॥श्री निरंजनाथस्मि॥ अथ श्री गोरषनाथजीका कुटकर ग्रंथलि
षते॥ अथ ग्रंथ रामबोध॥ श्री गोरषउवाच॥ श्री गोरष बोलंत
सुणि हो रामचंद्र राजा। सारषे दोउ राम लक्ष्मण एक ही नाम छ
इंदेह राजा राज निजपद चेति निजपाइ॥ सति सति भाषंत श्रीगो
रषराइ॥१॥ रामचंद्र उवाच॥ रामचंद्र बोलंत सुणौ हो गोरषना
थस्वामी॥ तुम्हारा जोगी सदा अस्थानी॥ ऊषक्के अन न प्यास कंथ
नी कूषद्भषत लि बासा करै। सो गा संग्रही जोग सत्यागी। चलंता
जोगी छीजंत काया। दुष सुष दोऊ सरीर समाया। हम ही राजारा
ज करंते। दसरथ के कुल नंदने। अनेक राजा हमही सेवा करे
कहा जोगी निष्या मंगनं॥२॥ श्री गोरषउवाच॥ श्री गोरषनाथ
बोलंत सुणि हो रामचंद्र राजा॥ तुम्हे राज कछि कछि काया
माई। गमाई काया बहोरि न पाई॥ तुम भूले हो रामा। सिछि कू
हो त्यांकां म। सुरगां मतयापालि राम। पाप पुनि का नहीं जम
न। पंच तत्व आत्मा जांणे ते समान॥ सुण हो रामचंद्र अवधू॥ अ

कंवरणी

॥३॥ रामचंद्र उवाच॥ सुणौ हो श्री गोरषनाथ स्वामी
।सरब ब्रास्णणा कूं देवा नुजा
गागीरथ करां सनान। कोटि कोटि गऊ हम मया दान। अने
क अमक सोना रूपा हम च्या दान। अनेक मुनि करां असन
न। ऐसा एक ब्रह्मा की जने कौ। सति सति भाषंत
रामचंद्र देऊ॥४॥ श्री गोरष उवाच॥ सुणौ हो रामचंद्र रा
जा। बासा तुम्हारा नाहे षोवे करे आचार। स्नान ग पाप तिगुण स
लि पृथी का नार। ब्रह्मांड रूप व्यो संसार। दिन दिन ह्म चव
न अपार। ब्रह्मा सोई चीन्है ब्रह्म गियान। सुंनि मंडल मूष
धान। आत्म परचे जगत्र पूज मान। षट चक्र भेद साधि के
सोसा सम्रपा धरे। अजपा गावती रवी सुरजैये। गगन मंड
ल मे षेती नेपजे। असी ब्रह्मा की कीजे राजा रामचंद्र सेवा। स
ति सति भाषंत श्री गोरष देवा॥५॥ रामचंद्र उवाच॥ सुणौ
हो गोरषनाथ स्वामी। हम राजा सुरपती गजपती। नृपती
अस्वपती अमृच कवती रजिंड बांधी। सब रासे तम बांधि
या। ते का कछि लीया कुरबेत जुगीता ए क हमारा व
षयां न बोलीए। तुमारा ब्रह्म ग्यान स्वामी हम न जांणे न
हम तुमारा ब्रह्म ग्यान षोज्यान बूझ्या। न कांनी सुणा पान अ
वण भारि सी निवहोई। हम छोत्रमचाया जथं बोर

सतिसतिभाषंत रामचंद्र
वेदैष्या। हमारा ब्रसा की करिस्यां सेव
देव॥६॥ श्री गोरषउवाच॥ सुणि हो रामचंद्र राजा तुम्हारा ब्रसा
जती क सती क काम दग्धी बोलीए। कै सुसमवेदी बोलीए। कै अ
लप अहार कै अलप निद्रा क्षारी बोलीए। कै अलपदान संतोष
बोलीए। कै एक एक ब्रसां कै विषे पंच पंच भारज्या बोलीए। कै जा
वेस्यां सू प्रीति कीजीए॥ कहीए राजा रामचंद्र तुम्हारा ब्रसा का
वा सतिसतिभाषंत श्री गोरष देव॥७॥ रामचंद्र उवाच॥ सुणो
हो गोरषनाथ स्वामी॥ न अम्हारा ब्रसां जती बोलीए न सती बो
लीए न काम दग्धी बोलीए॥ न सुसमवेदी बोलीए न अलप अहा
री बोलीए॥ न अलपदान संतोषी बोलीए॥ एक एक हमारा ब्रसा के
पंच पंच भारज्या बोलीए॥ जाइ वेस्यां सू प्रीति करीजीए॥ हमारा ब्र
सा का स्वामी सुणीए देवा सतिसतिभाषंत रामचंद्र देव॥८॥ श्री गो
रषउवाच॥ सुणो हो रामचंद्र राजा हमारा जोगी सदा अस्थान
मुष कै अंन पियासे रूपांनी॥ अषंडित निंद्रा सुष अहारी सुनि
मधे जोगी रहा जुग च्यारि॥ फिरैन करै जीवे न मरै न चौरासी लष
तरै॥ उपजैन विनसे जोगीद्र आवे न जाइ॥ हमारा जोगी राम चंद्र सं
जती सदा सती सदा संतोषी अजा चिगन लोनी॥ हमारा जोगी का
मक्रोध विवरजित आसा त्रिस्ना विवरजित॥ हमारा जोगी सदा
ही निहकामा निहकूत आसन छिमां धारी सीतल सदा ब्रसचा
री॥ हमारा जोगी के अष्ट सिद्धि नव निधि सदा हजूरि रहै॥ सदा जोगी
रेन सदा जोग धारी॥ षटचक्र नेदंत ले जोगी गगन मंडल में आसन क
रे॥ इकईस सहंस्र अठसै सतमास सहंस्र के वलदल मधे जोगी
अजपा गायत्री जे पिवो करै॥ नौ नाडी बहत्तरि कोठा चौसठि संधि
मधे जोगी ब्रस किरिया करै॥ संध्या वंदन गायत्री मंत्रा सूरज मंत्र अ
जपा मंत्रा बिण बिण जोगी पढै हो राजा रामचंद्र॥ हमारा जोगी का व
असरीरा जुरा मृति विवरजित हमारा जोगी ब्रसस्तुति मधे रचा
सदा सतिसतिभाषंत श्री गोरषराइ॥९॥ रामचंद्र उवाच॥ सुणो
हो गोरषनाथ स्वामी षटचक्र ते कौण कौण बोलीए। षटचक्र
व के पाषुडी का कमल बोलीए॥ काया का विचार गुरदेव जोगी
रन का भेवा पूछंत रामचंद्र कहीए श्री गोरषदेव॥१०॥ श्री गोर
षउवाच॥ सुणो हो रामचंद्र राजिंद्र॥ काया का विचार षटचक्र
का भेवा॥ षटचक्र के नाम॥ आधार चक्र॥१॥ स्वादिष्टि चक्र॥२॥ म
णिपूर चक्र॥३॥ अनाहत चक्र॥४॥ विसुध चक्र॥५॥ आग्या चक्र॥६॥
षटचक्र के नाम बोलीए॥ आधार चक्र गुदा अस्थाने॥ चतुर

ब्रह्मथांन।९।तै

ऊपरि स्वादिचक्र लिंगस्थांनी। षटदलकंवल षटसहंस्र

००ब्रह्मस्थांन।२।त्तसिचक्रऊपरि

'दलकंवल षटसहंस्र अजपा

००॥ब्रह्मथांन।३।तसिचक्रऊपरि अनाहतच

दलकंवल षटसहंस्र अजपागायत्रीजा

०००॥ब्रह्मथांन।४।तसिचक्रऊपरि विसुधचक्र कंठस्थ।

अजपागायत्रीजाप।१०००ब्रह्म

रि आग्याचक्र स्थाने। द्वादसकंवलए

॥ब्रह्मथांन।६।ऐताघट

॥षटचक्रऊपरि ब्रह्मचक्र सुरधनी स्थाने।सहंस्रदल

ऐकसहंस्र अजपागायत्रीजाप।१०००ब्रह्मथांन।७।ऐतास

अजपागायत्रीसहस्रीव्र

तेबतीसदलबिगसताकंवलदसबेद

गुलटहीगंगा।जोगीपीवंतअम्रताई

।सरीरबजपंजरसोहंजापनऐजोवा।चंड

॥असषदल

रा

कषटचक्रविचारसा

ग्रंनेतसिधलेत तरैपारु।सुणो होरांमचंडराजा।षटमासजोग

।१६स

व।सतिसतिनाथत श्रीगोरषदेव॥११॥रामचंडउवाच॥

हो गोरषनाथस्वांमी तुम्ह हमारा गुरु तुम्ह हमारे देव।हमतु

हारा चेला न पाजै।स्वामी तुम्हारी गति हमे न दीजाणी।स्वामी हम

गपान।मूट अपामति हीए।तुम्हारी गति स्वामी हमे न जाणी।स्वां

तुम अपरंपार महाजोगिंड।तुम्हारी गति अगोधनणीजै।स्वां

तुम्हारा पार बेद न जाणे ते नित नित स्वामी बेद पुकारते।प्रब्रह्म

स्वामी हम तुम्हारा पार क्यूं कहि

जमै बूडे॥तुम्हारा प्रसाद करि स्वामी जोगपा

।धनिक्रतद

।धनि हम तुम दरसने।अवपाप डरंगता।डरत ने स्वामी

मनिषजन्म।।३ रत्नेनेचतुमदरसन।।३ रत्नेनेप्रभु लखपाना।सतिस
तिबदामहेतुमदरसण।गुरुगोरषनाथदेवा।रामचंद्रसईद
माषित्ते।।१२।।श्रीगोरषउवाच।।सुणो पुत्ररामचंद्रराजा तुम
पुत्रमहाराजिंद्र।तुमेमहाजोगिंद्र।सतबादीजितक्रोध।तुम
सुधरमा।अतीतप्रतिपालननं।तुम्हारेपुत्रआदिजोगारंभ।जोग
मारगतुम्हारा।तुम्हारेकुलआदिजोग।अजैपालसेजोगिं
द्रचक्रवतीमहाराजाजोगेस्वरा।नयेतनिश्चय।लक्ष्मणसे
तुम्हारेभ्राता पूछो पुत्र श्रीलषमण।सतबंता तुम्हारेभारज
पूछौपुत्रजोगलछिणं।हणवंतसेमहाजती पूछौपुत्रनिश्च
य।पूछौ पुत्र सरबजाण।सति सतिनाथंत श्रीगोरषराइ।।१
३।।रामचंद्रउवाच।।सुणौ लक्ष्मणभाई हमतौ नएजोगेस्व
र।छाडिराजपाट सिंघासण हस्ती घोडा अरथ भंडार देसदिस
तरागढकोटनग्रीमहल।अस्थानमांनरजधांनी।अजोध्याकी
चिंतागुरुगोरषआगेमस्तगमुडाइबा।गलिपहरिबाकंथा।न
ग्रीपेसिइध्यानतमांगिषाइबा।कहौहोलषमणभाईतुम्हारी
कौणअवस्थाकौणगता।।१४।।लक्ष्मणउवाच।।सुणौहो
रामचंद्रराजा।सतहमारेजनेऊ।लीपेजतहमारेधोती।ज
टाबांधिनबाणकीयारहैंगेहम।अगमहोतेजोगी।अष्टांगजो
ग अष्टांगिन तिसाधिबा।हदसबरषबनफलषाइबा।तबहम
कूं मिले गुरुगोरषनाथजती।तबहमपाईजीवनकीथिती।नाम
राष्याबालासिधबालगोपाई।अटलदीया हमकूंजोगस्थान
आसणबैसिहमेजोगीकहाया।आदिश्रीगोरषनाथसापा
सतिसतिनाथंत लक्ष्मणबालनाथा।।१५।।रामचंद्रउवाच।
सुणिहोहणवंतजती।हमतौनएजोगेस्वर।छाडिराजपाटसिं
घासण।हस्तीघोडाथांनमांन।अजोध्याकीचिंतागुरुगोरषन
थआगेमुस्तगमुडाइबा।गलिपहरिबाकंथा।नग्रीपेसिइध्या
नमांगिषाइबा।कहौहोहणवंतजती।तुम्हारीकौणअवस्थाकौ
णगता।।१६।।हणवंतउवाच।।सुणौहोरामचंद्रराजा हमतौ
जोगीकहीए।आदिका।हमारेराजाआयानमोहा।राजनपाटनय
नपटण।हमारे।राजागुरतौ हमारेगोरष बोलीऐ।गुरुगोरषना
थप्रसादेहमतौजतीनऐ।पांचतत पचीसप्रक्रति जोगारंभसा
ध्या।षटचक्रअजपाजापानवनाडीबहत्तरिकोठाहमारावज्रसा
धेतसरीर।सतिसतिनाथंतहणवंतबीर।।१७।।रामचंद्रउवा
च।सुणौहोसतवंतीसीता।हमतौनएजोगेस्वरछाडिराजपा

हस्ती घोडा गढ कोट नयी स्यो नासकलप्रथ्वीका
चिंता गुरू गोरषनाथ आगे मुस्तग मुडाइवा
नमो गिषाइवा के होइस
अवस्था कौं ए गता ॥ १८ ॥ सत वृत्ती गव

ले गोरषनाथ जती तव दमपाइजी
॥ अष्ट रिधि गुरू गोरषनाथ आगे लाइ जव
कुंती ऊइ जोग
ले को ऊवा धरम का पिता हए वंत जोगी ल
गुरू गोरषनाथ आगे ले हा दश ॥ १
गोरष उवाच ॥ राम मुडाई मालिषम ए मुडाई ला मुडाई न

गुरू गोरषनाथ पाइ प्रसादे राजा राम चंद्र कीया कंचन

करते पापे निलिपते पुने न हारते सुरता मो
आवागवन निरवरतते ॥ लोक
सिवाइ गुरू मछिंद्र नाथ के पाउ का ।
॥ ग्रंथ ॥ १ ॥

सि ॥ यलमहे लमहे सि ॥ जोरजु लमहे सि ॥ अ
सि कलमोक हूलहे सि ॥ नेक बदु है सि ।

है सि ॥ जा रीद

11

अदल आद है सि । बे अदल कांमकन है सि । घवरदीन है सि
बेषवर बेदीन है सि । राहधीरां है सि । बेराह बेपीर है सि । फकीरी
सबूरी है सि । नासबूरी मुकर है सि । दया दीलति है सि । बेदयाक
हर है सि । तेगमरदां है सि । अदल पातिसाई है सि । रहंम सरष
रू है सि । बेरहंम नांसरषरू है सि । नवा आजर है सि । दंम ब्यवरक
ति है सि । नावा नतरी हरकत है सि । अबेतवेगुनांम है सि
असतीजादा कूसलांम है सि । हलाजादह रि है सि । बिनासफ्र
है सि । आकास दोस्त है सि । दिवांन दरद नां है सि । हूकमारूफ
है सि । आकूमदंद है सि । अनाही बेहदंद है सि । वा बोरां भरतन
अवलि पीर लोक । रिगरदेवा ए ताजां एसरदे । सोदांन सबंध
प्रथम मूलबंध । दुतीए लंगोट बंध । त्रितीए नाभिबंध । चतुर
थ जकरबंध । पांचमे तरकसबंध । षष्टमे नालिबंध । सपतबंध
बोलीए सपतदीपां वतीप्रिथमी । अफूठदा पकाया मकारा
सिकरि मदीन बसाया । ताका सरना गति बिरलो पुरसां पाया
मदूमद पातिसाह हूंजती गोरषनाथ चिताया । मदपीर दीन
बोलीए । सईद पीर मुसलमान बोलीए । जिंद पीर जोगी बोली
ए । ए ता अवलि पीर लोक म हि दूत साहे जती गोरषनाथ
गाया ॥ इती श्री अवलि पीर लोक [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ब्रा नासति सबद
सुधकारा । गगन मंडल बहि पी त्रिपुर सो [illegible] तारा टेक
धर ताहूं कर ता मति मानो । सति को सबद चिंताको अबलग
सरस नाहीं मेरा गुर बीज कहि जांऊं । हम नी माया तुम
नी माया । माया रांव राराधो । जे तुम बोला हूकम करतहो । तो सु
सबद संलागो ॥२॥ सुसबद का भेद निरालो [illegible] बिक
रा जिन अंद रससा भरपारा । सो सबका करतारा । तीन
लोक अर भवन चतरदस । आकाल का चारा । साध सबद
रहै धरि लीज्यो ए ती सबद पारा ॥३॥ [illegible] सति नाथे
राषो तो षड धारा । सुषसागर मैं सहजि मिलैगो सति प्रनाम र
मारा ॥४॥ [illegible] बेर सार पे चिदनां कोई जन जानै या मरम
गती [illegible] आदि तो माया [illegible] नाथे सत वंती ॥५॥२
॥ रांमचंद्र की पद ॥ मेरै मनि आया बहुरि अदेसा । सो
मैं से या ते बदव से घाटे [illegible] ओर [illegible] ओरे

२ छाबाक आदिलौ
अथ रानू जो पिंडे सो ई ब्रह्मंडे कर दस बदरि
तताबौ। पिंड की पोतिस्वाद सकपरि ततेततमिलाबौ।४ यल
पिंड ता सुषमना ऐकाया की तार। कहै रघुनाथ रची सो बाल
रजबीरज की धार॥५॥१॥ अथ नौ नाथ रब्या तिरया ते। आ
दिनाथ गोरष आदि सिध बालगो दाई २ घोडा चोली आदि ३ आदि
कं षड अरदाई ४ सिध कणेरी आदि ५ आदि अवलीया जालंधर
६ आदि अजैपाल गुरदेव ७ आदि जोग स्वरमछिंद्र ८ आदि
भरथरी पाव ९ आदि सुषदेव १० गोपीचंद निजत लग दणारा नौ ना
थ आवै सिधांसहत १२ निज ध्यान मुकस्ता करण॥ अथ
थांका नाव॥ गोरष १ बालगोदाई २ घोडा चोली ३ कंषड ४ क
णेरी ५ जालंधर ६ थूंधली मल ७ चरपटी ८ गोपीचंद॥९॥ अथ
स्वामीजी श्री सेवादासजी की महमा को कुंडलीयो॥ लग्या
ध्यान गुरध्यान स्रोतजी आन की आसा दरसण करि सुषपावद
धनि धनि सेवादास। धनि धनि सेवादास धणी सूध्यान लगाया
अबगति नाथ अपार आप मुषि गोबिंद गाया॥ जो गध्यान सा
आस बे कीया निरतरि बासा। लग्या ध्यान गुरध्यान स्रतजी आन
की आस॥१॥ कवित्त। रणतभंवर तलहटी सघन बन सिष
र बिराजत। चलेसदुजमघजात बीचिमघ के दरगाजत थ्यदहै
कत बैरागरांमरस छके दूरान जबाजन की दसा जु देषि सिषस
न मुषध्यायो तब॥ सिरन्वाइ चरण तलि सिघदीयो यह बालपन
पिहे। जनसेवादास गति अति अकद कि न बुधि असी कोकहै
॥२॥ अथ पद कौ॥ जनसेवा ऐसा सूरसे तिसाचा। अणीयाच
ढ्या अकाश रे साची करि करतूति कलूमें। करडी ध्वि अकरा
रे आंचप सण पेलि दलपाछा। सांवतसार बजाया रे। धणाघमसा
ण मोहि रजक्षरी भांव निसांण घुरायारे। १ मोटा मीर मांव मोदमली
या दलि दोषी गटलीयारे दुसडी अरलिकरी अरगंजण। आस्थ
पी आदरी यारे २ नब षंडु नाम सपतपुर प्रगट जुग जुग सुजस बाय
रे प्रगट नरसूरज सरवगि ऐक अषंड दरसायारे। ३ महरबान
नरहि मांक हाबर ऐणे देव दया करि आयारे लक्षि बक्ष रिसाचका
रिप्रगटा स्वामी आप सिक्षायारे। ४ अडिग अवधूत पौतिपतिसा
वौ हित्तिमिलिमगलगायारे। जनरूपदास प्रमसुषमांही संत

सेवा सहित समाचारे ॥ २ ॥ अगुन श्री गुण को मोजोगा ॥ ५ ॥
होहा ॥ साधन संगि सदा रहै गुनी कयाने लोभ मन बच क्रम मे
के भजै सो जिन सके कोइ ॥ ४ ॥ मंफ तिर सिंघ छै प्रगा जोग
न के काज हरन कु सिब हुते गयो जंतीत रङ्क कुजाइ थनगत
तु मेरी आलाजा कै जाइ लिरेधा तुर तु रन र तुरना गुर जहा
तहां मारे सोध आन देव की सेव तजि मो हित बांधे माथ मेरे
रि सि अंगुरी करे ॥ काटे ता कान थ ॥ ८ ॥ सो कहि कै तो सो कहत
ए हजा तिजीव मांहि ॥ बांधी मेरे दास की मो पे छुटत नांहि ॥ ९ ॥ साध
अहंगुन सब राषी जन की रेषा ॥ १० ॥ जिय सो अंगुर को न
र सिंघ छै रे षि ॥ लगति करी मो नीन हो ॥ तजि ब लोक कर्म ला
ज ॥ हेवल फे सो दे षि मे के बल ना मा का ज ॥ ११ ॥ उपति को पो
का रहे हो ॥ करन स को क छु अंत ॥ रा षो दास क बीर मे मा
गे वर के हेत दुरवासा जी मदो मय रि गयो ब देन स राप लयो
अंबरी कथ वारि को मन ब च क्रम मै आप ॥ १३ ॥ दे षी अन दे षी
रो जनकी देव तिदाहि ॥ जगति मांऊ आगो परे करे मो हि को
हि ॥ १४ ॥ यह दु षम सो मुनि परे साध सता वे कोय ॥ सो दीपक
कौ ॥ सिपति न क ब कु तो न ॥ १५ ॥ मेरे जन तन जो को जाति ते कर
ति ॥ साबक तो रे चो है ॥ १६ ॥ अगुन है गार को पी हि ॥ १७ ॥ तो ब सत
साधु सो दोषी है मोर ॥ गाहि कै गर द नि मारि है ॥ क ब ऊ न ब क
सो चोर ॥ कोहीते तप तिहि सो ही मांक सम हि ॥ मो हि न मेरे
हु चौर लोक त्रि न मांहि ॥ १८ ॥ सकु कंपा रोत गो ना रो लयो
जाइ ॥ आगे आगे बाछरा पी छे पीछे गाइ ॥ १९ ॥ ही माता पि
मो बिन और न कोइ ॥ साहिब सेवग जिसरई तो प्रियम ले
अगुन अतीत निरंक्षर ही ॥ निगम कहत मो हि ते ॥ २० ॥ अब
सुनाय रे बंधो साध के हेत ॥ धरती अंबर आदि है रहि स
योपी ना ॥ साधन ल पिए तो रची ॥ न तो ब कारि को न ॥ २१ ॥ न हि
ही नि रवेरता न तो नी ति र कांमा ॥ अनंतन सो कोजानी ए
धमरो निज धाम ॥ जल थल सकल हीय तो सो मि स ब अब सिर
यहि ठांव ॥ मो हि सु मर पे जो कोई ॥ साध तु घ हे मावर ॥ २२ ॥
ह ॥ हि अंतर न ही स तिक हत तु नि तो हि ॥ साध दु पी तो मे
पी साध सुषी सुष मो हि ॥ २३ ॥ साध सुमे रो स रा रहै तो संत
जीव ही नो सेव गाय ॥ मिला जु ब र ध अ कथी ब ॥ २४ ॥ जन
ऐ जा नी ए ॥ सो तो मेरे दास ॥ मन ब च क्रम स ह रि सु मिला
न फल अरु बास ॥ निस बासु र सु निर ग कोर मन

नलोमनाईए

यहबरदममाकरतेछाडिन

निश्चापसरी
रिहाथा। सगिबिराजोसाम

उ

मेरेथानहीजनबाजीदबिचारिनश्रेमे

क

छाहे

षनामोजोगगपसपूरा॥१॥अपश्री 1
ीकाकडपालिषते॥रागसीधुडो॥ 1३

अ

णीपंहितपीरिलीयावेगारीकहताकयाकहाणी॥रामद
समाया॥अतनीबलाजुगमेजोरेजाणी॥१॥जोवीरेजोबोज
गमांही॥मायामछरकरती॥च्यासीकेटरस्य दिसडोलेमस्त
फिरेमैमंती॥टेकषटदरसनपासीयेआया॥चाकरकीयाच
लावैहीहूतुकदेकिस्सरायें॥करेज्यहीमननावै॥१॥काजी
पंडितासुलाग्यानीहहाहीनाचनचावै॥रामदासरामतिस
याकीदेषिरसौकहाबेय॥२॥देषोरेदासीदलनबाकाउनी
मांवीनाफेरी॥सावतस्वरसाकडैघालै॥घणचककरतीघे
रीटेक॥सोधिसोषमारेसन्यासी॥जोगीजिदालूटे॥वेदपुरा
नपांडेपढिहास्या॥किलोकरंताकूटै॥१॥छानोनदीछोक
रीआंगो॥पेकनछूटैवोले॥रामदासमायामसतीचढिबा
रीवलनकरिवोलै॥१॥२॥देषोरेमायासुषमोडै॥मुलकिदसै
मनमांही॥सुरनरमुनिजनसरबलपेट्या॥घेरिलीयाघरत
ईटेकतापसतकेत्रिगुणीताके॥कछमायामिलेदमारे
आरुबरनचूपकरिवादे॥नालचिलोगास्नारे॥१॥तीनलो
कतपतेजसवायो॥सुरनरअसुरअपाडे॥रामदासमगभ
गतिमाया॥बांदीजीतिबेबाडे॥२॥४॥मोचीमारेरेमंडीयादल

पाखा।लागि त्रिगुनी तोड़ै।औकुलनकरैधकाधकि स्वामीजोरा
वरजंगजोड़ैटेक आसा त्रिष्णां अनंतगगामावै अवधूमंड्यो अषाड़ै
कामक्रोधतोनमाय्यामंद पिसनवंडा अरियाड़ै।२।मारोमारिक
रैमतिवालो पकड़ियचीसौंताड़ै।रामदासराघो सकिरिण रिप
वाजजीतिबजाड़ै।२।४।जीतैरेमायादलमूनी।रिणमैरावु
गलारै।टोकरमारि ठकोरीवीगा।पगतलिपड़ी पुकारैटे।स्वा
मी राषिसरनि चलि आई।बाबा बांदी कीजै आदर औरकरै
अतिसारो।देष्यांडुनीपतीजै।१।मारोपाटकिचलीप्रचिपां छ
कूनरकरिकरिहारा।रामदासमौनी मायातजि पापनिपरा
बिडारी।२।५।देषोरैस्वामीसबऊपरिकरडा मूं विमंडांणा छा
नोनरी छतोष्यावरीयो।मालिमराजा राणां टेक।सूसिधपुर
षविनै प्रमेस्वर। अंतरगति की जांनै।प्रचैपूरो करै कामनां
जो जाकै मनिमांनैं।१।अनंतसाधसिध आगै हूवा।सरबसुन्यां
रामकांनां।रामदासराघोगतिउलटी।यो कहुं अकथगयो नां
।२।७।निसदिनजाइरैनरकांइनचेतैजनमअकारथजात्यौ कूडैफोड
लोगिनलाचांनो।साचोस्याम विसारयो।टेक।बोछो आव अनंत
करि आसा।जगपतिजाण्यौ नांही।अपणी कुबधि अकूफ बधि
पड्यौ जात फंधमांही।१।साचासबद लोपि लोपरतां कीयो आप
णौ भायौ।इंद्रयांस्वादि विलंबै अधमूं उमीवेचितलायो।२।वसु
घरामविषेमदिमातो।दीनदुनी सबषोयो।तैं कांणि नमांनी करता
के री।निडर निसंकजगजोयो।पलट्याअस्यांरसेतसिरहूवा अंध
अजीन अघाणौ।रामदासजमजोरपकड़ैतो।तब पापीपछितां
णौ।३।८।सतो कांइरैसुषनींद नचीतो।जागिजुरा घर घेरै आड
अडी अबनेडी लागी।उसमणदीलाफैरै।टेक।प्राणीपरलो
पालिनबांधी।गाफिलहोइगवांनौ।षलक्याषालनालजब
जोरैविषहीबाटिबहांनौं।१।बूडंबिनजबोदा करिबेवोसो
दैस हीवगायो।तोटौपड्यो मूलनमें सांसो।हांणि कुई पछितायो
।२।सुरत्या दलैपड़ोहै ष्योथा।बातां विलिबिगतालो साहिवस
हूकारनमानै दीसै डरसिद्दिवालो।हिडक्यो हूवो करैहाफ
।३।राषिचटेक कुनांही।रामदास नर राम विमुष सूं मूरिषम
रिमरिजांही।४।९।इतीपदकोअंगपूरण।अथपद।रागसो
रठि।ऐकरसांफिरिआवौराघो रामजी मूनी सुषदिषलाउ
तेनमनतरसैतुमविनांतलफतरैनिविहाइ।टेक।कहांगया
तुमगवन करि हमनैइतछिटकाइ।हिवडौफाटैएकलोधी
रजधरीनजाइ।१।विरहीकरैविसूरणां।सांसोसोगसरीरगो।

श्री आरथा

नलागी चोटा दी
की वोटा पसा धूकूरैं
आपसूाकरिगया निपटि निरसा६

कीकाजी ऐ।जगजै सौजमपासा अबतौ कव्वन आवडे।तनमरै
नयावदासण।आम्पदरचौसहिपरी।मनमै रहिगयौसाल
कहावामूरति बचन कित।कहावादेषचाल।ाऐसो दिनकैसाद।
कृपानिनानिरषूंरूपा औरसरेवकरिवाराों।दरसौबदन अं
नपए काजानेकवमिलिहिं।सैंही प्रबजाएा।बलन नलागो
वापजी।श्री स्वजीवनप्राण।१० मनहीमांहिविसरएा।बारबार
मुरझाइ।।उरवौछैपांएाीमांछली।सनकितलफितनजाइ।।अ
बमनधीरजनांधरैबेगिमिलौतुमआइ।कैतौपावांआपकोद
मझरौरहुलाइ।२२कहां औकजोंकहांअकलसकत
करपूरि।हेतप्रीतिकरिरांमदासगुरगोबिंदनहीदूरि।।२४।।१
।।अथश्री दत्तात्रेजी की आरती।।अवधूवारिकहादिषावैन
ईंअंतरिआरतीकरो।मोनाईटिकदृरिहरिकरवदत्तसरिम।
हिसमानपूा।अैसीआरतीकरौतुमनाथगोरषदत्त औझतअ
नुपाआतीकारतापारिपकृतारनिरंजनकीदत्तआरतीगावै
तेजछिलिमिलिदीसैतहां औरथावै।।न्यो।१।।अथश्री सुषदेव
जी की आरती।। अचलआरती हे अविनासी। औरसकल
भ्रमधपिषपिजासी।टिकदेवीदेवलनरमपसारारामविनान
दीनिसतारा।१।श्री दिअंतमधिआरतीजाकी।ब्रह्मा विस्नमरै
देवसाषी।।२।।परापरैपरसपरनेवारोमरहैजनकदैसुषदेव
।।३।।४।। अथ कवित्त।। नांवमहानिजमंत्र नांवहीसेसा पूजा
नपतपतीरथनांवनांवबिनऔरनदूजा।नांवनांवनांधीतिन
वलेनांवहीबोलैं।नांवअजामेलसाषिनांवबंधनतैंषोलैं।नांव
अधिकरुघनाथतैरांमसबवदएवंतकह्या।कबीरकृपालै
परमततपदमनानिस्र्चालासा।१।।हरिनांवलेनेचित्तवनकी

व
५।अतिआतुरनयोमोहअगपानकहकहासेमइऐं।वि
छि राषी।छेदतहैंततकालनां

वरसनांजब नाषी॥ब्रह्मा विष्णु महेस कू आरि दन ने पूज
हरि ने चित बनि कीयो तब इसी घोर चिंता भई॥२॥ मैं एक
मा ते सुमात गयंन गोपी चंद्र री न्हां॥ ह की मात सुमात सु
वीति गे पदे सजु को न्हां॥ मदालस्या मात सुमात ध्यान अ
रक तप धारी॥ हेम सिर हरि हेत देत न राम हतारी॥ बष
करफ बीद की गुरु धर्म साहिब हजौति री जगवंत बे सुष सं
अपणी पंथ मात मातापरी॥४॥ नू॥ अथ पदासजी का पद॥ उ
सतगुर के गुन गांऊ हो जा प्रसादि अकलि न ई मो को ता को
कृ बिसरांऊं हो॥टेक॥ यह संसार सब नम है जंतसा सा सं
तन के गुन गांऊं हो॥ कृपा की रतन अरथ विचारूं॥ प्रमानंद सुष
पांऊ हो॥ जीवपने हि आत्म गति दीन्हीं॥ प्रमानंद पद पाऊं हो
बहुत बिचार करैं अनि अंतरि॥ मन का नरम मिटाऊं हो॥१॥
ऐसी मति सतगुर तै पाई॥ ता को कृ बिसरांऊं हो॥ दीन अना
सत दासी हो॥ माया जीति नए जन जोगी ब्रह्म स अग निवकासी हो
रे अग्र बिभूति जटा न धारै॥ मारे मन मैं वासा हो॥ गोरी संग अ
नगन आयो मरदन मारि कीया नासी हो॥१॥ आ भूषण तन भुजंग
निराजे॥ सिर परि चंद निवासी हो॥ मृगतुचा अंग वोढण को रुंड
मा लाग निस्वासी हो॥२॥ भिषा भोजन आक धतूरे॥ बेली पान धरा
सी हो॥ हाथ कपाल कपाली नर की॥ मरी मसाणां बासी हो॥३॥
कै मांजा के पावप लोटै॥ करै कुबेर षवासी हो॥ आरिपदारथ
आपा कारी रिधि सिधि दोक दासी हो॥४॥ नगन भगन गोविंद गुन
गावे॥ धुनि मैं सुरति निवासी हो॥ दास समाधि रहै निसो लागी॥ ब्रह्म
जोति प्रकासी हो॥५॥२ऐकर जान गरवजेणी का सांई कार णिजो
गनी या है सो हत लंपा मृग नेणी का॥टेक॥ साजे कनक छत्र सिंघ
सन ही रारतन जड़ै णी का॥ त्यागे तुरंग मदै दंत मंता॥ नाथ हजारे
नेणी का॥१॥ है छुरषेद से सर त्रिधि जाते॥ सुण ते सब वदन बेणी का
सो सुष छाड़ि भिष्या री कुवा॥ बीरसे णावती बहै णी का॥२॥ रोवे सु
रसुन टंपट राणी रोवै॥ नाटनि नाणी का॥ गांव पड़ंग नां घोड़ा हाथी
मा निक दान करै णी का॥३॥ सुष सपत लि कंथा सीवै॥ षेमत बाच्छु
रै णी का॥ भोजन पान फल फल नट का॥ बासी कुसी रैणी का॥४॥
प्रबस बासी गुफा निवासी॥ ध्यान धरै त्रिबेणी का॥ दास नरपरात्र
मर नए है॥ सिध पुरस कोरहै णी का॥५॥ आऐ करजा गोडवंगा
लै का॥ जोगी कुवा जानि जगफू वामिहलन तज्या गट मालै का॥ टेव
जो कै कटक धरणि धमधमंती॥ पार न ही ...

तेवातेका १चौवाचंदनअगर
।तातनऊपरिजस्मलगाईवोट
।षटरस नोजननातिनांतिकालेतास्वादरस।
।नाजीपालेका।रहीशकौ

असरानालेकाधाऐक

त्तिपालेका।।पा।।४।। अथरूपदासजीकोपद।। धनिवैसंत
त्रिवैयात्यागी।।तेजगमांहिप्रमवडभागी।टेरमाया।संगिजेह
रिमिलै।तौनृपतिकाहैवनिजाता।पारसपोरसोमेलितेलीके
हरकाहेषलिषाता।१।हीरजडीसेजसाहकी।।नांमवेजनाव
हाई।हासौकनककूपमेगोरषागुरकेचाणिकनाई२रूप
दासऐसेसंतनकूं।प्रभुजीपलनविसारै।सीषेसुणैगुरुकेप
दका।अपणैमनहीविचारै।।३।।५।।जनगोपालजीकोपद।।
जिहनररामनांमनहिलीन्हौ।विधवाबाकनईकिनजननी
कहाजाइकैकीन्हौ।टेरजननगस्यौवादितनबाद्यौकतसस
रहिआयौ।मायामोहनयोमतिवारौ।रामनांमविसरायौ।१।
काटौनारकुमतितवकीनी।कविहरीकिनमारी।पदलेसु
कृतआएगमाऐपापकीऐकलिमारी।२।घसिघसिछूटीरहतै।
मात्तावैरनिविषकिनदीनो।हरिकीभगतिविनाजगजीवनाह
रतपरतगएतीनू।३।नावेइंइसकलहीनृपति।रांवणसेसिर
दारा।जनगोपालविमुषजेहरितैपरीछईपरिछारा।।४।।
६।।अगरदाससजीकोपद।। श्रीपतिउपतिनगतिअपराधेसंत
नऊछडोहताकरिकै।अतिगतिसहतमोहिआरधिटेकस
वैसुणतवेकूंअनुपासी।सतिऊहतमेपावतभंहै।तिनसं धे
कृपाकरोकहीकेसा।पूजतपावकैवक्कौवै१ संतनडुसः
नावममनिसदिनमेरोनांवनिरंतरिलेहै।।अगरदासइम
वदतनागवतामोहिनजेपरिजनमधुरिजेहै।।२।।१।।७।।अथ
कुंनारीपावजीकीसबदीहारस-आगुलहसाजाइउनम
मनतालीग्यानसमाइ।यहिविधिअनंतसिधचितायाश्रीगोर
षरावासतिसतिनाथत कुंनारीपाव।पिंडषोजोरअवधूपिंडषो
जोपिंडषोजातेसीषोअनंतसिधपारगामीनएअनहदनादसरी
२७लटीबाइचटीआकासिगाजैमेघगगनिकंबिलासषट
नीतविलास ऊगावैतेतौ
।जोडैतेतौजोडा।नेषपहरेइसणीकहीऐ सि

धपुरसतेथोडाध।दुलापिसुलामंकैधरै।सुषमनिनाडीपव
नांकरै।नानिठिइतहांरेकैबावालतिसतिनाषं तथ्रीऊंना
रीपाव॥५॥अथश्रीस्वामीजीअमरदासजीकौमहमापै
पदराग बसंत॥जहांबारामासबसंतेरागा।अरसपरसहरि
सोंसमागा।टे।सिवब्रह्मादिकसंतकोडि।निसबासुररहैसुरति
जोडि।दत्तगोरषसनकादि।आदिफागरमैंजुगिजुगिसमाध।क
बीरनांमदेनितिहजूरि।मिलिपीपोसोजोनिरषैनूर।नानिकनापै
रैदाससेन।फागरमैंमिलिकरैचैन।सुधरसुधरतहांबजैनेरस
वदअनाहदहोतटेर।जनहरीदासजहांरमैंफाग।ध्यानउदेगऐव
मनाज।चौपचकारीलेसुजान।प्रेमपिचरकासकेबांन।जनसेवा
दासजहांरहैमोद।मगननएकौतूहलजोद।धरिधीरजबिसया
सपाव।धनौरहैकरत्ववराग।तुरसीसकिसिंगारसोदनि
रतिकरैनिरधारहोइ॥५॥ब्रसकेवलकोसुगंधलेह।सूषतदीजन
नएवदेह।जनअमरदासरहैनिरहोइ।अमैनगरतेनादिको
॥६॥साषी॥करमकनेमेंआलसी।जोगनमैंवहोप्रीति।बीच
करबोडैनाहीं।यहपावरकीरीति।१।बिषैबासनांकेलीयेंबिधवत
करमकराइ।बिषईसोईजांनीएनीचकरमबिसराइ।२।कोहुकै।
योजगतहै।नियेउरमेंआनि।सतगुरकुंपूछतफिरैसोममोष
जांनि।३।हृदेग्रंथीछुटिगईउपज्योजगतअभाव।जीवनमुक्ताक
हदस।बिचरैसहजसुभाव।४।जगतिनगतनगवंतगुर।चत्रनांव
वपएक।जाकैपदरजबंदनकीए।नासतबिघनअनेक।मंगलत्र
हिबिचारिकैं।बसतनअरअनुसा।हरिजीकोजसगावतांहरिजन
मंगलरूप।६।सबदसपरसरूपरसगंध।आमनबुधिचितअहंकार
सअधाएनवतत्तजीवकीनास।उपजेबिनसैबारंबार।७।धसाहू
थीजीनहींरहैंअधरकोबांदारांका।जहांबिलंबीया।तहांपरहै
हांरह।८।धसाहूथीजीनहीं।अैसापायानांका।बृछिनासीबिनसेन
हीसाकासेवगरांका।९।आरिनहोटीदेसकै।तुरसीअैसानीचनी
देवलिहरिचंदहूं।कोकीयोस्पोरदधीच।१०।ओरग्यानसबतोष
या।तजेनकुलकीलीक।ग्यानकबीराचकवे।औरग्यानमंडली
क।११।चत्रभुजाकैरूपसूं।मगननएसबसंत।कबीरातोतहांमग
नजहांपसरीजोति।अनंत।१२।रातेरारूपहै।मनासवबिसारजे
नयोभेदबिचारीया।सोजनउतस्यापार।१३।रकाररचारतैंनिकसत
पापअघोर।मरतहारमकारतैंनहींपेसनकुंडोर।१४।श्रीगुरबं
दुरबीउपदेसहरिगुरकहताएकोनेसा।जिह्विघरितेरीकीरतिहृति
हियरिराषिबडाईतोहि।१५।श्रीगुरुजीअविनिलेजी।

२

	पो	३१२	३२	रागबिहंगडो।।।।।।।।	पो	३४८	२
		३		।।।।।	पो	३४८	१९
		३१३					१२
		३१४	३५	रेषतारागकाफी।।।।।	पो	३५२	८
		३१६	३६	अथकिवतलिषते।।।	पा	३५३	१६
						३५५	१११
		३१७				३६३	६४
		३१९					
		३२०	४०	।का।।।।।।।।।।।।	प		४
		३२१	४१	।ला		३७५	८
	पो	३२२					१
		३२३	४३	गुणमायासेवाद।।	पा	३७६	२
		३२४	४४	थ			३
		३२५				३७८	४
		३२५			पा	३७९	५
		३२६		।।।।	पा	३७९	२
	पा	३२७	२९	नाथजीगोरषनाथजीकाग्रंथबाणी			
		३३१	२			३८०	१
	पो	३३२	१०	दत्तगोरषसंवादग्रंथ	पा	३८४	२
	पा	३३३				३८६	३
		३३५		।।।	पो	३८७	४
		३३९	१९			३८९	५
		३४१	१४	।।।।।	पा	३८९	६
रागगूजरी।।।।	पा	३४२	१	ग्रंथसिद्धिपुराण।।।	पा	३८९	७
रागटोडी।।।।।	पो	३४२	१	चोबीससिधिलिष्यते	पा	३८९	८
रागकालंगडो	पा	३४२	१	ग्रंथआत्माबोधज्ञान	पा	३९०	९
रागनटलिष्यते	पो	३४२	६	षडाक्षिरीग्रंथ।।।।	पो	३९०	१०
रागमलार।।।	पा	३४३	३	ग्रंथपंदरातिलिष्यते	पा	३९०	११
रागसारंग।।।।	पो	३४३	६	ग्रंथदयाबोधलिष्य	पा	३९०	१२
रागबसंत।।।।	पो	३४४	८	ग्रंथगिनानमाला।।	पो	३९१	१३
	पा	३४४	२				१४
	पा	३४५	४	ग्रंथपंचमात्रालिष्यते	पो	३९२	१५
		३४६	११			३९३	१६
		३४७	४	ग्रंथतिथिजोग।।।।	पो	३९३	१७

॥

४

तबंदगी गुरनयेपरमाकिरपाल जलतासीतलकरी
२ लीया बिषमभोहकीकाल ७४ जगतरूपबिषधारमै
बूडेथाथोजीव परउपगारीगुरनबे आपसरीषाकीव
आहूडया ताजीरी कूरि गुरनयेपरमाकिरपाल सतेल
ओगगाइकरि पलमेकीयेनिहाल ७५ जुगछोछिवारीरी
मेसूतेसोयेजगाई तकलीथेनिवाइकरि रामउसारसया
ई ७६ जगजालमैकेतेजले ताकाबारनपार गुरकैसरीक
बरैनहीबूडेथे बिषधार ७७ बूडेथेपालिकबरै गाहिगुरचर
नगहिहाज गनसेवादासडुषतबामिटे सरेसबेहीकाज
७८ जनसेवादाससतगुरमिल्या कीयाबोरहीघाट विषीया
तेमनफेरिकरि अगमाहिचाईबाट ७९ बेदकतेबकुरानतै
वाराललषानजाइ जनसेवा यतरमेलही सतगुरदईल
षाइ ८० साचासतगुरजबमिले तबप्रगटेपूरणभाग क
सरीदेकंचनकरै तबपावेपरमसुहाग ८१ वाराहबुतिबा
रीकहे गुरबिनलषीनजाइ जनसेवासतगुरजबमिले त
ब बतादिइलषाइ ८२ जनसेवादाससतगुरमिले तबहीउतरै
पारि भौसागरसंसारहै नावनावमंझारि ८३ गुणायडीमन
स केपाहे मैनहीजनबीब जनसेवादासमेंहूजोतिरै गहिसतगु
रकीसीष ८४ सतगुरकाहेकालमुषि लोचनलागेजैनकी
वसीवसामेहोइगया सुनिसतगुरकेबैन ८५ सतगुरसबद
त श्रवनासुणि सोबैठोतगे कालमुषतेकबरै निरजनकनांइ
लाग ८६ उलटासुलटाकरिलीया मनकालीपा जिवाइ व
हराचेतनकरिलीया हरिअमृतरसपाइ ८७ कठिनकालमु
षिकाढीयो सुषमेरहेसमाइ परउपगारीगुरनये महमा
कहीनजाइ ८८ बूडाथासंसारमे गुरबाहिकाढेकेस का
लौतेंबरे सतगुरदेउपदेस ८९ भौसागरसेतारहे सतगु
रखेवणहार नावनावगहिकबरे सतगुरकीयेपार ९० पेव
टसतगुरजबमिले तबदरवेदीनदयाल पारिगतारेपलक
मेंकाटेजीवजंजाल ९१ सतगुरसबदांकूपजे अंतरिध्या
नग्यान कूतमसबेटले थिरकरि पकूचेवुरनसथान ९२
सतगुरसबदांकूपजे माहीआतमग्यान ग्यानकोटसबमिट
जे करि बैलेजनचोगान ९३ पिंडलग्यानबेकूपजे अंतरिबै
तिप्रकास बोलिबकूं अटकैनही करेनिजनबास ९४ स
तगुरसबदबिचारिकरि मनराषेठहराइ बोलिबकूं अटकैनहि

जहांके लोतहां जाइ ६६ सतगुरसबदबिचारिकरिमनगहिये
केलाइ दसदिसासेफेरिमनाजैसहजैसहजिसमाइ ६७ साच
मिलावैसतजमे जनसेवादासगुरग्यांन सावासहजैमिलिरहै
जहांपारब्रह्मनिवासथांन ६८ जनसेवादाससतगुरमिले नबहो
साथीहोइ गुराविणिकेतेबहिगये पारिनपहुंताकोइ ६९ लष
चौरासीधारमे बहाजाइथाजीव काढगाहिराषिबूडता सुमि
रणलगेपीव ७० सतगुरसबदबेधीया मनथंडाइककेर ज
नसेवाचलिअवनासकौ थाकीसनहदोर ७१ सतगुरमाचाबास
बदकरि मनबांधाइलकीन पांचांथिरथितिपाकडी मेवास
नयेदीन ७२ सबदतीरगुरसाधके लगेसुजागेसोइ जनपूसब
मांहिभेदीया मनबानिरबिषहोइ ७३ लागीतबहीजांणीये जि
सरेसबसुषदेह मृतकज्यूंबापुकारिहै जगसूंनांहीनेह ७४ लाग
गीतबहीजांणीये बहोडिनपीवेनीर जनसेवासतवोजकनही
सालेसकलसरीर ७५ बाहरिघावनदेषीये सालेनषसषमांहि
येकरमईयोउरबिषै इज्ञानावैनांहि ७६ सतगुरबायातांमरस्से
अंतरकेपटषोइ निरमलनांवसंभालता जनसेवासषसुषहो
इ ७७ जनसेवादाससतगुरमिल्या नहितरहोतीहाणि जौसागरमे
बूडतो गुरगहिकाढेताणि ७८ जनसेवादासजगबूडतो गुरग
हिकाढ्योताणि उरअंतरगिआंनदीया सुमिरणलागेनाथ ७९ दी
पगदेषिपतंगज्यूं यूंजगसाराजंत जनसेवादासगुरसबदग
हि बिरलाकोउबरंत ८० पतंगजल्योसंगिदीपके सूमाबासगि
नीबनास जनसेवासतगुरसबदगहि कोईजनभयेउदास
८१ येकअंगलहदारहिगया कहांनापाबहेजांण सतगुरस
बदसंभालिकरि सोधिलीयानिरबांण ८२ गुरसेदाताकोनही
तीनलोककैमांहि बंधनकाटेमोहके मुकतिकीयेपलमांहि
८३ गुरदिएपातिसाइदी आममांहिबिचार नवसहजेहीतिरि
ये जनसेवादासबिषधार ८४ बूडेथोबिषधारमे गुरगहिकाढे
बांह गलतीसीतलकरिलीया जनसेवामेबालिनांह ८५ लो
मोहकीअगनिमे दाझेथायोजीव जनसेवासतगुरजलघले
तबकीयाजीवतेसीव ८६ मोहपासिकटिबोकभिनासतगुरते
आसानि जीवजनानैभेदकूं जनसेवासतगुरजांनि ८७ केते
तपतीरथकरैं पारिनपहुंतोभाइ जनसेवासतगुरजबमिले
तबनांवनावगहाइ ८८ लोकानांवचढाइकरि सतगुरषेवण
हार जनसेवादासतबलघीया दुषसागरससार ८९ नांवनि

२

धीगुरदेवकूले दीन्हीहोइ किरपाल॥ जनसेवादासदुखसबका
ये पलमैंकीयेनिहाल॥६०॥ रातेमातेनामसूं सतगुरयांकूरा
ह्या॥ जनसेवादाससुखपाविलसीये आगमवारनहीपार॥६१॥स
तगुरसबदबिचारिकरि लेअंतरमांछिपिजांणि मनपवनासमि
सुरतिकरि तबसेवासहजैंजांणि॥६२॥ जनसेवादाससतगुरमि
ल्या सबदुषडारेषोइ॥ आपसरीषाकरिलीया करमकसरसब
षोइ॥६३॥ जैसादातागुरमये तैसानांहीकोइ॥ आतमसुषउपजा
इकरि सबदुषडारेषोइ॥६४॥ जनमभरणदुषजागतमैं दारणदुष
अपार॥ बैदमिलैजबसतगुरू तबकाटैरोगअपार॥६५॥ ऐसा
रोगअसाधथा तैसीवोषदलाइ॥ नांवनिरंजननिरमलो षां
येसबजरिजाइ॥६६॥ साचेसतगुरसेईये जगतिमुकतिफलदेह
जहांकालजालब्यापैनहीं जनसेवादाससुषयेह॥६७॥ अमै
अमरपदपाईये सतगुरकैपरसाद मनानिहचलनिराबिष
भया छूटिगयेबकबाद॥६८॥ भावैपढोपुराणसब कहीकै
थाबिसतारि येकनिरंजननांवबिनि जनसेवानहीउबारि
॥६९॥ साखिबेदपुरांणसब पढिपढिरहेनिरास सतसंतोषयु
नांवबिन हिरदैनहीउजास॥७०॥ बेदकतेबकुरांणपढि
हिरदैसमाऊंनआरि जनसेवासाचसंतोषबिणि तापाटबैमे
षरि॥७१॥ कांइयेकूपढीयेसमाऊंकूं तातैंउपजेग्यान हिरदैमे
धीजपनै पईयेपरमानिधान॥७२॥ सतगुरतें आसांनिहैं सब
हीसाधनजोग ग्यांनभगतिबैरागपद आपैकाटैरोग॥७३॥
सतगुरतें आसांनिहैं जीवब्रह्महोतदुलभ जनसेवादासस
तगुरमिलै तबसबहीबातसुलभ॥७४॥ जबलगसतगुरनांमि
लै नेडाहीतैंदूरि जनसेवादाससतगुरमिलै तबपावैबसत
हजूरि॥७५॥ घटिघटिमैंभरतनहैं गुरबिणिलषानजाइ जन
सेवादाससतगुरमिलै तबअंतरिदेइलषाइ॥७६॥ सतगुरक
रिदीपकदीया तबकछुसूझणलाग॥ जनसेवादासआंनदका
सा तिमरगयेसबभाग॥७७॥ सबघटिपडदानरप्यारह्यासक
लघटिछाइ॥ जनसेवादाससतगुरमिलै तबसहजैंहीमिटि
जाइ॥७८॥ सोवतथेसंसारमैं महामगनमनमोर आणिजगा
येसतगुरला काटेपापकघोर॥७९॥ रहरजनूंपरकासगुरसासि
जसीतलसोइ जनसेवाजैसागुरमिल्या भरमतपातिगयेदोइ
॥८०॥ गरवासतगुरसमंदसा बडुधाजूंधीरा सरोवराछिबारी
या करिसागरतीरा॥८१॥ ऊंचाअधिकअगाधसासे पवनजूं

॥१८॥

गुरमिले सिषपलटैतिहिबार जनसेवा आतमसुध
॥१३॥ पारसपलटैलोहकूं कनककहैसब
कोइ करैआपसमिसोइ ॥१४॥ गुरसम
दुमिलामगुरगरवागहरासोइ जनसेवादासतिहूंलोकमेंगु
समाननहींकोइ ॥१५॥ सपतदीपनवषंडमें गुरसमानकोईनाहि
जनसेवादासलषाईया हीराहिरदामांहि ॥१६॥ निहमारगविले
माझायेसोसतगुरदीयाबताइ सुरतिपवनमनपंचगहिरहै
वगातिन्यौलाइ ॥१७॥ सतगुरकेपरसादतैं सबसिषकारिजहोइ
जनसेवादासजहांपकड़ीये जहांउपनहीआपेकोइ ॥१८॥ सतगु
रनिरभैकरिलीया अपानदापदेमांहि जनसेवादासगुरगपानाबि
लीकेतेआवैंजांहि ॥१९॥ मांबूथिरमनबासिकरै सुमिरैसिरजन
हारकरजोड़ैसेवाकरै चेलासबसंसार ॥२०॥ जगतबिषैकोहित
है आतमअमृतहेता जनसेवा अतिदुलमहै गुरकिरपाकरिदेत
॥२१॥ जैसैफाईमुकरमेंयूं आतममांहिदिषाइ जनसेवजैसागु
रमिला महमांकहीनजाइ ॥२२॥ मितामोहकीरैणिमेंसोवत
जगाइ अमृतपायासतगुरू मेटीबिषमबलाइ ॥२३॥ जगक
लमेंजावयूंजलैं दीपगमांहियतंगसतगुरकरगहिकाढी
यातनपाजगतकरंग पूरासतगुरपाईयेजेसाहिबकरैमयाद
मणीदेकंचनकरै गुराछेजातबहाइ ॥२४॥ गुरगोबिंदअंतरन
हीं आपोलागिनजितमहारकिरपातैंगुरमिलै गुरकिरपातैं
म ॥२५॥ जनसेवादाससतगुरमिल्या दीयाआतमग्यानमांकनकी
यापलकमेंधनिगुरकृपानिधान ॥२६॥ सकलजीवकरताकीये
देहगुणअटकेसब जनसेवासतगुरआधिकहै कीयेमुकताताबु
॥२७॥ अकातिकयिगुणकरमके सूं सतगुरआधिकबतावा जनसे
वादासदोजिगमेंजीवनपावैजांणा ॥२८॥ जीवदोजिगमेंजाइथ
सतगुरलीयावहोडि जनसेवादोजिगमेंटिकैजबलीयाव
होडि ॥२९॥ चारचासांईसबऊपरेनीचैमायाभ्रम जनसेवाद
समुकताकीया काटिसबैहीकम ॥३०॥ थितिपकड़ीअनाथ
लीया सतगुरकैपरसादि हरिसुमिरणसततसंगबिणि
॥३१॥ सांसामेंसबदिनगया समाजिपडीनही
॥३२॥ सतगु
तवपाई

सेवादास अंतरि लह्या ॥ अरस परस दीदार ॥ २३५ ॥ जल ता
सीतल करि लीया ॥ दे आतम उपदेस ॥ जनसेवा ऐसा सतगुरू
क्या लेवा जे पेस ॥ २३६ ॥ भरम मिटाया मैह स्या कीया तत उपदे
स ॥ जनसेवादास गुरदेव कूं ॥ कीजे तन मन पेस ॥ २३७ ॥ जनसेवा
दास सतगुर मिल्या ॥ क्या मैह मां के ईस पाइ ॥ नव सष अ (?) रि
नद भया ॥ ता कू छिर ल्या समाइ ॥ २३८ ॥ सब सुष सहज जे पाईये
सतगुर कै परसादि ॥ मन तत्ताणा उनमन सत छूटि गये बकवा
द ॥ २३९ ॥ अंमृत पाया सतगुर ॥ उलट सुलटा कीव ॥ जनसेवा
दास उरि सुष भया ॥ सुमरि सने ही पीव ॥ २४० ॥ जनसेवा गुर प
रताप तें ॥ मिटि गई सबै उपाइ ॥ येक नांव निरंजन उरि गह्या
अब मन अनेत न जाइ ॥ २४१ ॥ जैसा चंदन बांवना ॥ सतगुर सी
तल अंग ॥ जनसेवादास कुमति हरे ॥ गुर करै आपणे रंग ॥ २४२ ॥
ग्यांन ध्यांन दाता गुरू ॥ निरधार आधार ॥ सांसा मेट्या सुष भया ॥
छोले मुकति द्वार ॥ २४३ ॥ च्यारि वेद ब्याकरण पढो ॥ भावै अठा
दस पुरांण ॥ गुर बिन भ्रम मिटे नहीं ॥ जनसेवा निति मांण ॥
२४४ ॥ बलिहारी गुरदेव का ॥ मेल्या मसतग हाथ ॥ जन
सेवादास सब सुष भया ॥ सुमिरण लागे नाथ ॥ २४५ ॥ सतगु
र के परसाद तें ॥ लागी धुनि उर मांहि ॥ जनसेवादास निरभै
भया ॥ निरभै हरि पद मांहि ॥ २४६ ॥ बलिहारी गुरदेव की ॥ कि
या ताथ घा चौरासी दसा ॥ मैं नरम दै पायो पा कूं गैर
॥ २४७ ॥ गुर बिन जब ट जाइ छा ॥ चक उलगा ये राह ॥ सतगुर
सीतल कर लीयो ॥ मिटी बलती दाह ॥ २४८ ॥ निकट निरंजन
पाईया ॥ हमरा सो छेह रि ॥ लोचन पाजे सतगुरु तब
देखण लागे ॥ २४९ ॥ आपसरी षेक रि लीये ॥ दे आतम तत
ग्यांन ॥ जन नेद बताईयां ॥ धनि गुर कृपा निधांन ॥ २५० ॥ ते
नर बिछडे रांम तें ॥ ता कूं धूप न छांह ॥ भौसागर मैं बूडतां ॥ गुर
गहि काढे बांह ॥ २५१ ॥ जनसेवादास सतगुर मिल्या ॥ सारे सब
ही कांम ॥ हित उपज्यो मन थिर भयो ॥ सुमिरण लागे रांम ॥ २५२ ॥
रांम मैं चौरासी का जीव घा ॥ बहता जात बेकांम ॥ सतगुर बहोत
कृपा करी ॥ अलष लषाये रांम ॥ २५३ ॥ सतगुर आपणे जांणि कृ
पा कीये जीव तें सीव ॥ जै सैं कीट भ्रंग ज्यूं ॥ आपसरी षे कीव ॥ २५४ ॥
सतगुर ही तें पाईये ॥ आतम तत बिचार ॥ ग्यांन दीपक लै उर ध
र्या ॥ तब सूझ्या सब ही दार ॥ २५५ ॥ लोचन दीये ग्यांन के ॥ मिटि ग
या भरम अंधार ॥ सतगुर दीया बताइ उरि ॥ अरस परस दीदार ॥ २५६ ॥

मिलै तब अंतर मोहि लषाइ ॥५७॥ जन सेवादास सतगुर मिल्या
अलष लषाये राम सुरति समांणी साच मैं मन पाया विसराम ॥
५८॥ भौसागर मैं जाइथा इन नही उबारि जन सेवा राषे बूड
तां सतगुर बांह पसारि ॥५९॥ सब ही सुषां सिरि राम सुष सतगु
र दीया बताइ जन सेवादास तां सुष मैं अब मन रह्या समाइ ॥६
०॥ वार पार की मति नही हरि सुष अगम अपार तहां खिलै अस
तजन सतगुर के उपगार ॥६१॥ लोचन हिरदै प्रकासीया तिम
र गये सब दूरि सतगुर ब्रह्म लषाईया रह्या सकल भरपूरि ॥६२
॥ सतगुर ही तै पाईयै अलष पुरष भरतार जै सेंदा रक मैं बसै ॥
पावक ज्यूं करतार ॥६३॥ पावक ज्यूं करतार है माथिक ढैं गुर सो
इ सकल करम कि लिप लक मैं अगनि घात ज्यूं जोइ ॥६४॥ सत
गुर ही तै पाईयै अलष निरंजन सोइ जैसै पै मै घृत बसै माथि
का ढैं गुर सोइ ॥६५॥ पै मांही घृत रमि रह्यौ व्यापक सब ही गौर
कहिबा कूं तौ बहोत है माथिका ढै कोई और ॥६६॥ सतगुर ही तै
पाईयै उनमन आतम ध्यान तिमर गया मांसा मिट्या जन से
वा प्रगटे न्यांन ॥६७॥ भांन प्रकास्या न्यान का सतगुर करी सहा
इ अंतरि अलष लषाईया जन सेवा तहां लेलाइ ॥६८॥ नरम

तब होइ आतम न्यान ॥६९॥ जन सेवादास सतगुर है सागर

७०॥ इती श्री गुरदेव को अंग संपूर्णी ॥ अं॥१॥ अथ गुर सिषपारिष
को अंग ॥ गुर कीजै नौ तिरण कौं बोहै नौ जलमांहि सेवा ऐसा

।१९

रहै जन सेवा सु

बहे न्यांहि जुग संगड़ गुर पका हीर
ह अपणा रंगा सो गुर पारिजनारि है जन सेवा कारि

धिकारि

बूडत कौ सहाइ ऐसा गुर की सका

गुर तौ सोई कीजीये जावे ग्रेम प्रकास जनसेवा अरमानिव
शिष कौ अंतरि करे उजास ॥५॥ सतगुर ऐसा चाहीये ज्यूं
तातैं लोहन्नु द्वार सांधि मिलावे निरसंधि करि अरसपरस
दादार ॥१०॥ जो सिष कौ उरपापांरण सो तौ ग्यांन प्रकास न होइ
जनसेवा गुर कूं दोस क्या समझे नांही सोइ ॥११॥ तवासरीषासी
षचित काहे की जेरोस ग्यांन अगनि नहीं ऊपजै रीव गुर कूं
क्या दोस ॥१२॥ गुर तौ सोई कीजीये जिन पांचूं परमोधे जनसेवा
वार उलंधिके पैला घर सोधे ॥१३॥ गुर तौ सोई कीजीये जाके
ग्यांन बिचार ब्रह्मग्यान देई सिष कूं सन्निल मोह की धार ॥१४॥ गु
र जिहाज जग समंद है सिष बैठे ता मांहि कूदि पडे जग समंद
में गुर नौका दोस न नांहि ॥१५॥ ऐसा गुर किस काम का उलझावे
भ्रम मांहि जनसेवा सोधी बाहिरा दोन्यां कूं सुप नांहि ॥१६॥ गुर
तौ कीजे ग्यांन का बहतो डिंज पावै मोह जनसेवा दोनूं डीजीया
ज्यूं लीहाला मे लोह ॥१७॥ ऐसा गुर किस काम का ज्ञान दिढावे र।
ह जनसेवा सो गुर कीजीये चोर पलटि करे साह ॥१८॥ ऐसा गुर
किस काम का आंन उपावे भ्रम जनसेवा कारि न नासे उल
टाच दै वारम ॥१९॥ सतगुर करम सबै हरै घोवे देकारि भूम गे
सें ज्रीवकं ज्यूं हूसरना मालूम ॥२०॥ सतगुर ऐसा चाहीये सि
षकूं सूष करि लेह सिष पूछै लैलीन होइ ॥ गुर साचा सिष कूं दे
ह ॥२१॥ गुर सिष कूं तब कहै गुर होइ ग्यांन प्रकास जनसेवादा
सबिरि समझि मे दोन्यां को है इनास ॥२२॥ गुर सिष कूं जब क
रे तब गुर लाइ कहै रे तू सेवा नहीं बिगारि है साध कहै सब
वो ॥२३॥ गुर लो जी सिष लाल ची भलो बिगाड्यो डाव जनसे
वा दास षाली रहै हरिरस नांही नाव ॥२४॥ गुर मूला कूं सिष मिले
तो सिष पावै कहा ग्यांन दोन्यूं चल्या उजाड़ि मे मूलि नया हैरान
॥२५॥ मूला कूं मूला मिले तब समझावै कहो को न जनसेवा दो
नूं यूं गया ज्यूं पांणी मांही लोंन ॥२६॥ आंधे कर कै आंधे स्यांन
दीपंघ वी ग्यान जनसेवा तिरबो कठिन है उरि अंतरि महात्म
॥२७॥ गुर सिष कूं उपदेस दे सिष तजै न मरकट बांनि जनसेवा दा
स गुर क्या करै सिष बाइ हत जाकून जांणि ॥२८॥ सतगुर मे क्या
दोस है जे सिष के है मन जोति जनसेवा दास कै सैल मैं पास
बिना घट चोल ॥२९॥ सतगुर पूरा क्या करै कहि समझावै ग्यांन
करता था की ना मडी सिष समझे नहीं अयाण ॥३०॥ सतगुर
पूरा क्या करै सिष साधन मांनै मूरि समझावत सठ रहि गया

गुरपूरासिषसावधान तबदा वैदीवानोइ२४ गुरमायाकै
माहिहैं सिषनीमायामांहि दोन्यूंकाजनकरिसवचा॥२४॥ अ
यासूंनांहि२५ दोन्यांकूंभारीपडी॥ उलज्यामायामोहसूं
दीयीन्याबापडा ज्यूंधरतीमेलोहज्यूं॥ ऐसागुरकिसकां
मका॥ ऊंडेदहिमारै गुरतौसोईकहीजीयेजोसायरतारै॥
गुरतोकीजैजपानकूं॥ फिरिमायामेंदीन दोन्यूंबूडाबापडा
माया के आधीन॥२७॥ गरमननजाजे आपको तौ सिषकों
सेंजाइ दोन्यूं अंधारैवे सिर्कैरि न्याइ हल्ला हैलपाइ२८॥ गु
रमायामेंरतहे सिषनीमायामांहि अथे अधारति मिल्या
बहुं दोन्यूंजांहि॥२९॥ ऐसेगुरतौ बहोतहैं अंधबिधेहि
कार तोबिरलासंसारमें रातासिरजनहार॥३१॥ ऐसासिषतो
बहोतहैं माया ही सम्मांन बिषैरहतरत रांमसूं तेकोईबि
रलाजान॥३२॥ इम्रतपायानापीवे पि. रिफिरि बिषहाषाइ
जनसेवादासगुरक्याकरै सिषदोजिगपूजाइ॥३३॥ जनसे
वादाससिषक्याकरै जोगुरमायाआधीन पैलजालकीगम
नहीरहेवारमेलीन॥३४॥ सतगुर ऐसा चाहीये घाडि घडि
काढैषोट जनसेवादासगुरक्याकरै सिषसहैनहीचोट॥३५॥
सतगुरऐसाचाहीयै कंचनज्यूंताबै जनसेवादासगुरक्या
करै जोसिषबीडरिजावै॥३६॥ घणकीचोटसहैनही ज्यूंबिष
रैकाचकथीर जनसेवादासके सैरहै फूटै बरतणि नीर॥३७॥
॥ सतगुर ऐसाचाहीये सांसाषोवैदूरि सबदासिषलाग
हैं तबपावैबसतहजूरि॥३८॥ सतगुरसाचासाचैमते सि
षमूलाभ्रममांहि जनसेवासाचासाचैमिल्या तबकुसंगभए
षबिल्लसाहि॥३९॥ गुरपूरासिषसावधान स्वबौंकुसमल
धोइ जनसेवादासतबन्रमला बहोडिनमैलाहोइ॥४०॥ गु
रपूरासिषसाचमांहि तबकुसमलकैंपाप तबसेवाअंतर
मांरहै परसपरसदीदार॥४१॥ सतगुरपारसरूपहै जनसेवा
सिषसुधहोइ परसतहीपलटैसहा पलमैंकंचनहोइ॥४२॥
पांहणपारसबरसदस मिल्यानलागेरंग यूंबहुरमुषीअग
नको कहाकरैसतसंग॥४३॥ गुरत्यागीसिषसग्रही गुरसंग

सिषबैराग जनसेवादास मत दोइ है येक मिले बडभाग ॥ ॥
गुरपानी सिष सुध मन तब अंतर रहै न कोइ जनसेवा प
रस परसि करि लोहा कंचन होइ ॥ ॥ जनसेवादास गुर क्या क
रै सिष के लगै न येक सबद कूप रमोथी यो जनसेवा अंतरि
छेक ॥ ॥ मन फूटो अर मत फिरै सिष स्यौ ल्यास्यौ वार फू
टा फिरि सारा करै जनसेवा गुर ध्यार ॥ ॥ मन सुध होइ प
रसै नहीं तौ गुर का क्या सारा बिषै चुडावै फिरि पीवै बूडै बि
षधारा ॥ ॥ जनसेवादास सिष क्या करै गुर माया मै मन दीन
बिपति नदी मै बहि गया जनसेवा का जन कीन ॥ ॥ गुरसा
चा पाचा सिष तब अंतर कछु नांही येक मेक होइ मिलि रहै
निरभै पद मांही ॥ [illegible]
[illegible] ॥ सासा सा सम्हाली यै
साहिब सिरजनहार जनसेवादास फिरि नांल है यो औसर या
वार ॥ सासां सुमिरण होत है अजपा मांही जाप जनसेवादास
उर प्रगटै अलख निरंजन आप ॥ ॥ जनसेवा साहिब घट बिषै
स्वास बताबै देह गुर किरपा तैं रामरस भरि भरि प्याला लेह
॥ स्वास कहै सो जांणीयै है सो आपै आप गुर किरपा तै सेव
ला जपीयै अजपा जाप ॥ ॥ गगन मन मधि बैसि करि निर
षै अपणो पीव गुर किरपा तैं सेवला जीव पलटि होइ सीव
॥ गगन मन पौन बिना नेडा ही तें दूरि जनसेवा सतगु
र जब मिले तब पावै बस तहं तूरि ॥ ॥ नासिका बिचि मे
जनसेवा साधू सूर सास उसास सुमरी धै बाजे अनहद तूर
॥ मन पवना अर सुरति सूं लीजै हरि का नांव लष चौरासी
दुष टले जनसेवा सुध रै काम ॥ ॥ मन पवना अर सुरति की
अंतरि माला हेरि जनसेवा कारिज सिधि होइ रगु मीन रमैन
ही फेरि ॥ ॥ मन पवना अर सुरति की बैसि येकंत फेरि जनसे
वा सांईस गिर है तंउर अंतर मे हेरि ॥ ॥ मन पवना अर सुरति
की या माला तूं देषि अलष निरंजन सेवला उर अंतर मे पे
षि ॥ ॥ आठ पहर चौसठि घडी आरति संका हरि राम सुमरण टले
गी नहीं जनसेवा सुध रै काम ॥ ॥ आठ पहर चौसठि घडी ल
गै धुनि उर मांहि जनसेवादास साधना रहै तिरगुण सब जन
रि नांहि ॥ ॥ येके मानि येक पलक छू हरि नांद उचारै कोइ जन
सेवा ऐसा नांव है सकल काम ब्रै होइ ॥ ॥ जनसेवादास हरि ना
व लै येके मनां चितलाइ कायातें कमयूं कडै रूपा तन जैबा

पामनपक्नांअरसुरातित्तकीजे१।

लगीरहैनिसदिनम्मतोजोरनकरिसकैजं
।हिरदातेंहरिनांवकूंमनफ्लकनाबिस
।कानीर१९।लषचोरा
सीनरमतांपायोमनिषसरीर।जनसेवादासगोबिंदमजो।श्री
परणांमनकरिथीर२०।लषचोरासीनरमतांपायोमनिषातन
सोतयूंहीषोइसोरेमूरिषमेरामन२१।लषचौरासीनरमतांम
निषादेहलही।जनसेवायूंहीषोइमां।तूकेवलरामकही२२
लषचौरासीनरमतां।पाईमनिषादेह।जनसेवायूंहीषोइमां।
तरांमभजनकरिलेह२३जनसेवादासगोबिंदमजो।येकेमनि
इकनाइ।मांवैगिरजस्यांनजंबकन्यपो।मांतैगाडेबालेकाइ
२४।जनसेवादासगोबिंदमजो।येकैंमानिइकनाइ।निरसनेह
निरमैनया।कङूपडौयाकाइ२५।मनयेकागरकरिसकला।हरि
सुमिरणकरिलेह।तापैछैसंसैनहीं।कछूपडौयादेह२६।मनये
कागरकरिसकला।हरिसुमिरणकोजो।तापीछैसंसैनही।पदमांहि
बसिजे२७।मनयेकागरकरिसकला।हरिसुमिरणलेलाइ।मांवे
कासीमगहरमंही।कछूपडौयाकाइ२८।सेवाजिनपदपरसीया
तिनसंसैनांही।मूरिषमोंवेतनफकोबहूभ्रमकरिमांबंपडेबिगू
चीर२९।नांवप्रतीत्तिनऊपजे।तोदियोदासकबीर।तनमगहरमे
नषियो।जगसबकोपीबीर३०।नांवप्रतापनिरभैसदा।भैनही।
आपैकोइ।रामभजतनैमिटिगया।रांमभ्रयामेषोइ३१।कालदारक
जोरक्या।मीनपलटिनयानीर।जनसेवाहूसनारह्या।रांमहीभय
कबीर३२।मोंवैबसतीबनषंडमे।कछूपडौयादेह।जनसेवानि
रसनेहहोइ।रामभजनकरिलेह३३।रांमसनेहीरांमरत।आंननचे
ताधरै।जनसेवादासनिरभैमतो।इहिबिधिकाजकरे३४।काररजे
जनसेवासाचसंतोषगा
।सीलसाचसंतोषगहि।लीजेहरिवै।

।अथौऔरसंतबंदगीहोइ

रुए अलप आ नाल तदाल है है हरि गुरु पाइ जनसेवार
विके प्रगट्या अंतारागया विलाइ जनसेवादासहनामकी
नांवसरी आयो वा मुकतिवारे सबदुषदले हरै अनतनैसोक
सकलसरी मणि नांकहे नावत्यालिनही दोर जनसेवादास
हरिनांवले जासहनेहीसुषहोइ जनसेवादास हरिनांक्ले
नांवहीहै ततसार सुमरि सुमरि हरिनांवकूं केतेजन भयेपार
अभेकरैभेसबहरे जनसेवादास हरिनांव महापतितपावन
करै जनसेवा मे बालिनांवु पारसरूपीनांवहै जनसेवापर
सैदोइ ऊंचनीचकोऊजनो मनेसुपलटैसोइ जनसेव
दास हरिनांवविणि सबही मतया थे पकहन्वोहहै पढिप
चे बांधवहै पोथे जनसेवादासकहनांवहै कोइ ल्योम
ततसार औसागरनौका वणी जोवैसैसो पार जनसेवादास
गोविंदनै जेयेका गरावितहोइ दीरघदुषजनममरणका
गयेसुरहै नकोइ जनसेवा मारकउदेनयां निसपाई रहीन
रि सुमरतकी कतरामके पंडुष सवहीजांहि जनसेवासुमि
रणसारिषा औसा सुमनहीकोइ हरिसागरमे मिलिरमे व
हैहै न्यारा होइ जगहटवाडे आइके विणजकीयाव
होभांति येकानिरंजननांवविणि मनकी मिटी नभ्रांति सु
मिरणविणि सुषनांकडुं तीनलोकके मांहि सुमिरणकारनि
सौभया जनसेवा दुषकछु नांहि रंपनंतताजुधालेकारि
सबदेखे निरताइ नांवसमानिनही सबला सबसंतकहेसमझ
इ औरविषफमनतवदया नांवविनांसबफल जनसेव
सतगुरजबमिले तबनया साचा निरफल सावासोदारा
महै औरसबेही फारि जनसेवासुमिरनउरगह्या औरतज्या
सबदूरि हरिसुमिरण हिरदैधरे रहै विषेतेदूरि जनसे
वादासतदेषीये रांमसकलभरपूरि अलषनिरंजनदेषी
ये रमतासबघटमांहि जनसेवासाधूसबकहै जहांआपोत
हांनांहि जहां आपोतहां आनहै आपातहां हरिहरि जनसेवा
आपेजबमिटे तबदरसे रांमहजूरि नामि आपोगोविंदम
जे तो कवहूंदषैनहि र जनसेवादास सुषमेरमे दुषनहीत्या
येकोइ कालतायलागेनही सुषमेषेले पांण जनसेवा
सुमिरणकीजीये तनमनयेकैबांणि रहिश्रोसाहिब गति
मजे प्रेमप्रीति परकास जनसेवामरैनजनमले रहैनिरंजनप
स जनममरणदुषसदामिटै अषैअमरहोस्थांण जनसेवा

सुमिरणकीजीये मनअनंतनदीजेजांण॥६१॥मनअनंतनदीजे
रामबिसि जहांतहांजमयाइ जनसेवासुमिरणकीजीयेसु
खोरहैसमाइ॥६२॥सुरपुरनरपुरनागपुर कहूंनहीबिसरामज
नसेवासुषतबहीलहै हरिसुमिरैनिहकांम॥६४॥निहकांमीहो
इहरिभजो फलकांमनांमिटाहि जनसेवानिरभैहोइतब सुमिर
रामिटजांहि॥६५॥सुरगम्रतपातालमैं सुषीनदीसैकोइ जनसे
वासुषीयासंतहै हरिभजिहरमैहोइ॥६६॥निरभैकोदीसैनही
बिनांभगतिभगवंत जनसेवादासानिरभैभया निरभैभजिनिज
संत॥६७॥संतांसुमिरणसहजका लगैरहैं इकतार जमतैजोर
नकरिसकै जनसेवासुमिरणसार॥६८॥साधूजनसुमिरणकरै
तनसुषबिसरैगेह सुरतिरांममैरामिरही सोजनगुणांअबेह॥६९
॥साधूजनसुमिरणकरैं नांणों मिं थ्यादेह जनसेवासाचसं
तोषगहि जगासुकरैनेह॥७०॥नांवनिरंजननिरमला तहां
लागानिजमन जनसेवामनअसाधिरभया पायारांमरतन॥
७१॥हरिहीरोहिरदैबसै तब तितहांमनलाइ जनसेवायेक
संगालीयै तजिसबकांमनउपाइ॥७२॥पांचूंथिरमनबसिकरैहै
रांमल्योलाइ जनसेवाधनिवैसंतजन हरिबिनकछुनसुहा
इ॥७३॥चितमांहीहरिचितबसै आंनकछुनसुहाइ जनसेवा
दासधनिसाधवै रहैरांमल्योलाइ॥७४॥मुषतैंअसतनबोलहीं॥
रहैरांमरतहोइ जनसेवादासधनिसंतवै रहैकांमकलपनांषो
इ॥७५॥मुषतैअसतनबोलही रहैरांममैलीन जनसेवाकेवल
रांमबिनमनकछूंअनतनदीन॥७६॥सबसंतांकीसाषिसुणि म
नकैउपज्योबोध परगटपंथबतावीका सोहमलीयासोध॥७७
निहकांमीनिरमलदसा हरिभजिकरिमनधीर जनसेवादास
कैसीसपरि सतगुरदासकबीर॥७८॥भरमनिवारैनेहरै करै
ब्रह्मप्रकास जनसेवासोगुरकीजीयै अभैअमरपुरबास॥

मांनिबडाईपरहरै आपाविसरावै जनसे

७२॥

नकांमणीत्मा मै आसा ते कहीयै वै हरि के दासा ॥६॥ पाया
ρ तौ सौ जब दौडि नहीं पावै सोई साध सरोमणि हरि के गुणगा
वै ममता दोष राग नहीं कोई ॥ दीन जि साधू हरि मै होई ॥६॥
साषी ॥ जो जो जाकै मांवैना सुमरत छाडै प्राण तैसी ही गति
पावै कहै सुमृत साध बषान ॥६०॥ जो जो जा कै मनि ब
सै सो सो आवै आदि ॥ जन सेवा साधू सब कहै बाकी कीस
ब बादि ॥६१॥ जहां सुरति तहां जीव है तहां प्राण का बास
सुमृत साधू यूं कहैं जन सेवा सहजा निवास ॥६२॥ जनम ब
धि लू क्या चला प्रतिकालिक है रांम ॥ जमतै जोर न करि स
कै सुष सागर बिसरांम ॥६३॥ साधित पराग पारां ममै प्रथम जा
कै होइ ॥ यूं अंतिकाल ही रांम कहि तौ गंजि नसकै कोइ ॥६४॥
जन सेवा कालिमल हरण कूं नांव कुलिन ही वसत ॥ सूरसी
न कै उद्योत तै होइ तिमर को नसत ॥६५॥ सबै पतितपावन
कारै नांव निरंजन और ॥ वेद पुरांन यूंही कहैं संत कहै सब ठौ
न ॥६६॥ चौपई ॥ अजामेल गनिका जु येह ॥ नांव प्रताप नई ग
ते ति तेह ॥ अनेक पतित हरि नांव ॥ जन सेवा ताकी मै बलि जांव ॥
॥६७॥ साषी ॥ नांव सम नि कोऊ नहीं तीरथ ब्रत तप दांन ॥ जन
सेवा सुमिरन अधिक है भाषै वेद पुरांन ॥६८॥ मन पवना
सुरति सूं नांव निरंतर लेइ ॥ जन सेवा नीका नांव है यो म
श्रांन नन देह ॥ अकरम कटै सब पलक मैं बेद साध कहैं येह ॥ मन
पवना सुरति सूं सेवा नांव निरंतर लेइ ॥६९॥ घोड नांव न
जांणीयै नांव अनंत बिसतार ॥ ज्यूं नैक अंगारी अगनि की सं
वादाह कै बन भार ॥७०॥ नांव अगनि का चोड क्या लीजै पीति
जथाह नांव दहै सब करम कूं अगनि दहै बणराइ ॥७१॥ पारस
रूपी नांव है लोहा कै चनपाइ ॥ नांइ बिलंब जग ... यूं कलह
रत जि काइ ॥७२॥ आनूं पद हरल पार है नां इलिं जन साध न
सेवा ति न दीक्षु च कर्त्ता मदमां करु अगाध ॥७३॥ त्याका श्रुति
मन मै प्यासा कार है नीर सेवा औसै रांम सभालीयै सां न
लि मन बाबार ॥७४॥ कामी कै मनि कांमणी लोभी कै मनि दा
म तसकर कै मनि चोरी ह्वांयूं संतां कै मनि रांम ॥७५॥ चात्रिग
कै मनि घन बसै चिकोर कै मनि चंदा सीप कै मनि स्वाति है यूं
संतां कै गोविंद ॥७६॥ यूं सती मन वाटै नहीं रहीं टग टगी ला
इ यूं संतां कै मन रांम मै जन सेवा अनत न जाइ ॥७७॥ पतिब्र
ता मनि पति बसै ज्यूं जल नहीं त्यागै मीन यूं संतां कै मनि रांम

लीन १०६॥ दादूकै मनि जल बसै ज्यूं सूरा कै सं
ग्राम यूं संतां कै मनि हरि बसै जन सेवा सुमिरै राम १०७ ज्यूं
सूरा कै मनि बासना ज्यूं वारी न्दु वांस यूं संतां कौ मन रांम मैं नि
कसै नहीं मूवांह १०८ येको स्वासन षोईये बिन ही सुमिरण
बादि जन सेवा रांम संभालीये तब दरग हलह सीदादि १०९
श्रीत न वी तो जात है ज्यूं धूवां के धांम जन सेवा रांम संभालीयै
सब बिधि पूरण कांम ११० सास उसासै नांव लै वृथा स्वास न
षोइ जन सेवा निस दिन नांव लै ज्यूं सुष आनंद होइ ॥ १११ ॥
यौ वृत दिढ करि धारीये नांव निरंतर लेह येकदसी येकादसी
दूजै चित न देह ११२ येको वृत निबाहीये दूजा सूं नहीं कांम
दूजा सो ईदूजि है येक सनेही रांम ११३ येको वृत निबाहीये
आसमि और न कोइ नांव निरंजन निरमलो जगतां होइ सही
११४ धागा सहंस इकीस को लेह सुरति करि हेरि उन मन पट
लगाइ करि हिरदै मांही फेरि ११५ ॥ आपणां साहिब सुमरीये
मन धिर स्वांतिर होइ ज्यूं पीपा रामसा थवंघा यू गूटी मन बा
ल ११६ पीपा रामसा थवघा मिटि गई सब की दोड़ जन सेवा दा
सहरिनांव थी मन रह्या गोड की ठौड़ ११७ नांव निहाज नौ सि
धि चढै सु उतरै पारि और सबै ही बूडसी बिष सागर मंझारि
११८ तारणहारा नांव है इह भौ सागर मांहि जन सेवा बिल
म न कीजीये सुमरिस कल दुष जांहि ११९ आग सिधि नव निधि
नांव है सबै समरथ है नांव सब दुष जनन नांव है जन सेवा मैं ब
लि जांव १२० तिरण करै नव सिधि कू तीनो का नां ग्रही और
पाइन दूसरी तकै वल रांम कही १२१ ॥ तिरण करै नौ सिध कूं तै
नांव गह जिनांव जन सेवा मन दे लीजीये ज्यूं सुध रेयो डाव ॥
१२२ ॥ कोटि कारमा पिलियल व्लै मै जे व च रै हरि नांव ज्यूं पडी चि
णगारी अगनि की नांस्यौ फूस कौ नांव १२३ ॥ सज सम्मुक तिको नां
व है अपांन दीप परकास जन सेवा ऐसा नांव है करै करम का नास
१२४ करम भरम मैं हरन को अपांन दीप है नांव जम त्रास निवारि
पारि उतारै जन सेवा मैं बलि जांव १२५ ॥ अमरत मैं फल नांव है
नां सिर जै को ई पाइ जन सेवा मरै न जनमले जनम मरन मै दुष जा
इ १२६ जहां लोक बेद की गम नहीं ऐसा ततं अनूप जहां बिलं
बे संत जन तहां माया नहीं धूप १२७ दुष सुष रहत सुष संत जन
जा इस बस हैं सो इ हरि सुष सागर कहीये दुष नहीं ब्यापै कोइ १२
८ जन सेवा सुमिरै रांम कूं सतगुर के परसाद येक निरंजन उरि

जैसे स्नातनिबकबाद ॥२१०॥ जलमंजननहीनमला साध
कहैंसबटेरि जनसेवासुमिरणकीजीयै मनकूंउलटाफेरि
॥२११॥ कायामनवचाकरै माहीमैलघणां लोभमोहअरकामन
वैरीपांचजणां ॥२१२॥ जलकैमंजनानांमिटै लषचौरासीदुष
पावूंबासिकरिहरिभजै जनसेवातबहोइसुष ॥२१३॥ साधूसं
गितारामजल तहांमनकोअसमलजाहि सोलमरमसबछा
डिकरि साहिबसुमिरोमांहि ॥२१४॥ सेवाजनहैंगोदरी ऐसानाहि
औररामरतनउरमैंधस्या सबहीपरदुरिगौर ॥२१५॥ निरधनसब
संसारहै धनवंतहरिकेजन जनसेवापरहरि औरसबै[illegible]यारां
मरतन ॥२१६॥ संतांकैधनरामरस समताहिरदैसुष अषनमागै
जगतकीचाहिसदाहीदुष ॥२१७॥ समतासुषअंतरिबसै यूंजग
तैंनउदास जनसेवासुषीयासंतहैं हरिहीरिहिरदैबास ॥२१८॥
परमसनेहीसुमरिमन बिनसुमिरनसुषनांहि जनसेवापलप
लजातहै रहसीपछितावोमनमांहि ॥२१९॥ नगानिरमोलिकअंन
बहै तकौडीसटैनषोइ हरिजिलाहालीजीयै जनसेवातबसु
षहोइ ॥२२०॥ मानिषादेहदुलभहै इस्तीगोडनलाइ केसेवाकरि
साधकी कै हरिकेगुणगाइ ॥२२१॥ साहिबसुमिरणकूंदई जनसेवा
मानिषादेह स्नानमलीनहोइगी तंहरिजिलाहालेह ॥२२२॥
औरकौरसबछाडिकरि इकरामनांमसुमरेह जनसेवासासास
बमिट्या सुफलकरीनरदेह ॥२२३॥ सुमिरणबिणिसुषनांकौरे
मनचेतिअचेत पीछैहीपछिताइगो तबसामथलाटहोइसेत
॥२२४॥ सुमिरणकीजैरामको रसनतजिबिसनेह जनसेवाछक
लाधानला तंहरिजिनाहालेह ॥२२५॥ ताहीकूंतसमरि गि
निमलीसंवातीदेह जनसेवाबिलमनकीजीयै हरिजितजिन
गनेह ॥२२६॥ मानिषजनमधीहरिभजै तेनरचतरसमान हरिसु
मिरनाहिरदैनही तेनरसबैअयांन ॥२२७॥ दुत्तराईकिसकामकी ह
रिसुमिरणबिनबादि जनसेवाहरिसुमिरणकरै तेईलहैगो
ब्यादि ॥२२८॥ मानिषजनमधरिहरिभजै मनपवनागादितांणि
जनसेवासुमिरणकीजीयै तोजमलेसकैनडीलां ॥२२९॥ सोधी
बिधिसुमिरणकिसा गुरबिणिलहैनगपांन औबिनआदिनें
पजौसबकहैसंतबषांण ॥२३०॥ रामकहैंअरिहंतकहैंकेइ
कहैषुदाइ पषापषीसबकोबध्याओ निरपषलषानाइ
॥२३१॥ निरपषानिरपषहोइमिलै पूरणब्रह्मअगाधसब
छाडिमताजाणिकरि जनसेवासमरैसाध ॥२३२॥ पूरणब्रह्म

रांमहासन आदितं त आल्ह

तथा कहै हो जगवांना ।५२। ये कबूल आ कासवत अनंत नांव
निन देवा पूरण ब्रह्म विचारि करि साधू लागो सब ।५३। दिल ते
दुबधा दूरि करि पूरण ये का पिछांणि । जनसेवा ये कन जांणी
यो तो बादि बक्या मेंहा णि ।५४। बाद बिवाद न कीजीये दीजै
पैशालि बाद कीयां बिष ऊपजै अंतरि ये कसमालि ।५५। बाद
बिवाद न कीजीये सुणि सतगुर की साषि मन कूं उलट फेरि करि
हरि सुमृत रस चाषि ।५६। जनसेवादास मन तू कहै सुणि सत
गुर की सीष आपो थापै पर पडै तहां न दीजै वीष ।५७। बाद बिव
दन कीजीये हो इ मजन में हांणि । जनसेवा सतगुर सबद ये पूरन
पूर पिछांणि ।५८। मन कूं जाण न दीजीये तजीये मन की बांणि
जनसेवा सुमिरण लाइये उलटि आपूं मैं आंणि ।५९। हरि हीरो
हिरदै बसै कौण करै बकबाद । मनमिगहा हरि सुमरीये जनसेवा प
रसादि ।६०। जनसेवादास दीजै नहीं पंडितसेती बाद । आपो
थापै पर पडै उलटौ होइ बिषाद ।६१। बाद बिवादो ऊपजै जे
नसेवा सब दांड पमूंनि पकडि गोबिंद जे । तेता नन कूं सुध ।
६२। उनमन पट दीया रहै बकबाद निवारै जनसेवा ... सुधि
रहो हरि नांव उचारै ।६३। उनमन पट लगा रहै धुनि नेकन
छाडै बिण बूझ्यां हरि मजन बकवाद न मांडै ।६४। प्रसन की
सा बोले तबै हरि नांव उचारै जनसेवा साधू सरिखा बकबाद नि
वारै ।६५। आठ पहर की आरती संतां कै घट मांहि । ऊंचा नि
चा धन की सदा ये करै थमन मांहि ।६६। आठ पहर की आरती संत
कै घट मांहि । सूंपर देसी दीन्यारि को जीव बसै पीव मांहि ।६७।
आठ पहर की आरती संतां कै घट मांहि । सुरति लगी कर तार र
जनसेवा इ जी ना हि ।६८। आठ पहर की आरती ग ... तीर्ह
८ ।६। आठ ...

... म ... ।१३। आरत

हीआन २
पारस परसि कै लोहा कंचन होइ ।१७। जनसेवा के बकुनन्हं

आर २७४।६

१०

दासतवलुवलहै मनयावैबिसरांम ॥२७॥ रामनांमल्यैलाइ
रह्यो तनमनपांव्हमारि जनसेवा सोयरहेमतो तंअंतरिने
उघारि ॥२८॥ तनमनयड्याबासिकरैरहैरांमल्यौलाइ केवल
लकरताछाडिकारि जनसेवाअनतनजाइ ॥[illegible]॥ जनतअवून
भगतिपूकहै ऐसैमिलीयेआइ तनमनयड्ीजीतिकरिरहैरा
मल्यैलाइ ॥[illegible]॥ येकघडीजेयनलगै परमेस्वरसूंप्यार जनसे
वादासहोइसहजमें सकलकरमपरिहार ॥[illegible]॥ येकेहरिका
नांवतैकटैपलकमैंधाप जनसेवातपतीरथसूं मिटैनहीत
नताप ॥[illegible]॥ नांइबिलंबसंतजन येकेमनचितलाइ सकल
अघसहजैगये निरगुणकेगुणगाइ ॥[illegible]॥ समरथसांईसेईये
छांधंधविकार नांइनिरंजनलागिरह्यो येही अरथाबिचार
॥[illegible]॥ पिंडप्राणजिनासिरजीया अंतरिसेवैताहि संतउधारण
भैहरणसोईनांवसबाहि ॥[illegible]॥ जनसेवादासहरिनांवबिण
केतापरलैजांहि अनेकपतितपावनभये जनसेवाकेवल
नाइ ॥[illegible]॥ रेमनढीलनकीजीये त्नेतांहरिबिनांवदुषसागरसं
सारहै सुषसागरहेरांम ॥[illegible]॥ जनसेवादासनढीलकरिअं
तरमांहिसंभारि कणकालकाजोरक्या तंहरिहरिनांवउचा
रि ॥[illegible]॥ जहांरहैतहांरांमकांहि बसतीबनषंडबास रहैउदास
जगतसूं जनसेवाहरिकेदास ॥[illegible]॥ रांमकह्यांबिणसेवला
चालैमृतलगमाहि रांमकह्यांसुषलह्या सुषमेरहैसमाइ
॥[illegible]॥ रांमसबदमेंमनरहै अनंतकह्नेनहीजाइ जनसेवादास
संसैनही तासुषिसहजिसमाइ ॥[illegible]॥ सबसंसारबुराकहै सुम
रतांजगदीस जनसेवाबुरोनमांनीये नेहचढाइरसीस ॥[illegible]॥
रेमनढीलनकीजीये योओसरयाबार सासासासससंभालीये
समरथसिरजनहार ॥[illegible]॥ सिरसोडीकरिराषीये कटकसहीये
बैन जनसेसुमिरणकोजीये तबआतमपावैचैन ॥[illegible]॥ उतिम
मारगचालतां भलभलनासैकोइ जनसेवाबुरोनमांनीये तूं
हरिनिजिनिरमैहोइ ॥[illegible]॥ रांमरांमरटिबोकरी रेमनगहियाबां
णि जासुषिरांमनउचरै तोहीतनकीहांणि ॥[illegible]॥ रांमरांमरटि
बोकरी रेमनगहियाबांणि जासुषिरांमनउचरै सोघटषाली
जांणि ॥[illegible]॥ निंदकानिंदाकरिकरै जनकूंमानैदुष जनके
हिरदैहरिबसै तिहिसदनिरंतरिसुष ॥[illegible]॥ अपणांरामसंभा
लीये बुरानकहीयेकोइ आपैहीपछितास्या जाघटिरांमन
ताइ ॥[illegible]॥ जनसेवादाससंसारमें बहोमतिहीणालोइ जनसे

जलीजलवाइ२०१मतिबिसरैकरतारकूं॥जिनसौंजासवारीये
हूजनसेवाऔसरहैम्हलौ॥तरैंहरिनमिलाहालेह२०२सहजैं
सुमिरणहोतहैं॥अजपामांहीजाय॥भरमअंधारासबमिट्या॥
सबघटदेखेआप२०३घटघटमांहीदेषीयै॥अलषनिरंजनरा
अलषनिरंजनराघटहै॥सबघटरह्यासमाइ२०४निरमलन
वजिनुपीया॥तिनकेकटेविकारसंजमसमतामनपवनगाहिसे
वातेजनउतरेपार२०५जनसेवादाससबरोगका॥नांवहीवोष
दसार॥अनेकपतितपावनभयो॥कटिगयेविषमाविकार२०६॥
सुमिरणमांहीसुषघणां॥जेकोईजनहैसवादमननिहचलनिर
विषनया॥छूटेसबबकवाद२०७मिसरीपांणीमिलिरही॥जैसैंक
हीयेरामइजाहूरसबढूरिकरि॥जनसेवासुधरैकोम२०८नां
वनिरंतरलिलीजीयै॥आपऐउराधिरहोइ॥केताकोईकरकहो॥तय
पीतजिमसिसोइ२०९आपातबलगजाणीयै॥जबलगतनआह
कार॥आपामेट्यासुपनया॥हूलामुकतिद्वार२१०सकलसरोम
णिनांवहै॥जेमानिआवेपतिभूत॥जनसेवाकरिजासिधिहोइबहू
ढूनदेखपरत२११इतरातिरहीनांवतैं॥नरककनिवारेनांव॥ऐसान्
मलनांवहै॥जनसेवामेबालिजाव२१२तनमनपवनांफेरिक
रिलीजैहरिकोनांव॥अनेकपातितपावनकीये॥जनसेवामेबलि
नांव२१३तारणहारानांवहै॥जहि भौसागरकेमांहि॥जनसेवा
दासउरगहिरही॥आलिषतामतिषांहि२१४सबसुषसागरनांवहै
सबअमृतकीरासि॥जनसेवारामबिसारिकरि॥मतिउलझेजगपा
सि२१५रामकहतपावनभयो॥अगिणतपतितअनेक॥ऐसाअन
मनांवहै॥सबतजिमनगहियेक२१६॥कलंककटेहरिनांवतैं
कोपेकमदेसरीरजनसेवाऐसानांवहै॥जमतिबिसरैबार२१७॥
नांवलीयांभवडूबतै॥आजामेलसुनहेत॥जनसेवाऐसानांवहै
अमरअभैपददेत२१८सबसुषरासीनांवहै॥कादहैतीरथनाइ
जनसेवामनथिरकरिनांवलै॥संसहजैंसबसुषपाइ२१९हर
रिहिरदामेउचरे॥तबसकलअघजातजि॥हिजावनमेंद्योषगट
घनत्हररहोहि२२०हरिहिरदामेउचेरे॥हरिरहेसकलजगध

जनसेवादासहरिनावतैंकरमभरमसबहरि २२१ जनमसु
फलतिहिजिनदीयोरसनांहरिगुणगाइजनसेवादासस्य
नहमयाअबसुषमेरहेसमाइ २२२ जनमसुफलतिहिरामक
हिप्रेमसहतलैलीन तिनकेकलिबिषसबगयेज्यूंकछेअग
निमेछीन २२३ सकलअघसहजैंगयेजबअंतरिआयोनाव
कीयेपवित्रपलकमेजनसेवासेबलिजांव २२४ जपतपतीरथ
सबकीयेजोरहेनावहूंलागिजनसेवासोईसरिवाहरिजि
सबबिषतागि २२५ सोईतामीसाईसरिवाडुषतजिसुषविल
सोहिहरिहरिकरिहरिमेमिलोजनसेवादासबलिजांहि २२६ सु
रनरसकलसिरोमणीजपमुषिजेचेरेरामारामसजीवनिउरध
रयाजिनसबेसुधारेकाम २२७ सुतबितधीजगरमामन्या
नकेवलरांमजनसेवासाचसंतोषबिणिदेहधरीवेकाम २२८
जैसेकूपउजाडिमेबिणिजलकहोकिसकांमयूनरदेहीकि
सकांमकीजेसमझिनलागेरांम २२९ जिनिहाथपावसिरसे
जसबानषचषसोंजबणाइ तासाहिबकीबंदगीभूलाक्यूंसु
षपाइ २३० नषचषसोंजसबेकरीसांईसुमिरणकाज यबकै
सरहूकौप्राणीयांहरिसोकीनुइलाज २३१ साहिबअपणासु
मरिमनकनककांमणीजालाइहकी चितकत्तैषोयारतन
अमोल २३२ साहिबसुमिरेणिदिन तिसकाआगिणतमोल
अतोलजेसुतबनिताधनहूरमा तिनकाकौडीमोल २३३ जै
सारांमाबिसारिकरिबांधाजीकुंजालकोणछुडावेरांमबि
णिषडेसिराणेकाल २३४ जैसारांमबिसारिकरिबांधाज
गतंनेहकोणछुडावेरांमबिनासबैकटाऊयेह २३५ रामरामज
पिबाकैरसनांअम्रतवैंनपापपलकमेफिलिकरेआतमपावै
चैन २३६ जैसाहरिकानांवहेजोनहीमतिमंदापारिउतारै
पलकमेहरिकैदुषदंद २३७ बलिहारीहरिनांवकीकुसम
लरात्तधोरासुरगम्रतपातालमेपलानपकडैकोइ २३८ ज्यूं
हीन्हीनांवलेअजामेलसुणिसाषिअधमतिरेहरिनांव
तेजमयेलीथेराषि २३९ नवलायोगजडूबतेफंधकटेतिहि
बारजनसेवाऐसानांवहेसुमरिसुमरिभयेपार २४० अधम
तिरेहरिनांवतेअगिणतपतितअनेकसोईनांवसंभालीये
सबतजिमनगहियेक २४१ प्यारातिसकूंहरिनांवलेयेकेमनचि
तलाइ आसनबाजेअनतेंगलतेंसूषनजाइ २४२ केतेधरे
नावतेंसुषअम्रतगुणगाइकालजालतैंनाबंधेसुषमेरहेसमा

इ२४३ पापतापतनतैंगये हरिजी बिषसवत्याग जनसेवा
मोसउचारतैं ज्यूं डुमपत्तजिनगोनाम २४४ देहडुमतैं सबगये मा
ग्यापकरम नोव निरंजन उगिग्या तनमांसबदमरम २४५ ला
गाढूंपरबतमैं पेखीतजिमागो जनसेवायूं अघसबगये नांइ
निरंजनलागे २४६ पापकरमसबजालिगये जेहरि सुमिरण
रंगि जनसेवा बोदाफूसमै पडीतनकसी आगि २४७ काया
कालागैनही जो निरमल होवै मन हरि हरि करि जिन उजल
लैलगै निसदिन २४८ सुभ पाया सतगुर मिल्या लीया नांव ल
गाइ जनसेवा सासासबका लासूं तेलनाये जगाइ २४९ सूता लिये
जगाइ करि सतगुरु चेतन कीय जनसेवा भय आनंद भया आव
सुमिरण लागै पीव २५० सकल अघ सहजैं कटैं जे सुमिरै हरि
नांव नेक चिंगारी आगि की दाहवै सब ग्राम २५१ थोरे ही कि
नांव मैं जपतप साधन जोग जनसेवा ऐसा नांव है सबही काटै
रोग २५२ जकत रोग आतिस बिलहै वोषद रामनाम ततसार
जतन करै या बिपवन को तो काटै विषम बिकार २५३ जतन करैय
हि पवन को वोषद्या दह आदि जतन बिन जनसेवला दया दे
रग है मेदादि २५४ आलासासउसास की फेरे हरि कै जन जनसे
वादस अब सुषनया पयाराम रतन २५५ मनमता सतगुर दे
इ सुरति पवन सूं पोइ जनसेवा दास अंतरि फिरै लषै सु बिरला
कोइ २५६ जनसेवा ऐसा जाप जापि सोहं सोहं गाइ सो दे हंसा
थककरि काया गुण बिसराइ २५७ मन पवना समि सुरति करि अ
हिनिस घोजो मांहि जनसेवा सोहं सम कीये है सो इसरनो है २
५८ आदे निस ब्रह्म बिचारी ये मन पवनां सम यवि सोहं सो धीस
रति करि सा धू जो ले सा धि २५९ नाचिकं वल मन सुरति सम भी
समरति स्लीले स्नाइ इडा पिंगुला सुषमना त्रिवेणी तहि
न्हाइ २६० ऐसे सहंस इकीस को जपीये अजपा जाप ज
नसेवा मालामाहि नी लहीये आपै आप २६१ आसण
दिढ करि ध्यान धरि नंवर गुफा मैं वास जनसेवा उल
टै कंवल कूंतब होइ ब्रह्म प्रकास २६२ बंकनालि मैं
ऊगीया जनसेवा सहजै सूर रोम रोम धुनि प्रगटी बाजै
अनहद तूर २६३ परम तत परकास मैं हरि जन षेलैं सो
इ जनसेवा साधू मता मतन नहीं लागै को इ २६४ का
या गुण सब ओनहै तजि ध्वनि ब्रह्म सुध्याना जनसेवा
२ पूरण पद निरबांण २६५ तन मांही सनपि

रिमिल्या ॥ अब भयौ जमन कै ज्यांन। जनसेवादास मनमन
मिल्या परम तत गल्लतान ॥ २६६ ॥ तनमांही मन न्हैरह्या
हरिसुमिरण सुषसार। जनसेवादास सबसुष भया अरस परस
सदीदार ॥ २६७ ॥ जनसेवादास सब मन लग्या आत्म तत विचा
रि। उरअंतरि ग्यांन क्या सबदुष दीयें डारि ॥ २६८ ॥ मन हीसूं म
न फिरि मिल्या तब मन उजल होइ। सरणै सूल सब कासीया इ
स रनांही कोइ ॥ २६९ ॥ मन हीसूं मन फिरि मिल्या तब ऊग्या निरम
ल सूर। निसे अंधियारा मिटिगया बाजे अनहद तूर ॥ २७० ॥ मनहू
सूं मन फिरि मिल्या मन मिलि रह्या समाइ। जनसेवा बिलवे कंव
लतं अब उहि मन तन जाइ ॥ २७१ ॥ मन हीसूं मन फेरि करि सब म
न का तजे बिकार। जनसेवादास तब ही लहै परम पुरष भरतार
॥ २७२ ॥ बाहरि क्या दिषलाइयें अंतरि हरिगुण गाइ। लोक दिषा
वै क्या सरै सब साधक हैं समझाइ ॥ २७३ ॥ बाहरि क्या दिषलाईये
अंतरि कहीये राम। जनसेवा राम न जांणीयो तो देहधरी बेकाम
॥ २७४ ॥ बाहरि क्या दिषलाईये अंतरि हरि के जाप। जनसेवा राम
न जांणीयो तिनकै सिर सब पाप ॥ २७५ ॥ बाहरि क्या दिषलाईये
अंतरि कहीये सोइ। जनसेवा सो पछिताइगा जाघटि राम न हो
इ ॥ २७६ ॥ जनसेवादास ता मुषसूं हरि बिणि निकसै और। तिस
अपराधी जीवकूं नहीं कहूं ही ठौर ॥ २७७ ॥ जनसेवादास हरि नां
व बिन जे मुषि निकसै और। ऐसे पतित असुचि कूं नहीं कहूं
ही ठौर ॥ २७८ ॥ मानिषा देही धारि करि भज्यो न केवल राम। जनसेवाद
स ते प्रांणीयां देहधरी बेकाम ॥ २७९ ॥ मानिषा देही धारि करि मुष
सैं कहै न राम। जनसेवादास ते प्रांणीयां सहसी बहौ सिर घांम
॥ २८० ॥ मानिषा देही धारि करि हरि न जे नहीं मतिमंद। जनसेवाद
स ते प्रांणीयां न्याइ सहैंगे दंद ॥ २८१ ॥ मानिषा देही धारि करि बु
रा कमाया कांम। जनसेवा हरि का नांव बिन कछू नहीं बिसरा
म ॥ २८२ ॥ जनसेवा हरि का नांव बिनि बधि गमाई देह। सुमिरण
सूं न्यारा रह्या बांध्या जग सूं नेह ॥ २८३ ॥ जनसेवा हरि का नांव बि
नि आये टापा दैंण। कूडे परपंच लग्या ता मैं लैंण न दैंण ॥ २
८४ ॥ देहधरी किस कांम की हरि सूं नांही नांव। जनसेवादास न रवै
रूसै नांव कुलावन साव ॥ २८५ ॥ मोह पास सब जगबंध्या यो ही
दीरघ रोग। जनसेवादास जीव का लालहै उपजै हरष रलोग ॥ २८६
॥ परसे [illegible] करि चाले [illegible] जनमन सूं हीह
री सौं ता कूं वार न पार ॥ २८७ ॥ सुमिरण सूं न्यारा रह्या जगसूं

मैमनलीन साधूसेवनहरिन्जौ।येकोकाजनकीना२८८॥शं
नोमलागारहे।जगसुषत्यागैनेह।जनसेवासोईसूरिवां।ह
रिजिनाहालेह२८९॥निरदावैगोबिंदजै मांगिरनिप्पापाइम
तनबांधैजगतसूं।जनसेवारामसहाइ२९०॥नेसबेहानिरबे
मनभजेनिरंजनदेव।जनसेवादासतासाधकी।करैसबैहीसेव
२९१॥हैसचाहीरांमजन।भजैनिरंजनराइ।जनसेवाजनैहाइ
नबाकबकुकालनषाइ२९२॥सबकालासिरकालहे।जनसे
वाअबगातिराइ।सोईहिरदामैबसै।कालकोंग्रकूषाइ२९३॥ज
नसेवादाससतगुरदीया।हरिसुमिरणभाजबमेकाकरमनरम
सबमांडिकरियरत्पाअबगातियेक२९४॥परापरैपूरणब्रह्मात
हांमनरह्यासमाइ।जनसेवादासनैनैनया।अजिअलषनिरंज
नराइ२९५॥सुमिरणबिणिजमग्रासिहै।तौकिसकूंदीजैदोस।
जनसेवासाहिबनांभज्यौ।सबधरमासिरपोस२९६॥सपतधा
तकापिंडहै।सधूमांसलुचनाडि।असतवीजगुदगलक्या।तं
बतासिनैनउघाडि२९७॥पांणीकासाबुदबुदा।ऐसाहेतनयेह
हरिभजिढीलनकीजीयेऊलनहैनरदेह२९८॥लालाजगल
नाश्री।यातनकीयाहीरीति।सयतैमनकूंकाढिकरिकीसा
हिबसंप्रीति२९९॥ओसरयूहीहरिभो।तूंहरिदेहारिगुणगाइ।
जनसेवाफिरिलामैनही।जनमअमोलिकजाइ३००॥रामभज
नबिनबावरे।क्यूंषोवैनरदेह।फिरियौछैमांगिताइगा।तहांनिरे
लाहालेह३०१॥रतनअमोलिकपरयछौ।कौडीसटैनषोइ।ज
नसेवातजिअभिमानकूं।तूंहरिभजिनिरभैहोइ३०२॥मोहमा
यिमेसबबंधैसमकैनाहीजीव।जनसेवादासतबसुषलहैस
मफिरसुमरेपीव३०३॥रांमभजन्यासुषहोइगा।रेमनसानांलि
बीरबलतजिनरबलकैरहौयाहीकहेकबीर३०४॥नावेपढै
पोथापढौनांवनआवैमादि।जनसेवायालीषसमबहरिभाद
रगहनाहीदादि३०५॥रांमभजेनिरभैथका।ञासमनकी
ति।जनसेवाआसाअलषकी।यासाधांकीरीति३०६॥साषतह
निरबैरता।सबघटदेषैयेक।जनसेवायौहीसाधमतयौहीब
डाबमेक३०७॥सबघटमैरामीबहै।समरथसिरजनहार।गुर
जनआप्यांदीया।तबदेषैंदीदार३०८॥दिलमांहीदीदारहै।
मनकूंउलटाफेरि।रोमरोममैरमिरह्या।तूंहिरदैबैगहेरि३
०९॥तनदेवलमैदेवहै।अलषनिरंजनदेव।सतगुरकेपरस
३१०॥तनदेवलमनदेवहैमनह

दजैमांहि जबलगमनबाहरिफिरै तबलगपूजानांहि २११
जैमांहि जबलगमनबाहरि फिरै तबलगपूजानांहि
प्रतरिपूजाप्रेमकी मनयंडीसामिटाइ दीपकजोवैग्यानकै।
तबसहजैहोसुषथाइ [illegible] दिलमांहीदीदारहै मनकूंउल
टोलालि हिरदामांही बैसिकरि तरमतारामपिलालि [illegible]
[illegible] मनहीमांहीपाईये जैमननिरमलहोइ जनसेवासुकारस
मांन्मन ताहीभेतजोइ [illegible] धरमनेमतीरथबरत येसबवे
लीदेरमनउलटाफेरयाबिनां येसैनपावैगोर [illegible] गुणचा
सकोटिफिरयाफिरै अंतिरहैउरवार जबमनहिरदैफिरनया
तबहाउतरेपार [illegible] परापरैपूरणब्रह्म अगमपुरतहांगेर
ामका तहांपक्षुचैनहीं बेगमहोइसंगोर [illegible] गुणमेषेले
सकलनाग गुणांरहतकोईसाध सुमिरेनरगुनबूलक्कूं ताकं
बातअगाध [illegible] सकलबियापीसंगिबसे सोरह्यासकलम
रपूरी तहांमनकूंउलटिलगाईये तकेहांषोजेहरी [illegible] अंतरि
मनउलटाफिरै निरमलहरिगुणगाइ जनसेवादासतबर
मला हरिसुषसागरिन्हाइ [illegible] देहतपेकमआचतें धरतन
हीमनधीर सतगुरअमृतपाईया तबसीतलमयासरीर [illegible]
[illegible] बालिबालितेरेनांवकी परमसनेहीराइ जलतासीतलकं
रिलीयारामअमीरसपाइ [illegible] रामतुम्हारेनांवकी महमांक
लुमनंतवारीतेरेनांवपरि लागिरहेसबसंत [illegible] जैसेचंदन
बावनैसरपरहैलपटाइ असेतेरेनांवसूंसंतबिलंबेआइ
[illegible] वारीतेरेनांवपरि परमसनेहीराइ केतेउधरेनांवसूंमु
घइमृतगुणगाइ [illegible] सबसूंनिरसाहोइरहे बलतजिनिर
बलहोइ जनसेवाऐसेहरिभजै तबगजिनसकेकोइ [illegible]
बलछाडैनिरबलरहै गोबिंदगुणगावै जनसेवासाधसिरो
मणीसोईनिरभैपदपावै [illegible] निसवेही निजसाधसो अंगेअघ
डितराम जनसेवादाससतासाधका निरभैपदबिसरांम [illegible]
रामअमलमातारहै जागतेरहैउदास प्रमातमसूंआत्मा
नसेवानितिअभ्यास [illegible] सुरगसुषदुषनरकका नाहीभा
केयेह साधरमेहरिसुषमे कीयाहरिसूंनेह [illegible] हरिसागर
मरमलह्या अगमवारनहीपार जनसेवातासुविषेलीये गा
गुरग्यानबिचार [illegible] सतगुरहीतेंपाईये साविमहरिकी
टपथबिनांचलिबौसदा त्रिबेणीकेघाट [illegible] साधूजना
रमलन्हया त्रिबेणीकेघाट जनसेवासुरतिमनपवनकी गु
दिषाईबाट [illegible] सुमरणडोरीसाचकी सतगुरदईबताइ

अगतिमुकतिदात
मांनका कनककांमणीबंधजनसेवातेजनन्यमला जिनका
अगफंध२२॥जनसेवाबेडीसबलजुगि कनककांमणीदार
देइतजिसुमरणलग्या साधूकहीयेसोइ२२३जनसेवादास
संसारमे दोन्यूबंधनां णि तजिबंधनमुकतामेषा येकनिरा
कालबांणि२२७ कंचासोईहरिनिजो जातिबरणकुलषोइ सा
हिकजातिअजातिहै ताहिसुमरिसुषहोइ२२८ कंचासोईहरि
जनेमैमेरीसबषोइ जनसेवातेनिरमैमया तासमिओलकोइ
२२९ कचासोईहरिनिजो बहोबूडेकुलमांरि जनसेवामारी
इसी हूलकातेतरेयार२३० कचासोईहरिनिजो अहंममत
मकोतिकालबांणि लागेनही जुगिनही पायेफेरि२३१॥
कचासोईहरिनिजो कुलकेतारणहार जनसेवादासनेबूडि
गयेतिनकेकुलसिरमार२३२ कुलअभिमानेभूलीया जग
माराजादीस जनसेवाकालमहाबली सबकूं रालेपीस२३
३ हकरांमतुम्हारेनांवबिणि जीवणवृथाजाणि तुमतजि
लागेआंनसूं भईमानिकजनमकाहाणि२३४ कचासोईहरि
जनेकुलकाकांणिनिवारि कुललज्यामेसेवला अगाधचले
अनिहारि२३५ कचासोईहरिनिजो हरिमिजिहएहीमांहि कं
चकुलकिसकोपकाबहेजनीकेजांहि२३६ कनककलसजो
भयाहाथनघालेकोइ धूतमत्याहेचांममे जनसेवातजोनै
२३७ कचनीचअंतरनही जेजनसुमरेरांम रांमाबिमुष
किला नीदिनिषदबकोम२३८ सबलसरामणिसुचिसो
अषिम्येरेरांम रांमबिमुषतोक चेहेजनसेवासबबेकाम२३
९ जनसेवादासकरिवेदगा ओसरभलनाथा सकलजगप
तसिमसाथमयाबंधिबाधा२४॥ जनमसुफलतवजांणीये
जबैअगतिनगवंत जनसेवासोईकबेरे बिषसागरनाडूबत
२४१ सामतन्निनसोधीयो मजेजदेवलरांम निहकपटा
निरलोभीनिहकांम२४२ सुरबपुनिजबप्रगटे तब
जनसेवायूहीषोइमां तहेहरिनाजिलाहा
२४३ जेबलगपिंजारिथासहे तबलगहरियुणगाइ जन
तनबोलाज्यांलिजाइ२४ जनमुक्षम

१५

५०२ चितवणियेकटालषकी इछाकरि सब हरि इछा चित
रिण मिटि गई तब दरस्यारामहजूरि ५०३ नांवलेत दुषसब कटे
जनममरण का सोइ जनसेवा सांसा सब गया जना निरभै र
हे होइ ५०४ नांव निरंतर लीजीये तन मन पवना फेरि उल
टि गोता मारि करि जनसेवा अंतरि हरि ५०५ दान पुनि ओप
रहै तन धरि पावै सोइ नांव बिना जनसेवला मिटै न ही दुष दे
इ ५०६ तीरथ बरत जिग होम जप नांव तुलि न ही कोइ जन
सेवा ये सब परहरे ग्यान तुला करि जोइ ५०७ करम भ्रम स
ब आडि करि इक नांव निरंतर लेह जनसेवा निरभै होइ तब बहु
डि न धारै देह ५०८ संत सुमरि निरभै भया सुमरि सनेही पीव ज
नसेवा सतगुर जब मिले तब कीयै जीव तैसी व ५०९ हरि हासै ब
लन पाईये तन मन उलटा आणि जनसेवा तन मन नाथ कूं से
पि रहै दो बारि ५१० तन मन सौंप्यां हरि मिलै या मैं संसै नांहि
गुर का सबद गह्या रहै जनसेवा दासन माहि ५११ तन मन सौं
प्यां हरि मिले अंतरि षोट न राषि जनसेवा सांसा को नही सब हू
रिजन बोले साषि ५१२ करदीप गले ग्यान का सब देषे निरताइ
जनसेवा सांई मिलन कूं नांही औरु पाइ ५१३ तन मन सौंपे रा
म कूं तब साहिब करै मया अपणा करि हरि आदरै सब औगण द
रि गया ५१४ तन मन सौंपे राम कूं हरि सारे सब कांम जनसेवा
दास जग आंतडी तोडि भजे हरि नाम ५१५ भगति करै भगवंत कू
सुमिरण सरलै लाइ जनसेवा सुषीया होइ तब फिरि दोजिग न
ही जाइ ५१६ महा मोह कल जगनि की तामै दाझै जीव जनसे
वा त्रलेन रमै अंतरि बिसरे पीव ५१७ जे ग्यान सजि जगत पे त
ग्या संतजन सुषमे सुमिरै पीव ५१८ हम
तुम से मेरै नांहि तेरी कृपा कटाछि तें सकल स
५१९ महा निज अविधो हरी दीनदया करि लेहु अ
करि हरि आदरौ बकसो गुन्ह अनेह ५२० जिन सकल प
हम अंतरि सेवे ताहि निकटि निरंजन सेवला सोय
डि अनंत पूं जाइ ५२१ अधर अषंड सुमरि मन हे तुम सो तो गाइ
सकल नवन पाति सेवला सो अंतरि आबगति राइ ५२२ जनम म
रण जरा नही नही आवै न ही जाइ सो सांई सिर ऊपरै भरम ताफि
रे बलाइ ५२३ चौपई सकाटि पडे न जूनी आवे रहै न पारा मिलि मां
हि दिबावे गैसे सासि आकास माही यूं सद असंग सकल घट मां
ही ५२४ यूं हरि गया रपार कोनांही की मति ता की कही न जांही ॥

पांचूंततती नां तै आगे लहै सोई जो गुरगम जागे ॥ ३ ॥ द्वि
ति अविनासी देवा जनसेवा सुरनर लहैं न भेवा ॥ ४२ ॥ साषी ॥
परपूरण आकास वत घट बाहरि भीतरि येक ॥ जिनि हरि ऐसा
जांणीया सोई बडा बमेक ॥ ४७ ॥ सब घट मांहि रमि रह्या अलष
निरंजन राइ ॥ जनसेवा ऐसा जांणि करि हरि रांम ल्यौ लाइ ॥ ४
८ ॥ सब सुष सागर रांम है अगम वार नहीं पार ॥ लागि रहे सब सं
त जन केवल नांइ आधार ॥ ४९ ॥ सतगुर कीये पलक में नीध
न धनवंता ॥ हरि सा हीरा करि धर्या कोई बिलसै जागंता ॥ ५० ॥
जनसेवा ये केनांव बिणि डूबीया है सब कोइ ॥ जे राते अबगाति
सां सुषीया कहीये सोइ ॥ ५१ ॥ नांइ निरंजन जे रता ते गिऐं यंब्र
क्षरंक ॥ जनसेवा ते निरभै सदा मिटी काल की संक ॥ ५२ ॥ सब हि
आरंभ छाडि करि रसनां हरि गुण गाइ ॥ जनसेवा अंजली नीर ज्यूं
यौ तन छीसै जाइ ॥ ५३ ॥ दया सरोवर रूई ये सब आतम कौ त्या
ग ॥ जनसेवा रांम सनां लसी तिनहूं के बडभाग ॥ ५४ ॥ आरंभ स
बे निवारि करि जपीये केवल रांम ॥ दया सरोवर कूली ये जन
सेवा सुध रैकांम ॥ ५५ ॥ निरमल नांव संभालीये दया सरोवर
न्हाइ ॥ सेचा तें जन निरमला निरमल मांहि समाइ ॥ ५६ ॥ औस
र लौ बिसारीयां कीजे छति मकांम ॥ जनसेवा औसर जात है
बिषीया तजि नां जी रांम ॥ ५७ ॥ बिषरूपी संसार है तासूं षी तिन
लाइ रांम जन जोन मन लागे सब साधक है समजाइ ॥ ५८ ॥ रांम
भजौ जगपीत दिन नम बदी ते जाइ ॥ जनसेवा पीछै क्या करे
तब काल गहैं केंग आइ ॥ ५९ ॥ जनसेवा दास हरि नांव ले आबू
महूर्त्त जे हाथ बपलक को गम नहीं बैकुंठ तांत नयेहू ॥ ६० ॥
नरदेही पुनि तैं लही कस्तूर बलेनां ॥ जनसेवा सूं ही छै स्वा
हरि के सुमिरण लाग ॥ ६१ ॥ रतन जनम नर हरि दीयो सो मति
षोवै बेकांम ॥ जनसेवा औसर है अजौ भजि लै केवल रांम ॥ ६
२ ॥ यौ जग नरम मरीचका मयमिन भूली बीर ॥ जनसेवा सुमिरण
कीजीये आपणां मन की रथी ॥ ६३ ॥ जनसेवा बिलमन की
जीये हं अपणां रांम संभालि ॥ जनसेवा रांम संभालि करि माति बं प
धे जमजालि ॥ ६४ ॥ जनसेवा दास आलस करै भजिलै सिरज
नहार काचो नांडो सेवला बिनसत नांही बार ॥ ६५ ॥ जनसेवा सु
मिरण कीजीये जब लग पिंजर स्वास ॥ काल गिणैं नित स्वास
कौ कूवा तन की आस ॥ ६६ ॥ यौ तन थिर दीसै नहीं मूरष जनतौ

रामबिसास्यो होत है मनिषजन्म की हांणि जनरागो रामरिक रि
न अंतरि अलष बिडांणि

कांनी रबैगा बेगि संभालीये सांभलि मन बौ बार ॥ जा
न सेवा सुमिरण कीजीये तन मन सुरति लगाइ ॥ जन सेवा
तन थिर ना रहै जतन करतां जाइ ॥ चिंता मकरि न चित रहै
भजि मन प्राण आधार ॥ जिन करांम जी पूरवै संगी सिरजनहा
र ॥ सुमरि सनेह जागि रे सावै केहा अचेत जतन बिना
नसे वला मन मिरघा बेगा ड्री षेत ॥ गाफिल षावै सरबर
स जन सेवा सुख नही होइ चेतन क्यां ऊबरे साधक है सब कोइ
॥ रतन सरहो सी बुरी भजि परमसनेही पाव चौरासी
पाडि मंडी मार सहै यो जीव ॥ रामबिसारयां होत है मनि
ष जनम को भंग जन सेवा जनम सुधारी ये जो हित लागे हरि संग
॥ सुरति बिलन कुंभा व हरि जु देन दे घट को प समरथ साई
आ डि करि मयो आंन अधीन ॥ ऐसो समरथ छाडि करि म
जे सो नमा ति मंद समरथ का सरणागहै तो कटे सकल भै फंद ॥
॥ मै बंधन सब हो कटै जो केवल नाधीये राम जन सेवा के
वल राम बिन दूजा सबही काम ॥ जन सेवा आलस कू
करै तूं हरि दिल आं विचारि मनिषा देह दुलभ है तूं जिन चा
लै हारि ॥ छिन गिरह दया देह है ता हि रोसा को ण हरि
जि हरि मै मिलि रहै जैसै पांणी लूंण ॥ सुमिरण कीजे रां
म को करि विचारि मन मै चेत जन सेवा नै थि पाई न ली मानिष ज
नम वांधो ज ॥ कांम क्रोध विसनांत जे जन सेवा दास गुण
देह मनसा बाचा हरि भजे मानिष जनम फल येह ॥ रांम न
जे जग थे हि दे तजे जगत की आस ये का भरोसो जरि बसे ते ध नि
र वै दास ॥ येक भरोसो रांम को दूजी आस निरास ये क निरं
राति द्यौस ब्याप्त ॥ इ हि यो सरिह रिना व लै त
मन सुरति लगाइ जन सेवा भासु ब त्या गि करि अगम तहां लेल
॥ तो न मो ह लालच तजो मन न जौ निरंजन देव जन सेवा
सुख आगम है सुर नर लहै न भेव ॥ जहां आपो तहां आंतरो
पाते हरि दूरि जन सेवा दास आपो मिट्यां तब हरि सदा हजूरि
सुरति लगी रहै नांव सूं कब हूं छूटि न जाइ जन सेवा सुख हो
मै सुख मै रहै समाइ ॥ सुरति लगी रहै नांव सूं कबहूं बिसरै
हि जन सेवा सुमिरै रांम कूं बिणि माला घट माहि ॥ राम र
सब के सिरै जन सेवा हरि रस सार पीवैगा कोई संत जन जिन
मन के तजे बिकार ॥ तन मन सौं पै रांम कूं रस पीवै प्यास

वैद्यदीयावताइ सुमिरणडोरी जनसेवला हरिजनलागाज्ञा
॥विनासी दोविषीयासे पिष्टि जनसेव
दृष्टि॥७१॥नीचीदिष्टिसाधूचले दयाव
॥७२जन
मूकटैजीवकाजालथोमनआनंनदगीरे
॥७३॥निरमलनीकानांवहे निरमलनीकासाध
मैचाहितौता रघ॥७४॥साधनयेहीनावले त
नमनपाचूंफेरिजोचाहे दीदारकूं उरअंतरमेहेरि॥७५॥छाडिदेह
वकवादकूं तनमनसुरतिसमेटि जनसेवा सांसोयाइकरि पावपि
यारमेटि॥७६ सुरतिसमांणीरांममे अमृनीरसमांलो नजनसे
वाआवहूवक्याकैसमफावेकहोकोन॥७७॥अमृनीरसमानोइ
धमे सुरतिसमांणीरांम इज्ञाहवसबथाकिगया केडवालभेका
म॥७८॥पारसरूपीरामहे कांमधेनिकरतार कलपवृषिजग
दीसहे जनसेवा सिरजनहार॥७९॥कांमधेनिहरिआपहे सरवेस
वआपार पीवेगाकोईसंतजन जिनतनमनकेतजेविकार॥८०
पारसरूपीरामहै सबलोहाकंचनहोइ जनसेवापरसेसंतजन
सबमनकीदुबधाखोइ॥८१॥कलपवृष्यहरिआपहे कलपनारहै
नकाइ जनसेवासांसोमेटिकरि जेहरिमांहिसमाइ॥८२॥निस
दिनसरवेरांमरसपीवैप्यासाजन कांमधेनिवछसोधिले सोंपि
तनमनधन॥८३॥बारामासरवैसदा कांमधेनकरतार जनसे
वाअंतरमेलहे बिलसेसुषअपार॥८४॥जबलगकरमालाफि
रैअंतरिमननहीआंहि आतमसुमिरणरूपजे तबइज्ञाभावेनां
हि॥८५॥इज्ञासबफीकालगे तबआतमपावेस्वाद जनसेवापूरो
होइरहे सबछूटिजाइवकवाद॥८६॥तनमनअैसेगालीयेअप
लापियलेघांमि इज्ञाकुछभावेनही जनसेवाआतमरांम॥८७॥
तनमनअैसेगालीयेअंपूघांमलगपाघूतजोइ जनसेवाआतमरां
ममेयेकहोइनहीदोइ॥८८॥तनमनअैसेगालीयेअंपूपांणीलूण
मलाइजीवब्रह्मयूमिलिरह्या इज्ञाकह्यानजाइ॥८९॥मेलाउ
नलदोइघटयेकरेंणयेकत्तरदरेंणीमिलिगयारेतमेतरसमान
तर॥९०॥मेलासबमायामिल्या ज्ञानआतमरांममांहीसेवार्
दगी जनसेवाआहेंजांमधा॥९१॥मांहीसेवावंदगी तहांनदेयेको
इ तनमनपाचूंफेरिकी

ही

हीकोइध

२६

रांमहि साचो होत है मनिष जनम की हांणि उलटा गो तामारि करि
कांनी रे बैगा बेगि संभालीये सांभलि मन वाबार ॥ जन सेवा सुमिरण कीजीये तन मन सुरति लगाइ जन सेवा
तन थिर ना रहै जतन करतां जाइ ॥ चिंता मकरि न चित रहो
भगि मन प्रांण आधार रिजक रांम जी पूरवै संगी सिरजनहार ॥
सुमरि सनेही जागि रे सो वै कहा अचेत जतन बिनां जन सेवा मन मिरघा बेगा डारो षेत ॥
गाफिल षोवे सरबस जन सेवा सुष नाहीं है चेतन क्यों अबै रे साध कहैं सब कोइ ॥
स्यावनां नर होसी बुरी भजि परम सनेही पाव चोरासी चो
पाडि मंडी मार सहै यो जाव ॥ रांम बिसा त्यन्होत है मानि
षजनम कामंग जन सेवा जनम सुधारीये गि हिला गे हरि रंग ॥
सरति बिन सुनां वहारी अदेन्द्रुदे घट कीव समरथ साई
आडि करि नये ब्रांन आधीन ॥ ऐसो समरथ आडि करि
जेसा नमति मंद समरथ का सरणां गहै तौ कटै सकल भै फंद ॥
भै बंधन सब हा कटै नौ केवल नायी ये रांम जन सेवा के
वल रांम बिन दूजा सब बे कांम ॥ जन सेवा आलस कं
रै तहू हरि हरि नांव उचारि मनिषा देह दुलभ है ते गिनचा
लै हारि ॥ छिन छिन ग्रह या देह है ता छिन रोसा कोंण हारि
जिहा रि मैं मिलि रहै जैसैं पांणी लूण ॥ सुमिरण कीजे रां
म को करि करि मन मैं चैन जन सेवा नैं धीपाई नली मानिष ज
नम की मोज ॥ कांम क्रोध त्रिसनां तजे जन सेवा दास गुण
देह मनसा बाचा हरि भजै मानिष जनम फल ये ह ॥ रांम
जैं जग थैं छिदे तजे जगत का आस ये कलरो सो इरि बसे तेष निह
रि वे दास ॥ ये कल रोसी रांम को दूजा आस निरास ये क निरंज
न नांव को राति द्यौंस अभ्यास ॥ श्री हियो सारि हरि नांव लै तन
मन सुरति लगाइ जन सेवा जग सुष त्यागि करि अगम तहां लैला
इ ॥ लीन भो हलाल चत जो मन न जौ निरंजन देव जन सेवा सो
सुष आगम है सुर नर लहै न भेव ॥ जहां आपो तहां ओ तरो अ
पातें हरि दूरि जन सेवा दास आपो मिट्यो तब हरि सदा हजूरि ॥
सुरति लगी रहै नांव सूं कब हू छूटि न जाइ जन सेवा सुष हो इ प्रांण
मैं सुष मै रहै समाइ ॥ सुरति लगी रहै नांव सूं कबहू बिसरै न
हि जन सेवा सुमिरै रांम कूं बिणि माला घट मांहि ॥ रांम रस
सब कै सिरै जन सेवा हरि रस सार पीवै गा कोई संत जन जिन तन
मन केता जे बिकार ॥ तन मन सों पै रांम कूं रस पीवै प्यास जन
सेवा साधू सों मिला जगि रहै उदास ॥ सब मा जिम डी सत गुर मि

पेडदीया बताइ सुमिरण डोरी जनसेवला हरिजन लागा ज्ञा
॥बिनासा दो बिषा सां से पिष्टि जनसेव
निरमैनाची दिष्टि ॥७१॥ नीची दिष्टि साधू चले दयाब
राषे ना सांजग्र दिष्टि कूं इत उत चित वे नांहि ॥७२॥ जन
मूकटै जीव का जाल यौ मन आनन दीजीये
ज्ञान तम काल ॥७३॥ निरमलनी का नांव है निरमलनी का साध
निरमलनी का रांम है जो चाहै तो ता सू ॥७४॥ साधन ये ही नांव लै तन
मन पांचूं फेरि जो चाहे दीदा कूं उर अंतर मै हेरि ॥७५॥ छाडि देह
बकबाद कूं तन मन सुरति समेटि जनसेवा सांसो याइ करि पीव पि
यारा भेटि ॥७६॥ सुरति समांणी रांम मे जू नीर समांनौ न जनसे
वा आष्ट वका को समझावै कहो कौन ॥७७॥ जू नीर समानो इ
धमे यू सुरति समांणी रांम इ ज्ञान सब थकि गया कंड बाल भेव
म ॥७८॥ पारस रूपी रांम है कांमधेनि करतार कलप बिरछ जग
दीस है जनसेवा सिरजनहार ॥७९॥ कांमधेनि है हरि आप है सरवे इ
श्रुपार पी वेगा कोई संतजन जिन तन मन के तजे बिकार ॥८०॥
पारस रूपी रांम है सब लोहा कंचन होइ जनसेवा परसै संतजन
सब मन को इ बध्या होइ ॥८१॥ कलप बिरछ हरि आप है कलपनां रहै
न काइ जनसेवा सांसो मेटि करि जे हरि मांहि समाइ ॥८२॥ निस
दिन सरवे रांम रस यी वे प्यासा जन कांमधेनि बछ सो धिले सोंपि
तन मन धन ॥८३॥ बारा मास सरवै सदा कांमधेन करतार जनसे
वा अंतर मैल है बिलसे सुष अपपार ॥८४॥ जो बल गक रमाला दि
रै अंतर मिन न हो आ हि आतम सुमिरण रूप जे तब इज्ञा न आवे ना
हि ॥८५॥ इज्ञा सब फीका लगे तब आतम पावे स्वाद जनसेवा पूग
होइ रहै सब छूटि जाइ बकबाद ॥८६॥ तन मन ऐसे गालीये जू प
ला पिघले घांम इज्ञा कुछ आवै नहीं जनसेवा आतम रांम ॥८७॥
तन मन ऐसे गालीये जू घांम लग पांघूल जाइ जनसेवा आतमरां
म मे येक होइ रन ही दोइ ॥८८॥ तन मन ऐसे गालीये जू पांणी ल्रूण
गलाइ जीव ब्रह्म सू मिलि रह्या इज्ञा कहां न जाइ ॥८९॥ मैला उ
जल दोइ घट येक रैंण येक सूर रैंणी मिलि गया रैन मे सूर समांन
सूर ॥९०॥ मैला सब माया मिल्या उजल आतम रांम मांही सेवा
दमी जनसेवा आठु जांम ॥९१॥ मांही सेवा बंदगी तहां न देषे को
इ तन मन पांचूं फेरि करि जो रोगा जन सोइ ॥९२॥ येक अकेला दे
षीये जे मन येह थिर होइ आ अषंड बिल मै मह्या तहां दूजा न
ही कोइ ॥९२॥

सामै तब आतम को प्रकास ध्यान थी रोग लतैकाठाये तबकरै
जोति प्रकास यूं काया के गुण बीसरे जनसेवा सहज उजास
तनमन सुरति समेटिकै जनसेवा नाइ लगाइ तबादिन दिन मतै
देह गुण सुषमे सहजि समाइ ॥ यह आपणौ स्वाद कू बिसरै म
न कौ नास जनसेवा दास मनसा मरै तब आतम रहै प्रकास ॥
जीव दसा तब जाइगी जनसेवा बिसरै देह यो मन लागै नांव सूं स
ब सुष छूटै नेह ॥ जनसेवा बिसरै नांव कूं तब गुण परगट होइ
जनसेवा नांव न बीसरै तब गुण नांही कोइ ॥ हरि सुमिरत दुष
भलौ सुष सिर लागौ लाइ दुष काननै वारणै पलपल राम कहा
इ ॥ हरि सुमिरत दुष भलौ सुष सिरि बलौ आगी ठ इ सर कूं भावै
नही देमनां बिषै वास रपी ठि ॥ सपति सुष किस काम का रांम बि
नां सब छार साई सुषी संतोषी जनसेवा जाके नांव अधार ॥ जे
नसेवा सोई होइगा जोरची या है राम का है लोक चढाईये हरि सुमि
रौ निहकाम ॥ साहिब कै पारि रोप्याये धीरज धरि बिसवास
जोरची या सो होइगा जनसेवा दै हे दास ॥ ५०५ ॥ इती सुमिरण
को अंग संपूर्ण ॥ ७२४ ॥ अंग ॥ ३ ॥ अथ बिरह को अंग ॥ पीव पुकारै
बिरहनी परमसनेही राइ नैनां देषूं तुझ कूं तब ही नैनां सिराइ ॥ जी
अ जक तनमै जल आगि निसदिन रहै उदास सेवा जन है बिरहणी
ता री तेरी प्यास ॥ परमसनेही प्रीतमां तुम दरसण की प्यास म
चा बिग उम्र होइ रह्यो पूरो त्रिभुवन आस ॥ बिरहणि कन्हैदर
स अंतरि करै पुकार करणा सुणि करणामई हिवै मिलि दे दी
दार ॥ रामसनेही कारणै तलफै मेरा जीव तब जाइ जीव डे जकप
नैणां देषूं पीव ॥ अब मन धीरं धनाधरै दाझ लगी उर मांहि ॥
रदा म की आवत तुम देष्यां नै नां सिरां हि ॥ पीव जीव यूं तपत है
हि ब दरस दिषाइ बिरहनि कूं दीदार दे जनसेवा दास बलि जा
॥ पीव जीव यूं तपत है तलफित लाफि मरि जाइ बिरहणि कूं
दे क्या तेरा घाटि जाइ ॥ मै बिरहणि पीव पीव करूं तुम मिलौ
ही पीव तालाबेली तनमै तलफै मेरा जीव ॥ मै बिरहणि पी
व करूं जैसे कूंज बच्चां हि सेवा जन कूं दरस दे अबल तीआ
सि सहि ॥ तपति न जागे जीव की ना धन ह्यो बिरहा यतन
जीव मे अजक तुम मिलो सनेही नाथ ॥ जनसेवा कि सिह
ाइये सार परम सनेही राइ याह करक साले सदा औदिनबी
ह ॥ या सिब से षारि झारहे जब लग दरसै नांहि तब लग
डे जक नही झाल उठै उरमांहि ॥ बिणि दरसण जीव जक न

२डडषमनहीमांहि कोंण सुणैं कासूं कहूं तलफित
पी मरिजां हि १४ जब लग पीव प्रगटै नहीं तब लग डुषी सरी
जनसेवा बिरह बियोग की जांणैं या पीर १५ हडडषक हैं को
कंसुनि हो मेरे पीव येक मैं लमल गारहो षूं डुषपावै जीव १
जब लग तेरैं नूरकूं नैना देषूं नांहि तब लग हू रिदिसावरी फि
रस्यां कै मांहि १७ कहा करूं कोई जोरनां किसि बिधि मिलाये
१८ तब लगि तुम्हारे दरस की दरसौ मंद लिआइ १८ दरसा बिन बेह
रसाई दरस दे दीदार जनसेवा दास जकनां हि अंतरि बिरह णि
रैपुकार १९ इस कतेरे दरसकी बिरहि दरसण जांकना इ सेवाग
कूं दरस दे हरियर मसनेही राइ २० बिरह लावै मेतन मैं दीनां
थ दयाल सेवाजन कू दरस दे सकल भवन प्रतिपाल २१ जू
गिघन कूं रटैं पीव पीव करत बिहाइ २२ तालाबेली रैंणि दिन
तांहि व दरस दिषाइ २३ बिरहणि कूंरैंणि दिन सालै मन ही मां
है या कर कक लेजा मांहि ला तुम बिन निकसै नां हि २४ कब हरि
रस रंग देकूं कब सुष पावै जीव मांही मांहि बिसरण सुणिपत
पसनेही पीव २५ बिनै ही नैं णां रोवणा निस दिन मन ही मांहि त
न बल तुम्हारे दरस की सेवाजन बलि जांहि २६ डुषीन की जेवा पंजी
था गहो कर हाथ दरद तुम्हारे दरस को दरसण दीजै नाथ २७ दरस
दन भाजै दरस बिणि दरसण बिणि बेहाल जनसेवा अंतर जल
है बरसि बुझावो जाल २८ तालाबेली रैंणि दिन तलफित लगि
जी क्यां इ जनसेवा जीव डै जकन ही कब रामिलो मैं आइ २९ औसर
आवै येक बिणि रामसनेही चित पडरा धुकारै पीडितं जनसेवा द
सा दिन रति २४ मीन डुषी जू नीर बिन यूं हरि बिणि डुषी या दास स
ईं तेरे दरसा बिणि जीव की मिटै न प्यास २५ सीप सरोवर मैं रहै मनें
मिलाप नहीं लेहा यूं हम तुम बिन नां रवैं पीव प्रगट दरसण देहु १
पहली बिरहा आइ है पीछै परम प्रकास ज्यूं सावण मैं तूर जा तपै
तब बिरया की आस २२ बिरह आग मितैं ना लिग लै सब हा कुसमल
२ निरमल मन नयां आरसी तब मूरति मां हि दिषाइ २३ बिरहणि
सदा दे तुम हो दीनदयाल जनसेवा तलफै जीव डै बरसि बुझा
मल २४ सेवा जनकूं दरस दे हरियरम सनेही राइ पाश मिलो कर
णां मई तुम कहां रहे बिलमाइ २५ बिरह बिथा सब दूरि करि नाथ
दैं धन हाथ अबला को बल को नहीं हरि अपणी का रखो साथि २६
औगुण मेरे अनंत हैं कब कूं नलीया नाव औगुण वकसो नाथ जी १७

ही अेसगुणमाप क्तरि हिलिमिलि दरसनदेह ॥७॥ नालाबेली बिरह
नी आसमिलौकरतार यौतनयूंहीजातहै सांभलि सिरजनहार ॥
यौतनयूंहीजातहै तलफितलफितनजीव आरति ऐती बिरहनी
मिलौसनेहीपीव ॥ बिरहणि हेरै पीवकूं परमसनेही आव सब
ही अेगुणबकसकरि साहिबदरसदिषाइ ॥ जागतसोवतरैणि
दिन कलनबलप्यारीसोइ मैप्यासीदीदारकी दरसणद्योहरिमाहि
॥ सबगसांईरमिरह्या औरनमेरैमाइ जनसेवा गजिसाजरिव
रीसो आबनीबनषाइ ॥ नाथनिरंजनतुमबिना मेरैऔरनआस
स्वातिबूंदचात्रिगपावै नांतरमिरैपियास ॥ दरसणदीजेबाप्रभुजी
आबजिनजीवतरसाइ मैप्यासीदीदारकी तुमबिणरह्योनजाइ
॥ नैनांमांहीआवतूं मैवारंहरितोहि कृपाकरोकरुणामई दर
सणद्योहरिमोहु ॥ तनमांहीतबचैनह्वैइ नैनांदेषूंपीव नांतर
यूंहीजातहै तलफितलफियोजीव ॥ बिरहाबियोगीषीणतन
ऊंणांपंजरिसास अंतरिकलबहरिदरसकूं जणतेरहेउदास ॥
तनषीनांमननिंद्रनमनां अंतरिरांमबियोग जनसेवादासहरिमि
लणकौ अबकैबणयौसंजोग ॥ रांमबियोगीबिरहणी हरिबि
णि कछुनसुहाइ जनसेवादासअंतरिजलणि साहिबबेगिबुझाइ
॥१०॥७८॥ अंग॥४॥ ग्यांनबिरहकौ अंग ॥ ग्यांनबिरहतबप्रगटी ज्वा
ला उरमांहि जिसकैलागीसोलषै ह्वाजाणैनांहि ॥ अभिअंतरि
यौंपरजली ज्यौंबन फूंबाकोइ सतगुरदईलगाइकै अबबुनदा
केरूपघराइ ॥ जिसलागीसोजाणिहै सुषसूतासंसार रैणिन
आवैनींदड़ी प्रीतिलगीकरतार ॥ सतगुरमारया मूठिभरिसांधिषि
नकमालि पांचोंथिरथितिपाकडी जनसेवासवैनचालि ॥ अ
गनिसबदमैंप्रगटी करमभयेसबदाह मननिरमलनषआस
जनसेवादासअनलाह ॥ करमपतंगाजालिमबा सतगुरदीय
गजोइ जनसेवासाध्यौसाधिमिलि रहेआनंदाहोइ ॥ दारमध्यां
तैप्रगटी पावकपरबलसोइ करमकजोडैसबजलै सौ जनसेवासं
बसुषहोइ ॥ ग्यांनबिरहबैरागसंगि असीप्रगटीआगि सेवासो
जनकबरै सतगुरदैसंगिलागि ॥ बिरहाआयाअतिनल रोमरोम
केमांहि जनसेवाअंतरनाहिहै तनिदाझ्येकहोइजाहि ॥ ग्यांनबि
रहबेप्रगट्या मिटिगयाभरमअंधार जनसेवाउरआनंदभया अर
सपरसदीदार ॥१०॥७९॥५॥ अथपरचाकौ अंग ॥ रामरमतजहां
सतजन रतधोसहजअबीर केसरिप्रगरगुलालसूं षेलेसंतम
धीर ॥ जनसेवासंतजहांगये तहांबारमासबसंत हिलिमिलि

कै संगिरमे ।निरमलतररसपीवंत २ तेजपुंजपीवपरसीसा जहां
रामासबसंत जनसेवादासतहांरमिरह्या ३ झिलिमिलिहरि
संत ४ निरमलनिरभैसुंदरी निरमलनिरभैपीव ५ तेजपुंजपर
दासमे आतमआनंदकी बुह ६ पीवसंगिषेलैसुंदरीपायोपरम
सुहागा सदाबसंततहांहोतहैं आषंडआनंद दिराग ७ विनबेद
निजहांहोतहै तहांनानाधुनिररंकार जनसेवाषेलैसुंदरी
बीनसेसुषअपार ८ तेजपुंजपरस्याधणी नेणांदेष्यानूरआं
तरमांहीपाईया हमजाणैथेदूरि ९ हमजाणैथेसरिदूरि हैं दू
रैथेकहीमेर जनसेवाअंतरिपाईया तबआयेपांचूंढेर १० मन
सरोवरमुकतिजल मोतीपरमअनूप तासरवरहंसाबसैकदे
नआपेधूप ११ सबदुषसहजैहीगये सहज्यासुनिमैन्हाइ जन
सेवादासनिरमैभया तबआवगतिमयेसहाइ १२ जनसेवादास
दुषसबगये सबत्रमदीयाबहाइ कुसमलजागीनिरमलभयारांम
सरोवरन्हाइ १३ जनसेवादासनिरभैभया पपनयाचकचूर अं
तरदीपकप्यानका तबदेष्याततघांनूर १४ मैंएकपियारानैदीया अं
बआनंनदेखौचितजनसेवादासअंतरिलस्या रांमसरीषा मित
१५ परणब्रह्मपिछांनीयां तबकरमभयेसबदूरि सुषपायादुबदु
रिगया रांमसकलभरपूरि १६ आहंब्याधिदुषसबकटे जेजीव
जेयैक तबलगयेकनकपसे तबलगपचेअनेक १७ रांमसरोवर
न्हाइमनदुषसुषरालाधोइ अगमसुषतहांषेलीयेजोणैगा
जनकोइ १८ मनकूंतहांलगाईये जहांदोऊनपडहीरातिआवै
सुषआणंदघणां बरणन्हातहांजाति १९ मनकूंतहांलगाई
ये जहांअलषनिरंजनआप तिहिंसुषिलणसंतजन जहांको
ईनव्यापेताप २० अगमतहांगुरगमकरी तहांमनकीयानि
स झिलिमिलिझिलिमिलिहोतहै ताषुषमांहीबास २१ मनकूं
तहांलगाईये तहांपडैतेहैसंत जनसेवातिहिंसुषिषेलीये
झिगिमिगिमासबसंत २२ अंतरिगतिल्लेलाईये पांचूंराषेहाथि ज
नसेवादासतबपाईये निकटिनिरंजननाथ २३ भावभेवनाके
नेही प्रगटतेजअनंत जनसेवादासताषुषमे झिलिमिलिषे
लैसंत २४ मनकूंउलटिलगाईये निकटिनिरंजनराइ प्रेमपिय
लारांमरस पीवतहीसुषदाइ २५ सहजिसुनिमेरमिरह्यासोआ
पकसबघटमांहि जनसेवादासतहांषेलीये जहांकोईगुणनां
हिनांहि २६ हरिसरवरजहांषेलीये जहांबिणिकरवांजेवाणतिहि

हीऔगुणमाफकरि हिलिमिलिदरसनदेह ॥ ७ ॥ बालाबेलाबि
नीआसमिलोकरतार यौतनयूंहीजातहै सांभलिसिरजनहार
यौतनयूंहीजातहै तलफितलफितनजाव आरति अंतीबिरह
मिलौसनेहीपीव ॥ बिरहागिहरैपीवकूं परमसनेहीआव सब
हीऔगुणबकसकरि साहिबदरसदिषाइ ॥ जागतसोवतरैणि
दिनकलनबलम्हारीसोइ मैप्यासीदीदारकी दरसणद्यौहरिमो
॥ सबगसांईरामिरह्या औरनमेरैनाह जनसेवागजिसाजरिच
रीसोआबनीबनषाइ ॥ नाथनिरंजनतुमबिना मेरैऔरनआस
स्वांतिबूंदचातिगपावै नांतरमेरैपियास ॥ दरसणदीजेबापजी
आबजिनजीवतरसाइ मैप्यासादीदारका तुमबिणरह्योनजाइ
॥ नैनांमांहीआवत मेतरसहरितोहि कृपाकरोकारणभई दर
सणद्यौहरिमोहि ॥ तनमांहीतबचैनव्हेइ नैनांदेषूंपीव नांतर
यूंहीजातहै तलफितलफियोजीव ॥ बिरहाबिवोगाषीणतन
जीणांपंजरिसास अंतारिकबहदिरसकलगातेंरहैउदास ॥
तनिषीनांमनिउनमनां अंतरिरांमबिवोग जनसेवादासहरिमि
लणकौ अबकैजणौसंजोग ॥ रांमबिवोगलिबिरहकीहोरैबि
एकछुनसुहाइ जनसेवादासअंतगिलगिसाहिबबेगिबुकाइ
॥ ७ ॥ ७८ ॥ अंग ॥ ४ ॥ ञांनबिरहकोअंग ॥ ग्यांनबिरहतबऊपजीका
लजबाउरमांहि जिसकेलागीसोलषैअजाणांनांहि ॥ अमिअंतरि
यौपरजलीलषैनदूजाकोइ सतगुरदईलगाइकेसबबनदा
झपरोइ ॥ जिहलागीसोजाणिहैसुषसूतासंसारैतिन
आवैनीदडीलीतिलगीकरतार ॥ सतगुरमारयामूझिनैसांधिपूरि
नकमालिषांचोषिरषिति षाकडीजनसेवासकैनचालि ॥ अ
गनिसबदमैपरगटी करमभयेसबदाह मनानिरमलभयाआसा
जनसेवादासअजलाह ॥ करमपतंगाजालिमूवासतगुरदीप
मजोइ जनसेवासाधांसांथिमिलि रहैआनंदाहोइ ॥ दारमध्य
तैंप्रगटीपावकपरबलतोइ करमकजोडेसबजलौजनसेवाप्र
बसुधहोइ ॥ ग्यांनबिरहबैरागसंगिऐसीप्रगटीआगि सेवासो
जनकबरेसतगुरकैसंगिलागि ॥ बिरहाआयाचातिमलारोमरोम
केमांहि जनसेवाअंतरनांहै तपिदाइयेकहोइजांहि ॥ ग्यांनबि
रहबैप्रगटीयामिटिगयाभरमअंधार जनसेवाउरआनंदभया अर
सपरसदीदार ॥ ४० ॥ ७९ ॥ ५ ॥ अथपरचाकोअंग ॥ रामरमतजहां
संतजनतंधौसहजअनहदकेसरिअगरगुलालतूंषेलैसंतग
धीर ॥ जनसेवासंतजहांपाये तहांबारामासबसंतहिलिमिल्लि

के संगिरमै निरमलरसपीवंत २ तेजपुंजपीवपरसीया जहां
बारामासबसंत जनसेवादासतहां रमिरह्या ३ झिलिमिलि हरि
संत ३ निरमलनिरमै सुंदरी निरमलनिरमै पीव ४ तेजपुंजपर
कासमै आतमआनंदकीव ५ पीवसंगिषेलै सुंदरी पायो परम
सुहाग सदाबसंत तहां होत है अषंडआनंद दिनराग ६ बिनबेद
धुनि जहां होत है तहां नानाधुनि ररंकार जनसेवा षेलै सुंदरी
बिलसै सुष अपार ७ तेजपुंजपरस्या धणी नैणां देष्या नूर अं
तरमांही पाईया हमजाणै थे दूरि ८ हमजाणै थे सूरि दूरि है ढूं
ढे थाक ही मैर जनसेवा अंतरि पाईया तब आयेया चूं गौर ९ मान
सरोवर मुकति जल मोती परम अनूप ताससरवर हंसा बसै कंद
न आपे धूप १० सबदु षसहंजोहीगढ़ सहज सुनि मैन्हाइ जन
सेवादास निरमैनया तब अबगति भये सहाइ ११ जनसेवादास
दुस्व गये सब न्हायदीया बहाइ कुसमल तजी निरमल भया राम ५
सरोवर न्हाइ १२ जनसेवादास निरमैनया पपन याचक चूर अं
तरिथपक पानको तब देष्या नूर १३ मैयक पियारा नैटीया अ
वसांन नदेज जीवित जनसेवादास अंतरि लिसा राम सरीषा बित
१४ सरण्ण ब्रह्म पिछांनिसो तब करम न्हयेसब झूरि सुषपाया दुषदू
रिगया राम भक्त भरपूरि १५ आहंब्याधि दुषसब कटै जे नरशिष
नेवेक तबलगयेकनऊपजै तबलगपचैअनेक १६ रामसरोवर
न्हाइमन ऊपसुषरासाधोइ अगमसुषतहां षेलीये जाणै गा
जनको इ १७ मनक्ं तहां लगाईये जहांद्यौसन पडै हीराति नाँ है
सुष आणंदघणे बरणन्ही तहांजाति १८ मनक्ं तहां लगाई
ये जहां अलष निरंजन आप तिहिं सुषिलणं संतजन जहां कै
ईन्यापै ताप १९ अगम तहां गुरगमकरी तहां मनकी या निवा
स झिलिमिलि झिलिमिलि होत है तासुषमांही बास २० मनकूं
जहां लगाईये तहां पड तेहै संत जनसेवा तिहिंसुष षेलीये
गुणिग्रुणि मास बसंत २१ अंतरिगति लेलाईये पावूं राषे हाथि ज
नसेवादास तब पाईये निकटि निरंजननाथ २२ गावगेवज्ञाके
नेही प्रगटे अनंत जनसेवादास तासुषमैं झिलिमिलि ये
लैसंत २३ मनकूं जलटिलगाईये निकटिनिरंजनराइ प्रेम पिय
ला रामरस पीवत हीसुषदाइ २४ सहजि सुनिमैं रमिरह्या सो अ
पक सबघट माहि जनसेवादास तहां षेलीये जहां कोई गुण ना
हिं २५ हरिसरवर जहां षेलीये जहां बिनि करवा जैबीण तिहिं
सुषिषेलै संतजन करमनरयेसब षीण २६ जहांतहां पाणी पीजी

हरिसागरकी तीर जनसेवादास दुष सबमिटै निरमल होहि
सरीर २४ हरिसागर हंसा रमै चुगि चुगि मोती षाहि जनसेवाद
सता हंसकू कालचोट मै नांहि २ हरिसरवर हंसा रहै मांहा केलि
करांहि परमातम स्त्रं आत्मा सहज सुषा बिलसोहि २ सहजस
रोवर सम रतता अगम वारन ही पार रोम रोम मै रमि रह्या करन
हार करतार २ सदा मगन आनंद मै सहज रूप परकास ज
नसेवादास ता सुष मै षेलै हरि के दास २ नैन बैन ना हिरदै रहै परमा
नद स्वरूप रोम रोम मै रमि रह्या अबगति अलष स्वरूप २ परम म
तेज परकासीया झिलमिलि देष्या नूर पेरा मन तहां बिलंबीया
सो राम सकल भरपूर २ जनसेवादास मन उलटि करि तहां क
या बिसराम सुषा बिलसै संगि पिव के अति कोमल सुष धांम २
मन पवनां अर सुरति मिलि बणा अनहद नाद जनसेवा धुनि सु
नि श्रवणां सुणि बिसरे बकबाद २ जहां अमरा ति कोई आतिन
झिगिमिगि जोति प्रकास ससि मति वाल अंतजन निरषै नर निवा
स २ बेगमपुर तहां गम करी सतगुर के परसाद गुणा रहत निरगु
ण ब्रह्म जहां नही बकबाद २ बेगमपुर हां गम नही लहै सत
गुर तै भेव जहां बेद स्मृति दीनै रेणा नां तहां निज अबिनासी देव २
जहां निंग्रही दीपक चो दिणा बिण ... कुणकार जनसेवा
तहां मन बिलंबीया बिलसै सुष अपार २ भावभगति के सरि तहां
सधौ साध कबीर नांमा पीपा अरु धना षेलै दास कबीर २ भाव
गति के सरि तहां सधो सहज कबीर तहां अबिनासी चरावि है सन
मुष षडा कबीर २ सुषा सेंधि निरंजन पै कुरि फूलै हरि के संत ज
नसेवा तहां कोई दुषनां चुगि चुगि मास बसंत २ जहां अनहद ब
जा बनीया परम जोति परकास जनसेवादास ता सुष को कोनी
रषै निज दास २ जनसेवादास मन लीण हं गलि करियाणी हो
इ तब एक ही केला रमिया दूसर नांही कोइ २ आदि अंति मधि
एक है येवा [illegible] जनसेवादास ता सुष मै तहां लुनां सो
नेन २ अंतरि अबगति सै रयै तन मन चंदन लाइ पांचू पहोप
चढाइये भाव भगति लै लाइ २ जनसेवा कल संतोष करि पा
नी प्रीति च हाडि पी धावन निरमल नाव ... कर मन रम सब ताडि
२ सुरति आरती साझि करि ग्यांन दीप लै जोइ पांचू पहोप चढाई
यी जनसेवा निरमै होइ २ साल मंजरी कारिसे वला अनह
द घंटा बाइ जनसेवा सेवा सा वक देव अलष निरंजन राइ २
संजम चौका सा कीये मन माला पहराइ अवंड आमृराति दे

रहै जनसेवा तहां चितलाइ ४९ जनसेवादास आंनंद सदा
नहीं जनम मरण दुष दोइ तहां हमारा बास है पहुंचै बिर
ला कोइ ५० जहां चंद सूरकी गमन नहीं तहां उडगण नहीं प्रका
स पवन पावक पाणी नहीं तहां मै निजदास ५१ आनंद
आनंद सदा सहजैं सदा प्रकास जनसेवादास वा धाम मैं पहुंचै
को निजदास ५२ सहरनां बेगमपुरा बसैं सबेगम होइ जन
सेवा तहां सुष सहज का पाप पुनि नहीं दोइ ५३ उलटा मन फिरि
दषीया झिगमिगि ज्योति प्रकास अनंत सुष तहां दुष नहीं म
न तहां कीया बास ५४ परम सुष तहां मिलि रहे हिलि मिलि
लैसंत आवागमन तहां बिलंबीया जहां बारामास बसंत ५५ आ
तरियैक प्रकासीया छूटि गया सब क्रम कुंभ ढल जल मैं मि
ल्या यूं संत समांना ब्रह्म ५६ जहां ऊंच नीच कुल जाति बरण
नहीं तहां गुण तीन जहां पाप पुनि कण को नहीं तासु षमां हीं ली
न ५७ वार पार कछु तिनहीं कहीये कहा बषाण जनसेवादास
तासु मैं आवागमन रहीं समाइ ५८ दीपग देष्यो बेक तहां अ
सहज परकास चहूं दिस चमके दामणी को निरषै निजदास
५९ सकल न रम सहजैं गयो तब आतम कंवल हरषत यो बसि मि
लै सुंदरी जहां बारामास बसंत ६० बिरला कोई न लषै आ
रां की गमनां हि जनसेवा सहजैं रमि रह्या ररंकार धुनि मां हि ६१
जहां चोवा चंदन सहज सुष तहां रमै निज संत जनसेवादास
तहां षेलीये जहां बारामास बसंत ६२ सरितर वर तहां अमरफ
ल बारामास फलंत कैकाई लभै नहीं हरिजन तहां बसंत ६३
बिणि बादल बिरषा सदा तहां बारामास अषंड चहूं दिस च
मकै दामणी गगन गरजे ब्रह्मंड ६४ अनंद मांमां बाजीया
रोमरोम आनंद हिरदै कंवल प्रकासीया प्रगट्या रमानंद ६५ बि
णि ही दीपग चांदिणों बिणि सूरज परकास जहां सबदां ठी
ड तहां तहैं तासु षिषै लै दास ६६ सेज मैं सुषि सुंदरी पायौ प
रम सुहाग हरि आपणी करि आदरी देषै पूरण भाग ६७ जनसे
स वादास सतगुर मिल्या दीया भेद बताइ ध्यान इहण साहि फि
री सी धन दुहाइ ६८ जनसेवा नाथु प्रीति करि बगणा हिली
धी कनि चारो धारि करि इंहण क्रंनीया ६९ निबंध चौला ब
णी इहण बेयसंत जनसेवादास सतगुर जी हि मिल्या तिहि पायाल
गी हा तान्हू गुण दीया तपारध त्याय ७० इ बूहन्न

हरिसागरकी तीर जनसेवादास दुष सब मिटै निरमल होहि
सरीर २८ हरिसागर हंसा रमे चुगि चुगि मोती षाहि जनसेवा
मता हंस कू काल चोट मैं नाहि २९ हरिसरवर हंसा रहै मांही के
करा हि परमातम सू आतमा सदा जु सुष बिलसाहि ३० सहज
रोवर तत्त भरत्या अगम वार नही पार रोमरोम मैं रमि रह्या का
हीरक रतार ३१ सदा मगन आनंद मैं सहज रूप पर कास ग
नसेवादास तासुष मै षेलैं हरि के दास ३२ नैन बैन नाहि दे रहै पर
नंद सुष रूप रोमरोम मैं रमि रह्या अबगति अलष रूप ३३
तेज परकासीया झिलमिलि देष्या नूर मेरा मन तहां बिलंबी
सो राम सकल भरपूर ३४ जनसेवादास मन उलटि करि तह
या बिसराम सुष बिलसै सगि पवके अति कोमल सुष
मन पवनां अरस रति मिलि बाणां अनहद नाद ३५ जनसेवा धु
ने श्रवणां सुणि बिसरे बकवाद ३६ जहां भ्रम अति कोई न
झिगिमिगि जोति प्रकास सासि मति वाल संत जन निरषैं नर
स ३७ बेगमपुर तहां गम करी सतगुर के परसाद गुणा रहत
ाकुल जहां नहीं बकवाद ३८ बेगमपुर तहां गम नहीं ले
गुरतै मेव जहां चंद सूरा दिन रैणि नां तहां निज अबिनासी
जहां झिलिमिलि हीरा दीपक चांदिणां बिणि कला रिधु णकार ज
तहां मन बिलबाया बिलसै सुष अपार ४० भाव भगति के स
सू धौ साच कबीर नांमां पीपा रैदास धना षेलै दास कबीर
सू धौ साच कबीर तहां अबिनासी चर
गति के सरि तहां सू धौ सहज कबीर तहां अबिनासी चर
मुष पंडा कबीर ४१ सुषासि धि निरंजन पैं करि फूलै हरि
नसेवा तहां कोई दुषनां चुगि चुगि मास बसंत ४२ जहां
जा काया परम जोति परकास जनसेवादास ता
रसै निगदास ४३ जनसेवादास मन लीण भाव भगति की
इ तब येक अकेला रहिया दूसर नांही कोइ ४४ प्रा
ये कहै येक व आनंद परम सौन जनसेवादास तासुष मै त
नैन ४५ आतम अबगति सं सी तन मन चंदन लाव
वहां दै भाव भगति ले लाइ ४६ जनसेवा कलस सं
ताप्रीति चहोडि पी पांवन निरमल नांव सत का रम ल
४७ सुरति आरती मां झि करि पांन दीपल लै जोइ पांचू
ये जनसेवा निरमै होइ ४८ साल मंजरी कारिसे
द घंटा बाइ जनसेवा सेवा सावक देव अलष
सं जम चौका साकीयै मन माला महराइ आ

ना॥२७॥ राम कहत राम ही मिले जनसेवा अंतरि रहै न काइ॥ औ
सें बूंद समंद मे मिलि गई यों केन्यार॥२८॥ सकल लखा घसहजो क
टे रसिजरस नां राम जनसेवा निरमै ई रहे सुधरे सब ही काम॥
२९॥ राम बिमुख जग सब मरे भजे न केवल राम॥ जनसेवा केवल
हरि भज्यो सुधरे तिन के काम॥३०॥ नाम कबीरे दास कू दियो न
र मिलता इनां व प्रतापि निरभै नयां फिरि जगन जनमें आइ॥३
१॥ नांव न छाड्यो पग बंध्यो असुरां के घरि आइ॥ पिसण जकेन
प छिगये दीयो जन प्रगानि जलाइ॥३२॥ जे कोई पीवै राम रस जो रस
नां पावे स्वाद कबीर कसोटी नां लगी देषो जन प्रहलाद॥३३॥ ध्र
ध्रूसा हिलये कही अमर हो इन ही नास नांव सजीवन निघह
ना कटे नी चकी पास॥३४॥ ता तम राम न बीसरे सदा रहे ल्यो लाइ
जीव ब्रह्म में यूं मिले ज्यूं दरीया बूंद समाइ॥३५॥ जो पद हरि क
नांव है रोगी सब संसार जनसेवा दास गोबिंद नजो तब ही मि
टे बिकार॥३६॥ जनसेवा दास वा पद नली जे कोई जाणे या इ पाव
तही सुख रूप जो जुरा मरण नै जाइ॥३७॥ जनसेवा दास तें ईमूंये
नहीं न जाणो राम राम जिन्हें ही जाणीया तिन के सरे सब कांम
॥३८॥ ... राम रस जाण न रसि न रिपीया सेवा ते जन जुगि जुगि
या अमर न ये अबिनासी पाया पाइ॥ इतस्याहि समाया॥४०॥
मरसा इन निमक्न सारा पीया तिन के कटे बिकारा जनसेवा द
स सुख सागर कूले यावत क्या नांव न हीन्हूले॥२०॥ ...
...न ... सब अगनेरा कहत है चोरा करि मा ने
राम न का चोरीयां तन सैं न ही जाने॥१॥ पांचूं सरि नहीं होत है मे
सबल अनाथ तुम साई समरथ हो करगा हि रापो नाथ॥२॥ मैं
निबल सबल है पांच मुसताइ गांठी तुम किरपा तें राम जी
दरस न ना जो॥३॥ जनसेवो कहै सुणि बापजी मैं बिषे मगन बु
हो॥४॥ पार उतारो रामजी बिड दआपणों जाणिअ॥ बिषे मगन
मनरत नां वन तेरा लेहू पतित उधारण हम सुणि बिडद तु
रा ये हूं॥ हम तो निरबल कुल नहीं उपान जोग कोई स जनसे
आपणां जाणि करि मारि करो जगदीस॥६॥ मन यंद्री निग्रह तप
हीन नामै रे साधन और ये कतुम्हारो आसिरो तुम बिन ना
और॥७॥ नामै रे सील न साच है ना भैल यानां वा बिडद निब
एजगत गुर जनसेवा में बालिजा वा॥८॥ सतो षन जरणां त्यागे
मोबल नांही ई सा सेवा दास जन बान वे तुम सरणे जगदीस
प्रहलाद जन तें गुसांई मुझ मे गुन्हा न आवे बोड मुक देषता ते

छम नि पवनातिराइ गुरका सबद जांवण धरे इसि बिधि दही
जमाइ ॥ ७२ ॥ तत अमृत की कारि सेवला रर करर ईगयां हिमत
ने तो कारिला जी थै प्रांण बिलोवै मांहि ॥ करमथा हो निरपु
रिकरि माषण लीया सोधि जनसेवा निर्मे मिथ्या सतगुरके
परमोधि ॥ गुरसबद जन सेवला तांवण देत वे जो छो करहर
विचारकी तबहीं सचपावे ॥ जनसेवा सिलता सिंधमें मिलि
गइ थिके नाइ यूं संत मिले जा हरि मे इगा कद्या न जाइ ॥ गंगजू
मन बिचि सेवला आमी कुं ऊंहै साइ तामें न्हावें संत जन तनम
न के कुसमल धोइ ॥ ७८ ॥ इती परचा को अंग संपूर्ण ॥ ७४ ॥ अथ
राजीवनिको अंग ॥ जनसेवादास सतगुर दई वोषद ये क अनूप
पावत मिटे बिकार सब पलटि कीये सुष रूप ॥ जनसेवादासओ
षद गुरदई पीवत अये निहा
ल ॥ रोग बडा दासू बडी जांणि दई गुर दे जनसेवादास बेदनि
गई पायाअलप अभेव ॥ वोषद जब अनूप गुर हरि दे दई लष
नाम
इ जनसेवादास अबसुषतया सुषमेरह्या समाइ ॥ रामनाम
बोषद अजब रमे तो तूटै रोग ताघटमें ते दे नही जाघाटिसां
सो सोग ॥ रामसजीवन वोषदी लेराषै मन मांहि जनसेवा सुष
होइ प्रांणमें कोटि बिघन टालि जांहि ॥ रामसजीवन वोषदी
लेराषै मन मांहि ॥ और बिघन व्यापै नहीं चौरासी दुष जांहि
॥ जनसेवादास हरि सुमिरतां कोटि बिघन का नास याही वो
षद सति है जे मनि आवे बिसवास ॥ जतन करै नही पारिपक्व
को तो वोषद दोस न नांहि जनसेवादास छाडे नही कुरी बिधा
मन मांहि ॥ रामनांम जिन वोषदी सूचि पीवै जे कोइ जनसेवा मरै
न जनम ले कलि अंविर होइ ॥ रामअमी रस जिहि पाया ते
अमर भये संसार जनसेवा सब दुष कटि गये नाइ तणे आधार ॥ जनसेवा
जो हरि मुषि राम रट्यो नहीं ते मरि मरि जांहि संसारि ॥ रामा बिमुषके ते मरे मारिम
री हरि ममो ते अमर भये लोया रि ॥ रांमा बिमुषके ते मरे मारिम
रि आवे जांहि जनसेवा ज्यां हरि रस पीया ते हरि ही मांहि समा
॥ अषे अमर पवगति है अषे अमर होइ दास जनसेवा हरि रस
पीया ये करि करि मन में प्यास ॥ हरि अमृत रस जिहि पाया को
करि मन में प्यास जनसेवा मरे न जनम ले अमर भये निजदास
॥ लीन भये हरि नांव मे भये सजीवन दास जनम मरण दुष
बकट ओमै अमर पुर बास ॥ नांव सजीवनि जिहि पाया ते
ये सजीवन थांन जनम मरण दुष तानिस है जो हरि तां जी लागे

तबदेह७।समचितहरिंगरतजन नहीजगतसंनेह।जनसेवादास
तासाधसंकाजे।नितिसनेह६।ग्यानभक्तारीकोमजितअाचाह
मांनजनसेवादासधनिसाधवैलगेनांवनबान ९।समदिसीसुस
लताअसाधिरमनसुषअनूपजनसेवादासधनिसाधवैपरतबि
अवगतिरूप१०।समदिष्टीमनासिधजनासीलसाचमेकाइजन
सेवादासवासाधको दरसणकीजेजाइ११।सतवादीसतिदांतजन
सुषदाईसतिसील सावधांन जितआतमां।सेवाजनअमीलीरसं
तुष्टीजितआतमां तजिआपोनजिरमेजनसेवादासतासाधको।
निलेपदाबिसरोमर१३ सुनर्मेनजाकेनहींअभुमयेकसमांनउदा
सीनअनपेषता।कवारहैगलतांन१४।अनपेषीआपामुसेआनिन
भावहकबोरआनदिसाचितवेनहीजनसेवादासतेयार१५।अ
नभावअंतविसेहरिबिणिकछूनसुहाइसेवादासजनजगमे।
जिनहरिसमिनाही१६।ग्यानसहनगंभीरताग्यांनीगुणअछेतास
दासजनजगमेहेंपामेस्वरदेह१७।संतमिलेतबहरिमिलेकीय
जनप्रकासंसेवातेजनजागयेमांनूरविउजास१८।पालपालि
पांलीन्याउरिग्यांनजांणप्रकासजनसेवादासआनंदनयाच
रिचरणांमांहिनिवास१९।संतसमांनावृत्तमेंमुकुंडलकिन
लीरइजाकछूनदेषीयेयूंनीरसमांनांनीर२०।नीरमिल्याजाइन
रमेयूंआतमसतिजांनिजनसेवणपांनबिचारिकरिकवारहैगल
तांन२१।अंतरकछूनपाईयेयेकमेकह्रोइसंतामसरांगलिप
णीमिलापिगसकछूनहीभेद२२।भावहरिकानांवहैपीसुष
सिधसमाइयेकमेकह्रोइमिलिरह्याइजाकछानजाइ२३।जन
सेवादासतासाधको।बुधिसुषासिंधसमाइयेकनइजाकाक
हैअबकछूकह्यांनजाइ२४।परपूरणजनकोदिष्टिध्यावाह
कछूनांहिजनसेवादासयूंजांणिकदिनिरमैहरियदमांहि२५।
हरिसुमिरणसुषगरिधरैरहेबिषैतेंदूरिजनसेवादासतासधस
अवगतिसदाहजूरि२६।बिषीयातजिबिषजांणिकेंगहेछिम
दयासंतोष।हरिअम्रतरसपीजीयेसहजेसाधूमोष२७।मुकति
मंकससेनहीतजिबिषइम्रतपावजनसेवाकोटांनग्यानयूंजे
नपलटिहोइसावर२८।नितकांमीजनन्रमलासंतिसुषीअनुरा
गमसेवावेजनजबमिलेंतबहीमाथेभाग२९।रामनांमलागा
हेंआगैपहरखेहजनसेवादासधनिसाधवैजिनकेवरतनयेह
३०
वेदकवारहैगलतांन३१।

धूसोइ जनसेवादा । संतासाधकूं गंजिनसकैकोइ ॥२३॥ गुण
ग्राहीसो गुणतजै समदमसाधनमांहि अधिकारी गहैपानकूं
तबदेत नाबमेंजाहि ॥ सरधागुगतिनिरसंस ॥ साबधानम
नधीरजनसेवालछिनसाधके सोजनसुषीगंनोर ॥ बीतरागउ
दारचितनहिकंचनन्रबांनी दयादीनतादिलबसैजनसेवातेग
लतांन ॥२५॥ बिवारबमकहिरदैबसैधीरनीतिधरिध्यांनजन
सेवादासबिसवासगहि नमकीरसकैनपांन ॥ आसोयकअल
षमेरहैनिरंतरलाय जनसेवा ऐसेसतजन पाईयेपूणनरी
॥२७॥ परपोषेआपापुसे परउपगारीसंत सेवातेजनजगमेसब
तजिरहैयेकंत ॥ हरिसरातेसोजन मनकूं करियेकंत सेवा
जननिरमैथका जगमाहीबिचरंत ॥२९॥ भावगतिकुसगपांनमे
मनकरिरापेलीन जनसेवातधनिसाधके नाहकंदीनअधीन ॥
३०॥ निसप्रेहीनिनसाधसो मोक्षनिरासेमांहि आत्मत्रिपतिमन
मरो ताससभिकोऊनाहि ॥ आत्मकोपरकासज्यूं तासुत्रिपति
तिमन जनसेवादाससबसंपदा तिणसमिदेषेजन ॥ भयेभाव
हीसमचितसांतिसबदनिरलोभ जनसेवादासधनिसाधवे जग
मेजीवनमोष ॥ काटेबंधनमोहके गहिसुभिरणकी टेक जन
सेवादाससतासाधके रावरंकसबयेक ॥ रहैनिरासीनावरीमुष
तैकहैनधोर जनसेवादासधनिसाधवे जिलराबेषांहुगैर ॥
…तरिजिफजयोकोमकुटीमांहीइहि मनउनमनिलपारै
टेविचारयासं पिछि ॥ पासउसासेजापजपि मनबदनमांहि
छेदसंतरहतिबांनीनहीं सीलचमकैवेद ॥ सीलसंतोबसुषउ
रधैधीरजधात्यांनन बिषीयातजिनजिरामकूं ज्यांनपरमलक
ष्यामन ॥ पापीजितयइज्याण सहजरूपसमिलाइ निरअस
मीनिरवैमनेजनसेवादाससबलगाइ ॥ निरमांनिरबंधनिर
गुणदसा मानअमानेजीति जनसेवादासधनिसाधवे इकपरबू
लसंप्रीति ॥ सबघटदेषेआत्मा सरबंगीसोस्याधनिक
जेनाहींनदीयातेबालअगाध ॥ सबघटिदेषैरामहीइनादेषे
नाहि जनसेवासाधूसमा सितआतममोरदियाहि ॥ सबघट
देषेआत्मांइसिनमेदरसेमोर सूंवतदरसा जनसेवा जग
माहीजनधार ॥ कालीलाइसतजन लगेनहीरंगज्ञांन जन
सेवादासयेकअलषको सदानिरंतरध्यांन ॥ प्रांणतेषोपीति
नांषतेहरिजिनकअगाधासहरिविसतरीसोधिलेजनसेवात्रे
मप्रकास ॥ बोटाकाटिनसमाकी जलमेदईबहाइ लेलाय ।

।पद ऐसें साधू हरिजन कौ। अतित प्रीति
उपाइ।तन मन सुरति समेटि करि अंतरि रहै लौ लाइ ५७। नांका
हू सरबेर ता मोह न बांधै साध रहै निरासी ना बरत। जन सेवा बात
अगाध ५० नेह न बांधै भ्रात सुं इष्ट सुत तन स हित नेह। निरदावैं
रखुण दसा रांम न जांन कलि लिह ५९ एदावैसा फणि रानहे। निरदा
वै सुष चैन। जन सेवा दास निरनैष का अजीसै ब गाति जैन ६०।
दावै मै सक जानले, निरदावै को ऽ जन। जन सेवा ता मही हरिजन्नौ
करि करि निरमल मन ६१। निरमोही निहकपटता। निरलोभ सु तीं
माध। जन सेवा दास असा कोई ताका मता अगाध ६२। साग्याही सु
ह रता सरबंगी सम भिनाइ। जन सेवा दास सब आतमां थे कतू पद रस। (
६३। सासी सौ चूके अपां न तेतव अंतर के पट दूरि। जन सेवा दास परक
स सोयेक रांम न रपूरि ६४। अहं संसै का ग्रंथि ता जिकरम कसरस
षबाइ। जन सेवा साधू निरमला मलन री लागे काइ ६५। निहपरव
री निहत रंग। निरसंसै निरलेप। जन सेवा दास ज्ञल रहे उरौं तजे प्र
लेप ६६। लोभ मोह चा नितनन तजि गाहि सु मिरन टेक। जन सेवा
दास धनि साधवै जिंपरस्या अवगति येक ६७। जन सेवा दास सोई सत
जन आपा न जनावै। आपा मेटै हरिजजै सोई निरभै पद पावै ६८। जै
गुण ता मिगुण हमगहै मुष ऐसे तिबाणी। जन सेवा दास ता साध की
बिरले गति जाणी ६९। अहंसर सैंअ क्ति धता। निरबैर सांतत तरूपा
गको मल हिरदै दयावसै ऐसे साध मिलें बड भाग ७०। यंद्री थिर म
न बसि करै निहचल सुमरै रांम। जन सेवा दास ता साध का सरै सह
स कांम ७१। संजम समता सील सच दया सबूरी धारि। जन सेवा दा
स गुरु अपां न गाहियां चूं वैरी मारि ७२। परनिंद्या करै न सां जलै हरि
हिरदै दिन राति सेवा ते जन निरमला नहीं बंधावै ष्याति ७३। लैण
दैण पाप पुनि तजि जन मुकता होइ। जन सेवा दास गो बिंद न को
निग जन कहावै सोइ ७४। साधू आरंभ ना करै रहै निरालंब राइ दा
स जन सेवा आसो आलय मैं साहिब पुर वै आस ७५। निरबासी अ
लंघ रहत सुबंद जन सोइ पवन परारंभ बासिपा तन न बिचरंता
गुणि जोइ ७६। सुष दुष सम जाणी करै आतम अंतरि लष हरष स
ग ता तपां न गाहि ते जन लदसबंध ७७। इष्ट कुक मां नि अमां नि मैं जे
मन राषै गैर ता हरि बिणि आन न उवरै ते जन ना सिर के मोर ७८। इष्ट सु
ष मांन अपमांन मैं सदा रहै रस येक। जन सेवा साधू सो निरला गाहि
गुरु अपां न ब मेक ७९। जा णै मंथ्या देह कूं देह करै गुण गत मूरिष
नादे देह कूं साधू आतम रत्त ८०। निसनांत मिजनन्न मलां लेगत

समटैकाजनकोइपालीनांडौवो द्रिमुष घोल्यांक्यातुषहोइ।५
कैजनरहैअघाइवैं स्वआलतुषचैनरामरामसुषकपजै तवबै
बोलैबैन॥०६॥ बेदैस्यांस्रू हितनहीं॥निदकसनहीकोपृजे
नसेवादासबदनीकवैतेजनजगमेंआयं०७ वसुधाज्यूंमनथि
रहै।निरमलज्यूंआकासनांकाकू किविनसांच्यौ जनसेवातेध
निदास०९ जोजनराचेरामरंगि इक्सारंगनमाउसोईसाधसैरी
मणीसेवाजनवलिजाइ१० ऐसोरंग।हरिजनकामतयेहधनमद
अंधनेषांणीयांत्यासवैरैनहरामरतनजिनजांणीयां१२०जो
गमेंकुलनयेहरामनजनअरसाधसंग बहोडिनधारेदेहजेगरि
लागैरांमसंग११।रांमसनेहासाधरंगितेरेहीराचहीयातोबात्अ
गाधबहोडिनतनधरिनाचही।१२जोजनरातेरंगपीवकूपलक
नवीसरैसोजनतेरैसंगिसोन्यारोमूनीसरै१३सुषसिधमारू
यीरांमसाधूनदीयारलिमिली।नितनैनयेनिहकांमभनकीमवपूरी
रली१४।साजीकवरूडुषपावैनहींजनसेवाहरिकेदासअम
यसांईसीसपरिसवबिधियुदेआसर१६।जगतबिषेसुषदेषिक
रिहरिजिननांहरषतामनिमतिवालरांमरतिजनसेवातेनिजसंत
१७।जगतसवेभोगणकरै।हरिजनधारैनांहि।जगपारैधुनिध्यो
नमेंधनिवेजनजगमांहि१८।रागदोषजाकैनहीरहैकलपनासु
निश्चंतरिहसिसुमिरणकरैगह्यारहैमुषमूनि।१९।आपापरमै
निनांगिरैसवघटदिषैब्रह्मजनसेवातेधनिसाधवै।लिंनही
कोईकम२०हरिजनहंसदसारहै निरमलनावकुवो।करमभर
मसबछाडिकरिइकनिरगुणनाइलगै२१।साधूसुमिरैरांमकूं
जगासवसुमिरैपानजगबकुलौमायामाहैजनकेरवसकैथ
न२२।निरमलनावबिनासबेओरसबमायादेषासाधूसुमि
रांमकूंमनजगइतोबसेष२३जनसेवादासजलतैंनयापातैं
मोतीदेषजगाबिनसैजनाथिररहैजनजगइतोवसेष२४ज
गतुमपालौतेजतैं बिडरैपलघालिजाइजनसेवमोतीसंतज
नसदारहैंठहराइ२५जनसेवासरणैरामकैंनिसनैसाधरहा
इजैसेंगहरासमंदमैकीजालनैनांहि२६।साधूसुमिरैरामइ
मरिनसकैकोइजगमझलीआंनझीलरतकैंमारसहैयूंदोइ
२७मरजादौसमदांधसैमोतीलहैसुलतजनसेवापारषसंत
नहणीबहोतडुलन२८सकलबियापीसंगिरहैजनसेव
औटैलौंनजौसैआतमजानिकरिगहिरहैसाधुमौन२९

२५ श्रामे रमि ॥ २४ ॥ आतम आणै नाव न्यौ तब सकल दोष गुण
जांहि जन सेवादास सहजै लहै जाति मगुण रमाहि ॥ २० ॥ आ
मम नि निहचौ भयौ देह रह्यौ जिम घात जन सेवादास वृति म
की सहज निरबान पद जात ॥ २१ ॥ जनसेवादासा निज साधक गा
गंभीर अति ऊंच अबुध तन कूं देषि कै कहत है बहौ षूच ॥ २२
॥ गिरस मसु धार तन की परष करै नर लोइ जन सेवा गति
ति जीण है साध परषन हौ हाइ ॥ २३ ॥ अर पत्र काल स सहै गो
ति गा करै ष्रवा ॥ जन सेवादास गति साधकी लषै न चतुर सयां ॥
२४ ॥ साधर मै सूष आपरो जो मानै वहौ वेद गो बासी उस देस
का सोई पावै भेद ॥ २५ ॥ साध साहू सबी रांम धन जगत कहै सब चोर
जन सेवा देसी गमल है सो देसी जग घोर ॥ २६ ॥ तन करि मन करि
बचन करि काकूं दुषन दे है दास ॥ २७ ॥ पर तारि आपन तम माह
करे प्रकास ॥ २८ ॥ आपा नी गा फिल नि तिर है फिरि फिरि षोट
इ साधू सुमिरै रांम कूं सुष मै रहै समाइ ॥ २९ ॥ साधू जन ना निरषत
लै भाषै ज चित बैन लै निरषि डारै निरषि सब ही कूं दे चैन ॥ ३० ॥ प
रपीडा जन ना करै मन बांणी करि देह जन सेवा औसै संत जन जान
म सुफल करि लेह ॥ ३१ ॥ अहार अदोष आचरै जो आवै हरि माह
साध रहै धुनि ध्यान मै कल पत नि ध्यान षाइ ॥ ३२ ॥ अंबर नि ब्राप
ह जगारी साधू दोइ बिधि लेह तीजी साध परहरै जो पर घर धरणे
ह ॥ ३३ ॥ पातस जागी मन चलै जाइ चिता वे द्वार साधू सुमिरै रांम
गुर मुष गहै बिचार ॥ ३४ ॥ अहार अदोषी आचरै फो डि अंकूर
षाइ जन सेवा तेधनि साधवै सुष मै रहै समाइ ॥ ३५ ॥ पांणी पा
ति करि कास लेह अहार जन सेते धनि साधवै रातासि रजन
र ॥ ३६ ॥ बिन आरंभ संजोग न मिलै तन कूं भाडा देह सब आरंभ
त्याग करि केवल हरि सुमरेह ॥ ३७ ॥ जीव बसै अंकूर मै बाखा ह
होइ जन सेवा साधू सो भला करै न आरंभ कोइ ॥ ३८ ॥ आरं
ही दोष है पालै दया न साध जन सेवा साधू सो भला इक
मद रसाइ ॥ ३९ ॥ पारंभ रोग निवारि करि दया बोष दकूं षाइ ॥
सेवा साधू सो भला सुष मै रहै समाइ ॥ ४० ॥ मुष तकै हैं न न
सब आरंभ हरि निवारि जन सेवा गुर कौ भ्रपां न गा हि यां चूं है
रि ॥ ४१ ॥ दया वंत स धीर जन बिमा षडगल यां हाथि जोम
री सबल इन कै चलै न साथि ॥ ४२ ॥ सील साच संतोष क्रो
संगि लेह तब ते राकु जुन बीग डै ॥ ४३ ॥ करा मन नांम सुमरेह
सापालीका टिजा निरमल कीया मन आंनद ब्रत उरमै

१५४।निर्ग्रंथसांतआत्मसुषी।तेजीवनिमुकतिसुनाइज
दरसणकीजैजाइ१५५निरवैंविरहतसीरार
षू

।हूनांवैरीनांमंत्रकोसमचितजूंआकासयेक
रमईयोत्रिविसे।जनसेवातेधनिदास१५७कोमदगधकरि
ग्यांनतैरमैसरमतामांहि।जनसेवादासधनिसाधवै।न्यारादी
सैनांहि।१५८पूरणपरमोनंदहै।पूरणसाधूदिष्टि।न्याराकैसै
जाणीयै।जाकैश्रैसाइष्टि१५९जलमैडुबकीमारिकरिकह
बालीजाणै।जनसेवादासपूरणब्रह्मखेलैदबपांरतें।६०।
इम्रतबांणीसाधकी।श्रवणांसुणतसुषहोइ।दरसणकरत
साधकै।सकलकरमक्षैहोइ।६१।समचिततबरतरोमसंजग
सुषदेषैग्यारज्ञानसेवादासतासाधकै।केवलनांवअधार।६२
जनसेवादासधनिसाधवै।जगसुषजाणेंख्यार।चवदेतीनूंलो
कमैंहैहरिनांवअधार।६३।अडिगअचाहीयेकरसपारब्रह्म
संभीति।सेवासोजनतरिवा।देहीकागुणजीति।६४।पांचपच्च
संपारहरै।साधरहैरिणषेत।जगसुषत्यागैष्याकरिइकपारब्र
ह्मसंहेत।६५।कांमणिचलतीपरहरै।मायाफुरतीसोइ।श्रै
सेमरसधीरजन।बिरलाकहीयेकोइ।६६।सुषदेवचलतीप
रहरी।दासकबीरैसोइ।संतअनेकापरहरी।बाधिनबांधीकि
३।६७।गोरषत्यागीग्यांनगहि।दतडिगंबरदेष।संतअनेका
परहरी।यो।हीग्यांनबसेष।६८।मायामंदरअसतरी।हरिजन
कैनहींयेह।तजिबंधनमुकताभयाइकरामनांमसुमिरेह।६९
।माया।मिंदरअसतरी।हरिजनकैक्याकांम।हरिजनहरिसुमिरणक
रे।जनसेवासुधरैकांम।७०।कनकांमणीसंतजन।बांधेनांहीने
ह।तांहिरतांहरिबीसच्या।तोद्रहीषोईदेह।७१।कनककांमणी
त्यागकरिकेवलकहीयेरांम।हरिजनसींचोनांकरेहरिसारैसब
कांम।७२।अणूकसणीसूंहीनलांहरिजनबांधैनांहि।आमैपा
वैरांमजी।जनकाचिंतवरोंहि।७३।चौपई।आपाआरापिरहैन्यारा
ला।ताकारांमसदारषवाला।सेवादासकनमैसगहैतबसनेसु
षरांमसदाईरहै।७४।आपाआरापिहरिमांहिबसेरा।चौडैआह
मंडैजनतेरा।सेवादाससोईजनतेरा।तबलषचौरासीकाफिरि
हैफेरा।७५।साषी।मरकटमतसबत्यागिकरिकूरममतिगहि

नेह जनसेवा धनि है संतजन मनवृति सब सम टे ह १२६

२६ सुषसवतै आगम है तासु बिलास दास संत तहां हीमिलि रमे

तिबारीक अवास १०१ आतिबारी क अवास है बेगमपुर निज

वास तब मे तासुष मे सेवा जन नलिजांव १०२ सो सुषसवतें

गम है सुरनर लहै न भेव जनसेवा दास ता सुषकी साषि कहै सु

देव १०३ सुरनर गति जाणै नहीं सिव बिरंचि अरसेस जनसेवा

संता सुषमे संता कीया प्रवेस १०४ जन कबीर दू जाय मिल्या ज

नमिलि निजल होय ऐक जनसेवा दास हरि मे मिले औरहू संत

नेक १०५ गिणती का अगिणत तिरि गिणत न आवै वार पार तू अ

तिबारी कहे पकु गैजनथोर १०६ हासा षेल हराम है हरिजन

नहीं काम जनसेवा आतम रूप मे मन राषै बिसराम १०७ सा

ना रिहसि षेलणा हरिजन निकट न जाइ जनसेवा सुमिरै राम

आठ पहर इकताइ १०८ हासा षेल हराम है हरिजन का न ही

म सबद धुनि अनहद मे मन राषै बिसराम १०९ जन मन पट दीय

रहै मुष घाट न षोलै जनसेवा दास परसन कीया हरिजन तब बो

लै ११० जो बोलै तो सति कहै धुनि नैं कान न मांडै जनसेवा दास

रू बिनां बकबाद न मांडै १११ जनसेवा दास बूका बिनां

बकबादन की जै मन पवनां गहि राषीयै हरिसुमिरन कीजै ११२

बकबादा बुधि बल घटै मन पवनां कीजै जनसेवा सुमिरण

कीजीये बकबादन का जे ११३ षिमां कृपाल सु हिर्दै सुमारग सु

बउर माहि धीरजवंत अडिगमन जनसेवा दास बलिजाहि ११४

निर्मोही निरबैरता तजि आयो ममिरांम जा जनसेवा दास निरले

पका भजै नाव नदान ११५ सुम दासुन का नेतजै बेदमर लेनि

जाइ जनसेवा दास धनि साधवे रहे रांमल्यौ लाइ ११६ मनि आवै

जहां ही रहै तजि भूत प्रेत की संक जनसेवा दास धनि साध बे निर

षेध का निसंक ११७ सकल बृष्ष समि देषि है दूसरना ही और ज

सेवा दास धनि साध वे ते माथा के मोर ११८ बिचरत है जन ज्ञान मे

जैसें बनमै सीह मतिवाला अवतिरता येकनमल अबीह ११९

सबै संक तजि संकरत रातदिन निज संत मतिवाल्या घूमत रहे स

दानूर चरषंत १२० लोक बेद के जाल मे अला फेर है सब जीव जन

सेवा दास धनि साध वे उलटि समानां सीव १२१ लोक बेद की क

रितनि संता पकड्या येक जनसेवा दास याही समझि ये हा बडी

बमेक १२२ जनम मरण जाके नहीं अैसा तत अनूप साधू जन

सी सुमिरण करै जहां छांह न धूप १२३ बेद सास्त्र पंधिमो सब बा

तामांहि कोई ये पाहर जिननी सत्या इच्छा छूटै नांहि २०० हित
चाहित बिन्ही साधुरहै समिनाहि सेवगजनहूं कापडी सो अपणो
फल षाइ २०१ ज्ञान आतम तैं आत्मा निनिजि निजानन्दां संतजु
न सेवादास ताषाधका महमा कहु अनंत २०२ देहआनि तिनिति
आत्मा जिनि ऐसा दृढ्या बिचारन्हांवण धोवण सेवत्ता सब थाके
ब्योहार २०३ इन्द्रास बब्योहार मैं सबही उलझै जीव जनसेवादा
सकै मैंलहै हरियरम सनेहा पीव २०४ आत्म इम्रत बिन पायो
तिहिन जानि आवे योर जनसेवा तन ब्योहार मै कौ नैही मनदोर २०
५ ऐसा कोई येक है कोड ग्रांम धे कोश सारासार बिचार करि बेग
निमै होइ २०६ कारकामत पाहै हरमता जन लेह ऐसा को
येक जन हरि बिनि ताजि बिधनेह २०७ परार मबासि जनदेहूं है
मूं पवनबासि सुकपात सूं हरि जनके असा नहीं आरंनहीले गात
२०८ सकपवन वापवन बासि सूं आरंनबासि जन देह मनमांने जहां
गिकनै नांवन अपणां लेह २०९ सेवादास जन जगमै ऐसे विचरां
ही सकपात सूं पवन बासि सू आस कछु नांही २१० स्यों धूरमे तुन्ना
कमै पडै नर के संगि वासे सहज सुभाव मैं लगपातै हरिरंग २११
निरवासि निरमल दसा हरिर्यो रातेजन आत्मके असथांन मैं तेर
वे निगमन २१२ हरषन आगें सोच गेल हरि तैं सम तो संत जनसे
वादास निरवासनी जन जगमै बिचरंत २१३ निरमल सुरति जनसे
वा तब निहचल मन का वास पूरण बूह्म प्रकास मैं राति द्यौस न
मास २१४ आपा गरव गुमांन तजि मद मछर अहंकार सेवा तेजन
नमता इच्छा बांधे मार २१५ बहोपुरयां तुं मिलि रमै तो पतिबरता न
ही नारि जनसेवा साधु हरि मिलौं अहंमंमत सब जारि २१६ राग दोष बै
री सकल येतजि सुमरै रांम जनसेवा तब सुष कुपजै सब ही सुधरै
काम २१७ मांन कीयां नहीं हरषही अपमांन दीयां नहीं सोसजनसे
वादास ताधै मै क्याकारिका कै दोस २१८ जनसेवादास ता साधकै
समनये मांन अपमांन सदा रमै बूह्म सुष मै कही ये तेगलतांन
२१९ दास निजंत्रु गिर है सो कछु है ता कुहेत सेवा तेजन लालहै
इच्छा है सब सेत २२० आगपत रतरां मते सुमिरण सबद उचार
जनसेवादास धनि साधवें लगेर हैं इकतार २२१ तत बेता त्रिगुण र
हत त्रिगुणतर तहोइ जनसेवा तनि मनि मांन कौ साधक है सब
कोइ २२२ कारणी रज गुण उपजै आपा ऊंचा होइ आपा ताजि गो
बिंद कौ ता सम ओर न कोइ २२३ उरहै सुछंदी समवित साव बासन
कोइ सेवा तेजन जग मै जीवन मुकता जोइ २२४ उनमनि तिलकदि

नेह जनसेवा धनि है संत जन मन बृति सब समटे है ॥ १७६ ॥ हरि
सुष सबतें आगम है ताकु मिला गोदास संत तहां हां मिलि रमे अ
तिबारी क अवास ॥ ७७ ॥ अतिबारी क अवास है बेगम पुरानि नगा
वा संत बसें तासुष मे सेवा जन बलि जाव ॥ ७८ ॥ सो सुष सबतें अ
गम है सुर नर लहैं न भेव जन सेवादास ता सुष कुं साधिक हैं सुष
देव ॥ ७९ ॥ सुर नर गति जाणें नहीं सिव बिरंचि आरसेस जन सेवाद
ता सुष मे संतां कीया प्रवेस ॥ ८० ॥ जन कबीर ज्यूं जाइ मिल्या ज्यूं
जल मिलि जल हो इ येक जन सेवादास हरि मे मिले औरहु संत अ
नेक ॥ ८१ ॥ गिणती का आगिणत तिरि गिणत न आवे बोर बोरा हरि अ
तिबारी कहे मत्तु कैगे जन थोर ॥ ८२ ॥ हासा षेल हराम है हरिजन क
नहीं काम जन सेवा आतम रूप मे मन राषे बिसराम ॥ ८३ ॥ सारि
नारि हसि षेलणां हरिजन निकटि न जाइ जन सेवा समदि रै राम कूं
आठ पहर इक नाइ ॥ ८४ ॥ हासा षेल हराम है हरिजन का नहीं क
म सबद धुनि अनहद मे मन राषै बिसराम ॥ ८५ ॥ जन मन पट दीया
रहे मुष घाट न षोलें जन सेवादास परसन कीया हरिजन तब बो
लें ॥ ८६ ॥ जो बोलें तो सति कहै धुनि मैं कन अडे जन सेवादास सबू
झ बिना बकबाद न मांडे ॥ ८७ ॥ जन सेवादास सबूझ बिना
बकबाद न की जे मन पवनां गहि राषीये हरि सुमिरन कीजे ॥ ८८ ॥
बकबादां बुधि बल घटे मन पवनां छीजे जन सेवा सुमिरण
कीजीये बकबाद न कीजे ॥ ८९ ॥ षिमां कृपाल सु हिरदा सुमरण सु
षजर माहि भीजावंत अडिग मन जन सेवादास बलि जाइ ॥ ९० ॥
निरमोही निरबैरता तजि आपो भजि राम जन सेवादास निरमे
थका भजौ नां बन्ह धांन ॥ ९१ ॥ सुमत्ता सुन कानै तजो बेद भरलें घि
जाइ जन सेवादास धनि साधवे रहै राम ल्यौ लाइ ॥ ९२ ॥ मनि आवे
जहां ही रहैं तजि भूत प्रेत का संक जन सेवादास धनि साधवे निर
भै घका निसंक ॥ ९३ ॥ सकल बूसला मिदा बिहै दूसर नाही और ज
सेवादास धनि साधवे ते माथा के मोर ॥ ९४ ॥ बिचरत हैं जन जग मे
जैसें बन मैं सीर मति वाला अगातिरता येक न मल अबीह ॥
॥ सबै संक तजि सेवक रात हैं निन संत मातिवाला घूमत है स
दा नूर वारषत ॥ ९५ ॥ लोक बेद के जाल मे उलझि रहे सब जाव जन
सेवादास धनि साधवे उलटि समाना माव ॥ ९६ ॥ लोक बेद की क
रितजि संतां पकड्या येक जन सेवादास याही समझि ये है बड
बमेक ॥ ९७ ॥ जनम मरण जाके नहीं ऐसा तत्त अनूप साधू जन
सुमिरण करैं जहां छांह न धूप ॥ ९८ ॥ बेद सायां धरम सरब ब

ताभांहिकोईयेकहरिजननीसत्या.इच्छाचूकेनां॥२००॥हित
अहितबनिंहीसाधरहैसमिनाइसेवतजनकूंकापडीसोअपणो
ही फलपाइ२०१॥जनआतमतैंआतमांमिनिजिनिजांनपासंतज
नसेवादासतासाधकीमहमाकहुअनंत२०२देहआनितिनिति
आतमांजिनिऐसादृष्टाविचारन्हांवणधोवणसेवला.सवधाके
ओहार२०३कलासबओहारमे.सबहीउलझैजीवाजनसेवादा
सकेसैलहैहरियरमसनेहीपीव२०४आतमइमूरतमिदिपायो॥
तिहिनजाणिआवैऔरजनसेवातनओहारमेकौनेहीमनदो२०५
॥ऐसाकोईयेकहै कोइग्रंमधेकोशसारासारविचारिकरिबैठा
निरमैहोइ२०६कोइकामतपाहैरहरमताजनलेहऐसाको
ईयेकजनहरिनिजितजिविषनेह२०७परारंभवासिजनदेहूहैं
भूपवनवासिसुकपातयूंहरिजनकेअसानहीआरंभहीलेगत
२०८सकपतउडायपवनवासियूंआरंभवासिजनदेहमनमांनेमहांउ
ठिचलेनांवनअपणोलेह२०९सेवादासजनजगमेंऐसेविचरां
दीसकपातभूंपवनवासिमूंभासाकछूनोही२१०सपधूमेतुमा
वमेपईनपाकेसंगिचालेसतजसुनावमेलग्पादेहरिरंग२११॥
निरबासीनिरमलदसाहरिरंगीरातेजन.आतमकेअसथांनमेलरा
येनिजमन२१२हरखनआगेसोचमेलहिलैसमातेसंतजनसे
वादासनिरवासनीजनजगमेविचरंत२१३निरमलसुरतिजनले
ला.तबनिहचलमनकावाल.पूरणवूलप्रकासमे.रातिद्योसच
मास२१४आपागरवगुमांनतजिमदमछरअहंकारसेवातेजन
नमलाइच्छाबांधेमार२१५बहोपुरयांसंमिलिरयेतोपतिबरतान
हीनारिजनसेवासाधूहरिकोंअहंममतसबडारि२१६रागदोषबे
रीसकलयेतजिसुमिरेरांमाजनसेवातबसुषकपजेतबहीसुधरे
काम२१७मानकीयांनहीहरषहीअपमांनकीयांनहीरोसजनसे
वादासतांधमेक्याकाहिकोदोस२१८॥जनसेवादासतासाधके
समनयेमांनअपमांनसदारमेदुखसुखमे.कहीयेंतेगलतांन॥
२१९दासनिरंजनगिरहैंन्होंकरूंहेतकूंहेतसेवातेजननलालैंहैं
इच्छाहैंसबसेत२२०आपपरततरांमसुमिरणसबदउचार
जनसेवादासधनिसाधवेंजगेरहैइकतार२२१नतचेतात्रिगुणर
हत.न्हगुणतेरहतहोइजनसेवातनिआभिमांनकासाधकहेंसब
कोइ२२२कारणीरजगुणउपजैआपाऊंचाहोइआपातजिगो
विंदकोतासमिऔरनकोइ२२३अहंसुछंदीसमवितसरबबासम
बोइसेवातेजननमेंजीवनमुकताजोइ२२४जनमानितिलकादि

पैसाजनकै सिर निराकार की छाप वोटि प्रेम की डोरडी गहीं अब
गति आप २२५ ततनांव सोई तिलक है तत नांव सोई छाप तत
नांव हिरदै रहूं इस्क गुरदी बानाप २२६ साध नेष सतगुर दीया
दया सील साच संतोष निरमल मन निरवासना ते जन जग मैं मोष
२२७ साच नेष सतगुर दीया नांव निरंजन तंत जन सेवा निरमै नै मि
थ्या लागि रहै सब संत २२८ साच नेष सतगुर दीया आतम कूं उपदेस
माया देस कूं छाडि करि जन बसे जाइ ब्रह्म देस २२९ निरदोषी नि
ह कपटता अबंछा निरधार निरमोही जित आतमां सेवा सो जन सार
२३० अबंध अबंछा संत जन सुमिरण लै लागि जन सेवादास धनि
साध वै रहैं जगत तैं अणरागी २३१ जन सेवादास कहा येक हा याते ब
त अगाध आप पहर लागी रहै सुमिरण सहज समाधि २३२ सा
न संतोषी साधवा यें डी निग्रह मन दुष सुष सम जिनां एपो करै ते कह
यें हरिजन २३३ नांइ निरंजन लग पार है अंतरि आति अनुराग सेवा ऐ
से संत जन मिलै तो पूरण भाग २३४ संजम समता सति सब
दया सबूरी मांहि सेवा ऐसे संत जन पूरण भागि मिलांहि २३५ म
ल्लोन निरप्रग्रह निरमोही सति साध सेवा वै जन तब मिलै ज
ब दरवै आप अगाध २३६ हरिजन हरि सुमिरण करै मन का कुसम
ल षोइ येक दसा अब गति रता हरिजन हरि नहीं दोइ २३७ निहकं व
ना निरमल दसा साईं सेती प्रीति विषयां तैं न्यारा रहै या साधां की
रीति २३८ संकलप बिकलप अडि भ्रम नांव निरंतर लिहा विषी
यां तैं न्यारा रहैं हरिजन का मत येह २३९ ध्यावै आपि खूसल कूं आप
कूं सब घटि येक सेवा साईं संत जन छाडै भरम अनेक २४० सब थं
डी मन बासि करै ब्यापक अमृत बैन जन सेवादास ता साध का दर
सण कीया चैन २४१ सीतल बाणी साध की बोलै आपा षोइ सब क
वा कूं पोष दे उरतैं दुरमति षोइ २४२ सति सबद मुषि उचरै आंन न
धारे चित जन सेवा अमल जाणीयां राम सरीषा बित २४३ सी
ल संतोष धीरज धस्या संतर मैं चौगांन आन बोट सब छाडि करि
गहै नांव निसांन २४४ सदा रहै आनंद मैं हरिरस माते संत कोई बंदै
कोई नींदै नां हरषै नां कोपंत २४५ आगै पहर लग पार है धुनि मैं
ध्यान लगाइ जन सेवादास ता साध के अब गति सदा सहाइ २४६
प्रेम पियाला येम का अनहद रस माते जन सेवादास धनि साध
सो ते अब गति रति २४७ जन सेवा चंद चकोर ज्यूं सुरति नटि रे जन
अंतरि निरषै पीव कूं रहै मगन तहां मन २४८ जन सेवादास ता
साध के लागा हरि का रंग जैसें दीपक तैं पतंग यूं पड तन मोडै संग

२४९ आपा हो रंग सरे सतीमर अरसाध पीछा म्रू चितवेन ह
वातो घात आगाध २५०॥ चात्रिग धण ज्यन नांव पति, सीप स्वाति हि
नां दिन जन सेवादास हरि निज कौ हरि धिन प्यास न जां हि २५१ सदा सं
तोष रां मनन मन थंड भा हि हाथि, जन सेवादास ता साध के सदा
निरंजन साथि २५२ मन थंडी थिर होइ रहे रात दिवस रंग, जन सेवा
दास जिन साध सों रहे कंचन कामिन संग २५३ मन थंडी अस्थि
र करै रहे नाव रस लागि, जन सेवा साध सो न लारहे कनक कामण
त्यागि २५४ अहं ममता सब त्यागि करि रहे दुष सुष ये क समान, ज
न सेवादास ता साध कं त भव गति रूप जान २५५ रहे निडर नै जग
वत जिसौं पैतन मन प्रांन, जन सेवादास धनि साधलो पङ्कचे पदन्र
वांन २५६ गाहे गरी नीरां मजना संकन्न मनि का शरहै निसंकी संक
त जिगो बिद के गुण गाइ २५७ चाहि त जो सब रां म जन न रहे थ चाह
नितिस बे मनो रथ आ ऊकर हि कनिराकार संचित २५८ जन सेवा
दास धनि साध वे धरे न आ सा आं न, अपा आधर तं ये कता ने वे हरि
जन जां नि २५९ असन्तुति निंद्या ये कसी साध रहे सम तालि लम्प
रहे धुनि ध्यान भे गरी बी गहे असाति २६० जो पै सुमनन नां वे न ही
कीये दोष जन सेवा केसे संत जन, जग मै जा बिन मोष २६१ सु लज्ञ
सु लक्षण पर हरे सुमरे केवल रांम, जन सेवा धनि वै संत जन जिन स
रस बकां म २६२ सुध बां णी रहणी सुध चलणी सुध नि ग्रसंत सुध
ही मन सुध ता ते थां बैनं भावत २६३ विरहा सुरता सु लगत वैरा
ग ब्रह्म रूप प्रेम मना म्हा रदै बसे जन सेवा साई आनंद २६४ वैरा
गी विस्कात दसा सन्यासी अकांम, पषापषी सब छाडि करि साधू
सुमरै रांम २६५ करम करज्ञ जे फल नी व जे ता फल नां व सन्यास नि हक
मी हाइ हरि भजे ते कहीये निजदास २६६ करम करज्ञ जे फल न ता जे
भजे जफ फल रांम जन सेवा सो इल साध सो जिन को मन ना विस
म २६७ कां म सहल सेया करें हैं वे फल के गीत, जन सेवा सोई संत
जन स्या गे उन की रीति २६८ निह स बद लागा रहै आ नपा नुभर
प्यां हिं जन सेवादास धनि साध वै है ता ना व क हुं नां हि २६९ निस
प्रेही निरवैरता निरलोनी निरद्वंद, जन सेवादास धनि साध वे तिन
का त्रिगुण फंद २७० सी तल नैं न बै न सब सी तल सी तल अंग गुना व
नं सेवादास धनि साध वे परमे स्वर सं नाव २७१ मय मिथ्या माये न हि
श्रवणां सुणि नयोट, जन सेवादास धनि साध वे रहे रांम की वोट २
७२ साडी कुंजा समि गिणे विषमता नां हि धरंत ।।

रेत तेजनप कुचै रामम्मैं जनसेवाकेवलसेत २७४ सावधानस
खगिता सारग्राही संता जनसेवादासबेपकुंचिसी निरतैपारब्र
गावंत २७५ हिरदैहरि सुमिरण करै सतोषी जनसूरु जनसेवाद
संकै बजेअनहदत्तूर २७६ नांहूरतानंनमला हरिरसानिरम
लसार सुनिमंडलआसनकीया अरसपरसदीदार २७७ गपानम
त्तिलेउरधरै बपेतजोग्य सारा चितानिरोधेहरिनिजे तेमो हिसं
तपियार २७८ कनककामणीलागीकटिजेलागेहरिनांहि जनसे
वादासतासाधकामैब्रालिहारीजांह २७९ धातनकबकुकारीगहै
कैरनकामणिसंग जनसेवादासगोबिनजै तबदिनदिनइएां
रंग २८० कनककामणीपरहरै नांवनिरंजनलेह निरगुणदसा
निराटकी संताधारीयेह २८१ तबीकाछम्तेका जलपातरराषे
जन धातनपकडेहाथमे हरिनावरटैनिसदिन २८२ धातनपक
डेहाथमै कबकुराषैनाहि निरमैसाधूसेवला रामनजेमनमां
हि २८३ सीतनिवारणगुदडी षुध्यानिवारणअंन साहिबपूरवे
सहजमे अधिकसत्यागैजन २८४ अधिकोसाईलोनहै कोईजा
णेहरिकाजन जनसेवादासगोबिंदनजे करिकरिनिरमलमन २
८५ सो २८६ आजनत्रे ज्ञानयेह इतनोहरिजिनआदरै अधिकोप
रहरिदेह फिरिचितासाकिब्परे २८७ हरिबिलाइजागोर हरिजि
नकबकुनचितधरै हरिआपकुसबगोर हरिआपैचिंताकरै २८
८ चौ २८९ अंजनत्यागिनिरंजनध्यावे तेजनीसंकाटबहोडिनआं
वे कनककामणीत्यागेआसा तेकहावैहरिकेदासा २९० आपा
अरपिरत्यागैमाया सीलसाचमेराषेकाया आसापाडिरहैनिरास।
ताकारामनछाडेपासा २९१ सा २९२ रहैअचाहायेवरस अकं
निरधार जनसेवादाससतासाधका दरसणदेकरतार २९३ ऊल्लू
गपंनकूहरिजिनत्यागे चिकोरगपानचितधारे जनसेवादाससोईहरि
वां अयरणांकाजसुधारै २९४ मीडकमतजनहरिनिवारै भंवरमतो
गहिराषै भंवरकंवलमेरहैसमाई जनरामअमीरसचाषै २९५ ती
नलोककीसंपदा जनकैतिणनरिजांणि जनसेवादासतबजा
णीयेभईआत्मसंपहचांणि २९६ उदासीनजगतेंरहै मावैबस
तीरहैउदासी मनउनमनिलागारहै सेवासोजनजांनि २९७ उदा
सीनजगतेंरहै रूषेबिरषबास अंतरिरातानांवस्यूं सेवासोनि
जदास २९८ पषापषीसबकोबंध्या निपषहैजनकोइ पूरणये
काबिचारिकरि मयमगनजनसोइ २९९ न्यूषरसंपरबंधीयाय
जगसाराबंध आतमअनभैजबनयो तबछूटेदुषदंद ३००॥

निरपष अवगति नाथ है निरपष साध कोइ निरपष होइ निरपष मि
लै हरि जन कहियै सोइ ॥ २४ ॥ ठयि करी मजिन ज्ञानी यां सोई साध
सयांन पौर दुख दुंदह जिमै त्यागि मये है रांन ॥ २५ ॥ जन सेवा दास
सोई संत जन हरि नां वन बिसारै जैसैं चंदा चकोर ॥ सुरति न टा
रै ॥ २६ ॥ जा मिलीयां सुख ऊपजै मन निश्चति आनंद होइ सकल ताप
मैं सब हरै जन सेवा साध सोइ ॥ २१ ॥ सोरठा निरा षिधरै पग नौ मि जल
बसतर कूं छांणीयै बांणी का रसि तिबोलि मन का चित वनि जांणी
यै ॥ २२ ॥ साषी ॥ ये वतुष आनन संत जन राषै मांहि बिचार जन से
वा साधु सो नल्ला बिसरै नही त्यागा ॥ २३ ॥ क्रोध लोभ नहे साघणी सो
क मोह बिघने ह निंद्रा आलस अन्य उदिम जन सेवा ता मसये ह
॥ २४ ॥ मोगा वं मनो भद घणी जस प्रीति करै सब का मारहा सि वी जब
लब्द सुख जन सेवा रंजस नोय ॥ २५ ॥ समदम सहन तप साव गहै
दया सुम्रत गहि ग्यांन त्याग संतोष सुद्धता जन सेवा स्वाति कज
न ॥ २६ ॥ सीत उसन दुष सुख सहै सेवादास जन रीति सदा संतोषी ये
करै इक पार ब्रह्म प्रीति ॥ २७ ॥ कोमल मन अमांनि ता गि इक पार
ब्रह्म सं प्रीति सेवा सो जन ता रिवां ये घटराषै जाति ॥ २८ ॥ ध्यान अभै
न चलै ज्यूं सिथर दीप चित्रांम जन सेवादास ता साधकां आगम
लै हरि विश्रांम ॥ १ ॥ सुन सुन करण आगानि मैं पंच बिषै गुण दाहन
[illegible]
[illegible]
[illegible]
साधवो अवगति सदा सहाइ ॥ २ ॥ जन बिचरत है जग मै जगन हो
लियै लगार पदम अंब मैं देषीयै यूं हरि जनि रहै निरार ॥ ३ ॥ निरष
सी जन ज्यु गिरमेजी ते मन बुधि काइ ज्यूं पैकं मथि घृत काढीयो
बहो डि न ता हि समाइ ॥ ४ ॥ निरमल बिरषं धनि ग्रुण दसा जनहि
बैंस रज सुनाइ जन सेवा महमां संत की कहियै कहा बणाइ ॥ ५ ॥
जाप अजपा जन जपै नही ममत दोष कछु राग जन सेवा ऐसे संत ज
न मिलैं तौ पूरण भाग ॥ ६ ॥ मुक्ति मोद ग्रनां धरै नांक छुगद ण
न त्याग रहै गलतास हू यमै ध नि ध नि वो बैराग ॥ ७ ॥ निरबैरी सब
जीव तै आतम रता निज साध जन सेवा ऐसा है कोई ता की बात
अगाध ॥ ८ ॥ सब ते ग्या लै बासना आतम रता निज साध जन सेवाद
स कहा ये करूं या तौ बात अगाध ॥ ९ ॥ ब्रह्म अगानि सब करम दहै
जैसैं काष्ट आगि जन सेवादास धनि साध वे रहै नां वसं लागि ॥ १० ॥
साधु जन सुमिरण करैं ये कैं मन चित लाइ सकल अघ सह जैं जरैं ज्यूं

आगनीतिणहीजला ॥२२॥ बूरत आगनि त्यब बासना दग्धक
रै निरन्तर जनसेवा फिरि कोनही ज्यूं न्त्पां ओंकार ॥२२॥ गलमै
साति प्रति विंबहै ज्युं खगधरती मांह त्यूं सेवा जन रहै जगमै को
ई गुण आपैनही त्यांह ॥२३॥ संतां की गति को लिखै देह छत सब दे
खि जनसेवा बात अगाध है बडभागा कोइ पेखि ॥२४॥ असतुति नि
द्या सम गिणै सेवा सो जन तत्त साध रमै आनंद मै बाजै अनहद
तत्त ॥२५॥ हीरा माहि कोडी तजी ज्यूं सेवा साधु तत्त रहै मातिवालारो
मरति बाजै अनहद तत्त ॥२६॥ कोचन गाहित तजि का चली धखिसर
वरतजि त्यूं जगत गधोन तजि चलिणी संतग पां जगाहि तत्त ॥२७॥
अग सिधि नो निधि मांगणै ऊना करै पुकार हरिजन का हीन आ
दरी हरिजन जित तेरथार ॥२८॥ ऐसा कोई ये कहै तनमन सौंपे अ
रु हरि बिण इज्या ध्यि सब सुपनै दिन देह ॥२९॥ ऐसा कोई
ये कहै सेवा जन बरीयां मन तनमन मयडा फेरि करि अंत सिर
रेरांम ॥३०॥१२०५॥ आ॥७०॥ इती साध को अंग संपूर्ण ॥ अथ सा
धमहमा को अंग ॥ अंतरि हरि डिउ पजा इंक्हरि ढील न कीजै म्हरि॥
हरिजन के दीदार तें पापता पहोइ दूरि ॥१॥ साध सबद इम्रत ब
चन कालि बिष राले धोइ नांह सुष तिहूं लोक मै सो साध मित्यां
सुष होइ ॥२॥ साधत हां चलि जाइये अनंत न दीजै पाव साधू पास
स तपैहै जो मानि उपजै भाव ॥३॥ साधां सेती मन ना मिलै अंतरि कपट
निवारि जन सेवा दरीयां लावन्यं चढै सुरंत रैपारि ॥४॥ पारसि वारै
पलक मै जन जग मांहि जिहाज त्यूं सेवा सरणै साध के सहजै सु
धरै काज ॥५॥ जिहि घाट हरि चिन ही साध की हरि संतां नाहीं हेत जन
सेवा दास तत्र पाणीयां परता हि दीसै प्रेत ॥६॥ साध संगति कीन्ही नहीं भ
र म्यां तीरथ जाइ जन सेवा कैसे पाइये अलष निरंजन राइ ॥७॥ साधू
या संसार मैं निरमल हरि के रंगि अनेक पतित पावन भये साधुन ने
के संगि ॥८॥ साध मिल्यां तें सुष भया रहै आनंदी होइ अंतर के पट दू
रि करि सब दुष राले धोइ ॥९॥ मल रूपी संसार है साधू जल सम
नाइ जन सेवा साधू मल हरैं ते साधू सरवरि न्हाइ ॥१०॥ जनम जनम
की पापते संतां कीन्हा दूरि अंतरि झिलमिल बाझीया राम सकल भर
पूरि ॥११॥ सीतल कोमल बचन सुनि मनि आया संतोष जनसे
वा दास आनंद भया मिटी तिहूं रि दोष ॥१२॥ काजी मुलां पचि रहे कबी
रा के बलराम रह्यो आडा ये करस ॥१३॥ सन्मुष प्रगट्यो सा
म ॥१४॥ नामदेव कूं मारि करि छींबा दायौ घेरि सम्रथ सांई सीस परि
देवल दीयौ फेरि ॥१५॥ साध रांम की देह है मिनि जानै को जीव तन

प्रगटबिसचौपीव॥१५॥ साधूसलिलजगमैमांही
तहांलेपांनपखालीयेजनसेवाउजलहोइ॥१६॥सा
धनदीहरिनांवजल तहांकुसमलफडैअपार॥जनसेवादासनिरम
लभया साधूकैदीदार॥१७॥संतांकैसुषिरांमरसअमृततासीतलथ
इ॥जनसेवादरसणसंतका देषतपापबिलाइ॥१८॥विधितापत
नतैंभगैसाधूदरसणदेषि॥जनसेवापलटैभांमा पारसलोहा
पेषि॥१९॥१२२४॥ अंग॥२१॥ अथ साधसंगतिकाअं
ग॥जनसेवादासनिरवालनीतेसंतपियारामोहि॥कनककां
मणारचिरह्या ता संगिवे मिनतो हि॥१॥मायारातामांनई जासरवै
सासंग॥साधचिचालैंगाडसी न्यूंकांचलीभुजंग॥२॥मायाकेव
सिजीवहैंतिनसवैसानेह॥जनसेवाकारिजनांसरैसांतापौवैदे
ह॥३॥जनसेवादाससोईस्पांणपणसोधिकरैसतसंगकैटिटूटि
होइजूकडाजोतजैनलोइगि॥४॥संगतिपक्षीकीजीयेजैनिर
वाहेपारि॥कांचसंगतिसेवलारहसीवेलखवारि॥५॥लोहतिरैस
गिकाठकैजनसेवासरवरमोहि॥संगतिबिनोजालिडूबिहेतिर
तनदेष्यानोहि॥६॥संगतिकीजैसाधकीयामनवेफडैविकार॥ज
नसेवानिरमलहोइमनपावैमुकतिदवार॥७॥जनसेवासंगति
साधकीमुकतिनीसरणीजो॥हपावैपांवैरांमरसकालिविषरालै
धो॥८॥जनसेवासंगतिसाधकीवेगामिलायेध्यातपतिवुकं
वैसवजीवकीरांमअमीरसपाइ॥९॥साधूचंदनबांवनोजनसेवा
जहांवहांनोहि॥करमकटैसवपलकमैजेउनमांहिसमांहि॥१०॥
साधसंगतिजेमनलगौतोतारिकैनौपारि॥जनसेवाअघसागरै
बाकीरहैनलार॥११॥साधूसंगतिजवमिलेतवदरवेदीनदयाल
निरमैकौन्लोमताव्हैहोडिनकफेकाल॥१२॥बिनसंगतिसुधरैन
हीसाधकहैंसवकोइ॥जनसेवासंगतिसाधकी॥सहजैहीसुषहोइ॥
१३॥जनसेवासंगतिसाधकी॥षोंणीअमृतहोइ॥जेतारिमलषल
पावही॥कुसमलसवधोइ॥१४॥जनसेवासंगतिसाधकीघटि
उजियालाहोइसवघटिनूरनलखपावही॥औरनदूजाकोइ॥१५॥ज
नसेवादाससंसारमैंसाधूसंगतिनावजोवैसैसोपरिहैमनिदुष
वैसतिनावरूढ॥नीरबिनोजेनावमैजेकोइवैसैमांहि॥जनसेवाप
रिनसकैडूवसुषगोप्तामांहि॥१७॥साधसंगतिनौकामैंप्रेमनी
रकैमांहि॥जनसेवापकैचैसहजमैविचिकडूवगकेनांहि॥१८॥स
पंथऊंचाइहैरहैनबेलीवार॥जीवब्रह्ममेलाकरैविलसेसुष
अपार॥१९॥साधसंगतिवेकुंठहैवसैसुनिरमैहोइ॥कालयोणला

२०

गोनही साधकहै सबकोइ २० कुलनहैंसंसारमै जनसेवाहि
केदासनरमानिवारैमेहरैं अंतरिकरैप्रकास २१ जनसेवासंगति
साधकी मानूं ज्ञानप्रकास उरअंतरप्रकासया कीप्रापतिमरव
नास २२ संगतिकीजैसाधकी पुरवैमनकीआस दिलकीदुर्मत
धोइकरिकरैब्रह्ममेवास २३ जनसेवासंगतिसाधकी सबहीव
पतिस्परांहि जैसेंचंदनबावनौ पडयौकडाहीमांहि २४ साधसि
त्मासुषउपजै तनकीतपतिसिरांहि जनसेवासंगतिसाधकीस
गलीदुरमतिजांहि २५ जनसेवासंगतिसाधकी कीजैतनमनला
इ नीचनारमिलिगंगमैं भयोसुयेकैनाइ २६ संगतिकीजैसाध
कीज्यांतनमनकातज्यविकार ताकेदरसणपायकै सकलव
रमसिंघार २७ जेजनरातेरामसूं तिनसूंप्रीतिकराइ मायापैबसि
जीवसैं रहौलांतसाभिजाइ २८ जनसेवासंगति साधकी कीजैदु
बध्याधाइ साधूपारसरूपहैं परासिरकंचनहोइ २९ संगतिकीजै
साधकी अंतरकेपटषोइ तेलफुलेलज्यबासभया तबहिलिमि
लिषिल्यासोइ ३० जनसेवासंगतिसाधकी कीजेमनचितलाइ
जैसेंकीटीभ्रंगज्यूं येकरूपहोइजाइ ३१ जूसेवासंगतिसाधकी
हरिदरवैजबहोइ साधमिल्यावैरामक्रूं करमकसरसबषोइ ३२
संगतिकीजैसाधकी तनमनदीजैवारि जगतदुषकीरासिहै साधू
सरणिउबारि ३३ संगतिकीजैसाधकी येबैमनचितलाइ लो
हापारसपरसिकरि कनकरूपहोइजाइ ३४ जनसेवासंगतिसा
धकी जैसैंबावनचंदनबास कावसबैचंदनभये सबमैसुगंधनि
वास ३५ तपतिमिटीसबजीवकी साधूसंगतिमांहि जैसेंबल
तातेलमै चंदनपर्‍यासिरांहि ३६ जनसेवासंगतिसाधकी साध
होइसतिनाइ जाबनिचंदनरूपनौ सोचंदनभईबणराइ ३७
जनसेवासाधजिहाजहैं इहिभौसागरकै मांहि कैतेपारिगत
रायिजनकू उतरतेनांहि ३८ चंदनरूपीसंतजन जगतभबुंग
बिषकाल साधसंगतिगहिऊबरे सबैगारासेकाल ३९ जगत
भक्षतबबिषनस्या बिसत्यासिरजनहार जनसेवादासनिरषि
कनया साधूकेदीदार ४० उलक्ष्याथामनजगतमै साधसंगति
सुलकाइ मूवाजीवतकरिलिया रामअमीरसपाइ ४१ मोहकूं
पमैंजीवथा स्मभजिनथाकबूना तिउपगारीसाधूजबमिले
करगहिकाढेतांणि ४२ बंधनकाटैमोहके काढैअंतरिसालले
चनदीयेग्यानके ऐसेसाधदयाल ४३ जनसेवासंगतिसाधकी
लागेहरिकारंग अनेकपतितपावनभये करिकरिसाधूसंग ४४

अनेकअघसहस्त्रांकटैजनसेवासाधूसंगा जैसैंकोटीम्रूगजूं
करैआपणोरंगि ॥४॥ अनेकतीरथफालानतबाजेकत्ता मिलैं
हरिजन अनेकपायफितियलकमैकरतसाधदरसन ५६॥ रेज
ग॥दोहा॥ अघसाधवारथदोसंग॥ साधूजनसंसारमेंहरि
भजिहैंनिरारकंवलरहैजलकै बिषैजलपरसैनहीलगार
॥ जनसेवादासाबिचारमेंलगपारहैनिजमनअगजलतौलदै
नहीलूंपोलामांहिपदम२॥ जोबोलैतौहरिकथाकैगहारहैसु
धमून सेवादासजनजगतसूंबादिनयोवैपौन३॥ आसमेठे
सबलाकूरमजपूजनजोइबादबिवादोलागिकरीयूंहीखासनवे
२४॥ आंनकथानहीउचरैचाल्हैचालिनिजा॥३॥ जनसेवासाधुसे
मलासुपमेरहैसमाइ४॥ आंनकथास्तुतिनहीचाल्हैगाइन
॥५ ॥गुणोबहरोहै
[illegible]
[illegible]रदेहरि
[illegible]सोग

३१

वासाधूहरिजनौं आलियरहैंजगमांहि ॥ ३३ ॥ साधमांभिअंतरइते
येकहंसायेककाग हंसातोमोतीचुगैं कागकरकसराग
हैंनषयंदाहरिहै रहेकमोदानिनीर यूंसाधगहेंहरिहैमकूं
जगसुपतनेकथीर ॥ [illegible]
॥ ततववासल्लूमन वीताहरथसेग ॥ अजु
साधूरमै पडगनंवधीलोग जनसेवादासगजगपानके
जनचढिमेटीसक कूवाररूपीजगतहै भुस्तिनुसिमरोनि
सक जनसेवादासससारकीआंणिसदीव धीरजधात्याज
नरहै सुमिरैअपणोपीव जगतभगतसेअडतहै आज
नमीसदीव जनसेवाअैनाहीभगवतकोहैदोगिगवतीव
डुनीहिसात्योदीनकूं उलफेमायाफद जनसेवाहैमूल
फिरैजेहेमुकतिनिरवध जवकवेदेसिंघकूं अननहीआ
डेमूरि सेवाजनधीरजिधरिरहे पीवसनमुषिरहेहजूरि ज
गतवालनीकपहै कणडारगहितस धीरजधात्याहरिजनेय
डामरोजगनुसि संतसिलासमिहोइरहे धरिधीरजहरि
ध्यान कुसबदतीरनलागिहै केतापचोअयान सिलकेवान
नऊपजै नावेधकोमूलोकाइ यूंकुसबदसाहिसाईनजेजनसे
वासाधूसोइ ऊविनलभेनाकडे कूवारकीतजिवाणि जन
सेवाबरीमांहिहै सोइफरैनितहांणि धमकसहेससारकी
केताकहिकूंनाहि धीरहैधुनिध्यानमे जैसाहोइतवलाह
निरदोषीसाधूजनां परमेसुरसप्रीति न्यूंकूंकारकुबधिनवाइहै
याजगतकीरीति जनसेवासाधूहरिजनजे असालिगरीवी
रे कूकररूपीजगतहै भुसिजावोऊषमारि असालिगरीबी
ओधै आपारलेवोइ जनसेवादास साधकूं गजिनसकेकोइ
धीरजवंतअडिगजन सेवादासजनतोइ जगतकिलाकूदे
षिकरि जनचंचलकबहूनहोइ धीरजवंतअडिगजन उरम
हीहरिचित करमजीवकितोकरै ताहिनदेहैचित चिताषे
सबगातिमे संकनमानेकोइ जनसेवासाधूसारिवा भजैनिरंज
नराइ केतापवनचलाकरै गिरकपैनहीकोइ जनसेवासाधू
सारिवा हरिजनजीनिरभैहोइ धरतामनथिररहैगहिसु
मिरनदोटेक लगपारहैधुनिध्यानमे केतापचोअनेक जग
तकिलाकूदेषिकारै लगपीतानहीतो डिभयेलाहीयेकासि
इकपारबूतसंजोडि मलांबुरोकोइकहै साहिवसेतोनेह
लगपारहैगुरमपानमे जाणिमिथ्यादेह हरिजनहरिसुमिरण

रै कूकरथलकमनुसो निरमैथकानृबांणपदधीरजिधारिथिसो
रथीरैंधरैचलिबोकरै साहिबजीकीराह जनसेवापडआयर
मसुष बीचिरहेतौ नाहर २ जनसेवाधीरजसैंचलै तनफिरया
कैनाहिसहजैसहजेंपडखिसी स्केदिनवासुषमा २ रंगाक्षीर
नसेवासहनिबहैसाधुसत जनसेवाकथकोकहोइगा साहिब
कादीदार ३ सरिमारगचालिबोकरै अलसाकैनहीकुनानयेता
तनधरिमिलैगा नेतापीपलपान ९ ऐसीधीरनधरिरहै जनसे
वासाधूसोइपडआरहेदरबारमें कबकुकसांम्हेजोजु ५ सरधा
बांधैनाथके जरटीटोडीकीदेषयेकनमसे सिधिनईमिलै
सीआपचालिये रजोरथस्ताउरथा ६ अरजीवतमृतलक्ष
सोअंगा जीवतमृतकहोइरहै आपाबिसरावै जनसेवादासनि
रनैथका गोबिंदगुणगावै १ जीवतमृतककोइकाटिगोबिंदगुण
गावै जनसेवासाधूसहरिवां तननेहुचुकावै २ जीवतमृत कहोइरहै
आपासबषोवै मनपवनाउलटाइकरि अंतरिहरिजोवै ३ जनम
नमनसाउलटिकरि सुमिरैसिरजनहार जनसेवासहजैंयासी सा
हिबकादीदार ४ जीवतमृतकहोइरहै तजेजमनकोमांण जनसे
वासोईसंतजन पावैपदनिरबांण ५ जीवतमृतकहोइरहैं करि
आपाकोनास जनसेवासोईसंतजन सदानिरंजनपास ६ जीव
तमिरतकहोइरहे आपणाहिडारे जनसेवासोईसंतजन हसिनाक
बारै ७ आपामैंमनसामरैसकलबासनानास तबसेवामहुजैहै
रंगा उरअंतरिथिकासन ८ आसाडाकिमातकीसबकामरैपिया
सा जिवसनमयपदेयका बूडुषपावैदास ९ अपणांबैरीआपहै ज
बतनमैअहंकार जीवतमृतकहोइरहै तबपावैदीदार १० रामअमी
रसमिहिपीयातैअमरनयेसंसार औरजगतसबबहिमुवे सल
िमोहकाधार ११ ममतमनोरथमोनितजि हरि रमृतसपावैजी
वतरूमृतकनयु तावसुषपावाजीवरे दीनगरीबागरिवरे आपा
लेषोइ जनसेवादासतबसुफलहै कलिमेजरांवरसोइ १२ नाहीहो
रतरांमतें आपानजनावै जनसेवासोईसंतजन निरभैपदपावै १३
नांसिहोइरहै गतसूं जनसेवाथिरमन रांमरतनधूंलेरहै सूंदि
रयणकाधन १४ पपनीपपनसारिषा पहरैबिलाकोइ जीवतमृ
तकहोइरहै भजिनसकैकोइ १५ पपनीपफनसारिषा पहरैसंतसु
जानजनसेवादासजीवतमरैंतबपावैपदनरबांन १६ पपनीपफन
सारिषी पहरैहरिकेसंत जीवतमृतकहोइकरि सुनिसिषरवसंत
१७ सुनिसिषरजाइजनबसै पपनीपहरीमनिहरषसोगगतमपन

गहि दुष सुष सहि रहै तनि २५ मन तन मन मन सा मरै तब पहरै
फनी जन जीवत मृतक होइ करि राष्यो राम रतन २६ हीरो लै मंड
इ धसयो मृतक कै वो जाणि जनसेवा कसणी नवसही तब हीरै
व छी ष्वाणि २७ जीवत ही मृतक न या तब गांजि न सकै कोइ मूव
पहली जो मरै तो जन निरभै होइ २८ जीवत ही मृतक न या त्यांहि
घ घाया येक मेक होइ मिलि रह्या तेव सो ढिंग न आया २९ काम क्रोध
त्रिसना तजी लोभ मोह न या झारि नांही कोइ निरभै न या तब ठहरा
ति स द सुरति ३० बल छूटे निरबल रहै जीवत मृतक होइ जनसेवा
दास ता साध का पार न पावै कोइ ३१

दया नाव हरि देव से ता संगि बैठा जाइ जनसेवा सब घ
हि येक ही देषी रांम व ताइ ३२ दया नाव हरि देव से निरास्त्री साध
जनसेवा तिन की कहि कैसे याती बात अगाध ३३ दया नाव हरि देव से
निरआसी निह काम जनसेवा त्यांह जांणियो सब घटि रमता रा
म ३४ निरआसी तां जन दया बसे दिल मांहि जनसेवा दास तब
जांणीये इन आदरसै नांहि ३५ दया जिन्हु के दिल नही मास अहारी
जीव जनसेवा कैसे पाईये हरि परमसनेही पीव ३६ घट घट मांही
राम है अंतरि करो बिचार दया दरपन आप मे देषीये सब मे सिरजनहा
र ३७ जन मन मरण चूकै तबै सब घटि देषै राम जनसेवा साध सबै क
है होइ सफल सब काम ३८ कुमति सबै मन की तजे रहै राम ल्यो लाइ
इ जनसेवा इन्या कौ नही येक राम दरसाइ ३९ करद करि मन सुव
जो सब घटि देषो येक जनसेवा षोली बूदवे कीया घट अनेक ४०
जनसेवा बद कतेब पढि बिसरि रहै करतार दो न्यूं दो जिग मे चले
यान ही विचार ४१ जनसेवा सब मांहि जांणीये करि मन मन कांहूं
रे आपा पर सम जांणीये राम रह्या भरपूरि ४२ जनसेवा येकै षाक
का नाना रूप बणाइ सब मे साहिब येक है औ के ध्यान हमाइ ४३
जीव सतायां जा लिम्का दरगह नफा न होइ जीवसताये जीव कूं
राषि न सकै कोइ ४४ अपणा सा जीव सब जांणीये देषवाले नैन
तिन कूं मारि षात है क्यूं करि होइगा चैन ४५ मसजीद देवल आ
का कीया पै रे जतन जनसेवा जीव त्यो करता रे ने तिस मारि कै स
न ४६ दोजिग माय जात है दोस कहा किसिदह सांईस बसै रामि
आ सो सांईसा छिन लेहि ४७ आत्मघात न कीजीये कहै नांहक
इ जनसेवा दोजिग डर मिटै निसा तिस हनि तीमर ४८ सावक
सांसा न हि कैरै जीव का घात जनसेवा सो इस्वां णीयां निरफेदो
जात ४९ सब ही सरति राम की ता कूं अंधन मारि जनसेवा क

खावेइनही येकउपावणहार॥१४॥ सबघटमोहारामदेहिरदैरषांन
बिचारि दयाबिहूंणमानई औसरचलेहारि॥१५॥ सबकैपायाये
कही जलथलजीवअनंत जीवजीवसबयेकहैं जोएकोइसं
तरि पालाकाटिकरिमोसनपेनर मनमेंबहोतपुस्पाल दरगहलें
धमाणिहेतवहोसीकोणहवाल॥१६॥ दयाबिहूंणामानईदोजि
गचलेजोणि निकटिनिरंजनबासरे ज्यौंमानिधजनमकाहाणि
॥१७॥ मांसअहारीमानई दयाधरमकैनास जनसेवातेनरद्दूडेसी
निहचैनरकनिवास॥१८॥ मांसअहारीमानई परताछिप्रतहांजोणि
ताकोसंगनकीजीयै होइभांतिमेंहाणि॥१९॥ लेयोसाहिबमांगिस
तबजावनआवैतोहि पाछैंहीपछितोइगो क्यूंसावधानंनहीहोइ
॥२०॥ बदलोकहूटैनहीं काईसंतावैजीव दयाजाचहिरदैधरोसु
मिरोअपणांपीव॥२१॥ दयाजिन्हूंकैदिलनहीं मुषीकहैहमदास
ताकूंजमबांडैनहीं जमपकडैदयास॥२२॥ दयाजिन्हूंकैदिलन
हीभगतकहावैसोइ जमजालिमजबपीटसी तबराषिनमकेकै
॥२३॥ राषणहारासबलाधनां बिनाहोइरी करीमरमाईजुगतितं
ज्याबनलेहैंकजूरि॥२४॥ दयाजिन्हूंकैदिलबसै सबघटदेषेबुरुत
तिनकादरसणकीजीयै देषतकटैकरम॥२५॥ दयाबसैजादिलमैं स
बघटदेषेरांम तिससाधनकीपांहणीमेरेतनकाचांम॥२६॥ दयादे
सतहांबासकरिमनकादुरमतिषोइ तबदिलमांहीदीसतैअल
षनिरंजनसोइ॥२७॥ दयादरपणदिलमयां दरसैआतमदेव जनसेव
असतसंगतेंलहीयै अलपअमेव॥२८॥१६७॥ [illegible]
[illegible] पायापरअंतरनहीं सबघटदेषेरांम
दिष्टीसाधूजनांजनसेवा निजनिहकाम॥ येकरांमजांन्योंवरे
पावतानिनौदिसमदिष्टीसाधूजना जलटिसमादेमांहि॥२॥नि
रवैरासबजावतेंपी मततविचारसबघटमांहीदेषीयेयकरूप
वणहार॥३॥ सबघटिसमतारांमहै औरनद्दूजाकोइ जनसेवादास
दूजाकहैं सोकैसैपतियांवैसोइ॥४॥ नहींरवलनहीं तबकोनहींद
वानहींमिष्पार येकरमइयारामिरह्या जोऐणोंणएणहार॥५॥कोइ
दकोरणीया येकोआतमदेव दैसमप्यांनविचारिकरिलषिपैअल
षअनेव॥६॥ घीयेकवहोसहयणो बहौगहणांकनककुयेकायूंये
करांमहूजानहीयोहीवडाबमेक॥७॥ पूरणब्रह्मआकासवत था
पिआधिकहींनाहि जनसेवाअैसैंमांणिकरिमानरहैमनमांहि॥
[illegible] हिरणाकुसक्रमापि
सिराव्यौजनप्रहलादयेकजरासोरामकोरजातजिवकेयाद

नाथांजौंहरमांहिथीपांडूंराख्यापांचजनक वैंरहरिराषीयौ ल
गानतातीसांच ३ मांमांपरिगजमेल्हीयौ अंकमकीसोयतिस
हयेकनरोसोरामकोकेताहीपाक्षिनाह ३ रावणहारारामहै मरि
नसकैकोइ गनकोकुंभकांडे जेजगबेरीहार ४ येवमरास
रामकोगाहिरहैसाधूसोइ आपोतजिनाजरामकूं तौगजिनस
कैकोइ [illegible] मुग
ते बिषैबिकारसब आपणहैंकरतारकरणीबिणिकेसैंलहैं
जनसेवासिरजनहार कहैंसुणेक्याहोतहैं बिषकाबांणिनजा
३ जनसेवाणतिपावैनही साधकहैंसमझाइ ४ करणीसाइंसि
रदैकथणीतैंक्याहोइ कथणीतैंकरणसरससाधकहैंसब
कोइ ५ बिषैबिकारतजेनहीकरतहकलपनापूरिबिषैबिक
रामरैमेकरतीबिसरइहरि ६ करणीबिणिकथणीकहारतीन
रीफैरामकरतीकरणीमेमिलेमोईकाजैकाम ७ कथिकथिछ
केथाकेकरणीमिलीयारामसाधिबेदकहिदेतहै करणीहीतं
काम ८ सीलैसाधूदिलमेदया अरिरामसनारिजनसेवाइड
गुरगमनहीपावूंबेरीमार ९ मुगतेबिषैबिकारकूं जैगपानीक
नहीकाम बिषैरहतरतनांबुत्त जनसेवारातेरांम १० गपानीतै
इमुगतेबिषैसोतोगपांनीनांहि जनसेवाआलियअसंगमन
ज्यूंचंदजलमांहि ११ बातबणायांघालनो जबलगचढेनंनाव
जनसेवाकोजिनांसरैनहीआवेसतिनाव १२ जनसेवादासगप
नीदसाज्यूंसिथरदीपचित्राम अगननोजनलेतहैं सबैउषा
ल्हेकाम १३ यईहबिषेअसकतहैंहोइरह्योसुधरूप जनसेवा
दासकैसैलहैहरिहूरणपरमअनूप १४ दयानउपजैदिल्ले
दिल्लरहैबहोतकठोरसाहिबकैसेपाइयेपरषासिपाइये
र १५ कोमलदिलरहैब्रह्मदिष्टितजनपांवैरामपरमातम
नहीचीन्हीतौचतुराईबेकाम १६ मनकूंनिरमलनांकीयो
मलिमलिधोवैअंग प्रेमप्रवाबिणिसेवलाज्यूंलागैहरिर
ग १७ भीतरिमैलालोभभरतिबाहरिमलिमलिन्हाइ जनसेवा
लोमनकूंरह्योतौकिरमलकैसेथाइ १८ निरमलनांक्यौवैन
हीमलकूंपीवेधाइ जनसेवाकारिजनांसरैनरदोजिगयूंगा
इ १९ निरमलनांवपीवैनही नांसतसबमल गाइसांचबि
नाजनसेवलाकरिकरिन्हूयेउपाइ २० हाडांकरोमैंगरोक
परिमडीयेचामताकूं मैम्यौसुचिकरिअंतरबिसरराम २१
आसुचिसुचिकदैलहीसदावहैनोदारपरमततजाणैनहीमां

नेहम आचार २० दांतवणि सब बाडके सो तो मुष हि सांहि जि
म्यानी तो मांस की तिहि सतस बक छुपां हि २१ आचार किसी
विधि कीनी ये यातन का इ हु हुवा लात न कूं लाडन दीजीये हरि
भजिर हो घुस्पाल २२ जो कछु लगपास मन कूं जनपाणी सु
धु ग्रैना तन माडौ दे हर्जि जो औरस बकू ठे फेन २३ जे कछु ल
गपास मन कूं अनपांणी सुध नाही तन माडो दे हरि जो सवस्तु
नीव करांई २४ जन सेवा प्राणसंतोषी ये ता ग्रन सं पिनि राषि
कनक कांमणी जुगि जहरं से सो इंस्त्र तजि राषे २५ चाहि चूत
डी घटि बसै ताही कूं तजि गाडि जन सेवा हरि कानां बसै मन
लेतत्त तागा डि २६ जि हि आचार भिवगाति मिलै सो तो मेल्या
पूरि लो भरे तकै ता लिद वे जन सेवा सांई विसरे हरि २७ करमां
के बासि जीव सब मना विसास्यो पीव जन सेवा इतर कू तिरे भ
रमि भुलांनां जीव २८ २९ आचार संतां का छै दया सील साच
संतोष निरलोभी निरबेरता का टिकरम न ये मोष २९ सील सा
च संतोष गहि दया भाव ग्रत त्याग जन सेवा सुमिरण मन लगे
अंतरि अति अनुराग ३० इहि आचारि सांई मिलै संतां कहा
सुनाइ अनंत नांव अवगति के नी जैसो मनि भाइ ३१ ।। अैसे मन
का मे टिकरि जैसे दे दपि छोणि ये कहि कां एपां बाहिरा बा
दि वक्यां मे हांणि ३२ रहणी तो तिलनरि नही आ दिव पो वेका
रसूता जन मन केका [illegible] राम ३३ रहणी तो ति
लनरि नही दरहै अगम की बात करणी बिणि क्यू पाईये हरि
परमसनेही तात ३४ रहणी तो तिलनरि नही कथणी कछै
अपार जन सेवा दास रहणि विनां अति पडे सुबिचार ३५ र
हणी तो तिलनरि नही कथि परमो छे और चाहि दोषकै मू
लहै सो चाहि बासि रहे सोर ३६ रहणी तो तिलनरि नही कथि
कथि मूवा कोडि जन सेवा दास करणी बिनां कोइ न गहै घटतै डि
३७ करणी का कण का नही कथणी मेर समान करणी कण
का बाहिरा जासी नरकि निदान ३८ करणी बिण कथणी इ
सी ज्यूं सुपनां का राज करणी बिणि क्या पाईये जन सेवा कोरे इ
लाज ३९ जन मांर रहणी मोहि हे कथणी कथे सु वादि जन सेवा
दास रहणि रहै तेई लहै गेदादि ४० दिल हे जन सेवा जे कर
णी पूरा होइ निर्मे होइ फिरि ना बधे काल जाल मे सोइ ४१ क
थासु एप

लाधांजौंहरमांहिथीपांडूंराख्यापांचजनक वैरहरिराषीयौ ल
गीनतातीआंच ३ नांमांपरिगजमेल्हीयौ ऊंकमकीयोपतिस
हयेकमरासोरामकोकेताहीयाविमाह ३ रावणहाराामहेमरि
नसकेकोइ जनकोकछुनबीगडे जेजगबीहोइ ४ येवलारोल
रामकोगाहिरहेसाधूसोइ आपोतजिनजिरामकूंतोगजिनस
केकोइ [illegible] मुग
ते बिषैबिकारसब आपणकौकरतारकरणीबिणिकेसेलहे
जनसेवासिरजनहार कहेसुणेक्याहोतहै बिषकाबांणिनजा
३ जनसेवापतिपावेनही साधकहैसमझाइ ३ करणीसाइस
रहै कथणीतैंक्याहोइ कथणीतेंकरणसरससाधकहेसब
कोइ २ बिषैबिकारतजेनही कतहकलपनापूरिबिषेबिक
रामरमे करतींबिसरेहरि ४ करणीबिणिकथणीकहारतीन
रीपैरामकरताकरणीमेमिले मोईकाजेकाम ५ कथिकथिछ
केधारमे करणीमिलीधारांम माधिवेदकहिदेतहे करणीहीतं
कांम ६ सीलेसायूदेलमेदया अंतरिरामसनारि जनसेवाइछ
गुरग्यानहीपावेंषेरीमारि ७ मुगतेबिषैबिकारकूंवैगपानीक
नहीकांम बिषेहलतारतनांबुतरे जनसेवारातेराम ८ गपानीहै
इमुगतेबिषेसोतोगपांनीनांहि जनसेवाआलिपअसंगमन
ज्यूंचंदाजलमांहि ९ बातबणायायासनोजबलगबढेनाव
जनसेवाकीरजिनांसरेनहीआवेसतिनाव १० जनसेवादासग्या
नीदसाज्यूंसिथरदीपचित्रांम आजनगोजनलेतहेंसबैउषा
लेकांम ११ यहैतबिषैअसकतहैहोइरह्योसुधरूप जनसेवा
दासकेसेलहीहरिसूर १२ परमअनूप १३ दयानउपजेदिलमें
दिलरहबहोतकठोर साहिबकेसेपाइये परखासिपाचूंचो
र १४ केमलदिलरहैबुसदिष्टितेजनपांवेरामपरमात्म
नहीचीन्हदीतोचतुराईबेकाम १५ मनकूंनिरमलनांकीयो
मलिमलिधोवेअंग १६ मनावबिरिसेवलापचूंलागेहरिरं
ग १७ मीतरमैलालोभमतिबाहरमलिमलिन्हाइ जनसेवा
लोमनकूंरह्योतोनिरमलवेसेंथाइ १८ निरमलनांवथावेन
हीमलकूंपावेध्याइ जनसेवाकारिजनांसरैनरदोजिगयूंजा
इ १९ निरमलनांवथावेनही नात्तसबमल जाइसाचवि
नांजनसेवलाकरिवारिसूयेगयाइ २० हडाकरोधीजरोक
परिमढीयोचामताकूंमान्योसुचिकरि अंतरबिसरेराम २१
जासुचिसुचिकरलहीसदावहैनोदारपरमततजांणेनहीमां

नेहम आचार २० दांतवणि सब हाड के सो तो मुष है मांहि जि
मां मी तो मांस की ति हितै सब फें चुषां हि २१ आचार दिसा
विधि कर जीये यात न काइ हुहवाला ता न कूं आडा दीजी ये हरि
भजि रहो पुस्पाल २२ जे के कहुं लष पास मन कूं अन पांणी सु
धन्नौ नां तन माडौ देह हि जो और सब फुरै फैन २३ जे कहुं ल
ष पास मन कूं अन पांणी सुध नांई तन माडो देह हि जो सब पू
री चतुराई २४ जनसेवा प्रांण संतोषी ये ता श्रन तै भिनि राषै
कनक कांमणी जुग जहर है सो इस्त्र तकी रचा पै २५ वांहि चूत
डी घटि बैसे ता हो कूं तग्या डि जनसेवा हरि कांनां बमे मन फू
लै तत्तां गाडि २६ जिहि आचार अब गति मिलै सो तो मेल्हा
पूरि लोभ रतके तालि दवै जनसेवा सांई बिसरे दूरि २७ करमां
के बास जी व सब मन मां विमा त्यों पीव जनसेवा इतर कूं तिरि भ
रमि जु लांनां जीव २८ इड आचार संतां बडौ दया सील साच
संतोष निरलोभी निरबैरता काटि करम नय मोष २९ सील सा
च संतोष गहि दया भाव आतम त्याग जनसेवा सुमिरण मन लगै
अंतरि आति अनुराग ३० इहि आचारि सांई मिलै संतां कह्या
सुनाइ अनत तनां व अब गति के ली जै सो मन निमाइ ३१ ऐसे मन
की मेटि करि लीजै देव पिछांणि ये कपि छांणां वा हिरा बा
दि वक्यां मैं हांणि ३२ रहणी तौ तिलनरि नहीं आदि वधी वूकां
मस्हता जनम हानि कदा जागि न लागे राम ३३ रहणी तौ ति
लनरि नहीं दहै अगम की बात करणी बिणि कूं पाई दी हरि
परम सनेही तात ३४ रहणी तौ तिलनरि नहीं कथणी कहै
अपार जनसेवा दास रहणी बिनां अंति पछै मुषि छार ३५
रहणी तौ तिलनरि नहीं कथि परमो जि और चाह दोष के मु
लहै सो चाहि बासि रहे स्यौर ३६ रहणी तौ तिलनरि नहीं कथि
कथि मूवा कोडि जनसेवा दास करणी बिनां कोइ लगा है घटतो डि
३७ करणी का कणका नहीं कथणी मेर समांन करणी कण
का बाहिरा जासी नरकि निदांन ३८ करणी बिण कथणी इ
सी ज्यूं सुपनां का राज करणी बिणि क्या पाईये जनसेवा फेरेइ
लाज ३९ जभां रहणी मांहि है कथणी कथै सु बादि जनसेवा
दास रहणी रहैं तै ईल हैगे दादि ४० दिल है जनसेक्ता जे कर
णी पूरा होइ जिलै होइ फिरि नां बंधै काल जाल मैं सोइ ४१ क
थां सुणां क्या होत है रहणी रीझै राम बात बणाई जग सुण्या

निरमैसंतजबेसे बला ॥ भजिअलषनिरंजनराम धन्न हाथिप
लेफ झुनांपडे ॥ बातबणावोकोडि॥ निरमैनयेनिसंकजननेर
हेसंमतरजोडि॥ ५४॥ रामनामाबिनसेवला ॥ संसैगांठिनजाइ
कामक्रोधमदलोभमरि ॥ मैसबकरूं कुंमाइ ॥५५॥ पाबूंआरिलूटैं
सदा बहोतपछ्यांक्याहोइ॥ राममनांमलगारहे ॥ जनसेवासमै
षोइ ॥५६॥ मैमैमोरेसबनकूं ॥ ताहिनजाणेकोइ ॥ आपोमेटै हरिभज
पंडितकहीयेसोइ ॥५७॥ मैमेरामेसबबंधे ॥ क्यागिरही क्याभेष ॥ ज
नसेवासोम्यानीसो पिंडता ॥ सबतजिभजे अलेष ॥५८॥ पढिबे
गुनिबेक्यासरे ॥ भजेनहीभगवंत ॥ तबलगसबचतुराईयां ॥ ज
नसेवाकहेसबसंत ॥५९॥ राममजनबिनसेवला ॥ कथणीसबै
बिनाबिभषन्नजो अनकस्यां ॥ जबलगषाइनधापि ॥६०॥ रां
मभजनबिनसेवला ॥ कथणीबदणीलाइ ॥ जबलगनारद्दी
वेनही तबलगप्यासनजाइ ॥६१॥ मीगमीगमुषिकहे जब
लगषांडनषाइ ॥ जनसेवासुमिरणबाहिरा ॥ सुषसंतोषनष्ट
इ ॥६२॥ अगनिकह्योफूकेनही ॥ जबलगपावनदेह ॥ जनसेवा
सतिसुमिरणबिना ॥ मिटेनही दुषग्रेह ॥६३॥ पढिबोगुणिबोजब
भलो ॥ तबउपजेभगतिभगवंत ॥ जनसेवानांतरियबिमरण ॥ स
बहीनाषेसंत ॥६४॥ आतमराम नजानियो ॥ तोकहापढे पुरांन ॥ प
रसतोपरस्योनही ॥ लोहारहेनिदांन ॥६५॥ सीसपचावेबेदपढि
लहेनआतमग्यांन ॥ इसपढिबेमेक्यानफा ॥ नेबूडे आनिमां
न ॥६६॥ ग्यांनसेआयढिबजबनला ॥ तबसमझिलगेलिजनांम
जनममरणदुषसबमिटे ॥ सबहीसुधरेकांम ॥६७॥ गुइनिमातिबि
द्यापढी ॥ फिरियस्योधलोक ॥ जनसेवात्थारथिबाहिगये ॥ बिसरे
हरिसोथोक ॥६८॥ कलपतरआगोतकू ॥ पढिभरमेबहुबार ॥ क
लपनांमिटेनजीवकी ॥ गरेआंधियारोघोर ॥६९॥ आपअंधारे
चलतहे ॥ औराकूदेग्यांन ॥ जनसेवाहाथिचिराकले ॥ कूवेपडे
अयांन ॥७०॥ आपअंधारेफिरतहे ॥ मायाजलकेबीचि ॥ औराकूं
फिरिग्यांनदे ॥ आपचलेगुणिकीचि ॥७१॥ मूंदेनैनहिरदेनहीसू
झै ॥ बातयेकनहीजांनी ॥ मायामोहममतमैकेते बूडे हैआभि
मांनी ॥७२॥ चतुराईकहोपढ्यो ॥ समझिनउपजीमतिजन
सेवाजगपरमोधीयो ॥ तापढिबेमेधूरि ॥७३॥ पांचांकेपरबसि
भये भटकतहैसबठोर ॥ योडीग्याथोद्राघमे ॥ परमोधेफि
रिओर ॥७४॥ औरांकूउपदेसदे ॥ आपचलेनहीकोसा ॥ बिषय
स्वेदमकामिमयेदेहदइकूदोस ॥७५॥ बहोतपढ्यांक्याहोइ

बिषेबिकारनजांहिं कहैसुणैपालीनांतगो।बहौडि बिषै
हीपाहि ६८पोथीबिचिपडदोरचौ हाथिनआयोजीवसुग
तोबिषेबिकारसब क्यूंकरियावेयाव ६९ जिनसजेजनबूंदतैं
तासनेंकूननावओसागरतिरबोकठिन नांवबिनाहीनहीनाव
६८ मोहमायाकेवसिनये तनमेंपडेजंजाररामसनेहीवीसरे
बूडिमूवाबिणिनार ६५ औरांकूपरमोधतां आपाणरहेजं
जाओसणरमेसेवला बूडेबहोतअयाण ७० रहणीरांजीरा
मजी कथणीतेंक्याकाम रहणीरहिनिर्भैनया निरभैपदवि
सरोम ७१ रहणीमांहीरामजी चतुराईतेंदूरि तनमनयेंडा
सिकरैतबरसैरामहजूरि ७२ प्रेमनजनतेंपाईये अबगति
आपअलेष मनयेंडीउलटाइकरि जनसेवाअंतरिदेषि ७३
चतुरायोनहीपाईये अलषनिरंजनराइ प्रेमप्रीतिल्यौलीनव्है
संतमिलेसुषजाइ ७४ रहणीसोई हरिमिलेनांवनिरंतरलेह
जनसेवापांचूंउलटिकरि जेहरिचाहैतोमनदेह ७५ रहणीसो
ईहरिमिलेपांचूंअंतरिघेरि जनसेवादासतबसुषलहैजुगे
नहीमरमेफेरि ७६ रहणीसोईसारहै तजिआपोअभिमांनज
नसेवादासतबसुषलहैभजिनिराकारनिरबांण ७७ कहैरहैसपा
नीसोईकहैरहैसोईसूर कहैरहैसोईसाधहै रहणीबिनसब
कूर ७८ कहणीसोईसारहै मनयेंडीरहैसाच [illegible]मुकता
रदी जनसेवाकहणीकाच ७९ कहणीतोसबहीकरैरहणी
आनिसमांन जनसेवादासरहणीरहैतेकही [illegible]येगलतान ८०
कहणीकहतासोहिली रहणीषांडाधार जनसेवादासरहणी
रहैतेईलहैकरतार ८१ कथणीकथिप्राणिफूलीया बहोतरे
मायालोग जनसेवादासकरणीबिनां मिटैनसोसेसोग ८२ रा
मदोपमैतेंमनीसकामनजरौमोइथरमततनहीजाणीयो तोव
यासरमहोहोइ ८३ पढियौतोजबसीमलो आत्मयारिहेवि
चार जनसेवादासनहीवेदहैलायोवहैसिरभार ८४ मानहैंअभि
मानकेभेषवडबुधिवेदसौरन्त्रिनारनिहीओवही जनसेवा
किसंत ८५ कुचाकुल्तमेओतत्या च्यारिवेदपरबीण जनसेव
दासकिसकामका जेकरणीकाहैहीण ८६ करणीसोईसारहै
बिनकरणीकछुनांहि कनकष्पुभाकिसकामका जेजहरनसु
तामांहि ८७ बिषकेनांडेसवला साथनलादेकोइ अमृतनत्यौहै
भैताहिनलागैसोइ ८८ जाहिघटिहरिस्मृतनत्यारसेघट
सारोसार कुचाकुलाकिसकामकाबसनांहि

तप ब्या कि सका मका जे करणी नहीं होवै जन सेवा दास करणी बिनां मुंही तन पोवै ॥९॥ जो मोहर सजहर है उरतें सग्यान डारि तेनर दुष सहसी घणां ज्युं चौपडि की सारि ॥ जन सेवादास घर बिन गहयां बसो मारसहै सुं सारि मन अग्यो न कुं दिसा फिरे हरि बिन सीं उबारि ॥ कंचन तजे का चग विराषै महा मोह मैं सोवै जन सेवादास उडके कागे तल थकि तल कि तन षोवै ॥ माया मैं मन रपि रह्यो क्युं पावे करतार दो जिभ वाले देष तां कुल जाले सिर ज्ञार ॥ काहे नार सहै सिर आप पैं भासी चौरासी मे बि जन सेवा बोऊ ज्वार कि रि साहिब सुमिरो षूब ॥ अरथ करै ज्ञन रथ न ही बूडे कुल दासे अभिमान जन सेवादास गजानन का दी सें ऐसा हनांन ॥ परमतत्त ज्ञा पा बिना क बक का ज्ञलधाइ अरथ करै अनरथ नहीं ग्याडे नर दो जिभ ज्ञाइ ॥ ग्यांन दिढावे औरकूं आपण के उर मूंष घणमे हां मैं सकसी ज्युं गेवा सा को तंष ॥ स्वारथ लागा बाहि गया लष चौरासी धार जन सेवादास कै सें चचें बांध्या सिर पर भार ॥ वाद विवाद के मूल है संकन मानें काइ दस दस ानटक रफिरे आंतरि लागी लाइ ॥ वाद विवाद के मूल है संकन मानें काइ सीष सबुध सब का उिकरि मूसे गई बिलाइ ॥ तन ते दुरमति ना गई तो पढिबो कहो कि स काज जीव अलधे ना लगे जन सेवा कीयो नइलाज ॥ बौहत पढ्या क्या होइगा जि सनो निपत न धाइ जन मन का जिन्न मारे लष चौरासी जाइ ॥ लाल च लोभ न लूटें सदा बटपाडा बिचि मा हि समझ्या सांई संगि नहीं बांछे नम पुजिजो हि ॥ बहोत पढ्या किस काम का आपा का नहीं सुधि मन लेदी नहीं कुटंब में नई बि परजे बुधि ॥ फूटी बुधि समझे नहीं उघ सुषमा हि दहे जन सेवा राम बिसारि कुरि जगा के ताह बहे ॥ जन सेवादास मोटे बो मलो जे निज तत बिचारे पासी काटे मोह का फिरि आपण पौ तारै ॥ मोह नदी मैं ना बहे सोई समझि सयान जन सेवा पांवू पल टिकरि पर सेय दनिरबांन ॥ मोह नदी जन सेयुल बहे जके तजां हि सोई ग्यांनी सोई पंडिता बहे नही या मांहि ॥ बहोत पढ्या क्या होइगा जे मन सुल झ्यानो हि जन सेवादास दुनीयां गी उलफ़ाई नम मांहि ॥ बहोत पढ्या किस काम का जे अहंकार न मूंवा जन सेवा दास जल बाहिरा ज्यूं जंगल का कूवा ॥ कहो कूंपा किस काम का जे लाया न ही नीर जन सेवा साच संतोष बिन पढि पचि मूवा अधी ॥ बहो पढ्या क्या होइगा जे मिट्या न राग अरदोष माया वास

कांमतं तावै कहो सुष संतोष ॥१३॥ बहोत पढ्या किस कांमका
जे मन कै नांही धीर ॥ फूटै उरत लिनां रहै जन सेवा सतसीर
॥१४॥ पढ्या गुण्यां क्या होत है जे मान्यां नांही बिसवास ॥ जन सेवा
साध सवास बिन सो जुग चले निरास ॥१५॥ बहोत पढ्या किस कांम
का समाफ न माह्या जय कथै कै तै सब होत है सब नै होइ नथ का ॥१६॥
बहोत पढ्या किस कांमका जो होत बधाई मांनै सुमिरण सुष न्या
रहा बिष फल षाया जांनि ॥१७॥ मो निमगन रस पात है हरि रस
न्याइ तिन जन सेवा पति क्यूं पाई ये उर कांम क्रोध मर परि ॥१८॥ दि
न का डूं मति नां गई औ दिन रही जाइ जन सेवा सांई नाम मो तो
बाग षायां जाइ ॥१९॥ जिसनां दिन दिन बधि गई जो धिं स्यारि तक्या
न धारि ते नर डूष सहसी घणां यो औसर चाले हारि ॥२०॥ पर बन
जुटे जीव को जीव की त्रां त्रिन जाय जन सेवा ये करतां तो धणि नां
बसातन बडन थाइ ॥२१॥ गरवगो जिजीव्र की तन जो आपा दि
जौबो हरि सुमिरण हरि देध रो कत हैं तन पो ॥२२॥ पवन ता॰
बडो तौ निरपष कै सै पूर्जि उलक माया जाल मे फंस्या गयि ना दा
॥२३॥ जो सम भ्याम्यो हरि जो आपा करि सव पूरि जन सेपा ॥२४॥
महा रत्नां देषै सब नर पूरि ॥२५॥ माडे पाट पटि बेद पुराण रह असा
धान जीव दरगह दादि न पावसी मनो विरांरी पीव ॥२६॥ पराइ नां
गुरु डूं नी लगावे आपण लै घार आवै तके नही अकाति कथै
जन मधु पुरि जावै ॥२७॥ साटस बा भरथा सनमा कुं पत ज्यो कादि ध्या
वै आपण नावलो हल्ला वेरा औ दैह धिडावै ॥२८॥ आनंद पकाइ मा
मांडै करि निरमाइ न त्यां वैम नसेवा दास समके फकु नांही गूंथ
है दो निग जावै ॥२९॥ पत्र डो वेट व पक्ल यो आपण लिस्ता
कलावै के चनी क्क भां कलयां नै नै जाण डू चगावि ॥ आर
कल्यो भस्मा दिठावै आपण बे वित्या विं यां चा तां करें ये संक्
फं कल्या ता सातल्हि जावै ॥३०॥ पोथी पांना बांधि बिचारे न्यान का व
धो बो संत रिद्धो अलप निरंजन मेध कि न मांहि गोयौ ॥३१॥ ॥१
२॥ इती चांण क जोग सहूरत्र ॥ ४ ॥ अथ निनां
जोग ॥ गरवदा दिगो चिदन गोरिश्रो सब बे के जाड़ पाल
न्ना सरै न्यान गोबक दिसला ज्ञा ॥ चूरा औ एकां कर न पथ
स्व कांपेदै हन्न प वेरा संगी के न ही जन सेवा तनि जीं न
॥१८५०॥ ॥३५१५॥ हैमबदा औ जीवन्तेत वक
हरि सुमिरण जन वै दा ॥ तकात थक ॥
॥ यकें नरकों न्तें नवस हलामें नहें ॥ ते ॥

तिहै तेरा नांही कोइ ॥ औसर थथकां संनालिनर ब्रूता मेला नहोइ
२६
५ आगान उरथ मुखि ताधीयो तहां लगी नत तातवा तौ हि बिस
सो कुटंब मैं ते नलो बेगा छुडाव ॥ ६ साहिब चिंता निकरै सिर
ज्यों का प्रतिपाल ॥ मयो हरां मा जी वडो हरि सुमिरण बिलबे हाल
७ मरणं सिर सकै नही मांडै बहोत मंडाण काल पहोंके थया वदे
जीवन पाके प्राण ॥ ८ जो गिसनेहारा मन्नाजी तो सरवस जाइ
काल केवते पाकडे तब हरि बिण कौण सहाइ ॥ ९ मात पिता तिह
रिही सगा हरि बिण हजा नांहि कहर काल की चोटमें सब ही बी
छडि जाहि ॥ १० पलन रहीं छाडि कारि रहे कुटंब सतं जोडि जन सेवा द
स हरि भजन बिण काल गहे घट तोडि ॥ ११ मन तजि कुल कु गेरता
हे स्यो भलहरि गाइ जन सेवा औसर है नलो साध कहें समझाइ
१२ मन तजि कुटालि कुगेरता होइ को भल हरि गाइ जन सेवा दास
कुगेरता मूजमो गरीया ॥ १३ मूजमो गरा तब सहे जबतनि आव
होइ तन अभिमानी सेवला जमभार सहे पूं सोइ ॥ १४ तन अभिमान
आपकूं आपण बेरी होइ जन सेवा दास दयाल कूं आवर्ह दिलो
इ ॥ १५ अपण बेरी आप है जब तन्प आपा होइ आपा में दिरहहरि
जै तब गंजिन सके कोइ ॥ १६ आपा जब लग उपजे तनमा है महंकार
आपा मेट्यां सुख भया तब दिल मांही दीदार ॥ १७ आपा राख गुमान
सब तजि हरि सुमिरण लागि जन सेवा तब सुख आण मैं जौ कोई हे
को गि ॥ १८ आपा की ओटी सबल काढि न सके कोइ जन सेवा कोइ
कुढसी नाके गुर पूरा होइ ॥ १९ आपा की ओटी सबल दुखउपजे
येमांहि कोइ न जावा हेज्यो लिसी इजा करण मनांहि ॥ २० आप
की ओटी सबल पंडित बेद हारि मरजीवा कोइ सबला कोई संतप
डूता पारि ॥ २१ आपा की ओटी सबल मरे मनी में जपति आइ जन से
वा सज होइ सबरे तेर हे राम स्यो लाइ ॥ २२ बडे बडे मार महाबली किते
मन में नतलि जां हि कोइ थिस गुरुमपान्यां हि उबरे था कलि मांहि ॥ २३
सा हसुलतानां मर थरी जन सेवा गोपीचंद नाही होइ निरमें भया ते
उबरे न जिणो बिंद ॥ २४ सहसुलतानी नरथरी छोड्यु संत अनेक मे
पात जिसा इफजे तेउबरे कोई येक ॥ २५ मन नांमें ततलि सब मेरा
वरके सुलतांन नाही होइ निरमें नये भजि राम ना मगलतांन ॥ २६
कौण मांसे प्राणीयां सहतो निर में नादा काल पडे सिर सबला जू
ता रणक मौ वाद ॥ २७ कौण मरोसे प्राणीया तह तो ना सधार ज
गि जयो जगदीस कूं जम दीया दमां मां आड ॥ २८ कौण मरोसे प्राणी
यां आलस करि रहता जन सेवा सुमिरण कीजीये ता केज मइता ॥ २९

कोई नरसैसो हरस्या जमवाके दिनरात्रि जनसेवा सुमिरण कीजी
जै सा पिवत कुरम्याति ॥२१॥ नरवी वरतक्यिो पैरे जनसेवा सं
चारो काल नरनिंद कवै दा सेवते जा गिरजयो दयाल ॥२१॥ बो
खारतो तंकक्ते सुणि सम्मूरिख जीव जमजा लिमत बंधाडी
नेसुमरै क्यू नहि पाव ॥२२॥ सम्रूथ सांई सी सपति रा घीमसपा णरा
मज्ञान विधि सेंकला के कुंन पावे जा ण ॥२३॥ सम्रूथ का सरण
गहीरे मूरिख मनवा मारकाची सत हिन लूटि सा जमजा लिमन ॥
पवा ॥२४॥ चोरा सिर है सबल का तो रं कवाट क्यो हो इ ॥ जनसेवा वे
ग है सम्रूथ का तका जिन सकै कोइ ॥२५॥ चोरा करि सम्रूथ का रंक
वा टगै हैं आइ ॥ जनसेवा दास सबु टैनही दो न्या साथ ज्याइ ॥२६॥ सम्र
थ सांई क्यू तजे मंदन जै भोले चित्त ला इ ॥ जनसेवा दास सहु सी घ
णा दुष रासि मैं नाइ ॥२७॥ चौरासी दुष अनंत हैं बरणत नां ही
वार जनसेवा सुमिरे राम कू तौ सकल मिटै दुष थार ॥२८॥ चोरा
सी लष नाम ताप पावै मनिष सरीर सो तंयह पाइ स्यो सो निलिम
न वादीर ॥२९॥ जक तन कू वासति निस मन में मा नेमो दा हरि सुमि
रण कि न सेकन कारस्यासहे गोद ॥३०॥ जक तन कू सिंगारि का तिम
नमे धैबा फूलि जनसेवा दास हरि ज्ञान विधि अपणी ल्या साधू
लि ॥३१॥ जी जन विसर का रह्यो मरणां सं कैनो हिसु तकानि ॥
कैसो त्यागि तिनि स्मृत विषयां हि ॥३२॥ अंध अचेतन केरयो मर
णां सर्जे नहि मुक्ष नि वा हित नहा पामतं सो सच हाबा वाडि
जंरि ॥३३॥ अंध अचेतन केरयो विस यो विक्ल जजन सिजेज
लधू दंत वि हित मिथा मा नत ॥३४॥ अंध अचेतन केरयो कुल
को की यत्रि मान हरि विषियां सगा तान हा सवे प विडम्बो ज्ञान
॥३५॥ सदेह कि डन च्यांविटे तरनां हा कोइ स्वारथ सगा सब मिले
चेतन कसर हे ॥३६॥ फर सबका सिर कुला दरस पावे धमाइरे
मोक्ष सुपने सा विचारी दिना रंग लत ॥३७॥ अंध धंध दिनपो
या सुकाण कहुं न पुकावि शिक्षा पाइ ये नयो जाणजाण
कोहा धन ॥३८॥ सुकाम विषि विनन सकुला गोसिदां नहि बाधि
सचे भ्यासे न चैपरयेव विधि ॥ काण तिदे विनपुनि की यो
सुस करि न जान ॥ जनसेवादास ताजी का कूं कर सुधरे
काम ॥ ॥४०॥ वय कह पुनि ना किया दरस पायो पछिता इ जनसेवा
रप तेप्रा णसा दिन रैनि गिना वायाइ ॥४१॥ जोबन घायो जन हरप
विस समातेसों ॥ जनसेवा दास हरि ज्ञान विधि कीयु सनतन
महा ण ॥४२॥ दिन दिन में ऐसे जनसेवा दास ये राम जपहा ता मत

मा ना ये जनसेवा सुधरै का माथ ३॥ राम कह्यां बिण जीव सब
दो जिग चाले जो हि॥ जीवण की आस किसी जो रिण जह रकूं
पांहि ५४ जां तिवूं जिओ गुण करे दरगह ज्यां बन हार जनसे
वा साच सतोष बिणि चाले जनम बिगाड़ ५५ बैरी सा सु तौ हित
वा साच सतोष बिणि चाले जनम बिगाड़ ५५ बैरी सा सु तौ हित
का ये सो बैरी मीत न हार रामसनेही बीसर्या लो कुसल क
हां तैं होइ ५६ जब ही जीव संकट पडे तब सगा न सूके कोइ स
गा तो सिरजनहार थ्या जनसेवा बिसर्या सोइ ५७ ये मन धीर जि
नां धरो घट छूटे तिह बार जनसेवा सिरजनहार कूं बिसरि हो
इ मत ष्वार ५८ जनसेवा सिरजनहार कूं रखे बिसारी बीर ये तन
नबी तो जात है ज्यूं अंजली को नीर ५९ मरणा सही तया रहै जं
गल होइ मुकाम जनसेवा जिन ना बिसारीये आपणे मुष ते राम
६० जीवण सुपनें सारिषा बिष ज्यूं पीवे जोणि जनसेवा सुमि
रण बाहिरा या तन की मई हाणि ६१ आपणां राम संभालीये फ
रस्न की जे ज्याब जनसेवा सुमिरण बाहिरा यूं ही षावे आव ६२
काल्हि कहो क्या होइगा नही पलक की गम जनसेवा राम
संभालिये घड़ो सिराणे जम ६३ सासा सजि णे नित कि मघडी गा
फिल क्यूं रहै बीर जनसेवा राम संभालीये मन का छीपणे थी
र ६४ जनसेवा दासगा बिंद नजो तजो आन की आस आन बा
ट छूटै नहीं राम पकड़े न्द पास ६५ आन वाद सब परहरो सुमि
केवल राम लष चोरासी दुष टलै जनसेवा सुधरै काम ६६ मी
मेमेरी मे जीव सब बंधे आसा फंध यूं जीव रसातल जात है च
ते नांही अंध ६७ मैं मेरी है जीव को पासी है गल मांहि जनसेवा
राम बिसारीयो यूं नर दोजिग जाहि ६८ मे मेरी मे सब बंधे नर निरं
द सुरईस जनसेवा सुष के से लहै बिसारि रहे जगदीस ६९ मे मे
र जग सब बंधे दरयो गपान बिचारि जनसेवा साधू हरि नगे अ
मम तसब डारि ७० बिषै डजनम डंडगे मये नरतन रतन रान जन
सेवा सुध बुधि बीसरे पार ब्रह्म नही जान ७१ जागी जीव सो वेक
हां सम फिर करो बिचार जनसेवा दास हरि भजन बिण जनम
जनम डुष लार ७२ पति चले गोमाडि कारि ज्यूं तेन रमिन मूलि
सुक्रत कारि बाकरी यो तन मिलि सी धूलि ७३ सब दिन बीतेस
बला षेलिन देषे आंषि केते सचि पालागये जोति चले सब नी
धि ७४ बनिता सुत बसि न रत्नया ज्यूं बा गारबा सिमरकट जन
सेवा दास हरि भजन बिन काल गरासे गंठ ७५ मरकट मत छाडे न
ही उलके आसा फंद जनसेवा दास हरि भजन बिण माइ सहै दुष

सुतनारीधनहेत।जनसेवादासचैतेनही।स्पांमयलटिमयासेत
॥७॥पुतकुटंबकूहितचैतेंघरतैंदेहनिकस।तबतेरासंगीकों
णहैरेनरकरोबिचार॥८॥सीसबंगेकेहितनहीतौहितकायोग
वारकेवलकरताम्राडिकरीकांहलीयौसिरभार॥९॥जिहिसु
मिरंमरयौनहीतिहसुविदजेम्राटरामहिमास्योकुटंबमैवां
भैसायेनात॥१॥जेठमासजुगधूयहोसबहीदाफैनीलसीतल
तासुपनैलही।अंतरिबिसरपाव॥१॥नैभलहरिन्हाकरीअं
वरिबहैडुसारदिनदिनसोषैनारिजां।बिसरेसिरजनहार॥२॥
सूंमाकूमाफिरगीसूजगउलफैस्वादिनाहरिभजपोनफकुदर
बधुरयौंतनचायौवादि॥३॥स्वादहेतसबजगबंध्या।सूंमाधिगु
हहेतसबेबटकहितकोनही।ताहिआपणपौदेत॥४॥मायो
थीससारमैकरिलाहिचसंकोनासुतदाराधनमतस्यौ।मूलैआ
गूंटोल॥५॥परदेसचेतजठसमाफिलांरामबिमुषनरसगनीजय
हैफकफोलमैसुधिबुधिसबदहानसट॥६॥बालापणसमफै
नहीजोवनमयेरतकामबहोडिबुढापोआइयौतौकैसुमरैरां
म॥७॥स्पांमयलटिधोलानयाडाबकहासोवेस्पोरडाबहीरांम
संभालितेनहीके गोअपसरमोर॥८॥हरदामांहानिसिकरि
मनकरोविचारकोतेरातेकौण॥का सबबिबटाऊलार॥९॥पैडै
लैवयकवापाछैवहैबलीरप्रीतिकरैकहोकौणतं सांमलिम
नवाबार॥१०॥चौरासीमैभरमतांनबडीआवैअंताजनसेवादा
सहरिभजनकूंनरदेहदेभगवंत॥११॥रांमभजिनएकातौजासब
दीनहींसबगातिरहाआबहीमिलाहलजीयातौचौरासदुष
पाई॥१२॥सकलसिरोमणिनरदेहहै।जिनैतैलहीयेरांमरांमबिहुणे
देहहैतोदेहकिसकांम॥१३॥चेतिसकैतौचेतिनरऔसरमनलौ
जयेसरवसौडिवहैडिलामैनस्यौमनियजनंमुरदेह॥१४॥साधसं
बेहीकहतहैंसमफायांतोहिदेतजनसेवासुमिरणकाजयोबी
नडिसीतमयेरत॥१५॥सकरस्वांनकाभपरफौटपतेगबहैंनाइयै
सरबूकैपाणयांफेरितहाचलिजाइ॥१६॥धंधाहीमैयचिमूवां
रांमबिमुषतेजीव।जनसेवादासकैसैलहैंहरियरमसनेहीपी
व॥१७॥कायाहाटसनाटलौजनमजनमदुषभार।सबैपडि

जनम अमोलिक हारीयौ मन दीन्हौ ले डारि जनसेवा सकूं
पाईयै सुमिरण विरि सुघ ठौर ॥२०॥ जम बदा तौ सांचतै
नां फिर चैनां घाउ जनसेवादास तेप्राणीयां चाल्या जम गग
इ ॥२१॥ तन माया दो ऊ अथिर बोला ज्यूं गलि जाइ सोई सूरा
पूरा रांम का हरि के मारगि लाइ ॥२२॥ औसर भलो संभालि न
र मनिय जनम फिरि नांहि जनसेवादास सब पंथ मैं सब ही बी
आ डिगो नांहि ॥२३॥ रज बीरज का बूंद तौ भली संवारी देह तां कूं तूं
बीसर्यो कीयो कुटंब सूं नेह ॥२४॥ नैंण बैंण रसनां थकै सबद
सुणै नही कांन जे तिसमै कबरो किसी जम न जा लिम बलि
वांन ॥२५॥ पा पैं तासूं कांम है सो पहली लेह संभारि धरतीध
र तब सब कहैं जे पब दतना रांम चितारि ॥२६॥ गरवा किसो या देह
को वाहे कुटंब सब ये हू जनसेवा सब देषे घडी रांम स्यां प्रीति
नेह ॥२७॥ गरब आ ढिगो बिंदन जो साध कहैं सब ये ह पांणी ही पाछि
तां ज्यां देह मिलैगी षेह ॥२८॥ जाबल न्याय पिंजर स्वास है हरि बि
न जिलाहा लेह ज्यूं पांणी का बुदबुदा ऐसा है तन येह ॥२९॥ दे
ह अथिर थिर कर तहै सुता बित नारी नेह धन जोबन है पाहुणो
त हरि नाजि लाहा लेह ॥३०॥ बरीयां सोई है भली तब ही कहीये
रांम परबासि हो साजी बडो तब गाढै बूरि पसी कोम ॥३१॥ धंधा
हीमैं या बिरह्यो हरि सूं मन क्यान बांधि यक निचार जी व जां न
म घेरैं गे आंणि ॥३२॥ मरणा सही तयार है तू हरि न जिलमन
लाइ काल तबैसी चांण ज्यूं झपि चीत्यो ले जाइ ॥३४॥ नर बक
रौ काल षटीक करि गिण पालै तहै सास देषै न चेतै नही नारी
सुत अधांस ॥३५॥ लोन जाल जी बम छली काल कीर गाहि ले
त जनसेवादास चेतै नही देषै जीव अचेत ॥३६॥ बिपति नदी
पांणी बहै देषै निकसै नांहि बेद साध सब टेरदे पडे मांहि
का मांहि ॥३७॥ मांहूं महल मैं नितिसा वै देषे भागै नांहि जन
सेवादास यूं जीव कै बिधा सुरि मन मांहि ॥३८॥ कौंण न रोसे सो
इ रह्यो षडो सिरांहणै काल ऊभि चरण दिस दौडि रमो हूं प
सार्यो जाल ॥३९॥ जीवन थिर न रकरि रह्यो मरणां सूं के नां
हि जनसेवादास हरि भजन बिणि काल ग्रास करि नांहि ॥४०॥
हसती घोडा गाव गढ हारि बिणि फीका येह माल मुलक स
ब पलक मे परबासि को सी देह ॥४१॥ हरि सा हीरा हाथ तैं जि न
डो रे जु गि जागि जनसेवादास औसर भलो हरि के सुमिरण ल
गि ॥४२॥ संगति करि मन साध की मन तजौ कुसंगा संग जनसे

रिकरनो।तुरसीके कें वारी कान्पु
रांम मिन माता चाकर मनो छोर
।१।तुरसी यहि टेक मेरे जीय मही
ग नरि रूं राजा रांम कूं छाडि अ
तुरसी तुम ही तुम चितवत रहूं तु
म।तुम बिन और अनेक सुष।सि
रौ सब सुष तिंक रि छाड्या अंत
मि मिलि आनंद करूं अपने
जावतक वारी आ नो।तावत पति
लागि रिसि दिन।करै पति अप
चो लावत नगो।अे तितरी राज
हथ तेवो न गहंतद।।हथ तेवो हरि
मो तुष सोडो तब कें वारी बारी जु के
सिषि होइ।३।चौ।रौ तुरसी वपति
लोपी वपा सिर है निति वेसी।जो ह
चलावै।सो ततकाल धका सल पा
धका मिलतहि।अरु पी वको सा छु
बरमा पतिहि तजि।अनत करूं र न
हजीय जानि कै।न्रे गये मन माहि।
न बिछि।बिघन परै को कनाहि।
न कूं गये फेरि।बहू दिसा नें घट मे
र न निरा षे ताड़ी सो पति बरता ना
पी।तुरसी गुण अ्सी तगो छिद न
होइ कार।तऊ दास नेमा निछो
।२।स तगुन माया ब्रह्म को उपत
तुरसी निरगुन ब्रह्म है।सब स्वरूं है
बिस म हे स तो।गुरसु छिद सअ व
सबके परै।सो निज के तह मार।
त मैं।लुगते न नहीं गुन ज्ञान तुरसी
व प्रीति पिछा नि।१।तो पचीसा के
सोडी तुरसी और पति ना करूं।जो
।६।जिन वन कै कौ वारने।तिन व
सी कहा घरो रूं छिप पने पति आगे

गै सिरलेता ४४ नगर अजोध्या मै रहै मनी माया सं तेतजन
सेवादास चेतै न ही घाइ गया पछितावैगा ४५ कर मांदे बसिट्ठ पूस
है चेतै नाही जीव जन सेवा क्यूं सुख पाई दे मन ना बिसारयो व
४६ नर नै धड कबे गरा भाबिना गुरु ग्यान ना क्रिना नर मूल जन से
वादास करम ता फिरै यू हीडा डोडूल ४७ खोरा घावै बदी विणि कं
चन ताजि गाहि दाव जन सेवा सुध बुधि बीसर रहे ग्यान सरा चि
४८ माया मल कूट विपालै अंध अबुध जीव जिन सिरजे जल र
बूंद तै सो मत बिसारयो व ४९ माया के आधीन जीव कूं नैपग
कै पां राया जन सेवा सिरजे बूंद तै तासं सक्या न बांणि ५० रबिना
भगति भगवंत की नाही सुख पावै कूं और जन सेवादास मन दह
मति हरि बिन दूजा गैर ५१ तीन लोक तुलि कहत है जन सेवा।
साधू सो हरि नाम जन नाबिलि ज्ञान लेगि ये को घासन बाइ ५२
ऐसा महगा घास है भजा ये केवल राम बादा बिबादा लाणि क
रि मति षोवैं बकाम ५३ पल छिन बीती जात है घडी महूरत
ता म यू घटत घरत [illegible] घटि जात है तजि आलस भजि राम
५४ कहा की बोतल पाछकारि लागि रहे जे ज्ञान ध्यान जन सेसा
मे जे पार ब्रह्म न दीन्हा ५५ जन मग मा बी ग्यान पथि नइन
रहे बुधि साध मिलन ब पार पूत बपाई हरि की सुधि ५६ जी
व मारे हाथ सो मूल क करे प्रसन जन सेवादास ता जीव का
र चडे सिर रिन ५७ साचा मारे हाथ सो कूं गे दीन्हो मन जन से
वादास सहसी घणा जन मजन मगु घतना ५८ पार ब्रह्म कूं प
दे मन ले दीन्हो और ति हि सर्म निजन सेवला या बानाही जो
५९ पार ब्रह्म कू पूछिदे मन ले दीन्हो और जन सेवादास तेप
या परे न पावै गेल ६० अकालि बिडूणा अंध ला अकलि न
रमा हि मेतारी मल षे नही नर दो जग ध्यान हि ६१ जीवन
विसतावही मूल दसे तीना लाचल बोफधरि सा मपरि मलो बि
डोडाव ६२ राम सनेही गाडि करि लाग ग्यान गंवार जन सेव
स्ते प्राणी या सिर घणी सहै ज मार ६३ ग्यान दे वल सत्संग ड
मैला वन सा वा सुमिरो प्राण ब्रह्म कू जन सेवा सधरै डाव ६४
ग्यान देव बकामी है का मसरैन [illegible] साधा नर सो नेल
। चलेजन मा बिगोइ ६५ पूंगे देवा दिखाइया नै रूप [illegible]
मसे प्राणी ध्यावै सदा साधे घटे कर मरा ६६ सिरजन हारा
क्या ता कू जाणै नाहि जन सेवा ते नरक ७ लिसी लषचैरा
मोहि ६७ जन मास बन्न ना भर मम मे को मकल पना माहि ग

तुलबसुषकपजै तबलभोहरिकारंगा२३॥ त्रिबधितापकी
आवमेंजीवजलेसुषनांहिजनसेवासाधूसंगतेंसबेताप
मिटिनांहि२४॥निरंजनसरणेजीवरहैतोमारिनसकैका
लजनसेवागहरासमदमेंपडेनहीजमजाल२५॥चोछोपा
णीओरसबतजिगहिहरिदरीयावजनसेवाछासरुषमेर
हेतहांनहीजमडाव२६॥चोछोपाणीओरसबमायाकोऊ
गजोणिजनसेवाहरिकानावबिणिमटकिनटक्तिहोइहाणि
२७॥जलथलमांहीमटकणांबिनांनिरंजनराइज्यूंनीलकाठै
घालणांफिरिफिरिधारीयेवाइ२८॥मायाभ्रमतजिषांणीयांजी
वणांजलीनीरंजनसेवारांमसंभालीयैसांभलिमनवाबीर१
२९॥जनसेवादासगोबिंदनजोसांभलिमनवाबीरयेओसर
लागनिनहीजमकाकाटिजंजीर३०॥साधकहैसमकाइकरि
तसंमूललाजोहिरांमनजोमनाबिपतजौयोओसरफिरिनांहि
३१॥गाफिलक्यूंरहैबावरेमेंसहरिगुणगाइजनसेवामाणि
सीसपरितऐसेकैमनचितलाइ३२॥पांचविषैतजिरामकहिउ
रमतगहिमनमांहिपांचांकेबसिसेवलालषचौरासीजांहि
३३॥रामबिनांदुषबहोतहैलपचोरासीमांहिजनसेवानिस
हरिजोऐसारादुषजांहि३४॥मोतानिसोणीसीसपरिआ
येधोलेवारजनसेवाक्योनसभाउकरिलेकरतारांमचिता
र३५॥मोतादिलाडाआइयातूंसूतोनीदभघाइमननजो नि
रंजनओनतजिज्यूंसुषमेंरहैसमाइ३६॥ओनबोटजीवनांत
जेतेजनमगमावैबादिजनसेवाडुषसहसीघणांदरगहनांही
रादि३७॥कालकहरजीवडरगहेसमिरैकेवलरामजनसेवा
डुषपावैनहीनिरभैपदबिसरांम३८॥कालकसरताकैबाल
रेजेसैचिडैसाबाछाजनसेवाकालउचंकिलेजीवनपालेजा
णा३९॥बारबारतोसेंकहूंमननजोनिरंजनराइजनसेवि
नबिनभ्रमांफिरिफिरिषोटापाइ४०॥संसारसकलनसुषसु
पनकामनसमकाऊतोहिब्रह्नाबिसनमहेसलूंरासथि
ररहैनकोइ४१॥संसारसकलनसुषसुपनकातजिगहिसुमि
रणरामजनसेवाकाजिसिधहोइसबहीसुधोकाम४२जन
मसमालिकजातहेयोजीवजाणैनांहिरांमनजानाबिनसेव
फिरिफिरिषोटाषोहि७
चेतैनहीअचतजीवअबुधीग्पांनाबिणि

री॥२४१॥ जिन हाथ पाव मुष सौ नवणाया। ता हिवा छिमा न क्षं
आया। औसा पापी है कोई हत्या। जब गति आइ ज्ञान का पूजा॥२४
२॥ साछी। का ता केवल आडि करि लगे ज्ञान गवार। जन सेवा
तेइ पथा वही न्हालि रहे नरता॥२४३॥ मानिष जनम तें माति गमै। ह
रि सुमिरण विणि बादि। जन सेवा सुमिरण जायें ज्यूं देरग हूवा
वैदादि॥२४४॥ तो सरब सहारि मां जागण का जकयेहा। जन से
वा दसमो विदन्सो सुफल करो नर देह॥२४५॥ सो वुण का सा वार
नो। जागण की या वार न हीं जासी लष चौरासी जुणि मे सब दु
षली या लार॥२४६॥ लष चौरासी जीव स्वास वास न हरि रहन्हा लि
नर देही तें सुफल कारि हरि सुष सागर कूलि॥२४७॥ जन सेवा चित
मन का जीये भजिल जै भगवंत। लष चौरासी दुष मिटै सब ही
भाषै संत॥२४८॥ अलप सुष के कारणै काइ दुरा क माये कान रोट
दार्टा हरि सूरवे जन सेवा सुमिरो राम॥२४९॥ सुष थोडा दुष मन
त है समये क्यूं न ही नीपा सुष नेका सुष आडि करि जन सेवा सुम
रो पाव॥२५०॥ अलप सुष दुष नै जिसा नजि हरि सुमिरण लाभी
तेरे हरि बिण सांगा को नहीं जन सेवा देषो जागि॥२५१॥ बिपा तिम
री जल भाति वहे ताजि हरि सुमिरण लागि। जन सेवा साधु सब कहै
हरि लगि सवा विषया गि॥२५२॥ का माधि संजगइ स हरि हरि देग
यन्हालि जन सेवा स्व अनुधि बीसरे यूं लष चौरासी फेरि॥२५३॥
के स करि है काल ही जरा तहा मारे आइ। चोट गरै भगवंत की जन
सेवा तब दुष जाइ॥२५४॥ विषया वै न्यूं तल के यूं दिषो ऐ मति ही
ण। दही रोटे ष लि मोरन ई। यूं नन की योषी ण॥२५५॥ ज्ञान कथा सू
त चिया ली हरि वरया नसु हाइ जन सेवा दास तोमान इ निहचै
दो जिग जाइ॥२५६॥ हरि सुमिरण हरदे न ही ज्ञान देव तें हैत तेनर
पल विग चली न्यू निश्च तांबो घत॥२५७॥ ज सेवा दास ते प्राणीया ह
रि तजि ध्यावे ज्ञान देव सहत जनम घेर सी जासा नरकि निदान
॥२५८॥ हरि तजि ध्यावे ज्ञान कूं हारि तौ ते ईहरा म जन सेवा दास ते प्रा
णी वासहरूसी सिर वहो बांम॥२५९॥ सो सन बांवै ज्ञान कूं सो सम्स
है व है मार विन चारा ति पाति पी छि दे न्याइ तजे नरता॥२६०॥ चोथ
(ज्ञान देव का पूजणहारा जाली नर के न पावै पारा दयाल नही ता
के घट माही जन सेवा दास न्यूं दो जिग जाही॥२६१॥ स्वारथ के संगिल
गा सब ही। जा मिन दैषे कर्ता कब ही। सुन बितना रिला गि रहे वा
रा। याते बिसरी सिरजन हारा॥२६२॥ सुमिरण का जै वान्हीं देही। मूलो
पापी परम सनेही। आट आडि क वन रखे ते। लष चौरासी दुष

फो हि

।हसुहि॥२०॥जनसेवासाचेरो

॥जनमज

नमडुपलार॥२१॥नैनथकोजुगअधुलो॥फिरिफिरिपडैजैदेव
देवनिरंजनमांडयो॥ताकोलहैनसेव॥२२॥ओछिदेकेअं
धला॥जगलरमेचक्रवार॥जिहिसिरजनलबूंदतै॥ताकंजाणै
यारा॥२३॥फूटीआंपिजगतकी॥मैरुजगतिकेरहे॥मूलनिगहे
नरतारकू॥जिनिदीन्हानरदेह॥२४॥फूटीआंपिजगतकी॥दी
सैनोहीमूरि॥पनपांणीतिणतनरच्या॥तिहितजिलागेकूरि
॥२५॥जगमधायेधारच्या॥देवलसेवादेव॥गायतिजगतविसा
रिकिरि लगेआनकीसेवा॥२६॥नरनारीनरकांपडैं॥पैनकेव
लराम॥जेहकारणिभ्योतनधरयो॥सोआछिलगेवेकाम॥२७॥
नरनारीनरकांपडैं॥जपैनहीभगवंत॥जिहसिरजेजलबूंदतैं॥ति
हतजिचलेअनंत॥२८॥पापनरावरिलागिहै॥क्यानारीक्यानर
हाइ॥जनसेवाभ्रमनमरणका॥मैडुपमिटैनदोइ॥२९॥नरनारि
दोकतीरै॥जे सुमिरैसिरजनहार॥जनसेवादासजिहमेव
हैसुउतरैपारी॥३०॥जबलगहरदैसकोमत॥नरनारीहेनरगेध
नहकोमीहोइहरिनजे॥जनसेवाकोनिसिधि॥३१॥परमेसुरय
तिआदिकरि॥प्रांणीसवैंडानतेघरिघरिफिरिसीत्योंनज्यूंक
कूनरहसीमान॥३२॥परमेसुरयतिआदिकरि॥केवेआनदेवत
हततेनरसनकाजावसी॥३३॥मूरलोकोपेतर॥३४॥परमेसुरपति
आदिकरि॥लैहआनकोनांव॥तेनरसनकाजावसी॥रहसीनांव
नगांव॥३५॥नरनारीदोन्यूंबुरा॥जामुखिनाहारामः॥सकरक
रज्यूरतेतोमनिषातनवेकाम॥३६॥जनसेवादासराईमलण

गनिहोइसुक्रम

॥कचोरासज

वतादेवीम

हरिसुमिरणमनलाइ॥जनसेवाचितवैरामकूं॥तौनोव

नज्ञाथ

ढुवा॥जेतेजगमातिसीनर॥४०॥जीव

ीवक्रोसुतनारीपरवार॥मनवालहैदेवहोइप्रांणीक

हि॥४१॥परमेसुरयतिअ

अंगावसीवका तोहि।पा ह्वैहीपा डिगा।।सुषनी दडीनसो
५४ इ ३५ ।सुषनी दडीनसोई ऐसी।जागिरजापीयेराम निधडक
वैगो क्यूं वापे।जमजालिमतकाल।३४ मोहमगनरसपीव
क्या हरिसुमिरण कालकूं ना हि।तेनर पराबि मू त्यांती फूलि
देमनमांहि।३५ हरिसुमिरण हिरदै नही पावै विषे अघाइ
जन सेवादास क्या दोस है न्याउ सातालिजाइ ।३६।सातिमा
न्यां सुषसुपनको भयेजासुष आधीन जामपा तेमिथ्यामहै
राभेलीननदी।३७।जोजागपासो हरिजनजै जगसारस
वै।जनसेवादास हरिजनबिण यूंही तनषोवै।३८।सबजं
गसूता नींद्मं रि तसमतिकि सनेता जागिजन मछमालिकू
तहै।तहरि के सुमिरण का ।३९।रसनारामसंभाली यै कु
कनुसकतकीजे योओसरवहोरमूनही।तनधरिलाहालो
जै।४०।यो ओसर बहोत्तूनही।रसना हरिगुणगाइ के सेवा कू
रिसाधकी नाही औरउपाइ।४१।साधूजनसुमिरणकरे।मि
री साधूसब ।जैदाइ।४२।जनवहै मिलैनिरंजनदेवमू ।४३।जन
निरमोही वासाये सब गब ऐ प्रीति जनरातेगोविंदसं सब
गसाधप्रतीति।।२८०।।२०९२।।इतीचिंतावणीको अंगसंपूरण
।२०।। अथमनको अंग।। तनकूंस्याक्या होइगा जेमननही त
जै बिकार मनजबतजैबिकारसब तब दिलमाही दीदार।१
तनकसणीदेय विगडै मननहीतजैबिकार जनसेवादासवे
सैलहै परमपुरस करतार।२ सबे सररत्न कपरै मनथारी बि
लाकोइ सबसुषसहजे पाइये जेमननिरबिष होइ।३ तनतो
डबहोतपकरे मन कोतजैनबाणि मनकूटोभरमतफिरे त
बलबकूंठीजाणि।४।षांड अगनिमलतनदहै कागिनकसोह
साहि यो मनतो पैन रकहु फिरिफिर बिषफलषाहि।५ जन
सेवादासमनमे बसे कामक्रोधरिपदाइ जिनदि आपणपे तारी ये
ये मारि जिंडारसोइ।६ जिनकामक्रोधउरतें तजे तबमनमयो मु
करसमांन ताकूं श्रीतमदरासिहै दूसरनाहीकोन।७ मनअ
पराधीसाइयां कह्यानमानेमोर मैबाजु मन उगि चले बिषस
गीपांचकै वोर।८ माया मोहरसजेहरपी मसतनया मनमोर
मे कछहू कहै के नहीं मुरडिचलै कस्तोर।९ यो मनहरिरसनां
पीवै नावे बिषे विकार जनसेवादासका महकहे।नमजाणौ क
रतार।१० मेरो बरज्यो नारहे सुणिहो सिरजणहार आतमहीतु
मजाडि करि पावे बिषे बिकार।११ मै निबलाम्मन सबलहे मरौन

बड संगा ह्निन्यारी। हरिबिण नोरी जोरउ चारी॥२६४॥ साधी फव
सुषसंसारका सो सुष दुष ही जाणि। जीवन सुपनै सा रिषा। तं सति
कासच दपिकाणि॥२६५॥ जलमसु धातं लागि करि हरिसु पहालेंस
रि हरिसुमिरण जन बंदगी। हिरदै सक्यान थारि॥२६६॥ कनक कलौरे
विषपी वै मरण लस्के नाहि। जोण्यांप टल क्षप्यान का। अमृत तागिवै
थयो हि॥२६७॥ काम क्रोध क भैंगानि मैं सब ही दाकै गो वापडा नुल
वा जगतमैं अंतरि थिसरे पीव॥२६८॥ सुमिरण सुधन्या रारह्या। विष
भदपी वै अघा। जन सेवादास तै ओ लीया। निहचै जमपुरि जा॥२६९॥
दुषसागर संसार है ताका वार न पार। सत संगति गुरु पोन बिणि व
हैं मोह की धार॥२७०॥ सब सुष सागर राम है दुषसागर संसार। दुष त
जि सुष सिंध पै सीये ओ ओसर या वार॥२७१॥ किस कूं रोवे रोवे कीजे
किस का सोग। जन सेवा जग सराइ मैं सबै बटाऊ लोग॥२७२॥ ओ संसा
र सराइ सब मिलै बटाऊ आइ। नेहा की जे कौण तं पलमैं वे चलि ज
इ॥२७३॥ मिलै बटाऊ थिर नहीं जग हव वाडा मांहि। मम तबंधी सोई
दुष है बीछड तां पछितांहि॥२७४॥ सुत बित नारी नेह तजि सुमिरण
सुध्यो नाहि। पार न पावै पेरतां रहै गारका गलमांहि॥२७५॥ नेहा लोई दु
ष है बंध्या सकल जिहांन। केई मिलै केई बीछडै। नये हूय सेभ
है रान॥२७६॥ नेहा मूलिन कीजिये नेहा दुष का रूप। हरि हिरदै नें वी
सरै पडै मोह अंध कूप॥२७७॥ सारंग॥ नेहा है दुषरूप नेहा मूलिन
कीजीये। नेहा सो भय रूप जन सेवा मूलि न धीजीये॥२७८॥ हरिसुमि
रण कनि नेहा जन दुषसारा ही कटै। नोहो डिनर्थो रे दहा रसना जे
हरिगुण रटै॥२७९॥ चिल मन की नेबा रागी ब्यं के गुण गाइये। पोत
नभ जलो नीर वहो डिनपोतन याइये॥२८०॥ वहो डिं लहसी देह
रसना हरिगुण गाइये। पोतन मिलिसी पेह मूलि न बिसर फलपा
इये॥२८१॥ कूंपो वै नर देह अंधा हरि कि भजन बिन। राम भजन सूं
लेह नहीं नरा सोये कछिन॥२८२॥ डिलन मरे नर देह पुनि पुषले न
ही। जन सेवा दास कह्यै यह रामनो मगाठे माही॥२८३॥ स्वारथ पद स
मन्नं प दुषसारा ही टरै। मिटै मोह अंध कूंप हिरदै जे हरिगुण र
टै॥२८४॥ चोरासी जाइ छूटि जनम सुफल ज व ही मया। हरिस्यन सुष
जुगाप कै। हरि सौ षण ता व कारि सी नया॥२८५॥ सुत धितनारी नेह त
जि मनि जै सब ह तजे। जन सेवादास सुष्य यह। जम द्वारे तहिं जे॥
२८६॥ यो ओसर या वार। भूलो नर हो सी बुरी। सकै तो राम सनेंह। इन
हो तर जम का रसा बुरी॥२८७॥

रिसूरि॥८४॥जनसेवादास अस मन का जतन करतां जाइ। केवल करतां छाडि करि दो डि रा विष फल षाइ॥८५॥ निमष न मन थिर ना रहै दौ डि जहां तहां जाइ। मैं तो हास्यौ नाथ जी तुम मैं लेहु लगाइ॥८६॥ मन थिर कैसे कीजिये विसरौ फिरै विष सा थि। मेरो बल कछु ना चलै तुम कर पकडो नाथ॥८७॥ नीचो बहै निलज मन। विषै रस मा तो आंन। जनसेवा कैसे पाईये मन विषयां मां बांन॥८८॥ आतुर तरम न विषयां चे हरि रस पाना होइ। जनसेवा कैसे पाईये अलख धनी रंजन सोइ॥८९॥ जयतय मन के ता कैरो फिर फिर धारै देह। निसनेह ए न हरि सो दुलन मन गति येह॥९०॥ हरि सुमिरण सुख छाडि करि विषै पीवण जाइ। जनसेवादास अस मन कूं फेरि तहां ही लाइ॥९१॥ हरि विन बिष पीवै निलज। चौरासी भेजाइ। सन्मुष माई सौं वसै उलटि तहां मन लाइ॥९२॥ आपा हू उपदेस करि मन की दुरमति षोइ। अंत रि आप अनंत है मन लेत हां समोइ॥९३॥ जेती मनसा कलपना इतनी त्यागै कोइ। तव मन आतम तूर वै तब रसु घ आनंद होइ॥९४॥ जनसेवा यत मन लालची भरमत फिरै अनंत पांचां के संगि मिलि रमे विषयन मांहि धसंत॥९५॥ कूर मन तूं विषयां तजि रे मन। विषयां णि दुष पावै सुष नाकूं। अमगन मद दुष हाणि॥९६॥ मन पीतांग अनंत है जां णै विरला संत मन मांहि पैठ सिर रहै तो निरनै पद पहूंचंत॥९७॥ जातां मन कूं फेरि करि उलटि अपूठो आंणि। तां दा कछु न बीगडै पहुंचै पद निरबांणि॥९८॥ सो बहा ज्यूं सूघ विसनां नारयूं मन आवै रीति दिन केसे पकडूं बीरा न ह्वै निसबल वाले मन॥९९॥ पवन बेग मन धूंवां तैं अति झीणहै गहिरा बे कोई जान नां तरियूं ही पीण है॥१००॥ मन कूं देह लेह मन विसि वे मन पाईये यो जो सार। कूं यह वह पैडि न जो ना लिजाईये॥१०१॥ मन ह्वां तूं मन फेरि आगम तहां मन लाईये। संतां हरि कूं हेरि तां ही मांहि समपईये॥१०२॥ साधौ कैसे मिलीये राम कूं मन न ही तजै विकार। जनसेवा साईं छाडि करि मन बहै बिषै की लार॥१०३॥ जनसेवादास मन मसकरो मन की पहीन जाइ। हरि सुष छाडे निकट का दुष फल दौडि र षाइ॥१०४॥ जनसेवादास मन मसकरो अहो किरकट रूप करैक चकै क हरि भजि विषै तजै फिरि बिषै के पूरूप रे॥१०५॥ जनसेवादास इस मन कूं कब कू धीजीये नांहि मृतक कू वादे षौ षौ जीवै पल ही मांहि॥१०६॥ मन कूं जाण न दीजीये उलटि अपूठे आंणि। सतगुर सबद संभालि करि तजीये मन की बांणि॥१०७॥ मन जाता उलटा कूं पेल

रावास समूथ साई मे सिर करि रायौ दादन निवास १२ लै स्मोह
मम मत कू छाडै नाही मन जनसेवा दास कैसे लहै मा हीरा सरत
ना १३ लोभ मोह अहंकार गति करि रहे [illegible] विचार जनसेवा कू
करि पाईये सा हिब का दीदार १४ मद मछर आपा घणा मन देसार
अगुमान जनसेवा कह कू कारि याई ये उत्तन पदन्र बांना १५ मद म
मछर आपा मिटै सिरि जाइ गार अगुमान जनसेवा सहजै पाईये
पूरन पदन्र बांन १६ जहां तहां हरि दीये ते मन के पडै न ताइ य
ह मन कहा है मिलि रहै जनसेवा अन तन जाइ १७ चपलै मन के नाव
तै ऊलै घिचलै गुर का ग्यान जनसेवा सुमरन रापैं कही जहां तहां इ
स्थाणि १८ चालै मन के नांव तैं ऊलै घिचलै गुर का राम जनसेवा कूं
करि पाईये साहिब का दीदार १९ चालै मन के नांव तैं मिठ गुरु ज्ञा
न ज्ञा कूं जनम छाडै नहीं छूटै कहां न आप २० सजम समता सत
सील गुर की आप आहां अव पतर रतरां मतै ऐसा के तव लाज्ञा
२१ चालै मन के नांव तैं गुर आपा लोपै जनसेवा दरगह ढोइ नां
ना पसिम कोपै २२ चालै मन के नांव तैं आपा नहीं पावै जनसे
वा दास ता घट कूं जम जालि मजा नैं २३ गुर का सबद न वे चलै सं
जम समता सार जनसेवा सुमिरै राम कू तौ लगै न जम का मार
२४ का मी को धी लबधची लोभी ये आब सितै गुरु नै ले सुधज्ञा
नसे राम मन का निचा लत २५ देह धरी हरि जन कू मन ऊलक्यौ
विषै विकार जनसेवा ता सी सबल तैं ऊलन कौ सो पार २६ आ
बाया हरिजन कू मन लपी वे रै वाट साहिब कैतै पाई ये मनै
घर घार २७ मन कू ऊलटा फेरी ये सतगुर सबदां मारि ले बे
वा बासी है मलतं का वारां म वित हि २८ जा चल गम्मन सं तल
थिक तब लग कैसे अनेक काज वर्म वा अस थिर न या स वही त जिग न
सिर २९ जा ता मन कू फेर सै राम नाम लै लाइ जनसेवा नहीं
हो इसाब जब अंतरि सुपथ ल ३० कौ मन्दो ध अलो मदा तजि
मन नि मल हो इ जनसेवा दा स मन आर सी तव मन ही मैं मन जोइ
३१ जनसेवा दास मन निरमल तवै सत्या सबद कौ मारो मन भर
म जनसेवा निरंजन राम ३२ मन माया के संगि मैं तन राष्यो द्यौरि
बैर मैं जा ते मन मनि मिल्यो मन पा ही कू औार ३३ विषै विक
र मन फिरै मिलि ये आवै साधि फू चसो गिडौ कौ गहि साबन पफ
के साथि ३४ फूटो मन फू टैवै साचन कवडअ ने हुक्ते ता मन ओग
ले तै ता मुगते देह ३५ मन ढूंटै मन कि विधै मन ही सुलो ने ह
मनसेवा दास गात मन ढौ आगि ण तल हरि [illegible] है ३६

रिसूरि ८४ जनसेवादासइसमनकाजतनकरतांजाइ केवलक
रताञ्छाडिकरिदोडिरबिषफलषाइ ८५ निमषनमनथिरनांरहै
दोडिजहांतहांजाइमैतोहारयोनाथजीमुममेलकुलगाइ ८६
मनथिरकेसेकीजियेबस्योफिरैबिचला मेरोबलकछुनांच
लेतुमकरपकडोनाथ ८७ नीचोबहैनिलजमना बिषरसमातो
ञांन जनसेवाकेसेपाईयेमनबिषयांलागांन ८८ आतुरतम
नाबिषयांचेहरिस्युंपाछाहोइ जनसेवाकेसेपाईये अलषनि
रंजनसोइ ८९ जयतयमनकेतांकरोफिरफिरधारेदेह निस्नेह
इनहरिसेजोडुल्लनमनगतियेह ९० हरिसुमिरणसुषछाडिकरि
विषकूंपीवणजाइ जनसेवादासइसमनकूंफेरितहांहीलाइ
९१ हरितजिबिषपीवैनिलजचौरासीमैजाइ सन्मुषसाईसुं
वसेउलटितहांमनलाइ ९२ आपाहउपदेसकरिमनकोडरम
तिषोइ अंतरिअंतरहैमनलेतहांसमोइ ९३ जेतीमन
काकलपनाइतनीत्यागेकोइ नवमनआतमसुरजैतबरसु
षआनंदहोइ ९४ जनसेवायहमनलालचीभरमतफिरैअन
तपांचांकेसंगिमिलिरमेबिषकमाहिंधसंत ९५ कहूंमनतूं
बिषयांवेतजिरेमनाबिषयांदुषपावैसुषनांकहूंजनमग
नमडुषहां ९६ मनकीतरंगअनंतहैंजांणेबिरलासंतमन
मांहियेकैरसिरहैतेनिरलेपादपडूचंत ९७ जातामनकूंफेरि
करिउलटिअपूठेआंणि तांकाकछुनबीगडेपडेचेपदनिरबां
णि ९८ सारबिन सूघनिसतांनारयूमनआवैरेजिद्दीकेसे
कहूंबारनहींनिसबलवानेमन ९९ पवनावेगामनाधूवांते
आतिजीणहैगाहिराषैकोईजनानांतरियूंहांषीणहै १०० मनकूं
देहरिलेहमनाबिसिप्रेमनपाईयेयोंओसरकूयहबहोडि
नआंनलिजाईये १०१ मनहीतमनफेरिडागमतहांमनलाई
ये अंतरिहरिकूंहेरितांहांमांहिसमपईये १०२ साषी केसेमि
लायेरामकूंमननहींतजैबिकार जनसेवासांईछाडिकरिम
नबहैबिषेकीलार १०३ जनसेवादासमननमसकरोमनकीप
हीनजाइ हरिसुषछाडेनिकटकोडुषफलदौडिरषाइ १०४ ज
नसेवादासमननमसकरोअहोकिरकटरूपकरोकबकहांहीं
भजिबिषतजेफिरिबिषकेपूरपरे १०५ जनसेवादासइसमन
कूंकबक्कूधीजीयेनांहिंअमृतकडूवादबिषमीठोविषलहींमांहि
१०६ मनकूंजांणनदीजियेउलटिअपूठेआंणि सतगुरसबद
संभालिकरितजीयेमनकीबांणि १०७ मनजातांउलटाकूंपिल

हासमायासबल।मरदकीयेसबमांत।हरिसूंतनमनतोडिक
रिजनहरषचेरुचिघात।५।मायाकेगुणसबलहै।निरबलहैथो
गीपात्र्प्रथरौबलिछूटेनही।जेगोडेतोपीव।६।जनसेवादास
मायासबलजा।कोकहो।बिसतार।काईयेकहरिजनऊबरे।राषि
लीयेकरतार।७।मायासुरनरबसिकीया।ताहिलषीनहीजाइ।
जनसेवादासजनऊबरे।सकलरहेबिलमाइ।८।जनसेवादा
कोईनांकहेदोऊधातितलिआइ।रांमनांमगहिजनरहे।औरग
ईसबेकूंषाइ।९।जनसेवादासकालककबरे।सोरहेकीनसुला
गि।यूंकालचक्रतेंजनरहे।हरिसुमिरेंजुगिजागि।१०।सरणेहरि
रहेरांमके।तोकबकूनषीस्याजाइ।बिणहीसरणेसबलहु।का
लसबेकूंषाइ।११।पांहणियांणीसबलहु।मायामेरचेलोइ।अति
कलिजममारिहेराषिनसकैकोइ।१२।जपतपतीरथबरतसब
सबमायाबिसतार।सबजगमांहामिलिरहे।नहेंनहीकरतार
।१३।देवपुनिजगहोमसब।सबमायाकेमांहि।मांहियजिम
हिछियेजनसेवासुमिरण।बिणिसुषनांहि।१४।मूरतिपातीजन
सबल।मायानगारीता।नरमिपडेहरिबीसरे।परमसुषदात
।१५।मायाआडीदेरही।सबडहकूंफांवा।अतारयडदोकरि
ही।जनसेवाबिसरयांव।१६।जैसेतरवरमांहनूं।रहैनयेकेर
गसारेजगाडरवाईगी।योमायाकोढंग।१७।जिहित्यागीसे
फिसिनागहे।सुतिपरमसनेही।तात।बेटोमारेबापकूंया
मायाकीघात।१८।गुरसिषकूंमूरीतकी।सिषगुरकूंदबिषय
मायाकारीतिहैकहूंहरिजनलषा।१९।पितापुत्रकूंदोषक
रिपुत्रपिताकूंमारि।यामायाबालिनहै।सबजुगचालेहा
रि।२०।मायानगणीजगगोरी।वरकासुलतान।सेवादास
जनऊबरे।मजिनिराकारनिरबान।२१।इसधूतारीधूतसबे
जगतकांपौसबजरा।सेवादासजनऊबरे।संतसिरबग
तिहरि।२२।मागोवकेंनबूटीया।मायाबडीजलाइ।हरिसर
णेजनऊबरे।गईसबेकूंषाइ।२३।मायामछिजगतमेसबकू
उलकेसवादि।भूमाहिगुलमेंकाली।यूंतनवोयोबादि।२४।मा
याधापजीवयतेगमसबांमांहिपडे।तनरूप।जनसेवादासबेज
गजलेयोमायाकेढंग।२५।जलमायाजीवमाछली।सबम
याजलकेमांहि।हरिजनहरिसिमिजिऊबरे।सबकालकीलेजा
हि।२६।कनककाभिनीरांमरहे।जीवपडेअंधकूपमाताब
हनीआसपाकरिरहो।नानारूप।२७।कनककांमणिजगामें

मायाठगणीजगठग्यो गईसबैकूंषाइ सेवादासजनऊबरे दईरांमनांमअनैतार
मोरे

रांमनांममैलाइ। जनसेवादासम्नवसुषलहै। मनसुषमेरहेसमा
इ।१०७।मनकूंजोणनदीजोये।उलटिअपूंगेलेह।अधरमगम
मनराषीये सुरतिपवनबंधदेह।१०८।जनसेवादासमनमंसकरो।
मा॥मिलावेषेद केतापंरलेवाहिया।याबोईकंचनदेह।११०।मन
भ्रमेमुनिवरहिगये।अगिणतअनंतअछेहा।साहिबकेसेंपाईये।
जुलजमनगतियेह।१११।मनकेबसितेजीवहै कोरेननांरंगमने
कामनवसिकीयोरामते ताकेरंगहेयेक।११२।घरिघरिमरकटज्यूं
फिरेजनसेवानचावेमन।मनकीगतिअतिकठिनहै।गहिरायेके
जन।११४।मनकामारयामरिगये।केतेजीववअनंत।मनकीगति
अतिकठिणहै।जांनेंविरलासंत।११५।मननिरमलनिरनैमतेछा
डेवेषिकार।जनसेवादासतौंहीलहै।परमपुरषभरतार।११६।पां
चूंउलटाफेरिकरि।मनकूंउनमनलाइ।जनसेवादासतबसुषलहै
हेसुषमेरहेसमाइ।११७।मनमांहीमायारहै।मनहीदेछिटकाइ।
मनहीमनसूंमिलिरहै।जनसेवाअनतनजाइ।११८।मनमरणां
माडेतुरतही।क्रोधअगनिउपजाइ।जनसेवाजीवेतुरतही।क्रोध
अगनिकूंषाइ।११९।मनमरपांमाडेतुरतही।पसरिविषेरसषाइ
योमनत्यागेतुरतही।अवगतिसंत्योलाइ।१२०।मनउलटाफि
रिसुनमुषनया।तवज्ञानपलष्याघटमांहि।जनसेवाछिलसेसंत
सुषअवगुणनदेषेनांहि।१२१।मनअमावसबादहै योहीहैमनस
राये।मनतनमायाछिप्पा।योमनदेषेनूर।१२२।योमनपाणीहोइ
रहै योहीहोइमनलाइ।योमनकालानवेगहे।होइसवकाकूंषेपा
इ।१२३।ध्यानधूंईकरिसेवला।बिछेलावेमांहि।तेसमाधिलगा
रहेंकूं।मनसोनाजनघांहि।१२४।मनमुद्राकरिसेवला।सीलमेष
लाधारिसांगीसुरतिबजाइलो।चितचकमककरिकार।१२५।सह
जियुनिमेसेवला।मढीबंधावेकोइ।उनमनतालीलाइकरिरस
पीवेप्यासासोइ।१२६।ज्ञानध्यांनसबहीकरि।निरमलजोगकरा
इ।जनसेवादासनिजधंमकूं।तबसहजैपहुचेजाइ।।१२६।।२
१४९।।मनकोअंगसंपूर्ण।।अंग।।२१।।अथमायाकोअंग।।।

मायाफंदजगमेरच्या।उलफेसकल।जिहांनजनसेवादासधनि
संतहैन रामनांमगलतांन।१।।मायाफंदनजुगिरवे उलजि
रहेसवकोइ।जनसेवाहीजननांवंधेफेधपगहिगयेहेंसोइ।।
२।।यामायाहेपापणी।राषेसबअटकाइ।गाहिलहीसाणेजन
गइसबेकूंषाइ।रिब्रह्मासिवनारदभुले।यामायाबलि
मवडमी।कोईयेकउबरेसंत।।३।।

जै करै औरहा कांमाय श।५१। माया तीनूं लोक मैं व्यापि रही
प्रकास सुरनर सब ही बंधीया कोइ का टिगये निजदास
।५२। जन लिषि लिजा वृज हांत ही सब माया मोहे येह जनसे
वा भजि गवंत कूं का छिगये जन नेह ।५३। माया बाप रूसार ग्य
सुत बित परवार ।५४। इ हि बंधा ति सब जग बंधे का टिगये ज
न सार ।५५। सब जीव माया बंधीया बिषै मगन बोहार न्य
सबे ही जिसाध दो जनसेवा नांव अधार ।५६। माया सबल सं
सार मैं चिकाल भये सब गो वा सुध बुधि की कछु ठोड न्या नी
न सेवा बिसर्या व ।५७। नानारि बाना रिख जगडहके सब दीषै
जनसेवा वाडहके नही घर को भेदी पे षि ।५८। माया मोहे लोक
सब पिंडत पना दोर जोगी जती चारसेवडा तपी सन्यासी औ
र ।५९। टेरि वाहे सब संतजन अटकि पसाई येह माया नसमनि
वारि करि तुम मरसे करिले ।६०। संगि माया वे आय ते मिलन
हो अगावंत माया इहा ले गई जनसेवा कहै सब बुत ।६१। क
नक कामणी तांन तें कते लीयेल ।६२। चौरासी लष जूनि मैं जी
वा कौ केला पाइ ।६३। बुधि बल कस बही हरै बहोत तत पाये गी
व अगम अगम निसमिसे वला दा कै बिसर्या वा ।६४। कनक कांम
णी जग मैं मांनि बडाई लोइ ।६५। जनसेवा सीतल सा धसा औ
ता जिरहे भी लाइ ।६६। इ हि हैं से केली गलन सेवला निंडा गिग बे
मेका रि हाररसरा ते संतजन तिनहीं का टीसा रिद्धि जनसे
वा सब ही बासि की यो सुरनर जीव अनंत या बलिव ता नी ।६७।
को इयेक ठ बरे संत ।६८। जनसेवा निंडा पापणी आस्त्र धारे
पाइ मिल णन दई राम कूं लीया रसा ता लि जाइ ।६९। जनसे
गा पि लब लिकाय ऊ डयां णी येसि मिलण चलथे राम कूं
रहे बीचि ह बैसि ।७०। तिनपे हारा पापणी गारष के पाहि म
न निरभै नया निसकजन अकुपाव स्नको ध्यान ।७१। गुरगम
करि गोविंदजी नीका नेवारे दास जनसेवा पहूंचे परम सुष
कटै मोह की पास ।। [illegible] मांनि बडाई कसमी।।
[illegible] गटकाया ।
या कामणी माया जिके वा कोई जन कबरे ।। ग
मांनि बडाई जनसेवला या कामणी माया कोई येक कहा जिन
बरा इजा सब पाया ।७२। आदर मांनि बडाई या कामणी माया ये ह
जनसेवा तिरबो कठिन है यूं ह षोवे दीन ।७३। मांनि बडाई इ
ड रते तजी निगाइ कनक कामणी त्यागि करि मांनि मगन

जीवकेमोटीपासातलपिमरेकूटैनही।जनसेवायूहीनास
थन कनकपामणजगमै।मोटीविथजदोइ२इनदोऊं
तोऊवरे हरिजनकहीयेसोइ२९ कनककामणि लोभिक
रिडुबीयाहैसकावि।मायामेसुतासबै।जागिनसुमिरेपीव।
३०।सकविरहकीगहडी।वैसिनसुषपायाहोइ।जेमायावसी
जीवहै।दाझेहैसवकोइ२३१मनसाबादलकोमजलपपनम
नोरथजाणि।निसादिनबरसैतिसमैभइमानिधजनमकोहा
णि।३२मनसाकाबादलभये।हिरदेरह्याजलाइ।जनसेवाद
ससिजनबिणि।कालविधूसेआइ२३३मोहमायासनेनिमई
रहैजहरिदेछाइपपंनमाणपरकासविणि।कालविधूसैआइ
३४।मायाआगेजीवसव।बंधेआसालुभ।जनसेवादासतेवीर
हैनांती।हरिकीसुध।३५।मायाकेवसिजीवहैतेनयेजनमगंवा
यानहरिसुमिरणसुषबीसरै।मायामेचितदीन२३६।लालचतै
नहीनिसरैरहेमायामनमांहि।जनसेवादासबेप्राणीयासूंदी
जगमेंजांहि२३७सबजगमायाघेरियौजपेकरणीचाकमांहि।जन
सेवादासहोहिजनबिणिसबजगयाहीमांहि२३८।माथीतेमीठे
लगी।यूमायाजगरचि।सेवादासजनकहै।औरस्यूयेसबपचि
३९।यामायासंगिसबबंधेमोहफलाइला।हिजनसेवादासयु
रसबदगाहिगयेसंतजनकाटि४०मांनिचडाइजगमेबडेबडे
मुनिगईषाइ।जाणितजीजनजुगतिसेरहेसबैनलमाइ।४१।
मायागीदडीमास्येनरकैडोलकरिसाथ।केतेनरषचिषचि
येकऊन आयेहाथि४२।इहमायासबकौगिलैनाकाबा
लपारराषहुसबहिनकूंमारिमिलायेछार।४३मायाकेडो
सैलगेयूंजगतेनोहिउदास।औरकोकयागिणतिहै।लागरहे
हैदास।४४।मांमितछोणगोबिंदनगोमांनिजलहीजैलहै।साडि
वाबिबिअंतरकोतेनेराषेछिचितोड।४५यामायाहैपापणी
सतनधीमेकोइजनसेवादासकेतेगिलेमांनिबडाईदेइ।४६।
इहमायाकेकारणेजगजागेसबकोइ।हरिसुमिरणबिनसु
षसबलाकैसेंतहसासोइ४७।आदरमायामांनिहैमांनिन
सीजहारामसुमिरणलागेरामकै।जनसेवास्यूंऐसे।४८।पु
रहेरैयणिनांतजोयोमायारसआयार।जनसेवाधनिवेसंतजन
जाकेनांवअधार।४९जपतपतीरथआदिसबमूलनमोमि
लदान जनसेवादासमायासकलबंधिनसबमानि।५०जे

॥२६॥१२३०॥ अं २३॥ अथ कामी
कूलप्रकासपामाहि॥ हे कामकाअंग गी
र कौ अंग॥ जेतीमन के कलपना॥ हे कामीके घटिकुबधि
वुनलेया॥ अगनिमें लगेनही हरिरंगा॥१॥ कामीके घटिकुबधि
हे सुबधिनही लय वलेसा॥ जनसेवादास तजावकानी कान
हीप्रवेसा॥१॥ कामीकीसंगति बुरीकुबधिबसे घटमाहि॥ ताघ
रिरै तिअंधारीपानप्रकासेनाहि॥२॥ कामीकेबासिवाकारै को
मकलपनांमाहि॥ हरिसुमिरणसुषगाडिकरि॥ विषेमगनह
रहांहि॥४॥ कामीकेबिषहीबसे॥ आठपहरघटमाहि॥ जनसेवा
दासतेप्राणीया नरकचेजमपुरिजांहि॥५॥ चौपई॥ बुधिकमकब
लहराणीकहीयें॥ ताहिलागिकैसेसुषलहीयें॥ कामणिजहरइम्र
तकरिषांही॥ जनसेवादासतेदोजिगजांही॥६॥ कामसहतनारी
कूंपेषे॥ अंतरकासाहिबसबदेषे॥ मनमहीमातोकहेमुष तेबे
रासीमेपातोदुष॥७॥ जोनारीकूहितकरिजोवे॥ सोतोसरवसम
परोषोवे॥ जिंदबिंदसापेयानारी॥ तातेसंतोहरिबिडारी॥८॥ क
नककामणीभोगलागो॥ ताकेलीयेसकलजुगजागो॥ जिमजज
बूदसकोन्हीदेही॥ भूलिगयेनरपरमसनेही॥९॥ हडमासाभिष्टाव
कूडी जनसेवादासब्रामांमाणिमूडी॥ तासूलजिबिसरिरहेकर
पीछेदुषपावैचोरासी॥ फिरता॥१०॥ जेकूरनारीपरहरिजीये॥ वि
रनेथकारीभरतपीवेवेबहोवि॥ नहर्षेगारमनिवासा॥ तेसदा
हेनिरंजनपासा॥११॥ याकीप्रतिसकलजुगकूडा॥ नारीसदान
काकूडानरकाबलेबूडितामांहीं॥ ऐसाणायासुठाहरनाही॥
सूपनेकामणिमननहूले॥ उधेमुषिनतेईफूले॥ सदारहेरा
सिरातातेवेहरिजनआपबिधाता॥१२॥ साषी॥ कामणिका
रीलोभीरतादांम॥ ऐकडीघाटीजगमीकरणानदईरा
१४ येककनकअरकामणी॥ सबजुगलीयेडडा॥१॥ कौ
करहरिजनऊबरे॥ हेरामत्मौलाडा॥१५॥ येककनकअरक
रीबडपासीजगाथेहासेवादासजनऊबरे रामनामस
१६ येककनकअरकांमणी॥ दीरघघाटीदोइ॥ यांदेस
ऊबरेहरिजनकहीयेसोइ॥१७॥ येककनकअरकामणी
मांहीबडफूधाजनसेवादासथनिसतवौकारिलयेनि
हाडमांसभिष्टानरी॥ ताहिलगायानेह॥ हरिसुमिरण
सत्यामोईकेबनदेह॥१८॥ नारिपुरषसंरचिरहा॥ यामे
कारहाडमांसकापिडहै॥ नरकहैसबद्वार॥१९॥ जिंदबि
कामणीतीजीसोषेदेहमूवानरकांलेचले॥ ताहिल

।ए। ।णहै मोनिमरोडग्रे पड। कोमाणिक
पणिमोनितजीनहीजाइ।५।मोनिमहा
ऊीणहै मिलिरही आटेल्हौ।ण सवको चाहैमानिरूं
जनसेवालेलैसो।ण।६। मिलिरही आटेल्हौ।ण ज्यूं सवकरैमां
निभोगो।ण वानककामणी स्वतजे।मोनितजेसाको।ण।७।जे
बुगोविंदकिरयाकरै।तवमोनिकसरमिटैगा।इ।जनसेवासव
घटि आत्मा येकरूपदरसाइ।८।मोनिजगतमेमिलिरही मी
अकस्किरियो।हियेको।कनजनकरिसके।ज्यूं आयात्रूनां।हि।९।
मोनिवीचहैजगतमै।कलेसुनिकसैनां।हि।अरसपरसयूंमि
लिरहे ज्यूंमापीगुड।मांहि।१०।सोरठा।माया की।णमोनि सि
घसेवासेसारगति।होइ।जगतिमेहाणि।पाचांकेवासिहोइर
ति।११।मोनिलगाऊ आगि।जडमूलसंडीलीये।जनसेवाद
सऊभिागी हरिके सुमिरणलाइये।१२।जाहांहैबुरूमियांन
वहांमोनिरसनहीपाईये।तहांहीब्रह्मध्यांन। अवंतिहूलै
लाईये।१३।पारनपावेंसेससे ततहांहीचलिगये।सतगुरकेउ
पदेस तजिवेधनमुकतानये।१४।संतामिलेजाइ।रांमहूगीड
रमातित्यागिवारि।तक्सारसवेहाकांम।पाचूंमनजवनयेथि
र।१५।सषी।मोनिकसरवजिहारमिलेज्यूंपाल गलियाण
जनसेवातब अंतरनही।यांसंतांगतिजांणी।१६।जपतपतीर
थमवरूंधेयामाया जुगिकी।ण।जनसेवाहरिसुघडूरिहैसव
मायमैलीन।१७।माया बांधेजगतसव मोनिमहावलिवंतमं
निमगनासिसवपीवे।त्यागिगयेनिजसंत।१८।माया की।णी
मोनिहै।बांध्याजगसहहेत।जनसेवातया लागये।ज्यूंऊसर
वीज्योषेत।१९।सिषसाषसिसारगति।बांधेहैजगमोनि जन
सेवाकारजनांकाये।भईजतनकीहांनि।२०।मायामोनित
जीनहीहरिविचिअंतरयेह।मोनिवीचिसटवरईसापोईकं
चनदेह।२१।मोनिवुराहैजगतकी।हरिजनकरैसनेह।हरिवि
चि।दिनदिनआंतरो।यूंहीपोवैदेह।२२।मोनिजगततमिलि
रही चाहै आदरमानि जनसेवादस अमांनजनेना।रा।वरं।पेरू
समांन।२३।मोनिवडीवलिवंतहैकेतेलीयेलुड।२।हरिवि
चिअंतरकरिरही।जनसेवाकूंसुपथ्याइ।२४।चौपई।रेमूरिषम
निकहांइहूं।आईगयानकुदालेघो।दिगमाईऐसीगईचलैरोडे
नहीआईगईमोनिपरमेनिधिपाई।२५।साषी।जहांमायानहा
नहैमनितहांहानिनोहिमांई

५०

येसू पिम होइ करि षाइ। ताहि न कबहूं धीजीये॥४५॥ नषस
षसं षाषाइ नारी बाघणि जुग महीं॥ बहोडि नां कीलेगा
र जनसेवा सब संतां कही॥४६॥ कांमणि की चंनुगा येह केता
र मांहीं कल्या॥ षोइ कं चनदेह हरिजन कोई न्यारा रह्या॥४७॥
कहा गिरही कहा बैराग॥ नारी ताजी गोविंद भजे॥ तिनहीं का
वडभाग जम द्वारे तई न जे॥४८॥ पसा वी का जलसारे कामणि॥
हां तांला इक वाड॥ सब जुग आत्या कांमणी॥ न्यू दाहे मात्याप
ड॥४९॥ नारी जुग मैं जहर है॥ ताकूं रुचि चित चिपो दि॥ जनसेवा दि
न दिन सोषै कांमणी॥ ज्यूं लोह अगनि कै मां हि॥५०॥ दिन हि नसे
षै कांमणी॥ ज्यूं घणु कणकूं षाइ॥ जन सेवा सार है नहीं॥ आरुफूरे
नरकां इ॥५१॥ सरबस सोषै कांमणी॥ जनसेवा कहीं करि प्यार॥ ज्यूं
मषी मद का लाल वी॥ सारकै रहे वार॥५२॥ सुत हित नारी सलगे
धन हित सब तषाणि॥ वे इटकै वैतनि दबै॥ भई मा निषजन नम
की होणि॥५३॥ पारो सानो सो मिले यूं कांमणि सो धेक मां॥ जन
सेवा मन बुधि सब हरे॥ मन। विसारो राम॥५४॥ पारो धावै कूपदै
जनसेवा कामणि ता॥ यूं मनका मणि संगतें बूडि मेरे बिष
भार॥५५॥ यूं नर बिबडे नामको। कनक का मणी हेत॥ यूं पतो विग
छ्यो कूंपतें बालिका यौत बरेत॥५६॥ घरमें स्वारतं बीचडे जी व
उलके कामणि धनके मां कयूं। बिछुडे नेषसमंद ते रावे धोसर
मां क॥५७॥ कद्यूं षावै नर बावरे नरदेही कामणि संग॥ हरि नाम लाह
ल जाये हाडका मणि कनक प्रसंग॥५८॥ येक कनक अरु कांमणी
काल दाढ जुगि येह॥ अदाइ ल्या गिन ही रसिजे पो तो सूंहि षोई देह॥
५९॥ कनक कांमणी फंद दोइ॥ जै सब नरचे जगदीस जे सतगुर
मिले तो ऊबरे॥ जग सब ता लेपी सा॥६०॥ येक कनक अरु कामणी व
डफंद ये करतार॥ कोई येक हरिजन ऊबरे॥ जग सब लीये मारि॥
६१॥ येक कनक अरु कामणी॥ जुग फंध रचे भगवंत॥ जनसेवा सब
जुग बंधीया॥ कोई येक ऊबरे संत॥६२॥ हरि सरणै जन ऊबरे कांम
णि जुग बसि कीन॥ पार ब्रह्म पति छाडि करि॥ विषता जग आधीन॥
६३॥ नारी षावै पुरष कूं॥ ज्यूं घुण कण कूं षाइ॥ वा हो आटै ल्या हे
रया॥ जनसेवा कहूं नरहाइ॥६४॥ भवर कं वल बसि तन रहे सो॥
कामणि आधीन॥ जनसेवा दास दोन्यूं गये॥ कामासिक व तल
र स लीन॥६५॥ नारी न कहूं आनि है॥ ताहि लगाया नेह॥ हरि सुमिर
ण सुष बीसरे॥ षोई कंचन देह॥६६॥ भामणि आनि दाम्यूं बुरी॥ ता कूं
रुचि चित चिपाइ॥ जनसेवा पीव लक ही सरे॥ नये बावरे जीवे॥६७॥

२१ नारी तांऐं नरक कूं। तो हि सनेह न कोइ। ताते मुरिख लागि
करि वाले जनम षोइ॥२२ हाड मांस मल मूत्र भरी। मासे सैं संबु
से साथ सबकू नारकी लेखली। जन राघे है करता॥२३ कामणि बि
चितर रूप है। जीव बसे सब मांहि। जीव रण की आसा किसी। मे
गन हरस्या मांहि॥२४ जे नारी ना कूं ऋती तो सुषदे वत्या भेनांहि ज
न है रजडी है जुग मे थी वैसो मरि जां हि॥२५ नारी आग निसमां
नि है कोई रहसी साध सुचेत। तस्मिं निकटि जिन वे षि गये। सा
धन गत ह सचेत॥२६ निरिपराई आपणी। है फलफल नता मारी
कोई यक हरि जिन ऊकले ओरमू तैसबालण गिना॥२७ नारी तांरी न
रक कूं। संत कहे सब साषि। कोई एक हरि जन ऊवरे। लीये आ जे
वगति राषि॥२८ नारी नैन निरषीये। मन कूं हरि लेजाइ। जन लेव।
क बकू न धू जाये। विस दूर है हो इकेषाइ॥२९ नारी विस दूर रह
पहे प्राण हरे बिषलाइ। जन सेवा संगन की नाये। साष कहै स
मकाइ॥३० नारी बाघणि सारिषी। नैन बाण नी पाइ। जन से
वादास गुरु सब वगहि डारे बाण चुकाइ॥३१ जन सेवा तेजन ऋ
बरे जे राते हरि रंग। कामणि के समि जग जले। ज्यूं दीपक मांहि प
तंग॥३२ नारी नदी समांन है। बहै कि राडा तोडि। ओर जगत स
ब बहि गयो। जन रहे रांम सू जोडि॥३३ यो ऋक रूनैक भ्रम को मण
सबकू गलीया तुडाइ। जन सेवा ते जन ऊबरे। ते रहे रांम लौ ला
इ॥३४ नारी वोर निहारतां हे स नारी को रूप। जन सेवा दास तत
ण नकूं बिसरि पडे ग्रह कूप॥३५ नारी वोर निहारतां मन विक
ल हो इ जाइ। ग्यांन ध्यांन सब बीसरे। जन सेवा सुधि न रहाइ॥३६
नारी सांम्हो निरषतां तवाका हो इ स्याइ। जन सेवा बिसरे रांम
कूं आन निहार चेरे काइ॥३७ नारी सांम्हो निरषतां काम बिंसु प
रत रैणि अंधेरी सब भूला मैं तरि हो इस्याइ सुरत॥३८ ग्यान ध्यां
न सब ही से

॥९२॥ साधन बांधे नेह । नारी नेह कर ताडे । मारि मिलावे षेह
चौरासी भरमता फिरे ॥९६॥ नारी नेंना नेह । देष्यां ही । बिसहर ष्वसे
छूटे हांसू नेह सू । बिमहाज्वर में धसे ॥९४॥ नाहर गडी ज्ञ मिये
जो पीवे सो ईमरे । षावे कंचन देह । नारी मिलि नरका परे ॥ष्ट्रा है
कंचन कोट नैन तुपक करजे बसे । उबरे हरि का वोट सतगुरु के
सरणे रहे ॥९६॥ साषी नारी नैनन नि । षाये मुषतं नाकुनलेह बेग
सरवणां । जिनि सुणें । जन सेवा चित न देह ॥९७॥ नारी नैनन देषी ये
मुष करि बात न का जो सूबिमता इमांही धसे । जन सेवा तन गा।
॥९८॥ नारी नैनन देषी ये। हरा बिनका जे बात । जन सेवा सुधि बु
धि बीसरे हो इप्राणका घात ॥९९॥ परनारी कहा आपणी दे क
का अंग आगि । जन सेवा कोई नन कबरे । औरु ल्या सब लागी
॥१००॥२२२८॥ कामी नरका अंग संपूरण ॥ अथ लोभी नरको अं
जन सेवा अथ बेद पढि सब ली पढे पुरान चौरासी में ले चले
लोभ बडो बलि वांन ॥१॥ सूचि आचार कता करो केता कथो पुरा
न जन सेवा दास ये कलोभ तो सबै बृथ ही जांन ॥२॥ पठिबो गुने
बो जबनलो । तब छूटे लोभ अहंकार । जन सेवा के ते गा ते है सब
लोभन का धार । गीता पढि भागोत कहे सेवथा बिसतारि वे
ते बहि गये लोभ नते सब लेधार से तारि ॥४॥ लोभन छूटे जीव को ते
पसन कथ्यां कहा होइ । जन सेवा सुष के से लहे लोभ मांहि ये दि
डा पकरि आ घिये के रिहे लोभ मांहि ये दो २ जन सेवा दास प
नही अल पानि र जन सो इ ६ पढि पढि बेद पुरान को पंडित कहा
ये सा इ जन सेवा बृथा लोभ ते सागर ते सब धान धो इ ॥७॥ लोभ का
चकले अहो । नितकू फूल तजा इ जन तें ता में लो जीव डो उज्ज
न कै सेथा हि ॥८॥ लोभ न छूटे जीव को केते बंध हारि । कोई यक स
बेरा यि ला ये कता रि ॥९॥ लोभ बडा बलि वान है राव रंक
ये हा रि जन सेवा साधू उबरे सतगुर सबद बिचारि ॥१०॥ लोभ स
न को ई रोग न । मोह समान न ना । आगि कोई यक हीं जन कब
सूवा सब लागि ॥११॥ मोह अगनि में जग जले लोभ नीर में न
जन सेवा दास केसे बचे काल पक डिले जा इ ॥१२॥ लोभ स्यपथ
थ गजल । थाह न आवे तांह । कोई यक साधू न सरे । गहि सतगुर
की बांह ॥१३॥ मोह कूप अग पाल में लोभ थापको मूल । जन सेवा द
स लो नी नरा म्यूटे न सा सेसूल ॥१४॥ त्रिस्ना नदी अथग जल मो
हि । जन सेवा दास गुरु ग्यान बिरिणी अस्नावते जाहि
॥१५॥ कोम अगनि में सब जले तोरंक राव सुलितान । जन सेवा कोई

नारीकूंबिषरूपापीवैजगतसराहिजननसेवातूंजीवैनतपावै
मोमहिनाहि॥६६॥ऐसेअबुधअपानाहिजिणिनारिलगायाचि
हाडमांसकापिंडहैताहिदिखिनयेतो॥६७॥नारीबुरीअसुचिहै
जगतमोनिरहैपूतजनसेवासबहाफरतहैनवद्वारमलमूता
॥६८॥हाडमांसकोपीजरैमलमूततांभराअकालिविनानबा
वरेलागिगमायोनूर॥७०॥नारीनेहनकौजायिजोकायकोहोइ
असासकलबालिकायेभतिरयतजोकोइ॥७१॥नारीनैंनदयीये
जेदेषेतोइहिनाइमाइवहणसामिनाणीयेतोकवइस्कालन
माइ॥७२॥नारीनैनदेषीयेजोचित्रमंडाकेसोइसरजीवतसुपनै
ताइकरिसीणिकोरयाजोइ॥७३॥नारिपुरषतंतूडरैजिमबनमैं
सिंघराइजिनसेवाबनिधसैनताकीप्राणहरेगासोइ॥७४॥जानसे
वानारीजोहतोबिसहरबोराहोइऐसापिडअसुचिहैसबसंता
नागमोइ॥७५॥जनसेवानारीजोहतोबिसहरबोराहोइजोनिति
नारीकेसंगिरहैतोबुधिकहातैला॥७६॥इकनारीकासंगतैमन
मैउपजेऔरानितिनारीसंसंगहैबुधिनहातहांगैर॥७७॥कामणि
कूडीमदनरीसुरनरसबकैघावऊचासोसालगारह्यामोला
गासोनीच॥७८॥ऊंचासोईह्वैजिनैतजिकामणिकासंगजुसिवा
सोईनिरमलानाहिलागाहरिरंग॥७९॥श्रेणजारामानारिगैली
जोएनाबिसहररूपापानधानसबहीहेरालेनाविगृहकूप॥८०॥
कामणिलाडूसेवलामोहबिषतामांहिताणिगयेतेऊबरेधा
वेतेमरिजाहि॥८१॥नारीनागणिसारिषीकांमडंकलगिजाग्रसु
अबुधिसबहाबीसरागहरिलिहास्त्रिचहिगाइ॥८२॥जीवतमोहेका
मणीतोमैसारासोकाइनसमीननमउपाइयोदेषौनरषरीसा
॥८३॥नारीकाचितवाणिबुरीचितचंचलहोइजाइपरगटनारी
सैमिलेनषसषसुधाधाइ॥८४॥कामणिकेसंगिकामदलसबल
मारेधाइजानसेवाअबलाजोकैसाकैसेपतिग्राइ॥८५॥सबला
मारेकोमरणसरूभिमबारवहसगानिरूपताइकामणितनको
मांहिदहै॥८६॥नारीनैनदेषीयेहैबिषमरूपबिषजलारोमरोम
मैंबिषमसाकामणिहैजमकाल॥८७॥सोरवाल्यांघातिजगमंय
नारीनारसबलादत्तैतोनीसगनिवारिचेतनतजिपुदगललै

जग्पानानारीमिलिती

५२

दिनदिन बंधता जाइ ॥ जनसेवा सोई सत जन ॥ ३ पंजदेह बुफाइ
ध ॥ पंडित सोई जांणीये ॥ लोभ उथाले मूल ॥ सोइ सुषी संसा
जि निकाढी उरते सल ॥ ४२ ॥ लोभ मैल कूं धोइ करि पावे निरम
नीर जनसेवा दास सोई निरमल ॥ सोई संत सधीर ॥ ४३ ॥ लोभ नर
तग पानी सोई ॥ लोभ रहत संत सूर ॥ जनसेवा लोभ तज्यो नही तै
ता हि समफि नहीं मूढ ॥ ४४ ॥ या त्रिसना की रीति है कहा लगा दी
जे गोड ॥ अडवषडव कूं लोपि करि मन रहे न्यंकु गेड ॥ ४५ ॥ घु त
श्रगनि मे मेल्हतां ॥ घुजल तन अधिको जोइयां ॥ त्रिसना की री ति
है त्याग पानि यातिहोइ ॥ ४६ ॥ नृत्रष्ट ४ ॥ श्रा ॥ २५ ॥ किरपण नर को
श्रंग ॥ किरपण सं वैदरब कूं ॥ ग्राहन षरचै म्हारि ॥ जनसेवा कहा कू
स कारमक्का ॥ ऊपरि फेरी धूलि ॥ १ ॥ धनले धरती में धस्यो ॥ दषण हो को
लाड षरचै पांव कुक मा विणि तो मोरे सिर मे फाड ॥ २ ॥ किरपण श्र
पणी कारि ष्यपी ॥ षाइ न षरची जाइ ॥ साहिब के फरवान बिणि ज
सी किरि पछिताइ ॥ ३ ॥ धन कूं गाडत मन गड्यो ॥ अति आणि पकूंत
हृत पोडि बियो हो करि दिया ॥ धन में हाइ रह्यो भूत ॥ ४ ॥ धन गाडत ग
न सेवल मन गड्यो तामाहि देह बिछ्यो होहस्या यो पणि मन तो
निकसे नाहि ॥ ५ ॥ किरपण के किसका मका ना षरचै ना षाइ पडो मा
रे घरमु से ॥ किरपण की पूजा ॥ ६ ॥ किरपण दीन्हा देषणी षरचे प षै
नांहि के तो हो सापे तग ति के नव गहाइ ता माहि ॥ ७ ॥ गा के माया ॥
माषरचै नही ॥ जा पे माया नही सो लररा माहिं कूं फरवान बिणि जन
सेवा दान्हू करा ॥ ८ ॥ किरपणि दीन्ही देषणी माया छिल सैन्हा हि के
तो लूटे राज का के रहसी धरती माहि ॥ ९ ॥ किरपण माया जो डि जो
डि ॥ धरि राषि इक गोड ॥ मोत ज आई नीडा ॥ मनमे मडि रह्यो कोड ॥
१० ॥ नो षा पूगा सा गिय लै ॥ षरचा कूं न ही जाइ ॥ जनसेवा ऐसे सोच
तां न्हुरा पकूं ता भाग ॥ ११ ॥ करगा रितन कडी नैन करा घित न पडत
है पाइ ॥ जनसेवा दास मनसा चतां ॥ दिन रजनी गई बिहाइ ॥ १२ ॥ गाहि
राषी का आपणी ॥ मै तो मोडी नीठि जे कोई आवे आस करि ताहि
दे चलैया ठि ॥ १३ ॥ देता देषै ओर कूं ॥ किरपण कसके मनि ॥ स्म संकौ
डा नां कटे यो षरचै सो धनि ॥ १४ ॥ दरब हमारो झूरह्यो ॥ किरपण सो चै
श्रति नो षाइ सकेनां षरची यो ॥ न्हूं आया न्हू गंत ॥ १५ ॥ ना सै गिग
ई न नाव लै ॥ किरपण कै र बिलाप ॥ नो हम षरची ना षाइ सके ॥ पैई
सूरव ला पाप ॥ १६ ॥ हम कूं दीन्ही देषणी ॥ षरची नही कहीं नाइ चे ॥
र राजन के लागा न दहि ॥ किरपण का कूं नाउ ॥ १७ ॥ साध कहै सो सति सु
णि ॥ सीर सुकृत की जोडि ॥ नायार हैन संगि बले लेजा सी अति मो

नऊघरे।मजिरां।म्नां।मनवांला१६।जो।वलगतनमैल्लोनिहे तवल
नसुधनहीं।प्रांन।जनसेवादासत्वसुपलसैतजिनजेगो।विंसगल
तोंन।१७।लोभपापकोमूलहैनरकनीसाराजोंरा।लोभनछूटे
तनते तोनईमनिधजनमकोहांणि।१८।रातिदीसवसिवोपारेजन
सवादासउरम्यो।रि।जीवणकीआसा।किसी।लोभनजहरक्षेपांहि।१९
लोभकिउमैश्रथिर।जतजनअपेदान।रातिदीसनटकतापरेमा
यानस्राधीन।२०।जनसेवासुधनहीं।प्राणमो।सदाअथिररहेम
नलोभश्रगनिमैजगजलेवधिरहेसोईजन।२१।लोभश्रगनिफले
करेधोवेकेचनवहसा।हिव■चिश्रतरकरेमारिमिलावेवहे।२२
सबश्रनरथकामूलहैधातगहेजाकहां।थि।परमेस्वरपातिआडिवारी
वहडुनाकेसाथि।२३।सबश्रनरथकोहेतहैमिथ्यासेपईसोतेदा।ज
नसेवातनयेजकनहीं।उपजेरापश्ररसोक।२४।श्ररणंचीत।रिधिक
तेरलगयातैथुमिथ्या।निजनसेवादासनहीं।श्रादरेतजीवम्मुफ
तिजल्गो।नि।२५।लोभनछूटेप्राणतोलोघातवणावोकेछि।मतित
पडेदोकाररहीरही।जगतत्जो।छि।२६।जनसेपालेभश्रतरिवसेर
रिपथिदेहनजोनाकरेमिथ्या।जगतको।श्रेसोनहीं।श्ररिश्रांन।२७
उजीवश्रणकारिवोकरे।उपजेवहो।ततगजनसेवादासलोभनी
नरा।लगेनसाहारगा।२८।बुधिवमेकसवहे।हरे लोभवडा।वलि
वान।जनसेवादासश्रतकरे।सा।हिवि।श्ररिश्रांन।२९।जनसेवो
यडदोराभविरि।लोभमहारिपयेहन।नागिरहेतेश्राणीसोसोईकं
वनदेहा।३०।क्रोदनसारिथिविश्रतरोदरवकरतोजडासईसाए
संतजनदराकिनसायलगा।३।३१।वडफंदाजगमैरचोकनककामणी
दाइसाहिवकेसेपाईये।नागिरहेसवको।३।३२।रावरंकसबसीसे
वडपासीजुगियहा।कनकाकामणी।त्या।गिकरियुहापाईदेसा।३३
लोभसमानिवैरीनहीं।तीनलोककेमाहि।हारिविचिपाईश्रातरो
रो।ऐनरकिलेजा।सि।३४।लोभसमांनिजनसेवला।चैसोवैरीन
हीनीचापटकेदेयतांधूलिपडेमुखमांहि।३५।लोभसमोनिखेरी
नहीबुधिवलरसैघोड।विसपातादेवविद्या।संतनथ।नोहो
३६।लोभनीकनीचतेनीबा।श्रादरकोभजाननीघापटकेदेघतो
रेविकलनयोमन।३७।लोभनीकेतानमैश्रगफेविपतनयोसनस
हिश्रडवधडवहोस्येरवा।तोङुविपातिनो।हि।३८।विसनाश्रगनि
समांनिसेकवङ्गसोइनहीं।विपति।जनसेवाजजूप्रजले।लूरे
धातेघृत।३९।सेवाघनीसतोक

लहै तिऊ लोक कौ तौ इह सुपन सौ स्यं जन सेवा सब ही मरत
२ है कोऊ थिर नहीं संसार २४ जान भ्रम म्रतगा पर वाह मैं बेसा
तजग देष जन सेवा दुष सबा सिस्य है पार ब्रह्म न हो पवं २५
तन धन जौ बन्न सम ध्र्मे पार कौ कहा गंवार येक पलक मैं बांडै
पूत कलित पर वार २६ अध अली तो क्यों वार विनसि जाइ पलक मैं
हो ब्रह्म अर्त सि ब तैस सेतऊ थिर न रहै पहो २७ तोम स्यरू जस
तगुण त्रिगुण वै सब मांहि जन सेवा थिर को नां हि है उपजै सो मि
सिजांहि २८ सुपना मैं ह्वै सुष कीया जत्र पत न्यं सोइ जन से
वा को नैं वाति नहीं सुपने वा सुक जोइ २९ सुपनां मांहि धनल
हौ मन मैं मांन्यौ मोद सुपनें बांक पिलांव ही जाग्यां बालम यौ
द ३० मृगा पक्षी सरीता ता मरण तरफै नांहि जम जालिम बां सैष
डा मारत्ले इह पलमांहि ३१ ध्यौसच्या रिका जलवरण मांडै बहोत ल
डाण जे मतंगा तकोन है मजिलि जै मग दान ३२ कुसल कहो दी
से नहीं सब षंडै काल का पास निरले येक अलेष है केवल जन दास
३३ आवि नासी बिनसै नहीं विनसै नहीं बिनसै जग वाबि
कार जन सेवा निरमेरा मह हैं सु मस्यां कहैं विकार ३४ धूनि हच
ल तारा नहीं चंद सूरज नांहि निहचल्य थैवा निरंजन त्यां सुभ त्यां स
ब दुष जां हि ३५ सब विहि कोई न रहि सदा आसा उलपै जीव काल
विधू सै जीव कूं बिसरे अपणो पीव ३६ सास बटाऊ वा बैठले
मो हि नरो सा नां हि गो विंद के गुण गाइ ले आपरो हीऊ आं हि ३७
या तौ देही कारमी सो तो नरी बिकार हि अपती मैं चालि गये या
कूं बहोत सिंगार ३८ सब ही डरपै काल तें पार थे वांचदेव निरमें द
रिक्ष सतर हैं लगे अलष की सेव ३९ सब ही डरपै काल तैं रवि ससि
नर सुर ईस जन सेवा काल मह बली कंपे सरणि जगदीस ४०
हिरणा कुसरा वण कंस जरा सिंध सिसपाल कुंभ करण बालि व
तथै सबै गरासे काल ४१ सब ही डरपै काल तैं ब्रह्मा विसन महे
स सुर नर जुग सब ही डरौ काल न त्यौ है सेत ४२ सब ही डरपै का
ल तैं पिरथी पांणी पौन तारा वे ज बिलां हिंगे बंथिर है सो कौन
४३ कारण हार करतार सें मिलि रहै सोई पांनि जन सेवा सोई अब
रै और न पहूं वै जांण ४४ सब ही डर पै डर यै काल तैं गिर सर नदी अ
नंत सब का काल करतार है कर बंदना संत ४५ काल फांस ला
गै नहीं संत सुमिरै निह कांम सब का लाल का काल है केवल करता
राम ४६ हरि पद मैं साध रहे तहां वासु आपे नांहि काल काल सा
मैं नहीं साध रहैं सुष मांहि ४७ जो उपजा सो नां रहै रहसी अलष

३॥१८॥२४०२॥ अं १६॥ अथ कालकौ अंग॥ लिषते॥ सिरूपरैं॥ का

रसो सैके कहा अचेत जागि न सुमिरै राम कूं॥ कालक वगहि लेत

॥१॥ सरवी तो जात है रे जीव चेति सकै तौ चेति॥ जनसेवादास

हरि स्मरन बिण कालकै वगहि लेत॥२॥ निधडक फ्रैगे कौ वेणि क

न सवल हेला रे राम विमुष जन सेवल॥ बहोत सहै सिर ना॥३॥ जन

माया भ्रम मा कहा निस दिन चितवत काज॥ जा वही नरहरि तौ बि

मुष कै क्यु कूकडि है जाइ॥४॥ कोई न कालि मै ऊबरे काल बडा बलि

वांन॥ साध सरणि गहि ऊबरे भजि निराकार निरबांन॥५॥ निरमल

नांव बिसारि कै रिवो ध्यान [illegible] जन सेवादास चेत्यो नहीं अं

[illegible] तौ काल॥६॥ मोह पासि सब जग बंध्यो [illegible] जिन हर फल ष

[illegible] हरि सुमिरण बिन सेवल॥ काल बिधूंसै आइ॥७॥ पाव पलक

की सुधि नहीं सो साजि रो निति काल [illegible] जमप

[illegible] ॥८॥ ऊबरे [illegible] हरि बिण [illegible] मारे काल

महाबली सो मिले हूं सब [illegible] सरणे होइ रहे राम के तो सत्त

धैनो पार॥ जन सेवा हरि बिसरि इन्हा को न रही॥ बिपति [illegible] ह

री॥१०॥ हार इमृत तरस [illegible] तन मन सुरति सं [illegible] आन धारिये

[illegible] निन बचै काल॥११॥ आपा [illegible] बिना मिटै न

ही जम त्रास॥ आपा पर जब ही लह्या तब कटी काल की पास॥१२॥

काल अहेडी निति तिके मृघ बनमाहि [illegible] निधडक

[illegible] करे काल अहेडी गल॥१३॥ जो दीसे सो [illegible] उपज्या

[illegible] हरि सरणे न ऊबरे गयो काल सैंबि [illegible] ॥१४॥ यो तन

काचा कुंभ [illegible] बिनसत नाही बार॥ समरथ राम सैं [illegible] बिपत

[illegible] ॥१५॥ कालनै अति सबल है समर्थ [illegible] न जाइ॥ त

न [illegible] काल उचकि लो सा हिब करो सहाइ॥१६॥ यो तन [illegible]

ताको [illegible] गरब गुमान॥ आनि [illegible] काल [illegible] देषत माहि

समांन॥१७॥ जनसेवादास मन [illegible] काल अहेडी तद राम न

[illegible] कालने [illegible] ॥१८॥ सरणे होइ रहे राम के [illegible] रहे

राम नाम [illegible] जनसेवादास तब ऊबरे [illegible]

जाइ॥१९॥ सरणे होइ रहे राम के तौ कालने मिटि जाइ [illegible] तौ

[illegible] हरि सरणाइ॥२०॥ आसा पासी काल की काल गहै

[illegible] आसा तजि [illegible] ताकूं काल न षाइ॥२१॥ आसा

[illegible] आप है [illegible] जीवता मो [illegible] जनसेवादास हरि [illegible]

[illegible] काल गा [illegible] ॥२२॥ जगत चबीणो कालको काल गहे

[illegible] जनसेवा [illegible] कालको मरगीरत॥२३॥

+ समरथका सरणां तजे गहैआंनकी वोट जनसेवादास तेमांनई न्याइम हैजम वोट ७०

बलिवान ७२ वंछगहै आण चौ तीवौ समाफिनपकई काइ जन
सेवादास हरिभजनबिण काल गरासै आइ ७३ रूपं रूपं नरगाफि
लरहै काल षडौ सिरचाल काची आसा मासिसी लागिन ये बेहाल
७४ विषसागर संसार है मोहपसा यौ जाल जनसेवा सब जगमा
ली सबकूं षाचै काल ७५ जनसेवादास तब ऊबरै जेगहै हरिसरण
इ औरकू छूटै नही जहां तहां जमषाइ ७६ समरथका सरणां ग
है तनजै आंन सब वोट जनसेवा तसै जम की लगै न चोट ७७ सु
विनासकै आसिरै अजरावरकी वोट संत रमै तासुषमे जमकी
लगै न चोट ७८ काल गिलै स जगतकू जाणि न देषै संधा जनसेवा
दास छूटै नही पो हब डा जुगिफंद ७९ जिनके सिर परि राम है तिन
कू है कहा दुष हा गुरसरणै साधकै सदा निरंतरि सुष ८० सारै
तिन साईयां रे मन पहरादेह काल सिचाणौ नर चिडौ आणचौ लै
गहि लेह ८१ गाफिल कू वा कूं व्रणौ रे जीव पहरादेह काल गिणैनि
तिला सकू तीतस गहि लेह ८२ बालक तरणं नागिणै रसुम
रि सनेही राम काल वडा बलिवान है मारण हीसुं काम ८३ काल
वडा बलिवान है गिणै नही दिनसांक जनसेवादास छूटै नही लू
टैला पांमां क ८४ रावण से नर चालि गये दसमसतक भुजबीस क
लच न सबकुं दरै सबकू साते याल ८५ सहसभुजा बलिवान थे
करते बहो अनिमान घासज्ञ गनिज्यूं परि व गयौ काल वडौ बलि
वान ८६ रावण कंस वैरू सबै काल गरासे जोइ मनयेवडे कासे
वते घबरिन पावे कोइ ८७ रावरंक सब येकसा जम पैवचै न कोइ
साधसंगति भजि रामकू ह जिन अवरसा ब्रण ८८ वहोत पलाट की
रहै आसा रोष्यो जाल गाफिल रहै गुमान मैं आइ पकडैतो काल
८९ रा मनजैसा ऊबरै तनमन वि सनागी ति जनसेवादास
सु एरमोय कूपारब्रह्मसूं प्रीति ९० तनमन वेड लगाईयै हरि
सीलका लेहा जनसेवादास तब ऊबरै तनमन हरिकूं देह ॥ ९१
॥ साषी ९१४ ॥ काल को अंग संपूर्ण ॥ २० ॥ अथ सर्रा ति
न को अंग ॥ निसवासुरगो विंदन गौ पां च विसपैरि फुनी रति त
रांन वही मां णी यै इकपारब्रह्मसूं प्रीति १ संकत गोबिंद ति
जौ मन अनंत कूं माति जाइ लो भमोह मदमाया ते जनसेव
र हौलै लाइ २ जनसेवादास साईसरांवैं कनक कामणी
ति पांचूं उलटा फेरि कार इकपारब्रह्म प्रीति ३ जमारत्तएणी
क हितां पांच न पावै वोरा सूरा कामत और रहै का इरका मतऔर
४ काइरटालि कानै ऊरा माया आन्है मन सूरा हरि सि रण

नेरु जनसेवा थिरदीसैं नहीसुरनरसबहादेवाधप।काचीकाया
थिरनहीकहागरब्योतेजीव जनसेवाबेगिसंभालीयै हरिय
ग्रसनेहीपीवाधप देहीदेषतजाइगीभूंपाणीकावीलहरि
रजिविलमनकीजीयोनिकमौबेगेटालोपणा निकमौबेगेक्य
करे रांमजपजैवीाजनसेवादासतनजातहो ज्यूं अंजलीकान
पा)ज्यौराबेराजीवका जीवनजाएैअंधारातिद्यौस किवो
करे उलज्यौ आसाफधाप२ कहरदालकी चोटमे किता कूंचूंटे
नाश्विनिहकामीहोइ हारेनजोसा निरभै हरियदमांसिप२सव
।कालांकाकालहो अलषनिरंजनराशकरमनमतमिसरिभ
जे ताकूंकालनषाशेपध आगपहरगोविंदनजोअंतरिधीतिजपा
ऊ करडाकालकवोरहे लोडूमरखानहोइजाइपपाकरडाका
लकूताकरेजेजनसुमिरैरांम।कालजालमैनांवधे।निरभैपदवि
सरामपद सबजुगहतलानीदमांचे।तिनदेषेकोश सबजुगफ
ल्याफिरततैं रांमबिमुषतनधांपणरेजीवसत्ताकाकरेजाग
नसुमिरैपीवाजगतबसेसवकालमुषिमुसुमिरणविणिलनवी
वपणरेजीवसत्ताक्याकरैजागिरयतरादेहाकालचोरनिसदिनत
केपणापिलनकूंमुसिलेस्यपणपांचचोरतनमेवसैंजवतनमेस्यास
घहोइजेपांचांकेवासिहोइरहे रहेअचेतनाश६०रेजीवसत्ताक्या
करैतूहरिकेसुमिरणलागि।कहरकालकीचोटमें।कहांजाइगो
भागि।६१भागांकूनहीछूटीयेकालसकलनरपूरिहलतनिह
लिलगहरिहेसेतबसाहिवसदाहजूरि।६२ सुंदरपणमांहीदेषीयेद
कवाडरीआपाजनसेवायूसतासोमिटैीतबनहीकालकीता
प६३ सकलीघेलेंकालमुषिआचिरजदेषेयेहागहोघटीक ज्यूं
करौ सोलेणा संचितदेहघ६४ साहिबकूंसुमेरेनहीजिनिसकलसंव
रीसोजेजनसेवादासकेसादईमनिषजनमकीमोजद६५ निकटनि
रंजनबीसरेजीवचेतैगमलाजनसेवादासतयाईसाम्हांहीमनस
कालद६६ कालफालमेंजगजलैकोईननिकसेलागिजनसेवादा
सतेऊबरेजेरहेनांवसंलागि।६७ स्यामसिरजनहारते।जनसेवा
जनै हिनवीते

तोतेंचावेगा

मालमुलकमेंहोहातहां

+समुच्यकासरणांतजे गैस्यांनकीवोट जनसेवादासतेमांनई न्याइसहैजनबे

बालिवानाउ२वंचगहैं मणचीवीयौसमाफिनपइई काइजन
सेवादासहरिजिनबिलिकालगरासेत्राइ७२ स्यूंस्यूंनरगाफि
लरहेकालषडोसिरवालाकाचीमासामाखिलालागिनयेबेह
७४ विषसागरसंसारहैमोहपसात्यौजालजेनसेवासबजगमा
लीसबकूंपांचैकाल७५ जनसेवादासतबऊबरैजेगहेहरिसर
इ औरककूंछूटेनहीजहांतहांनमषाइ७६ समूच्यकासरणा
हैनजैज्ञानसबवोटजनसेवादासौजमकीलगैनचोट७७
बिनासाकेञासिरोअजरांवरकीवोटसतरमेतासुषमेजमकी
लगैनचोट७८ कालगिलैसंजगतकूं जाणिनदेषैसंधजनसेव
दासछूटैनहीमोहबडाजुगिफंद ७७ जिनकेसिरपरिरांमहैतिन
कूंहैपहांनुघाह सुरसरणेसाधकेसदानिरंतरसुष ८० सारि
तिनसांईयेरमनपहरादेहकाजसिंचो लोनरचिडोअणचीले
गहिलेहू८१ गाफिलकूवांकूंबलोरजीवयहरादेहकालगिगोनि
तिसातकोनीतस्यूंगाहिलेहू ८२ बालकतरणोनागिलोरसुम
रिसनेहीरामाकालवडावालिवानहैमारणहासकोमा ८३ काल
वडावालिवानहैगिणेनहीदिनसकिजनसेवादासछूटैनहील्
हैलाषेमांफा८४ रावणसेनरचालेगयेदसमसतपञ्जनबीस क
लचनकसबकूपरै सबकूंसतेयातां८५ सहसमजाबलिवानधे
कलेबहोअनिमनाधासंजगनिन्हूंचरिकगयोकालब[illegible]
वांना८६ रांवणकंसवैरसबैकालगासेजा[illegible] मनये
वतेषबरिनपावेकोअ८७ रावरकेसबयेकसेजमपैं[illegible]
साधसंगतिभजिरामकूंहरिजिनऊबरेसो८८ बहोत[illegible]
रहेमासातोज्योजालामाहिंजनरहेगुमानमेंत्राइप
८७ रांमभजैसोऊबरैतनमनविसनागीतिजन
मेरेमायेकपारबूमनतेप्रीति ७० तनमनबेड
मिलाफालेहाजनसेवादासतबऊबरैतनय
[illegible] कालकोत्र्यास पूणि ग्रंथ॥ २७
[illegible]कोग्रंथ॥ लिसवासरगोहिंदनगीपांच
रातवहीजांणीयेइककूपार बूंमसंप्रीति ७२
जोमनअनंतकरूंमातिगा[illegible] मोहर
रहोलैलाइ ७२ जनसेवादा[illegible]
तिपांचूंकलटाफे
बूहितापरेनपावेगोरामरोका
[illegible]काहटालिका ५

मस्त।७।तिमत्ता।रियको।मापांच३टकिंगलटा चलै।जनसेवासुन
रैरांम।७।।काइदूंगाकूं।फिरैसनमुष घोडे।घाव्हे।पांचमत्ता।रिय
जी।तिनै।आडि।षतमतिवा।तो।७।जनसेवादासतोईसरिवां।अंतरि
नेहरिनांषा।आनन्दरामसवआ।डिकादियकपावअस्तसंकाम।८।।
पांचादिसापांचूं।फिरोको।इगलटाल्यावेसूरा।जनसेवातबहूदेषी
ये।जाकेमुषपरिसूरा।१०।पांचअटकिगो।बिंदनगै।सेवादासजनतं
ता।अंतरिरातायेकसांनैलांमांहानूरा।११।सूरकहांपैसेवता।सब
ही।अपरा।गैरापांचूंतावैयेकठा।तेकेईबिरलाधैरा।१२ सूरासोई
जांणीये।करैजमनसगुध।मांचूंघेरैकोट्नै।सोईसूरासुध।१३
।गढघेरैजनतीरिवां।जाकागढपति।जनसेवानगरीयैनत
वापरसेअपरगौपति।१४ जनसेवादाससेहूसरीवां।आनिनमाव
इकवार।इकतामाबिनां।चितवैनही।तेसूरा।अमथार।१५।सूरमरत
तैनांडरैसती।गहैसतसाव।जनसेवाकंचनगाहिरहो।गहैनही
जनकाघाव।१६। सूरमरणतैनांडरैसतीन्हाणनिका।सेवायूंहरि
जनसुमिरैरामकूं।निरभैषकानिसंक।१७।तनोकजाजतामिहारिजै
मैसै।सूरांकाकाम।जनसेवाजगातपीचिंदे साधूसुमिरैराम।१८।
जनसेवामंसतकदीजीयेहरिकैमारगमांहि।तवहारिनिकटिहोय
ईये।अनंतकातेकूंनाहि।१९।पीवापावनवीजीयेमरीयेहरिमार
गकैमांहि।सोचनकाजेजनसेवला।सूरांबिडदलमांहि।२०।मनमु
षकूंकैसरिवा।सांम्हालेवैघाव।श्रीनवेरसवला।डिदायेलबिडं
काडारा।२१।सती।सतसावोगहै।मरणतैनडराइ।जनसेवालांघू
सरिवां।रहैरामल्योलाइ।२२।स्वांणपतंगाज्यूंजलैजनसेवाकार
णिईसासेवगसोईरांमका।तनमनसौंपैसीस।२३ साधसतीअरु
सरिवां।इनसेनाहीओर।निकासअपूवाबाऊडे।तोनाहीजग

सा तनमनजोबनसैं धिक्री राम जैतवलाहा ३० चरनन
रामका भावै तनधनजोबनजाह। जनसेवा काशर कदेरो सूर
होतन बाहा ३१ हरिमारगमेंमरिरहै तिलपीछा पावनदेह। ज
वा साधूसरिवा नावनिरतालिह ३२ हैशीहाइसहोश्री अ
ही की बात पीछिनफेरै सतरिवा जनसेवा बिडरलगात ३३
परकण मनहीं तबसरलडै रितामासिधणवाघाइतनकूवा
नसेवा सुधिसहि ३४ तनमनस्यौपैरामकू रहैरामलै ला
सूरसती साचा रहै जगदेषतमाजिलिजाइ ३५ सिरदेसिरज
रकू अबिनासी पदने हा जनसेवा तबसिकवरी इज्या सिरहो
३६ हरिकोजनजाजेनहीं मनकेमतलसबलोइ। जनसेवा मर
आसंगे तबबाणनलगेकोइ ३७ जनसेवा मरणा मांडीये सा
कै आगे ३८ दिलहैदरबारमें जमचोटनलागे ३८ सूरोसकिचे
मंडे सारग है ग्रमो हिपाछापगमेल्है नहीं आगा ही कूंजो
३० अरिदलपाचूमोडि हूंसहजसुरतिमैसूरा जनसेवा रं
रातोरहै बाजे ज्ञान हदतरा ४० सीलसचजरणांजतना रिणवे
तउ माहा तोडि किवाड भरमका पांचासिरबाहै ४१ ल्ला गिल्ल
जनसरिवा अंतरिहरिहरियेसा तबइकराजाहोइ जनसेवा
सबगुणबिसरेदेह ४२ संतसिपाही रामका कनकधांमणी ज
ति जनसेवा दासनिरंजनथका धिकथारबूनसंघीति ४३ संत
पाही रामका साचवलसंकोम मरणासोईआसहैसोई कहैग
राम ४४ रामकहा जिनिमरिकिस्यासारा कहैनकोइ जनसेवा
संगतिसाधका सतीमरसमजोइ ४५ सतीमरैहितपावके स
मरेसंग्रांम मांसाधमरेहितरामकेपावैपदसुषधांम ४६ सतीमर
तिपीवहित सूरबिड दसंग्राम साधमरेहितरांमके बसे
मरपुरधांम ४७ साचा रामसतीकहैसबतजिकुलकूलाज
तनधनसुतसबबीसरी जनसेवा दासपतिकाज ४८ साचा रां
मसती कहे सबतजिकुलकीकाणि सूसेवा साधूहीनजे सुर
तिसम्जयारि जोणि ४९ सूरचढेसंग्राममें आसातनकीछाडि
देहमहोलोपीवकू रहैषेतपगमांडि ५० सूरापीछिनदेचले तन
का करैनलोन सनमुषमरणोआदरै तबहीपावैसोन ५१ सूर
दविसग्राममें मनमैमानैमोद जनसेवा काशर का देरो दवाकिर
है क कूवाद ५२ टूकटूकहोइगिरिपरै टूकसूरा का काम जन
सेवा साधूसरिवा निरजैसुमिरै राम ५३ टूकटूक होइगिरपरै
पूगपावनदेहा वोदगहैनहीकरपता सूरा का मतयेहा ५४ सो

तजिआपै।अव्यातिनजै।इकुसुरांका।
आनवोऽसबपरहरै।जनसेवासुमरैरांम।६।सुराजनरतरां

रेरांम।७।।काइधूवाकूं फिरै।सनमुष घोडौ।घा।८।पांचमता।रिप
नीतिलै।आडिघेतमतिवा।लि।९।जनसेवादासतोईसरिवो।अंतरि
नेहरिनांव।आननरामसबआडिकरियकपाबूस्तसंकाम।१०।।
पांचादिसापांचूंफिरा।कोईउलटाल्यावैसूर।जनसेवातबहीदेषी
ये।जाकैमुषपरिसूर।११।पांचअटकिगोबिंदनगै।सेवादासजनहि
रो।संतरिरातायेकसांनै।ण।मांहीनूर।१३।सूरकहांपैसेवगा।सब
ही।अपणा।गैरा।पांचूराषैयेकठा।तेकेईविरलासूर।१२सूरासोई
जाणीये।करै।मनसगुध।पांचूंघेरैकोटमै।सोईसूरासुध।१३
।गढघेरैजनतरिवां।जा।गढहूंगढपति।जनसेवानगरीयैनत
वापरसैअपणेपति।१४जनसेवादाससंहरीसीरवां।अनिजनाव
इकबार।सकरांमबिनांचितवैनही।तेसूरामभार।१५।सूरमरत
तैनांडरैसती।गहैसतसाच।जनसेवाकंचनगहिरहै।गहैनही
जनकाच।१६।सूरमरणतैनांडरैसतीनआगनिदा।सेवायूंहरि
जनसुमिरैरांमकूं।निरभैधकनिसंक।१७।लोकलाजतजिहरि
भजै।सोसूरांकाकांम।जनसेवाजगतपीछिदे।साधूसुमिरैरांम।१८
जनसेवामंसतकदीजीयैहरिकेमारगमांहि।तवहरिनिकटिसांप
ईये।अनंतकालकूंनासि।१९पीछापावनवीजीयैमरीयैहरिमार
गकैमांहि।सोजनकोजेजनसेवकाला।सूरांछिडदलनांसि२०मनमु
षकूफैसरिवा।सांम्हल्लैवेघाव।आनवेदसमूलाछिदायेलछिडे
कडावा।२१सतीसतसावैगहै।मरणतैनछराइ।जनसेवालाघू
सरिवारहैरामल्पौलाइ।२२स्वांणपतंगाअबूजौजनसेवाकार
णिईससेवगासोईरामका।तनमनसौंपैसीस।२३साधसतीअर
सरिवा।इनसेनांहीओर।निरासअपूवावाडउडै।तौनांहीजग
मेवीर।२४दिगामगमनकूंतांकारतहै।आइपडो।रणषेतमां
गांमलीनहोइगी।सूहियपडैगीरेत।२५।एकटिरेकाइरकांदेरमारै
॥मेदांनाउलटिअपूगवाडडै।तौताकीरहैनमांन।२६

कि चौडे मंड्या। सूरां वह्यौ तउ न्याव है।७९। चौडै फूं पै सरिवां डरत
ग कैन वोठ देह महो लोयी वक्त। सदै मरम्मकी चोट।८०। काइरक
वांन बूदिये रेजीवसां ससंवा दि। लोलमो हरि पमदन कूं मी
त्यां ही सुष थाइ।८१। भागां मलीन होइगी। कडूं न ही गहता वा सि
र सौं पी अबगाति कूं। न्यूं सुधरै योडाव।८२। सेवग सूरा राम का
तन मन सौंपै सीस। ज्ञान वोटन ही अणसरै तब पावै बकसी
स।८३। सेवग सूरा राम का। साचे पग रोपै रहै धरणी केडूं कमने
ग्य पान हीं लोयी।८४। सेवग सूरा राम का। तन सैं माडै कूंम। प
पूं पसा निवारि किरि विकारै पाव समूंफ।८५। सेवग सूरा राम का।
तजै ज मन को मांन। जन सेवा साधू सबक है सो सूरा परवाण
।८६। सूर चढै संग्राम कूं। मनरिपजीत ण काम सील सनाहक
री पहरि करि साधू सुमिरै राम।८७। जब लग मन बाहरि फिरै मिटै
न गरब गुमान। जन सेवादास सूरा नहीं। जब लग काइर जांण।८
९। ममता माया मन तजै यो सूरा का षेल। तन मन सौंपै पीव कूं
जीव सा वस्त मेल।९०। सूरा पूरा संत जन। सांई सेती नेह। मन पव
न गहि सुरति सौ धि। अपणा पीव कूं लेह।९१। आपा ही कूं पग धरै
ते सूरा जुग दीठि। ता को मुख नहीं देषीयै फिरि विलै दे पीठि।।
९२। काइर ज्यौ जे जीवतो मरण तें डरपै। सूरा सनमुख पीव कूं त
न मन ले सौंपै।९३। जन सेवादास सोई सूरवां कूं के हरि केहे
त तन मन प्राण समो हि करि रहै षेत कंपेत।९४। षेत न छाडै सू
रवां पाछा फिरै न सोइ। जे कब हूं पाछा फिरै तौ लागै मोटी षो
डि।९५। सूर्य मरतां रे दिल तो पटी करै तागीर। मो जन पावै प्रमकी
तन मंगा फिरै सरीर।९६। सेरबजारी स्याम की घाइन कौ हेरो
माकांम पडग्या जन सेवा। उठि मंडै संग्राम।१००। साची करि मन
चाकरी सारी रैणि न सोइ। तब साहिब समसनमुष रहै मला
कहै सब कोइ।१०१। जन सेवादास सोई सूरवां जी आप बनदे
ह के मरि क्रुके जीति ज्यों आरो न ही संनेह।१०२। राम नाम जैं जन सु
रिवां राड्या तन की आस। सूरति समाणि। साच मैं कीया निरत
रि बास।१०३। सीस उतारया हरिवां राम जन संदेह तजी। गोविंदम
जि निरभै न्यारा रह्या षेतकाषेत।१०४। जन सेवादास सोई सूरि
वां देह न पागा पावा सापणा ही कूं अपणसरै हरि सुमिरण तन
वा।१०५। कटि न बणता निज साध की। जे जन सुमिरै राम। नि सबेही
किन धार की राति द्यौ सस ग्रांम।१०६। सती का बनता पलक की स
रकटि न पलक का मासाध का छिन ता जन मल्लगा राति द्यौ सस ग्रांम

नपकडे साखी। चौडेमांडे षेल भोला कालिम्पानका। सुमिरण
करिसेल। ५५। सीलसना हकारि सेवता। पाचूमाहा घेति हरि
लो। अरिदल उलटा फेरि। ५६। सूरदेषी पेसरको।
हरका मुषसेता सूर हूनि नहीं नाशेसी। वाके मरणा हीमहता।
५७। सती नूरत बस लिवचो सूरनूर संग्राम। साधा के मुषि नूर निति
निरन्ने सुमिरै राम। ५८। रामहै गेसाखि। आसा तन की धाइ सुरति
लागी इकाराम सा सूर कहा जेसो इप। ५९। उनकी उलटी तिहे साध।
सूरमरणा तैडरपे नही। सदा है सुषि नूर। ६०। सती सतइ
लकका। सूरा का पलदोइ संतसूरा पणा रैणि दिन। आपस
कासो इद्। साध सती आर सूरका। नांही हासा षेल आपा हाके
णासरे पाछा फिरे जुगहेल। ६३। कबहु पूवना फिरे साधसती
आपही कू आलसरै। बागेमन ह्दतरा। ६४। जनसेवाक
थिरह रकमे दल बावन हा सा षेलका। छूटे धन षुनित
हदया। काइ रवहोत पुमांव हे। सूरनका कूदा। बातीर
ग्रांमकी। सबका सकै मुषि। ६६। संतसेवा सषिवां सेमानादी।
लो नमो हासि मजीति को बैठ निरन्ने हा। ६७। लोनमो हस
निवेरी नही। जीतेगा रिगुरुपा नाजनसेवा हरिरसपावता
नाद। ८। सोफनो। धमदलो मन्हरि। मारि विडारि
सेवा सो जन नूमला। सारिन जि निरमल हो। ६६। ० अमलकरि
सबदी तजे। लोनमो हरि पदो। ३। मेवा सो मन निरमला। मलन
ही लागे को। ३७१। लोनमो ह आरि रिपघरो। सासे सबदिन
जनसेवादास गुरसबद गहि। सहजै सब सुष था। ३७१। कु
णा मांही बहै पालागा रविपुन। जनसेवादास सोंई स
वो जीतिरहे मैदानि। ७४। हरि रंगरातारामजन
रिदलपांचूं वसिनया। तावे मुष पारिनर। ७३। विवधि वाण
कावहें मनचंचल होइ जाइ। जनसेवादास सोई साखी। आ
तनहीं जाइ। ७४। सूरसदा सन मुष रहे। तटि न पूठा जाइ। तब
कारिहि आदरो लेसा स्पो मबुलन। ७५। सूरा तो नफैन हीं
मुहि षे सिजन सेवादास सूरा तिको। काइसूना गाजी
साधू साखि वां। अंतरि सुमिरै राम। आणि मडे चेण
नही का इरका कांम। ७७। जीवरषी नारणा गहो। नावधरे
प। जनसेवा साधू साखि वां। जमरो णा पारिकोप। ७८। आ
सबनकू। जनसेवादे दे पासा। सोई साधू साखि वां। करि अ
मा। ७९। सुमिरण सेल संबाहीया। पहरी सीलसना

सतथि उत्तु होइ।२७। नाद मीगन मै गाजीया। मया धरती परिसे
रा॥ अनहद बाजा बाजीया। जनसेवा सुष चहुं वोर॥२८॥ वा हिके
म कां नै कीया। चट्यो गिगन परि जाइ। जनसेवा सत्र संघारीया। स
थ मेरै ली हि हाइ॥२९॥ सुरातना लि करिसे वला। पेम पलीता दे
गोला करि धरि गिपान का। ढाहि नरम गढ ये ह॥३०॥ बिमोसे तो
सीलसा चगरहि। तो डि मन मैवास तब हो इ इकरागी सेवला म
मै निरंतर बास॥३१॥ ३१॥२६२४॥ अं॥२८॥ इती सुरातन को अंग संपू
र्ण॥ समरथाइ को अंग॥ नप तैं हरि थल करै। थल तैं फिरि जल
होइ। जनसेवा दास समृथ धणी। अबगति गति लषै न कोइ॥१॥
समृथ मेरा साईया। तो गति लषी न जाइ। कहा थै बादल ऊप
जै नीर कसं ठहराइ॥२॥ कुदरति करता क्या कहूं। तेरी गति अग
म अपार। घा कचे कातें सब रचे। सुरति बहो बिसतार॥३॥ सुरति बु
णी नां मिलै घाट घाट करता कीवा। जनसेवा बतलाग घटे। समृथ
मेरा पीव॥४॥ येक सबद की मांड सब। धरती अंबर बिसतार। जनसे
वा दास समृथ धणी। करतन लागै बार॥५॥ जाकी थापी नां उठै। स
रगामृत पाताल। ताको सुमिरण कीजीये। वो है दीनदयाल॥६॥
साहिब कैसा सीसपारि। मेटू जाइन कोइ। जीवत ज्यूं मृतक करै।
मूवा जिवावै सोइ॥७॥ राव करै रंक पलक मै। कैरै करा व पल्मां
हि। जनसेवा समृथ राम है। सुमरि सकल दुष जाहि॥८॥ करता कू
रै पलक मै। जल थल थापी पांन। जनसेवा दास करता की। मेटि
सकै सो कौन॥९॥ दिन रजनी रजनी दिन। करता करै सहाइ। जन
सेवा दास करता की। मेटि न सकै कोइ॥१०॥ धरती अंबर कर थपै।
अंबर धरती होइ। जनसेवा दास समृथ की। गति मति लषै न कोइ॥
११॥ बाली मैंन स्यानी ढारै। ऐसा समृथ आप। जनसेवा दास सत्र
नरि बिषै। ता कौ की जै जाप॥१२॥ येक पलक मैं सब करै। सब हो सुः
बिसतार बहोडि। सब मेटै पलक मै। हुकम षडे हुजदार॥१३॥
साहिब जुग बिसतार दे। जैसैं न तातार बसो। रि समेटै पलक मै।
समरथ सरजन हार॥१४॥ अबगति गति नही जाणीये। क्या चित
वै क्या होइ। हुकमी बंदा फेर है। दुष नही पावै कोइ॥१५॥ सिरपरि स
मृथ राम है। गंजि न सकै कोइ। जनसेवा दास निरभै नया। मिटे
सबल दुष दोइ॥१६॥ समृथ साई सीस परि। दुष क्यूं पावै दास। सद
सनेही संगि बसै। सब का पुरवै आस॥१७॥ सब बिधि पुरवै साईयां।
निसदिन लीजै नांव। वा जनसेवा रैसहज मै। ताकी मैं लिजाव॥१८॥
जनहरि ता बैठे पूरहे। बेद का बल नाहि। मस्त तिम्हारी साईयां॥

॥॥सोईकहैगारांमा सुषसरवरमेंन्ह
पांचूमारै ये कठा येहै सरसतेपोइ
मनकूंरापेसाचमेंसरकहाजैसोइ॥०५॥सुसाहिबकूंसोंप
पे सिरदेनयेसुनाथापावैहीसिरनारहै सिरमांगैगानाथ॥०
द॥जिसकातिसकूंदीजीयेढीलनकीजेमूरिपीछेहीपछिताइ
गा सिरपरितिष्टेसी धूरि॥०७॥साहिबतेरेनावपरि येतनदीजे
वारि॥तनमनसोंपेपीवकूं॥सोजनउतरैपारि॥०८॥जसोदासिजे
नहारसेसिरदेकरिकीजे॥तबज्ञाननिलैहोइरहैग्रमजुगजु
गिजीजे॥०९॥सोगीसुरतिसवारिकरिनलकामावमेंकरिबी
चिकहूंअटकेनहीं॥तीयापीवसेमारि॥१०॥सोरठा॥अंतरगति
कीप्रीतिसेतातहोहीमिलिरह्या॥यासाधांकीरीति॥आनमारसी
नांबह्या॥११॥साहिबसेतीनेह॥अंतरगतिलागारहै॥सुपनांजि
बिसरेदेह॥साधसबदअैसैंकहै॥१२॥सनमुषहोइपीवआय
तोजाइजीवरैजकपरैनहीतारसेगसंतापतालपितलकिसूहे
मरे॥१३॥सेवगसोईसराहिरिमारगकूंआणसेरोताकेमुषपरिनूर
मातिवालाघूंमतफिरै॥१४॥साधमताअरसूरयोतानांकूमति
हैमा॥जिनधावैनूरांजगमेजसतेईलहैं॥१५॥साषी॥साधसं
तीसरसूरकी॥आगासाकूंदोउ॥नसीऊपरलाषेलैनहींपा
छाकूंवैगोइ॥१५॥सूरातनअरुजोणीसोहरिसुमिरणसूंहेत॥सच
सेलसंबाहिकूरिसूररहैरियाषेत॥१६॥सारगाह्या जावतसीवैनि
रंजनया॥तिसकाअंतरिरातायेकसं॥छूटिगईसबसंक॥१७॥ज
ननिरंजनयेरांमनजिडघनरीबापैकेउ॥सबजगवैरीसाक
रैजबरांमसनेहीहोइ॥१८॥हरिसुमिरणहिरदैधरया देहदसा
रहैनालि॥जनसेवादासनिरमलमया॥रांमसरोवरिझालि॥१९॥
नावनिरंजनउरगहेमनचितयेकेंलाइ॥जनसेवादासनिरंजन
या॥कबहूंकालनषाइ॥२०॥सांचासूंसांचारहे॥तोकबहूंदषल
नथाइ॥जनसेवासालनिरंजनया॥मिलैपिसणसबआइ॥२१॥सं
चासूंसांचारहै तोसहजैसांचसमाइ॥जेसेवासाधूसोमला॥ब
होडिनलोजातिआइ॥२२॥सांचासूंसांचारहै तोसांवालहेसुन
मजेमनकूंवासूंलगैतौलहरांबहोतडलन॥२३॥आणकि
रीमहरांणकी॥मिलेपिसणसबआइ॥जनसेवादासनिरंजन
या॥निरंजैहरिगुणगाइ॥२४॥तनमनजोबनसहजमें॥आपे पांचू
गेरसतगुरकाकिरियामंही दासमिठी

॥सबल

घटिआपकरांमहे।ज्यूंदूधमेघीव।जैसेंतिलमेतेलहे।यूंसकल
छियापीवा१६।ज्यूंपहोपसमांनीबासना।लोहपिंडमेंअ
गि।यूंसबघटिमेंरापीवहे।जेकोईदेषेजांणि॥१७॥ज्यूंलालीम
हदीपातमे।ज्यूंफालांमेनाद।यूंसबघटिमेंरापीवहे।आडि
देहबकबाद॥१८॥ज्यूंपावकदारुमेंहे।ग्यांनिपहचांणसीसाइ ज्यूं
सबघटिमेंरासांईयां।लषेसबिरलाकोइ॥१९॥जैसेंजलमेंकुं
भहे।तामांहजलपूरि।यूंसबघटिमेंरासांईयां।नांनेडानादूरि
२०।आपकयेकोतांमहे।भांडाबहोबिसतार।रचेअनूपबनब
होनांतिकेकंचनयेकोसार॥२१॥ज्यूंजलमेंसांसिब्यंबहे।द
रपणमेंआभास।यूंमायामेंयेआपहें।कोनिरषेनिजदास॥२२
ज्यूंसांसिबिंबसमंदमें।सोईहेघटमांहि।लघुदीरघमेंसांमि
हे।घाटिबाधिकछुनांहि॥२३॥ज्यवदेतीनुंलोकमें।रांमरह्याभ
रपूरि।ज्यूंदरपनमांहिदेषीये।आपलोमुषकानूर॥२४॥निराकार
बिनसेनही।बिनसेसोआकार।सोअपंडीयेकरससोथीर
त्राणआधार॥२५॥परापरेपूरण।भूत्ताजहांछायानहीधूप
जेनमनरांणांकेनही।ऐसाततअनूप॥२६॥नांनरनांनारी
कालनेआगनिसकेनहींगांनिसकलअकासीऐकससोऐस
पीवाबिचारि॥२७॥जनसवागाडूनांगडेकाटोकटेनमूरिपे
सामरापीवहेसोरह्यासकलनरपूरि॥२८॥पवननसोषेजनसे
वला।जलमेंडूबिनजाइ।ऐसेमेरापीवहे।सोसबघटिरह्या
समाइ॥२९॥त्रिलोकोइगलजेओरलष्यानजाइ।गुणांतीत
तसबघटिमें।अघटनिरंजनराइ॥३०॥ऐसाततअनूपहेकही
येकहांबणाइ।जनसेवादासघटमेंलह्या।अलषनिरंज
नराइ॥३१॥जातिदेषुंतितेरांमहीबहोरंगीबहोरंगकाइस
मारोनही।ज्यूंजलमांहितरंग॥३२॥आदिअंतिमधियकहीजि
लतेमहीतरंगायूं।पूरणपरमानंदहे।बहोरंगीबहोरंग॥३३॥जिन
सिरजेहैजीवतबसकललोकबिसतार।सपतलोकमेरमिर
ह्या।जनसेवापीवहमार॥३४॥जिनसबरच्याब्रह्मांडासिरजीसबचंद
सूरअसनीरपावकपवनइलध्राकासकोसिरजिसमतायार॥३५॥
२६८७॥ओम॥१॥आसापीनूतनकोअंग॥करताहरकरता
रहेलेकेरहेसापीनूताजनसेवा।आयेनांघ्यये।सकलहीयेअ
बधूता॥१॥सबकछुकरताकरिरह्यो।कोतिगदेषेजनाजनसेवा
सोबेधूतहे।चोंतिनदेईमन॥२॥सबकछुकरवावरिरह्योमेलो
बातिकबोलि।जनसेवासाधहरिभजेसुरातमसंपघरि॥

नंदेवी सो पांहि॥२०॥ कुकमी बेदा कुकमनमै बेदा कादैवा चार॥
ता सब कौ नो वधै कहै
पिरह्या सब गोर॥२१॥ रहै निरा
ला सब करै॥ ऐसा समृथ आप॥ सबै उपावै नो निंदै तारि कोई
लिपे न याप॥२२॥ साहिब ष्याल बरणाई ष्या॥ साहिब ष्याल वे मींहि
जन सेवादा सउ दवुदकथा॥ सम झ पडै कहूं नो हि॥२३॥ न्यारा
है मिलता नहीं॥ मिलता न्यारा नो हि॥ अकथ कथा है रांम जी॥ म
जन रहै मन मांहि॥२४॥ करि आसा करता हो इ रह्या॥ सब घटि है अ
रपूरि॥ ऐसा समृथ सेईये॥ सो नांही कहूं दूरि॥२५॥ सब गति आ
अनंत है मरमा कहा न जा इ॥ करि सब ही सब तें अगम न हां
तहां रह्या समा इ॥२६॥ ब्वार पार आगाध गति कहा येक हा बाणा इ
सब घट मो हार मिरह्या ता ही सत्य लाइ॥२७॥२६५४॥ आग
॥२०॥ पीव पिछांणी को अंग॥ जिनि सिरजे जलबूंद तैं सीस
चरन अरु नैन॥ कर मुष नासा सब अंग रचे॥ ता हि पिछांनौ ऐन॥
१॥ ऐसो जंत्र सवारि करि अब गाति जा वधरयो॥ ता सा हिब कूं मू
लि करि भरमत अनंत फिर्यो॥२॥ सब पंषी नर सुर सबै जीव रचे
हैं रांम॥ जन सेवा सब मैं रमि रह्यो॥ सुमिरो होइ निहकांम॥३॥ धर
ती अंबर करि धरो बेद सूर आनी र पावक पवन जिन रचे॥ सोई
हमारा पीर॥४॥ मां जैं येक पलक मैं॥ करत न लागे बार॥ अधर अधं
री येकार स सो पीव वणा अधार॥५॥ अधर आपहीं येकरस सब
समि है जगदीस॥ ता कौ जौ रन जां णि है॥ सेवा जन हरदीस॥६॥
अधर अमर अत पहै॥ अगम अगाध अपार॥ सो पीव मेरै सा सपरि
जन सेवा सिरजन हार॥७॥ धरती पांणी पवन नो॥ तेज नहीं आ
कास चंद सूर जा कै नहीं॥ ऐसा परम प्रकास॥८॥ चौ सरै तिज
कै नहीं नहीं सा तन ही धांम॥ ऐसा तत अनूंप है॥ संतां का वि
सरांम॥९॥ काया कालजा कै नहीं॥ कारमन हीत हां पूर॥ ऐसा
तत अनूंप है तहां न कोइ सूर॥१०॥ विधन पैधज हांकै न हीं॥ त
सौ नहीं ब्रह्म बेद॥ कंचन चपुनि पापन॥ ऐसा अलप अभेद॥११॥
दिसि मुसाटि आवै नहीं॥ पुसतक लिष्या न मा इ॥ सब घट मो हा
रमि रह्या॥ अलष निरंजन रा इ॥१२॥ जिहिं जा न्यो सो सो जा नि है॥ क
ह्यो न मानै को इ॥ बाहरि भीतरि जन सेवला पूरि रह्या हरि सो
इ॥१३॥ बाहरि भीतरि जन सेवला पूरण सूंन आकास॥ पूरण परम
नंद है कोजा नै निज दास॥१४॥ इंद्री अगोचर अलष है मन न ही
सो इ जन सेवा सोई जा नि है॥ आतम अनभो हो इ॥१५॥ सब

गीगनमे जलहै।गिगनारहे निरारा ऐसें आतमदेहसंपरसे
नही लगार।१२ ऐसें आतमरांमहे।ज्यूं दरपणमें मुषदेषावाणि
में घाति ब्यंबज्यूं यूं ब्यापक व्याप्त अलेषा।१३ घारघरि दीपक के
रि धरि सबै प्रकासै सोइ ऐसें आतमरांमहे देहगुणलिपेन
को।१४ सोई दीपग विप्रघारि सोई दीपचंडारि वारै ग्यांतो स
घनिके ऐसे रामबिचारि।१५ येकसरोवरि सबनेरे घरिगया तै
भिनिहोइ जलटिसरोवरमे धस्यौ तब अंतर रह्यो नकोइ।१६ ऐ
वनी चअंतर नहीं ऊहरिमाजिहरि रांसमाहि। ऐसें सबरांम
मे ज्यूं जललिन लिबरतांहि।१७ कंचनथ्कोऊ न्जो सबकोक
सिहेरु कां ष्म लोहपषाणकी आनिनहीं कछुदोइ।१८ ना
रसरूपांरामहे आबिरणसबलोरु सबलोहांकंचनकरे॥
अंतररहेनकोइ।१९ अहूसे सेअरकरमक ग्रंथिनहोइमालूं
मा जनसेवा सुनिमे मिलिगये ज्यूं बहोकासटकोधूमा।२०।जो
कछु तोसनालग्या सोतैलीयालगाइ आपाउलटिसमालि
ले ज्यूं सेवा सबदुषगाइ।२१। देहमलीन अचेतजड तूंचेतनस
दा प्रकास।जनसेवा आतमसरचो यातनसूं होइउदास।२२ तू
अविनासी अजरहै देहासिरदेहाबिकार।जनसेवाइ पतंत्तूंहै
है ऐसाकरो बिचार।२३ जनममरणमें रैनही मैचिदानंद सत
प घटालिकासंजुगतिहै सोदेह अनितदुषरूप।२४ देहबिना
सवतजनसेवला ताहिनधीजावा।यंकरमहुयेउरगहीस
अतजिकचकथा।२५ नाउधस्यातोजाहगा धस्योभस्याकीन
रा रोमरोममे रमिरह्यो पावकज्यूं कातार।२६ जनसेवादासपा
वकरहे दारकमांहि अरूप यूं रोमरोममेरमिरह्यो अबगतिअ
प अरूप।२७ न्यांहारि ऐसाजांणीयां रमता सबकेमांहि बिच
र कायातें येकसी हूंनादरसेनांहि।२८ जोहै सो बिनसेनही जो
बिनसे सो नांहि। जनसेवावासयूं जांणकरी मगनभयेमन
मांहि।२९। अतचंतसबदेहहैं आतमनाही नित ता आतमपू
जांणिकरि छाडिदेहकीरति।३०। ज्यूजलमजलनी आतमा स
नआतममैदाविसबैप्रकासी नितहै ताहि आपरापोलेबि
३२ अविकारी है आतमा बिकारदेहकेमांनि सदासन्यासीये
करसपरकासिकतत्त्वांनि।३३ ब्रूसगपानी बूलमे मिले ज्यूं द
रीयावूंदसमाइ कायाकेमायामिलै नातेंदुषनजाइ।३४ ज्यूं
आकासघटकेगयै महहआकासहीहोइ जनसेवादासतन
बिनसैसो यूं जीवसमानोसीव।३५। करमाकेवासिजावेहै बि

आंणि॥राम नदूमांहीजांणीयेसादिवसाषीभूत॥ऐसा हिनि
नहैरहैसोकहीयेअवधूत॥४॥ जनसेवासागरमुवरमे॥गिस्म
हीदासंत॥भारतनजैनांवडूं यूगुणनांदिलिपत्त॥५॥सवयं
द्रीगुणमांहिहै चेतनसाषीरूप॥करैवरावैआपही॥अलिप
अरूपअनूप॥६॥ घटघटमांहीदेषीये॥केवलअमलअनूप॥ज
नसेवासाषीभूतहै॥निराकारनिजरूप॥७॥ देषणहाराराम है सुण
णहारारामा॥कोस्वणकरताहैरह्या॥जनसेवाआतमराम॥८॥क
हैसुणैसबसेवला॥अंतरियुरषअलेष॥तौनत्रकासीतुरीर
हृततसाषीभूतही देषणं॥सबसमिदेषैआतमांव्यापतर्य
कारोम्र इन्नाकहैतोदोइहै॥इन्नासेनहीकांम॥१०॥सबसीसा
हिबदेषीये॥व्यापकयेकसमान॥साषीभूतस्कूजानजन हैव
रहैगलतांन॥११॥ वैरनावकिसऊपरै॥मनिनहीउपजेआइस
बघटिदेषैयकही॥साधरहैसमिनाइ॥१२॥ रामअमलिमावारहू
जनसेवादाससुपरूप॥१३॥ विचैरैसुषरूपमैसोईसंतवनूप
॥१४॥ जिहिघटिसांसासोगहै॥जिहिघटिरामनजांणि॥आपवि
सनरकरिरह्यो॥मन्ह्योबोणिकबोणि॥१४॥दीपकमिंदरमेध
र्यो॥पापपुन्निनहीलेहायूं॥चेतनसाषीभूतहै॥दुषसुषसगीदे
ह॥१५॥२००२॥अंग॥२१॥ अथबिचारकोअंग॥ जनसेवाद॥
ससबरोगका॥वौषदयेकाविबारा॥जारौवदाईसतजनामेवे
षदततसार॥१॥मनधाषेभतकरो॥पूंहेलूंहीदेषकुणपापी
पुनीकुण॥सबमेआपअलेप॥२॥अंतरजाभीयेकहीउतिम
मधिमकोना॥ज्यूंयेकैडारैमणिगणांयूंपायासातंपोन॥३॥
बोमणअत्रीबईसशुद्रसब॥अंतिजपतितचंडाल॥जनसे
वादाससबमेरमेयेकोदीनदयाल॥४॥बसतबिरफोसापत्त
कुणउतिमकुणहदा॥पांचततकापिंडहैरजबीरजकाबूंद
॥५॥पांचततकापिंडहैसबमेव्यापकाम॥कोमगाइकेहूषसं
होइयामनहीकोमद॥६॥ आतमततविचारतैंभरमसबैदुरिउ
जो॥७॥ जैसेसुपनोसहजमै॥जागपातैमिटिजाइ॥८॥जैसैरजमै
सापभ्रम॥अंधियारैदरसाइ॥ जनसेवादासतविकैउदैसाप
भरमदुरिजाइ॥८॥ जगतसतिमानैतबोगबलगपांनहोइ
जनसेवादासउदैन्यो॥भोणभरमगयापोइ॥९॥करतानोग
तादेसमै॥जांणोंजीवसरूप॥जबअहंछूतमैमिटिगया॥तब
न्यारा अमलअरूप॥१०॥तोइतरंगोनिनिनही
विचारजनसेवासहजैसुपमैसाधनयेन

अपकआत्मो नंकुभमूतकानो ठिनूधनकेचनहेनहीपूआ
मतेंमिन्निोहिपाप घटमडमहृदाहिनूनोवमात्रमितिमा
जनसेवादासहूजानहीयेकपूरणवुरलप्रकासहै॥ येकउप
दोइहैदोऊव्येवायुकासहूनाविरजैसहूनसम्पियेहीममाव
बमेकदाआपैसुलक्ष्यासबसुलक्षीयाउलक्ष्याउलआसव
सारजगतनदीजलनाघहैसोइबडाविचार॥९२॥ ताकेडगमेव
लीयोपीलेसबैदियाइताकेनिरमलनेतहीजनसेवासुभदा
हाङ्॥९३॥ विचारकोअंगसंपूरण॥ अथ॥ अथ चि
कपटीकोअंग॥ मुषतेंमानावोलहूं चितमांहीकछुओरजन
सेवाज्यातारकपटहैताकूनाकरूंवोर॥ चितकपटीकाचितमै
बुरीवसनतहरागसाचबसतमनोरवैम्नूकरकरवैजाइकाग
॥ चितकपटीघडिवोकरैवातकपटकीमाहीजनसेवादासत
डोणीयांस्यूतनमिविषपोहि॥ ओगणग्राहीजीवकेबुरीठ
षममामोहिजनसेवाभडासवघमाडिकीजहांओगणतहांज
हूं॥ हीराडारहाथतेकुवाधिकाचगहैजाइजनसेवास्यूतबा
डिकीविषेहलाहलखाइ॥ चितकपटीकेचितमैवातविषै
कीहोइवाकैतकिनहीऊपजैकथावारतनदोर॥ उस्यूतबा
डविषपावैसाधसंगतिनहीजाइकेताहीपरमोधयोविषह
लाहलखाइ॥ चितकपटीचितवजूसोमिदेनहीजलपानत
वोपडयोरहैपानमैकहांपकासेमांन॥ चितकपटीगुणनाग
हैकोटिकोजेवोइकूवैपडैआपकाढीयेजलटिडसेडुषदे
इ॥ कागलबडारैवालूणीतुसरापैगाहैनाहीये॥ चितकपटी
ओगणगहैगुणकोइधरैनाहि॥ चितकपटीसबतेबुराके
तलपाहैनाहिमावनगातिहिरदैनहीभलौजामेजामे॥
चंदनकेसंगिबासहैतजैनअपणोओग साधसंगतिक्याक
रैजनसेवाल्योनाग॥ चंदनकेसंगिल्हसनहोइ॥ चंदनबा
सनमाहिआपलीदुरगंधिलावहागुणधारैनहीकोइ॥ काच
गुणपरगटकरैओगणराषैमोहि॥ ओगणतोलफेनहीगुण
सोकाटिदेवोहि॥ चितकपटीओगणघणैगुणनहीमांहि
यकजनसेवाओगणवेडनागुणदिषावैकाहिअनेक॥ बा
वरबपडयोरहैपाहणपाणीमांहि चितकपटीकाचितडसामै
तभिदैनाहि॥ लोहापारससंगिहैविचिपडदासेरूआग
हीदसवारघतेदेषीयैवाकेवोहीरंग॥ ऊसरवावैऊनजीप
जैनोवैबीजोवायचास॥ चितकपटीकेचितमेरामतचिन

धमुखआनासदरपणमेंहौ।दरपणमायाजोलि।जीव
८ मुखचेतनमायाइपण
पूंजीवबूंसहैयेकरा।नरामयडौमतिकौ३

मेयेकनयौतजिकर्मर२८जीवदसासबद्धाडिसैबिसरैसबगु
राअरैरजनसेवादासतघदेषीयेयेकरामसबगैर३०।नपूंज्य
सबगुणबीसरैसूंसूंहोइजजासा।नपूंदरपणमेंमुखमासहोयू
आपभाहिप्रकासथ०।जेतहेवारैमुकतिकूंलोतजिबिधीयाविष
जानिछिमासंतोपकोमलता।जनसेवयेमनमानिध३।।तानिछि
वीयाविषजाणिकरिरमनयेंहैबिवाणी।तवहाअतरिसुखलहै
संतसबकहे।सुचसिथ३।पापपुनिदुखसुखहो।तेरानाहीदोउ।
करतानेकतापूनहीतूपरकासीजोइथ३सबपरकासीयेकहै
मापकसबहीगैर।जनसेवासबघटिरमिरह्यौ।दूसरनाहीअै
रथ४।येकब्रह्मआकासवत।सबहीपरहीरअैर।जनसेवादास
तबहीलषैमनराषैकरिगेरथ५।सुधबुधआपापानहीतबनपै
अपानसंसेगवीतासैभगसंतापसबआत्मसदाअनंगथ६।जैसी
गाकीमतिहैतैसीहीगतिहोइ।नहीकछुआत्मबंधमेंसाधसु४
मतिकहैसाइथ७तनअभिमानेबंधीयौचिरकालकोजीवअस
बोधजबजपगौतबजाइसमावेपीवथ८चिरकालकोवासहोज
नसेवादासतन्माहि।अस्वबोधजबप्रगट्यौतबदूसरदीसैनाहि
थ९येस्वमेमसरबगिरैघटआहरिनीतरिसस्यूपूरणयेक
अषडहै।दूजानाहीकोइथ१०पूरणयेकबिचारियैनीकाकरिनिर
धारकुभमदलतगजलनषनकंचनसारथ११।।दूजिडअलाभूत
हैदिलतेदूरिनिवारि।स्यूनषनकंचनदेनही।यूंयेकोरामविचा
रिथ१२।।जगतपरपंचनासैतवै।जबलगपानंनहोइ।पानंनमया
मरपचमिट्या।तबदूसरनाहीकोइथ१३।जनसेवादासआपनतम
रनमेंसरपदिषांदिगिपांनमाणअंतोउदेतबसरपनरमभिटै

न्यूबंदी

।दूरिजनसेवादासइज्ञानहैये
तिजा

८

नो हो को ॥७॥ दुबध्या न्मूं निवारि करि ॥ आत्मराम विचारि स
हा सरत्ति राम की ता कूं मूं धन मारि ॥८॥ तजि अनीति सब जीव
की मन घट ये क विचारि ॥ सब ब हूं ये ही कह्या सो मेहा वा कृत
पुकारि ॥९॥ मो स मन पैदा तत्पा वे ता घट दया न हो ॥ चोरासी मे स
वला चाले जन म बिगाइ ॥१०॥ करद कहे की जीव मांडारो अल्ह
वला चाले जन म बिगाड़ ॥ करद कहे की जीव मांडारो अल्ह
सेना रिजन सेवा हूं ना को नही ये के बुस विचारि ॥११॥ जलथल
जीव जितकि ता य स पथी स ब आर घाली क हे नदे थी ये रामरमै
स ब ठोर ॥१२॥ सब हां जीव सु नियां न के स ब के माहि सु दार जन
सेवा ऐसे जो ति की को ई दलन दुषाइ ॥१३॥ स ब मे साहिब ये
क ही क्या छ बारी क्या गाइ क्या मुरगी आदम मे देषो ये कमार ॥१
४ लष असी मारि मसी त हो स ब मे साहिब येक तहां ले सा सन
वाई ये या मन की तजि टेक ॥१५॥ लष असी मारि मसीते हैं मा हो
न्र षुदाइ तहां ले सिजदा कीजीये कान्ह कूं न सताइ ॥१६॥ बोल
ता हारा जगत गुर वे ग स ब के माहि दुबध्या टारो दल मे ताते
दासैना हि ॥१७॥ को धपा रद दिल ते त जै महर ब से दिल माइ ॥ त ब से
वा सांई दास है दो जिग जा वन जाइ ॥१८॥ १८ २१ ॥ अंग ॥ २५
अथ ग्र ज प देस को अंग ॥ बादन को जे जन से व ला ॥ का हू सेती गा
डआ पैच ठ के सु का बि जे बोलत तत न साइ ॥१॥ मूं ति गयो हरि
सुमरी ये ॥ बस्यो बोल्या बठे बिकार ॥ मा छित सु चुप के रहे ॥ सत सी
लिकरे बिचार ॥२॥ सा छत मिले तब स चुला ॥ बोरा मुषा न बो लि
सत मिले बु लदे स के ति नसूं अंतर षो लि ॥३॥ मस्या दे सा बहो
मिले बु लदे सा को ई ना हि ॥ बु लदे सा मिले त ब स वला ॥ आन
द उपजे उ र मा हि ॥४॥ आपा मेटे बोल णा ते सुषी या संसार ॥ आ
पा ली ये बोल णा जन सेवा तो ते भरमै भार ॥५॥ आधा घट क ल
के स दा भरी या क ल के ना हि ॥ जन सेवा या ही पारि षा स म कि द
ठि म न मो हि ॥६॥ सा ज्ञान म सां जिन मिले मुषा न उ चरे ब्रैन ॥ जन से
वा अंतह करण की क सा दे त हैं नेण ॥७॥ मूरि ष सेत मूं नि गा हि
रपां नी से ती ग्यान ॥ दुबध्या दूरि निवारी ये ये क आत्म को ध्यान
॥८॥ जन सेवा समझ्या हरि कथा ॥ बिण समझ्या है बाद ॥ बिण स
मझ्या दुष दरद है ॥ समझ्या आत्म स्वाद ॥९॥ समझ्या अरु बिण स
मझि मे जन सेवा ये हु फरक ॥ समझ्या कै सुष भया जे ॥ अण समझ्यो
कै तरक ॥१०॥ १८ २१ ॥ अंग ॥ २६ ॥ अथ सुंदरी को अंग ॥ स प
तिपुकारे सुंदरी ॥ आगम अगोचर वासि ॥ जन सेवा दास त हार पि
रहा ररंकार के मां हि ॥१॥ सुरति सुहागणि सुंदरी ररंकार रत हो

ष्याससा।८।साधसंगतिहरिजनकी।।मईमवाकैमनचित।
कपटीनमतेमतफिरैयूंहीडांयांडूलत।१८।चितकपटाकेचित्तमेवं
ानलागेयेकसो।पिडुतपरमीधदे।तोऊलजैनमनकीटेक
२०कतेपडितकथिवाये।मगेनयेकोती।जनसेवादासदूडेन
ही।विषयपीवैकरयारे२१।चितकपटीकं ग्यानकहिपामफवैरू
नरा।ति।गुरुकैयेकनकपजो।म्हंकल्लूपरनो।तिरर२२।मुगणगुणदू
तेकरैनिगुणोरालेकौ।हि।जनसेवासवैविसारिकहिविषेहल
हलयो।हि।२३जैवासाजनमेनरल।।जनतककेसारासा।चितक
पटीहरिपथको।चलैनयेकोकोस२४।गुणसबछांडिनिकाटिहै
औगुणपकडैआइसंगतिविचारीक्याकरैविषहलाहलखा
इ२५।औगणपकडैगुणतजै।मलाकहातैहोइ।विषहलाहल
खाइकरि।अमितमरैगालोइ२६।साखिसबगुणवंतसतगुरुदे
यअधाइ।चितकपटीऔगुणगहैगुणसबमेटतजाइ॥२७॥
२७(८२)॥अथ॥अंग॥अथनिगुणीनकौअंग॥ कृतघ
नीकैजनसेवला।लहुवकुकाजलकोइ।कृतघनीसमिफौन
ही।ऐसापापीकोइ।१वसुधानागिगीनहीगिरसागरनाल
पा।जनसेवावसुधायूंकहै।कृतघनीमहाभार२।कुगलापे
टिघालई।नटतरबाघोजाइ।कृतघनीनरह्वैगयो।वाननगये
तबधाइ३।कृतघनीकेअमततेपीपलगयेजरलि।जनसेवा
वसुधायूंकहै।मोपरियाजनमारि४।येकसबदगुरदेवको।विस
रनरकोइ।सबोजनसबंडालकौपावैप्राणीसोइ॥५॥इसनिला
वैसरयकौ।म्हहरहोतनहीबार।यूंकृतघनीकूंरपानंदे।उलटो
करैविगारद।कृतघनीकोचितफटयो।म्हसूधपरयूंघूत्तना।स
सबदसुरोगुरदेवका।मूलिनकरैप्रकास॥७॥२७(८९)॥अ
२४अथदयानिरवैरकौअंग॥ मावंतीदुषपावही।तो॥
सबदनवोलि।वोषदधावमिलाईयेउलटाप्रावनखोलि१
सुघरीजेसबहिनकौ।रूपकाहूनहीदेह।जाकैजैसीभावनां
तैसाहीफललेह२।जाकैजैसाभावहै।ताकूंतैसालाइ।तैसा
हीकौफलचढैजैसासफलबाह३।येकसवैसीआतमां
दूजानाहीकोइ।जनसेवादासयूंजाणिकरिसबनिरवैरीहू
इ४।निरवैरीसबजीवतैयेमतसाधांसार।दूजाकोदीसेनहीं
सबघटिसिरजनहार५।निरवैरीसबजीवतैसोईसाधूजांन
जनसेवासबघटदेखीसैंदूंदरयनमेपुषनानं६।अरममसूल
मेतांनथरि।इग्यादयालोइ।भरमगयासोत

जेनो।१। नेह।लग्यो रासाजूं।नि भै।क्यो।पारि धारे वेह।१८।ज
नसेवादास कोई कूटिसी।साधूसंग बिचार।वो रसवे हादू
डसी।लग्यो रासी धार१७।जग सत्य।।तिन की जीये सुरिर मे
नवमी ताराम सने हीबा सेरो होसी प्रतिफ जीत१८।जन से
वादास्पी बचो सरे जग बंधसब लादि जग सुषत जेन ही मे
जो कूपा वैद गरदा द्दि१९।कनक कामणी जग बंध्या।नहीं बंधै
सो दास।जन सेवा ग्रटै काल तै।हरि चरणा नांहि निवास२०।ज
नसेबादास संसार मै।जम की दाढा दो१।कनक कामणी मोरवे
तेडुषी या है सब कोइ२१।जग मायाकार रो लागा बिसत्याजो।
डनीय
वा।जन सेवा साच नजाणी।वो मनो बिसात्यो पाव२२।
सती पा बिदै नजीपै केवल रांम।माया सू मन का ढीये।जन से
वा सुध रे कोम२३।माया सू मना मिलि रमे।जपे न केवल गाय
जन सेवा ग्रैसा ओर क्या।ज्ञानो होपाप२४।जन सेवा दासता
सुषकूं कहो क्या कीजे बीर।यो तनओ जैरे लो दिन।ज्यूं ओजली
कानी२५।गज श्राम तासिर छत्र धरि।बहो बिधि नोग बिलास
जन सेवसो सुष अगनि सम।जी वजाले हैउ नास२६।सब सुष रा
सारांम है इज्जा सुष डुषजांलि।दाकै जीवपतं गज्यूं।यात नकी लाइ
हो लि२७।जोग नज्युगते भोगवै सूघुण काष्ट षाइ।जन सेवा गये
ना बिवा हकरि माया मोहनलाइ२८।चरणा केवल रत मनकी
मायमोहन लाइ।जन सेवा श्रोसर हेम लो तंगो बिदके डणंगा
इ२९।जन सेवा हरि बिन सुषनो।इज्जा सुष बिलाइ।ज्यूं जल दाबि
मेरी चकू।कित छ्गा या बिलाइ३०।जग गमी नयतंग मुलि मर
कट फंधिपरे हा स्वादके लप रावसि मया।जन सेवा सब तजि हरि
सुमिरे२१।कनक कामणी जग मै येछ्डक दा कै दोइ।जन सेव
दास त्यागण बिना सुपनै सुषन होइ२२।ग्रजक करे जन सेवणा॥
सुपनै का मणि दांम सोई साधु सू रिवां त्याग सुमेरे रांम२३
सुपनै डस फरै नही।ववनकी यो जे सुइ२५।कनक कामणी जन
सेवला बिसरि रहै जन सो इ२४ हीरा जडी सुम्तो मदा लै नाधी
जल माहि जेम था नी कीज्याणतो।तो घर मै मल है नाहि२५।गार
षिडा लो कपमे कनक कल्लवो रूप जे माया ओ ज्ञाना राणते तो
त्यागे ना ही सूप२६।गो यों वदघ्रम रधरी।चल षतंग पतिसा
हा मा त्या लागी जन सेवला।लगै साई कीसा२७।जे सुषचाहे पी
वको तो ड्न तैका ढी मन।कनक कामणी जन सेवला नेहन बा
धेजान२८।जे सुष चाहे पीव को तो मन कूं अलटो ताणि कनक

।बसेगिर्षलेसुंदरी।

जहांकूसरनोहीआंन२॥सुरतिसुहागणिसुंदरी।बस्योजुंहू
भरतार॥आनंदसा।चितवेनहीं।सोधिलयोकरतार॥४॥२८
२१॥अंग॥२७॥उपज॥कोअंग॥अंतरमोहोउपजेआत्म
ततविचार॥आपेआपप्रकासहो।केवलमतनिरधार॥अं
तरमांहिऊपजेधीरजनीरनिरवार।केवलमतनिकरतालस्यो।स
हजैसाधूपार॥१॥पिगुलरूपनाविचार॥छंद॥आत्मउपजेआइ२
आपेमनथिरकेरहै।जनसेवादासल्योलाइ॥पिगुलरूपान
विचारमनिसहजैउपजेआइ।जनसेवाइववतनाचलेसुष
मेरहैसमाइ॥४॥२८५॥अंग॥२८॥अथविरकताईको
अंग॥मननेहादेवैआपलौ।जगतैंरहैउदास।सोजनबंधेजग
तसेंसोईहरिकादास॥उलटाजगतसेंफेरहै।हरिकेंसयीवे
गूसेवादाससोईसंतजननाम्यौलागाजीवै२॥उलटाजगतसेंहै
रहैतेताजनकूंसुष।जिकाभेदसहजमे।मातियवेजनदू
ष३॥तजिदुनीयांकीदोसती।करिसाधांसूंनेह।जनसेवास
बसुषपाईये।जनमसुफलकरिलेह४॥तजिदुनीयांकीदोस
तीकरिसाधांकासंग।दुनीयांदोजिगलेवगैसाधकरैहरिरंग
५॥तजिदुनीयांकीदोसती।करिसाधांसूंनेह।साधमुकतिकैं
पलकमेदुनीयांदोजिगदेह६॥मोह्यासिसबजगवंध्याभइ
नतनकोहाणि।जनसेवासाधूऊबरेसतगुरसबदपिछाणि
७॥नेस्तनकीजेजगतसूंबिजुलकेयोजीव॥जनसेवावातिह
रूपदकेबिसरेअपणोपीव८॥लोभमोहसेंसागतिबंधम
मतदेषअरराग।जनसेवादासधनिसाधूजेगेत्यागिनये
णरगण॥कंचनमरूलकिसकामका।जोहानरहीसरिनोभरा
मकहतअपरानली।जोसुमरेश्रीआजोभर१०॥रामकहेरेबिलिधू
लिसबकेंचनगृहनेइआ।जनसेवासुमिरेरामकूं।तेवैधनिस
सारि११॥रामकहांबिलिमरहसुवअंतिसलूरहैसोउसवर
वाजिगोबिदनजे।जनसेवानिरमैहोइ१२॥सोपाणिकसास्त्रिया
पषोगहतजिवसेवलाभकालिसरबपरगहल्यागिकी।ह
रिनिजितरया॥१३॥कालिनारिकुवालयहोवैराग्यहरा
नहोभिनफादबसतजनसेवल।सोपरस्नकीलगैमन
।हालाहोइरहेपाकेयूंरहै

दास कहावै नां हिगम। अन आतम मूरि जन सेवा सांगि
तिरै न हो॥ तिरै सो करणी हरि १६॥ सुध बुध सां ईश्वर
आपा कौ तजि भार। जन सेवा तब सुख रूप जे मन कै अ
ई विकार १७॥ मन मनसा जे जीव की विषिया सुन त्यां जग
दीसा। जन सेवा नेवर गाइ करि बोझ ली बदो सीस १८
दूर देह कपट नेष कहि पद स्यौ दास सनां ही सीची जन से
वा कंचन गाडि करि रास बिरह है को वि १९॥ नेव अंग पड दी
रथ्यौ साच न ली यो सा धि। जन सेवा पंच मुवल ला इया सकल
नयंच पर मो घि २०॥ बाहरि छिन्न गया बैसद प्रात मधि मरू सां पं
प्रेम इधसर वै नही। जन सेवा ऊगा जै बोझ २१॥ बाहरि थोया कथ
सरो नी तारि मैल न चपार। लोभ मोह मम ता मनी। जन सेवा की
यो न गवार २२॥ मन मैला फीसु धि नही। बाहरि धावै अंग का
मन कौध मद लोभ तो मन नरी भयो प्रसंग २३॥ प्रेम ना वले लो
दै सूहाबे उणगाइ सभाक थ्या हाथ्या। सां सो सी ति न जाइ
२४ साच सील संतोष गहि भामिरो केवल राम जन सेवा सा
धू कहै सरै सहा सकाम २५ तन मन सौ पे हरि जे धन जो
बन तजि आस। ता हि सुहागि जिंवं दै पीव न छाडै पास २६ म
हीका लादे रहया बाहरि बहो तजा स। जन सेवा दास कहै सेल
दे पर म जोति पर कास २७॥ मारी लाख लाल न चख्यो बाहरि हो
गल्ल सभा। जन सेवा थी बकै पार स्यौ बाहरि देवै वाग २८ वंध न
काटे हरि क्यौ फेरे मन पकनाकी माल जन सेवा पाखै बधिक
रे ऐसे मिले दयाल २९ ता लमू दगा बोलि गीत गावै गुण गा
पाल। जन सेवा सां से मूल बा अंतर कि डसाल ३०॥ माला प
रो प्रेम की मन मन कू समल धो इ। जन सेवा उरझ ने दिकापके
सस हृग नही हार ३१॥ डाट मूरख मुंडाइया मन नरमै च कुचोर। ग
यो जगत के स्वांग सरो राम ही जान्यो थार ३२॥ नेष पहरि गाडि
कर पोटा पाया भाइ। नि सनातगी न हरि न आयौ लोभ न दा ब
हि जाइ ३३ नेष पहरि गाडी करी। साहिब को यो न आदि जन से
वा सांग व णाइ करि जन म गायो बादि ३४ नेष पहरि गाडी वाल
ही न हारि को गति उडका जम न टका त फिरै कै से या वे पति ३५
सांग बणायो साह को फूटन न पत ले जाइ। जन सेवा कहै सो
पाई ये फूटो जगपा तराइ ३६॥ पाचू कल टाफिरि करि मुष ना
बोले कूर। जन सेवा दास गो विंद न्यौ सो ई साधू सूर ३७॥ ने
ष पहरि गाडी वरी। घडै माया का घाट। सांग बणायौ सुध के

३०कबीरसुधगोर

तजी॥दत छोंबरधीर संत अनेको परहरा॥ हरिनजि हरिमे
थीर॥४॥जे सुषचा हैपीवकौ॥जनसेवउनै निवारि॥येकफनफ
रकोमणी॥ औसोइडारि उघारि॥४॥जे सुषचा हैपीवकौ॥नागि
पावो कोनहु॥जनसेवा पलटे आत्मा॥सोये कंचन देह॥४२॥गात
कूतजा॥दीये वस्सबगतिसतसो॥ला३॥कोई मिलै कोईबीव
डुसाधाहे समिभाइ॥४॥विरकतमाया मोहतें॥ रामजनजनसूष
तिसाधासु मिलिपली दैवाडिसकल विप्रीति॥४॥आडीसो
फिरिनाण हे गहे तौआजानो हि॥जनसेवादासउथलिकरिसेपी
कैसेघाहि॥४॥ कनककामणी जगमे॥ बडफंदा हैदोइ॥जनसे
वासोई सारिबो॥ काटिगयजनसोइ॥४६॥कोई वसती तजबंधा॥
कोई बंधा उदानदोउकेम छिया लिये॥सोई संतगलतान॥
४७॥२८८१॥ अथ॥१९॥नेषकोअंग॥नेषपतुलनुहाआतसबा॥ने
षेनमतिनहोइ॥मनपवनापांचोगहे॥सूहरिसुमिरेजनतोइ॥१॥ने
षवनांयांकांकोरे॥तनमनसौ पैनाहि॥तनमनसौ पिरजनसे
वला॥ रामनजे उरमांहि॥२॥नेषनरोसैमतिरहो॥प्रेमप्रीतिल्यौ
ला॥३॥कपटिनरीफेसोईया॥दरगहिसाचसुहा॥३॥सांगीस
बहीदेषीये॥तेराजन हैकोइ॥ वनमनजोवनधनहू॥सोपिसुह
गणि होइ॥४॥सांगी सबसंसार है॥ वंधे विषैविकार॥ तेडौला घास
गि फिरै सबही स्तलार॥५॥साधसांगिअंतरघणो॥इक कंकर
इकहीर॥ कंकर करमनरमत फिरै॥साधहरिसुमिरैमनथीर॥६॥
सबसिलमैमांणकनहीं॥सबगजमोतीनाहि॥सबगतौचंद
ननहीं॥यूंसाधहैजगमांहि॥७॥सबसूरादलमैनहीं॥सबवने
चंदननांहि॥ अैसै साधजनसेवला॥विरलाहैजगमांहि॥सोईरी
फैसाच सूं॥हडै काजनहोइ॥ब्यभचारणिबहोसांगकरि॥पति
वरतानईनकोइ॥१०॥पतिबरतापतिहीनजोरहै तनिसहजसुभाइ॥
जनसेवापीवकेमनिवसै॥ तिसपीवमहलिबुलाइ॥१०॥अजन
मेजनछाडिकरिरहैरामल्यौला॥१॥ जनसेवासो पीवमांनिहै॥
पचिपचिमरैबलाइ॥२॥काजनहूंसाजिकरि॥लोकरिजाया
नारि॥ जनसेवापीवकेसनिनहीं॥मेल्हीमनांउतारि॥३॥पावब
सेपरदेसमे॥जोपतिबरताहैनारि॥जनसेवापतिविसरैनहीं॥
लेसीफेरिसंभारि॥१३॥सकहावैनांहिगमा॥परमततकीअैन॥

वरमैंगडिस्हीसूतां॥

रा घीपलगावे धुरताबे सिघताई योरी कै प्राणकै सोतु
णा वैतामरो रेच अवेरा ६ ।क हणी रत्ती नेदहै आणि
कोई जनाकरणी तीक हिदेत है रहणी सोई। तनह श्म
नो। बिकरैयडि गया। कैसे उ बरे बीरा तिसना तगस
उरधरलो ।लागि चाकि बाहतीर है रतन धोया मननधुये
मनका उ कुसमल धाइ। तन चर आमनना रयो मननिरा
षकरिसुषहोइ६ धमाला रखा कु जनहा। ततारमन कुफरि
जनसेवा सहजे निरविषहोइगा। साधकहै सबरे रि६ इमा
लापरथाना। फिरे मनपवना गहि कैरि। जहाज हासमन
उगि चल्ले उलटि ताहो हाछेरि६ माला पहरे ला मक करै
कूला नेसालो कदिषावो मन गना गति जहा लोले भ्र
६० उरधिरहोइगा। वंद मजेयके मनचितलो। हिजू पति
बरताफ़ दरी। सुरति बसे पावमाहि ६० अमनमजनेयाउ
करि रहे। सिमल्याला ३ मन गह्यि चू धाति बारो। श्रेतरि
सुषधाइ ६० श्रीगनमज लकी वारे तो कदिषावो आन।
ततना सुहिरदे गहे। साई साध सुजान ६० ।गुरु स वाम्भुत्तास
मकी सुमिरता की सुधि ना। हि तनपाना मन जनमनो हरि
सुमरै मनमाहि ६०। माला गरे लट की ३ कथि बहे आप
तिलकबनाइ पावो बसि धरि धरि फिरे करता बहे तउप
३० ।। ततना द सर्वे तिलक है। ततनाय सोई आप ततनावु
मननिमला पाईये उबगति आप ६१। आपा तिलक बण
रूप। गितलमे घात्यो काठ र जमा हत्या बाहिरा कैसे पावे
अ ६० ।। मेषपहरि माळा कूडी मिटी नसा तत्तलागी रो
लेबाहू। वाया पूहि उवाड ला ६० ।। सागयहरि डुनी या वगा
हरि रनाहा है। ता जनसेवो पाला रहे। गये। पूकसरबोजे
बत ६० धानन अहार व कार मूल ले पाति सग्रहनाहि। सुरति
न टारे पावत अधरो हाउरमाहि ६०। मेष बुणाइ रहगव
पो बांधो मा ये मार। गुरु सेवादा सपा है कै ता जंग सूलि
रहे करता ६० ।। जबलग आपा ना कुरा ति तबलग सुपन
आइ। जन सेवा आपा जे मूला। तब सुमिर हे समाइ
६० ।। सा गव काथी सा हरे। दो ना। विष्णु ना ना। नू सेवादा
स हरि मनत बिना गमपु जह सन ६० ।। सो सुमर
ता हरि जन ते ना ना बि बन ला जा सो न ना थे वा दासताजी
नको को रा कूडा है आ ६० टे देवा धोमाय ६० ।। नाषेत

हरि नाव करी मापा सातै पौ
नैदु की बाट ॥२०॥ समैथ हरि नां की करी ॥ ग ॥३०॥ सास
माया वसि भरमत फिर्यो ॥ उलटि न कोयो ॥ ग ॥३१॥ सातौ
नसै न धीरी ॥ तो सांग कछू ॥ का है ॥ ३२॥ सातौ जिन सबका
जे हरिजन कहीये ॥ सो ३४॥० ग्रंथ धरत्या ॥ क्या होइ ॥ ३३॥ दिन
बैस मारि जिनसेवा ॥ अविर सुधि नई ॥ ते जनज तस्या ॥ ३३॥ सौ
गावणायो साह को सौ ॥ गिसा हरि नहीं है ॥ ३४॥ जनसवाद मन बकै इन
है कवक को मतौ दौ ३४२ सो गावणाया साहदा ॥ पाढी पण पूचो
रसूरति न लागी ॥ साव सो चलै चितवई ॥ सो ३४३॥ जन ननी नो नि
कहो का की पाव ॥ है नकेवल राम ॥ जनम बंदी तो मन बकत ॥ स
तो न ये को काम ॥ ४४॥ मूहत जिन साधा नेथ में उलटि न यौ मूह
दीन हरि सुमिरण रूप सो ॥ सो हीसत्या ॥ नये माया को ॥ दीन
गरी ने हूनका जीयो चितन दीजे दाम ॥ तन मन या प्रू फोकरे
कहीये केवल राम ॥ ४५ ॥ निजतत निज रवि ॥ आवसी ॥ ता वादि
अवैस साधि गिरही का हाबेतग लो उतत्या सुन्यान पा ॥४६॥
मासखि नरथ अरिव सो चितवत हीदिन गा ॥ ३ ॥ जन सवा तम
ऊपडी नही कि रिमाया ना हि सभा ॥ ३४७ ॥ सिध साधा परमो
धिकुटि मां निमधान रस यो हि ॥ साहिब वे से पाई यो किमि
यामां हिसमां हि ॥ ४८ ॥ सिध सा धाकरता फिरै ॥ माया दी परि मूंद
यूवे सच्चसनो बाबति ॥ सो पाक जेसा कू ॥ ४९ ॥ सा गमा हि
वनो मिले ॥ साहिब मिलन फरक्ता ॥ जनसेवा सा गब ॥ ३ ॥ इको
॥ ३ ॥ इनीयां मा ई धूतिप ॥ ५० ॥ सांभी स ब सैसारहे ॥ साधसा धिन
जान राम ना मलागा ॥ रहै सा ढ्यहर गजतान ॥ ५१ ॥ साधसी
ग अंतर इतो ॥ यक हीरा यक काचा ॥ का ॥ सदकू दिसवी ॥
हीरो हरि सैं राचि ॥ ५२ ॥ साधसा गि अंतर इतो ॥ कग हस ॥
बुग बुगला तो मछी चुगै हंसा मोती चुग ॥ ५३ ॥ साध मा
अंतर इतो ॥ यू धरती आकास ॥ सूवा गो सव माया मिले ॥ ज
कीया निरंतर बास ॥ ५४ ॥ धूं देखन वनमै नही ॥ यू साधू
लाको इसा चा सा चे जाइ मिलें ॥ फे ठ क्या गति हो ॥ ५५ ॥
री जैजन सेवला ॥ सा चैरी कैरान ॥ पोवा तो साई मिलै ॥
कीजे काम ॥ ५६ ॥ लोक दिसाइ के पा सरे ॥ सेता पा अवगति
सूपगार कीयो ॥ विमचार णी ॥ कौ तरी जै गारे सा ॥ ५७ ॥ ते
सो पे पाव कूं ॥ मा सो को छे हरि ॥ हरि आस सुमिरण
पावे उलटा फेरि ॥ ५८ ॥ म झा ॥ चै आमा रसा ॥ गुरु गा
॥ दि ॥ पर ॥

चालै बांह। जन सेवादास हरि जन बिणि। जम पकडे गैवांह ९२
हरी बांधै पाघडी। मूं जो घाले हाथ। औ तिकाल जम घेरिसी।
तब कहो कौण संगि साथ ९३ माथै बांधै पाघडी। बागा रूड पहि
राइ। सुमिरण सब न्यारा रह्या। मो निम्यारा सब पाइ ९४ भगति दि
ढ औसको। आपणा नूल जाणि। मन मैं माया बसि रही। घडे घाट
घट नो हि ९५ औरां कूं परमोधदे। आपणा नूला जाणि। जतन परा
यो साधलां। होइ हो णि घरमां हि ९६ क्या पपो धे औरां कूं। उलटा अं
रि सो घि ना चनिरितारि लीनी ये मन इ प लौ ये मो धि ९७। भगति हि
गाडी लोनतैं मो नि मग नर सघा सिस कूं न मानै बोझ को बूडो
भौजल निगो हि ९८ भगति हि गाडी लो नतैं। नो न मग हा अति फा च
उजल ऊ चा न रेपड सकै। लोभन चलैं नी यू ९९ नो मन चूंटै प्रा
णते। तो दो जिग मैं क्या फेर। हरि सुमिरत गिलो मक्ख। मन हा मन
सो हेरण १०० नै षप सहरि मन मैं घुसा। मैं थे अगाति न होइ। साव पह
रि सिरदै रहै अप षडरा मक्कू सो इ १०१। जे जन हरि के हो इ रहे तन मन
त्रिस्ना जीति। पांचूं उलटा फेरि करि। थै कूं पावै सत प्रीति १०२
पांचां के पर बसि भया। न टज्यू का ज्यौं नेह। पांच बसि साधे लोभ
संगि। स्वाति आपस लेय १०३ मिथ्या बोलै नै षधरि मुषां के
बसि जीवि भया जहां नां देह कां। श्री तारि हि सरे पावे १०४ पर अनत
जो रणे बिना कपटे काम न छोइ। ऊसर मो हा बाजि कारी नु
णतन देखे ध्यो को इ १०५ प्रेम प्रीति पतसां बिनां। सब फू वा आचार
का जन करता जा पकाये बांधै सिर पर भार १०६ प्रेम पंथ न्यारा
हा। ऊमड चालै जाणि जन सेवा सुमिरण बाहिरा। भई मन पि
नेन मरै कोसणि १०७। सत जब रत संतो षत्तीर घ्या नैल ग्या नन
मल न्हाइ रतता तिलक सुरति मिला राम हरि हि धिग्या इ १०८ दया
दान सांचैं बोका। भगति धोती धारि। पांच कूं तं फेरि उलटा अं
तरि राम सनेहि १०९ दया पान दया ध्यान दया जप तप औरा दि
या मां हा पाई ये राम रमे सब ठौर ११० भाव भेज न क्षिमा पालर
[illegible] अगनि पर जारि सब्द दसत गुर सहि निसदिन मां वैरी म
रि १११ पाणि मतै मन फेरि मूरख [illegible] नेह अंतरि लाइ। सुरति पवन
मन देह बंधा। अमूं फेरि जनतन जाइ ११२ सुरति सतसना लिनि
सदिन। मन माणिका कूं पोइ स्याम लाल संमालि अंतरि मैं फेरि नि
रंनेहा इ ११३ सावधान सुचेत निसदिन प्रेम हरि देखे राम हि मैफल
प्रेमा ति मूलो संत बोलै साधि ११४ तन तना बु हूर देखे [illegible] तिलक

[illegible]

जगजीवन अम्र और येक मै इच्छा वाहिरा। इच्छा फूं नहीं वैरा।१ येक
हमारै गरिबसे। इच्छा तैं नहीं काम। इच्छा तैं दुष ना कटै येक सनै
ही राम।२ इच्छा जावै येक घिर। निराकार मैं जदव और सबेह
विनसिस। निहचल लागै सेवुर।३ चंचल नाथ और सव निह
चल अवगति येक। जनसेवा सुमिरै येक जो तागि इच्छा नाम कौ
कध्यार अवसत संघी तडा। निहचै उर मै धारि। कहीन काल की फा
समै अवगति लेस उवारि।५ मनसा वाचा करमना अंतरि अ
वगति धारि। आन कछु चितवै नहीं। सो पतिब्रता नारि।६ मन
सा वाचा करमना। अंतरि अवगति देव। सतगुर कै मारग दतै पा
वै अंतिमेव।७ पतिब्रता साचै मतौ आन कछु न सुहाइ। सब
सुषदाता साईयां ताही सौं ल्यौ लाइ।८ सा वैरी कै साईयां कू
है काजन थाइ। जनसेवा कूं जगत सब पूगदहे हदिसन्नाइ
।९ पतिब्रता कौ येक है बिभचारणि बहोत अनेक। बिभ
चारणि भ्रमती फिरै पतिब्रता सुमिरै येक।२० सा चैना हीं पावतै
तो पढै नयै वर भाग।३ येक रमईया उर बसै साच मैं बालि जाइ
२१। भ्रम जैरी फैसा इच्यौ पद्म नच्या कयाहीं।३ जनसेवा येक सै नाल
ये दिल कौ दुरमति धोइ।२२ सिंगार करै वहौ कौमणी पति कै नेह
नमारि। जनसेवा तौ किसकौ मकान ति सिंगार मैं धूरि।२३ पति
कै मानै नावै नहीं तौ सिंगार कहौ किसकौ न मैला कुचलकरूप
है जनसेवा सुमिरै राम।२४ पतिब्रता पति ही मनै तो पति के
मनि नावै जनसेवा रूप करूप है सवि माहि समावै।२५ पतिब्र
ता कै सैं रहौ कहा कान मैं वहौ मैं।४ जनसेवा छतवत कइ डोलै न
ही अरमै येक अलेष।२६ तन मन जो धन सौं पिकरी नाहीं हेरहे
दासा तव करम कडे करता धणी कथ इक न छाडै यास।२७ पासन
छाडै पीव न घातन मन जो बन देह। जनसेवा इच्छा छाडि करि येक
भंमनं भूगाहिल ह।२८ आपा पार वग्घन तजि मद मछर ग्रहे
र रहे मगन तताम। तें अंतरे नहा दुमार।२९ रहे सुमारी सैणि धि
हारि सम्रत पाद। पतिब्रता पति ही मनै पलक न बिसूरै पाव
३० जा वैसे वस्थल यक्ष। सोन निकलि न हरि जाइ सब तजि नगिन
ता रहै सब दुष्ष जनन राइ।३१ बिभचारणि भ्रमती फिरै सो न व
सब विधि पूरण के सवै सम्रथ सिरजनहार।३२ औ

...न

।गरहु मनजे णो दौसा अवगति येह।३४।

न आवै दिष्टि ॥ अकल अतीत सकल घट व्यापक सोई ह
मारा ॥ ८० ॥ आवै नही जाइ उपजै न सो बिनसै आपि रह्या
ह कूं सो जनसेवादास पूरण प्रकासी सो है इष्ट हमारे ॥ ८१ ॥
उपजै न बिनसै ज्यान थाके सुष दुष तैं रहै न्यारा ॥ जनसेवाद
स अषगति अबिनासी ॥ सो करतार हमारा ॥ ८२ ॥ रूप न रेष घ
टो नही थोडो ॥ निराकार निरधारा ॥ भेद अभेद अकल अ
बिनासी ॥ सो करतार हमारा ॥ ८३ ॥ रहै आधार सकल जुग वाकै
वो निराधार निराकारा ॥ आवै नही जाइ जनम न ताकै सो
इष्ट हमारा ॥ ८४ ॥ रमता राम सकल तैं न्यारा ॥ ज्यूं चंद जल
माही ॥ रोम रोम व्यापक सब घट मै सो पाती हूं जानी नाही ॥ ८५ ॥
तिल मै तेल ज्यूं गंध पहुप मै यूं सब घट माहि रहतो ॥ ज्यूं
घृत दूध काष्ट मै बहनी ॥ यूं निरगुण ब्रह्म माही ॥ ८६ ॥ ज्यूं ले
ल मै पानी रहै मेहदी कै ॥ ज्यूं फूल रि मै रजोई यूं निरगुण ब्र
ह्म है घट माही ॥ पावै जोवै बिरला कोई ॥ ८७ ॥ यूं आलिप्त अ
गम सकल तैं न्यारा ॥ अगम वार नही पारा ॥ अकल अतीत सक
ल घट रमता ॥ सो है पीव हमारा ॥ ८८ ॥ आपि स्वयंभ जि काल न
ही काया ॥ सपला बिसंभर पूरा ॥ बाल न ज्वान न बूढा नही गाकै
सो साई सिरि ऊरा ॥ ८९ ॥ अकल [illegible] सकल निरंतर व्या
पक ॥ निराकार निरधारा ॥ अतोल अमोल अलख अबिनासी
सो करतार हमारा ॥ ९० ॥ अजब अनूप आप है [illegible] नही सो
साई सिर मेरै जनसेवादास पूरण अबिनासी ॥ नही हरा न
होवै ॥ ९१ ॥ अरंग अन्या अगह अबिनासी ॥ सो दर्द [illegible] तें न्या
रा ॥ रूप रेष रंग नही जाकै ॥ सो करतार हमारा ॥ ९२ ॥ अडोल अ
बोल अदिग अमरा ॥ परम तत निराकारा ॥ गगन दीषत
है नही मापै ॥ सो पावै प्राण अधारा ॥ ९३ ॥ अरति अति अ
लि पालि पै नही कबका ॥ आपि रह्या सब का ही ॥ जाकी आ
दि न अंति कछु अकथ कहाणी ॥ सो करतार हम माही ॥ ९४ ॥ सा
हिब अघट जीव सब घटधारी ॥ ऐसा ग्यान बिचारी ॥ परम
पुरष पति परम सनेही ॥ मै हूं सरणि तुम्हारी ॥ ९५ ॥ कै तो पा
है मुकति कूं ॥ कै तो रिधि सिधि और ॥ हम कूं याही दीजीये
चरण सरणि निति ठौर ॥ ९६ ॥ ध्यावै जगम जगत गुर आपि
र स्या सं ठौर ॥ हम कूं राषै ताकै नही तुम बिन दूजा औ
र ॥ ९७ ॥ नित्य सेवग हो इ तब [illegible] स्वामी [illegible] जनसे
वा तन धारे न सो [illegible] ताजि वार ॥ ९८ ॥ [illegible] ॥

मवैनहीसवहीआसनिरासमोसतिसाचीसुंदरी॥सदानि
रंजनयासा॥पजा॥मारब्रह्मपतिसुमरतां॥मेलनलनीदोलोक
मेलाकुचलकरूपहै सबसुभाविलसै थोक॥५०॥दुषसुषमांन
अमांनमैमनगाहिराषैवोर पतिब्रतासोजांणीयै॥मानिनही
उपजैओर॥६०॥छाडिकपटहारिनावलो॥ज्यूंसिधैकारिजकोइ
जनसेवादासमुषमेरमै डुबनहीपावैकोइ॥६१॥जपतपतीरथ
नांवहै॥सेजमसमतानांव॥जोगजुगतिसबनांवहै॥जनसेवामैं
बलिहारीनांव॥६२॥जपतोपीवसंभातिरोमनआलसनही
कीजै॥रांमबिनाजमजालहै॥इहितकिजाहालीजै॥६३॥नांवब्रा
बारिकोनही॥जपतपतीरथदांन॥हिरदामांहिसंभालीये॥इगात
जिसबआंन॥६४॥इगांवजिभ्रमस्नांनसबायेकगहौलहौमां
हि॥जपतपतीरथआदिसबा॥नांवबराबारिनांहि॥६५॥चितमतम
सबहीवरचसै॥हरिकंचनगहिलेहि॥सबासंताकोसाधिसमुझि
चितआंनकडेमतिदेहि॥६६॥अगब्रह्मअनूपमआपहै॥ताकेनांव
अनंत॥सबगतिअलहयेकतं॥जनसेवासुमिरैसंत॥६७॥राम
रहीमकरीमतूं॥करतारकुदरतिकरतायेकतूं॥ज
नसेवानिरंजनहार॥६८॥तूंपावनतूंपाकहै॥तूंराजिकारहिमां
नासिपतिवुसंडोसांईया जनसेवाकहाबषांन॥६९॥अज
अनूपमयेकतं तेरेनांवअनंता॥तेरीमहिमांअनंतहै॥गावै
तेरेसंत॥७०॥अपणांपतिवृपीछिदानेनांगिरहहैआंन॥जन
सेवादासतेपाणीपांचारस॥करस्यांनसमांन॥७१॥अपणांप
तिकूपीछिदां॥नांगिरहीविनचारि॥बहोरूपकहोकिसकूं
मकां॥ताकूंमाथैमारि॥७२॥चितवणितो॥इकरामकूं॥इगांचि
तवणिनांहि॥पतिबरतासोईजांणीयै॥प्रांणबसैपीवमांहि॥
७३॥घटिघटिमेरासांईयां॥अघटनिरंजनाथ॥जनसेवावासप
तिप्रांणनाथा॥जहांतहांलहासमाइ॥७४॥घाटिबाधिनहीजां
णीयै॥पूरपरपूरणछोकासा॥जनसेवाअैसेजांणिकरिसुमिरै
हरिकेदास॥७५॥मनसाबाचासतिकरै॥अंतरस्यावैयेकसो
पतिब्रतजांणीयै॥तजिइजांनमेअनेक॥७६॥पतिबरताकै
येकहै॥बिभचारणिकैबहोनाम॥येकसमानीयेकमै॥यामिली
अनेकांजाइ॥७७॥जागृतसुपनसुषोपती॥तीनअवसताजे
गतीनप्रकासी॥तुरीरहतापुरषहमारासो॥इ७८॥सपतिसु
पनअरजागृता॥तुरीप्रकासीजोइ॥पंचमअमलअरूपहेपुर
षहमारासो॥२७९॥अमूरतिअचितअचलअविनासीमुई

अंतरको मैल धोआ पांहणकूं क्यां पूजीयै पत्थर मै प
होइ॥१८॥ दादु पत्थर मै मूरति तेइ सब भेले सकल जि ह
मता रांम बिचार बिना नरगुण तीमांहि समानं॥१९॥ ज
दोहि बिन सेवला॥ जग भूला भ्रम मांहि॥ जे मूरति कर
कौ तो तिरै नीरके मांहि॥२०॥ पानीहि बिन सेवला जग
ल्ला सब जांहि पांहणकूं करता कहै सो डूबै या गीमां
२१॥ पांहण भूलो भ्रम मोहि सत भूलो नीरा जन सेवो बिचा
दया करै जे चौडे पडै कबीर॥२२॥ सला मेरो ते प्राणीयां
ति कोई बै सो बीर॥ जन सेवा हरि सरवर मै बिन धर्म पांव
नषाडै कीर॥२३॥ सलाम ये सै जन सेवला॥ मातिरवै सी हा
डावनजांरो पैलको तो मरसहै ज्यूं सा॥२४॥ जन सेवा सा
री घरगह नर समरै सिरजनहार तब निरमै होइ ... ४प
भै मिटै जाम कौ लगै न मार॥२५॥ जन सेवा दास सुसार सब पा
हरण पूजि मूवा अलष अलह दरगाह गया के चुनका गसे
वार ध्या कौ रखो टूटै नहीं भजि निराकार निरबांन पल
मैं परलै होइ॥ कृतम करै बिधान॥२५॥ कृतम करता की
रिरह्या वह पावै बिसराम यैं सेवो सब घरां मक्की ज्यूं सुधरै
सब काम॥२६॥ कृतम करता कहै हो भूलि रहै संसार कि
रतम तजि अब गति भजै तो उतरै भोपार॥२७॥ सब जग बूडे
देषतां पांहण पाणी पूजि॥ जन सेवा इस भवन नाथ बिधि मा
बिरहै नर हूं जि॥२८॥ अघट बुल गोपै नहीं पांहण दीनं रोम
न मनकै धोषै बीसरै॥ जन सेवा राम रतन॥२९॥ पांहणकूं क्यु
पूजीये मुषां न बोलै देव बोलण हारा जोयौ ज्यूं साहिब
मांनै सेव॥३०॥ करियाक आगै धरै बाइन बोलै देव रमतारांम
नजांणीया तो कहा करीकै इह सेव॥३१॥ आतम हांपूजीये को
याद वलमाहि मुष बोलै नो ज नकेरी ताहि क्यौ डीकै नजा
हि॥३२॥ देषै बोलै बासले सब दसुणै सबका निरसना करि सब
वादलै सबौ सांमति जानि॥३३॥ बिन देषै ना सुणै ना बोलै
ना षाइ सो साहिब कै सें तारिहै क्यू न बहो भ्रम काइ॥३४॥
पांहण ही को देहुरा पांहण ही का देव॥ जन म बदी तो प्रन त
वन पायो नेव॥३५॥ पूजो आतमदेव कूं भजो निरंजन देव॥
सब संतां यू ही कह्यो या मति साची मेव॥३६॥ सब संतां यूं ही
ति ह्यो आतम अपना बिचारि पांहण ही के पूजणै कोई न पा
न तो पार॥३७॥ मति का सब दसुण वतां माति कोई मानै री

अमर अषै अतै निजसारा ॥ अबिचल अचल न्रमल निराकार ॥ अ
बीजस जीवनस रोमणि सार ॥ राम अगाध अनंत अपारा ॥९९॥ अ
बचन अषै अभै अविनासी ॥ निरमल निराकार निरक्षरं ॥ अकाल
अगाध अपार अनूपम ॥ परम प्रकास अपारं ॥१००॥ अडोल अमल
अगाहि अगोचर ॥ अबरण अचिंत अतीत ॥ असंग अनंग अरंग
अडोल ॥ रूप न स्यांम न सेत न पीत ॥१०१॥ अरूपी आतम राम है ॥
रूप गुण बिसतार ॥ सकल रूप कौ रूप है ॥ जनसेवा सिरजन
हार ॥१०२॥ ग्र १०२॥ पतिब्रता कौ अंग संपूर्ण ॥ अं ४१ ॥ अथ भ्र
म विध्वंस कौ अंग ॥ चौपई ॥ चौका देव तौ जीवा सेताया ॥
बहु पल षपुरष का भेद न पाया ॥ भेद लहै सोई जन सचा ॥ स
कल धर्म सिर सब तैं ऊंचा ॥१॥ चौका देमाति जीवसता वै रम
ता राम तहां डुष पावै ॥ अतंत पुरष घरमै सब माही ॥ समझि दे
षच्य ऐ मन माही ॥२॥ करि आचार बहे जीव संतावै ॥ साच
बनां संतोष न पावै ॥ तुलसी तोडि अऐ न रहजा ॥ कहौ कौन मानै
साहिब पूजा ॥३॥ बधती कूंपल तोडि मंगाई ॥ हरि इहि सेवा
कौने रीझैं लाई ॥ रमता राम देषि सब ठांई ॥ सो सेवा न लमानै सं
ई ॥४॥ साच सील का चौका दीजे ॥ कुल स संतोष जरि अंतर रीती
जो यो च्येष हे य सुरति की माला ॥ जो इग्यान दीप जै पौ सोइ उजा
लाय ॥ ग्यान स सान साच की पूजा ॥ देव निरंजन और न दूजा
और न रम सब देह उगाई ॥ ऐक रमता राम रहो त्यौ लाई ॥६॥
साषी ॥ काइ देवल षोजि तां तामां हीय तिदेव ॥ जनसेवा अंत
र मेटि करि करो निरंतर सेव ॥७॥ सुरति आरती साजि करि अ
नहद घंटा बाज ॥ ध्याय हो य जनसेवला तष अलष निरज
न राज ॥८॥ अलष निरंजन सेइ मन ॥ आकार मत रम करि इहरि ॥ ज
न सेवा डुबध्या इरि करि ॥ ऐक राम तत रहरि ॥९॥ ऐक सरूप पि
छांणि ॥ जनसेवा सब घट मांहि ॥ अंतर के पट दूरि करि ॥ दू
ऐक रांम दरसांहि ॥१०॥ जगति करौ बिसवास की ॥ अंजन म्रम
रण डुबजा ॥ रमता राम पिछांणि करि ॥ जनसेवा दास त्यौ ला
ई ॥११॥ साचा साहिब सेइऐ ॥ साची कीजे सेवा ॥ झूठै नर मिन न
ली ऐ ॥ करियां हण का देव ॥१२॥ कपरि के मैं हीर रहौ ॥ अंतरि दूरि म्रं
सा चिया से वास ॥ हि बसा निसी ॥ फूठैर गिनरा चि ॥१३॥ पडिन न्रूले
बेद पढि ॥ आपउ पावैं नांव ॥ रोमरो ममै राम रहौ ॥ जा कै गाव नगं
बन नं ॥१४॥ ४० पजे बिन सै नरम सबा ॥ या पउ नि विसंभर मांहि
नराजा कै रह्या ॥ सो दिन मो हिसे नार ॥१५॥ साचा राम [illegible] नि ये

सपोहणहीकेपूजणो। किस्पायो जगदीसा२७। साचासबदसुणावता मतिकोईमानेरीस। पोहणहीकेपूजणो
मूंडीघाटोसीस२८। साचासबदसुणावतां मतिकोईमानेरी
स आत्मबीन्यां बाहिरा कुलनहीं लोमोघ४०। साचासबद
सुणावतां मतिकोईमानेक्रोध। जबलगमुकतिकुलनहींना
हीआतमबोध४१। पूजेआत्मरामकूं दिलेकीदुबधाखोइ प
हराहीकेपूजणो सदगतिनयानकोइ४२। पूजोआत्मरामकूं
जूसाहिबमानैसेवा। मरमानिबारोहनिको। जपावेरूलनेप
कनेबध४३। आपापचीन्हानहीं तोकैसेपावेनेह। आपापरजब
चीन्हीयां। तबलहा निरंजनदेव४४। विणटाकीसंसारसबाध
डीया। सिरजनहारा टाकीघडी जगतसबकरिपूजेकरतार४
५परगटसोदीसेनहीं। मरमकेरे परगटाजनसेवादासवाछेन
रीकालगरासेगट४६। जोहैकरताजाहिको फिरताहीकीसे
वा। नरम्पडेहैजीवसबालहैनअलख अनेव४७। अघटघटस
बघटिमेसबघटलेहयविआणि जिसिघटिपरगटदेखीयेसोस
गतिकाजेजांणि४८। सोलिगरामबटवेघरे करिपूजेकरता
रपोणीमांहडूबिजोसो काहितारेपार४९। आपहीपरब
तिरहैसासंयाक्याहोइ। साचासयांमचपाईयोसाधकहैसब
कोइ५०। साचासाहिबसेईयेतगीयेभरमसंधार। अंतरिअ
लखपिछाणीये सोसबकासिरजनहार५१। अंदरिबेगसबल
घलटिताहितलाषिजनसेवाकारिजहोइतबासुणिसंतद
सविध५२। दिष्टिपडेसोविणसिहैतामेसारमनपचनाउल
टइकरि अंतरमांहीहैपिव५३। किरतमधत्योबागाडकरिज
कतोदवनहोइफलमैधरलेहोइ५४। साधकहैसबकोइ
पधकिरतधत्योबागस्करिइकतोदवनहोइ अघटवुस्तअं
तरिवसतिहिसुमत्यासुखहोइ५५। सांईसेवासनाकिवरि
जनमनहीतोहिनास। जनसेवाअवरियाईये कीरतितिवां
सअभ्यास५६। उपाजिनविनसेसहसो तिहिसेयांसुखहोइ
अपाजिरविनसेसेवता तिहिसेयांक्याहोइ५७। किरतमथल
पणाकरिसोकरताकवेनहोइ करतापरवासिकरहेनेनदू
राकैसोइ५८। जोमूरातिकरतारकीतोसेवगलेइबुलाइ जो
नसेवा५९। मतिहापरा मुषसूंबोलिकराइ६०। करताके
सबरीघहेघोनिजडेपिरिधोलिटाकीघडायेसपूला। स
नेमुषसेबोलिदा६०। कबकूपरबसिनोपडेमकथ६।

थी। धरखवर बिसतरा। नाको सुमरण कीजीये। सो है सिरजनहा
रा॥१०॥ धा अवर करता कीया सकल सो जन हरि की वाणि सो
च सुमिरण कीजीये। क्या करि हूये नाव॥१०॥ के सेवा करि साध
की के हरि सुमिरण करि लिह थापरना तिन ऊपजै तो यह ही षावै
दे॥१०॥ मन सा वाचा हरि भजे तो मुकति मांझि न हो फरि ना रथ
वरत सब भरम है। साध कहे सब टेरि॥११॥ पांच छि रमन बासिक
रो अनतारि हरि गुण गाइ। जन सेवा दास हरि भिकाटे हो साध कहे
स मकार॥११॥ संसार सागर डल न हो कैसे तिरीये बीर। नौका ना
व सबा हे दिठ करि गय जपै ली तीर॥१२॥ सब ही जलफेवार मे
वा हूप पाणा पूनि हम कूं जग मबतार ईया मेटा जन की हूजि॥१
२॥ पूरा सतगुर तौं मिले तब अंतर के खुले कपाट मूरति सिल
म दाहन हो अंन घड घडीयो हाट॥१४॥ मूरति सिल मे येवा ह
अंतरि समझि विचार जन सेवा करता दोष न हो देषी तन ही॥१
५॥ जेन। जगपति वासरे सकल सुषा को अधिया सदा विचार त तउ
निजकण चटै न ता थि॥१६॥ जेनी तलजा तैन ह। कूटै सदा पराल
जन सेवा दास हरि नांव बिन अति गरासे काल॥१७॥ साधु मथा थो
जांणीये जामे निजकण नाही नाव हरि बिन साधन सब रसा जे सि
तने गाव॥१८॥ सो भ्रम सकल सिरोमणी जामे निजकण नाव पैडे जा
केवल ब्रह्म सोई आवगा॥१९॥ दूसर कहूं दीसे न हो। सब मे व्यापक
येक। जन सेवा पष छूटे न हो। मन गाहै राषि टेक॥२०॥ सुष दया दिल
दोष से लष न रम तारा मानब लग का जिन सारे बादि बके ब का
म॥२१॥ मतवा मत लग्या बिना जीव को मुकति न है॥२॥ अंतमा सत
प्रीति है सपा इन बोलै गो॥२२॥ षाइन बोलै जन सेवला सो नारे
किसिद्ध किरतम कायो बणाइ बोपि जगलागे सब सेव॥२३॥ जि है
धरि बसे बट जरा व्याणि लगे घर माहि। जन सेवादास बचन सी दे
षूं हो जाति जाहि॥२४॥ तीरथ बरत जप तप जिता सबे काल के ना
हि। जन सेवा दास सब छाडि करि राम भजो दुष जो हि॥२५॥ परमतार म
संभालीये चित न हा दजे और जन सेवा दास सुष मे रमै दुष नाही
कोई वार॥२६॥ अलष निरंजन जरि बसे पाती ग्रां न वठाइ हरि बि
धि सेवा कीजीये अन मन भरम दुष जाइ॥२७॥ के मसीति के ड्डेरै।
पाषि लागे सब कोइ सब का करता येक है सो दिल माही गोइ॥२८॥
जहां मसीति न देहुरा देवा कि सकी गोर जन सेवा येक पिछानीये
हूवा तजि नूर म और॥२९॥ के मसीति के देहुरे बांधि रहे सब टेक दि
ल माही देषे न हो सब का करता येक॥३०॥ पाषि सब लग भ्राणी।

गरूहोतैजाइवोव
स्यापरतीतिबिणिवायोक्यासुक्षथाइ७४।वोपदयावेपछि हि
नापछिनजोरौराषि।लोनमोहमायातजोसवसाधूवोलैसा
हि७५।साहिवसुसाचानहीयोमनकूवेदीनाकिरतमसोसाति
हिनसिहै।नरताहिनयेआधीन७६याहणपूजेप्रधमीप्पानन
ही।उरमांहि।आपहीउवेदयतासोलेतारैको हि७७मूरतिल
लिसिघक्रूपरोरचीम्पोनबिवारि।जनसेवावोतास्नहीवाहैवै
राल्पामारि७८वसेपंपैरूसुषमोदेषो।नैननिहारि।जनसेवा
मूरतिनाकहैमोहिपूजोपाटउघारि७९जेमूरतिहीकरतारकै
तोपरवासिकूरहेवीरासवजगतमूलानोभरममोपूजेपाहण
नीर८०वोलणहारापूजीयेजीपनित्युणकोजापजेसेवाइस
संसारमेहरणासवसंतप्रघपाप८१।सीनिरवंधवंधैनहीअवध
अरूपीआप।जीवपडेसवभरममोजपैनहीहरिजाप८२हीसैं
रवधवंधैनहीसपटिनउनिसमाइपरपूराणवृह्मंडमोतासा
हिवकूगाइ८३अरमिपडेमातिवावरेकहिसंतनकोसाथअं
नउयाइसवछांडिकरिभजीयेनिनकूनाथ८४प्राणपुरषसंत
रिवसेताहिसुमीरनहीलेहज्ञानहीपूजेआंघलाषूहीषोवेदेह
८५पाषंडीतिनलांगाततमनामाहणदीन्होमनाजगकेचलकरता
नामजोसवटेरिकहैहरिजन८६दारतननिरालारहिगयाकंक
रवांधमाणिसाधनवूझ्याषारषूतगीनमनकोचं८७पठेजु
पठअगपांनउराकपटकतरणीमाहिसाधूइमूतवजनसुणिजा
रागणेनाणिजोहि८८केवलकरतारनाछांडिकेजिगपोहणदीन्है
मनसुनसेवाझूनेगगतसवकोईसमकेसाधूजान८९साक्षपर
तषिदेवहैताकोजजेसेवासुविवोलेनोगनकरोदेहस्मिागको
सेवा९०वोलणहारापूजीयेनहीपोहणसकोमाघटघटमाहि
आपहीअलखनिरंजनराम९१।सुरहीरोवाडेनिकटिहूपमदक
वगहेभाग।जनसेवादासइसमकिमीकहोकैसेसुपथाइ
९२वतलायेवोलेनहीपाहणकोकरता।जगसवमूलेनेन
विनावांधमाचेमार९३घटिघटिरामबिचारीयेसवकोआत्म
कमोहि।कोइदिलनदुषाईयेसवहरिकूरानपहि९४मूजीनरिय
रिकूनकूयहीप्रराणराम।जनसेवासेजानीयेमूसभरत
सवघटिसाहिवदपिहोसमकिनदषमाहिपाह

वै भ्रात जनसे वा परगट दे दी यै देषत नहीं कुमलाता ॥ स्मरती
तो करता नहीं करता तो है और ना करता बिधि बाजा रची सो क
रता सब ठौर ॥५७॥ अंतरि ऊलष जो तो नहीं फिरि फिरि ढूंढै आन
मन भ्रात सारा नहीं पूजै जल पाषान ॥५८॥ पांचू बालिक ईंद्री
यों मन नटू उलटा ज्ञान ॥ तन माता तात पमला ॥ जो को इन्हां वे
जा निधि ॥५९॥ आतम भ्रात तिपूजी ये काया देवल मांहि जन सेवा सहू
जे सुषल है दुष सारा मिटि जो हि ॥६०॥ जे मन बिषया लागे नहीं
तो क्या न्हावे तीरथ जाइ पांचू थिर करि हां मिले तो सहजै सी
सुषपाइ ॥६१॥ ॥२६॥ ॥ [illegible] को अंग संपूरण ॥ अंग ॥४
२ ॥ अथ साधु [illegible] को अंग ॥ सेवादास जन हंस [illegible] हे स
रा मांन सरोवर मैं रहे करैं निति निरधार ॥१॥ साधू जन सेई मिलो
जो कैनि ति बिचार मन निरबिषकार हूं मिलै जो सहजै तजो बिकार
॥२॥ षीर नीर ज्यूं सोधि करि ऐसा आतम ग्यान नीर न्यारा करि छाडि
रिये हंस गहै भगवान ॥३॥ षीर नीर न्यारा कीया सतगुर के परसाद
अब और उपाइ न हंसरी या तो बात अगाध ॥ राम सरोवर पे ई सै
त बिराग [illegible] मिटि गा भ्रम न हंसा मोती चुगे करम कूं ग उछिज
॥४॥ सतगुर के परसाद तैं उपज्यो आतम ग्यान जन सेवादास सब
[illegible] छूटे सब दुष आनंद ॥ सतसंगति जन सेवका उपज्यो
आतम बोधि सतगुर के परसाद तें कायो आतम सोध ॥६॥२७
॥ अंग ॥४३॥ अथ अबिहड़ को अंग ॥ स्वारथ बिसा थी जगत
है बिन स्वारथि नहीं कोइ ना धा निरंजन साथि है ना अबिहड़ अ
बगति सोइ ॥१॥ संगी है इक ज्ञान के के सा दिब के साथ लष दोष
बिछुरै नहीं या तो बात अगाध ॥२॥ संगी सोई कीजिये कदे न बि
छडे सो हि किरतम को क्या पूजीये पल मे परलै होइ ॥३॥ संगी सो
ई कीजीये सदा अषंड थिर सोइ ॥ जो न मरण जाके नहीं सो हम
ल्यो लागो ॥४॥ सदा अषंडी ये करसा लगै नहीं पुनि पाप संगी
सोई कीजीये सहज मिटै दुष ताप ॥५॥ संगी सोई कीजीये अव
[illegible] भगवंत रूप रेष जाकै नहीं लागि रहै सब संत ॥६॥ ऐसे
[illegible] बिचारि मन जो कलि अजरावर है ॥ कबहूं मरै न बीछ
डै तासे गि लागि जो ह ॥७॥ २९ ॥ अंग ॥४४॥ अथ अकालि
को अंग ॥ [illegible] निरबल भया [illegible] का सेवा जन से
वादास उडि नो स क्या परबासि [illegible] ॥१॥ [illegible] बिना यूं
सब बंध्या [illegible] जग बाबे मोहंन दी जन सेवका ता मैं बुड़ी
॥२॥ ग्यान [illegible] बैराग सूं उतरै भो पारा सो तो [illegible] निकट

या।वो निरपष रहि गया॥ हरि पष छूटा सो ता मिट्या। तब हाल ह्या ह
जूरि।३७॥ थमा वैराम रह्या मकहै। नाँ वेकहै सो हित मनका दुष थ
मटीये या हक दै सब सता ३८॥ दृह्ती दुता गमे भ्रये पारां मुसलमान
हरिपड भ्रम मे सदा क्यूं पावे भगवान॥३९॥ हौ हज पार सिकारते हैं जो
जे मुसलमान तान मनकूं षोज्या नही दो नूं लभ्रे ग्यान॥४०॥ ह्री
हूं या वै मुसलमान मसीत षालिक सबन पूरि है जे मन कातहं
भ्रनीति॥४१॥ पाचूं विसमलका जीये दिनन डुपा गे को॥ हिलदय
पष्किलजीयो तब दिलमे दरसण होइ॥४२॥ षालिक बिण षाली
नही सबै ठोड भरपूरि॥ सुंदर मांहि सनालषे कास्योजे हूरि॥४३॥ प
जब मरातिस पचनां पतो तब हिरदै न था विचार पानच कुंन धक
घरे तब देष्या अगम अपार॥४४॥ सतगुर पूरा पाईया भरम की ये
सब दूरि नैना अंजन लाइ करि दिषलाये नरपूरि॥४५॥ दाकूनि दे
काकूंब दै षालिक बिण षाली नांहि येके पांम सकल घट व्याप
क जूं भग पनिका घूंकै माहि॥४६॥ ज्यूं परपूरण आकास है यूं व्याप
कये कसा॥म॥ जन सेवादास सह ज्ञान ही क्यूं नरमै बंकांम॥४७॥ तन्मन
पवनां फेर कि हि मनजीयै सिरजनहार फ्ले परपंच जन सेवला क्यूं म
मैसंसार॥४८॥ देवल उपरि स्पंघ है सो देवल मांहि दिष्या मे मारे तेहरै
गासे क्यूं न लारहि सेवा॥४९॥ घडीयो घडी या मांहि देसब सेवचित
लाइक दैन सदैव सेवला ज्यूं घडी का ठकूरा॥५०॥ पहरिया लातां
रीफे नही वषसै काजन था॥ मन गाहि या चूं फेदि की। ज्यूं ताज्ञ
दगतिगा॥५१॥ पा सकारी पाहण धस्यो लोहा कनकन थाइ॥ सूं
गुगन लैम्रलीयो के हौ दुष कैसं गाइ॥५२॥ सायासे यांमुल दूस
बसी ना भ्रसेता मा वैराम रह्या मकसे। नांवे कहै अतिहत॥४८॥
लेके कारवां धोगोठडी सो हीराव दैन हो॥४९॥ अतिसंम जब पर छि
सी तब फूल कहै सी सो॥५०॥ अति म्मार गया जत मुराकरै
कोश सो हिव सेती कांम है जगत्र्यं धमाष है सो॥५१॥ सदा अम
रहो स्थाणपां जेद हो इम्र तपविंअंना विषपावै इनूं कहै तेक
लपा दैचैन॥५२॥ अत्रि अगम अगाध अपार है निरकार ग्यान
जन सेवा दास तहां किलेयां या अगम वड अस थान॥५३॥ महा
महल अति फीण्हे संत कै जहां सेवा जगल हनूल भरयमैल
हनमल छ अनेवा॥५४॥ सो इस्त्रि तिसे सोई सिलमें सब मे व्याप
रुत॥ मपिबार पितुजा पै भरम अनेकह॥५५॥ ज्ञान सेवा
नी दिदया दिलमांहि पाती फूल
मला वेनाहि॥५६॥ सजीवत हीतो किं

७२

को शिग हिनांव अधातार ६ येक बोत्यारी बहो दरब देलीथा
ये कोहार सो नगल गी को डी कृषल ।। अकालि बिनो बेधार २७
तनपै तारी दस सिरि पाय मनिघसरी राहरि लग ध्याडो कुब
धिगा हि अकालि बिनो बेधार २८ स्वान कथ्य केम तलि थासि मु सि
मु सिलन बोया ।। अकालि बिन जनसेवा ।। आया नहा नाया २
आयापर सुपिनायड इसतरसे ध्यावै जनसेवा सुधि बुधि बी
सरे [illegible] आपञ्ञाप कू पाइ २० अकालि बिन गजकामब सि परब
गा पोमार जनसेवा संकट मे पड़े । खूमा सिरे सिर धाइ २१ अक
लि बिना गग फेरी कि सिल २२ ते धरी ना ता जनसेवा आप बीम
ता ओलन सू हाता २३ सूं आपञ्ञापक्क बो तत्वा घोतन चात्मा
हारि पउ पगारी गुर मिले जनसेवा लखि आ १४ जो से दस के
ई मा नई नदी ति स्थाया जनसेवादास श्रेम कपजप आपा हि
सराया २५ जनसेवादास सतगुरु मिल्या तब लल्या सलप बजु
रि सुध चात्म रूप दिखाइ करि सो सालो थाइ रि ।। २५ ।। च २१ ।।
अंग ।। ५५ ।। अथ रस को अंग ।। राम नाम ना वस औ रस रा
ता ना हि जे राता है और रसि जनसेवा सो रस ना हि १ आ अमल
कापी जो ये पा के जलि जाइ २ आव पहर आ कथा रहै राम अमल
कूं पाइ ३ राम रसाइण [illegible] पीवे हरि रस सारा सार जनसेवादास
रस पीजो पीवे हरि रस ध्याणा धार ४ राम अमल लिया जरे से क
न मां न काइ नि सकी नि रभे मते जनसेवादास बालि जाइ ५ राम
अमीरस [illegible] जावै किसे आधारि स्यां ति बूंद चात्रिग नि
ता दिन केस पुकार ६ हम जी वे कि से [illegible] जे [illegible] आवे
जनसेवादास [illegible] जान [illegible] राम रसाइण नि
ति पीवे [illegible] जनसेवादास [illegible] बिना [illegible]
[illegible] मेरे धन [illegible] [illegible] सब [illegible]
[illegible] जनम [illegible] अमल
[illegible] हरि रस पीया त
ब जा णी वे [illegible] बिसरि रह्या
तन सार २ हरि रस पीया त बजा णी ये बिसरे सब माया राम अ
मल लिया सार है जैसे मंगल हाथी ११ हरि रस पीया त बजा णी
ये बंधन सब छूटे बिन रस पीया प्राणी यूं [illegible] छूटे
यो रस महंगो मोल को तन मन [illegible] तब जानै मरम ये
को [illegible] यो रस महंगो मोल को तन मन
सो पीवे दाइ जनसेवा हरि रस सो पीवे [illegible] नहीं २२ यो र

पधारा॥२॥ पंषी थै आकासकै पड्यौ जग हरै नीर कै
डर कौ सुधि बीसरयौ॥ यूं दुष सहै सरीर॥३॥ सकलि बिन जग
पंषीयौ बंध्यौ पींजरा मांहि॥ जनसेवादास छूटै नही फिरि फिरि
दुष फल पांहि॥४॥ सकलि बिना सिंघ कूप मैं झांइ देषि पड्यौ॥
जनसेवादास भ्रम करि जी हूं सर दे पिंड ज्यौं॥५॥ भरम भयो छाग
पसै आपा बिसरायौ॥ कारको पमांहा पड्यौ॥ ग्यान नही आयौ॥
सकलि बिना मृग बनमें भरमत बहौ फिरि हीना॥ निकवलि कै
सतगुरि का सुधि ताकी नही परही॥७॥ यूं ना निकवल निज जा पर
भरमत फिरही ग्यान जनसेवादास गुर सकलि बिन नही पावैं ग्या
वान॥८॥ सकलि बिना मरकट बंध्यौ मूठगा हराषी॥ जनसेवा
दास छोडी नही साथ बोलै सब साषी॥९॥ मरकट मूठि छोडै नही
मनमें गुमर धरै॥ जनसेवा यूं दुष तनि सहै घरि घरि बार फिरै॥१०॥
मरकट करकसौ किस गह्या मूठ छाडै नांहि॥ आप बंधाणे आ
पतै जनसेवा फंध न मांहि॥११॥ यूं सकलि बिना जग अंध सब दि
रवै नही प्रकास॥ सादि बिषै धन आस कै यूं सब जग बंधे पास॥१२॥
येक तवो कहूं साह कै पड्यौ पीजे ला॥१३॥ जनसेवादास त सक
लि की बात सुणौ चितलाइ॥ २ स्वो बिद्यावान थे पढि गेलौ
जो गेनी दिन जनसेवा सतगुर बाहिर॥ धियारो घट मांहि॥ थ गु
र आप तसिय पाइ करि मिध्या ग्रंथ आया॥ रवैता दूपसन्न कीया सि
ष्य पूरण थाए॥ सिष महा पैसम ज्यान नही गुर सकलि बताइ
ता हिरदै बिसमै भयौ कछु न समज्यौ मांहि दास तब बहो
उ प्रसन कीयौ॥ तब सिष कह्यौ बणाइ जै बस देह प्राण निरायौ
या तब दीया मुकतलाइ॥१७॥ साह छिब पत्र मैं तवल है सकलि प
दारथ सैन जनसेवादास बंधन कटै तब पावै जीवन॥१८॥ सा
षि विप्र कछु न ग्रंथ के बहो बिद्या पढि आयो॥ सकलि बिना मूतक र
षी तानूं सिंघ पायौ॥१९॥ येक सकलि करि ऊबत्या च्यार बि
पाजा इम्रत सिंघ जावत कीयौ तब गायो तौ निकवल॥२०॥ पढे
अपढ सब ढूंगायौ कछु न भयौ न गंपा न प्रकास अपढ अकलि की
ऊबत्या भया तीन्यौ का नास॥२१॥ जनसेवा गंपा नी जग मैं चतुर
ऊबरै तअनेक कुबधि काल सब कह्या मिलै अब जन कोइ ये
क२२ पिंड तगंपा नीक बिचतुर कुबधि काल सब पाइ सेवा जन
कोई ऊबरै औरसब गये बिलाइ॥२३॥ तपसि रिमरकट सिंघ त
गयो मैं आपा दीया पायू मरकट तनपोस
ह
पूत नैं आया दे बिकार॥ भूतना जगमांसा जनसेवादास त्यत॥

३। जनसेवा करि लै बंदगी। अपनंत का है कूं जा ब्राह्मण करि नीत रे
सेवा बंदगी पाई संत गुरदेव परसाद॥ २॥ संत गुरा बिन या वे नहीं
ब्याही मरमै भ्रम॥ ३॥ रमता रांम रहीम है करिल्यो ग्यान ब्रम्ह
रूडु बध्या ही रनि वारि करि सब घट देषो येक॥ ४॥ क्या मसीति
क्या देहुरा रांम रह्या भरपूरि। पषापषी सब छाडि करि निरषो
निकट हजूरि॥ ५॥ जन सो फेस च की तत तत सब ती तन मांहि।
हरदम हाजरि है पड़ा वा बऊ दूरा नांहि॥ ६॥ मोजदमां ही देषि त
यु सत दम करि ले दूत। इस मन कूं तू फेरि उलटा पांचूं जांण नदू
॥ ७॥ हरि मारग कूं चालतां जग नींदै सब कोइ। जनसेवा पुरोन मां
नीये तू हरि भजि निरमल होइ॥ ८॥ जनसेवा नींदै जगत सब चित
मांही हरि हित ताको पछताइबो पड़े जो रहै रांम सूं रत॥ ९॥ जग
नींदै चित रांम चित तासम कोइ नांहि। हरि ते बिमुष डुनी तं मिल
ता ते वेद कितेब जांहि॥ १०॥ जग आदस पाठि रांम दिस सनमुष तेवै
सद्गति पावै जनसेवा साधू सब कहै वेद सब पुरांण गावै॥ ११॥ या
पूजा करता रकी तम तिपु वै बादि लै षो सा हिब मां णसी तब स
वा ल हूसी या दि॥ १२॥ ना वै दिल मैं साच है दाद लहै गे सोइ। कू
डा कपटी बहु रमुष ताकी गति न होकाइ॥ १३॥ जग तै चित सम
किवाधि सच में रहे समाइ। सो निति जनसेवा लावै होड़ि न धार
पाइ॥ १४॥ जे सुमिरै नांही साच कूं जग बाध्या नेह करम ल करता
भंडि करि यूं ही षोई देह॥ १५॥ सो बारा मसं भाली ये जग जगदी
श्वास पांरण मांही निति वसे जनसेवा मेरे पियास॥ १६॥ साई साधू
तारि वां सोई साध सुपां ण॥ जग घड्या सच्चा या युक निरं क
रनिरबान॥ १७॥ १८॥ १९॥ ४७॥ पुछ सह जनौ अंग॥
सहजि सहजि सब जो रिगा गुण यंद्री मन बांणि। उलटा गांत
मा रिकी अंत ब्रह्म पिछांणि॥ सहजि सहजि सब होइगा
जो रची या जदी स जनसेवा सुमिरण कीजीये सो पिरत न मन स
॥ २॥ सहजि सहजि सब कल पना मन के तजो बिकार तब साहि
बस ह जै याइ ये करणहार करतार॥ ३॥ सहजि सहजि जनसेवा
है गुण बिसराइ। तब सहजै सुष मैं मिलि रहे मन षट्जे सहज
समाइ॥ ४॥ ३१२७॥ ३॥ ५॥ सबद कौ अंग॥ सबदे ही मन थि
र भया सबदै आमा रू षा सबदे ही मन निरमला सबदे पाया सुष
॥ सबदै ही सब ऊपजे सबदे सबै समाइ। जनसेवा बोध सब
दहै सबद धार कीजाइ॥ २॥ सबदे चंचल तरतही सबदे निह च
ल होइ। सबदे जग नियरज ते सबद नीरदे सो इ॥ ३॥ सबदे ही

जनसेवासोऊँअमरह्वैइ॥अमर
पारसनोरामसंभालीये पलपलबारंबार ह
रामश्रमलि लागरहै
हेऊँमगनतहांमन
बुधीकलालाथकि
।तबसुषपाया जीवा २० हरिचिंतामणिचितलो चितागई
सराइ चिंतामणिचितमेंवसो तासुधिरहैसमाइ २१ रामरस
रसपीजीयेंकरटैकोटिविकार सबसुषसहजेपाईयेसमरथ
सिरजनहार २० योरसऔतहैसही बिषमव्याधिकटिजाइ
रामरसाइनजिनिपीया तिनकूं ओरनभाइ २१ ॥ तनमनदेरसपी
जीये दूसरलाभैनाहि योरसमहंगामोलको सिरदेसोलेजाहि
२२ योरसयौनामदे निरभैदासकबीर पायोसुषगोरषभरथ
री सबदुषकटेशरीर २३ पीयोपीपरैदासधने औरपीयोरैदासज
नसेवासंतअनेकपीचरणांमाहिनिवास २४ योरसपीगयाजी
येंपीयोदादूजनहरिदास लोरसीसंतअनेकपीकायानिरंतरि
वास २५ योरसपीजनसेवलापीवनमतिऔलसाइ तिनसंप्या
राकेरहीजो विपदलाहलपाइ २६ हरिरसपीहरिमेंमिलेअमि
सरीपाणीमाहिजनसेवासागरमिलेदूसरदीसेनाहि २७ हरि
रसपीवतहरिमिलेहितमिलिनयेंजुयेंकायोरसअजबअनूप
है पीउधरैसंतअनेक २८ जोगहरणहरीभरैसुआधिबिडाण
गोरसातगयातिगसबहरे आहारिसपीयासोइ २९ ॥ ३४२
॥ अथ साचकोअंग ॥ सचबोलेसचमेंचलैंऐसा
भेषनाहिं जनसेवादासहरानहीसाहिबहैसचमाहि १ साच
साहिबकूमिलेझूठहदिसजाइ झूठकूतोनकनहीसाचास
विसमाइ २ साचाकालाहिबधणीझूठकानहीकोइ साधकूं
हेसबदर्वेसाचेमाचाहोइ ३ साचाकालाहिबधणीझूठकाक
होनाहिं झूठझूठहेगयासमपदविमनमोहि ४ झूठबहोत
संसारमेंउतपतिपरलेनासझूठेसेझूठवासचेसाचासाचेपास
५ झूनीपाराचैझूठतेसचतेरांचेनाहि विषकीडाविषतेंघुसी
विषमेंआवेंजाहि ६ झूनीपारचैझूठतेसचतेरांचेनाहि विष
पीवरअम्रतकहेतेदोजिगचालेजाहि ७ रतासाहिबसतीसवर
है झूठीपानेंकमुकोनापैईजाकैंचालीयेंसोईआवेगीमूणात
॥ स्वकाफौविद

है। आपबंधायो आ२ सुमिरणकरि मुकतानये तबसतगुर
ये सहाइ २० । अबधिकरमसंगि देहकै पान अगनिकदिाह
रणारहतगो बिंदमजो जनसेवादासतबलाह २१ ॥ अथ
अंग ५० ॥ किसतरीया अघको अंग ॥ किसतरी कुंडलबसे
घनजाणे मृग ढूंढ हिरदामांही राम है सो फिरि फिरि हेरै
१। डाडापड्या फूलका है निकटि निरंजनराइ । किसतरीका
घनमृघमटकि मटकि मरिजाइ २। नेड़ा राम न जाणही । दुनायां
याबादली हरि चंदोली सैनां हि । सूंदर कैकाइ आवती मुषन
हीदासैमो हि ४। अंतरिया वनदरसही जो बनमे फिरे अनंत
किसतरी का अघ ज्यूं ढूंढत है जुग अंत ५। नपतारथ नमताकि
रे निकटि नि देषै पाव पड्यो सुन वैजगतमे । नलपि मरेगु
जीवह ॥ जीवन जाणे राम कू । राम रह्या भरपूरि । आपामाहे
आपहै । बिरा पेस्यां ते दूरि ७ । सबघटि मतारामहै घटघटमे
हि निवास जनसेवा अंतरि राम है रूपहो पसमांनी बास ८।
जनसेवा सबघटि राम है परमजोति परकास । किसतरीका
अघ ज्यूं ढूंढत फिरै उदास ९। हैह जरी हरि कुरि देषै पान दिस
राति ह मनरमते सो तो घटहीमांहि । जनसेवा अंतरि घट दो नरमकी ता
दरसैनां हि १ सतगुर बिन पावै नही । राम रह्या भरपूरि । सतगु
रकी किरपा भई । तब पाया निकटि हजूरि २ हरदा माहीं हरि
बसे ढूंढै घेकहा और । निकटि निरंजन पाईया तब आये पांचू ठौ
र ३। जनसेवा दसमन कूरलिता । अरते सबछुटि जाइ । तब आ
मा दिवा सही । अलष निरंजनराइ ४। जबमके तब निकटि
अलष निरंजन साइ । बिन समझ्यां जनसेवला । दूरि कहै सबको
५ समझ्यां ते हरि निकटि है अलष निरंजन आप बनिबनि
तघतानात्रिक चलनिजजापर ६। मनमिरघो भरमताफ
लाटनदेषेमाहि । रामरोममे रमिरह्या । जनसेवा पेषे नांहि ७
भरमत बहोदिन गया । बिषका बनामझारि । अंतरि अलषबै
रिकरी यूही बास्या हरि ८। पाफिल रतनादनारि चेतनाहै
मेरामि पड़ै जनसेवला । अंतरि बिसरै पीव ९। जाके अयो
वला फूके नाम मन नधपायावै सब बासिन या बिसरि
वकुध २० नेड़ा रामबिसारि कारै जीवनमे कहूं हारि
वायां पंछे कि कारि निरषे नही हजूरि २१ राम बिराणी निक

सपपाईयेसबदैमुकतारांमोसबदैंसुलपैप्रांणीयांसबदांमें
आरांमध सबदेदेउपदेससब सबदैंसुलपैआ२ सबदैंसबदज
नसबलाघटिजियालाथाइ५बोकफातेऊपजेसबहीगु
ण विसतारम्पांवततेतेपिंडनया सिरजेसिरजनहार६ निरगु
णबांणीबालीयेकाटेतनकारोगगुणमाहिआपाबालीयेतत
कहीयेसेम७ निरगुणबांणीबालीयेआपाकरिसबदूरीमन
सेवाहसरनोकहेंपेकरामनायूरि॥८॥२३२८॥ संध५॥
अथकरमकोअंग॥ सतगुरमारेबांण नाठि सिषकाबजर
सरीरजनसेवादासनेंदेनहीअंपाहणमेतीर१॥ पाहणती
नमेदिहोजनसेवाअंगदहोजलसंगतिरहैरैतिक्षिनिदेन
येकोकोर२॥ मायाकेरागि मिलिरह्यो साहिबसंदईपीठि ताकूं
तीनबांहितं करमसनाहअतिचीठि३ सासनाहतनसंतंग
बांणनमेदेकोड सबदसुणि निसधका अंतरि प्रकासनहोइथा
मघरप्रकासनकरिसकेहेरह्यो मायारूपा जनसेवादासदरसेन
हीअंतरितिमिरअनूपय॥ श्रवणबताकहरौनयेएसनठतानयें
मूकाजनसेवाकेकतादोसक्या गुरोतामाहायूककद मूरिषकूंपर
मोधतोबादिगमसेतीरजनसेवादासलागेनहीमूरिषवजरस
रीर७॥ रातिद्योससुणिकरेसंतमुषिदअम्रतबेन जनसेवाघटिक्षि
द्रियाउडे अंबूजलनूंकैरन८ जलनूंबैनितिसाफेरूंबहामयो
जेनाहकेताहापरमोधद्यो जनसेवैवितकगाए॥ बहरोजनम
नेककोसबदसुणेकूंकानि रामबांणनेदेनहीकहीयेकरावघ
॥१०॥ अंधनयास्यकेनहीसुनिहामेरतानमायाहलेरतनया॥
तासंकेसीवात११ ज्ञांनिनकूटेजविदा अपानसुणेकहानुंहु ज
नसेवासंधोहोइना१२ कूफरकोपूछा१२ कहाउपदेसमूरिषकूं
जेकहापवपरस्पावांकाक हाबांधाकूं आरसी१३ सदाअनूप
सांफ१४ मूधोबासणचोकमेघनबरषेदिनरेंन बहुरांकूपरमे
धतोबवलाकूंकहाचेन१५ अमूंऊसरजमीनतीपजेयूंमूरिषल
हैनगपानापाहणकंदनपरघलेभावेबरषोद्योसनिदान१६ सब
दबांणनेदेनहीलोभीचितकठोर करमकठोसजडजडीगहि
ममताकीडोर१७ कायापेतमनपालनीपापपुनिदोइबीजबो
योलुणिजेआपणे रहोरहोमनामसीज्या१८ जेसाबोवेतेसा
लुणे यामेसारफेरकोईनांहि अबलुणतोक्यूंरोवेप्रांणीयायाठि

सोसोलुणिमनांकीयोकहेनहीमांन१९ ८॥

[illegible] घपातेप्रतियार [illegible] माईमापा [illegible]
[illegible] विचार करैब [illegible] आपका [illegible]
[illegible] बगाम [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] कीता [illegible]
[illegible] ब्रामाव [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] जनलेवा [illegible] मासती [illegible]
जगतेल [illegible] जनसेवादामल [illegible]
[illegible] कोहेन [illegible] जनिश्चाते
[illegible] रिजकमोतद [illegible]
[illegible] जन जगतेरदे [illegible] देवगा [illegible]
[illegible] करकोमाकाल [illegible] प्रमाणागे [illegible] ब्रन
[illegible] इरिकारे [illegible] कनरीमोजा [illegible]
प्रमाणाणमया [illegible] ब्रति थपदीन [illegible] तुमांगिका
[illegible] मोहित्वमव [illegible] नहै सकलोले
[illegible] मार [illegible] हमरिया [illegible] चितोलीम
[illegible] की मन्नयसब [illegible] वौद्ववक [illegible] नहै नचितान [illegible]
मातें जलबतन [illegible] कलोत्थ मोसाहि
बत्रुबदेहका [illegible] प्रमाण [illegible] पर्ली ताकै
आपरताल देखो [illegible] नहै [illegible] जि
नदनमामरुदर्मे [illegible] पापफकेबाद [illegible] हरि लीतरिगिकदा
नलिरनैतः गुणगाइ [illegible] रेवे जलानांडी [illegible]
तेर सोईहमकैदे [illegible] ब्रोधटघाटेंद्र [illegible]
मोमतिबिसरीबों [illegible] ज्ञानमैंनाबीयो कोमतलसुबमस्त्री

हरीभा मिना सिका घी ति जनसेवा स्रतौजी वडौ। कल्पै भ्रम कै कैर
घि २१ गनि मल जाल है निकटि है। मन ञ्ल टि अपूगे आं। जन
सेवा हिरदै पे सिकरि। सो हं सबद पञ्चा णि २३ मूरिष ज्ञा सा ज्ञान क
रता फिरै दिन रैन कूवल करता गरिवे सासुणै न ही गुर बेन २४ पढि
पढि भूल पंडित भै माया अंधियार हरि हीरो हिरदै बसै जनसेवा
चालै हा रिष पढि पढि भूलै पंडित। भरमि पडे जग मांहि सो हं
हंसो जनसेवू ला। निजतत निरष्यौ नां हि २६ परगट कथा विचारि
करि नरम्प गहे जीव जा। १ चौरासी लष जूनि मे। फिरि फिरि घोटा
षाइ २७ परगट कथा भ प्राणिया। भूलि भरम्पै कहूं ना। १ जनसेवा।
सुष पावै न ही दुषि दो जिग यूं जा २८। परगट कथा जे भमतो जो
सुणि है चितला २ जनसेवा सो सो छूटि है तब सुष मे रहै समाइ।
२९ जनसेवा कंचन छाडि करि मद कीच गहै घ्या १ बहु रम्भ षोह
रतै विमुष सो यूं ही घोटा षाइ ३० तिण वो लेहरि राहि गया। तीरथ
बरत तप भ्रौर दो हि दो डि जब थिर भया। तब बसत गेड लीगैर
३१ दो डि दो हि जब मन थक्या। तब आया जुगत है। अंतरि अलष
पीवां णि करि मनमां हि तत ले हरु ३२ अंतरि पड दा न रम का रहै।
सकल घट ध्या १ मन भूलो बाहरि फिरै अंतरि अवगातिरा ३३ म
परावेडै हा रिका मन की बहौ ततरंग। सो तूं छू है बाबर सा हि
बते रैसंग ३४ बदरी बदिके गाकू। फिरि रू वेग भात रटि मन की
भ्रमना बाडि दे सा हि बते रे घटि ३५। मन मिरघो न रम ता फिरै गु
रवा रूका बिन्दोरा गुर सबदां मन बे धीयौ। तब रह्यौ गेगा कि ठौर
३६ अब मन अनतन चालि सकै सतगुरु भोलां णि। जनतर मांही
पाईया येकनिरा कार न बांण ॥३७॥ २४३६॥ च्यौपई॥ अथ वि
सवास कौ अंग॥ विसवासी साधू जना। कुल पै न ही लगा। ज
नसेवा दास गऊ बछ ज्यूं जहां तहां प्रतिपारे। सिर परि समर
थ रामहै। क्यूं दुष पावै दास। जनसेवा सब कूं देत है। मार्हा रहे वि
सवास २॥ हरि सुमिरण करि विसवास गहि तं हरि कर्दै यानोइ
गौलिय लिज्ञी व जहां तहां सब कूं पूरवै सो इ २ सांजिन के सांसे
नही। सिर परि हरि का हाथ। लष चौरासी जीव कूं सब ही पूंदे ना
थ ४ चिंता सिर जा नहार कूं रोटी दो टी ये हा। अण्चीती आगै धरै
जन निरभै हरि सुमिरत पा॥ चिंता मकरि न चिंत रहौ सुणि रे मूर
षजीव संपट सिल मे पुरवै हरि अंतरजांमी पीव दे आदि अंति
मधि पेव को समरथ सिरजनहार सो हि बस बका करत है सिरजे

डिगा॥२५॥ परमेस्वरके भावका। हरिजिन भोजन लेहि। करम नाम
सब हरि हैं॥ जनसेवा निरमल देह॥५०॥२४४२॥ अथ ५२॥
अथ निंद्या को अंग॥ जीवरस तालि ज्ञात है। तजे न तन नसंतात
सो चैमास मे भ्रम सी॥ निंद्या न हरहि विषात॥१॥ निंद्या कर्या नर
कहे ते हरि लै बेमुख होइ॥२॥ नराकि पडे लो बापडा॥ राषि न सकै के
इ॥ निंदक षाचे पापकूं। हरिजिनका मल धोइ॥ परउपगारी बा
पडा॥ ऐसा नाही कोइ॥३॥ हरिजिन हरि सुमिरण करे। निंदक लोग
एगे होइ॥ अपराधी या संसार मे॥ ऐसा नाही कोइ॥४॥ राम सनेही
जन न मल। तिन का औगण धारि॥ जनसेवा दास ता पतित कूं
जैन रका हारिथा॥ नीदक बपरा जिन मरे॥ वो सदा के उपगार है
मकूं पारि उतारि करि॥ आपक है बिषधार॥६॥ जैसे रजु करजकूं॥
काटे नीर पषालि॥ जनसेवा ऐसे नीदक॥ मूं का दे मल उजालि
७॥ नीदक काटे पापकूं॥ जैसे बालो कांज॥ हम ही मल वि येक
आपहि ह्वारा बाट॥८॥ नीदक कूं साबासि है। निंद्या बिसरै ना
हि॥ मूं गऊ बगकूं चाटिकरि॥ सुध करे थल मांहि॥९॥ माय चले
जनसेवा॥ नीदक चेकरतार॥ बिण जाति का बेलजूं॥ सदा
बहै लोनार॥१०॥ नीदक धोवे बा कपडूं॥ बिण ही दीयां दाम॥ ऐसा स
नन जनसेवा॥ सो करे हमारा काम॥११॥ चौ०॥ जैसे गऊ बछ मल
हरे। ऐसे नीदक हम कूं सुध करे॥ जैसे माइ पुत्र चिरषावे। ऐसे
नीदक मो मल धोवे॥१२॥ साषी॥ जनसेवा दास संसार का। देषो उद
बुद्धि हि सरजन मांह्यो॥ बाहरि कीन्ही अपणे सिर लिये हूं॥ जनसेवा
दास इश्वर जइ है॥ देषो॥१३॥ हे संसारि॥ कुता घेड गज पड जकू
सिंघ बिडारि॥१४॥ रामभजने जगपति॥ दिसन मुआ सिरजनहार॥ ज
नसेवा सब मानै नही॥ के ता पचे पगार॥१५॥२४००॥ अथ ५३
अथ रह बकी अंग॥ धरम नेम तीरथ बरत जो गति गत पायो
र जनसेवादास पेहूं दमे घरे न पावे तीर॥१॥ वार पार को गमन ही
हरि बिन कछु दोड॥ जनसेवादास पावे नही। राम भजन बिन
होइ॥२॥ पाप पुनि की पासि मे। उलझ्यो सकल जिहान॥ निह का
मी सो इहरि मे जो तो पावे अगवान॥३॥ पाप पुनि की डोरि मे बंधे
है सब जीवा बाहरि लिर अंग मन ही॥ अंतरि बिसर पावे॥४॥ तीन
लोग सब जगत उछि चौलू गेन को इ॥ जनसेवा बंधन बंधी य
छूटिन सके गोइ॥५॥ मनमोषा॥ जनसेवा लत॥ है जग मासी कार
सब साई की ताहू चलत है पलि बेवे पर बासि है होइ॥६॥ फू वहरि
के मन। बिना नयन तन चली रथ पेहा चलनता थाणी बेलज है॥

मरथन पवबसै जनसेवा रिकिरिया षिलाया जगदीसा तासाहि
बकी बंदगी। तेनर लै मतै जगी। सर। आरन कसोटी। साकेडे। तहां
सिकहरि देहा सबइ जालरम निवारि दूरि। रकरामनाम गाहि
ले २४ आनन जनसहजमे सो सहजै पुरवैरा मातन निरखा
हरापीये। अधिका सैन हाकूम २५ संतो थी साधूजना को हेत
लपेगा इसन षासुका सहजमे सा हिबदेसोषा। २६। नन कून
डादीजाये त्ली जैसरि कानेत। आदिअंत मधिये लहीसरे वहा
सकाम २७ पाले पोषै रामना। इनाकोई नाहि। जनसेवादास यू
जाणिकरि मनराष्या तामांहि। २८ ज्योंतरजा मी निकट हैं समझि
देषि नहीं दूरि जलथल पांहण लाहमे सारिपरह्या भरपूरि ३९
राम धणी सिरऊपरे। सोजनकत्नपैकाहा। स्थिरउलटै जबपल
कमै सबनाल षैत्रै रिजो। हि ४० नालषा त्वसाकिना वहै सिधा
रूपी है राम। जनसेवै समरथ कूं। हरिसारे सबकाम ४१। चिंताम
णि सिचिंत हो पूराण है पूरा। सजनहारै सिजोया। सोई देवै
कूं सरा ४२ अनलपंष आला समै सो ताहित हा हीदेहा चिंतासि
रजनहार कूं करता चिंत करें हम ४३ पूराण हारा पूरवै। जल थलमै
सांई दियो कूं। मातिकूं तार का भेत। ाकूं बालिजो ई ४४। हरि विस
वासगह्या रहे। सब चिंत विसराई। दिलमांही दीवांण है सो ल
षै सबकी सोई ४५ सेरगह्या रहै समरथका। कोई तजो डुष्ण तो ह
दिलमै बेगदत है। सबसुष बिलसां हीं ४६। बिसवास साधूज
नों लै मैं लागा। जीवो जनसेवादास कंची दसा। निरभैरस पीवै ४७
बिसवासी साधू जना। चिंतामणि पाई अमृत अघै सुषा विल
सीये। जनसेवा तुर मतिस बजाई ४८ बिष बिसवासी जनस्व
सा। जीवरहै मयके वोरा ना कोदा अवगति। नथका तजिनरमै
कैसी औरा ४९ डुष सुष सम जिगोप्या दूरै। यकस मारसनेही मि
त साधी मूनकू चारहै सो। दूषकरिही चिंत ५०। जहां जहां रा
मपगा वहां तहां वहां जावै जनरामरतन धन सजन बहोकारि
षे बहै। तरजतन ५१। राम नाम धन संजबहै लेता मेरा षैमनां
गिनि वारै मनकी सो ई साधूजन ५२ आसा एक ज्ञान षकी भा
ग्यारहै विसबास जनसेव। समरथका सबाविधिपूरै आसा
५३ जनसेवाजतरै सहजमे संतोषी पासाध कलपत मिठ्यान
यादै सोइहरिका साध ५४ टका सांई सहजमे जोमेजे सोस
कलपतमि छ्यातधुसी। ताकूं लेण नजाइ ५५ जनसेवा तो
रतनका। साधू कापाज्ञ मांथे करम चढ़ै नहीं। सकलपपक

[illegible]ग॥ अंतरिल्यौ लागौ रहै कबहू छूटै नाहि जनसेवा न्
ये कैरहा॥ निरभै हरिपद मांहि॥१॥ अंतरि ल्यौ लागी रहै नाहि छू
टै आमन॥ जनसेवा निरभै है रह्या॥ निरभै हरि हरिजन॥२॥ गु
ण आडै आकार का॥ निरगुण मतल्यौ लाइ॥ परमातम मत अं
तमांत बहुलै सहजि हीं नाइ॥३॥ निराकार आकार बिन अरथ
अनूपम येह॥ अतिम सबबा डिकरि मनाधिल लेतहा देह॥
[illegible]सह जैल्यौ लागी रहै कबहू छूटै नाहि तन मन पतबूय
लटिकि रिवा सुषमांहि समांहि॥५॥ मिसरी पाणी मिलि गई हू
सरदा सैना हि मावालेला पागया पारी हरि कै मांहि॥६॥
कन ह्या वया कहूं मोपै कह्या न जाइ॥ जो थ्या आव सोई नया
जनसेवा वासल्यै लाइ॥७॥ जनसेवा मन मै और है सोई देषना
र जागत मै अरु सुपन मै वा ही जा सै आइ॥८॥ मन मांही पद्म ल
दै जनसेवा मौ लै लाइ॥ अविगत देषै लोक सब जाणै गाजन
सोइ॥९॥ [illegible] ॥ माधिके पे
डै चलि णो दुलभा हरि निवारि रमतारा नसनाल ये सोल
बका सिरजनहार॥१॥ प्रेम जा वैसा जो पूरन पद निरबान
घटि पाणि नहीं देषा दे यक सब घटि आतम जानि॥२॥ देपव
आडै साधसो॥ माधि के पैडै जाइ॥ मति मोटा ता साधकी सुषमै
रहै समाइ॥३॥ तुरका महंदि मन दाया हीइ देवा तिदेव जन
सेवा देपष आडि करि इक लु मिरो सतप अनेव॥४॥ जनसेव
दास र दास मक [illegible] पषतजि निरपष हो इदो कुके माधि
चालिबो सोसाधक हाये सोइ॥५॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
कन [illegible] दिवा [illegible] साहिब [illegible] करता [illegible]
ते ताई सिरजनहार [illegible] तेरा पार [illegible]
न [illegible] सांई॥
[illegible] संत [illegible]
[illegible] माधि के मारगि चालि [illegible] येस
ब आपा मेटै काल॥३॥ पटतंत जु वा नहीं यौंरे को दीन दया॥
ल॥४॥ मधि मारगि साध चलै॥ सुमिरै सिरजनहार॥ पषापषी जग
बंधीयै॥ डलन इरौं पार॥५॥ जनसेवा दासंसार सौं रहै निराला
तोइ॥ जगत सबै ही पचि मूवो मत ही समलो इ॥६॥ निरपष स

जैनग्रावैचेहु ७ सुनग्रसुनकेजालमैजगवलकेसबकोइ
सेवाजनकोईनीसेपारियकुंतासोइ ८ पापपुनिवेडीपगाको
हमाहिगुरपानजनसेवादासनिरजेनयातवपकुंतापदनि
रबान ९ बेडाकुजलतोहका रासैदकेवारिदोकतजिमुकतल
यापुलेमुकतिकेहारि १० सांसाचूटातबसुधमयामाहिगुरगंं
नविचारिजनसेवाहरिसुमिरणलगेहेजनउतरपारि ११ कर
लीग्रसाकपजेस्वगुणबधतोजाइ आपेतजिगोबिंदभजोतो
दुषसामिटिजाइ १२ पापपुन्निकीवेलडीपसरिरहीजगमा
हिजनसेवाजगसबजलफीयोछुटणकोगमनाहि १३ पापपु
निकीवेलडीदुषसुषफलहैदोइ फलबेलादोऊजलपातव
वयेमुकतिजनसोइ १४ मुकतिमंफसबैनहीजिनकुसमल
रालेषाइजनसेवानिरमलभयाजाइनरसंधाइ १५ जा
पामेटिसेनालीयेकरणहारकरतारधरमनेमतीरथवरतस
बैनांदकीलार १६ थाबेदनि ऐसानही औरकीयातेजाइज
नसेवादासगोबिंदभजोथकेमनचितलाइ १७ सबडपका
टसोईयाऔरउपाइनजाइरामभजनसतिवाछदीसुषमेर
हैसमाइ ॥ १८ ॥ २५२६ ॥ अंग ५४ ॥ अथवेहदकोअंग ॥ जन
सेवादासइकरांमबिनाऔरनदूजाजांनियेकोरमतारांमदे
सोघटघटमांहिपिछांनि ॥ येकहारांमअराधीयेतवबंध
नरहैनकोइ तवजीवमुकतहुवासबदुषगयापाखोइ २ सकल
तनिरंतरिमितिरह्यानिराकारनिरवानपापपुनिकोईनां
लिपेसाधिभूतसुजांन ३ बेहदभरमनिवारीयाहदमांही
भ्रमसांनहदमेंसबजुगडलकीयावेहदसोअगजांन ४ अ
मरतसांनदनयावेहदाभ्रमवाहिहदमेहाछिनआव
हीअतिकरमाकीजाहिया तमरजमेंनासैनहीजाहिवसे
तवामांहिजनसेवासातिरसुधइपनतवअपणांरूपादे
षोदिहाहदमेसबजगवंधीयाकोईबेहदमेंजसाधाहद
बेहदकेमधिहेसोतोवातअगाध ७ मेरमणिकलातत
येकयूंहदवेहदनरपूरऐसाबूझविचारीयाजनसेवादास
सोईसूर ८ हदमेनमेसबरहेजलपिचलेजनकोइसरण
बेसनपिछांतिकीरहैमगनजनसोइ ९ भरमवाडिनिर
मयाग्रातमचीतरिलधमगनजयाकिसतरूसूरगरगु
इषध १० सबीसबीकोसेनमेंसमफिजईमरूवयेकग्रक
नेपामिरह्यादेयोसूवासूब ॥ ११ ॥ २५३७ ॥ अंग ५५ ॥ अथल

ताथे हरि करि पकड़ि जमाये वाट पार सपरसतलो हृदै बदलै।
मनको घाट १४ ग्यान दीप उर मै धर्यौ तब चाले सुधी राह गुरकी
कृपा कटा भ्रम तें भया चोर तें साह १५ कबट्टी हूं जग बहै अंतरि
लहै न राह परउपगारी गुर मिले चोरय लाटि कीये साह १६ रैणि
अंधेरी कहि रहे पंच चोर बटपार सतलीये जगाइ कै [illegible] कीये गु
र उपगार १७ ग्यान दीप गुर कर धर्यो तब सूझण लागी बाट गु
र बिन जग तट्ठोलता जैसे हाडी हाट १८ माली मालि न्हाले पकै
हरि देन था बिचार अब सतगुर की किरपा भई तब लागो नावत
तसार १९ मल तजि निरमल भया जब मया तब सतगुर भये सहाइ
करम की दुस बपरहस्या बतो डि मलागो आइ २० इड़ पिंगुला सु
षमना संगि त्रिवेणी तन्हि हाइ त्रिकुटी मधे बैसि करि मगन
ये मन ब्राह्म २१ इड़ा मन पिंगुला पवन है सुरति सुषमना मांहि
त्रसमिकासांधीये तब सहजै सुष बिलसांहि २२ सास उसास ज
पजपि ना निकवल विलला इ हंस सबद तहां होत है सतगुर द
याल षाइ २३ मन कूं उलटा फेरि करि पवन सुरति बिचि पाइ त्रि
तरस्त्रि बंग बिना थहै मन कूं तहां समोइ २४ तीगुण सब ही छांडि
मन गुण गाहि हां सूनाव आो सर मलो बिसारि मा चूवै मतिन
लड़ाव २५ सतगुर सबद बिचार बिन भ्रम अंधारी चिता सतगुर दै
याल षाइ हरि राम सरीषा बित २६ निकटि निरंजन पाईया हम
जांणे थे दूरि लाक नञ जे ग्यान करि तब देषण लागा नूर २७ अ
वन नैन मुष नादि के मांइ निरंतर लै सगुण आडि निरगुण मजो
गुरगांन आवे मेह २८ अंतर के पट द्वारि कारि मन मजो निरजनरा
इ त्रोसागर तिरिबो सुगम ये के मन चिंतला इ २९ चतारि सुमि
रण को गाय मुषत छाड़ा बोलि नि करो बैठो नाव बिना रहा बै
तन बोलि ३० सारा रैणि न सोइये जागि र पहरा देह सावल लासिव
णो निति तिन को ताति स्पू गहि लेहर ३१ का लगा से सबनकार कर
रोम हारावा हरि जिन ला हाली जीये ये औसर मलडाव ३२ सुर
नर रावि सासिम बड़ रो त्रिथी पाणी पोन हरि भजि तहां मैं मिलि र
हे जैसे पांणी लोन ३३ ब्रह्म बिसन महेस लो सारा तज आक
साकाल डंड सबक परे निरमेद हरि केदास ३४ यडकु मेर गिरसर
सबे बिच णान पावै ए हां हरि के जन निरनै भया निरभै हरि सुमरे ह
३५ हरिजन कूं नैना कस्त जम तन न का को घर भेदे को पारि
सम हात बगए बिसर कि होइ ३६ सतगुर के परसाद तें सुमिरन
लागो रामा तदा का लजा लकी मनहीं आगम ठौड़ बिसराम

मोमिले। जिनकै के वलराम अधार इजिनिवारी दिलकी। ऐकल १
साकरतार॥१५॥इतीसाषीसंपूरण॥साषी॥२५८१॥अ॥॥५७॥
अथग्रंथलिषते॥ अथवंदनांजोगग्रंथ॥ नमो नमो निरंजनं
अकरणं नौ नंजनो॥ निराकार निर्विकारं निरलेपनिराध
रं निरधिरं निरालंबं चिदानंदानंद अखंडो परमतत्व अमर
मतेजं परमखांतिसरूपकं परमग्यानं परमआनंद परान
द परमादिपुरषं अजोरा अमर अनंतपक्ष परमजोग परमज
प सुयंजोतिप्रकासितं परमपदपमेश्वर चेतं अविलु अ
कुल अजनमयं अगह अचिंत निरगुण वसारमतारराम
अचलदेव परमपांवनपापहरण परमदेव सुषनिधानं अ
छेद्य अविनासी अलषरूपसरव व्यापक जनसेवादासवंद
नकरै नमो नमो निजदेव सुरनरयातिपावै नहीं लखअलष
अनेद जनसेवा दासकी। वंदना ग्यांनध्यांन धरि दिष वाय
रली मति निहो अपरंपार अलेष॥ इती वंदना जोग ग्रंथसं
पूरण॥ ग्रं १॥ अथ गुरमहमा जोगग्रंथ॥ हीरा जिन गुर
युकरस इज्यापडै नकोई काश कोई मिलै कोई पी छै गुरर
है सदासमिना २॥ गुरचिंतामणि गुरकामधेना कलप व्रछ गु
रदेव कामसिधिसमरथ गुरतुलदेन कोई भेद २॥ गुरऊंचा अध
कत्रा कासम जिम सरवरजिम गंगनीर समद दिष्टारविस। पावै
सुधा जिम गुरधीर ३॥ मातपिता जिम गुरअलिपर्है लिपैन का इ
सणि सीतल गुरससिसा। ४॥ गुरनिरमलसदा अनंग ५॥ गुर
पूरनपरमांन है गुरअवगति अपहलपा गुरअनंत अपारअष
इहै गुरव्यापक सव ही देव॥ ग्यांन अकाप्या गुरमिल्या पोलै
वज्रपाटा करसै करगा हिपा ऊडे भौ रूदिषाई वाट ६॥ दिष्ट अघ
डीग ग्यांन की सतगुर जो नलाई अगम नतसव तै कहै गुरि
मुंतीदीपालषाइ॥ वहतेफरै सतगुर अघलऊंचे को नहै
कोउ करतै हूरि करि सतगुरता तदीन्ह ७॥ निरधनधनवंतक
रिलीय अैसा गुरदातार। मिरतग लीवा जिवाइकै अमृतपाय
सार ॥ वहराचेतन करिलीयग ग्यानी लीया वुलाइ अैसे सन
थगुर मिलै मनसमां कहा नना इ ९॥ सतगुर कृपा सादतै पाय
आत्मग्यांन बादल गूर समिटि गया अंत प्रगटे नीन ॥ ध
नि सतगुर सासै हस्ती धल्वासी सर्पा रहाथ सतगुरकृपा साद
तै सुमिरण लाग नाथ ११॥ हितकर प्याै वित थिल्या आयध
अगर दस दसा प्रेम मतो करतो मन वहा दार

फेरि॥९२॥ बेगा तरि बैसि करि॥ नानिक वल मैं हरि॥९३॥ नानिक व
लत्ते धुनि उठै॥ जाइ गगन ब्रह्मंड॥ नहां कोई षेलै संतजन॥ नगरय
के नवषंड॥९४॥ नो द्वारा ते फेरि मन॥ पैठि मादि सा वृत्त आणि॥ नौबति
बाजै रैणि दिन॥ तहां रह्या तंगोटी ताणि॥९५॥ अनहद धुनि तहां हो
त है॥ झिगि मिगि जोति प्रकास॥ बारा मास बसंत है॥ ता सुषि षेलै
दास॥९६॥ अनेक बाजा ज्या मै॥ अनहद माहि सुणि॥ संत सुणै कोई
सूरा ति सत्त॥ जिनि थिर कीयै मन का॥९७॥ लूटै बरत्या कास ते तो बी
चि कहा ठहराइ॥ साध सती अर सूरका॥ आति ज्ञ्य के भाइ॥९८॥ श्रवन नैं
ना सिर पाव बोरसन ठसन मुष बैन॥ ऐसो जंत्र जिनि रच्यो॥ ता भूलो
कहां चैन॥९९॥ बाई दीन्हां मूव पैरे सा द्विव के दि सवा रातो कूं अर
कर्क नहीं॥ हरि बिन दूजी वार॥१००॥ बिना नगाति भगवंत की॥ दे दूक
हां मन और॥ राम तुम्हारे नाव बिन॥ नाहीं है कहूं ठोर॥१०१॥ एक राम
तुम्हारे नांव बिन॥ जग सब ही दोर॥ ररंकार रटिबो करौ॥ रमन्त
निर्म और॥१०२॥ सुमरण की सोधी नहीं॥ जब गावे गाल देषी के
सी होइगी॥ हरि सुमिरण बिना रवाल॥१०३॥ मुकति नहीं हरि नांव
बिन तीन लोक के मांहि॥ और धरम सब पोधरो॥ जूंगे दें के गहि
॥१०४॥ साधू या संसार मैं॥ पीवै इमृत नीर॥ माया जलतन जिषार का पीमु
वा जगत अधीर॥१०५॥ जनराम जे जग पाछि ठिठे॥ ऐसे जन मति धीर॥
जगत षारकू परहरै॥ पावै मीठा सीर॥१०६॥ जदासीन जग तैं रहै॥ जगान
ही लिपै लगार॥ पदम अंब में देषीये॥ यूं हरि जन रहै निरार॥१०७॥ धू प्रह
लाद कबीर से॥ नामो है निज दास॥ पार उतारे ना घनी॥ राषे अपणै
पास॥१०८॥ सो जासे ना आरधना॥ रका बंका सूर॥ साध सबै हीं तहां मे
नहां बाजे अनहद तूर॥१०९॥ नाथ मछंदर गल घरा॥ गोरष गोपी चंद
ति हि सुषि पक्कते सतजना॥ तहां नहीं रात्रि दिन॥११०॥ पीपा अरु रैदास से
जनहरीदास हरदास॥ निरलेंध कानबीण पदीय कूंते हरि के दास
॥१११॥ सुनि सिषर मेरामि रहे॥ परमेस्वर के संत॥ सदा सुष दुष कोनहीं॥
जुगिन प्रगि मास बसंत॥११२॥ अगम सुष तहां मिलि रहे॥ जन नल रसी ल
त अनेक॥ पूरा गुर ते पाईये॥ हरि सुमिरण ना क्रम मेक॥११३॥ दादू कान्हू
ड आदि सबा सकल संत सुषरूप॥ सकल संत नहीं बिलंबी पाज
सां छाया नहीं धूप॥११४॥ ब्रह्म सुष सब तें सिरै॥ नहीं गये निरंजन ही
नाजि हरि मैं मिलि गये॥ करि करि निरमल मन॥११५॥ ऐसे दाता गुरु मय
जिन सार सब ही कांम॥ जगत बंध सब का टि करि॥ कीये जमुकत
राम॥११६॥ जहां चंद सूर पावक नहीं॥ द्यौस नहीं नहीं तारा॥ ति संत रमे ता
सुष मैं बराण नहीं तहां जाति॥११७॥ उरकी मदद मा अनंत है क्या क

३०। नौसागरडूबैनहीं। जे निहचैसुमिरैरांम। पारिउतारैपलकमै
सारैसबहीकांम॥३१॥ वेणीतहिवैसिकहैं। अहिनिसपलटैपौन
सुधहोइसबआत्मां। मिटिजाइआवागौंन॥३२॥ एकदसाहूअनस
रोइजेदेहनचिन्नमुक्तिमे जिसंसैनहीं। ज्यांरांमगह्या निजचिन्न॥३३॥
भ्रमनैमतीरषवरता कहाकरैनिजसंता मनथिरकरियो विक्र
नोयेकहीनांवअनंत॥३४॥ धरतीकरौंविछावणां। नवसबसुमि
रैरांम। पहलांकूनसंभालीयै। पीछैजासंकांम॥३५॥ नैनबैनरसु
नांथके। सबदसुणैनहीकांन। अबतोमाईरांमकहि। सबैसुनांवे
श्रोनि॥३६॥ सबैहवडजगतारथी। सबअतिविछूटैयहातां हिल
गया हरिदीसत्या। तोयूंहीयोइदेह॥३७॥ पांणीकासाबुदबुदा ऐसी
हैयादेह। जबलगसासुसरीरमें। तूंहरिनिजलाहलेह॥३८॥ जीव
येकजमहैघणां। तूंसुमिरेक्यूंनही। पीवापीवैहीपालितां॥३९॥ तव
पडैसांकडेजीवदा। हिरणांकूसरांवणकते। मरासिंधसिसपा
लकंसकुंभमहतांणासे। सबैगासैकाल॥४०॥ जीवथिराथिरनर
करैसुतबितनारीनेह। जीवनसुपनसमांनिहैउलफिरहैजगहि
स्‍४॥ जेसैकुंजरकामवसि। पुहुपभवरकैस्वादि। साधसंगतिहरि
भजनबिनबेहिगयेजबादि॥ कुंजरबंधौंकांमवसि। मसकरबं
धौजलोनि यूंहीजनडरयेजगतें। तजिन्यारारहेअलोनि॥ जगमग
याअतिसबलहै। कोयेजगतसबजेरि। हरिजनलागेनांवसं। मन
कूंउलटाफेरि॥५१॥ मनहींसंमनफेरिकरि। मनकातजोविकार। उ
लटणेतामारिकरि। अंतरिवलयविचारि॥५२॥ तनमांहीतारथम
ला। मनथनांगहिते। पांचूंउलटाफेरिकरि। सुरतिसहजिधारि
यांणि॥५३॥ विषतरवरजगसबलहै लागिरहेसबकोइ तातरु
रमैजगवसै। तलफिमरैतनषोइ॥५४॥ सबजगदाफेरांणि। दिनलोभ
मोहकीआगि। सतगुरकैपरसादतैं। हरिजननिकसेजागि॥५५॥ म
हमोहकीरैणिमेंजगतसूताॱसुपनां। डिबेदपहरचोटरवे। आतिक
रिमांकीजा। डिभबेदसाधसबहीकहैरेजाएसताजा। यों
भरमभरीचका। तूंतजिहरिसुमिरणलागि॥५७॥ सताभनन्‍नै
केका। पहराहतक्यादोसभी। किजागेनतीजगाईया। पेडभ्रमि
णतकोसथ॥५८॥ सुमिरणलागेरांमकैं। मनआवेसातिमा। ततवस
तगुरकेपरसादतैं। पलमैपड्यै। पैजाइ॥५९॥ पेडांमुगअनेककाच
लतोनांहीरूहुं। सतगुरकेपरसादतैं। पाया। अंतरियेहूं॥६०॥ गुण
बांसकोटिघृणीफिरी। तऊरहैवारकवारअंकूवहांयउलट
रमैतोसहजेउतरैपार॥६१॥ अंतरअवगतिराइहै पांचूंउलट

गुला सुषमनि मेला । तब आतम सुष झिलै सै नेला ॥ ३४ ॥ इला पि
ङ्गला सुषमनि संगा । तब आत्म जोति रंगी हरि रंगा ॥ ३५ ॥ गुरु बूझ
अगनि अंतरि परजाली । दोइ दोइ लकड़ी जुगति की सिजाली ॥ ३६ ॥
बूझ अगनि मे करम दहाया । तब जोगी धरै न काया ॥ ३७ ॥ मनसा
जोग जुगति उलटि समाणी । नौ द्वारा पिव नेरैन पाणी ॥ ३८ ॥ उलटी ले
अगम तहां लागी । सीतल नया त्रिषा सब भागी ॥ ३९ ॥ बरषै अमी अ
षंडित धारा । सुषमनि सींचै बाग हमारा ॥ ४० ॥ आत्म फूल तेति बसं
ता । काम क्रोध बिषरस रहता ॥ ४१ ॥ अनहद बाजा अंतरि बाजो । परम
जोति निरषे चढि बाजे ॥ ४२ ॥ परम जोति सुष वारन पारा । वो सुष निरषे
कोई साधू सारा ॥ ४३ ॥ वा सुष पा सुष अनंत अपारा । येक दिन येक रैणि
अंधारी ॥ ४४ ॥ वा सुष का है अगम षिरा । बिलसेगा कोई संत पिया
रा ॥ ४५ ॥ बिलसै जाणता कोई जोगी सूरा । ताके बाजे अनहद तूरा ॥ ४६ ॥
पांचूं चेला बसि करि राषे । सुणें सबद सतगुर मुष भाषे ॥ ४७ ॥ पाणि मकि
वाड़ षोले जोगी । सो अमर जुगे जुगि रस के भोगी ॥ ४८ ॥ अमर जडी ब
ट वै धरि मेलै । परचै लागा जोगी बेलै ॥ ४९ ॥ सील मुद्रा जोगी सति ध
रे सींगी सुरति हरि नांव उचारै ॥ ५० ॥ काया कंथा धीरज की झोली सं
तोष रस की सुंकोली ॥ ५१ ॥ सुसे सहज सकल सं भोग । अंतरि बैरा
ग पेला गा ॥ ५२ ॥ तांणि बांणि वाणि भावे नांही । ऐसा बणि फि
रिया टिन जाई ॥ ५३ ॥ सहज सील की भिष्या पावे । सो जोगी जमपुरी न
जावे ॥ ५४ ॥ गिगन मंडल मे मढी संवारी । निरभै रहै काल ने मारी ॥ ५५ ॥ अ
मरपुर पद जब पुनि लावे । तब काल जाल निकटि नहीं आवै ॥ ५६ ॥
हरि सुष सागर कीया बासा । जगजीवन रत तिन मैं यह दासा ॥ ५७ ॥ जु
गडु षहरि सुषत जि गाहि लीया । तन मन उलटि राम रस पीया ॥ ५८ ॥
तन मन पवन सुरति मिलावै । तब वा निजस्थान कबलका रस पावै (
॥ ५९ ॥ अलष निरंजण अवगति रामा । संत सुमरि भये निहकामा ॥ ६० ॥
राम मंत्र जपत भै भागा । सब नाम सत येक लौ लागा ॥ ६१ ॥ राम कह
त काटै सब पापा । सो सतगुर दीया अंतरि जापा ॥ ६२ ॥ काल जाल
करि सके न चोटा । गुर गोबिंद का सरणा मोटा ॥ ६३ ॥ मछा सिध गहे
सरणाई । सो काल जाल तैं नांहि डराई ॥ ६४ ॥ निरभै सुमरि भये अवधू
त । भो कबकूं ता के जम दूता ॥ ६५ ॥ राम मंत्र का बहो बिसतारा । सुम
रि सुमरि केते भये पारा ॥ ६६ ॥ मंत्र जपत भये अबिनासी । हिरदा माहै
जोति प्रकासी ॥ ६७ ॥ राम मंत्र जपि लीजे मांही । प्रेम षशी अंतरि ल्यो ला
॥ ६८ ॥ तन मन सतगुर अर्पै रे । जनसेवा दीजे वारि । राम नाम हिरदे ध
घा । काम क्रोध बिष जारि ॥ ६९ ॥ स्रकार निंजिमल है सतगुर दीया

कूंसोमातियोउ॥ अनंतमुपरसनोवृणौं॥ तह्न आवैवेछ॥ ७॥ आम
वसतगुरगमकरीपाया॥ आतमनैवजनसेवादासघणंमकारिनं
मोनमोगुरवेव॥ ८८॥ इतीगुरमहमांजोगग्रंथसंपूर्ण॥ ३॥ ३॥
अथगुरमंत्रजोगग्रंथ॥ मंत्रनांवगुरदेवसुणाया॥ सनमुपकरि
सतगुरसमकाया॥ १॥ पांचूंलटिआगमरसपाया॥ ऊफङगात
मारगिलाया॥ २॥ ऊबटहीकूंचलतौवीरा॥ सतगुरफेरिलगायै
तीरा॥ ३॥ यौमनदसदिसाकूंवहता॥ सतगुरफेरिकीयाहेरहता॥ ४॥
रहताकेसंगिवहतालाया॥ आसथिरभया॥ परमसुषपाया॥ ५॥ जूं
पीपातमूंसथिरहोईपूं॥ अबमनचलणनपावैसोई॥ ६॥ सतगुरसे
थिलीयासबसंधण॥ ध्यानवोणनहीअवचलण॥ ७॥ सतगुरम
नवाधाइलकीया॥ निरनैपेकआमरफलदीया॥ ८॥ तिसफलका
केपूंआगमविचारा॥ सबकेसिरेरांमरससारा॥ ९॥ घातरोगविष
सवगाई॥ ऐसीवोषदसतगुरदई॥ १०॥ आसधवडवोषदलाई
अबसुषमेदिनरैणिविहाई॥ ११॥ सतगुरबैठियासोधिसबपोई
कीया॥ अमलनहीमलकोई॥ १२॥ तनमनसतगुरऊपरिवारू॥ चर
णकंवलहिरदेलेधारू॥ १३॥ तनमनआत्मअरपणकीजै॥ सतगुर
कोचरणचितदीजै॥ १४॥ दरसणकरतंऊपजमलाऊमयासमिरं
केअररांऊ॥ १५॥ सतगुरमंत्रकीयाउपदेसा॥ सोईमंत्रहै सिवसेस
॥ १६॥ ताराधिरांमहिरदामेधारा॥ धृतौसतगुरकोऊपगारा॥ १७॥ ररंका
ररमीयाघटमांही॥ तबइन्द्रआरतिनारनिहीआंही॥ १८॥ ररंकार
सुनबधुनिलागी॥ तबनिरतैभयारहेबिपत्भागी॥ १९॥ निसनैमया
कालभैनभागा॥ केवलनांइनिरवारिलागा॥ २०॥ समरथकेसरणै
जेआवै॥ तौजनकीतापलगणनहीपावै॥ २१॥ सतगुरसिरपरि
थिक्वीरा॥ हौस्रमिरैजोसागतीरा॥ २२॥ बांकीधारकूंवणनहीप
वैसीसकबीरा॥ थिरपैलाबैर॥ २३॥ मैंतंआपागरवनिवारैहीन
जीसाधूप्रांणधारै॥ २४॥ आपागरवगुमानअहंकारा॥ ओसवजै
जेकरतारा॥ २५॥ जोगमूलगहितजेपसारा॥ तवजगतितन
लागेबारा॥ २६॥ पासउसासेनक्सेंनारै॥ गुरगोव्यंदहिरदामे
धारै॥ २७॥ गुरगोव्यंदकोध्याणपाईहीसा॥ तिउसासिसनालिसनेही
॥ २८॥ सासंसनालिवोहिनिकाटिवताविबाहरनिराभिकूलिमति
नावै॥ २९॥ नाभिनासाहिचिपंथगहीजैपेमपियालानिरपी
जै॥ ३०॥ तबकालनालूलागेनहीकोईहीनिनहीनिजनिरस्हा
ई॥ ३१॥ पानाविचावनेकसुणाया॥ सतगुरआतसिांचलपाया
॥ ३२॥ कूंनरामनालजुभिजेते॥ सत८ ॥ ८६नदत

रही ॥ सुंदर ज्ञान उघरयौ मन थिर करि रही ॥ ३४ ॥ ये इंद्रिन ग्रहम नथी
र कीजे सुंदर राम रसोइण ग्रासि मारि थीजे ॥ ३५ ॥ आसा तृस्न कौ न तौ मो
ई दुष सुमिरौ राम सदा सुषदाई ॥ ३६ ॥ आसा त्रिसना जग बसि कीय
या सेर हे सोई ज्ञान गीया ॥ ३७ ॥ गज मन कू घौ जो नाही अरध उरध म
धि ताली लाई ॥ ३८ ॥ इडा पिंगुला सषमन की जो राम रसाइण चरि
गरि पीजे ॥ ३९ ॥ जहां सुरसुती हे समाई तहां मन रषीं मगन मट
आई ॥ ४० ॥ अब पांच तत का करौ बिचारा सत रज तम थि तिमया बि
सतारा ॥ ४१ ॥ मन बुधि प्राण दस वारा जइसा कारज दीया किहीं जे
जुवा ॥ ४२ ॥ अ तौ जड चेतन नै चेतौ अपरणे अपरो कोइ जज तेध ॥ ४३ ॥ सब य
ह चेतन कै आई जैसे चंबक लोह न चाई ॥ ४४ ॥ ता चेतन कू जाणो भा
ई जा कै चेतन सर दियौ लसनाई ॥ ४५ ॥ जल मै तरंग मुकर बिच आणी
सूर बिम्ब जयजौ देषौ जांणी ॥ ४६ ॥ पुन तन पक तसे तू ता के तारा सुंदर हे
ल्यो पा न बिचारा ॥ ४७ ॥ काम क्रोध लोभ अरु मोहा ऐ बैरी सब देह
कै डोहा ॥ ४८ ॥ पान पड गल डारि बिडारै सोई सूर हरि नांव संभारे ॥
४९ ॥ त्रिसना अगनि देह घट मांही संतोष नीर तौ लेहु बुझाही ॥ ५० ॥
छदि फल जाने सब जगसारा कोई साधू सतल न ताकै आधारा ॥ ५१ ॥
। तां मसार मसस । तिक माया तजि जन चौथे पदि समाया ॥ ५२ ॥ स
तगराज सत राम सा बिसराई तब चौथ्या सुनि यड पैजाई ॥ ५३ ॥ चौ
थे पद की या बिसरामा पूरण येक सबै स मिरामा ॥ ५४ ॥ सूर पे सिन
र मेडब की मारी सूसब सम देषौ नैनग धारी ॥ ५५ ॥ ऐसे गाणि अ
नो ओबिनासी तब सब कटे करम की पासी ॥ ५६ ॥ हरि सुमिरो मनि
के नितका मांजू पावो पूरण निज धामा ॥ ५७ ॥ तन घे जो तत कटो बि
चारा तौ बहोडि न बूडो भोजल धारा ॥ ५८ ॥ बाकी धार बहे जुग के
ता को राम सुमरि जिन रहे सुचेता ॥ ५९ ॥ धूलि समेटियां पडे बाणी
ई तास नेह नबांधौ भाई ॥ ६० ॥ उपजे देह जाइ बिलाई ता हि मोन्य
आपणपो घोटा मति षोइ ॥ ६१ ॥ कूडी काया कूडी माया येक साचा
नांव निरंजन राया ॥ ६२ ॥ मांइलि ज नकौ जन लागा गुरा का लैभेत
न सू लागा ॥ ६३ ॥ गुर ज्ञान मनै सबै मिटादी ॥ जे निस्चै नांव निरंतरि
गांदी ॥ ६४ ॥ बेद पुरांण नांव ही गायो सो पारबती कूं नांव सुणायो
॥ ६५ ॥ सोई नांव म्रवाण काशी सुकदेव लव जाइ ब्यास घरि मांने
वां ॥ ६६ ॥ ह मृतवाणी ता गुण गाया सो नांव प्रताप अनेक दुष
या ॥ ६७ ॥ तजि रिषि रही ह मृत जो मानि षाद हड फलक फलि जो
॥ ६८ ॥ नांव ही सेवा नांव ही पूजा नांव समाधि दवन कौ दूजा ॥ ६९ ॥ ती
रथ ब्रत नांव है सोई येक नांव सम नांवि आन नहीं कोइ ॥ ७० ॥ नांव

भगाइजनसेवादासलेउरधरया।सुषमेरह्यासमाइ॥७०॥इती
गुरमंत्रजोगग्रंथसंपूर्ण॥ग्रंथ॥२॥अथनांवमहातमजोगग्रं
थ॥प्रथमगुरदेवकेवंदूंचरणो॥जिननांवजिहाजदईभवतिरण
।सबसंतनकूंकरूंप्रणामो॥हरिनांमसुमरिभयेनिहकामो॥१॥
सबहीसंतसकलसिरमौरा॥इकनांवगह्यापांचूंकरिगौरा॥२॥स
बसंतनमिलिकीयाबिचारा।कलिजुगकेबलनांवअधारा॥३॥स
तजुगत्रेताद्वापुरकहीये।कलिजुगनांवपरमसुषलहीये॥४॥कलि
केसंतवेदयूंगावै।नांवप्रतापजमपुरनजावै॥५॥अजामेलग
नगनिकातारी।हरिनांवअनेकपतितनिसतारे॥६॥सधनाआदि
जेकृतेकसाधं।नांवप्रतापपरमगतिपाई॥७॥ज्यूंपांसुमस्योसोई
तरेपारा।औरसबैबूडेबिषधारा॥८॥नषचौरासीभरमतआया।
हरिनांवबिनाफिरिघोटाषाया॥९॥हैनांवजिहाजजुगमेफारा।
तिहिचढैनरउतरेपारा॥१०॥मनिषजनमदुर्लभहैभाई।सोतकै
डीसटैहरिमितजाई॥११॥यासाहिबसेभजनकूंदीन्ह।तैंतोप्र
तिकुटंबसंकीन्ह॥१२॥वहांकीबातहिरदैनहीआणी।कलिकी
बावकफोल्याप्राणी॥१३॥तेंबाचादेकरिबाहरिआया।हरिकूंभू
लिकुटंबपठाया॥इहिसंसारइमेकतेआवेंजातमाबिसरिबहो
तदुषपाये॥१४॥तंकाहूकानाकोईतेरा।जगसराइमेआइबसेरा
॥१५॥जोसैबटाऊडेरालीया।बनितासुतधनसूंहितकीया॥१६॥ज्यूं
भारभयोलदिचलेसंगाती।कोईयामेतेरासंगानसाथी॥१७॥तैं
कूंआपोदीन्होभाईदेपतहीसबगयेबिलाई॥१८॥फूवासंगापि
तोअरुमाई॥भूंनोरभयोताताडुरिजाई॥१९॥योतनऐसेज्यूंदामणि
साभैाजीवकौसासौजवहोछिनहीलागै॥२०॥कनककटोरेबि
षनहीपीजेहरिसुमिरणहिरदैधरिलीजे॥२१॥रंकारउचरेजनव
णी॥अगसिधिनौनिधिमुक्तागेनरेयाणी॥२२॥इहिबिधिसि
मरिमनमेरा॥इकनांवबिनासबहीउरफेरा॥२३॥मोतीबिनहंसन
हीकरैअहारा॥यूंहरिजनकेएकनांवअधारा॥२४॥ज्यूंघनबिनचा
त्रिगनीनपावै॥यूंनांइलगेहरिकिजननजीवै॥२५॥सीपस्वांतिबूंद
बिनकैरेननेहा॥यूंहरिजनकेयैंरामसनेहा॥२६॥ज्यूंकांमीकांमचो
रमनचोरी॥यूंहरिजनकोमनहैंइकडोरी॥२७॥ज्यूंजोतिपतंगमच्छ
लीनीरा॥यूंहरिजनकोमनहरिमैंथीरा॥२८॥ज्यूंचकोरचंदसूंतारन
तोडे॥यूंहरिजनमनहरिसूंजोडे॥२९॥ज्यूंभ्रमरकमलअम्लनबिसा
रेनांही॥यूंहरिजनकोमनहरिहीमांही॥३०॥ज्यूंसूराकेमनिहेसंग्रा
मा॥यूंहरिजनकेमनिकेवलरामा॥३१॥ज्यूंसतीआनकहूंपितनथ

रहै।यूंहरिजनअपरांमनथिरकरिरह्या।२५।येइपनगग्रसमस्थी
रकैजि यूंरांमरसोइणअरिअरिपाजे।२६।आसातनकीजीनौभो
ई इकास्युमिटौरांमसदासुषदाई।२७।आसाविसलांगगबसिकीयु।
यासेरहैसोईजनजीया।२८।गगनमनकूंषोजोभाई।आरधउरधम
धितालीलाई।२९।डाकिणीनासपिलेकीजै।रांमरसोइणभरि
भरिपीजै।३०।जहांसुरसुतीहैसमाई।तहांमनरह्यामगनमत
आई।३१।अबयौंचेतनकाकरौबिचारा।सतगुरमयितिमयांबि
सतारा।३२।मनबुधिप्राणइसबकोराजा।कीजिकाजसुकहीजे
जवा।३३।अैतोजवचेतननतेचेतै।अपणैआपणौकाजजतै।३४।सबय
हीचेतनहैआई।जैसेचंबकलोहनचाई।३५।ताचेतनकूंजाणौभा
ई।गवचेतनमईदेषौलसनाई।३६।जलमैतरंगमुकररिबिआभी।
यूंबिलसरूपजगदेषौजग।३७।पूरनरनषकैसलूताकेतारा।यूंनगदै।
रल्योगयानबिचारा।३८।कामक्रोधलोभअरमोहा।अैबैरीसबहै
ब्रिहीहै।३९।अपानपड़गलेहरिबिडारे।सोईसूरहरिनांवसंभारे।
४०।बिसनांअगनिदहैघटमांही।संतोषनीरतेलेदबुझाई।४१।
इहकालिजलेसबजगसारा।कोईसाधूसीतलनांउधारा।४२।
।नांमसरनसत्यातिकमाया।तजिजनचौथेपदिसमाया।४३।स
तगुरजनसतोमसबिसराई।तबचौथेसुनिपदजाई।४४।चौ
थेपदकायाबिसरामां।पूरणयेकसबैसभिरांमां।४५।जपैसिन
रमैइबकीमारी।सुसबसामदेषीनैनउघारी।४६।अैसेंगाणिम
नोसाबिनासी।तबसबकटैकरमकीपासी।४७।हरिसुमिरौमनि
कैनिहकामां।जूंपावौपूरणनिजधामां।४८।तनषोजौतनकाबि
चारा।तौबहोडिनबूडौभोजलधारा।४९।बाकीधारबहैजुगकै
ताकौरांमसुमरिजिनदहैसुचेत।५०।धूलिसमेटियापुडांबणा
ई।तासूंतनबांधौलाई।५१।पगोदेहजाइबिलाई।ताहिमांन
आपणपौषोहामतिभाई।५२।कूवीकायाकूवीमाया।येकसांचा
नांवनिरंजनराया।५३।मांइनिरंजनजनलागा।जुराकालनैत
नहैनागा।५४।जुरानमरैसबैमिटाही।जेनिरंजनांवनिरंतरि
गांही।५५।बेदपुरांणनांवहीगायो।सोपारबतीकूंनांवसुणायौ।
५६।सोईनांवअबाकाबीसुषदेवा।तबजाइबासघरिमिलैमां
वा।५७।अमृतकीणीहागुणगायासोनांवअतापअनेपद।
यो।५८।तजिरबिषवहारिअमृतजोमानिषादेहसफलतकरिलीजै
६०।नांवहीसेवानांवहीपूजा।नांवसमानिदेवनहीदूजा।६१।नौ
रषबरतनांवहैसोई।येकनांहसमांनिअौरनहीकोई।६२।नांव

हीकरता है कलिमांही॥ नांव बिना इन्नाकोई नांही॥७२॥ येक नां
व बिना नांही आधारा॥ नांव ही है करता हमारा॥७३॥ नांव ही है जप
तप तीरथ सनांनां॥ और नहीं कोई नांव समांनां॥७४॥ दान पुनि जग्य
जप तप सब कीया॥ जिनि केवल नांव निरंतर लीया॥७५॥ येक नांव
धन जिनके घटि बासा॥ सोई विपत्ति और सब मैं रे पियासा॥७६॥ इ
क नांव ही आसा नांव ही बासा॥ येक नांव बिनां जुगि कूवत मांसा॥७७॥
जूं कन्या कंवारी गुडी बिचारी॥ पाया पति तब गुडी निवारी॥७८॥ नी
रथ बरत जब लग साधे॥ जब पूरण ब्रह्म नहीं आराधे॥७९॥ तीरथ
बरत तो उली करणी॥ पाया महल तब तजी निसरणी॥८०॥ बिन स
ब बिहंगम चढि जाही॥ ऐसे संतमहल तुक पांही॥८१॥ साच गह्यु
कूवत जिकोनी येक साच बिना कवबहौ नांनां॥८२॥ येक साच नांव
सुमरि मन मांही॥ जूं ल यचौरासी मरमैं नांही॥८३॥ मूल चक्र बंध दी
जे माई सो सब जाले हरिगुण गाई॥८४॥ इडा पिंगुला समि करि राखे॥
पूरां परम अमीरस नरिनिरि चाखे॥८५॥ इडा पिंगुला सुषमन मेला यू
संतर मैं हरि सुष केलेत्ता॥८६॥ इडा मन पिंगुला पवनां॥ सुरति सु
षमनां आगम की गवनां॥८७॥ कचत वेगत सुरति समीनी॥ अज
लेन मलनां वहे पांनी॥८८॥ तहां न हा वे कोई जन पूरा॥ ता के बाजै
अनहद तूरा॥८९॥ हरि इमृत रस पीवे जन सूरा॥ सकल करम
सह जि कहू रा॥९०॥ फडे करम सुषसागर न्हाया॥ ते जन गिगनम
बहौडि न हीं आया॥९१॥ अमल अकल जुगि जोगी जागा॥ इक निरं
नाथ निरंजन लागा॥९२॥ ऐसे जन जुगमांही जुगता॥ रांम सुम
रि ये जनमुकता॥९३॥ जम की तापल गण नहीं पावे॥ जन निर
भै थकारांम गुण गावे॥९४॥ जो नर गाय्या गांह्यां हीं गत हूवा जूं पा
ला गलि पांणी हुवा॥९५॥ ऐसे संत ब्रह्म मिलि यकोहोई
तामैं भिंन्न भाव नहीं कोई॥९६॥ जैसे मिसरी पांणी मिलि ये के होई
मिग्रास आपणो लेकरि सोई॥९७॥ मिसरी मिली अंतर नहीं कोई यू
हरिजन हरि मिलियकी होई॥९८॥ मिलता न्यारा कहा न जाई यूं
सधि सुमरि सुषमांहि समाई॥९९॥ जूं जन येक मेक हो देषे त्हौ हीमें
हीलै नापा न्यारा कुई नांही॥१००॥ येक कहवा लूं णगालि पांणी ऐसी
संतां मुकति बषांणी॥१०१॥ संगाति समीप सरूप भियेजो ई सांजोति
येक है गया सोई॥१०२॥ काटे करम देह गुण भूलै सो जन सुषसागर
मैं कूले॥१०३॥ पांन आनि करन सब दहीये सो जन जीवन मुकता क
हीये॥१०४॥ च्याडे सुरति देह गुण माई अवरा लिमिलि येक दे नाही॥१०५॥
न्यारा के तै दे हधरावे येक ऊवा कछू षबरि न पावे॥१०६॥ जूं पे मैघ्र

तवतै सब संगा। ऐसै साधमै हरिसंगा॥१०७ जैसै पहोपमै
समाई। यूं येक नह्या कह्या न जाई॥१०८ जैसै तेल तिलांमै रहै
रम रह्या तिबिधासि घातौ॥१०९ ततनांव येक है देधारी करम
नांव ही गाया॥११ कालजाल लागे न है माया। संत
नही कोइ दुष॥१२ सुषसनकादिक नारद गावै। सेस महेस नाव
हीं ध्यावै॥१३ हरि के जन हरि मांव चारी। नांव प्रताप काल मै म
रै॥१४ है परम पांवन सकल आघ जात। ऐसो कष्ट हरि नांव बि
डारत॥१५ सति गपाति गकरम सब बीनै। यूं परम पांवन नांव
हीजै॥१६ नांव की महमा ऐसी भाई। जा की तीन लोक मै कीरति
गाई॥१७ नांव की महमां जो श्रवणां सुणि है। ते भौ सागर सहजै
तिरि है॥१८ जन सेवादास सति नांव है। सब मिथ्या सुष संसार
मेतोइ है बिचार करि हरि सुमिरौ बारंबार॥१९ अनेक पतित पां
वन भये केवल हरि के नांइ जन सेवादास तत्र मै धरत। ताकी मैं ब
लि जाइ॥१२ जन सेवादास कलिजुग मै है केवल नांव आधार
जिनि नियौ बुत हिरदा मै धस्यौ सो जन उतरे पार॥२२॥ इती नां
महमां जोग ग्रंथ संपूर्ण॥ ग्रं।४॥ अथ तत निरणौ जोग ग्रंथ॥ सत
गुर को चरणां चित धरि हो। मति अनति को साधन करि हो॥१ नि
ति आत्मा देह अनिता। याही समाफि कहै सब संता॥२ असुचि
अनिति अगल देही। सत चित आनंद आत्म ये ही॥३ घट बि
कार देह संजुकता। आत्म सदा जांन बिमुकता॥४ सतगुर स
बद बुधि लुनांणी। आतम सदा मुकति ही जांणी॥५ गुरु कि
रपा तै मारग पाया। अंजन मांहि निरंजन राया॥६ दिष्टि पडे स
ब ही सो माया। तत सरूप गुरदेव बुताया॥७ अलप असंग स
स घट मांही। यूं आत्म अलिप लिपै कछु नांही॥८ यूं घट घट
मां हि घट है स्वांमी। नमो न्याती हितोत तरै नांमी॥९ जोग न जोग
अहंन ही माया। अगम अपार निरंजन राया॥१० रूप न रेष बरण
परनां ही। अलप पुरष रमै सब मांही॥११ स्वेत न पीत स्याम न है
ता सरूपा बिबरजित आपा बिधाता॥१२ बरणा बरण न ही आस
लो ही कर मन ही अधर मां॥१३ ऐसा अलष निरंजन राया। जन
नामिन ही हरि आया॥१४ जूं नीजन मिसै कठिन ही आवै ही
न अथाह थाह न ही पावै॥१५ घट दरसण पाक्षै न ही भेवा। ही
न अजूनी अलष अभेवा॥१६ घट दरसण षोजै कछु हैरा। सो तो
रह्यो मरघ तैरा॥१७ मून भयेक मरण सब गेरा। ऐसे रामा हि

मिलियेकहूंवामिलिमोहीप धास्यूंयहतंहमारानाहीं
ऐसासबैबरतांहीथकमतोरोमसकलघटमांहींऊंच
नरकहूंनाहीं५पांचबरणकीगमहूंहांइसबमेंइधये
नाईअ॥बोलणअवीबईसरसदाबैगनबिगतियेक
न्यष्ठनारयेकबीनेहेजबाताभेपड्यातासारगिहूवा
थापलगेमजीवचोरासीसबमेब्यापिरह्योअबिना
कैसेगा६१॥आदिअंतिमाधितहांदेवाअगाधअपारको
हैनमेवा६२॥अराधिरपातेइकतनपायाकगोमाणसब
समितिया६३॥वारतारहरतायेहतोओरनइगाकोइरहम
गनिरमलारहेआनंदाहाइ६४॥साचीमालालुरा
वीफेरैबिरलाकोइसुमरिसुमरिसबीगीयेजनसवा
सुषहो६५॥जनसेवादासमाबीकथासतगुरदईसिषा
इआतरकेपटहरिकरिगुरदायासलसलषा६६॥निरबि
सोब्रह्महेसबिकारीहैजीवजनसवादसयूंजाणिकरिसु
मिरोआपणौभाव६७॥गुरसिदेनेनछोडीयेमतेलीयजग
जनसेवादसआनंदनयासमेरहेसमांइ॥६८॥इति
निरणौजोगग्रंथसंपूर्ण॥ग्रंथ५॥अथग्रंथस्यानन
गग्रंथ॥गुरुदेवसादतेयाक्तेग्यान॥ज्ञानध्यानमैथ्याइसज
ना१॥सतगुरमिलैतौपावैभाइगुरबिनभ्रमलछोन
नाई२॥परमपावनपरमप्रकासीघटघटमांहीआप
वासी३॥परमेश्वरपूरणअबिनासीसकललोकतामे
प्रकासी४॥जोहेसकलसिसहिताहांमीसोघटघटमे
अंतरजामी५॥परमतत्वप्रममोषदवाराकतलपरो
नहीं अहंकारा६॥हैरत्नीसिरहरिबतावेघटघटमांही
आपलषावे७॥आपेवकताश्रोताआपेआपहीअपनी
महमांगावे८॥आपेकरताहरतारा आपेजपतल
परच्यापसारा९॥हैसंसारनहींसंसारानाहरिमिलतनांही
न्यारा१०॥महाकासयूंजाणोसोईऐसेजाणियेकणहीं
इ११॥दिहिनमुहिग्यागहअबिनासीआलिपअसंगसक
प्रकासी१२॥अचितअजोनीनमनतांहीजानरूपनही
कोइआकेइ३॥बालनबूढनहींतननधारासुकलनरकतपी
नहींकारा१४॥नांहीसुषदुषनांहीमारीनांहीपुरषानांहीं
नारी१५॥नाहीरोगीबेदननांहीअलषपुरषम

मांनहीं औरा॥१८॥ अषंड अभंग अचल अविनासी सकल स्व
नमैनौ निष्कासा॥१९॥ असथिर अमित अमूरति देवा। सुरनर मु
नि कोई लहै न भेवा॥२०॥ अडिग अडोल अधर अविनासी। अलि
प्त बाहर सुयं प्रकासी॥२१॥ अतीत अजीत अगह अपारा। सब के
मांहि सकल तैं न्यारा॥२२॥ अबीज अबीग अपैज गुसांई। सब तैं
असंग रमै सब संगई॥२३॥ अद्वैत अतीत अनंत अपारा। दुष सुष र
हत सिरजनहारा॥२४॥ जैसे घन बिजुरी बरषै मेहा। नाहीं सो तिन
मकै येहा॥२५॥ ऐसैं जगत ब्रह्म मैं होई। होतिणि बिधि न हात ताहि
कोई॥२६॥ पाप पुन्नि न हा बंध काही। ज्यूं काल न ही जो लौसेई॥२७॥ ज्यूं
जन मैं सरपम्नु करमै कांडी। ऐसें हरि मैं जगत दिषांई॥२८॥ मन मैं सु
पनै न्हा इक रह आवै। ऐसैं इक जग न्हा इ बिलावै॥२९॥ आपांन
दिषितें इक न भानासैं। पान भयै पुराण परकासै॥३०॥ बासत्रीत
रि व्यापक सारा। है सब मांहि सकल तैं न्यारा॥३१॥ ज्यूं नभ पूरण पेहै
क सारा। घट बाहरि भीतरि नांही न्यारा॥३२॥ जैसैं पासिर है आका
सा अनंत घटा मै कीया प्रकासा॥३३॥ व्यापक असंग अघट घट
नांही। ऐसें रांम रम्यै सब मांही॥३४॥ अगम अगम अनंता निति गो
वेंक हैं ता का पार कहां तैं या वै॥३५॥ बांणी अनंत अनंत अवता
रा। न लिषा लिजा वै अनंत बिसतारा॥३६॥ न लिषा लिजा वै अन
त बिसतारा। जल सा सिकन दे वो तत सारा॥३७॥ दी घलु घतां हैं
क्नां ही। व्यापक हैं सकल घट मांहीं॥३८॥ लघु दीरघ या उ
पाधि दिया ही। चेतन घट बाहिरि है कन्हें नांही॥३९॥ सोई सत्ति सरु
व सोहा सोई सति सरवा मांहां॥४०॥ कीडी कुंजर है चेतन स
मिनाई लघु दीरघ या उपाधि बुराई॥४१॥ बांनी मांडे फेरवा
वै तिण कूं साल्हूं रणन पावै॥४२॥ बाजीगर माया बिसतारी स
कल जीव बंधे नर नारी॥४३॥ ता बाजी तैं न्यारा कोई नांहीं ब्रह्म
बिसन महेस इन्न मांहीं॥४४॥ धातु हैं कारण वा मिथ्यारा। पांच तत
गुण तीन पसारा॥४५॥ बीज रूप आदि निगम वांनी। तांहीं तैं सब का
वडपांनां॥४६॥ माटी ये कवर्ह्नो भांडा ही इन आया। फेरि कारैन
कारण मांहि समाया॥४७॥ जैसैं बाग मैं बीरछ होइ आया। बडे
डि बिरछ ता मांहि समाया॥४८॥ ज्यूं नेक अलुष न कनक के होई
गाल्या ये कर दिगयु सोई॥४९॥ ऐसैं सब घाटैं तता बिचारा। ज्यूं क
न्न पन्न नाहीं न्यारा॥५०॥ हरि सब मैं है हरि मैं मांहीं। ज्यूं तरंग बु

सव

तरंग बुद बंदा हैं नर्तै ८

ससातिगबातताप ५२ पांचप्रांणदसकरणजनइया ताहीमै
मनबुधिमिलिरहीया ५३ देहगुणोंकेहैबिसतारा तूंनिरगु
णहैगुणातेंन्यारा ५४ अनमनप्रांणबिग्यांनआनंदा ऐ
पांचकोसहैडुषकेदंदा ५५ जतनजतनकरिनिकसेमाई अग
नसुषतनैबिलसाई ५६ आडिदेहकोमाईयारी यो ओसरम
लोमारमततारी ५७ नितिअनितिअनितितिकेमेया हीअबि
द्याबोडेऐसे ५८ असुचिअमंगलदेहीअंगा तूंपरकासीनि
तिअसंगा ५९ सतचितआनंदलेहबिचारी देहअनेकओगुण
हेमारी ६० रूपेतामानिमूलिरह्यो अंधा याहीकाटिसहजेनि
रबंधा ६१ सुधबोधतवरूपन्योंमारी योहीग्यानदुषकाटीबि
डारी ६२ ग्यानघटअग्यानमिटायो आतमअनमोमांहिदि
षायो ६३ सतगुरुगोसाबुधिमेंनदानेदामिट्याडुषदाई ६४ मै
सुधरूपनिरमलनिजरूपा देहअविद्याहेडुषरूपा ६५ अबि
द्याकततहैबिधरूपा तूहैनिरमलसुधअनूपा ६६ सुधअ
नूपमआतमरासो सबसेंप्रकासीसाषीतूहै ६७ आतमनिरमल
हैअबिनासी हैतिरहैतसुधलवा प्रकासी ६८ ज्योंतनजैसे
घटआकारा घटआकासअंबरमांहिसंचारा ६९ महाआकासजू
आतमसोई ऐसेजांणियेकनतदोई ७० प्रथीअपपावकप
वननतनाही तूंचिदरूपसाषीसबमांही ७१ अनआतमहै
दुषकोआगर तूंसुधचेतनसुषकोसागर ७२ ऐसेजांणिअ
ग्यानयोनीकी तबअनआतमलागेफीका ७३ यूंसापासमझ
हेनमुकता याजडदेहदुषसंजुकता ७४ ज्यूंदसमणिघण
मैबरतैऐसे यूंआतमआलिपततनमैंजैसे ७५ ज्यूंसुदिमांही
ससिप्रकास्यो यूंअनआतममैआतमनास्यो ७६ जागतसुपन
सुषोपतिजुहैतीन ऐसतासाषीतूहै ७७ तूंतुरीयाऊतैम
रतमाईआरि ओसतामितिमांहिदिषाई ७८ तूंसुरबाजकै
दषणहारो तूंसुधरूपसबहीतेंन्यारो ७९ असंगअकेलाजा
णोयूंहीसबयडीजलकाग्यानातूंहीं ८० यूंआतमनितिकरे
अभ्यासा यातेमिटिजाइदेहअध्यास ८१ जैसेंजोगीमनकी
चितलायो वोहीसरूपहोइआपलषायो ८२ ऐसेंदेहकेगुण
हीबिसारेहोइअसंगआपणपोतारे ८३ जिनिऐसेंकीयेअ
पणानिरधारा तेनिजगुणअन्यकिरतारा ८४ ज्यूंग्यानल
सतअवनीपरिआवे आपोसमटिजलहीहोइजावै ८५ गुण
बोज्यां निरगुणकूंध्यावे देहयदांइनतराबामिटावे ८६ देह

सब माँही ॥१६ आपै पूजि पुजारा आपै। अनंत न वनंतउ गई सरि
थापै ॥१७ दीठि न पड़ै मुष्टि कहा थापै। ग्यांन दिष्टि नहीं देष्या
जै। पूरण सकल निरंजन देवा। कैसैं करि तुम्हारी सेवा ॥१८ घ
ट घट मांहि अघट अविनासी। न्यारा तौ हि सकल प्रकासी ॥
२० नां उपजै नहीं अवजाई। बाहरि भीतरि रह्यौ समाई ॥२१ पू
रण ब्रह्म नहीं उपजाई। ज्यां हम सेवग त्यांन जाई ॥२२ देतनां वतै
दीसै दोई। एकोरांम और नहीं कोई ॥२३ आपै आकास सासि रहाई
जैता घट तेता दरसाई ॥२४ उपाधि नैदते दीसै बहोता। सकल उ
पाधि तें है बेरहता ॥२५ सब घट जितरा जेतरबूजा। देरहै न्यारा मि
लि मांहि दिपावै ॥२६ व्यरता वरता सब का सोई। तुम बिन और न
हींना कोई ॥२७ जहां देषूं तहां अविनासी। सकल विसंभर जो
ति प्रकासी ॥२८ आदि अंति तरंग है पांणी। यूं सकल प्रकासी
ये को जांणी ॥२९ बाहरि भीतरि घट न्यतै सै। पूरण ब्रह्म सक
ल मैं ऐसैं ॥३० ऐसैं आतम अंतरि भासै। पूरण ब्रह्म सकल प्रक
सै ॥३१ ऐसैं आतम के अभ्यासा। न्यू स्वांति बूंद की चात्रिग प्या
सा ॥३२ जब स्वांति बूंद दिढ देह राई। यूं चात्रिग प्यास मिटी त
बनाई ॥३३ प्रेम सिंध उपज्यौ घट मांही। सबै भाग निसर जैसें
तलांही ॥३४ तब विरकत हाइ विचरै जग मांही। दिढ विसवा
स और कछु नांही ॥३५ पहली दिढ वैराग ही धारै। काम क्रोध अरि सै
बे बिडारै ॥३६ लोभ मोह फंदा जग मांही। तिल तिल का ठौर पैनां
ही ॥३७ कनक कांमणी सब व्यौहारा। अदेषे वंधन जग सारा ॥३८
देहीपै जे करै बिचारा। तब ही पावै मोष दवारा ॥३९ पोनी प्राण
करै वह लोंती। आपो थे जै दिन अरराती ॥४० पो जितो जि करि
आपा पावै याते जनम मरण नहीं आवै ॥४१ जगत मैं आपरोहे
ग्यांनां। आपा मांही आप भुलांनां ॥४२ जे स्वान कांच के मंदि
र मांही। आपत आप जांण पावत छु नांही ॥४३ सिंघ कूप मैं आपा
दीया। काल वूतक रिग जव सिकीया ॥४४ घजल देषि त्रिषा पत
नहीं क्षवा। यू उपज्यौ भरम सकल जग भूवा ॥४५ ज्यूं आंधा कत्र्यं
घरे भासै। ग्यांन द्रिष्टि तैं सब वे प्रकासै ॥४६ ज्यूं कल्पतर भांति दुर
वे यूं भरि प कव कूं नेदन पावै ॥४७ घूघू जांवर हैं घट मांही
दुस्यो देह मै सूर्के नाही ॥४८ ज्यूं पड़ौ विपर जेनलनी सतपा यूं
आपा विसरि देह बासि क्षवा ॥४९ है सब देसी का परकासी। रोम
रोम व्यापक अविनासी ॥५० ऐसा ग्यांन लेह विचारी। देह नहीं

मजुगतिनजाणी॥बिसरेरामभईतनहाणी॥२३॥थिर
हेनिसवनराया॥जाकेगुरजनमकालनहीकाया॥सतजिने
रमेमेनत्हाबायो॥निरभैतरूअमरकोथापो॥२४॥थिरहेतिकेज
गतबिसराया॥उपजेबिनसेहूजीमाया॥निरमेहाइननिरमैज
गा॥इहिबिधिसकलजगतजमताणे॥२५॥दादोधरोमनको
जीताणे॥करगाहकेसदाजमताणे॥जनममरणदोयइक्कुरे
गा॥रामहीबाटिमरमेसबलोगा॥२६॥धधागाहधीरमनथाये
हरिध्यानोहरिरसमातामनत्हालुभाना॥धरधतरधमधिम्र
सरणधारया॥निरभैभयाकालतेमारया॥२७॥ननानालाबनिरंजन
लेहसवारी॥रामनजीसनिजनमसुधारी॥जनमसिधिजोअब
दईदिषाई॥अबतचेतिरामनजिमाई॥३०॥पपापिसणपावग
हराधे॥रामकमासरसनाबाधे॥हरिपहरिमननजांनदी
जेगोबिंदनजिमलवाजिकोजे॥३१॥फफाफूटीकोडीसटेन
दीजे॥इकहाराजनमसुफलकरिलीजे॥सोविबिचारिदिविघठ
माहीहरिबिनकूनातेरानाही॥३२॥बाबाबाजीमरबाजीबिस
तारी॥तातमातबंधवसुतनारी॥बालपनाकोमीतनकलो
सबपरवारदेषिसुषकलो॥३३॥भभाभरमनदोभैवहैमति
नाई॥रामसुमरिसाचासुषदाई॥गहिगुरग्यानध्यानधरिमा
धो॥करनिजमिलकलंगुणबाधो॥३४॥ममामोहपसारसंवेन
वारी॥मधिअस्थोगोयकोकरिसारी॥गुरगहिग्यानमतानेजा
गे॥तोनिरभैहोइजमचोटनलागे॥३५॥ममामनिषादेहदुलभ
हेनाई॥अतताडबिषमातिषाई॥हरिसम्मजेन्हलेनरहसे
कामक्रोधममतासबदाई॥३६॥यायायावत्रजीनादिनषोई
रामभजनकीकुसमलधोई॥हरिबिनकूनेचितनदीजे॥ला
धीसोजनसुफलकरिलीजे॥३७॥ररारोजोभलाइकनाबाहीजे
योमनजाणकेनहीदीजे॥पांचूंपकडिबिकघरिस्याणो॥मन
मनसाकूंउलटीताणो॥३८॥ररारमतारामतापिउरमाहीअब
होडिनतोकूंकालनबाही॥बिनहरिग्यानबिथाजुगिजराणे
लषचौरासीमेदोडयाफिरताहे॥३९॥ललालाहिरहरिहरिसपि
तेरामनगाहिपवनयाचकफेरी॥रामिरोगिरहोसरपूरातमती
जाइपडेकुंकेहरा॥४०॥वावावाकुपकनेडजाणिपांचूंपक
डिएकघरिआणिडरिसाहिबकेजबिडरावासबतेंकाढि
हरिमोहिलगावा॥४१॥बाबाबकनादलोबाधिबलबजेनिर
भेनावनिरतरिलीजो॥उनमनिरहेनिरतरिमिलाइडापिंगला

॥७॥आप

जीवतनेहाथाडोमाई॥८॥देहातेरेसागिनअ
मरीविकारउपजेमिजावे॥९॥रोमकुचाअसतमांहिविकारा
सोतनजालिबालिहोसीछारा॥१०॥आदेलापजतनकरोकोई
अतिदहपेहहाहोई॥११॥देहउपजोबिनसेदेही।देहापीणपुष्ट
होइयेही॥१२॥भूपप्यासप्राननकीहोई।सोकमोहचितकेसोई
॥१३॥षटविकारदेहीकेमानो।गुणअसंगआतमकूजानो॥१४॥
अतवंतदेहाकूजानो।आत्मसदाअषंडहीमानो॥१५॥अजरअ
जनीआत्मअगा।सबप्रकासीरहेअसंगा॥१६॥ज्युंदरपणमेंकां
ईजैसे।यूंअनआत्ममेंआतमऐसे॥१७॥विकारदेहकेमानोमाई
बालज्वानवृधहोइजाई॥१८॥देहीमरेआत्मानितिसोईजंनी
जनममरणनहीकोई॥१९॥देहतेहोइकरमहीजानो।निहचेर
मतारामपिछानो॥२०॥घबरीनकोईअपनाजानो।बातओरसेमन
लेमानो॥२१॥ज्यूंउतिमघरकोबालककोई।लपेपितचंडालकहे
ई॥२२॥बामणबनीहोइरह्योजैसा।सुद्रमांनिरछोमेंऐसा॥२३॥मो
हपासिबध्योससारा।याते विसरेसिरजनहारा॥२४॥पांचोबासि
विकलनपेडोले।अंतरिनैननेकनहापोले॥२५॥देहआपणपे
सबकोईमानै।इनतेन्यारा कोईनजाने॥२६॥देहनिजासिबहीके
आवे सतगुरमिलेतोन्यारापावे॥२७॥न्याराअरदीसेमांही देह
मूवातेमरतानांही॥२८॥नितिचिनधनहीहोइरहोणो।तातिआप
णपोसतिकरिजाणो॥२९॥यूंतुजमेनहीघटविकारा।तूनिरवि
कारसबहीतेंन्यारा॥३०॥घटउपजेअसतबढेपरणामो।ऐसा
हैतनआगरआमां॥३१॥या तनयेबधजभापासी।तूंकबहूनांही
याकोबासी॥३२॥तूतोआतमन्पुणकोनाही।देहविकारउपजेम
रिजाई॥३३॥देहदहानांहेडयरूपा।तूअविनासीअसमअनूपा॥३
४नांहीपांनीनांहीअगा।तूतोचेतनहेसरबगा॥३५॥नाहीक
ततकोकबहूहा।याहीतेंतूबसतअमोहा॥३६॥असंगअन
गअरंगीहोई।ऐसेआत्मजाणोसोई॥३७॥पावकदहेनधारा
दाटेपवननसोषेघडगनकाटे॥३८॥ज्यूंजलमेंप्रतिब्यंबहीभासे
ऐसेंआत्मदेहमांहिप्रकासे॥३९॥यूंआत्मसबघटमांहिप्रका
सीरहेनिरंतरिसदासन्यासी॥४०॥तीनोंसतोकागमकहेनाहि
समाझविरलाकोईलहे॥४१॥साधीताकूंजाणोमाईतीनसरीर
॥मिदिमेहोइ।यूंसाध तसदारहे

अनतन जाइ ध॥ चौथि स चौक पुराइ करि मंगल गावै मन स
बधारि सहज विधावणा॥ पाया राम रतन॥५॥ पांचै पांचू पलटि क
रि मन रह्या गिगन मंडल जाइ। अब सहजै सब सुष बिलसीये॥
और कछु न सुहाइ॥६॥ छठि बक्या हरि रस मे अब हूं जा नावै
नांहि सतगुर के परसाद तै अगम सुष बिलसां हि॥७॥ सातै सा
तसो मिलि करि बिलसै मन तन जिन लखु घन बसेरा दुष सुष गय
ऐ पासन हारि री॥ अब करमन आवै नेरा॥८॥ आठै आठ कि अगम
घरि षेलै दोइ दोइ चोट चुकावै इला पिंगुला सुषमनि मेला
त्रिबेणी संगि न्हावै॥९॥ नौमी नै ह्वला घत निस दिन नाद बाजे
गावै गगन मनन मधि पेसि परम सुष हंस मोती पावै॥१०॥ दस
मी दर सबद लिविदिन मांही परासि गगन रस पीवै पीवत अके दस
गुण मूले ऐसे जोगी जीवै॥११॥ अगपारस द्वैक षे उर मांही
इगारस जनारो॥ सा पति बाता परासि पीवक्कू परम जोति प
हिचांणे॥१२॥ बारसि बजे बाजि मन राषै करै याप पुनि दाइ दो
न निलै यकांनि रंजन पर सै परम सुनि असथान॥१३॥ तेरासि तेर
ह सुष हम पापाती नगुण तें आगे तिहि सुनि षेलि निरसै हार
बेग जनम को चोट न लागै॥१४॥ चौदसि चित चेतन नया फिंग
ये नारम जंगी रसो सा ज भासुष नया परम्या पद गंगी॥१५॥ पूनूं
यो षुपरगट लष्या पूरण सबै प्रकास गुन सेवा बिनही बादल
बरषै बिहसति बारामास॥१६॥ इति तिथि जोग ग्रंथ संपूरण॥ ग्रंथ
॥ग्रंथ सत वार जोग ग्रंथ॥ आदित वार अगम घर लाधौ गुर गा हि
रपो नमन हा परमो धो अरथ उरध माधि चौक पुरावो सास उसा
स सहज पगावो मन गहि पकडि सहज घरि आंणो अरथ उर
धं मिलावी पिछांनो॥१॥ सोमवार सुनि मया सरीरा काम क्रोध स
बं कडे जंजीरा द्वादस बाडि दई मुकलाई सोलह कला संपू
रण पाई अब मन इतवत जाणन पावै नोदर बाना कुलपाल
गावै॥२॥ मंगलवार सदा आनंदा सब घटि पूरण परमानंद
जल मै कुंभ कुंभ मै पाणी यू पूरण ब्रह्म सकल घटि जांणी ऐ
सै जो त्रिगुणातीत गहै जोगी पूरण ब्रह्म परम रस जोगी॥३॥ बु
धवार बाजै रिणतूरा झिलिमिलि झिलिमिलि दरसै नूरा॥ नि
रषै त्रा निरंजन जोगी जो या रस का है कोई जोगी॥ ऐकरस
रपा बक्या रस पीदा ऐसे होइ सदा जन जीवै॥४॥ ब्रसपति बि
लसै बारामासा आतम कंवल कीया परकासा॥ बिषबनि ध
सेन सकै बाडी त्रिसना लागै सहज उपाडी या सुषबास षि

सुषमनि मेला॥३५॥ससा हरि सुषसी रला गिगड़ि पांनो जल
बूडा गाटै सबै बुफ़ो ना पदा निरबा न निरषि दिलमांह॥ निरंने
होइ नैजालि जा॥४०॥ससा साप ग्रिये कपि टोरे जागे गा फि
ल होइला हां छला गै पुरमिल्पा गाडू हि घडा ढपाडी॥ अंतरि
ग्रो पि अनूप उघाडा॥४१॥षषा यैता रा पिता पिरष बाला॥ निपजै स
पुन लागै काला॥ करजा चुका इरहै निरदावै यों ओ सम्ननौ हरि
के गुण गावै॥४२॥ससा समफि बिना तो बहोत दुष पावै बिन हरि
भजन चौरासी गावै गाफिल होइ सो ओसर हारै करतां कबहू
ना हरि चितारै॥४३॥ षषा षबरि लिहै उस घर केरा॥ मन गहि पवन उल
टि हरि हेरा॥ अवमन उलटि सहज घरि आपा॥ आविनासी निरंने
घर पाया॥४४॥ससा सुरति समेरहि नांव निति लीजो बैसि निरंतरि छ
ड आरंभ कीजे अरध उरध मधि पवन निरोधै षत गुर सबदां मन
परमोधै॥४५॥ ललाया मन का सबल हरि निवारा॥ सबते अगम ल
ह्या सुषनारी मन मै वासा करि हरि निराला॥ नबओ आत्म अंतरि न
याउजाला॥४६॥ हहा हरि हा सोदकी जै तन मन सो पिइसी वि
धि लीजै जे तन मन सौ प्यावो सुषल हायौ तो जनम मरण डप फेरि
न सहाये॥४७॥ ळळा विगूना सुष मानि आनै उलटी सुरति गिगन
कूतानैं गगन मनन धि जोगी जागै॥ निरंने होइ काल नहीं लागै
॥४८॥ येन कना षहा थिक रिराषौ पसर निवारि रोम रस चाषो बसै
गिगन मैं डुनी न जागै॥ मन गहि पवन अगम सुष माणै॥४९॥ अघ
ट पियाला निसदिन पीवै निरंने होइ जुगे जुगि जीवै हरि नाजि
हरि जिन हरि सुमिरीदोई जु राजनम भाके नहो कोई॥५०॥ अलप नि
रंजन है अविनासी भजतां सब कटै जम पासी॥ अबला उड़िब
सो डि नहीं आवै निरंने होइ परम पद पावै॥५१॥ बावन आपर
सोधि करि रसनां रटीयै रांम॥ ग्यान सेवादास दुष सब कटै सब
सुध रै काम॥५२॥ चौपई॥ बावन आपिर पढि ओ पावै आपिर अगम
तहां मन लावै संत सबद कहै परवांण॥ ग्यान सेवादास निरंने है
इ प्रांण॥५३॥ इती बावनी जोग ग्रंथ संपूरण॥ अथ॥७॥ अथ ति
थि जोग ग्रंथ॥ मावस मन उलटाइ करि हरि रस पीवै संत ह
रि सुषमां हे पेली यो आगिमा सष संत॥ पाकि वा पर्ये परम
सुष परम जोति परकास॥ पूरण ब्रह्म विचारि करि मन की
या निरंतरि बास॥२॥ बीजा बबांधि मन मेटि के बसत पिछाणि
येक हरि मिलि दुष सब गया वो है येके नो बस्नेक ३ तीजि ति
न कूं मेटि करि चौथै रह्या समाइ पूरण पद आराधिया अव मन

नकी। याहूजगतकीरीति १६ तमकितेहै सबकूपरै। रेमांगेगेतु
अनीष। आपणहूलाजातहै। फिरदेत कूटेबकूंसीष१७। आइ
कुराबुढापेघेरीयौ। तोकूनांवनलेत। योंकाज्योयौंमतिकरौ
फिरिसीषसबनकूंदेत१८। हरिदेआंषिनसूंकहै अंधनयौ
कुधिहीण। बादिगमायायौंहड। हरिसुमिरणबिनयौंषीण
१९ का। तेअचांणकआणिकरि। कंठगहोजबआइ। अबतेरा
संगीकोनही। हरिबिणिकौणछुडाइ२०। सबहीदेषैसंगिष
डे। स्वंधबस्तुतअरनारि। सबस्वारथकेमीतहै। जीवहरिबि
णनहीउबारि२१। अंधधदिनषोईया। समझिनसुमरयौरांम।
सबेरुबडदेषैंषडे। अंबबणेपोजगाढेकांम२२। धांमधंमध
षैकीयौ। साहिबकीयौनआदि। मूंछमरोडततिरषिछांहयौ
दिनषोयाबादि२३। हातिकछुआयौनही। रेरीतौरहगयोटोल
नरधंधहीमेंपचिमूंवो। होरडांवाडुलडोल२४। नरअंतिच
ल्योसबछाडिकरि। बहोजोडीकष्टउपाइ। चलतांफिरियछि
ताईयो। कछूसक्योनसुकतलाइ२५। सूतौजनमअनेककौ
षोलिनदेषैनेन। संतनसुषिसासबकेसुनेवहौतहीबेनर
२६। राहचलेनरनरककी। सुणिसुणिवातेअनेन। पड्योचौरासीजी
वडो। कछुनपावैचैन२७। तुरोहितबातैजमातसबमूल
रहमनपावरीकौडीकरिकरदमाही। हीरोचालेहारि२८। रामु
तिसुषनरहो दिगापरमूकस्वांनलियारालमचौरासीफे
रेहगौबूडेकालीधार२९। मौतनिसांणीजमधजा। चयासिर
पारधौर तबहरिसुमिरणकरिबावरे अबकहासाचैसौर
३०। रेबडेबडेमीरकहांवतेफिरतेसरदतहीगाजते असरदु
गरदमैमिलिगयेजबदलमहकुतोआहदूर ३१ मालमुलकहै
गेघूणा बसीतथेनीनेमातकोलपकडि जबलेचलेतव
कडूनपूछीबात३२ बहोसींगदलबलचालतेजाकीसेन
हीदीसतमांन तेकृतनलगरासीयासबमिलिगयेषाकनि
दांन३३ सेसमुजाबलतोलतेवेमननमेबडकहातेकस
लमहाबलीगयौसबकेपारि ३४ सांवणासेनरचालिगये दसम
सत्यानकुलबीसतेकफालमलामलीसबहीरालेपीस३५ हि
रणाकुसहिरणाषिलीडंलकरणमहारावणसबहीकालगारा
साषा कोइनपावैजारा ३६ कंसकेसबहीदलाइसासण
सिसपालवेतमिलियगेगरदमौसबगरासेकाल३७ नांन
राधिसानरपतीनांवऋपतीनरहाडाबकसबहीनमूं

येनाइनलायेकौ [illegible]

[illegible]रापरम्जोतिप्र[illegible]सारा[illegible]

कोइ संवस्तुनारेमिलियेके [illegible]

रतजोतिपरम[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

णीजागअथा॥रचनातिनवननाथ [illegible]

तामेउतिममनियादे [illegible]

नदेहसो [illegible]

[illegible]

लौसेवावदगीभयौ [illegible]

हाराछिकसिरजनसार [illegible]

करतारथमल [illegible]

धोमुपित [illegible]

रासिवासिनयौ [illegible]

रासीलषघ [illegible]

मृतचितनारीवाल [illegible]

योकोमत [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

रवू सत बांरी॥६०॥ मौत फिकौ लै सब नकूं॥ जैसें ब्रब के घात
गाफिल कूं रहे बाव रा करे सचांण क घात॥६१॥ यूं बूवपाले
घात हूं दिया ऐसे दिनादिन देह येक दिनो विरजा२॥ तूं राम
स्मरन कर लेस्॥ ६२॥ जैसें अंजली नीर हे विनीये क बार हा२
तैसैं जांणो देहकूं यांन तन करलो जा२॥६३॥ देह पेंहमां द्वा पि
सो कै जे बकूं नता पा इ याकू बांतन का गरब क्यों तूं गोविंद
को जांण गा२॥६४॥ घड घड तनपलकमै रे काल कै गोत्या२ नि
चक फबे गां कूं वणौ तेंह सुमिरण धि न ता२॥६५॥ काल घे
रि है ढील क्यां तें अब गाति त ल्यौ ला२॥ जैसें वाको मूं गद्दा॥
दोर हूं कका रिजा२॥६६॥ काल सदा ता कि बाकरै जीवन जा रोहं
थ आ२॥ अचांणक ले चलै नीव ल फ्यो त्रास फंध॥६७॥
बालक बूढा ना गिणे जम मारै आछे घा२॥ काल बली महा
जग में सब कां कूं षा२॥६८॥ नर जा तैसूं ब्रत जोगी यै सदा रहै
थिर रा ज॥ काल अचां णक मारि सी ज्यूं तीतर कूं बाज॥६९॥
ज्यूं मंजारी ता वि बाकरै मूसो पकडे आ२॥ ऐसें गाफिल जीव
कूं काल अचां लो षा२॥७०॥ बाक वच्यौ घर घटी वाके गजंद
रहल ई करमोहि विषमां न रत हो२॥ ज्यौ मरणा तें फेना हि
॥७१॥ तूं क्यूं गाफिल के र यो रहो रित पाति ज्यां२॥ जैसें बधक दार
गहूं निसदिन चिंतवत गा२॥७२॥ काल अहेडी निति तिल कोन रहै
रणा की लार यम किंन ग हार नो दरसें गाफिल षा ली मार॥७३॥
वि णा भिगर या देह हैं ज्यूं का चा कल सकुं भार येक पलक में बि
नासि है तू का रहो नो वं चार॥७४॥ सब तीर्थ का सुमिरण कौ
सकाति थका कनु देह मा लन मन का सब पलक में पखाति होस
॥७५॥ सब तीरथ का सुमिरण को सकाति थका कादि नधी है
परवासि हो श्रोतलका जून रहसी मांन॥७६॥ सतगुर कां स्यां कहतहै
सुणता हे सकल मीहा ना कर णा तो॥ नक जीयो आपा रसौ
तानेहा॥७७॥ मन मा ... दे ही धा कि कि रैं क हा क माया कां मांहे
यातो येला जिसी तन जिर के वल रो म॥७८॥ क्यों आपा सेता२ रहे
बडा पच भमो हि जम चारे लेगा हिंग नै पान र रणा तोहि॥
तिला तिल लेषा ली नी यो तब सुमान आवै ज्या बाइ घात कूं
मो कुटंब मै बहार रहता कैसे आव ण रा माबि सा सो कुटंब
तो कायो सुत नारी तने हू धरम रा२॥ जैसें कहो तैं मली बि
गाडी देह॥ तब धरमरा इ का गद ली यो कम सुकृत दीसे
जो कौ पा पब ज्ञा ने ब तो तसे त बदे चौरासी मां हि२२२

कालपरासपांजा॥३॥२०॥हरिसुमिरण॥बिनकालहै॥मिटतन
हीकछुबातमा॥फिलसूरहेबावरोजमकरेअचाणकघात
३॥४१॥सामलमलपहरत वहोसधोअंगिलगा॥३॥यातनकुं
वहोतसिंगारते मिलीपाकमेका॥४०॥चोवाचंदनुअरगजो वहो
घातेनपरपाना॥हरिसुमिरण॥बितसुधिनाकछुवेमिलाय
धापनिदानध२ सेफसुधासातोसोवतावेचलतेचढिसपपाल
पुकपलकमेथापसमि मनदेषा॥३॥हहवाल॥४२॥देहपेहमेमि
लिगाई॥फिरिहोनतातोनदियातनकापारातिहोनरामसु
मरिबालिजा॥४४॥वपांकअटकिमनसुरातितोहरिहिरदामेहरि
साधसबेहीकहतहेंजुगिआवेनही॥कृरि॥४४॥गजमनमथे
वसिकरिगा॥बिदकगुणगा॥३॥सकलमधूसहजेकडेअपू
ततजेबणरा॥३॥४५॥गजमनपोज्पा॥बिना॥हेनडंपातिहूरि
संतारिमनउलटा॥३॥कारि॥निरषेअलषहूर॥४६॥हरिनावकं
तजेधपरहरे अफभागातिसबबणरा॥३॥यानतजेअपाप
पेलगा॥बिदकगुणगा॥३॥४७॥ऐसाहरिकानांवदेमरषेबि
सारीबीरा॥वेगाबेगिसनालीयेनवलगासुधीसरी॥४८॥तसु
मिरणकरिबावरो॥आडिसकलपरतातियोतनजैसेजा॥३॥
गो॥अभूतारापमलो॥तिं॥४९॥बिनजिग्रहतनहासक्यातथिर
थिरकैजकामयो॥ओसचालिजा॥३॥गो॥बिषयातजिभज
राम॥५०॥लोनमेहफधासवलरचेजालिसजनहार॥तातिन
मिहरिनावकुं॥बिसरिहो॥३॥मत॥छारप॥५१॥लोनमोतकअंग
निमेलागिजलेजगसोआपागिलजेजगदीसकुं तवउरस
तलहो॥३॥५२॥मातापितावंधवसबैसुतवितनारानेह ३॥स
मेरोकोनही॥तहहिरिजिलाहालेह॥५३॥येकपलकमेवा
अडेसोथिरमानोनेहा॥फवेपरयेचिलागिकुरिमरयूहो
घा३॥देहपछ॥जिनकेहेतदसोदिसा॥वहोकरतो॥फिरेउपा॥३॥
तेरसगीकोनहा॥तेअंतिअफला॥३॥५५॥ग्रहडपऐसोहेस
हीमानूचकुंदिसलागीला॥३॥सीतलतुषकहो॥३॥पजेगी
कलतजलतमरिजा॥३॥५६॥करणाहेसोकारिकछुआजनहो
सोकाल्हिपीछेहीपछितासी॥तफवेरंगिनमाल्हि॥५७॥यास
रीरसमसतकमायावणातिहेयहमनूपाणीकासाबुदबुदा
हो॥३॥पलकमेवहेप॥५८॥पालाकापिंडहै॥पिघरतनाहीवा

करमभरमसबछाडि॥ अविगतअषिरल्यौलागी॥ जनसेवादा
ससोसा॥ मिटया॥ अबतनमनकारहिरियेसागो॥ मेदभागीनि
रंजनया॥ सतगुरकेउपदेस॥१॥ सतगुरदीयालषाइउरिअल
षनिरंजनदेव॥ अबभरमछाडि निरंजनया॥ निरंजनपदजिदि
वा॥ निरंजनपदजिदेव अबदेवदूजानहीकोई॥ जनमनयाति
राइसंततानिहिसुमिरैसोई॥ जनसेवादाससबरामिरह्या॥ अब
गतिअलषअभेव॥ सतगुरदीयालषाइउरिअलषनिरंजनदे
व॥२॥ बलिहारीगुरदेवकी दिनमैसौसौबार॥ करमभरमसबमेटि
कै इकनांवदीयाततसार॥ इकनांवदीयाततसारजीवकाभ
रमामिटाया॥ पारापरैपतिदेवअगमसो सुगमबताया॥ जन
सेवाचिगुरदेवसामिमेटैभरमअंधार बलिहारीगुरदेव
की दिनमे सौसौबार॥३॥ बलिहारीगुरदेवकी ततकीयाउप
देस जौसागरमेबूडतां कृपाकिकाढेकेस॥ कृपाकिकाढे
केसजगतकाभरमामिटाया॥ भौसागरतेकाढिमहररिकरि
चरनांलाया॥ जनसेवादासगुरदेवकूतनमनकीजेपेसब
लिहारीगुरदेवकी ततकीयाउपदेस॥४॥ बलिहारीगुरदेवकी
चारपलटिकीयासाह॥ चोरासीदुषमेटिकैषोईसबगुणदा
ह॥ षोईसबगुणदाह॥ जोई [illegible] अगमसुषघटमे
पाया॥ तिहिसुषपरहंसमाडिगहालैकालनकासा॥ जनसे
वादाससतगुरामिल्या॥ मिटीहांणि नयालाह॥ बलिहारीगुर
देवकी चारपलटिकीयासाह॥५॥ तबथीऔभांति अबनहीअ
बगुरमिलीयादातार॥ लोहापारसपरसिकैकंचनभ्यासार॥
कंचनभ्यासारबिकाणि अबमतगेलाणा॥ अषचरणबदेषनब
रणनोइलागा॥ भ्रमभागा॥ जनसेवादासनिरभैभया॥ अबपरम
रामपियार॥ तबथीसोभांति अबनही॥ अबगुरमिलीयादातार॥६॥
अगमबसतअंतरिबसैजाणैबिरलाकोइ॥ सतगुरकृपालाइ
करितालादीयाषोइ॥ तालादीयाषोइसबदकाकीयाउजाल॥
तिमरगयेसबदूरिसुरतिकीपाईभाल॥ जनसेवादासनिरमल
भया॥ दुरकुसमलसबधोइ॥ अगमबसतअंतरिबसैजाणैबी
रलाकोइ॥७॥ सतगुरसिषकूंजबमिलेतबासिषपलटेतिहिबा
र॥ लोहापारसपरसिकैकंचनभ्यासार॥ कंचनभ्यासारजी
वकीजकतापाई गुरमिलीयादातारयारिलेकीयासोई॥ जन
सेवादासगुरदेवकीमहमाअनंतअपार॥ सतगुरसिषकूंजब
मिले तबसिषपलटेतिहिबार॥८॥ सतगुरअंगसाषीहीयेगे

।टो॥ऊपरि स्यो लपे॥ना ते पंनामि टाइ फिरि काघ कैसं
गिनालीये कूं कर पासि फंडा इ॥६॥ फिरि आगनि कुंडमै नाषी
ये॥जगा हि पटकै धपाग मार वहीतू नमलोकमैं मोपैं कहीन
जाइ॥६॥ संडासी तत तोडीये फिरि पीलहै कोल्हू मांहि॥ऊधै
मुष दे नरकमैं यूं हरि बिन मार परांहि॥७॥ जगसुष तजि गोविं
दनजो तो दुष नांही कोइ फिरि चौरासी नरमें नहीं हरिजन जि
नमैं होइ॥८॥ काकूं कूंन दुष दइये सबकूं दीजै जैसुष॥ जे परजीव
दुष पाईये तो तेता आपे दुष॥९॥ जैसा बाहे फिरि लुणे बाल्हा
कहुं न जाइ॥ जैसा करे स पाइहै फिरि तैसा ही फल पाइ॥१०॥ बे
द साध सब ही कहैं करे सो पावे देह॥ पाप पुनि दोइ बीज हैं भु
गतै धरि धरि देह॥११॥ पाप करम पीडा करै पुनि करम सुष देह
पाप पुनि दोऊ चाडिकरि हरिजन हरि सुमिरेह॥१२॥ काम क्रो
ध बैरी सबल लोभ मोह रिप मांहि॥ पांति षोस इन सबल डरयेज
सो बिन सुषनांहि॥१३॥ औरां कैसही तैनां अडे॥ मनदगाबाज
कूं जीति॥ तब हरि दे सुष ऊपजै तबहोइ नांव हीं प्रीति॥१४॥ पा
गदो पजाकै नहीं॥ इक नजें निरंजन देव॥ जो तूं चाहे मुकति कूं
तो करि साधूं की सेव॥१५॥ यो काचा पिंजर है न ही बिनसे घिसव
बीस साधू सेवो हरि भजो॥ जू पावो जगदीस॥१६॥ सुरग म्रत
पाताल कूं हरि बिन सुष कहुं नाहि॥ यो ही ग्यांन विचारि क
रि राम भजो मन मांहि॥१७॥ द्वार बनिवारो हरिभजो॥ यो ही बडा
बमेक॥ और सगा सूं कै नहीं आतिसगा हरि येक॥१८॥ तेरी तेरे
पासि है तू आप छलटि संभालि॥ आपा की सोधी बिना ... जग
पाधो काल॥१९॥ बांकि बुराई दूरि करि तूं नित मल हरि गुण
गाइ॥ जन सेवा हरि सरनां रहे बूम ही होइ तनि काइ॥२०॥ जन सेवा
दास सुष सिंधमें मिलि रहे सोई प्रांन॥ जहां काल न का रकी गम
नहीं आगम गोड अस थांन॥२१॥ इती चिंतावणी जोग ग्रंथ
संपूर्ण॥ सर्व ग्रंथ संपूर्ण॥ ग्रंथ॥२०॥ अथ ऊडदायालि
षते॥ श्री गुर को अंग॥ सतगुर बहोत क्रिपा करी भजन ब
ताया नांम॥ यो औसर करी यां हदे भगी पै केवल रांम॥ भगी
पै केवल रांम सबद सतगुर यूं भाषै॥ सब सिद्ध हरि नांम
गतज्ञ करि उर मै रापै॥ जन सेवादास नदी लकरि मंगा पै धा
सू नांम सतगुर बहोत क्रिपा करी भजन बताया नांम॥१॥ गोविं
द नांग नित्य नैन या सतगुर कै उपदेस॥ औसागर मे डवतां गु
र गहि पूं छफ स॥ गुर गहि काढि रे

तगुरमम परवार है सतगुर मेरै ध्यांनां सतगुर मेरै ध्यान रहूं सतगु
र की आया काल कूं बाधि जै नरम डौ रे आपै नहीं माया ॥ काटे न
रु चौरासी जूं निते जन सेवा सतगुर रा ध्यांन ॥ सतगुर मेरै ई बाप
है सतगुर मेरै ध्यांन ॥ ५ ॥ सतगुर दाता मुकति का सब नर मेगमां
वणहार बंधन काटै जीव का [illegible] गुर सहज करै भोपार गु
र सहज करै भो पार कलपतर है कलि मांही ॥ है चिंतामणि गुर का
मधे निकलप नां सबै मिटाही ॥ जन सेवा पावै सांतर सस कूं लहै
रो माणि सार ॥ सतगुर दाता मुकति का सब नर मेगमां वणहार ॥
॥ ५ ॥ २० ॥ अथ ॥ ग्रंथ सुमिरण को अंग ॥ नांव निरंज
न निरमलो जगतां हो इस हो इ ॥ माया मल कूं त्यागि करि तिन
तर के पट षो इ ॥ तन के अंतर के पट षो इ समझि गुर ग्यांन बिचारै नी
र मै रूप गति येक सो सब किरतम सारै ॥ जन सेवा दास मन
सुरति तत उलटि त्रय पूगो नो इ ॥ नांव निरंजन निरमलो जग
तां होइ सत्त हो इ ॥ १ ॥ तत नांव सोई तिलक है तत नांव सोई आप
तत नांव मन निरमला इह कूं गुर दीया जाप ॥ इह कूं गुर दीया
जाप भरम सब दूरि निवारै ॥ नांव तिहां गच ढाइ सहज भौसा
गर तारै ॥ जन सेवा दास सासो हस्यो मिटि गई सब गुण ताप
तत नांव सोई तिलक है तत नांव सोई आप ॥ २ ॥ जे जन हरि सु
मिरण करै तब सहज ही सुष होइ ॥ मन की सब कलपनां तजि
सुष बिलसे सोइ ॥ तजि सुष बिलसे सोइ राग कहूं दोष न रा
षै इंद्री पसरा निवारि सबद मुष तें सति भाषै ॥ जन सेवा दास मु
कता लया ग्रंथि हृदे की षो इ ॥ जे जन हरि सुमिरण करै तब सह
जे ही सुष होइ ॥ ३ ॥ नांव मूल निज वोषदी काटे कोटि विकार स
बसत के मुषि सुणी इह वोषद तन सार ॥ इह वोषद तन सार
पछि जे पांणी साधै मन पवन सामि रा [illegible] पाधै
जन सेवा पाचूं वसि करै तन मन के तजे बिकार ॥ नांव मूल निज
वोषदी काटे कोटि विकार ॥ ४ ॥ वोषद इह संसार मे कुपछि पडे
सब जीव पांचां कूं मुकला करि चित बिसरे पीव ॥ चित
बिसरे पीव सुरति फूली चहूं वोरा ॥ जपत पती ए साधि नांव की
चलै न वोरा ॥ जन सेवा दास सांति नांव है हे सजीवन सदीव वोष
द इह संसार मे कुपछि पडे सब जीव ॥ ५ ॥ नांव सजीवन वोषदी
पीयां सब जीव जाइ जैसें अगनि महा बली कै ते कंजाल इ के
ते का जलाइ चहै रिकछु हांणि न पावै यूं नांव दहे सब करम जे
नांव मे मन समावै जन सेवा मन ऊति समटि करि फिरि फिर नां

सैकीटनरंग सबदचटकलालाइवरिकैरैआ पाणैरंगाकैआ
पाणैरंगासबदअनहदरसपावैसबकांटेजीवजंगालनरमनै
हूणिमावै॥जनसेवापूरासतगुरूमेटितीनकासंगासतगुरुत्रै
साचाहोयेजैसैकीटनरंगा॥७॥गुरसेदाताकोनहीजनसेवादा
सबूसंड॥जतनजतनकरिपोषदेजैसैकूरमयंड॥जैसैकूरम
यंडहूरितेहेतलगावै॥दिहिरहेततहांजोडिपोषबिनिध्यनही
पावै॥सतगुरसीतलसासिसमितपातिमबैकरिषंड गुरसेदाता
कोनहीजनसेवादासबूदमंड॥११॥अं॥श॥अथगुरकसौटीको
अंग॥ज्यूंज्यूंसतगुरसिषकूंकसणीदेतुंलाइ॥जैसैसोनीहेमकू
घडतांघाटजुआइ॥घडतांघाटजुजात अगिआनरुपणाधारै॥बि
नोघाटकाहेमताहिकहोकौणसंवारै॥जनसेवादासकसणी
सरसताइकीयानिरबाह॥ज्यूंज्यूंसतगुरसिषकूंकसणीदेतूं
लाइ॥१॥फेरिघडेगुरघाटबाटहरिकीगहिलावै॥कंचनज्यूंगुर
ताइसुधकरिघाटनिपावै॥सुधकरिघाटनिपाइसकलअघस
तगुरषोवै॥दिलदरपनकरिदेहतबआपमैआपाजोवै॥जनसेवा
पांचूंपलटिकारिरसनारसइम्रतपावै॥फेरिघडेगुरघाटबाटह
रिकीगहिलावै॥२॥गुरकुलालसिषकुंभसामिघडिकाढैसबषो
टि॥बहोतजतनकरिसेवलावाहरिबाहैचोट॥बाहरिबाहैचोटषो
टकोईरहणनपावै॥बोदिबुराईकाढिघाटगुरवसतनिपावै॥बु
लअगानियाकाकरैदेअबुधिबलीतोपोट॥गुरकुलालसिष
कुंभसामिघडिकाढैसबषोट॥३॥२४॥अंग॥श॥अथगुरम
हमाकोअंग॥गुरऊंचाअधिकआकासवतसरवरज्यूंगंभी
रसमदिष्टीरविसारिषाबसुधाज्यूंगुरधीर॥बसुधाज्यूंगुरधी
रपरमसुषपूरणसोही॥मासतिज्यूंगुरआलिपदेतगुणलिप
नकोही॥जनसेवाभीतलसासिसेपावैइम्रतसी॥गुरऊंचाअ
धिकआकासवतसरवरज्यूंगंभीर॥१॥सतगुरतीरथबरतहैंसतगु
रमाईबाप॥सतगुरसजनबाहहैलगैनकाईताप॥लगैनकाईता
पसबतलसतगुरसरणाही॥निरधारेआधाराबिध्यानहीच्यापे
काही॥जनसेवादासकैसीसमपरिअलषनिरं
रथबरतहैंसतगुरमाईबाप॥१॥सतगुरमाईबापहैसतगुरमम

[illegible]

सुमिरत [illegible] दे [illegible]

जौ जिगत [illegible] हे [illegible] कीता

[illegible] डात [illegible]

माया जनसेव [illegible] सुमि

रत सो [illegible] दे [illegible] तौ तैं [illegible] दे देखल्या

सिवि निवकार की [illegible] जायीहे अज

[illegible] जायी हे अज [illegible] निरलेख।

नख लेष [illegible] कवि थाये [illegible] निरल्यख

लेष निरंजन [illegible] सिवि निवकार की

[illegible] मि लरहे पाणी [illegible] कही [illegible] सुरति वि

सारे देह [illegible] तविमन [illegible] रहौ [illegible] तौ [illegible] ।

मेहि [illegible] सा [illegible] तजगत [illegible] जीव

जनाइ नांव सजीवन वोषदी षायें सब जनि जाइ ॥२६॥ रांम मंत्र जो रे
वियाक जो थे जन मधुमो लिकजाइ सासोसास से नाल गे रे
मन टील न लाइ रे मन टील न लाइ बहो डि षद लगै नाही
मन पवन ने गहि फेरि है फिर सेत्र माही जन सेवादास नूं पब्रा
डि करि नितनै हरि गुण गाइ ॥ रांम मंत्र जो छिपी या तजो यो जन मन
मे लिकजाइ ॥ये क अधि ऊ स पीवका सोई सति कानो ॥ ए रो
मनां मसत प्रक ह्यासो ई सतिपर वांणि सोई सतिपर वांणि ॥जो
न सांगि निकट निज जाव रांम नाम तत सार उल टि तरां चितलगा
वै जन सेवादास अचेतनें सी हरि बिन ज्ञान वो नि ये क भाय ॥३॥
पीवका सोई सति कहि जो ॥ टि० ॥ ऐसा हरि का नांव रै तीन लोक
मे सार राति दिवो सुरति वो करी रे मन इसे विचार रे मन इसो विचार
हरि नांव हिरदा मे राषी इक सतगुर को उपदेस संत वो ले रे
साषी जन सेवादास हरि नांव गहि ह्रिज्ञान रमनि धार ॥३॥ ऐसा हरि का
नांव है तीन लोक मे सार ॥ रांम नांम गुर राव क्या हरि मन ता कि
रम इक निराकार निरबांण मज्जि झूं का टिकी ॥ टिकरम भ्रूं फाटे ॥
टिकरम वोट इजी नही धारी ॥ लोभ मोह रिप मांहि सारा चितब ह्रां
बिडारी ॥ जन सेवादास आवै नही त्याग सब दम रम राम नाम गु
रस बदगा हरि मन तो डि परम श ॥ एक निमष न मार कीगी रोही
रदा ते हरि नांव ॥ अनेक पतित पावन भये कूवलन हार केनाथ ॥
हरि के नांइ चित दे नीकाली जो जिनि पचप सीं गया ॥८॥ ता
तगि बिरथा नीजो जन सेवादास हरि नांव ले मूं रखियो रचि को ॥
इक निमष न पाक कीजो ये हिरदा ते हरि नांव ॥९॥ रांम भजन बिन
मानई बाकि मां सै देहा रांम भजन बिन सुपन सी उलटि फेरू संग ॥
नेह अल के कुछ सनेह देह दीसे थिर नांही जो ये संग न ये पु
न कुल उपजि बिन से पल मांही ॥ जन सेवादास भगवंत भजि
बीसें थे बिय हरि भजन बिन मानई बादि गमा ॥ देह ॥१०॥ राम ह
सो मैं बडो न उज्ञावे कि से अधार नग ता गि कहा करै ॥११॥ षु
ही चालै हरि यूं ही चालै हार दो सफ को का कूं दीजै पारब्रह्म
ति छाडि मो निमम तारस पीजो ॥ जन सेवादास थप वि नातिं प्र
ससे रिंक हो मा सिरि राम विमारि जी बडा त का वि कि ये ब पारि ॥११॥
कर मन तन सब तें छाडि रे ह एक ही भज्या ॥ जन सेवादास ग नि रं न प
या भत मन्द संत न श्री सत गुर वद य नांव नि नां व निकम
गरी थत पांडि रहे कै बजग बले सांपे दास सहज रा ॥
भरम निवारि लीजो भ्रम ली धांम मग नालि ॥ अ मन

~~सुनारातैसैगीद गोलिराप्टि बिरहनां हि~~ पिया मेजागेपि
रीसेवे बिरहातायटमांहि बिरहाता घटमांहि पांडिनका
रमगावेयेकरां नसनेही चितजोरकचूमा हि नमावे जनसेवा
दासपुकारिसी निसादिनमनहीमांहि सारासोवैनादंजोरिजिस
घटिबिरहानांहि जहासामेहरिनांमिलेजिहि मिलीयातिहरि
रसोइरोइयारियाइये सबदसुणोसबकोइसबदसुणेसबको
इयावा बिरहा जिहूं जोइ पावंमिलनकीप्रीतिनीद नारतिसैन
सोवेजनसेवादास सोई बिरहणीअंगकेमांस न होइ हासाभै
हरिनां मिलेजिहि मिलीया तिहिरोइ हंसरौबकरोबुधिघटैज
गिनदेषेजाइ प्रनतननिलागाहैतबहीपरलैबीजु तबहीपर
लैपोजेअगमहांकरातिलगोमनपवनांस्थिरापिनानिहसा
तहांपावैजनसेवादास तहंसुषमगजीवतमांनासीवहंसरो
बकरोबुधिघटैजा गिनदेषैजीव ॥७॥ ५॥ अंग ॥ ५॥ अथपर
चाकोअंग ॥ तेगपुंजपीवपरसीया तहांबाजेअनहदतूरतहां
लोकवेदकीगम नहींजहांझिलिमिलिदेष्यानूर जहांझिलिमि
लिदेष्यानूरबसंततहांसदाबिराजेअनंतरिवपरकाससबद
अनहदतहांबाजेजनसेवादासतहां फैलीयेनूररह्याभरपूर
तेगपुंजपीवपरसीया तहांबाजेअनहदतूर साधसदा तहांभि
रमैसदासुषीतहांगावचालिनीवतहांजाईयेजहांनिरभैनिज
सुषगाव जहांनिरभैनिजसुषगांव आपजहांआपैआपोसंतामि
लैतहांजाइआपनिरभैकरिथापेजनसेवादासआनंदसदाह
रिसपीवतजोबालाधसदातहांमिलिरमैसदासुषीतहांगांवर
सुषसागरझलमलत उजलनिरमलनीरामनहंसातहांषेलिहैचु
गिहैमुकताहीराचुगिहैमुकताहीरातापतहांव्यापैनाही जहां
झिलिमिलिषेलैसंतरामसुषसागरमांहीजनसेवादाससंई
हंसजानपीवैइमृतसीरसुषसागरझलमलत उजलनिरमलनीर
सबदबिनांगाजैसदाबिनबादलबरषतबीजबिनांचमकैस
दाकोईजांणैबिरलासंताकोईजांणैबिरलासंतसबदसतगुरपूंछ
यौनहांबारामासबसंततहांरमिइमृतरसचाषैजनसेवादासता
सुषमैझिलिमिलिषेलैसंतासबदबिनांगाजैसदाबिनबादलबर
सतधासहाजिसदाफडहोतहैअहरनिबारामासा जहांचमकैदामणी
झिलिमिलिजोतिप्रकास झिलिमिलिजोतिप्रकासाबजेतहांअन
हदतूरावोसुषअगमअपारहैकोइगुरगमितसराजनसेवादा
सनिरभैनगरतहांकीयामनवास सहजिसदाफडहोतहैअहरनिब ।

अस्मेला करैजनसेवा अंतरघो ३॥मिलिरहै पांणी लौंणज्यों
नांव कहीजै सोइ॥२२॥मतिवाला घूमत रहै लगी अलष सूं डोरि
प्रेम पीया लाया पीछ क्यों वे ठाजगस्यूं तोरि न्यैगा जगस्यूं तोरि प्यो॥
रलांडा नमि केरा॥ अलष रहै संसार वैसे साहिब के नेरा॥ जोगी ज
गे जुगति गहि जनसेवा सतगुर श्री शि॥मतिवाला घूमत रहै ल
गी अलष सूं डोरि॥२३॥डोरी लागी उरमिट्या जनम मरण का सोइ
काल वांण लागै नहीं वेग निरभै होइ॥ वेग निरभै होइ चित्त च
रण चिंटाया॥ परा परै पति देव उलटि ता मांहि समाया॥ जनसे
वा के वृत्ति प्यांन ये हमन का मल सब धोइ॥ डोरी लागी उरमि
ट्या जनम मरण का सोइ॥२४॥ अलष नांव अंतरि कहै रोम रो
म के मांहि॥ व्याहरि जन रसमरीच कारहै जिन तहां न जाइ॥ व्याह
रि जन तहां न जाहि तत फिजग सारा मूंवा॥ तीरथ ब्रत तप द
न्हू जिन का जन हूवा॥ जन सेवादास अग्रत फल हिलीया ह
रि जन मांहि॥ अलष नांव अंतरि कहै रोम रोम के मांहि॥२५॥
४४॥ इती सुमिरण को अंग संपूरण॥ अंग॥४॥ अथ विरह को अं
ग॥ विरहणि कै पति मिलन की राति द्यौंस उरस्यां सिघो छै
पांणी मीन ज्यूं यूं तलफत है॥ विना आय तलफत ही जी
व जाइ मन हरि कि दिरसण दीजौ॥ सब औगण करि माफ पी
व अपणी करि लीजौ॥ जन सेवादास अंतरि गलणि हाविरे
गा बुरा सि बुफाइ बिरहणि कै पति मिलन की राति द्यौंस उरस्वा
हि॥ पीव पुकारै बिरहणी राम सनेही आव मेरे लाल विलगो
व मैं अब कहा न तरसावा॥ अब कहा न तरसाव पीव दे ष
सुष पावै॥ अबलम बिन हूजी गौर तहो मन गाऊं न भावै॥ जन से
वादास अंतरि कियां हरि वो पदउ रिला॥ पीव पुकारै बिरहणी
राम सनेही आव॥२॥ पीव कै कारणि बिरहणी निस दिन रहै उदा
स मन न चित्या तिग ज्यूं रटै पीव पीव लाणी प्यास पीव पीव लागि
प्यास पीव विन प्यास न जाइ जै मेघा विग धर जल पावै तो फेरि
ता को विड दलाजे जन सेवादास हरि स्युं रिकरियु वो झका त
प्यास पीव के कारणि बिरहणी निस दिन रहै उदास॥३॥ वो हौ पा
णी माछली ज्यूं प्यास पपही ये प्राण यूं मेरा मन या वलुफत नि
स दिन तलफै जाणि निस दिन तलफै जाणि पीव मो हि प्यास
बुफावौ करणा निधि किरपाल जी व क्यूं इब तरसावौ मेरे लाल
वो हौ पाणी माछली ज्यूं प

ससूरकीगमननहीं।नहींजाइसतबसो।हितहांजाइसतबसु
हिधौसतलारजनीनांही।जहांफिलिमिलिजोतिप्रकासत
हांयेकमिलिहूंरामादी।जनसेवादासबिछुडेनहीलिहसु
पिहरिजनजाहि।जहांपवनप्रवेसनकरिसकैगीगाननबसु
धानाहि।धादसमीनैमनांवस्तकाजेओसबैधंधबाइ।यकना
मबिनाजनसेवलासतानिकटनहींजाइ।सतांनिकटनहींजाइ
नांवरतरहेउदासी।नांवबिनांसबदैबिजगमांहायासी।येडावि
रमनलीनेंरिसबदेहागुणबिसराइ।दसमीनैम्हनांवस्तकाजेपी
रसबैधंधबाइ५संजमसमतासाहिवतरिनांवनिरंतरिलेसलू
णमिलैजाइपांणीयांपांणीलूणमिलैहांपांणीलूणमिलैह
येकमिलिहूवादोइ।तनमनसुरतिसमेटिषेलइरूषेलैजन
कोईजनसेवादासदुबध्यामिटीपाईबसतअनेहासंजमसम
तासाहिवतरिनांवनिरंतरिलि६यामृगाकीमैंनिहैहूंजालषैनकू
इहंससबदतहांरामिरह्या।सबकायाकुसमलधोइ।सबकाया
कुसमलधोइअगमजलपैसिरन्हायारोमरोमअमृतअपात्रि
भवनपनिराया।जनसेवासुखबिलसतादिनदिनहोनहाइ
यामृगाकीसैनिहैहूंजालषैनकोइ७त्रिकुटीबाजैबेसिकरितह
अहनिसपलटैयौनपाछैमादिसाकूच्याडिकरिमनकैअगमकूंगे
नामनकैअगमकूंगौनसाचतहांजाइसमावै।नानैकेवलतकू
हरिसोहंसाचितलावै।जनसेवादासअसधिररहैनारिदिहै
मुषमोंनत्रिकुटीबाजैबेसिकरितहांअहनिसपलटैयौन८त्री
त्रिबेणीतटबैसिकरिकृनैबिरलाकोइ एवतहीन [illegible] लेमयु
सबकुसमलरालेधोइसबकुसमलरालेधोइअगमसुषघ
टमैपाया।मनलागाउनमानिभरमसबदूरिगवाया।जनसेवादास
निरंजनयाकरमकसरसबधोइ।त्रिबेणीतटबैसिकरिकूनै
बिरलाकोइ९अंतरिधुनियेकादसीलगीरहेनिसदिनतनम
नसुरतिसमेटिकरियेकरांमसनेह।जनियेकरांमसनेहमनि
सुनिमैसुरतिसमांणी।मईमनहदकीतहांघोरयोवसुगिषे
लेपांणी।जनसेवादासयेकलेवबिनऔरनचितवैमनिअंत
रधुनियेकादसीलगीरहेनिसदिन१०देहीकागुणछाडिदेहरि
देहरिगुणगाइ।मनगहिपवनसुरतिमिलिपैल्हेसाबआनंदमै
दिनजाइ।साबआनंदमैदिनजाइअगमसुषघटमैपाया।तास
बिरहैसमाइछाडिसबबोलीआवा।जनसेवादासआतुरमिटी
अगतिअराधिसमाइदेहीकागुणछाडिदेहरिदेहरिगुणगाइ११

रामासाप॥ त्रिवेणीतटिबैसिकरिमनतहांमठछाइ॥ आठपहरचौस
ठिघडीतहांध्यांनबोल्पाकछूगाइ॥ तहांअगबोल्पाकछुगाइगाजत्रिआगेग
या अरसपरसदीदारसंतताहुपिसमाया॥ जनसेवादासआवसुपन
याअवककहुकहाजाइ॥ त्रिवेणीतटिबैसिकरिमनतहांमठछाइ
द धुरैंनगारासुनिमैबाजेंधानहदतरवपांचअटकिमनपेरिकरिपङ्क
चैगकेईहारपङ्कचैगेकेईहारकहमसबकडैजहरा॥ सेवाजनमोपाइ
मिलैजेसतगुरपूरा॥ त्रिकुटीमांजेबैसिकरिझिलिमिलिदेषैनूरघु
रैंनगारासुनिमैबाजेंअनहदतरह॥ पूंगीनादनवगमनरमैत्रिकुटी
धारजहांझिलिमिलिझिलिमिलिहोतहैआरसपरसदीदार॥ आरस
परसदीदारपरंसुधपरमतिनांहीरमैसरमतामांहिआगमसुपजन
मिलसांहीजनसेवादाससुधमैरमैजगसुपतजिसबघार॥ पूंगीना
दनवंगमनरमैत्रिकुटीधार॥ जहांऊंचनीचनहीपापपुनिजाति
बरणकुलनांहि॥ निकुलनिरंजनदेवहैसंतबसेतामांहि॥ संतब
सेतामांहितहांतीनगुणतापनव्यापैवो निरगुणदेवनिजदेवसंत
निरभैकरिथापै॥ जनसेवादासजहांकालबांणलागेनहीं॥ तिहि
सुषिहांसिनकासहिजहांऊंचनीचनहीपापपुनिजातिबरणकुल
नांहि॥ तहांहैनगरीबावरीचतरनपावैजांण॥ तनमनसुरतिसमदि
रिकोईपङ्कचैगुणगलतांन॥ कोईपङ्कचैगुणगलतांननेदनेमरस
निवारो॥ विषैबासनांसकलबूझअगनिमैजारो॥ जनसेवासोसुधि
पङ्कचिसीजाकेसामिनयेमनिअपमांन॥ वाहैनगरीबावरीचतरन
पावैजांन॥ झालरितालमदंगबजतहैसहनाईअरुभेरी॥ घंटासु
रअरुबांसुरीसपधुनितहांहेरि॥ सपधुनितहांहेरिबहोरिधूंघ
रधमकारा॥ करनालिगिडगडीझीकबजैतुरीनगारा॥ जनसे
वादासअनहदमैबहौबाजासुणयेफेरि॥ झालरितालमृदंगब
जतहेसहनाईअरुभेरी॥ जहांसहजैसदाप्रकासहैतहांबाराम
सबसंता॥ जहांझिलिमिलिझिलिमिलिहोतहैनहारैमैनिजसं
ते॥ तहांरमैनिजसंतत्रीनगुणतापनव्यापैइबचलआपथान
तसंतनिरभैकरिथापै॥ जनसेवादासनिरभैनगरन्तरसदाबरयं

साधजितैपांचूंकीयेसमाधसुरति॥
हिन्दूइसहजिरूपमुरतिहूंसमावैजनसेवादास॥

तौवैं समफ़िसहू निघरि आया मनसा करिवारा। डोरी अगमतह
जाइ लागी। इन नैं वसत विचारा। इन नैं बसत विचार समफि क
रिउलटा ध्याया। आगैं बसत अथाह ध्यान धरि मोहि समाया। जन
सेवादास सतगुर मिल्या तब आगा सरम अंधारा। सातौं समफि सहू
जिघर आया मनसा का करि वारा॥२२॥ सुरति चढी असमान कूं
हो जी वकीया विसरांम॥ जहां दुष सुष काई व्यापै नहीं निरनै पद
विसरांम। निरनै पद विसरांम जहां ते उणतीन नन्या पै जे सेवग स
न मुष है आपा निरनै करि थापै। जन सेवादास जहां दुष नहीं आ
नंद आक्रांम सुरति चढी असमान कूं तहां जीवकीया विसरांम
॥२३॥ दसमी मन उलटा चढ्या सहज सुनि मैं न्हाइ। मन गा हू पाछूं प
लटि करि यू गो विंदके गुणगाइ। आगो विंदके गुण गाइ फूल तजी
मा चपिछो पणां। जाता मन कूं फेरि सहू जिघरि उलट आपां जेन
सेवादास आनंद भया ता सुष मैं रह्या समाइ॥ दसमी मन उलटा च
ढ्या सहज सुनि मैं न्हाइ॥२४॥ दसमी देव दया करी मस्तलि विराजे
आइ॥ मन नौं रात हां विलंबीया मगन भया रसषाइ॥ मगन भया र
सषाइ पंथ भ्रम विसराया। अंतरि अक्षानि तिराइ तहां मन सहू
जिल्लु गया। जन सेवादास निह चल भया चंचल गया विलाइ॥ दस
मी देव दया करी मस्तलि विराजे आइ॥२५॥ कनक कांमणी परहरै सोई
हरि का संत। सवद सनाह दसौं रत जहां बाणा सब संत जहां वा
रामा सब संत सेत सुष सागरि फूलै। मन नयो तहां जली नदेह
गुण हो सैं न फूलै। मन उलटा चल्या अकास कूं वहां डिन मैं मलि
जे ता कनक कांमणी परहरै सोई हरि का संत॥२६॥ आवै उसदे
सतैं जहां उतपति नांहीं नास। जहां पवन पाणी पावक नहीं धर
णि नहीं आकास। धाति नहीं आकास तीन गुण नहीं पसारा। द्यौ
स नहीं जहां रैंणि चंद नहीं सूर उजारा। सकल प्रकास सहू जिस
मिलू सेवा सहज निवासी। हंस आवे उसदे सतैं जहां उतपति नां
हीं नास॥२७॥ ७८॥ इती परचा को अंग संपूर्ण॥ अथ॥ हैरान को अं
ग॥ नां वो उपजै ना मरै नहीं आवै नहीं जाइ। न हीं मैं ता नहीं जाग
ता न ही भूषा न हीं धाइ। नहीं भूषा न ही धाइ जहां मैं तैं नहीं दे
ही आपा पर नहीं मन हां जहां ऐक न हूं जाकोई भूहैं तहां देष
वो उपजै ना पैं नहीं आवैं नहीं जाइ॥१॥
साध महां मन वायकी

साउधिकहिरे आत्मा व हो डि नधारै तन कनककामणी परहरै सो
ई हरि का जन ॥१७॥ कनककामणी परहरै साध कहीयै सोइ लोभ
मोह फंध सबल राग दोष रिपदोइ ॥ राग दोष रिपदोइ ग्यान का षा
डा गहि मारै उर अंतर मै हरि छबि धारि सब बिसारै ॥ जनसेवादास
निरमै नय सम नही आस कोइ ॥ कनककामणी परहरै साध कही
यै सोइ ॥१८॥ कनककामणी परहरै सोई हरि का दास तन मन सु
रति सबै टिका रे हरि चरणां माहि निवास ॥ हरि चरणां माहि निव
स राम रत ग्यान उदासी ॥ उरमाहि गुर कौ ग्यान काटि सब माया पा
सी ॥ जनसेवादास निरास जन दई कै नव आसा ॥ कनककामणी
परहरै सोई हरि का दास ॥१९॥ कनककामणी परहरै हरिजन हरि नि
ही दास राग द्वेष रिपु मद मत्सर कूं मारि बिडारै सोइ ॥ मारि बिडारै
सो परम सुष पद कूं पाव इत उत चित वा त्याडि येक सौ ल्या
ति ल्यौ लाई जनसेवादास गहि पाव कूं सब मन वासना षोइ
कनककामणी परहरै हरिजन हरि निहीदास ॥२०॥ कनककाम
णी परहरै सो कहीयै निज जन तैसा दैणां पाप पुनि तजि निरमल
कीया मन तजि निरमल कीया मन आडि गहा थिर लौ लागा म
न तहां स्यौ अघ धीक सरस बम नकी लागी ॥ जनसेवादास निरम
ल मन सा बहै डि नधारै तन कनककामणी परहरै सो कहीयै नि
ज जन ॥२१॥ अंतरदिष्टी साध सो रामसनेही चित मुष बकबाद
करै नही उरमाहि हरि बिना उरमाहि हरि बिन चितनि स्चल त
ब कूं पीया राम सा थ व्यायु दे सगुण सत्गोम्रत वा ॥ जनसे
वादास हि गुल मया अब मन कहूं न गिता ॥ अंतरदिष्टी साध
सो रामसनेही चित ॥२२॥ मुष बकबाद करै नही पाटन बोलै ज
ना हरि सुमिरण हरदे बसे उनमनि लगाय मना उनमनि ला
गा मन चित चरणां चैहटा या पाचूं उलटा फेरि सह जि सुष
मो हि समाया ॥ जनसेवादास सुष बिलसी यै पाया राम रत न
मुष बकबाद करै नही पाटन बोलै जन ॥२३॥ साधूजन सुमिरण
करै परहरि बिषै बिकार आपा पहर निरषत रहै दिल माही दी
दार ॥ दिल माही दीदार चंद कूं सुरति निहारै रहै टगटगी लार
चकोर तन सुधि बिसरावै ॥ जनसेवा राम न माहि मगन सुषत
जि सब छार ॥ साधूजन सुमिरण करै परहरि बिषै बिकार ॥२४॥ राम
रसाइण सब पासि जे रसना पाकैस्वाद अरध उरध मधि पवन कुं
भरि सहजि बजावै नाद ॥ सहजि बजावै नाद सुरति मन मध्य
निवासी दिल माही दीदार जोति घट माहि प्रकासी ॥ जनसेवा

।रंगरतहै।आनरंगरतनहि

१

।हरषसौ।भगतनथै।पानगहिमा।निबैडारी।जनसेवाद

मानैका।२।मैतजिनिरभैकेरहै।आतमबितउरियाऊ।पांचोंकूपर
मोधिकरियूंगोबिंदकेगुणगाऊ।३।यूंगोब्यंदकेगुणगाइ।नरभके
बादलफाटे।निरमलज्यूंआकासतिमरविसैसबन्हाव।ज
नसेवादासयदपरसतासासयागयाबिलाइ।मैतजिनिरभैकेर
हैआतमबितउरपाऊ।४।निरभैनिडरनिसंकजननिरलोभीनि
हकांम निरमोही।जितआतमां।बिधीयातजिनजिरामा।बिधीयात
जिनजिरामआनआमा।जिटकाबोसंजमसमतासादिसहजि
सुनिमांहिसमावै।जनसेवादासन्हबोणयदतहांमनका।बिस
रांमा।निरभैनिडरनिसंकजननिरलोभी।निहकांम।१।जनअलप
अहारीसिथरमनदगाधकोमन्नसनहांसंतोषसबूरीसतिबंद
नयेकनिराकारकूंमरेहांयेकनिराकारसुमिरहिओंआसानद
कांईमनपवनागहिफरिहैस्थिरतारत्योंलाऊ।जनसेवादा
सधनिसाधसो।जिनिसुफलकरीभरदेह।जनअलपअहारी।सिथ
मनदगाधकोमन्नसनहा।२।रहेनिसंकोरामजनसेकनमानेकै
हसुरतिबिसारैदेहगुणहारिनजिनिरभैहोइ।हरिभजिनिरभै
होइउनतिमनमनहासमाचैसुनिसिषरपरिबैसिअगमतह
तातीलावेजनसेवादासासोहैनिजजनकहायेसो।३।रहै
निसंकोरामजनसकनमानेकोई।४।जीवनमुकतिजनजगि
रमैतनसुधिबिसरायो।हकछिसमतबाधैनहीरहैअबगति
ल्योलायो।हरहैअबगतिल्योलायोहनिसंकाबिचरैजुगमांह
सकयातजूंपवनबासियूंआसाकछुनांह।जनसेवादासबां
धैनहीरहैआतमपऊचायो।१।जीवनमुकतिजनजुगिरमैतनसु
धबिसरायो।२।कनककामणीपरहरैसाधसुमिरैरामा।गृहक
पासीकाटिकैनयेजमुकतारांमा।नयेजमुकतारामकोमनलोभ
बिसराया।गुणांतहरतगोबिंदसुमरिता।मोहिसमाया।जनन
मोजनआदरैजनबा।जिनबांधैदाम।कनककामणीपरहरैसा
धसुमिरैरांम।१।कनककामणीपरहरैसोईहरिकाजनआस
मनरथधोइकै।निरमलकीयामन निरमलकीयामनसेहोइ

थासु धि हरि आत्मा वहो डिगन धारै तन कनक कामणी परहरै सो
ई हरि का जन॥१७॥ कनक कामणी परहरै सो कहीयै सोइ लोभ
मोह पंधा सबल राग दोष दोइ॥ राग दोष पदोइ पांन काम
ड ग संन्यारै उस्थातर मैं हरि ध्यैरि धारि सबै सिघारै॥ जनसेवादास
निरभै नया सैनहीं व्यापै॥१॥ कनक कामणी परहरै साध कही
यै सोइ॥१८॥ कनक कामणी परहरै सोई हरि का दास तन मन सु
रति सम टिका रे हरि चरणां मांहि निवास॥ हरि चरणां मांहि निव
सरा भरत आंन उदासी उरगा हि गुरु की पांन का हित सब माया पा
सी जनसेवादास निरास जन कै कुंन बांधै आसा कनक कामणी
परहरै सोई हरि का दास॥१९॥ कनक कामणी परहरै हरिजन हरि नि
ही दोइ राग द्वेष पियि मद मन कूं मारि बिडारै सोइ॥ मारि बिडारै
सो परम सुषि पकुला जाई इत वत चित वाणी डाडि ये का ख्वा
ति ल्यौ लाई॥ जनसेवादास गाहि पावक सब मनैं वासना षोइ
कनक कामणी परहरै हरिजन हरि न ही दोइ॥२०॥ कनक काम
णी परहरै सो कहीये निजजन नैंणा दैंणां पाप पुनि तजि निरमल
की या मन तजि निरमल कीया मन आडिग हा थिर ल्यौ लाणी म
न तहां स्यो जघीत कसर रस ब मन की लागी॥ जनसेवादास निरम
ल भया वहो डिगन धारै तन कनक कामणी परहरै सो कहीयै नि
जजन॥२१॥ अंतर दिष्टी लाय ल सो राम सनेही चित मुष वक बाद
करै नहीं उर मांही हरि बिना उर मांही हरि बिन चित नि हचल त
व कुबा न्यूं पी पारा पुसा ध व्या यूं देह गुण सहजै भूवा॥ जनसे
वादास त्रिगुण लै भया आव मन कहूं न जित॥ अंतर दिष्टी साध
सो राम सनेही चित॥२२॥ मुष बक बाद करै नहीं पाट न बोले ज
ना हरि सुमिरण हरि देव सें उन मनि लिण मना उन मनि ला
गा मन चित चरणां चै हटाया पांच पचीस टाक रि सहजि सुप
मो हि समाया॥ जनसेवादास सुष विलसी यै या पारां मरतन
मुष वक बाद करै नहीं पाट न बोले जन॥२३॥ साधू जन सुमिरण
करैं परहरि बिषै विकार आव पहर निरषत रहै दिल मांही दी
दार॥ दिल मांही दीदार भूं चंद लं सुरति निहारै रहै टगटगी लाइ
चकोर तन सुधि बिसरावै॥ जनसेवा रामरत न गाहि जग सू अत
नि सब छार॥ साधू जन सुमिरण करैं परहरि बिषै विकार॥२४॥ राम
रसाइण सब रसि नै रसना पावै स्वाद अरध उरध मधि पवन कूं
भरि सहजि बजावै नाद भरि सहजि बजावै नाद सुरति मन भया
निवासी दिल मांही दीदार जोति घट मांहि प्रकासी॥ जनसेवा

दासलैलीनमनजनकैरैनहीदककन्नायरामरसाइएासबासिरै
जरसनापावैस्वादा२५साधसदाहामिल्तिमेकरिमनयेडाइ
कगेरसुरतिगडीवृहस्पमेनिजारिनआवैओरनिजरिनस्व
वैओरवोरनिरनैजावैपाईमिलेपिसएासबडाइरैएसुषम
हिविराइजनसेवादासरतरामतजनकैनहाककफोर सा
धसदाहामिलिरमेकरिमनयेडाक्कगेर२६निरवैरीसबजीवे
युदासाकीजातिनाहाहोइकैनौवलेनहीबंधावैष्यातिनहीबं
धावैष्यातितवसैकसुषसहजेदरसोतीरथवरततपजोगआ
नकोगकदेनयरसेजनसेवापीवनिरषनरहेकहादिनकहारा
तिनिरवैरीसबजीवतैयुदासांकीजाति२७दासरामहाजानै
हूसरनांहाओरसुरगमृतपातालमैव्यापिरह्यासबगेरव्या
पिरह्यासबगेरओरहूसरनहीजानै।सबघाटिरंगीरंगरमता
यकरामपिछानैजनसेवाओरकोनिकरिकैनहीकफोर दा
सरामहाजानिहेहूसरनांहाओर२८दिलदरपणकरिलीजा
येतबदिलमांहादीदारापांचवासिकापाकसैपरहरिविषैविक
परहरिविषैविकारसुरतिमनसाचिसभावैघटघटपटष
लिसाधतहांदरसणपवैजनसेवादासआसातरकिफिरव
हैनरीजुगिधारक्रिनदरपणकरिलीजीयेतबदिलमांहादीद
२९दिलदरपणमांजतरहैतबदरसणदेषैनाकरमकटैसब
जीवकातबआत्मयावैचैनातबआत्मयावैचैनफैनसबमनके
भूलैसुषसागरसेसारत्पागिसुषसागरफूलैजनसेवाहरिसु
षरमिरहेकबकनमाडेफैनदिलदरपणमांजतरहैतबदरसण
देषैन३०कनककामणीपरहरैसोईहरिकादासतनमनसु
रतिसमेटिकैरहैचिरणांमांहिनिवासरहैचिरणांमांहिनिव
सयेकामक्रिआनउदासीथेकबिनासबओरदक्रिनमांहीप
सीजनसेवादासलैलीनमनकाटैमोहभ्रमपासाकनककाम
णीपरहरैसोईहरिकादास३१कनककामणीपरहरैसोइमत
सुजानातजिजंजालमुकतानसाजमकसकेनपानाजमक
रिसकैनपानआनआसासबत्पागीपूरणयेकविचारित्रातिजी
वकीसबभागीजनसेवासुमिरैयेकाओरनध्यावैज्ञानकन
ककामणीपरहरैसोईसतसुजान॥३२॥२२१॥साधकोअंग
संपूर्ण॥अंग॥८॥अथनिरकत्ताकोअंग॥धनसषजोगीध
लिसमिसंसारीसुषसलामांनिजगतकोसीपसमितवकैहेह
रिजनक्रलानवकेहैहरिजानकलचासैनादहेनकाइसुरग

रतपातालदेखिसुषदाफेलाशाजनसेवासिधसबरीरसमित
जीनावगहेनिजमूलधनतकजाणोधूलिसमिससारीसुपसे
ला॥४॥मठीमसाणोजहातहांरूषेबिरषेवास।साधपहरगोबि
रगेजगतेरहेउदास।जगतेरहेउदाससकलधनासबबिसरा
रे।गोबावेमसीमसनाईनहीमागिकरिभिख्याखावेसेवगपर
माधनताजनसेवलायेवगगयारहेबिसवास।मठीमसांणे
जहांतहांरूषेबिरषेवास॥२॥करवोकठारीतुंबडीजलपा
नरताषेजननिसादिनहरिसुमिरणकरेकारकीनिरमल
मनकीकीनिरमलमनइबकेहाथनकछुफाडलेहज
राजोरामसत्ताप्रगामेंआवेजनसेवजगदिसनफेरेनिरगुणमर
हेतनकरवोकठारीतुंबडीजलपातरराषेजनन॥३॥मनमो
जमहलजमेकरताचितकोहलासरबपरग्रहत्यागिकरिनिरजन
हरिसुमिरहा।निरजैसरिसुमरेहसोसासासबतोडेजग
सुषसुपनेनाणिछाडमनहरितगोड।हरिबिनदूजोनाहि
सबजननसेवाचितनधोरहा।जनमनसहजमेकरताचिंत
कोरहे॥४॥रामदयातेंपाईयेनिरगुणदसाबडभाग।कारिकरडी
गलिगदडीअंतरिप्रीतिअरुणराग।अंतरिप्रीतिअरुणरागपरम
सुषलागाजीवेतनमनपवनाफीहियगमकाम्यालापीवेजन
सेवानिजनामलीगहेकनककांमणीत्यागरामदयातेंपाईयेनि
रगुणदसबडभाग॥५॥निरगुणमतधारयारहेतेजनधनिनिर
नाहि।अपेअमरलोसीसपरिअनमरोसानोहि।अनमरो
सानोहिअयेसबतैअरुणराग।लोभमोहमैममतामोनिमाया
सबत्यागीसेवादासजननिरमलासदापरमरसबोहि।निरगु
णमतधारयारहेतेजनधनिनिरमाहि॥६॥निरगुणमतधारिह
रिनिजेसबमांनिबिडारैवांनाहारयावपलकविसरेनहरिसुम
रैसाधूज्ञानसुमिरेआगेनामसालनलबआसातोडेयेकन
जेनिरंजनदेवनगातसुषकबहूनलोडे।जनसेवादासअडे
नहीहिरदातेंहरिनामा।निरगुणमतधारिहरिनिजेसबमानिबि
डारेकाम॥७॥बिरकतमायामोहतेंपरमेस्वररतप्रीति।जगसुषदे
षबारसमियाहसंतंकिरीति।यासंतोकारीतिजीतिगुणनोल
संसारेकामक्रोधमदलोभमोहमैममताडारे।जनसेवादाससबेरा
गप्रीतिसबदेहाकागुणजीतिबिरकतमायामोहतेंपरमेस्व
ररतप्रीति॥८॥निरगुणमतधारिहरिनिजेसोजननसमाकिसयाण
जनसेवादाससमोधिबिनासोनरमूढअयांण।सोनरमूढअयाो

दासतैलीनमनजनकैरेनहीबकवादपुरामरसाइणसबासिरै
जेरसनापावैस्वादा२५साधसदाहामिलिमैकरिमनयंडा३
कगेरासुरतिगडाबूलसममेनिजानिआवैओरानिजरिनसा
वैओरवोरनिरनैजावयाइमिलेपिसणसबआइरैणासुषम
हिबिराईजनसेवादासरतरमितेजनकोनेहाककफोरसा
धसदाहामिलिमैकरिमनयंडाकगेर२६निरवैरीसबजीवतै
यादासांकीजातिनाहाहाइकैनावलेनहीबंधादेष्यातिनहीवे
धावेष्यातितधसेकसुषमहजेदरसोतीरथवरतनपजोगअ
नेअगकदेनयरसैजनसेवापीवनिरषनरहेकहादिनकहारा
तिनिरवैरीसबजीवतैयादासांकीजाति२७दासरामहीनाने
हूसरनाहाओरासुरगमृतपातालमैव्यापियासबगेरम
पियासबगेरओरहूसरनहजानैसबघाटरंगारंगरमता
एकरामपिछानेजनसेवाऐसेजानिकरिकेनहाकफोरदा
सरामहीजानिहैहूसरनाहाओर२८दिलदरपणकरिलीजो
येतबदिलमोहीदीदारापांचूंवासिकापाकसैयरहरिदिषेविक
परहारविषैविकारसुरतिमनसाविसभावैघटघटघटमें
निसाषतहोदरसणपावैजनसेवादासआतानरकिफिरिब
हैनहीजुगधार२९दिलदरपणकरिलाजीयेतबदिलमोहीदीद
रणदिलदरपणमोजतरहैतबदरसणदेषैनोकरमकटैसब
जीवकातबआत्मपावैचैनातबआत्मपावैचैनफैनसबमनके
मूलैसुषसागरसेलारलागिसुषसागरफूलैजनसेवाहरिसु
धरमिरहैकबजनमाडैफैनदिलदरपणमोजतरहैतबदरसण
देषैनै३०कनककामणीपरहरैसोईहरिकादासतनमनस
रतिसमेटिकरिहरिचरणामोहनिवासहरिचरणामोहनिव
सयेकासिआनउदासीयेकबिनासबओरदषिगमोहीप
सीजनसेवादासतैलीनमनकाटैमोहभ्रमपासाकनककाम
णीपरहरैसोईहरिकादास३१कनककामणीपरहरैसोईसत
सुजानातजिनिजालमुकतामयाजमकरसकैनपानाजमक
रसकैनपानआनआसासबत्यागीसूरणयेकविचारआतिज
वकीसबनागीजनसेवासुमिरैयेकोओरनध्यावैआनकन
ककामणीपरहरैसोईसतसुजान॥३२॥२२॥साधकोअंग
संपूर्ण॥अंग॥८॥अथविरकत्ताकोअंग॥धनसपजोगेधं

होत जो हि साध संगति न्मलमदासो धिकै जेकोइ
रमा विते होइ पलक भी धन धन वेत होइ। नी धन धन वे
इस दुष दुष विडारै सब के रहि कलपना हरि ये कत्र बा
उर धारै जन सेवादास ॥ आनंद स दा हू गाद पलन होइ स
धसंगति न्मलमदासो धिक रै जेकोइ या साधू या संसार मे
सीतल चंदा सब जीवां के पोष देपावै परम आनंद पावै प
न आनंद फू वता जी साच बतावै पोवै पिवावै प्रेम स ह जिन
यमांहि समावै जन सेवादास संगति साध की मिटि जाइ सब दु
षदेवा साधू या संसार मे जैसे सीतल चंद ॥ निरपष साधू सं
धि कौ संगति कीजे जाइ जन न्ययेश्रवणां ये क माहि वैदसी
राम बताइ वै देसी राम बताइ आंन आसा सब लागी न्यष
को चीन्है न सुरति अवगति सं लागी जन सेवा असमत जन
मिलै तो प्रण लाइ नित पष साधू साधि कारि संगति कीजे जाइ
१॥ अंग बहु घर हाथी ग जब है कोटि न साध की टका ऽऽ बा
तो साई मिलै सो ते पा ति न व मेका सो है का टि ब मेक मो नि
मता सब लागी ती न गुण रांकू उ लघि सुरति जाइ चौथे ला
गे जन सेवादास ऐ म ब्राछि दार वै न जो न ति जन देका अज
रहर हरि है रा जब है कोटि न साध की टका ॥ दो ॥ १३॥ ३
१॥ १०॥ अथ साध महमा कौ अंग ॥ साधू माई बाप है साधू न्याई
बंध साधू या संसार मे काटैं जम के फंध ॥ काटैं जम के फंध मुक्ति
के मार गिलावै करम भरम सब मेटि राम इमरत रस पावै जन
सेवा साधू जब मिलै तब हरि करै दुष दंद साधू माई बाप है सा
धू न्याई बंध ॥ साध मिलावै राम कूं साध करै नौ या स्या सब जीव
अविद्या मेटि कारि पलटि करै हरि जलि हरि पलटि करै हरि
जलि तारि वाल तन सब ही मों कौ करै निरविकार निरलो भ अघ
तन मन के धोवै जन सेवादास निस्तै करै फिर जुग मे न सा
रि साध मिलावै राम कूं साध करै नौ या रि ॥ २॥ अथ ३२ कबी
र का दोकं प षा तै दूर रां वोप षा डि तिर पष न या सब घट देषा
हूरा तब घट देषा न्यूर बिचे भेद कछु औ नै जांण्या सब रंग
रंगी रे मसो घट घट मांहि पिछाण्या जन सेवादास साचा रा
ह्या सो साच रह्या न्यर सूर ॥ अथ ३३ कबीर का दोकं प षा तै दूर
रह्या दो कं पष बिचि मंडार ह्या निरंतै दास कबीर ॥ हरि सुमि
रया सुमिरत रह्या ऐसा मति का धीर ॥ ऐसा मति का धीर सहज
सुधर स्या स मा ई तन पो ज्यां तत दरसी या परम निधि अंतरि

णतीनिरगुणमांहि॥ अनूधा चौथा कीन ते।गम्म समझि पंथलीया
न सधा।तीरथवरत्तत पस्या लगे केई लगे पषाण।निरगुणम
तथा रहै निजे सो जन समझि सवाण।एगुणतजि निरगुण
सो जे सो निरगुण मांहि समाइ॥ गुण पोषे निरगुण कहै सो
निरगुण कवेन पावै सो निरगुण कहै न पाइ२ छ जहां जाइ सम
वे जैसा बाहै बीज बहो डि फल तैसा पावै॥ जनसेवा आसेप
आवै सी आगे कहै न जाइ॥ गुण तजि निरगुण सो जे सो निरगु
णमांहि समाइ॥१०॥ साध कहि सांई जे सो जन पद्म चै पाइ॥ सो
धी विन जन सेवला रहै सी वेली वा रिरहै सी वेली वारि पारि को
ई पंक चै स राजा का आदि अंति मधि नांहि लहै कोई गुर गम
पूरा॥ ब्रह्मा बिसन महेस कै तजि ये क निरंजन धारि॥ साधी करि
सांई जे सो जन पङ्कचै पारि॥११॥ सुर सिध दस औतार ईस्वरी म
या जो णो॥ ब्रह्मा बिसन महेस ता हि के परे पिछांणो॥ ता हि के
परे पिछांणो गम्यान साधी करि ली जो रमिर ह्यो रमता राम सुम
रि सुध का जिको जो जन सेवा दास साचा सबद सो धि हिरदा मे
आंणो॥ सुर सिध दस औतार ईस्वरी माया नांणो॥१२॥१२३
॥अंग॥ण॥ अथ साध संगति को अंग॥ साध संगति की जैस
दी मुधि सीतल सबद उचार पीवे पिब वैरां मरस वैता रिव
रै नो या रि वैता रि करै नौ या र बी चि अटका वै नांहि हास्यां
कू बिसरां म सर कूं पंथि चलां ही॥ जन सेवा दा सज न जगत मे
है प्रीत मजांण॥ अथा र साध संगति की जै सदा मुधि सी तल स
बद उचार॥१॥ साध सुरसुरी अंग जीव की तपति मिटावै करम
थोच सब मेटि सां तसु धार सुपां वैसा तसु धार सपा इ बी वे
अमिल मिला दे दे ग्यान बिचार सल ज ल ल फे सुल फा वे स
वुजन मिल ता रा मजलमांहि पैसि रन्हां वे॥ साध सुरसुरी अं
गजीव की तपति मिटावै॥ साध मिलावै रांम कृ या मे सं से
नांहि॥ अतन मन आपो अरपि करि जे उन मां हि समां हि जे उ
नमां हि समां हि बी चि अंतर कछु नांही॥ यक मे क हो इ मिले
णनं पाणी मांही॥ जन सेवा साधु संगते संकल आघ धु पि
जो हि साध मिलावें रांम कृ यामें संसे नांहि॥२॥ जन सेवा सा
धु संगते पाप बिले हो इ जांहि॥ पूरब कि उघो त तैजै सै ति
म र न सां हि जे सै नि मस न सां ई है॥ अघ को ई रहण न पावे॥ मू
मल चरम ल ही कां टि सुध करि प ल हा दिपावे॥ आप दिपावैं॥
पल जन मुषम मु करके मांहि॥ जन सेवा साधु संग ते पाप बिले

परपूरणबोधताह्किोईतापनलागैमुष्किरहै सदाविचारअग
निगोरकहाजलआगोजलसेवासीतलसाधसोजिनिकाया
आतमसोधानूंसरसैवन्न है ग्यानपुरस्यूं आनिनउपगैकाध
र ग्यानीगुणनरपूरहैग्यानीगुणसबलागि ३ तिमयपूणहै
रदैधस्यादेहगुणगायेजनलागिदेहगुणगयेजलागिजागिज
गयातिगरिगोपामनयड्डीसमटाइस्तुरातिवैनाकेपायाजन
सेवादासधनिसाधसोगुरसबदोरहैलागिग्यानीगुणनरपूरहै
ग्यानीगुणसबलागि॥२॥२६४॥अंग॥१२॥अथसाचकोअं
ग॥साचबतायासतगुरकीयानरमसबअहूरिसबघटयेके
रामहैमोरह्यासकलभरपूरिसोरह्यासकलभरपूरिभेदसत
गुरतैपाया॥तासुमिलागापलबाडिसबरोगीवाया॥जनसे
वादाससाचालह्याऔरतजीफकफूरिसाचबतायासतगुर
कीयानरमसबहूरि॥नाथनिरंजनयेकहेसबहूजाधंधपा
र साचेसाहिबसेस्यैसबकूगमनमनिवारासबकूवानरमनि
वारसाचलैहिरदैधारेलोनमोहङ्कारमपतकूवतजिसाचस
मारैजनसेवादासअनलैजडीकाटरोगाबिकार॥नाथनिरंज
नयेकहैसबहूजाधंधअपार२सकलसूरोमाणिरामरसता
सूमिलागजीवअबमनअनंतनचालिनकेअंतरिपायाम
ए आंतरिबापायाइमेदसतगुरजबदीया॥का मनरमसब
आडिनोवानिर्मैरसपीया॥जनसेवादासउरिसुमलयाअम
यापसबपीवासकलतरोमाणिरामरसतासुजिलागाजी
व॥३॥१६७॥अंग॥१३॥अथपालपिछाणिकोअंग॥ग्यान
मांपलेप्रगटैतिमरनिसानईहूरितबहूसरकूमासेनही
येकरामसकलभरपूरियेकरामसकलभरपूरऔरहूजीम
समायाहूजीहूजीनिवारियेकहिरदैवहरायागनसेवाद
ससतगुरमिल्याअबमनलगेनकूरिग्यानमांणकेप्रगटै
तिमरनिसानईहूरि येकाबिनाहूगानहीहूजीमायलाणि
ग्यान...ना...तिदेतबनईहजिवाहांणितबनईहूगि
...हो ... तगुर ... येकपूरणब्रह्मबिचारिसत
...निगर ... बध्यामिटीलीयाप्रेक
...पिछा ... २॥२५॥लालीमें
...हदीया
स-

नकाया॥ जन सेवा निरभै संत जन सिर परि अलप अभेव औ
र और मति फिरै इक निराकार कू सेवइ॥२॥ येकू दसा येकादसी जन
लगे रहै हरि नांइ॥ हरि हि बिन व बकु न तु लिकारी आन दिसा नही
जाइ॥ आन दसा नही जाइ चित मे बित येक रामा परापरै याति
देव साध कू मरै नहि कामा। जन सेवा हरि जन है सगति चु नि
नु कता हल पांहि येक दसा येकादसी जन नलगेर है हरि नाइ॥३॥
येको बरत निबाहीयै दूजा सत नही कांम। दूजा सोई हरि जन है येक
सनेही राम येक सनेही राम चित दसु मरण की जै। मन पवन नाम
मिरा पि पेम का प्याला पीजै। जन सेवा दास अब सुष भया मन
पाया बिसरांम येको बरत निबाहीयै दूजा संत नही कामधा॥ येका
दसी अषंड सो षंडी न कबकु न होइ॥ आन रिध निलणा है पर
मजा पानि ति होइ परमजा पानि ति होइ साध कोई बिरला जा
णै मन पवन नांगा हि पांच पकडि येकै घरि आणै। जन सेवा येका
दसी रहै औरन जाणै को इ॥ येकादसी अषंड सो षंडित कबकु
न होइ॥५॥ येकादसी अनेग है जहां तु बध्या तहां दोइ॥ दूब ध्या हरि
निवारी येनू व्यापक येको जोइ॥ तू व्यापक येको जोइ उलटि सो
धी करि मांही॥ परपूरण भगवंत देषि सब दुष जांही॥ जन सेवा
दास ओसा बरत समाफि गहै जन कोइ॥ येकादसी अनेग है जहां तु
बध्यात हां दोइ॥६॥ येकदसा येकादसी ता सुष मे रह्या समाइ॥ म
नफि रि मन ह्या आइ मिल्या अब मन अनत न जाइ॥ अब मन अ
नत न जाइ आन सब कू अनरथ जागो हू नी हरि निवारि नाइ साहिब
कै लागे॥ जन सेवा येक येकादसी दूरि हरि हरि देगा इ॥ येक दसा
येकादसी ता सुष मे रह्या समाइ॥७॥ अंतरि ले उलटाइ करि मन
मनसा कू घेरि॥ पव सतां की साषि सुणि पांचू परबल फेरि॥ पांचू
परबल फेरि नाव तस डोरी साधो॥ सतगुर कै परसा दि उलटि मन
कू तसा बांधो॥ जन सेवा साई संग रहै व नि सदिन अंतरि हेरि॥
अंतर ले उलटाइ करि मन मनसा कू घेरि॥८॥ बारासि इ सि बिधि की
जीयै जूं बहो डि न धरीयै देह पांचू पसर निवारि करि मन कू उल
टा लेह मन कू उलटा लेह वी नतां जिती नरदतायै सबै मनोरथ
जीति परम सुष अंतरि लहीयै॥ जन सेवा सुरति सबे टिकी रीनां
वा निरता लेह बारासि इसि बिधि की जीयै जूं बहोडि न धरीयै दे
ह॥९॥ सिल ये मदाल मे मोर जू दूजा दरसे नाहि॥ यू सब घट मे रा
इया राम रमै सब माहि॥ राम रमै सब मांहि औ दूजा नही कोई कथ
उया तन बाहर्यो मव्यापक है सो ही याद जेगम जात गु जेन

नरहरूनाथि।जपूलालीमहदीपालमैजपूकाहमैआगि।ऊनहां
किसतरीतहांसे धिलेऊमरकाधूजा॥३॥यूसुरतिमिलेपरब्रह्म
सूंगुणतजिसबसुषदा॥२॥गुणतजिसबसुषका॥३॥जहांआसे
तहांजांही।आसेआसणहोइभावजाकेजोसाम्पनमांही।जन
सेवादासआसेमिलेअैसेपीवकूपा॥३॥जहांकिसतरीतहांसोधि
लेऊमरकाधूंज॥४॥वरबोलेकरहीलयेसबदसुणेनहीकांनी
बैदरोगीकूदेषिकरिमईरोगकोजांणिमईरोगकाजांणिसुरति
यूंयामलगावैमनपवनागाहिफेरिहेरिअंतरिल्योलावैजन
सेवादासपीवपाईयातनमनयेकेवांनिकरबोलेवरहीलयै
सबदसुणेनहीकांनि॥वासुषहीकूंनिरषतांयोसुषजाइहि
ला॥३॥जपूंदरपणमेमुषनिरषतांलोहनिजरिनहीआइलो
हनिजरिनहीआइयूंअपमेआपलषीजैगुणयेहीमनवा
णिसबलतामांहिहूहीजैजनसेवादासपीवनिरषतांयूंनूली
गयेजनका॥३॥वासुषहीकूनिरषतांयोसुषजाइहिला॥३॥तां
तितबूरैबाजिहीरागतांतिकेमांहि।अनमईयासोजांनिहैइजा
नांनेनांहिहूजांनेनांहिरागसूरतिनहीकाईयूंसूरतिअ
पअलषमेदीन्यारानहीभाईजनसेवादासपीवसोलहैमनके
अमलबजांहितांतितबूरैबाजिहीरागतांतिकेमांहि॥७॥किस
तरीकूंसोधिलेजपूंऊमरकाधूंमा॥प्राणतज्योगीतिनांतजासू
वाहोइमालूमाभूवाहोइमालिमयूंब्रह्ममैसुरतिलगावोसु
रतितहांहीजाकीकमा॥३॥सीवसमावोजनसेवादासपीवपर
सीयेकारितनमनसुधदेसमकिसतरीकूंसोधिलेज्यूंऊमरका
धूंम॥८॥देषोऊमरधूमका॥किसतरीतनेसाकमलतनदेष्योकेत
कूंकतमिलीनिजदेहावातामिलातजिदेहसतसारिकुंयाह
अग्निप्रीतिउरमांहिओरहूजीकछुनांही।जनसेवाहरि
जनहरिमिल्नांवनिसेनलेहदेयोऊमरधूमका॥किसत
रीतने॥९॥१५८॥अ १४॥अथपतिबरताकोअंग॥ ना
गिनिराकारनिरलेपक्षानआसासबत्यागेभजतांनिरगुण
ब्रह्मअरमसाराहीजागेअरमसाराहीजागेयेकजोपतिब्रत्य
वोहूजीदिसानजाइहजितजियेकसम्पारोजनसेवाजणीसु
दरीआनकेपलैनलागे।भजिनिरंजनिरलेपक्षानआसास
बत्यागे॥ओरवोरमातिपिरैयेकनिराकारकसेवाआकारस
बैहाबिनसिलेतनिरमेभजिनिजदतअरमैजजिनिजद

गमूलनाम॥ प्रसिरांजपूंकंन्योकेवारीगडायामनाविलमा
हि जोबलंगपीवनेरौनन्ही॥तबलंगषेलाषिलांहि तबल
षेलाषिनांहि पीवसपत्योनांही॥तबमंईपीवपरच्यानिकु
नै निकस्निजांहीजनसेवापरयोसाचसोतबजुवामनिन
मांहिंनपेमांके चारीगडायामनाबिलमायेमांहि मूरति
करतागिणेसोकरताहेकोई औताकरताबिविबाजीरचीसे
कलाहेसबगेरासोकरताहेसबगेरसमकिनाकेनिरतांहि
नं उलटागोतामांहिविकारवाघटमांही॥जनसेवाकूकोरि
पाईयैम्मनअसमैपहुंवो मूरतिहीकरतागिणेमोकरतासेको
आरंभ॥पाहणपाणीपूजता यूं हरिपावैनांहि॥नांजिनासिको
हाथबिचिरमेसरमनामांहि रमेसरमलामांहि जगकामिटि
हैफेराअ्रमकीटाटीतोडि निकटिहीअंतरिनेरा जनसेवा
रुपिमूरतिजगअ्रटयूंचोरासीमैजोहिपाहणपाणीपूजतायूंह
रिपावैनांहिजाघटमैसोधीनहीसोपांहणपीवैधाइजोर
दिषावैवचासरेतअंतरकेपटषोलनअंतकेपटषोअलखष
टिअंतरितैहरिअंतरबिनासबलपैहरिकितदूढैरे जन
सेवादासजगभूलीयौसबद्यालैजनमाबिगोइ॥जाघटमैसोधी
नहीसोपांहणपीवैधोइ॥पथरपूजेपषमीसमकिनहीमन
मांहि आपहीडूबैदेषतांसोलेनारेकांहिसोलेतारैकांहेनांहि
सेयांगतिकेसोपांहणकोकरतारबूडिजलमेलजैसीजनसे
वादासबहीबूडीयाइसपमानकीबांतपथरपूजेपषमसम
किनहीमनमांहि॥साचासबदसुणांवतांमातिमानेकोईरीस
पाहणहीकैपूजणैकहोकिसपायोजगदीसकहोकहिपा
यौजगदीसग्योनमोधीकरिलीजे॥बोलैसबघटिरामताहि
नपाणीदाजै॥जनसेवादासतनदेहरोमांहिबिरानेईससाच
सबदसुणांवतांमातिमाने कोईरीसजा॥तनदेवलकूपूजाये
मांहिबिराजेरामासुषबोलैमोजनकरैसबपावैविसराम सब
विसरांमताहिसेवाकरिलीजे॥सबसिरजोहेनिरवैरनाव
टमलजलपीजो॥जनसेवादासतबसुषलहैसमफिकरेइ
कांमातनदेवलकूपूजायैमांहिबिराजेरामण॥पांहणहीकै
नरोसध्यातिनयानकोइजबलगपाषूवासिनहीतबलग
तफिनहोइतबलगसुलाषिनहोइसाधसबकहिसमका
दयाहैसबटेरिअलहिअंतरिनहाअवै॥जनसेवासुषकेवे
अतिरहेनरलोइपांहणहीकैपूजाधीसदगतिनयानकोइ

नैबोदी न

रिवाजनसेवातनमनजीति॥ऐसोपतिब्
तराषीयेऽमूंअनलहककीनीति१ऽमूंहेतमहरिहितसिदीया
हिबसनमुषदे षडारेनीवृनिह
दौऔणरेजावूनिहचौऔ।

सोचेतवै
हरिबिनदूजीऔना॥मूंहेतमहरिहितसिरदीयासूंतनम
नसौपेप्राण॥२॥२६८॥औ॥२५॥अथसहजकोअंग॥
सहजैसहजैजोहिगागुयंझाकानाम॥अलखिअलषविचारीयै
करिरातिद्यौसअभ्यासकरिरातिद्यौसअभ्यासअगमतहांग
मकरिलीजै॥सबदकसोटीलाइपेमकाप्यालापीजै॥जनसेवा
दाससुषतबलहैहोइअमरपुरबासा॥सबससजैसहजै
जाहिगुणयेझाकानाम॥१॥२६९॥अंग॥२६॥सबदकोअंग
सबदैसबसुषपाईयैसबदैहोइप्रकास॥सबदअंधेरौसब
देरैघटमैहोइउजास॥घटमैहोइउजासमसबदसबदुष
भाषैवोकरैपीरनीरनिरवारसकलअघसबदांषेवो॥जन
सेवादाससुषपाईयेसबहोइदुषकानास॥सबदेसबसुष
पाईयेसबदैहोइप्रकास॥१॥येकसबदबोषदकरैयेकघाव
करिजाइ॥येकसबदसुमनमिलैयेकसबदपाटिजाइ॥येक
सबदपरिजाइहृधमैधूंनपावैयेकसबदा॥बिषरूपयेकमानू
अमृतपावै॥जनसेवागाठिषुलैसबदिअरसबदागाठिघुलि
जाइ॥येकसबदबोषदकरैयेकघावकरिजाइ॥१॥२७२॥अंग
२७॥अथनिरमविधूंसकोअंग॥किरतमकरतानांमजोग्पं
नीसाचैराति॥वोअबिनासीबिनसेनहीकिरतमदीसैजाति॥कि
रतमदीसेजातिपतिसाकीयोबणाईकहूंनूपातिकीयेकना
थिपातिबिननाजनषरीजनसेवा॥किरतमाबिनसीयासभिज
लैकिसैदोइपाति॥किरतमकरतानांमजैगपानीसाचैराति॥
किरतमकरताकरिथप्पौजगमूलासबभूमिकेवलकरता
आडिकरिलागिरहेसबुकामि॥लागिरहेसबकामिग्पानसोध्यौ
घटनांहीकूवाकूकहेसाचसाचकूमूलामांही॥जनसेवापं
णापीतरौजगतमूलकैराहिधामि॥किरतमकरताकरिथप्पौज

तंसोपारायनमूलिमांहैदेवदयाकेमोहि।पातीमाहीदेवहैसो
तैजोएयेनाहि।सोतैजाएपोनाहितोत्रितेपापलगायो।मुखन
हीबोलैदेवताहैतैंकहारिकायो।पषदहडावारसबसोतोआ
पणांमाहि।तंसोपारायनमूलिमांहैदेवदयाकेमोहि।एयोसन
न्याग्रहै देहरो माही चेतनदेवामुषिबोलैसोजनकेताकी
जेसेवाताकीजेसेवाओरपूजासबदाची।येकब्यापकरमत
रामत्नषैसोईसेवासाची।जनसेवादासविचारकरिलषियेसु
लक्षनवयो।जनआत्मदेदहरोमाहीचेतनदेव॥२०॥ऊब
णाईकाठकीपारसकरिथापोपषांण॥चितामणिकीकंक
रांकीयाफटकपषाणकामांणि॥कीयाफटकपषाणका
मांणिनिमरतासुनहीजांहि॥नावधत्याकहाहोइफूवतोसाथ
नथ्याहीजनसेवाकरतावारियप्योसोतोरनहीश्रयान॥ऊ
ऊबणाईकाठकीपारसकरियसोपषाण॥२१॥नांवधलोले
गाइकोथणिसोतोसरवैनांहि॥तरजकायोपषाणकोपाणि
तालतिमरनजाहि।पाणितासतिमानजाहिजगतसबसोसे
बाधौ।सबबाहीभ्रमैगमसाचसोनिकसिलाधौ।जनसेवा
नासानानाबिधिसैकरताक्रमांहि॥नांवधत्योलेगाइकोथ
णिसोतोसरवैनांहि॥२२॥जिनिसकलपसारारच्यायाकरताकूही
येसोध्यासोकांतासबघाटिमेलषैसबिरलाकोइ॥लषेसबिर
लाकोइसबैबाजीन्यायारातिपाणीहजिथारयेलानही
पाया।जनसेवादासत्रमआप्रंगपादिहिबारिजोइ॥जिनसक
लपसारारच्यायाकरताकहीयेसोई॥२३॥जिनिसकलपसारारच्
याधरअंबरबिसतार॥सोईसमातापीक्तैसमथ्यासिरजनहा
रसमृथ्यासिरजनहारसकलकारिसबतैन्यारा॥रचिरहेयआ
कासस्कलकूकरैउजाला।जनसेवादासप्रुमितह्या॥रविर
हैनिरारजिनिसकलपसारारच्यायाधरअंबरबिसतार॥२४॥
नन्ययेकाग्रखंडहैब्रा[illegible]सबवोरायूसकलबियापीराम
हैसरनांहीओरहूसरनाहीओरबिहिवासैसोमायाहरि
निरगुणनिरबधसहसंगासबमोहिसमाया।जनसेवापरवासि
नापडैनामारीनाकोर॥नन्ययेकाग्रखंडहैब्यापिरह्यासबगेर॥
२५॥सुरगुणमायाब्रह्मकीउपजिषपैफिरिहोइ।आदिअंतिमधि
येकहैपरमेस्वरलहीदोइ।परमेस्वरनहीदोइयेकसबमांहि
अकाली॥जलबरतणपूरिहेदसबमांहिनिवासी।जनसेवा
दासनगुणाब्रह्मगुणतातिलियेनकोइ॥सुरगुणमायाब्रह्मकी

गतमरमिसबमूलथा॥ बिसरेसिरजनहार॥ करियोहरण
॥करतारासबपूजेकेकिरतारग्पोनसे
संतिरिजांह॥ जनसेवा
गदकोऊएनेकाचहिमेयपा॥ जागतमरमसबमूल
॥सरमनहार॥१॥ समकेक्यूनहीबावरेहिरदेग्यांनदी
नहिसिरात्मामारितिहिकिसिर॥ कि
त्मामारितोकहोमूरतिकिसितारे माहाबाहरियेकनांवोमारे
नांमारेजनसेवादाससोधीबिनाबुलमहोरोपापिसमकेक्यूं
नहीबावरेहिरदेग्यांनबिचारि॥१२॥ सूपारसकीयापषांणकानां
सकनकनथा॥१॥ सूंककरचिंतामणिकारिषत्यासोदलदरकबू
नजाइ सोदलदरकबुनजाइकूवराचेसबलोई॥ सूंयेककरी
काठकीगाइपाणिदूधताहिनेकनहाई॥ जनसेवादासजगमू
लीयेकरताकीयेबणा॥ सूपारसकीयुपषांणकातातकन
कनथा॥२॥ स्यामेवाकूरचादरकोएसोदेषोग्यांनबिचारि॥ जि
नजलबसतरदेतहैसोगकरासिरजनहार॥ सोगकरासिरजन
हारषोसिकैफिरिपहरावैकरताकेसबहाथिमारिकेफेरिजी
वावे॥ सेवादाससंसारसबभूलेनरममेका॥ स्यामेवाकरच
रकोएसोदेषोग्यानबिचारि॥ धणाकरकैसबहाथिहैकरन
मतेसाईहोइ॥ मांवेम्यारिमुनाकेमांवेराषेदोइ॥ मांवेराषेदोइ
जोषगकरकीनाईबोकोसधीकेरमोहिजडिपालिदिषाई॥
जनसेवादासकरताकोमेटिनसकेवतु॥ धणाकरकैसबहाथिहै
करणमतेसाईहोइ॥४॥ पताकीकरतातिहिलगेयोकरतानांही
कोरिनेननिदेषेनांसुनेवाबोलेनाहीमूरति॥ बोलेनाहीमूर
सोताहितोलियारितगोतीयासेवाजासीबाद्विजनमक्यूंबिरथा
तारौ॥ म्यानिजडचेतनकोयेसबलासोकरताबिसरडारिता
कोकरतातिहिलगेयेकरतानांहीकूशिकदेवोजडचेतनक
येकरताकहीयेसो॥५॥ सबदसुणेसबस्रवणानेनांलीसबजे
शनैनोंका॥ सबजोइगंधनासकारिमानौकडेकोसलतुवा
रसजिह्वापाईचांनोजिनिहाथपावकोयेसबलातलणचल
णासबहोइदेषोजडचेतनकीयेकरताकहीयेसो॥६॥ तूंप
तांतोडेदेवकूसोदेवनजाणैमूढ॥ सेवासातिसमफेनहीपकडी
मनकीरूढ॥ पकडीमनकीरूढग्यांनसोधीनहीमांही॥ रमिरह्यो
रमतारामनेदनाकोनहीपाही॥ जनसेवादाससमक्यांबिनो
॥७॥ नांपेमरवार

यांतोनाहरकाङ्गाशपोहणपारसबथितचोतैलोहाकेपल
थाशतौलोहाकेचनथाइकागगोसवैहधाकागदकीचठि
नावसमदजालतिरेजनहधाजनसेवाफटैकपवाणकामोए
धरचाकलिसाभावफलेजपाणायतोनाहरकाङ्गपाइ३पप
पथीजगबंदीयाभूलासिजनहारामैवडमैवडकाहेसाधी
नहमलिगारसोधीनहालिगारजगतसदभूलजाहीआठो
पहरदैनरमसाचसोदासैनांहीजनसेवावासनिरपषभूलप
बंधेसंसारपषापषजगबंधीयाभूलासिजनहार३मायाब
दलजगमेंहरिचंदादीसैनांहिआपअंधारेआपकेभूलादि
दिसनाहिभूलादिहुदिसिजाहिजगतकरैसाचनवरतेवेदवल
वेमरजीहैकेईजाइलोमरेघपरासेजनसेवाजगनाहारिफिरेपि
वदसैघटमांहिमायाबादलजगमैंहरिचंदादीसैनांहि४ऊ
परिसपघपतमामांहीवैमारैनारैनांहिहरिदेष्यानाबिरकि
रिमातिरथवाषाहिमातिरषोटापूराहिसबदसुणिसाचालेष
चठिकागदकीनावसमदजलतिरैयौनकोईसांचासासहिब
सुमरीयैजगचौरासिकुपजांहिऊपरिसिरपतमामांहीवैम
रतारैनांहि५देवलऊपरिसिरपहेप्रतिमादेवलमांहियामैम
रैतारैकोणऐसोबुनीयांजांणेनांहिइनीयाजोणैनांहिपाविमू
रतिकेबाधाकरैहोरघणस्याकीणकालच्यारिचुणिसकेमे
धाजनसेवासांइविनजग्यांयबुनीयांदोजिगजांहिदेवल
ऊपरिसिरपरप्रतिमादेवलमांहि६काङ्नाहिसताइयेसा
हिबसबमैंदेषमूरतिपातीयेकरहामापकआपअलेषआप
वाआपअलेषजगतसबहूजादेषेजबलगइबभामाहिवं
दगीपडैनलेषैरमतारामपिछाणीयेकरूंगिरहाकहानेष
काहूनाहिसताइयेसाहिबसबमैंदेष७लषचौरासीदेहरा
मांहीचेतनदेवकोईदिलनदुषाइयेजमूंसतगुरुमांनैसेवाजमु
सतिमांनैसेवभेदकोईविरलापावैसोजाणीपडैनगीवजी
वजाइसावसमभयेजनसेवासातोसेईयैताजिमनकूगटेव
लषचौरासीदेहरामांहीचेतनदेव८लषअसीम्हासिमस
तिहैईसबमांहिषुदाइतवदरगाहिलहसीदादिकानेंते
नाहिसताईकाहूकूनाहिसंताईपीवाबिनसकेनतनीजि
माकेबासिवतेजीवदादिकदेलहसोषूनाजनसेवाअलष
पिछाणीयेजीवकीबाडिबुराईलषअसीम्हाहिमसीतिदेषि
सबमांहिषुदाइ९पूररासनाबिधरामहैआनगलबसतसो

नसेवादासवानासवैताकारंगअनेकानाहरिमैरैनजनमलैसदा
अषडतयेक२७बाजीसबाजीरमैकारिकरिनानारूपाकऊ हा
कऊल्यकेहैकऊंसाहकऊरुऊनपकऊसाहकऊनूपधूप
बिरषाअतिनारीकऊरोगाकऊरोगाकऊरोगीकऊबैदक
ऊपुरषाकऊनारीजनसेवादासकहैगिरसरवेकऊबापीक
हैकूपबानीसबाजीरमैकारिकरिनानारूपर१अवगतिकीबा
जीरचीलषैसाबिरलाकोइ२बाजीसबाजीरमैनावरूपकादिा
नावरूपकादि२मेदकअबिरलैयापानावरूपसबबाजि
येकअपिरमनलायाजनसेवादासपुरषनानिचेतननाहि
दा३अवगतिकीबाजीरचीलषैसाबिरलाकोइ५येकोआप
कऊलहैइसरनाहीआनमनकीदुबध्यामेटिकीरतासरि
बकूजानातासाहिबकूजानग्यानसोचीकामोहीहरिनिरबं
धहैनिजदेवबधमेआवैनाहीजनसेवादासयेकसुमरिये
सबबाहरिकैसाागडफनयकोआपकऊलहैइसरनाही
ग्यान२णायाहणहीकैपूजाणेकहौबिरहपायोकरतारसाधूसे
बोहामजोनूपावोमोषद्वारानपावैमोषद्वारासीसकाबा
फउतारोकूगमिषसलागिजनमकूबिरथाहारोजनसेवा
सोधीकीनीयेहरदेग्यानबिराषाहाणकीकैपूजारोकहोकहै
पायोकरतार२१साचासबदसुणावतामतिकोईऊवोषीजि
पाहणहीकैपूजाणेयेमनकेकनमीजायोमनकवेनमाजिराकि
केन्यावनदेवैसधीबिनसबजगनलिपाहणसनसेवाजनसे
वापाहणप्रतमानोषजेनारीजिसाचासबदसुणावतामाति
कोईऊवोषीजि२१साचासबदसुणावतामतिकोईमानैदोष
निरगुणाबसनग्पाबिनाजीवनपावैमोषजीवनपावैमोषबा
नतोइलनगाईजीवअलहूधावारयारकूपऊतैजाईजनसे
वायेकैबाहिरालहैनसुषसंतोषसाचासबदसुणावतामाति
कोमानैदोष२२साचासबदसुणावताकोईमडकिमाजिजि
नजाइदेवन्कपारसपैहेकहौकोणकूषा२ कहौकोणकू
बाइतेमराविकिसतातैमाईकूरणहाकरतारसमारिसचासु
षदाईजनसेवाकागदनाबचाकिकहौकैसेसमदातिरा२३साचास
बदसुणावताकोईमडकिमाजिजिनजाइ२४मावफलेनबाणी

थाइ। थावर जंगम जगतगुर सब मै येक समान। सब कै मां
ही देषीये दूसर नांही आंन। दूसर नांही आंन रांम रमता सब
मांही। औसा करो बिचार तन का तिमर मिटांही। जन सेवा
दास पुनीति को आपा पर सम गिना। थावर जंगम जगतगुर स
ब मै येक समांन॥ थावर जंगम आतमां सब मै येक समांन।
सब के मांही देषीये पूरण है भगवान। पूरण है भगवान भा
न कहू नहीं जाये से। समदिष्टी समरूप सकल मै आप देषे। ज
न सेवादास तब जो णीये पाया नांन पियांन। थावर जंगम आ
तमा सब मै येक समांन॥ जिनि हरि औसा जांनीयां ता कू कछू
न बाध। सब सम दिषे आतमां या तो बात अगाध। या तो बात अ
गाध मृतन का कंचन सारि माटी नां कू कोई सूं बैर नां कोई स्याई ज
न सेवादास लछिन इहै सो कहीये निज साध। जिनि हरि औ
सा जांनीयां ता कू कछू न बाध॥ यूं ब्यापक ये क अषंड है दू
सर नांही कोइ। जे बतो द्विनी के नास ही तं अंतर के मल षोइ
तं अंतर के मल षोइ तब आप मै आप प्रकासे। ज्यूं मुष दीसे
नां हि मुकर के मैये ज्ञाते। जन सेवादास बूघा लिसाईया मू त
रमांणि गणपोइ। यूं ब्यापक ये क अषंड है दूसर नांही कोइ॥
ज्यूं सब बैंजन भूषण कनक के कंचन येक अभिनि। ज्यूं पट तंत
बुदान ही तंत येक गनि। तंत येक जनि कुसूत का भिनि भि
नां ही। यूं बिस्व मे व्यापक रांम रांम मै बिस्व समांही। जन सेव
दास पूरण ब्रह्म ज्यूं नभ अंबर आवि छिनि। ज्यूं सब भूषन
कनक के कंचन येक अभिनि॥ ज्यूं दरपण मै आनास है पांणी
मै प्रति ब्यंब। औसे आतम रांम है ज्यूं आकास बंब। ज्यूं आकास
बंद अनंत घट मांहि प्रकासे। घट बिनस्यां नहीं घटै यूं देह
बिनस्यां नहीं नासै। जन सेवादास यूं धप लोप मै यूं सब घांटि
परमानंद। ज्यूं दरपण मै आनास है पांणी मै प्रतिबंब॥ ज्यूं
कंवल रहै जल कै बिषै न्यारा कबहूं न होइ। ज्यूं रवि रत हित प्री
ति है जल सूं नांही कोइ। जल सूं नांही कोइ ब हो दिदीसे जल
मांही यूं सब तै बडा बिचार देषनै हा मिटि जांही। जन सेवा
दास सत हरि जि न्यारा लांगरे है सब मनै बासनां षोइ। ज्यूं कंवल
रहै जल के बिषै न्यारा कबहूं न होइ॥ जब लग नैन अपना सि
का तु कर सनां अरका नातै पाणि नांही ह्वारहै न बबिरति भई
बिलैमांन तब बिराति भई बिलैमांन गलाटि मन नहरि रसरातौ
मबनयौगपानगलतान थक्यो चौरासि जातो। जन सेवादास

शुनाहिंड्यो छिश्रानैंलग्पाजीवअबुधीजोशजीवअबुधीजोश
थामनाश्रपणीथापी॥कृतघनीमयेजीवनोहिंदोजिगमेंपापी
जनसेवादयतारीमहेश्रौरनहूजाकोशपूरणसवविधिरामदे
श्रनंजलवसवरसोशधऋसवेमनोरथपूरवेसम्रथासिज
नहारताहिंछाडिमुगधनरबोधेमाथेनारानाथेमाथेनाशू
धारचौरासीवहसी॥जनममरणदुषलाजीवनसौपीडास
हसी॥जनसेवादासपतिछाडिकजीवमेयेसवष्वारासवेम
नोरथपूरवेसम्रथसिरजनहार॥४॥करमांकेवसिविरचिहेन
जैकेरिउपाश॥करमांकेवसिविह्नहेसंकटसहेंजश्राइसंक
टसहेजश्राइकरमवसिसंकरडोलेद्वारथषपरषालिल
षकहिसंकरवोलेजनसेवानिगुणताणिकरियेकनिगुण
तेंल्योलाश॥करमांकेवसिविरचिहेनाजैकेरिउपाश॥५॥का
लामूंठातासकाजोहरितजिध्यावैश्रानापहेलापोवेदेह
कोनीचमांहिश्रायानानीवाजोहिमयानमेरिनसोतन
धारिपावेमहाजाइजहाबुभजीवकूंजीवसंतावोसमथ
साईछिनमउपा॥जनसेवारहैनमानाकालामूंठातासकाजो
हरितजिध्यावैश्रानं॥६॥जगतसवैहाकारिथपोपांहणको
जगदीसवतलायोवोलेनहापोटोविसवावीसपोटेवि
सवावीसरीसकाईकेयानमेनो॥अवसेककूंहलीवेविसव
दनहींसुणेजकानो॥आपिनदेवजनसेवलाश्रापवणायो
ईसजगतसवेहाकारिथपोपाहणकोजगदीस॥७॥२१
॥निरमविधसकोश्रगसरण॥श्रंग॥१८॥श्रथविचार
कोश्रंग॥ब्रह्मनिरंतररयोरहेज्योंश्रगनिकाष्टकेमांहिईस्व
रूपावकप्रगटेजीवदीचिराकदियांहि॥जीवदीयचिराकदि
यांहिकुनगझकेतेक्रवाज्ञईछपाधिकीहांणितवजीवईस्व
रनहींजूवा॥जनसेवादासविचारतैंईतनावमिटिजांहि॥ब्रह्म
निरंतररह्यूंरहेज्यूंश्रगनिकाष्टकेमांहि॥१॥पांचप्रांणदसकर
णहैमनबुधिकहीरेदोश्रसतेंरेततकोतेनहीत्संसुधचेतन
सो॥ब्रह्मसुधचेतनसोइश्रेजडतेरैसंगचेतेदिहइंद्रीमनबुधिश्रो
रकहीरेहेंजेतेतेतोनिरगुणब्रह्मत्रश्रंसयूंश्रामरणपोनिजो
॥पांचप्रांणदसकरणहैमनबुधिकहीरेदोश्र॥शात्तपतिपा
लननासकरेनकूरतासुजागतसुपनसुषोपती॥श्रनि

॥ससोपाः९
॥विश्वतेजस्पश्रसप्राज्ञजीवयनमांहिनिदा

[illegible] थाइनां [illegible] गुणवंडीसमि[illegible]
[illegible] लादासपीव [illegible] ब्रवस[illegible]
[illegible] कारि [illegible] ह्रसाथूं [illegible] ही
[illegible] हद [illegible] [illegible]
[illegible] हीरीवठा [illegible] कीलिसाथ[illegible]
[illegible] गीबतमूल [illegible] हरदेवपारी [illegible]
[illegible] श्रमे [illegible] हदघस[illegible]
[illegible] नीयक [illegible] हरी [illegible]
[illegible] हरसीकांत [illegible] कीर्ति [illegible]
[illegible] महाकिनि [illegible] जाति [illegible]
[illegible] गवलरादास [illegible]
[illegible] हरी [illegible]

[illegible] थाननई [illegible]
[illegible] वाकलेसु
[illegible] हारसाथ
[illegible] आनंद [illegible]
[illegible]
[illegible] विदयापी [illegible]
[illegible]
[illegible] गवलस
[illegible]
[illegible] हीलपढ्
[illegible] किरतागदादावीद [illegible]
[illegible] ज्ञान [illegible] तल्यांढ्या
[illegible]
[illegible] लहीतपढ्
[illegible]
[illegible]
[illegible] गवलरादास
[illegible] हरीलपढ्यू [illegible]
[illegible] सवहीपालयं [illegible]
[illegible]
[illegible] हरदेव [illegible]
[illegible] गवलरादास [illegible] हरीपाल [illegible]

मध्ये

मईनिरमूर
गौनहीज्यूंमन्यांअंकूरांज्यूंमूंन्यांअंकूरयूंदे
मईदाहरत्याओटातामाहीजन
सेवादासयूंदेहकेनदीसेहेपणिकूराम्पोनमयेतैबासतादि
गधमईनिरमूरर॥२॥पापपुनिदोइबीजहेंकसअगानिमेजारि
मनसावाचाकरमनांलीजैरांमसमरिलीजैरांमसेनस्थिान
आसासबत्यागीकरमकजोडोछाडियेबाअबछातिल्पैल्लागे
जनसेवादासनिरमैनयानिरमैबसतबिचारि।पापपुनिदोइ
बीजहेकैसअगानिमेजारि॥३॥रांमरांमसबकोकहेसाचातांम
सतीकहणांमांहिबिचारदेखापडैनांहरती।छ्रापडैनांहिर
तीबिसरीधांमधनसुतपरवारामनतहांमयोअडिगलोकस
बदासेतिणसारा।जनसेवादासआटकेनहीजीवजाइमिला
पतिरांमरांमसबकोकहेसाचारांमसत॥४॥बिचारकीयेमन
सुधमयामयोअनआत्मकोत्यागा।जनसेवादासगुरुग्पानगहि
यूंमेटीतनस्तरागा।यूंमेटीतनस्तरागअगमसुपघटमेपाया
तासुघिरह्यासमाइछाडितनमायातरछायासुरतिलगीजा
इसाचसुअबप्रगटेपूरणभाग।बिचारकीयेमनसुधमयान
योअनआत्मकोत्याग॥५॥ग्पानसुन्यांमनतचिनईमनहीमन
मांहिसमायोपापीपुनीअहंनीवनदन्त्रमहरिगमायोअ
दन्त्रमहरिगमायोफिरिकीटभ्रूंगीहोईकरमनयेसबदाह
अनलईधणदहसोईजनसेवादासअबसुपनयाग्पानक
रिमरमगमायोग्पानसुन्यांमनतचिनईमनहीमनमांहिस
मायो॥६॥सदासनेहीरांमसेओरसगादिनच्यारिओरसग
मिलिबीछडेदेख्यागपांनबिचारिदेख्यागपानबिचारिजोनस
तिफूल्पालोइसबस्वारथकेमीतजीवकाहितनकोईज
नसेवातनधननारिसुतसबलागिरहेउरवारसदासनेहीरा
महेओरसगादिनच्यारि॥७॥२२५॥बिचारकौ
रण॥अं१५॥अथजीवितमृतकौअंग॥

।।नन

नहं
आकासका

[illegible] लब्धिगहिवु
[illegible] विचारतहांतेलइ
[illegible] तहांतेलव [illegible]
[illegible] कहीया संगति
[illegible] बाइ [illegible]
[illegible] गानसवा [illegible]
[illegible] रतहातेसव [illegible]
[illegible] आचार [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] परलघ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] गानसवा [illegible]
[illegible] हीधार [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] गीगानसवा [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

।चूंदडीघरमै
।सुचिकैसैहोइकहोसुचि
॥१॥

रेचोंटीमयेनमार॥

सरैहरिपंथचलैनसूधा॥जनसेवादासहरिनांवबिनकहौकै
सैहोइआधार॥पठिबूडेमोसिंधमैकुलकाधरि
अपठसबहैरहेहिरदेसमफिनमूतिहरिचितावैबहलकसो
कुलध्यानपूरासोकुलरह्यानरफरिआंबिमायातंआगि
॥पठिबेदपुराण॥रतसाहिबकीनजी॥जनसेवाकरमदिवो
वहीकरता॥बिसरेहरि॥पठेआपठसबहोइरहेहिरदेसमफिन
मूरि॥पठेअपठसबहोइरहेमूलनसमफेसाच हरिकेचन
ग्रठेनिकुटिहीमंदगहेजाइकाचा॥मंदगहैजाइकाचसाच
सोसुरातिनलागेभरममफिजाइडुरैकवकेपहरैजागेजनसे
वादासउरकेघडीमूकनईपरवाच पठेआपठसबहोइरहे
मूलनसमफेसाच॥तुमजनेऊकोजोरकीसाधनीदोमति
नाशी॥तुमकीसतसंसकारनयैडुजिहैसुइघरमाहिलुगाई॥
हैसुइघरमांहिलुगाईतुमग्यानसोधाकादियो भोरिवरण
कुलकमकलुपांहलैनहीलेया॥जनसेवासंतसिरामणी
तुमपूजिकरिल्पोटमलाई॥तुमजनेऊकेजोरकिसाधनीदो
मतिनाई॥१॥सकलसिरोमणिसंतहैतुमदेषोग्यानबिचारि॥
भाविरणकुलकी॥तजिजनहरिनिजिउनरया॥जनहरि
भजिउतरयापारगातिकइबिरलैगाणी॥येकनयातगिदोइस
बदबोलसहनाणी॥जनसेवाजगजाणेनहीसबभूलेभरम
मंभरि सकलसिरोमणिसंतहेतुमदेषोग्यानबिचारि॥कहो
तौयेकविचारतहातैसबचलिआया॥अबगलैजनेऊघालि

॥कचुनोहो॥१फरि

६

कायातुमांनेदक

भिजरिनआंवहारांमसरीषबिवारांमसरीषा।वितचितमायासूंला
गा।साचसबूरीह्याडोलमायाकीलागा।जनसेवाम्नमाया
मिल्यातनकोरिदेह्यातितजवलगचेराजगतकोचाहितणोहू
चिता॥२१॥झूटीनहीगुलांमगतिनांवकहायाजनाल्यागाचीरोचो
करीहैमायासेतीमनाहैमायासेतीमनसुपसुपनेकूंनांहीचि
तमरपैचकूंवाररे दिनमटकतजांहीजनसेवाब्यांजवदोक
रेइसविधिजाइधनाझूटीनहीगुलांमगतिनांवकहायाजन
२२तंतजिमायाकीदासतीहोइरहोरांमगुलांमहोजनभोजन
रांमदेरूकनिहचैसूमेरोरोरांमायेकनिहचैसूपीरांमआश्या
साटिकारो।तनमनपवनांफेरिहेरिअंतरिल्योलायो॥जनसे
वादासनिहचौगहोजूसूधोसवकांमा२३तजिमायाकोदास
तीहोइरहोरांमगुलांम२४जगतगुलांमीमाइकानहीपिताक
कोइदेषपनाविचारिकैरिसठपरबसिबेमहो२५सबमावति
बेमहोइतीनसंगीससारा।चोथेमिलिरहसंतबाडिजगकास
बनारा।सेवाजननिसतैनयाकायाकूंसमलधोइजगतगुलां
मीमाइकानहीपिताकोकोइ२६धनीरधबरततपस्यानुलमा
याकहीयेसाइजोगजिगअरदांनपुनिजुमिलागिरहेसबको
इजमिलागिरहेसबकोइ२७अबगतिकीगतिनहीजांणीमाथ
कहैसबटीमायामूरतिअरपांणी॥जनसेवासोजनजांणिहै
जाकेचकूपानकेराइ२८तीरथबूतनपस्यानुलमायाकहीये
साइ२९षडूनीयांकेचकचूंधिहैलागिरहेसबआंनि।साचकूंवक
रिमोनिहैफूंगसाचवाब्याणि।फूगसाचकरिजांनिदेषिसुनि
पातिअगा।साचेसकेनाहिफूगकेतिनतररेगा।जनसेवाज
केपीलीयोपालेसबहीजांनि।षडुनीयांकेचकचूंधिहैलागिर
हैसबआंनि२६मोडआसामोकूंभजेमोहीसरतपीतीनकरम
दोस्वासन्नांपंचविषेगुणजीतिपंचविषेगुणजीतिउलटि
अंतरमैआसावैउलककूंसुलकाइगणमसोसुगमबतावे।
जनसेवादासधनिसंतजनसोमिलईसातिनीति।मोडासामोकूं
भजेमोहीतरतपीति३०रेमोडाकहीयेवाल्हिकसोलंपटलोभ
कोमावेविषीयातेमनफेरिकाटहोजिनसूपीरांमहाजिनसु
पीरेरामआनआसासबत्यागिपांचूंकीयेसमाधिसुरतिसाहि
बसुलागि।चोरजुवारीमसकराजनसेवाकहीयेतेइस्यामारे

॥५४

करामोडाकहीयेतेहादरगहिदादिन

कै बिचारत हां कै अंतर नांही॥ अवनी जल ही मैं दरहै सब ही
गगन मांही॥ रहै सब ही गगन मांही तहां स्थ्रक कीया॥ ३॥ हारा म
ये पांच तत का पिंड येको सिरजनहारा॥ जनसेवा दुख पाइ
रि करि जरै दो जिग दुष सब जांही॥ रहां तौ येको बिचारत हां
कै अंतर नांही॥ ४॥ पचा रिवाण करतां रैते गैला न्यारा
हैं। उत्पति ब्रह्म दसरी सब नर नृप कौ भति कौरह भरम
रिकोस्य बरौले सब आया॥ ऊच नीच ऊके रंग जो नृप घर मांहि
समाया॥ जनसेवा सांसो हरि करि आत्म येको जो हा आरि
बरण दरतां कै रैतौ गैला न्यारा॥ ५॥ धदा॥ ३५॥ जनमी वक दोकी
रा है येक ज्योति नर पूरी का घा कै गुण दोष कार जीव जीव त
हरि॥ जीव जीव ता हरि सम घट मांहि उपाया॥ पहरि जनने उ
बिप्र सूनाति कार तुरक कहाया॥ जनसेवा साचा बिसारि कारि
जगस्व लाण करि अवनी चक दोकी रा है येक जोति नर पूरि
॥ ७॥ ५३॥ राग कको अंगल पूरण॥ ३॥ २४॥ अथ चिंता
वणी [illegible]॥ देह विकारां संनरी उपजी सो मारि जाइ मां
ये चर चोरा गजे आति देख बेहर लीगा॥ आनि देख पेहरलि
जाइ मांम भजि लीजे गा है दे ही मांगी पोरा ब्रह्माथ तौ कत गिरा
गा॥ जनसेवा दास थिरना रहै आरति तहां गाइ देह बि
कारां संनरी उपजी सो मारि जाइ॥ १॥ रे क्यू भूलो प्राणीया
सुतनारी करि नेह तेरा संगी कोन ही सब बिछडे आतिये है स
ब बिछडे आतिये हूता है तें नेह लगाया॥ रामसनेही मूलि
जालि घटा पूंवाया॥ जनसेवादास तनातैं नही फिरिमानिष
जनम न रदेहा॥ तू क्यू भूलो प्राणीया सुत नारी करि नेह॥ २॥
भूलो नर हो सोबुरी रते हिक कूसम का इ॥ मन सा वाचा
कारमना तू लैरहा रि गुण गाइ॥ तू लैरहा रि गुण गाइ दोष
लूंग न विचारी॥ हरि बिन तेरा कोण न्हाहिमांति करै प्यारी॥
जनसेवा दास बिसरन लीये पै मिलेसब ही आइ भूला
नर हो सी बुरी रते है कूसम का इ॥ ३॥ येस बैक्ट कथिर तु
ही तैं त्यां तें बांध्यो नेहा चलतां बेडी पगि पडी नाहि कहू
मम गृह नाहि कहै मम गृह देषि मति मंदी षटी पी फिरि
पछिता इ काल फाले जब चोटी॥ जनसेवा दास हरि नाम गन
रयूं हीषो वै देह येस नैवट कथिर हीतैं त्यां तू बंध्यो नेह
॥ ४॥ जीनि स्यानिर धमु बिरा पी यो सो क्यू भूलो प्राणवानि
तासुत सुषकारि ह्यौ सो सुष दुख है जां [illegible]॥ सो सुषदुषही

जनसेवादासताजीवक्क्वाहोकहाहैगोरवकहोकहाहैगोरजा
गिरधेनहालोईकूडकपटमनबां॥समकिजातनिहाचे
ईफूवेपरपंचिलकारोसमर्पेनाहीमोरडनीयाहदिल
देमिलेसाधातेउसिंग्रोरा२७॥आपैचढिकचामयामांनिधरे।
सिरटोपहरिसुमिर॥मुषबीसरतबनईकालकुकोपातव
मईकालकाकोपवोटकहोको॥रोहटामांनिवडीजूंबांनि
कालकायगढछूटेजनसेवादासहांमिनाकिनईजीवास
श्रजोप आपैचढिकैचामयमांनिधरो सिरटोप२ नाहीइव
सिनातुरकबासिहदिोकपचासेहरी॥आपैमिटेबलतजे
नवदरसेअलपहजुरिमब दरसेअलपहजूरिहरिकिस
ढूंढेनाईपांचूंउलटाफेरिहूं॥दिलमांहिषुदाईजनसेवाद
सेनृपघकुलसोरह्यामकलनपूरिनाहीइलसिनातुरक
बासिहदिोकपषातेहरी॥२८॥ईलगाणा॥नसतुरकलगपी
रोहवास्फरिमटकेनरमतासोघटदरी दिंभारांहसोघटरीभैम
रोहमूलिमरमेक्यूंनाईहै दिलमांहीदीदारजेउलटिमनमांहि
समाई जनसेवादासबहोप्राणीयांहसिमूलनीराहहीहूल।
गा॥मनसंतुरकलगयीराह४०॥दिलमांहीदीदारचुसतदम
कूलिलजेयांचूंउलटाफेरियेमकाप्यालायेजोपेमकाप्याल
पीजेदिलसाबातिकसांईसउमेसाहिबयुकदिपितलेस
लाई॥जनसेवापावेमितकूंजेसबहांक्रमदजो॥दिलमां
हीदीदारचुसतदमकूकालिजे४१हाडमासकोपींजरोऊप
रिमढोयोचांम॥आधिवदीतीमांजलांसमकिनसुमराराम
समकिनसुमरोरामदेहदिनदहघायां॥मतारामसम
पउलटिताहिकबडूंनजोयां॥जनसेवादासजमजलीया
कसैकरिकरिसुधरैकांम॥हाडमासकोपींजरोऊपरिमढीयो
चांम४२॥कायाकेरुपाप्यानहत्या॥गिरसुमिरोरामा॥मनकरि
मलनिरवासनांकाजेउतिमकांमा॥कांजेउतिमकामधांम
नवनाशवांजोमिलिमिलिनरजमारदेषिनरपैसिद्धिम।
गो॥जनसेवादाससोधीविनोभूलाग्रोदूजोमा॥कायाकेगुण
आनेहेत्यागिरसुमिरोराम४३वैसातोयेकविचारतहकैब
मेदन्हीोरा॥पांचततकापिंडरहेसबसीइकगोरारहस्बहो
स्कवेरा॥निकसिकैनमितपाया॥ऊंचनीचकुलकूरमलागिस।

ाकशुभे ॥

केबिचारतहांकछुअंतरनांहीं॥कबनीयनहींभेदरहेसबही
गुनमांहीं।रहेसबहीगुनमांहींतहांसधुकाकीयाआहारास
चपांचततकापिंडयेकोसिरजनहारा।जनसेवादुबधाइ
रकोरिजूदेोजिगदुषसबजांहीं।तहांतोयेकोबिचारतहां
कछुअंतरनांहीं।१५।म्हारिवरणकरताकरैतैगेलाम्हारा
हेई।उतपतिम्रदसरीसबनरमिथकोमतिवोइभरम
कोस्यबहोतेसबआयुणाकबनीबइकठेरजोनिमधमांहिं
समाय।जनसेवासांसोहरिकृतिआलमयेकोगोइम्हारि
वरणकरताकरैतौगेलाम्हाराहोइ४६।कबनीबकहोकों
णहैयेकजोतिनरपूरिकायाकेगुणदोषिकरिजीवुजीवहु
हरि।जीवजीवातेंहरिनरमधघटमांहिउपाया।पहरिजनउ
बिप्रसूनलिकरिलुककहाया।जनसेवामाचाबिसारिकरि
जगसबलणकरिकबनीयकहोकोणहैयेकजोतिनरपूरि
४७।१८३।वाणिककोअंगसंपूरण।२१।अथचिता
वणीकोअंग [illegible]।देहबिकारांतेनरीउपजीसोमरिजाइमां
येयरचोअरगजेम्रतिदेहबेहरहेगा।आअंतिदेहयेहरलि
जाइरांमभजिलीजेमाइदेहीमोगपोसमहापूतलेकताजिगा
ही।जनसेवादासपिरनारहेन्हआरतिसंहांगाइदेहबि
कारांतेनरीउपजीसोमारिजाइ।१। कबभूलोप्राणीया
सुतनारीकरिनेहतेरासंगीकोनहीसबबिछडेअतियेह स
बबिछडेअतियेहतातहितेनेहलगाया।रामसनेहाभूलि
जांणिघाटापूंषाया।जनसेवदासलसैनहींफिरिमानिष
जनमनरदेहा।तूकुभूलोप्राणीयासुतनारीकरिनेह२।
भूलोनरहोसीबुरीरतीहकिकसमकाइमनसावाचा
करमलांतूलेरहरिगुणगाइ।तूलेरहरिगुणगाइदावि
तूंग्यांनविचारी।हरिबिनतेराकोणम्हांलिमतिकरैपुकारी
जनसेवादासबिसरनलीयेपिमिलेसबेहीआइ भूला
नरहोसीबुरीरतीहकिकसमकाइ२।येसबेक्टकअपिरत
हीतेत्यांतेबांध्योनेहाचलतांबेडीपगिपडीताहिकेह
ममग्रहाताहिकहैममग्रहदोषिमतिमदीघटापीओफिरि
पछितासिकालफालेजबचोटी।जनसेवादासहरिनांमगांन
रयूंहीषोवेदेहायेसनेबटाऊपिलनहीतेत्यांतेबंध्योनेह
४।जीनिरगुणनिरधमुघेराघीयोसोकभूलोप्राणबानि
तासुतसुषकारिह्योसोसुषदुषहीजांणिसोसुषदुषही

जांणि॥३॥तिकोईतेरानाहि॥दोकरणहारकरतारमूलिमरम्यो
जुगमांहि॥जनसेवादासरुक्मतजेमंदबुधिविषैलुभाणा॥जि
निआगनिउरधमुषिराषीयोसोक्यूंभूलोप्राणि॥४॥आयो
योसंसारमेंकरिसाहिबसूबेंणि॥आवबनितासुतधनमदि
रम्यौसोतामेलैरानदेणि॥सोतामेलैणनेदेणिरामसुमरिसे
गीसुषदाईया॥आवअपलपदिनआपरदेषिलुपनोसोजाणि॥
जनसेवादासजीवचेतिरेतूंषोलिग्यानकेनैन॥हे॥आयोथो
संसारमेंकरिसाहिबसूबेंणदा॥मनरामनजो॥विषीयातनैयो
जनमअमोलिकजांणि॥मनजनाविनमानईकहाकीयोतन
पाइ॥कहाकीयोतनपाइसाचहरिसुमिरणनहीलागा॥विष
मदपीकेआघाइग्यानवांदणनहीनागा॥जनसेवादासहरिसु
षअगममनतहारहोत्सोवा॥अनरामनजो॥विषीयातजैयो
जनमअमोलिकजाणि॥उ॥कर्महारहोगेवावरेसबहरिबिनफूठी॥३॥
साहरिबिनकूजीआसहैसोसबैकालकीपासि॥सोसबैकालकी
पासमोहसिलताबहुनारी॥सबतामैबहुजजोहिहारनावबि
ननाहिअवारी॥जनसेवादासजगउलफायोकछुहिरदैनही
प्रकासतुमकहा॥होगेबावरेसबहरिबिनफूठीआस॥रे॥
ग्सुषकेकारणितैकीयाबहोबिसताराम्हूंदारधनसंपदासूत
कुटंबपरवारासूतकुटंबपरवारमानिरहेबहोअहंकारासो
संगीनाहीकोइसीसबांधेबहोभाराजनसेवादासकुलमल
गबिसरेसिरजनहाररूवासुषकेकारणितैकीयाबहोबिस
ताराण॥रेमूलिपडोमतिबावरेयोऔसरमलोअनूपदाराग्सु
तधनसंपदासबलागिपडेअधकूपसबलागिपडेअधकूप
नारिसुतनेहबंधायाकौडीचेअचेतहाथिहिरानहीआया॥जन
सेवादासहरिनजनबिनकूगीसबहीचूप॥रेमूलिपडोमति
बावरेयोऔसरमलोअनूप॥ण॥जनसेवादाससंसारकाबं
डोआचरजकुफाणसुणसहिनातजोसुतनारीहूगुकातु
तनारीमेंगुफसाचकासबदनमानेबेदसाधकेनचनलेघि
बातसबमनकीगंनो॥जीवपडेभ्रमकूपमैहेफका
सुफजनसेवाद॥
दासससंसारकादेष्या॥दबुदष्यालोसाधसगातिसुषआ॥५

नसेवादाससंसारकोदेष्यानरकुंदष्यालारथसबडुनीयांमू
लीजातहैबडाहैवनामोहिंपानसुरोकबष्यलेहमनस
मकांकतोहिरेमनसमझकांकतोहिमलिविषेकाफलपावै
नारिसुतबनितासेनेहलागिनरकांकूजावै।जनसेवादास
तेप्राणीयांजागतहीरहैसोइसबडुनीयांमूलीजातहैबड
हचेनामोहि।२देषतनरकूवेपडेग्यानदीपलेहाथिमयो
अबुधीकोमबातीरनपंचनकेसाथि।इनुपंचनकेसाथिय
रमततपायानाही।बिस्वाबिडाहोहाथिमोहमेंदअंतर
मांही।जनसेवादाससबवीअडे।हरिसगकेरैनसाथदेष
तेनरकूवेपडेग्यानदीपलेहाथि।३।थानसूबाजीगरबासिबा
दरोयूंनारीबासिनरहोइ।जेसेनचावैनाचिहैदेषोमांकूर
गसोइदेषोअचिरजसोइसुधिबुधिसबहीपोशिहरिहू
मूलरससत्याहिजहरषीवेनालोभीजनसेवादासचेतेनहीगई
औसतादाधानसूबाजीगरबासिबादरोयूंनारीबासिनरहो।४।
नरखिपडेलोबापडालचेतिसकैतोचेतिसुतबनितासे
बासिनयोमुहिपडेलीरतामाहिपडेलीरतज्याबमुषतेनहे
आवेसंगीसिजनरहाविसारिकाइघाटकेमावैजनसेवाद
सऔसरहैहकहतपुकारयोनेतरेनरखिपडेलोबापडा।त
चेतिसकैतोचेतादरजावहतीक्याकरेजागिरजगपतिजोइ
येककनवडारकोमणीकालडाढ्येदोइकालडाढ्येदोइ
हमफिजीवचेतिअयाणोचलणोआजिककालिहीतो
हूकारणपयोरणो।जनसेवादासनिजसुरतिमनलागमतहो
येपाइरजीवसताक्याकरेजागिरजगपतिजोइ।५।ग्यानसु
णतसबदिनगयासमझिनकीयोबिचार।जातिबरणकुल
मारसुतलीयांबहैसिरभारलीयांबहैसिरभारताहिलगा
नीवजीवायामरणांकीसोजगहरहमूतकारियांजाफिरिचे
तसीनरमताफिरैजनसेवादासदुषलारग्यानसुनतसब
दिनगयासमझिनकीयोबिचार।६।वेदसाधसबहीकहैटेरि
पुकारयांतोहिकैतोसेवासाधकीकैतोनिजनिरनेहोइकै
होनिजनिरनेहोइआनकोईनहीउपाइगिरहीसधूसबमा
।सुमरेरामराईजनसेवादासयेजोरियेतोदषलनपडेकै
शबदसाधसबहीकहैटेरिपुकारयांतोहि।७।सबदकहैसो
नांकैरेमनवाहैसोकीनांजनसेवादाससंसारसबयज्ञाके
प्राधीनायज्ञाकेआधीनविषेऊनरघनहीछूटोकालगो

जो तिनसौं तिको ईते ता नां हीं ॥ बौ करणहार करता ॥ मूलि न रम्यो
जुग मांहि ॥ जन सेवादास स्मृतल जे मंद बुधि बिषे लुभाणा जी
नि अग नि उरध मुषि राषीयो सो क्यूं मूलो प्राणा ॥ ८ ॥ आयो
यो संसार में करि साहिब तत बेण ॥ भाव बनिता सुत धन मंदि
र म्यो सोता मेले लानदेण ॥ सोता मेले णनदेण राम सुमरिसे
गी सुषदाइया ॥ आव पल पल छिन घरि दे षितु पनो से जाइ
जन सेवा यसल जीव चेति रे तू बोलि ग्यान कै नैना ॥ १० ॥ आयो थो
संसार में करि साहिब सबेण ॥ हा मन राम भजो विषीया तजो ये
जनम अमोलिक जो शाय मन जनावि नमानई कहा कीयो तन
पाइ ॥ कहा कीयो तन पाइ साच हरि सुमिरण नही लागा ॥ विष
मद पीकै आघा अपान बोढण नही नागा ॥ जन सेवादास हरि सु
ष अगम मन त हारहो त्यो वा ॥ ११ ॥ मन राम भजो विषीया तजो ये
जनम अमोलिक जा ॥ १२ ॥ सुमंत्र रहे गबा वरे सब हरि बिन कूडी ॥ क
सा हरि बिन हूजी आस है सो सबै काल की पासा ॥ सो सबै काल की
पास मोह सिलता बहे मारी ॥ सब ता मै बहे जो हिर रता बि
नना हिं ऊवारी ॥ जन सेवादास जुगत लफा यो कछु हिरदे नहि
प्रकास तुम कहा रहे गबा वरे सब हरि बिन कूची मासा ॥ १२ ॥ म
ग सुष के कारणे तै कीया बहो बिसतार ॥ सुत दार धन संपदा पूत
कुटंब परवार ॥ सुत कुटंब परवार मां निरहे बहो अहंकार ॥ सो
संगी नाहि कोई सी सबांघ बहो मारा ॥ जन सेवादास कुल तम सल
ग बिसरे सिरजनहार रे कूवा सुषके कारणे तै कीया बहो बिस
तार ॥ १३ ॥ रे मूलि पडो मति बावरे यो औसर मले अन्त पछिताय ॥ सु
त धन संपदा सब लागि पडे अंधकूप ॥ सब लागि पडे अंधकूप
नारि सुत नेह बंधाया ॥ कौडी तिवे अचेत हाथि हिरा नही आया ॥ जन
सेवादास हरि भजन बिन फूगी सब बती भूप ॥ रे मूलि पडो मति
बावरे यो औसर मलो अनूप ॥ १४ ॥ जन सेवादास संसार को ब
ड अचंभा सु कापो नसु ती स छिना तजे सुत नारी स गुका सु
त नारी सं गु क साच का सब वन माने बेद साधके न वचन लछि
वा ता सब मन ॥

सुफ

दासस संसार का देष्या:

मोहसोककरमबहोवैसुधरावै॥ जैसाबाहैबीजबहोहिफल
तैसापावै॥ जनसेवादासहरिसुमिरनबिनजंमिमरैआवोकपाप
पुनिकीगांठडीबांधिचलैसबलोक॥२०॥ सुमिरणकासाथी
नहींफूवबजावैगाल॥ देषोकैसीहोइगीहरिसुमिरणबिन
हवाल॥ हरिसुमिरणबिनाहवालफूवबचूरीथैसोभी॥ जब
लगकागनथाइहरिसुमिरैनसीनिहकामी॥ जनसेवाद
सकाटैनहींअंतरिकुडालाल॥ सुमिरणकासाथीनहींफूव
बजावैगाल॥२१॥ टेढीबांधैपाघडीनिरषतचालैगोहसाधु
सेवनहरिनजपोतोघणोबिगोगेत्याह॥ तोघणोबिगोगेसा
हदादिकहोकैसेपावैलेषोमांगेसाहनबसीसधूणेपाछि
तावैजनसेवादाससुकृतनहींजबजमयकडैबांह॥ टेढीबां
धेपाघडीनिरषतचालैआंह॥२२॥ क्याटेढीबांधेपाघडीक्याद
रपणमेमुषनांणयोतनढेरीराषकीमिलसीजाइमसांण॥ मि
लसीजाइमसांणकतनरसुकृतकारेलीजोवैतोनिरमल
नांवकेसाधमुषिलीजनदीजेजनसेवादासधरिमनिषदेहकै
दाइबातप्रवांण॥ क्याटेढीबांधेपाघडीक्यादरपणमेमुषन
ण॥२३॥ तूंक्यूंबूडैबापडीमोहनदीकीधार॥ मातापिताकुलबंधु
बातेरैकोईनचालैलार॥ तेरैकोईनचालैलारभारसिरआपणे
धारयोहैसबस्वारथकेमीतताहिलागिआपणेपोहारयो॥ ज
नसेवादाससबइबडहैरेसमझिकरोबिचार॥ तूंक्यूंबूडैबा
पडामोहनदीकीधार॥२४॥ अंतसमैसंगीकोनहींतूंक्यूंभूलैब
वलाजाइ॥ सुतबनितापरिवारमैतूकहारह्योलुलफाइ॥ तूकहा
रह्योउलफाइसुमारसंगीहरिलेराकालकरतहैघातजा
गिदेषोमनमेरा॥ जनसेवादासतजिआनसबतूहरिचरणां
चितलाइ॥ अंतसमैसंगीकोनहींतूंक्यूंभूलैबलाइ॥२५॥ के
सवाकारिसाधकीकैभजीथैकेवलराम॥ यामैसासौकोनहींस
रेसहाताकाम॥ सरैसहातकामसाधसबहरीसांतबोलैफि
रिनिगममरतहैसाषिप्रानकैबैचनबोलीजनसेवादासइ
हजीवकमोइबातांबिसराम॥ केसेवाकरिसाधकीकेभ
जीथैकेवलराम॥२६॥ स्वारथकेसंगीसबैकुटंबसजनसुतना
रियामैतेराकोनहीदेषोताचबिचारि॥ देषोसांचबिचारि
मोहकेबंधनबांधाजीवपडैभ्रमजालकालहुणिहुणि
सबषाधा॥ जनसेवादाससगोमदनजोयोहरिजनमनहारि
स्वारथकेसंगीसबैकुटंबसजनसुतनारि॥२७॥ योझोसरच

हैकेवरोकिआइकायागहलूटेयोऔसत्मलौउलटिमनकौ
रामनांवमेलीनासबदकहैसोनांकैमनचाहैसोकीनर
सबदबताबैब्रह्मकूपाणिसबदैचीन्हैकोश्हैऊवारिपडदौ
नरमकोतातेदरसनहोइश्नातेदरसनहोइमगनहोश्सविष
फलषाया।निकटिनिरंजनदेवउलटिता।हिचित्तनलाया
जनसेवादासअंतरिविथासोलमोहरियदोइसबदबताकै
ब्रह्मकूपाणिसबदैचीन्हैकोश्२शं जनसेवादाससंसारकावडा
अचंभायेकाविषतराचीप्रथमीकैरामभगतिहठेकरै
रामभगतिसंठेकनरककाहैंअधिकारीभइमानिषजनमकूं
होणिअंधवाल्यांषमारीयेकरांमभगतिविनप्राणीयोनर
कांजांवि[illegible]नेकाजनसेवादाससंसारकावडाअचंभायेक२२रा
वरंकसबहीआथिरथिरनहीदीसैकोशरामभजनविनप्राणी
यांसबचालेजनमबिगोश्सबचालेजनमबिगोइनेहनारील
लाया भइविपत्तेबुधिजा।।घोटायूषाया।जनसेवादासगो
बिंदजीतनमनकूसमलषोश्यावरंकसबहीआथिरथिरन
हीदीसैकोश्२३औसरवीतौजातहैजुरागिरातैसोइयेमन
सतेनीदनहितैसांईसंगिजगाश[illegible]सांईसंगिजगाइआपबो
[illegible]दिननेडआगा[illegible]पलक्यूंटहैजीवपडैअचांणकजमपेडा।जन
सेवादासकरतातयेकैमनछिलाइश२औसरबीतौजातहैजु
रागरातैसोइश[illegible]चलरपाहैरहणानहीरकाइकरोतनषार भू
लांनरहोसाबुरायेकहीरम्मननांहिआधारयेकहरिबिना
हिआधारऔरसंगीनहीकोशसबस्वारथकेमीतलागिमूल
नरलोईजनसेवादासतेबूडेसाजोमुगतेबिछेबिकारा।च
लणाहैरहणानहीरकाइकरोतनषार२॥ नरबिषतरातो
जीवडाहरिसूंनाहीहेत।नरकिपडैलोवापडा।नचेतिमवे
तोचेतातूचेतिसकतोचेतिघातफिरिहाथिनआवैयोअस
रचलिजाइ१वहोडिपाछैपछितायै।जनसेवाजीवडामेमा
नषचोरासीषेत नरबिषतरातेजीवडाहरिसुंनाहीहेत२६
कामक्रोधदोइलकडी.

१११

कबंकमनविषीयातजैकबंककोविषफलषाइजनसेवाद
समनकीयाराति जहांतहांचलिजाइ। कबंकमोनिपक
डिमनबैसिकबंककबंककतेअघाइ। कबंककोतुषमोमनकै
कबंककथापिरयाइ कबंककथापिरयाइ तहांमनकैबंदी
माई कबंककोपरहैरहैकबंककोपानीदेजाइ जनसेवाद
समनविकारजैसोबहीनकरूपनणाइ। कबंककमोनिपकडि
मनबैसिकबंककबंककतेअघाइ। मनपकड्यांसुषपाइयैसूटै
मनफिरिषाइ हरितैं सूवासारिकरिबांडैमोजलिजाइ। बांडैमा
लिजाइत्यांनतकामनजैसोयोमनऐसानकाजाइ। अपकेब
सिवैसो जनसेवादासगतिमनकीजानताकपहांजाइ। मनप
कड्यांसुषपाइयैछूटोमनफिरिषाइ। मनतोमनतिरैसाच
मनतनिकतिवतावैकरमनमेस्तबाडिजगमनहांगाइसमा
वै जगमनहांजाइसमावेबसतेमननेकरिजांणोदिलदीय
मैपैसिसाधिहातालेजांणोजनसेवादासमननिरमलैयेव
हरिबिनजोतनमावै। मनतारेमनतिसाचमननिकषित
सेधामनहीसनमुषरामहैमनहीसनमुषजोतिमनहीम
थाकमनजैमनहीउपावैबोतिमनहीआवेबोतिबहोडिम
नाचमलहीवैमनहीजाइसुरगिनरकिमनमांलिलावे
जनसेवादासमनमीलिहरिगयकेलोतिमनहीसनमु
षरामहैमनहीसनमुषजोति॥ मनहीसमनफेरिकैमन
कातजैविकार।नमनतमाहीपाइयेसाहिबकादीदारसाहि
बकादीदारजोनहूटैकडैगाही।जैमनलहीथपेहाथिवै
बहोरिषागतधारी।जनसेवादासमनबसिकरैतोदिलमां
हीदीदार मनहीसैमनफेरिकैमनकातजैविकार।सबैज
बमनबसिफलटिमनतजैकोरीयांऊपरसतनिवारिलपतिवि
षिपवनैषोईसुतितिवियिपवनेषोईअगमनहतउलटिलगावै
पीवैनिरमलनीरमूलिविषीयानहीधावैजनसेवादासगुरस
बदतेंधुलीगोतिसबषोईमनजोबमनबसिफलटिमनराषै
री गोबिदजिनिरमलनवासनघरिसदाउजाइ जैसेनगर
नथानैमोगायोरचलहिनथासाहीवोपैलागिनथामहाराज
रयकैकीया।मिलेपितणसुबबाइपदकाप्यालापीया।जनसे
वादासमननिरमलाउलटपातेनवनातगोबिंदजिनिरम
लनथासबघरिसदाउजाहु॥ ८॥ सबद॥ ७॥ श्लोक॥ ४॥ श्लोक
याकोअंग॥ माया साधसौंमनमूसेकोईजिनिपतिआइपुर

जब अनूपदे तूं जिन चाले हारि॥ दिलतें सबै ख्यालि कीयेक
निरंजन धारि येक निरंजन धारि हो॥४॥ पैंड जु गकेरा मोहकी
पासी काटि मिटै चौरासी फेरा॥ जन सेवादास गुर रस वदगहि
पांचूं बैरी मारि यै॥३॥ सब्द जब अनूप हैत तूं जिन चाले हारि
॥ह॥ सत पुकार्यां कहत हैं यो औसर मिलै न फेरि॥ निसदिन
सुमिरण कीजीये पांचूं मांही घेरि॥ पांचूं मांही घेरि फेरि मन उल
टाओ रो॥ जगत सदैव पीठि सुरति कूं उलटी तांणो॥ जन सेवा रा
म समीप है तन गरू अंतर में हेरि॥ सत पुकार्यां कहत है यो औ
सर मिलै न फेरि॥७॥ यो औसर चालि जाइगो बहोडि न आवै हा
थि॥ सुत नारी सब संपदा ये तेरै चले न साथि॥ ये तेरे चले न साथि
हाथ तें सुकृत कीजे॥ केतो निरमल नांव के नूं षेकू नो जन दी
जे॥ जन सेवादास गो बिंदन जो मुगति पावै नाथि॥ यो औसर च
लि जाइगो बहोडि न आवे हाथि॥ ८॥ इस्त्री सारि गो बिंदन जे तें
चौरासी दुष जाइ॥ जन म मरण दीरघ बिथा सब्द सौं ही कटि जाइ॥
सब्द सें ही कटि जाइ सुषमें सत्त जिस मांवे पडे न ही जम जाल
मैं डनि दैनेजी व पावे॥ जन सेवा सुष में मिलि रहे बहोडि न धा
रे काइ॥ इस्त्री सारि गो बिंदन जे तो चौरासी दुष जाइ॥७॥ सरोतें
साईं साध बिन जीव रसातलि जाइ॥ तांन मांन जे धू नीयां जीव
जहर फल षाइ॥ जीव जहर फल षाइ जीव जीवे कछू नांई॥ हरि
साहित बिसारि औन संबहो मुने नांई॥ जीव लगे सब अंतरजं
न सेवादा केलाइ॥ सरोतें साईं साध बिन जीव रसातलि जाइ॥
धारा मनां वबूत अडि केजी वदा जिग मे जो हि॥ हरि इमृत बा
डि निकट ही दौडि जहर फल षांही दौडि जहर फल षांहि जीव
ज्वैर कि सब टा॥ हरि साहित बिसारि बांडि जीवु षांहि जघो
टा॥ जन सेवादास कांची सराण जूं बादल की छांह॥ धारा मनां वबु
तबाडि के जी वदो जिग मे जो हि॥१॥ टेढी बाधें पाघडी मूंछां घा॥
लै हाथ जब जम आगे लै चले तब कहां कौ संगसाथ॥ तब क
हां कौ संग साथ जीव तूं चेति अभागा॥ हरि सुमिरण साधू सें
व प्रीति सति ता हिन लागा॥ सुत बनिता धन सरचे जन सेवा बि
सरे नाथ॥ टेढी बांधें पाघडी मूंछां घाले हाथ॥४२॥२२०॥ र
चतांवणी कौ अंग संपूर्णी॥ अं॥२२॥ मन कौ अंग॥ इस मन की पा
रीति हैं ज्ञ होन हां चालि जाइ क व ऊं कलोटें ग्यार मैं कद्रूफ
मालि मलिन्द्राइ॥ बकू कमालि मालिन्द्राइ रेहे आ परगम
कब कूं कंमन मन कदसी कवकूं कथ

तो क्यूं नही बावरे कहै पुकाऱ्यो सतो कहै पुकाऱ्यो सतमात
केबंधन तोडो सब ही तै मनको हि नेहसा हिब तै जोडो ॥
जनसेवा ओसर हारि मो हरि ओ सरि मजि मगवंता चौ ॥ ए
अचा ॥ तिकमारि सी काल बडा न लिवंता ॥ काल बड बलि
वंत है तो चेते क्यूं नही जीवा लोभ मोह सठ ग्या फिकरि सुमिर
क्यूं नही पावा सुमिरे क्यूं नही पाव जीवत हि कहि समका के
लो मम मरण दुख सब लपी वुभगि फेरि नियाके ॥ जनसेवा अ
ल सम्मा तिकरे सा हिब सुमारि सदा वा काल बडा बालिवंत है
चेते क्यूं नही जीव ॥ ग ॥ गाफिल क्यूं रहे बावरे तकेरे ॥ ि दिन का
ल सुरग मृत पाताल अ तीन लोक पासि जाल ॥ तीन लोक पति
जाल का ॥ मजि तमू अ साई ओ ॥ ते सब अडिला ॥ ग ॥ लके
बलना ई जनसेवादा सस कौं ब्रमहि काल मांडि रह्यो ॥ गा
ल गाफिल क्यूं रहे बावरे तकेरे ॥ ि दिन काल ॥ ० ॥ काल करत
नितिघात अमार ॥ ियरण ॥ चितराषि मा ह काषी सी का हि सबद
मुष ते सांति मा ॥ षे सबद मुष ते लागि मा षेत बकाल का बाए
न लागे तनमन पांच पलटि सुरति साहिब मे जागे ॥ जनसेवा
नि लैहा ह तब जरसना हा हि मनता ना षे ॥ काल करता नितिघात
य मांकिय ररण ॥ चितराषे ॥ ० ॥ काल कहाल हेडी निति तके नर हिरण
कीला ॥ ४ ॥ चमा किलगतऊ बागा पिलबा ली मा रा गाफिल षा
स मांस धास चोरासी वहसी जनम मरण दुष लक ल जी रतन
धरि धरि सहसी जनसेवादा सरारि स्मर येजगा सुषत जिसब
सार काल अहेडी निति तकै नर हिरण कीला ॥ २ ॥ चमा किल
गल गऊ बरकाल अहेडी तक ये कलि रजनना पषि नकऊन
पाके का कऊ नमायेजकदोड ॥ आता सी ने फिरणो घर सहज
रवां ना सिया र बहोत तना फिरि फिरि थाण ॥ जनसेवादा सर
टिरां मक्र ओ सबे तगि कऊ के यम किला गया गिऊ बरकाल
अहेडी तक ॥ २ ॥ २५० ॥ ओ ॥ ॥ २५ ॥ अथ सजीवनि को अंग
॥ चालो मत अजर अमर पत्नै गम ते तो का लन मा ॥ ि ॥ सब रोग
कटै जीव चैन होइ सुषमे रहै समा ॥ सुषमे रहै समाइ ले
पस जहार निरा ने मन केरे हरि ना न नो वस बका ॥ जिसारे
जनसेवादा सरवे सह ॥ अगसारा कठि जाइ ॥ या वा पद्दा
गध ह अपद जा जरतो कालन मा ॥ १ ॥ २५१ ॥ अंग ॥ २६ ॥ अ
जगवको अंग ॥ अथ पहाला ॥ ऊबंनी धसा हरि ओ रा
यकनि सै ना वविसा रिका ॥ मये माया के बास स्पा ॥ रिनये

नानारी कूं नषै नारि पुरष कूं षाइ नारि पुरष कूं षाइ सु येके
ते कालि माही देषो चेतैना हि मूलै सब ही जग जो ही जन सेवा
दास माया न राम्या सैडो गिलगाइ माया सापणि सब डसे कोई
जिणि पति ग्राइ ॥ माया वेरणि जीव की लीयां रसातलि जाइ मा
ता बसन भारत्या धीयां धाइ रमाइ धीयां धाइ रमाइ जीव के
इरहण न पावै तीन लोक मैं दास बोधै जाइ सत सम्रावै जन से
वा निसै सत जन निरभै हल्यो लाइ माया बेरणि जीव की ली
यां रसातलि जाइ ॥ २ ॥ ३२७ ॥ श्री ॥ अथ काल को अंग ॥
काल पड्यो सिर ऊपरै मन माडै बहो आसा के आहै अण चीत्या
रंधि काल के पास हा धि काल के पास जहां जाकैत हो मारे का
ल हरण करता ता हि जीव क्यूं न संभारै जन सेवादास कंध ऽ
काल चढि सदा गिणत है सास काल पड्यो सिर ऊपरै मन माडै ब
हो आसा ॥ तीन तज्यू कि लग चकरै नहीं मरण की सुधि ॥ विषवन म
हि षुस्याल है मई विपलै बुधि मइ विपरजै बुधि काल सिर
रौनि ति ता कै कै सैड बेंबो ररा मराबिक नहीं जाको जन सेवा
दास चेतै न हीं जुकै आसा लुधै तीन तज्यू कि लिग चकरै नहीं
मरण की सुधि ॥ ३ ॥ काल बली महा जुग मैं सब काहू कू षा
र राजा रंक गिणै नहीं मारै आडै घाइ मारै आडै घाइ धारके
परिपट को जीवन पावै नो णजीव सब ही गा हि गटके जन से
वा साई साध के सरणै जीव रहा ॥ काल बली महा जग मैं सब
काहू कू षाइ राव रंक सब ही नक्ू काल चपेट्या षाइ नर
निधड़क बेवा राम बिन के वगदैगो आइ के वगदैगो आइ ध्या
स्न रवोट संभारा मै मेरी का हा रियस कूं मैं मन नाउ पारो जन से
वा समाजि पडै नहीं निस दिन चित धन जाइ ॥ राव रंक सब ही
नक्ू काल चपेट्या षाइ ॥ ४ ॥ करगा हि चोटी ताणि सी तब राविन स
कै को इ ॥ कोण मरो से प्राणीयो बेवा मिस्नेह रहि बेवा निरभै
होइ काल ताकै दिन राती ॥ आणि अचीत्यो कि कदी गिनत तो है
गे बाती ॥ जन सेवादास गोबंद न जो कीम काल मनो षैड़ कर
गह चोटी ताणि सी तब राविन सकै को इ ॥ ५ ॥ करि चोट है काल
के जन सात लंपट के ध्याइ ॥ यके राम सनेही ॥ विन न भी ता हि को
ण छुडावै आइ ॥ ता हि कोण छुडावै आइ जा गिन गादपो लाइ
सब षारथ के मीत जीव का है कुन कोई ॥ नै सिह तब सी ल
गी करियो कनि जिन गाइ करि चोटी है काल के न हो त ही पट
कै ध्याइ ॥ ६ ॥ आणि अचीत्यो मारिसी काल नगडा व

कहिजाहा ११ केतोपवनचल्याकरैगिरकैपैनहा। ताहिरहै
सीतलमुरग्यानगहिनहीउपावेधाहिनहीउपाकेथाहिमु
गचरणांचितरायेतनमनसुरतिसमेगिरामइमृतरसचाखै
जनसेवाधीरजंधरिरहैहरिबितगाहिउरमाहि। केतीपवन
चल्याकरैगिरकैपैनहोताहि॥ १२ ॥ डिगरहैगिरमेरजूकेतीपव
नचलोहा। जनचेचलहोइजलबलाजगकोदेषिकैलोहा। ज
गकोदेषिकैलोहसुरतिघटिमेहाजिमिलावैतनमनपवनो
सलादिबैसिइांतांल्योलावैकामक्रोधमदलोभतजिमाजिआ
दैल्दुणनिलोहा॥ डिगरहैगिरमेरजूकेतीपवनचलोहा॥ १३ ॥ डि
गरहैगिरमेरजूंबसुधाज्यूंमनधीर। निश्चलरहैआकासज्यू
रहैसरवरज्यूंगंभीर। रहैसरवरज्यूंगंभीरपिसुणपांक्किकैतेजा
सीकूकरज्यूंजगमुसैनहीजाइमैदगलीयाकेमीही। जनसेवा
दासगोबिंदनजपोपिसुणगाहपीर॥ डिगरहैगिरमेरज्यूंब
सुधाज्यूंमनधीर॥ १४॥ १५०॥ अं २५॥ अथ बिसवास
कोअंग॥ पूरणहारापूरिहैतूंक्यूंमनकरेसंदेह। जलथलकू
पपाषाणमेंजहांतहांहरिदेह। जहांतहांहरिदेहरामसबकू
रकीजोरैपुत्रकोबहोरुकपितातातहिदेषन्हाणोरो। जनसे
वादासनिसंथकाहरिमजितजिजमानेह॥ पूरणहारापूरिहैतूं
क्यूंमनकरैसंदेह॥ १॥ पूरणहारापूरवैसमरथसिरजनहार। धर
णतेअनलआकासमेंवाइमवेवुणहार। दोसमदेवणहाबै
तासिरजेकीकरहीमोडाघडि। उपरानिप्रदाताआनरहीजे
निसकलपसारारचीया। जनसेवादासकरतारापूरणहारापू
रवैसमरथसिरजनहार॥ २॥ साहिबसबकीकरतहैसिरजनी
प्रतिपाल। जहांपवनपवननकारसको तहांदीन्होरिजकद
यालातहांदीन्होरिजकदयालअहोडिपुजूचावैसोई। ताको
सुमिरणध्यानतूकाहमूलैनरलोई। जनसेवादासमुकैनहो
सबजगतआलूधीजाल। साहिबसबकीकरतहैसिरजनीप्र
तिपाल॥ ३॥ करताहैसोकरहुगाहमक्यूंकैसीचिंतादानास
गलीसिसटिकासोईहमारामितासोईहमारामितजीबका
लिसबपोषैसकलसष्टप्रतिपालनाहीहै। बिसरिनिरपडैज
गहैजनसेवादासिमजिहमाहिनिरंजनबाआगचिंतकरता
हैसोईकरहुगाहमक्यूंकैसीचिंताप्रेसईसमरथसगिरहैक
बेकहूतानाहिरदसरकेसुषिराधीयाबिकलचारवेमाहि॥
बिकलचारवेमाहितहांलेसतिपक्षचाया। बाहरिआयाजी

मायाकेबसिसौरजनमतौयूंहीहारयौ पांचोंसूंमकल
इचितातेरामबिसार्यो जनसेवादा दिनेरेणिमनकूब
कुरहैनवेरा ऐपषपहरिलोंडीकूंबानावधत्यापिसैसार
आगेरागहसाधषसी तोकल्यानमूरि ६ फिरिपडेमोहफेपथमै
रामबिसार्यो हरिरामबिसार्यो हरितो ऐपषपहरिफेकमोह
वै। हैरमतारामसमीप उलटि ताहिनेकनजोवे जनसेवा
बा डिरफिरिलगपावाओसमंतरूपरि हआगेरागमहासाधषय
सोतो कल्यानमूरि ३ ऐषपहरिफूल्याफिरेयाणिनेदनबायो
हाथिपरमततकोसुधिनहीरहै करमकूंवारासाथिरहैक
रमकूंकरासाथिसीसबाधवहोनारा सरिस्मनतरसबाडि
जहरकापीवणहारा लोनमोहरसजहरहै जनसेवामानी
थाथि ऐषपहरिफूल्याफिरेयाणिनेदनबायोहाथि ४ ऐदि
खनहदारहिगया ऐबलीयांक्याहोइ ५ तनमनसुरतिसबै
टिकरिबो निजततलह्या नजो ६ बोन्हि ततलह्यानजोअग
नमायारसमाता ऐमेरीजीवमांनिबिसरैत्रिनवनपतिदाता
जनसेवा ततजाण्या बिनांसद्गतिनयानकोइ ऐदलजनहद
रहिगया ऐथलीयांक्याहो ४ साचासाविसमाइगासाधकहैं
सबटेरि पार्छपरमनिवारिकरिमनकूंउलटाफेरि मनकूंउल
टाफेरिदेहगुणसबबिसरावे गगजमनमधिबासिडगम
तहांतालीलावै जनसेवादासनमधाडिकरिहरिअंतरमै
हेरि साचासाविसमाइगासाधकहैसबटेरि ५ गाहिसीलसा
चसंतोषकूं मनमालाकूंफेरि तरेनिकोटिनिजननाषहै
तं उलटिअपूगहरि ६ तउलटिअपूगहरि धेरिपाचूंधारमां
ही लोनमोहरियमारिनिकलिहरिहीरानाही जनसेवादा
सहरिनावलैयूंसाधकहै सबटेरिगाहिसीलसाचसंतोषकूं
मनमालाकूंफेरि ६ ऐषनरोसेमतिरहै ऐषैगतिनहोइप
नपवनागलिपाचकूं पपडरामरटिसो ३ अपडामरटिसो
इपलकडूंतासनपडे मनसावाचाक्रीतिमीनन्हूनीरनछडे
जनसेवादासपूमिलिरहैज्यूं घृतदूधमैनोइ ऐषनसेसमति
रहैऐषैगतिनहोइ ७ कहासिंगारकीयो बिनचारणीप
तिरीफैगोसाचि जबलगअंतरिसाचनांनावैगावैनावैना
वि भावैगावो भांवैना चिपावूतोकपटिनरीफे सबसाधक

२ पूरण ब्रह्म बिचारीयै रमता सब घट मांहि ॥ आपण मैं है हो
य सो तब दैत भाव मिटि जांहि ॥ तब दैत भाव मिटि जांहि ल
ष्य को फरि जोरो तब क्या याके गुण त्रय डिगाक कूं दोषन
सो जन सेवादास प्रब्रह्म डिद घणि अधिक कैना है पूरण ब्र
ह्म बिचारीयै रमता सब घट मांहि ॥ आपा विदई संसार तें रूप
[illegible] रत्त प्रीति निर्भय दिल गाजै स्या साधा करी रीति याला धा
री ति [illegible] सुष पावै जो वै धणी सुरति सम्हालि महा मन कूं
मावै जन सेवादास गोविंद जो गुण क्री सक्रीति पाछि द
संसार तें रूप परमेश्वर रत्त प्रीति ॥४॥ २८६ ॥ [illegible] ॥ नि वै
[illegible] ॥ ना का कूं वैता ना का कूं प्रीति सब का यु का
सब कै आगम यासा है बकी रीति यासा है बकी रीति सतले बै
सी धारै राग दोष जीति प्रीति लैना बसना रे जन सेवादा
स गोविंद जो काम क्रोध रिप जीति ना का कूं सू बैरता ना का
कूं प्रीति ॥ निरबैरी सब जीव तें तजि आपो अभिमान ॥ जन
सेवादास ता साध का सटै सद्दाते कौ भय रे स्हाते का मय के
रस लाग जीवै [illegible] मलत बिचारिये मकाष्या लाघी सब घ
टि ये वो आत्मा बहो ना [illegible] ब्रह्मो नी भमानि बैरी सब जीव तें
सिया पौ ना जिरा [illegible] ॥ सब थी ता जा लि अब नही तबौ बिपति
अब सुष जन सेवादास निरभै मया [illegible] गये सब दुष [illegible]
गये सब दुष द्वषत जि सो ग [illegible] सबै काल प्रानी ति चित
[illegible] लाय ही सुमिराण है [illegible] तिग इलारानु
ष तब था तौ मान अब नही तबौ बिपति अब सुष ॥ २ ॥ २९५ ॥
॥ २ ॥ अथ मांस अहारी को अंग ॥ मांस अहारी जो नर प्र
रगट दोलै ब्रेत [illegible] तब मूढै पडि सो ले
तब मूढै पडि सो ते [illegible] बसता या बहोगी [illegible]
रि को [illegible] जन दया बिडणा देतस बा के या [illegible]
रण तें हेत मांस अहारी नानई परगट दोलै ब्रेत ॥ मांस भषै
[illegible] दया नही दिल मांहि ॥ पापी पाप को [illegible] बाधै ज
म [illegible] मांहि बाझै [illegible] नो है मांगि है रिलै सालीला मनि
[illegible] थारि को मते [illegible] जन सेवादास जम लाक मे
मार सुहे सुरिषा है मांतल [illegible] वै दया नही दिल मांहि
२ ॥ २९७ ॥ [illegible] ॥ अथ [illegible] को अंग ॥ सबद बता वै
[illegible] सबद मांहि [illegible] लेषनव
[illegible] लेषन [illegible] में चाले पाखूप सानिवा

वगोगिकहादमडाल्पाया।जनसेवादासहारसूरवैरिजिकजीव
सबषोहिसाईसमरथसंगिरहैकबड्कहरानाहिंप।जिनिजि
गनिउरघमुविरापीयातहांलगानिताताीपोन ताहिबिसारो
जगतिसुषितनयोहरामीलोन तनयोहरामीलोनदाद्विक
हाकैसेपावैहरिस्मृतफलबाडिजहरफलतचिछविषावैज
नसेवादाससकटपड्यारेताहिवुडसेकोण।जिनिजगानिउरध
मुषराषीयानहालगानिताताीपोन।।६।।२८५।।श्रीरंप।।प्रथर
ग्रीनतीकोअंग।।नैनबैनहिरदेकपटरामरामनरपूरिघट
मेओघटघाटहैरामविसारोहरिरामविसारोहरिकुवाधि
कीगाठिनषूटेदोसाकिसोजदबालजीवकूंजमनितिलूटेज
नसेवासाईतुमविनाम्बेजनमपैधूरि नैनबैनहिरदेकपट
रामरोम्नरपूरि१।नैनबैनहिरदेकपटकपवडाकलनरपूरि
कपटकरणीरहणीकपट साईविसरहरि।साईविसरहरि
धूरिताकहणीमाहीहरिस्मृतासबाडिजहरकतचितवि
माहीकरजोडिकहैजनसेवलोजीवरचैजाइक्षरि नैनबैन
हिरदेकपटकपटसकलनरपूरि२।नैनबैनहिरदेकपटतुम
सेछानानाहिंभोवैमारोतारोसाईयागुन्हाअनतजीवमाहि
गुन्हाअनतजीवमांहिदादिकहादरगहपावेजीवविपक
पीवणहारलागिनरकोदूनावैजनसेवादासकीवीनतीह
रिओगुणसबबकसोहि।नैनबैनहिरदेकपटतुमसेछाना
नाहि३।नैनबैनहिरदेकपटतुमजाणोसबगतितुमजाण
राइजाणोसबमेकराडिपाऊंमातिमेकराडिपाऊंपतिजी
वगतिनाहिनषानीकामक्रोधमदलोनमेंगलेअभिमानी
जनसेवादासकहीयेकहाविषपीवेदिनरातिनैनबैनहिरदे
कपटतुमजाणोसबगति।।४।।२८८।।म३०।।अथमधि
वीअंग।।मधिकैपैडेपरमसुषपरमसाधतहांजाहिरामभज
नआनंदसदातहांहारिजातिदाहनाहितहांहाजितिदो
स्नोहिकसरसबमनकीषोईनिरमलपानाविचारिजगिदे
षैनकोईजनसेवादासतहांसुषअपमसोलेरापेमनमाहि
मधिकैपैडैपरमसुषपरमसाधतहांजाहि१।मधिकैपैडेपरम
सुषसोसंतालीयोविचारिआपेतनिजरामकूंजहांजाति
नहीहारिजहांजीतिनहीहारितापकातसबेनिवारणस्रिव
ननिकाचमानिहांदईविडारीजनसेवादासनिखलमया
सबकाआपारामहरि।मधिकैपैडेपरमसुषसोसंतालीयोविचारि

परसि कंचन होकरिलै
सुधा नरपूरि॥ पारस लोहा पलटि करि कंचन होकरिलै
कलमाहि रहता लिजाइ करि जो मांगे सो देइ कामधेनि स
कल माहि रहता लिजाइ॥ चिंतामणि दलदर हरै जो पे सबै
को मनोपूरण कोरे अमारा॥ चिंतामणि दलदर हरे जोणै सबै
को मनो पूरण करै जल पीया त्रिषा बुझाइ॥ १
लोण॥ जनसेवा लोगतमहरे जल पीया त्रिषा बुझाइ॥ पारस पलटै
जुगत्यां निरगुण ब्रह्म कूं सत जोही सुबध्यां॥ पारस पलटै
लोह लोहकूं जो सोना होई॥ सबै कलपना मिटे कलपतरली
जैसो ली जगनि हरै तमताति से कलै त्रणा नपावै सरवर को
हुग जाइ प्यास तन मैल मिटै वै कामधेनि पूरे सबका मन॥
चिंतामणि दलदर षोह॥ जनसेवा सुमरण निरगुण ब्रह्म कूं
यूं मुकति सहजि ही होइ॥ ... जब जानि घडी तब ये
कणि पीजे नहोतारि सोरकी जब जानिति बडकोर जान
रीजे॥ अवाई सयइ जब जगि नब जिरि दिन राति कलीजे
सो बाधजनलाह तब बहु त्मा की माखलली जे दस हजार
बुत्सा चलैतब घडी बिस्म कीनहीये दास ललाम जब बि
लत हाल तब घडी आध लिलकी लहीये॥ पांच हजार जब ल
बहुकै तब सकति योग की लहीजै॥ जब माया अनंत ला पहेइ
जाइ तब टक ब्रह्म का ध्यान लहीजै॥ साधो अकथ कथा याहे
रामकी कहौ कहीये कवाणी॥ जनसेवो सुमरण ब्रह्म को ग
नसेवा सब सुघथा॥ नमो नमो पर ब्रह्म परम गुरु आतमरा
मो निराकार निरबाण सकल सुबह सागर सामी॥ आलिप्त
छिप निरधार सु ब्रह्म सकल प्रकासा॥ आधि अनंत सदारम
अगन हीनो हि अबिनासी॥ आधार आपिस बीमरा मरम
तासब माहे॥ जनसेवा दास माई परसि पति गति कालनै
आपेनाही॥ नमो नमो परब्रह्म परम सुख पूरण स्वामी न
मो नमो निरलेप निरगुण है घणनामी॥ नमो नमो निरधार
अनत है अबिनासी॥ नमो नमो निरदेव सुख ब्रह्म सकल
प्रकासी॥ नमो अजोनी आपब्रह्म नाही बाला॥ जनसेव
दास बंदन करै सब दुष मिटै जंजाल॥ ११॥ मन नाम मन ति
रै मन चोर तो झुरै मन निगमा लेमन धाइ पै किं दुई मि
रै मन मैले मन सुच नल मनली चोर होले बहो बि धि
गाहि गाहि फिरि मन ही मैले जनसेवा दास मन का मता
हरि विकल बगाइ कारे मन कन जलौ लीन कर्ज्यूं लुध मैं
समाइ॥ १२॥ मन गावि नाहि हि रस ना लग्या तब लग मन डो
माहि लहि मको है निकासि बहि लिब फूलै॥ फिरि कपनि

कहै

रैतबहैश्कुबधिकानास॥१॥इतीकुंडलीयासंपूर्ण॥कुंडली
या॥१७५॥३॥गा॥२७॥अथ दिवस लिख्यते॥ देवानि
औरसबभायादेही।जो आकारसुनाइसुमरिमनपरमसने
ही।सुरसिधदसऔतारसकलयेमायामोही।हरिनिरगुन
निरबधगुणमेंआवेनाही।हैअबिनासीकोआसिरोअजरो
वरकीवातजनसेवादासनहीबिलंबीयानहीधूपनहीछाह
॥१॥देवयेवरमोमिलिमसंगिदेहतुलीजे॥अगसगितीथ्यन
इबरतलेबिधितकीजैकरैतपबहोमांतिदानआयालेदी
जैयेसबवेलदोरमोनिममतासेपीजेजनसेवादासकाची
विधाफिरिरिगवधतोजाइसबतजिमजिरमतारोमकून्रू
सुषमेरहेसमाइ॥२॥राजबुगसोविप्रमोतिमिहानजिमादे॥
बडाबडाधनवाननाहिलेदानदिवावेकरेसंगतीयुधा
वतहोजाइबधावेबहोदेवलिदरवलगाइमोहिमूरतिपध
रावेजहांजहांमानिबधेघणीतिहितिहिगलेजाइजनसेव
आमरामजाण्याबिनाकुजनकबडुधा॥३॥मावेअगसवि
वीरथन्हाइदानबिप्रांकुदेहमांवेगत्तोहिवालेनाइकासी॥
जाइकरवतलेअभावेकरोजिगअसमेधसहनावबिनकी
कियेक्तसकलधरमासितागनावनिहचेबक्ति जनसेवा
दासतिनावहेमेवलब्योहारजबलगनादिनजाणीयेतब
लगबादिनचैससाहि॥४॥नहीसीतउसनकैरुपचलसंजन
मोकरहीपवनलिगेनरूपलुचाकूमालुमपरहीसबदनि
रंजनरूपअवनकुजनमोहे॥५॥रसजालनांअरूपहेइस्मन
मोनिपानासाकुसो॥६॥हरषसोगदुषसुषकोयेमनहीकुअ
नमोफुरेजनसेवान्हगणबूझकोयेआतमहीजनमोफरे॥५
पारसयदैलालताहिकबुजाणेनाहीप्रबेकलपनामिटेक
लपतनेचैजोहीजाइसरोवरतीर्थ्यसतनमेलधिगवेको
मथनिसबकोमनोचिंतामणिचितवनसबपावेप्रगनिसीत
नेहरतलेतिमरकेसबदूरिजनसेवादासनिरगुणब्रह्मसफ

सतलोकमै गमतेबा दिगुरुकी पालीकाहिवोयेकसाहिब
कीजैसाहि ॥२०८॥ इती सिध्यंतसंप [illegible] या लिषंत
सतलोक सोमको मिराऊं करे आवेजामलोनमोहवेरीस
वैसोधिलाधिमाहै ततनवोरिली ऐसी लक्षीसनाह
जीग्यानकोमुराडोहाथिसबकोमकेधजाहै दम
नीकपालिकरिसंगरामजीतिलीयाजारकेपक्कतमहा
नहाअबिनासीप्यारहै साधूतानसरबीरसेलाजनकेसीर
कोऊपिसणपिबाडिकरीरोमनेलिधरहै ।मेतोतेरावेट
नाटयेकहीमरोसाचरिओरकबूबाहिनासीयेहीमनिमा
निहेनावैतोसुरगवासनावैतोनरकवासनावैतोचरण
कोनिवासआपागनिहरैसागेनामधीवैसामदसद
सानाहरिपानकेवकासमयेऐसेमावनाहिहे हरिद
वैकपटपोलसबानसतगुरजीपोसीमाहीडुबामारि
कहाथालीमाणिहै ।चेतिरेचेतिकसानरलीबतसाव
तसोवतसबरेणिबिहाणी ।तलोजमाहाबिपैरासिमा
नीतेरैकालधना लिसिराहदिवाणी ।नजसेधरबधनये
सबदीलेगहाहाथिलुककीयाबहैनेनानिपाणी ।सेवाद
सकहैजनगपाबिचारिजुहरिनाबबिनासमनाहिनप्रा
णी ॥३॥ सोवतसोवतरेणिगईबहोरैमनमारियचेतिलेबेर
मातपिताअरबंधत्रियासुतआइमिलेसबस्वारथिघेरा
भेआवतसंगिनजातसंगातीतनकाहकानाकोईतेरा
सेवादासकहैजनगपानबिचारिजुहरिनावबिनासबही
अंधेरा ॥४॥ इती सबदेया संपूर्ण ॥ अथ चंद्रायण लिषंत
श्रीगुरुदेवकोअंग ॥ सतगुरलीयेउबारिसमदसंसारमै
नौकानावबनाइकीयेगुरपारमै करमभरमसबमे
टिसाचसोमिलाइया हरिहांजनसेवादासनिराम
सहजसुखपाइया ॥ निरमलगुरकोग्यानदामसबकटै
गयेमनकेबिषेबिकारसहजिहाधुविगयेकामक्रोधमे
हमोहकबेरीसबमेरे हरिहांजनसेवादासमेटाहसीसप
रिकरधरे ॥ सतगुरसबदउलेधिकपगाकोईमतिमलौ
मनकाकुसमलधोईसबहरिदेधरौ नहांतहांजमकौ
लकहीनिनाईयौ हरिहांजनसेवादासगुरसबदतहा
मनलाईये ॥ सतगुरसबदसोतालिसलगावरयगपग
माहीकालनहालमाधरोदिहादिसफुटमनमूमेकिनर

नैनमेरसनारसजीवैश्रवणनादसुणिचलैगेधनासाकरी
पीवै जनसेवादासनुजेगमनमोहबंबईतहोबातसतगु
मिलीयागारडीतबमनपकड़यादियासा१०सतगुरकीया
फेरिकरिमनकाओरहीरूप बिषतजिनिरबिषहोइगया
अबपाइबसतआनंपायोसुषसतगुरपरकालीया।उषस
बधायाहरिकरिग्यानदिषि दिषाईयारांमसकलमसूरि
जनसेवादासमंमिलिरह्यामनहीमनकेमोहि।सतगुर
केपरसादतेअगमसुषमिलिसोहि११किरतमसबहीत्याग
भगतियेकनिरगुणसाधेग्यानजोगबैरागसदाअबगाति
राषैकारमनरमसनकाछिडगआपिरमनलावैनापहा
जपाजपैसुनितहोमत्तअवादैजनसेवादासयेकनाथा
बिनआसबेहीफटिसाईसेवासिरामनीजाकैआसाइवै
।ग्यानसुणयसचिजपजीतबमनमाहीमनलायोतबन
योअनातमत्यागअपावकदारदहियाग्रीपदमअबझन
पायमहीबिचतसुषमोहीतीनगुणातेरहतसुषजहारि
वरजनीकछूनाहीजनसेवादासआपनकैग्यानलेजैसे
गयो।अमूमलचरलेकरिमलरूपटकनेआतमसुधनयो।
दैनानारीनापुरषहेसयेकेसोईब्यापकसेवारामलषै
बिरलाजनकोईआकलअसंगअनूपरूपकछुकह्यान
जाईअजुलमधेचंदनरयूरह्यासमाईजनसेवादासके।
ईनालषैअनगतिआगमअरूपब्यापकसबेसनतेआग
मनहीआहनतीयपा७मनबैरीमनमंत्रमनकपनमन
घारैफिरिमनलेजाइसुरागिबहोडिमनमनरकोडारैम
नमुकतामनबंधमनमारिषमनग्यानीमनसयूहमन
त्यागमनाबिषीयामनध्यानीमनबोडैमनलेतिरैमन
बांधैमनमुकताइजनसेवादासमनबासनाछूटिपडै
मेंआइ।रसोवैकहाअचेतचेतिमनमारिषबौरेयोसुष
अलपअपानितिसतिकालसिरिमोरेयोदिनाचारिकसु
षअतिदुषदीसैजाईसोलुषतनसूत्यागितजागिगोब्य
दगुणगाईजनसेवादासादरिनालसैमनिपजनमनरद
हआसबबटाकथिरनहीतातेकितामनेदहा९पूतकलि
तपरवारसकलस्वारथकेसंगीसबआइमिलेदिनचारि
दबितरगयतेगीकोईयापैतेरानाहितबितग्यानबिचा
री सबतेमनकूकाढिसुमरिदेवमुरारीजनसेवादासआ

रषके रिनिपाघाटदई सुधे बुधिजी॥ कुमकीटसंपलटि
कीयेगुरभृंगजी॥ हरिहांजनसेवादासमनत्रेवररंगे
हरिरंगजी॥१॥ सौनेसेतोवेरनसोनीकासिहै त्यूंत्यूं सतगुर
नासासिषकेरसिहे॥ कररिनिपावाघाटघडेगुरदेवरो॥ हरि
हांजनसेवादासजनगिरामयूंसीसतिटेवरो॥२॥२७॥ अंग२॥
ग्यानसुमिरणकौ अंग॥ सुमिरणबिनीसुषनाहिंपशैप
छितरहैग्ये॥ घोडोसरचलिजाइ बहोरिनहीपाइये॥ करणी
निधिकरतारसुमरिमनगयोवक्त॥ हरिहांजनसेवादासगु
मगोहिरहेदिसुगोवक्त॥१॥ करणीनिधिकरतारसुमरिमन
नयेहरे॥ पापूरबलेपुनिदेह लहीनरदेहरे॥ तनमनके
कुसमलधरीरामलेलाईये॥ हरिहांजनसेवादासकक
यहबहोडिनहीपाईये॥२॥ मनमाणिकाकूंलेहसुरतिले
पोहरे ग्यानदीपकरिथापिजालेजोहरे॥ परमनिधिकर
मांहिसमधिचितलाईये॥ हरिहांजनसेवादासकहूंतलि
अनतनलीजाईये॥३॥ सासससासलिसनहीतमना॥
सुमिरणबिनतनदेहहोदेसकामकूं रेफवेरणिनमूले
धूलिमिलिजाइगा॥ हरिहांजनसेवादासनजिरामपछे
पछिताइगा॥४॥ येकरामबिनाबेकामसकलसुषकवेरले
रदेहरिगुणगाइजगतलेसकुरिजगबलीबिषपनवाब
हूधीजीये॥ हरिहांजनसेवादासनजिरामजहांलगजीजी
जे॥५॥ ऐसानिर्मलनांवकहेतेकूलीकजी॥ सुमरयांसब
सुषथाइमिटेदुषसोकजी॥ रातिद्योसरटिरामअमीरसपी
जीये॥ हरिहांजनसेवादासअवेदकलाहालीजीये॥६॥
ऐसानिर्मलनांरटोनिसीदिनरे वेदसाधसबकहेपुकारसु
वैराग्यसबेग्रंथसमाहिमजोनिजनांवरे॥ हरिहांजन
सेवादासबिषमलागिकरीउदकांमरे॥७॥ येकपूरणब्रह्मकिच
रितहांमनजाईये डेबध्याहरिनिवारितहांडमपाईये
गुरकासबदमांहिगरवसनगाडिरे॥ हरिहांजनसेवादास
मजिरामनमसबछाडिरे॥८॥ बेराग्येतबैसितदातरू
हरेनानिनासिकपीचितहालेलाइरे सासउसासेलहूं
रजनांवरे॥ हरिहांजनसेवानमननाकनपोबलिजावरे
॥९॥ सासउसासेसुमरिसनेहीरामकूं तेजनउतरेपारपहुंते
धामकूं जहांनुरागकालजैनोहिनहैतटावासरे॥ हरिहांज
नसेवातिहेसुषपर्जनजाहसुहरिकादासरे॥१०॥ जहांनु

णारे॥ हरिहां जनसेवादास समझाइ कहे गुर बैणारे॥४॥स
तगुर सबद सबाहि समझि हिरदे धरे॥ सब ओगुण गुण क
रि लिह काजन बहीसरे॥ सानै सती बैस्न सानी कासिहे॥ हरी
हां जनसेवादास गुर त्रोसहि रदामै बसिहै॥५॥ सतगुर सब
द बिचारि तहां मन लाइये॥ कनक कामणी संगि कहे नहीं
जाइये॥ रहे यकै तीजाइ साध धुनि ध्यान मै॥ हरिहां जनसेव
दास डुबना हि मगन गुर ग्यान मै॥६॥ सतगुर केत सबद चि
त्यो न हा वारे॥ गुण यं ड्या के सा पि बह्यो जल मायानीर रे॥
बिसनानदी त्रथा क केते बहि गये॥ हरिहां जनसेवादास गु
र सबद पकडि जन रहि गये॥७॥ बिपति नदी के मांहि केते
बहि गये॥ सतगुर सबद संभालि कहरि जन रहि गये॥ जन
स्तेरा मद याल कमा थे बा थरे॥ हरिहां जनसेवादास मैना
हि क कारि ज सब सरे॥८॥ गेलो हिरदा मांहि सुरति करि सो
धिले॥ सतगुर सबद बिचारि कूं मन परमोधिले॥ जनसेवा
दास संसार कंमूल जात है॥ हरिहां उफडु आत्मा जास
गोता षात है॥९॥ सतगुर का उपदेस समझि उर मै धरो॥ हरि
सुमिरण करि बीर मरण का डर क्यों करो॥ छिन काल की झा
ल सकल जग दहत है॥ हरिहां जनसेवादास गुर सरणि न
मे हो इरहत है॥१०॥ सतगुर सबद संभालि कांम साधीये॥ पूर
ण ब्रह्म आप हि कु आराधीये॥ मन गहि पांच फौ सिं सू
वाले हरे॥ हरिहां जनसेवादास गुर सबद कहे तो लिये हरे॥
११॥ सतगुर सबद संभालि ग्यान बिचारीये॥ कांम क्रोध
अभिमान कूं बाधि सबडारीये॥ सील साच गहि तो पतजो
सब न मेरे॥ हरिहां जनसेवादास हरि सुमिरि कि जै सब काम
रे॥१२॥ गुर गहि ग्यान बिचारि तजो गीन जाल रे॥ यैकाम न
मत सांधि मिटै दुष काल रे॥ और उपाइन कोइ कहे सत
टेर रे॥ हरिहां जनसेवादास मनष्याप अपूवा फेर रे॥१३॥ सत
गुर सबद मांहि बिबेक सो बंचीये॥ के वत्त निरमत्व नाइते
ई जन स्वीये मै मागा नूम हूं रिन्त नै नये तजना॥ हरिहां ज
नसेवादास सुष मांहि रमै है जे जन॥१४॥ गुर मिलीया दात
र लषाया पीव जी॥ नब्रोरा सीगा [illegible] ये सीव जी॥
इह सागर ते का ढि सुषा स्यै धाहि धरे॥ हरिहां जना
जनसेवादास गुर मिले काज तहीसरे॥१५॥

[illegible]

नरे॥ हरि हां जन सेवा जपि हरिनांव करम सब षोनरे॥३॥ अब
काहे कुं जीव तरातन सो हिरे॥ काम क्रोध अरि लोभ
इन सिर बाहिरे॥ तब दादिल है दरबार सो मसन मुपरे॥
हरि हां जन सेवा दास न गिर भा मिटे सब दुषरे॥४॥ दूध॥
॥१॥ कथ धीरज को अंग॥ धीरज धाल्यां जन जगत स
ब सुनत है॥ हाथ्यां का त्रास नां कुत्ता तें डरत है॥ जग की
या ही रीति किलो नि ति करत है॥ हरि हां जन सेवा दास भ
जि राम जग ताकुं सिमरत है॥१॥ दया सरोवर न्हाइ वा कूं स
मल धोइये॥ सब आत्म में राम ये कहूं जोइये॥ जन सेवा
दास निरबैर सजन सब जांणीये॥ हरि हां कोइ क्यूं कहि
जाइ दोष नहीं आंणीये॥२॥ दूध॥ ॥ अथ नाम म
हिमा को अंग॥ करी का व का गाइ चिंतामणि वा कराणपाह
णा करि पारस धरयो है भीतरा॥ वा सरवे मांझ पाहण नर्मल है
लो हरे॥ हरि हां जन सेवा जग तम्हुं लागो नर सिघ जलते
नहीं को हरे॥१॥ हरि नाम धरयो बणो ग्रुकालानो हरि इह
आसे जग बूड्यो जल लिग हरि सो धीन ही लगारजे अत प
वित्र धरे॥ हरि हां जन सेवा दास सब जगत रचो है धघर
॥२॥ देवल मांह देव ऊपरे बाधरे॥ या में मारे तो कोण वाही
ही सिधा धरे॥ सब नर पिम्हूं ल्या पोंगा नंद षै सा वह हरि
हां जन सेवा कंचन आडि गहै सो हुवा सहज॥३॥ पाहण पा
णी ग्राजी जगत सब मानत है॥ लष चौरासी मांहि जिह पिंड
धरत है॥ बाई कंचन देह न जांण पेपीजरे॥ हरि हां जन से
वा दास न मांहि डाल भानी बरे॥४॥ मानुस पोवै लाभ
काजा जिनि सीदी सा ऊ निस फल करी नांद देह धनि तिन क
जीया॥ देह धरी इस का मी बाई बंको मरे॥ हरि हां जन से
वा तन मन सो पिन तुम ताघो ते मरे॥५॥ नीरछि जाइ जल
में न्हाऊं पाहि सिरा देवलि जाइ नसी सनवाऊं बैसिर येक
सुमिरि सिरजनहार भरम सब मेटिरे॥ हरि हां जन सेवा
दास दिलमांहि दिवानें भेटिरे॥६॥ १७॥ अथ अघ
विकलो अंग॥ जन जगत सदी नज बैलगालो मरे है रूप
तिसाई ऊरमन जा आसो मरे अनजल बलता रामहि
तानि तिकरत है॥ हरि हां जन सेवा दास तिहि आडि सुग
धपाचिमरत है॥१॥ जब लग हरि देलो मन का जिको सरे
है मा धा स्तमो ह भम नबा अओ फिरे हरि जन ली सेवा दीमा जा॥

राकालमैंनौ।हितहांजनवसीरे।मनगहिपवनांफेरिसरोवरै
धसीये।हरिसुषसागरअनंतवारनहीपारेरे।हरिदांजनसेवा
तेजनपडेतोजाइसुनांवअधाररे।।२।।लीजेहरिकोनांवधर्म
तिपारेलोसागरसंसारसहजितिरिजाइरे।यामैसोसैनां
हिकववववपोणिरे।हरिदांजनसेवाहाथिनाइतिरयापा।।
रे।दां।न्नामलगजगोधगिनकाजाइरे।उधरेपतितअनकगि
णेकहाकोइरे।साषिसुणोदसवेदजपोहरिनांमरे।हरिदांज
नसेवादासइषइरिसुषाविसरामरे।।३।।दावानलज्यूंदाहकरै
बनपलकमै।चूकरमदहण।ज्ञानोवसुदेष्यापलकमैंवरस
धसबकहैपुकारायेरे।हरिदांजनसेवादासनिजनांवनि
रतरिलेहरे।।४।।२१।।अंग।।अथविरहकोअंग।।पीवजी
वूजनमनाहिंकदरसणदीजीयेतालाबेलीमांहिवयोतनः
बीजीयेरातिद्योसकलउदेगकोलेमांहिरे।हरिदांजनसे
वादासतुमविनामुषदउनांहिरे।योतनमांहेमांहिजलै
दिनरैणिरेकामहकहपुकारसुणनहीवेणरे।बिनदेषेनैना
रोजकरैविरहनपीटरोरोहरिदांजनसेवातबसुषघाइदेस
उरिआंगणरे।।१।।ज्यूंजलमलीकोमनज्यांलिसरसंग्रामरे।ज्यूं
भूषाकीअनुतिमनलोभीकैदांमरे।ज्यूंचाविगचितजलमां
हिरैतितदिनप्यासरे।हरिदांजनसेवादासउरमांहितुम्हाति
आसरे।।२।।ज्यूंकुंजरकैमनिबनबसैदिनरैणिरेजैसैचंदचको
रनषंडैनैणरे।ज्यूंअंरगनादसनेहभवरकेबासरे।हरिदांज
नसेवादासकेयेकतुम्हातीआसरे।।३।।२५।।अंग।।अथ
परचाकोअंग।।मूलचक्रबेधदेहकउबारंगदजीवेमन
पवनांसमिराधिरोमरसपीजीयेरातिद्योसअभ्यासहिरद
मैधारिरे।हरिदांजनसेवात्रिकुटीकेवासघासितजोतिनि
हारिरे।।१।।पहलीधूंवाहोइहूसरैफलउगी।दीजेपरमप्रकास
तहांजाइसुरतिअटी।तहांमनरहयासटकिफुगनोफिरे
हरिदांजनसेवाकरिअभ्याससंततहांचितधरै।।२।।बंकना
लिसमिरावि सिधआसणकरै।मूलचक्रबेधदेहचक्रषट
चितधरै।तहांनिरसेनूत्यअपारत्रिकुटीध्यानरो।हरिदांजन
सेवादासकोइसेतलहैगुरग्यांनरो।।३।।गंगाजमनोमेलसुरस
तीसंगो।त्रिबेणीतटन्हाइरंगहरिरंगरो।फडेकरमसब
गयेसकलतिस्नादरी।हरिदांजनसेवामनमवांनोमि

।।वसुनि.

स्मिानरे ७ अंध अबुधी जी वृमगन बिषया इरे बेड़ी स
२२ पगेसे हाथि सुघाली पाइरे पाटपुरा णी बासदी पा बारी
डी या। हरि हां जन सेवा स्रम त्यो नाहे पी बसु जम घट
तो डी सा ७ मन सकति थका तसु मरि सने हां रामकु या
मनि थादे स्ती दे बिधरी इसका मक्कं तो सुन बाने तासमु
गध लग्गा ग्रान हरे हरि हां जन सेवा दास न जिराम पलक
मेम हरि ए मन सकति थका तसु मरि सने हां रामरा हरि
नसब ही फवत रधन धाम रे काल कात है घात न चेते
धरे। हरि हां जन सेवा दासये जीव कहा लू धाधंधरे ९ मन सक
ति थका तसु मरि सिरजनहार कौं तेरे जम की बाहर सब
लमडी है लार कां फिरे ऊरा पैरि कक बास्बू खा पे घेरि
सी। हरि हां जन सेवा दास लाई तरसे। मनकु फी ली १ मन
सुमिरो सिरजनहार मलो छ पेहरा बता हिं मलानै सो
जमनि घना देहरा हे बड़ा नि धिन रदेह कला हाली जीव
हरि हां जन सेवा दास न जिराम कका सिंह का जीय १ जा
मेन तसु मिरण काजि देह नरदेहरा क बिषय बिकाराला
गि म कातिन न पहरे या सोज सुकाल करि लेह जपो म्याव
तरो वरि हां जन सेवा दास सबज ले पुका सोसतरे एन
रसना हरि के नाव भन्ता निस गाइरै तेरे काल अस्डी ल
रथर बलि निघाइरे नर तन मीद घा स्मालूपस जीव
रणो हरि हां जन सेवा दास अकयहरा न रसपी वणा १४
मेरे अंगली का नी र बीरतन जान है। हरि सुमिरण बिनि
थिरनो हे काल निति थानदो न तू रिम जिला हाल हे डाव
मल बूहरो हरि हां जन सेवा दास फिर ना हिं लस नरदेह
रे ध न नाव निरंतर गाइ कज न मल सुधारी ये यो रतन अ
मोलिक यू सीं कु हारी हे या नर ना इण नौ तारे फारि नही
पावसी हरि हां जन सेवा दास यो डाव बहो उ नहीं जावे
सी ९ ध्यान गहत बा है आइ कसो दा की जीवे ली जे सारा प
रमि पोट तजि दे जीव सुमिरे सन्त कूर की सी फगहो नि जन
से हरि हां जन सेवा दास जा यादि के लव लन ७ पालि
ज्ञान के लेन चे तलि बारे मूरन रतन घा हि बिम का पिर
कनक कामणी लागि लागि हरि ना इरे हरि हां जन सेवा द
सजि रामसु सरिम तिजा हिरे र साध सगा तिका तेर
रामकुं हा मारि यो केन का काम री संगि कदल ती जाइ ये ज

बिताति ह्वीसरै हरिहां जनसेवा फिरि पछिताइ ॥ कठैन
रसी सरै ॥२॥ पढि पढि सबै पुराण अष्टदस बरहि गये येकू
पारब्रह्मपति छाडि आनि पंथि लागि गये लोभमोह जु
ग जहरत चेतविषपीवण ॥ हरिहां जनसेवादास यावात
कहो क्यू जीवण ॥३॥ पढि गुणि मूलै मतमिन साध कुबुम्
डी फिरि मान तृप ज्यो अभिमान करत मति सिर लई ॥ मस
न्तविचार न संत सेवा करी ॥ हरिहां जनसेवादास भग
मंनी बूडे देह परी धर्मी यो करै पुकार फरजनत बसेरा स
बसा हिबके फरजनता हिजूरी करै मरता फरजन नरा पिज
ना पैत्ता ॥ हरिहां ता हि सेवा सरव देह हिव न हो को
रै ॥५॥ सब साहिबके फरजन नको कुमारीये सिर गुन्हो
नको जो वारनयो तन हारीये तब साहिब निज मति देह ल
गावै बंदगी ॥ हरिहां तब सेवा पावै निसति तजे सब गंद
गी ॥६॥७५॥ आ॥७०॥ अथ चिंतावणी को अंग ॥ जाव
सी वकू भूलि माया चित धरत है ॥ आप आपणा नास मु
गध नर करत है ॥ चेतै नही लगार मार सिर धरि रह्या ॥ हरिहां
जनसेवा सेवा रीसै जनके नात फिरि रह्या ॥१॥ चिरि चिरि जि
व अचेत जगतपति भूलीया ॥ हरि सुख सागर छाडि बिषै
जलि फूलीया ॥ समझै नही अचेत सु जठ निराट रो ॥ हरि
हां जनसेवा बारी डौले बाल पुरा लिया ट रे ॥२॥ प्रीति पुराणी
भईन समझै म्हारि रो ॥ अण आदर कोट कब सब्यो हूरि ॥
तौ कुप्रीति अचेत न छाडै बावरो ॥ हरिहां जनसेवा बिन
स्रम स्या भावत सहे सिर ता वरो ॥३॥ मरण आज कि काल्हे
चलाक हो इ रह्या ॥ प्रीति घणी पावा स्नितो कहि कहे
यू करीया यू नो हि सी ष सब देत है ॥ हरिहां जनसेवा आ
पणा भूला जाइ ना बन हो लेत है ॥४॥ सब कैली बन गमो हि
लधा आप ही ॥ माबात हो इ नास सो ईन र घाप ही ॥ सा
धसेवा साच सुमिरण आदि तरै ॥ हरिहां जनसेवादास ज
दजीव डहै सर्बी सरै ॥५॥ रे ओर कोर स छाडि राम गुण गा
इयै ॥ यो ही बडो बमक ना बिषफल पाइये ॥ सत डर सब
य बिचारि समझि हिरदै धरौ ॥ हरिहां जनसेवादास न
जिरा मम रणका डर करो ॥६॥ नरदा पै मयो अधन चेतौ
मारि
बादिदी यो मन अ

गीयै॥ कहौ या मैं तेरा कौंण समाझि मन लो हिरै॥ हरि हां जन सेवादास कहा दे धिलुनी गौ तो हिरै॥ २३॥ मनि मांनि लो वालु
घ गूंद न्याइ ज्यूं मलत है॥ सब स्यार धके स गिलागि अर्धा
गलि बलत है॥ फिरि लपटो तांनि देह गब भरत है॥ हरि
हां जन सेवादास यू नास आपणा करत है॥ २४॥ मन हरि
हीरा मफा है ल्यू आल सै॥ वो सदा गिणत है ता सकनो सिर
काल सै॥ न्ही लग्जुग लुभ आठे वारो सिंधसा तै॥ हरि हां ज
न सेवादास था घात मली है वारै॥ २५॥ मनसदा तिधका हे लु
भा रिस ने ही पीय क्या पवे निहाल देह काहत जी व क्यूं रै
नां जपा लाय गहै कांडि गुही॥ हरि हां जन सेवा थर हको पै
देहल टदि जाइ पाबसी॥ २६॥ पर मन ने हीरा म सु भा मि न ब
करा यौ मन ना द ल की मोत भि मा हि हर ना जरा॥ सब त्याय
के मीत हित नही कोइ रे॥ हरि हां जन सेवा ता त मात पर बू
र देख्या सब जोइ रे॥ २७॥ कंटव सवार य सफ्न जो जि का ना लत
फूल ला यदि उदि न गाठि आगें धरें॥ फिरि पडे सो फुडै मीव
हित रावको नही॥ हरि हां जन सेवादास पास वे भिलुला तो॥
ता म ही र सब वाला र थ केला ता हित नही को रे ना त मात
मूल ना रि देख्या सब जो इरै॥ सगन ल अगर जाल सवे हीला र
घो॥ हरि हां जन सेवादास तन देहि पान को आसी॥ २९॥ मु ग
धर है गर का लग मान गारजे मैं नर सू ते नांद आय इ है चै
गृहदर के॥ काल न दे सै नि दिन हाला हिलु धिरे॥ हरि हां
जन सेवादास हंसु ग अविला रिह बुधि रे॥ ३०॥ कनकुणत
आरु को तम्लूला स बगा ढै रै गुग सु प सु मन रचि बिलाल्यो
पीवरै॥ मूग नि सन ताजू नु पी मिठे न सो प्यास ले॥ हरि हां ज
न सेवा न रा मि पड जा म ना हि सम जि बिन मा ति रे॥ ३१॥ कंचन कु
न त गवा सो हि अल त्य ला लौ रै॥ विष रंगि रा त जो बा व त सौ मै
पीवरै॥ साध वेद ल व का है पुकारा रोये हरो॥ हरि हां जन सेवा दा ह
सर ना ती भी सी गा ह हि ये हरै॥ ५०॥ ३१०॥ चिंतामणी को
अंग स पूर्ण॥ अंग॥ १४॥ अथ मन को अंग॥ मन बिकट अति
घण मा हि रै॥ निदिन जा त है॥ हरि हां मन र तसौ मा हि बिषै विर
धा त है॥ जन सेवा दा स मन रिद के है पतु जी नांदि रै॥ हरि हां
मन हल त का के रि मा त ल जी जा जो मन जड साध घल मा हि
न क ल डा थिर रहै पा र बू ल पा त बा लि नि ल ज नी चा व है मन
कीपा हा री तिन क व क्रू धा ना है॥ हरि हां जन सेवा जन लगा ता है सा

गिबुलनघाटीदोइसमाधिमनमो॥हरि॥हरिहांजनसेवादास
गजिरोमाबिसारिमतिजो॥हरि॥१९॥सेवकनकेकोमृपोलागि
बिगूतेजीवते॥मेई बिपजेबुधिबिसा॥पोपीवेरे॥मेदोइब
डीसबलकवधो॥गिह॥नरो॥हरिहांजनसेवादासइकन
वबिनातनहानेरे॥२०॥मेमाटीकोगीतिपवनकाबंधरेमाह
मिहाहडओोडगधरे॥नासुणिमुगधलुगाइलीदमारि
सोईसा॥हरिहांजनसेवादासलेअधगुणजुगिराईया॥२१॥
बदसाधकीसीषयेकनहीरापहो॥बिषतचिपावेअधइम्र
तकस्यिापहो॥मरणेकानहांनेभरमभेम्भूलीया॥हरिहां
जनसेवादासतेमुधबिषमेफूलीया॥२२॥नातमातपरवार
कुलहनानारिरेतफातनसेलागिचल्यो॥मनहारिअेस
बेबटाऊमीतप्रीतिकोकोजीये॥हरिहांजनसेवादासम
जिरामनहालगमनजीये॥२३॥मानिषजनमधरिदेहबिगाड
कीहोमहेसबउलफिरहेबिचिमारि॥कालकोधोंसहे॥
नबपकडिलीयागढघेरिपडेपाछिताईये॥हरिहांजनसे
वादासयासेजबहोबिनहीपदये॥२४॥पकडिलेहूजमका
लूपडेपछिताइहोरेहारिसुमतोन्हाघोनरकिंतूंनाइ॥
होरफगनाकेनहबेध्योनरवावरो॥हरिहांजनसेवाह
रिविभुपसहेसिरतावरो॥२५॥सबनरकोवीवालदरवक
रतारका॥घर२सकोनहीबविपापहूलारका॥तनमनधन
हरिरतसुमरणकीजीये॥हरिहांजनसेवादाससुपहो
इरामरसपीजीये॥२६॥जीवनअलपजगमाहिकायूंषिरि
होइरह्या॥मोहमहलमेवासमगनहोइसोइरह्या॥नितकु
लफालहूघातनसंगीसजनो॥हरिहांजनसेवादासजीव
येककेवेरीहैघनो॥२७॥सूनोफलीलगाकेमहलवणाईया
फिरितबानताकेहेतमुगधलपटाईया॥सबधाक्चिल
परवारकनेरूपिरिदेहो॥हरिहांजनसेवादासयेजीवक
नीवालूबहे॥२८॥हरिपरमसतनहीनाडिकडीनसगाईयां
जबकोपेजमराजकमारतकाईया॥रेवंछूंमूलांसंधसने
हीपीवक्तो॥हरिहांजनसेवादासयूंमारपडेहैजीवक्त॥२९॥अे
बिषरसपीतेसारकप्रीतिनकीजीहेरे॥सूतवनिताकेनह
न्हवक्कधीजीये॥मोहपासगलिबंधेपगांमेबेडीयां॥ह
रिहांजनसेवादाससजिरासकजमसिरिघेडीवां॥३०॥मा
विधिकोनेहदेहल

नैसैनै तन ही गाह्या ॥ हरि होवो मन लस्यै थो ॥ सुख पिसमा स्या
२२३ स्या ॥ इती चंद्राइणा संपूरण ॥ चंद्राइणा ॥ १२४ ॥ अं ॥ १२ ॥ अथ रेषतो
अस्ते ॥ श्री गुरदेव को अंग ॥ गुरदेव की दिष्टि तै दिष्टि दीसै
की वाराह बारी कहोई साक्ष पावै कनक अरु कामणी जु गि
जो धासबल लडै कोई सूरद लगी तिस आवै पिसण पांचुं
पकडि दाहता लिहु मले लोभ हार मोह सब का सिया बैद्रो
ससेवौक है सुषल बहोल है अलष माजि ह्रालष आ जैस त
जी है १ कनक अरु कामणी तेग बरडी सबल मीस्त्र रपीर सब
क मारि लीये कोईयेक गुरदेव के ग्यान तै ऊबरै इनां वन बाणा तै
लागि नी ये गुरदेव की वोट तै चोट लागै नही रहै सबल की बं
ह न ही काल यारै दास सेवौक है चोट निबली गहै तौ अचू कि छु
डै न ही काल मारै २ गुरदेव के ग्यान बिनि वहै न गजा त हे वा
राह बारी कहै रहै न्यारो मन अरपे व नय सुरति समटा बिना तत
दरसै न ही भालि न्यारो वेद कतेव अरु पुराण सब ही पढे उल
हो टि करि गवाण न ही दास सेवौक है मह लव सैल है पषिबंध सबै
प्रल कनां ही ३ वौ निरपष निज देव सरब गिआ का सनूप पषि के
बंधमै नां ति आवे पषिबंधे सबै नु कही ह चट वाराह बारी कहै
नौ दिपावै देह रै देवल के जाइ धावै सबै फिरि ने कम हजी द
बंग दे पुकारै दास सेवौक है निकटि निरषै न ही वो राम रही
मन अरपूर सारै ४ दोष बेद षि लक मांहि तेरा धणी हरि क ह हु
ढता फिरै नाई सरणि गुरदेव का ग्यान गहि मन रमत जि सुरति क
समटि करि मांहि ध्याई त्रिगुण को त्याग करि चित्त चौथे धरा तै
दोषि बिचारि क अहूरि नां ही दास सेवौक है सुषत बहौल है
ह द बेहद माधि रहै मांही ५ सरणि गुरदेव की आइ अजपा जपै
जम तौ जोर नां करै भाई पांच कू पकडि हारि है रि इलटा फि
री तन हकीकति कर मिते षाई को मन सो धम दला न बेरी स
बल गुरदेव के ग्यान ले दा बिदीजै कनक अरु कामणी जीति
सेवौक है यो अवसर न लोन जिका जकीजै ६ सरणि गहि गुरु
वी अलष ठर मै न्यारि तब काल गम जाल तै बंचि गाई क
नक अर कामणी लोन मोह तजो मन मजो अबगति रषि तिप
द ग्यान का षडग ले मारि वैरी सबल सील सनाह अंगि पहरी
भाई दास सेवौक है पिसण पांचू पकडि घेलि चौगान के बीचै
माई ७ ॥ अं ॥ ४ ॥ अथ सुमिरण को अंग ॥ नांव ही जोग जिगे
नांव तप स्याउ लां नाव तीरथ व्रत बेद गाइ हैं नांव ही ग्यान है

सोघिरे इम्रतछाडे निकटि बहै बिषला घिरो तेजो तामनक्रब
धि सुरति की ज्ञो रितो सरहा जनसेवादास मन बिकट निकटि तेप
रिरे औला अनंत घट माहि रैणि दिन करत है बिलनयो मन पू
रि हत्त दिस बहुत है घोरि घोर घट मांहि जा तनकारि राघ सोर
रिहा जन सेवादास रस सार राम रस चाषीये ६ मन बिस हरका
रूप मो हठ कला इया को इयेक अबे सेत जगत सब षाई या प
न मंडी लहा ध्रिजत तन का डिंज नौ हरि हा जन सेवा सगुरु ज्ञान का
लि दई है धूवरे पजो ता मन कूं पकरि ग्यान समकाईये ये करो
मनो मत तसार तहां गरका इयो मन बहता काहे नराम सुनो म
नये हते हरि हा जन सेवादास सब त्यागि बिषैकानि स्वे दम
न मालो घट मांहि सम फि सतगुरु दई निसदिन फिरे अपंड द
मनि कारणी मंडी पवन सुरति ता पोइ कलो कैं राषीये हरि हा
जन सेवादास सगला ते सुमरि राम रस चाषीये ७ यो मन घिसनो
रहै बा हरि हुँ उ विषै रोघरत जिवन में जाइ बन मांहि घर करो मन
चपल चपल बहु लोक हयो नहीं करत है हरि हा जन सेवादास
मनीच बिषै चित धरत है ८ यो मन अपणा नात आप ही करत
है यो मन नाचो नी दा बिषै संगि जरत है कहा करत जगदीस नहीं
मांहि पाणी हरि हा जन सेवो कहै कर जोडि नमा गै आणजी
९ मन ने चल चपल अधीर थीर कउनारहै हरि सुमिरण सु
घड़ी डिनि लजनी चाल है मैं बरजत हार यो ना घसी फल ही मां
नि है हरि हा जन सेवा परम सनेही राम सुषा को पानि है १० मन
जतन करत उ बिजाइ मना तोजी बरा है बिषकू पी बुण हार वि
सा यो मी बरो सदा सो व घट मांहि कहो क्या का जीये हरि हा जन से
वा उँलना फेरि राम रस पन जीये ११ रे कहि फिरि मरि मन न सम
झै मरि रो अहनिस हात्यो देत नैं मु बिधारि रे मन करे कुसंगी
संग सू संगी ना कीरै हरि हा जन सेवा ऐसा मन ऊबट हा आण
म रे १२ कोही पैक हा नण ठउ मन का बातरो ही इम्रत रस छ
डि बिषै स दिया तेर न दीपक मांहि पतंग लु ना णो जरत है हा ह
रि हा जन सेवादास थै न न बिषै मैं परत है १३ मन बरक बल वाहि
मयो मनत ब्रसा यो सुंजो णि पक्रतो कात बिषै मन रस लो॥

१२२

तु स्रमनां तन हीमाझ्या। हरि हारयौ मनां मस्तै छै॥ सुस षिसमा
५॥ इती चेडाड्याण संपूरण॥ चेडाड्यां॥ १३७॥ अ॥ १॥ अथ श्रे
लष्यते॥ श्री गुरदेव को अंग॥ गुरदेव की दिष्ट तौ दिष्टि दास
ही वारा हबारी का कोई साधपावै कनक अरु कामणी जु
जो धासबल लडै कोई मरद लगा तिनां वै षिसण पां
पकडि दाढतां लिंडु मलै लोभ अरु मोह सब का सिर दे
सस सेवौक है सुषत बहील है अलष जिन लष जिन त
जो है॥ कनक अरु कांमणी तेग करडी सबल मास्त्र पीरस
मारि लीये कोई यक गुरदेव के ग्यांन तै ऊबरै इनां वन बांण
लागि नीये गुरदेव की वोटतै चोट लागै न हीरहै सबल की
हनही काल सारै दास सेवौक है वोट निबलीग हैतो अचू
डै नही काल मारै गुरदेव के ग्यांना विनि बहे न गजा तहै वा
राहबारी कहै रहे न्यारे मन अपवन ये सुरति समटां विनांत
द रसै नही मालिप्यारै वेद वातेब अरु पुराण सबही पढै व
ट करि गवाणन ही दास सेवौक है भ्रम हलवै सैल है पषि बंध सबै
षलकजां ही वो निरपष निजदेव सरवगि त्याको सजूंथ षि के
वंधमैं नां हि आवै पषि बंधै सब अरु कहीं अचट वाराहबारी कहै
नां हि पावै देहरै देव कै जाइ धावै सबै फिरिस्त अरु महजीद
बंगदे पुकारै दास सेवौक है निकटि निरषै नही वो नांम रहै
मत्र पूरस सारै॥ देषि वेदे षि लऊ मांहि तेरा धणी हरि करि हे
ढतां फिरै नांई सरणि गुरदेव का ग्यांन गहि निरमत जि सुरति कै
समटि करिमां हि ध्याई त्रिगुण को त्याग करि चित्त चोषै धरि लै
देषि विचारि कहारि नां ही दास सेवौक है सुषत बहील है
हदबेहद माधि रहै मां ही॥ सरणि गुरदेव की आइ अजपा जपै
जमतौ जोरनां करै आई पांच कूं पकडि हाटि है रिति लटा कि
रीतना हदै त्यांचि करि सितै षाई कां मत्र अरु क्रोध मद लोभ बैरी स
बल गुरदेव का ग्यांन तेदा बिदीजे॥ कनक अरु कांमणी जीति
सेवौक है यौ अतिसर नलोल जिका जकीजे॥ सरणि गहि गुरु
वी अलष उर मैं त्र चारि तब काल गम जाल तै बंचि जाइ क
नक अरु कामणी लोभ मोहा त जो मन मजो अवगति राषि तिप
ही ग्यांन का षडग लेमारि वैरी सबल सील सनाह आगि यहीर
पाई दास सेवौक है षिसण पांचूं पकडि षेलि चौगांन के बीचे
प्रासी॥ ७॥ अ॥ १॥ अथ सुमिरण को अंग॥ नांव ही जोग जिग
नांव तप स्नान दान ती रथ व्रत बेद गावै नांव ही ग्यांन है

क

मांहे

ध्यांनपुनिनांवहूीनांवहूीजोतिदीदारयावैनांवतारणति
रणाकलिमांहूंकेवलसहूीनांवसबग्रमनाइरियोवेदा
ससेवोकहैपरमसुषतोलहैजेनांवनबांणसंरतहोवे॥१॥
नुकमहूजीदबगईदवकरीदकरिनगोपायेकेवकूकरतरा
जाहूहिजाइदेहरैवूतयेकादसारारहबारीककेनांहिपो
जांदेषिज्ञोगदमैराहरस्थूलकापांचमनपवनकूफेरिय
ठा॥दाससेवोकहेनिकटिराहनिसतिकामोक्षपंडितबाव
रेफिरतफकरा॥षाडिदेनमसबरांमकहिबावरेमहूजी
दस्परूदेहरादोइनांहूीतनमहूजीदस्परदेहरातनहीतेज
लटिकरताररकेदेषिमांहीनवोजेओजदकूअवलिईमांन
कहिरसिहोछरसकूपरासिमाही॥दाससेवोकहैनिकटि
हीनिसतिहैपेषिदिलमांहिलनबीध्याईजाकोईरामरहीम
करीमकेसोकहोतुयेवअनेककहैनांवतरोकोईऊदरतिक
रतारअरिहंतअलाहकहोयेकरमताजोतिकरिनांवलेरो॥
आदिअरस्रेतिमधियेकअनतरतिहेचरस्थरचरसबदेषिमा
हीदाससेवोकहैनेदसाईलहैमुकतिकैमहलितनतेईजाई

१२८

लमेनिरषित्तदो विदिलमांहि वीदारतेरे अर धअरउरधकै बी
चि आसणकरौ मन अर पवन की जुगति जांणो दास सेवो
कहै नदी नव सै बहै सुरति सफेरि कै त्रिकुटी आंणो ॥५॥
॥६॥ अंग २॥ अथ भजन को अंग ॥ जे घकूं पहरि कै रि फूले
बेसही भजन का भेद तो हाथि नांही कनक अर कांमणी
की चिमाया कलेका मद्धारको धवि पस्त रमांही कहै तिस
चीकहैर हति काचीर है यक नाव न ब्वां गा बिनि काल षावे
दास सेवो कहै सुणत ब ही लहै के है जूर है तो पार पावे ॥ जे
धक्तूं पहरि कफिगत धूत सबै साचकूं बाडि करि का चलीया
मन अर पवन गरि सुरति सामिटी नहीं लोभ अर मोह रसन
तूर पीया कहै अर सुणे कछु कागसी फेनही जे करै करहै
तो पार पावै दास सेवो कहै दादि दरगह लहै बहोडि संसार
में नांहि आवै ॥ रांमराजी सदा रहति में जन कहै कहैं अर सु
णे कछु सिधि नांही पद साषी कवित सीषि सिरलोक कूं वगी
डनी यें सबै डिंभ मांही रहत निन्यारी रहै कहण कूं सरषा
नां हि तिसनां धणी फिरत भूल्या दास सेवो कहै साचकूं नी
लहै काल गहि ग्या सिहै फ्त है फूल्या ॥ सामातो सिधको स्रु
त साचा नहीं जोग की रहतकूं नांही पावै भेड नागी नही च्यटि
हैं कितकूं करम सब कूं करा फंडि घावे भजन को बाट जे म
चोट लागै नहीं सो भजन तो बीसरे भ्रम मांहीं दास सेवो कहै
सुपके मैल है बोहैति तिसनां घणी मिति नांहीं ॥ घरिषत कूं
बांचले आज बटो करे गाड घोडा घरां वाण वे वे हाथि पुरये
लीया दो बषा देस दो कहा जी को विधि नां वले वे मन मा
या मिल्यो तन जोगी कीयो भोग कूं जुगति तो नां हि पाई दास
सेवो कहै कबेरे को विधि भेड भेकूं करां फांडि षाई ॥५॥ मन
अर पवन कूं तिबंधि उलटि चलो त्रिबेणी तटि ज्ञाइ ध्या
न धारो विसर्णा पांचू पकडि हि ग्यान का षडग धरि कांम अस्को
धअरिलो नमारो सील अर साच संतोष हिरदै धरो परवि
जरणां न डोसी सरा पो दास सेवो कहै त्यरि रस सारो सिरै
औरस सब छाडि सब हरि रस चाषो ॥ मन अर पवन कूं सम
ति साइ भजो पांचकूं जीति पचीस न्यारो तीन को त्याग करि
चित चौथे धरो प्रातिस पावकूं परसि प्यारो सुरति लका
र का रिथ्या छांडि सबद रू गुण पाव सांगि ज्ञान कं नोड्य लागे दा
स सेवो कहै मनि निज भजो दकानी व अरसी वा मिलि यक का

धमांनपुनिनांवह्वीनांवहीजोतिदीदारपावैम्नांवतारणति
रणाकलिमांह्किसलसह्वीनांवसबत्रमनोहारिषावेदा
ससेवाकहैपरमसुषतोलहैगेनांवुनबाणसंतरतहैवेरा॥
उपमहनीदवगइदवकरीदकरिनगेपारयेकवस्तुकरतरा
नाहीहैजाइदेहरैचूतयेकादसाद्वाराहैवारीककेनांहिषा
नाएदिषिश्रोगदमैराहर्रस्सलकापांचमनपवनकूफेरियु
ठा॥दासससेवाकहैनिकटिराहनिसतिकासोअडितवाव
रेफिरतफकिरा॥श्राडिदेनमसबरामकहिबावरेमहनी॥
देपसकदेहरादोइनांहीतनमनजीदधरदैहगेतनतीतेन

[illegible]

हीआपहैमाधिहीआपहैसाहिबका॥ दासमसेवौकहैहैतिदासे
नहीजेनकीमालम्हूंसतयेकी॥२॥८॥अथ दा। अथ पदा
॥ एकरूपदेखकौ अंग॥ तूंजोरकरिजीवकूंपकडिजिवह
करैमुसलहकका हकवोलेइसजीवकाज्वाबदरगाह
मेनाहिंहैतबजीवकरिजिकरिकिसबोले॥ बिनादमगानू
रकाहाइकारतानहीअल्हसबघटमेजाणियकादासमसेवो
कहैमिसातितबहीलहैबंदीकूंबाडिकारिलेऊनेकी॥जि
वकुंमारिकरिम्हूलमबतावरतहीम्हूलमवेकायेदीजिगजे
लीमुन्हांसिरकूपदैचाटिराहीनिसातिकीजोहिआणेअल्ह
नहीदिवानो॥करहकोरासबलकाहिदिलबीचिमहरकेप
सेयुपसिमेकसांई॥दासमसेवोकहैदसतबहीलहैपावकू
नीपरतीतिपाई॥जीवकामरमसबबाडिदमुलनाबेदक
तेबपपादासदेणा॥इरासिइमानकूराषिसांईनजोनिसाति
कीराहकूंसाधिलेणा॥दयादिलमेंधरोपाकमनकूंकरोपा
बकपैरहहिरियावे॥दासमसेवौकहैदादिदरगहैलहैदी
जिगकीराह॥फिरिनोहिजावे॥येकमहंगीददसदारकरते
कायेकेउरदेषिबांवनकाये॥तीनसैसाठिचौराबंधबधीया
सपडदीपगदाइजोहदीये॥तिसमहंजीदकूंबाहिगुरहा
कीया॥दादिदरगाहमेनाहिपावे॥दासमसेवौकहैअकलि
कीतोइनौअकलिकहीणदोजिगनावे॥देषिमहंजीद
करतारकेसीकरीमांसकाजीमसेलोदमाणि॥सबदअवाण
सुणेरूपनैणानिरषिनासिकागंधहुगंधपिछाणे॥तिसमहं
जीदकूंघावदिलपाककरिमोहिअल्हापडादेषिलाई॥दा
ससेवोकहैनिराषिनिगदेरकूं सबरूपकडिकरिजुपु
दाईपयेहदरगाहकबूलबंदकह्याबेदकातेबसबकहैमे
रीमेनपाणीतिणदिलकादवालेतरसदिलआपणौदेषि
हारीकरदहैकोधकाफिलतेहूरिकरिअल्हकूंदेषिसबघ
टमांही॥दासमसेवोकहैमिसातिकहूहरिनादयादिलमोहिघ
रिमहलपांही॥दादरदादिलमेधरोपाकमनकूंकरोगुरुहांद
रगाहमेनाहिआवै॥देषिपैकबहूडरादिलमेधस्याजीवकूं
मारिकरिनोहिपावे॥निसाफदरगाहमेंहोइगजीवकाक
वकेधणीसिरिनाहिकोई॥दासमसेवोकहैसाचदिलमेगहैसा
चकीवौरहैअलषसांई॥७॥इति पद॥७॥अथ लिपी
नाणीकौअंग॥चेतिरचेतिअचेतसोपेकहाचेतिअचेतता

॥७॥२३॥अंग३॥अथ साचकौ अंग॥ सबकू वकू हरिकरि
येक साच कू उरि धरौ सतिका सब दस्त लेऊ कोनां डकूनां
व निरमल बिनां पारिय कू पैन ही बेद आरू प्रांण नां वे पतौनं नां
येक साच कू ग्रहि गुण गा सिपां चेयक डिपरम सुपसत चियै वासु
घ डाडि उला॥ दास सेवौ कहे संत निरमे रहे जगत सब जात हैं
रामिन लाश॥ संतां येक साचकू पकडि कै गह्यो जगत सब रते
है मू वमांही॥ निकट है साच सो साच दरसै नहीं फू वकी राह सब
जगत जो ही॥ राह पछिम चलै नां व पूरब धरै दिनै दिन आतरौ प
ड्त जाई॥ दास सेवौ कहै पद कू सैल है यूं सब जगत कू काल
ग्रहि षा तनाई॥३॥ आकार की चोट आकार नि रमै नहीं आकार
सो बिनस तेजां हि नाई॥ सेस सिव बिरंचि अरू बिहन आकार
मेंक गैसी आप्य वेनां र हाई॥ फूल फूले कुमलाइ जां वैसब
महल चुणी ये साई ढहि जावे॥ दास सेवौ कहै येक भेगन्दबा
णा कूं सो काल की चोट मैं नां हि आवे॥३॥२६॥अं ६॥ अथ
साध कौ अंग॥ साध की राह तौ बहौत बारीक है लहै कोई सि
ध मन सुध पूरा॥ काम अरु क्रोध मद लोभ तला लचत जै मोनि
मांनि सब करे दूरा॥ मन अरु पवन कू फेरि उलटा चलै सकल
मन बासनां जां लिया वे॥ दास सेवौ कहै सुषन बहील हे उलट के
रहि आप मैं आप जावे॥१॥ अलष की राह तौ चलै कोई जोगीया
मन अरु पवन जिनि सामि कीया॥ चंद अरु सूर कूं येक घर आंणी
यां सुषमन फेरि करि रस पीया॥ सील अरु संतोष हिरदे ध
रे लोभ अर मोह सब जहर धोवे॥ दास सेवौ कहै नूरनिरषत रहै
सुरति अरु निरति मिलि मांहि पोवे॥२॥२७॥ अं ५॥ अथ सम
दृष्टी कौ अंग॥ तूं येक ही येक सब देषि ह ग्यांन ही येकं पव
नां व पांणी येक पांणी॥ येक ही तेज आकास ल्याये क हीये कही
गोति सब घट जोणी॥ येक ही बूंद औ ग्रंदकू येक ही येक क
रता कीया और नां ही॥ दास सेवौ कहै नाम सब हरि करि ये ब
अलेष सब घट मांही॥१॥ येक ही आव है षाक पुनि येक ही ये
क करता कीया तुरक हींदू॥ तिस करता कूं भूलि पीछे लगे दे
खि देव कूं न्यारे गिणा हि लबूंद की बूंद ते देषि केसा कीया
और दसओ जहद दक्ं देषि ते॥ दास सेवौ कहै बिसरि करता कूं
मो ह के मद सब जगत माते॥२॥ आप ही ते न बिच आप मा
सति है आप ही सब आकास मांही॥
जीव ष्पा आप पावे पीवे और नांही॥

ा फिलक्यूं होइ नाहीं रे॥ यौ तन चल्यौ जात है बीतौ॥ तूं रांम सुं
न रिसुषदाई रे॥ टेक॥ तूं काची पर षषा हि मत षोटा॥ तो हिक
हि समझा के लोई रे॥ सुमरण साबलेला इदुग सब तें सा
च्स गति मिलि धाई रे॥१॥ वेद साध तौ द्रिटि कि हूत है॥ दिन
ही दिन समझावे रे॥ कह्यान माने मन सब मेरा दोडि॥ बि
ष फूल षावै रे॥२॥ सतगुर मिल्या कीया मोहि सन मुष॥ निरंय
म पियाला पाया रे॥ जन सेवादास मपूरण अविनासी॥ मैं मन
कूं तहां लगाया रे॥३॥२॥ मन तूं क्यूं लतनो नाईं रे॥ सदा सिरू
ं रौ काल लकत है॥ ज्यूं मूसे सद बिलाई रे॥ टेक॥ होइ ऊभि
यारराम नाजि नाही सब दीलन की जे काई रे॥ ज्यूं प्यासे नीर ज्यूं
प्रेमी जनका॥ यूं हरि सूं प्रीति लगाई रे॥१॥ ज्यूं कांमी कामव
रमानि चोरी॥ यूं हरि सूं मन तूं राषी रे॥ वसती रहो ना वैबन मे
रमो हां॥ साधक है सब साषी रे॥२॥ ज्यूं पलंग अगन हीम
डे॥ चो पड तन पा होजावे रे॥ यूं सेवग साहिब के कारणि
तन मन अपणो षोवे रे॥३॥ ज्यूं कुरंग बधक सर षावे यूं गन
तन सूं सुरति चुकावे रे॥ जन सेवादास सो होइ अविनासी
सहजि परम पद पावे रे॥४॥ राम रस पीया रे॥ पीरहे आनंदी
होइ॥ टेक॥ धूं पीयो प्रहलाद प्रेम सूं॥ नामदेव पीयो अघ
ईरे॥ दास कबीर पीयो होइ निरभै॥ राम सुरति ठहराई
रे॥१॥ सोझे सिनि पीयो रैदास॥ मीरां प्रेम बढाई रे॥ पीयो प
रे॥१॥ सोझे सिनि पीयो रैदास॥ मीरां प्रेम बढाई रे॥ पीयो रकेब
पंथ ने धीरज नित॥ सुषदेव रहि नत माई रे॥ पीयो रके ब
के मुरारि मलूक॥ और सनकादिक न अजोगी रे॥ गोर
षि पीयो सदा मतिवाले॥ औरस काहे न जोगी रे॥२॥ सससह
समुषित चित चिपायो॥ सिव नारद मुनि ग्यानी रे॥ हणु
मान हटताली पीयो॥ अनंत संतो धरि ध्यानी रे॥३॥ पीयो
नरषरी गोपीचंद॥ और मेरा पावन माई रे॥ सेषफरीदन
तिक पीयो॥ पीसुष मोहि समाई रे॥४॥ पीयो कान्हदा रूप
यो॥ और पीयो हरीदास रे॥ नरसी दास पीयो सबसंत
वे पहुंते अगम निवास रे॥५॥ चंद सूर जहां पवन न पाणी
परम जोति परकास रे॥ जन सेवादास मिलिये कन
येहै हिलि मिलि हरि हरि दास रे॥६॥४॥ सनो साच बिना
सुषना ही॥ जब लग विषै विकार न छूटै तब लग सुपन
ही माही॥ टेक॥ साचा सबद बताकै है तहै पारणउर तै ल
मन छूटै कह्या सुरत्या कबू कान न सीझै॥ त्रि सन छि

है कालपावै। दिषि दीसै जिकूं रहणपावै नहीं कालकी चोटमै
सकल आवै सुरग अरु मृतपाताल थिरिनां है ऊगिबतै दि
नासरबजावै दाससेवो कहै सुमरिहरिनांवकूं तब होइनि
र्भैमनसुरति लावै ॥१॥ फूवकै फूवसी रसुफूवहै सतिस्नै
वनिरबाणनाही दार अरु सुत धन धाम थिरनां है मिलुसं
जोग दिन च्यारि आई ग्यान बिचार करि देषि घटमें तरा देह
छिनयेकमै बिनसि जाई दाससेवो कहै सुपत बहील कैन
जै हरिनांव सब तजि उपाई ॥२॥ ४०॥ अं ८॥ अथ करम
को अंग ॥ करम सनाहकी कडी काची जडी सबद नैतीरन
हीलगणपावै बरण आश्रमके धरम गाढैकी येवाराहबा
रीकनही दिषि आवै ॥ मिलै कोई संत निरपष साचा सबद
नबफूवताजि साचलें मारिपेसै दाससेवो कहै सुपत बे
हील है मुकतिके महल जब जाइ बेसे ॥१॥ करम की तापतौ
नही तनिकूं तरी जहर सामि अगन तौ तातिहि लागै ॥ संततौ मु
षतै सति सबद उचरै सतिका सबद सुणि हरि जागै तापतौ
नसगई ग्यान प्याला लगै यू सतिका सबद सुणि भरम भागा
दाससेवो कहै फूवको त्याग करि लाटमन साच गहि साच
लागा ॥२॥ करम की बाडि मै करम का टासबल करम के कं
टका सब जगत बीधा ॥ कोई नीसरै सतगुरु ग्यान गहि संतज
न सब करम की पासि कूं काटि सीधा ॥ पंथ आहलीया पेम
प्याला पीया सकल मन बासना सोधि पाई ॥ दाससेवो कहै
धनि वे संतजन राम नजि राम जन नाम मिलि येक होई ॥३॥ करम
कांटा सबलत लागि पैंडा थक्या अटकि उलट पड्या बारम
हीं जीव लल फेसदा जनकतन में घाण दुषदारण घणा
मितनाही ॥ बैद पूरा मिलै रोग सब हरै दुष सब जीवका
साधघावे ॥ दाससेवो कहै सुपत बहील है तन आरमनका
मैल धोवै ॥४॥ ४४॥ इती रेवता संपूरण ॥ अंग ॥५॥ अथ पद लि
ष्यते ॥ राग गोडी ॥ मन रे तन रामि सुलां नांभाई रे ना कोई तेर
नतं का ङूकाजु आया तूं जाइरे टेक ॥ मात मतं बनिता सु
त बंध तेरा नोही कोई रे ॥ रामा बिसारि ताहि तेरा तो थूं ही
जनम बिगाडि रे ॥१॥ आपो बिसरि बिघिरहे प्राणी ज्यूं नलनी
कासुवारे हीं निजि सुफल करान सी वही यूं हीं यपवि मू
रे जा

[illegible] नमावैरे॥ मोंही सा

[illegible] वावैरे॥२॥ नो स्नि॥ सिक

[illegible] स्यावैरे॥ जनसेवादास

[illegible] बिप तिनदा बहिजावैरे॥३॥ ए नर

[illegible] सीरे॥ लोभमोहबैरी सगितैरे॥ जन

[illegible] सीरे॥ टेक॥ बेद पुराण सबै ह पढीया॥ क

[illegible] सीरे॥ लालच लोभ बिषैरासिराते॥ फि

[illegible] सीरे॥१॥ गंबलगलाल चलो मन छूटौ॥ त

[illegible] सीरे॥ सील साच संतो बिना नर॥ सबब

[illegible] सीरे॥२॥ स्त्री बनिता के हेतिबंधांनो॥ परमतत

[illegible] सीरे॥ मोह पासि गलमांहि पड्यो नर॥ यूं बांधजम

पुरि गैसीरे॥३॥ राम भजन सूं प्रीति न उपजी॥ फिरि बिषै स्र

त करिषैसीरे॥ जमदूत जं आणि गहैंगे॥ तब रसन ताल

वै फटसीरे॥४॥ राग दोष उरते नहीं छूटे॥ तो ग्यान कथ्या क्य

छ हसीरे॥ जनसेवादास नगवंत भजन बिन॥ काल ग्रसैं

लो पैसीरे॥५॥१॥ थांकै कैसी कथा तुम्हारी॥ लोभ मोह

बिषै रासि रत॥ अंतरि रैणि अंधारी॥ टेक॥ मन तो ये कहे

हके डोरा॥ के हरि के माया मांही॥ साति का सबद हरि

दे करि सोधी॥ यो दूगल पो नांही॥१॥ कंचन कामिनी का

च बसि ह्वा॥ समकि कंतून ही आई॥ आपण भूलि पडे

भ्रम मांही॥ फिरि सब डुनीयां भरमाई॥२॥ ग्यान कथ्यो कु

ण हाथि न आयो॥ सब रा विर्ह है आई॥ जनसेवादास पं डि

त होइ बूडे॥ सुधि बुधि सबही षोई॥३॥२॥ नरभजनाबिना

पछितासीरे॥ लोक लाज कुलकाणि कुटंब की॥ यह गल

मे पासीरे॥ टेक॥ तार नाई आयो घो तिनि को मिन लागो तूं

नरामि भूलाणो नाई॥ बार बार तो हि कहि समझा॥ क्यूं

म सुमरि सुन [illegible] नाई बा सेजम की पेडि पड़ी है

तू सूतो नी [illegible] छूटै नांही

ल

बिकत्या न

आगे॥२॥ मोह महल के मांही सूता॥ फिरि कहै कथा बि
सतारी॥ जनसेवादास तके संदरसे॥ जातरि रैणि अंधारी
॥३॥ मन रे जागि न देषै जाई रे॥ अति काल तिरा नही कोइ
न राम सुमरि सुषदाई रे॥ टेक॥ तात मात बनिता सुत बंधू
सब स्वारथि म्मली सगाई रे॥ जब आणि काल कंठ स्वै पक
डै तब सगा न सूके नाई रे॥१॥ सुष सागर तें दूरि तिग्यो संग
तंबोल न बिंगे आई रे॥ नही तो काल की कोडर है॥ हूं पि
रियो है पछितांई रे॥२॥ जिनि गर्भवास में रष्या कीन्ही॥ ता
हि सुमरि सुषदाई रे॥ साधा पसू चेति सवमूरिषा॥ छिन छि
न घटत दिन आई रे॥३॥ तसम कूं चेति समझि मन बौरे॥ न हरि
चरणे चित लाई रे॥ जनसेवादास कहत है टेरया॥ तो हि
बार बार समझाई रे॥४॥६॥ मन रे गोबिंद क्यूं नही गावे रे॥ बा
रबार तोकूं समझाऊं यो औसर बीतो जावे रे॥ टेक॥ कहो
का चेतो डेक बल गया प्राणी॥ बिणसत बार न लावे रे॥ डूग
थू हणी उह्या जसारा॥ तब फिरि पीछै पछितावे रे॥१॥ जब
लगि सास बास घट नीती॥ तब लग राम भजन करि लीजे
रे॥ जनसेवादास कहत समझायां॥ आव घटै तन छीजै रे
॥२॥७॥ अब कलिजुग आयो नाई रे॥ परमेस्वर सूं परचै नांहि
चले सुधा जम पुरि जोई रे॥ टेक॥ गंपान कथे अराबि षेक
मावो॥ तो साच न पावे नाई रे॥ फिरि साधां सेती करै षबरी॥
ते नर नरकां जाई रे॥१॥ कथणी कथे करणी रही न्यारी॥ स
ब कूं वी करे बडाई रे॥ यां बातां तो हि छूटै नांही॥ फिरि
दोजिग चाल्यो नाई रे॥२॥ परम तत चीन्ह्यां बिन प्राणी॥ स
ब कू वेवाद बिबादा रे॥ हरि मारग ते दूर होइ पिन आयो॥
नं चल्यो चौरासी गलि बांधी रे॥३॥ मोह पास गल तै न होय छू
टी॥ बहो सुत बित नारी ने हारो॥ राम भजन बिन पारि न पडु
वे यूं ही पोई नर देही रे॥४॥ जनसेवादास जे इष प्राणीयो
तिन सदी जेटाली॥ तो वे राम जना का निंद्या ग नै॥ ताकौ मु
ष कारि काल्ती रे॥५॥८॥ कोई गुरु बिन म्यान न पावे रे॥ कहा
भयो जो पाहि जग पर मोषै फिरि माया सूं मन लावे रे॥ टेक॥
मारि षहु असगाद तसाये॥ अरथ क्यौं होत बतावे रे॥ जोम
मोत पोचां बासि परगट को ऊ ही।

मिलैसबसंगी।तातमातसुतनारीरे।इनसूंलागिमूल
जिनहारौ।हरिजनकहैंपुकारीरे।१।तनधनजोबनदे
षिमुलोना।सोथिरनहीगवारारे।बादलछांहजुमके
पाणी।जातनलावैबारारे।२।नावनिरंजननिरमलसारा
नसुमरौबारंबारारे।जनसेवादासतिरिजाइसहज
मै।मोजलबोकाधारारे।३।१०।नरनारीनेहनकीज
येरे।गिंदबिंदनोनाइ।सोषे।दिनदिनकायाछीजी
येरे।टेक।जयूंराजरोगजकोमतसिमातो।तबबुडीयाइपछ
तीयैरे।दीपगमांहिपडैपतंगा।यूंकेतहैंजीवसीजी
येरे।१।ज्यूंकुरंगनादरंगीयानो।तबषडषेडतनकीज
यैरे।अवरोल्लुबधीवासल्लुभानो।यूंमनम्मोहबंधीज
येरे।२।रसनस्वादिमीनजलबाहरि।तबकालकोरंग
हिलीजीयेरे।जनसेवादासइहुगपांनविचारो।विपत
जिइम्रतपीजीयेरे।३।११।हंसोकाभांतिन्यारीरे।सतनारि
संगिकोकंसमिदासै।येजेबातषवारीरे।टेक।मानस
रोवरकेबासीहंसा।बुगनाडांमधिकारीरे।हंसमोती
बिनचांचनघाले।बुगलेमछीप्यारीरे।१।षीरनीरन्या
राकरिलीया।सारामारविचारीरे।जनसेवादासऐसज
नकीर्तीकीमैबलिहारीरे।२।१२।।रागभैरूंप।।।
राग।।१।।रागमारौगोडी।।।बालेहैसहानारिचैनवेपाचु
कूतपकडिमांही।और्तांजीसबफैनवै।टेक।पौंन्दमै
मोन्दहैवे।वोपाकपरवरदिगारवे।देषिलेदीदारकूत
गेबगौतामारिवे।१।हूंगुजरकारिफिरिआवउलटा।दैसर
सकूपरिआपवे।षोलिकरिदिलचुसतकरिदम।जपोजे
जपाजापवे।२।पाकमनकरिवैसिअंदरि।तंउलटिआपनी
हारिवे।बदीतजिदिलसाफिनकी।तंदेषिलेदीदारवे।३।ऐसे
वादीचांनदांनीबदीकरिसबहारिवे।जनसेवादासदिल
षोलिदेषो।वोरह्यासकलभरपूरिवे।४।१।हंउलटिदेषि
हजुरिवे।नाइहरिनांनिकटिसईयांरह्यासकलभरपूरिवे।
टेक।है।निकटिनिजनिधिमिराषिमांही।निजसुंतिउलटी
फेरिवे।चारिपांचकूंतंजिबदगुणतजि।दिलमांहिबैगदे
रिवे।१।दरदसंवीवीणहाजारी।वेदरवपासैहोइवे।दरसकों
तेरेचाहिअंदरि।तंओनदकेमलषोइवे।२।दिलम्याखा
फोदरसमांही।पीवसदासंगीसोइवे।जनसेवादासमैनि

फिरिल्यूटैजो तनलायोरे॥ये सबैइ बऊतां तहिनकीन्हौ तै
यूंहीजनमगमायोरे॥२॥ नेम तेम नरम मैजाइ॥याकाया
कामकी हांडीरे॥याती सौं मबहोडिन हीलानै तेबिसारिहो
इमतिमांडीरे॥ नहीं सिजिवीलमकरिमोबोरै॥सिरिकाल
धजाफहरांणीरे॥कालापलटिधोलासिरआयारा॥याकाल
तणीसहनाणीरे॥ कालतबाडि अलखनजिप्राणी॥ते
ह्निकाहिसमकोऊलोइरे॥जनसेवादासयेकरामबिनानर
नैरैसगानसकैकोइरे॥५॥ मनरेतूंसबदसुणीसतिसं
ततणां॥गूगासुबसीभासिरऊपरि॥ दुषपावैगोहास्वजन
बिनां॥टेक॥गाडेहालिहाकलादिनजेहै॥मारपडेगीबहोत
घणी॥ सुषप्यासदुषततैसुधिनाही॥अबसमाफिरसुनरोरं
मधणी॥१॥पोमिनाराफिरियांणीबदिहै॥ तवैतक्यूनदी अ
धा॥जनसेवादासमजो अबिनासी॥ज्यूं छूटैजमफंधा॥२॥१४
देषोनरअसिमिनूलारे॥परमेस्वरसूंपरवांनाही॥सबलागि
रैसुषकलारे॥टेक॥देवलिमूरतितीरथपांणी॥बरतस्मय
रासिकरसीरे॥परमततजांणां बिनआंणी॥तलफितल
फिमरिसारै॥१॥साचगहोतगिफतूपसारे॥कहिसमभग
लोइरे॥जनसेवादासमजे अबिनासी॥सोजननिरमैहो
इरे॥२॥१५॥देषोनरनहीचेतिहैरे॥सबैइबऊस्योनहीको
इलेतहि॥आपणपोदेतहैरे॥टेक॥साधसंगतिकरीनही
कबहू॥बिषरसिरातोमाईरे॥ नबयोजीवपडैसोकडेनव
हारबिणिकोणसहाइरे॥१॥ ताहीमैतेआपोदीन्हो॥सोतर
नांहीकोईरे॥ स्वारथि आइमिलेसबसगा॥ अतिबिछुटैलो
ईरे॥२॥ये सबदासैमोहपसारा॥साणिजपोमुरारीरे॥जनसे
वादासडावनत्ताया॥ज्ञानकरिल्योपकोसारीरे॥३॥१६॥
नरदेषोमेरांमिअलषधारा॥कोइलोकदेन्दकलिकबाडे
जैधोईजेइहधारे॥टेक॥तीरथबरतदांननतपसाधन॥जोग
जिगआचारारे॥परमततकासोधीनांहीं॥इस्नमहैसोपा
रारे॥१॥मसकातिकैरेसमसकातिपावै॥यामैसारफेरमतिजो
णीरे॥निहकांमीनिजदेवनिरंजन॥वोहैनांहिअयोनैरे॥२
॥होइनिहकांमभजोअबिनासी॥त्यागिअभिनसबदुष्या
सारे॥जनसेवादासनिरभैजनसोइ॥सबकटैकालकैपा
सरि॥३॥१७॥नरनावबिनाडुषमारीरे॥अबकपासीवैनाभिम
रेनीवडनातूंहरिनजिजनमसुधारीरे॥टेक॥स्वारथिआइ

जनसेवादास कुछ नांही कोई।। राम भजत निर्भै जन होइ

१२५ ।।५।।५।। सतगुर सीष ऐसी समझावै केवल राम निरंत
गावै ।। टेक।। सास उसास सुरति तहां राखै राम अमी रस भ
रि भरि चाखै ।।१।। गुर परताप सहज धुनि लागी सूती सुर
ति उठी तब जागी ।।२।। बिरला भेद लहै जन सारा जो कूं
सतगुर मिलीया पूरा ।।३।। हीरा पायौ खोलि घट मांही म
नि न तहां लुभांनौ कैसें नांही ।।४।। आत्म केवल कीया परका
सा ।। जनसेवा सो सुष बिलसे दासा ।।५।।६।। सतगुर सबद
सुणाया साचा ।। हरि हरि सुमिरै मनसा बाचा ।। टेक।। चंचल
मनवा निहचल कीया ।। प्रेम पियाला भरि भरि पीया ।।१।। आं
न ध्यान सतगुर सब षोया ।। राम नांम मे पो मन पोया ।।२।। उ
लटी बाट गिगन कूं ध्यावै सहज मनवा सुष समावै ।।३।। बि
रला जो पै भेद बिचारा सब के सिरै राम रस सारा ।।४।। हरि
कूं भजै रहै बिष त्यागी ।। जनसेवादास सोई बडभागी ।।५।।
।।७।। संतो सतगुर भेद बताया आवै जाइ सोई सब माया ।। टेक।।
धरता करता कदे न होई ।। अधर अपंडी सब समि जोई ।।१।। र
मता राम सकल घट मांही वे की माति का कीमति नांही ।।२।।
आवै जाइ न हरि राया सकल बियापी सहजि समाया ।।
३।। जल थल जीव सकल बिसतारा सब के मांहि सकल तै
न्यारा ।।४।। जनसेवादास सूधे सब कांमां ।। निरमल नांव की
या बिसरांमा ।।५।।८।। सुमरि सनेही साहिब तेरा ।। तौ पचौरा
सी का मिटि है फेरा ।। टेक।। साचा साहिब है भरपूरा फे चेला
पिपडे जीव हजूरा ।।१।। धरीया दिक कूं सब कोई ध्यावै अध
अपंडा बिरला पावै ।।२।। येक पलक न गछा पिंड थापै ये
क अकेला आप ही आपै ।।३।। बलबल करै सू करता नांही ।।
सकल जीव सब आपा मांही ।।४।। जनसेवादास जनि समर
थ सांई सुमरि सुमरि जन मांहि समांही ।।५।।९।।४०।।र
।।१।। राग सोरठि ।। मन रे तेरा कौंण गंवारा तुम देषो सोच बि
चारा ।। टेक।। पांचो के बसि रात ।। जागि न जापे बिधाता सूत ब
निता अरु भाई ।। सब स्वारथि मिली सगाई ।।१।। मोह मद ल
मैं सोवै ।। बिन जागे सब रस षोवै ।।२।। गिरजपो मुरारी ।। बि
न सुमरयां हो इष्वारी ।। तात मात परवारा ।। बहोत लके
मुगध गंवारा ।।३।। अंति काल की बेरा ।। कोई यामे संग न तेरा ।।
।। मोह मगन रस षाया ।। हीरा सा जनम गमाया ।। अलप

नयानिरमैयेकसबैरमतानोइवो॥२॥शडुनीयाइहरिढूंढ
णगांहिंसां नयारीकरतडोलैं॥पसमनरलामांहिंटेका
तपतीरथांमनकिरैंनटकता॥कुभसुधिपावैनोहिंमू
लिगानरतारकूजीवचलदो॥जिगजांहिं॥२॥निकटिअमृत
थाहुमूरिपा॥दौडि बिषहीपोहि॥जनसेवादासनिजना
नैडो॥स्मारिमूंसूबथांहिं॥२॥३॥२३॥राग॥१॥रागक
नडो॥निराकारानिरलेपनिरंजना॥नानाभांतिनयेसबगंगना॥
टेक॥जैसैंकनककेभयेअनूपना॥कनककहु कोईलगैनडु
पना॥१॥जैसैंघटमैरविपरकासा॥जैसैंसबघटिब्रह्मदी
सा॥जैसैंमनिगणसूतरमांही॥बिविसूतरमनिगण
कहूनांही॥३॥बाहरिब्रह्मब्रह्मदेमांही॥ज्यूंघटमैनीर
उन्नजलमांही॥४॥बाहरिभीतरिसबैब्रहता॥ज्यूंपट
तंतजुदेकछूनांहा॥५॥सबनंजनमतकाकेमांही॥ज्यूंतका
बिनोजुदेकछूनांही॥६॥जनसेवादासजांणोनरलोइ॥रम
तारांमसकलघटिसोई॥७॥१॥रामसनेहीमोमनिभावै॥
हरिबिनओरकछूनसुहावै॥टेक॥सीपसरीवरिहैहैउ
दासा॥चातिबूंदकीहैउरिप्यासा॥१॥ज्यूंचात्रिगघनकूं
नितिटेरैधरपरिनीरनहीतिसहेरै॥२॥कवलदेषिजलमां
हीफूलै॥सूरउदेहाइतबहीफूलै॥३॥जनसेवादासक्ये
जीवनितेरी॥याहीप्रीतिरहौनितिमेरी॥४॥२॥जाणेरांमन
औरनजांणोरांमाबिनाकोईनिजरिनआंणै॥टेक॥हरिबि
नसबहीबिधिमोहारा॥मेमेरेकामिनहीहैयारा॥१॥हरि
बिनसबहीदेवीदेवा॥मेरैकामिनक्यूंहीसेवा॥२॥जनसेवा
दासरमईयागावै॥रामाबिनाइहजानहीभावै॥३॥३॥हरि
बिनप्यासनभाजैमेरी॥भावैकोटिकहोक्यूंनटेरी॥टेक॥जो
गजिगतपजब्रतदांनां॥मैमेरेकामिनबिनभगवांनां॥१॥
तीरथजलनादोनजुगजेता॥मैमेरेकामिनआवैयेतेमे
तोयेकरमईयाजांणों॥दूजीबातमुषांनहीआंणूं॥३॥जन
सेवादासकहैसुणोनरलोई॥रांमभजनबिनमुकतिनही
होई॥४॥४॥आहुमनांमहीबिनदूजा॥हरिबिनदूजीकैसी
पूजा॥टेक॥औरबाततेंमुकतिनहोई॥रामकहतनडूबैके
ई॥१॥आडिआंनभजेगोबिंदा॥तबजाइकटैकालकेफंदा॥
२॥बिनहीप्रीतिलईजपमाला॥यूंतोनाहीआइकाल॥२
तनमनजोबनसबबिसरावै॥हरिबिधिरां

गिल॥गिजीवमेरा॥हरिनांवबिनाकोतेरा॥२॥दिनाच्यारिके
१२० मेला॥सबत्यारथिकेसंगिमेला॥जातिकालकीबेरांत
असगानसकेतेरा॥३॥तूसमझिदेषिमनमांहीं॥जोदी
सेसोथिरनांही॥जनसेवादासनजागे॥तेनांहिनिरंजन
लागे॥४॥धमनरेक्यूवासुषसेसारा॥सबत्यागिमनौक
रतारा॥टेक॥धीयासुतकुलनारी॥सबसीवतहैविषक्या
री॥१॥गुणतांकिरिमछितासी॥तातेपहलीहोइउदास
॥२॥धनजोबनथिरनांही॥येसबबादलछांहीं॥तिहिंसुषि
बेवथीरा॥सोधूपसहेबहोपीरा॥३॥रावरंकसुलितानां
अहंमायाकीचकलांनां॥नागिनजगपतिजोयां॥मनि
षातनयूंहीषोयां॥४॥जबाजीडहकायां॥वोनिजातनृनि
जरिनआया॥काजीमिसरमुलांनां॥बहोपढिपढिबेद
कुरांनां॥५॥सतषंडामहलबणावे॥बहोसंधोगिल
गावे॥सेकसुषासणिरतां॥तेऊठिगयेअतिरीते॥६॥असि
घोडामडरहाथी॥बहोदलबलचलतेसाथी॥नाकीर
जनहादीसेनांनां॥तेमिलिगयेषाकनिदांनां॥७॥हरिबि
नसबसुषआरा॥बहोबांधेसिरपरिभारा॥जालुपजाव
थिरमानें॥मरणांसोनिकटिनजानें॥८॥गुरदादूबुधि
अपारा॥सबछाडूजुगमोहारा॥जनसेवादाससुषप
या॥भजिनाथनिरंजनराया॥९॥७॥साधोतेनरमुकतिनपां
हीहे॥करणीदेषिपराईमूरिषबूडाजोजालिमांहीहै॥टेक॥
गावेंविषैजगतसबदचितचि॥निरगुणभगतिनआवेहै॥
निरगुणभगतिबिनानरबोरे॥पारनपेलोपावेहै॥१॥बूड
आपजगतकूबोवे॥कछूकमिनरमतपावेहै॥फाटेदूध
गयोघ्रतसेती॥यूनरदोजिगजावेहै॥२॥साचबिपाइभर
मकुरिपरगट॥भरमहीभरमादिढावेहै॥भूलाजगतभर
ममांही॥साचनिकाटिनहीपावेहै॥३॥जनसेवादाससत
गुरसमझावै॥जागपासोसुषलागपावे॥सततासोसुषक
देनपावे॥वेसुषतजतभनागपाहे॥४॥८॥साधोमुकतिकी
सीबिधिपावैहै॥वोनिराकारनिरलेपनिरंजननाकूंरसि
रासिगावैहै॥टेक॥बेदपुराणकहेसमझाया॥तीलगुण
बिसतारा है॥ताबाजीमांहिसकलजुगभूला॥वांकीग
तिहैन्यारी है॥१॥वांकिआसाहिबकाभेदनपावे॥नबलगका
चीसारी है॥जनसेवादासमनहीसमझावे॥वोउपजिन

वनही तकै कोई गुरमुष बिरला बूझै ॥ त्रिगुण लगपा
संसारा ॥ तातै दुल नहीं पैपारा ॥ चौथै चितन लाही ॥ तां
तै बांधे जमपुरि जाही ॥ ५ ॥ जग उलटि न देषै अंधा ॥ हरि नां
व बिना सब धंधा ॥ जन सेवादास तै जीया ॥ ज्यां राम रसा इ
ण पीया ॥ ६ ॥ हरि सुष मेरै मनि भाया ॥ और सुष दिन च्या
रि केरा ॥ सो सबै बिसराया ॥ टेक ॥ धाम धन सुत नारी सबही
सुपन सुष काया ॥ जोग जिग ब्रत सबै कूवा ल्यागि हरि गाया
॥ १ ॥ स्वरग मृत पाताल ना सुष ॥ तत कत उरझाया ॥ जन सेवाद
स जिन राम संगी ॥ सब स्यौं सिर राया ॥ २ ॥ ३ ॥ मनां न जा सिरे
गोब्यंदा ॥ और सुष दिन च्यारि केरा ॥ सो सबै दुष दंद ॥
टेक ॥ अथिर ब्रह्मा सेस संकर ॥ बिसन थिर दीसै नहीं ॥ यंद मे
र सुमेर गिर सर सबै परलै मै सही ॥ १ ॥ अथिर धाती पवन
पांणी तेज तारा ना रहै ॥ चंद सूर अरु गिगन थिर नहीं ॥ वेद
साधू यूं कहै ॥ २ ॥ स्वरग मृत पाताल थिर नहीं ॥ चौदे लोक थि
र लो वही ॥ जन सेवादास थिर येक अविनाशी सो मेरै मनि
भो वही ॥ ३ ॥ ४ ॥ समझि करो बिचार मनां नांव बिना सुष
नांक हूं ॥ टेक ॥ वेद पढै पढि आवै ॥ फिरि ज्ञान दस पुराण
रे मनां साच बिना सुष ना लहै ॥ कोटि कथा हो रीयां न ॥
१ ॥ दान जिग जप तप कै तीरथ ॥ भरमै हो जाइ रे मनां ॥ येक ना
व बिना कृवा सबै ॥ फिरि फिरि पीटा होपा ॥ २ ॥ अगणि चास
कोटि पिरथी फिरि ॥ अति रहै गरवा रे मनां ॥ निरमल नांव
बिन पीया ॥ तेज उतरै पार ॥ ३ ॥ पोथ्या गिन तन जाल ना धा
सो ताणि सिला हो बिचारि रे मनां ॥ अंतरि सुधि नहीं ऊपज
यू ही को पैतन छार ॥ ४ ॥ सब संता की ता बिस पालि ने हरि
को न षरे मनां ॥ जन सेवौ कहै बिचारि करि ॥ कीजै आपणो
हो काम ॥ ५ ॥ ५ ॥ हरि बिन आंन जा बूंनां हि ॥ हरि बिनां भ्रम फू
ठ सबही ॥ समझि मन नहीं मांहि ॥ टेक ॥ अथिर सुर नर सेस
सबही ॥ काल षाडै नांहि ॥ काल न हरि एक ता सुमरो अं
स बेदु षमि टि जांहि ॥ १ ॥ जग सुपन संसार केरा भाप न लाग्
हि ॥ हसि ना व कस्तूबा डिदौर ॥ जह राति विकाचषा हि ॥ २ ॥
हरि बिना सु भ्रम सबै अैसा ॥ नरं वाद ल की छांहि ॥ जन से
वादास सुण रे हत गो मद सुमार्ग नि सुपथ है ॥ ३ ॥ ६ ॥
म्हारै राम नजन करि लीजै भाई आव घटै तन छि
चौरासी त्रिके भाया वहीलव .. ॥ १५

गिला॥गिनी वमेरा॥हरि नांव बिना को तेरा॥२॥दिना च्यारि
१२० मेला॥सब च्यार थी के संगि मेला॥ज्योति काल की बेरा॥त
ब संग न सत के तेरा॥३॥तूं समझि देषि मन मांही॥जो दी
सै सो थिर नांही॥जन सेवादास सन जागे॥ते नांव निरंजन
लागे॥४॥ध॥मन रे कृवा सुष सैसारा॥सब त्यागि मनौक
रतारा॥टेक॥धीया सुत कुल नारी॥सब सी चत हैं विकारी
॥१॥गुण तो किरिया हितासी॥ताते पहली होइ उदासी
॥२॥धन जोबन थिर नांही॥ये सब बादल बांही॥तिहि सुषि
वे व थीरा॥सो धूप सहे बहो पीरा॥३॥राव रंक सुलितानां
सत माया की चक लाना॥ज्ञानि जन गपति जो या॥मनि
षात न चूहा षोया॥४॥जग बाजी उहकाया॥वो निज तत नि
ज रिन आया॥काजी मिसर मुलांनां॥बहो पढि पढि बेद
कुरांनां॥५॥सत षंड मह्ल बणावे॥वहो सधा जेगिल
गावे॥सक सुषास गिरतो॥ते फ्रुगि गये अंतिरीते॥६॥अस
घोडा मड रहाथी॥बहो दल बल चल ते साथी॥नाकीर
जन हीदी सैनांना॥ते मिटि गये षाकनिदांनां॥७॥हरि बि
न सब सुष बारा॥बहो बांधे सिर पर भारा॥डाल पजाव
थिर मांनै॥मरणांसो निकटि न जानै॥८॥गुर दादू बुधि
अपारा॥सब चाड्यां जुग औ हारा॥जन सेवादास सुषप
या॥भजि नाथ निरंजन राया॥८॥७॥साधो तेन मुकति न पां
वी हो॥करणी देषि पराई मूरिष बूडा जो जलि मांही हो॥टेक॥
गावै विषै जगत सब दचित चि॥निरगुण गति न आवे हो
निरगुण गति बिना नर बोरे॥पार न पैलो पावै हो॥१॥बूड
आप जगत कू बोवै॥कहीं क मिनरम त पावै हो॥फाटी दूध
गयो घृत सेती॥यू नर दो जिग जावे हो॥२॥साच बिपाइ अर
मकुरि परगट॥भरम हीं नर मांदि ढो वेहो॥झूला जगत भर
म मांही॥साच न कोटि नहीं पावै हो॥३॥जन सेवादास सत
गुर समझावै॥जाग्या सो सुष लाग्या रे॥सतता सो सुषक
देन पावे॥वे सुष तज त अभाग्या है॥४॥८॥साधो मुकति कि
सी विधि पावै हो॥वो निराकार निरलेप निरंजन ताकू रसि
रा सि गावै हो॥टेक॥बेद पुरांण कहे समझाया॥नील रूप
बिसलारा हो॥ता बाजी मांहि सकल जुग भूला॥वाकी ग
ति है न्यारी हो॥१॥वां कि सा हि बका भेद न पावे॥तब लग का
ची सारी हो॥जन सेवादास मन नहीं समझावै॥वो उपजि न

षपैमुरारीहो॥२॥(६)॥माईयामालीकीबाडीरेमनमौरोता
मोहिअलषधोबीधीसुषमानिनाडीरे॥टेक॥आपनपावैमो
षेआपैफिरिआपषपावेसाररे॥जबलगआपआपनही
चीन्है॥तबलगदुषीयासारीरे॥१॥मायामोहमगनमनबी
धीोनवरकेवलकेमाहीरारे॥२॥निरंतरिव्योनरमताषू
कालनगतकूं षोहीरे॥३॥नोबाडीतजिलणमालीलेसब
निपजीकायाबाडीरे॥जनसेवादाससोईजनत्वेपासतगु
रादिषिउघाडीरे॥४॥१०॥नरआहघरनहीपधारे॥निहचल
सुषकितक्नहीदीसे॥दिषिपडेसोमायारे॥टेक॥रजगुणतें
सबसिसटिउपावे॥सतगुणतैंसबपोषैरे॥वेदसाधसबही
यूंभाषैतमगुणतैंसबसोषैरे॥निरगुणरूपबणोसबमाय
बाजीगरष्यालपसारोरे॥नजिबाजीबाजीगरसुमरयोतेज
नउतरेपारारे॥१॥जनसेवादाससतगुरतैंपावैऐसाभ्यान
बिचारारे॥तबनिरभैघरिजाइपहूंचैपरसेरामपियारारे॥
२॥११॥मनसुमरौसिरजनहारारे॥रामरामआपकसबघट
मैंआगमवारनहीपारारे॥टेक॥मोथूलपाइकरीथिति
त्रिगुणमिलिबिसतारारे॥कहिअणकरताहइरह्योहेवो
निराकारनिरधारारे॥१॥भांतिभांतिचौरासीलषमेहोठा
पिरहिआइकसारारे॥सबमेरहेसबहीकीजाणैन्यारहेसक
लतैंन्यारारे॥२॥ऐसासिरहैगिगनकैमांही॥बहोवरतण
जलपूरारे॥यूंसबमांहिसकलतैंन्यारा॥फिरिम्रीरिबघनहू
रारे॥३॥जनसेवादासयाअकथकथाहै॥कोईजाणैजाणण
हारारे॥संतदिषिमिईजाजनकी॥सोजनउतरेपारारे॥४॥
१२॥मनरेरामभजनकरिलीजे॥बारबारसमकाकूंकहतहि
आवघटैतनछीजे॥टेक॥साधसंगतिमिलिसोधीकैजोर
सनोरामरटीजे॥तारथिजाइचढेजिनिपरबाति॥तानमनम
वनाछीजे॥१॥भासणिबेसिध्यानधरिमनथिर॥अनहदको
रसपीजे॥निरभैहोइनिरंतरिमिला॥बेगमपुरिजाइबसीजे
२॥पूरणब्रह्मपरमसुषदाता॥गाइगाइजुगिजीजै॥जनसे
वादासनोसमदतिरहरा॥कूंभोकानौवकहीजे॥३॥१३॥नरसे
णठिकाणैजासीरे॥समकिनपडीसाधनहीपूछ्यातेपछै हो
पछितासीरे॥टेक॥भगसुरतिदलदिसनटकैमनमेमासी
वासीरे॥गुणरहतमोबिंदनहीगावै॥तौहिकालपकडिले
जासीरे॥१॥जहांजहांजाइतहांजमम्मारे॥इकबिनासीमें

गिलागिजी वमेरा ॥ हरि नांव बिना को तेरा ॥४॥ दिनां च्यारि का
मेला ॥ सब च्यार थीके संगि मेला ॥ जाति काल की बेर न
लगानसकै तेरा ॥३॥ तूं समझि देषि मन माहीं ॥ जो दी
सै सो थिर नांहीं ॥ जन सेवादास सन जागो ॥ तेनां ऽ निरंजन
लागो ॥४॥६॥ मन रे क्यूं वा सुष सै सारा ॥ सब त्यागि भजी क
रतारा ॥ टेक ॥ धीया सुत कुल नारी ॥ सब सीच नहै बिषक्या
री ॥ एतो किरियो झिलासी ॥ तातें पहली होइ उदासी
॥१॥ धन जोबन थिर नांहीं ॥ ये सब बादल बांहीं ॥ तिहि सुषि
बैठ्यो रा ॥ सो धूप सहै बहो पीरा ॥२॥ राव रंक सुलितानां
अहसा माया की नकलानां ॥ जागि न जगपति जोया ॥ मनि
षा तन यूं ही षोया ॥३॥ जग बाजी झूठ कायां ॥ वो निजतत नि
जरि न आया ॥ काजी मिसर मुलांनां ॥ बहो पढि पढि बेद
कुरांनां ॥४॥ सत षंडा महल बणावै ॥ बहो संधो जे गिल
गावै ॥ से क्यू षास रिलटतो ॥ ते क्यूं गये अंति रीते ॥५॥ अस
घोडा मंड र हाथी ॥ बहो दल बल चलते साथी ॥ ना कीर
जन हीं दीसै नांनां ॥ ते मिलि गये षाक निदांनां ॥६॥ हरि बि
न सब सुष षारा ॥ बहो बांधे सिर पर भारा ॥ जालु पज प्राव
थिर मानें ॥ मरणां सो निकटि न जानें ॥७॥ गुड़ दान्ती बुधि
अपारा ॥ सब छाड्या जुग औहारा ॥ जन सेवादास सुष पा
या ॥ भजि नाथ निरंजन राया ॥८॥७॥ साधो ते नर मुकति न पा
वैहो ॥ करणी देषि पराई भूलि ष बूडा मो जल माहीं हो टे ॥
गावै विषै जगत सब दी चित्त चि ॥ निरगुण भगति न भावै हो
निरगुण भगति बिना नर बोरे ॥ पार न पैलो पावै हो ॥१॥ बूड
आपन गत कू बोवै ॥ कष्ठ कमि नर मन न पावै हो ॥ फाटो दूध
गयो घ्रत सेती ॥ यूं नर दो जिग जावै हो ॥२॥ साच बिपाई भर
म कू रि परगट ॥ भरम ही भरमा दिढावै हो ॥ भूला जगत भर
म मांहीं ॥ साचा निकटि न हीं पावै हो ॥३॥ जन सेवादास सत
गुर समझावै ॥ जाग्या सो सुष लाग्या हो ॥ सूता सो सुष क
दें न पावै ॥ वे सुषत जत भ्रम्या गया हो ॥४॥८॥ साधो मुकति कि
सी विधि पावै हो ॥ वो निराकार निरलेप निरंजन ताकूं रमि
रासि गावै हो ॥ टेक ॥ बेद पुरांण कहै समझाया ॥ तीन लगुण
बिसतारा हो ॥ ता बाजी मांहि सकल जुग भूला ॥ वा की ग
ति है न्यारी हो ॥१॥ वा कि आसाहिब का भेद न पावै ॥ तब लग क
चीसारी हो ॥ जन सेवादास समझ नहीं समझावे वो उपजि न

षपै मुरारी हो॥२॥८०॥माईया माली का बाडी रे मन मैरो ता
मां हे अल्ल धो बी धो सुषमा नि नाडी रे टेक आपत पावे मो
षे आपै फिर आप षपावे सारी रे जब लग आप आप नहीं
ची न्हें तब लग डुषी या न्यारी रे १ माया मोह मगन मन बी
धो निवरक बल के मांही रो हो २ निरंतर रत्यो नर मता थू
काल जगत कूं षो हा रे ३ जो बाडी तजि लप माली से तब
निपजी काया बाडी रे जन सेवादास से ई जन्त्वे ल्पा सतगु
रा क्षि हि ड घाडी रे ४॥८१॥ नर आइ घर नही पायारे निह चल
सुष वित्त इन्न ही दीसे दिहि पडे सो माया रे टेक रजगुण तें
सब सैसा टि ड पावे सतगुण तें सब पो षेरे बेद साध सब क
थूं ना षें तम गुण तें सब सो षे रे॥ निरगुण रूप बरण्यो सब माय
बाजी गरष्याल पसारो रे॥ नाजि बाजी बाजी गर सू मस्यो तेज
न उतरे पारा रे॥१॥ जन सेवादास सतगुर तें पावे अेसा प्पोन
विचारा रे तब निरभै घर जिनाइ पहूं चो परसे रो मापियारा रे॥
२॥८२॥ मन तू मरो सिरजन हारा रे रोम रोम ब्यापक सब घट
मैं अगम वार नहीं पारा रे टेक मो चूं मूल उपाइ करी थिति
त्रिगुण मिलि बिसतारा रे कहि अेण क रता हइ रह्यो है घो
निराकार निरधारा रे॥१॥ मारि षो तिवौरासी लष मैं हीठो
पिर आइक सारा रे सब मैं रहे सब ही कौ जाणे न्यारे है सक
ल तैं न्यारा रे॥२॥ मूसा सिर हैं गिगन के मांही बहो बरतण
जल पूरा रे यूं सब मांहि सकल तैं न्यारा फिरि सूरि बषाणै ह
रा रे॥३॥ जन सेवादास यह अकथ कथ्या है कोई जाणे जो जाण
हारा रे दाता रदि हिम ई जाजन का सो जन उतरे पारा रे॥४॥
८३॥ मन रे राम भजन करि लीजे बार बार समका इ कहूं तो ही
आव घटै तन छीजे टेक॥ साध संगति मिलि सोधी कीजे र
सना राम रटीजे॥ तीरथ जाइ चढे जि नियर बाति तन मन स्न
पना छीजे॥१॥ घा स पि बे सिध्यान धरि म्न थिर मन हद को
रस पीजे॥ निरभै होइ निरंतर मिला बेगम पुरि माइ बसीजे
२ सूरा ब्रह्म परम सुषदाता गा इ गा इ जुग जीजै जन से
वादास कहै समदा तिर ता कूं मोका नाव कहीजे॥३॥८४॥ नरको
ण ठिकाणै जासी रे सम कि न पडी साध नहीं पूछ्या तें पछि हो
पछितासी रे टेक कूग सुरति दत्त दिस नटको मन मैं माया
तो हि काल पकडि ले

षपैमुरारीहो॥२॥१०॥माईयामालीकाबाडीरेमनमौरोत।
माहिश्रल्लूषोबीधीसुषमनिनाडीरे॥टेक॥आपतपावैमो
षैआपैफिरिआपपपावैसारीरे॥जबलगआपआपनही
चीन्हौंतबलगडुपीयान्यारीरे॥१॥मायामोहमगनमनबौ
धोतिवरकैवलकैमांहीरा॥२॥निरंतरिरह्योनरमतायूं
कालजगतकूंषोहारे॥३॥जोबाडीतजिलपमालीसौतब
निपजीकायाबाडीरे॥जनसेवादाससोईजनचेतपासतगु
रदिषिउधाडीरे॥३॥१०॥नरआहघरनहीपायारेनिहचल
सुषवित्तइनहीदीसेदिषिपडेसोमायारे॥टेक॥रजगुणतैं
सबसिसाटिउपावैसतगुणतैंसबपोषैरे॥बेदसाधसकही
यूंनाषैंतमगुणतैंसबसोषैरे॥१॥त्रिगुणरूपबरणोसबमय
बाजीगरष्यालपसारोरे॥नजिबाजीबाजीगरसुमरयौतेज
नउतरेपारारे॥२॥जनसेवादाससतगुरतैंपावैअसभ्यान
बिचारारे॥तबनिरभैघरिजाइपहुंचैपरसैरामपियारारे॥
३॥११॥मनसुमरौसिरजनहारारेरोमरोमआपकसबघट
मैंअगमअवारनहीपारारे॥टेक॥मोच्यूंमतउपाइकरीचिति
त्रिगुणमिलिबिसतारारे॥करिअणकरताहइरह्योहैन्यो
निराकारनिरधारारे॥माखिचौरासीलषमैंहीठा
पिरह्याइकसारारे॥सबमैरहैसबहीकीजाणैन्यारेहैसक
लतैंन्यारारे॥२॥सासतिहैगिगनकैमांहीबहोबरतण
जलपूरारे॥यूंसबमांहिसकलतैंन्यारा॥फिरिमरिषषेनेहू
रारे॥जनसेवादासयाअकथकथाहैकोइजाणैजाणण
हारारे॥अंतरिदिष्टिमईजाजनकीसोजनउतरेपारारे॥४॥
१२॥मनरेरामभजनकरिलीजौबारबारसमकाइकहूंताहि
आवघटैतनछीजे॥टेक॥साधसंगतिमिलिसोधीकीजैर
सनारामरटीजै॥तीरथिजाइचढैजिनिपरबातिनमनभ
वनांन्हाजे॥१॥ध्यासणिबेसिध्यानधरिमनथिरअनहदको
रसपीजै॥निरभैहोइनिरंतरिमिलाबेगमपुरिजाइबसीजे
२॥पूरणब्रह्मपरमसुषदाताघाइघाइजुगिजीजै॥जनसे
वादासनौसमदतिरहांकूंनौकानावकहीजे॥३॥१३॥नरके
णाठिकाणैजासीरेसमाकिनपडासाधनहीपूछ्यातंपछैदु
पकितासीरे॥टेक॥कूगसुरतिदतदिसनटकोमनमैमाया
वासीरेगुणारहतमोबिंदनहीगावैतौहिकालपकडिले
जासीरे॥१॥जहाजहाजाइतहांजममारैइकबिनसरणभजी

॥बहनी सूताला जग। देपासी उलकायाहो॥२॥

॥१७॥सा

॥धाहो॥टेक॥तीनलोकमगजालपसायासुर

षेहतलपटायाहो॥मोतिमोतिकरिमोहेमाया॥नानारूप
बणायाहो॥माइबहण आरस्वामनीजी॥मोमाणहोइहर
मायाहो॥१॥अमरजडजोणणाहिनिरमै तबकालनफेफ
कायाहो॥जनसेवादाससतगुरकेसरणे सापणिदीतम
डायाहो॥२॥१८॥मनरेजागिरजपोमुरारी॥सोवतनहोतगे
येदिननीतो॥अबतचेतिसवारी॥टेक॥तेगरभवासमेकोल
जाकायो॥हरिविसरहुनहीलगारी॥बाहरिआइकोलविस
रानै॥आतिपडेगीगारी॥बालपणोसमझोनजपोहरि
तरुणभयोरतनारी॥बुधभयेजबचितभयोमोपूंजीचा
ल्योहारी॥२॥अजहूचेतिसमझिमनबोरे॥हरिजिनकहे
पुकारी॥जनसेवादास आसरनहीबहोरयो॥नेहीरमजि
जनमसुधारी॥२॥१९॥मनरेनजनबिनादुखभारी॥सतगुर
साधकहेसमझायो॥निसदिनतो हिपुकारी॥टेक॥तुआ
योथोतिसकामिनलागो॥पातिनजिआनैयारी॥सुतावि
तनारीनेहबंधाणो॥कूलाजरहेगीधारी॥यइ॥त्यारेटी
घरिहाठै॥अरपनलीयो॥विचारी॥रांमनांमनिजनेदनजा
णो॥आतरिरैति आभारी॥२॥धरमराइजबलेघेमागे॥तब
केसैकेचूटकारी॥सेवादासकहतजनटेरयो॥तेहरिन
जिकेमातेघारी॥३॥२०॥साधोहंसोकीगतिन्यारीहो॥नरवा
रासबराबरिदीसे॥वेगेबातपवारीहो॥टेक॥वोमोतीबिनो
चूंचनहीघालो॥मांवैअमरोदिनच्यारीहो॥बुगलोमछी
मारिकरैभषवोडाबडाअधिकारीहो॥१॥हंसागडिनाइ
औरदिसावरि॥बिनमोतीनहीपासीदो॥जनहरिचरणा
॥१॥साधूसागि
सातोमोतीनिति
निकलिनहो

हो॥मिलिकरिमेगलुगासीहो। ॥४॥

नआपणपो। सकलसमरपणकी जेरे ॥ १ ॥ ब्यापक येक सबै
समिजनो। काकूकूंनां दिहता जेरे। बेद साध सबे यूं भाषे
॥ हसेवा हारि राके रे ॥ ३ ॥ मांनि बडाई मैं तें मन की। तजि निसि
जुगि जुगि जी जेरे। जन सेवादास कहै संतो। इहि बिधि प्रे
रापती जेरे ॥ ४ ॥ २५ ॥ नरआत्म आनंद न्यारो रे। देषत जो इस
पन की नांइ। काया आनंद न्यारो रे टेक। सगा समधी मिलै
परसपरि सब आनंद बोलै रे। जो मैं मरै मरे फिरि जनमै।
अंतरि नैन न षोलै रे ॥ १ ॥ सास उसास कहै सम कायां। तिहि
सुखि न या न लीनां रे। तल फितल फि दुःख तन पायो। मा
या के आधीनां रे ॥ २ ॥ ता आनंद मै तिहि जिन फूलै। जग सो आ
नंद न ही पाही रे। जन सेवादास इह ज्ञान ही आनंद छिन
मै आवै जो ही रे ॥ ३ ॥ २६ ॥ मन रे सुपनयो संसार। जो गिन आण
ति सुमरि माधो फूव सब मो हार टेक। रंक सुपनै राज पायो
कीया भोगबिलास। जागि नै जब जोईयो तब मेल्हियो नै
सास ॥ १ ॥ येक बका सुपन मां ही घाम पायो सुत नारि फूवज
सही कैरादो तब देष्यो आंखि न घर ॥ २ ॥ संसार सकल सब ज
निओसो। स्वरगादि सनों नांरा। जन सेवादास न जिरांमसें
गी सो सकल सुहागनी रे ॥ ३ ॥ २७ ॥ भाई ओसा इष्ट हमारा
रो सब मै ब्यापक तत बकी जी ऐ वो रहै सकल तै न्यारा रे
टेक। जैसै अगनि अरूपदारकू मैं यूं रमता सब घट मांही
रे आतम ही आतम परि छाने वो नैनां दीसै नांही रे ॥ १ ॥ ब
रण न बपत्तपन ही जाकौ दिष्टि न देष्या जाई रे। जिन जांम्या
सोई मिलजानै। कह्यां न को पति आई रे ॥ २ ॥ पिति जल तेज
न ही आकास। मारुति कबडि न हो ई रे। दैन अपतत
मन ही सासि हब नां वा निरंजन साई रे ॥ ३ ॥ उपजि न बिन सै अ
पिल पिलै न ही जाकी अकथ कहांणी रे। जैसै कुल धसो
गल मांही बाहरि भीतरि पांणी रे ॥ ४ ॥ कला अनीत सकल घ
टि रमता। बसै सबन कै मां ही रे। जन सेवादास धरि ज्ञाय चेरा
ता साहिब का बांही रे ॥ ५ ॥ २८ ॥ भाई सतगुरकूं सिर दीजे रे त
न मन धन सब सौंपि आपणपो। सिरदे सौदा कीजे रे टेक।
ग्यांन ध्यांन सति सुमिरण आपै। पावक सिकु मिली जे रे। तन
मन पवन फेरि अपूठा। रसनां अम्रत पी जेरे ॥ १ ॥ काया पलटि
कंचन ज्यूं तावै। मन पवनां सम टीजे रे। जनम मरण का सांसा पे
रे बास अमर पुर की जे रे ॥ २ ॥ दिल कौ दुब्धा दूरि निवारो तन

कहा कहे राम राया॥ धा तुम दया बिन दयाल बहोत है।
दर्सी आ सांनो॥ जन सेवादास चित चरणा मांही तद मन
है तुम नां मोया ॥ ऋ॥ माधवे अनंत न औगुन मेरा चूक अ
कपड़ो मोमां ही॥ मै नां बनलीया तेरा टेक मै का औगुन
डकै तांई॥ फिरि मांनि मम तर सपी या॥ मै आपो घा फिरो
तीनी घा॥ माधो इसा काम मै कीया॥ तेरो नांव धराइ दीयो म
न औरै मैं गुन्है गार बहोत पांमी॥ तुम तो सदा दयाल गुण
धी कतो सदा हरांमी॥२॥ आणा की कछू सोधी नांही॥ फिरि
रांग कहै जागी॥ अपणो चोर मुसै घर ने तिही सो देषे नही
भागी॥३॥ औरां कूं कहि ग्यांन सुणावे॥ आप अधारे नाचे माया
मांही विषे मः न लेपद केवल ना इन रा चै॥४॥ नरम क्या डिमै
न ही सुधा॥ फिरि मल ही मल कूं परसे॥ जन सेवादास मन सु
धकूं दा बिन ब्रह्म कहो कूं दरसे॥५॥२७॥ माधवे अमन हन
तन नाचे हरि हरि कांहि हरि मांहि समाया॥ फिरि औरा गिन
ही दाचे टेक मन हरि गिरधर चेन ही जारे॥ फिरि ऊंनर
गर गन ही नावे॥ सूं सरिजा के परकासन्य देतौ सबै प्रकास
बिलावे॥ दीपं चिराकन बैलगा सोहै॥ जब लगा रवि न प्रकासे
ऊगा लगना नुउदै भयो॥ नारि सबै मरम साआ सै॥२॥ तीर
घबरत जपत सब धरमां ये सब ही बोहारा॥ निरमल नांव
भज्यो ते मुकता॥ ते सहजि भये भौ पारा॥३॥ सब धरम धरम आसे
रि सब माती॥ जन गाइ गाइ गत मांही॥ जन सेवादास सागे
रि मिलि मिलना॥ हा जिर हो कछू नांही॥४॥२८॥ साधो सतगु
र सब सुषदाता हो॥ बंधन काटि कीये हैं मुकत॥ सतगुर
सा धिक बिधाता हो॥ टेक तन मन फोरि सवारि की असुध तन
की ये साष्याता हो॥ त्रिबाधि ताप अरि हरि निवारी॥ नांइ नि
जर ताता हो॥१॥ करगा हि काढि ली ये गडरडू बत चौरासी मै जा
ता हो॥ राम भजन का भेद बताया॥ हरि इमृत रस माता हो॥२
॥ कर मन रम सब हरि निवारे॥ तीन्य गुणां की ताया हो॥ मन
पवनां थांचू सामि कीया॥ दीया अजपा जापा हो॥३॥ ग्यान अ
गनि अंतरि परजारी॥ सब षोई बिषे की बासा हो॥ कोपे अम
तन हो मलकोइ॥ तेरा चरणां निवासा हो॥४॥ ग्यांन ध्यान
पूरण सुष सागर॥ समर्थ सतगुर मेरा हो॥ सेवादास जन कू
वंदना जोरि करि ॥ केलफेरा हो॥५॥२९॥ साधो सो सतगु
र मोहि भावै हो॥ ओन लाइ बंध करगा हि तारे॥ राम अमी रस पी

कृपाईदेही त्रेहरिमतजाइ॥टेक॥संसारसागरदुषआगर सं
बनारिसुतमाई॥देषिनरतकोश्मूलो बिषैफलषाई॥१॥ना
तमातसबसजनसंगी पातिन्पुगनाई॥ बिचारिपानबमे
कहिरदेतकाटिसुलफाई॥२॥धामधनमंदिरगरबभूले सब
सगिरकाई अंतितेराकोनही॥हरनामगहरिगाई॥३॥तनि
सुषतजो गिनमूलो॥षोटाआतियूषाई यो सुषसुपनोजा
णिअैसोमेग्गाडिदुषदाई॥४॥नरजहरपीवेकदेइसुरतत बे
गसिजाई॥सैणसबहीरहनापातैत्यैकउगिजाई॥५॥जेई तन
कैजतनकरतातेतलगसीसबकाई॥आणीचौडैफूकिदी
न्हो प्रीतिनांकाइ॥६॥कौनकेगकरसाथिलीन्हो मतिरहि
जाई॥देषिजगकीप्रीतिअैसीतनहतजिमाई॥७॥नरआदि
कंचनकाचलीन्हो फिरिपछैपछिताई॥जनसेवादासल
सरिस्त्रमजालिबहेकेताई॥८॥२४॥मनरेमजिलैरामस
नेही॥साधकहैसबयेही॥टेक॥सधसुमरतयूंनाथेजेरस
नाहरिरांचाषे॥तबहोडिनधरहीदेही॥तोमनिषजनमस
फलयेही॥१॥साधसंगतिकरिलीजे हरिआसरिझकी
जैन्पालोनमोहतजिदीया॥भाईत्यालहरिरसपीया॥२॥
लोभमोहजुगिफंधा॥जनकाटिमयेनिरबंधा॥प्रेममग
नहरिगाया॥तबहोडिनजूंनीआया॥३॥जिनिआनंदक
तजरिधास्या॥तिनिकामक्रोधरिपमास्या॥तेमुषिमिथ्या
नहीबोलै॥तेजननिभैडोलै॥४॥जेआपाजनडारै तोबा
कूकोइनमारै॥जेआपाकूनहीत्यागे॥तांकूकूविसबैकोइ
लागै॥५॥जिनिआत्मयेकपिछांण्या॥तिनेरावरंकसमिजा
ण्या॥सबछूटेबादबिवादा॥तिनहीआत्मसुषलाधा॥६॥
अैसीसंगतिरामकीकीजै॥लैतनमनहरिकूंदीजै॥नांव
सुधारसपीजै॥जनसेवादासजुगिजीजै॥७॥२५॥माधौजीम
नमैमतहमारा॥बिषबनिधसैजहांजाइबैसो॥हस्तिनांवग
हैनहीसारा॥टेक॥सारतजैनाइआगहैमन॥अैसोमुगध
दिवानां॥छबटक्वैराहतजिहरिकअैसोमनसेतानां॥
१॥मानिकछाईयोमनचाहो॥फिरिमायाकेविसिदौडै॥निक
टिनिरंजनछाडिनिलजमन॥अंतरिनांणौतोडै॥२॥मनसे
तानकोकैसैतानां॥मैजतनकरताहास्या॥मेरोबलपकूंसेन
हीमाधौ॥हरिमनकतामास्या॥३॥सीगोरियसिवनारदब
ले॥हरिमननाचनचाया॥मैतौनिबलसबलहैयेमन॥

रदाहेइकनाइलगेन।।तिनलोकरतषवारी।७।अंतरमेलनि
गरिनहीआवैसवजगमेलकलावौ।फिरिदेषैनहीअकलि
काआंधा।यूंहीजनमगमावै।८।निरमलनावनिकठिअंत
रितिहिजलीपैसिनन्हाया।साधसबदऔगणकीबूझ्या।जा
रिरषोटापाया।९।वेदपुरांनपढैनहीमनकैवविधिगाविनही
घावै।आपसवैऔगणकाकूडा।फिरिपरकौऔगणजावै।१०।अं
तरिकौमैलपनाबाढै।नाहीहरिवचानसुहावे।उतिमगुण
साधांरैनाही।औगणकाढिदिषावै।११।औडऔकोनिरषतडो
लैसदाअनरथहीजावै।सारचालनीनीपानापैलेवारहिदे
अरिरावै।१२।सतपथपांनकासाधीनाहीतातकारिनथधैअतरि
कपटजनमजुगिलापरा।विषइमरतकरिपावै।१३।सदादुख
धीदुरमतिनरायो।सदानुकालीआगौ।दुरमतिनजेनरपोरिपेके
ये।सुसदानरकमेंवासो।१४।हरषसेगलासोचितचितमेयक
रामनोमनतानेरावूडेजा।हिनरकमेंमूखिकूणकाटैकरिके
र।१५।मेतेमेटिअगैअविनासी।मानिडुवमाहरिनिवारैजनस
वादासपरमसुखविलसेमा।आपणपोतारै।१६।धरदेवाते
रीकाविनत्रगतिकैनारीसेनालानदीसीसउतारी।टेक।मोरध
जसुधीपायेक।विलमकरी।सिरदेड्या।सिरिकविकतोटीकेली
पाणीमनगतिनहीमेल्ही।१।न्टपमोहमरदमोहमरदामो
हमाहिकायाहेसदा।रिषेनारदयोहउपजावा।पाणिमाहरी
कामिनहीआया।२।अंबरीपकैरिष्ज्ञआया।न्टपलेसीसनवा
या।रिषक्रुधवकपरवहोमाती।ताकैपवननलागीताती।३।
बलिमिरवांपवआया।न्टपसबदलुणवउविष्याया।ननधन
सरवसदीयातेजमनलियेडुगिनीया।४।प्रह्लादप्रेमनही
आड्या।तनमनजूवान्हूमाड्या।नअंगसुरकौपितविध्याय
तबप्रगटिपेमहरिआया।सहूस्तलतानीकोथ्या।नोमा
परिहांधीलोदयाप्रेमभगतिहोइआया।भजनउलटिअपूवाधा।
याद।असहीत्तिकेदआया।वोधिजजीकबीरडुबाया।रामप्रत
पाराधीजाकौसकललोकमेंसाषी।६।रांगिविषनदीद्या मी
राइमूतकरिपीया।वांनणमिलिवदेदास।७।हरिसदाभग
तकेपासा।८।हांहोसेघलिनरीकेंहस्तीचरणसाईकौजै
ननीलाकलाइकेलकोली।तिनहरामसबौगी।९।हरिसत
भनकउधारेहरिकैनांवाईजगसारे।जनसेवादासहरिनेरा
जैसनमुपदेमनमेरा।१०।४९।।मनरेगोबिंदकोइनगावैक

नौबनिहजचढावैहो॥३॥

जरमसबहरिनिवारो॥सधापंघवतावैहो॥मनमनपवनो
समिकरिराम्हकहोऊनताम्हकावैहो॥इडापिंगलासुषम
निमेला।त्रिबेणीसंगन्हावैहो॥२॥कालिजालिबधेनहीक
बहा॥अनहदबेणिबजावैहो॥जनसेवादासजुगतिगाहिजो
गीहंसहीहेसमिलावैहो॥४॥६० साधोरामकहैकोईसूरा
हो॥मनमनमा॥रमादवाजिहरिनजी॥नवदरसेअलषरूज
राहो॥टेकलोभमोहसबलुहैबैरी॥पांनषडगकीहूराहो॥
कुपलपमोहिरहेरसियेकैनबलुपपालेपूराहो॥१॥पांचपिस
णकोरेबसिकापर्णो॥नबमुषिआवैनूराहो॥लैलागीछूटेन
हीकबहू॥बाजेअनसदनूराहो॥२॥मोनिश्रमानिश्रगनिंद्र
सोषेतबगाढिपाऊसकेनचूराहो॥लैडस्पामकेहेतिसारि
वांकोमकोधबरहिराहो॥३॥सेरोसदास्पांमकेआगेंमाजि
नजावैदूराहो॥जनसेवादासमोजनबपावो॥निसदिनरहैस
नूराहो॥४॥४१॥साधोसोसाधकुणिजाणपाहो॥करमभरमस
बहरिनिवारे॥नाशनिरंजनलमपाहो॥टेककरमकाटिसक
लजुगबांधानाइनीरनहीन्हायाहो॥बाटथकोजेपारस
परसो॥तौकनकनावनहीपायाहो॥१॥करमकसरसबहरि
निवारी॥प्रेमध्यानगुणगायाहो॥जनसेवादाससोईसाभल
रिवां॥बहोडिनभोजलिआयाहो॥२॥४२॥पबतसमकिहूंय
मनमाही॥कहांहैसुचिअसुचिकहांहैताकोसुधिनपाई॥
टेकजोमणसातिगमरणांसातिगसातिगबनआयाणी॥
धरतीअगनिपाणीसातिगकहोसुचिकहांजोणी॥१॥
गोबरसातिगमाटीसातिगसातिगचौकामांही॥तनकूंधोइचौ
कामैबैठायातोसुचिकहुनांही॥२॥चाम्हिंडालीलोमचहडो
ओतोसेमिघटमांही॥भुपमैहाडमासकीज्पमाताहीसेती
पोही॥३॥मनतोअकुकीचमैकालीयो॥तनधोयोक्याहोवैनी
घादोपबसेघटनीतरितताकूकाइलयोवैधनीनमोह
लालचसबलागोसबकोमकोधअभिमानोमानिश्रमोनिमि
पैदोसमेतैथासुचिसबकूतारोपन्तवैसदणारिगुमरमैकि
रिनिलसतननितिधावैअतरिसुधिनतीपरमततकीनितिम
हामोहमेसोवैहरामदोमसवलहैवेरी॥ताकूंसकैनमारीनि

प्रगो ऋतेरा ॥ द्वा ॥ अंतरि लीन मगन मन मेरा याद मौजप
वैन न तेरा जनसेवादास कूं इह छजदी जैसन सुषप
रामरस पीजै ॥ ० ॥ धन साधो सो पील समूघ मेरा हो चंदस
रपवन अरपो पी आप्पा मोह कुं मेरा हो टेक सुरत रमुनि
नाकोजन सगा वै सिव सनकादिक वेतेहो ब्रह्मा प्रदूसे
नारद गावै कतन औ वैये तेता धरमराइ कुकम मे हाज
रि ध्यान न कोटि मेघमाला हो सेस सहस मुषि कीरति गावे
ओ सकल नवन धनि पाला हो ॥ २ ॥ आनंद समद हरि आप
कवकवार न लोपे हो जनसेवादास नजे अबिनासी तापि
जम न दीकोपे है ॥ ३ ॥ ५९ ॥ हरिजन हीरे गावे हो मकद समेज
ह बसे है अषे अमर फल पाते हो टेक रंग रस जाकै नदी
कोशि येक आनंद वृत गरि धारयां हो जैसे हो शबिच जेग
मांही कामक्रोध सब मारयां हो मोनि अमोनि दुष सुष
समि जांने हरष सोग सब डारयां हो सेवादास कृति मन
ज्याम बास नासब ही आस्यां हो ॥ ३ ॥ ६० ॥ हरि अविनासी
गरग्रिन आया उपजै पचै मो ई है माया टेक दस औतार बि
रत के याता आवै जावै कदि सै जाता ॥ १ ॥ आवै जाइ न हीद्र
रि राव सकल प्रकासी सहज सम्माया ॥ २ ॥ हरि आध लिये
पातिल की न जाइ हो इस रंग बुदबुदा मो है समाई ॥ ३ ॥ हरिम
हातेज न दीन की कोशी नामे बिस्व कुन गाके ते होई ॥ ४ ॥ औतरि
आवे मौ औतारा वो आवै जाइ न ही निराकारा ॥ ५ ॥ जनसेवादा
स तत लेह बिचारा पूरण ब्रह्म सबे इक सारा ॥ ६ ॥ ६१ ॥ ऐसो
निराकार निज देवा तावो लहै न सी कोई सेवा टेक दस औतार
इ रवरी माया वो अधर अषंडी काल न काया ॥ १ ॥ नरकै रमो
तो सब चतुराई वाहि कुदरति की गति लखी न जाई ॥ २ ॥ वोह
बिनासी बिनसै ना ही उपजे षपै सो माया मांही ॥ ३ ॥ जनसेवा
साई देह न धरता सहज बिराजै कुदरति करता ॥ ४ ॥ ६२ ॥
तासा है व कू सुमिरे लोई जाके दुष सुपनां ही कोई टेक
नादसांध्ये देसोट दीया नासे गिलई जन दीधीया हरि
जन बास गवन न कीन्हो नो हरि राजन रथ कूं दीन्हौ ॥ २ ॥ नो
सीताराम नरल्या ये सब माया चिरत दिषाया नो जल पाषा
णन कूता त्या नो हरि रावण मास्यो जाकै देव लहाणी सोक
हि है पंचाताणी व सुधा पवन अरपाणी ये हरि आप प्रमे सब
नोदी ॥ १ ॥ नो हरि गोपीसं गिन लाई नो हरि गोकलि गऊ चरा

चीपरषसमकिकछनाहा।।नातैरेदुणपावैटेकधनदारायसु
सुतमितनाशीसाचिकेसबमेरा।कालपकडिआगेंकरिली।
या।तबसगानहीकोईतेरा।।हरिप्रीतमततप्रीतनकीन्ही।तै
मूरिषमुगधगंवारा।नांहरिन्जैनसुकेतकीया।अवकहो
कोएतुमलारा।२।मनिषजनमधरिकीयाननीकामुगधचले
उविहारी।रामनजनविनसुपनहीकिवकंजसोनहांडपना
री।३।यहांसुषअलपअनंतदुषआगेंतसुमरिसनेहीरांमा।।
रतनअमोलिकसाथिवढौनजमतिपावैवेकांमा।।४।समकिबि
चारिदेषिजगनीवैथामैकोईनहीकाकूंका।।टेक।।तैनरामिमुल
नैप्रांणीतैकाननकीयानीकपायौऔसरचल्यौनातदेवीतौ
मनसमकितजोउलकेरा।जनसेवादासमजिरामसनेहीक
लषडाहेनेरा।।२।।पमनरेनावसकरिनेहा।अडिआलस
अलषजनिन्हासापहेतोहियेहाटेभार।रबलेपुनिलहीनरदेह
सोजाइमततहिहीनरदेहकोफलयेहप्रानीनलेहरांमसं
भारि।।२।।सबकुवंवकोनेहत्यागिहीजानिपारिसैंजलामेंना
हीयौपाणीकासाबुदबुदातनविणसिहैपलमांहि।।जल
बूंदनेऔजुरदकीयाया।सौजसवैविणाइदेषिऔसरलतो
नाधौतलेहगोअंदगाइ।।३।।कामक्रोधमदलोभमांगेमन
कुणौमुकताहीता।जनसेवादासगप्रसबदाहिरितेउतरिपैल
तीरा।।४।।६।।मनगलतगोबंदगाइ।।आडिसुषसंसारवील
रामसरबरिन्हा।।१।।टेक।।रवपरहरिसुमरिहरिहरिअमूं
लेतरिसुषथा।।२।।मैआडिबिचारिकरिलै।।मैवहीडिकाल
नपाइ।।३।।कामक्रोधमदलोभलालच।तंत्यागिहरिहितलाइ
मौसषगहैगहडो।तामेडुबितजिनजाइ।।४।।पावकूंतफे
रिउलटा।सुप्रतिलेसुलटाइ।।नदीवहनीफेरिपूरी।।तमेत
पारलाइ।।५।।चरअचरसबजीवजातिसबमेदेषिहरि
दरसाइ।जनसेवादासपूंनोहिनिरमैयेकमनोअबगति
राइ।।६।।७।।प्रीतडीनगोहा।रामनिसदिनतुमसीयाद
यादवकीनैहोमुफसो।।टेक।।मैविषयामैरतसरकिरिकैडा
मेतोइरलिकैकरिनेडा।।विषयानैमनफेरोमेरासुभाए
दीनैसाहिवतेरा।।१।।जीवनिबलनेसवलहोइवारा।नभाकौ
ईकरिमकेनजोरा।।२।।मायामोहममततउलकेरा।अैसबहोके
रोजीवकेरा।।३।।साहिवऔगणबक्सो।बकसौमेरा।षानांजा
दजाणकेचोरा।।४।।प्रेमप्रीतिगरदेहबसेरा।मेरातिषोसगु

२७

हरिसोंवबिन ऐसबैफ वोतदेषिपांनाबिचारि॥रहीराजकीसुष
सकसैनां॥सिरिचेवा अत्रकी ब्राहि डालपडावधिरिनाहिरह
नां॥ब्राछिवलेथलमांहि॥सुपनोमैबहोमोगकी धेजाग्यामेवे
लिलांहि॥जनसेवादासमुजलेकहीएजि॥सोथिरसदारहा
हि॥३॥पूण साधासूं जोग मतिवालाहो मनमनपवनासमी
कीताबैपा वैपममदिवालाहो॥टेक॥सातसमदमोतीफिरिमो
मैं नदीनिवासेताणै हो॥ब्रसैसईकालधगा॥अमृतहाले
वाणैहो॥१॥आरधउरधमिंयोकपुरावै॥मेवरगुफामें आवेहो
पांविणि॥निरतिकरा॥विणिबाजा॥बिणिरसनांगुणगावे
हो॥२॥बेगमकोइलहे वालुषकी गमकाकवकूनपावेहो॥प
रमततकीसोधीनांही वृंगुणकागुणहीसमावैहो॥३॥वोसुष
सागर अगमगुण आगे तिहिसुषकोइजिनजावैहो॥जनसे
वादाससमरहोइ वांणी॥जो अपेआपफलपावेहो॥४॥६०॥
जगतादिवांनोरामजगपति भूल्यासबलागिरहेसुषकला
टेक॥धनजोबनसुतनारीनेह॥वपकारियावैरामसनेह॥पां
चोंकैबसिरातोडोलै॥अनंतहोमनेकनषोले॥सगासंबं
धीतेअतियारी॥हरिकेजनातिनसदेगारी॥जनसेवादास
सुषकैसे पावे॥बिनहरिप्रीतिचोरासीजावै॥४॥६१॥अबमै
जांणीयो आपश्रीतिमधिनाहि॥अबमैनोणीयो॥टेक॥अद
लकारकवोटनिसदिन॥सोसकलव्यापीराइ॥परमजोतिय
रकासपूरण॥अनंतहांतालीलाइ॥१॥वारपारकहुनाहिकीम
तिपरमजोतिअपार॥दहगुणसबबीसरे॥भाईसोलहदी
दार॥२॥येकबूलआकासबनतहोसोरह्यासबघाटपूरि॥जा
केपानइयासोनिकटदेषै॥सबओरषोजेइरि॥२॥नाहीनो
कांहीकछुअकहअवगाति॥भाईयेकनइगाक्याकहूं॥ज
नसेवादासहेरानहेगाति॥मेसमफिमनमांहीरहूं॥४॥६२॥
अबमेक्याकहूं॥मगननयेमनमांहि॥अबमेक्याकहूं॥टेकये
ककहूंतोदोइन्हीसेदोइकहूंतोयेकायेहअपबाहरिकरि
भाईनाबादोइनयेका॥२॥हैसूहादेषीये मैतेकोसबहरि
जनसेवादासयूंजांणीये॥वोरह्यासबलभरपूरि॥३॥६३॥
सतगुरहपडामेरेराम मैजनपत्नी॥ध्या॥टेक॥दरसणफलमया
हिरदेषुलिरहा॥मेरेरामलागोनितिनवा॥सोतलकारलीया
आलागीदीया॥मेरेराम निजकेकीरलीया॥१॥नैनपीजायेला
हालीजावै मेरेरामजगजुगजोजीवै॥२॥सरणोलीजावेगा

३॥नांयेइकोपनहीकाया नाहरिगोलाधन
जीतैनोतरिलारैनोतरिकोपेनांहरिमो
नाकेउनीयोदोषलगाजैतादोपा॥ऐसार
नसाहरैनैनूंमांही॥१४॥ऊलपरब्रतरज
महीमजेदिवानोद्धावोनिरलेपानिरंजनरा
मरमाया॥जनसेवादासजोकरता॥से
इकसारा॥७॥पश्रवाइरेरामकहेंगेमरा
नूरा॥टेकवानककामणीत्यागीतेनांझ
मोयअहंकारा॥जनउलैयेसबडारा॥
जनबांधैनहीसनेहा॥जनसेवादासतेजो
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
वारिबुलायोंतो॥कहोक्यातेंघरआक
वनमुषतेभायोतो॥बदेषोकहासक
घालिपिलहायोरे॥सीमासोंजापेसं
[illegible]
[illegible]
बीतायलपलयोतनओजेरेटक्करसाव
योआसेरसमीजेरे॥लपसीआवमर
लनोहिरहीजेरो॥सपतसआदिअलप
आननदीजेरेमनसेवादासआसयेक
ननहीधीजेरे॥५७॥देवालमदरसणक
दासा॥टेकजगबाजीमोहाराजनाबिल
सतरसकेमातावैनाउनिरंजनरातो॥
ही वैबहोसमाबिलसैमाहि॥जहोअ
ममत्वाजिदेमनिलोइश्येला॥पिंड

सब्योनहीजाइ।जनसेवादासतजिआलसहरिमिजि
लधजाकरराई॥२॥६८॥मनरे यूंहीजनमगमाया।हरि
भजनरसच्याडि निलजमन।विषैमगनरसपाया।टेक।सुप
नरवरसा हीबकतमेला।नगबीलरचितलाया।जबकाम
हतनिघेरिलीयौहै।तबकोईनिकटनआया॥१॥विषरस
मातपीकरिफूल्या।वोदिनआदिनआया।तातमातबनि
तासुतलपाति।पलमैनयापराया॥२॥ओगणकरतसबैदिन
बीते।गुणकोईकारणनपाया।जनसेवादासदाकिरदूर
मनाप्रीतमरामनगाया॥३॥६९॥मनतैंकहातबुराईकीन्ही
साधुसेवसुमिरणतजिहरिकौ।वसोइरमातिसिरलीन्ही॥
टेक।मैबुधिहीणसमकिकछुनाही।योमनज्ञानदीन्ही
न विषैमगनरतहूरस्यो निति।हरिरसकबहुंपान्ही॥१॥जग
मैआइजगपतिनाण्यो।मूलोजनमगमायो।जनसेवाद
सभगवंतभजनबिना।योतनयूंहीआरा॥२॥७०॥रेमनयौ
तनजैसेकीजै।राम नामजपिलाहालीजै।टेक।पूंछैनजान
रघरतघटिजाई।योतनजैसेंजातबिलाई॥१॥जैसैआपविर
चोमेसा।गयौबिलाइऔसैयौदेहा॥२॥सुपनेमैगकायाधन
माया।जाण्यांतैंकछुनाहिरहाया॥३॥जनसेवादासऔसरमत
खूहौ।नजिलेकेवलरामसनेही॥४॥७१॥साधोसतगुरस
बदेतायाहो।करमजनरमतबहूहरिनिवारायेमाविद्यालाया
याहो।टेक।कछकजीजबलेथा वैरी।समकिनधीकछूका
ईरो।नाभिनासाबिचिपंथबतायाप्रमजोतिजगाईहो
॥१॥लोकबेदकीराहथकीअबअगमपंथगुरदीबाहो॥उ
लटाकेरिअंतरमैआण्यो।उनबपरासोवाकीपायोहो॥२॥जो
यादोपगपानेकाआंदरिपरमअपारानागाहो।जनसेवादास
सुषलह्यानिरंतरिनादनिरंजनलागाहो॥३॥७२॥रागसोर
ठसंपूरण॥१०४॥राग॥४॥रागमारू॥निरंजनहेपियाराहो।सत
गुरअंजनलाइयाँ।देसेसबन्यारा हो।टेक।सतगुरमायेवर
ल्या।उरिकौबाउजालाहो।भरमसबैहारिमिटिगया।देख्या
अगमतमालाहो॥१॥बेदनैनउघाडिक्या।दीपाअगनिनिच
होपरपूरणपरकासीया।नहीतिलबारनपारहो॥२॥जे
मगुरराजाकैनहीं।तिमिलेहसैनारसो।जनसेवालगम
र्कीनायो सापतिआणउआधाराहो॥३॥१॥निरंजनतसन
हो।जगसुषसुपनेसारिषा।दीसैसबयेहीहो।टेक।नाव

याकीजीयै।मेरेराम१कुदतदीजीयै।धातरवारिलीगरहूं।बिसी
यासवदक।मेरेरामहिरदेहीरल२।पागनसेवासुषमयानि
स्तैतरिगया।मेरेरामपंडीजहारहा।।६।।१४।।हेजगजीव
नदेवमुरारी।।पांवनपतितकारणइ३मटण।मेदसरणितुंम्ह
री।टेक।१सधम३धारण।पाहणतारण।बिरदतुम्हारा।जेसा
केतेतिरेतिरेगेकेतेतरु।जैसाकातेसा।।२।।पानछांनमेरेकछु
नाही।।३।।गतिजोगनहीकानो।३।कसरणिध्यांकालगदसा
निधिमेनबलवलहीनो।४।मैरेसीलसाचसबूरीनाहीनामे
रैलागनजरणो।तीरथबृततयकुनमिनाहीं।।काहैइतर्के
सिविधितिरणो।।४।।तुमनावैसमैनहीजाणे।कहोकिसि
बिधितुम्हेलहीजै।।नमसेवादासहैयुन्हंतुम्हारी।तेरी।
नोषपहेजुंकीजे।।५।।६।।मनरेरामअमारसपीजै।।जैसासो
जबहोहिनहीलागैहरिमिलाहालीजे।।टेकपावपल
ककी।रामनसीबोरोया।भावघटेतनछीजै।नातैतोहिस
मकाहकहततारा।मननामचितदीजै।।१।।मनसाजीतिमनो
रथमारो।किरिलालचलोनतजीजै।सीलसंतोसदयागहि
अंतरिरसनो।अमृतपीजै।।२।।जरणजडीजतनकरिराषेस
बकोमक्रोधदहीजे।हरजसोगगतरेग्यान्गहिसमता।
साचगहीजै।।३।।हिनकपटभरमोनिबडाई।पाखंडवादनकी
जो।परनिंद्यापरदोषनिवारो।येकन्नमलनावरतीजै।।थागहे
सुबधिकुबधिकारिकोनै।मनकुंकासिकासिलीजै।।रमतारांम
अंतरमेराषो।भ्रमिजलिमनोहिवहीजे।।५।।बिकलवरहिरिक
परिरापे।किरतमतसनहीधीजे।जनतेबादासमतहालेय।
सा।सिवसोलगिजुगिजुगिजीजे।।६।।६।।तेतोकुबधिकाल
मैनाणा।।निरमैमयाकरमकोकोनैनाशनिरंजनलाणा।टेक
करगहिसडगलीग्रांनमगरजो।।डावपडेनवमो।समिर
णमिलसेवाहिरैति।दिनानहीकालकेसारे।।माथासांई
पिसिरउपरि।।निरमैहरिजनबोले।जसेबाहरिजनहा
गुणजचरेग्यानकथानहीबोले।।२।।मनरेनोवतंकरि
प्रीति।नाव्बिनासबफुवजगमे।छाडिसकलबिप्रीति।टे
।।मनिपतनकोयेहफलहैयेकगोव्यंदथाम्हा।फिरपीने
पूबिताझो।जबकाल

२२५ रारे थौतनआंगलौनी रज्मू काझ्झातनबारारे टेक स्वारथ
कोसबकोस्या ॥ बानितासुतनाई रे यामैतेराकोमनहीम्
लै मातिलाई रे ॥ नंजोजिसनेहीसोइमां कोतिलेहाविचार
रे रामसनेहीबिनकृपा ॥ बांधेसिरभाराहे ॥ १ ॥ जागिलागि
सोबेकहा ॥ भजिपरमसनेहीरे ॥ परमसनेहीबिनकृपा ॥ रे
यापैनरदेहीरे ॥ रामभजैजगपतिदे ॥ भजिप्राणउधारेरे
जनसेवादासजाथेमतो सोईकाजसुधारेरे ॥ २ ॥ रेजीवम
तिभुलानारे फूवासुपनसंसारका ॥ तामैदेषिभुलानारे टे
सुपनामैबहुसुषकीया ॥ जागपाकछूनाहीरे सोसुषसा
डोहरिभजो समझोमनमांहीरे ॥ नातमालनधूमसबातें
राकोनाहीरे देषत सबहीगी उडै जैसेबादलछांहीरे ॥ १ ॥
येकसनेहीराममतै इस्याडुबबाइरे ॥ जनसेवादासगोविंद
भजौ तजिज्ञानसयाईरे ॥ २ ॥ रेजीवजागैनासीरे घारासु
घसंसारका ताकूं दुविधानाहीरे टेक श्रलिपडग्रामैसद
चौरासीमाहीरे ॥ रामसनेहीजीलत्या घोटाद्रेषाहीरे ॥ सु
तबनितासंहितकासो फूवसबथैलारे घोटाषायाजाइके
षाईनरदेहीरे ॥ जीवनसुपनैसाखिमा समझौक्यूंनाही
रे जनसेवादासगोविंदभजो सबहीदुषजाहीरे ॥ ३ ॥ १० ॥
रे जीवहातअवारारे हूंतोसरबस्यालसौं चेतिसवा
रारे टेक जागिलागिसोलैकहा ॥ बिनसेपलमांहीरे हरिभ
जिलाहालाजोबै अकलजैनाहीरे ॥ थौतनकंगलकीष
…धिरदासैनाहीरे साभाजोबिलमनकीजीये किसप
लमांहीरे ॥ मनिषादेहदुलभहै ॥ बोनमालिषाहीरे जन
सेवासुमिताकाजीये ॥ उधनेमनमांहीरे ॥ १ ॥ चौरासी
चौलनकीजोरे नरदेहीलोकंदई सोहासिमिलीजेरे ॥
चौरासीलषभमताईपाईनरदेहीरे सोनहुतेगोमाइ
भजिपरमसनेहीरे ॥ थौतनफूवाचाबकाजालिहा
षिहीरे गरबनिवारोहरिभजो मनिषापालघेहीरे ॥ २ ॥
कालनेहालहि किनाहरेजोनहीदीजैरे जनसेवादासनसल
थौबैमनिकाहिजनाजैरे ॥ ३ ॥ ११ ॥ रेजीवजागिरजाणारे
तनबीतेमातदहै ॥ मतलीवोपाणीरे टेक काबेकुमिल
नरहीबिनसैपलमाहीरे ॥ रामसनेहीबाडिकेपोटा
…पानहीरे ॥ फूवासुषसंसारको सुपनैकीनाईरे स्वारथ
…सबभलसोबीछुडै …जाहीरे जागिपियनहीबिक

सुधारसपीजायेहिनिवात्हुवालाहोजगतसुषमनजिनिदी
या ताकूंवाल्यारासो॥ श्रीनरताहरिबीसर्या जिनिवहै
तावगात्याहो॥जिनिकेवलकरतागरिगह्या तिनकाजसु
धात्याहो॥१॥मेप्यासादीदारकाप्योहिदरसणदीजेहोतुरा
गलाजनतेरहु॥अपणांकरिलीजेहो॥ आलमनिरंजनतु
मबिनाहुजानहनावेहो॥जनसेवाकूंयापेगथ्यो॥चरणं
चलिआवेहो॥थ॥२॥ स्नेहीपीवमहाभेषधारोहो बिरहणी
वोगाणि मैनहीकह्यातनजारोहो॥टेक॥ यमकितवमेरेपिं
कूपीवनैनानिदीसेहो॥ आवसनेही आंगणेंकरिहो
कसारीसैहो॥ बिरहणितलबदीदारका प्यो हिदरसण
दीजेहो सेवाजनहेतेरहु॥ भक्ति बकसीजेहो॥१॥२॥बोल
माबिलमनकीजेहो॥ मेप्यासीबीदारकी मोहिदरसणदी
जेहो॥टेक॥करणांसुणिवरणांमहीपीयामहलिपधारोहो
मैनैनावेषूंतुमकूं॥जपापैलागहमारोहो॥ हिलिमिलि
हारसंगसुंदरी॥ षेलेदिनरातीहो॥जनसेवादासज्ञानक
या॥पीवकेरंगरातीहो॥२॥४॥स्नेहीरांमकिसिबिधिपाई
येहो॥ दरदतुम्हारेदरसको कहांचलिजाइयेहो॥टेक॥नि
कटिबसैपरदेसहै॥बलगञ्जगटनथाइमोहेमोहिबि
सरणो॥योतनयूंहीजाइ॥बिनदरसणदुषमेरहुंसालेनि
सदिनमोहियाकरवेमाल्नामहिली॥तुमबिननिकलै
नोरहि॥केसेवरूंकछुपाणनी॥तलफैमेराजीव सेवाजन
हैबिरहणीतुमबिलेसनेहीपीवा॥२॥५॥सनेसावादिसु
योनसीमोरामेप्यासीउनदरसकी॥तकारेरह्यौचितकवार
टेक॥दरसणबिनदुषतनमें॥मोहिदरसैनाहीपीव॥तालाबे
लीरैणदिन॥दुषपावैजीव॥ सबघनदीताकसांजटे
स्त्रणिहोपीवसुकातसेवाजनकेदरसदो॥मेरसमझ्याति
जनदार॥२॥६॥निरंजनतेंमेरीजीवनिहो॥ओरकछुभावे
नहीतूंहीमेरैमानिहो॥टेक॥ब्रह्मा बिष्णमहेसलो बाजी
गरमायाहो॥बाजीतजिञ्जलगातिमजो॥तिनहीसनपायाहो
श्रीनवीटसबपरहरैत्यागोजगफंदीहो॥येदरामतुम्हे

सालोउनरमनिव ९८
जनबीनवेमेरेप्राणञ्चधाराहो॥५॥७॥ आरेजीकुं

[illegible] नाविधवीसरातो तैप्रीतमरामाव्रा
[illegible] गिणतनकोस्वपरादा
[illegible] घटिम हम हा मठ आपा सतय
[illegible] दसेवड़ नगावा मन
[illegible] मीतिमायो [illegible] विरह
[illegible] पानबोले [illegible] पीव
[illegible] पीवकलियाला [illegible] चाव
[illegible] याद[illegible] मारसिविरह
[illegible] लीडुयीयाविता
[illegible] पीवदरसणदे
[illegible] नलानमदीतो
मनहसूमीरसनेहातर।
[illegible]
[illegible] करा तवजू
[illegible] कामरा सांईवे
[illegible] मनसवाद
[illegible] मनरह
[illegible] सुरवते
[illegible] बरसस।का
[illegible] रवकरहतनिसा
[illegible] डाणी तंत्रम
[illegible] ततनगांव
[illegible] सोसध
[illegible] रसनोसरा
[illegible] चरणां सो
[illegible] सजनलो
[illegible] वांचा
[illegible] सराबे जन
[illegible] जरूर
[illegible] नलल
[illegible] नोजर
[illegible] तबलसा
[illegible] सबहीबो
[illegible] कालिधायानरलनी

॥रेत्र॥परमसनेही पीवं दरसण दीजीयै तुम बिन म्हा
॥ये॥टेक॥परमसनेही आव म्हा कु
ला विरहणी॥तुम दरसण का देव॥ प्रीति अति घणी॥१॥तु
म बिन सनी सेक पीव करि आपणी॥दोलि मिलि दरसा दे
घाइ मैं तो तुम तणी॥२॥पंथ तुमारो नाथ मैं जो ऊं घडी पौ
रन धाऊं आन स्मो हि आपडी॥३॥जनसेवादास के प्यास
तो अति घणी॥दरसण द्यो हूं दयाल॥ त्रिभुवन धणी॥
४॥१४॥११८॥राग॥५॥राग बिहंगडो॥ सांईयां तुम बिन कछु
न भावै॥ अब मन तन तनदा वै॥टेक॥ तुम साहिब मेरा
मैं बंदी जन तेरा॥तन धन सब मोहारा॥ तुम बिन सब ही
आर॥१॥सुख संकट सुख ईसा सण राज॥ तेरे नांव बिना किस का
जा॥२॥ देवरांग वरग्या नां॥ तेरे नांव बिना बेकांम॥ धन तात मात
सुत नारी तेरे नांव बिना सब छारी॥५॥ सब रोवे लू डेरी त्यां
स कौन्ही प्रीति घणेरी॥६॥मोई प्रीति काल की बेरा॥ को रहि सब बि
न सगा न तेरा॥७॥जनसेवादास हरि गावो॥ म्हू बहो डि न मो
जालि आवो॥॥सत हीरा पारां मूनी॥ मन पिले हरि यौ तन
बी तो जात सनेही॥ जू नाल रहि गे मेहा॥टेक॥ मेजन के ओ तौ ॥
सभा किस यांणा॥साप सुष सुदिये हा न हरि हरि सुमरि सौ
ल जि निलावो चित ज्ञान कऊ जिन देहा॥ जो मरण मरण स
बल ड पत रे ऐ मिटत न ही कऊ केहा ओ रूप पाइ नही मन को
की ऊक नि रहे हरि सुमरे हा॥२॥ रवऊ मन कहाया तन को
जलि हो सी षेहा॥जनसेवादास ओसर मल पायो हरि द्रि
म जिला हा ले हा॥१॥ मन रे राम नाम जपि लीजै यो ओ
सर लो पोइ मो यूं ही ॥ हरि लिजि कारि जकी जौ॥टेक॥ जब लग
स्वास बास घट भीतरि तब लग राम रटी जौ॥ या ही सीप
सूणो सतिगुरु दगाण यो मन आनन्द दी जौ ॥१॥ यो ही मन विचा
रि मन जो हरि बिमुत जि रत न पीजौ॥ जनसेवादास सतगि
हूं जी॥ येक हरि की सरणि गही जौ॥२॥३॥ मन रे तकौ ई श्रीपण
पो पोदे॥ ऊगि चले यल येक हीन कसौ॥ सब ही ऊ भा जो वैटै
॥ तात मात सगा न हातेरे सुत बान्धता परवारा॥ येत वे स्व
ड तेरा न हा कोई॥ तेका इली पोसि रिनारा॥ संगी सिल
ज्ञा सो यो तेम्हा ५

मगनलैलीन॥जनसेवायोमनविषैआधीन॥६॥२॥क्यूंरेमन
तैरामबिसारै॥रामबिसरिजनमक्यूंहारै॥टेक॥मातपिता
कोईनहीतेरा॥बंधवकुटंबसबैउलफेरा॥१॥तनधनजो
बनक्यूंवधेहा॥सबहीतजिमनजिरामसनेहा॥२॥सकलसै
जसेवारीकरता॥तिहिंमजिमनवाक्युंडरता॥३॥जनसेवा
दासमनहीसमझावै॥तगोबिंदकेगुणकांइनगावै॥४॥
२॥क्याकहीयेयामनकीबात॥रामछाडिबिषैरसमा
ता॥टेक॥दीपकजोतिलुभांणां॥जैसेंमगलदाबिपड्या
फंदिजैसे॥१॥भवरकंवलबासिकुंजरियाया॥मूलगहोत
जरामनगाया॥२॥नादनेहकुरंगकैभाई॥यामनकायूंबिष
बोरिमनजाई॥३॥जनसेवादासकहेसमझाई॥तंतजीरे
रसुषहरिगुणगाई॥४॥३॥योमनवौयकैरासिनरहै॥नटज्यूं
केताचिरतकरै॥टेक॥कबकुंकमनवोहरिगुणगावै॥कबकुं
कमनवोआनहीध्यावै॥कबकुंकमनवोसकठब्रतक
रै॥कबकुंकमनवोब्रह्मध्यानधरे॥१॥कबकुंकमनवो
कामीबोरा॥कबकुंकमनवोसीतलबोरा॥२॥कबकुंकम
नवोपानीबकता॥कबकुंकमोनिपकडिफेसुरता॥३॥क
बकुंकमनवोमायाकेलै॥कबकुंकमनवोपापीगेले॥४॥
कबकुंकमनवोसीतलचाला॥कबकुंकमनवोबिषकी
ज्वाला॥५॥कबकुंकमनवोसाधसुसीला॥कबकुंकमनवो
सारकापीला॥६॥कबकुंकमनवोसीतलबानी॥कबकुंकम
नवोपरोअभिमानी॥७॥कबकुंकमनवोधीरजधारतो॥कबकुं
कमनवोफिरेबिडरतो॥८॥कबकुंकमनवोनिरबैदेषैआपी
कबकुंकबैरबिसाहेपापी॥९॥कबकुंकजाइयेकातिरहेवो
लो॥कबकुंकगाकालीयोफिरतोडाले॥१०॥कबकुंकमनवो
बिरकतहोइलागे॥कबकुंकमनवोफिरिमायालागे॥११॥
कबकुंककलेसछाडिदेजारा॥कबकुंकफेरिकेरेबहोतो
रा॥१२॥जनसेवादासमनकामतानहै॥पनेकोकोईतौधगाहि
रावैयेक॥४॥४॥निरभैयेकनिरंजनराइ॥दूसरकोईथिरनहीं
रहै॥टेक॥सुरनरकोपैदेवसमंता॥निरभैयेकसदाभगवंता॥१॥
कोपैपापैयेकबरदेव॥निरभैहैसदअलषअभेव॥२॥सब
कोपैचोरासीजीव॥साधोनिरभैकोपैसदीव॥३॥निरभैयेकज
पावणहारा॥जनसेवादासमजिनेयेजपारा॥४॥५॥थिरअ
बिचलअचलनिरंजनदेव॥औरसोथिरसुरनसबयेवट

पा॥ज्यों चौथै वितन दीया॥जन सेवा क्या मल कीया॥६॥२० मन
रे पांचउं लटि घरि आवै॥ तब सहजि परम पद पावै॥टेक॥अर
ध उरध मधि पवन निरोधै॥ सतगुर ने दवताया॥ गगन कों आडि
अगम मैं षेलै मन थिर करि काया॥ भंवर गुफा मैं वहो डि
न पैसै॥ फिरि आवागवण न होई॥ जन सेवादास निजि मूल
निरंजन॥ ता सम और न कोई॥२॥२॥२०॥ राग॥६॥ राग केदा
रौ॥ जे जन नांव सैं लागे॥ सकल आघ छिन मांहि परलै भ
गा निंस्तंति णषेला॥टेक॥ के हत हरि हरिया पाप थरहरि॥ सब भा
ये परहरि देह॥ सुणि॥ अवाज बंहक की ज्यूं पंषी बिरष तजे
ला॥ सब मैल पट को काटि मल चरि॥ फिरि सुध कीन्हो है
हा॥ जन सेवादास हरि नांव भजता॥ थूकरम सकल फंदह २॥
॥रसनां राम नांम जिनि लयो॥ ज्यूं नि नैं अरमरा गो काल नै मि
टि गयो॥टेक॥ अजामेल सुणि संषि गनिका॥ जम टालो दयो॥
हरि नांव को परताप ऐसो॥ पतित पावन नयो॥ दास कबीर
रैदास नांमो॥ हरि नांव नजि थिर थयो॥ जन सेवादास तरप
तज्यूं अघ॥ नांव रटत सब गयो॥२॥२॥॥ भजि मन आकल आव
गति देवा॥ सकल व्यापी संगि तेरे॥ सहजि करि लै सेवा॥टेक॥ ना
व निधि सो निकटि तेरै उलटि मांहि निर्हरि॥ जुरा काल नैं ना
हि कोई॥ सुमरि उतरो पार॥१॥ सुष सिंध सागर ऐसिक लो॥
मन चुगो मोती ऐन॥ ता सिंध मांही हंस षेलै॥ सदा पावै चैन॥
२॥ अगम अथाह थाह नांही॥ कोई थाह पावै नांहि॥ जन से
वादास ता सिंध मांही॥ हरिजन केलि करांहि॥३॥३॥२४॥
राग॥७॥ राग भैरू॥ जग धुंधा रे जग धंधा॥ जगपति को डिस्या
जग अंधा॥टेक॥ पाहण पांणी पूजै आन॥ पार ब्रह्म तत नही
पिछान॥ पूजै देव पितर कुलदेवी॥ भैरू भूत सीतला सेवी॥
१॥ पुरांणी पस्ल हैं न ही भेव॥ आतम राम न जांणै देव॥२॥ प्रग
ट देव निरंजन मूल॥ सब हीं ध्यावै भूत मकूल॥४॥ जन सेवा
दास प्यारो मन जांनां॥ ते चौरासी फिरै है रांनां॥५॥१॥ यो म
न चंचल बहु दिस डोलै॥ पति रूप विज्ञान सु बोलै॥टेक॥ म
न दिसा हित जैसे स्वांनां॥ बिषयां के संग रहै लुभांनां॥ जे
सै कुंजर सम फै नांही॥ मरण दिसा दि पडे फंध मांही॥१॥ जैसे
कुरंग नाद मैं लीनां॥ ऐसैं मन वो बिषै आधीनां॥२॥ जैसैं प
तंग दीपक सैंगा॥ सम॥५
मांसि बंधां लीखो॥८॥५

बेहनकीन्ही॥ ताकै नराभिमूलिमतिचालौ॥ लग्नपानहिदैलै।
वीन्ही॥२॥ करतादोइनहीहै नाही॥ येकै सबै उपाया॥ तासा हि
वकूंचीन्हि कहर तजि॥ सो सबघटमांहिसमाया॥३॥ कहर की
करदादिलतैसबडारो॥ महरदरपणमें जाइ॥ जनसेवादासयूं
कहीरमता॥ ओरनहूंजाकोसीधा॥१०॥ नजो अनीतिनीतिग हि
वौरो॥ कहौरांमबिनाहगाहैकोरे॥ टेक॥ जिवहकारिकै जीवसे
ताकै बांगदेयेकपुकारौवहांतोयेककहैसबक्षितसोंमीह
जाकरिमारै॥ कहैजबाबक्याद्योदरगदरगाहि॥ लग्नपावो
कूमुकलो॥ जनसेवादासडबध्यादिलमांही॥ वसतानंद
नयाया॥४॥१०३॥ हरिजनगतिहंसाकीगहै॥ हरिबिनओरनमु
खनंकहै॥ टेक॥ रांमसरोवरमैजनरहै॥ कांमक्रोधममतामबद
है॥ उरीअंतरिमोतीजनलहै॥ बगकैसंगिनहीजाइरहै॥२
क्षमीसंजाइकदे नहीफहै॥ मोनिमाहैवोहरिगुणकहै॥ मे
जादासजनपतिगहै॥ पीरनीरन्यूनिरनोकरै॥४॥१०४॥ जोपति
बरलानांहीनारी॥ तौपीवमेलन्हीमनांउतारी॥ टेक॥ लागदिया
वौसिंगारसुहागणि॥ पीवहिसातोनरडुहागणि॥१॥ टानहू
नरटीकाटमका॥ यूंतौमिटैहैधकानजमका॥ पतिव्रता
येकपीवहीजांणै॥ हूजाकोइनिजरिनआंणै॥२॥ जनसेवाद
ससुहागणिसाई॥ येकहरिबिनओरनजाणैकोई॥३॥१०५॥
साईसुहागणिपीवमनिभावै॥ आंनपुरषसंगनलावै॥ टे
कुमसुनमांहि रहैरसमुंके॥ वातरिकाबेतनमनदेकै॥१॥ ध
नजोबनसौंपैसानारी॥ नाहिपाकननाडैनासदाप्यारी॥२॥
पीवपिआंणरहैघरिआंगणि॥ जनसेवादकहीयेसाईसुहा
गणि॥३॥१०६॥ मैतोयेकरमईयाजांण्यौ॥ येकरांमबिकोईनाजा
णिआंण्यौ॥ टेक॥ जाकैचंदसूरआपिवांणी॥ तेलासाहिबकू
लपहचांणी॥१॥ जाकैब्रह्मासिवबहोतेरा॥ तासाहिबकांमे
हूंचेरा॥२॥ पांचततगुणकीयापसारा॥ हैवोहीयेकअपावण
हारा॥३॥ कीयेधरतीगिगनपवनअरपांणी॥ ताकभांतिबिले
कहैंजांणी॥४॥ लषचोरासीजीवअनंता॥ थावरजंगमकीयेम
गवंता॥५॥ सबघटमोहिरहोभरपूरा॥ सोसाहिबसेवाकिरहै
सूरा॥६॥१०७॥ मनचंचलमेरोराष्योनाहे॥ मेकातककहूँरवडा
मेघरहै॥ टेक॥ मनदसूंदिसाकोरहोरत्राउं॥१॥ वाडितोडिषेतमे
जाइ॥१॥ षेतबिडाणोतोडेझाड॥ तोऊनमनवैमानैआड॥२॥
बहोतभांतिसमकायोवा॥ मनवोनिपटहैकाचकथीर॥३॥

दसरधरती धिरनो हिपवन पांणी आकास विलो हि॥ ७॥
कापै आगनि गरासै काल कोई बचरान पावै रक्त नूपा ल॥ १॥ को
येतीन लोक सबषंडा सब कै सिर ऊपरि काल का डंड कोपै वु
स्ला वि स्म म हेल वाल न ग्राडे पकडे सैसध सानंनलाशरथि
रिरहसीनां हिीन दीसा गिर ग्रास पलमांहि पितारातेजसब
जो हि विलो हि रहत न पावै सवपलमां छिन रहसी वेकनिरं
जन देवुजन सेवादास नमि अलष अभेव॥ ७॥ नि घाहमारी
कौरें माई तुम बिन मेरा मैलन जाई टेक जैसे धाबी कापड
ग्राटैसें नीदक मेरा मैल पिछांटैं जैसैं मातावालक चिर
धोवें ऐसें नींदक मेरा मल धोवै जैसैं गऊ वछा कूं चाटै ऐ
सें नींदक मेरा मल काटै। जन सेवादास मन हीसमझावे ह
मकूं पारि उतारि आप दो जिग मैं जावै॥ ७॥ नीदक तुं मेराम
तरे माई मेरा मैल तूं सीतिघुवाई टेक अनेक जनम का दा
ग बदहौ तेरा विनां मजुरी काटै मेरा॥ १॥ ऐसा प्रीतम नां हि पि
यारा बिन नीदम कौं कौ संवारा॥ २॥ आपण बूडै औरउधारौ ऐ
सा नींदक कौ कोई जि नि मारौ॥ ३॥ सेवादास जन कहै विचारी
नींदक बानां परउपगारी॥ ४॥ ७॥ माया मिलण न देई राम सै
[illegible]
[illegible]
[illegible]
थवाद माया जल थल पवन आकास माया व दस हरि पह
रिकौ पैकासश माया ब्रह्मा बि स्नमहेस माया सुरग मृ
तपाताल सेसय माया आविर ही वकूं वारि माया रहत कोई ज
न थोरा माया हरि कै जन सा रा जनसेवा क रहु करो ग आधार
॥ ३॥ ७॥ प्राण्यैक हे माई काया के गुण कह्यान जाई टेक माटी
ये कनां डा व हो वि धि के वहो वि धि घडे ऊं भार रचन येक
गहणा वहो विधि के है कंचन येको सारा॥ १॥ सामे टि सक
ल समिदेयो वसत विरा जै आप सो हुं सब घट है होत है दे
यो अजपा जाप॥ २॥ पांच वरण की गऊ दुहाई अमृत दे षो येकही
इधा जन सेवादास प्रण अविनासी कुं ण उतिम कुं ण पत
दा॥ ३॥ ४॥ ७॥ जे जो मनी ति नी वकी माई अमकजि और जिव हद
रत हो सो किसि नै परमाई टेक जै तुम क हन तो मद की
वा सो मन मद की कठिनाई सब देंमारि जिवाई
मबत नो सि ला शी महम द का द ह्या धिन की

हारी॥७॥ उगल न्मलनाव नीरहै॥ सोपीजैपेमउपाई॥ तोजनम
जनमकेपापसबपरलौकुं समलसबधुपिजाई॥१॥ अंतरिमैल
धुपैनहीजलसुं तंकाहेमलिमलिन्हावै॥ तनमनपवनाफेरि॥
अपूगाजेहिरदेहरिगुणगावै॥२॥ पांणीमांहिपेसिमुगधनरावहै
तसंतावैजीवा॥ दिलमेदयानऊपजी॥ मनाविसारेपीवा॥ दयास
रोवरन्हाईयै॥ अंतरिग्यांनाविचारियेकअातमरांमपिछाणिक
रितुं अपणांकाजसुधारिया॥ अणगलपांणीक्यानन्धोवे॥ अभि
मानतजीवस्यंधारे॥ निरमलनांवपातितमयेपांवनासोतवपूंन
संभारै॥ तारणतिरणनांवजगमांही॥ सोतजिमरमेंअनां॥ मा
चसीलवै॥ निकटिनआवैसबजगसुगधदिवांनां॥३॥ बिनापरचपै
टाजगपावैजीवजनममिजनाम दुषपावैसमफिरबिणजकरो
नरलोईयापूजीबाहिनजावै॥ जनपंजाबविसाविसुणिजनक
यो॥ ओसराफिरिनांही॥ येकोसासनवनातिइजेता॥ तंहरिमजिथि
रकरिमांही॥ ५॥ सतगुरसबदराखिजी अंतरि जाइदयादेसब
सीजै॥ जनसेवादासनजो अबिनासी॥ तनधरिलाहालीजै॥ १०
२२ कैसेपूजाकीजैमाई॥ वोअलषपुरुषगतिलषीनजाई
टेक॥ दिष्टिपडैसोसबहीमाया॥ वोअदृष्टिअलगनिरंजनरा
या॥ ताकीसेवाकैसैकीजे॥ नांवनवांवनकोईताहिलहीजै॥१॥
रूपनरेषनहीकोईताही॥ गांवनवांवकह्योनहीजाही॥ ताहि
बंधवबंधनिनहीआवै॥ ताकानेदकहोकोपावै॥२॥ दिष्टिनपडैमु
ष्टिनही आवै॥ अगमअगोचरलष्यानजावै॥ हरिसबमांहिसक
लहरिमांही॥ ग्यांनदिष्टिबिनदीसैनांही॥३॥ प्रेमप्रीतिलेहिरदै
वासै॥ नबआनंदवलउरमांहिप्रकासै॥ भावकीभगतिसाच
कीसेवा॥ आतमरांमऔरनहीदेवा॥४॥ सकलसकलनिरंजनन
राइ॥ जनसेवादासताकागुणगाई॥५॥ वोअबिनासीबिनसैनां
ही॥ आपिरह्यासकलघटमांही॥ ११॥२३॥ भगतिबिकटरेभा
ई काछुबिरलैजनपाई॥ टेक॥ नाचैकूदैतालबजावै कुनीयां
बहोतरिझावै॥ गलोपसारिऊंचैसुरिगावै॥ फिरिमायासंमन
लावै॥१॥ प्रेमप्रीतिहिरदैगुणगावै॥ सबदअनाहदसंचितला
वै॥ तजिअभिमानरहैनिरदावै॥ सोभगतिनासतिसोजापावै॥ ता
लमृदंगाबीणिबजावै॥ पिनाककीगरीसचितलावै॥ तांणांतूंण
गुणगावै यांबातांसूंसाहिबपावै॥३॥ बिणहीचरणनिरति
करावै॥ बिनकरतालतनमांहिबजावै॥ सासउसासैजपा
गावै येकअपंडतासचितलावै॥४॥ हाथोइकरिसुदरसोहैप

जनसेवादासमनजांणनदीजैयेकरामनांममैलैमनकी
जोधा[illegible]जानिहचलनाहीरेनिहचलयेकनिरंजनदेषा
सोबरतिरह्यासबमांहीरे॥टेक॥धरतीगिगनपवनअरपांणी
चंदसूरअरतारारे॥जैसेसबजांहिरहैंथिरनांहीयेकरहैगयोबू
णहमारेरे॥सेसमहेसपीयेकेवलिकीरब्रह्माबिह्मबिलांही
रानिरमैयेकनिरंजनजोगी॥सोबरतिरह्यौसबमांहीरे॥२॥गिरल
रुमहीदेविसबनाथिरयेकअबिनासीथिरआईरे॥जनसेवा
दासदेषिसबनांथिरथिरतार्हौसोलासीरे॥३॥८॥जैसे
राममनजोमनमांहीसोबाहरिभीतरिसकलनिरंतरिसबघटि
रह्यौसमाहीरे॥टेक॥जलमेकुंभकुंभमैपांणीयूंनिराकारन
रपूरासकललोकमेव्यापिरह्यौहैतलदेकोईडरगमिसरारे
॥जलमैलूंणलूंणमैपांणीयूंआतमब्रह्मबिचारोघटिब
धिकदीसैनाहीजनसेवाजीयारोरे॥२॥रामरामव्यापकसब
घटमैयपहोपवासज्यूंसोईसकलअभेदअरूपअबिनासी॥
औरनदूजाकोईरे॥३॥अकलअतीतसकलगुणरहतासबरह्यौ
येकभरपूराज्यूंआकासकलसमिपूरणघटबिनस्यांकहा
हेरा॥४॥जैसैंतत्तनमाणिगणसबपोयेंयूंसकलघटतामांहीकुं
चनीवत्रमन्नेदनिवारोहारी॥बिनदूजानांहीप॥ज्यूंकंचनयेकर
चैबहोतूंपननाबधरैबहोतेरा॥आदिअंतिमधियेकोकंचन
यूंसबघटिसाईंचमेरा॥६॥आदिमृतकेजिमसचैबहो।फिरि
अंतिमृतकाहोईमधिमृतकाहीमलजांणोयूंआदिअंतिम
धिअविगतिसांईं॥७॥आदिहीततंअतिहीतंतहीफिरिमधिहीत
तजानो॥नांणैपटैतत्तसहैंयूंअबगतिआपसमानो॥८॥ज्यूं
सासिकुंनमुषडपनमेयूंरामरमैसबमांहीं॥जैसैंरामबिचा
रोनाईवामिलतामारानांहीजमाधिभेदकूमदूरिनिवारो॥
हैकेवलयेकोरांमा॥जनसेवादासअैसानिनिज्ञानसांसांईंपू
कितांनाइपरमसुषधामा॥२०॥अबमनरूंढबंधनाईदू
रिपांनमोएअंतरिउजियारातबदेष्योरामसकलभरपूरिटे क
॥ज्योंकेस्नतैंमूषननहींन्यारा॥कुंभमृतकानिंनिंनहींहोई॥
यूंयेकोरांमसकलविसव्यापकऔरनदूजाकदीयेकोई॥ज्यूं

हारी॥७॥ जल न मल नाव नीर है॥ सो पीजै पेम उपाई॥ तो जनम
जनम के पाप सब परलै॥ कुसमल सब धुपि जाई॥१॥ अंतरि मैल
धुपै नहीं जलसुं लंका है मालि मालि न्हावै॥ तन मन पवना फेरि॥
अपूठा जो हिरदै हरि गुण गावै॥२॥ पाणी मांहि पैसि मुगध नरा वहै
तसंता वे जीवा॥ दिल मैं दया न ऊपजी॥ मना बिसारे पीव॥ दया स
रोवरि न्हाइये॥ अंतरि ग्यांन विचारि॥ येक आत्मराम पिछाणि क
रि तूं अपणां काज सुधारि॥४॥ अणगल पांणी क्या लन धोवै॥ अणि
णलत जीव स्यंघारै॥ निरमल नांव पतीत न ये पांवना॥ सो तव्हूं न
संभारै॥५॥ तारण तिरण नांव जग मांही॥ सो तजि भरमै आनां सा
च सील वै निकटि न आवै॥ सब जग मुगध दिवानां॥६॥ बिना परबधे
टा जग षावै॥ जीव जनम जनम दुष पावै॥ समकि राबिण जकरै
नर लोई॥ या पूजी बादि न जावै॥७॥ नरपंगा ... सा बिसणि जनक
यो ओसरा किरि नांही॥ येको सास न बुनाति इजेता॥ तूं हरि भजि थि
र करि मांही॥८॥ सत गुर सबद राषि उरि अंतरि जाइ दया दे सब
सीनै॥ जन सेवादास मनौ उबिनासी॥ तन धरि लाहा लीजै॥१०॥
२२ कैसे पूजा कीजै माई॥ वो अलष पुरष गति लषी न जाई॥
टेक॥ द्रिष्टि पड़ै सो सब ही माया॥ वो आद्रिष्टि असंग निरंजन रा
या॥ ताकी सेवा कैसै कीजै॥ नांव न वा वन कोई ता हि लहीजै॥१॥
रूप न रेष नहीं कोई ताही॥ भाव न भांवन यौं नहीं गाली॥ हरि
बंध बंध निनही आवै॥ ताका भेद कहो को पावै॥२॥ द्रिष्टि न पड़ै मु
ष्टि न ही आवै॥ अगम अगोचर ध्यान न आवै॥ हरि सब मांहि सक
ल हरि मांही॥ ग्यांन द्रिष्टि बिन दीसै नांही॥३॥ प्रेम प्रीति लै हिरदै
बासै॥ तब आनंद ब ल उर मांहि प्रकासै॥ भाव की भगति साच
की सेवा॥ आतमराम और नहीं देवा॥४॥ चकल सकल निरंजन
राइ॥ जन सेवादास ताका गुण गाइ॥ वो अबिनासी बिनसै नां
ही॥ भापि रह्यो सकल घट मांही॥५॥२३॥ भगति बिकटि रे भा
ई का क्यों बिरलै जन पाई॥ टेक॥ नाचै कूदै ताल बजावै डूनीया
बहोत रिकावै॥ गल्ली पसारि ज चेल्हा गावै॥ फिरि माया में मन
लावै॥१॥ प्रेम प्रीति हिरदै गुण गावै॥ सबद अनाहद सों चित ला
वै॥ तजि अभिमांन रहै निरदावै॥ सो भगता सति सांना पावै॥२॥ ना
ल म्रदंग बीण बजावै॥ पिनाक कौ गरीत चित लावै॥ ता मंगनांतू ल
तु गुण गावै यो बातां क्यूं साहिब पावै॥३॥ बिण ही चरणां निरति
॥ बिन करताल तन मांहि बजावै॥ सास उसास अजपा
येक अषंडता सूं चित लावै॥ न्हाइ धोइ करि सुंदर सो है प

रधनपरदारामनमोरसैषाटैमीठैमरैअधाशीयूंतोजोगनपावैनाः
पपांचूंपकडिफेकघाल्यो ऐसैमनमैसाकूंजलठतोपोदयास न
बूरीसंजमसीलाहीवैहरिजनरामरंगीला॥दलीनगुणआगैंप
गमांडैलोजमोहत्रिसनासबबांधै॥चैथासंजवचितलगावै
सोशीसाधुमुकतिकहावै॥नीवतमूवासाइसुषीया॥औरज
गतसबेहीदुषीया॥जनसेवादासयाजनवकहोणी॥निहि
जांणीसोईमलजांणी॥२४॥मेरामनअपराधीनागाडो
लै॥मैकैसैमजुलकरूंतोहिकेसैं॥साधसबदसबहीयूंबोलै
टेकयौमननिकुचनिलजनिसवासुहित्रटकतफेरबिक
रीमेतौहास्योनादिवापनी॥अबरापोसरणिमुरारी॥मैंकहि
समकायोसीवनमानैं॥फिरिचलैविषैकीवाट॥कूसविधि
लऊंतोहिकाहिसमकावौबहोघटमेंऔघटघाट॥२मे
रौबसनहीचलैकसांईमैहास्योयामनआगैंमैअटकूंमे
रीअटकनमानैमनफिरिफिरिविषैलागै॥मैवारवार
पुकारिकहतऊं॥सुणिहोपतमद्दमारा॥जनसेवादासकैबे
रनकोरिन्याविनरामणाहारा॥४॥२४॥अथअंगमायासाष्यु ।
उलटिस्यालासिंघकूंगह्या॥कनकरीउलटिचीताकूंघेरयु ।
फिरिमूसैगहीमंजारी॥सुसैस्वानकूंवनमैघेरया॥बनरा
बैकेमानारी॥फिरिसंघगास्करल्या॥करह॥मीडकसापक
सिकीया॥मकडीहूंमाषीमाहिराषी॥चिडेसिचांणहिल
या२फिरिमुसैदौडिबिलाईपकडी॥नीनरासिकारमाल्य
मिरघलीलकूंचोडेरोस्या॥सदासरयासिंवअटल॥राजक
रैबोफकोबेटौ॥भरदिलसबासिंघा॥जनसेवादासलाई
जनसरताध्यापरुध्यारथाविचारै॥२६॥दरूहजगसे ।
मेरमनापलकनानिसतहरिकंप्योटरनर॥चकोरसु
रतिचंदसजोडै॥पूरवतारामतारनहीतोडै॥७॥अथमनजीपर
सोचवनहासोहीसकलब्रह्मंडसबदाधीन॥रकटग
लपारहैनहीविसरैसमसमारपैसिवहोडैनहींमित
१०॥सेवदासऔसैंमनसोदैजनममरणकासासपकिव
११॥रामनामभुधिचरवाणीमनगारिपदजलहि
मरिआणी॥अथमकनमाधिमंचरगुंजारि॥सेवरपक
सैनोतिनिहारि॥बंकनालिरसपीवैजोगी॥हेअसतरू
हरिसकेलोगी॥जनसेवादास॥ ॥४६॥
उलटिसपमांहिसमाय॥ ॥२सैते॥

नेसा।मोडकदे। टि॰ सरपकूं गह्या टेक दादरदे बिहसा वल
कीया।उगाहसरपपाणीमेंदीया।गारूकरैघिरिनजाइबि
डारी।आवातिंघकरैरषवारी।२।मूसेदे बिहसामतिगती।ऊ
लटिबिलाईघिरकैंती।३।ऐसीयेककथाहमलाधी।गुरुगे
उलटिमिनीकूंषाधी।४।कूसेलिंघकूंसकमनाईजबकस्तू
नेगहीनबषाई।५।चींटीपरबतनदीयोउगाही।हिरणीमिलपे
माजिनजाई।६।तीतरबाजपरांबिचिंघात्या।हिरणीउलटिचि
ताकूंमारया।७।जनसेवादासयपदहाबिचारे।आपणतिरे
औरनकूंतारे।८।२५।साधोमगतिकैसीबिधिकीजै।मनप
कनापांचूंमुकलाणायूंतोरांमनरीके।टेक।मालातिलकपह
रितनकपरितनतोसोधिनांकी।देषोसुपदेवसांईपहू
चांन्यां।सुमिरनकीन्होमांही।१।मेपबणायाजोगतिकी
है तोगोरषमुद्राधारे।पांचूंपकडिफेरिमनउलटा।यूंहरि
गतिप्राणउधारे।२।रागदोषसबछाडिसबमैंतें।आसतिमारी
बाधारे।सेवादाससोईजनजगमें।सोआपणपोतारे।३।२६।
साधोमगतिइसीबिधिकीजे।मनपकनापांचूंसमिकरिकेंर
सनांहरिरसपीजे।टेक।कांमक्रोधलोभमदमायारागदोष
सबछाडै।मांनअमानिबिचारातजिमनकाहरिसुमिरण
मेंमनगाडै।१।गरबगुमानछाडिसबमैंतें।डुबधासबैनि
वारे।आपापरयेकेंकरिदेषे।येकैबिरुलबिचारै।२।हरिकौ
पंथदूरिपिजरमैं।प्राणतहांलेलावै।जनसेवादासलूणि
मिलिपांणी।सोईपरमपदपावै।३।२७।मगतिकुहेलीसी
तिनआवे।तनमनसोंपैसोमलपावे।टेक।दारासुतधनथां
मनेहारा।रांमनजेयेनांणेआरा।१।कुलकीलाजकुटंब
सूंतोडै।सबसूंउलटिरांमसूंजोडे।२।कुवचनकाविनस
हैजगकेरा।चौडैआइमंडैगनतेरा।३।कनिकसोटीसहै
मनधीरा।वैदेषोप्रहलादकबीरा।४।सनीगाहिसतअग
निमेंपैसी।जनसेवादासमगतिहैऐसी।५।२८।तेईजगमें
पूतआया।लोनमोहमायामनलाया।टेक।गानपैंडमेक
मेंगआपोहरा।सुतबनितानारितजिजूवा।१।बहोतदिल
मनपजोडरमाही।तहांउलटिपैंडदसमगतालिजांही।२।
पढिगुणिपोथीजगतसबधूता।हादिनदरगहबहोतबि
गूता।३।कथणीवदणीसबकूंवीकेजापे।जबलगहरि
देसाचनआवे।४।मायामोहममताफिरिवाध्या।जनसेवादा

रधनपरवारा।मनमोसै।घाटै।मीठै।नरै।अघाई।यूंतो।जोगनपावैमार
पांचूंपकडि।येकघरिआंणै।मनमंसाकूंगलढ।तोणे।दयास न
बूरीसंजमसीला।तै।वैहरिजनरांमरंगीला।।दसीनगुण।आगैप
गमांडै।लोनमोहनिसनां।सबबांडै।।यो।धातं।जबचितलगावै
सोशिसाधुमुकतिकहावे।गं।जीवतमृवासोईसुषीया।।ओरजन
गतसबेहोदुषीया।।जनसेवादासया।अजबकहोंणी।निहि
जांणी।सोईमलजांणी।।२४।।मेरामनअपराधीनागाडो
लै।।मैकैसैनजुलकूं।तोदिकैसैं।।साधसबदसबहीयूंबोलै
टेक।यौमननिकुच।निलज।निसबासुरि।नटकत।फेरबिका
री।।मेतोहास्योत्रादिबापनी।।अबराषोसरणिमुरारी।।मैकहि
समकायौसी।पनमानै।।फिरिचलैबिषैकीबाट।।किसबिधि
लकुंतोदिकहिसमकावौ।बहोघटमैऔघटघाट।।१।।मे
रौबसनहीचलैउसांशी।।मैहास्योयामनआगैं।।मैजटकूंमे
रीजटकनमानै।मनफिरिफिरिबिषैलागै।।२।।मैबारबार
पुकारिकहतहूं।सुणिहोप्रसमदमारा।।जनसेवादासकेवै
रनकोइ।तुमबिनराषणहारा।।४।।२५।।येकअचंभाऐसाभय
उलटिस्यालसिंघकूंगह्या।।टेक।।बकरीउलटिचीतांकूंघेरय
फिरिमूसैंगह्यामंजारी।।सुसैस्वानकूंबनमैघेरया।।अचम्या
ऐवैनामारी।।फिरिस्यंघगाइकारब्याकरही।मीडकसापब
सिकीया।।मकडीकूंमापमाहिराज।।चिडेसिचांण्णदिल
या।।२।।फिरिमुगैटै।डिबिलाईमकडी।।नीनरासिकारमालम
मिरघनीलहुंचौडैरोक्या।।दादरसयासिंघडाताररजक
रैबोफकोबेटो।।गारिदलसबेसिंघारो।।जनसेवादाससांई
जनतरा।।यापदका।अरथबिचारो।।४।।२६।।बकहुजगैम
स्मेरमना।पलकनानिसरूहरिकेगुना।टेक।जूं।चकोरसु
रतिचंदसूंजोडै।।सूरटतांरांमतारनहीतोडै।।१।।प्रथमजन
सोअबनहींसोहै।सकलअघगुरसबदाधोवै।।२।।कल
लगपारहैनहींबिसवैसुषसागरपैसिबहोउजनदा
रै।।सेवादासऔसैंजनसोवै।।जनमरणकासा
।।४।।२७।।रांमनांमसुषिचरैबांणी।मनगरि
गरिजांणी।।टेक।गगनमनमथिनेवरगुंजार
सैनोतिनिहारै।।बंकनालिरसपीवैजोग
हरिरसकेनगी।।जनसेवादाससुषस
उलटिसुषमांहिसमाया।।३।।२८।।स्तोत्र

केते गये जो हिग केते ॥ आवैसो थिर नांही ताते राम भजो
निर्मलो मन थिर कारि उर मांही ॥२॥ आगे पंथ विकट है मा
ग फिलकार है लो हि खांडा धार कहे जन टैस्यां ताकूं पारि
लणो तोती ॥३॥ पंथी पंथ संचारि टीलन मतलावे ॥ जग पातिन पि
गिस वेरा बेगा करा मरण का डर करि जगालि के गाडरा
जेसा करम करे फल तैसा ॥ नामे सार फेर न होई जैसो बीज
मि परि वोवे तैसो लुणि है सोई ॥४॥ कांचो कुंभ नीर दक कसनरी
सो विनसत नांही वारा ॥ जनसेवादास सनमि राम सनेही गम
की बाहरलारा ॥५॥ भूलि पडो मन मे राजा जोन ही
हरि ने तक टेक तप तीरथ जोग दो बंदो मांनी मद तातम नच
... ॥ पढि पढि पोथा पांना ॥ वो सुपर हि गयो वा नांना ॥१॥ जब ल
... अंतर की सुधि नांही
गसा च न पावे ॥ तब लग हरि बिताव ॥२॥ जनसेवादास पाव पाया तब पा
भूंम घट दूंडे कमां ही ॥४॥ जब लग हरि देसा च न सपे तब
चेतन टि समाया ॥५॥ जैसे पसु पेत मे जाय बांध्या
लग करम भरम की बूझो टेक ॥ बार बार नहीं मुसि क णकी वाई पस
न पालि मुसि के माड्या ॥ सब जग भूले भरम मंझारी सांच
मु समांण सकल पाई ॥१॥ निकट कि सतूरी मृघ सरीर है जग
नदे पैने नानिदा री ॥ जनसेवादास कहै मन ही समझाई ॥ ड
भूले पादूण नीर ॥ साधो नीदक जोग णि पैठ बैरे
मां भूली दो जिग जाइ ॥१०॥ नीदक दो जिग जावे रे वात
जैसे मापी दुरगंध लूं बैरे टेक ॥ नीदक डूबे आपे रे ॥ वो बुरी हिरद
ति स्मत बिप पावे रे ॥ नीदक डूबे औसे रे ॥ नी
मे पापे रे ॥ पां हण पीदे बैसे रे ॥ वो नीदक डूबे ॥ नीदक नि
दक को घट ऊणां रे ॥ भूं गले पाणी मे लूंणां रे ॥ वो आप आप कूं
धा प्यारी रे ॥ वाके अंतरि रैणि अंधारी रे ॥ वो नीदक पर कूं तारा रे ॥ वो अ
मा रै रे ॥ वो पर का काज सुधारे रे ॥ वो आपुन स्कामे
पकूडे बिप धारा रे ॥ है पर उपगारी ओसा रे ॥ वो पर जोग ण काटे साध
पे सारे ॥ है नीदक नीचा लोधी रे ॥ वो पर जोग ण कार सबे गमाई रे ॥ वो
रे ॥ है नीदक मेरा नाई रे ॥ मेरी दुरमति सब गमाई रे ॥ जनसेवान
आपण मे ला इ वारा ॥ मो कूं उजल कीया रे ॥ आपे रे ॥ नी
दक मल का पेरा वो च मो रस ताले आपे रे ॥ टेक ॥ स्मृत ब
कमा भी जैसा रे वो जा रहु रगाधत गबे सारे ॥ वहि बुरी बाचति
तन नावे रे ॥ वो विषे हलाहल पावे रे ॥ जनसेवादास क
लीधी रे ॥ वाकी काया का हजू बांधी रे ॥

सपूंजगतजमबाधा।पा।१०३॥जागतकदेनमुसीपेमाईवि
नजागपांसबजगतबगाई॥टेक॥जागतरहैगतनकरिसोई
तौजागतचोरनमूसेंकोई॥१॥तौघरमेवसतनपावे॥जा
गेचोरबसतलेजावै॥२॥बसतगयांपीछेंजेजागे॥तौवाके
हाथिकछूनहीलागे॥३॥जेपहलीजागेतौबसतनखोजे
जनसेवाहरिभजिकारिजकीजे॥४॥२४॥रागसारंगसदा
जनतेरा सबऔगणबगसोसाहिबमेरा॥टेक॥भावैसुरग
नरागि हरिलोकबसावौ॥म्हाराधोतम्हारहीजौ॥जोरनही
नफरकाकोई॥हरिअपणांकरिलीजे॥१॥म्हारापोतम्हाते
रा॥स्वांमी॥औरदसलकछुनाही॥मांनाणैंसोराखिसाई
तैरेनांइबिकाही॥२॥मेंआसाकरुंआपगानाही॥भावैता
रैमारैस्वांमी॥मेंनांवनलीयौजगतपतिमाधौ॥३॥तौसद
रांमी॥३॥भावेदेहरसातालिस्वांमी॥भावैसकलसिराम
णिकीजे॥तेरीओधजोरनहीमेरा॥येकनांवसुधारसपीजे
॥४॥भावैसांसपाटिकरिरतजीटांको॥भावैचरणसरणि
सुषदीजै॥चोटीकटघरिजायाचेरा॥जनसेवादासकहै
जे॥४॥२५॥संतौऐसाततअनूपमपाया॥जाकेगुरज्ञनम
कालनहीकाया॥टेक॥सकलसकलसबरह्यासमाई॥सून
मयेकपोलनहीमाई॥१॥अविरोधेनहीआवेजाई॥वोसब
घटमांहीरह्यौसमाई॥२॥पवननसोषेनलिडबेनांह॥धार
मतारोमसकलघटमांही॥३॥आगनिनदहैनांधारलिक
लाही॥हमऐसाततकहौसमझाई॥४॥हमऐसाततअनू
पमलाधा॥वोआवेजाइनबंधनिबाधा॥५॥जनसेवादास
ऐसाततगहीयै॥कांमक्रोधममतासबदहीयै॥६॥२६॥ऐ
सासतगुरबंदोरेभाई॥आपतिरैसिषतारै॥मुकतिकरैप
रमसुखमाघै॥दिलकाडवधाहरिनिवारै॥टेक॥सीलसंतोष
दयासतिवांणी॥भगवंतपलनाविसारै॥कांमक्रोधलोभमद
माया॥मारिकपाड़िबिडारै॥१॥पांचूयंद्रीदिढकरिराषैयो
आचारविचारगहैसुमतिकुमतिकरिकोनैंगुणअतीत
उरिधारै॥२॥लियानरकताहिजनत्यागैदोजिगडुबधा
योवैरहैनिरवैरदोषकरिकोनैंसकलजीतमांनौदे॥३॥
केवलसाचमिथ्यानहीबोलै॥जनसेवादासजनसाई॥अ
रिहेतदेवनिरंधसधसो॥सुरतिसाचसूंपोई॥४॥५७॥अ
लिपध्यावकहौतकरिमोनैं॥मरणांनिकटिसातारिनमांनै

तोलनमोलमापकछुनांही॥रमताराम सकलघटमां
हीं॥३॥निजततनूर अमूरतिमांही॥ऐसा भेद लहौ दुय
मांही॥ झलहलहै गासोजनपूरा॥जाकै बाजै अनहद तू
रा॥३॥गुणअतीत निरंजन जोगी॥यारसका कोई जन भोगी॥
अजर अनूनी कालन काया॥जनसेवादास निजिमांहि
समाया॥५॥४२॥नूर तुम्हारा देषूं सांई॥बाहरि भीतरि सक
लर हांई॥टेक॥अमीमहारसपीवै प्यासा॥औरनचाहै तेरा द
सा॥प्रेमपियाला नरिनारि पीजै॥निरभैहोइ जुगजुग जीजै
॥२॥अमृतधारापीमतिवारा॥कहत न आवै वारनपारा॥३॥निर
मलनांव निरंतर पीया॥जुगमै आइ तेई धनि जीया॥४॥अज
र अमर अविनासी गाया॥जनसेवादास सुषमांहि समाया॥
५॥४३॥मन अपराधी वह्यो नमानै॥कहि येकहूं नेमसै नहि
आनै॥टेक॥मायामी गमनमै नावै॥कनककामणी कूंमन धा
वै॥कामक्रोधमदलोभबडाई॥ऐसैमैं मन निकसत लहां ईमां
नि आमां निवसै मन मांही॥हरिरस पीआ विषरस पांही॥ आ
परे मन जाणो मन पीआ कूं लेतां णे॥४॥साहिब गुरू बक
सी जै जनसेवा तब तांजी जे॥५॥४४॥पिंडत कहा पाठिहै पोथी॥
निजनांव विनां सब थोथी॥टेक॥बंदा मये कपिबानां॥
तब हू सर कहा भया नां॥१॥जब तत नहीं तत मिलावा॥ तब कु
लसागरमांहि समावा॥२॥करम भरम बिसरावा॥ज्यूं घात्यू
मनि आवा॥३॥जीव ब्रह्म नयामेला॥ज्यूं पाला गलि पांणी जे
ला॥४॥सब अंग सबही गोरा॥मनके नांही दौरा॥५॥जनसे
वादास क्या कहीये॥बाबा समभि चुप कै रहीये॥६॥४५॥
॥जागत जोगी मुसै न कोई॥सूतां बैगा सरब सभाई॥टेक॥
जागत जांनै आतमरांम॥सूतां मर मि फिरै बेकाम॥१॥जा
गत जां णि जतन करि राषै॥अंतरमांहि अमीरस चाषै॥२॥चो
रन लागै होइ हुसियारा॥सतगुर सबद गहै ततसारा॥३॥स
तत समीप रहत नहीं पावै॥जागे तिनकै ध्यान आवै॥ज हौ
प्या जोगी जीता जमदूता॥जनसेवा जागै सारा ही सूता॥४॥४६॥
पांडे आंन पढिनु झिलमिरो॥पोथीपाठि पढि निगम रमो
धो॥जो नमोहत नहीं त्यागे॥टेक॥स्वारथ का ज्ञान नहीं पू
ज्या॥मन ये कुसार पनाई रोलकहांलकहां सू चितदी
रो॥चाले गगन मगन गाई रो॥आपन नाव न बैठे पांडे औरां
नांव चढावै रो॥समके न हीं अपाले कां आंधा यूंतो सगरा

जैसेवोआपहीआपैहीजैसेत्यां॥४२॥बरगिहोरांमतेरीमाया
जगसाराडहकाया टेकसाधिबधितापतपावै सबबुधिब
मेकबिसरावै॥रमगआगमिसमिमायारायौरांमजलेमेरी
कायां१॥नीनांत्रोतिरूपधरिआवैबरजौरामजीवहुपप
वै२॥मायाबहुणनारीहोइपावैया॥आगेकोईबंचणनप
कै॥सुरनरमोहेवगणीमायाकोईबंचणनपावैसबचु
णिषायापजनसेवाद्सबीनवेस्वांमी॥नीजेराविमोह्यि
णनांमीहृ॥४३॥जैसैग्रहमेरहीयेनाई॥हरषसोगदोऊ
गामिटाई॥येकामक्रोधअहंकारा॥त्यागैविषैविकारा॥सं
पतिविपतिसमिजांणै॥हरषसोगनही आंणै१॥रागदोष
मैमेरा॥मेसबड्डारिकैजनतेरा२॥सुषदुषसमिकारले
षेसबघटिआतमदेषे॥नीनमोहअरगरबा॥मैमनतैस
गेसरबा॥तनधनजोबनसारा॥जनकूंमावैनहीविकारा
३॥मीतमातसुतनारी॥मोहबाधैनहीलिगारी॥बैरीमीत
नकोई॥आपापरसमिहोई४॥कुटंबसजनबहोतेरा॥
सबसूंकरैनवेराण॥मदमछरमोनअभिमांना॥त्यागिम
जैनगवांना॥५॥ज्यूंबाजारिखटाऊ॥वोषीतिनबांधैकाऊ॥
ज्यूंजलमैकवलरहाई॥यूंजगालिपैत नाई६॥ज्यूंमांषन
तकसमाई॥यूंजगमांहिरहाई॥स्वनबानिताधनजैसैरांमां
यूंहरिजनजैसैरैसबकोमांधेतनमनअजलभायाजदोई॥
जनसेवासदजैंकाहिजहारी॥५॥४४॥ऐसारेगुरगमनग
हीजे॥आवैनहीजाइउपजेनहीबिनसैसोदिलयोगिलह्
जो॥टेक॥अधरअमरअगमअविनासी॥करमनरमतैन्यारा
गुणअतीतसकलघटिमता॥ताकोकरोविचारा॥अक
लअभेदभेदनहीवाको॥सकलविसंभरपूरा॥ज्यूंआकास
सकलसमिपूरण॥कनीयांवोजेदूरा१॥नांहरिहूरिनिकटि
ऊनांही॥ज्यूंजलकुंभरहांही॥बाहरिभीतारिसकलसमिहै
हरिजनसेवानंजिमांहिसमांहीर॥४५॥ऐसाग्यांनविचा
रोनाई॥वोबाहरिभीतरिरह्योसमाई॥टेक॥आवैनहीजाइज
हिनमुष्टि

राम १ वात
१॥अनंदा॥सबघटिपूरणज्यूंरविचंदा॥१॥अलष
१. ॥१॥११॥
गहअपारपारनहीकोई॥ताहू॥नमः। ६न

मांहीपैसै॥७॥ताधनपावूनहीनांहिकोई॥ जगमूलायूंजन्म
डिपोई॥९॥जगबीननीकैसानलैनांही॥ यूंजगबूडानैग
ति॥मोह॥१०॥गुरअंधासिषमूलिनहिफेकाठकीगासूक
देनहीहफै॥११॥मौसागरतिरणांहूतरलोई॥चढिकागदना
वपारभयाकोई॥१२॥हिताचेतसतवंदगीकीजै॥रसनांहरि
हरिइम्रतपीजै॥१३॥जनसेवादासबकलाहीलीजै॥जगप
तिसूमाहिगेजप्रीजीजै॥१४॥पद॥नीदकहैगेनकीजगसारा॥
जाकेहिरदैरामपियारा॥टेक॥जगतकहैअभिमानीडोलै
जनहरिविनमुषसूंआननबोलै॥१॥निरअभिमानरहैनिर
दावै॥दुनीयांकैमनिनो हिनआवै॥२॥कूडकपटदिनदुनीया
रीकै॥गुणांअतीतताहिजगषीजै॥३॥कंचनमृतकायेकस
मिदेषै॥दुनीयांगुणआपणकालेषै॥४॥दुबध्यादोपमिटी
जनकेरी॥दुनीयाआंधीदेहनफेरी॥५॥निंद्याअसततिमानै
मोनांहिजिनकैयेनयेसमानां॥६॥दुनीयांआंधीभेदनपावै
अम्रतछाडिजहरहीषावै॥७॥दुनीयांनिंद्याबडैनांहीजन
सेवादासयूंदोजगजांही॥८॥५५॥अैसैलोगनसूंनितडरीये
मारी॥आणदाती अजगैबासिलासी॥पटकेवोडे आई॥टेक॥संग
मसीलसाचसतिसुमिरणमुषसूंकूवचनबोलैनांहीकहै
जगठपासागर॥अैगोठपराईषोलै॥कहीयेकहाजगतसब
फूठोहिरदेआंधिनहकै॥जनसेवादासजगचलेजमपुरी
विरलाकोईबूझै॥२॥५६॥पद॥निंद्राप्रभु॥षाधासबलोईयासूंगै
बेचायाजनकोई॥टेक॥हैअकेलीगिगनमंकारी॥उतरिदुसै
सबहीनरनारी॥१॥गोरषनाथसूंनिंद्राजागी॥औजावांतहि
तकरिलागी॥२॥सुरनरपसूपंषेहूप्पारी॥नांइलगेजनति
नहीमारी॥३॥तेनैघटिसचरैयानारी॥हरिरसपायोतिनही
विडारी॥४॥जबघटिआवैबुधिजाइदीया॥गाफिलजीवस
वैबसिकीया॥५॥निराकारजुगमांहीथापी॥नांकूंमारैहरिमु
लापापी॥६॥निरमलपांणीपैसिरषावै॥लीयांजावरसावतलै
जावै॥७॥कोईजोगीजुधकारिजगैसारा॥निसदिनपीडिसूं
करैपुकारा॥८॥अंतरमांहीआलमजागे॥निंद्राकोकोईजोरन
लागै॥९॥नाटिकध्यानधरैजनसोई॥निंद्राकोबलनहीकोई
॥१०॥गुरगमिरामसेनालो माई॥जनसेवानिंद्राकालनषाई
॥११॥५७॥ संतोहैकोईरसकाजोगी॥गिगनमंडलमैंरातुम
बेबानिरषैविरलाजोगी॥टेक॥अरधउरधमाधैवाईफेरै

डूबा नावै रे॥४॥ श्री वैसा तैं यौ छि अमावस॥ रे मृंग पारसि स
हसा रे निज कण नाव न है॥ उरि अंतरियूं चौरासी मे बहसी रे
॥ छिती पातक न्या वल चाहै मन मैं बहै तक फूलै रे॥ लेह
पतिय सब का स्की भूं नरकां मांही फूलै रे॥ रा हर केत थर
या वरह सपति॥ ईनीयां सबै लगावै रे॥ पापण बो फचठ
हसी सपरियूं चल्यौ रसातलि जावै रे॥ सब ही देव दिहडी
मांनैं॥ मैं हूंसी तल ध्यावै रे॥ पकडै कुंवजम जालिम जब
तब कहै कैं॥ बुडवै रे॥ पतडौ काछिलो कदिवावै॥ अ
नमांहे कातीरे॥ जनसेवादास भगवंत भजनाबिन॥ जम
तोडैं गे बाती रे॥७॥ पद॥ पांडे तैं पछ्म पूछि जगत बिगोया तैं॥
म रांमन जोया॥ टेक॥ तीरथ वरत दिढावै॥ आपण मूला भगत्र
रमावै॥ मरती पाती काल न्हावै॥ साच सबूरी ना हिरदै आवै
॥१॥ बैसा व मह्रातम कौ ढिसुणावै॥ जग सब भूला तो हि भु
लावै॥२॥ नांव जिहाज जो सागर मांही॥ नो आपा पा चढै चढ
वै नांही॥३॥ बरण आश्रम का धर्म दिढावै॥ भरमि भरमि जी
व दुष पावै॥४॥ जग सब कफ घाल्यो माही॥ ऐसी ओर कुणक
रै बुराई॥५॥ बिधि निषेध करत दिन बीता॥ रांम भजन बिन नर
ह्रिगया रीता॥६॥ रसना रसि बसि मैं दन पाया॥ जनसेवादास
यूं मन भग माया॥७॥ पद॥ पांडे पष पुरातम सोधौ॥ थातुम
कौं ण कहां तैं आया॥ मन अपणो परमोधौ॥ टेक॥ पहल जिन
म सूद्र का जाणी॥ श्रवंस सकार दुगि कूवा॥ वेद पढे पढि बि
प्र कहाया॥१॥ अनिमांनै मूवा॥ ब्रह्मण सो जो ब्रह्म
बिचारै भुषि मिथ्या नहीं भाषै॥ क्रोध चंडाल चाहि चूहडी
मैं घर में द देन रापै॥२॥ पह हरि जिन कै जोर कीयो तो ब्राम्हण
परो जणायो॥ सिर जनहार सूं सुरति न लागी यू ही जनम
गमायो॥३॥ कुल को कोणि बाडि है रागावै॥ मनि डु बध्यान हि
आणै॥ जनसेवादास ब्राह्मण सति सोई परम ब्रह्म पि
छाणै॥४॥ पद॥ हुनी दिवांनी देवल सूं नां॥ मध्य गारो ऊपरि
चूनां॥ टेक॥ अमृत भोजन बहो विधि कीया॥ सो जड मूरति
आगैं दीया॥१॥ पाहण भोजन कदे न पावै॥ साचा से विश्वंस
चपावै॥२॥ भाडा पडै दाबी नली करावै॥ दुनीयां भूली कोई
समझावै॥३॥ घसि घसि चेद नले पन का रहै॥ केनक डंक ने
आगै पर ही॥४॥ जाकै नै
रै प्रकास॥५॥ अवणानो हिसुणों कहौ कैसे

१४८

फ

६१॥ सोई जोगी जुगति बिचारै रे॥ मन मनसा कूं मारै रे॥ टेक॥ जोग
से मारग मन नही देवै॥ नाभि निरिष प्याला अंतरि लेवै॥ गगन मं
साधि पवना निरोधै॥ गुर का सबद मन परमोधै॥१॥ बिषत जि
बसत पिछांणै॥ मोही॥ मीठ मुधा अमृत फल षाही॥ जन
सेवादास जोगी मन मारा॥ कांम क्रोध अरु लोभ उतारा॥२॥
६२॥ सोई जोगी जुगति गहै जन मारा॥ जाके केवल राम पिया
रा॥ टेक॥ असे सहज सहज की सधणा॥ अंतर बिंब वाणी ला
गा॥१॥ भीति रियेम पिया ला पीवै॥ निरभै नयाजु गे जु गिजी
वै॥ उलटी सुरति अगम कूं ताणै॥ सतगुर मिले त बबा री
के बारै॥२॥ जरणा जडी जतन करि राषे॥ जन सेवा जोगी अ
मृत चाषे॥३॥ ६३॥ सो सुप्रसुणि जो प्रासत सुजांणि॥ बिना ही
आगो बाना बाजै॥ तहां मन रहै लुभांणी॥ टेक॥ बिण ही बीज
रहो बीज घम के॥ बिण बादल कड होई॥ बिणा ही दीपग
सहज प्रकासा॥ देषै बिरला कोई॥१॥ बिण ही देवल देव बिरा
जै॥ बिणा ही मूरति सेवा॥ बिण ही फाला फिलक फुलके
अषंड अमूरति देवा॥२॥ जरणा जडी जतन सूं राषे परम जोति
मे षेले॥ जन सेवादास सतोई साधत रिवा॥ कनक कांमदल
पेले॥३॥ ६४॥ जोगी येक असा हम देषा॥ ता जोगी के रूप
न रेषा॥ टेक॥ धरणि आकास नही तहं फंद॥ पवन नयोणि
सरन चंद॥१॥ मेर मूल नाद नहीं तहां कोई॥ आपै आपा निरंज
न सोई॥२॥ जहां धोस नहीं तहां रैणी॥ असी उदबुद अक
थ कहांणी॥३॥ सीत न घाम नहीं तहां होई॥ तारा मेघ न ह
बन कोई॥४॥ जहां काल न जाल जुरा नहीं ब्यापे॥ निरभै य
का निरंजन आपे॥५॥ जहां सिव नहीं सकति और नहीं देवा॥
असा देवा अलष अभेवा॥६॥ ब्रह्मा बिसन नहीं तहां
सेसा॥ असा गुर की या उपदेसा॥७॥ सुरग मृत पाताल
न कोई॥ सब सामि पूरि रह्या है सोई॥८॥ भूष न प्यास नहीं त
हां निंद्रा॥ वैसा है जीव जो गिंद्रा॥९॥ जहां उतपति परलेक
लन काया॥ रहै न्यारा सब मांहि समाया॥१०॥ नहीं पाप पुनि
फल नहीं साचा॥ जन सेवादास तहां गन राचा॥११॥ ६५॥
निंद्रा सब कूं मारै॥ त्पन कौ निंद्रा निकटि न आवे॥ पीडै राम
पुकारे॥ टेक॥ गोरष नाथ सूं निंद्रा लागी॥ ऊ सोया सब नग
सारा॥ या आगे कोई जन बचीया॥ जे लागा नाइ आधारे॥१॥
गगन मंडल मैं रहै अकेली॥ आनि करो पबेसे॥ जन सेवा

अलषपुरष अंतरमै हैरै ॥४॥ ऊंची बाट गिगन कूं आवै । सुरति प
कमै नाद समावै ॥ पांचूं फेरि अगम रस पीवै । परचै लागा जोगी
जीवै ॥ लैली मैं मन मांहि समावै । ग्यांन ध्यांन को तब फल प
वै ॥ सुरति निरति लै समि कोरा षे । सुषम तेक बंक फू वनम
षे ॥ चंचल मन वा निहचल कीया । हरिजन हरिये केन हीर
वा ॥ गुर परताप जिनै ये मन मेरो । नहीं आइ देह न ही धरै ॥६॥ बि
रला बाइ चढावै ऊंची । जाल धरउडियां न लगावै कूंची ॥ सु
ब करमां कूं काढै षेदा । सतगुर मिलै तौ पावै भेदा ॥ हीरा कोष
लैगडा ता । सतगुर भेद बतावणहारा ॥ इला पिंगुला सुषम
निसांनी । सतगुर सबद बुधि लुमांनी ॥ सतगुर हाथ धरया क
रि माया । बिगस्यो सुधत्यो योम लडावे ॥ मन पवन अरु सुर
ति मद्दरावै तब जाइ भेद महल का पावै ॥ सासउसास का
जोगै भेदा तब होइ सकल करम का छेदा ॥ सिध आसण एक
रि ध्यान लगावै तब अयांन बाइ अमर कूं आवै ॥ मन मन
सा कूं जांणन दीजो । इकु आरंभ अदहा निस कीजो ॥ मेरडंड ब
ई चाढि ये दो तब परम जोति का पावै भेदा ॥ जनसेवादास
सतगुर समझावै । निरभै येक निरंजन ध्यावै ॥ ॥ जैसी रां
म कहै कूं नाही रहसी रांम सकल जुग जाही टेक जैसी रांम
सदा चल बांणी ॥ सति रांम निहचल पहिचांणी ॥ रांम कहै
जगन्नद न पावै । जग सब चल्यो चौरासी जावै ॥ जिहि रांम कूं
सब जुग ध्यावै । सो तौ रांम रहण नही पावै ॥ केवल रांम सकल
भरपूरा । जग सब भ्रालि पडै हैं हूरा ॥ आप आपतें को ईन
पावै । सतगुर मिलै तौ भेद बतावै ॥ कारता येक सकल जग
कीया जनसेवा येक सही कीलाया ॥ ॥ ऐसा रांम क
हौ ... क्यूं नै नाही । उपजै ना बिनसै आवै न जाई ॥ टेक माइ
न बाप नही कुटंजा को । अचल अनंग जन मन ताको ॥ रम
ता रांम सकल घट सोई । ता हि सुमरि निरभै जन होई ॥ ध
रयो धरया कूं सब कोई ध्यावै । सो तौ निरभै ठौड न पावै ॥ अध
र अषंडी न जिलै रांम । जनसेवादास ... धरै को मांध ॥
॥ साधो सतगुर पूरा पाया । मन कूं फेरि सहजि घरि ल्या
या टेक कोई कहै बैकूंठि बसीजै । बैकूंठ रहै क जामा ॥ ह
म कूं तौ सतगुर समझाया । सुरति निरंजन बासी ॥ तीरथ
बरत जोग जिग तपस्या । भेकर न तरभाव धिजाई । जनसेवा

नीपाषेधा॥रामभजनबिनजमकैटैनफेधा॥३॥जनसेवाद
सदाजमगांजै॥बिनहरिभजनकालकेधमोजे॥४॥२॥येकन-
निरंजनजगपतिलोई॥वाजोगीबिनमुकतिनहोई॥टेक॥मूर
पांणीपारसिहेरा॥लषचौरासीमिटैनफेरा॥१॥केवलरामी
रतीगावै॥नीजनीजनामबिहोडिनहीआवै॥२॥तनधनजोब
सकलसमरपै॥यूंहरिभजेतबेजमडरपै॥३॥जनसेवादासज
गजीवनजपीयै॥निरपषहोअपांनहीषपीयै॥४॥३॥जाग
नोदेवजपोनरलोई॥वाबिनिजीवकामुकतिनहोई॥टेक॥नैंन
नदेषैमुषानबोलै॥नाकैतोउवेरनहीबोलै॥१॥रंकागहैमोटी
मरगाई॥ताकूंकाढिनदेहैमाई॥२॥सिलानरोसैमतिकेईमू
लो॥योतोष्यालबातककोकहो॥३॥जाकूलगाकन्यानपातिकूं
पायैतबलगष्यालमनहीबिलमावै॥४॥जनसेवादासकह्यो
रीसमतिमानी॥सांईमुकतिनहोसीपांहणपानी॥५॥४॥रां
मराइअगतितुम्हारीदीजै॥करिकिरपाबिधितपमेजीवजतैन
री॥इहैविधिसदगतिकीजै॥टेक॥सुरगमृतपातालनहीसुष
जनो॥रिधिसिधिकूनपतीजै॥नहीचाहमुकतिकोमाधोये
कमेकरसपीजै॥१॥अबिचलअचलअमरअबिनासी॥सोप
तिइजनमांही॥जनसेवादासकैआननहीआसा॥मिलिषेलूं
तमांही॥२॥५॥आपोअगतिभगवतभगतकूं॥फिरिभोजलै
हूबिनजावै॥येकमेकहोइहरिसंगिषेलै॥बेहोडिनजनीजी
नै॥टेक॥जनरिधिनमांगेसिधिनमांगे॥नाकरैमुकतिकीआस
इकटगलगासदारसपीवै॥परमजोतिपरकास॥१॥निरमल
नाहनहीमलजाकै॥सिरिसोपतिआननधांऊं॥तुमसाहिब
सेवगतेरा॥जनसेवादसमझौसमांऊं॥२॥६॥जैसेसंत
सहेडादाषै॥हरणीयेकबिकारीपाई॥येकेसरतेरा॥टेक॥
दरवाजारोकिनलीबिधि॥जममघाजोणनपावै॥गुरकेस
दिषौरिघटमांहा॥फिरिबाहरिकदेनजावै॥सीलसाचकाव
लगावै॥मधरहैबनमांही॥जनसेवादासमारिमनमघा
बहोडिनषेतषांही॥२॥७॥साधोहूंबिनसेसंसाराकाम
धलोभमदमाया॥मेमेरीअहंकारा॥टेक॥बेहोगरबगुमान
कनामांहीकुलकुटंबममोहा॥तासलागिरामनहीनं
नरयूंहीषोईदेहा॥१॥तीनगुणामांहीजगबैलेकोईचो
तनलावै॥जनसेवादासपांचांबसिप्रांणीयूंजगदाजिग
॥२॥८॥स्वामीकेसाचलणहमारा॥घरमैंधीलुतनादीनै

दासतनैघटिसंचरैरोमरोममैपैसारा॥६६॥नैतोकूंहरिना
वैमाहीमुषतैकहवत्यागिपरनारी॥परधनस्यौतिनलाग्री॥टेक
हिरदैसुधमुषासतिबाणी॥मनकीचोरीमेटै॥आपापरदे
षैसमियेकै॥नबपीवपियारा नैटै॥कुबचनसरैबादनही
मांडै॥त्री तिनरमसबषोदै॥जनसेवादाससोईसाधत्ती
वा॥आपआपमैजोवै॥२॥६७॥नीदतहैजगजाणतनाहीएक
गह्याउरअंतरमाही॥टेक॥लोगांकूंतौआनसुहावै॥हमकूं
एकरमइयाभावै॥आनपंथकूंदुनीयांध्यावै॥मेरैहरिबिन
हिरदैऔरनआवै॥पापपुन्नितैंहैजनन्यारा॥दुनीयांमूलभ
रममैकारा॥२॥जनसेवाहरिजिनआगमसुफलाणी॥वोमुषदु
नीयांतजतअनाणै॥२॥६८॥जगनीदतहैजनजुगतिनजांनै
एकरामसूंत्रवंमआनआनै॥टेक॥सैसुधिगलीजनकेरा॥ताक
कूदेषैहेरा॥दुनीयांमेटिनयेसमिजांणी॥दुनीयांनेदनजा
णौरोगी॥मानिअमानिबिषादोष्यागी॥डोरीजासनिरंज
नलागी॥२॥जननिंद्याअसतूतिबराबरिदेषै॥ताकूंजगअरी
मानीलेषै॥२॥जनसेवादासनिंद्यासोकहै॥हरिसुषबाछिनके
भैपरैषे॥६९॥निंद्यानरकमैसोनरधसैं॥जाकेहिरदैरामनबसै
टेक॥निंद्यानरकमैसोनरकलै॥निंद्याचीतरामसूंभूलै॥
निंद्याकरैपराइनरा॥तातैपापीनोहिनबुरा॥निंद्यानरककु
हैनीसाणी॥ताकूंवोनहींभूलैप्राणी॥२॥जनसेवादासनिंद्या
जीतिप्पारी॥जाकेहिरदैरामअंधारी॥२॥५७०॥नींदकनरकमै
अैसैपरै॥हरिजनगताकीनिंद्याकरै॥टेक॥सेवाबंदगीतेरहैहार
वाकैकपटकतरणीसदाहुहारि॥आपरणकेनओरांदिठ
वै॥पुसीयकसीघरनगोजादेश॥बिनजलबूडैनीदकओरा॥
चोटीपकडिनाषैलेजोरा॥२॥हरिजनकीजोनिंद्याकरै॥जनसे
वादाससोकैसैंनिसतरे॥४॥३२॥१०३॥रागनैरूसपूर्ण॥मा
ग॥८॥रागरामगरी॥जो गिरजपैजगतिपतिमाधौ॥बिनहरि
भजनकालजगबांधौ॥टेक॥हरिबिनफांदेवीदेवा॥कालनब
डैकावीसेवा॥याहीकरताहुनीगाई॥सुनारासिलावटलईबु
राई॥जेउअमरातिवारताहोई॥तोपरबासिहूपरहैकिसोई॥स
बजगमूलानरममकारी॥जनसेवासमझिनजपैमुरारी॥२॥॥
साचीकहतहूंपोमतिकोई॥हरिबिनरमभगतितैमुकतिनहोई

वि

क

७

लकी ये मनोटे ॥ काया माया सकल जग बाधा रन्के सरयी
सकल जग बाधा ॥२॥ सीप डी के के पैसब डक काया ॥ यूं मन
आतम मै आतमा चित लाया ॥३॥ भ्रम जल दे पिक रग जग मृतु
कोई मोबिंद मजि निरंजन कु ना ॥४॥ सतगुरु मैन हिरदा के षु
ले जन सेवादास गा मुनि बोले ॥५॥ ॥ १६ बानी ॥ मूलैम
हो मति भाई अबतु मन्द हाइ मौ ठि मैं मीमे ॥ चौरासी बिस
राई ... कोति आनै मानी बिधा हा इलाएं ॥ याही मिवतुम
मारिहो हरि तैं बिमुष ज्ञान की पूजा कहै कवावक हुमी
हो ॥ औरपति तिन तो औसा कोई ॥ जो हरि तजि आन ही ध्या
वे जमद्वारै तेई नरजासी ॥ दरगा हिदा दिन पावे ॥२॥ हरि के
जन हिरदैन हीं आवे कूल कठ बिब हो रंगा ॥ आतिकालि
जीव पडै सौ कडै ॥ तव कहो कै गालम संगा ॥३॥ ये के जानि
बरण सब निकस्या ॥ बामण छत्री सूदा ॥ पांच तत का सक
ल पसारा रज बीरज की बूंदा ॥ गरभवास जब रह्या मास द
स तब चौकाठि सिंदीया ॥ सुखदेव ग्यान बिचारि गरभ मैं गुरु
न जिब नष डलाया ॥४॥ ये कथा रे पैसब ज्यमजा त ह्वा भरम न द
हा कोई ॥ आब कै चनी चका अंतर राषो भयो आवै नासोई ॥
५॥ गुरु स्मतारि ग्यान अधारे ताते कछू न सको आतूबर
ण विषै मैं फूलौ बिरला जन कोई बूझै ॥६॥ सुत बनिता धन कन
द माता ब्रह्न कहाते पावे ॥ त्यागै मोह ममत सब छूटै तब
कु बाधि सहाज धूरि आवे ॥७॥ राग दोष तें सब छाडे भरलो
ममा हद कसि पीवे ॥ कुल अभिमान कपट सब तोडे ॥ तब ऐसा
हो इसा गावे ॥ सब घटि येक वू सही देषे ब्रह्म कहावे साई
जन सेवादास येक आस अलषमे ॥ ता सम और न कोई ॥ १०
॥ १ ॥ मेरा मन अपराधी षोटा ॥ हरि सुष छाडि बिषै बनि पै
सै छाडि न फोग दृट टोटा टे ॥ गरभवास मैं रह्या कीन्ही ॥
जहां मल मूत्र में लोटा ॥ तू हरि कू बिसारि आन संगि ल
गो ॥ बिषै मान रासि कोटा ॥१॥ जे हरि तै बिमुष भार बहा षेट जे
सें गीद ब हो दोटा ॥ जन सेवादास जे राम भजै ते बड भागी
मोटा ॥३॥१६॥ मन रे तू पांच लोटि घरि लावै ॥ तो जनम मर
ण का ससा लागे ॥ बास अमरपुर पावे ॥ कि मन वर गुफा मैं आ
सण मांडै ॥ त्रिवेणी तटि न्हावै ॥ इला पिंगला सुषमणि मेल
अनहद बीण बजावे ॥ स्वात समद मोती फिरि सो पै नदी नि
वाले तारो ॥ ऐसे सहज पा लहू ॥ निहचल निमै बारो ॥२

सीलसेतो घसा चहरि सुमिरण
रा॥ ८ मबिषका कोठा सारा। टेक सीलसेतो घसा चहरि सुमिरण
अंतो नेड़ा नाहीं॥ कामक्रोध मदलोभ जहर रस। पीवत जन मन
सिरा हीं॥ करि अनरथ बहो दरवउ यावें॥ फिरि धीके माहलः
गावें॥ सोतो धीहै पाप को मूला। सब संचत दो जिग जावे हरि
रिके जन तिनते हितना हीं॥ फिरत भ्रमि मे भ्राटा हरि के लग
तिस बधि रहीको। है उरिगङ्या कुबधि का कोटा २ दया गरीब
हिलते घोशी भरि रहे गरब गुमानो॥ जन सेवादास जन मलोकि
चले उजीहरि तजि करि हितनां नां ॥ ध॥ ए॥ हरि सेवा करी फै
स्वांमी तू पात तो क्रिकरत है घांमी टेक पात मांहि निरंजन दे
वा सो तू तो क्रिकरे सिलसेवा॥ सो च कहया नो पाप मतिमूने
हरि सेवा तो देवन री कैश तन देवल मे देव बिराजे हरि सेवा
तें अघ सब नाजे॥ बोलण हारा पूजो भाई या सेवा मति ब
हिन जाई॥ जन सेवादास सोई जन सारा परस्या तम जिन त
बिचारा॥४॥ १०॥ नारद साधू मम परिवारा। टेक साध सो मे मैं सो
॥ सता वैता क्रं मे बपधरि जग माता टेक साध सो मे ...
ध हि वि अंतर नहीं कोई साध मो हि वि चि अंतर राखे तेन
जग हो २॥ ए गाला दिता रघुत प साधे॥ नो गाजि गजा चार
नकूं तो मे कूल भनारद॥ मेरे मंगल गत का लारा २ भ मन
मो ही संरत है है॥ ३॥ घि सिधि जन की चेरी॥ मे तो ता हि पर
आपूं ओर क्या बात घनेरी॥ ३॥ जे भगता निरमल गुण गा
भगता मो हि ना है॥ जन सेवादास दास की महमा। हरि
मुखि गावे॥४॥ ११॥ साध मिल्यां अति आनंद भया अन
सबै मिटि गया टेक बिषे बासना टारी धोइ निरमल
हरस बमाह २॥ निह कंचन निस प्रे ही जना जिनके दरस
घूहे घण ॥ २ सीतल कोमल हरि के साध। दरस
है अपराध २॥ छिमां कृपाल सदा मन धीर। ह
है रासधीर ॥ दया करी दीया अजपा जाप। मेरी जन
की मेटी ताप ५॥ जन सेवादास सो सार्की या हरि को
हाजर पूरि है॥ १२॥ साध मिल्यां सुख आनंद हूं। २ ब
सबही डोरे धो॥ टेक निहकं चन निस प्रेही साध॥
कटे अपराध॥ निरमल बांणी उचरे नाम वे मे
रै निसकांम २॥ दया वंत सुखदाई धीर। जन मन
र ३॥ जन सेवादा स ... निध निध नि है हरि केजनो
... ॥ ३॥ ध

गोपीचंदा तजी सोलासै नारी चौडरयकड्यो साई केका जै

२५२ तिन करी लगारी ॥७॥ देषि पाति सहि बल्लष बषारा । जिनिपा

सा ही त्यागी ॥ सरम गही हरि सुमिरण लागो ॥ फेरि मायात

ग्री तिन लागी ॥ पाये देषि केसो न तिसा की ॥ जिनि वारारा या

त्यागी ॥ सरम गही हरि सुमिरण लागो ॥ सुरति निरंजन लागी

३॥ सोल मइवती सूं नारी त्यागि रम्या उदासी ॥ सरमगही भ

११ मां निरगवंत को ग्रहता जिनये वन वासी ॥४॥ किंधनराजसिंह

स्तरायण । सबद सुणत तिइ त्यागा । सरमगही भगवंत नै ध्या

यो । सुरति धरी तो लागी ॥५॥ गोरष कनक कूं पमेडा त्यो । फिर

नां मांसे कन रूता । पायो दंत पारस पोरसो । सो त्यागि दीयो स

वधूता ॥६॥ यह अपछरा आई वन मे । सरमगही सुषदेवा । पाइ

मावसी कही कबीरै लग्यो अलपकी सेवा ॥७॥ साहिब को नैराधि

सिरकु परि समत अनेक नये पारा । जनसेवा दास सरमगहि जे

रि हरि सिमिरि प्राण उधारा ॥८॥ २२ ॥ साधौ करता की गति न्यारी । नु

म देषो ग्यान बिचारी टेक । उपजै न बिनसै रामा । ता हिन जो निर

को मा ॥१॥ जनम मरण नही होई । देव निरंजन सोई ॥२॥ नां ष बिसं

भरमा दो ॥ कोई पार न पावै ताको ॥३॥ वो निराकार निरबंधा । इ

नीयां मांडि रही सब धंधा ॥४॥ त्रिगुण रहत गुणां तै न्यारा । सब

घट मांही येको सारा ॥५॥ ध्यान ध्यान तै रहत निराला । क्यूं करि

यकू पै बुधि बिसाला ॥६॥ ब्रह्मा षोज न पावै ताकूं । निगम अ

गम कहि थाका ॥७॥ से समहे स पार न ही पावै । अनेकथ

स्तुति गावै ॥८॥ अनंत अवतार नवावै माथा । तेरी गति को

नपैन ग्याथा ॥९॥ सकल निरंतर सब कै माही । जनसेवादास अह

ताको नाही ॥१०॥२४॥ हरिजन वे हरिसेती बांमला । चित वकि

सिमरै बेकाम टेक । हरिजन सुमिरै निरंजन हारा । सो चितकै

निरत विकार ॥१॥ सा चित लागे हरि गुण कहै । ओगुण मानै उ

टो फल है ॥२॥ बिस हरहय पिवावै कोई । न हरल रत ही होवै

॥३॥ सो चित कूं करत्वो पिन लागे वानी दैवो । न सिव लागै

पूराकिस तरी दी ॥ जैयास जनसेवा ल्हे सणन छाडे वास

॥ मन मेला कज्जल को नाई यो मनपकि रपहि नाह

ई ॥ टेक ॥ मनहि माहि बसे अहंकारा । मनतें मिटि जैक

रा ॥ मनही माहि बसै सब माया । सो सब मेटि भजो राम

॥ मनही माहि बसै सब करमा । गोबिंदजी तजो सब

॥ मनचंचल चपल नहि दिस डोलै तें नलग सो हि बमु

ऊपरि सिंघ प्रतमां मांहि ॥ श्रो मारै वो तारै भो हीध ॥ ऋो ६

जनसेवादास सतगुर के सरनै ॥ ओगमूल बंधणा णै ॥ कलावती
तास कल घटि रमता येक पूरण ब्रह्म पिछाणै ॥ २ ॥ आं भूला
रे जग साचन द रसै कैपां हूण के पांणी परसै ॥ टेक ॥ जे इ ऊपां ह
ण देव की हीजै तो बोडै बेग दर दे मीजे ॥ १ ॥ आपा नो पो कूक
खाटी ॥ जग आं पिन सू के हिर दे टाटी ॥ २ ॥ वो मुष सबो लिन दे
वे ज्वाब ॥ तास लागि न पांवो आव ॥ ३ ॥ जितारण हारा नीर थूक
हा वै तो कलि के आप कूकां ॥ लगावे थसवही उलके त्रासम
कारा सम जिन सुमिरै तारण हारा ॥ पयां हंडू वेयां णी सके सा
च बिनो न रयूं ही वूके ॥ री सन मोनी कष्या सूति साची मुकति
न होसी बातै काची ॥ ६ ॥ साचा सबद हिरदै धरि पेषी ॥ वो रमता रा
म सकल घटि देषी ॥ ७ ॥ जन सेवादास जो अविनासी ॥ सू कटै स
कल काल जम पासी ॥ ८ ॥ १७ ॥ भाई रे असा इष्ट हमारा ॥ पषा पषी
बंधनि नहीं बाधा ॥ सू निरबंधी निराकारा ॥ टेक ॥ पूरण येक स
कल घटि व्यापक ॥ है न नज्ञ ब्यापक सारा ॥ मां हि जगत तै रहै
निराला ॥ हम असा तत बिचारा ॥ १ ॥ गुर परता पि सम झि न ईस मो
कूं ॥ हम लीया येक संभारा ॥ जन सेवादास आं दंन ते अंतरि
भागा न रम अंधारा ॥ २ ॥ १८ ॥ भाई रे मघ पुरातम लीया ॥ है पप
रहत येक अविनासी ॥ तहां ले मन कूं दीया ॥ टेक ॥ भकुलहा त
न सकल घटि व्यापक ॥ उतपन बरणपे नाही ॥ आवै नहीं
जाइ रूप जिन ही ॥ विनसे सो सहजै रह्यो समाई ॥ १ ॥ वेसा दिव
गम अकह अविनासी ॥ सो गहि सब तजि आंनां ॥ बिकट पंथ पं
ऊ चैवई ईसरा ॥ जन सेवा है है रांनां ॥ २ ॥ १९ ॥ भाई हम पेष पु
रातम पाया ॥ ले सतगुर साच बताया ॥ टेक ॥ ऊकै स गम मत न
ही बाधा ॥ सो हम सुष निरंतरि लाधा ॥ १ ॥ वाके रूप बरण कु
छ नांही ॥ सो तत दरसै मांही ॥ २ ॥ इहिं पेषि सां ष्पारा ॥ सोइ बेन
ही बिष धारा ॥ ३ ॥ जनसेवादास चालि नांही ॥ सो वहो इनि मेंजि
लि आंही ॥ ४ ॥ २० ॥ मन रे त्यां ही कूं डौ की न्हौ ॥ पां रांम रस छाण
पी न्हौ ॥ टेक ॥ वै कुसंग कूं बाधि तै न्यारा ॥ भाई त्यां ही का निस
रा ॥ ॥ ते सत संगति अनसरीया ॥ भाई त्यां ही का कारिज सरीया ॥
जे बांणी वूहल उचारै ॥ ते आपण पौता रै ॥ ३ ॥ मन मयां छिपै ते
न्यारा ॥ ते नौ सागर पारा ॥ ४ ॥ येक कांम क्रोध ग्रारलो नां ॥ ते त्यागे
अंमृत पीया ॥ जनसेवा ते जुग जुग

जीया ॥ ५ ॥ २१ ॥

कुल लगे तजि तै बहात

रराहि॥जनसेवादासप्रेमपंथिचालो॥जूंसपणोपीवपोहि॥१॥

१२ ॥२॥१॥ ॥रामा॥१०॥राग मरुजीयो॥सतगुरदीनदयालदर

सणदीजीये॥बल्हिपीवपीवलागीप्यासटीलनकीजीये॥टेक॥

कीयजीवतैंसीवप्रगटप्राणीयां॥बाल्हमेंमूरिषमतिहीण

माणनजाणीयां॥१॥बकसोगुन्हासपाकीजैआपणो॥बल्हि

साहिबदीनदयालसबद्दुषकापणो॥२॥जनसेवाकीअरदास

साहिबमानीये॥बाल्हचोरीकरिगुल्लोमसेपसाजाणीये

॥३॥बुल्हसरहलिरपुरियालीनोकर्जयावेदनिघटमाहिपर

गटनांलडूं॥टेक॥याहुगुरूकीबातमैंतोकिसकहूं॥हरिजव

लगदरसनहोइ॥प्रेपयूंनादहूं॥करिमनथिरियंडीलीनप्प

सापीरहूं॥तबसेवाजनदरसणहोइदेष्यांजीवहूं॥२॥१॥

रूपसमारवारनपारताहोहीफूलीये॥प्रानदसगिनमाह

आत्मफूलीये॥टेक॥किलिमिलिझिलिमिलिनूरनिरंतरदे

षीये॥सतगुरसबदविचारिअंतरिपेषीये॥१॥बिलसैरूपत्र

ल पारपरमातिपारनो॥जनसेवादाससिहमाहिलिजेवारणो॥१॥

३॥समरथसिरजनहारदयाकरिलीजीये॥जीवरसानलिज

रजाणनदीजीये॥टेक॥बिडदलम्हारोयेहुनरकोनिवारणो

म कीजेऊपरमासवडुपनारणो॥१॥दीजेनावमानबिवास नि

रनैथापणो॥जनसेवादासबलिजाइकीजेआपणो॥२॥४॥पू

रणब्रह्मअषंडयेकहीजांनीये॥औरनदूजाकोइयेहमनि

मांनीये॥टेक॥बाहरिभीतरिब्योमसबैसमिआयदे॥नाकी आ

दिअतिमाधिनाहिबेदसाधूकहै॥१॥नांवरूपसबभ्रमनिहचै

मांनीये॥त्यागिसनाकोनीरयोजगजांनीये॥२॥गुणभ्रतपात

लाधिरिदासैनहीं॥निरभैनिरंजनध्याइसेवाउरमेंहीं॥३॥५॥म

नैयेकाकालेमनिरतरिध्याईयै॥सतगुरसबदविचारिपरम

सुषपाईये॥टेक॥निहचैआतमांमसकलमभिदेषीये॥कंचन

भूषननांवयेकहीलेषीये॥१॥कंचनीवभ्रमतैदहारनिवारी

ये॥जनसेवादुबध्याबोरन्वाशिनसारीये॥२॥६॥सोघटबांनी

नोहिग्यानप्रकासहीकंचनलोहायेकमिनिनहीनासहीटे

॥रहेसवालपरमातमोहिकूवानीरज्यूं॥अनआतमआतमनि

हीयावीरज्यूं॥१॥कामोअगमिबुफासदातललषनयायहूमा

चोगरज्यांनभ्रमसारगया॥ज्यूंतनजलकैपरकासतिमररहेन

हीजाघटिउपज्योग्यानमहामिवहेनही॥४॥ग्यावसंगमयेरूस

कलमेरामिरह्यो॥सतगुरपालेनेनरूपतिनहीलह्यो॥येहीपर

मांनबोलैध ।यौमनअंतरमांहि ।आवै ।जनसेवादासतबैसब
पावै ।५।२८। मनिमननिराकारनिजदेव ।मनिषउनमकोयौ
हीलामहे ।करिसाधकीसेव ।टेक ।जौतैमनिषादेहलहीतोह
रिभजिसतगुरसरणैआइ ।थाहीसापसुणोसातिश्रवणोश्रे
रनज्ञानउपाइ ।१।याहीदेहदेवताध्यावै ।ताहीतैहरिगाइ ।श्रौ
नध्यानसबपरहरिजाणौ ।येकनिरंजनध्याइ ।२।अबकैन्तला
भैजलिजैहौ ।तोफिरकूसमकाइ ।जनसेवादासकहैयाहीसम
झिहैयेपारमईपागाइ ।३।२९। मनतूहरिसुमरिमतिमंद ।औ
रसुपतिकलोकनांही ।नहांतहांदुषदंद ।टेक ।अबकैडावबणै
नरहरिभजि ।भूलिजहरमतिषांहि ।औरसगानहीसकतहरि
बिन ।तूदेषियाकालिमांहि ।१।जबलगसासबासघटमांतरित
बलगहरिगुणगाइ ।यौऔसरचलिजाइगो ।फिरिछैपछित
इ ।२।यौऔसरबारपुनियाहि ।जीतिडावनांबैहारि ।जनसेवादास
मनचेतिरे ।कहतपुकारिपुकारि ।३।३०।२३। रागरामगरी
सपूर्ण ।राग ।९ ।रागदेवगांधार ।मनायेककरिगोव्यंदसंधी
तिनरदेही ।भजिबाकूदीनी ।सोहरिभजितजिष्ठपराती ।टेक ।स
वकाहरभजिज्ञानपंथिलागो ।षोईमनिषजनमरसरीतिस
रातिकोषेतनहीआडै ।तनमनयेडीजीति ।१।मनमेवासांमां
गिरमतभिसंतकहैसबटेरि ।जनसेवादासभजौआबिना
सी ।जुगिनहीआवैफेरि ।२।१। मनायेकनिरमैआवगतिराइ
औरसबैभैमांहिभैबासि ।सतसंतकहैसमकाइ ।टेक ।देहध
रीतेनिरभैनांही ।सनकालबिचारैआइ ।सेतम्हेसबिहम
अबृह्म ।तेकाथिरनरहाइ ।१।धरतीगगनपवनअरपांणी
चंदसूरथिरनांहि ।जनसेवादासथिरयेकनिरंजन ।तूसुम
रिसकलदुषजांहि ।२।२। मनोतूआरतिसबैनांत ।जाकैपं
षिचलैगोप्राणी ।सोईआवैगांव ।टेक ।जननांमांदासकबी
रमकालसतायेकनांवपुकारिकह्यौ ।सोईनांवजपोनिस
बासुरि ।सबकरमकजोडदह्यौ ।१।येकनिरभैनांवनिरंतरि
गायौ ।तबजमकागदफाडिदह्यौ ।जनसेवादासपुकारिकह
तहै ।हरिनोकभजतसुषपायौ ।२।३। मनातूहरिभजिबिष
मतिषांहि ।बारबारसमकाइकहतोहूं ।कहुंरसिकबाहर
नाहि ।टेक ।जगतुमसबैसुपनकासमहै ।तूमतिलिपटैमति
मांहि ।अलपआवजीवनथिरिनांही ।तोहिकालनचेकिले
जाहि ।१।पालसकहाअलपनजिप्रांणी ।स।र

दैं। तुम दयैता।। नै।। ४।। मै निबलामनसबल है मो हियाणा नपू
जै रामसनेही काढिकैं।। मनलागे हूजे।। ५।। मैं तो हरस्यो नाथ नां
स्यौ लेडू पुकार।। तुम सरणागति के मन।। सेवादास बिचार
।। ६।। ६।। अनेत बसै मन वीयां।। स्वामि मेदाता तुमसे कहा छि
पाइयै।। मन बिसरगिरता।। टेक।। मै तौ लेआरा घेरिकै।। फोकि
फाडचा बै।। राजस तुणौ त्रिगुन पती।। मन फोड ग्राले।। घालघ
रा।। मनमे बसै तुम जांणौ बांमी।। मौवै मारो तारो सांईया।। मनमै
बहो घामी।। २।। मनमे तुरंग अनंत हैं।। करू आगिण तन वोरा।। मैं
सहस्य टोलावद्यौ मे करैत निहारा।। ३।। तुम सांई समरथ हो मेदुर
बल जन तेरा सेवाजन की बीनती।। कृपा करि मेरा।। ४।। ७।। मेरे
मन की चोरीयां।। तुम सैं नहीं छानै।। तुम जांणराइ जाणो सबै मे
कहा तुको ने टेक।। रोम रोम का सबल घो दिल मालिक सांई
काहो किसी बिधि छुटीयै।। गुन रूं अनंत गुसांई।। मैं उपत करू पर
गट लयौ जीव की सब घातें।। मन मुष हो २ कै सैं कहूं।। मै पी वस
आतें।। ३।। आतिसा व्रनेमरडे।। मैं अंतरि नाही मन मुष स्यो वार
रिफिरे माया का बाहो।। गुन रूं भेटि करि आपणे तेरी बलि
जांही।। जन सेवादास की बीनती।। ग्रहिरा घोबांहीं।। ४।। ८।। मेरम
निवारो हरि मेरौ।। समझौ मन मांही।। किरतम करता का धरै।
करता सेनांही।। टेक।। कोधे करि नरल ये चलै।। ले दरीयामांही
बोडूबे सब देषतां सो तारै नांही।। १।। करता करि सपट थल्यौ।।
धरि लागे आगी।। नां हिजलै सब देषतां निकसै नहीं नागी।। २।।
करता परब्रालिक्यूं रहे।। जिसके सब हाथा।। पाणी पवन अग
नि दू मेल्ही जिन नाथा।। ३।। गज बपोई का ठकां करि लोक दि
घावा हहा।। वेग नाक्यू।। कबूह धन आवा।। ४।। कतबा धा
गांवडा मांगि मोलन लहसा।। सो लिदिषायो यार प्युतन के
वाक हस।। ५।। हरि देग्यांन बिचारीयै।। चित कहु टनदीजै।। जनसे
वा त्रि भवन नाथ कं।। भजि कहिन कीजै।। ६।। ९।। रामसनेही सा
ध वा।। ऐसो ब्रत धारै।। मुषि मिथ्या ना पै नहीं।। हरि नांव उचा
रै।। टेक।। राम दोष हत जनां।। ततनां रंगराते।। काम क्रोध नहीं ऊ
पजै।। ते ईरासि माते।। १।। बैरना जपै नहीं।। सत्रु मित्र समांनां।। र
मै सुखदा राम तां तेडी लव लीनां।। २।। ये इ जित मन थिर जनां स
मता सगिलीयै।। जन सेवा साध सरिवा निरमैर सब ही ये।। ३।। १०।।
राम भजै है जैगला।। स्यूगिर है उदासा।। ये करम स्यूं उरिग या।।
काटे जमपासा।। टेक।। बांणी निरमल साध की।। हरि नांव उचारै

मपयानपरतबिजोनीवै॥औरनह्नाकोइबुसपिवांनीवै॥५॥अ
गमअगाधअपारपरमतिकोनही॥जनसेवापूरणरांमरमेतासबमही॥६॥७॥२४४॥राग॥२२॥राग बिलावल॥जोगीऊवानथ
रीगुरकोगहिपांनां॥बंधनकाटेतारिवै॥मंडीयाचोगानां॥टेक॥अ
नसंघासनबंडिकैबनिकीयाबासा॥योसुपदुपसमिजांणि
कै॥जननयेउदासा॥१॥वगडरनातजी॥हसतीबहोघोडा॥
रांमामिलणकैकारणै॥सबलनेहतोडा॥सूरणपदआराधीय
नजिनरमजजीरा॥जनसेवाजोगीनरघरी॥नयोअमरसरीरा॥
२॥१॥साचबिनासंतोषनांसाणलीज्योऊवणा॥औरउपाइन
इसरी॥निजनांवउचरणा॥टेक॥औरधरमतैंनोमिटेजोमणअ
रमरणा॥जोवेवेदकतेबपुराणपढिसबतीरथफिरणा॥१॥जो
वैंजोगजिगजपतपकरोसबलोकैकरणा॥जनसेवासतियक
नांवहेसोहिरदैधरणा॥२॥२॥साचबिनाछूटणनहीचोरासी
फिरणा॥इजातेंदुपनाकटेजोंमणअरमरणां॥टेक॥तीनोंमि
लिकरिफंदरच्या॥जगमांहीजाला॥जोभवेदधरमसाधतोग
हिपावैकाला॥१॥कलेसबमोहारमे॥उलकेजगसारा॥जनसे
वासबलजिहारिज्यो॥तेउतरेपारा॥२॥३॥सबजगबंधणिबं
धीया॥निरबंधजनकोई॥बिपकेचारेचितंदयो॥गयेननमाबिगो

५

ई॥टेक॥करमपासिपकडुमिले॥कहिबेदसुणावै॥चवदेतीनूंलो
कमैंकोईजांणनपावै॥१॥तिसरूपीकरिथपेरू॥किमजग
मांही॥जीवदीयेसबजेरमे॥जांणैकोनांही॥तीनूंतमिवोथे
लग्या॥तिनभमलमिटाया॥जनसेवासोनिरमैंनया॥फिरिधरे
नकाया॥२॥४॥तुमबिनमेरैसांईयां॥हूंजानसांनावेनेनांदे
पूंवीवस्तुतबजीवनकपावै॥टेक॥जगसुपसमनेसीरषा॥दुष
अनतअपारा॥तातेंतुमपनिमांनीयां॥मेरेसिरजनहारा॥१॥मा
तमातबंधूसपाबनितासुतलोई॥जबजीवडोसंकटपडै॥स
हिनकोई॥२॥परमसनेहीप्रीतमो॥पतिप्राणअधारा॥जनसे
वादासकैयेवातहृनासबबारा॥३॥५॥हरिजिबिपाडैआत
रो॥पापमनमोरा॥दसदिसीनरमतफिरै॥करतोबहोजोरा॥टेक
मेघरजूमनउठिचलै॥कहूअटकनमांनें॥हरिरिसबाडैबिस
पौ॥जाइबिपैलजानें॥१॥बिषमाबिपैकावासना॥मनबाडैन
ही॥बिपरसलागीबिषपीवे॥हरिरसहितनांही॥२॥यौतनसूं
जातहेसुमनिमेरेदातारामअमीरसनापे
२॥तमदात

२५४

आंनसगाईी॥२॥सुतबनितापरवारसा॥तैनेहबंधाया॥तेरा
मीकोमती॥भाजिलैरामराया॥१पलबिनमांहदेषता॥बि
सैयादेहा॥जगहटवाडेआइवैं॥सोदाकरिलेहा॥जगहट
वाडेसबमिले॥बौपारीआया॥केतांमूलगमाइया॥केतं
लाभकमाया॥रामनांमधनाबिणजीयो॥त्यामूलकमाया॥अ
संमबिसाह्यो॥आंनसंपी॥त्यांमूलगमाया॥५॥समकिपडीमत
गुरमिल्या॥षोटानहीपाया॥जनसेवादाससोदाकिया॥गुरि
नबताया॥७॥२६॥मनहीलोभिमगनहोईये॥बहीपेंडध
से॥जतनजतनकरिराषीये॥तबहीसबपावे॥टेक॥अरधउरध
मधिरोकीये॥मनजांणनदीजे॥सासउसासजापजपि॥आंन
सबकीजे॥१॥सुरतिनिरतिलागाहे॥पलतारनतोडे॥सतगुरस
बदलखाईया॥तासैलैजोडे॥२॥रागमपियाताप्रेमका॥मनह
रसपीवे॥सुरतिसमाणीसाचमै॥त्यांलागाजीवे॥३॥दसदिसा
सकेरिकरि॥लेहिरदेवहराया॥मनहमनिआनदभया॥मनम
नहीसमाया॥४॥संजमसीलसंतोषगहि॥मनउनमनिलावे॥जन
सेवादासहरिअगमहे॥मननहीसमावे॥५॥२७॥सीलसपीत
ज्यांमनहीराता॥बरणबिबरजितन्यारारे॥जैसेंब्योमयेकसा
रषमिहे॥यूंभ्रातिरहेहरिसारारे॥टेक॥अगमअगाधवारनहू
पारा॥वाकारूपकछोनहीन्यारे॥दिष्टिनमुसटिअगहअ
बिनासी॥ताकानेदकहांतेंपावे॥१॥निपजैसंगसकलतैं
न्यारा॥सबदजलमांहीरे॥यूंरमतारामसकलघटमांहीबोले
यतनन्यांणपोकांहीरे॥२॥अउंसतीतसकलघटिब्यापक
कोईबिबिबनहींजाकारे॥ऐसारामकहेंनहीतेसा॥कोईपा
रनपावेवाकारे॥३॥जैसेंकुंभनीरमेंपूरयो॥बहोरिधरयोजल
मांहीरे॥ऐसेंरामनिचारोनाइं॥घाटिबधिकहूंनांहीरे॥४॥अर
धेरामउरधमधिरांमा॥दसदिसान्यूरारे॥जनसेवादासअै
साजिनिजोन्यां॥सोईमुकतिजनम्हारारे॥५॥१८॥अलषनिरंज
नअबगतिरांमा॥सोईप्राणनाथपतिमेरारे॥घटघटमांहिअ
घटअबिनासी॥तउलटिदेषिहरिनेरारे॥टेक॥परतिपकनमनस
मिकरिराखे॥सबमनकातजैपसारारे॥उलटापेलिपरमसुषब
लसे॥परसेरामपियारारे॥१॥अजराजरेसोईजनजीवे॥नारंणा
जाणीधारे॥कामक्रोधमदलोभसबहूर्या॥हरिभजियेसब
मारे॥२॥संजमसीलगह्यांसुषबोले॥हरिबिनआननआपे॥
बादबिबादकरेनहींकबहूं॥हरिचरणांचितरापे॥३॥पांचूंप

ताकी संगति कीजीये। जो सागर तारै॥१॥ आनंद बृत उरमै धरै सब
संसै त्यागै। मन पवना उलटा इकै। हरि सु मिलण लागै॥२॥ सारग
हे तजि च्यारकूं। सोई जन पूरा। जनसेवा करमन लगण्हीं जागै
सब दूरा॥३॥२१॥ ऐसे रांम बिचारीयै। आपणै मन मांही। पस्सू
रण आकास ज्यूं। घटबधि कछू नांही। टेक। ज्यूं बरहो ज्यूं षनक
नक को। कंचन इक सारा। यूं यक रांम अषंड हे। घटि घटि न्हि
न्यारा॥१॥ ज्यूं सासियेक आकास मे। बहो घटमे नासे। यूं अंतर
जामी येक है। सब घट प्रकासे॥२॥ ज्यूं सतर माणिगण है नहं
पवतं तन न्यारा। कुंजम मृतका मिनिन्हों। यूं है रांम पियारा॥३॥
सब घाट येको रांम है पतिप्राण आधारा। जनसेवादास सांई
जो लिहे मेटै मन के बिकारा॥४॥२२॥ यो जग फकवाजो लीये गु
रगभं नगहाजै। ज्यूं मृग निसनांनी नैं ताहि अघपतीजै। टेक। जै
सें तूं पे सीप मै। भ्रम नास्यो नाइ निकटि गया सो सा मिट्या भ्र
म गया बिलाइ॥१॥ ज्यूं संज्म मे आपदे षीया। जे ल्यो कछु पाई। ज्यां
दीपलै देषी पा भ्रम गया बिलाई॥२॥ येक अषंड तर रहि गया। स
कल रमा बिलाया। जनसेवादास सतगुर मिल्या साचा दिषला
या॥३॥२३॥ पेलै साध समा धिमा पीवै अम्रत धारा। सुनि सिषर मै
रमि रह्या जहां जोति अपारा। टेक। सुरति निरति लाग रहे पल
तारन तोडै। इला पिंगुला साधि कै अबगति तें जोडै॥१॥ तीनूं
तजि चौथे चले सोई जन सूरा। पांचूं बल करि नो सके बाजे अ
नहद तूरा॥२॥ अगम पियाला पेम का अनहद रस पीवै। आगम
हर घूमत रहै लै लाग जीवै॥३॥ आगम बसत अंतर बिसे तहां र
ह्या समाई। जनसेवादास आनंद नया। सुष कह्या न जाई॥४॥
॥२४॥ रे मन परहरि आन कूं करि हरि की सेवा। मन सा वाचा प्रेम त
भजि अलप अभेवा। टेक। सत संगति के ध्यान धरि के हरि सुम
रण कीजे। आव घटत चौ हि घडी। मुष अम्रत पीजे॥१॥ आन
ध्यांन सब परहरै गो ब्यंद गुण गावै। सोई साधु हरि को निरभै
पद पावै॥२॥ आन कथा संत षिन ही। हरि रस के भोगी पूरण
ब्रह्म प्रकास मे सुष बिलसे जोगी॥३॥ जनसेवादास निरभै मन
भजि अलप बिनांनी। सुसब्द पकोई ब्यापै नहीं सो ई तत गि
यांनी॥४॥२५॥ रे मन मूरिष बावरे हरि क्यूं न संभारै रतन अमोल
क क स्वैली काहे तूं हारै। टेक। सदा सनेही रांम है मन कां हूं
न गावै। यो औसर चलि जाइगो। पाछै पछितावै॥१॥ तन धन गो
बन नां रहे लोभ मन नांही। भजि परम सनेही आपणां तजि

नापिरै ॥ ऐसो सैतांनां ॥ ३ ॥ जैसा बैरी मन है तैसा न हो कोइ ॥ ना
पव के देषतां ॥ जे गाफिल होई ॥ ४ ॥ सतगुर सबद बेधीया म
न जो प्रांण न पावे ॥ जन सेवा घिरि दा जनां वस मन उलष्टिण
तै ॥ ५ ॥ २९ ॥ फिटि फिटि रे मन मारिये तेरै सिर भारा ॥ अमृत
छैडि विषपावे तू डैबि षधारा ॥ टेक ॥ तह हरि बिबेका कूप जो विष
रै तकु बारा ॥ सील किवाड तोडि कै निकसै कहिजे रा ॥ १ ॥ तो ले
प्रासे मन तूले हो इहत नको बारी ॥ सील साच का आवडी मन
तजे बिकारा ॥ २ ॥ सर मन दीसं सारका ॥ हरि को मैनां हां सीष
सूत्रा षि सबत्रा डि के विषकूं तचि पिसां हा ॥ ३ ॥ दो जिन चाल्यो वि
ता ॥ मन दायो मुकलाई ॥ जन सेवा डुगर का बकता कू
मन माई ॥ ४ ॥ ५ ॥ २१ ॥ नारी ने तन बांधीयो ॥ टूटे बूल आंनां ॥ सीति
मुकाति जाइ जीवत ॥ विसरे तनुपांनां ॥ टेक ॥ सव विसम होइ उरमे
घसै पावक सो इ जाले ॥ न गति मुकति निज ग्यांन कू उरिये सि
उ पाले ॥ १ ॥ सो गीरिष सम हा मुनी ॥ वन मै तप ध्याता ॥ जुग मे
जोधा कांमणी ॥ कत इहि मासा ॥ २ ॥ जग सब मा ला कांमणी
नग फल जालि मूवा ॥ जिन्ह सेराम दया करी राषे कं निवा ॥
३ ॥ कोइ येक जन जग मे बंचे ने हरि केर गिराता ॥ जन सेवा स
१ औ राम के राषे हरि दाता ॥ ४ ॥ ३ ॥ रे मन तुम अनाणीया का
कू फोडा घाले ॥ नोवू नगर की बाट तजि ॥ कूप डक बोले
टेक ॥ भोग करत झूसो सदा ॥ मन त्रिपति न होई ॥ या काया
रीति है जो गोज नबकोई ॥ मन आरगहै न जिसारका पीटाम
नमाई ॥ राम निकटि मन बाडि दीं उलटै करु जाई ॥ १ ॥ विष
के बन मन पैसि है ॥ जन बको पैज मराई ॥ देषा सीज मत गि
है तब कोण बूडाई ॥ २ ॥ कि रिषी बैपछिताआं ॥ तो हि कन
सम काई ॥ मात पिता सुत बंधवा कोइ निकटि न जाई ॥ ३ ॥
जन सेवा दास चित चेति रे ॥ हरि सौं जो सरि हम की जै जो र उप
इन हसरी ॥ निज नां वरटी जे ॥ ४ ॥ ५ ॥ २ ॥ ५ ॥ का है नर मे जो गी या म
गि सम थसाइ ॥ तं सम घसाई आडि कै षोट मिति विधि टे
१ गिनि सिर जेजल बूंदती सोई प्रतिपाले ॥ पजकू पुरवेष
णीयां सो क्युं न सभाले ॥ १ ॥ जि निज वरस्या निमेरा षीयो त
हो उधे मुष फूले ॥ ता सादि बडकू प्राणीया क्यूं रे तन ले ॥ २ ॥
वटा को लकरै कल तार तो जग नकूं ज्यो माडी ॥ जन सेवा दास
गोबिंद जजो न्हूले मति नाई ॥ ४ ॥ ३२ ॥ काहे मन नर मत फि
रै हरि क्यूं न सभाले ॥ ज पति सिर जेजन तबूं वते सोई प्रतिपा

कउि करै बासि ज्ञप रो।सोइ साध सोई सूरा रे।मन रूप कछि
मनोरथ मारै तो गठि पड़ि सके न छूरा रे।४।श्री दिल सबै जीति ग
ढ़ि रावै मगरी सब सब साबै रे।जन सेवा दास सतगुर के सरणै
सहज परम पद पावै रे।२।१४।मन मेवासी मसकरा कछु कहु
तन न पावै।न तन न तन करि राखीयै तो ज्वालि जावै।टेक।सुधि
महो इश्वर तै चलै नैना मै आवै।बाहरि निकसि आति फूल या
घट मैन समावै।१।माहा सबिम हो इरहै बाहरि ज्ञाप पसारै
यो मन का लाग बगहै सब ही हमारै।२।यो मन अति बरी करै
जातान हाजा रौ।मन नयो मसता बिकारै सें गि।नरको कूं ताणै
३।मन करणी कछुक माइकै सुरगा लेजावै।मनतहां तै याहु
फिरि कै नरका लेजावै।४।मिमन चढ़या फेरया मुनी शई मन न
रमाया।दे पे मन का रातिहै नी चाले आया।५।जैसी मन के ऊप
जे तैसो हाइ जावे।जैसो साहबि महाइ मिलै।बिरला कोई पा
वै।६।धहो पबासतै पातला मनके कछु नाई।जौता मन कूं फे
रि करि चरणां चित लाई।७।सुरति पवन मनराखीये हिरदै व्ह
रावै।जन सेवा मन अस थिर न थांबे बगति कुं पावै।८।२०।
मै मन वा का चोरीया लखीयारे भाई।पंच द्वार मन नीसरै उलट
फे कहु जाई।टेक।पांडू सरहित दे मिलै कहु बैरव धावै कब
हुं क बियबन मे घसे कब हुं क हरि के गुण गावे।१।जप तप स
धन मन करे।सुरगा लेजावे वहां से उलटा फेरि कै नरग मे न
मावै।२।कब हुं क मन बिरकत रहे माया से खुश रहा।कब हुं क म
न माया गहे बांधे फिरि नेहा।३।कब हुं क चोधी चे पिकै निरगु
ण कहावै कब हुं क पहरै बाफता घसि चंदन लावै।४।कबहु
क मन मृतक दसा तन सुधि बिसारै कब हुं क मन घोड़ा चढे
सिरि पेच सवारै।५।कब हुं क मन ऐसी दसा तन भसम लगावै
कब हुं क पिलंग तुलाई मो दवा अंगी तेल चढावै।६।कब हु
क पय धरा बिला इके दिन रैं रिम्ड दारै।कब हुं क जावै धाप कै
कब हुं क तन गारै।७।जनसेवा दास छिति मन की अगणित क
हानाये है कोई बिरला संत जन येकर सिराये।८।२१।बसंत हा
सोना थना समके न आयां नां।बपो बकारा फिरि बैरै मनसम
सता दिवानां।टेक।मन उबरैहा जै आग सरे मुरि गि सा बिनरि
पाप भैलै नां चलै रे कर तनि साए।१।राति घौस सम काइस
देव दीपां ना सरडे सरमन ऊपजै बिप सही को ध्यांतां।२।
पसारि बिषै रसरति पीवै मो हिक लुनपां नो मन उलटो फरयो

१५६

रिबेदघटसासम्रासबम्रुणबषा रोसी तैसा चसेतो
ह्रिदेनदी आगोशकुटी करतिनसाबता गद्दिस
लाई जनमवदातो नटकता कथिटगपाई मनी
यडी बसिकरै डुबधा सवपोई बिषरद तरतनांवस
वाजनमोडीध ॥१॥ चोरी दुटै जी दवी ॥ तब के
सौ दवता मथौ बि छायही माया दीतमो दीष्के प
नपरधन कूरलद्दा गति दाहै नाही नांनबि संमरनाथ
सुनसे गरमाही ॥१॥ यांचेतं परमो षिबै समता संगिली
तबकालजाललरोनदी दरिकेरसपी ॥ ३ ॥ सुरतिसमे
तावमो डुबध्या सदपे दे जनसेवासाधूसोनला मन
मतथावै ॥२॥ आनट ज्यूं यो मननापवे हो पेर छेबदीतेघ
आदरमांनि बडाईयां मनतजे नरेषा ॥ टेक ॥ वाड़ मनबते
नपकरै ॥ काया कसि तोडे ॥ कबडू मन बिषीयां नजीरूहे
पिलोडै ॥१॥ दाता होइ मनदत करै ॥ फिरि जाचिग होइ जा
वैक बडू मनमायातजै क बडू फिरि राचै ॥ १ ॥ मनपांच
गनिमुषितपदिहै तीरथ बहो करही ॥ सकल्ब तमनस
धिदौ फिरि फिरि तनधारही ॥ ३ ॥ बसतीतजे मनबानिबसे
फिरि बसती आवै ॥ इदिम नकायारा तिदे ॥ बहेनाचे
नचावै ॥ जनसेवा मनिगातिकी पदे ॥ जो रीजनपूरा ॥ दस
दसाररफेरिदे गहराये मरा ॥ ५ ॥ अरा मरमनिमनबावरे
काहै वरत अंबेरा ॥ योतन बजलतीनीरज्यूं जाइ लगैनबेरा
टेक ॥ रामनाम जापिन्नगातिमीतो काहे पचिपरणो ॥ संजमसी
लसंतोषद्दो ॥ नेत्रमे धारणां ॥ सतोदिवाऊं समकाहकी नि
गनांकिनरणं ॥ पिंगलतीतोद पदध्याइजे मानि नटकि
नमरणां ॥ जनमरणाइबसबल दे पाको क्याकरणां
जनसेवादासहरिनांवले सब दीद्रवहतरणां ॥ ॥ १ ॥ बैसे
साधूजणि हे ॥ जुगमन नबांधी थेंक निरंजननी बसैते
डोरी सांधी टेक तनअबत्यागी मनगदै पंडबासकायेंरदे
कृद्धदायेकराति मनमतातनिदीये ॥ १ ॥ कामक्रोधबिषयात
सहरिकेरसपीये जनसेवसाधसमाधिमो लेल्यागाजी है
रखसोईसाधू तारिवां ममतागद्दिराखै कामक्रोधतज
धामकू हरिरसस्वादे ॥ टेक ॥ मनिअंतमे येदिको ॥ मनि
चानिहारे दरसोजमनिमातितजि ॥ ननिकाउजताउ ॥ २ ॥
रबतीमारी कौनकेताहाइ गोंगीजनसेवासाधूसोन

से टेक उदर उरध मुखि पूरी यो। सोइ अब देह रजी वसो बनि
वा रिकैं अजिरां म सनेह॥१॥ संकट तैं तोहि काढीयो सुम्म
श्वासा तासा हि बकुं सुमरि रे न गिरहो उदास॥२॥ जि
करो म जीवत हो जालिय लिपकुं चाइ। गाहि बिस वासी रा
मकुं सुमिरो सुखदाइ॥३॥ लष चौरासी जीव कुं दाता हरि दे
इ। असा समरथ राम है सेवा नजिलेइ॥४॥२७॥ कुदरति
करता करि रह्यो बांति कधर्यो बणाइ। तूं काहे चिंता कर
त है गो अदग ण गाइ॥ टेक॥ गरभ्य कलो टीसा कडे दीयो
प्राण आधार। सो कुं न लेबावरे नजिले हसवार॥१॥ जा
हि न जननी गरभतें बाहरि तें आया। देषे प्यान विचरिकैं
कहा दम डाल माया॥२॥ जन सेवादा स बिसवास गहि मे
रा परम सनेही। चिंता सिरजनहार कुं सोई न लदेही॥३॥२
८॥ अकल अतीत सकल घटि व्यापक ज्यूं चंद जलमां
हीरे। पूरण येक न न ज्यूं ना णो बोधाधि को वा को नाहीं रे॥ टे
क॥ वार न पार अमित कछ्या नांही बोअकह कहण न ही आ
वैरे जेसा कहै तिसा हरि नांही पार न कोइ पावैरे॥१॥ ज्यूं तर
ज पर कास सकल सामि आग स्ग हण नही आवैरे जन से
वादास निरलेप निरंजन सत गुरु भेद बतावैरे॥२॥२९॥ रम
ता राम सकल घटि व्यापक घा टिवाधि कछु नाहीं रे ज्यूं
घृत दूध काष्ठ मै बहनी सूरां मर मै सब मांही रे॥ टेक॥ साई स
रिसा दूसा गति काडी कुं जरये हारे है व्यापक येक अ
षंड अविनासी आधिकी बोछी देहारे॥१॥ सोई दीपक लो
मंदिर मैं सोइ ऊ जन कै मांही रे जन सेवादास अपाधिन
ही लुब्ध चेतन घट बांधि नांही रे॥२॥३०॥ कुदरत कर णां
मई मन क्यों न मानों मरगट नांव बिसारि कै विषपी वैजा
नै॥ टेक॥ सजनम लेइ इ काम अमन हाथि न आवै जतन करत
बहो दिन गया विष अमृत नहि पावै॥१॥ घरि घरि घट नातरा
ले आऊं सोइ येक निम पढौ लोर है फिर लक्षुन माही॥२॥
मै घर जन्मन उ गि चले कुंजो ण तनात्री अैसो निबल नाथ
जी गहि राखो बांही॥३॥ समरथ मेरे साइयां सुणि दादि ह
मारी चरणां राषो सेवलो बालि जाऊं तुम्हारी॥४॥३१॥
नांव करा वेसा हक्को चोरी नहीं अठै। साचा सुमिरण नादि
रा जम काया लूट टेक। लो न मोह लाल च इतो जे ते तन
श्वासा दिन दिन अधिका प्रीत डी नही होइ उदास॥ आ

१५१

रांमबिवोग॥सुमिरणलैलागी॥दै हरिरसकेलागी॥टेक॥सी
तलजनसमतागहै॥सतवादीतरा॥धुनिमैध्यांनलगारहै
बामैश्रनहदतर॥१॥गुणग्राही औगुणतजैरहैतनसूरात
जैसेहरिजनतबमिलै दरवै आपबिधाता॥२॥निहवांचनानि
रमलजनां॥गुणदेखबिसारै रहैअचली॥दिढमन हरिनांवसं
भारै॥३॥दीनगरीबाओगहै॥सबसैंत्यागै॥जनसेवादासत
साधकै॥जग बोटनलागै॥४॥४२॥ कबकमनबिषीयातजे
कबक फिरिषाइ॥मोबलतोषकूवैनही॥समृथसमफाइ
टेक॥तपसीहोइबनमैबसै फिरिघरमैजाइ॥योमनाचैरतव
रेघणां॥कबक घिरनाहाइ॥१॥मनमूषैनटकैसदा॥बिषका
नांकूषाइ॥अजसुणो त्रिभवणधणी॥यामनकूसुलटाइ
॥२॥यामनकीयारीतिहै॥जहांतहांचालिजाइ॥३॥जनसेवोकहैवार
नोंकैं मनतुमहांमांहिलगाइ॥४॥४३॥४४॥२८॥राग बिल
वलसंपूर्ण॥राग॥१४॥रागटोडी॥ हरिनांवकहीयेहरिनांवक
हीयै॥ हरिनांवलेतपरमसुषलहीये॥टेक॥हरिनांवलेतअटल
धूकरे॥हरिनांव प्रहलादसंकटटरे॥१॥हरिनांव अगतअजा
मिलमये॥लंकाराजभरतहीदये॥२॥हरिनांवनांमांकाषिजसरे
हरिनांवदासकबीरउधरे॥३॥हरिनांवरैदास ऊचानये हरिनां
वसेनांसबदुषहये॥४॥हरिनांवजीपैपरचादये॥हरिनांवमी
राजहरजागिये॥५॥हरिनांवगनिकाप्लउधरे हरिनांवगजगण
निकासीतिरे॥६॥हरिनांवअनेकपतिततिरिगये जिनिजीनि
नांवअभिअंतरलिये॥७॥हरिनांवलेतजनतजनतिरे जनसे
वादासनजीकाजिसरे॥८॥१॥नांवनिरंजनजीका॥नांवबि
नासबुहीफीका॥टेक॥जोगजिगतीरथदांन॥नांवबिनास
बही पैआंन॥१॥रिधिसिधिमुकतिनआभेदासा॥येकैनांवत
णो बिसबासा॥२॥जैसैसीपसरोवरनिवासा॥बिणसवांतिबूंद
नहीकरैबिगासा॥३॥सोधिचरैमृघअमरघास॥ऊमरबिनां
नसधैतास॥४॥ज्यूंचकोरचंदसनेह॥चात्रिगकैचसैमनि
मेह॥५॥सेवादासजनकीयारीति॥नांवनाबिसरैअहनिस
प्रीति॥६॥२॥हरिरसरातेसंतजन॥ टेकटगलगपारहैनिसब
सुरि॥नांवनाबिसरैयेकाछिनां॥टेक॥प्रीमतिवालाम्हनसया
मन औरनलागैरामबिना नितनेमयानिरंतमिला देसु
मिरणमांहीसुषघणां॥तनमनफेरिप्रेमरसपीवैतकन
नमभरणउपद्दरिजैसुमिरैयेकनरमताजिहजातेंई

ला॥हरिरसकेजोगी॥२॥७७॥सोईसाधूरांमका॥मनसागहि
आंणे॥थांचोंसूंपरमोधिकै॥मनअंतरिआंणे॥टेक॥ममताम
नमायातजै॥आत्मचितलावै॥सोईसाधसिरोमणि॥निर्भै
पदपावै॥१॥कांमक्रोधजसत्यागिकै॥सातिगहलागे॥देवनिरं
जननिरगुण॥तहांलैलागे॥२॥सदारहै आंणंदमें॥सबजनमन
गावै॥जनसेवासाधूसोंमला॥पदमांहिसमावै॥३॥७८॥हरि
हीरोहिरदैवसै॥गुरिदीयोलपाई॥ताकूंमैंयाडूंनहीं॥राहेसं
ल्योलाई॥टेक॥सीलसंतोषक्षमारहै॥कांमणिकनकउदासा॥
दिनदिनप्रीतिबढावही॥उरसोहंजासा॥१॥पांचूंछूटरहि
नफेरिकै॥रसपीवैप्यासा॥दरपणकीकाईकटै॥मुखमांहिप्र
कासा॥२॥अरधउरधमधिपूरदे॥कसमलसदखोदै॥जनसेवा
चिनवनताधकूं॥दिलमांहिजोवै॥३॥७९॥साधसदाहीसुर
सूरी॥मेटैतपतिपियासा॥उनकीसंगतिकीजीये॥सुषमांहि
निवासा॥टेक॥भरमभिटावैजीवका॥देअजपाजाप॥विव
धितापगुणतीनका॥कोईलगैनतापा॥१॥हरिआनंदउप
जावैं॥दुरमतिसबषोवै॥कलहकलपनाजीवकी॥सब
हीजनषोवै॥२॥भक्तिमकिससैनहीं॥तत्वऐसाबनिआवै॥
जनसेवासाधूसंगतें॥निरभैपदपावै॥३॥८०॥जोगमूलगाहि
बावरेका॥देषविमरण॥मनपवनासमिरातिकै॥हरिनांवउच
रणा॥टेक॥दसोंदिसातेंफेरिकै॥मनकूंगहिल्यावै॥निरमलनां
वनिरंजना॥मनतहांलगावै॥पांचअटकिउलटाकरै॥चिचि
अटकैनांही॥नवसहजैसहजिसमाइगा॥हरिदरीयामांही॥
१॥गंगजमनमधिषोजिरे॥जहांपीवपियारा॥तहांनिसदिन
फरकरतहैं॥पीवैमतिवारा॥२॥हरिरसुतरसाजि(?)पाया॥तिहि
औरनभावै॥जनसेवासाधूसोंमला॥सुषमांहिसमावै॥३॥८१
॥रांमसनेहीसाधवा॥सुबिबिधिनवोलै॥प्रसनहीपांवैले
तवै॥नहीपाटनषोलै॥टेक॥आंनवाटकाआपकी॥हरिबिनन
हीध्यावै॥आंनवचनल्यांबीसरे॥तेहरिकूंपावै॥१॥समदिसम त
जाणैसबै॥येकब्रह्मविचारै॥रागनहींकाहूंसूं॥वैरतातेआपण
पोतारै॥२॥सीलसबूरीसाचगहि॥ममतानिवषोदे॥सुमरिसुम
रिहरिनांवकूं॥कलिमलसबधोवै॥३॥अमानअडंननिहक
पटसमतासंगिलीयें॥आठपहोरचोघिघडी॥हरिरसुतरस
पीयें॥मनथिर[illegible]॥आत्मबिनसाई॥जनसेवाता
सपटतरेदूजानहींकोई॥४॥८२

१५८

डुबध्या हीं करौ जी वकेरी याही सीप सुणौ सतिमेरी टेक॥ सा
कूलो दियमेजलमांही॥ओसा गति तेरे सुवैसे मांही॥१जे साधा कू
डुबध्या करही॥ तेनरचौरासी मैभटकत फिरही॥२डुबध्या देजी
गदानी सोणी॥ त्यागे नहीं तुनरको प्राणी॥३डुबध्या बसेताकै
हमांही॥ तापापी कूगहलो ही॥४डुबध्या नरकाकूं लेजावै॥ जै
साकोण सोता छिडावै॥५डुबध्या तहां जमका हे डावु पकडे
जमदेवा तीपावदसुचि आचारके वहोतेरा॥जबलग डुब
ध्या तबलग जमहेरा॥७सा बिबेदकी आणि सुणावै डुबध
ध्यां बिनपतिनहीं पावै॥८पति बिन कोकहो आणि ह डासी
जबजमपकडै देगलिपासी॥९सोनवोटनहीं छूटैनाई डुब
ध्या मेटि मिजो रामराइ॥१०तीरथमूरतिजपतप औहार॥ तीन
गुणामे उलकेजगसारा॥११पोचततगुणतीनपसारा॥ सबकूं
घेरे सिरजनहारा॥१२जबलगपति नहीं परसै नारी॥ तबलगन्हि
रफलकन्याकवारी॥१३जनसेवाकहै एककत्यासत॥ डुबध्या
मेटिमिजो भगवंत॥१४॥४॥२०४॥राग॥१४॥राग गौड॥द
रसणदेव दिषाइलुम्हारो॥ तलफत हैपीवजीवहमारो॥ टेक॥
आवो देव दयाकरि मेरै पैवलिजाऊ वारनै तेरै॥१जैसे सीप स्वां
तिकी आसा औसे मोकूं तेरी प्यासा॥२जैसे चात्रिग धनकूं टेरै
औसे पीवकूं बिरहनि हेरै॥३जैसे जलबिन तलफत मीनां यूं
मनतुम मैलीनां॥४निसदिन तेरी प्यास गुसांई तनमनला
गा छूटै नाही॥५जनसेवो कहै जगजीवनस्वामी दरसण द्यो अं
तरजामी॥६॥१॥निरमलनांवजपौमनमेरा जमजालिम
फिरसकै नतेरा॥ टेक॥ निरमलनांइ तरैसब साध निरमल
नांइ मलेहै अगाध॥१निरमलनांवनिरतरिलीजै निरनेह
रज्जुगजुगिजीजै॥२निरमलनांवनिरतरिगाया तेजूनीज
नम्यबहो डिनहीं आया॥३निरमलहोइनिरमलजपि
व जनसेवादासताकी बलिजांव॥४॥२॥निरमलनांवनिरत
रिगावै तेजनजनमबहोडि नहीं आवै टेक॥ निरमलनां
वनजाणैकोइ मलहीमलपीवैसबलोइ॥१कलिमलसब
टालैधोइ निरमलनांवपीवैजेकोइ॥२त्रिगुणजगमाया
बिसनार गुणांरहतकोई साधुसार॥३नांवनिरंजननिरमल
सार सुमिरिसुमरिजनउतरेपार॥४निरमलसाधनिरमलरा
म निरमलमांहि कीया बिसराम॥५निरमलनिराकारनिज
देव जनसेवादासनांजैअलपअभेव॥६॥३॥कोइमनतै नि

जमकै लो किनजे॥२॥ आनंद बरतग है उरि अंतरि आनंद उ
चित धरै जनसेवादास सहजि सुष बिलसै हरि नित आप
णौ काज करै॥३॥ हरि जिन हरि बिन चितन धरै सोई आप
णौ काज करै॥टेक॥ हरि रस पीवत मगन नये सकल अघ सब
दूरि गये॥१॥ जे जन के वल नाइ लगे जनम मरण दुष दूरि भगे
२ निरमल भक्ति तीन के आगे सो चित धरै आनंस वपागे
३ राम रस उपाउ कमोहि समावै वे कू अमुकति कूं ना हि
न भावै॥४॥ हरि गुण गाइ प्रेम जन लीनां हरि बिन सब अपदे
षे हीनां॥५॥ अगसि धिनो निधि तेपति सुष तुम बिन सब
जा पेदुषा॥६॥ इक टग लग पास सदा तस पीवै जनसेवा सो जन जु
गि जुगि जीवै॥७॥४॥२७७॥ राग॥२३॥ राग आसावरी॥ अ
वधू नावनि रतरि लीजै मन पवनो सथिरा चित अंतर मे उक
अनिनिति कीजै॥टेक॥ मूल चक्र बंध दे कीवाइ षटं कामे
ल्या वो जनम मिरहो निरंतर मिला अनहद बणि बजावो
१ ऐसे सै सहज कंई सकी माला हंस नला वो अनहद उप
जै आप तहं अस्थिंत आवो॥२॥ इडा पिंगुला सुषमनि केर
रि जतन जतन करि ल्यावो निरने घका निरंजन परसो वहे
डि न जनं नी आवो॥३॥ चित चौ वाले वरणो राये पांचू उलटि सम
वो जनसेवादास सुष कै सिंध पेसो जूं वहोडि निकसिन
हीं आवो॥४॥२१॥ दयालु म्हारी उक्रत दी जे रामरसो अण मार
मारि पीजे॥टेक॥ फिलि मिलि फिलि मिलि नूर गुसांई जोति
म्हारी दरसै मांही॥१॥ रहूं लग्यान म अपारा कहत न आवै व
रन पारा॥२॥ निस दिन बरसै अमीरस धारा पीवै कोई संत पिया
रा॥३॥ अजर अमर अबिनासी राया जनसेवादास जिनि मांहि
समाया॥४॥२॥ अवधू सहजि सहजि रस पीजे ताते अमर जु
गे जुगि जीजै॥टेक॥ हरि रस पीजै जुगि जुगि जीजै तन मन न्हक
रि लीजै साध अनेक नयमति वाला सो आतम निति कीजै
१ मूंधी बासा णंत धोकी जे सुषमन में हे कैल्याबो पवन पि
याला नीति त्रिरिपी वो निरभै नाद वजावो॥२॥ आधउरध मधि
चौक पुरावो पाचू उलटि समावो ऐसे सैसहजसीतरंधाणास
धेसे घि मिलावो॥३॥ गिगन गुफा मे आसण मांडो धूं रूं ई ध्यांन
लगावो काम क्रोध कुं करो वलीता जू सहजि परमपद
पावो॥४॥ जोगी जाणि पानी उमनागपा ———— निरंतरिली
या सेवाजन मति वाला सूवा —

यारे॥२॥रामरतनधनदीयारे गुरुआपसरीषकीयारे॥जनसेवा
क्रसम्रुषपायारे मेरैसतगुरिसाचवतायारे॥३॥६॥धनिवैसत
निरंजनध्यावैते ऋनासेकटिबहौ छिनआवैटेक हरषसेम
रकंवनहाआणीमांनिअमांनिबराबरिजांणै॥१॥मैमुषदीर
देसपिनाई परउपाधितहांनिकटिनजाई॥२॥सुमंत्राकेज
समांनतनबेताआलमगलतान॥३॥लोहाकंचनगंकेसमिन्य
गुराणपतालिनिलैतेन्रयाई॥जनसेवादासरैसाजनकोइ
आत्मरतकैरहैलसोइ॥४॥१०॥पायारेगुरिपायारेसांतसुष
रसपायारे टेक रामरतनधनदीयारे गुरिपलटिआपसमिके
यारे॥१॥सतगुरसरोदागरे आईरांमअमीरसमीगरे॥२॥सतगु
रनाडोजाइरे बेदनिसारीषोईरे॥३॥दरद्रारिनजायारे गुरिपै
लेयारिलघायारे॥४॥पववाहरिनमूंनांहीरे गुरिनेनउघा
डे मांहीरे॥५॥जपतपतीरथपोघारे येकनांवबिनांसबघो
यारे॥६॥सकलसिरोमणिसारारे जिकेवलनांवअधाररे
॥७॥जनसेवानिततनीकारे सकलधरमसिरिटीकारे॥८॥११॥
कोइरेमलिमालिनरूपैयारी तनजिलेकेवलसारंगधा
री॥टेक॥बाहरिधोयाक्याहोईरे तेरैअंतरिलागीकाईरे॥१॥
बंताकेमलधोईरे जसहजमप्रकासैसाईरे॥२॥पांचूंउलटि
समाईरे तैरैदागनलागैकोईरे॥३॥सबदगुरकासांवूरे तेरै
माइनणेपोहैकाबूरे॥४॥नोवनिरमलापांणीरे तबनिरमल
बसतपिछांणीरे॥५॥जनसेवादासततपायारे सुषसागर
नाहिसमायारे॥६॥१२॥साधोपहलिबधाअआयारे बिरह
ामनिनायारे टेक जतरजतपेआकारारे नबजलबरषे
होधारारे॥१॥मनकैमंगलछवारे सुषबिलसैनहीजवारे
जहांबाजैतरनगारारे तहांकालरिबिणिकणकारारे
बाजांबिणिबहै बिधिबाजारे तहांघोरिरह्योघनगाजा॥
॥जहांअमअघडीतधारारे तहांकाईपीवैसंतपियारारे
जनसेवाकोइरसपीवैरे सोईअमरजुगेजुगिजीवैरे॥६॥१॥
संतोवासुषसबतैन्यारारे कोईजाणैसंतपियारारे टेक॥
हांझिलिमिलिझिलिमिलिनूरारे तहांबाजेअनहदतरारे
जहांबिनकरतालबजावैरे जहांबिनरसनागुणगावैरे॥१॥
हांगिगनमंडलकेबाजेरे तहांसुधरमधुरधुनिबाजेरे॥२॥
पीतहिन्हावैरे सोसुषहमैसुषपावैरे॥३॥जनसेवाबाल
नूरारे कोइदेषैसाधूसूरारे॥५॥१४॥पायारेमेपायारेसत

सोवतसोवतसरबसषोवै टे॥ सतांसतांआवे
तोराणिबीद॥ सतांततांहोइअकाजदे
जागिसुभि

॥५॥ ॥मनबालकपणपानगहिमूला कालकामुखमेसकल

रिकालचुणिषाधा॥

मजनमनलासेवारा टेक॥ साधसंगतिकरिहरिगुणगाररते
रेकालघडोसिरिऊपरिआ॥१॥ ऐसीसैजनलानेफेरि देवनी
रेजनअंतरिहेरि॥ तनमनपकनासाभिकरि॥२॥ रामअमी
समतिनिरिचावि॥३॥ सतगुरसबदकहेसुणितो॥ द्विपीछैदोस
नहीहेमोहि॥ सुरतिरुतमेमनकूपोइ॥ कलिमलसकअंतर
केधोइ॥४॥ जनसेवादासइहनिर्मलजोग॥ जनममरणकाक
टेरोग॥६॥५॥ ऐसाजापजपोमनमाही॥ उरानव्यापेकालनषा
ही॥ टेक॥ निगमसुर्तामेआसणकरो॥ तनमनपवनांद्रिढकरि
धरो॥१॥ अरधउरधमधिचोकपुराइ॥ सासउसासेज्ञानपागाइ॥
२॥ विवेणीतटिधरोधियान॥ अहनिसपोजोपदनिर्वान॥३॥ ज
नसेवादासयासतगुरसीष॥ रामनामतजिसैनबीस॥४॥७॥
मजिमननिराकारनिजदेव॥ अबिनासीहरिअलषअभेव टे॥
जनममरणजाकैनहीहेह॥ बरणनवपतूपनरेखरेह॥१॥ सक
लसाकलनिरंजनराइ॥ ऐसाहैवोअकगतिराइ॥२॥ वनितासु
तनहीमाछनबापसबघटमोहिनिरंजनआप॥३॥ अबलअ
घटअविनासीदेव॥ सुरनरमुनिजनलहैंनभेव॥४॥ उतहत
निरगुणरमराइ॥ जनसेवादासताकागुणगाइ॥५॥७॥ सत
गुरमैवलिहारीतेरै॥ मनमेमेतनहीविसमैरै॥ टेक॥ मनसैतं
नकरैसैतांन॥ तुमतेहैकछूतांनबांन॥१॥ तुमसबजाणोम
नकीबात॥ तुमतेकहाडुराऊनाथ॥२॥ तुमजाणराअंतरवि
जाणो॥ मेरीतोमनाबिपैलगांरौ॥३॥ हरिरसमनबोपीवेनाहि॥
विषैमगनवासिविषवनमाहि॥४॥ मोबडादामनदाहूदिसफि
रैकहूजतनउलटोनहीफिरै॥५॥ जनसेवादासवरणोकाचेस
मनकूराषोसाईंवमेरा॥६॥८॥ सतगुरमेरापूरारे जाकेवा
मैमनहूदतराटेक॥

विषतागीरे।१।पी अम्रत बिषत जिन त्यागारे। जन सेवा कारि गत
सारे।२।२०। धनि वैसे संत हरि ना गीरे। ज्यां सुरति सहज जिघरि
आणी रे। टेक। त्रिबेणी तीर जिन्हूं पाया रे। ते बहोडि न जूनी आया
रे।१। ज्यां बेद सहर समि काया रे। पीरां मर सां इणजी या रे।२। जन
सेवा दास ते जोगी रे। हरि अम्रत रस के भोगी रे।३।२१। का रे म
न तूं राम बिसारे। राम बिसारि जनम क्यूं हारे। टेक। ऐसो जन
म न बारंबार। तातै न जीये सिरजनहार।१। चौरासी सिरपा
ये मोड। दूर पेल गावे काची गोड।२। साध बेद कहै समझाइ
तं हरि विन दूजी गोड न लाइ।३। नर तन जनम यूंही मति ह
रि नाव सुमरि के तें भये पारि।४। जन सेवा दस तग गुरकी यासी
प्र हरि नाव बिना कडं मरी नवी प।५।२२। ऐसी मन के आवे
रे तो चौरासी न हीं जावे रे। टेक। म्यां निरम्रत का रिजा णे रे मां
न हरि देन हीं आणे रे।१। मां निरामा निसकल ग पाधारे। मां
नित जा तिन गा मंदला धारे।२। सम मिलो हाकू कन जाणे रे हरष
सोग न ही आणे रे।३। बंदत हरष न आवै रे नींदत ना कुम्हलावे रे
।४। अंतर के पट पूले रे। जन सेवा सुख मे झूले रे।५।२३। ऐसे
मन गाहि मांई रे हरि तजि आन न ध्यांई रे। टेक। मान बडाई तज
ग मांही रे। वो ई हरि कूं जाणे नाही रे।१। कोई हरि कूं जाणे दा
सारे। सो हरि रत आन उदासा रे।२। ज्यां कूं प्रेम वसुह वे रे हरि
जन कूं सच पावे रे।३। जन सेवा दास जग वीजे रे हरि मजि लाह
लीजे रे।४।२४। ऐसी जन कोई धारे रे तो आपण पे तारे रे। टेक
लोभ अगनि जालि न्हवारे। त्या गि देह जन क्रवारे।१। मनि बि
ष्या संघा धारे मो हि पड्या सब दा धारे।२। लोभ म्या र सैं मूवारे या
समि आसन कूवारे।३। कनक कामणी बेडी रे ये आरे नासीन
डी रे।४। जन सेवा सो जन जाण्यां रे नो ह निरंजन ला प्यां रे।५।२
५। जातत जीव दे ह अध्यासी ना रत जा तिका रम वा पासी
टेक। ये कं अपंड न जे उर मांही छत वता चित वानि सबै मिटा ह
१। गहि गुरग्यान ध्यान धरि मांई तब देही का उपास हूं जि मिट
है।२। नाहूं तम्हे सब नासे नाई सुप पाति मैं सब जाइ बिलाई।
३। सुपा सिंध पे सिंदे हगुण भूले जन सेवा दास त आतम फूले
।४।२६। पांडे पाौ कूट कथे गियान। जब लग बिषे न त्या गे स्वा
न। टेक। ये का गरकरि सुरति समेटे तब आतम राम सहज ही मे
टे।१। आतम राम सूं चित न लागा। बांणी बिलब के सूकाग।२
बेद पढ्यो पणि भेद न पायो। स गो सी स परि बोझ च ढायो।३। प

मुरुदेवबतायोटेक॥घटिघटिअलषअनेवारेकोईऔरनदूजै।
क्यारे॥जैसैंयहोपमेवासारेयूंसबघटिरोमप्रकासारे॥२॥जै
सैंदूधमेघृतारेयूंसवघटिरोमरमेतारे॥३॥जैसैंतिलमेतेलारे
यूंसबघटिसाहिबषेलारे॥४॥जलथलसकलपसारारेहैएको
रामपियारारे॥५॥ज्यूंकनकचनमांहीरेयूंसबैरामनरनांहीरे॥६॥
वोहलकानारिनांहीरे॥वोतेजपुंजसबमांहीरे॥७॥जनसेवा
यूंहरिजाण्यारे॥सबघटिअलषपिछांण्यारे॥८॥११॥हैकोई
ई बिरलाजोगीरे॥हरिअमृतरसकाभोगीरे॥टेक॥वांकनककां
मणीत्यागीरे॥तबसुरतिनिरंजनलागीरे॥१॥वैसुषदाईसति
सीलारे वैहरिजनरामरंगीलारे॥२॥वैनिरमलहरिगुणगावैरे
वैअबिनासीकूंपावैरे॥३॥वैबाहितमोजलमांहीरे॥वैपारिक
रैंहरितांईरे॥४॥जनसेवाजगतैन्यारारे॥वैहरिरसकामतिवार
रे॥५॥१२॥सतगुरमैंवलिहारीतोहि॥वांहपकडिगहिराषोमोहि॥
टेक॥मनमैंमेतनआवैहाथि॥समरथसांईराषोनाथि॥१॥षोमे
नकालाविसहरऱूपा॥कनककांमणीध्यावैकूपा॥२॥यामन
आगैबलनहींकोइ॥सुरनरगणगंध्रपसबरोइ॥३॥मैंकरजो
डिबीनऊंतोहि॥साहिबसरणैराषोमोहि॥४॥सुणोगुसांईमेर
रेतातमैंकाहेकहूं सुणेकरणबात॥५॥मैंनिर्गुनीनिकलब
लनोंहि॥सेवादासजनतेरीबांह॥६॥१३॥सतिकासबदसुण
नरलोइ॥बिणिहरिभजनिमुकतिनहीहोइ॥टेक॥निरफलके
मनितपजोदोष॥रुगरामुणियावैसंतोष॥स्मारिषपषनजा।
रोमेवआदिपुरसनारा॥१॥पादेवास्पूजैसिलाअरपातीतोडे
हरिसंपीभिआंनसंजोडे॥२॥सरजीवतोडेसमफैनांहि॥सोकुं
मलावैपत्थरमांहि॥३॥पाहणफूटोसिरविनजाइ॥सबहीसा
धकहैंसमकाइ॥४॥तनदेवलमैंआतमदेवा॥सबहीसाधकहै
सतिसेवा॥५॥सालकल्यांमनिरोसनधरीयै॥जनसेवाहरिभजि
तरतिरीयै॥७॥१४॥नेरैरेहरिनेरैरे॥हरिसंतनकैनेरैरे॥टेक॥
साधसंगतिनहींजावैरे॥नरनरमित्रामितनभवैरे॥१॥फिरि
फिरितीरथन्हावैरे॥वोरमतारामनपावैरे॥२॥पोहणपोणीष्य
वैरे॥यूंयांबातांसचपावैरे॥३॥अंतरिदिलिन्हावैरे॥तातेफि
रिफिरिबाजीजावैरे॥४॥मिलिसतगुरसाचबतावैरे॥जनसेवा
॥५॥१५॥धनिवैसंतबिनानीरेज्योनिरमल

सी॥बिनहरिजनकहैकूपाती॥२॥मैतैआपागरबानेवारै
हिरदैयेकनिरंजनधारै॥ मैमेरीसबहीकूमोरै॥हरिजिस
धूमिपाउधारै॥३॥हरिजीतिसांसासबषोवै॥जनसेवाहरि
भजिनिरभैहोवै॥५॥२२॥२७॥रागगौंडसेपूरबी॥ताल॥१४
रामसागर॥मनकरिसंगतिजनसाधकी॥निहकपटीनिर
दोषनामरतालसीहैबातअगाधकी॥टेक॥आपोनतापी
हिरदैपीछै॥सबबातेंकहैतउताकी॥ताकोसंगकरैमतक
युकूपाकेवारदहलेगेमारकी॥१॥आपोसाबपिटिकसैपीच
महमांकातबणावकी॥जनसेवादासतोजनकेउरिमई
नारसीनावकी॥२॥१३॥ताकीसंगतिदेवैरामजी॥निहपरपंच
निरंजनतंरत॥निरलोभीनिहकामजी॥टेक॥सीलसंतोषसदा
धूलधासरपांच्यानध्यानसुजाणजी॥नासंगतिजरिहोइउ
जाला॥पांचूंपरकासैप्राणजी॥१॥काहरमेहिकरैतरापण॥दे
हुअपनेसुषदानजी॥जनसेवादासवेसतमिलैतबमोनमि
लैभगवानजी॥२॥१४॥माईहरिरसनाहरिरसपीजीयै॥मनिषादे
हसौजनललायी॥सोहरिजिसाफलकीजीयै॥टेक॥साधसं
गतिमिलिहरिगुणउचरो॥तनमनहरिकूंदीजीयै॥तजिभ्र
मसब्रह्मजोअबिनासी॥तनधरिलाहालजीयै॥१॥तीरथब
रतदानजपपूजा॥सबहरिबिनतुषकतकीजीयै॥मनपव
नासमिरासुरतिकूं॥नांवनिरतरिलीजीयै॥२॥कोटिगरथ
कोअरथइतोरी॥हरिबिनप्राननधीजीयै॥सेवादासजन
हरिकहतहूं॥चरणावलाचितदीजीयै॥३॥१५॥सुम्होहमसे
सोविकदतुम्हारा॥अधमउधारणदीनदयाकुरियबलि
छिनजानबधार॥टेक॥मैमंदबुधिहीणचतुरतानांही॥गणा
नगुणकोईनांही॥मैकांमीकुटलिनटलीसनिबुधी॥वडे
पतिततिनमांही॥१॥नामेरैत्याणजोगनीनांही॥नामेरैबुक
तबैराग॥मैनांवतुम्हारोजांणूंनांहीनाकछुमेरैभाग॥२॥मै
तोपतितपतिततेनीचो॥मेरैपापनआवतवारा॥पूगणांच्या
वकहूनहीआवै॥मैजनमजनमकोचेरा॥३॥मैअभिमानहु
कोमदिमातो॥लालचलोभनहुटै॥तुम्हकूदोसकिसोजग
जीवनपूंजमजालिमकहोकूटै॥४॥तुमतारणतिरणसकल
गुणग्रामी॥मैघालिआयाचेरा॥सरणिगह्यांकीलाजगुसांई
हरिकूपरकीजैमेरा॥५॥तुमगुणनिछिगनांसदाहीमैजन
महारोदास॥जनसेवादासचरणांकाचेरा॥मेरीमेटोजमकीत्रा

करण॥अरथकौनीक॥प्रेमनगतिबिनसघरीफीक
नाबलेतअघसबहीकापै सोलह॥डिऔरक्यापै॥ज्ञान
वोकहैसुतिरीसबकौजै॥निरतेनांवनिरतरिलीजे॥६॥२७॥
सतगुरकाजसंवारेसोई॥गुरुआपपाभेजनांसिषहोई॥टेक॥गुरके
सबदसिरमकालनास॥अंतमांहीहैजमत्रास॥गुरकेसब
केवलनांइनिरतरिलाग॥गुरकेसब
दियकआराधे॥पांचूपिसण॥येकमनसाधे॥गुरकेसबदि
चलैसिषसोई॥कालजालतहिलगैनकोई॥गुरकेसबदि
चलैसिषतरा॥सकलअघसहजैदेहूरा॥अगसिषिनोनि
धिकेकहावैरी॥गुरकीसीपलइजिनिहारी॥गुरकासबदगो
जनसेवादासजेअंतीआवै॥ ॥ थनिगुर
परसिपरमपदपाया॥अहोडिनकपैकालनआया॥टेक॥दर
सुखनया॥नरकअंधारासबमिटिगया॥नैं
कायपरसकीयेसबहूवि॥रामबतायामकनरपूरि॥सबदसु
णतसतगुरकामग॥रामहिरदामैतबहूदीग॥सतगुरस
ह्या॥आलयअंतरमैतबहीलह्या॥जनसेव
नगुरतबमिल्या॥पारपील्यूं येकरूहइमिल्या॥५॥२७॥
मनहीसलेफेरि॥गुरकासबदमाहिघेरि॥टेक॥मनमै
लोउजलतबहोइ॥निजमनसूलागैसोई॥बाहरिमन
कूजाणनदीजे॥अनमनिलणाहरिरसपीजे॥मनहीउपजै
बिषैबिकार॥ऐसबधावैसाधूसार॥जनसेवादासमनहू
॥१॥२८॥यामनकौतेजोन
नदेस॥केवलनांवनिरंतरलिह॥टेक॥यामनकातजिबिषैबि
कार॥अंतरिनिरषौसिरजनहार॥कामक्रोधअहंकारलोभतज्या
रितबहरिदरसैदेवमुरारि॥मनानिरमलहोइमुकरसमांन
तबहीदरसैपरमनिधांन॥जनसेवादासमनउजलहोइ
तबमनकैब्रांतिरहैनहीकोई॥४॥२९॥मनकूफेरिआपमतहु
लाइ॥ज्यूंसुषमैयोमनरहैसमाइ॥टेक॥मनमैलौमनहीसूंधो
इ॥ज्यूंमनकेदागनलागैकोइ॥अनमनिलागानृमलथावै
हमाहीमनकूंपावै॥मनहीमाहीउपजैलाइ॥गुर
केसबदिसकलचुणिषाइ॥मनजयानिरमलदरस्यादेवजु
नसेवादासनजिआलयअनेव॥४॥३०॥बकिबकिमलमग
वैयूंहीरामकह्यांबिनसुषनहीकहूंहीं॥टेक॥बादाविवादाबुधि
बलबीजे॥अनमनिलागाहरिरसपीजे॥बातोबादसबैहै

हि॰ जे जन जाकौ ध्यान धरतै है ते पावैदादा तजनसेवा
दासकरजोडि कहत तको है निरगुण अवतार ४ एक
बीज सों तें पाइया हो यह हो जहां जाति बरण कुल नांहि
टेक आवगति से चलि आइया हो परमन जाणो कोइ स्या
ति करण कू प्रगटे हो राम कबीर नहां दोस १ जे न जन्म
नहीं है जाके गरभ कसी टान रहि निराकार अविनासी हो
प्रगट भये कलि मांहि २ जावे हाड न मांस लुवान हों नाडी
तेज पुंज परकास अरु रा काल जाये नहीं निरखे जन गावत
सेवादास ३ ॥ २ ॥ मोहि परम सनेही विन न मिले हो अहे मे
जीव कारो प्राण अधार टेक सेवा विरह धनकू नित तरसे
तालावेली जीव व्यापे जाणक दिल आवै है हो परम सनेही हे
पीव १ क बनि रहू नैनां भरि माधो जीव धरत नहीं धीर वे
ते पानी मीन तन तलफे सो गति अरह्ही मरीर २ के हो जो
रूपा कृत दिलै सो ते करत विदाइ विरह जलावै रे
ण दिन हो धीर जिधरी होन जाइ ३ प्राण नाथ पति परम स
नेही कहा रहे बिलमाइ जन सेवा दास विरहणि नि
त तरसे दरसण देव दिखाइ ४ ॥ ३ ॥ ऐसे फाणिर मैं रंग रा
तीया हो सो जस राम सत गुर दे परसादि टेक मन मक्का देव
मो सिमज दरोगे दम एरी ले है गोरख पानसोई घट मांही
जगाति जल धरीये है जिन रब में कसोई घाट सब के जन
कजाणि बोई स जे हरीक अआ दिन ये चिंता तिनको सुमरि
सुमरि जगदीस २ रहा ते सारंग है तहां पावंत जरणा सोजे देव
ध्यान सोई धूनि है चल निलो लखमण लछण भूलेव सो
सुरति साधि हरि अतरि सील सोई सुपदेव सो नये तो पहारि
का रहे दरा लागे अलख को हो सेवा घट ला वखन बिचार कनि
तिसन का दिक सोई खा ति दत दया सोइ दिल मांही मिरग
रमन ही हो ग्रां तीय ने जोगी नोह रजु गति गाहि जतन केजन
नारा धनो धीर ज धारि ध्यान धरि वागे हो अनहद तर धनां मां
निअस्ये है हरि जिनि कबीर कसोटी पहि भजन प्रताप राम वूले
निरमोर ह्यो जगनि के हो मांहि नारद नहरी मसरू ताके मिल्या
मनाथ एाखा कमी पे पण नहीं बाडी यै हो औसर न लोहे डा व प
हलाद प्रमसिध फूली यहो तहां न मलहा वे मन भरमी रुप
ले प्रेम का हो पीवे हो हरिके हम जन ॥ ९
हि पाचू की या जीव सीव तरू मेल ॥ ५

सी॥बिनहरिजनकटैकपासा॥२॥ मैतैआपागरबानपार
हिंदेयेकनिरंजनधारे॥ मैमेरासक्तीकूमोरे॥ हरिजिसा
मुक्ताणउधारे॥ हरिजितिसांसासबषावै॥ जनसेवाहरि
भजिभिलैदेवै॥५॥२३॥२०॥रागगोंड सपू...॥२४
...॥२३॥ मनकरिसंगतिजनसाधको॥ निहकपटीनिर
दोषनांमरते॥लखी हैबातऊगाधको॥टेक॥ आगेनतापी
भिकहैपीछे॥ सबबातकैहतउतारको॥ ताकोसंगकरैमतकू
बकू॥ वाकैवारदकलेमारदी॥१॥ आगेसांवपीछिकैसीब
मदमांकातबणावकी॥ जनसेवादासतजनकेउरिमई
आसीनावकी॥२॥ तावा॥संगतिदेवैरामजी॥ निहपरयेब
निरजनतंरत निरलोभी॥ निहकांमजी॥ सीलसंतोषसदा
हृतधारयां॥ ग्यानध्यानसुजांणजी॥ नासंगतिजरिहोइउ
जासा॥ मोसंप्रकासोभांणजी॥१॥ काहमेहिकरैतरायण दे
हृजाने सुषदानजी॥ जनसेवादासवेसंतमिलैतबमानमि
लेभगवानजी॥२॥२॥ ज्याईरसनाहरिरसपीजीयै॥टेक॥ सापस
हसौं जनललाधी॥ सोहरिजजिसाफलकीजीयै॥ तजिम्र
गातिमिलिहरिगुणउचरो॥ तनमनहरिकूंदीजीयै॥१॥ तीरथब
त्रिमनिभजोसबिजासा॥ तनधरिलाहालीजीयै॥ मनपर
रतदानजपपूजा॥ सबहरिबिनतुछकलकीजीयै॥२॥ को...
नास मिराबिसुरतिकूं॥ नांवनिरतरिलीजीयै॥ से...
कोअरधइतोरी॥ हरिबिनप्रानजधीजीयै॥
हरिफलतकू चरणावलाचितदीजीयै॥
सो बिकदामता॥ अधमउधारण...
बिनानजहार॥टेक॥ मेमदब...
नगुणकाईनांहि॥ मेकां...
पतिततिनमेंहि॥१॥ नां...
तबैरगा॥ मैनांवतुम्हार...
तौपतिततयांतितेनीवो॥ मेर...
बकजनहीआसे॥ मेजनमगम...
कूंमदिमालो॥ लालचलोलनहूं...
सीबजसूंनमजालिमकहूं॥ कूंडै॥३॥ टेम...
गुणग्रामी॥ मेघहिनायावेरा॥ सरणागहीयांक...
हरिकूपरकीजेमेरा॥ तुमगुणनिधिगनीरस
मेरोदास॥ जनसेवादासचरणांकाचेरा॥ मेरीमेट...

लालउ।३।२। ऐसो षेलमच्यो अतिनारी। नहां मनल्यो लुनाइ
वाघटपियालाप्रेमकाहो। निसदिनपीवतजा।३।३। चयजीप्रीति
परमसुषपाया। नरभ्रम्यामेहरि सेवाजन आनदमयाहो। रामं
सकलमरपूरि। ध्यपीकछालमयंतरि आईयेहो। अरुामेहां
नरजामीहोदेव।टेक। विरहाविजोगिमे फिरूहै। दरदाद्वाने
राइ। दरदनमधेतुमछिनोहो। तुमकवरमिलोगहाइ आश। निस
दिनजोऊवाटडीहो। तनमनसुरतिसमाइ। यारतिवंतीसुंदरीहे
बिनदरसनजीवजाइ। तुमबिनमेसाईयाहो। हुजा कूनसु
हाइ। जनसेवादासहरि आईयेहो। मेरेपरमसनेहीहाराश।१
गोरषनाथगाईयेहो। अहेजाकोसुनिसिपरमेवास।टेक।
गुणगतजोरषनाथजीहो। तेजपुंजपरकास। सुमिरणकरत
भरमसबभागेहो।२। तिमरको होनास। अविनासीविनलेनहै
हो। गोरषअलषअनेवजाकी गतिकोईनालषैहो। ष्ामल
अनूनहोदेव। रूपांनप्रकासकरेजाघटमे तापरिमहीकरेहू
मरघअवीरडा। एताऊपरि चेतनहीकरिलेहु। रूपांनध्यानके
लमहादाता दयालुमुरारी। जनसेवादासकरिजोडिकहा
हे पेमपियालादेहु।४।१४। हरिसुषसागरझूलीयेहो। अहो
जहांमलनहीलागेकोइ।टेक। निरमलहोइमिलेवासपकू। वदे
हिजधरीयेकोइ। संजमसमतातासहिसनहो। पंकनलागैहूम
कू। सुरगाहि रूपानअम्रतहोगमकरिलीजैतताविचारि। जन
सेवामनतहांलाईयेहो। आसणअचलमुरारि।२।१२। ऐसेनू
रनिरंतरदेषीयेहो। अरुजाकोवारनहीहैपार।टेक। नूनअ
मापकयेकअघडितनूरनिरंतरआप। झिलिमिलिझि
लिमिलिजोतिजिगमिगे। मुनिनहीतहांपाप। सहजिसदा
परकासपरमसुष परमातिनहीकोइ। जनसेवातिहूसुष
लपैहो। जातिवरणकुलपाइ।२।१३। चलिचलिमेरामन
तहांजाईयेहो। अहोतहांनमरणइपनोहू।टेक। विनचरन
तहांचालिबोहे। बिनश्रवणसुणीयेहू। बिनरसनांतहांगाई
येहो। फूलेहोबिनहीहोदेह। बिनकरवेतिवजाईयेहो। वि
नचरणनिरतिहोइ। तहांतरसाषिडतवाजिहेहो। वोसुष
लषेजनकोइ। जहांबिनदीपगादहदिलउजियाला। परमजो
तिपरकासतिरिसुषमाहीषेलीयेहो। गावतजनसेवादास
।३।१४। चलिचलिमेरामनवहिदेसडेहो। अहोजहांजाति

२६२

सूनिसि परमै हो घेला ॥२७॥ नायो आयो हरिकी यौ अहि गोपी चंद
हुरुजोति चिरपट चिर सुख रूप्प मगन भयो पारब्रह्म सरूपी ति
दादू दर दमिलन तरे अंतरि परम सनेही पीव तरसी ललति
रणजो सागर थारि करता होजी ॥२८॥ जहां घो सनै रसिहर
जहीं असि हरि तन्हो बसे जाइ सत जन सेवादास तहां घली यहां
जुगि जुगि मासबसत ॥२९॥ ध ओसै हिलि मिलि हरि सिणि
[illegible] आतम आनंद नरमा हि टेक रूप न रेख बरान
हुआ [illegible] अबरन [illegible] जाति राशि रामि राम हरि ख्या पियहां अ
लख निरंजन राइ [illegible] होय सूर लिलित रूप्या अमरहां म
हका [illegible] तरि मिल घटा अंक नंदना वितल पटाइ ॥१॥ पर
आनंद परम सुख दाता भौबन गति का भेव जन सेवा दास रमता
सब मांही [illegible] नाथ निदेवा ॥२॥ पा [illegible] तारि खेलांहो
सब लोक [illegible] सजलन डाव अति मन गोहि घट न सूरति [illegible] हिपाव
हां हो यो अोसलल डाव [illegible] ध्यान गुला
[illegible] चिर मेब संत ॥ मै धो साच मरग जो आरति [illegible]
[illegible] तागा गजन मन गाहि बागंब न्यो अरति जहां नेयर कर तगु
जार तर हूं आतम आनंद सुख हिलली ये हो परम पुरष नरतार
[illegible] बनंद न करणा कारि कसरि नाब न्माति लोला जन स
[illegible] आनंद रिझरि ता सुपिर हूं समाइ ॥३॥ हूं दरस ए मो
[illegible] हदी जायेहो अरु हो मेर आरव सनेही हो नाथ टेक ये दिन बीते
[illegible] सो ईस्यो अजली कानी रामे न तन फूलन कारये हो नं
[illegible] जानै हो पीर ॥१॥ निसदिन पंथ अजि हो तेरो नैन नीकरल
[illegible] परम सनेही पीव ॥२॥ [illegible] नर हो हो नन जाइ ॥ अदरिम
[illegible] आलसनेही पेम पियाला पाइ जनसेवा दास विरहनि नि
हि हे रामि हूं लिमि लिदर लदिवाइ ॥३॥७॥ राम ईयो अतरिम र
[illegible] हो हो सब थारि करत प्रकास [illegible] मनंद
[illegible] बनि बित नचत रा मिरा मिर मिर [illegible] मईया ता हि
[illegible] सूपूरि बनोहीं लला ॥१॥ आ सर जल सम्मालि सनेही का हिसम
[illegible] तो हि सब बेबिमत्री मिलबोना हो दासनहीं है मे हि
[illegible] ला लक सारिका कि रता फागि रमो इहूं नाहि जनस
[illegible] सयोजन मन सुफल तहां नहो हि नमो जल लिया इ ॥२॥८॥
[illegible] बस सिगार घेली ये हो सखीरी बहो हि नआवण हो इ
[illegible] नपल नां सामरा धीय हो मन हव्वे [illegible] जाइ गगन मन
[illegible] बी ये हो सकल करम अति जाइ ॥१॥ पांच सखी मिलि आप
[illegible] तजि लगी आइ आप आप में पल मयो हो ध्यान गु

१॥गजमेजनाफिरिलेहधूरि॥विषैमगनमनरतहो॥अरतनगन
प्रथूचलेहैं पो॥२॥सतगुरुकूकहू नो हिलाजपछ्या॥अरधि
करैअकाज॥जनसेवादासकछुकहीनजाइ॥बेवनवारेमन
फूरिप्रि॥३॥ग॥सषीहोमगहमारे धूर॥पेलूसरसबसंत
पीवसंगि॥बा॥नेअनहदतूरा॥टेक॥इलापिंगलासमिकरि
यूमधिसषमनोओपी॥पांचसषीमिलिषेलणलागी॥नेघ
रिभरेंनपाणी॥घरिघरिआनंदहोतपरमसुषसुनिमंडलमै
आजे॥परमातमसंआतमसेला॥बेणिमधरधुनिबाजे॥२॥मननि
हचलनिरमैसुषलाधा॥परमसुषमनपाया॥जनसेवादासअ
नंदसुषविलसैसतगुरअलषलषाया॥३॥७॥मनतजिआ
लसगोबिंदगाइ॥अबकेडावबन्योहैआइ॥टेक॥लषचोरासी
जातिजीवनामैंफिरतनसूधिपीव॥तनमनसोंजसेवा
के हितनाहिसुमरिमैममतगोहि॥मैमेरीमैजगबंधानकोईये
कानिकसैसतस्रुजोन॥आपापरजिहिहरिदीन्हा॥परमततमेंते
हलीन॥२॥मनथिरयंत्रीसमिकीना॥हरषसेआनुपस्समलीन॥
सोईसतसिरोमनिसबकासार॥जनसेवातनमनतजेबिकार॥
॥३॥८॥जनफकीरमेनिजमवानिआइ॥अहानिसिहरिसपी
वतजाइ॥टेक॥गंगजमनमधिपैसिन्हाइ॥पांचसषीसेगिलेह
लाइ॥नेवगफजनकोरैहैबासजहांकालजालमैनाक्रिास
॥१॥अरधउरधमधिचोकपुराइ॥जहांबिराजेरामराइ॥नहांबा
रामासबसंतहो॥छतिहिसप्रपेलैसाधको॥२॥मनपवनोस
मिसुरतिओ॥णि॥नदीनिवासैउलटीतो॥णि॥जनस्वादासनिर
मलनिवास॥तहांकोईजोभीकरैहैबास॥३॥९॥मननिरक्ति
होइभजिदीनदयाल॥तेरेबांसैलागोफिरतकाल॥टेक॥तजिगज
लनीवपासिकाचिवांमक्रोधअरलोभदाहिभागदिग्रिमंद
पासंतोषसाचरायेमतितंत्रनातिकाच॥१॥जगतकाबनगिर
चिंताचिमायामोहविषैनाचेसंजमसीलगरिवावभातिक्र
लषअंतरमेनितिउचारि॥जोसागरजलगहरगोरिरतन्हि
भजिजगतसंभीतितोरि॥जनसेवादासततनिरषिमाहिआ
जलिमलिरमतिजोहि॥२॥१०॥सोईजोणिजमारहेउदासकून
कूकोमणीवारेनपास॥टेक॥पांचूथिरमनकरैनिरोधगंगजम
नमधिपीवसोध॥त्रिबेणीसंगिपैसिफकलितहांआलमवांकू

२

बैरदेनकाइअसोतमो॥ ॥रवधंदेह

बानैहोत्रन
स्वहोजहांस्मरतैंरोग्होंसंजहोउनत्यतिनासी बिलसैहरिकैदास
हदवार ॥२॥ परमजोतिपरकासपरमसुख अहांजनममरणनही त्रास ॥२॥
जनसेवादासतकोजाइये अहोसबमलमरिरस्योसेस
॥१५॥ जोमकबीजयुगिकुजनलाहो तुम्हारा मावेनांहिहूजी नरम
॥२॥ टेक ॥ येकगपासिकनांवकाहो हनांमानवोटसबपरहरीहो
मरीचकाहो जगतमुलांनांमांहिं ॥१॥ जगसंउलटाहो हरहेहो सुरतिसहजी
लीयाथेकपिहो ॥२॥ जामककबीरानोवसंहो पालिबंधपपत्यागिग
परिस्यालि ॥३॥ जगअधनदेयेनजागिनरहरका
नत्यागिनैनापूलागांनसीहो नरमानिवारिसा
ररततनसुधिबिसरेरामिरहेरमलामांहिं ॥४॥ १६ कबीरुलाहो
चयपरकास्या जनसेवाबलिबलिजांहिं ॥४॥ १६ ॥ टेक ॥ बालकरूपधरयो
गाइयेहो ॥ हांहीप्रगटयाकलिमांहि ॥ जगतिकरणकूंप्रगटेहो गर
जगजोसे ॥ कासीपुरीकेमांहि ॥ नगरनहीनाकी ॥१॥ उदवीरजन्म
नकसोटीनांहि ॥२॥ तोहीमांसलुचानहीनाकी ॥ रजबीरजकोनहीं
सतनजोणि ॥ सपनधानकापिंडनहीं ॥ परमजोतिपरकास
सोलि ॥ ३ ॥ अनंतीजनमकालनहीकाया ॥ परमजोतिपरकास ॥ ३ ॥ २७
सुमरिसुमरिजिनपरिहोतहै ॥ गावतजनसेवादास ॥ ३ ॥ ऐसैजोगी
रूपधा ॥ रागकाफी संपूरण ॥ राग ॥ २८ ॥ रागबसंत ॥ ऐसैजोगी
जागेरामसंगीबसौहि नराचे ॥ ग्रोनरगि टेक ॥ सतगुरसबदबी
चारकीन्हा हरिचरणकेवलमेंचितदीन्ह ॥ जोगमूलगहितजी
देडाल ॥ जाकेजराजनममनहीमरणकाल ॥१॥ जाकेमाइबापन
दीसकुलरांमासेतपीतनहीटके स्पोमा ॥ आदिपुरसअबगत
निराश ॥ जनसेवादासजहांसुरतिलाइ ॥ ३ ॥ ऐसैजोगीसतगुरसबदांमनलीन
कोमपोश ॥ पांमनांममेंसुरतिपाइ ॥ टेक ॥ जाकेरागदोषजनहीमोहद्रोह
कामकलपनानहैंहै बीन ॥ संजोगीजनसमचितवेअंतरि
हैनयेत्रकचीनांहिंछांह ॥ संजोगीजनसमचितवैअंतरि
गाहिरहेरामाबित ॥ ज्यांजोगमूलगहिलीयोबिचारि ॥ वेजन
॥२॥ वनजगमेंकालि ॥ जिनियोचूंबासिकीन ॥ परमततमैंतरई
लीनतनमोजंततलस्याहू ॥ हारिसबदजनमाहूदवमेंतर ॥२॥
माइ ॥ माइमनमयाहुहैलीन ॥ सुषसागरनहीतजतमीनारांम
रोमरसपीवतनीराजनसेवादाससकतातिगनीर ॥ ३ ॥ २९ ॥ साध
देषोकुकरमनकीबातहोहितपालेफिपात ॥ टेक ॥ देषादेषि
पक्षिसिषअंतरकीनहींतजनरषसाधमतोनकीआवैहो
॥२॥ क्रमिचलेसैंजगनसाथि ॥ सतगुरसीषनमांनेमू

रिनो वा बिना ही निरनै वोर ॥९॥
।मसु तेरा धि बेकना लिरमता मचा वि त्रिवेणी

रा की मां हि षां ति । आनंद सं दिसा सुं फेरि सो णि । जनसवादा
सये सहज गति जोग ॥ जोगी दिल से परम जोग ॥ १ ॥ धनगिन
ब गति नाथ निरंजन । सुष सागर दुष षंडन । टेक । निराकार
अषंड देव । सिव घिरं चित पहि लहै न भेव सकल बियापी राम
राइ । अलष पुर बगति लषी न जाइ ॥ सेस सहंस मुष रटत ना
मा पार न पावै परम धाम ॥ स बही घो जैं ड गम्ये का रि गुण रह
त है देव मुरारि ॥ स्मरन जी को लहै न भेव । अचिंत अजोनी पर
म देव । वरण वर्न हाता हि को ॥ ३ ॥ सुमरि सुमा जिन निरनै हारे
॥ देह गेह ना कै जन मन । हि ना हि सुमरि स बहु पग । सि जहं
काल जाल लहु नो हि को ॥ ४ ॥ संत रहेत तहां न्टर मैं होइ ॥ अरध उरध
माधि पवन रा खि राम अमीरस तहां पावि । मन पवन । सम सि
रति धरि परम जोति तहां निहारि । जहां पाप पुनि दुष सुष नां
हि संत रमैता सुषमो हि । अगम वोइ । आनंद होन । जहां मुधर
मधुर धुनि बजै बैन ॥ जहां ताल मृदंग धुनि संष होइ । जहां
बहो विधि बाजा धुरै है सोइ ॥ ति हि सु विषैले दा कि दास । तहां चो
वा चंदन पहो प बास ॥ ७ ॥ जहां धोम रैं पि नहीं चंद तत । तहां का
ल जाल नहीं करम पूरा । जनसेवादा सत्यो तहां नाम । जहां बसे
है संत जाइ ॥ ८ ॥ ॥ ५ ॥ अजिनाथ निरंजन देव मुरारी । मो सागर त रि
करे है पारि । टेक रूप न रेष न ता हू देव । सं तास बे रा ष देहै ठेय सत
हृ सुमरि गुर ध्यान धारि । संत अनेक नये हैं पारि । अरध उरध
माधि पवन राखि । सतगुर सबद कहै है सा वि त्रिवेणी नाठि धा
न धारि । जहां परम जोति प्रगटे मुरारि ॥ २ ॥ सदा बसंत सुष धां
म अैन । तहां संत सबै ही करै है चैन । जहां पाप पुनि परवेस नां
हि । सुमरि सुमरि संत तहां जाहि ॥ जहां रवि ससि नाही धोसरैं
णि । मुधा घोर तहां बजै है बैंणि ॥ जनसेवा सहजि तहां प्रकास
ति हि सु बिसंतां कीयो है बास ॥ ४ ॥ १६ । अलष पुर षपेले बसंत
अनंत को हि सं गिली यो संवा टेक जहां मही महल वारी क
या तहां बिरला पहुंचे नो हि । ओर जहां चंद सूर नहीं गम का
तहां सकल प्रकासी सहज नाम ॥ जहां पवन प्रवेस करि सकै
न को ॥ १ ॥ तहां विणदी गपरका सहै सो ॥ जहां बिन ही बाजा बजै
बाजा बाती नलो कते मि निजा ॥ २ ॥ जहां सिव घिरं चि हू ही बिस्न

नां वलै ह्वा ॥ २ ॥ एकता निरंतरि का आधारा ॥ तहां काया कूं समम
ल कै है अपारा ॥ जनसेवादास अरमे न फेरि ॥ तहां सकल सुमा
सिरि नांव है री ॥ ३ ॥ १८ ॥ सो सरबी तो देषि जाइ ॥ तजि आलस
तजि राम राइ ॥ टेक ॥ सूं अंत ली पिछिनो हिनी रायेतन में से
जानि वीरा ॥ सब लागि रहे सुत तात मात ॥ काल अचीतो कर
त घात ॥ १ ॥ अत्त पछावत फिर करत का ॥ मा ॥ गिन केवल जपै है
राम ॥ तू लै माया ममता ॥ भानि बात तन यह चीत लै हां ॥ २ ॥
सो जन बड़ो कीन्हो लाभ ये हा ॥ राम सुमरि करि सुफल देह ॥ जन
सेवादास तजि आन आस ॥ रामचरण मन करो है बास ॥ ३ ॥ ५
यो अंजो सरबी तो देषि जा ॥ गि ॥ जगि जाग्रत आगिला गिलागि ॥ टेक ॥ के
ते गा ल लषि पान कत जान ॥ राति दिवो स जीव करत घात कौण
नी दस ते अघाइ ॥ जागि परम सनेही राम राइ ॥ १ ॥ जग सुपना ।
लरत तहां न जाइ ॥ तुं राम सरोवर पैसि न्हाइ ॥ २ ॥ गहां कबीर
मे नांव ति को इ ॥ जनसेवादास रहे निरभै होइ ॥ ३ ॥ २० ॥ सोई जोगी
मेले सहज जाइ ॥ अवल पुरष से ताली लाइ ॥ टेक ॥ चंद सूर सम
मि सहज निकन्ह प्रति सुष मन तहां लीन ॥ पांच सभी तह
रमे है फाग ॥ गगन हो अषंड अनाहद होत राग ॥ १ ॥ आरध उरध
मधि कवल मूल ॥ जहां फूल जफूले अगन ब फूल ॥ गगन मनम
धि भयो है बाग ॥ जहां भवर गुंजारै मधुर राग ॥ २ ॥ मन पवन मिल
सुरति होइ ॥ तब आतम कवल प्रकासे सोइ ॥ जनसेवा से
कहां तहां जे आइ ॥ पेम पियाला पीवत जाइ ॥ ३ ॥ २१ ॥ सोई जोगी
जाके सील संतोष रा चेतन ताही ज्ञान का चाट ॥ टेक ॥ ग्यान मूल तिल गा
वे ज्ञान गि जोगी बाले नाही तीन सगि बोध्यो मिलि जोगी को ज्ञा
न व ॥ जहां पूरण मेटे परमानंद ॥ १ ॥ तीनां मे न गारहे तहां चीजो
गी तिल से परम साच ॥ जाके जनम मरण कोई दुष नाहि ॥ जन
सेवा तिहि सकल जिस तब सो हि ॥ ३ ॥ २२ ॥ सोई जोगी मन मे रहे सम
झाइ ॥ नवत चितवनि सब भामि टाइ ॥ टेक ॥ आरध उरध मधि पहो
पवास ॥ तहां मन भवरे कीया निवास ॥ आब ऊडि अनंत नहू
करत गौन ॥ मन जाइ बसे है परम भौन ॥ १ ॥ जहां बिन ना दल
हिर भा अपार ॥ दामणि चमकै ता मंझारि ॥ ति हि सुष षेलै
मन न वा मोरा ॥ जहां बेणि मधुर धुनि होत घोरा ॥ २ ॥ हरष सेगगत
भये है दोइ ॥ जन रहे सदा आनंदी होइ ॥ जनसेवा निरभै षेलै
सोत ॥ जुगि जुगि मास सदा बसे ॥ ३ ॥ २३ ॥ मन का है षोजे हूरि
नाहि नाम निना सिका मधि रहाइ ॥ टेक ॥ सुरति पाणी जहां जाइ
वहां वसै नांदी मात पाइ ॥ कि ॥

तिकलंमै सेवा।३॥ अचल अखिंड आवै नहीं जाई॥ बाहरि भीत
रि रह्यौ समाई॥४॥ जल मैं कुंभ कुंभ मैं पांणी॥ ऐसा व्यापक राम
सकल घटि जांणी॥५॥ अंतर मोहि अंतर की जांणैं॥ जन सेवादा
सतासि क्या बषांणै॥६॥ आरती तेरी अलष अभेवा॥ निरं
जन नाथ निरंजन देवा॥टेक॥ वार न पार अगम गमनासी॥ रमता रा
म रमै सब मांही॥१॥ तोलन मोल हद कान ही नारी॥ अनंत म
ु वन मैं जोति तुम्हारी॥२॥ सब कै मांहि सकल तैं न्यारा॥ स्वैं रवि स्री
गान करत उजियारा॥३॥ अचल अघट अबिनासी राया॥ रूप
न रेष काल नहीं काया॥४॥ अनहद सबद सहज धुनि कारा॥ नू
र तेज दीदार तुम्हारा॥५॥ पांन का दीप मिट्या अंधियारा॥ झिगमि
गि जोति सकल उजियारा॥६॥ अलष निरंजन त्रिभुवन राया॥
जन सेवादास सरणि तेरी आया॥७॥८॥ अंतर आरती देव तुम्हा
री॥ राम सनेही जीवनि म्हारी॥टेक॥ रूप न रेष लषै नहीं भेवा॥ कि
सि बिधि राम करूं मैं सेवा॥१॥ तन मन लेनो बाहर कीजे॥ अंतर मां
हि चार रतन लीजे॥२॥ दीपग ग्यांन भया उजियारा॥ अनहद सबद
झालरि झुणकारा॥३॥ प्रेम बाल सुचंदन घिसि लाया॥ केसरि कि
रणं अगर चढाया॥४॥ पांचूं पहोप सुरति कै धागै॥ माल गूंथि मे
लि हरि आगै॥५॥ तन मन ज्ञांन समरपण कीजे॥ राम रसा इण म
मिरि पीजे॥६॥ कारण निधि करता मुरारी॥ सेवादास जन सरणि
तुम्हारी॥७॥९॥ आरती देव निरंजन तेरी॥ जो एन ही करताम
ति मेरी॥टेक॥ धरणी आकास नहीं तहां तारा॥ जिगमिग जो
ति सकल उजियारा॥१॥ पवन न पांणी चंद न सूरा॥ जहां सहज बाजे
अनहद तूरा॥२॥ जहां सात समंद नहीं नाद अवतारा॥ सकल
अनेगी सिरजनहारा॥३॥ पाव तन हीं तीन पसारा॥ सब घटि रमि
सकल तैं न्यारा॥४॥ आगम अपार पार नहीं तेरा॥ क्यूं मन पकडै
साहिब मेरा॥५॥ अनहद नाद अषंडत बाजे॥ परम जोति जहं सा
पवि राजै॥६॥ सब घट मोहि तेरी पूजा॥ देव निरंजन और न दूजा
॥७॥ विनसी वासो बहो विधि बाजे॥ सकल सिरोमणि सब पर
राजै॥८॥ ररंकार निज नांव अमरा तिं सब कै अपार ऊदवु दसराति
॥९॥ अलष अभेद निरंजन जोगी॥ सेवादास जन रस के भोगी॥
१०॥१०॥ आरती निराकार मुरारी॥ सकल भवन मैं जोति तुम्हारी
॥टेक॥ नमल गांन दीपक दीया जोई॥ सत से तो घजनती तलसम
ई॥१॥ त्रिसनो घाती दई लगाई॥ भगा भरम परम निधि पाई॥२॥ प्रे
म स्री तिका कलस भराया॥ सहज नाम हरि दरसन पाया॥३॥ म

जहां कबीर जन लगे है सेवा जन सेवादास संत तहां ध्यान तहां पडूं
तो नही फिरे है आश ॥ २७ ॥ असो अलषपुरष देषो निहाय
जहां पास चोपड़ि नही सारि टेक अकलपुर सका असा षेला
जहां दीपग बिनही बाती तेल जहां चंद सूरय परकास नाही प
रमजोति में संत रहा दि १ जहां अनंत बाटे अपार साध बिलवे
नांइ आधार तहां उदे अस्तत न ही राति दिन जन सेवादास
कोला इस्मल ॥ २ ॥ ५ ॥ १७४ ॥ राग बसंत संपूर्ण ॥ राग ॥ १७ ॥ रा
ग कल्याण ॥ राचि रे मन हरि के रंग ॥ और रंग सब है बिदरंग टेक
राचे सुषमन का छिक सेस राचे नारद और महेस ॥ राचे रंका बंका
तरजो मोरा चे निरमत नूर राचे धनो कबीरादास फिलिमि
लिजोति सदा परकास २ राचे पीयो अरैदास सो के सेन रचे नि
जदास ॥ राचे गोरष गोपीचंद रचे अरषरी परमानंद राचे दा
दू जन ही दास राचे लर सी परम प्रकास ३ राचे सारिंग संत अ
नंत जन सेवा कहत न आवे अंत ॥ ४ ॥ १ ॥ गाइरे मन हरि के गुन
बित सिगा इमती येक छिनां टेक तनधन जोबन थिर नरहा
शाइ दिन सुबिन्ना लिष तामति षोई १ अंजली नीर निरषत जाइ
(कि ती येक बार रहै व दराइ २ अलप आव सुपनां की नांई कंपू
रन लिहि षेफल षाइ ३ चेति सवेरा ढलन लाइ सिरपरि का
ल परस्वनि तिषाइ ४ जन सेवादास ओसर मलयेहा ते रांमनो
मज पिला सालेह ॥ ५ ॥ २ ॥ अथ आरती ॥ नाथ निरंजन आरत
गाऊं गुरु जी जन मिब हो छिन दी आऊं टेक अबिचल अचल
अघट अबिनासी ॥ पूरण ब्रह्म परम सुषरासी ॥ रूप न रेष बर
ण बनां ही रमता रांम सकल घट मांही सबद अनाहद बाजा
बाजे अनंत भवन मे जोति बिराजे २ सिव बिरंचि तिसि पार न
पावे सेवादास जन आरती गावे ॥ ४ ॥ ३ ॥ औसी आरती हरि कू
भावे निरमै हाऊ पूरन पद पावे टेक काया देवल आतम दे
वा अंतरि रहत निरंतरि सेवा १ कलस संतोष प्रीति की पाती
ग्यांन दीप जहां पाषूं जाती २ सुरति आरती अनहद घंटा ध्य
न हूप ले देव अनंता ३ सील संजरी संजम चोका इंद्री बिधि
देव निरंजन धोका मन की माल अनूपम पूजा देव निरंज
न और न दूजा ५ अषड अमर रतिदेव गुसांई जन सेवादास
ता की बलि जांई ॥ ६ ॥ ४ ॥ ऐसी आरती अंतरि कीजे अंतरमां
हि वा रणा लीजे टेक अकल सकल हो निरंजन राया घट
घट मांही आप समाया १ निराकार निरगुण निज देवा प्रेमप्री

तिकर्तामै सेवा॥४॥ अचल अपिर आवै न जाई। बाहरि भीतरि रह्यौ समाई॥५॥ जल मैं ऊन कुंभ मैं पांणी। व्यापक राम सकल घटि जांणी॥६॥ अंतर मो हि अंतर की जांणै। जन सेवादास तांहि कै पष्रांणै॥७॥ ५॥ आरती तेरी अलष अभेवा। निरंजन नाथ निरंजन देवा॥टेक॥ वार न पार अगम अगम न तोही। रमता राम मैं सब मांही॥१॥ तोल न मोल हल का न ही भारी। अनंत भुवन मैं जोति तुम्हारी॥२॥ सब कै मांहि सकल तैं न्यारा। अंतरि विरागन करत उजियारा॥३॥ अचल अघट अविनासी राय। रूप न रेष काल नहीं काया॥४॥ अनहद सबद सहज धुण कारा। नूर तेज दीदार तुम्हारा॥५॥ ग्यांन का दीपक मिट्या अंधियारा। झिगमिग जोति सकल उजियारा॥६॥ अलष निरंजन त्रिभुवन राया। जन सेवादास सरणि तेरी आया॥७॥६॥ अंतरि आरती देव तुम्हारी। राम सनेही जांवां निम्हारी॥टेक॥ रूप न रेष लषै नहीं भेवा। किसि बिधि राम करूं मैं सेवा॥१॥ तन मन लेनो बारवार कीजै। अंतर मांहि विचार करि लीजै॥२॥ दीपक ग्यांन भया उजियारा। अनहद सबद झालरि झुणकारा॥३॥ प्रेम बाल सत चंदन चितलाया। केसरि करणी अंगि चढाया॥४॥ पांच पहोप सुरति के धागै माल गुंथि मेलि हरि आगै॥५॥ तन मन ज्यूं सब अरपण कीजै। राम रसायण भरि भरि पीजै॥६॥ कर मनि धि करता मुरारी। सेवादास जन सरणि तुम्हारी॥७॥७॥ आरती देव निरंजन तेरी। जोए न ही कहा मति मेरी॥टेक॥ धरणि आकास नहीं तहां तारा। झिगमिग जोति सकल उजियारा॥१॥ पवन न पांणी चंद न सूरा। जहां सहज बाजै अनहद तूरा॥२॥ जहां सात समंद नहीं भार अवारा। सकल अंग सिरजनहारा॥३॥ पांच तत्त नहीं तीन पसारा। सब घटि मैं सकल तैं न्यारा॥४॥ अगम अपार पार नहीं तेरा। क्यूं मन पहुंचै साहब मेरा॥५॥ अनहद नाद अषंडत बाजै। परम जोति जहां आप बिराजै॥६॥ सब घट मोहि तेरी पूजा। देव निरंजन और न दूजा॥७॥ बिनहीं बाजा बाजै बहो बिधि बाजै। सकल सिरोमणि सब परि राजै॥८॥ ररंकार निज नांव अमरां ति सब कै उपा उदबुद तराति॥९॥ अलष अभेद निरंजन जोगी। सेवादास जन रस के भोगी॥

टे०॥ न मल गणां न दीपक दीया जोई।
ई०॥ न्त्रिसनोवात
मथ्री ति का कल सभ बाया॥ सहजि नाश हा।

जहां कबीर जन लगे हैं सेवा जन सेवादास तहां ध्यास तहां पड़े
तो नहीं फिरे हैं आस ॥ ३ ॥ २७ ॥ ऐसो अलष पुरष देषो निहाय
जहां पासा चौपड़ि नहीं सारि टेक अकल पुरस का औसा षेल
जहां दीया बिन हीं बाती तेल जहां चंद सूर परकास नाहिं प
रम जोति में संत रहे हैं ॥ १ ॥ जाने अनंत बाहे अपार साध बिलबे
मोह अधार तहां उदे अस्त नहीं राति दिन जन सेवादास जन
हां लाइ मन ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३७४ ॥ राग बसंत संपूर्ण ॥ राग ॥ २७ ॥ रा
ग कल्यांण ॥ ॥ राचि रे मन हरि के रंग ॥ और रंग सबै बिदरंग टेक
राचे सुष सनकादिक सेस राचे नारद और महेस ॥ १ ॥ राचे रंका बंका
सूर नामा राचे निरमल नूर राचे धनो कबीरा दास फिलिमि
लि जोति सदा परकास ॥ २ ॥ राचे पीपो अरु रैदास सो फो सेन रचे नि
ज दास ॥ राचे गोरष गोपीचंद रचे भरथरी परमानंद राचे द
हूजन हीं दास राचे लर सी परम प्रकास ॥ राचे सरि रंग संत अ
नंत जन सेवा कहत न आवै अंत ॥ ४ ॥ १ ॥ गाइ रे मन हरि के गुन
बिसरि जा इमती येक छिना टेक नन धन जोबन थिर नि रहे
आइ दिस सुपिन लिष तामति षाई ॥ १ ॥ अंजली नीरा निरषता जाइ
कितीयेक बार रहै व हराइ ॥ २ ॥ अलप आव सपना की नाई कुं
रेन्हा लिछि षेफल षांइ ॥ ३ ॥ चेति सवेरा ढलन लाइ सिर परि का
ल षरा मति षाइ ॥ ४ ॥ जन सेवादास औसर मल ये हत तेरा मना
मजा मिला हालेह ॥ ५ ॥ २ ॥ अथ आरती ॥ नाथ निरंजन आरति
गाऊं गुरू नीजन मिब हौ छिन हीं आऊं टेक अबिचल अचल
अघट अबिनासी ॥ पूरण ब्रह्म परम सुषरासी ॥ रूप न रेष बर
ण बंनो ही रमता रांम सकल घट मांही ॥ २ ॥ सबद अनाहद बाजा
बाजे अनंत भवन में जोति बिराजे ॥ ३ ॥ सिव बिरचि तिसि पार न
पावे ॥ सेवादास जन आरति गावे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ऐसी आरती हरि कूं
भावे ॥ निरमै होइ परम पद पावे टेक काया देवल आतम दे
वा अंतर रहत निरंतर सेवा ॥ १ ॥ कलस संतोष प्रीति की पाती
ज्ञान दीप जहां पाचूं जाती ॥ २ ॥ सुरति आरती अनहद घंटा ध्य
ध्यान पुहुप ले देव अनंता ॥ ३ ॥ सील मंजरी संजम चौका सुद्ध बिधि
देव निरंजन धोका ॥ ४ ॥ मन की माल अनूप पूजा देव निरंज
न और न दूजा ॥ ५ ॥ अषंड अमूरति देव गुसांई जन सेवादास
ता की बलि जाई ॥ ६ ॥ ४ ॥ ऐसी आरती आतरि कीजे अंतर मां
हि बारणा लीजे टेक अकल सकल हो निरंजन राया घट
घट मांही आप समाया ॥ १ ॥ निराकार निरगुण निज देवा प्रेमप्री

तासहजिमयेओपाराएनांमांह्रीपाजाटजूलाहा ओरै
दासचमारा नांवप्रताप अमैपदपङ्कतं ओररहेजवारा॥
जिनिजिनिध्याया तिनतिनपाया नगास्मतकिसबधारा जन
सेवादासकैयेकसनेही केवलरामपियारा॥ अथ योतनपांडे
तोरेमनकीगुणगा॥ रांमजनबिनिप्राणीया ओसरचले
गा॥ टेक काचेकुनिनजलरहे बिनछिन स्पलमो ती हरि
भजिलाहालीजीये योअकलानेनोखिः हरिभजिबिलमनकी
ये मतिपजन्मफिरिनोखिः सलपसुषांतेलागिकतिमति
रमोगधोखिः॥ रूकालीकानीजूं छिनछिनघटतोजाइ
चेतिअचेतनदेहहोरेकालअचीलोपाइ॥ सदाअथिरथिर
करतहेसुतावितनारीनेह तेरासंगीकोनही तहरिभजिलाह
लेह॥ ओधिवदातीजातहे सबेतोहरिगुणगाइ जनसेवादास
लागेनही फिरियाबेपछिताइ॥॥ योतनबीतोजातहे
कीकारनीर हरिभजिबिलमनकीजीये सांमलिमनवावीर
दिनबीतेजातहे समकिरकरो बिचार मानवोटनहीह्र
दीयेमाईसुमिरोसिरजनहार सरनरारवसातसबकरेबच
एनपावेरेकोइ रजीवगाफिलक्यूंरहे हरिभजतांहोइसहाइ
२जीनिपिंडप्राणतोकूंदीया सोईलेहसंनारी जनसेवाद
सतंजाइमतेरेमनिषजनमनगहारि॥ प्राणसनेहडाभी
तमरामसंनरि॥ तनजनमनरकीबखोरे तकोडीसटेनहा
रीकेतनधनजोबनमदमेगाफिलरह्योगेवार अजिनही
नीकालिस्मरीरेयोतनमिलेसीबार जीवनसुपनसमानिहै
मरणांसहीरेतयार॥ तिअवेलाउविलेतवकोइनचाले
लार सोरघकासबकोसगी। तातमातसुतनारी घटघट
सबहीतजेयासोलाकिनमारि॥ अतिअवेलउविलेसं
गिनचालेरेकोइ॥ जालिबालिभसमीकरीसबफिरिआयेरो
अपहलीक्यूंनसंभालीयेपीछेजातरेकोमसबेहीजाग
त्यारघोरेसदासनेहीरेरांम॥ सतगुरतेंसाधीमहीपेंडेलागा
रेजीव॥ जनसेवादासनिलेभयास्मरिसनेहीपाव॥ ७॥
रामसंभालीयेरेमनवाहूबारारामभजनबिनप्राणीयायो
तनहसीबारा॥ योतनजलकाबुदबुदा जातनलागेबा
रा॥ स्मरिसनेहीआपणोकेवलप्राणअधार॥ तालरिकरान
रस्मांअरसतनाइ॥
घितलाइ॥ योतनकाचोकु॥

साधदनलेपनकरिहुं।तेजपुंज[illegible]ना।पजन
चीतपहोयकरिपूजा।अलषपुरषनहांदेवनहूजा।।६
लेदादाससदगुरकीपूजा।सबघटिरामओरनहीदूजा।।६
।।२८।।राग।।२०।।राग।।धनाश्री।।योतनजातहेसोदेक
हारेअचेत।रांमभजनबिनप्रांणीयां।कालकेवगहिलेत।टे
धंधधंधदिनखोइया।सम्रफिनपडीरेलगार।योजगतरू
रपातज्यूं।बिछडतनांहावार।१।योतनअंजलीनीरज्यूं।तेसा
लसकीयोसअघाइ।हरिओसीचेत्योनहीं।तोचोरासीफि
रिजाइ।सूतबितनारीनेहसं।सकलरहेउलफाइ।तेरेअंती
समगासंगीकोनहीं।तूलेरेदरिगुणगाइ।३।सतांसरबसजात
हेजा।गिरसुमिरेरेराम।योओसरचलिजाइगो।रेतेकरिले
अपरोकांम।४।लोभमोहलालचतजो।मनभजोनिरंजन
देव।निरमलहरिगुणगावता।लहीयेअलषअभेव।तंक
हरजिनिदाइप्रांनीयां।योओसरफिरिनांहि।जनसेवादास
दासाइलो।अपरोहीउरमांहि।६।।१।।आलसकरिमाप्रांणी
यां।तूलेरेहरिगुणगाइ।परवपुनिनरतनलह्यो।बहोडिन
मिलिसीआइ।टेक।मनउनमानिलेलाइये।पदहरिबिषेबि
कार।हरिरसजीतरियाजीये।देहरिससारोसार।१।गाज
ममासुरसुत।त्रिबेणीसंगिन्हाइ।ओमजनमधरमजेसाचे
रासीनहीजाइ।२।मनपवनांअरसुरतिसं।करिहेनिवउचा
२।येकुपलकमेहातदे।सकलकरमासिंधार।पूरणमागउ
हेज्ये।सतगुरमिलीया।आइ।जनसेवादासनिरलेनया।अब
निरगुणकेगुणगाइ।४।।२।।निरमलनांवरटीजेमेरजीवडाते
रमलनांवरटीजे।बारनारसमकाइककेतोहिपलपलयोत
नहीजे।टेक।योससारचहूरकीबाजी।ताहिनदेषिपतीजेमर
जनिसनांलेलषागिजेतसुष।हरिलिजोकरिजकीजे।१।नन
धनजोबनअंजलीकोपांणी।साधिलोहिरदेजे।तातेरामअ
जोगिनभूलो।देषिनजिनिस्पाटवीजे।२।जगसुपनेसासुपनेजे
सा।अपातिनकोनकदीजे।प्रहपुमेहपुरयेहनहीसुषहै
रिबिनमननहीदीजे।भरमनिवारिमजोअबिनासीबिषतजे
इसनपीजे।सेवादासजनदेरिकहूतझंतनधरिलाहालीजे
।।४।।मेरेकेवलनांवअधार।मेरेकेवलनांवअधार।पावनप
तितकारणदुषमेटण।हेजगमांहीसार।टेक।जामेलगनगनि
कातारे।सोईएतपतितअपार।जिनिजिन्हिनिवलीयोतेमुक



अबगाति नजो। कालफिरतलला ... सुपबी म स्या
... कविनपासि न्यमाहि यो सुषिद ... तातमात परवार
तासी चलि जाहि। ऐसे गी दिनआरिके ... सिरजनहार। फग
ति बिछडे घिसना है तताजिनजि ... जनसेवादासहरिगाइ
अबके कारगे तलफतहै यो जीव। जनसेवादासहरिगाइ ... नावनि
... जिपरम सनेही पीव ॥ यो तन जात है ... राग गरासे आइ
... नगाइ फिरी बैपति बाइ गो तक्कू ... अलप सुषो सं
... ति घकोकबिंदगी ॥ रसना रामस न्यारी ॥ नैन बैन रसना थके घरत
... लागि करि तहरी रोजन मन हारि ॥ ... जिलाहाले है ॥
... रकापै देह नवतेरा संगी कोनहीं तहरि ... जनसेवादास निरंजे
बारबार तोसों कहूं ... औनउपाइ जनसेवादास ॥ ऐसा गया नाबिचारी मरे
मते तं अबगाति सल्पो लाइ ... नो कोई तेरा न तकाजा ॥
जीवडा ऐसा ग्यान विचारी ॥ नोकोई ... लाइ काम ला ॥ बिछडि गाहि
इम्हले दिन च्यारी ॥ यो संसार ... कई चाले धन हारी ॥
व्यापारी ॥ ... लोग कमाया नो ... कैसारी ॥ सांस उसासि
... नगी सासन ... तीन लोक के सारी ॥ तात मात घर थ
... सामग्या सासन बोई ॥ काग सुधारि ॥ ... थके को मतै नबरा
टे ... दीसा ... जब यो प्राणी थके को मतै नब ... लग मरी
के संगी बंधू सुत घ नारी ॥ जब लग यो जीव सनजैनाही नव लग मरी
... सब धारी ॥ जब लग यो जीव सन ... दीयो सबरारी ॥
मेरी सेवादासजन समाकिन ईतब ... कीतोग
... बाहे नगरी बावरी ॥ चनरनपा ... नहारा ग दोष मैं तेन
मनकी कोई पक्ड पंगुण गलता न ... लनि ... नाथ दे के
ही जातिबर ... लनाहि वानि ... बिसरि रहे तनसा
ईदर दिवाना जाहि ॥ ... सोई लहै दीदार ॥ पष तजि नि
... हि घरि सोई पकडि सीसोई ... पषा पष बांगग बंधीय
रपषसे लहै बानिरपष है निजदेह ... कानही गम का पावेना
लहैन का इसे ... बेगम गम तहाकोनहीं गम सोहि जहया
हि ... मसोइ सगम लहै ... बाबे गम मोहि ... जनसेवादासज
पमुनि ... सुषन ही हरषन ही तहां सोग ... पेम पटो ल ... कसि
हो जाइये ... अमरबालोग ... सुरति ... मी वो नी करनी रहै
कीन बांधे ... मन पवन ... बिबरा ... पेम पियाला पी
... गगन ... केहि ... सुनि सि महमे रमिरह्या ॥ अम
... जाये ... आनंद में दिन जाइ ॥
निताली लाइ रामरो मरसप जाये ...

वांचे विचारे जा कूं राम रांमन्से यानार ॥ अथ ज्ञानी दिणदासजी की वांणी लिष्यते ॥ चितांवणी ग्रन्थ ॥ आपनिरंजन सेतसब कूं पाकरि दीया रंग ॥ गुर किरपा तैं पाईये चिंतामणि का अंग ॥ चिं तामणि चो घोदसा लषे सु पावे सुष ॥ जाइ धसे वासु निमे। बलेन दरसे दुक्ष ॥ पूजी तो परमे सुरत णी तू मति षरचे वी रादरगहु लेषा मागिसी ॥ कोण रंक कू मीर ॥ नंव निजारा पारका पूंजी जमेल गाइ ॥ चेतन हो चूकी रये तो कंतरदीया जाइ ॥ जे जांणे तो दुरगहो डरगाहि पकडी निति ॥ जिन गल संपेदा कीया ॥ सोई साचा मित ॥ मन नाबिण जागा जागिरे सारा वैस दा घोर ॥ सतापूंजी हारसी केमुसिल जासी चोर ॥ बिग ति बेल गामि गहू निकुरि नांवब सतत तसा ॥ सुमति पटादस वसत डिका सतगुर हावरांदा त ॥ तसकर वेदा घट मंझी निस दिन करिहैं घात ॥ पांन षड गह थियार गाहि पा निसारी व ता जनम जनम का सेगिरहैं ॥ विल डूंब हीलगार चेतनरहो केडो कारियौ ओसाया वारि ॥ पावती नका जु पमिल्पा मा हो म्पा मनारा ति अंधारी जैपरी काया केडो वन ॥ उद्दीपडें वधु लेंदीया ॥ दुनी पाकेरी ॥ सो नलि सतगुर यू कहे ॥ रहे चेदल दुाके जाहु ॥ गरभ वास मे राषीयो ॥ का हि नर कितीयेक वारा सु के नदरि गुण गाइ लो ॥ विसरें कहां गंवार ॥ जब भगति मे ज रीयो राषि लीयो ग्रभ वास ॥ आतुर हो इ अगे षडा हरि सुमरी सासै सास ॥ दुष जामण दुष मरण है ॥ दुष मात पिता दूरा पस गा दुष वंधु दुष जातियां तिा दुपरकुटे बीलोग ॥ दुष गांवण दुष गाढुणा दुष नारी नो ग विलास ॥ दुष हीदुवसं पति मिल दुष दुष केरी आस ॥ यो दुष सुष करि लेषीया ॥ उणां अंधे लेसा र सुपना केरी नावडी कैसें उतरें पार ॥ दुनीया केरा दिष्ठि बंधन ही रहा ऊकोइ देष तही गहि जाइगा ॥ सो जिका लिहूं न दोइ ॥ जो जल आयुग पापा है कोम को धम अराइ रय सोग दो इत टमंडा पडे सो अंधि जाइ ॥ कोई येक विरहै स तजन भा के राम सहाइ ॥ सतगुर जनरे वे सि वाति षेम

[illegible] सती सतसंग [illegible]
मजजोबन्या लीयो [illegible] नरदेह [illegible] गे अनहद
मकारो सुफल करो नरदेह [illegible] सुमिरैं रामकूं [illegible]
रि ए संग्रामे [illegible] साध सुमिरैं रामकूं [illegible] सेवादास
र [illegible] चेतन ब्याडे सरिवां चोडे रोपैरेपाव [illegible] रघलो गावि चे
नयूं करो मांई इह फूल डिबिका डावा [illegible] नीगांनीयां तिन
नीदह्यो [illegible] गिनडू नजो मां रामा रामजि नु ही जानीयां तिन कूं नपाया
[illegible] सेस बकांम [illegible] हरिजनकूं तेनीदह्यो [illegible] जामुकि ज्ञान नही पांना [illegible] सा
[illegible] प्यान रामजि नु के दिल नहीं [illegible] नीदक और गणधार
[illegible] सिरजनहार कूं सुमिरैं [illegible] नाम [illegible] नीदक [illegible] जेतरि धारके
धू [illegible] मरै बेकांम [illegible] चोरासी मे साइ [illegible] नीदकने
कौ [illegible] तिनकूं सुपकुं बडूं नहीं [illegible] हरि है धरे दूरि
[illegible] सदा सबारे कांम [illegible] नहीं [illegible] कांम सबारे आइ
साधीये जो सदा सबारे कांम [illegible] मांगे नहीं [illegible] नीदक से
जनसुमिरै राम [illegible] मसकाति कांम [illegible] जल करै सुन्ना [illegible] नीदक से
[illegible] साबण पाणी बिना [illegible] जल करै [illegible] निरमल करत है ब
[illegible] तिकारि दीजे बदो लोमान [illegible] निरमल करत है ब
[illegible] तकबा कि बदि यांना [illegible] जेसाधा दानी दिंदे तेमुकति पावे
हो तकबा कि बदि यांना [illegible] धिन सकै कोइ [illegible] सोधरी
सा [illegible] नर का मांही फल लिसी [illegible] जनसेवादास नरएनरकमे
मकी देहदे तिनके [illegible] ॥ [illegible] ॥ अथ आरती ॥ रमईया राम
बी [illegible] चलिजाइ ॥ [illegible] ॥ [illegible] अनंत नरनकेराइ [illegible] सबु
तेरी आरती सकल बियापी राइ [illegible] अचित अजोनी देव बरण
[illegible] सकल घट ब्यापक [illegible] अलप अनेव [illegible] अगह अग
[illegible] जनहीं जाके अबरण [illegible] तिम धिनाही [illegible] जहां पावक पव
[illegible] साआदि [illegible] ता मांहि [illegible] वसुधगण
[illegible] सासि [illegible] संतरमे [illegible] निरत दासक
[illegible] नहीं तहां उद्दि गण [illegible] निरमे [illegible] सवातिराइ [illegible] संतोइस लि
[illegible] जनसेवादास बलिजाइ [illegible] हरिरस निलि
[illegible] जन [illegible] अंतरमे [illegible] निरंजन देव
[illegible] आरती कीजे मनयवना [illegible] आसणधारे जहां [illegible] अनहद
[illegible] गगनमंडलमे [illegible] करै संततहां सेवा [illegible] जोतिसरूप
[illegible] परम परकास [illegible] मिलसी ये सेवा [illegible] मिरामिरा [illegible]
[illegible] गुरगम [illegible] मिरो मिरामिर [illegible]
[illegible] तहां बाजो [illegible] चितदेवा [illegible] सेवादास जनकै आरती
[illegible] राजे [illegible] केवल चितदेवा [illegible]
[illegible] सोपति [illegible] सेवादास जनकै आरती
[illegible] रमईयो सो पाति [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] जालि ओली ॥ [illegible] ॥ [illegible] की संख्या साखी ॥ [illegible] ॥
श्री श्री सेवादासजी को [illegible]

बिछर्‌या होइ प्रहार ३ जैसैं

राषे पिंजर यो ३४ जैसैं माता पूतकूं ज्यूं नारी भरतार पेमी कै
चित पीव बसे ज्यूं रंक वारी सार ३५ पेमी कै परतीति है दारि
दै दिरदम्यो ३६ पेम बिना पाली सबै ज्यूं लाभ टकै का शब्दा
ताभातायेम्म मे सु पेम रहै समाइ या पेम की पारिषा होत
जिके तन जाइ ३७ पेमी पर घल पेम भांति दया दीनता हारि
रूपा नगरी बादरवत गुरु आई करि धारि ३८ पेम तसाें हीपवि
दैष्यौ वृत बिन पेम न सोइ पेम बिना हरि को न काम तिरत्यो
वो को ३९ पेम तहां प्रवरति नहीं नाहि न आसा या स नो काम
ईल्योली नहीं ४० ससकत सासां सास ज्यूं रांत्ते परचा नयां
पीया पियाला धापि जनम जनम की त्रिसनो मिटी सा है
न पाया आप ४१ ऐके सेती येक है ढ तीया नाहीं को ४२ पेमी
कै परतीति से हूंजी का ई हो ४३ अनिपादहीपाइ करि म
नहीं ला या रांम पेम स्वाद जो पान ही ४४ पेम स्वाद कं म
४५ सदा सनापा सावधान जिनि दास नांदिन रैणा ज्यूं दरप
न मे देषी यो ज्यूं रस परसम्पु षयेकु ४६ रिधि सिधि आव ध जोग
जिग नेम बरत तप दांन पेम पियारा पीव को पेम बिना स
ब आंन ४७ नीर थयूं गाजा पधुम प्रेम कत आधार पे
मा बिना किसकाम का प्रति बिन सफा सिंगार ४८ सदई फ़ु
लाणा रहे बरषेनि रमल पेम ब्रह्मराज अपंड पुरी ना हू
न वासुर भोम ४७ सप सरवर जन हंस है मुष मुकता हल
षो हि पेमी राम है पेम तहां ५० ढिंगाडिं अनेतन जा हि ५१ प
वि सीजहां अनही मो सी निरमल हीरा को मरजीवा क
सी जहां गोल कालन नही कोरा ५२ अगम अगोबरत म इ
मुकै पेम की नाव जो बैसे सो पार सिद्धे नांहिन डुलीया नाव
५३ पेम लाडि या हरि जगति है कोई साधे संत सुजांण चो
रासी मे नहीं लगे न काल कपा ५४ जामड रपे ता दास
सतां जा कै अंबरि ना व पेम मो जसूं पचला ज्यूं आया त्यूं
जा ५५ बैरागी हो इ बनि बसे ७ पजे न ही बिवेग धमाबन
दो ऊं थक्या बाद बिसाया राग ५६ बैरागी चंदन बावनो त
की बास सुवास पेम पियाला पाईया जगत रह्या जु दास ५
सत गुर मिलि रे जगाईयुं पीया पियाला पेम प्र घर गलिय
णी ५८ ता ज्यूं रस हमा ही ५९ सब द सताग

बन्हे बीसर्यो कहा कहूं मुष... बीसर्यो कहा लहूं गोवार
नबधगुण चोर परमसनेही बीसर्यो कहा लहूं विकार मेवासा मोमद
पांनपली ताला इकहि दगा धाबन विकार मेवासा मोमद
या लहै नहीं वार २२ मन मेवासी पाकडै आन तनदेई जो
डै विरह पहरा इवै नावे सतगुर बांन २३ बिगति बिगति
डुषसरा गारनसंकट बहोत्रास लघचोरा सानमी यो
कहा छुटी आस २४ सकल बियाप सकलमै सब मैं दीस
नहीं जैसे चेदाउदकमै सकलरह्या भरपूरि २५ गाहि बिसवा
सखा सगाहिं जीवचेतनकू चेति बारबार ये बेनही मनिष जन
माजे ति २६ मनिषा देहीं डुलभ है सबजीवन मे सार किरपा
करि तोकूं दई नमिले सिरजनहार २७ महायति तकै पाव
नहीं निरबल के आधार निरभलक धनदीन बंध सरनाई सा
धार २८ जलथल त्यावृ गीवजंत परलै की टपतंग तो
घहौ हरि औतत्या तौ कमोड़ा आत्रंग २९ चंदन रूं पीरा
गात डै मास्तै मारा जाति कोटि बाढि बकुबहरीया लोकूं
मन्सुमक्या नाथ ३० परमसनेही परमगुर परका जो परखेन
परमार थकै कारनै पूपरा परै परवान ३१ निराकार निरंज
जो निरबिकार नि हस्वाद काया माया बननही नही बिदन
ही नाद ३२ पृडअमर अगाध हरि बारयार कुंवनो हि
सबसाध न मिलि नाबीया हैम्यारा अरमाद्दि ३३ सुपत रवस्मा
यारहत मूल डाल पत नो हि अमृत फल प्रकासीया सबस
कवि लिषा हि ३४ सब त्वादन मे स्वाद है सब ब्यारन मे प्यार स
जब निमे स्वप्न है सब सारन मे सार ३५ हरि ही मात हरि
पिता हरि कुटंब परवार हरि बंधू हरि सजन नी हरियारन
मैयार ३६ निरनै घरज ही मैन ही भावभगति सुमरूप किरपा
करि तो कू दई ऐसा तन आजू पा ३७ सतगुर प्रगट करी ओग नरबान
जी वचेत निचै चेति गुपत बसत परगट करी सिचिताई या
नापयू चिंताम सिरंधरे अनत कोटि बिसरांम जो पापी से
परसि है तरै सकल बिधि कोम ३९ मन साबा चा करमना अ
किनासी कौ आस गुरकबीर परतापते कहै जगजीवनदास
॥४०॥ ग्रंथ ॥२॥ अथ प्रेमनामो जोगग्रंथ ॥ नांव निरंजन पेम
अंगा साषी गुर पर वांन मनसा बाचा करमना नो हि नहजी अ
ना॥ धर्मी कै परतीति प्रीनहै तनमन है आधार रोम रोम मे रमै
रह्या बिसरै ही लगास ओ सै मछली जल बिना पेमी के कर

सुंदरीयामोतीसीपध्य लक्षचौरासीयंद आदिनोफंदवूहम
इरूकीलपेमनावजनकूदई।ता हिदरया न्यादीरूः साहिब
समिदातान्हीनहीजनसेमगनहारे पेममेजदातादत्ती सब
भोजनमेसार ५० मनमक्कुवा उडपानकरि आही मुष्धरि अ
मीपियालाजनपीया। बिसरयादेहविकार ५१ अकलिकलाले
वालीरहीगिगनमवमाइजनमजना। पेडारिकरिकहिया
हीपाइ ५२ त्रिगुन तापसेतरके निरासमोतीआस चोथेअ
अमसेतजन तहापेमीकावास ५३ येमसलिता दरयतचली
चलीपान्हनगाइजाइयलीहरिसमंदमे सुषमेरहोसमाइ
५४ हीरामोतीलालधणां बैरागखडनाम सुकृतिपेतानिज न
पुरी।जहांपेमीलीयारंग ५५ ज्योतिजातिमेन्रमनहीनहीना
हनुगमेदापूरणबूह बेमवाति निराकारानिरंजिद५६ आवगर
हाभावबसिनहारिधिसिधिबधविकार ३ कालसतगुपीसक
लमेजाकावारनपार ५७ महापेमअगग्रंथहे निजसेतनक
या विचार गुरकबी परतापते कहे जगजीवनसार ५८ मेमग्रं
थ बडमोजहै।सकलततमेतत निराकारवहीम हरिकृति
ननजगजीवनकूदतीयादत्त।५९।इती प्रेमनामोजोगग्रंथ
संपूर्ण।ग्रंथ।२।अथपदलिष्यते।।रागधनाश्री।। अबओरस
रण कितजांऊं आरतिहरणनहीकोईदूजो।काहूकूनेपल
जांऊं टेक हरिहेदयालसंतनसुषदाई ओरनहीकोईदेवा
आगेअधमउधारेकेते जोईजोइलागेसेवा जेलपतपाव
कगजसिंघआगेराषिपूपेदहीपा सुषकरिकसाबडाईन
षूंदीरै अनाथनके नाथ१ पतितपावनहरिबिड दतुम
रो मेपतितनअधिकारो जगजीवनसति बिड दतुम्हारो जे
मोहूकूतारोपार।२।।तेरोजनचरनसरनितकिआवैकद
रकालकोबोहे त्रासहै हरिबिनकोनछुडावे टेकपा
वतीनपचीलपक्कातिदेलाफिरनहूकोसाअे।दरिबिनओ
रकोनतेकरोयोरहेकरमउफाइी।।मनसानदीवहेनिसब
सुरिरहतनहीयारापी।नावजितहाजगहियारनपकडै सुनि
सतगुरकी साषी।।मेवलहानमहासवअवनो हरिअध
मोचनअविनासी।।जगजीवनजनकोंवीनतिकाटिकरम
कीपासी।।३।।शहरिलै सुपतितनपतिसाहा ऐसीओरकौ
नयेंहोइहैदारिघकूमैअथाह टेककोमक्रोध५५
रे

ललगाइ॥ सतगुरसौनाव...

घाडादिलत्रहरणा॥ दऊबिचिलायौ...

कमती॥ कीयाबाराबानीत्राव॥७॥ कसतकसतकमणी

कसिकसिपायापेम॥ सतगुरमेरा॥ देकै॥ ली कीया

हत्रबानीदेम॥८॥ आमलासबसंसारहै॥ कनककामणी॥

चापेमीसंतजना॥ ना॥ है बिषनही॥ आवैआदि॥९॥ प्रवृति

निरवानिसयूं॥ येकनांवकीचाहि॥ पतिवरतामतिमस्यूं

पेमलपटाइ॥१०॥ ज्यूंमोतीगजराजसिरि॥ ज्यूंगिरवरमेधात

सहरसं॥ गिमाणिवसे॥ यूंपेमीहरिसाथि॥११॥ जैसेपावककी

ऊमे॥ ज्यूंपैमाहीधीव॥ ज्यूंतिलनमेतेलहै॥ यूंपेमीमेपीव॥१२॥

नालिदूरसोगिङम्नृतवसे॥ ज्यूंफूलनमेवास॥ ज्यूंचंदनमेहैता॥

सूंहरिमांसीदास॥१३॥ जैसेमिसरीइखमे॥ ज्यूंहीरामेजोति॥ जै

सैगननमेनांवहै॥ नयायेकदीपाति॥१४॥ घाटिघाटिमातिमिनव

से ज्यूंआसुरमेसरा॥ ज्यूंजलसतीजलमिले॥ यूंपेमीमेन्नारा॥१५॥

नरमिल्याउमन्तरता॥ प्याराकीयानगाइ॥ वेमप्लिमाउसप

वलो॥ ज्यूंजोतजोतिमिलाइ॥१७॥ आनलपष॥ आकासधूरधरि

आतीसंनेम॥ गिगनगोनलागोरहै॥ यापेमीकीपरयम॥१६॥

सूंतिसनेहावि॥ बिघरणा॥ ज्यूंकरियकूंताजाइ॥ जोइरह्योहांसि

दमे पेमीपाषलला॥२०॥ प्रीतमचाहे॥ पीतमांकूंवसांध्याम

हिस्त्रांवि॥ कोइयेकमिलिहै॥ संतजन॥ पेमप्रीतिदेपषि॥२१॥ पे

नपाक्षजनकूं दश॥ कारिकिपाकरतार॥ सोजलसिंधअथाह

तिरिदरसादेवमुरारि॥२२॥ बिनपैरनकापंथहै॥ देहिघबर

जिलवे॥ पेमपरचैपाईयौ॥ ज्यूंसुषउपजेमार॥४०॥ चंवकचुपी

हैलोहक॥ सुरनपुरानमश्रीति॥ आसपरसहरिसेंमिलेया

पेमीकीरीति॥४१॥ रनिवनिवसताबिधिरहै॥ निछ्याअचीतपा

उपेमीमिलैनदेहगुण॥ ज्यूंपथकोराह॥४२॥ पेमीकेमालप

दा॥ बाजेअनहदनाव॥ सोचपावचाँसौनहीं॥ ज्यूंदधूदलोवी

यसर॥४३॥ जैसेसतासतकीया॥ पसमसंगिजाषतजालीदेहयूं

पेमीसंगनपाइ॥ निराकारनिजनेह॥४४॥ कुंजपुकाहेकुर

लैकरिसुरतिरहैतनबात॥ पेमीआपनांजानिकीसाहिबपा

दादास॥४५॥ ज्यूंतोचुगोचितवणिकरै॥ चुगचुगजावेहरिअंतरजा

मीषमवासि॥ देहाजराहग्यारि॥५०॥ नेहदङ्कमयेकसा॥ कासां

ईक्वासेता॥ जोकेडहोइगा॥ निंदमेसोईफलेगा॥ अंत॥५६॥ केवल

बाबयेमीतणी॥ जलनहैजकसमीप॥ निरंजननजिमारदसा

नयूंकहै याडनीवोकारीतिजीवकाजीवनिरोमहैथेतासं
लावोप्रीति॥६॥रांमपियारडीहूंगा॥मलपपियाराहूंगा॥सं
पटकडारफलाकारिसंगीसिरजनहात॥टेक॥मातपितासाव
निबंधुसुतनारीकुलज्ञातियोपरपंचपिंडकूंगेवनौ॥जूं
सुनेकीआश॥१॥देंगेमैंमतिगहेदलपाऽस्कगढमाला॥म
नसिंघासनसुंदरीदेषतलेगायोकात्या॥२॥जो॥एशविषे
टागह्या॥विसरिगयाहरिभोजा॥बारबापाइसनही॥मनिव
जनमकीमोज॥३॥कोरि॥गणरागउदारहोश॥चनकवलवि
तला॥४॥जगजीवनजनदमघटौं॥२॥आरतिहोइअनगा
॥८॥७॥हरिस्यंलगाइलैतनमनप्रेमलगाइ॥अंतसं
मीअरिहरणजनकीसदासहाइ॥टेक॥कारतिकेवलन
थकी॥करिआनपहरअषंडानिराकारनिरमलमई॥जिन
रचीयाब्रह्मंड॥१॥इपदालिदरहारिहोइरचाथेरमता॥म
पस्या॥सुधमनकमबचनसरैसकलाबिधिकम्मा॥२॥सरव
विया॥पीसाबमेजूंघटमांहीसासायूं॥आत्मपरमातमां
कहैसमझायादासजगडगोविंदाहरदेवसेजूंदेवलमैदे
व॥पाटजघाडिरपरसिलैकरिलैनिहचलसेव॥धगोरषना
थनरथरीदतजा॥रामानंदकबीर॥रामसुमरिरामैंमया॥पा
यापूरापीत्य॥सेवासिरजनहाकों॥दलसुधमोगलगाह
जगजीवनआरतिअपेडाबेहदवजावाह॥६॥॥जा॥गिरे
मारैंपकांइसतो॥अबधिगईजमआइपक्कतौ॥टेक॥जप
तपदानकथानहींपूजाजेनिसिलेसा॥तासन्याईज॥॥
सुतवितबनितासंगिलुभाना॥सोनआयोपीछैंपछितानं
॥भरमतजनमतपाईवारी॥जगजीवनजनजपोमुरारि
॥णकारणमतैसोईवारैकरतार॥रूपटभगतिहरि
फैनांही॥साचमहैसोइंउतरैपार॥टेक॥धरतीगिगनचंदस
रूजतरा॥तीनलोकबूलनडस्वीसाहेसबहीमैसबतैन्य
रासोकहीयैसाचाजगदीस॥रामानंदकबीरनामदेगोर
षदतअरूसुषदेव॥अनंतकोटिजनअगमेउधरया॥जिन
जिनसाहपायोभेवा॥२॥परवातिहानिनिरखातिहोशवि
चैहमाया॥आंमनकरैप्यारसबडरवा॥जिसोअपनोत
ना॥निहचमहीइमजो॥निजसार॥३॥सेसनागकहौकोनैद
ष्या॥सूकोनैदष्या॥साममांनाजैसीफैतैसामलपगटैते
साहीदरियावेमांन॥४॥नरथरसलीचारेउपतासतीकरण

तो कौं हारा ॥ चिंता छजानो घटत नकुी कछू मनोरथ उम
याद्यां चित चेचल कुं स्याल्ली दान्ही । राजा सरजा रावा ॥ अस्स
उक्की सलोक रियैं तोई । उपजे पतित सब लोक अपार प
तित नमो हियतिल सिर नामी । औरपतित सब लार ॥ तिस
नो गाज बाज दाघि मै तो बति बाजा सरि जगजीवन जनत
स्ने आया । लीजै अध मड धारि ध ॥ २ ॥ अबि घाद महेरि सके
लो । अगति का गति हम सरह्य । मारी । मई मूं ढमति मेरी थ
मारत अनतो उ अति चंचल धीरन धरत लगार । ताही सूं रस
अग न मो रमन । लेपटा बि षै बिकार ॥ ३ ॥ मलतें उपजि मो नित
हि मलतें पायो हलाहल पोना । अगनि प्रवेस नष करत नि
ति पर हा रिसदा अस थांन ॥ हरिपद बिमुष अपनो नाव
अति ये ह धूतं पामरी । जगजीवन जगप्रान जगतपति जा
परि मिलासन तेरी ॥ ४ ॥ समारि सनेहा रे गी वृडा मूरा रा गा गि
हरि गुण गाऊ । या माया का मूंडी मोह बती । कहो नै को ण गा
यो सच पा । टेक । गगं धूपदेवा सुरा । ब्रह्मा बि हम म
हेस सुरी बिलं डुनमो गाड़ी । इन का ये हा बसै प ॥ कहा त्रै
पद्म रमो जो बनी । कहा नो गायं हनुवाल । कहो मंडारी कु
मेर सो जिन संषाव हो माल ॥ २ ॥ कूं भकरन महरावन कहाँ
कहो रावन कहा बालि । कहा नारी नागदेत सौ तेऊ षायेक
लि ॥ ३ ॥ बारा षो हाणि केहू कहा । कहा पांडो फ फार । मे
मेरी कारि फ कना । कई ल गया लार ॥ ४ ॥ तिमर बिबर हम क
कहा । अकबर राजा से प । जे मन बास मकै नहीं । तो वहारदि
साने देष्या ॥ ५ ॥ अनंत को हि जन उधर या गहि गरयो अदवि
सलाम नांवा बिना निहचल न ही । कहै जगजीवन दास ॥
६ ॥ ५ ॥ जिद बटा कडा नरहे चालणहार । औरस मा ई स
ब परहरी । का दि दोस तनि रजनहार । टेक । मन साडा का ॥
सब जग पा । बं ध्या करम की जाल । सा बुभाव न कैरही नू
को डी कौ माल ॥ १ ॥ सब धि बदोती । आगम आईया फिरि
पछि ताणो सो ह । घाट बांध्या गा वडी चाल्या हारो धार
२ । रामसगो सो तैं पर हरो । बिषस बांध्या हेत बा हिंगा
इन लार खो । पूं काल रिहोषत ॥ ३ ॥ मैं मेरी कारि यल्या कछू
न चाली साथि । ऊ परि पीडा चूंन क । ॥ षाली हाथ हाथि
घ मणी भौ लाक सब बाजू ते के ही न बाछ्यो साष सज
न थालै चालि गया । जगा ली रहि गई राष ॥ ४ ॥ जगजीवन

वनन्तनसरनि आया। नो दिन ल मक्तिनवोर ॥४॥१४॥ गोबिंद
गाइलेजी वडरो प्राण। सुघात सुपसागर आरतिहरन। जा
ने बिसरे को उगार टेक। नलवूदतो जीनपिंडसा ज्ञा। नष स
षसो जवना। जव अगनि ज्वाला तेराष्या। सो तें दीयो मु
ला। ५। व होत कदिन जरम्यो चोरासी वै दिन लेकु पि आनि
नांव बिना कूं हेनही घासतसी मुरसा ए। गरब्यो कहा मुग
ध माया मे। दीसे मात पिता सुत नारि। को ई का हू का न स्याण
ग अग नितन सं मारि। परहरि कपट परम सनेही पकडि
या डी स कल बिकारा। सुरनर सकल नवन कै पति। मन दे
काई लेगा। लारव वारवार न्यां हायो औसर हरि दे को बि
चार। जग जीवन जिंदनार के हरि भज तरो पार ॥१५॥ मनसा
जनसा हि व सो का जो मन साचा चा और कर मना सुमरि सुम
रि सुमली जो टेक। जव र आगनि में करी रष वा ता। नष स प सो ज
वना हरा जा सर्न रिदा इन ही रहा। सा तें दीयो मुला ॥२॥ दु
षु में सुष में बाला बिरधा सदा सहाइ जा। रि रि परम सनेही
प्रीतम पूरा कहन के हे हरि ॥२॥ वा स सरे हाम फि दा ॥३
ज्यू फूलन में बास रे दिल मालि के अंतर की जाणो तू का ह्ये
पैय सरष पैसे घृत का दूध में पावक आर स परसा मिलि घले
जग जीवन औ गन करि कने ज्यू ले चोथे पदि मे तो ॥५॥१६॥
राषे रे ना वरा षे रे सुग धा कां इन ना षे रे टेक या इन्ह गा की नो
लै सावी जल ज्वाला मंली या राषी ॥ श्मर थ सूली व रा सै
नेत पत्या सु अलगा वो हेत ॥२॥ जो जन दे उपज्यो विसवास
राम बिना न ही दूजी आस ॥ पतित पावन हरि बिडद सुआ
र र टल्यो हे मिन लावो बारम्व ॥ आदि अंति दूजा हरि नो ही
जग जीवन सुमिरो मन माही ॥५॥१७॥ हरि सुष पाया हरि सु
ष पाया सा चे सत गुरु भेद बताया टेक जब मन दीता इव
धा हरी त ब क हूं सुषे नाही कर्मा गइ पो न्या मि उपमा
तव हरि उपज्या माही ॥ गया बिमास आस सब छूटी परि
वास धारित पाई मन क्रम वचन मिले अंतर गति गैबाल
क मिलि मोहि ॥ बि होत कद्दिन के बिछूटे मिलीयो पूरण ज
न की आस पतित पावन साचि बिडद तु म्हारो कहे जगजी
वन दास ॥३॥१८॥ राग ॥ रामविला

रटेक जो सैदा तुरपांवसांघणवं

...जगजीवन हरि अंतरजामी सुष पावो सुम
रोकरि हेतायथा॥७॥ मेरो पीव जी सदा सुषदाई हो। बिनदरस
न निरषनि के सेजी बोल मन प्रीति लगाई हो। टेक॥ सो षिवि
वा रिम कमल नामदेष्या। जहां तहां उनि धाई हो। जोगा तोहे व
र फिरी जंगल मैं वृधि विकहीं नपाई हो॥ तिन कल बो
ल तन्यो मन बाबर हौनि। बिकल भई बोराई हो। तनी मेरू क
हो तवू जी खोल लपकतैर वि विहाई हो॥२॥ नारद सारद सुकमुनी
गावै बहुत बेद नवाई हो। मो जोगेस्वर ध्यान धरत है सेसस
हस्र मुषि गाई हो॥३॥ सो सनकादिक अंत ब्रह्मादिक वा
रा ति उनकु न पाई हो। जगजीवन तघ नाथ नसंत जीजो
गकु पानि कहि पाई हो॥४॥१४॥ जोबन जाइ लो रे याकु गणो दिन
चारि मन सिष जन मन मै न है। अंड को डासटे न हरि टेक
॥ गया जुरे सुरनर मन सुषी चौ॥ उनकु कोमिटा न ताप पहै
वबास को रसा यो मथकर उत्ताटि बंधाणो॥ आप॥ १ कहां रजा
कहां पाति ला॥ कहां नारी कहां नेह देषत ही जलि बलि गई
वाकी कंचन सी देह॥ कहा वेलो ग कहा सुतसंग कहां पे
ताकहां माइ हंस उड्यास जन बत्या बसे निमिलबो आ
हरा सु घनेके सुषि सब जग डहरया॥ बंधा करम की पास
जगजीवन जन जतन करि जीव का हरि सुमरी सासे सास
॥३॥१४॥ बीर बटाऊ बा कही यो हर जी सं जाइ यात डलाइ
नसंदेसा हिवसुर कमनाविरहा॥ टेक॥ सोच करत सब राम
गमि बिना और श्याम नोर थमो हि। सकल आपदा आहि रि
सो तुम बाले हारा जो हि॥ अमवान मिदा या घटमीत रिम
री या लयो ना हि॥ बेद हारि बिन की नजीवा वोरह्या बिषा
दि मांहि॥ मन जो णराइ नां णो अंत र का राषू कहा दुरा
करनी मन विकर नां मई बेगि मनालो आइ॥ जे सेबा लोगा
हकुं या हीमा इबछपका पास। ऐसे जीव को राम मिलन कुं
करै जगजीवन दास॥४॥१३॥ ब देब दगी कुं सिंयार दरीषाने
नोदि अंतरा पड़े मुरला मुहि मार॥ टेक॥ गण गड पयंड आदि मं
ड कहां लग और काल आयो बालनाहि॥ गहिला यो अवो
रा॥ कहत कुंड तोमन नाही कहां न की जैरोस ऐसी औसर
बहो डि नाही दे हमो कि सदा मए॥ १ पवरिकरि कुसियार हरी
मीत जि आंनावि दमारा न मन बिना मी पा रा ना दूव हे काल
॥ १४॥ सक जी व की कहूं कित नीक हतन आवे वार जगजी

२३॥रा२॥राग सारंग॥प्रीतम आवो जी अब ॥ निलावोवार
वैमासोहूं मरनतमुकि बिरहनिक आधरिहै आससावणती
जतरणी आत्मकी प्यासिगास लवेचा आगधरहेरेघन बीजल्य
चमकात्यीविघिनमेरो बदनबिलषो टिकतनांही सासरस
सावणजाइ आद लो कहा बंधावो आसरु आदवे मेपड्यो मनके
नदीयानीरनहाइरामबिनमरी सफलनी कैसै रैनिबिहाइसु
निसधीसबाम्रचितमयो सुपनेमयो सदेसाआदवो अतिजाइग
हरो आऊ करो अदेसर आसे जमैजैसी नई मेरो चितनथी
है थीलालबिनमेरे नहीं कोई कोनजाणै पीराय थज्ञाऊ नैन
राऊ षडचितऊचाटआसोजमै धनमई आतुर अहोरिनांही
थएन कात्यगम मंगलचार जनके पूरईसव आसपी वआपेम
नोभायोदरसीसवदास करी किरपादी नऊपतिपरसिपदनि
रवांनाजगजीवनजनकेलिका किम्ने छिनहूजी आन ध॥१॥
२४॥रा३॥राग सोरठि॥सजन आवत मघरि आवांघरवार
नोहिइस उनेयो मिलिवाकोडातठेकपरप्या सोजा लिखहूंता
तुमधिन कतसुजानामे अवला कत हीनतुम ॥ कोई न पूजेगी
नहातलवतरीमायेनिसदिन जूंवा धिगधितवतनी ॥ करनांसु
निकिरपालत्यो मी वेमि बुफ वैपासे आवधेघरतीजाइपत्य
लतनालावेलीगीयात्मजानराइ घवीणधरूंमहलियधारोथ
कबविधातनकी वड्डकासं कल्पानकैपतिआशतुमदीनवंधु
दयालकहीयो रह्या वदेसांइ ॥श॥ सुमसरणिसोतकुमद्गसाच
बिड दसुधारणरावाजगजीवनजनमिलेप्रीतम आत्मआपिक
जआहा॥हलतरीनगतिदीजेमो सासुरति धागानांवमणिव
रापिंजर पोश अजपूयनपाजोपनिमदिन अयंडसुमिरण
होअदाविलतेरासत नेलाबाणन्ह लागे कोश॥ वुसावितनम
हे सत्गुरनराइताचुणीयादोनामकत्ततजिलमसतणिरायारा
पीजनकोमानरआसतेरीक रे रआमेरी मोहि मिलनकावा
जगजीवनजनकरे बिनती देवदयाक छ्योगार॥२५॥ धोजीउ
लमदरसनतो रमेनिवला अंकरमवलिहतकवनपूजेजरथ
मनमनसासुरति चलाइनका येली सुनाइ अपत परगटवहे
सदई करे नहीं वहरावो जोगध्यानवछैयवन सारंवनानाम
अपार प्रेमभक्तिनां घरसन नहीं वैसाचालिरजनहार जोगीज
तपीसन्यासी सब ही कहै पुकारिगुरकिरपातें ऊवावेनहीत
रात्योहातिजीवसी बदाऊरहत सुमिलनत वसिनईआतर

स्यां उप जैव हौने हा॥ ३॥ जैसै अमली अमल बिन मखल
बिन नीरा॥ दिल माली या दिल मै बसै ज्यां नै पर पीरा॥ पीति
तुलाई प्रेम गी दबो जा बकली बिरहा ऊ पै टै पीव पियांडा
ऊमी ठा लि छु लां ऊ र अगर चंदन लो लेपनां संदल सुग
बासा॥ प्रेम पियाला मांह संगि दीपक परकासा॥ बहुत क
दिनां बिछु त्या हस्या तन ताला बुली॥ जग जीवन बलि सांई यां
मिलि सुकतु पेली॥ ९॥ रे घडि याल बीनती सुनि मेरा सांई
मेरा पियारा पाई या पांजे बंटी बधाई टेक॥ रंज घडी या मे सु
रता मेरा सांगडरा ऊ बहोत दिन तपी बमिलया मा तै बढि
डि गाई॥ मिलता मिलत मिलि छ्यारहां बिछुरनां नहीं भावै मै
पीहा दिरसकी॥ मोहि अजक लगावै॥ काया महल सिंगा
राया॥ तिस फुबजाई दीपक पांन रतनका मिलाय स्रमदा
ई॥ सूमपूती सारति जडी अमी रंग बाला॥ अरस परस आंन
द बानांगा सब चिंता घट न घट न घडी या घडी कोनांम
तिरस्वावे जग जीवन दे तगया॥ सबसा दिखावै॥ ८॥ जैसु
त्या नै रसना कहा करे॥ अनला जिन मिरामा जलबूंद सांसे
है सतिपाला टेक॥ डाटी टोडी तसरा सूखाटे टिटका छैग
जा निरास हो रहे टेरी या हरिली या बंबाई॥ जल थल झी स्व
ला महीं जहां तहां रब बाला॥ प्रहलाद पतपा पूरि है घटि
मय जाला॥ रासी तली मरथ रतणी नामदेव बंचाया॥ ल
हुले गरपगिपालि के कबीर तिरया॥ साधि सुण तपात
री महि मो अमा नारी जगजीवन मसु सकलिक हां जाके द
मुरारी॥ ९॥ बीनती सुणो मेरा नाथजी तुम सम्रथ देवा
मेरा अपने अबला बली के कहा तन सेवा टेक बहो बिधि पान मु
नाई या करनी बहो तासा॥ मदा रूप निज समझे नहीं॥
फिरि बाहरी आसा॥ जब लगि तक लपनां दगा थे निरास ती क
रसनां सुणी कनों मन्त्री जनय करौ हा था॥ तन्य घे रास जन
मन दिस्या के कुचलत जत या इ जान जगजीवन ले कारिस्या
हरि लिया रहो बांबाई॥ १०॥ महा हरि के पहरबो नजी आपनो क
रि राखो मैं तुम ही सलागा रहो सो ई बुधि आयो टेक मन जालि
न समझे नहीं मेरा बसनाही तुम सं कहा दुराईये तुम द
रसै मांही॥ आगे पीछे ये कहं मैं आन तुम आधार तुम ही तै प
द पाई सै सब छेल तुम्हारा राखन निवाज कल मार टेके कहि जि
बतप आसा॥ जगजीवन दरब सके पांवन की प्यासा॥ ११॥ ५॥

तकदिन वि छया नया॥ता ता व जो जावा राम दयाल दयाक
॥सहन पक्षरो पीवाध्या जगजी वन जनबानेवो सुनि सतगुरी
रजन हारा दरसण दीजे देवजी॥ अब कि मिलावो वारं या प्रभु
दवा जाणि रे जग जो ने ॥ समझि मूढ मति नाई ॥ रामसुमरि से
ज्ज सुख पावता पर हथि कोइ ढिकाई ॥ टेक ॥ चकवे व होत सूर
विवता पाति साह सुणि तां ना दे षत नेजरि या कोमे मिलीया को
रक कुण रांणा ॥ जाके हस्ती घोडा गंवग उ गुड रायर चव जा
नारी कनी क्रम हवे ली छाडी ॥ कर ता म्हारी म्हारी या सो वति
गन गरावा जे ॥ लेडे फौज कूरारा चलती देर कांदष वरि न पा
किगया सह ल छ क्षरा ॥ ४ सूर से ई ल डे ला या सा न हि न हि
पौत्र बोरे सतगुर सब्द मिल हक रि न तकी जनमे वासी मा
या यन भूत नी सब बसि कीया ॥ कोम कालके गिली या जगजी
न वे जोगी जुग तपहरि न जिह रि मे मिली या ॥ दो ॥ मन चेति रे चे
ते कोइ कूर य तो ॥ अलप जी वन संसार सां मैं पड्यो सुमरि ले
राम सति राम ना तो ॥ टेक ॥ कोम दन क्रोध ल ल से लि ल मो दव
लिपा धा सं य्रा ग सा ही ॥ सा वरी सां ग खे सफर न जन ना हि न स
सुष जग जी तितर्पी ॥ सब दस ना दस मसे रग छि या नको ॥ जो
रसतगुर सबद ध्या न धी रा प्रेमरे जुग चढि सुरति लगां मदो पको
पो हूं क रि ह थि हम ॥ २ सो ह ड सो वत न डे सुख पावा पडे ॥ पे
री या पिसण रिण राम सो ही ॥ ना लि गो ला व है का इ रा कि मस है
डिर हे षत कम धज को ॥ ३ विरह छिधि आर वा ना घे जी हि अ
तरां ने लि ना रय ज स जो ध ली या ॥ रा जि रे का जि त न त्या गि क र
रामकी या मोत नें मा रि जन जुग तिज्या ॥ ४ अदलि वे सी न इ
रमा म स न सुष स ही ॥ ली ती या गढ छ रि नां जि नारी दा स जगजी
वन मौज दे मां नी या ॥ हरि करे कृपा ज न ली या तारी ॥ ५ ॥ मना
मूफिरे कू फि त कज्ञा इ नारी ॥ मन क रा जो ध अ साध आगम दहे
सुमरि रू घ ना थ या नो हि था री ॥ टेक ॥ देह ते ने ह मन म लि जो ते प
ड्यो ॥ क र म नेत न स्म कालि मं फिबसा ॥ सा पि सु पि न्या ग ली म मी
फ सत गुर को हे ॥ दो २ वि र ने न र रा खि पासा ॥ ॥ कन का नेकाम
णी त्तग ति त्यो बडो ॥ स वजन दो ३ कं हा थि सा सो ॥ मो मने रे
सन सी वा के र ल्या ॥ कोरे क र त विसो ई जी व पावे ॥ २ रि षि ने मि
ध्वि सब रू ग ला वि सा ध नो ॥ कारि वे र ग ध ति ला व मो है मना र की
चेट की न स म पा मे र हि ना ॥ सो इ ल्यो ली न सं ना ति सां ई ॥ र
या नें रीन चा दे पि सा हि व सबो ॥ ...

आ नुरागरी बीनाबडराग है तौ हरि कै सहाइ ध कोम आतम मो ह
मया ऊजी बचै बे धा जगजी वनजनसतगि आया लीजै राम
उबारि प्र मनरे हो इ हरि का बोलिणांना सूतै रै कोई न ला
गै बोणां टकनं य रह रि बि बै आइ यो स मप्रियालागा दूर हो
रे ति नपाता तो कूं दर वै आप त्रि थाता जा कै मनतको ठि अमर
बा दे मा वे ओ जन म गा घरा स जी ना मा चौ फिरि ओ स मगरि नह
आ ॥ कल मकन को ता ज प जा दे बा तो मनह दबा चहे ग
गजीव न दास ॥ तरु त्वि रखो मैं दा स ॥ १४ ॥ मनरे सा चा रा मदी
वां वरे जा के बाजे अगट जी सां ना टकये कबूंद स्ट सवजग नी या
रव सक तु लि तां ना ये वो जो य गि घो र या रे का कांड करत ड
का नो ॥ गा ग डय स बही बा लि है सो मूं ही नहीं रहाई रावन
सा बड जो धा हो ना तिनकी ष बरि नि मांहि धरती गिगनन ही क
लु अ स धिरा बा लि है स न ग म डा णां जग जी प न है सं तन बिलि
हैं जा पर स्वा प द न बां ना ॥ जी व डा हा री रा बे सूर हीये मुल
का लि ब हो त प डा या जा बु को यो दु स का स क री यो टका लपर पि
उ ब्र स मं डु प गि ला रा ला ग त्या रि पो कान्नी व यो मा सो
मो कि नि तदि न आये जा नै अंत जो मी पीव स त गुर स र नि ला ज
स तन को दूजी कजून सु हा ई आ गे मधम त धारे के तब ोल त
नि ग म ब ड कै य लय ल डी जै राम न री के फ बा जग मे वा सा ह
रि दि या ल म हार कि नि थो कहै जग जी व न दा सा ॥ २ ॥ पं थी
डा ग फ रे बिर ह ना आ जी म्हा रा पा ब जी य बै न क व घर आ स
कि व क ब मि ल ना जो ऊ दि न आ रे टा बहो त न व धा रा प्रि य
ब ह ला ल्या व स दे सा ब हो त का दि न म त्या न या मो म नि ग्रो
ही च्चे दे स ॥ य हू भा गा जि जा बै न ही ॥ बि स ला गे स सा र ॥ बि स्ह
नि ब द नि बि म स्या ति दर स्यो हा ई का रा स क ब घ जो ला ला
कि व क व मि ना हरि य म म ने ह री रा ८ ॥ महा लि अना लो ध ग्र म
ति मि ल्या सि ज स्न रं गी घा आ गो बालि म्हडी ऊ घ री अग रा जे
नै का रा ज म जी व ज दु ल ह नि के त सें दर स्या रा म मू ता रा ॥ ३ ॥ कई
खे रा क पा व नै से दे स डे ॥ बिर ह नि कूं मे धा ड़ ॥ क्षि स न ई सा हि
ब ब ह्नि ग यै पी ही कहा जी करौं ग आ ॥ टेक हिं वडै अह टलाई
या क ब र मि लो गे ना थ ॥ कन्जी जो कंग आ गा णै म स्ल ग री यां दा थ
॥ १ ॥ बिर ह का सी दय गई या ॥ तुम बेगि प धा रो दो रा ज ॥ तुम बिन घ
डी न आ वे गी त ल फ त रै नि बि हा ॥ २ ॥ स्तु य न क पि है आ ला जी
उ ति जी कं बा या तुम र बि न स्ल नी से ज डी ॥ नो हन जो दे पा टा ॥ ३ ॥ ब

सिरऊपरि साँई लगौ नूंपा॥गभा तन नालि॥ प्यांसो चपो रमनस्म
तिधरै सांवत होश्सरतो॥ पियो ओसर बहो तूं नहीं सो कैंव
णिमजां रिद्धि कनक कांमणी दोइ दीज्ञो भ्मां बडी रणराना प
हली चोट उपाडीया सो साच्या रणराव॥ सूरक हावापसे ह
रा॥ जिम्मा मारी होश जो पिमरणा कविन हो॥ मारि हे तिलाक
अं सव तरी पादेषी ये आता कदे ब णाश्मु हमिलाया पछि
तकैवांन बिड दल्ला हश्॥ नांति बू झिमन क्रमबा नरिण
रवीया औ धूत परदल पा गामे लिदें॥ सीलघतणा जपूत
रक्षा विपुरतम पूहिलै॥ मारन ही सेसा जीवणरो सां सैत
नी कूरिमारणे इकूतारा॥ जेमूं बातेअबत्या॥ नगत सूर साणदा
तारी मपगाई पतिवा॥ पुनिवै कूंग बास थसांइधरमी साचै
मते बोनी याद सजि॥ जगजीवन जनकूं फाया॥ आपने सा दि
बकाजि सूया १॥ ष्टी सरजा इलौरें नर सोंधा वरनसर निगाहि
माई सुपनेकै सुषकु हासुलोनी तोपरिवा टैं काल वधाई॥
टैक भगो मलें होसी गडा॥ मपाणो कूं बनिज्ञावें पाबपचीस
पालप पतिआगी साचदई दारिमावो॥ हरिसा हित नहीं कोइ
सूझा ना कूं कोइ बिसारो॥ सो देव हानिरध निरंतारि सतगुर
साध पुकारो २॥ मैं तेमें हिमरम्मा हि मुगधा॥ जाडे सकल कु
टलाई वामें बैनन हो रिचे घलाये सब विधि सगाई ३॥ सास
पास बंधी सब क्षीलम भैक्षन रमविट माये॥ मा रूप कहिस
तिरो मनगा धरा करमो हाथि निकाये धा॥ जम कौ त्रास सुनी
जब अब नातब मनरो मकहायो॥ हरिहो दयाल महरि कोई
माधो॥ जगजीवन सरनै आया ४॥ धा॥ माय जोबनी घुमडध
स्यो धा॥ लोभी संत सधीरमं डली आयो महा गिरि बिरचै हु
नी यांदा सकबी कटे कप समणयां चूं पालि रहीया॥ दिपीयाद
सूं देसा रामजा सूरंग घ्रे लै करै पिंड रेसा॥ अयनमत संगीत
रहीया सा विश्रा मिली संता॥ जगजीवन जनगुण गावगय म
स्यो भगवंत ५॥ ५॥ मेरे मन जागि जनम कहीयावन जोसै दू
पदुहे कारि कठाव तक ठावतेना॥ बुनाटे कोई इसवें सर रस तें गु
ड कान्हौ भ्र तें घोड कूमाई कूं जाटालम ई गषिमिस हीम
स्गोमो लिहि कासी॥ जैसैं सापसमद जल नीता हि उरधरा पे
हीप ब हो सो जतन करै॥ फूनिवा को आंदीन भेदे नीर रहे
सैंजा निभ जोबन नाही तनमनप्रीति लाइ
जगतैं न्यारा वहौ रिन उदी समाइ॥ ६॥

नी नकौ॥ पागकरि चित चौधरी॥ दास दरसै जन हो दरसन्नरी
ानी रमलाी तेज सुष सेक्क साई रमे॥ झिलि मिलै जो झि
हांसा पदेवा भावरी पूजि दिल दूजि दरसै नरी॥ जहां
दास जगजीवन करै सेवा॥ भा॥ नरनिरानिरै निरषि निज
तत देखा लो मनै॥ ोर सब पक्ष उक्त नै करी मन नैपव
न धुनि धारि सेवा॥ देवनै दहरा दे क्षिमा॥ हा॥ क्क गुर
सब दहीप गालाइ फ्जा॥ ऊ बाधिना पाट षोलि पालिक
दरसि भावनै भेग हरिनां दिस जा॥ को लरी घंटा बेहद
बाजा बजै॥ संष चक्र गदा पदम ये त्रय हो मपाती ग्पो नैके
म मल छि प्पांन को कल सला रिज्ञ रसनै पर सजन गुण गावज
नैरा॥ को मनि दु कोमती न गुण न्मगुण हो ३॥ ससि नै भोन
नाथ राधि दोश से व्यास्वो मीसाव यपरांची या॥ जि मिन
रमैं नाराजि जिनी हि कोई॥ विवधिवस तज हरि आनंद सा
रती मंगलाचार तहां सत मै सोही स जगजीवन परमपद य
रसाया॥ जो तिम जोति लिक्त्रै का॥ भा॥ र सरे गुण चोर
न का ३ बिसरे॥ बिसरयां कत्र पीति र हसी॥ हरि दरबारै हो
इ जबलेषा॥ भार बहोलत लस कसा टका ओर अघ सगर
भसंकट मो सुधि बुधि सकै मांही न पसपसा जि कीयोत
नसा बाति जैसा सम्रपसांई॥ नजि भगवंत माल मांन्
॥ बारमली बनि आशी परमानंदय मा हित सेती सम
रिसदा सुषदाइ ३॥ भा॥ भागाति का भजन निरंतरि औ ग्री
सरको इस्तारै॥ आनंद सिधि बोल गि अबिनासी सब विधि
कान संवारै॥ जाकि गदी सजांग कोई जावै छिन छिन
छीजै दास आरमतारी मर ठ जैंसे सजां सनगुर कहै सम्फ
या॥ भा॥ नैराकार निज तक ज नि रंजन जनकी सदा सहाई ज
गजीवन जपि जगत सरो सग्नी जंगलसं गुपति बनाई॥ पा
३॥ म्लरा या नी यारस्मा यो ाक नक्षा शिया चतान पचीस जै
के फ्ला टघत बुहा रिठेक सेल सबद सम तेरगा॥ हाजरणा
ठाप बाणा ३॥ जसपा गुनाति बिचार का॥ धीर ज ढाल आपणा
॥ घोट प्रेम सिमारी आ॥ पति या पर बिसवासा कमधवट
संग्रा के बाडी तन की आसा अास्या॥ सतगुर विचैं बेग
रघ सूरारी
फाल बनीया लो हो ... को
होणी हा इस होइ॥

वेकीसुष॥३॥आत्माबिनमेरैऔरनकोई॥कासेमिलोंऊचित
॥जगजीवनजनबक्षताआतरता॥सुनिपरमसनेहीमित
ध॥२०॥मनरेकहानयौसुषवासम॥कामक्रोधमायामेम
तोसाहगालामेपासी॥कैएंहुआदिरकेगरूरांनो॥म्
हसुषसबेसुहाया॥राजपाटसिंघासनआसन॥पलमे
भयापराया॥१॥मेरीमेरीसबकोईकरता॥यानोहीकाहूकी
धूवारमेहुअडंबरदीसै॥पिंडमहाधरसकूप॥२॥चेतनहो
इचितईचिंतामानि॥निरषिनिहारिघटमांहीसतगुरकहे
सोसामतिराषे॥अरसपरससुषसांई॥३॥योऔसरअक
आइबन्योहै॥करिल्योजोकछूकरनो॥जगजीवनजनल
वबिसवासबिन॥जमआगेदुषभरनो॥४॥२१॥हरितरवर
जनपंषीआया॥भ्रमनभ्रमततोसरणेआया॥कोगहर
भौरफलअमृतदाता॥हरिकाजनऐसैबालकमाता॥१॥
कूंपलतोरेपातबिगारे॥तजनतरवरअनंताबिडारे॥जग
जीवनजनतांवाबिसरांमा॥जैजैजडुपीडुपीनिजरांमा॥
३॥२२॥कैसैदरसनपाऊंप्रभूतारा॥मनजानिमतमफे
नहीमोरा॥कैप्रभुनिहरमुनिजन॥अरसिधसाधिकाअ
लीया॥तीनलोकनवषंडहीमिलीया॥१॥जोकबदीसै
ईमनकापसारा॥यामनकाकोईलषेनपारा॥२॥मीयामे
हनोंनारीनरतारा॥मनहीनिरंजनमनहीनिराकारा॥३
सगुरसबदमनउनमानिलागे॥जगजीवनजनभरमस
बभागे॥४॥२३॥४३॥राग॥४॥रागगोडी॥गाफिलनदिनव
रीपैरैमाथेऊपरिकालपडाहै॥तासूनिसदिनडरीयै॥
टेक॥काकातूअबकोहैतेरा॥हरिबिनाकिसकाकाजि
सरीयरे॥दिनोच्यारिकागोवलवास॥फिरिचोरासीप
यारे॥१॥किसकीमातपितापनिकिसका॥किसकीकेहू
रजोईरे॥योसंसारसुपनांकीबाजी॥जोनैगाजनकोई
॥किसकाराजपाटपानिकिसका॥किसकाधनआरम
यारे॥आपेंचकबेराजाहोता॥कहिकौंनैसंगिचलायारे
३॥मैमेरीकरिआसालागी॥पछआफधसबलोईरे॥जगजी
वनहरजीकाचरनां॥रह्याचाबधारिहोईरे॥४॥१॥४८॥राग
४॥रागतेरह॥सतिसाहिबसतिसाधरो॥पोसमकलस्अ
बादरेटे...
उबिजोनो॥३॥मोगीनाभानुगी॥

अनगढ़ी डोलनौ ह्णी है हरि के दास। अधिक रूप अहत्सां
११ नंद सबकी पुरवै आस॥टेक॥ पांच तीन पचीस प्रकृति कौ म
कोधरी कौनो छिमन मनसा नाद बिंद मिलि रहे थे कै यो झा॥ अ
धर षेत आगाध मन मै प्रेम प्रीति ल्यौ डोरी नवरंग नवलकि
सोर नागरस है हरि तत जो रिषब मेकबादल बिबै रा बिज्जुरी स्वा
ति बूंद बरषाइ चाहै चात्रिग लवै सदशी धर रहै घन आइ॥
३॥ जो बन गगन को बिजिलि मिलि॥ परम जोति अपार षेलै अ
न्मर मसां मिलि सांझ प्रोडि सिंगार॥ झूलना हिंगुलागिं
जमना॥ सुर सती साधि आइ त्रिबेणी तट औकल तरवर त
८ हां र हलनुमा शाय जहां। गगन में झिलमिलि तारा चतरद
सवे ह्वा॥ रिआरस परस दोऊ मिले मंगलाचार मेघ न्नू पति न
हि॥ जोरे सो द्यो सनत रंगतारा॥ अगम आनंद रूप न
रा निरमल मूक्ति माधो॥ गसां बो तन धूप॥ समाधि सागर
मसो लालनि॥ पंक्ति मोती हंसा हंस पेलै चुग दिव चबिन
म ता॥ अमीरस ती राणपरम सुषपरमो नयर मल सरस सु
४ मेघन न्हां॥ घटा घटा घटा घट घटा॥ निराकार निजदे
णनहां जोग ध्यान न बान निकूचला सबसंत न बिस
रामा जगजीवन जन देव निरंजना॥ आपरआप हित स्याम
॥२०॥२॥ बरसण लागी बदरी याये काम सिलता समटिच
ली हरि सिंधु दिसा आसा रतीन सै पाटेक॥ बिरह बीज बाद
ल घनन म टे सतगुर सबद अवाज॥ महा अमीरस जल
प्यालन री पा नये रांम के राज॥ चात्रिग बाहै पपीहा पीव
पीव नवरग जौरे रागा हरि पावस बिन कौनी निवाजै॥ धरी
आल्हा दी पौ सुहागर॥ प्रेम प्रीति ल्यौ सील सबूरी पर चा
सुध बिस वास। जल तरंग जल मांहि सम मौनी॥ यूं नाहंस
मो नांदा सु॥ नये मगन गमप्पान बिंपाना॥ पाई थिति
बिसरांमा जगजीवन जन हरि दया लदया कारी सज
ने सवारे कांम॥४॥२॥ हमारी को पतीयाले जाइ श्यान
नाथ अनन को प्यारो॥ नहां बचावै जाइ॥टेक॥ गाकूं बहो
नबधाई देहूं लिन मन सौ सस है ता पावै पीव संदेसा
पीतम सीतल होइ रहै नैना॥ मोसागर सुमन न्सो प्रीत
मांचा त्रिगचे चन लाछि गर मनरम बहो नाता सहेतानि
वैरहै त्योति की चा ह्ली॥ बिरह बिथा मिसदिन जरा वे का
मा गि आई दुष पानै नबैन आतर नये प्रीतम हरिमिलि॥

क्रोध बिरोध गई हरि उपज्या प्रेम सुषनर हरि हित। तन मन नम
सषन या उन्हाव। आत्म बेठे हरि के नांव। ४। आरे अनंत कोटि
निरंजन देव। परफुलत है दक रिल्यो सेव। ५। अरस परस अंत
र तिनि नाहि। जगजीवन जन परस्या माहि। ६। २। गाइ मेरा मन
कमाल वार। तेरो अै सोन अै सिर वारो वार। टेक। मेरा लगा या
नामदेव कबीर। नग ति भिरो मन निरत स्यातार। १। गोरष न रथ
री गोपीचंद। अति बिचल रही या न झिगो बिंद। २। दत्त बपरा लि
म अरस उपदेश। मिले निरंजन त्रिगुण देव। ३। सो जापी पाजन
रेदास। हरि जन जिह रिमें कीया बास। ४। रो का बो का नां निकसा
सा हिरदा जीतरि न या उकास। ५। अनंत कोटि की बोले साषि
ड्यो सुमस्या ते लीया राषि। ६। जगजीवन जन करै बिचार। मो हि
सरनै राषो सिरजनहार। ७। ४। पद। राग। ७। राग वसंत। अप
राधी जीव डे गुन्हेगार। रोम नउ मरै वार बार। टेक। जगत वाग
जो मै बिषे फूल। मन मधकर तहां रह्यो मूल। १। हंन तिजो नैं सु
ष की रासि। आगें व है तब गे देंया ही पासि। धपो न धांन उनम
नी ला। २। मन पवनो विहे नी न्हा। ३। सत जुग त्रेता बोले साषि।
आगें अनेक जनां हरि लीरे राषि। ४। करि बिरोग देराग धारि नेरा
हिरदा नीम रहि सिउ धारि। गुर को सबद लेम न ओ साषि। तानें कहै
जगजीवन सिरव्या षि। ५। ३। ५३। अथ आरती। आरती आर
त हरन तुम्हारी। निराकार की मैं बलिहारी। टेक। काया देवल
देव अबिनासी। मन करि पूजा मनसा दासी। १। तत का तिज क
य हो पल्यो पाती। परम पुरष जहां निज जन जाती। २। दीपक अने
त अनंत परकासा। वाजा अनंत अनंत षडे दासा। ३। अलष दे
व जा का सकल पसारा। कहै जगजीवन दास तुम्हारा। ४। १
आरती राम निरंजन चावे। नेती सूं मिलि संगल गावे। टेक। चित क
रि थाल जो तिजी ब्रजागै। सबद अनाहद बाजा बागै। १। घंटा नाद
प्रेमरस बांनी। अवगति की गति जाइ न जांनी। २। घर मैं अनंत
बजा वै बाजा। सतगुर सेय सरै सब कांजा। ३। जिस तन मांन माव
उन आगे। जगजीवन जन चरनां लागे। ४। २। ५५। राग। ८
इति पद संपूर्ण। साषी। गंजि पटिजे सुमरीऐ। जो जे उन मन धां
न। जगजीवन हरि सुमरीऐ। कव ऊन बकी ऐ आंन। १। आंन ब
क्यां अंतर पडे। उपजे सोग संताप। जगजीवन हरि नजन बिन
सब दस बद मैं पाय। २। इति जगजीवन दासजी की बांणी सं
पूर्ण। राम राम। बांचे ति वांरै जा कुं राम राम नी

स्पारिनही तल्मा॥२॥ नीरषवरलपूना॥आचारी॥बेदबिनां
कावासब कारी॥अन्तोरेबहोतकउवारनपारा॥कहै
जीवनमेरेमोक्षधारा॥४॥११॥रामरमैतजि निकरैरेबधीरा॥
जाकीजीवनजेसेअजलीनीरा॥टेक॥तनबेराकागदकाकीन्हा॥
जलसेतीबोहारा॥जुराबेध्या तनिमरहीसाजा॥गलततनला
बिबारा॥१॥पांचततकातेरासाज्या॥ नरीयाबिषेबिकारा॥गु
बिवरस्सबरबोनांदी॥कि सबिबिजतरोगेपारा॥२॥सैंसबरस
जाकीजीवन होती॥तेरूचलिगयानाई॥सुपनाकोसोसुष
डोरहै॥तामेंकहालनाई॥३॥मेरीमांनउनमांनबिचारी॥रा
रांमनहरिगावो॥जगजीवनजनमिलेबलमें॥बहौरिनमौ
जलिमआवो॥४॥२॥देहोदेवमैंसरनितुम्हारी॥कृपाकरौजन
लोउबारी॥टेक॥ग्यांनध्यांनबिग्यांननजांनौं॥समिहरकेब
सूरनआंनों॥१॥महाकुचीलकुटिलबहौकांमी॥तुम्हारीन
हिजिनआंमीनरमी॥२॥तुम्हारीआसचरनांबिसवासा॥करै
जगजीवनदासनकोदासा॥३॥२॥हरिरसमीगमाईरेहरि
॥टेक॥कहूंबिरलेजनच्याषिरहौगा॥टेक॥यारसकीक्याकहूंरे
दीआरसपीयांसबैदुषजाई॥१॥पीयारसनयामतिवाला॥
भरनआयेनहीकाला॥२॥येमरसपावैगाकोईसनाथा॥जाका
धड.परिनांहीमाथा॥गोरषनरथरीसाषिकबीरा॥अनंतको
टजनतनतेरा॥जगजीवनजनजुगिजुगिजीया॥अमरप
दपाजाहरिरसपाइ रीया॥५॥४॥५२॥रागगौड॥ रंमप
धारे॥मपधारे॥जनकेगृहआएकारिजसारे॥टेक॥पांचसषीमि
लिमंगलगावैं॥आरतीकरिकरिनहौतसिरावैं॥१॥पहौपबी
बिछांऊंकलीजनमजन्मकीपूरीरली॥२॥आवागवनकीमेटी
त्रासा॥चौथेपदमंडीयाबिसवासा॥३॥कायामहलमैंनयाप्रका
सेजासुफलनईरता बिलासा॥४॥साधसंगतिबैकुंठनिवासा॥जग
जीवनजनपूरीआसा॥५॥१॥धनिरैदिहारौधनिआजकीबारा॥हरि
जनआएजबमंगलचारा॥टेक॥लूनवछारकरूंडोत॥पांवन
जयोसबजनअरुगोत॥१॥परमउपगारीआएहरिकेदास॥मि
टायातिमरनयाप्रकास॥२॥हरिजनहरजीअंतरनाहिं॥अरस
परसधेलैंजनमाहिं॥जगजीवनजनन्हमलनांइ॥स न
लिबैठरैसैं[illegible]॥२॥हरिआएहरिआयेरी॥नागेरोरकारिजस
बसारे॥टेक॥कायामहलमेंजेजैकारा॥अरसपरसदरस्यादीद
रा॥सतगुरसबदोजागीचिंता बैरीउलटिनयाहैमिंत॥२॥

[illegible]

श्री निरंजनाय नमो श्री गुरदेवाय नमः ॥ स्वामी जी श्री ग
कबीर साहिब जी की कृत लिख्यते ॥ श्री गुरदेव को अंग
कबीर सतगुर सवांन को सगा सोधी सवीन दाति हरि जी सवांन
को दिसा हरिजन सवीन जाति ॥१॥ कबीर जाति हमारी आत्मा
प्रांण हमारा नांव अलष हमारा इष्टदेव गिगन हमारा गांव
२ कबीर जाति हमारी जगतगुर परमेस्वर परवार समाद
सेतै हैं सिरपथि सिरजनहार ॥३॥ कबीर सतगुर की महमा
अनंत है अनंत कीया उपगार लोचन अनंत उघारीया अनं
त दिषावणहार ॥४॥ कबीर सती नहैं जु गुर मिल्या न दीव
रहोती सांणि दीपग जोति पतंग ज्यूं पडंता पूरी जांणि ॥५॥
कबीर माया दीपग नर पतंग भ्रमि भ्रमि मांहि पडंत कोई
एक गुर ग्यान तै एक आध उबरंत ॥६॥ कबीर सती नहैं जु
गुर मिल्या तिन तैं पाया ग्यांन घर ही मांही चौंतरा घट ही
मांहि दीवांन ॥७॥ कबीर सब जग नरम्यां यूं फिरै ज्यूं रामां का
रोझ सतगुर तैं सोधी नहीं पाया हरि का षोज ॥८॥ कबीर गुर गर
वा मिल्या मिलि गया आटै लौंन जाति पांति कुल मिटि गा
या नांव धरोगे कौंन ॥९॥ कबीर ग्यांन प्रकासी गुर मिल्या सो
जिनि बीसरि जाइ जब गोबिंद कृपा करी तब गुर मिलीया
आइ ॥१०॥ कबीर गुर गोबिंद तो एक है दूजा सब आकार आ
पो मेटै हरि भजै तब पावै दीदार ॥११॥ कबीर आप निपाई थिर
तन है सतगुर दीन्ही धीर कबीर हीरा बिनजीया मांनसरोव
र तीर ॥१२॥ कबीर थिति पाई मन थिर भया सतगुर करी सहा
य अनकथा जी व आचरी हिरदै रमता राम ॥१३॥ कबीर चे
तन चौकी बैठि करि सतगुर दीन्ही धीर निरभै होइ निसंक
भजि केवल कहै कबीर ॥१४॥ कबीर चाल्या जाइ था लोक वे
दकी साथि पैडै में सतगुर मिल्या दीपग दीया हाथि ॥१५॥ क
बीर दीपग दीया तेल भरि बाती दई अघट पूरा कीया बिसा
हणां बहोरि न आवै हट ॥१६॥ निहचल निधि मिलाइ सत
गुर साहस धीर निपजी मैं साझी घणां बांटै नहीं कबीर
॥१७॥ कबीर सतगुर हम सूं रीझि करि एक कह्या परसंग बर
स्या बादल प्रेम का भीजि गया सब अंग ॥१८॥ कबीर चौप
ड़ि मांडी चौहटै सारी कीया सरीर सतगुर डाव बताईया
खेलै दास कबीर ॥१९॥ कबीर बूडे थे पणि ऊबरे गुर की ल
हरि चमंकि भेरा देष्या जरजरा ऊतरि पड़ा फरकि ॥२०॥

मैं रांम नांम तत सार जन कबीर हिरदै धरया। सो ना अनंत
अपार ४ कबीर सांसां सुमिरण होत है तौ नी लागै अवार प
लका सुमिरण होत है तौ नी लगै जुबार ५ कबीर अजपा सु
मिरण घट बिषै दई सिरजनहार। शिणी ही संग्राम मैं रहग ई म
रो मार। ६ कबीर बाद हरि का दिष लाइ एक तरि कही एं रांमा न
ही मही साध तकसू पड्या धणी सूं काम ७ कबीर सब रगत
तिरबा बतन बिरह बजावै निंत हूंजा कोई नां सुणी कै सांई
कै चित। ८ कबीर माला काठ की बहौत जप्ण का फेर माला
फेरै मास सुमास की जा बिचि गांठि न मेर ९ कबीर सुनि मंड
ल मैं घर रह्या बाजा सबद रसाल रांम रांम ही पाग लया तब
प्रगटे आप दयाल १० कबीर तूं तूं करतां तूं नया मुझ मैं रह्
न हूं बारी बारि हरि का नांव परि जित देषूं तित तूं ११ कबीर तूं तूं
करतां तूं मिल्या तुझ मैं रह्या समाइ तुम ही मांही मिलि रह्या
अब मन अनंत न जाइ १२ कबीर पांच सषी पीव पीव करै छ
वा जु सुमेरै मन आई सुरति कबीर की पाया रांम रतन १३ क
बीर चित तौ हरि नांव की और न चितवै दास जो चितवै हरि नां
व बिन सोई काल की पास १४ कबीर पद्हली बुरा कमाइ
कर बांधी बिष की पोट कोटि करम फिलि पलक मैं जब
आवै हरि की ओट १५ कबीर कोटि करम फिलि पलक मैं जै
रे चेक आवै नांव अनेक जुग जे पुनि करै नहीं नांव बिन ठी
ठांव १६ कबीर हरि का नांव सौं कोटि बिघन टलि जाइ
राई मान बसंदरा केता काठ जलाइ १७ कबीर करम की
या प्रबल तजि सा लीया एक ही नांव राई मांनि बसंदरा जारै
केता गांव १८ कबीर लांबा मारग दूरि घर बिकट पंथ बहु
मार कहौ साधो क्यूं पाईए दुरलभ हरि दीदार १९ कबीर
ण गायां गुण नां कटै रटै न रांम बियोग अहनिस हरि ध्या
वै नहीं क्यूं पावै दुरलभ जोग २० कबीर कठिनाई घरी सु
मिरतां हरि नांव सूली ऊपरि नट बिद्या गिरै तौ नाहीं ग
व २१ कबीर रांम ध्याइ लै मन करि प्रेम प्रीति हरि सागर
जिनि बीसरै छीलर देखि अनंत २२ कबीर रांम रिझाइ लै
मन ही मैं गुण गाइ फूटा नग ज्यूं जोडि मन संधे संधि मिला
इ २३ कबीर चित चमंकीया चहु दिस लागी
सिमरण हाथ रिघडा लेह बुझाइ २४
न सुमिरण नहीं तौ बिन भजन

दि॥ १ कबीर कौ टिक चंदा कराा या सं१रजकौ हि रजा कतै सासि
२० आनसा जरस ॥ गुर बिन घोर अंधार ४१ कबीर गुरां बिंद दोके षडा
किसके सा गूं पाइ बलिहारी गुर आपणे जिन गोबिंद दीयां ब
ताइ ४३ कबीर गुर समांनि दातां नहीं जाचिग सिष समांनि नी
न सोक नी तीपसा सो जेदोनी दोन ४४ कबीर सतगुर अैसा चा
हीये जैसा सीकलीगर होइ जनम जनम का मोरचा पलमें डारें धोइ
या सतसार॥४५॥अं॥१॥गुरपारिष कौ अं॥ कबीर नां गुर
मिल्या न सिष मिल्या षेल्या लालच डाव दोन्यूं बूडा धार मैं
चढि पाथर की नाव ॥१॥ कबीर जाका गुर है आंधरा चेला
षरा निरंध आंधे आंधा ठेलीया दोन्यूं कूप परंत ॥२॥ कबीर माहि मैं
पूरा गुर की तिन तें नरम न जाइ आपण बूडा धार मैं चेला
दीया बहाइ ॥३॥ कबीर पूरा सहज गुण करै गुण न आवें छेह
सायर पोषै सर भरै दाण न मांगै मेह ॥४॥ कबीर पूरा गुर बिनां
पूरा सिष न होइ गुर लोभी सिष लालची तातैं दूणी दाझ
होइ ॥५॥ कबीर पूरा सतगुर नां मिल्या रही अधूरी सीष स्वांग
जती का पहरि करि घरि घरि मांगै भीष ॥६॥ कबीर पूरा सतगुर
नां मिल्या सुनी अधूरी सीष निस क्या थाहरै मिलण कूं चारी
दिस क्यां बीष ॥७॥ कबीर सा गुर तें मांसान दो कूटे ज्यां तिन
जीव की जाइ गुर तो अैसा की जीए दैर बूसन बताइ ॥८॥ कबी
र जांणतां बूझ्या नहीं बूझि न कीया गौंन अंधे कूं अंधा मि
ल्या पंथ बतावै कौंन ॥९॥ कबीर जब जांणतां बूझीया पैंडा
दीया बताइ चलता चलता तहां गया जहां निरंजन राइ ॥
१० कबीर जो कछू कैसो पत्नी णतौऊ गडा सो देद हरू अंध का
नाचणां कहि का कूं मौद ११ कबीर सतगुर बपडा क्या करै
जे सिषही मांही चूक भावै ज्यूं परमोधिए जो णि कवांस बजा
ई फूंक १२ कबीर जे गुर मिल्या तौ का भया जे मनि पाडी नो
लि पासि बिणं गा कपडा क्या करै बिचारी चोलि १३ कबीर
का चा सेती म तिमिरै पाका सेती बांणि का चा सेती मिलत है दो
इ नगा तिमै हाणि ॥१४॥ थपा॥ अं॥२॥ सुमिरण कौ अंग ॥
कबीर सुमिरण मार है सहज का सतगुर दीया बताइ सासां
सस भरता तां एक दिन मिलसी आइ १ कबीर माला सास उसा
स की कौ फेरै निज दास चौरासी नरमैं नहीं कटै मोह की पास
२ कबीर मन माला तन मेषला मैं की करूं बिचूति रांम मिलै
सब देषतां सो जोगी अवधूत ३ तत

॥ निरंजनै राम जपि जब लग दीवै बाति तेल घ
दिन राति २१ कबीर घंदे कारे बै

॥ छिटा वौ ॥ सहा क सौन मांनौ रोम ज्युं हिमार ॥
॥ पूजै तत्रि
माया बिष चौजां वार वार नसा पाइ वौ मनि ष जन्म का मोज २४
कबीर ज्युरा आ ऊजोरो कायौ पीव आपणौ पिछांणि मरत कबू
पलै पडे। कयतै घरि नि हां ॥ २५ कबीर जोवन मिक सारी तज
चल्यौ निसांण बजाइ सिर परि सेत सिराइ च्या सीया बुढापै
आ २६ कबीर ज्युरा आइ जोरो कायौ नौ तन दीन्ही पीठि आ
प्या क परि आंगा लीवी व ष परै पछिनी ठि २७ कबीर कांनि
ग धीं रवां क सौ कां ज्यां मांनी हा रिरा जवि राजी होत देस
केसौ संमसं मा रि ॥ २८ ॥ २२३ ॥ आ ॥ प ॥ विरह कौ अंग ॥ क
बीर आं षडीयां झाई पडी पंथ निहारि निहारि जीभडीयां
छाला पड्या राम पुकारि पुकारि १ कबीर नैनां नीझर लाइया
रहट वहै निसजांम पपीहा ज्यूं पीव पीव करूं कबरमिलि
गो राम २ कबीर रात्यूं रूनी विरहनी ज्यूं रवचा कूं कें त्र. कबी
रा अंतरि पर जल्या प्रगट्या विरहा पुंज ३ कबीर विरहनि ठ
मी पंथि सिर पंथी पूछै धाइ एक संदेसा कहि पीव का कब
र मिलौगे आइ ४ कबीर बहोत दिनन की जोवती बाट तुम्हा
री राम जीव तरसै तुम मिलन कूं मन नांही विश्रांम ५ कबी
र विरहनि कौ वेजी पडे दरस दिखाव राम मूवां पीछें देहुगे
सो दरसन किहिं कांम ६ मूवा पीछें मति मिलौ कहै कबीरा
राम लोहा माटी मिलि गया तब पारस कौंणें कांम ७ कबीर
रतिवंती आरति करै राम सनेही आव सुरति कइ यांई मिलि
तौ विरहनि का चाव ८ कबीर अंदेसा नवी भाजिसी संदेसौ क
हीयां. कैतुम आयां भाजसी कै तुम ही पासि गयां ९ कबीर आ
इ न सकूं तुझ पै सकूं न तुझ बुलाइ जीव यौं ही लेहुगे विर
ह तपाइ तपाइ १० कबीर यौ तन जालौं मसि करौं धूंआं जाइ
सुरगि मति वै राम दया करैं बरसि बुझावै आगि ११ कबीर
येक कै जाली झरत्या यां गत विरहनि सब वाच जि लैगा त्रि
र बोलत्या तिन का कौन हवाल १२ कबीर पढ़ि...
॥ परस्या निर्जन निरखै ...
... कबीर यौ तन जालौं मसि ...

रह्या ज्यूं लो हा कंचन होइ ।१५। कबीर मैं बिन साधन कपंजे
साध किसां न दी प्रीति जब हरि देसूं मैं गया तब मिटी सकल
सबी रीति १६ कबीर मन मा ता सतगुर दई प्रवन सुरति सूं पोइ
बिन सांधां निस दिन जपै अ ह्ल जाप यूं होइ १७ कबीर नांव
बिसारि दे गुण ।। जीव रसास न जाइ जब ही छाडै नांव कूं त
ब सब लागै आइ १८ कबीर रांम नांम सबाइ नहीं या प्रतीति व
धी कलौ काल ब्यापै नहीं डोरी नांव संधी १९ कबीर निज सुष
नांव है इला दुष अपार मनसा बाचा क्रमनां निहचै सुमिर
ण सार २० कबीर सुमिरण सार है और सकल जंजाल आदि
अंति सब सोधीया दूजा दीसै काल २१ कबीर पांन कथै बरै
कबि कि ... का है करै उपाधि सतगुर दम सूं यूं कह्या सुमि
रण कोई साध २२ कबीर के हत कंचन दहि न जगत जा
कामक थी रज्यूं आल जंजाल तजि एक ड्या साच कबी
र तू कबीर बिरल मन की जीऐ रे नैतां हरि कौ नांव कायाकि
स की ला पडी होइ पवित्र गात ।। २४ ।। २५ ।। अंग ।। अकलि
कौ अंग ।। कबीर अकलि न सत्तै कलरी बिधनां दीनी बाँ
टी कअ स गया लुटि रहया ऐकौं लईन कांटि १ कबीर सबसी
पांनि पर बसि पसौ सूवा के बुधि नांहि अकलि बिहूणा
आदमी यूं बंधी जग मांहि ।। २ ।। उपदेस कौ अंग ।। अंतरि ऐक
विचार या साषी कहै कबीर भौसागर में जीव हैं मति कोय
कहै सीर २ कबीर जैसी उपजे पेड तैं तैसी निबहै ठोड पैं को
कै ही जोड तां जुड सी लाष करोडि ३ कबीर करती का लत
ते कालहै बुरा करी मत कोइ अनबांवे लोहा दाहि णीबो
वे सलुणता होइ ४ कबीर कहै में कथि गया ब्रह्मां बिसम
है सार मनां म तत सार है सबका हूं उपदेस ५ कबीर जिनि ह
रि जैसा जांनीया ता कूं तैसा लाभ वो सां प्यास न भाज ई ज
ब लग धसै न आभ ६ कबीर कहता जात हूं कहि जात है सुण
तां है सब को इ रांम कह्यां भल हो व सी नांतर भला न होइ
७ कबीर आपण रांम कहि औरां रांम कहाइ जा मुषि न
लै रांम ता मुषि फेरि कहाइ ८ कबीर जैसे माया मन रमैं तैसे
रांम रमाइ तारा मंडल छेदि कैं तौ अमरापुरि जाइ ९ कबी
र लूटि सकै तौ लूटि ऐ रांम नांम है लूटि फिर पीछैं पछिता
वगी जब तन जासी छूटि १० कबीर ऐसी बांणी बोलीऐ
तन का आपा षोइ औरां कूं सीतल करै आपन कूं सुष होइ

सोईमिलैचल्यानरीकोकोसार्उ कबीरदविकानांवलेतझि
मायाविषद्योजावारबारनदीयाइवोमनिपजन्मकोमोज२४
कबीरजुराञाझजोरोकीयोथिवञापणोपिछांणिमतरकब
पलेपडे।कवतेपतिसोणि२५ कबीरजोवनसिकदारीतजी
चल्योनिसांणवजाइसिरपरिसेतसिराइचाल्दीयालुदाये
आ२६ कबीरजुराआइजोरोकीयोनोतनदीन्दीपीठिआ
धाकपरिआगलीवोषपरेवचिनीवि२७ कबीरकानिर
णिधोंलोकदीकांलांमांनीदाशिराजविराजीहोतदेम
केतोसंमसंजारि॥१८॥२२३॥ञं॥प॥विरहकोअंग॥क
बीरआपडीयांझाईपडीपंथनिहारिनिहारिजीलडीयां
छालापुवारांमपुकारिपुकारि१ कबीरनैनांनीझरलाईया
अरहटवहेनिसजांमपपीहाज्यूपीवपीवकरूंकवरमिलि
गोरांम२ कबीरसात्पूरूंनीबिरहनीज्यूरवचाकूंकंजांकबी
रांजेलारिपरजल्यापरगयाबिरहापुंज३ कबीरबिरहनिक
जोपंथिसिरापंथीपूछेधाइएकसंदेसाकहिपीवकाकब
रमिलोगेआइ४ कबीरवहोतदिननकीजोवतीवाटतुम्ह
रीरांमजीवतरसेतुममिलनकूंमननांहीविश्रांम५ कबी
रबिरहनिऊठेभीपडेदरसणिकारणिरांमसूंवांपाछेदेज्यो
सोदरसणकोणिकांम६ मूवांपाछेमतिमिलोकहेकबीरो
रांमलोहातोपाथरभयापीछेपारसकोणिकांम७ कबीर
रतिवेलीआरतिकरेरांमसनेहीआवसुरतिकीयासाईमिले
तोबिरहनिकाभाव८ कबीरअंदेसोनहीजाजिसीसंदेसीक
हीर्याकेतुमआयांजाजसीकेतुमहीपासिगयां९ कबीरआ
इनसकूंतुझपासिसकूंनतुझेबुलाइजीदरायूंहीलेझगे बि
रहतपाइतपाइ१० कबीरयोतनजाकूंमसिकरूंधूंवांजाइ
सुरगिमतिवेरामदयाकरेवरसबुझावेआगि११ कबीर
अंबरकंजांझरलीयांगरजिभरेसबतालजिनतेगोवि
दबीछुरयातिनकाकोणहवाल१२ कबीरचकईबिछडीरे
निकीआइमिलीपरभातिजेनरबि

१

रहा कबूं जो हा कंचन होइ ॥ ४ ॥ कबीर मैं बिन साधन कू पंजे
जा बिलिमांन दी प्रीति जब हिरदे सूं गै गया तब मिटी सकल
असीति ॥ ६ ॥ कबीर मन मा ला सतगुर दई पवन सुरति सूं पोइ
बिन हाथां निस दिन जपै ब्रह्म जाप यूं होइ ॥ ७ ॥ कबीर नांव
बिसारि दे सुमरण ॥ जीव दास मन जाइ ॥ जब ही आडू नांव कूं स
ब मन लागै आइ ॥ ८ ॥ कबीर रांम नाम मुख आइ न ही ॥ या प्रीति सि
धी करौ कालत अपनी ॥ डोरी नांव संधी ॥ ९ ॥ कबीर निज सुख
नांव है ज्ञान दुख अपार मन माला चाक मना निहचै सुमिर
ण सार ॥ १० ॥ कबीर सुमिरण सार है और सकल जंजाल आदि
अंति मध सोधीया दूजा दीसे काल ॥ ११ ॥ कबीर यांन कथै बरी
कब दि ॥ का है करै नु पाथि सतगुर दम सूं यूं कहा सुमि
रण कीया ॥ समा धि ॥ १२ ॥ कबीर के हत के चन हरि जन हजा
का च क थीर जूवा आलजं जाल तजि एक डूा सा च कबी
र ॥ १३ ॥ कबीर बिरल मन की जीण नेतां हरि कौ नांव का या कि
स की बाप डी होइ पवित्र गांव ॥ २४ ॥ ए २ ॥ श्री ॥ छ ॥ अक लि
कौ अंग ॥ ॥ कबीर अकलि असतें कतरी बिधनां दीनी बांधि
टांके आगा पालुटि रहा ए कांल ईन कांटि ॥ १ ॥ कबीर बसी
पांखि पर बसिप सो सुवा के बुधि नाहि अकलि बिहूण
आदमी यूं बांधी जग मांहि ॥ २ ॥ उपदेस कौ अंग ॥ अंतरि ए के
बिचार आ आया कहै कबीर जो सागर में जीव है मति कोप
काहै तीर ॥ ४ ॥ कबीर जैसी उपजे पेड तें तैसी निबहै वोड ॥ पैं को
कै हीरा हो डा तो जुड सीलाय करोडि ॥ ॥ कबीर करती का तन
न का ल है भुरा करो मत कोइ अनबावैं तो हासा हिरण बो
वे सत्गुण तो होइ ॥ ३ ॥ कबीर कहै मैं कथि गया ब्रह्म बिसन
दे सा रांम नाम तत सार है सब का उपदेस ॥ ४ ॥ कबीर जिनि ह
रि जैसा जांनीयां ता कूं तैसा लाभ वो सां प्यास न जानई ज
ब लग धसै न आभ ॥ ५ ॥ कबीर कहता कू कहि जात है सुण
ता है सब कोइ रांम कह्यां भला होवसी नां तर भला न होइ
॥ ६ ॥ कबीर आपण रांम कहि औरां रांम कहाइ जा मुषि न
चलै ता मुखि फेरि कहाइ ॥ ७ ॥ कबीर जैसें माया मन रमै तैसें
रांम रमाइ ता तारा मंडल छेदि कै तो अमरापुरि जाइ ॥ ८ ॥ कबी
र लूटि सकै तो लूटीए रांम नाम है लूटि फिर पीछै पछिता
वगे जब तन जासी छूटि ॥ ९ ॥ कबीर ऐसा बांणी बोलीए
तन का आपा षोइ औरां कूं सीतल करै आपन कूं सुष होइ

वृक्षथकबीरजबहमगावतेतबहरिजांणतांनांहिअब
हमदिलमेंपेषीयागांवृणकूंकहूनांहि४२कबीरपीव
सूंमिल्यारंगरह्यात्यागागमांनगुमानहषरनेबोहरिसूंचुड्यौत्तिं
मणामरणासमान४४कबीररांमसरोवरसुभरजलहंसाकेलि
कराइमुक्ताहलमोतीचुगैअबउडिअनतनजाइ४५कबीर
सुरनरथकेदेवताब्रह्माबिसनमहेसतांकेचामरढलकबीरकाप
रनपावैसेस४६कबीरनीवबिहूंणांदेहुरादेहबिहूंणांदेवां
तहांकबीराबंदगीअलषपुरसकीसेव४७कबीरसंगीसोकी
यांजाकेदुषसुषनांहीकोइदिलमिलिकेदरपैलीयाकदे
बिछोहनहोइ४८कबीरकंवलप्रकासीयाऊगानृमलसूर
नसअंधीयारामिटिगयाबाजेअनहदतूर४९कबीरकंवलप्र
कासीयाब्रह्मबाससेंहोइमनभौंरातहांलुबधीयाजांणैगाज
नकोइ५० कबीरसुनिसरोवरमीनमनीरनिरंजनदेवसदा
सुषसुषबिलसणांकोईबिरलाजांणैभेव५२ कबीरमैंलागा
उमांकसूंणिकनयासबमांहिंसबमेरामैंहिकराअबकोइजा
नांहि५३कबीरआगहगादेअकहकदेअनेरानेदलसाइअ
णनेबांणीआगमकीलेगईसंगिलगाइ५४कबीरअनभैकोदे
रोगकूंअनहदउपजैआइसेंकाजलहमलाकोईपावैगा
रचिलाइ५५ कबीरअनहदबाजेनीझरझरैउपजेब्रह्मबिच
रआकासांमुषिअंधाकूवापातालांपणिहारि५६कबीरताका
पांणीकोहंसापीवैंबिरलाआदिबिचारिरपोसकिदिसाकूंजोंवै
पछिमजैवेजुगाका५७कबीरपांणीमेंसिंघहरक्षेमछीचदेपि
जूरिअमृतबरषेहीरानीपजैघटांपडैटकसालतहांकबीराग
लाहानयापारषूआपणैहलाया५८कबीरसांसाकर्मनै
डहूंसबउपदीयानिवारिसहजिसुनिमेंमिलिगयाजबपाया
मुरारि५९कबीरलूणगल्यापांणीहूवाबहुरिनरणीगूंण्हां
जनहरिसूंयूंमिल्याकालचल्यासिरधूंणि६०कबीरधजाफर
सुनिमेंबाजेतबललनिसांनतकीयातोयसतनकामदीहेमेंदा
६१ कबीरज्योंपांवांनेकासरीहांड्यादेसबदेसांत्योंपांवांथि
तिपावडीआंगणजयाबदेस६२कबीरसूरांसूंपरचानयाइ
षसुषमेंलस्याइहरिजगमूंबाकीटकजयालबसाईमिल्याहृ
रि६३ कबीरगुणइंद्रीसहजेंगईसतगुरभएसहाइघटमें
रिब्रह्मबिराजीयाबकिबकिमरेबलाइ६४
थासोकहिरसाअबकछूकहणांनां:६

रिजन नया बुझी जलती लाइ ३२ कबीर तत पाया तन
४ बीसरा मन धाया धरि [illegible] नात प तिमिटी सीतल नया
तब सुनि कीया अस्थान ३३ कबीर पाया तिन सूं गहरा सा
र हम लाल सो स्वादि रतन निरखा पाइया जगत ठठोला बा
दि ३४ कबीर दिल सदगा तिन ही फल लागा सूं गुरु साहर
३ मो हिर हीरा तना हीरा चढि गया दृष्य ३५ कबीर में यात
बहुरि जिही अब हरि दे में नांहि सब अधरा मिटि गया
तब दीपग देष्या मांहि ३६ कबीर जा कारणि में नाइया
सो ता पायो बीर सो ई फिरि आपण नया जा सूं कहता औ
र ३७ कबीर देष्या इक अंग महमा कही न जाइ तेजपुंज
परसा धणी नैनां रहे समाइ ३८ कबीर गगन गरजि अं
मृत चुवै कदली कंवल प्रकास तहां कबीरा बंदगी
३ कै कोई दास ३९ कबीर हम बासी अस देस का जहां जाति ब
रण कुल नांहि सबद मिलावा होइ रहा देह मिलावा नांहि ४०
कबीर हम बासी उस देस का जहां ब्रह्म का पैल दीपग देष्या
गै बका बिन बाती बिन तेल ४१ कबीर हम बासी उस देस
का जहां अबिनासी की आंण दुष सुष कोइ व्यापै नहीं सब
दिन एक समान ४२ कबीर हम बासी उस देस का जहां बारा
मास बिलास अम्रत झरै बिगसै कंवल तेजपुंज प्रकास
४३ कबीर धरती पवन गगन नहीं होते नहीं तुयान होता
जब हरि हरि का जन हुता कहै कबीर बिचार ४४ कबीर
[illegible] थान नहीं जहीं होता राइ न बाद तहिका कबी
र ऊन जन देषै औ घट घाट ४५ कबीर दिल दरीया नया हरि
दरस दिषै आद जीव ब्रह्म मेला नया अब जीव कस्या न जा
इ ४६ कबीर अंतरि प्रेम प्रकासीया हीरै कीया बिगास चंदसू
र की गम नहीं तहां दरसण पावै दास ४७ कबीर सुरति समां
णी निरति मैं निरति रही निरधार निरति सुरति परचा नया त
ब षूले सिंभ दुवार ४८ कबीर जब दिल मिली दयाल सूं त
ब कछू अंतर नांहि पाला गलि पाणी हुवा यूं हरि जन ही
रया मांहि ४९ कबीर मन ता मीया क्या करै पै मन घाडी पोलि
दरसण नया दयाल का सूलि भई सुष सोड़ि ५० कबीर अधरै
अधर पिछांणीयां अधर रह्या हीमां दिल अधर अधर मेला हुवा
तब कोई इक जानां हि ५१ कबीर हीय गज्जूता गगन का पेष्या
अजब अनूप परदे वचा रि बेद की गम नहीं तहां कबीरा से

तबनूतिगाऐबपाराश२ए।कबीरहरिसबटैतहैअवण
दोनोबोडिंमचरनकाबाग्हेप्रतिकबकुस्योछोडि॥२०॥
२१८॥अंग॥ए॥त्नोबीकोअंग॥कामाकमडलनदलीया
नज्ञलनमरतनीरपीवतनिपानतनजदी नियावंतकबीर॥१
कबीरमनत्तलद्यादरीयामिल्या त्ताग्रामलिमलितिन्हांनाथा
त्ततथाद्नअवहीत्तंपूरादमांन॥२॥देरानकोअंग॥क
बीरपंडितसेतीकहिरस्या कस्यानमांनेकोइवोअगा४योंका
कहेनारीअविरजहीइरकचरचसैअपीडी।पिंडमेंसागमिल
धेनकोइकहेकबीरसंसहोबडाअचंनामोहि१कबीरदेव
लमांहीदेहरीतामेंतिलजेंहेविस्तारमांहीपारीमांहिजल।
मांहीपूजणहारा॥२॥देरतकोअंग॥कबीरदेरतदेरतदेराया
देरताऐदिराश२लूंदसमांनीसमंदमेंसोकितहेराजाइ२कबीर
देरतदेरतदेसघाइसाकबीरहिराइस्पंमंदसमांनांकूंदमेंसो
कितहेस्याजाइ॥२॥अरणांकोअंग॥कबीरत्नारीकइत्तोअं
तिडरूहत्तनकाकइतोफूतमेतोजांएरूरामकूंनेंनाअंतरि
दीव१कबीरदीवाहैतोकाकहेकसातकोपतिआइहारहे
साकातेमांहो।बिस्पिरबिगुणगाइ२कबीरअेसीअदबुदम
तिकथेसब।तेरापिनुकाइवेदकतबांनाजपी।कसांकोप
तिआइ२कबीरकरसाकीगतिअगमहेत्तूचलिअपणेनन
मानाधीरेंधीरेंपावहोपकुंचेगेतूबांल४कबीरपकुंचेगेजब
कहेंगेअपडेंगेतउसवांवअजकुंजेरामदेमेंलोलिविगूंचे
कोइ५कबीरज्ञोगीबूफिजतहेत्तहेखसजिनवत्तहाइ।
कहेकबीरतासमकूंगजिनसकेकोइदो।कबीरवादविवा
दो।बिषथणा।ज्ञोत्यावहोतजयाथिमूजिगसांदरिसुमरीए
तेकोइजांएसाथि७कबीरमेयमनथावेरामकूंमेरामनरा
हीअहिमेयमनरामदीहैरसात्अवसीसनवांकेकोदि॥
दा।त्यीकोअंग॥कबीरसुरविदीकत्तंज्ञिनत्योमननिति
डोत्तनहाराकेवत्तकूवामेप्रेमरसापीहैवारूचार१कबीर
गंगाजमनउरअंतरेसहजिसुनित्योघाटत्तहांकबीरेमचर
च्यामुनिजनजोवेंबाट१कबीरहिहवतिसीहनसंचेरा
पीनडिनहीजाइमोटात्ताभकबीरकात्तहांस्हेत्योत्ताइ३
कबीरत्योत्ताभीतबजाणीयेफबकुचूटिनजाइजीवतत
त्तागारहेमूंवामं... ।मा२ ... ...अबत
कथी।हजिरहीजगदीस...

२

बेबेदरीयामांहि ह्वा कबीर फाटा दीदांमें फिरूं निजरिन आवै
कोह्र आ घटिमेरा मांईयां सो कंू खोना दोइ १४ कबीर अगम अ
गोचरा बीया करिकरि बहोत जतन कबीर औनां कंू रहे जा घटि
साथलन १६ कबीर हरिका भावता झीणा पिंजर सास रैणि न आ
वै नींद डी अंगिन चढई मांस १७ कबीर हरिका भावसां हरे सूंदी
संतात नषीनां मन तन मना जग सूं रूठ आ फिरे ता १८।। १५८।। ८
रसको अंग।। कबीर प्याला पीया प्रेमका अंतरि लेयो लगाय रोम
रोम में रमि रह्या और अमल क्या पाइ १ कबीर हरिरस यूं पीया
बाकी रहीन थाकि पाका कलस कुंभार का बहोरि न चढई चा
क २ कबीर राम रसांइण प्रेमरस पीवत अधिक रसाल कबीरा
पीवण दुरलभ है मांगे सीस कलाल ३ कबीर हरि प्रेमकी बहोत
रूकी है आइ सिर सो पैसो ईपीवै नां तर पीया न जाइ ४ कबीर हरि
रसमह गा जिनि पीवे ते सी मूंड कलाल दिल वो ही घर इवला
वो हे गा बहोत मार ५ कबीर हरि रस महंगा पीवसूं छाडि जीव
की बाणि माथा साटे रस मिले तब लग सूं हंगा जाणि ६ कबी
रमें भें सा अवगति रता अकलप आसा जीति राम अमल
था का रहे जीवत मुक्ति अतीत ७ कबीर सातगांठि कोपीन है सा
धन मानैं संक राम अमल राता रहे कहै इंद्र कूं रंक ८ कबीर हरि
रस पीया कूं जाणिये ज्ञ्यनें न जाइ खुमार मतिवाला घूमत फिरै नां
ही तन की सार १० कबीर जिहि सिर घड़ा न बूडता अब मैंगल मम
लि मलि न्हाइ देवल डूबा कलस सूं पंषि तिसाई जाइ ११ कबी
र सबै रसाइण हम कीया हरि सा नांही कोइ रंचेक तन मैं संच
रै तौ सब तन कंचन होइ १२ कबीर राते छोडि सा कीया एक जो
डा पीया थोरा फूल पियाला जिन पीया रहे कलाली सो इ १३
कबीर कहत सुणत जग जात है विषे न सूझै काल कबीर कहै
प्राणीयां बांणी ब्रह्म संभाल १४ कबीर राता माता नांव का पी
या प्रेम अघाइ मा धूमति वाला दीदार का मांगे मुक्ति बलाइ
१५ कबीर राता माता नांव का मद का माता नांहि मद का माता
जो फिरै ते मतिवाला नांहि १६ कबीर मैं माता घूमत फिरै रामरी
स समपूरि छाडे आस सरीर की तब देषे राम हजूरि १७ कबीर प्रे
म पीयाला नहि पीया जरणा करे जतन आयो छैजे जाणि सी
री को घरांइतन १८ कबीर हरिरस बरसू नरलख्या कोई न पीवै
नीरन्ना गिबडे सो पीवसी नाहि न पीवै कबीर १९ कबीर मो
रे बाडी पर हरी मेवे बिलं ब्यो जाइ बावन चंदन घरकी या

ञामनमेंलीबिनचारणीताकेपसमअनेक॥२६॥कबीर
पतिबरताकेएकहै बिनचारिणीकेदोइ॥पतिबरताबिनचा
रणीकहिक्यूंमेलाहोइ॥२४॥कबीरसैनिचलीपसमकैबहोत
कीयाबिनचारमततगुरसहीनताइयामूरखतानरतार॥२३॥
कबीरजैरवेसिकरिसबसेकसौपुकारिधरयाधरैसोधृकरै
अधरधरैसोनारि॥२४॥कबीरपुरेसुरआयापाकूणांसुणीपिया
रेदासषटरसनोजनजगतिकरिकदेनछाडेपास॥२५॥ कबीर
कूतारामकामुतीयामेरानांवगलेसुपकूजसीजेवडीजित
मैंचेतितजांवु॥२६॥कबीरगांवेतेतोगांवणाजोडैतेजोडा
पतिबरताअरवेदोंयेताकरिथोडा॥२७॥ कबीरमातामरी
मनमुखीकोतिगसारअपारपतिबरताअवेछीरैबिरला
संसार॥२८॥ कबीरनेतनसाज्यांसुंदरीतनमनरहीमजोइ
पीवकेमनिनांलेनहीतोपटमकीयांकासोइ॥२९॥ कबीरकं
चीजातिपपीहडीलवेननीचैनीरकेजाचैसुरपतिकूंकैइ
बसेहसपीर॥३०॥कबीरमेंअबलापीवंहसूंनगुणमेरापीव
सुनिसनेहीरामबिनअैरनदेषूंजीव॥३१॥ कबीरपतिबरता
पतिकूंनजेपतिनजिधरेबिसासआनदिसाचितवेनहीं
सदाजपीवंपास॥३२॥ कबीरपतिबरताऐसेरहैजैसेचोली
पांनजबसुषदेषेपीवसंगिचितोनआवैआन॥३३॥३३
अ॥२५॥चितावणीकोअंग॥ कबीरनौबतिआपणीदि
नदसलेहुबजाइयेपुरपाटणयेगलीबहोरिनदेषेआ
इ॥१॥कबीरजिनकेनौबतिबाजतीमेंगलबंधतेबारि
एकेंहरिकानांवबिनगयेजनमसनहारि॥२॥ कबीरजिनकै
नौबतिबाजतीअरबतीसंराग॥तेमंदिरषालीपडेबैस
णलागेकाग॥३॥कबीरथोलहमांमांगिडगिडीमहलांइ
संगिजेरिअ ओसरचलेबजाइकेहैकोइल्यावेफेरिइक
बारथोडाजीवणमांडेबहोसमंडाणसबहीऊनामेल्हिग
याराववंककसुलतान॥४॥कबीरोकदिनऐसाहोइगासब
सूंपडेबिछोहराजाराणांछत्रपतीसावधनकिनहोइ॥
५॥कबीरकडपेडेवाकरीघडिघडिगयेकमारंरावण
सिरिषाचलिगयालंकाकासिकदार॥६॥कबीरकेचामि
दरमालीयाचूंनेंकलीचुणाइएकेहरिकानांवबिना
जदितदिपरलैजाइ॥७॥कबीरकहागरबीयोंयमजोवन
कीआसकेसूफूलै॥

णं। हरी सथ। कबीर अरथमांही गरथपाया गरथमांही मूल
लो ल्लागी नमतजया मिटि गई संसे सूल॥ ॥ ३७॥ अ
२५॥ पतिव्रता कौ अंग॥ कबीर प्रीतडी तुझसूं मेरे बहो गु
णियाले कंत जे हंसि बोलूं औरसूं तौ नील रंगाऊं दंत १ कबी
र नैनां अंतरि आव तूं ज्यूं हूं नैन झंपाऊं नां हूं देषूं औरकूं
नां औरै देषण जांऊं २ कबीर सांई मेरा एक तूं और न दूजा को
इ जो दूजा सांई करूं तो कलि निरथल होइ ३ कबीर बार बा
र कहां अषी ये मेरा मन की सोइ कलि निरथल जब बहोत
दे सांई औरन होइ ४ कबीर रेष सिंदूर की काजल दीया न जाइ
नैनन मै प्यारा रमि रह्या दूजा कहां समाइ ५ कबीर सीप बारा
पूत है ज्यूं सीप समंद मांहि बासौ तौ वामै रहे पणी मन चि
त नाम सूं नाहि ६ कबीर सीप समंद मैं रटे पियास पियास सम
कल समंद तिणका बडै स्वांति बूंद की आस ७ कबीर दो
जिग तौ मै आगीया यौ डर नांही मुझ न्हि सि तिन मै रे चाहीये बा
जी पियारे तुझ ८ कबीर चित चोडा न्यौ लूगडा सुध बुसाय
जानतां प्रेम मोड प्रतीति कौ यूं तोरण बंदेतात ९ कबीर
जिन चोरी मन माड हो गीत गमान गुणदान रथल वीद्ही
म तुझ ओ अषे अमर बर जांन १० कबीर जिन हरि को
जांणीयां तिन जाण्या सब जांण एक कौ जांण्यां बाहिरा सब
ही जांण अजांण ११ कबीर एक न जांणीयो तौ बहो जा
णां का होइ एक कै तें सब होत है सब तै एक न होइ १२ कबी
र मन लागो एक सूं तौ निरवाल्या जाइ तूरा दहू मुष बाज
णां न्याइ तमाचा षाइ १३ कबीर नगरी चैन तब जब रक
राजा होइ दूजा राजा दुष दुदै मैं सुषी न देष्या कोइ १४ कबीर
आसा की जे राम की दूजी आस निरास पांणी मांही घर करै
ते जो मरै पियास १५ कबीर आसा एक अ रतन की दूजी आ
स निवारि दूजी आसा मारसी ज्यूं चोपडि की सारि १६ कबी
र मैं सेवग सम्रथ का कोई पूरबला नां गमूती जागी सुंदरी
कोई दीया सुहाग १७ कबीर मैं सेवग सम्रथ का मेरा कबकूं
न होइ अकाज पतिव्रता नागी रहै तौ वा ही पति कूं लाज
१८ कबीर पतिव्रता दूबली काली कुचल कुरूप वा कै
एके रोम परि वारूं कोटि जांन सुरूप १९ कबीर पतिव्र
ता तब जांणीये रती न षंडे नैन अंतरि तौ सूची रहै बोले मी
ठा बैन २० कबीर पतिव्रता तब जांणीये सदा जु समरै री

चितां बिसारितेनरहरीबारतदीसदापर्यहवा ॥२४॥ कबीर
हरिजीसरिचेत्योनहीपमुझ्यूंपालीदेहरांमनांमजांण्यो
नहीअंतिपडीमुषिछेह ॥२६॥ कबीरांमनांमजांण्योनहीबातबि
णवीमूलिहरिसोद्दसांसीसारीयोपरतिपरामुखिधूलि ॥२७॥ कबी
रांमनांमजांण्योनहीलागीमोटीषोडि॥कायाहांडीकाठकीनां
उचढैबहोडि ॥२८॥ कबीरआयाअणआयारूवाजेवकुराता
संसारिपडोनुसावीगाफिलांगएजबकीसारि ॥२९॥ कबीर
कहांकीयोहमआइकरिकहांकहैंगेजाइ॥यतकेनऐन
उतकेचालेजन्मगमाय ॥३०॥ कबीरहरिजगतिबिनाधृगज
नसंसारधूवांकेराधौलहूवाजातसलागैबार ॥३१॥ कबीरज
गतजनेगमरचीयोऊवाजनकीज्ञासनबिनस्यांजन
बिनससीरहेनरांमजिहाजर ॥३२॥ कबीरपातझडसेयूंकसो
मुणिसरवरवणरारापत्रबकेबिछडेनांमिलेंहमपडेंगे
जाइ ॥३३॥ कबीरसरवरयूंकहेसुणोंपातइकवातहमतुम
ऐहपटेतरा इकआवतइकजात ॥३४॥ कबीरमनिषाजन्म
दुरलभहैसदेहनबारंबारसरवरसूफलझडिपडआबहोडि
नलागैडार ॥३५॥ कबीरयहतनकाचाकुंभहैचोटचहूंदिस
षाएकैहरिकानांवबिनाजबतबफुटेजाइ ॥३६॥ कबीरयहत
नकाचाकुंभहैलीयोफिरेथासाथिढबकालागाफूटिगया
कछूनआयाहाथि ॥३७॥ कबीरयहतनकाचाकुंभहैमांहिकीया
आवासाकबीरैनेनजिहारीयानहीजीवणकीआस ॥३८॥ क
रपांणीसेदकादिषतगयाबिलाइएयूंजीवडाजांहिगोदि
हसडौरीलाइ ॥३९॥ कबीरयहतनजातहैसकैतोठोडलगाइ
सेवाकरिसाधकीकेगुणगोविंदकागाइ ॥४०॥ कबीरयहतन
तहैसकैतोलेहबहोडिनांगेपांवांजेगयातिनकेलाष
रोडि ॥४१॥ कबीरबासुरसुषनेरैणसुषनांसुषसुपनांमांहि
नरबिछडेरांमसेतांकूंधूपनछांह ॥४२॥ कबीरसजाक्याकरे
कादेनदेषेजागिजाकासंगतेबीछड्या फिरिलाहीसंगिला
गि ॥४३॥ कबीरदीनगमायाउनीसांइनीनचालीसाथिपायकं
डअमारीयागाफिलत्रपांण्यांहाथि ॥४४॥ कबीरयहतनबनन
या करमजजयाजसांबिआपआपकूंसाटिदेहकहैकबीर
चारिय ॥ कबीरजलपोयोजलकचेरजलपण्यांजल
हारांमनिजलजवनेटीयातबसवजलरसामभाहय
कबीरदुनीयांकेधोषेमूवाचालेजलकीकी

जौ न कहा गरब्बी यो देही देषि सुरंग। बीछडी यां मिलिबौ
नहीं ज्यूं कांचली भुवंग॥२० कबीर जिह घटि प्रीति न प्रेम
रस [illegible] रसनां नहीं राम। ते नर आए संसार में उपजि षपे ब
काम॥२१ कबीर कहा गरब्बी यो चांम पलेटे हड। हस्ती क परि
छत्र [illegible] ले तउ दीसे षड॥२२ कबीर यौ ओसा संसार है जैसा सां
बल फूल। दिन दस क्यौ ब्योहार मैं झूठे रंगि न भूल॥२३ कबीर धू
लि सके लि कथि पुडी जब बांधी एह। दिवस च्यारि को पेषणां
अंति षेह की षेह॥२४ कबीर राति गमाई सोइ कै दिवस गमा
यो षाइ। हीरा जनम अमोलिका कौडी बदले जाइ॥२५ कबीर
[illegible] का जडीयां हीरां लाल। दिवस च्यारि षेषणां
बिनसि जायगा काल्हि॥२६ कबीर सुपनें रैणि कै ऊघडि
आये नैन। जीव पडी यां बहु लूटि मैं जागूं तो लेंन न दैंन
॥२७ कबीर आजि क काल्हि क पंच दिन जंगलि होगा बास
ऊपरि ऊपरि फिरहिंगे ढोर चरंता घास॥२८ कबीर मरहगे
मरि जांहिगे कोई न लेगा नांव। ऊजड जाइ बसावहींगे
छोडि बसंता गांव॥२९ कबीर हाड जलै ज्यूं लकडी केस
जलै ज्यूं घास। सब जग जलता देषि करि भए कबीर उदास
॥३० कबीर हम जाते येते मूए हम भी चलणहार। हम नी पाछै
पुंगडा तिन भी बंध्या भार॥३१ कबीर षाणां सारे बाडिया चिडि
यां पांत्र खेत। आध परध ऊबरै चेति सकै तो चेत॥३२ कबी
र [illegible] बिडां [illegible] बिड हम भी मक बिडा हम षेवट केरी ना
[illegible] जोगे मिलीयां [illegible] कबीर देवल हाड का माटी तणां
[illegible] डी यां पाया नहीं देवल का संधांण॥३४ कबीर
देवल ढहि पड्या ईट भई सावार। कोई चेजारा चिणि गया
मिल्या न दूजी बार॥३५ कबीर रांम नांम जाण्यो नहीं लागु ष
ओ नहीं आंन। के मूसा के कातरा षांतां गया जनम॥३६ कबीर
रांम पियारा छाडि करि करै आंन का जाप। ते बेस्यां केरा पूत ज्यूं
कहै कौंण सूं बाप॥३७ कबीर जिन हरि की चोरी करी रहे रांम
गुण भूलि। ते बिधना बागुल रचे रहे अरध मुषि झूलि॥३८ क
बीर रांम हि जपि ले छाडि जीव की बांणि। पाडोसी में बहि गई
सो आपण मैं जांणि॥३९ कबीर रांम नांम जांण्यो नहीं पाल्यो
कटक कुटंब। धंधा ही में पचि गया बाहरि हुई न बंब॥४० कबी
र रांम नांम जांण्यो नहीं हूवो बहौत अकाज। बूडी गे रे बापडा
बडां बुरां की लाज॥४१ कबीर रांम नांम जांण्यो नहीं मेल्यो

कों माणसां दापादीया आइ ॥ ३ ॥ कबीर कहा गरबीयौ ऊंचा देखि
अवास । काल्हि परूं भ्वैं लोटणा ऊपरि जामैं घास ॥४॥ कबीर हौ
रघ ऊंतान रघडो ॥ बिसरयासागर हुआ जामु धिरामन उचरै फिटि
बेडा दीमूस्या ॥ ८० ॥ ४२ ॥ अंग ॥ १६ ॥ मन कौ अंग ॥ कबीर मन
के मतै न चालीए छाडी जैया बांणि कतवारी का तार ज्यूं उलटि
पूठे आणि ॥ १ ॥ कबीर चित चिंता बिसारीए फिरि बूझीए न कोइ ॥ इं
द्री पसर निवारीए सहजि मिलैगा सोइ ॥ २ ॥ कबीर सेरी सांकडी चंच
ल मनवा चोर गुण गावै ल्यौ लीन रोह कछू क मन मैं और ॥ ३ ॥ क
बीर मारूं मन कूं टूक टूक ह्वै जाइ ॥ बिष की क्यारी बाहि करि
लुनतां कूं पछिताइ ॥ ४ ॥ कबीर यस मन कूं बिसमल करूं दी
ठा करूं अदीठ जो सिर राखूं आपणां तो पर सिर पडै अगीठ ॥ ५ ॥
सोरठा ॥ कबीर मन जांणै सब बात जांणत ही औगुण करै कांहे
की कुसलात कर दीपक कूंवै परै ॥ ६ ॥ साखी ॥ कबीर हिरदा भीत
रि आरसी मुष देषणां न जाइ मुष तौ तब ही देषीए मन की दुब
धा जाइ ॥ ७ ॥ कबीर मन मृघा भया खेत बिडांणां षाइ सूला क
रि करि सेकसी जब धणी पकडैसी आइ ॥ ८ ॥ कबीर मन कूं मन मिल
ल तान ही तो हैंसा तन का नंग अब ह्वै रहू कारी कांवली ॥
ज्यूं चढै न दूजा रंग ॥ ९ ॥ कबीर मन दीन्हां मन पाइयें मन बिन मां
न न होइ मन उनमन उस अंड ज्यूं अनल अकासां जोइ ॥ १० ॥
कबीर मन दीनूं पर मोधि रै तो आपा ही उपदेस जि ऐसां चूंब सिक
रै तो सिष हे सारो देस ॥ ११ ॥ कबीर बन मांही जे मन धरै मन धरि
जल होइ सा हिबसूं सन मुष रहै तो अजरांवर होइ ॥ १२ ॥ कबीर
मन गोरष मो बिंद हो मन ही औघड जोइ ॥ जे मन राषे जतन क
रि तो आपे करता होइ ॥ १३ ॥ कबीर मन पांणी की प्रीत ही पड्या ज
कप ही तूं ना घंड घंड करि मन गया ब्रहो रि मिलावै कौन ॥ १४ ॥ क
बीर एक ज दीत्त हम कीया तिस मालि ताल कवाइ बहोत क
धोबी धोइ गया तो नीरंग न जाइ ॥ १५ ॥ कबीर पांणी ही तै पतला
धूवां ही तैं झीन पवनां बेगि उतावला सो दोस्त कबीरै कीन
॥ १६ ॥ कबीर मन बातो अक्षव स्या बहोत कजी एण होंरय अलो
कत समच पाइ ॥ १७ ॥ कबकुन न्यारा होइ ॥ १८ ॥ कबीर मन मोराम
न रुवला मन पांणी मन लाइ ॥ मन के जैसी कुपजै तै सा ही है
जाइ ॥ १९ ॥ कबीर मन बिकरै पड्या गया स्वाद के साथि गट का प
अबरज सा अब क्यूं आवै हाथि ॥ २० ॥ कबी
सुमिरण लागे नां हिघणी सदे हो सासन.

त्त त्ता जसी। जब लग ध्यान समाधि ॥ ४९ ॥ कबीर केवल राम की
कंमति साडे रोटा न दीसै ऋषदस णि घणा बिचि चिरणी सदैसो
लो साध ॥ कबीर केवल राम कहि सुधि गरीबी झालि कूड बडा
ई लूड सी। सारी पडिसी काल्हि ॥ ५६ ॥ कबीर का था मंजन क्या करै
कथडा धोइ मधोइ ॥ उजल हवां न छूटिसी सुष नींद ई न सोइ
॥ ५७ ॥ कबीर उजल पहरै कापडा पांन सुपारी षाइ ॥ एकै हरि का नां
व बिन बांध्या जमपुर जाइ ॥ ५८ ॥ कबीर जा मुष नन चरै चाबेन
जलधनाके सुष ब्रैसे कूटिबा ज्यूं कष्ट में धन ॥ ५९ ॥ कबीर ड
रषा है से पाप से मति मैली के जाइ पाप बिचारी क्या करै सि
र लीमा ही पाइ ॥ ६० ॥ कबीर मिंदर मांहीं पोढते परमल अंगिल
गाइ बननदी की झार मैं गधा लोटै आइ ॥ ६१ ॥ कबीर गौ षांमां
हीं पौढते परमल अंगि लगाइ ते सुपने ही देषे नहीं देषत गये
बिलाइ ॥ ६२ ॥ कबीर मल मल षासा पहरते षाते नागर पांन ते नी
न लिया चलि गये करते बहोत गुमांन ॥ ६३ ॥ कबीर जंगलि ढेरी राष
की ऊपरि हरीयां तेनी होते मानई करते मन रलीयां ॥ ६४ ॥ कबी
र सूता क्या करै जागि न जपै मुरारि एक दिनां ही सोइबो लंबा पा
व पसारि ॥ ६५ ॥ कबीर प्रेम न चषीया चाषि न लीया स्वाद सूनां घर का
पाहुणां ज्यूं आया त्यूं जाइ ॥ ६६ ॥ कबीर मेरा संगी को नहीं सबै स्वा
रथी लोइ मन परती ति न ऊपजे जे बे सास न होइ ॥ ६७ ॥ कबीर थली
[illegible] कज बच्या सो ॥ ६८ ॥ मत्तो पंथा पंथ सिर रह्या बैरे
गा कै णा ॥ ६९ ॥ कबीर यथ पर घर न थ घर बिण जण आ रहै कर
सकिरा पीबे चिक रिक बिरचा लेबट ॥ ७० ॥ कबीर डागुल ऊपरि
दौड णां सुष नींद ई न सोइ पुने पाया द्यौं हडा बोही आवन
बोइ ॥ ७१ ॥ कबीर नाव जरी जरी कूडा षेवणहार हलके हलके ति
रि गये बूडा तिन सिर भार ॥ ७२ ॥ कबीर नाव जरजरी भरी बिडा
णै भारि षेवट सूं परचो नहीं क्यूं करि उतरौ पारि ॥ ७३ ॥ कबीर रा
म कहां तैं भजि भये कोटी क्रिमि गलि जाइ सूकर केके औतरे ना
क बूडते षाइ ॥ ७४ ॥ कबीर जाम ति सो मति ज्ञान मति जाम ति ल
न साद राम बिना सब नरम सी राजा राणा राव ॥ ७५ ॥ कबीर सू
ता क्या करै काहिन रोवे दुष जाका बासा घोर मैं तिक्यूं सोवे सुष
॥ ७६ ॥ कबीर यह औसर चेत्यो नहीं चूको अबकी घात माटी मै
ल न जैसा र ज्यूं पाणी महै लो जात ॥ ७७ ॥ कबीर माटी का पि मां
पांच चोर दस द्वार जमराणौ घट ले लिसी वो लिग लै करतार ॥ ७८ ॥
कबीर पीपल रूनौ फूल बिना फल बिन रूनी जाइ यूं ही कारे

डीयां मो मन डेरणीयां केसी वहै सांम्हीयां केती तिरछीयां
४३ कबीर लहरि समंद की केती आवैं जांहि। बलिहारी तिस
दास की उलटि समावै मांहि ४४ कबीर खेरी सब लतें ऐक जी
व रिष पांच अपणे अपणे स्वाद कूं बहोत नचावें नाच ४५।
कबीर जे यो मन चलै तो फिरि फिरि नीलगा इंचन मन दी
कंथा निरंतेता का कछू न जाइ ४६ कबीर मन मरकट मन मु
क्ति फल मन राजा मन रंक जे यो मन हरि कूं मिले तो हरि मि
ले निसंक ४७ कबीर कव हूं मन गगनां चढै कव हूं जाइ
पताल। कवहूं क मन उनमनें लागै कवहूं क बंधे जंजाल ४८
कबीर चंचल मन रा चेत रे सूतो कहा अजांन। जम धर जम
ले जाइगा तव पड्या रहैगा म्यांन ४९ कबीर मनन मारया म
न करि सक्या न पंच प्रहारि सील सांच सरधा नहीं इंद्र्या अ
जहूं उघारि ॥ ५० ॥ ७ ॥ अंग ॥ २७ ॥ सूषिम मारग को अंग ॥ कबीर
कौण देस कहां आइया कोई जाणै नांहि। यो मारग पाया नहीं
भूलि पड्या यस मांहि १ कबीर उत तें कोई न आवई जाकूं
बूझूं धाइ यत तें सब को जात है भार लदाइ लदाइ २ कबी
र उहां तें आवत संतजन होते आइ सैण। परका मां परकारि
जां बोलते मीठा बैण ३ कबीर नांनां बांनी बोलते सो कित
गए बिलाइ यों सो सो नां जे नहीं कोण कहै समझाइ ४ कबी
र सब कूं बूझत मैं फिरूं रहण कहै न कोइ प्रीति न जोडी
रांम सूं रहणा कहां तें होइ ५ कबीर चलूं चलूं सब को कहै
मोहि अदेसा और साहिब सूं परचा नहीं पहुंचेंगे किस ठौर
६ कबीर जाबे कूं जाइगा नहीं रहिबा कूं नहीं ठौर कहै क
बीरा संत हो अवगति की गति और ७ कबीर मारग कठिन
है कोई एक सकई जाइ गए ते बहुडे नहीं कुसल कहै को
आइ ८ कबीर का घर सिषर मैं जहां सलहली गैल पांव
न टिकत पपील का लोकन लादे बैल ९ कबीर जहां न च
ली चढि सकै राई नां ठहराइ मन पवन का गमि नहीं तहां प
हूंते जाइ १० कबीर मारग कठिन है सब मुनि बैठे थाकि
तहां कबीरा चलि गया गहि सतगुर की साषि ११ कबीर सुर
नर थाके मुनिजनां तहां न कोई जाइ रे ऐसा कोई गमन हो
तहां कहे ल्यो लाइ १२ कबीर सुर नर थाके मुनिजनां ब्रह्मा
विष्णु महेस तहां कबीरा चलि गया सतगुर के उपदेस १३
कबीर सांसा दूरि करि जांमण मरण भरम।

२८९

२० कबीर कोटि करम करै पलमें यौ मन बिषीयां स्वादि मत
गुर सबद न मांनही जनम गमायौ बादि २१ कबीर यौ मन फट
क पछौडि रहे सब आपा मिटि जाइ पिंगुलके पीव पीव करै
पीछे कारन जपाइ २२ कबीर मैं मंता मन मारि रे घट ही मांही घेर
जब ही चालै पूठि दे तब अंकुस दे दे फेरि २३ कबीर कागद के
री नांव ड़ी पाणी ही की गंग कहै कबीर कैसे तिरूं पांच कुसंगी
संग २४ कबीर वो मन कहां गया जो मन होता काल्हि जंगल
नूंया मेह ज्यूं गये निवांण चालि २५ कबीर मन कूं मृतक दे
षि को मति मानै बेसास साध जहां लौं मे करै जब लग पिंज
रि स्वास २६ कबीर मृतग तो दावा किसा रसा अहंड तन हो हू
मूवा मसाणां प्रजले यौ कछू अचिरज भी हि २७ कबीर मन
मृतग कूं धीजूं नहीं मेरा मन बीहे को ई बाजे भाव बिकार का रि
फ फिरि हौ जीव २८ कबीर मैं जांण्यो मन वा मूवा मन तो हूवा
भूत मूवां पीछै फिरि रहै मै अैसा मेरा पूत २९ कबीर काटी कू
टी मछली छीके धरी चहोडि को ई इक अंक्षरम निबस्या
दह मैं पडी बहोडि ३० कबीर मन वासे पंषी लया चाहि च द्या
आकासि वहां तेगिरि पडया मन माया के पास ३१ कबीर घ
टा मी ही अव परास सनां मे रहे नीर जब लग मन पाको नहीं का
चौ निपह कि कथीर ३२ कबीर काया कजली बन है मन कुंजर
मैं मंत अंकुस ग्यान रतन है को इस मझै साधू संत ३३ कबीर नग
ति दवा रो संक डौ राई दसवें नाइ मन अराप ति होरहा कयूं क
रि सके समाइ ३४ कबीर काया देव लमन धजा विषै लहरि फ
हराय मन चाल्यां देवल चले ताको सरबस जाइ ३५ कबीर
मनां मनोरथ छाडि दे तेरा कीया न होइ पांणी मैं घी नीकलै
तो रूषा षाइ न कोइ ३६ कबीर काया कमंक बांण ज्यूं पांच
तत करि तांणि मारूं तो मन मृघ को न ही तर मिथ्या जांणि
३७ कबीर यौ मन लालची समझै नहीं गंवार भजन कूं
आलसी षावे कूं हुसीयार ३८ कबीर मनका बाहिला अंड
मं झे सोम देषत ही दह मैं पडे दई किसा को दोस ३९ कबीर म
न की बहोत लहरि तिल तिल मधे होइ ऐकै रंगे जो रहै को ड्या
मधे को इ ४० कबीर मन हूमल हरि नाव सूं के साध के नाइ
को ऊले हाणी काल्हि मां न्यावे सो मणि सावू लाइ ४१ कबीर सुण
त सुणा वत दिन गया न उलझिन सुलझ्या मन कहे कबीर सम
झै न ही अजहू पहला दिन ४२ कबीर समंदो लहरि जयो

णी क्यां द्वोला द्रिरिदेसे र्हवेर नीगोमंदिरमांह्रि१५ कबी
रमायातरवरत्रिविधिका साषा दुष संता पासीतल छाया
गहर फल्ल फल फीकातनताप २(० कबीर जग की का
कं कंां नो जलिवरे दाम पारवह्मपतिह्याडिक शिकेमांनि
कीत्रास २७ कबीरमांनिवडाई कूकरी सांई केरखा रि लुच
तारतावीवाद्रिराकेतायापोफारि २२ कबीरमायातजीतौकान
याजेमनितजीनदीजाइमायातोमुनियरगिलेमांनिसबन
कूंपाइ २३ कबीरकालामुदूंयसमांनिकाअंदमेलांकेआगि
मांनिवडाई झाडिकें रहूंरांमस्योलागि २४ कबीरअकुं ऊ
ईजअसबीमायाकुईजमांनियूंवसिपडीपसीकके पाक
डिअंणीकांनि २५ कबीरांमदिथोडा जांणिकरि उनीयां
आगेदीनजीवांसराजाकदेमायाकेअधीन २६ कबीरसां
कलदीतेअतिसबलामायायहिसंसारअपणांबलिछूटेन
हीछोडेतोसिरजनहार २७ कबीरआसातरगसबेधियानिं
नेंगणेसुजानथणांपंडेरूमारयायसनोजरीकमांन २८ क
बीरबाडिचढतीबेलडीनलजीआसाफंध टूटेपणि छूटेन
हीनईजवाचाबेध २९ कबीरसबआसणआसातणा न्र
कसीकेनांह्रिनूकसीकेनेहनहीपरकसीपरपंचमांह्रि
३० कबीरमायायूंकहेतुमतिदेइपूवि औरहमारे हमब
सारसा कबीरसूं छिड़ी कबीरडनीयांसेतीदोस्ती होइज
जानमेंनरामैकाएकीरांमसंकेसाधकेसंगर १ कबीरसंसा
रीसूंपीतडीसरेनएकोकांमकुबधामेंदोकंगाई मायाकु
ईनरांम ३२ कबीरमायाआगेंजीवसबवाढेंदेकरजोडि
जिनसिरज्याजलबूंदसूं तिनसूंबैठातोडि ३४ कबीरमें
मेरीकेमांमिलेतोबिवादरिसूंतोछिमायाकरककदीनदे
केतेगऐचंचोडि ३५ कबीरमायाकरककदीनदेयसनो
सागरकेमांह्रिजेबकसूंपीजीवदेपांचतहीपणिजांह्रि
३६ कबीरपितापियारेपूतकूंगोंदराखेलागोधाइ लोजे
मिवाईहाथिदेआपणाचलेमुलाइ ३७ कबीरडभीपा
ट्यमउकदेमनमेंरोमउपाहरोवत्तरोवतमिलिगणेपित
पियारेजाइ ३८ कबीरमोरत्तोरकीजेवडीबलिबंध्यांसं
सारकासासिकडूबोसुतकलतदाफणिबारंबार ३९ क
बीरचुगत्तीनीरबिटालीयासरबचगाकुलंकाअंरप
षेरूपीगयाहंसनचोवेचंच ४० कबीरमायाजोलेमरो

मि ल्या सुमिस मांनां मन॥१४ कबीर सूं बिम सुरतिका जी
वन जीवै जा रन रु सिदयालो हरिक रि आनमन्त्र दिर का
ल॥१५ कबीर दु हिद हिदू हिदू थियार करि कूडी गलन मारि
ज्यो ज्यां पंथो चालणां सोई सोई पंथ मंवारि १६ कबीर मार
ग कठिन है रसा जिहि मारग पकुते साध मैतो दो कंगा हिर
सा लो लन बडाई बाद १७ कबीर आगम दीतें आगम हैं आ
गे देखा आपार तहां मन धीर जकां धरे पंथ घरा निरधार॥
१॥ ८०॥ अंग॥ १॥ माया कौ अंग॥ कबीर जगदेट वा
डी रवदवा माया पूरी लाइ रांम नांम गाडो गहीं म ति जा
इ जनम गमाइ १ कबीर माया पापणी फंद लेबैठी हाटि स
ब जग सो फंद मैं पड्या गया कबीरा काटि २ कबीर माया
पापणी लालै लाया लोग पूरी किन हू न भोगई यन का
यह संजोग ३ कबीर माया पापणी हरि सूं करे हरांम मुख क
डिया की कुबधि की कहण न देई रांम ४ कबीर माया पा
पणी मांगी मिलै न हाथि मन उतारी झूठ करि तब लागी
डोले साथि ५ कबीर मैं जांण्यूं हरि कूं मिलूं मो मन मिमो
टी आस हरि बिचि पाडै आंतरो माया बडी जपास ६ क
बीर माया पापणी मोहे जांण सुजांण लागा ही बाडै नही
न रि लाइ मारै बांण ७ कबीर माया पापणी सब जग घा
ल्या घांणी कोई साधू जन ऊबरया जिनि तोडी कुल की
कांणि ८ कबीर माया मीवी जगत मैं जे सी मीवी पांड भत
गुरु की कृपा नहीं न हीं सरदोते जांड ९ कबीर माया मोह
नी जई अंग्रेधी यारी लोइ जे सूता ते मुसि लीया रहे बसू कूरो
इ १० कबीर माया डाकणी सब का खूं घाइ दांत उपाडूं पाप
णी जे संता नेडी जाइ ११ कबीर माया मूई न मन मूंवा मरि
मरि गया सरीर आसा त्रिस्नां नां मूई यूं कहै दास कबीर १२
कबीर आस जीवै जग मरै लोग मरै मरि जाइ धन संचे ते धि
सू दैं उबरे जो धन खाइ १३ कबीर धन संची जो आगा कूं दे
इ मूंड चढाया पोटली जात न देख्या कोइ १४ कबीर त्रिस्नां
पापणी तासूं प्रीति न जोडि पैडी चढि पाछा पडै लागै मो
टी षोडि १५ कबीर त्रिस्नां सीची नां घटै दिन दिन बधती जाइ
जैवां साका रूंख ज्यूं घण मेहां कुमलाइ १६ कबीर न लनी
सा रूघर कीया हैं लागी अबते णी जलतां मांही जलति मूई
पूरब जन्म लेषेणी १७ कबीर गुण की बादली तीतरबर

जाइ॥१८॥कबीरकहणीसुलपकविनेरहणीमरसीग्या
गावैकहैकबीरपोताकोपापीपरकायापगमावे॥१९॥कबीर
करतादीसैकीरतनकूंचाकरिकरिचेडाजांणीबूझेकहूनदी
ग्रंथमूंडीसूं॥२०॥कबीरकहणीसुलपकविरहणीमाथी
कहेबिचारजपूंगावेस्यूंहीरहेसबजाइजुतेरपार॥२१॥कबीर
नाचेगावेपदकहेनदीधणीसूंहेतकहेकबीरक्यूंनीपजे
बीजबिहूणोखेत॥२२॥कबीरव्यासबेदपंडितपद्यांकीया
नहरिसूंहेतबालिकबीरालेगयापंडितढूंढेखेत॥२३॥कबी
रबांचणगुरुजगतकाकरमधरमकोबाडनेजिपुरलफि
करिमरिगयाच्यारयूंबेदबहाइ॥२४॥कबीरकलिकाबांभ
णमसकरांताहिनदीजेदानकुटंबसहततनरकोचल्यासा
थितीयाजजमांन॥२५॥कबीरबांभणबूडाबापडाय्यसजने
कंकेजोरिलपचोरासीमाहिलईपारबुलमसंतोरि॥२६॥क
बीरसाषितसिणकोजेबडोलागांतेंअवबाडदोइअपिरगु
रबाहिराबांध्याजमपुरजाइ॥२७॥कबीरव्यासकथाकहे
लीतरनेदनांहिफिरिपरमोधेऔरकूंआपणसमझेनांहि
॥२८॥कबीरचतुराईसूवेपढ्योसूवोपिंजरामांहिफिरिपरमो
धेऔरकूंआपणसमझेनांहि॥२९॥कबीरमनफूल्याफिरेक
रताहूंरधरमकोटिकरमसोसिरचढेचेतिनदेपेमरम॥३०॥क
बीरगिरहीतोचिंताघणीबेरागीनेंनीषदोयकांरयांबिचिज्ञ
ईडोसंतोदोनेंसीष॥३१॥कबीरबैरागीबूतलनागिरहीचित
नदासदोयबांसाषालीपडेसाकूंवारनपार॥३२॥कबीरस्वाम
कोनहीस्वामीसिरजनहारस्वांमीहेकरिबेसरीसोधणीग
देसीमार॥३३॥कबीरसिषसाषसंसारगलिजेबागरत्तहिकाल
बेरागीसोहमदीबंधावेताकामूलनडाल॥३४॥कबीरस्त्रि
तासुणीजिनिसंसारीसंगजाइपदलीजेसुषनोगीयासाका
गुडलेमाइ॥३५॥कबीरसेषसबूरीबाहिरादसाजमकेजाइ
जिसकोदिलसाबतिनहीसनकूंकहांथुदाइ॥३६॥कबीरला
कोहिरदेहारनहीमिषसाघाकीचूषचेनरकलासूकसीज
सादेहादोषरहूष॥३७॥कबीरबांनांपदस्पासिषकाजांणपांनहीं
चारांणमाबोलीजेडकीतबस्याजांणपाइफारि॥३८॥कबी
बातबणाइजगठगपापमनपरमोध्यानांहिकबीरास्वा
लेगयाफिरिचोरासीमांही॥३९॥कबीरसांगीलीयसोथि
रिमायाअप्रबेलल॥४१२

ग्रामा जिन वैसे मास जीव डो सांसे चुगिली यो राम कह्या
की अंग संधि ० कबीर मोती नीपजै सीप समंद तो जाइ रची एक सं
...हि गया तो कछू कीया न होइ ४१ कबीर माया की झल
जग जल्या कनक कामणी लागि कहो कहा तो भाजीए रू
ईपले ते आगि ४२ कबीर मैमें बडी बला है दूसके ते नी सरि
जाग कूक रि बके राम जी रई पले टी आगि ४३ कबीर का
गि सवि कूजि मूवा बिन पीव एक हाड दोइ कूकरा लागि
मूवा यू जीव ॥४४॥ ।। २४ ।। अंग ॥ २० ॥ चांणिक को अंग ॥ क
बीर इहि जुग के कारणो जगत जाचे नि मत जोम स्वामी पणो सि
र चढौ सक्यो न एको काम १ कबीर स्वामी होणां सो हरा दोरा
होणा दास गाडर आणी ऊन नैं बांधी चरै कपास २ कबीर स्वा
मी हूवा सी ति का पैके कारप चास राम नाम धन बेचिकरि क
रै सिष्यां की आस ३ कबीर तष्टा टोकणी लीयां फिरै स्वादि राम
नाम चीन्है नहीं जन्म गमायो बादि ४ कबीर कलि का स्वा
मी लोभीया पीतल धरै पिटाइ राजदवारे यू फिरै ज्यू हरि या
ई गाइ ५ कबीर राजदवारे राम जन तीन बात कू जाइ क्यू मी
ले क्यू मानि कू क्यू माया की चाहि ६ कबीर कलिजुग आई
या मुनियर मिलै न कोइ लालच लोभी मसकरा तिन कू आ
दर होइ ७ कबीर सत सुमिरणा साची कथा कोई एक धरई का
नि क जिमै रूजा डिम की केवाज री को मांनि ८ कबीर रासि
पराई राषतो घर को षांधै षेत औरान पर मोधता मूंढे पडि
गईरेत ९ कबीर तारा मंडल बैसिकरि चंद बडाई षाइ न दे
उदय जब सूर का स्यूं तारा छिपि जाइ १० कबीर देषत का सब के
न जा सीत का कोट देषतही मिलिया बांधे जल की पोल
ट ११ कबीर इस संसार कू समझाऊ कै बार पूंछ जु पकडै ने
ड की उतरयो चाहै पार १२ कबीर पद गाया मन हरषीया
साषी कह्या आनंद सो तत नांव न हौ जाणीयो गल मै पड गया
फंध १३ कबीर कथणी बपडी क्या करै जे करणी नाउ
हराइ कालबूत का कोट ज्यूं देषत ही ढहि जाइ १४ कबीर कथ
णी काची होगई रहणी रही सत सार कथता बकता मरि गया
मूरिष अनंत अपार १५ बांसा कूं पाई ऐसा दिवकादीदार १६
कबीर जे साबोणो मुषि कहै ते सी चालै ते चाल साहिब दरसन
मुष षडा पल मैं करै निहाल १७ कबीर बोलै ज्यू चालै नहीं
सबद कसौ बतिजा इ मन निषनही वे कूकरा बांध्या जमपुरि
कबीर करणी की कि रचीनही कथणी ...

नेह्बुधिबमेकसबहीदेरैंकोहगमावेदेह्कारिजकोईनां
मेरे१६॥ साषी॥ कबीरनारिमावेतीनगुणजैानरपासेहोइ
भगतिमुक्तिनिजग्यांनमैंपेसिनसकेकोइ१७कबीरनोउन
स्वादसुषनारीमेसीरंगविगिछाडिपछितावैगोनांतरकैहै
नेंगरे१८कबीरनारीकांकुंकनाहरीनयसमघसूधगाहपाणी
बूडाकब्बेरानगबूडाबहिजाइ१९कबीरनगकीप्रीतडी
केतेगयेगडेतअजहूंवेतेजांहिगेनरकिहसंतहसंत२०क
बीरफांदाकोनांवाघणीतीनलोककूंषाइजीवतचूसेकाटि
जोमूवांनरषिलेजाइ२१कबीरजोरूरूठिजगतकीच
लाबुराकेवीचानविमतेअलगारसेंमिलिघलेंतेनीच२२
कबीरनारीकूंडीनरककीबिरलाथंनेवाटकोईसाधूजन
ऊबस्यासबजगमूवालाग२३कबीरसुंदरितेंसूलीभली
बिरलाबंचेकोइस्लोहलीदलोंआगिज्यूंजलिबलिको
इलासोइ२४कबीरसंसारबूणाअपछरांकोईलागेतत
विचारिसुरनरमुनिजनबसिकीयाधनयोथरीचंमारि॥
२५कबीरनारिनहीयाजमहैाचूमरिजांनेदासीबिलाई
ज्यूंफीणीबोलेकाटिकाःलेजोघासी२६कबीरनारीनद
यांसारिषीबहेअप्रबलहरिअबगतिसेन्यारांकैरेअं
तिपरेमुषिधूरि२७कबीरनारीनदीअथाहजलबूडिमूवा
ससारऐसासाधूनांमिलैतासंगिउतरंपार२८कबीरबि
षपावेसोईमरैक्यामेराक्यातेराआगिपराईआपणी
सबकाकेैनवेसिर२९कबीरजगमेडोडीकांमणीअमतीसबस
सारऐसासोफीनांमिलेलासंगिउतरूंपार३०कबीरअ
गिआगिसबएकहैतामेंहाथनबाहिनापिपराईआपणी
जुगत्यांनरकांजाइ३१कबीरव्यासाव्यासाक्याकोवो
यामेरीमाइमकरनातषुवाबूकरिवेडीघालीपाइ३२कब
रएककनकअरकांमणीविषफलकीयाउपाइदेष्यांही
तेंबिषचढैषायातेंमरिजाइ३३कबीरएककनकअर
कांमणीएजगमेंबडफंदाथनमेंजोनबंधवईताकामें
बंदा३४कबीरचलूंचलूंसबकोकहैपकुंचेबिरलाके
इएककनकअरकांमणीदुनरघाटीदोइ३५कबीर
जबीरजकीकलीतापरिमाज्यारूपरांमनामबिनबूडे
सीकनककांमणीकूंप३६कबीरजहांजलांईसूंदरी
सो

थूरि॥७॥ कबीर सूक त्ति स्वामी सूं कस्या मुणिर चेत अचेत
पीतल दी कापारसू नांही दरसूं देत॥४॥ कबीर पव्या गुणां
सोधा सवे मिटी न संसे सूल कहै कबीर कासूं कहो चादि
दोष को मूल॥५॥ कबीर कलि का स्वामी लोची या मनसा धरी
अधाइ दे दह पई साध्या जकूं रेन पो करता जाइ॥६॥ कबीर जो रि
दन आजि दे सो दिन नां ही कालि चेत कबीरा चुणि गया पंडि
त ठेहै बालि॥७॥ कबीर के पांणां के सोलणां और न कोई चिंत
हरि प्रीस बीमस्या बालपणां का मित॥४॥ कबीर कथणी मी
ठी खांड सी रहणी बिष के लोइ कथणी कथि रहणी रहे तो सब
ती खांड सी रहणी॥ बिष कै लोइ॥ कामी नर को अंग
बिष ई अन्नत होइ॥४६॥५७०॥ अंग॥२०॥ कामी नर को अंग कबीर का गु
कबीर कामी का गुर कामणी लोभी का गुरदाम कबीर का गु
र संत है संतां के गुर रांम॥१॥ कबीर पग सूं माया वेलता जगसूं
र हता इ पिणुदी पक डिगो ता दीया पांनी बव्यान सूरु॥२॥ क
बीर चीय कलांवनीयां बिसहर कीया बेहाल जा के सदा
लावनी यां ता को कोण हवाल॥३॥ कबीर जा की रुष छाया
पड्या अंधा होइ नर कहि तें ता की कोण गति जा को
नि ति नारी संग॥४॥ कबीर कांम नि काली नागनी तीनूं लो
कमं झारि रांम सनेही ऊबरे बिषई षाये झारि॥५॥ कबीर कां
मनि मीनी षांणा की जे छेडूं तो षाइ जे हरि चरणां राचीया
तिनि कै नि कटि न जाइ॥६॥ कबीर सहूं कामी दीपा दसा सो षे
तेल बिणास कबीर हीरा संत जन सदा प्रकास॥७॥ कबीर ना
री तो हम ही करी जांणी नहीं बिचार जब जांणी तब परह
री नारी बडी बिकार॥८॥ कबीर नारी तो प्रत पिसुरी बिर
लाब चे को इ षांतां मीठी षांड सी अंति काल बिष होइ॥९॥
कबीर पर नारी रात्ता फिरै चोरी बढती षाइ दिवस च्यारि स
रसा फिरै अंति मूला जाइ॥१०॥ कबीर नारी दिसा न देषीये
दे षिन को जे डोर दे षत हीं त निबिष चढे मन आवे कछु और
॥११॥ कबीर जे क बकु पर देषीये बीर बदन के जाइ आव
पटे र अलग रहे तो कब कु का लग पाइ॥१२॥ कबीर देषत दी
दोमें पडे कनक कांमणी नांहि कबीर कूं केतिग न्नया मन
कूं रस्यासे बाहि॥१३॥ कबीर नारी कै राचणां और गण छै गुण
नां हि षार समंद मैं मछला के ता बहि बहि जांहि॥१४॥ कबीर जे
र नर नारी सब नरक है जब लग देह सकांम कहे कबीर जे
रांम का जे सुमरै नि हकांम॥१५॥ सोरठा॥ कबीर नारी सेती

छिप पाकबीरयाघाटीसैंऊतस्यांजेजनउतस्यापार।
याघाटीमैंआघड्या ज्यांनैवारनपार॥५०॥१२०॥अंग
२१॥सहजकोअंग॥कबीरसहजसहजसबकोकहै
सहजनचीन्हैकोइ ज्यांसहजौविषीयातजेसहजक
हावैसोइ१ कबीरसहजसहजसबकोकहैसहजन
चीन्हैकोइ पांचूंराषेपसरता सहजकहावैसोइ२ कबी
रसहजैसहजैसबगयासुतबितकांमनि कांम एकमेकह्वैमिरि
रह्या दासकबीरारांम३ कबीरसहजसहजसबको
कहैसहजनचीन्हैकोइ ज्यांसहजांसांईमिलैसहजक
हावैसोइ४ कबीरसहजैसहजैहोइगा जोकछूरच्यास
रांमकाहैकूंकरतपतफिरैदुषीहोतबेकांम॥५॥१२५॥
अंग॥२२॥साचकोअंग॥कबीरसाचसरीषातपनहीं झू
ठसरीषापापजाकैहिरदैसाचाहैताकैहिरदैआप१ कबीर
साचालोकेसचरहैसचमिलैसमाइ साचासबदमुषतैक
हैताजोगीकूंकारनपाइ२ कबीरसाचीकहूंतोमारिजो झू
ठैजगपतिआइ कलिजुगकाजीकूकरीजेछेड़ूंतोषाइ३
कबीरसांईसेतीसचचलिसांईसचसुहाइ भावैलांबाकेसकरि
भावैघुरडिमुडाइ४ कबीरपूंजीसाहकीतूंजिनिकरैषवार परी
बिगूचणिहोइगी लेषदेतीबार५ कबीरलेषादेणांसोहरा
जेदिलसाचाहोइ साहिबकादरबारमैंपलानपकडैकोइ
६ कबीरचितचमकीयाचौगानपयाणा हमिकारयकागद
कौतीयाकबदरगहलेषापूरि७ कबीरकारथकागदकादी
यासबलेषावारनपार जबलगसाससरीरमैंतबलगरांम
संभार८ कबीरयासबझूगावदगी बरियांपांचनिवाज सा
चहीमारेझूठपढिकाजीकरैअकाज९ कबीरकाजीलोहिक
रांमकाकहिआयाफुरमाण घटफोडिघरघरकीयासाहिबका
नीसांन१० कबीरश्रावबाटचकरीगईमांसमुलांगयाषाइ
अजहूंष्यालषरीककेभिस्तिकहांतेंजाइ११ कबीरहांकिन
बिसमलकीयाष्युणकिनकीयाहलालमछलीकिनजिब
हैकरीसबषाबेकाष्याल१२ कबीरकाजीस्वादबसि ब्रीहरतै
सबदोइ चढिमर्म
बीरकाजीमुलांनमीयांचल्या उर्न

मोस वो स्यार ३९ कबीर विषै पियारी प्रीति सूं तब दूरि अंत
रि नांहि जब अंतरि हरि जी बसे तब विषया सूं चित नांहि ४
० कबीर कामी नर का कहे न सीसा जाइ साहिब सूं अंतगार
वे वाके हवै देला गी लार ३१ कबीर औषधि नर चेतन हीं मिटै
न सैसे सल्ल और गुन्हां हरि विकसिसी कामी डास्त मूल ४०
कबीर नाति बिगाड़ी कामी यो इन्द्री केरै स्वादि हीरो खोयो
हाथ सूं जनम अमायो वादि ४१ कबीर कामी कदे न हरि नै
जो पैनके सो जाप री मक द्यां वैज रति मरै को ई पूरब लौ पा
प ४२ कबीर कामी ता ज्यूं नां के रामन मैं या अरहत्ता दनीत
नमो गे सा थये नूयन मोगे स्वाद ४३ कबीर कामी तें अन्ता नन्त
हिति सिरि पोलि का उरा मनोम जां गोन ही वब ई जे ही बाच
४४ कबीर कहता जूं कहि जात हूं समझे नहीं गेवार बैरा
गी गिरही कस्यां कामी वार न पार ४५ कबीर कामी कूं इस्र
तन न्हावही विषही कूं लेसो धि कब धि न जाजे जीव की
नावे ज्यूं प्रमो धि ४६ कबीर कामक्रम की कोचली पद
रि न यान र नाग सिर फोडे सूझे नहीं को ई पूरब लौ अना
ग ४७ कबीर रोक कनक अर कामणी तजी ने जीराहरि
अंतर पारे हरि बिचे जम देसी मुषि धूरि ४८ कबीर नारी केरे
राचणे सूं क्षै नर को जाइ जम वो हनू थाडे नहीं जिकोटि कर
ि गुण गाइ ४९ कबीर परनारी प्रीत पिछूरी जिमी लहसण
कीम णि ढूंणो वे सिर मा हि ये प्रगट हो इ दीवाणि ५० कबी
र पर नारी प्रीत बिछुरी विरला बचै कोइ नांक पे टिसं चा
री हो जे सो नां की देह ५१ कबीर कामी मिलावे राम कूं जे को
ई जाणे राषि कबीर बिचारा क्या करे जाकी सुषदेव बोले सा
षि ५२ कबीर जिह्वा जेवडी जरा बंधी या तूं मति बंधै कबी
र कैसी आवा तूं णाज्यूं सोना सवां सरीर ५३ कबीर कामम
कर सब असवार है मोर सब कूं ढाह कोई एक हरिजन ऊ
बरे जाकी राम सहाइ ५४ कबीर जब लग नामगति मन कां
मना तब लग न फल नसे वा कहे कबीर वे क्यूं मिलै निर
कामी निज देव ५५ कबीर काम कामना सब की कहे काम
न वी है कोइ जे ती मन के कामना कामक ता वे सोइ ५६
कबीर केल बाल बढि गा कितब देगे आइ अैसे नेदरी
वाजा रिकरि तूं मति नेडा जाइ ५७ कबीर है घाटी रन अथ
री के हू तं घी जाइ सोइ लेय णाकी करे सो इन तुझे मां

कबीरपाथरपांणीमतिकोईपूजौ यासेवाजामीबादिकैसेवा
करिसाधकीकैहरिकैसुमिरनलागि २७ कबीरसेवैसालिगरांम
कूंमनकीभ्रांतिनजाइसीतलतासुपनैंभईदिनदिनअधिकी
लाइ २२ कबीरसेवैसालिगरांमकूंमायासेतीहेतपहरैकालाका
पड़ानांवधरावैसंत २३ कबीरतीरथकरिकरिजगमूवाकूंडेपांणी
न्हाइकरतापुरसनध्यावहीतातैंकालघसेटेजाइ २७ कबीर
तीरथचालेन्हांणकूंमनमैंलाचितचोरऐकोपापनलतस्या मां
न्हालायाओर २४ कबीरतीर्थवरतजवेलडीसबजगमेलस
जाइ कबीरमूलनिकंदीयाकौंणहलाहलखाइ २५ कबीरज
पतपदीसैथोथरातीर्थवरतवेसासासूवैसेंबरलसेझ्यायूंज
गचाल्यानिरास २६ कबीरकासीकांवैंघरकैरैपीवैनमलनीर
मुक्तिनहीहरिनांवबिनयूंकहैदासकबीर २७ कबीरमेंजांण्यै
पढिबोभलोपढिबाथीभलोजोगरांमनांमनीकांगहीभल
नलनीदैलोग २८ कबीरपढिबोदूरिकरिआथिपढ्यासंसार
पीडिनउपजैजीवमैंतोक्यूंपावैकरतार २९ कबीरपढिबोदू
रिकरिपुस्तगदेहबहाइबांवनअषिरसोधिकरिररैममैंचित
लाइ ३० कबीरहुनीयादेहुरैसीसनवांवैंजाइहिरदामांहीह
रिबसैतूंताहीसूंल्योलाइ ३१ कबीरपढिपढिजगमूवापंडि
तहुवानकोइऐकोअषिरप्रेमकापढैसपंडितहोइ ३२ कबी
रसालिगरांमकामोहिनरोसोनांहिकालकहरकीचोटमें
बनसिजाइपलमांहि ३३ कबीरमनमथुरादिलद्वारिकाका
याकासीजांणिदेहीमांहीदेहरातामेंजोतिपिछांणि ३४ कबी
तुरकमसीतिदेहुरैहीहूआपआपकूंध्यांवैअलखनिरंजनह
हीनातरीताकामरमनपावै ३५ कबीरपाथरलेदेवलरचा
मोटीमूरतिमांहिपडिफूटेप्रवसिरहेमोतोतारेनांहि ३६ क
बीरपांचततकापूतलारजबीरजकीबूंदऐकैघाटीनीसरा
बांमणक्षत्रीसूद ३७ कबीरवेदांजगबिगोईयापंडितांमंडी
बाटजिहिकरणीसाईमिलैंसोरहलैनाघाट ३८ कबीरजाक
याप्यापिंडहैताकीकीजेसेवजोथाप्यायसमांडकासोनही
हमारादेव ३९ कबीरपांहणपूज्यांहरिमिलैतोहंगरपूजूंज
इचाकीकूंनहीपूजीऐताकोपीस्योसगलाषाइ ॥ ३०॥ ६
ए ३॥ अंग॥ २४॥ जैपकौअंग॥ कबीरकरसेवीमालाजपै
दैवसेडंडूलपगतोपा

साधीया अवदलईतब हाथि २४ कबीरकालामुहकरिकरहक
दिलतैं हरि निवारि कब सुरति सुबिहांनकी अहमुषमुलां
नमारि २५ कबीरजोरीकरि जिबहकरै मुषसूंकहै हलाल सा
हिबलेषा मांगसी तब होसी कौंण हवाल २६ कबीरजोरी की
यां जुलम है मांगै ज्वाब षुदाइ षालिकदरि षूनीषड़ा मारमुहे
मुहि षाइ २७ कबीरगला गुसाका काटीयो मीयां कहरकूं मार
जे पांचूं बिसमलकरै तब पावै दीदार २८ कबीरगला काटै कल
मां पढै कीया कहै हलाल सा हिबलेषा मांगसी तब होसी कौं
ण हवाल २९ कबीरमुलां चढिनमुलाणीं अलषन बहरा
होइ जिसकारणि तूं बांगदे सो दिलहीअंदरिजोइ ३० कबी
र सांईसेती चोरीयां चोरांसेती गुझ जब जांणैगो जीवड़ा मार
पड़ैगी तुझ ३१ कबीरसांईसेती सचचलि सांईसच सुहाइ भा
वैं मैं गललांब रैलै सचै सरपनषाइ ३२ कबीरकूवेकूं कूवा मिलै
तब अधिकाबधै नेह कूवाकूं माचा मिलै तब तडैकैतै देह ३३ क
बीर लज्या लोककी सुमिरै नांही साच जांणि बूझि कंचन तजै
कांठो पकडै काच ३४ कबीर जिननर जांणीयां करताकेवल
सार सो प्रांणी काहेचलै झूठा जगकीलार ३५ कबीर झूठा न
समलगाइ करि मिटी न मनकी चाहि जबलग सिकानसाचका
तबलग जोगी नांहि ३६ कबीर ऐसी याटणि याटीयो बहौरिन
यह तनहोइ षांन गूदडी पहरिकरि कादि न सकै कोइ ३७
हद २॥ अंग ॥ ४२ ॥ अथ भ्रमबिधूंसकौ अंग ॥ कबीर पांह
णकेरी पूतली करि पूजे करतार यहि भरोसे जेरहैं ते बूडा का
लीधार १ कबीर काजलकेरी कोठरी मसिकेकीयेकपाट पांह
णबोई पृथमी पंडितपाड़ी बाट २ कबीरपांहणकूं क्यापू
जीयै जनमन देई ज्वाब आंधानर आसामुषी यूंहीषोई आब
३ कबीर हम भी पांहण पूजते जबहोते बनके रोझ सतगुर
की कृपा भई डारया सिरकाबोझ ४ कबीर जेती दीसे आ
तमां तेता सालिगरांम बोलणहारा पूजीयें नहीं पाहण सूं कांम
५ कबीर घर गिरवर करता कीया सोक्यूं रहै अपूजि तां हिफोडि
देवल क्यूं परमेस्वर सूं हूजि ६ कबीर सूतधरि धरि कथ्या पांह
णका जगदीस मोललीनो थो बोलै नहीं षोटो बिसवा बीस ७
कबीर पाथर पांणी पूजिकरि पचि मूंवा संसार भेद अलहदा
रहि गया कोई बिरला उतस्या पार ८ कबीर पाथर ही को देह
रौ पाथर ही को देव पूजणहारा आंधला क्यूं करि मांनै सेव ९

मनआवैको ह॥२५॥ कबीरमालामोसूंलडि पडी कहाफिरा वैमोहि॥ जिमनफेरैआपणों मिलौंकतो हि॥२६॥ कबीरमालापे रूयोकचन दीकाठीमन केसाथि॥ जबलगहरिपरसे नहीं त बलगयोथी साथि॥२७॥१२७॥ अंग॥२५॥ कुसंगतिको अंग॥ कबीरकुसंगतिकेलेगणो जिनिकैनांहनवाहंजे कूं से सीबाअपडा साधनहीवहिंगावह॥१॥ कबीरकुसंगतिनकीजी योरोनेहाजलनतिराजकदलीसीपभुवंगमुषिऐकबूंदति हुंभाइ॥२॥ कबीरजलबूंदआकासकी पडिगईनौमिलि कारामूलबिणगमानईबिनसंगतिभवधार॥३॥ कबीरहरि जनसेतीरूसणों संसारीसूंहेत तेनरकदेननीपजै ज्यूंकाल रिकोषेत॥४॥ कबीरमारीमरूंकुसंगकी केलाकाटेबेरि॥ वा हालेवोचीरिजे कुसंगिसंगतिफेरि॥५॥ कबीरकहैनेक्यूंबणों अणबणतासूंसंग दीपककेभावैनहीं जलिजलिमरैपतं ग॥६॥ कबीरमेरनिसांणीमीचकी कुसंगतिहीकाल॥ कबीर कहैरप्राणीबांणीब्रह्मसंभाल॥७॥ कबीरऊंचाकलका जनमीयांजैकरणीऊंचनहोइ॥ कनककलससविषसूं भ्र्यासाधानीद्यासोइ॥८॥ कबीरजांणिबूझिसाचहीतजै॥ करैझूठसूंनेह॥ ताकीसंगतिरांमजीमोहिसुपनेंजिनिदेह ॥९॥ कबीरकुसंगासेतीसंगकीया रहोरहीयामधीजि कुसबासानीपजै नावैहूणोंबीजि॥१०॥१२९॥२६॥ संगतिकोअंग॥ कबीरसंगतिसाधकी कदेनन्नफलहोइ॥ लोमीचंदनबावनों नीबनकहिसीकोइ॥१॥ कबीरसंगति साधकीनितिप्रतिकीजैजाइ॥ दुरमतिदूरिगमावसी देसी सुमतिबताइ॥२॥ कबीरमथुराजाभावे द्वारिकाभावेजाजग नाथ॥ साधसंगतिहरिभगतिबिनकछूनआवेहाथि॥३॥ कबीरमेरासंगीदोइजनां इकवैसनोंइकराम वैहैदातामु क्तिका वेसुमिरावैरांम॥४॥ कबीरबनिबनिमैंफिरया का रणिअपणेंरांम॥ सरीषेजनमिले तिनसारेसबकाम॥५॥ कबीरसोईदिनभलाजादिनसंतमिलाइ अंकभरेभ रिभेटीये पापसरीरांजाइ॥६॥ कबीरहरिजनआवतदेषि करिहसीहूमारीहेहूमाणोंकाग्रहिकतरया नैनांबंध्या मनेह॥७॥ कबीरचंदनकेबिडैबेध्याआकपलास आपसरीषेक रिलीए जे हौतेउनपास॥ कबीरचंदनकेबिडै॥
इरुडेबांसबडाइतोयूंमतिबूडेकोइ॥

१५

ई मिलै सो तो नया काल कबीर २ कबीर माला फेरतां मनमु
सी लागै कछू नहीं ३ मन माला कूं फेरतां जग गत जियाला होइ
२ कबीर माला फेरतां मन मुसी बहै तक फिरै अचेत गांगीरी
लै बहि गया नां दौ हा रसंदेह ४ कबीर माला फेरतां कछू नही ह
त्या मैरे गे नारि बाद रिठी ल्याही गरत्व जीत रि नरीनं गारि ५
कबीर माला काठ की मेल्ही मुगध झूलाइ सुमिरण की सोधी
नही तो डीगरघा लीगाइ ६ कबीर माला काठ की कहि समझा कै
तोहि जे मन फेरे आपणौं तो कहा फिरावै मोहि ७ कबीर माला
तौ मन की और संसारी भेष माला फेरयां हरि मिलै तो अरहट के ग
लि देष ८ कबीर माला फेरयां कछू नहीं मांगि हिरदा की घोइ ह
रि चरणां चित राषीइ तो अजरांवर होइ १० कबीर माला फे
रयां का नया न्याग तिन आई हाथि डाढी मूछ मुडाइ करि च
ल्या दुनी की साथि ११ कबीर केसां कहा बिगाडीया जे मूडै सौ
बार मन कूं क्यूं मूंडै नहीं तामै विषे विकार १२ कबीर मन मैवासी
मूंडि रे केस मुडावै कांइ जो कछू कीया स मन कीया केसां कीया
नांहि १३ कबीर मूंड मुडावत दिन गया अजहु न मिलीया राम
राम नाम कहि का करै मन करै और ही काम १४ कबीर सांग पह
रि सोरा हूवा दुनीयां षाई षूंदि ज्यां सैस्यां साधू गया सो तो मेल्ही
मूंदि १५ कबीर बैसनों न्ययो तो का न्यया जो पायो नही बमेक था
पाति लत कब णाइ करि दगध्या जगत अनेक १६ कबीर तन कूं
जोगी सब करै मन कूं बिरला कोइ सब सुष सहजै पाईये जे
मन जोगी होइ १७ कबीर न्यर मन न्या गा जीव का अनत क थीया
ने ष सत्त गुर परचा बाहिरा अंतरि रह्या अलेष १८ कबीर रैण
हर संबौ छड्या रहे हौ सं षमझूरि देव लदेवल धाहडी देसी
कूंगे मूर १९ कबीर पषलै बूडी पृथमी झूवा ज्ञत की लार अल
ष बिमार्यो ने षमें बूडा कालीधार २० कबीर चतुराई हरि नां
मिलै ऐ बातां की बात निसप्रेही निरधार का गाहक दीनांना
थ २१ कबीर हरि की नागति का मनमैं बहुत हुलास मैवासा
भाजै नहीं केण मत्ते निज दास २२ कबीर नौ तन साज्यां सुंदरी
तन मन रही सं जोइ पीव के मनि भावै नहीं तो कपट कीयां सो
इ २३ कबीर सांगी फिरता देषिकरि हसी हमारी देह सांग पहरि
नर काच ल्या मो दिह अदेसा एह २४ कबीर माला धारी मन मुषी
माला दीसे भीग छोड्यां तै इ षेपसू मांदी गुपता सी गर २५ कबीर
काचा इध का जो कछू करै सहो इ कन फूका कांनी हूवा को

वेसरयनमास्याजाङामूरिषवेवईनोडसेमरपसवन
कूषाड़ाणाकवीरसोमणाड़धकाटपकेकीयाविनास॥
ड़धफाटिकोजीफूवाानयाघृतकानास१०कवीरेंणप
ड़ेबासुरघेयेवनग्रंथीरोदोडस्नागिरसाफूलीफली
पंथनकाटेकोइ॥११॥७८॥अंग॥२०॥साधकोअंग॥क
वीरनिरवैरीनिहकामतासांईसेतीनेहविषीयासूंन्या
रारहेसाधंकागुणएहा१कवीरसंतनछाडेसंतगीजोंकी
टिकमिलेअसंतचंदननंवगाबेधीयोतऊसीतलतान
तर्जत२कवीरसाधहजारीकपडौताभैमलनपटाइमा
षितकालीवलीजोवेसहोविलाइ३कवीरहासा
षेलहरामसेजेजनरातारामभाया।मिंदअसबीनहीसा
धकाकामथ४कवीरजगतभरोसेरामकेनिधडकनीचीर
दहतिनकूंकालनलागहीरामगसानिजमुधिपाक
वीरदीनगरीवीदीनकूंदुदरकूंअभिमानदुंदरदोजिगज
ह्गादीनगरीबीराम६कवीरहरिजनग्रेसाचाहीऐजा
केयांनविचारबमकाबादिरिमिलताम्रूंमिलेअंतरि
सवसंऐक७कवीरहरिजनकेडुरमतिहलीजेतीजल
मेसाटपरलकोऐकन्यारीरहेपीछेवोहीघाटदकवीरह
मकूंस्वामीमतिकहोहमहेंजीवविचारास्वांमीकही
ऐतामक्रूंजाकातीनलोकविसतारा॥ए॥७७१॥अंग
२९॥दिषादेषीकोअंग॥कवीरदेषादेषीजगतिकाकदेन
चढईरंगविपतिपड्यांछाडिसीज्यूंकोचलीनवंग१कब
रऐसोकरिजोणीसारीपांसुसगलीरलीरलोईथइल
नूनछाडेरंग२कवीरयोमनदीजेजासकूंजोसुधसेवग
होइसिरऊपरिवोरासहेकहेनइजाहिइ३कवीरपांह
णटोकनलोलीएहाडनकीजेवेहमायारालामानईल
सूंकिसासलेहः४कवीरजांसूपीतिकरिजेनिरबाहे
वोडिविनसाविवधिनरांचीयेदेषलागेषोडि५क
वीरदेषादेषीपाकडीगईअप्रछेषूटिकोईविरलाद
जनवाकुड्यासतगुरसामहीमूवि६कवीरदेषादेषीप
कडीगईअप्रछैद्धूटिचालेथेहरिमिलणकूंविचि
हीलीयाकूटि७कवीरऐककनकअरकामणीऐदो
लावीतरवारि।चालेथेहरिमिलणकूंविचिहीलीया
मारि॥८॥७७७॥२०

पांणी पीवै नको इ जाइ पडै जब गंगा मै सब गंगा होइ कहै
॥२॥ सो... कबीर तास मिलाइ जास हियाली तूं बसै नही
तर बेगि न वाह निति को गंजन को सदे ॥१॥ साषी कबीर एक
घडी आधी घडी नी आधी का आध साधां सेती प्रीत करी जो कि
जे सो लाभ ॥२॥ कबीर एक घडी आधी घडी नाव न जन मैं जा
इ साध संगति फल ही न ली जम का धका न षाइ ॥३॥ कबीर
साध संगति का स्वाद ले मस्तिक बकु दे बाकि वे मुषि मोती
बीकरौ ते चुणि चुणि हिरदे राषि ॥४॥ कबीर संगति को जे
साध की पूरा जाका मन आण तो ल्याइ ही देत है राम सरीषा
धन ॥५॥ कबीर संगति साध की साहिब की जे आदि लेषा मै
गही घडी बाकी का दिन बादि ॥६॥ कबीर संगति साध की
कदे न नृफल जाइ फल सी हरणी चो गणी जैसे वे चितला
इ ॥७॥ कबीर मेरा मन हंस्या रमै तो हंस्या गगन रहा हि बुगला
मनि मो नै न ही घर आंगणि फिरि जाइ ॥८॥ कबीर ज्यांसू
प्रीति करि जे जिन जे रै राम राजा सांणा छत्रपती राम बिनां बे
कांम ॥९॥ कबीर चंदन जे सा संत है सर पति सा संसार वाके
आलपत्र ए रहे सा जे न ही बिकार ॥१०॥ कबीर चुयंग म वा
सन जे द ही चंदन दो मन लाइ सब आंग बिष सू न सि स्या
इ अम्रत कहां समाइ ॥११॥ कबीर चंदन डरपै रूसण ग्या मति
बिगाडै नाम सगुणं डरपै निगुणा थी यूं जग थी डरपै दा
स ॥१२॥१५॥१॥ अंग ॥२३॥ अथ साध की अंग ॥ कबीर जे ता
मीवा बोल णा ते ता साधन जांणि पहली थाह दिषाइ क
रि दे सी कंडे आंणि ॥१॥ कबीर न जल दे षिन भी जो रे ज्यू बु
ग मांडै ध्यान धीरै बैसि च पेटि रे ने यूं ले बूडे ध्यान ॥२॥ कबी
र ध्यां न्यां मूल गमाइया आपणि केरता ता ते संसारी न
ला निस दिन रहै डरता ॥३॥ कबीर च तुराई चूल्हे पडो
जो णणि पीणि जल तिजाय दया भाव रूप जेता गयानी नै जो
रो षाइ ॥४॥ कबीर ग्यांनी सो निडर नाजया मो नै ना ही सं क
इ द्रयां के रे बसि पड्या भुगतै बिषे निसंक ॥५॥ कबीर पंडि
त ज्ञो चिरा कती कहि स मजावत बात करत न जा लो
औरकूं आप अंधारे जात ॥६॥ कबीर पंडित की कथा सो
चोरां की नाव बैस णा हारा अधरना भावे जित लेजाव
॥७॥ कबीर पगाड जहू रि दे आइ पकुती सांझ जाणजाणकी
मन राषता बैस्यार ही गई बाज ॥८॥ कबीर कवैई कहे बा

सुमरत दिन जाइ चक कबीर थनि वा मासा सुंदरी जिन जाऐ बैस
नौं पूत राम सुमरि न नेन या सब जग गया ग्रकताश कबीर
ऊलसौ सो नलौ जिह ऊ रत न पडे दास जिह ऊ रत दासन ऊ
पडे सो ऊरत दाक पराग्रम ५ कबीर धंधा मां भूमै दिन गया चित
वत नई जसा ऊ राम नग सिह रिनो वविना जत नी जानि न
ईखोफा ५ कबीर जननी ब्याई तो का न या ऊ करी का सा चेत
साध संग हिकी ग्रीन ही नांउ पज्या ह रिसे हेत ह कबीर तो थग
यो एक फरत साध मिल्यो फरन चा रि सत गुर मिल्या ग्रने कफ
ल कहे कबीर बिचारि ७ कबीर नजी नई जौ नेमि ग्या सूटी ले
कल ग्राज बेपर वाही है रहू ग्रांबे वेराम जिह जाजा ८ कबीर ह रि
जी न ऐज के तकी नवर नो ऐसब दासा जहां जहां नग तिन्म
नी तहां तहां राम निवास ९ कबीर ऐक ऐक स्नेग्राग रा साधू ज
न ग्रपार कबीर कूंजा प्रेम का ग्रोले ईम्रत सार १० कबीर सुपने
ही बरडाइ करि जेर कहे गा राम ता का पग की पां ह ग्रिमिरा तन का
चाम ११ कबीर राम कहे ते सब नले ग्रपनी ग्रपनी वोर जिन
ऐ पां चूं बसि की ए ते मा था का मौर १२ कबीर ऊव त बे वत राम
कहि पां तां पी तां राम लेतां देतां राम कहि सदा राम ही राम १३ कबी
र साधू गांगा तिमां ह्वि रत न पति रा ह मद न्गा गी मूंवी नेरौ कर
कर च दि जा इ १४ कबीर सा थित बी नरण मति मिलो बिहमो
मिलो चंडाल न ने मिली यां सुपक पडे जां णि क मिले गोपाल
१५ कबीर धारा तो दो ऊं नली गिरही के बैराग गिरही दासा तन
करै बैरागी ग्रणराग १६ कबीर ऊंडा चित समंद सा साधू गुण
गंभीर सो दोषां बिर चैन ही सो ईसं त सधीर १७ कबीर माधूतो
रा न था नौ मा जे घ ग्रिघ ग्रि रनाचो बि ग से ऊ ज न ग्रूं नां वदि ग्रा
रा इ १८ कबीर ह रि दरी या सूजर नस्या सां धं का घट सी पल मे
मोती नी पडे चढे दिमावर दीप १९ कबीर चंदन का ऊ ट की
न ली नां ब बू ल त ब ग्रि रा इ साधन की ह्वपरी न ली नां सा पि
त का गांव २० कबीर साधन के ह्वपरी न ली नां सा पित का गांव ज
चा मिंदर कि स कांम का जहां न ही ह रि नांव २१ कबीर देगो गो
रस घन घन ग्रन पती की ना भि ता स पटे सर नां तुले ह रि जन क
पणि हारि २२ कबीर क्यूं नृप नारी नी दी ऐ क्यूं प
नि हा मां ग स धा रे पीव कूं वा नि ति न हि सुमिरे राम ॥ २४
ग्रंग ॥ ३१ ॥ मधि को ग्रंग ॥

जलकेरी वोवरी तिसमांयो संसार वलिहारी तिस दास की पैसिर
निकसणहार ४ कबीर काजल ही की कोठडी काजल ही का
कोट वलिहारी तिस दास की रहे राम का वोट ९ कबीर पांच ब
लद यक फिरकडी ऊजड ऊजड जाइ वलिहारी तिस दास
की पकड़ि राषे वांह ह कबीर आणरते सुषसो वणां रते नीदन
आइ ज्यूं जल छूटे मछली तलफत रैणि विहाइ ७ कबीर रा
जन कछू जांणां नही सुषनी दडी विहाइ मुझे अबुझा बूझ
ही जांणि मारी पडी बलाइ ५ कबीर जांणि नगति का निति
मरण आण जांणि पांकारा जासर श्रीसरसमझे नही पेट भरण
सूं काज ६ कबीर जिहि घटि जांण बिना णि तिहि घटि आ
वट णां घणां विन षांडे संग्रामे निति उठि मन सूं झूझणां ७
कबीर सीगे स्वारथि सब मिले जगमगतो ही जांणि विनि आ
दर आदर करै सो हरि की प्रीति पिछांणि ८ कबीर राम विवो
गी षीण तन तादिन चीन्हे कोइ तंबोली का पांन ज्यूं दिन
दिन पीला होइ ९ कबीर मीठे मीठा सब मिलै कडवै मिले
न कोइ नीव पीयां कफ जात है षांड पीयां कफ होइ १० कबी
र सब घटि मेरा सांइयां सूनी सेझ न कोइ भाग तिन्हूं का हे सषी
जा घटि प्रगट होइ ११ कबीर सब जग लोटीया जागत नां
ही कोइ के जागे बिषई बिष भर्या के कोइ दास बंदगी होइ
१२ कबीर सूता ते नूं फल नगया जागंता फल लेस सांइ दुकन
मेट ही जे वंदा सेव करेस १३ कबीर दावे दाझणि होत है न्यू
वेर हे निसं का जे न रन्नूं दावे रहे कहे इ दुसरेक १४ कबीर निस
प्रेही नूं म लल हमा पकडया च्यारूं कूट ह क है कबीर ता दास
की आस करै ज्यं कूंव १५ कबीर रता रतास ब को कहै बिरला
कहे न कोइ रता सोई जांणिए ता त निरत न होइ १६ कबीर
रते रत न नीसेरे जैसन चीरे कोइ जे रता रहमां न सूं ता त नि
रत न होइ १७ कबीर जा घर में संसा बसै ता घटि रांम न जोइ
रांम सने ही स अविचा ति णां न संचर होइ १८ कबीर जो मा
जे तो चैन ही मन मुष रद्यान जाइ सू ता सिंघ जागाइ या मे
र निरासी आइ २० । १७८ । आगा ३४ । साध महीमा को
अंग । कबीर पुर पाटण सूव स बसो आनंद वांगे वांइ रांम सने
ही बाहिरा सूना मेरे जाइ १ कबीर जिह घर साधन पूजीय हरि की
सेवा नांहि ते सो घर मड हट सारिसा भूत बसे ता मांहि २ कबीर है
गे गैवर सघन घना छत्र धजा फहराइ ता सुष ते भिष्या भली जे ह मि

सूतअत्नूझीया। कबीरघरिघरिबाशिज्यांसुत्तफयोबाप
डाजांणी अगतिमुराशि१० कबीरराम कहै मनबसिकरो
सबकायोदीअर्थकाहेकूं पढिपचिमरो कोटिकग्यान
गर्थ॥११॥८४३॥ अंग॥ ३४॥ सारग्राहीको अंग॥ कबी
रसाधिसकोनहीं सबैबैहोनें जांणि ज्ञामुधिराम मनउचरै ता
हीसतनकी हांणि॥१ कबीरजुसांतो सबरोकहै पडदादीयाने
घकरमअनरमसबइमिकोरि तबसबहीमांहि अरतेघ२। कबी
रघरिबधिकरूनदेघीरो ब्रह्मसकत्तनरपूरि ज्यांजांणि
।निकहिदाइरिकहैते इमि३। कबीरपारब्रह्म सूनरस्नमा
दरीयावारनपार घालिकबिनघालीनहीं जेतासूईसंचा
र४। कबीरसबघटआत्मा सिरजीसिरजनहार रामकहैते
रामसमिरहता ब्रह्मविचार॥५॥ पीवपिछांणिको अंग॥
कबीरसंपटमांहि समाईया सोसाहिबनहीं होइ सकल
मांडमैं रमिरह्या साहिबकहीए सोइ१ कबीर हैनिरालामां
डथी सकलमांडतामांहि कबीरासेवेतारामकूं इजामेवे
नांहि२। कबीरजाके मुंहमाथानहीं नांहीरूप अरूपपहै
पबासतेंपातला प्रेसातत अनूप३ कबीरसाहिबकहीए
ऐकहीं इजाकस्यानजाइ इजासाहिबजे कहैसोसाहिब
परारिसाइ४ कबीरसाहिंकहीऐकहीं इजाकस्यानजाइ
इजासांईजे कहैते बाहिबिहंब्या आइ॥५॥ बिसवास
कोअंग॥ कबीरपवनअगतपांणीजगतजगतधरणिआ
कासाचंदसूरदोकंजगतबिडोजगतबिसवास१ कबीरजि
ननरहरिपिंडप्रगटकीया करणचरणकरईसाजी नजी
वमुघतासदीया जरथपावअरथसीस२ कबीरबीसपषाय
मराधीया जहांजेरेअनपांन तहांअनलतैंराधीया ऐसा
रिजगवांन३ कबीरयहज्योतिरूवानरहदरमें तहांतेंदाया
निकारतपांमहमारत कवीरकहि अबकरिसीप्रतिपाल४
४ कबीरअूपाअूघाक्याकरे क्यारमुणावैलोग मांडाघडि
नमुघकीया सोईपूरबनजोग५ कबीररचणहाराकूं चीन्हि
रिपैवेकूंक्यारोइ दिलमंदिरमें पैसिकरि तांणिपछेवडो
इद। रामनामकहिबो हहैं बाहीबीजअघार सरबलोक
सूकापडे ज्ञानअनूपफलजाइ७ कबीरचिंतामणिचितमें
बसै सोइचितवे आंणि बिण
बांणि८ कबीरबीरजन

वामीसत्तवाराव

बध्याहरिकथि।।कै अगरहोत्तागि।। अकासाघरकीया

द्दीन्पूकहीरोआगि।४।कवीरअनतअकासाघरकीया बिनगाहरबिसवा

नेरसतरवासोबसुधव्योमबिगतारहै बिनगाहूरबिसवा गामकवीर

कवीरवासुरगमनरै।।।गमजासुपनातरगामकवीर

बिस्तबीयाजहोत्तावाहडीनघामह्र कवीरजिहिपैंडेपंडितगा

उनीयादीयाबहारओघटघाटीगुरकहीतिहिचढिगयाक

।१५।कवीरनरकसुरगमूहमरहेसतगुरकेपरसादिचरनकं

नकीमोजमैरहस्यांअतिरआविदु।कवीरहीहूकहूतोमैडस

सतमांननीनोहिपांचतत्तकापूतरताकोईगेबीबोरनेमांहि

कवीरहीहमूवारामकहि।मुसलमांनषुदाह्।कवीरसोईजी

कवीरहीहमूवारामकहिमुसलमांनषुदाहकवीरदुषीयाभूवांडुपकरिसुषी

तत्वदरूकेसंगिनजाह।६।कवीरदुषीयाभूवांडुषमुषरा

यारा।।मुषकूहूरिसदाआनंदीरामकाज्यांडुषमुषरा

त्याहरि।७।कवीरहरतदीपीत्ती।चूनांनजरत्तनाहहरिजनह

रिसूंयूमित्यादोनूंवरणनसाह।।कवीरसावाफिरिकामीन

यारामजीनयारहीममोटाचूनमेदाकीया।बेविकवीराजीमा

।२।कवीरधरतीअअसमांनबिचिदोदेतूंबडीअवध षटदरस

गासांसेपडाआअरचोरासीसिध।२।कवीरनिरतिसुरतिबेतूंब

डीजांमणमरणअवधषटदरसण।।पोजतरहेज्यांबांचेतेसि

ध।२।कवीरगृहवनदोकेरीत्तिहै तूराचिनयनकेरंगा।कवी

रोनांयबिलंबीयोरहीनिरारेनेदेगा।।४।।हे चधि आ।।।

।१।विचारको अंग।।कवीररामनामसबकोकहै तामेब

होतबमेकारोक अनेकाफिरिमित्यारोकसमानारोकर१क

वीररामनामसबकोकहेतामैंवस्तोतबिचारसोईरामसतीक

हैसोईकोगतिहार।२।कवीरआगिकह्यादाझैनहीपावनदी

जेमांहिजोपरनेदनजांनहीरामकस्तोलोकाहरि।३।कवीर

सोचबिचारीया।हजाकोईनाहि आपापरजबचीन्हीयांन

त्तटिसमांनांमांहि।४।कवीरपांणीकेरापूतरलासष्यापवनस

चारनांनांवांनीवोत्तीया जोतिधरीकरतार।५।कवीरआधी

सापीसिरकटेजेरबिचारीजाइ।मनप्रतीतिकपजैतोरागि

छोसनरिगाइ।६।कवीरोकसबदमेंसबकह्यासबदीअ

विचारनजीरोनृगुणब्रह्मकूंतजीए बिषेबिकार।७।कवी

सोईअपिरसोईवोंजगाजूजवाचवांताकोईोकमेतेकेव

अमीमहारमहोता।८।कवीरअनादगमोलोककहेनल

...केसमजावेरामजीकेअलनसअतेअलन।९।नोम

३०कबीरजाकेहिरदेहरिबसे।सोजनकलपेकांहरे
कोलहरिसमंदकी।दुषदाभिदसबजांहि३१कबीरजि
नहरिसेयाहेतसूं।तिनकूंनिहिंहीसुष।जाकेहिरदेहरि
बसेतिकदेनपावेंदुष३२कबीरएकगावणोंहीमेरोवं
णोंएकरोवणांहीमेरागएकांहोडसघरकीयाएकघर
हीमेंबेराम३३कबीरगाया।तिनपायानही।बिनगायां
हीरहरिहरिग्यांगाया।बिसवासूं।त्योंसंरामहजूरि३४कबीर
पदगावेंत्योंलीनह्वे।कटेनसंसेपास।सबेपिछोड्याथो
थरा।बिनाएकबिस्वास३५कबीरमेरमिटीमुक्ताभयां॥
पायाब्रह्मबिसामाअबमेरेद्वजाकेनही।एकतुम्हारीआ
स३६कबीरपाडलपिंजरमनभंवराअरथअनूपमबास
रामनामसींच्याअमीफललागाबिसवास३७कबीर
आगेंपीछेंहरिषडाआपसमासांभार।जनकूंदुषीसोकूं
करेसनमुषसिरजनहार३८कबीरआसाकाईधणाक
रूंमनसाकरूंबिभूतिजोगीकीफेरीफिलकरूंतोब
निआवेंसूति३९कबीरसबजगनीधनांधनवंतानहीकों
इधनवंतासोईजांनीयेजाकेरामपदार्थहोइ४०कबी
रडोरीलागीभेंगया।मनपायाबिसराम।चितचहुंट्यारां
मसूंयोंहीकेवलग्यांन४१कबीरबेसासीहोइरहिन
जैतोलनोहाकंचनहोइरामनजेंणरागसूंहोणिहरपकूं
मोइ४२कबीरसोसाकरीएरामसूंनरीएगूणिहरनाइ
जेकबकूटाडोरटूटेतोपूंजीबिरलेनजाइ॥४३॥१००॥
अंग॥३१॥धीरजकोअंग॥कबीरकूकरकरमकितोकी
योभेदगिलयाकूंजाइजगतनगतदेबेरतायूंहीचालं
जाइ१कबीरतूंकाहेडरेसिरपरिसिरजनहारहस्तीचढि
डिकरिडोलीयेकूकरभुसोहजार२कबीरजेनेंबेसिक
रिनेचकमनांनजोइबूडणाकाजेयाडिदेकिरताकरेस
होइ३कबीरहस्तीचढीयाग्यांनकेसहजदुलीचाडारि
[illegible]कबीर[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

२८

जैसहूजे मिलिगया ज्यूं सिलता सिंधसमांइ ॥ ११ ॥ कबीर रांम
नांमके कारणै सबधन दीया षोइ ॥ मूरिष जांणै घटिगया दिन
दिन हूणां होइ ॥ १२ ॥ कबीर जाकूं जेता नूंमया तांकूं तेता होइ रा
ई घटै न तिल बधे जे सिरकूटै कोइ ॥ १३ ॥ कबीर जो हरि कहूं स्या
म सबे हरि ध्यां ध्यावी रातिका अंक राई घटै न तिल बधे रहो
रहो जीव निसंक ॥ १४ ॥ कबीर घटमैं जोति अनूप है रिजक मो त
जीव साथि क्या है सोरै मनिषके कलमधणी के हाथि ॥ १५ ॥ क
बीर सांई दीया सहज मैं सोई रिजक कहलाव देवा सबै हरांम
है तजि जीव सौं से सार ॥ १६ ॥ कबीर झीषि न झीषीए तेरा झी
क्यांन होइ करम करी मो लिषि रह्या तां हि मेटि न सकै को
इ ॥ १७ ॥ कबीर क्या मैं चिंत कूं क्या मेरा चिंत्या होइ आपणी
चिंता हरि करै मोमो हि चिंत न होइ ॥ १८ ॥ कबीर सिरजनहारै
सिरजीया आटा पांणी लोंन देवणहारा देत है मेटणहार
कौण ॥ १९ ॥ कबीर लूषा सूषा षाइ करि वे ठा पांणी पीव देखि पर
ई चोपडी मति तरसावै जीव ॥ २० ॥ कबीर मत जिन छाडो बाव
रे पूरा है पूरा सब सिरजे की चित है देवै कूं सूरा ॥ २१ ॥ कबीर स
त जिन छाडो बावरे सत छाड्यां बित जाइ सत की दासी लछ
मी बहो रि मिलेगी आइ ॥ २२ ॥ कबीर करम करी मो लिषि रह्यो
नर सिर आग अआग जे बहो चिंता चिंतवै तो न स आगे आ
ग ॥ २३ ॥ कबीर चिंता छाडि अचिंत रहो सांई है समरथ पसुपं
छ जीव जंत तिन को गांठी किसा गरथ ॥ २४ ॥ कबीर हरिजन गां
ठि न बांधही उदर समांनां लेह आगै पीछे हरि षडा जब
मांगै तब देह ॥ २५ ॥ कबीर इंडा पारले काछि वी बिन थनला
वे पोष यू करता सबकी करै पालेती न्यूं लोक ॥ २६ ॥ कबीर
पहो फाटी पगडो हूवो जागी जीवा जूंणि सब काहू कूं
देत है चांच सवांणी चूंणि ॥ २७ ॥ कबीर रांम नांम सूं दिल मि
ली जम बिचि पडी बिराइ मो हि भरोसा इष्ट का बंदा नरकै
न जाइ ॥ २८ ॥ कबीर सबतें लघी मधुकरी नांति जांति का ना
ज दावा कि सही का नही बिन बिलास बडराज ॥ २९ ॥ कबी
र मांन महातम प्रेमरस अरगरवा तन गुण नेह कहै क
बीर ए सब गया जब ही कह्या कछु देह ॥ ३० ॥ कबीर मांगणम
रण समांन है बिरला बंचै कोइ कहै कबीर रघुनाथ सूं
मति र मंगावे मो हि ॥ ३१ ॥ कबीर मरीए पणि मांगीए नहीं अ
पणें तन के काज परमारथ के कारणे मो हि न आवे लाज ॥

गुण तिण्यान जाइ ।८। कबीर ऋब रणां को काल रणि में पं
चरणपोन जाइ ऋबरणा बरणा बादिरा करि करि थके न प
ह १९ कबीर मुझ में इतनी कयास क्तिा णां के गतो पसार बि
देकूं यतनी घणी पड्यारसूं दरबार २० कबीर मैं तोडरू जे
मुकती में दोइ भी चकुंदा मोक्ष पदा सबका कूं कूं सोइ २१
कबीर बंदो बंधन कम बंधीया रौ क बिचारा जीव ऋयणै
बल बूडे नदी जे बोडे तो पीव २२ कबीर रझल बांवे झलदां
हिणी झल दी में ज्यो हारा आगें पीछे झल फिरे रांपे सिरजन
हारा २३ कबीर मैं बूडण कूं बहो कीया दरिबूडण न दी देह
जब दी डा कि कूंवे पडूं दरिबां दम कडिगा दिल ते दर २४ कब
र सांई मेरा बाणीयां सहज करै ब्यौपार बिन डांडी बिन प
लडे तोल्यो सब संसार २५ कबीर मैं वासा मोई कीया डुरज
का दे हथी गज पियारे राम का सहर बसे न्न पूरि २६ कबीर
वास्यादरि का नांव परी रा कीया राइ तूं णो जिसे चलावे पं
थ तूं तिसे चलावे कोंण २७ कबीर कूं करणी कूं करम
गति कूं पूरबला लेष कूं मेर सांई में बल कूं हम दीतण
बसे घर २८ कबीर करणी बिचारी क्या करै जो राम न करै स
हाइ ज्यां ज्यां डाल्ं पग धरूं सो सो नै नैं जाइ २९ कबीर जदि
माय जनमीया कदे न पाया सुष डाल्डे डाल्डै मैं फिरया पांवे पा
लेडुष ३० कबीर बासुर सुष नैं रैणि सुष नां सुपणा मां हि
सुष सरणै राम कै कै सुष साधां मांहि ३१ कबीर धरणि गगन
नी जांहि गी गिर पर बत के लास ऐक मेक के जांहि गै तब
कहां रहैं गे दास ३२ कबीर धरणि गगन नी जांणदे गिर पर
बत केलास ऐक मेक के जांणदे हरि में हरि का दास ३३ क
बीर बहण बहूदा अल कै थे थलक रि बहण करे दसा दि
बहा थि बडाइयां जिस नावे तिस देह ३४ कबीर धनि धनि
सांई तूं बडा तेरी कोंण अनूप मरीति सकल अनूप परि सांई
यांकि करि रसा प्रतीत ३५ कबीर सांई में तुझ बादिरा के
डी डीन लसां वाजे सिर ऊपरि तेल धणी तो लघूं मोल क्यों व
३६ कबीर सांई देता लष षडा षड षड लष सिरा दास सिर सिर
लघूं मुह दीया मुष मुष लष जिवां ह ३७ कबीर सिपति
म्हारी सांईयां मै क्या करत डी यां तेरी तुझ तो सिफत हो
तेरी तुझ रत्तीयां ३८ कबीर सांई देता लष सिर तो लघूं देर
वां रिसांई दीया एक सिर सोजे मों ध्यानारि ।। ३९ ।। ए ५ ।।

दोहा १ कबीर चित्त चेतन में गरक ह्वै रह्या
नक का माणी दोहा १ कबीर चित्त चेतन में गरक रह्या
ग पियारे मित्त कित कित का सन्निपाडी लाग लाख्त
सहर अनंत कबीर बाजणा देह ब जंतडी कसि तांत
डी न छेडि तु औ बिडाणी क्या पडी तूं आपणी नबेडि ७ क
बीर जाता है ताहि जाणा देतेरी दिसान जा हूं दरीया केरी ना
व जूं पणा मिलें गा आहु ८ कबीर नीर पिलाव तक्या फिरै
सा इर घर घर बारि जो त्रषावत होइगा सो पीवैगा झक मारि
९ कबीर सब जग देषीया मांद रखे कै धच ठाहूं को ऐकि सदी का
नहीं देषा गो किब जाहू १० कबीर मैं दुनीयां के कछू न ही मे
रे दुनी अक थ मारि बदरि देषूं घडा दुनीयां दोजिग जस ११
कबीर रम सुपाणि बिसम्यान हो ती तो नी सरणां कोटि पहली
घाइ नषा ली या सो फिरि मां ण्यो नांहि १२ कबीर राम बिना बे
कामदे व्यापन जोग बिना साक ह्वा इ इ कौ चेस णो क ह्वा बे
कूं वा बास १३ कबीर मेरा मन में परिगइ है से सी एकदरार फा
टा फट क पषाण ज्यूं मिल्या न दूजी बार १४ कबीर मन फाट
बाइ फ चुरै मिटी सगाई साक ज्यूं पर हूध तिस बास का नक
टि फूवा आक १५ कबीर चंदन जागो गुन करै जैसे चोली पा
न दोइ जन न्यागा नां मिलै ए क मोती अरमान १६ कबीर मो
ती जागो बीधतां मन मैं बस्या कबीर ला बहोत मयां पाणपचि
गया पडिगाइ गोविन घोलि १७ कबीर बस्ती मैं बसि बो क
ना बंधे न देगन दोन जन मैं अंनार हैं सो तत बेता ज्ञांन ॥ १८
॥ १७ ॥ ४७ ॥ अथ साहू के को अंग ॥ कबीर सम्रथ श्री रीक्यं
पेर थकूं वो डि नि बा दि मारग मांहि नमे रहि बो पीछै नि
डं दल जा इ १ कबीर मांई तै सब होइगा बंदे तै कछू नां
राई सं प्रबत करै प्रबत राई मांहि २ कबीर नांक छूकी
न क रि सक्या नां कर णो जो गि सरीर जो कछू कीया सहि
या ता तैं न्याकबीर ३ कबीर करता करै नि मष मैं की डि
जरिहा ३ ते जर तै की डी करैं सा कौ अचिरज नां ही कोप
बीर कीया कछू न होत है अणकीया ही होइ जो कछूक
होत है तौ करता और कोइ ५ कबीर जिसे न कोई तिनि
जिस तूं तिस सब कोइ दरगह तेरी सांईयां जैनांव
न होइ ६ कबीर एक घडा दी ना रनहै ए कघडा बिलन
मूथ मेरा सांईयां सूता देह जगाइ ७ कबीर धरती स
इ धिपणि सब बणराइ सात समंद की मसि

आपणीं कोइ कस के जीव काल कबीर देह किरा दिन कंबर
मुरूत बीज सुफीलाज हीं जहीं करकाल क्या तहां तसार
हिग ईवार त ४ कबीर मोह ऊटी मैं जाग जल्या करम कि
बाडी बाथि कोई रोक हरि जन कल्या सूरा राम पुकारि
५ कबीर सपत दीप नौ षंड मैं कही ऐ जा की आंणा जिस्ह
रि जगति जाणी सो जननी रूषि पषाण ॥ दो ॥ ७३ ॥ अ
थ २ ॥ काल कौ अंग ॥ कबीर कहा गरबीयौ काल जग हां
कर केस न जाणौं कहां मारिसी कि घर के परदेस १ कबीर कू
वा सुष कूं सुष कहै मानत है मन मोद जगत चबीणों काल
कौ कछु मुष मैं कछु गोद २ कबीर आज कि काल्हि क प
लक मैं मारग मारन्है तां काल सिचांणों नर चिडी औझड आ
वी तां ३ कबीर काल सिराणै देष डा त्हं जागि पियारे मिंत
राम सनेही बाहिरा तूं क्यूं सोवे न चिंत ४ कबीर सब सूता नी
दन रि मोहि न आवे नींद काल षडा है बारणै ज्यूं तोरण आ
या बीद ५ कबीर पांव पलक की सुधि नहीं करै काल्हि का
साज काल अचीत्यौ झडपसी ज्यूं तीतर कूं बाज ६ कबीर
टमटम चौघटां पलपलत ग ईबिहाइ जीव जंजाल पडि
रह्या जम दीयो दमामो आइ ७ कबीर सूता क्या करै उण
गोबिंद का गाय तेरा सिर परि जम षडा पर च कहे का पाड ८
कबीर सु टिस के ते लूटी ऐ राम नाम भंडार काल कंठ तै
हैगा रोके दसूं दुवार ९ कबीर मैं अके ला वे हैं जणां छेती
नांही का हजे जम आगें कब सूं जुरा पकूं चै आइ १० कबीर
जुरा कुती जोवन ससौ काल अहेडी लार अब कै छिन मैं प
कडि बौ गार बौ कहा गंवार ११ कबीर काल हमारे संग रहै
किसी जसन की आस दिन दस राम संभाल्यौ जब लग
पिंजर सास १२ कबीर आउ पद ख्यूं ही गया गाया मोह के अ
लि राम नाम ह्रदै नहीं जीति ली या जम कालि १३ कबीर ब
री बारी आपणी चले पियारे मिंत तेरी बारी जीव डा नेडी
आवे नित १४ कबीर पंथी कना पंथ सिर वुगचा बांधा पू
ठि मरणां मुह आगे षडा जीवण का सब झूठि १५ कबीर
माली आवत देषि कलीयां करी पुकार फूली फूली
चुणि गई काल्हि हमारी बार १६ कबीर देषि अहीडी आ
वतो सरबडो लणलग
घरजग १७ कबीर फागण आवत देषि

...अंग॥ कबीरभ्रतातौ बूंदानिसद्दौ बा
ढमदेहवणारा इक्रुबचनतौ साधूसदेज्यूंदरीयाबूंदसमाइ ३
कबीरचोटसुहेलीसेलकी पडतालेरनसासचोटसहारैस
बदकीतासगुरुमैंदास ४ कबीरपरगटपूरापाईया छूटिग
याअभिमांन समज्यांपाछैजाणीऐ गालीमोटाग्यांन॥ ५॥ [illegible]
...॥ कबीरगालीमोटाग्यांनजेरचेकनरजेरैकोटिसवांरै
कोमडुरजनसोईपगिपरै॥ १॥ ...॥ कबीरसीतलताभया
तपज्याबूद्दागीयांनजिहिवेसंदरजुगजल्यामैरैनदिकसमं
न २ कबीरसीतलताजबजांणिऐसमतारहैसमाइपषछाडै
नृपषरहैसबदिनसुषमैंजाइ॥ ३॥ ...॥ ५॥ ...॥ ४१॥ सब
दकौअंग॥ कबीरसबदसरीरमैंबिनगुणबाजैतांति बा
हरिभीतरिरमिरह्यातातैछूटीभ्रांति १ कबीरसतीसंतोषी
सावधांनसबदबेधीसुबिचारसतगुरकाप्रसादथीसहज
सीलमतसार २ कबीरसारैसोतनबेधीयासरगुणसीगणि
नांहि लागीचोटसबदकी करककलेजामांहि ३ कबीर
साराबहोतपुकारीयापीडिपुकारीऔर लागीचोटसबद
कीरह्याकबीराठौर ४ कबीरघाइलघूमैंघइलाराषार
हैनलोटाजतनकायाजीवैनहींबाणीमरमकीचोट ५ कबी
रसरगुणासीगणिसांधिकैषैचिरमारयामांहिलागीचोटसब
दकीअबतोजीवैनांहि ६ कबीरजबतुममारीषैचिकरि
तबहमपाईजांणिलागीचोटसबदकी गईकलेजेछांं
णि ७ कबीरसाइरमारीसरगायामछीषायासोइसोमछी
तरवरचढीबूझैबिरलाकोइ॥ ८॥ सोरठा॥ कबीरजिहि
सरिमारीकाल्हिसोसरमैरैमनबस्यातिहिसरिअजहूंमा
रिसरबिनसचपांऊंनहीं॥ ९॥ साषी॥ कबीरपंषनडां
णिगगनकूंनडिचढीअसमांनिजिहसरमंडलभेदीया॥
सोसरलागाकांनि १० कबीरलागीलागीक्याकरैलागीनहीं
लगारलागीजबहीजांणीऐनीकलिजाइडुसारि ११ कबी
रसतगुरबाहीप्रीतिकरिघहीकटारीलूटिअैसीअणीनसा
लहीजैसीसालैमूंठि॥ १२॥ करमकौअंग॥ कबीरकरम
कडीसजडीजडीपाडीफाटअपारअनेकलुहारापचिग
यातफूटीनहींलगार १ कबीरकरमपरषीयांमनांनकीजै
रीसराईघटैनतिलबधैभावैपाथरफोडोसीस २ कबीर
कायाषेतषिसांणमनापापपुनिदोइबीजबासोलुणिजै

पासि॥ ४०॥ कबीर काल्हि करंता आजि करि आज करंता अ
ब॥ पीछै आछै कालि करैसी जो आइ पहुंतो काल॥ ४१॥ कबीर
जालणहारे भी मुए मुए जु रोवणहार हाहा करते ते मुए कासूं
करूं पुकार॥ ४२॥ कबीर टालै टोलै दिन गया ब्याज बधंतौ जा
इ नां हरि भज्यौ न पत कटी काल पहूंतौ आइ॥ ४३॥ कबीर
जूं कोली ऊजलै बुणै आवै वोड़ ऐसा लेखा मीच
का दौड़ सकै तौ दौड़॥ ४४॥ कबीर पगड़ा दूरि है आडै बीचि है रा
ति न जाणूं क्या होइगा ऊगंते परभाति॥ ४५॥ कबीर सूता क्या क
रै सूतां होइ अकाज ब्रह्मा का आसण डिगा सुणी काल की गा
ज॥ ४६॥ कबीर हम जांणो थे खांहिगे बहोत जमी बहो माल जूं
का त्यूं ही रहा पकडि ले चल्या काल॥ ४७॥ कबीर माया सं
चे संग्रहै वो दिन जाणै नांहि सहंस बरस की सौंज करै मरै मु
हूरति मांहि॥ ४८॥ कबीर चहुं दिसि पाका कोट था मंदिर नगर मं
झारि खिड़की खिड़की पाहरू गज बंधे दरबारि॥ ४९॥ कबीर चहुं
दिसा जोधा पडा हाथि लीया हथियार तामें इत्ता देखतां प
कड़ि ले चल्या काल॥ ५०॥ कबीर इसी दाधी लकड़ी ऊगटी करै
पुकार मति बसि पडूं लुहार के जालै दूजी बार॥ ५१॥ कबीर मे
रा लुहारा यातूं मति जालै मोहि एक दिन ऐसा होइगा तूं जा
लैगा तोहि॥ ५२॥ कबीर दिन दिन छोड्यूं जात है तासूं किसा सने
हा जनम कबीर उदकीया गुण माया ऊदी देह॥ ५३॥ कबीर ऊल
चीटी का नाल जूं पड्या कटोरी मांहि कोई गुर की किरपा म
बै तौ तूं कारन नपांहि॥ ५४॥ कबीर काल कहर की गाज सूं डरप्या
संकर सेस ऋजि नयो काल न पाईया तन ता हूं की पेस॥ ५५॥ कबी
र पवरि न हीय सपलक कूं काल बजावै गाल न अपणी अप
णी पालते मेरब हीं जी ऊस्या लगै॥ ५६॥ कबीर काया कंचन मन रत
न जतन करंतौ जाइ किसी नरो सौरैं निकौं कव हूं किसी ब
लाइ॥ ५७॥ कबीर घडी जबागी राज दरकूं समझि अयाणं चित
आव घटै तन छीजई योसमजावै नित॥ ५८॥ कबीर बिप कान
न में घर कीया सरपर साल न पराइ तातें जीव है उरगसा जाग
तै रैनि बिहाइ॥ ५९॥ कबीर मिंदर आपणें देवा करता आलि मैड द
र दीवाडर पता चोडे दीन्सां जालि॥ ६०॥ कबीर जो करणा सो अ
बयौ कूल्यां ऊमलाइ जो चुणीयां दिपड [illegible] में सो म
रि जाइ॥ ६१॥ कबीर जो दिन आज है
सकै तो चेतां रे भी च पडी देख्या लि॥ ६२॥

दि कं चांडालपाल्स्ता दिनादिन पोरता थ्या।२०। कबीरन्याय
डेबै रांम बिना चेतन करे पुकारि यौ तन जतन का बुदबुदा बि
नसत नांही बार।२१। कबीर पांणी केरा बुदबुदा इसी हमारी जा
ति देषत ही छिपि जाइगी ज्यूं तारा परभाति।२२। कबीर पंच पंषे
रूवा रापा पोषि लगाइ एक ज आयौ पारधी ले गयौ सबै उडा
इ।२३। कबीर मिंदर मांहि झबूकती दीवा कीसी जोति हंस बटाऊ
चलि गया काढौ घर की छोति।२४। कबीर पड देस ती पदमणी
करती कुल की कांणि छडी पकंती काल्हे रीन्ह ई मसांणि।
२५। कबीर कांइ चिणांवै मालीया लांबी नीव नसारि घर तौ सा
ढी तीन हाथ घणौं तौ पौंणां च्यारि।२६। कबीर पांच तत का पू
तला मांणस धरीया नांव दिन द्है चहूं के कारणे फिरि फि
रि रोके गांव।२७। कबीर मछली दह छाडि नदी झीवर मेरा का
ल जिहि जिहि डाबरि घर करूं तहि तहि फिरै पे जाल।२८। क
बीर पांणी महली मछली क्यूं तुम पकडी तीरा कडी घडूं कि
जाल की आइ पकंतो कीर।२९। कबीर हमति हांणी मछली
तूं राषि न सकी सरीर सो सरवर सेयौ नही जहां जाल न काल
न कीर।३०। कबीर यह आगी मछली छील रिमांडी आ
ली डावरीया छूटै नही सकै तौ रांम संभालि।३१। कबीर म
छि विकंता देषीया झीवर के दरबारि अंषीया रतनाली
यौ तुम क्यूं करि बीधी जालि।३२। कबीर पांणी मांहि घर कीया
चेजा करां पताल पासा पड्या करम का यूं हम बीधी जा
ल।३३। कबीर सूकण लागो केवडौ तूटी अरहट माल पांणी
को कल जांणतो गयौ ज सीचण हार।३४। कबीर धवणि धवंती
रहि गई जल बुझि गए अंगार अहरणि का बमकार हा तब
न बिच तौ लुहार।३५। कबीर हरिणी दूबरी इण हरियालै
मालि लाप अहेडी एक जीव कितौ एक टालूं भालि।३६। क
बीर रांम कहा तिन कहि लीया जुरा पहूंती आइ मिंदर ला
गौ बारि तै अब कछू काढणां न जाइ।३७। कबीर खरीयां बीतं
बल घट्या सेत परत टि नाे औ बिगड्या काज संवारि ले क
र छूटां कितवौर।३८। कबीर हरि सूं हेत कर कूडे चित न ला
व बांध्या बार पटी के कै त्यां पसु बा कितीएक आव।३९। कबीर
काची काया मन अथिर थिर थिर कांम करंत जिम जिम नर
नधडक करै तिम तिम काल हसंत।४०। कबीर सब सुष रांम है
औरे दुषां की रासि सुर नर मुनि जन असुर सुर सबै काल की

कबीरसंसारीसाषितनहीं।कंवारीकन्याकेनाहजिवैधीं।आरा
बनचारणीहरिजनतहांनजाइ।३।कबीरजहांनजाइऐजा
हांनचोषाचितमाइहुआंजोगणपणांमूंडाआगेंमिनध।कबी
रपटकसणीजोजरसामुषजेरनणकारंगआगेंनहपीछैंचुर
सिनकात्यागीसंग।५।कबीरजहांनजाइऐतहांकपटकाहेत
जोमणबंधेबाहिकरिहनोरसासुपेत।६।कबीखहांनजाइ
ऐजहांननांनांनावरनागारीफलनटहिपडेबाज्योकोईजं
बाव॥७॥२०६॥४७॥गुरसिषहेराकोअंग॥कबीरऔसांनं
मिलोतासूंरहीऐलागि।सबजगजलतादेषीऐअपणीअपणी
आगि।१।कबीरऔसाकोईनांमिलेहमकूंदेउपदेस।जोसाग
रमेंबूडताकरगहिकाटेकेस।२।कबीरऔसाकोईनांमिले।
रामनगतिकामीततनमनसूंपेमृगज्यूंसुणिबधककामीसउ
कबीरऔसाकोईनांमिलेअपणांघरदेयजलाइ।पांचूलडक
पटकिकरिरहैरामल्योलाइ।४।कबीरऔसाकोईनांमिलेह
मकूंलेइपिछांणि।अपणाकरिकैंपाकडैलेउतरैमैंदांनिा।५
कबीरऔसाकोईनांमिलेसमझैसेनसुजांनढोलांबागानासु
णेंसुरतिबिहूंणांकांन।६।कबीरऔसाकोईनांमिलेजासूंब
हूंनिसंकाजासूंहिरदाकीकहूंसोफिरिमांडेकंक।७।कबीरऔ
साकोईनांमिलेसबबिधिदेयबताइसुनिमंडलमेंपुरषहैताः
रहैल्योलाइ।८।कबीरतीनसनेहीबहोमिलेचोथामिलेः
कोइसबैपियारेरांमकेबैठेपरबसिहोइ।९।कबीरहमदेषत
गजातहेजगादेषतहमजांहि।औसाकोईनांमिलेपकडिछुड
वैबांह।१०।कबीरसारासूराबहोमिलेघायलमिलेनकोइघा
यलकूंघायलमिलेतबरांमभगतिदिढहोइ।११।कबीरदे
हूंढतमेंफिरूंप्रेमीमिलेनकोइप्रेमीकूंप्रेमीमिलेतोसब।
षअंम्रतहोइ।१२।कबीरमायामिलेमुहबतीअैपेकूडाबो
कोईबीधाघायलनांमिलेसांईहंदासैंण।१३।कबीरसरपेइ४
वाईऐसोतोबिषकेजाइऔसाकोईनांमिलेसूंसरपेबि।
षाइ।१४।कबीरऔसाढूंढतमेंफिरूंतैसामिलेनकोइतीनस
हीबहोमिलेचोथामिलेनकोइ।१५।कबीरजैसाढूंढतमेंफि
रेतैसामिलेनकोइततबेतात्रिगुनरहतान्रिगुनसूंरतहोइ।१६
२०७७॥४८॥हैरतप्रीतिकोअंग॥कबीरजजमैंबसेकमोद
चंदाबसेअकासिजेजांहीकेमनिबसेसोत्यांहीकेपासि।१।क
बीरगुरबसेबांणारसीसिषसमंदांतीर।

ने कोऊ ॥३॥ कबीर जुरा मीच व्यापै नहीं मूवा न कु
चलि कबीर वहि देस मे जे तहां बैद रम रीया सेहो ४ कबी
लागर तें यूं रहो ज्यूं जल लै पदम निराल मन वाज हां ते
ये जहां मीच न जो रा काल ५ कबीर जोगी बन बस्या
पारी कंद मूल न जो रा रू किस जडी सां अमर न या अस्थू
बीर हरि चरणां चल्या माया मोह सं तूटि गगन मे डेरा स्त्रा
कीया काल गया सिर कूटि ६ कबीर बेदगी मैं रैन खा
न स्या नित नित पीवो सार जहां कबीर बेदगी मैं रैन खा
ल्वार ५ कबीर मन तीवा सीया लिर हद लाया घुरसा चित
बरणां मूच कुटी या तब न ही काल पाण ६ कबीर काची कारी
नसि करै दिन दिन बधै ज व्याधि राम कबीर सचि नहीं याही
वीघदि साधि ७ कबीर राम नाम की वोषदी सत गुर दई बताइ
बीघ दस प्रा स्यचि रहो ता की बेदनि जाइ ८ कबीर या वोषद अ
ल गुस्प नंतन धारी बेहा कोई फेर ऊ पद्धि कान दी तर वो पौद
कबीर राम नाम की वोषदी कोटि क कटै बिकार विष बाडी बृक्ष र
हैं तो काया कंचन सार ११ कबीर बेद बुलाइ या पकडि दिषा ई बां
ह बेदनि बेदन जाणही करक करते जा मांहि १२ कबीर बेद निरम ई ल
ह घरि आपणौं तेरा कीया न होइ जिनि या बेदनि निरमई सब दरसा र
लाकरै गा सोइ १३ कबीर मन वाजत या दिस तरी वोलै सब दरसा र
जाम दिसा वर की क हे ज हां न दी जम काल १४ कबीर अैसी तीर्थ
सुरति हे फोडि गई ब्रह्मंड पीव निराल पषी या सपत दीप नव
षंड १५ कबीर सूली क परिधर करूं बिष का करूं अहार जामबि
चारा क्या करै जे आ वे पद रकू स्यार १५ कबीर मे जाण्यूं मे क्रो
र या मे तो हूवा सोइ मैं ते दो नुं मिटि गई तब न हीं क हूण कूं दे
इ ॥ स्या ॥२०५०॥४॥ साषी लै कौ अंग ॥ कबीर पूछै राम कूं
सक ल भवन पति राइ सब ही क रि अलगा रहो सो बिधि हय
बता इ १ कबीर जिहि बिरीयां सांई मिले ता सन जाणे और
सब कूं सुष दे सब द का अपणी अपणी बोर २ कबीर पार सरू
पी राम है लोहा रूपी जीव जब जाइ पारस भेटी यो तब जाइ
हो इ सो सीव ३ कबीर दया कौण परिकी जीये का पै नृ दय हो
इ मतौ लेत मास गीरनार टिक बाजी जो इ ॥ ४॥ बिसर पर
कोश्या ॥ कबीर जहां न जाई ये जहां कपट का हेत जा ल
कली केंडी र की तन राता मन से त ५ कबीर नवन न या तो क
या सूधा चित न त्यां हि पारधी या हण न व निमृ घा हूं कं ता

ऐ किस के मूंहे नूर था। कबीर जिम जिम हरि गुण संचरै
तिम तिम लागै तीर लागे पणि लागे नहीं सोई संत सधीर २४ क
बीर जिम जिम जिम हरि गुण संचरै तिम तिम लागै तीर सी
ही सो ही झड़ि पड़ी नल का रस्या सरीर २५ कबीर जाय पूछो
उस घाइलां सों सपीडि निस जागा मा मारणहारा जाणि सी कै
जाणि जिस लागि २६ कबीर निज घर प्रेम का मारग अगम अ
गाध सीस काटि पग तलि धरै तब निकटि प्रेम का स्वाद २७
कबीर ऐ घर प्रेम का माला का घर नांहि सीस उतारै हाथ सूं
सो पैसे घर मांहि २७ कबीर प्रेम न गति कूं गुरु ऊंचा पराऊं
नत सीस का टि पगतलि धरै तब जाइ पकूं चे दध २७ कबी
र ऊंचा तरवर गगन फल पंषी मूवां झूरि बहोत सयांणा प
चि गया फल न मरन पणि झूरि २२ कबीर हरि नया तो का
नया सिर दे नैडा सोइज बल लागा सिर सूं पेन हीं कारिज सि
ध न होइ २२ कबीर प्रेम न षेतीं नीपजै प्रेम न हाटि बिकाइ
राजा परजा जासा रिषा सिर दे सो ले जाइ २३ कबीर सीस काटि
पासंगा कीया जीव सरीच लीन जो चाहै सो आय ल्यो प्रे
म आथ हम कीन २४ कबीर प्रेम बिकंता मैं सुण्यो माथा व
दलैं साटि मूंझत बिलम न कीजीए तत षिन दीजै काटि
२५ कबीर कहि दरबार का तडी कूंपाइ प्रेम हलां जांना सीस
उतारै सो सचै रै नहीं और का कांम २६ कबीर सीस उतार स्या
सूरिवां ज्याडा तन की आस आगा मूंह रि जी मिल्या आवत
देष्या दास २७ कबीर सीत रता तार से जोग रता सुर उचै दे संग्राम
अवके नाजण प्रीतिं सिर स्याद्रि बके कांम २८ कबीर षडगस्यं
सीस उतारि करि डारि दीया जूडे न करूं सुनडी हीनें स
हसी ऐ घर जाणी का मैल २९ कबीर सूरा के तो सिर नहीं स्या
मी के धन नां हि पतिव्रता के अगन हीं जीव बसै पीव मांहि।
३० कबीर सीस पषे सांई न षेल न डचं कां असवार कमध कबी
र किलो कयो केता कीया सुमार ३१ कबीर जगति डुहेला रा
म की नहीं का सुका कांम सीस उतारे हाथ सूं सो लेसी हरि नां
म ३२ कबीर जगति डुहेली राम की जियी षांडा की धार जे डो
लूं तो कटि पडूं नहीं तर उतर करूं पार ३३ कबीर जगति डुहेली रा
म की जिसी अगनि की झार डाकि पड्या ते ऊबरया दाधा को
म सार ३४ कबीर घो आ प्रेम का
गले का लसि कि न जीव जाई मार ३५।

जगुण के समराथ कबीर ज्यों दिन ज्यों का आवता जदिन दिमि
लसी आइ ज्यांकूं तन मन सौं पी ले कब कू छाडि न जाइ ३ कबी
र सनेही सौ जो जनां तौ वौ हूदा मझारि कु सनेही घरि आंगणैं
जांणि समंदां पारि ४ कबीर कहा न यो घट बीछड्या हरि वसी
जै आस नैनां तो अंतर पड्या प्रांण तुम्हारे पास ५ कबीर सो कं
तो सुपनें मिल्या जागं तौ मन मांहि लोयण रले सु न घडी बी
छडि बेके नांहि ६ कबीर मनेह ग तो मझ ली इ जा अंतर पसने
ह जब ही जरतें बीछडै तब ही त्यागे देह ७ कबीर ऐसा नांव
हु यह तनि या दी रीति मीन मरैं तां जल मरै तो सा चे ली प्रीति ८
कबीर स्वांमी सेवग एक मत जे मत में मत मिलि जाइ चतुराई
रीझै नहीं रीझै मन कै भाइ ९ कबीर सेवग सेवे साध कूं साधू सुम
रें रांम यन मैं थापा को नहीं सरै दहू का कांम १० कबीर गुर सेवा ज
न बेदगी दहिसु मिरण बेराग ए ती जब ही पाइये जब मस्तग भो
टा भाग ॥ ११ ॥ २० ॥ ८० ॥ अंग ॥ ५ ॥ अथ सूरातन को अंग ॥ कबी
र सूरा सोई जांणिये लडै धणी के हेत पुरजा पुरजा होइ पडै त
उ न छाडै खेत १ कबीर खेत न छाडै सूरिवां जूझै दहूं दल मांहि
आसा जीवण मरण की मन में आंणै नांहि २ कबीर कायर हू
वां न छूटी ये कछु सूरातन साहि भरम भलका छाडि दे सुमिर
ण सेल संभाहि ३ कबीर सोई सूरिवां मन सूं मांडे झूझ पांच
पयादा पकडि कारि दूरि करै सब दूजि ४ कबीर सूरा झूझै गि
र दसू यक दिस सूर न होइ यूं रबि हूं ण सूरिवां न लानक
हि सी को इ ५ कबीर आरणि पैसि करि पीछै रहै स सूर सांईं सूं
सनमुख रहै या हि सी सदा हजूर ६ कबीर गगन दमांमां बाजी
या कलहली या के काण सूरा घर रोवध आं वणा कायर तजै पि
रांण ७ कबीर गगन दमांमा बाजीया पड्या निसांणै घाव खेत
बुहारा सूरिवां अब मरिबे का डाव ८ कबीर गगन दमांमा
बाजीया पडी निसांणि चोट कायर भागा कछु नहीं सूर न जैते
बोट ९ कबीर सूरै सार संभालीया पहस्या सहज संजोग अबगांन
गये दीच दिक दिखिता पड नका जोग १० कबीर मेरे सा सा को न हीं
लागा दह दिसि सूदेत कांम क्रोध सूं झूझणां चौडै मांड्या खेत ११ कबी
र घूंणि पड्या न छूटी ये सु णि रे जीव अबूझ कबीर मडि में दांन में
करि है ह्यां सूं झूझ १२ कबीर अब तो ऐसी है बणी मन कहा चं
चल कीन मरनै का नेहा छाडि दे हा थि संदेरा लीन १३ कबीर का
इर बहोत पमांवहीं बड किन बोले सूर सार घर ल्यां जाणी

मोरथा गिरा अटल त्रे सा दास कबीर ५९ ा कबीर सूरमा नाद
न पद र धै मरवा सूनड रा ३ । का हरना गा का लिं का सूरमुदे
मुदि पाद ५५ ॥ कबीर हरि सब कूं नजे हरि कूं न जे न को प्राज
ब लगा आस सरीर की तब लग दास न होइ ५६ ॥ कबीर नग
ति छुटे ती राम की कवि न पेल ब दे को म नि स प्रेही नि रषी
र का आव प दहर सं ग्राम ५७ ॥ कबीर जोग कवि न जो हर सुगम
ग्ये क घडी का छु प तन अतीत को रू कर ै न्ह हरना थिम न
ई घर ै कबीर तीर तुपक बर छी बहे बिन सिजा इगा चां
म म्हूरा को मे दान मे न ही का इर कं को म ५८ ॥ कबीर सूर चढे
संग्राम कूं पाछा कब कुन देय आघा चल्लिपा छा चले ॥ सा
का मोन देय ५९ ॥ कबीर षांडा ति स कूं बाही ये फिरि षांडा का
देह का इर कूं क्या बाही ये दांत ति नूं का लेह ६० ॥ कबीर सा
रान्ह स बल देरीया सिर दारन पाया गी द डी या कूं बादि
बादि बे का मग माया ॥ ६१ ॥ चौपई ॥ कबीर खेको मी कूं रि
र जिन बाहे सां वी मो वे न ति ग मा वे दास कबीर ता हि सि
र बाहे था डि स ना तूं अरसां म्हे आवे ॥ ६२ ॥ साध ॥ कबीर
साध सती अर सूरिवा ज्ञिम ल्ले घन तिम सा चा सी रन मारे मी
ड का साधन बांधे लो न ६३ ॥ कबीर साध सती अर सूरिवां ग्यां
नी अरगा ज दंत ए ता नि कसि न बा हु डे जे जुग जा इ अनंत
६४ ॥ कबीर पांच अगनि सह णी मुग मा ओ सुग मधा धार ने
हे नि बांह न एक रस म हा क ठिन बे राग ६५ ॥ कबीर ने हनि
स्वां ही न ग्यो सो च्यां जनें न आं ना तन देम न दे सी स चो त्रे म न
दी जे जां णि ६६ ॥ कबीर ना ब नल का सुरति सर धर धीर ज का
तो णि मन की म वि ज सां न गी चो ट न हीं जा णि ६७ ॥ कब
र सूरा लड़े क मध हो इ धड सूं सीस न ता रि क हे कबीर मा सू
मूवां कहत ज मारो मार ६८ ॥ कबीर बिन पेंडा का पंथ है मग
सद र अस मां न बिषम घाट औघट घणां को ई पहुंचे संत स
जां न ६९ ॥ कबीर पांच अस मन मि ल्या ज ब रिण धसी या सूर
ल मो ड्या सिर क ब स्या मु ज रा स्यां म द ग्गु ह ७० ॥ कबीर सि
ध सी या ते क ब स्या आ या ग्रह निवास घरां च ध वा वा जी र
औ र च दे को आस ७१ ॥ कबीर ज ब ल ग धड सूं सीस है सूर क
है सो इ मा थो ल ठां धड लड़े क म ध क हा वे सो इ ७२ ॥ कबीर
ल ज मा ड्या पित्ता र सूं आ न दे च व द्यो ७४
पड़ी प्रेम गा यां सब जा २० ॥

करीस्यों को करो त्नगाम सबद गुरू का लाज णा कोई पड़ुचै
संत सुजांन ३८ कबीर हीरा बिणजीया महगे मोलि अपार हा
ड गल्या माटी मिल्या सिर साटे व्यौहार ३९ कबीर पैलां णीयां चा
व करलीया हाथि चोंसथ कां हरि कूं मिल्नुं पीछैं पडि सी राति
४० कबीर हरि घोडा ब्रह्म का कडी बासि ग पूठि पलांणा चंद सूर
दोऊं पायडा कोई चढि सी संत सुजांण ४१ कबीर तोड्या मांन मद
जीत्या पांचू षांनां नांव ऊहा डेक रमबना काटि कीया मेंदान ४२
कबीर लालच लोभ न मोह मल णेक लमल अबीहा हरिजन
ऐसा चाहीए जेसा बन का सींह ४३ कबीर जेता तारा रैणि का ते
ता बैरी मुझ ४४ सूली सिर कां गुरै तन न बिसारूं तुझ ४५ कबी
र चोपडि मांडी चोहटै अरध उरध बाजार कबीरो षेले राम सूं
कदे न आवे हारि ४६ कबीर जे हारया तो हरि सूंवां जे जीत्या तो
डाव पार ब्रह्म सूं षेलता जो सिर जायो तो जाव ४७ कबीर चूटे
बरत आकास तै कोण सहै जडझेर लासाधमती अरसूर का अ
णी कपरला षेल ४८ कबीर सती पुकारै सलि चढी सुणि रे मी
त मसांन लोक बटाऊ चलि गया हम तुम रहे निदांन ४९ क
बीर सती बिचारी सत कीया काढ़ूं सेज बिछाइ ले सूती पीव
आपणा चहुं दिस अगनि लगाइ ५० कबीर सती सूरा तन
साहीयो तन मन कीया घांण दीया महोला पीव कूं तब
मडहट करै बषांण ५१ कबीर सती जलण कूं नीसरी चित
धरि एक बमेक तन मन सौंप्या पीव कूं अंतर रही न रेष ५२
कबीर हूं तोहि पूछूं हे सती जीवत क्यूं न जराइ मूंवां पीछैं
सत करै जीवत क्यूं न कराइ ५३ कबीर सती जलण कूं नीस
री पीव का सुमिरन नेह सबद सुणत जीव नीसर्या भूलि ग
ई या देह ५४ कबीर षाग टरां मकाहि थांनें राम न आइ कूस
क जोडे हरि कारि ज्यूं कदे न लागे लाइ ५५ कबीर आप स्वार्थी
मेदनी जगति स्वार्थी दास कबीरा राम स्वार्थी जिन छाडी वन
की आस ५६ कबीर सांई सीतिन पाईए बातां मिल्यो न कोइ
कबीरा सौदा राम सूं सिर बिन कदे न होइ ५७ कबीर लागां न
लीन होइगी कहा धरोगे पांव सिर सौंपो सूधा लडो का हे करो
ऊडाव ५८ कबीर लागां न लीन होइगी पूंठि जलागे धाव जा
गी री सब कुतरे ध णीनक हि सी आव ५९ कबीर लागां न ली
न होइगी मुह मोड्यो घर हूरि सांई आगे साच दे तो सोच कि सौ
रे सूर ६० कबीर सूरां सन मुष बाहतां कोई न बधे धीर परहन

गयामबजेबा२०२कबीरसूरीमारेसेजस्यापडेदवारघाव॥
कबीयेमारेसबदसंतत्तिमूंडीकपरियाव२ए१कबीरमीसत्
तास्यानेधस्याकपरिमेल्स्यापाव़दासकबीरायूकंदेओसा
कैतोआव़२०३कबीरकायाकजालीबनदेमनकुंजरमैंमंस
अंकुसपानरतनदेकोइदेमीसाधुसंत२०४कबीरनांवका
जितिलतिलखांधस्पामहारिणमांसिपाटीदासकबीरसी
सबसाधूजनपांदि२०५कबीरसारकदेजोदाजडेसूटेजोरे
जंजीरभरदांकोमेंदानमोमांजीदासकबीर२०६कबीरनदी
पूंचानदीपोमस्तोनदीपावनदीसाथसीसखटिधरतीपड्या
पणिमारिमारिनदीजात२०७कबीरसबकोंवोइबांधतेस
बकोदेतेसांपाबादीजिसकाजांणीएरीताकरेपलाण॥२०
८॥२२०६॥अंग॥५०॥जीवतमृतककोअंग॥कबीरजी
वतमृतकदेकरदेतजेजगतकीआसमंगिलागासांइफिरेमति
डुधपावेदास१कबीरधरीकसौटीरामकीपोटाटिकेनकोइराम
कसौटीसोटिकेसोजीवतमृतकहोइ२कबीरमरतामरताजग
मूवांओसरमूंवानकोइदासकबीरायूंमूंवाज्यूंबहोरिनमर
नाहोइ३कबीरमेराबैरीमैंमूंवामुजेनमारेकोइमेंहीमुज
कूंमारतामैंमरजीवाहोइ४कबीरवेदमूंवारोगामूंवामूंवा
सबसंसारकदेकबीरसोनामूंवाजाकेरामअधार५कबीर
सेरीसाचकीमैसिननिकसेकोइसोइपैसेवापडजीवतमृ
तकहोइ६कबीरसेरीसांकडीमातीचूराचूरिकारणवंती
सुंदरीरदेधकासूइरि७कबीरकारणवंतासुंदरीधीरैपाव
धरेइस्यंदरिजनदरिनांवका ऐसाजतनकरेद८कबीरदस
कैतोलादीएचीटीकेजबरांवमरेतमंपत्तिमित्तेतोदत्त
मत्तीनजाइ९कबीरजीवनतेमरिबोभलोजोजिमरिजांणेकं
इ।मरणपदलीजेमरैतोकत्तिअजरावरहोइ१० कबीरम
नमनसाममतामूंईअहंगईसबछूटिगगनमंडलमेंघर
कीयाकालरह्यासिरकूटि११कबीरआपीमत्यांहरिमिले
हरिमैत्योसबजाइअकथकथांणीप्रेमकीकह्यांनकोपति
त्याइ१२कबीरजामरबातेजगडरैमेरैमनिआनंदकब
मरिहुंकबदेखिहूपूरनपरमानंद१३कबीरचेरासंतक
दासनकापरदासाअबतोऐसाहोरह्याज्यूंपांवतलिघास
१४कबीररनिगुसांवांबहिजाइगा
दासगरीबोबंदगीकरतांदोयसहोइ१५

लथावासबदलपाञ्चामोङ्कोमांजासेतीवावा ७१ कबीरस
रातोमांचांपगामदैमनमुषभारगीदङ्स्याणीचुकाइकरिपात्रा
ऊबैञ्चपार ७० कबीरठोलतदमांमांगिङमिद्धीमहनाईरिणात्
रातीनूंनिकसिनवाकुंडैसाधसतीञ्चरसूर ७१ कबीरएतीनूं
नागानुरामहिवजीकीसींदसाधसतीञ्चरसूरकादैइनमो
डीमांदद ७२ कबीरदेषादेषीसबचल्याबांनाघदरिञ्चनेकासा
हिबञ्चपणांकारणेमरिसीबिरलाएक ७३ कबीरकाइरकूं
कोतिगभलाकादैकसैमनादानीडिपङ्यांजगिज्ञाइगामी
वजलागैघाव ७४ कबीरसाधसतीञ्चरसूरिवांकदेनफेरीपूवि
तीनूंनिकसिरबाकुंडैताकामींदनदीव ७५ कबीरसाधसती
ञ्चरसूरिवांशथ्यारदैनवोटमाथैबांधिपताघसूनेजैपाडे
चोट ७६ कबीरनाजिकहोलूंजाइएनेंनारीघरडूरिबकु
डिकबीराषेतरहीदलञ्चाएनरपूरि ७७ कबीरएकमरि
बोएकमारिबोयादीविषमीसंधिनांनेकाइरलडैगेचाले
तरगसबंधि ७८ कबीरकाइरभागाकालिकासूररहैरिण
मांझिपटालिषायारामकाघराघजीनांघांहि ७९ कबीरएणे
तीरलाहूवासोजिनिषेलसीहरिवावागवागहस्यानाजि
गईनकनूरि ८० कबीरजबलगञ्चासमरीरकीतनैहूवै
नजाइमायाकायामांनिलजिचौडैरहैबजाह ८१ कबीरचौ
डेदीञ्चांनेंदहैनांवनयारिनजीतिसादिबसेतीमिलिरला
अंतरिगतिकीप्रीति ८२ कबीरसाधसतीञ्चरसूरिवांयनस
मिकोहनांदिञ्चगमपंथकूंपगधरैडिगेतौठाहरनांदि ८३
कबीरसाधसतीञ्चरसूरिवांयनकामताञ्चगाधञ्चासा
छाडैदेहकीतिनमैंञ्चधिकासाध ८४ कबीरसतीसूरातनपे
कयलञ्चरसूरातनपलच्यारिसाधसूरातननितिमरनकरै
कबीरविचारि ८५ कबीरसूराथोडाहीभलासबकारोपैपग
घणांमिलाकिसकांमकासावणकासाबगा ८६ कबीरसबदी
साथकलंतडोधीरनबंधेकोइनागांपीछैबाकुंडैथाट
गुसांईसोइ ८७ कबीरसतीञ्चसतीयांजलैमडाकीलार
सतीजसोईजाणीयेबलेसंनालिसंनालि ८८ कबीरसू
रसनांहनपहरईजबरणवागातूरमाथोकायांघडलडे
जबजांणीजैसूर ८९ कबीरञ्चासामेरीलाडलीमगांदठोलेनी
रतिरनकरेबूडएकरैबंधिनसकैधीर ९० कबीरकहांञ्चास
कहांतैबीकहांहोरह्याकहेवकबीरमैसमवांणनरिवत्वि

वीरदरदीवांनकै।क्यूंकरिपावैदादिपदह्लीकरमबुराकैरै पी
छै कैरै फिरा दि॥८॥कबीरगायनिस्तिमुरगीनिस्ति निस्तिकत्ते
वो मां हि।अपणांगरनाकराइकरिनिस्तिवसीक्यूंनांहि॥९॥
१२३५॥अंग॥५४॥अपारिष कौ अंग॥कबीरचंदनरूष
वदेसगयोजनजनकहैपलासजूंज्यूंचूल्हे झूंकीए॥
स्यूंस्यूंहणी वास१कबीरपायपदारथपेलीयाकंकरलीय
हाथिजोडीविछडीहंसकीचलेवुगांकीसाथि१कबीरप
कअचनादेषीयाहीराहाटिबिकाइपरषणहाराबाहिर
कौडी वदलैजाइ२कबीरमनतनमनसूंतीलीयासवदं
मोलनगोलाजोहरिपरपनजांणहीआपैपोपैबोलथाक
बीरहीराकाकछूनांघट्याघट्याजवेचंणहारजनमगमायो
आपणोवहोरिनपावैवार५कबीरचकचुणताकनफिरे
हीरापायावाटासाकामरमनजांणहीलेषरिपाईहाट
६कबीरगुदडीवीषरीसोदागयाबिकाइषोटाबांधागां
वडीलीयाकछूनजाइ७कबीरपैंडेमोतीवीषरयाअंधा
निकस्याआइजोतिबिनाजगदीसकीजगतउलंघ्याजाइ
८कबीरसबजगअंधलाजिसीअंधीगाइबछाथासोमरि
गयाऊभीचांबचटाइ९कबीरराममरतनधनपाइकरिथेगां
ठीबांधिनषोलिनहीपाटणनहीपारषूनहीगाहकनहीमो
ल१०कबीररामपदारथमुजमैमांनिपुलाघरमांहिसीत
मीतहीदेतहूंगाहककोइनांहि११कबीरनांन्होकातीचि
तदेज्यूंमहंगेमोलिबिकाइगाहकराजारामहैऔरनने
डाजाइ१२कबीरजहांगाहकतहांमैंनहीमैंतहांगाहक
नांहिपरचाबिनभरम्याफिरेंपकडिसबदकीबांह॥१३॥
१२५८॥अंग॥५३॥पारिष कौ अंग॥कबीरजबगुणकूं
गाहककमिलेंतबगुणलापबिकाइजबगुणकूंगाहक
नहीतबकौडीबदलैजाइ१कबीरहमदीराजनजौंहरी
लेलेमांडीहाटिजबरमिलेगापारषीतबहीरांकीसाटि२
कबीरसुसनेहीसाधुमिलेंमिलिमलिकरैंविचारबोल्यां
पीछैंजांणीएजोजाकाबोहार३कबीरमेरीबोलीपूरबी
ताहिनचीन्हेकोइमेरीबोलीचीन्हसीजोउसपूरबकाहो
इ४कबीरदेषिपरषिपरेनोपरषिरमुषांबुलाइजैसीअंतर
होइगा ॥म
गाकूंतेसाबोलि

आपकूं परकूंन देन को ह घालित यहू तो ली ए नहेंस गरवादे
हा २६ा कबीर नीचा हुवांन रन फा नहेंस बिरला को ह दाहदी
रा दा जरिय का लहैस नी चा दोह २७ कबीर रोडा ह्वै रहो बाट
का तजिया षंड अभिमान लोन अहंकार ते छोत जो ताहि रि
मले भगवान २८ कबीर रोडा भया तो का भया पंथी कूं दुष दे
हहरिजन ओसा चाहीए जिसी जमी का षेह २९ कबीर षेह भ
ई तो का भया तडि तडि लागें गहरिजन ओसा चाहीए जैसा
जल का रंग ३० कबीर जो जल भया तो का भया ताता सी
ला होइ हरिजन ओसा चाहीए हरिजी हरि सम होइ ३१ कबी
र मो सी नीपजे सीप सम मेंदां मो ल्हि को ई मरजीवा काढि सी हू
जा की गम नाहि ३२ कबीर हरि हीरा कूं पाईए जीव जीवण
की आस दरीया मों ल्हि थी का ढिसी को ई मरजीवा दास ३३ क
बीर कंचा तरवर गगन फल बिरला पंषी षाइ यस फल कूं
सो ई चषे जीवत डा मरि जाइ ३४ कबीर मो मर णों का चाव है
मरूं तो राम द्वारि मति हरि पूछै बात डी को दास मूवो दरबारि
३५ कबीर भो मरणों का चाव है मरूं तो राम द्वारि के तन का ऊ
ट का करूं के लेन तरू पार ३६ कबीर मूवां कूं क्या रोईए वो अ
पनै घरि जाइ रोईए बंदीवांन कूं जो हाटै हाट बिकाइ ३७
कबीर सुनि सरुज मैं पाईए तहां मरजीवा मन कबीरा चुणि
चुणि लेगया नीत रि राम रतन ३८ कबीर मरि मडहट बासा
कीया तब कहीन पूछी सार तब हरि आदरि आ घालीया अं
ग सब्बद्या की लार ३९ कबीर पेडा मां दि पक डिरहा सब ल
मृतक होइ जि हि पैडे जगलूटीए मेरी बात न बूझे कोइ ॥ १
॥ २२ ६ा अंग ॥ ५१ ॥ मां सआहारी को अंग ॥ कबीर मांस
अहारी मानई प्रतषि राकस जाणि ताकी संगति मति करै है
य नगति में हाणि १ कबीर मांस षाइ ते ढेढ सब मद पीवै ते नी
च कुल की दुरमति छाडि दे राम कहै ते ऊंच २ कबीर मांस परा
याते नमें सुरा पांन सू हेत ते नर स जडा जाइ सी ज्यूं मूला का
षेत ३ कबीर यो कूकर का षांण है मनिष देह क्यूं षाइ मूं है अ
हमुष मेलता नरक पडै नर जाइ ४ कबीर कलि में जो रावा
पस्या पोसत नागि अफीम राम नाम का वैरस्या भ्रमला का अ
धीन ५ कबीर मांस न षै अरु मद मीवें धन बेस्या सू षाइ जुवा
षेले चोरी करै अंति समूला जाइ ६ कबीर षि चडी षांण षूब
है जै हुक बादे लूंण हेडा रोटी कारणें गला कटावै कोंन ७ क

॥९५॥२२८॥ अंग ॥ पद ॥ सुंदरी को अंग ॥ कबीर सुंदरि यूं क
है सुणि हो कंत सुजांण बेगि मिलो तुम आइ कबीर तारि
त जूं पिरान १ कबीर सुंदरि दिय संदेस डो सुणो दमारा पीव
जल बिन मछी कमूं जीवे पाणी ही का जीव २ कबीर जे को सुंद
री जांणि करे बिन चार सा दिन कब क्या देरे परम पुरष नर
तार ३ कबीर सुंदरि तो सां झिन ज्ञे त जे आंन की आस ता दिन
कब कुप पड दे पल नदी छाडे पास ४ कबीर यस मन का मेद
के रूं ना न्हो करि कि पीस तब सुषपावे सुंदरी पदम अलके
सीस ५ कबीर चडी अषाडे सुंदरी मांड्या पीव सूं षेल दीप
राजो या ग्यान का काम जले ज्यूं तेल ॥ ध्यान पांग णि को अं
कबीर नांव न जांएं गांव का येडे जाग जाव का ल्हि जको
टा ना ज्ञिसी पहली कूं न पुंड्या व २ कबीर सी मन हंस मारते
चले ज सां ई पास अ बिना सी मो ह्रि ले च ल्या पुरई मेरी आ
स ३ कबीर ईद्र लोक अचिरज भया ब्रह्मा पड्या विचार
कबीर चाल्या रांम पै को गति दास अपार ४ कबीर सद पाणी
पाताल का का दि कबीरा पीव ब्यासी पाव क पडि मुरा वि
पे बिरलं क्या जीव ५ कबीर हरि का डर पता कि न्हो धीनन
पांव रा हु दा नी त रि हरि बैसे दाके तो मरा डाव ५ कबीर गा
विंद के राव दो त णा लिख्या ज हरि दा मांस्रि पांणी पीनं न्ड
र पता म ति वे धीया ज्ञां ह्रि ध कबीर अव तो अैसा न्या मी
लिक निज नांव पहली का च क थी रथा फिरता वांने गांव ७
कबीर नो सागर जल बिम न रया मन न ही बे धी ध्यसव जसने
री हरि मिल्या जत स्या पार कबीर ८ कबीर अन तास्रे लाक
त स्या पूरा मेरा न्याग रांम नां म नो का गदी चल पांणि प कुलना
ग ए कबीर सुपनां में सांई मिल्या सूता जी या न गा झ्ञा वि
न मी चुंड रपता म ति सुपनां की जा ६ २ कबीर हरि का दया न है
सां सा दीया घोट ज्ञे दिन न गति बिनां गया ते दिन सालै मो

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कबीर किस्तूरी कुंडलि बसै नांनि कंव ढूंढै नाव न रहूं
पावे नदी गुर बिन कंबंवे ॥ कथा
ए गा दूंढे बन अैसे घटि घटि रांम दे

दृकबीरमदृजतराजकूत्र्योणिकेसबरसदेप्यातीतिसबरस
मांदीजीनरससाजेकोजांणीबोति ७ कबीरपदतीसबदपिछं
णीरेपीछेकदीबोल्ल पारषूततनपावैरैसबदांमोलनतो
ल ८ कबीररांमरसमाइन प्रेमरस अंमृतमंदअपारगाइकबि
नांननीसेरमांणिक कनक कूवार ९ कबीरदरदांमनमा
दृग्या पाटणि प्रानसुघटगाइकबिनांनषूलदीदीरांकेदृ
१० कबीरराकोबारपरषीरी नांकेबारूबारबालूतोकिरि
करीजेघांणी सोबार ११ कबीररांमरतनघरकोथलीकदू
गाहकआगेषोलि जबरमिलेगापारषूलेगामंदगेमोलि १२
कबीरदरिमोतीदूलकीमालदेपोईकाचेधागि जतनकरे
झोणीघणीतूटेगीकहुंलागि १३ कबीरदेसातेमदराणका
नडिपड्यो थलीयादबुगरलोकरिकरिमारीयोमंझनजांणी
त्योद १४ कबीरदसबुगांकेपाकूणाकोईदसाकेफेरिबुग
लाकसागरबीयोवेवैपाषबषेरि ॥१५॥ २४ ॥ आगापष
नियाकोअंग ॥ कबीरलोकविचारानीदहीजिनकुनपाय
गयानरांमनामजानैनदीसेवेआनदीआन १ कबीरदोषप
रायादेषिकेचल्योदसंतदसंत आपणानिजरिनआवदीजा
कीआदिनअंत २ कबीरयासननीदारीजोपांवतलिदोइ
डिपडेजेअंबिमैबराबदेलाहोइ ३ कबीरआपणपोनसरा
हीयपरनीदीएनकोइ आजरूलांबाहौंदहा नजांणैकहं
होइ ४ कबीरआपणपौनसराहीये औरनकहीयरंक नजांनै
किसरूपतलिकूटादोइकरंक ५ कबीरआपणपौनवगा
ईयाऔरनवगीणीकोइ आपवगपांसुषकपजैऔरवगांदु
षदोइ ६ कबीरबुराबुरासबकोकहैबुरानदेषूकोइ जेदि
लषोजेआपणोतोमुझसाबुरानकोइ ॥७॥ २७ ॥ ५५ ॥
दयानृंदरताकोअंग ॥ कबीरदरीयाप्रजल्यादाझैजलथल
झोल बसनांदीसैपारसदाझैरतनअमोल १ कबीरकंनै
आइबादली बरषनलगेअंगार ऊविकबीरारोधादेदाझंत
देसंसार २ कबीरसाधकरतापीसबडुषीसुषीनदेषूंकोइ को
पूतांकोबंधवांकोधनहीणांदोइ ३ कबीरसाधकरतापीसब
डुषीसुषीनदेषूंकोइ जदांजदांजगतिगोपालकीतदांडूक
धीरजहोइ ४ कबीरहमरोवैसंसारकूंहमदिनरोवैकोइ हम
कूंसोईरोवसीजोरांमसनेहीहोइ ५ कबीरबागबिछूटेमृग

॥ढा॥२२८॥ अंग॥पद॥सुंदरी को अंग॥ कबीर सुंदरि यूं कहै
सुणि हो कंत सुजांण। बेगि मिलो तुम आइ करि नांतरि
तजूं पिरांन १ कबीर सुंदरि देय संदेस डो सुणो हमारा पीव
जल बिन मछी क्यूं जीवै पाणी ही का जीव २ कबीर जे को सुंद
री जांणि करे बिन चार सा दिन कब कुआं देरे परम पुरष भर
तार ३ कबीर सुंदरि तो सांई नें जे तजे आंन की आस ता दिन
कब कु परद्वै पलन नहीं छांडे पास ४ कबीर यस मन का मेरा
केसरी ना न्हौं करि करि पीसत लव सु घणा वे सुंदरी अदम कलके
सीस ५ कबीर चली अषाडे सुंदरी मांड्या पीव सूं षेल दीप
ग जो या ग्यांन का कांम जले ज्यूं तेल ॥ घानुपात्र ॥ को अं
कबीर नांव न जाणु गांव का मैंडे लागा जांव का ढिज कों
टा ना जिसी पहली क्यूं न घुडाव १ कबीर सीम नई संसार तें
चले जसांई पास अब बिना सी मो हि ले चल्या पुरई मेरी आ
स २ कबीर इंद्र लोक अचिरज नया ब्रह्मा पड्या विचार
कबीर चार्‍यारां मैं पैं कौ गति हार अपार ३ कबीर सद पांणी
पातालन का कादि कबीर पीवा बासी पाव कपडि मंदा वि
षे बिरलै ज्या जीव ४ कबीर हरि का डरपता कंन्हां धांन न
पाव हरदा नीत रिहरि बसे दरके तो मरा डराव ५ कबीर गो
बिंद के राव दे तरुणा लिघा जहि रदा मांहि पांणी पीनें न ड
रपता मति वै धोया जां हि ६ कबीर अब तो असा नया नमी
लिक निजन नांव पहली का चक थीर या फिरता वां ने गांव ७
कबीर जो सागर जल बिष न स्या मन नहीं बधे धीरस च ज सने
ही हरि मिल्या तत स्या पार कबीर ८ कबीर कासुं ले ना क
हस्या पूरा मेरा लागा रा मना मनो का गही लव पांणी पंक ऊना न
ग ९ कबीर सुपनां मैं सांई मिल्या सूता लीया जगाइ आंषि
न मीचूं डरपता मति सुपनां व्है जाइ १० कबीर हरि की दया नैं
सो सादी या घोर जो दिन जगत विनां गया ते दिन सालें मो
हि ११ कबीर जा च ण जाइ था आगैं मिल्या अ जाच आ पस
री षाक रि लीया आप मस्त गां परि हाथ १२ कबीर जब मेरा मन
मुकर था करता बहोत बिगार अब सूधा व्है पैंडे चल्या हरि
आगैं मैं जार ॥ १३॥ २९ ॥ पा॥ पद॥ कि सतूरीया मृग को अंग
कबीर किस्तुरी कुंडल बसै ना भि कंवल नहीं नांव न रहै
पावे नहीं गुरु बिन अंनंग बांव १ कबीर किस्तुरी कुंडल बसै
मृग ढूंढे बन मांहि ऐसे घटि घटि रांम है दुनीयां देषे नांहि

६ कबीर मद जतराज आंणि के सब रस देष्या तोलि मन रस
मांही नीच रस जे को जांणि बोलि ७ कबीर पढ़ती सबद पिछा
णि पीछै कही बोल पारषू रतन पारषी सबदां मोल नतो
ल ८ कबीर रांम रसा इन प्रेम रस अंमृत मंद अपार गाहक बि
लोन मेरे मांणिक कनक कुवार ९ कबीर हीरा मन मणि
हट्या पाट णि ग्रान सुघट गाहक बिना न पूरन ही रां केनी हट
१० कबीर राम को बार पराणी नां कै बार बार बार लोक किरि
करी जे आंणि सो बार ११ कबीर रांम रतन घट को थली कूं
गाहक आणि मोलि जब र मिले गा पारषू ले गा मह गे मोलि १२
कबीर हरि मोती हन की माल है पोई का चे धागि जतन करो
जोणि घणा तूटे गी क हूं लागि १३ कबीर हंसा तो महराण का
नडि पड्यो थली याह बुगलो करि करि मारीयो मंझ न जांणे
ल्यो १४ कबीर हंस बुगां के पाहुंणा कोइ दसा के फेरि बुग
लाक सागर बीयो बेबे पांष बषेरि ॥ २३ ॥ २५६ ॥ अथ पथ
निंद्या को अंग ॥ कबीर लोक बिचारा नींदही जिन कुन पाय
ग्यान राम नाम जांनै नहीं मैं वे आन ही आन १ कबीर सो पप
राया दे बिके चल्यो हंसंतर हंसंता अपणां निज रिन आंवसी जा
कीआ दिन अंत २ कबीर या सन नीदाणि जो पांवांलति ही है ३
डिपडे जे आबिमें मराडु देला होइ ३ कबीर आपणपो न सरा
हीयो पर नींदीयेन को अज कूं लोचा धीं दुडा न जांणे क
हो इ ४ कबीर आपणपो न सराहीये और न कहीये रंक न जांन
किस रूंख तलि कूडा होइ करंक ५ कबीर आपणपो न वगा
हीयो और न वगो इ को इ आप वगंपां सुपकपजे और वगां
पहोइ ६ कबीर बुरा बुरा सब को कहे बुरा न देघू को इ जे
ल नपो जे आपणो तो मुझ सा बुरा न कोइ ॥ ७ ॥ २६३ ॥ ५५ ॥
दया नृर्बरता को अंग ॥ कबीर दरीया प्रजल्या दाझे जलथल
झोल बसनां ही गीपार सं दाझे रतन अमोल १ कबीर कंनै
आई बादली बरषन लगी अंगार कबि कबीरा धाह दे दाझ
है संसार २ कबीर साधक ला पीसब बुभी सुषा न दे घूं को इ के
पूतां को बंधवां को धन ही णां होइ ३ कबीर साधक लापी सं
ड पीसु षं न दे घूं को इ जहां जहां जगति गोपाल की तहां तूक
धीरज होइ ४ कबीर हं मैं रोवे संसार कूं हम दिन रोवे कोइ हम
कूं सो इ रोवसी जो राम सनेही होइ ५ कबीर बाग बिछूटे मृ
लो तिहि मति मारो को इ आपे ही मरि जाइगा डांवा डूली हो

रिसवरपीया।गरपरवतसिपरांह नीर निझांणांगइथैनां
ह्मापरडांइ४कबीरमूढकरमीयां नयमघपपरत्यांह कांह
ाहाराकाकैलेंणन लागेत्यांह५ कबीरमांतिनइतोका
नया।जिमनहोइकबीर नीनेजापांणी चदे सउन नीजेकोरह
कबीरमसुहांसूपांनोपडयो।रहेरहेहायामपीजक सरवासा
ीपजे न्हावैतसो बीज।७ कबीरजालूंऐहबडापणां जांबेपे
ुबिझूपि।पंथीछांहनबैसैफलनलागैतो दूरि।८ कबीरकै
वाकूलतकेकारणें।बांसबंधाग्रसरालपांमनांमझांणनही।
ाल्यासबपरवार।९।कबीरचंदनकैबिडेनीबनीचंदनसो
रूडोबांसबडाइतोयूंमतिवूडोकोइ।१० कबीरप्रसचंदन
वांनौ।बिषनहीतजेनवेगा।वांचालेगुणआपणां कहाकेसं
संग।११ कबीरलहरिसमंदकीमोतीबिषरेआइबुगलासारन
जांणहीहंसांचुणिचुणिषाइ।१२ कबीरहंसाबुगांएकरंगएकें
लचुगाइ।एकटेढोलेमाछलीएकमुकताहलषाइ।१३ कबीर
हंसागाहकाप्रीतिकाहोकोरेगडिजाइनहीनिमांणांकागल
फिरिफिरिकुबणिषाइ।१४ कबीरएकसबदमेंसबकह्यागुरसि
षकूसमझाइ।समझापेसमझेनहीफिरिफिरिवूझेआइ।१५ क
बीरमूरिषकेडरमतियतीजबलगनेंनपिरानसबसमझापे
समझैनहीजावेकोटिकमिलोसुजांन।१६ कबीरसुधबुधवैसु
षपाइएउलकिजाइज्यूंघीवलुस्लाकोरेआयोनारंजे।पानद
गधीजीव।१७ कबीरकरमकचोईआत्मा निजकणपायासोधि
ग्रेंकूरविनांकेगेनही।जावेज्यूंत्रमोधि।।१८।।१६ग्रंथ।अंग
२०।।बीनतीकोअंग।।कबीरनलोबुरीजांणिसबेतासूंकह
उराइ।जासूंछिपिकरिकीजीएसोतोघटहीमांहि।१ कबीर
बेदेवहोतबिगाडीयाकरिकरिमेजाचिसमाहिबगरवा
लोडीएनफलबिगाडेनित।२ कबीरकरताकेरावहोतगुण
औगुणकोइनांहि।जोदिलघोजूंआपणांतोसबऔगणमु
झमांहि।३ कबीरमुझऔगणतुझिगुणातुझगुणऔगणमुझ
जेमेंबिसाइंतुझकूंतोचूंनबिसारीमुझ।४ कबीरऔगणकांपे
वैबसोकीएकलतनमांनीहाप।जावैबंदाबकसीएजावेगल
निमारि।५ कबीरऔगण ... बंदाकागुन्हेनकथांर
ससाहिबसमाइकाधणी।बंदेकूंसबदान।६ कबीरऔल
बीताअज : :
सम ग्रंदेसा।७ कव:

रहै षै कोई संतजन जाके पांचूं हाथि पांचूं जाके बसि नहीं ता ह
रि संगि न साथि ३ कबीर साधु जु सोई सूरिवां जिन पांचूं राषा
चूरि जिनका पांचूं मोकला तिनसूं साहिब दूरि ४ कबीर सो
सांई तन में बसै भ्रम न जांणें तास किस्तूरी का मृग ज्यूं फिरि
फिरि ढूंढै घास ५ कबीर सोई राम यहां बसै सोई सिंघल दीप क
बीर बिचारा क्या करै जे मन नांन ही प्रतीति ६ कबीर में जांण्यां ह
रि हरि है हरि है सकल नर पूरि आपणपि षांण्यां बाहिरा ने ड
हीं सूं दूरि ७ कबीर ज्यूं नैनां में पूतली यूं षालिक घट मांहि
मूरिष लोग न जांणहीं बाहिरि ढूंढण जांहि ८ कबीर मेरा सां
ई मुझ में ज्यूं फूलां में बास बावरा ढूंढै घास बनि बनि नाए
नदास ९ कबीर दौड़त दौड़त दौड़ीया जब लग मन की दौड़
दौड़ थकी सांसा मिट्या तब बस्त बोड़ बौड़ १० कबीर घास ब
है सिर नां कटै त्या जेनहीं जांगे यूं सिर सौं धांसी पीया ता हि
ग्या दिग १ कबीर घड़ियार ते सोई मेरे तेई खौ ध ना दातिण (?)
चर बन मांही बसै ति क्यूं मरै अपाद २ कबीर बहेतक दिन
जरमंत फिर्‍या मन रोनि बिषे बिराम ता कारणि जग ढूंढीया ३
ताणकें वोहीराम ३ कबीर तिण के वोहे राम है प्रबत मेरे जां
इ सतगुर मिलि परचा लया तब पाया घट मांहि ४ कबीर
राम नाम तिहूं लोक में सकल रह्या भरपूरि या चतुराई जाऊ
जलि षोजत डोलै दूरि ५ कबीर अंतरिगति निहचा लया
नहीं कछु वार न पार षालिक बिन षाली नहीं जेता सूई संच
चार ६ कबीर षोजी राम का गया जु सिंघल दीप राम तौ घट ही
में बसै जौ आवै प्रतीति ७ कबीर जा कारणि जग ढूंढीया
सो तौ घट ही मांहि पड़दा दीया भरम का तातें सूझै नांहि ८
कबीर समझ्या ते घर में रह्या पड़दा पलक दिया हतेरा सांई
तुझ में अनंत का देकू जाइ ९ कबीर कहां न यो जे बितगये
पिता बंध सुत माइ छी ज्यो जबही जांणी ये तब रांम रसाइ
ण जाइ १० कबीर मन तो दीया अनंत ही तन साधां के संग क
है कबीर कोरी गजी के सेंना गो रंग ॥ ११ ॥ २७ ॥ २२ ॥ अंग ॥ ५१ ॥ (?)
नि गुणान कौ अंग ॥ कबीर हरीया दीसे रूष डांन स पांणी का
ने हसूं का का वन जांणहीं कब कुबूवा मेह १ कबीर झिरिमिरि
झिरिमिरि बरषीया पाहण ऊपरि मेह धरती गलि मंजरल भइ
पाहण वोही तेह २ कबीर पार ब्रह्म बूठा मोतीयां घड़ि बंधी सि
षरांह सुगरां सुगरां चुणि लीया चूक पड़ी निगुरांह ३ कबीर

रोहदबेहदकी गमलहै तासूं रोमदजूथिप ।कबीरहदबाध्य
बेहदमे पलपलपेपेन्हूंमनबाजदी लेरावीया ।तहांबाजे
अनहदतूरा ३ ।कबीरहदमांहीहदकाघ्राण ।लीयाजीवतुडा
श्रीगसिबिगसिबेहदगांहेतो मेरैनआवैजा ६०। कबीरसु
रतिसमाणीनिरतिमें अजपामांहीजापलेघसमानांअजे
घमें स्यूं आपामांहीआप ५ कबीरहदछाडीबेहदगया कि
यासुनिसनांनमुनिजनमहलनपावहीतहांकीया बिश्राम
॥ कबीरकेचाचदिअसमांनकूं मेरलंघीकडिपसुपेपेरू
जीवजेतसबरसामेरंबूडि ७ कबीरजीवबिलव्यापीवसे मे
पीवलीयारमिलाप्रलेघापड्या अजेघमेंअबकछूकस्यान
जा ६ २ कबीरहदछाडीबेहदगयात्तिनसूंरोमहजूथिपा
खबूसपरचानयाअबनीडातबह ६ २ ९ कबीरमेरमिटी
मुक्तानयापायाबूस बिसास अबमेरेहूजाकोनहीएकत
म्हरीआसरे ३ कबीरहदमेबेवाकघतहैबेहदकीगमनां
हिबेहदकीगमदो ६ गीतबकदिबेकूंकछूनांहि ४ कबी
रहदकाजीवस्यूं हितकरिमुषांनबोलिजेरातेबेहदसूंति
नसूं अंतरमोलि ५ कबीरहदकाजीवसूं प्रीतिअघिबेहद
जसोजेसारोगीयातसोलेसादग ६ कबीरहदछाडीबेहद
गयाघपयालीयाद्दाथिलयानिष्पारीदीनकाअबक्याबूझे
जाति ॥ २७ ॥ २३६ ॥ अंग ॥ ६४ ॥ इतीसाघीसंपूर्ण ॥ आयर
मेंणी लिष्पते ॥ सकलगहग्राग्रेथरमेंणी ॥ रामसूहे ॥ तू
सकलगहग्रासफसफादिलदारदीदारतेरी ऊदरतिकिनकु
नजांनी पीरमुरीदकाजीमुसलमांनी देवादेवसुरनरगणगंध्रू
पाबूस्नादेवमहेसथतेरी ऊदरतितिनकुनजानी टेककाज
सोजोकाया बिचारेतेलदीपमेंबातीजारेतेलदीपमेंबातीर
हैजोतिचीन्हिजेकाजीकहेरे मुलनांबांगदेयस्वरपांनीअ
पमुसलांबेवातांनी आपनमेंजेकरेनिवाजासोमुलांनासर
बतीरगाजारे सेघसहजेमेंमहलनवावांचंदसूरबिचिचारी
लावांअधेनधेबिचिअंनिनुतारासोईसमतिहूलोकपि
याराजंगमजोगबिचारेजकुवाजीवसीवकरिएकेवत्व
चितचेतनकरिपूजालावांतेसोतेगमजंगमनोस्वकहावा
जोगीजसमकरेजेमारीसहजगहेबिचरबिचारीअनमे
घटपरचाघलोजेसोजोगीनिद्दकलदेडोले ५
षकाकंकुबिचाराकोणजीन्हजनेघरा

मे

नद

परिजोरा होत है जम कूं बरजि गुसांई ॥ कबीर तेरे जोर न कुल
म है मेरा हो इ अकाज । बिड़द तुम्हारो राम जी सरणि पड्यां की
लाज ॥ कबीर मेरा मन तुझ सूं यूं तेरा मुझ सूं होइ । अहरणि ता
ता लोह ज्यूं संधि न लखै कोइ ॥ कबीर तुझ बिसारयां कूं बरी
में कासरणाई ज्ञांव स्यो बिरंचि मुनि नारदा यन हृदे न समांवा
११ कबीर नैन हमारे बावरे छिन छिन चाहै जित हम सै तुम कूं
बसो तहै तुम सै हम कूं कित १२ कबीर हम अपराधी राम का न
ष सष ज्ने रे बिकार दया करो तुम राम जी ज्यूं हम न तरो पार १३ कबी
र मांई मेरा साव धांन में दीन्यया अचेत मन बच क्रमन हरि ज्या
ता तें न फल षेत १४ कबीर नां प्रीति तिन प्रेम रस नां को तन में डंग
ल जांन्यू न सपी व सं क्यूं करि हसी रंग १५ कबीर अंतर जो मी एक
तूं आत्म के आधार जे तुम छाडो हाथ तैं तो कौंण सबां हण
नार १६ कबीर जब सम ज्यात बसु लझीया सूल कि समांनां मां
हि जब लग कछू कहो वत्ता तब लग सम ज्यां नांहि ॥ १७ ॥ सू
१ ॥ अंग ॥ ६ ॥ अबेली कौ अंग ॥ कबीर कड़ई बेलि का कड़
वा ही फल होइ सीध नांव जब पाईए बेलि बिछोहा होइ ॥ १ ॥
कबीर सीध जई तो का लया फूटी चहु दिस बास मांही बीज अं
कूर का फिरि क्रमण की आस २ कबीर जे कगे तो अब हम में अन
तक हूं न हीं है रिस चीचेलड़ी कदे न फल आ ३ कबीर
सीध सहज्जो बिरपडी अगनि जल्लागी मांहि सीध बेलि दोन्यू
जली अब फिरि ऊगे नांहि ॥ ४ ॥ बेली कौ अंग ॥ कबीर जल
णआंणी लाकडी ऊ वी कूं पल में हि अबतो असी है बणी
नां तूं बडी न बेलि १ कबीर आगे आगें हूं बलै पीछै हरीया होइ
बलि हारी न स बेलि की जड़ कां ट्यां फल होइ २ कबीर जे कांटूं
तो डहडही सींचूं तो कुमलाइ यस गुणवंती बेलि का कछू गु
ण कह्या न जाइ ३ कबीर आंगणि बेलि अकास फल अण
ब्याई का दूध सुसा सींग की धुणहडी रमें बांझ का पूत ॥ ४ ॥ बे
हद कौ अंग ॥ कबीर हद छाडी बेहद गया अवरण कीया मि
लाण दास कबीरा मिलि रह्या सो कहीए न हकांम १ कबीर बेह
द बिचारी हद तजो हद तजि मेरौ आस सबै अलिंगन में टिक
रि कै निरंतरि बास २ कबीर निरंतरि बासी नूम तासु निथल
तें न्यारा पूरब की गंगा पछिम बौरा नों येषे जोति जारा ३ क
बीर बेहद अगाध रांम है सब हद के जीव जे नर राते हद सूं
ते कदे न पावें पीव ४ कबीर हद में राम न पाइए बेहद में नर पू

तिआचेधातजिप्रकृतिनजिच्रनगो॥बिंदा॥उइकूपतजो
ग्रनवासारेजीवरामनामअन्यासांजागजीवनजैसेंलह
रितरंगा॥बिनसुषकूंन्हूलसिबकुसंगा॥लागतिकोटीनजी
वनकछुनांदीनंपतिपरसेबकुरिसमांदी॥दोहा॥नगति
हीनअसजीवनंजन्ममरनबकुकाल॥आआंमअनेकक
रसिजीहरा॥रामबिनाकोईनकरेप्रतिपाल॥पसोईनपाय
कपियकुउपजाई॥सबपरहमबिबेसगाई॥मायामोह
जेरेजगआगी॥तासेंजरसिकवनरसिलागी॥त्राहित्राहि
करिहरीपुकारा॥साधसंगमिलिकरकुबिचारा॥रेजीवन
हीबिसआंमांसबउपपेंडनरोमकोनांमा॥रामनामसंसारमें
सारा॥रामनामनौतारनहारा॥दोहा॥सुमृतबेदसबेसुने
नहीआवेकृतकाज॥नहीजैसेंकुंडिलबनितमुषमुपसो
नतबिनराज॥द्वाअबगहिरामनामअबिनासी॥हरितजि
जिनकतकुकेजासी॥जहांजायतहांनयोपतंगा॥अबजि
नजरसिसमजिबिषसंगा॥चोपारांमनांममनरीनांनेगी
कीटनिनिनहीकीनो॥नवसागरअतिवारनपारा॥तति
रिबेकाकूलकुबिचारा॥मननावेअतितनहरिबिकारा॥न
हीगमसूझेवारनपारा॥दोहा॥नौसागरअथाहजलता
मेंबोहिथरामअधारकहेकबीरहमहरिसरणितबगो
परषुरबिस्तार॥७॥इतीसपतपदीरांमणीसंपूर्ण॥२॥अ
थबडीअष्टपदीरमैणी॥लिख्यते॥रागगूडी॥पेकबिनानी
रच्याबिनांनेसबेअथानवोआपिजांनेसतरजकथेंकीन
माया॥च्यारिषांनिबिस्तारउपाया॥पंचतत्तलेकीन्हबंध
नं॥पापपुनिमांनअनिमांनअहंकारकीन्हेमायामोह
संपतिबिपतिदीन्हीसबकोहानलेरोपीचअउरनउर
वेसा॥गुणीनगुणीधननीधनवेसा॥रूपप्रियासअनहित
हितकीन्हा॥हितचितमोरतोरकरिलीन्हा॥पेचस्वादले
कीन्हांबंधूबंधेकरमजोआदिअबंधू॥अवरजीवजंतजे
आंहीसंकटसोचबियापेतांही॥निंद्याअस्तुतिमांनिअ
निमांनां॥यहरूवेजीवहत्यागियांनां॥बकुबिधिकरिसं
सारनुलावा॥रूवेदोजिगसाचतुकावा॥दोहा॥मायामोह
धनजोबनांयदिबंधेसबलोइ॥रूवेरूवबियापीयाक
बीरअलपनलपईकोइ॥१॥रूवनिरूवसाक्करिजानंद
वनमेसबसाचरनुकोनां

२

चोरासीकादेव लहेमुक्ति जे जांनौं नेबांधा न्नगतातिरणामतै
संसारीतिरणतत्ततेरने क्रुबिचारी॥प्रीतिजानिरांमजे कहै दा
सनांमसो जगतारलहै॥७॥पंडितच्यारिबेदगुणगावा आदिअं
तिकरिपूतकहावा उतपतिपरलोकहो बिचारी॥संसाघाते
सबै निवारी॥८॥अरधकउरधकऐसन्यासी तैसबलागिरहै अ
बिनासी॥अजरीवरकूं दिढकरिगहै सो सन्यासी उनमनिरहै
॥९॥जिहिंथरचालरचीब्रह्मंडा॥प्रिथमीमाहिंकरीनवषंडा अ
बगतिपुरसकीगतिलषीनजाइ॥दासकबीरअगहरांमरहै
ल्योलाइ॥१०॥२॥सपतपदीरमैणी॥राग सूहो॥कहन
सुननकूं जिहिंजगकीन्हां जगन्नुलांन सो किनहुं न चीन्हां
सतरजतम थैंकीनी माया आपण मांहैं आप छिपाया तेतो
आहिअनंदसरूपा गुनपलवबिस्तारअनूपा साषातत
थैंकुसमगियांनां फलसो आआरांमकानांमां॥दोहा॥सदा अ
चेतिचेतिजीवपंषी हरितरवरकरिबास झूठेजगजिनन्नूल
सिजाय रेकहनसुननकीआस॥२॥सूकब्रिषयहुजगगपा
यासमझिनपरैबिषमतेरीमाया॥साषातीनिपत्रजगच्यारी
फलदोइपापपुनिअधिकारी॥स्वादअनेककथानहीजा
हीकीयाचित्रसोयनमैंनांही॥दोहा॥तेतो आहिनिनारनिरंज
नांआदिअनादिनहीआंन॥कहनसुननकूंकीन्हजुगआ
पैआपन्नुलांन॥३॥जिननटवेनठमारीसाजी॥जोषेलैसोदी
सैबाजीसोबपराथैंजोगतिजोंवी सिवबिरंचिनारदनहीदी
ठी॥आदिअंतिजेलीनभयेहै सहजैंमांनिसंतोषरहैहैं॥सह
जैंरांमनांमल्योलाइ॥रांमनांमकहिभगतिदिढाइ॥रांमनांम
जाकामनमांनां॥तिनतौनिजसरूपपहिचांनां॥दोहा॥निज
सरूपनिरंजनां॥निराकारअपरंपारअपाररांमनांमल्योला
इरसिजीहरे जिनिन्नूलैविस्तार॥४॥करिबिस्तारजगधंधेलाया
अंधकारतैंपुरषनपाया॥जिहिंजैसीमनसातिहितैसान्नावा
ताकूंतैसाकीन्हउपावा॥तेतोमायामोहन्नुलानां॥षसमरांम
सोकिनहुनजांनां॥जिंजांन्यातेनृमलअंगा॥नहीजांन्यातेन
रेन्नुयंगा॥तामुषिबिषआवेबिषजाइ॥तेबिषहीबिषमेंरहै॥
समाइ॥मातानजगतन्नूतसुधिनांही॥न्रमिन्नूलेनरआवैजा
जांनिबूझिचेतैनहीअंधाकरमजबरकरमैकेफंधा॥दोहा॥
रमकाबांध्याजीयरा॥अहनिसआवैजाइ॥मनिषादेहीपाइ
करिहरिबिसरैतौफिरिपीछेपछिताइ॥५॥तौ करिआदिचे

नआवे जे तुम दरवो सो पूरि जन पा[illegible] सुन्दोर चरन कंवलम
नराता गुन न गुन के तुम निज दाता । ज कुवा प्रगट व जा वइ
…मा । जिस अनन्तेक थी या तिन ऐसा ॥ बाजे जेन नाद धुनि द
…) जेव जावे सो औरे को ध्व बाजी ना चे को तिगदे प ॥ जोन चावे
सो किन कुन पेषा ॥ दोहा ॥ आप आप थें जानी ए देपर नां हीस
…कवी स सुपने केरधन ज्यूं जागत हाथि न हो इ ॥ ४ ॥ जिनिय
कु सुपनो फुर करि जांना ॥ औरस वे दुष या दिन आंनां ॥ पांन हीन
चे तेन ही सूता मैं जागया ॥ विसहर न्हे न्हूता पारधी बांन रहे सरसं
धे ॥ विषम बांन मारे विष बांधे ॥ काल अहेरी सेज सकारा ॥ सावज
संसा सकल संसारा ॥ दावानल अति जोरे विकारा ॥ माया मोह रो वि
ले जारा ॥ पवन सहाइ लोन अति जइया ॥ जम चर चा चहूं दि
स फिरि गइया ॥ जम के चर चहुं दिस फिरि लागे ॥ हंस पंषेरू अ
ब कहां जाइ बो ॥ केस गहै कर निस दिन रहेई ॥ जब धम अैचे तब
अचहूंई ॥ कहिन पास कस्तू चरलेन न पाई ॥ जम वा रिसी के सब
जाइ ॥ सोई आस सुनि रंमन गावे मृग नि छांजू वी दिन धावे ॥ मृ
तकाल किन कुन ही देषा ॥ दुष कूं सुष करि सब ही लेषा ॥ सुष का
मूलन चीन्हि स अनागे ॥ चीन्हे बिनां रहे दुष लागे ॥ नीब कीट
रस नीब पियारा ॥ यूं विष कूं अंमृत कहै संसारा ॥ विष अमृत ए
कै करि सांनां ॥ जिन चीन्हां तिन ही सुष मांनां ॥ अष्टित राज दि
न दिन दिसि राषी ॥ इम तप रही कि रविष पाई ॥ जांनि अजांनि जि
न्है विष पावा ॥ परे लहर पुकारै धावा ॥ विष के षाए का गुन होई ॥ जा
वेदनि जांनें पर सोई ॥ मुरछि मुरछि जीव जरि है आसा ॥ कोंजी अ
लप बकु षीर विनासा ॥ तिऊ सुष कारनि दुष अस मेरु ॥ चीय सील
षकीन्हां फेरु ॥ अलप सुष दुष आहि अनंता ॥ मन मैंगल न्हू लो मैं
मंता ॥ दीपक जोति रहै यक संगा ॥ नैंन नेह मांनूं परे पतंगा ॥ सुष वि
श्रांम किन कुन ही पावा ॥ परहरि सांच झूठ दिस धावा ॥ लालचि
लागे जन्म सिरावा ॥ अैति काल दिन आयतु रावा ॥ जब जग देय
कु निज तन सोई ॥ तब लग चेतिन देषै कोई ॥ जब निज चलि क
रि कीया पयानां ॥ लयो अकाज तब फिरि पछितांनां ॥ दोहा ॥ म
गि षो दिन दिन ऐसी ॥ अब मोहि कछून सुहाइ ॥ अनेक जतन
न करि टारीए कवीय करम पासि न ही जाइ ॥ ५ ॥ रे मन बुधिवंत
डारा ॥ आप ही आपै कर कुविचारा ॥ कंवुन सयांन कवन बौ
राध्व ॥ कि हि सुष पाइ ॥ कि हि दुष जाइ ॥ कंवन दरप को विसमें जा
नां ॥ को अनहित को हित करि मांनां ॥ कंवन सार को

आगमघटकीन्हा।घटरसछाटि
जलरहैननेरा।घटद्वारसनआगमघटसामनबखांनो।बिद्याअनंतक
मरसलीन्हा।च्यारिबेदघटसामनबखांनो।बिद्याअनंतक
कोजांनोतपतीर्थब्रतकीन्हीपूजा।धरमनेमदानपुनिदूजा
औरअगमकान्हेद्यौहारा।नहीगमसूझैवारनपारा।लोलाक
कहिलेषफिरावा।वोटबहोतकचूकहूतनआवा।गहनबि
हूकथूनहीसूझै।आपणगोपनयो।आगमबूझै।नूतिपसो
जीवअथिकडराई।रजनीअंधकूपकीआई।मायामोहजने
नरपूरी।दाहुरदामनिपवनांपूरी।तरफेबरषेअषंडधारा।रैनि
जामनीनयाअथियारा।तिहिबिवोगतजिनएअनाथा।परे
निऊंजनपावैपंथा।बेदनिआहिकहूकोमांनै।जोनिबूझि
मैनयाअयांनै।नटबहुरूपषेलेसबजांनै।कलाकेरगुनठा
ऊरमांनो।वोषेलेसबहीघटमांही।दूसरकेषेलेकछूनांही।जा
केगुणसोईपेजांनै।औरकोजांनैपारअयांनै।नलेरेपोचऔस
रनरलआवा।करिमनमांनपूरिजनपावा।दानपुनिहमदहूनि
रासा।कबहुगरहूनटारनकासा।फिरतफिरतसबचरनतुरां
नैं।हरिचिरतअगमकथेकोजांनै।गणगंधपमुनिअंतनपावा
रहोअलषजगधंधेलावा।यहिबाजीसिवबिरंचिभुलांना।
औरबपराकोकिंचतजांनां।तातेताहिहमकहूपुकारा।राषि
राषिसोईयहिबारा।कोटिब्रह्मंडगहिदीनफिराई।फलकर
कीटजन्मबहुताई।ईस्वरजोगघराजबलीन्हा।टर्योध्यांनत
पषंडनकीन्हा।सिधसाधिकउनथेंकहूकोई।मनचितअस्थि
रकहुकैसेंहोई।लीलाअगमकथेकोपारा।बसोसमीपकिर
हौनिनारा।दोहा।षगषोजपीछेनहीं।तूंततअपरंपार।बिनप
रचैकाजांनी।कबीरसबऊवअहंकार।५।अलषनिरंजन
लषैनकोई।निरभैनिराकारहैसोई।सुनिअस्थूलरूपनहीरे
षा।दिष्टिअदिष्टिछिप्योनहींपेषा।बरनअबरनकथ्योनहीं
जाई।सकलअतीतघटिरह्योसमाई।आदिअंतितातेहिनक
मथे।कथ्योनजाईआहिअकथे।अपरंपारउपजेनहीबि
नसै।जुगतिनजांनीएकथीएकैसे।दोहा।जसकथीएतस
तनहीजसहैतैसासोइ।कहतसुनतसुषऊपजेकबीर
परमारथहोइ।१।जांनसिनहीकैसेंकथसिअयांनां।व
गुणतुमसरगुणजांनां।मतिकरिहीनकवनगुनआंव
लचिलागिआसिरेरहोहीगुनअरुगयांनदोऊंहमत
कैसीकछबुधिबिचारतसकीन्हा।हमममतिहीनक

यकुसेसारसुपनकरिलेया।नईलुधिकल्लूपांननिद्रारा।आप
आपदीया बिचारा।आपणमैं जेरह्या समाईनेंडे हरिकपेपो
नदीजाईताकेचीन्हेपरचोपावा।नईसमझितासूंत्योंत्यावा
दोह्या।त्यावन्नगसिद्दिसबोद्दियापसतगुरुदेव।णादाजअनपन
दिकत्तवज्ञांनी।एकबीराजबणोपदपुरबिस्तार।।६।।स्तीव
डीअपदारमणीसंपूर्ण।।।३।।अथडपदीरमणीलिष्यते
रागसूहो।।जयारह्याजबिसरजरजा।गा।गहगहीनप्रेमब
कुत्ना।गा।नयोअनेयजीवनयें.रल्हासा।मिलेरांममनपूग
आसा।मासअसारविधरनिजयवा।जलतजजलतजलतअ
ट्रेकुफावा।स्तिसुनाइजमीसबजागी।भ्रेमतधारहोइफर
त्ना।गी।जमीमांहिनतीहरियाई।बिरहनिपीवमिलेंजाईम
निकांमनिकेनएक्षादा।कारनकौनबिसारीना।वेरनत
म्हारामरनजयामेरा।चौरासीलषकीन्हांफेरा।सेवगसुतजे
करेअन्याईगुनऔगुनसबतुमदीसमाई।अपनेऔगन
करूंनपरायदिअनागजेतुमनसंनारादरवोनदीकांइ
तुमनाहातुमबिछरेमैंबकुडुपचाहा।मेघनबरषेजांदि
उदासा।तननसारंगसागरआसा।जलदूननस्योतादिनदी
चावे।केमरिजायकेउहेपिया।वो।मिलकुरांमप्रुरकुआसा
तुमबिछुस्यांमेंसकलनिरासा।मैंरनिरासीजबनिधिपाईरां
मनांमजीवजागपाजाईानरतनीकेज्यूंनीरअधारापिनबि
बस्यांतेंरविपरजारा।रांमबिनोजीवबदोतडपपावेमन
पतंगजगअधिकजरावे।मायमासरुतिकेवसंतसारान
योबसंतजबबागसंजारा।अपनेरंगसबकोईराता।मधुकर
बासलेहमैंमता।बनिकोकिलानादगहगहांना।रुतिबसं
तसबकेमनिमांना।बिरहनिरजनीजुगप्रतिनईया।बि
नपीवमिलेकलपदरगईया।आत्मांचेतिसमझिजीवआ
ईबाजोरूवरांमनिधिपाई।मयादयाजनिसबाजहिबा
जासंदजेरांमनांममनराजा।दोहा।जरतजरतजरतपाईया
सुषसागरकरमूलगुरप्रसादिकबीरकदिा।जागीसंसेसल
।रांमनांमनिजपाया।सारात्रबथाफूबमकलसंसार
हरिनतंगमेंजातिपतंगा।जेबककेहरिकेज्यूंसंगा।किंच
नकेसुपनेंनिधिपाईनहीसोनाकूंधरूंलुकाई.हदेनस
माइजानीएनहीपारा।लागोलोजनऔरहकारासुमिरत
कूंअपनेनंनमांनांकिंचिलजोगरांममैं

रा।कोअनहितकोआदि पियारा।कवनसाचकवनहैफुरा।
कवनकरुकोलागैमीठा।किहिजरीऐकिहिकरीऐअनंदा।क
वनमुक्तिकोगलमैफंदा।दोहा।रेमनमोहि ब्यौरकहि हूंस
लिपूछूंतोहि।संसेसूलसबैनहैकबीरसमझाइकहिमोहि।
८।सुनिहंसामैकहूंबिचारी।त्रिजुगजोनिसबैअधियारीम
निषाजन्मउत्तमजौपावा।जानौरांमतौसयांनकहावा।नहीचे
तैतौजन्मगवावा।परयौबिहांनतबफिरिपछितांनै।सुषक
रसूलनगतिजौजांनै।औरसबैदुषयादिनआंनै।अमृतके
वलरांमपियारा।औरसबैबिषकेभंडारा।हरषआदिजौरम
ऐरांमा।औरसबैबिसमांकेकांमा।सारआदिसंगतिनबौना
औरसबैअसारकरिजांनां।अनहितआदिसकलसंसारा।
हितकरिजांनीऐरांमपियारा।साचसोईजोथिररहाई।उत
पजैबिनसैफुरहैजाई।मीठासोजोसहजैपावा।अतिक
लेससैतैकरुककहावा।नांजरीऐनांकरीऐमैंमेरा।तहांअन
दजहांरांमनिहोरा।मुक्तिसोईजुआपापरजांनै।सोपदकहा
जुभरमजुलानै।दोहा।प्रांननाथजगजीवना।दुरलभरांम
पियार।सुतसरीरधनग्रहकबीरजीयरेतरवरपंषबसि
यार।१।रेजीवअपनांदुषनसंभारा।जिहिदुषब्यापौसंसा
रा।मायामोहभूलेसबलोई।किंचितलाभमांनिकदीयो
षोई।मैंमेरीकरिबहुतबिगूता।जननीउदरजन्मकासूता
बहुतैरूपभेषबहुकीनां।जुरामरनक्रोधतनषीनां।उप
जैबिनसैजोनिफिराई।सुषकरमूलनपावैचाई।दुषसंता
पकलेसबहुपावै।सोनमिलेजौजरतबुझावै।जिहिहित
जीवराषिहैभाई।सोअनहितहैजाइबिलाई।मोरतोरक
रिजरेअपारा।मृगत्रिष्णाझूठीसंसारा।मायामोहझूठर
हयौलागी।कानयोयहांकोकेहैआगी।कछुककछूचेतिदेषि
जीवअबहीमनिषाजन्मनपावैकबही।सारआदिजोसंग
होपीयारा।जबचेतैतबहीनजियारा।त्रिभुवनजोनिजेआदि
अचेतामनिषाजन्मभयोचितचेता।आतमांमुरछिमुरछि
जरिजाई।पछलेदुषकहतांनसिराई।सोईत्रासजेजांनैहं
सा।तौअजहूंजीवकरैसंतोसा।भौसागरअतिवारनपारा।
तातिरिबेकाकरहुबिचारा।जाजलकीआदिअंतिनहीं
जांनीऐ।ताकोडरकाहेनमांनीऐ।कोबोहिथकोषेवटआही।
जिहितिरीऐसोलीजैचाही।समझिबिचारिजीवजबदेषा

मुरारी।ग्यांनदृष्टिनिजपेषैजोईयनकाचरितजांणैसोई
ज्यूंरजनीरजदेषतभ्रंधियारीदुसैत्यूंगमबिनजियारी
तारेभ्रगिनतगुनदिसभ्रपारा।तनकछुनसीसोतभ्रधारा।रू
वदेषिजीवभ्रधिकडराई।बिनांत्यूंगमडसीजनीयाईज्यू
वैरूठजागिरदीभ्रासा।जेतमासजीमैंजरंगपियासा।एक
त्रिषांवंतदहदिसफिरिभ्रावै।जूवैलागानीरनपावै।यक
त्रिषावंतभ्ररूजाजेराईरूवीभ्रासलागिमरिजाईनीर
नीरजांनिमरस्त्रीयाक्रमकेवांधेलालचभ्रीयाकेंदे
मोरकछुभ्रादिनवादीनमकरमदोनैमतिवाईनमक
मदोकंमसपरस्त्रीया।जूवैनांवसाचलेधरीयारजनीगत
नईरविप्रकासा।नरमकरमधूंकेरविनासारविप्रकास
तारेगुनधीनो।भ्राचारजौदारसवनरोमलीनां।विषके
दाधेविषनदीनावैंजरतजरतनुषसागरपावै।भ्रनिल
रूवदिनध्यावैभ्रासा।भ्रंधडुगांधसदेडुषत्रासा।यकत्रिष
वंतरूसैरविलवाईदहदिसज्वालाचक्रदिसजराई।
करिसनमुषजवग्यानविचारीसनमुषिपरीयाभ्रगनि
मंजारी।गहिंगूविलजवभ्रागेभ्रावा।विलतनमांनदि
बवाइकपावा।सीतलसरीरसनरसासमाई।नसांघाडि
कतदाफेजाई।यूंमनवारुनिनयादमारा।दाधादुषक
लेससंसारा।जरतफिरैचौरासीलेषा।सुषकरमूलकिन
हूंनदीदेषा।जाकेछाडेनरऐभ्रनाथा।त्रूलिपरेनदीप
रुपंथा।भ्रहोभ्रनिभ्रंतरिनियरेहरी।विनचीन्ह्यांकयं
पाईऐमूरी।जाविनदहसवकृतदुषपावा।जरतजरत
गुररामसिलावा।मिल्यारामरह्यासहजसमाई।पिनवि
छुर्‍यांजीवनरफेजाई।जामिलीयातैंकीजैवधाई।परमां
नंदरैनिदिनगाई।सषीसहेलीकरिहैंभ्रनंद।हितकरि
भेटीऐप्रमानंद।चलीसषीजकुवांनिजरांमा।न्नऐउछा
हछाडेसवकांमा।जांनकमोरेसरसवसंतांमेंवलितोर
जांकुनगसां।नगतिद्देतिगावैलैलीनां।त्र्यूंवननादि
ज्योकिलाकीनां।वाजेसेषसवदधुनिवीनां।तनमनचि
तहरिगोविंदलीनां।चलभ्रचलपायनपंगुरनी।मधु
करज्यूंलेदभ्रापरनी।सावजसीदरदेसवमाचीचंदस
रहरघपांचीगएगंध्रपमुनिजोवैदेवा।भ्रारतिकरिहि
वैसेवा।वासिगइंद्रब्रस्रांकरैंभ्रासा।

वं

कहीए अ साधा। किं चित्त जोग रांम मेला धा। कबिज होइ अमृत
फल लै आप कूं च्यालत मनि पूरी अखा। नियरै थें दूरि दूरि थें
नियरे रांम चिरत न जांनें यही पुरा सील थें अगनि फुनि होइ
रवि थें ससि ससि थें रवि सोइ। सीत थें अगनि पर जरइ। जल थें
निधि निधि थें थल करइ। बज्र थें तिन बिन नीत रि होइ। ति
न थें कुलस करै पुनि सोइ। गिर ह्वै छार छार गिर होइ। अब
गति गति जांनैं नहीं कोइ। जिहि तुर मति होरयो संसारा। पैर अ
सुझि वार नहीं पारा। बिषयं मृत ऐकै करि लीन्हां। जिन चीन्ह्या
सुष तिन कूं दुष दीन्हां। सुष दुष जिन चीन्ह्यां नहीं जांनां। ग्रासे
काल सोग रुति मांनां। होइ पतंग दीपक मैं परई। झूठै स्वादि
ला गि जीव जर मरई। कर गहि दीपक परहूं कूप। ऐसा कुय चि
र जहमदे धिअन्न पा। ग्यांन हीन बोखी मति बाधा। मुषां सा
ध करत तू ति असाधा। हरम समि कहू साधन होइ। गुन समां
नि पूजी ऐ सिध सोइ। नेष कहा जे बुधि बिसु धा। बिन परचै
जग बूड निबूडा। जद पिर बि कहीए सुर आ हौ। झूठे रबि ली
न्हां सु बिचारी। कब कु कुता सन होइ जरा वै। कब कु अषंड
धार बरषावै। कब कु सीत काल करि राषै। तिहुं प्रकार बहु
त दुष देषै। ताकूं सेहु मूंड क्यूं सुष पावै। दौरे लान कूं मूल
ग मावै। अछित राज दिनैं दिन होइ। दिवस सिराय जन्म ग
ऐ षोइ। मृत काल किन कुन ही देषा। माया मोह धन अग म
अले षा। झूठे झूठ रह्यो उरझाई। साच अलष जग लषी न
जाई। साचे नियरै झूठै दूरी। बिष कूं कहै सजीवनि मूरी। क
थ्यो न जाइ नियरै अरु दूरी। सकल अतीत रह्यो घट पूरी।
जहां देषूं तहां रांम समांनां। तुम बिन ठौर और नहीं आंनां। ज
द पिर ह्या सकल घट पूरी। भाव बिनां अभि अंतरि दूरी। लो
न पाय दोनें जै रे निवासा। झूठे झूठ रहा गिर हो आसा। ज कुंवा कै
ज प्रगट ब ज्वाला सुष संतोष तब होइ मयावा। तिल तिल बि ज स कीन्हे
प्रकासा। पावक रहै जैसे काष्ट निवासा। बिनां जुगति कैसें प्र
गटि या जाइ। काष्ट पावक रह्या समाइ। कष्ट के कष्ट अगनि परजरई।
जारै दार अगनि समि करई। ज्यूं रांम कहै ते रांम हि होई। दुष क
लेस घालै सब षोई। जन्म के कलि बिष जाहि बिलाई। करम
भरम का कछु न बसाई। भरम करम दोनें बरसे लो इयन का
चरित न जांनें कोइ। यन दोनें संसार भुलावा। यन के लागे ज
नम गमावा। यन कौ मरम पै सोइ। बिचारी सदा अनंद रहे लीन

बकरै अधिकाई स्वार्थि अर्थि बंधे गोई जा को इध अरु
करिपी जै ता मा ता कूं बंध कूं को जै रन कुरै थके तुद्विपीया
षी स्तताका अट्ट मुबन्न पैसरी स्पदो हो बिअकजी अकल्लि
न ज्ञान ही ल्लूले फिरै ऐ जो हु दिस्न दरी यादी दार बिना निस्ति
कहां तैं हो इ धा पंडित ल्लू जे पढि गुनि वेदा आपन पावें नां
नां न्ने दा सेध्या सरपन अरू षट करमा ला गिरहे यन के आसर
मां गायत्री जुग च्यारि पदा शुं पूछो ज्ञा रमुक्ति किन पाई स
ब मे रां मरहे ल्यो मी चा यन सें और कहे को नी चा अरि गुना
ग्रबकरै अधिकाई अधिके ग्रबन होइ न ताई ज्ञा को गाज
रग्रब परहारी सो कछू सक ही ऐ ग्रबसहारी दो सा ऊज अनि
मां न बिचार तजि पो जो पद नृबान अंकूर बीज न सा इ गा
तब मिलै बदेही थांन पापना करै षनी याथर मो तिनकूं हो
इसवाया करमो जीव हिंसा रिजीव अति पारै देषत जन्म
आपनों हारै पंच सुजाव हुमैरै काया सबत जि करम न जे
रां मराया पनी सो जक टबैसरू ऊ पांचूं मेटि एक कूं बूझे
जो आ वध गुर ग्यान लषावा गहि करवा जधू पधरि धावा हे
ता कै रे निसां नों घा का ऊजि परेल हां मन मथरा ऊ दोहा
मन मथ मैरे न जीव ई जीव णा मरणा हो इ मुनि सनेही रांम
बिनागयो अपणी पोषो शद्द अस्तूल षट दरशना शिपाप
डने घरहेत पराई जैन बोध अरु साकत सैंना च्यारि वाकि
चतुरंग बिहूनां जैन जीव की सुधिन जांनै पासी ली हिदे कु
रै औनें दो नां मरवा चंक्रूत ना ता मैं जीव बसे कर तूना प
अरू पृथमी की रोमन पाथें देषत जीव को टिसे घायै मनम
थ करम करै अस रारता कजपत बिंदध सेति हिवा रात्ता
की हत्या के अदन्तताप टइ छा मै जैन बिगूता हो हां ग्यां
न अमर पद बा हिरा लीडा ही तें इभा जि नि जांन्यां ति नि नि
कटि हेरां मर स्यासकल नर पूरि ऐ आपन करता नए ऊ
ता ला बक्कु बिधि सिष्टि रची दर स्ता ला बिधनां ऊंच की ऐ
हे यां नां प्रति बिंब चा मां द्वि सं मां नां बक्कुत जतन करि अ
न कबीनां सों जमि ला इ जी व तहां गनां इ न व अगनि दो
न्हो परजारी तामैं आप करै प्रतिपारी जीव रथं जब बा
हरि आवा सिव सक्ती हे नां व धरावा भूले नर मि परै जि
नि को हूं हूं हृ तु क रूब कूलै दो दूं घर का सुत जौ हो -
यां नां ता के संगि कबू जाइ स यां नां सा ची

रांमदासा॥जगतिदेतिरांमगुनगावै॥सुरनरमुनिउजन
पदपावै॥पूनिमबिमलससिमासबसंतादरसनजोति
मिलैजगवेता॥चंदनबिलनीबिरहनिक्षरायूंपूंजी
ऐप्रानपतिरांमपियारा॥जावजगतिपूजाअरूपाती
आसमांरांममिलैबकुजाती॥रांमरांमरांमरूचिमांनैं॥
सदाअनंदरांमल्यौजांनैं॥पायासुषसागरकरमूला॥
सोसुषनहीकहूंसमतूला॥दोहा॥सुषसमाधिसुषनया
दमौरैमिल्यानबेगरहोइ॥जिहिलाधीसोजांनिहैरांम
कबीरऔरनजांनैंकोइ॥१॥इतीउपदीसग्रंथ[illegible]
[illegible]॥अथ[illegible]॥केक
कतीर्थब्रतपटानां॥केकऊकेकऊकेवलरांमनिजजांनां॥अज
राअमरऐकअस्थांनां॥ताकामरमकाहूबिरलैजांनां॥अबर
नजोतिसकलउजियारा॥दिष्टिसमांनदासनिस्तारा॥जेनहीउप
जैधरनिसरीरा॥ताकेपंथनसींच्यानीरा॥जांनहीलागैसूरजके
बांनां॥सोमोहिआंनिदेहूकोदांनां॥जबनहीहोतेपवननपांनी
जबनहीहोतेदिष्टिउपांनी॥जबनहीहोतेपिंडनबासा॥जबन
हीहोतेधरनिअकासा॥जबनहीहोतेगरभनमूला॥जबनही
होतेकलीनफूला॥जबनहीहोतेसबदनस्वादा॥जबनहीहो
तेबिद्यानबादा॥जबनहीहोतेगुरूनचेला॥गमअगमपैपं
थअकेला॥दोहा॥अबगतिकीगतिकहूं॥जसकरगांवनगांव
गुनबिहूंनकापेषीयेकाकहिधरीयेनांव॥२॥आदमआदिसुधि
नहीपाई॥मांमांहवाकहाथीआई॥जबनहीहोतेरांमषुदाई
साषामूलआदिनहीजाई॥जबनहीहोतेतुरकनहींदू॥माका
उदपिताकाबिंदू॥जबनहीहोतेगायकसाई॥तबबिसमला
किनफुरमाई॥भूलेफिरैंदीनह्वैधांवै॥तासाहिबकापंथनपां
वै॥दोहा॥संजोगेकरिगुणधर्‍या॥बिजोगेंगुणजाइ॥जिभ्या
स्वार्थआपणौं॥कीजैबहुतउपाइ॥३॥जिनिकलमांकलिमां
हिपढावा॥कुदरतिषोजतिनहूंनहीपावा॥करमकरीमजेऐ
करतूता॥बेदकुरांनजाएदोनैरीता॥कृत्मसोजोगरभिअवत
रीया॥कृत्मसोजनांवजिसधरीया॥कृत्मसुनतिऔरजनेक
हीइतुरकनजांनैंनेक॥मनमुसलेकीसुधिनजांनैं॥मतिभूले
हैदीनबषांनैं॥दोहा॥पांनीपवनसंजोयकैं॥कायाहैउतपाति
सुनिमेंसबदसमाइगा॥तबकासनिकहीएजाति॥४॥तुरकी
धर्मबहुतहमषोजा॥बहुबजगारकरैबहुरोजा॥गाफिलग्र

॥श्रीचित्तश्रवणतिदृनिधान, [illegible]
जोकहेसबंधेनिनाग [illegible]
करोकुनवंदनेप्रत [illegible]
गुनवानाग्रैवान [illegible]
नदीबाठ [illegible]

[illegible]

सू भी फारकहादेवानात्तासू।गोपनिनिद्दे।ऐके हूभी कासू
कहीऐ बांनएा सूदा दोहा जिनियो चित्रवनाई या सो सा
चा सूत्रधार कहै कबीर ते जन न्यारे जे चित्रवत त्ते हैं बिच
रा ॥ ७ ॥ इस्ती ल ङ्की अष्ट पदी रमैणी मे पूरा ॥ ५ ॥ अष्ट
पदी रमैणी लिष्यते ॥ पहली मन मैं सुमिरूं सो ईसा
समतुलिंन्न दीको ई को ईन पूजै वासूं पांनी आदि अतिरो
किन कुन ज्ञांनी बुधि मैं कछून आवे अंनी बीज सहैत स
जाइन ज्ञांनी रूप अरूप न आवे बोला हरुगरु कछू जा
इन तोला न्यून विषा धूप नहीं छांहीं सुष दुष रहै ते
सब मांही दोहा अबगति अपरंपार ब्रह्म ग्यांन रूप सब
ठांम बहु बिचार करि देषीया कोई न सारिषा रांम
१ जो त्रिभुवन पति वोहै असा ताका रूप कहो धूं केसा सेवग
जन सेवा के ताई बहुत नांति करि सेवि गुसांई के सी सेवा
चाहै रांम ईजा सेवा बिन रह्या न जाई सेव करंता जो सुष
जाई सो दुष सुष करि गिनै सवाई सेव करंता जो सुष पावा
तिन सुष दुष दोनं बिसरावा दोहा सेवग सेव भुलांनीयां प
थ कुपंथ न ज्ञांन सेवग सो सेवा करे कबीर कहि जिहि सा
हिब तत्त मांन २ जिहि जग की तस की तस के हा आपे आ
प आपिहै ऐहा कोई न लषई वाकाभेद हा भेव हो इत्तो पावे
के का बांवेन दाहिणो आगे पीछु अरधन उरधन रूप नहीं का
या मायन बाप आवत नहीं जावा नांव कुजन्यांन कोवहिज
वा वो है से सा वो सी ज्ञांनै वो ही आदि आहि न ही आनै दो ह
नैं नां बैन अगोचरी अवनां करनी पार बोलन के सुष कार
नैं कबीर कहीऐ सिरजनहार ३ सिरजनहार नांव धूं तेरा
नो सागर तिरिबे कूं भेरा जे यहु भेरा रांम न करता तो आपे आ
प आवटि जग मरता रांम गुसांई महर जु कीनी भेरा साजि सं
त कूं दीनी दोहा दुष षंडन मह मंडनां भगति मुक्ति बिश्रांम
बिधि करि भेरा साजीया कबीर धरया रांम का नांम ४ जिनि यह
कू भेरा दिढ करि गहीया गए पारि तिन्हूं सुष लहीया दुमनां
हे जिन चित डूलावा कर छिटके तैं थाह न पावा इक डूबे
अरु रहे न रवारा ते जग जेर न राषण हारा राषन की कछू जु
गति न कीन्ही राषन हार न पाया चीन्ही जिन चीन्हां ते न्हू मल
अंगा जे अचीन्ह ते न एपतंगा दोहा रांम नांम ल्यौ लाइ करि
चित चेतन है जागि कहै कबीर ते ऊबरे जे रहे रांम ल्यौ ला

नावनगतिकीसेवाकोजोनावनगतिकीसेवामोनेंसत
गुरप्रगटकहेनद्दानो अनन्तेनपजिनमनवद्ययस्प्रकी
मनमननसमाई जबलगनावनगतिनहीक
रिहो सबलगनवसागरकोतिरिहो दोहा नावनगतिबि
सवासबिनाकहेनसंसेसूलाकहेकबीरहरिनगतिबिन
मुक्तिनहीरेमूला॥४॥७॥अथसपतवारमेंणी॥राग
बिलावल॥बारबारहरिकागुणगांऊं गुरगमनेदम
हलकापांऊं टेक आदिसकरेनगति आरंना कायादेव
लमनसाथंना अषंडअहनिससुरतिल्योरना ग्रअनहे
मबदसहजमेंबाहुर सोमवारसमिअमृतझरे चापितबे
गितबेनिमसतेर्वाणीरोक्यां रहेदवारामनमतिवालापी
वणासार२ मंगलवारल्योमांहूंतांपांचलोककीछाडोरी
ताघरछाडे जेबाहरिजाइ तापरिपुरारिसावे राहुरबुरी
धवारकहेबुधिप्रकासाहिरदाकंवलमेंहरिकोवास गुर
गमदोकेएकसमकरे उर्धपंकजमेंसूधाधरे ३ बृसपति
विषीयादेयबहाइ तीनदेवएकेसंगिलाइ तीननदीस
होनिक्रुटीमांहि क्रिसमलधोवेअहनिसन्हांहि ४ सुकर
सुधालेयदिबूतिचरे अहनिसआपआपसूलरे सुरथी
पेचराषीएमबेलोदूजीदृष्टिनपैसेकबे ५ थावरथिरक
रिघटमेसोपाहजोतिदेवटीमेंदेषेजोइ बाहरिनीतभिन्य
प्रकासातहानयासकलकरमकीनास ६ जबलगघटमें
दूजीआंन तबलगमहलनपावेजांन रमतारामसूला
गेरंग कहेकबीरतेनमलअंग ॥७॥७॥ अथबावनीरम
णी॥दोहा॥बावनअधिलोकत्रियसबकछयनहीमां
हि सबधिधिबिरजोहिगो सोअविरयनमेंनाहि तुरक
तरीकतजांनीएहीहबेदपुरांन मनसमझनकेकारनें॥
कछूएकपढीएग्यांन ओंपईजहोबोलतहोअविरआ
वाजहांअबोलतहांमननलगावा बोलअबोलमंझिहै
सोईजोकछूहेतहिलषेनकोई ओंकारआदिमेंजा
नां लिषिकरिमेटैताहिनमांनां ओंकारकरेजसकोई
तसलिषिजसमेटाणांनहोई ककाकंवलकिरणिमदि
पावा अरुससिप्रकाससंपटिनहीआवा अरुजेतहांकु
सुमरसपावा तोअकहिक ... ॥५॥
यहैमोरिमनआवा

कहै कबीर बिचारि करि जिनि कोई षोजै दूरि ध्यान धरो मन
सुधि करि राम रहै नर पूरि ॥२१॥ नाद बिंद रो कषेला आपे
गुरू आपही चेला आपै मंत्र आप मंत्रेला आपै पूजै आप
पुजेला आपै गावै आप बजावै आप नां कीया आप ही पा
वै आपै धूप दीप आरती आपनी आप लगावै जाती ॥ दो हा क
है कबीर बिचारि करि झूठा लोही चांम जो या देही रहत है
सो है रमता रांम ॥२२॥ इति बावन पदी रमैंणी संपूर्ण ॥ छ ॥ अ
थ चौपदी रमैंणी ॥ राग सूहो ॥ ओंकार आदि है मूला
राजा परजा एकहि सूला हम तुम मांहै एकहि लोहू एक
हि प्रांन जीवन है मोहू एकहि बास रहै दस मासा सूतिग
पातिग एकहि आसा एकहि जननी जन्यां संसारा कौंन
ग्यांन तैं न्यारे निनारा दो हा ग्यांन न पायो बावरे धरी अवि
द्या मैंड सतगुर मिल्यां न मुक्ति फल ताते षाई बेंड २ बाल
क कै नगर बारै आवा नगचुगतन कूं पुरष कहावा ग्यांन
न सुमर्‍यो निरगुन सारा बिष तैं बिरचि न कीया बिचारा
जाव जगति सूं हरि न अराधा जन्म मरन की मिटी न साधा
दो हा साधन मिटी जन्म की मरन तुरांनो आइ मन क्रम बच
न न हरि न ज्यो अंकूर बीज नसाइ ॥१॥ तिण चर सुरही
दक जपीया बारे हू धवछ क्षंदाया बछरा चूंषत नप जीन
दया बछ राषो थिबिछोही मया ता का दूध आप दुहि पीया
ग्यांन बिचार कछू नहीं कीया जे कछू लोग निसोई कीया
माला मंत्र बादि ही लीया पीया दूध रूंध्र कै आया मुंई गाइ ल
ब दोष लगाया बाकस लै चमरा कू दीनी तुचा रंगाइ करो
ती कीनी लै र करोती बैसे गा दे षो पांडे कैरंगा तिह ल क
रोती पांणी पीया यहु कछू पांडे अचिरज कीया दो हा अ
चिरज कीया लोक मैं पीया सुहाग ल नीर इंद्री स्वारथ सब
कीया बांध्या भरम जंजीर ॥२॥ एकै पवन एक ही पांणी क
रीरसोई न्यारी जांणी माटी सूं माटी लै पोती लागी कहो क
हां धूं छोती धरती लीप पवत्र कीन्ही छोति न पाइ लीक बि
चि दीन्ही याका हम सूं कहो बिचारा क्यूं न वतिरिहो इह
हि आचारा ए पाषंड जीव के भरमां मांनि अमांनि जीव के करमां
करि आचार जु ब्रह्म संतावा नांव बिनां संतोष न पावा सा
लिगरांम सिला करि पूजा तुलसी तोडि भया नर दूजा ठाकु
र लै पाटै पौढावा भोग लगाइ र आपै षावा साच सील का चौका

लाहा॥४८॥पपा अपारपार न हि पावा परम जोति सूं परचो
आवा। पांचूं इंद्री निग्रह करै। तब पाप पुनि दोऊं न संचरै॥
४९फफा बिन फूलां फल होई। ता फल फंक लहै जो कोई। दूस
नी न परै फंक बिचारै। ता की फंक सबै तन फारै॥५०बबा बंद
हि बंद मिलावा। बंद हि बंद न बिछरन पावा। जे बंदा बंद
गहि रहै। तौ बंदगा होइ सबै बंद लहै॥५१ममा निंदै नेदन हि
पावा। अपने मनां निन्ह रोसो आवा। जो बाद रिसो नीत रिजांनां
न या नेद न्होपति प हि चानां॥५२मंमा मनसूं का ज है। मन मां
न्यां सिधि होइ। मन ही सन सूं कहै कबीर। मन सूं मिल्या न को
इ॥५३ममा मूल गह्यां मन मांनै। मरमी होइ सो मरम हि जांनें। मति
कोई मन सूं मिलता बिरमावै। मगन भयां तें सो सुष पावै॥५४ज
जा सो तन जीवत ही जरावै। जोबन जारि जुगति सो पावै। अस
जरि प्र जरि जरि बरि रहै। तब जाइ जोति उजारा लहै॥५५रा
रस निरस करि जांनें। निरस होइ सरस करि मांनें। ए करस बि
सरै सो रस होई। सो रस रस कलहै जे कोई॥५६लला लहूं तने
दहै। कहूं त को उपगार। बटक बीजै मेरभि रहा। ता का तीन लो
क बिस्तार॥५७ववा वो वा हि जांनीं। ए यहि जांन्यां वो होइ वो अ
र इहुआ जब ही मिल्या। मिलत न जांनै को इ॥५८ससा सो नीकां
कपि सोधै। घट परचे की बात निरोधै। घट परचे उपजे जा वा।
मिले ता हि त्रिवन पति राव॥५९षषा षोजि परे जे कोई। जो
षोजे सो बहुरि न होई। षोजि बूझि जो करै बिचारा। तो भौ
जल तिरत न लागै बारा॥६०ससा सो इसे ज संवारै। सोई सा
इ संदेह निवारै। अलप सुष बिसरै परम सुष पावै। सो अस त्री
सो कंत कहावै॥६१हहा होइ होत न जांनें। जब ही होइ तब
ही मन मांनें। है तौ सही लहै जे कोई। जब यह होइ तब वह
न होई॥६२लला न लाने मन लावें। अनंत न जाइ परम सुष पावै। अ
रु जे तहां प्रेम ल्यौ लावै। तौ अलह लहै लहि चरन समावै॥
६३षषा षपति पिर तिन ही चेतै। षपत षपत गए जुग केते॥
अब जुग जांनि जोरि मन रहै। तो जहां बिछुर्यो सो थिर लहै॥
६४बावन अषिर जोर्या आंनि। एको अषर सक्यां न जांनि॥
सति का सबद कबीर कहै। पूछौ जाइ कहां मन रहै॥१॥ पंडि
त लोकन कौ ब्यौहारा। ग्यांनवंत कूं वत बिचारा। जाके हृदै
जैसी होइ। कहै कबीर लहैगा सोइ॥५२॥ इती बावनी र
मैणी संपूर्ण॥ ०॥ अथ उपदेस मैणी॥

द्दि जोनषिमांकरिरहे। तो हो इनमेव अषेपदलहे। दोगगा
गुरकेबचनपिछांनां। इसरबातनधरी। कोनां। सोईबिदं
गमकत कुनजाई। अगहगहेगह्ये। गगनरहाई। १७। घघाघ
टिघटिनिमसेसोई। घटफूटो घटकब कुनहोई। ताघटमां
हि याठ जो पावा। सुघट स्याडि औघट कत आवा। ८ ननां निरी
षमनेहकरि। निरवालो मनेह। नाहीदेषिन जाजा। परमस
योपरोह। ८। चचा चरित चित्रहै नारी। तजिबिचत्र चितचे
तकु चितकारी। चित्र बिचत्र यहअे। अेयातजि बिचत्रचि
तराषि चितेरा। १०। छछा यहछत्रपति पामा। तिहि छाकिन
रहै छाडि कत आसा। रेमन तूं छिनछिनसमझावा। ताहि छाडि
कत आपबंधावा। ११। जजा जांनें तो उरमति हरी। करिबसिका
यागांव। रिहारो कांनां जेन ही सूरो। थारोनांव। १२। झझा उरझि
सुरझिनही जांनैं रहै मुषिझझ कि झझकि प्रवांनें। कतझषि
झषि औरहि समझावा। झगरो को हि झगरि बौ पावा। १३। नंनानि
कटिजु घटिरहै। हरिकहां तजि जाइ। जाकारनि जगढूंढीयो
नेरो पायोताहि। १४। टटा बिकट घाट घट मांही। षोलिकपाठम
हलजबजांही। रहैलपटि जबघटपरचो आई। देषिअटल
टलकत कुनजाई। १५। ठठा इहिठौर ठगनीरा। निठनिठमन
वाकीयाधीरा। जिहि ठगिठगि सकल जगषावा। सोठगठगयो
ठोरमन आवा। १६। डडा डर पूं जे डर जाई। डरहीमें डर रहो समा
ई। जे डर डरे तो फिरि डर लागे। निडर होइ तो गरडर भागे। १७। ढ
ढा ढिगकत ढूंढे आंनां। ढूंढत ढूंढत गए। पिरांनां। चढिसुमेर
ढूंढि जग आवा। जिहि गढगढ्यो सुगढमें पावा। १८। णाणारि
रूतो नर नांही करै। नांफुनि नवैनसंचरै। धनिजन्म ताहीको
गिनों। मरैएककतजि जांहि घनां। १९। तता अतिरतिस्यो कयूं जाई
तन त्रिजवनमें रहो समाई। जो त्रिजवन तनमांहि समावै तो
ततहि ततमिल्यो सचपावै। २०। थथा अथाहथाह नहीं आ
वावो अथाह यो थिरनरहावा। थोरैथलि थांनें आरंभैतो बि
नहीयंभै मंदिर थंभै। २१। ददा देषि जु बिनसनहारा। जसनदेषि
तसराषिबिचारा। दसवैं द्वार कूंची जबदीजे। तबदयाल
को दरसकीजे। २२। धधा अरधे उरधनवेरा। अरधै उरधै मझि
बसेरा। अधैत्यागि उरध जब आवा। तबअरधै त्यागि उरधा
करधावा। २३। ननानिसदिननृषतजाई। नृषततैनैंनरहैमत
वाई। नृषतनृषतजबजाइ पावा। तबलेनिरषेनिराषिमिर

यूगारको

बकबा॥ ॥२४॥ पाच ससगुण तीनेतें आगें नासिमुको मत्तद्दा
कबीर धिसद्दा गोरषदत्त अरंथम १५ सुनि सिघरयठ मा णिक
निपजे मांहि अमोत्तिक द्दीरा अगाध बोध संपूर्ण कद्दीया
यूं कथंत दास कबीरा ॥ २६॥ २॥ अथ श्री याजोग ग्रंथ॥
तन मसीति करो मन मेरा मन की तसबी फेरि सवेपरो बुधि
की बाडी धीरज धुनि लावे ज्यूं नद्दचे सो इम्ब्रल्हा कूं पावे
२ साच सील रद्दत कसीजा तामसस्था गिमां स अरू बोफा
२ पांच बषत पांचूं बसि कीजे सा चा द्दोइ तो अल्द्दा पतीजे
४ सोन त्रिसफा करि योन तिसो इंशा इतचतने सो बंदा द्दोई ५ के
जू आ बूआ जीजी कीजे प्रेम पियाला छक्या रद्दीजे ६ मके
मदीनें पकुच्या चा द्दो तो तुरम सिमारि रमनी बद्दावो ७ पांच
मारि करी संग्रामां काया जीति तजो ऊफरानां ८ गुसा छाडि
करि तजो गुमानां तो तूं साचा मुसलमानां ९ जोरी जुलम क
रो मति कोई दांन तिरा थि दीन में द्दोई १० तत सार ऊरां न करि क
लमां सेतो परा थि तुम छाडो पलमां ११ ईमान राषि बंदगी
करि पूरी निवाज सद्दोइगी लीयां सबूरी १२ कान अंगुरी देजो
रपुकारें निवाज नद्दी रे जमारा द्दारे १३ वो बद्दरा नाद्दी सो देन
जोगी सोरकी यांसें बुराज जोगी १४ याक नाम कोई मो मद्दिल
पावे सरे बेसि कें मन समजावे १५ तुबच्यानारि करे तक बी
री ताके मुलां सुध मद्दरफ की री १६ रात फकारां कविन देसम
के बिरला को इद्दूर पज्ञानां निस्ति का अल्द्दा दिखावे तो द्दोइ
१७ मसिमांनो वेद कतेब आरां नां मसिमांनो मद्दजीद देद्दरा
मुलानां १८ आगें पेकं बरद्दोते असे जिन मद्द जीद मुकरवा
कीया के से १९ तुनी यां गावें यमा द्दू द्दां पारन पावे बुसला बि
द्दां २० आदम राद्दजमत पकी लागा जा द्दुमेर मन्नूकन
लागा २१ असा यत्तो बिन समीवो तो बिन सेनां द्दि स चिनां वे
सुमिरो सद्दा सदा निस्ति के मांद्दि २२ निस्ति अरसतें कतरी
बिधनां दीन्दी बांटि सत्ति सादि बकबीर कद्दे तुम मेटो मन
की आंटि २३ आस आस जग बंधीया रद्दया आसलपटाइ
नो वै आसम ऊब पूरवे तब सब आसमिटि जाइ ॥ २३॥ २२॥
अथ सबद ... जोग ग्रंथ॥ अमृत रचि जिवनार बनाई
ग्रीन पुरसके नोगरत गाई बोलन द्दार जगत गुरदेवा
बाचा कबिल्यो सवा १ वो कें सा

रमेणी॥ हला पिंगुला सुषमनि त्रिबेणी॥ सुषमनि कूचीलाय
रले तारा॥ अनहदसबदनेवेकणकारा॥ सुषमनि तंतीबाजणि
लागी॥ गुरप्रसाद आत्मा जागी॥ जागतेरैनि नयान जियारा॥
निद्रा नेहन नैनन धारा॥ अनपानकरि त्रिषा बुझाई॥ जोजन
कीयांनमन सुसताई॥दो॥ द्वारे कै गुर हूलहै॥ कबीसहज
सुन्नाह॥ ब्रह्म अगनि घरजारीया॥ कबीर अबक कूकादगां
नजाइ॥ ब्रह्म अगनि मैं बारा बांनी॥ ऐसा मन वा श्रास्रमपां
नी॥ हरिजन जिमन मंजन करि न्हाई॥ बकुरिनयाके लागे काई
मनमंजन का एप्रवांनां॥ सब घटरांम ऐक करि जांनां॥ दीहैं
तुरक छती सूजाती॥ ब्रह्म बीज सब की तत पाती॥दो॥ गुर
सूं सरगुन नया॥ धरि माया बिस्तार॥ जीवन जन्मता का सुफल
तेसु मैरे सिरजनहार॥ ततरमेंणी घोजिक धिन्न मरन कीया सरी
जो सागर न्यारा रह्या॥ हरिजन जितत स्यादास कबीर॥ ३॥ २७॥
अथ श्रगाध बोध ग्रंथ॥ ऐसा ग्यांन कथूं रे अवधू बूझै बि
रला कोई॥ ब्रह्म बरण ऊमेर ऊलं दाई सन जांणी सोई॥
उत्तर दषण पूरब पछिम॥ करूं च्यारि चकजेला॥ चवदे लोव
जीति गुरगम सूं॥ करूं ब्रह्म सूं मेला॥ २ पैसि पयाल सेस कूं ना
थूं दस थंभां परिमेल्हूं॥ बैकूं वासूं डरडरूका रूं॥ ऐसी रांमरि
षेल्हूं॥ ३ तजि आचार बिचार आवत जि॥ नो सूंने हन बांधूं
गोवलन परिपावन धारूं॥ सुरति गगन कूं साधूं॥ ४॥ छ इसणप
षंड छिनेवां किनकून पाया मरमा॥ सहजि समाधि रांम गुन रमतां
मेंजाइब सूं वा घर मां॥ ५ काजी पंडित पीर अवलीया॥ मुनिजन स
हंस अठ्यासी या सीसूं हरि अगम अगोचर॥ अलख पुरख अबि
सीद्ध च्यारि बेद अरु नौ ब्याकरण॥ अष्टादस पुरांनां॥ चवदे
व्यासु गी सब्द में॥ नने प्रांन समांनां॥ ७॥ राजा परजा जगसूं का
सुरते सीस मंघारूं॥ ससि अरु जोंन पगांत लिपेल्हूं॥ बिनकन
रफारूं॥ ८ सालिगरांम सहज में सेकूं॥ फिरि ब्रह्मा सूं तोरूं॥ सेक
सेसी निषटि बिगारूं॥ महाबिष्म सूं जोरूं॥ ९ निराकार के परचे
बोल्हूं॥ अननेपद आरा धूं॥ ग्यांन बिग्यांन मिल्या धुनि मांही॥ ऐ
सेवा साधू॥ १ साहर सात सहज में सोषूं॥ मेर सि षर सूं टांकूं॥ का
लीकंन धौकं बिनयांनी॥ तापरि रंग च ढाकूं॥ ११ नो से नदी कूंप मैं
चूं॥ चौसठि जोगणि बुलांकूं॥ नमरलनी रंजन करि राषूं॥ बांवन
रपि लाकं॥ १२ बंक सनालि नपाडि जडां सूं॥ अनि हला मैरोपूं॥
कहै कबीर ऐसी बिचारै॥ ताघटि सकल समो पूं॥ १३ नांमें वारा

१ अथ कंवलदलनीतया॥ श्रीरंग के लिकरा॥ सतगुरुमि
लेगो पाईयो नदीतो जन्म अनूप्या जाइ थ॥ कदलीक सम
दलनीतरा दस अंगुलकावीच तसुंदवादस षो जिरेनेजु
रामरननदी मीच र॥ वंकनालिके अंतरें पछिमदिसाकी
वाटा तसों नीझरझरे रस पीजी यो॥ तिवरगुफाके घाट था॥ त्रि
वेणी मनन्हाइ रेनो सुरति मिले जेसाथि॥ तसोन फिरिमघ
जोईयो॥ सनका दिक मिले देसाथि पगगनगर जिमघजो
ईया॥ तसोदीसे तार अनंता॥ बिजुरी चमकि घनवर षिये
तसोनीजसदे सवसंतध॥ षोरसकंवलजव चेतीया॥ मिल
या श्रीवन वारि जुराम रनचो न जीया॥ अवमुनि रिप ज
न्म निवा रि७॥ गुरम मदे तो मा ईयो॥ नदी तो ऊधिमें जिनके
घातसों कवीरा रमिरह्या॥ सदजिसमाधे सोइ॥ ८॥ धा॥ लोक
लनायक वीवला मिरो मनल्गागो वो रहि॥ वकुलक दिनवि
थुरयां नया अरे सरिलागी मोहिये॥ टेक करम को टिको गद
रच्यो नेदगाएको आसा आपे आप वंधाईया॥ वेलो चन मैं धि
यास॥ १ नाकत कुचलिजाई यो नो लीजे सिरनार सनार
सहि विचारी यो॥ सारंग श्रीरंगधार २ अपा पर सम चीन्ही यो॥
दीसे सरवसमाना इहि पद नर हरि नेटीयो॥ वंछाडिक पट
अनिमान ३॥ साध्यां ते सिध पाई यो॥ किंवा दोइम दोइ॥ जो
दिदगयांन नकप जेतो अदगिरदे जिनको इ४॥ एक जुग
तिये के मिले॥ किंवा जोग किनोग॥ इन दोन्यूं फज पाई यो
राम नाम सिधिजोग५॥ तुम जिन जानो गीत दे॥ इक्कु निजव्र
ह्न विचार॥ केवल कहि सम झाईया॥ आत्म साधनसाराध
प्रेम जगति अेसें की जी ये॥ सुष अमृत वरषे चंद॥ आपे आ
प विचारी ये॥ तो केता दो इ अनंद ७॥ चरन कंवलचित ला
ईये॥ राम नाम गुण गाइ॥ कहे कवीर संसार दी॥ जग ति मु
क्ति फलपा इ ८॥ ९॥ पंथवें में पाइवो रे पायवो वहु लागीयान
मद जिसमाधे सुषमें रहिवो॥ को टिकल पविश्राम॥ टेक ग
रजू पालकू पाजव की न्ही॥ दूरदे कंवल विगासा॥ नाग ा
तमरदसू दिस सूज्या॥ प्रम जोति परकासो १ मतक चक्रा
धनक करलीये॥ कालअहेरी जागा॥ दया सहनि सकी
या पयो नां सो वृसते जवजागा॥ २ अव गति अकज अन्नं
प्रमदेष्या॥ कहता कहानजाई॥ सेन करै मन ही मन रहसै
गूंगे जांणि मिठाई॥ ३॥ पदे पछिनां ये कतर वस्त्र फरलीया॥

नपूजाकीनैंकांमां॥३॥पाहणपूज्यांसैंकाहोइ॥आम्हरांमचीन्हि
ल्योसोइ॥पातीतोडैंआणिचढावै॥आतमकीकछुषबरिनपा
वै॥४॥आम्हरांमचीन्ह्यांबिनां॥३॥लनहोंणांपारिकहैकबीर
सोधीबिनां॥५॥दूधदहीसारिखोबांडघृतअमृतधारीनरी
लेजडमूरतिआगैंधरी॥७॥यनकूंरूबनकांकैंधागपांनां॥पांह
णजोगचुगतिकाजांनां॥॥जिनकैनैननासिकानाही॥घसिघ
सिचंदनलावैतांही॥(?)हरिपाषंडतैंबूडाअंधा॥गुरअंधासि
षनिपटिनिरंधा॥१॥जगजीवनकूंचीन्हांनांही॥कैसेंतारि
चौरासीजांही॥१॥सेवासाधसैतकीकीजै॥हितचितसूंअम्ह
तजोजनदीजै॥१॥साधजिहाजजोसागरमांही॥चढैमुइच्छे
कबहूंनांही॥१॥साधजिहाजबिनांनरलोइ॥जगसागरतिर
तनदेष्याकोइ॥१॥अनतैंषोजैपावैनांही॥कहैकबीरहूंसंतांमां
ही॥१॥कबीरमैंसाधूंकेसंगिरहूं॥अनंतकहूंनहींजांवां॥जेमो
हिअरपैप्रीतिकरितोसाधनमुषह्वैहूंषांवूं॥१॥कबीरसाध
हमारीआत्मांमैंसाधनकोप्रांन॥१॥केअगियेंहैनहीं॥उबध्या
करैअयांन॥२१॥२॥इतीरमैंणीसंपूर्ण॥अथपदलिख्य
ते॥रागगोडी॥दुलहनीगावहुमंगलचार॥हमघरिआ
ऐहोरामभरतार॥टेक॥तनरतकरिमैंमनरतकरिहूं॥पंचतत्त
बराती॥रांमदेवमोरैंपांहुनेआऐमैंजोबनमैंमाती॥सरीरस
रोवरबेदीकरिहूं॥ब्रह्माबेदउचारा॥रांमदेवसंगिभांवरिले
हूं॥धनिधनिभागहमारा॥२॥सुरतैतीसूंकोतिगआऐमुनिय
रसहूंसअठ्यासी॥कहैकबीरहमब्याहचलेहैंपुरषएकअ
बिनासी॥३॥बहुतदिननतैंप्रीतमपाऐ॥भागबडेघरिबैठें
आऐ॥टेक॥मंगलचारमांहिमनराषूं॥रसनांरांमरसायनचाषूं॥
१॥मंदिरमांहिभयाउजीयारा॥लेसूतीअपणांपीवप्यारा॥२॥मैं
रनिरासीजबनिधिपाई॥मोहिकहारांमलोहिबडाई॥३॥कहै
कबीरहमकछूकीन्हां॥सषसुसागरांममोहिदीन्हां॥४॥१॥अ
बतोहिजांननदैहौंरांमपियारा॥ज्यूंभावेत्यूंहोहुहमारे॥टेक॥
बहुतदिननकेबिछुरेपाऐ॥भागबडेघरबैठेंआऐ॥१॥चरनि
लागिकरूंबरिआई॥प्रेमप्रीतिराषूंलपटाई॥१॥सदाबसौमन
मंदिरचोषै॥कहैकबीरपरोजिनधोषै॥३॥मनकेमोहनबी
ठलायहुमनलागोतोहिरे॥चरनकंवलमनमांनीयां॥औरन
भावैमोहिरे॥टेक॥षटदलकंवलप्रकासीया॥चहुंकूंफेरि
मिलाइहुदहूकेबीचिसमाधिहै॥तहांकालनपरसैआइहो॥

तिथंकरूतोकदूतनजाप्र टेक अचरजगथवासुदावे॥ अ
परमूरतरडारवे१ दरूतेंप्रसरलिपूरीयताप्रबतफूटीपो
नाजिरे१ काफूकरूलकाफूसुनरया काफूकेरूलप्रवानरे
नूदासकवीरगुनगावलरे॥ गुरजोगीयाकहिगेलरे॥३॥२२
ऐक अचंनादेष्यारेनाइ॥ गदासिंघचरावेगाइ॥टेक॥ पदरून
नयापूतपीछेनईमाइ॥चेलाकेगुरलागेपाइ॥१॥ जलकीम
छीतरवरव्याइ॥ मूंसेपकडि बिलाइ॥ घाइ॥२॥ बैलडारिगूं
णघरिआइ॥ कूताकूंलेगइबिलाइ॥ ३॥ तलिनइडारकपरि
नयामूल॥ बहुलहिदेपिजडलागेफूल॥४॥ कदेकवीरयापद
दकूंबूझे॥ ताकूंतीनूंत्रिभुवनसूझे॥५॥ २३ दरिकेघारेबरेप
कमो जिनजारेतिनघारे॥ पानअचेतफिरेतेनूलेजनम
जनमपछितारे॥ टेक॥ धोलमदलीयाबेलरबावीकउवा
तालबजावे॥ पदरिचोलनोगादरनाचेनेंमातिरतिकर
वे॥१॥ सिंघजुबेठगरपानकातेरघूंसगिलोरालयावे॥ उंदरी
बपरीमंगलगावे॥ कछूऐकसबदसुनावे॥२॥ कदेकबीरसु
नजूरेसंतो गडरीप्रबतषावा॥ चकवोबेसिअंगारेनिगले
समंदअकासांधावा॥३॥ २४ व्वरषा जिनजरेकालूंगीरजरी॥ का
सूतानणदकेनईयाकीसूरटेक जलजाईथलकपनी
आईनग्रमेंआप ऐकअचंनादेषीया बिटीयाजायावाप
१॥ बाबुलमेरोव्यारकरि॥ वरऊंचेरोचादिश जबलगव
रपोकेनदीतबलगवरदीव्यादिश सुबधीकेघरिलुबधीआ
या॥ आनबकूकेनाइ॥ चूल्हे अगनिजलाइकें फलसोदी
योवगाइ॥४॥ सबेउनीयाभरिजाफूऐकवदीयाजिनमेरेस
बरोइनकोसाथाचरघाको घरेपाकदेकबारसोपंडितपांन
जोयापददिविचारे॥ पदलेपरचेगुरमिलेतोपीबेसतगु
रतारेधा॥ १४ अबमोदिलेनचलिदोनणदकेबीरअपनेंदेस
यनपंचनफूलूटी लू॥ ऊसंगआदिवदेसा॥ टेक॥ गती
रमेरापेसीबारीजमनतारपरिद्योनोसाचेबिरसीमोरेअ
जा॥ पंचूमोरकिसंनां॥ कदेकबीरयाअकथकथादेकरूतो
करीनजाइसरलिजाइनाकेतनिनुपजी तेरमिरसासमार
२॥४ अवदमसदजनिरंजनचीन्दा॥ गुरगमध्यानविचा
रिपरमपद मगनजरारसनीनांटेक॥ बिमसतकेवलजे
तत्रतरिधुनितदोमनजयाअनेदाऔविसरूपलर्क
भेदेष्या॥ रूपानीमेंचेदा॥

बिनकरतूरबजाया।नारीबिनांनीरघटभरीया।सहजरू
पसोपाया।४।देषतकाचभयातनकेंचन।बिनबांनीमनमांन
ऊञ्या।बिर्दगमषोजनपाया।झूजलजलहिसमांनां।पपू
ज्यादेवबकुरिनहीपूंज्या।न्हपेनहिकनन्हांकां।लागालग
सऐकहीकहतां।आपैबकुरिनआंकं।आपेमें।आपानि
रष्या।आपणमें।आपासूझ्या।आपैकहतसुनतपुनिआ
पन।आपनमें।आपाबूझ्या।७।अपनैंपरचैलागीतारी।आ
पनपें।आपसमांनां।कहैकबीरआपबिचारें।मिटिगया
आवनजांनां।८।४।नरहरसहजैंहीजिनजांनां।गतफ
लफूलततसपलवअंकूरबीजनसांनां।टेक।जनलग्रापव
नचक्रषटबेध्या।मेरडंडमरपूरा।गगनगरजिमनसुनिसमां
नां।बाजेअनहदतूरा।१।प्रगटप्रकासग्यांनगुरगमतें।बह्मअ
गनिपरजारी।ससिहरसूरदूरदुरेतरलागीजोगजुगतिकीत
री।२।सुमतिसरीरकबीरबिचारी।त्रिकुटीसंगमस्वांमी।पदआ
नदकालतेछूटै।सुषमेंसुरतिसमांनी।३।७।मनरेमनहीउल
टिसमांनां।गुरपरसादिअकलिभईतोकूं।नहीतौथाबेगानं।
टेक।नेरैतेंदूरदूरितेंनेरे।जिनजैसाजनमांनां।औलोतीकाच
ढ्याबरेंडे।जिनपीयातिनजांनां।१।उलटापवनचक्रषटबेध्या
सहजिसुनिअनुरागी।आवेंनजाइमरेनहीजनमें।तांहिपोजि
बेरागी।२।अनेकथाकथनसूंकहीरै।असाकोंनब्रमेंकाकहे
कबीरगुरदीयापलीतासोजलबिरलैदेषीया।३।८।हिलतरां
मजपोरेप्रांनी।बूझेअकथकहांनी।हरिकोहूपानईजाज
नपरि।जागतरैंनिबिहांनी।टेक।डोरेडाइनसुनहाडोरे।सिंघ
रहैतबनघेरे।पांचकुटंबमिलिजूझनलागे।बाजतसबद
संघेरे।१।रोहामृघससाबनघेरे।पारधीबांननमेलेसाइरज
लेसकलबनदाझेमछअहेरैषेलै।२।सोईपंडितसोईतत
ग्याता।जोयापदहिबिचारें।कहैकबीरसोईगुरमेरा।आ
पतिरमोहितारे।३।९।अवधूग्यांनलहरिधुनिमांडीमबद
अतीतअनाहदरातायहिबिधिनिष्यांषांडी।टेक।बनके
सुसेसमंदघरकीयामछाबसेपहाडी।सुदपीवेंबांह्मन
मतिवाराफललागाबिनबाडी।१।षाडबुनैकोलीमेंबेठी।
नेंषूटामेंगाडी।ताणेंबांणेंपडीअनवासी।सूतकहेबुनिगा
डी।२।कहैकबीरसुनहुरेसंतो।अगमग्यांनपदमांही।गुरप्र
सादिसूईकेनाकेहस्तीआवेजांहीं।३।१०।कहनीयाबिघी

मैंदास।४।नादबिंदकीनावरी।रांमनांमकिनिहारि।कहैक
बीरगुनगाइल्यौगुरगमत्तबौपारि।५।।२३।कोबीनेप्रेम
लागौरीमाईकोबीनेरांमरसाइनमातेरीमाईकोबीनेदेष
पाईपाईलूपुतिहाई।पाईकोतुरीयाविचिपाईरीमाईको
बीने।१।ऐसेंपाईपरविघ्युरझीलूरसञानिबनायौरीमा
ईकोबीने।२।नाचेतांनांनानाचेबांनांनानाचेरूचपुरानारीमा
ईकोबीने।३।करगहिबेठिकबीरानाचेचूहेकाट्यातांनां
रीमाईकोबीने।४।स्मैंबुनिकरिमिरांनाहोरांमानाजिकर्म
नहीकबरेटेक।दिपनकूटजबसुनहानूका।तबदृमसु
गनबिचारा।लरकेपरकेसबजागतहैहमघरचोरपसारा
होरांमा।१।तांनांलीनांबांनांलीनांलोनगोडकेपनवायत
तचितबृतकबैतांलीनां।मोडचलूनांडउवाहोरांम।२।
एकपगदोइपगत्रिपगासंधेसंधिमिलावा।करिप्रपंचमु
काटबनिआयौ।किलकिलसबेमिटावा।३।तांनांतनिक
रिबोनांबुनिकबिज्ञाकिपरीमोहिधांनो।कहैकबीरमैंबु
निकरिसिरांनो।जानतहैभगवानो।४।।२४।तननाबुननां
तज्याकबीरराममनांमलिषिलीयासरीरटेक।जबलगनर
नलीकाबेहातबलगतूटेरांमसनेहा।गाढीरोवैकबीरकी
माइ।लरिकाकैसेंजीवेंधुराइ।१।कहैकबीरसुनहुरेमाई
पूरनहारात्रिभवनराई।२।।२५।ऐसीग्यानप्राइमेरेमरिजाइ
घरजाजरोबरेंडेटेढो।औलोतोदराझैटेक।मंगरीतजौ
प्रीतिपाधेसूंडांडीदकूलगाइ।छीकोछाडिकपरिहोडो
बांधै।।१।ज्यूंजुगिजुगिरहोसमाइ।।बेसिपरंहडीघरमु
दावोल्यावोफूंतघरघेरी।जेवीधीयसासरेपवावो।ज्यूं
बहैभिनआवोफेरा।।२।।लजौधायसबेअलपोयोतबरी
टगबैठलपाई।कहेकबीरनागवपरीको।किलकिलसबे
चुकाई।३।।२६।मनरेजागतरहीयेनाई।गाफिलहोइबस्त
मतिषोवे।चोरमुसेघरजाई।टेक।षटचक्रकीकनककोट
डी।बस्तभावहैसोई।तालाकूंचीकुलफकेलागे।उघड
तबारनहोई।१।पंचपहरवासोइगएहै।बस्तजागिमलता
गी।जुरामरनब्यापेकछूनांहीगगनमंडलेलेलागी।
करतबिचारमनहीमनउपजी।नांकहीगयानआई
कै

कबीरगलागारैता

हो कबीर का स्वामी ॥ बिन करबे निम धुर धुनि बाजै त हां सु
नी अनूपम बांनी ॥२॥ रहा अब हम सकल कुसल करि मां
नां स्यो तिन्ह ई ज बगोबिंद जांनां ॥टेक॥ तन में होती कोटि उपा
धि उलटि भई सुष सहज समाधि ॥ बैरी उलटि भए है मीत
सा षित उलटि सहजन्ह भए हीता ॥ जम से उलटि भये है रामा
दुष बिसरया सुष कीया बिश्रामा ॥ आपा जो निज उलटि
आपा ता बन हीं ब्यापै तीनूं तापा ॥ अब मन उलटि सना
तन हूवा तब हम जान्यां जीवत मूंवा ॥ कहै कबीर सुष
सहज समाऊं ॥ आपन डरूं न और डराऊं ॥१७॥ अब हम रोक
एक करि जांनां ॥ दोइ कहै तिन ही कूं दोजिग जिन नांहिन पह
चांनां ॥टेक॥ एक पवन पावक अरु पांणीं एक जोति संसा
रा ॥ एक हि माक घरे बहु भांडे एक ही सिरजनहारा ॥ जैसे
बढई काष्ट काटि अगनिन काटै कोई ॥ ऐसे ब्यापि रहे सब
ही मैं धरे सरूपै सोई ॥ माया मोह करि जगत भुलांनां अथि
र देषि गरबांनां ॥ होई निसंक कछू नहीं ब्यापै कहै कबीर दिवा
नां ॥२॥ ऐसो आइ गयान की आंधी ॥ भ्रम की टाटी सबै उडानी
माया रहै न बांधी ॥टेक॥ हित चित की दोइ थूंनी डिगांनी मो
ह बलेंडा टूटा ॥ त्रिस्नां छांनि परी धर ऊपरि कुबुधि का भांडा
फूटा ॥ जोग जुगति करि नीका छावो निरचू चुवै न पांनी ॥ कांम क्रो
ध मद मछिर सारे ज्यां हरि की गति जांनी ॥ आंधी पीछै हरि
जल बूठा प्रेम हरी जन भीनां ॥ कहै कबीर ग्यान के प्रगटै ति
मिर गया भ्रम छीनां ॥२०॥ अब घटि प्रगट भए राम राई ॥ सोधि
सरीर कनक की नांई ॥टेक॥ उपजत उपजत बहोत उपाई ॥
मन थिर भया तब थिति पाई ॥ बाहरि षोजत जनम गमा
या ॥ उनमन ध्यान घट भीतरि पाया ॥ कनक कसौटी जैसे
कसि लेइ सुनारा ॥ सोधि सरीर भया तत सारा ॥ बिन परचै तन का
चक थोरा ॥ परचै कंचन भए कबीरा ॥२१॥ हिंडोलनां तहां
झूलै आतमराम ॥ प्रेम भगति हिंडोलनां सब संतन को बिस
राम ॥टेक॥ चंद सूर दोइ षंभवा बंकनालि की डोरि ति
झूलै पंच पियारीयां अरु रूहे मन मोर ॥ सहज सुंनि को नेह
रो गगन मंडल सिर मौर दहम दोई कुल आगरी जिय हि
ले हिंडोर ॥ अरध उरध की गागरा जमना ॥ मूल कंवल को घाट
षट चक्र की गागरी त्रिबेनी संगम बाट ॥ नाद समाध के अंत
रे तहां अंमृत को ग्रास ॥ जिन यह अंमृत चाषियो सो ठाकुर

न्हजी॥१॥२॥कहै कबीर मन बकु गुनी हरि जगसि बिना उ
घ फुनि फुनी॥३॥२॥३॥ का सूं कहौ सुनि रामा तेरा मरम
न जाने कोइ जी॥ दास बमै को सब जले परनै दन छो ना ही
इ जी॥टेक॥ ऐसकल ब्रह्मंड ते पूरी या अरु रूजा म ही थान
जी॥ मैं सब घट अंतरि पेषी या जब देख्या नैन समान जी॥२
राम सा॥२॥१॥ सिक है अदबुद गति बिसतार जी नर मनि
साजे गत कहै ता हिनस्फ़े संसार जी॥२॥ सिव सनकादिक
नारदा ब्रह्म लीया निज बास जी॥ कहै कबीर पद पंकजा अ
बनेडा दरन निवास जी॥२॥२४॥ मैं डोरै डोरै जो कंगा तो मैं ब
हो रिन नो जलि अंकंगा॥ टेक॥ सूत ब हो लक छूथो रंग
तें ता यरने कं थाडोरा कं थाडोरा ता गा॥ त बजु राम र ननौ
नागा॥१॥ ज हां सूत कपास न पूनी तहां बसे यक मूनी॥ उस मू
नी सूं चित रना कंगा तो मैं ब हो रिन नो जलि अंकंगा॥२॥ मे
रु डंड ऐक छा जा ता तहां बसै इक राजा॥ उस राजा सूं चित रवं
कंगा तो मैं ब कु रिन नो जलि अंकंगा॥३॥ जहां व हो ही रा
घन मोती तहां तत ता यत ले जोती॥ तिस जोति हि जोति मिलं
कंगा तो मै ब हो रिन नो जलि अंकंगा॥४॥ जहां कोंगे सूर
ने बु हा तहां देष्या ऐक अनदा॥ उस आनंद सूं चित रना कंगा
तो मैं ब हो रिन नो जलि अंकंगा॥५॥ मूल बंध यक पावा तं
हां सिध गणेस रा यवा॥ तिस मूलहि मूल मिलं कंगा तो मैं
ब हो रिन नो जलि अंकंगा॥६॥ कबीरा ता लिब तो रा जहां
गोपिह री गुर मोरा॥ तहां हेत हरी चित रनां कंगा तो मैं ब हो
रिन नो जलि अंकंगा॥७॥ २५॥ संतो धागा टूटा गगन बिनरि
स गया॥ सबद ज क हां समाई॥ यह संसा मोहि निस दिन॥
ब्यापै को इन कहै समजाई॥ टेक॥ नहीं ब्रह्मंड पैंड पुनि ना
हीं पांच तत भी नाहीं॥ यला पिंगुला सुषमनि नाहीं ए गु
न कहां समाहीं॥१॥ नहीं गृह द्वार कछू नहीं तहीं यां रचनह
र पुनि नाहीं॥ जो वन हार अतीत सदा संगि ए गुन तहां सम
हीं॥२॥ तूटै बधे बधे पुनि टूटे जब तब हो इ बिना सा॥ तब
को ठाकुर अब को सेवग को का के बिसवासा॥३॥ कहै क
बीर यह गगन न बिनसे जो धागा उनमाना॥ सीषे सुने
पढे का होइ जौ नहीं पद हि समाना॥४॥ २६॥ रत्ता मन रूं पो जो
रे ना ही तन छूटे मन कहां समाई टेक मन कस नद न जे

ईक कहै जोगी कोइ कहै जंगम।। कोऊ कहै कहै एक ब्रूनां ही कूं
ता हिदे षू दिरदा नीत रिद्ं हैं सैसब मांही।४ अलख रूप
गति लषैन कोई।। अजनरा ता सोई।। जेया मन कूं दिढ कषि
रा षे सो निरचै दृष्ट होइ।४ कहै कबीर जो या सो पाया का
यान ग्रम झारी तूस्वामी मैं सेवग तेरा तारन तिरन मुरारी।।३
।२७।। अपने मैं रंग अपन पौ जानूं।। जिहि रंग जां नि तां ही कूं
मानूं।। टेक।। अभि अंतरि मन रंग समांनां।। लोग कहै कबीर बौ
रांनां।।१।। रंग न जांनै मूरिष सोई।। जिहि रंग रंगि रह्या सब कोई
।।२।। जो रंग कदे न आवै न ही जाई।। कहै कबीर तिहि रह्या समाई
।।३।।२८।। अपने विचारि असवारी कीजै।। सहज के पाइडे पाव जो
दीजै।। टेक।। दे मूंहड़ा लगांम पहरांऊं।। सिकली जीन गगन
दौराऊं।।१।। चलि बैकुंठि तोहि लै तारूं।। थकि हौं प्रेम ताजनै मारूं
।।२।। जनक बीर अैसा असवारा।। वेद कतेब दुहूं तैं न्यारा।।३।।२९।।
गराय किन वौरी राम।। जौ तुम्हारे जन सूं है कांम।। टेक।। ब्रह्मा
बडा क जिन रूप उपाया।। वेद बडा क जहां तैं आया।।१।। यहु
मन बडा क जहां मन मांन्यां।। राम बडा क जिन रांम पिछांन्यां
नां।।२।। कहै कबीर हूं षरा उदास।। तीर्थ बडा क हरि का दास।।३।।
।।३०।। दास रांम ही जांनि है रे।। और न जांनै कोइ।। जापरि गुरु
पा करी।। ताकूं गम होइ।। टेक।। का जल देय सबै का हूं च षि
चौदह न मांहि ब्रिनांन।। जिन लोयन मुनि मोहीया।। ते लोय
न प्रवांन।।१।। बहोत जगत औसागरा।। नांना विधि नां नांचा
।।२।। जिहि ह्रदै श्री हरि नेटीया।। सो निहक रूक रूं वांह।।३।। द
रसन समका कीजीये।। जे गुन नहीं होत समांन।। सीधव नीर क
बीर मिल्यौ है।। फटक न मिलै पषांन।।४।।३१।। चलन चलन स
ब को कहै।। नां जांनूं बैकुंठ कहां है।। टेक।। जोजन एक प्रमति
नही जांनैं।। बातन ही बैकुंठ बषांनैं।।१।। जब लग है बैकुंठ
की आसा।। तब लग नही हरि के चरन निवासा।।२।। कहे सुनें
कैसे पतिईये।। तब लग तहां आपन ही जइये।।३।। कहै कबी
र यहु कहीये का हि।। साध संगति बैकुंठ हि आहि।।४।।३२।।
कैसें होइगा मिलावा हरि सनां रे।। तू विषै विकार न तज।।
सि मनां।। टेक।। रे तैं जोग जुगति जांन्यां नही।। तैं गुर का सब
द मांन्यां नहीं।।१।। गंदी देही देषि न फूली ये।। संसार देषि न

मपांडे।घरचंदनजसनारा।रामनांमततसमजतनां।दो।ऋ
तिपडेमुषिआरा।१।बेदपढ्यांकाइकुफलपांडेसबघटि
देषेरामां।जन्ममरनतेंतोत्नूंछूटो।सुफलहोइसबकांमां।२।
जीवबधततअरधरमकरूतहो।अधर्मककुवांनाई।आपन
तोमुनिजनह्वैवेकासनिककूंकसाईउकाजीपंडितकाम
तोकेसतगुरकह्या।बिचारा।तुमवेदमेंजकरिजीवबधाय
जनकरनमांकहिमाराथनारदकहेव्याससूनोषेसुषदेवपू
छौजाईकहेकबीरकमतितवछूटेजेरहोरामस्योंलाई
।४।।४३।।पंडितवादवदंतेझूठा।रामकह्यांदुनीयांगति
पावेतोषांडकह्यांमुषमीठाहोइ।पावककह्यांपावजोदाझे
जलकहितिषाबुझाईतोजनकह्यांदषजेनांजेतोसबको
इतिरिजाई।१।नरकेसाथिसूवाहरिबोलेनांवप्रताप
नजांनै।जोकबहूंउडिजाइजंगलमेंतौबहुरिनसुरतेंआ
नै।२।बिनबिसवासअरदरसपरसबिननांवलीयांकाहो
ईमायाकह्यांमायासांपजेतौनधनरहेनकोई।३।साचीप्री
तिबिषैमायासूंहरिजगतनसूंहासी।कहेकबीरप्रेमनही
उपज्योबांध्योजमपुरिजासी।४।।४४।।जोमैंकरतावरनबि
चारेतोजनमततीनडांडीकिनसारैदेक।जलपतिबिंदक
हांतेंआया।जोतिधरीअरुलागीमाया।नदीकोकेचानदी
कोनीचा।जाकापिंडताहीकासींचा।२।जेतूंवांम्हनवम्हनी
जाया।तोआंनवाटह्वैकाहेनआया।३।जेतूंतुरकतुरकनी
जाया।तोभीतरिषतनाक्यूंनकराया।४।कहेकबीरमधिमन
हीकोइसोमधिमजामुषिरांमनहोइ।५।।४५।।कथतावकता
सुरतासोईआपबिचारेसोग्यानीहोई।टेक।जैसेंपवन
आगनिकामेला।चंचलचपलबुधिकाषेला।नवदरवाजे
दसंदवारबूझिरेग्यांनीग्यांनबिचाररेदहीमाटीबोलेजे
पवनोबूझिरेग्यांनीमूंवांकंवनोमूंईसुरतिबादअहंका
रावहनमूंवांसोबोलनहारा।२।जिमकारणितटतीरथ
जांहीरतनपदारथघटहीमांही।पढिपढिपंडितबेदबषा
नेंभीतरिहोतीबस्तनजांनै।३।हूंनमूंवांमेरीमूईबलाई
सोनमूंवांजोरह्यासमाई।कहेकबीरगुरुब्रह्मदिषाया
मरताजाताजिजरनिआया।५।।४६।।मनमरेमारिहेलै
[illegible]समकूंमिल्याजिवांवनसमाटे
मांनां।तेईसुषिजिनरामनजांन्यं।

नारदमुनिग्यांनी॥मनकीगतिउनकुनहीजांनी॥२५॥प्रहला
दबलीघनसेषा॥तनचीतरिमनउनकुनदेषा॥चेतामनका
कोइल्तहेनजेवा॥रचककलीनचरो॥सुषदेव॥गोरषनथैगोपी
चंदा॥तामनसूंमिलिकैरैअनंदा॥अकलनिरंजनसकलसरी
रा॥तामनसूंमिलिरह्याकबीरा॥२६॥नाईरविरलेदोसतक
बीरकोयकुतसबारबारकासूंकहीए॥नांनाणघडुणसंवारण
संम्रथाज्यूंराषेत्यूंरहीए॥टेक॥आलमदुनीसबैफिरिषोजी॥ह
रिबिनसकलअयांनां॥छदरसणध्यांनवेषाषंडु॥आकुल
किनकुनजांनां॥१॥जपतपसंजमपूजाअरचा॥जोतिगजगबौ
रानां॥कागदलिषिलिषिजगतचुलांनां॥मनहीमननसमांनां॥
२॥कहैकबीरजोगीअरुजंगम॥ऐसबफूवीआसा॥गुरप्रसादर
टोचातृगज्यूंनिहचैजगतिनिवासा॥३॥२७॥कितेकसिवसं
करगएऊठिरांमसमाधिअजहुंनहीछूटि॥टेक॥परलेकाल
कहुंकितेकजाषगएइंद्रसेअगिनतजाष॥ब्रह्मांषोजिपरसौ
गहिनारद॥कहैकबीरवेरांमनिरारन॥३॥२८॥अचिंतचिंतो
माधौसोसबमांहिसमांनां॥ताहिछाडिजेआंनभजतहैंते
सबभ्रमचुलांनां॥टेक॥ईसकहैमैंध्यांननजांन्यौ॥उलजनि
जपदमोहीरचककरुणाकारणिकेसो॥नांवधरनकूंतोही
१॥कहौधूंसबदकहांतेंआवै॥अरुपुनिकहांसमाई॥सबद
अतीतकामरमनजांनैं॥भ्रमिभूलीदुनीयाई॥२॥पिंडमुक्ति
कहांलेकीजे॥जोपदमुक्तिनहोई॥पिंडमुक्तिकहतहैंमुनिजन
॥सबदअतीतथासोई॥३॥प्रगटगुपतगुपतपुनिप्रगटसो
कतरहेतुकाई॥कबीरप्रमांनंदमनांहीं॥अकथकथ्योनहीं
जाई॥४॥३०॥सोकछुबिचारहुपंडितलोई॥जाकेरूपन
रेषबरननहीकोई॥टेक॥उपजेपिंडप्रांणकहांतेंआवै॥मूवा
जीवजाइकहांसमावै॥१॥इंद्रीकहांकरिहैंबिश्रांमां॥सोकत
गयाजुकहतारांमां॥२॥पंचततहांसबदनस्वादं॥अलेषनि
रंजनबिद्यानबादं॥३॥कहैकबीरमनमनहिंसमांनां॥तबआ
गनिगमझूठकरिजांनां॥४॥४१॥जोपैंबीजरूपभगवांनां॥
तौपंडितकाकथसिगियांनां॥टेक॥नहीतननहीमननही
अहंकारनहीसतरजतमतीनप्रकार॥१॥बिषअमृतफलफ
लेअनेकाबेदरुबोधकहैतरोका॥२॥कहैकबीरइहमनमां
नाकहिधूंछूटिकंवनउरझांनां॥३॥४२॥पांडेकौंनकुमतितो
हिलागी॥तूंरांमनजपहिअभागी॥टेक॥बेदपुरांनपढतअ

रहिआईहो।२।बोटनहमारेएकपक्षे वरा।लोकबोलेहक
ताईहो।जुलहेतनिचुनिपांननपावलं।फारिबुनीदसगाई
हो।२।त्रिगुनरहितफलरमिहमरायिलं।तबहमारेनांव
रांमराईहो।जगमेंदेषूंजगनदेषेमोहियहकबीरकछू
पाईहो।२॥५४॥लोकाजांनिनभूलोभाई।षालिकमें
लकषलकमेंषालिकासबघटिरह्योसमाई।टेक।अला
एकेनूरनिपायाताकीकेसीनिंदा।तानूरतेंसबजगकीया
कोनभलाकोनमंदा।२।ताअलाकीगतिनहीजांनी।गुरगुड
दीयामीठा।कहेकबीरमेंपूरापाया।सबघटिसाहिबदीठा
२॥५५॥रांममोहितारिकहांलेजैहो।सोबेकूंटकहोधूंकेसा
कापसावमोहिदेहोटेक।जेमेरेजीवदोइजांनतहो।तोमो
हिमुक्तिबतावो।एकमेंरमरह्यासबनमें।तोकाहेनरमा
वो।२।तारणतिरणजबेलगकहीयो।तबलगततनजांनां
रांमरांमदेष्यासबहीमें।कहेकबीरमनमांनां।२॥५६॥सोहं
हंसाएकसमांन।कायाकेगुणआंनहीआंन।टेक।माटीएक
सकलसंसारा।बहोविधिभांडाघडेकुंभारा।२।नारएकअ
वारानारा।रूपबरणगुणन्यारान्यारा।२।पंचबरणदसदु
हीगाईहो।एकहूधदेषोपतियाईहो।कहेकबीरसंसाकरि
डारि।त्रिनबनमांथरह्याससमायरहि॥५७॥प्यारेरांममनहीं
मनां।कासूंककहूंकहणकूंनांहीं।दूसरऔरजनां।टेकजे
इपनइतिबिंबदेषो।आपदवांसूंसोहि।सांसोमिट्याएं
ककोएकेमहाप्रलेजबहोई।२।जोरिझऊंतोमहाकठिन
है।बिनरिझयेतेसबषोटी।कहेकबीरतरकदोऊंसाधे
ताकीमतिहेमोटी।२॥५८॥अरेनाईदोइककहांसोमोहिब
तावो।बिचिहीभरमकाभेदलगावो।टेक।जोनिजपाइलबी
देषरनी।दीनयेकबीचिनईकरनी।२।रांमरहीमजपतसुधि
गईहौ।उनमालाउनतसबीलईहै।२।कहेकबीरचेतहूंरेभूंदू
बोलेनहाराराबुकनहीहूवा।२॥५९॥ऐसाभेदबिगूचनिभारी।
बेदकतेबदीनअरुदुनीयां।कोंनपुरषकूंननारी।टेक।एक
बूंदएकमलमुत्र।एकचांमएकगुदा।एकजोतितेंसबेउत
पनां।कोनबांमणकोनसूदा।२।माटीकापिंडसहजउतपनां
नादबिंदसमांनां।बिनसिगयाकांनांवधरिहो।पढिगुनराम
रमनजांनां।२।रजगुनब्रह्मातमगुनसंकरसतगुनहरिहोसो
ई।कहेकबीरएकरांमजपौरे

न्हि नबिरोमरसांइनपीवे थंह रिमरिर्हे तो हमकू मरिहै हरि
नमैं हम काहे कूं मरिहैं २ कहै कबीर मन मनहि मिलावा अम
र भो सुषसागर पावा ॥४॥५३॥ कौन मरै कौ जनमैं आई सुरग
नरक कौने गति पाई टेक पांच तत्त अबगति तें उतपनां एकै
कीया निवासा बिछुरे तत्त फिरि सहज समानें रेष रही नहीं आ
सा २ जल मैं कुंभ कुंभ मैं जल है बाहरि भीतरि पानी फूटा कुं
भ जल जलहि समांनां यह तत कथौ गियांनी ३ आदे गगनां
अंते गगनां मधे गगनां भाई कहै कबीर करम किस लागै
झूठी संक न पाई ४॥५४॥ कौन मरै कहो पंडित जनां सो समझा
इ कहो हम सुनां टेक माटी माटी रही समाइ पवनौ पवन
लीया संग लाइ १ कहै कबीर सुनि पंडित गुनी रूप मूवा सब
बदेषै दुनी २॥५५॥ जे को मरै मरन है मीठा गुर प्रसादि जिन
ही मरि दीठा टेक मूवा करता मूई करणी मूई नारि सुरति
बहु धरणी १ मूवा आपा मूवा मांन परपंच लेइ मूवा अभिमा
न २ राम रमे रमि जे जन मूवा कहै कबीर अबिनासी हुवा ३॥
५०॥ जस तूं तस तोहि कोइ न जान लोग कहै सब आंनहि
आंन टेक च्यारि बेद चहुं मत का बिचार यहि भ्रमि भूलि
पर्यो संसार १ सुरति सुम्रिति दोइ का बिसवास बाझि परै सब आ
सा पास २ ब्रह्मादिक सनकादिक सुर नर मैं बपरो धूं का मैं
का करै ३ जिहि तुम तारो सोई पै तिरई कहै कबीर नां तर बां
ध्यो मरई ४॥५८॥ लोका तुम ज कहत हौ नंद कौ नंदन नंद
कहौ धूं का कौ धरनि अकास दोउ नहीं होते तब यो नंद कहां
थो टेक जामै मरै न संकट आवै नांव निरंजन जा को अबि
नासी जप जे नहीं बिनसै संत सुजस कहै ता को १ लष चौ
रासी जीव जंत मैं भरमत नंद थाकौ दास कबीर कौ
ठाकुर ऐसो जगति करै हरि ता कौ २॥५९॥ निरगुण राम नि
रगुण निरगुण राम जपहु रे भाई अबगति की गति लषी न
जाई टेक च्यारि बेद जाके सुम्रिति पुरांनां नौ ब्याकरनां म
रम न जांनां १ सेस नाग जाके गरड समांनां चरन कंवल कं
वल नहीं जांनां २ कहै कबीर जाके भेद नांही निज जन बे
ठे हरि की छांही ३॥६०॥ मैं सबहनि मैं औरनि मैं हूं सब॥
मेरी बिलग बिलग बिलगाई हो कोई कहो कबीर कोई
कहो राम राई हो टेक नां हम बार बूढ नांही हम नां हमारे
चिलकाई हो पठए न जांउं अरवा नहीं आउं सहजि रहूं

हीमनमाना॥
कोक सुरतिबकतसीट को अवनाम
हौसजातिक रिकुरनि पाया॥१॥ सुरति अ
नांतेश॥ निरतिकारिजा हिवानां॥२॥ कहै क
नांतेरी॥ निरतिकारिजाहि मरा॥३॥ देह॥
॥ बिचारा यारवयारवयार हंमरा॥३॥ देह॥
ति तूं ऊमनानी॥ तेरे नाति मगावरपानी॥ टेक
तिजलमें वासा॥ जलमें नननी तोर निवासा॥१॥
तिन कूं परिभागि॥ ताकूं ननं कासनिलागि॥२॥ कहै
दिसा तिनसैं नाम॥ कहै हमारजानन॥३॥ ८७
रतेगुदिकमसानसेन॥ हमारमानृन
सप्रजुमेक छूना हीं पहिलनपदि अनिमानृन
ममें जबलग में कीन्हा॥ तबलग मैं करता नहीं
कहै कबीर सुनो नरनाहा॥ नाहमजीवतन मूंवे
आदि अबका डरूडरडर॥ हम मानां॥ जब तैं मेरा
चांनां टेक॥ जबलग मेरा तोर कहि नीनां॥ निमैं ज
नडुमदी न्हा॥ आगमनिगम ककरिजांनां॥ तेप
लैनरमनानां॥ कहै कबीर मेमेरी पाई तब दे
ओरन ही कोई॥ आदि वोलनां का कहीये नाई
तबोलततततनमांई॥ टेक बोलत बोलत बदे बि
॥ बिन बोल्यां क्यूं होइ बिचारा॥ संत मिले कछु क
कहीये॥ मिले असंत मुष्टिकरि रहीये॥ पानीसूं बोल्या
कारी॥ मूरषसूं बोल्यां झष मारी॥३॥ कहै कबीर आध
डोलै नग्या हीइतो मुषान बोलै॥४॥ ७०॥ बागड देस लौ
का घरहे॥ तहां जिन जाइ दाझन का डरहे॥ टेक॥ सब जग दे
कोई न धीरा॥ परतधूरि सिरिक हत अबीरा॥१॥ नतहां सस्व
नतहां पानी॥ नतहां सतगुरसाधू बानी॥२॥ नतहां कोकिल
नतहां सूवा॥ ऊंचे चढि चढि हंसा मूवा॥३॥ देस मालवा गहर
गंभीर डगडगरोटी पगपग नीर॥४॥ कहै कबीर घरही मन मा
नां॥ गूंगे का गुड गूंगे जांनां॥५॥ ७१॥ अवधू जोगी जग तें न्यारा
मुद्रा निरति सुरति करि सींगी॥ नादन षंडै धारा॥ टेक॥ बसै गग
नमैं दुनी न देषै॥ चेतन चौकी बैठा॥ चढि आकास आसा
नन ही छाडै॥ पीवै महारस मीठा॥१॥ प्रगट कंथा मांहे जो
गी॥ दिलमें दरपन जोवै॥ सहंस इकीस छसे धागा॥ निह
चल नाकै पोवै॥२॥ ब्रह्म अगनि मैं काया जारै त्रिकुटी सं
गम जागे॥ कहै कबीर सोई जोगेस्वर

हमारैरांमरहीमकरीमाकेसो। अलहरांमसतिसोई॥ बिसमलमे
टिबिसंभरएकै। औरनदूजाकोइ॥टेक॥ यनकेकाजीमुलांपीर
पैकंबरएजापछिमनिवाजा। यनकेपूरबदिसादेवदिजपू
जा॥ग्यारसिगंगदिवाजा॥२॥ तुरकमसीतिदेहुरैदोइ। दहूंगैरा
मखुदाई॥ जहांमसीतिदेहुरानांही। तहांकाकीठकुराई॥३॥ हीदू
तुरकदोऊंरहरूटी। फूटीअरकनराई॥ अरधउरधदसौदिस
जितजितपूरिरह्यारांमराई॥४॥ कहैकबीरदासफकीरा। अप
नीरहचलिभाई॥ हींदूतुरककाकरताएकै। तागतिलषी
नजाई॥५॥२५॥ काजीकौनकतेबबषांनै। पढतगुनतकेते
दिनबीतेमतिएकैनहीजांनै॥टेक॥ सकतिसनेहपकडिकरि
सूनतियकुनबदूरमाई॥ जोरषुदाइतुरकमोहिकरता।
तोआपेकटिकिनजाई॥१॥ सूनतितोतुरकजीयाकरिसूनतिऔ
रतिसूंकाकहीये॥ अरधसरीरीनारिनछूटैतोआधहीहूंक
हीये॥२॥ छाडिकतेबरांमकहिकाजी। षूंनकरतहौभारीपक
रीटेककबीरजगतिकीकाजीरहेपछिताई॥३॥२६॥ मुलांक
हापुकारैदूरि। रांमरहीमरह्याभरपूरि॥टेक॥ यकुतौअलह
दूगानांहीं। देषैपलकउनीदिलमांहीं॥१॥ हरिगुनगाइबं
गमैदीन्हां। कांमक्रोधदोऊंबिसमलकीन्हां॥२॥ कहैकबी
रयहुमुलनांझूठा। रांमरहीमसबनमैदीठा॥३॥२७॥ पढि
लेकाजीबंगनिवाजा। एकमसीतिदसूंदरवाजा॥टेक॥ मन
करिमकाकिबलाकरिदेही। बोलनहारजगतगुरएही॥
१॥ वहांनदोजिगभिस्तिमुकांमा। यहांहीरांमयहांरहिमां
नां॥२॥ च्यारिपहरजुरोनबषांनै। मांऊपरयांमुरगीगहि
आनै॥३॥ उनमुरगीकाहोष्याबीजातौबिनसिजाइगातीसू
रोजा॥४॥ बिसमलतांमसभरमकेदूरी। पंचूंनषिज्यूंहोइस
बूरी॥५॥ कहैकबीरमैंभयादिवांनां। मनवांमुसिमुसिसहज
समांनां॥६॥२८॥ मुलांकरिल्योन्यावषुदाई। इहिबिधि
जीवकाभरमनजाई॥टेक॥ सरजीवआंनैदेहबिनासै। मा
टीबिसमलकीता॥ जोतिसरूपीहाथिनआया। कहौहे
लालक्याकीता॥१॥ बेदकतेबकहौक्यूंझूठा। झूठाजोनबि
चारै॥ सबघटएकएककरिजांनैं। भौदूजाकरिमारै॥२॥
कुकडीमारैबकरीमारै। हककहककरिबोलै॥ सबैजीव
साईकेप्यारे। उबरोगेकिसबोलै॥३॥ दिलनहींपाकपाक
नहीचीन्हां। उसकाषोजनजांनां॥ कहैकबीरभिस्तिछि

हजिन नारवृषवसेरा पंषिका अैसा माया जारघ अैरमरच
कारो ईश्वा जो आप थिर नरहा ज्ञो उपज्या सो विनसि है ता
तें डुघ करि मेरे वला ह्रश्व जहां उपज्यां तहां फिरि च्यायी वु
त मरदन लागा कहै कबीर चित चेतीया तातें राम सुमरि वे
रागा॥३॥ ७७॥ राम चरन मन लागो रे अैसठु रि जा कुरांड के
करहा प्रेम प्रीति स्यो लागो रे टेक॥ आंव चढी अैवलीरे अै
वली विंबूर चढी नग वेलीरे थ्रे घर चढि गयो रांड को कर
हा मन ह पाट की सेलीरे १ कंकर कूई पताल पांनीयां सो नें
बूंद विकाई रे बज्र परो यहि मथुरा नग्री कान्ह पियासा
जाई रे २ ऐक दहेंडीया दही जमायो दूसरी परि गई सारी रे
न्यूंति जिमां कें रांड को करहा आर मुनस की दादी रे ३ यह
बन बाजे मदन भेरी रे उहि बनि बाजे तूरा रे यहि वनि घेले
राधो रूकमनि उहि वन कान्ह अहीरो रे ४ आसि पासि तु
रसी के बिरवा मांहि द्वारिका गांऊं रे तहां मेरो ठाकुर राम
राइ रे लागत कबीरा नांऊं रे ५॥ ७८॥ थिर न रहे चित थिर न र
हे। चिंता मनि तुम कारनि हो मन में लेमो फिरि फिरि आइ हे।
तुम सुन ज्ञान उघ बिसरो वन हो टेक प्रेम घटो लवा कसि क
रि बांध्यो बिरह बांन तिह लागू हो तिह चढि इंद के करत ग
वसीया अंतरि जमवा न गूहो १ मदहू मद्धि मारिन जांनें ग ह
रे पैठो धाई हो दिन ऐक मगर मछ लेष रेत वके था पिहे बंध
न नाई हो २ मद रूनांव मदर इये जांनें पढ बदन बूझे वौरा
हो चौरे लाइ सकल ज्ञग षाया जे न जे टिनि सहरा हो ३ जो मद
जि चाहो मदर इये तो ना थो ऐमन बौरा हो चारी न्याय के रि
साधि बिचारे तब गहि जे टिनि सरा हो ४ टिकरी नई का
न्ह के कारनि त्रिमित्र मिती थकी न्हां हो सो पद देमो हि म
दन मनोहर जिहि पद हरि में चीन्हां हो ५ दास कबीर की न्ह
अैस गहरा बूझे कोई मदरा हो यह जसे सार ज्ञात में देषो वा
सार हूं किन हूरा हो ६॥ ८०॥ बिनती ऐक राम सुनि थोरी
अब न न चाहरा षिपति मोरी टेक जैसें मंदरना तुम दव
जावा तैसे नाच तमें डुघ पावा १ जो मसि लागी सबे छुडा
वो अब मोहि जिन बहो रूप कछावो २ कहै कबीर मेरी
ना चत गावो तुम्हारे चरन कंवल दिषलावो ३॥ ८१॥ म
न थिर रहे न घर हो मेरा
घर तजि बन बाहरि कीयो बास

गेनु॥७२॥ अवधू गगन मंडल घर कीजै अंमृत झरै सदा सुष
उपजै बंकनालि रस पीजै टेक मूल बांधि सुर गगन समांनां
सुषमनि पो तन लागी काम क्रोध दोइ कीया बलीता तहां
जोगनी जागी १ मनवा जाय दरीबै बैठा मगन भया रस लागा
कहै कबीर जीव संसा नाही सबद अनाहद बागा २॥७३॥ को
ई पीवै रस राम नाम का जो पीवै सो जोगी रे संतो सेवा करौ राम
की और न दूजा भोगी रे टेक यहु रस तौ सब फीका भया ब्रह्म
अगनि पर जारी रे ईस्वर गौरी पीवन लागे राम तनी मतिवा
री रे १ चंद सूर दोऊ भाठी कीन्ही सुषमनि चिगवा लागी रे
अंमृत कूंपी सांचा पूरा या मेरी त्रिस्ना भागी रे २ यहु रस पी
वै गूंगा गहला ताकी कोई न बूझै सार रे कहै कबीर महा
रस महंगा कोई पीवैगा पीवनहार रे ३॥७४॥ अवधू मेरा मन
मतिवारा उनमनि चढ्या गगन रस पीवै त्रिभुवन भया उ
जियारा टेक गुड़ करि ग्यांन ध्यांन करि महुवा भौ भाठी
करि नारा सुषमनि नारी सहज समांनी पीवै पीवनहारा १
दोइ पुड़ जोड़ि चिगाई भाठी चुया महारस भारी काम
क्रोध दोइ कीया बलीता छूटि गई संसारी २ सुंनि मंडल मैं
मंदला बाजै तहां मेरा मन नाचै गुरप्रसाद अंमृत फल पा
वा सहज सुषमना काछै ३ पूरा मिल्या तबै सुष उपज्या तन
की तपति बुझांनी कहै कबीर भौ बंधन छूटै जोतिहि जो
ति समांनी ४॥७५॥ आकि पर्यो आतम मतिवारा पीवत रां
म रस करत बिचारा टेक बहुत मोल महंगै गुड़ पावा
लै कसवार सरोम चुवावा तन पाटन मैं कीन्ह पसारा मांगि
मांगि रस पीवै बिचारा १ कहै कबीर फाबी मतिवारी पीव
त राम रस लगी षुमारी २॥७६॥ बोलौ भाई राम की दुहाई य
हि रस सिव सनकादिक माते पीवत अजहूं अघाई टेक
यलापि गुल्ला भाठी कीन्ही ब्रह्म अगनि परजारी ससि हर सू
र द्वार दस मूंदे लागी जोग जुग तारी १ मन मतिवाला पीवै रा
म रस दूजा कछू न सुहाई २ उलटी गंग नीर बहि आया अं
मृत धार चुवाई ३ पंच जने सो संग करि लीने पीवत षुमारी
लागी प्रेम पियाले पीवन लागे सुरति जोगनी जागी ४ सह
जि सुंनि मैं जिन रस चाष्या सतगुर तै सुधि पाई दास कबीर
यहि रस माता कबहूं उछकि न जाई ५॥७७॥ रांम रस पाई
यारे ताते बिसरि गए रस औरे टेक रे मन तेरा को नहीं मैं खिले

हनके का हू को पल्योन पूरोरे राजा रांना राव छत्रपति जरि
जरि न स्मा को हूरोरे १ सब तें नीकी संतमंडलीयां त्येरनगा
त्तनको नेरोरे गोबिंद के गुन बेद बेगे है मैं हट कोटेरोरे ३ त्रे
सें जो निज पो जग जीवन जग सूरत किरती रोरे कहे कबी
र राम न जिब हूं एक आध कोई सूरोरे ३ ए दा देंज सिमीन
देखिब ह्रूपांनी काल ज्ञान की मब खिन जांनी टेक गोरे ग्रथो
औ घट घाट सो जल छाडि बिकांनी है टि १ बधीन जां पी ज
नहद मांद कहे कबीर सब मो देस्या द २॥ ए का देरे मन द
हदिस धावे बिषीया सं गि संतोष न पावै टेक जहां जहां
कल्प तहां तहां बंधनो रतन को थाल की यो तें रंधनो १ जो
पै सुष पईयत यन मांही तौ पाज छाडि कत बन हूं जां ही॥
आनंद सहत जो बिषनाथ स्त्रबका जीष प्रवित निषा
री २ कहे कबीर यक सुष दिन चारी तजि बिषीया नजि
चरन मुरारी ३॥ एजी यह जां है गोमें जांनों जो देष्य सो ब
हूरि न पेष्या माटी सूल पटांनों टेक बाकल बस्तर कित्ता प
रिखा कास मबनघंड बासा कहा मुगध रे मांहन पूजें काजल
डारे गाता १ कहे कबीर सुरे मुनि मदेसा लो कांपंथ लगा
ई सुनो संतसुमिरो नगताजन है रि बिन जन्म गमाई २॥
ए २ हरि बांजगत गोरी लाई हरि के बिवोग कें सें जी क
सेरी माई टेक कोंन पुरष को काकी नारी अभिअंतर तु
म लेहु बिचारी १ कोन पूत को काको बाप कोंन मरे को क
रे संताप २ कहे कबीर रवा सें मन मांनो गोई बगोरी वगप
हिचांनो ३॥ ए ( ) राम बगारे हूं वगि लीन्हो सब तें चुडा
ह अपनें बसि कीन्ही टेक चोक बेद को सं ज्यानासी हिर
दे न धरे हर बिनासी १ देह गेह अभिमांन न साथो प्रम
पुनि तें प्रमपद पायो २ कहे कबीर हरि के चरन निवास
रां मनां मम न बस्यो न जासा ३॥ ए ३ सांई मेरे साजि दई
यक डोली ह स्त लोक अरु मैं तें बोली टेक अंश फंफर
सम सूत मये चा निष्ठा बाव चकु दिस डोला रे पंच क
हार का मरमन जांनां एके कह्यो ए कन दी मांनो ह्रून थां
मन हार न आवा मेंदर जात बकुत दुष पावा २ कहे कबी
र बरव हू दुष सहे राम प्रीति करि संपि दो रहे ए ३॥ ए
४॥ बिन सिजा ह का गदकी गुडीया जब लग पवन तब

स२ जहां जो कुं तहां सोग संताप ।। जुरा मरन को अधिक बिया
प ३ कहै कबीर चरनतो हिंबंदा घर मे घर दे प्रमानंदा ।। ४ ।।
कैसे नग्र करूं कुटवारी । चंचल पुरष बिचषन नारी टेक बेल बि
याइ गाइ लइ बांझा बछरा दूझै तीन्यूं सांझ १ मकड़ी घर माषी
छाझि द्धारी मांस पसारि चील्हि रषवारी २ मूसा षेवट नाव बि
लईया मींडक सोवै साप पहरईया ३ निति उठि स्याल सिंघ सूं
झूझै कहै कबीर कोई बिरला बूझै ४ ।। ५ ।। नाई रे चून बिलूंट
णाई बाघनि संगि भई सबहनि के । षसम न भेद लहाई टेक
सब घर फोरि बिलूंटांपायो कोई न जानै भेव षसम निपूतो आं
गनि सूतो रांड न देई लेव १ पारोसनि पनि भई बिरांनी मांहि
हुई घर घालै पंच सषी मिलि मंगल गावै यहु दुष या कूंसा
लै २ द्वै द्वै दीपक घरि घरि जोया मंदिर सदा अंधारा घर घेहर स
ब आपन वारथ बाहरि कीया पसारा ३ होत उजार सबै कोई
जानै सब काहू मनि ना ये कहै कबीर मिलै जे सतगुर तौ य
हु चूंन छुडावै ४ ।। ६ ।। बिषीया अजहुं सुरति सुष आसा हौं
न न देई हरि के चरन निवासा टेक सुष मांगे दुष पहली आवै
तातैं सुष मांग्या न हीं भावै १ जा सुष तैं स्यो बिरंचि डरांना सो सु
ष हम हु साच करि जांनां २ सुष छाड्या तब सब दुष भागा गु
र के सबद मेरा मन लागा ३ निस बासुर बिषै तनां उपगारा बि
षई नरक जात न हीं बारा ४ कहै कबीर चंचल मति त्यागी तब
केवल रांम नांम ल्यो लागी ५ ।। ७ ।। तुम गारडू मैं बिष का माता
काहे न जिवावौ मेरे अंमृत दाता टेक संसार भवंगम डसीले
काया अरु दुष दारुण व्यापै तेरी माया १ सापनि एक पिटारै जा
गै अह निस रोवै ताकूं फिरि फिरि लागै २ कहै कबीर को को
ज करि करि पाया तो न पांडे दूरि लांई गया ३ ।। ८ ।। कह
कलजुग षाया सो इस ब्यागु सरणे आया ३ कहै कबीर को
कौन हीरा थे रांम रसाइन जिन जिन चाष्या ।। ९ ।। माया तजूं
तजी न हीं जाई फिरि फिरि माया मोहि लपटाई टेक माया आद
र माया मांन माया न हीं तहां ब्रह्म गियांन १ माया रस माया क
रि जांनि माया कारनि तजै परांन २ माया जप तप माया जोग
माया बांधे सब ही लोग ३ माया जल थल माया आकासि
माया ब्यापि रही चहुं पासि ४ माया माता माया पिता अति मा
या अस्त्री सुता ५ माया मारि करै ब्यौहार कहै कबीर मेरै रांम
अधार ६ ।। १० ।। गृह जिन जांनौ रूडौ रे कंचन महल उजारे
मिंदर रांम कहै बिन धूरौ रे टेक कायन गृह मन डहके सब

लाघूंमहतैं लेत अचांनकाकाहूनदेतदिषाई॥४॥२०४
कामी गूंकछ्यथिरनरहाई। देषतनैंनचल्याजगजाई
टेक॥ पीकलनपूतसवालषनाती। तांबांवनघरिदीवा
नबाती॥१॥ लंकासोकोटसमंदसीषाई। तारांवनकोष
बरिनपाई॥२॥ आवतसंगनजातसंगाती। कहाभयो
दरिबंधेहाथी॥३॥ कहैकबीरअंतिकीबारी। हाथझा
रिजैसैचलेजुवारी॥४॥२०५॥ रामथोरेदिननकूंकाधन
करणां। धंधाबहोतनियायतमरणां॥ टेक॥ कोडीध
जमाहदहस्तीबंधराजा। क्रिपणकोधनकोणैकाज
॥१॥ धनकेगर्बरांमनहीजांनां। नागाहैजमपैंगुदरा
नां॥२॥ कहैकबीरचेतहुरेभाई। हंसगयाकछूसंगि
नजाई॥३॥२०६॥ कहादेहूंमायाडुषकरिजोरी। हाथ
चूंनगजपांचपछोरी॥टेक॥ नाकोबंधनजाईसाथी।
बंधेरहेतुरगमहाथी॥१॥ मैंडीमहलबावडीछाजा। छा
डिगयेसबभूपतिराजा॥२॥ कहैकबीररांमस्योंलाई। धरीर
हीमायाकाहूषाई॥३॥२०७॥ मायाकारसषांनपाया। तब
लगजमबिलवाकैआवा॥टेक॥ अनेकजतनकरिगाडिउ
राई। काहूसांचीकाहूपाई॥१॥ तिलतिलकरियहुमायाजो
री। चलतीबेरतिनांइयूंतोरी॥२॥ कहैकबीरहूंताकादासमा
यामांहीरहैउदास॥३॥२०८॥ मेरीमेरीदुनीयांकरते। मोहम
छरतनधरते॥ आगैमीरमुकदमहोते। तेभीगयेयूंकरत॥
टेक॥ किसकीममाचचापुनिकिसकी। किसकापुंगडाजो
ई। यहुसंसारबजारमंड्याहै। जांनैंगाजनकोई॥१॥ मैंपरदे
सीकाहिपुकारूं। यहांनहीकोईमेरा। यहुसंसारढूंढिसब
देष्या। एकभरोसातेरा॥२॥ षांहहलालहरांमनिवारै। जिस्हि
तनकूंकूंतहोई। पंचततकामरमनजांनैं। दोजिगपडिहैसो
ई॥३॥ कुटंबकारनिकरमकमावै। तूंजांनैंघरमेरा। एसबमि
लेआपसवारथीहुइहांनहीकोतेरा॥४॥ साचहुतेरोपंथनि
हारो। बुरानकिसीकाकरनां। कहैकबीरसुनहुरेसंतो
ज्याबपसमकूंभरनां॥५॥२०९॥ रियामैंक्याभेराक्यातेरा। ला
जनमैंकहतघरमेरा॥टेक॥ चारिपदारनिसभेरा। जैसेंत
रवरपंषबसेरा॥१॥ जैसेंबनीयेहाटपसारा। सबजगकासौ

डेर॥२॥ कहैकबीरसुनहुरेसंतो। ईहमतुम

ल्पीयेंकरडोरीडीलै॥१॥पवनथक्यौगुडीयावस्यौनीसीम
धूनिधुनिरोवैप्रानी॥कहेकबीरजिसारंगप्रांनीनही
तरकैंहेपैचातांनी॥३॥ए६॥मनरेतनकागदकापतरा
लागेबूंदबिनसिजाइछिनमैगर्बकरेकाअतराटे
माटीषोदह्निीतनमारे॥अंधकहेघरमेरा॥आवैतब
बबांधिलैचालेबकुरिनकरिहैफेरा॥षोटकपटकरि
यकुधनजोस्यौलेधरतीमैंगाड्यौ॥रोक्यौघटसासनही
निकसेवोरवोरसबछाड्यौ॥कहेकबीरनटनाटिकथा
केमंदलाकोनबजावैगगेपषनीयांनरुफरीबाजीकोक
कुकेआवै॥४॥७०॥फूलेतनकूंक्यागरबदईयेमरीगत्तो
पलनरिरहयानपईयेटेकघीरषांडयृत्तपिंडसंवारा॥प्रांन
गयेलेबाहरिजारा॥चोवाचंदनचरचतअंगा॥सोतनजरै
काठकेसंगा॥दासकबीरयकुकीन्हविचारा॥एकदिन
होहेकालहमारा॥२॥७१॥देषकुयकुतनजरतांहे॥घडीप
हरबिलंबोरेनाई॥जरतांहैटेककाहेकूंएताकीयापसा
रायकुतनजरिबरिहैछारा॥नौसतघादसलागीआ
गीमुगधनचेतैनषसलागी॥कांमक्रोधघटनस्यौबिका
रा॥आपहिआयजरेमंसारा॥कहेकबीरहममृतेंसमांनां क
रामनांमछूटेअनिमांनां॥३॥७२॥तनरायनहाराकोनाहे
तुमसोचिविचारदिषोमनमांही॥टेकजोरकटबअपनो
कहिपासो॥मुंडचोकिलेबाहरिजास्यौ॥दगाबाजेलूटे
अरुरोवै॥जालिगाडिपुरषोजसीषोवै॥कहेकबीरसुन
हुरेलोई॥हरिबिनरापनहारनकोई॥३॥७३॥अबक्यासो
वेआइबनी॥सिरपरिराजारांमधनी॥टेक॥दिनदिनपापब
हुतमैकीन्हआनहीगोबिंदसुकमनी॥लेष्टोजोमिलहोत
पछिसांनो॥लालचलागोकुतघनी॥१॥छूटीफोजआंनि
गढघेस्यौगढिगयोगढरबाडितनीपकस्यौदंसजमले
चाल्योमंदिररोवैनारिघनी॥कहेकबीररांमकिनसुमिरत
चीनततनोहिनएकचिनी॥जबजमआइपरोसीघेस्यौ॥बा
डिचलेपोसबपुरषपनी॥॥सूवदाडरपतरहोमेरेना
ईतोहिडांईहेतबिलाई॥तीनं॥बारसूधेयकदिनमैं
कबकुकमत्ताघवाईटेकयामंजारीमुगधनमांनैसबकु
नीयांडहकाई॥रानांरावरंककूंल्यापैकरिकरिप्रीति
सवाई॥कहेकबीरसुनहुरेसुवटाउबरैहरिसरनाई॥

हरन अनेता ॥२३॥ हरि जननी मैं बालक तेरा काहे न औ
गन बकसो मेरा टेक सुत अपराध करै दिन केते जननी के
चित रहैं न तेते १ कर गहि केस करै जो घाता तउ न हेत उता
रै माता १ कहै कबीर एक बुधि बिचारी बालक दुषी दुषी म
हतारी २॥२४॥ गोबिंदे तुम थे डरपूं भारी सरनाई आयो
क्यूं न गहो ए ध्रु कउन बात तुम्हारी टेक॥ धूप दाझते छ
ह तकाई मति तरवर सच पांऊं तरवर मांहे ज्वाला निकसै
तो क्या लेय बुझाऊं १ बिन बन जलै तो जल रै फूं बांबु मति
जलसी तलहौ जलही मां हि आग निकसै औरन हू
जाकोई २ तारण तिरण तिरण तू तारण और न दूजा जांनं
कहै कबीर सरनाई आयो आन देव नही मानूं ३॥२५॥ मैं गु
लाम मोहि बेचि गुसांई तन मन धन मेरा राम जी के तांई टेक
आनि कबीरा हाटि उतारा सोई गाहक सोई बेचण हारा बे
चै राम तो राखै कौन राखै राम तो बेचै कौन १ मैं र
सिर पर तेरक तुम्ह सौं हि तुम बिन दूजा कोई नांही॥ कहै कबी
र मैं आपाड सा सादि बन्दे अपनी छिन न बिसाऊं २॥२६॥
अब मोहि राम भरोसा तेरा और कौन को करूं निहोरा टेक
जाके राम सरीषा साहिब भाई सो क्यूं अनत पुकारन जाई १
जा सिरि तीन लोक को भारा सो क्यूं न करै जन को प्रतिपारा २
कहै कबीर सेवो बनवारी सींचो पेड पीवै सब डारी ३॥२७॥
जीयरा मेरा फिरै रे उदास राम बिन निकसि न जाई सास अ
जहु कवन आस टेक जहां जहां जाउं राम मिलावै न कोई
कहो संतो कैसे जीवन होई १ जरै सरीर यहु तन कोई न बुझा
वै अनल दहै निस नींद न आवै २ चंदन घसि कै अंग लगाऊं॥ २
राम बिना दारन दुष पाऊं ३ सतसंगति मन करि ले धीरा स
हज जानि रामहि जे कबीरा ४॥२८॥ रांम कहो न अजहूं
केते दिनां जब है है प्रान प्रभु तुम लीना टेक जो अमत
अनेक जनम गया तुम दरस गोबिंद छिन न भया १ भ्रमि
भूलि परयो भो सागर कछु न बसाइ बसो धरा २ कहै कबी
र दुष भंजना करो दया दुरत निकंदना ३॥२९॥ हरि मेरा पी
व माई हरि मेरा पीव हरि बिन रहि न सकै मेरा जीव टेक
हरि मेरा पीव मैं हरि की बहुरीया राम बडे मैं छुटक लहु
रीया १ क्या सिंगार मिलण के ताई काहे न मिलो राजा रा
म गुसांई २ अब की बेर मिलन जो पाऊं

थोर्‌स रानरजान अमर मरा काया घर घर वा हु पहर की छाया
टेक मारग छाडि कुमारग जो वे आपण मरे और कूं रोवे १
एक कीया कछू एक करनो मुगधन चेते निदुचे मरनो
जल बूंद ते मा मे सारा उपजत बिनसत लगे न बारा २ पंच
पंखुडी एक सरीरा चरन कंवल दल नेवर कबीरा ४॥ २२२॥
डहड डहड क्या हसती है दिवान पना क्या करती है आडी ति
रछी फिरती है कूं चूं चूं मूं मूं करती है टेक अति कुल
नती जोरावंती रहन कहूं न दी पावे राजा रानी और छत्रप
ति तिनी अति बिलावे १ क्या तूं रंगी क्या तूं चंगी क्या मु
डि चढनी मीर मुकादम सेर दिवानी जंगल केर षज्ञानी २
भूले जर मि कहा तुमरा ते क्या मद माते माया राम रंगि सा
सम विचारा काया दोड न माया ३ कहे कबीर सुहाग सुंद
रि हरि भजि के निसतारा सारा षलक षराब कीया है आदम
कहा बिचारा ४॥ २२४॥ हरि के नांइ गदर जिन करहू राम
म चित मुषा जु धरहू टेक जेसे सती तजे सिंगार ऐसे
ही करम निवारे १ राग दोष दहूं मे एक न जाणि कहा चितउप
जे तो चिंता न राषि २ भूले बिसरि गहल जो होई कहे कबी
र क्या कंसि सोमा ही ३॥ २२२ मनरे कागद कीर पराया कहा न
यो ब्योपार तुम्हारे कलितर बढे सवायो टेक बडे ब्यो
सो वोदी न्हो कलतर का ग्री घोटे च्यारि लाष अरु असीवी
कहे जन्म लिष्यो सब चोटे १ अब की बेर न कागद की
तो धरमराइ सूं तूटे पूंजी बितडि बंदला देले तब कहे कौ
ण के छूटे २ गुरदेव ग्यानी भयो लगनीयां सुमिरन दीन्हों
हीरा बडी निमरनी नांव राम को चढि गयो कीर कबीरा ३
॥ २२४॥ धागा ज्यूं तूटे त्यूं जोडि तूटे तूटणि होइ गीर नां
मिले बहोडि टेक उरझ्यो सूत पान नहीं लागे कूंच फिरे सब
लाई छिटके पवन तार जब तूटे तब मेरो कहा बसाई १
सुरझ्यो सूत गुडी सब लागी पवन राषि मन धीरा पंचूं न
ईया आए सन मुष तब यहु पान करी ला २ नान्ही मेदा पी
सि लई है छांनि लई है बारा कहे कबीर तेल जब मेल्या
बुनत न लागी बारा ३॥ २२५॥ ऐसा औसर बहुरि न आवे
राम मिले पूरा जन पावे टेक जन्म अनेक गया अरु आ
या करी बेगारि न भाडा पाया भेष अनेक एक धूं के साने
रूप धरे नट जे मा १ होन एक माग़ कवला कंत कबीर के डुष

रांमजणिरांमजणिरांमचिंतामनिनागबडेपा
जिनिटेका अस्संतसंगतिजिनजाइऐनुलाइमा
तमिलिहरिगुणगाइ२ हदाकेवलमेंरापिरेलुका
कोगोविदेजपूछ्यटिनजाइ१ अवसिधिनोनिधि
जारीकहैकवीरजजिचरनमुरारि३॥१२६॥नृमस
मगुणगावेसोनगरामैरमनिनावेटेकजेजन
मकोनांचतोकोमैवलिहारीजांवरजिहिघटि
जनरपूरितांकोमेचरनारेजधूरि१जातिजुला
केधाया हरपिहरषिगुणरमैकबीर२॥१२७॥जा
जगतिनदीसाधीसोजन्मतकाहेनमूवोअपराधी
नमुचेमुचिनइकिनवांझसूकररूपफिरैकहि
जिहकुलपूतनग्यांनविचारीवाकीविधवाका
हैमहतारी१कहैकवीरनरसुंदरसरूपरांमनगति
कचलकरूप२॥१२८॥रांमविनांधृगधृगनरना
तेअइकायेसंसारीटेकपजविनकेसोरजपूत
विनोफोकटऔधूत१गनिकाकोपूतपिताका
गुरुविनचेलोग्यांननलहै२कवारीकन्याक
गारसोजनपावेविननरतार३कहैकवीरफू
डरूंसुषदेवकहतोमेंक्याकरूं४॥१२९॥जरिजा
साजीवनोराजारांमजीसूंप्रीतिनहोइजन्मअ
कजातदेचेतिनदेषेकोइटेकमधुमाषीमध
सोमधुवामधुलेजाइगयोगयोधनमूढजनां१
पछिताइ२विषीयासुषकेकारणेगतिका
तिकपाइ गिनसूझैजरेपतंगज्यूंजा
केजन्मकेकारणेकिलपूजोदेवसदैसोकाहेन
रांमजीजाकोजगतमहैसो३कहैकबीरचित
लामुनइमूढमनमोरविषीयाफिरिफिरिआवै
जारांमनमिलेबहेस४॥१३०॥रांमनजपहुकहा
अधारांमविनांजमभेलेफंधाटेकसुतदाराका
मसासाअंतिकीवेरनांइहपारा१मायाऊपरि
मांडीसाथिनचलेषोपरीहांडी२जपोरांमज्यूंअं
वोरावादीबादकबीरपुकारे३॥१३१॥
मनबौराअबतोजस्यावस्यांव

लिनदी ओ कै ॥२॥२२०॥ राम बान अनियारे तीर जा हिला
गसो जानै पीर टेक तन मन षोजूं चोट न पाऊं वोषमूरी
कहां घसि लाऊं ॥१॥ एक ही रूप दीसै सब नारी नां जानूं को पी
य हि पियारी ॥२॥ कहै कबीर जा मस्तग भाग नां जानूं का हू
दे सुहाग ॥३॥२२१॥ आसन ही पूरी यो ॥ राम बिन को कम काट
न हारै टेक ॥ जल अजल परिपूरता चातृग चित हि नदा
सा ॥ मेरी बिषम गति है परी तातें पियास पियास ॥१॥ सिध मि
लै सुषि ना मिलै मिलै मिलावै सोइ ॥ सूर सिध जब भेटिए
तब दुष न व्यापै कोइ ॥२॥ बोछै जल जैसे मछिका उदर न भ
रैनी ॥ तुम कारनि केसवा जन लाल बेलि कबीर ॥३॥
२२२॥ राम बिन तन की तपति न जाइ ॥ जल मैं अगनि उठी
अधिकाइ टेक ॥ तुम जलनिधि मैं जलचर मीनां ॥ जल मैं
रहूं जलही बिन षीनां ॥१॥ तुम पिंजरा मैं सूवनां तोरा ॥ दरसन
देहु भाग बड मोरा ॥२॥ तुम सतगुर मैं नौतम चेला ॥ कहै कबी
र राम रमूं अकेला ॥३॥ [illegible] ॥ गोबिंदा गुण गाइरे तातें पाइ
रे परम निधांन टेक ॥ आकार जग न पडै जो बिकारै जग जाइ ॥
अनहद बेनि बजाइ करि रहै गगन मठ छाइ ॥१॥ संपति दे
पिन हरषीए बिपति दे पिन दीरोइ ॥ ज्यूं संपति त्यूं बिपति
है करता करै सहोइ ॥२॥ सुरग लोग न बंछीए डरीए न नरक
निवास ॥ होंणां था सो होइस्या मनन करि झूठी आस ॥३॥
झूठै जग डहकाया घणा क्या जीवन की आस ॥ राम रसाइ
न जिन पीया जा कूं लगी न झूठी प्यास ॥ अर्ध षिन जीव
न ला भगवंत भगति सदेस ॥ कोटिक लप जीव वृथा
जे नां सीह हरि सूं हेत ॥ क्या जप क्या तप क्या संजम क्या
तीरथ ब्रत समान ॥ जो जीव जुगति न जांन ही भाव भग
ति भगवांन ॥ मुनि मंडल मैं सो थिर लै प्रम जोति प्रकास त
ह वां रूप न रेष है बिन फूलां फल्यो अकास ॥७॥ कहै कबी
र हरि गाइलै सतसंगति हरदा में धारि ॥ जो सेवग सेवा करै
ता संग रमै मुरारि ॥८॥२२४॥ मन रे हरि भजि हरि भजि हरि भजि भा
ई ॥ जा दिन तेरै कोइ नांही ता दिन राम सहाई टेक ॥ तंत
न जानूं मंत न जानूं जानूं सुंदर काया ॥ मीर मलिक छत्र
पति राजा ते भी षाये माया ॥१॥ बेद न जानूं भेद न जानूं जानूं
एक ही रामा ॥ पंडित दिस पछिवारा कीन्हां मुष कीन्हौं जि
त नामा ॥२॥ राजा अंबरीक कै कारनि चक्र सुदरसन जारै ॥

सबकोईवोब्रह्माविष्णमहेस्वरकुपीयाजिनयाच
लचलोसेरात्रीधुंकुपीयाजोपत्तिकुपीयारेकुपीवि
तरीताके कहैकबीरसबैजुगकुपीया सतसुपीमनजीव
वे॥४॥२२३॥कासिथिसाधिकरूकद्धनांदीरांमस्याइ
नेमैवीरसनांमांत्तीटेकनदीकद्धपांनधांनसिथिजो
गत्तातेलपजेनांनारोग॥१॥काद्धनमैवसिजोएनदासवि
मननतीबाडैआसासासा॥सबदिलकाचहरीदिलसा
२॥कहैकबीरतजिजगब्योहार२॥२२८॥जौलैंसनांराम
नकदियौतोलुपजतबिनसतअमतरदियौटेकजैसी
देपितखुक्लोछायायानगएकदोकाकीमायाजीवल
कद्धनकीयाप्रवानां॥मूंवांमरमकहिकाजांनां॥१॥कंथ
कालसुषकोईनसोवैराजारंकदोउमिलिरोवैरहैसर
रोवरकेवसरीवारीमरसाइनपीवैकबीराधा॥२२७॥का
नागेकावांधेचांमाजोनदीचीन्हसिआतमरांमटेकना
गेफिरेंजोगजोहोईबनकामृगमुक्तिगयाकोईमूं
डमुंडायेंजोसिधिहोईस्वरगिनेडपकुत्तीकोईवि
दरापिजेपत्तिदेनाईतोपुसेरकौनपरमगतिपाई२॥
पढेगुनेनपजेअहंकारा॥अधपडबेवारनपारा॥३॥क
हैकबीरसुनहुरेभाईरांमनामबिनकिनसिधिपाई
प॥२५०॥हरिबिनचरमिविगूतेगंदाजांपैजांनेआप
नपोछुडावनतेबांधेबहोफंदाटेकजोगीकहैजोग
सिधिनीकाऔरनदूजाभाईलुंचितमुंडितमोनिज
टाधरएजकहैंसिधपाई॥जहांकाउपज्यातहांविल
नां॥हरिपदबिसरयातबहीपंडितगुनीसूरकविदाता
एजकहैंबडहमहीस्वारयारकीपवरिनजांनीफिर्यो
सकलबनऐसोयकुमनतोबोद्दियकेकनवाउस्वर
ह्योवगपोसोवेसो२तजिबांवेदांहिणविकारादरिपद
दिदकरिगह्यौ॥कहैकबीरगंगेगुडखाया॥बूझैतो
काकहाँ॥४॥२५१॥चलौविचारीरहोसंभारीकहताहुं
जमुकारीरांमनांमअंतरिगतिनांहीतौजनमजुवाउस्रू
हारीटेकमूंडमुडाइफूलिकाबैठेकाननिमुद्रपि-म
जसा॥बादरिदहघेहलपटांनी॥नीतरितोघरमूसा॥गा
रबनग्रागांवबसाय   म-॥२॥
याजबजम-प

हाथिसंदोराटेक होइनिसंक मगनह्वै नाचो लोकमोहन
रमझाडा सूरोकहा मरणंतेडरपै सतीनसांचे भांडा १ लो
क वेद कुल की मरजादा ऐह गलामें पासी आधा चलिक
रि पाछा फिरि है हो है जगमें हासी २ यह संसार सकल है
मैला राम कहे ते सूचा कहै कबीर नांव नहीं छाडूं गिरत प
रत चढि उंचा ३ । ३७४ । नाहिं हरि जन न गति तिन छाडी तन
धन जाइ जाइ सुष संपति नांव की नेजो गाडै टेक सती नेडा
र संचे नहीं कबहुं पडदो दीयो नहीं ले पीव पीव करत पी
व ही पावै रांम रांम मुष बोले १ सूर हथियार धरै नहीं ध
रती जो अरि का दल को पै रालि सनाह अरसा म्हो आवै
देही को भेजो रोपै २ केहर घास चरै नहीं कबहूं नावै प्रान
निकसि किन जाहु दास कबीर राम न रत जांनै औरन जां
नै का हू ३ ॥ ३७५ ॥ अब मेरे ऐसी है बनि आई नावै को इनि
दो नावे को बंदो मैं छाडी लोक बडाई टेक लोका नीदक
मेरो क्या करि है सिर परि राम सहाई हस्ती का दंत सल
आया सो पीछा होइन जाई १ कहलक छाडि नई जब गौ
न का बहो रिन कुलैस माई के हरि कोटि कै जे लांघ मंजू
षोया सन षाई २ पडि गई छाप नगति अनभै की अंतरि
रजगल पटाई दास कबीर हरि गैनही कबहूं षाटी आधि
क समाई ३ ॥ ३७६ ॥ सतगुर साहब डे सोदागर तहां मैं च
लि करि जो कुंगा मन की महोरथ रूं गुरु आगे ग्यांन
का घोडा ल्यो कुंगा टेक सहज पलांन पवन का घोडा
ल्यो की लगांम लगा कुंगा ग्यांन बिचार जरू तन तरगस
सुरति कबांण चढा कुंगा १ षीर गंभीर षडग लीयां सु दग
रि माया का कोट ढहा कुंगा सोहं मस्त मेवासी राजा बदि प
कडि मंगा कुंगा २ गगन गंधूप मैं सहजै पाया अनहद तब
ल घुरा कुंगा दास कबीर का सिर परि साहिब मैं नाही कू
सी सन वा कुंगा ३ ॥ ३७७ ॥ तन धरि सुषीया को इन देष्या
जो मिलीया सो दुषीया वै हदे अरस की बात कहत हूं
सबै बस का की यावा टै का हाटै बाटै सब जग दुषीया
क्या गिरही बैरागी सुष आचारज दुष के कारणि ग्रन
सूं माया त्यागी वां २ जोगी दुषीया जंगम दुषीया तपसी
कूं दुष दुणां वै आसा त्रिष्णा सब कूं व्यापै को ई महल
न हीं सूनां वै ३ त्रिणमें सब लोई दुषीया तप तिनमैं

जे अैबरज्ञानैताहीसूंमैरामनमांनौ॥४॥२४८॥तनषो
जौनरनांकरौबडाई॥जुगति बिनांजगतिकिनपाईटेष
ककहावतमुलांकाजी॥रांमबिनांसबफोकटबाजी१न
गृहबोजगाजगावासी॥तिनकुनकाटीजमकीपासी
कहैकबीरयकुतनकाचा॥सबदनिरंजनरांमनांमसाचा
३॥२४९॥जायपरोदमारौकाकरिहै॥आपकरेआपैडुबि
रिहैटेकफुफड़जातांबाटबतावै॥जौनचलेतोबहोडु
पावै॥रहेंथकूंपकदीयोबताई॥तरकिपरैपुनिहरिन
ईईश्री१ईश्रीस्वादिबिषैसबहिहै॥नरकिपरैपुनिरांमन
हिहैत्रुपंचसषीमिलिमतोउपायो॥जमकीपासीहंस
बंधायो॥कहैकबीरप्रतीतिनआवे॥पाषंडकपटइहि
जावै॥३॥२५०॥ऐसेलोगनसूंकाकहीऐ॥जेनरजनऐना
तैन्यारे॥तिनतैसदाडरांतेरहीऐ॥टेकआपनदेईचर
पोनी॥तिहिनिंदेजिहिगंगाआंनी॥१आपनमेरेऔरकूं
सेऔगनिरत्नगाई॥मंदिरमेंसोवै आपनअंधऔरसू
कोनो॥तिनकूंदेषिकबीरडरांनो॥३॥२५२॥देहरिजन
तलडत्तेहाफुनिगाकेसेंगरडजपतहैटेकअवि
एकदेषकुसंसारा॥सुनहांषैदेजंजरअसवारा॥२ऐसाऐ
नादेषा॥जंबककरेकेंहरसूंलेषा॥कहैकबीररांम
नजिभाई॥दासअधमगतिकबहुनजाई॥३॥२५२॥देह
रिजनथेंचूकपरी॥जेकछुआहितुम्हारौहरीटेकमोरतो
जेबलगमैंकीन्हो॥तबलगत्रासबहोतदुषदीनो॥१सिध
साधिककहैंहमसिधिपाई॥रांमनांमबिनसबैगाई॥२जे
रागीआसपियासी॥तिनकीमायाकबेननासी॥३कहै
बीरमैंदास॥तुम्हारा॥मायाषंडनकरहुहमारा॥४॥२५३॥
सबडनीसयांनीमैंबोरा॥हमबिगरेबिगरोजिनऔरा टे
मैंनहीबोरारांमकीयोबौरा॥सतगुरजारिगयाजरम
१बिद्यानपढंबादनहीजांनं॥हरिगुनकथतसुनतबौ
नूं॥२कामक्रोधदोऊंजरौबिकारा॥आपहिआप
३मीठोकहाताहिजौभावे॥दासकबीररांमगुनगावे४॥
॥२५४॥रेमनजाइजहांजोभावे॥अबनकोईसेरेआंकुस
वैठेकजहांजहांजाइतहांतहांरांमांहरिपदचीन्हि
याबिष्णांमा२तनरंजनतबदेषीयतहैईप्रगट्योभ
जहांतहांसोई१लीननिरंतरबपबिसरा चौ

२गोठबिषबांधे॥मूलनहूवालालहामेरेरामकीअ
पदनगरी।कहैकबीरसुनलालहा॥२॥२४२॥कौनबिचार
करतहौपूजा।आतमरामअवरनहिदूजा।टेक।बिनप्रती
तैपातीतोडै।ग्यानबिनांदेवलसिरफोडै।१।लुचरीलप
सीआपसंघारै।दारैवाहारामपुकारै।२।परआतमजेततरै
बचारै।कहैकबीरताकेबलिहारै।३॥२४३॥कालचयोति
लकगरैजपमाला।मरमनजांनेमिलनगोपाला।टेक।
दिनदसपसूकरैहरियाई।गलैकांठवाकीबांनिनजाई।१।
स्वांगसेतकरनीमनिकाली।कहालयोगलिमालाघाली।२।
बिनहीप्रेमकहाचयोरोयें।भीतरिमैलबाहरिकाधोयें।३।
गलगलस्वादभगतिनहीधीरा।चीकनचंदवाकहैकबी
रा।४॥२४४॥हरिकेआवेंकिहिकांमा।जेनहीचीन्हेंआ
तमरांमा।टेक।थोरीभगतिबहुतअहंकारा।अैसेभगता
मिलैंअपारा।१।भावनचीन्हेंहरिगोपाला।जांनकअरहर
टकेगलिमाला।२।कहैकबीरजिनकेंअभिमांन।तेभगत
भगवंतसमांन।३॥२४५॥कहाभयोरचिस्वांगबनायो।अं
तरजांमीनिकटिनआयो।टेक।बिषईबिषदिढावैगावे
राममनांममनकबहूनभावे।१।पापीपरलेजांहिअभागे॥
अंमृतछाडिबिषैरसलागे।२।कहैकबीरहरिभगतिनसा
धी।भगमुषिलागिमुएअपराधी।३॥२४६॥जौपैंपीयाकैम
निनहीभाये।तौकापारोसनिकैंहुलराये।टेक।कहाचूरा
पायलझमकाये।कहाभयोबिछुवाठमकाये।१।कहाका
जरसंदूरकेदीयें।सोलहसिंगारकहाभयोकीये।२।अंजन
मंजनकरैठगौरी।कापचिमरैनिगोडीबौरी।३।जौपैंपतिब
रताहैनारी।कैसैंहीरहौसोपीयपियारी।४।तनमनजोबन
सौंपिसरीरा।ताहिसुहागनिकहैकबीरा।५॥२४७॥हूमरपनी
यांनस्यांनजाई।अधिकतिषाहरिबिननबुझाई।टेक।
परिनीरलेजतलिहारी।कैसेंनीरभरैपणिहारी।१।उधस्यो
कूपघाटभयोनारी।चलीनिरासपंचपनिहारी।२।गुरउप
देसभरीलेनीरा।हरषिहरषिजलपीवैकबीरा।३॥२४८॥कहै
नईयाअंबरकासूंलागा।कोईजानैंगाजांननहारसभागा।
टेक।अंबरदीसैकेतातारा।कौनचतुरअैसाचितरनहारा।१।जेतु
मदेषौसोयहूनाहीयहूपदअगमअगोचरमांही।२।तीन
हाथएकअरधाई।अैसाअंबरचीन्हौभाई।३।कहैकबीर

सतनरिश्मैलफूलवाकीडालहूरी॥टेक पांचजनांमिलि
मजलसिमाडी॥फिरतपियालाघरीघरी पीवैसनाम्पात
जेअनागपा म्रिपिनपावैतांक नरी॥१॥पीयौप्रहलादनां
मदेवअपदेवदकौध्यांनधरी॥पीवतहीजनचढमिवरपांरि
औरअमनसूतरकपरी॥ सतगुरसबदअनतसचपायौ॥
पीवतसप्रबुधसबबिसरी॥कहैकबीरअमरकीमहमा
सोईपीवैजाकूंसबरिपरी॥३॥२८१॥ टेकोइअदलीअद
लचलावैनगरीमैचोरमुसणनहीपावै॥टे॥पांचूंपकरि
डरोकघरिल्यावैचितकचोरहैन्यावचुकावै॥चेतनकै
घरिपहराजागैताकूंकालनकहानविलागै॥पैलचोम
नमंडाकोईसूरा॥ताकूंसतगुरमिलीयापूरा॥कहैक
बीरसाईलवडभागी॥जाकीप्रीतिरामसूलागी॥४॥२८२॥
साधोकह्यांसुण्यांकछूनांहीरे॥जबलगजुगजेजाल
नछूटे॥विवेकरतपनामाहीरे॥टे॥सांपीसीखिबूल्ले
ईव्हैवा॥निरजेविवेकमावैरव्यामसप्रपंचीप्रांनी॥सापि
आगमकीरयावैरे॥करैअनीतिगगनमायामैकथताबद

[illegible]

रसाहिकाकहीणदेषतहिष्ट नुलांनारे॥२८३॥अना
दकजीवनमारीमलैवांटेमरीडरीडरीकरिफूंवांटूंजरि
थारीरे॥टे॥ल्ससबलोमैनिबलबापरो॥प्रागसमइक
मारीरे॥अपणींबदलोकफूलछूटेकफूलीछिपुकारीरे
॥धरमराइजबलेषोमांगैपड़ीकरैदरबारीरे॥साचकूच
कालेषाकै॥गातलवजागडाकैनारीरे॥यनकूवीससनां

[illegible]

मृतकचाह्यासोईरे॥३॥जीअधूमसौधर्मकहावै॥तोप
पकवनसाकसौंयैरेकहैकबीरणविषकैरनाम्हआप

रसुधसागरपावा॥२॥२५५॥ बकु रिदमकादेकूं आवेगो बि
छुरे पंच तत कीरचनो॥ तब दमरांमदि पावेगो टेक॥ पृथी का
गुण पांणी सोष्या॥ पांणी तेज मिलावेगो॥ तेज पवन मिलि
पवन सबद मिलि॥ सहज समाधि लगावेगो॥१॥ जैसे बहु कंच
न के भूषन॥ एक हि गालि तवावेगो॥ ऐसे हम लोक बेद के॥
बिछुरे सुनि हीमां हि समावेगो॥ जैसे जल हि तरंग तरंगनी
ऐसे हम दिपलावहिंगे॥ कहे कबीर स्वामी सुष संगम॥ ह
सहि हम मिलावेगो॥२॥२५६॥ कबीरो से तन दी गयो बहिरे॥
वाडी माह किराडे टैरैदि कोई स्यावेग दिरे टेक॥ बादल बो
नी रांम घन गनया॥ बरषे अमृत धारा॥ सधी नीर गंग न रिआ
ई पीवे प्रेम नहमारा॥१॥ जहां बहि लागे सनक सनंदन॥ रू
द्र ध्यान धरि बेवा॥ सुयं प्रकास आनंद बमे कमे॥ घन कबी
र के पेव॥२॥२५७॥ कबीरो से तन दी गयो बहिरे गहो माय कि
राडे टेरे दि कोई स्यावेग दिरे टेक॥ भेरे भ्रम के कबकु न बे
से कंठो आगम अथदिरे॥ आगे अनिन अनिन निजदोतो
अबपडो॥ भगति के दहिरे॥१॥ कांम क्रोध अहंकार नव्यापे॥
लालच लोभ न लहि रे॥ डिन पाषंड अरु मांनि बडाई रूपि
पचि हारे सदिरे॥ ऐसे सम हंस चुगे मुक्ता फल॥ चुगत न कोई
चहिरे॥ रिष नारद से चुणि चुणि जीवे॥ हरि मारग क हि कहिरे॥
३॥ त्रिहमां तरंग निकट नदी आवे॥ ऐसी भ्रम न नेरे॥ कहे क
बीर सुणो नाई साधो॥ साध संगति स ति देरे ४॥२५८॥ अवधू
कांम धेनि गहि बांधी॥ भांडा भंजन करे सबे नेका॥ कछू न
मुजे आंधी टेक॥ जो ब्यावे तो दूध न देई॥ गया न णि अमृत स
रवे॥ कोली घाल्यां बीडरि चाले॥ ज्यू घेरूं त्यू दरवे॥१॥ ति हि धे
नितें इछ्या पूगी॥ पाक डि षूंटे बांधी॥ ग्वाडा मांही आनंद उ
पनो॥ षूंटे दोनूं षाधी॥२॥ साई माई सास पुनि साई॥ साई घर की
नारी॥ कहे कबीर परमपद पाया॥ संतो लेहु बिचारी॥३॥२
५९॥ हरि रस सार रांम रस सार सोई पीवे जा का मिटे बिकार
टेक॥ यो रस अमल सब लहे नाई॥ अमल दार कोई पीवेगा॥
जो पावे सो होइ अबिनासी॥ अमर जुगे जुग जीवेगा॥१॥ यो र
स पीयो सुर सनकादिक॥ और कं मांप लि स्वामी॥ नारद से सु
न के ते बरनूं॥ जोगेस्वर न बनांमी॥२॥ हरू जो निसर ना गति आ
न गति बहु तल रूघ नाथा॥ दास कबीरा हरि रस पीवे॥ सब संत
न मिलि साथा॥३॥२६०॥ मी डौरे कूं डालन जरी रांम नांम का

॥टेक॥ऊगजपतपऊवा॥पांनरांमनांमबिनऊवा॥आंन
२बिधिनखेदपूजा॥आचार॥सबदरीयामेंवारतपा॥३॥इं
स्वाथमनकेस्वाद॥जहांसाचतहांमांडेबादरदासकबीर
रह्या॥त्यौंलाइ॥जरमकरमसबदीयाबहाइ॥४॥२७२॥
रागगौडीसंपूर्ण॥राग॥२॥रागरांमकली॥जगतगुरअ
नहदकीगुरीबाजे॥तहांदीरघनादल्यौंलागे॥टेक॥तीअ
स्थानअंतरविषछाला॥गगनमंडलसींगीबाजेतऊवां
एककुकोनरचैदेनिराकारव्रतसाजे॥पगगनहिला
वीसींगीकरिचूंगी॥कनककलसइकपावातहुवांच
वेअमृतरसनीजररसहीमेंरसचुवावा॥अबतौएकअनू
पबातजइपवनपियालासाजा॥तीनअवनमेंएकजो
गी॥कहोकहांबसेराजा॥२॥बिनरजांनिप्रनवेंप्रसोआ॥
कहेकबीररेगिरालायजुनीयांकोइअमरमिचुलांनीमें
रांमरसा॥इनमाता॥४॥२॥ऐसाग्यांनबिचारलेरेलाइले
ध्यांनां॥सुनिमंडलमैघरकीया॥जैसैरहेसिंचांनां॥टेक॥उ
लटिपवनकहांराषीऐ॥कोईमरमबिचारे॥सांधेतीरप
तालकूं॥फिरिगगनहिमारे॥२॥कैसांनादबजाइलेधुनि
निमसिलेकैसा॥कैसाफूटापंडितां॥धुनिकहांनिवासा॥२॥
पिंडपरेजीवकहांरहे॥सोईमरमलषावे॥जीवतजिसघरि
रजाईए॥कैथेमुषनहीआवे॥३॥सतगुरमिलेतौपाईऐ॥ऐ
सीअकथकहाणी॥कहेकबीरसंसांनहीमिलेसारंगपां
णी॥४॥३॥कबीररोकौनेंरीबोरायो॥नांघरिहेनतौजन
करईकौनवगौरीलायो॥टेक॥जहांजहांदेषेयनमुंडी
यनकूं॥तहांतहां३विधायो॥यनलरकनकीकोप्रतिप
रोकादेकूंघरलायो॥२॥कबीरकीनारिकहेंसासहीकादेकूं
ब्याहकरायो॥पतनौ॥पांनकुलौजबहिरहेंहमहिघरक
तलायो॥२॥कोकाकीनारिपुरषकोकाको॥ऊबहिप्रपंच
लायो॥यहुसंसारयसौहिमयतहेकौनकहांतेआयो॥
रहिजसरचैपचैनहीकबकुलौकबेदबिसरायो॥क
हेकबीरसोईजनजवरेतसमूरतिनपायो॥४॥३॥रहेकोन
संतमहजसुपकमजै॥जाकूंजपतपदेनदलालीएक
बूंदजरिदेयरांमरस॥ज्यूंजदियकलालीटेक॥काया
कलालीलोदनकरिकं॥गुरुसबद॥

घाइ क्यूं मदीरे ॥२॥२६६॥ अमल ह्मारे केवल राम ओर
अमल सूं नांही काम ॥ टेक ॥ जैसें नंगी पावे नंग ॥ नांति नांति की
करे तरंग २ जैसें अमली अमल बिन मरे ॥ ऐसें ह्मारे हरि बिन रधि
रि परे ॥ ३ ॥ जैसें सूती सूतरी जांणें ॥ नवा पुराणा बेसि बखाणें ॥
कहे कबीर हरि रस पीकें घड़ी घड़ी ॥ ओर अमल सूं तर कपड़ी
४॥२६७॥ राम कहो सो तो कहा न यो ॥ मंत्र पढे पढि काल जग्रा
स्यो ॥ अंतरगति को बिष न गयो ॥ टेक ॥ माला तिलक पहरि
न तु पहिरि पाणि ज्ञान चिकें पेट न स्यो ॥ जैसें बधक टाटी के वोलै
अनेक जीव परिडा वे धस्यो २ हिरदे कवोर वचन असि सीत
ल ॥ अति अधीन होइ नां वलयो ॥ कहे कबीर जाको संगन की
जे ॥ बिनां बिचार जिह्न ने घलयो ॥ ३ ॥२६८॥ जीव डा जाहिगा में
जांणी ॥ आवेगी काई लहरि लोन की ॥ बूडैगो बिन पांणी ॥ टे
क ॥ राज करे सा राजा जाइगा ॥ रूप दिपे ती रांणी ॥ वेद पढंता पंडि
त जांहिगा ॥ जांहिगा बडा बडा ग्यानी १ गंगा जाइगी जमनां
जाइगी ॥ जाका नूं मल पांणी ॥ कहे कबीर तेरा संतन जाइगा
राम भगति जिन जांणी ३ ॥२६९॥ कूबे लोग कहें घर मेरा ॥ जा घ
र मांही बोले डोले सो तन नांही तेरा ॥ टेक ॥ बस्ती मांहि तें मा
रि लायो ॥ जंगल कीया बसेरा ॥ घर कूं षबरि खरच नहीं ने
जी ॥ आपन कीया फेरा ॥ १ हस्ती घोड़ा बैल बांहनी संग्रह
कीया घनेरा ॥ भीतरि बीबी कुरम महल में माल मीयें का
डेरा ॥ २ बाजीगर की बाजी गर जांनें कै बाजीगर का चेरा ॥
चेरा कब हु उझकि न देषे चेरा अधिक चितेरा ३ नों मण
सूत उलझि नहीं सुलझे ॥ जन्म जन्म उरलझेरा ॥ कहे कबीर
एक राम भजो ॥ ज्यूं सहज होइ सुलझेरा ४ ॥२७०॥ सब तें संत
सिपाइ गाढे ॥ राति दिंवस करे असवारी रहे जरण मे ठाढे ॥ टेक ॥
निस दिन जीन उतारें नांही ॥ चैंन न पांवे घोड़े ॥ बिन सिर लडे
धनी के आगे ॥ मोन मेवासा तोडे ॥ १ काम क्रोध दोउ गरद नि
मारे ॥ पांन रसन के षांडे ॥ चोट करे ताही कूं मारे ॥ जिनयो सब
जग डांडे ॥ २ काया गढ में फिरी दुहाई ॥ दुंदर हता न ही पावे ॥ क
हे कबीर ताही कूं मारे ॥ जे यो हुदन गावे ३ ॥२७१॥ रांम न रो
से बहुन काई या प्रतंग पांन तैरे जन के आई ॥ टेक ॥ जोग जि
ग तप की नहीं आसा ॥ राम चरन में हिरदे निवासा १ अनेक
जन्म भ्रमि सब नहीं पावा ॥ सरनि कबीर अब के आवा २ ॥
२७२॥ हरि बिन कूबे सब ब्यौहारा ॥ केतोक कोक करो गंवा

चेतानां सो हंसु चेति लो ज्यो। कबीर हरि के अंग लागा
४॥७॥ पंडित होइसु पद निबिचारो। मूरष नां हिन बूझै
न साथ निपाइ ति बिन कोन नि। बिन सो चन जग सूझै
॥ बिन मुष षाइ चरन बिन चालै। बिन जिभ्या गुन गावै
छै रहै ठौर नदी आडे दह दिस ही फिरि आवै १ बिन ही
ताल बजावै बिन मंदर ने पट सारा। बिन ही सबद
नाहद बाजे तत हांनृ सत देगो पारा॥२ बिनां चोलनां
कंचुका। बिन ही संग संग होई। दास कबीर औसर भल
ष्या जांणैगा जन कोई ३॥ टांदे कोई जगत गुर गंयानी उल
टि बेद बूझै। पांणी में अगनि जरै अंधरे कूं सूझै टेक। एक
दर षाएं पांच चनु सूंना। गाइ नाहर षायो। काटि काटि अंग
बकरी बिघार षायो। हिरन षायो चीता। काग लगर फंदीया
रे बाज जीता १ मूसे मंजार षायो स्याल षायो स्वां
दि कूं आदेस करत कहै कबीर गयांनां २॥ ए। अैसा अदभु
कथ्या मैं रहा न जे पेषंमूसा हस्ती सूं लडे न कोई बि
ला पेषे टेक। मूसा पैठा बांबि में लारै सापणि धाई उल
मूसै सापणि गिली यह अचिरज भाई १ चीटी परबत
षणियां ले गरत्या चौडे। मुरगा मिनकी सूं लडै फल पांणी रे
२ सुरही चूंषे बछ तलि। बछा दूध उतारे अैसा नवल
या सार हलदी मोर टूनी ल टु क्या बन बीज में सुसा सर
मारे कहै कबीर ता हि गुर करूं। जो या पद हि बिचारे॥२
॥ अवधू जागत नींद न कीजे काल न षाइ कलप नां नहीं व्या
पे देही जुरा न छीजे टेक उलटी गंग समुद्र ही सोषै ससिहर
गरासे नवगृह मारि रोगीया बैठा जल में बिंब प्रकासे १ डा
सा तें मूल न सूझै मूल न सूं फल पावा बेल ई उलटि
अप कूं लागी धरणि महारस पावा २ बिन ग्रुफा में सब जुग
प्या। बाहिर कछून सूझै चलटि धनक पार धी मार्या यहु
चिरज कोई बूझै ३ ऊंधा घडा न जल में डूबै सूधा सूभर
नरीया। जाकू यहु जग घिन करि चाले ता प्रसादि निम
॥ अंबर बरसै धरती भीजै। यहु जांनैं सब कोई धर
ती बरसै अंबर भीजै। बूझै बिरला कोई १ गावणहारा
न गावै अणबोल्या नित गावै। नटवर पेषि पेषनां पेषद
नहद बेनि बजावै २ कहणी रहणी नि
ज अकथ कहांणी धरती उलटि अ

दसचावीपुरईभ्रुल्लअगनिपरजारी॥मूंदेमदनसदजधुनि
तुपजी॥सुषमनिपोतनहारी॥४॥नीझरझरैअमीरसनिकसै॥
तिहिमदरावलछाका॥कहैकबीरयुक्तबामबिकटअति
ग्यानगुरूलेबांका॥३॥४॥अकथकहांनीप्रेमकी॥कछूकही
नजाई॥गूंगेकेरीसरकरा॥बैठेमुसकाई॥टेक॥नोमिबिनांअ
रबीजबिन॥तरवरऐकजाई॥अनंतफलप्रकासीया॥गुरदी
याबताई॥१॥मनथिरबैसिबिचारीया॥रामहित्योलाई॥
झूठीअनभैबिस्तरी॥सबथोथीबाई॥२॥कहैकबीरकछू
सकिनां॥गुरओसहाई॥आवणजांणमिटिगई॥मनमन
हिसमाई॥३॥५॥संतोसोअनभैपदगहीं॥कलाअतीतआ
दिनिधिनृमल॥ताकूंसदाबिचारतरहीं॥टेक॥सोकाजीज
कूंकालनब्यापै॥सोपंडितपदबूझै॥सोब्रह्माजोब्रह्मबिचा
रै॥सोजोगीजगसूझै॥१॥बेदेनअस्तमरनहींसमिहुरताको
नावनजनकरिलीजै॥कायातैंकछूदूरिबिचारै॥तासगु
रूमनधीजै॥२॥जासौजरैनकाटौसूकै॥उतपतिपरलैनां
बै॥निराकारअषंडमंडलमैं॥पैचूंततसमावै॥३॥लोचनअ
छितसबैअंधियारा॥बिनलोचनजगसूझै॥पडदाषोलि
मिलैहरिसाकूं॥जोयाअर्थहीबूझै॥४॥आदिअंतिनैप
षनृमल॥द्रिष्टिनदेष्याजाई॥ज्वालाउवीआकासप्रज
ल्योसीतलअधिकसमाई॥५॥ऐकनिगंधबासनांप्रगटजग
गसैंरहैअकेला॥प्रांनपुरिसकायाथैंबिछुरैराषिलेकु
गुरचेला॥६॥आगारमनयामनअस्थिरनिहानेहनसां
नां॥घटकीजोतिजगतप्रकासा॥मायासोकबुझानां॥७॥बंक
नालिजेसमिकरिराषैतौआवागवननहोई॥कहैकबीरधु
निलहरिप्रगटीसहजिमिलैगासोई॥८॥६॥जाइपूछौगो
बिंदपढीयापंडिता॥तेराकौंणगुरू॥कौंणचेला॥अपनेरू
पकूंआपहिजांनै॥आपैरहैअकेला॥टेक॥बांझकापूतबाप
बिनजाया॥बिनपांऊंतरवरचढीया॥असबिनपाषरगज
बिनगुडीया॥बिनषांडैसंग्रामजुडीया॥१॥बीजबिनअंकू
रपेडबिनतरवर॥बिनसाषातरवरफलीया॥रूपबिननारी
पहोपबिनप्रमल॥बिननीरैसरवरभरीया॥२॥देवबिनदे
हुरापत्रबिनपूजा॥बिनपंषांभवरबिलंबीया॥सूरा
होइसुपरमपदपावै॥कीटपतंगहोइसबजरीया॥३॥दीपक
बिनजोतिजोतिबिनदीपक॥हदबिनअनाहदसबदबा

परसबोएकसमान।तबहमपायापदनृबांनाा७कहेकबी
रमनन्नयासंतोष।मिलेनगावंतगयाडुषदोषाषा।२६॥त्र
तरिहातिन्प्रतिन्प्रनिबोणी।गगनगुफतमधुकरमधुपीवंत
सोगतिसेससिवजांणी।टेक।त्रिगुनत्रिबधितलपतति
मरातनततहीवतमिलाणी।न्नागेनरमनोडनन्नोनारी
बिधिबिरंचिसुषजांणी।१बरनपवनअवरनबिधिपाव
कान्प्रनिलअमरमेंपाणी।पविससिसुनगरहेनरिसवथ
हीसबदसुनिथितिमांणी।२संकटसक्तिसकलसुषषोए
उदधमथ्तसबसारे।कहेकबीरअगमपुरपटणा।प्रगटपु
रातनजोरा॥२९॥साधहेकक्र साधहेहीरकंवलीया
बाधहेटेकबोलनमोलमापकहूनाही॥गणातीगयानन
सोईनासोरूलवांनांसोनारी।ताकीपारिपलंपनकोइ
जामेहमसोईहममांही।नीरमिलेजलएकरूवायूंजानें
तोकोईनमरिहे।बिनजांनेथेंबकुतमूवा।१फूलबासमक
लमेंएको।घटघटन्नीतरिआपरहे।बाहरिनीतसिकल
निरंतरितासूंदूजाकोंनकहे।२दासकबीरप्रेमरसपाय
पीवनहारनपाऊं।बिधनाबचनपिछांनतनाही।कहूं
क्याकाहिदिषांऊं॥२८॥हपहदेसअनंतकतचाहे।न्न
लेनरमदुनीकतबाहे।टेक।जगप्रमोधिहोततनपाली
करतेजुदजुपाया।आसरामनचीन्हेंसंतो।क्यूंमिलेराम
राया।१लागेप्यासनीरसोपीवे।बिनलागेनहीपावे।पाजे
ततमिलेअबिनासी।बिनपीजेनहीजावे।कहेकबीरक
बिनयकुकरनी।जेसीषंडेधारा।उलटीचालमिलेब्रह्म
कूंसोसतगुरूहमारा२॥२९॥रमनबेविकितेजिनजास
हेदसरोवरहेअबिनासी।टेक।कायामधेकोटितीर्थक
यामधेकासी।कायामधेकंवलापती।बेकूंठबासी१उल
टिपवनषटचक्रनिवासी।तीर्थराजगंगतटबासी२गा
नमंडलरविससितारा।उलटीकूंचीलागिकिंवारा३कहे
कबीरजईठजियारी।पंचमारिएकरहीनिनारी॥२०॥
मबिनजनममरननेनारी।साधिकसिधसुरअरूसुरप
नरमतनरमवगोएहारी।टेक।बिंदनावचंगततजेंअक
कलसुपांसुषकारी।अवतसुनिरविससिसिवसिवपव
पुरिपपलनारी१अंतरगगनहोतअंतर
निरमोहीघोरतसबदसमंगलसथ

रषां की बांणी॥३॥ बांझ पियासे अंमृत सोष्या। नदी नीर नहि रा
ष्या। कहै कबीर ते बिरला जोगी। धरणि महारस चाष्या॥८॥२२
रांम गुण बेलडी रे अवधू गोरषनाथ जांणी। नात सरूप न छा
या जाके। बिरध करै बिन पांणी॥ टेक॥ बेलडीयां दै अणी पहु
ती गगन पहुंती सैली। सहज बेल जब फूलण लागी डाली कूं
पल मेल्ली॥१॥ मन कूं जर जाइ बाडी बिलंब्यो। सतगुर बाही बेली।
पंच सषी मिलि पवन पयंप्या बाडी पांनी मेल्ली॥२॥ काटत बेली
कूंपल मेल्ही सींचतडां कूमलांनी। कहै कबीर ते बिरला जोगी।
सहज निरंतर जांनी॥३॥२३॥ रांम राइ अबगति बिगति न जां
नां। कहि किम नतो हि रूप बषांनां॥ टेक॥ प्रथमे गगन कि पुहमि
प्रभु। प्रथमे पवन क पांणी। प्रथमे चंद क सूर प्रभु। प्रथमे
कौन बिनांणी॥१॥ प्रथमे पिंड क प्रांण प्रभु। प्रथमे रकत करे
तं। प्रथमे पुरष क नारि प्रभु। प्रथमे बीज क षेत॥२॥ प्रथमे
दीस करैणि प्रभु। प्रथमे पाप क पुंन्य। कहै कबीर जहां ब
सहु निरंजन। तहां कछू आहि कि सुंन्य॥३॥२४॥ अवधू सो जो
गी गुर मेरा। या पद करै नबेरा॥ टेक॥ तरवर एक पेड बिन ठाढा।
बिन फूलां फल लागा। साषा पत्र कछू नहीं वाके। अष्ट गग
न मुष बागा॥१॥ पै बिन नृति करौ बिन बाजे। जिभ्या हीनां
गावै। गांवनहारे के रूप न रेषा। सतगुर होइ लषावै॥२॥ पंषी का
षोज मीन का मारग। कहै कबीर बिचारी। अपरंपार पार प्रसोत्म
वा मूरति की बलिहारी॥३॥२५॥ अकथ कहांणी बीरे के वलराइ
की कहांणी। मैं जोति रांम प्रकासै। गुर गम अगम बांणी॥
टेक॥ तरवर एक अनंत मूरति। सुरता लेहु पिछांनी। साषा पेड
फूल फल नांही। ताकी अंमृत बांणी॥१॥ पहोप बास भौंरा एक
राता। बारा ले उरि धरीया। सोलह मंझे पवन झकोरै। आका
से फल फलीया॥२॥ सहज समाधि बृष यहु सीच्या। धरती ज
ल हू सोष्या। कहै कबीर तास मैं चेला। जिन यहु तरवर पेष्या
॥३॥२६॥ राजा रांम कवन रंगै। जैसें परमल पहोप संगै॥ टेक॥ पंच
तत ले कीन्ह बंधांन। चौरासी लष जीव समांन॥१॥ बेगर बेग
र राषि ले नांव। तामें कीन आप कूं ठांव॥२॥ जैसें पावक भंज
न का बसे। घाघट अनमांन कीया परवेस॥३॥ कहा चाहूं कछू
कहा न जाई। जल जीव ह्वै जल नहीं बिगाराई॥४॥ सकल
आत्मा बरतै जे। छल बल कौं सब चीन्हि बसे॥५॥ चीनियत
चीनीयत चीन्हि लसे। तिह चीनीयत धूं का करके॥६॥ आप

कनजोगी ॥ अब लोन मो रुजे. वृडी लपटांनी विन हांगां
गिगरो फेधा टेक कंचेटी बेमठ वस्तदे समां बसे जलगं
मोरा प्रवस्त कपरिलोगड विमूं वानां रमूं वां धूं कां दारे नेरे
नार तिणषड सबजवेरे वसिंदर लेसी चो उपरि मूल फूल दे
सन चीत रे ॥ जिन जांन्यां तिन नीकें २ कहे कबीर जांन हो जां
नें अन जांन तडषनारां हारी बाट बटाउ जीता जांन त कीब
लिहारी ॥ ३ ॥ २५ ॥ अब धूं छुल्लम ते घर जाइ का लिदू जु तेरा ब
सरीया धीनी कस्यां चर वांवे ॥ इटेक ता लिचुगे बन तीत
रल नवां प्रवत चेरे मो राम हा बन की हिरनी फूवे वियांनी
समा फिरे अकासा २ ऊंट मारि में चोरे लावा रस्ती तड वा
दे इं बधूर की डरीयां बन सी लहुं ॥ सीहा चूं किन्हं कि पाई
रे आव के चोरे चरहुल कर दल ॥ नि बीया छो लिहो लिषा
ई मोरे अंग नं दाषदरा बल ॥ कहे कबीर समझाई ३ ॥ २८
कहा करूं कैसे तिरूं ॥ चौ जल अति भारी तुम सरना गति
केसवा ॥ राषि राषि मुरारी टेक घर तजि बन षंड जाईये ॥ षन
षईये कंदा ॥ विषे विकार न छूटई ऐसा मन मंदा २ ॥ विष
बषीया की बासनां ॥ तजूं तजी न जाई ॥ अनेक जतन करि
सुरझि हूं ॥ फुनि फुनि उरझाई २ तन मन धन जोबन ग
या कछू कीया न नीका ॥ हीरा जन्म न्रमोलिका ॥ कोडी ब
रबी का ३ कहे कबीर सुनि केसवा ॥ तुम करन वियापी तु
म समांन दाता नहीं हम से नहीं जाचीथ ॥ २७ ॥ बाबा करहु
कृपा जन मारग लावो ॥ ज्यूं नौ बंधन षूटे ॥ जुरा मरन दुष
फेर करन सुष ॥ जीव जन्म तें छूटे ॥ टेक सतगुर न लागि
यू बिन कों जीवन कसो थे पाई ॥ जाकार निर्गुम उपजावि
नें सो क्यूं न कहो समझाई २ आसापास षंड नहीं पाडे यो
मन सुनि न लूटे ॥ आपा पर आंनद न बूझे बिन आंनद
क्यूं छूटे ॥ १ कहां न उपजे उपज्यां हीं जोनें नाव अनाव
बिहूंना ॥ उदे अस्त जहां मति बुधि नांही सहज रांम ल्यो
लीनां ३ ज्यूं प्रतिबिंब बिंब सीं समांनां उदिक कुंभ बि
गरांनां ॥ कहे कबीर जांनि भ्रम भागा सीव हि जीव समां
नां ४ ॥ २५ से तो षेषा कासूं कहो ॥ गुण में न्रगुण न्रगुण
में गुण है बाट छाडि क्यूं बहीयो टेक अजरा अमर कथे
सब कोई अकथ न कथणं जाईनां

३।१पांणीपवनअवनिनतयावक।तिनसंगिसदावसेरा
कहेकबीरमनमनकरिवेधा।बकुरिनकीयाफेरा।३।१३।नर
देहीबकुरिनपाइहो।ताथेंहरषिहरषिगुणगाइहो।टेक।जेमन
नहीतजेबिकारा।तौक्यूंतरैभौपारा।जबमनछाडैकुटला
ईतबआइमिलैरांमराई।१जपूंजामनत्पूंमरनां।पछितावा
कछूनहीकरनां।जांनिमरैजेकोई।तौबकुरिनमरनांहोई।
२गुरबचनांमेझिसमावे।तबरांमनांमल्यौलावे।जबरांम
नांमल्यौलागा।तबभरमगयाभौभागा।३ससिहरसूरमिला
वा।तबअनहदबेनिबजावा।जबअनहदबाजाबाजै।त
बसांईसंगिबिराजै।४होहसंतजननकेसंगी।मनराचिरहो
हरिरंगी।धरौचरनकंवलबिसवासा।ज्यूंहोइनपदबासा
५यकुकाचाषेलनहोई।जनषरतरषेलैकोई।जबषरतरषे
लमचावा।तबगगनमंडलमठछावा।६चितचंचलनिहच
लकीजै।तबरांमरसांइनपीजै।जबरांमरसांइनपीया।तब
कालमिट्याजनजीया।७यूंदासकबीरागावे।ताथेंमनकूंम
नसमझावे।मनहीमनसमझाया।तबसतगुरमिलिसाचब
ताया।८।१४।अवधूअगनिजरैकैकाठ।पूछौपंडितजोगस
न्यासीसतगुरचीन्हैबाट।टेक।अगनिपवनमैंपवनकवन
मैंसबदगगनकेपवनां।निराकारप्रभुआदिनिरंजन।कत
रहतेभवनां।१उतपतिजोतिकवनअंधियारी।धनबादलकी
छ्यायाअगटो।बीजेधरनिअतिअधिकैपारब्रह्मनहीदे
षा।२मरनामरेनमरिसकैमरनाहरिननेरा।बादसबादस
सनमुषदेषो।आपेआपअकेला।४जोबांध्यातेछंदमुक्ता
बांधनहाराबांध्या।बांधमुक्तामुक्ताबांध्या।तिनपारब्रह्मल
हिलाधा।५जेजातासेकोंनपर्वतारहतातेकिनराष्या।अमृत
समांनांबिषमैंजांनां।बिषमेंअमृतरसचाष्या।६कहैकबी
रबिचारबिचारी।तिलमैंमेरसमांनां।अनेकजन्मकागुरगु
रकरता।सतगुरतबभेटांनां।७।१५।अवधूऐसाग्यांनबिचा
रं।भेरैचढेसुअधफरडूबे।निराधारभयेपारं।टेक।ऊबटच
लेसुनगरपहुंचे।बाटचलेतेलूटे।एकजेवडीसबलपटां
नेकेबांधेकेछूटे।१मंदिरपेसिचहुदिसभीगे।बाहरिरहेते
सूका।सरिमारेतेसदासुषारे।अनमारेभएदुषा।२बिननैननं
केसबजगदेषे।लोचनअछतेअंधा।कहैकबीरकछूसम
झिपरीहै।यहुजगदेष्याधंधा।३।१६।धंधारेजगधंधासबलो

अथ करता मिसर पछा डग्रा गलो में घालि जगी मा॥१॥सारि
घत के तूं सर ता करता द्रि न्ना गत न के चेरी दास कवीसीं
म के स्मरने जपूं च्याई त्यूं फेरी॥३॥२५॥ जग रुषी तिन कों जी
रो सम झि मन में रा स्वां दे हे वल पटाई॥ कोनि के से स्ला टे
लोक कन कञ्चर कों मनी॥ आमें दोइ फंदा॥ थन में जो न बंध
वई सा का में वंदा॥ देह धरे यन में वासे दो॥ कदो के संधूं टे सी
वनो तेन बंधे जी व तस्ल टे २ रो करा कस्रूं मि लिरसा॥ तिन दो
स च पाया॥ प्रेम मगन ज्यों लीन मन॥ सो छ कुरिन आया॥२॥
कहे कबीर निहचल चया॥ निरंजन पद पाया॥ सेसा ता दिन
का गया॥ सतगुर सम जाया॥४॥ अथ दिन द कुच कुं के कारो
जे में संवे न फूलो॥ फूवी संपी ति लगा इ ञ्जं मा चे कूं च्यू लो
टे पे जो ससगा स्रू परद स्या॥ बिड रा ते प्यारे॥ आस ति क फूंन
दे पिउं॥ बिन नांव तुम्हारे॥१॥ मा ची सगाई राम की सुणि॥ अ
व मे रे न कि मडे नर पुरे॥ पा हक ज म ने र २ देस व ड्या॥ चित च
लीया सग पन कहूं नादो माटी सू माटी ने निक री मी छ्वं स्वन
पोसी र॥ कहे कबीर जग अंधला कोई जन मारा॥ जिन हरि मरम
न जांनीयां॥ तिन का यापसारा॥४॥२६॥ माधो मे ऐसा अपराधी ते
री न गति हे तन दी साधी टेक॥ कारन क वन आइ जग जनम्या॥ ज
नमि कवन सचु पाया॥ नो जन तिर न चरन चिंता म णि ला चि
त घडी न लाया॥१॥ पर निंद्या पर धन पर दारा॥ पर अपवादें सूरा॥
ता थें आवा गवन होइ फुनि फुनि॥ ता पर संग मन चूरा॥२॥ कांम
क्रोध माया मद म छर॥ ऐसें तत हम मांही॥ दया धरम ग्यांन गुर से
वा॥ ऐ प्रभु सुपने नांही॥३॥ तुम कृपाल दयाल दमोदर॥ भगति बछ
ल भौ हारी॥ कहे कबीर धीर मति राषो॥ सासति करहु हमारी॥४॥२
८॥ राम राइ कासनि करूं पुकारा॥ ऐसे तुम साहिब जांनन हारा
टेक॥ इंद्री सबल निबल मैं माधो॥ बहुत करै बरियाई॥ लेधरि
जांहि तहां दुष पाऊं॥ बुधि बल कछू न बसाई॥१॥ मैं बपरो जी
व अल्प मूं रमति॥ कहा नयो जे लूटे॥ मुनि जन जती सिध अरू
साधिक॥ ते उन या पें छूटे॥२॥ जोगी जती तपी सन्यासी॥ अह नि
स षोजे काया॥ मैं मेरी करि बहुत विगूते॥ विषे वाघ जग पाया॥
३॥ कत जांहि हम हरि घर घरनी॥ तिन चीव हौ तन पाया॥ कहे
कबीर कहूं समझि न पराई॥ विषम तुम्हारी माया॥४॥२९॥ मा
धौ चले बुनांवन मा हा॥ जग जीते जाइ जुलाहा॥ टेक॥ नव गज
दस गज उगनीसा॥ पुरीया एक तना ई॥

कोई। वाके आदि अंत न होई। पिंड ब्रह्मंड छाडि जे कथीए
कहै कबीर हरि सोई॥२॥२०॥ अजहूं न संक्या गई तुम्हारी ना
हिन संक मिले बनवारी॥टेक॥ बहुत गरब गरबे संन्यासी ब्रह्म
चरिज छूटै नहीं पासी॥ सुद्र मलेछ बसै मन मांही आतमरांम सु
चीन्हां नांही॥१॥ संक्या डांइणि बसै सरीरा ताकारणि रांम रमैं कबीरा
॥२॥२०॥ सब न्हूं ले है पाषंड रहै ते राषि रह्या जन कोई रांम कहै
॥टेक॥ सोहं अरोगि बूटी घसि लावै गुरु बिन जैसें भ्रमत फिरै है
हाजरि प्रतीति न आवै सो कैसें परताप धरै॥१॥ ज्यूं सुष स्यूं दुष म
न दिढ राषै एकादसी इकतार करै॥ द्वादसी भ्रमैं लष चौरासी
गरभवास आवै सदा मरै॥२॥ मैं तैं तजै तजै अपमारग च्यारि बरन
उपरांति चढै ते नर डूबै पारि तिरि रहे थीं॥ निरगुन सरगुन संग
करै॥३॥ होइ मगन रांम रंगि राचै आवागवन मिटै धापै तिन ह
उछाह सो कन ही ब्यापै॥ कहै कबीर करता आपै॥४॥२१॥ तेरा
जन एक आध है कोई। कांम क्रोध अरु लोभ बिबरजित हरि
पद चीन्है सोई॥टेक॥ राजस तांमस सातिग तीन्यूं ए सब तेरी
माया॥ चौथे पद कूं जे जन चीन्हैं तिन ही परम पद पाया॥१॥ अ
स्तुति निंद्या आसा छाडै तजै मांन अभिमांनां लोहा कंच
न सम करि देषै ते मूरति भगवांनां॥२॥ च्यंतै तौ माधौ च्यंता
मनि हरि पद रमैं उदासा त्रिस्नां अरु अभिमांन रहत है॥
कहै कबीर ते दासा॥३॥२२॥ हरि नांव मैं दिन जाइ रे जाको
सोई दिन लेषै लाइ रे ताको॥टेक॥ हरि नांव मैं जन जागै ता
के गोब्यंद साथी आगै॥ दीपक एक अभंगा ता मैं सुर नर
पडै पतंगा॥१॥ ऊंच नीच सम सरीया ताथै जन कबीर नि
स्तरीया॥२॥२३॥ जब थै आतम तत बिचारा तब निरबैर भ
या सबहिन थैं कांम क्रोध गहि डारा॥टेक॥ ब्यापक ब्रह्म स
बनि मैं एकौ को पंडित को जोगी॥ रांणा रंक कवन सूं कहीए
कौन बैद को रोगी॥१॥ इनमें आप आप सबहिन मैं आप आ
प सूं षेलै॥ नांनां भांति घडे सब भांडे रूप धरे धरि मेलै॥२॥ सो
चि बिचारि सबै जग देष्या निरगुण कोई न बतावै॥ कहै कबी
र गुणी अरु पंडित मिलि लीला जस गावै॥३॥२४॥ तू माया
रघुनाथ की षेलण चढी अहेड़ै॥ चतुर चिकारे चुणि चुणि
मारे कोई जन छोड्या न बौरे॥टेक॥ मुनिजन पीर डिगंबर मारे
जतन करंता जोगी॥ जंगल मांहि के जंगम मारे तूं रे फिरै अ
परोगी॥१॥ बेद पढंता ब्राह्मण मार्‍या सेवा करतां स्वांमी॥

तोडे मातीपातीजीव।जा मूरतिकूं पाती तोडे सो मूरति न जी
व।२।टोचणहारे टोचीया देखाती कपरि पावु जे मूरति सक
ल्न दे।तौ घड णहारे षावै।३।जो वन खाड जा पसी मूळा चेदे।
अपार मूजि पुजा भाखै गाया देमूरति कै मुंह छार पाती ब्र
पदोपलि छ्यमूलफलमहादेव नियो देवो कमूरति।तूं करे
किसकी सेव धेकन झलादो इन झला झलास ब्रसे सारा
ऐकन झला दासकबीरा जाके राम अपारा।५।४५।से इमन
समझि सेन्नथ सरणगत।जाकी आदि अंति मध्धि कोई पार न
पावे।को टिकारि जसरे देह गुणस ब जै थे नैकिनां वे।।पते ब जो
र त आवे टेका आकार की वोट आकारनदी कवे रे सिव वि
रंचि अरु विष्णतां ई जास कास व गता सकूं पाऐ दो इ स्टकूं
छाडि आगैन जाई।पुणमई मूरति से व स ब ज्येष्मि रि
न गुण निजरूप विश्रामनो दी।अनेक जुगवं दगी विब
भिप्रकारकी अंति गुणका गुणदी समो दी।२।पांच तत्ती
नगुण जुगति कसि सां नी यां अष्ट विनदो तन दी कमका
या पाप पुनि बीज अंकूर जां मैं मरे उपजे विनसे जिती
अब माया २ कृत्म करता कदे भ्रम पद कूल हे झलि अ
मेपड ग्रालोकसारा कदे कबीर रां मरमता न जि कोई ऐक
जनगोऐ तरिपारा।४।४५।मासहेरी गति जाणीन जाई
जोज स कहिदे सोतस प ह दे रा जा रां मनिया ई टेक जे सीक
हे कैरे जो तेसी तौ तिरतन लागे वारा कहसा कहि गया
सुरता सुनि गया करनी कठिन अपारा।३।सुर दी तिण च रि
अं मृत सरवे रे लरत वंग दि पा ई अनेक जतन करि नि ग्र
ह की जो विषे वि कार नजाई।२।संत करे अ संत की संगति
ता सूं कहा वसाई।कहे कबीर ता केन्न भ्रम छूटे।जे रहे रां
म ल्यो लाई।।३।।४७।।२२०।।रागरां मकली संपूर्ण।।रा।।२।।
राग आसावरी।।अैसा रे अवधू की वांणी ऊपरि कूं सवा त
लि भरि पांणी टेक जब ल गगान जो तिन दी पलटे अ
वना सी सं चितन दी च कूटे।जब लग जं व र गुफा न दी।
जांने तो मेरा मन केसें मांनैं।२।जब लग त्रिकुटी संधि न जा
नें।स सिहर के घरि सूर न आनें।जब लगना नि कं वल न
दी सो धे तौ हीरै हीरा के सें बेधे।२।सोलह कला संपूर्ण छ
जा।अनहद के घरि बाजें बाजा।सुषमनि के घरि भया अ
नंदा।कहि कबीर ले नै दै गो बिंदा।२५

दौत्तर पाउ लगी अधिकाई ॥ तु लहन तो लौ ग जद नमा
पद जन सेर अडाइ ॥ अडाइ मै जे पाव घटावे तो कर कम
रै बज दाई ॥ ५ ॥ दिन की बेठि घसम सुं को जे अर जन लगी तद
दी नागी पुरी या घर दी छाडी ॥ चले जुलाहा सि साई ॥ ६ ॥ छो
नली की मिन दी आवे लपटि रदी नरफाई ॥ ७ ॥ ठपसारी रा
मक हि बोरा कहै कबीर समझाई ॥ ४ ॥ ॥ ४० ॥ बाजे जंत्र बजा
गुनी राम नाम बिन भूली ॥ गुनी टेका रज गुन सत गुन तम
तीन पि च तत लै सा ज्या बीन ॥ तीन लोक पूरा पेष नां ना
न चावे ॥ ऐके जनां ॥ कहै कबीर संसा कर इपि निज बन रस
नर पूरि ॥ ॥ ४१ ॥ जंत्री जंत्र अनूप म बाजे ता का सबद गगन
मे गाजे टे ॥ सुर की ना लि सुर ति का तूं बा सत गुर सा ज बन
या सुर नर गण गंध्रप ब्रह्मादिक गुर बिन तिन कुन पाया
॥ जिभ्या तांति नासिका करदी माया का मैण लगाया ॥ गमा
बतीस मोरणा पांच नी का सा जब नाया ॥ जंत्री जंत्र तजे न
ही बाजे तब बाजे जब बावे ॥ कहै कबीर सोई जन साचा जंत्री
सूं प्रीति लगावे ॥ ॥ ४२ ॥ अवधू नादे बिंदे गगन गाजे सबद अ
नाहद बोले ॥ अंतरि गति नही देषै नेडा ढूं ढत बन बन डोले
टे ॥ सालिगराम तजू सिव पूजा सिर ब्रह्मा को काटौ ॥ सा गर
फोडि नाग मुकलाऊ कूवो सिला दे पाटौ ॥ चंद सूर दोन्यूं
करि तूबा चित चेतन की डांडी ॥ सुषमन तंती बाजन लागी ॥ इ
द्रि बिधि त्रि ह्मां षाडी ॥ परम तत आधारी मेरे सिव नगरी घर
मेरा ॥ कालहि षंडू मीच बिहंडू बहुरि न करि हूं फेरा ॥ जप
न जाप हतूं नहीं गूगल पुस्तग ले न पढा ऊं ॥ कहै कबीर पर
म पद पाया नही आऊं नही जाऊं ॥ ॥ ४३ ॥ बाबा पेड छाडि
सब डाली लागे मूंढे जंत्र अभागे ॥ सोइ सोइ सब रैनि बिहा
नी भोर भयो तब जागे टे ॥ देव लिजा ऊं तो देवी देषूं ती
रथ जाऊं तो पाणी ॥ ओछी बुधि अगोचर बाणी नही परम गति
जाणी ॥ साध पुकारै समझत नाही आन जन्म के सूते ॥ बांधे
ज्यूं अरहट की टी डरयां आवत जात बिगूते ॥ गुर बिन इ
हु जग कौन भरोसा काके संगि है रहीये ॥ गनि का के घरि बे
टा जाया पिता नांव किस कहीये ॥ कहै कबीर यहु चित्र बिरोध्या बूझौ अम्रत बानी ॥ षोजत षोजत सतगुर पाया
रहि गई आवण जाणी ॥ ॥ ४४ ॥ भूली मालनी है गोबिंद जा
गतो जग देव तूं करै किसकी सेव ॥ टे ॥ भूली मालन पाती

चुसनराती॥कहैकबीरछाडिचरे।बिछोरसबसाथी
३॥१५॥साधनकोचूहरिनतुतोथेञ्जनमेकेतेञ्चथेबि
चोरेटेकबाणीसुरंगसोछिकरिञ्चोपोंञ्चोपोंनोरंगधी
गा॥चंदसूरएकेतरकीयासीवतवकुतदिनआगा॥
१॥पंचपदार्थघोडिसमानोहीरेमोतीजडीयाकोटिव
रसक्षोकोचूसीयासुरतधंधेपडीया१निसवासुरजेसो
वेनोदीतानरवाजनमाईकहैकबीरगुरप्रसादेस
रजैरसासमाईर॥१५॥जोवतजिनमारेमूवांमतिल्या
वेमोसबिङ्गणाघरिमतिआवेहोकंतटेकचरबिन
षुरबिनचंचबिनावपबिहूणासोहसोस्पावजाकि
नमोरेकंत॥जाकेरगतरगमांसनहोइ१पेलीपारके
पारधीताकेधुनिहीपिनचनहीरे॥ताबेलोकूदेकौ
मृघरोना॥मृघाकेसीसनहीरे२मारयोमृघजीवतोर
ह्योयोगुरग्यानमहीरे॥कहैकबीरस्वामीतुम्हारेमिल
नकूंवेलीहैपनिपातनहीरे३॥१७॥धीरोमेरेमनवा
तोहिधरिटांगौतैतोकीयोमेरेषसमसूंषांघूंटेकाप्रेम
जेवरीयांतेबंगलबांधूजहांलेजोकंतहांमेरीमाधो
१कायानगरीपैसिकीयामेवासाहरिरसछाडिविषे
रसप्यासा२कहैकबीरतनमनकाबोराभावभगति
हरिसूंगठजोराइ॥२१॥पारब्रह्मदेष्योहोतरवाडी
फूलीफललागाबडफूली॥सदासदाफलदाषवि
जोराकोतिगहारीफूलीटेक॥दादसकूवाएकवन
मारीउलटानीरचलावे॥सहजसुषमनाकूलनरावे
दसछिसबाडीपावे॥१॥ल्योकीलेजपवनकाढीकूमन
मटकाजवनाया॥सुरतिकीपाटिसुरतिकाचावासह
जनीरमुकलाया॥२॥त्रिकुटीचढ्योपावरोदोरेञ्चर्धउ
रधकीक्यारी॥चंदसूरदोकंपाणातिकरिहेगुरमुषबी
जबिचारी३भरीछाबडीमनबेकूंवांसाईसरहीय
रंगा॥कहैकबीरसुनहोरेसंतो॥हरिहमएकेसंगा४॥२
२॥रामरंगलागोकुरंगनहोइहरिरंगसोरंगञ्चोरनको
इटेकाञ्चोरसबेरंगइहरिरंगछूटेदाहरिरंगलागोकदे
नछूटेरसत्तगुरमेरेलायारंगनपसपयाचिरतासबत्र
ग२कहैकबीरमेरेरंगरांमराइञ्चोरपतंगरंगउडिउडि
जाइइ॥२२॥कबीराप्रेमको

चा न इया॥ ज्यूं नाले रांमा रस मइया॥ कहै कबीर घट लै
कु बिचारी॥ औघट घाट सी चलै कारी॥४॥१॥ मन का भ्रम
मन ही सूं भागा॥ सहज रूप हरि खेलण लागा॥टेक॥ मैं तैं तैं मैं
ऐ दो हूनांही॥ आपै अलष सकल घट मांही॥१॥ जब थैं यन म
न उनमन जांनां॥ तब रूप न रेष तहां लै बांनां॥२॥ तन मन मन
तन एक समांनां॥ इन अनंत मांहि मन मांनां॥३॥ आतम लीन
अषंडित रांमां॥ कहै कबीर हरि मांहि समांनां॥४॥२॥ आत्तम
आंनदी जोगी॥ पीवै महारस अंमृत भोगी॥टेक॥ ब्रह्म अग
नि काया परजारी॥ अजपा जाप उनमनी तारी॥१॥ त्रिकुटी को
ट मैं आसण मांडै॥ सहज समाधि बिषै सब छांडै॥२॥ त्रिबेणी
बिभूति करै मन मंजन॥ जन कबीर प्रभु अलष निरंजन
॥३॥३॥ या जुग या की जुगति जु बूझै॥ रांम रमें ताकूं त्रिभुव
न सूझै॥टेक॥ प्रगट कंथा गुपत अधारी॥ तांमैं मूरति जीवन
प्यारी॥१॥ प्रभु नेरै षोजै दूरि॥ ग्यांन गुफा मैं सींगी पूरि॥२॥ अ
मर बेलि जो छिन छिन पीवै॥ कहै कबीर सो जुगि जुगि जी
वै॥३॥४॥ सो जोगी जाकै मन मैं मुद्रा॥ राति दिवस न करई
निद्रा॥टेक॥ मन मैं आसण मन मैं रहणां॥ मन का जप तप म
न सूं कहणां॥१॥ मन मैं षपरा मन मैं सींगी॥ अनहद बेनि ब
जावै रंगी॥२॥ पंच परजालि भसम करि भूका॥ कहै कबीर
सो लहसै लंका॥३॥५॥ बाबा जोगी एक अकेला॥ जाकै
तीर्थ ब्रत न मेला॥टेक॥ झोली पत्र बिभूति न बटवा॥ अन
हद बेनि बजावै॥१॥ मांगि न षाइ न भूषा सोवै॥ घर अंगना
फिरि आवै॥२॥ पंच जनां की जमाति चलावै॥ तास गुरू मैं चे
ला॥ कहै कबीर उन देस सिधाये॥ बहुरि न यह जुग मेला
॥३॥६॥ अवधू ऐसा ग्यांन बिचारी॥ ज्यूं बहुरि न है संसा
री॥टेक॥ चितवन मो जो चित बिन चितवै॥ बिन मन साम
न होई॥ अजपा जपत सुनि अभिअंतर॥ यह तत जांनें
सोई॥१॥ कहै कबीर स्वाद जब पाया॥ बंक नालि रस षाया॥ अ
मृत झरै ब्रह्म प्रकासै॥ तब ही मिलै रांम राया॥२॥७॥ गोबि
दे तुम्हारै बन कंदलि॥ मेरा मन अहेरै षेलै॥ बपवाडी अन
गम्रग रचि ही रचि मेलै॥टेक॥ चित तरउवा पवन षेदा॥ सह
ज मूल बेधा॥ ध्यांन धनक जोग क्रम ग्यांन बांन सेधा॥१॥ षट
क्रम केंवल बेधा॥ जारि जारि कीन्हां॥ कांम क्रोध लोभ मो
हा हाकि स्वावज दीन्हां॥२॥ गगन मंडल रोकि बारा॥ तहां दि

हैकबीरताकीबोनिनजाईं॥४॥२७॥अबनबसूंइहिगांइ
गुसांईतेरेनेबगीपरेसयोनेहोरामटेकनगरीकेतहोती
बधमरहताबसैंजुपेचकिसांनैंनिनोंनकटेअबनुंरघुं॥
इडीकहोनमांनेंहोरामरधांइजगाउरघेतेऊनेपेका
ज्यधरचनपारेजोरिजेबरीयेतमसोरेअबमिलिमोकूं
मारेहोरामरघोटेमहेतोविकटबलाईंसिरकसदम
कापारेबुरोदिवांनदादिनदीलागेरीकबांधेरकमारेहोरा
मरधरमराइजबलेघामाग्याबाकीनिकसीन्हारीपंचकि
सांनाजाशिगोहेजीवधरिबांधेमारीहोरामरकहेकबी
रसुनिबीनतीमोरीहरिजिबांधीनेपाअबकाबुन्दांब
कसिबेदेकूंपसबघतकरूनबेराहोरामप॥२७॥तानेथं
मनलागोरामतोसीकबोहूपाजिनबिसरोमोहीटेक
जननीजठरबकुतदुषन्हारीसोसंक्यानहीगईहोहमारी
२दिनदिनतनछीजेजुराजनावेकेसगहेकालमूंगेबना
वेरकहेकबीरकरुणामैंआगेतुम्हारीकृपाबिनोदुकुपे
चपतिनजोगेरा॥२१॥कबदेषूंमेरेरामसनेहीजाबिनदुष
पावेमेरीदेहीटेकहूंतेरापंथनिहारोंस्वामीकबरमिलो
गेअंतरजामीरजैसेंजलबिनमीनतलपैऐसेंहरिबिन
मेराजीयरातलपेरनिसदिनहरिबिननीदनआवेदरस
पियासीरामक्यूंसचपावेरकहेकबीरअबबिलमनकी
जेअपनोजानिमोहिदरसदीजेर४॥२२॥सोमेरेरामकबे
घरआवेतादेषेमेराजीवसुषपावेटेकबिरहअगनित
नदीयाजराइबिनदरसक्यूंहोइसिराईरनिसबासुरमन
रहैउदासाजैसेचात्रिगनीरपियासारकहेकबीरअतिआ
तुरताईहमकूंबेगिमिलोरामराईरैंजैमासतिपीवगोव
निआईसोईसंगिसाधनहीपूगीगयोजोबनसुपनाकी
नाईटेकपंचजनामिलिमडपछायोतीनजनामिलिलग्न
गनलिषायोसषीसहेलीमंगलगावेंदुषसुषमाथेहलद
दीचढावेरनानारंगेभांवरिफेरीगांठिजोरिबांबपतिता
ईपूरिसुहागनयोबिनदुलहेचोकहेरगमध्येसमाना
ईरअपनेंपुरिषमुषकबहूंनदेष्योसतीहोतसमभ्याम
भाईकहेकबीरहूंसरलसचिमरिहूंतिरहूंकंतलेनूरव
जाईरा॥२४॥धोंधोंरेपाइबोअनेतन
रमिरहिबोटेकपदलीपाइआईमाई

नसैरै।बांधि लै धेरा मा चिलै क्यारी। ज्यूं तूं पेड नेरटे का
काया बाडी मांहै माली टहल करै दिन राती। कबहुं न सो
वै काज संवारै यां तितहारी माती।२। सेझे कूवा स्वाति अति सी
तल कबहुं कूवा वनहीं रे। भाग हमारै हरि रषवारे। कोई न
जाडं नही रे।३। गुर बीज जमाया कृषि निपाया। मन की आपदा
षोई। वैरै स्यावट करै बारिसा। सिलाकै रैसब कोई।४। जो घरि
आया तो सब ल्याया। सबही काज संवार्या। कहै कबीर सुन
हु रे संतो। थकत भया मैं हार्या।४।।२४।। राजा राम बिना क
तती धोधे। जम करैनगा धोधो टे का मुद्रा पहरयां जोग न होई
घूंघट काढ्यां सती न कोई। माया के संगि हिलिमिलि आया
फोकट साटै जनम गमाया।१। कहै कबीर जिन हरिपद चीं
न्हा। मैलि न षंड तैं निमल कीन्हा।२।।२५।। है कोई राम नाम
बतावै। बस्त अगोचर मोहि लषावै। टेक। राम नाम सब को
ई बषानै। राम नाम का मरम न जानैं।१। ऊपर की मोहि बात न
भावै। देषै गावै तो सुष पावै।२। कहै कबीर कछू कहत न आवै।
परचै बिना मरम को पावै।३।।२६।। गोबिंदे तूं निरंजन तूं निरंज
न तूं निरंजन राया। तेरै रूप नाही रेष नाही मुद्रा नाही माया।
टेक। समंद नाही सिषर नाही धरती नाही गगनां। रविससि दो
कुं एकै नाही पावक नाही पवनां।१। नाद नाही बिंद नाही का
ल नाही काया। जब तै जल बिंब न होते तब तूं ही राम राया।
२। जप नाही तप नाही जोग ध्यान नाही पूजा। सिव नाही स
क्ति नाही देव नाही दूजा।३। देव नाही देवल नाही पूजा नाही पा
ती। दीप नाही धूप नाही दिवस नाही राती।४। रुग न जुग न स्या
म अथरबन। बेद न ब्याकरनां। तेरी गति तूं ही जानै। कबीर तो
सरनां।५।।२७।। राम के नांइ नीसान बागा। ताका मरम न जा
नै कोई। भूष त्रिषा गुन वाकै नाही। घटि घटि अंतरि सोई। टेक।
बेद बिबरजित भेद बिबरजित। बिबरजित पाप र पुन्यं। ग्या
न बिबरजित ध्यान बिबरजित। बिबरजित अस्थूल सुन्यं।१। भे
ष बिबरजित भीष बिबरजित। बिबरजित डिंभक रूपं। कहै क
बीर तिहूं लोक बिबरजित। ऐसा तत अनूपं।२।।२८।। राम राम
राम रमि रहिये। साषत सेती भूलि न कहिये। टेक। का सुनहा कूं
सुमृत सुनायें। का साषत पै हरि गुन गायें।१। का कऊवा कूं कपू
र षवायें। का बिसहर कूं दूध पिवायें।२। साषित सुनहा दोन्यूं भा
ई। वो नींदै वो भूकत जाई।३। अमृत लै लै नीब सिचाई। क

हरि की चरन निवासा ॥ २४

टन जे रांम राई। कहै कबीर बिकुल्यो कबडाई ॥३॥ २३॥ चौ
पाबिण जब्यो पार की ॥ जो आइ ने दिसा वरि रांम जपिला है
लो जे टेक जब लग चे पो सट पसारा ॥ ३ बिन हिब णीयां क
रिहे बनिज संचारो ब्रो है तु मला दिन दांणा ॥ आ घट था
टी चलणा ॥ हरि प्रयांणा ॥ घरा न पोटा ना परवाया ला है का
रनि सब मूलव गायो ॥ सब कुनी यो मैं लो न पियारा ॥ मूजी रा
पै सो ई बणि जग रा सू अर्थ इन ब अरवार पराया ॥ श्रेसा को ई जि
न संग चलायो ॥ है सन ला पणि लो ग बिरांनां ॥ अचमन संगी
करि को ई साथ सयांनो ॥ मै लो सागर अति वार न पारा ॥ कहि सम
भावे कबीर बणि जारा ॥ ३ ॥ २५ ॥ जो मै ग्यांन बिचार न पाया
तो मैं यूं ही जन्म गमाया ॥ टेक ॥ यहु संसार हाट करि जांनां ॥ स
ब को ई बणिज णि आया ॥ चेति सके तो चेतो रे नाई मूरिष
मूल गमाया ॥ १ ॥ थाके नैन बैन भी थाके थाकी सुंदर काया
जांमण मरण न ऐ द्वै थाके एक न थाकी माया ॥ २ ॥ जे जन जा
नि जपै जग जीवन ॥ तिनका ग्यांन न नासा ॥ कहै कबीर वे क
बहुं न हारै जांनि न ढारै पासा ॥ ३ ॥ २६ ॥ म्हांनी कहै लो नल
गिरतन जन्म षोयो बहुरि ही रा हाथि न आवै रांम बिनां
रो यो ॥ टेक ॥ जल बूंद थैं जिन पिंड बांध्या अगनि कुंड रहाया
दस मास माता उदर राष्या बहुरि लागी माया ॥ १ ॥ एक पल जी
वन की आस नांही जम निहारै सासा ॥ बाजी गर संसार कबीरा
जांनि ढारै पासा ॥ ३ ॥ २७ ॥ फिर तकत फूल्यो फूल्यो जब दस
मास ऊरध मुष होतो सो दिन काहै भूल्यो ॥ टेक ॥ जो जारै तो हो
इ भसम तन रहत कृम है जाई ॥ काचे कुंभ उदिक ज्यूं भरिया
तिनकी कौण बडाई ॥ १ ॥ ज्यूं माषी मधु संचि करि जोरि जो
रि धन की न्हों ॥ मूये पीछे लेहु लेहु करि प्रेत रहन क्यूं दीन्हौं
॥ २ ॥ ज्यूं घर नारी संगि देषि करि तब लग संग सुहेली मरह
ट घाट पै चिक रि राषे बहुरि देषत हंस अकेलो ॥ ३ ॥ रांम न रम
हु मदन कहा भूले परत अंधेरे कूवा ॥ कहै कबीर सोई आ
प बंधायो ज्यूं नलनी का सूवा ॥ ४ ॥ २८ ॥ जा दिन दिन दिन
देह करि ले बोरे ये मन हो टेक बाला पन गयो जोबन जा
जासी ॥ जुरा मरन भौ संकट आसी ॥ पलटे केस नैन जल छा
या ॥ मूरिष चेति बुढापा आया ॥ रांम कहत लज्या क्यूं की
जे पल पल आव घटै तन छीजै ॥ लज्या कहै
हो जम की दासी एकै हाथि मुदगर दूजै हाथि पासी

२ षाया देवर षाया जेठ सब षाया सुसर का पेट २ षाया सब
पटण का लोग कहै कबीर तब पाया जोग ॥ २५ ॥ मन मेरै
रहट ज्यूं रहम पूरीया हरि को नांव लैलै कातिब कुरीया टेक
च्यार षूंटी दोइ चमरष लाई सहज रहट वायो चलाई
सासू कहै कातिब क्रू ऐसा बिन कातै निस तिरिबा कैसा
२ कहै कबीर सूत भल काता रहटै नहीं प्रम पद दाता ॥
२६ अब की धरी मेरो घर करसी साध संगति लेमो कूं तिरसी
टेक पहली को घाल्यो भ्रमत डोल्यो सच कबहूं नहीं पायो
अब की धरनि धरी जा दिन थें सगलो भरम गमायो १ पह
ली नारि सदा कुलवंती सासू सुसरा मानै देवर जेठ सबन
की प्यारी पीव को मरम न जानै २ अब की धरनि धरी जा दिन
थें पीव सूं बांन बन्यो रे कहै कबीर भाग बपरी को आइ
र राम सुन्यो रे ३ ॥ ५७ ॥ मेरी मति बौरी राम बिसार्यो किहि
बिधि रहनि रहूं हो दयाल सेजै रहूं नैन नहीं देषूं यो दुष
का सूं कहूं हो दयाल टेक सास की दुषी सुसर की प्यारी ॥
जेठ के तरसि डरूं रेना णद सहेली गरब गहेली देवर के बि
रह जरूं हो दयाल १ बाप सावको करै लराई माया सद मति
वारी सगो न ईया सै मसि चढि हूं तब कै हूं पीय हि पिया
री २ सो चिबि चारि दैषो मन मांही औसर आइ बन्यो रे कहै
कबीर सुनहु मत सुंदरि राजा राम रमौ रे ३ ॥ ५८ ॥ अब धूं ऐसा
रु पोन बिचारी ताथें नइ पुरष तें नारी टेक नां के पसी नां
हूं कंवारी पूत जनूं द्यो हारी काली मूंड को एक न छोड्यो
अजहूं अकन कंवारी १ बांम्हण के बम्हणी कहीयूं जोगी
के घरि चेली कलमां पढि पढि भई तुरकनी अजहूं फिरूं अ
केली २ पीहरि जाऊं न रहूं सासरै पुरष हि अंग न लाऊं क
है कबीर सुनहु रे संतो अंग हि अंग न छुवांऊं ३ ॥ ५९ ॥ मीठी
मीठी माया तजी न जाई अग्यांनी पुरष कूं भोलि भोलि
लि षाई टेक निरगुण सरगुण नारी संसार पियारी लषमन त्या
गी गोरष निवारी १ कीडी कुंजर मैं रही समाई तीन लोक जीत्या
माया किनहुं न षाई २ कहै कबीर कूं बिचारी संसार आइ
माया किनहुं न कही षारी ३ ॥ ६० ॥ मन को मैलो बाहरि कैन
लो कि सारे षांडे की धार जन को धरम इसो रे टेक हदा को बि
लाव नैन बग ध्यांनी ऐसी भगति न होइ रे प्रांनी १ कपट की
भगति करै जिन कोइ अंत गई रे बिगड़ तउ षसी ई २ षाडि कप

कथणी तंत मंत सब वो पद ज्ञांणीं अैसे तत मरणं ।२।रा
ज पाट स्यंघासण आसण बहु सुंदरि रमणां चंदन चो
र कपूर बिराजत अैसे तत मरणं ।२ जोगी जती तपी स
न्यासी बहु तीर्थ भरमणां लुंचित मुंडित मौंन जटा धर
अैसे तत मरणं ।२ साचि बिचारि सकल जग देष्या कहै
न उबरणां कहै कबीर सरण ई आयो मेटि ज्ञांमण मर
णं ॥४॥४१॥ पांडे न कर सि बाद बिबादं या देही बिन
सबद न स्वादं टेक। अंड ब्रह्मंड षंड भी माटी माटी नौ नि
धि काया माटी षोजत सतगुर भेट्या तिन कछू अलष
लषाया ।२ जीवत माटी मूंए भी माटी देषो ग्यांन बिचारी
अंति कालि माटी मैं बासा लेटै पांव पसारी ।२ माटी का चि
त्र पवन का थंभा ब्यंद संजोग उपाया भांनै घड़ै संवारै सो
ई ।इहु गोब्यंद की माया ।२ माटी का मिंदर ग्यांन का दीप
क पवन बाति उजियारा तिंहि उजियारै सब जग सूझै।
कबीर ग्यांन बिचारा ॥४॥४३॥ भेरी जिभ्या बिस्न नैंन नारां
इण हिरदै जपूं गोब्यंदा जम द्वारि जब लेषा मांग्यां तब का
कहसि मुकंदा टेक तूं ब्राह्मण मैं कासी का जुलहा चौ
न्हि न मोर गियांना तैं सब राजा भूपति मांगे मोरै राम
ध्यांना ।२ पूरब जनम हम ब्राह्मण होते वोछे करम तप ही
नो रांमदेव की सेवा चूका पकड़ि जुलाहा कीनां ।२ नौ मीं
नेम दसमी करि संजम एकादसी जागरणां द्वादसी दांन पुनि
की बेलां सर्ब पाप क्षौ करणां ।२ भो बूडत कछू उपाइ क
रीजो ज्यूं तिरि लंघौ तीरा रांम नांम लिषि भेरा बांधौ कहै
उपदेस कबीरा ॥४॥४४॥ कहौ पांडे सुचि कवनै ठांव जिहि घरि
भोजन बैठि षावं टेक माता जूठी पिता पुनि जूठा
जूठे फल चित लागे जूठा आंवन जूठा जांनां चेतहु
क्यूं न अभागे ।२ अन्न जूठा पानी पुनि जूठा जूठे बैसि प
काया जूठी कड़छी अन परोस्या जूठै जूठा षाया ।२ चौ
का जूठा गोबर पुनि जूठा जूठी का ढी कारा कहै कबी
र ते ही सुचि अचारा ॥४५॥
घोरे जग धंधा रांम नांम का मरम न जांणं माया
टेक जनमत ही रकस ले आया मरत कसाले
दिवस च्यारि के ब्यासी ।२
जड़ का टी सुष की न

निरूमब दास्या रामनां मजिनमन कुबिसाक्यो ॥ ३॥ मे
री मेरी करतां जन्म गयो जन्म गयो पराइ रिन करसौ ॥ टेक ॥
बालपन खेलत बाला पण घोया खीमबस्य करहूत पन कोयो ती
रथ मैं कर राम न सुमिर्यो फिरि पछितानो बृधपनयो ॥ मूके
...पानि बछावे लुणैं घेत दरवि बाडि कर न्रायो चोर
...गमलेगयो मेरी मूदत मुगध फिरे सीम चरन कर कं
...लागे नैन नीर असरालवहे जिभ्या बचन सुधन ही
...कम तब सुकृत को बात कहे कहै कबीर सुन हु रे संतो
धन म च्यो कछू संगि न चल्यो आई तलब गोपालराइ की
मडी मिंदर छाडि चल्यो ॥ जाद जा ती दहि नो वन लीया
...रपाछलतावे गार जीया टे धंध काल चरन कर घाटे आ
व घटी तन पीनां बिष बिकार बहु त हचि मांनी माया मो
ह चित दीनां ॥ जागि जागि नर काहे सोवै सोइ सोइ कब जा
गेगा जब घर भीतरि चोर पडेगा तब अंचलि किस लागे
गा ॥ कहै कबीर सुन हु रे संतो करिल्यो जे कछू करणां लं
ष चौरासी जौंनि फिरोगे बिनां राम को सरणां ॥ ३ ॥ माया
मोहि मोहि हित कीन तो थै मेरो ग्यान रतन हरि लीन ॥ टेक ॥
संसार ऐसा सुपन जैसा जीवन सुपन समान साच करि
नरगां बिलां ध्यां छाडि प्रम निधान नैन नेह पतंग हुलसे
पसून पेष आगि कालपासि जु मुगध बांध्या कनक कांम
नि लागि करि बिचार बिकार परहरि तिरण तारण सो इ
कहै कबीर रघुनाथ जग जीवन ऐसी यानी कोइ ॥ ३॥
ऐसा तेरा झूठा मीठा लागा ता थैं साच मन लागा ॥ टेक ॥
झूठे कै घरि झूठा आया झूठा खाण पका या झूठी सहन
क झूठा बासा झूठे झूठा पाया झूठा कहना झूठा बैसण
सिब सगाई झूठे के रंगि झूठा राता साचे कून पत्या
२ कहै कबीर अलह का पगुडा साचे सूं मन लावो झू
तिण्यागो मन बंछित फल पावो ॥ ४ ॥ कौण
राम कौण कौण ... पिंड पंड आघट माटी था
गोरख कां ... कहू पोडे सारिसा जेसा
हसी नाग चेद ... ओवे के बारा
छिन सेगा ... नाद निराकारा
इण ... अनुभरा दीन दयाल द
म पंडित आगम जाण बिद्या ब्या

कथ्यां।तंतमंतसबवोषद जांणीं।अतिसजमरणं।१।
पाठ सिंघासण आसण।बकु सुंदरि मणा।चंदन ची
कपूर बिराजत।अतिसजमरणं।२।जोगी जती तपी स
न्यासी।बकु तीर्थ भ्रमणां।लुंचित मुंडित मौन जटाधर
अंतितजु मरणां।३।सोचि बिचारि सकल जग देष्या।कहूं
न उबरणां।कहे कबीर सरणं।४।आयो मेटि जामणं म
।।४।।४३।। पांडे न कर सिवाद बिवादं। या देही बिन
दनस्वादं।टेक।अंडब्रह्मंड षंड जो माटी।माटी नौ नि
धि काया।माटी षोजत सतगुरु भेट्या।तिन कछु अलष
लषाया।१।जीवत माटी मूए भी माटी देषो ग्यान बिचारी।
अंति कालि माटी में बासा।लेटे पांव पसारी।२।माटी का चि
त्र पवन का थंभा।बिंद संजोग उपाया।नौनें घडे संवारे सो
ई।इह गोबिंद की माया।३।माटी का मंदिर ग्यान का दीप
क पवन बाति उजियारा।तिहि उजीयारे सब जग सूझै।
कबीरा ग्यान बिचारा।४।।४४।। मेरी जिभ्या बिष्न नैन नारा
यण। हिरदै जपूं गोबिंदा।जम द्वारि जब लेषा मांग्या।तब का
कहूं सि मुकंदा।टेक।तुम बांभण मैं कासी का जुलहा।ची
न्हि न मोर गियांनां।तैं सब राजा भूपति मांगे।मेरे ब्रह्म
घ्यांना।१।पूरब जन्म हम बांभण होते।वोछे करम तप ही
नां।रांमदेव की सेवा चूके।पकडि जुलाहा कीनां।२।नौमी नै
म दसमी करि संजम।एकादसी जागरणां।द्वादसी दांन पुनि
की बेलां।सर्व पाप ष्यौ करणां।३।नौ बूडत कछू उपाइ क
रीजे।ज्यूं तिर लंघै तीरा।रांम नांम लिषि भेरा बांधे कहै जु
पदेस कबीरा।४।।४५।। कहो पांडे सुचि कौनैं ठांव।जिहि घ
रि भोजन बैठि षाइये।टेक।माता जूठी पिता पुनि जूठा।
जूठे फल चित लागे।जूठा आवन जूठा जांना।चेतहु
क्यूं न अभागे।१।अन जूठा पांनी पुनि जूठा।जूठी बैसि प
काया।जूठी कडछी अन परोस्या।जूठे जूठा षाया।२।चौ
गोबर पुनि जूठा।जूठी का ठीकारा।कहै कबी
जन सूचा जे हरि जिन तजि दि बिकारा।३।।४६।।
तिन दे मेरे जग धंधा रांम नांम का मरम न जांणं।माया
रस अंध।टेक।जन्मत ही रे कहा ले आया मरत कहा ले
जासी।जैसें तरवर बसत पंषेरू दिवस च्यारि के बासी।१
आपा थापि और कूं निंदे जन्मत ही जड का

अनूसबद्दास्या॥रामनांमजिनमनकुंबिसास्या॥५॥३६॥
नीमेरी करतां जन्म गयो॥जन्म गयो पणि हरिनकह्यो॥टेक
बारहबरसबालापणखोया॥बीसबरसकछूतपनकीयो॥त
सबरसकेरांमनसुमिस्यो॥फिरिपछितांनोंबृधभयो॥१॥के
सरवरपालिबंधवेरसुरी॥खेतहविबाडि.करे॥आयोचोर
तुरंगमलेगयो॥मेरीमूंदलमुगधफिरे॥२॥सीसचरनकरकं
पनलागे॥नैंननीरअसरालबहे॥जिभ्याबचनसुधनहीं
निकसेतबसुकृतकीबातकहे॥३॥कहेकबीरसुनहुरेसंतो
धनसंच्यो कछूसंगिनचल्यो॥आईतलबगोपालराइकी
मेडीमिंदरछाडिचल्यो॥४॥३७॥जाइहजातीहरिनांवनलीय
फिरिपछितांवेंगोरेजीया॥टेक॥धंधाकरतचरनकरघाटे॥आ
उघटीतनखीनां॥बिषेबिकारबहुतरुचिमांनी॥मायामो
हचितदीनां॥१॥जागिजागिनरकाहेसोवे॥सोइसोइकबजा
गेगा॥जबघरभीतरिचोरपडेगा॥तबअंचलिकिसलागे
गा॥२॥कहेकबीरसुनहुरेसंतो॥करिल्योजेककूकरणां॥ल
खचौरासीजौंनिफिरोगे॥बिनांरांमकीसरणां॥३॥३८॥माया
मोहिमोहिहितकीनां॥ताथेंमेरोग्यांनरतनहरिलीनां॥टेक
संसारऐसासुपनजेसा॥जीवनसुपनसमांन॥साचकरि
नरगांठिबांध्यो॥छाडिपरमनिधांन॥१॥नैंननेहपतंगहुलसे
पसूनपेखेआगि॥कालपासिजुमुगधबांध्यो॥कनककांम
निलागि॥२॥करिबिचारबिकारपरहरि॥तिरणतारणसोंइ॥
कहेकबीररघुनाथभजिनर॥दूजोनांहींकोइ॥३॥३९॥
ऐसातेराकूवापीवालागा॥ताथेंसाचेसूंमनलागा॥टेक
कूवेकेघरिकूवाआया॥कूवाघोणपकाया॥कूवीसरून
कूवाबासा॥कूवेकूवाघाया॥कूवाकवणकूवाबेसाण
ईं॥१॥कहेकबीरअलहकापुगडा॥साचेसूंमनलावो॥कू
वेकेरीसंगतिल्यागो॥मनबंछितफलपावो॥२॥४०॥कोंण
कोंणगयारांमकोंणकोंणजासी॥पिंडपड्योघटमाटीथा
सी॥टेकइंद्रसारिखेगोरलमककरोरा॥कूपोडुसारिसाजोरा
॥१॥कहेकबीरयोजगझ्योइहारा॥चंदसूरऔवैकेबारा॥
॥४१॥ताथेंसेइयेनारांइणां॥प्रभुमेरो
दीनदयाकरणां॥टेकजोतुमपंडितआगमजा

दयालिका गरकद्रमतुमपेसाकबीरपुनद्रमुदाइकी दे
दिगारदांवल्लेस ४ मरा आलदरांमजीजे तेस्नां छब्देपरि
महरि करोमेरेसांई टेक कालेमाटीचुरसेवारे क्या जेस्त
देहन्दवारा जोरकरेमसकानसंतोवेगुनहीरंद्रहिपाएर
क्या कज्जज्ञपमेज नकीएक्यामसीतिमिरिजोएमेजाकेरे
निवाजगुदेर्केक्यारजकाबेजापो२ बांचगायपारसिकरैचो
बीसंकाजीमहरिमुदांनाप्पारदमासजुदेकरेकीएएकही
मांहिसमांनां२ जोरपुदाइमसीविबसदेओरमुलकिस
केरातीर्थमूरतियांमनिवासा दक्मैंकिनजानदेरा४ पूरब
दिसा हरीकावासापछिमअलहमुकांमा दिलहींघोजिदिसे
विलनीतरियहांरांमरहमांना४ जेती ओरतिमरदाकही॥
सबमैंरूपतुम्हारा कबीरपुंगडा अलहरांमका हरिगुरपीरह
मारा दा॥५९॥ मैंबडमैंबडमैंबडमाटीमएदसनाजटकादस
गांवीटेकमैंबाबाकाजी धकहींकं अपणीमारीगीदचलांकं
२ यनअहंकारघणेपरघाते नाचतकूदत जमपुरिचाले४
पांचांमांहीबडोकहींकं जोमांनेसोईकहिअंक२ केहेकबी
रकरताकीबाजी एकपलकमैंराजविराजी४॥ पचाकादेही
होमेरेसाथी हेहाथी दूरिकेरा चोरासीलषजाकेमुषमैं सोचि
तकैरैगामेरा टेक कहोऊणविधेकहोऊणगाजेकहांथें
पांणीनिसरैअसीकलाअनंत देजाके सोहमकूं क्यों बिस
रे२ जिनब्रहमंडरच्योबहुरचनां बावबरनससिसूरा पाइ
कपंचपदमजाकैप्रगट सोक्यूं कहीएदूरा२ सेननासि
काजिनदरिसिरजे दसनबसनबिधिकाया साधूजनकूं
सोक्यूं बिसरे असोहेरांमराया२ कोकाहूकामनजोनें
मैंसरनागतितेरा कहेकबीरसूंमराया करमतिराषकु
मेरा४॥५५॥ पवनपतिउनमनिरहतषरा जहांजनममरन
नहीं जुरा टेक मनबंधिनिवेणीपाई गुरगमथें आगमन
पाइजुलटिलेतन्तिमलारंपेसिलेगमानमंकारं नैदिसे
चकचवंगा नैटिसलेनांगंइपासेगा छुटिरनामोहपिया
संससिलीनासूरगरासे२ जबतैनषसषथोमनलीनां तब
बाजेअनहदबीनां जबकें नकचरपूरिकरिलीनां घट
नीतरिमंजनकीनां३ बकिबकितेंबकिसुणाया सुणिसु
णतेंकछूनपाया कारकरणीउतरसिपार बेलें दासकबीर
२४॥५५॥ ना हरिनपेनरसिंघ जबजागे

जिनू सब हाऱ्या। रांम नां मजिन मन कूं बिसाऱ्या।५।।रुष
नी मेरी करतां जन्म गयो।जन्म गयो पणि हरि न कह्यो।
बारह बरस बालापण षोया।बीस बरस कछू तप न कीयो
सब सकें रांम न सुमिऱ्यो।फिरि पछितांनों बृध भयो।१सू
सर वर पालि बंधावे लुणे षेत हठि बाडि करै।आयो चे
लुणे गम ले गयो।मेरी मूंदत मुगध फिरै।१सीस चरन कर
पन लागे नैंन नीर असराल बहे।जिभ्या बचन सुध न
निकसै तब सुकृत की बात कहै।२कहै कबीर सुन हु रे स
धन संच्यो कछू संगि न चल्यो।आई तलब गोपाल राइ व
मैंडी मंदर छाडि चल्यो।४।।२०।।जा हरि जाती हरि नां कलो
फिरि पछितावैं गौरजी या।टेक।।धंधा करत चरन कर घाटे।आ
उ घटी तन षीनां।बिषै बिकार बहुत रुचि मांनी।माया मो
ह चित दीनां।१जागि जागि नर काहे सोवै।सोइ सोइ कब जा
गैगा।जब घट भीतरि चोर पडैगा।तब अंचल किस लागे
गा।२कहै कबीर सुनहु रे संतो।करि ल्यो जे कछू करणां।ल
ष चौरासी जौंनि फिरौगे।बिनां रांम की सरणां।३।।२१।।माया
मोहि मोहि हित कीनां।ताथैं मेरो ग्यांन रतन हरि लीन।टेक
ऐसा ऐसा सुपन जैसा।जीवन सुपन समांन।साच करि नर
गांठि बांध्यो।छाडि परम निधांन।१नैंन नेह पतंग हुलसै
पसू न पेषै आगि।काल पासि जु मुगध बांध्यो कनक कांम
नि लागि।२करि बिचार बिकार परहरि।तिरण तारण सोइ
कहै कबीर रघुनाथ न जो न भजि तौ यानां हरि कोई।३।।२२।।
ऐसा तैसा हूवा सो वा लागा।तातैं सांच सूं मन लागा।टेक
हूवे के घरि हूवा आया।हूवा षांण पकाया।हूवी सहन
क हूवा बासा।हूवे हूवा षाया।हूवा करवां हूवा बैसण
हूवी सब बैस गाई।हूवे केरै रंगि हूवा राता साच कहूं न पत्या
ई।२कहै कबीर अलह का पुंगडा।साच सूं मन लावो।हू
वे केरी संगति त्यागो मन बंछित फल पावो।३।।२३।।कोंण
कौंण गया रांम कोंण कोंण जासी।पिंड पड्यो घट माटी था
सी।टेक।।इलास गोलष करोरा।कहूं पोडे सारिसा जोरा
१।।कदांस धूमंडलन रहसी तारा।चंद सूर अवैं के बारा।२
कहै कबीर यो जग ज्यो हारा।बिन सेगा ध्यावरहै निराकार
३।।२४।।तो थैं सेईये नां रांम जणां।अब तुम मेरो दीनदयाल द
या कर णां।टेक।।जो तुम पंडित आगम जाण बिद्या व्या

हनारा। तामें हूं छे सब संसारा॥ पंछी मीन का मारग कैसा। क
है कबीर न गुणमत ऐसा॥४॥ २१ साखी करता कर मन सून्या
रा। आवे न दीजा ह मेरे न दीजन में ताका करे बिचारा है कथ
र्व ऐब्बर आदि देव है ताका सकल पसारा॥ नाद बिंद तें रह त
है सो है घसम हमारा॥२ दसरथ रांम का पिता कहो वे दसरथ के
ए न पाया। दसरथ के पिता रांम का दादा कहो कहां थे आया॥३
रा धस हकम णि कृष्ण की बहनी कृष्ण जनूं का बीरा। सो रहे
सहे सगो प्यां सिगि घेल्या सो कृष्ण कि घे को कीरा॥४ बसदेव रे
पता देव की माता हू जौ नंद गूजर घर आया। कहे कबीर
करता न ही हो ई करमां हा थि बिकाया॥५॥६३॥ रांम निरंज
न न्यारा रहे। अंजन सकल पसारा रे टेक॥ अंजन उतपति औं
कार अंजन मांड्या सब बिस्तार अंजन ब्रह्मा संकर इंद्र अं
जन गोप्यां संगि गोबिंद रे॥ अंजन बांनी अंजन बेद अंजन
मांड्या नांनां भेद अंजन बिद्या पाठ पुरांन अंजन फोकट क
थि गियान रे॥ अंजन पाती अंजन देव अंजन करे अंजन की से
व अंजन नाचे अंजन गावे अंजन भेष अनंत दिखावे रे
अंजन कहूं कहां लग केता दांन पुनि तप सीधन जेता॥ क
है कबीर कोई बिरला जागे अंजन छाडि निरंजन लागे॥४॥
६२॥ साखी यो मुरदों का गांव सब धरि कोइ रहण न पावे का
कोली जेनां बुटे कानो नी मूवा दस नी मूवा मूवा सहंस अ
व्यासी तेतीस कोडि देवता मूवा सब पड्या काल की पासी
१ पीर मूवा पैकंबर मूवा मूवा जिंदा जोगी। राजा परजा सब
ही मूवा मूवा बैद रोगी॥२ चंद भी जासिगे सूर भी जासिगे
जासिगे धरनि आकासा। चवदे लोक जल भी तरि जासिगे॥
का की धरीए आसा॥३ कहो जोतिस कल घर भीतरि औ र
न दूतीया कोई। कहे कबीर सुन हुले संतो भरमि पडो मति
कोई॥४॥६४॥ संतो उपजे घपे समाया। निराकार निरलेप नि
रंजन सो कहूं आया न आया टेक कहा मुसकल मक्र क
छा है नां संपा सुर मारे महरवांन मबूदी में सहिब नाजी
ते नां हारे॥२ दरिया राह दो बैन दीक बकू धर्यो डि सण न
ही धारी रो तो कां मरोम के नांदी कूबकद संसारी॥२ वो न
ही रांम घंन जिन का स्या नां हरना जस बिदारे वो दया
ल दो घन दीवा के कहो को नें मारे॥२ बांवन हो इन बलि
कूं जाचे जे जाचे तो माया॥ छिनो बिच॥

क

॥अनामी॥ कहा कस मन लोगै॥टेक॥ करम कलाली चढाई आवी

लेइ झीरस आवै गंध नप्रकौ रसंगि पकु चावै कोई चतर होइ
सो पावै २ अमली लोक षुमारी त्रिष्णा॥ कितकु से तो घन आवै
काम क्रोध दोकुं मतिवाला माया लरिन धियावै २ संकट सोच पो
च कलि मांही बहुत क व्याधि सरीरा जहां गंभीर धीर अति
निहचल तहां गुविच लो कबीरा॥४॥ पद॥ गुरु निरंजन नि
रपष चेला सहज पुरी में अनतै मेला॥टेक॥ मनसा चरबन अ
स अहारा अगम निगम बिचि पंथ हमारा १ निहकलंक
था अकल अधारी निरति सुरति में रहन हमारी २ बैठे तत
तरवर की छाया ग्यांन गुफा में बहुत सचु पाया ३ दास कबी
र जुगे जुगि जीवै रस नां रांम रसाइन पीवै ४॥५८॥ रांम लगति ब
ल हरि ली या मोरा बिन बल कैसे ध्यांऊं सा च कहूं तो दिवां
नो कहीए या बिधि का हि सुनो क्रो टेक॥ हिष्टि नो गते नैन
रे अब नौ ते सुधि हारी हुं ग्यां का बल न त्यानि कूस का सो
ग तिन इ हमारी १ निरति करन से एक गथा के करोन ब जांत
हूरा त्रिगुन त्यागि नया मन अस्थिर सतगुर पाया पूरा २ मि
ध साधिक बहो तेरा न्हा त्या हरि समान को नांहीं कहै कबी
र कृपा न गुर की थकत न या पद मांही ३॥५९॥ संतो नृगुण त
त है ऐसा बगधार अगनि जल जैसा॥टेक॥ नृगुण कही ए नृग
ण रहीए नृगुण घरइ घांणां नृगुण राह बुहारत रही ए लोग
स नृगुण घरि जांणां १ सब जुग बस्या गुनन की मति ता गुण
पंडित गुण काजी हम नृगुण न जिन्ह नै निरंतर या ससगुणा
दीसै बाजी २ नृगुण बूझ अकल अबिनासी सब घटि व्याप
क ही ए कहै कबीर सरगुण सब बिनसै नृगुण सुमिरि रहि
ए ३॥६०॥ संतो नई अलूफा नारी जब लग तत मत न हीं द
रसै पचि पचि मै नर नारी॥टेक॥ कोई कहै मैं नृगुण ध्यांऊं न
गुण का गुण कैसा नृगुण गुण बिन हाथि न आवै गुण देष्या
स्त्र नाजे १ नृगुण सरगुण एक रूप है सतगुर सब दरसाया परषे पां
णी पवन हो इ जब मेला तब जा इ हम तब लषै २ कहै कबीर
अंतर की करणी प्रगट न इ जब साची अपणां सुष के काजि
पीया के आगै नगन मगन है नाची ३॥६१॥ धूंधूं धमके बाजै
तूरा अनहद निस संघ पंचो इन पूरा॥टेक॥ गगन मंडल में एक बसे
कलाली बिन मद मस्त सदा मतिवाली १ सौमे सा षे सहजा
ल्यावै तब सतगुर एक सबद लषावै २ बिन प्रतीति न दीज अ

नृगुण सुरगुण को है ना ई यौ मो दिषरा अदेसा स्यगुण कहीए नांव महात
सुरगुण साध बिराजै वो ८

हरिनजपैसोवोनरकिपरैटे।२।जामुषिंगाव्रतीवचारोथास
बदनसंसारतिरे।३।जापांडेनैंसवजगकूफैसोपांडेजीवघात
करै।१।कंचघरिजनमनीचघरितोजनादूवकरमकरिउद्न
।अमासपूंनयूरुचिरुचिमोगे।दाथिदीपकलेकूवेपैरा।२
बाडिनकीन्हीमृघनमाख्यो।घेतवजारयो।सवअंधुरे।कहै
कवीरहमरांमलागिवस्ये।तुमवेदनरोसेग्रवगंरे।३।।७०
अगमनोमिगतिन्यारी।।जहांवसैएकव्रह्मचारी।टेक।गो
।पिदतनथरीजोगी।।अनिलपिमदीसंवारी।आसनमारिअ
चलसोईवेवा।लागीगगनमेंतारी।१।अजपाजपतपरम
सुषवपनां।।व्रह्मअगनिपरजारी।मनअरूपवनसहज
घरआया।।वडोअचंनोनारी।२।अरधउरधकेवीचिनि
रंतरि।सुषमनिसेहजसंवारी।नोएवदेहगगनतुरीयाप
नमतजोतिविचारी।३।उदस्यानांनससिकोटिविवधुरि
नदरस्याकंवलवनमारी।गंगाजमनकेवारपारविचिने
टेदेवमुरारी।४।रोमरोमआनंदनयाहे।तवमनलागीषु
मारी।।कहैकवीरसतगुरप्रसादैंवनीअलपसूयारी।।
५।।७१।।धोइलेधोवीयामैजकाधरा।उजलनमलसौ
घाटहमारा।टेक।ग्यांनकानीरध्यानकापाटा।सुरतिका
साबूलगाइलेमुत्ता।१।ऐसैंधोइमेलधुपिजाइसारा।हे
इनमलनजिसिरजनहारा।२।मनकैमैलहैविषेविका
रा।जिनधोयासोरह्याजगसूंन्यारा।३।कहैकवीरएकरं
गिघेलीघांमहेमूलअरोसववेली।४।।७२।अवधूसोजो
गीजगसारा।जोयापदकाकरैविचारा।टेक।चेतनजोगी
ग्यांनगूदडी।पिमाविभूतिचराईसुनिसहरमेंनिघ्या
मागेंअनहदसींगीवाई।१।पवनपेमकाप्यालापीया
गंगजमनहेपांनीगगनमंडलमेंआसनपूरयाअवग
तिकीगतिजांणी।२।पांचूंचेलासहजसंतोष्याआसानि
छांधेरी।अवधूरावलअकलसमांनांवहेरिनकोधीपे
री।३।कहेकवीरजोगीजुगतिविचारीअलषरूपहह
चांनों।सहजसमाधितालीलागी।रूपअरूपसमानां।
४।।७३।।अवधूसोजोगीजुगमांही।जाकेमनमेंदुतीया
नांही।टेक।जुगतिजोलीसेतोपपत्र।करडंकविचार।१
क्षमांदयालेमुद्रापहरै।ग्यानकरै-
रागकौगरीसंजमकरिविभूति

पृथमादीना।नावौ
नीसंतावै।जातिबरण।जगदीसनमानैंपषापषीनहोनावै
असिरजणहारनपरणीसीता।जलपाषंणनबंधामेरूय
नाथनाथकरिजानैं।जेसुमरैंतेअंधा६करताकान्हनही
रंगोकल करताकेसनमोरैअलषनिरंजनलषानजाई।
सबकछूउनकेमारे७ऐतोनरमसकलमायाके।चिह्नचि
ह्नकरिदीन्हा।पूरणब्रह्मसकलतैंन्यारा।जिनओतारन
लीन्हा।८ऐसासाहिबजिनसबकछूकीया।करिहरही
याकीनी।दीनदयालसकलकादाता।ऐसाहेबिडदांनी।(
दसओतारईस्वरीमाया।जिनकरताकरिपूजो।कहैकबी
रराम अबिनासी।उपजैषपैसदूजो।२०।६५।पंडितअबू
झ्याकरोबिचारं।तहोसिष्टिनसिरजनहारं।टेक।अस्थूल
नसुनिपवननहीपावक।रविससिधरनिननीरं।जोगजुगि
क्तिवाकछूनांही।नांतहांबचननसरीरं१हरहरिब्रह्मा
नहीसिवसक्ती।नांममंत्रनहीपूजा।सजनसहनसुनाव
तहांनांही।नांवीयकनदूजा।२सहजसुनावनावजब
होई।मुनिजनकहोसमझाई।कहैकबीरसोईगुरमेरा।जो
मोहिदेहदिषाई३।६६।कहोपांडसुचिकैसेंकीजे।सुच
कीजेतौजनमनलीजे।टेक।जासुचिकेराकरौबिचारा।
जिहिजनलीन्हौंओतारा।जाकारणितुमधरतीकाटीतां
मेंजीवमूऐसौसाठी१जाकारणितुमलईजनेऊं।थूक
लगाइकातैंसबकोऊ।एकषालघृतकेरीसाषा।दूजीषाल
मेंलेघृतराषा२सोईघृतसबहुनीयांषायो।सोईघृतसब
देवतांकूंचढायो।कहैकबीरसुचिचूबताई।एकरांम
नांमलीज्योरेभाई३।६७।पांडेपढिपढिजगतबिगोवै।
आपणमेरेओरकूंरोवै।टेक।बकराएकच्यारूपहरपुजावै
संकलपदेयरनाडिकटावै।मरोडेमूंडीतोडेकांन।बांभण
बूडांसूंजजमांन१देहीकाथेतीलरकाई।जन्मब्राह्मणप
णिकरमकसाई।कहैकबीरब्राह्मणकहांरोवै।उत्तमजन्म
जोणिमतिषोवै२।६८।।एकलिजुगकेबांमण।आएरांमक
हतमांनूंबीछूषाए।टेक।तुमकैसेंब्राह्मणहमकैसेंसूद।हम
मारेकैसेंलोहूतुम्हारेकैसेंदूध।१जेतूंबांभणबंभणीजा
या।तोआंनबाटहैकाहेनआया२कहैकबीरसुनोरेपांडे
संगिलेकूंतापोदेसांडे३।६९।।काहेरेपांडेतुमजपोनहरे

ता ना ता मूला थन रावेगा ३ चोरी करे हते जीव प्रांनी॥ हड कपट चित लावेगा नरक जाइ सहे सासना चोरासी रमावेगा ४ सुकृत करे साध की सेवा हरि चरणां चित लावे॥ चढि वैकूंठ सकल सुष देषे बहुरि न जोनि आवेगा॥ जो ई जो ई बावे लुणेगा सो ई बीज पलटि न ही जावेगा सो कोई सुकृत करि प्राणी सो कण घर में आवेगा ५ गुरु प्रताप साध की संगति बिन प्राप ति नही पावेगा कहे कबीर पे कराम नजन बिन लाटे लाटि बिकावेगा॥५१०॥ सब सिषे का ज गुरु सूं हो ई आत्म काज न बिगडे को ई टेक गुर ज्ञान अगाध अराधे पांच पिसण घट जीत रि साधे र गुरु की सीष चले जे जा ई सो मह मा मुष कही न जा ई १ अब से धि नो निधि परसे नां ही गुर की सीष बसी मन मांही २ गुरु को ग्यान गो बिंद मिलावे कहे कबीर फिरि जनि न आवे ४॥८०॥ अैसा रांम पियारा मोरा तासे तन मन देनया तोरा टेक सूं धन कूं धन पियारा ज्यूं बिष ई पर नारी जेसे कुरंग नाद सुसे पेत्र अब मो प्रीति हमारी ज्यूं धनि कूं बछा पियारा॥ ज्यूं नवंग मणि राषे चानि ग स्वांति बूंद कूं चाहे मीन मरे जल पावे २ ज्यूं अमली कूं अमल पियारा ज्यूं कांमणि नर बास ज्यूं जोगी कूं बिंद पियारा माया मोह संसारा ३ जब हि लमिर ली पियारा पाया अब में बेद न नांही कहे कबीर जा कूं प्यारा कहि ता सो पाया घट मांही ४॥८१॥ मनकी मूल बिचारे जे को ई सो जन मति पार भूलो ई टेक नगन मगन बकला कंद षा ई दे षि सामति को पति आ ई १ बहु बिधि बकाचन पूरी णा अनप अहारी काया षी णा २ बहु बिधि बांणी प्रेम हि तरावे र चक चा हि रसा तलि जावे कहे कबीर सो ई निजदास जा के पार ब्र ह्म की आस २॥८२॥ साधो सो जन उतरे पारा जिन मे तें आपा डारा टेक॥ को ई कहे मैं ग्यांनी रे भा ई को ई कहे मैं त्यागी को ई कहे मैं इंद्री जीती अ हूं सबे कूं लागी १ को ई कहे मैं जोगी रे भा ई को ई कहे मैं भोगी मैं तें आपा हि रि डा स्या तो कैसे जी वे रोगी २ को ई कहे मैं दाता रे भा ई को ई कहे मैं तपसी निज तत नांव निह चे न ही जांण्यो रे सब माया में षपसी ३ को ई क हे मैं जुगति सब जांणूं को ई कहे मैं रह णी आत्म देव सूं परचो नां ही ऐ सब झूठी कह णी ४ को ई कहे मैं सब धरम साधे

न

[illegible] का

ततची न्हौ अवधूत थ अंजनुछा डि निरंजन राते अंजनपव
न अहारं रोक मांव सब लै है तेरा ते बिरलातें सारंग त्रिगुणात
जै बिबेणी न्हावे अनहद बेनि बजावै कहै कबीर बेजावत
मूरा पुनि रिपजन मन आवै ॥४॥२४॥ अवधू जोगि निराछिवाहरि
जो कहू थो जैसो तुमसी पैहौ का हे कूं नर मैं बाहरि टेक मेमैं
टिमा चकरि मुद्रा सानसी ल दिठ की जै अनहद सबद की गु
रौ बाजै ता जोगी मन धीजै २ सति करि षपरा षिमा करि झोली भ्र
न बिभूति चढाई उलटा पवन जटा धरि जोगी सा गीसुं लिव
जाई ३ घटि घटि ग्रीतरि गिरवर बनषंड घट ही ग्रीतरि सात
समंदा घट ही ग्रीतरि तारा मंडल घट ही ग्रीतरि रवि चंदा ४ र
नाटिक चेटक नै कूं कलवाय नमें जोगा न होई कहै कबीर
रमता सूं रमनां देही वादि न षोई ४॥२५॥ नारी कुन जानै बेद
नि पट अनारी है पीरी पीरी पानसी पित्तंग पर डारी है टेक
नीर छाडि बीर बेद पीर मो हि न्यारी है करै जो मैं कलक मारै
वृहस्र मारी है कहै कबीर दास जग मैं फिरै उदास जी बनै
की यारी आस मरनै की धरी है ॥२६॥ रहै टौम्हारो अजब
फिरै राजा रां मत णी कत वागी है ठक्का ते कासे सूत हजारी है
टेक पीढी प्रीति रप्रेम पाटडी तूं मणि तास सवायो बिमक
रमां अरबे दमा ता मिलि हरि के कुकम बनायो २ चित चिड
कसी ध्यान ढोलणी ताडौ रंग तुरंगा दावणि बांधी है षिब
मे कसूं ससौ फिरै सुरंगा ३ सुधबुध सारु सरो बरराष्यां थेन
ला ठिकव हराया षांच रषो ला हैन हौ कब कुं गपो नगुरु
कछाया ४ मनसा मारल रु तत्त ता करो बिधि सूं बन्यो बि
चारो रु णा कुणराग अला पैर हटो सरसो फिरै सुदारो ५ प
वन पूणी काया कतूणी सासमणां के बासो करणी कूकडी
ध्याद मड को पाप पोनि चुणिराखो ६ कहै कबीर यो सत्त अमे
लिक साधुजन बेजारा अस्ता बिछम है सन्नारदा सरस बव
णिपै चोतारा ६॥२७॥ षूंनी मारी थैगा वे सांई केदरबारि गा फि
ल मारी थैगा वे टेक जाको रुधड हि पीजै ताके गले छुरी कं
कीजै १ जो मैं हरदमदम वहरां नी सो बिसमल क्यूं करि आं
नी २ सा हिब लेषा लेगा तूं ज्वाब किसी बिधि देगा ३ कहै क
बीर का जी अंधा तें क्या पढि न्ह लो छेधा ४॥२८॥ अपणां की
या नर पावेगा जिंद छाडि जी वं जावेगा टेक परघार पुरष
रमैं घरसुं दरि सालच मन लपटावेगा सातात थेन षेनक

कलपनां निकदिन आणी निसदिन नांव जुचावै । कहै
कबीर आप कहासा सो जन औरें तारै ॥ १८ ॥ नारै
नगति घेलन दीजाणी अंतरि गुति से कानदी फूटा ॥ त
बलग के सापां णी टेक मन करि सूसबद पवन करि बौरा
सुरति दोउ णी साधी ग्यान कुदाल गगन जयो सागर पा
लि सबद गुर बांधी १ चंद सूर दो कंगा जगा दिमाग्या सिं
जूले प्रबांणी कहै कबीर सांसा सब छूटा प्रेम धजा फर
राणी ३ ॥ १०० ॥ संतो तन खोजत मन पाया मंदी सुरत्ता मन
दी पंडिता मनदी निरंजन राया टेक मनदी पांच तत्त गु
णा तीनूं मनदी का सकल पसारा जे सें चंद नरदि के मेंदी
सेर हे व्यापक अरन्यारा १ जो मिश्र कास तेज अस मा
रुति ऐसब मन की पांदी मन औ तार अस्वरली ला ध्य
मन बिन दुतीया नांही २ दस दूवार जेदे मनदी सोई
निज मन कदी आदि अति लौं मनदी सयो नां मन चजि
मन संगि रहीयो आदि जीदो ता सो फिरि हुवा जब आत
म अजप जपाया कहै कबीर कंचन का रूप नांे कनया
सबसायाध ॥ १०१ ॥ हारका धीबी या मन कूं धोई तासें द
ग पुरातन धोई टेक सिला सा च सुरति कुरितपणां पां
चूं बांवसमो ई अति नुजा सन जलक पडो सामें मल
नदी लागे को ई १ कूंडी कर पवन गाइ करणां थिमां धू
म चढो ई २ जो सागर अति नीरनरी यो जा में मलनदी
लागे को ई २ करि करणी आगम गांवडी प्रीति को पंडो
जोई कहै कबीर धुबीया कारीगर वा को बेकूं वां मजू
री सो ई ३ ॥ १०२ ॥ तुम दाता क्या दीयो गेरा मां मैं तन मन सों र
पजयो निदका मांटेक सोनदी तें सो नदी मेरे तो लख चौ
रासी का कूं फेरे १ समंद बूंद जल ऐक समांनां दो इक है
सोई ज अर्थां नांर स्मजयो ऐक हुजिद मस्यागी दोइक
है सेई मद चागी रकहै कबीर दमनां दी जूवा जूं पा घा
ग लिपांणी रूवा ३ ॥ १०३ ॥ अब मैं रैन लपति सांई आई
ता तें मिठिगई बिघे बडाई टेक गर मैरे गगन सुरति
सिंघासन त्रि तन चंवर दुलाई इला पिंगुला सुखमन ना
री अनंद बेणी बजाई १ सत मेरे तुरी है तमंदा सीयन
रतन गदि मात्रा मद रमता दी
रथ वाला १ रस कर अकल अजप

श्री तो करजन बटोन सिरकी या।प।गब गुमान सब इरिनि
रे करणी का बरतनां ही। कहै कबीर सो साई का बेद। पढूंता
दापद मो दी। द। ८२। अवधू अकल पंथ कूं चलिबा। जीवत
मरो चरन बिन चलिबा। मन उनमन ले धरबा। टेक। पिंड पर
जीव जिम घर जाता। जीव तहां ले राषो सुनि मंडल का मेला
रे अवधू मह। अमीरस चाषो। १। मेर सिषर में मठी बंधायो करि
लो अनैबासा। अधर जुगति नो आसण पूरो देषो अलष
त मासा। २। सहज मुजा इ सुरति का मारग सतगुर पंथ बताया
दास कबीर च्यसपैंडै लागा अलष निरंजन पाया। ३। ८४। ह
मारी रामनां मल्यो लागी। ताथें जम की संक्या भागी। टेक। रो
म मुका दम हरि पटवारी। गो बिंद जी सिकदारा। १। मोहन मस
हलका न्ह जेवरीया लषि लै अलष अपारा। २। सारंग ग्रीनी
महीसूंग्रीनी मदसूदन बिसवाई। जमां बोधि बन माली
कीन्ही। जम पैंगेल छुडाई। ३। दास सिरल जमो रूवा बेवाकी
आगें करजन करबो। कहै कबीर जन षालसे हरि कै। जम को
कछू न धरबो। ४। ८५। संतो सोई रांम हम पाया। आपे आप अ
लष अपंपर जोनी संकटि नाया। टेक। पूज्या जाइन जाइग
गाया। कथ्या जाइन ही गाया। अनत लोक का ठहरत है
सो कैसे जाय जमाया। १। जब लग बाहरि पूजा दीसै षसमन
देत दिषाई। पतिब्रता को बिरदक हत हैं करतो फिरै अनम
है। २। जि निसि लाव ट सिष्टि न पाई ता हीसूं ल्यो लाई। कहै
कबीर मनमन हि समां नां। तब मन का षेध जाई। ३। ८६।
रे चित चित सि चित ले तांही। जा चिंतत आपापर नांही दे
हरि हृदे रोक पांन न पाया। तातें छूटिग ई सब माया। १। जहां
नाद बिंद दिवस नहीं राती। नहीं नरनारि नहीं कुल जाती
। २। कहै कबीर सबै सुष दाता। अवगति अलष अभेद बि
धाता। ३। ८७। अवधू सो जोगी मतिवाला। जाकै अंदर नय
न जाला। टेक। अजपा जपै सुषमनि संवारे। उब ध्यानि कटि
न आसो। मकर बियापी सब ते न्यारा। अैसे ब्रह्म पिछांणें। १। अ
सा परषे निरषां परषे पर षिपर षिबसि कें। गुर गम मपांन अल
षकेपर चै ब्रह्म अगनि में दैबे। २। मेल्है सुरति नाद घट मांही
तन सूर है निरासा। अधपिया लाउ लटिर पीवे तब सह जें दे
ह प्रकासा। ३। निरत सुरति अरु पांचू पवनां। रो कै संगि चला
वै। रहै समाइ प्रेम सागर मैं चहुं दिस मंगल गावै। ४। कलह

ऊटेबसबपाया टेक ममता माई जांमत पाई दुषसुषदे
कै नाई कांम क्रोध दोकं काका पाया निछां पाई बाई ॥१॥
पापपुनि पाडौसी पाया लोभ नत्रमदो कै मांमां मोहनग्र
कोरा जा मांये चलटिप डोग्रो जब ग्रांमां दुरमविदा दीग्रे
फूबडदादा मुषदेषतदो मूवा ग्रानंदरूप बधाई बाजे
तबयो बालक फूवा २ पांनी नांव धस्यौ लड का को महमां
कहीन जाई कहै कबीर सुनो नाई साधो घटि घटि रह्या
समाई ॥४॥ ए५॥ मस्तें मोले लाग कारक सा जा घरां टेक म
गरी का गन बैसण पावे पांहणां आया ती नित भणा री
जा सां घर में बैसी मैं छां णां ल्या कं वे णा २ छां निपो सिक
रि आगि लगाई चूल्हो दीयो जलाई भूकी च्यार षस्म
के मारी आपण चली रिसाइ ३ बन में कटणी कूकत्ती
घर में कलह गारी जो इ ज्ञा घरि जबसी जाइ ये चबदा
ये में लागी लोइ ३ कहै कबीर सुणो नाईसा धो यो घर को
ब्यौसार निति उ विस रजनें कहै म्हारो कब मरिसी नर
तार ४॥ ए५॥ ल्यावो बाबा अगनि जरावो घरारे तिस का
रणि जीव धधे परारे टेक एक डायण मेरे मन में बसेर नि
तिउठि मेरे जीव नें ग्रसेर २ एक डायण जाके लड का पां
च २ निस दिन मोनें न चावे ना चेरे २ कहै कबीर में दास
रे डायण नें मारि रहे न दास रे ३॥ २००॥ बकु मासू कूं घि
लावे तातें मो हि अचे जो आवे टेक एक कूं मारे एक
कूं तारे पीवे के राह चलावे लड का लड की कूं वेन सारे
नां न्हो सूत कतावे २ नाचे सरपस नां मूसा की पीड कज
न बजावे कउ वा बैठा सुगन बिचारे नें सां गोडी गावे ३
अचिरज एक नया कलि मांही दुरगा देव मनावे मुसी
निति सिघ कूं मारे मूसो बल्ली पदावे ४ नारद ब्रह्मा दो
कै आगे उनी यां रही सु नावे कहै कबीर सुणो नाईसा
धो सतगुर मुक्ति बतावे ५॥ २०१॥ अब मेरी रांम कहे
गी बलइया जां मन मरन दो कंडराइया टेक ज्यूं जध
री कूं दे सरवां नां धूं रांम नगति मेरा मन दिन मांनां २ मैं
बपुला दुषि पूल हमारा मैं बहुने करां मेरा सारा २ क
है कबीर सकल जुग मूवा रांम कहे ते ईजन फूवा ३॥
२०२॥ बाबा पोरिष पवन अनंदा या में कौन सूरज कौन
चंदा टेक गाज है सी कांम णि लटकैसी देषी कह्यौ रू

धगादि मारं॥नयायकराजरजिकव्हां नांदीनदीजीत्रन
ष्म॥त्रायकुसह्रमेरेसूलसलसीयांत्र्ववकव्हांजीजेः
दी कहेकबीरगनीतिन्नईनगारीनलटिमिल्यामनमांदं
॥४॥७३॥रामतेरैसंतकरैमतिमादी॥प्रमधामकैतषतवि
जे॥अजबमादिबी॥आईटेकदिलकूंघोजिरदिलीलीः
लेलालैरबसाई॥आसघोजिआगरोलीयो॥दिखादिष
या॥॥पाई॥२॥पांचूंचोरमहलमेंजाल्या॥अजेचदिकरिला॥
॥हरीलवगगनमेंगाजे॥सुनिधजाफहराई॥३॥पांचूंमारि
पचीसूंवसिकधियूंगढलीजैनाई॥कहेकबीरसुणोन
ईसाधो॥असीअदलचलाई॥४॥७४॥सोईन्नलनारीमुन
सदीमावे॥मुनसदीमारिपडोसीतावेटेक॥मायबापकी
गिनेनकोनी॥सुसरोमारिलरावेपांनी॥१॥पांचसवदीअरघ
वोजवाई॥तादि मारिकूंल्यादणाआई॥२॥मायकंवारीध
लसआया॥नाचनीयांघरिधेटाजाया॥३॥कहेकबीरमेपर
मनिवासये॥पदविचारेमैंताकादास॥४॥७५॥साधोघर
कीकदोनमांने॥तातेंप्रगटकहूंकदांने॥टेक॥कवेअव
रीसोवेसचारी॥दोपेरादरतिरांधेजीमणविरीयांटाबरप
टके॥कलेकंतसूंसांधे॥१॥नवेढाजकोपूणोबाल्योनई
डोईकीडांडीबातीछोडिबलोडेलागी॥अजकूंनचेतेरांडी॥
२॥कडकडकरेकडूंबोमारेरांधोग्रासनघारेनेधागांसेती
केरेधकाधकैं॥आपमुरादीचालै॥३॥मनसानारीवदोविधि
मारी॥गपांनगुरुकीलावी॥घेरियारियठनीतरिल्यांकं॥फिरे
जल्लावील्यावी॥४॥निगुणीनारिसूंफेरालीया॥विडलोकां
मेंवासो॥कहेकबीरसुणोभाईसाधो॥किसविधिदोघरवा
सो॥५॥७६॥सेराववरलामरीयोरे॥मुजिनेकूरकूंदई॥टेक॥कू
रअरोसीकूरपरोसी॥कूरकिसीकानाई॥कूलकूलकरिल्यांद
या॥आयाकूलीकरीसगाई॥१॥नरवामरीयोवरवामरीयो॥अ
रमरोयाबाई॥लेदपडेलांलोजरामरीयो॥जिनयोलगन
लिषाई॥२॥घोरामरीयोजीनलूदीयो॥जिनचढिकुलदाआ
या॥मांढेतनबरातीमरीयो॥जिलयोनातसिरायार॥दालि
पकाएनातपकायो॥वडेपकायेकाचा॥सववेवरातीजीमणबे
ठो॥सारसकेसवेचाछ॥कहेकबीरसुणोभाईसाधो॥योपदहे
नूबांनी॥यापदकीजोनिंद्याकरई॥जिन्हेंबाह्ननवांनी॥४॥७
७॥साधोमृलांलेटाजाया॥गुरुप्रतापसाधकीसंगति॥बोति

कबीरसुणोनाईसाधोमजनसिटैरनटारी॥२०७॥
पांडेबूझिपीवोजलपाणी॥तासेंसुचिकहांथेंआणी॥टेक
जलनीसूतिगथलनीसूतिगसुतिगपवनरुसोई॥जाम
णमरणदोन्यूंनीसूतिगसुचिकहांथेंहोई॥नहाइधोइक
रिचोकादेख्याबहोतकेसुथराई॥चोकेआइपपीवेगी बू
डिगईचतुराई॥पीरमूलपेकबगडेसहंसऋषासीपंडे
जलिबलितिरापरूपधरणापायसमाटीकेनंडेरूपंचूं
कपडाऐकसूतकाऐकजुलाहेबणाया॥कपडालेकरि
श्रलगाभेस्या॥श्रीतीचोकेल्याया॥४॥डजरेफरिगूलफरे
फरिइथनहोथेंश्रावे॥सोईरथपांडेपीवणबैठा॥जलकूं
श्रोतिलगावे॥५॥याजलमांहीमछीकछीरक्तपीतजलकी
या॥बामछीकासूतिगमांही॥सोपांणीतेंपीयाध॥बनणी
केजनेकनांही॥पूतकहांवेपांडे॥बीबीकेसोसूनितनां
ही॥कानीबांनणनांडे॥७॥ऐकनचूलादोइनचूला॥चूल
सबसेंसारू॥कबीरगावेऐकनिरंजनरामनामरहतारू
॥८॥२०॥साधोकाकूंनजूंतजूंमेंकाकूंकहोकहांतुम
नांही॥ऐकहीजोतिसकलघटनीतरिज्यूंबीरजफल
मांही॥टेकमायाब्रह्मनिनिमतिजाणो॥बिनाब्रह्मन
हीमाया॥जेसेंसबदहेमेंबरतेबछतलेंज्यूंछाया॥१॥
कंचनऐकघडेबहोत्तनूपनश्रंतिऐकहीदोई॥श्रेसेसब
मेंतुमहीदीसो॥श्रोरनदूजाकोई॥२॥माटीऐकघडेबहो
नाडा॥तिनमेंश्रापसमांनां॥लुघदीरघश्रबकासंकहीऐ
कोणरंककोणराणां॥३॥नमेंश्रापश्रापमेंसबही॥श्रोर
नकोईदूजा॥काकूंनिंदूंकाकूंबंदूंकरूंकोणकीपूजा
॥४॥लीलातेरीश्रगमश्रपारासकलरूपमतिसोईकहेक
बीरसबेसुपपाया॥जबमनकोदुबध्याखोई॥५॥२०९॥सा
धोदूमनीचढमचलाया॥जाकाब्योराश्रलखलखाया
टेकचेतनचढसनयानबमूंदी॥सुरतिसेजाचलिश्रा
या॥झिलमिलनांवनीरनिरंजन॥सीरसंतनसबश्रायाष॥१॥पी
लीसबदधिसेनदीकबकु॥न्योकीलावबणाया॥न
धिकाबलह्याबदेंसतारा॥धीराधीनलगाया॥२॥श्रंब
श्रहोडाबूटेछत्रबा॥प्रीतिपांणतीयालाया॥करणी
क्यारापीवेसपीछा॥पिमश्रणीबलजाया॥३॥कबीरश्रोर
सोजसबसुधरी॥श्रारंनश्रंतिबनि

लंदाके साचीटी चटिकैं ऊँटज आया दूँढे च्या रूदेस २ ऊँ
जसैलेके हरल्हागा आगनि देषि घीठ रीया। मूसाके सब दिखि
लाई ल्हासो हिरणी चीता भरीया २ ओक अचेंभा ऊदबुददेष्य
बेदर हदे गाई नीरबि लोवतल्हूणी बाया दहो दसूं दिस जा
ई २ आनंद में आनंद निति होई आनंद अनंत नपारा कहै
कबीर में गुरमुषि पाया तनहीं में ततसारा ४। २० रलतीन
ई मेरी पहली मरी जुगि जुगि जीवो अबकी धरी टेक पहली
को रूपक रूप ऊलछन माया के सासरे ले ली रे अबकी २
सौं जरमें सुलछन सहजे आइ मिली रे २ कहै कबीर लकुठी
नैं मांगी जेवीको सुहाग टर्यो रे लकुडी सती कुई संगिमा
थी जेठी और थर्यो रे ३।। २१ धारांम राइ मनको आसा पां ऊँ
ताते काया नगर बसां कुटे कैदस दरवाजा मो ल्हे षाई बां
धन बाणं पां के गेरा तीनि सेमाठ चीराबै धलागा नगर बन्यो
चौफेरा २ राजा राजक रै गढ नीतरि निसदिन फिरै डहाई
कांम क्रोध दोनुं गारद निमारै असी अदलि चलाई २ पांच
पचीस करूं बसि अपने परजा डुषीन होई। चेतन पुरम
करै ऊटवाली सहर नगंजे कोई ३ ग्यांन नें डास ल स्यानं
२ पूरा कछू परच्या कछू पाया दास कबीर चढ्या गढ ऊ
परि जीति नीसांन बजाया ४।। २२।। गुण का नेदन्यारान्यारा
रा कोई जानें जांन न हारा टेक सोई गजराज राज ऊल मंड
ण। जाके मस्तकि मोती और सकल एं भारल दाऊ मह
की सुत के गोती २ सोई नवंग जाके मस्तकि मणि होजो
तिन जाले षरैले और सकल सोवण का कीडा जगत पाव
तलि पेलै २ सोई गिरमेर सुमेर बराबरि जामैं धात निवा
सा और सकल पाषाण बराबरि टांची अगनि प्रकासा
न पतिबरता सोई पतिकूं मानें आग्याकार न लोपै और
स बेही स्वान मंजारी सुंदर नाचन वोपै ४ कहै कबीर सो
साधसरोमणि रांम भजन अधिकारी और सकल साहिब
को बांनो देषो सोचि बिचारी ५।। २३।। अब में हरिरस चा
ष्या नारी ताते लागी षुमारी टेक मदवो नांव मधुर माथे
को कसि कसि देत कसोटी ब्रह्म अगनि अंतरि प्रजारी तब
या नाठी वोटी २ सीतां बैठी [illegible] तगा लेरांम चिगावेना
वीह्ण। मांन लनकार करत है पीवो मेरमें गलहा थी २
पे मपियाला सद मतिवालो नरिल निदित कलारी कहै

दोजिगनिस्तिदोकूँत्यागीरहिरेंपुन्हांतुम्हारी॥१॥सरि २६५
नदीद्दोतकरूंमेकिसिविधिघरहीमेमेवासोलपतत
लेंदोहतसकत्तलूदेंयनकोअजबवमासा॥२॥कदेकबी
रसुणोजाईसाधोयोजगरूवीवाजीत्ततनोवविनपारै
रनपकूंचेक्यापेडिसक्याकाजी॥४॥२६॥कायामसीति
मनदरवेसाकत्तमांसतगुरुकाग्रपदेसटेकेअजपातस
बीअनहदबंगहरदमसादिवसदाजसा॥१॥गिगनम
सालअगमअवाजजनरदमानसम्यासबकाज॥२॥पर
मजोतिसादिवकाराजजनकवीरतहांकरेनिवाज॥
॥३॥२६॥जाईरेवोहजगदीमकहांतेआयोकहोधूकहां
विचारोमनमेकोनेंधूवोरायोटेकवेदीरामरहीमवेदी
किछमकरीमांसोईहरिहजरतिदीवांनकहावेआमि
नचलोकोईएवेदीमहादेववेदीआदमब्रह्मोमह
मदकहीयोकहांहीहूकहांतुरकहावेएकेघरमेरहीये
एवेदीकरांणपुरांणपूछतहैवेमुलांवेपांडेनांवजु
जारधरेवक्कुतेरेएकमाटीकेजांडेरगहणांतेकनक
कनकतेगहणाथामेसारफेरनहुआकहनसुनन
कूंदोहकरिथापेएकनिवाजोएकपूजा॥४॥आदिअंति
लूंअंतिएकहीअंतिरहेगासोईकहेकबीरअजुपू
रणकीगतिविरलाबूझेकोई॥५॥२८॥काजीमेंदोमूं
घरदीवादीहतुरकसकलकूंब्यापेस्वार्थसबकूंमी
वाटेकहाथनीभेयापावनीभेयामेलरहामनमां
हीकादिकरहगरनसाथावेलासादिबकानेनांही॥
१॥लूनीकांजीचूनीमुलांलूनीवेलकजेसासादिव
मेरालेघामोगेज्वावजरोगेकेसा॥२॥कुकडीमारीवक
रीमारीमुरापांनजीपीया॥कुकडीकेवोहईडानिकस्या
सोविसमलकिनकीयानदयादीहकेनमहरितुरक
केटेकदरूकीजागीवेजिवहवेवेजटकेमारेआ
गिदरूघरिलागी॥४॥रोजाकरेनिवाजगुदारेंबंगदो
कपुकारेकहेकवीरतिनकूंनिस्तिकहोंतेसांकामु
रगीमारे॥५॥२७॥जाईरेजगतिमतगुरुआणीकरू
विरलेदीजनजांणीटेकगिरवमांसकूंगणानिकसी
चरूदिसदोहगयापांणीतापांणीमेंदोहब्रवन
डूबादरीयालहरिसमांणी॥

नीपनो सरसा। टोटा सब्बे गमाया॥४॥२२०॥ संतो उब्बध्या दी
२ सैनो री। बाद रिरो मां नीत हिरो मा। रांमें बोले मों। हीटेक उत
रो मों दयणरोमा। परब्ब पस्सरांमा। सुरग पाताल नुयंथ
लरो मां रां मां सब्ब बिश्रामो॥२॥ रांम रांम कहि जपे निरंतर। री
म रांम कहि गावे। कहे कबीर रांम के दरस्यां। अपणी बोडन पा
वे॥३॥२२१॥ असैं नगत तिन की जीयें जग से बेहासी। अंतिका
लि जम मारिसी देदे गलि पासी। टेक जैसे मंजार सु ही मुए
कथा पोटो ब्रत कीन्हें। कर सूंली पग छाडि के मूंसो गहि
लीन्हें॥१॥ जैसे लाष प्रघलि चले। पावक के संगा। छिन य
क बारि रा पीये। हिरदे बजरंगा॥२॥ जैसे गंदद रीया वमे
जलर हीयो पूरी। बाद रिनिक सिवाहो नयो। सिर डारे धूरी
॥ कहे कबीर प्रगपांन ते जीवत ही मरीये। सेल पकरी
ये साच की पांचां सूं लरीये॥४॥२२२॥ संतो दया पदां सूं न्या
री। जब लग मन प्रतीति न उपजे। तौ का बांणी बिस्तारी॥
टेक सकल सब्द की परषन आवे। तब लग रांम न पाया
निज अबिनासी कू चित्त न दीया। तब लग रूवे ही नरम
या॥१॥ निस बासुर में एक पलक हू सुरति बिषें कूं तरसे सु
मिरण ग्यांन ध्यांन न ही पूरा। तब लग रांम न दरसे॥२॥ त
न मन मनसा आपो तजि। पद में प्राण समाया। कहे कबी
र तब ही जांनी रे दरवा न्हन बनराया॥३॥२२३॥ मन बांणीयो
बांणीन छो रे। जा के घर में ऊब धि बि एपाणी। छिन छिन
में चित्त चोरे। टेक जन्म जन्म को मास्यो कूटो। अजहूं न
बो तो ले पांच कडूं बी मही द राम। ऊ मृत में बिष घोले॥१॥ कू
ड कपट की पासं गडोरे। फूल्यो फूल्यो डोले। कहे कबीर
सुणो नाई साधो। ऊ टली गांठि मैं खोले॥४॥२२४॥ रे बणीयां
कूं न हिज मांसं चोरे। टोक टांक तेरी बी जे पूंजी दो मपडे
गा थो रे। टेक बोड चोड की ऊठी चोपरि। जीव कूं बिपतितु
रो रे। कूड कपट तूं छाडे नां ही। हरि हिरदे न चितारे॥१॥ सा
रे जन्म को घाटि ही तोल्लत। कबहूं न पासं गडारे। कहे क
बीर सदा कपट के कीये। कब लग सा दकबोरे॥२॥२२५॥ मा
हि बकि सिबि छिरा पूं रा जी। चाकरी चोर निवाले हाजरि
॥ असा ते में पाजी। टेक पांच चोर करें ऊं परांनो दीन रह
णन ही पावे। यन सूं लड कर क रूबंद गी। है को ई समझा
वे॥१॥ यन सूं मिल्यां तुमें न ही यय हूं। मो हि होत बजगारी

धिमुक्तिआदिदेऐसौनांवनकूंकीन्हीजाकूतु
महाथासंछाडीतिनकूंऐसेदीन्ही॥२॥कहैकबी
रसीजगतिनछाडीजेकोटिककरादिषावैमिब
लकतुमपितानिरंजनहाहरिकैविरगावै॥३॥
२४॥३४४॥रागआसावरीसंपूर्ण॥रागा॥रागसोर
ठि॥हरिकोनांवनलेइगंवारा॥कासोचैबारंबारा॥टेक॥
पंचचोरगढमंझागरलूटेदिवसारसंझा॥जोगढपतिमु
हकमहोईतौलूटिनसकेकोई॥अंधियारेदीपकच
हीएतबबस्तअगोचरलहीए॥बस्तअगोचरपाईतब
दीपकरह्यासमाई॥२॥जोदरसनदेष्याचहीएतोदरपन
मांजतरहीए॥जबदरपनलागैकाईतबदरसकीयान
जाई॥३॥कापढीएरेकागुनीएकाबेदपुरांनासुनीए॥प
ढंगुनैकाहोईमैंसहजैपायासोई॥४॥कहैकबीरमैंजांनां
जांनांमनपतीयांनांपतीयांनांजौनपतीजैतौअंधैको
काकोजै॥५॥२॥अंधेहरिबिनकोतेराकवनसूंकहतमे
रीमेरा॥टेक॥तजिकुलक्रमअभिमांनांझूठेभ्रमिक
हारेभुलांनां॥झूठेतनकीकहाबडाईजेनिमषमां
हिजरिजाई॥२॥जबलगमनहिबिकाराती तबलगन
हिछूटेसंसारा॥जबमननृमलकरिजांनां॥तबनृमल
माहिसमांनां॥३॥ब्रह्मअगनिब्रह्मसोईअबहरिबिन
औरनकोई॥जबपापपुनिभ्रमजारीतबभयोप्रका
समुरारी॥४॥कहैकबीरहरिऐसाजहांजैसातहांतैसा॥
भूलैनरमपैरैजिनकोईराजारांमकरैसोहोई॥
५॥२॥मनरेसरयौनएकोकाजा॥तातैंनभ्योनजगपति
राजा॥बेदपुरांनसुमृतगुनपढिपढिपढिगुनमर
मनपावा॥संध्यागावत्रीअरुषटकरमां॥तिनथैंदूरि
बतावा॥२॥बनषंडिजाइबहौतपकीन्हांकंदमूल
षनिषावा॥ब्रह्मगियांनीअधिकधियांनीजमकै
पटैलिषावा॥३॥रोजाकीयानिवाजगुदारीबंगदेलो
कसुनावा॥हिरदैकपटमिलैक्यूंसांईक्याहजका
बेजावा॥४॥पहस्यौकारनमकरनजगकपरिमांहि
लषेभ्रमगपांनी॥कहैकबीरतेनपैद्यालसेरांमभ
तिजिनजांनी॥५॥३॥मनरेज
कदिवेकूंकछूनरह्यौ॥टेक॥

ब्याई॥ बोलै ईम्रत बांणी॥ मछी थी जब्व मछ्या नांही
ग्रन्हस्या बिन पांणी॥ ऐकैं ना रिसकर लज मुआया॥ निरंज
न ऋाप ऋकेला॥ कहै कबीर या पद क्षिबि चौरस ताम
गुरु मै चेला॥ ३॥२०॥ ऐसा हैं तत कौ बिचारा॥ रूपन
रेष बरणतें न्यारा॥ टेक॥ सब कहु कौ या कहुन करणां॥
जब लग करै तबै मरणा॥ १॥ बाजे तत करो बिन कीनां॥ १
ब्दै ब जावे जी नन बिद्रूणां॥ २॥ सुनत सुनत मो हित न मै
रज बल त्राडि नै ऐ छेरा गी॥ २॥ कहै कबीर मन मन हि मि
ला॥ बाजा बुझ्या बिहंगम षोजन पाया॥ ४॥२१॥ ऋबधू र
हि पद ऊलम जांणी॥ कहा न यौं जे ने घबणा॥ याकथ
तान दबुद बांणी॥ टेक॥ जब लग पवन मारग नही पा
वै॥ पारा थिर न रहाई॥ जब लग सहज ऋकास न द रसै
मिथ्या करत बडाई॥ १॥ मन थिर होइ पवन थिर होई॥
मन पवनी इक संगा॥ पारा बो धि परम स्मो ला गो समस
रस तीं गंगा॥ २॥ सुरति निरति दोऊ सम करि राषी॥ ऋगम
चक्र गढ़ षूटा॥ कहै कबीर मैं सहज समांनां॥ ज्यूं सेरेज
ल फूटा॥ ३॥२२॥ संतो मैं ऋब गति सूच लिऋाया मै
गा मरम किन्हूं न ही पाया॥ टेक॥ नां मेरे जन्म न ग्रन बसे
रा बालक है दिषलाया॥ कासीपुरी जंगल बिच डे
रा तहां जुलाहे पाया॥ १॥ नां मेरे धर नि गगन फुनि नांही
ऐसा ऋगम ऋपारा॥ जोति सरूपी निरंजन देवा सो है
नांव हमारा॥ २॥ नां मेरे हाड रक्त नहीं चांमां॥ ऐके नांव न प
सी॥ ऋपरंपार पार प्रसोत्म॥ कहै कबीर ऋबिनासी॥
३॥२३॥ ऐसे जोगी या सन कोजे न ब जाई॥ ज्यूं तेरो
ऋावागवन मिट जाई॥ टेक॥ तत करि लो तिधुर मकरि
डांडी सति की सारि लगाई॥ मन करि थिर ऋासण क
रि निहचल स्म नां स्म गप जाई॥ १॥ चित करि बट वा लु
चा मेष ली नस्मैं नस्म चढाई॥ तजि पा षंड पंच करि
निग्रहा षोजि परम पद पाई॥ २॥ हृदे सींगी ग्यान गुण
बांधै षोजि निरंजन साचा॥ कहै कबीर निरंजन की ग
ति जुगति बिनां पिंड काचा॥ ३॥२४॥ बाबा वे बालक
हम नांही॥ नैं षुन षुन दे बोलां ही॥ टेक॥ प्रथम धू
प्रहलाद नथरीया सुरग लोक ले छूटे॥ मां निब डाई स
बद फुरत है॥ ऐसे बिचिही लूटे॥ टेक॥ ऋव सिधि नौ नि

२जा कुदमारी बदनां। बिषला गै तुम्हारैनेनां टेकअं
न आदि निरंजन राते। नां किमदी कोदेनां च्यलि जांजं
को तुम पवईगो कमाय रोक बेदेनां। १शाती मांडी देबि जिनि
पिदमारा। सिंगारो सुरालो कथेदम चलि आई
रमकबी रमरत्तारो। सुरालो कमें क्या इपपडीया। तु
आईक दिमांदी। जाति जुदा दानां लकबीरा अजरूप
गोजो नांदी रजदां जाअंतदा पाटपट बआगर चंदन घसि
नीनां। आयदमों रिकदा करो गीदमतो जाति कमीनां ४ जि
हदम धाजे सा जिनिवाजे बोध्रेका चेधागे। जेतुम जत
करो बदोतरा पांणी आगिन लागे॥ सादिब मेरा ले
घामां गे। लेघाकं कदीजो जेलम जतन करो बदोते
बीपां दरानी रतनी जे। ढ्राकी मेंम छीसो मेरा मछा
गाषं बालुदको कतुम्हार सा थल गां अंतो गजा
सालू ७ जाति जुला दानां बकबीरा। बनि बनि फिरे
उदासी। आसिपासि तुम फिरि फिरि बसा पिकमा इरक
मासी। पा। णतां कोरकदाकी जेनाई तजि अमृत बिपसे
लौलाई टेक बिषसंग्रदकदा सुषपाया। रेचकसुषकूं
जनम गमाया। रमनबरजे चितकरी नकराई साजि सनेह
दीपक में परई २ कहे कबीरा मोहि नजिनु मादी रतक
णी जालिन या जुलादान। २ऐसु पडुबमो दिबिषन
रिलागा। ज्ञनसुषदइके मोटे मोटे छत्रपति राजा टेक जप
बिनसे जाइ बिलाई संपति काकूके संगि न जाई २ धन
जोबन गरब्यो संसारा। यह तन जरि बरि हैं है छारा।
२चरन कंवलमन राषिले धीरा रांम रमत सुष कहे कबी
॥२१ अबन रहूं माटी के घर में। अबमें जाइ रहूं मिलि
हरि में टेक। छिन हर घन अरु छिन हर टाटी। घन गरजत
कंपै मेरी छाती २ दसवें द्वारि लागि गई तारी। दूरि गवन आंव
न यो नारी। २चहूं दिसि बैठे चारि पहरीया। जागत मुसि
मोर नगरीया। २कहै कबीर सुनहु रे लोई। भांनण घड
णं वारो सोई ४॥ २२ कबीरा बिगस्या थम दुहाई रामर
जन बिगरैं मेरे जाई टेक चंदन के ढिग बृक्ष जु भैला बि
गरि बिगरि सो चंदन ह्वैला २ पारस कूं जे लोह छिवैगा
बिगरि बिगरि सो कंचन ह्वैगा। २गंगा में जे नीर मिले
बिगरि बिगरि गंगोदिक ह्वैगा २कहै

ज्ञातरामनामनहीजांनो॥१॥कामक्रोधदोऊंन्वाराता
थैगुरप्रसादिसबजारे॥२॥कहैकबीरहूमनासीराजारा
मभिलैअबिनासी॥३॥रामराइसोगतिनईहमारी
मोपैछूटतनांहीसंसारी॥टेक॥ज्यूंपंषीउडिजाइअका
सा॥आसरहीमनमांही॥छूटीनआसरह्योनफंधा॥उडि
बोलागेकांहीं॥१॥जोसुषकरतहोतदुषतेईकहतन
कछूबनिआवै॥कुंडलज्यूंकिसतुरीमृगआपैआप
बंधावै॥२॥कहैकबीरनहींबसमेरासुनीयेदेवमुरारीअ
तनैंभीतिडरूंजमहूतैनिआयोसरनितुम्हारी॥३॥५॥राम
राइतूंऐसाअनभूतअनूंपांतेरीअननैंथैनिसतरीये
जेतुमरूपाकरोजगजीवनतौकतहूनभूलिनपरीयै॥टे
॥१॥हरिपदतुलनअगमअगोचरकथीयागुरगमबिचा
रा॥जाकारनिहमदेहरतफिरतेआथिनस्यौसंसारा॥१॥प्र
गटीजोतिकपाटघोलिदीयेदगधेजमदुषद्वारा॥प्रगटेवि
स्वनाथजगजीवनमैंपायाकरतबिचारा॥२॥देषीयत
रोकअनेकनांहीसंलषीयतजातिअजाती॥बिहकौदेव
तजिढूढतफिरतेमंडपपूजापाती॥३॥कहैकबीरकरुणां
मैंकीयांतेरीगलीयांबहुबिस्तारा॥रामकैनांयपरमपद
पाया॥छूटेबिघनबिकारा॥४॥६॥रामराइकोऐसाबै
रागी॥हरिभजिमगनरहैबिषत्यागी॥टेक॥ब्रह्मांकेडि
नसिष्टिउपाईनांवकुलालधरायाबहुबिधिभांडेउन
हीघडीयाप्रभुकापारनपाया॥१॥तरवरएकनानांबिधि
फलीयातांकेमूलनसाषा॥भौजलभूलिरह्यारेप्रांनी
सोफलकदेनचाषा॥२॥कहैकबीरगुरबचनहेतकरिऔर
डुनीयांआथी॥माटीकातनमाटीमिलिहैसबदगुरुका
साथी॥३॥७॥नैंकनिहारिहोदासमायाबीनतीकरैदीन
बचनबोलैकरैजोडे॥फुनिफुनिपायपरैटेक॥कनकलै
हुजेतामनिभावैकामनिलेहुमनहरनी॥पुत्रलेहुबि
द्याअधिकारीराजलेहुसबधरनी॥१॥अवसिधिलेहुतु
म्हारिकेजनांनौनिधिहैतुमआगे॥सुरनरसकलभवन
केभूपतितेऊलहैनमांगै॥२॥तैंपापणीसबैसंघारेका
कोकाजसवांरयो॥जिनिजिनिसंगकीयोहैतेरोकोबैसारै
सनमार्‍यो॥३॥दासकबीररांमकैसरनैंछाडीझूठीमाया॥गु
रप्रसादिसाधकीसंगतितहांपरमपदपाया॥४॥८॥तुम

बेवाज्ञदेनईस्वनराश३॥ज्ञदांको बिछुटो ते सांचा गो
गगन बेधो जाइ जन कबीर ख्यानवा जिन मारग दी
यो चाइ धा१ण तां थे मो दिनाचि बोन आवे मेरो मन
मदलानवज्ञाबेटेक कनरथे ते सूनरनरीया निछा
गागरि फूटी दरि चिंतसमेरो मदला जी नो नरम नोय
नगयो छूटी खसनआगनिमें जरी त्रमसता पाषंड आरू
अनिमो नां कामचो जनान्तया पुरानामो पंडो इन अनि
१ जे बकुरूपकी ऐलेकी ऐ अबबकुरूपनदोइ याकी
सों जसंगके बिछुरे थम नां मसिले ओई२ जे थे सचल अच
लो कृथा के करते बाद बिबाद क्छै कबीर में पूरा पाया न
या रांम परसादं ४॥२७॥ अब क्या कीजे ग्यान बिचारा नि
जनसरगत ब्योसारा दे का जाचिग दासा इक पाया ४ न
दीया जाइन पाया को ईले नरिस केनमूका औरन पैं जा
नां चूका १ तिस बाजें जीवन जाई वो मिले त घाले पाई२
वो जीवन नरला कहा ई बिन मूवा जीवन नां होई३ सिच
दन बन घंड बारा बिन नैंन निरूप निसारा तिहि मूतबा
पये कजाया बिन गादरन गरबसाया ४ को जीवत हीम
रजानें सो पांच सयल सुष मांनें क है कबीर सो पाया प्र
भु नेट तन आप गमाया ५॥२१॥ अब मैं पाया राजा रांम स
नेही जा बिन दुष पावे मेरी देही टेक बेद पुरांन कहत
जाकी साषी तीर्थ ब्रत न छूटे जम पासी१ जाथैं जनम
लहै नर आये पाप पुनि दोउ भ्रम लागै कहै कबीर सो
ई तत जागा मन न कया मगन प्रेम रस लागा ३॥२४॥ बि
रहनी फिरे दोनां य अधीरा उपजि बिनां कछू समझि न
परई बांझन जांनें पीरा टेक याबउ बिथा सोई भल जां
नें रांम बिरह सर मारी केसो जानें जिन यहु लाई के जि
नि चोट सहारी १ संग की बिछुरी मिलन न पावे सोच करे
अरू काहे जतन करे अरू जुगति बिचारे रटे रांम कूं चा
हे२ दीन भई बूझे सषीयन कूं कोई मोहि रांम मिलावे
दास कबीर मीन ज्यूं तलफे मिलें भलें सचपावे ३॥२२॥
तुम बिन रांम कवन सूं कहीए लागी चोट बहोत सही
ए टेक बेध्यो जीव बिरह के भाले राति द्यौस मेरे उर
मे सालें १ को इन जानें मेरे तन की ॥२॥
हिगयो सरीर २ तुम सब

दे गा ॥ बिगरि बिगरि सो राम दिढैगा ॥ ४ ॥ २ ॥ राम राइ नंइ
बिकल मति मेरी केइ कुइनी दिवांनी तेरी ॥ टेक ॥ जे पूजा इ
रि नही भावै सो पूजनहार चढावै ॥ जिहि पूजा हरि भलमां
नै सो पूजनहार न जानै ॥ १ ॥ भाव प्रेम की पूजा ॥ ताथै भयो देव
थै हजा ॥ काकी जे बकुत पसारा ॥ पूजी जे पूजनहारा ॥ २ ॥ कहै
कबीर मैं गावा ॥ मैं गावा आप लषावा ॥ जो इहि पद मांहि स
मांनां ॥ सो पूजनहार सयांनां ॥ ३ ॥ ४ ॥ राम राइ नंइ बिमूचनि
जारी ॥ जसे यत नग्यांनी यन थे संसारी ॥ टेक ॥ यक तपती रथ
श्री गादे ॥ यक मांनि महत कूं चाहे ॥ यक मैं मेरी मैं ब्यौजे ॥ य
क अहं मैं मेरा झे ॥ १ ॥ यक कथि कथि भरम लगावैं ॥ समत
सी बस्त न पावै ॥ कहै कबीर का की जे ॥ हरि सूझै सो अंजन
दीजे ॥ २ ॥ ५ ॥ काया मंज सि कोंण गुणां ॥ तेरै घट भीतरि हे
मैल घणां ॥ टेक ॥ बाहरि लाम लजल सूं धोई ॥ भीतर लाम ल
का हमोई ॥ १ ॥ जे तूं हरि दे मैला होवै ॥ तो तूं बाहरि सूं का धोवै ॥ २ ॥
जे तूं हरि दे सुध बुध पांनी ॥ तो तूं कहा ऊकाले पांनी ॥ ३ ॥ कड
ई तूंबी का पलई ॥ ले चेला के हाथि दई ॥ ४ ॥ तूंबी अठसठ
तीर्थ न्हाई ॥ कडवापन अजहू न ही जाई ॥ ५ ॥ तूंबी का क
डवापन नही गया ॥ तो तुम्ह न्हमलन कहो के से भया ॥ ६ ॥ कु
है कबीर मैं दास सब का इ राम न जे सो न्हमल होइ ॥ ७ ॥ २६ ॥
कैसे तूं हरि को दास कहायो ॥ करि बहु भेष जनम गमायो ॥ टे
क ॥ बुध होइ न जो न ही मांई ॥ का ब्यौ डि भनइ केताई ॥
१ ॥ जे देक पट हरि सूं न ही साचौ कहा भयो जे अनदित नाचौ ॥
२ ॥ कूबे फोकट कलू मंझारा ॥ राम कहै ते दास नियारा ॥ ३ ॥ नगरी
तन नारदी मगन सरीरा ॥ यदि बिधि न वृत्ति रि कहै कबीरा ॥ ४ ॥
९ ॥ राम राइ यदि सेवा न लमांनै ॥ जो कोई राम नाम तत्त जा
नै ॥ टेक ॥ रे नर कहा पषाले काया ॥ सो तत चीन्हि कहां थे आ
या ॥ १ ॥ कहा बिन्हूति जटा पट बांधे ॥ का हा जल पेसि कुतास
न साधे ॥ २ ॥ राम मां दोइ अक्षर सारा ॥ कहै कबीर ते लोक
पियारा ॥ ३ ॥ ४ ॥ इहि बिधि राम सूं ल्यौ लाइ ॥ चरन पाषे नि
रति करि ले बिन रसना गुण गाइ ॥ टेक ॥ जहां स्वाति बूंद न सी
प साइ सहजि मोती होइ ॥ उन मोतीयन मैं नीर पोयो पवन
अंबर धोय ॥ १ ॥ जहां धर पिाब रषे गगन नीजे चंद सूरज मेलि
दोइ ॥ अमिलतहां जुड़ण लागे करै हंसा केलि ॥ २ ॥ एक बृष
भीतरि नदी चाली कनक कलस समाइ ॥ पंच सुवटा आइ

२ जोगी जती तपी सन्यासी मठ देवल बसि परसैं का
सी ॥ टेक ॥ कहै कबीर म घर जन झै हूं चरन बिरद का सीन
ही दे हूं ॥ ४ ॥ १०॥ तब काहे न हो बनि जो ॥ १ ॥ अब आ
यो चाहे संगि हमारे ॥ टेक ॥ जब हम बिन जी लोग सुप
री तब तुम काहे बिन जी पारी ॥ जब हम बिन जी प्रेम
ल किसूरी तब तुम काहे बिन जी कूरी ॥ २ ॥ प्रेम सा
डि हला हल पाया ॥ ला ज लोन करि मूल गमाया ॥ २ ॥ क
हे कबीर हम बिन ज्पा सो हूं जा थैं आवागवन न हो
ई ॥ ४ ॥ २० ॥ परम गुर देषो हूदे बिचारी ॥ कछू क हूं स हा
इ हमारी ॥ टेक ॥ लवा नी लि तं ति इक समि कथि जैं न ए
क नल सा जा सति असति कछू न ही जांन्हूं जैसें ब जा
वा तैं सैं बा जा ॥ १ ॥ चोर तुम्हारा तुम्हारी आग्या मुसि य
त नग्र तुम्हारा जन के गुन ह हम हू का प करो का अप
राध हमारा ॥ २ ॥ सेई तुम सेई हम एकै कही यत जब आ
पा पर नहीं जांनां ज्यूं जल मैं जल पैसि न निकसै कु
हे कबीर मन मांनां ॥ ३ ॥ २१ ॥ मन रे आइ कहां गयो ॥
ता थैं मोहि बैराग भयो ॥ टेक ॥ पंच तत ले काया कीन्ही
तत कहां ले कीन्हां ॥ करम के बसि जीव कहत हैं जी
व करम किस दीन्हां ॥ १ ॥ आकास गगन पाताल गगन द
सूं दस गगन रहाई ले ॥ आनंद मूल सदा परसोतम घट
बिनसे गगन समाई ले ॥ २ ॥ हरि मैं तन है तन मैं हरि है
है पुनि नांही सोई ॥ कहै कबीर हरि नांव न छांडूं सहजै
होइ स होई ॥ ३ ॥ २२ ॥ हमारे कौंन सहै सिर भारा ॥ सि
र की सोभा सिरजनहारा ॥ टेक ॥ टेढी पाघ बड जूरा जरि
जरि है भसम को कूरा ॥ १ ॥ अनहद कींगरी बाजी तब का
ल द्रिष्टि भै भागी ॥ २ ॥ कहै कबीर रांम राया हरि कै सो
मूंड मुडाया ॥ ३ ॥ २३ ॥ कारनि कौंन संवारे देहा यहु
तन जरि बरि है है षेहा ॥ टेक ॥ चोवा चंदन चरचत अं
गा ॥ सो तन जरत काठ के संगा ॥ १ ॥ बहोत जतन करि
देह मुटियाई ॥ अगनि दहै कै जंबुक षाई ॥ २ ॥ जा सि
र रचि रचि बांधत पागा ॥ ता सिर चंच संवारत कागा
॥ ३ ॥ कहै कबीर तन झूठा भाई ॥ केवल रांम रहौ ल्यौ ला
ई ॥ ४ ॥ २४ ॥ धन धंधा ब्यौहार सब माया मिथ्या बाद ॥ पा
णी लूंण ग्यूं रलि गये हरि नांव बिनां अपवाद ॥ टेक ॥ १

कञ्जा वृह्मा बवांगा अरनंघूसमो छिचित्तवतजाई
अजहूं न आइ मिले रांम राई ॥ कहै कबीर हम कूं दुष
न्यारी बिन दरसन कैं जीकैं दो मुरारी ॥ ५ ॥ २४ ॥ जांत निबे
देलि जांणौं ज्ञान से ऊँसा रांम रमन जांनें कोई टेक चषबि
नांदि व्रस जिसी देसं ऊा व्याव रपारन जांनें केऊा रमूऊे
करकन लागे कारी बेद बिधाता कर मोदि सारी ॥ १ ॥ कहै
कबीर यक दुःषका सूं कदी ते अपने तन की आपदी
सदी ए ॥ २ ॥ २५ ॥ जन की पीर होरा जा रांम मन तन जांनें क
रूका दिको मांनें टेक नैंन का दुष बैंन जांनें बैंन का दु
ष स्त्रवनां पिंड का दुष प्रांन जांनें प्रांन का दुष मरनां
१ आस का दुष प्यास जांनें प्यास का दुष नीर नगत का
दुष ... रांम जांनें कहै दास कबीर ॥ २ ॥ २६ ॥ तेरा हरिनां
मैं जुलाहा मेरा रांम रमण का लाहा टेक दस सें सुत्र की
पुरीया पूरी चंद सूर दोइ साषी अनंत नांव गिनि लई
मंजूरी हिरदा कंवल में राषी ॥ १ ॥ सुरति सुमृत दोइ षूंटी
कीन्हीं आरंभ कीया बसेषी ग्यांन तत की नली भरा
ई बुनत आतमां पेषी ॥ २ ॥ अविनासी धन लई मजूरी पू
रीया पनि पाई अन बन सो छिप्रसो छिसब आगे निकटै
दीया बताई मन सूधा को कूच कीयो है ग्यांन बिथ
रनी पाई जीव की गांठि गुडी सब भागी जहां की त
हां ल्यौ लाई ॥ ४ ॥ बिबि बेगार बुराई थाकी अनभै पद
परकासा दास कबीर बुनत सच पाया दुष संसा सब
नासा ॥ ५ ॥ २७ ॥ भाई सक कुलतन बुन ले कुबै पीछें रां
म कु दोस न दे कुरै टेक करंगहिरो कबिनांनी तांनी
तरियें चपसांनी तांमां है ऐकन दासी सोत निबुनि नयां
अविनासी ॥ १ ॥ जे लूं चो छिबिरीयां श्रावां नहीं दोइ पच
सूमिलावा जैतें पांच से छप्रमे सिरांनी तो मुष में रहै पि
रांनी ॥ २ ॥ पद लीतनी यां तांनां पीछें बुनीयां बांनां तनि
ब
बुनि मुरलब की न्हां रांम राइ पूरा दीन्हां रांम रानरत
नई संका तारूणी नियामन बधा कहै कबीर बि
चारी अब बौही नहीं रमारी ॥ ३ ॥ २८ ॥ कैसे क्यूं कासी त
जे मुरारी तेरी सेवा चोर भयो बनवारी टेक जस मैं म
घरक प्रकासी ॥ १ ॥ हृदै नांव जपूं अविनासी जो ज
न चरन कंवल के प्यासी तिन कूं कहा मगहा न्यकासी

निकसिकालिमोआई।२।यातोकविननगतिरनाईक
फूविरलेदीजनपाईयदुआगमपेयकामेलातेरीनग
तिनतासीपेलाधतालपपावजबीनां।पेटनमासाकी
नांवदोसकरैसुघडाईयानगतिनदीरनाईपोकक
थेदेवकीपूजाजाकूदेवलहीलागधजा।एकव्रतादि
तीथंजाईयानगतिनदीरनाईदुचोकाघटकमआचा
रायेउत्तमकुलव्योहारा।एकवदीनकरैचतुराईयान
गतिनदीरनाई।७।टामणदेमणवांघमूरीघरदीघपू दि
रणपूरी।एकरामनगतिजिनजांणी।तोकेरिधिसिधिरा
कंयांणी।८।एकबोचेवेदपुरांणा।एकसुनिधरेधरिध्यांनां
पढिबोगुणिबोसबसाचौ।जबएककरैबसिपांचूं।९।
जोलूंपांचनदीकोचडोवबनगनदीनवेडो।एकएक
सलागेजबकोसोवेकोजाो।१०।बिनदीवरलगालबजा
वेजोलोगदपतिदाथिनआवे।बिनदीसतमूंडनघारै
परिवारलयजांमारैरेजेनूकेगामेरातोघलककहा
तेगाजेनूनांदीमेरातोमूंडफोडिबदोतेरा।११।कोईबलि
वंतारामअमलेमेंमता।याघटमेकेपकडेवासी।तोप
डेसबमेंपासी।एककूबातनदीगदचडे।जोलोंतीरतुब
कनदीछूटाजुडेसूनडेमेदांनां।तवपडेपेतयमसांनां
१२।फूवीबातनमेंकदालीजे।जोलूंसाचनदीसोकीजे
सीसबिनरदेनदासा।कबीरोताकोदासा।१५।१४।राम
तेरीनगतिबिनोडुपनारी।तेरामेंतानलीबिचारी।टे।ए
कदेसदिसंतरडोले।एकबकुपांनीदोरबोले।एककरेगु
फामेंबासा।केवदेनीवनकीआसा।१।एकमायाकेरा
मासा।एकवेदपुरांणरासा।एककायाकसेअपरा।एक
मेरघडगाकीधारा।२।एकमोनीअमसवासी।वाकीकटी
नजमकीपासी।एकनागारूषधारी।थांनगतिनजांणी
थारी।३।एकआदिजुगादाजाग।जाकारूरचरनांचि
तलागा।कदेकबीरबिचारी।नचूसागरतारिमुरारी।
४।४०।सेतोनरमडनीनरगाईतातंनांवबिनोडुपदा
फूटेदा।एकबेदपुरांणलागा।एकतपतीथकंनागा
एकबांधेपवनअपूजाकेवलनगतिबिनांसबफ
गा।२।एकनागामूंनीकहावेसिद
करैसिधकी

२ करो राम नाम निज सा चा॥ चित्त चेति चतुर घट का चा
य सञ्च मिन न्हूल सि नो ल्ली॥ बिध नां की गति है औं
ल्ली ज्यी वृसे कूं मारन धावे मरते कूं ब्यगि जिलावे॥ जा
के कुं ह्वि ज मसे बैरी॥ सो कंपूं सो वै नींद घणेरी॥ १॥ जिह
जागत नी दन पावे॥ तिह सोवत क्यूंन जगावे॥ जल
जंतन देषिस पांनी॥ सब ही से फूव निदांनी॥ २॥ तंन देव
ल ज्यूं धज आछै॥ पडी यो पछि ताउपाछै॥ जीवत ही
कछू की जे॥ ह रि रांम रसा इन पी जे॥ ३॥ रांम नांम निज सा
र हे॥ माया ला गिन षोइ॥ अंति का लि सिर पोट ल्ली॥ ले
जात न देष्या कोइ॥ ४॥ कोई ले जात न देष्या पूछा॥ बलि
बक मनोज गछ्या॥ का हू के संगि न राषी॥ दीसे बीस न की
साषी॥ ५॥ जब हंस पवन ल्यो षेले॥ पस रया हाट क जब मे
ले॥ मां नि ष जन्म अवतारा॥ नां है है बारंबारा॥ ६॥ कब कुं है
कि सा बि सां नां॥ तर पंषी जे मन उडां नां॥ सब आप आप कूं॥
जाई॥ को का हू मिलेन नाई॥ ७॥ मूरिष मनिषा जन्म गवाया
बर कौडी ज्यूं डहकाया॥ जिह तन धन जगत नु लाया॥ जग
राष्यो पर हरि माया॥ ८॥ जल अंजुली जीवन ऐसा॥ ताका है
क सा न रोसा॥ कहे कबीर जग धंधा॥ का हे न चेत हू अंधा॥
२०॥ ३५॥ सरवर तट हिं रांम राइ हंसणी॥ तिसा इ॥ जुग ति बि
नो हरि जल पी या न जाइ॥ टेक॥ पी या चाहे तो ले षग सारी॥
उडि न सके दो नु पर न्हारी॥ १॥ कंन न्ही गांवा ही पनि हारी॥ गुन र
व न नीर ने कैसे नारी॥ २॥ कहे कबीर गुरु एक बुधि बताई॥
सहज सुभा इ मिले रांम राई॥ ३॥ २ ॥ २१॥ बाबा पूजत कूं पूजि
उ बध्या दहन मे उनी बिन से तह तां तन मति न्हू जि॥ टेक॥ आ
पने अपांन तेन्हू कर तदेव प धान॥ बूझत सू बोलेनो ही
बोलन हार जांन॥ १॥ बोलन हारी जांनी यो गुर दई दिषि
ला ष इ सकल गति मति पंगा है रही॥ २॥ है सह ज समा इ रस
व दया का उ देम हा॥ न्हो केवल रांम कहे कबीर सब पीर
मि टि गइ॥ या या पूरा धांम॥ ३॥ ३॥ २ २॥ रांम ते री न गति कैगा सा ई
जा का ध ड परि सीस न हो इ॥ टेक॥ सीस का टि जे डारे तो कोई
न रूं ड हिं मारे सीस बि नां जे डोले सो कोई न वा सू बोले॥ १॥
सीस बि नां जे गावे॥ तब ही न ल सो न्हा पावे॥ दह सीस सू ला
गी॥ तब ल गन ही अनुरागी॥ २॥ जे सैं अग निक डा ही ते ला
तां मे हाथ चोर न ही का मे ला॥ अंग मह हि जी वड रा इ॥ तातें

दासकबीरपदगाया॥४४॥रांमराइमैंतरागसबंधतेय
अबकीबेरमयाकरिमाधौमोनेंमहोनामेराटेककौ
ईपांचहजारीकोईसातहजारीसबनजरितुम्हारी॥
मोहौलोकछोटीसीआसामीहोतीहमारीदफदरिमंडी
कनादोरआदिकदीनतुम्हारीचाकरजदरांघोनहों
रह्यो॥गिरतोपरतोसरनितुम्हारीजहांतहांनिरबहो
यो॥१॥नोसागरमेंडूबतस्यौकरगहिकाढोमेराप्राघिद
जूरिहरिडुघपांऊंमेंजनमजनमकाचेरा॥२॥थिनमांगं
सिधिनमांगूंमुकतिनजांचणजांऊंप्रेमभगतिकेका
यौंरां॥आगेंआइदगांऊं॥३॥सतजुगत्रेतादापुरकहीये
कलिजुगकारतिसरोतीनलोकबूहांडउपायाराममत
दिकीमसकतिमेरी॥४॥करिकागदकोघ्रापबणाईपटा
लष्याबहुतेराअमरापुरजागीरीपाईजबमगनभया
मनमेरादरीकरिटोपमोकारवगतरसुमिरणसहस
पांणदासकबीररांमकेआगेंआवपहरवोनिगाणां॥
॥४५॥संतोभगतिनदीयादासीजगसंमोहतरकसी॥
संगांवकिसेवोजासीटेकजनमतदूरकहारेआयो
मरतकहारेजासीजैसेंतरवरबसतपंषेरूमुइकेहो
घिसिजासी॥१॥बरणहंसकोचालचुगांकाफिरफिरप
सीपासीकहेकबीरसुनहुभाईसंतोकरमांहाथिवि
कासी॥२॥४६॥बंजणांरांमकहोमेरेभाईमोथीपवहा
हारकरिरमेंचितलाइहैकपराईकन्यांकाधरमव
तावोअपणीलेकरिबेचोकूलीनरकपडेगेपांडेचे
तिसकेसोचेतोरेआवेंचोदसिचोथिचांदणीचायमा
सपुजावोआंनहीआंनदिटावोरपांडेतातेंनरकांजा
वो॥१॥सकेतदोहबडाकमैंसीसातसतीपरिबतीश्री
रदेवसबलडकालडकीमनजोगोननसतोरवेदप
ढेरोपणीनेदनपायानिछांनदीबहोयोपतडोस्वांन
सिकारीआपणालूटिलूटिजगपायो॥३॥आपणानाव
लोहकोबेगओरांआंनदिढाईकहेकबीरकासीमां
कादोबांन्यानहीकसाई॥४॥४७॥संतोज्योंरहरिकानं
वमेंबणिजारकीवेटेकलोनलदारनदीयांबहेवे॥
लषचोरासीधरवेगराबिनमूरिष्वदिगयावेकोईसं
तनतारायापारो॥

डातीसती कूं पूजे। एक स्रा दे होइ शिश फूंके। एक कासी करवं
घाई केवल नगति बिना पछितावै। इक एक काजी पीर मुल
लां। एक सन्यासी नग वांनां। एक जापजत सेध्यावे केवल
नाम बिना दुष पावे। एक स्वार्थ कांन फडावे जुगि जोग
न लीक हावे। एक जैनी देह उजत राषे केवल नाम मन चा
षे। एक पद रिजन के रूं मा पढि पंडित हरि कूं न लास
लावा विधि आनं दिढावे हरि हीरा कब कूं न पावे। कोई
पूजे अतिथि बारा सब लागे करम अपारा जिन पू
ज्या पत डापोथी केवल नगति बिना सब थोथी कोई
गुरमुष के गुण गावे सो साध संगति नल पावे हरि कारे
करम अपारा हरि जन च रूं बरण ते न्यारा जैका हूम
लि नावे कबीर तत्त न पावे न्याव नगति तत्त सारा कलि
केवल नांव अधारा ॥४४॥ चेडी करि गोबिंद न रत्तारा
मेरे राम को नांव अधारा टेक चेडी कौंन देस ते आई तो नै
कौंन सुमति बताई दास यपाव बैरी तूं न जिन ने राम सेवे
र जाके निगाम सरी मा घाट तां के सम दंस री मा माटा हो
इ बिलोवण हारी जिन मेटे घात हरि मारी २ मन का दिक
म हत्त न पावां तहां चेडी जाइ गुदरावे कहै कबीर बिचा
री नव सागर ता रिमुरारी ॥४६॥ सतो नन का मन रषवा
रा कोड़ जोग जाण णहारा टेक मन ही देव देहरा मन
ही मन ही आप पुजारा मन मन कूं पाती मेल्है सब कछु
मन का सारा २ मन ही थोथा मन ही मोटा मन फूटा मन सा
रा मन ही ले करि नरक पठावे मन ही तारण हारा ३ मन
ही क नाम नही बेल। मन नेला मन न्यारा मन ही तां ताम
न ही मीला मन मीरा मन पारा ऐसे जाणि रहै मन कूंई
सो जन उतरै पारा कहै कबीर जिन यो मन जीत्या ते जन जु
ग ते न्यारा ॥४७॥ हरि के हम नी चाकर लागा तातें जुरा
मरन नी भागा टेक त्यो की लग्यं मग्यांन का घोडा प्रेम की
पाषर लाई जोग का जीण जुगति करि बांध्या चित का चा
बक लाई २ सील का सेल षिमा करि षेडी तत्त तरवारि ब
णाइ काम कटारी गाढी बांधी निज मन ही ले आई २ प्रग
टी जोति प्रेम रस पीया अनहद नाद बजाया हो इनचिं
त सी सपरिषेस्या तैरे आगें आया ३ गिगन मंडल मैं निरा
कार है जहां जाइ हम गाया नगत हेत का दी या पड गनां

लागा।तोतेंमेरामनकाधीपानागा।टेक।परलोथीबंदी
मांनिगुमांणि।जबपीवमुधांनवोल्पावे।अबवंदीन
ईपायबराबरिहदि।बध्रेतरपोल्यावे।२।साहिबको
ल्याअंतरपोल्यासेफडीयांसुषदीयावे।अपणांपीयाके
मैरंगिरातीप्रेमपियालापायावे।२।जोकलाजकुलकी
मरजादातोडिडाल्याजेसेंधीगावे।दासजनदरिसमूंअसें
मिलीया।ऊंसोनेंमिल्यासुहागावे।२।पाचीदिसतेंसा
हिबसाचाकूंवीसूंमनलागावे।टेक।कबीरगुरपूरापा
या।लागसमाराजागावे।४।।पदं।रांमसनेही साधवासु
षपाटनपेसेनांव।जोपेनंबांणलतावूज्या सुबोलेंटे
कजेबोलेतोसतिकेसे।कछुअसतननांघेसुरतिनिरी
तमनपवनलेत्यारणंचितरापे।१।धुनिसूंध्यांनलग्या
रहेविश्रांमनछांडे।विणावूज्यंआपसुंचकवासन।
मोडे।२।सास्सदारससंग्रहे।त्यागेसबछांडेकहेकबीर
तिहूंलोकमेंतत्तवेतासोईहै।३।।पदं।रांमनरोसारापाये
अपणेमनमाहींसवविधिकाजसंवारिहेविगाडेक
छुनाहीं।टेक।जबलगगृहथकहांकुतातवग्रलब
सेयकोडातोपें।अबलपाकालामुपतेसार।१।सपंपी
यजगारकिताबहोकीटपतंगावावांलूकहूंदृरिसतहे
सबहीनिकेसंगा।२।ऊंजकसांलगसंचरेचदांकोरख
वारादेतप्रीतिसूंपेषीवेप्रांनपयारा।३।साइसिल
तापहेकरीतनिरयाधापांणी।यटिवधिकहूंनदेषी।पे
वाकीअकथकहांणी।४।कहेकबीरजिहांजेमेंच
लिपेलीपारापेवणहारायोषेसी।जाकेसिरजणहार।५।।प
धारेचितचिंताजिनकरे।चिंताहरिकरसीलांडाघरि
डमुषरापीयासोईजनरसी।टेक।आगहीआग
लगूंहरिकरतीआया।तुहंगपिटारामांहियानप
मारगपाया।१।सराजांमतिहूंलोककाकरताकरि
डाप्रपूणहारापूरवेकबीरेमुपमांड्या।२।।५५।यूंस
धूसंसारमें।कंवलाजलमांहीं।भदाअबदासंगिर
हैजलपरसेनांहीं।टेक।जुगतिजांनिजलकूंकडे
जलमांहिररहेपांणीपेकलेपेनहींकाईकसर्प
पाई।१।पटरसलोजनबिंजनं
स्वाकूंलोरोनहीरोकोचिकना

रामै बढ़े। सुरति हमारी डांडी यों बे। तातें चित व्रत ह्यां का फेर बे।
।२। अधेत धै बिचि हाट डी बे। गिगन हमारी कुकांन बे। सो हाग
रमौ दे आईया। तातें लागी बस्त बिकांन बे। कहै कबीर सु
णाके सब बे। तुम हो अगम अपार बे। साधां बिचि ज्यों रामन मांम धन
बिथबिण ज्यों संसार बे।४॥४६॥ सुनो हो देव अबहम मगनन
॥ कहा जी नयो जे तुम सें बिछुरो अबि तुम मां हिरदा टेक के
पहि मैं कौन कुषदे षे। काकूं ब्यापै संसा। अबहम सुनि में मग
न चाहै दे देषे पलक तमासा।२। मुनि बैकूंठ दोकूं हम त्यागी। ब
डी सकल नु पाथी करणी कथनी करें सो जानें हमतो लई स
माधी।२। नहीं हम गरम दें मन्नी नांही। नहीं हम चंचल थीर
घालिक हम में हम घालिक में यूं गरका बकबीरा ३॥४७॥
आपणपो आपण ही मैं पायो। सबदें सबद नया नु जियार
सतगुर ने दबतायो टेक। ज्यूं कुरंग किस्तूरी नां ने ढूंढत
फिर्यो मबायो। फिर चितवेतो बास आपणमें तब अप
णों तन चाह्यो।१। कंवारीके वमण ढूंढडो लेन्नू षणा कही
गमायो। हां यो बताइ औरस मीयन मिलि तनको ताप
नसायो।२। सुपने नारि सुतनर परिन्नूली। बालक कही दि
रायो। जागि देषे तो ज्ञांको तहां ही फूवो न्नरमन पायो।३।
कहै कबीर समभज की या गति नां कहीं गयो न आयो कर
त बिचार मन ही मन उपजी। ज्यूं गूंगे गुड़ षायो।४॥४८॥
जो नावे सो दोऊ राम सनेह नवांडी। टेक मात पिता सुत
बंधवा। और कुल हनी नारि बहोत कमिलि मिलि बीब
डें। यासो ना दिन च्यारि। गढ घंटक पोली पगां कुं चाकूं
चा बिंस बाह्पक डि जमले चल्यो तबको इन आयो क
मं।। कबीरो राम न बीसरै हारि होइ नावे जीति। औसीन प
जी पेड सें दिन दिन अधिकी प्रीति ४॥४९॥ नावे तन धन
जोबन जा कुरै जो प्रमांनंद पाई। टेक नावे को निंद्या
करो नावे अस्तुति करो अनेक हरिजी की नगतिन ब
डही। या संत जनों की टेक।१। नावे को गीता पढो। नावे रा
ज छोडि बन वासा हरिजी संप्रीति न कपजे तो फूवो न
योनदासा।२। नावे देही अबकडो। नावे रहो जुग च्यारि
कासी मघ हर सम के नासं गिरमत मुरारि। पारस परसि
कंचन नया। अतन का गुण जाइ। कहै कबीर सतगुरर
मत्या सुष मेर हासमाइ॥५०॥ ॥ हरि रंग लागा वे हारिंगर

गपकडि फाल्डी कान्ही नेनाजुगमेंडंडा वापुरमांही
फरी उलाई कहिजुगमेंनोपंडा।२४ रणिनहीजवलीया
मेपला बुलंडनहीजवर्थका महादेवकाजनमनहीगो
जवलीयाजे हो सेया। गुरपलापसाथकीसंगति जीति
अमरगढ आया कहैकबीरसुणो नाइसाधोमेंअनेनि
रंतरपाया।। दुहा।। नाईरें अणीमेंड्रासेतसूत दोहदल
बिचिपेलैंपूरा टेक बाजारूफानक बागा तबकाहरसु
णिसुणिनागा सरमेड्राचोगानो मनमारिकीया थमसा
नो१ मनवानेबागन्ड गाईमुरपांन की पडगामें बाहो मा
स्या पांचूंथानां तबथमजोन्नयामदरवोनां२ मन माम्या
जवाडहीया जत्मत्तमेंडादाया गढफिणिईरामड
होई कबीरअवगतिकासरणईन्॥ ९२ जोगीजांनी
यांमवमेंजपे अजपा जाप पिंडेपिंडरमें यवन्ह सकल
व्यापी आपटेक कायाकंथामनमुद्रा सहजअंगबि
भूति षिमांडंडअनहदसंगी ऐसो देअवधूत१ सगनमं
डलमां हिअवधूबेठे आसणबालि त्रिबेणीतटिता
लनरीया निगमनो मिनिरालार चतुरदलअरुष्टद
लो बारसदलअरुसोलदहदलीपरिब्रह्म अस्थिर
करतदेसकिलोलरब्रह्मचेतनसुयंसचराचर गुरसेद
लै हरिनांव कहैकबीरपिंडब्रह्मंडेनमो निहकलंक
नां वृथ॥ दुहा अवधूपो जिहिलदरीया वातपंवेकाती र
लप्रक्राल सौबन्योसेरो डाव टेक क्षणिनायकसहज
लाडणसीलसंतोषसहावरंमनांमकी गूणि चारहे॥
लादिलैघरि आव२ नांवनोकापांनपवट लोघिनव
जलपारि सुषमनो जाडकीयासोहा गगनपोलिबारि
२ कीयासोहानफापाया हत्मदीयावदाइ नवरंगफोर
अलेपसादिव दासकबीरबलिजाइ३॥ ९४ बंदेनोवसा
ति बकोहेरनदीनावसंजोगबन्योहे ऐसा मिलनोहेर
टेकजबलगासासबासघटभीतरितबलगासबहीक
हेरकालकंवतंआइगह्योजातोपलकनरहेर१ एक
लघपूतसवालषनातीसो इथिरनरहेरे लंकासीकोट
पलटिगयोछिनमें ऐसीवात वहेरे२ मातपितावार
थकारोनो मंडेपलकवहेरे जवजीव
डसीतबकोणकिसीकाहेरे

मैं । चित धरै अकासा । कूरम कला पिछांणी कैं बिचेरनि
जवासा ॥३॥ मीन तनै जल लै पैंक छलै गैन नारा आउ
अटक मों नैं नहीं बिहरै जल मारा ॥४॥ नग ल बिद्यान
ट पेली या तन न्यारा न्यारा पेड बिहंडा क्यै पडआ अपू
का त्यूं सारा ॥५॥ नंद जबूरै पाई या बिसहर लपटा पी
वा क्यूं बिष ब्यापै नहीं गुर गम तै पाई ॥६॥ अपूर्व बडि बि
सहर बसे कोई नेडन पावै कहै कबीर सोई गारडू ॥
जापै सहजैं ही आवै ॥७॥ पद ॥ नारद संत सूं अंतर नां
ही जो मेरा संत सूं अंतर राषै सोई नरक मैं जांही टेक
जहां मेरो मेत जीवै तहां मैं जीऊं जहां सो वै तहां सो
ऊं जो मेरा संत कूं दुष दिषलावै ता दि अनेक दोष
धरि षो कूं ॥१॥ जहां मेरी कथा होइ कीरतन तहां हूं मा
रा वासा मेल चल्यां आगैं होइ चालूं मो हि संत की ॥
आसा ॥२॥ अठ सठि तीरथ संत के चरणां कोटि गंगा अ
र कासी ॥ लिछमी मेरै अर्धसरीरी सो संतं की दासी ॥३॥ निसबा
सुर राम त्यौ लावै सोई परम पद पावै दास कबीर संत की
महमां हरि अपणैं मुष गावै ॥४॥ ५१ ॥ मेरा गुर बडा रंगी
अपणैं कीट कू करत भृंगी सो आप तैं रंगी टेक पाय और पं
च और रे और रंग रंगी जाति पांति न लषै कोई नाग नवरं
गी ॥१॥ चलत मन सा अचल राषी मो हि मन पंगी तत मथि त
त मिलीया अपूं संग मैं संगी ॥२॥ नदी नाला मिली गंगा कहावै
गंगी सम्मोणी दरीयाव दरीया पार नां लंघी ॥३॥ बंधतै नृबंध
कीया तोडि सब तंगी कहै कबीर कोई साधु निज जन
रो मरे गरंगी ॥४॥ ५२ ॥ बांनैं सू बिडद दुहेला हो मद ग
जगा रह बन्यो सिर कर पगि नगतिन हा सी षेला हो टेक बि
कट पंथ बैराग कहीजे बिरला कोई निबहेला हो सत
गुर सबद पुकारि कहत है कंचो बाद हेला हो ॥१॥ पांच
पकड अप्रबल जीते ऐसा धंकाजे ला हो पकडी
टेक तजै नहीं कबहूं ज्यूं गाम सेस्यो ले ला हो ॥२॥ सूरो षेत
न छाडै कबहूं टूक टूक तन के ला हो आघा चलि पीछा
पग मेल्है सो दफदरि नीं हि मेडे ला हो ॥३॥ तन की आस करै
नहीं कबहूं भुकि पडै सो पेला हो कहै कबीर यो बिडद
निबाहै ता सगुरु मैं चेला हो ॥४॥ ५३ ॥ नाथ जी मैं जब
का नया हो बैरागी तातें राम नांम त्यो लागी टेक मत जु

मोसो पतित अवर न दी काहि गुन औगुन प्रभु जांनो सो
प्रीट क तुम गुण कीरति हू चिन दी आवत विधि बिका
र आई जाव जावेत ॥२६॥ मन साधां न दी जाइ सो जुग
ति ज्ञान दरखे रामरा ॥१॥ मन बच करम मिलन न दी दो ई
माया की चिन्ता गिल धि घोई ॥ सूलो रेपो च आपोन सं
नाको हिरदे मुष सूं कबीर पुकारयो ॥७३॥ लोक कहे कं
बीर न लाज न राम चरन लायो ऊट लमन टेक सो जुग
तिन सो इ जो लगे निदोरा राम केसे मिलेन दी प्रेम का
डोरा ॥ सो जुग तिन जांणे जो प्रभु कूं लावे राम केसे मि
लेसो जुगतिन आवे ॥२॥ कहे कबीर दूरि सब की जांने ॥
अंतरजामी सूं कहा छांने ॥३॥७४॥ मन रे तन का बेर पा
ज्यांनी ॥ ज्यांनी के मंदिर मन जांन्यो अंध अचेत अया
नी ॥ टेक दस बस सकों बालो न्यारो सो वतरैं नि विहांनी
बीस बरस को सुंदर चारों अंबरा मूंढ दिवांनी ॥ रा ति
यों स अैसें मन लावे ज्यूं माया मिष्टांनी ॥ कडे न का सो
साप ड आवा की पां घरदी लपटांनी ॥२॥ बूढो नयो कंव का
न रु कांनों कलको कोगिन मांनी कहे कबीर सुणोन
ई साधो नारी नरक निसांनी ॥३॥७५॥ रावड धावड ज
नम गमावे कब कुं नांम चरन चित लावे टेक जहोज
लो राम सदू मन ध्यावे औगुनी गिणा तो रेणा बिदावे ॥
१ निया को बदन दे षि सुष पावे साध की संगति निकसि
न दी आवे ॥२॥ सुरग के पंथ जात सबको इ सिर धरी पोट
न पकु ता को इ ३ कहे कबीर दू मिक सीन बोरे अमलो ॥
पाव आपले जो रे ४॥७६॥ प्राणी राम सुमरि मि छितावे गो
या देही का गरब न करणां का गद ज्यूं गरि जावेगो टेक
जब जम आवे बांधि चलावे तब लो दि कोण छुडावे
गो नाई मात पिता सुत बंधू निकट कोइ न दी आवे
गो सुरमय हजब लेपो मांगे तब की ये आपणो पावेगो
लष चोरासी जूणि जुगति सी फिरि फिरि गोता पावेगो ॥
पे वट गुर सूं मिलि करि रदी सो लेपार लंघावेगो कहे क
बीरो क यों मन नग तिसूं साध संगति तिरि जावेगो ॥
पा॥४१०॥ राग सोरठि संपूर्ण ॥ ॥४॥ रमाकेदारा ॥ सारनु
थपाई हो रंगि राम कुं आ तमराम टेक ब
जेम नहीं तजे विकार घर बन तत स

डु बो कोई न श्री चमदेरे ज्ञमके ह्लपकडि ले चाले रा
खो पत्नकनरदेरे ध नां कोई तेरा नत्तूं का ह्रुका दूरिचर
णा चित्त देरे रा घिसके तो राघि श्र पणा पो दास कबीर क
देरे प द्धा बेदे बेद गी द रिया वा दीन में त्यो लीन के रहै
अ ध्ठ जामज गाव टेक त्रिकुटी संजम पेसि करि जहां बीण
जंन बजाइ निरति थेई थेई सुषमना तहां मुक्ति मे गल
गा ह्र बृह्म नावी आवै टेत हां अजर बीज जमाइ पंच
तत भिल्ला इ करि तीन ताप नु वाइ ३ अधंन धेम षि पेसि क
रि तहां पवन चोक पुराइ बिन ह्र बिन आर सी दीदार
मां दि समा इ ३ सुन मंड त्प रिदेस दे मादेस सुब सब साइ
सोई घर देरे रह तिका तहां दास कबीर रहै नो ३ध ॥ द्व
मन रेतें चित्त ध रिनां वन ली या तातें कहां आइ जुग की
या टेक डर था त हां निडर हो इ रहीया निडर तहां डर की
या चित थात हां अचित है बेठा अचित तहां चित दी
या ज हां जहां बर जं या मन कूं तहां तहां ते वि आवे क
दे कबीर मन अकट मूंठी को ई संत दीनलें खुडावे ३॥
मेतो सुरसूं ना द न तो र जे सें दीपक थे रे पवन में किसरे
बधि लोइ सं वो रे टेक दह दिस फिरे मो नि बहै गंगा नी दे
मजरत नग ब्बूटे का चा कलस परसि जल जेसे यूं बहै
सग तिमन फूटे गां वण हारा कदेन गावे अनबोल्या
निति गावे कहे कबीर सुणो नाई साधो नेरे सना दब जा
वे ३॥ द्व ८॥ नाई रे फल नमी वो पणी तरवर कें चे कहो कि
सी बिधि लीजे नि कन वा इ सुध्या सवा को कैसे ही करि ली
जे टेक बिकट पेड वाको अघिं सूं लसनो अगह गही न
नही जाई तन मन में लिचडे सर धा सूं तब वा फल कूं षा
ई बहो तक लोक चलया अण न हा दे षा दे षी गह्नि बां दी
र पट्टा पा वडि ग्या अधफर से आइ पड्या नेमो सी ३ सी न
साच के पेडे पग दे पोन गुरु ग हि डोरी कहे कबीर सुणो
नाई साधो असविधि फल कूं तो री ३॥ द्व ८ माधो जी मेरो
जन्म निवारो बहो रि कहा जो र परि जारो टेक जो जन उ
धी या तो तुम ह्र षपड हो जन्म जन्म रामतुम पछितइ हो
आवत जात बहोत का किना ह्रे रा षि ल्यो संतन सरनाई
२ सरने पड्यो जन क्यूं न न बारो कृपा करो तो पार उतारो
३ कहे कबीर सुणो राम राई तुम सूरां कहा चतुराई ४॥ १०

अब जिनकर। कुबधीर तुम धीर जो मैं आतुर स्वामी जू
का चेनाडे नारश्व कुत दिनन के बि-हुरे माधो मन
नसी बंधे धीर देह बंता तुम मिलो रूपा कार आपति
वंत कबीरा र। धाबि दिन कब आवेगा माइ जा कारनि
या देह धरी है मिलि जो अंग लगाइ टेक हूं जानूं जे री
हूं लि मिलि पेसूं तन मन प्रान समो इ या कांमनां क
री पर पूरा संपूर्ण रांमराइ ॥ मैं उदासी माधो चाहूं
चितवत रैनि बिहाइ सेजड़ मारी सीह ज्ञ इहै जब से
जतब पाइ ॥ यक अरदास करो सुनी पै तन की तपति
बुझाइ कहे कबीर मिलो सुष सांई मिलि कर मंगल
गाइ ॥ १ ॥ बाल्हा आव हमारे गेह रे तुम्ह बिन दुषी
या देह रे टेक सब को कहे तुम्हारी नारी मो कूं यह है अं
देह रे एक मेक ह्वे सेज न सोवो तब लग कैसा नेह रे
॥ अन न भावे नीद न आवे गृह बन धरे न धीर रे ज्यूं का
मी कूं काम पियारो ज्यूं प्यासे कूं नीर रे है को इ ऐसा
उपगारी हरि जी सूं कहे सुना इ रे ऐसे हाल कबीर
भया है बिन देषे जीव जाइ रे ॥ ८ ॥ माधो कब करि
हो दया कांम क्रोध अहंकार व्यापै नां छूटे माया टेक
उतपति बिंद भयो जा दिन थैं कबहू सच नही पायो
पांच चोर संगि लाइ दीये इन संगि जनम गमायो
॥ तन मन डस्यो भुजंग भामनी लहर वार न पारा गु
र गारडू मिल्यो नहीं कबहू पसर्यो बिष बिस्तारा ॥
कहे कबीर यह कासूं कहीए यह दुष कोइ न जां
नें दे हु दीदार बिकार दूरि करि तब मेरा मन मानें ॥
८ ॥ मैं जन भूलो तुम समझाइ चित चंचल रहै न अट
को बिषै बन कूं जाइ टेक संसार सागर मैं ढ़िचूलो
य को कर लउ पाइ मोहनी माया बाघनी थैं राषि
लेरांमराइ ॥ १० ॥ पाल सुनी रो एक बीनती अम सा त
न वहराइ कहै कबीर यह कांम रिपै है मो सब कूं
दाहइ ॥ ११ ॥ भगति बिन भौजल डूबत है रे बोहिथ
छाडि बैसि करि डूडै बहुतक दुष पावे रे टेक ब्रह्म
र जम पेड ह्वा कावे हरि को ह्वे नर देवै चेरी कावा सक
की नाई कासूं आप कहे रे नलनी के सुवटा की नाई
जगत सूं राचि रहे रे वेसा अ नि

॥संसार॥१॥काजटा नम्रलेपन कीयै कहा गुफा मैं बास
मनजी त्यां जुग जीतीयै॥जे बिषीया रहै तसास॥१॥कूंना
बांध्या जल रहै जल बिन कूं न न होइ॥ग्यांनी बांध्या म
न रहै गुर बिन ग्यांन न होइ॥२॥सहज नाइ जेक पजे ताक
किसा अनिमांन॥आपा परसम चीनीयै॥तब मिले आत
मां राम॥३॥कहै कबीर हम पान इ॥गुर ग्यांन कह्या समझा
इ॥ हदै सोहरि नेटीया॥अब मन अनंत न जाइ॥४॥पा॥४॥
है हरिजन को प्रवांन॥नीच पावै ऊंच पदवी बाज
ते नीसांन॥टे॥ जन को प्रताप ऐसो तिरै जल पाषांन
अधम नील अजाति गनिका चडै जाति बिवांन॥१॥नव
लष तारा चलै मंडल चलै ससिहर जांन दास ध्रू कूं अट
ल पदवी रांम के दीवांन॥२॥निगम जाकी साषि बोलै कहैं
संत सुजांन जन कबीर तेरै सरनै आयो राषिलै कु नगवा
न॥३॥चलो सषी जइये तहां जहां गये पाइये परमांनंद॥
टे॥ कोइ सषी आंम नइ मनी तन छीजे दिन जाइ चिंत
मनै चोरीयां ता थैं कछू न सुहाइ॥१॥सुनि सषी सुपनेकी
गति ऐसी हरि आयो हम पास॥सोवत ही जगाईया ज
गत न रोऊं दास॥२॥चलो सषी बिलम न कीजे॥जब ल
ग सास सरीर॥मिलि रहीये जगनाथ यूं कहै दास क
बीर॥३॥५॥मेरे तन मैं लागी चोट सचोरी॥बिसरयौ ग्यां
न बुधि सब नाठी भई बिकल मति बोरी॥टे॥देह ब
देह गलित गुन तीन्यूं चलन अचल न चोरी॥घत्त ग
त जित कित बादस चित वृनि यकु नई गुपतवगोरी
॥१॥सोई जाने पीर हमारी॥जिह सरीर यकु व्यौरी॥जन क
बीर ठगवग्यो बापुरो सुनि समांनो तोरी॥२॥६॥मेरी अंषि
यां जांन सुजांन भई॥देवर नरम सुसर संगतजि करि हरि
पीव तहां गई॥टे॥बालपनैं के करम हमारे॥काटे जां
नि दई॥बांह पकरि करि कृपा कीनी॥आपसमी पलई
॥१॥पांनी की बूंद थैं जिन पिंड साज्या॥ता संगि अधिक
रई॥दास कबीर पल प्रेम न घटई॥छिन छिन प्रीति नई
॥२॥७॥ हो बलईया कब देषूंगी तोहि॥अह निस
आतुर दरसन कारनि ऐसी ब्यापे मोहि॥टे॥नैंन हमा
रे तुम कूं चाहैं रती न मांनैं हारि॥बिरह अगनि तन अधि
क जरावै ऐसी लेहु बिचारि॥सुनहु हमारी दादि गुसांई

लूसमो लोग कहूवी दूस अकेलो जाइ॥४॥ कहीवे
लोग कहा पुरपाटन बहुरि न मिलिबो आइ कहै
कबीर राजाराम न जतु रे जनम अक्याथ जाइ॥४१॥
राम गति पार न पावे कोई चिंतामणि प्रभु निकटि छाडि
करि भ्रमि भ्रमि सुधि बुधि खोई टेक जाप अरु तप तीरथ व्रत क गति
रि करि बहो तन्नां तिह रिसो धे सपी सुहाग कहो कूं पावइ
अहसो कंथ विगे धे नारि पुरष है इक सज्या अहनिस व्रा
इस्त्री होरे न तजि अभिमान मिले किन पीय कूं ब्वन ब्वन दूं
उतडोरे रे कहे कबीर यह कुकाम करी ऐ थक्या तिं बिरसा कोई
जाने प्रेम प्रीति अंतरि गति वेधा कहे का दिके मांने २॥
॥०॥ राम बिन संसार धंध कुहेरा सिर प्रगट्यो जम का पेरा टे
क देव पूजि पूजि हींदू मूए तुरक मूए हज जाई जटा साधि
साधि जोगी मूए इनमें किनहू न पाई कवि कवीने क
वता मूए कापडी केदारे जाई केस लूंचि लूंचि मूए ब्वर
तीया इनमें किनहू न पाई २ धन संचे संचि राजा मूए अ
रु ले के चनन्नारी बेद पढे पढि पंडित मूए रूप देखि देखि मूए
नारी ३ जिन र जोग जुगति करि जाने खोजै आप सरीरा तिन
हे मुकति का संसा नाही कहै जुप्रेद स कवीरा ४॥ ०॥ कहु रे जे
कहिबे की होइ नां को जाने नां को मांने तो अचिरज
मोहि टेक अपने अपने रंग के राजा मांने तनांही को इअ
ति अभिमान लोभ के घाते चले अपनपो खोइ १ मैं मेरी मे
जगत चुलानो समझत नही गंवारा जो जलमांही थाकि
तनतरि है बूडे बहोत अपार २ आगे आवर ईश्या तदया कमी
कहि कहि मूसमझाइ कहै कबीर हूं कहि कहि हारयो अब
मोहि दोस न लाइ ३॥ ०॥ मोहि तोहि लागी कैसे छूटे जैसे
हीरो फोरयो न फूटे टेक मोहि तोहि बीच मी वृक बासा अ
हे प्रभु तुम गाऊ रमें दासा २ मोहि तोहि जैसे टंग की नाई
जैसे सिंधु छिलूं स समाई जैसे ... [illegible]
टे का चाधागा ३ मोहि तोहि आदि अंति बनि आई [illegible]
लता सिंधु समाई ४ कहै कबीर मन लागा जैसे [illegible] सु
हागा ५॥ ०॥ मुरली गगनि में जिस्यणी मूल [illegible] वार
पहली बंध देधरनी टेप स्यादस आगतत [illegible] गुफा
गहि करा णी अष्टादस बद्दां कंवल [illegible] नल्ली
अधअधं बी चिमा धोत नें

आपहि आप दहै॥ यकु संसार श्रममें डूबै अधफरया
किरदेहै धेवट। बिना कवन नोताहै कैसे पार गहै॥ ७
दास कबीर कहे समझावै दरिकी कथा जीवै॥ राम को
नाम अधिक रस मीठो बार बार पीवै॥ ११॥ आप रहै
दीपी पिआण किहा नयो तो हिसम जिन परही केसी
लागी बाणि टेक॥ यामायामें कहा रगड़ो हेकहा कीयो
बंधि मोह लाहा कारनि मूल नगमायो समफाकें हूतो हि
निसबासुरतो दिक्यू नीद पसतहै चित वत्तकाहै नता
हि जमबट नारीत्तैसिर। १। परिगठो परदथक हा
बिकाइ लोमि पराई कहि क्या तेरी भविकाहेनदी॥
चालि कहे कबीर अबबिलमन कीजे कोनदेषीक॥
लहि॥ ११॥ मन बज्यो सो बार सवा जिन दोइस बर
को मारी चंचबक फलफल चाख्यो उडगयो सवीयो त
बतरको टे॥ पकु पद बिसुवटार चुलानो कछु दगवा
यो बरको पंथ संवारि उड प्रबत कूं नहीतो नासदीह
गो प्रकोश यकु संसार चहर नठ बाजी जैसें मो तीजर
को कहे कबीरा राम किन सुमरो बुत पति परलो कैन
रको॥ ११॥ नयो रमन पांकु नरो दिन च्यारि आजि
क का ल्हिक मांहि चलेगो ली ज्यो राजा राम सेना रिटे
॥ धन जोब्बन अंजुरी को पानी जात न लावे बार संब
रके कूसन न्यूफूल्यो गरब्यो कहा रेगवार सोंज प
राई जिन अपनावै औसी सुनि किन लेकु रकु संस
रहसो रे प्रानी जे सो धूंवर मेह॥ २॥ माटी मांठे तें घरानली
या कछू न कीनी सांटि कहे कबीर कछु बिणा जनकी
यो आयो यो इस्ति टेक॥ ११॥ ४॥ रे मन राम नाम हिजा नि
थरहरी थूनी पसयो मंदिर सूत्तो छूटी सांनि टेक मैन ते
री कोनसमझै जीन पकरी आनि पांच गजदोवटी
मांगी चून लीयो सांनि बेसन्दर घोषरी हांडी चल्यो
ला दि पलांन नाई बंध बोलाइबा कूरे काजकी यो
आंनि कहे कबीरय मैकूवनांहीं छाडि जीवकी
बांनि रामनाम निसंक न जिरे नकरिकलकी कानि
॥ ११॥ ५॥ प्रानी लाल औसर चल्यो रबजाइ मूवी रोकम
टीया मूवी रोककवीया संगिका कूकेनजाइ टेक देह ली
लग तेरी सगी महेली फलसा लगसगी माइ मरहट

चहूंदिस ढूकैं होय स्त्री सौ दूलनकी पीटे फलन पचीवा भीज
ल थल बाल दिसा को लाद णहारो घाट बाट घर दी
सिर पूवताको अपूठनंडारो॥४॥ धरणि अकास अधर
जिन राष्या सब को सिरजनहारो कहै कबीर सुनो भाई
साधो सोई नाइक रांम हमारो॥१५॥ वो घर सतगुर कूं
नवतावो। जा घर सैं जीव आया। क्षाया ओडि चरण ज
चहूं सा कहो नें कहां समाया।टे॥ मैं भेषमस्ता के कारणि
बांकूं बार बगाया। सम झिनपडी गांन गुरू की। तातें फेरि
र फेरि लिलटकाया॥१॥ जहां चंदन सूरधौं सनही रजनी तसं
जाइस मग आया। सुरति सुहागणि पाव पलोवे। दसम अ
पांणि पाया॥२॥ मेरी प्रीति पीव सूं लागी अनहद निरंजन ध्या
या कहै कबीर सुणो भाई साधो प्रगके पार बताया॥३॥
धामसो हिं सतगुर मिले अनेक कला निधि परम तत सु
षदाई कां मअगनि तन जलत रही सैंहरि सहरकि बु
झाई टेकहरस परसतें हरमति न्हागी दीन मटत स्पोल्ना
ई पाषंड नरम अरूकपट षो लिकैं अनने क या सुणं
ई१ यो संसार गंनीर अधिजल मो दिग हि स्पावे तीरा॥
नांव जिरहाज पैवटीया साधू पूंउतरया पार कबीरा॥२
॥७॥४४८॥ राग॥६॥ राग टोडी॥ तूं पाक परमांनंदे पीर मे
कं बर पुनरहतुम्हारी मैं गरीब क्या गेदे ठेव तुम्हरी या
स बदी दिल नीत रपि परमांनंद पियारे मैं क निज रहम क
परि नांही क्या कम बखत हमारे रहिकम तिकेरे हल ल
बिचारे आप कहावे मोठा चाकरी चोर निवाले हजारि
सांई सेती पोटे२ दाइम दबा करद बजावे मैं क्या क हूं जि
ष्यारी कहै कबीर मै बंदा तेरा षालिक पुनरहतुम्हारी२
२अब हम जगत गोहन तैं न्हागे जग की देषि जुगति रां
म ढोरी लागे टेक अयांन पनें हम बहु बोबोनें सम झि
परी तब फिरि पछितानें१ लोक कहै जाके मनि नावे
लहै न वृंगम केंनडसावे कबीर विचारि यहडरडरी
या कहै का होइ हांनें मरी॥३॥१॥४५०॥राग॥७॥राग
भैरूं॥ ऐसा ध्यान धरो नरहरी सबद अनाहद चित वा
करी टेक पहली पोजो पंचू वाइ बाइ बिंद ले गगन स
माइ गगन जोति तहां त्रिकुटी संधि रवि ससि पवनां मे
ल्यो बंधि१ मन थिर होइ तो कंवल प्रकासे
गम

जोतिन्हमत्ताजहोदिष्टितणी॥२॥गाजमनांमधिमुरसती
चवेश्रमीकाणीपीवेगाकोईजोगजुगतासकलबिप्रद्र
णीनृथाकेब्धिछमदेसब्रह्मामेसमसंसफणीकासकबी
रपानगढ्मीतरितहांश्रटलब्रह्मधणीध॥२१॥बंदेबंद
गीखूंकाममहरिबिनश्रोरजोनिदरामहरिचलनांकूचबे
गाष्यहांनदीमुकांमाटेकजहांनकोइयारदोसतगांगिगष्ठ
नवामएकाहेकीपंथचलनांबीचिनदीबिश्रांमसेसास्स
गरबिषमतिरणांसुमरिलेहरिनांमकहेकबीरतहांजाइ
रहीरोजहांसुषकोधांम॥१॥१२॥४४॥रागकेदारोस
[illegible]॥राग॥१॥राग॥[illegible]॥दिवांनोदीनबिमास्योरेपेटन
स्योपसुवाज्यूंसूतोमनिषजन्मसनहास्योरेटेककांमीक्रो
धीलालचीरबाजारीबेकांमनिद्याकरतांजन्मगमायोक
बहूनसुमरयोरामरसाधसंगतिकबहूनहीकीन्हीपाच्यो
फोकटिफूवसूकरस्वांनकागकीनांईचारयोचलेजेक
विश्रापनकूंमोटागिनेंश्रोरनकूंलघुमातमनसाबाचा
करमनोदेषतदोजिगजातकहेकबीरचेत्योनहीरेमू
षमुगधगंवाररामनांमजांन्योनहीकूंकरतरिबोपार
॥२॥मनारेरांमसुमरिरामसुमरिरांमसुमरिनाईरामनांम
सुमिरनबिनबूडतहेश्रधिकाईटेकदारासुतग्रेहनेह
संपतिश्रधिकाईयामेंकछूनांहितेरोकालश्रवधिश्रा
ईश्रजामेलगजगनिकापतितकरमकीन्हांतेऊतरि
पारिगयेरामनांमलीन्हांस्वांनसूकरकागकीन्हींतेऊ
लाजनश्राईरामनामश्रमृतछांडिकाहेबिषषाईतजि
नरमकर्मबिधिनिषेधरामनांमलेहीजनकबीरगुरप्रमा
दिरांमकरिसनेही॥४॥रामनांमहृदेधरीन्नमोलिकरी
राखोनातिकुलोकमेंजाइनिबषिपीराटेकनिसनांनें
लोनलहरिकोमक्रोधनीरामदमछरमोहदोइहरष
सोकतीराकामनीश्ररूकनककेनवरबोरबकुबीरा
जनकबीरनोकाहरिबेवटगुरकीरा॥१॥रचलिमेरीसषी
होवांलगानेंरामरायाजबलगकालग्रासेलीकायाटेकज
बलगलोलमोहकीदासीतीथबूतनछूटेजमपासीश्रो
वेगेजमकेहलघालेगेबांटीयकतनजरिबरिह्वेगेमा
टीरकहेकबीरजेजनहरिरंगरातापायोराजारामपरम
पददाता॥१॥५॥माईमेंमंत्रकीयोबनिजायोहाहेहादे

पूर्ण [illegible]
देसं [illegible]
लिप्यते॥ निरासती निहस्वादी॥२॥ निरबंधिका॥३॥ निहस
व्यदेश निहसंगा॥५॥ निरनरमी॥६॥ सुलप अहारी॥७॥ गुरसेव
पासावधान॥९॥ निंद्राजित॥१०॥ समदिष्टी॥११॥ कांमदग्ध
१२ अकांमी॥१३॥ अजाची॥१४॥ असनेही॥१५॥ सथिरमन
१६ अमांनी॥१७॥ सुसील॥१८॥ सुरता॥१९॥ सावधान॥२०॥
संतोषी॥२१॥ सतवादी॥२२॥ सांत॥२३॥ दांत॥२४॥ सीतल॥२५
सजन॥२६॥ सुषदाई॥२७॥ समता॥२८॥ गंभीर॥२९॥ उदासी
३०॥ मौनी॥३१॥ निरपषी॥३२॥ सरधा॥३३॥ जुक्ति॥३४॥ निरदुंद
३५॥ निरसै॥३६॥ निरवैरी॥३७॥ निरबांन॥३८॥ निगरबी॥३
९॥ गुनग्राही॥४०॥ परमारथी॥४१॥ गगनमन॥४२॥ निहकं
चन॥४३॥ ततवेता॥४४॥ परउपगारी॥४५॥ बमेकी॥४६
विचारी॥४७॥ वीतरागी॥४८॥ बिसवासी॥४९॥ ब्रह्मग्यांनी
५०॥ वैरागी॥५१॥ विरही॥५२॥ ब्रह्मरूप॥५३॥ षिमावंत॥५४
धीरजवंत॥५५॥ प्रेमी॥५६॥ नावलगति॥५७॥ दीनता॥५८
दयाल॥५९॥ हरिसंगी॥६०॥ ल्यौलीन॥६१॥ समाधि॥६२॥ की
रतन॥६३॥ ध्यानी॥६४॥ अजपाजापी॥६५॥ त्यागी॥६६॥ सुचि
६७॥ सहजरूप॥६८॥ इंद्रीजित॥६९॥ जरनो॥७०॥ सबद
७१॥ सुमिरन॥७२॥ निरबंध॥७३॥ निरगुन॥७४॥ सन्यासी॥
७५॥ निरसै॥७६॥ सारग्राही॥७७॥ सुरती॥७८॥ सरबंगी॥७९
सुनिमन॥८०॥ निरमोही॥८१॥ निरलोभी॥८२॥ निहकपटी
८३॥ निहप्रपंची॥८४॥ निहतरंग॥८५॥ निरसंसै॥८६॥
निरलेप॥८७॥ लयकरन॥८८॥ ध्यान॥८९॥ समाधि॥९०
इती साधकी औगुंनी संपूर्ण॥ अथ अकरता॥ आदि सुन्य
ब्रह्म ऐका इती॥ कोई नांद रसाई॥ स्रिष्टि समय प्रजुंग
नि आदि माया तप जाई॥ चिते अंजा कौ रगरज धरि मह
तत्व जायौ॥ महतत्व के सुत नयौ॥ आदि अहंकार कहा
यो॥ सो करता संसार को॥ त्रिविधि प्रकार बषांणीऐ॥ जीव
रूं बंधन जगं नांथ॥ आदि अहंकृत जांनीऐ॥१॥ सा॥
हरि गुर साध समान चित॥ चित आगम तत मूल॥ इन बि
चि अंतर जिनि परौ॥ करवत सहन कबूल॥२॥ साध संग ति
निरमल वसा जे मन होवे मेल
का के सानस्या फुलेल॥३॥ श्री निरंज
नतमसा पुरषायनम॥ रांम रांम रांम

[illegible] सुरासपट पालो दिषाड़ा नगुरा कृता कल्ला
वलावै रउलटि पवन जब चढ़ै प्रकास अनेक वन्न
बिचिनि जल ॥२॥ सिनेपति आवे सब दुष जाइ आप
परमेस्वर है समाइ रहै समाइ ध्यांन नहीं कोइ मुनिमवरस
इजे ही है ॥ प्रगट तीन लोक स्यौ लाइ अवहरि बिन श्रो
रनहीं सेकाइ ॥४ केवल मोल जब पाया प्रांन पिंड बुधि थी
रजब तिकरि जांनि उलट्या सम सिहर सो प्या ग्यांन गुर
रूपा ते पाया पूरा ग्यांन ब्रह्म ग्यांन ब्रह्म समि होइ पूरा
॥ प्रीति करै जे कोइ अजरा मृत रहै ते जिणवा सो तहै मा
ता का नांव इस्थावर ॥ व र ॥ बाचा बंध देह निज जन
के स्रवनां सुनि ले हु। विंद हि नाद कि नाद हि बिंद नांदे
बिंदे मिले गा बिंद १ सहजस्न छिन लेत जो उपाधि र
अमन दिष्टि दिठ करि निश्चल ता छिप रूप परजहां दी
ठा मनी कहै कबीर जिनि ज्वन धनी पाया दृष्टि वि
षि सहीं पीनर हरी मनका उब ध्या मन परहरी है
मन करि पूजा मन करि धूप मन करि सेवो सहज रूप र
मन आवै मन दह दिस जाइ उनमन रहै तो कारन षा
इ ४ मन मैं जन करि हसवैं द्वारि गंगा जमुनां संधि बिच
रि बिंद हि नाद कि नाद हि बिंद नाद हि बिंद मिले
गो बिंद रुज हां नहीं जहां नहीं तहां कछु जांणि जहां
नहीं तहां ले कुप्रवां ॥ नो ही दे षिन जाइ रोना गि ज
हां नहीं तहां रही रोना गि ॥ ८ देवी न देवा पूजा न जाप
नाई न बंध माई न बाप गुन अतीत जस न गुन आप
ऊम जे वडी जग कोयो सा पा ५ हृथ मैं घृत पकुप मैं बा
स काष्ट नीतरि अगनि प्रकास जोर कहै तो को इनप
त्याई कनक मैं ब्रह्मंड समाइ ६ तन नाही कब जब
मन नाहीं मन प्रतीति ब्रह्म तन मां हीं परहरि बकुला
गहि निजसार नषि देषि निषि वारन पार कहै कबीर
परम गुर ग्यांना सुनि मंडल मैं धरो धियांन पिंड परे जी
व जैहै जहां जीवत ही ले रा षो तहां ७ ॥ २ ॥ अलह अल
ष निरंजन देव कि हि बिधि करूं तुम्हारी सेव टेक बि
स्न सोई जाको बिस्तार सोई कृस्न जिन कीयासं सार गो
बिंद ते जे ब्रह्मंड गहै सोई राम जे जुगि जुगि रहै २ अ
लह सोई जिन उमति पाई दस दर षोले सोई षुदाई

देईजरनों। ताकाजीकूंजुरानमरनां।२।सोसुन्नतांन
जुदेसुरतीनेंबाहरिजातानांतरिआंनेंगगनमंडल
मेंलूसकरकेंसोसुन्नतांनधुनसिरधरेराजोगीगोर
षगोरषकेलेदीइसंमननांमत्रचौमुसलमानकेएक
षुदाइकबीरकौस्वांमीघटिघटिरह्योसमाइ।४।द्यांग्र
कूंगानजोकूंगा।मरूंगानजीकूंगा।एकेसबदमेंर
मिरमिरहूंगा।टेक।आपकटोरा।आपेथारी।आपेपुर
षा।आपेनारी।२।आपसदाफल।आपेनांबू।आपेमुसल
मांन।आपेसीदूर।आपेमछकछ।आपेजालन।आपेजी
वर।आपेकालन।आपेनाहर।आपेगाइ।आपेमारे।आ
पेपाइ।४।कहैकबीरहमनांहीरेनांही।नांहमजीवत
नमूंएरेमांहीं।७।हमसबमांहिसकलहममांही
हमतेंऔरदूसरानांहीं।टेक।तीनलोकमेंहमारापसा
रा।आवागवनसबषेलहमारा।२।षटदरसनकहियतह
मभेषा।हमहीअतीतरूपनहीरेषा।२।हमहीआपक
बीरकहावा।हमहीअपनाआपलषावा।३।८।सोध
नमेरेहरिकानांव।गांठिनबांधूंबेचिनषांव।टेकनांवमे
रेसेवानांवमेरेपूजा।तुमबिनऔरनजांनूंदूजा।२।नांव
मेरेबंधवनांवमेरेभाई।अंतिकीबिरीयांनांवसहाई।२।
नांवमेरेनिरधनज्यूंनिधिपाई।कहैकबीरजैसेरंकमिठा
ई।३।९।अबहूंहरिअपनोकरिलीनों।प्रेमभगतिमे
रोमनभीनों।टेक।जरेसरीरअंगनहीमोरूं।प्रांनजाइ
तोनेहनतोरूं।चिंतामणिक्यूंपाईऐठोली।मनदेरां
मलीयोमोली।२।ब्रह्मामोजतजनमगमायो।सोईरां
मघटभीतरिपायो।३।कहैकबीरछूटीसबआसा।मि
लेरांमउपजेबिस्वासा।४।१०।लोगकहैंगोवरधन
धारी।ताकौमोहिअचंभौभारी।टेक।अष्टकुलीपरव
तजाकेपगकीरेंनां।सातसमंदअंजननेंनां।२।एउपमां
हरिकूंकितीएकओपै।अनेकमेरकपरिरोपै।३।धरनिअ
कासअधरजिनरांषी।ताकीमुगधांकहैनसाषी।सिव
बिरंचिनारदजसगावें।कहैकबीरवाकोपारनपावें।४।
११।अंजनअलपनिरंजनसार।यहैचीन्हिनरकरहु
बिचार।टेक।अंजनउतपतिबरतनलोई।बिनांनिरं
जनमुकिनहोई।२।अंजनआवे

लष चौरासी रब्व पस्वै सोई करीम जे हस्ती करै ॥२॥ गोरष
सोई ग्यांन गम करै है महादेव सोई मन की लहै ॥ सिध सो
ई जो साधै इती ॥ नाथ सोई जे त्रिभवन पती ॥३॥ सिध साधू
पैकंबर हूवा ॥ जपै सु एक नै षज जूवा ॥ अपरंपार का
नांव अनंत ॥ कहै कबीर सोई भगवंत ॥४॥२॥ तहां जोरा
मनांम ल्यौ लागै ॥ जुरा मरन छूटै भ्रम भागै ॥टेक॥ अगम
निगम गढ रचि लै अवास ॥ तहां वा जोति करै प्रकास
चमकै बिजुरी तार अनंत ॥ तहां प्रभु बैठे कवलाकंत
॥१॥ अषंड मंडल मंडित मंड ॥ त्री असनांन करै त्रीषंड ॥ अगम
अगोचर अभि अंतरा ॥ ताको पार न पावै धरणीधरा ॥२॥
अर्धै उर्धै बिचि लाइ लै ॥ अकास तहां वा जोति करै ॥
प्रकास ॥ टाल्यो टरै न आवै जाइ ॥ सहज सुंनि मैं रह्यौ स
माइ ॥३॥ अबरन बरन स्यांम नहीं पीत ॥ हां हूं जाइ न गा
वै गीत ॥ अनहद सबद उठै झुणकार ॥ तहां प्रभु बैठे स
म्रथ सार ॥४॥ कदली दीप पकु प्रकास ॥ हृदा पंकज मैं
लीया निवास ॥ बादस दल अभि अंतर स्यंत ॥ तहां प्र
भु पाइस करि लै चित ॥५॥ अमिलन मिलन घांम नहीं
छांहां ॥ दिवस राति नहीं है तहां ॥ तहां न ऊगै सूरन चंद
आदि निरंजन करै अनंद ॥६॥ ब्रह्मंडे सो प्यंडे जांनि ॥ मांन
सरोवर करि असनांन ॥ सोहं सो ताको जाप ॥ ता हि न
लिपै पुनि न पाप ॥७॥ काया मांहै जांनै सोई ॥ जो बोलै
सो आपै होई ॥ जोति मांहि जे मन थिर करै ॥ कहै कबीर
सो प्रांनी तिरै ॥८॥४॥ एक अचंभा ऐसा भया ॥ करणी थैं
कारण मिटि गया ॥टेक॥ करनी कीयां करम का नास ॥ पङ्ग
प मांहि पावक प्रकास ॥ पकु प मांहि पावक प्रजरै ॥ पा
प पुनि दोऊ भ्रम टरै ॥१॥ प्रगटी बास बासनां धोई ॥ कु
ल प्रगट्यौ कुल घाल्यौ षोई ॥ उलटी चित चिंता मिटि
गई ॥ नै भ्रम नागा ऐसी भई ॥२॥ उलटी गंग मेर कूं चली
धरती उलटि आकास हि मिली ॥ दास कबीर तत ऐसा
कहै ॥ ससिहर उलटि राह कूं गहै ॥३॥५॥ है हजूरि क्यूं दू
रि बतावै ॥ दुंदर बांधै सुंदर पावै ॥टेक॥ सो मुलां जे मन सूं
लरै ॥ अह निस काल चक्र सूं भिरै ॥ काल चक्र का मरदै
मांन ॥ ता मुलां कूं सदा सलांम ॥१॥ काजी सो जो काया
बिचारै ॥ अह निस ब्रह्म अगनि परजारै ॥ सुपनैं बिंदन

तसमउ विकटदैहं जे जीवहू प्रसुमिरन तरे वे वे दै कबीर २
कहै कबीर मेरे संगन साथु जल थल में राघे जगना थ
१ ॥२ धन्न रूतनी दो रूतनी दो सोगा तन मन रांम पियारे जो
गा टेक मैं बोरी मेरे रांम भरतार ता कारनि रचि करुं सिंगार
जैसें धुबीया रज रूा श्रोवे हूरत परत सब निंदक धोवे
१ निंदक मैरे पिरां न अधार विन वेगारि चलावे भार २ नि
दक मैरे माई बाप जनम जनम के काटे पाप ३ कहै कबीर
नंदक बलिहारी आप रहे जन पार उतारी ४ ॥ १७ जो मैं
बोरा सो रांम तेरा लोक मरम का जांनें मेरा टेक माला ति
लक पहरि मन मांनां लोगन रांम खिलौनां जांनां १ थोरी
भगति बहोत अहंकारा ऐसे भगता मिलें अपारा २ लो
क कहै कबीर बौरांनां कबीर का मरम रांम भल जांनां ३
॥ १८ ॥ जन देस दसा लीए डोले न मन नाव चढे जस बोले
टेक मांन सरोवर तट के वासी रांम चरन चित आंन उदा
सी १ मुक्ता हल बिन चंच न लावे मौनि गहै कै हरि गुण
गावे २ कउवा कुबधि निकट नहीं आवे सो हंसा निति द
रसन पावे ३ कहै कबीर सोई जन तेरा षीर नीर का करै नबेरा
४ ॥ १९ ॥ सत रांम सतगुर की सेवा पूजहु रांम निरंजन देवा
टेक जल के मंजन जो गति होई मीनां नित ही न्हावे जे
सा मीनां तैसा नरा फिरि फिरि जोनी आवे १ मन में मैला
तीरथ न्हावे तिन वैकुंठ न जांनां पाषंड करि करि जगत
भुलांनां नांहिन रांम अयांनां २ हृदे कठोर बसै बांनां
रसि नर कनबेच्या जाई हरि को दास मरें जम गरबि
सै न्यांस कलि तिराई ३ पाठ पुरांन वेद नहीं सुमृत तहां
बसै निराकारा कहै कबीर एक ही ध्यावो बावली यासं
सारा ४ ॥ २० ॥ काहे ते रे नृप ध्याई आतम रांम न चीन्हां
सोई टेक काया घट क्रप रि मैं जन कीये नीत रि में से अ
पारा रांम नांम बिन नरक न छूटे जे धोवे सौ बारा १ का
नट भेष भगवां बसतर भसम लगावे सोई ज्यूं दादुर
सुरसुरी जीत रहे हरि बिन मुक्ति न होई २ पर हरि कांम
रांम कहि बौरे सुनि सिष बंधू मोरी हरि को नांव अभै प
द दाता कहै कबीरा कोरी ३ ॥ २१ ॥ पांणी तें प्रगट भई
चतुराई गुर प्रसादि परम निधि पाई टेक इक पांणी पा
णी कूं धोवे इक पांणी पांणी कूं मोहे १ पांणी के चापां

न सब घटि रह्या समोइ ॥२॥ जोग जिगत पसरे विकार
कहै कबीर मेरै राम अधार ॥३॥ एक निरंजन अलह मेरे
ही हिंदु तुरक दहूं नहीं नेरै ॥१॥ राषूं ब्रत न महरम दी
ना तिस ही सुमरूं जो रहै निदांना ॥ टेक ॥ पूजा करूं न नि
वाज गुदारूं ॥ एक निराकार हृदे नमसकारूं ॥२॥ ना हज
जांऊं न तीरथ पूजा एक पिछांणां तौ और न दूजा ॥३॥ कहै
कबीर भरम सब भागा एक निरंजन सूं मन लागा ॥४॥
॥२१॥ तूं हौं मुझ गरीब की को गुदरावै मजलसि दूरि म
हल को पावै ॥ टेक ॥ सत रिसहंस सलार है जाके असी
लाष पैकंबर ताके ॥ सेष जु कहीए सहंस अठासी ॥१॥
छपन कोडि षेलिबे षासी ॥२॥ कोडि तेतीसूं अरु षिल
षांनां चौरासी लष फिरै दिवांनां ॥ बाबा आदम पैं निज
रि दिखाइ नबी भिस्ति घनेरी पाई ॥३॥ तुम साहिब मैं क
हा भिषारी देत जबाब होत बजगारी जन कबीर
तेरी पनह समांनां भिस्ति नजीक राषि रहमांनां ॥४॥२२
॥ जो जाचूं तो केवल रांम आंन देव सूं नांही कांम ॥ टेक
जाके सूरज कोटि करै प्रकास कोटि महादेव गिर क
विलास ब्रह्मा कोटि बेद उचरै दुरगा कोटि जाकै मर
दन करै ॥१॥ कोटि चंद्रमा गहै चिराक सुरते तीसूं जीमैं पा
क ॥ नौग्रह कोटि ठाढे दरबार धरमराइ पौली प्रतिहार
॥२॥ कोटि कुमेर जाके भरैं भंडार लिछमी कोटि करै सिंगा
र कोटिक पाप पुनि ब्यौहरै इंद्र कोटि जाकी सेवा करैं
॥३॥ जगि कोटि जाके दरबार गंध्रप कोटि करैं जै जैकार बिद्या
कोटि सब गुण कहै पारब्रह्म कौ पार न लहै ॥४॥ बासिग
कोटि सेज बिस्तरै पवन कोटि चौबारै फिरै कोटि समं
द जाके पनिहारे रोमावली अठारह भार ॥५॥ असंष कोटि
जाके जमावली रावण सेन्यां जाथें चली सहंस बाहु के
हरे प्रांन जरजोधन घाल्यो षै मांन ॥६॥ बावन कोटि जाके
कुटवाल नग्री नग्री षेत्रपाल लट छूटी षेलैं बिकराल
अनंत कला नटवर गोपाल ॥७॥ कंद्रप कोटि जाके लावन
करैं घट घट भीतरि मनसा हरैं दास कबीर भजि सारंगपा
न देहु अभै पद मांगूं दांन ॥८॥२३॥ मन न डिगै तातैं तन न
डराइ केवल रांम रहे ल्यौ लाइ ॥ टेक ॥ अति अथाह जल
गहर गंभीर बांधि जंजीर जलि बोरे हैं कबीर ॥१॥ जल की

रिगा॥१॥पारधीपनोडेसाधैको॥ अथपाधासायषैसोइ१क
हैकबीरजेपांचूमारैआपतिरेओरंकूंतारैआ॥२॥पहरि
कोखिलोवनोखिलोइमेरीमाइत्रिअखिलोइतेसंतत
नआर्ट्टे केतनकरिमठकीमनहिखिलौइता मटकीमे
पवनसमोइ॥१॥इगलापिंगुलासुषमनिनारीवेगिखिलो
गारीछखिहारी॥२॥कहैकबीरगुजरीबोरानीमटकीफू
टीजोतिसमानी॥३॥१०॥आसनपवनकीयेदिढरहोरे
मनकामैलछाडिदेबोरे टेक॥क्यासीगीमुद्राचमकायं
क्याविभूतिसबअंगलगायें॥१॥सोहूसोमुसलमान
जिसकादुरसहिरहेईमान॥२॥सोब्रह्माजोकथैब्रह्मगि
यानकाजीसोजानैरहमान॥३॥कहैकबीरकछूआनन
कीजेरामनामजपिलाहालीजे॥४॥२०॥साथैकहीए॥
लोकाचारवेदकतेवकायेंव्योहारटेकजारिवारिक
रिआवैदेहामूवांपीछेंप्रीतिसनेहा॥१॥जीवतपित्रहि
मारेडंगा॥मूवांपित्रलेघालेगंगा॥२॥जीवतपित्रकूंअन
नषवावैमूवांपीछेपिंडभरावे॥३॥जीवतपित्रकूंबोले
अपराध॥मूवांपित्रकूंदेहसराध॥४॥बापकागलोबेटे
गज्ञापिंडभरयवतनआवैलाजा॥५॥कहैकबीरमोहिअ
चिरजआवै॥कववापाघाइपित्तांकूंपावैधा॥२१॥बापरोम
सुनिबीनतीमोरी॥तुमसूंप्रगटलोगनसूंचोरीटेकपह
लीकामसुगधमतिकीया॥ताते कंपैमेराजीया॥१॥रामरा
इमेराकहासुनीजै॥पहलैबकसिअबलेषालीजे
२कहैकबीरबापरामराया॥अबहूंसरनितुम्हारीआ
या॥३॥२२॥कंकूंलीजेगढवेकाजाइ॥दोवरकोटअरुतेव
रषाई॥टेक॥कामकिवाड़दुषसुषदरवानी॥पापपुनिदरवा
जा॥क्रोधप्रधानलोभबडदुंदर मनमेवासीराजा॥१॥स्वा
दसनाहटोपममताको॥कुबधिकवाणचढाइ॥त्रिसना
तीरबहैघटभीतरि सुबधिहाथिनहीआई॥२॥पांच
पचीसमोहमदमछरआडीप्रबलमाया॥मोगरी
बकजोरनचालेकहाकरूंरामराया॥३॥प्रेमपलीता
सुरतिनालिकरिगोलाग्यानचलाया॥ब्रह्मअगनि
लेदीयापलीताएकैचोटढहाया॥४॥सतसंतोषलेल
रनेंलागातोरेदसदरवाजा॥साधसंगतिअरुगुरकीपा
तें पकस्योगढकोराजा॥५॥आवेवनीरसा[illegible]किरनकी क

५८

प्रीनीचातापाणीकालीजैसीचोरइकपाणीतेपिंड
भयादासकबीररामगुणगायाउ॥२४॥नजिगोविंद
मूलितिनजाकुमनिषाजन्मकोयोदीलाकुटेकगु
रसेवाकरिनगतिकमाइीजोसेमनिषादेहीपाईयादेह
कूसोचेदेवासोदेहीकरिहरिकीसेवा॥जबलगजुरा
रोगनहीआयातबलगकालग्रासैनहीकायाजबल
गहीणपडैनहीबाणीतबलगनजिमनसारंगपाणी२
अबनहीनजसिनजसिकबजाईआवैगोअंतनज्यो
नहीजाईजोकछूकरैसोईततसार॥फिरपछितावैगो
वासनपार॥२॥सेवकुतेराजोप्रेमसदकुतेरीजाघटसीनीतरि
सोचिविचारिकहैकबीरजीतिनावैहारिबकुबिधि
कसोपुकारिपुकारि॥२३॥औसाग्यानविचारिमना
हरिकिनसुमिरैदुषनजनाटेकजबलगमैंमेरीकरै
बलगकारिजएकनहीसरैजबयकुमैमेरीमिटिजाइ२
तबहरिकाजसंवारैआइ॥२॥जबलगसिंघरहैबनमांहि
तबलगयकुबनफूलैनांहिजबलटिस्यालसिंघ
कूषाइतबयकुफूलैसबबनराइ॥२॥जीत्याडबैहा
स्यातिरैगुरप्रतापजीवतहीमरैदासकबीरकहैसम
झाइकेवलरामरहोल्यौलाइ॥४॥२५॥जागिरेजीवजा
गिरेचोरनकोडरबकुतकहीयतहै॥विगुविपहरैल
गिराटेकररोकरिहोपममोःकरिबगतरगुपानरतन
करिघागरैऔसेजोअजराअमरैतोमसतगअविना
गरे२औसीजागनीजेकोईजागेताहरिदेयसुहागरे
कहैकबीरजाग्याहीचहीएक्यागिरहीक्याबैरागरे
२॥२५॥जागकुरेनरसोवकुकहाजमबटवारैरूंधे
पहाटेकजागिचेतिकछूकरौउपाइमोटाबैरीहैज
मराइसेतकागआयोबनमांहिअजहुंरेमनचैतेनां
हिंकहैकबीरतबैनरजागै.जमकाडंडमूंडमेलागै२
जाग्यासोनरनीदनसोईचितचेत्योचिंतामणिपा
ईटेकसोवतसोवतबहोदिनबीतेजनजाग्यातसक
रगयेरीतेजनजागैकेयहसहनांनाविषहरलागैवेद
रोनकहैकबीरअबसोवंनांहिरामरतनपायाघटमा
हि॥२७॥सतनएकअहेराजाधामृगवनखेतसबवनका
षाधाटेकयाजंगलमेंपांचूमृगाएईखेतसबवनकाच

त

तिलघेनको हस्रूविकूंनजैसदरिकाद्येहेटेघरूरिकून
जैसस्र्रा१कीज्ञातिजस्रांद्रिलदांदोंसनदीरातिघा
मनछांदूपगडोनदीव्यास्नाजुरामथ्याव्यापेनदी॥
कास्नारकाघूनिरंतरिदेज्यूंस्रा॥१॥मथनकीयातेञ
वेज्ञा॥१॥घटिघटिज्नीतरिनिमसेश्रेसेंस्रागनिजले
झलेदासेतेसें२यांनीपेडितकदैनमकाशतनकूं
दोजीकसेंसमाशज्ञोतिसरूपव्हेदेदीमांदितादेवी२
रूछाडेज्ञासी॥२॥जबलगरूसनबलगजीवान
सीतोसदानिरालवसीवाजीसुसीलतसोकेदोयञ
पदीकरताश्रेरनकोहा४कायामध्यस्रसदेवज्ञानि
ज्ञतसकीकीजेसेदासकवीरकदेसमकाहस्रापा
मोदीरसासमाशा४॥२॥स्राम्रतसविचारिसगगो
नी॥ज्यूंनरीयेसबवरदीसेपांनी॥टेकछोतिकदेहूरी
बज्रवनरानीछोसिकीछोतिजतारेपांनी२पांनीकी
छोतिजतारेपवनां॥पवनकोछोतिजतारेकवनां१पां
नीपवनदोन्यूंधयनिसमांनां॥पांनीदीहकिमुसलमां
नां॥स्रादिश्रेतिकामरमनज्ञांनां॥कदेकबीरसंतप
दिचांनो४॥२॥॥श्रेसीनाहकरांमदमारासकसनो
ककीयाबगा॥ज्ञाराटेकजतपतिकूंसबस्रादिचा
लावेबसुधास्रापगाराषीबूस्रामसदेवसेगिल
या॥नादवेदवोयसाषी२कांमक्रोधदोकंकीएजगा
तीमनतुरंगबटपारानिछ्यांगूनिजरीघटनीतरिया४
द्ववधिटांडामाया२कदेकबीरयनसंगिनताहूंमोदि
श्रेसीबनिस्राहीधाटीचदतवेलहकथाकोगयोरा
निछिटकाईन॥४॥कथणीबदणीसबजंजालस्रा
वजगातिस्रुरुरांमनिराहाटेककवेबदेमुणोमबको
राकथेनसेहकीएकबूलेह२सूनीकरनीगंमनपावे
साचाहिकेनिजरूपदिपावे२स्रोरसबैकूटबतावे
स्रापस्रेभ्राजमपुरीजावे२यहमेंस्रागनिजेरनूकूमा
चेसितुजाहकबीरादासा४॥२॥मनमांहस्रंसना
स्रंतरोकाकीन्होदरपणज्यूंनेनछायामनपटल
दीन्होटेकाजेसेजरगांनानिसरूतहूंजनकुमनलो

स्राकासतेंस्रनंपंप१

टिकारनकीपासी दासकबीरचढे गडकूपरि राजदीया
अबिनासी ॥१२॥ रैनिगईमतिदिननीजाइ नंवरख
डेबगबेठे आइटेक काचेकरवेरदेनपांनी हंसनडा
कायाकुमलांनी ॥१॥ थरहरथरहरकंपेजीवनांजांनं
करिहैपीव ॥ कनवाउडावतमेरीबहीयां पिरानी ॥क
हैकबीरमेरीकथासिरानी ॥१३॥ काहेकूंनीतबन
कूंटाटीकाजांनूंकरांपरिहैमारीटेक ॥ काहेकूंमंदि
रमहलचिणाकुंमूवांपीछेछिनरीकरहूणनपाकं
काहेकूंथांकेकंचकंचेरामारेतानरायघरमेरा
॥ कहैकबीरनरप्रबनकोजेजेतातनतेतीलुइली
जे ॥१४॥ असैजोगीजुगतिरहीजे सूतेंस्नेनेमिंदरा
आसणकीजेटेकध्यानजोगोटापवनकरिकंथा
नृछांबिन्दतिबलटिचलापंथा मनमृगमारित
तअधारीलागतिध्यानध्यौसहजिबिचारी ॥ मुद्र
जटाधिमंकरिधारीसीगीपूरीगगनमझारी ॥ घए
घांसीनरमगमावेयदिविविधिध्यावेतौसिधिपावे
डंडप्रवांणनाथकूंध्यावेनवसवअभ्यासालीलावेदोनं
तजेपापअरूपुन्यांपांचघरिनिध्यादसघरिसुन्नंमेबिण
तंतीअंतरधुनिहोईनिजआतमांचीन्होसोईआसाह्या
डेरहेनिरासा कहैकबीरमेंताकादासा ॥१५॥ अवधू
राइकरिलेसतगुरसेवा परमिलेनृबाणपदअलप
अनेवा ॥ टेक ॥ घटचकसाधिलेअकलआराधिलेप
गटेजोतिजहांतिमरनाजेपुलेकपाटमसिनाणमं
डाणबंदेध्यानधरिदेखिजहांगगनगाजे ॥ अष्टदलक
घडेआपअकलप्रगटे तेजप्रकासतिकुलोकहो
ईमुरतिजहांसेचरेपांणपूजाकरेकिरणिकुसमल
सकलमहजिधोईमहलबारीकजहांअगमआस
णकीयाचरनबिनबिदलेपावधीरादेखिआवेंकदेबा
टबिरलालवैतपततबेवेतहांपरमपीराजहांफूले
मनअरूपवनफिलिमिलिनीझरझरैसुनिमाहरतहां
अंबनीरातततखरतहांअकलआसणमईवबे
वेचुगेहंसहीराकोणमीनेकथाजगतसबजलोज
थासंतजनमेदपावेकोईकहैकबीरनृबांणपदपरस
तांजगतीजावजाइब्रह्महोई ॥१६॥ अतिअपारम

संत सेकान्हा वाधिपीरु अंजरकूदीन्हां अंजरमोठव
कुवंदन करे अ जकुंन सूझे काजी अंधेरै चातीन वेरि
पतियारा लीन्हां मन कठोर अ जकुंन पतीनां कहै कबी
र हमारे गो बिंदा चौथे पद में जनका जिंदा ४ राग सल
वेम अरू सदी सलांम तिरा देखा कूदीन्हां रे आवत जा
त दरूं घां लूटे सब चित्त तदूरि लीन्हां टेक माया मोह
मद पीया मुगध कहै इकु मेरी यह दिदस चाखि नलेम
नर चैथा नांही किस केरी रे सुनरमु निजन पीर अव
लीया धीरां पैदा कीन्हां कोठि कन रोकसां लूबरन्हां
सब निपर्यानां दीन्हां रे२ धरती पवन अकास जाइगा
चंद जाइगा सूरा रे हम नांही तुम नांही रे जाइ रहै रांम
जरूरा रे३ कसोहि कसजकरत जागीनां अडे काल
जम पासी रे कहै कबीर सबै जग बिनसे रहै रांम अबि
नासी रे ४ ॥ ४ ॥ मन वनि जारा जागि न सोइ लाहै कार
नि मूल न षोइ टेक ला हादे षिक सागर बानां ग्रबन
कीजे मूरिष अर्यानां १ जिन धन संच्या सो पछितानां सा
थी चलि गो हम भी जानां २ निस अंधियारी जागहु
बंदे छिटकन लागे सब ही संधे ३ किसका बंधू किस
की जोइ चल्या अकेला संग न कोइ ४ ढहि गए मंदर
टूटे बंसा सूके सरवर उडि गए हंसा ५ पंच पदारथ भरि
है षेसा जरि बरि जाइगा कंचन देसा ६ कहै कबीर सुन
हु रे लोई रांम बिन और न कोई ७ ॥ ५ ॥ मन पतंग चेते
नही जल अंजली समान बिषीया लागि बिगूचीए
दाझीए निदान टेक काहे नैंन अधेरी ए सूझत नांही
आगि जन्म अमो लिक षोईए सापनि संगि लागि
कहै कबीर चित चंचला गुरु ग्यांन गति कौ
हीन जैसे जैसे आवैत हां जाइसी ॥ ६ ॥ स्वाद पतंग पे रजरि
जाइ अन हद सं मेरा चित्त न रहा हटे के माया के म
द चेतन देषा ३ ववधा मां हिए कन ही पेषा २ जे पअने क
कीए वहुकी न्हां अकल पुरस एक न चीनां ३ कितेक
सूरामर दहो केते केते मुगध अजहुं न ही चेते ४ तंत
मंत सब वोषद माया के वलरांम कबीर दिढाया ॥ ७ ॥
रोक सुहाग निज अगत पियारी सकल जीवजंतना
री टेक घसम मेरे वाना रिनयोवे

रत्तिकरतकूं चाहीआवै २ राम तेरी अकथ कथा मोपै
नहीं आवै साधसंगति प्रेम जगति जन कबीर गावै ३
॥४२॥ जाइ रूं केवल नैन राजा राम के पाऊं मांगत दं
न देत कछू अन जैसो प्रसाद से आऊं टेक ली तरिमह
ल कुसे केव स्नापति जहां जाइ मैं गावा सो वृत्तते प्रभु च
म किन्ह वे को ईदा सब दगी आवा १ करि मन का रिमह भ
सूप्रवण कछू दास कूं दीजे ह मन नाही स्वार्थ के लोभी
जगति दान मो हि दीजे १ बांस पक डि जीत रिले आण म
व अस्थान दिषावो जगति कबार तिल क दे मासा द
स कबीर पद राये २॥४३॥ अजर जरै को इ अजर ज
रै अजपा सुमिरण जाप करै टेक सुनि मंडल मैं बाजा
बाजे सुषमनि तेती घोर पै बिन दीपक दह दिस उजि
यारा साधू जाको ध्यान धरै १ गंगा जमना मधि सुरसती
नाद बिंद की गागरि पैरे सुनि मंडल मैं आसण साधि द सवें
द्वार की षबरि पैरे २ सोई पंडित सोई तत ग्याता बिनषो
डे में ग्राम करे कहै कबीर सो ई गुरु मेरा आदि अंत तिलो
क बहु न मरे ३॥४४॥ ६०७॥ राग नेट्ट संपूर्ण ॥ राग
८॥ राग बिलावल ॥ राम न जेसो जा ण्यो जाके आ
तुर नाही सीलस तोष सीयेर ह धीर जमन मांही टेक
जन कूं काम क्रोध व्यापे नही त्रिष्णा न जरावे परफु ल
त आनंद मैं गो बिंद गुण गावे १ जन कूं पर निंद्या भावे
नही अरु असत न भाषे काल कलपना मेटि करि
चरनां चित राषे २ जन सम दृष्टी सीतल सदा ड बधा
नहीं आनै कहै कबीर ता दास सूं मेरा मन मांने ३॥४५॥ र
माथे जोन मिले जा सूं मिलि रहीए ता कारनि बरब
कु दुष सहीए टेक धन धार दष ततदा र जां अधिक ग्र
ब थे पाक मिला इ अगम अगोचर लषी न जाइ जह
का सहज फिरि तहां समाइ १ कहै कबीर रूव अनि
मीन सांइ हम सो तुम रोक समान २॥४६॥ अहो मेरे गोबि
द तुम्हारा जोर काजी बकि बो हस्ती तोर टेक बांधि भु
जा भलै करि डार्यो हस्ती को पि मूंड मैं मार्यो भागो ह
स्ती चीसां मारी ता मूरति की मैं बलिहारी १ महावत ते
कूं मारू सांटी यस हि मरौं के घालूं काटी हस्ती न तोरै
धरै धियान वाकै रूदे बसै भगवान २ कहा अपराध

दोहे२ भवा लेका दोदू बिनासो उत दिन रक ठ्स जोग
बि रवा सा१ सुहाग निगा लि सो हे हा१ संत नि बिषबिल
से मं सा य पी छें लागी फिरै बिचारी संता की ठिव की ठि
तकारी २ संतन जे चा पाछी पेरै गुरु को सबदां मारी डेरै सा
थिल के कूं पिंड पिरानी हमारे दृष्टि परै जे संडा नी अब
दमदन का पाया ने वा दो इकू पाल मिले गुरदेवा कहे
कबीर अबबा हरी परी संसारी के अं चलि टरी४ प
या रो स नि मा गो कंत हमारा पीव कूं बोरी मिले ज धार
टे आ मा सा मां गे रती न दे कं घटे मेरा प्रेम तो का स लिले
कं १ राषि पारो स नि ल्स का मोरा जे क छू पां कुं स अ
छ ते रा बनि बनि ढूं ढूं नैं न न र ले कि पीव न मिले तो
बिलन बिक रि रो कं २ कहे कबीर यकु सदृज हमारा
बिरली सुहागणि कंत पियारा ३॥१॥ जगति दोन
मो हिं दी जी ऐ देवन के देवा जन्म पायन ही बोस कं
करि हूं संग सेवा टेक अनमादिक रिधि सिधि घणी
बे कूं तो बासा ऐ तो पत निमां गि ढूं जब लग तन
सा सा १ सुंदर ता सुषसा हि बी सुंदर सुत नारी सुपनै
ही अं ख्या न ही मो हि सरनि तुम्हारी २ सब रिषि की
साधना बेदा रूपा क रि ही जे जो सागर ते का हिबे
अपणा करि लीजे ३ दास कबीर की बीनती अब
गतिस ए लीजे आडा पड दा पी लिके मो हि इस
ए दी जे ४॥२॥ मतिस बद ते बूटि हो को ज्यो हत ब
राये संसार सबै बंधो जम जाल पसारा टेक गुरग
ली हो इदेरी या अकू अदे कारा चेतन हारी चेती
या बूडो जिन धारा १ कीरत या तीनूं जना दे बिष
का चारा करमां को पासी डारि कें पकड्या जग सा
रा २ अजर अमर बोपुर मदे निरंजन सा की डारा नि
दे वा सा बां प्रज्ञ गा सारा ३ बस ला बेद सही कीया सि
व ज्ञो ग व चारा बिष्ण धरम उत पन की या कलाब्यो
हारा ४ तीन लोक दस हूं दसा जम रूं दे द्वारा जोतिस
रूपी हा कि मो तिन अमर ल पसारा ५ अमल मिटी
कं तास का पत कं नो पारा कहे कबीर ता हि अमर
करूं जो हो इ हमारा ६॥११॥ मैं मतिवाला राम का
मो कूं जिन को हे छेरो मैं मारिवे सूं किसी ओर सूं मो सूं

ठकराइ१षपांचबांधिधरणीधस्याणउदीयालुदा
इदासकबीरकीदासनीदीदारचुकाइ॥३॥२१॥
५२५॥राग॥ए॥रागललित॥रांमऐसोहीजांनिज
पोम्हरी।माधवमदसूदनबनवारी॥टेक॥तुनदिनप
नकैघरिम्रपारधवाप्रेरहरे देसमारजैसैनदीना
वकैसंग॥ऐसैहिमातपितासुतम्रग॥सेवदिनन
फूलमलफलकीरजलबुदबुदाऐसैप्रादिस
रीरजिस्यारांमनांग्रन्यासकहैकबीरतजिग्रन
वास॥४॥२सनांरांमगुनरमिरमिपीजे॥गुनम्रतीत
नमोलिकरतीजे॥टेक॥तृग्रणबरसकाथोरनाइला
दिसुमरिसुधबुधसबपाइ॥विषतजिरांमजपसिअन
गो॥कबूडतरातचकैरागो॥तेसबतिरेरांमरसस्वादी
कहैकबीरबूडेबकबादी॥३॥निबरकसुतल्योकोरा॥
रांममोहिमारिकलिविषबोरा॥टेक॥उनदेसजाइबोरबाब
देषिबोरलोगकिनकिनषेलो॥२॥डिकागोरउनदेसजा
इबा॥जासूमेरामनचितलागा॥लो२दासढवलेपाटन
पुरहेढरेनदीगावकैगोरालोरजललबिनदेसनिस
दिनैरबू॥कबीराकोस्वांमीपाइपरकैमनेंबू॥४॥३॥
५२६॥राग॥२०॥रागबसंत॥सोजोगीजाकैसहजभाइ
अकलप्रीतिकीभीषपाइ॥टेक॥सबदअनाहदसीगीनाद
कामक्रोधविषीयानबादमनमुद्राजाकेगुरकोग्यांनत्रि
कुटकोटमेंधरतध्यांन॥मनहीकरनकोकरेसनांन॥गुर
कोसबदलेलेधरेध्यांन॥कायाकासीषोजेबास॥तहांजो
तिसरूपभयोप्रकास॥ग्यांनमेषलीसहजभाइबंक
नालिकोरसषाइ॥जोगमूलकोदेइबंध॥कहैकबीरथि
रहोइकंध॥३॥मेरोहारहिरांनोमैंलजावांसासुदुराच
नपीवडरांवदे॥टेक॥हारगुहोमेरोरांमताग॥विचिविचि
मांनिकएकलाग॥रतनप्रवालेप्रमजोतिसाअंतरअ
तरलगोमोसरपंचसषीमिलिहैंसुजांन॥चलहुतजइ
ए त्रिवेणीन्हांन॥न्हायधोइकैतिलकदीन्ह॥नांजां
नूंहारमेरोकिनहुलीन॥हारहिरांनोंजनबिमलकी
न॥मेरोआहिपरोसनिहारलीन॥तीनलोककीजांनैपीर
सबदेवसरोमनिकहैकबीर॥३॥हारकोनांवसतसि
लोकसारत्योलीनमोतिगतरेपार॥टेक॥इकजोगीज

चैतिन्नपानी ३

जै गई धूलि मंगी वो यावगा वा मा है बी छिन माहिं
बिलांणी २ बारा जो जन के बिषै चल ते ठत्र कों ब
ही यां वोवर जो धन कहां गयो मिलि माटी मह्दी यां
ऐसो संसार कंसार है ॥२ बिन कोई न अपनां कहे क
बीर यूं जाहगा ज्यूं रैनि का सुपनां ॥ ४ ॥ २१ ॥ जुगीया
कूं ठंउत जुगत नया कहूं देष्यारी माई कोई बतावे
जोगी आंवतो जाकूं ताष बधाई टेक ॥ एक जोगी है
जो मिंत है अलमस्त दिवांना ष्वोट सात कीया है र
हा धरती अस मांनां या जुगीया की जोलीया मां
नि क मोती न रीया मन मांने ता कूं देत हे ऐसा हिर
का दरीया ॥ २ सूरज ससेवा करे जा के चंद चिराकी
कागद लेष णी हाथि है कछू मागे बाकी ॥ पांनी
छाई रावटी फूलां सेफ बिछाई आया सावल रमि
गया कहूं षबरि न पाई ॥ ४ आत्मदेव निरंजनां ता
का पार न पावे कहे कबीर मैं का हा कहूं कछू कहि
तन आवे ॥ ५ ॥ २२ ॥ तुम्हारी नगति का गुन कहां
जे जन जुग समांनां के तु मनि जकरता नहीं के रू
वा बांनां टेक मांनसरोवर का गुन कहां जहां हे षत षु
री के वो निज सरवर नहीं के बुगले षधुरी ॥ तीरथ गया का
गुन कहा जो पाप न जाई के वो निजती र्थ नहीं के मन
टलाई ॥ २ ॥ कंवल पहोप का गुन कहां ले कूं ले ई बासा
के वो निजकंवल नहीं के नेंवर उदासा ॥ ३ दाता हीं का गु
न कहां जो दांन न दी न्हां कहे कबीर तुम दांन पति हम
ही कम हीनां ॥ ४ ॥ २३ ॥ राम चरण जाके हृदै बसे ताको
मन कूं डले रे अब सिधि नो निधि आगे ठाढी हर षिह
रषि जस बो ले रे टेक या प्रतीति हो इ जा जन के कूट
ल गो विसब धो ले रे बाहूं बार बिषैतें छूटे के सेन र जो
बन तो ले रे ॥ तेरो जन न हो ज तें जा हत हूं सुषपावे
माया ता हि न झो ले रे कहे कबीर हरि अंतरजांमी नि
कटि प्रेम के वो ले रे ॥ २ ॥ २४ ॥ चाकरहां रांम के संतन
हो सि पाई बगतर पहल्या गर्यांन का पेमपाषर लाई ॥
टेक सबद तीर तर गास न ल्या सुर कमरबं धाई सुरति
कमां हाद मकूं दई दमलई चढाई ॥ ५ ॥ जकमकी योग
ठलगन कूं गढ ल गो जाई गढ में र हन न यावई हजी

रीडरकूंनकेरगुरुपारिनिविनपैचालनिन्रामुरारिटेम
तनलीतपिवसेमदनलोरातिनप्रबसलीनोदृरिमो
रामोगेदेयमलविनैमांनावकिमारेहुदामेकामवान
२भैकिहिगुरुरांकंआपलागिनुकलीडरवडेवडेग
रेजागिवुल्लाविछाअरुसुरमंयककिहिकिहिनदी
लायाकलंकरत्नापतपसेजमसुचिध्यांनवेदिपरसव
सहितमपानाकहेकवीरतुलोहेदीनजापरिगोविंद
रूपाकीनतर्याश्रेसोदेषिचिरलमनडरयोमोरताथें
निसवासुरगुनमसूतोपटेकयकपटहिपाउरकच्र
मेनदासारकनगननिरंतरिरदेनैवासएकजोगजुग
तितनदोहिपीनस्रेसेरांमनोमसंभिदेनलीन।१।
कहूहिदीनइककदेहिदोनयककरेकलापीसुरापान
इकततसमंतवोसदवोंनाइकसकलछिषिरामेअपां
नरइकतीर्थवृतकरिकायाजीतिऐसेरांमनोमस
करेनप्रीतिइकधूमघोटितनहिस्यामयेमुक्ति
नदीविनरांमनामरसतगुरततकलोविचारमूल
गलोअनननेविस्तारजुरामरनथेंनाथीररांमक
पानईकहेकवीर।४।।५।।सवमदमातेकोईनजागि
ताथेंसगिहीचोरघरमुसनलागिटेकपंडितमाते
पटिपुरांनजोगीमातेधरिध्यांनसन्यासीमातेअहं
मेवातपामातेतपकैभेव।१।जागेसुषदेवअक्रू
रहनुमानजागेलेलंगरसंकरजागेचरनसेवकलि
जागेनांमाजेदेव२ऐअभिमानसवमनकेकामऐअ
भिमाननहीरहेवोमआतमकोमनविश्रामकहेक
वीरमजिरांमनांम३।।२०।।अवधुरामसवेक्रमकरि
हूंसहजसमाधिनजमथेंउडिरहूंटेकजेनरांके
करिवासनघरिहूंधोवीकेमलभीकें।चमराकेक
रिगंत्रधोरीजातिपांतिकुलसपोकं।१।तेतीकेतन
कोस्कूकरिहूंपापपुनिदोनोपीकूंपंचवेरनजव
सुधचलांकेरामजेवरीयांजोकूं।२।पचीकेकरिष
डगसेभाल्यूंजोगजुगतिदोनोसाधूंनठवाकेकरी
मनकूमूडूंआदीकेकमवादूं।३।अवधूकेकपअ
पोधूंवंवधकेहिमनमाकेवनिजाराकेतनकूव
निजोजवानीकेजमराकूं।४।

गमजदा धार२ इक अंगि बिन्न तियसें अपार२ इक मू
नी अहमन कुलीन अैसें होत होत जग जात बीन
२ इक आराधे सकल सीव२ इक परसादें बूधे जीव२ इ
क ऊलदे ब्यां को जप दि जाप त्रिन्हवन पति न्हूले त्रि
बिधि ताप२ अन आडि इक पीव हि इध हरिल मिलें बि
न हिरिदे सुधा कहे कबीर अैसा बिचार राम बिनां को उ
तरे पार२।।३।। हरि बोलि सूवा बार बार तेरे ढिग मीनी
क चूकरि पुकार टेक अंजन मंजन तजि बिकार सत
गुर समझायौ तत सार२ साध संगति मिलि करि बसंत
भौ बंधन छूटे जुग जुगंत२ कहे कबीर मन नया अनं
द अनंत कला भेटे गोबिंद२।।४।। बन माली जांनें बन
की आदि रोम नांम बिन जन्म बादि टेक फूल जु फू
ले रुति बसंत ता में मोहि रहे सब जीव जंत फूलन में
जैसें रहे तैबास यूं घटि घटि गोबिंद हरि निवास२
कहि निगुंनी नेवरा जाब देस मेरा हरि प्रीतम सूं कहि संदे
सा चोली लटकी जोबन जार मोहि बिरह सतावे बा
र बार२ इक सब जन गावें मंगल चार ता में को ही एक
जांनें राम सार कहे कबीर मन भयौ अनंद जग जीव
न मिल्यौ परमांनंद२।।५।। मेरे अैसे बिन जसूं कवन
काज मूल घटे सिर बधे ब्याज टेक नाइक एक बनि
न जारे पांच बैल पचीस को संग साथ नौ बहीया
दस गूनि आहि कस नि बहत तारि लगे ताहि२ सात सू
त मिलि बनिज कीन्ह करम पयादो संगि लीन्ह ती
न जगाती करत रारि चल्यौ बनिजीयौ बनिज हा
रि२ बनिज पुरानौ पूंजी टूट षाडू दह दिस गयौ फूट
कहे कबीर यह जन्म बादि सहज समांनौ रही लादि२
।।६।। माधौ दारन दुख सह्यौ न जाइ मेरी चपल बुधि तासें क
हा बसाइ टेक तन मन भीतरि बसे मदन चोर जिन ग्यां
न रतन हरि लीन्ह मोर मैं अनाथ प्रभु कहौं का हि अ
नेक बिगूचे मैं को आहि२ सनक सनंदन सिव सुकादि
आपण कवलापति भये ब्रह्मादि जोगी जंगम जटा
धार अपने औसरि सब गये हैं हारि२ कहे कबीर रहु सं
ग साथ अभिअंतरि हरि सूं कहु बात मन ग्यांन जांनि
के करि बिचारि राम रमत भौ तिरिबौ पारि२।।७।।क

गी आसन करी बिन्हु ति सिध साधिक केइ जगत धुत
करि जटा जूट पी धूडाडा तेरी नगति बिना भ्रमो
षंड षंड।पमें कब कुक पीयो पेब दोत कालाकब
कुपेचा आगनि सही दे ज्वाला कब कुपट तजि के
रह्यो निरास तेरी नगति बिना थकि रह्यो निरास दे
मे अनेक जन्म लीयो सन्यास मन बिन जीत्यो नही
मिटी दे प्यास न्हनिमति डोल्यो निकाज्ञ तेरी नगर
त बिना फीरो निलाज ३ मैं पंडित हुवो अनेक बार
बेद पुरान बांचे अपार राजा परजा करी दे मो निसी
नगति बिना सब गई सो निट मे अनेक जन्म लीयो
पुन्यास जदा जलो गयो तला सुध निवास कबाकु से
र पुर नरक वास तेरी नगति बिना न हो मिटी त्रास ४
०मे अनेक जन्म लीयो पुन्यास जैन धरम की करी
दे आसा बहो बिधि पाल्यो दया धुम तेरी नगति बि
ना न हो कटे है क्रम ५ मैं अनेक जन्म लीयो पुन्यास
जैन धरम की करी दे आस चौबीस तिर्थंकर की पूरि
आदि जलमल पीवत गयो जन्म बादि ६ सुकन ली
बंध्यो करम पास अपनी जप धिनप जी हुवा सामि लि
चंद सूर बिदेन बिन्द बिन करनी कूमिले गोबिंद
७ मे मित्र की ज्ञीन पिसाच पवन बाच क मन न ही
राचो निस बासुर को धरयो है ध्यान तेरी नगति बिना
न ई सब हो हानि ८ मे तेत सन्त की ए कष्ट साध्यान्न
त प्रेत निसदिन आराध्यो यो जन्म सब यूं ही बार
दा तेरी नगति बिना लगी बहोत ब्याधि ९ मे बस बं
ड न प जो सर पा ताला बहो सारा सिन्हू फल रसाल
बहो बिधि करम की एकठा तेरी नगति बिना का
हो अनेक बार १० में चंदन न प जो गिर निवास भ्रम
ल आग न ई बहोत बास घसि कब कुन चरचो स्यां
म आंगि तेरी नगति बिना रहे भ्रम में गो ११ जहां बि
छिन षेद नही पाप पुनि लेरे चरन कंवल बिन प्रभ सु
नि कूबी माया लगो हूहि कांम तेरी नगति बिना
आराम १२ अब तेरे चरन कंवल हदा में फागि सो
ई करो प्रभु स्यो न बारि के सेक बीर प्रभु ना हिना दि
अब नर सूर जन जम पेंखु डाह॥२५॥२४॥ अघ टब

कविषेवदासनानोवनदास॥प्र॥२१॥नदीछांडीबाल
बालनामभेरेअरपउआमूकोलकामटेकपद्रसादप
अरेपडलमालासेगिसपालेबदोलबालकसमेपडा
देषाडे आलजालमेरीपाटीमेलिषिदेश्रीगोपालासे
नमाककजबकह्यौजाइ।प्रद्रसादबेधायोवेगिआइ
ललालकदनकोछाडिबोनितोदिअबहीछुडाकुंमे
लेकह्योमानि।१कहारेडराबेमोदिबारबारजिनजा
लघालगिरकेकीयोप्रहारिमारिडारिलावेदेरूजारि
दूतोरामछांडतोमेरेगुरदिगाशिरतबकाहिषडगको
ल्योरिसाइतेरोराषणहारोमोहिबताइ॥बेलामेप्रग
टेगिलारद्दिरणंकसमारयोनषविडारि॥४॥आदिपुरुष
देवाधिदेवाजिननगतिहेतधरयोनृसिंघरूपकहेक
बीरकोईलहेनपार॥प्रद्रसादनबारयो॥अनेकबार
॥५॥२२॥चलिचलिरेभंवराकंवलपासतेरीभौंरीबोले
अतिउदासटेकतेअनेकपहोपकोलीयोहेलोगमुष
ननयोतनिबहोरोगहूलकहतलोदिबारबारमे
सबबनहेदुहोडारडार॥२॥दिवसच्यारिकेसुरंगफूलाहि
नहदेषिकहारह्योफूलतायाबनासपतीमेलागीआ
गि॥तबतुमजेहोकहांलागि॥३॥पुहपपुरानेनएमूक
तबभंवरीलागीअधिकभूषनडिनसकेबलगये
हैछूटितबभंवरीरूनीसीसकूटिदहदिसजोवे
मधुपराइतबभंवरीलेचलेसिरचढाइ॥४॥कहेकबी
रमनकोसुभाव॥रामभगतिबिजमकोडाव॥५॥२३॥
मोहितारिमाधोअबकीबार।तेरीभगतिबिनानर
भ्योअनेकबारटेकनृपअंबरीकधूरूहमब्यासानि
जप्रेमकथानितहेनिवासजनप्रवनसुनतनयो
गयोनदीपअद्रसादअादिराषेसमीपभैनयोगज
आगिनंतकोमीबिरूपदेषिबिलंब्योगहरूकूंपअति
बदरमुषतनधूरिधाइगहेअधकूपमेपर्यो॥कूंप्र
ड२मेनयोसिंघस्वानसूकरसियारबगाइडजोनि
मासमुरारीनयोमछकछजीवकमकेटिऐसेअ
मतअमतनहीआवेटौहिरमेबेदबिधिछांडो॥
नृपबंसराजमलसुमटबीरामेबडकरतही
योबिलाइसीभगतिबिनाबेकूंवराइ॥६॥मेजो

दरिमुरारि॥२५॥मनिघातनपायोबडेनागि॥पंचरे
बचारिमिलिपेलोफागिटेकबिनचरनोचालेअथ
रचारु॥बिनरसनोगावैपदरसारु॥बिनेंबाजाबजे
बेन॥ऐसेमिरपिदेपिनरबिनानेना॥बिनमाखोमरि
जाइसोड॥बिनजाख्योपापहोइ॥बिनमांगीदीवस्तदे
तायासारिमबाजीजीतिलेत॥२॥जसंदीपकजोरेअथ
डजोति तसंपापपुनिकीनदीहोतिजसंचंदसुरन
दीआदिअंतनसंदासकबीरगावेवसंत॥३॥२०॥
५५७॥राग॥२१॥रागमालीगोडी॥पंडितामनरंजिता
तूंनगतिदेसल्योलाइ॥प्रेमप्रीतिगोपालनजिनर
अोरकारण जाइरटेक॥दामछेपणिकामनाही॥ग्यान
छेपणि धंध॥श्रवणछेपणिसुरतिनाही॥नेनछेपणि
अंध॥१॥जाकेनाभिपदमसउदितब्रह्मा॥चरणगंग
तरंगरे॥कहेकबीरहरिभगतिबांछ॥जगतगुरगोबि
दरे॥२॥बिश्नध्यानसनानकरिबादरिअंगनछाड़ि
साचबिनासोफसिनदीकोईग्यानदृष्टैजोइरटेक
जंजालमाहेंजीवराषेसुधिनहीसरीर॥अभिअंतरि
भेदनहीकोइबाहरिन्हावेनीर॥१॥निहकर्मनदीग्यान
जल॥सुनिमंडलमांहि॥अवधूजोगीआतमा॥पोसंज
मन्हाहि॥२॥इलापिंगलासुषमना पछिमगंगबालि
॥कहेकबीरकुसमलझडे॥कोइमांहिलोअंगपषा
लि॥३॥२॥नजिनारदादिसुकादिबंदित॥चरनपंक
जभामनी॥भजिभजसिभूषनपीयमनोहरदेवदेव
सिरोमनी॥टेक॥बुधिनाभिचंदनचरचिता॥तनरिदामं
दरभीतरा॥रामराजसनेनबानी॥सुजानसुंदरसुंदरा॥१॥
बहुपापपर्वतछेदनां॥भोपापडुरतनिवारणं॥कहेक
बीरगोबिंदभजिपरमानंदबंदितकारणं॥२॥३॥रामरस
कडवाबैतातेंजरसमचाष्याजाइ॥टेक॥अतिकडवाबा
बायपा॥काकेपटसमाइ॥थोडोथोडोसाधसाकोईअम
लीहोइसघाइ॥सूधसदीगूंगनया॥चाषतहीमरिजा
इ॥कहेकबीरतासमक्॥बलेडिकालनदीषाइ॥१॥४
॥५५७॥राग॥२२॥रागकल्याण॥अैसेंमनलाइलेराम
मरसनो॥कपटनगतिकीजेकोनगुनो॥टेक॥ज्यूंमृगना
देबेधीआयिपिंडपरेवाकोध्याननजाइ॥ज्यूंजलमीन

संत घटै कबहू नांहि मूल नडाल पहोप फल नांही
नेवर बिलसे बेलाविटै नहत्त बिन ऊं नमो मिलि नबा
री अधन धैंकी क्यारी थहां काय कुपतहां पहूं चावे
सो माल णि पीवू प्यारी १ पांच बिरष कुं धास सेआ प
कुपवास मनो ज्ञागी अकलि मालणी सुमति हाव डी
निस दिन ब्योरन लागी २ मन मुष पहोहमा लहो पहराय
बा सवसा या धीरा सुष मति मसूरमैर हू निरमारी यूं
कहै दास कबीरा ३ १५ देषो है षो रंमर की मूल सी
चत माषा तन्न तमूल टेक प्रगट निरंजन घट हो मांहि
ताहि न्हाडि पाषाण जांहि जल पीव पाषाण धोइ मो
आदि अंत पाषाण हो इ अलष निरंजन आवे न
जाइ सब घट मोहि रह्यो समाइ गगन सीस पालप
य सो क्युं संपट मैं समाइ २ जुगन जुगन मेक हो पुक
रि सबदन चीन्हें करतारि कहै कबीर नर की योन
षो ज्ञान टकि मूवो जैसे बन को रोज ३ । १६ ऐसे संत
गुर बेले रुति बसंत परम पुरष जहां साध संत टेक
नहद धुनि तहां बजे बाजवो तीन लोक तें निराज
जहां कोटि किरणि कौ अपार तहां को इ बिरला पा
वै पार १ जहां कोटि हस्त करजोडया हा थ तहां
कोटिक ब्रिछमन वीवे मांथ जहां कोटिक ब्रह्मा पढे
पुरान तहां कोटि महादेव धरै ध्यान २ जहां कोटि सुर
सती करहि राग कोटि इन्द्र तहां गावन लाग मुनि मुनि
सुरगिने न जाइ तहां प्रभु बैठे सहज नाइ ३ जन
रामानंद प्रभु रमताते वि संत गुर सबद बिचारि ले
वि कहै कबीर दया आदि इक नरक निवारणी
वं ता हि ४ । १७ चलि जई ये हो जहां रामदेव सुरन
रि ज्ञा की सकल सेव ब्रह्मा बिछमन देस वीरवि
ती तटि जमनतीर टेक जहां धरणि गगन हो चं
तहां झिलिमिलि झिलि मिलि रा मनूर रैणि दि
हो ब्यां हू धूप ऐसो आत्म अंतरि ततअनूप १
कि हां केवल मैं थरथिर यांन तहां तुम पावसि परम
ग्यान सिवसन का दिक ली इहै सगि रसनां रटि राते
रामरंगि २ दीपक को कअषंड जोति तहां पाप पुनि नहीं
लिपे छोति कहै कबीर तिन कुटी मंजा रि तहां पुरुष बेठे

प्रीति न लागी॥२॥ सब सुख त्यागि न ज्यों अविनासी। गु
रु गोरख त्यो लागी॥ सूरबीर गाढा पग रोप्या। सुरा गा॥४॥
नो त्यागी॥३॥ मनसा बाचा कर्म करमनां कामजी तिबऊ
त्यागी॥ कहै कबीर ऊ दरति तन जि करता। अमर हुवा अप
रागी॥४॥५॥ ऐसे लोग न कूं बहि जां न दे हंसहंसा मिलि
चलो सरै वृ वडुगालां कूं मच्छी घाण दे टेक॥ साषत का ग
करै निति रोला। संत सु नो जिन कोन दे॥ साध गयद रोम र
स माता। जग सूकर स्वान न सु सोन दे॥ जन रहि मोन निरंत
रि वासा। रामनाम निज घ्यान दे॥ कहै कबीर हारि जुनी यो
थो इसा धरहे हि स रांम ले॥५॥६॥ ऐसो घर में झगड़े नारी रैनि
द्यौंस मोकूं जु विनु विलोगे॥ पांच षेटा इक नारी टेक॥ न्या
रा न्यारा न्यो जन मांगे॥ जूवा जूवा स्वाद॥ कसां सु एपं को
कहूं न मानें चालें आप मुरादी॥ घर को टाबर कसो न सां
नें का कूं कहि सम झांनें यो घर छाडि सहज घरि आवे तब
दीन रह सुख पावे॥ कुमति कूं तो करे दुसागणि पांचूं पक
डि चपेडे॥ कहै कबीर सोई गुरु मेरा घर की राडि न बेडे॥६॥
७॥ यों तन बिन सै गा रत्ताई जरि ब्रासन सुम दोझादे दी॥
काय रिकर सब डाढि के॥ काचा कंचन नीर सून रीया बा
की केसी आसा मरनन जी कमती अस्थिर घिरकु तो ब
डी तमासा॥१॥ अब गुमां न तजै जन कोई जब जाइ सु निसम
ने। जि ति मि ति जो ति निरंजन दरसे ब्रह्म लीनो जलि अ
बे॥२॥ कहै कबीर यो अगम पंथ है सो पे चल्यो न जाई॥ नव
गुफा का नेद लहै जब उनलटि का लकूं घाई॥३॥८॥ गुण
अतीत कारिज गुण स्वारथ महरि पची सूं बोल्या या पांच
रतन गलि हार टेक नैंन निकजत ला प्रेमका। सुरति सिंहर
सि रत्ला। सहज भजन करि नांव को सुषमनि सुरति सुह
ग॥१॥ दिगवाटी विरहनि घडी। पार ब्रह्म न रता र कहै कबी
र पीव कूं मिली। छाडि स कल परिवार॥२॥९॥ तिथि चल
णो एक नगर में राम न जन कछू करि ल्यो न लाहु अप
णी अपणी बार मेटि के लंका सी कोट रावण सो राजा मिटि
गयो माटी घर में के रूप पांडों स जब जहां वा थिर न रह्या
संसार में॥१॥ आगे सां इयक डिमंगावे॥ ज्यां बंदे णा दरबार
में कहै कबीर सुणो ना ई सा धो प्यारे ले या अ हंकार में॥२
१०॥ राम जिन बिसरे रे जीया यन्त्र वासे में वो लज्ज बोल्या॥

देतकाजोनिप्रांनतजेविसरैनहीं।वांनिथच्चंगीकीटर
हैसोलाहुकेलीनव्हैगहैजाडुयोमनामनिजहुमृत्तमा
रामसुमरिसुमरिजनउतरेपारहकहैकबीरदासनिकेंदास
अबनहीछाडुंहरिचरननिवास॥५॥१॥राग सारंग॥यह
ठगठगतसकलजगडोले।गवनकरेतबमुषहिनबोले
टेकतूमेरोपुरषाहूंतेरीनारी।तुमचलतेंपाथरतें.भारी।१
बालपनांकेमीतहमारे।हमहिछाडिकतचलेहोहनिना
र।२।हमसूंप्रीतिनकरिरीबोरी।तुमसेकेतेलाएठोरी।३।ह
मकाहूंसेगिगहेनआए।तुमसेगढहमबहुतबसाए।४
माटीकीदेहीपवनसरीरा।तावगसूंजनडरेकबीरा।५।सु
मिरनरामकोनितिकीजे।नमलहरिजससाधसंगतिमिलि
ला।प्रेमसहतरसपीजे।टेक।कूबीमायामोहबिषेरसमो
नतेंत्यागीजे।हृदाकंवलमेंनिसदिनहरिहरि।हकुत्रा
लेबनकीजे।१।तनमनद्योवनमेंनसाबाचा।रामसुमर
पनकीजे।कहैकबीरकछूऔरनजाचे।चरनसरनस
हीजे।२।२।नरगरबसथोरीबातें।मणदसनाजटका
दसगांठी।टेढोटेढोजातें।टेक।जोमतहोरकदहोलेआ
यो।मरतकहारेजातें।दिनाच्यारिकीहैपतिसाहीज्यू
हरियालेपातें।१।राजाहोहगांवदसपाया।टकालाष
दसब्रातें।रावणहोहलंकाकोछत्रपति।छिनमेंगे
योनिष्पातें।२।माईमातपितासुतबंधू।कोईनचले
संगातें।कहैकबीररामभजिप्रांनी।जन्मअमोलिक
जातें।३।३।हरिबिनकोंनगरीबनिवाजे।तिनसूंबज
रबजसे।तिनकरि।जोकछूकरेमछाजे।टेक।जीवतमा
रेमृतजिवावे।बिगडीफेरिसुधारे।रिषकोगर्बहरेसब
देषत।जनकोजसबिस्तारे।१।जलमेंथलथलमेंजल
कीया।नहीकछूकेसारे।नरसंन्यारिकरे।नारदकूं।अजा
मेलकूंतारे।२।मतिकोगर्बकरोकराणीको।करतामनां
बिसारे।कहैकबीरसाहिबसंडेरीए।औरसूंऔरबिचा
रे।३।४।नथरीचूपनएबैरागी।बिरहबिवोगीबनिब
निडोले।सुरतिसबदसेंलागी।टेक।हस्तीघोडागढद
लबादल।पाहकनकडारागी।जोगीहूवादेषिजग
जातो।नग्रउजेणीत्यागी।१।छत्रसिंघासणचंवरढलं
ता।रागरंगबहोरागी।सेजसुषांधारेनारांणीकाहूसे

॥५॥ त्रिमेलोगनकूं

जिनरहिमोनमिरंत

कहैकबीरसोई गुरुसाचा घटकी राहि नबतावै॥३॥

॥बारमैएककलंकासोकोटरावणसोराजामिल

देतकरिजोनि॥प्रानतजे खिसैरेनदी॥बोनि ४ चंगीकीटर
देस्योल॥ इहोलीन चंगके॥जा इरामनामनिजइमृत
रामुमरिसुमरि जनतुतरेपार॥ कहैकबीरदासनिकोदास
अबनहीजाइइरिचरननिवास॥ ५॥ १॥ राग सारंग॥ य
वगवगतसकलजगडोले॥ गवनकरेतबमुखइनबोले
टेकतूमेरोपुरषाहूतेरीनारी॥ तुमचलतेंपाथरसे.नारी॥ १
बालपनोकेमीतहमारे॥ हमहिछाडिकतचलेहो इनिना
रे॥ २॥ हमसूंप्रीतिनकरीबौरी॥ तुमसेकेतेलाएंडोरी॥ हम
मकाहूसंगिगएनआये॥ तुमसेगदहमबहुतबसाये
माटीकीदेहीपवनसरीरा॥ तावगसूंजनडरैकबीरा॥ ४॥ सु
मिरनरामकोनितिकीजे॥ हमलहरिजससाधसंगतिमि
ले॥ प्रेमसहतरसपीजे॥ टेक॥ झूठीमायामोहबिषैरससोम
नतेंत्यागीजे॥ इदाकंवलमेनिसदिनइरिहरिरकुत्रा
लेबनकीजे॥ १॥ तनमनयोवनमनसाबाचा॥ रामसुमर
पनकीजे॥ कहैकबीरकछुऔरनजाचूं॥ चरनसरनसु
षदीजे॥ २॥ २॥ नरगरबसथोरीबातें॥ मणादसनाजटका
दसगांठी॥ टेढीटेढोजातें॥ टेक॥ कोमतहीरकहालेआ
यो॥ मरतकहालेजातें॥ दिनाचारिकीहपतिसाहीजू
हिरियालेपातें॥ १॥ राजाहो इगांवदसपायो॥ टकालाष
दसबातें॥ रावणहोइलंकाकोछत्रपति छिनमेंग
योनिघातें॥ २॥ माईमातपितासुतबंधू॥ कोईनचले
संगातें॥ कहैकबीररामभजिप्रानी॥ जन्मअमोलिक
जातें॥ ३॥ ३॥ हरिबिनकौनगरीबनिवाजे॥ तिनसूंबज
रबजमसूं॥ तिनकी॥ जोकछूकरैसोछाजे॥ टेक॥ जीवतमा
रेमृतजिवावे॥ बिगडीफेरसुधावे॥ रिषकोगर्बदूरैसब
देषता॥ जलकोजसबिस्तारे॥ १॥ जलमेंथलथलमेंजल
कीया॥ नदीकहूकेसारे॥ नरसूंनारिकरैनारदकूं॥ अज्ञा
मेलकूं तारे॥ २॥ मतिकोगर्बकरीकरणीको॥ करतामन
बिसारे॥ कहैकबीरसाहिबसूंडरीए॥ औरसूंऔर बिचा
रे॥ ३॥ ४॥ नर्थरीनूपनाबैरागी॥ बिरहलिवलागीबनिब
निडोलै सुरतिसबदसंलागी॥ टेक॥ हस्तीघोडागरदद
लबादलमाइककनकजरागी॥ जोगीहूवादेषिजग
जाती नगरजैणीत्यागी॥ १॥ छत्रसिंघासणचंवरढलं
ता रागरंगबहोरागी॥ सेजसुषांधारेनारीणी॥ काहूसे

रलोई मोसो तुम तें रादास नि से हि रकस्ता करूं जन ची
न्हकु नमो ही जस मुष तुम जे हदे सो हि ।३। जब सेवग
के छूटि बिकारा । तब साहिब के सच्या पारा ।४। जुगति
जो नि जे रमी ये रांम । कहै कबीर तब ही सुष का धांमो
।५।३। धनि सो घरी महूरत दिनां । जब गृह आये हरि के
जनां ।। टेक ।। दरसन करत सकल मैं सा नठया नैनां का पटल
रहे गया ।। सबद सुनत संसा सब छूटा । श्रवण का पा
ट बंस सा छूटा ।। परसत घाट फेर करि घड़्या । काया का क
रम सकल झड़ि पड़्या ।। रकहै कबीर सेत नर आया ।
सकल सिरोमणि घट मैं पाया ।। २ ।। ६ ।। रांम का भेद मैं बे
ले ना ई रांम जि तदे षं तितु चांम ही चांम ।। टेक ।। चांम क
जीणा । चांम का घोडा । चांम ही चढि करि दीया अहेडा
।। १ ।। चांम का कैटा चांम का बाजा । चांम की नगरी चांम का
राजा ।। २ ।। चांम का बछड़ा चांम की गाइ । चांम ही चूंघै र
चांम चराइ ।। ३ ।। चांम का हस्ती चांम का मीर । चांम का
नगता दास कबीर ।। ४ ।। ७ ।। पापी के मुष रांम न निकसै
पारसा मांहि केवल कपू बिगसै । टेक ।। बारू मैं कैसे निक
से तेल । ऐसा है पापी का षेल ।। १ ।। सूकर अबधिन बाडे
बांणि । ऐसी तिण पापी की जाणि ।। २ ।। पापी आवै पापी ज
इ लष चौरासी मैं गोता षाइ ।। ३ ।। कहै कबीर बाकूं ह
रन सुहाइ कालामुष करि दे यब राइ ।। ४ ।। ८ ।। ५ ।। पद
राग ।। २ ।। राग धनाश्री ।। जपि जपि रे जीयरा गोबिं
दो हित चित परमांनद रो ।। बिरही जन को बाल हो स
ब सुष आनंद कंद रो ।। टेक ।। धन धन झीषत तन गयो सो
न मिल्यो न आइ । जे मूवन फूली मालची जनम अब
था जाइ ।। १ ।। प्राणी प्रीति न कीजीये इहि झूठे संसारि
धूंवां केरा धौलहर जातन लागै बारि ।। २ ।। माटी केरा
तला काहे गरब कराइ । दिवस चारि को पेषनो फि
र माटी मिलि जाइ ।। ३ ।। कामी राम न भावई भावै बिषै बि
कारौ । लोहनाव पाहन भरी बूडत नाही बारौ ।। ४ ।।
मन मूवां न मरि सक्या ना हरि भजि उतर्‍या पार । मे क
रो कंचन गहि रह्यो काच गह्यो संसार ।। ५ ।। २ ।। न का
रन कहूं राम बिना सरीर धरे की रहै

वादहि आइरष्या कीया टेक॥ मरु तांबे बिमो जनितिक
रते सो लहु सदे ससदे ली यां॥ छिनमें छाडि दई उकरा
ई॥ देदे धोहन कासी यां॥ जब रूप पथ चले गो प्रानी संग
न साथी को लीया॥ कहे कबीर रघुनाथ न जोरा तनमन
अर्पन करि दीया॥४॥२॥ मन नृपति होइ न जिन रहरी॥
छाडि जंजाल जंजाल पडे मति प्रवृति का फंध परहरी
टेक॥ दुख पद्रहि करे मति करसण॥ यार फकीरी फिरि
करी॥ बिनां बमेक न धमति पहरै पहरै तो अजरा जरी
१॥ घटदरसण कूं सीष सबद दे घ्यान गुरु कही यो घरी॥ का
चे जो गरो गम तिरां चो॥ ता तें तु मरही यो घरी॥२॥ निसबासु
र जम जोर करत है॥ तजि गुमान गाफिल डरी॥ सील संतो
ष दया दिल आप डिं अलष अंतर में न चरी॥३॥ जो सागर
बूडे मति मूरिष तजि न छांडे हरि न जिति री॥ कहे कबी
र पीडत जि पां चूं कू जोगी जी वत मरी॥४॥३॥५५॥
राग॥२४॥ राग भैरव॥ जतन बिन मृघ षेत उजारे टारे ट
रत नहीं निसबासुर बिडरत नहीं बिडारे॥टेक॥ अपने-
नेरस के लोभी चरत न्यारे न्यारे॥ अति अभिमान बदन
ही काहू बहोत लोक पचि हारे॥१॥ बुधि मेरी कृषी गुर मेरो
बिझुका आषर दोइ रखवारे॥ कहे कबीर अब षांन न
दे हूं बरियां न ली संभारे॥२॥१॥ हरि गुन सुमरि रे प्रानी ज
तन करत पतन हूं जैहे भावे जो पि मजाना॥टेक॥ बोल
रनी रहे धूं के से कोसु पनें सच पावे॥ पाके पात परत तन
बरते उलटि न तरुबर आवे॥१॥ जल थल जीव डहके य
माया कोई जन उबरन पावे॥ राम अधार कहत हैं जु
गि जुगि दास कबीरा गावे॥२॥२॥५५॥२५॥ राग गजट॥ रो
क को मन निमिलां वनि मेला॥ बहोत कनी ति करे फुर
माइसि दे असवार अकेला टेक॥ जोर कटक जु घेरत
कुंदिस करत बफ़े लिक फ़ेला॥ जोर कटक गढ तोरि
पति साही षेल चल्यो यक षेला॥१॥ सब ही कूच मुकाम
जो गय शिक हूऐक घंस षटांनां॥ आसन रा षि बिन्दु ति
टे॥ कुनि तेम डी च डांनो॥२॥ या जोगी या की जुगति जो जो
नें सो सत गुर का चेला॥ कहे कबीर में तिस बंदा॥ जिन यकु
नरम पछेला॥३॥१॥ रागोंड॥ देह रि अधिक क बन तेरी
सेवा सो समझ नाइक हो मो हिदेवा टेक॥ जो जो ऊपमा देन

वरमंजनकरिलै।त्रिवेणी निजघाट अनहद धुनि सु
नि पोचूं मोहे घूले पोन कपाट॥२॥ विमनदीयां विन
नावडी गुरअक्षरतौ पार॥ विनसदीयां अपरिलै राषे
घट नीतरि निजधारि चंदन सारवौं सनसीर जनी नदी
विद्यानसी वेदसार कबीर जो तसां गुरमुष कोई बिर
ला पावे नेद॥४॥दा॥भायाबादरतोरे सरिवं सादरसे नां दिवे
दों विनां कमोदनी डप पावे जरलमां रिटे कपरि घरानि
ति कुंबटे गरजे श्रुति अदे कारा तन त्रिटोतो मपिवे
चीसद सं दिसवमकेमि॥

विकारता पत्तनिना जे। जुमतिसकल सूरी २ म

॥लिजगां पायो सो जीदे

रो कछिनो।झूठे सुष के कारनि प्रांनी।त्रपे चकरत घनो
।२।तात मात सब लोक कुटंब में फूल्यो फिरत मनो।३
कहै कबीर राम भजि बौरे।छाडि सकल भ्रम नो।२४
नरप छिता कुरो ग्रंथ।चेति देषि नर जमपुरि जैहै क्यूं
बिसरे गोबिंदा टेक।गर्भ कुंड तूं जब नर बसता उरध
ध्यान ल्यो लाया।उरध ध्यान मृत मंडलि आया नरहरि
नांव भुलाया।१।बाल बिनोद छ कुरस भीनां।छिन छि
न मोह बियापै।बिष अमृत पहचांनन लागो पांच
भांति रस चाषै।२।तरण तेज पर त्रिया मुष जोवै सर अ
प सर नहीं जानैं।अति उदमाद महामद मातो पाप पु
निन पिछांनैं।३।डर केस कुसम भये धौला सेत पलटि
गई बांनी।गया क्रोध मन भया जु पावस कांम पियास
मंदांनी।४।तूटी गांठि दया धरम उपज्या काया कंवल कु
मलांनां।मरती बेर बिसूरन लागो फिरि पीछे पछितां
नां।५।कहै कबीर सुन हु रे संतो धन माया कछू संग न ग
या।आई तलब गोपाल राइ की धरती सैंन भया।६।२
लोका तुम ही मति के भोरा।जो कासी तन तजै कबीर
तौ रामहि कहा निहोरा।टेक।तब हम वैसे अब हम ऐसे
इहै जनम का लाहा।ज्यूं जल मैं जल पैसि निकसै
यूं ढुलि मिल्या जुलाहा।१।राम भगति परि जाको हित चि
त ताकौ अचिरज काहा।गुर प्रसाद साध की संगति ज
ग जीते जाइ जुलाहा।२।कहै कबीर सुनहु रे संतो भ्रमि
परै जिन कोई।जस कासी तस मगहर ऊसर हिरदै रांम
सति होई।३।४।बरण बिसारी ये धरि निज जन गुण
सुमत ही सामो मिटे भय जे बूझ गियांन टेक।
पद बिन दीरा चीरा तन बिन सतां अंग अबिना
सी सू प्रीति कि रिज्यूं कब कुन छाडे संग।१।धर्या घाट
सो बिनसिहै अघट न घटे लिगार लाहि सूं ल्यो ला
ई।जो जन लगत तेरो पार तीन गुनां पिछो कहै सो ईस
रम तत सार।कहै कबीर ता कूं जो ज्यूं मन के मिटे बि
कार।३।४।सिर परि राषी ये मति गुर सगु देव सुमिरण
ध्यान आरती पूजा सन मुष कहि रह्यो सेव टेक।अजपा
जाप जपो बिन जिभ्या मूल मंत्र प्रारा।अ स्थिर षि
रह्म मर आसण परि लागी ये जस मो।५।मांन सरो

नोबेलत्तदी बोये ज्यांनी जोबन जारथी मनमस्तक
सोनदी मांनें मांऊ गिणातनदी नोर ॥ प्रबतो कोमको
धमदमातासोबेचोटपतंगजेनरांमनांमनदी जांनें॥
तेनरनएनुजांऊँमनांमकी गारी दीज्यो गुरको बच
न बिचारि साधसंग तिमिलिषलीये हो कबकुंन आ
वे सारि॥४॥पांन ध्यांनका बाजाबाजे नीत मरलोबध
झ केसरि चंदन लावे कहो जुगि जुगि रंग नजाइ पांचो
रासी पिचकारी छूटे कीजे के नउपाड कहेकबीरस
मजि मन मे यफगावा परम पद पाइ॥ छाउ बूल्मानंदसर
वरफूलीये सो जसोजां मण मरणनेनो दिटेक ब्रह्म
सरोवर मोती नीपजे जाकामोलन सोल सो मोती हर
रजन हंस चुगि है पांन की चंच टोल ॥१॥ घण मोती
घणमांणिक निपजे रतन पदार्थ होर सो मोती बिर
ला जन परषि है कोड्यां मे एक बजीर ॥ अनंत को टिज
ती पेछी फूलें हरि दरीयाकी धार कंते सिव मन का दि
क केतो गोरषअनंत अपार ॥२॥ मन पवनां दोनें करिमे
ला मूलचक्र गहिबो षिण्ड त्रिबेसी बिषि कार पीवरि जाय
लागि गई ब्रह्म समाधि धन्न बेनी जिग मिग जोया रा
अनहद घुरें निसांन षीयाडी केरंग राती प्रतनां बिसरी
षांन रुपांन पद्म सो पीव पीव सो हमदी मिलि गए आ
दि अनादि दासकबीर समानो सीव मे मिटि गई जीव
उपाधि हो ॥४॥ षिल्ले तेरी माया मोहनी है जिन माया जे
रकीयो संसार टेक पृथम फागडोरी को डांडो बरण च
ले बृजरां धूपदीप सीतालें आरेक घब्बर घमालो जा
री चंद बदनी मृघलो चनी माया बेंदल्यो बन्योर
सालमाया षेलन नीसरी हो बाले हो गजगाजें चाल
२ छारकत धोछा प्रेम सुन रिपिचकारी गात सेनकस
नदनरलें न करत है औरां की कितीएक बात २ सुरन
र मुनि जन एकनां ऐहे तिकन केली आप मनमुषको
ईन बाह रैहे सो घेरलीया यक धी प४ राती चुसंग चं
दरी हो सुंदर रवोटेता सिया का नंद बुद रूपकी होवे
॥ पांन झिडोज बरो पथ्यनरे जन्

गरमें डूबत राष्या करगहि का हिली या ऐसी ओर कों
नपेषि है गुर मैं सा चदीया करम नरम गुरहरि निवारे
मृतक जीव जीया थमें घ्या कीट स्युगुर मेरो भृंगी कीट
सूं भृंग कीया कहै कबीर गुरदेव दयाकरि सरीरा घि
लीया ॥ ३॥ २०॥ ५३०॥ राग॥ ६॥ राग काफी॥ मेरे कों
न बसें गा ता नो कोंन तें में गा में कासी का बासी मैं हरि नो
वगपा मी टेकबो म्हन बनीयो जायपुकारे मा हरि सिकंदर
पासी॥ मातार हस्ती रा श्री निरफु काया रा षिलीया अविना
सी २ राजा जां नें दरजा जों नें जाति कबीर जुलाहा श्रान
देव की सेवा नां ही राम भजन का स्वाद ३ ऐसा तो ना तर
नर प्रांनी जा मन मरन नैं न्हले ३ मदरीया वतिरपल
हां में सुषसा गर मैं झूले र स्यो की स्वगानि देह किन देषी
तालवहन दीजे आड टेढी नली च रले तो फेर अपूठी
लीजे ४ चंद सूरकी घूंटी गाडी सुषमनि पूरया तां नां वि
ऊ ट्सिंगम चरषा चास्या अब केमन वा मां नो ५ निरति
सुरतिकी नली चलाई राम नाम का धागा पंच तत ले
बनि बा बेवा प्रांन धनी सूंलागा ६ घोडे चढि में तां नां त
नीयो ऊंट चढि में पाई हस्ती चढि में रंजा बनी या अ
जब सा हिबी आई ७ सेवा साधै राम नाम का कीज्यो सु
रति लगाई रामानंद प्रसाद तें जन कबीर चलि जा
ई ८॥ ३॥ अबिनासी दुल्है कब मिलेहो भक्तो सबस
तन के प्रतिपाल टेक जल उपनी जल सूं नहीं नेहा
रटत पियास पियास ऐसे ही बिरहनि मं घ जोवे राम तु
म्हारी आस १ चाछो गेह नेह लगाया तुम सूं भई चल
ल्यो लीन तुम बिन जी वडो यूं तलफत है जैसे हो ज
ल बिन मीन २ दयूंसन्न न्हरे पीन ही निद्रा गृह अगनो
न सुहाइ मेझडीयो बेर निज नई मोकूं जागत रैनि बि
हाइ ३ मैं तो तुम्हारी दासी हो प्रभु जी तुम हमारे भर
तार दीन दयाल दया करि आवो सारि व सिरजनहा
र ४ अब हम प्रांन तजत हैं प्रभु जी केअपणी करि ले
हु दास कबीर बिरहअति बाढ्यो हम ही कूं दरसण दे
हु ५॥ ४॥ ऐसें हरि संगि होरी षेलीयें हो जैसें षेलें ष्रहत्त
ल्ला दटेक सनक सनंदन नारद षेलें षेलें सेस महेसा कि
लकूं छाडि बनी ध्याए षेलें कीयो है लंकनरेस १ बालप

बिना णो बहोत बेरं मुख्या मुसारी । अब जाइन यासयी ॥ तें
हूर जुगि जुगि यूंही चाली आई तें क्रिसी जुलाहारो
डी तीन लोक का कहूं छि पाणी तें कादे पा थोडा ७ ती
संदी वो माया में मति मोडी अलप अलेष नं
मेरी आयाता तें देसी थोडी ८ ब्रह्मा बिश्न महेस में जाय
थारा मरमन पाया तेरी तुरकन जारिक्या कंची मेरो नाव
= प्रबल माया ए केसा छि संगद मरहता पणि तेरांम
प्रताप न जाणी कहे कबीर काल तें छूटा मारबे का गोबि
नी ॥२०॥ ३ माया जुगवगणी में जाणी त्रिगुन पासि ली
करडो रे बोलें मधुरी बाणी टिक जोगी के जोगणी हें
राजा के घरि राणी पंडा के मूरति होइ बैठी तीरथ
जाइ पाणी रुके मां के कंवलादे होइ बैठी बुह्मा के ब्रह्मा
ई स्वर के गौरां दे होइ बैठी इन्द्र के इन्द्राणी ॥२ जगतां के
जगतणि होइ बैठी तुरकां के तुरकाणी लष चोरासी चु
णि चुणि षाया तो हूं किन हून पिछांणी ३ काहू के हीं
रा होइ बैठी काहू के कोडी काणी दास कबीर साहिब का
जिन के साथि बिकाणी ॥४॥ ४ पंपान की गूदडी मूरख
का धागा सब्द की सुई लें सांदो ण लागा टेक पिमां की
ली सति का डूका धीरज डंड जे जालचू का १ से तो बप
अनहद नादो नेक ह भि जोगी बाद बिबादो २ मद जि अ
धारी मनक मिमुद्रा पिंड न पडे जे साधे मिद्रा ३ अलप अ
हारी जुगति जोगोटा आसन अलष गुरु सूं नेटा ॥४ तत
थोवती बिचार कीनडो णा ऐसी गूदडी तुम कहां ते ।
पीपु फिमि कभि कूकिंचा स्माखां नासी सबद का थ्यार ६
समझि मूल मां हीं द आपस गुहि निरंतर मेला कहे क
बीर यकुल तअ केला ६ ॥५ दे कल दे थिलें ता मां हीं सासि र
सही निरंजन देव रूप न रेष बरयान ही जाके अैसा अ
लप अनेवर टेक बिल सी टां की देवल घडीया ता में देव
नि जंगी अकल सरूपी कल्यो न जाई छिन छिन में व
हो रंगी १ त्रिगुण तेल करि दिल दी पग ब्रह्म अगनि पर
जारी अैल घा सि में नयान जाली लागी अषंड मंडलां तें
तारी २ प्रेम सरोवर तामें सा पडि य हि बिबि छिन म[illegible]
ई ध्यान सरूपी पहरि थोवती बिसला चान्है
तक पि चंदन तरली करि तुलसी नाव

थे गुरुगम रहेली गुरुबसें उलटि चली मुसकाइ चबुस्वामं
केरथाइके हे दोकुंपकड आज्ञा मुखपणि फगवा मांगि
केहे बहो डिदीया छिटकाइ ॥ माणिमहिइकोमली
योमाया वो छिदीया गुडाइ गोरष आगेन इचलीहो
उलटिरलागी पाइ ॥ जेता थातेतालीया माया घूघ
टमांहि समोह याकीकाजरे रषमांहो अदगगयाज
नकोइ ॥ इइ सुकचिवाडो नयो सोचनलललल
जाइ ॥ इरि अविनासी रूपकीहे दासकबीरबलि
जाइ ॥ २२ ॥ ५ ॥ ५७५ ॥ राग ॥ १७ ॥ रागललितं गउडी ॥ रा
मतेरी किस बिधि नगति कमोकुं आवपरूपचनके
धंधेजा सूरइपान पांकुं टेकयोमनमस्तकहोनही
मोनै क्यूं करि लैसमझाकुं उडत फिरे पंछीकीनाई ॥
किसविधघरमेलयोकुं ॥ पांचांमांहि पचीसमताहो र
कसकिसकूं समझाकुं ताके बीचि पदोरीयाबेगाता
थे मिलपाउनपांकु सुगुन नगुन कछुन जांनू किस
बिधिरामरिझाकुं कहे कबीर रामके सरणि हरबिल
षिगुणगांकु ॥ ३ ॥ नागेजाके साधपांकुणि आवेद्वारे
रचिहे कथा कीरतना दिनिमिलि मंगलगावें टेक प्रथ
म लान चरणाइ म्रतको महाप्रसाद की आसाजाकूं
जोग जिगतपकीजे सो संतन के पासा ॥ २ महाप्रसाद दे
वनकूं डुलन संतसदाही पोही कहै कबीर हरि नग
ति बछल हे सो संतन के मांही ॥ ३ ॥ माया रकु साध
संगी नी वार वार तो हि कहि समझाकुं मोनें मिलीया
मोटा हांनी टेक ब्रांनीन दीस कलसू कंचीज्यों हनवे
नदी सूनी चा कहे कामणि किसे मुषिबोलो मुकि सूं
ल्योदासी चा ॥ ३ ॥ गहली नई बाइ तो दिसलागी बढ़ोतन
ई व्यो नी मैं कबीर अबगति काबदा लुकि क्या नेटेगे
बांनी ॥ २ ॥ म्हारी सेवा सुरनर बेवा ब्रह्मा बिष्णुमहेसा
लूर जुलाहा कोणि बिटमाये तीनें कोणि दीयान पदे
सा ॥ ३ ॥ अलष मोनें उपदेस जुदीया म्हारा सतगुरु मांस
वोया जिन जिनसंग कीयो हूती तोसूं ते तो पकडि र
बोया ॥ ४ ॥ रकूं सकल की माता कहीयूं रावरा नावोलि
गांणि देवडुनी म्हारा पाव जु परसे तूं क्या नयों गांणि
॥ ५ ॥ दया नई दिलमांहीस मज्या में थारा जांणि पांजो णि

स्याको श्रीरहेकाया सुन्दरी रेसंगा मेंबहोत सुषकीन्हो ।१
नति प्रतिम लिमलिखी योसन ची या चार दोहजे दे
तबनांवनखेगा कोई १ ब्रह्मा बिष्णु महेस आदि दे
ससहस मुष जो ई जिन जिनदेहधरी तिनबनमें
थिरनहीरहीया कोई रूपापपुनिमरेच लेसंगाती स
मझि देषनरलोई जनकबीर प्रभु पूरणकी गति बू
झै बिरला कोई ॥ २ ॥ नावमैरीनेकें चलणां लागी
औथी मेरू कछू नदीव्यापे कोई साधचढ्या बडभागी
टेकागरेजाइ तो डरकछू नांही नदी नीलरकासेसा
उलटिपडे तो मारन बेका याका अजब तमासा १
औसरिपडे तो प्रबलतबो में कछून लागे नारी धनिस
तगुरु जिहसौं जबनाई ताकी मैं बलिहारी ॥२॥ रोम
राइ डिगमगातीरा पीऔं हकमकडीयालाया गुणल
वसकी साजतिनांही श्री सासा जबनाया रूकहेक
बीससीस बिनथरले सो यासों जबषोने याबोहिथ की
अकथकहाणी कोई बिरलापैवट जानैध ॥ ३ ॥ सतगु
रु शरण अजबव्याया एक मटी जाके दस दरवाजा
सर्व तैंतिलपटाया टेकप्रहरणि प्राणि आगणि पटकी
घणवा पांचलगाया सुरति संडासी दरमदू थोडे सें अ
कलि अंकडालाया रेसासन मासकी नालि बणाई
उन्हटा पवनचलाया रे करम काट का कोइला ऊक्या
कुंरमकीट जलाया नम नलोहा ज्यूंयसि बिधिलाया
लाचलेवनि श्रायासील मा चकाचोगकीया तामें
आणि बुझाया धतो लनमो लहल कान ही जारी श्रे
सारतननियायाक्टेकबीरखलि बलिसतगुरुकी
लो साकेपारसलाया ४॥ १ नटसोहना चिरमनमेरा
गुनरीके गासाद्विब तेराटेकायान का ढोलबजा इरे
णि दिन सबद सुणेसबकोई धारहस्थ के तन उपर
कोपे जमके सापिन होई १ दमतिलक [illegible]
चौसचढि जासूहो इ देनास प्रेमप्रमान [illegible]
चिसनामें ज्यूंरी के गासादिबतेरा २ जे [illegible]
गुरुनाइक देखौ वान बुलाई मगातिमु [illegible]

...बामारहसनमुष रतीन होहि हजाथ ना
दसे रहत अगोचर सुरनरतें गतिन्यारी मुनिरिषत्र
ते कू नजाणो गुरमुष लेह बिचारी मत्त गुर मिल्य
तजा वह बतायामि ट्रा करम का पासा मूवा पीछे जु
रजाता जीवतकरि लेबासा ६ कहै कबीर सुणो ना
श्रीप्रमततस्यों लाइ यापद कूं कोइ बिरला बूझे न
आनंद होजाइ ७ ग्या पीयासूं नपर चो फूली डोलेन
प तिव्रता को कसाहिब को बिन चाणी दसां सूं बोलेट
अपणा पीव संग है अबोले अंतरि गो विजाण संू षोले
द रिहीरो घट मांहि बिसा ल्यो रतन अमोलिक करतेंडा
ल्यो ८ कहै कबीर धन नई दिवानी ताते पी याके मनिन
ही मांनी ९ ॥ ७ ॥ साधो अब गति की गति न्यारी एक निवारि
करे राज मरल्सूप करै निष्पारी टेक ई परसा ल जहर फल
लागे बावन चंदन फूले मधुसि का रचे टेवन मांही सिंघ
समंद में फूले ए रंड रूष करै मलिया गर चढ़ि सफूटे
बासा अनंत कोटि ब्रह्मंड षंड का देषे अधन मासा थपि
गलो मेर सुमेर तलेथे त्रिभुवन मुक्ता डोले गूंगा ग्यांन
प्रग्यान प्रकासे अबिरल बाणी बोले इंद्र राजा कूं
पयाल पठावै सेस प्रभु गाप रिराजे कहै कबीर रामराजे
सराजो कछू करे सुछाजे ॥ ८ ॥ मनरे प्रम तत्त न हीपा
या घट भीतरि हरि नांवस्तु का यह टेक तिलक करै गलि
माला झुलावे फिरि फिरि सेल इनी समझावे अंतरि
र कासा को थका अंधा ओरां सूं सांध ददे आपपडे फंधा
१ कहै कबीर राम रस पीजै पांच चोर कूं नितिसूं षदी जे
॥ ९ ॥ जन जागे के बिषीयारे लो इकेको दास बंदगी दे
१ के जागे बालक की माता प्रति करही बालक डमीय
हो २ के जागे जंगल को जोगी जाके ग्यांन अषाडे स
३ के जागे चकवो चकवी जाके रैनि बिछा यह होइ
४ के जागे तसकर पर धन परिहरि वो जन्म जन्म की षोइ
कहै कबीर जन जागा पारी चहीर पारब्रह्म को दरसण
हइ ॥ १० चल तप्राण कहूं रोइ री काया तुम तो रहमा
वन को योघर कूं हम कूं चलना बिगोई प्रमहंस चलत
जान यूं रोइ टेक हे सकहे सुनि बौरी काया हम तुम संगन
होई तुम सासो बती में कोटिक जाइ हा मेरे संगन चा
कैजोगि परजाकै राजा मतिकही परजा दुबीया होइ ? ...

गुरु की तन की सपत्ति कुकीनी॥४२०॥ जन जन बिन
बेल बिरानो है रे॥ न्यारि पाव दोइ सींग गूंग मुष तब
के सें गुन गहु है टेक॥ न्यारि पहु फिरत जंगल मे सं
नन दूनो है॥ कुवत बेवत नी गाल जि दो तव कामु
ड रहे है रे॥ तूटें कंधा फूटे नकवा कोइ कौनु सिषे है॥
कहै कबीर राम न जि प्रांनी पी सधू णि पछि सय है
४॥२१ मन रे प्रेम सी हेती करी ये॥ तांतें कारन दु कारन ड
री॥टेक धीरज धरती बल दव से घा पा ज्यो प्रेम बण
या जोडा॥ जुगति करि हली या जो स्या सा चा सीर कर
या॥ झाडि पिछोडि हरि करि प्रांनी॥ निज कण बीज ज
बास्या॥ चेतन पुरष राषि ष वास्या॥ ज्यूं निपज्या षेत
न षाया॥ मन सा मेद बिचार ने राषी॥ पांचा बलदां
नी॥ बावसु बाव तूं तऊ डि ज्या॥ कण पति घर मे आ
ई॥ धाडा जरि गो हांका स्या या को गाने खि वा ना गा॥
कबीर के दूलीनो निधि निपजी॥ घर को टाटा ना गा ध॥
२३ निंदक जिन मरो मेरो निंदा करेगो कोण टेक नींद
क नें सा बासि है जरी दू थाई मां हि राम नांम बिसरा
फिरे पणि निंदा बिसरे लां हि॥ नीदक बारव सा ई थे
श्रोंग नि मरी व धाइ॥ बिन पांनी बिन साबूं वां मैरी मै
ल धोइ धोइ जाइ॥ ओबी धावे लूंगडा निंदक धोवे मे
ल॥ बोझ द मारो रे चरे ज्यूं बनिज्ञार को बेल २ निंदा
हमारी सो करे मीत हमारा सोइ॥ बिन पांनी बिन साबू
वां मेरी मल सारा ले धोइ॥ ३ जरी वरो गिरदी परोज्यूं पां
णी॥ जूण कबीरा के सेरांम हूपा णि नीदक ते रे कोण॥ में
पा॥२४॥पणण॥ राग॥ ३०॥ राग कनडो॥ रांम न ज्ञो पि
जर कासू वा अज कुबन कि पडी न ही अधा धंधो क
रत सकल जग मूंवा टेक घडि मुत हार कंवजरा की
या॥ निहचे साच ग्रज हूं न लि हूवा श्रति काल रिप
हो तमें जारी॥ बाडि चलो जे मैं षेलत जूवा स्यासा
लेज पंच पणिहारी॥ नीर निकहिं नी वजन लकूवा क
है कबीर जो हरि जस गावे ता के मुषि हरि रमत कूवा
॥२५॥ जास्यंया जग की चतुराई॥ रांम न ज्ञ न न ही करत

२

नौनिधि द्वैगी चेरी॥२४॥लाइलै जुगी या गूदडी
धागा त्रन जेडोर मूलते सांगा॥टेक॥निस बासुरह
करना इलै डोरा यदि विधि रहि बो मुसेन चौरा॥१॥यदि
पहरै जे जोगी या जोगी॥कहै कबीर काल न जोगी॥२॥
सो सब प्रेम दी को कारन॥बिनां हरिपद चरन सुमिरन
बिना कसाबे॥२त्र आरन टेव॥जोग जिग जप तप बूत सं
जम करतासमा धिल गारो॥श्री नवंत नांव रत नां ही बू
या की ऐसब जाऐ॥१॥कहा नयो जे चकुं घर मांन्यो॥कहा
मांन्यो चकुं देस॥कहा न यो जे तीरथ न्हान्यो॥न्हा
गारे के स॥२॥कहा नयो जे बेद पठ्यो॥छबि कहा जत
न बकु कीन्हो॥कहै कबीर सो मानही छूटा॥निज स
रूप बिन चीन्हो॥३॥२५॥मन रे क्या कहाये कानां ही
जे योम घ अधिक कहरु दे॥ती अति पडे न मांही॥टेक
बेद कतेब करणा पुरानं॥निगम ही आगम बिचारयो॥थ
हर थार हथार नहीं आवे॥केई पचि पचि हारया॥१॥कहै
कबीर मन मन हि समांना सब परकार अकेला॥ऐके सं
हजा दिब जो बेला सगुरु मैं चेला॥३॥२६॥चलि रे मन बैं
तीरथ जईये॥त्रिबेणी के संजम न्हईये॥टेक॥अध उध
के मधि निवासा॥जहां अगिणत सूरज प्रकासा॥१॥त
हां अनहद सबद ज्वे रुणकारा॥सोहं सो हं सो हं न्हा
रा॥२॥च्यारि सीस जाके च्यारि ही बदनां॥अष्ट भुजा ले
भ दबुदक घनां॥कहै कबीर जहां म हल हमारा॥जल
कत जोति अषंड धारा॥३॥२७॥राम कहत सब जाति कों
न जाई॥काको जैरे कौन पछिताई॥टेक॥कौ जैरे कौ
न केहां न नर बिधि षेले सारंग प्रान॥१॥आप ही पावक
आपही पवनां॥जारे गारी मत्तो राषे गा कवनां॥१॥कहै
कबीर बेअदर नाथ द्वै मारी मतो से गरा बि॥३॥२८॥
मैं डा पीव मिल्या बूझ ग्यांनी॥सब मैं ब्यापक सब
की जांनें ऐसा अंतर जांमी॥टेक॥सहज सुन्नाइ सनेह
की चोरसो मन ही मन लु न यांनी॥सीलसंतोष पहरि
दो ऊ कांक ए॥होई ही मगन दिवांनी॥१॥कोध जलाइ की
या सब काजल चट तत प्रेम रस वांनी॥ऐसा रूप धरे
जब बिरह नि तब पीव के मन मांनी॥२॥ऐसा पीव मैं
कब हु न देष्या देषत नैन लुभानी॥कहै कबीर सत

रदीयाबुफानो॥२॥धु॥सोइउघगोबिंदमेटोमेरा॥ग्र
गनिरहनग्ररुग्रनलसेराटेकमायाबिनसीबरे
बिधिवाराकेगडिहेकेजलिहेंचारारलषचोरा
सीत्रमित्रमित्राबोसकलफिरोसुषकहलपा
योरग्रावागवनकामेटोडीरातुम्हाराध्यालमरन
नयामोरारकहेकबीरहरियारीबिचारोग्रबमे
रोग्रावागवनलिवारो४॥७॥यो तनहेरफूसकीटारे
उडिगयाहंसकायानईमारीटेकमेडीमंदिरमालर
साईग्रंतिकीबेरचरयानसीकोईरच्यापिपहररह
तीरालिलागीन्तन्तकरिकांमधाणिनागीरदगा
बाजरहेंग्रररोवेजालिगाडिपुरषोजरीघोवेंरक
हेकबीरसबेजगलूचेरमतोरामनामकहिछूटे॥
४॥८॥६०७॥राग॥१२॥रागकारहेरो॥रामजनगूद
डीयागलसानाग्रावंपहररामरसपीवेछाडग्रमान
गुमानटेकपांचततकीनईगूदडीमंडग्रहेचोगान
रूषेवृषेरहणिहमारी॥गुरगोबिंदकाध्याननादबि
दकीगांठिपरिगईग्रनहदचदीकबानकहेकबी
ररम्नग्रलषबिरोगी॥बहोरिनग्रावनजान१॥२
ग्रबमेंहरिसोहरिलाक्षोलागनतहांमनमगनभयो
हे हृदेगावडीबांधोटेकनाकाकंरैनेदनदेहुमा
धूलानेजानेपलपलमांहिसंनालूनषूपडयोरंक
केपानेरहरिकीपरषकोईजोहरीजानेहीरोफूल्यो
होनहीफूटेकहेकबीरगांवडीघुलिगईग्रबमो
हिप्रतिनछूटे॥१॥१॥रागकसाहचो॥जोगीयासोइ
रकायागढमेंजोमनमेवासामारिपांचचोरकाढिने
ग्रीसहग्रपानेग्रथबिचारेटेकदोषीदरसेमले
मेवासी॥पिसणग्रावतापेलेरवारसकंपरिपग
देजोगीजोतिजालेघेलेर२चेसनतुरीचढाई
कीन्हीदससरवाजाबांधेलसकरमारिलीयाब
डसावतसबलधणीकेकांधेरजीत्याघेतनगार
बागाचहुंदिसफिरीदुहाईदासकबीरजीतिघ
रग्रायासंतांबंदीबधाई४॥हरिमारगकोईबि

सरणा जाकू देषिर अधिक लजाई ॥२॥ माया जो डि
जो डि करे एक ठी रमघाई लड कां छ्यो साई सो धन
रा जाडंडे चो रले गयो परसो षयो ले गयो जवाई ॥४॥ ध
न माया सुरनर मुनि मोह्या देई देवता गरि अरूपा
एक जप डा अधनि परले लोटे एकोनं देष तक्षलि
जाई ॥२॥ कहै कबीर सुणो नाई साधो हमही कूं पासी
ले श्याई गुरु प्रताप साध की संगति हरि जि चल्यो
जो सान बजाई ॥४॥२॥ चतुरा इन चतुर चतुर पई ये
जब लग मन माधे न लगाई ये टेक नीत रिकाम क्रोध
मद माया तो क्या बाहरि का धोये काया ॥१॥ का सिध सा
धि मघा सिर बांधे जल मे पेसि कुरासन साधे ॥२॥ कहै
कबीर जोर हम्मु नाई नो रे नाई मिले रामराई ॥३॥२॥
कारन सबे जयाए कमुरारी जाके ब्रह्मा बिष्णु म
हेस भिषारी टेक ओ पण ले पण जो मिल गावे मूंड
हलावे नोपा ज्ञान पति आवे ॥१॥ ऊकडी बकरी ले हशु
सांईवा बपडी कहै नां दी रे नां दी ॥२॥ कहै कबीर एक
हरि ध्यावो रांम न जो जूं प्रम पद पावे ॥३॥४॥ दरी या
अगम अथा ह थाह न ही आवे तेरू ति सा निगम
निरिया का तो कु पार न पावे टेक ब्रह्मा दुरमी न बिरचि
शिवमुनि जन ते क अगम बतावे नाल फिरत असं
ष जुगबीते तो कवेडन आवे ॥१॥ अगम सुने सुनि सब
न ठि धाया कोई रद न न पावे गो डेडे जूं षोजद सूंदि
न अगे जाइ बिला वै ॥२॥ वार पार बिन अवर नदी से
अवरन जाइ समाया घा घि था घिए अबदो यो यी
न दिन पूरा आवा र अब गति दरीया दे षि द सूं दिस
थकित न या घ र आया दास कबीर सहज घर सूं
नी बोले न ही बुलाया ॥३॥५॥ तू मेरा कबून मैं तेरा
को इ अंति की बेर ब ट क दो ष टे क प्रपंच ठो क बिनो
णी कीया बोधि पवन घट जीत रिदीया पाच तत क
रि माद न पाया करिन जीयारा मंदिर आया ॥१॥ सरव
हे सर हतय कसंगा पेष पसारि मैं ब कुरंगा चेत
न दीप ब कुतक बिनाई हम तुम संग किसा कोरे
नाई ॥२॥ कहै कबीर सुणो रे लोई बाद बिबाद करो
मति कोई रांम सरणि जब दीया पयीनां देषत मैं

अवगतिविगतिज्यांतिनकीजोन्हेक्यूंपकूंचैमतिमे
रीटेकनिराकारनिराधारनिरंजणुणअलीतसुमदेवा
ग्यानध्यानतेरहेनिराला।किसविधिकीजेमवार२निगम
नेतवुसादिकषोजेसेसपारनहीपावेसंकरध्यानधैमि
सवासुरअजकूंअगमवतावे२सवकोईगावेजनमो
निआपणेतुमगतिलषीनजाई।कहेकबीररूपाकरि
जनपणिज्यूंहेत्यूंसमझाई॥३॥५॥६२६॥राग॥१३
इतीपदसंपूर्ण॥अथरेषतालिषते॥कहैकहैवेफ
कीरकूंसेताइकरिकिनसुषपायाहैजिनघरत्तज्याबार
तज्याऊटवघ्रवारतज्या।आपेआपअलेषदीलथाय
हैसुणिसुणिवेहडचांमकावूसाएतागुमानक्याकरता
है।कहेताहेकबीरबेसानेज्याथावेदगीकूंगाफिलगे
दाहूवाजाताहे१।कहरिकीनजरिदिलवीचितेहरिक
रिमहरिकीनजरिविनघताबेघाइगानिकीकूंआदिकरि
रवदीकूंहरिकरियाहीतेजाणिलनिस्तिमेंजाइगामके
जाहमदीनेंजाहलालकीलालीविनगरदमेंसमाइगा
कहेताहेकबीरबेदाओजूदकीषवरिकरिक्यालाया
क्यालेजाइगा।१।२।छ।षा।माइकाकोसमेंकीयाथाद
समासकाकोलतुझेनविसरूंगाअवमायामोहमेंम
तिवालाहूवाजाताहे।जाणताहेरेणिदिनइसहीगु
दारूंगा।घडीदिलआवेघडीदिलनावेयूंहीफगडा
करताहो।हगरईईमानकीसावूतआपरहेजूरहोणा
हे।जेसेंगएपीजसूलतानदयाकीकोसमेंवाजाबाजेगा
मसकीनकातेरानवाजेगा।कहेताहेकबीरवेसुणताहे
नाईयारबेसाकरिबेदगी।कुछफेरिनीनिवाजेगा।२।
समफिवेमनगवारमालापेरिमनकीमनकामणिका
करिडोराकरिदिलकारोजनसंवारदेषिषवरिकरित
कीतसवीक्याफेरताहेनिध्यानगईहेमूलम

२॥नद्दी न्नगवंतका ॥मुगाधब्यादि पति स्तरैरेसा च्म
हे सुरातनमा ध्यो ॥ज्यूं सा स्त्रि काष्ठि ज्ञ सो रैरे॥रसारी मि
रै स्त रां सो इ रिन संग्राम सु थ्योरे रे॥ता सम तुल्लिन ही
को सांवृत साचू परी या ता रैरे॥२जी त्या षेत चित्त देदु
शिच स्या॥ न्त्रीननको कु जु सूरैरे कहै कबीर सो ई ज्ञन
सूरा पांचू न्त्रप्रबल मोरैरे॥३॥१॥६२२॥राग॥४१॥न्त्र
थ न्त्रारती॥राग धनाश्री॥गोपाल राइकी न्त्रारती कीरै
संत स्यौ लाइ टेक मन करि घृत काया करि थारी ब्रह्म
ग्यांन करि बाति पंच तत्त लै दीपक जोया बले न्त्रषंड दि
न राति १ चित्त सु चंदन ध्यांन सुगंधन न्त्रनहद घंट बजा
इ न्त्रज पा धुनि न्ना व धरि न्नो ज्ञन मन सा न्नो गल गाइ
२ चव्क स पवनं न्त्रषित स गवनं नानं केक पाट लगाइ न्नी
तरि द्वारि पूजि प्रेम सर न्त्रात्म पंकुप चढाइ ३ संष मृदं
ग गहर धुनि न पजै न्त्रनहद बाजै बीन ब्रह्मा बिष्नम
हेसुर नारद सकल साध ल्यो लीन धकाल निकंदन मु
रन र मं डन संत नि प्रांन न्त्रधार कहै क बीर न्नगति ए
क मांगूं न्त्रावागवन निवार ४ तेरी न्त्रारती हो मेरे ना
थ निरंजन राइ करै लो मन गगन मंदिर जाइ टेक प्रे
म घृत न्त्रनरा न्नरि थारी बाती ब्रह्म लगाइ सकल न
वन ज्ञियारा हूवा पाती पांच चढाइ १ चेतन ना कूं ची
न्त्रचेतन ताला संक्या सकल ऊडाइ सो द्विब न्त्रकल
स्से सेवा गस न मु षा न्त्रम का पाट षिकाइ २ न्त्रनहद बेन
न पंग मृदंग दीर घ घंटा नाद दास कबीर प्रम पद ब्
दो मांगे न्त्रषंड न्नगति प्रसाद ३॥२ न्त्रैसी न्त्रारती त्रि
न्नवन तारै तेज पुंज ज्ञ हां प्रांन न धारै टेक पाती पांच
पहोप करि पूजा देव निरंजन न्त्रौर न दूजा १ दीपक ग्यां
न सबद धुनि घंटा पर्म पुरष तहां देव न्त्रनंता २ तन मन
सीस समरपन कीना प्रगट जोति जहां न्त्रात्म लीना न्त्रम
प्रकास सकल न ज़िय़ारा कहै कबीर ज्ञन दास तुम्हारा
४॥३ न्त्रैसी न्त्रारती करि मन ग्योनी पल कन बिसरैसा
रंग प्रांनी टेक पांच पचीस का करूं बिचारा ता मैं न्त्रात्म
रांम हमारा १ प्रेम का तेल सुरति की बाती ब्रह्म की जो
ति जो दिन राती २ गुर गोबिंद की न्त्रारती करिहूं कहै क
बीर न्नो सागर तिरि हूं ३॥४॥ न्त्रारती देव सिरो मणि तेरी

अतिरंजनायनमः अथस्वामीजी श्री हरीदासजी की छा
लिष्यते॥ अथ ब्रह्म अस्तु तिजोगरंथा॥ गंथन नअमंन अ
वीद अज्ञाप अवत अलतनमा ऽस्नवाथ॥२ जगदीस अरी
सनिकंपनिघात दत्तोज दत्तोजविसन्नरतात॥२ अमुरी
द अपार अछेत्त असाथ॥ अउप अमुषनिंजननाथ॥३
अरूमेवनटेव असेव अदेव अन्यात अघात असिंनअ
नेवंध निरंतेपनिसाज्ञनिद चीज्ञनिसो ज्ञानृकोमनिज्ञ
मनिरासनृलो ज्ञापानृमूलनृसूलनृमिंधनृधंध॥ अजी
तअतीत अबंध अकंपउदा निओदनिदोदनृमोद निस
सां नियंकनिसंक निडंकनृवास॥६ निरंकनिटंकनृवं
टनिता सा अनसनतवुलमप्रकास॥ अमान अथान
अरूतिअवाट अचित्त अनंत अथित अघाट॥७ निद
घनिघोष अछेद अथाह॥ पारलगवाल अमि॥ तअ
पार॥८ दयाल अकाल अज्ञाल विराट॥ अनाल अ
पार अताल निराट॥ ९ सालुममालुमलती फगुंजार
दकीमफदीमसतारजवार॥ वेचगुनिवेचुनिलदं
गकरीमबेसादिबेदादिपुदारदीमर॥ वेसलदेवे
निबदेबेतावबेनिमूनिदिफनघानानमराबर॥ बवक
द अरूदेअगमदलाज्ञानाथेदनाकेदमुदीन अवाज्ञ
॥१२ जूपिनदरीनवेरनमाथमारिकमालिक अथाद
अपार॥ दाजपिनाजमिसदंसदया॥ ति॥ औजूदजफ
दलजीवनज्ञाति॥ १४ दिरसवुसनजेरगुमानसिरंजन
दारबृधनचानर॥ १५ सालुमपालूमसवेसुलितानमालि
कमालिक अजवानीमान॥ १६ ज्ञादिममादिमसदईवब
सी अलईव अलादअमुदीद अपीर॥ १७ पका दिगार
नविकारनिपूरबमनियदानाइसादिबफनानफनि
यर॥ १८ राजनकरजाइसमजनसूसवजान अमान अबि
डतन॥ १९ रजानमजातनसोचनतासदछदानिनज्ञी
ति अन्यासननासगवेरजोजवेरानदेरानमुकाम
कलामनतामनसीतनघाम॥ २१ उदार अपार अजार अ
रूप अपार अतार असार अरूपथ अनूप अदेद अथ
रूडार अदार अतिर अछेद अमर॥ २२ दा अरे अदेअ

...सा फकरि निस्तिदो जिगका करैन वेरा कहै
कबीर ... कूं छाडि आगूगया रूचा असवार तबदी
... पांनको गीदकरि सुरति कांडे करि षेलि चौ
... मांही जगतकी भ्रमनां छाडि देषा लका आ
... सपरिधांन धरै कंचन कूं छेदि करि ब्रह्म कूं नेटि
... मदन जीति करि क्रोध मारै पवन परचै लीयां पद
... कीयां गिगनका महल में मदन जोरे कहै कबी
... कोई संत जन जो होरी अबधि कोरि पपरि में षमारै दगा
... कौ कहै न रमनां हीट है भ्रम जंजाल दुष दुंदनारी
... जाल में जगत सब फेरि हैं आस की डोरि जम जे
... पांन सूझै नहीं साध बूझै नहीं अब न वौडै नहीं
... चीन्हां नहीं भ्रम पूजत फिरै ही रौ केने
... फारि डारी थापि निरजीव कौ रैकाटि सरजीव धरै जीव कौ द
... जीं को दरदबेदरद कसकै नहीं आपनी आपतें बाप
... रीरिकपगग टाकर जो रि बीनती कै सरक्षि बलि जां व में सरनि थारी
... आज अंधा करै कगन द दैर न हीं टरत टारी जाव कौ
... अपराध न्यारी लगैरतन सो जन्म जरूवा हारि डारी ऐसी अ
... तैन रक्रि पापी पडै कूमचंडाल कै रहनि न्यारी तेजनम
... जम घाट बंधा जो अधम सब कूं नहीं लाज गारी ऐसा
... सार का घाल है परै अपकीरति मूढ अनारी धनि
... सो जग ... संगति गहै ग्यान की दिष्टि में चेतो विचारी
संत दया ... सदा न्हैं नहीं अंक मेटी चेतो घमारी कहै क
बीर तूसां तैं कूं न जार करि बोलता सब घटि देत जियारी जा
गतादेव कूं सहज सुराधन रनदीतो निकलगति है इगीतु
म्हारी ॥ ७ ॥ इति श्री स्वांमीजी श्री ५०८ कबीर साहिबजी कौ ह
न संपूर्ण ॥ कूनकी संष्या साषी ॥ १५०६ ॥ अंग ॥ ६४ ॥ रमैणी
॥ २१ ॥ पद ॥ ६३४ ॥ राग ॥ २१ ॥ रेखता ॥ ७ ॥ संपूर्ण समाप्त
संवत् ॥ १८४९ की मिती आसोज मा शोक सूं पक्ष तिथौ
नौमा ॥ ९ ॥ वार मंगलवार के दिन सुत नक्षत्र ॥ लिषतं गांव
कोरली या मध्ये ॥ लिषतं साध सदा रांम स्वांमीजी श्री अमरदा
सजी को सिष स्वांमीजी श्री सेवादासजी कौ पोता सिष्य
...चे बिचारै पढ़ै सुणैं जा कूं रांम रांम बीनती डंडौत नमस्का
...र र

अरूप अजर जिहां जातो हि कांम न क्रोध न लोभ न लो
भ पक्ष तत आस न दास अहेत न हेत जहां जो नि न
जीव रंग तन रेख ५॥ अधर अकर सुषा सु षरा सि सम
धि आगाध इहै अरधा सिप८ अहल न अचल अप्ल
अवेल अपार बिचार अधार अके स॥९॥ जन हरीदा
स अथचित अनंत ॥ गिनती ग्यांन न कोइ ष्या धज्ञांनि
सुमिरन करै मन आलंबन होइ १०॥ साची माला सु
रति की लै सुनि स मांनां चित धुनि मांही धन पाइय
राम सरीषा बित ११ जन हरीदास अब गति अगम
हेस कल ते हरि ॥ सतगुर मिले तौ पाईये हरि जहां त
हां नर पूरि॥१२॥ इती ब्रह्म अस्तुति जोग ग्रंथ संपूर्ण
ग्रं॥२॥ अथ मूल मंत्र जोग ग्रंथ॥ सुर नर मुनि हरि पा
ल दिन राम सिध थिर ना हि॥ एक सकति की पलक मैं
कितना आवै जांहि॥१॥ अलष पलक लागै न हीं हरि
सकल नवन पति राइ॥ अण हूवा सो रहैगा॥ जो हूवा
सो जाइ॥२॥ पारब्रह्म सूं प्रीति प्रम निज भेद बिचारै
ग्यांन षडग लै हाथि ग्यांन अनर्थ अरि मारै॥३॥ मा जि
निवाजि नृं नैकरना हरि सुरनर सब का स्याम नाथ नि
रंजन प्रभु ष्टरण॥ जहां तहां जगदीस ध॥३॥ पजिन
बिन सैयो करसा हा जारिजहां हद्भू थि पूरण ब्रह्म अ
कास ज्यूं ज्ञ हां तहां नर पूरि॥ पलकडी कोटी कटत
है॥ आनिन कोटी जाइ द्वार आग निज्यूं परम गुर
जहां तहां सम ना ह॥६॥ फूल बास तिल मैं उरी ति
ल का तेल फुलेल॥ हरिजन हर ऐसै मिल्या अर
स परस यहु षेल॥७॥ वार पार मधि नांहि राम नजि
ने दबस्ता या॥ जहां तहां गोपाल गाइज्यूं आगे गा
या॥८॥ नांइ नन्हां ता दि कोइ बिरला जो णै भगे
ला गा जाइ॥ आप कै आप पिछांणि ए हरिजी ति
हर सुपरा निकटि निज बस्त न दरसै॥ रुठ तहां ज
र उरै फिरै तौ पारस परसै॥१०॥ निरसंसै निर्दद जोग न
ही जेरन जरनी॥ नाद बिंद नही जीव जन्म न हीं अ
वधि न मरनी॥११ निराकार निहचल अचल रहि

गा॥२५॥ अदष अपष अचष अछोट अतूत अजाल अ
डोल अचोट॥२६॥ अतोल अमोल अबोल निघोट अ
झोल अभेद अछेद अलोट॥२७॥ अनंग अरंग असाध
असंग अजेर अजोर अफेर अजंग॥२८॥ अभूर अकूर अ
मित अमोड॥ हरि नंट सनेट अनंत अथोड॥२९॥ अमो
च अपोच अलोच अगंभीर अवृध निसिध धराधरपार॥
॥३०॥ असोस अदोस अलिप्त अगाध तो दिवार न पार अ
चोर न साध॥३१॥ अहीन अदीन अनूष अपीन॥ बिसेन
र नाथ अनाथ अदीन॥३२॥ अदल अपर अचर निधार
अमर अधर अजर अपार॥३३॥ अचड अपड पुरष न
नारि अजर अनार अधार बिचार॥३४॥ अपैर अनैर
न बैर निषंड॥ नितो जनितो जरच्यो ब्रह्मंड॥३५॥ अबं
ग सबूद बयम बिथार॥ जदा सतदा मुकतादर बार
॥३६॥ यत्तान द्विअंबन तेजन बार॥ अकासन बासजु
रान द्विता द्वि॥३७॥ अबिद्ध अजड अपड अगढ अघ
ड अनड अनड अजड॥३८॥ बिनोण प्रवोण बपन
व नने दस अगिणत निदार तथाद अछेद॥३९॥ अका
ज न राज अठग बिचार॥ गदरगं जीर समाधि मुरारि
॥४०॥ अदेह असाज अगेद अबिंद असलि अदरन
अचल अजिंद॥४१॥ गरीबनवाज समंदन गाजा मछ
कछन नीरन कीरन साज॥४२॥ नयानन नूत औधूत
न धूता नदास न तास पिता न दी पूत॥४३॥ मना मोनिन
जो निनस्पा मनसेत न मोहन दोहन कोध न हेत॥४
४॥ अलिंग असंग निअंग निसोर रदते कहति जन
मनजोर॥४५॥ अदतं मत अबत अजता अगिर अति
र असर अहत॥४६॥ निराकार अपार अरूपन रूप रस
राजन रैतिन दुषन सुष॥४७॥ रस बेद कतेब रो जन राग
सुषसे जन दुष अनीदन जाग॥४८॥ निगम आगम त्रिबि
धि न त्रास ततआनंद मूरत अनंत प्रकास॥४९॥ सुष आ
दि अनादि बिजोग न सोग॥ बपु खोटन चोट अजिंग
अजोग॥५०॥ इकत्त्न सिपुरिस दौरि कंचन नीच न तत
पन तेज बिघनन बीच॥५१॥ तपाक अग्राक अछिप
अनेव॥ निरंजन नाथ इहे तो दिटेव॥५२॥ नृसिंध नृ
भर अर्थन आंन प्रमपुरिष पयोधरपान॥५३॥ अनुष

संमृथसिरजनहाथब्रिबधिजमकाफंधजाधणा४के
सोरमतारांमदाथजनकेसिरधरणानारा३णगोप
लसिंतराघणारिपमारणा५प्रमसनेहीनाथत्रिबधि
गुणगहरगुहरणाप्रबिनासीहरिअहलाकरणा६
नरबिषनोबिषडघदारणा७छनकाकरेपूहरथु
नाथनिजअंधिघारणा८बलकरिगोबिंदाचिंता
अरिबृघडपारणा९अपरंपारअपारणारनवसिंधउ
तारणा१०तुमनरहरनबेसाबेसतोदिसाध्रुसुघकारणा
निरसंसेमूप्रीतिताहिसंसेकाग्रासेजहांअजपात
हांबेसिबातअनन्तेअन्यासेहानटनृत्तैनिरनेष
अरीफहमरांफैनाहीनमलनिकटिहजूरिअगहअ
निअसमांहा७परमरीतिपरप्रीतिप्रमनिधिआ
पसुंवामीजुराकारनैदरणाकरणानिस्तैनिजनांमी
८परमपुरषपरकासालहैकोइगुरगमसूरास्वयं
ब्रह्मसचराचरसकलबिसव्यापीपूरण९परमतेज
परजोतिपरमरूपअंजनसोइपरमसुनिपरदेवजी
वजागिस्मरैनहीलोइ१०परमध्यानपरध्यानदरि
परमसुषसाचवतावैपरमजोगपरजोगहरिपरम
यत्रिलेपकूंचावै११निरालंबनिरलेपअचलचर
णचितधरेहरिनरगुणनिरषेदवारनहीलोनेपा
१२अकलअनंदअछेदानिरूपनिरवैनघरपाया१
३नयकारनबांणप्राणमनतहांसमाया१४अलगरै
तअगमअलेषतादिकोइबिरलापरसैअजोनो
अस्थिरअचितअनितअंतरिदरसै१५अदिष्टअल
रअरूपाअयाहनिरमोहसन्यारेनिरामूलनिरधार
निकुलनिरपषनिजसार१६परमततपरलेदासक
लजुगमडणाजोगीपारब्रह्मदरिअदलरसभोग
रसनानहीनोगी१८अधरअजरसमचाइजीवसंच
जलथलपाषेअकहैनिरंजनदेवसाधुसुमैरमनचो
षे१९अदतअछीजअनेकानिरासनतेनैसुषसरंअ
करमअरतअलोकाविरिधारसइमृतधरै२०केम
कनरपूरिहरितादिकहूकनेवानिजतरुनिरखि
धप्रोणातहांपेषीमेरा२१अषंडषंड[illegible]नमं

... पचस ... ी ... फूल फल डारन की
... नरलेंव निरलेप निडर न्है निदकामी
... निह्कम सुत हरिअंतरजामी ...
... अपार अजीत अविनासी ... अविल
... सुथिर गयान जोती ...
... निरभमति ... परम
... परम सुख ... निदोष ... अकर
... सुथिर ...
... सुख ... मुधर ... मनकामना ...
... अनादि ...
... कासि ... बसे ...
... निरंजन ... सुत
... जसी प्रीति ... कागत
...
... सकल ... सदा निरा
...
... सम
... निरद
...
... कोई जे
...
... हरि
...
... हरीदास
... सतगु
...
... कुदान नां
...
... जनत सांन।
...
... दोइ जन
... नकोइ

... निवारा

मा॥१८६॥मघोजनकियै पषापषी बिस्रांम॥२९॥का
लहरणाकरतापुलासुमरताग्रुणएहचितमांही
चितलेरहोजपूंवहोडिनधरीएहर॥३०॥वनमाली
नजेतांनलाजुराजन्मनहीतोहिमैनहीयाडं
रामकूरामनछाडेमोहि॥३१॥बातहापरयुनाथ
केसदासाथकेसाथिपेलेश्रगिमाडेनहीजाकू
पकडेहाथि॥३२॥नारायणकानावकीमैवलिर
हारीजावाभृगीकोटपतंगज्यूंउरेहसेरोनाव
॥३३॥मांनदकेश्रासिभैजाइपडे तवजीवहारमकै
नजायदैभैजवतवजीवसूंसीवः॥३४॥सकलवियापी
सोगिवसैहरिसम्रथसिरजनहारसाहिवहीतेपाईये
साहिवकादीदार॥३५॥अविनासीश्रासणश्रमरश्रज
रांवरनणकारामदयातेपाईएहरिसुमिरणनावव
मेक॥३६॥इसमपदेपहिश्रारवीच्यारिपदेमुषवेदस
दगतिसुषसवतेश्रगमसवकोकरेगमे॥३७॥श्रवित
तुम्हारीवंदगीवहीतकरैवहोनाश॥श्रल्लाकूंम
श्ररिहंतकहेकेईकहेषुदाइ॥३८॥सवकोईचाहेतुम
कूंतूतोसवहीमांहितुमहीतेतुमपाईएवंदेतेक
हूंनाहि॥३९॥पारब्रह्मपरउपदरनाप्राणतसंप्रभउषाइ
नेदसहतनेध्यानजोहराइगाईजेत्यूंगाइ॥४०॥महार
कहोमीरांकहोकोईकहोश्रनंतनिराधारनिरगुण
कहोतथाकहोभगवंत॥४१॥निरामृतनिरपषकहोक
होनिरषरनावनिरमोहीनिरदंदकहोवाश्रविचितकी
वलिजाव॥४२॥श्रलषश्रगमश्रवैतिकहोकहोनिरं
जनरामश्ररसकहोश्रलिपतकहोश्रलिधणीसूंकां
म॥४३॥धरतीधरणश्रमरत्वपनोवदयाद्योगपानश्रा
मश्रंतविरापोपिधणीतुम्हारोध्यान॥४४॥श्रपणीश्रप
णीश्रकलितेसवकोपढवेपांणपारनलाभैपरतां
णिदेरजामहमांन॥४५॥हाजिरीतिउषसुषरहतनिगम

॥ श्रतोलकातोलणीश्रलषश्रनेदश्रदेह
ग्यांनध्यांनमसिगतिश्रगमश्रजपारामश्रछेद॥

८८

मतैं पाया॥२०॥ जस्तो हरि रापै तस्तो मैं रहूं हरि पर वैतस
जो वाजन हरीदास की बीनती मैं हरि नहीं छाडूं हरि
नांव॥२१॥ ग्रंथ॥ अथ नांव निरूपण जोग ग्रंथ॥ नांव रू
न रूप परम सुष जांनें षिला को इ जन हरीदास ताकूं
नजे तब ही आनंद होइ॥१॥ परापरै पूरण ब्रह्म केरित
हो मन लाइ ग्रबल्या डिगो बिंदन जो जन्म भूमोलि
क जाइ॥२॥ सत गुर मिले तो पाइये हरि रिपरम सनेही त
ता बहोडि बहोडि लानें न ही अदिस्ट्री सरयह घात
३॥ नेछाडो नृनैन जो गुणां रहत गोपाल अगम बोड
आनंद सदा जु राजन्म न ही काल॥४॥ जोगा रनैन का मूल
है हरि स्त्र बगति अपरंपार सुष सागर समृथ धणी स
ब का सिरजन हार॥५॥ नृनै पद नर कर चढ्या मनि षज
न्मन लदेह निराकार निस दिन जो हरि अगि नत्त
नत अछेह॥६॥ मनि षजन्म षर चै रषे हरि बिन हूजी वा
ड॥ सास रच सासो नांव लेन रदोड सकै तो दोड॥७॥ जा गिज
रि वं कूं सा प्रथम मो हत जिमांण सा धमुल न कत सो बास
क रिज्ञम लस के न डो॥८॥ नगति करो न गवृत कोम
न दीन्हो सिधि हो इ मन बिन दीन्हो मन लड पायन
ध्याया को इ॥९॥ पाप पुनि दोन्यूं बरयात हां करे मन पान
मन रो दोन्यूं तखरत जे तब पावे नगवांन॥१०॥ नर म
छाडि नृनैमतैं नृनैब स्त बिचारि गुर अदर कर बा
न धरि मोह मह रिपमारि॥११॥ कमि धारण कै सो न जो
सम भिन की जैसी चाइ कुं आसर चलि जाइ॥१२॥ बहोडि
न लानें पोच॥१३॥ राम न जो बिषीयात जो घर मांही घर
क ताघर सूं लागरहो छाडो वार अनेक॥१४॥ हरि सुमिर
ण हिरदै धरो बिध्यान पकुं चै बीर कारस्ट लि कोनें च
ल्या लग्यान सुष की सीर॥१५॥ परम पुरष नेरिप नजो
लतान लागे लोइ प्रवधि घटै ग्रासे जु रा हरि नजतो
हो इ सहोइ॥१६॥ नांव बिसंन रमा छजो लष चौरासी
प्रतिपाल सबका हूं की करत है तातें राम दयाल॥१७॥
मन सज्जन तो सूं कहूं मांनो सा च ह दीस का रनजाल
लागे न ही सुमरंता जगदीस॥१८॥ कंचनी चन्नमतें
कोई न जो मुरारि जो सागर लिषि ओक ठिन हरि नांव
उतौरे पारि॥१९॥ न धरतैं बाजी रची बाजी मांहि कला

प्रीति २४ निरालंब निर्लेप राजहंस सा गुण समाव प
नदीसा द्वि थरनि गगन समदन दीव जल ज्वाला मेछ
नकार २५ पुरुषना गिर्याव नीन मास धान पान रहीन
असा गुन गीत नाद न्यारा नने रूह विछुक्वा लछो दा
नछेरू २६ तेज पुंज निद्र चल निवास बाद रीनी तरि
ज्यू आकास जन दरी दास जिम दर्जनाह समकल बि
यापी समराह ।। २७ ।। अस्तुति २ दव छंद । सुतो रंरूव
नदसीन आवेन आया दितदीन ढितदीन रूपानध
सार ८ गानेन धानेन बरीन चेष अकजेन काजेन
रूपेन रेष २९ सिधदीन साधेन सेवान पूजा गुरदीन चे
लान ऐकेन रजा ३० घटदीन पटदीन नटदीन बाजी
नेडान न्यारान रूसे नराजी ३१ नादेन बिंदेन सिधेन गा
ई ब्रलदीन वरुदीन मारेल धाई ३२ धरतीन गिगनेन
चंदेन सूरा सत्तिसान सिधेन वोछान पूरा ३३ उपजेन
बिनसेन बूधेन बालं कल्याणन कोधेन कायान कालं
३४ घटदीन बनितान बसीन सुन्य रसीयान रोगीन पा
पेन पुन्य ३५ जपदीन तपदीन ऊत्तदीन लाजेम तिदी
न मुगधेन रूत्तिदीन गाजे ३६ भरदीन मारेन जीवेन जो
रारन दीन बन दीन बाडीन मोरा ३७ आदेन अंतदी
न सारेन पार बीजेन बकरनानमा वान धार ३८ बंधदी
न मुक्तान कलपेन करदीन जैन नेदीन मिश्रीन जरदी
३९ जरणान जोगीन रछान बा चेन रदीन नारीन
दीरान काचे ३० गुणदीन गायान रमेन नेदा सन
दीन रासेन कथदीन छेदे ३१ बपदीन बिलसेन ग्रने
न मूलं मंनेन बेरीन संसेन सत्तं ३२ रिनदीन राजान
सेन्यान साथी मुलकेन मायान असदीन साथी ३३
चेन बिरचेन रीझेन रोवे मनदीन मूनीन मेलान धोवे
३४ रत्तान बरत्तान फूटान सारं सुषदीन दुषदीन चिं
तान चार ३५ थितिदीन थानेन आसान पासे बेवान च
लिदेन देवैन दास ३६ सुरेन दचान बिप्रेन बसे गिर
दीन तरदीन सुरदीन दसे ३७ जरणान पीजेन क णार्ह
नषोदी रूदीन भातेन मासेन लोदी ३८ वार पार मति
सिन्त्रगाम परेल पंकुचे दाधू जन दरी दास सो कोन दे
नरे आन संबा घ ३९ मसिकागद

हरि देषो वार पार मधि नांहि सकल बियापी संगि बसे ता
हि सांइ मति जांहि २४ मोह द्रोह में तें मनी कांम क्रोध भ्र
म दूरि मन उनमन लागा रहे तहां बसत नर पूरि २५ चित्त
चंचल निहचल भया मन के पड़े नराइ हरि निर्गुन न्रिं
मल तें जहां तहां सम मनाइ २० हरि चिंतामणि सब में बसे
जांणी बिरला कोइ रांम दया तब जांनीऐ साध कहें हैं सूं
होइ २१ गंग जमन मधि मुक्ति फल सतगुर दीया बताइ
मन लो लीना लालच पड्या तासु षमें रहा समाइ २२ अनंत
साध आगें भया परसि परसि चो पार जन हरीदास सिर के
सटे इहां तहां दीदार ॥ ४४ ॥ इति नांव निरूप जोग ग्रंथ
संपूर्ण ॥ ग्रं ॥ ४ ॥ निरंजन लीला जोग ग्रंथ ॥ गाहगाह ॥
वे कहा गां वाण मांहि बिमेक एक गाहद हदिस गया एका
परस्या ऐक १ गुर हम सूं ऐसी करी जैसी गुर सें होइ आ
म ठौड़ आनंद सदा पलान पकड़े कोइ २ गुर ने चेला
निड़र गुरु निराकार सब मांहि चेला तन धरि तहां मिल्या
सो तन धरि ना चेला नांहि ३ प्रगट प्रम गुर पार ब्रह्म प्रगस
ने दीसो इ आप दिषावे आप कूं कर्म किवाड़ी षोड़ ४ रा
म सारा राषि ले आप आपणे हाथि जो फिर मन चा
लै नहीं करि ऐ केसा थि ५ मां जिन वा जिन्हें ने कयण
नरम बिथा ने दूर परम पुरष परदुषहरण हरि जहां त
हां नर पूरि ६ आस पास आनंद सदा षबरि आनंद सबौ
रा हरि सम रूप सुष निज रनरि कौम तिकरे स कोण अ
गुन का गुन का कहूं कथि ऐक हां अकथ अकल तत्त
है आसि सै सकल नवन सं मूंध ८ गंग जमन मधि ऐक सम
सुष में सुरति निवास जो गारे न लागा रहे त्रिबेनी तट बा
स ९ परा पर प्रसिध पुरस माया रहत अनंग सेवग को सव
कै साध तहां प्रसंग १० नांना बिधि सुणि सुणि असुणि
बहो बिधि करै बिचार जनहरीदास लहि लहि अलष
हरि अबगति अपरंपार ॥ ११ ॥ छंद बेअरी ॥ त्रिबधि ताप
संसे सोन सूल परम नेद आनंद मूल उदे न अस्त आवें न
जाइ सकल बियापी सहज नाइ १२ मोह द्रोह आसा न
पास बरन बिबर्जित स्वयं प्रकास कांम क्रोध तृष्णा न ता
प गयांन ध्यान जोगी न जाप १३ तात मात सों सोनसंक साद
बेद रो गीन रेक घट घटा रस नां नरीति कें चनी च परसैन

ती॥१५॥ संसैन सोगन जोगंन रोग॥ जोगेन बांणी नजांणे
नजांणी१७ नमो देवकरनाम ई परमदेवा नमो अथघ
घाघ्यो नजाइ अगम जेवा नमो १७ पारउ रवार तिसथा
रनां ही नमो मोह गमतां नहीं धुपछांही नमो १२ संमेद
गगनांन ही जडि तजोगं नमो मेरगिर स्वरन ही जोगरोगं
नमो १९ डां ए डाक रन ही घणो थोड नमो गवालन ही गवा
लनी कंस जोड नमो २२ जन्म जवरान ही व्रध बालं नमो
आवजावे न ही नदी नालं नमो २४ क चिवेवे न ही जा
गि सोवे नमो आदि न ही अंतिन ही बिघन सोवे नमो २५
परसपरसार न ही रेसरंग नमो निकटि निरलेप निजसा
ध संगं नमो २६ गहर गुण रूप गुण तीन नांही नमो षंड
ब्रह्मंड सब तु कमांही नमो २७ गहर गल सांन करमोन
काया नमो अगम अस्थान निज नेद पाया नमो २८ अ
मर अस्थूल बरणं न बासं नमो सकल सिरसा च अ
सानपासं नमो २९ सब्द न ही स्वाद सरबंग साई नमो
करन करतार मैं तुक तां ई नमो ३० बाद बकबाद बि
टरूपनां ही नमो परम निजरूप सरबंग सांई नमो ३१ दि
ष्टिन ही मुष्टि देवै न दासं नमो डारन ही मूल न ही नांव
नासं नमो ३२ अमर अजरा जन मेन जाया नमो अषंड
करणं महीं मराया नमो ३३ जन हरीदास अैतर अग
लं परम नेद निजरूप वाद्ह सागर मैं अनसख्याति
जल दिकां केंरूपा॥ ३४॥ इती साध चालमी तीसम
जोग ग्रंथ संपूर्ण॥ ग्रं॥ ६॥ अथ अचिर जोग ग्रंथ
गोरष दांणू न षैरी सुषदेवा सिंघसनकादिक सुषसारं
नारद संकर मुनि ब्रह्मादिक अगिणत साध प्रसिन
ए पारा २ चंद सूर कीया दो इदीपक करितां राम डल
करतारं अनंत लोक बिसपाल बिसंनर सकल स
माया तो सारं ३ रूप न रेष अमन हि नंज्ञान ताहिन
जोगजिन रम जाइ बेद कतेब कैदें दो इबांतां दो इ
अगेन निस्तारं ४ ध्यान न ध्यान धापन ही मुनि ए
अधर अलेष न ही चिक चाल नेद अ नेद अग्रीफ अ
छेदं सुनि सुधार मारह ताल ४ राजन री ति प्रीति न ही
प्रघत कलापि न फलके करतारं रमता रांम सकलं
ब्रह्म व्यापी निरषि निरषरन'

गैडदैलोह॥ जनदरीदास अैसी कथा जो कोई बिरला कौ
॥४१॥ जन दरीदास अब गति अगम जहां ज्यो तिन दो
लो ति दम बास तत दो का लिषत दो कर लेष न बिन
दो ति॥४२॥ इती निर्जन लीला जोग ग्रंथ संपूर्ण॥ ग्र
॥ अथ चाल मोती दीलकी जोग ग्रंथ॥ पांच अट कि
नुलटा चरलैं डोरी लेना गा जाइ॥ एक दिहाडे साच मेंम
द जैरदेसमाइ॥२॥ आपकाई ध्यण कैर कांम को ध्रफुनि॥
ह्वारो एक दिहाडे साच मैमदङ्गे मिलै नरतार॥२॥ आपैन
चवर्णो बादैन करनी निरति संचालिबा सुरति ब्रोलि
बा॥ कांमकूं ग्रासिबा मिथ्यान ज्यो लिबा तीन गुण
बाइबारक्सिसि मेलिबा॥३॥ परमपद पाय बा नव ना
य ना धिबा सात सागर सो षिबा नौसै नदी उलटी बालि
बा॥४॥ प्राण पुरस पोषिबा बदोत रिझा जांन षेलिबा॥
पसुष मेटिबा सुरंती सतारिबा॥५॥ अदंमेव मारिबा ग
न च दिगरजिबा॥६॥ उनपदे सबा अथाह थाघिबा॥
अदृष्टि बिचारिबा॥७॥ कोडी संन षेलिबा हीरा नहा
रिबा अर्थ का नेत्र नघारिबा अनर्थ का पालिबा॥
सील संतोष की सना दअंगिप दरिबा सुमरण की सु
ज लेबा अगम कूं चालिबा धर्मामें ... अधर सि
बा॥९॥ सुष के सिध पेसिबा परम जोति परसिबा पंच॥
प्रमोधिबा मेर चढि बोलिबा॥१०॥ कायागढ सोधि मन
कूं कंचन ज्यूं तोलिबा सुरति सदृ जग घरि आंणिबा मा
नि अमानि ठेक अरि आंणिबा॥११॥ काची सराषी षोटान
लै ग्णे मोंहगा मोल का मन दैर अब धूसों हगान दे णां
॥१२॥ सतगुर सबद षेलिबा कल समेकूप आंणिबा
नीर उलटे गंगा पाल सो षेगा तब परापरै परम नेद जा
णिबा॥१३॥ बिहंगम उलटे गाम लेय में आवे गा॥ ब्र
ह्म कूं ग्रासिबा परमनेद पावे गा॥१४॥ मेतें मेटिबा मेर
मैं ल सुधारोपिबा गगन मंडल की गुफा मैं पैसिबा
औघेन ध्रोषिबा॥१५॥ मूल कंवल दिष्टि रोपिबा पीव
का मिलाप कूं तरसिबा अगम पिया लापी यबा अ
लेष पुरस परसिबा॥१६॥ अलेष अयाद कंडे अपार ब
सुधान गगनै ज्वाला न धरणी पंनीर पवन वारैन पा
॥१७॥ चंदैन सूर्य सैन राती काया माया न पूजा नपा

रं२३ अधर अरूप अथाह अजोनी। अनंत अमूरति
अघ जारं दीनदयाल कालन नदी करणं। त्रिबधिन
ब्यापे तत सारं२२ हरि पति प्राणं सदा सें गि समर्थ।
परमि परम तत्त नैपावं न दैन अस्त आनन दी अटप
टातर वर मूलन हलधारं२३ सुजन दी असुन गिणत
नदी अगिणत तन वनदी अजघम धुर धारं। बिरकत न
दी बिकल न अकल अनि अंत पितन मन सामन तदं थ
रं२४ हमूतन दी जल रक सरन दी करणं। मरन दी अम
रन श्रोता रं नरनदी अनर अजरं अमरानंद दैपणं स
रं सिरसारं२५ छलन दी अछल अचलन दी चंचल
धरनदी अधरन अदै कारं लाल चनदी लोचन रम
नदी निरूप्रम नट बाजी करि नट न्यारं२६। निरमल
नछोरू निरास निरंतरि निज तत तदं निज मनधारं
संकट नदी सरम करमन हि अकम लरमन ब्यापे
तम नारं२७ परम जोति प्रकास परम सुष आगम आगम
सो ईनर धारं। कंचन नीच ब्रनन हि अब्रन गतिन
दी अगति नदै कारं२८ सकल बियापी अलष अपंप
रथलन दी अथलन मे मारं पर मनदार अपार अषंडि
त रदिर घांर दिरं कारं२९ अगद अकदन सें अघज
रन सुनि मंडल मे सद जो प्रकास जन हरी दास परि प
रसि परमसुष अविरलन जोति अत्रेन पुर बास।३०।इ
ती अगाध अचिरज जोग ग्रंथ संपूर्ण।। ग्रं।७।। जोग स
ग्राम जोग ग्रंथ।। जोगी ग्यांन षड्ग कर धरै मन सा जो
ति मनोरथ मारै। अंग्राम सणा छाडि अनंत न दी जाइ ला सं
गिर मैं निरंजन राइ१ दीरघ रोग बियोग निवारै कोडी
सैटेन दी रा हारै धन दौडेरै न दी लोड आपा डारै तो
यूं हो इ२ बिषीया बिषत जो न जो हरि बीर सुनि मंड
ल मैं नैना रकं चनी च स ब संस मिना इमन बचक
रमत हो मन ला इ३। न्है निरबांण परम सुषसार अ
दि अनादि वार नदी पार ज्युरान ब्यापे कालन षाइ ह
म न सतगुर दीया बता इ४ अरन ष अनेद गहर गुण
ग्रांमी प्रांण नाथ हरि अंतरजांमी कोई ग्यांनी लहे ग्यां
न गुर और धीर नीर ज्यूं सब हीं गिरा।५। ताजिन गवेत

गहत्रअनिअंतरिअकलअरूपनदीलषभ्यालंषपी
अकासनसमंदसुमेरलषचोरासीप्रतिपालंधनुपर
जनबिनसेजागिनसोवेआलसनीदनआकारंपुर
रषजुनारिकेरनदीकीडोअगमअगोचरततसारं१७
गावेंजनांवबिघननदीबासंसासनुसासननोघारं
प्रगणब्रह्मपरमसुषदातात्रासनदासनआचरं
जोसेनदीबदत्तरिष्याजाइंदीपोचनचित्तचारं१८
तनथीवनैननदीनासाद्याष्ठनपावनघटधारं१९जो
तिनद्योतिमुनिनदीसंकटतेजसपुंजनन्यारं२०
अअरेषअदेषअलेषंआदिअषंडितअघजारं२१व
रनपारमुनिनदीबक्ताअगदअकदत्तदांधुनिध्या
रंकेचननीचबरणनदीअबरणकदरनब्यापेत
सकालं२२अबगतिअगमअगदअनिअंतरिना
थनिरंजननिरकारंगरजेगगनमगनमननुमन
निसदिनदरसेदीदारं२३निजनिरलेपसकलजग
करतासकलसपोषेसुषन्यारंसकलनिरंतरिसरम
ब्यापेआनंदरूपअगमयारं२४दिष्टिनमुष्टिगोन
नदिगुष्टसंकटबरत्तनबिणजारंनेदनग्रेदनो
गनदीरोगंजटानजोगीनजनालं२५सीतनधूपमी
ननदीपांणीकोरनडारेकिमजालंस्यामनसेतर
गत्तनदिरेतंतरवरमूलनतिसडालं२६जवणनग
वणनपितासदोदरामोदनदोदनपरिवारंपरमउ
दारपरमनिधिन्हेनिजचिंतामनिचितधारं२७अ
रधनउरधजोगनदीजापअजरअजोनीलसजा
लंअगमअथादपरमसुषसागरनाथअनाथप्र
तिपालं२८जपूआकाससकलनेजंनजलंसबमे
दीसेआकारंहाथगसांकोइदेह रनआवेयूंसब
घटमेघटधारं२९निरमैनबांनीअषिलअबिनासी
अबरणबरणनबिस्तारंदीरघलघुलोलपिमान
हीबीजोदरिनृसिंधनिकटिन्यारं३० निरगुणनृधात
गातगुणनांदीनिजनृमूलसनिजसारंजोगनतो
गपापनदीपुनियरमृतअकतनपरिवारं३१बल
नदीअबलनिरूपनिरमसदासनेहीसुषसारंनि
डरनिराटबिराटअनंतहरिसबऊपरिसबतेंन्या

जोरप्रेमसिंधजहांजालनकीर२१॥वारपारनहीअ
गमअछेहधरतीनसेअंबरतेहांनिरमलधरअपा
रअनंत तासुषिलागिरहेसबसंत२२ निगमअगमगुर
गमगामहोइ।पवनजोरलेअंबरश्री इरमतारामनिरं
जनराइ।२३।पीवसतसाटकूंषाइरध परमतदासअपारअन
तअखराणवराणअगहजगवतउलटीगगजमनमे
अंणितोहिपिछाणोंताहिपिछाणि।२४। गहबनननही
तसांमठमाइलकनालिइमतरसषाइ।ग्यानगुफा
मेंआरनकेजोगीजीवेजोंरामे।२५।सोसागरउरअन
तअपारतातिखेकाऐहविचारमनविषछाडिविसंन
रनजोकामक्रोधविषीयाविषतजो।२६।प्रमानंदप्रम
सुषसारताहिनजोनजितजोविकारजोमनमनज
रानेडराणा।अवमरिसाहिवमारगिसिरधराणा।२७।का
हूसूरवीरकाकांमाकाइरकहेकहेनहीरांममंडिसं
ग्रामघावघटसिहेप्रदलजीतिप्रमगतिलहे।२८।जुम
मेंरहेजोगसग्रामाकोईकरोआपणाकांमणोपासाचे
पडिोसरिअवकेजीतिजाकूनावेहार।२९।जनहरि
दासकहेमतोएहवडनिधिहाथचढीनरदेह।गोविंद
नजोरामकीआणवहैडिनरागेजमकाबाण।।३०।।
इतीजोगसग्रामजोगग्रंथसंपूर्ण।।ग्रं।।८।।अथअ
षपदीजोगग्रंथ।।हमहेरूअवगतिकूंदेषेजातामन
कूंउलटाफेरैंमहादेवकामतापिछांणोमनदसूंदसास्
उलटाआंणोंमनमाहेजीस्वकूंषावेहमकूंमनमाचव
तावे हमजोगीजोगजुगतिगमजाणोंबहतीनदीअपूठी
आंणों।पवनगोटिकापारावांधेउलटीसुरतिगगनकूंसां
धेंकांमक्रोधकामूलजपारैंगगनमंडलमेंआसनधारें।
अगमपियालालरिनपीवैरूपअरूपविचारतजी
वेंहरिसुषमिधतहांनेनांहीहरिजनहेसबसेंतांमांही
परमजोतिअंतरमनमाथेहरिहीराविणचूणिनसाथे
जनहरीदासनिजनिरषोमनकीगोडनगाइसुरतिसु
नटिततटाचढेतोअगमतहांचलिजाइ।।१।।लहोये
अगमनिगमतेंआगेंअंतरिनीरनेतजबजागेंससि
हरकेघरिसूरसमावेउलटिकंवलकंवलापतिपावे

गौवै वा मांहि गिगन मन जल पीवै नांहि द मो ह दो ह
मैं तैं करि हरि रमता रांम रह्या भरपूरि ब्यापक अगनि
ज्यूं सैसव मांहि गुर बिन गैला ला भै नांहि ७ अप्रवां
ण निधि अगम बिचारै आप तिरै साथी संग तारै पवन
पियाला उलटा धूवै भर भर पीवै अजरा जरै नाथ
निरंजन न्हैं जोगी जुरा जन्म जोगन ही रोगी षरचा
घटै न दीया जाइ सोई बित चित में रह्या समाइ ८ का
लन जाल जीवन ही जाया नट ज्यूं घट धरै न घट धरि
आया पूरण ब्रह्म परमपति प्रांन उरझ न षपडै न जम
ले डांण १० गहू बैरागन बृह बिवेगी पाप पुनि पूर्वे
सन जोगी उलटी सुरति सुनि में धरि तब जाइ दरसै दे
व मुरारि ११ थिर नहीं अथिर अरूप अछाया निरगुण नि
र धार निरंतर पाया गरजै गगन मगन मन होइ हरि रं
न जैसा हरि समि होइ १२ थिर नहीं अथिर सर मन ही सोग
व पन ही बिथा बेदन ही रोग जहां प्रगटै तहां ऐसी करै
अवरण अगनि बिथा बिन चरै १३ आसन दास मोह नहीं
माया ग्यांन बिग्यांन धूप न छाया करम किवाडी कल
सू षोइ है तो महीं लहै जे कोइ १४ संकट नहीं सरम जनम
नहीं भेद जरा नहीं जुरा कंध नहीं छेद सकल बिया
पी सब तैं इरि अबगति जहां तहां भरपूरि १५ अचल नहीं
अचल चित नहीं चाहि घट पर अघट भरम न हिताहि
तजि अभिमान अगह यूं गहणां जागि लागि नरउन म
न रहणां १६ डर नहीं निडर निरगुन निज रूप उदै न अस्त
सीत नहीं धूप घर नहीं अघर पुरष नहीं नारि प्रपंच प्री
ति जीति नहीं हारि १७ नर ह्रै निजजन अहो निस करै ता
हि जारै अगनि बिन मारया मरै संकट पड्यां साथि रघुना
थ जहां तहां जन के सिर हाथ १८ उलटा षेलि अपूग आ
वै जैसी भावना तिसा नर गावै निसि ऐ निज नांव निरंतर रहणां
सा पिंड सैन पर लै बहणां १९ अनर्थ अनंत तहां जीव
जाइ ताकूं सरप सदा संगि षाइ जा सरदा उकै हिलागी दे
ह रांम जपां न रहै बिष होइ २० बैसि निरंतर अलष ज
गावै आसण अमर अगम सूर पावै नूषार देन धापि नषा
इ मन साच लैन परघरि जाइ २१ ब्रह्म अगनि में काया
दहै मन चंचल निहचल होइ रहै काम क्रोध का फडै जं

सोसहजिवि
ाउपजिनआया।जोउपज्यासोसहजिविम
हजिबिलायातेमतिनाही।ऐसेंसमझिदेषिम
ीनहीआवैनहीजाइगा।आवैजाइसोऔरनि
रनिजरूपदै।सोव्यापिरह्यासबघोरधात
पगावनहीगाम।परमसनेहीमनबिश्राम।दि
दिष्टनेस्रनेहं।तरवरडालमूलनहीछेदंस्र
ीफआसनहीपासंउतपतिषपतिनावनहीना
व्यापकब्रह्ममोहनहीमाया।बेहदपडग्रामेदन
पाया।सुगटगुपतगुपतगोपाल।संकरइष्टका
आगमरूपमांझोन्हीसोग।नांवनिरदु
गन्होग।हरिहेमवारन्हीपार।समदगगननने
बिचार।मूलअमूलकरमनहीकाया।अंतरआ।
परमसुषपाया।सकलसमीपीसकलसुषम
तिराइअबमनतहां।बिलंबीया।सोसुषमे
सोसमाइ।पाया।श्रीमरिहरिकाकरही।नवाए
सोन्हधरकही।नांवबिसंनरविसपतिरावा
ाब्रह्मपरसिपतिपावा।करताकरणचरण।चित
धर्मदांमणि।दिष्टजोतिउजारं।निजन्हलेपनिकटि
निरकार।आगमअपिंडतआगमबिचारं।ससिप्रका
स्मातिमरबिलाया।मननयामगानपरमसुषपाया
हांमनधरिहं।मनगहिपवनइहैब्रत
रिहंहरिन्हसिंधनिऊलनिरधार।अंतारनिरंत
निकटिनन्यारो।निधिपाईन्हेनेनया।निधिपरम
हीराम।प्राणी।माहीपेसिकरिमनपायाबिश्राम।।
हिगुरगपानआगमकूंध्यावै।आगमअथाहथाह
घटिघटिअघटसकलघटिसोईगुणगम
लहैजनकोईउलटाधैतिसहजघरिआवैधुनि
ध्यांनतहांमनलावै।अवगतिआगमआगमगम
यानवगहपलटिगगनरसपीया।जारसिमुनि
जनरह्यासमाई।तारसरुचिमनहलटिनजाई।
पागलितमिट्या।अनिमांना।अबहमजाणां
सुजांना।हरीयारूपवारनहीपार।तामेमथलपा
हमारंकालनजालनहीनेनेरा।फूलेषेलेमंझि
सहजिपियालापरमसुष।जारनरिपीवेप्रान

यकुनिजसुषजागपासोजांणोसूता अर्थकहांसूत्रा
णो अगम अथाहवारनहीपार।ताकाकैसानेदवि
चारं।वरणविवोगरोगनहीजांनां।परमनेदअैसाअ
स्थांनां।सकलसमीपीसकलसुहावा।तीनलोकवि
लक्षनपातेरावा।सुषमनिजलटिगगनमेंआणी।सु
निमंडलमेंपैलैप्राणी।सुषमनिपरमसिंधमेंझूलै।
तारुतिकंवलकेतुकीफूलैना।निसरोवरनिजजल
मेंरा।मनमतिवालाझूलैमेरा।नागानरमनेदजब
पावा।तबमनउलटिसहजघरिआवा।गगनगरजि
वरिषानईहीरलयानिवांण।जनहरीदासहरि
सिंधमेंपैलैसाधसुजांण।२।सोआणैजोगीनांवअ
नंता।जटानजूटपांचनहीतंता।सकलसमीपअक
लनिजनांमी।प्राणआधारगहरगुणग्रामी।आदिअं
तिहरिकीदरिजांणो।सुनिरूपबटोबाणिकबांणे
आदिनअतिलहैकोईभेवा।सुरतिसबादिपरमसु
षलेवा।जुरानजन्मआइनहीजावा।अगमअथाह
थाहकोपावा।तेरूसमंदतिरणब्रतधरिहैवारनपा
रकहांलोंतिरिहै।पंषीउलटिगगनकूंधावैकंचाअ
गमकौणगमपावै।चेलापांचमिलांवनिमेलै।सोईप
रमजोतिकाछरमेंपैलै।परमनेदआगालप्रहरिपरम
सनेहीसोइ।अबमेंतहांबिलबीया।सोउलटिनपूग
होइ।२।तसनांवनिरंजनअबगतिराया।परमउदार
परमसुषदाया।तरवरअकलअगमफलहूवा।चंचा
चोलरहैतहांसूवा।कांमीकागहंसनहीआवै।आसा
कीचउलटितहांजावै।सकलसमीपअकलनिज
पावा।अबरणबरणभिनिनहीजावा।सबसूंएकरंक
क्यारोणं।दुषपावैतेकरमबंधांण।करमबधारूब
होतदुषपावै।चउग्रादिसावरषोटाषावै।षोटाषाइमू
लमतिहारै।रषेनबूडसिऊलकेगारै।ऊलकरलूति
कहांलोंकरिहै।जांमिजांमिजांमोफिरिमरिहैप्रप
चप्रीतिमोहनहीदोहासरणिउधारपरमसुषसोहा
हरिसफसफागहरगंभीरंनहींसोषीरनहीसोनीरंनिर्भै
निरगुणनिजनिरंकारंभीगानहीनहीसोषारंतिसप्र
वारपितानहीमायानांगरहकैरनकाहूजायाआदि

सोक श्रम फल करचद्या। अपरंपार अलेष॥ग्रं॥२०
निरंजनायन्मो निराकारकी बंदना॥ नमो नमो प्रब्रह्म पर
मगुर आतमा अन्यास आमा सो आलोक नत्रानंद प्र
मानंद सिधसाधि कन्मसकार न्मो न्मो रमसा राम न
रायण निरसिध सकल निरंतरि नरहरि नृबान न
बिग्रहं न्मो न्मो निरामय निरबिकार सुष ब्रह्म सक
ल बियापी निरंजन निराकार जन हरीदास बंदते ए
क का अबिनासी अपरंपार ज सार॥२२॥ निरपषा मू
ल जोग ग्रंथ॥ गुरु सिष संसम ऊहक रिजन जन बता
या रामया सेवा यो बंदगी यो आरत यो काम रूवा
सुष संसार का कलई का सारंग हो डा टोडी पड़त दे
तामें जीव पतंगर काहे कूं परडुष सहेंह रिपडेगा
जाइ मनि षा जनम अनंपरे मन सके तो हरि गुण
गाइ काम क्रोध त्रिष्णा तजो निब थिता प गुण दे
ह सो ई कम सुमिर करो परम सया णपरो ह धम नअप
णा सूंकह तहू अपणा गपां न बिचार णो बिद नजि
नरमे कहा धसिम तिडु हेधार। बिषपी वे अमृत की
हे कनक कटोरा मो दिया मरो। को सो जहे पीवे स जी वे
नां दि द नि सबासु रया सेजुरा मन सो वे कहा गवार ला
ल चहत जिमें तेम नीन जिरा मनाम तत्त सार। पांच हृ
दी फेरि करि सुरति सहज घरि धरि बिअनंत साध आगे
चल्या सो ई राह संजारि ८ मो हहो ह की आग निमुषि
दा फत है जीवजा इजलत जलत भ्रमत फिरता यू
ही गया बिला इ॥ सूता सरब सजात है जागि रकरो
बिचार हरि परम सनेही परम सुष आगम वार नदीप
२१ जोगी जागे जग सोवे मोह मद ल में जाइ मोह म
ह ल में प्रवेस ज ब सो वे तब षाइ २४ सोवण का सुष
औरहे जागण का सुष और जब जाण्या तब ए कस
त हं सा धा कौ ठोर २२ जीव जोगी जागे सदा क ब कु
सो इन जाइ इह त्रि आन न लागा रहे धुनि में ध्यान लगा
इ २३ माया के ससरस कहे बात कहत है वो इ राम र
सा इण अज ब है पी वे स र सी या हो इ २४ क हू स्वा
मी क हू सेवगी माया दी पपि म्रवि लड ते जुड़ तय
ही करत गया कि ता ही क वि र

त्म अंतरि देषी ॥ अबगति का अहनांन ॥ ७ ॥ सो प्रेमस
२ पृथमी पृतपालं करम बिपाक हरन अघ जालं प
रब्रह्म चरणां चित धरि हरि हरि पति ब्याडि औरन सीव
रिहां ॥ तातन सी तन ही सो धार जुगा ह रण जगदीस ज्युं स
गुण ग्राही गोबिंद गुण गावां नजिन जिं परम पद
पावां परम सिंध मे प्राणी डारं नन म निस्ता गो प्रेम ब
धारं आत्म प्रमात्म संमेलो परम हंस संहृ लि मिलि
षेलो परम जोति आचार बिचारं परम सु निमिति
प्रान नु धारं जन हरीदास हरि अगम है अथघन
या घ्यो जाइ तहां नांमदास कबीर सा के तार हास
म द ॥ ९ ॥ इति श्री अथ पदी जोग ग्रंथ संपूर्ण ॥ ग्रं ॥ ७ ॥
बंदना जोग ग्रंथ ॥ नमो नमो परब्रह्म परम गुर नमस
कार आत्मां अभ्यास प्रमात्मां प्राणनाथ परम पु
रष निरंजन निराकार निरामय निरबिकार निरास
निराधार अबिनासी निनार एकंकार अपरंपार दा
र पार ब्रह्म करण हार करतार जगत गुर अंतरजामी
अजन्मा अबजांन नहार अजपा जाप ब्रह्म अग
नि प्रकास अनेक अस्साध रोग जारण हार अलिप
अछिप निरालंब निरलेप निरदंद नृमल नृसिंध
परम जोग परम जोग परम गति नृगुण ब्रह्म परम
मति परम ग्यांन परम ध्यांन परम तेज परम जोति प
रम धांम परम बिस्रांम अधर अमर अलह अजर अ
तिर अथिर अक्षर अपार अबार अधरमी गामु धर
अंग अनंग निअंग निमोह निछोह निजोग निजो
ग निरुति निरोग संजोग बिजोग न सो सान ही सो ग
ह्यान हो सीन आवे न आया जन मे न जीवे न माय
न खाया जागे न सोवे न भूषा न धाया ऊ चे न बैठे न
री फैन को धं जय हीन तप हीन ध्यान न बोधं इ हीन
तत हीन गाते न धाते बनिता न सुत हीन जन मे न
ताते अलष पुरस की आवे पहरा करे बंदना कोट
जन हरीदास काल बाण लागे न दी है रिन जिनम
न देहं मन गनं लाग रहे क हासे ग्याक हा प्रात
जन हरीदास तासो ध का जम करि सके न घात सिध
साधिक की बंदना ॥ ग्यान ध्यान धरि देह जन हरीदा

रकाक हूं स मिद्दर कहूं राति ॥२५॥ कबा माति दे लेभ
हूं पैकंबर कहूं पीर गुपत प्रगट बिचरत फिरत करि
दीरघ सुल्य सरीर ॥२६॥ अव सिधि नौ निधि सुन अप्रसुन
कहूं कंचन कहूं काच कहूं धीर जद रिध्यान मैं कहूं
बिकरन्य बिटबाच ॥२७॥ अर्थ गाथ आगम सुगम सि
धि साधेग द्दि गेर रांम जन जन सुष आगम है जे सब केली
दौर ॥२८॥ अब तारा ति मर गिर सर समंद अथाह
कहैं दाता कहैं बैसिले कहूं तोटा कहूं लाह ॥२९॥
सबद सबद पैनें चरले सबद सबद कहूं घाइ सबद स
बद कहूं पोषदे सबदै सबद समाइ ॥३०॥ दोहा सबद दी
सैं कुरसी एक कहूं सो कोंण अरसि सबद अबगति मि
ले सिफत सू दिसमों ॥३१॥ बेद सबद का नेद है ब्रू
ला सबद सुष और बूझा सबद पै बेद की कहौ कहां
लूं दौर ॥३२॥ बेद सबद की मूठि मन जहां तहां चलि
जाइ आगम सबद सूं मन मिले तौ अटपट कह्यौ न
सुहाइ ॥३३॥ सपत पुरी भ्रमत फिरै नौ कष भ्रम और
राधास सगोपी चिरत हैं है बेद की दौर ॥३४॥ अघट कहै
तहैं घट धस्या घट धर अघट न होइ बेद कथा सब स
मझि मन इष्ट कहूं तहैं दोइ ॥३५॥ उबधा दिल तैं हरि
कहियै है जा ॥ जीव मांहि माया कारण अनंत है ॥ प्र
भिसर दोइ नां हि ध ॥ साध सुगर रिस दगति नया पराप
ति पति लोक प्रभे सरदोइ कहत हैं मन अपणा की टेक
॥३७॥ मन सज्जन तासूं कहूं सम झि करो बिचार युक्ति
कहूं न दबु दहै पीर ॥ दोइ कहै करतार ॥३८॥ जगति है त
हरि अपधस्या नरम कर नहूं हरि करता सब लक न
रम धूं नरम रस्या नर पूरि ॥३९॥ हुहे दैत उनीयां इहैं मा
रै घोसें मांहि सग्रथ की बाजी रची घटै बधै कछू न
हिं ॥४०॥ बाजी सूं बाजी रमै करि कर भिना नारूप कहौ
ग्रासे कहौं ग्रासी ॥ हमद रसा हूं कहौं न्याय ॥४१॥ न हौ ही
हू स्वेरता न ही मुसलमान सूत्री ति ॥ सब कृष्ण कहि
सब तें अगम या सा हिब की रीति ॥४२॥ तुरक कहै मक
ना जहां सा हिब की गोर ॥ हीडू जाइ मथुरा बस्या
इहे दहौं की दौर ॥४३॥ हीडू यापे देहरा मुसलमान मसी
ति ॥ पषापषी जग पचत है ॥ इहै दहौं कारी ति ॥४४॥ मुस

गरुा मूठि दई फंधमांहि मूठी ब्राडग्रा छूटि दे तौघ
पिघरिना चैना हि २६ क्ष जसकै नेमैडरू मोजसरा
न जाइ कांम देत प्रबसि पंडया बेडी लागी पाइ २७ का
कुकेरसरदृति का कुकेरसकांम का कुकेरसज्ञे
गका दरिज्जन केरसराम २८ का कुकेरसरापानका क
कुकेरसनाद का कुकेरस नांमरीा का कुकेरसबाद
२९ का कुकेरसमांनिका का कुकेरसनेष का कुकेर
सबेरसा सदा निरंतर सेष ३० कोइ सा जलिका लान
या बहे रिक सो टी पो हि अगनि दीया ते प्रजले कस
ररही कछू मांहि ३१ कसरि मोनि जहां तहां बसे जोगी
बिरला कोइ सूद्या आटे लूण ज्यूं के सैन्यारा होइ
३२ जिनि सू दरि रूपा करी अपणी अंगि लगाइ ति
न के अंतरि दरि बसे दरि बिन कछू न सुहाइ ३३ तन
मांही तीरथ नसा तहां मन न्रमल होइ पांचूं इंद्री फे
रि करि फूलै बिरला कोइ ३४ काया मांही कंवलदल
लात तहां बसे करतार अबरण बरण अगर्दस अकर
अगम वार नहीं पार ३५ काया मांही कंवल दल तहां
बसे नगवंत जन हरी दास पेरेते तहां कोई कोई बि
रला संत ३६ पवन पलटि नेनेनया गगन पकू तांज
इका लचौट चूकेनहीं अति पडे नेत्रा इ ३७ धरम ने
म तीरथ ब्रत अरपट पूजा ध्यांन जोग जिग तपस्या
तुला रोजन के जसर समान ३८ दिष्टि रूप दीसे जिको
रोक सबद बिस्तार ऊंच नीच अबरण बरण मैं तैं
मोह बिकार ३९ कहूं यमृतक कहूं कहूं जाट्टर कहूं न
हरक कहूं गाइ कहूं मारे कहूं मारी रो कहूं षाजे कहूं
षाइ ४० कहूं ही दूक कहूं घटि तुरक बाल बृध कहूं
केद कहूं नारी कहूं घटि पुरष कहूं रोगी कहूं बे
द ४१ कहूं सूकर कहूं स्वांन गति मोर मृग नरका
ग कहूं जोगी कहूं जोगीया कहूं रोवे कहूं राग ४२
सुद्र बैस दत्री बिप्र कहूं मछली कहूं कीर कहूं
नृत्य नृबेरसा कहूं जाली कहूं कीर ४३ देवर घर कहूं
जरगदर कहूं कादर कहूं सूर कहूं राजा होइ फीरा
मैं मडग्रा दहीं दिस बाजे त्र ४४ सीतल भंवर षाक
हूं जड चेतन बदो जाति कहूं दिनकर अंबर स्त्र

कूसुषतजैनवासुग्रलागोजागतिजाइनजोणीपङ्
चैकोणदूरिबेगमपुणबीचिगदरगुणपाणीपस
बदसुणेसुणिसाचपिङ्गोणीजोगमूलगढ़िजोगे
गलटाषेतिपरमसुषपङ्क्चेमायाबाणनलागेद
निरपषबस्तनिजरिमेराषेपिषदोकपरमोवेसरम
सिलाग्रविनरतेवेमेग्रबलाइदरिनसोवे१७काया
करमतरमकथिकोनोनिजबिग्रामनलदी१९ग्रातमकै
ग्रस्थाननपङ्चेतबलगपरलेबदी१०पपषकीप
सिपचतेसबकोसतपुरषासुषदूजाबाढ़रिनेषदस
तनमृतकजरग्रादरकीपूजा१ नरग्रौताबजातदेह
रिविनसूनीसेजनसोईयाबासाबोईपारिनपङ्क्तेमा
धकदेसबकोईपथ्यक्कुसुषछाडिग्रौरसुषग्रगोबा
तग्रगमकीकहीगदेहरिग्रगमनिगमतेन्यारागुर
गमिकेतोलहीगर२जेमेकहेरदेनीतेसोचितमेन
रमनग्रागोपेडाकरेमरेनहीमासापंथपुरातमजोग
२२पङ्क्चेविथाननिमबनपैसेबपतजिवस्तवि
चारेनजेनाघनजेनजिनलेबाजीसूषेलिनसार२
३बासिदरबारमरमिमांदवकरिग्रगमतहांमनदीजे
रामबिसारिसोहमांदरतजिग्रबधिघटेतनछोजेर
४ग्रंतरिग्रैरकहैकबूग्रौरेग्रथग्रौरहीबकैसबद
कहेताहिराहनचालेसाचसबदसमझेर५नाहुषग
हैनसुषदूसोथेग्रगमग्रथनरछोरगादिगुरग्यान
मोहतजिमेतेकामकोधरिपमारेर६मतगुरसबद२
ग्राषिसंगिसाथीऊवेनरमनलागोनोषंडपहोमप
लटिमनगुनमननांवनिडरलेजागो२७निरलेबस्त
सकलविसव्यापीघटलजिग्रघटविचारेजोगीम
रैनजोराजीवेहमाजन्मनहारे२८ग्रामणग्रचलमे
रगिरकपरिमनदूसीगढ़िबाधलेलटाचल्पासवोड
मक्कुतापैडेपारनलाधर१९सासहसासग्रगमग्रवि
पायाग्रछरग्रेषग्रथाहग्रषं

तमानरोजाकैंदीहूगपारसिंग्रांनमैंबडमैंबड गोत
दै यदेबडादेरांनपपादीहूंचात्मातीरथांतुकपरेत
दांजांसिदिलमोदंदीदारथागोतामास्यानांसिहूडि
बदकीयाबकानिस्तिलिषीकत्तेबांमांदिसोग्रपणां
गत्लाकटायकरिनिस्तिबसोकूनांदि॥७॥ग्रपणोकरि
काटीचुनेतबकाउंदीसुषदोइयूंसादिबसूंबेरां
नदेबातकरतदेंदोइ॥५८॥काजीकाबेटामेतबका
जीकेन्रपीरयूंपमेसरसबकापितान्नलानमांनेंबीर
॥९॥गाइनिस्तिमुरगीनिस्तजिबदकीयाजीवग्रीर
एदोजिगमेंडूरतदेनदीनिस्तिमेंबोर॥६०॥मनिषमरे
तबजालीएजालिनस्त्रावणजादिंदीहूकीकरनी
कदा जेमारिमडग्राकूंषांदिदेनेरूग्रागेबाकराभैसा
मारेजाइ॥चांवडचिंताडाकणिमांदीवेठीषाइ॥६१॥प
षापषीमनषाडिदेन्रपषदोइसुषदेषनिरपषसूं नि
रपषमिले तोपूरणब्रह्मग्रलेष॥६२॥पषापषीसब
कोमिलेनिरपषमिल्यानजाइजौकबकुनिरपषमि
लेतोनृपषपषकूंषाइ॥६४॥नदीगपजेनदीषपेगा
नदीग्रावेनदीजाइसबकहूंसबतेग्रागमजदात
दासदासमाइ॥६५॥मनसबकाग्रसवारहैपैंडाकरेग्र
नेकामनकूपरिग्रसवारदेबिरलाकोईएक॥६६॥ज
नदरीदासमेंदानमेंमनग्रपणांदोडाइदसूंदसासूं
फेरिकैंग्रगमतदांलेजाइ॥६७॥जनदरीदासमनमा
यरनीमायाकाजरनमांदिजबदीबिछडैतबमरे
तासैंबिछडैनांदि॥६८॥जौहूवासोनांरहेयासोरसा
समाइजनदरीदासग्राछेमतेंलदारदेंस्योलाइ॥
॥६९॥इतीनिरपषामूलजोगग्रंथसंपूर्ण॥ग्रा॥२४
श्रीरामप्रसिधिप्रमात्मापूजाजोगग्रंथा॥ग्रीधूजो
गीजगतेंन्याराघटेनबधेसदापूकासूरदेसकल
तेंन्यारा॥१॥पदतीहूवानपीछेंबिनसेंजागितदांमिर
तरदीएजामणमरणजुराजेजमडंडकादेकूंसिर
सदीए॥२॥तरवरसंसारबिलबधिफलनलागाजीवत
दांसबजीवेउपजेषपेबसेतादीमेंमगनहूवारसपी
वे॥३॥कदीएकदाकोनयदेमांनेंइकुरसमसबकूंलावे
एकग्राधसापणिकासुतज्यूंग्रदिदेकैसुषपावे॥४॥

वारसपरसिनयामनकेवचा छि जविसरांस समाया॥४२॥
जोगनजोगजुगतेजीत्या॥मूलिंयडग्रोमेनोंही।सु निमडल
मेंसफलविंयापी।जोणवसेतामांही॥४३॥कटनहीसरम
करमनहीं अक्रम।धरे अक्षरघरपाया॥ सुषलागिसहज
घरिमूनी।बोलेनहीं बुलाया॥४४॥ध्यानध्यानजोगनहीं भोगी
नहींतहां गुरूनचेला।घटेनवधेसदाऊंकातूं॥अरषितनाथ
अकेला॥४५॥रणजुलनअलषहरि अरषित रूपअरूपअ
छाया॥षीरनीरजुसकलनिरंतरि॥लोतसकालनकाया॥४६॥
रागदोषरससमैसैंनांही।जीवजन्मनहीं जोगी॥ अरतननेगनिरंग
निरंजनतत्तवेदनरोगी॥४७॥ अरसअथाहजागरअरि
पासतगुरसावचनाया॥मनसाधनेनयऊमनछांडेपानन
थपतिपाया॥४८॥पनहीं दिणावरणनहीं अवरणमयानध्यान
नहीं॥ दूजा॥नाथनिरंजनवेलेजोगी॥तहांहमारीपूजा॥४९॥मयां
नविचारवसेकअगमगतिहारपारनहीं।नदीणेहरिदरीया
सुषदेषिदसोंदिसतहांवपासारहीणे॥५०॥जलथलजहांतहां
करणमोरदेसकलतेन्यारा।जनहरीदासअनतासुषलागा
गुरगमअगमविचारा॥५१॥सबदेवांसिरदेवदया निधिछिये
नकाहूछाया॥जनहरीदासमलतासुषलागा॥सतगुरसाच
बताया॥५२॥इतीश्रीजोगसिषिसमाधिजोगग्रंथसं
पूर्ण॥ग्रं॥६३॥जोगसमाधिजोगग्रंथ॥ अवधूजोगीजगतें
न्यारा॥पदनबोननिरंतरिवेता॥विनाकाकरिवारा॥१॥सबद
विचारिसहजघरिषेलै॥नावमिंतरिजोगे मनसाडाकणि
मारंतीमारे॥तोनगरीबोरनलागे॥२॥ डीकसेंधसेमनदहदिस
मनकूअटकिनराषे॥तनपारणतहांमनमेवासी॥नानाविधि
रसचाषे॥३॥चिंताकूंचिंताफिरियासे॥अगनिअगनिकूंसोषे॥
जलविनन्हाइनिरंतरिषेलै॥अवमनपडेनभीषे॥४॥नजीतेताकूं
ततदरसे॥ततरहेगुणतेजूवा॥जोगणिकोईजोगेस्वरजाघटिप
रवासूवा॥५॥अधरअगमकोईविरलापऊंचेसतगुरसावचना
याताषुपकेंदमन्यारीकहतासोसुषजेऊपाया॥६॥तोणीमारि
दोणमेरीया।अषणमूलनदारीहजीरहेविणजतूंविणसूं
पेंडाअगमअपारी॥७॥गृहकरोनवनवसिनरमूघरमांहीघ
रघाया॥सोघरसकलघरोतेंन्यारा॥तांथरिध्यानसमाया॥८॥पि
अजनमांहि

काठी। सूता बीरज गाया ॥२२॥ ग्यो न गूदडी सहज निरालंबा रे
पसएण पवन गहि बाधा ॥ गगन मनम धि आसण आवधू वेले
सत गुर लाधा ॥२३॥ अषिल अलेष निरूप निदर घर फेरि तहां म
न लाया ॥ नत नीका सूवा की नांई आपे आप बंधाया ॥२४॥ मां
जष गहे न अमृत छाडे पापपु निंदो इइजा साधधरम अेत रन
ही पाडै तो अबगति की पूजा ॥२५॥ आतम सकरे नपार न तो भा
कूं जमराइ न मारे ॥ अजरा जरे अरी करि जावे जीत ए कूं षेपन
हारे ॥२६॥ निरनेनयाग गया डर डरता ॥ साच सबद मैं पाया ॥ चेला
लेनाथ गुफा भै पेमा तहां कछु अलष लषाया ॥२७॥ बेद सूरस
सिसुरति सहज घरि अर्थ अलूधी आसा ॥ परम जोति परका
स परम सुष तहां हमारा वासा ॥२८॥ मन निहचल निरंजन सुष
लागा रहे सकल तें न्यारा ॥ गगन मूल अमूल अधर घर तहां
मंडिर हया बिचारा ॥२९॥ जहां जहां बरण न हो बहो बंधन काल
कहर की छाया ॥ अबरण अगम सुगम मन बस मन्या मन रहीं
मैं तत पाया ॥३०॥ सतरज तम गुन रजार हतरस ॥ तहां विलंब्या वी
या ॥ बेला पांव पसरता ष्या कार सही मैं रस पीया ॥३१॥ कहूं ए
सुणए सुष तें सुष आगे ॥ अगम सहर हे लो ई सहां बसे तो रि
हृदा एण न लागे पहुंचे किरला कोई ॥३२॥ ध्यान न ते मन और अ
गम हे सकल बियापी सारा ॥ परम सुनि परवाण न कोई नि
ज बिसराम हमारा ॥३३॥ सा असंबाहि सहज घर राषे बंकनारि
लरस पीवे ॥ इला पिंगुला सुषमनि सकिरिप रचे नगाजी
वे ॥३४॥ मद्य आनंद वकरणामे ॥ परमन लपति पूरा ॥ असप
रस आनंद अछिअ तशि बाजे अनहद तूरा ॥३५॥ परम ज्योति
परकास परम सुष आतम अंतरि लहीए ॥ करम कपाट भर
म करि कोने अगम तदां मिलि रही ए ॥३६॥ आसण छाडि परो रे
बनजडीया ॥ अलष बृष घर पाया ॥ रस फल षाइ बहोडि मन
रसीया रस ही मादिस माया ॥३७॥ लल पवन अकास पऊं
अकरत हां कर दीया ॥ परम उदार अपार अबहित बास तहं
हम कीया ॥३८॥ आसा मेटि निरास निरंतर गुरगम गेला लाध बा
द बिन बीज गो मन मैं चमके घन बरिषा बन साधा ॥३९॥ इडी म
न पोन अरथ के आसणि ॥ अगम तहां फिरि लागा ॥ धुनि मे धा
न परसि पद नें ने नर मगया नेता ॥४०॥ मन निहचल निरक्षर रे
नरे तरी मछ अमृत बिन पाणी ॥ पंष दो अंपर ला मैं हूडा ॥ धुनि मेंधु
जा समाणी ॥४१॥ आसण अनंत फिरे छा फेर्या गा थे सो गाया

रतरिबा धा प्रा बासनकदेनजलकेजेजलकेतो
आथा २ पतीतरबाजपगातरिरोंद्याखालीबि
द्चारेगूगाग्रंथ अगमकाब्कै बहूराग्रंथ ।
२९ पिगुलाकु रिपगा बिनचाल्या आधेलोच ।
धातखरपातफूलफलडाला बीजसमूलाथा
२० धूत्रेधनकहु लटिसरलागा लोगतमासे आया
मुरगीबपरीजिबहमुलांनां काजीन्यूतिबुलाया
२१ चीटीकेमुषमेससमांनां मूसेगिलीमंजारी दाद
रससरपसमदमेंडाख्या लोकांपरिअसवारी २२म
डीकासिरमाथीतोड्या जंबकसिंघजगाया उंज
रमग्रहदांततलिचूख्या हिरणीचीताघाया २३ वि
ससिपकडिदाटतलिराख्यानकटीनाछि
सुसाहमारेषतीराषेबाडीसुघनघाई २४ आनिअ
मोनिअगनिदोहदारघसुरनअसुरासि
मोरगजीतणाकूघमताधीपेडाहगदास्यारप अ
कलअनदअछेदअघडिसनिरामूलनिरधारे ।
२६ सानजदानिकटिनदीन्यारा अगमवारनदी ।
२७ साईन्नेनिजनाथसदासंगिमेरेजुरामराण
नेजागाअनहदसबदगगनमेंगरजेमूलकेव
लमनलागा२८ जपजिनजिनसे जुरानब्यापेना
मोमनमारेथिजेनषेलेजोगिनसोवेसोईनगुण
२९ दमारे२ नोतसमोहदोहपाणिनाहीनातस
कोलनकायानांसोपुरषनारिजीनाहीनांतसध
नछायारए जोगनजोगनिकटिनदीन्यारा ३० देअ
लदोहनाहीमेंसेतजे जजोगासोईब्यापिरलास
बमोदी ४० घणांकहूंतोकहणीनावेपोडाक
लोपाराधटेनबधेसदाज्यूंकात्यूंरहेसकलतेन्या
रा जनहरीदासपतिपरसिपरमसुषजड्यासद्
जेमेंतालाजोगसमाधिजुरानहीब्यापेजाघटि
अगमजजालाध२जुरानब्यापेजोगीयाचिता
लनघाइकरमअरमधूईकायासुषमेंरह्यासमाइ
ध३सुषअगाधसबदेंअगमपहूंचेबिरलाको
जनहरीदासतत्तसोंमेलीचेतबद्गी आनदद्ोइ ४
४ जोगतेषमसतगुरदीयाआतमकूंनपदेसाज

न्यारा नया अचंत्ता नारी पैंडे चल्लै नकांटा लागै नलटी
प खे वारी २० गुण गत गया मिल्या मोहि निरगुण निर
गुण सुष वारन पारा सहज समाधि पवन गहि योंचूं हम
दह पषा तें न्यारा २१ मैं मेरा मन अकलन जाने अगम
त्ते नेला या नलटा चढ्या अनल कासुत जपूं सहजै सुं
न समाया २ पैंडे चलै सपा रिपकुं चेवे ठिरहै सो सूरे अ
र थकी यां अनरथ सब छूटै ऐसा अर्थ बिचारै २३ सील
संतोष दया दस बारी विमें दह मारे दाई ग्यान बिचार
मेक सिंघासन सुषमें सुरति समाई २४ निरमें डंड निरा
स अधारी कंथा अजर अपारे निछ्या अगम निरंतर
डीबी आसण सुनि दह मारे २५ जोग बिचा रि जुरा दह मजी
ती अगम बस्त सोपाई निरमें नया निरंतर मिल्या नल
टी ताली लाई २६ पूरब छाडि पछिम नदी षेल्लू कजे
लीवन बिष बारी देस कोवू रू करंग हत्ता लू सींगी सुरं
नह मारी २७ आसा कटई धणह मकीया चिंता आगनि
बुझाणी नदी निवांसे बहती थाकी चढ्या अपूंग पा
णी २८ कामदह मोसें कागद बांचे आषर अगम बिचारै
यक मत गहै सपारि पंकु चे बेठिरहे सो सूरे २९ मंजदे
सत दहो मठी दह मारी तन खाघंबर कीया धूई ध्यान स
हज की मुद्रा अगम पियाला पीया ३० मेरडंड का मार
ग लाधा नलटा पवन चढाया दसवें द्वारि निरंजन जो
गी दह मगुरगम तें पाया ३१ तेरह तीन प्राण घर चौथे
परम सुनि मन पूरा सोमी नया पिंसण धिसण नयास
षी गढ पडि सके न चूरा ३२ दिषणा देस रहि दह मछाड्या
न लटदह मारा बासा निरमें नया निरंतर मिल्या अनमें
पद अभ्यासा ३३ जोगी सदा सहज घर रिषेले बसु धम हि
बस्त बिचारी जागि रहते गंगा निकसे लागि रहे गु
फा दहमारी ३४ यला पिंगुला सुषमनि मेला त्रिबेनी
तट न्हाया जोग समाधि प्राणले सूता जोगेन दी
जगाया ३५ अर्थ बिचार अगनि मे पैठा नकंनाथ
संगि लीया आइ सबले अंगी लोताषे जपर आसण
कीया ३ सात समंद मोती फिर सो च्या मछ मूंबां बि
न पोणी गोपी तजि कान्ह अगम कूं चाल्या आणे कै
या घियो णी ३७ मरकट पेंबा जोगर नाचे सबद नि

२६॥गुरुसबदसुखछिकंविसीगी॥ग्यानचक्रकरधारे
चेलापांचजटासिरजरनोआसणमुनिहमारे॥१७॥पेंडा
अधरअगमनरअंतरिनुदबुदकथाअनेदं॥षिमाष
डगलेअैसेषेल्लोजनआमरणसिरछेदं॥पअजपाजाप
मंत्रमेंसीष्यालोनहिसबजाडं॥काल्हीनागपिंडस
ाणनपावेगिषिणीगिणिदासनुपाडे॥२०॥पांणीमेपेसिनष
रूपंपांणी॥अगनिछसिअगनिनग्रासेगुणांपेसिनिर
गुणहोइनिकसूं॥आसाबसिरहूंनिरासं॥२१॥प्यारंजक
रूकरिरहूंनिरासंजीतणीरूषधूंनसारूं॥प्याडोंसाधन
साधीराषूंनांमैंमहूंनमारूं॥२२॥काररहूंनआपणांअ
कांचारहूंनसीचलायासोनंसहजनरहुठकरजागंरहम
रहूंनध्याया॥२३॥ज्यूंआकाससहजगुणग्रासेगुनकोई
आपेनांहीअवधूतनमनअैसेराषेज्यूंचंदाजलमांही
॥२४॥साहिबअघटसाधसबघटथाकीमतिकहतन
आवेवारपारकोईमधिनजांनेसबकोईअगमबतावे
॥२५॥परमपुरषपरमग्यांनपरमसुषपरापरेंपारिपाया॥ज
नहरीदासमनतनलागासहजैसुनिसमाया॥२६॥पारब्र
ह्मपतिपरमसनेहीसमंदरूपसबमांही॥जनहरीदा
समंन्धुलसुषलागावारपारकछुनांही॥२७॥२६॥ग्रं॥२५॥प्र
ाणमात्राजोगग्रंथ॥वोंकंप्राणमात्रासुणोहोसाधोहरि
जनजनकाभेदकांमक्रोधकाकरिवाछेदोकपटहिराषि
बापेचसाथीमनमैंमतमारिवादाथी॥१॥मैंतेंमोहदल
जीतिबाजोगीजुगतेभेटिबापवनससिजोगीसबदको
गूदडीसाससबधागाअवादिकांसहैरहिसीवणेलागा
॥२॥निरासमैंमुद्रासीलसंतोषसतिचेला॥ध्यांनकाधूंडि
तहांसिधांकामेला॥दयाधारिजडंडसाचकरिगहिबा
बिचारकेआसणिउनमनरहिबा॥३॥सबदकीसींगीस
हजकीमालाजतकीकोपीनतहांजोगकाताला॥४॥नि
रमोहमठीनिहचलबासाजरणांकीजटासिरदेषिब
तमासा॥५॥निरासंकुंडांणीअकलकीछायाअधरबि
चालिबातजिबाकोमक्रोधकाया॥६॥भेदसिरटोपीत
नबाघंबरगुणजोगोटासुलिच्छतीनघर॥८॥पाताल
कापांणीआकासकूंचढालाकरलपनीझूपणीपवनमु

न्हरीदासमनतहांबसैजहांसंतनकाप्रवेस॥५॥
जोगसमाधिअगाधअतिपारब्रह्मसूंप्रीतिजनहरी
दासतहांषेलीऐतनमननिहिंजीति॥५८॥इसीजोग
समाधिजोगयुं थैसपूरो॥ग्रं॥२५॥ जोगध्यानजोगगृह
स्थिदेसतहांसोदामेरा॥सतगुरआइजगाया॥पैड़ेचलूं न
कांटालागे॥उलटाराहबताया॥१॥मनथिरप्राणप्राणथिर
मनसा॥बंकनालिमेंबाई॥अगमअर्थसोईकयाकह
लंक॥सतगुरबसतबताई॥२॥तनपाटणतहांबासहमा
रा॥नौदरबारजड़ीया॥सुनिमंडलमेंजोतिचमंके॥नल
टापवनचलाया॥३॥आवधग्यांनसंग्रामकरमबिनआर
न॥त्रिगुणसषीसुतषाया॥जटापंचपांणीमेंपेठी॥मीनसु
निथरपाया॥४॥राजानथीरैसिरैतिनर्यु॥राजाकुपरिअ
सणकीया॥रुतिपलटयांरसफाकालागै॥एकैरसबसि
जीया॥५॥मीवाजहांततहांमनलागा॥फलकरगहैनघार
थिरिथिरचैंनराजस्यणकैं॥निरनैनगृहमा॥रा॥६॥निरगुण
निजननेदसकलतैंन्यारा॥सकलभिरतरिदरसै॥घटघट
अघटकरमपटलागा॥बिरलाकोईपरसै॥७॥कंनुणिअ
हअकासगरास्या॥बिनबरिषाहुतिआईतारहतिसाषि
सहजमेंनिपजै॥षेतीबिषबावनलागै॥कोई॥८॥कोटि
फडेप्राणकाणनिपजै॥बिनपरचैकणसीजै॥इबेन
दिकनअगनिगरासै॥ऐसाआरंभकीजै॥९॥गिरवरमें
धातधातमेंगिरवर॥गिरवरधातनपाया॥नेषनरोसम
तिकोईनहीं॥जबलगयोमतनाया॥१०॥चौमासैदो
चानिगग्रास्या॥निरपषनिजरसमाया॥सातसमंदमोती
फिरिबास्या॥मरजीवालेआया॥११॥नवघणघटाबरस
ती थाकी॥नारअगरहयाई॥चिंताषिवणि॥गाजैगतअ
पौ॥बसुधागगनसमाई॥गागरिकापांणीकूवापीवै॥न
याअचेनानारी॥उलटीलेजअगमसूंलागी॥पडफूटी
पणिहारी॥१२॥मेरडंडबाईचढिलेद्या॥जलमलअगनि
गरास्या॥मिटिगयात्रिबिधितिमरयातनतैं॥परमस्वरूप्र
कास्या॥१३॥सीमरतासगरेजगमूंता॥पडदापरदान॥
होईनदेकेंवलतहांअगनिदलतहे॥जाभिनदेषेकै
॥१४॥सतरजतमगुणकामक्रोधमदमोहलोहकसदी
या पांणीजरैअगनिजलसोषै॥ऐसाआरंभकीया॥

पाणीफूल्या घडालसमायामूलकोमयङ्कसतगु
कीया त्रिबेणी अस्थानाजडांमेपाचकदीया ८ गंग
नमनमधिबेसिन्धदघरिसूसमायाप्रेमजोतिप्रका
स अगमगुरगमतेपाया १० थेगिधामपरदस्या प्रसि
पाणीनदीपदि मसुनिघप सेऊपदकेरङान
जोवे ११ अरचिस अरतअनगाला घनहैनेनर्नेतेज
दातसेनरपूरिपूरिलेप्रासनभेद १२ वारपारमधि
नोहिथिपेनदीकाहूस्याया अदिष्टि अदर अरूप
अगदअरअतीपाया १३ तसोसापाणिनदीसंचरे
डहकिदोहडकनधोवेपृथमचढेनहिजदरमंत्र
गारुडनमारे १४ नेहलेलेगेनचोरासीसजोपानद
तोले देवल बिन देव अनेवातसोऊलफकोईज
डेनबोले १५ अधेका डिगये चढ्या राग बिन राग नि
वाजे ब्रह्म अगनि अजणमलद बिन सीगी बाजे
१६ तुलानहीतसोतुल्या बिप्र बिन वेद पढाया अ
गनि बिना असहोमपुदि बिन पुनि समाया १७ अप
न बिन अरन करम बिन करमस कीजे बिन तपस्या
तपतहा पाठ बिन पाठपढीजे १८ ईधण बिन ईधन
अगनि बिन अगनि सजोरे बिन दीनिजनीदनूप
बिन नूपसनोरे १९ नतेना थलेसाथिमेरचढि अ
सणधास्या जोगारन बिन जोग जोग बिन जोग बि
चारया २० नीरनफलके पाणामास्यायज्ञ आरन्हम
कीया वगता जिके सुतेठगठावा एक डिअगनिमु
पिदीया २१ जनहादासंसतगुरुकाचेरनाडेरनसो
वेजागे ठनमनिरहेनिरतरिनस दिन तोनगरी चो
सनलागे ॥ २२ ॥ ग्र ॥ २३ ॥ तनपति अहेतजोगग्रथ ॥
बोमनहीबसुधानदीपवनजलतेजनपाणी चो
नदीजदियातितादिकहिकोण बिना णीर सातसम
दमरजाद नदी गिरनार सूतारा चोरासी लख जाति
हीजदि मेडलतारा २ अदिसक्तिस्योसेस बिनक
नहीआयाजनाजुरानहीमोतजीवनदीकाल
काया २ मुरषनारिस्सपांच हाटपाटणनपसार
दामणिगगनन गाजेनदीत्रिषिघण भर४गार
नोकुलीनाग मंत्रगारडनगहरं डसणनहीअ

ग्यांन का चक्र ले काल कूं मारिबा ।२०। बारह सोलह क
ला ऐक घरि आंणिबा जोग का मूल यह जुगति सबद ज्ञां
णिबा ।२१। गुर का सबद ले नौ राज गाडबा अपबेबड़
त जि आगम तत्त ज्ञा डबा ।२२। देषि पाव धरिबा दया पंथ
करिबा न हत्न रिन मोड़बा भतक रिन धरिबा ।२३। नैनी
त्तिन ग्रीमो रहनी माया को मनां मिटी नब ज्ञोग पंथ प
या ।२४। रहता सो नाइ ब्रहता सो बहणां अब धू उलटा
गीता मारि आकास मे रहणां ।२५। अर्थ की अक्षरी मिध्या
न ना षिबा निरंजन मा ता जतन सं राषिबा ।२६। डीबीस
बूरी औरकूं नदे बा आकास की निध्या नाव संभूले बा ।२७।
बाइ न झल के नरम सब छाड्या प्रमतत प्रस्तां मेरमरि
ध गाड्या ।२८। बैसि निरंतरि आरंन करिबा काया कं मडन
अमीरस नरिबा ।२९। चिंता डाकणी फिरि गई लाजे अ
नहद सीगी गर्ग सुरबा जे ।३०। जीव ता मेरे स जुगि जुगि जी
वे अगम पिया लाह क्यारस पीवे ।३१। करम धरम सुष
मनां नोगी अकल तत बरतत है बसे प्राणनाथ ज्ञोगी
।३२। जनहरीदास सतगुर सबद कह्या तूं कीया अक
ल के आसिरै अगम गहनी या ।३३। साध सबदी बसे तत्त
नै नांही जनहरीदास मन सुरति प्रांण बसे ता मांही ।३४।
जनहरीदास चेत्या सतगुर चिताबे ओबेस सावे जागस
पावै ।।२५।। ।।२६।। आत्मा अभ्यास जोग ग्रंथ ।। ब्योम
नहीं बसुधा नहीं पवन जल तेज न होई अगम गैंकुर
सपा तहां चोर कहि लोग न कोई ।१। पांणी बिन पांणी अ
त्र हा घा बिन तिरणा वार न रहणा थाकि पार जाइबा
है। डिन फिरणां ।२। के साथी साथि गया साथी गत ह
ज्ञा देवलि देव रिषि सिध सरि भन कैरन पूजा ।३। तारि
ज्ञी ति दो हु देस तसा सबजीव का बासा देषित मासा ड
स्या बहे मूंदि आवे तासा ।४। चिंता की लोगन चोट वा
ट सतगुर की आया सतगुर सा दूसधार सुतो सतगुर तें
पाया ।५। ग्यांन सिंघासण बेसि के आरंन दम कीया बू
त्न अगनि प्रजालि पवन मुषि बुबत पीया ।६। गया प
प्रचंड निबधि मेते अम नाम न लटा गो तामारि
प्रांण न है सुष लाग ।७। पांच सषी रै साथि परम सुष
सागर झूल्या बिब धिबेलि फल झड्या केवल बि

कथा।प्रमग।तिग्रुरगमलह्रो।थस्वनगिरत्सके
म्रा षेतह्ररह्रो।।२५।।ग्रं।।२८।।मव्वदपरह्याजोग
।।जगतजंगम।जोगी।जती।सोफी।कह्रसन्यास।माया
थाया।ध्वक्या।निरनैठोड।निरास२।जादकीथा।ब्वितघद
स्त्रूपतपरम।नजाघ्र।मनिघ।ऊलधरि।ह्रस्नजोम
केरिमनह्रिसमाइ२ष्याग।दोघमैतेमनी।जह्रातह्राम
दैतम्रंगाना।थपतिध्या।डिका।लारसोमिरलेतन।
पानस्त्रा।घिमाया।मुद्दित।जीवजा।गिसकैतो।जा।गिस्त्रप
ापला।घुडा।इक।थिपतितपरम।मुषला।गि४।ब्विप्रबे
इकाजीयलभदह्रोपघादोइला।लिब्वी।चिसमंदजंघ
इथा।कहैतह्राकी।बात।५।जैनधर्मकोटाकरमनमें
करिसकैनह्रा।चिदानंदसब्वतें।गाम।जह्रातह्रान
२पूरिद्ध।च्यारब्वणा।का।मूलकह्रो।ह्ररिपरमसनेह्रीपी
व।ह्रा।रिजीतिन्हुरकोपडी।तह्रांस्त्र।रूथ।जीव७ घटदर
सण।सोधमासव्वेमुतोस्त्रोरह्रोरीतिकला।मालीजह्रो
तह्रा।पघापघी।बिप्रीति८।गावण।सूरीवणनलारो
वण।गावणमा।ह्रिराम।सिवो।गीधा।वकेतलफितल
फिमरिजो।ह्रिा।लाघण।इकास्त्रथंडहेकोटपदो
पदसघसाह्रिबसबतैम।गुघसदा।ह्रसनमुषदे
घ२।स्त्रनतसा।घिसाधवदीघह्रिस्तनपतिराम७
लटागोतामारिकरिकरी।स्त्रापणाकामरितजितन
मुघचोवाचंदन।सूधो।सह।स्त्रोगिद्धीं।ह्रेम७जासमु
तोसिंगारकोइ।स्त्रोरह्रे।जह्रां।मिटेकालकीत्रास१२।मि
लोबेमितपम्याकोरे।कटमूलघ।णिघाइवातपम
कोइ।स्त्रोरह्रे।जह्रां।विब्व।हिला।पसनजाइ१२ब्वह्रो।वि
विनोजनलेतेत।इम्यातेकी।वोटवो।नोजनको
स्त्रोरह्रे।जह्रा।मिटेकालदोवोट१४धमनमतीरथ
तप्रीतिह्रेतमनमाह्रिमुरै।गीरथकोइ।स्त्रोरह्रेजन
सब्बेपापजडिजं।ह्रिथ५।चारतलेदेह्रीडडै।स्त्रनस्त्रावि
करिघातासुतो।चारतकोइ।स्त्रो।है।जसांकामक्रोधन
त१६।पांचस्त्रागनिसाधैसुतो।फलसाकेतह्रांजाइ।कु
गनिपूगटीनह्री।डालमूलपछघाइ१७।देहघेह्र
दसा।स्त्रनफास।निरगुणलेत।नस्नेपदपकंतान
गपाकोणसूह्रेतर

का नही मूरत नही जहा ५ बांरनि दीपन पाय चलत
कागन नही नरसें निकं जोगन जोग ारसरी गास नां नही कं
धन छंद ६ मात बारसू तितीना घडी मरूरत नही जोइ
पहरा दिन पष मास बरस जुग बरान कोइ ७ पुष्याति
पा बानि नीद संकर सुषसोतन घरती नही छरी नही मिन
नसी नंदन नही डरती मुद्रले स दुती छिप्र विद्या वि
स्तार नचैद नहीं ही हूनही तुक सरान्ही सबदन स्वा
द ८ नही चंदन नहीं सरास्तारत बजी तिन मन नही मुक्ति
सधिन बनिषि चितनही चाहिनधनही ९ सिधसाधिक
जोगी जती पीरनही पैकंबर नही कतबन नही गांस द
रनही देवडि गांवर १० नहीं तप स्या जाजाप नहीं क
रता नही काया नही जोर नही जंत्र जोगा गोरष नही री
या ११ नही मूरनही गाष्ट्र जब दूतन तेगन तूटा नही
हतमु षसा य तदिस्वादक फूली यान छूटा १२ नही
पापन ही पुन्य दया निरदे नही माया नही मोहनही
दीसा दूत अनदनही डुपसुपछाया या १३ नही सीलसं
तोष गहरमति गुरुलचेला नही मान नही ध्यान १
आपत दिअरतपुअकेला १४ नही बिरहबैराग न
ही सवग नही स्वामी बट दरसन पषनही तदिआ
थि अरचितबद्दी नामी १५ महल दरगहसेफसुप
नही बद्दी नारी छोदा नही जोध जरकंब नही गोगो
डिकंदा १६ नही पायक नही फौज चूक नहीं चा
लन धरही सूलजा चिगदातार नही कोडी नही कर
ही १७ तिन ही राजा नही देत नही दे वाय र नही मनी
नही घडगा सूरवि रण तूरनका हर १८ नही नादनी
साण दैनबद्दता गोबावलन ही सावतन ही सूरनी
च रिणराकनकावल २० तदिस अपडित राम आर
थ अवसा थी सोई सबजीवांका जीव तासगतिल
षै न कोई २१ जहांतहां गोपाल गोपसबमें गोपाल
कानहीजोरनही ज्वान नहीबूता न हीबाल क २२
सिरजन हार अपार नांव नांरी इणा ती जे निरामूल
निरसिंधतन ही फिरि सर बसदी जे २३ ऐस बक्करिस
बतें अगमा हरि जन दरीदासनूं जेनि डर प्राणदं स
मोती चुगै मांन सरोवर मंफ हर २४ जन दरीदास क

परंपार श्रेष्ठ सुतातमातबनितानसीगोबदेसनदी
देहा ३० जनदरी दासपतिका बरत अपणां हिरदे धारि
परपांणी लागे नहीं नतनदी पंघसबारीथणपरमसिंध
प्रवाणा कहा बड़ो कीमतिकरता गोहरि जनसीदा
सनृ जेमतें नृ ऐसे बिचारी ॥ ४१ ॥ इती सबदपरख्या
जोगग्रंथसंपूर्ण ॥ ग्रा ॥ १० ॥ बीरास वैराग जोगग्रंथ ॥
क्या कहीएक हां कहा रजा मां रहां णी मांहि सो साहिबके
हाथिहे देतो अचिरजनांहि रहां णी तो जे हरिनजे रहें
नरत्तरिसा ॥ बलताकुफें अगार सब बसे डिनफलके
आगिर को चरचें को बंदिजे कोनी देग हिखारघेलेसाध
समाधिमें करतये नसीलगार २ जोकरनपेंतोकसरिदे
कछु कि रचिमन माहि आगमत हां पड़दाय दे निजतत
परम्पाना सिंध जपू रमदे पेंत्युं कहे ऊंचा करिकरिबाह
अरंगसिंघ बेसनरो एकब्रह्म को धाट ५ उनीयासूं बाई
दईप्रेमे स्वरसं प्रीति सा धांका सुप आगमेदेयाकछु जगत
रीतिधकरमकठिनरहाणी कठिन कठिनसाधकोटेकज्यां
बातां सांई मिरे सो कोई कठिन धमे का ७ बिरहचोटला
गीनहीं साधसबदसुबहरि कामक्रोधमें तेंमनी प्रगादेसक्या
नचूरि ८ याबेदनिकटिबोकठिन जोगोबिरता को ६ ॥
दयाजहां आरंननहीं आरंनदयानहो ६० दयादेसत
हो बासकरिनें जे पदनजिरांमधीरजेमें धनमिलेगा इति
श्रीसरियक्कुकाम १ मन चंचलनिहचलनया गडा ॥
ग्यांनकी पालि जा गपासो नरमेंन हीं सूतापडे जंजालि २
पांणी मांहीपेसिकरिध्रेनिरंतरिध्यांन मनमछली चित
बतरहे बड़ी बिपतियक्कु ग्यांन ३ आगमतहांपडूतान
ही गुणइन्द्रांका प्रतिपाल गुरजी करसिघमाछली त
कितकिमेल्हे जालरे ४ साधतहां सुरतनपसदाहरिसुमि
रणसंहेत धालपड्या घरधातहें जाका सूनां घेत ५ प्रांन
सनेहीसो इमां सुमिरिसनेही रांम अलपआन आतस
कहां सुपनो का सा कांम ६ बारबारतें सूंकहूं तें करेन
अपणा काजगो बिंदनजिजीवन इसा जिसा बीलका
राज ७ कालकहरचितवत हैं तकितकिरोपे डाणडं ।
णापड्या कहि कहा करे अज्या सिंघसमांण ८ गोरूगवा
लहिस्या डिकरिषेतबिडांणांमाड़ मारसहेसंकटिपेरेस

१ल (थे/ना१

तदेह्कैजाइसुतौपंथकोईश्रौरहैजहांसातसमंदं१९

सतगुरसबदंमनघड्याघाटनुतास्याञ्चाथिहूजालो

डडुमिगयारोकेजाडहाथि२० चिंतामणिदरहैतहां

सुतोसबैसुषलेतवाचिंतामनिकोईश्रौरहै प्रगट

परमपददेत२१ धाइअगनिमुषिप्रजले तोबाली

यातारसुतौलांबौकंचननयाजबपारसपरस्याजा

इ२२ श्राइलालजरदासपेदगिरवरसुतहाथिहूजूर

लोहापलटिकेंचनकरैसोपारसकहतहूर२३ हीराकी

सोनाकहासुतौचोरलेजाइ वोहीराकोईश्रौरहैउ

लटिचोरकूषाइ२४ मानिश्रमानिदोइगबगतप्रगट

परमपदहाथिकामधेनिसुरहीसबैसुतौकामधेनि

तहांसाथि२५ मनमरजीवातनसमंदउलटगोता

षाइहीरालेन्यारारह्यापारानलनसुहाइ२६ चंदनत

रवरकीसंगतिबसैसचंदनहोइश्रसपरसगतिऐक

हैनांवधरनकूंदोइ२७ चंदनतरवरबिबधिबनचं

दनमिलेनकाइरंगिश्रौरवृछचंदननयामिलिचंद

नकेसंगि२८ कल्पवृछसबतेंश्रगमकनगुरदीयाब

ताइजोपरस्यादोजिगडुलैकामकोधभ्रमजाइ२९ व

तश्रापैदालिदरगमेंमनकातोटाइ्१ सुतोदातासब

तैंश्रगमजहांतहांनरपूरि३० जातिलीगीजोगीवगप

नजनकरतमबसाध सबदवांसिरदवहैहरिश्रप

रंपारश्रगाध३१ सुषसीतलदूअंतसुषमनकरतपे

मधसिपांनसुतौचंदकोईश्रौरहैप्रगटहैश्रनिमां

नि३२ कंवलबिगसिप्रगटीकिरणिघटमेंश्रघटनजा

सपश्चिमदिसाकगाश्ररकनघसघनानिप्रकासइ

श्रावपद्र३ श्रंमृतसुधाश्ररसपरसरसऐकसुतोइद

कोईश्रौरहैइजाइइश्रनेक३४ जन्मजुराघटपटन

हीजमकोलगैनगाजासुतौराजाकोईश्रौरहैजाका

सबपरिराज३५ सबदेवांसिरवहैसबसाहांसिरसा

हसबसुलतानांसिरसुलतांनहै हरिपूराब्रह्मश्र

षाड३६ लषचौरासीजीवजंतनांनांबिधिदीदार

रासबकबिसबतेंश्रगमश्रनंतजोगबिस्तार३७ बसे

कहांनांहीकहांकोपासकेश्रौगास्तिवानपारकीमति

नहीनांवधरतहैतादिन३८ नांवधरंसुतौमेडरूहश्र

षीनदेषाकोइरत्तासमारिचरिजातदेनंजनकानंग
देषु४०॥जलमायाजीवमाहरत्तोघुसीबसेतामोदिका
नकारबौसेबसैनिदेचैलाडैनोदिधरलोकलाजसिर
देलदेदेतनरत्तावैनारासिरसादिवरूसूपतात्तकुकरै
बिचार४१सतीजरतेसूरामरैकठिनबातपरतकोमनि
सप्रेहीनिजसाथ४केपातिदूससंग्रामथ४जबबातपै
डाअगमजीवजागिसकेतोजागिमनसजनतासूकै
कायकुबारारसबैराग४४कजलीबनरवानदीगेरापै
मनमाहिरहैसेदरिसूमनमिरतैतोफिरिबिछुडैनांदि
४५पैडेमरैतोपरमसुषपकीताद्रिसमिटोहजनहरी
दासदरिसनजनकीघाटीलहैनकोइ४६जनहरीदास
कहिकयूंडुरैपांमनजनसरीतिनकेवीमांतीदेषीगे
जाकैजैसीप्रीति॥४७॥इतीबीरारसबैरागजोगग्रं
थ॥संपूर्ण॥ग्रं॥२०॥जगबिध्वंसजोगग्रंथ॥आलम
षलककुपरैषानिकाकरताकरणबरणबिस्तारबुसु
धातुयाअगनितनवाईरबिससिसोनाप्तारअगार
अचवदीनवणगवणगुणग्रामीतारामंडलनरचण
त्रियलोकासागरसपतअष्टगिरपबतनदीनिवासे
बदेअलोपरस्पोसफिसक्तिबिष्मब्रह्मादिकानव
घणदामणिइंद्रअमेघधाणीच्यारिच्यारिबिधिवाणी
घटिघटिअरूमंडाणामेलनसुरनरअसुरषसेआपमे
मायादडीसममताजेपधेतिषिस्याकेअजरूपतिसि
मायाघटैनममताफेरिध्रब्रह्माकेवरसअनंतजुग
बीचैसोईब्रह्माडरैबिघनलपकालवोथीआवअराए
राषोराधेंकैसुषरूचाजोपालापलाणीतजिकैबिनऊ
मतिकपैकोनैसुमसुमरिअंतरिनिजमारानिजपुरमति
रषिनिरषिनिजनेडोजनहरीदासहरिपरमनुसाघ्दूदेव
रगैंदरगांबगढमहलमगानरसराजछत्रसिंघासनसव
सुषवाजागहरीबाजा७नरपतिजोपसिदरिष्ठ[illegible]
दातनतोलनराजादिसदेषेसोनवैक्रूकारबोलनत[illegible]
तमतषडाकोडीषुसीरातादाचैरंगअकेआ[illegible]
कजला।वोदरहीरानदीसंगएमालमुकन्दपुह
पहोमषगपतिबरतानारिकरजोड[illegible]

कटिप डि पछिताइ २२ आप सरीदे आपकूं चोदे मांनसु
हाग साहिब साधन आदरै यो ही बडा अभाग २३ साधतहै
नवेरता जहां वैरतहां प्रेत प्रभ मे स्वरपति छाडि कै नरक
जाइ तहां हेत २४ मनमर कट मति छाडे नही क्रूरममति
सो इरि कलू आं बिछ्र ओ पदे तोदो सक हाक दिसू २५
चिंताकी डाली नई सुसा प्राणत्ता मांहि कोम क्रोध आंधां
अब्या मरणां सूझै नहि २६ पांच स्वांन पांचूं दिसा आइप
कुत्ता वीर अब्बधिकाल चितवतर है तक्ति ताकि मारे ती
२७ मोह पासि कर कालके फंद्या सब संसार मृगतहां
पगमति धरै यो ही अरथ बिचार २८ रांव्रणसे मनमतिमि
लेन करिके सस प्रीति ब्रहमा का बर छाडि दे संकर का
बर जीति २९ तिणपरि किण की दास की जीवण असा
जांणि रांम सनेही सुमरि मन सुरति सहज घरि आंणि
३० बिषतरवृस्क फल झडे सो फल बिषई हो इता कूं
साधन आदरे कोटि करैं जे कोइ ३१ नरम छाडि त्रमे कस्त
करम कठिन छिन बात रांम कहत जडि जाइगा जूत
रवरकापात ३२ निस प्रेही नृनेमते सुनि सुधा रस पाइ
भलटा घरि त्रिअकास मैं सुषमें रहे समाइ ३३ लोकारंज
न होत है मनिष जन्म का लंग दिरस धका दे जात हे य
है सका चरंग ३४ जहां आपो तहां करमी दिरस तहां
बिन चार ओदो नृ मोटी बिद्या मैं सो करो बिचार ३५ रां
मरसाइन प्रजब है हजार सकरिहं भ याब्बेदनि कूं हरि
जडी है हाजरा हजूरि ३६ नेडा हे न्यारा नही न्यारा नै
डा नाहि त्रमे स्वरस बतें अगम अपार हासब मांहि
३७ मनमें लाह रि न्रम लो मन चंचल हरि थीर मन थिर
होइ नहि मिले सांच लि आत्मबी र ३८ अवगति न
जि आरत सक हो है बंध कफंध जांणि रांम बिसास्यां
होत है मनिष जन्म की हांणि ३९ सूंम कडी माषी गहे
एक डि केंवर ले जाइ ये निगुसांव्राजीव क्रूं काल बिंध
से आइ ४० माया दीपक देषी है रांम न सूझे पीव आप अ
धारे आप के पडि पडि दाझे जीव ४१ धर्म ने मती थूलतात्तु
लातु लतते हैं जाइ ब्याज बजावे डोकरी कूंट षेत कूं षाइ
४२ राजाकी चोरी करै रंक की वोट रंक वोट कहिकं
टले कहर काल की चोट ४३ पांट गाइ कहि बारहोंसु

॥चिंतावणीउपदेसजोगग्रंथ॥ अनध्यान

रतहेसासीलोनजालेलागारहे लिपतिनदीमेंवास
२अपरिअथिरप्रकरतहे चिरसुषपलनसुहात॥
इतउतचितवतलिवधिरसअलपसुषमिनमात्र
वालककालेनांडरहेदेतअपमुषदाय केचास्याके
चलेगामविअनर्थनरेवाध्याघायाहबि कायानदे
देहदीवासातोइजातमडीकुवादीवानुज्यानिपतिवड
ईवात॥फटकिपटकिआसाअटकिलटकि धतगर
काचानिवधिताप्रमेंसोइरह्या॥समझिनदेपेसाचहचे
चलचपलजमचोटसिरकुडादेहकीवोटआवपद
रअचवतजदरकडिकौं॥सत्मकाघोट॥पटमद
छकउदमादछकालकमायाछकअनपावधसतक्ष
यातकसपसरिकसेपषपान॥८॥डिनसिंनडरीअट
किचलोलदोएकलोनालदोगदोगहिमिलिरहो
हेहरिसबसंतनकीसान॥तमकिधमकितनगति
पतितकालवगतवगतोधिमोहमतीमेंसोइरह्या॥ए
हअचंनामोहिर॥अईयाहअकलिकहीएकरहासु
तोकों॥उपदेसुमनिषजनमगपरमदतक्रपदक
रतकपेस२॥हवीतझिमतिमतिमजितलजतव
जतलपलोनतिरतसकसलिचिदोथका॥अईया
हवरतदेसोन२९चमंकिचेतिचहतनया॥जहंत
हाजलपूरिआसाबसिचितडस्या॥सुवोघाटकह
हरिरहरिकरोदयादोमहपिपरनरधरिकेंडोआ
जपीवजीवमनिजाइगासुनतसमंदाज२४वि
धिअवधिगतिमतिगईदेवाकीजीजातचिंता
चिंतचितमेंबसेचितमेंजीचिंताकीवात२५गात
वगतवगवगियाबुगउजलवेग॥आइगतजो
वनजीसीजुराचल्यादेहछिवछाइ२६तनजीर
ण॥धूजतडरसामतमुदितअनिमानलोकलाज
मुधबुधगइ॥पसरलकरतपषपान२७धमकिनध
रपावधरिसकेलेनकरसंधुनिसीसाकरकंपेअवण॥
असुणि॥अजहु

न अबमृका अगम नरक अंतार नदी वैतीक था अ
र॥ २२ बहो बिधि बाग बहो सषी बहो सूंधे बहो पान
बहो बिधि भोजन बहो रतन ही रां जडत पलांन २३
हैम जडत हथ सांकला गलि मोती यनकी माल याज
ल मे बूडाघणा कूंडो अनत अतालि २३ हरि तजि प्रक
रति रता साचन माने कोइ केदाख केदा जिसी यादी
णा वाकी लोइ २४ पांच कडी कटके सदा त्रिबध ता
प का जाल के मा स्या के मारिसी कोवै कूं नौ काल २५
कुंभ हिरणा दकसो महिका सुरकहो कंस २६ जुरासिं
धसिसपाल कहो हसा सणा कहो नीव के रूदेल पाडू
कहो षगा जु पडती सीवा २७ ला चकवे मुचकंद कहो
कहो बिक्रम कहो भोज मांवत पृथी चौहाण कहो
कहो अकबर नै भोज २८ तीमन तो स्कू कहु सुणि सर
लसो ना कांन मे तैं तजि तूं राम न जि कहो हमारो मान
२७ बूणो बेवाक्या करे क रि कछू बे गिन पाइ अलष
पुरष के आसिरै चौडे मडे न आइ ३० दुष दारण इस
ति हरण मेतें हरण गुमांन त्रिबधि ताप त्रिछांहरी
न जि न धन गवांन ३१ गरब गुमान आपो हरण ता
रण तिरण मुरारि वो आमन पूरा करण हरि नजि ने व
बिचार ३२ काम क्रोध पांचूं पिसण दुष सुष नदी बिका
र ऐदीर्घ वो ध्याकरणा न जि नो ने जन हार ३३ साच
कहूं तो मेंड रू कहि सी रहो नजाइ राम संतो ध्यां सक
ल सुष ना वे दुनीयां रहो रिसाइ ३४ राम रसिक हरिरस
सुषी आन रसिक रीसांहि हरीदास जन यूं कहै में हरि
र छाडूं नाहि ३५ रांमन छांडू मेंड रू कूंडे थसे ब लाइ
पति ब्रता पति कूं तजै त ब ही षोटा षाइ ३६ प्यासा ज
ब ही जल पीवै त ब ही आनंद होइ बिष की किरची
मे लिहू करि पीयां न जीवै कोइ ३७ आल बाल कर
ता फिरे साध हैं णा की सोल पै स्नेम निदै षेपति त मन
अपणो का षोल ३८ जन हरी दास दुनी यां तरक रांमन
जन कोटे का ला गिरसां ऊंब का दाम अोर अनेक
३९ जन हरीदास दुनीयां तरक बिकरूप बिष जा
ल साच कहूं तो लडि पडे मिलि षेलूं तो काल॥ ४०

परमानंद तै कौंण मन लहै सतगुर दीन्ह सब कौं
बताइ ॥ अवधू मन कै मन सारा स्यनंत चालै
धीरज मूल मोरडा लाउ लटा षेलि मन मन कूं गहै
तौ मन के अग्रपय सनि षिलहै ११ स्वामी जी मन कै
कौंण रूप कौंण चाल कौंण रंग कौंण का ला कौंण
अस्थान मन कुन मन रहै कौंण अस्थान मन अगा
ह्यागहै १२ अवधू मन कै वदल रूप दोइ चाल
तीन रंग सहज काल गगन अस्थान मन उनरहै
नाभि अस्थान मन अग ह्यागहै १४ स्वामी जी कौंण
समैगल कौंण सनोई कौंण महावत कौंण महौष
बैडी कौंण पर सिमनजी वै प्यासा कौंण कहा मन पीवै
१५ अवधू मन समैगल धीरज नोई ग्यान महावत ध्यान
महौई बैडी कौंण पर सिमनजी वै प्यासा प्रेम सु निरस
पीवै १६ स्वामी जी कौंण कूंराषिबा कौंण कूं ग्रासिबा
कौंण कूं राषिबा नौ घडं कौं नम वदरनै निरंतर षेलिबा कौं
ण घडगरनै मेलिबा रविचंद १७ अवधू मन कूं राषिबा
मनसा कूं ग्रासिबा निव ष्टिकरिबा नौ घडं मत गुर सब
दलै निरंतर षेलिबा ध्यान घड गरनै मेलिबा रविचंद
१८ स्वामी जी कौंण कूं मारिबा कौंण घरि आणिबा कौं
ण विधि रापिबा बारी कौंण के पटै जागिबा कौंण अ
स्थान मिलि षेलिबा सारी १९ अवधू मन कूं मारिबा स
हज घरि आंणिबा काया बनराषिबा बारी सील संतो
ष लै पटै जागिबा गगन अस्थान मिलि षेलिबा सारी २०
स्वामी जी कौंण कूं पकडिबा कौंण कूं चूरिबा कौंण क
मेटिबा पसारा कौंण सबद लै नैनेषे लिबा कौंण सब
द गहिबा षिबा पारा २१ अवधू मन कूं पकडिबा सुसस कूं
चूरिबा मोह का मेटिबा पसारा निरषि सबद लै नैने
षे लिबा मन पवन गहिबा षिबा पारा २२ स्वामी जी कौंन
गया सगया कौंण जातारा षण उलटी सुरति कौंण रस
चाषण कौंण रस पीवै गा जीवैगा कौंण सलैं गा कौंण
षकरिबा डाणी सो इम्रत कहि पावणी २२ अव

बोलै तो मुषि ष्यारा ऊटक व्वचन सब सिरसदै व्वस्तामोद
की धारा ११ सब दक दत्त रसनां ऊटत्त नट्टत घट्टत निरुघा
ता रनटकि लटि किलुटिलु टिनुवत्त तकत्तटैदेल्लतघा
ट १० जीवदृस्त चल धस्ती धस्यां मरत ऊटंबसंदेत यूंक
रीयो यूंमत्ति करो सीष अज दृढेत ११ इस ब्वृत सब जीव
की देतका चस मिट्ठे जीव काया तरवरत्तजि पंषी च
ल्या बसै डि ऊटं ब्वसं पेम १२ आंन ध्यांन गोविंद बिमुष
ऊस्या काल की ष्यांत्ति तत्तमा लनै त्त ऊटंब नौ तन जा
ईवां दृ १३ जां गोविंदू फि बोरा नया देत सिलात लिसाथ
जन रुरीदास न्है मते लजो निरंजन नाथ १४ ॥१॥
अथ मन चिरत्त जोग ग्रंथ ॥ गुरु की जे कछ्र ग्यांन कूं मत
गुरु ग्यांन ब्वताइ किसि बिधि नृने आत्मां निज तत पर
से जाइ १ सत गुरु चरणां सिर धरूं मैं सति पूछूं तो हि
प्रम सनेही कसा बसै कदि समझावो मोहि २ कोमुरीद
माला कसांली जे कोण बुलाइ कसंरसी ए कसांगा इरो
सतगुर ने दब्वताइ ३ अवधू मन मुरीद मालामतो सुरति
सहज घरिसा इ आत्म के अस्थान रसौ अण बोल्या क
इ गाइ ४ स्वांमी जी मन हि चिरतमन सालहरि केताल
या तुड़ाइ मन कंडैले अण सरै सतगुर ने दब्वताइ ५
अवधू मन कूं पालिब्वा अगम कूं चालिब्वा अगम के
आसिरे प्राण ल्यावे रूप बिन राचिब्वा मद बिन माचि
ब्वा तौ काल की चोट मैं कोंण आवे ६ मन दैस फूटैल
डे का नीर दे फूस को आगि दे स्वांन रूपी रूप करत्त दे
फटिक मणि ज्यूं फूटि जावे मन के मतै नषेलिब्वा रे
अवधू मन के मतै षेलै सषोटा षावे ७ स्वांमी जी सति
का सबद बिचारिब्वा फूटै जांडे का नीर तेको ण मन
बोलीये फूस की आगि ते कोण मन बोलीये कोण मन
फटिक मणि ज्यूं फूटि जावे स्वांन रूपी कोण मन कोण
मन अनेदीनां नै दषावे ८ अवधू फूटै जांडे का नीर बो
लीये जे पांचूं चूरां चरै फूस की आगि बोलीये जे दसूं
दसा प्रजले स्वांन रूपी रूप करता प्रम झाई पडै फ
टिक मणि ज्यूं मन फूटि जावे उलटै गा मन मन कूं
बेधैगा तब यो ही मन ही राक रावै ९ स्वांमी जी म
न के कोण राह कोण चाल कोण मूल कोण डाल

जलसूंनस्याजलमांहीधस्याऋलशिनिरंतरिनीरून
यातूंनरमिन्नूलायन्नेदपावेनहीसकलव्यापीक
हेरामरांया॥२५॥स्वामीजीकोंणफुनिफुनिघिरेकोंण
न्रमतफिरेकोंणकेआसिरेकोंणपावेंसतिकासबदबो सच
लोहैस्वामीजीकालकीचोटमेंकोंणआवैरन्अन्नधूक
याफुनिफुनिघिरेंहंसन्रमतफिरेहंसपरमहंसनदीप
याहंसपरमहंसपावेंगालखनहींन्रमेंगाजबसाचपा
यारा२६॥स्वामीजीनोजलसेकेंडोंश्रयासेंअजरसबस
विकारमीयामोहनीपांचपबलबहेकहांलागि
ननरिबोपारा२७॥अवधूमेंतेमटिबासेतोमघरिरहिबा
अजरसबदकरिबाअहारंपरमजोतिकेपरचेबेलि
बाउनमनीलागिउलरिबापार॥२८॥स्वामीजीकोंणतु
म्हारीजातिबोलीएकोंनतुम्हाराकुलबोलीएकोंण
गपानलेनयाचन्हांसंकोंणदेसकोंणदसाकहांतुम्हा
रापराणपुरसकावासं॥२९॥अवधूअनीलपुरसहमारी
जातिबोलीएवनसतिहमारेकुलबोलीएब्रह्मगया
नलेनयानदासंदयादेसरोकदसाबोलीएपरमसुनि
तहांहमारापराणपुरसकावासं॥३०॥स्वामीजीकोंणत
रवरकोंछायातुम्हेकहांकेपंथीकहांआयाकोंणन
डाणाकहांसमाया॥३१॥अवधूअकलतरवरसकलछा
याहमेपरमसुनिकेपंथीअथेसुनिआयाउलटिउडं
णापरमसुनिसमाया॥३२॥स्वामीजीकोंणअपंडित
कोंणअरूपकोंणससीतलकोंणसधूपकोंणसक
लयेकोंणसबदेकोंणसहिनसेकोंणसरहेकोंणअ
स्थानमनउलटाजाइकोंणअस्थानमनरहेसमाइ
॥३३॥अवधूब्रह्मअपंडितमनसअरूपमनससीतल
पवनसधूपचिंतसकलयेमनसाबहेदिष्टिविनसे
अदिष्टिरहेगगनअस्थानमनउलटाजाइसहज
सुनिमेंरहेसमाइ॥३४॥स्वामीजीकोंणअधराकोंणन
जासकोंणअस्थाननिजकिरणिप्रकासकोंणअस
थानमनरहेसमाइकोंणअस्थानमनचूपाजाइ॥३५॥
अवधूनिविधिअधरागंगनउजासनानिकंवलनि
जकिरणिप्रकासताअ

जी विषरूपते कौंण बोलीए॥ अगनिरूपते कौंण थाया
षरूपते कौंण बोलीए॥ परमनंदते कौंण बोलीए॥ तत्ता
काया न माया॥२४॥ अवधू रूपते ग्यांन दगधी॥ अगनिरूप
कोम षाया सुषरूपते परम संगी॥ परमनंदते निरंजन राय
२५ स्वांमी जी कौंण तत्त पल टिबा कौंण घरि आंणि बाके
ण पुरस लेबा पाली कौंण अस्थांन मन उनमनि रहिबा
कौंण अस्थांन लाइबा ताली॥२६॥ अवधू पांच तत्त प्रति
टिबा सहज घरि आंणिबा प्रांण पुरस लेबा पाली॥ अ
२४॥ अस्थांन मन उनमन रहिबा परम अस्थांन लाइ
ताली॥२७॥ अवधू नरमकानांडा नांजिबा त्रिबधिता प
टिबा यला पिंगुला राषिबा नां रीलो मन लूटा रहिबा बं
कनालि बालिबा तहां दे षिबा झिलिमिलि जोति उ
जाली॥२८॥ स्वांमी जी नरमकानांडा ते कौंण बोलीए
त्रिबधिता पते कौंण बोलीए कौंण बोलीए इला पिं
ला नारी लो मन लूते कौंण बोलीए बंकनालि कौंण बो
लीए तहां दे षिबा झिलिमिलि जोति उजाली॥२९॥ अव
धू नरमकानांडा ते नैन चक बोलीए॥ त्रिबधिता पतीन
गुन बोलीए मन पवन बोलीए इला पिंगुला नारी लो
मन लूते कनक कांमणी बोलीए॥ उलटी सुषमनां परम
सिंधु ने देग॥ तहां दे षिबा झिलिमिलि जोति उजाली॥३०
॥ अवधू उपसुषमे टिबा संतोष घरि रहिबा सहज समा
इबा ते परम जोग हंस स्वरूप परमहंस मिलाइबा तहां ल
गि काल टिबा काल रोग॥३१॥ स्वांमी जी उपसुष का घर कौंण
बोलीए संतोष का घर कौंण बोलीए सहज समाइबा
ते कौंण जोग परमहंस ते कौंण बोलीए तहां लागि का
टिबा काल रोग॥३२॥ अवधू उपसुष का घर अदेमैं बो
लीए संतोष का घर समता बोलीए सहज समाइबा पर
म जोग परमहंस पारब्रह्म बोलीए तहां लागि काटि
बा काल रोग॥३३॥ स्वांमी जी पांच इंद्री पचीस प्रकृति
कौंण अस्थांन राषिबा कौंण अस्थांन राषिबा बाई कौं
ण अस्थांनि मन स्थिर राषिबा कौंण अस्थांन रहिबा स
माई॥३४॥ अवधू पांच इंद्री पचीस प्रकृति उनमनि अस
थांन राषिबा बंकनालि मैं बाई मूल अस्थांन मन स्थि
र राषिबा सुनि अस्थांन रहिबा समाई॥३५॥ जपूंकेन

६१॥मनचिरतजोगग्रंथसंपूर्ण॥ग्रं॥२२॥मनमदबि
ध्रूंसजोगग्रंथ॥सतगुरकहै सो आसन करि है।अल
ष निरंजन देषरि है सरब सोग चिंता सब्ब जाइ भूषी
पकडि सिंघकूं षाइ २ मनसा घटाग सरजलपूरि चेल
पांच अग निमुषि चूरि पांणी जरै मीनमन मरै ऐसा
आसन जोगी करै ३ आसानदी अपूठी बहै यमृत भरै
गगनसरदेनो लेनदी निवासी निहचल नहीं आसा
त्रिष्णा न सूषी गई २ आसण अधर पवन मनहाथि सु
रति जोगणी जागे साषि परमजोति आनंद अभ्यास
नै नैनया कालका नास ५॥आसा के घरि चिंता बसै॥
काल रूपणी जीव डिहै से। गंगजमनम धिबेवे जाइ॥
तब जोगी चिंता कूं षाइ ५॥सतरजसमो हत जिमाया
मन निहचल नै नै घर आया पूर्ण फिराया डिघट घा
ट ग्यान ध्यान गडिल गांक पाट ६॥त्रिकुटी कोटमें आ
सण माडै राजा तीन डंड देषां डौ पोलि कपाट घाट घट
लहै परहरि डाल मूल निजगहै ७ छूटी पांच प्रपंच
करि हरै जोग मूल के धागे जैरै जुगति बिचारै अज
रा जरै गुरगमि ध्यान निरंतर धरै ८ असलि गरीबी
आपा डारै माया सार कसा लै मारै सूनें घरि बिसहर
का षाइ मन इन्है घरि रहा समाइ ९ सारि जोति का
पासा ढाला आ बाजी जीती डाव बिचारया षेलन हार
गया मुष गोइ सोकापलालनपकडे कोइ १० जोगमू
ल गदि जोगी जागे पिंडे चले न कांटा लागे धरै ध्यान
ग्यान की छाया मुष सब्द निरंतर पाया ११ पांच तत
तकी मेटी संवारै मृतक देह काल कूं मारै सतगुरक
है समोई सूझै तब अगम गम्य घर ही में बूझै १२ अल
ष निरंजन साधी मेरा परम जोग पद पूरा का अलष
टि ज्ञात जदां कार लहै मकुं चे को ई सूरा १३ ग्यान ग
दा लै मन कूं मारै बस अगनि दे तन का जारै दोम छि
ग अंतरि धुनि होइ मा पपु निरतहाल कडीहाय १४
अब तौ रोकरौ कसूल गया जब लग पात्र मन मन
व ग्या दी नदया लस सतगुर की छाया सहज सम धि
परमपद पाया १५ पेडा ३

स छाया। पंषी कौंण कहो विल्व माया। पंषी तिको कौंण फ
ल षोड़। स तिस तिस्वांमी कहो सम झाइ। अवधू अ
कल तरवर सकल छाया। पंषी प्रांण तसं विल्व माया उ
लटा षेलि अगम फल गहै। सतगुर सबद नै नेरहै ५
०॥ स्वांमी जी तुम्हें अगम भेद कि वारपार। अगम अर्थ
कि ध्यांन धारं दया दरगह किकु मिहर दस्त। बिग्यांन दे
वे कि ग्यांन गुष्टि सुराजी सौ। किंद सबै वार। उधै फूटा कि
ऊड्या ताल ५१। अवधू मै अनंत भेद अजब स्वाद
परम दिष्टी अगम नादं दया दरगह महर दस्त। विग्यां
न पेछ ग्यांन गुष्टि जुराजी तौ दस वै वारं उरध फूटा ऊ
ड्या ताल ५२। स्वांमी जी कौंण ग्रासी कहां सीधा कोंन
मोती कहां बीधा कोंण उलटि षेल्या कौंण पीया सिस कै
मुषि कौंण दीया कौंण मेला कहां बेठा। पांच जोगी का
हां पेठा ५३। अवधू मे सार ग्रासी सब दिसीधा। मन मो
ती निज अर्थ बीधा। मन उलटि षेल्या पवन पीया। सै
स कै मुषि सिंघ दीया। रवि ससि मेला चौकि बेठा पांच
जोगी गुफा पेठा। नवनाथ निहचल देषि नाई। गगन उ
लटी गगन आई ५४। स्वांमी जी कौंण धागा कहां लागा
कौंण निहचे नरमन्ना गा। कौंण जोगी अवधूत बाला
कौंण आसण कौंण मृगछाला ५५। अवधू सुरति धागा
सहज लागा। नेद पाया नरमन्ना गा। प्रांन जोगी अव
धूत बाला। गगन आसण मन मृगछाला ५६। स्वांमी
जी कौंण टोपी कौंण कंथा। कौंण चेला कौंण पंथा
कौंण झोली कौंण सिष्या। कौंण डीबी कौंण भिष्या। कौं
ण जाप कौंण माला। कौंण जोगी कौंण पियाला ५७
अवधूत टोपी षबरि कंथा। पांच चेला अगम पंथा
उधै झोली सबद सिष्या। ग्यांन डीबी अजर भिष्या। अ
जपा जाप मन माला। प्रांण जोगी पवन पियाला ५८
स्वांमी जी कौंण धूंई कौंण पलीता। कौंण अगनि कौंण
बलीता। कौंण चौपड़ि कौंन सारी। कौंन षेलै ध्यांन धारी
५९। अवधू धुनि धूंई प्रेम पलीता। ब्रह्म अगनि काम को
ध बलीता। चित चौपड़ि पचीस सारी। प्रांन षेलै ध्यांन
धारी ६०। मन हि चिरत निजग्यांन है सतगुर दीया बता
इ। जन हरीदास हरि अघट है घटि घटि रह्या समाइ॥

मंडी श्रोरही मू विश्राम सबदमीनें नही रूवतसों चरी
लजाइ मनसा वाचा करमना गनिका कौ कुतला हि ॥२॥
मन हम सूघडि फूल ज्यूं रषे दिषलै श्रेद बाई का गुण
श्राडि दे वसुधा का गुण लेहू उन्ह गमत रा पक्ता नही
रही नरम की षिम जका मास्या मरहगा करि करि नाना
नेषध माया का काहू मंड्या करमा सुनिक सेनां हि श्र
स परसहोइ मिलि रहा ज्यूं माषी गुड मांहि ॥ सिंघस्या
त्तरन वन वसे वस्ती सके न चू रिके वस्ती के वन वं
ध्या साधहु सूहरि दा साध वंध्या हरि श्रव धसूहरि
वंध्या साध के नाइ परम सनेही परम सुष तहां रहैत्यो
ला इ १७ हरि सुमिरण मन हु मतो सो मैं श्राडू नां हि
रांम रतन धन श्रजब है लेरा ध्या मन मांहि पारके हाथि
हीरा चढ्या सतगुर दीया बताइ ता कुं मैं श्राडूं नहीं
श्राड्यां सरबस जाइ १७ पाति सा हवलन करि कैसा
नां मां कहो षुदा इ सदा संगि गंजव लज्यू जन कै
रांम सदाइ २० नाम धणी सन मुष सदा सकल काल
का काल पाति साहनां मो कहैं त्म तिपडे जंजाल
२२ तव नामैं मन हव काया भाहि गुरग्यान विचार मै
ह रि सुमिरण श्राडूं नही सिर परि संमध सिरजनहा
२२ पे पाया पारषी हरि दे वलन फेरया दे हमाया जल
मैं दैन ही श्रां नि थवा ई ौह २ रस कमम ई ज लांसू
सो वसै डिन जलमें जाइ सब नामें मन हव काया
मूई जिवा ईगाइ २४ एक वोडि हीहतुरक रएके द
स कवीर मन हव लेक जारहा सिरपरि सा हसधी
२५ टेकर हौ तन मतरहो टेक गया पण जाइ श्रेसी
टेक कवीर की चोडे रहा वजाइ २६ फुनिवात सुण
प्रहलाद की कहिस मझा के लोइ मन हव करीगा हि
दन ज्या थका न लागा कोइ २७ गिरजल ज्वाला तेंव
च्या पिसण गया पचि हारि नही साधर्म … ये
श्रर्थ विचारि २८ प्रवान कवे सी करी …
मन हव करिमंड्या मरण जहां यष … २ …

याप

इ परमजोतिमें रहै समाइ २६ जोलिन्हलि
बगहि अक्ती बात और ही नहि परमउदार अबग
तिको दया करतारा जैरै तिसो नयारा २७ जोगमूलका
जारो नेदा जन्म जुरा कं धन ही छेद छिपी बार अनि
अंत रिलहै सबद बिचारि नमनी रहै २८ मन गहि प
वन मेरु गिर चूरै न वर गुफा मे आसण पूरै स सिह
र के घर आणि सूर सबद अनाहद बाजे तूरा २९ मन
नया मगन परम सुष मांही ग्यान गुफा मन छाडे नाही
अस पस आन दस रोक ताहि जी तिको रहीन
टेक ३० त्रिबेणी तटि ताली लागी मन थिर पवन
सुषमना जागी दसवें द्वारि बस्या मन जाइ वंकनालि
यं मृत रस पाइ ३१ सुनि मंडल मैं सीगी बाजे मान्
घटा दसूं दस गाजे सहज पियाला नाम रस रि पीवै म
न मतिवाला जोगी जीवै ३२ ब्रह्म अगनि सब ही
बन दझ्या तत्वरा एक अषंडि तर ह्या नातर कूरमैं
राबासा परम जोति पूरण प्रकासा ३३ तहां काम क्रो
ध जोगन ही नोग मांनि अमांनि हरष न ही सोग आ
लष निरंजन नहै नाथ राग दोष देतन ही साथ ३४
राजन रीति आगन ही नेग घर परिवार सुत बनिता
न ही संग ता द बार लेषण को र है दिलमालिक सब
दिल की लहे ३५ सब मैं बसै सकल की लहै मुषतै
फेरि ज्या बन ही कहै वार पार न ही अगम अगाध तहां
एक आधक्को पक्कं चै साथ ३६ रसनां मुष सीस ह्या थन
ही पाव घट न ही अघट बेर न ही नाव रूप अरूप
नै ष न ही ज हां माया अगनि न व्यापै तहां ३७ काल
न जुरा दे ह न ही दीन जीवन जन्म पुष्ट न ही षीन ता
की कीमति कोई के सैं कहै कहत कहत बोरा है र
रहै ३८ जन हरीदास क्रालन जाल पूरण ब्रह्म अन
त प्रतिपाल रमता राम निरंजन राइ अब तो मन त
हां रह्या समाइ ३९ दिलमालिक षालिक मां हि बमे
रा जन हरीदास घर जाया चेरा पकडि हाथ जिन अ
डो मेरा पइआ रह्ं चरणां तैं नेरा काल जाल लेकरै न
केरा ३० ग्रं २४ मन हठ जोग ग्रंथ बांण पकडि
क्र नारसा मन फिरि लागा कूगि नीसाणं न्यारा रसा

नासिसुतमातायक्कुमनबंधूयक्कुमनतातयक्कुमनम्
रिषयक्कुमनदेवायामनकाकोईसदेननेबंधयक्कु
नमत्रिरूपहोइजाइ यक्कुमनजेनिरंजनराघतु
त्तावेसिकंचनदेकाटि यक्कुमनविकेविडाणेहाटि
धयक्कुमनदासहोइदतकरेयक्कुमनज्रूषोमागमेरे
आसनकरेरदेनिरदंसयक्कुमनमुक्तायक्कुमनबेधद
यक्कुमनघादसपेडाकरेपसंजूषेतविडाणाचेरे।
आपआपकरोपेपासयक्कुमनकरेआपकानास।१।
लघचोरासीघटयक्कुमनधेपलकपलकमेंजोमेम
रेकबक्कुलूषाकबक्कुभयामनहीमनकूचेटकलाय
यक्कुमनसाहबेदगराजसूकरस्वानसिंघगेबाज
स्याहसालपीलीमधिरेघयक्कुमनकरेकिरकटान
घण्यक्कुमनसवारयक्कुमनछायायक्कुमनवृक्षरूउ
मनमायाथसिद्धोसमनरदेगदासयक्कुमनकरेगुफा
मेंवास।२।यक्कुमनसुरनरअसुरअतीतजरषरीक्ष
मृघानेनीतसतगुरकदेसयक्कुमनकेथाडेअपद
सुपदपगधरे२साधसबदमानेंसुघसाथयामनकाक
छूअगमविचायक्कुमनरनवनयक्कुमनसद्रयक्कु
मनक्रमसयक्कुमनजद२तीधयुतकरेसमित्राइ
यक्कुमनअगमतहांचलिजाइयक्कुमनअमरीव
जरीजरेसबदपुरणकूयाविधिकरेरपेडाअनंतन
आवेवाअकहोकहांसूदीजेजोड।जोगध्यानधुनि
यक्कुमनधरेयक्कुमनज्ञेपवदतारकरे३जनहरीदास
केयाहीरीतिअरसपरसहरिहीसूंप्रीतिजनहरीदास
यामनसूंडेरोराससिद्धोसहरिसुमिरणकरे।।था।।२६।।म
नमतोजोगग्रंथ।।फिटिफिटिरेमनविकलबहोतनाटि
ककहानाचेक्रबकुदासहोइदसकरेकबक्कुजाचि
गहोइजाचेरेमनजोगीजंगमसेषमनबहोतेभषवण
वेहधधारीहोइफिरेअरमेड्रघपावे२मनगहिकेसमे
ननिजसुनिकीमवरिनपावे।।साथीमूडमुडाइछापा
बहोतिलकबणावेरचोकादेवेचाहिरसनाकेहाथि
बधहेमनविधीयासंगिरमेंमननमायासंलावेधमनसू

न

नषहत्ताभैर२रजनकजनकसबकोकहै अमर
लोकसबाधजनकमत्ताकबू श्रीरयाउषसुषरहत
अनाथ२४पावअगनिमुषिकूबरैजनककहावैसा
इयसंदाधंजसंदाजिहैयहैलनरोसामोहिनजायम
छदरपडिरत्ता।मायानरकोआसगोरषकछूनोला
नषा जिनिगुरकाल्यागहिवांह२५राजपाटतजिभर
थरीकीयाआपणांकाज जोगधांनराजाखहैतोवेकू
ल्डिराज२५हस्तीघोडागांवगढसुतबनितापरिवार
कहैमातामैणावतीतजिगोपीचंदयकुघार२६यकुसु
षबिषसमिदेषीएलाधीसोंजनहरिअगमबसतअंत
रिबैसांलगतागोतामारि२७बलछाडयांनृबलनया
गहिगोपीचंदगुरग्यांनसुनिमंडलमेरमिरह्या अगम
वोडअस्थांन२८लतसिंघासणछाडिगया औसीब्या
पीआइमायासंगिसांईमिलेतोबलकछाडिकूंजा
इ२९सजतुलाइगीदवागेदसकेईसपथरतलेबि
छाइकरिसांईलज्यापरीदा३०रतनपरषूमनहका
याथोल्यासबदीलेषतबवाकूगोरषमिल्याएमन
हकागुणदेष३१ग्रथनावमनहठमतो।मनकेमन
हठदोइयाकेमनहठहरिमिलैएकैपडदाहोइ३२का
मक्रोधमेंतेमनीपगदेसकानचूरियामनहठमनबू
डीरोहरिसूपडीएहरिसगुनजीतेगोबिंदजेनिरभै
निजघरआइयामनहठमननीपजे।ऊईपडैनकाइ
३३कालकहरगरजतफिरैदिनदिनव्यापैरोग।जनह
रीदासहरिजनबिनाजहीतहीबिपतिबिवोग३४
जनहरीदासकुरलषतही जहांनहरिसूहेत।जेनरल
ग्यानहरिहठीजमद्वारेडंडदेत३५जनहरीदासगोबिं
दनजोलूलांमलीनहोइअबलूलातेफिरेहगाकू
कडपैंहुंदोइ।।३६।।इतीमनहठजोगग्रंथसंपूर्ण।।ग्रं।।
३५।।मनपरसंगजोगग्रंथ।।मनपरसंगसुणोंहोसाधो।
तुमसूंकहूंसुणाइ कबकुक मनबिषयातजे कब
कुकबिषफलषाइ१मनसाकालाकूकैरैकबूनआवे
हाथि मनअपेलारमतफिरैगुणाइह्यांकेसाथि२या
मनकीयारीतिहेजहांतहांचलिजाइकबकुकलो
टेह्यांरमैकबकुकमतिमसिन्हाइ३यकुमनपुष

णी कसे कवकुकायासूमिलिपैलेहसे॥२४॥कवकु
चंदसूरसमिकेरे कावकुध्यानअरलपिकाधरे॥२५॥कवकु
त्रिवेणीसंगिन्हावेगुरुगामिवसतअगोचरपावे॥२६॥कव
कुनलराबेलिकायासबसोधेसुनिमंडलमेंपवनाने
रोधे॥२७॥दवकरिमारेनवसेसहासिअगमध्यानधरिसहज
बिचारे॥२८॥चक्रमेंएकेडोरिसतगुरुसबदगायाम
नचोरे॥२९॥णीकमेअंतरकहानादिपूराणाबुलबसे
न मांहि॥३०॥वंकनालिडमतसमाइमनमायाथाय
वसेनजाइ॥३१॥मेरडंडमधिडोरीलदेबुल्अगनिका
याबनदहे॥३२॥दसवेंद्वारिवसैमनराजासबदअना
हदबाजेबाजा॥३३॥जनहरीदासमनवसिनयाग
याजरमेंसबअोरएकमेकसंमिलिरसातवपाईन्त
नेवोर॥३४॥३५॥अथव्याहलोजोगग्रंथ॥दिषणादे
समदरऊदनपुरपवणीछतीससुधारीराजनिलो
लोकनिलिनेकन्याराजकंवारीरेराणीकहसु
राजाजीवित्तमनकीजेकाईवाईवडीवडोवरहेरो
आइआदिसगाई॥२॥निजपुरनगरवसेकंवलापति
सकलसिरोमणीस्वांमीवरवेआदिविघननदीवे
गमघटघटिअंतरजांमीरचवेनबंधेमदाजपूकास्
बिरचिनबुरोलषावेरांमजरतारपरमसुपदातासो
म्हारेमनिभावे॥४॥सकलजवनकरलाकरणांमेंविद्या
नवापैकाइराजाकहेसुणोरुकमईयालहदीजे
रवाइ॥५॥रुकमईयोकाइकहोनमानेआनसगाई
होराजाकहेदेषिवरवरस्याम्रतकिअपूठाफेरेचं
देरीसिसपालअसुरअरिलगनलसांलिषिदीयाहेव
गोवरपाइकपालावसोजोधासंगिलीया॥७॥कस
कसोघासकूंचरिहेअंन्यांअसुरबुलाईजावण
नहीमरणासिरऊपरिजीनपांडविषणाईपासोसो
ससपालचंदेरीचिंतासोहलतलांवसीजेग्रबगुमा
नदेतबहोतोमसाकोस्यांजिणपरमसनेलीपा
णानाथहरिसदालिसदासगाईअलषपुरषअबगा

[illegible] मनके पंक परि जको दीपक रूप
[illegible] मन गिरवर मन कंप मन [illegible] मन गंदा
[illegible] मन धीर मन [illegible] मन चेदा [illegible] मन नीको
[illegible] मन फले [illegible] फूल मन [illegible] विद्या मन
[illegible] जल [illegible] मन [illegible] मन [illegible]
[illegible] काजीन कारि [illegible] मन जंबक
[illegible] मन सूक मन [illegible]
[illegible] मन [illegible] मन [illegible] मन को
[illegible] मन [illegible] मन का [illegible] मन [illegible] मन धार
[illegible] मन [illegible] मन [illegible] मन [illegible] मनन
[illegible] मन [illegible] मन [illegible] मन माली मन सी
[illegible] मन [illegible] मन सिंध मन
[illegible] समान [illegible] सा च मन
[illegible] करि [illegible]
[illegible] मन फिरि
[illegible] मान
[illegible] आइ [illegible] गम
[illegible] रस [illegible]
[illegible] रूप कारि
[illegible] आइ [illegible]
[illegible] कल्प कृ जोडे
[illegible]

बस्योबनमालीफु सीरत्र्प्रचिलत्र्प्रबिनासीपर
तिमेतालीा२णा परसिद्धसिमिकरिलीनीप
कोपलोनमेलोना नहरीदासनिसदिनत्र्प्रतित्र्प्रां
चताग्र्प्रांनमेषैसे ।।२२।।२०।।तोडरमलजोगग्रंथ।
त्र्प्रनहृदबेनिब हतोडरमलज तोजीहरिजिन
रेपारितोडरमल तोजीटेकमन ।।हिपवनत्र्प्रगमग
त्र्प्रागणिचोकत्र्प्राया।।चित्तचोकीहरिचरणांराष्या
कवलसिंघासणदीया।।हस्तापिरलीकरेत्र्प्रारतीप्रेम
णीत्योताणीत्र्प्रातमपरप्रेम हथलेवोपीवसंगिघें
प्राणीहरिजनहरिदासहर ।।त्र्प्रसप्रसहोइनैनानेलवे
ध्याय।।जाकीधीमोमहत्नपधारयारांमसनेहीत्र्प्राया
।।धा।।ग्र।।३।।इम्रतफलजोगग्रंथ।।त्र्प्रसरिनावजन्य
त्र्प्रंतरित्र्प्रावे।।पांनबिनारषमेकवतावे।।दयासबु
रीजरणजोगा।।तिबधितापकालनेरोग।।सीलसंसै
बफुनित्र्प्रजपाजापापाह ।।यापुरातमपापसतत्र्प्र
रसहजपवनमनहाथि।।सापांचचेलासाथिऽ
तरततकोईसकेनरूटि।।गयाभ्रमताकाछूटिस
मतासुबधिबिद्यामनसाथि।।गतिजोगदोइल
भ्रूसाथिरकोमगयेहचीहाफिरिघरत्र्प्रायापकडिसील
सांकलसहजेस्या।।न्ने जयानप्रेमराजतीतरकेमु
बिदेष्याबाजें पवनात्र्प्रयास्वाइम्रतपांनऐकादसी
त्र्प्रषंडितध्यानहृतज्ञाप्रेमकाबंधमनकाछूटि
गयासबदंदा।।सतगुरकाइम्रतफलदीयासोह
इताकीफंकबिष्यासबजाइ ।।इम्रतफलज
पेतोहताकाफलानपकडेकोइपेडात्र्प्रधरत्र्प्रपूवी
चालत्र्प्रबकेसतगुरकीयानिहाल ।।हारिजीति
कापासागयाचजलनमलन्याजातिबकिजांगेन्हैं
सोजावैसहजसमाधिसदारसपीवैत्र्प्रजपाजा
पनजनबलेजांवकजडगयाबेस्याफिरिगाव
सोइम्रतफलहदैधरस्या।।हुतै
।।८ मायादीन्हीमोलिनलीयो

बलीयाइलागी रामतसं चरिजाई नीवनसोकाइलेस
नदीजिलकमईयोडपरई १४ अबहरिषेहायतें जाई
पतिम्हाराहूं थारी व्याकुलन ईमाघनिसिहरू रसो
देवमुरारी १५ आसणाष्टहनीवनेम्हारेकहोतिकामनिर
वेलकमईयेरसकहोनमांनेनूडोनूमगगावेघडी
मकुरतआजसुदिनदिनापतिव्हसायंनावेचोरीलिबि
बिप्रनेदीनी रवेबिप्रविचिरावे ५ मनसुधबिप्रगयो
वेगमपुरलिषासुलपकुचायादेषिदेषिहरकागद
वांच्याचलोबिप्रम्हेआया १६ साचासबहराषिसिरुक
परिआनंदअंगिनमावेब्रासणादरिसुषदेरिबधा
ईमांगेनेडीजानेबतावे १७ अनंतकोटिब्रह्मंडसो
२ जसंगिइंद्रकुमेरघणोराबूलाअनंतमहावअगिन
ताचंदसूरबदोतेरा १८ एनोनाथसिधचोरासीसुरते
तीससहायानारदमुनिजनसाधसकलसंगिहरि
दूसानेदसूंआया १९ सीलसंतोषसतदियासबूरीक
रमकपूरलडायायूसेकुठिसदेलेदोडयापवनतुरीच
टकाया २० आरतीकरिकरिचरनपलोटेकेचरचेके
गावेप्रेमप्रीतिचंदनघसिहरिबिधिपरसिपरसिसु
षपावें २१ साथिसषीलेषेलणाकेमिसिनिजबहदे
रणआईबडकंवारहरिदेषिनजरिनरिनषसषरस
समाई २२ बडबिप्रांमतसांहरितरेआतमअंतरि
नेरासषीसहेलीमंगलगावेमनसाचावफेरा २३ ने
णांरामबसोहरिवेणासकलसुषांसुषलाधासुरते
तीसघेरिघरिआयासतगुरडोराबांधा २४ अरधेनधे
चंरीचरचेतलसारदबेदादीयअतिहाहूअब
लामनिआनंदहरिसूंफेरालीया २५ लारंगरागनाम
बिधिसुनिमंडलकेचाजेपतिसंप्रीतिजीतिगुनह
जाबेणीगगनमेंबाजे २६ पांनगुलालकेसरिबरसे
करणीअर्थअबीरबिडायाआजसषीहरिमहलपधा
स्यानलम्हारेमननाया २७ सुंदरिसेजसाचनरअंतरि
समतासोडिबिछाईरामराइलसोआइबिराज्यासो
सुषकहानजाई २८ गातगुफामेंगमकरिराषुंसेजस
नेहीआयाबिनदीपकदहदिसिजियाराआगिरे
णचोकपुराया २९ घरिघरिमंगलचारसदासुषबर

गुरयेन्नाथे पिंड ब्रह्मंड मैं दोइ सिध।गयांन अरु गो
रष त्रतीय। जन हरीदास सत्र मह्या डि। ग्यांन गोरष त
त्तसार। ग्रं।३१। बारजोग ग्रंथ॥ बारबार मन रूप
रमो धूम नग।। छिपवन सहरस सलसो धू टैन्यो आदित
अगम नर धीरै। कलबार कालेद बिचारौ जोग मूल गै
द्वि जोगी जागै। धुनि मैं ध्यान तहां मन लागै। दरि सुष
दारपार मधि नांही। नृन्ने घर ल्याधि घर मांही। रेसोम
बारस हजमन जागै। पवन निरोधे आरंभ लागै। अ
रधं नर्धं मधि धूम्र चढावै बसै तहां तिसूवे गर ल्यावै का
या कर मै मेल्न सब धोवै। धूप ल्यावै अव्वर भोवै २ मंगल
वार बार देनी का। औरस करतर सर्लागै फीका मन ग हि
पवन अट कियरे। आवै गंग जमन मधि पैंडा पावै बा
षे नमी अमी अर्धं डिस धारा सुषमनि सींचे बाग दमारा
२। बुधवार आणं नबु धि बांणी। आगम बस्त अनि अंत
रि जांणी। त्रिवेणी तहि सा तीर लागी। इडपींच सुब धि ले
जागी। बंकनालि इम्रत रस धीवे ध्रचे लागा जोगी जीवे
३। ब्रसपति बिषब लसांहि नर हो। बिषफल षाइ ब
हौ डि दुष सहींपे। बिषबल बार पार मधि नाहीं सुरनर अ
सुर बसै ता मांही। पिंडा अष्ट परम गति ल्हेना मूवा फिरै
न जम बंध घूत्ताप। अ्रुकरवार सह जघर ल्या धन्नारनज
लकै पारा बाधा निरअगार। पसरिन पोषै अन्नबहणीप
वन धरणि नहींसो पेनि स्नेनया अरम सब जाया। त्यौकी
डो रिजन मनी लागा ६। थावर थिर सत गुर सम काया। मूर
ष ब्रह्म तहा कालन काया। परम जोति परकास बिराजे। सु
निमंडल मैं सींगी बाजे। सो धन सुफ रूप न कालीरा। दे षिदे
षि मन राषे धीरा ७ सातबार कानेद बिचारे। पंडे चतूं न बे
गासारे। औघट घाट तहां मन जागे। नियाअ पकपे कनद
न लागे। जन हरीदास सत गुर की छाया। सहज समाधि परम
पद पाया॥ ८॥ ग्रं।३२॥ इति सप्त बार जोग ग्रंथ॥ स्वामी जी
पडदा कोण परमनिधि आडा कहा षेलि दुष पावे पहरया
सो गसा चन्दो दर्से सो फिर कहां समावे १ अवधू निब भ्र्म
पमे फूले षेले परमनन्द नदी पाया अंत सि आनिगो पिण्ड
की लूं देषादि षड राया २। स्वामी जी कांटा कोण कहां से ला
गा, कोण सई लेकाडे ला णी कौण अगम घर षेले मेरक

ग्यांन

रह्या ग्रास ज्या अबाधतन छी जे तन मन देखा जे स्फूरी
जै ॥२०॥ रूप न रेष बारन दीपरा। या फल का कछू आम
बिचारा। तरवर डाल फूल फल नां दीसा षीनूत बसै स
ब मांहि ॥२॥ मात पिता गांव नहीं गांव अलष निरंजन ता
का नांव ॥ बिद्या नगर बसै सब लोग। मन का छूटि गया
सब सांसा सोग ॥२१॥ जन दरी दास अब ऐसी नई मनसा
भूल बिश्राम तत्त लो गई। स्यो की डोरि सुरति म षिंआ गा
मन निहचल नृत्ते सुष लागा ॥२२॥ ॥ ग्रं० ॥ २४॥ ग्यान तुप
देस जोग ग्रंथ ॥ पांच तत्त गुण तीन अष्ट तत्त सात तस
मोह जाग्रत सुपन सुषपति पांच ग्यान इंद्री पचीस
प्रकृति लोह दैत अदैत अलष साक्ष निद्रा चित्त चंच
ल निहचल नांदी पांच कर्म इन्द्री उपसुष मन प्रा
ण बसै ता मांही ॥१॥ राग दोष अभिमांन डिंभ पाषंड अ
हंकार काम क्रोध भ्रम मोह आसा त्रिसना लोभ अप
न अंधकार सीत नुष्ण षुध्या त्रिषा मांनि अमांनि पष
पांषे ममत मनोथ सोच पोच संगि सांसो सोषे ॥२॥ कु
बधि अबिद्या कलपना चिंता त्रिष्णां तदा लदीए
च्यारि अवस्था घट च क घट सूं औघट यूं कहीए ॥५॥
घट मैं गोरष ग्यान बूझा बिचार दयावंत देत बि
छब मेका नधरी नाव मुद्रा देव मन जलंधरी पाव
जोग नारद नेह लषमण कवार लषमण बती सम
ष देव संतोष गोपी चंद आनंद सीगी रिष सील चि
रपट चित प्रेम प्रह्लाद परम गुर प्रकास ध्रूधुनि
अजैपाल अर्थ जनक जांण प्रांण चौरंगी नाथ चौ
थी दसा भरथरी कथ चादि सती कणेरी साच सनक
स्वाति नागा अर्जन नेह सनक सनंदन सहज दत
तात्री दवा नेम कंथार निहकर्म हाली पाव दहौ तब
निहकंपक बीरा मीड की पावत मोक्ष नांम देव नेग
वां धूधली मरन भान रहत रे दास औघड़ नाथ अघ
ट पाणी पीपा पृथी नाथ प्रांण समझि सो कहणी
रामचंद्र दया मगरध्वज मुनि जत्तन थि ने द घ
टि घटि गोरष ग्यान सुतो सब घट की देषे दया कै स्ती
ह्वि कहै औरके पडै नर्षे मेष नाथ पाकडै हाथि एक
डि हि मि चरणा राषे जजो निरंजन नाथ सबद सत

अनसब्दरोकरसअंतरिह्या डिगायापू
न्यारा अनहदसब्दरोकर जिमूलकंवल
थ निवधिताप तिणातुलितरकत जीतो निवणीसंभी
फूलेपानचक्रलेअभिदलजीतो रागरतीनरि
४
स्वामीजी कोण जोगताभेमनहूने सुरतिकहा
असणकोण कहासोबेठा वैरागपल
धूमन निह्चल निजवस्तवतावैरागपल परमसुनिरसनो
जोगीपांनतपतबेठास्सपीवे परमसुनिरसनो अंतरिअल
स्वामीजी आसणथा डिआगमघरिपेले अंतरिअल विनासुषना
लषावेताकारूपकहोधूंकेसासमझि विनासुषना
वेधूहरिपरस्यातबहोमनहूने केहरिपरस्या
मनिलाविनयामनहीराबहो डिनव्यापे
६७ सतगुरसबदसाचकरिमानो सतगुरसाचव
तायाब्रह्मजीवका ज्यूंहेमेलान्यूं सतगुरसमझाया
जलमेंआगनि आगनिमेंजलदोसबकूंदीसेपाणी
गटीकाल आगनिकलसी ध्यातब आगनेआगनि
समाणी ध्यातो अजरकहोक्यूंजरीणप्रथ्या
पाणीआगनि किसी विधिसोषेमनप्रतीतिन
सतगुरसबदआगमकी पेडीताचढिलंघोपार
काष्टआगनिमेंडास्याताबजनिवलिनया
स्वामीजिसजमकोणकसाधसिफूले धोतीको
मगावेनिरनेडो रिकहारेरोधकोणकलसनरिय
अवधूसंजमसी लगांनधसिफूले धोतीध्यान
गावेसुषमनिडोरिगगनमेरोपे पिमाकलसनरि
स्वामीजीकोणवस्ततासूमनपरसेकेसेचो
देवेकोणवस्तले आगे अरपेकोण जतनसूसेवे
अवधूआतमप्रभातमपतिपरसेमनसाचोकादेवे
प्रीतिलेआगेअरपे कहोतजतनसूसेवे ५ स्वा
मीजीदेवलकोणकहांसोमूरतिसिवगकूंसुषपा
चोकीकोणकहांसोराषे मातीकोणचढावेरे अ
धूकंथाकवलसुलटिकरिसेथा वटवेवस्तवता
चोकीहरिचरणारांचेतनमनपातीलावे
जीपेडाकोणकिसीविधिचलिबोनिर
विचारेरूपकिरचेनघरिघरि
तोरोआवधूपेडाअधरपगाबि

[illegible] मगगानमुध वा[illegible]
[illegible] त्रिलोचिनाथकी
[illegible] मलपाया [illegible]
[illegible] पानन आया [illegible]
[illegible] पाया [illegible]
[illegible]
[illegible] मनगुर[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] नाकाया फथि[illegible]
[illegible] नडजन
[illegible]
[illegible] मुकम
[illegible]
[illegible] नमकरमागमनाव
[illegible]
[illegible]
[illegible] मन
[illegible] नगवन
[illegible] करसंग
[illegible] मो
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] आया पे
[illegible] जीजो
[illegible] गुफामेर
[illegible] जेनोदर
[illegible] गुफा [illegible] मदिन
[illegible]
[illegible] लगा
[illegible] नेकुं

मनग क्षिपवनागगनमगद्यावैयकुपणसाद्धिपिसाण
पडियेलेआगमउजासतहोमिल्लिषैलेद्दरिसुषद्देरिद्द
द्धरिवतावैआनंदमैगोविदगुणगावैकोमनकलवै
कलपिनजोनैाजेनाथसाथमैआनैबीजयसीबि
धिकीजीए ज्यूंसतिभानेसाद्धसाद्धिवस्तुमिलिषैलीए
आगैवस्तअथाहतूपीजसनिमांतिलतिलषंडे
तीनगुणआगेपगमांडेपला पिंगलासुषमनिमेले
वेसिनिरंतरिचौपडिषेलैसाधमैहलीसथिविराजे
अनहदनादअषंडितबाजोचंदसूरसमिअर्थवि
चारैधुनिमैध्यानकवलदलधरैतीजरमतपावैतेह
रू पीवरूवांकदांवोरजिनहरीदासआनंदनयाछू
टिगयाजमओरपाचौथिसच्याकूंचोटचुकावैमि
फसुदेसवसेसुषपावैाकरजनकाउेमूलनहारेआ
ननजाचेरामजुहारेआईसाषिसमझिघरिआवैरू
ठसुषसाद्धिसदासुषपावैाकरमकपाटफडआसवत
ला भ्रासमअंतरिजोतिजगावाचोथिसचौपडिषेल
रोदोइदोइचोटचुकाइ तीजतजिसारीमेल्हीए चो
थाघरमैजाइहू पाचेपाचपलटिपद्दिलावैबैसिङ
लीचैलोकवुलावैसाजनसेए पिसणकोनाहीअ
रथअवीरपडआसचमांहीध्यानगुलालकेसरिव:
होकरणआगिलगाइचलोहरिचरणसूकडिसम
ताजरघसिजालाइसषासहेलीसाथिवुलाईपांचे
पीवप्रसणनयानेदसहतजगवंतारासमंडलमेंहो
तेहे घरिघरिरागवसंतo| छविछकाछकलाधमं
रीमहलपधरदेवमुरारीमंगानलटिजमनमैआ
णीबाहरिनीतरीकेपिणगिरवरगरकगयाता
मोहीअगमअथाहथाहकहूनांहीरूपअरूप
मोहनहीमायानिजनिरंजनिरंजनरायाचोदपि
छविआईसबी मिटिगयामोहअंधार आसपासमि
लिषेलीए अवअैसरयावारि सातैसमझिपडी
सुषपायाआनंदसहतअधमैआयानिरनैमारना
रनिजनेरातासुषैलागिरहामनमैराखसैतहिनां

षि अनूप तउ धारे आनंद सरूप ताकन सषावे करमकाण्
काडारे ३८ स्वामी जी अबला कोण अगम घरि वैले पू
तपरीषत जाया जामत सवे सकल कूल सन मुषपरम
सुनि सु लाया ३९ अवधू बांझ जाई तब बेटा जाया बैटे
बनषंड जारा रसनाषै प्रेमरस बिलसे परचे प्राण अधा
रा ४० स्वामी जी तीन लोक नांनां रस बिलसे अति काल
डु षदाई तीन लोक आगे सुष स्वामी सुष दे ज्यु बताई
४१ अवधू दिष्टि न मुष्टि ग्यांन ही गाथा रहे सकल तें न्या
रा तीन लोक आगे सुष ऐसा ताका वार न पारा ४२ स्वा
मी जी सो सुष कहो किसी बिधि लाभे करमन व्यापे का
या जन हरीदास सतगुर कू पूछे समझावो गुरराया
४३ आतम के अस्थान लहो जे मन थिर ह्वै तो पावे प्रस
म तांहे गुण ग्रासे पीव मे प्राण समावे ४४ स्वामी जी
आतम का अस्थान कहां है जामे अलष लुकांनां मेर
स्वामी सतगुर सति पूछूं तुम हो बहोत सयांनां ४५ अ
वधू सबद जहां ते कछु बिचलत तहे त्यौ लटा पवन समाई
सो जस हत सुष म निन दीतहा मिले जो जाई ४६ स्वा
मी जी मन मति वाला प्रेम का पीवे प्रेम अघाड़ रोम रो
म तन मन छिले रोकमेक सुष थाई ४७ अवधू अंतरक
छु दीसे नहीं ज्यूं जल जलहि समाई तब हरि है जन
रुकहे जन हरीदास सति भाई ॥४७॥ हंस परमोध जोग
ग्रंथ संपूर्ण ॥ग्रं॥ ७४॥ बडी तिथि जोग ग्रंथ॥ ग्यांन सब
द सति अरथ बिचारे माव समन काम मे लग तारे सुरति
षेवा दिवसे निरखावे साच न छाडे कुवन जावे मे ते मो
चा मेटा मांही तिल तिल काटे राषे नांही सो लह कल
म फिर घर आवे अरधे अरधे ताली लावे करमकल पि
ां नै केरे जुलम अगनि मे जारि जन हरीदास माव सब
रत कोई करि सीसा धबिचारि १ पडिवा पल टि सुपह
पंथ जांणे सूल मता मे मन सा आणे नरम न ने दे मन न
डु लावे गुर परसादि परम पद पावे सत जुग आदि जाणि
जुग जीवे पवन निरोधे अंबर षीवे जुरा न व्यापे जुगि जु
गि जीवे सहज समाधि मदा रस पीवे पडता पासा छाडि
दे बैसे अजर जिहाज जन हरीदास पडिवा सुपह सक
लति पां सिरताज २ बीज बिब धि बिध बांन चकावे

ला सर्वंग्यक्या ब्रह्मज्ञानात्तेसि सतसो पिछाणेरे री जग
न कटि निरंजनराइ प्रेमसनेही सोगोबसे ग्रांनतराम
वह्या ॥२४॥ चवदसि रामचरनदी हाडे उवारी ज्यूं त
नमन वाड़े दरसणादे फिरे घत जिराई ज्यां मुड़दा तदू
ग्रांन समाई रहतां राम अद्यो अविनासी मूवा जिवा
या जीवतमा स्यां मन निहचल न्हे निधि मांही जद्यां
तद्यां इरिद्ध रिजां ही चोदसि चितवनि सबमि ही अ राम
णाबो स्याक छ गाह जन दरीदास चंचल गया निह
चल रह्या समाइ ॥२५॥ सुरते तीसथे रिघ रिआया पूस्यू
मन फिरि मनदि समाया समकल समीप सकल तें न्या
रा पूरन ब्रह्म मांजेद पियारा ज्ञान ति द्यारहू मिहारि नांसि
सबते अगम बसे सब मांही परम सिध सुषवासन पा
रा ता सुष लागा प्रांण हमारा जन हरीदास सो लार
सु तिथि सदगति सुषद लगाइ पूंन्यू पीव प्रसाण
नया अंतरजांमी आइ ॥२६॥ ग्रंथ पालकुंडी तिथि
जोग ग्रंथ ॥ मावस मन उलटा चडया कला सेवारे चंद
फिरि लागा उनमन सूं छूटि गया सब दंद ॥१॥ पडिवा
प्रेम पर सबत जो सूते औरही बाट गगनमंडल आ
सणा कीया लांघ्या औघट घाट ॥२॥ बीज सबी जन षो
हीरा षोबी ज अधी ज जन हरीदास गरजे गगन सद
ज च मके बीज ॥३॥ तीज त्रिकुटि सघो रिकें उलटा अगनि
में आरि दे लागी दरीया जसे लुरीया नेद विचारि थि
चौथि चाहि चू सतनया उलटी ताली लाइ गगन
मन मथि बेसि के मीन मगर गह माइ ॥५॥ पांचे पांचू फे
रि मना सुरति सबद जघ रि धारि थि मन तारा मंडल बे दिग
या उजरदी पल संवारि ॥६॥ छठि अछि पघट में छिप्या पू
रण परमानंद ॥ परसि परलिया दूंनन नया जहां तत्त आ
नंद ॥७॥ सातें सरवर सरनया पवन पलटि गत नार म
छली बसे आकास में लागी प्रेम की सीर ॥८॥ आवें अ री
रस बपरहरि गया अम लिंब देन या ध्यान आवपद
रहम लसुध बाज पयासे घनन ॥९॥ नोमी नव सेंसवारी
रो अनड नमोडे अंगा मन फेर्यो तन फिर तदे मनि
धज मका नंग ॥१०॥ दसमी देह दुरंगा द वद दिस मोर

३२५

लीया। सातेंसाहंसमिसदा। निजपुरनगरनिवास बि
नबादत्तबरिषासदा। ग्रहस्तिबारामास। ८। आवैं आ
वकावकरि कोनें। अलबलआडियहैहरिमांनें जंबक
स्वांनसिघदोहमास्या। हिरणी आगेंचीलासस्या। मूसा
केमुषिचहडमंजारी तीतरबाजकरांबिचिधारी। पंष
संवादिसमंदमेंपेवा। आसाआटलतसोजाइबेवा।
आवैं अर्थबिचारीया। फूलीसबबणराइ। नेवरकं
वलरसघातहै। परसोहदईलडाइ। ९। आजसषीनेंनी
दनआवेजागिनसोउकंतरिसावै। बेकनालिमेंगर
जेबाई सैंफसुहागमिलेसुषदाई। बससेधरनिगगन
रसआवै रांमनरतारनजमोहिलावै। प्रमनदासक
लसुषरासी। अगम अलेष अगदअबिनासी। नौव
रांमननांबदे दसवेंरसासमाइ। जनहरीदासआतुर
मिटी। आंनंदमेंदिनजाइ। १०। दसमीदेवदयाकरिआ
या। सीतलनेंनबेंनसुषपाया। जलमेंकंनकंनमेंपांणी
सकलबियापीयूंसतिजांणी। अकलिनजालेमेरु
डाया। नोराकारसबेलीघायो। दसमीहरिदरसणदी
या। हरिपरमसनेहीपीव। सबसेजांसाईबसे जागिभ
देषेजीव। ११। पारसिकरतबहोतदिनबीता। एकादसी
नजाणोंरीता। जबलगनिजततनिजरिनआवै। उब
ध्यापेलबहोतदुषपावै। कंचनआडिकाचबसिका
चाषडचरषिमांनडीसतिबाचा। यासुषवासुषअं
तरनारी। कहांदिनकरकहांरातिअंधारी। अंतरधु
निएकादसी। बेकनालिरसघाइ। मनउनमनलागा
रहे नांनांनेहचुका। १२। बारसिदांनपुनिकूंकीजै
मनिषजनमधरियहसुषलीजै। प्रबगुमांनघरचिनि
रदावै। अगमअगाधसहजसुषआवैं। सतरजतमगु
णमोहपसारा। यहदततयोनलागिमंवारा। पतिसंपी
तिजीतिगुणइजा। सायपसारिकरौयहपूजा। हरि
सुमिरणहहैसदा। पापपुनिदोयदांन। बारसितहां
मिलिषेलीये। जहांनहजीआंन। १३। तेरसि ततहां बैसेंम
भरानहीसोहरिनहीसोनेरानांकोकुलहेनकाहूलाष
दोहलुरकदोकंपषबाधा। बेदकेतेबकथेहचिमांनी।
यहुपनसाहिरहेअनिमांनी। अपोंअपेरसमतिवा

चै॰१७ रामचंद्र लोणा जि बलीया सुरतेती सद्बु डाया।
रावण मारि लंका गढ लीडा राज बभीषण पाया॥१५
रमता राम औरे अनेक समजि देखि मन माही पुधा त्रि
भुरो मन ही व्यापे हार पार कछु नांही॥१६ हरि गो कल मे
ग्वालन चाया नृसिंघ कीया कालीकंस केस चाणोर
पछाड्या मथुरा में बनमाली॥१७ नांव नवसेन मुथरा
आवे अलखपल ध्यान ही जांही अवरण वरण कंच
क्यानी चा पूरण सब मांही॥१८ बुध औ तार मही
लकीया अघासेन दल मारया जगत हेत हरि ऐसे
आया नृकाला रतनातरुया॥१९ कृ तारन जाणं को
ई जाके हरि एबा लागा मतोदरि ऐसे करि देख्या बृद्ध
तराणन ही वाला॥२० ब्रेद करे हरि सांज लि आवे वर
ज संकट निवारण। निकलंकी औतार कहावे कलिका
लिंग कू मारण॥२१ हरि कूं कलंक न जाणं कोई कलंक
न कोई लागे हरि अगाध ऐसे करि देखो बाबे दादि होपी
छे आगे॥२२ निराकार आकार रहित ही उबध्या जाणी
नांही हरियो डाकें ऐसे करि देखू कैसा हि ब सब मांही॥२३
तुम नूले औतारन जाणं साधां का सुख दाई निराका
र कू सोई ऐसे बेसो सह जे सुनि समाई॥२४ हम नूले तुम
परिपरि ढूंडे सब दस्युणां कहा जांबे तुत पति पावक
परलो छे तब जीव कहां लेतो छे॥२५ अमल देव सदा मि
हकांमी नांव निरंजन राया यो ही पावक यो ही परलो
सब या ही मांहि समाया॥२६ मा हि व अधर धरया सब ब्र
ज्या मिलता जाणं नांही रनकंक रोपवो समजावो य
आसं क्या मन मांही॥२७ चौद लोक रचा जिन बाजी सो
बाजीगर न ही माया उत्तपति पावक परलो छे तब सा
गर ना इस माया॥२८ परलो कहो कहां है स्वांमी ज्यूं या
आसंका जागी घटि घटि जवर आगनिका बासा घट

[illegible] आत्मजनगढ़ जगत्‌उपत्र थ्रातलीवोड़ जगद
[illegible] आत्मन जोनीविर-नाकोइ दोइगहततजि
[illegible] गोदिया जाति बुध्द-आगनिमेघरकोयारसा
[illegible] नरामेतनमप्रमतत पचनततेश्री
[illegible] कहानोदीकहा जहानजीसबहार चौदसि
[illegible] तहिमा गया-नाकतां जेनाज चेदनित्याश्रान
[illegible] तिहरमबदश्रवाज पूंपूपयपूरानयामह
[illegible] जीमानकोम तनदरा[illegible]सश्रान्मश्रुतरिपरमसन
[illegible] श्रात्मवा
[illegible] सथा द्रमिततिविनमनताइ न्हैनेनावानिरंज
जीनेरे [illegible] श्रवागानिकागतिनपैनकोइसा
[illegible] गाया गगनपुमगुरु[illegible]सौखिन तहांनरे जनराया
मद्धकु पकार[illegible] श्रमान्ना उरजको [illegible] जग
[illegible] श्रापपक[illegible] लेखु [illegible]कदाया: न्हत्ताना
[illegible] पीमिरसु रूपानेश कोज रूपकल्न सागरश्राबि
नाम [illegible] मसमपाजे [illegible]दमन्यामेगारन
मसिमत कोटक माक्यो श्रकल श्रापश्रविनामी श्री
या जल[illegible]कारिजसाक्या श्रविनासीकद्द श्राइनही
[illegible] दमदधाममधमांहा जतरश्रुगनिसेरदे निवानारै
[illegible] जापनाहा नगानिस[illegible]विदुर्या
[illegible] द्वीश्रापगा[illegible] कनिताजस्यो
[illegible]काद्विकमाथ [illegible]कालक श्रृपशासुधकेजुन
[illegible] जोहीदमान श्रावे [illegible]नदीपाहि
[illegible] [illegible]होनारी
[illegible] [illegible]पारती नरद
[illegible] [illegible]मास[illegible] धामकल
[illegible] [illegible]मलासः [illegible]पूराजिग
[illegible] श्रीवी [illegible] [illegible]मासश्रम
[illegible] [illegible]याविरि
[illegible] [illegible]कोनो
[illegible]श्रावि [illegible]श्राया
[illegible] श्रमुगति [illegible] [illegible]ज्या
[illegible] जगत [illegible] [illegible]
[illegible]गाढ़ [illegible] [illegible]पजरा

मायाकाब्रन्न अनंतहे लंचणनपावे कोइ रेमनकोडी
यकुहीरा रूपनहोइ ॥२॥ तो इरहीरा जौहरी
पिछांणें कोडी रूपलिक टिनहीं आणें रामरसाइणास
वते मीठा सोतो जगपारा करदीवा तरसिंधु कि पीवे
को नांहीं गारक न्हे सबमाया मांहीं मायामीठी नेडा
आणें वाहपव डिनरकां कूं ताणें रामनजन बिनरे
बथि ब्योहरा तेतो सकल कालकी मारा नरनिबल
सबलीहे माया थाई नहीं सकल चुणि धाया रोगब
ध्यादारू घणी लावे कोई नांहिं तातें रोगी वापडा
हस्तानरकांजांहिं ॥ थोडी जोग रोग के आवे जेसा
करेस तेसा पावे सोई मरे जिको बिषखावे मूलमंत्र
जांनें कछू नांहीं विसहर लेग्रहे गरलमांहीं जेसा
फुनिग तेसी हे माया जे धाया तेवहीं डिन आया मा
याकरणी कल्याजग सारा है कोई साचबताबणे
हारा हरिइम्रतरस छाडि करि विषकूं दोडआ जांहिं
कूवेरातामीडका समंदसमझि कछू नांहिं ॥६॥ गुरुगम
समझि इसी परिआई जेसा अकल सकल पतिराई
नांव निरंजन अंतरजांमी सरिलम लपरपूरण स्वांमी
तबसात समंदन हीं आरअपारा तबधा अबसोइ
सिरजन हारा गिरपरबत नहीं मंडलतारा समझिन
हीकछू वारन पारा निराकार आकार बिन अनंतन
वंनकेराव ताकूं नजिरप्रांणी यों डलन अंसो डाव
॥५॥ जोगध्यांन सू जवधुनि लाई तबहरि रीकरो करे
नाहीं पवनन पांणी धरणी आकासा चंदन सूरदेवन
हीदासा चौंसनरा तिंडां लिनहीं कांहीं अबयाजा
ति होति रेजाई छो तिछो तिकरि जगतनुलाया
तातें निजकांण साधिन आया प्रपंचरा सो प्राणीया
हरिसूं नांहीं हेत प्रबसियडो बिमूचसी अबहे
चेत अचेत ॥६॥ मनप्रपंच कस्विसे तनुराया उर
झ्यावारपार नहीं पाया एक डाक्रूबसाचन हीं न्हा
रे आपजले औरां कूं जाले पारगहे कोई जनपूरा
पूरागुरु का सेवग सूरा सतातन की सौंज सवारे कांम
णी भावे

१७

या

३२ मैं सब मांहि सकल तें न्यारा। जे कोई सतगुर सरणैं
आवै आपा मांनि तहां मैं नांही मृतक है सो पावै ३३
आपा व्हडा कनां तुम स्वांमी आपा कानै कीया बाजी
सबै तुम्हारी दीसै तुम ही आपा दीया ३४ कहता सुणता
कौं बिधि नांही कह्या सुण्यां बिनि नावै पार जती औ ता
रस्त्र लीया ऐसा रूप दिषावै ३५ रूप कहो कैसा हे स्वा
मी हम तो देष्या नांही अब छेदे कूं रूप दिषावो दरस
ण देह गुसांई ३६ परहरि पाप जाप जपि अजपा नांव
निरंजन लीजे त्रिवेणी तटि ताली लागी ता आंनंद म
न धीजे ३७ आंनंद कहो किसी बिधि तासैं कहो हिन
सी सो सोषै ब्रह्म अगनि मैं बैसि सहज घरि आतम
रवर पोषै ३८ घट ही मांहि दरस परस है कायामें ज्योप
वे सतगुर सबद साच करि पकडे ताडै रैला गा आवे
... राम सनेही चित चढ्या हजा देषन चंग हरिरंग
चढ्यो न कतरे न डिगडि जाइ पतंग ४० जब हरि हीर
कर चढै मेरे हे रंक छिपा इ जन हरी दास हरि अघ
टहै कोई गाफिल षोटा षाइ ॥४१॥ इती चारन सपदी॥
जोग ग्रंथ संपूर्ण ॥ग्रं॥ ३७॥ चौदा पदी जोग ग्रंथ ॥ सतगुर
का चरणां चित धरि हूं अनिन गति सोई मैं करि हूं गुर
बिन ग्यान न पावै कोई जो पावै तो भ्रम न होई ध्यागध्या
ग करि गुर सुलझावै गुर की सुलझिन लझिन ही आवै
गुर रूपा तैं हरि निधि पाई जिन पाई तिन बहोत छिपा
ई प्रगट करै स प्रगट पैडा प्रगट आइ पंकु चैनैडा पा
रिपकुता न लहा ल्यावै महापुरष ता तैं बन बावै रनव
न रहै जगत तैं न्यारा राम जनै सारां सिर सारा गरबक
ल णि केता कह्या तिन का लेषा नांहि बात चलावै
सुरग की बैसे नरकां मांहि १ गुर गम नहीं डनी जरम
रे वानि जस साहिब की षबरि न पावै आपे चढ्या कर
म संगि लीया राम नज न कबकुन ही कीया राम न
जन बिन जेती आसा तेती सकल काल की पासा कर
म ही णा ऐसा बैरागी हरि लजि माया मीवी लागी मा
या वारपार कछु नांही तेरू थकत नया ता मांही न
ति नो तिक रि आडी आवै तातैं कोई व्यवन न पावै
रिकस मैं स्यो जीड हकाया बांसै लागा दोड्या आया

कुकनुवागतिबिचारा।कब्बकुहजगरपषीगोह्
।उपपावेहरिसूंदोहामरलामांहीआवैजावैंआय
घसुबहोतदुषपावैरामनजेतोसकलसुषमहीते
।सबदुषसाधिबोहापदातिषाईयाघरानआवेंत
थि।२१।।भाईसुबधिऊबधिकूंकाला।साधनहीको
ईबिषकीज्वाला।जिउनेदजोणिकछूनाही।कब्बे
धिषडहीयाकाषामांही।थापातिलकनरमकीपूजा
सूतरिकरमकालरीहूजा।मनसामनकेमसेचलि
णे।अंतरकोसाहिबसबजाणे।अंतरषोवतहाहरि
नाहीतातेंबूडापरलामांही।करमनरमसबहरिक
रिरहसिरहसिगुनगाग्रहरहरिनजिरप्राणीयानही
तोकालअचूंकोणाइ१२घासीकालसबीसूनाई।
पसवेसमकिपडीनहीकाईकनककामणीकूमनदी
याराममनजनकबकुनहीकीया।पांचततकाकूवा
मेलाहरिनजिप्राणीचलसिअकेला।अनंतलोक
जिनकायापसारासोसबमांहिसकलतेंन्यारा।न
गतनभारबिडदहेजाको।निहचेनावनछांडताको
।नावगहेसोहीसुषपावैजोसागरमेंबहोडिन
आवे।साचीसतगुरकीसरणाईअजबअनूपव
स्तनिजपाईगी।बिदनजिरप्राणीयाहरिस्मरत
सपीवाजनहरीदासदहिअनतहैसुकहाबिचारा
जीव।।२४।।इतीचवदापदीजोगग्रंथसंपूर्ण।।ग्रं।
२८।।अथतीसपदीजोगग्रंथ।।अंचामहलसीज
सुषसूंषेमनहरणी।नानाबिधिनारिहैदलोदल
देपिग्रहक्याद्यकि।नाचलगयानरापतिहारारि।२।बल
बलकरिबसुधाबसिकीन्ही।जमसूबलकरिसक
नचूटिहरिसुषछाडिसाहिसुषकौडी।कलपत्ता
याकितासिरकूटि।२।कपणमेरेनमूकेमाया।काचो
करिरापेकसिकाचापडूतीजुराबिघातनबीतो।
सफैनहीबडेसुषसाचहरिकरिकरतूतिनयानरच
कवेत्रदिष्टचकबहेगुणाहरामनामनिजनेदन
जांपेगेजमूंडारिगायासिरधहधयकुसंसारसकल

मा तहां निज सेवै करै निज दासा ॥ सौंज संवारी निज जन कूं
अब के दफकु आकार कोढी गहि दीरा तजे तांकूं वारन पार
७ जब आकार नया औतारा ब्रह्मा सि छिन पावणहारा
सो सनकादिक नारद नांदी ॥ सम जिसम जिदे ध्यान मांही
दी बिन ओर न देवी देवा ॥ सालिगराम न कूं ही सेवा ॥ जल ज्वा
ला प्रवेसन कीया ॥ बिष्ण बेद पीछे कौं करि लीया ॥ ता बाजी मा
की षब्बरि न पाई ॥ सब बाजी मां रहे लुकाई ॥ कउवा को
मोती चुगे हंसा ताजि कहां जांहि ॥ मान सरोवर सकल सु
पातहां बेवा के लिकरो हि ८ ॥ जब डुष सुषन था गुरु न
चेला ॥ पांच तत का नां ही मेला ॥ सील न धूप राग रंग नां
ही ॥ जामे मरन आवे जांही ॥ जब कोई बिप्र न था बिप्रे
ला वो ऐकाकार मैं अकेला ॥ रूप रूप कूं र सिर सिंगा
वे रूप चल्यां ता का सुधि न पावे ॥ निराकार दृष्टि न मता
नां व निंजन देव अब जिन हूं ले प्राणीयां बरस ता कूं
सेवा ॥ ९ नूं ले ब हे ल सम झि न दी काई कंचनी चकी
बात चलाई ॥ आवे जाइ स कंचु कनी चा ॥ ताम लेले
डोरे सी चा ॥ आडा लेले चौका ढोरे ॥ पसुवा परीयो क्रूर
संचारे ॥ कोण कंचकी णहे सुक्ष ॥ जामे मरे स एकै त ह ग
नवा समैं जब ले दाया ॥ दीया संकट हूं दीहूं चिपीया ॥ पी
पीरु हीरा सा द स मा सा ॥ अब कछू ऐसा कहे तमासा क
हणी सुणी ही रीकरि अंतरि घोट नरा बिलुंहू रिन जि
रे प्राणीयां सुणि साधां की साषि १० ॥ कहे सुणि पाणि हू
णी रूवा ॥ जम सूं र जूरी मसूं रुवा ॥ कंधे मुष दस मास
झुलाया ॥ नजन वो टदे बाहरि आया ॥ कलि की बाव
न बी सुष पाया ॥ आवत समैं पसु बिसराया ॥ बाचा दे
दे आयो नाई ॥ सो बाचा कूं भूले लाई ॥ जोर करे म सा
की न संतावे ॥ जगर अगनि दिन ची तिन आवे ॥ जब
तूं पर ले कोट पतंगा ॥ तब दकुगर बकस्यो गदा ग
ब गुमान सब दूरि करि वा निज साहिब कूं जांणी ॥ वा
निज साहिब कूं बिन न ज्या मनिष जन्म की हांणि
११ हांणि कस्यां कोई न पतीजे ॥ निरचे मृग बधिक
कूधी जे जम निति बधिक सवान र दिरणी चौरासी
मैं दौड्या फिरणा ॥ कब कु घर पसका टप तंगा मो रस्य
ग गति नां नां रंगी ॥ कब कु सूकर स्वान सियारा कब

सा निजदास।२२। आलसमकरि रामनजिन्ममिजु
रा पकुती जन्म जाझूली तैजन्म बलेप अतासि दृरि
गाइसके तो द्रवेगा।२३। जैसे फुनिगामे ब्दिमणि चेजे
जोति जाले कै जाइ यूं इह सब कलस कल को सो
ना रंतिण बिथि द्रसि लयो लाइ।२४। गादिगुरुगपानजा
गि जीव जोगी सतगुर सब्द सादि सति बाणि षोलि
कपाट आवगढ मांही साधी मिले मिलै दीवाणि।२४।
सुरनर असुर सुरोपतिको सुख अकल अजोनी अंत
रि देव तासुष जागि जाणि जीव लागो निसदिन करे
निरंतर सेव।२५। गादिगुरु गपान ध्यान धरि अंतरि दीसो
चदीयो सो थिर द्रवि बीसरि जोजंतो बलेन ला अंक
बोरा घूंरंकपरि।२६। निज अन्सिंध अगद अ निरंतर
घटि घटि अघसरा आनपूरि इकलस जोति णि कर
स अंतरि अन्मूलानलो बतावेइ रि।२७। रमता राम परम
सुषसागर गुणरहत निरगुण निजदेव आनंदरूप
अबिलअ बिनासी निहचल साध कौं नितिसेव।२८।
जवरान दी जुरा अहंन दो आलस बपन दी बियाप
रम सुषसार दीनदयाल देव करणी में द्रेगौ बिदनृक्ष
रो आधार।२९। जनहरीदास पतिपरसि परम सुष सतगुर
सब्द पर्द्मसि तिने ष देह रि अकल सकल बिसवा
पी निहचल बस्त निज भिन्न रहेय।।३०।। इति तीसपद
जोगग्रंथ संपूर्ण।।ग्रं।।३०।। बारापदी जोगग्रंथ।।
रोहीरट्टी रामजी मोही आलसम करि आवछौ छो
ही लप चौरासी जूणी मलोटी घोटा देतल छूटि सीष
टी मैं ते खाडि जागि जो वटो टी ऊसरति कालफासि सी
चोटी रैकनक अर कामणी कातसाटी दोहयां दोन्या क
बिचि आइ कमि ब्बैबैस बिस्ना कोइ।१। तै मनिष जन्म
अमतो मनल पायो सो तैकोडी सटै गमायो दृट बाडै बा
जी डहकायो घरचौ कहा कहा तैपायो गुण तजि नृगु
णा राम न गायो नूषै जाइ सन प घर आयो अमन नमो
निन गायो तिण चरति णातदो जाइ सरगुण तिण सुष
थाडि कषि वस निरगुण का गुण गाइ।२। हरि सुष छारि
रिसी कहा कहा तैकी श्री का चसटे

रंजननृपिनिरंतरा॥८॥ रिद्धरिसुमरिगारकगल्लसूरत॥ब्रा
जोगरतजोन्नजोकोइब्बाजी॥डाला॥बाडिगर्के॥निजसू
तइ नोषंडपसेमयत्नरिपदिरोषेनाटिकफिरिनट
जोवै नटसुषदेषितजेसुषबाजी दरसनजिइमक
त्तिबिषसत्रथौवे॥७॥ मनगदिसबत्तत्र्यबत्तसोइर
रिसजि आवधपांचअटकिअरिमारि॥ रिद्धरिसुमरि
सुमरिनरद्धरिद्धरि नलटोषिलिपडे मतिषार॥ जिम
नरामकामकरिकाणकाणमेतैबाडिमुगधमतिहीन
मुनिमंडलमैसदजसुधारसतारसबसिसद्देजोतौरी
नणा॥ स्वातिबूंदबरिषासूतिबिगसे आयेसमटिदे
जलमांहि सागरकोजलसीपनपरसेमिलिषलेतीमो
तीनोदि॥१०॥ सुषसंसारसमदजलषारोषारेजलिलागा
जुलिजीव नृत्रेसारनोरनिजनेडो आषिनघाडिनदेषे
पीव॥११॥ करताकरणासकलजुगिजोगीताजोगीसूपी
तिलगाइयकुपणासाहिआनतजिअनरथाजुरानब्या
पैकालनषाइ॥१२॥ अगदअरीफकदैकिमरीफेजेब
लगघटमेंइजीआनकावलबाडिरामजिकेवरत॥
तेतासतिरीफेरदमान॥१३॥ जमातासुतप्रीतिबिचारे
अलिअंतरिआनंदतुबाद थूनरनापनावलेनिसदि
नथणा आसरयकुबडोजसाद॥१४॥ नृत्रेयकोनाचिमा
घघिघरि कदरनसूजै कालडरनजिनगवंतअतिपढि
ताइसिमरसिपछैदीदमैमर॥१५॥ जैसेकुरंगनादसुणि
श्रवणांषंडषंडषंडीयोतनयूंसतिसुरतिसाधकोदहि
सूतबजाइदरसेरामधन॥१६॥ मूत्योलीनमीनपाणिपा
णीजोबाडेतोछूटेदेह यूमनप्रानसुरतिगोबिंदरत
तबजाणीजेरामसनेह॥१७॥ इहादिककंवलनलदेल
दलौनीमधुकरतासुषदेसमाइ॥ भारअवारफलनी
नोबिधियकुसुषतजेनवाबनजाइ॥१८॥ चिंतामनिरां
मचाहतातापोनिद्धचरनबसतनिजरिनारिजोइआत
मअंतरिअगद ... रचा...नजाणेंकोइ॥१९॥ कं
मधैनिकरतार ... सुषसाहिजो
गीजतीपीरपैव ... हि॥२०॥ क
रूमब ... टिक
णान

रसुषञ्चाडिकैं।कोइसेंदेसिरयाम।ए।माय संबादि जु
रा चलिश्राध्रिस्पादसेतसजनडुषदाश्रीधूजेसीसई
सनजिनाइ।षड चरषेपडे।मतिषाइ।गदिगुरष्यां
नध्यानधरिश्राइदरिद रसुमरसुमसुषदाईसक
लसुषांकीसौंजहश्रिवारपारमथिनांहिदेहग्रहउ
नीयांतरका।प्रांणागरकतामो।हि।२० हीसीतनश्रासना
रतजिलोइ।द्दिश्रिबिनसमौनसूफेकोइ।गाफिलजा
गि।श्रनागनसोइ।सासउसासेश्रमरथोइ।थागतिजा
गो।बिरलाकोइकिजासूदरिकपाहोइ।दरिनजि।
बुषतजिनृमलहो।इनुनमनरहेनरमसबषोइरा
मसेनालिपरमसुषसोइ।श्रनंनजनमनलागरहेपीवे
नृमलनीर।त्रिवेणीतटिन्हावतां।जमकाफडे
जेजीर।२१।नजिनगवंतकरमकरिकोनेतजिश्रनि
मानयहेदरिमांनें।मनगहिसुरतिराषिप्रस्याने
हरिप्रगट्या।हुगा।हमां श्यांनें।सुषसेसारधारतजि
श्रांनें।पोथीप्रांणारांमलिषिपानें।पोथीप्रांणासंन
लिकरिनांवनिरंजनरेषसजनहरीदासहीराज
नृमकोडीसटेनदेह।।२२।।बारापदीजोगग्रंथसंपू
र्ण।।ग्रंथ।।४०।।बावनीजोगग्रंथ।।बावनश्रदर
लोकसबसुरनरलोकश्रनेत।थस्यासधूवाजाइगा
श्रषेश्रदारनंगवंतरे।सिधसाधिकजोगीजनक
सुरनरकहैंबिचारि।सबकाहिसबतेंश्रगम।तहां
कसूजी।तिनहा।२२।मुसरनमांनहींइसबे।बरोबि
धिकेंबमेकदोइराहदीसेउरसिकरतासबकाए
करा।सबदतहांसंचरपडे।संचरसरबसजाइनिर
सबदनृनेवस्तफेरिलहांमनरनाइ।४।बोकंकारदै
माया।षंडषंडकरिरूपबणाया।जलथलजहांत
हांरहीसमाइ।माया।षाजेमायाषाइ।पककाकसर
श्रसुरचलिश्राया।जुधकीजेगुरश्राइजगाया।ग
हिगुरग्यांनध्यानउरधारो।मारया।हरमहारिपमारो।
।हाषषाषबरिघलककीपाइ।सीधूडे।बाजेसहनाइ

[illegible] आ [illegible] माषवा [illegible] [illegible]
छाडि के मारगपंथ [illegible] कोइ [illegible] मार [illegible]
[illegible] थी [illegible] नहि [illegible] सतगु [illegible] लख
[illegible] दास [illegible] जिथान [illegible] जक [illegible] लाल [illegible]
[illegible] पर [illegible] मनसा [illegible] सहज [illegible] द
[illegible] जगाती [illegible] अमदर [illegible]
[illegible] जन [illegible] राम [illegible]
[illegible] राम भजन को [illegible] नहीं [illegible] जाइ [illegible]
[illegible] गुर ग्यान बिन [illegible] [illegible] पंथ
[illegible] तब [illegible] चिंता [illegible] माया
[illegible] जीव [illegible] बिना [illegible] मिला [illegible]
[illegible] गोबिंद को [illegible] जे तन [illegible] जे [illegible] काल [illegible]
दास [illegible] जे काल [illegible] [illegible]
[illegible] काल [illegible] पीड [illegible] गति गु
र ग्यान [illegible] कोइ [illegible] जन [illegible] नहीं [illegible]
[illegible] नहि
[illegible] निराल [illegible]
[illegible] राम [illegible] मनि [illegible]
तात कोइ जन [illegible] प्रान [illegible]
[illegible] पति [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] मन [illegible]
[illegible] रस
[illegible] [illegible] हिय पर
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] को
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] दासी
काल [illegible] [illegible] साथी
[illegible] साथी
साथी [illegible] [illegible] तब

नयामिल्याद्रसिद्दताभ्र्यधधाध्यानधणीकोधरी
रो मृतकछाडिग्रमनवरीॐगयाकसाथीसा॥
थीआया॥निरूनेनाथनिरंजनमयाश्धननानाव
निरंतरिलीजेसिरकेसूटेतुरतसिरदीजेसाद्रमि
लेतिद्रघाटमिलीजेसोदेघटेनपूजीछीजे४॥
पणाविसणदेहगुणदारणघातसहत्तआयाघरि
माराद्रशिपद्रशिविस्वांस्नलीजेसवसिपडिग्र
देसबसीजेरदफफाफे॥सारसबजोईरहरबिनस
गोनसूझेकोईतजिग्रजिमांनरामनजिलोईसादवि
नसूनीसेजनसोईर॥बवाबोलकबोलनकहीरो॥
राषेराममतिसीविधिरहीरो॥सुषसंसारनिजरसुषनावे
घरजायाघरकोतवपावेर॥न्ननानरमनदीकंबही
रोरापिगुरपानकिनारेरहीरो॥आलसछाडिग्रवधि
तनछीजेरामदयाद्रसेसपूकीजेर॥अमामोहकिसी
विधिकरीरोमरणासदीह्रडरडरीरो॥त्रीघटछाडि
घाटजाइतिरीरो॥चितविलघटेनपूवाफिरीरे॥३०म
मामथिडेरमेरगासोईविलमूवासिधसाधनकोई॥
आगमजरकगुरगामसिषचांचेसबदविचारिमिले
सुषसाचेरर॥यायायाविनओरनरहजामनगहि॥
पवनकरोहररपूजादीसेजिकोसुतोसबमायाफर
ताकोछाडेफलछायार॥जजाजोगमूलजोजाने
हरीमनघानरेकथरिआने॥आगमपियालानघि
नरपीवेपरचेलागाजोगीजीवेररसामनराषिर॥
जामेरहीरो॥विनहसिजाबहोलडुषमहीरोरामवि
सारिपसरिविषपीय॥दिनदसपांचकहजोजीया॥
रहनलालनहेगहेगासोईजहांदेपूतहांओरनको
ईर॥गावणादारकहाकदिगावैआदिग्रतिकोईमधि
नपावेर॥संवावाग्रगमग्रथंहमपाषाडरडहका
डरहीडरमावातरवरग्गतहोकरिबासादेषे
वधग्रगमतमासाररहमसासुषमेसीगीबाजेपम
हदारग्रथनरथाजेपदनवीणानिरंतरिजागेगव
भचरपडेनतसकलागेरगुषापिपलगीघरिग्र
वेसोवेरषचोरमतिलावेर॥हेबरतनफोघरिग्र
वेतबलगमेतेमूलगमावेर॥जाजाजामकिविब

तिअगमगढलीजेपघघाघातबातरोककरीयेनव
सागरनेचकतेडरीयेरावेरामतिसीबिधिरहीयेआ
साआडिप्रसगतिहनहीयेननानाथिहाथिमनरायो
मुषतेमिथ्यासबदनचायोसुषमनिफेरियेरियरआ
वेगेगजमनमधिमडीवंधावे१०चचाचूकपड
तहेनारीकबनजेस्योअबनजेमुरारीनटकोक
हानटकिनीमरणचित्तरणहारअगहनरधरण॥
११छछाछापअगमकीबांचोनिहचलकेनूनेरं
गराचोपासाहाथिआथिछकमारीअबचूकोते
बाजीहारी१२जजाजागिजुरादलआयीसुनरअ
सुरपागडेलायाबासेकालजुरानेडरणनिरगु
णनजोअलषनषजरण१३झझाझेरमेरेगासोई
याबातांसिधसाधनहोईनजिनगवेंतछाडिसुष
हजाइदिबिधिकरोनाथकीपूजा१४ननानाद
रकेसेमिआलीजंबकनेडरेटलेनहीटालीचौडे
बेवीरहेनिराहीतिणदेवोटनताकेलाली१५॥
टटाअटलतहाटलिरहीयेपरघरबसिपरउषक्य
सहीचिंताबसेडसेघरमाहीतबलगनिजघरल
धानाही१६ठठाठिकबिनठोडनलहीयेफूटेम
नफोटाकूबहीयेजागिजहरडमृतकरिपीजे॥
काचसटेकंचनकूंदीजे१७डडाडहडहडहकूं
हसीयेसापणिकामुषमांहीबसीयेछलबलकरि
घासीकेघाधानिगुसांईनिगुसांवांलाधा१८ढढाढ
हारूपढिगरहीयेरूंपढेहेतबतोसंगिढहीयेबि
बधिजोगबिपतिसंगबसीयेतोदशणदोजिगउष
सही१९णणांरुचिमांहीरसपायापीवतछकमास
हजघरआयाअहिवोढणजूंतजिगुणकायाने
दीजाइअनेदसमाया२०ततातातपितासुतसोभे
मूलकेवलमधिपवननिरोधेसुतकेहेतिपिताघ
रिआवेनूनेथकेनिडरघरपावे२१॥थथाथाकि
कपहकरिकोनेचालोसुपहछाडिरहेछानेकरि
सीकाल्हिआजतूंकीजेनपथकेनूनेपदलीजे॥
२२ददादुसदगयानितिदहलाजदातदोआइपि
सणकरगहतासतरजतमडुलमषडुषमदत्तामिने

तासारको ब्राह्को ओरकूथोलता आजका
दौसने षडगसतिमो रतता मारधारामदी देषितन
तोरतता मेंअगदिसापुरसन्याहद्र सिवोरतसा पडि
यालगकरिदादिएरी वावेन्तुजगदिढारा आपस्त्र्प
षाडे आपकेसबकोदीसेमारतःथ्र सकतसाचेमते
दरतेदोषीयांदरतां मेरिएा आफुडे पेतषेसेषता सी
रगोली बदे बांएा वूहे थडा घूरेनी साएामनमांएामो
दांनडा जांएा वाराव चूरे चुरे वाएा चरा दामएीफ
डा विधिसारधूके थडा थडगतोया षत्री षसे मंह्यामत
रिएामो दितोरघरटघमसांएामुषिपडे सपीस्याजादि
दतौ वाजतेसो रडे पाव मांडा षरा फाडरकेदराग
या छिपिफेषरा षारकोमारके सूरवां वांनरां घएा चू
डितात्ता जिसी आजकाकू घरां वीजली तेगकडके
पडे केजरां जोगसंग्राम जोगी तुटे षेजरां धूमधांमवा
जे थका वापेतामुरतताज श्रएी मंडा मेदानमें मंडी
अषाडो आज) संग्रांमजीतेजिके मेदरतेयूकेमे मछ
रखोडेंनदी पेडसांम्हांम्रे चंदसूरजमिते डुरजनष
सेषडरडे जमदाढथमकेनरांकर मेगत्रचवरा छोडे
अपकीजीनजूपै आएीनरतका करे केतडे केत
डषडे घक्या नरताष पडे पांएानमूके आपएां मते
परायेमाए कपरवाडे वोलता वोल्यातेप्रवांएा॥
।८।सांगि धकधूएी मुजदाघमुषफेरता आजका दौस
की वात निसिदेरता कोटसैं ठेकुरजिडसमएादता
षरता नो मिवापेत एा देषिजे फेरता जेर जोगी मरदश्र
पएी जेरता जनदरी दाससा हिवसनमुषसदी सूतिए
वेरका सूरसमा छिश्रगाधदूत जनदरी दासमनमांहि
पेलाने नाजेनतां आपएा ना जिनजां हि केमारे केम
रमिटे सिरदेते निजवेर जनदरी दास सूरां तिको काइ
रकामतऔर काइरटरतिकांने चले डरतारेसे डुराइज
नदरदास सावतितका दरसए करेवतारुसूरतदांधीर
जसदास निआतुरतानां हि देदलगेवतदे षिकरिफी
केफाकांमां हि जनदूदास समरतगरदा हरिकूं सोंप्याजा
॥एा॥

डषन्नारी गा फिल्लपणमैरेछकसारी चितनह्वैतोचो
टचुकावे।पसाह्वा थिआ थिघर आवै।रण।हा ह्वादे
तसहतसरत्ला।गा।बसताषत्लै तिकै।छत्लन्नागा।मतगु
रवोटचोटनह्वा काई।सनमुघरहेतांवेसूंलाई।५०
दहा ह्वंनी मा।रिमनाया मेवासीकरिरतिबसाया
अबिनासीनृह्नेसुषदीया।करताजोरजेसो कीया।
५१ त्लस्ना लालचलोलन करीहे चालोदेषिधणीने
डरीहे।कर्मकसरआडोअकथ्याया।अबगतिन्नजोअ
वधि दिन आया।५२।बावन अछरपडिस्वकहै।सब
दसबदकासंचरत्नहै।संचरथ्याडि।निसंचरहेर जन
हरीदास तासमिनहीको र्युह।बावन अछरपडि
व्यो पाइ।अछर अगमतहारहेसमाइ।जनहरीदास
नृह्नेतबहोइ।तदे अखतमेतनहीदोइ।५३।बावन
जोगग्रंथसंपूर्ण।।ग्रं।।४१।।सूरसमा थिजोगग्रंथ।।र
हाबमेकनहीमोरहदत्न।षेतबुहारयादषअमारेके
वेमारिलेसंचरहेनसेष१।साथदोकेहिसादेषिजैसा
रिषो।बातथोडीहवेत्लात्नसीपारषो।गैदगाजेगुडै
कहरेनेनीतनो।संग्राम जीतै जिकेसीसदैसावतो
मित्या सबत्लांसबत्लषरेनेबाजसी आजतो।बापडा
बड।बडेरहे अभ्रैगा२जो।जनहरीदास आसामुषी
सबैकहावैसूर अंतिनवडाहोवसी।जबरिणबाजे
तूर।२।दूरबाजेनत्ला।आजरिणमारका।नालिगो
त्लाजिरहद्द कहेसारका।मरदमूछांत्लरिणदेषिदद
कारता।नीअबाघा पडैवारनहीपारका।जोरतोलेतु
लैनारतनथरता।आजदेषीयेडरतहोषीयामारता
तेगफड फबरह्वीबहै।मारमुहमुह्निषांह्निअंतरदी
सै।बिगसता।करतोरण।बंदणाजांहि२परणा।बानो
घडासारसान्हांचहै।घायकांपायकांआजपडरण
पडै।बागलेआपमत्लफोजसजमुषषहैतानकतांहु
कतांजोधहाकांकरैं आजपेलांदलांदेषिमारैमरै।
गुरजबाजे सिरांपिसणधुकिधडहडै।सौणअका
रा आजका।पडै नडा।सिरमार सबको दीसे मात्लू
ता ग ह्निपाचहेषियार।४।आपणांआपणांगहिन्न
स्याबोलता।घणां अमत्लांकायांआंषिनहीषोल

॥२०॥ग्रं॥४३॥निरवर्तिप्रवर्तिजोगग्रंथ॥सप्त
धातकीसींजसवाग्र कूं गिरपरगट कीया नोदरव
जाण॥त्रिगुणतत्तांचूनांदीया॥२पांचतत्तसत्तसौ
तुभत्तासुंदरपुरकाया॥नानाभुरजअनेका॥चित्र कोग
रास्वनाया॥२॥नौसेषाईकोटपांचपायकअनिमांनी
मदत्तवस्तुतरणा॥सिंदोङवारूपटरानी॥३॥चितच
चलप्रधांन ब्रातनांना विधिवांनी॥गरोसरससा॥
मनराजाराजधांनी॥४॥आपेकासिरछत्रअरूआव
करमांदी॥प्रवेसेतीप्रीतिनेत्निवेसूनांदीय॥प्रवे
करेसिंगारत्ताकदेरोकतकारे॥निरवेरत्तेनिरासन
दीकाङ्केसारे॥६॥निरवेपुत्रवमेकासुबधिकुलवं
तीनारीसीलसंतोषप्रधांन॥ग्यानचाकरषगधारी॥७॥
सरधाकेवरसीलसंतोषकेसमतानारी॥षिमांवसो
वरज्ञांनाबिचारबारूरवारी॥८॥प्रवेकेसुतमोह
कुलवधिसूं फेरालीया॥कांमक्रोधप्रधांनलोभअमां
नसंगिकीया॥९॥रुतिवत्योत्वरकांम॥क्रोधदसिदंस्य
परणी॥आसाकेवरलोभअग्यानकेचिंताघरघर
णी॥१०॥चोषिचेडीमाषिसुकोअग्यांनगिरातीदुष
सुषदोङदरबारतत्ताषेलेमदमाती॥११॥मनसामनह
रीचरेनांनाविधिमंडेकांमक्रोधअभिमांनतहांफिरि
आसणमंडे॥१२॥कुलविधघरघरहरेषिवेनांनाविधिगा
डीलोभलूंवफडमंडा॥गोहकीसेन्यागाढी॥१३॥मदता
मनोरथरातिदत्ताकछूसूझेनांहीसांसोहस्याचिंत
षुसीषेलेतामांही॥१४॥सोगविजोगअभिमांनअरूभ्रमि
लिपेलेसारीदेषिप्रांण॥घरहस्याडस्यापेमांन्याना
री॥१५॥तत्ताबिचारवमेकबुलायासीलसंतोषग्यांन
संगिआया॥१६॥लीडासवकाहूकूंदीयाहाथपसारि
षुसीहेलीयासेन्यामोहमवलदेनाईजपूंजांणिसूक
रीलडाई॥१७॥कहेविचारप्रथमजुधमेरामारिक्रोधमुक्ता
दूडेरासेकपेकनेनांहीमेरेमारूंक्रोधकोधकेडै॥१८॥कहे
संतोषपांसबसिकरिहूंलालचछाडिदोनरूलरिहूं
नामेंडरूंनजुधकरिहांरूंलालचलोभषेतधरमाहूं

१६७

[illegible] मयाबसुका [illegible] तजकरतद [illegible]
[illegible] कौ [illegible] तेरीबसुधत्तधणी
[illegible] देह जीवरघ [illegible] यत्ता [illegible] ग्रासा
[illegible] बमकदो [illegible] ग्राइमड्या [illegible] राथि
[illegible] मन्मुरमबद राग [illegible] जनहरीदा
[illegible] [illegible] यंदकदत्ता [illegible] नमरे
[illegible] वंदा [illegible] जनस्मा [illegible] ताघटिमदन बदे
[illegible] ग्रसा [illegible] पान [illegible] घटिकदे [illegible] रिषु
[illegible] लत्ता जन [illegible] ग्रदो [illegible] तेनोनकत्ता
[illegible] मानस्म मानद [illegible] दागा [illegible] देव
२। जन [illegible] मचौदे [illegible] नयां [illegible] बुला [illegible] बरे म
[illegible] गोत्ता [illegible] अमेक सायमन
[illegible] मारमुहै [illegible] विना [illegible] वेदा
[illegible] लाबि [illegible] जनदो [illegible] का [illegible] दुरंप
[illegible] कासिरमार [illegible] जोल [illegible] इत्ता जोधवे
राग जनस्री [illegible] नमत [illegible] इत्ता
[illegible] जनग [illegible] जनम [illegible] ग्रा [illegible] जा
जनदरीत [illegible] का [illegible] कहे
संतो [illegible] संता [illegible] सेता चाक
रमोदको [illegible] ग्रापा [illegible] लाग्राद
सो [illegible] ग्रा [illegible] काइ
[illegible] इत्ता [illegible] तादा
[illegible] जसी
[illegible] लमां
[illegible] मता [illegible] इत्ता
[illegible] बीत [illegible] ग्रास्मा
[illegible] [illegible] कारि नु
[illegible] यदे [illegible] करि
[illegible] इत्ता [illegible] ताकी
[illegible] ता [illegible] वं
[illegible] त्तामेन [illegible] दसब [illegible] बधि
[illegible] त्वमक [illegible] मंड [illegible] मप
[illegible] कायार [illegible] मुत्तदो
[illegible] व्याबम [illegible] गया [illegible] गोयु

पमेंप्रमलबसाधि२थ्यूंजनहरीदासम्रवगतिग्राम
ज्या।पिरसासबमोक्षिकोईजनजाण्यासोजांनिहेमुक्त
जोनेनांहि॥४३॥इतीनिरतिप्रवृतिजोगग्रंथसंपू
र्ण॥ग्रं॥४४॥मायाछंदजोगग्रंथपूरुडीधूरुडीधी
वेतीडकजनेरत्नरिषावती।रामविमुषतहोजांवती।मोह
नदीमेंन्हावंती।अपनेअंगिलगांवती।करणहारकर
तारजगतगुरदीनदयालनुलांवती।कवकुनांमणि
कबकुमाता।अपणी।मोलेराषिंलांवती।कवकुरूसेक
बकुतूसेनेरुमृदगवजांवती।कवकुसातीकवकु
सीली।जीवांजेरजिवावेती।जोगणिहो।इजुगतहदी
जाले।जसूरपियारा।पावेती।ग्रूडेमूरडेडाकणिडोमी
न्हूलीनेंनरमावेती।कंचनीचसवकूमिलिषेलेन्हूषी
नोगिलगावेंती।दरूंग्रापणांकेषेले।नानानेषवनी
वेंती।डाकणी।पापणी।सापणी।नामणी।नोगणीनेद
देरोगणी।जोगणी।जागणी।न्हूलणी।लागणी।न्हूकरी
सूकरी।कागणी।कूकरी।ग्रासणी।वीपणी।नरककीटोक
णी।जरजरीजहरणी।कालगतिकहरणी।निवधिस
नधारणी।देसदेमारणी।भावणी।जावणी।डकडक
वाणी।साधनेघरहेप्रगटमारी।मेरें।पावपाछाधेंग्रग
निमेपेंसतांधसे।पाछीपडे।जनहरीदासमायामतेमि
लसमायादोय।हरिसाचासेसाचामिलेतिपलान
पकडेकोग्राग्रं॥४५॥जोगमूलजोगसुषजोगग्रं
थ॥नीचेडालमूलनयाऊपरिग्रज्यासिधसंकजे॥
मकडीकंमाषीनहींछांडे।ग्रांषकूंसवसूजेरेमूसेदो
डिविलाईपकडीचिडेसिचाणिधाया।सासबकुके।
पागेलागेसमंदच्वेदमेंपायार।पिसुलेमाघग्रगामकाल
धावदेसबकछूसुणीया।मूरिषपंडितकीसुधिपाई
सूतजुसादेवणीया।नभजमगरकूंषावणलागी।दा
डुरलरगपचाया।पांणीमांसीमागनिप्रगटी।तिलमेंमे
रसमाया।४सीचतबाडसबकमलावें।कोदतबहे
फलसाम।चोरसाहकेमंदिरपेठा।सादगहत्तजिन
गा।५।पाटपुरषपरिसोसुणलागी।तेडीम्रनमेंरांधी

लीया २० प्रगट्या ग्यांन अग्यांन अंधारा । धीरज ध्यां
ग्रांमी ल्केलागा । कायर के रूक ला बल मेरा । जिमि लिगया
कोम क्रोध साचरा २१ षिमां षड्ग ले हाथि चित्त हस्याले
ऊमारी । सो सोगयो बिल्लाज दया के मह्ल पधारी २२ सु
बधि ऊंच धिरूं ग्रासि साथि समता के चाली सरधा के
करबांण मोह की सैन्या पाली २३ सिदक सबूरी साच ।
जोग बल जरणां जारै सोग बियोग अभिमांन मोह का
मूल उपारै २४ कांम रूति अटी औरअन ले सुति आई
फड़ग्राम नौ थ्यांन । भेर सिर गगन समाई २५ ल्यो का सुत
जागि सिंघ बन मां ही मास्या मह्ल की करै मस्तार मुसैफि
सिल्वांन सिंघासल्या २६ षिमा संतोष सेज बिसै चीटी निरख
वे मह्ल की करै सिंगार चैत परमांण न पावे २७ मूसा के ड
रसैस लेल टिजल मांही पैठा ऊंजर चढ्या अकास
म छ ऊंनस थल बैठा २८ पिसण गया पग छाडि लरम
कातालानागा तरवर रोक अनूप । प्रांण लिहू तरवर
लागा २९ बसुधा मूं जड़ नां हि गोठ तरवर न लीपाया
अमृत फल रस रूप । मह्ला सुष सीतल छाया ३० तातर
वर मैं बास मोह न ही ब्यापै ३१ माया निरालंब निरले
प अगम गुर गम तै पाया ३२ पारसि निरंजन देव नेरला
धी अमनागा आनंद अगम अथाह मनमनसा लहांला
गा ३३ परम ग्यांन परध्यांन आन रस पारसि न पीवे परमगु
नि परदेव जागि लागै सो जीवै ३४ परम तेज पर जोति
जोति मैं जोति निवासा लूलटा चढ्या अकास मूलम
डल मैं वासा ३५ ब्रह्म खोल मैं अक्या लोन की लाइबु
फांणी ब्रह्मा बिअम है सस सैन लागा बिन पांणी ३६ ना
द रस सेती नेह ग्यांन गोरष जध्यांनी अनहद सबद न चार
सुरति निज सबद समांनी ३७ मां चूपां डू फेर घेर अप
णो घरि आया । चांवड के सिर चोट नेद नै रूका पाया ३
८ केरू से नि अपार अट कि अरि फोजन डाई चंक सूर
समकीया तत सूता सीताई ३९ नौसै जोगणि साथि
फेरि जाता मन लीया अनंत सिधा सूं प्रीति सहज मैं प्या
रस पीया ४० न केनाथ निज ठौर अकल तरवर की छा
या ग्यांन सिंघासण बैसि रांम रस तौ पति पाया ४१ जथा
तिला मैं तेल काष्ट मैं अगनि निवासा जथा दूध मैं घृत पञ्च

ऊव्वथिसूनेन्हनबांधे॥ ऐसीगहेलिचारा॥२५॥कीदं
न्नंगगहेनेन्हदेन्हासहोतनबारा॥काया॥कागुण
सबहीत्यागे॥तबजाइपकुचैपारा॥२६॥ऊरगनाद
सूनेहलगावेदेहबिसरिसबजाई॥थीरजपकरे
डिगाहेपाणगाहे॥बानबुधिकछपाई॥२७॥मीनम
रेपांणीजबत्यागे॥बिनपाणीनहीजीवेन्तजेनि
रंजनऐसेंसाधु॥अबिनासीरसपीवे॥२८॥पतंगदीप
कूंसरबसदेवे॥तनमनआपोपोवे॥ऐसेंसाधूसन
मुषहरिसूं॥भलटिनपाछोजोवे॥२९॥चोरीचोरकरेह
दासुध्यतजेदेहकी॥आसा॥ओटो॥मासगहे॥हदामें॥
समझिदाहिणीन्नासा॥३०॥सतीअगनिमेंकायाहोमें॥
पीवप्रीतिकेआंटे॥तजेसासरोपीहरत्यागे॥मनकित
हुनहोबाटे॥३१॥सूरपीवपाछानहीफेरे॥सनमुषघोडो
घालेपेलाअरिदलजीतिसबेही॥साहिबतजि
नहीचाले॥३२॥चंदनऔरबछनहीहोई॥औरबछ
सबकाचा॥औरबछचंदनकीसंगति॥होचंदनसरे
तबाचा॥३३॥हीरामांहिपडेनहीकांई॥पाचरंगकी
कोई॥फूटिफटिकमणिबिगीजावे॥रुपसुषव्यापैदो
ई॥३४॥सतगुरसरणिगाई॥सबदुचध्याऐकनिरंजन
पाया॥करमबिवरजितसकलबियापी॥सोमेरेमनि
नाया॥३५॥पापपुनिदहूंसेंन्यारा॥साधकामतआया
ऐसीसमझिपडीहृदामेंकरमअरनरमबहाया॥
३६॥साचकहूमिथ्यानहीबोल्हूं॥अबिनासीसुषदी
या॥मनकीकसरदईसबनीचे॥तबअपणांकरि
लीया॥३७॥जनहरीदासअबिनासीसंगति॥आवा
गवनचुकाया॥अभरजडीहृदामेंराषीस्वादसम
हमेंपाया॥३८॥जनहरीदासन्नेपदपाया॥न्नेनही
व्यापैकोई॥जिसेंनदीसमेंद्रपहुचे॥ऐकहूवात
जिदोई॥३९॥जनहरीदासकायातजिमाया॥अरूप
रूपसूंमिलीया॥जेसेंआटेलूणानअंतर॥ऐकमेक
होमिलीया॥४०॥ग्रं॥४८॥रागानअरागानपरब्या
जोगग्रंथ॥चुराईह्याडिमलाईपकडीन्नितजिन्न
नेगाया॥४५॥
न्नमलपाया२

णीमें नीझेनांही बिनपाणी निति झूलै ७ पांचू मि
लि मतन लीनपायो बुरे पंथन दीजांही निसदिन
ग्यान गुफामें पांचू बाद रहि निकसै नांही ८ सात संमद
सुकाया चेडि जलकी गादर षोई बैरी आय मिल्या च
कर छेगि वरदासा दोई ए सतगुर थिति समकाई
अंत रि ताते निसदिन जागा तीन तापतनको तब भा
गी सीतल सुषतब लागा १० लेताडाणा जगातडिङ्ग
सब अपणो बसिको या गहि गुर ग्यान अंगनध रि अंत
रि सा हरू सरबस दीया ११ सकल ब्रह्म तजि बसेसुष
पाया तरवर अकलबसेरा सीतधूप दोऊ नहीं ब्यापे
पकड्या निहचलडेरा १२ मोह अरु दोहद हूँ तें न्यारा
सुषमें जाइ समाया सतगुर सरणि लीम तिन पञ्जी
पातासोई पाया १३ मनसा बाचा अरु न तजीयो क
रम करै न लगी काया सुमिरो एक अषिल अबिनासी पर
हरि छोटी छाया १४ तुपत्री अकलि बडाई त्यागी अस
लि गरीबी आई नजो निरंजन परहरि डूब सुष छाडी
आनस गाई १५ निरंजन सदा सलाह मारे कोमन बिग
डे कोई आसा तिस्नां छाडि मनोरथ मनकी दुबध्या षोई
१६ पाक पीर सूं नेहा में तजि तब सबकछु समझाय
असलि अकलि हृदा में मेला साधसंगति सुषपाय
१७ पाक पाकमें जाइ समावे बेद भेलकूं नांही मेल
मेलकी जाइ गाय कूंचे समजि दे भिमनमांही १८ मा
या मेरन सकल जगमेला नूमल साधू कोई पांच स्वा
दत जिन जो निरंजन सकल मेलतत नि थोई १९ दिरदे
मैं बरतीन दीराधि न जैसदा अबिनासी गुनवास सो
कब कुन आवे पडे न जम की पासी २० तन में कबल
तसूं मन मेरा तुलटिन बाहरि आवे स्वाद बसत का म
रीलाश निसदिन अंमृत षावे २१ जैसे सीप संमद मे
कूंडे स्वांति बूंद लेपेवी बारो पांणी पावे नांही सम
दि आपण पी वेवी २२ जैसे निजाम चकोर लगडे सी
तलसुष कूंलोडे अंगार चुगे पलाज नांही निजरधि
दस जोडे २३ चात्रिग नीर नी चन्द्री पीवे कंच बूंद कूं
चाहे तनधावे पणि आडे नांही असी सदा निवाहे २४
देसम का हरन निसदिन बूंगो कंकका गतें न्यारा काम

नीपापकरैनहीं।डरैपकडैजगदीस॥ग्यांनीपापकरैस
हीजजैनकेवलईस॥२२॥ग्यांनीगाफिलनांरहैसदासु
चेतसुजाण॥ग्यांनीगाफिलरहै।फिरिफिरिविषफल
खाइ॥२३॥ग्यानीकपटकरैनहीं।कपटकरैअग्यांन॥ग्यां
नीसुमरैअलषकूं।अग्यांनीसुमरैआंन॥२४॥संगतित
जअग्यांनकी।ग्यांनीसंगतिषेल।ग्यांनीनांवबतावसी
निवधितापतजितेल॥२५॥निरंजनसरनैडुघनहीं।मा
रिसकैनहींकाल।जैसेगहरासेभदमें।पडैनहींजीवर
जाल॥२६॥दोहोपांणीऔरसब।मायाकौअंगदेष।वि
नोनिरंजनडोलसी।करिसीवहोलानेष॥२७॥जलथ
ल॥मांहीनरमणां।विनांनिरंजननांव।जोनीसंक
टिआवणां।फिरणांठाकुंगांव॥२८॥मायातजिनजि
नांवनिरंजन।जीवनअंजली।जीरयो।औसरजावदे
हि।नलानै।जमकाकाटिजंजीर॥२९॥सतगुरसोहिसम
झावैनीकौ।तूंकूंनलाजौ।हिरदैग्यांनदाहसमता।जिन्म
सूं।कायाकेगुणषोहि॥३०॥जैसंअलषनिरंजनजीवो
गाफिरैहीएनोहि।पांचस्वादतजिपरहरि।डुषसुषथकु
मतगाहिमनमांहि॥३१॥मारीडुषदेहै।रामविसार्यौ।लष
चौरासीजूंनि।प्रेमप्रीतिसूंनजि।अविनासीज्यूंपकुं
चेचौथीसूंनि॥३२॥मौतदिसाडाआवैनेडा।तूंकूंगाफि
लसोवै।निरंजनजजितजिआनसगाई।तूंक्यूंजन्म
अविरथाषोवै॥३३॥कालकहरसूंडरपैनांहीं।लेज्यूंचि
डीसिचाणां।विनानिरंजनयागतिहोई।जमकेनो।
कसिधाणां॥३४॥वारवारतोकूंसमझाऊं।अजहूंस
मझ्यानांहीं।संसारसकलसुपनांसादेषैतोसमझ्या
मनमांहीं॥३५॥ब्रह्माविष्णमहेसऔरइंद्रसलिलं।
अस्थिरकोइनदीसै।अस्थिरएकअषिलअविनासी
औरकालसबनकूंपीसै॥३६॥गोरषनाथकबीरकूं।का
लसकैनहींमारि।जनहरीदासनिरंजनमांहिसमाई
या।पहुंच्यापैलीपारि॥३७॥जनहरीदाससुषपाइया
सतगुरसरणैआइ।वासकीयासुषसिंधमें।कालक
देनहींषाइ॥३८॥जनहरीदासनरमैनहीं।पाईनिहच
लठौर।आगाजरमविकारसबसहरगयातजिचौर
॥३९॥जनहरीदासअविनासीपाया।कायानगरीमांहि

पछुडाया। कूप आडि मागर सूं लागा। फूवत जिसा
सुहाया। २ मुक्ता हंस न गहि गूंजा सूं बहु हा। बिषत जि
म्रत पीया। थोथा छाडि कण सूं कासो हा। थोथि तजी
घृत लीया। ३ मरकट मति त्यागी हृदै तैं कूरम मति
ले जागा। काग बुधि सूं बहु तैं हुवा हंस बुधि सूं लागा
४। कहु ग्यांन नहीं मनि मानें। चकोर ग्यांन चित धार्‍या
भंवर बासना लेह कंवल की। मीडक का मत हार्‍या। प
का इस कामत परहर प्राणी सूरमता मैं रहीए। बहै पु
रषो सूं मिलता नारी पतिब्रता कूं कहीए। ६। पतिब्र
ता पति कूं नहीं छाडे सिंघ घास नहीं षाई। साधु सबद न
हे निस असती का मैं कैं कांवे सती असती संग नहीं बैठे
सती असती पैं नावे। ८ कंचन चिरम बराबरि हैं नै पडै आ
गनि में ब्यौरो। चिरम जरै कंचन ज्यूं को त्यूं मिटै चिरम
को जोरो। ९ पडै फटक मैं पाचूं कोई हीरा पैंन हीं पैवे अहर
णि घण बिचि हीरा वाहे रै चोट फटक फूं फिसे १० ग्यांनी अ
र अग्यांनी मिलता मतो मिलैन हीं कोई। वाके हृदै एको अ
वे वाके हृदै दोई ११ धरम नेम तीर्थ ब्रत पूजा अग्यांनी अ
न दिढावे। ग्यांनी एक निरंजन सुमरै पांचूं स्वाद छुडावे १२ अ
री देह धारी कूं राषै बिन आकार न मानें अग्यांनी के ऐसी
मति हृदे अविनासी नहीं जानें १३ ग्यांनी देह रूप कर जा
नें बिन देही कूं ध्यावे एक रूप आच पचीस सूं परहरि सुष मैं जा
इ समावे। १४ अग्यांनी करम करम सूं लागे ध्यान कथा न
हीं भूले। ब्रह्म ग्यांन सूं हेत न लावे जल थल मांही फूले।
१५ ग्यांनी करम करम सब त्यागे आण नेक कथा सुणावे सुमि
रै एक अषिल अविनासी ध्यान कथा नहीं जावे १६ अग्यां
नी कूं ग्यांनी नहीं मानें द्रूमना मन दोई कंटर नें सम
तो नहीं मिलि है नावे देषो जोई १७ पतिब्रता बिन चा
रणी संगति सुष नहीं को पाते न नीर सूं नां मिले हूं सण
चंदन नी होइ १८ साचे हूवे नां मिले मिलैन काइ रसू
र रात्यूं चूं सें नां मिले। मिलैन नहीं हे मद जूर १९ नो है
काई लागि है कंचन काई नां हि अग्यांनी ग्यांनी नां मिले
समझि देषि मन मांहि २० ग्यांनी आरसनां कैसे है निरा
लंब है। इ अग्यांनी आरसनको मदा सदे उषबो ह २१ ग्यां

पा२मनिषजन्मधरिस्सिनजो नांवनिरंजनलेस्वे नगरी
नरमोत्तिककरचढ्या कोडी सेटेनदेस्वे कोडी सेटेन
देकु हीराव्रासजलयललैसहीतनधरैधरिमरस्वजी मे
नगतिस्वरिन्यारीरहीरांमनजिस्वरिसब्वरनसाधीनरम
नेचितातजो अपरंपार अपार अगमगतिमनिषजन्मध
रिस्सिनजो २ जनम अमोलिकजातस्वेजाएंकोईनां
स्विवेरांमननजनकानेनहीनिसदिनजूलाजांस्विवे
निसदिनजूलाजांस्विजसोतसा गुरुग्यानबिनडुष्प
हैरीस्वरिनजनरसरीसन्यारीवसोडिफिरिपछिता
हैरीमूलदीघिस्त्रधमडुषसुषविद्यायाकासंकटे
नगवंतनजिनरजुराग्रासेजन्मअमोलिजातहे
त्नगरअविद्यातसानरवसेमनमायासहेतने म
मतामदिमाताफिरेचेतेनही अचेतहे चेतेनही अ
चेतअजकुकर्मवसिपरडुषसहेगुरुग्यानबिनन
रन्याइअप्रंथकाचसकंचनकैहेबवरिबिननरम
हघोटाकामबिसहरसंगिडसेकालकेकरिकेसनि
सदिनगरअविद्यातसानरवसे ४ मोहमहलमे
मनसोवेचितासोडि बिद्याहवेसोसेकीसज्यानहै
मनसाजहोसहोजाइवेमनसाजसोतसाजाइदिह
दिसत्रिबधिआवेसगिधएग्रासुषसीलसाधीसाथि
नोंहीकबधिकाटानरअटा स्वरिनांवन्हमलनीर
न्याराकरिमसिलगीमसिईधवेअग्यानअसथ
लियेचरसबसिमोहमहलमेमनसोवे ५ नोसाग
रसूनरनस्यातहोतुम्हारा बासवे बोहिथहरिजी
कानांवहेरजीकूवीआसहेरजीकूवीआसहरि
बिनतसोकूमवछ्या हैरीरांमनजिमनराषिनिरच
लपारकतरजाहैरी आसहमहीरेअकरकहीरे॥
अमरजजिअजराजस्याजनहरीदासहरिबिन
पारनांहीनोसागरसूनरजस्या पा ६ जुगमेअैस
साजीवण्णसुषनाकासाकामहैजावधणीजूदेव
एगचजोंनकबकुरांमहेनजोंनकबकुरांम श
करलसोकरसनागारहे संसारडुषसुषपाइवेडी
कुपहकुसंगतिकम्बहोगोबिदगावोगरबछ्या॥

हूसा जहांतहां नर सूरि है। कलकु बिनसेनां हि ।।४८
ती सर्व ग्रंथ संपूर्ण ।। ग्रंथ ।।४३।। अथ पद लिष
राग गौडी ।। च्यार पहर दा कांम है बिणजारीया तेराः
गण दा अकरोह हवे सौवणदी बिरीयां नहीं बिणजारी
हूंणांव निरंजन लेहवे नांव निरंजन लेह अहो निस
लमन जकी जेवी रवे जैसा कमावे पावे तैसा नहीं कि
दा सारवे सुष थोडा दुष बहौ ।। अनंत है रामजजे कुं
हि है जनहरीदास कहै बिणजारीया हूंमति मूलाइ
हि है ।।१।। बाल अवस्था गतिमति बुधि थोडी बिणः
रीया दुष सुष जाणें नां हि अयांणवे मोहलग्या माय
बाप्या बिणजारीया तेंमूला नांव न लोणवे ।। ” नां
वलुलांनां फिरे चौरासी दिन दिन पोदाहा हवे कहूं
कहूं डरे कहूं मिलिषेले अस्थन मागैरो हवे देह अ
वस्था पलटन लागी षराषजीनां जाइवे जनहरी
दास कहै बिणजारीया तूंसके तौ हरिगुण गाइवे ।।
।२।। ज्वांन अवस्था जोर बहौत बिणजारीया सकै
तौ जोर निवारवे हरिसुमिरण करि देहो बिणजारीय
चालो देषि बिचारवे चालो देषि बिचार सहज घरि
सा चासौ दालेकुवे करम निष्ठ जन्म हीरा चत्र्यां को
डी सटै नदे कुवे मैं थाडौ नै जैन जौ ऐहलुं जंसू गुं
फवे जनहरीदास कहै बिणजारीया लेषा देंणां तु
फवे ।।३।। बरस पचास पूछितें दीया बिणजारीया तेरा
ती जाप हराह वे सुत बनिता परवार घणेरा बिण
जारीया मूल हमारा थे हवे मूल हमारा थे ह बडभै
बहौत लीया सिरभारवे अंतकाल कोई संगिन चा
ले फूटी हांडी लार वे के गाडें के जंगलि जालै पूंगवे
सें आइवे जनहरी दास कहै बिणजारीया जीजिंद अ
के लाजाइ ।।४।। अवधि सब आई बहिगई बिणजारी
या तूं चालस्या पूंजी हारिवे और बणिज सब ही कीया
बिणजारीया तूं सब्यान रांम से ना लिवे तूं सब्यान
रांम सेनालि सहज घरि सतगुरु सरणैं आइवे मालमु
लक है गै ज्यूं कात्यूं तूं चालस्या घोहा माइवे समफिन
लीतें षान लीया नलानतु पज्या नावके जनहरीद
स कहै बिणजारीया तेरी मोजालि बिचियाकी नावडे

तजो॥१॥नजागही॥आकजडिबधाहथसी चेत
तआवनलागसी॥४॥ जो॥१॥ऐसेजजोगोबिवप
रसिहरिरसपीजीये जनहरीदासहरिगुणगाश्यो
निसदिनप्राणहरिकूंदीजीये॥३॥५॥सोईदिनआ
वेगाअपणारामसेनाति वे टेक अनेकरावणसेनि
जोधामां॥णमूंकोतेगयाकालकलमेंसकलआया॥
तनसदावानलदहा॥२॥ असुरसुरपसिपहेमकूपरि
षडगाकरगहितालताजुरासिंधबलिकहा बिक्रम
बोलअबलाबोलता॥२॥पांचपांडोंकहांकेसरीकोी
लेसबबसा॥सिसपालसेन्यांकहांजांहांकहोजेको
ईरहा॥३॥हिरणांकुसहिरणा दसमुच चंदकरनमहा
दोनीनयाकहीछलबलकहांमाया अंतिसबषा
लीगया॥४॥धस्या धूवांसकल बिनसेकालकांटाला
गिहेअधरबस्तअनूपअंतरिकोईसाधगुरगमजा
गिहे॥५॥तिसाहनपतिकहांसुरपति जालसबप
रिडारिहे॥जनहरीदासहरिभजहोहजलज्यूंकोई
चोटहरिजनटारिहे॥६॥जीवडाजाइकहांतेरहसी
वे॥ करणाहारकरतारनजान्यो॥मनिलमोहसेंगिबहस
सीवे॥टेक काचीपरषसरापीघोटी॥तालेपरहषसहसी
वे॥रामनंनामनिजनेदनजाण्यो॥कालचराते गहसी
वे॥२॥हरिप्रीमसूंप्रीतिनबांधी॥फूबतहांजाइरहह
सीवे॥जबजमआयाकूचबिलाया॥समनतालवेफ
हसीवे॥२॥जबइहिजीवडेकायापयांनोबकुडिन
यहतनलहसीवे॥जनहरीदासमायाअपराध॥१॥
बहेतनातिकरिदहसीवे॥॥७॥समझिदेषिकचा
नाहीवेतनोहीनोहीसूनागा॥साचनसूझेमोहा
वेटेक परमसनेहीछाडिआपनो॥विषैहमृतकरि
षाजैरसूकरस्वानस्यालकजवागतिकालसदासि
रगाजै॥२॥हसबटाऊपरघरवासा॥अबतसमझि
सयानोरे॥पांचसातदिनरोकआधमेंजतिश्रकेर
लाजानोरे॥२॥कालकहरकीचोटसकलसिरकेमा
॥दासजनजिरामसनेहीसयोरां

वंधू जग मैं ऐसा सो जीवणां। १। या सुष का दुष अनंत है
गिणती ग्यांन न होइ वे। सो सुष पद हो नाडणां। पलान
पकडे कोइ है। पलान पकडे कोइ होरा इहै अर्थ विचा
री। ए जागि पंथी कहा सो वे सोइ सर्व सहारी। ए उलटा पं
थ। सं नालि पंथी सति सब हम तग गुर कहै। विवधि विष
वन मांहि विसहर या सुष का दुष अनंत है। २। यकु त
न तो यूं ही गया स स्थान कोई कांम वे। पर निद्या करि मै
वडा नइ पानक वकु रां म वे। न ज्यान कव कुरां म यह
छाकि माया के छाकि मिलि रहा। हरि ब्रम गति प्रमां
णा पर हरि नीच जल नी चाव हा। जहर फल जगन्ना
ह षा धं जीव सब प्रबु सिनया। हरि प्रांन ना घसनि
कटि न्यारा। यकु तन तो यूं ही गया। ३। अपणो अपणो
मन मतै चालत है सब कोइ वे मरनां है जीवन न ही
जीवत मरै न कोइ वे। जीवत मरैन कोइ पूव सिमर
ण दुष सिर परि घणां। मरो जोगी मरणां मीठा मरि न
जो साहिब आपणां। संसार मैं कोई अमर नांही अम
र हरि जिगुण गते। हरि परम संगी जोगी न्हूला अप
णो अपणो मन मते। ४। आडा डूंगर वन घणां नदीयां
के डा नीर वे। हरि दिसावरि चालणां मन धरि सकैन
धीर वे। मन धरि सकैन धीर यकु दुष सुष मनां फूटीव
है जैसा वादे लुणे ते सान फाटो टा सिर सहै और।
कूं यकु दोस नाही कीया पावै आपणां। जन हरीदा
स दुरन ष दुष सदारण आडा डूंगर वन घणां। पा ५।
मन रे चस्यांणां न ही अयाणां रे थोडी राति बहोत क्यूं
सोवै। जागि न देषि दिवाणां रे टेक आया देषि कहा म
न फूल्या। देही देषि मल्हांना रे झूठी काया झूठी माय
फूठै हेत बंधांनां रे। १। हट वाडा आवै ज्यूं विछडे सम
झि देषि गेबा नां रे आजन हीतो का ल्हि न रहणां मर
णां न दीब हि जांणां रे। २। मोप ति ब्रहो तक रे माया मे
मीर मलिक सुलितांनां रे जन हरीदास विस्वा जन
कोई उलटी पांष उडांनां रे। ३। ५। साजन सने हरावे प्रां
ण हरि गुण गाइ टेक। नेवर जूं मन फिरै दह दिस।
काल दह दिस है सही जहां लागे तहां कांट। निजनां
व बिन नहैन ही। अजकु जीवडा कहा सोवै जग र

मातपितासुतबिसनीनारी। सेगिनचालेकोईवे वो॥२१॥
बहोतनांतिकरिआईश जोगीसंगिजोगणिहोइचा
लीन्रगतणिन्गतमनाया।सोफासंगिसोफणिहोइ
चालीमाथैमुकटबनाया॥१॥सीगीरिषसूषमहोइसे
ष्या॥नारदरूपफिराया।सिंकरकामनमांहीपैठा॥नां
नांनांतिनचाया॥२॥आगनिरूपहोइमैंसेघडे।परसि
परसिपरचावे।जनहरीदासबिरलाजनकोईजल
टिपरमपदपावै॥४॥२१॥जीवडाजागिनदेषेलाईवे॥
जमजागतहेंलूंकूसोवैरांमसुमरिमेराजाईवेटक॥
निसदिनआवघटेसनछीजैडिंभेंजलीकापाणीवे
तजिअलसीकअल्यदेजीवनासमझिदेषिअनि
मांनीवेंहिनसूंलागबिकटमतिबोरामनिषजन्म
निधियोईवो॥१ बांसेंबाहरलियांनकूटेदेहीजुरालुटा
नीवेपिंडरकेसहाथनैनापालिकालधजाफहरांनीवे॥
२ औघटघाटबिचारेनदरीया।तहांमेरानांवमुरारी॥
वेतहांनागिसैंपारनकीयापरदेसीअंहंकारीवे॥३॥
तहांनदेनअलकालनहीकाया।सोईपरमसनेहीते
रावे हरीदासजनटेरिकहतहेतहांचलोमनमेरावे॥
४॥२२॥रांमअसाडासाईहो राषोबेटचोटकूलागेस
मझिपडेकछूनांहीहो।टेकपांचपचीससदासंगिषेले
आंबरकैंअधाईहो।तुमअटकोतोवहोहनव्यापै।
हमबलकछूनबसाईहो।१।तारणतिरणपरमसुष
दाताएकदुषकासूंकहीयेहो।करमबिपाकबिघ
नहोइलागातुमराबोलोरहीयेहो॥२॥समंदअथाह
आगलकरणांमेंगोडिकरैतितिगाजेहो।तामेंमंछक
लसाबैलेमांफडैसोभाजेहोर ३ अधरूपअनंतमो
हजोरे अंधकूपमेंघेराहो।जनहरीदासकैआसनह
रीरामनरोभातेराहो॥४॥२३॥समझिसुषपाईयारेता
सुषमेंरह्यासमाइटेकमनजिसबाईजबपडीतब
सतगुरनोसहाइगुरसूपावेंहरिनज्योंगुरदीयासाच
बताइ॥१॥अगमपियालारुचिपीया।निर्भैसपतिबुभ
र॥ पूरेंगुरबिलबसेडीया।सरासोइसोपाइ।२।निसन्नूल
दिनसमझिवे।दिननूलसमझैंदौ।तिहूंलाकासंगमा

ञ्रत्तटी ताणैगे हरि है साच श्रौर सब्ब कूडा ॥ वादरि
सूंवा णिक वो णैगे ॥२॥ श्रानंद सासूं जब्ब मन थाक
करम नरम संगिना णैगे ॥ रामरस पाइण काम तिवारा
श्राइ पी ती पिद्या णैगे ॥४॥ सोक णिनत्तटि सबी जब
तैं हिगी नत्तटी नदी चला णैगे ॥ पारा वा धिप्रे मरस पी
या ॥ रोम रोम रुचि मां णैगे ॥ जन हरीदास सां सास बत्र
गा ॥ रामरस पाइण पीवैंगे ॥ श्रानंद सकल सुष विषत्र रिदेष्या
हरि सं म्रथन जिजीवैंगे ॥५॥ ण ॥ तब हम हरि गुण गावै
गे ॥ गावैंगे गुण गावैंगे ॥ टेक ॥ काम क्रोध सांसा सब जीत्या
मोह मता मुरझावैंगे ॥ पांच पकडि श्राप वसि लैं हगे ॥ बं
कनालि रस पावैंगे ॥१॥ सुष सुष श्रा डिस हज थरि षैने ॥ श्र
वधि सुव षि सूं षावैंगे ॥ झंझडा श्रा डिनत्तटि मन सुलटा
ण कदसा कूं त्यावैंगे ॥२॥ सतगुर सब्द दचां दिण मैं श्राम
तत्त हम जांवैंगे ॥ तेज पुंज प्रगट पर पूरण सुनि मंडल मैं
यावैंगे ॥३॥ घटि घटि श्रघट घट तह रिनां ही सो इरमता
रामर मावैंगे ॥ जन हरीदास दास हरि जिन जि हरि ही
मां हिस मावैंगे ॥४॥७०॥ समझि देषि मन मेरा रे ॥ या जग मां रै
हजा गिहम देष्या ॥ मगान को इते रा रे ॥ टेक ॥ तात मात ब
नित्ता सुत बंध्य जतन जीवता करही रे ॥ मूंवां जालि बा
लि घरि श्रावै ता मरहट तें डरही रे ॥१॥ मवि सारि हारि
मति चारे नो कहि सम झांकेने इरे ॥ माया संचि संगि रै ने
जाता देष्या सुण्यां न को इरे ॥२॥ जामैं मरै मरै फिरि जामैं
मृत्तलोक मैं श्रावै रे ॥ जन हरीदास देषि मति मंदा गोविं
द कां यन गावै रे ॥३॥७१॥ रामन ही वास सूं मेरे गुर गम दी
यो बसाइ ॥ टेक ॥ ज्यूं नटनी नैं नै थ की ॥ बरतें लागी जा
इ ॥ इत उत चित डोलै नहीं चित बरतैं रह्यो समाइ ॥१॥
मरजीवो समंद धसै तन मन सुरति समाइ ॥ चीचि कहू
श्राटकै नहीं निज सीप संभाले जाइ ॥२॥ गुर जनालि गो
ला बहै धनक बाण सर पूर ॥ स्याम काज सनमुष लडे
नत्तटि न षेने सूर ॥३॥ ज्यूं चातिग घन कूं रटै पीव पीव क
रत बिहाइ ॥ यूं जन हरीदास हरि नांव मैं मन सहजैं र
ह्यो समाइ ॥४॥७२॥ देव लिवैं ती माया लीयां घडग सक
ल सिर षेरै षां षा मते केषाया ॥ टेक ॥ माया पुरष नारि पु
नि माया माया श्रांन सगाई माया स्वांमी माया सेवग

मोहरिटेका दीसेसिंयस्यारवैतेंकाहराजवलगजोग
नलाधरेसोसेपकडिआपवसिकोया जवधिकाम
णिधाधरो१पदहिसनाहसंगनहीसाहीवटपाडो
घरस्थरे सा दिलच्या डिघेतखिसिचाल्यालूणह
रामीस्रधरे२सावृततिकोसूरसतिसो३जिनमन
मेवासामवकीयाये जनहरीदाससोईमतिवाला
जिनरामरसाहणपीयारिला।१२आगेसाधनऐअह
लाद जिनकेनहीविघैरसबासहटैकाउनकाकहाव
रलूबिस्तारारामसनेहीमेरेप्राणआधारा१सीतलको
मलसंतसधीरजन्मजन्मकामेटीपीर२जनहरीदा
सआनंदजसहोइसाधमिल्यांविषडाल्याधोइ३
॥२१॥रामननजनबिनजन्मऊहारीचालतदेअप
णाबितहारीटेक१मतिहीनसमझिमनलोईह
रिबिनसगानसूजेकोई२मनमनलागिगगनसर
पीवेअपणांजन्मसुफलकरिजीवे३जनहरीदास
गोबिंदगुणगावेसहजसमाधिपरमपदपावे४॥२
२पांडेकेसानजनलुम्हारामनकूपकडिसहजघ
रिथेलोमायाघडगडुधराटेक१सतिगुरूतुमसति
कहीयोरामोकहाडुरायामनहेरोककहालागेग॥
रोकबूझलहूजीमाया१कंचजछाडिकाचसूथेलो
तवलगकाचीसारीमायाहोबूझलहीइवेवा ऐहे
अचेनानारी१अर्थवनेअनर्थअनअंतरिपरमने
दनहीपाया३जनहरीदासऐसाअपराधीस्वामी
मणेसतायार॥२३दसओतारदसूरोदेसी औरोअे
रचदावेसोबाजीगरजलाकनाही रोककूकेरग
मावेटेकपरमपुरषकापारनपावेआसासूंरसलू
धोसधराहसहजहीछाड्या॥कफडपछ्याअलू
धी१निराकारलूनेरसंलोजोआकारसजावेहीडा
गरहीडाकूदोडेसोनीधणीकहावे२तरंगसिंधसो
नीहरिनांहीनिहचेजाइविलावेजनहरीदासअबि

अनंतन [illegible] थाइद्या [illegible] फिलनी दनकरा [illegible] जीवन
नदीमन [illegible] सरक पशि सामरनां तेडरीरी [illegible] जनीमो
दनी [illegible] मूना परमें जदन दी पायो [illegible] अति अनिमां
नष्ट [illegible] दीकाफूदी [illegible] मगमायो [illegible] दिगुर
[illegible] जाग जीवजोगी फूधेज रमन्तुलानो [illegible] दास
[illegible] प्रनो चिनानो विधि छोडि चरे सुखलानो [illegible]
[illegible] मांचे सोदे काचे [illegible] दीरदव वाडा
[illegible] दे पा जागो रामडु [illegible] अवतंस
[illegible] पिनिस बीती पंडा करा [illegible] तसकरव
[illegible] घरतेरा साथी सगन के [illegible] जन दरीदा
[illegible] देपिदे [illegible] नारे दरिदवार
फूलन दीनावे [illegible] मत्ती
[illegible] माररा डिन कमा डाकोि चुगि धाया
कोई मृतक पड्या पुकारे [illegible] साजि कोने नारी मां
ने दरि [illegible] आपे चढ [illegible] गट कावे पा
[illegible] जन [illegible] को नातो आडो
पडदो [illegible] देपा [illegible] आगे चा
[illegible] आव रिकेर मकल [illegible] घट घट मांदी
जागे र जन दरी [illegible] साको चरणां
लागे रे [illegible] नि [illegible] मांदी [illegible] आदि च दीसि
रकम [illegible] वस्त [illegible] दीने न
वेनके वरी के चे तज घणां चु [illegible] पडेरीडो
तेफीडा कोई [illegible] काये [illegible] कलकी
चेडी आई [illegible] जुथकरि
[illegible] नरि
[illegible] अपराधा
[illegible] दीदेत
[illegible] माया मदि
माता [illegible] कापा
[illegible] साधि [illegible] लग
जीव [illegible] लग [illegible] जन
दरीदास [illegible] जागे [illegible] साला
[illegible] संतो [illegible] जनने
वय [illegible] आडे

मति। अगम निहि पावै। अगम अगम अगम अगम॥
सतगुर ले लावै॥४॥ अनंत सूं निकटि न्हां जो तिन
सत्तगुर ले लावै। जन हरीदास निकटि बास दास है सपा
तिमिलावे। जन हरीदास निकटि बास दास ह्वै सपा
वे॥५॥ सकल व्यापी हो निरंजन हंसने ही साच
ओ सकरन जाचि देषो कत्ता जाचूं काचा टेक जागि
लागि प्रेम प्रीति ग्यांन री तिनो ह्वै। मन पवन अगम
गवन। परम सिंध मांही॥१॥ अगम ग्यांन अगम ध्यान
अगम अरथ छाया अगम जोग अगम भोग। अगम
अगम पाया॥२॥ परम तेज परम जोति। परम भेद ऐसे
जन हरीदास अरस परस। षीर नीर जैसे॥३॥१॥२४
राग॥२॥ राग रामगरी॥ कोई मन तूं पर घरि जो हि
हरिजी सा सुषदाई कोई नां हि टेक हरि हीरा बिण
जै क्यूं नांहि अजब घांनि तेरा घट मांहि॥१॥ ए हसुब
धि चिंतामनि नंई कोडी ऊब धि सहु जहीग ई॥२॥ ज
न हरीदास सुष सागर रांम। नित सांचा साधां का के
म॥३॥ आव हमारे आंगणे। ग्रह अवन रा इ तुम
बिन मैं बिलषी फिरूं अब रहो न जाइ टेक ऊल
करनी सगली तजी हरि आंनंद मांही। तनत जिवे
की बेर ह्वै मिली एक्यूं नांही॥१॥ आरति कणार ति घणी
मेरा मन मांही। दरस परस की बेर ह्वै पति आइ नां ही
॥२॥ सती पिव आनें साच हूं। मन नि आंनें ही ना मन आतम पै
कै मतै। तुम सूं त्यो लीन॥३॥ जन हरीदास हरि सूं कहै॥
तुम बिन तन छीजै। प्रेम पियाला पाय कें। अपणां करि
लीजै॥४॥२॥ बाजीगर बाजी रची माया बिस्तारा। बाजी
सूं बाजी रमै। बाजीगर न्यारा। टेक। कांम क्रोध अग्नि मां
न का लेडे रूं बाया। जल थल जीव जंत सां। बाजी
नर माया॥१॥ अहं बांस ममता चढी नव डोरी पसारी
मोह ढोल बाजे सदा। नाचै नर नारी॥२॥ इ सुष गोटा
कछ ले। माया मद पीया। बूड़ा बिषम रे समत्तें बा
जी बसि कीया॥३॥ मन चंच ल निह चल न या नै घर
आया। जन हरीदास बाजी तज्यां बाजीगर पाया॥४॥
३॥ मूरि षै मूरि ष सूं मिले। मिलि बाद बधारे समज्या ह
रि सुमिरण करै। आपा सब डारै टेक कांम क्रोध नि आंत

११

फैवासीतलवोडनसूफै॥३॥विबधिविकारबालिनू
रिईथए॥थूई॥ध्यांनधरै॥ब्रह्मअगनिआकासनमेंदेते
पाराकूंमारै॥२॥निगमअगमतहांलेगेनआसण॥गुरब
नादनितिबाजे॥नगरीमांहिन्नुगतिबसिनूषा॥जहां
तहांउठिनाजे॥मनगहिपवनअटकिलेउलटा॥प
रमजोगनरधरै॥जनहरीदासनिरबासनरमतजि
निरगुणजसबिस्तारै॥४॥२६॥रामरससमीवारेअबप
यांहीसुषहोइ॥टेक॥मीवाअैसेंजांणीऐ॥पीवेनार
दसेसमतिवाला॥गोरषपीवैरुचिरुचिपीवेमहे
सा॥१॥सीगीरिषबनमेंपीवे॥हरिरसइम्रतधार॥सुष
देपीनैनया॥जांकूंजाणें॥सबसंसार॥२॥गोपीचंद
नृमलपीवैपीवैहनवंतबीर॥जोगीपीवैनथ
री॥जाकाअरणनैनयासीरार॥नांमकबीरानिति
पीवैहरिरसबारुंबार॥जनहरीदासज्यांहरिन
ज्यांत्यांलागानौनार॥४॥२७॥रामरसअैसारेअमली
बिनपीयानजाइ॥टेक॥सोफाकोपीवैनहीं॥कप
चिपड्यासबकोइ॥आरतिसूंअमलीपीवैपीमर
तवालाहोइ॥१॥सोफीसबउलटापड्याअमली
रह्यालुनाइ॥भंवरगुफाकाघाटमें॥उनमनसूंमन
लाइ॥२॥अमलीसबसंसारहैरह्याबिषैमनलाइ॥
जनहरीदासहरिरसपीया॥रह्याकछूनसुहाइ॥३॥२
८ करमनमैकाकोयाकरैवा॥मांसाजलज्यूंपीया
तातीसीलीसहजसमांनी॥हमतोउलटैपैडेंजीया
टेक॥अधेराहसकलजगचालै॥पसवातहांबिना
या॥रसनास्वादबहोत [illegible]
पाया॥१॥नृमलकए [illegible] अधरअमरनि
जनालेसुरत [illegible] पास
रालै॥२
रिमो

॥३॥२
न्नीजो

तामलमुक्ता सिका ऊपरि तरथसास मलायानापार
एक रिक छत्र राजरसलागा निह्चल रामन गाया तपेब्रत
घड्याकाल फिरि ग्रास्या परह्यि प्राण बिकाया माधौ २ की
टपतंग मीन मृग बिसह्रा स्वान सिंघ बपधास्या सूकर स्याल
काग कम कुंजर ऐसे फिरे फिरे पचि हास्या माधौ ३ ज
लथल बास जु रासं गिरै कालक ह्रकी छाया जन ह
रीदास अपणां कसियो पतित सरणि अब आया माधौ ॥
४॥ ए॥ बाबा ऐह्रागरी बीळ्ग मन अरपवन दोउ ऐक्रुद
मनसा फिरै कूटी टेक निबधि तापकी कंथा पहरी मन
दोष सिर जाके राग दोषकी कांनो मुद्रा करहागरी बीतावै
१ पह्रस्याल निषेष जंपकी रहू मोहमरी बसि जीवे सनके
ध रामन हीरी जो बिषइम्रत करि पीवै २ पांच चोर पर देस प
कुत्ता मिलि षेलै तां मांही मन मैं जोर मुषि गरे गरी बी अ
सत्ति गरीबा नांही ३ जन हरीदास अनत जि अन थि मन
रामनाम ब्रत धारै राग दोष का ह्रस्सू नांही याअस लि गरी
बीतावै ॥४॥ २१॥ ४२॥ राग ॥ ३॥ राग आसावरी ॥ अवध
ऐसा ग्यांन बिचारा देह रि अकल सकल बिस व्यापी रहै स
कल तैं न्यारा टेक ल्यौ मे अलष अकल अबिनासी सुरति सु
षमति जागी गोरष गो वि परसि नि धिन्न ने अनहद सी गी बा
२ निज पुर आण बसे निति निस्चल पवन सुरति सति मा
ला ब्रह्म झोल मैं झूलै षेलै पीवै अगमपियाला २ निक टि
नाथ निज रूप निरंतरि नांव निरंजन राया जन हरीदास निदे
को बंदे मन फिरि मन हि समाया ३ ॥ २ संतो सो जोगी निसतारै
उलटी चाल सदा सपीवै उलट नेद बिचारै टेक ज्ञ बला
मांन ग्यांन सब साचा रामकहैक हि जीवै नुल टि पुलटि
का प्रेम पियाला ज्यूं जागे त्यूं पीवै २ सो मति वाला जु गि जु गि
जीवै सहज सरस सलीया छाकथा फिरै सदा हीरा कल गुरुप
या उन पीया ३ पीपी अवधू नया दिवांना निजसरूप सो जां
नां जन हरीदास हर कारस बिलसे सो जोगी मन मांनां ३ ॥
२ अवधू मैं मेरा मन समझाया मन जा इ थाप णि ज्ञाण न
दीया फेरि सहज घरि लाया टेक के बपधरि बिकूंव बि
चारै मत लोक का मास्या सो बैकूंठ धस्या सो बिनसे हम क
छु अगम बिचास्या २ नरक सुरग देषे हम तो स्या पांन त
राजमांही दोन्यूं बिथा बराबरि दीसै इन मैं घटे बधे का

गावै॥ २ संगति की जे साध की मति साच बतावै। मूरख सूं को
ई जिन मिलौ अरु लौ अरमावै २ संग का छिमाया मंड्या॥ दा१
बिचि सो नारी जन हरीदास मया तजे ता की बलिहारी॥
२॥२॥ जागो रे अब नींदन काइ॥ थोडी राति निसोवो कौ
डि कौडि रैणी का हारा कोडी सटै न बीघो टे कचेतन रहै
२ षेमति चूकौ कांम कौ धन्न मजारी ता राणा हारप षे कूंति
रिस्यो भी है जन मन हारो २ प्राणी काइ कालनें आपो दिन
दिन नेडो आवे जूं बालक नां हाथां बाटी हाडो आर २
छिनावे ३ जन हरीदास का लक रज पारि मेल्हि ति लां जू
जो वेद रिते बिमुष दा हत लिद रहै मूल मधि मन वो मो
वे ३॥४॥ हो हरतुर को एक कल नाई रांम रहीम दो इन दी
नाई टेक इस्ता बांग्ना ण गहा मुलां बक रै बेद कतेब क
थे बिश्राम रांम संना लि रूरि करि मैतै आप रोक अलह
सूं कांम २ का जीव दे जोरन करनां सांचा सब्द सुणो सति
कोनि करद सें बाहि गला कूं काटो कष्ट तो डरसा हि
ब का मांनि ३ रोम बजीव नपाया सा हिबा ता कूं मारि पडो
कूं हरि जन हरीदास इक अर्थ बिचारो ता सूं षालिक
सदा हजूरि ४॥५॥ संतो रांम रजा में रहो मन दे प्राण सीस
दे सद गति रांम रांम यूं कहो टेक गृह परवार मोहत जि
मैते मन की गति मन जांणो तजि अभिमांन न जें अबिना
सी अंत रि अलष पिछांनो १ सब संसार कहै कछू नां हो सं
इ के मनि नावे पूरण ब्रह्म प्रम सुष दाता आप ही मारगि
लावै २ हम तें बिमुष लोक बहे मांनें सद गति सुणा मन को
इ नी देसो करांम बित चित में ता सम और न कोई ३ जन
हरीदास रांम के सरणे रहे रांम ही गावै जो सागर तिरे निरंजन
परसै निज बिश्रांम समावै ४॥६॥ एक हरी एक हरी एक ह
रि साचा अलष न जि अलष न जि मुफ लक रि बाचा टेक
अबिनासी पूरण ब्रह्म तहां मन दीजै रांम न जि रांम न
जि परम गति लीजे १ गाइ गोपाल सति सुमरि मन रांमां॥
काल लागै न हो सै रस बकांमा २ इक सूं एक न है ने मेतेर हरि
जन हरीदास गुर मंगम हि अगह ह्ये गहीए २॥७॥ अब ग
णमो सि अनंत करणां में कांमन को धरस नावे ता सि लाभि
नी दन रिस तातु म बिन कोण जगावे मा छो टेक हारण द
समास इषित अन अबला जनम लजो जन कोरा॥ बर

थीपंडेतौसुषदेवकूंत्यागीहरांमविसारिहारिमति
चाहेगोत्र्यांषिअन्रूपजघाडेगोक्रोधचंडालसमदासंगिषे।
लोलाकामूरतजपडेग्थपांचततकासकरतपमारालहे
प्रांणा३षयावेजनहरीदासत्र्योत्रणासतिसोईगुलटे
भृत्तसमावेय॥७॥रांमसुमरिजनजजलातयारोप्रमस
नेहीअपणांसाधिलयाथटेकसकलगयाइसकलतें
न्यारासबदेवलमेरमेंहोचितारा१सकलनवनकूंप
लैपापैकहापूजालेदासमेलेपै२जनहरीदासप्रनवे
निजदासाजीवसीवसंगाकेवासा३॥८॥चलनारम
नविलमनकाजेरांमनजनकालाहालीजेटेकजस
जहांजांनेतहांजममारेकरणांसागरमरणजावै
१३षसुषनदीवहैदीह्नारीतामेरांमविमुषमूलेंअधि
कारी२जनहरीदासअोसरलपायामितामेटिनजी
रांमरायाग्र॥९॥सोसुषतुणीयोसंतबिनांणीबीजचमकें
बादलगरजेचहुअत्रपूवापांणीटेकजोगीरोगरती
नरितोडेवेषदअगमवतावेयासणछाडिअगनिमें
पैसेउलटीतालीलावें१गगनमनमधिपवननिरोधे
विषतजिवस्तपिछांणी॥ [illegible]
वेनगुणकागुणजांणी२छबैसेसहकीसंधागाअग
मतहांलेजोडेनैनेथकोनिरंजनपरसेतित्तनरितोडे
३सेसमहेसविह्मगहिवहाकाटिकाटिकसलावे
नरिनरिअगमपियालापीवेलालीचोकचिगावेथमं
डीअथंडितमांहीविराजेगीएकविराजेजरणजडी
जटामेरामेसुषमेसीगीवाजेपाविनहीजालरिवाजा
वाजेविनहीदेवलदेवासुनिमेंडलमेंअनिहमारा
वनहीमूरतिसेवाहजनहरीदासअष्ठजचिचारेताक
पलानकोईलांणेबिनधनीवरसरणेकदेयाविरल
कोईजांणे७॥१०॥अवधूमांणिकचौकमहानिषिल
धीकस्थानकोपतिआवेजाकामोलतोलकबूनांदे
सिरसूपैसोपावेटेकअधरसधरनमलनिहकोमीना
वनिरंजनरायाथेअधरसंपरचाहुवासोफिरितहां
समाया१अवरणवरणसकलसंगिरहतापतिवर
ताप
विराजे२अधेउर्धमधिअगम

ध्रूनां ही २ तीर्थब्रत जोग जिगत पस्या बडी बिद्या जुग
मो ही जन हरीदास एमल करि देष्या हरि नै कूं परसे नां ही ॥२
६॥ सेवो दे को ई जोगी जोग जुगति गम जांणै वहती नदी
ग्यान कै पारै बांधि अपूठी आंणै टेक॥ राजस तांमस सातग
ग्रौ से ससनाग कूं पीवै अलष अधरी आसा राषै अभ्रै सा जो
गी ज्यां है॥१ रूषिम गला निज रिमैं राषै पांच चरणतलि च
ढै परम जोति कै परसै षेलै अनहद सीगी पूरै॥२ सुरति सं
वाहि सहज घरि धारै न्यमल नेह निवासा जन हरीदास ऐ
सा जन को ई देषै अगम तमासा॥३॥७॥ मन रे सो साचा बैरा
गी त्रिकुटी कोट क परितत आसण सुरति निरंजन ला
गी टेक॥ पांन षडग ले बन मैं पैसे चेला पांच विवोगै॥
बस्त गोपि सतगुर सू प्रगट प्रेम सु निस्स जोगै॥१ सागर
सप्त अष्ट मेडल मैं नदी निवासे तांणै उन्मनि रहै एकरस
लागा जोग मूलबंध जांणै॥२ अर्थ करै कर अर्थ ध्यै दरसै
निज बिश्रांम मन रहै गुर गम औघट घाटी लांघे ट बे
णी संग रहै ने मन कूं पकडि सहज घरि षेलै सुरति सह
ज घरि धारै जन हरीदास अहराणि घणा क सणी तब हरि
ध्य पसारै॥४॥८॥ मन रे सो साचा अवधूत नै रहै अविधि परमनिधि
परसै बसै डिगनरी पैसारी टेक॥ पहरी षेल बहोत दिन
हार्या सतगुर समझि न आई अब बेडा चरन तलि च
र्या उलटी सारि चलाई॥१ तीन पांच नव डावन षेले च
लि दसवैं घरि आई अब या सारि पडै नहीं काची वेड अ
मोलिक पाई॥२ उभै सुषडाव चारन चौरासी त्रिबधि ताप
त जिपासा मारी मांणै प्रेम परस्पी अर्थ अर्द्ध आस
न चित्त चौपडि चेतन घरि चौथे दो उ मेल्हे जुग हूवा त्रि
रै सदा सुरति कैना कौ फूटिन चालै ज्या॥४ उनमन रहै नि
रंतरि निस दिन पिजत रहर की माया जन हरीदास सतगु
र के सरणै कर मन व्यापै काया॥५॥८॥ मांडै अपनी अगनि
बुकावै हम तो अपणै रांम चलत है तुम काहे अपावै
टेक॥ या तुम कौं णकता थैं आया अनंत लोक फिरि नाई
अब तौ तुम बांनणां होइ बेग चौरासी बिसराई॥१ अन
बास कंधे मु धिर रहता सपत धात रस पीया अब तौ तुम
चौका दे जो मैं न हां चौका किस दीया॥२ ऊरर अगनि मां
न ग्रांन वपपूजा रे हाथ्या हो इ लागी जे या जालि जसी

बि

२राजवलाद्दीमते आपणे।।फिरिफिरिकेरैवुराईताको
सिरजरबासूंरूवो।।पूजाणैवडनाई।।१गांवसुहागणि
मारगमेकोआडीआडीआवेजनहरीदाससोईततवे
ताजोयासेयरैलोहुडावेआ२५अवधूवेलीआंमिलफे
णीपिलीआंधिस्मुजमेफूलीयासतगुरकीसहनाणी
टेकआद्कपांचपोतिमेंअटक्योपयानगुफामेंआया।।
गगनमंडलमेंआसणरेअवधूधुनिमेंध्यानलगाया१ कंध
कंवलसुलटिकरिसंध्यामनहदसबदउचारा।गंगजमनमे ब
छिरविसमेलाअसजनयामतिवारा१गममेंअगमअ
गममेंगमदेमनफिरिमनहसमांनां।जनहरीदासकछ
करतनआवेअवसमनयाविचानां३॥२६मनरेसोसत
गुरमेंचेला।अनंदसहतआगमघरिपेले।परमजोतिसंमे
ला टेकमनगद्दिपवनगवनगुरगमतेपदमदेसपेयजं।
योसुरतिसंवादिसमदमेपैसेवस्तअमोलिकआणि१
स्वाधकीसीखअटकिअरिअवधूपसिंप्रमनिधिदेवेगैन
वनाथसाथमेंरावित्तवदिनलागैलेवे२पाइकपांचणेक
रसरोकेगोरषकडोसत्येजरणांजडीजोगजततजोगे
सीयाअधिदिवंकेअसुनिमंडलमेंवसिनिरंतर३अणवोल्या
नितिगावेजनहरीदाससोईगुरमेराजोयाअर्थसमावे४॥
२७जागिनदेषीरेहरिनेरासजिवहोरूपधूपनहीव्यापेसुषमे
सहजवसेरा।टेकरमतारामप्रमसुषदातासकलसोकसाथ
या।तासुषलागिसाधअविनासीअमरलोकफलपाया१अ
नंदअनंतअनंतअघजारणा।अनंतचंदसेमेला।अनतनां
णप्रकासप्रमपदअनंतजोतिकामेला२आनंदरूपअग
दअविनासीआगमतंगामकीया।जनहरीदासनिधिदे
षिनिजरितरिजन्मसुफलकरिलीया३॥२८॥निजमारे
।।गुरंकत्तमरावतुणीमाहुवाअसिदेगेवा

आपनिरंजनजागेंमेंयापीकालतणीनीसांनी१

दसै मन मति वाला नरि नरि पीवे घटा बिना घन बर्सै
उनमनी नदी गुण स्यूं न्यारी महानी रस्ति मीगा सेजो रा
जा रामपथ स्या मदन गजा सादी वा ४ नैडा निपटि निज्जा
नेको ई करम काट बहो लागा जन हरीदास सुख सा गर
पेगा नो सागर नो लागा ५ १२ जोगीया अलष अलेवा
आसन को ण कहो तेरा आसण करूं किसी बिधि सेवा
टे० सकल सरूप सरूप बिबरजित सकल रूप ले काया
सकल रूप करि सब तें न्यारा साधां कूं सुष दीया १ चित
न चा हि प्रीति तिन ही प्रघत सकल निरंतरि न्यारा अगह
अरूप अयाह अषंडित अगम वार न ही पारा २ मैं मेरा
तन मान बिचार्‌या कर्म कूप तजि काया उनमनी सुरति
गगन मैं गरजै त हां कछू अलष लषाया ३ याहरि सदा
सदा नीरस्सी उपजिन बिनसै नांई जन हरी दास अ
बगति गति ऐसी मिलि षेल्या सुषदाई ४ ॥ १२ सुणि ले
रे साद संदेसा साद कहा इ चोर संगि राषे जाव करो गोके
सा टेक नि छांणे करदे घट नीतरि निज पद अटके नाही कं
चनी चकी माया षेचै सो यडे रसोई मांही १ ऐसे चित्त चोर चि
तपेगा षेड षेड करि कापै अति अभिमान काम बसि का चा
कर्म कथा कन थोथे २ सोई साद सदा संगि षेलो मन की बो
डन गावै बेकनालि इंम्रत रस पावै रसही मांहि समावै ३
एक डितराज मन कूं तो लै हरि इंम्रत रस पीवै जन हरी द
स साद सति सोई मूंसा वा करि जीवै ४ ॥ १६ हरि बिन जां णि
षोटा षात राम जी सूं प्रीति नाही ऊठि ददहि स जात टे०
न जि निरंजन नर मन जन हरि अरि गंजन ना थ ग्रा पणां क
रि आप राषे सी सप रिधरि साय १ काल कान बंध कापे जा
प अजपा आप आपै उनमनी अस्थान इसो दाता अवरनां
ही अने आपे दान २ नरक कांने कंड टाले काल चोट न
बाहे डि साले जुरा ग्रासे ना ति सी स देता दिजगति आपे
न रही बस्त है सब मांहि ३ नरम जन नै पार लहो ए षेलि
उनटा अगह गहीए हरि पूरण ब्रह्म अगाध जन हरीद
स नै ध्यान नमर न तहां बस्त है स बसाध ४ ॥ १७ मंत्तो स
दहीए के सुमला धाम हही एक डि आप बसि कीयो सत गु
रस बदां बा धा टेक मह तो रो क्यों महती किनै करे कलि
नारी क हो का हू को मानै मांही लबगल गोतो दे मारी

२राजब्धाडीमसे आपणी॥फिरिफिरि कैबुराइ ताकू॥
सिजरबासंसू चो॥यूंजागो बडभाइ॥१॥गोवसुहागणि
मासरो कौ॥आडी आडी आवे जनहरीदास सोई तत्त बे
ता॥जो या तें परसे सुभावे॥२५॥अवधू वेली आ बिन कौ
णी पीली आ बिसहजमे फूली॥या सतगुर का सहनाणी
टेक॥इक पांचयो तिमें अद क्या पयांन गुफा में आया॥
गगनमंडलमे आसण रे अवधू धुनिमें ध्यान लगाया१ कंथ
कंवलसु लटकि रसे ध्या अनहद सबद उचारा॥गगजमनम
धि दिसि सिमेला सहज नयाम तिवारा२ गाममे अगम अ
गाममें गमदे मन फिरि मन हिस मांना॥जनहरीदास कछु
कहतन आवे अवहम नया दिवांना॥२६ मनरे सो मत्त
गुरुमें चेला अनहद सत्त अगम घरि षेले॥परम जोति सेमे
ला टेक मन गद्दि पवन गवन गुर गम तें पदम देस पथ ज
रो॥सुरति सें बादि सम दमें पैसे बस्त अमोलिक आणी२
स्वार्थ की सीर अटकि अरि अवधू परसि प्रम निधि देषै गोन
वनी घ सा घ में रोषे तत बदिन जागे लेषै २ माइक पांच णेक
रसरो कै गोरष कडी सत्त मे जर गांजडी जोग जत्त जांगों
सीया अथि दिवूजे सुनि मंडल में बैसि निरंतर आणी बोल्या
निति गावे जनहरीदास सोई गुर मेरा जो या अर्थ समावे॥४॥
२७ जागिन देषौ रे हरिने रा तजि बसो रूप धूप न ही व्यापे सुषमें
सहज बसेरा टेक रमत राम प्रम सुषदाता सकल लोक सा ष्या
या तासु पता गिसा ध अविनासी अमर लोक फल पाया २ अ
नेक अनंत अनंत अघ ज्ञाणा अनंत चंद सैसे ला अनत नं
ण प्रकास प्रमपद अनंत जोति का मेला ३ आनंद रूप अग
म अविनासी आगम तहां गम कीया जनहरीदास निधि दे
षि निज रिने रि जन्म सुफल कर लीया ३॥२८ निंदा मौ
मस्त दिवानी॥ रांक मरावचु णि मा सुया ऐसी देगे बा
नी टेक जोगी जती सब डा सो फो लिन कूसैरहेन ज्ञांनी॥
आप निरंजन जग में थापी कालत णी नीसांनी १ जग सो
वे गोरष जन जागे ऐसा परम निधांनी जीव जंत सब ह
ब सि कीया सब हिन के मनि मांनी २ जोग जुग तिगम
ज्ञां णीनादी निंदा के बसि हूवा जनहरीदास के ता नर
नारी माया मांही मूवा॥३॥२९॥६०॥राग आसावरी से
पूर्ण॥राग॥४॥राग सोरठि॥पलपल जाइ रे मन जाइ

दसेमनमतिवासानरिनरिपीनेघटा
नतटीनदीगुणोसस्थारीमहानीअतिमींगासे
जारांमपथासामदरानजासादीवाने नेडानिपरिन
नेकोईकरमकाटवहेरागाजनहरीदाससुषसा
पैगानेशागनैगागापा १३ जोगीयाअलघअनेवा
आसनकोगाकहेतेराआसणाकरूकिसीविधिसेवा
टेकसकलरूपसरूपविवरजितसकलरूपतें
सकलरूपकरिसबतैन्यारासाधांकूंसुषदीया १
नचाहिपीतिनदीअघतसकलनिरतरिन्याराअगर
अरूपआयाहअघंडितअगमवारनहीपारा १ मैंमेरा
जनमानविचारयाकर्मकूंपतजिकायाउलटीसुरति
गगनमैगरडोनहींकाछूअलषलषायाअ थारू
सदानीरहसीउपजिनबिनसेनाईजनहरीदासअ
वगतिगतिकीसोमिलिहैत्यासुषदाई ॥ १२ सुणिले
रेसाहसदेसासाहकहाइचोरसंगिराषिजाबकरोगे
माटेकनिशांरकरदेघरनीतारनिजपदअटकेनाहीं
चनीचकीमायाधेसोघडेरसोईमांहीमैंतेंचित्तचोरचि
तपेवागेडगेडकरकोपेअतिअभिमानकांमवसिकाच
कर्मकथाकनथोथे २ सोईसाहसदासंगिषेलेमनकी
डनवावे बंकनालिइंम्रतरसपीवेरसहीमांहिसमावे ३
एकडितराजसमनकूंतोरेनेदरइंम्रतरसपीवेजनहरीद
ससाहसतिसोईयूंसांवांकरिजीवे ॥ १६ हरिबिनजां
सोटाधातरामजीसोतिनांहीकठिदहदिसजातहेकी
नजिजिरंजननरजनेजनहरिअरिगंजननाथआपणां
रिआपराधेसोसपरिधरिहाथ १ कालकानैबंधकापेजा
आपआपेउनमनीअस्थांनइसोदाताअवरनां
पैदान १ नरककानैडंडटारेकालचोरन
सासे गुरआसेनांहिसीसदेतहिनगतिआपे
बस्तदेसबमांहि जरमजलनैपारलहोएषेलि
नलटाअगहगहीगहरपूराणभलाअगाधजनह
सनेनेध्यांनअमरलाहाबस्तदेसबसाध ॥ १ संतोस
होकेसुषराधामहासोएकडिआपबसकीयेसतगु
रसबदाबाधाटेकमहसोराकायांमहली किरनोकरेक
नरीकसोकाहकेमांनेमांहीसबगलिगोतो

आसन हजी।आस अनाहद तेरी।३।४।माधवेक विनजा
लअमपूरि सकल व्यापी हो सनेही करो कलि विषह
रिटेक जोग ले जाइ जसू बन घंडि रहो तालीलाइ दे
ष तां मन कछि गो ज्यू दत धरि ले जाइ २ पवन गहि लेग
गनरा धूमेरु डंड चराइ ना यतु म बिचि ऐ हपइला ह
रिपडी ऐ जाइ ३ बोलइ रिबिन और नाही काल ग्रासे
आश जन हरी दास गुदास तोतें आन कबून सुहाइ॥
२।६ तोकूं बिड दकि सो दे गांकं। जुग च्यारू बेदो बांची
जे पे लो पार न पांकं टेक आगम अपार पार नहीं कोइ या
रन किन कु पाया। तू हे एक मांड सब तेरी। सुणी निरंजन रा
या १ सूर जत पे सो ई ते ज तुम्हारो। घुरै हकेबाजा २ हु
प्रताप तुम्हारो स्वामी। तुम जोगी तुम राजा ३ सात समंद
इल मूल न लो पे तहां किन पाज बंधाई जि लो पे मरजा
द तुम्हारी तीनी रक्षू लिदो इजाई ४ तुमतो आप सकल घट
नीत रितुम सोर हो गुदासा जनहरीदास कूं चरणां पासो मे
टो जम की त्रासा ५॥ ७। मन रे हूवा आसपसारा सब तरी
जनजि सिरजन हारा टेक धन जोबन सुत माया या बाद
ल की सी छाया जसांबे मिसु पपाया ताकूं फेरि धूपजला
या १ हस्ती घोड गदपाया अप णां करि मुलक बसाया
चा त्यात बदीया रोई वाके संगि न चाल्या कोइ २ सादवे
दसु लिसानां मैं मेरी मां हिन्दु लानां यह काल का फंध जी
वजा गि न दे षे अंधा ३ या हट वाडा की बाजी जिनि वगो
मिस रमुनि काजी षट दस मण वगि षाया बाजी का मरम न
पाया ४ मात पिता सुत नाई सब स्वार्थ मिली सगाई तत हो
लागि जीव लोई चिंता मणि कर ते षोई ५ कंचा मह्हल अ
वासा नाना विधि भोग विलासा निज धिताप अहंकारी
न्हू लोरे बाजी हारी ६ तिल फुलेल सिर डोरी नाना विधि
दे ह संवारी किसा कांम की काया हूस्या के अगनि जलाय
७ सत गुर मिलिसा चव ला दे जो सो जैसो पावे जन हरीदास
स हरि नी का हु २ सकल धरम सिरटी का ८॥ ८। मन रे खेल
ह्रिस हज घर नाया सब लग बादि बक्या ज्यो राया टेक नां
निके वल मैं पवन निरो धूं सो सतगुर का चेला मन गहिय
वन आगम घरि षेलूं करू अगम सू मेला १ गल बाष ति ग
गन मैं पेसूं सुरति सहज घरि धारू॥

कमरतागोन्नरमचूरतो॥२हो कालतनुताइ टेकोएक सूवटो
तलटिवेवो ष्ट्रन्हमीतरि आइ॥सोईव्हवोछो अमुरमानी
यातलागोधाइ॥३॥एकक लसमुंदरना रनरीयो॥नोपोवेपणि
दारिसोईकलसफूटोद्याडिचालो॥वडो औसरहारिपहर
च्यारिमसहजबीतान्नयोमूलगमाइ॥गयोबासुरैरणि आई
नरचलो घोटोघाइ॥४॥कालआइजवफिरो दोलमूसमजिन
पंडेईकाइ॥जनहरीदासहरिकानजनविननरहोजम
पुरद्याइ॥५॥२॥हरिसुषनिमषद्याडोनोहिरामयतिमैरेजीव
नजीवकीरहैमनहीमांहिंफुनिगसोन्नागयांव्याकलबाव
रोहोइजाइ॥रामम णिमैरेवसैमसतणि प्रेमसंगीराइ॥अ
त्योअस्यांननरहरगयापरहरओर प्रेमजोति प्रकासप्र
गणि॥जहांतहांसबवौर॥१॥अबगोविनरहीमनकैरागदो
षनरेषा॥जनहरीदासकेरामसंगी प्रांणनाथअलेष॥॥
१मनतोसूकरमनहोवारंवारसुणाइ अथतजिअभि
मानआपोगलितहरिगुणगाइ॥टेकषारपरहरिसारसलि
गहिअगमअर्थविचारिहरिनीवविनन्रूबारनोदोरषेच
लेहारि॥१॥पानदाटनगालिअरिअघसहजसबसिधहो
सपतधातसुघातबसिकरि सुरतिनिजनगपोइ॥२॥परमनि
धिनिजद्याडिनिसदिनाविषेफलरुचिषांहिन्नमजस
पसुजांणीपीवेगरकदिनदिनजोहिवांप्रानसंगीपरसि
प्रगटप्रेमप्रीतिलगाइ॥जनहरीदासरसनोरामरटिहो
जुराजोरैयाइ॥४॥३॥नजिमनअकलदेवमुरारिनोव
गहिनोवगदिहरिलिनतोरेपारि टेक॥निकटिनोवनिज
रूपलडनिधिसुषसिंधवारनपार॥तासिंधमोतीवसेहसा
चुगेमोतीचार॥१॥अगमअपारअगाधनरहरिनिरषिरवि
लमोहिदासनिजतहांसदासनमुषदिस्याहीरामोहि
॥२॥जहांगोवनवावनबरणबाडीमनपकडिरनिधिजो
इ॥जनहरीदासरसनोरामरटिहूपीवसदासंगीसोइ॥
॥रामराइमोगूनगतितुम्हारीसोतोनिबधितापैतैन्या
रीटेक॥रिधिनमांगूसिधिनोमांगूमुक्तिनमांगूदेवाआ
दिअतितुमसूमिलिवेल्यएकआंसयासेवा॥१॥मल
गोनध्यानधुनिन्हमलाप्रेमप्रीति प्रकासाआसणअच
लतहांमननिहचलतुमचाकरमैंदासा॥२॥संजमसीलस
चसतिसुमिरणपतिसंप्रीति अनेरी॥जनहरीदासकू

आपथापीमहापापी।नगतिपाडेनंगा।थनरमजलमेंक
अजहूंकलिकलिनाहिं।रामबिनमेरेथाण।
सूकतिबिषमोहि।४।बासजगमेंतासज
।अलपजीवनमोहि।जनहरीदासकूंबिस्वास
मेंनछाडोंतोहि।२।रग्यासेतोऊबधिकालतेंडरा
।भौसागरतिबिबेकेताधिदधिदेषिपगधरी।टेकली
पडेगावरीजमगाढोघातपडेसबमोझेहरिकाज
नकोईसंकनमानेंहस्तिथियारसेनारे।७।सुणिसूरज
सबदहमारा।श्रीकदेनहोई।गोबिंदकाजनज
रेजातनदेषाकोई।८।मेंमेराडवसेगिकरिली
।चालितसांजहांनाई।साचारेनहरिस्वरणांराषा
झाकवकूंघाई।९।निसबासुरनैनैगुणगावेंकहि
कहिरामपुकारे।जनहरीदासप्रगटप्रभेस्वरसाका
रे।१०।स्थानमनपंषीयामेंत्तूंजांणपोरेनाहिंतुल
लिपरमनिधिपाई।टेका।आगमअगहिआंतरिअ
सीमननिहचलकायातनकासी।अखंडपाव
हीकायासूक्ष्मबषसुसीतलछाया।भजनद
दासनेंनेंनेंनाहींम्हारे।प्राणबमेदरितरवरमा
।५।आबमेंजाणपोहेजांणपोगोबिंदोम्हारेम
टेकअकलसेवाकेरूंइहिबिधिमनहीमन
मझाईया।नाहनगुणसेफआया।प्रसिसोपतिपा
ईया।१।साचगहिसतिसदासनमुषासमीसबसेवाक
।हरिनिकटिनिसदिनप्रेमबरषेतहांसिरच्चरणां
धरे।१।आतमांअस्थानआनंदसबदअनहदबाजी
।कोटसूरजतेजदरसैकोटिचंदबिराजीयारअ
मथासोइहांपाया।प्रांणपीवसेगलाईया।जनह
सआसाअस्थिरलागी।अनभगनमठछाईया।४।
वनजांन्हेंतेरानेवतुमकैसेसतिमानोंसेवटेक
मिलिसाचबताया।अगमपुसतीकीइहम
हिनेदजांणोकोईनाहीं।सेषसेजपेडेजलमां
२जलहीमेंजलहोइसमाया।आगमजोगकानेद
या।नेदलहेसोईगुरमेरा।जन्मजन्मकुंताकाचे
इहबिचारपारनहीकोई।सालिगरामसरामनहोई
कोइबामन

लिये ल्है ऐसा अर्थ बिचारू ॥ जन हरीदास ऐसै निधि
परसूं प्रेम सिंधमें न्हांऊं जब अरा निमैं प्राणन हेमूं आ
वागवन मुकांम्यां ॥ ५ ॥ अब मो हि दरस दिषाइ माध
वे थिये औ मस्त लागै नांही दिन दिन घटतौ जाइ माधवे
प्रीति घटै तो जिन मिलौ तुम प्रेम सनेही राइ माधवे
मैं जन लांध्या प्रेम सूं टेक ॥ एक अंदेसो म्हारै मन निबस्यौ
सो हम बिसरै नांहि माधवे निकटि बसौ न्यारा रहो के
नेद्र मांहि माधवे के मिलि हो के तन तजां अब मोहि
जीवण नांहि माधवे प्राण अधारण तुम मिलो ॥ २ ॥ अब ला
म निबाकरन नई तुम क्यूं रहे रिसाइ माधवे तुम मिलि
हो तो मिलि रहूं न तिर मिल्यो न जाइ माधवे अंतर
जामी आतरो जनम सिरानो जाइ माधवे प्रेम सनेही तु
म मिलो ॥ ३ ॥ पांच सषी सन मुष नई सुष मन सहज समा
इ माधवे मन पवनो मेला नया तुम कब रमिलो गे आ
इ माधवे आत्म अंतर आइ हो जन हरीदास बलि जाइ
माधवे दरसण द्यौ दयाल जी ॥ ४ ॥ २० ॥ षोड्बादे रे षोड्बा
दे मांहि लाम नोरथ षोड्बादे टेक ॥ नगुण नांहन आ
या तातैं जीवड़े बहोत दुष पाया ॥ अब पीव बिलमन
की जे जन दुषीया कूं सुषदीजे नैंन पलक नरि जोइ
बादे ॥ १ ॥ अब बिरहणि कूं सुषदीजे पीव अपणी करि रा
षीजे प्रेम पियाला पावो मेरा तन की तपति बुझावो अ
रस परस मिलि मोइ बादे ॥ २ ॥ पीव निकटि निरंजन नारा
सौं ने जन संत सधीरा जन हरीदास सरणाया सुष सा
गर मांहि समाया दी रही रा षोड्बादे ॥ ३ ॥ २१ ॥ दरसण दे रे
देव दरसण दे मोहि नैंन पलक न रि प्रसाण दे टेक ॥ आव
घटै तन छीजै तुम है तै सी कीजे भवसागर वार न पारा
मेरे तुम ही राषणहारा ॥ १ ॥ देवा बिलमन कीजे मो ही बिर
हणि कूं सुषदीजे ॥ तुम बिन पीड़ न जांणै कोई पीया
पड़े दे पीतिन होइ रसा हि बु मेरा मूरा जा के बाजे अन
हद तूरा ॥ जो मरै सो पावे तातैं बिरहनि बिलमन लावे
मो हि बिरह संतावै सांई मैं अबला तुम हीं तांई दूष
न कूं तसै मोरा ॥ सू हरीदास जन तेरा ॥ ३ ॥ २२ ॥ आयो न ल
टि जाऊं नांहि दयाल हो कृपाल माधो मन मंड्यो चरणां
मांहि टेक ॥ संसार भार अपार अब बल तरुंगा चारंग

वारह तिन आई हाथि॥५॥ औरा वल आडि काय
त्या जग के साथि॥४॥ पांच राषि न प्रेम पीया हस
कूं जाहि देषि अरधू अकलि अंश्री अरज हूं चैते
रहरि नाव न मल निकटि नाही॥ बिकटि घेले॥
जन हरीदास जोगी आडि आसण॥ जम लोके अ
जासूध॥२१॥ मन रे जगत न्हलो ओऽ अलष की ग
लषै नाही॥ नेषम गति न हो टेक तीर्थ ब्रत सब
डकली तहां चाले जांहि फिरव सूं संसार ता साच
षै नाहि२ नदी उलटी बहे निस दिन॥ समंद लागी अ
हूं ता समंद का कछू भेद हुजा॥ तिन तहां ताली लार२
सो समंद अरु तिहु षसु षन व्यापै जन पाइ पावै नाहि
ता समंद मांही बसि हंसा॥ हिस्या हीरा मांहि२ नरम ज
रन जब जा णि पीवै॥ तब पार पावै नाहि जन हरीदास
कलिजुग बहै जो रैता मैं बहा स्वामी जो द्रिष्टि॥२२॥
अब मैं हरि बिन आन न जो चूं न जिन गवै तम गन
कैना चूं टेक हरि मेरा करता हूं हरि कीया॥ मै मेरा मन
हरि कूं दीया२ ध्यान ध्यान प्रेम हम पाया॥ जब पाया त
ब आप गमाय॥२३ हरि राम नाम ब्रत हुदै भरूं परम
उदार निमषन बिसारूं राइ हरि गाइ गा॥ हृा वै थागा
या॥ मन न्या मगन गगन म व छाया॥४॥ जन हरीदास
आसत जिपासा हरि न गुण निज पुरी निवासा॥५॥२४
सोई देवा सोई निरंजन हारा जाके जोग ध्यान का बदे
बिस्तार टेक ना थ निरंजन वारन पार॥ निराकार न म
ललत सार ता हि भेद जा णौं नही को हनि दा हरि सूंन्या
रान हीं हो२ रे जाकी आ ग्या पवन चले दिन राति माइ
बाप तिस नाहीं जाति सै ना कहा कही जे जाकी सका
मांडया दीसे ताकी॥१ जाके डकम इ इमे घव रषांवि
जीव जंत सकल सुष पावै॥ करि अनि मांन इह अ
साकै तो वा कूंमे हि आरे कूं थापे२ जाने काल स
ल जुग या ड निस बासुर दो उ तां बिसा घ जब ही
काल बिसरा सा॥ तब ही देषि काल का नास४॥ ज
सागर सपत घुसी सुधी र जल टिन चाले तिन व
रा उलटि नीर बरते तिन मांहि हरि आग पानी म
षि॥ गिर परबत नी र हसी नांहि अनन लषब

३३१

लामेंराषे।कहवासदाकहवहीनाषै।बारैमेल्है आलामोही॥
कहवकहवहकुसाहिबनांही।४।अबहंसमझिदेषिजीव
मेराहरिबिनऔरकोंणहैतेरा।हरिनबंधबंधननहीआ
वेसंपटजडआसहरिनकहावे।५।हरिअबसिपडेनपरस
गिआवे।सबहनितैन्यारा।निरदावे।हरिसबमोहिसकल
हरिमांही।तासाहिबकूंचीन्हेंनांही।६।निराकारनिरंजन
राऊ।जनहरीदासताकागुणगाऊ।७।अविनासीबिनसै
नांहीहुवाबिनसेआवेजांही।७।२७।मनसमझाइलै
रेमनगहिगुरग्यांनबिचार।आनंदरूपअगहअबिना
सीअगमबासनहीपार।टेक।आलसआवैसाचननावै
बिषकापीवणहार।आसाबसिपड्याडस्याअपराधी।
जोगेनहीलगार।२।हरिनिजनांवनहीउरअंतरिसमझे
नहीगंवार।केतेगयेजोहोयगेकेतेसबहिलमोहकीधार
।२।इहुसंसारषारमेंदीसैतामेंदाझेजीवअपार।पीव
तहसकेथकेनिजमारगमैंतेंमोहकिवार।३।तजिअ
भिमांनआंनतजिसेवानांनानेहनिवार।हरीदासज
नहरिगुणगावैजाकेरामअधार।४।२८।रामबिसारि
मोरप्रांनकबधिपरहरिसुमरिहरिहरिसुरतिसिंधनि
धांन।टेक।उदरिअबलाजबरहतेमैंतहांलीयेरा
षि।गाइहरिअबिमांनतजिनरआंनसबदनलाषि।१।
सिघस्यालपतंगकुंजरसरपकीटीकागमछकछहोइ
जलांडोल्यौतौकूअजहुनआईलाज।२।मांनिषाऔ
तारबडनिधिपाईएकहूकाजिजनहरीदाससमझि
बिचारिसदगतिरामनांमसंभालि।३।२९।जोगीरेला
औप्रीतिपछेरो।तातैंमननहीआवैनेरौ।टेक।चंदसूर
समकीयासतगुरमिलिसाबददीया।जतनजतन
करिधोवैतातेंबहोरिनमैलाहोवै।१।बादसआंगुल
बाईगहिसुषमनिसहजसमाई।तरसिअगमरसचा
षेममतासोमैलनराषै।२।जनहरीदासहरिनेरातहां
प्रांनबिलंबाभेरा।हरिप्रीतिपछेरादीया।ताकूहम
औउतजीया।३।३०।गोबिंदकिसोआंगणमांहिसुष
नांवसागरछाडिहरिकोछीलरजमपुरिजांहिटेक
रोग
कहतिजोगीरहतिरोगीरोगकोघरिषांनिसोईदिन
दिनडालमेलहैबूडिगयाअभिमांन।१।पदहरिसुमर

रा४॥ निगम नति ज्ञानपांन विचारं निराकार निरधारं अगम
पारन हीपारं न सोपातां पांच न तारं॥१॥ रूम रदम तेतय कारं
णां तांस ब्रह्म हिलजां मणमरणं डरणं॥ राग आसारण
देषि देषि पग धरणं॥ स्यो लागा जन जीवै तहां नारस्त्र गार
पावै॥२॥ छत्र सकल सुष धरं तल हि आप कुमारं निजत त
निज्ञपांन विचारं परापरें सुष सारं व्रकारस इम तथ
रां तहां पारसु प्राण अवरं इहै सकल सुष नेषे जल हि
अगम कू देषे करि अवगति सूं सीरं पांच पुरिष कूं नीरं।
गगन मन विचि दीरां तहां पारसि निरंजन पीरं॥ हरी दा
स जन सोई ताकै निरबधि तापन हीं हो ई पीव के पहेरे
लागे सदा निरंतर जागे गुड़ीया गगन चड़ावै सु
ष सागर मांहि समावै॥५॥२६॥८६॥ राग सोरठि संपू
र्ण॥ राग॥५॥ राग जैत॥ नांव दे नांव दे नांव दे देवा हरि
नांव कौ आसिरौ नांव की सेवा टेक नांव बिश्रांम द्यो नां
व की छाया नांव निरवांण तैं रांम जी पाया॥१॥ नैन लोन
जन द्यो न्रपष्ट पि तेरी॥ बीनती मांन लो बाप जी मेरी॥२॥ क
ल रूपाल रूब तैं संत बिधि पाया॥ डस्या डरि दीन है आ
सिरै आया॥३॥ सकल संसार का स्वाद सब कूड़ा॥ जन हरी
दास का नाग मैं नांव ही रूड़ा॥४॥२ नांव दे नांव दे नांव दे
राया॥ नांव देना थे मैं नांव सुणि आया॥ टेक ग्यांन संध्या
न द्यो न जन द्यो देवा॥ स्यूं करों रांम ज्यूं मैं करूं सेवा॥१॥
प्रेम स्यू प्रीति द्यो न जन द्यो मां ही मांसि दे रूपणि मेरे स्ह
स्यूं नांही॥२॥ जन हरीदास की बीनती सांन लो स्वांमी जा
ग तो सो इमां जागि हरि जांमी॥३॥२२॥ रांम न जैसो आनंद
सोइ दीनानाथ दयाल दयानिधि चिंताहरण सकल
बिधि सो प्रेक परम उदार अपार अखंडित पूरण ब्रह्म
भजन करि सोइ॥ ओसर ऐसो फेरि न पावै हरि
ण कब ज्ञान ध्यान सोइ॥१॥ आणद रूप अषिल अविनास
करणहार करतार जांनि ज स्यांन धरे तहां ही माया॥ प्रेम
प्रीति करि ताहि पिछांनि॥२॥ नाराइण निरवांण निरषि नि
ति ग्रबहरणा गोबिंद उर धारि॥ जन हरीदास न जौ अबि
नासी गुरगम योही ग्यांन बिचारि॥३॥ रांमनांम अंतरि
आंनंद आस

२३८

जोंहि।।धायाजिहनडावै सोइ।वाजोगीबिनजुक्तिन
रहिमारअवाराकैसेरहै।दावानलगनकूंनीदहै
परलोजरसेमांहि।।सातूसमंदसूकताजांहि।७।तारामं
डवबिसवासनिराकारन्हैनिजदासाजोदीसेसोरह
हिरहिजनरतिमितिसीहरिमांहि।८।देषोधरतीकहांआ
कासारविससिहूकाहैगानासाउलटिसुनिफिरसुनिसमा
हि।अंबरधरबोडेजलमांहि।९।परलैब्रह्माइंद्रअनेकासु
रतेतीसहूपरलैदेषाजोआकारसोथिरनरहाइहन्हैनैएकनिरं
जनराइ।१०।आनआसकालकीपासबिनहरिभजनकूंवबि
सवासाजनहरीदासभजिरमतारामाआदिअंतिहरिहीसूं
कामा।११।२४।हरिइम्रतरसपायोहैवामीगासूंमनलाया
है।टेक।दुबध्यानहीसदारसपावैरामभजनबिनकैसैजीवै
दुबध्यातोमायाकोदासारामभजैपणिकालकीपासाकोटि
लोकंडारैषोइ।तोसहजैहीआनदहोइ।१।नरसअधारारा
षैनाहिंरसपणज्यूंदेषैघटमांहि।नरमसहीकछूबरतैऔर
निसबासुरमननांहीठौरा।दरपणमोरचाडारयाषोइ।तोसह
जैहीदरसणहोइ।२।कऊडचलैनपैडेजाइन्हूषारहैन
अपिनषाइजोकऊडतोपूजैआनजोपैंडातोऊलमैंम
नावहूगुणतैन्यारारहैसोजोतिसरूपीदरसणलहै।३।जो
न्हूषातोहरिसूंहेतजोधायातोफिरअचेतजोगीचालेऐसै
जाइसुनिसहरकीभिष्याषाइतनमनतोलिअकासांचढै
सोजोगीमरिबैनहीडरै।४।नांगृहकैबनमैंरहैपांचूंकर्म
सहजहीदहै।जोगृहीतोचितावदारबैरागीतोमनकूंमा
रदोन्यूंचालेऐसैजाइतिनकूंकालनएसैआइ।५।मैल।
रहैनकुजलहोइआपाकुंडारैषोइजोमेलातोब्यापै
कामाजोनृमलसोहजारामातातेंहीराम्हसकहोइताकी
बातनबूझैकोइद्।नांदुषगहैनसुषकूंजाइऐसैषेलै
सहजसुजाइसुषतहांदुषअनंतअपारातातेंनजीएसि
रजनहारारामनामकहितालीलावैतबकछूजेदमह
लकापावै।७।पापपुनिकीआसानांहि।रामरटणिराषै
टमांहि।मायादिसिहैजनसोइरामभजनका-
रजनहरीदासतबनइपिछांणि।जबमिटिगईऊरं
कीकांणि।८।१५।जोगीयेलाधीप्रीतिबिचारैताते
चढैरीयमारैटैक।इहैसकलसिधिसाधू।अबलाहूंकं-

न

किसा मन दूरि पद मांही ॥२॥ राम बिसा स्यो बिघन होत
मग्रासै जाइ॥ जनहरीदास गोबिंद नजो तजि ऐन
सगाई ॥३॥ ०॥ धूम धाड़ ॥ जग क्यो हारा सुष थोडा ३
ष अनंत अपारा टेक माता पूत पिता नही कोइ स्वारथ
आइ मिल्या पष दोइ बिछडन छ्यो मिलन न ही आ
गे तातें मोहि बाजी सी लागे ॥१॥ सासु सुसर नही को सारा
रा सब दीसै मोहथ सारा कामदे तजल तदे लोइ चुका
दू समान तेरा कोइ ॥२॥ मनसा अटी मिटी सब वैर गहि
रयाल बसे निज वीर ॥ जनहरीदास गोबिंद गुण गाइ स
करत बिया पी राम सहाइ ॥३॥ ०॥ कादे कूं अनि मान करी
जे निसदिन आव घटै तन छीजे टेक सिला बैस सांस
पात पकै सी या लिपौ ॥ मैं मेरे पांच अंग निज न्हा ले
पा इफल जु गते जीन का जाइ ॥१॥ तीथ ब्रत करें समना
इ चित मैं तसि घिमन लाइ तुला बैसि कंचन देका टि
न है चे बिकै बिडारौं हाटि ॥२॥ जैसा बच्छ तैसा फल होइ
पापपुनि पराछि फल दोइ यह फल छाडि आमफल
गहे सोपैछा नैंक रहे ॥३॥ जनहरीदास ऐ मनका कांम नैनैं स
रूलजैन हीं राम ॥ आन इष्ट संकल्प ब्रत करै न पूना चि
नाचि घर धरैथा ॥२॥ सूगह स्थान सो हरि कछु ग्यान दि
छिले जो हरि टेक अबत रूचेत अचेत रते वो लिगपान के
नेत शद हरिजी केसु मिरण लागि रे अकलि अधयू जागि
रे ॥१॥ करम दीण कछु जांणि रे पांच लटी आणि रे प्रेम पि
याला पीव रे हरि लिव अ सें जीव रे ॥२॥ हरि हीरा के विराधि
रासु णि साध की साषि रे जनहरीदास यू जाणि रे अंत रि
अलष पिछाणि रे ॥३॥ १॥ अवगति आगम कह्रगति
बाजी निह आड घट जूं गाजी टेक देत प्रीति दे आ
बरकरे निह संगि जी चित हीमेरे घट घट मांही डाकरे
राव सो सिंघ रूप है जीव हि डै से ॥१॥ जनहरीदास निह
सूकेत अतिकाल मुषि पडि सो रे तड ॥२॥ हदरि जन जुग
ति विचारे जागि डरे न सो दे सापणि लागि टेक लोचन
तीन तरल तन धारै घट दरसण दादत लिमारे ॥१॥ सांसो
मुष फेलाया आवै सकल न कल लेता रूल आवै ॥१॥ सुन
एषाधा

न्है नाथ जहां तहां जनकै सिरि हाथ ४ काल जाल की
लागै न चोट हरीदास जन हरि की चोट ॥३॥ ध्यो मैं तो राम न
छाडौं तो छिटूं हरि मी गल्हा गै मो हि टेक पालै पोषै सेवा
करै ता हि छाडि कै दोजि ग पैरै १ ऊंच नीच अंतर कछू नां
हि परम ऊदास सकल घट मांहि २ जन हरीदास न जिराज
रांम आदि अंति हरि ही सूं कांम ३॥ ५ अणबोल्या गावै
ऐसो हांसू जपा जाप निरंतर होइ टेक जन जो निरंजन
नरमा माइ जुरान व्यापै काल न षाइ। जो नी सैक टि अ
वैठां छिवां ण सम्मावै हरि पद मांहि सुष म नि फेरि थे
रिय रिस्यां मैं सूरथे विचारै अगम पिछांनै मूल कं वल
मैं पवन निरोधे तब मन कूं मन ही परमोधे २ त्रिबधि
ताप त जि सहज विचारै जा गि न सोवै जीतिन हारै त्रि
वेणी तटि वैसे जाइ धुनि मैं ध्यांन रहै ल्यो लाइ ३ आस
मेटि निरास सेल्हारै सुनि मंडल मैं आसण धारै सात सम
द मसि डारै धोइ जन हरीदास जोगी जन सोइ ४॥ ६ ॥ धारा
घिरा हि तू तुम साहिब मेरा तुम साहिब मैं बंदा तेरा टेक
नर्क वास ह्वौ तो भी मैं रहूं जो हरि लोक बसेरा जो रन हो
बंदे का कोई बंदा जहां तहां हम तेरा १ जाका चेरा ताके
सारे दष ल ओर कांनां हा जे तुम मारो मारि निवाजो ॥
नी चित चरणां मांही १ तुम साहिब मैं मुलां जादा चो
री करता तुम्हारा ॥ घरजाया की लाज बहो जे औगण १
कताहमारा ३ कीजे आस आ संगा कै सा करो जिका
म नि न्नावै जन हरीदास चरणां के सरणां मो ज म हर
सुष पावै ४ ॥ ७ ॥ जा गि मन बालका ग्यांन गहि पूता का
ल का मुष मैं निडर होइ रहता टेक जोर त जि नोर न्यारा
मन जिन्ना ई जुरा सह त से न्यां सी लाय रि आई १ कै सप
ल ग्रा सु तौ सैल जहां तहां कारन स नमु षष डा छिपां ह
टेकहां १ जनहरीदास भगवंत भ जि आव धरि ली जे अै
र अरंभ कत्ता कांमय कु की जे ४ ॥ ८ ॥ हरि ही रो हरि देव से
गोबिंद गुण गावै आदि अंति संगी सदा तासूं मन लावै
टेक अनल पंष आकास मैं अवनी न ही आवै आनंद मैं
ऊंचा दसा अपनो भषपावै १ ऊजगर के संचा किसा क
हूं ही ण न भाषै ता हि विसं भर देत है अपणो व्रत राषै
२ लष चौरासी जीव है सब कूं दे सांई हरि जन के सांसा

कहाकमलताकहीए।मरणनदीनदीजलपीवे२॥
ज्ञाकूंकहूसोमोकूंमारे।मायाकेमदमाता।जनहरी
दासतिनिकीगतिऐसीदीसेजमपुरिजाता॥३॥१
१०५॥रागजेकूंसंपूर्ण॥राग॥ढाराग बिलावल
ऐसोधजीवअजागाया।सूझैकछूनांही।निसदिनबाध
णीमातरहै।कहस्यामनमांही।टेकरोमरोममेंरमरही।स
बिमहैइयांवे।सापणीसरबसहतहै।तादेषांजीवे॥
१रांमसगासीपरहस्या।ऊधचुरकीडारी।डाकणीड
सिडसिषातहै।षोटीरेषारी२जनहरीदासकहीकहा
कछूकहतनआवे।बिषकीडाकिमहै।षुसीहै।मृतन
हीनावे३॥१०६॥रागजनबाघणीदेषिडरेसेवाकरैप्राणक
णीसोषेसखिमअंगनिचरैटेक अबलाकहेपणीस
बलापावेजाणेकोईनांही।नषसषसूधामूलनपांडे
मीदीदेमांही१नियाकहेपणीतुरतगरासे।सूषिम
बीरचलावे।कचाकूंतडाकानेडारे।सारसकलचुणी
पावे२याकांमणीकूंमतिकोईधीजो।कांमकटकरले
आवे।कायाकोटचोटसूंतोडे।पलहीचोटसकावे३
जनहरीदासज्यांहरिससयीया।तेमतिवालामाता।जि
नकेबाघणीनिकटिनआवे।परमतेजरंगिराता॥४॥१
तबलगकहांसुणीकछूनांही।जीवतहफिअथज
रतारेजनयतिकीगतिकबजानजांनी।लोककहेपति
बरतारेटेक रांमरसाइणबहुनपीया।मोसेसहनच
कीरे।अरसपरसहोइसेजनषेली।तबलगसुपनेसूल
रे१मनमेपीवनअपणोकरिबेवीसकिसुहागनलीया
रे।तिनकेअजहूपरमपदअहनंगोपरचेप्रेमनपीया
रे२बिबधितापजिनरिषिपरमपदहनहिसहां
रहीरे।जनहरीदासतबलगसबकहीकहोकोनसू
कहीरे३॥३॥रांमसनेहीसाधवा।निजनिरषतजीवे
अगमपियालाप्रेमका।अनहदरसपीवेटेकबहुनथे
लऐसोबहेगुणदेहबिसारैसेवगचंदचकोरज्यूंरी
नजसुरतिनटारे१रांमसरीषाहेरहे।बिसरांमनमेंहे
मगनहूवाहरिरसपीवे।स्योलागाषेले२मनगनमरी
नलागारहे।चरणचितराषे।जनहरीदासमोजनतू

थजनहरीदासरांमनजिनाइ॥तूंसापणिकेसंगिनजाइ
॥२४॥हरिजनजिहरिजनजिहरिजनजिनयाहरिबिनजन्म
अबिर्थागयाटेक॥साचपिछांणि॥आनतजिअनथोजम
जागतहैजागिरेआदिअंतिहरिसदासनेही॥तूंताके
सुमिरणलागिरे॥१॥पांचराषिसतेकै॥गुणगोबिंदका
गाइरेदीनदयालदेवकरणोंमैंहरिसकलभवनपति
राइरे॥जनहरीदासहरयमेंसनेही॥ग्यांननजरिनरिदे
षेरेसुंनिमंडलमेंसकलबियापीहरिपूरणब्रह्मअ
लेषरे॥३॥५॥णांमसुमरिनरनरहरिजोकामक्रोधबि
षीयाबिषतजोदेवतजिअभिमांननजोक्यूंनसंत
जोसागरतिरणोकलगवंताकाटैक्यूंनकालकंजा
लसुमरिसुमरिगोबिंदगोपाल॥१॥जैसेअगनिकाष्टमें
रहैकाटीकटैनकोवेंदहै॥जनहरीदासअबअैसीनहै
नजतांरामबिघासबजाइ॥३॥६॥नैहमआडिहरिक
हांजांवपैंडाअगमसुगमसाधांसूं॥गोकलनगरबिसं
भरमांवांटेक॥सेवगजहांतहांहीस्वांमीसबदबिचार
रषस्यानिजवीरचंधीआं॥षिचपलमतिषोटीचित
वततांसबमिटिगईदौर॥१॥कायाकंजप्राणजलपू
रिकाघटिघटिअलषलुकाया॥अबगतिअगमनि
रंतरन्यारानूंदरपणमेंछाया॥२॥साचपिछांणिप्र
सिपरपूरणवारपारकछूनांही॥जनहरीदासइद्वांर
सन्यारायापिरहासबमांही॥३॥७॥अर्थकरैपाणिक
नोआसोनमैंलषनहीलागीनिधिनेडीपणिआपर
फडेजलटिअगमनहीधायीटेका॥प्यासबहेतअ
तरमेंलागीरोगीकदेनजीवेजणपछिपडोवोषदन
दीनेडीमरणनदीजलपीवे॥२॥कौडीबिणजिषुसीकै
वैवानेडैसाचनलीयोहरिहीरोघरमांहीन्हरैनोक
रजबहैतसिरकीयो॥१॥चंदनबासबिकटिकरदीग
सीधजडीमनिमांनीजनहरीदासतेजमकेद्वारेम
सापुरषबडजांनी॥४॥८॥चोकादेवेचितदौडावेरस
नाकैरसलक्षालागीचोटमरममायाकीअछिनआ
वैसूधाटेकपासीपसूआपणीतांणीमोटीमीचनजो
वैदोन्यूंआंषिअर्थकीफूटीनैनबैकैरेधोवे॥१॥कोई
उलटाषेलिपरमपदपरसैपैंडैचस्यौनजीवेताकी

रीमालेनहीसावलीजा...
ममताकैथगी।जनहरीदाससताजीवकेतनि चोटनला
री॥२०॥जबलगमनब्याहरिफिरेमायाकीछाया।तब
लगततदरसेनही।सतिसाचनपाया।टेक।व्यासकहेरु
चिआगमकीघिसेगममांही।तुलटीमूंठिपतालकूं।स
केकछूनांही॥१॥अथमारगकीआपदा घुलिगोठिनषो
लेलोकलाजलालचपड्या।निरपषकेवोले॥१॥जनह
रीदासआसामुषी।जीयाअणजीया।हरिसुषसागरन्यारा
रह्या।मायामदपीया॥२॥१०॥रूपनरेषघनोनहीथोडो।ध
रणीगगनफुनिनांहीरे।अकलसकलसंभरिहेनिरंतरि
जुंचंदाजलमांहीरे।टेक।अगमअथाहथाहनहीकोई
थाहनकोइपावेरे।जेसाजनजनतिसासबकोईमनगुने
मोनबतावेरे॥१॥सागरमेंऊंलऊंलमेंजलहेनिराका
रनिजऐसारे।सकललोकऐसेंहरिमांहीरूपकहोधूं
केसारे॥२॥अचलअघटसबसुषकोसागर।घटघटसबकां
मांहीरे।जनहरीदासअविनासीऐसा कहेंतिसाहरिनां
हीरे॥३॥११॥मीठालागेरामजी।हजासबषारा।परसिनिरंत
रिषेलीया।समझ्यासोसारा।टेक।पछिम दिसामनफिरिच
ल्या।पूरबदिसआया।सहजिसदाऊडहोतहे।मनमन
हिसमाया॥१॥सुनिसुधारसपीजीए।पतिप्राणअधार॥
झिलिमिलि झिलिमिलिहोतहे।बरषावहोधारा॥२॥गं
गाचली फिरिगगनकूं।गिरवरगतछाया।जनहरीदासअ
नस्नया।तनमेंततपाया॥३॥१२॥जिनिजिनिजिनिहरि
नांवगयो।जलटाषेलिचल्यासुषसागरहुयहीयाबिष
हरिदयो।टेक।धरिबिस्वासकरमकरिऊटका हरिरसरस
नोंजांनिरयो।तजिसंसारधारतेंऊतरे हरितरवरमनजा
इबसो॥१॥सुरतिसंबाहिपसमनिधिपरसे।एकेंहीलोरबा
गिरसो।सहजसमाधिगवनब्वगमपुर।कालंगपुरि उघर
हियो॥२॥वारवगुमानचरनतलिचूर्या।जरऐसेतरिनिज
नांवधरयो।जनहरीदाससुषसागरपेठा।अघअजराइल
चमंकिडयो॥३॥१३॥अलषनिरंजननिगुणमेरामनमांही
रूपसुषसंसारका।षोटाकछूनांही।टेक।जीवजीवकेअ
ग्रिसेंआसाधरिआवेंअतिआसपूजेनही।यासैंपछिता
वे रुप्राणनाथपतिछाडिकेंमायाजलरूसेअंसिका

३५१

ले सूषिम सीरां पीवै। पैंलो कयापरमपद सुणंतां मनमी
डुकान जीवै।टेक। जब हो सुणेंत वै सुषपावै पुषसे सासि
पुकारै। माया की छाया मैं वेग। कूंरना अर्थ विचारै।१।
मैं कहै रहै मैं मांही सुरति सुपहलनही जागी। नांव निरूप
नि कहिन ही न्यारा। करमनालि कं विलागी।२। अंत रिनेत
ल हां डूरि नेरा। वै निज आं षिन कांणी। जन हरीदास ताका
संगपरस ही। लेवडै बिन पांणी॥३॥५॥ गुरकौ सबद साचक
रिपकडै। नैका मास्या जागोरे। जिनकौ चित्त साधांका चर
णां दिन दिन दूणौ लागोरे।टेक। जन नंदलीयां तें जीयां।
जोगरोग है लागोरे। आगें ही कें ई जोगी बूडा। तातैं सुषदेव
जागोरे।१। नूमल नही लिकें निसि बूडा। जाका षोटा हैरूं
औरस कल जे सागर बूडा। नांमी थी पातेरूं।२। दास कबी
र सकल जग परगट। पीपै परचा पायारे। जो सागर मैं नेरा
बाथ्या। जगतां नै दिषलायोरे।३। जन रैदास नीच कुलकं
चा। जाकूं तीन लोक सब जांणैरे। जन हरीदास वै नृमे
देष्या। ताते नृलटी तांणैरे॥४॥६॥ घटि घटि गोपी घटि घ
टि कान्ह। आनंद रूप सकल घटि राम।टेक। घटि घटि नार
द घटि घटि सेस। घटि घटि ब्रह्मा बिस्न महेस।१। घटि घ
टि सूदे षोध रिध्यान। घटि घटि जीव नरंजन मान।२। घटि घ
टि ममता घटि घटि मोह। घट घट कंचन घट घट लोह
।३। घटि घटि आवै घटि घटि जाइ। घटि घटि षेलै घटि घ
टि षाइ।४। घटि घटि रावन लंक दवार। घटि घटि के रूसे
न अपार।५। सूता गोरष लीया जगाइ। जन हरीदास ताकी ब
लिजाइ॥६॥७॥ मेरै मन की चोरीयां मैं जांनूं रे जाई। सूषिम
होनरतें चलै। बिसहर कै षाई।टेक। विषीया कै बनि मन ब
से मो कैसें जावे। कांम घटा गर जै सदा। नोनांस पीवै।१। ब
हो ग्या जां षेलै षुसी। बहो रूप निहारै। रस नां केस कहै रे
जाणो। लूं मारै।२। श्रवनां सुषें नाद का। घ्रमन सुषनास। अब

ले

धि कहा ली कां मनां। तहां षेलै पासा।३। जन हरीदास बिषी
या तजे। गोबिंद गुण गावै।४। जे बैसे ग्यान कै। तब हरी
सच पावै॥५॥८॥ जे लागी तो जागिरे। सूतौ कांइ हारै। सत
गुर कै सर बेधीया। कहि क्यूं न पुकारै।टेक। सबद ही रता ती
षरा लागै तो मारै। कोड्या मधे एक को। तन निचोट सहारै
।१। अमि अंतरि लनकार हा। सतगुर का लाया। न सम

री दासकूं दीदार दीजे प्रेम प्रीति चषा३३॥४॥ नजिमन
राम सजीव निमष२ प्रेम प्रीति अंतरि ल्यो लागी॥ हरि स
कल रहे नर पूरि रहे का जग सूं प्रीति कहां लों कीजे सक
ल काल की चोट॥ जलते मेलि अलल का सुत ज्यूं पक
डि राम की वोट॥२॥ देह रहि अकल सकल बिस व्यापी ने
राव सो कह्यो जन हरीदास निजरूप न जांन्यो ताप
स वामु षि ध्रि १॥३॥ अब हम राम नजतसुष पाया॥ को
म किंवाडी जडी जतन सूं मोह मता मुरझाया॥ टेक॥ वि
ग सत केवल सब्द मति सुनीया सुनि मंडल में सारं।
बरसे अमी गगन सरजी जे सदा अषंडित धारं॥१॥ चंद सू
र एके घर लेगा पवन बिरोले वाहि॥ गंगा जमन मधि हीं
रा दरसे सुषमनि सहज समाई॥२॥ यों घरि सक्ति सक्ति
में लाल नरम गया नेना गा॥ गगन मंडल में बसे उडा
गा ऊंचे अरे लागा॥३॥ निराकार निरलेप निरंतरि
म हलमि लै बनमाली॥ सुषमें सीर अषिल अविनासी।
परम जोति सूं ताली॥४॥ घटि घटि अघट अखंड अविनासी
बंकनालि रस माया॥ [illegible] थकित छक्या रस पैल्यो आ
नंद अषि समाया॥ पनव॥ [illegible] राग रकगुण तीनूं रा
म रतन धन नेरा वहे में हू पहम हसति पलटै सुषमें स
हज बसेरा॥ देह रहि अकल सकल की सेला ज्ञा गि
ल है सो जीवें जन हरीदास तातें राव लीया अगम पि
याला पीवे॥६॥४॥ जब मन मैं ते मोह चुकावे तनमनि
रहे निरंतरि निस दिन कल पिन काल लगावे॥ टेक॥ म
न में तन तन में मन षेले यों चन्ह तकी पूजा॥ आटी आ
प आपकी बांध्या तब लग हरि सूं हजा॥१॥ षलिक
पाट कर्म करि कैले अकर्म अर्थ समावे॥ पूजा फिरे न
पर डुंगर दे षे नैन निज घरि आवे॥२॥ डीं पांच अटकि
लेन लटी ल्यो कोडो रलगावे आसा छाडि निरास बि
चारे थकित भया थिति पावे॥३॥ उलटा षेलि प्रकास
गरासे गम में अगम विचारे जन हरीदास मरण जांम
ण का तब देन्यूं पेय हारे॥४॥५॥ संतो राम कस्यां वनि
आवे जीवन अरूप कहि न देक लिजुग हरि बिन को
न छुडावे टेक मन की तरंग अनंत बसे ज्यां जा तासें अ
रथन आवे ताकी आस वास मध कर ज्यूं जहां लागी

लहाडे न की का दे कूं फ़ूं ...॥१॥ जनहरीदास ऐसी कथा
२५२ जो गे सो जी वै मुनि मंडल मैं बैसि कौ न कैसे सर पीवै ॥ ३ ॥
२४॥ १२ ८०॥ राग बिलावल संपूर्ण ॥ राग ॥ ७ ॥ रा
ग मजरी ॥ सषीरी अबपीव कै मनि चाई न डिन डि जा
इ पतंग रंग बयरौ हरि रंग चढ्यौ न जाइ टेक ॥ औगण
ब्हौत सौ लन की साची ब्हौत करी लंगराई सो क णि
सकल घेरसी या की पीव प्रगट सैं फ़ुब लाई ॥१॥ पद
नसमो थै क छूनां ही तन सिणगार न की या सो सोरे है
रैनि दिन ब्यापै पीव कूं आय दीया ॥२॥ जनहरीदास सं
सार वरम भागा तब पीव अैस चले लाई यौं रूप क रिस्त्र
सुंदरि लीन्ही जम की मिटी दुहाई ॥३॥ २॥ राग टोडी
ऐसे राम राइ जाणी ला पाचूं न लटा आणीला टेक
औघट घाट पी ईला हरि नजि ऐसैं जीईला ॥१॥ त्रिकुटी
का पड धोईला नवरगु फा मैं सोईला ॥२॥ जोति सरूपी
जोईला हरिजन जि हरि सा होईला ॥२॥ दीनदयाल पिछ
णीला जनहरीदास ते प्रां णीला ॥३॥ ३॥ राग कल्यांडे
राम सनेही जीव नि मेरी तेरे चरन कंवल परि वारी फेरी
टेक हरिजन कै मंदिर हरि आवौ मैं ब्याकुल तुम दरस
दिषावौ ॥ बेद निबिरह बिथा तन मांही पड दा षोलि
स मिलौ क्यूं नांही ॥ जनहरीदास के आं तुम्हारी बिलम
कहा पति देव मुरारी ॥३॥४॥ १२ २१ ॥ राग ॥ १० ॥ राग न
ट तुम बिन मिटै न जो नी पीर धनक धारि जो आसं
गि मेरै मेवा सी बलबीर टेक मेरा करम मूल का लागू
ता रूप रीति न नीर बेडी कठिन क हो क्यूं काटौ कुल
मरजाद जंजीर ॥१॥ औगण ब्हौत नजनन की कीया मन
को मतो अधीर नवजल वार पार क छूं नांही क्यूं कारि एक
डो तीर ॥२॥ हे हरि अकल सकल बिस ब्यापी मैं का चेकर
हेमीर जनहरीदास चरणां का चेरा सरणि राषि रघुबी
र ॥३॥५॥ तुम हरि बसो मिंदर आइ नैन निसदिन फ़रत
नी फ़रा प्रान पीव बिन जाइ टेक आन मांझ स्यान आतु
र बिरह बिस दर षा इ मन भया ब्याकुल कब मिलौगे
सकल ब्यापी राइ ॥१॥ हरिमा घ निज पंथ सद से सूं आं
न पंथ न सुहाइ पीव पीडि उघरि कौ जे देव दरस दिषाइ
॥२॥ तुम जांन ते लोक कूं कासूं कह सन आवे का इ जनह

ञोजलिनूलिन जांवासुरतिसमांनीमाचैमेम्होरैम
निपायोबि स्रांमटेकसूगनि बिजांईधा।जलैजल
बिनमलिमलिन्होइ।बिन जिन्या जसहोतधैतहा
मनरहासमाइ।२ बिन स्रवणांसीभीसुणे। बिनपांवा
पंथलेइ।नोघारांमननांबहैजाणे। बिरलाकोइ।३।।
साथमकल हैसाबसो।बसमेषतकमाइ। बिनबाड
फलहैतहैजो जांणें सोपाइ।४ नेनसमांनानूरमें।।
हरिनूरनिरंतरस्रापा।जन हरीदासस्रानदसदा।बि
मडनबडेसंतापा।५।२।स्रवधूगुरबिनग्यानननला
नेकहानयोजेदांमणिदरसी।जलबिनवोछैस्राने
टेकजबलगनिजततनिजरिनदरसे।तबलगप्या
सननाजे।कहानयोजेसूकेनांडे।पाली बाईगाजे
।१।नोघणघटागरजिजबबरसे।तबहालीसुषपा
वे।स्रारंनकेरेसाषिधेसाम्ही।वासकरिकरजचुका
वे।२ जनहरीदासदोषतजिकुलनध।रांमरसांइणपी
वे।बहेमेहपहमरूतिपलटे।परचेलागाजीवे।३।
।।१म्होजलकुंडोहोकेसवेरसी।कोनस्रधरास्रज
रजिहाजनांवहरितेरो।बेलीबांहपमारिटेकजम
केलोकिसदाकूरहती।दहतीजमकीलाइ।स्रबमें
रांमसजीवनिपायो।जमपैपलोछुडाइ।१।जबषिस
षीघरिजाकुस्रपनेसुबधिकदेकरजोरिभेपतिबर
ताहरिपीवपायो।कुलमरजादातो।२।पांचसषीसह
जिघरिमेलै।तनमनसेजबिछाइ।जनहरीदासजबस्र
तरदेषा।तबबेगहरिस्राइ।३।२।सुषसागरसाहिब
नेरातहांसा।गिरस्रामनमेरा।टेकनूमलगपानध्यानधु
निनूमसननूमलकूमनदीया।ताजोगीसंगिसहजेंबे
लूं।जिनजोगीजगकाया।१।नैनांरांमबसेहरिबैंनाहि
रदेहसासमाईरोमरोमहरिसुमिरणलागा।मेरोसुरगम
दीयोबताई।२।स्रांनदरूपस्रषिलस्रबिनासी।सुषमेंसु
रतिसमांनी।जनहरीदासजिधिदेषिनिजरिनरिघटि
घटिस्रघटबिनांनी।३।४।स्रबलापीवबिनक्यूंरहूं।।
निसदिनतलफितलफितनजाइ।टेकस्वांतिबूंदसद
जांपीवेनांपीवेनाडारोनीर।बिरहस्रगनितनजाली
यो।जिहब्यापेसोईजानेपीर

३४३

तहा जावै॥२॥ हरितपलहि पतितहै॥ इन्हा साचका
कौं निसु दांगे नी काखाहि पडै सागरमैं नरमैं नराम
[illegible] २ जमको त्रास तिकौं बसि सहसी॥ जिनैपै
[illegible] याया॥ जनहरीदास याजीवकाबासा मन
[illegible] कियाया॥१॥ [illegible]
[illegible]॥ संतो घेली कीरुति आई॥ औसर इसी बहै डि
नली लागै अबजी त्याङ्यो बाई टेक धरती सू डि का
[illegible] सोत्या लिरहु आग निजसाई सुबधि नेमिरां
[illegible] मुबाडी बनि आई [illegible] लीन लान
लासे जसगस्ता केमसैं कैलासा [illegible] सापियुं नी
[illegible] आई मुकाटोटा [illegible] अनंत आत्मां त्रैर
[illegible] बलैब हैतसुषपाया॥ निजततत कोसा
[illegible] लोटै लोक धपाया॥ [illegible] सा नेदकोई वि
[illegible] जाकू काल जालनै [illegible] जनहरीदा
स [illegible] पिसकलज [illegible] बिलसी आनंद मांदी॥
[illegible] रागनगर जिधन आरो सुणि सुणि सबद
कंवल निज बिगसत [illegible] ल बलषाए टेक से
[illegible] सुहाग [illegible] बड मवालनि [illegible] सुषपाए म
[illegible] सिमाते॥ [illegible] सुषसागरन्हारो २ मोर
[illegible] सुषचित वत बीज चमंकि [illegible]
[illegible] धुनि गरजत पीव मिलि प्रेमब
[illegible] मंडल हेत अति आनंद बेलि बधत
बन [illegible] जनहरीदास जल [illegible] गति परम जो
[illegible] पति पारे॥ [illegible] सबद [illegible] बिराजै प्रस
परस कौं [illegible] कंवल कै [illegible] टेक भ्रमर
[illegible] जल [illegible] गगन गरजि [illegible] आया
[illegible] आनमैं [illegible] तिबुलाय
[illegible] बिवधि [illegible] सुषि [illegible] कला लिमैं बा
[illegible] सोलिस [illegible] मेरमैं आ [illegible]
[illegible] सुषमनि सहज सांनी
[illegible] नदी नि [illegible] सेतांनी [illegible]
म कास अघिमैं [illegible] सिपरसु [illegible] जनहरीदा
स परसि [illegible] मीनमाछला जीया॥ [illegible] २
[illegible]॥ [illegible] जनआडौं नहीं॥

मतिवालीमालणिनांहिहरिहारपरमसनेही हैस
जूरिटेकअधेनधेमधिकेवलमूलआतमनिज
फूलीब्रह्मफूलअजेववासकछूकहीनजाइ
जहांमनसामालनिरहीलुनाइ॥२॥विमसिमेला
पछिमथूरीतहांनदीनिवासेवहे पूरिनरतनरधी
वेअवारनाररतहोवसुधाजीजेअषंडधारा॥३॥सकल
बियापीसहजनाइमथुरापतिमहलोवसेआइ
जनहरीदासतहांचरनलागि॥जहांगोपिग्वाल
नीरेमेफागि॥३॥४॥सषीहोमासवसंतविराजेगो
पीग्वालघेरिगोकलमेवेणामधुरधुनेबाजेटेव
श्रीगेसुरतिपांचनगरूप्या॥मनमोतामधिआया॥
वगसतकेवलपरमनिधिअगटाहरिकूंहारचढा
या॥२॥अवगुलालचरनतलिचस्या॥अर्थअबीर
बिडाया॥प्रमलप्रीतिपसिं॥परपूरनापीवमेंप्रान
समाया॥३॥वंकनालिनिहचलनैनोन्हेनेरीकौलहि
लनारी॥जनहरीदासआनंदनिजनगरीषेलैफा
गमुरारी॥४॥धानंवतैजवरबागनिजलाधीताकी
उसमवासलेजावैन्हैनेडोरिनिरंतरसूंलागी॥मगन
नयौरसपीवैटेकब्रह्मफूलकीवासमस्तहैअम
महारसलागा॥सुषदेवपीमतिवालाहूवा॥कछिव
नोकूंजागा॥१॥सुनिमंडलकीवाडीविलसैसहजसक
लरसलाधा॥जनहरीदासहरिजीकासेवग॥जमकेबं
धणिनबांधा॥२॥५॥मनमतिवालासहजनाइजोग
मूलगहिरह्यासमाइटेक ब्रह्मअगनिवरषाअपार
नरिनारिपीवैअवारनार॥१॥गजमनमथिवसंतराग
मंवरगुंजारेगहरबाग॥२॥चंदसूरथिकियाफाग
रपीनध्यानलयोगगनलाग॥३॥प्रेमप्रीतिकापहोपसाधि
पांचसषीमवसौंजसाथि॥४॥हरषसेगडमडश्यावे
इयहगतिजाणैसाधकोइ॥५॥विवेणीतटिध्यानधारि
प्रमजोतिपरगटमुरारि॥६॥सकलवियापीरामराइ॥परम
पुरषगतिलषीनजाइ॥जनहरीदासअवगतिअन
तं॥नजिअलषनिरंजनकरिवसंत॥८॥६॥चलोसषी
जहांरामैराइ॥रामराइबिनरहीनजाइटेकयकअ

द्या॥ अबभाव दो मोहि प्रेम पिलाइ रोम रोम हरि
मयी यो लल बिछुडै तन प्रेम न जाइ॥३॥ पतिब्रता
बिन चालनी दो कं अंत तन बै से एक साथि फूटि
कमणी जब लग न त्री तब लग हीरान आवै हे
पिना अंत पुरी प्रागे बसी राम न जन बिन चले
लोट मा हु तस पुरी आमर लयो अब पीव प्रेम मग
... अधिक दरस का सूक हा ब्याति हे मेराम
नमो निज जन हरी दास तन मन स ज्यों अब पीव हरि
तो ले कं बूली हि घाय मन तन जाइ नो री था सुधिर
पारा कौन अधार अब तजि भरम सरम गहि हरि न जि
साच तासु पाट के आपे कल निकस्यो अपराध
अकल पुरिस के सेयाइ हे सकल भवन पति राइ
सकल गुण आगम बिचार अपार परम तत हरि ने
बिली जे प्रेम बधा हरि सम कि सम कि निज तत री
न जम न धरी अधर अधर न जिन जिनि सबा सुर
अपऐसे जल तन मे म बिचार जन हरीदास स्वास
थ मन हरि बिन कौडी सटै न दी हारि॥१॥ ... ॥
... तुम न जो जिन जन्म जाइ
... काल ... हितकत
कौ पानी दस्रू ते अ या घटै का काल ... री राम न जन
तो हि जीव ना गिर दे सब मदन सो हि राम न जन
बिन कौन बात ... रात ... राति
... जैसे वो है पानी म गन मीन॥
... रामसम दल ता कौन
काल की निति घर ... गुर ग्यान सबदरी
जाइ॥ ... जिन जि जंजाल जन
हरदे बिचारि ... सुमति बालारा
हरीदास तहां ... का ... निकटि बोरटे का हत तत
... रि मन तत तो लाइ
चित बत ... बिला ... मन अकंध
प्रेम प्रीति का दे ... लेमन ... तत हो
... निज सुरति लाइ ... तत हो बतर हो
मराइ हरि सकल बियापी परम देवा ताकूं बतैत
... जागि जागि जागि जागि जा हरि
... ताराचि जन हरीदास हरि सकल
आगम अगम ... राचि जन हरीदास हरि सकल
साच ... निकटि मन ... टिका ... ॥

नहरीदासनूनारवतासा॥हरिपरमजोतिजसनुरबसी
राग॥३॥जोकवकुमनहरिजीसूलागेजवअगनिमें
वहोडिनषेलेजमकेपटेचढेनहोआगेटेकनिवधि
तापततपोचनपरसेजोनीजीवजनमनदीआवेतजि
संसारअसरतेगुतेनरलटेषिलिपरमपदपावे२मनगहि
पवनहरिचरणचरणारहेतरसिततदरसेजनहरीदा गव
समनपलटिपरमगतिनमलहोइनिकटिनिधिपर
से३॥१जोकवकुमनहरिसुषजाणेजनमनलागिअ
गमघरिषेलेऔरसकलसुषआदिनआणेटेकजूत
रमूलपहमेमेपैरैसवजलसेजैजाइसमावेयूंसतिसु
रतिनिरषिनिधिनिरलेयासुषिअटकिनलटिनहीआ
वे२ज्यूंहरिसुतअनलगगनकूंतलेषेध्यानप्रकास
पितापषजोवेयूंफिरिजीवसीवसंगिषेलेजनमज
नमकाकलिविषधोवे३सलितागोडिकरेलवन्यारी
समंदसमाइसमदसमिहोवेजनहरीदासयूंअरसप
रसमिलिहरिजनहरिमेंप्राणसमोवे४॥३॥जिनि
जिपरमपदआपेरामदयालअमरकरथापेटेककर
ताकरणसदासंगिजागेचितवनिकहोकसाधूताके
२करमऊगारविद्याहरिकामेंजनहरीदासनरहरि
हरिजापे॥१॥४॥२५२॥राग॥रामगाउ॥जुगिजा
गिनजोयारेनरदेहीहरिनोनज्योयूंहीतनषोयारेषे
स्योथिकासवकोसगावासलकीबांहीसुपनेकासु
षआडिदेजागेकूंनांहीरे२फूवासुषसंसारकासाच
करिलीयारेमोहनदीमेंवहिगयामायामदपीयारे
३मूरिषकूंसमझाइयेऔगुणकरिलूंफेरेआपाकी
आटीपडीसतिसाचनसूजैरे४परमसनेहीरामजी
साचासुषदाइरेजनहरीदाससगोविंदनजोनरमोम
तिनाइरे५॥२अपणोहीराजनमनहारिवारवारते
सूंकहूंचेयोहोगध्यानविचारिटेकजागिलागिसो
वेकहाहरिसुमिरणसुषसातिऔतिअसपहेजनहै
तूंकालरवीजनवाहि२नूवनगाजेनेनजोजमके
मिटेनतासतूंकूंरोपेआपलूआप्रअआपनेपास॥२
जोजागपातेसोहमाजोसूतातेजागिजनमअमोलि
कजातहैतूंओधआरंभिलागिरे.

मत्रमोलिका चल्यौ जात॥ नां ते तरवर लगै फिर तूटै
पात ॥१॥ कस हरमैं बिल्ब थिराजा हसी पाइक हेमबा
जा कान बांणी री फिर तै मो हित तहांब स्याक छूटैं न
जो हि १ परमनंदास आनंद न्यूठौ हो सुत तात मात जी
ते जंद हो जन हरीदास मन तहां लीन। समंद बि छोदे
मेरी न॥२॥७॥ बल्लकु सषी करि बसंत राग। जिस बन
मन मो हू नरम हु फाग टेक पांच सषी सब सों ज हाथि
मिलि बेलण चाली पीव साथि। तुम आगा थमें न क्यू
जाव आ ईक तिब संत रंग रमो पीवा॥१॥ ज्यूं चकवी
निरहैन दास ऐसैं आत्म फूली लै सुबासा पहोंप
बास मेरे हे तुम्हाइ ऐसो बाग बन्यौ पीव रमो आर॥१
जन हरीदास मन आति उमंग ऐसा लागा प्रेम रंग प्रेम
पियाला घट तनां हि हरि जन पीवत जो हि॥३॥८॥२
७॥राग॥२४॥ राग अडांनो॥ क हुं और के कहै सईयां
तुम जिन हम पै बोर छुडावो। अब हम सूं ऐसें मन राषे
अंतर जोति जगावो टेक। तन सूं तन मन सूं मन मेला
अंतर अंतर जे लारे। और सकल सुख बिषज रलागत
तुम लागत हो सब लारे॥१॥ नैन निमें नैन बेल निमें बेना
समझि समझि सुषदी जे तुम बिन जीव चात्रिग की ना
ई तलफित तलफित नछीजे॥१॥ तुम बिन पार न जां
ने कोई तुम ही ठोरी लाई जन हरीदास गुरु तुर कीडा
री बिरह नि बहु जगाई॥३॥ पीव पाए हो जाग लाग
अब मो हि मागि सीतल सबद सुहाए हो टेक मन ही
सूं मन मे लाबैन हो सूं बेनसे लानि जग रनैन समाए
हो॥१॥ जो निजा नि प्रीति लाए होसे जा सन हो आए हो
आज मेमन नाए हो॥१॥ ज हां तत सांसु ष मेरे मो हो हुं चिर
तत में आनंद अनंत रिझाए हो जब बन गवन कीयाम
नमेरा हरि लीया अब सर सर स पाए हो॥४॥ जन हरीदा
स तहो बास सुषमें सुष निवास समझि समझि सुषपा
ए हो॥५॥७॥२५॥ राग॥२॥ राग कानडो॥ संत सु अरण
जम चोट बिडारण। परमानंद सरकर ता बिसंन राग हर
गंभीर समंद जो तारण टेक हरि पावक पावक षबजा
रण। पारब्रह्म अघ मेटण कारण॥२॥ जल थल बास अ
भिआस निवारण जांव निरूप घट घाट संवारण॥१ हरि

हीधा।सेजसनेही आव॥आवोदेवनरहरी।व्याकु
लनई मन मांक्षि।कोहो पीव परहरी।टेक सुरति स
बाहिमाय निति हेरौं।चित्त चेतन चौकी चहौं।तन
फितल फितन जा।इन्तुर कीनै परा।१यक्ति सुवास
आस निज अंत।रअबला चौबारे परी।मस्ते दूरेदेस।
घरपंथहेरूहरी।२जाण अवे णीपरम सुषदाता।बि
रहनि बिरहा पर जरी।जनहरी दास बलि जाइ।बि
लम कहा करी।३॥धा।बालम बिरह बियोगी रेतुर
कीमो परिडा रोयो।जुगमंड ए।जोगीरे।टेक सारा
सुषसंसार का मोहि पारा लागैरे।तूं मेरा जीव निजी
वकीर हौ नैनां आगैरे।१परमसनेही प्रीतम।प्रानन
तैं प्यारारे।मेह लिप धरै माधवे।मांरा सिरसारारे।१
बिरहनि केसरो।कर्ता हूजा मन ज्वालारे।जनहरी
दास यूं बीनवे।मुहू आवो बालारे।३॥७रे मेरा मरस।
पीया रे।थाकचवीसु थिबीसरी।सिरसौ दाकी यारे।
टेक अगम पियाला प्रेम का।सतजि पीया धरि ध्या
नाइत उत चित विनि मिटि गई।ल्यब बिश्वरन म
रन समांन।१जिनि पीया सो जांनि है।औरन जांनै
कोइ।रसीयार समैं मितिरसा।भ्रवबर लेन रूजा
होइ।१कहा कहूं ऐसी नई।मन पड्या दरी बेजाइ।
जनहरी दास मतिवाल मैं।मेरा मन हरि लीया चुरा
इ।३॥पा अरे मैं पीमतिवाला रे।सुरति समानी साच
मैं।पीया अगम पियाला रे।टेक गोला चाढी ग्यांन
की।ममता कस दीयारे।काम क्रोध बालणि बल्या।
गम ही गुड कीयारे।१गगन मंडल नाली चवै।सरवे
बहै धारारे।पांच सषी सनमुष सदा।गुर पावण हार
२।रामरसा इएरी तिहे।सा धंकू नावैरे।जो पीवे सो
ईश्के।हौ कि मांहि समावैरे।२प्रेम पीया जब जा
णीये।तन मैं मन आवैरे।जनहरी दास आछे मते।व
थू आंनन नावैरे।४॥ ।जो बिदो ज्यूं जांणौ त्यूं गा
जब अमो लिक जात है।लंहरि से हेत लगाइ।टेक
अलष निरंजन उरि बसे।राम नाम निज नेह।रांम बि
सास्यो होत है।सहीकं धका बेद।१रविसिसि मिलैन
मुक्ति फल।पति सूं प्रीतिन होइ।करम काट मोरच

मो द्विश्र
ही पंडित कहै न जांन। जहां आपोतहां आंतरो। मोहि आ
ज रांव़ा की आन ४। राम जन सुष पर हरे। मायातहां
मन जाइ। जा घटि सुष छिन संचरे। मोह रहा लपटाइ
हुतात मात ब्रह्म सबा सुतब नितासुष लोइ। सबको
स्या छिकासगा। घट छूटांस गान कोइ। परम सनेहीरा
मजै आैरस गा दिन च्यारि। जनहरीदास इजात आ त
जिलीयां राम संभारि। ७। २ बेली लीत तबेलीसोका
ही बेलि बधै स्तीलो। टे का चेद सूर दो कै समि कारिरा
सासास सबद संमिलाया सोगेगा मूलतत हारसउ
लटै बेलि तकोरस षाया सो। १ निज निर सिंध अगह
अनि अंत नि बरणाा बव जिंत बाणी सो। हला पि गुला
सुषमनि मैं सातासु षि बेलि समांणी सो। १ तरवर अ
गम अणी तहां लागी बेलि कीया विस्तारा सो। काटी
बेलि अमर फल लागा बिन काटी फल षारा सो। चा
बासबिकट कोई पानन मोडे मृग बसे ता मांही सो
पारू कं मांच पहर वाराश्री ७ दे अस्त दोइ नांही सो। ३
गगन मंडल मैं बेलि बिलूधी मूलमता मैं आया सो
जनहरीदास आत्म कै अंत। सतगुरु साच बताया
सो। पा। ३। जीव़डा जन्म सिरायौ रे। सोवत सोवत सो ह
रसो। मूरू नीदन थयौ रे टे का जन्म अमोलिक जातहै
बिषीयारस मांही रे। काल ग्रह्यो ग्रासे जुरा जोगे क्यूं ना
ही रे। १ जा कूं तें तन मन दीया अपणा करि लीया रे। या मे
तेरा को नहीं लै बिषपीया रे। २ सुतास्व बस जात
है। जाणा सो जागै रे। जन हरीदास आछे मते हरि सुमि
रण लागैरे। ३। ४। रैणि गई दिन जाइ सपी मैं क्यूं करूं
हरि बिन कठ्ठन सुहाइ बिछोहै मैं डरूं टे का जल बि
न मीन कहो क्यूं जीवै। जा की जीवनि पांणी। ऐसें हम
हरि बिन दुष पावत। तलफत रैणि बिहांणी। १ पीव
पीव करत बिरह तन जारयौ। वा बिग घन कूं टेरै। यूं
मम प्रांन दुषित हरि तुम बिन मनसा मारग हेरै। २ ज
न कै नवन गवन हरि कीजे। बिलम कहा दरिस दावो
रमता राम सकल बिस ब्यापी। हा हरि दरस दिषावो
आया बड बिथा रामनल जानै। बिरह बसै तनमां
जनहरीदास हरि मत लिपधारो। कै अब जीव निरा

नकासनदेषणाता।रामनजोद्दरिसम्रथदाता।१७गानप
रकासनिजशिनिजरोदी।सुरितेसननरहेयादेदीजन
दरीदासनजिरामसनेही॥३॥४॥२६६॥राग॥२६॥राग
बिहंगडो॥रातडीयांजातसिराणीपीवबिनप्रानत
रसितलफतदे।ज्यूंमछलीबिनपांणी॥टेक॥अंतरिचो
टबिरहकीलागीनघसघचोटसमांणि॥बिकलनइहदे
रिअजहूनआ॥हरिजांणतहेमेंजांणी॥२॥जांणिब्रह
गएमसुषदाताऩगुणनादबिनांणी॥प्रीतिबिचारि
मिलोप्रमांनघअबलानदाबिडांणी॥२॥कहाकहोरोकव
कहतनआवेऩमनिरहतलजांणी॥जनहरीदासहरिस
मनमांन्यांआदिअंतिसुषजांणी॥३॥१॥२६७॥सिकारुबोली
॥पीवसूंपरचोनांहिअंतरघोलमोटेक॥रेनिसबाइबरी
हगइतमनबेगीघोछरूबकूकूचिलकदरसणीसरै
कसुहागनहो॥२॥पीवकेमतिबरताघणी॥तहारहेमनला
इहूतरसूंबोलेनहीथोडुषकहांसमाइ॥अबलाकोब
लकोनहीप्रीतमरहेरिसाइ॥सदासंगातीरामयामोहिप्रे
मपियालापाइ॥अंतरजामीतुमबिनांइजाकछूनसु
हाइ॥जनहरीदासहरिबिनमिल्यांजन्मअमोलिकजा
इ॥४॥१॥२६८॥राग॥२७॥रागधनाश्री॥रामसनेहड
हरिबिनइजाअलपसनेह॥इजादेषतजांहिलाज्यूंहं
वरकामेहटेकतनधनजोबननारिहैउबथादरसनहो
इ॥चोरासीचोपडिमंडीतामेचोरनबचेकोइ॥१॥सुतक
लितपरवारमेंसकलरहेउरझाइ॥स्वार्थकासबकोस
गाअंतिअकेलाजाइ॥२॥समकिपडीसतगुरमिल्या॥पै
डादीयाबताय॥जनहरीदासआनंदभया॥तासुषमेंर
॥३॥समाइ॥१॥२६९॥प्रीतमप्रांणीयारामसनेहीजोइ॥राम
सनेहीबिनजगांलूंकबकूनिपतिहोइ॥टेक॥जिनज
लतेपैदाकीयासगलीसौंजबनाइ॥सोसदासगातीगो
बिंदसूंतासूंतालीलाइ॥२॥ज्यूंबादलमिलिबीछडैअ
पआपकूंजांहि॥दिनदसकामेलानयानिहचेरहणान
हि॥२॥बहतोडिबहतोडिलालूनहीमनिषजन्मऔतार।

जेह्या।तूंनांवनीरस्लेक्षेह२सातसमंदनौसैनदीबन
अवारैनार।गिरखिससितारामेंडलातहांपैरेंसीदार
ह।ऐकसेफकासौवणं।ऐकमहलमैंबास।जनहरीद
सहरिसूंमिल्या।गतिप्रेमप्रीतिप्रकास॥४॥२०॥निरंजन
नांहलागाहो।नरमअधरामिहिगया।सूताघ्याजागपा
हो।टेक।अगमतहांगमकोनहीमैंगमकरिलीयाहो।प्री
तिपियालाप्रेमका।तुमहीदीयापीयाहो।१।नांकैगांव
वांवकुलकोनही।कैसेंकरिपांकेहो।गुरडोरीदीन्हीसा
चकी।तिहिलागाअकेहो।२।नगतिनिवाजनमैंसु
न्यो।तुमकारिजसास्याहो।नांमोंजनरैदाससा।लेपारि
नतास्याहो।३।अगमपियालाप्रेमका।तुमदीयापीया
हो।गोरषनाथकबीरसा।अपनोंकरिलीयाहो।४।पीपा
सोफासेनसा।हरिलोकब्सायाहो।जनहरीदासहरिमैं
जसुणि।चरणांचलिआयाहो॥५॥२१॥२६४॥राग॥२१
रागकेदारो॥सनेहीप्राणआत्मकीयौरेअयाइहरिह
रिसुमरिसगोहरितेरो।वेहरिकागुणगाइटेक।मात्मुल
कअपणांकरिखेवा।तिरानांहीकोइ।२।हांसुषअलपअ
नंतदुषआगे।अतिचलेगोरोइ।१।कातेकूंसिरनारसहत
हेसकेतो।वोऊकतारि।जनहरीदासनजिरांमसनेहीतें
अपणांकाजसंवारि।२।२।मनरेगोब्यिदागुणांदेहानगति
नवरियनरमनेजन।करनसंतसनेह।टेक।स्वयंब्रह्मस
नाथनिरपष।पषिवेध्याजनकेनाइ।अकलतरवरस
कलब्यापी।अगहगहोनजाइ।१।परमजोतिप्रकासपू
रण।अगमवारनपार।जनहरीदाससोसुषराषिनैनांनि
रषिबारोबार।२।३।मनरेगोब्यिंदागुणगाइ।अबकेज
बतबकविचलेगो।कहतहूंसमफाइ।टेक।अटकिअरि
हरिध्यांनधरिमन।सुरतिहरिसूंलाइ।जनजसिनगवंतनमैं
नेजनसेतकरनसहाइ।१।तरलनिछ्यांतिबधिरसिबसि
गलितगततहांचेदजाइ।जोबनजुरागासेजागिरमतिमें
द।मोहमनरिपग्राहमैंतेगहरजलगुणदेह।जनहरीदा
सआजिसकालिहिनांही।हरिनजनकरिलेहआइ।जागौरे
अबनींदनकीजे।निसदिनआवघटैतनछीजे।टेक।बसे
तदिनांतैहहृथकमाया।सोतैकौडीसटैगमाया।दीराया
पगिदाछिनआया।१।कामकोअपणापतिमानिकिप

सहेतालाबेलीजीव॥जनहरीदासहरिआइ॥१॥मेरे
परमसनेही पीव॥राग॥रांमभिलाइलेहो हो मेरे परम
सनेही राइबहोतकदिनबिछुरयां भया॥अबमोपे
रहोनजाइ टेक॥परमसनेही प्रीतमां सेक असांडी
आव तुम्ह कहीयत हो सोइनां मुझ तुझ देषण चा
व॥१॥अंतरजांमी आंतरोनैडा बसो कहुं रि अबलापीव
पावे नहीं मिराने नरहा जल पूरि२ हरिदमय कृतन जा
त है दम बलक ध्रुन बसाइ भहल्लिपथारो माधवो जन
हरीदासबलिजाइ३॥८॥सुमरिससनेही आपणो जाकी
आदि अंति मधिनां हिसतगुरसा चबता इया मिरा प्रा
णबसैतामां हि टेक॥पांडोरू हमसमीपथा गल्याहि
वालेजा इलो हारूं पारसमिहै तौ क्यूं कंटीया इ१॥
काबा क्यूंगो पीहडे हकुअचिरजमनमां हि अनिन
नहिं गोपीन हीकी वोकरतानांहि२ पलकफुरतां जु
गफुनो हरि जुग थापैपलमांहि थलबसुकरिहरि
क्यूं लडे समझि पडे कछु नांहि३ हरिनो क्रूसरांवन
हत्याहु रासिंध्रुसिस पास जनहरीदासयूंजांणिये य
हुकालहीग्रसै कालथा॥४॥ सतगुर दीया ने दबता इ
रहेरांम हूजा सबजाइ टेक॥धरी देहते ता आकारसो
क्यूं कहीये सिरजनहार जाकै रागदोषकछ्यापेनां
हिसोइरमतारांमसकलघटमांहि१ जगतहेतको
ई जगतपगाया आयआगा धहहांनहीं आया पहस्य
नेषमिटीनकलूरानैडा रांमबतावे हरि२ दस औता
रकहो क्यूं जाया हरिऔतारअनंतकरिआया जल
थलिजीव जिता औतार जलससिज्यूं देषो ततसार
३ हरि अपारपारको नांहि साधूजनषेलेतामांहि जन
हरीदासनजिकेवलरांम नमलनी वृत्तहो वि श्रा
म॥४॥२०॥गोविंद नजि मन मां हि त्या अबजिनचारे
हारि हरि सुमिरणसबतैं सिरै हरि नजि निजजनना
तेरपारि टेक॥सतगुरमाथै करधस्यासो वृत्तलीयाज
गाइ सोवणकी बरीयां नहीं हरिहरवाडे आइ र
हरवाडे बिणजीनसी है रहाइ लाहपोटा चुणि

पियालापीजैहरिरसअजरजरैतौजीजोसिरदमीरा
कीजैटेकमतरजतमसपीचरहतरमातासस्मन
लागाउंमतफरैप्राणासपीवैनमैगयानेलागा१
मनगहिपवनसहंसदससंगीदसद्यौडसहंससोसा
राएकेडौरोकरसलागागुरगमग्यानबिचारा१बि
गसतकेवलपरमततदरसतापरसिपरमततपाय
जनहरीदासमधकरमतिवारावैकनालिरसपाय
३।३।वादेससनेहराजतोगदेअस्तअथनोहिरूप
अरूपयासबयारीजिंदबसैतामाहिटेकसांमन
सैतपीतरंगरहतांअगमवारनहीपाराजहांतहांस
रोजहांतहांदेषैरहैसकलतैन्यारा१मुक्तिमहलिजाइ
मनवैवागुरकिरपासेंलहीएभ्रमनिरहैतिकोमिलि
पैलैवातांवादिनवहीएपछिमदेसहाटनहीपार
एसोदातहमाराजनहरीदासबिएाजमिरसाटैरी
वाएजिबिणजिमनप्यारा२।३।तवमननमलोरे
जबलागेगोहरिनाइनरमैतोलागोनहीलागीतोन
रमेकायटेकरामनजेबिषैयातजेसमझिपियांरोस
चसाचसनेहीगोबिंदोओरसकलसुषकाच१मोह
दोहममतातजोनजैनिरंजनदेवसकलबियापीस
गिवसैआनंदअलषअनेव१अर्करूपआसामु
षीदीसैसबसंसारजनहरीदासकेरामहैजीवनज
गतअधार२।४।संतोसतगुरपरनपगारीटेकमेराकर्म
लाजातजबदेष्यातवगुरवांहपसारीटेकमेराकर्म
कालकेलागातबगुरवोघदलाई१थोडारोगबहोत
दारूदेवैदनिहरिगमाई२आतमकंवलसिंघासण
करिहूरतनजडोंकेमोदीतनमनवारिवारिमेंडारों
तोनीकरणानांती१नपजीप्रीतिपसमुषपायात
वगुरमिल्याहमाराजनहरीदासलैचरणांराष्यामे
राप्रेमअधार३।५।वीरवटाउवांहजीसूंकही
योरेजाइरातडीयांहलनलईमोहितारागिणतवि
हाइटेकसांवणमासअकेलीयांसेजनसतोजाइ
पीवनेडोपसेनहीमोहिवृहबिलंब्योंआर१रीएा
अंधेरीमेंडुबीचरनडरांनीदोइ२लनफितलफितन
जातहेमेरोनाथमिलावैकोइ३।बिरहमंहीमेंवा

निजचरनांका चेरा।तेउनजाँनैनेवाउलटीसुरति
अगमरसपीवै।।करेअकलकीसेवा।सेवाअकलस
कलविधिजाँणो।वपघटवरन्यांनजाई।निराकारनि
रंजनअैसैव्यापिरह्यासवमांही।।३।।स्योसनकादिक
रहैनिरंतर।सेससहंसमुषगावै।गोरषहणूंनधरी
सुषदेवउलटीसुरतिचलावैसुरतिचलावैपारन
पावैथाघतमीहिसमाया।व्यापकव्रह्मअैसैहमजा
न्यांगहनीमोहिनआया।।४।।नजिगोपालअकलअ
विनासीहरिन्हमलनिजसारा।नैसांतिरिवेकूंभे गर
पेयउतारेपारा।।पारिउतारैनरकनिवारैसुषपावैनि
जदासा।।ज्यूंहरिगाया त्यूंसुषपाया।सुषसागरमेंवा
सा।।५।।दासकवीरनांमदेछीपोउलटीतालीलावै
अगमअगमकरितन्मनषोजैतनषोज्यांततपावे
ज्यांतनषोज्यातेघरिआया।जलहिअकलसूंला
गा।।जनहरीदासअविनासीनजता।कालजरम
भैनागा।।६।।२४।।तुमआवोहोरांमतुमआवोअहे
मेरेअंतरजांमीदेवटेक।।साधहोसषीसहेलडीह
कमनऐकैतारापंथनिहारैपीवकोमिलीऐसिरज
नहारा।।१।।विरहनिविरहविवोगणी।दरसणकारणी
पीवविकलनईविलविकहांतालावेली।।
जीवा।।२।।अगमगवणगमकोनहीचितवतैरैनि
वहाइमुषदिषलावोगोविंदाजनहरीदासवरे
लजाइ।।३।।२५।।वरूविडोणीरेजीवडाहरिसगो
हरिसुमरेक्यूंनांहि।टेक।।नरपतिजोपतिदरिषडा
डालधजाफहराइअवधिवदीतीसंगीकोनही
कविअकेलाजाइ।।१।।हैदलगैदलसंगिचलेप्र
दलजीतेराडि।।मालमुलकज्यूंकात्यूंरहैअंतिच
लेकरझाडि।।२।।सिरछत्रसिंघासनवैसणांऊंचाकं
चामहलअवास।।यासुषहरिसुषवीसत्यातातें
तेरोजमपुरवास।।३।।प्रमसनेहीप्रीतमआपणो।।
जीवनजगतअधारजनहरीदासहरिगाइलै
हरिसकलसुषांसिरसार।।४।।२६।।रागतडीसवाईहो
रामजीवहिगाइ।।पलपरनछीजेगात।करणासु

आनंदमें दिन जाइ ॥ २ ॥ मरननदी जलमति पीवे पीव
तलेइ तुराइ बूडे सौरे बापुड़ा निकस्यो बहै डिनजा
इया सुनि संगी तोसूं कहुं आंध अपरन चालि मनक
मूलनु पाडिले थारे अंतर कुंडा माल ५ जनहरीदासह
रिगाड ले अंतरि मूलष पिछांनि मन मधकर मुकस्यो रि
परे उलटि अपूठो आंणि ॥ ६ ॥ २२ ॥ प्रीतम प्रानीया तदेव
लबैठो आइ निज देवल षो ज्यौं नदी तो जासी जन्म
गमाइ टेक देवलोक पंच दोइ जाकै पांच नांति रंगदी
या दस दर बार बहोतर श्याजा गली गांव बहो की
या १ बहोत जतन करि बांणा कबांणा यो कुपरिकल
सचहाया २ दोइ रतन उजागर दीसे बहोत नांसिसू
लाया ३ तामें सागर सपत अष्ट गिर प्रबत नदी निवा
सेलाइ बसुधा नार अगार गिगन पुनि तीन सबल
वकराई ४ दोइ प्रधांन सदा संगि षेले तिनगति र
पीन जांनी मूनी रोक मूनि गहि बैवा सोतें षो ज्यानां
दीधा तामें बरत चौदस बारा ऐतिकें बला अगम र
न गम ता मांही गरजे गगन गरजधुनि कवै बेदधु
निसोइ तामांही ५ तारामंडल चांणां नौंणा पतिन
जंना थसगि लीया जोगीरोक जुगति मब जांणे
सह जिषो जिसु षलीया ६ सुरते तीस बसे तामांही
तीर्थपुरी सबाया सेसम हेस बिष्न ब्रह्मादिक र
वसि सिसंगि लगाया ७ इहकुमेर दांम णी फि लिमि
लि गगन गर जिघ्या आया जनहरीदास रोकरच
जदेष्या सो देवल मूरति षाया ८ ॥ ७१ ॥ म्हारी आत्मा
तेरां मसनेही जांणि आदि अंति धा अबहरिसो
इ हं तासू बाणा कबांणि टेक जाति बरण कुल
कीवाकै सो निकुला निरधार कंडी अथगाया
ही आबै नदी वार नदी पार पारल ताहै निज चिंत
मणि परा परे निज सार जल धर पवन गगन अरु
ज्वाला वाकै रोक सबद बिस्तार ३ सात समंद अ
नार अगरा सब हनि कूं हरि पावै सुन सनेही सह
जैं बरषा न लटी नदी चलावै उलटी नदी अगम
गम नांदी कोइ बिरला जन जांणे मनकूं पकड़
...नी चलावै पांचूं न... णै ... ज

मसुणो अब कै है नलडा वा जन हरीदास जगत गुर
स्वामी दीजे जगति प्रसाव ॥५॥२०॥२८७॥ राग ध
नाश्री संपूर्ण ॥ राग ॥ २०॥ अथ कडषा राग सोरठि
आसुर जो हरे निस आठ पहर ती ॥ नि हरि रहै निरदा
वे हरि जन जिसे गावै गा सुणि बिकृत बलेन हरि कुछ
क आवै टेक तजि तिण रूप घि जे कोइ घड चर पर
रि लिषे संगा इ घट छूटा दुष सहसी फीटा राम सुमरि सु
ष दाई ॥१॥ मोड फिरे कोइ रूखो रूखा कि मरंगर
हसी अब कोइ कर जन आये कोरहसा बलेज हरि कु
दुष दहसी ॥२॥ आई सा षिषर चिमो षोटा कण कण का
हरि बिडावे पांच पचीस प्राण मन मनसा देले को इनघ
रि आवे रसी रस सती षमत दया सब री हण ओ सर ह
म को जे जन हरीदास सति मन सा बाचा रसना राम
रटी जे ॥४॥२॥ राग सी धू ॥ गंपान बड राज मन सादि
सांचे मते सुमरि हरि निडर निज नांव पाया ग्रासि गुण
ग्रा हन जिरां मजरणो जडी सो हमां ग्रासि है काल
काया टेक गाह गो पार रूपाल करण म हो अकल
अरूप जुर ध्यान धारो संत जे रिप हरण निपट नेने
करणा राम छाडो न दी ओडि स्तारो ॥ गहसे नेनी ति
न ध्यान दीत विवहै अन त आगे वसा मित नां ही
साध आ कास मे अट कि जु लटा चढा प्राण मन सु
ति आ कास मां ही ॥२॥ समंद संसार जल सु जल ति रि
बोक विन जन हरीदास निति नेम हरि जन की जे
परम तत सकरतार से ग्रथ धणी ना थ जी ता घ्यागति
राषि ली जे ह ॥२॥ कोम जल देत सांसे प सूब हि गया
कोई बेद मिली यो न ही स बद सा चो आंषि फूटी अ
घट और दिस कघडी अथे अ जीन ही आनरा तो
टेक विब धि तिण रूप ब प मेर हरि बिचि म डो पिन दो
हरि संक ला ज को जो वे परम नि श्चिने समधि माय ला थो
न ही मूलप सू आपरो आय घ ते रोग मे रोग अघ रोग
दारण दे से ज्ञान बधि को टे करयो सु बधि नाइ का च सू
परसि निज साच न्यारो रह्यो नेद त जिन रम जलथ्यो
आई ॥१॥ रोग तो डे तिको एक सूरो कहे नांव सो निउज

मतिवालाहोरांमजीसबकुछक्यानीदहीनआवैमो
हिमेरीबेदनिरांमजीजोपीहैकैजिसबेदनिहोइ
॥२॥यहकुलनयूंहीरांमजीजातहैहमबलकअनब
साहापरमसनेहीरांमजीतुममिलौहरिसकलनव
नपतिराइ॥३॥चरणांचोकीरांमजीचितधरूंआत्म
भजसेवारिनेनतुनोनोरांमजीप्रीतिसूंदरसोदेव
मुरारि॥४॥जनहरीदासरांमजीयूंबीनवैमेरानेननन
वेदेहोधारदरसदिषावोरांमजीआपणोहरिसंम
थसिरजनहार॥५॥२६॥अथआरती॥ आरतीज
गजीवनदेवा आत्मअगरनिरंतरसेवा॥टेक॥चित
चोकीहरिचरणधरिहौं आत्मकंवलसिंघासणक
रिहौं॥१॥दीपकग्यानसबदकुजीयाला पांचूंपदहोपसु
रतिकीमाला॥२॥प्रीतिप्रसिस्योचंदनलांऊं प्रेमक
लसलेकलसबेदाऊं॥३॥सूधौसाचग्यानगढिफारी ब
हौविधिचरचूंदेवमुरारी॥४॥नमहनेहचंवरकरिजनकै
गगनमंडलमेंफाग्रिवमकै॥५॥जनहरीदासन्यामनमं
जन आत्मआरतीकरै निरंज॥२७॥इबचलआरती
अबगतितेरी रांमसनेहीजीवनमेरी॥टेक॥नीजन्म
जुरानहीजाकै बरननबपरूपनहीताकै॥१॥अकल
अतीतसकलघटमांही अपरंपारप्रमतिकछूनांही
॥२॥असंगअनंगअरंगीरांमो पूरनब्रह्मप्रमसुषधांमो
॥३॥आगमअगाधवारनहीपारा सोपतिमेरैप्रांनअधारा
॥४॥रमतारांमसुमरिमनमांही कलबिषसहजिसबेमि
टिजांही॥५॥जगमगजोतिसकलप्रकासा प्रेमप्रीतिगा
वैजनहरीदासा॥६॥२८॥तेरीआरतीहोअलषनिरंजन
राइ होनायनिरंजनराइ स्यौबिरचपारनहीपांवै॥
सेससंहेसमुषगाइ॥टेक॥धरतीअंबरतेरच्या चंदसूर
मधिकीवापावकपवनअंबहरकीयालषचोरा
जीवा॥१॥आपनिरंजनबपधरैजगतितेहतहरिआइ॥
अनंतरूपअबगतिअबिनासीतुमगतिलषीन
इ॥२॥अनंतनवंनकरिकरणपैकरणमतेसोई
तुमबलिवंतजीवसबनृबलपारनपांवैकोइ॥३॥
रनरसबजैजैकरैंअगमकहतहैबेदनिराकारथ
नांमीतुमगतिकोइनपावैनेद॥४॥अथमनप्रणा

जौरिबहै मारि जे मीर कहूं संकनांही। तासनैकांप नि
ज नांव हरि चित चढ्यो। रहै निज नांव निज सुरति मांही
टेक। आवरां णाग है जोर कोई नां रहै। सहज सा झे सक
ल अकल चेड्यो। काच कोने कीयो साच सहजै लीयो
न जौरे न खौ निज नांव नेड्यो। २। सूकल की आस धरि
र आंन सब दूरि करि संकल सा सो मिट्यो। साच पायो
ता साच की वोट निज दास निति कुच्छ स्या। राषि साचा
धणी सरणि आयो। २। नक्र की नीड हरि आप आतुर
करै श्री ति पूरी सदा काम सारै। जन हरीदास हरि नांव
को तत भरो। चित चढ्यो। राम प्रहलाद ज्यूं प्रीति या
रेरा घामना दे घिरदे पिछकन लो ला धो। इसो अव
सर वले वहो डि ला न सिन ही। राम न जि राम न जि रां
म जग काल पाषो। टेक। मो हडसी धड चढै अन मस्त गि
धै निज नांव धी तीति हरि निकटि नांही। अजर की व
ट न र पति अन मारीया। पड्या नूं पाल धु कि धरणि मां
ही। १। जा के सी सदस बीस भुज कोट लंका जिसो सम
द झिलि मति करै सबल पाई। तिको दस रथ सुत राम
चंद्र मारीयो। काल की चोट मैं सकल आई। २। इन्द्र की
कथा क रूव हो तब्रह्मांड मैं कै रे कारण कहै काल मारै
जन हरीदास निज न कबीर नांम। जिसा सबल की
वोट नहीं काल सारै। ३। ७। जा तिको भेद पणि सकल
ऊपरि न यो। राम रंग रस्यो रंग न ले रा सो। दास कबीर
ज म लो कि जावे न ही अलप रस पीवै मस्तान मातो।
टेक। चोट संचो टषि सि धेत चा ल्यो न ही। पांच प्रबल
पिसण मारि लीया। अकल की वोट जम चोट लागै न
ही। ३ लट का पुल टरस न ला पीया। १। साध की चाल सु
णि सकल सांसो मिट्यो। कसौ ल्यूं रहो कछ संकनां
ही। आन की आस विसवास वा धै न ही। रहो पणि रसौ
र मि राम मो ही। २। जल मैं कंवल पाणी न लै न ही जक्त
मैं नक्र यूं रहे न्यारा। जन हरीदास हरि समंद मैं बूंद क
बीर जन समंद मैं बूंद मिलि ऐक रूपा रा। ३। ८। अरे डोथ
को रांम गुण गावै। हजी दसा लीयो मन ताणि। ऐक दस
न भै के लागो। नां मो न रहे के दावा णि। टेक। माया दल

षेनहीसुरतिसंसारसूंतलटिलांणी॥३॥२॥गुरपीरबिन
नीरकीपरषलाभैनहीसीरनिजनिजनकूपरसि
जीवैगगनचढिसीचिबोपछिमदिसबावडीजल
टसीचैतिकोसाधपीवैटेकसुरतिकीडोरिमंकिअगम
घरिबेलिबोअगमघरिषेलिनिजकंवलफूलेसु
निमैमाचनिहिकंवलतलटासुलटिगहरमतिग्वा
लनीगोपिफूलै१अर्कघरितरकतजिसमंदसुत
समिकेरेबादसीआडिदिसरेकथावैपैसिपाताल
मैअगमजलआणिबोसदजघरिआत्मांबेलिपा
वै२आपमैंअषलषितलटिषेलैनहीप्रीतिप्रवा
णनिजप्रेमचाषेजनहरीदासनिजरूपनृबाणनि
मलकथाप्रांणअसथांननिजसुरतिराषे३॥३॥नि
जनकूसदानिजरूपनृषतरहै॥अकलअलगोनहै
सकलमांहीसकलसुषसागरअगमअंतरिअगहक
गिबरतेतिकोअगमनांहीटेकसतिसदाआपआक
रसोसतिनहीपरमनिजसारसोसकलसोईओरपेषी
तिकोवेडपावैनहीअनलपषीरमेउरवारमांहीर
अकलतरवरतिकोसकलजगकूपरैडालबिनमू
लबिनसदाछायाआइजावैतिकोसमंकिमनसति
नहीरूपधरेतितीसकलमाया२सकलब्यापीक
सतिपरसिपतिआपणोगगनअसथांनमनउलटि
लायाजनहरीदासप्रकासपांचूंपिसणप्रजल्याथ
स्योमैंअधरघरनिकटिपाया३॥४॥सुमरिमनरांमस
तिरूपसमृथधणीनिजसिनगवंतनवसिंधनारी
जांणिजगदीससबईसअवसरयहैछिबछिबहै
फंधकाटेमुरारीटेकसाहिगुरग्यांनजीवजागिनैडी
जुराजाणतोजोरकरिकांइसोवैहसैहीराजनमब
लैबहोडि लालसिनहीकाचसूंलागिकणकोइ
षोवै१प्रांणप्रवाणसिरमोतमांहीबिथाकालब
टपाडनितियातहैरैकनितपरिवारसुतसकलस्वा
र्थसगाआदिसंगीसदारांमतेरै२बवलतरयांह
कांटाघणांकरमनारचिसमांरहसिअटिथमांह
जनहरीदासहरिहेरमनफेरिनरमैंकहानिजरि
रिदेषिहरहरिनांहीं३॥५॥कालजमजालकीचोट

तहांपूरि दिलमांहि मकारोह मुथरा पांच प्रबलचू
रि ॥४॥ मही मूरत ब्रगरहगा फिलमांहि क्या सुलतां
न ॥ हदम हजूरि सं न्यारि निसदिन ॥ दरदसूं दीवान
॥३॥ चुस्त चसमां उरध अंतरि ॥ अब्ब गस्त निवारि है संता
ज रि अगमयारो ॥ आसिकां दीदार धाव रवारं दो जग ग
रक गुमरा ॥ मनी मारे मीर महरि का मुकरहे रहि ॥ पड
द्ये ॥ से पीर पा दिलसदा स्वाफी कहर कम करि पी वस
दासं गीसो ॥ जन हरीदास आसा का हि पासा निस्ति षे
लो को ॥५॥ पा ॥ सईयां उरसि है दीदार सैतांन का सिर
तो ॥ ६ ॥ न नै षिति ष्यारी यार टेक अरवाहमें मन आं
॥ गुलटा है सहाजरि है ॥ १ ॥ कसूं मिलि षेति षुस
मति कहर कांटा षोह ॥ १ ॥ सिरन्याह परसि ऊरांन का
बिज वे सिप हि दिलमांहि तहां षालिक षलक पू
रिका षुदी षाली जांहि ॥ २ ॥ हहरा जे रब्बस हूं चिगह
गुणगलतांन है सहाज रि अगमयारा ॥ मोमनां सु
लतान ॥ ३ ॥ पीर मुरसि दिक आसए ॥ अरसपरसे दो
॥ ४ ॥ जन हरीदास पीव सूं ष्याल षगाट सहज सिज
दा है ॥ ५ ॥ ६ ॥ मैं रैक तूं रहमांन ॥ मकसूद मेरा ग्री
तं सूं ॥ औरसूं क्या काम ॥ टेक तूं थाम सांनी सदा सद
सी ॥ निकल तूं न्यार औरसब आधार ते रे तूं पाक
परवरदिगार ॥ १ ॥ बे षुदी बे आदि बे गम अजर अचल
अचाल चिदानंद अरूप अबगति षबरदार षा
स ॥ २ ॥ तूं अकह सबके है सुनत है कहे ते सानां हि
जन हरीदास अमर अलेष तूं नैं तूं षेलि ता सुषमां
हि ॥ ३ ॥ ६ ॥ क्या करूं रब कबूक तन आवै रूवा सो
जा ॥ ३ ॥ जा इसी सति नहीं अलाद आलेमें रहा ह
वे है वेरजक रजिकर जा षलक षालिक सुषी है
ति सा है स जांएंन को ॥ १ ॥ यार का यार दीदार यारां द
सतन्दर निरसिंध निजरूप सोई ॥ २ ॥ जिंदमें जिंद अर
वाहमें एक तूं ॥ सकल नर षूरि निज ह रिनां ही बंद
गी ॥ अडि बंदा कहां जब वे मगनमस्तान नसल्लम
ही ॥ २ ॥ निजरि नरिका हूं मांदे षिकल मां ई है सेजसु

तुफ

नै

श्रा

पीवै अडिग मन अबधू अनहद बैन बजावै तूर।२ मन
कानास करौ मति कोइ।नांमैं मन पल ग्यान दीपज्ल
टी सुरति अकल रस पीवै।निज तत निरषत रहै समीप
।२ मलतैं अगम अडिग निज साधो अंतरि लटी आ
वै नां हि।जन हरीदास नांमैं निज दीवो सो नूर बिरा
जै मैं नां मांहि।१।६।। मो टिम मेर सफेरि के रूपो हरमो
टिम बीजो कोई नांहि।चवदास वन गवन गुन ग्रांम
उपति षपति सकल हर मांहि।टेक।। समंद अथाह ति
को नर थाग है। हरि अथाह थाघी यो न जाइ। कोई थाघै
अघघ अगम घर षेलै।निज तत निरषत रहै समाइ
।२ गगन अगम गोबिंद गम जांणो। गोबिंद गम कोई ल
है सु साध।उलटी षेलि अकल रस पीवै।परसे अबगत
तत अगम अगाध।३ मन तन मांहि निकटि निधि जोवै
सुरति सबद हि गहै मन पौन।जन हरीदास अबगति
गति ऐसी भेद अभेदी लहैस कौन।३।।२०।।सो वत सो
हं सूर सति सनमुष।रांम तणां बोलि गांणां आव धस
र टोप सिर सु मिरण कांकडि आइ मंडाणां।टेक।पैली
फौज घटा घण घरहरि अरि आतुर नल होडा।साधन
ला जरांम च जिल्लो जे टिकि विकिस के सयोडा।पांच
पचीस मोह दल माया कांम क्रोध दल पूरा।षडक्के से
ल षडा षड षसतां बाजे अनहद तूरा।१ गुर ज्ञान ग्रिगो
ला सरछूटे कमधज पडि घोणां।बाण षिवै ज्यूं आने
वां मांहि कोइ कट कनुडाणां।२ मन गहि पवन पलटि
पहिरायै आया अमल चढी है।जन हरीदास मां निम
मता तजि यूं मैवासा तोडे।३।।२१।। गोरषनाथ तुम्हारी
गति मति कोई सुर नर मुनि नहीं जांणे। जांणे सिध साधि
क अरु अलष निरंजन।गोरष सुनि सुधा रस मांणे।टेक।
जी त्या करम नरम करि कीनें। गगन चढे रस पीवे। जामां
ही मिलि झांटे डोरे सो मृतक सति जीवै।१ जांणे जोग
जोग नहीं जांणें नाथ इसी बिधि षेलै।जन हरीदास गो
रष सति सनमुष स्वामी महारस झेलै।।३।।२२।।२०८।।
।।२४।।कड षा सपूरो।।२ प्रत।।राग काफी।।सईया
नलटि दे बिहङ्ज रि औजद मैं मैं जद मीरां कहा षे जे
हरि टेक निकटि निज निधि तिरणा तारण निज सुरति

तत्तांपूरि दित्तमांहि मकारोहमु घरा ।पांच प्रवल्लचू
रि ॥ मद्दीमूरत व्रगरदगा फित्ता ।सा हिक्यासुलत्ता
न ।सदम हजूरि सेन्या लि निस दिन ।दरदसूदीवान
३ ।चुस्त चसमांजरध श्रेत्तरी ।ग्रव्व गस्तनिवारि हैसद्दा
ज रिश्रम मयारो ।श्रामि कांदार धादरबारे दोजगग
रकस्रु मरा ।मनीमारमीर मद्दरिकामुकसूद ॥ सीपड
द यों सैं ।पीर पाविस्तसदासवापी कहरकमकरि ।पीवस
दा संगी सो ४ ।जनहरीदास श्रासा काहि पासा ।निसिवे
लो को ३ ।पा ।१ ।सईयां तुरसि हैदीदार सैतांनका सिर
तो ।ड.नस्ने पेस्ति प्यारी यारहै कश्रवारहै मैमन श्रां
णा नलदा हैसद्दाजरि हो ३ ।एकसूमिस्ति पेतिषुस
मति कहरको टायो ३ ।१ ।सिरन्या ३ परसि कुरांनका
बिजाद्वे सिपढि दिलमांहि ।तहांपालिक षलकपू
रिकाषुदीषारी ज्यों हि २ सूहरा ज्ञेरवरसरूचिगल्ल
गुणगा लतांनहि सहाजरि श्रगमयारा ।मोमनांसु
रस्ता नश्रा पीर मुरिस ऐक श्रासरा ।श्रसपरसे दो
३ ।जन हरीदास पीवसूप्यालु द्रगाटसहजसिज
दाहो ३ ॥ ५ ॥ मेरे एक सूरत मान ।मकसूदमेरा श्री
त सूं श्रीरसूं क्या कोम टेक तसूंपासदा नीसदार स
सी ।निज्ञल तूंन्धार श्रीरसब श्राधार तेरे ।तूंपाक
प्रवरदिगार ।१ ।वेषुदी बेश्रादि वेगम ।श्रजर श्रचल
श्रचाल चिदानंद श्ररूप श्रचगति ।षवरदारो प्या
ला २ तूं श्रकत सबकै हैसुनत है कहैते सानो हि
जन हरीदास श्रमर श्रलेष न्हे ।तूंपेलितासुषमा
हि ३ ।३ ।क्या करू रब कलू कस तन श्रांवे रूवासो
जा ३ गा जा ३ सीस तिनही श्रसा दूश्रा लेमेर हासा
वे हे करि जकरा जिकर जा षलक पालिक सुषी हैं
तिसा हैसजो एन कोई ।यार का यार दीदार यारांद
स्तान्हर निरसिं धनिजरूप सोई ।१ ।जिवमें जिद श्र
वा हमे एकत्त ।सकल जरपूरि निज हरिनी ही बंद
गी श्रो डिवेदा कहां जवे ३ मगन मस्तांन तसन्हरम
ही २ ।निज रिन्नरि काइमांदे षिकलमां ३ हैं ।से जसु
कोनसो सकलमां ३ ।जन हरीदास दिल बारि
रसदिल ::

पाव अडिग मन अवधू अनहद ध्वे नव जावै तूर ॥२॥ मन
का नास करी मति कोइ । नांमैं मन पल ग्रासदीप न ल
टी सुरति अकल रस पीवै । निज तत न्रप तर है समीप
॥२॥ मवतैं आगम अडिग निज स्ताधे अंत रि तलटी आ
वै नां हि । जनहरीदास नांमैं निज दीवो सो नूर बिरा
जै नैं नां मां हि ॥२॥ ॥ पी टि म मेर स फेर के ह्रषौ दूर मो
टि म बी जो कोइ नां हि । च वदा न वन गवन गुन ग्राम मी
न्रपति षपति सकल दर मांहि ॥ टेक ॥ समंद अथाह ति
को नर थाग हरि अथाह थाघी ये न जाइ कोइ थाघे
अथघ अगम घर षेले निज तत निरषत रहै समाइ
॥१॥ गगन अगम गोविंद गम जांणें गोविंद गम कोइ ल
है सुसाध उलटी षेलि अकल रस पीवै परसै अबगत
त आगम अगाध ॥२॥ मन उनमनि निकटि निधि जोवै
सुरति से बाहि गहै मन पौन । जनहरीदास अबगति
गति ऐसी भेद अभेदी लहै स कौन ॥३॥२०॥ सौ वतसो
ह्रड सूरस तिसन मुष । रांम तणां वो लिंगौणी आव षम
र टोप सिर सु मिरण कां कडि आड मंडाणां टेक पैली
फौज घट घणां घर हरि अरि आतुर नल देडा साधन
लाज रांम न जिन्नो जै टिकि विकि सके सयो डा पांच
पचीस मोह दल माया कांम क्रोध दल पूरा षड के से
ल षडा षड षसतो बाजे अनहद तूरा ॥१॥ गुजना लिगी
ला सर छूटे कमधन पाडे धोयां घाव षिवे जपूं आनै
दांम ही । काइर कटके नडांणां ॥२॥ मन गहि पवन पल वि
पदि रोषे आआ अमल च दो डे । जनहरीदास मांनि म
मता तजि यूं मेवा सा तोडे ॥३॥ ॥२॥ गोरष नाथ तुम्हारी
गति मति कोइ सुर नर मुनि नहीं जांनै जांणें सिध साधि
क अरू अलष निरंजन । गोरष सुनि सु धारस मांणें टेक
जी स्या कर मन रम करि कांनें गगन चढे रस पीवै जांम
ह्री मिलि झांटे डारे सोमृत कस तिजीवै ॥१॥ जाणे जोग
जोगन हीं जांणें ना घरसी बिधि बैनैं जनहरीदास गो
रष सति सनमुष अमी महारस के हैं ॥३॥ ॥२२॥ २००॥
ज्या ॥ २२ ॥ कडषा संपूर्ण ॥ रेषता ॥ राग कांन्हडो ॥ सईया
उलटि देषि दूरि अ रि औ जद मैं मौ जद मी रां कसांपे जे
हरि टेक निकटि निज निधि तिरणा तारण निज सुरति

सुषदाईतुमसग्यानतुमध्यानरामजीरामड्हा
ड्रीअगमवस्तअंतरिअगहकहिविषकाहणता
पती।जनहरीदासकैरैकतंआनननजाचूंबापजी
२।गुरदीरघज्यूमेरसमंदज्यूंथाहनकोई।मतिग
नीरज्यूंगगनचंद ज्यूंसीतलसोई।समदिष्टीज्यूं
सूरपवनज्यूंनिपेनलोई।वसुधाज्यूंमनधीरप
रमसंगीगुरसोई।जनहरीदासगुरगमअगमकह
तनआवेक्याकहूं।गुरगोविंदचरणारविंदमा
इविंदरलागारहूं।३।दीवानइसाजाचूंनहीइक
ममदीवांनसओरहै।जहांसागरसलितानांदि
पवनगिरप्रथमीनांहीवरणनहीवेकूंबविघन
कीतूलनांहीवपघटनहीविचारकरमनेनर
मेनांहीरविससिद्यौसनरातितिमरताराहणनांही
व्यापेसीतनधूपगगनवसुधाफुनिनांही।जनहरी
दाससबतेअगम।तासगमकोईबिरलालहैदीवा
नइसाजाचूंनहीइकममदीवांनसओरहै।२।अब
गतिकोलहैकोणगैणाइरमापै।कोणमेरकूंतुल
दियापनांनलटीथापै।कोणसमंदजलतिरेकोण
गुरयहमतिआपै।कहूंअगनिमेपैसिकोणसिधि
अंतरिलापै।जनहरीदासपूरणकहूंनहीनैडूनही
हरिकीमतिकहिकहिकहिअकहिहरिजसांतत
नरपूराधजोगजिगअस्वमेधसीसगहिईसचढ
वेपांचअगनितपसिलाकेरोकनातपनावेअं
बबिबरतनसीतसुतोसबतीर्थन्हावेकासीक्षा
डेदेहहेमबसिसाडगमावे।बिबधिधरमतपस्यारि
बबधिफलचुगतैपरडुषसहै।जनहरीदासहरिनां
वबिननरकहिकोणवोटन्टेनेरहै।५।अगमतीथ
गुरगमसुगमअगमतपस्याजिगजोगविचारो।ऐ
कादसीअगमअगमनावनरहूनविसारो।संतस
रातनअगमअगमगुरग्यानउरधारो।गंगजमन
मधिपैसिकरिअगमवस्तअंतरिलहौ।जनहरी
दासनेमचेतहोनमतिलागारहोदहलोकरला
जपघनेषतहोमिलिजन्मनहारो।राम्मनामजस्य

२॥ धातेरेसो षकासुषमो हि निनन रनि जनहदे
मेन ग्राडौलो हि टेकामांइसेज आयामुकनाया प्र
तिकातुरहार। इसक तेरा रहोमेरे यारतं दिलदा
२ सुरतिमेरीवारी फेरी जिंदमें घरग्रा इ बोलि घ
मददे षिनेना रहूं तुरलपटा इ ४ मदह रिमालिक
षवरि बालिका परस्तांने पारामारिगो तादस्सपाय
तुससमें दीदार रामदरवानदी वानदाना जहांसत
हांसुष आजाजनहरीदासकेसुषरहो तेरा औरसु
षसं नाजधा॥ पा अलह आवयारो यारा इसकदे
हालव्या कला दससद्यो दीदारा टेका इसक तेराजिं
दमेरा जाइ इक्कु तनजाइ तुम जांनते हो क
कास कबमिलोगे आइ २ फरक फारक तरक
डुनीयां हैतु सांडा चावसे फमेंडी आवसईयां
सीसपरिधरिपाव ॥ १॥ अला आले बिरहजाले
बिरह घाले घावं जनहरीदास कू दीदारदीजे षूब
मालिक आव ॥ ३॥ ६॥ डुनीयाडुरसिचलीदीन वा
षसमको कछू षबरि नां ही औरकी आधीन टेको
कजलेषांकाजापजां पी आदमी अस्थान इक
पीरासईदांजा इलागे वेसामा कछू पांन ॥ १॥ एक
जडीबूटी धातपाषंड इ ष नेरूबीर सुरतिसुल
टिन चलाततलटा बहिगयातनसीरा २ एकतत
मंतजडेतआगम सुरतिदहदिस पूरि जनहरीदा
मतिनकूं भिस्ति केसे रहा मालिक इरि ॥३॥ ७॥ बंदे
बंदगी कुसियार जोर करि नीजेर होइगा बहेत
पाइगा मारटेका नूलिगाने फूलेबेवा जहांस
तहां जमवास कालन टके दा धि डोरी ॥ कंवि ब्यो
कपि ज्यूं पास ॥ १॥ पालहया पुरपिसण पक्कूलागुणग्र
सिगोबिंदगा इ॥ हरिनांवलेनर आडिमे तें जनमज
वा जाइ ॥ २॥ सोरवहदिस जोर लागा ॥ टूटिहै गढदेह
जनहरीदास जोगीजागि जुधकरि रांम आवधलेह
॥ ३॥ ८॥ इतीपदसंपूर्ण ॥ पद ॥ १०८॥ रा ॥ ३॥ ॥ १४॥
अथ अरिल लिषते ॥ तुमसती षेतुम बरततुम
सपीरषसबलाई तुम्हसबंधतुम बांद आन चि
अटेनकाई तुमसमात पितापरिवार तुमसजन

ते निरखलपकं चैनहीं।२।३देवरगेंवरगांवफोज
फरहरखक्षे पाइकाखेहो जो ध्रदरखारिषसे आषू
नीषाइकलरवास्यांतनतो लिचढे आंणीयांमुहि
लाइका।त्रितिमाली करधरि विवरखकैमुषिबिक्र
तबाइकालोहछाकगौलागिलेपरबलहलिपरपुरा
तनुजनहरीदासहरिजनबिनरबिकटरूपदी
सैबुरा।४।बीरघबाघरहैंजुटेगेरणमैंगाजे।पडेलो
हबोबाडबडगषसतारिणलाहे।क्षरवरकरसूतो
लिपिसणांतनपिसणआवाजे।सबीरसनमुषच
ढेषेततजिकाइरलाजे नीरकतस्यो बीरनांवषत्री
पणिलाजे दोकंपषांनूंनेरतनस्यांमध्रमआमां
णहरीदासजनयूंकहै बालिनिमांणौ जांणा।५।
नजिकरणोनिधिकरतारलोवनाराइणलीजे।लजि
निरामूलनिरसिधकांमआरंभयक्रकीजे।लजि
अलषनिरंजननाथछाडिविषइअतयीजे।नजि
परमउदारअपारग्यानगहिध्यानधरीजे।जनहरी
दासवारपारकौमतिनहीरामनांममोटौरतनउर
मंडणउरधरिप्रेमप्रीतिदीजैजतन।।२६।।कवि
तसंपूर्ण।।ऊंडलीयाविषते।।गुरुदेवकोअंग
साचागुरसाचेमतैनजैनिरंजननाथजनहरीदास
तासाधकासिषकूंछाडैसाथसिषकूंछाडैसाथ
नांवनिजभेदबतावे।अवरणअगतअरूपअगम
गुरगमतेपावे।गरबछाडिगोविंदनजैसिरिसतगु
रकाहाथसाचागुरसाचैमतैनजैनिरंजननाथ।१।का
चागुरकाचेमतैकाचाहीफलषाइ बुगलाकादिष्टं
तदेसोबुगलाहीहोइजाइसोबुगलाहीहोइजाइ
ध्यानबुगलाज्यूंधरैपांणीमांहीपैसिमीनपांणीमें
मौरैजनहरीदासउरनमलहातासूंप्रीतिनलाइका
चागुरकाचेमतैकाचाहीफलषाइ।।२।।२।।गुरसिष
पारिषकोअंग।।गुरसिरपरिकरलषधेजबगुरला
इकहोइ।बिनहीपरचेसिषकरैबडाअचंनाहोइ
बडाअचंनाहोइबातयाकासूंकहीएबोटागुरके
साथि

अचलजनहरीदासगुरसोइगुरु

२५४ नाहि घट घाट तजि अघट बिचारो॥ परम ध्यान परध्या
न हरि निजनाथन रनिमषन बिसारो॥ जनहरीदास ई सं
अटकि पिसण पलटि परम गति लहो॥ अगम बस्त अंत
रि अगह तत तहां उनमन त्यागार रहो॥७॥ परम ध्यान प्रमध्या
न प्रम गुरगुर गम गावो॥ राग दोष रस पांच रषे मन तहां
न चावो॥ काम क्रोध अभिमान कुपह कोंवा मति लावो॥
अलष नजन नरषरो मेरो मरि मोत चुकावो॥ जनहरीद
स मन गलि पवन ब्रह्म अगनि बिष बन दहो॥ अगम ब
स्त अंतरि अगह तत तहां उनमन त्यागार हो॥८॥ मूत कलि
त परिवार माल बहो मुलक बडाई॥ ऊंचा महल अ
वास सेल सजन सुषदाई॥ बहो सुक्ष बहो पांन सेफ षा
सा दरियाई॥ कर धरि मूछ मरोडि कहै मेरी जडुहाई ह
रि सुमिरण हरि देन ही दहि दिस माया घेर॥ जनहरीदा
स यूं जांणी रोय कुतिल सुष दुष अस मेरा॥९॥ जहां जा
न तहां सीव बीचि माया का सरवर॥ गिरवर अजंग गत
ग बिबधि बिषकाबन तरवर॥ सरप सिंघ जष जुरा
जीव धसि के न तहां धरान दी बहै मैं मंत मध्य मरणं
म धि रद्र डर॥ जनहरीदास हरि तहां चलो ध्यान पर
धरि तजि घर जहां जीव तहां सीव बीचि माया का
सरवर॥१०॥ दरबार गर गरा गत हो ध्यान धरि जोगी बे
वा जे बक मास्या सिंघ सूर ससि हर अगि पेवा॥ गया
पाप परदेस पकुमत जि धुरे ते षेवा॥ गंग चडी ब्रह्म
ड अटा दवकर ता देवा॥ अरस परस रस परम गति
परम नेदन नैन याथि निब धि तिम रगत ग्रब गत
जनहरीदास सतगुर दया॥११॥ नाथ मंछ दर देषि
देषि गोरष गुण रता रह्या धणी सूं लागि॥ छाडि नै जं
ल कामता गोपी चंद नी जांणी रे जोग ध्यान ज्रै सैंग
स्या हैगे मे गे ह्या छाडि कै माया सूं प्यार रसा सुषदे लनी
माया त जी बास छाडि बन मैं बस्या॥ जनहरीदास तेज
बस्या जग सारा माया डस्या॥१२॥ नाथ निरंजन देषि अ
ति संगी सुषदाइ॥ गोरष गोपी चंद सहजि सिधि न वनि
धि पाई नामेदास कबीर रांम न जतां रस पीया॥ पीपै ज
नै रैदास बडे छक लाहा लीया॥ अन नैबस्त बिचारि क
रि जनहरीदास त्यागा ति ही रांम बिमुष दुवधा करें

णी बसै। जन हरीदास आछै मतै सुष मैं रह्या समा
इ कोई प्रीति ले कोइ आवै अरिल्ला २६ आव पख
र की जन मनी आव पख की प्रीति आव पख सं नेह
ष सदा यह साधां की रीति यह साधां की रीति ऐक र
स लागा जीवै आगम पिया ला साथि राम रस पावै
पीवै जन हरीदास गोबिंद जो आन असुर अ
रिजौ ति आव पख की जन मनी आव पख की प्री
ति ॥७॥२२॥३॥ सुमिरण को अंग ॥ हरि नजि जे
द बिचारि हरि मति चालो लोई ऐके साथी साथि
औरसा थी नही कोई औरसा थी नही कोइ जांणि
या जीव मैं साची रसना राम उचारि षै मति थापै का
ची जन हरीदास गोबिंद बिमुष सो जत्या सद गरि
त मोइ हर नजिनि द बिचारि हरि मति चालो लो
ई ॥ कहा दिषावै और कूं उलटि आप कूं देष करले
ष णि मसि कागद कहा लिषा ऐत हा अलेष लिषी ऐ
त हा अलेष सु तो न्रमल करली जो दिल कागद करि
र षाक सु तो लिषि लिषि विकिवी जे। जन हरीदास
रि सुमरि तां संच रर हैन सेष कहा दिषावै और कूं उ
लटि आप कूं देष ॥१॥ गुर गोबिंद गोबिंद जन गोर
ब दहा सू प्रीति हरीदास जन यूं कहै या साधां की री
ति या साधां की रीति आगम गुरगम तै पाया निरामूल
निरसिंध कालने जाल न काया। जन हरीदास तहां
रेक सु बन ही हारि न ही जीति गुर गोबिंद गोबिंद
जन गोबिंद हा सूं प्रीति २ निसदिन राम संभालि जा
गि न्रंजन पद लहो जहां तहां मन लाइ अपा पर उष
कूं सहीरो प्राण पर उष कूं सहीरो सिर जुरा जम चो
टन सूं जे देह षेहसो इजा इजीव अपणी करि लेजे ज
न हरीदास अवगा लि आगम फेर मन रहा सुष रहीरो नि
स दिन राम संभालि जा गि न्रंजन पद लहीरो ॥४॥२४॥
४॥ बिरह को अंग ॥ सती सो णाकी दोस धरि सन जां
लण कूं जो हि लोक लाज लेज लस तहे असलि सत
सोनां हि अस लिस ती सोनां हि पीव की षबरि न ला
धी धीर ज रहा न सो इव ली ज लके पषि बाधी ज

थी जव गुरुल्लाइ कहो इ ॥२॥ गुरु होइ सिष साष ।
मीनी का सा मोंह ॥ जन हरीदास उदबुद का प्यान
हि गोया द्योंह ॥ ल्ला बिगोया द्योंह ॥ रांम सुषनै
ना ही जड ह्रड जीव षा हि ॥३॥ कूंत रवडकी
जाची मंग तिवडी ऐसा हि वजा का सौंह गुरु होइ
ष ष्ष ष्ष क रे मीनी का सामोंह ॥ ॥ ४ ॥ ७ ॥ साधसं
ति को अंग ॥ संग तिकी जे साधकी मनकी दुबध्या
इ साध वतावै परम सुष पंक्ति वै बिरला कोइ पंक्ति
चै विरला कोइ देहु सुष दिल तैं भावे जाइ वसे दर
स्नो दल रिनि सैन सोवे जन हरीदास आनंद यदे हु
जाद पल नहो इ संग तिकी जे साधकी मन की दुब
ध्या षोइ ॥१॥ संग ति की जे साधकी जासूं रांम द
अरस परस आनंद सदा गाई जे गोपाल गाई जे
पालन प्रांण पति प्रांण पिआंरो धस्यो धस्या कूं ध्या
अधर अमि अंत रि जांरो ॥ जन हरीदास पति परस
प्रवान पकडे कारन संग तिकी जे साधकी जासूं रां
म दयाल ॥२॥ साध मिल्यां सुष पाई ऐ नजी रे केवल रां
म नरन्यारा गोविंद विमुष तहांन ही साध का कांम त
नही साध का कांम धस्या जंडा जेल मां ही विण जे संष
स्राप दाह हीरा की नांही जनहरीदास हरि परस कूं र
चन वोह स कांम साध मिल्यां सुष पाई ऐ नजी रे के व
ल रांम ॥३॥ रांम सनेही साध वा बडा बेद जग मां हि सू
ता जीव जगाइ करि और देस ले जां हि और देस ले
हि सवद राषि जांर हीरे स बद के हैं तू करे स बद
णी सब सदहि ॥ जन हरीदास ता मुलक में जुरा काल
ने नां हि ॥ रांम सनेही साध वा बडा बेद जग मां हि ॥४॥
असदा मेला रहे कब कु हरि नजां हि जिनि की
डीगडी बूझ नो मिता मां हि बूझ नो मिता मां हि
रति निज जाइ स माई दरसे परसे प्रेम परम निधि
रि पाई ॥ जन हरीदास तहां अगम फल हि लीया ह
जन षां हि साध सदा मेला रहे कब कु हरि नजां हि
॥५॥ कोई आवे प्रीति लै कोई आवे अरि नाइ साध
दो कं कूं पोष वे दोवा का फल षाइ दोवा का फल षा
इ ष ते सा फल दरसे आंधी के मुषि धूरि घटा मुषि पा

दासवगतिसुषज्यो नही तसांकधेश्रेदातसांके
ध्रुकाश्रेद आनतरवोटनश्रूसेदसदरवाजारोकि
कालकायागढसूधेजनहरीदासअबगतिअग
मफूवीओरतमेसतनधरिधरिमरिमरिगयाहरित्त
रिजतेजननेदा।धा।जागोरसोवोकहताअवधिघटेघ
टिवीर।कहेतोकहतातोराघाराफूटेताडेनीरफूटेन
डेनीरगरकाराफिरनरसोवोगजेनहीजगावत
लदोडिमलसूमलधोवेजनहरीदाससुरनरअ
सुरसबमछरीजमकीराजागोरसोवोकहताअव
धघटेघटिवीराधाजनहरीदासनिसदिनघडीवा
जेबारोंबारघटतघटतसबदिनघट्याभरणासही
तयारामरणासहीतयारन्याइनिधडकनरसोवोमो
हपोहछकछक्यामूलमायामदषोवेजन्मअमोरि
लकजातहैयोनितिकोरेपुकाराजनहरीदासनिस
दिनघडीबाजेबारोंबारा।६।राजारामनवोलगेना
राइननिरसिधाजनहरीदासतेमानईजांतिअधी
गतिअधजांतिअधीगतिअधअग्यानआलसग
रिलागा।विवधिअधोरेबेसिग्यानबोलणानहीना
गा।आनध्यानगुरग्यानबिनओरअणोरावेधराजा
रामनवोलिगेनाराइननिरसिध॥७॥२६॥७॥परच
कोअंग॥बिनबादलबरिषासदाछहरुतिबारामा
सआवमअंतरदेषीएपरमजोतिपरकासाप्रमजोति
प्रकासप्राणसागरमेझूलेअनहदसबदगुचार
सुरसिनिजसाचनझूलेजनहरीदासआनदन्या
अरधिसमानीआसाबिनबादलबरिषासदाछह
रुतिबारामासा१।ग्यानपत्रमनसाजुगतिनिसदिन
बेबाषाइआसाराषेअलषमेत्रमतफिरेजाइन
रमतबूरताइसिंधजबमहलपधारेमूसेगासेसेसु फिरे
सोसुनताकूमोराजनहरीदासनदबुदकथातहा
मनरसारसमा२।ग्यानपत्रमनसाजुगतिनिसदिन
बेबाषाइ।२।अगजड्याआकासकूचीटीपरोसमाइ
जसांचीवीकीगमनहीतहांपगबेगजाइतहांपग
बेगाजाइमुरलकबोओरनाईसीतधूपरसरहत

गा को हांसधरि जनजालण कूं जाहि ॥ २॥ २६॥ ६॥
अपांन बिरह कौ अंग ॥ बात सुणि सुणि पीव की सि
र तें डास्या चीर लीया संदोरा हाथ मैं पैडे लागी बी
र पैडे लागी बीर देह सुत बित सब भूली जीव ग
यां तहां पीव पै सिदा वान लभूली जनहरी दास सं
सार की लगी न काई सीर बात सुणि सुणि पीव
की सिर तें डास्या चीर ॥ बिरह मढी मैं पैसि करि द
ह दिस दीन्हीं आगि जीव लग्या पणि पीव कै रह
निरंतर लागि रही निरंतर लागि आन चित वा
हन धारी ॥ प्रगट जरी मैं दोन लोग लज्या सब डा
री जनहरी दास पीव का बिरह तहां बसे धसि जागि
बिरह मढी मैं पैसि करि दह दिस दीन्ही आगि ॥ ४ ॥ अ
सलिसती आतुर कहा अर आलस नीनां हि धीरे धीरे
चलि चली एक रेष मन मां हि एक रेष मन मां हि और छ
नीयां सब धारी जीव गया तहां पीव देह लेष है मेंडारी
जनहरी दास अैसा बिरह धस्या आडिकं सौं जांहि अस
लिसती आतुर कहा अर आलस नीनां हि ॥ ५ ॥ २ ॥
६ ॥ चितवणी को अंग ॥ आइ सिंघासण बैसता ह
सहसि करता बात सुतब नितापर वा सूज ठिगया
करि घात ऊठि गया करि घात मात संगि तात नमा
या नाई संगि न मोमि अं तिसाथी न ही काया कहू का
लचोट चूकै न ही जनहरी दास तिलमात आइ सिंघा
सणां बैसता हसि हसि करता बात ॥ १ ॥ चोवा चंदन ल
इतन करता बहोत सिंगार जनहरी दास ते मानई
जलि बलि हूवा छार जलि बलि हूवा छार नारि
पौं सिर धास्या ग्यारस नां के स्वादि जीव नां नां बिधि
मास्या बूडे डि. बूडे डि. जामें मरे जुरा काल ने लार
चोवा चंदन लाइ तन करता बहोत सिंगार ॥ १ ॥ मात
मुल कहै गे घणां अन्न आंद मनि आका के मास्या के
मारि सी काल करत है ताक काल करत है ताक अं
ति कोई छूटै नांही ॥ सुर नर असुर अनंत सब लोक ज
म का मुष मांही जनहरी दास गोब्यंद न जो और स
बै सुष पाक मा ल मुल कहै गे घणां अन्न आद मनि
याक ॥ तनधरि धरि मारि मारि गया हरि हार न जैन ने

[illegible]

बागैत्ता॥१॥मन चंचल निहचल नया नरमन की रेन्
सा पहली को पैंडा सजपा उल टि चल्या अवधूत उलटि
चल्या अवधूत निरंषि नैं पव्रना गा कीम को ध अभि
मान आन अनरथ अरिजा गा॥जन हरी दास आनंद न
या नत भि मल्ह्या सूत मन चंचल निहचल नया
नरमन को इन्सूत॥२॥२८॥ ८॥मन को अंग॥अधर
नर आकास मैं राषे बिरला कोइ मन पोणी मुषि सबद
के रा थ्यां ही सुष होइ रा ष्यां ही सुष होइ हरि नांव मन के
मधि थमै ब्रह्म अगनि प्र जलै मन पारा यूं मारै नीरपलरि
टपाव कत बेगत जन हरी दास पष दोइ अधर नीर आका
स मैं राषै बिरला कोइ॥२॥मन के बसि सब जीव है मन बसि क
रै स कोइ॥ जन हरी दास मन राज है तहां राज बिराजी होइ
त हां राज बिराजी होइ ना च मन ब्रहीत न चो वे तब ही षु
सी उथ्या हृ बहो डि तब ही दुष पावै रा मन जन को नैन ही
पैंडा तजै न दोइ मन के बसि सब जीव है मन बसि करै स
कोइ॥३॥मन बिसहर मुष पांच ओ बिष अगिण ततमासा॥ द
सइ सण षट जी हमो ह बंब ई त हां बासा मो हबंब ई
त हां बासा पूंछ न हि चिंता सा र॥ डंक न रैत हां जहर जु
गति कोई जो गी जांणे जन हरी दास गुर ग्यान जड़ी ले
मुष की है आसा॥मन बिसहर मुष पांच अबिअगिण
ततमासा॥४॥पांच्यूं इंडी सरप मन चिंता जहर मुष लोइ
कीस्या त बन बिष नया डंक नाबि सकै न कोइ डंक ना
सकै न कोइ जुगति जांणें त बजा गै॥ नाग द वण हरिनं
रहै मन का मुह आगै॥ जन हरी दास मन उनमना गारहै
पवन सुरति संग ले इ॥ पांच्यूं इंडी सरप मन चिंता जह
र मुष लोइ॥५॥ जन हरी दास कही कछा रूप गे ज्यूं म
न भ्रमै काया बन मैं चोरै उरैन ही डर कन हीरे डेरै न बीड

[illegible]
ज्ञा२ गंप न गुफा मैं पैसि कार बैवा ताली लाइ सुष पा
या सतगुर मित्या सूता लीया जगाइ सूता लीया ज
गाइ हरि आप कूं आप बतावे घट घूंघट पट षोलि मा
ध तहां दरसण पावे जन हरीदास आनंद यहैं तहां मन
रहा समाइ गंप नगु फा मैं पैसि कर बैवा ताली लाइ
धापरापरैं पूरण ब्रह्म परम जोति प्रकास सकल बिया
पी सिव बसै सब तैं रहैं दास सब तैं रहैं दास वार न
ही पार निज तत्त बरन सिध प्राण तहां बसै हमारं ज
न हरीदास अंतरि आगह मन कात तहां निवास परापरे
पूरण ब्रह्म परम जोति प्रकास ४ सब को सरबस देत है
आपणी आपणी प्रीति सो हरि बकूं सरबस दीया या कछू
न लटी रीति या कछू न लटी रीति जीति गुण गो बिंद गा
वे सुनि मंडल मैं पैसि साच सू सुरति लगावे जन हरीदा
स आनंद नया ब्रूटी सबै आनीति सब को सर्बस देत है
आपणी आपणी प्रीति ६ सहर अधर पैंडा अधर कसर कर
म नहीं कोर धरम अधर रहनी अधर अधर सबद की घोर
अधर सबद की घोर अधर बरिषा घण आया जहां त
हां नर पूरि अधर गुर गम तैं पाया जन हरीदास नैंन
गरा तहां जम कर सकै न जोर सहर अधर पैंडा अधर क
सर करम नहीं कोर ७ निगम आगम मन तहां बसै जहां
साधं की गैर परमानंद पति परसतां छूटि गया भ्रम औ
र छूटि गया भ्रम और रामनै सुख पाया रूप रेष रस रं
ग काल नै जाल न काया जन हरीदास अंतरि आगह
प कुंचन का पेष और निगम आगम मन तहां बसै जहां
साधं की गैर ८ सो वृत सो वृत सो हरसी जागि जागि कहै
जाइ सो वृण जागण तैं आगम तहां मन रहा समाइ तहां
मन रहा समाइ प्रथम आपणैं घरि आया निरामूल निर
सिध आगम गुर गम तैं पाया जन हरीदास अबगति आग
म जहां मन रहा समाइ सो वृत सो वृत सो हरसी जागि जा
गि कहै जाइ ९ मन चैचल निहचल भया त्रिबेणी तटि
बास आषि अजब अंजन पड़या परम जोति प्रकास
परम जोति प्रकास अगह आघ बिन अघ जारणा सीत
ल परसरह से करम नै नरम निवारणा जन हरीदास पति

गिज्ञागी ज्ञुध कीजे गमान षड्गले ता थिरिगा जीतिका
यागटलीजे जन हरीदास हरि सुष तत्ता जमकरि सके
न चोट सकल बियापी सगिव्हे ड स्यादेह की वोट
ध मा ला ता होइ सेवा करे देह पल टि ता होइ नारि पित्ता
पलटि नी पूत तो छ देष्या सो चि बिचारि देष्या सो चि
बिचारि वा तया कास्यूं कहीये। आप आपते जाणि आ
पतो न्यारा रहे। जन हरीदास हरि सुमरता नरक रि
लो गेन गारि मा ता ता होइ सेवा करे देह पल टि तो होइ नारि
॥५॥५२॥२०॥ चाणिक कौ अंग॥ तकत तकत तकि
तकि थक्या चलत चलत गए हारि वकत वकत व
कि वकि वक्या मन कूं सक्या न मारि मन कूं सक्या न मा
रि देह सुष दुस्न ष दारण पार ब्रह्म सुष हरि स्यामाय
कारण। जन हरीदास सुष आगम तहां मन सक्या न धा
रि तत कत तत कतत किंत किथक्या चलत चलत गए
हारि॥ पढत पढत पढि पढि थक्या पढत अर्थ करत न ऐ अ
ध हरि पर हरि चास्या रूप हग लिमैं सैं दो इ फंध गलि
मैं ते दो इ फंध ना नर हरि न ही लीया पारब्रह्म प्रति
छाडि औरनां नो रस पीया। जन हरी दास नर नाजेना
राइन निरसि धा पढें पढत पढि पढि अपढ अर्थ कर
तन ऐ अ धा॥ सुण सुणत सुणि सुणि असुणि कथत
कथत गए को डि रस्त तरस्त रहि रहि वस्था पालिगया
मन फोडिया लिगया मन फोडि रोम न जि पार न की
या काम क्रोध अभिमान मोह माया मद पीया। जन ह
रीदास हरि सुष आगम तहां मन सक्या जो डि सुणत सु
णत सुणि सुणि असुणि कथत कथत गए कोडि
रण कादशा गीता पढी अनेक अर्थ अनेक पैडा दे
ष सो इक दहतें दे वात कहतें ऐक वात कहतें ऐक
सुरति तहां लागी नां ही परा परे पति छाडि धस्या कं डा
जल मांही। जन हरीदास नर बोले डरा सि वाणी विव
थि वमे का ऐकादशा गीता पढी अनेक अर्थ अनेक ध
केति इल मपडि आर बी सवका करे वयां न नी फिर
डनी या सूं मिले नोह वडा ही रा न पो हवडा ही रा न परम
सुष पक्ता नांही॥ आपा के अंग।

३५८

सुतो तिणका ज्यूं तोडे। विवधि दांत धरि चूरि सुसो सब
सिधि सिंघारे जन हरीदास कहीं एकहा रूप गे ज्यूं मन
थोर।५। मन पंषी काया सुबन डाली डाली चाव ऋां पि
अनंत हित सुष अनंत विवधि पंषबहै पाव। विव
धि पंषबहै पाव सुतो सति सबद न नांषै हरितरवर सु
ष आगम विवधि तरवर फल चाषै जन हरीदास चंच
ल चपल फूवन रमत तहां नाव मन पंषी काया सुबन
डाली डाली चाव।६। ज्यूं मन फेरै त्यूं फिरै मन कूं फेरै न
हि निरासा पूजा तके ब्याह ब्याद हरि जां हि ब्याह ब्या
द हरि जां हि मांहि अरु विकृत गांवें डीबी मांही दिष्टि
पहे सिधि रूप कहां वें जन हरीदास ऐसा जती हमवे
ष्या कलि मांहि। ज्यूं मन फेरै त्यूं फिरै मन कूं फेरै नांहि
।७। नांव तुम्हारो रांम जी लेतां लगे न दांम। मन निकमो
है बोरहै करै और ही कांम। करै और ही कांम गांन
रम्प्रीत रिनां ही हरि सुष सागर छाडि बसे विषका ब
न मांही। जन हरीदास जां मेमरे हरि सूं रहत हरांम नां
व तुम्हारो रांम जी लेतां लगे न दांम।।८।।४६।।१।। अ
था को अंग।। एक बीज ताका वृछ अनंत रूप बहै
लाद्र तात तरवर का फल में सब को रह्या समाइ सब को
रह्या समाइ बहै तेतन्नषा बहो धाया ता ही में उपजे ष
पे आपही आप बंधाया जन हरीदास हरि सुष आगम
तहां साधि एक को जाइ एक बीज ताका वृछ अनंत
रूप बहै नाइ।१। माया दरषत जहर फल आगम वा
र न ही पार च्यारि षांणि का जीव सब गरक फरक विस्ता
र गरक फरक विस्तार मुषी पेसे तां मांही जन हरीदा
स हरि तरवर सुष आगम तहां तेप कुचे नां ही बटदर सप
डि नु डि पक्या विवधि पंषजरि जार माया दरषत ज
हर फल आगम वार न ही पार।२। यान्ये जन सूं प्रीति है त
हां निरंजन हरि अंजन जे जन दोइ आस हां कारन ऐपूरि
त हां कारन जे पूरि जन्म ऐसा कहूं होवै नी कोडी सूं हेत
है घस्यूं ही राडो रे जन हरीदास गोविंद जो तजि मांि
न बडाई धूरि यान्ये जन सूं प्रीति है तहां निरंजन हरि
।३। सकल बियापी सं गिव्कसे हु स्वादे हरि की ठौर हुजा ऐ
गणि को न ही या अंजन का षोट या अंजन का षोट जा

कौबातमूवडुवध्यामेंराषे जनहरीदासश्रीगणरहे
आपकाश्रीगणथावै लोकासेतीप्रीतिमाधवेष्या
हषपावै२४ तांमसगुणरसबैरताराजसरसअभि
मानस्वातगगुणरसलुडायडी तहांजीवतोडे तां
नतहांजीवतोडे तानघरसचौथानहीपायालेष
धस्याधरक्षिप्याजीवजीवांकीथांयाजनहरीदास
कहीएकहांकाहिकोंगानपूजे ओन तांमसगुणर
सबैरताराजसरसअभिमान २ स्वादीसूस्वादीमि
लेजहांसमजितहांसाच मान अमानभैतैमनीस्या
दनचावैनाच स्वादनचावैनाच पांच इंद्रीरसपावै
जहांजीवकानासतहांहीलागाजीवै जनहरीदास
हरिस्वादतजिकोंणगहेकछौच स्वादीसूस्वादीमि
लेजहांसमजितहांसाच २४ ऊपरवाडेसेरीयाकहे
पीवसूंप्रीतियोबातासाहिवपरसिकैकोणमयाज
गजीतिकोणगयाजगजीतिरामसुषलहैनकूंही
साषीसबदअर्थकहैकहिजूंकासूंही जनहरीदा
सश्रीगणहरेराजाअनरसरीतिऊपरवाडेसेरीया
कहेपीवसूंप्रीति २५ पषापषीसबकोमिलेजहरन
स्यामुषनागजनहरीदासबोस्याविगतिकहांको
इलकहांकागकहांकोइलकहांकाग जषजीव्यो
राजारीवाअचवेसअंवकागकरकोविजचारी
बरणआडिअवरणजेजेताकेमस्तगिनागपष
पषीसबकोमिलेजहरन स्यामुषनाग २६ अजूंलि
गयानाडीकरीपरमसनेहीरामजहांतहांतेजीव
सबन्याइसहैसिरयांमह्याइसहैसिरधामनावनहै
नहीपायासकबहूसूप्रीतिअगमहमितरवरलाय
जनहरीदासगोविदविमुषकदेनभनिहकामहै
लिगयानाडीकरीपरमसनेहीराम॥२७॥द८॥२२॥
कामीनरकोअंग॥ कामगयंदअजतफिरेपवनधजा
फहराइ राजाजाघविसंचरकरेसोकामरूपहोइजा
इसोकांमरूपहोइजाइ संककाकीनहीमानैवस
तीमांहिजाडिकोसवादसकीजानैं जनहरीदास
गतिमतिहरेबुधिवरलकजूनबसाइ कामगयंद

३५५

[illegible] पाउ आरवी सब का कैवयान [illegible] च्यार
[illegible] च्यारी [illegible] इस्लम आरबी आधि मन चंचल निहू
[illegible] क छ्रुन आवै ता थिति तौ क छ्रुन आवै ता
[illegible] बीरादाया हरि संम्र थि बिचि बैटजन
[illegible] पीया जनहरीदास कहै रोक हा नर मन स
[illegible] च्याब्बेद च्यारी पल्ला इस्लम आरबी आ
[illegible] पल्ला मुम्नत सबै इस्लम आरबी आथि कही
आवे [illegible] नहीं तौ क छ्रुन आवै ता थिति तौ क छ्रुन हार
[illegible] तिरबेन कोई पार ब्रह्म पंथ्या डि अवधि
[illegible] जनहरीदास कहीरो क हा मन बसै बि
[illegible] पतपल्ला सुम्नत सबै इस्लम आरबी आ
[illegible] जमुम्नत म्रवणा सुन्या सबद बेओ गादि ज
[illegible] रसन के सबद का अ थे कैबहे तो नाइ अर्थ करै ब
[illegible] सब जाणे अगम आगम दिष्टात
[illegible] जनहरीदास ओग णाइ है नि
[illegible] नता दि सबसुम्नत म्रवण सुणि सबद
बेओ गादि [illegible] मती तौ बेवास हामा निछा निकी हां
हू मानि छा निबुडि जाहां जब जम पकडै बांह जब
जम पकडै बांह [illegible] पकडि धरता सूं मारे जनहरी
[illegible] गोबिंद त्रिभुवन कोण द रबार पुकारै माया
[illegible] मातै जाणे मांड स्वां मी तौ बेवास
[illegible] निकी हाह [illegible] जनहरीदास सबको पुसी
रागदोष रसद्दा थि अरस पल सकौ [illegible] गुण
इन्द्या के साथि गुण इन्द्या के सा [illegible] जन हर इम्नत क
रिदा बै साक्ष व रजी बालत दीर्त [illegible] जीवै कोई
जन [illegible] सी राम नाम [illegible] आथि जन ह
[illegible] सब कौ पुसी राग दोष रस [illegible] षपद हरि
[illegible] जो निसू दे न अरस प [illegible] जाइक जन हर यूं
[illegible] ड़ कबि लैला यूं लाडू कहि लै [illegible] रस बांटे जारी
[illegible] कपो लि प्रवे सामे [illegible] जारी जनहरी
दास कहै लिक हा चेल नहीं आबे [illegible] षपद हरि जोडी
करी हारि जीति सूं [illegible] जोगी [illegible] सामे दे षा
३ षपा बे कूल कदी सें हरि रोह मोदि [illegible] चिरज आ बा रेह
मोदि श्र [illegible] चिरज आ बे जहर दारन ३ षपदा बे नीसा [illegible] १

[illegible]न मांदिवमीमाथिले चेलीव्मांता स्सास
राजेतु जसातदेजानुपाक्षा॥(७)॥२४॥
[illegible]प्रुषना रिमै तेनदी नहीपा
[illegible]सारि डवनुदे पडिनदी जीकिनर्दवारि नदी वर्द
जीतिनदी त्तरियेंदे नेदिस्रचिरजस्रावे नदी काल
नदीजदकों पाजमतो किपवावे जनदुं[illegible]मजी
वतन्न[illegible]देत्रापस्रापर्णीजारिसुरघना रिमै तेनदी[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
पदणवे जनदीसास पेरो कादूदद्रस्रेगा[illegible]
चनी चेन नेमतेको इपत्सोणवा[illegible]मे दिवेना[illegible]
न्थ्रुणजसविस्तार भई मूंडो स्रानकीला[illegible]
रतातुडांगडार[illegible]सिस सानजाई[illegible]
तारकस्तारस्राडि[illegible]जा उपदाईजनदीवास[illegible]
इष्टतेजारुका[illegible]नेरे दिवेमडिस्तान[illegible]
विस्तार॥[illegible]॥[illegible]पदसकोस्रा[illegible]
जुराकारणपुंजनात्राइ रामतुजी विश्वा[illegible]
मोलिकजाइ जन[illegible]मौलिका इजीव[illegible]
तरिसुमिरा एउरिश्वारि स्रानतइ षन स्राणी[illegible]
सतविसुपस्रामफेरितकामनता इस्वा[illegible]
कारपकृतत्राह[illegible]मनकजनो किवातन्न[illegible]
कत्तीए तजिकामको[illegible]निमीनरामरा[illegible]
मरांधतहुं[illegible]राजमचेत[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]जनवीवासदरी[illegible]
[illegible]

...राम आइ दाघ मगन मन मोहनी ना प
... पी अैसा गा मांइ चोरि चंचल चितली
... सब लल कांम अपणो बसि कीया जन
... कहा बसैत नाति करि बाधा पांन
...या कु क्या फरोघे आइ शाघटत घटत
...किसा गा काल... जन हरीदास जी
... आप आपणी बोल्या आप आपणी बोल्या तु स
...जी नैं सा च सब बद अपणा सु तो तब ज़रि
... घट त घट त सब थूं थ ज्या... किसां ण
... जन हरीदास संसार सुष सो... अगनि की
... घटै का हला जले द कु अगायारी ति द
...गायारीति कत्ता पुरष कत्ता नारी क्रोध अगनिप
... धर ... सु पनारी मोह लु ...मैं तैं सु
... बिण्या गई बप जाति जन हरीदास संसार सुष
... अगनि की प्रीति नारी के पषि नर ... पांन प
... किरि दिषे आकास कू ... की आस
... की आस सकति ... कान ... धरू
... ... जन हरीदास नर जो
... जनि ... दास नारी के पषि नर ब
... पर ... जन ... नारी नां मी
... बि था बिकार कपदी पसु ... लग जनि बरि
... मन ... जनि ... तन मन ... ति दो न
... ही जे कांम करद करि ... की या
... कड़ि ... राम ... संसार जन ह
रीदास भगी नरो मोही ... बिचा ... मसबनमें
... सकल ... की सो बरा ... सुतत पहरणा मु
... नि ... बिगो
... जारकि
... जन हरीदास ... रूप पार मगी
... सकल ... मैं ... सकल सु
की सो बरा जनपि ... बि ...
घट नारी ... सकल ... लोक ... क
... कां... सोम ति काची ... नचारो को
... मा ... मरीया ... नाची जन हरीदास संत न ... पा

सुरमेतेबुधिकपजे
बसैदिनदिनबधतोजा॥२०॥लेमेतेबुधिकपजे बुरेमतेबिष
बुरेमतेबुधिजा॥२॥लेमतेगोबिंदनजे बुरेमतेबिष
घाइबुरेमतेबिषघाइ॥पापकातसरबोवेरामनामबू
तब्याडिकालकाघरमेंसोवे॥जनहरीदासयाजीवब्धि
चलतदेहकेजा॥२॥लेमतेबुधिकपजेबुरेमतेबुधि
जा॥२१॥धनिमातामेणावतीपुत्रकीयादरवेस॥निज
बुधिग्यानबताइकरि॥असलिदीयाउपदेस॥असलि
दीयाउपदेसकालपेंप्राणछुडाया॥जोसागतेंकाढिन
थकाचरणालाया॥जनहरीदासगोपीचंदनेनेनया
मिटिगयामोहअदेसधनिमातामेणावतीपुत्रकीय
दरवेस॥२४॥१२॥अं॥२४॥रागथाईकोअंग॥जहांज
लतहांहरिथलकेरेथलततहांफिरिजलहोइ॥उद
रतितेरीबापजीमतिगतिलषैनकोइ॥मतिगतिलषै
नकोइरामतुम्हसबकेदाता॥जीवहरांमीचोरअहं
मायामदिमाता॥जनहरीदासहरिपरसतांगहरबिथा
गतहोइजहांजलतहांहरिथलकेरेथलततहांफिरि
जलहोइ॥१॥जहांहरिराषेतहांमेरहूमेंराषेतहांनांरि
हमेंराषेतहांमेंरहूंतोमेंरुडामांहितोमेंबूडामांहि
नाथयातुम्हसूंकहीरापारबूलपतिछाडिओनमारग
कूंबहीए॥जनहरीदासगोबिंदबिमुषन्हरून्हलाजो
तिजहांहरिराषेतहांमेंरहूंमेंराषेतहांनोहि॥कहांअ
मापकामापीयेवारपारमद्धिनांहि॥सकलबियापीसगि
बसैतांहिछाडिमतिजांहि॥तांहिछाडिमतिजांहिरोग
मेंरोगनहोईआसपासमिलिमेलिपारनहीपावेकोई
जनहरीदासअबगतिअगमजहांतहांसबमांहिक
हांअमापकामापीयेवारपारमद्धिनांहि॥२॥रामरजागि
रसरसरूसरतहांफिरिगिरहोइरंकरावराजासूरंक
लटपुलटपषहोइतलटपुलटपषहोइनांवकरत
तोकरसीपालीनरेनेडारन्त्याघालीकरिधरसीज
नहरीदासनदबुदकथाअसासमरथसोइरामरजा
गिरसरसरूसरतहांफिरिगिरहोइ॥३॥अरिजनअ
नरथहरणगरबहरणगोपाल॥जनहरीदासअकरण
करणहरिअकलसकलबिसपालहरिअकलसक
[illegible] नाथानेनिरधारं

नपदीमनिकाइ आपआपकमाई
आपआपकहाडिकमि आपआप
पनहीअ रामनंनेसुपजोए तासु
जनहरीदासगोवि
कोइ आप मारिकार आप
कमदेकोइसादास्योत्
कुसाहिबकै दाद यकुसाहिबकै
रामअदीहेत गाइगहोसत
मन्दलमेलत ताएज नलामतयोद
कोइ जनहरीदा
आमित्रपणीकहै
आदि माने जनकीज भरन
चततततंमि
जनदीद चनांवनि
जेरेचा मुजा करिवरिनाव
मत्ताराधरिम्र
पणमससी चरन
मदिदज जानाइडाव जे
प्रान वी
कपडलान
संगालि
जरकोर विधिवा
अग्निरि गोबसमामाई
प्रानबा कं दाजि जे
नामां स्वाजी
मामाहिमवमो
जागीज
आजी
साधि किरघाद्द सबसे
जद
नादवा
रामना दिगोवे
सरफर अरविरद

पआपकूंमारिकसिआपआपकूंषाइआपआपणोना
सकरिन्याइरसातत्तिजाइन्याइरसातत्तिजाइआप
कूंआपसंतावैकाचमहलिविसिस्वांनडसैडसिडस
गमावैजनहरीदाससबआतमांएकरूपव्हैनाइ
आपआपकूंमारिआपआपकूंषाइ॥२॥१०४॥अ॥२४
सूरातनकोअंग॥सूरवीरसांचेमतेसाचारोपेपाव।पेला
अवद्दलजीतिकरिरांमभजनसूंनाव।रांमभजनसूंनाव
भेदकोइविरलाजांणै।गगनमंडलमधिपैसिपांचपारका
पछितांणैजनहरीदाससांचेमतेरमैसदाचाडाव।सूरवी
रसांचेमतेसाचारोपेपाव॥२॥१०५॥२०॥भेषकोअंग।
कालरिवाहैषेतसाहकीपूंजीषोवै।भेषधस्योजीनरम
परमगतिजाणिनजोवै।परमगतिजाणिनजोवैसुमीष
लेसामांही।चितमांहीवितविपतिनांवनारांइणानां
ही।जनहरीदासमसिकरिलगीवहैडिमसिसूमसिषे
वै कालरिबाहैषेतसाहकीपूंजीषोवै॥२॥निगुणान
रकोअंग॥औगुणग्राहीजीवकीसुणोसंतएकबात।
गुणछांडैऔगुणगहैतजिइंम्रतविषषाततजिइंम्र
तविषषातहरिनावहिरिदेनहीधारै।ऊंवधिकाचकरि
गहैहाथसूंहीराडारै।जनहरीदासआवूंपहरचडैगे
तैरैघात।औगुणग्राहीजीवकीसुणोसंतएकबात।
।२।चंदनवृक्षतजपाडिजहरतरवरजडरापै।पारब्रह्म
पतिछाडिबिवधिबोणीनस्नाषै।बिवधिवाणीनस्ना
षैषेपघरिआईषोवै।ग्यांनसिंघासणछाडिसूलसज्या
सुबिसोवै।जनहरीदासहरिसुषत्रगमदुषसदारपासु
षआषैचंदनवृक्षतजपाडिजहरतरवरजडराषै॥३
।हैरानकोअंग॥कहतकहतकहिकहिअकहिसु
णतसुणतसुषसार लहतलहततलहिलहिअलहि
अगमवारनहीपारअगमवारनहीपार।नावकेहूंधस्या
नजाई।निराकारनिजसारसाधपरसेसुषदाई।जनहरी
दासअरचितअरतहरिसंमथसिरजनहारकहत
कहतकहिकहिअकहिसुणतसुणतसुषसार॥१॥
हेतप्रीतिकोअंग॥मेरामनहरिसूंलग्यापहरिमेरा
मनमांहिमैंहरिकूंछाडूंनहीहरिमोहिछाडैनाहि

मनचेचलानिहचलतहां जमका
जनअनरथहरण गरवहरण गोपा
कहाछिहैकरताकैसहोइ जनह
सहगतिसुपोनकोइ सहगतिसुपे
कहाजांगे हरि-आप-आपण
…गो हरि जनहरीदासरायेतहां जहांद
आसनाथकैहांछिहै करताकैसहोइ
…सलर-अगमेहेपकुंचेबिरलाकोइ साति
…री सातिबहीतेहोइ सातिबहीतेतेइ मेर
… कुरा ब्रह्म अगाधकरमकोटा सब
…रमिडर निरंजनगुण तहांमन लगैनलोइ
…हांगहमअगमेहेपकुंचेबिरलाकोइ ॥७॥
…तब थीसोमतिअबनहीं
…लाद दोषीसबसोषी नया चोरनया
… साहसाचलेसोदेलागा नजे
…आंन अनरथअरिजागा जनहरीदासव
…सब घरिसदान आद तब थीसोमतिअब
…लाद … रागदोषहरिदेनहीकरसं
…सुवपि … ठेनही श्रवणसुणेनबोल
…सुणेनबोट नावन्नेसुषपाया तासुषिरहाम
…सबलोटीआया जनहरीदासहरिसुमिरता
…राग दोषक्षिदेनहो करसंकरैनचे
…साचसबदहीरायरार
…बिरलाकोइ … सोफिरिहीरातोइ
सोफिरिहीरादे … जनहरीदासजी
बहोड़ि कोमहीराकाकीजे जैसा किसबतेसाभतन
आपपडे … साचसबदहीरापराराषेबिरलाके
… सिलसिज्यानिरगुणद
… जनहरीदासनि जनिरषतं
बडी … बडी … सिरेराम निजरिजैनि
जतनआवे सनमुषदेघसाचे …
आधेसबद … पराविपरवि
निजयारबूहीराजनहीरां जिसा …
सिलसिज्यानिरगुणदसा ॥ …

हरिहां जन हरीदास न्हें नया निसंक साधन हीडर
तहै ॥७॥ पांन गुफा मैं पैसि आनि परजारिए आव
का अनि मांन तहां लेडारीए रस पांच सात गुणती
न आनि मुखि जारीए हरिहां जन हरीदास ब्रह्म आग
निप्रकास आगाध बिचारीए ॥८॥७॥२॥ परचा को
अंग ॥ लोकलाज पषनेष अपूठी चालहे निवेणी
तटि ध्यान तहां एकलालहे गरव सिला करि ह्वइ
हे बड सालहे हरिहां जन हरीदास नजि पूरण ब्रह्म
आगाध अमोलि कमालहे ॥१॥ अलष निरंजन नाथ
समाथी सूर है नजि करण हार करतार सराम ह्वरि
है दीनानाथ दयाल सबन का मूर है हरिहां जन
हरीदास तेजपुंज परकास अमंडित नूर है ॥२॥ सति प
लट्यो मन मांहि अचंनालो तहै नीरबूंद निरमोलि
क हीरा होत तहै हीरै हीरा वेधा जाइ पोत का पोत है
हरिहां जन हरीदास ७ निहीरा की जाति हमारा गोत
है ३ परम सनेही राम तहां मन जात है बंकनालि
बिश्राम सदा रस पात है नजी एसमता राम इसै बड
घात है हरिहां जन हरीदास हरि परम उदार अपार
हमारा तात है ४ गगन मन मधि पैसि आगम तहां जाइ
ए परम जोति परकास परम गति पाइए वारपार मधि
नाहि कहा कहि गाइए हरिहां जन हरीदास तेजपुं
ज रस एक तहां मन लाइये ५ जन हरीदास ल्यो लाइ
तहां चलि जाइए जहां न व्यापै धूप सील नसंताइए
बरषा बारामास तहां बसि जीजीए हरिहां जन हरीद
स आगम पियाला हाथि सदा रस पीजीए ६ जन हरी
दास नजि राम न लीय है टेक है जाइ बसे ता देस त
हां रस एक है बंकनालि बिस्राम सदा हरि पाइए ।
हरिहां जन हरीदास झिलिमिलि झिलिमिलि होइ
तहां मन लाइए ॥७॥२८॥२॥ काल को अंग ॥ जीव
सूता नीद अघोर मनी मद घात है काल करत है ताक
मकडि ले जात है काल तमाचा जोरि लगा मुख मुंसत
है हरिहां जन हरीदास नजि गरब करण गोपाल व
च्याकी घात है २ नर सूता जागो नाहि नींद की छाक है
माया छाया बीर सत वर आक है समझि पडी घर हरि

कारनिरलेप साधकूं पेडे लागे जनहरीदास हरिसुमि
रतां जुराकाल नेनां हि मे राम न हरि सं लमपा हरि मेरा
मनमांहि ॥२॥ २२०॥ अथ दया निरवैरता को अंग ॥ च
तीकूं दीजे धका तब ही अनरथ होइ तंत मंत का जाप
जपि जुराकरी मति को शत्रुराकरी मति को शजीव पेल
उषपावे सबद जगावे बीर बीर अपणो नषि आवे जन
हरीदास साहिब सहै तब वैर पड तहै दोइ चींटी कूं दी
जै धका तब ही अनरथ होइ ॥२॥ २२१॥ अंग ॥ १४॥ दया
जउजी या सपूर्ण ॥ अथ चेतावणि लिष्यते ॥ श्री गु
रु देव को अंग ॥ गुर संमृथ सिर जन हार सनेही राम हे
साजि करण निधि करतार जजन सकां महै विलमन
कीजे बीरे रे काजा महै हरि हां जन हरीदास न मल
अंग अनंग अजब बिश्रांम है ॥२॥ २॥ सुमिरण को
अंग ॥ चंद सूर रथ अटकि निरंजन पाईए उलटी पंष
संवारि तहां मन लाईए तजि घट औघट घाट अगम त
हां जाईए हरि हां जन हरीदास गगन गुफा मे पेसि गरक
गुण गाईए ॥ सील संतोष बिचारि सपांन जगाईए उ
लटी पंष संवारि अगम तहां जाईए निगम अगम सो
क तहां मव्हाईए हरि हां जन हरीदास हरि तरवर में
बास अगम फल षाईए ॥ अपांन चक्र ले हाथि सबन
षंड पेलीए परम जोति विश्रांम तहां मन मेलीए बरि
बारा मास अमीरस फेलीए हरि हां जन हरीदास आनंद
रस सब कूं व पवन सपेलीए उ रांम नाम ब्रतधारि विषै
बिषडारीए सुषमन पवन संबाहि त्रिवेणि सटारीए
पैंडा करण जीर दे बिषा व धारीए हरि हां जन हरी
दास जे लटा पवन निरोधसपारा मारीए धारा जा रांम बि
सारि सजन मन हारीए मो ता बैरा मोह मद हारि पमारीए
कांम क्रोध अभिमान अगनि मुष जारीए हरि हां जन ह
रीदास नजि रांम सकां म सुधारीए ॥ पारब्रह्म सू प्रीति
सरीर सि बिचारीए इ जीरी तिअनासिहा छते डारीए
कांम क्रोध मन मेल अगनि मुष जारीए हरि हां जन ह
रीदास अन्यास अलष उरि धारीए अबतो रो क अन
म उलटि पर धरत है सुनि मंडल मैं जैसि स्मारं न कर
त है नजि अलष निरंजन नाथ अजप नषि जरत है

ष्यासब्बातेहे ४ लोव निरंजनन्हेंही जागिरबुगलो
बेगआइनडांणकागेरे नवप्रणायाश्सिाइन्तुकदी
याहाथिरे हरिहांजनहरीदासजोश्रुतिकमाईसाथिरे
नाईसनकोबातसदाइरहतेहेच्चूठिजाझीकाल्हि
साचकरिगहतेहेयाक्तिनरोसेलागीऊपहकूबहे
तेहेहरिहांजनहरीदासरामसनेहीसाधरामहीकहे
तेहे६घडीघडीतनजाइनलागेसाचसूंकंचनका
रसूंडारिस्यामिलिकाचसूंपीवसूंपरचोनांहिकहे
वेरावेरहरिहांजनहरीदासहरिनेहनजांनेबावरे
७गौंदकरेगरडडाटसदादरबारमेंरामसनेहीआडि
ज्ञक्याजगिआरमेंचोरासीलषचोटब्हेगे धामेंहरि
हांजनहरीदासबेरानवसेधसिषारमें टकरगहिमूं
थमरोडिमद्धरमनिनांवेता नांनां बिधिसरागरजामें
गांवता सुतबनितासुषसेफमहलगढमालीयाह
रिहांजनहरीदासतेजोधसजेगलिजालीया ए स्यो
तेलफुलेलसआगिलगांवता नांनां बिधिदेहसंवारे
रमहलमेंआंवता षांन पांनब्हेतोलोग षुसीसूंषातेहे
हरिहांजनहरीदासतेअंतिसमूलाजातहे२०आइज
रोषेबेसिषुसीमनकीजता कामकोधअभिमानअगरे
नमुषकीजता देतालेतापोसिअहमनिनांवता हरिहां
जनहरीदासतेजोधगयापछितांवता२१पडेदारहता
पोलिपहरवाजागता परधनलेताचूरिकहरहोइलाग
ता सूरबीसंग्रामसगेरिणगाजता हरिहांजनहरीदास
तेअंतिगयायूंबाजता २२आइतमतपरिबेसिछत्रमि
रिधारता हहदिसिजोधदेषिमनीबिस्तारता परधरपरह
लचूरिघरलेघसिमारता हरिहांजनहरीदासतेन्हजन
कालपडगाकरिधारता २३गोपीग्वालनचाइगाइजन
चारता मुष्टरामूंधीमारिपिसणषसिमारता कनूंकह
गरतोलिजोरबिस्तारता हरिहांजनहरीदासचेअंतिजा
यातनघाडिबहेतेतनधारता२४नौग्रिहपायेबांधि
षुसीकेबोलता मोहमहलमेंबेसिषड्गाक [illegible]
अऊंगांविजरिधारिबहेडोडिनहीषोलता हरि [illegible]
रीदासका लिहल्यावहकेधमनीमहबोलता [illegible]
ए॥श्रांप॥मायाकोअंग॥मोहदोहमेंमस [illegible]

कालकीलाकहै हरिदासजन हरीदास रांमनजन बिरि
ग्यालसबात बे पाकेहै।२ जीवमोहलपेटामां हिग
रकगडि जातहै। कालतमाचाजो षुसी सूं षातहै।सं
कट पड्यां दुषहै।३ ललफिमरिजातहै। हरिदासजनह
रीदास नजिपरम सनेहा रांमनजन की घातहै ३ रामन
भजूतला डि अ्रानसुष लेतहै। जहरपियाला हाथिपीव
गासंहैतहै। कालतकतहै तो हि अ्रगांन अ्रचेतहै। ह
रिदासजनहरीदास सास अ्रमोलिक अ्राथि ऊपरकू
लेतहै।४ राजारांमबिसारिकहां घरकरोहगा लष चौ
रासी जोनि जनमि धरि मरोहगा।५ अ्रा काल की बंदिस
डुषनरोहगा। हरिदासजनहरीदास अ्रनवासदम मा
स अ्रगनिमु षिजरोहगा।५ बूडाहुवा बीरनैनन्नीज
रतहै। कालपकुता अ्राइ अ्रजूनहीडरतहै। मोहनदी
मे पैसि बूडि कूं मरतहै हरिदासजनहरीदास रांमसने
हीसाधजजनहीकरतहै।६ कालजालकीचोटनसू
केजीवकूं मायाकेसुषिलागि बिसारे पीवकूं। बिषमू
लीमति हीण षुसी सूं षातहै हरिदासजनहरीदास तेअ्र
तिसमूलाजातहै ७ कहै अ्राथि अ्रौधूतसकि कापूतहै
रातिद्यौ सजकनाहिलगपाकोईन्नतहै लफिनसु
लज्यामूलसुरतिकासूतहै। हरिदासजनहरीदासका
लनद्याहै ताहि हूतपरिहूतहै।। ८।२५॥४॥ चितावि
णीकोअंग।। नरदेहीनरध्यारिऊपहिरफातहै। अ्रास
नदीगरकनजनकाघातहै। मोहदोहषषमांहि पसूप
चिजातहै हरिदासजनहरीदासनजिरामअगाधसाध
अ्रमरफलषातहै।१ बिषबनमांहीपैसि बिषैरसषात
है। जहांतहांतन ध्यारि बहोडिमरिजातहै। जीवणदे
षिनबातकाल [illegible] कोघात हरिदासजनहरीदासअ्र
नधरमडरि ध्यारिडहत्तातहै।२ काया बिषबन बिब
धितहांकूंराचौरे बिषफलफूलअनेकषात हीमा
चौरे कोटलागेपाइतहांपडि पाचौरे हरिदासजनह
रीदासलष चौरासी घट ध्यारिपहीमपरिनाचौरे ३ होछी
छायादेषिजहरफलषातहै। मनि चडी जहरकी छाक
बहीडि हत्तातहै राजारांमबिसारि सनरकां जातहै।
हरिदासजनहरीदासनजि पूरण ब्रह्म अगाध अौरमि

हरीदास ग्यान षडग लै हाथि काल नै मारी हो ॥३॥ पद ॥
ग्रा ॥७॥ सूरातन को अंग ॥ नडो दाक है कंपती रगो ली
चहो सुनट नता के चोट चोट सन मुषि सहै ग्यान षडग ले
हाथि न फिरि मूवा फिरे हरि हो जन हरीदास सूरवीर अ
ति जीति सिद्धि का हो रहै हो समंद रूप संसार अथरु विचा
ली हो बाग वागर सरो कम पवन मद्धताली हो पिसण कपरि
चोट सन मुष घोड़ा घाली हो हरि हो जन हरीदास पेला अ
रिदल जीति परम ढष पाली हो ॥ जोग पंथ मैं पैसि सपूवि
न फेरी हो ग्यान षडग ले हाथि सबल गढ घेरी हो ल्यो डेरी
करि साहित सांमन जेरी हो हरि हो जन हरीदास अलष निर
जन नाथ निरंतर हेरी हो ॥३॥ सजीवनि को अंग ॥ हरि पू
रण ब्रह्म अगाध अषंडित राम है साधवे से ताहे सिमुलकरी
न है कांम है जुरा काल नै नां हि सीत न ही घांम है हरि हो
जन हरीदास परापरं पति ऐक अजब बिश्रांम है ॥१॥ पति
ब्रता को अंग ॥ रजा तुम्हारी राम कहो त्यूं मैं करूं मन गरी
रूप वरन संबाहि अट किरतल दो धरों ब्रह्म अग निमेष मि
अलष अजरा जरू हरि हो जन हरीदास राम नंम ब्रत ध
रि न अग्रांन बुतज रिधस्ते रयी वजी सकाजीव निरंजन न
हरैं गुपजिन बिनसे मूलिन आवे जाइ है परम पुरष [illegible]
स साध मन लाइ है हरि हो जन हरीदास परगट [illegible]
रोकको पाइ है ॥२॥ साध को अंग ॥ विद्या कैर [illegible]
ना हि रिनादो वरसे मेरुन दी घस्यो हि रि [illegible]
[illegible]
[illegible]
सना हगर कगुर ग्यान मैं वाजे अन [illegible]
हरि हो जन हरीदास धुनि ध्यान सदा वि [illegible]
वत सांसी व्रीक कोजा णि है मन को [illegible]
अांणि है जोग मूल की वात सवात [illegible]
जन हरीदास पूरण ब्रह्म अग [illegible]
मन को अंग ॥ चंचल मन को [illegible]
बिसहर कारूप है फिरिया [illegible]
[illegible]
[illegible]
मारी करत है हरि अ पअ पणा [illegible]

षलगा।नहारामनामसूप्रीतिप्रगटमायासगीस
३८५ जीवह्रैमिलाइसदाजागेनगी।हरिदासजनहरीदास
मायातगीछायासेसारसुतोसोथोवगी।२ आथिबसत
हैमाथिसदाहीरहतहै।कामक्रोधअभिमानसआसा
दहतहै।तिष्णातरंगअनेकतहामनवहतहै।हरिदास
जनहरीदासबिरलाकोईसाधपरमगतिलहतहै।३ मा
याछायादेषिकोणसुषलेतहै।प्रीतिकैरेयारीतिकपट
कादेतहै।जन्मअमोलिकजाइसकसरषेतहै।हरिदास
जनहरीदासनीसनिरमालतिदेतहै।४ मायाचढीसि
कारतुरीचटकाइया।केमारयाकेमारिपताषालाइया
जनहरीदासनजिरांमसकलजुगघेरीया।हरिदासमुनिज्ञा
नबेदरबारितहातैफेरीया।५ मायाकादलदेषिसक
लकादरे।षिसिचाल्यातजिषेतधकासूधसिपरे।कजल
नभजनांकिसिकालेकापरे।हरिदासजनहरीदासहरिने
दनजातीबापरे।६ मायासंमनलाइकहासुषसोइरो।
हीराजन्मअमोलिकषोइरो।गरभवासदसमास
तादुषपाइरो।हरिदासजनहरीदासनजिरांमसबेहचुका
इरो।७ जनहरीदासतजिआननजोहरिनरसू।मायाका
दलदेषिमंडाहैजोरसू।नरनरवैसुरमारिलीयाषगको
रसू।हरिदासकासीपीलाटारनधसीदसवोरसूं।८ केआवे
केजादिचलाकलोगहै।मायामोहविजोगइहैवडरोग
है।जकरजडीजीवषादिकहैयहलोगहै।हरिदासजनह
रीदासनजिरांमनयानलजोगहै।९ सकलबृह्मसासारत
ह्यामनलाइरो।कालगरासैआइबेहोहि।पछिताईरो।रहणि
नहीनिदांनअकेलाजाइरो।हरिदासजनहरीदासतसमात
निरंजनमाहिरो।॥१०॥अथपदाआंदासअमदेसकौअंग॥जो
गमूलकीबातसघातविचारीये।सांसोदस्याछाडिमनी
सबडारीये।जपीयेअजपाजापआनध्रमसबडारीये।ह
रिदासजनहरीदासअलषसजननधारीयेअलेषजुतारीये।
१ निबेरीतीतटिवाससहाक्यूंनजाइरो।रोपासाएडावृसीस
लेन्हाइरोवोछेपाणीदेसिसंमेदक्यूंछाडीरे।हरिदासजनह
रीदासनजिअलषनिरंजननाथतहांमनलाडीरे।२ मनि
षजन्मनगहाथिकपहैक्यूंडारीये।मोहमदलैमैंसोइसज
न्मनहारीये।नषसषलागारोगसरोगनिवारीये।हरिदासजन

चल्या अपणै मत मिलाइ ४ जो कछु गुर सिष सेक
स्या मोजे गुर पैं होइ जनहरीदास करि बंदगी गुर गो
बिंदन ही दोइ ५ गुर न्है गोबिंद नजो सेसा ही सिष
होइ जनहरीदास मत ऐके हैं तब कहूं णसुणणाकूं
वोइ ६ जनहरीदास गुर गारुडू बिष फाडै फडि जाइ
सिष संग्रितो गुर क्या करै सिष फिरि बिष ही खाइ ७ ज
नहरीदास गुर क्या करै सिष मूरिष गुण जार ह्र मत
पाया नां पीवै बिष का पीवण हार ८ ग्यांनी गुर सं सि
ष मिलै सो सिष भी ग्यांनी होइ ९ ऐको ऐके न जन
तब कहि बेकूं दोइ १० बालक देह्र आस की आप रसा त
लि जाइ वा ग्यांनी गुर सं मूरिष न ला मकेन और हु
लाइ ११ सिष साचा साचे मते गुर दीरघ अमनास रहि
तो एको ऐके बस्त ऐक दिसा वरिबास १२ सिष सता ज्ञा
गेन वारै णि पकुंती आइ वा सिष के मति गुर मिलै
तो अंतिर सात लि जाइ १३ पश्चिम देस पंथ पर है रै
पूरब देस माइ वा गुर के मति जो सिष मिलै पारि
पकुंचै जाइ ॥१४॥ ५८॥ २॥ सुमिरण को अंग ॥ सा
हिब जी की बंदगी कीजै तन मन लाइ जनहरीदास
पैलौ तहां जहां काल न परसै आइ १ अबिनासी अं
वे पद अपणो हिरदे धारि जनहरीदास न्है मते च
नै बस्त बिचारि २ नांव निरंजन न्है मला न जतां हो
इस होइ हरीदास जन यूं कहै न्ह लिपडौ मति को
इ ३ हक करि को इम तिम रो पै रैं न पहुंचे हाथ जन
हरीदास न्है मते न जो निरंजन नाथ ४ ध्रू रिसा हि
त बिसारिमां कहि औरके साथि लोक लाज बहि
जाइगा हीरा न आवै हाथि ५ पडल हगो ता मारि क
रि अंतरि अजपा बिचारि रांम न जन आनंद सदा
करै न आवै हाथि ६ सनकादिक जोगी जनक मति
गति लेषैन कोइ जनहरीदास ताकूं नजो न जतां
होइस होइ ७ मै हरि सुमिरयाइं न ही बातक हत हूं
तुफ हरीदास जन यूं कहै मीठा लागै मुजा ८ मै थूं
सु बहा है न ही मीवा लागै मो हि करम कठिन
के करा ग्यांन सं पलै सोहि ९ मै हरि सुमिरण
नही मन कूं मारि अघट हि जनहरीदास

सबषलकरामसुषच्याडिअगनिमैंजरतहै।
हरीदासमनभलहाचढ्याआकासिमास्यानहीमरत
है।।३।।६३।।२३।।अबधीलरकौअंग।।अनंतघाटघ
टमांहिसदाही घडत हैकंचनहिरदामांहिकाचलेज
डतहैंभ्रमजडचाल्याजोहिसआषडिपडतहै।हरिहा
जनहरीदाससबषलकदिवांनाआथिकहांकूंषडत
है।१बादबिबादनिवारिबहोडिपछिताइगाहरिसं
गांहीहेतरसातलिजाइगामदनमोहगुणमांहिआरक
लपहाइगाहरिहांजनहरीदासराजारांमबिसासिमो
लाषाइगा।।२।।६४।।अंग।।२४।।इतिबंदासंपूर्ण।।अ
थसाधीलिष्यते।।श्रीगुरदेवकोअंग।।जनहरीदा
सके ग्यांनगुरु सतगुरसिरजनहार।निधिपाईंन्हैंनया
अरसपरसदीदार।१जनहरीदासकेग्यांनगुरसाधंसेती
प्रीति।साधसदागोबिंदन्जेदेहीकागुणजीति।२जनह
रीदासकेग्यानगुरा गूदडीयांसूंनेहा३जुषसुषदोइब्यापेन
हीगूदडीयांगुणएह।गोरषदमोरेगुरूबोलीएपारा
हमारीचेलीसत्तिकासबदसहजयरिषेहूं।इहिबिधि
डरमतिपेली।५माईमूंनूंसिधकीजन्नेनिरंजननाथ
हरीदासजनयूंकहैसिरिगोरषकाहाथ।६दिहिदईस
लगुरमिल्याहारालीयासुन्माइ।हरीदासजनजौंहरी७
षोटाकदेनषाइ।८बलतीअगनिबुफाइकरिसीतल
कीयाअंगार।जनहरीदासआनदमया।सतगुरकाउ
पगार।९बलतीअगनिबुफाइकरिसीतलकीयासरी
र।जनहरीदासगुरगमतैपीयानृमलनीर।८जनहरी
दासनाथकाबालकरहैनाथकीछाया।पूरणब्रह्मप
रमसुषदातानिस्नैनिरंजनराया।९जनहरीदाससतगु
रसबद अंतरिलागाबांण।हारहैरलहरिमनदस्या।हत
भतलहैनजांण।।१०।।अं।।१।।गुरसिषपारिषकोअंग।।
गुरगिरहीमायागहैसिषबैरागीहोइ।जनहरीदासम
तकूंमिलैप्रगटपेंडादोइ।१गुरलागासंसारसूंसिष
अंतरिहरिसाच।जनहरीदासमतकूंमिलैबोहकंच
नलोहकाच।२गुरसिषदोऊंकविचल्याजनहरीदासह
रिमांहि।सिषचालैगुरबाकुडैतौवैगुरसिषनांहि३ज
नहरीदासनेसिधतजिजनैबेगजाइ।सोगुरसिषकूंले

थिपत्तोपसेवा बिवधिमधिमोतीयनकीमाल जनह
रीदासबैलोतहांजहांगोथ्रीगाइनग्वाल॥२३॥आध्या
इ कबीरका॥ग्रगमवारनहीपार हरीदासजनमिलिर
हागहिगुरग्यानबिचार॥२२॥जनहरीदासग्रंतस्त्र्यास्ह
हागहि परमजोतिपर्कास ग्रगमवोर ग्रानंदसदा मनकात
हांनिवास॥२३॥तिरतातिरसातहांगया जहां ग्रचंवा
ग्रेरचित्तकपटीपकुचैनही तहांसाधाकीवोर॥२४॥ने
नागानैनया हरिसकत्तबियापीरेका हरीदासजन
यूकहे तासुधिपकुतापुरषग्रनेक॥२५॥पद॥५॥चि
तावणीको ग्रंग॥ग्रादिग्रंतिगोबिंदसगा हजासगा
नकोइ॥जनहरीदासहजासगा सोफिरिवैरीहोइ॥१॥जन
हरीदाससंकटिपड्या सगानसूजेकोइ रामसगासोपर
हरया ऊससलकसंतेंहो इ॥२॥ घटछूटेफाटेतिमरमनध
रिसकेनधीर॥जनहरीदासतबहरिसगारथबिसारबी
र॥३॥करातिकासोवणां जीवणग्रेसाजाणि॥जनहरी
दासहरिनजनबिणि तारूमांहीहाणि॥४॥नषसषसू
पैदाकाया जाणिकचितस्यामोर॥जनहरीदासहरिबी
सरया सोवडाहरामीचोर॥५॥बीजचमकिग्रान्नेडेरा पू
सतिजाणीदेह हरीदासजनयूकहे रामनजनकरिस्ने
ह॥६॥मरणांहेजीवणनही जीवतमरेनकोइ॥जनहरी
दासजीवतमरे सो ग्रबिनासी होइ॥७॥ जामुषिरामनऊच
रे ग्रानकथामनचोल॥जनहरीदासतेमानई कागबिल
ईकोत्ताल॥८॥जामुषिरामनऊचरे स्वनांबेरीहारि॥जनह
रीदासतेमानई सूकरकीगणिहारि॥९॥प्राणनाथपति
व्राडिकरि ग्रन्नहरूलाजोहि॥जनहरीदासतेमानई न्या
हहलाहलघांहि॥१०॥ जनहरीदासया जीवको उपसुम
चालेसाथि॥ग्रबयाचोरीक्यूंमिटे तादिनग्राईहाथि
॥११॥जीवसीवकेसंगिबसे करमजीवकेंकों जनहरीदासमे
लोकहूं दोकपासाहाथि॥१२॥काजाणोंकबकाल्हिहैका
ईजबजेबालि॥जनहरीदासग्रौसरइहै तूग्रपणांरामसं
भालि॥१३॥कालीकेहरचलनई थेनावेगाग्राइ जन
हरीदासगऊपालट्या गुणगोबिंदकागाइ॥१४॥ग्रहिपुर
महिपुरइंद्रपुर स्योब्रह्मालोकजोइ॥जनहरीदासहरि
इनीसूलनस्थानकोइ॥१५॥जनहरीदासमोहिन्ने

३८७

सब त्तसहा ॥ दिगुरग्यांन फट कि ॥ १० ॥ जनहरीदास
न्हेमैते न जौ निरंजन राइ ॥ काल जाल लागै नहीं ॥
सुष मैं रह्या समाइ ॥ ११ ॥ जनहरीदास या जीव कूं अट
कि अटकि समझाइ ॥ हरिजी कुमति हरि करि हरि चि
त राचित लाइ ॥ १२ ॥ रूप ॥ अंगा ॥ बा ॥ बिरह को अं
गा ॥ बिरहणी कन्ही दरद सूं अबला सूं क्या मांण कै
मिलि कैत न तज्यं सुणि हो कंत सुजांण ॥ १ ॥ जनह
रीदास का सुक हूं अपणां घर को लाइ ॥ जम्यूं जाल्या तू
ही जल्या ॥ जलि बलि रह्या समाइ ॥ २ ॥ बिकल भई बि
लवै कहां ॥ ता ला बेली जीव ॥ हरीदास जन बिरह
णी ॥ मिलै सो स नेही पीव ॥ ३ ॥ अंत हि बिरहा आईया रोम
रोम सब मांहि ॥ जनहरीदास के दूरि मिलै तो के अब
जीव निनांहि ॥ ४ ॥ अबिनासी आवै पहर अपणै हि
रदै धारि ॥ जनहरीदास निरभै मतै न्हैमे ग्यांन बिचा
रि ॥ ५ ॥ षफनी षफन सारिषी पहरे बिरला कोइ ॥ जन
हरीदास बहु आग निमैपैसिक रि ॥ जलि बलि कौ
इला होइ ॥ ६ ॥ ४१ ॥ ७ ॥ पर चा को अंगा ॥ जनहरी
दास सुष आगम है सो थिल है ते संत ॥ उरस परस आनं
द सदा बारा ह मास बसंत ॥ १ ॥ राम तहां संमै सहज
बाजै राग अनंत ॥ चंदन पहौप गुलाल लै बेलै संत
बसंत ॥ २ ॥ जनहरीदास बसंत रुति फूल्या सब ही ब
न ॥ हरिजन माही को सिंगार या ॥ हरिजन बेलै फाग ॥ ३ ॥ ज
नहरीदास तहां जाइ ऐ ॥ जहां बारा ह मास बसंत पांच
पहोप जहां कातहां बिलन तहैं सब संत ॥ ४ ॥ जनहरी
दास बसंत रुति बिलै गो पी ग्वाल ॥ हरि सनमुष जहं
कतहां करि पहौपन की माल ॥ ५ ॥ जनहरीदास बसं
त रुति बगटे राम अगा ॥ प्रेम प्रीति का पहौप लै षे
लैं वस्यै सा ॥ ६ ॥ जनहरीदास परचा पषै कोडी काची
सारि ॥ डावपड्या हैं नहीं कोंनि ही कै मारि ॥ ७ ॥ घरि आ
ई नैनै हिडाव पड्यां यूं तो इ ॥ जनहरीदास ता सारि
कं पासा लौन कोइ ॥ परम जोति पलटै नहीं कोटि
करै जे कोइ ॥ लोहा कूं पारस मिलै परसि रकंचन हो
इ ॥ ९ ॥ जनहरीदास अंतरि अगहै दीप को एक अनूप
जोति जा लै षेली ॥ जहां या दिसै न धूप ॥ १० ॥ बिन

चराानासिंकानोहि त्रैसामनमेवासीयाकायानग
रीमांहि ७ मेरामास्यानामेरे औरवाटकेजाइबाजा
रीबहोरूपकरिपूवावैसेआइ २ जबआवेतबमा
रीए याकीगोडजगाइगुरकासबदोन्हूंबिकरिज्यूंमन
मनसाकूंमाइ ए जनहरीदासआत्मसकहा ध्यानतुम्हा
मनतोहिमनदीन्हांसांईमिलेमायामिलेनमोहि ३ ध्या
नधोनसुधिबुधिगईलागयांभेजाइ जनहरीदाससस
रवसगयातबमनदीयामुकलाइ २२ निजकरतूतिक
मांणकरिसुबधिचिलाहेचारिध्यानधानकांवांणक
रिमनमेवासीमारि २४ हरिदाकुजराभ्रजबहेफेरितसं
मनआंणि जनहरीदासलीसंलपत्ततहांतगोटीसांणि
२२ जनहरीदासघटकीघटासुरतिदांमणीदेष मनपांणी
पांणीमिल्या परस्यानहीअलेष २४ जनहरीदासतत
तेजकासबघटिगरजैआइ मनपांणीमनसाघटाब
रसतगयाबिलाइ २५ सदासनेहीरांमहेताहीसुंमन
लाइ जनहरीदाससुहुतधेलाकहादीजेअगनिजं
लाइ २६ सुईमूईथागाथकाकंथासीवेकोंण जन
हरीदासमनदरजीजहांकातहांकेंऔरहीगोंण २७
माईमूंईमनकीजेकितकूंचलिजाइ जनहरीदास
कंवतेगसांकहिसरषकोंणकूंमाइ २८ मननिरमल
हूंमेमतेछाडेसकैबिकार जनहरीदासतबपाइये
अलषपुरषनरता [illegible]
तहांमनरहासमाइअलषुसाईजांणीये चुणिचुणि
मनकूंमाइ ॥३०॥२०५॥अ॥७॥ मायाकोअंग॥ह
मासबजूपीनघा आयाकोईनांहि औरांकूपरमोध
देआपणनरकांजांहि १ जनहरीदाससाधीसबद स
बकोईकहेबणाइ कहतकहतमायामिलेकोंणरले
किसिनाइ २ मायाछायादेसिकरिजीवजंतफल
पाइ जनहरीदासताजीवकूंकालपकडिलेजाइ
३ मोहलगामनिधांतुरीचितचोगांनोहाथि जन
हरीदासमायादडीचलेनकाहूसाथि ४ भरतरचो
गांनबि
यांगीदगुडाइ ५ आणनेदीकथणीकथे

[illegible] जनहरीदास [illegible]
लामुककाला करे चोरी जपरि चोट॥ जनहरीदास [illegible]
मतैगहो रामको वोट॥३॥ डुनीयासूं दिल दे मिले साधी
सूं मन ओर॥ हरीदास जन यूं कहै पकुचे गो किस ठोर॥४॥
आप न जन कूं आलसी ओरां कूं दे आड॥ जनहरीदास
हरि तें बिमुष मसुषड़े गो षाड॥५॥ जनहरीदास सुष आग
महे मथि कादे तैसे मत जल थोड़ा आंधी घणी ऐसा मां
न अनंत॥६॥ नोंहनों हि अंत रि बि था बोले मांवेना रह
जनहरीदास निगुरा तिको निहचै नरकां जाह॥७॥ गुण
पोषे निरगुण कछे सुरति न लागी साचि॥ जनहरीदा
स काचे मते बहोत गया यूं नाचि॥८॥ पांन भांन पोथ्या
लिष्या हिरदै सक्या न राषि॥ जनहरीदास ता साध की
हित दे सुणी न साषि॥९॥ चाल्या था पाणी वा कूं डा ही
रा बेवा हारि॥ जनहरीदास कोडी रता तिन का संगनि
वारि॥१०॥ जोरी करि चोरी करे बेसमपांन की आंद हरी
दास जन यूं कहै ता की फूटी बांह॥११॥ आपा की आंटी
पड़ी दुष सुष व्यापे दोइ॥ जनहरीदास चौथी दसा च
तरन पकुचे कोइ॥१२॥ जहां आपो तहां आंतरो कारणी
मागर दूरि॥ जनहरीदास आपो मिट्यां हे हरि सदा हजू
री॥१३॥ पैंडो कआघा चले पग स्स पूंवा जाहि॥ जनहरी
दास कहणी कहा रज मां रहणी मांहि॥१४॥ मनसा का बा
दल नया काम क्रोध जल जोर॥ जनहरीदास कहणी स
रस रहणी बड़ा कठोर॥१५॥ आपे चढि जंचा नया को हि
करम ले साथि॥ दोड्या था हरि हेम कूं कोडी आई हाथि
॥१६॥ सिंघ सदा बन में बसे गादड़ गर जे आइ॥ एक दिन
डे षाप का सह जैं सिरमें षाइ॥१७॥ जनहरीदास के हरि
गरजा जे बकल है न जांणि॥ जब के हरि के हरि मिले
त बगरजां पर वांणि॥१८॥ मोडां मां थां मान हीं ताल ब
जो वे तो ड़ि॥ जनहरीदास जन की संगति नां पकुचा
वे बो ड़ि॥१९॥ अरथ करे अन रथ नहीं छूटे तातें फिरि फि
रि नांडा फूटे हरीदास जन ऐसी कहे को हिज लदाषि
लि परम पद ल है॥२०॥ मूंनी बांह णी जाड़ करि कपरि
बेवासाह जनहरीदास या बिणजमे तोटा घणी कर
ह॥२१॥ भूष प्यास संकट सहै सहै बिडांणी नार जनह
रीदास मूंनी बलद कासूं करे पुकार॥२२॥ हरीने सुल

हरीदास माया नरां मारे त्रगि लगाइ ॥ परहरि भजन के मि
ले पंछि पिसु ... षाइ ॥ जन हरीदास माया मिल्या
सो भ्रष्ट मिले नहि ज्ञानी ... गुण को नही माया र
ली यातु डा इ ॥ जन हरीदास माया विरछ फल बि
कार सरूप ताल र रिपे षाव से न्याइ सहे सिरि थूप
॥ माया जैसे विराट रूप जीव विलंबे आइ कारन
का ग छाडे नहीं ते लागे वो ह षाइ ॥ तेल माहि माषी प
डी तन का हुवा नेग ॥ जन हरीदास माया मिल्या तिन
का यो ही टंग ॥ माषी तो गुड मैं गडी तहीं कडा हीमां
ति ॥ जन हरीदास मीवे वगी त्यंम तिमी वे षां हि ॥ माया
[illegible] छाया रहे कहे आगम की बात हरीदा
स [illegible] सोरां की घात ॥ माया देष्या मन षुसी मुल किप
सो रेल्या [illegible] जन हरीदास त्यंम ति करे [illegible] सोरां को सा
[illegible] माया वे ष्या मन षुसी विछड्या वहोत विवेग
[illegible] आपडा कैसे साधे जोग ॥ जन हरीदास
सासा भिन्या माया की गम लष रूसि रहा ते
षुसी हुवा ते वध ॥ जन हरीदास माया तजी जहां माया
तहां रोग तीन लोक का राज दे तो नी विपति विवे
ग ॥ माया मुद का ला करे अंत रिवे वी आइ हरीदा
स सो जन नला मा षी देइ उडाइ ॥ छल बल करि
जहां की तहां पूरवि से आइ जन हरीदास गोविंद
बिमुष ता कू माषी षाइ ॥ [illegible] मन जेसो कब्धे सत
गुर सर सों आइ जन हरीदास ता साध कू कदे न माषी
षाइ ॥ माया तौ अंधार डे फिरि लागा सब जीव
हरीदास जन यूं कहे कैसें परसें पीवि ॥ माया बाग बि
षि फल [illegible] जन हरीदास चौरासी
लष जीव सब म धुकर [illegible] संग की यां साप
[illegible] जन हरीदास सूक विरछ
[illegible] मुकति कूं जा ॥ काया माया रूव है
[illegible] जन हरीदास कहि का की लागी निसा
मृग [illegible]
[illegible] की रतन्यां का चेम ते जपे न के व लरांम जहां
नाचत फिरे माया मिले न रांम ॥ चौटी कू परिचौट के
लागी के लाग सी [illegible] रांम की चोट ते नर न्हे जाग सी ॥ मा

गागोबिदकागाइ॥२६॥२७०अंग॥१०॥भेषकोअं
ग॥भेषपहरिजांडीकरीफेरिधरायानांव जनहरी
दाससांमीपणौव्हैहोइरोगभेपांव॥१जनहरीदास
बादलबिगतिकूंबाब्योरासोइभेषबराबरिकरि
मिल्यासुमिरणकोसुषदोइ२जनहरीदासगोबिं
दबिमुषतिनिसिरिजमकादाघबादरिमूंडतदेष
तीसीतरिसलवासाध३जनहरीदासकहैयाजग
मेऐकअचंभानारीदमदेपीकाहेकूंपहैरंजलटी
चालहमारीथसांगकाछिसोहराहूवाहरानआया
तायिजनहरीदासतांडोलट्योलबसबकूतासा५
थाप जनहरीदासतांडोलट्योलबसबकूतासाथि
संगितांडोसगिदीकूता कद्दूनआयादाथिदन्है
पदगोविनदीगाईजेरसरागहरीदासजनयूंकहै॥
मेडानलानकाग॥७॥२७७॥२१॥साचकोअंग॥
मिथ्यासबदनबोलीयेजनहरीदासयुंक्तआन॥
बदलवृक्षलागैनदीयारजातिकेपान१धरक
दरजकरनजबिरछनीकदरजफलपातजनह
रीदाससाचहूअकलाबिपतिनदीबदिजात॥२॥
साधकोअंग॥तेलकडाहीजलततेकलबिनक
लनवुझाइजनहरीदाससीतलभयातबबंदन
पर्कूताआइ१कामक्रोधत्रिष्णातजीत्रिबधिता
पकानासरामनामहिरदेसदाजनहरीदासयूंदा
स॥२॥हदडीयोआछेमतेतजेनिरंजनराइजन
हरीदाससासाधकीमहमाकहीनजाइ३चितमां
हीचितलैरह्यासंमृथसिरजनहारजनहरीदास
तासाधकामिलिकीजेदीदार४पारयलकछोडेन
हीदिरदातैहमैनांव जनहरीदासतासाधकोमैंब
लिहारीजांव५आवेपरसतजेअबिनासीइहैने
षमनमांहिकूडमूंडकहाहोपीपहत्यांदेहनरीसांन
हिद्दरांमनजनआंनंदसदाआवेपरअछेदरांम
नजनबिणिमानईबादिगमावेदेह१नांकाहूसूं

ए॥गोविंदकागाइ॥२८॥२७०॥अंग॥१०॥भेषकौ अं
ग॥भेषपहरिनांडीकरीफेरिधरायानांवजनहरी
दाससांमीपणौबहोड़िरोगमैंपाव॥२॥जनहरीदास
बादलबिगतिबूवाम्योरात्तोइ॥३॥भेषबरावरिकरि
मिथ्यासुमिरणकौसुषहोइ॥२॥जनहरीदासगोबिं
दबिमुषतिनिसिरजमकाहाथबाहरिमूंडतदेषि
ग्लीतरिसलवासाथ॥२॥जनहरीदासकरैयाजग
मैरोकअचंनानारीहमटोपीकाहेकूंपहरैउलटी
चालहमारी॥४॥सांगकाछिसोहराहूवाहरानआया
हाथिजनहरीदासतांडोलद्योतबसबकूतासा१
थ५ जनहरीदासतांडोलद्योतबसबकूतासाथि
संगितांडोसंगिदीकूता कछूनआयाहाथिहरनै
पहगोहैनहीं॥६॥ईजैरसरामहरीदासजनयूंकहै॥
मोहानलानकाग॥७॥२७७॥२२॥साचकौअंग॥
मिथ्यासबहनबोलीयेजनहरीदासयूंआन॥
बड़लबृक्षलागेनदीपारजातिकेपान॥२॥धरक
दरजकदरजबिरछनीकदरजफलपातजनह
रीदासताबृछअउलाबिपतिनदीबहिजात॥३॥
साधकौअंग॥तेलकडाहीजलतहैकलबिनक
लनबुझाइ॥जनहरीदाससीतलभयातबचंदन
पकूंताआइ॥२॥कामक्रोधविष्यातजी त्रिबधिला
पकानासरांमनांमहिरदैसदाजनहरीदासयूंदा
सा॥२॥गूदडीयोआछेमतेनजेनिरंजनराइ॥जन
हरीदासतासाधकीमहमाकहीनजाइ॥३॥चितमां
हीचितलैरहा संमृथसिरजनहार जनहरीदास
तासाधका मिलिकीजैदीदार॥४॥पावपलकथोडेन
हीहिरदातेहरिनांव जनहरीदासतासाधकीमैंब
लिहारीजांव॥५॥आवैपल्लनजेअबिनासीइहै
षमनमांहिरूंडमूंडकहाटोपीपहरयांदेहनरोसान
हिंहरांमनजनआनंदसदाआवैपुरअछेहरांम
नजनबिणामानईबादिगमावैदेह॥७॥नांकाहूसू
बैरतामोहनबांधैसाधजनहरीदासआवैपुर
जोरामअगाध॥८॥लावनगतिगोबिंदजन जा
केहिरदैहोइ॥जनहरीदासतासाधकूंगिनसकै

१७०

टाकद्दकष्ठानस्थ्या जनहरीदाससांसडसाडनायाच
कह्रधी॥२॥कहाकागंकहोमनिषदिहाहिधीसाध ॥
कीबातकरतेसुग्रालागीपवनकडाकडाजात
॥३॥कहेकरग्राधाकीयामनकीमिटीनरेष जनहरी
दासतरसुतजल्याएसंगतिकागुपादेष॥४॥पानग्राही
नमुगतकवेदेगोलातातादेह जनहरीदाससाचीसं
गतिजलतनदेखाकोइ॥५॥देमग्रगनिमुषजालीये
धातांसंमिलगाइ जनहरीदासकंचनतिकोबिके
लोहकेभाइ॥६॥लोहाजलसूंभेडीतबलगकाटी
षाइ जनहरीदासपारससमिल्यांमहंगेमोलिबिका
इ॥७॥ ॥१५७॥ ॥अंग॥ ॥ ॥अमविध्वंसकोअंग॥ ॥ जमूं
नहतिलूंहीसिलारामबसैसबमांहि जनहरीदास
पूरणब्रह्मघाटिबाधिकहूनांहि॥१॥मांणसप्रेमसु
कीयासोसोकरतानांहि जनहरीदासकरतापुरिस
आपिरह्यासबमांहि॥२॥नहीदेवलसूंबैरतानहीं
देवलसूंप्रीतिकिरंमृतजिगोबिंदनजेयासाधां
कीरीति॥३॥लोकदिषावैमतिकरेहरिदेषेज्यूंदेष
जनहरीदासहरिब्रह्ममदेपूरणब्रह्मअलेष॥४॥
जनहरीदाससाचीकहैसांतिबजीकीसोंहपाहण
कूकरताकहेताकाकालामोंहा॥५॥जैनधरममाया
नरूपपरस्यांलागैपाप जनहरीदासनेमतेन
॥ निरंजनआपा॥६॥साचीकथासुणांवतांमतिकों
मानैरीसअलषनिरंजनछाडिकरिलजेनरमचो
ईस॥७॥जैनधरमसबतेंबुरानलाकहेमीकोणज
नहरीदाससनेघरमेंसरपहेतहांनकोजेगोण॥
धरमसोधासबेपांनसूपरलेहाथि जनहरी
दासफटकिफटकिफटकूंकहाकोईजणकास
नसाथि॥जैनधरमकीबातडीसांनलिमनसा
बीरकजडकूमरुजाडिमेंतहांआयानहीनी
॥जैनधरमकीबातडीसुणतसुणातनया
जनहरीदासजहांकातहांघरमेंमेतैचोर॥१०॥
ततकाप्रतलालजबीरजकीबंदरोकेघाटीनी
स्यानसाधनीसुद॥११॥देवलमांहीदेवहैघटि
घटिधस्यावसाइ जनहरीदासयाचूंधिहेतूगु

जलियाल कोटयुतगल्सुरुगहति रातोसौसि
इसबकूवेतहेबदो डि कबक्नदीन्हे हरीदासक
नयूकहेवाकेदेवादीसंहेत१जनहरीदासदातदई
हुजाकोईनोहि सबञ्जकरिसबतेंश्रगम्ब्यापिर
हासबमाहितुश्रेसाकोईकहेबासतीसतोनाहि
श्रातमलागामसथिरानिन्हेरिपदमाहिथश्रातमए
लागमनचलेतोमागिरनिघाथा२जनहरीदासचदि
मश्रजबाजेनिरंजनरा५॥ हजगचदिमकरतहै
श्रातमलागादोइजनहरीदासवैरागवृतिजहांकछ
अदिमनहोइहा६दिदिमश्रबगतिजेगगजमन
मधिबासजनहरीदाससबदेषीरप्रेमजोतिपरकास
७पराएपूराणब्रह्मतहांमनदासमा८जनहरीदास
श्रेसाउदिमश्रोरउदिमकूषा६पतनकाउदिमकहार
देजबमनपिगुलहो१०जनहरीदासमृतगपगांचल
तनदेषाकोइ॥लोकबकुमृतगचलेतोबीचिबि
देबकोईश्रोरजनहरीदासमृवापछेनहीकदेबमेवो
र१६सतरजतमघटकरमीमेंसैमोहजासमुषगो१जन
हरीदासविगपानवृतिसहेउदिमनहीहोइ॥२१॥२२
७॥श्रग॥२७॥पतिब्रताकोश्रग॥मेवगहाजरिचा
हीयेसाहिबसदाहजूरिपूरणपूराचदजूजहांतहा
नरपूरि१वारपरमतिगतिश्रगमश्रादिश्रतिमधिनाहि
जनहरीदासश्रानंदमदाप्राणबसेतामाहि२ ब्रह्मगो
नबूतनीदसांनलानकहसीकोइजनहरीदासोकछ्य
डिहजानेजेतेहजासतिहोइ३ हजीपूजाकालको॥
पकडिकालरलेजाइ जनसीदामेरामश्राडिहजानेजे॥
तासमिलेबलाइ४॥जनहरीदासयाहीकविनासबको
चाहेमानकहिपूकेसेमानीयेबीदबिहरीजानपावी
दश्रमरबरबरा तजिसुषमेंसुरतिनिवासपतिब्रत
पतिकूमिलेकेनिमदिनरहेउदासा६॥२२॥५॥हि
रकताईश्रग॥बेरागीमायातजेरामनजनसूप्रीति
जनहरीदासमेलोककूदेहीकाउराजीसि१हहांचा
दोसीरहेनजेनिरंजननाथश्रानकथामोनेनहीहरि
नगतांकोसाथ॥२॥समथाईकोश्रग॥श्रागेयीहरिम
जीपूरणब्रह्मश्रगाधहरीदासजनयूकहेतामुषि

ए॥नाद जगति गोबिंद न जन दयाविहूणा दा बि जन
हरीदास गुरग्यांन गह्यो ऐसा थी सं गिरा थि २७ परम सनेह
राम है के राम सु म्हारे संत। जनहरीदास हस्नि जन मि
न्या पासी श्रोर श्रनेत २२ श्रलष निरंजन नाथ सति सि
राम राम का साध जनहरीदास बरा ऐ कह्या था तो बात
श्रगाध २३ मन उलटा च श्रा श्राकास कूं पवन सु तिले
साधि जनहरीदास ता साध के सदा निरंजन साथि २४
जा ध्यू को लागे नही नजीरो केवल राम। जनहरीदास
ता साध का निरमै पद बिसराम २५ नरक सुरग सब
रह्या गहि गुरग्यांन बिचार। जनहरीदास ता साध
के सनमुष सिरजनहार २६ जनहरीदास सो जनन
[illegible] जे श्रषंडित राम राग दोष मैं ते न ह्वा जोगमूल सं
[illegible] राम २८ श्रजब रहरहणी श्रजब श्रजब बात सं दे
सा। जनहरीदास ष रनैत ता कोई कोई साध सुचेत २९ श्रव
डी योन्है मते चाले उलटी चाल जनहरीदास ता
की संगति जब तब करे निहाल ॥३८॥२०७॥ श्रंग॥२३
साधि को श्रंग॥ बैरागी ग्रिह बन तजे मधि के पैडे जा
जनहरीदास श्रापरहत सुष मैं रहा समाइ ॥१॥ [illegible] पद
स को श्रंग॥ सीषनी षकी बातडी मांन निमन वाबीर
[illegible] मसनी षत हीप छे दोइ सम दस सी २ बात कहे
न पैडा थके चलतां दोइ सहोइ जनहरीदास ह रि
धंम तां पहुंचे बिरला कोइ ३ श्रजब साषि साचा
सब दा घर मैं रहेन सोइ जनहरीदास गोबिंद जो प
लान पकडे कोइ ४ तन तच्चि सवणि छाडि दे मन
मेर सो मारि जनहरीदास हीरा जनम कोडी सटै न ह
रि ५ जनहरीदास ली जै न ही कंचन बदले काच
जो क छूगया सजांण देवरत ता संरा च ६ रह तारम
ता राम है दूजा कोई नांहि जनहरीदास यूं जांणि क
रि तो राख्या मन मांहि ७ श्रापा मांगं श्रागम की श्र
ाम सुगम सू है होइ हरीदास जन यूं कहै उलि पडो
मति कोइ ॥८॥२०५॥१५॥ बिचार को श्रंग॥ जन
हरीदास कही एक हाट बैसो चि बिचारि फ़्वासु
ष संरना मिक सिह रि सुष चाल्या हारि॥१॥ बिसब
को श्रंग॥ पूरण तारा पूरि है जनहरीदास हरि राइ

२४७ जनहरीदासपीवपरसीयेपांच अटकिम्मोला
हडोवेकरिमसतगथेसुतासनमुषिजाइ२सीस
उताम्यासुरिवैंछाडीतनकोआस अंतरिताएक
सूपरमजोतिप्रकास॥१२॥२४८॥अंग॥२१॥काल
कोअंग॥रोकदिहाडेइडकूं पकडिपछाडेकाल।
हरीदासजनयूंकहै गोपरहैनग्वाल १रामदयान्या
रोरहै राषणहाराकोइ॥जनहरीदाससताजीवकूंका
लगहेघटतोडि२रामनामभूलछाडिकरिजहांत
हांजीवजाइ३जनहरीदाससाजीवकूं कालतहां
षाइ३ जनहरीदासगोबिंदनजोगहिगुरग्यानवि
चारि करिकबाणकेबस्तीएंकालषडाद्रबारि
४ देहषेहकेजाइगीमुहिपडेगीमारा जनहरीदा
सगोबिंदनजोगहिगुरग्यानविचार ५ हरिसुषसाग
रपरहस्याकीचिरहालयपवाइ जनहरीदाससाजी
वकूं किनीयोहाडोषाइ ६ आसाकेघरिजमबसे डा
वपडेतबषाइ हरीदासजनयूंकहे हरिजनतहांन
जाइ ७ ऐसेजलिपकतानहो कलाजलकी आस
जनहरीदाससुरगुणकथा जहांकालकीपास ८
जनहरीदासमोहीबिथा करमकालजीवमांहि॥
रामनजेसोकबरे हजाछूटैनांहि ९ कालदकुदि
सिदेषीरो जहांतहांनरपूरि जनहरीदासगोबिंदन
जेसोकालजालसेंदूरि॥१०॥२५०॥अंग॥२२॥सजी
वनिकोअंग॥ वोषदअजबअनूपहै जरेसोजुरान
षाइ जनहरीदाससतूहै बिथासुषमेंरहेसमाइ १ मूग
कूवोषददई षाइकरीउषाल जनहरीदाससताजीव
का चूकानहीजंजाल २ वोषदजेसोमनमरै षाइ
केउषाल जनहरीदास ताजीवकूं अंतिगरासेकाल
॥३॥दयानिर्वैरताकोअंग॥ चोटीफाटीकरहीरतानम
नेसेकपगांतलिरोंदामरे माथेचढेकलंक॥१॥साध
हमंकोअंग॥ जनहरीदास आनंदहैहै मनअपणांट
रमोधि करडापंथकबीरका सोहमलीयासोधि १ पी
वइसंसारसूं परमेसुरसूं प्रीति जनहरीदासकबीर
माहकछ्यनलहीरीति २ उलटेपैडै परमसुष प्रम
धतहांजांहिहरीदासजनयूंकहै

१७२

गिरहासबसाधा४रामदयासनमुषसदा जे हरि जन
सनमुषसोहुकाल जालजोगेनही पाडाजोगेनकोइ ॥
॥११७॥ अंग॥ ४०॥ सूरातनकौअंग॥ कोडीरूपसवा
रिहेहीरारूपसपारिसेगा कोइजो हरी मेलेहैसीसभुसा
रि१ आगनिदेहेडुषपाईरोवुधिबलकछुनवसाइयूंअं
वासगिरपडीपरडुषसहेबलाइ१ तनटटेऊटकाजु
हिरतीजीमाँनेसेकाषे पेरेमनथिररहीरैदोदणीनिसं
करासुजमुषके श्रवणांसुणीते आपणीसुबासिधागां
सुहैविसताछिमांरेदोहणीदयाजि४दयाइहेसाधांसु
दासाचालीनिजघरिताकिजनहरीदासयूंजांणी एव
कोडिनचढईचाकि५ रामजेजेनिरजेथकीतकीनका
हूबोटसागीपणिजागीनहीउरियांहणकीचोट६ जा
णेकोसेकोनहीजेमनमांडेधीरापरबतसुतसंबाजि
करिलीकोराधीनीर७ जकुमीसुतअरुगिरसुता
काजमंडै जारथपिसणांमांहीपेसिकरिजलादिषा
वासाथ८ सूरवीरसाचेमतेजेसनेहीरामजनहरी
दाससाधकासिरसहीसेंकामएसीसदेणकावोडहे
तसुपराणसिरदेहु जनहरीदाससिरकेसटेरामरतनध
नलेहु१ जनहरीदासहरिमिलणकूं अंतरिकायाबिच
रिजेसिरसाटेहरिमिले तोसिरसोंपूसौबार२ सिरहेरादे
सिरधणीमुकसिरसूंकाकामसिरहैबिषकाहैबडालूं
सुषकामागरांम३ जोगपंथिपगमतिधरैथरैतोसीसन
साहिहरीदासजनयूंकहेयोहीअर्थविचारि४ आगम
सिंघासणआगनिसमिकाचाटिकेनकोइ जनहरीदा
सबेवातसोदिनदिनआनंदहोइ५ जनहरीदासभे
वांनमेंबेलतहेगोडारिकोड्यामधोकेकोतेजेपेतेमा
रि६ सिंघजषेविसहरडसो भावेंजडोसुनाहजनहरी
दासगोविन्दजीतनसूसुरतिचुकाइ७ काइरसूकाइ
रमिलेसूरमिलेसतिसूर जनहरीदासआनंदसदाबा
जेअनंतदनूर८ भिरणलटिबसुधाजषीपुबलप्रव
तनादिविछिपावांकेचाचढ्याबस्याआकासांमांहि
९ मेरअडिगजलटीगंगाआपाराखाभूराजनहरीदा
ससबदेकोरनैणांमांहीनूरा१०पांचहूईफेरिकरिराम
जजनकरिसूरजनहरीदासकाहरघरांकालबजावेद

तकाल ग्रासंतरे मांनवा॥४॥ अथ सतुति
जो॥ तक काल ग्रासंतरे मांनवा॥४॥ अथ सतुति
की साषी लिष्यते॥ अगम सुष तहां मिलि रहे जी ति
मो हमदन रिपकाम जहां लोक वेद की गमन ही अ
गम वोड़ वि श्रांम सुरन रगति जां रोन ही ब्रह्मा वि
सम देस॥ जन हरीदास तहां रमि रह्या पार न पावे सेस॥२
किरतम तजि वरि अमर वर सतगुर के उपदेस जन ह
रीदास तहां मिलि रह्या जहां संतां कीया प्रवेस॥३ नग्र
नांव वेगम पुरा वेगम होइ वसां क्षित हां को इप कुंचे
संत जन हरिजी की गमनां हि॥४ जहां रैणि दीस न तपु
तिन ही चंद न ही तहां मांन जहां पावक पवन पांणी
न ही तहां जन हरीदास का अस्थांन॥५ जन हरीदा
स जी कृत की यो सु नित्य ओ जि ज्ञास जोया कूं हि
रदे धरै तिन की पुरवे आस॥६॥ नर नारी कोक पढो प
है सुन तरे पार हरीदास जन यूं कहै राम नाम तत सा
र॥७॥ कलि मांही यह कल्प तरु सब्द न मैं सिध्यंत
या कूं सुमिरै रैणी दिन वा कै कु न होवे अंत॥८॥ इती श्री
श्री स्वामी जी श्री श्री हरीदास जी को कृत संपूरण॥ इती श्री
रया लजी का षष्ठ वक्त न की संष्या॥ ग्रन्थ॥४७॥ पद॥२७८॥
राग॥२३॥ किवत॥६॥ कुंडल्या॥११॥ चंद्राणा॥६४॥
साषी॥२४॥ श्लोक॥४॥ अस्तुति की साषी॥८॥ कुंडल्या
यां का अंग॥२४॥ चंद्राणा का अंग॥१४॥ साष्या का अंग
॥२५॥ समस्त बांनी संपूरण॥ संवत (१८..)॥ मिती काती
सुधि वार बुधवार दसमी॥ लिषतं गांव फतेपुर मधे संत
न स्वामी हरी दास जी को कृत संपूरण॥ श्री श्री स्वामी जी
सेवा दास जी॥ श्री श्री स्वामी जी अमर दास जी सिष मदार
म ॥ सब संतां को षा नाजा दगु नाम बाचे विचार जी ने रा
मरी मरा रररररररररररररररररररररररररररररर
ग्रन्थ स्वामी जी ध्यांनदास जी का ग्रंथ लिष्यते॥ गु
णा दि बोध जोग ग्रंथ॥ चंद सूर तहां कछू न ही न ही
धरणि आकास पवन न ही पांणी न ही न ही तहां जोग
बिलास॥२ तेज न ही तारा न ही न ही तहां रूप अरू
प सब्द न ही सुरता न ही न ही छाया न ही धूप॥२ बिस
न न ही ब्रह्मा न ही न ही संकर न ही साध॥ सद जस
रूपी राम था अलष अ तिअ लेष अगाध न षडंग न ही

वली॥ध्यांनदासवलिजोत॥४॥आदिअंतिमधिसे
आश्रिमि॥लमि॥ध्यांनजाइध्यांनदासमादिवसुमरिम
कआत्रौतसमांहि॥४॥इती गुणांधिवोधजोगग्रं
थ॥अथगुण॥मायासंवादजोगग्रंथ॥एककनकअ
कोमणी॥सवजुग लीयातुडा॥२॥साधगदेमतमंछदर
चेदेअप्रवेका॥२॥संतोसज्ञजसुनिमनलागा जनमनि

व

चतुराआलसंपूरकासंसव्वनागनचदिवागा२पांचप
चीसकुलदिछरिआवैतनमनअनंतनडोलेम्रति
मांहिअनमति दसौंनांनांवांणीवोलेरदेसतलटिव
रीयाअर्ह्लनमनरसा॥३॥हारेमरेअवाजाघुरैअस्थि
रव्हेदोआइ॥४॥स्रोजुडैसकव्हवेआगैकाइरसीस१
ज्ञानावे॥सतगुरमिलैसूरलजढवांधैपरमसुनितव
पावै॥५॥कलीएककूडलीमकूमांतेजपुंजअविना
सी॥रूपअरूपकलंअलगवसै॥मठीगरवनवासी॥६॥
अलपअभेदगहरगुणग्रामी॥सर्वेसलसुषदाई॥निरा
कारकागुणकीमदसांसोइ॥कालनजाई॥७॥नावोतरून
विधपणिनांहीनांहीगुरूनचेलासुछिमरूपसकल
लैनांवेनहीविरधनहीवेला॥८॥नांवोदेअस्तपरी
णानांहीफडजसुनिमणिनांही॥गुणतैरहतनिरतरि
केवाध्यांनधरेसकमांही॥९॥अलषअभेवअतीत
सकलसेतिगुणतैरहतिविराजै॥दरीयाधरनिसेस
फूनिआपैइंद्रलोक कुमांले आपै चंदसरफनि
आपैसपतदीपनवषंड॥१०॥अभुजकीरूपलडं
ऐसोपुरिषवसिवडा॥११॥जाकौजोलकाचोअस्के
पैलोजाइनआवैकायानहीकालमणिनांहीदो
जगकौनषेदावे॥१२॥वाजीसवाजीसेगुणसुगुण
नरमावै॥अवगतिलहांरकछुनांही॥मायामोड
नचावै॥१३॥कंकालीकेडेफ्डिकोईदेसनेहीसाध
अगमध्यानकपरिकहूमायासंवाद॥१४॥जीवत
डांजगमेंरहोमूवांनछोडेंलारा॥पारा॥रिषसापांदी
याडरपोंनहीलगारा॥१५॥कछूचेडीमदनकी द
रिकैरहतरिषदरसनमोमैमिल्या॥साधकरत
देहरिआसिधमास्यासाधिकचुणिलीयारामसु
रांकोनांडो॥मौनजलधरफेरिनचायाइसोअथ

लीछाडिखनबैसीतकैनछाडेलारा२४।ध्यानस
कसंकरकेहैनीचकरमकहनोहि।आपोसोपेय
थकूंसोसदाजीवेजगमांहि।१।सदाजीवैजुगिजुगि
मासूतरब्रह्मविचार।पारसतोब्बोछ्वैकंच
होतनबार।२६।दिनाबडोकोजेकहा।ग्रकलिबडी
गोमांहिजोगसाधिसेवाकरु।कोबोछाडैनांहि।२७।अ
कलिबडीग्रासणाग्रडिग।ध्यानलीनग्रोधूतघरोजो
करलीयो।वैमायाकापूत।२८।ब्रह्मचारीघडैउलाल
ज्यूं।बिछघरैश्रोतार।जोगसाधिमनारह्योसोदेषे
छारा२९।ग्राडीतिरछीगामहीसकितरीतरवा
रि।षटदरसनसंसारसब।कतलकीयाइनमारि।३०।
नीब्रह्मचारी।लिछमीबिछघरां।पारवतीसं
करकैनैनारीग्रोरनरां।३१।मातासूनारीनईपूलन
यानरतार।ग्रैसाग्रचिरजदेषिकरि।नागानागण
हारन।३२।जेनागातेकववस्या।मारह्याख्लकफिटाइ
जाकेग्रादिग्रांकूंथां।ताकैनिकटिनजाइ।३३।ग्र
कथारोताफला।दिसगोरषसुषदेवा।सणूंमांनल
षमणजती।पैडोग्रगमग्रछेद।३४।मूलमंछरंद्र
नौसकलजोगतामांहि।ताकेसिषगोरषजिसामा
याकेबसिनांहि।३५।जाकेसिषगोरषजिसासोगिर
होइ।महामायासूंबिमरा।चलुरसमाऊंकोइ
उस्केतामारिडिगाईयाकेताडिगताजांहि।एकै
टोलिजोहाथनदीजेमांहि।३७।कोईनाहट
गिन्यारारहै।डुषसुषलिषेनकोइ।३७।लषनजेग्र
तजेसोकहूनैनेहोइ।३८।गोपिकथानारदसुणी
महादेवकोजाप।नेजोगस्वरजनककेसंकरको
प्रताप।३९।राजाकोडिनिनांनवै।नरवैसाधेजोग
सिधचोरासीनाथनो।तिनकाबन्यासंजोग।४०।रांको
बांकोनांमदेव।रामानंदरैदास।करडीकथाकबीर।
कीग्रगमनिजरग्राकास।४१।परचासूंपीपोमिल्यो।स
जैकोटेसीव।पांचूंदेवैबातरैनं।तबमुषदेष्यापीव
४२।कितीकथाकबीरहीग्रगिणतसाधग्रनेक
सकलकोबंदीवांनदिसदेषा४३।करणांसुणि
णांमहरिजनकीकरीसहाइ।ग्रादिनाथबि

जैनह्री सिष्यहूतौ रैदासा अणीयै मांह्नीपलटि करि
डेरादीया अथा कैसा हाजा [illegible] डेनह्ती छ
प्रगौ लज्जा हुर २८ अर्बवी [illegible] जु डे सबदलीयां
दुधियारना सो कैतरियो कुडया मरद दिषाई मारस
प्रदुरिजन [illegible] सुषा [illegible] दास सुह मोडि
चारदैनह्री [illegible] तिलकदास ३ ॥ सत्रसतिस
[illegible] जांकै डोडि ॥ माया आवै मारती केता ली
यामारे डि ४ ॥ [illegible] मतिलीयं
मां [illegible] डेनदीन रिच निसारै बांण ॥ ५ ॥ ज
नलै [illegible] की ध्यांन [illegible] षेत मांहि ष
[illegible] जोगेस्वरदा
[illegible] ज्यूं जडी
[illegible] ध्यानध
[illegible] पड्या नै
[illegible] संतन कै साथ
[illegible] ॥ ७ ॥ ऊंचा
[illegible] कादीदा
रकी [illegible] चिगे
[illegible] ॥ पाया निग
मनिरा [illegible] सबदर
[illegible] पाल
[illegible] हौत उपगार
[illegible] ॥ ९ ॥ इती गु
ण माया संबाद जोग ग्रंथ संपूर्ण ॥ ग्रंथ ॥ १ ॥ अथ ग्रं
थ तीसरी जोग ग्रंथ ॥ श्री [illegible] अदभुत अ
जपिया [illegible] मनो मि
स्रू चलि करि आया मैं अब गति का [illegible] तरक कै
रौ तत बांनी बहैरि [illegible] सौ कबेद मर आदन
मांनौ जलती राह चलता कौ जल हिया ता लबसो आल
सै जलमै आगनि जलां कै [illegible] सिलासह जैसी छोकी
महताब जर बहै बांकी राम सबद की अदभुत महिमा
[illegible] जोग अभ्यासी [illegible] जो कोई चाहै परम धाम कूं सुणि
[illegible] रो ॥ २ ॥ अषिर संकरी दोसती तब तरौ
[illegible] रथौं का अनर घट तौ वैरा ॥ कलि जुग

ड्यो।२७।काइरपडे.सूरिवांरूजैं।सिधसाधिकस
च्यासी।।।रिषनारदमुनिग्यानी।चतुरचुणचु
मास्य।२८मनमेहसीदेषिकरिषिगासी।जोरजुल
तुधकीयो।च्यारिजुगको जोगीहूंतो।मोडि.मंथड
ायो।२९हेतेकारनयो बसुधांमें।गोरषलागो।गादे
व्रधसतिजुडाईचिटक्या मनदमेरोडि.रकाढो
०बुह्मा बिस्मतलेदेबेवी रुद्रोतिसुणिनागो॥
सूराजुडे.कंदरेंकाइरामडोनदेषेआगो।२२संकरजा
रसुनिमेपेगोव्हेतरूपकरिआईरायो।आपनगा
तिकोआगलअबगतिआंसिधिदिषाई।२२सक्तिअहे
डे.नीसरीधकोसबलसूंबागो।गोरषकहेचालीती
मारूंकोनिगुरूलोलागो।२२जुधमांहीजोगीजुडे.मा।
लकेवचलिआयोमायाकहेमारती।औरी।गोरषद
पनुवायो।२४गुरकेबचननरघरीरूजेसक्तिसब
हतेमारीगांणगधूपजिनसबेसंघारदलबलका।
अधिकारी।२५दत्तामलहेलोकीयोसुणिबासिधि
बरियांमकाचांनेकामणकेरोनहीतहांलगकाम
२६सक्तिसबायाकपटेंक्षेवीकरेमेलारदसकेमनि
उबध्यानहीकासूंकरेहथियार।जउनरथघूडी
मंड्या।मिल्याआत्मांमांहिमोनीमेवासेरहेमाया
केबसिनांहि।२७कपिलजतारेजतस्यो।कनसांम
हणावंतसोकिहमारेपहलकीरूपरिकरांबसंत
२८लषमणपणिलोहजुड्यो।सूरबजायोसाररा
मचंदसानुधस्या।बादसवाओतार।२९सुषदेवजु
डेसकलकेआगेराकेरीठिसमाई।नामदेवनीसा।
णबजावेसाधूमिल्यासहाई।३०नीकांरूफ्योनां
निकोसतगुरसबदसहारि।निगमनोमिकांन्होजु
डे.अगंधकीयोहथियार।३२हवाजुडे.देरनाकेरे
जारचिकोबाजीदमुसलमांनमहमंदलडे.पीरां
मांहिफरीद।३१ननसूलडे.बहावदीजोवाकोजु
नमांन।गुरगमिगोपीचंदलडे।गूदडीयोसुलितां
नऊरांमांनंदकारोकीयो।कहाजावांलावीराअ
णीमंड्यानाजेनहीछत्रीमंड्योकबीर।३४दसोंदि
सांजोधाजुडे.कीयाब्रह्ममेंबास।नीडि.पड्यान

२७५
॥

छिनां वदो गांन करैगा॥ श्रीपालीनी सांनी॥ २४॥ परजा प्रक्षि इत
निकी करि है॥ सार पच्छी जन कौ हित जि जगन्नाव निरंतर बांसा
सुरलकि मिलै सोई॥ ३॥ कुलउपासी काम बिलासी जाइ स फैज
महारा ह्रम कर्ता जि कर्ता संग हरवा॥ श्रीरन कूं उपगारा॥ रांम
कहैगा॥ सो निबहैगा॥ छल हरि है गा॥ गाहा धका धूमां बहोत लवे
गा॥ संसन्न गसि केन्ना डा॥ ३०॥ ही हलुरक दो कंदरि भूला लोक
वेद बट पाडा॥ सतगुर बिनां न हरी सिधि कोई॥ पिड कल जाइ
उघाडा॥ ३१॥ लेदी कौ ग्रथि केदी आया॥ सतगुर नया सदा ही॥ अब
किलो में आय अवासा॥ है अरम मंव हा॥ ३१॥ सहै सब बातकी
रोक बात है॥ श्रादि अंत निविचारी॥ जिरणती तरांम जणे पारी
कुहा पुरकक ला नारी॥ ३॥ काजी पंडित मर समन जांणें॥ हम देख
ला बिलासी पीरे वो कोरे कस्म सांलाकि हाल महर कला कासी
२॥ कहै कबीरा मस्त फकीरा॥ लोया सार फट कांइ जने नया
डा रिजे जणन सो॥ ३॥ सधि मिलाई॥ ३४॥ इती बतीसी जोग
ग्रंथ संपूर्ण॥ अथ नांव माला लिष्यते॥ लीके कारप वन
अस्व जीवा सबद गुर संगु राइ जास संसार छाले सावमनाद
सिद्धा साला मीन अरववादा॥ १॥ मीनाम्रथ
श्रीड का अंजार पूंसा मोती मरकट हारा मोर गरूड॥ गज पस
पतंगा सुन हा सूवा कऊवा रांम हादेव अवधूत देव रावस
लो रूडक वाले बकाला बाज काइस पन जोगी षूंटा
अंधा लंबराला गीफट का श्रोलः कला रन मनाम ही कुला॥
मूसल कर्ला फाली रिवले तांन जिनिराया जी रिरिल
ली कब फून ले देख सि॥ ३॥ चित्त के नाम॥ चित्त बानिग
चित्ता चकोरा चकवा॥ चक्का चिडा॥ अरु चोना दून्हा चाकी
चरषा भोइ॥ ते नांव चित के होइ॥ २॥ मनसा के नां॥ मन
सा माइ त्री सुरती बल्ली नारी जमुनां तरंग साली माषी
मुरगी देवसक्ति डीबी जोगणी पांनी जिकत्त॥ ४॥ प्रन
सा मसिन के नो मा॥ कलाली गोरी पारवती दीया रांम
नी मोरी मंजारी बुगुली चांवंडा चंडी चांदी चील्हा चोर
टी मेडी॥ ५॥ माया के नांम॥ माया मैंणी मोहणी मंजारी
मघहरा मकडी सांसपसारी सापणी पापणी कोटणी डं
कणी संषणी कांमणी लांमणी गनिका जषणी॥ ६॥ इं
द्रीयां के नांम॥ इंद्री अस्व बहारवां ॥ पांडवा पांच्चं
लरका॥ जिंदा पांई वैरी गोई मिनासकल लोका मैं इंद्री अरि
वो अंकार के नांम वो २०

बीजरूपि पासी। सुध संग्रे सुध करे कारिक थिरि है आप अ
पइ प्रकासी। परंकार सूं सुरति मिलंबी। कोटि क सुनि
दिषाई थी। तिनि सबद बसे प्रवर्त्तावे। ताकी मूरति माई
दा सेती मन लाय देह मसु निबरनै। रिक सूं एक सवाई। बा
सटि लाय आसनपरवांनं। अधिक अधिक दरसाई ७ अ
ष्ट लाय सुनि सुकरत बरन देस पतलाय रवि तेज ता
के ऊपरि अचल अनंगी। रंकार की सेजा ८ पराके प
रि अगम के आगे मही पुरष अबिनासी। फुनि मांही
न्यारा का न्यारा सब हीमांहि मिलासी ९ एक है कबी
र सुणो हो साधो। परगट कहूं बजाई। रंकार सो बीज
सबद है और सबद सब बाई १० सुणि ज्यों सो कोई सं
त सुजांनो। दास कबीरा न्यारा। चि निति नि नेद कहे तत
बादी बहै तो रिस ने हून राषे ११ पंड पंड अर अब लोक
मैं दीपदीप नरपूरा सत सार संगि। सुणि लहे निमांणां
सुणौ अनेपद सूरा १२ रांमरांम सब कोई न्या षे। ता विचि
बहै तबिनांनां। ताजि सती लरांम लागी। बेद दि
ब्रह्म समांनी १३ अजपा जाप जपौ निज रूप सति दीपदीप प्रकास
।गगरोमरोम ल्यौ लागी। अनहद नाद मिलासी १४ ब्रह्मसारु
पगा कहूं मति अन नैस रूप सेवा घोसी हततनग सिद्ध लकाज
या जगमांहि अनेक। अपथरि थरि लिये प्रगांन मैं आसी थरि सीआ
पस्मारी सत गुरु मिलेडहेह प्रगोटे। कहा पुरष कहा नारी
१६ घरि घरि गंगांन धांन थिन होसी। घटि घट टिबाद बिबाई। क
ण कूं छाडि ते षेंगा कूकस। बिरला बीज अराधू १७ मेरी कथी
कथै गा बहेला। बीज लहे है गा बिरला। बीज लहै सो बंस हम
रा बाहन षे सो नरला १८ सुधी सुरमा निसे फसि। फिलि कूं बि
त सिर आंणि मुणी इडगी डहग। णि सुणि सुणि गावे सिषि
सि लन हीं काई १९ एतामप ठें तरसी पत गंपनी मेरी गाई गावे
ब्रह्म महल का मरम अगोचर पाया बिनांन पावे २० रामम
सति बीज सबद है थ्या कूपी भिन दी ज्यों जे कोई बाद करै ब
है तेरा तो सम कि चुप क तो इन तिज्यौ २१ बई मांन बहै ते
रा होसी राजा पंडित पांनी जागत सोसी जन्म बिगोसी सर्व
प्रजा अभिमांनी २२ बीतरागा बिरला जन होसी दरसन करसे
नकारी सार सबद कूं पेखिन चलेगा कलिजुग नेष बिकारी २३
बिन दरसण परस्यां बिन न होता होसी ब्रह्म गियांनी। बीजर

जित॥७॥अथ ब्रिंद के नाम॥सुकल॥जलंधर॥कंद्रप
मैन मदन॥काम॥मद्धि गुर के बैंन॥बिंद॥अनिंग॥ग्यांन सूं
गहे सकल लोक मे कीरति रहे॥८॥अथ औषधि के
नाम॥औषधि कोल॥केतुकी॥अमृति॥बिलाई॥दुबध्या
पेपती॥दुरमति॥ऊदाल॥कागली॥ऊली॥ऊलीने॥क
मोइणी पेती का वार दीजे॥९॥अथ संसा के नाम॥
संसा॥संका॥सरप॥सिंघ॥स्याल॥सुसा॥अरले॥नंवग॥सुनह
दुबध्या रज बिकार॥प्रतिबिंब देषि तन करि है च्यार॥
१०॥अथ बिकार अगनि के नाम॥काम अगनि काया॥बि
नास॥क्रोध अगनि मन जाइ निरास॥मोह अगनि प्राण दु
षपावे॥लोभ अगनि संमूल गमावे॥११॥अथ आत्म कं
वल के नाम॥कंवल॥कुंभ कलस॥दिल॥गगन॥कोल
कोमल॥पदम॥भैमगन॥अमृत सुक्करण॥अंगण॥लाषा
कूवा॥कंवल॥बदरूनी॥लाषा॥१२॥अथ ग्यान के ना
म॥ग्यान॥दीप॥पिंगुल॥मतसार॥गाडरगाडगंयेद॥बि
चार॥सूरज॥वेद॥बोध॥प्रकास॥ग्यान॥चांदिणों॥तत्तज्ञा
स॥१३॥अथ गोसट के नाम॥कथा॥उचार॥चाचरी॥चर
चा॥निजगुष्टि सूं कीजे परचा गुरबति नाम पारसी पा
ई॥सब्द मांहि सतगुर समझाई॥१४॥बांणी के नाम
बांणी॥गंगा॥भागीरथी॥सारद॥ब्रह्मी॥कोकलि॥कथी
घट सुरसरी॥जाह्नवी॥तारूणी॥अषरी॥बेणी॥चवी
१५॥अथ सुरति के नाम॥सुरसती॥सुषमना॥सूंदरी
सुरति॥सीगी॥सूई॥संषी॥समझि॥मति॥सास॥सीप॥सुरति
डकसी॥एकदाली॥सुरका॥चेतना॥लहरी॥१६॥सुब
षि के नाम॥आसामां दिन पजे सुमति॥सुबषिबदूरि
है॥केत बेटी धाय सुजन परिवार आत्म के अंग है निज
सार॥१७॥सुमिरण के नाम॥सुमिरण॥भजन॥रटणि॥अ
रजा॥परंकार॥धुनि प्रगटे आप॥डोरी॥सुनलै॥ते तांलूर
है॥धूरि गरजि नाम जनक है॥१८॥नमाज बंदगी के
नाम॥पूजा॥अरचा॥सेवा॥बंदन॥चोटी॥चाकरी॥अरदा
सा॥तन बंदगी॥यबादत॥बिजमति कीजे ऐसे नाम भ
गति के लीजे॥१९॥नांममाला जोगग्रंथ संपूर्ण॥अ
थ राममंत्र लिषते॥राममंत्र सुणि लीजो भाई सतगु
र बिनां नजांणं जाई॥जाके कछू न रूप न रेषा॥कोंण

डोमंड्यो।२७ काहरपडे सूरिवां झूझें।सिधसाधिकस
बद्दाम्या।सी।गीरिषनारदमुनि।गणी।चतुरचुणेचु
णि।मास्या।रम्मनमेंदसीदेखिकरिखिरासी।जोरजुल
मजुधकीयो।च्यारिजुगकोजोगीहोतो।मोडि।मंछद
लीयो।२०दहैकारनयोबसुधामें।गोरषलागो।गाडे
ग्रन्थसक्तिजडाई।चिटक्यो।मादमेरोडि।२काड्यो।
२१अस्मा।विभ्रमतलेदेवेवीरूढ्यो।तिसुणिलागो॥
मूराजुडे।कंदरेंकाढ्या।मडोनदेषे।आगो।२२संकरजा
ग्युनिमेपेचो।बहोतरूपकरिआईराघ्यो।आपन्ना
तिकी।आगलगबगातिआपिदिषाई।२३सक्तिअहे
डे।नीसरी।धकोसबलसंलागो।गोरषकहेचालीती
मारूं।कोनिगुरूसोलागो।२४जुधमांहीजोगीजुडे।क
नकंवचलिआयो।मायाकहेमारसी।औरो।गोरषवं
धनुगायो।२५गुरकेबचननरथरीरूफे।सक्तिसब
दतेंमारी।गिणगंधूपजिनसबेसंघारे।दलबलका।
अधिकारी।२६हस्तामलहेलोकीयो।सुणिबासिधि
बरियाम।काचांनेंकामणाकरेनहीतसांलगकांम
२८सक्तिसबायांजपरेंवेढीकरेमेलारदलकेमडि
ड।बधमानदीकासूकरेहथियाराजउनरथघूडी
मेंड्या।मिल्या।आल्यांमांहिमोनीमेंवासेरहे।माया
केबसिनां।हि२७कपिलगतारेजतस्यो।कनस्यांम
हणावतसो।किहमारेपहलकी।जपरिकरांबसंत
२८लनषमणपणिलेरेजुड्यो।सूरबजायोसाररा
मचंदसातधस्या।आदसबांओतार२९सुषदेवजु
डेसकलुकेआगेरांकेरीविसमाई।नामदेवनीसाप
णबजावेसाधूमिल्यासहाई३०नीकांकूफ्योनां
निकोसतगुरसबदसहारि।निगमजोमिकांन्होजु
डे।अगंधकीयोहथियार३१हवाजुडे।देस्याकरे
जारचिकोवाजीदमुसलमांनमहमंदलडे।पीरां
मांहिफरीद३२नजसूलडे।बहावदीजोवाकोः
नमांन।गुरगमिगोपीचंदलडे।गूदड़ीयोसुलित
न३३रांमानंदकारोकीयो।कहांजावासावारा
णीमेंड्यांनाजेनहींषनीमंड्योकबीर३४दसोंदि
साजोधाजुडें।कीयाब्रह्ममेंबास।नीडि।पड्यां

बीजछिपासी।सुधसूत्र्रसुधकरैकरिकथिहै।आपअ
पहकासी।धरंकारसूंसुरतिबिलंबी।कोटिकसुनि
दिषाईथ्या।बिनिसबदबसेघबतावे।ताकीमूहंमाई
दतेतीमलाषहेमसुनिबरनेंरिकसूंएकसवाईबा
मटिलाषआनपरवांनं।अधिकअधिकदरसा६७अ
हलाषसुनिसुकरतबरनहैसपतलाषरिवतेजंता
केऊपरिअचलअनंगी।ररकारकीसेजा६८पराकेपा
रिअगमकेआगेसहीपुरषअबिनासी।फुनिमांही
न्याराकान्याराराशसबहीमांहिबिलासी।६९कहैकबी
रसुणोहोसाधो।परगटकहूंबजाई।ररकारसोबीज
सबदहै।औरसबदसबबाई।७०सुणिज्योहोकोईसं
तसुजांनां।दासकबीराचाये।तिनितिनिनेदकेहैतर
वादीबहैरिसनेहनराषे।७२हडयंडअरअबलोक
मेंदीपदीपनरपूरासतहरसमिमुघिलहै।निमांणा
सुणोअनेपदरूरा।७४रांमरांमसबकोईनाषेता।बिचि
बहेतबिनांनां।नजिस्मतीलरांमरारबंगी।बेहद
बूल्लसमांनो।७५अजपाजापजणेणेहूंसभिदीपदीपप्रकास
मगरोमरोमहयोलागी।अनहदनादबिलासा।७६प्रमसार
णाकंहूमतिअननैसहलसेघाहोसीहलतेजगतिडहकाऊ
याजगमांहिअनेका।७७धरिधरिपगपांनमैंआसीधरिमीआ
हमारीसतगुरुसमिहोइहोइ७८मोटेकहापुरषाकता.नारी
७९घरिघरिगपांनध्यांनघिनहोसी।घटिघटिबादबिबाइ।क
णाकूंथाडिनषैगाकूकसाबिरलाबीजआराध्र८०मेरीकथी
कथैगाबहोता।बीजलहैगाबिरला.बीजलहैसोबसहम
रा.बाहनषैसोनरला।८१सुषीसुहमानिसैऊसिफितिकूं बि
नसिरआंणिसुणांईऊधीडहगाणिसुणिसुणिगावे सिधिह
सिलनहीकांई८२एतामपटेतरसीपतगपांनीमेरीगाईगावे
बूल्लमहलकामरमअगोचरपायांबिनांनपावे८३रामममा
सतिबीजसबदहैथ्याकूंपीभिनदीज्योजेकोईबादकरैब
हैतेरा.तौसमकिचुपकहोइरहिज्यो८४बेईमानबहोते
राहोसी.राजापंडितगपांनीजागतसोसीजन्मबिगोसी.सर्ब
परजाअभिमांनी८४बीलराणाबिरलाजनहोसीदरसनकर
नकरीसारसबदकूंपेलिचलेगा.कलिजुगनेषबिकारी८५
बिनदरस्यांमस्योबिनबहोताहोसीबूल्लगियांनी.बीजाए

कहूं लंदीसैवोड.नवांमकहीकि

त्रकारताहसुषेथा २ कहूं लंदीसैवोड सबसतांमिलिकीयाविचारी

[illegible]मिलिश्रीपेधान सबसतांमिलि... कहो अपहांमगुरुकेकारणिदासा

[illegible]लिनीलाजोधारा सबसंतामिलिनांवनिज

कांप्तातोविप्रमपकासा सबसंतांमिलिनांवकी

[illegible]लिखिलोनिलहोजाप्रो सब्तसनांवकी

[illegible] रांममंत्रमोर

कोराच लगि [illegible]पारकोपावे रांममंत्रश्रेमत

[illegible]मोरा [illegible]प्रकोपगेप्राग रांममंत्रलेमिलातिरा

तसाब [illegible]घटमां[illegible] रांममंत्रका प्रेमाकांमा

[illegible]देवीपाप[illegible] रांममंत्रसेपोगोरीसुणाया

[illegible]नपत्रलियल[illegible]रांमा कनिपहलादगोरहत्नमंत्रा

रांममंत्र[illegible]पतनाः जसेलेमंत्र[illegible]गकीधारा

[illegible]कसीसीकाहे[illegible] [illegible]रांमसदरोजी

रांममंत्रकोहत्न[illegible] [illegible]निगुरुकेपासा

रांममंत्रकूं जोइलेवीर्मां [illegible] जिन्यारहतमंत्र

[illegible]जिन्हकों [illegible] पहलीत्रपनी

[illegible]लहोडेनांव[illegible] तनमलविस

[illegible]पीछे[illegible]नांवे तैसेपांर

[illegible]सबकदरांमधुनिहोई

[illegible]लाबी[illegible]सूतसमावा रांम

मंत्रश्रेसीविधिसें जोकोईछाजेरांम सतगुरुकेप्र

सापसे रांमानंद[illegible]पायान्निसूरांम रांमानंद

[illegible]जावि अगमअगोचरगमन

सी नहोलसाया [illegible]

[illegible]चालसनकादिक

जैसी सीलसुनी[illegible] अोजमुनिसंकरकेसी दषसु

[illegible]संपिलमधुकपिलनाथजी जती [illegible]

गोरख सतीहनुमंतबषांनी [illegible]

ससीतलहजिसो कबीरपांनगनी [illegible]

हैइसो रहतजतीगोरषजिनअनंगप्रगनिहूं जा

सो लद्रमणविदसलिंगरहत [illegible]

सुकजतीआकासअसुरसोसरिसाचे [illegible]

सेप्रवेदसुविद्यासोनांपे [illegible]

[illegible]बापका रहतिहदिहि[illegible]

[illegible]समापका

जित॥१०॥अथ खिदके नाम॥सुकला जलंधर कंदप
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
नास॥क्रोध अगनि मन जाइ निरास मोह अगनि प्रांणी दु
षपावै॥लोभ अगनि सूल गमावै॥११॥अथ आत्मक
वलके नाम॥कंवल किंन कलस दिल गगन कोल
कोमल पदम भैमगन॥श्रेत हृकरण॥आंगणं लाम
रूवा कंलन वा वरूनो नाम॥१२॥अथ ग्यान के ना
म॥ग्यान दीप पिंगुल मत सार गाडरगाइ गयेव बि
चार सूरज चंद बोध प्रकास ग्यान चो दिप्तं वतजा
स॥१३॥अथ गोसट के नाम कथा उचार चाचरी चर
चा निजि गुष्टि सूकी जे परचा गुरबति नाम पारसी पा
ई सबद मांहि सतगुर समझाई॥१४॥बांणी के नाम
बाणी गंगा भागीरथी सारद ब्रह्मी कोकिल कथी
घट सुरसरी जाह्नवी तारूणी अषरी बेणी चवी
१५॥अथ सुरति के नाम॥सुरसती सुषमना सुंदरी
सुरति सीगी सूई संषी समझि मति सास सीप सुरति
डंकही ऐं उदासी सुरका चेतना लहीरो॥१६॥सुब
धि के नाम॥आसांमां दिगपजै सुमति सुबधि बहुरि
है ऐकेस बेटी थाय सुन परिवार आत्म के अंगहै निज
सार॥१७॥सुमिरण के नाम॥सुमिरण भजन रटणि अ
रुजाप रंकार धुनि प्रगटै आप डोरी सुन त्यो ताल्र
है धूरि गरजि नाम जन कहै॥१८॥नगरि उचेदगी के
नाम॥पूजा अरचा सेवा बंदन चौटी चाकरी अरुदा
सातन बंदगी थवा बली षिजमति कीजै ऐते नाम अ
गति के लीजे॥१९॥नांममाला जोग ग्रंथ संपूर्ण॥अ
थ रांममंत्र लिष्यते॥रांममंत्र सुणि लीजो नाई सतगु
र बिनां न जांण्यां जाई॥जाके कछू न रूप न रेषा कोण

ना। पवन सुरति सुरति थे ला। त्रिकुटी के तलटि मे त्या न व
गानताले रमै भेला। [illegible]॥ स्वामीजी कौं प्र
श्न यह कौण घरि सबद कौण धरि काल न बजावे तब कौण
घरि थे वतन समाहिहै सनमुक्ता सनबूज्या कहे है। भीम
[illegible]॥ अबधू मन थिर चिदपवन धरि सबद सुनघरि
काल न जावे तब तत्त नाम तारि थे वतन समाइहै। ऐसा बि
चार मछिंद्र कहे [illegible]॥ स्वामीजी कौं प्रश्न
मन कौं प्रसबा डिबा कहो का मन्हार सबद होत नै चढिवा
कौं प्रश्न स्वामी निमन तन मन निर्दोसन गुरु हो इसपूछ्या
कहै है। [illegible] मछिंद्र [illegible]॥ अबधू रवि आसा बस चंद सप
ढ़िबा। अस्थि का मन्हार सबद थे ले चढिबा। गगन ध्रुव सथ
मिन तन मन निर रहै। ऐसा बिचार मछिंद्र कहे है। गोरख
[illegible]॥ स्वामीजी कुसबद कौ कौण प्रश्न सुसबद का क
थे बास हुसबनाई कौण मुक्त है। सतगुर हो इसपू
छ्या कहै है। मछिंद्र [illegible]॥ अबधू कुसबद का सुस
बद माता सुसबद का पिता निरवाला। [illegible]
इ गुरु मुक्त है। ऐसा बिचार मछिंद्र कहे है। गोरख बोल्या
स्वामीजी [illegible] थानी का कौण मरना। [illegible]
न का कौण प्रसथान। [illegible] यह [illegible] मछिंद्र
बोल्या। अबधू आदि का [illegible] थानी का [illegible]
[illegible] थान का प्रसथान येतना [illegible]
[illegible]॥ स्वामीजी कौं [illegible] माया मोह छूटै कौन
[illegible] कौण पवन थिर चैला [illegible] कौं [illegible]
[illegible]॥ अबधू मन [illegible]
[illegible] छूटै [illegible] पवन थिर चैला [illegible]
बंध [illegible]॥ स्वामी
जी कहो कैसे मन कहां कैसे पवन कहां कैसे सबद कहां
बसे यह कौण प्रसथान ये तत है सतगुर हो इसपू
छ्या कहै है। मछिंद्र बोल्या॥ अबधू हृदै बसे मन ना
भी बसे पवन। [illegible] बसे सबद गगन [illegible] प्रस
थान ये तत रहै। ऐसा बिचार मछिंद्र कहै है। गोरख बोल्या
॥ स्वामीजी [illegible] होता मन ना भीन
होती तब कहां रहता पवन। [illegible] होता तब कहां रहे
ता सबद गगन न होती तब कहां रहता। [illegible] मछिंद्र

अथ स्वामीजी श्री गोरषनाथजी कौ

गुरू गुसाईं ॥ अम्हे ज सिष सबद येक बूझै
कुन्ह कारिबा रोस ॥ आरम्भी
चेला कै सेरहै सतगुर होइ सबुझ्यो कहै ॥ श्री मछिंद्र
बाच ॥ अवधू रहबा तो हाटै बाटै रूष बिरष की छाया
तजिबा तो काम क्रोध लोभ संसार की माया ॥ आपसूं गु मो
ष्टि अनंत बिचार षंडित मंड्या अलप अहार ॥ आरम्भी
चेला ह्वै हि धिरहे गोरष सुणो मछिंद्र कहै ॥ गोरष
बाच ॥ स्वामीजी कौण देषिबा कौण बिचारिबा कौण
लेधरिबा सार कौण देषि मसतग मुंडाइबा ॥ कौण पा
नले उतरिबा पार ॥ श्री मछिंद्र बाच ॥ अवधू आपा देषि
बा अनंत बिचारिबा तत लेधरिबा सार गुरु का सबद ले म
सतग मुंडाइबा ब्रह्म ग्यान ले उतरिबा पार ॥ गोरष
बाच ॥ स्वामीजी आदेस का कौण उपदेस सुनि का कथ
ना सबद का कौण गुरू पूछंत जती गोरषनाथ प
श्री मछिंद्र बाच ॥ अवधू आदेस का अनोपम उपदेस
सुनि का [illegible] निरंतर रहिबा सास सबद का परचा पूछंत
जती श्री मछिंद्रनाथ ॥ गोरष बाच ॥ स्वामीजी मन
का कौण रूप पवन का कौण आकार दम की कौण दसा
साधिबा कौण द्वार ॥ श्री मछिंद्र बाच ॥ अवधू मन का सु
निरूप पवन का निरालंब आकार दम की अलेष दसा
साधिबा दसवैं द्वार ॥ गोरष बाच ॥ स्वामीजी कौण पेड
बिन डाल कौण पंषी बिन सवा कौण षध बिन नीर
कौण बिण काल मूवा ॥ श्री मछिंद्र बाच ॥ अवधू प
वन पेड बिन डाल मन पंषी बिन सवा धीरज पालि बिन
नीर निद्रा बिन काल मूंवा ॥ गोरष बाच ॥ स्वामीजी कौ
ण बीज कौण षेत्र कौण श्रवण कौण नेत्र कौण जोग
कौण जुगति कौण मोहि कौण मुक्ति ॥ श्री मछिंद्र
बाच ॥ अवधू मंत्र बीज मति षेत्र सुरति श्रवण निरति
नेत्र उरमन जोग धूर मज जुगति जोति मोहि ज्वाला मुक्ति
गोरष बाच ॥ स्वामीजी कौण मूल कौण बेला कौण गु
रू कौण चेला कौण षेत्र कौण मेला कौण तत ले रमै
अकेला ॥ श्री मछिंद्र बाच ॥ अवधू मन मूल पवन बे

[illegible] ॥ [illegible] मूलका सुनिमूल
मूलका नि रंतरि लीया पद का [illegible] रा गुरू ॥ कथं सीम
हिं ज्ञाथ [illegible] ॥ स्वामी जी कथं उतपदि ते बोन
कथं उतपदते मना ॥ कथं उतपदते बावा ॥ कथं बाचा बि
ली हते [illegible] ॥ अवधू सबति उतपदते
ब्रां [illegible] उतपदि ते मन ॥ मन उपदि ते बाचा ॥ बाचा
मन बिली हते [illegible] स्वामी कौण सरोवर कै
ण कनाला [illegible] लोकं प्यो
वरकै [illegible] मन पवनां कैसै समिरहै [illegible]
[illegible] ॥ अवधू मन सरोवर पवन सनाल अरधमुष हैरवे
थे [illegible] अरध उरध [illegible] मनपवनां
लै समिरहै [illegible] स्वामी जी कोण सबि पनी
[illegible] लाबै बंध कोण वेतानि नउन
मानि [illegible] सत गुर [illegible] ते [illegible]
[illegible] छिसा [illegible] जोबी [illegible]
[illegible] सब लेत मन [illegible] सा [illegible]
[illegible] ॥ स्वामी जी कहां ते उतपनां [illegible]
[illegible] तिल माहि [illegible] तत [illegible]
[illegible] उतपति [illegible] ॥
[illegible] तिल मधे जु तेल [illegible] मधे होता सने [illegible] मधे
[illegible] दे [illegible] ॥ [illegible] स्वामी
जी [illegible] माझ बंकनालि [illegible]
[illegible] पिंड मधे प्राण पुरस [illegible]
[illegible] ॥ अवधू [illegible] कहै [illegible]
माझ बंकनालि [illegible] नाली [illegible]
पिंड मधे प्राण पुरस [illegible] रहै [illegible] ॥ स्वा
मी जी कौण [illegible] कौण [illegible] बंध कौ
[illegible] मे पवन निरोधै कौण [illegible] मे मन [illegible] कौण
[illegible] मै धो धियानां कौण [illegible] मेली जै [illegible]
[illegible] ॥ अवधू अरध [illegible] मे [illegible] अरध [illegible]
मेल [illegible] बूझाना [illegible] पवन निरोधै [illegible] मे म
न [illegible] मेधौ धियान [illegible] मेली जै बी
[illegible] ॥ स्वामी जी कौण [illegible]
[illegible] कौण [illegible] रहै [illegible]

अवधू हिरदा न होता तब सुनि रहता मन नाभी न है।
ता निरलेकार रहता पवन रूप न होती तब सुनि रहता
गगने न होती तब अंतरि रहता सं॥२८॥ गोरषो
स्वामी जी रात्री न होती दिन कहां तैं आया। दिन प्रका
से रात्री कहां समाया दीवा बुझांनी जोति कहां लाया वास।
पिंड न होता तब प्राण का कहां वासा॥२९॥ श्री मछिंद्र उवा
च॥ अवधू रात्री होती दिन सहजैं आया। दिन प्रकासे रात्री स
हजैं समाई दीवा बुझांनो जो तिनिरंतरि लीया बास॥ पिं
ड न होता तब प्राण का सुनि होता ठे वास॥३०॥ गोरषो वाच
स्वामी जी काया मधे केलष चंद पहोप मधे कहां वसे गंध॥ दू
ध मधे कहां वसै घीव। पिंड मधे कहां वसै जीव॥३१॥ श्री मछिंद्रो
वाच॥ अवधू काया मधे है लष चंद। पहोप मधे चेतानि गं
ध। दूध मधे निरंतरि घीव। पिंड मधे सरब व्यापी जीव॥३२॥ क
गोरषो वाच॥ स्वामी जी कहां वसै चंद कहां वसै सूर। कहां
वसै नाद बिंद का मूल। कहां चढि हंसा पीवै पाणी। उलटी
सकति कौंण घरि आंणी॥३३॥ श्री मछिंद्रोवाच॥ अवधू उ
रधे वसै चंद उरधे बसै सूर। हिरदै वसै नाद बिंद का मूल।
गगन चढि हंसा पीवै पांणी। उलटी सकति आप घरि आंणी॥
३४॥ गोरषो वाच॥ स्वामी जी कथंत पवन तैं नाद कथं नाद
सुनि सम वर्तें वैराण लेसथ। पतैं नादं कथं नाद मिली हते
३५॥ श्री मछिंद्रोवाच॥ अवधू ओंकार उतपदि तै नादं सुं
नार सुनि सम वर्तें। पवन लेसथ पितै नादं नाद निरंज
न मिली होत॥३६॥ गोरषोवाच॥ स्वामी जी नाद न ना दिवा बि
दे न बिदि। गगने न लाइवा आसा। नाद बिंद दोऊ न होइ
गा तब प्रांण का कहां होइगा वासा॥३७॥ श्री मछिंद्रो वाच॥
अवधू नादे ना दिवा। बिंदे नी बिंदिया। गगने ना लाइवा
आसा। नाद बिंद दोऊ न होइला। तब प्रांण पुरस का नि
रंतरि होइगा बासा॥३८॥ गोरषो वाच॥ स्वामी जी आकार छू
टसी निराकार होसी। पवन न होसी पांणी। चंद सूर दोऊ छी
न सी होसी। तब हंस कौंण निसांणी॥३९॥ श्री मछिंद्रोवा
च॥ अवधू सहज हंस का षेलं मण जे सुनि हंस का वास
सहज ही आकार निराकार होसी। परम जोति हंस का नि
वासा॥४०॥ गोरषो वाच॥ स्वामी जी अमूल का कौंण मूल मू
ल का कथं वास परका कौंण गुरू सब्दै तजंत गोरषनां॥

वउतयमि निंद्राकाल जोति मेंये चतत गरि रहे जैसा
विचार मनि हिंडकै [illegible] बाच्या स्वामीजीकौ
[illegible] जावै [illegible]
[illegible] सतगुरु [illegible] कहै [illegible]
[illegible] सबद [illegible] देख
[illegible] रहे जैसा
[illegible] स्वामीजीकौ [illegible]
[illegible] रसको [illegible]
[illegible] रहे सतगुरु [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] विचार [illegible]
[illegible] स्वामीजीकौ [illegible]
[illegible]
[illegible] कहै [illegible]
[illegible]
[illegible] जोति
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] विचार [illegible]
स्वामीजीकौ [illegible]
[illegible] सतगुरु [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] स्वामीजीकौ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] स्वामीजीकौ [illegible]

नवग्रह बिचरै या पन पुनि॥ सिवस
नरहै॥ अैसा बिचारम छिद्रकहै॥ ५६॥ गोर
कौ लोगरभि

व्यकौण दिसा उतपति भया सरीर॥ ५७॥ श्रीमछिंद्रोवा
च॥ अवधू सुनी लघरि अकाति बास॥ अतीत गरभि
बसा दसमास॥ मन मुषि थापी पवन मुषि असहति
॥ ५८॥ गोरषोवाच
भर वोक कार दिसा उतपति भया सरीर॥ ५८॥ गोरषोवाच
स्वामीजी कौण नालि होइ सिवस चस्या॥ कौण मुषि पे
ग जीव कौ गरभि वसतडा कौण नालि रस पीवं॥ ५९॥
॥ श्रीमछिंद्रोवाच॥ अवधू सषनी नालि के सिवस च
ल्या सुषमनि पै ग जीव॥ माता गरभि वसतडा वंकनालि
रस पीवा॥ ६०॥ गोरषोवाच॥ स्वामीजी कौण सुनि उतपन्न
आई कौण सुनि सतगुर सबुझाई॥ कौण सुनि मैं रह्या स
माइ॥ येतत गुरु कहो समझाइ॥ ६१॥ श्रीमछिंद्रोवाच॥ अ
वधू सहज सुनि उतपना आई॥ साथि सुनि सतगुर सबु
झाई॥ अतीत सुनि मैं रह्या समाइ॥ परम तत कहुं समझाइ॥ ६२॥ गोरषोवाच॥ स्वामीजी कौण मुषि लागे समाधि
कौण मुषि छूटै उपाधि॥ कौण मुषि तुरीया बंध॥ कौ
ण मुषि अजरी वरकंध॥ ६३॥ श्रीमछिंद्रोवाच॥ मन मुष वा
ला लागे समाधि॥ पवन मुषि वाला छूटै उपाधि॥ सुरति
मुषि वाला तुरीया बंध॥ गुर मुषि वाला अजरी वरकंध
॥ ६४॥ गोरषोवाच॥ स्वामीजी कौण सोवै कौण जागै॥ कौण
दह दिस धावै॥ कहां तै उतपत पवन॥ कौण ठंठताल का
वजावै॥ ६५॥ श्रीमछिंद्रोवाच॥ अवधू मन सोवै पवन जा
गै॥ कल्पना दह दिसि धावै॥ नाभी तै उतपत पवन॥ हृ
दै ठंठताल का वजावै॥ ६६॥ गोरषोवाच॥ स्वामीजी कहां
थै करै मन गुण घणां॥ कहां थैं पवन करै आवागवनं॥
कौण मुषि चंदा नीझर करै॥ कौण मुषि काल निद्रा करै
॥ ६७॥ श्रीमछिंद्रोवाच॥ अवधू हिरदा थै करै मन गुण घ
णां॥ नाभी थैं पवन करै आवागवनं॥ आप मुषि चंदा नी
झर करै॥ मन मुषि काल निद्रा करै॥ ६८॥ गोरषोवाच॥
स्वामीजी कौण सुनि थै जोति पलटै॥ कौण सुनि थै व

ण आधार। आधार कौ पारख्या॥ ॥ श्री मछिंद्र उवाच -
३०४ अवधू मन का पवन आधार। पवन का ... सात सानि का पु
रुष आधार। ... ॥ स्वामी
जी कौण चक्र मैं थिर है रूप्या॥ कौण चक्र मैं प्राण गाढ़ बंध्या
कौ। कौण चक्र मैं हंस निरोध्यौ कौण चक्र मैं मन परमोधौ कौ
ण चक्र मैं नाद है सवाद कौण चक्र मैं लागै समाधि॥ श्री
[illegible] अवधू मूल चक्र थिर है बंध्या। गुद चक्र
प्राण गाढ़ बंध्या। मनि चक्र मैं हंस निरोध्यौ। हृदय चक्र मैं
मन परमोधौ। विसुध चक्र मैं नाद है सवाद। चंद चक्र मैं ल
१८८ गै समाधि। षट चक्र का ... सेवा सो आपै करता आ
पै देव। मन पवन साधंत ते जोगी। उलटा पलटै काल से
नि रोगी॥१२॥ इति श्री गोरष बोध ग्रंथ मछिंद्र नाथ
गोरष [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] स्वामी जी तुम्हे ब्रह्मचारी कि ग्र
हचारी॥ कि तुम्हे बालक कि वृद्ध धारी॥ कि तुम्हे जोगी
कि जोग जुगता॥ कौण प्रसादे मोक्ष दै मुक्ता॥१॥ श्री म
छंद्र उवाच॥ अवधू न हम्हे ब्रह्मचारी न ग्रहचारी। न हम्हे बा
लक न वृद्ध धारी। न हम्हे जोगी न जोग जुगता। आपा प्र
सादे मोक्ष दै मुक्ता॥२॥ गोरष उवाच॥ स्वामी जी आप
मैं गोसत गुर आपणा। अपणपर कै ... या॥ गोरष क
है सुणौ हो स्वामी॥ तुम्हे कौण पुरुस कै हाथै आया॥३॥
श्री मछिंद्र उवाच॥ अवधू हौ गुप्त गुरु पुरुस ... पुरुस ही ता
पुरुस की छाया॥ दत्त कहै सुणौ हो गोरषा। अम्हे गैबी पुर
स गैब थै आया॥४॥ गोरष उवाच॥ स्वामी जी अजर विंद
अगाध बाई अवरन ... की माया। गोरष कहै सुणौ
हो स्वामी॥ कूंसी फैतजला विंब की काया॥५॥ श्री म
छंद्र उवाच॥ अवधू कै ... बाई पवन नै न माया। श्री का
र निराकार सुक्षम नही काया। ... जल विंब उप
न आया। दत्त नै गोरष का या न माया॥६॥ गोरष उवाच॥ स्वा
मी जी कौण सआवै कौण सजाइ। जो बोलै सो कहा समा
इ। जे मछिंद्र सत कहीं ऐ नेव। गोरष नणै सुणौ दत्त देव
॥७॥ श्री मछिंद्र उवाच॥ अवधू न कोई आवै न कोई जाइ। आसा

मुषनचुवै सुरंगा॥तामेनिहचलवौसैंर
॥१९॥मछिंद्रोवाच॥

ऐसा विचारमछिंद्रकहै
॥मंदरकौणसदेवा॥क

॥१८॥

॥छिंद्रोवाच॥अवधूस्वनिसम
रिमनसदेव वैंगनिरंतरिकोजेसेवापोहूंपातीउनम
निरहै ऐसा विचारमछिंदरकहै॥१६॥गोरखोवाच॥स्वाम
जीकोणसमंदिरकौणसहार कौणसमूरतिकोणअया
राकोणसमैनिरंतरहै॥सतगुरहोहसपूछ्याकहै॥१७॥
मछिंद्रोवाच॥अवधूस्वनिसमंदिरसबदसहार जो
तिमूरतिज्वालाअपारा॥अरूपरतपमनउनमनिरहै
ऐसा विचारमछिंदरकहै॥१८॥गोरखोवाच॥स्वामीजीकौ
णसदीवाकौणप्रकासाकौणबातीतेलनिवासकैसै
दीवानिहचलरहै॥सतगुरहोहसपूछ्याकहै॥१९॥मछि
द्रोवाच॥अवधूपानसदीवासबदप्रकासासंतोषबा
तीतेलनिवासाइवधामेटिअमंडितरहै॥ऐसा विचार
मछिंद्रकहै॥२०॥गोरखोवाच॥स्वामीजीकोणवेगकोण
चल्या॥कोणदिस्याकोणमिल्या॥कौणसघरमैनिरभै
रहै॥सतगुरहोहसपूछ्याकहै॥२१॥मछिंद्रोवाच॥अ
धवेगधीरनचल्या॥विकाल॥सूरतिसुकिस्यामिल्या॥सु
रसदाअतीतघाटनिरभैरहै॥ऐसा विचारमछिंदरकहै
॥२२॥गोरखोवाच॥स्वामीजीकौणसजोगीकैसैंरहैकौण
सभोगीकैसैंलहै॥सुखमैकैसैंउपजैपीवा॥तामैकौणवं
धावैधीर॥२३॥मछिंद्रोवाच॥अधूमनजोगीजैउनमनि
रहै॥उपजैमहारस सबसुखलहै॥रसहीमाहिसंषउ
तपीर॥सतगुरसबदबंधावैधीर॥२४॥गोरखोवाच॥स्वा
मीजीकौणसआत्मा आवेगारा॥कोणसआत्मासुनि
समाइ॥कौणसआत्मात्रिभवनथी॥कोणपरचैबाद
नवी॥२५॥मछिंद्रोवाच॥अवधूपवनसआत्माआ
वेगारा॥मनसआत्मासुनिसमाइ॥ग्यानसआत्मात्रिभ
वनथी॥गुरपरचैबादनवी॥२६॥गोरखोवाच॥स्वामी
जीमनकाकौणजीवजीवकाकौणवेसासवेसासकादे

[illegible] कौं [illegible] पानिका [illegible] ऐसे गोरषमतो सुणौ दत्तदे

२८५ [illegible] ॥ [illegible] सोई कंटक बुधि

[illegible] जो निर्मल बुधि ध्यान सोई जो दया धर्म ग

न सोई जो [illegible] खवला ॥ स्वामीजी

कौं [illegible] कौंण संजोग कौंण सच

कौ [illegible] का कहीयै ऐसे गोरषमतो सुणौ दत्तदेव

[illegible] जो करम [illegible]

[illegible] जोग [illegible] मन रहै गो

रष सुणौ दत्त [illegible] स्वामीजी कौं व

[illegible] आये रोग [illegible]

[illegible] ऐसे गोरषमतो सुणौ दत्तदेव ॥ श्रीद

जुगि [illegible] सोई जो [illegible] जोगली

[illegible] मन रहै गोरष सुणौ

दत्त [illegible] स्वामीजी कौं [illegible] धरम कौं न

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] गोरषमतो सुणौ दत्तदेव ॥ श्रीदत्त

[illegible] साधरम सोई द

[illegible] धरम सोई

[illegible] कौंण सम

[illegible] कौंण

[illegible] ऐसे गोरषमतो सुणौ दत्तदेव ॥ श्रीद

[illegible] सबदस

[illegible] मन रहै गोर

ष सुणौ दत्तदेव [illegible] स्वामीजी कौं सत

[illegible] कौंण [illegible] थे नाया ॥

[illegible] ऐसे गोरषमतो सुणौ दत्तदेव ॥

श्रीदत्त [illegible] ॥ [illegible]

र [illegible] अपार

[illegible] गोरष [illegible] स्वामीजी

कौंण [illegible] कौंण [illegible] कौंण [illegible]

[illegible] ऐसे गोरषमतो सुणौ दत

[illegible] ॥ [illegible] ध्यान सोई [illegible] रहै

[illegible] सोई [illegible]

[illegible]

येवैस्‍उत्तपोवाहाण्सांभलि गोरषद्रुसे

॥ ७ ॥

करऊबिश्रांम॥ कौंणसघरसोदाखोनांम॥ श्रीदत्तकं
वाच॥ अवधूबिमांमाता संतोषपिता ग्यांनगुरू उपदे
सपितात॥ अलेषसणतद्वाबिश्रांम॥ सांभलिगो
रषदासूगंम॥ १०॥ गोरषोवाच॥ स्वांमीजी कौंणसमुकत
कौंणसदुषसहै॥ कौंणसबिनसै कौंण अजररहै॥ जोभ
मिहोइसकहीयेंनेव॥ गोरषजोसुणोदत्तदेव॥ १॥ श्रीद
त्तऊवाच॥ अवधूब्रह्मसुगलेषकातिदुषसहै॥ पवन
बिनसैब्रह्मअजररहै॥ ५॥ इहगिग्यांनकथिलेअपासांभ
लि गोरषकुक्क बिचार॥ १॥ गोरषोवाच॥ स्वांमीजी कौंणस
मूलमकौंणसथूल॥ कौंणसडालाकौंणसमूलजो
गमिहोइसकहीयेनेव॥ गोरषजोसुणोदत्तदेव॥ ३॥ श्रीद
त्तऊवाच॥ अवधूब्रह्मसत्ताबिमततसथूल पवनसड
लामनसमूल॥ ५॥ इहगिग्यांनकथिलेअपारसांभलि
गोरषकुक्क बिचार॥ ४॥ गोरषोवाच॥ स्वांमीजी कौंणस
गुरूकौंणसचेला॥ कहिजिथिहोइअनंतसिधांतनै
ला॥ ब्रह्मकंसलकाकहीजैस्वगोरषजोसुणोदत्त
देव॥ ५॥ श्रीदत्तऊवाच॥ अवधूग्यांनगुरूमनसगुरू ज्ञान
मोसचेला॥ सहजसुरतिहोइ अनंतासिधांतनैला
ब्रह्मकमलउधमुविष्णुसांभलिगोरषउनमन
कल्ला॥ ६॥ गोरषोवाच॥ स्वांमीजी कौंणसउनमनिकौं
णसकल्ला॥ कसिबिधिफूटैत्रिकुटीताला॥ नादबिंद
कहीयेनेव॥ गोरषकहैसुणोदत्तदेव॥ ७॥ श्रीदत्तऊवा
च॥ अवधूउनमनिध्यांनपवनावीधिकल्ला नादमुधि
फूटैत्रिकुटीताला॥ दसवेंद्वारिभेदकावासासांभलि
गोरषनादमदास॥ ८॥ गोरषोवाच॥ स्वांमीजी कौंणस
बोटकपौंणउचाट॥ किहिबिधिफूटैब्रह्मकपाट॥ श्र
मयंप्रकाकहीयैनेव॥ गोरषजोसुणोदत्तदेव॥ ९॥
श्रीदत्तऊवाच॥ अवधूकटकसोईजिहिआतितक्रोध
॥ उचाटसोईआत्माबिरोध॥ इसमुधिफूटैब्रह्मकप
ट॥ सांभलिगोरषउजबाट॥ १०॥ गोरषोवाच॥ स्वांमीजी
कौंणसदयाकौंणसधरम॥ कौंणसबड़णतिरणवा

ला॥४॥श्री[illegible]॥अवधूतुमेवगोरषतुमे[illegible]

८६ अनंत सिधां मे तुम लोपाल॥तुम्हे सिध नाथ[illegible]

केदस गोरष जोग॥५॥गोरष बाणी॥स्वामी जी द[illegible]

स्वारा देव॥अादि अंति सिध पाया जे बा॥गोरष[illegible]

नाम॥जोग जोग परम निधान॥५१॥इति श्री द[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]॥स्वामी जी[illegible]

[illegible]॥अवधू[illegible]

जोगी [illegible]॥स्वामी जोगी[illegible] ते बो[illegible]

[illegible]

[illegible]॥अवधू[illegible] निरंजन जोगी॥स[illegible]

[illegible] निरंजन[illegible]

[illegible] सेकी[illegible]

[illegible]

[illegible] तिते का बोली ये[illegible] ते का बोली[illegible]

[illegible] बोलीये॥[illegible] ते बो[illegible]

ते [illegible]

[illegible] तिते का बोलीये॥अवधू सत[illegible]

[illegible] बोलीये[illegible] बोलीये सत[illegible]

स्वामी[illegible] ते का बोलीये॥[illegible]

ये॥अवधू[illegible] बोलीये[illegible]

[illegible] बोलीये॥[illegible]

न [illegible]

[illegible] बोलीये॥स्वामी[illegible]

ते का बोलीये[illegible] बोलीये॥[illegible]

तिते का बोलीये॥अवधू[illegible]

[illegible] बोलीये॥[illegible]

स बोलीये॥[illegible]

[illegible] बोलीये[illegible]

[illegible] बोलीये[illegible]

ससिहरतसरकौनसमिवनैं ८

यैनेव गोरषनऐ सुणोदतदेव ५९

ससिहरतसै गोवरबास सोमलिगोरष

अवधू मंत्र

पदजीतिजरा

स्वामीजीकोणसपरबौकौणपरतितकैसैसिधत्वेचलचित
मनपवनाकाकहीयेनेव गोरषनऐसुणोदतदेव ४१ श्री
दतउबाच अवधू गुरपदे मनपरतिता निसचल अस
थित्वेचलचित पवनथिरतांमनथिररहे गोरषसुणोद
तयूकहे ४२ गोरषोवाच स्वामीजीकोणसनिसचलतले
बंधेबंध जुरामरण अजरीवरके ४३ गगनपदकाकही
येनेव गोरषसऐ सुणोदतदेव ४४ श्री दत उवाच अवधूनि
सचलसो जोनपडेकाया त्रिगुणरहतसो गगनसमाय
सहजपदपरमनिरबांण सोमलिगोरष येपरवाण ४
४ गोरषोवाच स्वामीजीकोणसकतिकौणलीवकै
णतीनभवनकाजीवकौणसनासापुरषैनेव गोरषमऐ
सुणोदतदेव ४६ श्रीदत उवाच अवधूसकतिसो जोस
बहीसोषे सीवसोईजोसबकूंपोषे जीवयेकतीनभवन
जगनाथ सोईसंगीतोपरदै ४७ गोरषोवाच स्वामी
जीकौतत्वलेकथिवाग्यान कौणतत्वलेधरिवाध्यान
कौणस्माधिलमलागे नेव गोरषनऐसुणोदतदेव ४८
श्रीदतउवाच अवधूआत्माचीन्हेतबकहाकथिवाग्यान
तत्वबिचारिबावाहाधरिबाध्यान दतकहेहमसहजस
मांन सोमलिगोरषपदनरबान ४९ गोरषोवाच स्वामी
जीकौणतत्वतुमरहेसमाइ कौणतत्वतुमसाधिआन
कौणपरचैतुमकहीयेनेव गोरषसऐसुणोदतदेव ५
१ श्रीदतउवाच अवधूदतचुलागातत्वसेततदतहीमे
हीतत्वदतपरचा अवतपहुंना कहूणौनाहि ५१ गोरष
वाच स्वामीजीतुम्हेंदतत्वमेवदेव आदिमधिअंतपो
नेवतुम्नाराशणतुमकोपालतेमहेसपत्नविस्नकेपा

का कौ स्वाद [illegible] ॥ बाह्य कौ [illegible] ॥ [illegible] सबी कौ
[illegible] ॥ अथ पृथ्वी [illegible] ॥ आसाधन बेती ॥ अप
का [illegible] ॥ मन सा चोरटी तेज का [illegible] ॥ कल्पना बेड
ली ॥ बाइ का [illegible] ॥ चिता [illegible] णी ॥ आकास का [illegible]
से [illegible] ॥ स्वामी [illegible] कौं गुणी ॥ अप कौ गु
ण [illegible] तेज कौ [illegible] ॥ बाइ कौ [illegible] ॥ आकास कौ गु
ण [illegible] ॥ [illegible] मूल गुणी ॥ [illegible] गुण ॥ तेज
रूप गुण ॥ बाइ [illegible] गुण ॥ आकास मे [illegible] गुण
[illegible] दिस [illegible] का सा [illegible] ह
[illegible] पूर्व [illegible] तत कर [illegible] त
[illegible] ॥ [illegible] गति [illegible] तत पादि तेज [illegible] ॥ ओं
[illegible] आकास ॥ आकास [illegible] बा
[illegible] उतपादि ते
[illegible] तेजा ॥ तेज [illegible]
[illegible] आकास [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] गति रहति
[illegible] निर्गति [illegible] निपट
[illegible] ॥ [illegible] समाया
इती [illegible] ॥ इती गो
रष [illegible] गुष्टि संपूर्ण ॥ गुरु [illegible] पादुका [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ सबद [illegible]
[illegible] ॥ कोट
[illegible] ॥ [illegible] अधिक
[illegible] मेरा [illegible]
समांना [illegible] ॥ [illegible] तन मन नहीं
[illegible] ॥ [illegible] मेरी [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] स्वाद [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] कराबि
[illegible]
[illegible]
[illegible] आपा [illegible] ॥ [illegible] हरि न
[illegible]
[illegible] ॥ आपा [illegible]
[illegible] गति [illegible] नहीं [illegible]

संकोचरणा॥अगोचरीबोलीये

णबरणा॥अपकाकौणबरण॥
॥कौणबरण॥तेजकाकौणबरण॥आकासका॥
तेजरत्ता॥वा
॥न॥
सस्वांम॥स्वामीप्रथीकाकौणत्वाद॥अ
॥प॥
॥कौसमिजल्ता॥स्वामीप्र
॥णसुन्नाव॥तेजका
कौणसुन्नाव॥वाइकाकौणसुन्नाव॥आकासकाकौण
सुन्नाव॥अवधूप्रथीमांगी॥अपसीतल्ता॥तेजताता॥वा
इचल्ता॥आकासकुन्ना॥स्वामीप्रथीकाकौणगुरू॥
अपकाकौणगुरू॥तेजकाकौणगुरू॥वाइकाकौणगुरू॥
आकासकाकौणगुरू॥अवधूप्रथीकागुरूमनदेवता
बाचासरूपी॥अपकागुरूचंद्रदेवता॥बुधिसरूपी॥ते
जकागुरूसस्निदेवता॥अगनिसरूपी॥वाइकागुरूई
सरदेवता॥आनंदसरूपी॥आकासकागुरूगोरखदेव
ता॥अगतिसरूपी॥स्वामीप्रथीकाकौणघरकौण
दारकौणअहारकौणनिहारकौंओहार॥अपकाकौण
णघरकौणदारकौणअहारकौणनिहारकौणओहा
र॥तेजकाकौणघरकौणदारकौणअहारकौणनिहार
कौणओहारा॥वाइकाकौणघरकौणदारकौणअह
रकौणनिहारकौणओहार॥आकासकाकौणघरकौ
णदारकौणअहारकौणनिहारकौणनिहारकौणओ
हार॥अवधूप्रथीकावलेजाघर॥गुदादार॥षाइपीवै
आहार॥प्रमरीबजरीनिहार॥लोमल्लालयओहार
अपका॥लिलाटघर॥पंद्रीदार॥नीयाअहार॥बिंदनि
हार॥भोमहीधनओहार॥तेजकापीताघर॥चषिदार
दृष्टिअहार॥हरषनिहार॥मोहओहार॥वाइकानाभि
घर॥नासिकादार॥बासनाअहार॥निरवासीकनिहार
डिंनपापंडओहार॥आकासकाब्रह्मंडघर॥श्रवन
दार॥नादअहार॥निकनिहार॥आस्कोषओहार॥स्वा
मीप्रथीकाकौणनारज्या॥अपकाकौणनारज्या॥तेज

द्रमे ग्राघ कहै ओ रषनी ऊरनी ओ गानिम्रपिब चै सोपै बा
२८ ५ गहसारा धारहा गौ तैयै कंवर नियूसै तिसीया मरै संसा
रस्द यंद्रमिलमा तै धत्ती निपनो यंद्रा बरषे देहा। २६ ह
मसाबा पीवोली मां पिक दुपि पि लो हीर ३०। याघ रमे
घरस जगिनी सी। सूरज धात मे सोनां यूं सब जुगमां
हि सम कि दाबि नाल। लाया रिपापन दुनो ३१ बहतीनदी
मां कहीं आमी। तारो जदे षिपक्षाही। कुल नदे बल मन ओ
गां लोमा बेल्यां कलर्या कही ३२ नो लष द्वारी पिन्न पूर्वी
पुगटी कोरी कितो निम्रुध झापो क है नाथ धरम कापें डा ये
सो बूंदन लपी ३३। पारा कै धा रि न मह मातो। संगतिस्र
ति देवां सी कै नाथ पनी लिखु सम्यवो जबलि बधरिसु के
तिसमां णीर ३४। अनहद धुनि मैं रह नि रहमा री। ततदा घिम
नन सा। पाप मां हि आपा ग्रगट् रा। सबजा हीधी मैं धमरा
३५ अनहद जो निरंजनी सी। सं तां सिद्ध पुरष मिलावा। नारद
मी मे आनंद्मा रा। ताघ टै या मि लै ना ३६ उरधमरे
नौ धि रहा रूपी वो गंधे पट संबुरी ग्राथे ला ब न सब कुग
लघे सा तिमस बजे षि धारी ३७ नवो मै त्रिलो क समान।
विहनी रहूं चं ता वूंको हां को रहूर सियांनी। अनहद
नादइ भा ३८। सुखमन नन सकामा र गा पुरषां पंघ
जता या सबजुदा तीन अनाहद बोले झांझर गति समाय
३६ त्रिमलपथ वा गलजूं परमके। हदहदलौ घन गाजे ता
इनी मैं जो गी का घर। अनहद का गाजे ३७ जा पदमंदि
धमा कह है मदीस वा मेला। वा विनाग हा। अनहद
नीमा वैपुरष मकेल। ३८ नो लज पानी अपेनो
या बैसर हम जराता जो मैं मन रहै जो मीह ली नव अंतरं
व से नहा रा ३९। सम्य रहे तो थि सना ड्रि है मत रजदे थिपजे
ही सत गुरमि ले तो सा सा मपो। सुरत जय बा सा धा धादी
४० नमा हि निरंजन ने यु। तिल मुषमे युं तेल
रति मांहि सुरति पायमा। मंधा निरंतर षेल ४१ अनहद
हीनहा सब कहू देष्या। कहां न को पति आई
व तदै ही गई या। बिरला यदो समाई ४२ हि ममा
याको गति वले मुल तानें। जैसे तम जो गी
निभाव। पदन्त वानें ४३ आफुनानिकै पैसूं दनदल के
हति मे गावी न मैं मिरता धो। सिध समाधि जोग झो मा

जैटा घाटै नै सो बीग निहचा हो तो गे

नवेरा जे लग्या जिन सबां नि पाई

गोया राडी ॥ विद ओर मगवा घी ॥ ओरे विनदा तो जुग
बया ॥ प्राणपुर सकम मरमनपायु ॥ डोडि छिमतेमाया ॥१०
मोबेला कड जू घुण लगे लो है ला भो का डा ॥ छिन परत
तिकहा पुरवी जे का लजग्या लाजा ॥ ११ ॥ रडोत ज्यां नयस
या जीवो पुरपत ज्यान ही नारी ॥ कहै ना धवे दोन्यू छिन से
धोषा का आसवारी ॥ १२ ॥ वैस दरसु द्दिवू हम जु होते सडप
डाऊ बोनी ॥ आसमेद वी धिवू लनजिग निपनां नै ॥ जुगति
जमाया पोनी ॥ १३ ॥ रंजु गाडा ॥ जोभे त्वर भाषा ॥ सिवत
कना सं फेरा ॥ जापा दिमंदर सुरब मिलेबा ॥ वहमंदिर घ
मेरा ॥ १४ ॥ यारहनी मे घर घरला ॥ सा जो गजुगा ते का रिया
या ॥ सिध समा ॥ ये देव घर मे ल ॥ गोरख लह ॥ समाहा
॥ १५ ॥ हाली नीतर खिला ॥ निदां ले जुग मे ता लसमा ॥ श्री बर
से मारट डू के सां वाण ॥ नदा ग्रपवा आरि दा गव पदमा
ही पहो वारफ दको ॥ दादर मलाफि लारी ॥ वा ॥ १६ ॥ गमे चो
मामा बोले ॥ ऐसा समा हमारो ॥ १७ ॥ आसा त्रि सना ॥ छिरक
बेगी ॥ मदपत्चे सुषमा या ॥ सके नर वर कूपल मे न्हीइ
सिवि धिनिय जी का या ॥ १८ ॥ स्व दे सपवा ही घाटी ॥ न
नमा लिया हमारा जे गा ॥ गुरु समारा नांवग रद ही पेमे
टै अरभ वि वो गा ॥ १९ ॥ नो प्रमा छिमा निमु जि ज्यों का डु
रहि लग पाडो री ॥ परम पुरष फिर बिले मा ॥ मई ज्य
मगति मोरी ॥ २० ॥ अवा च कथ्या अनअ बिर बोला ॥ आ
गम गम न करि लीया ॥ दे सबि ले बा वू दन्त लदै ॥ व दि
सरवा विंधदी या ॥ २१ ॥ बोलै ना ख्गगन धर वास ॥ आन
रिबसी य जा ॥ श ॥ परम पुरस मेरैका ॥ गढ माडा ॥ १ ॥ दिन
दिन कलास वाई ॥ २२ ॥ ऐसै रम ड़ जे सै न पसव नै दे सं
क्या सरीर न लूटै ॥ चनता फिरत पद मो हिसमा वे ॥ जन्म
मरण ने लूटै ॥ २३ ॥ मरि मरि जि ॥ इ जाइ लुस लामा ही ॥ तन
का भरम न पाया ॥ समझ्या हो इतो पद पं ध डोरि धोवे
जनम गम या ॥ २४ ॥ या पद की का थि न है करनी ॥ केवल मत
पुरष की रहनी ॥ या रहनी तै पार सनि पजे ॥ लोहा कं चन

३०५

सिको लछिन [illegible] सिधि को पाई जोजन ऊपरे स्यारं
॥ [illegible] लछिन [illegible] ॥ ३ ॥ अथ [illegible] सिधि पु
रा ॥ १ ॥ ये ऊपरि [illegible] नांही [illegible] सिधि नांही अ
[illegible] नांही [illegible] नांही द्या ऊपरि थि
रनांही ॥ [illegible] ऊपरि [illegible] नां
ही ॥ [illegible] ऊपरि [illegible] नांही ॥ नासिका ऊपरि [illegible] नां
ही ॥ [illegible] नांही ॥ [illegible] ऊपरि [illegible] ति
नांही ॥ [illegible] नांही ॥ मूल ऊपरि [illegible] ति
नांही ॥ [illegible] ऊपरि [illegible] नांही ॥ [illegible] ऊपरि [illegible] नां
ही ॥ [illegible] ऊपरि [illegible] नांही ॥ काया ऊपरि [illegible] नांही
[illegible] ऊपरि [illegible] नांही ॥ [illegible] ऊपरि [illegible] नांही ॥ सं
[illegible] ऊपरि [illegible] नांही ॥ [illegible] ऊपरि [illegible] नांही ॥ अ
[illegible] ऊपरि [illegible] नांही ॥ [illegible] कराया तिनां
ही ॥ [illegible] नांही ॥ चित ऊपरि [illegible] नांही
काल ऊपरि [illegible] नांही ॥ [illegible] नांही ॥ जि
[illegible] नांही ॥ [illegible] नांही ॥ नारा
[illegible] नांही ॥ [illegible] नांही ॥ इ
तो ग्रंथ [illegible] ॥ ३ ॥ अथ [illegible] सिधि
लछिन ॥ [illegible] सिधि [illegible] पावै [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] सिधि ताको लछिन मा
[illegible] ॥ [illegible] सिधि ताको लछिन लघु दीर
[illegible] ॥ [illegible] सिधि ताको लछिन ब्रह्मा वै
[illegible] ॥ [illegible] सिधि ताको लछिन अनेक रूप
[illegible] ॥ प्रापति सिधि ताको लछिन [illegible] ताकै ॥ प्र
[illegible] सिधि ताको लछिन [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] सिधि
ताको लछिन [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] सिधि ताको
लछिन ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]
ना सिधि ॥ मनोजा सिधि ताको लछिन ॥ सरव को मन
नां वांछा सो ॥ १० ॥ [illegible] सिधि ताको लछिन मन
मांनै तहां सरीर काढै ॥ ११ ॥ [illegible] सिधि ताको लछिन
सीत उसन तें रहत होइ ॥ १२ ॥ [illegible] सिधि ताको
लछिन ॥ [illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] सि
धि ताको लछिन ॥ [illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] सि
धि ताको लछिन ॥ [illegible] ॥ १५ ॥ [illegible] सिधि
जलवसि सिधि ताको लछिन जल आग्या मैं रहै ॥ १

मैं

॥इतीग्रंथग्यानतिलकसंपूर्ण॥ग्रंथ४
वोऊंअकलपंथसकलिकाम
रानाथजोग॥प
॥निजमवनगुफा॥सदूगलंजमकोपी
१५॥वलजोगोटा॥जुगतिऊंड
२१५। २०॥अंत
नडीवी॥निगुन

इला॥मनउदिसा॥महाअ

खेगीकला॥बि
लवनबंध
मल्लजगामलरा॥अ
मीकलीपुसप॥सतसंतोषफला॥निराकारकलपवृख
फिंगसेवर निरासमढी॥सतीतदेवत॥गिनानदीप॥रा
का॥अकलपरहनी॥अजाचीदभिछ्या॥सबदलीण॥
अनाहदकीगुरी॥पवनआधारी॥अष्टांगजोग॥स्त्र
तप्याला॥निहचलरिधि॥सतिकरामति॥मुकतिसी
धि॥अनयाजाप॥अलजदरसन॥निरतरिध्यान॥अटल
समाधि॥सारमात्रातततरत॥अलखनिरंजननिरक
ष॥कथतश्रीगोरख॥नाथजोगी॥सतिसतिभाषंत॥
बाबामछींद्रप्रसादे॥गुरुमछिंद्रनाथकपाडुकानि
मस्तते॥इतीश्रीनेमामात्रासंपूर्ण॥ग्रं।५॥अथबतीसलछे
ननिख्यते॥ग्यानपारख्या॥निर्लोभीनिहचल॥नि
रवासीकनिहसवदा॥विचारपारख्या॥निरमोहीनि
रबंधनिसंकनिर्बाण॥बमेकपारख्या॥सरबंगीसा
वधानसतिसारग्राही॥संतोषपारख्या॥अजाचीन
अबोछीका॥अमाननिश्चलथिर॥बलपारख्या॥
निहतरंगनिहपरपंच॥निरद्वंदीनिरलेप॥सहज
पारख्या॥सुमतीसुहृदी॥सीतलसंपदा॥सीलपा
रख्या॥सुचिसंजम॥सतिश्रोता॥सुनिपारख्या॥नै
लभ्यानसमाधि॥इती अष्टांगजोगपारख्या॥नग

२८१

मकाशै॥ इती आत्मबोध संपूर्ण॥ ग्रंथ॥ ४॥ अथ ग्रंथ
मछींद्री लिष्यते॥ गोरष उवाच॥ स्वामी॥ राजा॥ ये ए
ता कुंसल कंकुंगोष्टि पालके॥ गोरष कहे है
नीतां प्रकार। इन मसो मसो॥ स्वत क्रीयालेबो असा
त्रं नंदन कर्ते स्थांपाविराजि ना कंनानां कर कार ह
नमो नमो॥ प्रकार। इक कई सब वृद मंडो पंच रंच गगा
रुद्रां पंच पालहर गहे सो प्रकार। इनमो नमो नो
नासा एको दासी नो नो लख कासित नादबिंद
मेली नीन प्रकार। इन मो नमो॥ १॥ आदि तत लिसंसा
सो कुलेद चमसोपा दरेषि जोगमे सचीदो एकरा इ
नमो नमो॥ १॥ गर्बेर मोन सक ज्ञान दसकारं सरूप लषितं
सकारे इकी सब रूल डों नकार नादबिंद सबकारं
थोनमो नमो॥ ६॥ इती ग्रंथ मछींद्री संपूर्ण॥ ग्र॥ १
अथ ग्रंथ रहरासि लिष्यते॥ श्री कंकरादेस आदेस ग्रल
[illegible] वली तें तदांन होनी धरती आकास तद
कालेसै सूनी ईश्वर मारे लिपनी मालानले बीद सम
सम्बंध मितान करि वृक्षा धारे बिहार जो नीत रहा
सालीनी मन रूप सुमत मागोपी बेल नवकाहि
लक्ष्मी लेम पुरुष नहीं पेमसिला तद बैठे गो
रष सील मन मछींद्र की कासपद करो। मछकामत
दलेले सी सिमे सा प्रचनी पवन नाली द्विषार
बैंद्री कछु पिबही ते प्रहंकारा कला होतसिंध बैगतेप
सो लो श्री गोरषनाथ बुलावा प्रत्युत्तो अनत सिधा
रहा सिकदू मादल रिषे मलेसे सो साहि॥ इती ग्रंथ
रहा सिसंपूर्ण॥ ग्र॥ २१॥ अथ ग्रंथ ग्यान तिलक लिष्यते॥
वो सिधो वोगल ताको आदिनाथ कापूत कहां जो गो
गारसी जाहीं बांधे सब अनादि नाथ अवेक बानी जो
॥ जोगा रंग हिरदा मे मांडो॥ रुपा जपा बोज नती आडो
गोपी वाजे जनम्हवा नाका कारि जप हुली सुवा पच
यसंवा रषि धाने धूनी नामे बीटी केता मुद्रा तजो क
रनि जरि बिनती ब रवा फाहडी मिलिलो हाथि
आतम परस्यो सिधा यूंक घत जती गोरषना थबु
सब लला धरणि दीहि जो लागे॥ नौ ला के कारा को
जीम हली आरंम हमना करतो जीव जंत बहोते हुव

रिहादसे रथा। कोमको मोदसिधिता
कोलछिनाकोमनायुं जैसो करो।१६। अप्रहत। सिधि
ताकोलछिन मनमानेत होजाइ॥१७॥ देवतासेलसि
धिताकोलछिन। अबदेवतासे केला करिआवे।१८
रूपसेलदेवता सिधिताकोलछिन। सरबदेवता
कोरूपधरे॥१९ होनेनांही। सिधिताकोलछिन कऊ
प्रकारहोनेनांही॥२०त्रिकालसिधिताकोलछिन। अम
रकी आगलीकसै। अमासकीपाछलीसफो॥२१
अविवासि सिधिताकोलछिन। अगनिमेजलैनाही॥
२२सबरबासि सिधिताकोलछिन। सबदफुरै॥२३ईती
चोबीसासिधि ब्रह्मग्यांनीकेआडी आवे। इतीचोबी
सासिधिआइहोइजो। सतगुरप्रसादतेत्यागे। सोई
जोगेसुर सोईब्रह्मग्यांनी॥ बसतअपारनतीगोरष
नाथसमझावै। इतीचोबीससिधित्यागे। सोईपरम
जोतिकूपावे। इतीचोबीससिधिसमासि॥ ॐनमो
सिवाइ ॐनमो सिवाइ गुरुमछिंद्रनाथकेपाइका।
नमस्तते। ग्रंथ॥ग्रंथ आत्मांबोध॥ संतोसालि
गरांमसोपाया। ताकी घडननकिन अजपाया॥ नाकोऊ
केघरिजाया॥ आपे आपअपरंपार। जोनीसंकटि
नआया। परबातिनहीउद्दिमनहीकरता। मनसाक
रिआपउपाया। जोरनिहारैलीयानजाई। ताकोमन
कूजाइमनाऊँ॥ दासमनांवकहां लूंकीजे॥ कैसीसेवा
भावै। सबदासा तनकैआपही। सबकानत्तामना
वै सालिगरामसोमनहीमांही॥ निसदिनसेवाहोई
पारब्रह्मसनमनलपटोना॥ जानैगाजनसोई। मनके
भीतरिअलषनिरंजना॥ परमजोतिपरकासी मनही
मांहिदेषनलागा॥ सअलषअमिलाअबिनासी॥ जो
बलगइजा भावनरमहै॥ सपसमनदेतादिषाई। पतिब
रताकैविंडदकहावे। करतोपिरैबुराई। मनहीमाहि
सहजसतिपूजा। मरतिदेतादियाई॥ सबदअगाधमन
हूदबोल्या। सतगुरदीयाबताई॥ साधनपावचरननही
वाकै। निमाहानागालै। मरतियेकइसीपरकासी। निस
दिनदरसदिषावे॥ जिहिगुरपाया। तिहरलषाया। गुरबै
नगमनपावेपानीपाथरडनीयाभूली॥ गोरषकहिसे

३०१

रिषान रतनजतना सारिषान जतना बैराग सारिषान
ग्यान निराकार सारिषान ध्यान पुनि सारिषा जिन थाती
निंद्रा सारिषा न राती जाग्रता सारिषा न दिन अनहद
सारिषा न बानी हिरदा सारिषा न जोती काया सारि
षा न पोथी नहचा सारिषा न आसा आसा सारिषी
न माया त्रिस्ना सारिषा न तत्र मन सारिषा न रूप
सत सारिषा न सील रिस्या सारिषा न स्यां
अकास सारिषा न पिंड पवन सारिषा न पुनि ता
मंत्र सारिषा न जाप बालक सारिषा न निहपाप आव
सारिषा न लेवा प्रतीत सारिषा न देवा सबद सारि
षा न बांण क्रोध सारिषा न पांण मुकति सारिषा न ब
धारि तिसा सारिषा न दूबा होत सारिषा न आधार जो
ग सारिषा न सार सुषम सारिषा न बल बुधि सारि
षा न बल गुरु सारिषा न आप सारिषा न
सुरति सारिषा न आपा मन सारिषा न सार बा
चा सारिषा न जे थाप्या सारिषा न थंभ [illegible] त्रीस
ं लाधू ॥ इति श्री [illegible] सं [illegible] ॥ १४ ॥ अ
[illegible] ॥ मछंद्र नपिता रजमा [illegible]
तमकु [illegible] लो [illegible] आधि धा
[illegible] बोली [illegible] पेती नधा
[illegible] बोली [illegible] बोली
[illegible] ॥ [illegible] गजा
[illegible] ॥ [illegible] तो सिध बा
लीया तो स्वामी कौं [illegible] देदीय ॥
कौंण [illegible] कौंण कौ
ण ॥ अवधू [illegible] बांधा [illegible] पद मुद्रा
मंदीया तो स्वामी कौं [illegible] कान
फरैया तो अवधू [illegible] चंद्रक
रै तो स्वामी [illegible] बोली [illegible] नारि ते
कौंण कौंण ॥ २ ॥ अवधू [illegible] बोली [illegible] जिंदपी
र बोली [illegible] तो स्वामी [illegible] धरती [illegible] घाट
बोली [illegible] कौंण कौंण ॥ ३ ॥ तो [illegible] बोली [illegible] मन
[illegible] बोली [illegible] बोली [illegible] बोल
[illegible] तो स्वामी [illegible] रहाय

।४।आसन नेम दडी बलावो।निरति सुरति अबि

चिहैताह्मीवै संगय।।रिधि छाड़ो।सिधि पाईये।सिधि
संकरके हाथि।छाडो सकल आलकू धावो।यूं कथ
नजती गोरष नाथ।६।। आसण तजि तजि निज
नो अकलप निद्रा वैरायाहो।नीतरिया च घरि चित
रवा येकां तिरहिवा।७।कनक कनपकडै कोरै नफेलै
आई रिधि कूं जोगी ठेलै।। इत्यादि पोकनासता वैजी
तासो जोग करीये परतक्ष्सी वा।८।चक नकू वमकू
नावन धरो।।परमात्मा कापरला निजि निकरो।अग
निनबालो धूवान घोटो।निद्रा धीरजू रष चलेवाटो
।९।छाडि बिधि आसण जिनि मोडो।मोहलगा इश्राप
जिनि मोडो।बाई बाखडी कूंम नन हीदी जै देषतादि ष्टि
काया तनजीजे।१०।पिंड तपढि गुणि करै न आसादे
षि येकां तिर रहै निरास।।काहे कू पढि गुणि मलाक स
वैन बलगा हिरदै दयान आवै।।११।।जब लगा हिरदै दयान
आई तब लग कहा ये सुध क साइ।कनक कनप कडै स
बरन बहै जोगी कामद कहा तैल्या वै।१२।तन मेरे या घ
मन मेरैले षणि।येनी निजतत निलपती।यूं कथ तगोर
षजती।१३।वरहां चलिबे का कहरो विचार।निंद्रा म्लपरस
लप आहार।।घड्या देडराखे घडदेवा नहीं जोग स्वरल
गो सेवा।१४।पांच चेला मिलि पूजा नादा धरणि निगनि
लिविनई अवानादी पक युं के अषंडित जिनवाल पतह
जोगे स्वर थापना थापी।।१५।।आम श्रोताचरसंकलनू
रमंडा।नादीपक कै चरन न पिंडा।।अवनन सीसनैन
दीहाथ।सो दीपक दे षानजती गोरष नाथ।१६।नादीप
क कै डालन मूल।तादीपक कै कली न फूल।नादीपक
कै रंग नरूप।नादीपक कै छांह न धूप।१७।तादीपक के
सवद न वाद।नादीपक कै बिद्या न बाद।नादीपक कै मे
हेनमाया।सो दीपक सुने सुनि समाया।।१८।।इती ग्र
षदया बोध संपूर्ण।।ग्र।१२।। अथ ग्रथ गिनांन माला।।
वो ॐ संतोष सारिसा नपिता।छिमा सारिषा न माता।
दया सारिसी न भगनी।बुध्या सारिषी न आनी।।आत्म
सारिष न भ्राता।।निरंजन सारिष न दाता।।केइ यसा

३८२

अथ धारणा तो नामी बारह कला [illegible] तनकी ताके गुण
छतीस [illegible] कौण कौण [illegible] प्रथम बारह कला के नाम
[illegible] माया [illegible] पर पूरण [illegible] पर
[illegible] कोध [illegible] लोम
[illegible] बारह कला तरजकी बोलीये
[illegible] सोलह कला [illegible] के गुण छतीस
[illegible] कौण कौण [illegible] प्रथम [illegible] की
कला के नाम [illegible] शक्ति मा [illegible]
[illegible] पात पद [illegible]
[illegible] निरंजन [illegible]
[illegible] इंद्र मृता [illegible]
[illegible] सोलह कला [illegible] बोलीये [illegible] मा किला
[illegible] सोलह कला [illegible] की पावै ॥
[illegible] सुणै कथन करे तेपाये [illegible]
[illegible] बोके [illegible] सिवाइ [illegible]
[illegible] के पाइका [illegible] ॥ ग्रंथ ॥ १५ ॥
[illegible] ॥ [illegible] तायंथ
[illegible] तिमेरहै [illegible] सो
[illegible] सिद्ध [illegible] मथानं
[illegible] स्वमे
[illegible] नि [illegible] का
[illegible] निर
[illegible] करडा वि
[illegible] मागेन [illegible]
[illegible] वधपंचमा [illegible] ॥
[illegible] पोहो [illegible]
[illegible] मे [illegible] ॥
[illegible] तो पडे नरक का कुंडी
[illegible] सिधा [illegible]
गलगाये [illegible] ॥ [illegible] द [illegible]
[illegible] मागे [illegible] निरंतर [illegible] ने
[illegible] पाप
[illegible] कूप का [illegible] दस
[illegible] काया कडा

घटमीतरिबोलीये तेकौणकौण। तौ अवधूसरीरारथ
सरीरअेदपरमारथबोलीये प्राणअेदगुठा
रथबोलीयेग्यानाजा तौ स्वामी आरियोबोलीयेघट
मीतातिकौणकौण। तौ अवधूसनमछिंद्रा सरीरई
स्वास चितचौरंगी ग्यानगोरषधा।३। तौ स्वामी
मातिकवीरबोलीये घटमीतरितेकौणकौण तै
अवधू दृष्टिकहैमूलभेदजै सुरतीकहैमूबो।
लीयेसुणीये नासिकाकहै सुगंधबासना अमला
दिकलीजै जिभ्याकहैकेपाटोमी बोषास्ये ण स्वामी
आरिदसबोलीये घटमीतातितेकौणकौण। अवधू
सवतरा दृष्टिदिषण सुरतिपूरवाण स्वामी औ
रउपदसबोलीये घटमीतरितेकौणकौण अवधू
करमधूरमजोतिज्वाला। तौ स्वामी कौण करम कौ
णधूरमा कौणजोति कौणज्वाला।५। अवधूकरम
बोलीयेमनधूरमबोलीयेपवना जोतिबोलीयेनेत्र
ज्वालाबोलीयेश्रवना।६। स्वामी आरिषाणिबोल
येघटमीतारि तेकौणकौण। अवधू आरिषाणिबो
लीये सेरज जेरज यंडज उदबीज था रज तौ स्वा
मी सेरजकौणबोलीये जेरजकौणबोलीये यंडज
कौणबोलीये उदबीजकौणबोलीये।७। अवधू
सेरजबोलीये हाड जेरजबोलीये दीगायंडरजबो
लीयेनेत्रा उदबीजबोलीये रोमावली।८। स्वामी
आरिवाणी बोलीये घटमीतारितकौणकौण अ
वधू आरिबांणी बोलीये सहज सजम सुपाव अ
तीत स्वामी सहजसंजमसुपाव अतीतबोलीये
तेकौणकौण।९। अवधू सहजबोलीये सरीर सं
जमबोलीये पवना सुपावबोलीये प्राण अतीतबो
लीये परमपद।१०। महामुद्रा महामुनौ नास्ती म
हामजोनी सिंध्रबोलीये पांणीबांणी कूविचारते
निराकारबोलीये बोउंकारमधजोतिजाणीये।१०
करमधूरमजोतिज्वाला। नेदैरिवकी आरिकला
मनकाहूसती विवनलपीवैदोरूपषचीन्हैसो
न्हकलानीये।११। बारहकला सूरजकी सोल्हक
लाचंदमाकी पुरसिसदानपीवै नहीं चेलातिसका

[illegible] श्री गोरष सिवा [illegible] मछिंद्रनाथ के पाइ का [illegible]

[illegible]॥ ग्रंथ ॥ १६ ॥ अथ ग्रंथ पंद्रह तिथि लिष्यते ॥ बोलं [illegible]

[illegible] [illegible] मिले [illegible] तपीत [illegible]

[illegible] [illegible] जती गोरष [illegible]

[illegible] सिवा [illegible]

[illegible]

[illegible] नाली [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] जती गोर [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] तत चाम [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] गोरष [illegible] ॥ [illegible] की बाव [illegible]

[illegible] विकार [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ए ॥ [illegible]

[illegible] ॥ पायेन [illegible]

[illegible] गुरु मछिं [illegible]

द्रनाथ के पाइ का [illegible] ॥ ग्रंथ ॥ १७ ॥ अथ ग्रंथ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] गोरष [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] सतगुर [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नदेवह
॥ हिसत्ता॥ अथलषपुरस गौरी
प्रायु चितवनले

जनम्कुतिनद्दोशमलेष

गोरषविद्द्या लागवादा गोरषलेइ बनायानादाबि
सनलीयामृघका रूपा मालामृघनया औधूत॥४
पूरबजाता पछिम हंसा मालामृघनछैमेसा नालि
वैषिसी गीनादबजा३ याहीसीगीनादगगनकूंजा३॥
५॥ गगनमंडलमेरहेसमा३ अनंतसिधापाईजोगवा
इसीगीनादगगनकूंजा॥६॥ अहुमिसदेदगगनसमा३
॥६॥ पोचूंसेडी पूरैनाद॥ ते अवधू जावैसीगीनादा॥ अन
हदनाद उरधका मूला॥ चंदसुरसुषमनि सम पूला॥७॥ आ
रंगमापारि गंगा मधि जो गोटा ध्याना॥ गंजामनलेसर
चढाई तहां प्रगटा बूलसियांना॥८॥ सींगीमेलीगोर
षदासर॥ अनंतसिधालीरूंना॥ ९॥ दादसडी दिउर
धका मेला॥ अलषमढी तहां गगनसमा३॥१०॥ लेलारू
मागिरहाकूं दीया॥ सो जोगारंमतहां सिधसमा३॥ आदे
मरलेई स्वरकूं दीया॥ आदिधर्मसतुलाउतपना॥२०॥
नारसूवसेका मृवामलेना॥ श्रीगोरषनाथ नमास्या॥
चौसठिजोगण निव्या पूरी॥ अनंतसिधा आदि पत्रया
यु॥२१॥ पादिपत्र आदिजतिमा॥ अनादिधर्मसेकेरूपे
सा॥ निगुरक्लागडवडवोलीयेसुगराकूं उपदेस॥२२॥ येता
येक अवधू पंचतत मात्राका उचार अनंतसिधांतसु
नीया बिचार॥ मछंद्रप्रसादे जतीगोरषकैसी ते अवधूप
वनआतमालहैर॥२३॥ जेजोगीपंचमात्राका जाणैनेवा
सो आपेकरता आपेदेव पंचमात्रा जोगी बूझैताकूं स
कलदेवता त्रिभवन सेवै॥२४॥ इतीश्रीगोरषपंचमात्रा
पढंतेसुणंते कथंते करते पापेन लिपंते पुनर्न हारंते लोके

आवभवन घट मैताजो [illegible] प्रवन सिरपूजा
[illegible] के दिन [illegible] तो [illegible] आदितवार [illegible] सोम
[illegible] कायापापनपुनि स
[illegible] वारगुण येला करै
[illegible] करदो [illegible] सनिकरि
[illegible] रपावो मंगल
[illegible] रोकापायायो
[illegible] धवार [illegible] ता
[illegible] पावूंयं [illegible] नि
[illegible] तो [illegible]
[illegible] कहा [illegible]
[illegible] नावहै [illegible]
[illegible]
[illegible] सहर के घरि
[illegible] सा
[illegible] सि पिंडे
[illegible]
[illegible] तेकर
[illegible] सिवाय
[illegible] दुकानि
[illegible]
[illegible] येतन
[illegible]
[illegible] करे मन
[illegible] घट [illegible]
[illegible] दारिद जो बंध [illegible]
[illegible]
[illegible] वपहो [illegible]
करो मति बुधि [illegible] बुधवार मतिबु
धिप्रकास [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सतगुर

॥सतमसतगतम

नगाशफरतमह

बाहरिजातिननन्मा॥१० दसमीदहदिसलगेबंध
जतसतसंगमथिरहोइकेधाधरमदासगुरबाचा
लीनाापानबिचषनबसैबीन॥११ ग्रेकादसीइगपार
रहा़मा॥ॉकपायोकायासमुंद॥अलषरतनगुर दी
याबताइ॥येकादसीतिथिकोरास॥१२ द्वादसीदिनक
रनषे॥काालपसरेकिरणिहोइमकासनहोयदि
नैकुरह्यासमाइसतगुरकेधीयाजीवनिजयाइ॥१३
तेरसित्रिकुटीसंधिकरिमेलिचंदसुरदोऊंसाधिकरी
नेलिायेकसिधरूधानयघाटासतगुरकोजेअर्चहू
बार॥१४॥चवदसिचवदहरनबिचारिकालाबिका
लआवलानिवारि॥साधै आपदेषोपटतारि॥ तप
तिपरलैकायामेकारि॥१५ पूनिमपूरामनकाआस
मायामोहतजिमयेउदास॥सोलहकलासपूरणचंद
गुरपरसादैथिरहोइकंध॥१६॥सोलहतिथिक
लाकीस्पाधिमछिंद्रप्रसादैथिरभयाकंधमयाध
रजबआठेपीर अनंतसिधांश्रीगोरषबीर॥१७॥इ
ती श्री ग्रंथसोलहतिथिपढतसुणतेकथतेकरतेपापन
लिपंतेपुनेनहारतेबोऊंनमोसिवाइबोऊंनमोसिवाइ
रूमछिंदनाथकेपाउकानिमसते॥ग्रंथ॥१७॥ अथ
ग्रंथसप्तवारलिष्यते॥रागसूहौ॥जोगमूलगदि
बारबारासतगुरसबदैसहजबिचारंटेक आदितसोधै

३९४

ज्ञा दरख चैदस वै कूची सात मै मं ता हसती वेग्या वारि
र णमी तरि रिजा फूल उण हार च डूं दिस जात तारा मा मा
री राजा फूलै विषमी घा [illegible] पवनाले रहा समाइ
॥ [illegible] पवनालै विषमी सिंधी चंद सूर दो ऊ समिक
रि वेधी नो से [illegible] सा [illegible] सो पै जोगी सो विसद
स्यिो पै ॥ २ ॥ विन पुस तक री [illegible] वा पुरान सुस्मृती
उच वे [illegible] मा [illegible] पै [illegible] रे सरव दोष
सा [illegible] ले है ॥ ३ ॥ पै रै सो पै ना लै वं धा तो [illegible] रा द तथिर
हो [illegible] धा सो पै पा [illegible] लै वा लो [illegible] नि सवुद [illegible]
[illegible] पर [illegible] लै [illegible] सो नि पा यक [illegible] से पै सिं धपव
[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] पी र पी र [illegible] पवना सिव पुरी
ना ला [illegible] को पै नो [illegible] सा [illegible] पै वं धई जिंदा घास
मस्तो पै [illegible] दे धाय [illegible] सो पै [illegible] करे रोग
मा [illegible] सव हरे [illegible] दी दे टी न लै या ति को [illegible] प हलै
[illegible] इ [illegible] ॥ [illegible] वे टी [illegible] करे तो वे द धनं
तर वा हे सरे सा ने हू पै सा [illegible] जानै [illegible] हे राजा बडे
रा ॥ ६ ॥ प [illegible] पै न सी [illegible] सो प सवा मो [illegible]
[illegible] रि [illegible] लै सो लां नी पै तो [illegible] जे [illegible]
[illegible] रि स रै ॥ ७ ॥ सो लां नी [illegible] रवो बा च
[illegible] यि ग्या मी ग
सो लै [illegible] ॥ [illegible] पो लै स नि वा दी [illegible] वाले
[illegible] दे [illegible] वि षी [illegible] वा लै मा र सा र
[illegible] ॥ [illegible] से सा करै ते सा पा [illegible] सो य रा [illegible]
[illegible] पुरष वह तो मो [illegible] नारी सरव नि
रत रि आत्म सारी ॥ २ ॥ सर [illegible] रहो पा
आत्मा बोध [illegible] कहा या [illegible] पुने त्ति पैन का
सो [illegible] आत्मा बोध कथ्यंत श्री गोरष रा ॥ १ ॥ इती श्री
आत्मा बोध पढ़ै ते सुणे ते कथे ते वरते ते पाप न लिपे ते
पुने न स्या ते ॐ न्मो सिवा य ॐ न्मो सिवा इ गुरु मे [illegible]
डना थ के पा दुका नि मक्त ते ॥ [illegible] बी स ॥ ४० ॥ [illegible]
सि आ द ग्या नि प ते ॥ [illegible] पा ति उत पा ति ते वो को दे
ऊ उत पा ति ते आकास ॥ आकास उत पा ति ते वायु ॥
वायु उत पा ति ते तेजा ॥ तेज उत पा ति ते लु था [illegible] त
पा ति ते [illegible] ॥ [illegible] हो [illegible] वी [illegible] मा जल [illegible] लो क

पसैसहसमाधि मायामाकिरि
कोरथिरथा
दा काया मीतरि सातबार सतगुर
बे
हकेधाथिरिथार
सपतबारकोईबिर
लतहै ॥ सा दिन आर्यासे मे श्रवण मंगल बुध
मवारा बुध हिरदै बृसपति नाभि स्क्र ते यंडी ना
ण सनि गुद्द बाहरा रहै तै मन के तते ना सिकार है स
पतबारनक्षत्र देवता काया मीतरि श्री गोरष कहै
॥ फिर ते सरा ते कथ ते के
वाइके मो
सवा इगुरु मम छिदरनाथ के पाइका ने मसतते ॥ ग्रं
थ ॥ ॥ अथ आत्मा बोध लिषते ॥ आसन करि
दि आसन बांधि पाछिले आसनि पवनां संधि मन
मुरछावै लावै तारी गगन सिषर मै बहले पारी १
पथ मिवे सिवा इदरी बंधि पवनां षेलै चौ छिसि
छि नौ दरवाजा ताला वै ताली हंस वा मधे हौइ उजि
याली २ ऐसा अनुयंगम जोगी करै धरती सोषै अंबर
रै गगन सुर पवने सरतांणी धरती का पांणी ले
अंक आंणी ३ ता जोगी की जुगति पिछांणी मन पव
नां ले उनमनि आंणी मन पवनां लेनै उनमनि रहै तो क
थागर जोगोरष कहै ४ चंद्र मह रस अमरा नरी ऐसा
आंखल जोगी करै उलटी सकति चढै ब्रह्मंड नष सष पव
नां षेलै नव षड ५ उलटै चंद्र राहु कूं गहै सूरज उल
टि केतु सूं ग्रहै सकति हारा सूरज थिर रहै ता तनां ए
जोगी सरक कहै ६ अरधे जात उरधे गहै ॥ द्वादस पव
नां उनमनि रहै ॥ पहुनिसबाईधुनि बाजै ॥ पछिम
द्वारै पवनां गाजै ७ अभि अंतरि ब्रह्म अगनि परजा
रै पंच चोर लै पापां न सम्भारै जोगी अपणै घरि दिवला
दियै ता जोगी की काया काल न छियै ॥ ८ ॥ इति लिप

गले कू किवादा रे
छपरवत असा

त्रिकूट मंडल खेलिबा सूरं गुरु सबद सुनाइ दमा निबा
२०९ सते स्वर नाथ सिंघासन है सार संसारो निहचल धीरे त
न निराली बानी श्री सिधा आइबा पंथ नाथ गुरु मछि
न्द्र नाथ सिधा परहरिबा कानों अकल पडी वी फाली
सिरत नवी सदि मंत्र बोलिबा बंक नाल सों पवन रहिबा बं
न धिवा तत्व लो बाल गगन मंडल इंद्र वा अमृत बारह कला
सिवी सोलह कला सूर्य नाड़ी सोम नाड़ी बांधिबा स्वान
न सैना भाखी सब ला क्या सो सबद गुरु जी बहुत रिजगा
बुझाना को मन पंडु अघ थरमा मोगिवा त्रिलोक
मध्ये न हो सो तिवि व्याये दसा वे त्रिकूट मंड जहां जोइबा
ह सं घट दरसन पथ मंथले भ्रात असार खंडी उंह मंडवा भेव
ग्रम सं ग्रथ पुडी गगन का दिसा बंदंत गोरषनाथ
ति यत्न वा वाले पेव ठी नाथ पुनि न पायो सुनि ध्यान
सो लह कला अकाल आप न सी सनी श्री गोरषनाथ वा
ला। इती श्री ग्रंथ सिध्या दरसण पढते सुणते कर ते
र फते प मुक्ति लोत्र बोलते ते से लो सिवा इ गुरु मछि
नाथ के पाउ का नमसते॥ ग्रं। २४॥ ग्रंथ अष्ट मुद्रा लि
ष्यते॥ स्वामी जी अष्ट मुद्रा को लीये घट भीतरि ते की
न कोण॥ अष्ट मुद्रा मध्ये मन नी मुद्रा बाल मिसि ननाले
उतपनी कामिनि समो हात्या मुद्रा तो मई स्म
सा नीं श्री मध्ये जलसरी मुद्रा॥ काल को धले
उतपनी। काल को ध समो हात्या मुद्रा तो मई गल
श्री री। हिरदा मध्ये षरनी मुद्रा। पवनदा फले उतपनी। सं
नदीप समो हात्या मुद्रा तो मई श्री सीला। मुष मध्ये
चरी मुद्रा। स्वाद विस्वाद से उतपनी। स्वाद बिस्वाद स
मो हत्या मुद्रा तो मई षेचरी। धुनासिका मध्ये भूचरी
मुद्रा। गंध विगंध ले उतपनी। गंध विगंध समो हा
त्या मुद्रा तो मई भूचरी। पांच सिमध्ये चाचरी मुद्रा॥
दिष्टि विदिष्टि ले उतपनी। दिष्टि विदिष्टि समो हा
त्या मुद्रा तो मई चाचरी। दस दुवार मध्ये अगोचरी मु
द्रा सबद असबद ले उतपनी। सबद असबद समो
हात्या मुद्रा तो मई अगोचरी। ब्रह्म मंड मध्ये उ
नमनी मुद्रा। परम जोति ले उतपनी। परम जोति स
मो हात्या मुद्रा तो मई उनमनी। या इती अष्ट मुद्रा

।नादरूपअवगातिउ
मूसरवानहीपायानेव॥

अगोचरीबुधि॥उनमनीअव
॥न

रिधूानेनाघनेणा॥सहजैश्रव
।निहवेवलज

अनेपमभेद्या॥निरंजनमाला॥निराकारउजाला॥
मैसे हूंसाइकईसकीमेला॥नघतपपवनादेषिवा
मेला॥नादअनाहदनेहसवदवांणी॥जीवतेसीवयू
सहोस्वाप्राणी॥देहीयदेही॥आविचलधणीयकु
पलटिफिरिहोस्वाघाती॥हे॥छिविदिछिजोस्वानै
नापवननिरंजनबोलिवावैना॥सबदहैसबदहोइ
गघूलं॥आदिकडानादिहोस्वामलो॥नादअंसा
भिघागगनआकासं॥न॥पडै॥घटनहोइबिनासं धर
तिगनविछिमाघनहोशी॥नचलनै[illegible]तहांकाल
नकोई॥अपंडमठीतहांजोस्वाध्यानं॥जुगिजुगि
नालीकथिवायपोना॥मूलवकेलहांपलटैजिह प
लटैकायाथिरहोइकधं॥मूलबंधवजरकछोटा॥
पकड्वाधारं॥सातिउडानीबांधिवादीवोनतजेस
टाआसनपूरं॥अमृतधाराअमंडलहोवासरंतु
भपात्रेपीइवानीरं॥चेतनाविनातिअगिलसरिरअ
नरकथानहीवादविवादं॥अनाहदतेभीवनास्वा
नादं॥संतोघतिलकपदनिर्वाण॥अनदेवलटेसी
पहूरिवाप्रवांण॥मनवैरागीमनजोस्वारूपंवदंत
गोरषनाथयेततअनेपादसाडेआहांत्रिकुटीधा
न॥मोलागीटकिवामांन॥चेदसुरनागीजातिवा
धारं॥ऊंरैगगनतहांकैसतिवालतैनेमीजोगञ्ज
नमीबिचलसारं॥बंदमुकतामैनूमयारं॥दोइप

तजिनिकरौ। सिसलोतक्रौलोमपरहरौ॥२॥ बाडौउंद
३०७ रहौ निरदंवातजो प्रतिग्गनरहो प्रबंधासदजाउग
तिलेग्रासनदुरोत्तनमनपहनो द्विकिरिधरोस
नमचितवोउगतिग्रहारामिडातजोजीवकाकाा
सा॥ बाडौतंनमंतवेदंत ... गा च्छिकाधातपाषड
जडौभूटाकलोवागिनलेक्रारजदवारियावजिन
दे क्लाप्तिमणमोहणवालिकरम ग्राडोसकल
वांटासुणोहोनरवेपतालिनीविषमोबाटाधनेमस
नांनवतपरहरो। नवलीचाली कामाजिनकरो मै
... रिके ... नारागिघतमतलोमुवाल ग्रा
मजोगकहोउचारासुणोहोजोगकरौ।जोगारंभ
कांछिचाराया सा नन्नाचेलो जिनिसारा। जतसत
ग्रानणां अधिकारी॥ या ग्रोदसायरहरो ग्रतीस
मालविधिग्रावौनगदासाचलो किछिनाटारमा
वारिलोयमकोछुञ्हेकाल्हजारिह॥ बादविव
उयाछिनिकारिवाथोलकातिजोगविधिसारने
मसारसाधलो जिनिदेसानटामारवाथो जिनिके
॥ नागामनीदूधाधारी॥ ऊपती चकसबैनिवा
देवीचक्रनोमासवहातायेनालजोलमज्म
विचार॥ रुधविरवबाडी जिनिकरौ कवानि
णमो सिजिनमदोनहेमवनांहीजैसाया ग्राम
दिवकारैसोरखाण॥ बाडोवेदविणनबोपा
३ छिवयपिछिग्रानोकचारनारथकहारासहमे
गिरधरवहचढिया पाणिमि निहरे॥ सूनापान
पोसिनजापानोगगमावेछिमेलापा गरव
ता निधरोकुनिंदग्रापापेहिहो निरदंद॥ ब
लांकासेगानिवारिउपादीमसोणबादबिष
घणाचेलाहै प्रतविकालायेकाषेका तुमरह
वालः॥ धनकंचनकाकरौ मिनग्रासा। भि
नपरमउदासा। कामक्रोधग्रहंकारनिवारि तं
नोतोउतरोपारि॥ धसंवसवदजिनि पूरोनादा
निरहोन्पसोवादाजीवण महारस दिढ गि
सुमरमहारसलेऊपियो णियेसमावै सिनि
... भामहलादैरहो ... नासाधी

काजांपैनेव सोआपैकरता आपैदेव ॥इती श्रष्टमुद्रा कथंत श्री गोरषनाथजती॥इती श्रष्टमुद्रासंपूरणा॥स

श्रथ ... श्रकालिपत॥ वोजंगोर नैकौंणकौंण॥

॥ अवधू प्रथम आधारचक्र बोलीये ... च्यारदल कवल षटसैसास॥१॥तिसचक्र उपरि प

...तिसचक्र उपरि मणिपूरचक्र नाभिसथांने दस दल कवल षटसैसास॥२॥तिसचक्र उपरि अनहद चक्र हिरदासथांने द्वादस कवल षटसैसास॥४॥ तिसिचक्र ऊपरि बिसुधचक्र कंठसथांने षोडस कवल येक सहंस्रसास अजपागायत्री॥पारब्रह्म ध्यांन५॥तिसचक्र ऊपरि अगनिचक्र नेत्रसथाने षोडसदल कमल येक सहंस्रसास अजपागायत्री पारब्रह्मध्यांन६॥तिसिचक्र ऊपरि भीनो ... ब्रह्मंडसथांने येक सहंस्रदल कमल येकसहंस्रसास॥ अजपागायत्री पारब्रह्मध्यांन७॥तिसिचक्र ऊपरि सुंनिमचक्र बिगिांनसथांने इकईस दंश्र्र कवल येकवीससहंस्रसास॥ येपूक कवलद्र ... नांपैनेव सोआपैकरता आपैदेव॥८॥इती श्रष्टचक्र कथंत श्री गोरषनाथ॥ग्रंथ॥२३॥ श्रथ नरवै बोध ग्रंथ॥ प्रा बिद्यामी च्यारि अवसथा सहेता च्यारि अवसथा जोगके नांम कथीतं प्रथमे आरंभ जोग दुतीये घट जोग त्रितीये परचाजोग चतुरथे निसपतीजोग इनी च्यारी अवसथा॥ कथंत श्री गोरषनाथ सुणो हो नरवै राजिंद्र॥ प्रथमे आरंभ जोग लछिन॥कथंत सरबनाम ड्डरगत॥श्री गोरषबाचा॥सुणो हो नरवै सुधबुधका विचार अनुसार सतगुर कथीला काया का बिचार पंच तत्व तपनो सकल संसार॥नाथ कथीला आतम सार पहली आरंभ करो घटपरचे निसपती नरवै पुराण कथंत श्री गोरषजती॥सतपुत्र सतका विचा पहलै आरंभ ... ङ्गाडौ को मक्रोध अहंकार॥ कालया सिमहत्म्य हु निवारि मनसा माया बिषै बिकार हंसा पच्छाडिबा

मनिकरो। रविससिदो ॐ गाद्दिकाथिरो।। १७ गति
मगाडो ओहारा सबघटि येक आत्मा सत।।
कावरो नि आता भिक्षा भोजन किरो ते द
।१।रस रसांइण गोटिका न्हारी। हथि यरहरो। सि
अविचारि राइकै मन धीर जमया आनंदा इन
।१८ इंसा गाव न वनो तमवाट ञनरो
जिनि- घटघाट सी गीनाद पयो एां देखो देव
ताकाल नबि न लेखो। १९ बाग जं ध्यान तो एि दिनथ
चल गति परहरो। ध्यान न एवो तुमल
न सो वो थिरि दे हि निज मंडा। जिनो चे। २० सह
लैणो परहरो उपाधि। जोग रतन इए परिसा एि
सुरापान अह मं गा ना लैंएजैनो नारंगा २१।।
परहरौ मिथ्या। येता आरंभ सत गुरु कथ्या।
पहलै करम तणा फल होना दो। २२ कर जो हि दे खो सि
जोइ रस पैसा येक बार कस लग्र रकत्वै केन ककाम
नी परहरि रहो। आरंभ जोग सुणो तम राः ।२३। आदि सवि
आपे तक्षा। गोरख राइ २२ नारी सारा डोंगरी स्त्री भूम
नगुर परहरी। आरंभ जोग घट पर चे नि स सत फिर दे
बोध कथंत श्री गोरख जती। २४ येक आरंभ जोग लखि
ना जोगी सब विघन नाश काया होइ निरंभी। आध्या
त्म जोग तणां बिचार। अनंत सिध तह उतरे पार। २
७।। इती श्री गोरष नाथ विरचित नरवै बोध सुणो हीन रेसिप
ड।। आरंभ जोम सास त्रय मोपटल।।१।। इती ग्रंथ संपू
ण।। ग्रंथ।।२४।। अथ पद लिष्यते।। राग आसावरी।। मारो
मारो आपणी निरमल जल पैठी।। त्रिभवन डस ता गो
रषनाथ दीठी टिकमा रि ल्यो आपणी।। गाइल्ले मेंर
त्रि नि मारी आपणी ताको कहा करेंगो रा।। आपणी क
है मै अमला मली या। ब्रह्मा विष्णु महादेव छलीया
श मा ती माती आपणी दसौ दिस ध्यावै गोरषनाथ गार
डू पवन वेल्या वै आपणी कहे ॐ घरी विगूती गोरष
नाथ जा ण्या इं पिरि रहलीधा आदिनाथ नाती मछिंद्र
नाथ पूता। आपणी मारी गोरष अवधूता।। १।। बांधी बांधे
ने जड़ा पीवो पी वो षीरं कलि अजरा वर होइ सरीरं टे
बारह बरस ऊडा सोलह गाई धेनहु हावत रैएि विहार

बतंगा ती मि लिषलैंनवषंडा।१।गगनमनम
मणबालो।अनहदनादकालमैंटालो।रमन
डुलमेरमौ अकेला।गरथमुषिद्रंनालि अमीर
३।कथंतगोरषनाथमछंदरउपदेसा मिलास
त्या ईदेसा।४।१।वै सैबोलं अवधूराइ गगन
दमसरवरषे थौ।मनसैली।ठ्ठिपजैनाविनसै
नमवावैब्रापनमाई।१।निराकारसौ
धूला।सापायनिक नहीफूला।२।मसनमन सी
बिरषनहीबेला।साषीसबदगुरुनहीचेला।२।मां
गनहीजुगता।पापनपुनिम्रपो छिनहीमुक
४।मणंतगोरषनाथमछिंद्रादासा।माव्वीमगति
कैआसनपास॥५॥७॥आवोनेगोसजेवेवै
छकनारी।ठि्ठआवनहोताछदलिंडा
गनहोतातारा।बिणहीथंनांवावैमंडय
तवआपहीअपार एहारा॥१॥बापहमारोवैस
नहोतो।तादिनआदिकेवारी।अघ्याहमारोपाल
डैपोढौ।फूहीहीडोलणहारी।२।बुघीविहमथार
दिमहेसवरा।ऐतीनूंमेजाया।यांतीफूवांकैफूपर
घरणीदोइकरिमेरीमाया।३।गगनमनमहरैषाट
लडी।हंसागवनतुनाई।धरतिपथरणे।आनपवे
वडौ।तोईमेउनमाई।४।यूंपडतडोम्हारोजनमव
दीतो।चोषैसांबिनमारी।मछिंद्रप्रसादैंजतीगोरष
बोल्या।येततलेफूविचारी॥५॥८॥रम्परमतातचौगा
गगनाविचिअटकनहीं।नहांवेवलमकहि
जपलो।पवनकाघोडासोल्मो
तचवक।सबदगुरुकाचेतनराषो।थौरतजौस
॥१॥येकतैंअनेकअनेकतैंयेकैयेकैअनंत
येकयेकसंपरवाकुआ।सोफिरितहांसमा
२।तिलकैनाकै सिषनसकोकोयानावविधाता
जोधासोफिरिआपेकुवा।नाकुंदुंढणजाता॥३॥बिन
परचैजुगवूडा।बूडा।साचाबिनांकोसीधा।गोरष
सुणोमछिंद्राहीरहिराबीधा॥४॥१०॥गुरकीजैग
निगुरानरहिला।गुरबिनग्यानकैसैंपाइलोरे
माइला।टेक।रूंधांवोयाकोइला।कूजलानहोइला।

लीला षष्टि दीनी वे
दसवें दायें सरग नैके
...

सातिसो ला॥ सघ्यों नंलो॥ मूल कंवल तहां जीवसी
वधरि॥ नमानें अचलनिधानं लो॥ अनाहद अन हृदय
ज्ञे॥ ऐंगा पछिम गामो ए लो॥ उतरडी वा दक्षिन
नाबै पाताले पूरव तो सीलो॥ शब्द दस तरनी मुद्रा कीनी
धरा विमल समजलमेत्ता लो॥ नाद ही बेंदी सी गी आला
मेंजलष गुरु नाचे लालो॥ [illegible] नसे साउ षे गली
कंथा सहंस इकी सधसाले लो॥ वहु वारि नाकी तहइ
निवासा॥ बावनवीर सीं दुरफला पालो॥४॥ इला सो
धिने पिंगुला पूरी॥ सुषमनि चतुसमानें लो॥ वेदे
तगोरषनाथ सुलो॥ पछिंवा निरंजन सि [illegible] स घ
नेलो॥५॥ अवधू बोल्या तत बिचारी॥ प्रथी मैं बक
वाली॥ [illegible] कुल परबत नल बिन तिरीया॥ [illegible]
[illegible] चंद्रमा॥ टेक [illegible] नां [illegible] गम [illegible] गिया [illegible]
राषि सासि तार गवा॥ [illegible] नराज निवाधि कुल नांह
[illegible] सिध वा॥ [illegible] पंच सहंस में [illegible] पूवा
सपत दीप [illegible] नारी नव षंड [illegible] इकवीस मां
[illegible] कदसा [illegible] तारी॥२॥ द्वादस त्रिकुटी इला पिंग्र
ला॥ चवदसि चित मिला॥ षोडस कंवल दल सोल
बतीसो [illegible] मरण गम [illegible] दसवै निरंजन [illegible] नम
निवासा सब दें जल दिसमानं॥ भणंत गोरषनाथ
मछिंद्र ना पूता॥ अविचल थिर ह्वो ना॥४॥६॥ [illegible]
पिंड बूम गियान गोरष बोलै जांन [illegible]॥ टेक
बीज बिन निसपती मूला बिन बिरषा पान फूल
बिन फल लीया॥ बांझ केरा वालूडा [illegible] बिन रूरे
ला॥ पिंगुला नर वा लिदीया॥ गगन बिन चंद्र [illegible]
मंडल [illegible] बिन [illegible] थांन [illegible] पर मार [illegible]
जैन रजो [illegible] घट [illegible] रस पीयां॥२॥ [illegible] मूलन
गनही पूजा॥ धुनि बिन अनहद बाजै बाडी बिन प
[illegible] पवन बिन [illegible] गा [illegible]
राग बिन गीलीया॥ अगनि बिन जलीया॥ [illegible]

डसिडसिधाया॥ तेताजुगमधेजुगदोइरची
नरबदरसबलाडिलाडिस्या
हापुरमधेज्जुगतानरचीला

षासिंघारं३॥ कलिजुगमधेजुगच्यारिरचीला॥ छूटीला
सारबिचारंघरिथासिंदीघरिथरिवादीघरिथेरिकथ
णहारंधाव स्त जुगांमधेमतच्यारि थापिला॥ गपांनाति
पालंबरहीया॥ मछिंद्रप्रसादेजतीगोरषबोल्या॥ कोइवि
रलापारिउतरीया॥ ४॥ २३॥ च्यांवलीयो धालिमोरा॥ बोउ
पभिलाव छिजौरांफलीयो॥ सोफूलषातालागैमीबोजो
नैसिजिनगुरपरसाददीनौ॥ टकूऊटसघोपेगनवग्रहो
नाइकैतेडालीबैगो॥ बांझै बेटाजनमीया॥ नेलांपुरस
नदीगो॥ नाकडबूडैसिलतिवैदेषतांजुगार ऊंट
मनालेबाहिगयो॥ सुसलोपौलिननाश्रा॥ २डूगमैआव
नससा॥ पाणीमेघोलागा॥ प्ररहटबहेसिलवा॥ फूले
कोटनागाघा॥ येकगाइनोवाछडा पंचदुहेवाजा॥ ३॥ ये
फूलसीलदकरेडीसा॥ मालणिमनमैहरषीनमाइ॥ ५॥
पगांबिहूणडेपेरादीधी॥ बोरिनैसांणीगाइ॥ ४॥ मछिंद्र
प्रसादेजतीगोरषबोल्या॥ इकणीनर्थशि॥ ६॥ २६॥ अवधू
जापजपौबनमालावान्है॥ तितेजापजप्यांफलहोई
अैसाजापजपतागोरषचीन्हेबिरलाकोई॥ येकंकेवल
बदनकायामईकंचन॥ अवधूचेतनरूपसतफनाली
अनेकजनमकापातिगछूटा॥ जपैगोरषचगाला॥ १॥ यह
अषिरयेककाजपीलौसुनिमूलदोइबाणी॥ पिंडब्र
हमंडसमतुलिखापीला॥ येकअषिरगोरषनाथगुर
मुषिजांणी॥ २॥ दोइअषिरदोइपषउधारिलै॥ तिरीलग
नैपमौ॥ अैसाजापजपतागोरष॥ नपाांनमाबिकारंच
नी॥ सावित्रिकोटमधेजपीलौ॥ त्रसकुंडनिजधांनोगज
पाजापजपैगोरषा॥ सूतीतअनंतपहीगपांनंथा॥ चौजापि
रीसारिवेदयापिलो॥ सारिपोणीआरिवांणी॥ मछिंद्र
प्रसादेजतगोरषबोल्या॥ अजपाजापलो॥ थीररहो

४०२

[illegible]री कहं तौ पिंड सौ यातें [illegible] षडि जो ऊतौ बिखन
[illegible] ओक तौ [illegible] मिलण घालोला
[illegible] इना पूता [illegible] माया मया [illegible] भूता
[illegible] सेसा [illegible] रहमारां [illegible] वौजुवो कज
[illegible] गोरष करै विचारं टेक
[illegible] विचार [illegible] सांच ततते [illegible] दर
[illegible] भेडारे । काया
[illegible] दारं चेतन पहरै
[illegible] तीनसै साठि
[illegible] नौ दरवाजा परग
[illegible] नार कोटि कंठ

रा

[illegible] कपारि [illegible]
[illegible] घडी पडसव
[illegible] कामक्रोध
[illegible] वावैसाद
[illegible] किमोम
[illegible] इना पूता काया
[illegible] गोरखनाथ [illegible] ॥ २०॥ [illegible] वनासो
[illegible] घावन घातिवा
[illegible] मारिबारे
[illegible] सलाहि ॥ सब
[illegible] रया सुरंगपां
[illegible] मारीयेय [illegible]
[illegible] है स्यादोनं
[illegible] गोरखनाथ [illegible] ॥ [illegible] ॥ मोरसतो
[illegible] नारी [illegible] जामनजो
[illegible] आपसुनारी
[illegible] विंदहथै
[illegible] वि
[illegible] सामि

ऋपै

[illegible] रल्लीना कामसासा
नीचोरी [illegible] सासा [illegible] रिहैम [illegible] इ
[illegible]
[illegible] तीन [illegible] रहनी जानै ताघटि थापन

केला।नाथैगोरखरांमरमेला।टेक।काया हंससंगी कैसा
या।जा।जोगी द्विन छन थाया।जीवनजुगमैमतांमसां
रणा।छांया पुरल कितकी।यापयांरणो।२।जामणमरणां बी
ज।ऊडि।द्वैवो गा।नाथैगोरष नईला।जोगी।उधक्षुमाऊं
नहीजाऊं निरंजननाथकी कुलाई।पिंड ब्रह्मंड धोगतां
अर्थेसवालिद्यिपाई।देवकाअगढनीतरिनवलपसाई
दसयेता दिसरपुतानीलाई।३।कायागढनीतरिदेवदे
जेरा का।।मनजिस्कु।आप सि लेखा।दिनामी।१।वदंतगो
रपनाथसुणोनरलोई।कायापाणजो तैगा विरलाकोई
॥४६॥जोगीहानेमा।अधरानमलणी।तगातडमूल
नहारोमरनाईरे।अंदरदेवोसुणौसाद्दिवादेषैसे।
थेसकालन मारे।केदासीनेवार।अकघरद्वारीतुम
केमानाका मनकी सोरेदिधवानारीनें संगवारेसो।
नेरोमिसोमिनरादि पडै मोरे।येकबूंदकेकारणि आ
सक्रानराधि।कुसबालहना फलनेसो।नरनारी दोनूं
नरकिंपडेसो।धारणीधारि।एड़ेसोरे।२।अंजनमूल
नीरंजनपाया।तुम्हेमिलीयासासारिसबलोरे।मांइम
मादैमारपलोम्हाजीतामारिनहारोरे।३।४८।चालि
रेमोदिलीकोइनमोरो।धरती।गगनदोरी टेक
मारिलियामारीसिधकुंपेरै।अलक पलगइकंचवैरै।का
हैसासनपूजेदेव।सकहैकसाका सेव।२।नालिकारि
टक णीक मारिकाल।न सीजे मामरस।बेगनाल
रदीपकबाति।आं।काया।गोरपकोसिरिधरवतदी
आ।४।।४९।सांनलिरजाबोल्मा।रेअवधूसुणो।नाप
मवांणिजा।नपणनाही।नेहकरेलो।जबकेरि
बिसरीजा।नीकेडालनपाल।पनहीमोया।मनुजे
नापिठुलासीचैजी।बिनजी।मनीथो पदलाव।जे इन
विधिलो आसीकैजी।।बीटीकुंबलडोलारे।अवधू
मायावाघविडा।ज्ञाजी।सूलेसमदीलहरीमनाई
गिरधा चीतासमाजी।२।ऊजड मारगजा।लारे।पवन
पुरविनवही पकाआजी।जाली गोरषअवधूहारे
समजिरतालेपासाजी।३।।५०।औसागापजपोमन
लाइ सोहंसोहं अजपागाइ।टेक।आसण दिढकरिधै
यौ धियान।अहनिसमीजोब्रह्मगियान।।नासिकव

नो॥आपैगोरषनाथतो॥नवैगातवसोनासुनिसमा
नांथाय॥न्ाथबोलैइम्रतवांणीजरतैगोकलता
मैनायोणी॥टेक॥उपडस्यानांघिलैघटाचलैदम
मावागिलैकटा॥१॥कऊबाडालीपीफलवासोमसाकै
वाविलाईनासे॥२॥चलेबटाऊसाकीवाटासोवैडाक
रोवागरैयाट॥३॥दूधिलैकूपारमुसलैवाराकाष्टैघण
कूटैढोर॥४॥ऊजडिपेडानगरमझारीनतिगामारि
पारपपिहारपैकामाछिजलैप्रगीतातायोविविवैसदर
थरथरकापैदमगरीऊपरिचूल्हाधूंधाइ पोलूणलागी
कूरोटिधाइ॥ टेक॥जरडोयाउ रडनीआशीवड़ा[illegible]
ईतासजाई॥६॥नगरीकापाणीकूवैआवैउलटीवरचा
गोरषगावै॥७॥४२ कानलकडबुधूराइविरषनकाइ
अपरफलएजांऊआप्योधरीसोई॥टेक॥आपहीमच
॥क॥आपहीनालाआपहीजीवआपहीकाल॥१॥
आपहीस्पंधआपहीभाइआपहीमारेआपहीखा
३॥आपहीटटीफडकाआपहीवेधआपहीमलछ
पहीकेधनन्हाइवेकोनीरपनप्रजिवेकूदेवा॥बंदतगोर
षनाथअलखअभेवा॥३॥४३॥भोगीयातलनावायेआग
जोगजाणोभोगनहीरेरोगअभाग॥टेक॥भोगीयाकहैन
लेभोगहमाराम्नसम्मीनाहिदासोनन्यारा॥१॥भोगी
याकहैमलनभोगविलासाभोगनहीकेधषिनासा॥२॥
येकबूंदनरनारीरीधीनाहीपैंसिधसाधिकसीधा॥३॥
भोगीयासोईजोअमृतेंनाला॥राजसतनभसझेलपा
ला॥बंदतगोरषनाथसुणोनरलोईकेथणीवहरणजि
नहोई॥५॥४४॥मगराकसलो मगराकेसलो॥विणिदं
तांतुगवायालो॥ग्पांनीकूतातेग्पांनमुखिझीयाजाव
लैआपगमायालो॥टेक॥दिनदिनवाघणसेनीयोला
गीरातिमरीरैसोषेविषैलवधीततन्दकैघरैलेवा
घणीयोघे॥१॥चावैचामपसंतांचालिंम्नचूंवता॥दि
नदिनबीजैवलया॥आपापरचैगडमुषनहीचीन्हैफा
डिफाडिवाघलिषाया॥२॥वघणीउपाइवाघणीनि
पाया॥वाघणीपालीकाया॥वाघणीटाकतैनौरीया
पायरैअमनवीगोरषराया॥३॥४५॥आवैसंगेजर[illegible]

४०५

यहां हो तो मक हीहतां सलोकां इहां हां तचितैतो नाति
नोका अवैसगिरहै जय नाकार पिछनेकरा नागो
सतकवा इबदेनकत वेनवाणी नवाणीसबढाकीत
निज्ञाणी भगवानसिध [illegible] प्रकास्या नहांचूफि
लैस्सलपविनांणी [illegible] मपविनाणी दोइदीपकरचि
लै तीनमयचनमयेकजोती नासचैचारन त्रिनवनतर्कै
युरितैमांरिक मोती पवेदेनमासत्रैकतेवेनकुरांसे
मुसलमानिआं जाहीलेथदओपोलपहिलानोगी ओर
नीसवधथेनाहीहदसमा छैलिबादि [illegible] संगकांनैघ
कातजिवा तं माहैलिवामोलिवा गास्वागिताहि
हकरिराहिवा आपणांहिताउ हसिबावेलिबाधरिवा
धुणांनां हलिसकछिया वूसगियां नाहसैघलेनक
हैसलंगां लोनिलचलसदा नाथकेसगी ८ मनमुपगा
नापुरसप लेहां नोहीमांसब्रगानेकुसदेहांमातरि
तालीमेटैधाता हौसाहोरखुनावेनाथ एनाथवाद
नांमवजुगना घा पोरथहतलांगोदी कलमांकां गडर
सहंमदहोनाम हली हवासोई मयहंमदंमहमदम
तासिकाली महंमदका [illegible] धिमबिचारं महंमद
हांमिकरदकुहोतो सोनोहै घडीनतारं ११ सारसा
गहरगंभीरं [illegible] अलीयानादं मांनिकपायाप
चुदायाचनवानादविवादं १२ कोईबादीकोईविवादी
जोगीनबादवंदकरणा [illegible] हसाहिलीसकदिसमानां
सूंजोगीकूं [illegible] नरणा १३ जपहिलीहुरसणांजे
गीमकलपीवम सलमनां नेरानहैची सोहोकाजी
मुलां जिवजासिसनमहादेवजांनां १४ मांमसवर्दु
कायादद नि रूचैराजासरपरी पर गाथी चंद तीहै
नेरवेलथेदिरंदा परचैजोगीपरमनंद १५ अहनिस
मनलेउनमनिरहै पामकोजाडि [illegible] कहै लाडया
सहैनिरासांकहै सामेतकारा सम १६ अरधैगात
उरधैघरैकांसदगाथजे जोगकरै लजे यलंगानकहै
नाया तांकाविसलपवालेथाया १७ अजपाजापैसु
ननधरै पांचूंयंद्रीनिग्रहकरै ब्रह्म अगनिमें होमैकाया
तासमहादेवबंदे पाया १८ धनजोबनकी [illegible] आ
सा चितराखेकांमलि पासा नादगीदकोथाहिजेतेला

मैसैंसइवा।सं(ग्?)।पप्रनहृदउपजै।आवैआप भवटको
मैंसासारा।न्हृहनिसहृसा।जैकोत।४।अलटेकवल
सहृसदसबा।सा।नेवगुफामैजोतिप्रकास।५।कृसना
तिमैकगा।ततसैमरोमधुनिवा।जेलर।६।गुरु इश्वर
पतीगोरषक।हा।परमततको।ईश्वरजानसै।७।अथ
उरुपरिवारीहो।अणघडयादेवा।घडी।सुरतिकरस
कोईसेवौ।ता।हिनजो।एैमेवा।टेक।प्रथविनासी।श्री
रूकहीयेमोत्तिमरोसापडीया।सवसंसारघड्याहेत
राताकिन कुंनहीघडीया।१।दसआंता।औतरीयाफिरी
यावैपतिरामनहोइ।कमाई।इपरणी।अनकुंपाई।करता
औरकोई।२।तूंपूरणवृत्तपुरषप्रथमीका।सुरतिसुर
तिमासअवणै।सुणपानने।णदेषा।नरैघडरोहारा।
३।तौआपआपनैंकवा।रदेष्याउजियारा।गोरष
हैगुरूकेसवइ।तेरानहीघडणेहारा॥४॥५२॥अथ
आरती॥नाथनिरंजनआरतीगाऊं।गुरदयालआगपाऊं।र
यांऊ।टेक।नहांअनतासिधाघिलिआरतीगाई।नहांजम
कीपाक्ननेडीआई।१।नहांजोगपरहरिकूंध्यावें।चंद
सुरतहांसासनवां।वै।२।गोइंदपसादजतीगोरषनाथ।
आरतीमादेवरा।जेघिलिदीसेतहांअतनआवे।३।
५३।नाथनिरंजनआरतीसाजै।गुरकेसवदूंझालरिबा
जैटेक।अनहदनादगगनमेंगाजै।परमजोतिनहांआ
पविराजै।१।दीपकजोतिअषंडतबातीपरमनोतिजं
गैदिनराती।२।सकलभवनउजियाराहोई।देवनिरंज
नऔरनकोई।३।अनंतकलाजाकीपारनपावैसषम्
दसाधुनिवेरी।वजावै।४।घोतिवरदलेकलसवनाऊं
निरतिसुरातिलेयकौपचढाऊं।५।निजततनावसुम्र
रतिसुरति।सवदेवासिरिउदवुदसुरति।६।आदिनाथ
नातीमछिंद्रनापूता।आरतीवरैगोरषअवधूत।७।५४
इतीपदसंपूर्ण।राग।१।अथसबदीलिष्यते॥वसती
नसुनिसुनिनवसती।अगमअगोचरऐसा।गगनमं
डलमैंवालकवोलै।ताकानावधरोगेकैसा।१।अदेषदे
षिवादेषिविचारिवा।अदिष्टिराषिवा।चीवा।पातालदी
गावृहमंडचढाइवा।तहांविमलविमलजलपीवा।२।

४०६

[illegible] मोडिवा [illegible] होइवारोगी [illegible] सातिका
[illegible] पतीजोगी २७ देखकलाते
[illegible] मनपवन [illegible]
[illegible] सारे [illegible] केथरिको [illegible]
[illegible] गराते [illegible]
[illegible] संगपारय
[illegible] जाके हिरदै सदा [illegible]
[illegible] विवाग [illegible]
[illegible] लेकनमनजोडै
४२ [illegible] संजमजोति
[illegible] संजमथिरहोइ
को ४४ [illegible] निंद्रा दिठहोइजा
[illegible] ४३ [illegible]
[illegible] साधिराजो
[illegible] पटनजम
[illegible] सुरतालेकु
[illegible] दिकालिदेषगात
[illegible] ४५ [illegible] नवोलीये [illegible] हमारीवात
[illegible] होगसा
[illegible] ४६ [illegible] गतिकाजोगे
[illegible] लेट ४७ घट
[illegible] लेट [illegible]
[illegible] दंतगोर
[illegible] पेट
[illegible]
[illegible] पायापाछाये
[illegible] तासंजमति
री ४९ [illegible] जोगिवाडेल
[illegible] सातिसाते
[illegible] नदरसे [illegible]
[illegible]
[illegible] जोमननहीं [illegible]
[illegible]
[illegible] हैनेथे

वतीकरै।१०।बीलैगोवनजेनरजती काल
कालांतेनरसती।कुरतैभोजनम्बलफग्रहारी नायक
१८सवदहीतम्बा।सवदही।कुंचीसवदह
सवदगाथा।सवदहीसवदत्तेपरचाङ्का।तवसवदह
सवसमाया।२१।सवदवदोतेप्रवसवदवदो।सवदे
सकंतकाया।निनो।एवैकोडिराजा।तगांजीला।पर
काअंतनपया।२१सवदवदोतेप्रवधूणवदवदो थान
मांसवधंधा।आतमांमधप्रदातम्मादीसै।८ पूजलमथव
दा।सवदवदोतेअवधूसवदवदो।सवदेसीकतकाया।
निनो।एवैकोडिराजासीधा।परजाकाअंतनपया।२५।
पंथविणिपुलिवा।अगनिधिनजनिवा।अनीलनिधा
जद्दीया।सुसमवेदजतीगावनाथकथीया।१।दिने
विंतपटीया।२५।गगानमंडलमेऊंधाकूवातहांइम्रतकर
बासा।सुगराहोइसभरिभरिपीवेनिगुराजाइपियासा
२६।पणनेजगोसंततेजेनसोदेतापवनेनपलंतबाई
महीनारेनमातुंता।उदफेनडूबंताकिनेनौकोपतिशाई
--- गोमारतोगन ... [illegible]
... रता।३।मा ... [illegible]
ीमरणहैमीठा।तिसकनणीमरोजिसकरणीजतीमार
नाथमरिदीठा।२७।हवकेनवांलिया वकेनचांलिव
मीरैधीविपावें।गावनदुस्वातहजारहिया।धूबोल्या
गोरखरावेंरुणसरीयातेथादेकनेफूनतआधा।सि
सिधांसिधमिल्या।अवधूबोल्याहारतनाथी।२०।नाथवा
हैसुणोतेअवधूदिढ ... योवीया ... काथबंद
कारनिवारोनौसवेदि ... वाचं स्वांमीज ... नव
डरकुंतोपुष्पाबापेनपू ... आसाभरिनामदृ०
तौवेदपव्याजेचसूंसीज ... गारयना।बजानविव
कीकस्या।२२।अवधूधाधेनपारवा ... हिवाअह
निसलेवाब्रह्मअगनिका।सेदं ... कविवापडशपूर
हिवाधूबोलागोरषदेवं।२५।थाडावीनेथाडपाहल
परिपक्वाहैसमाइ।गगानमंडलमेअनहदवाजा।पिंड
पडैतोसतगुरलाजै।२०।अवधूअहारतोडो।निंदामोडे
वनकुनहोइवारंमो।छेवैगमातिकायापनटना
कोईकोईविलाजोगी।३६।अवधूआहारकृतांडिचो

कालप्रगट आद ॥ ३ ॥ मनसकधार जलअलचंदा
पुरी कै घीसरंनादके घीबिंदा जौ नह जुगे अनद
तरं ॥ ४ ॥ उलटे ननादपलटतबिंद आई कै घरिनिस
कलजिंद सुनिमंडल तहां नी फरीया देसतालेउन
मनहीवा ॥ ५ ॥ अवधूपथमनाडीनादफ्मकै नेजको
मडी पवनंसीतेगननाडी छिंदकाटि मा कोई जोगा नि
तगवुनां ॥ ६ ॥ ऐतेपवनरतिनपैगा छेगतपवनाचंद
रजनितसिमाखिलैवो अंदवसेतहां लिदं ॥ ७ ॥ अघं
तकवलउरधंतकवला माधि एपुरसकाबासा द
दसहैसा उलटिचलैगा सहजीजोतिप्रकासा ॥ ९ ॥ ध्या
साधिवे सिवा पवनानिरोधिवा आनमानेसवधा वंद
गोरषनाथ आत्मां धिवा विवा सूनलमधेवदा ॥ १० ॥
गोरषकहै सुणौ रे अवधू पांचूपसरनिवारी अपणी
आत्मांआपविचारी बिांसवसोवौपावपसारी ॥ ११ ॥ बंद
पेक पूछि जाकहौ गुरुदयाल ब्रधतेकहोई बाल
फूल्या फूलकली क्यूं होई पूछूं कहै गोरषसोई ॥ १२ ॥
सुणि हो देवल तजो जंजाल आपा थापीवतै हो स्वबाल
ब्रह्म अगनिसीचिवा मूलो फूल्या फूलकलाफिरिफूल
॥ १३ ॥ उलटै पवन गगन समोई तब बालक पन ब्रधहोइ
उदे थे हैअसत थे है मन थे है पवनां मेला छिलै हसतीया
निज सालनेला ॥ १४ ॥ बारहकला सोषंता लहद सपो
षे सा किलासाधे अनंतकलाजीवे करम धूम जोति
ज्वाला सिधसाधंतया किलायाये ॥ १५ ॥ आसाधस्थित
गगनगाजंना उनमनलागंत ताली उलटंत पवनांप
लटंत वाणी आपीयापीकंत तेब्रह्मअगनी ॥ १६ ॥ अनेप
ने पंतआदेषदेषंत हरसपासतेदरसजोणी सनिगर
जेत बाजंतनादे अनेपलेपंततेनिजप्राणी ॥ १७ ॥ आहि
मतसिं डानदटि बोजगायाब सिआरतरसेतफट

श्री [illegible] पक [illegible] नयेथै [illegible]
[illegible] सालें [illegible] गणमधे [illegible]
[illegible] सार १४ [illegible] कहै [illegible]
[illegible] नाम [illegible] मुख [illegible]
[illegible] कहै [illegible] तपाल [illegible]
[illegible] भरी [illegible] मनमे
[illegible] पाप्पला [illegible]
[illegible] पापी १४५ [illegible]
[illegible] नानी [illegible] जाइबा
[illegible] १४ [illegible] बिरो
[illegible] प्रवांणी [illegible]
[illegible] बिरला
[illegible] बिरला
[illegible] १४ [illegible] लरीयानी
[illegible]
[illegible] १४ [illegible] पनि [illegible]
[illegible] सारं १४ [illegible]
[illegible]
[illegible] पोथी १
५२ [illegible] मीग
[illegible] वा १५१ [illegible]
[illegible] राजसेती
[illegible] १५२ काजी मुला [illegible]
[illegible] ती
[illegible] १५३ देवजा
[illegible] फल
जात्रा [illegible] १५४ [illegible] मुसल
मान [illegible] ति
१५५ [illegible] जोगी [illegible]
[illegible] १५६ [illegible] त
[illegible] यामो
[illegible] पारार
[illegible] १५७ [illegible] लीनलो
[illegible] १५८ [illegible]

॥२३॥नादबिंदकाइलैदोजो पीलै
नहरवना सो घिलैमरघरीसेको तिकावासा कहै गोरषन
थनबिंदकादासा २४ नादनारसवकोईकहैनादहीले
कोईबिलारहै नयबिंदहै पवनीसिला।जिनमाध्यातेसिध
मिला २५ नादहमारेबाहैकोणनादनजायातटैयोने
अनहदसबदवाजतारहै।सिधसंकेतजानीगोरषकहै २६
पवनहीजोगपवनहीभोगपवनहीहरैछोतसिरोग
याप्वनकाजोणैनेवसोआपहीकरताआपहीदेव २७
आनिहीजोगआनिहीभोगआनिहीहरैछोतसिरोग
याआनिकाजोणैनेवसोआपहीकरताआपहीदेव २
८ बिंदहीजोगबिंदहीभोगबिंदहीहरैछोतसिरोगयाबिं
दकाजोणैनेवसोआपहीकरताआपहीदेव २९ अदेखदेख
णातेभलरणांनहीनषोजतते आपांनीसही बिनजीवैबा
दीमरैउपाधीकापिडपरै ३० कोईनिंदैकोईबिंदैकोईकरैह
मारीआसागोरषकहैसुणौरेअवधूयोपंथषराउदासा
३१ केतापावैकेताजाइकेतामागेकेताषाइकेतारूष
बिरषतलिरहैगोरषअपणैकासंकहै ३२ आमीहोइन
रनिंदाकरैमदमांसआरनांपिनयेकोतारिसैयरीपाल
कमैजाइसातिसतिभाषतश्रीगोरषराइ ३३ अवधूआस
नपवनउपाधरमकरनासमदपीवतांघ्राणकेनिरासनीन
पतेगपानध्यानपोदेतामरवालितप्राणीक्रमारोजा ३
४ अवधूकेकंठआरप्रमपसतापैदेह बिनासिरनिंदाआपे
बुधिबिनकैबिकलहैजाइनातेगोरषनागिनयाइ ३
५ जोगीसोजोमनजोगवै बिनाबिलाभिडराजभोग
वैकनककामणीत्यागेदोइसोजोगीघरनिरनैहोइ ३
६ सन्यासीसाईसरवकरमकानासकरैअंतरमैरमाई
आस अनहदसैमनउनमानिरहै सोसन्यासीआगमुतीकहै
है ३७ डंडीसोईसोआपाडंडै बावनजातीमनसापंडैपां
चुंवेडीकामदैमारेसोडंडीकहीएतत्समानं ३८ दरवे
ससोजोदरकाजोणै पांचूंपवनअपूठानाणै सदासचेतर
है दिनराती सोदरवेसबलदारजाति ३९ लालकहैहम
पाछिआरीसा मूलरस्याउरवारं फूगनोणोषिषितिछिआणं
नांतसबालपारं ४० पढिदेषिपंडितारहिदेषिसारं
अपणीकरणीउतरिबापारंबंदतगोरषनाथकाश्लोक १

संध्या [illegible]ती गोरषनाथ [illegible] जिननी [illegible]रनारा
॥२०॥ आ[illegible]सति [illegible] होपं[illegible]ता ना सति नो [illegible] होइप
[illegible]ती तिरिनारी [illegible]पानथ्यो [illegible] पानथ्या सा तिस
ती सा [illegible] सिधसाति ना थ्रत[illegible] ॥२१॥ मतो [illegible]मारी मनसा
बोली [illegible] नादेला [illegible] निरजन निराकार [illegible]
ना [illegible] बोली [illegible] पिंड [illegible] ॥२२॥ आपना [illegible]
[illegible] जोगपंथ [illegible] फेरि किरि म
[illegible] सिध पुरस [illegible] ॥२३॥ आ
[illegible] होपं[illegible]ता [illegible] सो स
[illegible] नाग[illegible] ॥२४॥ थ
[illegible] बाल[illegible] गोरष [illegible]
[illegible] ॥२५॥ [illegible]
[illegible] बोलै [illegible] सबद [illegible] काया [illegible]
[illegible] बोलै [illegible] ॥२६॥ [illegible] म द
पां[illegible] सा[illegible]का सबद बिचारी ना [illegible] हो[illegible] निस
[illegible] तिना सिर [illegible] तारी ॥२७॥ येक का मध
[illegible] सिध [illegible] बांधी [illegible] पारि
[illegible] सिधकी [illegible] निरजन [illegible] सांधी ॥२८॥ [illegible] सतजुग मध्ये
र[illegible] बोली [illegible] नारी मानसरोवर पै
सि[illegible] नकरंती [illegible] बाल गोरषनाथ की
चेली [illegible] होती [illegible] निसा [illegible]
ली ॥२९॥ त्रेताजुग मधे सीता सतवंती बोली ये रमा
[illegible] नारी सेतबंधरा[illegible] सिसनान करंती
[illegible] बाल गो
रषनाथ की चेली [illegible] होती [illegible]
[illegible] ॥३०॥ द्वापुरजुग मधे द्रोपती बोली
[illegible] सिसनान करंती [illegible] नारी [illegible]
[illegible] निरदलंती [illegible] बालगो
रषनाथ की चेली [illegible] होती [illegible]
[illegible] ॥३१॥ कलिजुग मधे कालिका बोली ये
[illegible] महादेव पै [illegible] सनान करंती [illegible]
[illegible] निरदलंती सिध [illegible] जोगि
[illegible] बाल गोरषनाथ की चेली [illegible] हमारे सं
गि होती [illegible] ॥३२॥ [illegible]

सीदक्या मननिरास पपमेरस जोगी। मण तत्त थरी तेमस

५१२ गीरणथंबूं ग्रा धिरवाल्लिवंता मनरा श्री मं तगा जोवर

डीलह रिकिडूपकी निकसे नवकौण फूकै कोणमारै २२

जैरणी जोगीरा मलफरणां मनमनसा का विडी। अगमग्रा

गोचरासिंधका आसण तहां आया निसना येडी २३ आसण

३ डीमनसायंडी मनवनदो केजीरंभ्याति सतिन्नणतर गाम

र धरीतनमन होस्थायी रंरराजणयांकूं रमग्रा करैवेद

गयांकै रंगीकू पगथ्रकू कमानि फूटे अदगयेकूं जोगी।

२४ वीजनहीं भेकर नहीं नहीं कूपरेष अहंकार उदै असत

नहींवाणा नजाई जिहां मरथरी रह्या समाई २५ मरनैकास

मा नहीं नहीं जीवणकी आससति सतिनाथ तजोगीनर

थरी हमारै सहजै लीलविलास २६ निरधनकथा बडू

विसतार कथी निरंजन रहो आसार पूछत विनमबावनवी

जीकौनपरचैर हिबाधी २७ सुनिहो जिनमछनसगियान

देही बिनरतन धरो ध्यान उदैन पायतजहां कप्यान

जाई तहां मरथरी रहा समाई २८ आगै वहनीपीछैना

नानिरति सुरति विरकतालिधमन कथो निरंजन रहो अस

सा भ्रजाकूं नछाडै आसपास २९ माया सतरणी नवरसै

मुवनहीं धरनोथ नराजा दरवा कनकदां मनी जोगाविल

यकैहै मरथरी कथ विनास ३० साधिवा तोयेक पवन आर

नसाधिवा आडिबातो सकलविकारं रहिबा तो निहस

बदली आया सहजातौ निरंजन निराकार ३१ कुलसहीन

नगनोपबाला मगनैरूपाइ छितावि क्राला घदमोफ

लदंतनाकसि वीणी कलोर्य हगात्मा हेलम्मा बिकूपी

३२ नगनासिक हेनगन सिरिया नगनासिजी कुलचरा

अजकूं कापेसिहोनता नहीं मसिधिजो गेरवरा ३३ धनिसु

सुनीकुलवंती नारी धनिसित पतिवरता धनिसदेस

देवी हूं उपदेस म्हेछिजोगी ३४ जोगीचित विलपीम

नसमाया कथजोगनुगला तैजोगी नथाया नेहीजो

गजोगीसरबस जोगी गुरगम्यानेंही एणां फिरो मुदजोगी॥

३५ तिलसम्या बनोवासी कपरि ग्रंब [illegible] काया मरथरी

मनतिसबलां झोरियो विरषि हिये इकेरायो ३६ जसिप

नालसिरातरा आसिहाथा बंनाला सिमरदंतां है हैलोका

करचारी वैरागी हुइ किनजाने ३७ जसिमाया तासिजा

तकादोरन
॥वैगवास्चुलत
धनदरतां चोसटितैकं
॥पमदरछाडैकूटवेधावैत्यागेमाथ
॥तगोरषन्ताल
॥८रसतारूगगोलारोगी॥मोलामिठकरे
गगोगोरषकहैसरखटासोगी॥इतनामैनहीनियसे॥
जोगी॥२२७॥नियनत्वोतिवैदरोगीरसाइणी॥आरजाएहै
घाखडनजोगी॥तरानपीहियाछेघावांरिलयांनेजो॥नन
गोरषराव२२८॥हुंडवूझंडचहोडीयामांनवोड्ग॥इन
कोइकोईकोरहरहिगया॥सूनापेनाघरलन२२७॥निडासप
नेवदकरैपंथचलंता॥आत्मांमरेवैगपटपटकमा॥अ
॥निनाथकहेसूतासहजसमाधि॥२२७॥इतीश्रीगोर
षनाथजीकीसबदीसंपूरण॥१॥अथनरथरीजीकीस
बदी॥अहंकारत्रषमपींरां॥पदेदेचीरायांमेरांसती
सतिनापेतराजानरथरी॥पंडकाबैरीजैरांहुबपारो
वंतसुपीयादसतांवेलाकरंतदा॥मणीधरांमूकनमूइ
॥आल्याससतिसतिनापेतराजानरथरी॥२॥सुधीराजाडुश्री
परजासुधीवानरगवांणीयां॥सुधीराजनाथरी॥जिनगु
रकासबदपिछांनीया॥३॥वधागरवानीमझरीदेविस्याड
रीयां॥सोलाहैमेमंतीयां॥नुजघरिहीडतीयां॥४॥वनेविर
जारुफलफलंतोमाडवईगतेमावेदातोगिडोमनडागा
या॥मेदेषतोनिदा॥५॥चढैगासपडैगानपडेगतलउ
वारीधनवंतलोगगोजैगातेराकयाहैनरथरी॥निष्पारी
॥राजानरथरीभरमिनमूलातालिकरिडीवीतमसिव
रिचूल॥हैदेलकडीकुगतिमझा॥तिजोगीनरथरीजी
वैनुगया॥१॥७॥अवधूजलविनकंवल॥कंवलविनमधकर
कोइलबोलेकंगविना॥धलविनगिरधमिरघाविनपारथ
येकसरवेध्या॥यंजना॥८॥नोदोरेजाडिनेकपाट॥दरवेदा॥म
सिवघरिवाटदाइलयचंदायेकलपनांनवेध्यामंघगग
नप्रसथाना॥वेधामिरधनगडैयाल॥नगनतनरथरीगोरष
॥नतिरासमनमंडेमाया॥मंडमुडाइमनेउ

नकूदिसातत्हनीपवनाकीवोलै ग्यांनरतनमनमोहे ४८

४१२ देसमवंता सदा वैरागी सात्र वैरागीपंडितावालु

कर्मा विधवैरागी यूं ग्यांन वैरागी राजा अस्थिरी ४७ ग्यां

नी सो जोणहू गंभीरं अस्याकुं मनालनि सकलनरंभ

प स्यांत अस्थिरी मति सरूं तत्व विचारै तौरेषन रूप ४८

मतीनरथरीजी की सबदी संपूरण ॥ २ ॥ अथ चिरप

टजी की सबदी ॥ काया नगर मध्ये कंध्याचित डोलै पातै

रमै नितिकू नपै फलपैद हदिसनाश तिस कारणि कोई

सिधन थ्या र २ डील कछोट मनअगा फेरै घारिघारिनै

मसाराकारीषाया जरैनवाचा पुरै ताकारणि नूं ई फरिक

रैमरै २ मनचंचल पवनाचं चलाचे चलवाई धारा अप

हुघटमधेतीन्हूं चंचला च्यारा षिनाकरता पिंडकादारु

च नाथ कहै वैसदैननाथि चेलापंचलावैसाषिमोगे

लिया लेलिरिषा इनाथ कहावै मारिमारिजा ३४ दरसण

मह्रै नाथ कहावै मुषिवोलैचकराई आलै काहिनू

गुणलगै डालमलघडिषाई ५ टीकाटांमोटमकस

वोलतमुधरीज्ञानी चरपटवा है सुनो हो नागा अरजना

यास्योरां की सहनांनी दरंगा रंगा बहु दादारी जैसी पोटी

महोरपलमाधारी चरपटवाहै सुणौरेलोई वरतण है

मछिजोगन होई ७ येक सेतपटा येक नीलपटा येक ट

सरकटीकानेवनटा येक पंषका डिमनऊ बखटा

चरपटवाहै वैपेटनटा ८ रातीकंथा तापटरोता पगोप

वडीमुषानंवोलथागोपी जेकीजेंनागा चरपटवाहै वि

गाडूंनागण पहरिमडकी कं दाणता थिनकडी कूंची

न जोगणि साथि ऊवतवैमनका पाए करात जिंस कपान

मायाजेजाल १० नांगालेपागै गंजालपीछैं नंजालकुं

मारकैभांडै सो जंजालताजि जोगी तैसा सो गंजालफू

रिमाडै ११ वाकरकूकरवी गरहाथि वाकी मोली तर

णीसाथिदिनकरि भिषारातूं जोग चरपटवा है विगावै

जोग १२ गंधवि गंधा मूनाषाऊं असवापडिपड तोडैर

र्यान बंधा सोगेकूल अपरि चरपटवा है तैसा येमार

३ नलकी भांति पवनका षंभा देवल देपि नया अ

नमावा हरि मीत गिंध मगंधा का है मूलतो रेयु सव वां

धार्था सो विकाट कटका नावकाहां डी चरमकांचं

तमिसंकं लेवंतेकाया।साहास्लोफाडुरावारी।निज
लाया।२८धंकोमकत्लालीधित
मुराविषेरन्यामनमथमासवीरजलसहत्ता॥
कहोरहीसुष्या२९आसनीजोमिटे
कोटिपूजाविनसतेवरतमंजनतयपंडनाग्य
नासतिब्रह्मसहस्रापदेयदे२८गोरषवोलै॥
छत्येकदिसारूवाघनीयेकदिसा
एकमडीदमडीममडीतीनवसतत्यागी।सा
तहोजोगीभरथरीतिनांइरतावैरागी३०ने
रिजारीतीनवसतत्यागी॥सतिसतिभाषंतजोगी
भरथरीत्तिनांइरतावैरागी३१मोहनबांधिबामन
परमोधिवा॥निष्पातेम्यांनाविचारंपंचसंबातकरिवा
येकसंरहिवा॥तेऊतरिबापारं३२छाडाहसतीघोड
गांवगढाहरषसोगमानिनांहीताते राजाभरथरीध्य
रतनयायदमांहि३३पवनवाजुगवाजीवणां।बढेसवा
रीभाताते निकस्याभरथरी।भीगालागजोभा३४ाग
नजाइगामंडलजाइगा।चंदजाइगा।सूराजाइगा
जाभरथरी।सबदगुरूकेपूरा३५गयेजुराजारमव
रतेगयेजुपरजाकेलिकरंतेगयेजुनिपावहोरूपध
रंतेगयेजुब्रह्मावेदपढंतेगयेजुब्रह्मासफलफलंते
गयेजूसतवाचहारिकरतेसतिसतिभाषंतराजाभरथरी
हमनीजातेजेजोगीनहोते३६जेतेपुरषाजुनेगगुं
तान्तेनारीजुरूपरमंता।नतेविरग्योंजू मूलसहंतान
तेकूवाजुअमृतपांनीहोता।नगत्वाराजाभरथरीगुर
परसादेग्यांनरता३७सवालगिरवरंगिरसुमेरं तासमत
लिम्यामांडारते।तोनीसाधनडुषतेनादिरिषपालनिरं
जनं३८समंद्रमघेहोतासनंतासमतूलिम्यात्मांहोम
तितौनीसाधनडुषतेनादिरिषपालनिरंजनं३९गंकल
गधरतरी।तबलगभरथरी।जाइगीधातुरीनगत्वाभरथ
री४०।घूलोलघ्रोतिएासप्या।बावडोलंतन्नमालचा
आंगलोगृहेदापवनचंदंप्योमनिरानानिसबलं४१मोर
नाचंतकोकिलागांवंतामेवरावनावेततदडबेणीचडं
सततत्नीपवनकूकोलंतायंभरथरीग्यांनलीनं४२॥
सिघासनबाक्रन्तवसतरभागनछत्रासिरसोहै।

यंडी। चरपटबोलैहेजो गिडी॥ ३१॥ वारपारि निश्च्या व्रषत
लिबास। शदि हि बिधि रहिबा जोग अभ्यासा बनषंडि रहैम
सांना भूता चरपटबोलैते औधूत॥ ३२॥ स्तस्त्र बिरषा गिरकंद
रिबासादो। इजान अगान मेलैपास। पलटै कायाषंडै रोग
चरपटबोलै धनिते जोग॥ ३४॥ रिध्या चरपट बिबरत कंधा
पुण्यापुनि बिबरजित पंथा। स्वादा स्वाद बिबरजित तुंड
लूष मनां नांवन मुंडै मुंड॥ ३५॥ मन नहीं मूंडै मूंडै केस के
सां मूंड्यां क्या उपदेसा। मूंडे नहीं मन मादिक पांनां चरपट
बोलै तत गियान॥ ३६॥ धीगा धीगी मुसता मुसती। बहोत
गोरखा मारी॥ मूंड मुंडाय नित दै पासंड बबै नंड बंडी याल
[illegible] मारी॥ ३७॥ झोली भाई पतर पाया। पाया पंथ का भेदरी
नानांक सरीषा आंजां कालकौ गुरदेव॥ ३८॥ महा जेसुम
[illegible] मांगिवा। संजमै मन नष्ठरणा। आसन दिढि
कांदि कैसिबा अजलधुम्न मुक्ति कहौ कि न मरणा॥ ३९॥ फोक
ट आवै फोकट गाइ। फोकटबोलै फोकट षाइ। फोकट
[illegible] रहै चरपट कहै सूबे [illegible]॥ बांमे हाथि
पा
जौ
[illegible] मांडौ चक्र पूरै॥ होंम्डा बैगे लम
आगे ढा चरपट कहै यम व पावेंडा॥ ४१॥ जे फल्या सोत्र
न पाया। घर [illegible] परतजी न माया। नाथ बिसारि नि
डर [illegible] जोया। सो मन नाइ सुपीट इसोया॥ ४२॥ नो घरि
नीया नांघरि बरतो नां पर्थी [illegible] नोबन संता। नां घरि पु
न घी सके बारी॥ तातें चरपट नी दषियारी॥ ४३॥ दिन उठि
घरि घरि दीन्ही फेरी। [illegible] नगा न्हेहरी पावर
पूता पेट फुलाया। मांगी भिष्या मटका षाया॥ ४४॥ गटका
षाया सागर सचाया। जे से सहर का कुतां। जो गम गाते
का
की षबरि न पाइ [illegible]॥ ४५॥ आईन बोड
नेबान जांकं तातें मेरा चरपट नांऊं। आई नी बोडी ये
नेबान जाईये गोरष कहै पूता बिचारि बिचारि षाईये
॥ ४६॥ सति कलणां सुरबा इन्द्र धीरा निसदिन का या गहर
गंभीरं जलसन निरवृत्ति बिमाख कृता बंदत चरपट
औधूत॥ ४७॥ हंसणां जो गी गणी सांढा पुरष कुलष
[illegible] नांढा कुलिन्सा न्हूं निलजा नारी चरपट कहै
[illegible] ४ [illegible] गलित [illegible] की [illegible] मांगे
[illegible] चरपट कहै सुणो रे लोगो अबरतण है या सिजो

ससटिकादारजहां वे सकाकूचागेधवि

पयोनाकूटैचमडीधौधिया
वौतेपाधीचरपटकहैयेकालिजुगकी
ामुष्कार

सुणौरेअवधूकांमणिध्यानकीनै जिंदवी है

२२ चरपटचीर
कीरोरे
२३ दिढकरिमनवाधि

२३ अवधूमूलदवारदीजै

रपटधानिधानिजोगर४ वंधिसवेधिविषमकरिवंदुन
निकरिरविभ्रमारिकाथिंदारातिद्यौंसरसचरपटपीया
भूटैतेलनवूकेदीया२५ जोन्हैरखलपरासयार्मेहासिकी
नवाडेटाटीवाराआंगुलपैसिगईहै मोलाओगुन
फाटी२६ पसांकंघाअनलेवासाधिसननकोस्वादै
पासमनसूंमतोगुरुगपांनाविहूतचरपटकहैधनिअ
वधूत२७ निरभैनिसंकतेतत्वेतामनसोनिविचरनि
नयंद्रीजितासेतकटाकि मनस्पानरताचरपटकहैथै
सिधमता२८ साधैनषामारैनिंदसुपनैकाविंदरन
विंद पडैनापिंडनकंपैरोभाचरपटबोलैयेसिधजोगा
२९ अरधउरधचरपटगोपीचंदवंदोयूरणपरमांनदाधीर
मंडघूलछाडीभराभौंआत्मसाधोजोग ३०।नं
वांधलवायेदोऊसचारानाजोगीकैदोऊकंचानाथा
डूबैलेलातिरैजीविजोगीरतनामरै ३२ जलकैपार
लेगडेवासकामणिध्यानमेलैपासदिढकरिराषेपंदू

१२५

तीरे पूता यौवन आवि बलि दे गमसाणकी माटीजी
[illegible] जोगन होसी रे पूता जोगन्द होसी। नसी कि सी जलबं
[illegible] की काया जी। सति सति भाषंत माला मैणावती। मरमि
[illegible] लै रे आधार [illegible] गोमरिजा कुगेरा फिरे [illegible] गेम
मसाण की छार जी। [illegible] पम तत चीन्हिलै रे पू
ता [illegible] संसार मो पार जी। ७ कौण हम कूं [illegible] फुला
[illegible] कौण [illegible] लै पाई जी। कहां [illegible] मैं मेडी मंदिरा कहां तु
मैं [illegible] माई जी। ८ [illegible] मात कुनावे [illegible] गाप
[illegible] लै पाई जी। [illegible] मेडी मंदर घरि घरि मैणाव
ती माई जी। ९ [illegible] देस बंगाल जी
गोपीचंद [illegible] मेटत मागाकाल जी १० [illegible]
राज पट [illegible] भोगविलास जी गोपी
चंद [illegible] गया बन बास जी ११ राणी
[illegible] रावत रेति
[illegible] राजा गोपीचंद [illegible] गई लाजी १२
[illegible] गोपीचंद [illegible] जी। मंदिर म
[illegible] १३ मार
[illegible] सम्भालि
[illegible] १४ मन रा
जा [illegible] मन कूं चीन्हि पार
[illegible] राजा गोपीचंद जी १५ [illegible] नांहीं देषि
[illegible] मैं [illegible]
[illegible] गोपीचंद पाया १६
[illegible] धीति रूप स
[illegible] १७ मन थीर तां
पवन थिर पवन थिर तो बिंद [illegible] थिर तां बिंद थिर यूं
भाषै गोपीचंद १८ मन चलै तो पवन चलै पवन चलै तो
बिंद बिंद चलै तो [illegible] गोपीचंद ॥ १९ ॥ ४ ॥
[illegible] जती [illegible] जी की सबदी ॥ [illegible] का
बाला [illegible]
सतगुर मिलै तो [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कोतगोमैं [illegible] वामां मैं [illegible]
[illegible] बिनडै [illegible] ४९ कोरामां
मैं सतकपासा चरपटकहै सुणो
[illegible] डीधरवास्या ५० पंचमाऊमाथै टे
मू पैको प माया दोविष सारा करौच
छोटी चावैपा
तीध जाइउ घावै दो नाकै रै बैदगी जिवावै रोगी
चरपटकहै बिगरता जोगी ५२ जटा बिटंब एकै गोला
रमोटी कंथा बऊ निसतारा बिचत्र बांणी जोग
भाबरवासी वैचकहौ बिधि रंगो मैं दैमा सैलादैषिता ५४
भना बिबरजित गावै गिता आहनिस माई जोगबि
लासा चरपट बोलै वैधविनास ५४ कथणी बदणी
बलि बलि जावा बेधिसकै तो बंधो बावा चरपटकहै प
कनका डोरी भेकल गद वाले गया चोरी ५५ नेजोगे
ऊडो ऊक कंधरमा ऊचापदर कऊ [illegible] चरपटक
है सुणो रेलोका रतनपदारथ गमायौ फोका ५६ ये
कै पाथर अमीपावा हूवा पाथर ऊपरि न्हावा चरपटक
है उनी कतेवायो कूं पाथरयौ कूं देव ५७ पूजि पूजि
गा सबजुग घाया निजतत रह्या निरंजन जोतिस रू
पी सं गिहीआ गौ तिसका करो बिचार ५८ पूजिबा तो अ
मा देव पूजा चटउ दवातो अनादि पाती चरपटक है
कै उनट किन मरणा घटि घटि हीं तीरथ जाती ॥५९॥ इ
ती चिरपट जी की सबदी संपूर्ण ॥ छ ॥ अथ गोपीच
द जी की सबदी ॥ राज तजिलै रेपूता पाट तजिलैत
जिलै हसती घोडा साति साति लाष तमाता मैणावत
रे पूत ॥ कलि मैं जीवन थोडा १ राजा कै घरि रोतिहो
ती माता हमारै होती माई जी सतघर पै चौबारै बैठती
माता हमऊ ग्यान कहाते माई जी २ गुरू हमारै गोरष
बोलीयै चरपट है गुरु माई जी येक सबद हमकू गुरू गो
रषनाथ दीया तो बोलण मां मैणा वती माई जी ३ मोल
मैं राणी नैं बारासै कन्या बंगाल देस बड भोगी जी ब
रावतसमो कूं राज बारण दीपा चै [illegible] जोगी जी ४ [illegible] जि
आ जिकरंता पूता काल्हि काल्हि करंता काया कै रे [illegible]
कलालू का भाखा जी ॥ साति साति लाष तमाता मैणाव

सनीपैसेपुरसकूं परसापेलि कादि आगेदोहजैसे
४२६ कूंपणीनापडिया रबिचारबिनासबधोंछैदीडं
बंतासबदआसबदनबंदहीत्ताकूंकपूलेटैमारि
बंता७ केपूलकादसतदौ आगनिबकूनेगलेर
हिसासिंगतसतंगाह्मागैरैरणपकरापडैकील
सेतीलडै।धंडवरू बोडियाणकजनमामी पचेसी
धरनाधरैसकजलोनिसतरै बादबकबादतौदेहबी
जोपुससाषीकहेसोईसबदगहो२नाबिधिबणिजी
यांनिजीजेएसुनिसाइबसैम तकालंडसैउलटिबां
बईसरपैपाया।पूजिलो जिणदेवआगेंघडारहसिर
हरिदेऊरैनादबाया।२।गगनअसणकरैसिवपुरीसं
चेहैसनिधुनितहांनादबजो नषंडदीपगजरेब्रह्म
च गोछिकरोपं जनबेठअकथामे२२ पंचगढसोडिब
कायगढतोडिबा डाहिनिसकफेबामासमीरांआ
बा सकूंमेटिबाब्रहमकोटिगगनआसणकरिसोदूथी
सं२ वथाअषपारससरबाघाटिघाटमीतारलोहि
विसनमगातिदकूंअपनै जिनेहाविवेकामोतार जेस
म मफोतेपिनये डानसपंफेबढिनतं अटसागतिरथ
कोटिजिगजहांबिलंबेसंत।।३।।दा।। अथचोरंगी
नाथजीकीसबदी।।मूलसंचोरंगीअरधमूलसींचै
अतरवरमेलूंतंडालोदूमैसोरंगीमूलसोचीयायूं
मनमैउतलापार२मालीलोनलमालीलोसीचै
सहजकियारी।पनसामिकूलायेक पहौपानिपाया
आदमहूलनिवारी।३मारिबातोमनमसतमारिब
मूटिबापवनभंडारसाधिबातोपंचततसाधिबासे
इबातोतिरंजननिराकार२ आनिसेतीआनिज
लिबापाणीसेतीसोखिबापाणी।।बाईसेतीबाईफे
रिबातबआकासिमुकिबोलिबाबांणी।।४।।७।।अ
थकणेरीपावजीकीसबदी।।सगोमहासंसारिलित
नहीआचेबैरी।।निलैहो२लिसेकहरषमेहसोक
तू णेरी।।२८सोकणेरीईषमेयेकलडैआनिंगजराबी
जोहीगोमरदामरनाबैठोमनमन१मनआमेराबीत
बैजोवैपवनांबाडिलगादौचेतनराबलथदरैबैटा
प मरथा।चेतनसारैो।२।जागोपसाजी।तिहीनांसर्पहि

कासपवन अरपोली चंदसरष
नोली वोऊंकारकोजाएँमेता ऐसासिधत्र
तेष्ठ गोपीचंदकहै स्वामीजी बसतीरहूंतौ
नेगलिजोऊतौ छुधा संतावे आसाति(र
माया पंथैचलूं तौ छीजै काया भीगापाऊं तौ
सीपरिसाधूं जोग ५ सांन लिश्रव
ग्रेनिजसकलासिते मालिसारंसंजमत्रह
पैबाई आरंनपुधानसंतावें सिधत्र
नादपयांनेनहीं लीनैदाय्रा ६
जैजोगामनपवनांलेसाधो जोग ६ दष्ट
मिलैश्रवध पवनांथ्यां रिलैकाया
ग्रामरन थ्यौमिलैं ब्रिचारि त्याधि लैमाया ७ स
मरेजोगी नलेश्रोतार सुनिसमावै
अलषपुरसतहांत्योलीनों ८ जोगनजे
महलागयाजमारा ग्रामेगदहजे
लकरंषरि(रिपितिरिलैऔतारा ॥ ६ ॥ इकुसमीपाई
लो अबबोइयैते आगेफलैथ्यौ संसारकरमफ
री अनबल्यासरधासर्कंतिसनी १० पहलैंकीय
सो अबभुगतावै जो आदकरैसश्रभैपावौ ऐसादी
सैसालीजै ताते तनधरिनीकैंकीजे ११ ईजनपा
नांतपाक्षिनतपनों धुनिगादिधीरवाध्यानेजोग
सहारंपापप्रहारं ऐसाप्यादभुतगपोनं ॥ १२ ॥ ५ ॥ श्री
पप्रथीनाथजी की सबदी ॥ हंसचढ्यासाइरतिरं
संघचल्याबनमांहिं हसतीपाषरमेलिकैं मनदं
इकएनांहिं १ सोऊतौ हाथिनश्रावसी जागतौ म
मनहीसेतीफिफनांबाधक्रष्णगपाइ १
षायेराजमैपिंडनकोटिश्रनंत मनकैजीत्या
जगदेष्यानंत २ मनमुद्रासुरतिसिका स
लअरसबदावेध्याकांन जोगीकाघटकाविनहैं प्रथीन
कूंरचाश्रासांन ४ प्रथीनाथजिनश्रपनाम
ताथैंधडानकोश अगसांतिरिथकोई
जिगवाकैंइसनकीयां फलहोश ५ लोहैकीमति
मांहा जोक चाहैगो जितपकरैवा
डिनकादर

ध१७

कोईनमरमिसारिवां बालक काडुपनिवारै ग्यानी जो प्यांनपुनिरहत्ता मेटियांचरणा सा उरअंनखिन पनीलयावै भगमगवएकरिबासा ॥७॥१०॥ अथ स्यावंतनगरीकी लखनी ॥ बंदना आगे श्रोतादोर बांधी गदेखिसमकानंदां सिधके आगें साधिकहो ख्याय संसति सातिमां थैदूणवेवावीर २ बेदमटेपाटि फिकतमूरापटि छुपिमारन्नगारी राजाकरता ताजामूलाकूपदाविदेखिना सीर२ बखतनाश्रोता परिमादिनालीरहुणीरहैगांधीरं सा रवाचिणाकोर छिलाचालेयूसंसतिसातिनांथैदूणवेवतू वीरे ३ कथलादछिगयाअंगनाम्पुछिगया निरमलरहै गांधीरंकोस्थैरवां तांबचवनपारिडतरेगा ग्रंसतिसतै सातैदूणवेवावीर ४ चंचलघातो निदूचल कूवापुरकू सबसाधीरं परमनोति आकाशबसा ईयूसातिसतिमा थैदूणवेवावीर ५ नगरधजापूछोसोहोदूणवें लबीरं कायां कांकोण बिचारें अमपाटि तारथ घटहानीजाहि बाहरि लोकाचारं ६ अगसाठिनारथजावैचरणांसोईदेंलूमरु जैजौ तूवारणां रुणदंतकहै मनस्थलथिरथरणां बाह रफितडूरटकिनमरणां ७ पेवबतेबालेपवनांलटे सरवी जैनतजासदेही नैकछूरिबतावै लिलको मूंडमा ही ८ देहअंतरिवारोरे अवधूदेह अंतरि काबीजैहाणु नपनेदेहतरकरतांबांजिसपालासाचैर चलैमीन नतथोनलदीसे गगनाविदेयमरहिया सिधकूमारगको इछिरवानासों ओरपरहरणपावहूवा कारतति कारतारहेबाचिहावि बिलिरवनलेपकुंता बिधनांत्वांबि धैहैजोता पुरवाइक सोधूता ॥११॥१४॥ अथ नगरमाहे रनतनगरीकीलखनी ॥ दाकूलैदापनतपनी दापकथीन तीगाई दापदाकतनदपरचामया नबदापमेदाहतसम ई पुरवडलपातिपडिमपिताहि जतपातियरलैकाया जग्रिपनरिपिंडजाडिपांणमरपूरिरहै सिधसंकेतना गांचजनमकैरैलापामेहलासतगुरधीपिलानकरवि लोपकुगातिकाहेला जनमकिडोरीजवधेंचीना नबसद जिजोतीकाएला ॥१२॥१२॥ अथ दूरबनतनरीधारल्वे हैनोमीलाजोजमातीफनांलैआपाथांगिरवावैबा हैजोनेकटेवनारीयासीचुयनजिरहै जोमांसाईजोवै

५

लवंधा।बिनपस्चैजोगवेषा।ऐ

।कदै परमहंसुधिरकाहे
गैकहां आपवै कहां सतरैल।बिहा

कहांसमाई॥७॥सद्गुरु गैं आेपनासेजमेगगननासहजौंस
हजैंवदैपवनांसहजेंसहजेफिरैवा॥३॥सहजैंसहजौं
फिकाइ॥८॥८॥अथहालीपावजीकीसबदी
॥अनपाजपोरेअवधूअजपाजपोपूजौनिरंजनथां
नांगगनमंडलमैजोतिलषाइ॥देषिधरेवांध्यांन॥२॥
लोका आेचिचेतनकीपालि॥दिबिदृष्टदिष्टिसप्तिरंग
कोषि॥आगमअगोचरतहांगुरुकूलहै॥येततदेषि॥
धहालीपावकहैं॥१॥छोटानमोटावोडानअदला॥
पुनिसरूपीपवननेसेसेलया॥जोवैजोवै अलखपुरूषसु
जैसाहूलवा॥२॥अधरहोताधरिवा॥आया॥धरिरहिदी
याबिचार॥निरतारिधुनिसंपरचा भया॥निरालंनानिरा
सार॥३॥हंसावरणांपहलीहोता॥सुषमधरिनआया॥
पिंडधरेनैंगुरुकूंजानीयां॥तबआवागवनामिटाया॥४॥
हरिदेषिआराधतो॥करतेआसनमेदांनेडहीसिवप
इया॥नवलाधागुरमुषनेदं॥मनसामैंमाताकही
येपित॥निरंजननिराकारं॥गुरुहमारैगोरषबोलीयैअ
तीतसबदअयेपारं॥७॥१०॥अथमीडकीपावजीकी
सबदी॥।पिंडचलतांसबकोईदेषै प्रांणचलंतअदे
ला॥प्रांणचलंताजेनरदेषै॥तासगुरुमैचेला॥१॥कहां
बसैगुरूकहांवसैचेला॥कौंणसधेनकैसेमेला॥जी
सापुंनकह्योरेभाई॥गुरूसिषकीदौंणबोलषाई॥२॥
उरधेवसैगुरूअधेवसैचेला॥त्रिकुटीसेनउलटितहां
मेला॥मनहूदसबदनईवोलषाई॥गुरमुषजो॥तिनिरंजन
पाई॥३॥कायाकंचनमनाहैसतरी॥सोलेगुरूदीनेअध
डमंडलमैमठी॥मवारवा॥गुरामननहीबीजो॥४॥पालेंड
रैयरषीये॥मनमेलरमता॥जतीसतीकापारिषा॥लावैधि
ररहता॥५॥रातिगईअधरातिगई बालकयेकपुकारे है

१२०

रहैसौं [illegible]दा जैमन नहीं माईध आदि [illegible]
बाबा के आडते गाहि गुण गाडा नौ दरवा मांताली गो
[illegible]गति कोई सनमुष लौ पाये पवी संवाल प आइस
[illegible]सौ दैष बाबा जे लता ते घरा जिगू ता नन माया अत
[illegible] काया हिरणी काल अहेरी हमदेषत सब माया
[illegible] जागौ बाबा जे नर पाते जु गि जु गि जा म्या
[illegible] सुण्यां तो कैसा गगन मंडल मैं ताली लागी जे भाप
रहै सा [illegible] जी मरो बाबा हम नी मरणा हमनी
[illegible] सकल संसार है सुन्न मांल गं दपर [illegible]
[illegible] कोई [illegible] [illegible] जीवो बाबा जो
[illegible] नाया पात्या ते सब मूला जोग जुगति
[illegible] साधा [illegible] दरवा [illegible]
[illegible] ते तौ मन वैरागी या [illegible] काल
[illegible] ते जोगी [illegible] या [illegible] जाल [illegible]
[illegible] बाबा जे पैरे तो पनर पैरे दरवना घेरे
[illegible] चिलाली लाडे नौ निधि [illegible] सिधि मेरे
[illegible] बाबा गोरष बोले [illegible] नि सस्क
[illegible] जुगति [illegible] जागे [illegible] आपै
[illegible] लागे [illegible] देवौ बाबा या हां नी म
[illegible] दीवा सकल संसार [illegible] पुलटि निजतत
[illegible] बिचार ॥ १५॥ [illegible]
[illegible] कुंड सम [illegible] घृत कुंड सम [illegible]
[illegible] प्रसंग [illegible] तौ मन निहचल रे [illegible] मरण
॥ १६॥ [illegible] ॥ वकुंद सजो
[illegible] संग [illegible] दसै बेले राषेत्रा
[illegible] राषे काया गढ [illegible] दसदरवाजा राषे बांणा तो ता
[illegible] नदेई [illegible] राषे कासी मा यं द्वार राषे
[illegible] पवना [illegible] करै [illegible] मनिताल [illegible]
[illegible] धरै राम [illegible] लष [illegible] जोगी [illegible] सिधि
रहै [illegible] सो जो [illegible] गगन [illegible]
[illegible] बाई बंधी [illegible] जोगी [illegible] या जौ
[illegible] पारधी [illegible] बाल गुदडी [illegible]
[illegible] सी हर [illegible] मातासत
[illegible] जोति [illegible] किरण [illegible] सा टिहे

सेवोजताकूमूवां॥ मनतांउदै मनतांबोठै मनतांन्हाहै
तानीमनपवनां तपसाछ्वा सूंनादेसरताली ७ मनवा
करीमाई मूंडापवनांद्यांबहाइ मनपवनांपरै अनहद ग
जै तहां अनंतासिधारयो ताडी ८ जाणौजोभाजतनका
कै बेतरिसीचोर तनमांहीततकाठिलै बांधरहैनठेरं
९ दरसनसचकरसनीहोसीराजाहोसीहाली॥ जनीस
कोईबिरलाहोसी यूंनादेसरताली १० नीदर ए आलूनक
लोनद जाहसकलानिरतरियो स्याहदरमनकाम
आयाजमायासोततसिधहरतालीपाया॥ ११॥ १३॥ श्री
बसिधगरीबजीकीसबदी॥ कायानगरीमेमनरावल ह
महनिसरीकै जहांनिरमलचावलावद्दलसंजिपका
ईडीबासतिसातिनाथततसिधगरीब २ काटीकूंथावांडी
डीवआयोरावाफिरैगरीबारं पवित्रपैवेकोतारियालाह
हबेधीरखिजोगाअमासश पाताल्लीमीडलीआका
स जैबजबैसुसरजमिलै जहांगंगजमनगातमावै
॥ सकलबहमंडजलछैसध नाबैडीबसातिसधिलावै
नसिधगरीब॥ ३॥ २४॥ थलीमस्तजीकीसबदी॥ चौर
सपटाएम॥ माम्यातासमईयाकीकथा॥ आस्सर्न
चेबोबाबाआवतजावतबद्धचुगाबीनाकछुनचढ॥
यासाथ आबका आवणसफलफलीयापायानिरं
जनसिधकासाथ १ आइसजीनाबौ॥ बाबाजेजायातेजा
इरहैगातपाकेसहासा॥ बिछड्यापाछैवहौरिन्मी
लनांकोईजानैकितबास २ आइसजीबैगो॥ बाबा
बैरा कबीकगवेगी बेठिकविजगदीग घरिघरिराव
लनिधपमांगे आमीमहासमीगनू आइसजीकमी॥
बाबाजेकमातेइकबगकमा॥ सिंमसमाधिलगाईजन

सुनि मैं बैसा ॥ तिहि सुनि तैं पिंड ब्रह्मंड उपन्या
धा१५ ते सुनि है कै सा रा ॥ तिहि सुनि तैं आया कीधा ॥ आ
या दो सास्त्र कीधा ॥ सुनि लागे ते मरि मरि गये ॥ आप
ड आप अनंत सिधसीधा ॥ पिंड तैं ब्रह्मंड ब्रह्मंड तैं पि
ड डा पिंड ब्रह्मंड ध्यान जाई पंड ब्रह्मंड दो जसमि
करै पिंड ब्रह्मंड समाई आप पर्षी वो तत महल लखि
ला ॥ पाप के तत कहीला आचार तैं जके तत ब्रह्म दी
पक बालिबा बाइदे तत ब्रह्म करीला विचार ॥ आ
सत तत दम्मे करिबा पालिबा मनराइ का मान सुनि सु
धा लती संतोष हुलीया वे सिवा पांन पुरसकाद दांन
६ जुरी मरणा दुःख सब मापे कांम बसंत सरीरं ल
अमणक है हो बाबा अजैपाल नमको आरंभ थीरं ॥
ल कै स्यागानि बैरागसी क्या कोइ पदे वसरीरं जुरा मर
का गुन सबि ए जोगारंभ सुषीरं ॥ वाद सल हरि गमन
आसपांने सो खिलाया जल मल पटचक्र जोग धरि
बैग तव मा जिगया जम काल ॥ १॥ २८॥ नो [illegible]
नाथ जी की सबदी ॥ का वडी कर मन की जैरे अवधू प
वन चलै असराल सलै देवा लीचोर पडैगा ॥ चेतो रे चेत
णहारं ॥ सिध साधसाधि कमरै बाईस बिंद गगन मै
फरै मन का बाकुल चुणि चुणि बोलै सीधी रूप रि
कुं कुंभ मन डोलै रे बाई बंधा सकल जुगा वाई किलै बंध
बाहा वीकू सांढा हू पडै ॥ जौ रै को ई नषध रे नीचे पो मा
ले आ पोरणी उरचा कति सम्ब बा सबदा बिचारै तब डक
होसे दिन करि बडा नष्टा ॥ १॥ १९॥ देवल नाथ
जी की सबदी ॥ देवल मये दिसंतरी सब कुमा देष्या
जोइ जादी वेदी बद्दो मिलै परमेदा बिरला कोइ ॥ दे
वल निह केवल मये सुरति निरति ले बोलि ग्यान रत
न की कोथली कसि पारष आपै खोलि ॥ देवल नेम
बंध दे बद्दो बोलणा विचारि सारी यां संसंग करि केगु
रमुख पान विचारि ॥ पारषन सन ताप तरे सबदां मो
ल न तोल देवल दे विचार करि तौ बोली जे बोल
॥ २०॥ महादेव जी की सबदी ॥ गगन मंडल का किलै
निबड कुंभ का टिलै षा पिलै बाला पंच अमृत हरि रस
माकिलै जनम मनो मा गिलै भाषंत साति सिव जोधूतं ॥

मनमैआहिमनीवाकरम मुषिबसोगतिमधरमानतांतई
सरबकालिजुगकीगतितातैंकहीयेनसातेअसतिरूप
रूपहिह नुखलासंमृ षिोनदत्तपाडलंवादविवदनक
ण सक्षेपमकलंततथापाडलो।२०॥२१॥ अथपारबत
जी की सबदी॥ जलमलसरीयानलाअगनिनवलैनाम
केतानि।अगनिनवलैनपलरैकिरनीताकारानियारकला
जनन्दकरसरन १ अस्तुवहाथकेधरी जलमलसरी ना
सिका मलकननघलैना।सिंकी।रूली।ऊलटैपवनांनगगंम
माईनाकारनिपेपनवामहिणा२ रूंषबिरषागिवंदा१
सासनिरजनकेपारहैऊचासोमिध्यानेमनासहजमैपुरै
नाकी तेलापारजनी कहैर कालहिडीबगोक्षांनी बाल
नवस्थालवंतमअरता।।=पवधतसोवैरागपावती
ज्ञानकंसधारी४।पनजोवनकीकरैनजासवितनर
पैदांमनिषासनादविंदनामैं घाटेजरैताकीसेवापार
वतीकरै५ निरधनकंमानकाधिसनारऊगतिनिरंतार
रूनिअपारानादविंदजाकैघाटिजरैताकीसेवापारब
तीकरै६ निताअलेषिन रूलिवालमदनाधीदिनेदिनेत
नसिझानेदलीपारबतीमोहिदिखावलछिने।७।२२।।सि
धगोपावजी की सबदी॥ सिधमालीपावलोसिधमाली
पावलोसदसैसोवनवारी।जनमनिकलायेरूपहोप
निपयानाोयकुमवनानिहारी१ गगनातिषरतें
दोलैपावहनानैसुनमनिसिंघगोरखवचनेमाषं
तनालीमारागांणतिदिखिवारिविकार ऊतपतितांबा
गिकुतपालीनावावारिलोककहिबेगोरखवचनेमाषंत
मालीपावापूनारादिलेबसंडअनहदसंदनादम
धायेकेवलगलेकालमहमेलीये. तिसदेवल
मैंअंतरिध्रुपनिरंतरितासपांडुकागहीयेचंदसूर
दोरफूलाफूलीरचिलैपवनांमालितंगोरखीगगंसि
षरबैठाचोसहिगधोविल्हाबूझेतकोसोमा।।२३॥कु
मारदेसनाकोसबदी॥देवलदेवतादेवलपंडहंडसी
राताहेकनांरिपवासंपुरूचेलेथलाबिवादहोसफुन
मोनैसीमाइनवि १ दिकनाषडहंडसीउतरगाजिसीषू
ढीमुंगानमनकानीरं बरावारा जोजनरूपहिनगीब
सिसोमासंमकापवनांनाकियाहोसीजतीसतीकोईबिर

सिवसकतिपिंडरूनाथकैपामोणिकलोमिलैमा
इलापिंगुलाआरंभेअवधूरोकिनैबाटसहरिथां
अमनपवननवदारानीतोधिलैमाधिलैउघांनघ
टीजोगऊगातिकारिपटचक्रछेदिलीमोटलैब्र
कोटीहजारांकाहजरिमापिलांकूहरिबिरला
नंतानिजततपांनीमुसपनामीरहैइगासबसि
लहैमापंतासिवसातिबांधमरपउरधतोंपिछिक
लैसंधणीनानीबाईसरिजेनीदिहैदैकूफगपाई
अगंतसदासिवजीनेउपाईपधरमउपसपांनजहजा
तकरमाथाडौअवधूचितमरमादीयावेतनमनाहिन
कारिजांणीसंकरबोलंतसहजावांणी।६।चंदसंतुलय
धिरसनसंचारिकालबिदाजाआवतानिवारिनाउ
तनिद्राचितप्रवांणीसंकरबोलंतसहजबांणी।७।ड
लनमूलनपत्रनछायाअमृतपातानयकहीमा
यापिंडब्रह्मंमुसामिकरिजांणीसंकरबोलअतीतबां
णी।८आरिबांणीकायाछिदरागजलोमअथरबणा
बेदअगतिजोगकरिजोभीतपैसंकरअहनिसअजपा
जपै।९।अजपाजपैसुनिमनधरैपांचूंयंद्रीनिग्रहकरै
ब्रह्मगानिमैहोमैकायानासमहादेवचंदैपाया१०यदी
कीजनीमुषकसती।छिदीकमलमुकना।ईस्वबोले
तपारवतीतेजोगीजोगकी११जिमाइडीयेदोनाल
नोरषैसोबधैकालबोलंतईस्वरसातिसरूपातनवि
चातैतोरेषनरूप१२षारापाटाषटरसमीठेबाटेरभा
इस्वरबोलंतपारवतीएतांथीनिरालंनजोग१३घृत
षांडगोरसमृतजोगनहींसिराजीलैचोसाठिरोगानन्त
लिअगनिनप्रजालैनअगीमांणनातैसंसारकूमरणधू
वांण१४गलअरमलनराखैनलासंसारफूंसपूनरहै
थकनामनमसतहसताजीतिबाक्लाभणेतसिवतबं
कूंथाअसथल१५नौनाडीसोनरीलैस्लीमनसिव
लैनमीसीतली।चंदनसोपेसरनमरैगिरहीफूलोंअ
वधूमरै१६बेदहीनब्रह्मावारमचंडालअपांनीजोगा
थीकानादप्रबोधरागाकीनकीजैसेवासतिसतिमा
पंतश्रीमहादेव१७सिवनिमोइलवहलसाचंडीध
नगेपाशईस्वरबोलंतपारवतीनीन्सम्लाजाइ१८।

४२० [illegible]पांनिर्लिपरमरूपं[illegible]सा निरासदोक[illegible]गीत
[illegible]थंत पिंजुन्ना॥ [illegible]निधूस्सां निगाद्यं [illegible]अधी
[illegible]विचार[illegible]नगानां [illegible]जोगवैराग[illegible]विनं
[illegible]नगन[illegible]रूपो निरासं सेसुधमनसां निर
[illegible]ध्यानातीनासतिसमा[illegible] होय
[illegible]नासति[illegible]नासति [illegible]पांन[illegible]लिनं [illegible]गतसनो
[illegible]सव[illegible]निज[illegible] सबिबराजितं
[illegible]परताजितीवी इपोइथें[illegible]जाति [illegible]पांनी
५. [illegible] २५ [illegible]तलदवही मोहि[illegible]तत
[illegible]क्रोडनां हि २६ [illegible]विगतचन[illegible]
[illegible]पथिरं तीत[illegible]तिकमास्थिर
[illegible]जाधिबाजीततर[illegible] त्रिइलोक
[illegible]तेत्री तरागं [illegible] [illegible]पद्मासा[illegible]
[illegible]निरपेक्ष[illegible]
[illegible]जोगी [illegible] ऐसा जोगी २[illegible]
[illegible]मेटी तवजाइ
[illegible]जोगी ऐसा जोगी २० [illegible]जीतं [illegible]
[illegible]वैरागां [illegible]मनस्व
[illegible]जोगी ऐसा जोगी २१ [illegible]
[illegible]तिनस्वं [illegible]
[illegible]जोगी ऐसा जोगी।
२२ [illegible]जो पुरी पुरी [illegible]बे
[illegible]२३ [illegible]नादोन संदोक
[illegible]ध्यानमाया [illegible]आगमोनानिगमो [illegible]
[illegible]मोहो न[illegible]सं[illegible]
[illegible]तं सकलपाबेल
[illegible]मोह[illegible]चारत निलो[illegible]
गी [illegible]२४ [illegible]दोमुक्तबंध
नाना[illegible] सकलमानेनं [illegible]तस्वपमनतं
[illegible]नासति [illegible]पांनी
[illegible]नासति [illegible]सनातनं २७ आगानसातिप
[illegible]बुधिवासनां मनोम
[illegible]निरंजनं ॥२८॥ ४५॥ घोडा चोली जोकोम
[illegible]गो [illegible]नासिद्धा[illegible]

वमहीश्रावाटसी॥कूरमदलिसी प्रटि
वेवीजे चंदसरदोशरा रुयासिसी॥ ०
णवा रात्रीनदिवसं॥ उतरदिसा
टिकलमिलिया लिसी॥ अकरोजाका अंतनपारं
असण थरहरिसी सिधबुधिकारिसी
कंद लियै सिवा सुकलहं
सचीयाचेतनदोर्दु पिलरिमे मिलाग्रह-
परमहंस॥५॥२५॥ अथदतात्रेयकीसबदी॥
पंसीलखेवा पंवयंडी कूलासनं॥ उनमन
एदेवसदाजीवतिमाहनाथेवाल्पोलीनपूज
सातिमाषंताश्रीदेवदत्तऔधूत १ श्रा
प्रीतिधका॥सांचतुलसीसीलमंजरी॥दयापहुप
रोपकलसा॥गैनागनघंटा स्रातिआरती॥आतमदेव
अपंपना॥अखंडम्हरति॥उतिगोसदा१॥कर
तारतेनिहकरमसतगुरलपाया॥करमकर
माभा सबद अगोचरपाया॥उनमनिरहनालेरनकद
विनानीझरपानी॥पोली कासारंगलेरहनांरवो
मबोनी॥२॥घ्रपाबाइस्रातअकास अपोत्रगनिदं
मजमधरहरतमी नाभिंगुला॥ससकुररभरम्नकेवा
सरकता॥उसनारयपउरननाली॥सपेसयेतेमेगुरराज
सतरासुत॥४॥कासासीतमनकिसतर
स्नांदकिनकाजे जागिदतैश्रड पिंडगलपना॥सोकंस
मधिदीजै॥सति सातिमाषंताश्रीदेवदत्तऔधूता॥इनवि
धमारगमहीयेतो वूडाजोगी तैबानाहेरहीयै॥४
एमहाब्याधिदीरघरोगाट्टिटवनायेवेविपरीतिसरा
नोकं॥विमानपदनपतसतं निरालंबोपदंप्रायतं
तेअचलागता॥निरखरताअवहायानसंभुनिहट
रेपरा॥५॥नकजांनिबाझविंतानिडुनीयार्द
नोयेकायेदी एमलुषी सूकेवारीहाथिदेकनादु
कैभजोनहोस्याभिजतनलेवावोनिगडरुकीया
अवधूचेला घ्रयोहांनि॥७॥एकायेका
धवा म्यारयोवकदूबानाऊदसबी ८
॥८॥निराकारमेकूध्यानंमनयो
परकारनिरताजोगी सालपोकामेलो॥९॥श्रासानेमे

पंच

लतोइकै

कायाअगरोवरथिरहैकंथउ३अनघडीतेजेघन

निम्मलताअास

वैरेअल्ह्दीवा(ण)गगनकूसै

नाईबेध्यामोरा(सिघबाल्कडदसिाध्याजोरा।

मानजोसंघ

धुन

स्नात

जोपाल्लतेजोबैक

जोपन्नोधमेटै बिहन्दीम

थूलतेगोपालनाथकथाया।एचोलतासिधयोडाचोल

हमेषनीपेत्रकामहरा।मानमंडलमेरहाणिहमातिजहा

कैअनहदतरा।१०।रिएलूटयेसिरामंडरणकीता।दसई

रवेद्यिहोडीसतिमसरालेतलहाधाध्यायोणीदसासिर

गेक्लिकिघाडिअोणी।११।गोरषतेजेरायैगोडीमायामन

माकैनमो।सदाअकलपतरहेउदासा।परचेजोप

सिमनिवासा।१२।जेभाषुगारंजनयेसिधा।दादसहैसयप

नहिबिधासोहैसोहेसारजसासंबोलैघोडाचोलमछी

डकादास।१३।अचितपुराणगगनगराम्पबोलैघोडा

चोलीमछिंद्रकादासा।असंतफुरेहाकोनमावैलघे

डाचोलीकहातंयावे।१४।नपचपपूरिहीलेपडूमा।अ

योहैदूधनातघाडगोवोना।धुध्याकीअगानेवुकाईफा

लाषो सांटसंधिपवनकामाल।१५।मेरखेडकागकरिवं

धबाईपेलैचोसाटसिधि।अनरामरैकातुफेडंसनूयडै

काघानकडेहंसा।१६।।२६।।इतीसिधोंकीसवदीसंपूर

ण।।अथसिधांकापदलिष्यते।।अवधूणावंतजीकापद।

बाघनिलोरेबाघनिलो बाघनिहैवटपाडीलोहितकरे

घटमीतरिपैसेसोपिलेइनदनाडीलोटेकनिदनीसो

पेधिंदनीसोपेसोधेसुंदरिकायालोजेजनजा।णिसैरद

सतगुरदीया बताए ६ गोरख गति सखेलणा रैला लसि
धांत बूतारा २ ठीक नगाई लीक रै लखाल ठल हि पिवेणी
लाख २७ विद्या वेद पाठे नसी रैलाल कथेन कतेव कुराण
ठीक रतो गवको की पोरै लाला याद्रै के ऊसंत सुजांण ॥ ८ ॥
१॥ अथ सिध वंदणा लिष्यते॥ नमो निरंजनां परमको वि
हंडने नमो गुरदेवं अगमपंथ भेवं १ नमो आदिनाथं भये
सुनाथं नमो सिधमछिंद्रं बडौ जोग पंद्रं २ नमो गोरष सिधं
जोग जुगति बंधं नमो चरपटरायं गरू ग्यांन पायं ३ नमो भ
रथरी जोगी ब्रह्म रस जोगी नमो बालगुंदाई कीयो ने म
आई ४ नमो प्रथीनाथं सदा नाथ हाथं नमो हांडिभडंग की
यो नेम संगं ॥ ५ ॥ नमो बीकर नाथं सदा नाथ साथं नमो सिधं
जलंधरी ब्रह्म बुधि संचरी ६ नमो कांनीपायं गुरू सबद
माया नमो गोपीचंदं रमत बूलनंदं ७ नमो औघड देवं गो
रष सबद लेवं नमो बालनाथं निराकार साथं ॥ ८ ॥ नमो चौ
पाली जी त्यो जमकालं नमो हरदासं मानं निरंजन पिछांनं
९ नमो नरसाई देवं अलष अभेवं नमो हालीपावं निर
लेपभावं १० नमो पूरणभारथी निरंजन साथी नमो मा
लीपावं त्रिपल सुधनादं ११ नमो भड्डवीपावं निरंतरि सु
माधं नमो सिधहटनाली कालकंटक टाली १२ नमो सिध
कणेरी जीत्यो मन फेरी नमो धूंधली मलं प्रवीण सकलं
१३ नमो कुरकट अजीयं रमत रामसंग्यं नमो सिध घटनहनी
जोग आनंद धुनी १४ नमो सिध चौरंगी परम जोतिसंगी
नमो कंथड नायं नही मोह मायं १५ नमो विध सिधं ली
यो मन जरधं नमो सिध कापाली नहीं चित चाली १६ नमो
कमंधसंदं त्रिबाधि तासु षंडं नमो लागबंदु कलपनां
विहंडं १७ नमो बीरपा सिध दैगपा न लाकिं नमो सुरानंदं
प्रकृति निकंदं १८ नमो मैदानंदं रहै निरद्वंदं नमो संखरा
नंदं पूरण कलानंदं १९ नमो चौणकनाथं अगमपंथ
पंथं नमो पूरणधारी मये मन मैसीरं २० नमो आत्मारामं
परमसुख धामं नमो गरीब सिधं गुरू सबद दिढं २१ नमो
नंगनाथं वकडिनाथ साथं नमो दंडगडनाथं सदा सा
नै नाथं २२ नमो देवदत्तं मिलै न नलतं नमो सुषदेवं अ
लष अभेवं २३ नमो सिध चौरासी ग्यांन प्रकासी नमो नौ
नाथ सारा तेद र मेल हरं २४ नमो कपलदेवं नस्योब्रह्म

लो।टेक।।वङ्कनमनवोम्हारै
।कबङ्कंकमेंगलमातौरेलो।कबङ्कक्ल रि
ऊनघणोधलो।किछङ्कविपीयारंगिरातो। रि
ङ्कमनवोम्हारैमाथारेमाणे।कवङ्कवहे
रेलो।कबङ्कमनवोम्हारैम्हसानेभी।कब
लो।२।पंथांतोबांधांनेभीजतीनघ
सा।नकलगमन्यानहीबांध्यारेलेपांहूणपाऊलो
नेऊकालसीमाथारेलो।।३।।जोतिदेविदाबि
नादलीनेकुरंगारेलो।स्यकोलोमभैंगलमा
फलेभैंरारेलो।४।सासहस्।लहस्योपारजपा
मनवाकलहस्यांपारनआवैरेलो।।आदिनाथना
पूतासातिसतीकणेरीमावैरेलो।।५।।२।।श्र
वनथैरीजीकापद।।सिधोयहांदोईहृनानांहां।गपांनदि
धकरदीसणलागा।।हरिहैसबघटमांही।।टेक।।लघलु
मांहीजीवजंत है।।इन्यरिदया।।बिचारोसबघटआपकं
अलहे।।कऊंकजिनमारो।।२।।जहांघादीपदयातहांउ
न्हीसहजिसुरतिअनुरागी।गोरखमिल्यांपरमसबनाण
सुरतिसबदसंलग्यो।।३।।माक्षिवाइनषेनहीप्रतकसुरा
पांननहीपीवै।तंतमंतगुणकानहीजाणै।सोजोगेसर
जीवै।।४।।रसरंगपानपांनसंबुधिनहींवुधिसंबकालिष्र
कासी।मणंतनरघरीहरिपदपरस्या।।सहजिस्युअवि
नासी।।५।।३।।ठीकरनाथजीकापद।।स्वेलिहारीसुगण
जोग्यारेलालम्हारीकायानगरकोराव।।टेक।।मूलमहलपि
इवालगीरेलालगगनगरजाजाइ।।सुनिसियाकानफाप
रिरेलालम्हारेजोगीयोरहयोरेलुभाइ।।१।।धिनसादलधीन
अनंतरेलालजहोफिरमिरिवरखेमेहा।।सिवसकतीमि
लम्यारेलालजहांनितनक्तानेहू।।२।।परअपरथमाढीचि
णीरेलालजहांथरथिनगाइधारापांचसपीणालादिवैले
लाजहांसंजमडीमतिवालि।।इला।।पिंगलसंगिरमैरेला।। दृ
लसुषमनिनेवातिस्यारमतिवा।लांमूंमतरहैरेलाल।।जा
कीलगीआनघरडोरि।।४।।गयादिवानैदसडैरेलालरह्या।।
स्वांनांहोश।।आपणयोनहीजाणीयोरेलालगाहांदिलस्वे
सुमतिघार।।५।।सुंदरसुषमनिजोगी।।येनेभावैरेलालगा
कांसुनसिषरकोवास।।विकटपंथवैडामतारेलालनेरे

नहीफालफदा। योवःबीरकान्हु
…जोहरी
मोमहरवान्हुं हिरानध्यानं
२१। मोनां मपीपा प्रष्ट
गाध ३०कांमदष्टु
अनंतकोटि
२सिषवकुनांजोपढेस
…भन्गुंघ धी
सिषसाधनेवंदनां…जोसत
…कैजेबसदन्नही दरसैजो तिअनंत॥२३॥इतीस
बंदनावती सांसपूर्ण॥ अथ नांमदेव जीको साषी १
लष्यते॥ साषी॥ अभिअंतरि नहीनां बुनांमकैदं
नांमसूंनाराबिकूंणी नावकैसे तिरबोकेसवो। २
अभिअंतरि काल्हा रहै बाह्री विरै उजास। नांमकैहै
हरिभ्याति बिन। निहचैनकौ निवास। ३। अभिअंतरि
गातोरहै बाहरि रहै उदास। नांमकहै मैपाईयो भाव
भगति बिस्वास। ४। बालापनतें हरिभज्या। जुगतैंनं
यौ निरास। नांमदेव चंदन भयां सीतल सबद निवास
५। पैपायो देवल फिरयो। भगति न आईतोहि। साधन
की सेवा करी हो नांमदेव। जो मिलीयो वाहै मोहि। ६। जे
तो अंतर भगतसूं तेता हरिसूं होइ। नांमकहै तादास
की मुकति कहां तैं होइ। ७। टिगाटिगा दै पंथजू।
चीन्हें नांहीसत नांमकहै क्यूं पाईये। बिनभगतां नम
तत। ७। बिनचीन्ह्यां क्यूं पाईये कपटसरै नहीकाम
नांमकहै निति पाईये राम जनांतैं राम ८। नांमकहै रे
प्रांनीयां नीदन कूं वजुनांहि कौनभांति हरि सेईये
रांमासबन ही मांहि ९। समभ्या घट कूं यूं वनेइकूं नो
बात अगाध। सबहीनि सूं निरबैरता पूजन कूं ये साध।
॥१०॥ अथ पद राग टोडी॥ हरिनांव हीरा हरिनांव ही
रा हरिनांव लेत मिटै सब पीरा। टेक। हरिनांव जाती ह
रिनांव पांती। हरिनांव सकल जीवनमें कांती। २। हरिनां
व सकल सुषन की रासी। हरिनांव काटै जमकी पासी।

[illegible] नि दोषन [illegible] नबांमीये सब्बकलि [illegible]
[illegible] निवारन [illegible] नांमां कीलेमै कसरा
[illegible] लोगवेद [illegible] नी मेकाजी वनसा
[illegible] ली टेक जो हि मो हि रंगे लोकराता तारंगे
[illegible] चेला जो सो वो है मारगि संसार जाईला
[illegible] चेला १ [illegible] बांणपद कोई चीन्है फ
[illegible] ला [illegible] नांमां परम ततरे सत
[illegible] लो कैं दैं लो कांइ रे नां
[illegible] निर्दा टै नजा [illegible] गति जाइगी
[illegible] ताविप्र आचारी ति
[illegible] जो हरि दास सबाहि न तैं नीचा त
[illegible] मां १ अधम [illegible] सोच मिहि कुलदी
[illegible] नांमां रे सब बंधबरगमेरी
[illegible] मां २ गोसतिलष्टि
[illegible] दासपटैंत
[illegible] मां ३ ॥ २ ॥ काव
[illegible] राजा रांम से कादि नराती टेक
[illegible] री काती रांम रमेरमिका टूंग
[illegible] बाणा नासीवेत
[illegible] सी करासी कं
[illegible] ईयेम काघाग
[illegible] ॥ २५ ॥ ऐसैं मन रांम
[illegible] चित राषिला टेक
[illegible] कासमंडालि जोडि
ला [illegible] चित डोरी राषिला
[illegible] राजकंवारि पुलंद
रियै [illegible] चितसं गागरि राषि
ला १ [illegible] घरावन बालि
ला पांच कोस [illegible] चितसं बाछा राषिला
[illegible] तिलोचन बालक पाल
[illegible] मंदिर का ज करंती चितसं बालक
राषिला ४ ॥ २ ॥ कानाचीला कागाईला का घासि
[illegible] टेक आपापर नहीं चीन्हीला चे
[illegible] ला १ [illegible] नाचैलाईसिंमू

नांमदेव कहै सुनौ रे संतो। अवमो हि सम पिय
रांमनांम जपि बोभाव न निसनि बोसलिल
सि नही जाइ बो टेक अकथ कथ्यौ न जाइ का
सकल भवनपति मिल्यो है सहजन
ममाता रांम पिता रांम हरि जी ब्राता मणतन
पौ कहै रे पुका रि गीता ॥१॥ पाते बहुन
प्रांननाथ कौ नांव न लेता टेक नाद वेद
नां रांमनांम कौ मरम न जांनां ॥१॥ पंडित
पां नै मूरिष नांमदेव रांम ही जांनै ॥२॥ ३
पयांनो रांम अपना पयांनां नांमदेव हरि लो ४
नां टेक ब्रह्म मंदिर देषी ति बिचारी सतव
ओड़ि नयो त्रिष्पारी १ ग्यान हरि रूप करी हम जूं
बधा चेरा भवन यौ रांनां २ नांमदेव कहै मैं न हे
गन परमारथ पाया ॥३॥२१॥ तत्र गाय न
नरे चरन मेरा माथा टेक सरब भूतनां
जनजांउ तन तूंही जहां रहूं जल थल महीं
लक छपणानां आगम निगम वेद पुरानां २ मैं म
निस जनम निरन्तर ज्वाला नांमा का ठाकुर दीनद
ला ॥३॥२१॥ तन मैं चलु रता बरतै अ पणी ऐसैं नि
ई निरपष हो इ षेलै ता तैं मिटै अंतर की तपनी ५
टेक अंतर कुटर हत पेचर मति अपार मंजन वरत
नी ऐसा न कोई सरब गिपिढ्यां नै धन बिन
नी ॥१॥ सोई साध सोई मुनि ग्यांनी
दिन स कुपनी ॥२॥ सोई साध सोई मुनि ग्यांनी
जा की लागि रही ल्यौ रसनी ॥ अनंत नांमदेव तिनि थे
ति पाई जाकै रांम नांम नि जर टनी ॥३॥२३॥ तेरी तेरी म
मति तूं ही जांनै अलम जीवंति कहा बषांनै टेक जे
सा तूं कही यै जैसा तूं नांही ॥ जैसा तूं है तैसा छ
ण सांई रे हूं णनी रथै नां कै न्यारा ठाकुर ॥ दिवम
णां हमारा ॥३॥ साध की संगति संत सूं भेटा ॥ प्रणवंत
रांम सहेटा ॥२॥२४॥ मैं अपराधी बाप मैं अपरा
साचली कुमची भगति न साधी ॥ टेक घणो अमं
गिन ज्ञंगी ॥ कीये कांम कुसंगा संगी ॥१॥ इङ
इहै परि घाटा ॥ निपरक माई न छूटै नाटा ॥२
घूंनगो बंद सब जानै ॥ पोढा प्रवत मैं रथवांने २

[illegible] अपोगां [illegible] काहां नयैनकी बायौवो
४२५ [illegible] यो [illegible] कन्हौ बिसतारा नांमदेव [illegible] हरिग
[illegible] ॥ ७ ॥ कौनकै [illegible] बरह्यौ रांमनां [illegible]
[illegible] ये रांम [illegible] ॥ टेक ॥ रांमसंगी नांम
[illegible] ति आ [illegible] ये कादसी ब्रत करै का है
[illegible] ॥ १ ॥ मन नांवां मदेव [illegible] सुमृत सुक्रत पाई
[illegible] कौ [illegible] जाई ॥ २ ॥ ८ ॥ रांमना
[illegible] रारी [illegible] ये निंतारि चरन मुरारी
॥ टेक ॥ [illegible] बैकुंठनी सरनी हिरदै बिराग पू
[illegible] ॥ १ ॥ [illegible] निं [illegible] आये सोन
[illegible] ॥ २ ॥ नांमदेव कहै [illegible] आई येन
[illegible] ॥ ३ ॥ १९ ॥ रांमज्
[illegible] ज्ञान मन है सैंहा
[illegible] नन [illegible] केवल चित
[illegible] ॥ १ ॥ रांमनांम [illegible] लागो है जाको कहा
[illegible] कौ ॥ २ ॥ मन क्रम बचन करत हरि पू
[illegible] ॥ ३ ॥ २० ॥ जोक्तिमग
[illegible] ॥ टेक ॥ दरसन षो
[illegible] ॥ १ ॥ सनमुष
[illegible] लेषीला ॥ २ ॥
[illegible] परबलपेलील
[illegible] मानसरोवर [illegible]
[illegible] नांमदेव आनंद गाई
ला ॥ ४ ॥ २१ ॥ [illegible] संतसंगति मिलै
[illegible] संत [illegible] सं
तसंगति पद [illegible] सरनी ॥ १ ॥ [illegible] माया संत की
[illegible] ॥ २ ॥ संत ही मा
ई संत ही बाप संतसंगति [illegible] आप [illegible] स
तसंगति [illegible] जाई [illegible] संगति मेरह्यौ सम
ई ॥ ३ ॥ २२ ॥ परहरि धंधे कार सबैला तेरी चिंता रांम
[illegible] ॥ टेक ॥ [illegible] माता नारा . बैसन्
[illegible] सदे
[illegible] नांमदेव [illegible]
[illegible]

कोई नाम्यो हर आे फेलौ ता।३।। होंका उपजै पा।२।। हाँ बिल
मां कौल नहारा। कहीं लमां नांश कहै नरां कुन सुनि
जन्नं मांज हांसुरति जहां हिंसरो मां।३।। जीव तरो मन
न्यों प्रकाश।। मनत नां मदेव रवां कै सी आसा।।४।।
कै सैं लिला। कुटल मचौं कालि के चिन्ह न देषिनां हि
कर्यो। ए कहै सी सेवा के साधा न जैसें जल वगज
अमां नां।१।। कछु यंगम्यों कहां सुरति ति कि यांनां मति
रमां तो।२।। नामदेव मयो वकि इहि गुणि बाधा।। डो।२।। प
दिसन कलि नां बांधा।३।।४३।। काल नै बाप लह्यो न
ताम्मता मैं नीतैं जगत कू षा इटै।। अनेक मुनेसुर
देवै जाच्छ किन रघा के करन ज्यु पावार कं पैं पा रघै वं
देवा रिषि कुं पैं चौरासी जे वा।१।। चंद सूरज पवन आक
सा मांनी कुं पैं आगनि पारा सर कं पैं लोक लोकं तर वं
डा तैं नी कं पैं असाधि पिंड।। ओ विचल अमैं नाराइन
देव सो मैं सेवन दे अनत पअने वुधा।।४४।। सहजैं सब
कुन का खेला। भगवंत मगता ये थिर रहै ला। टेक। मुक
ति द्वै ला। जप ध्यायेला संसेवगा रवां मीसे गिर रहैला।
नें नेल सधानि दि अनंत न जा येला पीव न प्रान क
दिन ध्याइला।२।। रामनांमां प्रिति लिमे गिर रहैला। गवल
वार सन वन मपी वैला।३।।४५।। कैसैं मिले रांम तू व
नोटा। तन चलै कुचि रसो ता सू टै व बाहर मोटी
वा रल गी ला। ऐसें जो मन न लगै वा वला।१।। नां मो कु
है मन का हि लग लागिला। ऐसैं सागल तर लगिला
।२।।४६।। पहा कहा कदं न गदे व त न प्रथा ता जि आनंद
जो रैं। धा रे कां दन अगै देव कटी ला। वां कीया न
नां ही बा कीपू गहीला।१।। नि जीव अापो सरजी कमा
रै दिष तजा नन्म आपनो हांतो।२।। आं गानि देवप ओक
र पूजा। पां हन पू जी मरये न रहेगा।३।। नामदेव कहै सु
नौ रे धगड। आत्मदेव न पूजौ दंगडा।।४७।। रांम
।। राग गोंड।। दैवकू नेरी जाति नमोपै हो इजी। जि
हि वासा दि ब गल मां नै का [illegible] नैको इजी। टे। सु
रत कथा हो इन हीं मां यो। कथं तो हो इस्मि भिमान जी
जो ईजो ई कथं जलाहि मो हि वा ये नाहि तां हि मग वो
ना।१।। जा मैं सकल जीव की उतपति सकल जीव मैं ओ।

रिजतारैपैलीतीरी॥१॥साधसंगतिरितिपेईयारके
सोनामदेवचादानारा॥२॥रधा॥माझोअंदेबापगोदि
दोभातिपांतिगुरदेवगोअंदो॥टेकगोअंदमपानगै
अंदधूतसदाआनंदीराजारामा॥गोअंदगावैगो
अंनावैगोछिनेषसदीनितिरूपोै॥१॥गोअंदपाती
गोबिंदपूजा॥नांमांनणौमेरैदेवनहूजा॥२॥५॥हरि
रैमाला॥हरिदेगोपाला॥हरिदेसिहिकोदीनदयाल
टेकहरिदैमैरंगा॥हरिदेजीपा॥हरिदेरैणीपाणीनीका
॥१॥हरिदेदीपगघटिजनीयाला॥सूटेकिवारतटि
गयोताला॥१॥हरिदेरंगरामनहीजातिरगिरैनक्ष
हरिमांतिर॥२॥६॥अबनानिसाहरामसंभालजौकी
राबिसालंतोसबहालं॥टेकलनमनहरिछिनछिनपरि
वारू॥घडीमहूरतपलनहीटालं॥१॥छिनछिनसास
उसरिपीऊरंकरांमझडपा॥२॥जोऊ॥२॥आरोगडु
रांमराछिलैऊजौरा बिसातैंतौरोइदेऊर॥नांमदेव
कहैश्रीसासनकरिऊरांमनांमधनलागीमहि
४॥२७॥रांमराइचोलगूंऔरनजाचूं॥सरीरमनतन
मलैजा॥७॥टेकजोभाजुमाभिकलमुदातिनमासु
रिनांकरिनांवहिरदैराखूं॥ २॥रांमनामनांमदेव
नहदश्रावै॥भगतिप्रेमरसगावैनाचै॥१॥२७॥बीक
बीकतेरीसकलमाया॥प्रभौइनअनेकनसमायाक्षे
माया॥नखूलनदीसोइह॥अंनरिमायानदीसै॥
मनतनांमदेवजापावधानांदक्षाघोडांनचढाईहो
रांमा॥१॥२८॥बाजीरचीबापबाजीरचीमैबलिहारी
जिनरचीटेकबाजीजोमनबाजीमरनां॥बाजी
लागिरह्योरेमनां॥१॥बाजीमनमैसोछिदिवारी॥आ
सुरतिआपेसुनधारी॥२॥नामदेवहैमैतेरीसरनांमै
टिसमारेजांमनमरनां॥३॥२९॥तेंनदिसा॥दिल
सारिमैकूंदिसाहौमोसूनाग॥टेकअखिलभवन
तिकालिहरिसंतरजामी॥१
॥६
तेंनाविसैररमैजननांमा॥संतनजनकेपूरन
॥॥॥बापमंकासमाविनपरहीसांधै
चिनस्वनकाधूना

शीतला [illegible] तुम्हारी सरनि मैं [illegible] दुरलो कै बंदि गो
[illegible] हरि नां बिराजै हरि नांव गाजै
[illegible] तां कोई नरतां छै ऐसा हरि मेरै मात पिता
[illegible] करि है सेव । २ हरि नांव मैं निज फ
[illegible] हरि नांव मै [illegible] बिनासी । २ हरि नांव मैं मू
[illegible] हरि नांव मै [illegible] हरि मै
[illegible] साथी । हरि नां [illegible] हाथी । ४ हरि
[illegible] हरि कै नांव नांम देव राता
[illegible] लागे । रांम नांव लै सो
[illegible] रांम नांम अपिरा
[illegible] रांम नांम [illegible] किया ता रांम नांम नि
[illegible] रांम मंत्र मैं जग
[illegible] सांपन सा
[illegible] ॥ ७ [illegible] रांम नांम बाल
[illegible] ये सब प
[illegible] ॥ २ [illegible] की आस फोकू
[illegible] की करनी नं
[illegible] ॥ २ [illegible] तुम्हारे नां मु
[illegible] ॥ ७ [illegible] माहि गाने
[illegible] पसरै स्वर
[illegible] ॥ आर रांम कीटप
[illegible] ॥ २ [illegible] कहै पै रैवे धन
[illegible] ॥ ७ । ऐसे रांम जैसे है
[illegible] विषई है यर
[illegible] ॥ १ [illegible] डारै पसवारा सो
[illegible] ॥ २ [illegible] तांमा वित
[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ननतलफै जै
सै रांम नांम [illegible] लागि लै ताल
जैसे [illegible] ॥ १ जैसे गाइ का बछा छूटि
[illegible] ॥ २ [illegible] लै ताल
[illegible] जैसे रांम [illegible] बापू रे [illegible] ॥ २ जैसे विषई वि
[illegible] ऐसे नांमदेव [illegible] मुरारी ॥ ३ ॥ २ ॥ अनबोल
[illegible] तुम्हारे [illegible] बल कट
[illegible] बोलता । [illegible] बोल बोलै बोलता

कहौ धूं कैसो। पिंड परे लहौं जाई।
हऊ परतीति माहि नहीं आवै जीवत मुकति न पाईये
१ जेजन जीव सु जतन समाधी बिन देखे इक पाईये राम
समपक है जनन नो मां संपि मिल्यां धुन गाई है॥१॥ स्म
ति आपि मेरे बाकुला तेरी भुकति न मांग हरि बिदुरता
यो भगति न आपै तो तन आगु कोटि कौ ने भगति नर
हौ॥ अनेक जनम भ्रमत। फिरौ तेरो नांव ले लेउ धरौं
१ नांमदेव प्रनवै जीवला तोरा। भगति दोन देस। हि बमो
रा॥२॥ संसार सम देता। फिरो बंदो भगति ही न जांन बो
फ्री टे। लो मन ही अति नीफ के बरसे काया कूं डे बेस
वा॥१॥ आनंदे मेला बेड़ न जांनू। पार देया देती ठला॥ नो
मां कहै मै सेवग तेरा। बांह देवा हेलेवा बुल प्रा॥२॥ कु
कि बिन वजूं जी जरो तो काहि बिन वजूं जी को। तूं मेरा प्रान अ
धार तुम बिन कूं जी को। टे। सार सुत रानांव दे कव
यो संसार मन माया वाकर मनां काति के वकूला कु प्रथा
र। इनी या मै दो जिग धना दारन दुख साधि क इ पार क
र नकं कल की मौज मे मो हिरा धो सिरजनहार॥१॥ नाते
धि पर दाइ हां लोभ बडाई कांम काोई ये कारु हरि जनक
बरे जिन सुमरयो निहचल रांम लोक बेद के संगि
यो सालिल मो हकी धारा। जनम नामा नामा लीव ला। मे
दिये इतना रै पार्या॥४॥ बंदे की बंदि छोड बनवारी
आसर निसरानि नांव की थे बिन आइ परै जम धारी टे
प। केई बांये जोग जिगदा रि के ई तीरथ दांना। केई बा
धे मांव रतां ते रहा धिनाधि भगवांना॥१॥ नांमदेव तेरा दास ने
माया। हे नाटी कपट की नां ध्यावज गमग नीति लीया
है आपापर नहीं चीन्हां॥२॥ नांमदेव कहै मै तुम दे कूं दी
ने तुम बुडा वो गोधल जी॥ तुम बिन मेरे गा हक नाहीं
दीनां नाथ दयाल जी॥२॥ ५ देवा मेरी हीन जाति है रा
क पैस हीन जाती हो टेक मै नही मै नही मै नही सूधे
न है मै नही हो। स्यंये व अनेक है विसरसो मेरी वर
नन साई हो॥१॥ जैसे नदी यां समदि समांनी धरनि व है
ही हो। तुम्हारी कृपा तै नीच ऊच भये। तंकाल की
जाती हो॥२॥ नामा कहै मेरे दे ही न देवा। संगन साधी॥

४२०

तिनकि नांव तरैजो पारटेक रूडामणपदहि जपमाला
ग़ाहैमनसुनजानैको होइ आपनपहै औगदिपावै कपट
कुकातिकहू होइरे १ सींगीजटा बिभूतिलगावै सांवरसि

२

अवादावैं नाथनवोलपैमरमनजांणैमावचंडाली
लावेरेरपिंडतपाहिगुनिवेदसुनावै वाकामनकी
भ्रांतिनजावैं कामकरैतेसूफेनांही औरैंकरम
करावैरे २ तीसदिवसलगरोजासाधैकलमांबां
गपुकारैं तीरदेवातीजीवरिंघारै नांवअलाह
कासारैरे ४ वेदवदबुमसतिकरिजांनां सहजास
दैमैंआपानैं अलावंतनांमदेकउस्कसादतैपावा
तिनतीनुकासारैपा ४ देवालीनकजैगणेगाजै
सबदअनादवाजैअंतरिगतिकापाजैनांही सूरि
मनसतडोलैइकचंदसरदोऊसमिकरिराषूमन
पवनांदिदिडोडीसुषमनिसंजमताम्रैंडल इडि

६

पिंगलानांमांकी १ बैटारक्ननफेरूनडोलसषा
नंनपांऊमरतनजीऊअहनिसगुगातनहिंधांऊं
सीजांऊंर गगनमंडलमैरहनिहमारीसहजिसु
नमेलाअंतधुनिमैमनविलमांऊंकोईजो
गीसागमतहैलात्रपातालोहिनरूपदेवादेवलदे
वनहोईनांमकहैमेंभरनिरंजनापुनिरिपजन
नहोईपा ११ जोदेवागनभडीवेटीमेंनहीतवदीठ
देकगबलगआसणिरासाविचारतबलगताहिनपा
वैकाहिलोसुनिलोनबगतदासंवोतवताहिपरचौध
रे १ गायेगयेगायेतगायो गाईकछुबाकांघनवंत
नामान्यौनिदकांमांसदूजासमाधिलगाऊंर ११ जो
गीजानन्याइउगेजुगनिदेयातालबाधे आकास
चढावैआलमरेनरिचीवै टेक अमृतवातपिताप
रसोधोमाइमूईकरिसेभामाईबंधकीआसनपू
री मोजिगायेसबलोग १ बादरलीमूढिलैमांदि
लीचोथिलैपंदकीआसमिटाइरे मनतनमदेव
नरिंजनसहजिसमाधिलगाइरे २ ११ २ लटकी
नवोलंबाघबरतपानगाढेकोलकुपोडामात
डामैमफैडोलदेषीलाटेककोलीवैलावाधजैल
मांगरीलेंदूसैंउडतपवमैलवरूपेषानरलजैंबु

[illegible]थूबली अनवंत नामदेव [illegible]
[illegible]वलनै [illegible] दोराइ [illegible]
[illegible] नराइलै उदिव [illegible] दी [illegible]
[illegible]पइलैं निरंजन लावि टालो [illegible] काइ कर [illegible]
[illegible]तै के सरिस कडि समसरि [illegible] दिया लिर
[illegible]पइली बासन वनाइली [illegible]
लै पड़ी यगथि लै माला [illegible]
[illegible]वरै लीन्हा फगनि मैला [illegible] पूत
[illegible]लै वाती बालगो भंदइ [illegible]
नानि देवी फगनि मैला [illegible]
[illegible] बालगो भंदइ [illegible]
फगनि मैला काइ कल [illegible]
[illegible]लगो भंदइ [illegible]
[illegible]मैला काइ [illegible]
[illegible] माया नामा [illegible]
[illegible]पाया ॥७॥ [illegible]
[illegible] पांइ [illegible] सेवग [illegible] पार [illegible]
[illegible] बिदा [illegible] मार गा [illegible] सचे [illegible] बांहि [illegible]
लै [illegible] हरि ॥१॥ जैसें मीन [illegible]
[illegible] जिम्पो [illegible] कनक [illegible]
[illegible] माया का [illegible] करे सो माया [illegible]
[illegible] ध्यान [illegible] धरती [illegible]
[illegible] काम क्रोध निसतां [illegible] साधसंगति [illegible]
[illegible] अनवंत नामदेव [illegible] निरलै [illegible]
[illegible] ॥१॥ [illegible] आलसीया राम [illegible]
[illegible] लसीया [illegible] नी [illegible] नर [illegible]
[illegible] हरि हरि श्रासन [illegible] लै हरि [illegible]
[illegible]नी [illegible] रता [illegible] सत [illegible] दयू
[illegible]न पढता [illegible] लै हरि की रति नांभा [illegible] नी [illegible]
[illegible] धरम [illegible] पावये [illegible] ठा [illegible] पट कम सहित
[illegible]ता ॥ तो [illegible] लै हरि की रति नांमा ॥ [illegible]नी [illegible]
[illegible]सरम वादे [illegible] बहो भेद [illegible] पारिस [illegible]
[illegible]दां नामदेव नां [illegible] तिरै मो सिंध [illegible]
[illegible] जोई [illegible] करै संसार मन को मेलो ॥

१ मनकांपी है केलथरहरया नांमदेवसनमुष हारयौ

२ नांमदेव नरहरि [illegible] बांह पकड़ि मंद

लेया २ कैसी मन [illegible] सीदसा नांमदेव प्राणवें

[illegible] २४ आनंद रनांमीं आनंद रेहोति

[illegible] पास हे वलमांही नांव डैरैथक

[illegible] बराणवा मतौरै २ ठ

[illegible] पंडित वेदमतौरे

[illegible] सोनैकल नपडै रे

[illegible] पंडित सबपा वाषडै

[illegible] ठाकुर पाणराषे हरिसां

[illegible] ॥२५ [illegible] तेरौ हरि

[illegible] मानि राजन मन बालवा

[illegible] रे मन गोव्यंद का हे नग

[illegible] झाड़ि कुटला

[illegible] घनां रे अब कैन

[illegible] दीनदयाल ॥२६

[illegible] बाजे अनहद

[illegible] तां सबद अनाह

[illegible] आपै आप

[illegible] सारं तहां

[illegible] ॥२७ [illegible] वैम

[illegible] पढै गुणै अर

[illegible] माडै अैक २ नबल

[illegible] पजै येत २ जप

[illegible] निकसै डधेरनां

मदेव कहै येक बुधि बिचारि [illegible] परचै मति मरौ पु

कारि ॥२७॥ [illegible] मनां चलौर

[illegible] सरलनै जाइ ज

[illegible] मधीपंथ मांह डरै

[illegible] जेसे कोवी देह रि

[illegible] पंकज वणकरै

[illegible] ॥२८॥ [illegible] सुषसण

[illegible] आमाता टलौ

रन्जा [illegible] देवा [illegible] अपनां तम की करिकै सेवा १॥

लोटे संथैल

हंगाफीड्धकैला॥श्रवेश्राटैगोकील
लटवचोगईयोगढीयाजो
उडतपंछमेमूगपेषी लाटीजे
दासनांमदेवसूपनवे याचेगीक्वो
लटक्योश्रागेसांगीला॥ताचेमोछिन मुकती
॥३॥१४॥ लटक्याकूवामोलीमनमंथेडोलै॥
श्रोषि टेक ढेली श्रात्मांवाधकालन्योलम
मेलर प्रीतिपगसाचनिहूच
लानावनगाति॥संपासबदसु
नासंसा॥मीडकमन श्रमिलासक्या॥२॥लाटबहूमं
डपंकीपानझूधरामरस चखदेलोकमटका रूकूव
नीवधडणहागोवंदकीडीमनसापेषश्रीति डोले
श्रसाद्रिष्टि बाटीसरजा॥४॥विसनदासगुरुकृकति
श्रनंनेलटक्याकूगसागीवाहेसांगीनिपधारी॥५॥
२२॥पद॥देवातेरानीसोनबाज्याहो॥तालपयावजज
नीनां॥ऐसा श्रो सरसा ज्याहो टेक लो हालावावंद
नकीनां पाइपरीहेवेरीयां जोसागरकीसंक्या छूटीमु
कतिनईहेचेरीयां॥१॥सिंधनमामूठियेरी यांनलागीबै
रीयांबाहरिजाताभीतरिपेष्या॥नांमेनगतिनवेरीयां
॥२॥२२संतप्रवेनीनगति श्रापिला॥नहीत्यापिलातो
श्रनलागिला टेक हमचीपाति॥तुमवासिनईला॥श्रे
सूचानीवला॥किमचीलागिला॥१॥माभिमुकति श्राव
सिधि श्रायुईया॥नगतिना श्रापूंदासनमईया॥१॥नांम
देवबीलसनमुषवोलीला॥नगति श्रापिलामुकति
लागिला॥२॥२२॥हरिनांमदेववाहरिजाशजहांलो
गमहाजनवैठे श्राइ टेक बांम्हण बणीयाजातिम
लोगा॥नहीरेनांमदेवतेराजोगा॥१॥वारवारसीचाकूण
नेह कोछिंपीया ढिगवैठनदेह॥२॥हमतोपढीयाबे
दपुरांनां तूकहांल्यायो वृसमीयांनां॥१॥नांमदेवम
निकुणारतिधरी॥हीणजातिमूकाहेमेरीकारी॥ज
डिंकेवलीयाचल्योसिस॥मठवेपीछैवेगोजाइ॥
पगांघूघराहाथांतारी॥नांमदेवनगतिकेरैपछिवारी

आधिबनचरमीहली
आंरिमांनलीयांनआयोरेयआल
।। आंरिमांनलीयांनआयोरे (श्रीमद्‌दास

गदिनांदिल्योलावैरोदादीकरदी
मौगदिआपदाबुडायौरे१।। आलरानोमा
वैबासनोसमिनिसलकैधायोरे। हेहरिनाव
मददेवकोकबङरोमनगायोरे। ना मदेवक हे समर्थ
धारके। साधूसरणिबनायौरे।। ३।। २०।। ७९।। राम
नमूरिषि। जेसमके समझायौरे।। मेरो गीवरोपरे
।। रागगौरवि। यादिपांवपद। नलोमेरे केगोबदांक
२। नगातिनबाईहरिकीलकोईसेरे केवीमायालागिमगि
नांक्लीयनवनलतिरीयेते केवीमायालागैरे
काहेकूमरीयेरे२। सांईकूसाक्षैदेहसकललगैरे
विरकालनांकोईजावे दोनपक्षलायेरे२। आपनाथ
नकारनिश्रांनीमरनमांडेरे। नगातिजगताजनकाहेकू
बाडेरे। गंगाप्रयागोदावरीसंसारिधरमांरेनारारे
सनमुषसेवगनांमांरो।। १।। देवानटनीनोतनमनवा
संबरतांमांहीरे अनेककरादिइंद्रवेगतिनकूसचितनां
हीटेको सुमतिमरीसंवारेनटनीनिहारेरामनाम
नीसांनबाजे। नाहितहिपावधारे। एकमनियेकचित
बैलीलेबेलारेमरकटमूठीकादिदेजूमुकतिभेलार
पधरनीधरसंधांनलागो आपडांतरजांमीरेनामदे
कूनस्योदेनाचोतौरीकरोषोमीहे।। २ साहिनलगा
याजोत्रागा। तेराजनगहीकातहांजाइलागा ये
बाजीगरडाकबजाई। सबकुनीतमासेआई बाजी
रखेलसकेला। नकूआपेरहेअकेला। रामरा सम
लाई। सबकुनीयांसोदेआई। सबकुनीयांसौदाकी
काहेआतमरामनचीन्ह्यो।। मृघथेतविफूका
जैवकिजैवाकिएवे। निदरीगायांमुषिबाई अड
कहाडराही। कुंमृघनपेताविफूकागई तत
नटुका। नांमदेवतागुलसमकावे। याहीतेंकहा
।। २ ।जहांतहांमिल्योसोईतातेकहेगुरो
अनेदेभेदमिल्योमेदेमिल्योमेहूसहसा
मिल्योषेलैमिल्योकेलू२। डुपसाईदुपैमि

पवनसा सिसा सिसुमे
लीन्हये कं गगनमधी सा ग्यपनी पडी दृ जगुन
रद ॥ रा पद ॥ का हे रेमन द
नद चितधर ही टेन
र न चितधर ही टे न
अवधिकाल दिन त्रावे
तब सासा ज्या डिमन
हा गेहा बिनसत वा
देव कृ वीदे ही तोस
पबो लिखबा न बां
टेक को कोन नारे
मदु मारे ॥ सो नाक
हीरा कलाम अकेल
नो कौ नै गति पाई २
हि सम का वे दामना
तु म जगत मरन देवा
सेवा टेव बडो पति
ओर पति तज गत
लभै गरीबा टेरिक
वे दास नो मारे ॥ ५
न बि सत्य कीधर्क
मकी डा गति
गयो पार जे
रमिन्न क टेयाम
दास नियारा बे
पंडितकरो बिचारा टे दध
सनकन्ता के नद बो पडितकरो बिचारा
छितरू काढि घृत लीया ब हो रिन तक मिलाई
कदा कि काढ्या ब हो रिन दास समाई
सपरसि लोह भया कंचन ब हो रिनलो हान होई
चंदन ल बेधीया चंदन काष्ट कहै न कोई
मनामर गिरा ता का टिब रम की पासा राम
हो इरहीये प्रणवंत नामदेव दास ॥
धा राम मानी मो सो हमारे गोपाल राजा गोप
और देव तन ना हीं का जा टेव का हू के समृति बेद
चरन कंवल मेरे मन माना ॥ का हू कै ला

नाहिंबंध्यो संसारादासनांगैग
गजीतिलायौ केवलनांव अधलेधा द्वरेमनपंषीयं
नपराति पिंजरे मंसारमायाजालरो केवलदिनमें तीन
बिरीयां सदाकं पैकालरे ॥ ८ ॥ धनजोबनकूं पदेषि
करि गरबीौ कहा गंवाररे कुमलाबैनीरमैं दीयौ बिन
सतांनहीबाररे ॥ ३ ॥ श्रमीकंदनकपूरनोमन नितिन्ह
सिणगाररे हंसकाबउडिजाहि चाल्यौ देह है बा
ररे ॥ २ ॥ तेपितानननी भाइलनहीनासुतसजयरदार
रे अतिकभामोलि हारि एकलनेनोहनहारारे ॥ बरस
लागेतेरीमाइरोवै बहनडी छमासरे आपनारीरोदैदस
दिहाडा सितवंतीधरवासरे ॥ नामदेवसुनिहो
तिलोचन घटिदियाधुमपालिरे पांऊनांदिनयांकिता
सुकृतरांमसंभालिरे ॥ ५ ॥ ३ ॥ ८ ॥ रा ॥ ग ॥ रा ॥ रा ॥ गौ
डी ॥ अद्भुतअचंभाकथ्यनजाई चीटीकेमेवचैसैग
जिइसमाई ॥ टे ॥ कोईबोलेनेडेरैकोईबोलेदूरी जलक
मछलीकैसैचढे षिजूरि ॥ १ ॥ कोईबोलैयंहांवोअकोइवे
लैमुकता सहजसमाधिनचीन्हैमुगधा ॥ २ ॥ कोईबोलैवे
दसुम्रतपुरांना सतगुरकथीयापदनबानानें कहैनाम
देपरमततऐसा जाकाकपनरेषबरनकहौकैसा ॥ ४ ॥
२ ॥ अभौ ॥ चीटीमनसागजंदगपांनटे ॥ नेरैतिकुटीधा
नहीमिषैकासी नलमायामछलीमनसाधजुबिहल
कूचीदसा ॥ २ ॥ येंडीबांध्यांकोबैराग अभिमांनी मुकता
सोग्रह अभिमांनी डंदरहतप्रीतिनही ॥ ३ ॥ बेदस्म्रतको
ई पंडिताई अभिमांनी नबांण ओरसबकयातेंनबां
ण अगम हैप्रीति करियावै ॥ ४ ॥ ३ ॥ पद ॥ देवआगग
डीसहजऊडीगगनमांहिसमाई बोलनहाराडोरिसम
नां नहीआवैनहीजाई ॥ टे ॥ तीनरंगडोरिजाकैसतपीत
स्याह ॥ आडिगगनबानियवन सुरनरमुनिचाहि ॥ १ ॥ दा
दसतैंउपाजिगूडीडा नैजनकोई ॥ मनसाकूंदासपरसगु
रतेंगमहोई ॥ २ ॥ कागदकौरहतगूडी सहजआनंदहोई नाम
देवजलमेघबूंदमिलिस्यामसोई ॥ ३ ॥ २ ॥ अभौ ॥
गूडीमनसासहजडुंदरहतऊंडी उनमनीब्रह्मगगनकं
चीदसाकूं बोलनहारापांनडोरिसुरतिश्रावणवनन
ही ॥ टे ॥ तीनरंगरजसपीत तामससांम सातिसतसो ग

रांमकौनांवअधारा२काक्रूवै हैगैपा३गाहा
मकानांवसंगाथी१सबलोकजाकोजसगा
नांमांकाचितहरिरूनमा ध।।१कहिमनगो
बंदाचरनकंवलचितवनिजिनाविसरैगोबंदगो
गोबंद टे।अंतरिगरभिसहोदुषनारी।
फिरयोमेहारी१अनंतनांमसबहरिगुनगांऊ
ललनीरैझांऊं।२।२।रांमगोबंदकमो
जिनांबिनपांनकैमकरंदा टे।जैसैकंवलमै
धिगोपालयरांतिफिरिआई१।अ
वैचरनकंवलजकाहेनपावै२।
महामंत्रारांमबिनांमहामुकतिअनंत
देउपदेसीगोरी।रांमनांमजपिमनाबौरै१।जो
दयकूंसिधाया।मुगतिमुकतसंतनिमुघिगावा२
रांमनांमजपेला।चौरासीविषकूतजिला।३
गुडमीगारांमगुडमीग जिनलह्यातिनगुनदीग
नैननिपाया।अकलनिषाया।त्रिपतिनईत्रि
१।पाचंडुरंमषनिगपानगंडासी।कोल्हू
तिपास२ घटकूंडाजबहोइनिदोषी।सह
नडगुडसोनाहोसी।३।गरवासोगरवाईसाजा।सोगुड
कवातिक्रूंपारिराजा।४नांमदेवप्रनवैकूसनमिगाई
जहांतहां सुमरिबिनिआई।।५।।५।।७।।६।।१।।५।
रांमगरी।।नाधौतौनाधौरेमेरांमनांमनाधौत्रे
हे सबैपोयो कठिनैबाधौ टे।रांमनांमततसारसु
सुमरिजिनउतरैयार१।रांमजननीरांमपिता
मीता।रित२।अनंतनांमदेवहरिगुनगांऊंबहोरि
नीसंकप्रिंजंऊं।।३।वादहगाडिरैजगतामाईहरिस
नैनिधिपाई।रांमनाजिमेरौ मनअनंतनजाई टे।
लाता।गेपेहासरीरप्रंतरिसैसोई।बादिबिमुषहरीबि
ननयोई।रांमनांमजपिलोईमरमततनहैसोई तीनूंरेति
लोकव्यापैरेजोनहीकोई१।संजीवनमूरीसोईनटा
रंमसंतिलाई।रांमनांमाबिननांहीअंमउपाई।नांमदेव
गतासौपारचेतऊरैचतनहारहरिकीभगतिबिनजोत
रोगेबारबार२ ४।हरिलैहरिलैहरिलैहरी।त्रिपणीमग
तिरांमकरिलैघरी टे।भवसागरकुरवजै काहेनिपूत

माधिदुंदरहत ॥ अवस्था सोबाडी तरवर बूहय अमरबे
लि आतमां ॥ ३ ॥ अमर लूं लागी अनभै मैन हीं नहां लागी रूप
माया रंग नहीं येह मों गपां न कहै दरसन ॥ ४ ॥ पांच मूघ पांच य
ही पचीस मूधी प्रकृति बूझ बास तहां घत हां मूई अनंत
मरकू लगो ॥ अंदर दरसन ॥ ५ ॥ २० ॥ पद ॥ अनेक मां रिमरिझो
दिगेरे अवधू येक रांमनां मततर है गा टेक ॥ मूरू आसासा मू
रि जु तिसनां मूइ इज्जु मनसा माई लो नहमारी बहना मूई ति
नकासोक हमनां हीरे अवधू ॥ माइ का गोत मद मछर मूवा
बापका गोत अहंकार कांम क्रोध नाइ मती जाम रिगया ति
नकासोक हमनां ही रे अवधू ॥ २ ॥ जोवर नीजो मेरव महा ता
सधरां नि मैं नां ऊंगा ॥ नामदेव सतगुर साहीला गो अंदर
न निवासा रे अवधू ॥ ३ ॥ २१ ॥ बैरागी रांमा ही गांऊंगा सबसू
नीत अनहद राता ॥ अवुल्ल केघ रिझीऊंगा टेक तीरथ जि
ऊं न जाऊं मैं येतूं नी दून न न संतो ऊंगा अठसठि तीरथ गु
रु लघाये घट ही मीत रन्हा ऊंगा ॥ १ ॥ बेद पुरान सासत्र गी
ता कहि न कबी न सुनां ऊंगा ॥ अषंड मंडल निराकार मे अ
नहद बीन बजाऊंगा ॥ २ ॥ इला पिंगुला सुषमनि नारी प
वनां मं रिझा ऊंगा ॥ चंद सूर दोउ सामे करि ताघूं ब्रह्म जो
ति मिलि जा ऊंगा ॥ ३ ॥ पंच सूना ई मन का सोभा भला बुरा न क
हौंऊंगा ॥ नामदेव कहै मैं कसो ध्याऊं सहज सम्माधि लगा
ऊंगा ॥ ४ ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ बैरागी कहूं सब तैं उदास सब मां हि दु
पसुपतै बैरागी ॥ आकुल कुंल रहत टेक तीरथ न रमूं नज
पतपवाकूं जीवजंत पांन फूल तोडि प्रतमा न पूजूं अठस
ठि तीरथ का थूणी परमेसर सो घट मै ॥ १ ॥ अषंड मंडल बु
ह्म असथांन ॥ २ ॥ इला पिंगुला सुषमन मन पवनां सुरति थि
र पवन सास थिर चंद सूर ताता सीला सम ॥ ३ ॥ पंच नाई यां
की सोभा भली बुरी छाडी सहज दुंद रहत सम्माधि ॥ ४ ॥ २१
पद ॥ पावै गे पावै गे सहजै मुरारी सबद अनाहद घंटा ब
जै बबेक बिचारी बीठला टेक ॥ त्रिबेनी संजम मंजन कीजै
मन बुफाया नैन कु सम करि वरहूं चितै वंदन लाया ॥ १ ॥ पा
ती प्रीति ध्यान लेधूप दीपक पांनां ॥ अजपा जपूं अपू ना पू
जों ॥ पैजरा वधोलां ॥ २ ॥ जहां का हूं नांहीं तहां क छूं देषा ॥
जीइ रा लोनां नां ॥ आतम के रतेज मध्ये तेज दियां नां ॥ अनेक
ताराजा मिलि दे कायें है जैसी जोति प्रकासी तहां निरंजन

सहंसश्जारंजी॥२वायामसीनम
जगुजारंजीकवला
मिताकाश्रकारंजी२सहरबिसहरसवैतमाकिरी
नह्नमरमनपायाजी।नांमदेवकाचित्तहीतंलागा।
रांमरायाजी॥१७॥वैसनूंनेमैमैतेबैसनूंसु
जेनगतमेरगइनगावी।ताकेअंतरिथका
टो॥नारदकहैसुणोनाराइणा।बैकुंठबसी
लासंभहोममकथातहांमैनिहचलाबैस
दिसकलतीरथकरोगुणचासको
येकादसीसहतसंजमकरेनेमोक्षि
देनपावैनारद२जोगीजतीतपीसन्यासीइकमुनिध्यांन
बईसजैजेनगबेदधुनिउचरैतिनकंक
।।जोग जगितपधामनेमव्रतानबलगइनकीआसा
कथाआदिदैहूंदैंणावतानहींममचरनमिवासानारदध
नगता।निरमलजसगावै तेनगताममसारांजीयांजी
ऊ बैसनूंममपरवांनारदथबैसनूंमैदोइनही
दप्रीतिकीयानैंश्रोऊं भगतिहेतऊवतधस्योहै बै
बंधांऊंनारदप॥बिसवावीसआगैबरतांऊं।नि
ननांवससंता।नामांनोस्वामीपरमेपदआपैनगतिमु
२॥७॥ माधोजीतरिमातुहेली॥
प्रकृतिनाइनपेली येमेत्र
गुसांईकहौकहावसमेरा वेतकीपकचकहीं
गराधैबसमनकाहूफेरा॥तुमसेवेदनतुमसेरोगी
नेऔरनहीजांनांव्याधिअसाधिअगाधदयानिधिप
येसयोनांर॥जीनकूंतुमहीकारीकोन्हीं विथ्या
नांमदेवकहैनहीबसमेरा।कृपाकरोदुख
।८॥अवधूबेलीवृधैकरेली।निरगुणजाइनिरं
गीमारीङनमरेलीयेसहजासमाधेबाडीरेअव
।अमीमहारससींचतला॥।तनतर
२।अमरबेलजनमेंनाहलागी।डालीह
लीरूपरेषताकेकबुनहीचंदहिकोटिफलेली
।पांचसंघपचीसंमघी।सैघतदेअमरेली।निराकपन
पानेरीवेली।अनंतअमरफलदेली॥२॥८॥अरथ॥
कैनीआतां।बिरधनाबरनगतिचमीरामरस येसहजस

बैकुंठबासी।थ।करमसबलकौनेषधत्यौ है।छिपई
।बेवरपवनगुनअपितकीर्ह्नसारंगधाराप।।बिनां
निजचरैअधिकरसाल।।बिनांतंबसनारदनाचै
ताला।२।रूपअनीतसकलगुणरहतागम
तहांतैंअधिकलैलागी।अंतरिष्यानां।७।।बिसनद
यासगैनेटीला।सोई।हरिहरिहरिकीरतनकरतां
अनंदहोई।।८।।२३।।अर्थ।।पा।वैगेपा।वैपै
षेपाये सहजैडुंदररहता।बबेकबिचारया।वीठलवा।
।टेक।।त्रिबेणीमनपवनसुरतियेकंत्रमंजनस
नांवनेत्रफूलचितचंदनकरिब्रह्मपूज्या।१।फ्ता
याअंतरगतिजापा।अंजनरागोअदपूज्या।२।कछू
नांहीगुणआकारनांहीतहांदेख्याब्रह्मा।षीतमसै
ायमातमतेजदेख्या।३।अंजनमायापटहरिकस्या
।बैकुंटकहीयैकालकरमतैंरहता।४।सकलकरम
कौनेषकाया।ताकरिकरमकाटेप।बिनांब्रीषांवा
णीबिप्रबेदबिनअनहदधुनीरसालरसीलाना
रदमनगावैअंतरगतितालनावसैांज६रूपगुण
रहतागगनब्रह्मअसथांन।।७।।२४।।पद।।पुरषह
जरिबरनहाँहीहरिगढाबोलैमांहीटेकगपांनध्यांनर
हतथेलै।अदिष्टिमांहीदिष्टिमेलै।१।संगलागा
नेषकाछै सारीषाआगैअरपाछै।२।निगंधरूपबिब
राजितबास षणवंतनांमदेवहरिकादास।।३।।२५
।।अरथ।।पुरषप्रांनबरनरहतघटमैबोलैहाथिनअ
वै।टेक।गपांनध्यांनकरैप्रांनघटमैबोलैहाथिनपावै।
रतनापुरीकायमैआदिष्टब्रह्मतामैदिष्टिमेलैहजा
आपआदिष्टघटमैऔरसवकूदेवै।१।संगब्रह्मकेमां
णनेषकाछैदेहधरैप्रांणआदिअंतिप्रसंगा।२।प्रांनगं
धरूपबिनांघटमैवास।।३।।हरिजा।अरथ।।हरिजापुरषपर
मेस्वरप्रतापिसत्पाबरनरहतहरिगढा।सबतैंपारा
सबमांहि।टेक।गपांनध्यांनध्यानउसीतेरहतनांपुरी
कायामैषेलै।आदिष्टसबघटमैउसीकीदिष्टिदेषे।१।
जीवसीवसदासंगि।नेषनांनांघटसुनाव सरीषपोये
करस निजधरूपबिबराजितासबमैवसैब्रह्म।।३।।४
पद।।देषापालरबाजैमांदलनाचैप्रेहडाअचंभादीठा

कैब भीरा जा धुंधसारन जी वैको जुग च्यार मेरी
नमंका१। रे मन मछिंद्र नाथ सहर
तेजी दे पत का तूल्यो मन मंका२ रवि स
फिरत गगन लाश्री ३ ऐसै मूलाजरमस वजा
मंका४ अहंकार दिन दसारा थिलै दिन चारि पर
नहोई रे मन मंका४। नामदेवजी यो चौपई
कै जैसा नाव तिर तेसी वि धि पाई रे मन मंका॥५
॥२२५॥ राग॥६॥ राग आसावरी॥ जोगीया जि निष
समकी नाई रे दि लेरां म्हां के बाई कौ
मवर चौ नग्ना वै मां टियरै तब पस्यौ आवैश। मण न
मदेवरा वि लेघा ती फगटी जोति जहां दीजन वाती
॥१॥ अर्थ। जोगी जी कहां मद मघा ला नयो ह्य नांम लेदे
टेक बाई मास दुख मद मघ स्या आयो या म्लान
गांठि सोई जो मगन मे पस्या तब परसन पयातीरा
जोति ब्रह्म की दीवा बाति कत म बिनां१॥२
मिलि झिलि मिलि झिलि मिलि झिलि मिलि जरा रंग
पद॥
रूलोक पियारा टेक रहै अकास पडे नही दिष्टी प
मुष्टी१। दीपक पषै तेल बिन बाती
सरूप बलै दिन राती२। अनत नांमदेव परम पद प
पिंड अया मुक्ती लुयात नदरस्पाश॥२॥ त्रिवेणी प्र
गकरि उं मन मंजना सेवौ रा जा रांग अलष निरंजन टेक
पुरी द्वारिका निकट गोमती। गंग जमना बिचि वहै सुरस
ती१ अठसठि तीरथ मधि सरोवरा येक तपा ता मेतार
कौ घर२। अनत नांमदेव सुनो तिलोचन ये तीरथ सब
घ के मोचन॥३॥३॥ अर्थ॥ त्रिवेनी मन पवन सुरति ये क
न पिराग पिंड त ही मन मंजो टेक पुरी सात सो सपत धात
द्वारिका दसूनां। गोमती गो पिवांणी। गंगा न मन जं
ती वैठ ती वांणी सुरसती सुरति २ अठसठि तीरथ कोथ
णी गोबिंद घट मे सरोवर हिरदा ता तटि तपा परमेसु
र घर कंवल॥२॥३॥ पद॥ माधो माया मिलण न देई गन
जी वै तूं करो सनेही टेक माया जाल थमो रमन मछी नी
र बिनां क्यूं जीवै हो पियासी१ जे मोडूं तो मूला विना सा
बो फपड्यां नहीं आवै सासा२ अनत नांमदेव दीन दया
ला निरधारन के तुम आधारा॥३॥४॥२२७॥ राग॥७॥

मोतीमेलाहीरमेलापन्नापाक्कसत्तहीरा२मेलातीन
लोकषूलंडइककईसमेलानिसबासुरदिनतीस१मेला
बलामेलाचंदासहंसकलामेलारविचंद३सबजगमे
लाञानांदिमाइजननिरमलतबहारगुणगाइ४मेला
मुनिसमेलापापमेलाआनंदेवकाजाप५मेलातीरथ
मेलादांनव्रतमेलापूजासमांन६मेलासुरमेलीसु
रसुरीनांमदेवकोठाकुरनिरमलहौ॥७॥जगिजीव
कहुमुत्कनांआपेथीछेजांनांहिजांनां टे०दिवसबा
रिकागोकुलबासातापैतोदिवसआवेहासा१इहि
मिनागीकुसानतांसोवोकाहेकुजनमवादितापावे२
कहालसोवेबारबारारांमनामनपिलेहगवारा३म
णतनांमदेवतीथयांनां ओघटघाटअरूडरिपयां
नां॥८॥जाडेमनहमताममता सबघटिरामरह्यो
रमिता टे० आसाकरिमनजाईयेजहीयांरांमाबिनासु
कतांहीतहीयां१जनकीप्रीतिअगमपियारीजंगल
निरापिन्देयनिहारी२भरणतनांमदेवसबकुनआगर
भजिहरिचरनकृपासुखसागर३॥९॥हरिनजिहरिनजि
हरिनजिमूलबिनहीभजनपडेमुखधूलि टे० अनेक
बारपसूकेजोनत्यो लषचौरासीमांमतफिल्योपायै
नहीकाहेबिसरांदसतगुरसंगिकस्यौनहीरांम१रमते
नसकलजितसबजागाअबिनासीलांडीतिलगा२इहि
मनमांनलगाविलुतधरैजुरामानमोसंकटटरे३गु
नसागरमोअंदगुनगाऊअपनोबिडदाबिसरिजिनजा
उ४भनपंतनांमदेवसंतसधीरचरणसरनराषोहरिनीर
॥१०॥गेनजैनरनाराइनाजाकामेनकहूदासरणो
टे० जाहिसंवारेआबुसोक तेनरगीनीयेपसवांमाझ
२जिनकेहरिनहीअभिअंतरा जैसेपसबातैसेनरा१
जैसीसंतोबिनकाडरी तैसापरघरकीसुंदरी२अपनी
परार्ईसबपरहरी तिनकेनिकटबसैनरहरी२भनवंत
नांमदेवनाकाबिनानासोदैबनीसलछिनां॥११॥हो
मनजोलदेवादेवा मतजितथांनातितहीतेरीसेवा
टे० तूसुखसागरभगदाता तूमेरैयांनापितागुरमा
ता१नांमोमनमैमेरैसबकुबसांईमनसाबाचाइसर
नाही॥१२॥पांडेमोहिपढावोहरीबिद्याअपनीराय

जैसीप्रीतिबालकऊपरमाता।ऐसैंहऊमन॥

चितबिहंग

ऐ॥२॥पांनसरोवरमगनमें
नासहजैबटिलैमगा।तोमांसगैरामबहने रामनाम
बिसरमंछै॥२॥ भगवंतभगतानहींअंतरा हेकाहै
नोंयसवानरा टेक॥जिभगवंतभेदाबिधिकरै ताकै
गंजेजमैमरै॥ कधनाबदनीसबकोकहै वारनाजन
कोईबिरलारहैर कहैनांमदेवममताइ तौसाधसंगती
मेरहैसमाइ॥२॥ रांमरांमरांमजापिबाकरै हिरदै
रंजीकोसुमिरणधरै टेक सांडामुरकाजाइथुकारोपढ
नहीदमपचियबिहारै।हरिहारिकहैअंततालबजावै
बटरामबैबिगारै२ सबवसुधावसिकीनी।रंजाबीनती
कैपटराणी॥पुत्रप्रहलादकह्योनहींमानै इनकुबुधैं
रहीमनी२ राजसभामिलिमंत्रउपायो।बालकबुधिघे
री॥जलथलगिरजवालातैराष्योरामराइमायाफेरी
२।कादिषडगकाहैकोप्योमोहिबताइतोहिकोराषै
मनमाहिप्रगटपरमेस्वर सकलबियापीसतिभाषै॥
४॥हिरणाकुसकौउदरबिडारयो सुरनरकापैसनाथामन
तनामदेवकमसरनागतिरामअनेपददाता॥२॥जौ
बोलैतौरामकही बोलिनहीतरबदनकपाटनपोलीजैसे
गेबोलायेतौकहीयेराम।आनवकनसंनांहीकांम२ श्रां
मनांममैरेहिरदैलेपारांमबिनासबफोकटदेष२ नांम
देवनणैमेरैयेकैनांवरांमनामकी मेवलिनांव२॥४॥
जपिरांमनांममंत्रावला कालिजुगमरणाअवला टे
। षीससमायाग्रभौहार रातिज्आई अंधाकार।हरि
पयानांसौघटघोट कौनिसतारियौसंगनसाथ२ म
णतनांमदेवऔघटातिरी।अधैनावउधारैहरी२॥५॥
मैलामालितासबसंसा।हरिनिरमलजाकावारनपार
कै।मैलाबीसमैलाषेत मनमैलाकयासहेत॥ मैला

आधिरा॥पारउतारैमोसागरा॥

हैप्रहलादश्य

रांमनांमजपिहरिरतिरो॥॥ब्रह्मा

॥१४॥रांमनांम

मैरेपूंजीधन॥तापूंजीमेरोलागोमनां॥टेक॥यापूंजीहैं

रामअपारकोईयेकबिणजैसाकुकारा॥१॥साहकीपूंजी

बैनाइअवजुकबैसैमूलगमाइ॥२॥जारीजरैनकाईखाइ

राजाडंडैनचोरलेजाइ॥३॥अलपनिरंजनदीनदयाल

नांमदेवकेधनश्रीगोपाल॥४॥१४॥रांमनांममेविडमव

नामलनहीलागेजपतगोपाला॥टेक॥रांमनांमडूंगरसै

सिरधोबीयधोवैअंतरिमला॥बरस्यारामनांनां

मती॥नांमदेवकोस्वामीत्रिभवनपती॥२॥१५॥हरिदरजी॥

कायरमनपापा॥जिनिइकुब्राणापूकबनाया॥टेक॥पानील

त्रिपकुनकाधागा॥लाकुसीवतमासदसलगा॥१॥थोम

वालमुकटबनिआया॥येदोइहीरालालल्गाया॥२॥अ

गतिभुकतिकापटा॥निपाया॥पूरनपावूसंपहराया॥३॥

आपैसीवैआपपहरावै॥निरतनांमदेवनावधरावै॥४॥

१६॥१४५॥रा॥ग॥१५॥राग कनडो॥ तमेरोवडुरतं

मेरोराजा॥कुंवेरैसरनेआयोहो॥नसलमलोगावतगोवि

दासनलोगनिमारिजगायोहो॥टेक॥आलमहुनीआवल

मेसीसाइर्याडेको॥पिलोंहो॥सुडसुडकामोरिजवायो

कहाकहूमेरेवाबुलाहो॥१॥आनगयेजोभुकतिहोतहै

सोभुकतिनदीसेकोईहो॥इहबानमोहिमडकहतहै

तेरीपैजिपिछूडीहोईहो॥२॥नईचकुंदिसआचिजवान

अदबुदबातअपारहो॥दासनांमाकूंनयोदवारोपिंडत

कंयविचारहो॥३॥१॥कुरवलगरीबारांमकोहरिकोदास

मैतनसेवगतेरा॥टेक॥आचाभोहरनापनदीपूना॥भैमो

नगतआयोसरनिला॥१॥नांमानेमैसेवगतेरा॥नाभिज

नमिहरिवरमिला॥३॥२॥तम्हारीटयाबिनानपाईयैहो

रांमनपाईयेहो॥टेक॥नावकलपतरानगातिलताफल

सोफलरसालकदेसीदेवा॥नामोनरणेसुणिकेसवनदे

सीतरलब्धाउलौउपायेलफकजणीजै॥३॥२॥चकनगीन

बकनजीला॥बूफैचितओताधरीला॥टेक॥इगदीणादस

गोवणहारा है सिक टिक लां कौ । टेक । जब लग है या तन की आ
४३८ तन लग कौ है सुकाश । जब मन सि टो आसन ही तन की । त
ष्णहारा जब लग मन ही न सम्हसमावै । न बलग बहै=
जब ह्न छिन्यो रोम सागर सं । तब इकु मिटी पुकार । जब लग न
लिखु रके की आसा । परम तत्त सु निगावे जहां जहां आस धरत
है मन तहां तहां कलुन पावै । २ । छाडै आस निरास परम पद तब सु
ष्य तिका रहि होई । कहै रैदास जासूं और करत है । परम तत=
ईश्रु । ३ । रामजन हूं न भगत कहाऊं सेवा करूं न दासा । गुन
राजग कछु न जानौं । तातैं रहौं उदास । टेक । भगत हूं वातौ चढै ब
डाई । जोग करौं जग मानैं । गुनी हूं वातैं गुनी जन कहैं । गुनी आप
हूं तौ नें । १ । ना मैं ममता मोह न महीयां । ए सब जाहि बिलाई । दोज
ग भिस्ति दोउ सम करि जानौं । दहूं वातैं तरक है भाई । २ । मैं तैं ममता दे
खि सकल जग । मैं तैं मूल गवाई । जब मन ममता एक एक मन तब
ही एक है भाई । ३ । कृष्ण करीम राम हरि राघव जब लग एक एक नहीं
पेष्या । वेद कतेब कुरान पुरानन सहज एक नहीं देष्या । ४ । जोई जो
ई करि पूजिऐ सोई सो ई काची सहज भाइ सति होई । कहै रैदास
मैं ताहि कूं पूजूं जाके गांव न ठांव न नांव नहीं कोई । ५ । ५ । अब मे
री बूडी रे भाई । तातैं चढी लोक बडाई । टेक । अति अहंकार करम सैं सा
वरजे । ता मैं रह्यो उरझाई । करम बंध बसि पर्यो कछु न सूझै स्वा
मी नां वहु लाई । १ । हम मानैं गुनी जोग सुनि जुगता । हम महा पु
रष रे भाई । हम मानैं सूर सकल विधि त्यागी । ममता नहीं मिटाई ।
२ । मानैं अखिल सुनि मन सोध्यौ सब चेतन सुधि पाई । ग्यान ध्या
न सब ही हम जानैं । बूझै कौन सौं जाई । हम जानैं प्रेम प्रेम रस जां
नैं । नौ बिधि भगति कराई । स्वांग देषि सब ही जग लटक्यौ । फिर आ
पन पौ रवधाई । ४ । स्वांग पहरि हम साच न जान्यौ । लोगनि यह भरमाई ।
सिध रूप भेष जब पहरी बोली तब सुधि पाई । ५ । ऐसी भगति हमा
री संतौ प्रभुता ऐह बडाई । आपन अनि और नहीं मानत तातैं मू
ल गमाई । तन पैरे दास जस नहीं तैं अब कछु मो पैं करी न जाई ।
आपा षोयां भगति होत है तब रहै अंतरि उरझाई । ७ । ६ । नरहरि नर
र सम जगति सु जांन जो लौं नहीं साच स्वरूप पहचांन । टेक । नर मन नाचन
नर्म गावबा नर मन जप तप दांन । नर मन सेवा नर मन पूजा । नर मन सूप
हचांन । नर मन षट करम सकल सहेत । नर मन ग्रह बन जांना । नर मन
रि करि हरि करम फीटे । नर मन कीयउ बांन । २ । नर मन इन्द्री निग्रह कीया ।
नर मन गुफा मैं बास । नर मन तौ लैं जांनी ए सुनि की केस्ज्या सा । ३ ।

की बांणी लिष्यते॥साषी॥ हरिसा हीरा छाडि
कै नकी आस॥ तेनरजमपुर जांहिगे सति भाषै रै दा
स॥ तिरावेनदी बादस्कि थैनदास तेनरजमपुरजां
हितैभाषैरैदास॥ रैदासकहैजाकै हिरदैरैनदिनराम
तसगि सोभनत आपेकाम॥ ३ मारेथ्यां पिनअनि
वासप्रेमनगाति सूत्र धरे पम्तजनरैदास भोरेद
विकली तुफैन छीपै कोइ तैनितनोवन मांनीयां
कहांतैहोइ पैरैदासरा तिनमांइ १ रिवसनकी जैसार
हरत्ती मुमरी ऐ छाडिसकल व तिवाद॥६॥ अपर
आतमकली॥ परवैरामरमैजेकोइ पारसपरसेइ भिषनहोइ
जेरीसीसो सकल विनासआण दीठेनो दीषिसवास हरग
केनेराम सोभयताके वलनिहकांस॥ फलकारनि
नराभउपजै फलतवपकुप दिलाइ पांन हिकरनि
कउपस्पो ग्यांनतवकरमनसाइ॥ वटकवी जेते
कारा पसस्रोती नलोक विस्तार जहांकाउपज्यातहां
सहजसु लिमैरसोतुका॥ जेजन दिदैसोइ छिंद
जंदीसेचंदन जैसैं जेसैं तरुवा तिरै परवे पिंडजी वेनदी
सो मनकोंनजुमन के पाप॥ हिनदारै सिलोकागाइस
नमस्यांसवको कहै पंडित मो ज्ञो ग्यन नेरहै फकैरैदासइ
परमवैराग रांमनांम किन जपजसनाम हृतकारन दधि
थेन जीवनन्तु हिसदा मृवोन॥६॥ सबमैंहा तोरेना
ई पंडितनथेसवहाल चालेतें लोभनिये रहडांइ टेजहित
न अभूतना वन॥ थाकी सेवा हजा कां मकोधनेसनघा
कतनई कहैकहांलौ हृझा॥ रामजनहेऊंनभगतकहांजं
वनपयांलूं नदेवा लोइंज्ञो ईकरोंजलटिमो हिवांधे भातेनि
कैमेवा॥ पहलैग्यांनकाकीयाचांदिनां पीछैदीयाबुझाई
निसहजमैंदोऊंत्यागे रांमकहोंनपुदाई॥ हरिवैस्यक
मसकल॥ अतहरि कसी न्हैसेक थांनधांनहोऊं इहिली
है हरिवछाडेते अभपां हूंथकितनऐजहांतहां तुहांनहो
पाइ लाकार निमैंरोलो फिरनो सोअवपटमैं पाइ ५
मेरी मधी महेली तिनिमिय दइदिषाइ अबमनफूलि
ामरीयां उलटि आपमैंसमाइ॥ चलनलगनमो
नत्रमनयाको अवमोपैंवन्योनजाइ सांईसराली मेलो
सुष कहैरैदासचताई॥ पाइन्या इपवकाकहिरे

४५०

हूं तुम जोग करत है॥ जब लग आसकी पासी॥ छूटै तब ही ज
ब मिलै रैदासी॥ रैदास उदासी॥५॥१४॥ न रहूं रवेव लग
तमोरी॥ कैसे ज्ञाति करौं राम तोरी॥ टेक॥ तूं मो हि देषै हूं तो हि दे
षों प्रीति परस पर होई॥ तूं मोहि देषै हूं तोहि न देषूं यह म
त सब बुधि षोई॥ सब घट अंतर रमसि निरंतर मैं देषत ही
नां गुन सब तोर मोर सब औगुन॥ कृत उपगार न मांनां॥ मैं
मो रतोरी असमझ सि॥ कैसे करि निस्तारा॥ कहै रैदास कृष्ण
करुनां मैं॥ जै जै जगत अधारा॥२॥१५॥ राम बिन संसे गांठि न छूटै
काम क्रोध मोह मद माया॥ यन पंच न मिलि लूटै॥ टेक॥ हम ब
ड कवि कुलीन हम पंडित हम जोगी सन्यासी॥ ग्यानी गुनी
सूर हम दाता॥ यह मति कदे न नासी॥ पढे गुने कछु समझि न
परी जो लौं अनभै भाव न दरसै॥ लोहा हरन होइ धूं कैसे॥ जो
पारस नहीं परसै॥ कहै रैदास और असमझ सि॥ भूलि परे
भ्रम भोरै॥ एक अधार नांव नरहरि को॥ जीवन प्रांन धन मोरै॥२
॥१६॥ ऐसा रांम रांम कहि गावैगा॥ ररंकार रहत सब हन्नैं
अंत मिले न मिलावैगा॥ टेक॥ लोहा सम करि कंचन सम क रि
भेद अभेद समावैगा॥ जो सुष कै पारस के परसैं॥ सो सुष का
कहि गावैगा॥ गुर परसाद भई अनभै मति॥ बिष अमृत सम
धावैगा॥ कहै रैदास मेटि आपा पर॥ तब वा ठौर हि पावैगा॥
२॥१७॥ तौ अनिन भगति यह ज्ञांनों रे॥ जब लग सत रज तम
पांचौं गुन ब्यापत है या मांही॥ टेक॥ सोई आंन अंतर करै हरि
सों॥ अपमारग कूं आंनें॥ सोमक को धमन्दो भ्रमो हको पल
पल हू जागांनें॥ सक्ति सनेह इष्ट अंग लावे॥ अस्थल अस्थ
ल षेलै॥ जो कछु मिलै आंन अषित सूं सुत दारा सिर मेलै॥२
हरिजन हरि बिन और न जांनें तजै आंन तन त्यागी॥ कहै रैदा
स सोई जन न्रमल॥ निसदिन जिन अनरागी॥२॥१८॥ भगति
ऐसी सुनहु रे भाई॥ आई भगति तब गई बडाई॥ टेक॥ कहा भयो
नाचै अरु गावैं॥ कहा भयो तप कीन्हैं॥ कहा भयो जे चरन प
षालें जौ लौं परम तत नहीं चीन्हैं॥ कहा भयो जे मूंड मुडायो
बहो तीरथ ब्रत कीन्हैं॥ स्वामी दास भगत अरु सेवग जो परम
तत नहीं चीन्हैं॥ कहै रैदास तेरी भगति दूरि है॥ भाग बडे सो पा
वै॥ तजि अभिमांन मेटि आपा पर॥ पिपलक है चुनि षावै॥२॥१९॥
अब कछु मरम बिचारि तो हरि आदि अंति औसांण रांम बिन
कोई न करै निवारा हो हरि॥ टेक॥ जल मैं पंक पंक अंमृत जल॥

तौ लैौ नरमनां व बिनांव नरमन रैदास तौ
है गंवा धा। ३। ज्यूं तुम कारण के सवे अंत रह्यौ
। ऐक अनूपम अनुभव नवी। कि मदो इ बिनाणी। टेक रोवा
बिचरत जग मांही। जदपि जल पूरण महीं क
१ जिसें कामी देषै कामनी। ह्रिदे सूल उपाई
। लगे वैर वाकी बिथा न जाई। २। जो तिहि वाढ़े सो।
गति होई। कहे रैदास यह गोपि नहीं। जांने सब
॥ १७ ॥ आयो हो आयो देव तुम सरनां। जांनि कृपा कीजै अ
मैं। त्रिविधि जोनी वास जम की अगम त्रास। तुम्हारे भ
फिरयो। ममता अहं बिषै मदि मातो इहि सुष कब
तिरयो। १। तुम्हारे नांव बिसास छाडी है आन की आस स
सम मेरो मन धीजै रैदास की सेवा मांनि हो देव धि देव पति
व परगट कीजै। २॥ १८॥ ऐसैं रांम कहां हैं मो हि वतावो
रांम ता कै निकटि न आवै टेक रांम कहत सब जगत भुलान
रांम न होई। करम अकरम करुणामै केसौ करता नांव सु के
रांम हि सब जग जांनै भरम न भूलै रे भाई। आप आपैं कोई न
जांने कहे कौन सूं जाई। २ सतत न जो न परसि जीय तन मन। गुन प
सन नहीं जाई। अपल नांव जा कौ ठौर न कत हूं क्यूं न कहै सम
भाई २ न रैदास उदासता ही तें करता कौ हैं जाई केवल करता
एक सही करि सति रांम तिहि ठांई ४॥ १९ ऐसो कछु अनभै कहत
न आवै साहिब मिलै न को बिगरावै टेक सब मैं हरि है हरि मैं सब है
हरि आपन पौ जिन जांनो। अपनी आप साषि नहीं दूसर जांन न
हार समांनां १ बाजी गर सूं रचि रह्यौ बाजी का मरम सम जांनां
बाजी झूठ साच बाजी गर जांनां मन पतीयांनां २ मन थिर होइ तौ
कांइ न सूझै जांनै जांनन हारा। कहे रैदास बिमल बबेक सुष
सहज सरूप संभारा। ३॥ २० अषिल षिलै नहीं का कहि पंडित को
ई न कहै समझाई। अबरन बरन रूप नहीं जाकै सो कहां ल्यौ
लाइ समाई टेक चंद सूर नहीं राति दिवस नहीं धरन अकास न
भाई करम अकरम नहीं सुभ असुभ नहीं का कहि देहु बडाई १ सी
त बाइ उसन नहीं सरवत कांम कुटिल नहीं होई जोग न भोग रो
ग नहीं जाकै कहो नांम सति सोई २ निरंजन निराकार निरलेप
हि निरबिकार निरासी। कांम कुटिल ताही कहि गावे हर हर आ
वै हासी ३ गगन धूर धूसर नहीं जाकै पवन पूरन हीं पानी। गुन
बिगुन कहीयत नहीं जाकै कहो तुम बात सयांनी। स्या ही

[illegible]यावककालतादिवानंधारा नोभका आपनीगपा
नहता २ विष संसारको लहरिमा कुलतवै मोहगु
नविषे संबंधनूता है गुन्नागरडी मंत्र आवनादयो
जागिरे तामकाहिकाहस्नतारा सकलसुम्रत जितीसं
नजितिकहै तितीमाइनहीनगमतिपरमबेता ब्र
[illegible]रिमनाद्रासिनसनकादिका रामररमिरमतगथपा
लोता ३ जिनजापनिजापरटएतीरथदान बोध
[illegible]सिकदयमलदेलानागदवानिजरजरी रामसुमि
रिनहीननतरेदासथेन कि बेताध ११ रामांहोज
[illegible] सारीराम भजनतोरा टे संक
[illegible]सोचपोच दिनराती [illegible]मकठिन मेरीजातिकुजाति
[illegible] कुभाव चरनन [illegible]ज
[illegible] कहैरैदासकबुदे क्रपालबन वेगोमि
लो [illegible] तेरोजनकाहेकोबोले
बोले [illegible] बोले टे बोलना
बोलना [illegible] बोलेबोल
[illegible] बोलेपानमानप
[illegible] जबहाबोले
[illegible] बोलिबोरही समक्षावै
[illegible] बोलिबोलिसमकिजन
[illegible] बोलेगुरु [illegible]
[illegible] कहै रैदासथके
[illegible] ऐसीभगति
[illegible] सोसबम
[illegible] भगतिनरसदानभगतिनकथेगपान
भगतिनबनम्सेगुफाखुदाई भगतिनऐसीहासी
गतिनआसापासी भगतिनहसबकुलकोनिग
[illegible]भगतिनयंदीबांध्यां भगतिनजोगसाधा भगति
[illegible]घटाई येसबकरमकहाई भगतिननिद्रास
[illegible]नगतिनबैरागबांध्या भगतिनहीयेसबबेदबडाई
[illegible]भगतिनमुंडमुडाये भगतिनमालादिखाये भग
[illegible]येसबगुनीजनकहाये भगतितोलै
नीआपकूआपबषानी जोईजोईकरैसोकरमबड
[illegible]भयोगयोतबभगतिपाई ऐसी है भगति भाई

छूटैहुमबि
।जपतपाविधिनषेधकरूनामैपापपुनी
बिमुषधनीज
ताडनभेदनत्रापनषेद
।लैठपाइीलूणषडीसजोगबिनं
।मनतरैदासकाविनक
वबूडतनैनी
वलंबनदीजौधारानिरहरिक
प्रगटसिनांतौप्रगटसिनां।दीनानाथद
।तैबिगूरानंत्रातोकछु
काउँ
।इकुबंदेसकेलिकाला

कुरधितहीसबसोंक्र रैदासबिनवेकरजोरि त्राहोस
मीलममाहिनयोषिलुतोप्रबला त्राकममोरबालि
आऊंकरोजिनिश्रीरथा।।२।सूलमकारानिकेसबेला
लचजीवलाणा।निकटिनाथप्रापतिनहीमंनमंद्र
लागा टेव साइरसलिलसरोदिका।जलप्यत्राधिक
ईस्वातिबूंदकीत्रासहौपीवप्यासनजाई१।जोरसने
हीवाहीयेचितवतक्रूइरी।पंगलफलनपऊंचह
कछुमाधनपूरी२।कहैरैदासत्रकथकथा।उपनूष
दसुनीजो।जसतूतसतंतसतूंही।कसवोपमदीजे
ही।।२।जोप्यंदेनौजलबाधिश्रपारा।तामेकछुसूक
नवारनपारा टेव त्रागमग्रेहहरिदुरतरिबोलिम
रीसनदेकु।तेरीनगतिपरोहन संतत्र्प्ररोहनमोहि
चढाइनलेकुं२।लोहकीनावपषाननबोझी।सुकृ
तनावबिकूनां।लोभतरंगमोहनयोगाला।मीनम्पै
मनलीनां२।दीनानाथसुनहुबीनती।कोनहेनाबि
लंबैरैदाससंतचरनमोहिबिलबनदजोप२।।कालकेमंक
हासलैमुगधनरा।कालकेमंकसुपतजिश्रबहुत
रामचितवतत्रनेकसुष टेव त्रासहजधीरजलोप
कासनउधरंतकोपमदनत्रुयंगनहीमंत्रजंत्रा।बि

यो जलपल्लीन बंधीया लिंबै बीसबर स्का मया प्र
यांलां थेमिन सक्या भावे जन रैदास कहै बिणजारा
तैं जन न भल्लीया संसारबो ॥१॥ दूजै पहरै रैणि दे बनिज
रीया तैं निरखत चाल्मा बाहुरे हरि न दमोदर ध्याइया
बनिजारीया तैं लेइन सक्या नांवबै नांव न लीया
[illegible] गुरु कीया इस जोबन देतांन वे आपनी पराई गी
नानकाली मदेक [illegible] भकमान वे तांहि बलेबाले सी [illegible]
हिदे सी भी [illegible] जन रैदास कहै बिन
जारा तैं निरखत चाल्मा बाहुरे ॥२॥ तीजै पहरै रैणि
दे बनिजारीया तेरे [illegible] पिरान वे काया खुली
[illegible] बनिजारीया [illegible] नरि बसे कुजांन वे इक
तैं कुजांन [illegible] नरि [illegible] जनम गमाया वे
[illegible] अगड पावावे
[illegible] गढ [illegible] फिर लागा पछितांन वे ज
न रैदास कहै बनिजारीया तेरे [illegible] पिरान वे ॥३॥ चौथे
पहरै रैणि दे बनिजारीया तेरी कंपन लागी देह वे साहि
६ बले [illegible] बनिजारीया [illegible] पुरानां थेह वे आ
[illegible] पुरानां [illegible] मंवेरीया जम के आये
बांधि [illegible] पंथ चलै अकेला होइ
[illegible] जन रैदास कहै बनिजारा
तेरी कंपन लागी देह वे ॥४॥ [illegible] मन पापकरत [illegible]
[illegible] होता ॥ टेक ॥ ते हो मोह
[illegible] गल न [illegible] जैसा
[illegible] अंतरजामी ठाकुर ते जन जानी ये ज
न तैं [illegible] सब कमामा [illegible] रैदास दास
[illegible] ॥१॥२॥ [illegible] एक [illegible] नाते
[illegible] दास कि सता
रजानां ॥ टेक ॥ मैं बेदीयां [illegible] जरबंद वाखुदा
[illegible] ॥१॥ मैं गुरै
गारगरी [illegible] करता [illegible] दरदरि
[illegible] ॥२॥ [illegible] तन हसत
[illegible] रैदास दासा रि
[illegible] ॥३॥ अब हम खूब
[illegible] ॥ टेक ॥ बेगमपुरस

धितिधितसबैगमाई।कहैरैदास
:आतमाअस्थिरनईत।

तारतबनहै
१८

॥८६

दोहिअदिसाटिगेवअकपात।
॥कोईसुं
यसबकूपतलीचोना।जाकूजेताप्रकासेताकू
तेताहीसोनाटेया।हमहीतेसाधिसाविदमहीतेमा
डोबारेहीइतराइचाले।मतिसाहीबाडै२।आतिही
आलरवदेकाचीहीनारे।ऊंडेगालिपेसेनाहीयाडूरे
बारे।यारेघारेमुसीइतयरायोधना।कहैरैदास
सुनोसंतजनं॥१।मरमकेसेपाइबोरे।पिडतकूं
नकूहेसमकाइ।तातेमेरोआवागवनाबिलाइ।टोब
हाबिधिधरमानिरूपीये।करतादीसेसबकोइ।जोहीध
रमेत्रमहूं।टिढे।सोधरमनचीन्हैकोइ२।करमअक
रमाबिचारीये।सुनिसुम्रतबेदपुरानासंसासदहिरदे
बसे।हरिबिनकौनहरेअभिमान२।बाहरिउदिकप
षलीये।घटनीतरिबिबधिप्रकार।सुचिकोनबिधि
होहिगे।जेसैकुजरबिबधिमोहार४।सतजुगसत
तेतातपद्वापुरपूजाआचार।तिहूंजुगतीनूडढी
कलिकेवलनांवअधार५।राबप्रकासरजनीजथा
यूंगतदीसैसंसार।परसमनितोबोधीयांकरनक
होतनहीबार६।धनजोबनहीनामिलै।डुपदारन
धिकअपार।येकेअनेकबिबोगीया।ताकूंजानेसबस
सार७।अनेकजतनकरिटारीये।टारीनटरैभ्रमपास
प्रेमभगतिनहीऊपजै।तातैरनदासउदास।८॥११॥
२७॥राग॥३॥रागजंगली॥गौडी॥ पहलैपहरैरैणिदै
बिणजारीया।तैंजनमलीयासंसारवो।सेवाचूकारामकी
बिनजारीया।तेरीबालकबुधिगंवारवे।बालकबुधि
नीरनचेत्या।भूलामायाजालवे।कहाहोइपाछैपछित

२

सुरति देषाये घिरनां हिवे हम नसे सहंस इकावी स्वरदे
न भजांमें तैंजां हिवे १ मनी मागेगसगा फिल बेमहरबै
गरबेदराम में मउ तबोया होलनहा तकसारबै २ कुंब
गांकिमसी महरतोला खेरसब्हा थिवे धलीकफरम
नश्रासा नवनायावा सेला छिवे ४ नजिवदनबाबेन
जरिकि मदिलकारिपसमची कानिवे रैदासकी अरदा
सनुणि कुमदवालालमि कांनिवे ५ सुकर्ुविवि
चौताते मेरो मनथिरकै च्यो दरिसनत्ता मोताते बरनप
नटिनयो टे। जिनि इकपंथी पंथ चलावा आगमगाव
नैं मनदिषलावा १। अवरनवरनकथे जिनिकोई घ
टि घटि व्यापि रह्यो हरि सोई २ जिहि पद सुरनर प्रेमा पि
आसा सोपद रमि रह्यो जन रैदासा ३। माधो संगति सर
नि तुम्हारी जगजीवन कान्ह मुरारी टे। तुम मषत
नमलाई वेनसुर मै वपरो जलकीरा पी कतडाल प
नमा जइसत लद गजनई माती तारा १ तुम्ह चंदन मे
अरंड बापुरो निकटि तुम्हारी आसा नीचा बिरष तें ऊंच
भये हैं तेरी बास सुबास निवासा २। जाति नीचा कुल
नमजीवाचा वोवाकारम हमारा हम सरनागति रामच
न्द्रकी कहै रैदास बिचारा ३ ॥ १९ ॥ माधो अबिद्या हितकी
न्ह ताते मैं तोरन्यां बिनली न्ह टे। मधमनन्हे गापतंग
कुंजर येकदोषबिनास पंच माधे असाधि इहितानि
कौन ताकी आसा। जलथल जीव जंतु जहां तहां करम
पास न जाइ मोहपासि अबधबाधो करीये कौन उपा
इ १ त्रिगुन जोनि अचेत भ्रमि भ्रमि पापपुनि नसोच
मानिषा औतार दुर्लभ तिहि संकट पोच २ रैदासदा
स उदास करम बूज नमतप गुर ग्यान भगवंत जन मै
हरन कहीये औ सेपरम निधांन ३ ॥ २० ॥ देहु कलाली ये
कपयाला औसा अवधू है मतिवाला टे। ये रे कलाली
तै क्या कीया। सिरकै साटै प्याला दीया १ कहै कलाली
प्याला देउं पीवन हारे का सिर लेउं २ चंद सुर दोउं सन
मुष होई पीवै प्याला मरै न कोई ३ सहज सुनि मैं भाठी स
रवै पीवै रैदास गुरमुषि दरवै ॥ २१ ॥ माई रे सहज बदे
लोई बिन सहज सिधि न होई। लोलीन मन जो जांनी
ये जबकीट भ्रंगी होई टे। आपा पर चीन्हे नहीं रे और

मेकोग्रहदावै॥

॥ कसवैबिकटमायातोरता सुबीमकसणाकृतालध्रादि

यहूयादिक्लुघदारनांग्रसेष्मादिक हिनासनताये॥

रमृभिरमाया ८॥ बालक बृधतरुन अतिसुंदरीनां नानेषबनावे जोगीजतीतपीसन्यासी पिंडतरैहननया वो बाजीगरका बाजी कारनि सबकाको तिग आवे टुटी

दयेतोनूं लिरहे वाका वेला मरमजुपावे २ पंडबूहमड लोकसबजीते इह बिधितेजजनावे सिनूको चितचो रिलीयोहे वाकेमी खेला गाथावे ३ इनबातनिसुकचि नमरीयतदे मनको कहेनम्हारी नेकिअटकि किनारो पोकसो मेटो बिपातिहमारी ४ कहेरैदासउदासभयो मन भाजिकहां अबजइये इतवतहमगोबिंदगुसांई तुमहीमाहिसमईये॥ ५ ॥ रामदिपूजाकहांचढाऊं फलअरुफूलअनूपनपाऊं टे॥ थनहरदूधजुबछ रुजुबिटारयो पहोपभवरजलमीनबिगारयो १ मलि यागरबेधीयोभवंगा बिषअम्रतदोउयेकैसंगा २ मनहीपूजा मनहीधूपा मनहीसेऊं सहजसरूप ३ पूजाअ रचा नजानोतेरी कहेरैदासकैनगतिमेरी ४ ॥ २ ॥ तुम रवीनारबिंदनवरमनी पानकरतपायोपायोरामधन टे॥ मे संपति बिपतिपटलमायाधन तामेमगनहोइकेसे तेरोजनर २ कहाभयोजेगततनाछिनछिन प्रेमजाइ तोडरे तेरोनिजजन २ प्रेमरजालेरापूरिदेधरिकहेरैदास छूटिबोकवनपरिहि॥ ३ ॥ बंदेजानिसाहिबगनीसमझि बेदकतेबबोलेकाबमेक्यामी टे॥ ज्योनीडुनीनमान म

कहांकौनपतिझरैव।
।११।
[ग]। अैसीमेरीजातिविष्यातच
के३।सुरसतीजल
जैसैसंतजनकरतनहीपान
सुरसुरीमिलत
।तलकराअयक्तिकरिमोनायेजैसे
।बिचारांभगतभगवंतजनकपरेलै
तबपूजासेकरिनमस्कारंसुछानेकअधमजीवमोव
नयेपरासिसारंअगंतरैदास
हजपरधौ॥१। मा
हिहोई ध्यैप
।व । पा
मकमुरारी।ताभैआपरमैबनवारीरासुरन
कहैरैदासमिलेमुभसांईश॥रव
हैरेभ्यांनविचारिचरनचितलावैहरी
ध्यो पातीतोडैपूजिस्यावै।तारणति
रणकहैरेसुर। तेमाक्षिवसैयरमेस्वरतोयांणीमाहिति
रे।१। निबधिसंसारकरनाविधितिरिबो।जेदिढिनांव
गहैरेनावबाडिजेडूंडेबैसे।तोडूणांडुपसहैरे२गुरको
सबसुरसुरतिकुदालीषोदतकोईलहैरेरामकाकृवे
नबाटैआयो।सोनैकुलवहैरे।फटढीमोयानगडरका
थ।तोतनितापदहैरे३कहैरैदासरामजापिरसनांमायाक
कैसंगिनरहैरे४।२।येहअंदेससोचजीश्मेरे।निसब
सुरगुनगाऊरांमतेरे टे।तुमचिंततमेरीचिंताहोनजा
ई।तुमचिंतामनिहोएकनांई।१।भगतिहेतकाका
हीकीनां।हमारीबेरभयेबलहीनां।२कहैरैदासदास
अपराधी।जिहिंतुमदरवौसोमैभगतिनसाधी३।३।राम
राइकाकहीयेइअसैसी।जानकीजानतहोजैसीतैसी
टे।मीनपकरिकाटोअरुफटौ।बांटिकीयोवहुबा
नीषंडषंडकरिभोजनकीनो।तोऊनबिसरयौपानी।१तैह
मबांधेमोहपासिमैहमतूंप्रेमजेवरीयांबांध्यौ।अपने
छुटनकेजतनकरतहौ।हमछूटेतूंआराध्यौ।२ कहैरै
दासभगतियेकबाटी।अबकोकौडरडरीये।गाडरकोरमसुम

तराजनकुतदुखपायो सोगतिनईहमारी
मकुलेतधैतुमनांही हृदकम होदमैनारी॥
नकीयो लहरिमहोदध जलकेवलजलमांहि
सजयगरजनीपरकासा असकनमरमजनावासम
कनककआलिकृनत्व अववणुक हत्नच्चा
करताये कमाइजगम्भगता सबघटिसबबुधिसोइ
सनगतियेकउपजी सहजौंहोइसहोई॥४॥ ३ज
सेनाबिलाई तोतैंदुतीनादरसाई ॥टे॥ कंन
कुटकसततपटजुदारां जनुयंगनमजोसानालतस गज
प्रतिमांजू अमजीवजुतिऐसा१ बिमलयेक
सजपजेनाबिनसे उदेआसतदोऊनांहि बिगताबिग
बऊबसतबसैसबमांहि२ निफलनि
रागअनूपम निरनैगतिगोब्यंदा अगमअगोचर
अंतरकनिरगुन अतिआनंदा२ सदाअतीतग्यांनघन
बितनिरबिकार आबिनासी कहैरैदाससहजसुनि सति
मुकतिनिधिकासी॥४॥ २१ मनमेरेसतिसरूपाबि
द अंतिअनंतपरमपद संसारकुलानिवारि ॥टे॥
मरा कहा मेलसहारिनांही हैअसजसकनूतैसा जा
नोनिरखोसब मरमकहा निजकैसा१ कहत
आनरसमिलेनबेगा होई बाहरिभीतर
प्रगटगुपत घटिघटिप्रतिआनकोई२ आदितये
तिपुनिसोई माधिउपाधिजुकैसे हैयेकपैन्रमहू
आलेकतजैसें२ कहैरैदासप्रकासपरम
काजपतैंबिधिप्रजा येकअनेकअनेकयेकहरिकहौं प
कौनबिधिहरजा॥४॥ १२ थोथाजिनिपछोडरेकोईजोई
रेपछोडरेजामैनिजकणहोई ॥टे॥ थोथीकायाथोथीम
ना थोथाहरिबिनजनमगमासा१ थोथापिंडतथोथी
बांणी थोथीहरिबिनसबैकहाणी२ थोथामंदीरभोग
बिलासा थोथीआनदेवकीआसा३ साचासुमिरणना
वबिसवासा मनबचकरमकहैरैदासा॥४॥ २४ ॥ पपा॥रा॥
पा॥रा॥ भैरूं॥ ऐसाध्यानधरौबनवारी मनपवनदृढसु
षमनिनारी ॥टे॥ सोजपजपूंजुबहोरिनजपनां सोतप
जुबहोरिनतपनां सोगुरकरूंजुबहोरिनकरनां ऐसै
१ मरनां१ उलटीगंगनगमनमेंल्याऊं
बिनहृंफालसंजमकैआऊं लोचनभरिभरिबिंबनिहारूं

रि दोस कवन परिधरिहो कहै रैदास प्रभु तुम दयाल हो अ
बंध मुकति का करिहो ॥२॥६५॥ राग ॥ ८ ॥ राग गौंड ॥
अजका धौं सकात नुवालिहारा मेरै यहु आयात जा रांम
जीसा पाता ॥ टेक ॥ जोगण बगड अवन नयो यो वन हरि
नम वैकही जिस गावन ॥१॥ कार कडंडौ [illegible] चरन पखालूं
नन मन धन [illegible] अपरिवारं ॥२॥ कंथा करै [illegible]
नारे आपा तैसें जोनकूं तारैं ॥३॥ कहै रैदास मिलै निगदा
सा गन मन अनमकूं काटे पास ॥४॥ ऐसें जानि जपौरे जी
वा जानि [illegible] ॥ टेक ॥ गनिका थी किस कर
मां जोग [illegible] ॥१॥ निसप्रेह अजामील सुरक
रम [illegible] ॥२॥ नामदेव कहीयैं जा
ति के [illegible] ॥३॥ तिन लोक नी भगति है
[illegible] मिलै [illegible] कोटि जिग जे
कोई करै राम नाम सम [illegible] तरैं निरगुन का गु
न देषो [illegible] ॥४॥ मेरी कुचील जा
ति कुचील [illegible] हरि चरन निवास ॥५॥
[illegible] कहै रैदास [illegible] ॥८॥१॥६६॥ राग
॥ राग सारंग ॥ जो ग्रंथ बेद [illegible] जे इन मैं औरं अग
[illegible] ॥ टेक ॥ भोजन व्याधि [illegible]
[illegible] जे पढैं गुनैं [illegible]
[illegible] चवि बिंब निकंता
[illegible] कहै रैदास बबेक तंत
बिन सब मिलि [illegible] ॥२॥२॥ राग [illegible] ॥ माया
मोहि [illegible] ॥ टेक ॥ संसार परपंच मैं व्या
कुल परमानंदा ॥१॥ [illegible] नाथ गोबंदा ॥ रैदा
स बिनवै कर जोरी अबगति नाथ कवन गति मोरी ॥२॥
[illegible] गुर की साटि ग्यान का
[illegible] ॥ टेक ॥ प्रेम का प
[illegible]
[illegible]
[illegible] कागद [illegible] बिन रस
[illegible] कहै रैदास [illegible]
[illegible] ॥२॥३॥ राग केदारो ॥ कहि मन राम
नाम संभारि माया कै भ्रमि कहा भूल्यौ जांहिगौ कर झारि

। सानिआणूं हरि बिन जीवन रहै वै
टे॥ जीवत रसे इक दर्गी वा तेरा, कोई करीम
नावै नीद
न नावै १। सषी सहेली गारचा हेली पीव
सहेली मेरड दुहागनि अधिक जानी गय
मधन मानी २। तंदा नां सांई सा दिखावो मेरा, बिन
पाखंद मैं तेरा। कहै रैदास अदेसाये ही, बिन दरस
जीवै हो सनेही ३॥ २॥ तातै पतित नही कोयावन
धावैरो हम अपूजि पूजिनये हरि तें नांव अनि
गावै टे॥ अष्टादस व्याकरन बषांनै तीन का
मन गति अंतर गति नांही तातैं धान क
रो १। तातैं भलो त्यांन को सत्तु हरि चरनां चित लावै
मूवां मुकति बैकूंट वासो जीवत इहां जस पावै २। ह
म अपराधी नीच घरि जनम कुटंब लोग करै हासी रे कहै
रैदास राम जप रसना, कटै जनम की पासी रे ३॥ ४॥ गो
बिंद तम्हारे चरनार बिंद स्यौ समाधि लागी। अनियं गन
सम अंग संतत बैरागी टे॥ जाकै तीन दैन अम्रत बैन
सजटाधारी कोटि कलप धांन अलप मदन अनंत ल
री १। ना कै लील चहन अकल बूल्ल ग्लै रुंड माल। अ
मगनाफि तन गन, संगि सगा बाला २। ऐसे महेस बि
कटा से अजन क दरस आसा। कै सें राम मिलूं तो हि भावे
रैदास २॥ ५॥ सो कह जांनै राम पीर पराई, जा की दिल मैं
दरद न आई टे॥ दु षी दुहागनि दोइ पष हीनी, नेह निर
नि करि सेवन कीनी, स्याम प्रेम का पंथ दुहेला, चलन अ
केला तहां कोई संग न हेला १। सुष की सार सुहागनि जा
नै तन मन देइ अंतर नही आनै। आन सुनाइ और नही भा
वै राम रसांइन रसनां चाषै २। षालिक तो दरबंद गाय
बहूत उमेद ज्वाब न पाया। कहै रैदास कवन गति मेरी
सेवा बंदगी न जानूं तेरी ३॥ ६॥ ४४॥ राग॥ ७॥ राग
सोडी॥ पावन जस माधौ तेरा, तुम दारन अघमोचन मेरा
कीरति तेरी पाप बिनासै लोक बेद यूं गावै। जो हम पाप
न करता तौ तूं कहा न सावै १। जब लग अंग पंक न
तौ जल कहा पषालै मन मलीन विषिया रस लं
तौ हरि नांव संभालै २। जो हम विमल हिरदै चित अंत

दिनआवैदीनदालाबारकौंनउपाइ॥२॥चपलचेतैान
हीनहोतउपदेसयैाकामवसिमोहीयाकामपधास
कोतिसनबंधकीयो[illegible]पदहरिलीयौ॥हिरदैविसरू
पतजिनयो[illegible]॥परमपरकाससाविनासअघमोच
नां[illegible]सिसांमयायावंदतदासवैरा
यकविनतानाखौजगदीसगोअंदराया॥५॥मेराघाति
[illegible]सांजिनिघटैहो मेमोलिमहोतईतनमटै
[illegible]हिरदैसुपिरवदंतेनैनआलोकनां॥भवनाहीकि
[illegible]सिपुमनमधकारवदतोचरनांचितधरूरामसम
[illegible]रसनांबाख्या॥साधसंगतिबिनांभावनहीउपजै॥
[illegible]तैरीबंदतदासरघनाथस
[illegible]पाकरौमेरी॥३॥२॥कौनअ
[illegible]घरिदेषोमेश्रवनाअनां
[illegible]तावेकधोऊआकेश
[illegible]जोडमूलकाटैप
[illegible]बंदैदासपरसोजबले
[illegible]दषो॥३॥३॥मेकाजानूं
[illegible]विकानो॥ टा॥ चपल
[illegible]थिरनरहाबोलमनो
[illegible]इतकालिजुगकेकांमी
[illegible]लीकमोपैतजीनजा
[illegible]दिनदिनहरगीरूचत
[illegible]निपानीसुषनादबा
[illegible]मोपातेत्यांमासेससहे
[illegible]जातेदुषकोतसौ
[illegible]नवकैविधिकरिमे
[illegible]॥हरिपदविमुष
[illegible]नलटैवहोविधि
[illegible]कौनलगाऊं॥के
[illegible]तिविचैत्याहचितदी
[illegible]विनजगनाथवकृत
[illegible]यावन्मूति
[illegible]नामरो[illegible]पटमनमें
[illegible]विषमविपाथविहडनका
[illegible]मोहारी॥२॥देवदेवदरवारकुवारे
रांमरांमरेदासपुकारे॥५॥ दरसणदेहोरामदरसनदेहो

आनगायैकहिकौंनतेरा
बहोरिहिकलिकालमाहीजीतिन
धरारोम्रातिदिनप्रतिपार
सोजीवतेनबिसारि॥२॥स
कौतांडौलादैंनाइरेभिवारिजारेरांमको रांमन ॥धन
म पाईयो तातेसकलकर्मोहरेरे॥३॥ऋघट
रपनेधनारोनिरगुनबैलहमारे रांमनामधनलाद
यौतातेंबिपलादयौसंसाररे॥१॥अनतह्विरतीधन
सौअनतहिढूंढणजाहि अनतकैधसौनपाईये
तातैयाल्पोमूलगमाइ॥मैं भाभाईसाडकरिहै
सागमयौपाशहीरायौकूलनपारकारिकोडीवदले
नाहै साधसगतिपूंजीनहीवसतलई निरमोल
सहजबलदवालाहिकरि चकूदिसताकोमेलि ग्रजोग
रंगकसूवकातेसारकैस सायरगईयारांगमजीठका
तातेंरैदासविचारिये॥१॥प्रीतिसुधारणआवते
जसरूपी सकलसिरोमनि अकलनिरंजनराव ठौ
प्रवसभीप्रेमकबअनदीपायो करनी कौनबिसारी च
ककौध्यानदधसुतसरहूतकैयूलमतेमेनपारी॥१॥मोर
गयाभोदिरकटगनोवतानलकनारजनीजाइपीवबि
नसेकहीकहूंसुपसोजो बिरहबिथातनपरि२॥सेढि
हामसुहागनिकीजै अपनैअंगिलगाइ करैरैदासस्वं
तुम्हारे बिछोहे यकपलकलुगजाइ॥३॥१५॥
॥२॥राग जेतश्री॥सबवासूकरतनकहौंकुकैसैं
गुनबिधिवहोतरहतसाहिजैसें यादरयनगगनअन
लमलेयजसगंधजलधम्रतिवबदेवितस२॥मक
रम्रकोमअनेहाबिधिनयधकीयोअनकेहो२
सकहतसुनतनहीआधोकहैरैदासकतकोपावै
॥३॥राग धनाश्री॥तूकप्देवकलापतासरनिआयो
जनमसंदेहभ्रमछेदिमायाहेहनातिरसंसार
पारमोसागरा॥भैजामरणमरणसंदेहमारी॥
भ्रमक्रोधभ्रमलोभ्रममोहभ्रम अनतभ्रमछेदि
रक्षिपारी॥१॥पंचसगीमिलिपीडीयोप्राणीयो
सकुंबैरागनणा॥सुबरगडकलाबेधतेनरजना
संदेसा॥सिरिकालललागा२॥लगातिचिंततोमा
आपैमोहचिंततोमेरीलगातिजाई॥जनैसंदेहमो

रांमबिलमन्कीगे टे॥ दासतोराजीबनिमोल
नक्यूंजावैहोयकोरा॥४॥माधौसतगुरसबजग
बिछुरेमैंनदुहेला॥२॥धनजोबनकोफूली
सतिसमतिनावैमनरैदास॥॥३॥जनकूंतारितारि
याबाबिनपदयस्योपंछमरैया टे॥नुमहो
मुनिहूं हैक कूनपायेजमपासिछुडईस्या
सेवनदयालनलमरो॥ सरनसरनिरैदासचमईया
॥७॥पद॥अथआरती॥ आरतीकहालेकरिजोवै
सेवकदासअचंभौहोवै॥टे॥बावननदीपपडूलावै जोति कां
गराइ छिनआवै॥१॥कोटिभांनेगाकीसोभारोमै
हा आरतीअगनिरहोमै॥२॥पांचततत्रिगुनीमाया जो
सेसा सकलउपावा॥ कहैरैदासमैदेखामांही सक
रामसमिनांही॥३॥६॥संतउतारैआरतीदेवस
माथि. हरिचिंतनरतिहाबैसि मनासनामणीये टे
मनसामंदरमांहिधूपधुपाईयेप्रेमप्रीतिकीमाल
रामचढाईयै॥१॥चहुंदिसदिपलाबालिजगमगदेरदौ
जोतिजोतिसामिजोतिजोतिहिमिलिरहोये॥२॥तन
मनआतमबारितहांहरिगाईये॥॥मनतजनरैदासतु
मसरनाईयेये॥३॥२॥नांमतुम्हारोआरतीमंजनमुरारे
हरिकेनांवबिनझूठेसकलपसारे टे॥नांमतेरोआस
न नांमतेरोउरसा नांमतेरोकेसरिलेछिरकारे॥नांमते
रोअंभिला नांवतेरोचंदनघसिजपे नांमलेनुफकूंचारे
॥२॥नांवतेरोदीबा नांवतेरोबाती नांवतेरोतेललेमांहिपसा
रे नांवतेरेकीजोतिजगाईभयोउजियारोभवनसगरारे
॥२॥नांमतेरोधागा नांमफूलमाला॥ नांवअगाहसकलज
गबारोतेरोकीयोतुमैकाअरपूं॥नांमतेरोतुमैचवरढुलेरे
॥३॥ दसअस्टादसअठसठिचारेषांणी॥इहैबरतनहे सकलसं
सार कहैरैदासनांमतेरोआरती॥संतभातिहरिभोगल
गावै॥४॥२०॥८४॥राग॥१४॥इतीश्रीरैदासजीकीबांणी संपूर्ण॥ चिंताव
॥अथपीपाजीकीबांणीलिषयते॥ चितावन
णीजोगग्रंथ॥सोरठा॥इहउपदेसमुनोमनमितब
मनिकरिलैचिंत जाकैगुसैंहैजमराइ ताकूंतीय
सैंत्रास॥मारगकलणाहैतोहिअथकयूंनचेतनहोइ
पयानाइ॥रहैनेरा सघनबनबहोतउरकेरा॥१॥गामैबसै॥

फ

आदेहगेतेऊथिरनांहि॥

रसीपांनीपवनअकासनरहसी॥
तीनगुणबिसतार मायाआछिविकार मनरहीपुरा
मोहअकाल॥ऐसैजनमराइजाविकैजाल रहसीआपहेव
भतिनायमेकायेकीसंपनसाथ॥२५॥घरीपुनिवाहोतोत
रहीनिसदिनमोहीसाहूवेरयेकोसबहकांनिकाइघ
रघरतेतीआवघराइ॥२६॥मरनवेदहेंदोजमाधिपूरबेन
इपछिमदाबिनिसृहिनरघरैअभूतजातसोगतिआपन
मुविबात॥२७॥नरयदुधिकिरतीआहिकोमाअविसा
नाहिमोगतिआपणीनहिजाणितरवरसोचितैसातिमा
निरामिलतामानीनहीथिरहोइसरवकुनदयोजाइथ
जायेतोसबजाइसोगतिदेषितनिरताइ॥२८॥योसब
जातिअनुरीभीरजासीदेषतांनहीथीरऐसीधनजोब
नसबआथिकहोथूंबलादिसकैसाथि॥२९॥सुरगेमंच
रथाकताइजंवकतीनकहीसमकाइहहिविधिजोम
नीतेआगघरीतीसइसोसाथि॥३०॥लापुरोलिशहिहि
धिनाइअधकमरयेसोपाइयपसूयाथिकलोपुकारिम
नथाननमजानननहाइ॥३१॥खालेसामयायेसतमसतहू
जदेहलादेत॥॥कैहिकयोसुणितोहि अपंपुन
चेतनहोइ॥चलतातातमातनहीभ्रातजोरोदेपताले॥३२॥
जातदेषेकुलकुटंबपरिवारसघधनहीबुडावन
हारू॥३३॥दोसतयारइनअरिमीताचहूतनयेसकलने
जीताऐसोकोनहीबालिवुसजमतेजीवराषेजात॥३४॥
ऐसोकोनहीकालिमाहिरायेचलतणहिवाहसाथ
केसगेसबकोइसकरनिवूटिनहिआवेको॥३५॥वहै
बिधिकहीमैसमकाइयोसाजाणिहरिहितलाइसुणि
सोबातनकीयेकोवात पीपेसजिरैतिनवननाथ॥३६॥
इतीचिंतावणीसंपूर्ण॥अं॥२॥अथसाषी॥पीमायर
चैयवनके छितामिलैगाआइसबहीपरचानाजिसी॥
नवपवनकीयातैजाइ॥१॥पीपादासकहांवनकठिनहै
मनहीमानैमांनिसतगुरसंगयौनहीकालिजुगाला॥

टे॥ कायादेवलकाखादेल

कायामैहैकैकलापती
जोब्रह्मंडेसोईपिंडे जोयेजोसोपावै पीप
॥८ सेकडाबला
टे॥ नादबिंदसै

तांहीतैंअगमअगोचरलहीसे२
धनधिदेवनैरहता। त्रिगुनअतीतनिरंतररमता२ जन
पीयसतगुरबलिहारी। ताकेसबदइमिलासुरारीध२ क
मेरभयातेरामना। जेसैंतरवरियंविवसेरामना टे। दिन
होतापहरनहोता होतादिवसनराती। जनानहोतासुइ
नहोता करताकेनिमराती२। मातनहोतीबापनहोत
होताकरमनकाया। मेनहीहोतातुमेनहीहोता क
हौकहांतैंआया२ बरननहोताविचारनहोता मोहनहै
तीमाया। राजसतातमसतामसनहोता। सबगतिआपउ
पाया२ सेकरनूचरसीणीमुद्रा गुरपरसादैंपाया। पीपाप्रण
वैपरमततरेसबजगधंधैलाया२॥२ माधवेनटैबिधामा
ही सबजगनेलमायाबांधी टे॥ नांकोईपुरषनहीको
ईनारी। नांकोईदातानांकोभिष्यारी२ नांकोराकनहीदे
ईराणांभेनघुदीरघफतकफिजानां२ भगवंतपीयासब
जगदेष्या बाजीमारघटनीतरियेष्या॥३॥५॥७॥२३॥रा
गगोडी॥ सकरमेरोमनअनंतनजाइ नहारायिनहांतेरे
पार टे॥ अकलनिरंजननिरमलहरी नहारांफिहांमैं
सैपुरी१ सअंकूनिरंतरसबघटिस्वांमी अंतिकालिह रे
सिअंतरजामी२ पीपाप्रणवैपरमनिधांन जगतिचिंताम
णिधोहरिदोन॥४॥१ तोजीजैजोगोमदचरला नहीतज
नमबविग्यामरणां टे॥ जादिनजारीनगोविंदनांमां
तादिनआनपतनकरिरांमा१ आपाउधारिलेइअमत
नाका राम्नांभजापरमप्रणवैपायाध२ जगतितेरांजीव
नमेरीयेकलेआनदहोइमेकादेवाटे। देहकाडुरमाल

।हमसेपतितकहा
नोबानीदेविसुनि।
प्रकनोबहोमारगज्ञानसुंतेप।निगुनरहतनगतिन
नवंत।बिरलाजनकोईपावैदयाहोइजौनकृपानाथकी
नामकबीरागावैप।हरिहरिनगतिनगतिवनलीनो।
विवधिहतछिति।मोहेपाषंडरूपभेषसबककरगप
नतपतसोहे७।प्रगतिप्रतापराषिवेकारनि।निजजन
नआपपगयो।नामकबीरसाचपरकास्यो।तहांपीपै
कूपायो।।८।।५।।२५।।२।।।।४।।२।।२।।२८।।देवानटव
गतिनाकिवेडुनीयांमैकेतेआपातिनवालगवालमी
रमलकहोतेटेएजाकेबाइआगानीतेजापवनचलतेद
लमारीलंकापतिहारिगयोरावणअहंकारी१नमत
गतिबोटदीन्हीपलसोज्योमायानरम्हडीवाइडेकं
बनीगरबह्यो२लपापोहणपीजिगयेकेतयाइल
त्तिवसुधाकिनेनजीतीपीपादोऊगरबकरते।।३।।२
२६।।२।।।।५।।रागधनाश्री।।देवनरमतनरमततैसरनै
आया।सरनाइछिजेपिनरराषिलैरमईयाराइ।टेलोह
कोसकुंतपाइतूटेहोघरचैघाइ।मोहकोसंकलके
सैटेहोरमईयाराइ१।देषीविधादेषोदानदेषीकाय।
होत्मतनसाधसगतिविनेनहीनमानेमन२।देष्यो पुनि मेरे
देष्यो।पापसकलजगदेष्योसंतापप्रनवंतपीपानरह
रिवथालिलैआपेआप३।।१।।बाकोड़िबासिरेयांकुणा
पूछिहमारीसारकैम्हारैम्देरिविसोकैलेबानेलार
थी।जेतेआयोपांकुपो।म्हाअधिकंसगरचानिठरनि
लूकेरह्योकर्कनदेष्योजात१।आस्पांअराधि।रिजाव
स्पारहस्पांघरिघरिवारिचीरीकोचाकरकूरहै।याई
नडीनिवारि२।सतराविधिनेभनकीयो।अमृतकीया
अहारतउनधिराजपांकेनोअंतकालबीवारस।मन
पीपाकीवीनतीजेजनसदासुचेतबकुंठिनजगमेआ
वसीज्याहारिसंलायोहेत४।।२।।नैमनुमोसबहोत
कारीनरदेहीसुमरणकूंदीन्हीमोपापीतेकवनसद
यो।गरभवासदसमासअरधमुखतांह्यांनमेरीसुधि
विसरीपावकजरतराषिहरिलीन्हो।जहांअैसीकंप

बीन्हंतेतेभूलभपानी रांमरब्यामणंतेउधरेश्रांनीला
६५२ गीया विचारपारंगंताप्रंथेघोरराजदवारेसंग्रांमेसं
नाटेसंध्याकालेप्रातकालेमध्यांने श्रीरांमरक्षाउ
चरंतेउधरंश्रांनी पुनेनहारंतेगेजपतेजानारदनमो
गमुकतिफलपांवंते। इतिश्रीम[illegible]ताबा
मानंद[illegible]तो। रांमरक्षा[illegible]तो[illegible]
नो[illegible]तपावतेयश्री[illegible]
नीश्रीमदा[illegible]था। अथरांमानंदजीकी
[illegible] कहांजाइयेहोघरिलागोरंगमेरोचितनच
[illegible]नयो [illegible]गटे। जाहांजाइयेतहांजलपषा
न [illegible]हरिसबनमांन बेदसुमृतसबदेषेजो
[illegible]जाइयेहरियहांनहारे येकदिनामनम
[illegible]भई [illegible]चंदनचराचि [illegible]गीपूजनचालेवाइघ
[illegible] गुरबतायोश्रापमांहि सतगुरमैबलिहा
रीतोहि[illegible]सकलबिलभ्रमजारेमोहि [illegible]नरां
मानंद[illegible]रमताब्रह्म गुरकोसबदकाटेकोटि
[illegible]नहरीदासह
रि[illegible]दासक[illegible]सीतलपाश्रयांमतजीसबस्वाम
[illegible]धंदपरमाध्यायाध्यांनधरेधरिमिल्पाना
[illegible]नाथदीमाया [illegible]दासकृपालषेमसु
नि[illegible]मायांमोहनश्रोसुरारिदासजगजीव
नासिधंबरश्रानंदासजगनाथ [illegible]मणचर
धाटवालि[illegible]नहीअधिकारीनिजधांमकूयेहा
दसमहंतानेरजनी[illegible]सदाहरिरामकोरश्रनंत
कोटिनि[illegible]तामाहियेककरोडि। इकलषदी
[illegible]री।।।समरश्रयेकसहस्रसोयदवेश्राधिका
रीपचासयेकश्रगटायचीसपरमउग्रागरा बादस
[illegible]प्रधान भटरसउनके श्रागरा चवनामगो
[illegible]दोइ[illegible]तामाथियेककवी
[illegible]तापदरजषीमैसराहि [illegible] हरिगुरसाधसमानचै
[illegible]बिनश्रागमततमूल[illegible]चितरजीनिपरो
करषुनमदनक्यूलराकामधेनपारसपषलि
[illegible]रश्रकीबारि[illegible]हरिकीगतिबिन
यहतैनलीउजारि॥२॥ [illegible] २२२२२२२२

सरीरसंसरीरामिलिसरीरनिरषतरहै
जीवसंसीवमिलिज्यसजाप्पा॥नैनसंनैनमिलिनैन
निरषतरहै॥मुषसंमुषमिलिबोलबोल्या॥श्रवनसंश्र
वनमिलिनादसीजतरहै॥सबदसंसबदमिलिसबद
बोल्या॥निरतिसंनिरतिमिलिनिरतिलागीरहै॥सुरति
संसुरतिमिलिसुरतिआडै॥ध्यानसंध्यानधरिदसलकता
रहै॥रंगसंरंगमिलिरंगगावो॥ग्यानसंग्यानमिलिग्यानसं
ग्यानमिजापअजपाजपो॥सोईदमलाइलैलै॥चितसं
चितमिलिचितचेतनभया॥उनमनीदिष्टिमेयाबदेषै
दारसंदारमिलिसीससंसीजामिलिदेहवदेहमिलि
रहेया॥तिहंलोकमेघोरअंधारसवमिटिगया॥संत
हैदिमारीहारवेस्या॥घरनैनचरवेन॥देदा
संसराबीयाथीरथीरहरावतहयकारमचतारहै
सोचीयापकड़िबावनबीरगगउलटीचलैगी
याछिमसिले॥निकसीबिबप्रकासकीया॥आत्मा
दिवीदारदेषतरहै॥संजराअमरहै॥आपजोयाकु
पुरणीसरणकरणीनाडुरीनादनादसषमनोकाहू
स्वादस्वादबाचरभूचरीषेचरीअगोचरीअनमी
पांचमुद्रासाधततीसीधजोगीडाडरड्डूगरेजले
लेघाटेऔघटेतसमईआरंभआकरेबाघबाघ
काकरूंकाला॥चौसठिजोगनीकाटिकुटकरूं
चरांभूचरांषेचपाला॥नवग्रहतपषिंडटारू डूहा
फिरतारहैअलषनिरंजनाररंकारकीचकफिरैबा
बादयपथमेघोरमैसारमेदेसवदेसमेराजकैराज
सांकडेयेसतातसमईआरंभआकरेजागता
वतांपैलतामाल्हता॥ततकेसीसपरिहसनापि
बोकरेचक्रलीया॥आपरअआकरेगुपतकाजापले
पतसेवे॥चंदसरसूरयेकघररहिबोकरैजीताया
मदेवाधिदेव॥फेरिसधाकीयाउलटिअमृतपी
या॥विषकाजहरसवदूरिलागा॥कंवलदलकंवलद
लजोतिज्वालाजगी॥नवरगजारतंआकासलागार
मंतसारसोधतरुद्रबिंदरो॥मनाडीगरजंतगगनबा
जंतबेनीसंषसबदधुनित्रिकुटीदासरामानंदब्रह्म

कौनहि॥ [illegible] जोग [illegible]॥ गुरगमिपानम
[illegible] हमारे [illegible] तुरसी [illegible] जोग बेरा
[illegible] नांनां रतन [illegible]
[illegible] तुरसी [illegible]
[illegible] आय॥ ताकु के सानागुरू
[illegible] तुरसी गुर तेगति गुरते
[illegible] आंन॥ बिन गुर कछु न पा
[illegible] बिद्या तीन्यूं लो
[illegible] कोय॥ तुरसी तन गुर कृपा बिन
[illegible]॥ ६॥ ८॥ १॥ श्री गुर [illegible]
[illegible] तामहा मोक्ष का॥ गुर म
[illegible] कोनही [illegible] जगत मे
[illegible] तुरसी गुर [illegible] सब धरम का उपदेस न
[illegible] महा जव जल पारा [illegible]
[illegible] नही माही मोइ॥ गुर की म
[illegible] कोइ॥ गुर सम
[illegible] तुरसी तापट तरव
[illegible] तुरसी सप नदी पन
[illegible] गुर समान गुर ही [illegible]
[illegible] रांम॥ [illegible]
बि [illegible] निरंजन निरंका
[illegible] आंनदी कंड
[illegible] अधम अना
[illegible] तुरसी अधम नि
बि [illegible] कौन ता को नह
गुर सम [illegible]॥ ८॥ १६॥ [illegible]
[illegible] तुरसी ता गुर की बलि
[illegible] नसमसतन मन पा
[illegible] करि लीया॥ सा
तुरसी [illegible] सीव
[illegible] यह अैसी की वा से
[illegible] तुरसी अपना
[illegible] तुरसी [illegible] मजा
केउ [illegible] जांनि कृपा करी

॥ गुसांई श्री तुरसीदासजी कै॥

॥ अथ ब्रह्मसंध्यान ॥ प्रथम सतगुरनाम नि॥ ॐ प्रमजोति प्रकास थिरं परब्रह्म स्वपरापरं॥ परानंद प्रमादिपुरु
षः परमात्मा प्रभमेस्वरं परमतत्वं परमतेजं परम
सांतसरूपकं परमपरसमानं सरब सिधि अज्जरे
अमरं अनूपकं॥१॥ परम निरगुण निराकारं नि
रधारो निराश्रयं निरविकारं निराधारं॥ निरवि
घ्नो निरामयं॥२॥ परम अचित अधित अकल अ
मल अगह अगोचरं॥ परम अग्राह्य अनंत अक्षर
अचिंत चितचरं॥३॥ अदेहो अभेदो अमरं॥ चित
अचल अभितं अंतःकरणं दृष्टो अदृष्टो अछेद्यो
अधर अतिपत अविहरं॥४॥ अजीतो अजीतो अनादि
अबीह अरंजनं॥५॥ सो निरायं लतुयाते मंत्रास
मयो न इंद्रीयं॥ मात्रा मन अंतःकरण॥ चित्त लिंगसदं
भवैभ्र मसथूलयं॥६॥ शालहू पैन तकनोऊ॥ अधि
अतिम थिति कसं॥ अन जूल अच्छेद अछिन॥ अत
पक्ष अनेग सं॥७॥ विशेषविद्य ऋषबं ग गहि गहि॥
सुष सिंध संपूरण॥ ज्ञानी भी आवै न नाथ॥ अनम
र्थर मूलनं॥८॥ काल दंडन करम खंडन॥ महि मंड
नमन मलहरं॥ निरवंजनं निरवण्ण भूरण पुनः॥ अंग
मनसा गोचरं॥९॥ परमपावन पापहरनं॥ सरसक
पिज सारनं॥ परम सुषकंल्याण कारी॥ जनम मृतु
निवारनं॥१०॥ सो थिर पद अरपन अनेसा॥ अनंत जै तु
मनं जनं॥ नमो नमो गुरु संत स्वामी॥ तुरसी पदरज
बंदनं॥११॥ श्री गुरदेव की परिक्रमा बंदन लिष्य
ते॥ नमो नमो निज्ञानेदमयं॥ निरानंद निज देवं॥
निराकार निराधार प्रभु॥ अगम अगति अनत अनेव॥
गुरपदरज बंदन जु करि॥ करि संतन की
सेव॥ तुरसी असे सुमिरि के॥ जनम सफल करि
व॥१॥ नमो नमो निरंजनाय॥ निरगुनाय नमो नमः॥ नमो
नमो गुणनरूपाय॥ गुरुदेवाय नमो नमः॥२॥१॥ प्र
गुरकृपा लिष्यंते॥ तुरसी प्रथम गुरकृपा सौं॥ उ
तीयेसतिसंग मज्ञान॥ त्रितीय सूरब अरूर मिलि
तरै नयो यरु ग्यान॥ तुरसी ग्यान प्रजित दरि

निर्वाण॥ जिन पति तजी कृपा वन कीये। हम मेरे कहि तेत्र
ग्यान॥३॥ तुलसी पहली का चक थीरया। कूर प कूर ता
न को ३॥ जु पारस कू परसि कैं। अब कंचन भया सोइ
॥४॥ तुलसी सतगुर को सबद। परति पारस रूप। प्रि
न परसे हिरदा चित तदा। तेन हे पलटि अनूप॥५॥ कंचन
रूपी है सिषौ। लोह रूप पद मन॥ पारस रूपी गुर बच
न जो। लहरि अभै नजल॥६॥ पारस परस तपत कमैं। लोह
कंचन होइ॥ तुलसी तन कंचर रहै। तो अंति दोइ कर
सोय॥७॥ तुलसी लगे गुरस लिंगर न दोष मिटि जाइ
तुलसी जुग पारस परस नै। तो हो नांव न साउ॥७॥ ...
सी सें चांलें नेहलैं। पारस तन नैं जु पांन॥ तुलसी प्रसी रे
प्री सिष आपिक ले टें ली ह्वांन॥८॥ तुलसी रांम जु हाई
प लि क स्त्री॥ लदपि पारस गुर आहि। तो कू धात ही पल
टई पांह लभ लेट नाहि॥९॥ तुलसी किते सिष गुर कु
लि कू लै अपनी अपनी टोर॥ पारस श्रम लसु धात स
मिं॥ ते गुर सिष को ज्यौर॥१०॥ तुलसी गुर कूं दोस न
ही जाणि गुर निज पारस आंग। सिष सुध दोइ परसें नही
जाति लोभ तरंग॥११॥ तुलसी सुध रिद सिषके। आव सि
वदे जु सोइ॥ पारस सत गुर देव को। ग्यान गजार सोइ॥
१२॥ सत स्वरूप सतगुर। पारस। सा हरा सोय॥ पारस व
तआनो सोई। जो औसा है को इ॥१३॥ भाग बडे हम पाई
या। गुर पारस कूं संग॥ तुलसी ता कूं परसि कैं। आंण
मि लेह रिरंग॥१४॥ पारस कू ते परम गुर तुलसी अषिक
प्रवांन॥ पारस कंचन हि कनक करि गुर करै आप समा
न॥१५॥ पारस सत गुर देव की महमा बरनी सोइ आगे
क तितर सतगुर बरनौ सिष संजोइ॥१६॥ ५२॥
॥ गुर कूं तत सत रूप लिषान॥ तुलसी कलिं नर
सतगुर जिद सिष ही कि कषान॥ लदपि सरजि आवे
को कैं॥ तादी के जिहा लनि॥१॥ जा के पीति न बैरता सब
सूं सदा समांन॥ तुलसी कलिं नर सतगुर के। समको
से सह नांन॥२॥ पैयर सेंब्र ति लघो बदे औसे कपा निष
न अघट घाल न धन अरथि कैं॥ हेरे सकल तउप आंन
॥ उदर लिह नाह रिक रि॥ निज अपनौ सुष देय॥ तुल
सी मरना ग तलि सुर॥ निज अरथ लांक सिंत ह॥४॥ सतगुर

देषि सै आंसी
होइ आइ॥ तुरसी सतगुर दरस से॥ तीरथ सुमति ग
ता आय॥ सार सुमत उपदेसीया॥ सिष्या आतम ध्या
न॥ तुरसी सुपावन करि लीया॥ सतगुर क्रपा नि
धान॥ जा ताड़ करम नांकते॥ अरु अनुभी वै
तुरसी गुर मन सुष कीया॥ सु मिरण नाम सीव॥ ध
नि सतगुरू धनि संतजन॥ धनि ते सतसंग॥ नि
जि अपनां करि लीया॥ अरपि आप सैनां ७ ॥ हि
रदीया हर्षि करि सतगुर क्रपा [illegible] आव कोडी
तन नांचते॥ तुरसी तन मन प्रांण॥८॥ क्रपवनता ही
क्रपा करि॥ तन मन कीया सु पूत॥ तुरसी दिन दरसीय
नई सतगुर के उपगार॥९॥ तुरसी सतगुर के उपगा
र की कहां तौ बरनें सोइ॥ फिर दुक्ष छिन न तुमि नेपरे
सतगुर पारन होइ॥१०॥ तुरसी दिडा अनंत जुगि निकी
छिन में दी दिषाइ॥ धनि गुर जिन ऐसी करी मेटी दि या
मन बलाइ॥११॥ अंध कार में ग्यान का दीपग मेल्हा
जोइ॥ तुरसी गुर ऐसी जैसी गुर रहै होइ॥१२॥ कर सं करी
कर गहि क्रपा करि॥ दिह्या [illegible] निज नांव॥ क्रपा सि
धु कबीर की॥ तुरसी मैं बलि जांव॥१३॥ जब ते मोहि
दरसण भयो॥ मिटि गयो सकल कलेस॥ तुरसी पा
यो परम सुष॥ सतगुर के उपदेस॥१४॥ आ त्मा बोध
वेद करन॥ अरपन सुष आराम॥ ऐसी सम्रथ गु
र मिल्या॥ तुरसी पूरन काम॥१५॥ इ बिवृत नर मसि
सा हरन॥ समि वृत हरन दुसाप॥ तुरसी ऐसा गु
र मिल्या महा निरमल निह पाप॥१६॥ ग्यान सुसी
तल नीर सूं॥ छिरकि बुझावन काम॥ तुरसी ऐसा
गुर मिल्या अमृत आत्मां रांम॥१७॥ तुरसी ज्वाला
क्रोध की सहजै गई सिराय॥ तीन अगनि पांनी भ
ई मोह ढहगया पुलाइ॥ नष सष हरि आनंद भ
यो सो सुष कह्यो न जाइ॥ गुर की क्रपा परसाद से
अब ऐसी नहीं आइ॥१८॥१९॥४॥ गुर लछिना
नु पारसवत बिधांन॥ तुरसी पारसवत गुरू पर
स कफल देह॥ ताते कालिमा हि जु छिन परसमां लै
स करि लेह॥ तुरसी पारस वत गुरू है मनजीव

निरधारौ आधार [illegible] आधार गुर औरन आधार
न कोइ ॥ कैसे आधार मेरे साईया जिह हम सिर सेमोइ ॥४॥
तुरसी परम [illegible] गुरु [illegible] सब बन कृदेय ॥ प्रति [illegible] पग
[illegible] तैसे आनंद के अपा ॥ आनंद के दाता गुरु
सुष [illegible] सो जिह हन ॥ तुरसी पार ले घाइ दे ॥ बाह गहे
की लाज ॥५॥ ०५॥ २५॥ गुरु कृपा मृत निधान ॥ तुर
सी जन तुरत [illegible] ॥ समें दिपित गाइ इरि हीत लि
[illegible] ॥ तुरसी सू गुर सिषन कूं
[illegible] सो बेद निपाल नि करै आपनो
[illegible] ॥७॥ तुरसी आपनो जानि करि आपकै प्र
[illegible] हि गुर निज करि कै नि
[illegible] गुरदेव की सुदिष्टि रूं सोइ ॥
तुरसी [illegible] जी व कलुष ता षोइ ॥८॥ तुरसी-
सी [illegible] हि ब्रह्म होइ जाइ ॥ गुर की
[illegible] वे आइ ॥५॥ ८५॥ २९॥
[illegible] जी वचन [illegible] ॥ तुरसी ते जी सुतन हि ता
[illegible] तिन पोषै ॥ करि क
[illegible] ॥१०॥ तुरसी ऐसे सत गुरु ॥ कृत निकी ग
[illegible] ॥ करि करि सकनी प्रीति
॥११॥ तुरसी [illegible] गुरु ॥ मति तन पावै सोइ जाकी
[illegible] सिध होइ ॥ तुरसी सत
गुरु की [illegible] नहीं बतिवान ॥ पतितन
कूं पावन करै [illegible] ॥१२॥ ८४॥ १३॥ गु
रदीप ॥ वृत बिधान ॥ [illegible] प्रिय काटि दह निश्र
[illegible] वेदी व कारि रहै निम
सब षोइ ॥ तुरसीदास गुर सिष का ॥ ऐसे यह मत जोय ॥ के
[illegible] ते होइ ॥ तुरसी दीप
[illegible] ॥ कौ क आवो [illegible]
[illegible] केउ षसु पमें जद
[illegible] को का सरूप सुपदेता
[illegible] ॥ गुरदेव अपनो आ
[illegible] ॥ बिन सेवा बिन बंदगी बि
[illegible] ॥ तुरसी [illegible] गुर ऐसे आनंद
के दाता ॥ तुरसी अनेक जनम को अविद्या अंधकार

मरनिआगेदेम्पांनीपाञ्जैररावरंक

॥८॥गुरकांमधेनिवतविधांन॥तुरसी स
तगुरकोसबदसुरजुधेनिकुनमांन॥तेकानमनो
रथसिधिहैहिजोकोऊ भरेकांन॥१॥तुरसी सतगुर
कोसबदरयाहृधनितिदेहासुरजुधेनिलोसरधेल
रैनरिनंजनकिनलेह॥२॥गुरचितांमणिवतबि
धांन॥तुरसीचिंतामनरूमैंगुरचरनांउरधारतहो
मोयमनवंछतफलदेतहैं जेउरधारैकोइ॥१॥चिं
तांमनिमेगुरचरन मोईचितलैधारि॥चितवतही
चिताहरेमलहिमहाफलचाहि॥२॥चिंतांकोकब
रैहीउरधारतहीऐंन॥तुरसीअमलगुरकेचरनसी
तलसुषदसुचैन॥३॥सनसिधिसहजेपाइयेकोंन
तिरहैनकोय॥तुरसीचिंतवतगुरचरनपरमलाभ
यहहोइ॥४॥ इ४॥ ८॥गुरचंदनवतबिधांन॥तुरसी स
तगुरकासबदांचंदनजेहाजोयपुगंधैसीतलम
नैमरनेआगेसोध॥१॥चोपईमरनेआइसकलउमगयो
तोमरोमसुषआंनदजयो॥जिनकेमांकउपनोचंति
वेंलपरससतसीतलगुरकेबैंना॥२॥साषीतुरसीगुर
बैनासुणेअवधारतहीकांन॥पापतापसबहीमि
टैतेमननरहईआंन॥१॥चंदनसीतलघरसौंहीतिनी
तिनिबहंत॥तुरसीसतगुरबचनआदिमधिअरतंत
॥४॥तुरसीजाकेसत्रनही॥मित्रहूनहीनकोइसत्र
मित्रसबकेविषेरह्यासमांनजुहोइ५॥ऐसासीत
लसतगुरुचंदनरूपीजोइ॥लापदपरसतपापछेतो॥ता
रनरहईकोइ॥६॥७॥९॥गुरकुरकटवतबिधां
न॥तुरसीकुरकटवतगुरु॥प्रीतिसहीजुरुमाल॥
अपनोप्रीतिपषवावदे॥करैसिषनप्रतिपाल॥१॥तु
रसीपापसंतापसबहीहरैं॥करैअमलउपगारकुरक
रसुतनलोपोषहैलेनिरवाहेपार॥२॥ऐसासमरथ
सतगुरुग्यानध्यानदातारासूरवपुनिहमपाईया

हिजो गुरबचन गहे रहै गांठि कै जीव मांहि ॥ तुरसी
[illegible] कै गहै ॥ घट ही मांझ गुरबैन ॥ तौ मन तन गये होइ [illegible]
[illegible] श्रमो [illegible] श्रैन ॥ तुरसी पार समंद संसार
[illegible] पसमांन । [illegible] परस [illegible]
[illegible] राग र घनां सीत न संतोष
[illegible] गुर गमि त्रास श्रमान
॥ ६ ॥ १०५ ॥ १६ ॥ गुरबचन बांण बिधान ॥ तुरसी भि
[illegible] बचन बांण तन [illegible]
[illegible] तबी ते नांहि ॥ तुरसी निक
[illegible] के मारे सांधि मांधि गुर ग्यांन
[illegible] गुर बादे हांथि के सब
[illegible] तुरसी जाइ [illegible] तो रे न रम
[illegible] मोह की नींद मांझ अबीह
[illegible] चमकि कें उठे [illegible]
[illegible] सुनत करन गुरबैना ॥ तु
[illegible] ही कछु श्रैन ॥ ५ ॥ तुरसी दर
[illegible] श्रकास ॥ तवे बिंब
[illegible] सदा रहे तिहि पास ॥ ६ ॥ तुरसी रबि
[illegible] निकटि ऊँ श्रथवा
[illegible] ॥ गुर गुर गुर करि बो क
[illegible] नहीं कहा नये
[illegible] तुरसी गुर [illegible] त कं हिरदा के मां
हि [illegible] प्रीति बिसारे नांहि ॥ ८ ॥
गुर [illegible] तन करि रह रहै ते ॥ तु
रसी [illegible] ॥ १० ॥ [illegible]
[illegible] कै है तह रि तुरसी
[illegible] ॥ ११ ॥ ११६ ॥ १७ ॥ गु
रसंगी [illegible] बिधान ॥ तुरसी [illegible] पाईये श्रैसा
[illegible] टिसी ब ॥ याही तन
[illegible] जीव पलटि है
[illegible] कीट प
[illegible] तुरसी ध नि
[illegible] तुरसी [illegible]
[illegible] श्रपना साकी

तैलिपति

॥२॥ तुरसी जी बिनि जी कहि

॥२३॥ गुर चरन प्रति बिधान

...अथ

गुर चरन को

॥८॥ ध्यान ग्यान लाग रहे

सिख प्रत गुर को पेख्यो

के तांन लागा रहे तो ही सही कारण

जू चाहिं ग्यान प्रीति बू सिखसे

बिगु चरन होइ जगत लेजी लि धतुरसी तब तुम पाई

बोले के है मोरी ति मन साधा चा करयता स्है साची

प्रतीति तुरसी यह मा ची प्रीति गहि हित लिहचोन रि

धारे आपनो गुर गोबिंद न जो सिख हि मन वन सार॥

पांनी होवै पत लिहि बे तुरसी तीन्हं ताप सौं गरे मसुद ल

सहोइ जप तत जपत गुर जाप॥६॥ गुर बिबेक बरता प्रधा

ना॥ तुरसी रबि वनगुर की कहां लौ बरनों सोइ महमा

अभि अपार है बरनि सकै का कोइ॥२॥ तुरसी बिन से

वा बिन बंदगी अन ... आस जु त्याग लिरद आपनो ॥ ही

जांनि करि दाय म पावन जगाइ॥२॥ तुरसी धनि वह सतगु

रु निसा करी जिन दूरि काम क्रोध अरु लोभ की मोह

कि निरमू रि छै मोह आवरन निवारि कै निज पद द

वा रिपाइ॥ तुरसी धनि वह सतगुरु जिनि ऐसी करी

आइ॥४॥ गुर तें नई ग्यान मिम फुनि प्रापति न भो

ध्यांन॥ तुरसी दरसी आतमा धनि वोऊ पाति ध्यांन॥५

बरणाश्रम को नेद हो निमिन छिव त्तो सोइ सो बुधि

सहत छिन नयो तिसन रहीयो कोइ रबि वत गयो न

जैसे नयो गुर परसादते सोइ तुरसी गुर पेरयो करो जे

सी॥ गुर ते होइ॥६॥ ॥१५॥ गुर घन वत न बिधान

॥ गुर घन होइ सु घते अवे सब्द सुधार स छार तुरसी

सिष चात्रिग है अचवै बारंबार॥२॥ तुरसी सत गुर मां ति

बरतो बरखै मंत्र तबै ले सिष सरवन पुट मां पत्तो मो

ताहि गहि हित अने तुरसी गहि गहि हित गुर के बचन रि

दै मछिरा पत जाइ तब निहचै तन सीप में मन मोती

होइ आइ॥२॥ तुरसी गन मो ती होइ सही सं तारे पै लं

ज्ञांन॥४॥१४॥१८॥गुरबा-
॥बाचकग्यांनीगुरघनोंदेखि
॥जब्रिकहांपाईयेबाचक
सांवनसा
आवनहारा।जोइसे
पगमोसोतुरसीग्यांनीगु
१२५८९॥वकीतु
हनेहातुरसीतेजेआसासलोंध्यवद
विनदेह।तुरसीबाचकोंनेस्लेनेमोहिपदि
वदपुरांणवहांवनिमांहीक्रिपरो।नाशिनसकेन
समानध।तुरसीबाचकघटमटवनआस्पादेखि
आकासवतजांन।तेनेतापाउजलरहेसोसतगुर
कोज्ञांन॥पत्त्वंपदकीसुधता।नहिकहावे
सोइतेनेनिकूराकहीकसिजियानलेनेहोइद्दातुर
सीऐसासतगुरजुगकीजिहाजजोसआमलिरेता
रैसिधनिआरोहेजोकोइ।७।१२७॥१८॥गुरहंस
पारतीरवतविधांन॥तुरसीप्रस्वपुनिलेपछिरो
ऐसासतगुरसोइधारनीरलोंसिलिकाप्रनप्रकति
पुरषदोइ।प्रकतिपुरषनिरवारिदेन्यारेन्यार
ग्यांन।तुरसीऐसापरमगुरसेरीजीवनिप्रांण१।
तुरसीयहप्रकतिपुरषद्दहै।जिनिजिनिदेखता
उसेक्रशमैंनही।सोगुरनांमकहाइ२।तुर
सीसतगुरनांमकहावसो।नाजनमरनजसोइ३।
आवनप्रकतिपुरषदो।निजकरिलषिनदोइ४
तुरसीजहांसैसेनही।नहीबिपरजैकोइऐसे
पुरषवताइदेगुरुहमारासोइ५।वोपरईपदप्रक
तियरपुरषकेहावे।सेसेबिपरजेरहसतसोवे
तुरसीसाचासत्गुरसोअकरेबंदनासबही
लोइ६।सापी॥तुरसीसाचागुरसोईपुरषहिदे
हबताइ प्रकतिस्यंन्याराकरैसिषकेहोइस
हाइ।७।१२८॥१९॥गुरदारवतविधांन॥
गुरदारमईचाहीयेसिषगुतोहक्रहेसतुरसीता
निधिपारहोइआइजेरजोकोइ१।ताहजरिनहोइदार
सोतेजलमांकतिराइयूंरतरतहेउविरकतसं

कहा चित्तागे कोइ का [illegible] पवा सिष का कब कुका
५८ ज्ञान होआ किं चन गुर को कंबे सिष अक सोजुक
[illegible] तुलसी ता सिष द्रुं । ताजे दोष अघाइ जिहा ज्ञ
[illegible] हियरे डोइ [illegible] कनक त्यागि कू बुधी
[illegible] [illegible] किए [illegible] ऐसी पत्ता जुपान
हि [illegible] [illegible] जो निरकन गुरस्रूं बिरचि
तो [illegible] ॥ [illegible] चुनि कंचन कगुरु
[illegible] सबके बिषे है रहा
[illegible] ऐसे गुर स्रूं सिष तजे तो दूर [illegible]
३ [illegible] तुलसी [illegible] परि फिर कइ तो परवान [illegible]
[illegible] गुर की निंदक [illegible] जि
[illegible] तदीया दिष [illegible] तुर
[illegible] परमा [illegible] राम मे मे
[illegible] निव हस सतगुर नाम ॥ ७ ॥ १७
॥ २ ॥ [illegible] तुरसी
[illegible] मंद जागि जाजी
[illegible] कहे तो गुर
[illegible] क मन दे दे अपनो ता
[illegible] तुलसी [illegible] तपत
[illegible] नदी कनक
[illegible] क पहरन कुं श्री
[illegible] मनांमुरा
[illegible] तुलसी [illegible] गुर [illegible]
॥ [illegible] संसार की [illegible] कबीर कहि कबिच
न [illegible] बोल
नां [illegible] तुलसी [illegible] सतगुर नहीं मत रपती
जो कोइ ॥ तुलसी [illegible] सुध रिदा स
२ [illegible] सतगुर रोह संतां ना ।
चोपई ॥ १७ ॥ २६ ॥ गुर सिष [illegible] नां [illegible]
[illegible] गुर बिन नहीं होत नगा
[illegible] तुलसी [illegible] बिन [illegible] पा कप्रगटे
[illegible] आरसी [illegible] नि
[illegible] तुलसी [illegible] बिन रज [illegible]
तुलसी [illegible] जो आरसी मलीन [illegible] तप्र
ति बिंब होहि [illegible] कीन ॥ तुलसी काटेप

स्वंनकू नदसाहसोगुरनावकहाइकै बिरथ
।३॥१५४॥२०॥गरनंतपथग्रामीस
॥बिधांन॥नहीसहरोसतत्ता असंतताबरतांहि ऐसे
माया स्वारथक
वेकर्कोकरूके
रक गुरसिष बिकलनलुधी नहेबहा
कुसिहोइतुरसीहै
आनौइसीछोम
कोहोकसे अधि
आपनअधराअधसिषा अंसेहीउपदेस तुरसीतेअनुप
पकोतहेनसुरतिसदेस ७। जोपरलोसीह्नंतोमगुर
करै ताको ंकाजक बहुलंसुरे ज्यं कामनिकामनि
कूं परसे तुरसीसुत सुषौंकैनदरसै ८। तोमीगुरसूर
बिपबिघ्रानीत नैतो करार तसम्प्रानी। तुरसी नाकुं
अ कूंतामाहि दोकू सुषमैौको नांहि ए। सापीरूसिवे
सीत्रियत्रियमिले नीकारनरहेत को तुरसी परसे फिर
षकेत तफलपावे सोइ १०। तौमीलोसीह्नंतो नामिले
कपाकेहबहोना तो बिनसिरलो सीगुरबिना तुरसी
मिटे नभ्रांति ११ चौपई अरमु नावसबहीकरिस्रेरे।
ग्यांनहीनहरिजनअस्र्हो। सोगुरमनोजानिजरजरी
नावचढनहीउतरेतिहिरा छू १२ साषी। जननूनात
तिसोबचाहोरे। तौसारीनावसंजोइ तुरसीफूटी
नावमे चढि मसि बूडैं कोइरजे। कबनीरेवैसीए
फूटे नेरेमांहि तुरसी जनकी मतियैं नबूत्तसांर
हीएनांहि १४ तुरसी यहमाने सकल दिपिजरजीन
व अंधरी आरोहनकरै औरन धरद्यावे १५। कवा
षितिरोजनतसिमतिगुरु ग्यांन के काजाउनेमांहि
करूं नहीं। सो दृष कैसो केरहता ज १६। तुरसीसक
लतइलाजरो। गुरबिनफोकटजांनि जोनिहकंचन
गुरमिले। सोही चढे पवांन॥१७॥१७१॥२४॥गुर
त्यागदो पछि धीन॥तुरसीनिहकंचनगुरदेव तं

[illegible] का [illegible] तुरसी सतगुरु का सिष सो सही ॥ चलै सतगुर
[illegible] ने नो को [illegible] जो चा
[illegible] सिहोय तुरसी सतगुर
[illegible] सिष मन [illegible] के सिष अपने मन के
[illegible] सिष गुण [illegible] न के [illegible] रहैयू
[illegible] फिरै जहां मन कहै तहां जांहि
[illegible] बहु कलि मांहि ॥ आ
[illegible] को ग्यान तुरसी जहां जहां अ
[illegible] गुर मुष मारग छांडि कै
[illegible] तुरसी [illegible] मुषीयन के मुष देषी
[illegible] गुर मुष मारग छांडि कै षिकनक कामनी ॥
[illegible] तुरसी [illegible] चम निन चितन दीन ॥
[illegible] गयापीव ॥ तुरसी डरै
[illegible] ॥ चौपई जिनि पांन पी
[illegible] फिरै अपनो मन नायो ॥ तुर
सी [illegible] गुर को ग्यान [illegible]
[illegible] फिर फिर बहु ग्यान
तुरसी [illegible] क बहु प्राण ॥ अंतरि
[illegible] तुरसी [illegible] का भया
[illegible] पारस [illegible] ही पतछि के षि
[illegible] तुरसी [illegible] रूप को कहा करै
गुरदेव ॥ तुरसी ना सिष को गुर का करै जो [illegible]
[illegible] पेस म फे नही
[illegible] पारस तनो जु पा न ॥
तुरसी [illegible] यथान [illegible] जो सम
[illegible] तुरसी [illegible] नन समम
[illegible] ॥ जो समझे गा मन की
[illegible] तुरसी [illegible] सार मे चेतन कहीए
[illegible] बधी स तिवांन तुरसी
य [illegible] सिष [illegible] ध्यान ॥ चौपई तुर
सी [illegible] सबद के सबद म कारू
[illegible] सो सिष कौन प
[illegible] तुरसी सत गुर को अकथै करै ॥ आ
[illegible] सदा है चरनन [illegible] नासो
सिषस [illegible] गुर जो देवै सो पाइ ज[illegible]

कप्रकासैनहीं ग
नोपश्तुरसीपानकरूपी ग्यांन
पैजुगुरननहै ताहोय।
अरु तैसा सिषकुं होइ सोध्य सापी। तुरसी सतगुरसिष
दोकुं अतिहीं अमल तन होहिं तौ ही ग्यांन जुक्त्य पैसो।
मोहिं रांम कासों हिद। तुरसी मनसा बाचा करमनां थ
मैं मिथ्या जुनांहिं। गुरसिषसुमसंपरकहैं पा. बसि
ग्यांन होइ मांहिं। तुरसी [illegible] अनंत
अनंत जुग के मांहिं। गुरसिष दोउ धना बिना ब्रह्मग्या
न होइ नांहि। ब्रह्मग्यांन बिन मुक्ति नहीं सकल साध जु
कहांहिं। तुरसी सुमत मसदी कहैं अरथ इतो हीं आहि
। गुर रवि सिष दरपन वतां षै संजोग सु भास ब्रह्म
सिग्यांन कुतन दे होइ। तुरसी निजयह काज॥१७॥१८
॥१९॥ गुर ग्यांन ध्यान उपदेस दाता बिधांन॥
तुरसी ग्यांन ही मार है स उही मांहि सोइ सो सतगुर तें पा
ई। औरउपाइ न कोइ॥ तुरसी सतगुर दाता ग्यांन का
ग्यांन कु दाता जोइ सो मिक्ति मुक्ति अरपन सकल त्रैसार
गृंथ सोइ॥ सोई ग्यांन हलपाइ ईस सतगुर दीया दिषाइ
तुरसी करनि हचानया। आह सिंत मैं ब्लाइ॥ तुरसी
बाहर जिर मैं बहर मुषो जिनि गुर पाया मांहिं तिन कुं
पूरा गुर मिल्या ते आत्म सुष मांहिं॥ तुरसी पूरा गुर मि
ल्या। पाया हम परसार सब घट मांहिं लषाईया। ए
कहीं ब्रह्म अगाधपसुषपाया। स मिता नसी मिटी बैरत
आंन। तुरसी आंनि सी तन जो लत गुर के सनिधांन द॥
तुरसी रागादिक न कौ। रसौ अंतिन राउ। सम्रथ गु
र की कृपा सु ल्यो औ रहौ इनाज॥ तुरसी थिरचर।
आदि लष चौरासी जीव। सतगुर ते सोधी जसी सब मैं
देष्या सीव॥ कहां संसै नहीं लिपरजीव जै रह तंअस्यां
न॥ तुरसी अंतघतपा वईया सतगुर मित्तीया जांन॥
तुरसी मन फिरि आईया अपन है घर अस्थांन अहि मि
स आतम ग्यांन मैं होइ रह्यो गलतांन॥ ब्रह्म रतन तचति
नां सकै तह कमिटी सब आंन॥ जिन सतगुर ऐसी क
री सुध निवह कृपा निधांन॥१०॥२०॥२१॥ सि
षु को पूरिकरन॥ सतगुर का सिष सो सही सुनै सत
गुर ही को ग्यांन॥ तुरसी मति मुन मु षी इन के निमपन

तो आतन्त्रजो [illegible] दिना ही तें करि बो जुगति जपतपबि
६० धमांहीं। तुरसी जाको मन मली न ओर नहें नांही ॥१॥ तु
रसी मानहीं का करे अरु [illegible] वटस्त का काम जो नन
[illegible] पार हो गया मायो पद आरांम ॥ जो न पार गये
माही से सो तो डोरे जु नाव तुरसी वेवट नाव बिना
को [illegible] तुरसी इतेही मांहि हेस बग्र
[illegible] व तक्ष्मजनकंतु अतरा छाडिये
[illegible] मन कों मित
[illegible] हरि [illegible] सहज चित्त लगिजा
इ ॥१२॥२४१॥ सु ॥ मख्वेत्र अधिकारी बिधांन ॥ तु
श्री रसी जगति जगवंत को अन [illegible] यास जुहोइ या चित
के [illegible] नहीं कठिन ता को इ चिदाकार चित
की [illegible] होइ जाइ तुरसी चित सुध जाए
[illegible] ग्राम निगनन बिचि
[illegible] जगति जु नदे होइ तुरसी सू
[illegible] अधिकारी बिधांन ॥ तुरसी या
[illegible] अधीन जु ग्यांन ता हि बड भा
[illegible] तुरसी या जगति
[illegible] बिजाती को नहीं स
[illegible] तुरसी [illegible] ग्यांन यह जहां नहीं पं
च को [illegible] नहां सु षि स्यों तिके
[illegible] थावर जंगम जां
[illegible] अरोक समांन ॥ श्री
[illegible] तुरसी जहां यह ग्यांन [illegible] माधि सहत तत पनन
त [illegible] नहीं पषी [illegible]
र [illegible] दिस जो इ बाहरि भी
[illegible] नहीं को इ ऐसी दिष्टि जु नदे होइ
[illegible] तुरसी सिधांत ग्यांन यह का
[illegible] ॥५॥ जगति को परिकरन ॥ पर [illegible]
[illegible] तुरसी जगति जगवंत की बंदत तीन
[illegible] करे हरन अनंत तें सो
[illegible] तुरसी जगति जगवंत को सकल सिरोमनि आ
श्री हि ता ऊपरि को ऊ नहीं और पंटतर [illegible] का हि अ
र धन र धम [illegible] सो दस [illegible] नेसो रि करि ताहि मंगल

पढ़े वेत हो तरह नाम तुरसी कहत कुञ्ज मोरन हो
मिथ्या सही सुखित सिमो यह ॥ सार सार ख्यो ति
मनसुधरम मसत गुरु हूं सूखे सोर नाम मो कुछ कहे
मानत नाय। तुरसी अंहे सुखसितसाय ॥ रेसी नलोवे
अनि एक रित्यागो सिन सुषदहै सदा गुरु आगे तुरसी
तक्रे नलनु नाइ सो सिष सकल सिहे मनि राय ॥
॥ ३॥ ३५॥ ७०॥ पंचम दमा को पार करन ॥ तुरसी
गुरप्रसाद सा सत्रे मनै अलख अनमो जानि। सिवसा
धिक सब की कृपा याते बेसुमांनि। (छोपे) अनतमा
मत्र अनत बानी। अनन्त कथ्या सुनि नहीं जानी ॥ तुरसी
मे ... [illegible]
याही ... [illegible]
मत बूझे बिरला कोइ। याही मे सुरति सुरति को।
रम्यू तसब ग्यानी याही मे सुमन नको घर मन मह
मानो। छिया तीन लोक को छोर कक कहा लो
आनी तुरसी या मे है सहा सब को सुधि छिपायं। तुर
याही माही नहि होय रूपा वनी सोइ याही मे वे
राग है पिछानि लेह जो सोइ है। याही मांही जो गहे जो पी
मनी छनिमन रिायाही माही ग्यान हो कन लहै तनिर
छिदांत सिधांत को सब संतन को सार तुरसी
मै है सही सब को आरण्य बिचार ॥ तुरसी याही मे
आये तु हमा अधिकारी प्रतिधर मा हम गुन मधि-
कूंन गति पक नहि हे सु मनकी मा ॥ ७॥ ४६॥ ७॥ अप वी
निर अधिकारी विधान ॥ तुरसी तावन करम कीयो
मन प्रतीति उपाइ जावत असुन करम को। का
टर सो तुरन्त आइ ॥ १ ॥ तावत करम कीयो करे जावत
कछु सकाम। तुरसी हिरदे सुध होइ तन करम न स्वे
का काम ॥ २॥ जावत करम कीयो करे जावत करमल
होइ तुरसी आदर सत्र मल तजे सिकल करे न होइ
असुध अंतह करन को सुम करण ही वानि।
तुरसी सुध के ग्यान है अरण्य यतो ही जानि ॥ ३॥ मलिन
आरसी मंझी ए। अमल न मजे कोइ तुरसी सब को सा
मै जोइपा। तुरसी सुध दरपन मंझे कव
न अमल हिरदे क्रम को गासा धिमा को छे मरे। यह

म जगति यह हो ताज समा हो सोय है असुभ करम है करन
हो सुभ कम सचे करा नाकरु नास के सो जनै सरधा
तिन पाइ ॥ तुरसी स्वांति गजगति यह हो कनिष्ट नाम कहाइ
सुरति सुमति सब ही कहे सो लखे हि दिखाइ ॥ प्रीति
रूप जब दवन की जगति करे जो कोइ हिरदे नांव रटे जो करे
अखंड सज को सोइ ॥ निरंतर निस दिन सदा अरु रकाम
ना हि कोइ ॥ तुरसी मधि स्वांति कु जगति संत नि बरनी सो
रूप बुधि भ्रात दृष्टी सकल ता बिबेनि स्वतंत्र ताग नेबि
धि सत अल्पम तके बोह दिढ़ हिरदे जु आय ॥ सेवा सुध
कामना रहे हो फल को मनां मिटाइ ॥ तुरसी यह स्वांति गम
ती [illegible] जगति निसे अमिताइ ११ तुरसी करम ८ मिश्र जग
ति [illegible] सोय ॥ सुन जुन छिबे जु हम कपी सके बि
[illegible] को ॥ १२ ॥ तुरसी करम मिश्र जगति अरु धरि दिढ़ जे
[illegible] चित दरपन भयो ॥ कहा करे अब सोइ ॥ तुरसी
[illegible] न आरसी [illegible] प्रमल न भजे कोय सकल
[illegible] यह हो [illegible] जो य ॥ चौ० तुरसी चित
[illegible] मनि कौन परोजन ता को जाग र
[illegible] असुभ नि छिटका
हो ॥ १४ ॥ १६ ॥ [illegible] जोग मिश्र जगति [illegible] तुर
सी प्रेम जगति [illegible] जोग सत्त्व समान जोग बिना जग
ति [illegible] ॥ १ ॥ चौ० प्रेम प्रीति उर में
[illegible] आइ भावे जगति जान
[illegible] जो गा [illegible] जगति जो
[illegible] तुरसी संत [illegible] जिय [illegible]
[illegible] सिंगार ॥ तुरसी सिंगार जगति यह ॥
[illegible] संत जन ना कहा करे
[illegible] कोनेह तुर
सी [illegible] तुरसी जोग
मिश्र जगति [illegible] कहु एक बरनी जु हम ॥
[illegible] ॥ २८ ॥ [illegible] जगति मिश्र ज
गति बिधान ॥ तुरसी आजन [illegible]
[illegible] राग [illegible] जगति यह [illegible]
[illegible] तुरसी [illegible] माया जु एह सकल ब्रह्म को जानि
बैराग मिश्र जगति यह [illegible] नहीं कहुं आंन ॥ का

॥४॥१५१॥१४॥
महिमा विधान॥ तुरसी भगति भगवंत की
सुमिरि निकु संत जन
२ तुरसी भगति भगवंत की। भिन्न
अति तपा वन रूप है। सं सेक है सब के
भगवंत की निहृच्छ सै करना छि
तपति तपा वन की तोज्ञे आरे जु सरन ३॥ तुरसी भग
ति भगवंत को। पारस के गुन मां भौ जो चली चपर सो के
क्र। सोई सोई कंचन भा॥४ सरो म मिह रि की भगति
जुग जुग जुग तत्त सार॥ तुरसी ली लह लोक में जाके
जैसे कारय। थो पेम तहरि भगति छिन॥ सब ही त्या
ग साय तुरसी जुग जुग ये में सदा। भगति भि अ के जी साध
॥ जो मन जो गहु के कार ता न रि प्रां भी नहीं होइ सो म
न धीरे लौं गरे प्रेम भगति सूं सोइ॥ छिन भग तिसब
तेगत में जो नर धारे कोइ जन म मरन सू कबे। निहचे
पाणी सोइ॥ चौ पूर्वी पेम भगति जिन जप तप ध्यान कू
बिलाग सहत बिगपां न तुरसी सगति न रि होइ न बस प्रेम
बही मत्त सा चे जो इ॥ स्यी कहा जोग जुगति कुं करे
कहा मां पिसु बिचार। तुरअति मकी भगति हो इ नो स
बमत तोगे सार १० कहा जोग कहा मांषि बिधि कहा
बैराग बिचार। जा जा सै हरि की भगति सोई सो अंतत
सार॥ १॥ २६४॥ ७५॥ करम मिश्रा भगति विधान
तुरसी गुन गुन के लिये त्रि धा त्रिधा सो अकरम मिश्रा
आ भी जु यह। जहां ऐसी भगति जु होइ॥ १ हंसा दो पत
पाइ कें करे भगति मन लाइ॥ तुरसी यह अंध नाम
सभ गति। संत मिक टिन ही जाइ॥ २ तनि मति गो छि
दन जो नही भगति नहीं निहकाम॥ तुरसी तामस भ
गति यह। मधि मया कौ नाम ३॥ भगति करे औ रके
मांन घटावन काज तुरसी आपने मांन कुं सो भग
तित्तमो सिरताज ४ अन दारा सुघडां छि कोइ रित
मिरै जन को तुरसी यह राजस भगति॥ कनिष्ट
कही ये सोय॥५॥ तुरसी मधिम भगति यह राजस के
मांही। जसकार न आरास को सुमिरै नर मांहि दा अ
ईस्वर के अरपा करे सो न जे जु को। तुरसी अति

प्र

हीन नरेपिक रिपरांही ॥ अमरहिपत्त नहोहि ॥ फिरिफिरि
सीफिनिनिकाम नगति नहीझांनी ॥ तुरसी सकाम हि
मन नायज्ञा तिन को ठौ नाहि कनक मरवायो ॥ तुरसी
यह ग हरीनगति नु जांनि अपवान गुण सुरगुणअ
ना ढि सकांताके जकोइ ॥ अपने आस पकवे सो
॥४ साषी ॥ अपवान गुण ह दोह अपवा सुर गुन सो
सकामता छाडे बिना ॥ मुक्ति न पावे कोइ ॥ तुरसीनृ
गुण सुरगुण दरीया नगति वारपार नही कोइ तूंचा
त्रिगलोसार मता पोरहि गहिरहे सोइ पोरही मे आं
द है जो नगति जु सकनी होइ ॥ तुरसी सकनी नगति हि
न तु सकल टेउ करे कोइ ॥ तुरसी तुसको कुटिबो
सिंगार नगति बु सोइ ॥ मन बिषीया चितयो करे ॥ अभि
[illegible] कबहू न होइ ॥ तुरसी अस्थिर होइ नही ॥ यह मन
का बहु आयजाव त सिंगार नगति मोर हा प्रीतिफे
लाह ॥ तिरगुण कूं जांने नही ॥ तिह कोंन ताउपाय ॥ तिज
सा प्रेम या नगति बिन जाइ सु जाइ ही जाइ ॥ चौप
तातें सार एक सोई मत ये प्रेम नगति उपजे सोई करे
तुरसी तुरथ रिसाधन सार अति आसट हो इ करे बिचा
र ॥ साषी ॥ प्रथ मे साधन नगति मे जो साधक गहा राइ
सो तुरसी पीछे कहूं प्रेम नगति उपजाइ ॥ तुरसी के
गा नगति के सीज बिधि साधे साधिक सोइ ॥ ता साध प्रेम
नगति उर मे उदे जु होइ ॥ तुरसी दास नो भग्त गति बरनी
वेद नि माहि ॥ ताहि समकि तर आचरे तो अंतर मत जा
हि ॥ [illegible] कनो ध्यानि रवरति तन ए क परवरतितन
ज्ञान तामे अति कनरूपनी ता का कर हि बषान ॥
तुरसी नो भग्त गति को हे अति तिबिस्तार ॥ तामें कछु
क कथ तह मा सार मांहि अति सार ॥ २४ ॥ नु र या ४०
श्रवन नहि यांन ॥ चौपई ॥ प्रथम श्रवन हरि नगति
बिचारे ॥ जुं गिरही घर नीव जु धारे ॥ नीव बिना मंदिर
नही होइ ॥ तुरसी ताहि जांने सब कोइ ॥ तुरसी जो तप
तीरथ कीए देह गेह दांन हि क हीए तन मन को निम
राधन जाइ सो श्रवन नगति सह जन साइ ॥ तुरसी
श्रवन नगति मन कादिक संत रिषि मुनि केते क कहूं
अनंता श्रवन नगति जिनका हि क ज्ञिते पारपक तेब

तुरसी सहँ बासना रै है त
मन जैप कनूं तजै निजे सुध

छितनासा निमय

०८.

...७॥ पावनिग्राने
ग्रहनी मनसिहैबलहै

रिस॥ तुरसी ताव तब्रह्म लहो पावे नाही कोय॥१॥ मगहि
सुपानमय मनणी॥ संगली ऐ बैयग॥ जाघन मांहि हैसहि
ताके मोटे भाग॥२॥ तुरसी त्रिषु जगन सिंह हाडरनी केहि
मांहि गुरगमि सुसतपे का डा॥ क्षिरत डे केर आहि रांतु
रसी प्रथम कनिष्ट मगमि को॥ जिसह सोके हि हो नाही
हो नायै तजै हि नहि मावे केहा॥४॥ तुरसी जद पिहे बहुम
ऐक है॥ ती खिनेदन हीरां का॥ जद पिने ऐसो हयता॥ तुमपहु
मै गुरु नामा॥५॥ ऐहक रमी त्रिधकी॥ सब कोक आवै॥ तु
रसी ऊरमी निरंतर रिध सूं कोऊ न नावै॥६॥ यांही तिस म
तुपम ही॥ दीन लीन हिनराति॥ दास भाव लागे रहै तद पि
एकै जाति॥७॥ मैरा मै बांधीया॥ ब्रमजेवरी यां रामा कसि
नी कै निज रूप में॥ लै तै गुनरो नांम॥८॥ तुरसी अपांन ग्रन
तहरिकी भक्ति॥ भविमया कौ लांम॥ जहां जन कै यह त्रा
संघो॥ परतु सू आवै जांम॥९॥ तुरसी उत्तम नगति यह जहां
ग्यान सग्रन तिसो इ॥ जा मैं दरसै ऐक ही॥ चैतन नाम कोइ॥
१०॥ तुरसी ग्यान सग्रन नी॥ महा भगति यह जांन॥ नहीं
बिजाती को नहीं॥ सदा सजाती ध्यान॥११॥ चवदानी नूं ले
कमै॥ ऐक रूप दरसा इ॥ जूं दरपन मैं देषी ऐ॥ अपणा मुष क
हाइ॥ तुरसी ग्यान सग्रननी॥ यह निज भक्ति कहा इ॥ जा त
रमैं उत पतन नहीं॥ सुध निवा जन की काइ॥१२॥ ३७८॥
३॥ सार भक्ति विधंन॥ तुरसी ऐक सरगुन भक्ति
ऐक निरगुन निज सार॥ तामांही अति ही अमल॥ सो
जीव निसूर दसा रा॥ निरमल निहकांमी भक्ति॥ सोई
न भक्ति नगवंता॥ तुरसी भक्ति सकांमता॥ तामें कजी अ
नेत॥२॥ चौपई॥ सकांमून भक्ति के सेवन हारे॥ सुरगले

४६३

न ग्यांन ॥ १३ ॥ तुरसी आतम ग्यान उतपन होय ॥ अब मितु
उर मैं आय जोब कला स तिस कलि हो य कहै सु बिथ
न जाइ ॥ १३ ॥ चौ ॥ तुरसी औ नाह तै सा होय सुनै सु अ
धरमी ग हिले सोय सु नि हरि कथा अब धरन जाइ या
पति ॥ करतनमे रहे स माइ ॥ १५ ॥ के सुनि कथा सती होइ स
चा दिके हजती होइ मन सा बाचा तुरसी ऊ भैरे कऊ
मांही सो सुनिबा गुनि बाकि हि मांही ॥ १६ ॥ तुरसी सुनि
सुनि कथा तुसारा मन के बाडत जाय बिकार सुनि
बा मन ने हा हीका सा चा और देषा देषी मत का चा ॥ १७ ॥
रूपी तुरसी देषा देषा हरि कथा सुनि सुनि नयान को इ
सो मै सर धा पा निस्तुं सुनैं नहीं जे सोइ ॥ १८ ॥ तुरसी यह
धरमी तिहे कथा जु सुनिबो कान घाड़त होइ क
था सुने सो सुनिबो कछु आन ॥ १९ ॥ तुरसी जर पिका
था पर्व नि है सुनै सी सुनि पानन देय ॥ तद पिसर धास
सुनैं अनंत ता न सो ती ॥ २० ॥ चौ ॥ बेदांत सिधांत सार
सां त नि की बांनी जिस सार स कल धरम सुनि प्रती तिप
री सो औ ता संदेह नि वारै ॥ २१ ॥ पानी संदेह ज को कनार
हि सो सुनै सुर नि स्त सोइ तुरसी अ तिजन न धरमा ता
मैं कला न को इ ॥ २२ ॥ क्रोधी काम अरु क्रोध की तो जमो
ह की बा म तुरसी बाई रही नहीं सुनत कथा नि हका
म ॥ २३ ॥ पिता पद्रीयप्र ब्रह्म की स्तुति के लोक ऊ जाम तु
रसी मद हैं सुचेत है तिन की को क हियां ॥ २४ ॥ तुरसी य
ह अन ने क था हर न अनंत संदेह सो न सुने ता हि
नार है याज्ञ यारि धन गेह ॥ २५ ॥ मनि औ ता बकना जु ध
नि छि न के तरत सु रेह प्रेम कथा अन दिन सुनै क
रिक रि प्रीति सनेह ॥ २६ ॥ सो २ ॥ तुरसी क रि क रि प्रीति
सुने हा कथा रस श्रवन नि पीजिये यह आनंद नगे ह आ
दि अंति औ से जाने ऐसा ही ॥ तुरसी यह कथा परसंग
कहा हर न जीव जड़ ता वा ले हैं सो मन आनंद करना अ
में की रति गा दि ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ ३ ॥ श्री की रति ग्यांना तुर
सी श्रवन कथा रस ना रमैं गो बिंद के गुण सार ता के
पाप प्रचंड ज रि छिन मे हो वे छार गा वत गुण गोपाल
के प्रेम प्रीति सं सोइ तुरसी ता के सुध होइ पापन रहई
कोइ ॥ ३ ॥ चौ ॥ रसना सु बिमो बिर गु न गावे प्रेम प्री

श्रवन नगति नोथा के मांहि प्रथम जो भि
ज्ञ बरनी आंही तुरसी सो पंरयक जो करै तो आगें सह
वै ४ तुरसी श्रवन नगति यह नाहिं बिन साधि कि
कति सुमाई ह्यातें समकि यह उन मांन प्रेम का
करऊ सुपान ॥ ५ ॥ सा० तुरसी प्रेम कै थाप रहे
आवार पार नहीं कोइ अपने छिन उनमान तू सुनि
जु चित थिर होइ ॥ ६ ॥ अनंत सास अनंत मत अनंत
कथा गुन ग्यान तुरसी मति मरजाद नहीं कहां लो सु
नि कांन ॥ ७ ॥ अलप अवधि अलप जु बुधि अलप
ही मन मांन ॥ ता तें कछु एक सार मत सु जै संत देका
नि ८ सार सार मत श्रवन सुनि सुनि राखै रिद मांहि ॥ ता
ही को सुनि बो सुफल ॥ तुरसी नप तिसि रांहि ॥ ९ ॥ तुर
सि हरि कथा ॥ सुनै संत चित लाइ ॥ सुनि सुनि
न हि अरथि विचार तजाइ ॥ १० ॥ कै न सुनै
तपुरस बेद सर धारी सिव पाइ कै बरासा सन्त से
जा सुनै तम जाइ ॥ ११ ॥ तुरसी श्रवन सिदेव की अन
कथा जु सार ताहि सुनै संत प्रीति करि बहि न पैं
सार १२ तुरसी तेनार तान श्रवन सुनि ते बका
धाते ग्यांन जिन बसुने सरधा घटै छूटै मन को धा
न १३ श्रवन नि कथा सुधा मही सुने सु छित थिर दि
ह सुनि सुनि मन सुरकाइ तो श्रोता कही ये सोइ १४
पर्व तुरसी श्रोता असी करै ज्यूं मृग नांद श्रवन चित
धरै सुनत सुनत तहां लौ जु सुनाइ देह गेह सुधि बीस
रि जाइ १५ सा० श्रवन कथा सुनै संत सुष असंत
निकट न छिजाइ ती नर जा हरि कथ जे ये मरो मसुष
काय १७ ततु वे नातप धरमर ता रहे मम तम तमोह
संतन को वचन रुचि कै सुनी ये सोइ १८ चोपई
गुण रहत निरगुण को ग्यांन निरजोनी होइ करै बषां
ण तुरसी सो बकता परवांन आप तिरै तारै श्रोता न
१९ साषी तुरसी ज्यूं है त्यूं कहै और की जु और जु नांहि
जग मैं बकता सोई और स्वारथी आंहि २० मा तदिव
सहरि कथा सुनि जो परी मत पारि तुरसी सो लितिसु
नत है पै उपजै नहीं कुराउ २१ बकता ताहि सु मदे वसो
श्रोता धीख तस मांन तुरसी तब तत उपजै तत प्रकास

नओरजु आना निज करि केउ पदे सीया सतगुर कि

४६४ रपा निम्रन ॥४॥ चौपई तुरसी सुमिरण ही अधिकारा॥

सुमिरन सुमि को कोउ ओर न सारा जिन सुमिरन का

पाया ने तु नेपद तहि हि गये निरंजन देव ना सा ही तुर

सी कहि निमेक हि मन तरन कुं रामनाम सम आन

सुन मन को कुदे ध्यान नहीं सुमान को ऊका न न सबपा

उन को पद है मन तुरत तन को प्राण पांव नपद तिन

तो कमी तुरसी नाम न बाण ॥ अपांवन पांवन कर

गा कहि निछिपटान हु सि तुरसी ओसा नांव है राम हि

वे सुप मूर्ति उ जो गज मि नारद बरत जपत पदान

आने का तुरसी सजही कमे हो तुम नाम की टेका॥

॥ तुरसी नांव सभी जिन ध्यान को कु नांव समानि न

आन नाव स मा नि न छि पिउत नांव समि न दततदा

न सा को हियु पके अवपो हा को हिपान कनाहे

च तुरसी नि हरि [illegible] को करउ नांव स नेह ॥ तुरसी

या जुग में अवस्थ ह या जुग में यह गान या जुग में

हरि नाम सामा न ही धरम को कु आन ॥ चौपई तु

रसी भरम अनेक दिखाये तिन में कहि कोन सच पा

ये जो निज के नाम हरि नाम तिन दिन लें पायो आर

नाम म ध तुरसी नांव ही सात सो म नाम बिन धंध बिकार

जिन आरत न नाम सोह ते जन रहे रमही होइ

र४ साखी पो को कहिन ही जानी रे प्रभु को जनन ब

त नि को तुरसी कन का आगन की दा हरि द्वार अनेका

॥५॥ तुरसी अमृत आत पकड़ होइ यू अल पक

[illegible] ने [illegible] न दहे जो सुमिरे को ऊनि

म ॥६॥ तुरसी भरत [illegible] नाम [illegible] ता जाने रजीवा नि

सुमिरे सो मन लाइ के ते जा जीव ले मीव ॥७॥ तुरसी

लिके में तहे जो [illegible] निज [illegible] कराउ ऐसे सुमिरत राम

[illegible] ये पाप [illegible] ॥८॥ अखियाँ रे आपा न को रसी

न हिय मछि को उ तुरसी रछि न तरा मको नाव कचार

न को है ॥९॥ [illegible] रीऊ [illegible] धनि चेदे ही धान ॥ तु

रसी तिन की को कहै जो सुमिरे आठो जाम ॥१०॥ सातज

पत [illegible] सो हरि सुमिरन [illegible] होइ तुरसी ता

ण की [illegible] कोइ [illegible] क पल क की

गावतो।तुरसीतनिसुधिरहैनकोय।कथादी
कहियेसोय२।साधीकथाकीरतनकलिमही।।
तबेदपुराण।तुरसीचवक्रांततिरनसूंहै॥३॥
दातंध।तुरसीजिहिंजिरूपहै।एसनारदिवो।मउनमं
बिहयबिकेगाइवो।हरिजनसब्लाटिसकाम॥४॥तु
तपतीरथव्रतदांनसं।गिरूसुपुनिजोइ।अ
भावनरूपहै।कलूकीरतनसोइ६।सतजुगस
तात्रु।तपाध्यापुरइजाजोग।तुरसीकाम्रक
विप्रहरना।कलूकीरतनसोइ॥७॥ठो।ऊलि
हीजिनिधरीदेहा।करतनकीरतनधरतसंदेह
तुरसीअसंसकारीसोइ।प्रेमनगलितनमनक्यौहि
८।पिमनगतिउपजनकैकारनि।कथाकीरत
तसुधसाधारनो।तुरसीजिनयहदिटकरिगहा।नि
नमीतबकालनाहालहा॥ए।सुवदेवअदिसंतसब
गावैकहिलालनबिलारो।तुरहोवेरहेमगनहरिज
सभैनो।तुरसीमीठालागैसोइ१०।जिनहरिजसको
पायोस्वाद।तिन्हूनेईडीरसचाव।तुरसीरहेजुबि
हवलहोइ।गावतगुनमनअधावतसोइ११।साधीज
हांकथाहरिकीरतना।करैजगतनिहकामा।तुरसी
तिहांचेसहीसूं।तहांबिराजैरांम१२।जहांप्रीतिसूं
मगनहोइ।करैकीरतनसाध।तुरसीनहीछिनना
रहेजाहिंनांमिअपराध१३।जाहिंकरतमनिमार
हेकंपकातिमांकोइ।तुरसीसोईकथासुफलकी
सोकुसानिसोइ१४।कथासुनतंकदाचिकोऊ
कैगीरतादरसोइ।तुरसीकरतैकीरतनातुवोरैलो
गरिजाइ१५।तुरसीवोरैलोगरिजांहिसबामनके
चारबिचारमैंएकरूपहरिदोजु।होइ।करतकीरत
नसार१६।कीरतिकसुनांसिंधकी।जिनउरधारीमो
तुरसीतिकंचननतएडकसौकाचनहोइ॥१७॥
तुरसीयहकीरतिबिधि।कवुहोकवरनीसारआगे
सुमिरणबरनऊंपावनप्रांणअधार॥१८॥ग्रं६८॥
४२॥सुमिरणविधांन॥जितेकअंगहरिजनगति
केतासबहीमैसोइ।तुरसीसुमिरणसारहैसंतक
सबकोइ१।तुरसीसुमिरणसमिकोऊनहीसाध

छूरी मकुरति बडतौ जाइ यद सुमिरन तावत जु कराइ ॥ दो० २२

म सिंतदे सु मांही । तउ गन लडरे बादर मांही ॥ ता
पक ल नहीं करै सितं आगि आ धपूं हमें पैन ताम सोपी ॥
सो नांहु कु तिरनां सदैव मद तिरण कुंजा ॥ तुरसी प्र
मुसा ये तिनां ॥ तौ नं घेद रिधाव नूए जावत मन चित
किरनि रही लसो दिस फैलि ॥ तुरसी तालूनतउ तम नज
होइ हरदेसो पल सनी से लर्ष ॥ तुरसी तिनै तिने मना बिटि
रह्यो ॥ तिन रह्यो किन किन हो ॥ तावत उमनज नमें के
सुम मेकै सो ॥ ४९ ॥ आरत ॥ अ ॥ अथ सुमिरन [illegible] वि
धान ॥ चौपई ॥ ता तै अब हरिजन समाहै उन मनज
नकी ये लौ ला है ॥ तुरसी महा मदीप स्थिराय पेरी बिनान
पुके ये नाइ ॥ २ ॥ साखी ॥ पेरी पेरी पावे दे सुमरन ब डताज
ष ॥ तुरसी नत म नजन मै सब काऊ मन रहराइ ॥ ३ ॥ चौप
ई ॥ ज्यूं बेला तिनकी संग तैया दिन दिन रधपया नां दे
ह हरि जन हरि जन जु मगन पार है ॥ अलसाइ जु
मांही न ॥ सुमिरन डोरी लागी जाइ ॥ उरमै अति प्रीति
सुभाय बहै नहीं जौ रही आन साइ ॥ तुरसी तब सुमरण स
धुपाय ॥ ४ ॥ दुर लग्न की माला लै है अपवा माला हु
तिन के हाडे निवे निरसनो सुघरा मा ॥ तुरसी उचरै पाव
न नांव ॥ ५ ॥ साखी ॥ पांवन नां मर टेरो कैरे ज्यूं चात्रिग घ
न प्रीति ॥ अस से गौ बेद हिन ज्यूं गहे रहे य हरी ति ॥ ६ ॥
चौपई ॥ तुरसी निमष निमष पल पल सुमिराय ॥ मधि
सुमिरन की गति हो इ आय ॥ ७ ॥ साखी ॥ यह सुमिरण अव
र कुत सन लि कहा जु सोइ ॥ तुरसी तावत की ओ जा
वत मधि म मि हो इ ॥ ८ ॥ ४ ॥ १६ ॥ ५६ ॥ मधि सुमिरण वि
धान ॥ चौपई ॥ तुरसी मधि सुमिरण है ऐसा आकास
उडगन ते जु ऐसा ॥ अथ सुमिरन की उपमा रेहा ज्यूं अ
यो है दीसपमोह ॥ १ ॥ साखी ॥ तुरसी मधि सुमिरणवूं की जी
ये ज्यूं तियापुरुष जुनाम ॥ मांहीं मांहीं रटबो करै बाहरि
सुं का कां म ॥ २ ॥ चौपई ॥ तुरसी बाहरि ज्यूं जेनां ही जिन
सुमिरण रस माया मांही बाहरि तो लौ ही उचराइ
लो सी समिडो दनपाइ ॥ ३ ॥ तुरसी अब मन उलटा च
कंठ कंवल तका मारम खुल्या धुनि अस्थाने बै
स्त उनकी सब धरी न जाइ ॥ ४ ॥ तुरसी कंठ कंवल अस
थानां नांव निरूपै धरि के ध्यान ॥ तिन ही कर मा

तुरसी जो मन सुध होइ नांइ वि
आचरण निमष निमष हरिनांम लै स्वासै स्वास
निरंतर तुरसी पल पल पीवै सो प्रीति करै सो संत॥
१ सो ज्यूं प्यास जु की प्रीति नीर सूं सोइ ऐसी सुर
इ १२ चौपई ज्यूं तृषैवंत न प्या
ऐसी प्रीति सूं जो जिनांनी। तुरसी जन जु क
तासोय जो ऐसा जग मैं है कोय १३ साषी। ज्यूं पपई
मर ज्यूं चात्रिग घन की प्यास ज्यूं कांमी कांमनि हि नै
गम नैन निज दास १४ तुरसी ज्यूं नैनों जु रूप मा
ग लता न नासा गंध रस नां रसन हि सब्द स्रवन कूं
न १५ दिह पियारी जीव कूं जीव देह को प्रांन। ऐ
ी प्रीति राम की जन कूं नांम न्है बांण १६ तुरसी रां
भजन कहिली जोगि देखें जितन आंन। नहि निमष आभी
एइ हे जन बडो मसांन १७ दूहे जो गय यह जु गति
इहै भगति यह नावां जन हि तैं तिन की जांणि तु
सी जिन वनता वू १८ जबल गदे ही सा बत्ती रोग न कु
सी रात न बत लागो छिद सजन करि बंद गुर चरण
मार १९ नांम निरूपति रांम को जांम धरी पल साइ
तुरसी छिन मन की जांणि। भजै ते होइ सहोस्र २० चौपई
तुरसी नांम न संत निगाया। नांम हि मांहि सबन स चपा
या। ता रांम नांम कौ ऊं चार। आगै बरनौं च्यारि प्रकार
१ साषी तुरसी अधम मधि उत्तम अति उत्तम ऊं सोइ सु
रण की सुधि जु गति रांम जांनै बिरला कोइ २१ चौपई
तुरसी अधि सुमिरण ऐसैं रहार सनो रांम नांम ज पि
नै यह आलंबन लोलौकै रेमंम मि सुमिरण की सो
ी पैरै २२ साषी। तुरसी मधि सुमिरण जु यह कंठ
कंवल अस्थन। रांम नांम उचार होइ ताहि धाइ लै
हि ऊं ज्ञांन २३ उत्तम सुमिरण हिदा मैं आरनै धरि
ध्यान सास ऊं सास रहै करै तुरसी नांम न बांण॥
पा। चौपई। अति उत्तम सुमरन की भाई महमां सु
न रिकही न जाई रोम रोम ररंकार सु नाइ तुरसी
गि नुदे होइ आइनू छ तुरसी अति उत्तम कूं नावै
अधि सुमरण कूं लष्यौ न जांवै तावत अध सुमिर
ण कूं त्यागै ता को ग्राहै पार न लागै २५ जावत रहि
न

३

।तुरसी
मोहीही मांही बसै

।मंकुरं तनामें जाम। बढती प्रीति नजेंदूं
।साषी तुरसी मधि सुमिरण
अपनी बुधि अनूसार आगें तन मन रनके कोऊ
जांनें जाणनहार ७ ।उतम सुमिरण कुसमव न मधितर
वत्यार व्यामि तुरसी अति तम नजन नां हि फलरूपी
जानि ए चिपई उतम सुमिरण सवि तसोइ पूरण भ
गितें होय तुरसी अति उतम मन्नि सांण नि पटि जुहरण जर
निस आपान ।।२०।।४२४।।४५।।उतिमा गुणरन बिधा
ना।।साषी।।तुरसी यह उतम नजन सत निकसाजुसो
या ताहि बड नागी पावे को कोजानत कैनहीहोइ १ हि
रदे रांमरटेयो कैयमुष की हाजतिनां हि सम अ मासनि
नांव लै तुरसी मोहीमांहि २ तुरसी मालासास नु मा
मकी औरन पिलै आरांम तास निरंतर रहिहोइ के।।
सुमिरो अपनौं रांम ३ ।स्वास उसास निनांव लै निरति
सुरति नुलराइ तुरसी इण बिधवे नही रोकरु सास सु
नाइ ४ ।।कैकु स्वासन षोइये रांम नांम बिन बांम तुर
सी बाये जानत न धूवाके धांम ।।मोल चवरदमन व सो
न केभ एक स्वास है सोइ असे सो धन हरि नांव बिन हर
सी पाय न षोय हाउ उतसासा नांव लै बेउत स्वास
नांव तुरसी निस दिन नांव लै मन चित करि एक ग
रु ७।तुरसी स्वास सुमिरन की मदा एकादसी निबाहि
या ब्रत समि को कु तन नही हम कहे जु गति आगा
हि ८।छसे सहसईकी स्वास समालासोय ताहि फे स
रे जन सुरति सू तन मांही थिर होइ ए निस दिन रांम
रांम हिनये प्रेम प्रीति चित गोय तुरसी सो सिध होइ
सही।छाया माया षोइ ए जास्या कुन जौरे मास्या पुनि
मैरे न प्राणी।।का दयोरू नही कटे ।बोया नही बडे मां
नी पछि सेस हसर्ई की स[illegible]म नियन की माला जांनी
तासू जोतर थिर होइ नांव सुमिरे निरबांनी ११ ।तुरअ
तरि लागे रहो । नवो कपाट लगाइ तुरसी रांम के नांव
मे बाहरि त्र मे बलाइ १२ मोती लै पोयो कहे सुरति

सेनागेरहेयक चितरो केनाश तुरसीलोक व प्र
४६७
को अमिति पार नही पाया जाकेहस्त लपाउको अ
रे नैन सुषमासा तुरसी तिग विहनबिना के सेसउ
ना सर चोपई तुरसी सुगुण सेवा मोह रूपदेषि कि
सनहे लोया अरूप सेइ चढाइबो अं डो अतिहीउ
नइ धर्म रोष डो प्रा तुरसी हम से अधम अग्यान काजा
सेवा को भोल सनकादिक संकर अरु सेषा ति क क
हे अनेप अनेषा धासाषी तुरसी अपने चित नुनमा
टा सरधा प्रीति नपाइ सेवामें नागास्त्रु रज्जा चरणा कं
वल चित लाया तुरसी पा चो नतपर त्रिगुनतेन
रे अतिहीस्त्र छिम चरन वे संतन के प्यार तुरसी
चरन कमल की रामगति नजन के सेवा नही अषंड अ
पडे निज अबिनासी देव तुरसी तेजपुंज के चर
न वहां हाड चाम के नाहि वेद पुरानन बरनो रिदा
कंवल के माहि तुरसी रिदा कंवल के मही जो पि
मई ज गाढी सा ना चरनन लागा रहा मनो मई अपनो
सी सर चोपई हरि चरनन की सेवा करो छिन छि
न सीस चरनन तन धरो तुरसी हरि चरनन को ध्यान
और त जो आन लहन आन रूप रति बरता पति कं
से के छिन क रुचित लगन न देवे तुरसी रूप च
को रसिक ध्यान ऐसे सेवा निजपद निरबान अ
ति प्रीति स्वरूप परो टकपा व उरमहि को मन ना व अपा
रा तुरसी अति सरधा सुं हे सरूप आपनो प्रभु सेवो
मोह साषी सेवा सुषि कीजे करो क प्रटमना दि
के तेरा तुरसी या सेवा महीं मुकति जीवकी होइ
तुरसी मुक्ति मा छिनमे सेनही जो मन मानरआइ
प्रेम सहत लेषी रहे को मन प्रभु के पाय तुर
सी रूप मन सा क रूल बसाइ हे चरन सिरनाइ अप
ने निज जन को लो कोन परम सुषपाइ चो
८
तुरसी यह सेवा सुविधान बरन्यो अपने बि
लन नमाना आगे अरथन सिंध ओ हिकुल एक
१
बर निसुन ता हि …
जान तुरसी सिं… पेमनही सुर नआदे सोय ता प्र
भु को अरचन लागति कहो को विध होइ हृमि

सिरनकसा कुछरेकहितनमां

तुरसी अति
४५६॥४६॥ अतिउ॥ सुमिरण विधान॥ तुरसी अति पैठना मिरहाइ
उतम अनन को पै बरन्यो जाय॥ नयो जको पैठ ना गिरहा
तो पायै॥ तुरसी पूरब भूमि तें पाइये कै पूरण पुरहोय
के संत संगम निध्यान तें॥ ओर उपाइ न कोइ॥ तुरसी रहि
वत राम को अति ही नाम निहकाम रोम रो मही यो के रे स
हज सुमिरन राम॥ तुरसी रोम रो म रंरकार धुनि सहजे
चली उजाइ ज्यूं कारिज बिन कुंजार को सहले चाक फि
राइ॥ तुरसी चाक फिरयो करै बिनही कारिज सोय
यूं नर बाहरि संत के परमनि निहि होइ॥ बिनही जपी
यो जापहोय अखंड उरमै अैं ना तुरसी करमाला बिना
बिन रसना बिन बैन॥ दरसनां हलैन कर चलै डुलै न
मनसा सोइ॥ तुरसी मनकू होइ रह्या सहजै राम रत्त होइ
॥ फूरमा लाफेरन को घट पट मिटि गई अैं ना तुरसी
आत्म ध्या
यह मनरहि गया अटूल आत्मा ध्यान॥ तुरसी आतम ध्यान रह्य
नसु लिम घन न्यारा होय॥ ज्यूं मुषक मारा पाया फेर रह्य
अैसे सोइ॥ तुरसी महा बज्र पाय लिको हो तो परदा
बामासो सबरि तो फिटि गयो॥ चितरहि गयो रेकरा
म॥ तुरसी राम नाम ही रहि गयो या चित मांही सोय
ज्यूं हस्त पग जु द्वार ते तन तन कबकु होय॥ किब कु
न उतरई द्वार ते हस्ती को चोडि तुरसी यूं चित रहि गयो
सुमिरन मे सोइ॥ टास्यारू थें नां टरैरहै को मांदिक
ताहि तुरसी चित्र की बत्ति के ज्ञा करै बाजि बया रि॥
१२ ज्यूं मिरवर की छांह में निको के पज्नांहि॥ तुरसी ब्रह्म मांद
मन हैर सा राम नाम के मां हि॥ तुरसी ब्रह्म सां
नाय है नां बूक हावे सोय॥ रसनां कर माला बिना
अखंड उर मे होइ य ह सुमिरन संतनि कह सा सार न
त सज्ञोय॥ नवसि धकी ज़िहाज्य यह चटै सुत धे सो
॥१५॥४७०॥४९॥ पादसेवन विधान॥ चोपई॥ ह
सी सब गुण परम अवतार॥ सो कसे वा अति कठै धर
तो निरगुन की सेवा सोय॥ ताहि साधि बे सके न कोय
२ साषी॥ सिवसनि कादिक आदि सब रिषमुनि
सोय॥ तुरसी निज सेवा करै पे पार न पावे कोय॥ स

८८

पर्यो नांदै हुरिद असधिंनखिरि आमनताइ अरचनन
गहिकरेयहि नाइ॥२७॥ चित चंदनघसि गातलगावे
नेतिपूल्हकै अंगन धरा वो॥ तुरसी आंति तजनतहोइ
अरचननगतिकरेयू सोइ॥ तुरसी और अरगजे
नो दिहैकहो कसलोगिने भाव नगति के अतिही
सुगंध अरचो अपनो आनंद कंत॥१॥ तुरसी तर
हीले नहां तीलमंजरी सोइ संतोषके पक्षपजु बने
सुंदरमाति संतोइ॥२॥ अरचो आत्मदेवकों अतितम
रधतिहोइ॥ तुरसी यह अरचन नगति मंत निवरभी
सोय॥१॥ जोरहुदीप गग्यानको अनहद घटा बाइ अ
लद्दसनकरे आरती लल्लि हि असि अंतरि आइ॥१॥ अ
जंड आत्मदेवकी अतिन भावनपाजाय॥ तुरसी यह
न अरचनगति सतगुरदिई दिषाइ॥ तुरसी यह
अरचनगति कुछए क कहीसुनाइ॥ आगे बंदन
नगति को गाइ दीनै ताजु याइ॥१७॥पर॥७०॥ बंदन
[illegible]॥ तुरसी असुग अमल पाप सब बंदत हरिगु
साधा सा न कातलहीं नुछि नजा हिनोसि अपराध॥
रसी गुरगोविंद संत निविसो असिनि भावनपजाइ म
ल्लत लिवनकरे सोपापनरहई काइ॥ बंदन तेप्र
रको संसति गायो सोइ तुरसीता विधिने दक्षं सम
साक्षी कोइन तुरसी एकनिरगुणसरगुणएको नजे
रूप पैसाव लकनसा मत्र सुत्र तनिकसा को ऊं
भेलानन हरद॥ तुरसी निरगुण बसहे सरनग
[illegible] ज्ञीवान नेत्रा छिक हत्यागीरो तनविनंनि
कीवप नातत हि हिम धनये को क सोई संतसधी
सोई मंत गुरसम ईश्वर सोई तुरसीबंदनकी वहचु
निरगुण रामसी निरगुण सत गुरसाध निरगुणसु
गोइलक साक्षी अतिरहत अमनाध॥ तुरसीनिरग
बंदन सतो मडी सरगुणनलके होइ नयनकी वि
नगतिय दावि दक्षण नतसोइ॥ तुरसी तनदेव
हो दिव आत्मा मांहिनसाहिन जही का सोकर॥ म
मर्इ धनामण नो क दिषावको करेफुनि परिप
निकतो॥ तुरसीय हमन कमल चनम नेमाहिनी
ति रामहि तिमांहिनीने कंगा अंतरजामी राम तुरस

ब्रह्म कालिन पाय १० ॥ हिरदे हरि गुर कौ न जान ॥
४६७ संतन की सेव तुरसी अधन नि हरि कथा रस न रमे गु
र देव थाकरि सेवा हरि जनन की सुष पुनि हरि को
नाम ॥ भगवत पद अवलंबन यहां औरन को कहा म
र्ग ११ ॥ तुरसी सेह रि के गुर संत जन जीवन जानै ए ह ॥
और अस्तु न संसार सब कंचन लावै ने हा १२ तुर
सी ति रन [illegible] की चित मैं आने नाहि सेवा माहि म
ग्या रहै ॥ ता मता मके मांहि १३ तुरसी ता नि दे ना ब
ड़ी नांह [illegible] बिसमाउ मगन रहै हरि सेव मैं मो सेव
सति भाइ १४ तुर अभ्यां तो पै नही को पन का या
सि संतन की सेवा करै को मन ता न रधारि सुरग
न पातालह पावों छै नही लगार ॥ तुरसी नि स दिन न
[illegible] सेवा सति भाव १५ सत गुर सो कृजनन के
चरन कंवलनि सिर नाइ तुरसी नि ति पड़ जार है निम
न [illegible] १६ जो सब की सुद नि सहै सब दुः
[illegible] तुरसी [illegible] आने नही सो नि ज दास
कहाइ १७ जो सब की सुदंनि सहै कसक न आने
तुरसी [illegible] मंत चरन ता रि सोइ १८ तुरसी
[illegible] दास मा ता सुषपल
[illegible] बिलास २० संब संतन
के चरन की रज को [illegible] तुरसी असे
[illegible] २१ [illegible] बिन दास के जो सुष
नि कसे आने नाही तुरसी व ह दास न ही है असो च अ
ग्यां न २२ [illegible] दास न रमा
तुरसी [illegible] आने नाहि २३ जिन
[illegible] सो इ सुपने कू
पनावै नही [illegible] कोइ २४ [illegible] चिंत निर
[illegible] तुरसी दा स ता दास के न
ही [illegible] २५ [illegible] महा अधि का
[illegible] बरीष को ता हि जो
सब को [illegible] २६ [illegible] ब्रासा दिष
२ [illegible] हरि दास लूं राषो नाहिं कोइ ॥
[illegible] ॥ तुरसी [illegible] सष
भाव होइ हरि मंत्रो सो कसद गति होइ मन सा वा च

कहहैसकाकामा१४बाहरिसेवा

कसैहोहीअपनुआ

उ१२

तुरसीनिरनाइयहांनिजनीकैकरिसोइतेउरअंत
रहरचेकपरमलाहिकघोइ१४तुरसीकपटजावत्या
गेविनांपरमासरसीसोइपाषंडीपरिपरिजेहेपरम
मुकतिकैयोंहोइ१५तुरसीपरममुकतितबपाईये
जबऐसेहोइआइहरिगुरकूंबंदनकरैरीकभाव
उपजाइ१६तुरसीयहबंदनविधिकहीमहाबुधिज्यो
पाइजियाहिजउरदिढकरिगहैप्रेमभगतिफलपाइ
॥१७॥५३॥५०॥दासनविखांन॥तुरसीबनैनदास
कूंआलसपोकलगार।हरिगुरसाधूसेवमेंलगया
रहेइकतार१चौपईहरिगुरसाधूसेवामेंहीएकट
मरहेअलसाइजुनांहीजिसाषांनांजादगुलांमातुरसी
पावेपदश्रारांम१संतचरनरजसीसचढावैऊभ
धरआगैजुरहाऐआगयांसंगनकबकरैयहप
नपकरिमदधर्यूंतिरन१सापतुरसीनिहकांमीजिज
ननकी॥निहकामीहोइसोइसेवानितिकस्योकरै
फलबासनाजुषोइ॥लोनकाजिरंमहिजेजोनांम
निमतिदेहांनतावतदासातननहीतुरसीसोसाझांन
पाढावतसोदाहैसहीसंतकहैसबकोइतुरसीभग
तिकरिबांछडीदासइनीसुषसोइ१सुरगतोकबो
श्रेनहीनांनरकतेडरायातुरसीनांइनमारहे दास
नांमसोपाइ२कोऊतेहधनमानकूंकोऊमांनसु
सुगोदासतहेहरिजगतकूंमेटनकूंउपदागए२दा
सबडाईअपनीआपनेमुषकराइतोतुरसीवादास
कोहासापणघटिजाइएअपनीअसतुतिआपमु
षकैरैकरावैकोइसाकोतपपांनजुघटैज्युं सिस
कोनाजेसोइ१एकबकजूतपितरकबोकबरूदे
वीदेवाकबरूनरहरिकूंनजोनहीअनिनयहसेव
११आनंदेवतजिरांमकीसेवाकरैसुजोइतुरसीदा
सतबजानकहूंहरिकोदासकहाइ१२जोदासाप
नदिढगहेसोरमिबाहैजाइतुरसीताहरिदासकूंक

तिनि अकुलै वै
या ताकी ताकुं सोइ ॥ ४१ ॥ तुलसी यह साधन जगत
ही ची सोइ तिन प्रेम फल पाईया प्रेम जग
॥ ११ ॥ ५८ ॥ प्रेम ज गति छिन ॥ तुलसी
गति यह जा ता के नहीं होइ
[illegible] तुलसी गति यह मन बिकु बल होइ
[illegible] न सु थिर है न काय ॥ ४ ॥ प्रेम
[illegible] तुलसी सुख सरीर की रहै
[illegible] गति गोईडी निकेरी [illegible]
[illegible] तुलसी ऐसे साधु मोइ रहे राम रत मैं
[illegible] सो हिंद गुन गावै प्रेमनि के पर
[illegible] तुलसी ता प्रवाह मै सोय गई क वीरता पानी है
[illegible] तुलसी क गैर जा मै नहीं कोक काय माहि
[illegible] नहिं फिरि बकु स्यो नाहि ॥ चौ ॥ तु
लसी [illegible] फिरि [illegible] क तरवर पात न मारो त्र
[illegible] प्रेम जगति सु पावन [illegible]
[illegible] प्रेम [illegible] पूरन मिसै तो मोइ तु
लसी [illegible] रही न कोइ ॥ चौ ॥ तु
लसी [illegible] की और रही नई सी
[illegible] दहती माहि ॥ सा ॥
तुलसी दहती [illegible] ज्वाला रोइ प्रेम
[illegible] गई रही नहि कोइ ॥ जीव सब अंतर
[illegible] तुलसी धनि धनि सत वे जिन
[illegible] ॥ ११ ॥ ५८ ॥ ५४ ॥ बिरह को परि
[illegible] ॥ तुलसी बिरह [illegible] ऑति गति रहे उदास
[illegible] प्यास ॥ तुलसी बि
रहनि [illegible] अपने मंदिर मझार पंथ निहारे पीव
को [illegible] बार बार ॥ २ ॥ [illegible] भांति होक बने [illegible]
[illegible] जिन पाइ नके बी [illegible]
[illegible] रही निस बासुर
[illegible] रही पपीहै होय
॥ बिरहनि [illegible] जक नहीं [illegible] बिकल सु
मार तुलसी [illegible] दारु [illegible] फत बारू बार ॥
[illegible] चाति ग घन की प्यास यूं बिर

४७२

श्रासकी।करिरहेफामकोहोइ।२६।तुलसीप्रीतिर
कपीवमिलनकीसोइप्रीतिप्रवानश्रोरप्रीतिविप
रीतिहैसोहितमकीश्रान।२७।तुलसीरामहुहाईमति
करहैंसोचेतन।तलीन।साचाविरहीजानिवहश्रो
रकामाहिकमीन।२८।चौपई।तुलसीबिरहानिदेकोई
परसुनमोकनरभिनाहेसोइजाविरहामाहीयूहोई
रामरहीलागीरहेसोइ।२९।सामीतुलसीबिरहबिना
सकलामिलापीकेप्रवानिजहांलहाबिरहतहांत
हांहैप्रभुरूपहचानि।३०।तुलसीतीब्रसबेगिय
हसंतनिगायासोइपीवमिलनकुपंथयहश्रति
तनुलागेसोमनु।३१।ननसुबजारूश्रागतिमैमनसुष
देषैनहोइसकलनसुपतुफकेपरैवारूत्रिनव
नहोइ।३२।तुहावेनहीतुफबिनासंसारीसुषमोहि
तुलसीतबसंतचैनहोइजबनैननिरषैतोहि।३३।
।।निलनिश्रपनेल्यायकुंदेषूनीकेनिरताइतुर
सीमनकोपटलाइकेराषूमधिसमाय।३४।तुलसी
निसदिनल्यालाकरिसदूंसोपीवपांकैसोइजापां
रछिनछिनबिरहकीरहीडांवाडुलीहोइ।३५।तुलसीइ
नननगलइलानिरषतरैनिबिहाइदिनरूकरष
रिसीसपरिहरिमघसोवतजाइ।३६।श्रजकनश्रा
रामसीकरतरहेछिनमाइपलकपलकछिन
तु छिनसहश्रोसरबीतेजाइ।३७।श्रसकसबनहे
मो सोईयातुमजानतनिधिहमसीन।तुमनिरंहीनाथ
जीहममललफितलफिजीवदीन।३८।हमतुमही
लागेसोचैश्रंतरजामीराम।तुमकूंश्रीफहोइ
रहेसूंकसबनिहैकाम।३९।श्रतिहीश्रनाथबि
की मीश्रपनोदरसदिषाइतुलसीसुनाथंद्रीण
लीजेसमिलनगाइ।४०।तुलसीलीजेसोमिलत।गाइ
टिजुगकोउपदेशतोहोहरिछिनवननराइमिलि
यहप्रेमवढावो।४१।हमतुममेंतुमहममहीमि
लिसिधलौसोइतुलसीतबश्रानंदहोइजबपीव
सीहोइ।४२।पीवपीवरटतनोबिरहनीकोट
गहोजाइ।तुलसीदासतबनलकहूंबिरहनि
नामकहाइ।।छ।।इतिश्रीपंथ।।ग्यानबिरहलो

नाही [illegible] तुरसी [illegible] नवीं नताबो जिन क
रिराखे कर [illegible] जीर रामनाम सूरचि रहे ज्यूं रचि नांम
कबीर १७ तुरसी जिन को कं साधू जोग्यानबिरह
को आदि [illegible] तन आपनो रहे अगवहिं लागि
[illegible] कर मंगा हरही को कनाही बरि उगई मा
ही [illegible] माही [illegible] कयरै को घरी तुरसी देषत दे
[illegible] देषत के दीसे उते कयरि जीवत मा
नो तुरसी अंदरि हो इरहे दस्य घट अनमान १६ [illegible]
[illegible] परचा को पर [illegible] अस [illegible]
[illegible] सब मत देष जोइ तुरसी
[illegible] तुरसी सबही मत
[illegible] कबीर परचा पार सत पद [illegible]
[illegible] कबीर २ तुरसी साध कहै सो सत्र कहै सूरत [illegible]
[illegible] नर चा [illegible] सब ही नेम त्र नेम [illegible] तुर
सी कहा लौं [illegible] परचा की बानी जिन के अंत
[illegible] धनि धनि ते प्रानी [illegible] तुरसी धनि धनि साधवे परचे
[illegible] हिरदा कंवल में आइ
[illegible] तुरसी हिरदा कंवल में रामजी बाहरि भ्रमे बताइ
[illegible] जिन यह भेद न पाइ [illegible] तुरसी जोति
[illegible] अमै ने हीरदा कंवल मै
[illegible] प्रथम अनाहद सूं भया परचा पि
ड मंझारि तुरसी पायो परम सुष आनंद बढ्यो अपार
[illegible] तहं सुनि जै बाजे अनहद नाद तुरसी तहां म
[illegible] परम जोति सूं मन ला
[illegible] तुरसी तहं बाजे सदा अनहद के
[illegible] अनहद बाजा बाजही [illegible]
[illegible] तुरसी तहं प्रगट रही पारब्रह्म की जोति [illegible] तुर
सी पारब्रह्म की जोति के नही पटंतर कोइ रबि सिस सत
[illegible] रबि सत पसि सषीन
[illegible] तुरसी [illegible] पै ता
[illegible] पटंतर नाहि [illegible] परम जोति के पटंतर परम जोति ही
आहि और पटंतर को नहीं तुरसी या जग मांहि [illegible] नि
[illegible] निरंजन निरबांण तुरसी ऐसी जोति
है सीतल [illegible] समान [illegible] परसत नासे पाप सब [illegible]

चैबैठिरागिनि सनेह सुहेश्यचतु सा॥ तुरसी यह परचा
[१७३] सही ओरचापचाजांनि जाकेन्यासनित्तसई ओ है
सुषकी षांनि॥ तुरसी रांम दुहाई सति कहूं यामे मि
[जृ] थ्यां नांहि॥ बिनघन चमके बीजुरी रूमदेषी नैननि मां
हि॥ बिन बादरि नी तरै॥ झिलिमिलि झिलिमिलि
होति॥ तुरसी रमादेसदेषीया पारब्रह्मकी जोति॥
तुरसी हिरदै नांकोकै ओरहै वे श्रवनां कोक ओर॥ जि
नकरि सुनी रादेषीया जोति अनांहद टोर॥ तुरसी च
लि तहां जाइये जहां नांना बिधिके नांद सुनि सुंदर सु
[बि] रलाइये छुटि जाइ बादंबाद॥ तुरसी चलि जहां
जाइये जहां गये यह नांहि॥ बाजी को बिसमरन होइ
रही रहता यरमांहि॥ तुरसी चलि तहां जाइये जहां
परचे सुष सोइ सुषसागर मिलि षेलीये बक्कर बि
छोह न होइ॥ तुरसी कहिबे की नहीं सुनिबेकूं क
नांहि॥ दिषन सिरषी बात है यह परचे सुष मांहि॥
जिनके रहे परचा भया सुन्या अनांहद नांद॥ तुरसी
तेतिन षसमी भिनि भिनि के साध॥ तुरसी धनि धनि
साध है जिन चेतन तीया चीन्हि॥ जट घटनिकूं बि
सरि गया ऐसी अदभुत कीन॥ तुरसी चोबीसों
[illegible] परे जुनाय तापदसूं परचा भया
परचा कहीये सोइ॥ परचा परमात्मा का तुरसी ओ
र न आंन॥ हरमां ही दरदिन भया [illegible] अनहद घुरै निस
[illegible] मे बाजा बाजही हो [illegible] जेजेकार॥ तुरसी
[८] आंनंद हद रहे भावे मंगलचार॥ तुरसी काया
कवलमे कोमल कवल है कओर॥ तहां निसानि
[illegible] नहीं [illegible] निति [illegible] मधुर मधुर पातुर
[ट] [illegible] अंड [illegible] निरति करइ ऐसा अचिरज देषा॥ तु
रसी [illegible] तुरसी बरषन लाग्यो ग्यान घन
घटमे घटा संजोय॥ बिचि बिचि चमके बिजुलता
तेज पुंज की सोय॥ घटमे भेजा फूटीया निकस
निरमल नीर॥ तुरसी अचेता नीरकूं सीतल भया स
रीर॥ अमृत पीया अघाइकैं नागी त्रिष्णा पाहि॥
तुरसी मन पूरन भया बक्कर निजा चेका हि॥ पू
पारस मदमे मिह जात॥ पाया पूरन नाथि॥ तुरसी ता

रहै सजोग इए चौ तुलसी एक पालमा एक पानी म
रचे जो कोइ सहनानी एक परचे पकरनी जुग्र ले जो
[illegible] न हि गये जे नही आवे [illegible] सामी एक बीज जवी
नक ज्ञ नयो ता कि चरित्र हि गये सार पेक लेक गनसू
रहे आपा आनि प्र ज्ञा राचि तुलसी यूं देह अदेह बिचि
कृतनो ही न दवि चा रि देही दिव देहा लीये अदेह
देह [illegible] तुलसी तिमर परचा [illegible] जानि यह परमज्योति के माहि
सिंध लहर जन होइ मिले बहे लो बिलग रे नाहि चौ
[illegible] तुलसी बूंद लो बिलग रे नाही जो बूंद सों चलि ज्ञाइ
नरे जाति की जाति जु साध बिजाती मतर ध्यान को इ
[illegible] आर तन्न नी कु रदन नो करम काट मलक तरि
गये तुलसी सु पे पुनि ज्ञो जु मो उपर चे माया कु सम
[illegible] साखी तुलसी अपन दी नेरम दी अमल आत
आरांम [illegible] दरसू परचा नया गया पुतला इन्नु काम
[illegible] तुलसी जहा रांमत हां कामनां कैसे थौ व राइ
रिकैसा रहि अलख जति हम कहू देव नाहि [illegible]
रहि र जनी नतहां जहां रांमत हां कामा तुलसी कैसे
[illegible] तुलसी पद परसे जु के
आहि जो सन्मान [illegible] गति गत [illegible] रहिग
ये देहत सां न [illegible] साध घट लो देखी ये तुलसी संतम
[illegible] पाला गलि नीर [illegible]
[illegible] तुलसी संतम [illegible]
परचे यद रहि मिले साध अहि तही काय [illegible] क
या अ [illegible] पर चे रत की साइ सूपरे चिके दी
पसे [illegible] नपा धिन काइ तुलसी काया कुजा इग
रि देखी जुन हि माइ जो नरो क अंत घस पूरन प
[illegible] सुखि मन जु है [illegible] तनि मे रलि
जा हि तुलसी जार न गडन की बाकी रहे जु नाहि सू
[illegible] पर चा अ [illegible] सब माहि जके हा हि जो तुलसी व
मिलि ए कहो हि संधिर है को कनोहि [illegible] तुलसी गये
न [illegible] हि हि त्रि यदेह सुधरे क आमरी
रहे सूरत परचा रह तुलसी जी व ना व जु मिटे सु
ध सी वा हि रहि जाइ संतनि मिलि तो एक हो हि परचा

५४॥चौपाई॥क गाथे
तुरसी बसे अनाहद तत्वं बरघनला॥
गात्रअमृतअक्षयसोरसआचवेआत्मसारपरकोकके
कमंततहांकेबासीजहांघटइणीकंवलप्रकासीके
कदमदलकरिहेनिवासातुरसीपेषिपरमप्रकास॥
पुसा॥कोककोअसहंप्रकंवलकोतुरसीबासीसो
इ नारसमेसलैं॥होइविहसीतिहोइ५॥चौपाई॥जहां
नागमगजोतिकोनिवासातुरसीतेनभिपरसेतासोपर
सिपरसिआनंदीहोइगोताआनंदकोअंततनकोइ५६
सी॥उलटिचितननघरिगयो॥जहांअनहदघुरेनिसा
न॥तहांबिनपाइनहीनिरतिहोइबिनरसनागुनगान
५७॥दहदिसदीपगदीवी दहदिसकंगमानदहदिसि
चंदबिमलरहे तुरसीपरमस्थान॥५८॥तुरसीचितह
तहीनजडीपरमजोतिकेमाहिअतितातीनजुके
रहाअबइतनतकेनांहि॥५९॥इतनतकेनेकीनहीजु
करोफंदमांहिं॥यूंचितअनहदनादमें॥गत्यासुनि
कैसेनांहि॥तुरसीतिकोघरजुयह॥परचाकरिएआहि
जिनबडभागिनकेनया॥जुगिजुगिसुखबिलसांहि
६०॥तुरसीजातालाइकहमनांकतें॥सोईपाइगेरसत
गुरतेसोधीजई नहीतोमरतेदोरहे॥चौ॥तुरसीइ
शीतपतिसिगांनी॥जबपरचेपीयासुखपांनी॥जापांनी
केपीयैसोयबहोरचोतापनेदेनहीहोइ६१॥साषीअंत
रकीआतसबबुझीसंक्यागईसिराइ॥तुरसीमनपांन
नयासुखमेरह्यासमाइ६२॥पांनीतहांपावकहीप्र
सुतहांपरपंचनांहितुरसीनांगनेदेनाएकोटितिमर
मिटिजांहि६३॥बिसपांनीतिमरनहीसमिस्थाननही
तापातुरसीपीवपरचेजहांतहांनहीपुनिपापइ
बरसगपदोकरहेउसमसुषचनेएससमांनजीवसीव
लिएकरूवा॥परचेकासहनांन६६॥परचासबके
ककहतहेपरचाकहीयेकोण॥तुरसीमननिजम
सूभिलिहोइपांनीलोन६७॥तुरसीपरचापरचा
कोकहेंपरचामांहिबबेक॥एकपरचेपदंनिहो
एकहोइमिलिएक६८॥तुरसीपरचातेंप्रकार
संतनिपाएसोइएकबसगलतानएएकदिबि

[illegible]
ब्रीति स्नं पलटि जातै राम [illegible] सो तो सुधा सुइ
या तुरसी रू चिके सोइ मति वारे बास न जाे
न नहीं होइ १ तुरसी बिदी बदे राम रस जो बि
ही राम रस बिदे बिना मिथ्या रस रा चा
तुरसी मिथ्या वटरस जोग
वन तुरसी नौ रोग नाहि जु भाने बिम बेका
बिंदी बिंदे रस राम २ सो तुरसी श्रेसा को
जगीया जनत गदेही धाम तुरमाहीं श्राल
श्र चवत अमृत नाम २ तुरसी अमृत ह
ज्ञि जो श्रि चवे रस काम कालमुख वापति
सु चन दिसा चै राम २२ तुरसी रातौ राम का
रस गुलम्यान तेजु ऐके से रू चे श्रडडी सु
न २ ति तन होह रस्या ग्यान मे क रि अमृत
न तुरसी चै स सन कू का जानै जगत ज्ञि
हि ताके हिरदे राम रस पूरि रह्यो न घ सघ तु
हि तिन सभि तो त्रिलोकी कौ सुष २ सो
पावे है बिदेह जिन श्रचयावह श्रमीरस
डारो प्रेह को क चंदन तेपन करो २ सुध
श्रम साध सहूको चित वन नही करि सा
हारे पीके प्याला पेम का २ ३ २
को परि कर जा तुरसी पीया राम रस तन म
ति सुहोय तो रू प्यास मिटै नही मीग लागे
जे सो मीठा राम रस तैसा श्रौर न श्रांन तुरसी
हि अवृते त्रिपति न माने प्रांन २ अनंत
साध जो अनंत सिध जोऐसोइ तुरसी अचवृत
स तन न भरि थक्या नको इ २ सन कादिक सु
सिव नारद दिस बसाध तुरसी पीवे राम र
न को है अगाध अगाध तुरसी अगाध अगाध
है कुलिपी वते जु नाहि श्रटटदरीया राम र
ब धे क बुनाहि तुरसी प्रेम मारी लागी रहे
न अनक चिहोइ आतही मीठा रांमी रस
नही कोइ तुरसा अघावे को कनही पीव
जगबीति श्रंकु श्राति तप्या सहे यह मति

हाय ४। तुरसीयापरचै जुगति बिरलाजानै

कूरिकू रिबर्क के मूरो गुरसूप्रापतिहोइ॥१ त

॥पुठा रसको परिकरना॥ तुरसी अनंत०

इमही ऐसा मिष्टन कोइ जैसा मीठा रांमरस र

ततहां सोइ॥१॥ चौपई॥ तुरसी रांमरस मांहण मा रासे

जीवनप्राण आधार जिनि आरतिसूं अचया

ननरहे बावरे होइ रह। सापी॥ तुरसी इही सुषन की र

मिसारन कोइ महा मतिवारे होइ गए अचैत्र

मोइन॥ तुरसी तिनकी को कहै जिन अच्यारसरां

जिनें तुरवासं नांसि दीसे तिसरे धनधांमसुं। तुर

श्रमी अचे ऐसु की रे बातें मोपाइ रसूं सुषकपा

पीया इतनेत रूवानजाइ। तनमनकी सोधीनही

मापर नहीं जांनां॥ तुरसी अचया रांमरस। तिनका

महनांन ॥ रांम रसमांहण अचवते आपाकी सु

सेनसिला सरूप हे सला रहे सुमाइ८॥

परंतु रसी रसरांम को नांम। ताहि अचवतें ओ

कामदरसां वहि देह के मांहि। तावे सोरम अच

हिग॥ तावत सोरस अचया नांही जावतकां

कायाके मांहि॥ तुरसी जनपरिको पक रहवे कोध

आइ दिपारी व्यावे ॥ सा॥ तुरसी अचया रांमर

मत्तिवारो रांमसरूप देही सुध न लिगए बिसरिग

रह रूपण॥ जिन अचया यह अमीरस होइ रह्या म

तांना॥ तुरसी ता की दिष्टि में आवत नांहि न आन

जिनह रिरस हचिसू पीया रहे परमसुषसोइ तिनज

गुबाण॥ जिनहीं को टिकरे जो कोइ॥ जाइ तनसुमन

सुषापाती परंपर मरस माय॥ तुरसी सोरस अचवतें

आंनदबढे अपार॥१॥ चौपई॥ तिरूआंस्यां तिह हूग

मपेरी तारस अचवन को जो करे सोइ तनतविदे

वनी बिसारे तलट अषिलमनतनमें धारे॥१ रसा

धी बिसरे गए विंवलिसकाल जिन अचयारस

हां॥ तुरसी तारस में नहीं कारूप्रीतिन होह॥४॥पी

पीयारांमरस। सबको कआवे। तुरसी पीयाजां

मुषऔर न ताबै॥१॥ पीया पीया रांमरस सबेकू

सोइ तुरसी पीया जांनितबा। तन सुधिरहे न

तनीका को तुरसी या संसार की १५ होइ रहे है गहर
गंनी [illegible] ही बुधि बिसरा के तुरसी भषि सरीर कु
[illegible] बडु न मिटे १६ सा [illegible] तुरसी जरना
[illegible] सब अंग न मे मोइ मार न्हूत संत निकया
[illegible]
[illegible] तुरसी कहै [illegible] ऐक ही कहै कहू
[illegible] दसु गणन [illegible] मही रही है सो ही होइ
कास [illegible] पचीस [illegible] काम घट बिस
[illegible] तुरसी [illegible] निरधार बिन बही बही फिरै लोइ
२ तुरसी बही बही फिरै लोइ यह जाव तलो है न तास
[illegible] अ [illegible] प्रकास [illegible] तुरसी ताका
[illegible] पाये [illegible] घटदर संघट मा
रहे [illegible] तुरसी [illegible] न मान
[illegible] माने
रहे समा [illegible] सुध मार कु [illegible] सा [illegible] सुधि
सार [illegible] तुरसी अति ही आग
[illegible] न को [illegible] क मास त्रिप
[illegible] ते [illegible] तिने ति
[illegible] बिना [illegible] सा [illegible] तुर
[illegible] नाहि कहे क
[illegible] आगम आग
[illegible] तुरसी कित पढि
[illegible] आवे नही
[illegible] तुरसी [illegible] करनै को
[illegible] मित [illegible] जाकी न
[illegible] तुरसी [illegible] मे नाय धावै
[illegible] हो नही जा
[illegible] तुरसी [illegible] पाइ १९ [illegible]
[illegible] तुरसी
[illegible] को के बाध [illegible] तुरसी
[illegible] सिव बिरचि
नारद मुनी [illegible] तुरसी
[illegible] महेस [illegible] सनकादिक [illegible]
ते क कहै [illegible] निरदेस [illegible] कहां प्रवेस

।लकु कीरीति ३।।तुरसी पीवत पीवत राम रस तह
सोयु रसत नमे ना होइ गये आपा पर सुधि
।।मीर की सुध ना रहे गई बिसरि जन होइ तुरसी
अमर स्वादेजु पाय पुनि सोइ ।।७८।।६०।।
नांनोपरिकरन ।। जावत विषय रिपतन महीअ
अरु बिद्या तुरसी ये अनजारे छिना छिन छिन
धूं।। तुरसी जावत अपनो पौनी तोयातन मा
हो ता वतनोई का जे है औरकानि कोउ मां हि रह
गाहे कु न तडु भो बिधि जा दन विषय रिपतन तुर
जरजरे छिना छिन तन ते जन मरन न जन
म मरन न चवा जो जो जावत जरे न ताहि तुरसी जो
ऐसु गति सूं तो से को उनाहि ।।८।।चौपई।।तुरसी सोई
जुगजो नि जि जिये अजर जरे ज्यों गोनि निरे आ
ते गुरमचत हो जहां के गये बडु दिन ही आये
प तुरसी नाद बिंद मन माहि असा धरु मन से ये
कारु जावत जोगी जरे न रहे ता वत उपजे बिनसे
इहां सारे जावत अजरे जरे नहीं अमरन मंडे अर
नावत अथिर थिर रहे हे तुरसी थिर थिर जाइ थि
रत थिरत कलप नांब सिंनाद बिंद अरु ताहि तु
के ते जग नये अबन ल टा ल रहइ ।। अति त
अजर आ मरा हो या तन मांहि सोइ तुरसी जरे अगा
निसूं सो अजर अमर मन होइ ।। जस्यो न जाइ अ
मर सब दाज ठजी दिपे न मारा तुरसी चेतन ही जे
जा के ग्यान बिचार ।। तुरसी अजर जरे जोगी सोई
अजर जरे सोई सूर अजर जरे सोई संत जन पीवे अ
नद मूर ।। जेसी विधि सूरी जेसे सकल नदी बिंग य
को नीर तुरसी यूं अजर हि जेस सोजन तिन वनप
।। चोपई जैसे नीर धतक नहि ठु रावे का हू भांति क
न कहावे ऐसे अपनो ग्यान न डारे तुरसी जरे स
जोगी सार ।। रसा पी सार यूं तजो गीसोई जानर जरत
जर ना बिन न के ते परे खाली बास न सोइ जं चं
चूं बाल्यो करे रैनि दिवस च्युप सोइ ।।तुरसी ऐस
स चेहि जहां तहां न न उक कोइ ।।रली ।।तन
कूं करि दरी आवा मन ते मे ग ब वात न पकरि लीन ते

४११

रनातिसिरी आगम जु मोक्ष मपी लपु निषेधी तहां
चिनम के कोय रान पती रथ के धरम मा जपत पस
जानि तुरसी ध्यानक स्त्र आपि को त्यै मारग प्रवाि
नि तहां के क जाइ मन के अरु पकु चन सकहीम
सान हां बस नै ताइ को संत निकीया प्रवेस।। ह
सी संत तहां गये राम नाम म्यो ताइ जहां र बिनदे
कुरि स कैसे सि कनस के जु गाइ।।४।। तुरसी संत
ना हैं जहां क धन न्यापै कामना मनाम न्यो ताइ को
कीया बुन्द विश्राम।।४।। तुरसी संतन हंमारे जहां न
ही प्रान्त कोय सारह ही मेमुन कहि नाम को छिन न रि
हा संचा रा।।५।। तुरसी ते मारग है ऐसा पंथी
जनी न सच तेसा आमि हो अन हि न हो न ही जाइ
ते न हि न रिय के ज्याइ।।६।। सामी रातियो सचिं
कैसे तन माही फिर हाथ तुरसी आतमराम कुं ते म
माटे सोइ।।७।। तुरसी तै समानि को क नहीं उत्तम मा
र न्यां ना मा श्रम नामि दिखायो कहि अति नृपान
।।८।। सो परे तुरसी ते प्रांन तह जन्म दे दात, गीहो तो
हो जन्म जैसे तुलसी थिरा जजात पुरुष हो आदि स
तामही रहे तहां।।९।। साधो तुरसी तु सम्तु ते तहां ऐन
ही सेक तन पछि के न प्रदेश निबाकु नार तौ हे रसा
यह सब लिंग सोइ।।१०।। दिलो न ई खित पिरनयो तु
रसी ते समय या ईस कान मना रंपन छिगा ना इरयू
रह सह।।११।। काजु न अप नमि न्यो करे सु नि सुनि
से सिय पा न सेक ही स्थ त्यो ना इ रूप कूच को र मिम
धा नर।।१२।। ना वे इस हो ऊदेह सो नावै सुध हो ऊ आप
ऐसी सयरि धरि कैसे कही स्थ न्यो ना इ।।१३।। ते न
गी सह जा नी सोर हि जाइ वचन अबोल तुरसी मन
को रूप थको उठी हो हि स्युडे ता।।१४।। ऐसे चित्र की
पुतरीरहि जाइ ए कही वेवा तुरसी ऐसे ब्रह्म सं हो
रहे हो वंद च को र।।१५।। तुरसी कहा तो आपी ए या ते
को ऊन माना नागी हे सो नाहै ये न लिक सत हो
मान।।१६।। तुरसी प्रानि के बयान जुक रत मन
सहे इसो सोई तो निन गहे हो नहीं जो लगी ब्रह्म सू
होइ।।१७।।१८।। इस।। ति ह कुर सी पति न रताते

।७।तुरसी अगाध अगाध बांनी सिन गही सुषम थिन चैे
प्रांणी कि थिकथि कै थरहे जु सोइ पिपरमतिपार कि
न आवे कोइ द्मा ॥ बानी पर की को लहै बांनी कोन
ही पारी तुरसी कि तें पिहत गुनी रहे थो निरचिहाशि
७ ।पंथी का षोज तक हां द्र हांमी नका माघ तुरसी जे
थि बो ब्रह्म कौं ऐसो आगम अगाध ।८ज्तरबेकी
पंडिता तिक नमर मन हा हि तो अपनी ओर को ।१
का की गिनती मांहि ।।१ अयांन मिकी को कहे सुब
हे जां हि बिषयारो तुरसी यह हेरां नहें जुदी मक निक
हि अंधार ।१०। तुरसी अं मियारी सुय हंत चन बस अे
गाहिं पर ब्रह्म हिजां ने नहीं रहे तो नहि तां हि ।११। औ
रन कूं कहे बुरी भयागो माया नेह आप अमी करि भोग दे
वे दिषा हेरा तिरोह ।१२। वो रोक थनी ज्यं कुम्हार को
नांडो कुथि बो करै यति दिन पांडो चुरसी करनी सु।
चित नांही यह हेरां न बडो मांहि आंही ।१३। औरन सूं क
हे नटे बयारे आपन कु लागे अति प्यारे औरन कूं क
हि बिषया बुरी आपन भोग रे इम तकरी ।१४। तुरसी
ऐसे अंध जु जोड़ा दिन के जू लतां नो मोड़ तिन हि जु
को समझावन कैसे दिपत अंध कूप को परे ।१५। सोही
हरष सो गर्को नदी में षंडि तरू रब सांहि तुरसी रास
पांनी गुनी छे गब परा कि समांहि ।१६। आगत बिचारा
क्या करै जाने नहीं कुछ पांन जांनि बुझि के बहत है
तुरसी यह हेरांन ।१७। अंधारो सु मरम कौं ता कान ही अ
देहो छती आंधि न सूहमें परे तुरसी अचिरज मह ।१
८। तुरसी अचिर जओ हि यह ता हि न को क जांन ऐ
क कहै ऐक न तजे निजे अनेक अयांन ।१९। चो ए
मिर गुण सुरगुण ऐक बतावो क बक जु देजु दषि
षरावे तुरसी ऐक बिचार बिन सोड़ तातें रही हेरांनी
होइ ।।२०।। क बकू इत कबऊ नत जांहि ऐ कबस्त पाइ
निहचा नाहि ऐक निहचा बिनां अंध. अग्यान होइ
रहे थेवी को स्वांन ।।२१।।८१।।८४।। तय कौ परिच
रन ।। चौपई ।। तुरसी तेमार गम गधार तहां को कान जं
क रिसके संचार चंद च कोर चित तहरां उतब कहूं
न हो अ नसम्यो जाई ।। सा ।। तुरसी ते मारग मआधार

कीयै मेहि जुलो हाजो तुरसी ले हरूप यह मांड सब
त्रि [illegible] मैसा [illegible] चन रूपी राम जी संत नका
[illegible] तुरसी [illegible] ही [illegible] आरा [illegible] एक हीलै
[illegible] पथ [illegible] नहीं रा चौ यह संतनि की
[illegible] आर [illegible] अ चवे [illegible] तिसु धा कीनी
[illegible] तुरसी [illegible] मारे पर मा सी यन [illegible] से बार ४ [illegible]
[illegible] रस [illegible] को [illegible] ग बासना चुकाइ तुरसी
[illegible] नसी [illegible] मोती हो इ आइ ५ तुरसी मन
मोती हो इ आइ कै [illegible] मे क हु संसे नाहि जग सम
[illegible] ऐ जुनाहि ६ तुरसी प
[illegible] ताकै एक ही आस औ सब
[illegible] नास ७ तुरसी पतिब्रत
[illegible] कि [illegible] रताइ चे अ चवे न
[illegible] प्यासा [illegible] ८ तुरसी प्यासा हि
[illegible] घर पानी यह पतिब्रत की
[illegible] ९ चौपई सुषि पतिब्रत
[illegible] सोइ सिंगार तुरसी
[illegible] सुनीह म साधु माहि
[illegible] तावत पतिबरत
[illegible] वस्तु परदे माहि २
[illegible] आगे सोइ तुरसी
[illegible] स जोइ ३ तुरसी
[illegible] मिथ्या सोइ जो लो प
[illegible] संजोइ ४ स कल लो
[illegible] संपति [illegible] तुरसी त्रि जन
[illegible] रचो स [illegible] तुरसी चारू
[illegible] राम चरना रचि रहूं
[illegible]
[illegible] तन पाइ के जे न जोगु
[illegible] तुरसीदास मन के [illegible] धृग धृग ते नर औ
[illegible] कीयो जुग तिन जानी को इ
तुरसी [illegible] रचते बादि तन पाइ
[illegible] पर [illegible] फूर मैं लीना तु
सा सन [illegible] अंधक माहि कीन [illegible] लष चौरासी

कं चन दासीकी चाका च रूप कदरजसुषा सो दिष
ग्रहोजुनी च५। पायोहो बकजत न करिबमिके चा
होषानि सो तन कोडी के सदा घोयो ६ तुतेसा नि
धा चिथाई सो व तमो वतेरे निविहानी बासुर आठ५
जनताप्रानी बपु बिमस्यालानि पतरा ना प्रि पन
करतन मनग लेरानां के बक्र जागि नैप्रे मुरारी।
मैते करत अव धिसबहारी। जब हिरदतागलि मेल्प
कंधा तकन रामंत चारेअध ७। साषी। तुरसी अधन
सुमिरे रामकुं अबिया के बाराइ तनमन रत्न छं
घते बीति गई सब आइ। ८। जिनि जो बनमे नाम आ
अबिनासी सुषधाम। तुरसी ते पछितांहिगे छनकटरा
मको वेचां म ९। याछिन अंगुरदेह का अति प्रीति
तिक री को इबारू के मंदर बलोछिन सत बारन
होइ १०। तुरसी मिथ्या देहयह तासु मोहन नाइ।
झाउ गए सब देषते जिनकी दीरघ आइ ११। जिन
के अगिनत लछमी चलते छा अजुआंहा तुरसी ते
कपाली गये निमे फूला वृ तवांहा १२ यावोह्रोजा
व निमहीं। मति को कगर बक गज १३ कटिनो नुछि
चालमां बाइनरी तजिकाय १४। मिथ्या माटी को ज
तना फिर माटी है सोइ। तुरसी ता कौ गर बकरि म
रिष मूंचे को कोइ १५। हार हार ड गंध चवे मतेमूत
की जुषानि। तुरसी सुपेकु नहीं या देहीगति जानि।
१६। जाकुं नर अपनाइ कौ पाले पोयेनि तिसो देह है
बदावनी जाइ पोंदेगी छिति १७। कहा रसो पलमें दि
कै दिषि जुने नर घारि जनम सिरानो जात है जैसे पा
नी पारि १८। मान कुं सूले आइया ना लै जाइ जु कोइ
तुरसी ना माही आवनी ना गारी जानां सोइ १९। याहि
सेहम कहतहैं तो हिजवार वारपद अी मरवकुरो
नहीं स कहते रामसंनारि २०। कामको धाकनि छि
बनरी मराछिन नंगुर हे सोइ और सी कदरजपदेहकुं
मति अपना वो कोइ २१। आगोपी छै जाइगी रहतनदेषु
देहरे मन का फूलो फिरै रामसुमिर किन लेह २२।

गरबन करि या देह कौ सेह होत नहीं बार तुरसी ग
रब गुमान तजि राम सुमिर यक तार ॥४३॥ जाइ जा
इ तन बीत नये कहा रहो अलसाइ सुमिर
सनेही आपनो मन चित मन सा लाइ ॥४४॥ बक
कहो कहा पाइहो इसी असोलिक देह तुरसी अ
ब राम के आपनो लाइ किन लेह ॥४५॥ आगे पीछे जाइ
गा अमर नहीं आकार तुरसी राम संभाल तो पत
यान बार न बार ॥४६॥ आगे पीछे जाइगा अबिचल
नहीं सरीर तुरसी साईं सुमिर ले सब माग रघुबी
र ॥४७॥ आगे पीछे जाइगा ता की केसी सार तुरसी
के सामीपी हिरदे राम अधार ॥४८॥ बार ही लेन तप
नयो कुमिन के हितन बार तुरसी यह : ॥
को राम सुमिर हिक तार ॥४९॥ कार आया देह की
होत न हो बार तुरसी छिन छिन ने मस्ह न म
न चार ॥५०॥ जो पीछे ही आइगी सो अब ही देखि टका
आ तुरसी तन मन सो कि को साईं सुमिर अघाइ ॥५१॥
साईं सुमिर अघाइ कै जब लग तन नी देह तुरसी
देह बिन घटे गा तिन बन होइ पुन नेह ॥५२॥ कहा पाक
की देह सों करत बहुत आपने सो तुरसी इते आपने
स सों न जितै मन तेसन ॥५३॥ बिनसि जाइ पल छि
न मही दिपें ही यह देह तुरसी इसी या देह सों करी
त कहा सनेह ॥ जो सब बाद धरि निपरि ते सें या देह
तुरसी असे जानि को छाडि देह को नेह ॥५५॥ पा
ते जुन गइ के सा जिर काया सरीर तुरसी ता हित्र
पनाइ को भति सो देह रहि हो र ॥५६॥ बा क हो ते पैदा
या अति सा कही समाइ आदि अंति मधि पाके हो
तुरसी ताहि बिसराइ र ॥ मति रहते या देह में क
राम सुमिरने सौ तुरसी चाहो परम सुख तो साहिब सु द
ढ मन नेह ॥५७॥ तुरसी या संसार को निस चो मानि
निसा ऐ छिन न पेजो छिन छिन मई पिन पिन मे होइ
आर ॥५८॥ जनना तो तुपन को सकल न पइहै
तुरसी असो जगत यह ता कूं देख न छूपिन ॥५९॥ पू थ
म सुपन संसार है ता सुपन में सुपन समान तुरसी
पाइ देह यह सा को कहा अभिमान ॥६०॥ होइ आइ अ

छिनके मझारि तुलसी छिनमें फदै
सो यह संसार ॥४॥ धूवरि के बादरनकी
कहां लोप [illegible] तुलसी देषत ही जु तौ
गो बदी तिप ॥ ज्यों यह नैननि देषी औसी
नही थिर कोउ अपनो अपनौ ओसर जु गति
चल्या जाइ जग सोइ ॥ जिनके हे वरही दूती गोव
मनहारी ते नागे करि जु निकारी ॥ करू न रही
ऐसे मिथ्या जगत यह माया रचित बसे
ममरन बिष्या ॥ फिरि फिरि यातें होइ
फिरि जपुजे फिरि बिनसै ॥ फिरि फिरि लै अ
वतार वन उपही तहे यामैं बार बार ॥
जग बिष्या सूं कितो चाहि हरि तो तुलसी
या जगत को सेवा करकै निरमूरि ॥ जीवत हू ज
गमतक तुलि मूए महामसान तुलसी ऐसो ज
गत यह बिन जाणै न सवान ॥ ऐसो सो जानो
जु यह संसार मग सोइ अव छिन दी जतरि गए ॥
जकाना ही कोइ ॥ ऐसे सजोगो नियह माई
धपित माइ न सू मिलता बिचि तिन मिलै कई
करू के आइ ॥ कोक काको कनही काहे देवो
नबली कं वगहे गा ॥ तबनि कटि लआइ
को घर राज पाट धन लछमी ॥ बिन जाणै न म
वात तुलसी है सुबछिनक को फिरि उपहोइ अनत
॥ ऐसो वत सुपन मे पाइये राजवइ उसमान तु
लसी जागे फूट है ऐसो सा सब जानै ॥ रैन रनिस
दिन ना वजपि कहारस्वा सुबसोइ यह ऐसे सम
यो जु यह बहोरि कहां ते होइ ॥ आलसी कके हा
होइ रहो नगिकिन कराहै उपाइ जिहि उपाइ की ए
नबरी ए दाफ तजम की लाइ ॥ आलसी ककहा
होइ रहो अब कि न सुमिरै राम मोति बिषरी लौप
करि तो हिलि जाइ गीनि काम ॥ तुलसी कलपि
बर्ष काया मन बिगास्यो मूढ अबनी कोह रिनाव
ते होइ अकलप आरूढ ॥ होइ आरूढ हरि नांव
ले घडि कलप नां आन तुलसी घडि कलपनां प्राण
मिले निरबांन ॥ तुक्या तुक्या हरि नांव ते आप

१०५

नहि तुरसि उर होइ तुरसी काँनि जुग केठ नहो डि
करीमि कोइ १ णोजि मि सिनिर्डि कीया जेते कलि
गती पेहु राइ रांम कहनपाऐ नही सिवि दीगऐ
नाइ २ तौ मनां ढुन तलो क को होइ परलोक
होति तुरसी मंत्र न छिब्रि तिजगपरे करन लोक
नोहि ३ जन जनको मनराषते बेरागरनि जदेह
तुरसी हुबुषि हाटुहे कवनसयांनपरे ४ तुरसी
नन सयांन परहो तृष्णा कंचन नन नम्रो हीर रामज
तिसराइ अनसाइ अतुरहे सोई ५ आल साईं
नहीं कैयन सुमत राजा राम तुरसी बीयोजा
तन ध्रुवाको सो धाम ६ तुरसी ध्रुवाके मेघर
तन छ नोवनजोइ कालकबू केजाहिगे हिये
थिरेहे सोइ ७ तुरसी मेनेमतिकरो भेते घरोत
शहि हिमेरे काको टहो तिहिबोट रहे हरि आइ
८ तुरसी मे निबलौ बसे जुतन मन माहि तब
लग दरसन देव को जीव के देसे नाहि ९ मेने बाद
होइ स्यात बिराम हि हिलोज तुरसी एपरदामि
हि न हिसे दरस न होइ १० जा गिरि वांनां चतरे
हार हो अंतसाई राजा राम रिफाइलो आसर
तो साइ ११ कुरोफेरहु रिफाई री तुरसी राजा रा
मा फिरि पा छे बुषि ता इ बो जब बिन सेद हो धाम
ग्राम रिफा वे सो निसरि गोकि लोककी आन व
रसी जो ऐसी कैरसो रेबड सुजान १२ तोर सुरति
आ कारन सिया कार स्यांन तुरसी उर म थि आइ
बी उहै अरथ जोइ पाइ १३ जो ते गुर कोसरदी
या तो आनि नहिं कहां जाहि तुरसी आदि अचल
बिधिता आरा धे नाहि १४ आराधन आ बिदेव
आ तसाधे काइ अध्य तुरसी अरि तिस न सुमिर
ते हिं १५ तुरसी कहनी का कथे कपे कछु न
होहि छू जो चाहो हरि दरस तो मनतन माहि
मोइ १६ कथनीक थि कथि कति मही बकत
बका रा तुरसीदास थया नही बिन करनी
करता र १७ करनी करतां पाइये बिन करनी क
होहि तुरसी करनी कीजिये मनगहि

...ननजाईहो अनंततनपाईपीवापीव
...तननति अनतनतनजाईहो ... किनसीव ७ सुष चाहै
...वकेपा सिहेपरसिहोइ किनसीव ... सुषसो सोजलै
...क्योंलेहि तुरसी सुगम गवार सुषसो सोजलै
...क्यों लेहि तुरसी सुषदुष परे बिसार ७१ सुमत्यागे सुष
...ईतौ निम बसु दुषदेउ ज्ञाइ तुरसीदास सुषपरहै
...हीं सुष [illegible] जाहे दुष जाइ ७२ तुरसीदास छिपकरपै
...सूं सुष में रहो नमाइ ७३ तुरसीदास सुषपरहरिदेह सं
...मरी लपटाही है सेनानाना गोगहे परहरि है से
...इ ७४ दुषपरे रोये सुषपहे सुष हि छूटे टोडे दुष कैसै
...परम परदेषी लोहि संसारी सुष ७५ ऊचे सुषको
...दुषिक हिमत हिडला वा जीवा तुरसी दुषवक्ता
...नेहीं मजि सुष सागर सीव ७६ दुष के सागर राम
...जी दुष के मजन हार ७ तुरसी ता हि संसारि ले
...मुषबार बार ७७ तुरसी या संसार की छंद व सागा
...जानि स्वारथ देवन ति मिले तिन स्वारथ अपछो
...नि ७८ तुरसी या संसार को सुषिने को सो सुष ने
...हां नर चीते बावरे रचे होइ बहो दुष ७९ तुरसीया
...संसार सूं निमषन वारी ते नेह निद की ते निज च षि
...नमैः पैरे के वधिकी षेह ८० तुरसी सुष संसार को
...कोटि दुषनि की षानि लिहां पहि सो तिप लगालो प
...चवकुं तन अपार ८१ जो लों तन आरोगि है तौ लों
...हरि सुन गाइ तुरसी प्राण परस्थ सिथे तन दुष अ
...चलेन नपाइ ८२ तुरा आइ फाले तन हि मन सर थ
...घटि जाइ तुरसी तन बउल न हो मन जिबो त्रिमन राइ
...८३ तुरा आइ ग्रासे तन हि मन वन लाइ बिलाइ
...तुरसी इन्द्री सिथल होई जन ब कछु होई न उपाइ ८४
...परहर परहर तन अय हा के तन सकल सरीर
...तुरसी राम भजन तन बा कैसे धो होइ बीराइ रेन
...अवे अवत नि रू सु जोन परै सुष बेना एस नाथ कि
...कं वरुम षि जे पले अति तन भेला छपा आंग सब सि
...थल है हि सम झे न ही सुष सेना तुरसी हरि गोवि
...द भजन नाकैसे धो होइ आन ८५ रकुरतप्री तिघर घ
...ट निस्सू गयो बी तितन सो इ तुरसी आ जऊ न चेतई
...यह अभ्यानी लोइ ८६ सो रता घट सूं करत सेनेह
...देह जगत में धरी ते नाते समझि जो हा अघट ही

सु मन न लाईये ॥ ६५ ॥ सा० ॥ जो पीछे हू आडनो
ती तिस नेही सो अब सही छिद्र काहु के हो रहे हो अस ग
अने ह ॥ ६६ ॥ चौपई ॥ सो बीहट न कीवो घटि टोह पहले क
छन करी जे नेह ॥ तुरसी जन हित उर में आइ ॥ ना महि सूर ही
लो ज्या ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ मन को परिचै कहै ना ॥ तुरसी मन पू
रब दिस्या ॥ जिस का सुर ध्यावे ॥ पछिम दिसा आवे नहीं के से
पिछिम जावे ॥ १ ॥ पछिम मन बहि जु सो उत्पति ॥ हरन अनंत
भ्रनाम ॥ तुरसी नाहि दिसारि मन ॥ पूरब करे प्रकास ॥ १ ॥ पि
छले सो छिन ना सिकार ॥ छिन स्रब गो चलि जाइ ॥ छिन तुरसी
रस ना ॥ तुरसी छिन सकल स्वाद रस पाइ ॥ ना बेमारि गब हि
सुरत्या ॥ तिन हि न आवै ठौर ॥ तुरसी चंचल चोर मन ॥ जपे औ
र ही और ॥ ४ ॥ तुरसी जब लग चंचल चपल है ॥ तब लग
कर ई सैर ॥ छिन हहां छिन वहां दसों दस फिरि आवै सब
ठौर ॥ ५ ॥ तुरसी जब लग चंचल चपल है ॥ तब लग रहे म
धीरं ॥ स्वाद गादन कु खाद स्यूं ॥ जाइ कैरै मिलि सीर ॥ ६ ॥ तु
रसी जब लग चंचल चपल है ॥ तब लग बके अघाइ ॥ ज
ब मन वस न भनि निमिस्या ॥ जब बोल्या ईन सुहाइ ॥ ७ ॥ तुर
सी जब लग मन यह जीव ता ॥ तब लग बरते रोइ ॥ मेते म
निस्र डाई स्यौ ॥ तातीसी लीसो हइ ॥ ८ ॥ तुरसी जब लग मन य
ह जीवता ॥ तब लग दिह दिस जाइ ॥ भली बुरी बरते सबै
छि मत्यम मन समाइ ॥ ९ ॥ तुरसी जब लग मन यह जीव त
तब लग चंचल है हु जब मन वा मरत गनया ॥ तब देह
नई बदेह ॥ १० ॥ तुरसी जब लग मन यह जीवता ॥ तब ल
ग पंच पचीस ॥ जब मन वा मरत कनया ॥ तब पांच पची
स न तीस ॥ ११ ॥ यह मन मारे सकल कूं ॥ मन कूं बिरला को
इ ॥ तुरसी मन कूं मारि हे ॥ पाहै है सुख सोइ ॥ १२ ॥ यह मन
मारे सकल कूं ॥ मन कूं बिरला संत ॥ तुरसी मन कूं मार
ही ति पाहै न गवंत ॥ १३ ॥ मन के मारे सुनि गये ॥ बन तजि
बसी मांहि ॥ तुरसी यह मन मसक ॥ गाय तन थी जीये जु नां
हि ॥ १४ ॥ मन के मारे सुनि गये ॥ ध्यान ध्यान सुधि भूलि ना ॥
तुरसी यह मन मसक रा ॥ याहि थी जीये न भूलि ॥ १५ ॥ म
न कि छिन यह मन है ॥ आगहा सो न ही जाइ ॥ तुरसी के
ते पचि गये ॥ करि करि कोटि उपाइ ॥ १६ ॥ काया कसे
क कु कनया ॥ मन का नार समाइ ॥ तुरसी मन रस रहत

छूहो निरबांन पाइ।१६।जौ मन कुं वसि नया होइ
तकौ मन करि गिनै मकोइ।तुरसी अपनै श्रो सरपे थप
लहि मत्र होइ सोइ।१७। मन सु मित्र ई किसी का कौ इह
मुराव।बडे बडे महा मुनी रिपु यहि मन हौ गेडि गाइ
।१८।तूके बीज समि।जहां न संचर कोइ।तहां मन आ
इ संचर करै।कांम कट कसं जोइ।१९।जोर जतन मगन नस
गकै।नया मांनि को मन तो।सूना हि नथी जाऐ।सिधि
नु मांझे जन।२०।मन को जे करि रिपु ब सै।बिचरै बोरस
रूं।तुरसी तब जन न छूटि गो त्या मन जागे सोइ।२१।कानि
को महा काल है।कोटि कसत्रु समान।तुरसी ऐसो मन
है।महा मृगा थग्र गान।२२।तुरसी तकू न थी जीये।जे मन
मृ वां होइ।कि ई चि कन कू न मिलगी।नू तथे न होइसो
।२३।तुरसी न कू न थी जीये।या मन सुं हित साइ सुप
क सी मिलै।मिट्ये न कू मथि अकूर न जाइ।२४।नाव
तु मंपूर सा मन।नया न तन मैं थीरा ता वन न केरो मन
को।छाडि नरीजे बीच मन ही कू तन सत कत पनां नय
जावै हर माहि।तुरसी ताकी चिंप यरि निकरन चाहे
नांहि।२५।देषौ या मन की मुढिता।चलता कें समझाइ।
तुरसी इय सुपका रिगिनै।मुषका उषका राइ।२६।मीव
कीटर मनी बसू रुचि मांनई सु सोघ है सद ड मधि सेन्ही
ऐ तौ ताफि त्याग न नहोइ।२७। अपने ही मन को का
पना, मन कूं बंधन होइ।जू ता लून निमा करी रही अर
फि मधि सोइ।२८।देषो मो चि छि चारि कें।औरन को ऊ
पदेश।अपने ही कीए कर मर्म में।अरुफि रहा मन मेंद।२
९। जैसे की रापाट कौ।आप ही रचि कें जाल।तुरसी ता
मे पचि मरे।औरन को कु काल।३०।सकल सास्त्र
स मुरन कहै।सिध साधक कहै मोइ।तुरसी दास मन व
सि कीए।मन की मुक्ति न होइ।३१। मन ही माया बिबे
रत।मन ही निरविष होइ।मन ही उलटि निज मन मिलै
तुरसी गुर गम सोइ।३२।मन ही सू मन पाईये।मन लि
नेम मन हि होइ।तुरसी तुरीया तत कूं।मन बिन पके
चै कोइ।३३।मन ही समझे ग्यान गति।मन ही होइ अ
ग्यान।मन ही परसे पीव कूं।तुरसी पर ह रि आन।३४।
मन ही उतम मधिम मन।मन ही चोर मन साध।मन ही

रि मन कै मिते छाडि सकल अपराध अप राग दे

१ ष मन के अरमा पुनि सक[illegible] पबिकल पसोय तुरसी रे

[illegible] मान सो हित तब मन [illegible] जोइ [illegible] मन अपनी

[illegible] कौ [illegible] होइ लीना तुरसी [illegible] यह ई जु

[illegible] होइ [illegible] स मद कामी न [illegible] यह मन रत होइ

[illegible] यह बिषीया रत होइ तुरसी रे [illegible]

का यह मन कारने सोइ [illegible] यह मन इंद्री सुष निसं

र ति में सारी होइ तुरसी यह मन [illegible] कत होइ तौ ब्रह्म

समावै सोइ [illegible] मन अरु जुग क

[illegible] सोइ तुरसी [illegible] तिन तं धीम [illegible]

[illegible] कत कन न रे जु मे

[illegible] तुरसी [illegible] रत होइ [illegible] बिया स

[illegible] तुरसी

[illegible] निकौ ना स [illegible]

[illegible] यह मन [illegible] सोइ यह मन बसि

[illegible] होइ [illegible] तुरसी यह

[illegible]

[illegible] तुरसी यह मन

[illegible] क चत्र सवार

[illegible] या मन

[illegible] तुरसी स ने सने

[illegible]

[illegible] ऐसो सो

पर [illegible] चढावत स

[illegible] मन [illegible] होइ [illegible]

[illegible] तुरसी थी

[illegible] तुरसी ह म गु र

[illegible] केपर सैं ते

[illegible] होइ [illegible]

[illegible] जब निर

[illegible] तुरसी [illegible] क [illegible]

[illegible] तो स ह

[illegible] कै नि ति [illegible] न चित

[illegible] तुरसी [illegible] मन [illegible] सहज बि[illegible]

।जुबोस तो मन महि उपजे ज्ञ
ताजाइ ५४ सहजिस
मा तुरसी छीन जु होइ जो दिव धि नेम
५५ ज्ञावृत जेतन जु मन को
जनसद्रतयह तावृत
।६ ज्ञावृत जतन जु मन को जननदेहन

दू:

तुरसी जब लग मन असथिर नहीं। चित चंच
ल चलि जाइ। तो लौं महा करनी करत। बिही नहीं अ
लसाइ ५८ अलसा ते कृदे क्यों बने अवधि सिरानी जा
इ। तुरसी मन बसि कार नें करी ते कछु न पाइ ५९। स्वासे
स्वास सुरति सूं राम नाम निति टेरि। तुरसी मन या आ
लंब सों ती जे घट में घेरि ६०। सिने सनेसुर फाई ते अ
रज निस वे निकारि। तुरसी दास मन रासि करि रमिर
हो अमन मंझारि ६१। ज्यूं आवे त्यूं लीजीए दीजे नअन
तन ज्ञान। तुरसी मन बसि कीजीए। यह जबडो सयान
६२ चौपई तुरसी यह मन बसि कब होइ। जब रासि हि
व सतागार है सोइ। या कोपी छो पतन न खिसारे। या अ
ना सै मैं अवधि गुदारै ६३। आरज पाइ सबै पर हरे मन
बसि होइ सोई मन धरे। तुरसी ओ रज पाइन मांही बक
मूले तिन की सुधि नांही ६४ साषी। मनि ब्रदिक सिवा
आदि दै आपे उयहे जु जोग। तुरसी मन तु लटाई ते
परहरे नांनां जोग ६५। सो मन निरम्मर नां जोत न निर
मर न होइ। तुरसी तत निरम्मर जये उतीन दरसे कोइ
६६। बेदांत सिधान को इतो ही अरथ तत सार। मन ब
सि करि भजि राम जी तुरसी त्यागि बिकार ६७ चौपई
तुरसी कोटि ग्यान की रे कही बाता। कै देसंत सुर बे
द बिधाता। जो सब बिधि मन बसि होइ आवे। तो जन
कूं न मुक्ति फल पावे ६८ साषी। कांया के सि मन कुं
सुसे थसि के कछु न जाइ। तुरसी सोई संत जन सुधि
सुधारस षाइ ६९। तन में मन मन में पवन। पवन में स
रति समाइ। तुरसी तब आनंद होइ वे आनंद बिला
इ ७०। वे आनंद बिलाइ तब जब मन थिर होइ आइ
तुरसी मन थिर नां भयो बिनां कहा कसे होइ का ७१। का

वस्तमैं।नपैतेव्रस
मनकाईसूंहै।मनईस्वरयनहीं

पंडि न व
त

।तुरसीमनमहचलविचलाचं
चलचपलतुमोह श्रेसेमनकुंवसिकरोसीननव
पजैसेरगहिगमेलीलोफिटिकतिसा
होइजायातुरसीहीराएकरमहजैरगिनसमाइ।
९६।कूटकरूपजोतोरिदे लोलोरंगअनेका।तुर
सीहोवैहीरसमि।तवैरोककामौकूर७।।करमत
रूजोधैरेपरैवहांवानिमांहि।तुरसीहोतोफूटक
मन हीरारूपीमांहि।९८।पापाचौरसीपंचरंग छ्रमेफू
टकसमांन।तुरसीसवरंगहोहिफिरतजोनुरसाज
नहरिग्यांन।९९।मनकुंजीतिरजुगतिगहिजेतजैहो
गोपाल।तुरसीपकूचेगसही।जहांहरिदीनदयाल
।१००।जहांहरिदीनदयालहै।तहांतनकीगमनांहि।तु
रसीमनपकूचेसही।जोहरिसुभिरैघटमांहि।१०१।का
लामुखहोइकालकां।करमजाविकूटिजाइ।तुरसी
जोमनहरितजैयवाचितराखैंताइ।१०२।तुरसीका
पढीगुनीएकहा।कहासुनीएवकुग्यांनजवल
गमनमनमकैनहीं।तबलगसबभ्रमजांनि।१०३।पढि
पढिवकुपंडितमूए।कथिकथिकविताकोटि।
तुरसीमनवसिमांनया।विनागहेहरिकीवोट।१०४।
सोईकरनीकीजीए।सोईकथिएग्यांन।जिनग्यांने
वसिहोइमन।तुरसीपरहरिग्यांन।१०५।जावैहकिम
हमसूंभावैब्रह्मा।बिनामनवसिजाएहोहिमो।तुर
सीपांचूंवसमन।१०६।तनहिजासदैनिदिन।मनकी
षवरिनमारा।तुरसीफिरेतिरुवोकमैमसारुहि
मसोधारि।१०७।मनफेरेतनकीसकति।फिरिआवे
इकठौर।तुरसीताहिनफेरही।रूरिषमतिकैठोर।।
१०८।मनफिरेमहांमुक्तिकै।मुक्तिजांहिवजरकपा
ट।तुरसीमनफेरेविनां।म्रांनपुटैवकुपाठ।१०९।
कादसआगुनदेहसूं।जोलोंकरैगवन।तुरसीतोलै

जानीयें तुलसी बासना मन १०० अपने घरिअ

३०३ रहौ तिन नरनि के मन थान तुरसी तन तजांनी

मिथी बासनां आन १०१ जौलौं चलै छिन कुं जौ

लौं ठीच न मान तुरसी मन मूंचौ जानीये जौ गहे रहै

असथान १०२ त्रियारूप हिये षिक रि जो कवन तजर

जौ लौं तौ लौं तुरसी का च मन सूटे न षिषियाय

१०३ त्रियारूप हिये रि करि जो क बक रहि गव म

तौ लौं तुरसी का च मन परपक कहे क चन १०४

परपक मन कौ जांनीये सौ पडै सु धमार तुरसी

छिनै छिका रहै मन मैं हीलगार १०५ परपक मन

नही कुंजो अटल छिनै कीकोट तुरसी रमिता राम

ने सेठ रता चंद चकोर १०६ चो जावत जैसा पर

पक मन तुरसी है न नर है तन ला वत मन परसी

जिसो कोलाहै रेस तन जल बडै सोइ १०७ यो मन

कोटक तुरसी मास तन बैठे न अरध कूं जाइ मानै न

सी कासूं की संका तिन मैं छिनै तिन जे तिसंक १०८ मा

क नी तुरसी को टि बात कौ रहौं करूं तो हि मन जाइ

जो चाहे मन को सरसा सो जग मे थिर रहाइ आहि १०९

असमथि माया रामको बाह रि बाजी का म तुरसी व

हरि छिसा रिके तुरसी षिक रि आ राम ११० नांव आत

बन बिना मन आदि कुंमन आवसाइ के तुरसी कहूं

तजि चले पिअसपिरि हानजाय १११ तुरसी क

बकू नाहि आकासमन नहि बकूप नाल हिजाइ क

बकू धर्म दसा दसा मे ना आवत अलमाइ ११२ जग

आवत यह अधमना आनन सकर तन अनेक तुरसी

मात रिव मन कुं मिलवर पावे तिक ११३ सकल सिधि

या मन मैं जो मन असथिर होइ तुरसी नर असथिर

छिनां कोटि काल नहीं सोइ ११४ को आतु सरजनहि

असथिर नाहिं मन ना तुरसी नर असथिर रहे तौ य

है अमौ तन रता ११५ काइ कबाइक मन कूं जीते गा

तन सोइ तुरसी सो मन नाके कैरे लागा होइ ११६ जो

तजि तै मन कूं तजी लजि रावे तन माहि तुरसी चेत

न पूरन सोइ नवजल जमे ना हि ११७ तुरसी चेतन

गये मन के माहि कायागढ माहि अचेत नन है व

माहिं।२७। जौ लि मन छिन जं
कै जहां जहां मन तहां जाहिं। तुरसी जब छूटाबही। कहि
ही जानैं जबै लग जाइ। तुरसी जब छूट लटा वही। बिचिहं
चेतन पाइ।१ जहां जाइ जहां मन नदे लहां बिचिहं
न लैफेरि। तुरसी मधि चेतन सौ। अैसैराखि घेरि।२
निगुठि तैही मन कुं लेय। ले बिराखे लहां गोइ। तुरसी
त्रिय लोक मैं। चित मचेत न सोइ।२ अजादि अति
मिलैरहे। सावधान यक नार। तुरसी चातनै रमन छि
कौ चेतन निज सार।२। तन के सु छल जिमन कु उल
टि आनै नर माहिं। तुरसी हरि नांव लग्या रहै तौ सिधि
मैं संसै नांहि। पंग होइ मन तन सही। गुण कंठ छिस
राय। तुरसी तब रिद कंवल मैं। परमजोति दरसाइ।
२१ मनकी मूठि पता मिटै। नरमराति होइ जाइ तुरसी
तब या नरमही आतम देकराइ।२२ अब लाधं मिलि
यूं कह्यो। फुनि कहै बेद पुरांन। तुरसी मन छिप जीति
कै नजी ऐ पद निरबांण।२४ कान यौ लन थिर बिसि
कै धरै जु हरि कौ ध्यांन। नरझोरही आलब कै तुरसी
मन आपान।२५ चौपई।। पलक लाइ बन बैठे ध्या
नां। मन बजार मैं नदिस गांनां। बिधि बिधि काव है मैं
दाकै। ताकी सबसुध कुनही पैरे।२६ साषी। जा की छु
टि गई मन मनी। होइ गयो मन पैलाव। तुरसी ता मति
हीन कौ उलट न मन त्यौ फिराव।२७ अैसे मन को समद
बो पीछै उलट न होइ। ताते अबरी छिट राषीये। तुरसी ध
टमैं गोय।२८ चौपई।। तुरसी जोरबरी जो आनैं सो मन
म मुध गपड वानै। ताते सनै सनै उलटावैं सनै सनै
मनबसि होइ आवै।२९ साषी। तुरसी जोरबरी मन
बसि करै जुगति न जानैं कोइ। कछु कै चाबक मैं कै
सै बडे सोय।३० ज्यूं ज्यूं तरहादा बोए त्यां त्यूं न छुटै
सोइ। तुरसी जोग जुगति बिन यह गति मन की जोइ।
३१। जुगति जुगति मन थिर रहैं। अजुगति बीघटि
जाइ। तुरसी सब साषु कहैं। यह जुगति की गम पाइ।४
२। चौपई।। तातै जोगी जुगति समावैं। सनै सनै मन
कूं उलटावैं। तुरसी सनै सनै बसि है। जो छिन जो त्यावै
छ्या कोइ।४४ साषी। सनै सनै को पालहै जोरबरी के
नांहि। जोरबरी आवै नहीं। तुरसी मन तन माहिं।४५।

नन्द २

जब मन थिर होइ तब मन ही । त्यास प्यास मिटि जाइ तु
लसी तब तें न होइ । मन न बस होइ जाइ ॥ ७८ ॥ जावत म
न न मेरे हैं तावत सौं साधि । जब मन न जिबा हरि न
न की ही साधि उपाधि ॥ ७९ ॥ जब मन मेरे है तावत मन मि
थ्या [illegible] मान । तुलसी रत्न अरु धन रहे जो रूपा रहे
[illegible] न ॥ ८० ॥ जन की त्याग रसोई मन की त्या सोई
रहे मान न जिन आये आप है तुलसी जिन वृन यति ॥ ८१ ॥
मन की है संकल्प तें जगत उदै होइ आइ । तुलसी सो सं
कल्प मिटै जगत न ही न होइ जाइ ॥ ८२ ॥ चौपई जावत
जीवै मन विकारी । तावत दुःख नर अरु नारी । तुलसी न
[illegible] मिली मान । जब मन मेरो मिटै अभिमान ॥ ८३ ॥ सा
खी जावत मन में कल्पना । तावत जुग दरसाइ तुलसी
मन [illegible] तब । जब मन नास मिटि जाइ ॥ ८४ ॥ जावत पं
थ नर मैं तुलसी मन को बेग । तावत जोगी जन को आगे
रहै म ॥ ८५ ॥ [illegible] मन को तन महि मंझार
तुलसी युक्ति सों नास को । कठिन पड़े की धार ॥ ८६ ॥ [illegible]
[illegible] मन हरिया । तुलसी मोकें सेंटि कै
जब [illegible] होइ आइ ॥ ८७ ॥ तुलसी अजत मन की क
[illegible] चन सुनि हि चलै । मूल जलबा
सी [illegible] ॥ ८८ ॥ [illegible] है या मन के माहि ता
[illegible] मन । तुलसी कंचन भो हि ॥ ८९ ॥ कंचन म
[illegible] राजी क [illegible]
[illegible] ॥ ९० ॥ [illegible] आदि जुसक
[illegible] तुलसी [illegible]
[illegible] ॥ ९१ ॥ तुलसी [illegible] मन यह [illegible]
[illegible] जीवै क क तम्ती
[illegible] ॥ ९२ ॥ मन [illegible] संकल्प [illegible]
[illegible] तुलसी [illegible] ॥ ९३ ॥ मन बी
[illegible] मन के [illegible] तुलसी [illegible]
[illegible] संसार ॥ ९४ ॥ तुलसी सुर नर असुर सब
[illegible] सब [illegible]
[illegible] ॥ ९५ ॥ [illegible] संसार सब सुर नर
[illegible] तुलसी [illegible]
॥ ९६ ॥ संकल्प [illegible] जावत है मन सोइ

ब्रिती मान होहि त ब मन नमृ तौ जोय।६४। तुरसी स
का मृत मन। मन ही म मन होय मन छिनाक रिनास
छ।का रिज क छु जु होइ।६५। तो क करै है नाग करै मन
का कै छु सोय तुरसी या हमि हचा तु मिजा मा मनि नौव
कोइ।६६। काया ही तु दिम करै तब कोइ। कराइ तुरसी
हंस ग ब न कै काया मित मो ङ्गहा।६७। लोक छु करै मम
न कै तन का कीया न होइ। तुरसी तन तु दिग करै तौदि
मो मृ ता गे जोइ।६८। सो मन ही कुं ग हि गयी।। मन ती जे
तुलटाइ मन ही कुं बंद की जाए। तब तन न कुरू न जाइ।
।६९। मन बिन तन करि नास कै तु ब्रिम।। कलगार कुछ
सीत न बिन मन तु तौ मन मा तु स्रुपा।७०। तु दिम
तैसे तो गते सुन अमुन सब ही चै तरवा दो अंपक त
नातु दिम करै न कोइ।७१। दार न म बतु दिम निको
तुरसी हिय हमन। मापी ले लागो फिरि पवन पात लोन
ना।७२। मन कारन का रिजु तन सब मई सब संसार।।
तुरसी रिषि बदी या यौ। सु हे मन को बिस्तार।७३। तुरसी
होइया मन को परिति लोम प्राण म सकलि सात्र मि
को यह। सार मृत बिष्याम।७४। वो।। वर कवान
लो तुलटा रोचै अधमी सन रधपा व करा वै। तुरसी ज मन
बै अ सा मन होइ। तिब आ ला सुब छिन सि मोइ।।
मा।७६। तुरसी होइया मन को अरधम सन रधपाइ कै
बनसे तप करै। सो तै छि जव नजाइ।७७। तन बन मे
मन तपक रै तु तजिइ दिति को सो तुरसीय स्मेरा कै
रिहै। रा म हिर गै।७८। अतिरा तिमुचि मन करि
बाहर नु धि मि सराइ। तुरसी हा दमक पालने मे पर
मात्मा पद ध्याइ।७९। अहं तिता ति मुच मन क रिचा
निग्रक विम बश्रो न तुरसी धृ तिगा हि ध्यान धारि प
पिछा लि।८०। अतिरा ति मुच मन को आदि
अति जो होइ। तो तुरसी पद पदि हि मि लि पद सरूप
होइ सोय।८१। तुरसी साध कहै सात अकहै छु मृ त
कहै सोइ। अतिरा ति मुच मन होइ। ता मह है सब
सिधि होइ।८२। तुरसी सब मत मांही सार यही मन जी
तन कुं सोइ।। पान नागबै बामां अलटत होइ स्ले
इ।८३। चा।। तुरसी न लटत अलटत बह मन मा

रिक दिलां पिपल केहै जाई यह ज्ञानि अभ्यास उचरां छिनन
छिमांस अपनी देह [illegible] सासी छिन छिन यह मन अ
लि कै सन में आनि समाय तुरसी त्रिजन नाघ [illegible]
मे [illegible] नाहि ७ [illegible] मिलतो मन रहै सदा सुधि
रित [illegible] मांहि तो तुरसी पैसे तुरी त्रिय अवसथा बि॥
८० कोई कोई लरग [illegible] वे या मन में मोन लीन।
मा[illegible] सो चित मन [illegible] निरधन तो नरमे आनि समावे
[illegible] साधक होइ सही सु याकरनी मन लावे तुर
[illegible] त्रिगुन कों निरगुन मांहि समावे ८७ को
टिक करनी करि [illegible] होइ तुरसी जिनिम
[illegible] ८८ क अरु की को कहै
[illegible] तुरसी जो मन [illegible] टिकै रहै
[illegible] ८९ [illegible] मनका रनका रजे मन मन हो ड
[illegible] तुरसी [illegible] मिटे जनम अ
[illegible] तीन पसार जो कछु
[illegible] तुरसी सो सब मन परखो नि मन
[illegible] मन मन सब को कहै है
[illegible] जैसी संपूरण मनजा
ने [illegible] मनजान नहि
[illegible] तुरसी कह न [illegible]
[illegible] तुरसी बऊ
[illegible] मन [illegible] बुधि [illegible] अब चा
[illegible] मन [illegible] कहु [illegible]
[illegible] आनि [illegible] का सब आदि पंचो
[illegible] चीस बरनि सुनो क
[illegible] मन ही अस्त पंचम
[illegible] तुरसी [illegible] तिए [illegible]
[illegible] सद [illegible] जानि [illegible]
[illegible] तुरसी आय [illegible] करी
[illegible] आन सनि [illegible]
[illegible] तुरसा [illegible] प्रकृति ए
[illegible] चले बो
[illegible] तुरसी [illegible] प्रकृति [illegible] कहै स
मजाइ [illegible] राग दोष मोह पुनि माया।

ति जब सो काया। ति पंचो तिन तन के सागा तुरसी
लोगा पार तन बैराग॥२००॥ अब न वृता गमु न ऊगुन ति
न मत गुर के हे कपाक छिनि नो तुरसी जो इन न वोज
जाने सो मांनी का है न मत मानें २०१॥ साधी मुलकप
प्रा न बिंदरीगे। नपति अंन न अस्र कि मी ततस्
क चिमु बंधता। तुरसी बिरला को कदु कि २०२ और
ग तुरसी गुणप्रकृति न वे तो साचरनि गुनोपे छिवछि
के मन क्रमबचन सही सा। तामधि जो नि चाली मई
२०३ सा॥ यह चाली सूं से रमन जुगति ज्ञाटा मेघ
तुरसी जोया बसि करै रमु जोया मो फिरि होइ २०४ चं
रसी जोया मोन न होइ सही जिन अंसा कछु की न सम्
रन मन जीति जो लिया। अस मन ने मेली न २०५ मन क शेप
या मन कूं पिवन धारना घाना तुरसी जो मन बसि नया
लौ करने रथान आन २०६ नहीं या जलन सो लो चढे ली
लीन सके समाय। तुरसी मिले सुपसिध कूं मोह जन
चलन थकि जाइ २०७ मन की गई अस परहात न की
मिटी न पति। तुरसी तप साधन की। तब को लिक रिम
रे वपति २०८ तुरसी वो पद न बने॥ घाटी जब लगा
तन मे रोग। रोग मिटे तन जके नहीं जब नया संपू
ग जो ग॥२०९॥१८५॥ [illegible] का प
कारंना। तुरसी मारग पीव को क्यों करि पायो जाइ
बडे बडे मुनिय रषपि रहे। फिर किकरि कोटि न पायो। तु
रसी मारग पीव को जूप छा आकास सुर को जाई न ह
महा [illegible] आहे [illegible] नगति तास २१ तुरसी मारग पीव को
ऊन कुते अति जीन पावल टिक है पच के मऊ न सक
इती कहु तुरसी मारग पीव को अतिही बडे अगाध चित
गहि चलै सु पकु चारो ओर रहे [illegible] जोगी जंग
मतपसी पीर अवलीया देव तुरसी सघ पावै नही पा
के करत तिषेवपा अति सूछिम अति ही अगम अति ही
आगहन सो ये तुरसी सम गुर छिना पाइवे सके नक
इद।। सूछिम मारग मा छिको [illegible] महा
मुंड : का आ हि बिन देह की कपा बिन को क
पावता हि ।। सूछिम मारग मा छि को है नुरमा ही
डा बाहरि [illegible] मतन पाइये कोटि करै जो कोइ [illegible] चे

जा[illegible] न रमो ही आवै तब नल नाम घकी सुधि
[illegible] तुलसी [illegible] हि ना तु सोइ को टिर है [illegible]
[illegible] तुलसी यह समझो [illegible] जिनतो [illegible] स्त्र ज्ञान
[illegible] हो इर है [illegible] होइ गए कान ११ तुलसी [illegible]
[illegible] पर्यं [illegible] सोइ धरस्त्र धरे हो [illegible]
[illegible] पावै नल सोइ १२ तुलसी [illegible] पथ यह [illegible]
[illegible] चले [illegible] हि गए बिपाया नदी माही
[illegible] तुलसी पछिम दिसा [illegible] पूरब प्रीति [illegible]
[illegible] हि न धि ना रि [illegible] चो [illegible]
[illegible] नाय [illegible] यह सबन की मारी [illegible]
[illegible] तुलसी पद सरूपते नए [illegible] सा
[illegible] गोरखपा न [illegible]
[illegible] नपा ल न [illegible]
[illegible] काम [illegible] मन को जीतिबो [illegible]
[illegible] साध की [illegible]
[illegible] र स [illegible] अलख अभेव
[illegible] नहीं न काहु [illegible] सी सदे
[illegible] तुलसी चल वाअ
चलसी [illegible] जामा अ चल हि [illegible] हाँ पञ
चलसी [illegible] यह ग्यान [illegible] चल न हि
[illegible] चल अ चल [illegible]
[illegible] तुलसी अचल चला [illegible]
[illegible] ना [illegible]
[illegible] अचल करि अपने ही
[illegible] तुलसी अचल [illegible] मन [illegible]
[illegible] चाले [illegible] तिन [illegible]
[illegible] तुलसी [illegible] बिचारै
[illegible] तुलसी यह बिचार
[illegible] चले [illegible] माया [illegible] अर
[illegible] तुलसी [illegible] मन चि
[illegible] गए सुगगान [illegible]
[illegible] ग्यान तुलसी [illegible] हे पेज
[illegible] मारग [illegible] न गर कै ज
हो [illegible] तुलसी [illegible]

मामद२१ त्रतटि चलेते जाइ मिलै परम जोति मैं का
तुलसी सूधी पंथ चलत ना ल्है हित्ताया संसार॥४६ स्व
प्या ज्ञान ते का ल्ति तें अस्ति ऊ बदमालि तुलसी
नित्याग्यो औरसी लीया ग्र वो ल्हि एवो नृप मा
मो छिमधयह जगकरै लाहि बेदको संसनरा है तुर
बबेको तुर आयो पंग होइ पर मैं रहे समान्ह १ मर्थ
॥गोतहा मलयकूं चंदसपरास पाइ ज्ञान तुलसी जो
बर बसे न बिछुरे प्रान २ खल मलको ऊकु
सकौ पल चरितहा ये बे स तुलसी गूगे बावरे हिले
इदेस न तुलसी चतुराई चित तैं बिसरि ज्ञानप
या गियाजल में लूट घलो तधिन सकैयह आ
बडे मनो बिलास मे मानि मानि सुख सोइ तुलसि
पतछिपकंदयहा सम झलस क्या कोइ २॥ तुलसीके
तुफंदयह गया गानघर सो छा अलचरूप मैं रवि
मिल्यो बकुरि न आवन होइ॥३॥१२२०॥६१॥स
शिशजन को परिकरण॥ तुलसी रक्त पनसे
कलपमरन प्रवनो नल मरनयह इमकसा
औरकहे को ऊ आंन। चौपई तुलसी मनस कलपच
सि होयमानामारूप निहारे सोयाजागत सो बत सुपन
मंक सिद्ध हो तहां न्त्र म बिबधि तन धारि नृ यह देषो
मन की गति सो छ क बकु कोरी ऊ जरहोइ। कि बकु मि
ब छिरूप बि त्तारे। अति न छिम नाना तन धारे॥ प्र
हो मैं घर चिबो करे। जानै बडे संवारे धरे। यह देयो
मन को बो हार ब्ह्म ऊ तरि बोया सपार॥४॥ सोई यह मन
आपहि नारि होइ आप हि होइ पुरुष। सिव सक्ती को
साजि तन। आप आप सुषद। कि बकु सा तस कर
कबो। कि बकु परम भोग होइ। कि बकु देव सरीर मडि
सुख सुख भुगते सोइ॥ कि बकु ऊ राजा रंक होइ कब
कु साह पुनि चोर नाना रंग बद यो करे यह मन निर
अरु नार। नाना बिधि क्रनजि तन स्थ छिमस्थ बि
म सोइ बिरिछ रिना मैं मरे मन माया बस होइ॥५॥ य
क दिन मांही बकु जनम धरै मरै धय यह मन तुलसी ध
र धरि फिरि मरै। करि करि सू छिम तन। चौपई यक
दिन में अनंत अवतार धरै मरै फुनि फुनि होइ छार तु २

३ रसीयह [illegible] मना [illegible] आपके ले आइ रसा वो
८ [illegible] मन के तन नि [illegible] जो न तनाही कोय [illegible] सप ॥
जो [illegible] मरगा सं ना गि रही सब लोय [illegible] स तु सि सु
[illegible] नहि निसा सुनि सु रजाय तु रसी यह जो मन
[illegible] नि [illegible] तन हो इ आइ १२ मां निजो [illegible]
[illegible] रिसी [illegible] यह देह सो मां ने फिरि करि मरे देखो
[illegible] है । [illegible] आ का गव न होइ तन मही [illegible]
[illegible] के [illegible] जो है कहि [illegible] न सही मन करमी अजा ।
। तुरसी [illegible] नत [illegible] जहां कै प्रीति तहां
ई जो मन मरन दिषो यह [illegible] प्रीति । [illegible] अव तारजु म
के [illegible] को [illegible] चेत [illegible] चेतन जा ने न ही [illegible] कहां कहां
[illegible] करे । ६ अस [illegible] जो मन मरन को [illegible] होइहै
[illegible] नाम [illegible] मन [illegible] जिन कै रेन जोगवि
[illegible] । ७ तुरसी [illegible] मन न साजे नही यह मन सुपन
[illegible] सोइ [illegible] जो [illegible] निनक बक होइ । ८ ।
तुरसी [illegible] है जो गा यह सो [illegible] यह जगति निह काम ।
तुरसी [illegible] जो मन मरन [illegible] होइ [illegible] राम । [illegible]
मन के [illegible] होहि [illegible] मिट [illegible] तुरसी
[illegible] चो [illegible] तुरसी जनम
मरन को [illegible] है सक [illegible] पञ [illegible] ताहि मिटे
[illegible] यह [illegible] आधि २१ ।
[illegible] तुरसी [illegible] बनत [illegible] सोइ सेक ।
[illegible] जिन [illegible] को य २२ । बचन
[illegible] होइ [illegible] को [illegible] तुरसी बस्तमि ।
[illegible] २३ तुरसी को टित
[illegible] सेक [illegible] विकल
[illegible] २४ तुरसी सकलप
[illegible] मिटे [illegible] मिटे मरन यह बेद न यह वो
[illegible] साधु जन २५ । तुरसी मिटे तु ग्यां
[illegible] मिटे जो [illegible] सत्त और
[illegible] २६ [illegible] मिटे [illegible] बैराग [illegible] हरि ना
[illegible] रन यारो [illegible] हिन आं ने उपाइ ॥
२६ ॥ १२४६ ॥ ६७ ॥ माया को [illegible] ॥ तुरसी माया
[illegible] नहि जाइ बडे बडे महारिष मुनी

मन

करि करि य के उपाय ८ तुरसी बिसकी भ्रांति पार नहीं
कोउ पांहिं पाहं आवै नहीं । जंघी जाइ न सोइ ॥ ९ ॥ तुरसी मा
कहि कैवेगी कल तीर रई सूर होइ आडी नडी करि
मको टपहार २ ॥ तुरसी माया ब्रह्म की आतिक्षि चत्रै है सो
ता की छिपिर चनां जुदो पार न पावै कोइ ३ ॥ तुरसी जहां
माहीं है होइ तहा हि तहां नांहीं होइ ४ ॥ यह आचिरज माया
जु को देखो अद भुत सोइ ५ ॥ चौपाई ॥ बिद्या रू अबिद्या
दरसावै । अबिद्या मांहि मन लपटावै । तुरसी ऐसी माया
मोह माहि भुलै घन कैसे होय ६ ॥ ब्रह्मादीक को जइमा
भी चरित्र देषि सुभन चेरे मांनी तिनहू को मन चित्त चुर
यो सर अवसर कछु सुध न आयो ७ ॥ तुरसी ऐसी पर
बल माया सुर नर असुर सकल नर माया । काहू की छि
न सकै न आनै तीन लोक तिन वाकू सिमाने ८ ॥ साषी ॥
सी ही माया चपल है सो ही चंचल मन ॥ तुरसी तजे र
न बिधि करि निरबहइ जन नहीं निरबाहया जीव
को ॥ बिन सीव के सहाइ तुरसी माया प्रपंच की विरहा
चक्र पाइ ९ ॥ तुरसी माया प्रबल तन मन की है हीन
जीती जाइ ॥ मरते हूं कूं जानि ले काम क्रोध छिदि माइ १० र
माया के अंग अनंत है वार पार नहीं कोइ तुरसी गुरगो
बिंद बिना न थी जाइ न सोय ११ ॥ परबल माया की प्र
कृति ता आगे यह जीव ॥ तुरसी न छुटे होइ रसा सदै
सना तिन सीव १२ माया तुस्थिर बसि की जग जब ध
रा किस मांहि ॥ तुरसा बिष्णु महेस लौं तिनहूं छूटी नां
नांहि १३ माया पेल अगाध है लख्यौ न काहू जाइ तुरसी
लघई संतजन जेर हे राम ल्यौ लाइ १४ ॥ तुरसी जग की दौ
के हेर स्वाति ष्यां घर लाय १४ जागे रू कै सोइबे रू से तै
हम नांइ तुरसी ते जनि कवरे जो है हरि चरनौ लपटाइ
१५ तुरसी माया ब्रह्म की कर विबेक बपु सोइ । त्रिया पु
रष होइ परसपर । सब जग मोहा सोइ १६ ॥ केऊ त्रिया
होइ संगि लीए । काम क्रोध छिदि पाइ । केऊ कनिक
करि बसि कीए । छूटि रतो न उपाइ १७ माया के अंग अ
नंत है ता मैं जे ते जु जोइ तुरसी परबत होइ रहे जीव
सी बिबिधि सोइ १८ ॥ जे नि लिये सो अवसि सदस पल
हैस माया तुरसी जे नि बसि परया सो नां नां जोनि फिरा २

२१ जो कवक कामनि तजे लोक न कन आन ही जाइ
रसी कनक रूप रहे तो मानि रहे अरकाय २३ चो
जे जोगी सं कटि आगे जाति जाति के तनमारो
जलिन सचा को इति न गुरु गोबिंद कपा सोय २४ सा
याम हि को तिनहू लागा दास २५ बदरसन घटसा
इ स कांठे करि मांय तुरसी माया मोहनी करि मेल्हे
आठे [illegible] मुनि इहि माया तेरी तुरसी
सकदे मांके रा [illegible] मेरी २७ पति राषा प्रभु के म
लसिन मां गति तोर माया त्रास निवारि के चरन
[illegible] तुरसी तुमही आहि प्रभु हम से अधमन
आन माया न [illegible] क पानि धान २८
माया आगे मुनि हारे और रपत गजी वृकह
बिचारे जाके तुम प्रभु [illegible] सोई न तोन वेसु
२९ आसा [illegible] के आदी ओर त्रिस्ना होइ तरंग
तुरसी आसा त्रिस्ना होइ बकू नक बंधन पारे
[illegible] आसाके आधीन न [illegible] तिन आ दरे नकोइ
तुरसी सां न महत बिना [illegible] सारी लोइ ३२ तुरसी जे
आसा के सबहे [illegible] आसात जित्रा न
[illegible] त्रिजवनवंदन मन ३४ आसा रूप न रमन
यो लगी [illegible] गई सब
सच पाये [illegible] तुरसी [illegible] आसा बंडनकायो
मनसा कर [illegible] तिन को [illegible] गटर [illegible]
कमफ़ [illegible] तुरसी आसा परहरे त्रिस्ना को [illegible]
न [illegible] नरसु जान [illegible]
लसी आसा परहरो आसा आनि का का [illegible]
ते सब [illegible] तुरसी आसा परहरो
आसा [illegible] करि महो [illegible] सब
आसा [illegible] तुरसी आसा परहरो त्रिस्ना को तजि रह
[illegible] जनम सुफल करि लेह
[illegible] गुन [illegible] रहे [illegible] तुरसी
[illegible] जग [illegible] दास [illegible] गति
[illegible] तुरसी [illegible]
सगुहे [illegible] कनक कामनी देह

क नक कामनी संग्रहो ग्यान ध्यान ब्रह्म छिटि जांइ ।। तुरसी
तेश्रा त्याग प्रभु संघरे इ राख्य ४९ बहरो श्रोनगा हा मोह
परम सो कको घांनि ।। तुरसी हरि की रतिक थ्या मुनने
को निध ४ मोह छ मो गीत्रि नि तगाति रि भिट नन हीं
ग्यांन ।। कृष्ट छिटि छ दि छ हो ति हाँ जनम के छांनधर
मो हपा सि मे तेक सो तिन सदगति सुख नां ल्रि तुरसी दा
स उब जो गदे अहि बीस के मांहि ४४ मोह ति मर ना न
न महीं बांटर हो अमंत अपार ।। तुरसी दास तांश्र थकं
सू के न हरि ते तिन्या र ४५ ।। विष हो हि यसं र रहे अम्
त करां न माय तुरसी इम्रत यो जो ऐसो बिष धेनुगा र
४६ ।। विकी ज्वाला दिषि कसि मृगजल का रिधावंत तु
सो प्यां स मिटै नहीं भ्रमि भ्रमि तन दाहंत ४७ तुरसी इ
न विषी यानि को ऐसो जांनी जो गम्य तप सुष दुष को ल
ष्य नि यतन न थके तो ग ४८ कृष्ण करै को रतन सुने
पुनि परमो थे ग्यांन ।। तुरसी त जहिं तु छसु ष छिहे न डो हे
रां न ४९ ।। गुर बचनो छाडे प नां तुछ त को नहीं जाइ ।।
तु सी तु छ त जे बिना छूक रि ति हि भुगताइ ५० ज्यूं
तिन षं ति कांने कोयो तुछ तां नं रह्यो जाइ तुरसी द
स ब रिया नो ज्यूं का तूं तनिजाइ ५१ जो बोहित सं
रि नजो जो वे नजो क छु और ।। तुरसी सुरति जहां लग
पावेंगा सोई ठौर ५२ जो सन मुष होइ सूर दिस तो ये
प्रकास ।। तुरसी छाया निरषि को छायाही दरसा स
प ५३ माया मोरे साम कूं जो चितवे वा वो रि तुरसी दा
चितवे नहीं सो जाइ जरा टि को रि जोर ५४ छिउ लो
गते भर बसी ग्राई करि छालछ्न तुरसी सु करा ब ति
हिर ह्यां माई जंत टिय गाबे द ५५ छ्रुत पचा बसि क
रन को बसिन भया सुषदेव तुरसी छ लबल फि लि
मो निरफल गई सब से वं धड्या तुरसी इयाई कू न
रारन कूं मुनि ध्यांन तु रसी सुनत सुषदेव के बचन र
सो नरे सा मां न ५७ हो नो दे हु नि या सती सो नो कं पि
न प्रांण पर हरि कं च न गुर ग्यान को ज्यूं निरदेन माया
रां ५८ ग्यान कंच न पर हरे बिना प्रांन धरत नहीं धीर
तुरसी बिषम माया तने आइ तो भरती ५९ ।। बहे सघ
न घन बंद लो माया के बल बोन तुरसी कं च रि वो क

[illegible] कोटगुरु [illegible] पो पां न [illegible] टकन करवी
[illegible] नग [illegible] सतमं गुरु कृपा तें और
[illegible] मोह करि [illegible] नरथे
[illegible] तुलसी तिनकी [illegible] करि रहे मांनांम
[illegible] तुलसी [illegible] नेह न माही चिहत नपरेनर
[illegible] माया [illegible] होइ गये [illegible] कांय [illegible] नथां
[illegible] तुलसी [illegible] माया यहि
[illegible] माया [illegible] तुम्हारे जन
[illegible] सुख [illegible] जीव
[illegible] तुलसी [illegible] मुख न रहे होइ रहे जो
[illegible] कहै [illegible] बाजी कोवि
[illegible] तुलसी [illegible] कोउ पावे करतार [illegible] बा
[illegible] बाजी [illegible] तुलसी [illegible]
[illegible] कीन [illegible] मिती [illegible] देखे
[illegible] तुलसी यह गुर
[illegible] तिको कधार [illegible]
[illegible] तुलसी माया और रहे [illegible] रचन रपारपाइ [illegible] तुल
सी माया [illegible] नतास [illegible]
[illegible] कार
[illegible] माया [illegible] आन तुलसी [illegible] घना [illegible] कोकप
[illegible] रही स कल दि
[illegible] तुलसी [illegible] चेतन आनर [illegible]
[illegible] माया [illegible] बिधि [illegible]
[illegible] तुलसी [illegible] कोइ [illegible]
[illegible] माया मिथ्या [illegible]
[illegible] हरी [illegible]
[illegible] रहे [illegible] पथगाइ
[illegible] माया कीरीति [illegible] निरताइ [illegible] नाबून
[illegible] तुलसी ग्यान [illegible]
[illegible] तुलसी [illegible] सुप [illegible] माही
[illegible] मोह [illegible]
[illegible] माया [illegible] मोह [illegible] नमा तसुत [illegible]
[illegible] तुलसी [illegible]
[illegible] तुलसी [illegible]

मायाऐसी करिजानी। जैसे स्तरिके बादरजि न कञ्जर्डबरकृतिफटिगो ७८॥ साखी॥ तुरसीप्र णेश्रुवरिघटाजौ कोमक्रोधकेलेहुरमायारोड मरीबुधिप्रकासी औररु७१ चौपई। आत्मबुधि प्रकासितनहीं मायारजनि भ्रस्त होइगई तुरसीसोफि रिनाईमारि रबिनिगवानरसोनरिक्षीरु७१॥ साषी॥ माया तरबलनये। सुदयोअत्मगयानतुरसीआगेरहि कहारजनिको मांस ८२ चोपई। इद्रियांनरजनीस मायामुदेहो तभुरमोजनसाया।तुरसी छहरवालधी को पन हो हरवा ज्ञानम आटैलौनट८३॥ साषी॥ अक्षूलौ मायाको मारगआमवेद तुरसी पाति नो मीनहौ नेतत अनेरस्थेदट४ आमिज्ञोनरिरतन मतनसदा तुरपदलैग तमांन। तुरसी नहीनेदानिसकै ॥ ही छवनमायाहांल८५॥ मायाका करै ना साधुको आयातिहैअवस्थाये तुरपदरसासमाइ८६ चोपई। तुरसी आपनेतुरप मोही। अरसपरसअनरकछुनाही। होइरसाजसाटे॥ लौन। माहिजुकहो बिकौहैकौन ८७॥ साषी॥ लिखो हि कोनांसके नयावृसपदलीन। तुरसीपांचोपविरहे अरथकिरहे सतीन॥ ८८॥ रस्तुत्था॥ दुहा॥ गुनति नाकौ परिकारन॥ तुरसीमाया ब्रह्मकी नासंगु ननोएतीन। एक नम सधि नोएकपै ककनिष्वकी न॥ त्रिगुनकेवियपुरवनीत्रयध्वरधमष्ठिसोइ तु सी सम केगा सही संत बवेको कोय९१॥ तुरसीतत प अस्थिति प्रभि प्रतो मिक्रुगुनलिस्त होइ ब्रह्म करताइनमहीसाखीलोरहे सोय९२ तुरसीगुनसंगन प्रव। लिसव। सहजै चलीजुजाय। ऐसे चुवकपाषान सोलोह चपत होइ आय९३॥ तुरसी चेतकजड लोहस ह ऐसेही जडगुनतीन। परसपरसंजोगते चेतनल नय। जदपि जडगुन थैजुएअपआपमेंआइ तुरसी मिलिचेतन नयो। तक चेतन सरनाइ९४ चेत नछिनक बुनही थाप्यं नहवत जो मि। तुरसी कनवत चेतनहीको मानय५॥ चोपई तुरसीजडगुन चे तननएजबचेतनकेसरनेगयो चेतनबिन कबहुहो इनआनागटरहै जैसेंजुपषांन९७॥ साषी॥ तुरसी

जडे व्यापी चेतन अगनि ज्यों वनहार बिन सोइ जदपि
१८० प्रकास मलिन हैं तदपि कछु न होइ ॥९॥ तुलसी जदपि गु
नातीत हैं चेतन निर्गुन अंति तदपि तजु होइ रहे
[illegible] आपने पान १० तुलसी जदपि सगति वत आ
[illegible] जदपि रवि बिन नाहि पावक प्रकास नहीं जे
ड चेतन न सूझई हि ११ तिमि तकारन ब्रह्म है तासु य
ह संसार तुलसी उतपन होत है यह तनि हरे बिस्तार
क १२ ज्यूं रवि के सं मंत्र जग तेच [illegible] होइ तुलसी ऐसे
[illegible] ब्रह्म ते [illegible] होइ [illegible] ॥१३॥ चोपई तुलसी कहा
[illegible] संसारा ता उद्योत करै ब्योहारा पैर
[illegible] निरगुन यूं देषो जोय ॥
[illegible] तुलसी जड चेतन का कछू कछू कीया बि
चार आगे गुन तिन वरनऊं भिन्न भिन्न बिवधि प्र
कार ॥१४॥ चोपई तिऊ गुन तिनको चित नवषानो जि
[illegible] जानो तुलसी तासूं होइ यह ग्यान ॥
[illegible] तन निरबो [illegible] ॥
[illegible] तह करन नव हि करन ते त्या
[illegible] तुलसी [illegible] म
[illegible] जोको [illegible] अपावृत कनषो
[illegible] मा नाम [illegible] कीयह [illegible] नकी
[illegible] बिबेक [illegible] बिकछी नरहाइ
[illegible] सो [illegible] मकहाइ [illegible]
[illegible] हि रदे सुषिज्ञास [illegible] मांत
[illegible] यह [illegible] सुधरम सील
[illegible] तुलसी यह सा त्वा
[illegible] बिना [illegible] ग त्याग तप दान य
[illegible] यह [illegible] तपंथप
[illegible] गरथ आत्म श्रेय
तुलसी [illegible] धरम यह सो [illegible] मासुजस बिन [illegible]
[illegible] आसती [illegible] सुषिज्ञास संतोषी सी
२ तल [illegible] सुषदाई गुन तासो फल अंग [illegible] संग
[illegible] चेरे हते अयास तुलसी [illegible] गहत मह कोची
स न्हे निज दास [illegible] त्रिसां
गरव सकोमता मदमनोरथ मान तुलसी [illegible] के गु

जौने जौन सु जौं न। मद अमद नजौं न दिसु महो
सा चकू वस मके नहीं सुनि जे के गुन रोह
आदि जा दि सु भेद जहाँ। मद उसम समता सिहा सि
बन तु रहि म। तुरसी रेरजरी तिन्ह नोई जोई क अुज
सु जस प्रताप के काज। रोम नगाति जौ लेनहीं रजे
तन लजति काज॥४॥ १२१॥ नाम गविधा
॥ निम भेजाल नसद लेड हिंसा सो कसे नायाजुहेयोरे
तुरसी मन बचन कर्म रहि तुरसी ऐनाम मग
अधमा नून जरपाप। मिथ्या मोह बिषाद ता परधि
ति तुरसी मन बचन क्रम सही ऐतम की बिधी
२ क्रोध अधिक तौ नरू अधिक अधिक देन असु रोह
स क रहे चिन्ता अधिक अधिक हबटपै अदो ह
आंह स अधिक कहां लौं बरनौं बोह प्रत्रनी अन
मस हृति अधमनो का लोह आमान अधिक आल
अधिक हि निस जानि तुरसी अब छेकरू अ
धकोऐनम चिहनप्रवानि॥४॥ १२६॥७॥ नान
॥ तन तनि धौन॥ तुरसी ऐसो मेरी मस्ति या अवार हके
माहि बिवहार न मेब हि परे संतो प जुको क नाहि अ
धर्म कां मही कोवि डे बडे करम कराहि। जुल सु मित
जौनो जहां यह बुधि नपजे सोहि। अपनी अपनी हृति
सरखा लो न उपाइ अतितन नम नहो यरहे मन डंडी
अरु काय। गह पूय धन पूय सु पश्या बऊ आर न उपा
। तुरसी जहां बुधि हति यह गुन सुमि लत तुक हा
२। तुरसी यह रू यह मेरी वस्त। यह हत्ते तेरी जानि या प्र
मे परिरहे करि करि षा चातानि। निरगुन की सो थी
नहीं। कहां बसे किस थांन। गुन सुमिलत जौ नै जहां॥
बुधि उपजे आंडु॥ २॥ १२६६॥ ७४॥ त्रिगुन तिन
भेद भिन्न भिन्न निरूपन विधांन॥ संत ते सुघर ज
करम न मतेन बिधि अबिचार। तुरसी तीन्हे गुन
नि का भिन भिन भेद बिचार। रजस मनो सकाम
की तांमस को धसु नाव प्रसत न मद संजुक्त हैं ऐ त्रिग
उन तिय नाम। रोऐ त्रिगुन बुधि सू भेऐ चित सुषउपजे
आया। तुरसी ता हि जी व मौनि के बंधन या बिलतांउ
। तुरसी सु धरू मतह रिन जे। स्वामि कांमनां देह त्रि

आहे कि अथवा पुरवासा त्याग प्रकृति हेह । धा मुकरम

४७० रे सुख बांछि को नरक आई जु को मा तुरसी यह रज की प्र

नि श्रांत पारन राम पचो १३ तुरसी हिमा दिरदे धरे स

रन नि निज सेवा करे तहां तहां नाम सब क्रुति कहावे

सुख पावैत बनाहि न सावे ४ साखी तुरसी धरम उदिम

करता चित न बिघन जो होइ । ताकी पीड़ा जानि मन स

के नित्य रिनसो ११ सो च हिसो च क सो करे सुख आं

नंद पद होइ यह लग ग्यांन बरतै जहां रज सुभाव तहां

जो इ १० चौपई सुनि चित मां क दुःख होइ आवे सो चत

सो चत मांहि रहावे । सकै न ही परमो धि जु जाको । साखी

कम नि सनेन का को तुरसी यह नाम सी सुभाव बड़

बड़े या समदम कौ १२ साखी । कमला चित हरी अच

ला मन असंगी होय तुरसी यह जानि सु भाव सत हि

रिपद चीने सोइ १४ स्वारथ बस्तु सु संग्रहे त्याग जोग

सिंगार तुरसी गिरज के गुनां बरने पंच प्रकार १५ बा

द करत है बेध बचनां चि चम सो कछु सोइ तुरसी ए तम

के गुनां हरि के बिरला कोइ १६ दया धरम सर धम्र क्रुप

ये चम नक्रि रु जांनि तुरसी ए सत के गुनां संत नि की

ए श्रवानि १७ नृत्य चौरासी घट निमे आत्म अभिनए

का तुरसी औ से देषी एतहां स्यात की बबेक । तुरसी घ

ट भिन भिन है नही भिनि विचि जांना औसें देषे अ

नां सो स्यात की जु ग्यान १९ तुरसी स्यात गम्यांन बि

नां मिटै न मन को मैलो राज सतां म सग्यांन मे यह चि

न्ह करै फेत २० तुरसी न्यारी न्यारी आत्मां न्यारी न्या

री देह । न्यारे न्यारे देषी ये राजस ग्यान सु ए ह २१ तुरसी

अति मा द्रि क्रम न क्रो क रि सू जे न गवां ना स्वछि म कै

जो तै न ही यह तामसी जु ग्यांन २२ तुरसी ब्रह्मा आ

दि अस्तंन नलौं नयुदीरह सब देह इन ही के आत्म

क है तो म सग्यांन सु ए ह १८ चौपई आदि इडी सकत

तिन तिन उपजे ग्यांन तुरसी पुनि प्रकाश होइ तहां

स्यात गहि तिमांनि २९ तुरसी त्रिभो नो च आसा तिमा

पर धन हरन सु प्रीति जिहां जहां राजस बैठे तहां तहां

यह विश्री ति ३१ साधिक अवरति बांसो अधिक अ

धिक विशेष रहे तुरसी रजगुन है धिन सो फुनि उपजा

ओर २१ चौपई अंतित तम अतित अविचार अतित
मोह विसार अतित आसा वृथा नी जहो तुरसी अ
मत्त हो २२ साषी। तुरसी तम सुमिलत या मन कुं
मैं जानो मो ड्डा सु निरूप सूझै नही। सुकृत सो वाकोय २
। तुरसी तम सुमिलत या मन कौं वङ्ग स्यो जानो ऐह २४ अहत
नजिबे अहयह बुधि नांही देह २५ तुरसी रतन संत जु
नां निश्चै जानो सोइ कांमनी नीका चारीया। रसायन क
होइ २६ आप आप कुंनि रहै। महा संत सो सो २७ तुरसी स
की सुगति समकै ऐकन होइ २८ सां निरूप स्वात गी मन
हति कालैं नां कां म गुर वबे रूप रसां देखे होइ रस्यार त
२९। तुरसी सुरूप संपति विपति कां महा सुज्ञा
ता सोइ। सुध स्वात गी मन के। अंब सपरस न होइ ३०। जा
संग हे माहि असंग निति। असक नक वङ्ग वहो इंतुर
असाहे को ऊ। सुस्वात गकर तजो इ ३१। तुरसी फ
नही कारने। करमन भैगत तां नां राति दिवस की ये
अमस करता जो न रूप भगन महायह रूप में। नही संत
न मांगो न गति जाव वूझे नही। सुरा जस करता जो न।३
२। ग्यां न रहत कारिज कर्रे। तर अंधकार न्याइ तिर
गति समकै न कछू। तिम करता सु कहाइ ३३। तुरसी सं
सरधा अमलो सरबा तमसू होइ। रजु कर मनि अधर
जु नेम। सिसरधा बिधि जोइ ३४। तुरसी जो कर
अंबरन आत्म राम तहां जाइ कै वाहरे। सो स्वात ग
नां मन ऊनि मयू जो ऐक टरै नहीं। ता धांन स्यो वसे सोउ न्रं
३५ सुधमांगि के। सो स्वात ग सरधा जोइ ३६। तुरसी सर
धा स्वात गा भे नजन न की माया पालै पोषै प्रीति सुं
सुत पांन कराइ ३७। चौपई। सुत जनमी लौं जननि ज
पालै पोषै पुष्ट करावे। आठ अठ म उतपन करै
सेवक स्यौं न गमहोइ ३८। तुरसी जिनके सरधा नां
सुध स्वांत गा प्रीति न मांही। तिन पै न गति न जान
नांही। जैसी रू विधिक रस्त जु आंहीं ३९। सा।। तुरसी
स्वामि को वन मैं वसे असंग। सो स्वात गवा सा जो
हर जन मग्रां मकु सांगर ४०। फल बांछा पर दहै। सुज
र्म निक्कं संत। सो कमसा त्याग जांनऊ। आदि हां मधि
नि अंत। सात्ं न कि तुच्छ है होय जनम मरन की हेत

७२

तुरसी तामस सा दै ते मेटी एजु जगवंत छपा। अतिही
नतम करम का फल सावृत गसुध जांनि। तुरसी ता फ
ल नहि दै जगति कुस फल मांनि। ४ (प हलै ही फल
कां कि कै करम नि कै रहु कोइ। तुरसी राजस करम वो
सै लछां नै सोउ ४ ९ चौपई। तुरसी हि सा नरधार विध।
क रम कोरे को क मति मै रसा करम कै कीए यह जांनि
ता कै रसा तनि जाइ अग्यान ४ २ सा [illegible] संत
र कौ तै यद सात्विक तै महा अग्यांन। तुरसी त्रिगुन फल
सुऐ नि श्रै लै कपवांन ४ ४ सा त्वक सुष ६ आस न वि
न राजस दिपथ्या जांनि। अग्यांन तैन तपन जया कै सुपतां
म सचां नि ४ ५। तुरसी सतु अहार रुच हाकु रै सहमै सोव
सु [illegible] सुष अरु सुष करना ल हां न कु लयना को
य ४ ६ तुरसी षाटा मीग आदि दे रस नौ केन जोग म
हा रजसी आहार ए जुपजांव न कुषरोग ४ ७ हिंसा संत
न मन होइ फुरै कलपना सुष। तुरसी अतु छु अमुच
सदा तामस अहार निरुष ४ ८ तुरसी त्रिगुन अहार मै
सं लई सोई तीन। जा लिए सातग बढे रजतम बुधि होइ
छीन ४ [illegible] रजतै ज तपति लोजकी तम तै मोह प्रमाद
तुरसी सतै ग्यांन है ग्यांन तै ध्यांन समाध [illegible] र जगुन
है सब कपजे तम तै होइ ह्यै मांन सतगुन तै पावै पू
रि रगुन निरा तैव जांन [illegible] रज पदई मृतलोक है त
म पदई पाताल सतगुन पदई सुरग दै तुरसी कहै वि
चार। तुरसी सत प्रधान जो प्रांन पयान कराइ
तो सुर है इकै श्रो तै सुरग लोक मैं जाइ [illegible] रजगु
न बढे हरि जगति को छषु बिन सई जडीर तो तुरसी
म नलोक मै पावै मनष सरीर [illegible] जौ तमगुन परब
ल जो तन त्यागै जु कोइ अधम जो निमैन पजि कै
पसु पंछी होइ सोइ [illegible] अधम होवै अधोगति मधि स्
मधि स ध्यांन। तति म सू नर धलोक मैं प्रापति होइ य
ह ध्यांन [illegible] सत रज तम त्रिगुन नि का क छु क छु की
या विचार। तुरसी बहै स्यो षर न का भिनि भिनि भिनि रु
प्रकार [illegible] विद बुधा रित जौ गुन रज गुन की विधि
नीर तुरसी ऐ त्रियब सि करै रज गुन तिनकी या
छीन [illegible] बाह न छम रित तमोगुन ऐ त्रियनम के भेद

तमगुन जित मो करै तिऊ कौ है दोहा ६१ ॥ मन
तमसतोगुना ॥ सत के तीन प्रकार तुरसी नी
जुसोनन सत जित सा ६२ ॥ और गारन गुन के
तीन प्रलक प्रमथन बिद रिहा नव्यात तवतर
ना तुरसी जिन ऐ बसि कौ ऐ ६३ ॥ तन मके त्रिय
तपति अनत अमुक ता कहि रै ता सच कौ त्याग त
तत्व बेता सोई ६४ ॥ साधी ॥ प्रध्य मसी तऊ तीऐ
कुचा त्रिती सु बेध प्रवीना तुरसी ऐसत के गुना
क जाने ता न सुजान ६५ ॥ तुरसी बरने सी न गु
हारस बिधि सोइ ऐ अहोद स बसि करै सुनो
नत होइ ६६ ॥ तुरसी कहा तो आवीऐ त्रिगुन को
सतारो काल कर मकरता नुपता ऊ बिदेस आ
१ त्रिबधि गुन मरधा त्रिबधि त्रिबिध मकरता सो
र बसं तो सुनी ऐ देखो ऐ निरगुन ते नरवार ६७ ॥
साविक ऐना वनो सबै गुन मई जानि ॥ प्रकृतिपुर
तिकपनो तुरसी हित अस थान ६८ ॥ चौपई
प्रकृति रत पुरष जुदो का नने है तमसं नप जे
नवनीयन अनहित होइ आवै ॥ तब गुन मई जत
बिनासि ६९ ॥ १४ ॥ १५ ॥ सतगुन बुधि प्र
रबिधाना ॥ चोपई ॥ तुरसी सतरजतम ऐ तीन ऐक अ
मत है उनै मलीन ॥ ताथें साविक सोई करै रजतम मि
हिसतगुन बिस्तरै ॥ सा रजतम बुधि जगत सब स
न बुधि को कुसाध तुरसी मतमे सुधि घना रजतम मन
घाद ॥ चोपई रजतम मनो रज नि अधियारी तामें
त्र मति फिरै नर नारी ॥ बिन स्वात नाम सिउदे जु होइ तु
रसी पंथ न पावै कोइ ॥ साधी ॥ पंथन को कुपाव धिको
टिक करै है बिचारी ॥ तुरसी स्वातमा बढै बिना रजतम महा
हिन ध्यारथ निह संग होइ संग छाडि कै सिर धाप्रीति
अपाइ ॥ तुरसी तब सात गा बढे रजतम जाहि बिनाइ
प्रथमे सात गपुष्ट करि दया धरम नर धारि ॥ तुरसी
ऐसे होइ गा इरजतम का परहार ॥ रजतम को परहा
रजऐ ॥ सतगुन केवल न होइ ॥ तो आगे तुर तत सं पतनम
नरत होइ सोइ ॥ चोपई सार सार ग्रंथ नि औ गाहे सं
नसंग आदि अंत निरबाहे सतगुन की सेवा नित कौ

सतगुन रहित रजतम मयूं मैं ॥७॥ निरगुन त्रगुन सम आनि

त्रि [illegible] सतगुन ग्यानी आतम आगाध तुरसी ता न्ते ७ १२

रथे [illegible] तम गुति सहूं तें मैं ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] करम करै तन ताई जो तो ग्यान उतपन होइ म

[illegible] तुरसी ग्यान उदै होइ आवै तब सतगुन करम

[illegible] रजतम करम आ [illegible] सिकै निकरै सतगुन

[illegible] तुरसी जाव तब उपजै ग्यान प्रगट

५ करन [illegible] निरवान ॥ [illegible] रजगुन तजो बिजे

[illegible] गुन धरी [illegible] तीजे आस गावे सिकै चौथे

रहो [illegible] जो कदाचि रज तम गुन हि [illegible]

[illegible] तो आगे [illegible] तुरसी सतगुन सोइ

[illegible] सतगुन [illegible] के अनंत मुनि [illegible] मांनि मैं बहाइ रि

[illegible] के सुषनि मैं तुरसी रहे [illegible] सा

[illegible] के [illegible] अपनो [illegible] तुरसी [illegible]

[illegible] करै [illegible] तुरसी

[illegible] फिरि आवई [illegible] मोइ जो सतगुन

[illegible] करता होइ ॥ सतगुन के

[illegible] जुगति को [illegible] आन के तुरसी नि

[illegible] ग्यान [illegible] को करि ग्यान का

[illegible] सतगुन को निरगुन [illegible] तुरसीदास ता ग्यान

[illegible] आतम ग्यान [illegible] होइ

[illegible] तुरसी [illegible] करम नि

[illegible]

[illegible] तुरसी तीन्यूं गुन ज्यो

[illegible] बंधक

[illegible] सतगुन मैं [illegible] तमगुन मैं सतग

[illegible] चौथे ही [illegible]

[illegible] तुरसी तीन्यूं [illegible] चौथे [illegible] जानि तुरसी

[illegible] निरगुन [illegible] ग्यान वा

[illegible] वेद समानि ताके दरस

[illegible] निरगुन ग्यान के

[illegible] तुरसी गुन निरगु

[illegible] पुनि [illegible]

न करम गुन तिनु पार जिन सोइ तुरसी तिहू को स्वा
मी कहा तिन बेता सूं होइ हा ति तबे ता ही कहे कोऊ
त्रिगुन करम को त्यागी तुरसी ओ रजो यह न मही रहे
परम परपा ॥ ७ ॥ ज्ञान ममरन नवडी जाते गुन चित क
र मननाव आरथ ते र्य मधि लोक से तुरसी कर हि
गुनाव ॥ ७ ॥ ध्रुष मे चित डती ऐ जगुन ऐत्रिती ए इरी आं
नाछ्रह मम नआ दिब मकान ऐ नवडी जन पा ना
॥ ७ ॥ तुरसी इन ते जे ॥ न म हो इ मरन रूप्यन ते होइ जे
न मरन नवडी जाए संत निवरते सोइ ॥ ७ ॥ तुरसी बर
नेती नगुन तत्व पांत को पाइ आगे बरनो अवस्था
गुन रूप मन चित नाइ ॥ ११ ॥ १४६ ॥ ७० ॥ त्रिगुन
अवस्था विधान ॥ त्रिगुन की त्रिय अवस्था ताना
के अस्थान तुरसी तिनि निनि निबरन के ग रथ रिगुर
को ध्यान ॥ जाग्रत तजा जगु धिता र जगुन रचित हो
रे वा त्व हू स्थान आदि ब्रम काल ॥ इड़ी आ ह नुएव
अपने अपने सुप निमति ॥ ना गिर ही बिब सेव तुरसी यह
जाग्रती मेरे ॥ तो सुपन क नदर सेव ॥ ७ ॥ सुपन री
नासि धनु ता पति ॥ सत गुन सुब तहां चंद सुकंग था
न आदि दिसो दरा ॥ जर मे मन सा मंद सुत अस्तु
पइ यक रूं ॥ करू मु क्षा कफ द ॥ तुरसी यह सुपन
रूते घई तो जप जे सु प स्थान द र सुबपति रा जा इ
तहां तम गुन गुन तहां ज्ञो इ दे व द ह नि बुधि ध्यान
तहां रहे प्रान मन सो इ ता मधि व्यापक वासना ता
को तंग न होइ ॥ तुरसी यह सुषपति सही ये तेष ॥
बखाना कोय ॥ ७ ॥ तुरसी चत्र दस मइ जा गुते जो जो बृति
कराहि पुनि जाग्रत अस्था यह ॥ सब साक्ष जु कहा
हि ॥ ७ ॥ परन ह को य द सो वइ नो तत को जागे सुप
न अस्थान ता नि यह ॥ करूं दक्षै नाग दा ॥ सुषपि आदि
इड़ी स कल आसि तलीन होइ जांहि सरीर की सुधि
ना रहे पुनि सुषपति ऐ आहि ॥ अध्यान हा जर हि
नो करे सो भी न सैन जु नाहि ॥ तुरसी ध्यान बैराग विन
अपद तोही आं हि ॥ ७ ॥ जज्ञाग्रत स सुपन सुप न
तां मन सुषपति रोइ ॥ तुरसी ते त्रिय अवस्था ॥ तिहू गु
नन की जोइ ॥ ७ ॥ त्रिगुन फुनि त्रिय अवस्था ॥ ज ऐ बु

॥ [illegible] सो घातु रमी ते त्रियपर है तौ चौथे गभि
[illegible] ग्रसति कौं [illegible]
[illegible] ॥ जागत तें ज्ञानरति यह क
रत न नहीं देहा तुरसी बस्त जो देब सोय ता हि पर
[illegible] रि लेउ ॥ तुरसी बस्तु और जासे ग्रवर
[illegible] जो हिय जहां ग्रे सब ऊनर म हो हि जा गत
[illegible] को कुग्रानी मदन न सि मसा
[illegible] सुन गिनै न अस्तुन कहु संका धरी
[illegible] नही क्कानि सक रिस्या हरि गुन नै बिसरा
तुरसी [illegible] सुषपति यह जहां ऐसे जु बिहार
[illegible] सत गुर मिल्या [illegible] सुनां बन गपान तु
[illegible] का अवनी मैं सुपन जागत तय जो मि ॥ तुर
सी सुपना मैं सुपन [illegible] ज्ञान मांक तरंग [illegible] कन पड़े
[illegible] के ग्रस्त होहि सुपन सुपनो अंग ॥ तुरसी जो जे
[illegible] सुपना मैं धरि देह ॥ जागत तें सुष्पि ना रहे
[illegible] सुषोपति रहे ॥ तुरसी सुषुप्ति गुनी वृत्ति
[illegible] सोई वृत्ति तिन के जगपा यह सुषपति
[illegible] ॥ तुरसी वृत्ति जो गुनी दुष कहे सब
[illegible] वृत्ति के [illegible] यह सुष [illegible] पति सुपनो जो
[illegible] तुरसी [illegible] सो चढ़े [illegible] नांहि क
[illegible] यह सुषपति सुषपति अंहि
[illegible] ति रूं
अवसथा कै परे है तुरीया अस थान तुरसी जहा जे
[illegible] कहि बो अति आसान [illegible] है पिंड तक है
[illegible] है सक्केल मंसार ॥ तुरसी रहे चितुरी घर
[illegible] ॥ [illegible] रहे ता सक्के तुरसी क
[illegible] तिरूं अवसथा कै परे जो चतुपद रसास
[illegible] जागत सुपन सुषुप्ती तिरूं अवसथा मांहि
तुरसी [illegible] की ता आगे नेना हि ॥ जो जन बि
[illegible] सो सुपन रूं मंत्रम
[illegible] सुषपति [illegible] सुषपति रूं आगे चले त्रि
[illegible] तुरसी [illegible] तुर पद मही [illegible]
[illegible] ॥ तिरूं अवसथा कै परे जिन कीयो [illegible]
तुरसी [illegible] मुक्ति सो जो धन [illegible] काम [illegible] जा

आराम। तुलसी...
बतलिऊअवस्थासही॥हिजनकोआराम॥तुलसी॥ससमझेको
अवस्थाविस्वेपारेसामसर्॥हदबेहदोअंतरा॥सममझेको
ऊसुजान॥तुलसीहदत्रियअवस्था।बेहदतुरीप्रवान
॥जोवृतव्यापिका।त्रिपना॥वृतव्यापिकामाना॥वृता
कालविघनकेरा॥वृतहदआराम॥६॥हदमेंहदका
जीवको॥नानाविधिकीत्रास॥तुलसीबेहदअनेपदापद
मजोतिप्रकास॥७॥बेहदपदचेतमघटनहानतेको
कजानि॥तुलसीइकराजीसदाकिवृतिसुषकीषानि
॥८॥चौपई॥सुनअसुनकरमोदोइ॥तहांआनंदघूरेति
सकैकोय॥तुलसीऐसाबेहदप्यांन॥तहांआनंदकेठागे
सांनआनंदकेबऊबाजेचाजे॥हदपरेबेहदकेछाजे
हदअनहितबेहदरतहोइ॥तुलसीसुनिसचपावेसोइ
॥त्र॥१४०५॥८९॥तुरीयातीतविधान॥तुरसी
॥९॥तुरीयाअतीतविधान॥घनछंदते
तिहकीउपेक्षातुरीहै॥तुरीनउपेक्षातीन॥घनछंदते
गनसूकैरजोतीपंचमपदनलीयाचीन्ह॥१॥तुरसीपंचम
पंचीन्हाजुजिन॥तहांकोऐसहनानजिदानेदविस
रिाएरहोनबाजीप्यांन॥२॥यहकेचनयहकाचमनि
गाहिजअगाहिजसोऊ॥तुरसीतुरीयाअतीतकेयह
बुधिरहीनकोइ॥३॥कोऊअमानजुकरैअंतरकोपनमप
रकोऊविवधिसुषपाइकैबेगवईजुबुलाइ॥संत
दऊनिपरिऐकरसहरषेनकरूंबिसमाइ॥तुरसीतुरी
याअतीतकेरेतछिनमोपाइ॥४॥कोरीकुजराअरिजु
सित॥पावृतनामसजान॥तुरसीकरूंनविषमता॥सबुसे
एकसमांध॥॥दोहा॥नामहेजोदृष्टिजुरामअ
सीदृष्टिजुनदेनईफिटगाईविषयावांस॥दाअरथन
रथमधिदिसोदसा॥तिपेताकोनाम॥तुरसीऔरनजास
कीजनकूंआगेनाम॥१५०३॥८१॥लोगनकोपार
रच्ना॥कोटिसुरातननकोटिसुचिकोटिप्यांनगुनग्र
पा॥तुरसीजबलगलोनहोतबलगसबेबिरथ॥१॥को
टिकगुनकोटिकचतुराईकोटिकबातबनावही॥
कोटिकागनितानतुककेकोटिकोकोटिकअरथसुन
वही॥कोटिकपुराननपढिजुबऊविधिकेपडितन
सकहावही॥तुरसीएकलोनरबिआगेनछिवह
छिपिजावही॥२॥लोनसमाननपापकोकसोह

नत्रमोल कोमसमां जनकलंककोकं क्रोध ॥ समि
रिपुत्रांत त्रिस्नांसमान नत्रनलकोकं जिनिदहैयौ
कलिजिहांन तुरसीजो तेरित्रारि ॥ तरिबसे तेतेसु
खनवांनल सबपापनिकोमूलहै सबदोषनिकी
खांनि तुरसीनसरनीनरककी निहचैतोनप्रवांनि
॥ तेतासूनज्ञातनमही तहांनपिरित्राकीनजन
त्रांतेंसीवक्रां करतफिरैत्रा धीनदुरहनन
तेज्ञनकोसतसुमत तुरसीपोखपलेकरै ऐसीते
तनिक्सर जकमेत्राइत्राजकरै वुधिवलकचुनव
ड तुरसीऐसोतोनहै सबदोषनकोराऊ ॥ कालरूप
कुरसारविधि होइरुयाहमहिजुसोइ तुरसीऐसातो
नयहनिरमूलनकोहोर ॥ आवरक सबहीनकेपीछै
परयानुसोइ तुरसीदरवसरूपहोइ बसिकोनीसब
हप दरवहैरसबहीलिको लोनिहरिलेजाइ तुरसी
त्रि नवननांघरसं त्रंतरपारेत्राइ ॥ चौ तुरसीत्रि
तोनमिलांहि तोकापैसतोरेजांहीं लोभत्रकेतेना
चनचाहि सीमतेमा पेटरीदिखवै ॥ सा तुरसी।
त्रिस्नांरूपवयह निसचैजानैसोय नानादरबिनदेखि
केत्रिपतिकबहूनहोइ ॥ टकोतहांचाहेजुदेह देह
तहांदसधीतिं वधतवधतवधैलतनतो त्रिस्नांकी
रीति ॥ सततैसहस्रसहस्रतेलषलषतेकोरिबधाइ
तेौकलत्रिस्नांविरतिहोइजौ अरबवरबलौजाइ ॥
॥ कहो कहांलौबरनीए त्रिस्नांकीदोर तुरसीत्रिस
नविनामितेतनकबांछैकछुत्रौर ॥ आघावेनहीत्र
गनितोनदधक्लौपुनिमोइ तुरसीयात्रिस्नांकोनदर
खनकोपहोइ ॥ तुरसीपूरनक्योंहीनहोइसके त्रिस्ना
खडजुसोइ कोटिसुमेरकनकके आयत्राइडारोकोर
॥ तुरसीत्रिस्नांतोनरो महांनीचत्रगपांन त्रागनिपवन
संजोगतो जारीसकलजिहांन ॥ चौपई ॥ तोनहीसंत
गीसबलोइ तोनहिरतजोडितहोइ तोतुरसीदोकंस
मित्राइ अधिकारीत्रबत्राछोंकाहि ॥ तोनतीचती
चसूनीचाछाकापिडततेहिजुसीचा तुरसीपंडितवे
होजांनि त्रिस्नकेचनमृतकासमांन ॥ २०॥ १५२ ॥ त्रि
रतोनहोमरिकरना तुरसीतोनहमारेकोकरैते

ननमसंसारहीरजन ... लिनाहिनारे
चार तुरसीलोनपियालाजिनयीमो ... समिक्राचं १ चुरसी
नमावमोर्हिनलजांनिहेतुसमिकंचनसमिक्राचं जितउनीयं
जितउनीयांकीपाहिंहोतिनसंतनकाम्रुस जितउनीय
सनमुवमरा।तितजनकौरनरूमरा।मागहोवविवस्नन
म्यांलोनम्रालनरपूरि।तुरसीतुगनुगपिलोइजिनवी
याजिमरा४।जिरमूरनवीयालोनमहि गहिसंतके
मुनबांनतुरसीनेम्रजरम्रमरनहिचेम्रीरसमयोल
।५।चौपर्ईत्रिसोमहतलोनम्रमसायाइतिनहिंयागि
निरलोनसमांधूतुरसीऐसासामोहिन्नप्रनकुलनदे
धोजोइद।साषीजोकोकलोनदिषावैधरैतषिवनम्रो
मितुरसीम्रोसरिस्रिवांसोम्रनीतवांनि७।पदिबोगु
निजोनवसुफलनहीलोनिफलजानीतुरसीलालच
लामतजिसबस्नेहोइसमांन८।चौपईसाचरूवजि
निजिनिकरिम्रवैम्रापनसमकिम्रोरजिसमकावे हम
पंडितजन म्रापेताहि होइम्रकंचनम्राइचाहि।। लो
नमलेहमहामतिहीनाताउगोहोइनम्राधीनतुरसीरह
पिंडतसोइजोपटिगुनिकेम्रेसाहोइ१०ऐकचोरकूकन
कसुमेरलेकचोरिकोउनकोषेशप्राहिजिम्राहिनिबुधि
जनाकेपिंडिताईहममांनेताके ११।कोकनेलिषिवनम्रा
गोधेयीतकनधीरनिमषनरिहे तुरसीम्रानदिनरहे म्र
डोलगहेम्रमोलकगुरकेबोल १२ तुरसीरिधिसिधिम्रा
वेचालीज्यूम्रावेरूपहोइटाली।तामेम्रसकिजनहीएन
ईयहपांनयहसमकिसबाई१३मनसाबाचापानतकु
छितावनवैरिहोरिसहेलछि।जासमिलोएकंचनहोइ
तुरसीपानीकहीऐसोइ१४ साषी।रावरंकसंसारसबद
रस्राहिम्रागेंदीनलादरनहिपंडितगहिलोपढिगुमिक
रूकाकीनासादरवहिलोपरहैरोधरैनिरंतरिध्यांनाद्र
रसीमनवचक्रमसहीसोपंडितप्रवांन१५कापढीएगुनी
ऐकहीकाकथीएवकगपांनतुरसीऐकनिरलोनविन
मितनहीनगावांन१६चौपई नलोनमाथानिरनैजोइ
वनवलीताकेतनिमोइदेषेदसाम्रांनदीफिरेतमकर
चौरनकाउडैर१८ संतसंतोषतासंतनपूजीउनीयांउवन
गांगीरहूजी।तुरसीतासुपसमिसुपम्रांनःहमकोऊदेष्या

सुन्या [illegible] कान ॥ ८५ ॥ साखी ॥ नाही सुष संसार में संतोष [illegible]
संसार [illegible] तुरसी दम कू दीया सतगुर ह्म पासि [illegible]
[illegible] सतोष धन ॥ अपने ही नर आंख तुरसी
[illegible] अन को जा वै जाइ ॥ ८१ ॥ ग्यान चक्षि ग [illegible]
औ [illegible] ति नको गति और ग्यान चीन्हुनी चैन [illegible]
[illegible] तसिर मोर ॥ ८२ ॥ ग्यान चिखु तिरलो
[illegible] पार कू परवा नी तुरसी जे तोर बिरजा तिपार [illegible]
[illegible] ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८४ ॥ चान [illegible]
[illegible] तन की सब्दा नही काटै बचन को गा [illegible]
[illegible] संत जनां के चोर ॥ ८५ ॥ संत बचन
[illegible] बना ॥ तुरसी ऐसे पतितन सब
[illegible] जिन दा वे ह ति जे जगु स्त तिन [illegible]
[illegible] माई पुरी अंध हरामीपोर ॥ ८७ ॥ आपन
[illegible] और नस्त के है कान ॥ तुरसी ऐसे पसुन सू
[illegible] ॥ ८८ ॥ परमा त बचन जन चरै मा कलौ [illegible]
[illegible] मन मुषी ऐसे बक कसी माहि [illegible]
[illegible] नही [illegible] तिन स्त का ने पई [illegible]
[illegible] तुरसी [illegible] बमे कू ॥ ९ ॥ का छ [illegible] निक [illegible]
[illegible] कोइ तुरसी कोटि क धरम गहे
[illegible] ॥ [illegible] निक लेक बिना बै
रागी [illegible] मन मै को क्रोध नाहि तीन [illegible]
[illegible] ॥ ९३ ॥ जिन के बोले बंधन ही सा च न हिरदा
[illegible] हि गये जनम [illegible] ॥ ९४ ॥ जि [illegible]
के बोलि बंदन ही तेबादि क हावे संत संत नाम सोधा
[illegible] निकलेक ॥ ९५ ॥ जावत छूटे न जगत रंग
[illegible] का होइ तुरसी जगति अ [illegible] न सोइ जुगर
[illegible] ॥ ९६ ॥ [illegible] ने मने न चैर बचन सो साध सत्तिसार
तुरसी [illegible] जनतो [illegible] कि बोक रहि गंवारा ॥ ९७ ॥ बकि
[illegible] निदिन [illegible] पगा हि रूप हिन नाम [illegible] न जह ॥
[illegible] हि रहे [illegible] है राम ॥ ९८ ॥ मन्मा घत संसार
को [illegible] नहोइ गयो बरीत [illegible] ग [illegible] ग सो स्वामी पनो तामे
यह [illegible] परीति ॥ ९९ ॥ नही समिता अहि [illegible] नही पत
परउपकार ॥ पापी तयह के [illegible] के ॥ परत्रूं बहे जु भार
परधन पर त्रिया पर कथा यह त्रि जन बिचा र [illegible]

॥सो॥ मीपनो तन

तुलसी उर आकास हरि सदा अनही

ऊनन तजे नग

तुलसी ते अध बिचिर है ज्यूं बंघ्र को पांन ७ तुल
माया नईन ब्रह्म नंर्ध्य॥ बिचिहो बिनई आवो ते नर स्
आपबिगरो॥ सुंदरीया बिबिनावा॥ ८॥ घरके नेए न गमन
क रहावो बिही फूलि॥ तुलसी दरस न पद रिके जेगए सं
मए नन्न फूलि ९॥ तुलसी इत फुनि गुरहि कईन हो॥ नत रि
कऐन हीं तमा॥ कुवस्याग कूटली॥ नरनि अंधक माए
कां॥ १० व वैवाग्रि मे वहि परे छूटि गयो नरआरेम न
ही और आलंबन ही है आ लंबन कां मा॥ १ पदि वृम अभि
दिमकरेवो करे॥ वकतेहीं जविहाजें रिगि रहे म ग सोउ
मनने हींतहा नरमा॥ ३॥ अहि निस पावे अंधयूं फेंरी निके
चाम तुलसी न नवे रागनहीं॥ है कहुबडो बलाह॥ ११ न
होषड बेराग की जहां बढे बकु मांन॥ तुलसी मुहावे नही
संत निको सुग्यांन १२ बेरागी होइ बिपेतन॥ फिरि जुय
यां नादिया॥ सो पुत के चनत्याग को कोडी करम धिते
१ अचोपई आवे पटि गुनि वदपुरान॥ छिब्रि स्रछिर को
समझो ग्यांन॥ ज्ञांवत न बिपेन सो गबिमा येना॥ वृत पैनर
क कै सारे १४॥ मन निनिसा करि मांनो कोध हगक है मरो॥ त
रवांगी मोह नल पिंड तमर रिपहो क्रको ध बिपीया त्यागे
मुक्ति न होइ १५ साधी॥ कासी नमो कि मगहि जन जाव
न मुक्ति न जाय॥ तुलसी नावृत न रिरूही कांम कोध मस्का
१६ कांम क्रोध काया मही मद हाम ते अन सो हि॥ ता हि ग
वारि सके नही॥ कपरि मति मति जोहि १७ कपरि मंजन
निनकर हि॥ अंतरि सुध नही मान॥ मोह अंधारे परि रहे
तुलसी कि ते अग्यांन १८ चो॥ तन करि नां नां मुखिन
साधे॥ मन करि मति न करम आराधे॥ ता की चमें रहे ि
रयोड॥ तुलसी निकमन मक ई सो ड १९ जोई जोई क छु क
रत ब करे॥ लोक दिपावन ही चित धरे॥ तुलसी तिन्पाइ न
रकमें का रि॥ बूडे न बरे बार न्मार २० नट हि कांजन दिम
बकु करे॥ मोरं इन नाम न चित धरे॥ तुलसी ऐसे अग्यांनी
जीवा॥ कैसे पावे अपनो पीव २१॥ सा॥ लोक रिजा व
न कारने॥ सी वे अरथ अरु नाव॥ लोक रिजावन कारने

को रंचक [illegible] न बनाव । [illegible] ग ते ताहि मुख [illegible] मुनि लोक हि
ते चाव । तुरसी तक हरि बिमुख को । होइ न तेउ न राव ॥
लोक थित न तन को । नेम सहे सी सय परिघा मन । लोक रिभाव
कारने । जो रोआगे जोम । अलप अहार तुया अलप आ
प तन तू जु तर सम । ठो न पाइ कं लोक कूं । ये अधन सुभिरे
राम । [illegible] । दो । कथनी कथि कथि मोट वंधनी करनी
बिना ली रहे प्रानी । जन तुरसी सो कथनी मांहि काहू के हि
रहे ना हि । दोहरा । कथनी मेर समुह समान करनी तुष
राई [illegible] न मांन । ताहू को विसवा म न कोइ । तुरसी यह फूल
की भांति नोहर [illegible] । कहूं कहूं को कनीमि लावे । पद जोरत
सबै मिलि गावे । न कनम्रूत हो वे पद सा हि कहे बानी
[illegible] तो बानी मे होइ गान तान । यो जे न ही गुर सतगु
रु ना । तुरसी यूं पुन पावे आव । ये जलटि न मु मेर थि तव
[illegible] सा [illegible] संतन को बानी मुसे जो नि वकि जे मी
। तुरसी असे पति सन सू । ज्यो परस न होइ पावे । [illegible] से
तनि को बानी मुसे मु सि अपनो लेदि नाव । तुरसी तन
[illegible] होइ नरक मे ठाम । [illegible] अपने स्वारथ कारने
सा च [illegible] तुरसी जे सेउ मटन सू रही सदा सह
[illegible] पसू को ज्ञान ली । पेडु ह जेटी रे नाहि तुरसी ज
[illegible] के अनु [illegible] मांहि । [illegible] आ मांपो पे आपनं
हरि [illegible] को आस तुरसी लिनकू होइ गान रको मांहि
[illegible] । परमारथ को नांव लो स्वारथ जरसी चेत तु
रसी [illegible] । से उपसहे अनंत ॥ स्वारथ करे जु
[illegible] परमारथ न हि पाव । तुरसी वडे न व मही ज्यू
[illegible] । पडित पढि पढि बाद ही सरम कर
[illegible] सा परमारथ कूं पढे सो तो कहुं न होइ [illegible] बद
[illegible] हि करतो रो । खिचि खिचि के वकु बाद । तिन बादन मां
[illegible] आसा वेइत पिंड ताते
पढि तम रखा । तुरसी जे आसा मुखी ते सब स्वांन समांन
[illegible] स कं [illegible] नकरे । सा चेदे स समा जाइ । तुरसी
[illegible] पंडित । सब जग बंदत पाइ [illegible] प्रथम प्रमोधे आपक
[illegible] संसार आपे प्रमोधे बाहरा । बादि ही बकत गवा
[illegible] आपा कू रमी । मे ते गरब गुमांन । तन कू
[illegible] नहीं । जावे को टिक पढे पुरांन [illegible] तुरसी

वकिवकिवहरमुष॥ तौ करैकपा॥ कुवछिनताहि
जीवकी छिननजीहिगोपा॥ तामवदञा॥ धनसमझैव
हिजाहिबिषधारा तुरसी तके सेतिरे आतिमकूपमंसार॥
पता अछिरअछिरको अरथ॥ समझा तेसवका हि तुर
सीअंतरथनरबसे अधनता पईता हि॥ ५४ ॥ आदिमम
तिवियापहे छडतिमतितपदेमादे नतिमतिपूजाकेरे
तांमतिमतिदतदेस॥ मायारवारथ कारने सपि नांमां
जेसा तुरसी से आतिजमपुरिससा॥ ५६ ॥ गात नां सहेस॥
थथ मदगी वसतसो हगीकरे॥ पंडितसा [illegible] हाट तुर
सी बेचेतइक॥ केवलग्याननिराट॥ आपतनाव तु
तोहकी तो हही बोके ताइ तुरसी ॥ के सेतिरे आतिर
समदसंसारय ७ध्रगाध गंजे नरनाम [illegible] है चिततेबि
सराइजपि आं नही आं नमुष [illegible] गतिअतिजपनाइ रतम
तस्वारथस्वादमें परमारथ तमसूहाइ॥ तुरसीजेषआ
जेपहोइ तितसमिते [illegible] ॥ ५८ ॥ जाके मतियह
तांवतां चुगतेछिपे विकार तुरसीसोसुतिग्यानमत
काहेकूं पचतगंवार ५९ ॥ तुरसी काहेकूं पचतगंव
र प्रीतिजो नईपूरानी॥ मनछितीयावहिगयो॥ फि
होनदीसोआपानी ६० तुरसीनिदाकरिजडमूरनांके
हे॥ तांरीडनकेचोरा अपनेंडंड॥ सुषनिमेंरा चिरहेनि
सनोरदेश॥ इष्टनिरंजनक हतहैं अंजन छाडे नांहि॥ ६२
तुरसीपूरब चलतनर पछिमकोपछ चांहि॥ तुरसी
इष्टनिरंजन कहतहैं अंजनत्रिगुन विकार
ताहि छाडे नही॥ तोतौ तिय ठगंवार ६३॥ जाही की नि
दा करै ताहिकूं नगाहो॥ तुरसी ओसे आपानेनर के
सेपकूं पकूं चांहि ६४॥ तुरसी या संसार कूं॥ कहो
तोकरूं समझाइ॥ कूरनिकापरकूरनि लिपे॥ तारी
कूं पतुमाइ ६५॥ आसी छिपायाआगनि समि सवनी
करनिमाइ॥ तुरसी ताही आचरे आति अंध॥ ६६ ॥ ऐ तो
हा॥ ६६ तुरसी नैंटि ग्रनसूजिनिकेए ना सूधिपि रहे पो
ना गुरु गुरु गकी करनि लिवि नाहि आचरे आपान
६७॥ हूं रिकेनतिमजननिसूं आधकरे आचार तुरसी
इड्यरगमे बसे झा की तहैं नसार॥ ६८ ॥ जुगपरहरिजे
तालमें फेरि पिरै जे आनि तुरसीदासमन क्रमवचां

तेनर स्वरूप समांणि हुए जगुरू व लिखिन करै बेच
५०७ न नहेमो कोणा तुरसी ते पर तखिपस्त स्वांनसरनरजो
न [illegible] सुथ चरू मैं मस्ता सु पच सो चांडा शे चांडार तुर
सी अ[illegible] तनो मत जि जिन बिपस्त बो भाप्यार ७१ हरि
सुनीयर कृपी छिदे प्रचीया माया की च तुरसीदास
लोक मे सोनी चा सिरनीच ७२ कामी क्रोधी कुटि
नर [illegible] के ते का ल्हे मफार निहक पटी तिन संत जन
लिवता संसार ७३ जा रहनी मे रामनी चित न आवे चु
माणि ही अमल चढो रहै ना कल कालस्वप ७४ क
हा रहनी कथनी करा रहे नक हत न पजाइ तुरसी आ
सा करनी ता मुख तव रसाइ ७५ चो [illegible] कथनी कथे
कथे कछु नांही करता है करनी के मांहि तुरसी करनी
[illegible] करनी मे आहं बिकार ७६ सा [illegible] कहु
रहनी कथनी करता उपजे अहं बिकार सो करनी कथ
नी न कछु तुरसी मा थे मार ७७ कहा करनी कथनी
करत जो उपजे बल आंन तुरसी सो करनी न कछु क
थनी हू अम जांन ७८ तुरसी के ते हू हि गये कितेक है
गे आइ कि ते भी अजहू कहत है पै रहनी रघा न जाइ
७९ रहनी रखान जावई कहनी सब कु सियार तुरसी
रहनी [illegible] को पावे करतार ८० रहनी मांही राम है
कहनी मे कछु नाहि तुरसी रहनी दृढ गहे मति र
लो कहनी मांहि ८१ रहनी सिरकी बात है कहनै सिर
[illegible] कहे करता भि ले तो कबि सा बकु कलि
मांहि [illegible] कहे ग्यानी [illegible] रहे कहे सोई संत रहे कहै
सोई पिंडता [illegible] पद न गावन ८२ करनी पूरा चाहीये
कथनी होइ महेइ तुरसी हरि दरबार मे दादि तहेता सो
[illegible] तुर
सी [illegible] लोक मे अविद्या को भरो क अके तो काम
है [illegible] सकल घट पूर [illegible] व ते सिरु लो कमे मल
[illegible] तुरसी ता सब हिन को कारने काम
बिकार [illegible] मसमान को [illegible] नहीं बली जु या संसार
तुरसी सकल जीव जाति [illegible] मारि मिला इ छार
चो[illegible] का ला मुख कूट [illegible] के रा जि हि जीव करि
सब चेरा तुरसी न बरन स[illegible] कोइ बिन सतगुर की कि

रपा सो१४। साषी सतगुरु सरनै कौ ... कृपा विकोन
रत होय महा बलत्र पापी तु सोई दिन का न्हू तो होइ १५ स
तगुर सरनै आइकें ... जो नर तु गति कोम। तुरसी तो
प्रतीक मैं कछू न लेहै विश्राम १६ कहा गुपत प्रगट
हा कहा देश प्र देस। तुरसी तु गति कोमना। तज बुर
कीनेस। १७ गुरतो जे साने सुबधि गपानही प्रभु किआइ।
जब नर तु गति कामना। तबै कहा होइ आइ १८ कामी सो
गु कु बधि का सुबधि न कैरे पेदे स तुरसी करम कमा
इतें। तिनै न देस बिदेस १९ तरस न ही न तमन महा। निर
करम कमाय विष अमृत करि करि गाहे। पी पी मुग्ध
सिं हाइ २० कु बधि न छूटे मन की जनै मैं अति आने
देषि कनक अरु कामनी। तमा म चलै नर ओष। २१ जम
मि चलै नर अ धर्के। सम कै नही सङ्ग्यान। तुरसी गपानै का
कौ। कामकु रत कुज्ञान २२ कामी कसा लो फिरै। त
कत बिराग्री नारि। तुरसी तुम सुष कारनै। कुरत रतन त
आर १४ रत अमोल कु देह यह कु कर सटै न सोइ
सी सुबुध पो वत फिरै। पर त्रिय रत लोइ। २ नारी की मो सा
कहै। निलि सनर अ गपान। छिन निषेसुष कारनै। नर रैने
सिम समान २६ अलप सुषते अधन रत है अनरीहोइ।
रुपे य गफ एकी छाया। मोड कहे लगा सोइ २७ अपरी
का सुषक रितीया। छिन कसुष के काजि। तुरसी अ
मरब धैं तन कुपुन साथे पाज २८ तुरसी गति गति बिव
स फुनि बही कुत सस सो। रत नही फिरि फिरि जो ग
वत। तैं तन अघ लोग २९ देही का न्हि आनि कपूरी
रैनि निवेरी जो ग अरसे कद र ज सुष निस ठ फिरि फि
रि करहिं सजो ग ३० चौपई तुरसी नर नारी की देह देव
तनी की निरो है यह। का संतन पोंटे तप। अभिमानी।
ते जनम षोइ गये अग्यानी ३१ ऐसो महा कदर जय हका।
या। का पर चित्र अनेक बनाया। तुरसी ता संमोहि
बकू तमा ऐही रतन न षोइ ३२ साष। तुरसी पाहन पाहन
घसै लोह लोह सं घसाइ त्यूं त्रिय पुरष दोऊ घसै
क काम के चाइ ३३ ते क बूंद सुष मैं तिन जत्रिय पुरष
मतिसोइ तुरसी मोहित सोइ कें चलै रतन न न षोइ
३४ रस सांपो पे आपनी जन क कोम रस का ज तुरसी

४०८

कामी कातुरा एऐ कहे हलाज ॥ २४ ॥ तुरसी कामा सुके
कुकहै कहि गईया सुषराम तो ताकु यारिजारि मैहै
कत कुकहै भांम ॥ २५ ॥ तुरसी ऐसे कुबधी जीव कु करा
न हीं कुय हेस आपत कै तजव गुरति जहां तहां दे
हे सः ॥ २६ ॥ जिनके अमितो धाजु अति कांमनि ही को
नो तुरसी तिका जो नही कुबधी आत्मा पान ॥ २७ ॥ जो
म अंहीरिसे निंद हूति करत अनेक तो लों तुरसी छि
पिये आवत नांही ऐक ॥ २८ ॥ ऐक राम सबही निमें घट घ
ट रहे समा ॥ तुरसी छिपै रे नही सम रहि मरूर योत्र
य ॥ २९ ॥ सम रसा तिहोइ मुंतिन गि कुमति पति [illegible] फ
हिना ॥ तुरसी दरसे दसो दसा तब त्रिभुवन पति राइ
॥ ३० ॥ कोटिक से कोटिक सुनो कोटि कथ कथो गियान
तुरसी समरस ता षत्र तो लों लगे न ध्यान ॥ ३१ ॥ आप
हरमै ऐक मन तो जो तरनाप कांम तावत के कु मति
गि मो आषा कुं निह कांम ॥ ३२ ॥ तुरसी माती रूबकी स
ब जागि हांहि तिरसूत ऐक सांस लागो रहे तो लो ऐर
हे अकुर [illegible] सो सांस कांटे बिनो निपटन मरनहोइ
ओसे ही अंतमा निरदरै छिन हित हिघाई सो इ ॥ ३३ ॥ ऐक
नि मह कु नारि तन जाको चले सुचित सो मतिरा गि
नो आपद कुं [illegible] जित [illegible] कमि का ऐ कु आनि
कां मिले अपाषि तुरोइ ॥ तुरसी प्रजल प्रचंड होइ पि
ह तन दे सोइ ॥ ३४ ॥ ओसे ही कांम नां जलत नो तर अलि
मह होइ ॥ तुरसी कुसंगति कीऐ प्रसरि जात है सो इ ॥
॥ ३५ ॥ कुदा चितिय बदन कुं हित करि चितवे सत
सो तुरसी तासत परि प्रसन नही भगवंत ॥ ३६ ॥ पुरषादे
षि जुनारि कुं नैन निहारे रूप सो तुरसी बूडे सुमति
परे कुमति के कूप ॥ ३७ ॥ नारी को निरषत बदन नैकरू
महनपाइ जात कालित चितह नैपरे फिरि फिकस्यो न
ही जाइ ॥ ३८ ॥ पुरषदे षि पिय चित चले नैन चपल होइ
जांहि तुरसी तावत भ्यान मन समझो सुन्यो सुनांहि
॥ ३९ ॥ तुरसी नैन चपल नही चपल अरही चोर जो नै
नो न चायो कहे [illegible] नरनारी का चोर
॥ ४० ॥ नैननि मांही ष्टति करै धरि धरि नाना रूप तु
रसी तांहि नु गमांये नैं कांम अवधूत [illegible] का

ऊ
यानश्री केमश्री महा वली रियकोमाकोरि जसारकु
मति के करिकरि मोहामलांगतिनिरानसुरतिको
रूं।।निरखनदेखतगमातानीचेजोनिरदेरे मिटिसूरबार
यांमधधआवेश्रसवारीजुकरिमहाबलीरियकोगतुर
मीतहांबिचारगहिसंतसंजोरेरांमधपोगवांमगुरधन
ककरिध्यांनध्यानकेसांनातुरसीकामहिनिरदेरे संत
मिरनिरबांन४६तुरसीषेदतषंडतकुलपनापंडतषंड
ग्कांमयहजेदिमतावृतकोडाव़नहीइनितकोमाध
७ष्हेसांपियहजोगहे अहजगतिनिहकामयेहैबिर
कतबैरागहैपबिपायातजिजजिगंमध८ नरनारीमाया
रलातास्त्रमकंचिसराखतुरसीनाकैनिरपिलेनमं९
विनवनराय४ जोलोनरनारीकोचहनचितनेछूटे
नकोइतुरसीतोलोबैरागकीबातकहेकाहा।।५०
जोनरनारीकोचिहनाचितसेनहीछूटेलीमानसो
हृदिरसैनहीजावेकोटिककथोमियांना।।५१।।जा
होपुरांनसबगावकोसमकैगारतुरसीछूटेनति
यासुधानावृतधंधबिकाग५१।।कहाजुजपतपक
रोकहादानअसनानाकहामोनहठतरूगहेकहा
बिबधिपुरांनानाकहाजोगजा।।दिधरमासबही
निरफलजानजावृतछूटेनचितसोनरनारीकोध्यान
।।५३।।चोपईमोनगहीजनसचिचरवांन।।छिधिवि
स्तरचरोमुखपानी।।जावेसपकरितनतरगाव ना
टविनसबधंधबाह५४मा।।कहाअपनीकहापार
सांग्रगहोसबसंतातुरसीक्षु।।भतिनारोकाजुप्रतिय
नस्पांगतपदआपनीपराईनारेकोनिपटजुत्यागे
हांसोयातनधरिनधरेसोभेंनाहिसदेह५७जती।।
केमिलेकोसतीजुफलतनहिकोधतुरसीपरधनपर
रकोतावृतत्यागनहोइ५८ग्ररतकेपरकासमैजो
गडक्कवाइमदनागताजीवनकोस्वरजदोसनकाय
५९मुखदियगइसकेनहीसतनिमाहीमोइतुरसीजो
रागतजिवकऊदिषिरतहोइ।।६०परनवांनविसारि
केरिबैरागीहोइकोयतुरसीछिपमानोगवैपसवाके
मोहा।।६१।।परसपरककोहोनदी।।पसवाकहीएसोय।।
तुरसीबिरकतहोइजोगवैकनककामनीदोइ।।६२

अनपाई करी आपणा न रहै हा तुरसी आता
[illegible] ह ६२ जा त्रिया को त्याग करि फिरिताही
[illegible] तुरसी ते अयान नर [illegible] ग्रघन मांहि [illegible]
[illegible] अति बुरा नर या लोक मंझार तुरसी त्रिय
[illegible] जिन वै धाफिरि प्यार [illegible] ग्रप्प मग या बैरा
[illegible] दीया छिट काय तुर सी घर न र फिरि गहा पि
[illegible] गुनि ज्ञाय [illegible] ग्रति गति को पकायाम हा [illegible]
[illegible] काम तुरसी जेष आनेष होऊ तिन कहा है
[illegible] तुरसी न गत अनगत होऊ जातग री बैराग
[illegible] आगे नहीं जन मम रन डपराग [illegible] कहा पै
[illegible] न कहा तुरसी जे ने समान जाव तजिदत मरी
[illegible] य रूटा छि के बान [illegible] जावत इ आ जोग की
[illegible] वत बे धल ए है तुरसी न बेध जानत व जब छूटे बि
[illegible] मह तय नै सो तो न तौ राजित राजा रा म
[illegible] तत थार है तुरसी होइ मिह काम [illegible] जाव
[illegible] नरो मझौ नाचत प्रगट काम तुरसी को मवि
[illegible] न है य नव प्रगटै मोरे राम [illegible] नावे को कव
[illegible] मी कथ्यौ नावे कथनी होइ हीन तुरसी बुझैन
[illegible] नाव त कब न कीन [illegible] जा जोगी की काय
मे [illegible] तुरसी सो केस जीवे मरन हीक
[illegible] कहा परमो पुलक कै कहा बढा ए बकुमां
[illegible] नही [illegible] रिकै मदन मुसत है ग्यान [illegible] नी
[illegible] रूप [illegible] नारि लेक्रम त चोरि तुरसी कछु श्री
[illegible] जीव मे जीव ली कोरि [illegible] जब लग रस तब लग
मुसे देह अपना अंग तुरसी [illegible] छोडे न करि तब जप
छांडे संग [illegible] चित चोरै बुधि वित कै है [illegible] न
[illegible] सपर हरै नमत महा मो छि को हार नाहू
को [illegible] ने मा [illegible] रवत ए कल नारि को
मी मारि [illegible] निरू कां को पावे जान तुरसी
हा मो छिन बान [illegible] सा [illegible] छिमा घत न पग धरत ऐ
क अकेली नारि जन कै [illegible] सरूप है देह धरम संग
रि [illegible] कितम रसां वत [illegible] तुरसी या मे मारि ऐत क
बल करि बसि कारे ऐक अकेली नारि [illegible] बरषा हो
इ बाने [illegible] सांवन का मे हा [illegible] तहां सु रसन मुछि रहै

सूरवीर सो वंत
ऐ नारी नी चाले ह८७ नारी आगे म बहतो खिनारा म बहतो
तुरसी रात ते म सू तिन कूं कर जोरंत ८८ खिनारा म बहतो
तुरसी रात ते म सू तिन कूं कर जोरंत तुरसी राम म हाइ होहि सो
नां चलो या काम सू जु कोइ तुरसी राम महाइ होहि सो
मन तुबर न होइ ८९ ऐस मदम माहि अन तमुनि करि क
मन तुबर न होइ ८९ ऐस मदम माहि अन तमुनि करि कामसराक
मथकेन पाइ तुरसी राम कृपा बिनां ध्यान को मसरा
ह९०॥ चौपई नारी नरन है। होइ रहे ना सि तिन है चेक ठिया
लोक म का रितुरसी को कुसम के नाहि बिना ग्यान पर
मरमे माहि ९ नारी नर चित बनि के रानर नारी म
मोन तुरसी बिय रजे रूप धरि होइ रहे अनमीन ९ पाचो
नारी नर को चित बन के रा सोइ रह रूप सू पनमे ध
ऐ नर नारी रूप हि तिर था हा निरधि तिरथि तेमा होइ जा
इ। जने का म ब सि र है यूं होइ। नारी पुरष पुरष जो इ
९६ सा। कामी नर की कलप ना पलटि कामनी होइ
तुरसी पुरष पेषी ए सुपनां मां ही मोइ ९७ सुपनां मांहि
सरूप धरि मन सुधि होवे आइ हरि कैं मन ता पति त को
देह मान ते गिराइ ९८ हिरे सुपन की कामनी जा को तु
थि तंडयरा ता कौ तप कलेस सब मिथ्या जो निसा र
९९ जन बतैन नितै निकसि है। सि सूर नहोइ कां मा १०० सूरप
त बनर बाहिर दसो दसी तुरसी दरसे राम ११०० सूरप
जो निसंमा रसूं पो नगा ता नाइ तुरसी जिन दिन गामा की
बाझा बिमाइ १०१ जुग मे जो भाती नहिं कां म दोम अस
चांम तुरसी जीते जुगति सूं तिय पांव छिप्यां म १०२ रतिबि
श्री मन बपाइ है र चि रहे हरि चरनां ह १ च मरी द मरी म
मरी यां तजि न जिणा ए बनां ह १०३ तुरसी कहा जाग बत
सो वृत कहा जो न छ राव नारि कंचन मई जो गा सोई
और कां चन न हार १०४ जा कें नरम धिनां जिदे त्रिय कुं
माछि केबांनां तुरसी या त्रिय लो कमें सो अतीत प्रवां
न १०५ कां मनी तिं राम दिन जे त जे त्रिगुन को नेह तुरसी
चौ प्या पदम ही मिलि जा न होइ बिदेह १०६ चौपई मिज
र होइ कां म हि जु मिट वे निरम तर म न मोनां वे
तुरसी औसा को क होइ लागु मे जोगी कहीये सोइ १०७ सा
१०८ आसन कं तपन त्याता स पटं तर जोइ तुरसी जे तु
स्था ए मा सा अपनी सो इ १०९ चौपई। श्रथम नारि पी
मह नारी दियो यह है रां न बि चारी। तुरसी जिन अचे

जि
००

सिद्ध है सो ते प्रिहतं ब्रनगो बंब को [illegible] य ह अनु
सिघ ह सुग के मांही ताहि सु को क सम के नांही तुरसी
जिन तु लटीय ह जांनी तिन हू सक लत्रिय मतामा
[illegible] क जोरैस बकांम [illegible] नी पेषे दितास मांनि
जतजन रत तग्यो रोम हं तुरसी गहि गुरग्यांन [illegible] गा
गम्या गुरदेव का उरतजि गया अनेग. तुरसी जनन्न म
नमाया पाया सीतल संग [illegible] सीतल संग ह म पाइया
तत जनों का मोड तुरसी ता परसाद सूं रहै जु पांनी होइ
[illegible] सतगुर अरु संतनि की बांनी अतिसीतल
अति अमान जु जांनी तुरसी जिन परसा चित लाइ तिन
की आंतगतक तमाये सिराइ [illegible] सा [illegible] तुरसी क्रतक्रत भ
ये से जिन कांम कीया निरमूर रामनांम सू रचि रहे रोम
रोम सब पूरि [illegible] सुपनतरहू नसरबई चढ्यो गगन
धार छिद तुरसी ता के मुख परि मांनों जु चम के चंद [illegible]
[illegible] चो [illegible] कोटि के चंद इक नखकी जे तामा [illegible] की सो
भा दीजे तुरसी तकन नुलहै रामजो नाद छिद तें च
अकास [illegible] तिन कहं सु जिनके चढे उनमै नाद
अरु छिद लागन न को मुख निरखतें उपजे अंति आनंद
[illegible] नाद छिद को के अगम घरि गया गगन घरि सोइ
तुरसी ताम अतीत की सो सर कुं नही कोइ [illegible] तुरसी सो
जा सूं को क नही तो तो लो का मंझार जोय हजे दबिस
बिसाया कोंण सुरष को मार [illegible] न ख्रम अगनि लो होइ रा
खा को सको य सदजी ति तुरसी हमता सू कहै रेने
गम अतीत [illegible]
सहज मांहि सार्थि लिते जे को क सहज समाइ तुरसी
असहज के मन नरि थिरे न पाव सहज सीप मैं जो रहै
सो मन मोती होइ तुरसी पांनी असहज को जे परसे क
छू न सोइ [illegible] सहज सहज सब को क कहै
सहज सुनावहि विरला लैहे तुरसी सहज सुनावही
जांनें सोप रषे चलपा लन रिगांने [illegible] सहज सहज सब
संतनि कह्यो सहज ही मांहि सब न सूब लसो सहज-
मांहि सु निकोउ रामे यसेय सहज जो बकूपारि
निहतरगर हे न्यारा कहु का कतरूफूट न चालेनूव
तुरसी जब मन सहज समावै तब ऐसा होइ के दर

॥ तुलसी तन लघु निबुरैन नको। मन नावै जु आश
म सहजै सुरति गहि रहै। ता गा सु मिर न राम ८॥ सहज
सहज मन रहै गा। रिदे राम ऐसो ताउ। नातै तुलसी असह
ज को। आकुलता मिट दुरि॥ आकुल व्याकुल होइ म
न जब तजै सहज अस्थान। ज्यूं पंछी पिंजर छूटै रह हि
सकै यथा न ८॥ सहज समां ना मन रहै तो तन न जि
न ईं जाइ। तुलसी हिरदा के वतन गही राम हिरां मज्ञ पा
इ ए। सहज समां तो मन रहै तो अलह जकी आ। तुलसी
सहज नही मांति होइ जाइ तन मन कूं त्या गि॥ १० सोपई स
हज सकल संदेह निवारै। पै सहज सकल आ पद मिटावै
तुलसी जहां सहज की तुहारी तहां परपंच न देत दिखाई
११ तुलसी ता जो रिदा मधि सहज ज्ञ होइ तहां तहां तरंग
न उपजै को इ। निरतो पा निरदाइ कचित आदि अति स
वा रहै नित १२ यह देपो सहज की बडाई देखि असहज
जु गया पुलाई। मांनो अमल घ का ऐसो जांन तुलसी मन
न रज न को मांन॥ १३ साषी। तरंग मिटी नहि तरंग न त्यो
बु झि ई चंचल गांन। तुलसी जब मन सहज धर आस
ण की ये आणि॥ १४॥ १०५५॥ ॥ ७५ सीलको षशिद
न॥ जिने कबर ने धरम राजु छिदन मांही सोइ तुरसी
ता सबहीन में सील समान न कोइ॥ १ अकतल गांम आ सु
म तक है पु नि कहे संत सुजांन तुलसी सील सुधरम स
मि नही धरम को कल्यां न॥ २ चोपई। सील धरम सबही
को टीको। सील बिनां लागै सब फीको। तुलसी जो मुष
सुंदर होइ। नाक बिनां न सोभत सोइ ३ सा[illegible]। नाक बि
नां न सोभ नहि सुंदर तन को मुष। तुलसी ऐसे सील बिन
सब ही धरम निरमुष ४ एकादसी अरु आदि है जा बते
पु ब्रत सार। तुलसी ता सबहीन में सील सु ब्रत अधिक
र ५ सील बिनां एकादसी। सील बिनां तपदान। तुलसी
ऐसे जांनहु ज्यूं कुंडल बिन कांन॥ ६ एक अन कन के
बांन स्नांन ती जजी फिरै सोइ तुलसी ता नी तिह [illegible] सि
अैसे न याकहि को इ७ तुलसी सत ब्रत सील ब्रत दया
व्रत प्रतिपाल। निस बत बुत न में सार ऐ संत निलेष नि
र [illegible] नति ८ चौपई ताम सील धरम अधिकाई दया
सति ता ता सम ही ई तुलसी ज्ञा न दरग दाए है सुफ तहु

तहां तदां एतहनोन १४ चौपई तुरसी सील रतो यनु सोकजो ६

पहैति नहीदेह [illegible] तुरसी सील सुधरम की मह
सो ज्ञानी नसाऊ कामिजाय नपजाया दिव्रत रहे राफल
रिरमाऊ [illegible] सील मरो थल हा ग्रहार लो पतसो मु
[illegible] तुरसी जसो सुष गुपन कादिपीये नक्षमु पार । सुप
सुलो छिन विशाग वहि रसो धीरज धीन तुरसी सील स
सीय सु हां [illegible] त्रिविधि मर हर दीप गदोक गाग
त नासे दिस्याग थनिध निनौन कीकार ११ अलपत्र
अलप सी जु पांनी अलत दहौ निद्रा अलप ही वानी तुर
सी श्रीसी जु गति न सोवे सोई सुघन सैन सीलकों पावै ।
१२ तुरसी तै आलीहि गये निन त्रिय देखिन ही चलावै
छिति आदि अति श्रेम जु रहावै सोई सुपन्न तैसी लकौ
पावै १३ तुरसी जे ते कत्रिय दोधिय तन जगु मांही न धुये
दयगुंसा न सदो । मान व ही नोपुश्री जुज नावे । सो सुपन
तै सीलवो पावै १४ [illegible] पति वरता त्र्प अधिक स
ससील पतनारि । तुरसी वा नुगते अलय सुप वासु
यन्त्रेश सुरारि १५ सिव हरो गिरितै परो नावि व रोमि
रतो न [illegible] जु त्रास नतिहो यो । पैसील न चंग मतिहो
[illegible] क्रियालिद है नदी यांव सो सनन कुत्तर मारे थाइ
ये जु सा समहो स्री तिन्हें पैसील गयो न सुहद [illegible] सुप
[illegible] न जाकु स व मायाजिमवा बीरा तुरसीतनम
[illegible] सील नसु सदरा [illegible] सील गये सब जात
हो [illegible] ने राम सील रहे मवरहे तो इतुरसी मम
[illegible] तुरसी
[illegible] मन लावे विवधि पुरान नावे मन सिक्
[illegible] के ऐनहीको ना सा चतमान । साधके हैंमा तज
कुहे सुनि सुमत कहैमो हा तुरसी सुरनर सब कहे सा
चसमान न कोहा । सा चमय सब कुदरे हेजु सिरो
मनिसार तुरसी तोहि गहि संतजन नुतरिगये भवपार
२ । तुरसी न वजा तो सिखो कुवाहीए तौ साची नांव सजे
हां मिथ्या के नेरे न च ढि [illegible] सक बडी नोह २ । तुरसी
मिथ्या नेरो जर जरो अंति न फूटे आंहि जानि आजा
नि चढे को कछ त्रिविधि छिद्र रैता हि [illegible] मिथ्या मत
हा अंति बुरो बजत्र लै पलि जाइ तुरसी क्यों न फूटई
लौन सत जल न्हाइ २ । तुरसी सतना जतन्हाए बिना

व्यापत मन मांहि। मधि व्रवे सगुं करि रहो। मोते हू घूटे
मांहि ४ तुरसी सतित्सगुण सलिता रहि। सलिता सरवे
गो मसगत तिव सोतव सलिता सतिसोइ ॥८॥
६ विनविवेक नचोरे सहिवांनी। ता कूं मांहि मैं
कूं धपानी। तुरसी विवेक ही सवोले। ता हिकरम कुंदि
कंठोले ॥९॥ साषी। तुरसी कहि वो साच को। कंठिन पडे
अंगसाचकहे जन कूं परै। कोप करै संसार ॥१०॥ साच क
हिया संत जन। विरले या संसार। कूंठ कौ वल जगत
कूं। जगता बऊत अपार ॥११॥ मिथ्या वादी मन हुवी म
न यं न न संसाय। तुरसी ते सठ साच कौ। मरम लन लवे सं
॥१२॥ कालसुपवन अगिनका। जिनके कूंठ ही प्र
। हिन करि कथि तजुन रैं। कही साच कौ लेह तुरसी
दो जगपर हगे। ता मेन ही सदेह। साधक देता सत्र कहै
सव कौ निसचो ऐह ॥१३॥ तुरसी औसे अनरती छंडी अहि
तअ गियान नरक साससा सहैगो। सो हिराम की आन
॥१४॥ तुरसी औसे जटनकौ। कूंठ गिकौ संग सो ह सुपनंत
रऊ न कौ जीऐ जागत की कहि कोइ ॥१५॥ साच कूंठ सु
धि कोन ही। कहां आ ऐकहां जांहि। कसे करनी हम करत
। तिनमन आतमांहि ॥१६॥ कालु लपट कुलधी जुकुट
ल। कुमारि गातेति षे साचहि का कै। विधीयार सम
ते ॥१७॥ पधायधी लजा लजी। सरसा सरसी सोइ कूंठ का
च सुमसं ग्रहै। सा च पसारथ होइ ॥१८॥ चोपई साच सवति
संसारा। कहा तरत कहा रूठा वारा। कहा हीरू कहा मु
नि तथा नां। विन समत्र थगुर को जन जांन ॥१९॥ साषी। तु
रसी साचे गुर विनां। साचा मारिग लोइ अरु साचीगति
विनां। पाइ वस कैन कोइ ॥२०॥ चोपई तुरसी साच सोई न
त जानै। जो कीयो कूं कै रे जुकाने। अन कीया अनथा पा
व। ता की कै रे अपंडित सेव ॥२१॥ साषी। तुरसी कीया
कूं का नें करे अन कीया भर पाशि। साच कूंठ सी वा
जु यह। सा हि तेऊ नी कै निर धार ॥२२॥ तुरसी साचे ऐ
क बस है। मिथ्यां तीनों देह। ता तीनों कौ त्याग करि।
च तारथ ता चौने हू ॥२३॥ तुरसी यह साचा आका स वंत
चिद्दघन आतम रांम। औप घट वत मिथ्या जग ता उपति
वपति को धांम ॥२४॥ तुरसी उपजे विनसिहा सोतो साच न है

[illegible] सांच सुप्पिर अमल अपिर संत बघाने सोइ ॥ ७५ ॥
[illegible] रसी यह मार्च सुरति सु सूरति न कसा
[illegible] सम्मिलन सा अमृध जीवसा चहि का जाने तऊ
[illegible] ताहि कहि जाने [illegible] सा
[illegible] कासि लेय [illegible] काम क्रोध अहंकार में पल
[illegible] न देह [illegible] हा सु अस्थिर को आप ॥
[illegible] बखानें तुरसी कहत बेनती सो पंडित
[illegible] सुसलमान की राषी भावे नाहि
[illegible] सो सांच जुग मांहि [illegible] तुलसी मंदी बो ॥
[illegible] की करि आस सदा निरासी नांव रत तुरसी
[illegible] सु मिथ्या जाये नहीं गहे रहे ब्रत ए ह
तुलसी [illegible] बिन प्रीति [illegible] राम नाम न चरे ह [illegible] तुरसी
[illegible] आवत चित में आन राम नाम [illegible] बिस
[illegible] करे [illegible] यान [illegible] तुरसी यक बिषयां
[illegible] यक अति [illegible] मोह सकल मिथ्य
[illegible] बिन मुक्ति न होइ [illegible] चौ [illegible] सकल मि
[illegible] सो में [illegible] आहू सांच प्रकासे तुर
सी [illegible] मोह तब जिस चे संसार नहि कोइ [illegible]
[illegible] तुर
सी [illegible] अनूप है देषि उपजे है [illegible] संत सज्जी
[illegible] पूजे पषान [illegible] परत [illegible]
[illegible] करि बक्र नपियार [illegible] ऊ पिंड प्राण ज
[illegible] सो प्रभु धर्यो [illegible] मंदिर में रमिर सा
[illegible] तुरसी नाहि बिसारि नर करहि [illegible]
[illegible] तुरसी दास [illegible] लोक में ऐ प्रति मां तत
[illegible] संत जन [illegible] बड़ पार [illegible]
[illegible] लोक में [illegible] प्रभु को नाम नाम [illegible]
[illegible] ओर राम [illegible] तिमें त्र
[illegible] अमल आतम राम तुरसी नर मांबि सगा
[illegible] नाम [illegible] तुरसी ताही [illegible] माहि [illegible]
[illegible] ज्यूं [illegible] पाषान जगत जल सेवे
[illegible] तुरसी सर्व जगत की जल पाषान के माहि
[illegible] राम [illegible] होत नाहि [illegible] तुरसी
[illegible] समुद्र की सी [illegible] तब [illegible]

२ लोह ब लाइ १२
। जो पिरकुं पिरसे वृसि तो अपिर कबजान दोइ ॥ तुरसी ॥

मैबलाइ १२ चोपै बाहरि श्च भै बलाइ ह मारी ॥ हम पापे
घट माहि मुरारी ॥ तुरसी घट नजि बाहरि गए ॥ जिन के काज क
छु नाहि गए ॥ १३ ॥ सा० ॥ जावन कारिज नासरै तावन यह अप
ने चित कारन जि चित नकुं करि पूजे न गवांन ॥ १४ ॥ तुरसी
सब चित्रकार चनेरन हारा ॥ तिरंतरि रहि गया जुन्यारा ॥ चि
त्र ही तं लग मो सब कोय ॥ चित्र है दै खो है रानी सोइ ॥ १५ ॥ सा० ॥ तुर
सी है हैरांन भई अदतूत मो जाव माहि ॥ जिह पिर जे नाहि
मो मंजे रचना पूजन जांहि ॥ १६ ॥ परम पद कूं न चिना मके लग
म करम को भोर ॥ तुरसी नरमही होइ रयो जाव माच विचि
कोर ॥ १७ ॥ बाहरि देन बनाइ के बैठे मन फैलाइ ॥ तुरसी पा
जी पलक मन तिहि सेव पतियाइ ॥ १८ ॥ तन तजन करि ज
दि ककरि मनहि कालिमा काम इ हि मैवाइ हिं दरगा ॥ तुर
सी रिझै नरांम ॥ १९ ॥ न्हावै धोवै नेम सूं बरत निबाहै चौर ॥ जि
न करम कुंनि बिध मिटे ॥ जै है नही मो बोर ॥ २० ॥ मन चित मन
मा सुधि नही ॥ तन मंजे का होइ ॥ कोटि दिन प्रति धोईए ॥ तक
ऊजल न होइ ॥ २१ ॥ निंदा करि कौ ऊमति गिनो हम कहै मरा
नर बात ॥ २२ ॥ तन मंजे मन मल न मिटे सो जल नचर मिलि न्हात
२३ ॥ तुरसी जावृत सुध ह्वै डी नही ॥ तावृत सुछ न यीरामाद
मदा बिधि जुगा तम हू ॥ मलि मलि न्हावो नी २४ ॥ कुल मंजे तन
मल न मिटै ॥ मन मल मिटे न नाइ ॥ तुरसी मन मल तब मिटै ॥ ना
व नीर मैं न्हाइ ॥ २५ ॥ तुरसी गंग नं जोन कारि ॥ फूलनि जु बेगो कोइ
कांम क्रोध मल मिटे बिन मुक्ति न कबहू होइ ॥ २६ ॥ तुरसी इं
द्री घुछ नहीं तो सब सुचि माधी सोइ ॥ तनस नसब पावन न
या ॥ क्रंतन करने रहा न कोइ ॥ २७ ॥ तुनि म आचारी सोई ॥ कैरे
ग्यांन आचार ॥ तुरसी क्रोध चिंडा लक्कूं ॥ परसे न रहै तार ॥ २
८ ॥ अरध ला अरध निम पमन ठे तन तजान नदेय ॥ तुरसी पावै
नावै सो आचारी सो श्रेय ॥ २९ ॥ सुध मिथ्या नाये नही आचारी

गो ऐन तुलसी मुक कवाद नसुनै सीतल राषै नैन ३० अ
[illegible] मन राषै घट मै गोय तुलसी ग्यान आचा
र्यन [illegible] कोय ३१ तुलसी धागा वृत्ति को बृह्म है
[illegible] घट माहि मनि गन वृत ना ना जुगत तहां सरगा
[illegible] तिनकै जिनि जिनि लषै कफान राषै माहि
तुलसी ग्यान आचार यह सब साधु कहांहि तुलसी यह आ
[illegible] बिरता को रूजानै ओर रूप रिन्हा यो कै रे मिरे
नमैत्त अप्रमान ३२ देह हमारे देहरा देव आत्माराम तुल
सी कैसे वृते सिधि होंहि सब काम ३३ अमृत अमर ति
आत्मा अकल तेजोमि परकास तुलसी स्दिम षिजा जई सेवो
बिषिस्तता मि बाहरि बहर मुवकुतन नर पूजे जल गता
अंदरि मिवा राम की जन तुलसी रात्ता ३४ मानसी कृमेवा क
रे हरि की हिरदा स्थान तुलसी गति ता नगत की कागौनै
जगत अग्यान ३५ मानसी कसेवा मुनिन उतम आषी आ
हि सदनाना तजीव को जो व ऋपायेत हि ३६ [illegible] सिव
नाम की बाहरि सेत आराध [illegible] सेवया के भिमरी तुल
आगम अगाध ३७ [illegible] सेव माहीरचे मनको मेतमिटाइ
तुलसी साचे दासके परपद बैवे पाइ ३८ दीपक करी एत
वलग जावत रजनी होइ तुलसी रजनी गत नए दीप कैरै
न कोय ३९ दीपग को वल तावत लग जावत रजनी रहीउ
[illegible] तुलसी नान उदे नय दीपग जाइ विलोइ ४० चौपई दिन
मध दीपग को पान तुलसी चलैनन [illegible] मप प्रावृन जहां जहां
रजनि [illegible] तहां तहां ही लागै प्यारे ४१ ऐसे ही
क निछ धरम [illegible] तुलसी तावत लाभ नी को जावत उ
तम धरम न होइ जन ममतल को [illegible] ४२ जब उत
तम धरम प्रकासे तब कनिष्ट मह [illegible] तुलसी [illegible]
आकास के तारे दिन उदे न्य [illegible] ४३ सा[illegible] को
उरउतम धरम तुलसी [illegible] तब दीप भई धरम को क
[illegible] पाल ४४ दीप भई कनिष्ट धरम प्रतिमा रूप
की सेव तुलसी उतम धरम यह [illegible] आत्म देव ४५
उतम धरम जुग जुग मही [illegible] निकी यो पवान तुलसी क
निष्ट [illegible] चितवन कूं अग्यान ४६ चितवन कूं आ
ग्यान [illegible] तुलसी तहां ही व हि [illegible] पंडित
चतुर [illegible] चौ [illegible] तुलसी पूरन धरम [illegible] नाहि

रस कुंवलदै तुनारि निर
नपायो पाइमारि पण।५७।। तुरसी देंगनी तुमहा।छित
हा अविरजये हादे देही देही कुं नजे। जोये नराम अदेहा।५८।।
धिरेषे पेमा कृतमै है। अधिर आत्माराम । राम महि आराधि
लै तुरसी सोइ मिहकांम।५९।। पूजन हारा पूजीए पूजी ऐस
पूष्य ऐसा हि तुरसी पूजनहारा पूजीए पूजन हार मांहि।६०
।। तुरसी महपूजा जु विधि अधिकारी नंत ग्यान रत जीव
कुउत्तम है। जाके उर अग्यान तुरसी देहधारी जुत हां लगे
अविचार तजी वृत्ते नृत्ववरि हते परि रहो सुमिरन सकई
सीवृ।६२ तुरसी के ॐ नमः के ॐ मंत्र मैं केऊ वेद गीकरांहि
केऊ धातपाषंड की।।येरवहां वृनि मांहि।६४।। तुरसी केऊ थं
भन मोहन निमै। केऊ मोहनिनो ह केऊ चाटन मारन निमै
रहे मुगधसूमे हि।६५।। तुरसी कहां लों आषीए मरमन को
विस्तार। आवत ऐतावतन नहोइ परपरमै पै मार।६६।। आवै
सपत परी वसो।।गरहव नतीरथ गंग। आवै तुरसी पारगु
हा मुक्ति न विन हरि नांउं।६७।। आवै अरथ गरथ रूजं नलना
वैमषि नुवषांन।। अमृत जीवुकरूं वसो तुरसी तहां बंध
मांन।६८।। बक्ता श्रोता सुवरदमुष आवत नहीं विवेक तुरसी
विषे विकार तजि। जे जेन हीपरो कुं।६९।। वक्ता श्रोता वहर
मुष लेजेन आतमराम। तुरसी वहाऐ नरम के विदेजो हि
वे कांम।७०।। आवै पठिपरवी न होइ पंडित वेदपुरांन तुर
सी ततनेयविनां मवपचा वृद्धि ज्ञान।७१।। पंडित को पेहु
तपनो। तावृत ही प्रवांन। तुरसी रागन जे रहे हो घनध
रिकांन।७२।। बता चासो विदको। जो पंडित मनसोइ राग दे
मांतनोत्नए। धारथ व कसये सोइ तुरसी पढि पढि वकुपंड
त मूऐ गुनि गुनि गुनी अपार। राग दोष ताते गऐ विन को
ऊन [illegible] तसो पार।७३।। चत्र पटन व अष्टदस। पढि पंडित
होइ कोइ। तुरसी ब्रह्म न ग्यान हीं जौ लंकथे निजोे सोइ
।७४।। तुरसी कहां लौं आषीऐ बांनी को विस्तार। नून हो ह
अथ वां अंधि कः ब्रह्म बिना भठ हार।७५।। चौरासी तुरसी
तूथ जु बांनी जाकी रुनगनि सुरति ब्रह्म सूं ताकी गति
दिव्य कथिये सो ही कवै बानी किं चितरू न चित धरे दद
सा विरण बरण हि विचार कौ कौ चमांहि अग्यांन तुरसी
पथर होइ रहे तनेही हदग्यान।७७।। कहै वरनकर ताकी

[illegible] फुनि सो [illegible] तुरसी यह जग मां निपलु रहे क
[illegible] तुरसी बरन भेद करता की ए तो कही
[illegible] गारन [illegible] नीक से
॥ तुरसी [illegible] भ्रम की तं कैसे [illegible] अपर [illegible] ॥
[illegible] बिगो । सहो न ए को काम [illegible] तुरसी करम
[illegible] तो बी बरत जु सोइ बरना [illegible] भ्रम सब
[illegible] एक अरथ एक अरथ फ
[illegible] फल जोइ [illegible] आस [illegible] रहे रहट घ
[illegible] कपव [illegible] काम
[illegible] सब को आदि निवास [illegible] सो [illegible] को
[illegible] को चामर [illegible]
[illegible] नी च को क नहीं [illegible]
[illegible] सब [illegible] जोति [illegible]
[illegible] बसति रही एक जोति का
[illegible] करी ए जोति [illegible] सब [illegible]
[illegible] पन जो [illegible]
[illegible] कहे [illegible] कर्म [illegible]
[illegible] पंचतत
[illegible] पन की ए [illegible]
[illegible] तैसी तैसी जाति जे
[illegible] गाई करम [illegible] जाति [illegible]
[illegible] तुरसी [illegible] सुकर
[illegible] जन्म [illegible] करनी [illegible]
[illegible] सुदर घर [illegible]
[illegible] तुरसी मन मे
[illegible] बिप्रन क
[illegible] तुरसी सब ही लोइ [illegible]
[illegible] नहीं [illegible] करम [illegible] तुरसी नीच
[illegible] तुरसी [illegible]
[illegible] करनी [illegible] सोइ ॥
[illegible] तुरसी [illegible] नान सदन
[illegible] बचन प्रवान [illegible]
[illegible] हरि नाव ले [illegible]
[illegible] तुरसी बरन [illegible] भ्रम सब कायलौ सो काय

करमको रूप। करम रहत ते जे जन जये ते निज पद यथ न रूप ५०
चौपई करम रहित आनि करम हि लखिया। करम दिखे रासु
निदेश्वय तुरसी ए करमनि के नाम। निह करमी केतो मन गा
पय मुक्त होहि सत कुलीन को कु धंम जनम मांहा तुलि दोऊ
जूत गोगी माज लसो हरामा गर मिलि खि जे इन को हू ५१ सा: उं
जल तल गई अमित कि चनी च सब ना खि लंकि के द को जन
ही यह ब्रिय जिय ह जनमा रि ५२ चौपई कुचनी जिन नेद न
जाके। तुलि नाम दई बरते ताके। तुरसी ऐसे ब्रह्म समान त
हि न जो छाडे अभिमान ५४ साखी। तुरसी उतिम जन्म को मति
को अक्रक गुमान। पापा रस मई प्रभु कुं लखि ते सकल समान
५५ तुरसी पायो काट को अथवा अमल उहोह। पारस परस
कंचन भयो कुचनी च को लोह ५६ तुरसी सकल समान कहे
संत कयहे कहां दिजे जहां जन अधिकार है इहां नरम को सां
हि ए तुरसी नरम करम न उभार सब। बिना न गति निह कां
म। आ नी कृ धरम उदे होइ। सब ए पै कहि कांम ५७ चौपई
कामा के बारी पुछि न मांगा। ताव न घले करि कर रिम तुरसी आ
वत पति हिं पावे। पति पावे तब ति नह बहावे ५८ ऐसे नरम
करम ए जानि। सावत साचे से प्रवानि जावत चै इन आत्मा
गानि व छिव तह रस रजन आपानि ॥५९॥ ॥६०॥ ॥६१॥
भेषको परि करण॥ तुरसी भेष न रूप हो ए सजि ए रस जाए सं
भे पूरी सांई मिले। तो को सुमिरह दिनां म ए तुरसी भेष न रूप
ए भेष नरे माका चा लिरो माह दिन जन का संत बना वे सा चे
ए तुरसी भेष ह धवृत देखी ए। ऐसि ही अ मल जु सो घ को इ
तो रूप न रबासना के मेष जाल हो हरा ति के गुहि पहरा
ही। क कवा के गति माला: तुरसी मरहामो सीन को तकुन
तज तकु चा तथा। तुरसी बाहरि कुंन खि चत्र बन्यो फां हि
नरी घरो ऐसे मिथ्या भेष यह सबही नर नारी ५ । नर नारि
स बही जुए गंम तो म बिन सोइ तुरसी हथा सरूप है पे प
सजे का होइ ६ फांही मो हर कपी रक्षी कय एक न क चि
त्रो म। तुरसी ऐसे भेष यह। बिना जजन ते कांम ७ बिना
भजन का थ कै फकन कज ए का होइ के पर आनि नजु हो
इरहे। मारयो हिंगे सोइ ८ । भिष जरे साआ निज रि जे को कु
कै अनी तिसि तो तुरसी ताकी जु होइ गांवन की सीरी ति ॥
९ भिष निजं को साजि के हरी पराई नारि सो रावन तब

५

११

स्यान ही आरि मिलायाब्बारि १० दुराचारनी सा जई तनप्र
मानंनेष तुरसी पति रीझे नही बिन त्यागे मन रेष ११
कपरि भेष बिचत्र बन्यो अदिर नाव अलेष तुरसी मुप न
नही कृपा तिनकु कानेष १२ कहा कीयो नेष बनाइ के
न ज्ञान के वलराम तुरसी अधम या मन के पर हरि कर म
सकाम १३ पट दरसन मे को ऊ नर केसे ऊ का भेष
रिजको ऊ नांमसे बिन हरि भजन बमेक १४ माला पहरि
के तिलक दे आवे मूड मुडाइ आवे त्रिकाल समान करि
तिलक तिलक हि न्हावा आ जाचे तरम छिगु हाम छि बसारे
नजाइ तुरसी मन रिपु मरे बिन कारिज सरे न काइ १५ न
ज सो मन तनम ही पडो न तज अपढ अज्ञान जनम लो विमल
छि छिजु गति करे त्रिकाल समांन जल तस रगु न तिरधुन क
यो समझो अरथ ध्यांन तुरसी जावत नर मद न बसि
न पर सुमांन १६ भेष बनाइ जु का कीयो जोगी नांम क
तुरसी जोग जु ध्यान ही अध बिधि पोइ काइ १७ मन सा
ला पन सार ही तिन नरा द्यो आ राम तुरसी मदन सुवांन ही
का न यो जोगी नांम १८ जोगी नांम कहाइ के मति को क ग
र बकवाद तुरसी जावत मन की नुरा कपाइ न जाइ १९ रं
गी आसा काहे फिर हि जु नेष तुरसी इन ते मति कहूं
अन मारता अलेष २० सेव पा बिप हर बे रचि रहे मुगध
रहि हि सिलक रिमांनि ली हरि पद बेठे हार २१ पाषंड ने
हम मांहे बेमुद त फिर संसार तुरसी जम दरबार मे क हि
पैगी मार २२ हिरदे कपट मन कतरनी तन हि सुरंग जे
म तुरसी असे उर सुधि नस्यां डरो हरि स अलेव २३ निष्या
सांहि जगत की जगत नेष की चोट तुरसी तजे न अधम
ता करे हरे जम चोट २४ अनपर चेपर अनन षे ऐसे
ठ जंजाल तुरसी न अध अज्ञानि का पैग को न हवाल
२५ ज्ञान ही न बेराग हु हीन जगति जो होइ तुरसी पर
अनआचे ते तो हिन सन बंधी होइ २६ गिर ही होइ बे
को जो नो नेष बनाय दूजा वे संसार मे धोइ धोइ प्या
व करनी कुर की मी अति न बिषे आ ल तन अधम तु
रसी सो उप भोग वे अछबीस मे जाइ २७ चो मुरि सन का
क के सा जि बनेष कवजन सु भिर नाम अलेष गिर ही
के नकार म कमाइ सोऽन रन्हा र सात तिजाइ २८ बेरागी

गिरहीकहा भाई अपनें अपनें नेमरहों उ(?) वह जंतमें वह संत
रहे सा॥ तुरसी दो कंतन तै पा॥ ८१(?)॥ बिराग गिरही
कहा को कुजनतसंतधरम गहे दि ढिदे क॥ तासमानभत
मनहि ओर॥ तुरसी तीन लोकसिरमोर॥ ८२॥ साग्री बिरागी
कूंनावैनो ऐसो बिगुचन नेसराग लै बागो यग पांन ही॥ सि
रपगरी कुनिकेसर रब्यो इनना गा सिरन गनलि वैक रा
दिदे गोपा नामैपहर गूदड़ी कटि बांधे कसि कोप
बिचैरबिब बिपतोंतजो बरधरियां न अनूपत्यहवांनो
बिरागको तुरसीपांवनरूपः बैराग दसा तबसो भई जब
तीनदसा बंधै देय॥ तुरसी तीनों त्याग के चौथे बासा ते
य॥ ८३॥ भांनीतजजगत नगतको तव संतराजितरांम॥
तुरसी जबबरसूं मिटहि कलहकालि मांकांम॥ ८४॥ जगत
भेषतब राई कै रैजगत को त्याग॥ तुरसी जगत्यागे बिनां
वपरिहम नरका ग८५॥ माला मुगति लक तब सो हसन
न के गाही कनकनक बकु॥ कराहे॥ कांमनि संगन सु
हात स तुसी तना नरध रैसु मिरैखिन वन सात॥ तुरसी
ओसा संतजन सुषसिंधमें समात॥ ८६॥ तुरसी ताकै जे पहो
कुभावै होकुअनेष॥ आ नरमें आपा नहीं नहीमैं तें नरम
रषागं मनांमरत होइ रहा॥ आदि ओतिम षिरैक तुरसी
ओसा हे कोकु॥ सो आतम रूप अलेष॥ ८७॥ ए(?)॥
॥ कुसंगतिको परिकरन॥ तुरसी कबकुनकी जीए कु
संगी को संग॥ सजन की चिअंतरकरै रंगनाइ आपनो रंग
तुरसी कबकुन की जीएं कुसंगी रूपी प्रसु संगमांही
बिचरीएं यह संतन की रीति॥ गिरही हो कु बैराग चत्व अ
पवाको कहोइ तुरसी कबकुन की जीए कुसंगी रूमोह
२॥ जितीसंगाई संतजन। करैकुसंगां जाइ तै तोही अंतर
परे अवसि नजनमें आइ ८९॥ हरिजन नांम कहाइकै मतिको
ककरो कुसंग॥ कीए कुसंग हिहोतहै लगनि सजनमें नंग
॥ ९०॥ तुरसी कदाचि ओसा कुजु होय॥ बाह स्दिसा वदे हत रक
दरजहोइ बासनां तकुन करीएनेह॥ कदाचि ओसाकु जु
होइ को कुकुसंगीजीव॥ धरतै अधर अधर फिरै॥ तो कुन
ताहि थी जीव ९६॥ नातें यह गति समझिकें सदा सुसंगीदास
तुरसीक बकुन तै बसई कुसंगी कैपास॥ ९७॥ बिषयनकी सं
गतिकीए॥ ग्यांन ध्यांन घटि जाइ तुरसी बुधिबल सब मिटै

स्नान ही गति भितायाबारि ।१०। इराचारनीसा अहै तनपट
नांनांनेष । तुरसीपति रीझेन ही । बिनत्यागे मनरेष ।११।
कपटनेष बिचत्र बन्यो । अंदिर नांव अनेष । तुरसीसुपन
नही तृपति नरूकानेष ।१२। कहाकीयो नेषबनाइके ।
[illegible] ग्यान के वृत राम तुरसी अधमयामनके परदरिकरम
सकाम ।१३। पटदरसनमे को कनर । केसेरू का भोनेष
रिझको कनो मेरे । निन हरि भजन बमे क ।१४। मालापहरि
के तिलक दे जोवि मूड मुंडाइ मोवे त्रिकालसनान करि
तिलतिलतन हि न्हवाइ । नावे तरम छिमु दामथि बसोरे
न जाइ तुरसी मनरिपु मेरे बिन । कारिज सेरेनकाइ ।१५। ब
हुसे लखनमही पढो नन अपठ अजान जमम तो विनित
विधि जुगति करै त्रिकाल समांन जलसरगु नानि रहानक
षो समको अरधरूपांन तुरसी जावृत तन रमदन बसि
नपसमान ।१६। भेषबनाइ तु काकीयो जोगी नांम क
तुरसी जोग न हृदयानही अध बिधि पोईकाइ ।१७। मनसा
तपत जारही मिन नराहो आरांम तुरसी मदन मृवान ही
का भयो जोगी नांम ।१८। जोगी नांम कहाइके । मति को कग
रबकराइ तुरसी भावत मनकी नु राकपाइन जाइ ।१९। र
जोगी आत्मा । कादि फिरहि मुनेष तुरसी इन ते समति करू
अलगरहा अलेष ।२०। सिबपी बिपहर बेरचिर हे मुगध
[illegible] हिकलक रिमांनि ती हरिपद बेठे हार ।२१। पाषंड
छल गाइवे प्रगट फि से सार तुरसी जमदर बैरमे क कि
पैगी धार ।२२। हिरदे कपट मन कतरनी तन हि सुरंगा ने
ष तुरसी ऐसे उरबुधिन सो डहरो दरस अलेष ।२३। निष्पा
[illegible] जगत की लगत नेष की चोट तुरसी तजे न अधम
ता करे टेम चोट ।२४। [illegible] नपर चेपर अनभे मे
[illegible] तुरसी न अध अ [illegible] के गा कौन हवा ल
।२५। [illegible] हीन बेराग [illegible] हीन जगति जो होइ तुरसी पर
[illegible] सो रिन सन बंधी होइ ।२६। गिरही होइ बे
को [illegible] नेषबनाय पूजा ये संसार में षोइ धोइ या
[illegible] कीमी अति [illegible] बिषे [illegible] तन अघ इ तु
रसी सोउप भोगवे अप बीस में जाइ ।२७। चो [illegible] मन का
कि से साजि बनेष कबकु न सु मिरे नाम अनेष गिरही
के [illegible] मकमाइ सो [illegible] रसातलि जाइ ।२८। बेरागी

तुरसी दो ऊंन तो रंपा गा।२५। बिरागी गिरही
समानतत
तुरसी तीन लोकसिरमोर।।२६। साधी बिराग
मांवैमा धमो बिगुचनजेहग। लेबागोयगयों नही।सि
सि वैकरै
शेप। गलिमे पहेरे गूदडी कटि बांधे कसि कोप

न दसावं धे देय। तुरसी तीनौं त्याग कौं चौ थे बासा ते
य।२९। बांनो नेक्कसजत्व जगत को। तब लत राखि तरांम।।
तुरसी अम्बर स्य मिटहि कहत हक्काति मांकांम।३१। जगत
भेष तब गांई। फेर जगत को त्याग। तुरसी जग त्यागे बिना
वपरि हमनेर काग।३४। मानो मुजाति लक तब सो हस्थ
न केग हो कनकलक बकुरे करगहे। कामनि संगन सु
हात स तुसी तना गरधगे सु मिरै बिनवन सात। तुरसी
ऐसा संतजन सुषसिंधमे समात।३८। तुरसी तावे जे पहे
रू भावे हे कुअने षाजा नरमें आया नही। नही मे तेंनर म
रेष गंमनामरत है इरहा। आदि अंति मषिऐक तुरसी
ऐसा है को कु। सो आत्म रूप अलेष।।३७।। १९ अध्याय
।।कुसंगतिको परिकरन।। तुरसी कबकुनकी जीऐ कु
संगीको संग। सज्जन ही चित्र अंतर करै। ताकु आपनो रंग
तुरसी कबकुनकी जीऐ। कुसंगीसं प्रीति सुसंगमांही
बिच रीऐ। यह संतनकी रीति।।२। गिरही हो कु बैराग बच्च अ
पवा को कहे। तुरसी कबकुनकी जीऐ कुसंगीसं मोह
।३। अिसी संगाई संतजन। फेर कुसंगा ज्रा होते तो ही अंतर
मैं अबुसि नज्जन मे आइ र। हरिजननाम कहा कै मतिको
ऊ केरो कुसंग। कीए कुसंग ऐहे तैहे। लगति नजनमें रंग
।४। तुरसी कदा कि ऐसा रू जु होय। या ह प्रिदसाव देह तर क
दर जहोइ बासना। तकु न करी ऐनेह।। कदाचि ऐसा कु जु
होइ को कु कुसंगी जीव। धारते अधस्य अधर फिरे। तो कुन
ताहिं थी जीव।६। जानियह गपि समझिके। सदा सु संगी सम
तुरसी कबकु न बैस ई कुसंगी के पास।।७। बिषयनकी सं
गतिकीऐ। ग्यांन ध्यांन घटि जाइ। तुरसी बुधि बिनसन सब मिटे

अवु मिलै दैहै अ्राइ ॥१५॥ विषयन की संगति कीये विष
नु मजे आइ ॥ तुरसी माया मोह मैं आतम जाइ बिकाइ ॥
॥ तुलसी जीव रहि तिपैरे विषयन की संग रहे ॥ तुरसी
तासै ग्यान धन कीये कुसंग नेह ॥१७॥ तुरसी तन हि बि
षि कैं कुमति बिषै बिकार ॥ तिन की संगति को करै
वो कैसे कुसंग १८ ॥ तुरसी तन हि बिसारि कैं ताते आदा
र तिन की संगति को करै ये मुरारि दैव हाइ ॥
कुसंगति कै तब धका जन पाइ ॥ तुरसी हरि जया र
हे तो धका न लागै काइ ॥ पतंग परि बिको बिसन दी
पग दहन सु भाव तुरसी दीवा होवे नही तो पतंग परे क
हां जाइ ॥ पवन हारा होइ पतंगा तब न वे सुदीप ग पास
तुरसी हरि नया रहे तो कबहु न होइ बिनास ॥ स
संगति कुमति कारि करै कुसंगति कोइ तो तुरसी
वा पतंग की गति ता कुकी होइ ॥ बाहरि संग न
तर मिले अंतर बास नां बिकार तुरसी जैसे कुसंग
वे सिरजन हार ॥ बाहरि भीतर दसो दिस जित देखै
तित सोइ तुरसी सकल कुसंग है जा वत पान नहोइ
को है कथा करे पढि सरम करत यह देह इसे
हा मैं ग्यान सब तजि बिरहन कीन है ॥ तुरसी ऐसे सग
को छिन संग करी ऐ नांहि ॥ पहली विषया बवन
कु भिव कु सोतन चाहि २१ ॥ बिषरि जाइ बिधि
विसवा की यो कराये थार तुरसी जो मन संगति
रि रचे संसार २२ संगति होइ सही सतसा मैं संसै
तुरसी जो मन संगति रि रचे कुसंग मांहि २३ मन सा
चा कु रमना वास मिमतु नकोइ जे तम संगति तजि
या करै कुसंगति सु सोइ २४ जो जब कके गुपन मैं
बिचरै मिचतु नाइ तो तुरसी पानि घूंट के हरि नाव
ल ताइ २५ जो हंसा महराज को बिचरै बुग बिरह मां
हि सो तुरसी महमा घटे ऐसे चेजे नांहि २६ ऐसे ही
संतन सुसीतलन कुसंगति मैं सोइ तुरसी कबहु न सो
ना ही यह तो यू नदी होइ २७ पति बरता पत कु बजो
बिनचारनि के संग तुरसी सुनाइ रूपि रैतो लगै का
लमा अंग २८ तुरसी कालौ कांब रि को कोऊ न करै
अन राग सब हे रांनी करि रहे जौ लगै पास कु दाग

॥ साधु श्री ... सो साधु सुजन तें संग। तुलसी
... को बरी संसारीनि को संग ॥१५॥ संसारी अरु साधु संग
कदाचि कबहु होइ तौ तुलसी सो मैं न दीं अरु संतान
[illegible] कै ते ... बिस कुसंग को दाग। तुलसी प
... कीजै ... निंदा ... कबहु कको होइ काच्य
... तो ... सो ... तुलसी न मल संत को करि नस के
... कुसंग को ... तुलसी
परवेस ॥ कुसंग ... फटक ... माहि तुलसी
... कुसंगति ... तास ...
केउ मधि ... तुलसी ताको ... सो होइ ... गुन
... कुसंग को ... लग ... तुलसी
... तो करि न सके ... ॥२७॥ कर सौ करै को
... साधु को सोइ तुलसी ... हरि राम ही ...
... होइ ... संग ... न मन ...
न तुलसी कबहु न देई ... कुसंगी ... ॥१८॥ ॥१०८
॥ ... संगति को परिकरन ॥ तुलसी संगति साध की
... समान जल रूपी हरि ... पालै
... तुलसी संगति साध की सुख ... जी
... तुलसी संगति साध
की ... सो ... कलाकरि ...
... तुलसी संगति साध की पारस के ... मानि सु
... पर ... तुलसी सग
ति साध की ... सो सुख ... मिलै
... ॥ तुलसी संगति साध की ... न
। आदि ब्याधि ... करैनि ...
६। तुलसी संगति बिना पार न या को कौ नाहि। सब
सब ग्रंथन के माहि ॥ कुच ... चप

... जल मिलि तिस ... को की
... आन ... हि
॥ ... किन ... सुन्यो ... पारस निकट
... हो तुलसी पारसि कंचन न भया ... लोह
... कदाचि याजी ... देह न आपनो ... तो तुलसी
... संत जन ... संग ॥ साधु संगति पारसि
... कीजे ... तुलसी संगति साध की ...

सबिजानि १२ मनकीमिटैमलिनता मनमाहोइअपंगा
णमिलैनिरखानमें तुरसीसाधसंग १३ सोसाजनममरु
कौ जगतुगताका सोइ तुरसीनिसचैमांसई औसंतस
मागमहोइ १४ तुरसीसंतसमाहीजुसारहै पारकरनमव
अ जैसे संतसंगकोमरम कानौनेकोअंध १५ चौरासि
लखनिजिनकुतंजाइ भावैकोटिककरउपाइ फि
रहै निवृंड मुवृजैना संतसंगतिबिनहोइनचैन १६
सतसंगतिहैसाधनसार परसिपरसिकेतेगएपार
परसिमनरसंतसंग तनमनअमलहोइसबअंग १७
काली तुरसीजीवनजनमको निपटजुलाहाएहि संत
समागक सनेरहौ जबलगहैएदेह १८ तुरसीदेहधरे
का परमलाभएजानि सरधासूं साईजो संतसंगति
रहि मानि १९ तुरसीसतसंगहीनते सारहूतसंसारस
तसंगहीतेपाईए महामोछिकोद्वार २० तुरसीसंतस
मागमत्रसंग उपसमितापुनिसोइ संतोषटेमहामो
छिके चारपालएजोइ २१ तुरसीइनसबहीनमें संतस
माही असंन जहांसतसंगतहांआहियहसबकोनिम
[illegible] तुरसीसोसतसंगसो केहादईजुकोन जाहिपर
सपावनहोहि तीनलोकनिजभौन २२ कामनक्रोध
मनोमत्सर मोहदोहकछुनाहि ऐसीसंगतिसाधकी
हमसुन्यौतिनमाहि परसतपापजुगनके सरहमाइन
सिजाहि तुरसीतापऊ नारहै अतिहूजुसीतलआहि
२३ साधसंगजिमजानहै तबनलहसंसार ताजिहा
परि [illegible] तुरसीकरहुपार २४ संतसंगतिचं
दनबिरछ बली सबहुजगजोइ तुरसीजेजेलपटीरहे ते
सुगंधमोइ २५ चारिवेदचहुजुगमहीं सपतदीप
माहि तुरसीसतिसंगतिपरसि अफलगयाकोऊनां
२६ साधसंगतिलहीबासकरि आसतेकउरधारि तुर
सीभजिगोबिंदपदपलपल बारंबार २७ आराधनक
रिहरिकौ करिसंतनकौ संग अरु संगहोइसंसारसू
तुरसीउनमसंग २८ उत्तमसंगतिसाधकी औरसुपमें
संसार तुरसीताकौत्यागकरि सतसंगकरोसंचार
२९ विषयनकीसंगतिमही कबहूंनदीजैपाव तु
रसीताकौत्यागकरि सतसंगतिमेंआव ३० सतसंग

तिकेमुखमसि लाहिनसुधकोआनतुरसीहमछूटेसबै॥
छिलावतखुरान॥२२ तुरसीदासजनतुरधमुषीतिनकू
कहीऐमंगसुषदेउपदालिदरहैरेगेमलगावैरंगरर तु
रसीदासजनतरधमुषीतिनकूमिलीऐधाइधीलीऐ आ
परकूपजे है आनदछिलाइ२४ तुरसीनरधंजोनोजुव
ऐसेमाधकोयहरीतिकोसंजमजुकरि रहेबुसारत
होइ२५ जोतूंचाहैमोछिपदतोप्रथमपरसिसंतसंगाइ
जेकामनातातिके साहितसोआगतिलैपवनापलटिके
मनतनमेकरियंग।तुरसीतवैचोपैकरूंजाइमिलैसुरत
गंग२६ सुरतिसमावैबसमैज्यूंसितलतासिंधमाहि तुर
सीसाक्षसाराहि औरनपाउजुनाहि२७ साधिकोम
नफटकसमिसिथहीराउनमान तुरसीसंगतीऐरहै तो
फांईपरैनआन२८ जोलोहरीहसिनहीउप जतनानां
रा तुरसीतोलोनछाडीऐ।संतजनकासंगाधपाआता
कहरहे केकरि जोकबछाडेनावे तुरसीनवहीछाडीऐ
कोऊनकैसहावे२९ तुरसीसहाइजुकोकंनांकरे
नापापीकूं।कोयाजगवंतजगतिबिसारिकेआपहीक
रताहोय४०।।साचसुपननसुहावडीसीतलहिवेठाघोइ
सततसंगपारसकाकरैजोलोपरसैनपीतिसजोइ॥४२
॥२०२॥।ऐथ।असाधकोपरिकरन॥ तुरसीकितेअ
साधनरयालोककेमेकार।मीठीमीठीबातकहिबो
वैबहालीभार१।तुरसीकितेअसाधनरकहेसुहातीबा
त अपनेस्वास्थकारनै करैऔरकोघात२ अपनेस
स्थकारनेबोलेअमृतवैन तुरसीतवस्वारथहोइ ते
वकबुलेनदैन२।अपणीअपस्वारथीअपपोषकअ
गपंन।तुरसीअगअसाधकेनाषतवेदपुरानछ॥ चो
पई।कामनासुषउनइऐनकेरा।सुषमिटरिदसंफाकेरय
मतकोकंधीजी तिनेबेदपुरानन कीनेमनेंदा।अथ
हकोव्याहकरिदिषावे।आपनबूढेओरबडावे।आप
मरीबकरिलेमोडा।ऐउतरहतनपावैकोड़ा।ऐसूविं
चारतिपतिबरता कंअपनौपरसतगावैताकूं।जोनें
जोमोसीयहहोइ तुरसीऐअसाधमतजोइ१।आपनक
मीक्रोधीकूर।करिवेगसुकतनिरम्पूर तुरसीओरनि
कीयेचाहै।विधिविधिकेवहिकावैबाधे१ ऐसेअस

[illegible] किंच कागनजलमैं गे तुरसी
[illegible] लूर्वासकै एव सुन्दरसी सा सत्रपु
[illegible] कूस व कोय तुरसी [illegible]
[illegible] तुरसी [illegible] बलावकी से
[illegible] चौवे विषक पा गावै तुरसी यह
[illegible] तुषपावै [illegible]
[illegible] तुरसी साख्या संसार मे बड
[illegible] तै ठर र है यह तोह
[illegible] संसार मे कुलला मिब्र रूप पावै जेनि
[illegible] जीव तिक रैनि बात [illegible] तुरसी सा
[illegible] पर खिम [illegible] के ते
[illegible] तुरसी साख्या संसार मे
[illegible] वेक हि लीरो जे आए संत संग
[illegible] संसार मे चंदन जे हा होइ महा तुरसी
[illegible] परा ने मोह [illegible] तुरसी साख्या
[illegible] समान पौवे पावे तुरसी रस के थास
[illegible] महर्चे कूं सूरज के तन मान
[illegible] सा [illegible] सम मान [illegible] चौ
[illegible] काजा परस रूप संत
[illegible] पा रंग [illegible] जा सिव रन [illegible]
[illegible] जो भयानी श्यान तन चै आपा
[illegible] संसार सब मर [illegible] कोण के गार
[illegible] हिआ न दहार [illegible]
[illegible] पावे कोइ [illegible] संत सदा परमार
[illegible] तपति हरै सब जीव की आप
[illegible] [illegible] चाहे आपकूं संत सुब [illegible]
[illegible] याजीव कूं सुष स रूप करि लेह
[illegible] आपा रहत निरदोष पति
[illegible] अपनो पाव [illegible] तुरसी सीतल दी [illegible]
सीतल चंदन चंद लत सि [illegible] सुमि तेसी त ल संत
न [illegible] सोइ सीतल बानी बोलते ही सीतल
[illegible] सीतल [illegible] के मन की तपति हरै ह
[illegible] जीव कूं फेरि करि [illegible] तुरसी
[illegible] सांति करै सब गार [illegible] संतो समि को

ऊ। नहीं सीतल औरसरीर। कै सीतल मैं। साईयां हैं
सकल की धार।७ ऊपा करन नै उघहरना सुष कै दात
मोया तुरसी साध जनन कि कोदि मोरे अंग जोय १८। सीतिभ
बी जुमील घांना सीतल मन मन तास शंम तो मरत होइर
हा। तुरसी स्वासै स्वास १९ तुरसी तन करि मंरत। मन रू
करि हरा मारी। मन मरत हो इर है। रोम रोम सब रांम २
०। चौ०१ तुरसी अंति सीतल अति ही सुषदाई। सीम हम
न अंतरू अधिकाई। जडजीवन कूं करन सुचेतं नेज
मांही बिचरै इहि हेत।२१। सा०। और कारन कोऊ नहीं।।
बिचरन कूं संसार। तुरसी पंथी जन बिचरै पर उपगार
२२ तुरसी औसा है को ऊ धिन धिन वृहसे सो पर काज
परमारथी। यह बुत ली पिलि बंहत २३ कि सुष पाट दीये
रहें कै जथा अरथ लाभंत। तुरसी या संसार मैं सो परम सु
बधी संत २४ बोलैं चारिक रि। ती ये सात सुनावो। तुरसी
यम इर बचन कौ पंथ न दे रहे पाव २५ यह चाल करनी
नहीं इहै संत रस रीति। तुरसी बोलै सुष बचन यै डअनंत
प्रीत २६ सत्रन का रूं करि गिनै मित रू गिने न काहि
तुरसी गति सँतन की बोलै समिता मांहि २७ संत्री मित्र सब कै
बिषै रहा ए कतुलि होइ तुरसी औसा संत जन त्रिभुवन ड
ल न सोइ २८। अकत करहै कत कै नही सुलि हैं अपुन स
मै बिंन। तुरसी या संसार मैं साध कहीजै तिन २९ चौपई अ
तिन अकिंचन हइ हित। जाको हरि बिन अनत न चित तुर
सी औसा साध सो इ जुग मै बिरला देष्या को इ ३० साषी
मो जनन ज्ञान ति जिहा जेही। ज्ञा कै रागन दोष। तुरसी विरमो
त्यागि कै गहि रह्या सील संतोष ३१ सील नेग हन सब कौ
सहै न कहन रिदै सुष गंन। तुरसी उराम दहन पीतल
जनरू कै क्षा मन ३२ तुरसी हिरदै मुक्त मन साम मल सु
ष चैन अम्रत बैन दया धरम सहित मानत ता पौ संत जन
रू कै चिह्न तुर का रू कै जु कुसबद कहि। पर मन छे
द करां रूं तुरसी ग्रैसे संत जन बिरले या जुग मांहि ३४।
तुरसी साध जननि को सुभ बचन को सुनाव। असुभ
बचन उचरै नही। आवै कैसी करू कुभाव ३५ साध बै
ते सुभ बचन उरधरि आतम ग्यान। कारू कुं उपजै नही।।
अंग आय नो ज्ञानि ३६ कोमल बानी साध की। लागै अम्रत

परिहरि तुलसी ताहि कठोर मन सुनत मैन रूप होइ
॥७०॥ श्रवन नैन मुख नासिका पुनि करै [illegible] ऐसी
[illegible] ॥७१॥ सीतलता बानी मधुर कीस
[illegible] तुलसी को हित पातर है जो कोऊ कथ
न ॥७२॥ तुलसी धनि वे संतजन जो ऐसे कोऊ आहि आपन
[illegible] है और की पाहि ॥७३॥ चौ[illegible] पापता
[illegible] जो कबहु घरि आवै तुलसी ऐसे
[illegible] मा[illegible]
[illegible] जो देहन का [illegible] तुलसी
[illegible] ॥७५॥ [illegible]
[illegible] तुलसी ऐसे संतजन [illegible]
[illegible] ॥७६॥ [illegible] दरवेदी [illegible]
[illegible] ऐसे साधु [illegible] ॥७७॥ कोमल
[illegible] मन [illegible] नाहि तुलसी [illegible]
[illegible] आपने [illegible] माहि ॥७८॥ [illegible] तन मन [illegible]
[illegible] तुलसी [illegible] आपने [illegible] पास
॥७९॥ [illegible] नाहि मनसा
[illegible] तुलसी [illegible] नाहि ॥८०॥ सो [illegible]
[illegible] तुलसी [illegible] मुक्ति [illegible]
[illegible] ॥८१॥ [illegible]
[illegible] दीनन [illegible]
[illegible] ॥८२॥ [illegible] कंचन का [illegible] को
[illegible] तुलसी ऐसे संतजन [illegible]
[illegible] ॥८३॥ [illegible] कामनि का [illegible]
[illegible] तुलसी [illegible]
[illegible] ॥८४॥ ऐसे साधु संतजन है सु धरम की
[illegible] तुलसी [illegible] ॥८५॥ म
[illegible] आकार तुलसी ऐसे सु
[illegible] दसो
[illegible] तुलसी [illegible] को [illegible]
॥८७॥ [illegible] तुलसी
[illegible] ॥८८॥ [illegible]
[illegible] तुलसी सुख [illegible]
॥८९॥ [illegible] को [illegible]

नमांमिले सुबमेसुषनसोय समकंचनकाचैं।निने संत
मित्रसमकोइ तुरसीयां संसारं साधकहीयेसोइ।४७। मि
यातिरूपत्रिमांतजे।।नुरुपदमेंग नतांन।तुरसीअैसेसंत
जन सकल सिरोमनि जांन ४८।।चौपई निरबिरकी क
छुन्नांहे निरपेषी बिचरे निरदावे।तुरसी निरलीयामि
रबांन अैसे साधू बिरला जांनें।४९।।साषीसाकेयहस्ते
यहश्रवरयहमेदन नांहीं तुरसी ऐकही होइरसांमि
लिने कहीं मांहीपरे बिरलेनबिरले साहिप माया त्यागी
संत तुरसी कांमी कुटिलकाटि।के तेफिर हिऊंनेतप
ए जिनकी संगति सुषको।छरबाटे दिरयाव।तुरसी ति
नतिन सुषमिटे होइ मेते बिसराप जे ते मिटे निरम
रहोइ।कंगे आतमग्यांन।संतजनन के मिलनेके तुरसी
ऐसहिमांन।।दचा।।२५०।।०।।०५।।साषसी घी नूतदेो
परिकरता।।करहेकुसते नांकहै।।छनेसगाअरुदोष अन
करतेकी के कहे यहसमिमा सतोष्र।।निरबैरी सबही
नसे निराकाररतसाध तुरसीऐ अंगसंतके।। घेडेसब
अपराध।।तुरसी नमतनै नोदसीऐ न मनेबेनमका
मोन मनअवनमा साजु मुमानिरमलेनषसपतास
।२।। श्रीनदेह कुरसतजे ष नुमांहीतरु लीन तुर
सीअैसे होइरहा ज्यूंजलतसेमीमीन ४।।दासीनउद
बुसतजे।तन मनरहयासंगोइ तुरसीऐ अंग संतके आ
घेसबही तोइ५।।दहेनरावादहनमे बहेन मनकी
धार रहैनर विसंसारमे तुरसी सांजनसारदा।।संक
लपबिकलपरोगमे छूंदी लोग निमांहि तुरसीतीन
आतमसही उनछनेनमनोंहि७।।कहाअपनेकहापार
के औगुनसंनही कांम तुरसीउनेषहारिके हेछर
सांरतरांमा।लेतनकास्ति अरहकाईरतनबरनेक
हि साषी नूतअतीतकी तुरसीऐगुनओहि।।९।।हित
की कहन कुहेतकी क्षमा के रनको।पग नेसापि चु
पकेरहे तरधरिग्यांनअनोप १०।।अैसा निज निरपषी
जन नदपिरहै अनोप नदपिताके दरस हीसे कृत
रथ होइ नो।।११।।पषकी कहैन अपषकी आपापपे
नआंन साषीनूतअतीतकी तुरसीऐसहिमांन१२।।नो
निरनाबिदई।मोलदेकछुकाहिमांहरयेमांबिसमई

[illegible] सु [illegible] मुक्तिरूप [illegible] ब्रि
चे [illegible] सहि [illegible] श्रीतके तुरसी ए गुन श्री
हि [illegible] कायाधीन [illegible] मन वे [illegible] कोइ बचनरू
को [illegible] सनी होइ हरि की रति के हरि
[illegible] तुरसी रत मन [illegible] रहे श्री
[illegible] साचते न मन [illegible] मैते [illegible]
[illegible] तुरसी [illegible] जीय माहि [illegible]
[illegible] सोइ चपल काम मन
[illegible] होइ न नावे न ही जगत कू [illegible]
[illegible] तुरसी [illegible] रहे करै गुपत हरि सेव
[illegible] कान्ह को जीय मांहि
[illegible] श्रोहि [illegible] तुरसी [illegible]
[illegible] कोइ जो रत मन न होइ र
[illegible] रत मन होइ [illegible] राम मैं क
[illegible] तुरसी [illegible] को कू [illegible]
[illegible]
[illegible] करे मन चित प्रीति लगाइ
[illegible] न जाइ तुरसी [illegible]
[illegible] सुधा [illegible] श्राम [illegible] बि
[illegible] धनि धनि माता धनि
[illegible] तुरसी जो गोबिंद [illegible]
[illegible] तुरसी जिनके [illegible] श्राइ [illegible]
[illegible] धनि धनि [illegible] जगत न की काइ
[illegible] तुरसी [illegible]
[illegible] होइ [illegible] हरि [illegible]
[illegible] तुरसी जगत [illegible]
[illegible] नाम [illegible] काम के [illegible]
[illegible] तुरसी [illegible] के [illegible]
[illegible] होइ [illegible]
[illegible] तुरसी [illegible]
[illegible] तुरसी [illegible] हरि [illegible] सब
[illegible] कोदास [illegible]
[illegible] तुरसी [illegible] नही कोइ [illegible]

१०॥

दीसी सब लोइ ॥ ९ ॥ जदपि दास अति न होइ हीन तदपि
पटंतर कौ ए कुलीन ॥ वहदीन होइ ताम न चरै वहुत
भिमान आनि मैं नरै ॥ ज्ञा कै कुल अभिमान न कोइ
गुन म रन कौ किंचत सोइ रहा गामत न मेला होइ ॥
तुलसी ताहि वंद सब लोइ ॥ १ ॥ साधु हरि कौ अभिनंदास
नाम कहा कौ पार ॥ तुलसी पाइ कैन सकै कौ कहि
मनी कै कीयो निरधार ॥ २ ॥ तुलसीदास निकाय पददास
होइ ताहु का होइ दास ॥ ता सुष पाल पटंतर नही सुष
गसुष नो ग विलास ॥ ४ ॥ सुरग म्रति के सुष लिस नो
हिन कौ कामा दास अभिन निह काम होइ होइ
वार धाम ॥ ५ ॥ तुलसी वार के पार है ॥ पार कै वार
आहि सुरग म्रति संजोग यह ॥ दास दक मैं नाहि
ह ॥ दास रताए कराम सूल नै लोक सुष त्याग ॥ तुर
सी मारा होइ तहां दह न उष की आग ॥ ६ ॥ १२६ ॥
सी मारा होइ तहां दह नउ वकी आग ॥ तुलसी विभ्रा भूषन चंद
॥ ७ ॥ शांति को परिकरन ॥ तुलसी विभ्रा भूषन न गति होन
मा दिव सत्र भूषन नान दास अभूषन ध्यान श्रुति ध्यान
गति आभूषन ग्यान ॥ ग्यान अभूषन ध्यान त्याग पद तुलसी अम
आभूषन त्याग ॥ त्याग आभूषन स्वांत्यपद ॥ तुलसी अम
लअदाग ॥ त्याग फल आदि कस क करम कौ त्याग क
हावै सोइ ॥ अन्तर म्रानि कंदो कुपल नेयत न कोइ
ग ॥ है त्याग सुष वरनीयो सुरति सु श्रुति मैं सोइ स्वां
तिसुपद परगट करन पै सुके विरला कोइ ॥ ७ ॥ चौ
पहि अमल अदाग स्वांद साधु सकल कले सन कति
नमहार ॥ तुलसी ताहि उर धरै कोइ अति आनंद सुष
बिलसे सोइ ॥ ॥ तुलसी ताहि नउ षवे कोय उपवै जोइ
ष निवरि होइ ॥ परम स्वांति सुपर हाम माइ तहां को
कन पति न कन देआइ ॥ तुरसी अग्नि मासी तल न संत ॥ व
स्त बिसो तन ले रहे इ कंत ॥ होइ रया चंदन को अग ॥ क
हा करै ष ठुनो गचुनु ग ॥ ७ ॥ साधी अति सीत ल अति
ही जुअमल ॥ आति ही औडा सोइ ॥ तुरसी तास अतील
कू ग जिनस के कोइ ८ ॥ चौपाई ॥ जौ कोक कौ जे र सुष
नासन मुक्त चरै तास निअनि ॥ तुरसी त कारि सावे
नाहि सोसी तल करिए जुग माहि ही फल न काय कू क
नाही अलिग हरा कैदा म न माहि ॥ तुरसी पार न पावै

[illegible] विधि मे रहा समोय ॥ ७ ॥ सा[illegible]
[illegible] तीन लोक के माहि ॥ तुरसी सांति स
[illegible] कहूं जानो हि ॥ ८ ॥ चौ[illegible] जहां सांति सतगु
[illegible] पज रक्षा रि गई ॥ कहूं काम [illegible] मना बिले
तुरसी सांति सुख रह भीनी ॥ ९ ॥ तुरसी सांति सुख के माग
[illegible] लियो सुख सागर ॥ तामें तन मन रहे समोय ॥ अ
[illegible] सोइ ॥ १० ॥ सा[illegible] अहंकार की आग तिमे ज
[illegible] संसार ॥ तुरसी ह[illegible] तौ न जन को न अधिक
[illegible] पद [illegible] सांति न या जन सोइ ॥ ते अहंत्र
[illegible] कोटि करै जो कोय ॥ ११ ॥ जो सब पल क उमडि
[illegible] अहंकार ॥ तुरसी तरुं उपजै ॥ [illegible] जन के ऐक ल
[illegible] सांति पद ॥ गहि मन मन सा प्राण
तुरसी ते [illegible] तो [illegible] जग में हे रान ॥ [illegible] हे रानी होइ
[illegible] होइ ॥ तुरसी जो पानी न या जो ब
[illegible] पावक फिरि होवै नही जो पानी न
[illegible] तुरसी [illegible] पावक ते ईज्ञान ॥ १४ ॥ चौ[illegible]
[illegible] राग दोष में [illegible] मग मावे सुपन
[illegible] तुरसी जहां जहां नर वृति ऐहं ॥ [illegible]
सोई [illegible] सोई संत सुजाना सोई सूर सो[illegible]
सोई [illegible] सोई ग्यानी गुनी जन सोई सोई
[illegible] तुरसी [illegible] के राग दोष [illegible]
[illegible] ॥ १५ ॥ [illegible] राग दोष की आग निबुकाणी कामको
[illegible] तुरसी जब सांति घर आई तब [illegible]
[illegible] फिरि [illegible] राम की [illegible] कां मांहि
[illegible] तुरसी [illegible] के [illegible] नर जगि को [illegible] ॥ १६ ॥
[illegible] ॥ १७ ॥ [illegible] तुरसी पप अप
[illegible] जाइ जो जन रहे सो प
[illegible] तुरसी प[illegible] की [illegible] नही [illegible]
[illegible] घट दरसन [illegible] रहे पे [illegible] स्यां
[illegible] तुरसी को [illegible] हे [illegible] की [illegible]
[illegible] रहे अपनी अपनी [illegible] पंडित [illegible]
[illegible] चार [illegible] तिय [illegible] में निज पद र
[illegible] घट दरसन गहि घट डांडी अपनी
[illegible] पथ [illegible] में रहे समाइ निरपख

छ्रुअांग्या आरसथ। काहीर कामुस लमोन। अपनें अप
नियम मस्तां ना होइ रहे स्नूंपां नी लों। मा तुरसी एपवतावे
को नहा मधी तुरसी ऐ पूरबतन वेपहि मतन ओहि। रं
म निमला रहि गया। उनेप घन के मांहि ७। तुरसी उनेप
घन मही अगांन करि करिवी लिगो इअभेरे गेकरि रहे
मांनि मिथ्या परनी तिं ८। ऐ अपने ऐ पार को ऐ आवे ऐ जं
व तुरसी ताव तनप घेरे। नहीं निरपषसु नाव ए। कदाचि
कोऊ सूं कहे पषनि याजु मको यपष छिन कारिं। ग
रे पष छिन नगो जां ऊ १० सिंध साध कजो गाजती। पष छि
न जयानको य। पष छिन पष बंधन नि को। तुरसी जे ग
नहे य ११ आम रन संपष करे। औ रनि अपष अमो
हां कहा अपने कहा पार को। तुरसी को ऊ हो दा १२ सा च
पष निरपष मसि। साहिपष कही ऐ नांहि। तुरसी पषरो
ई जो नीऐ जुपरे पचाव टिमांहि १३ यु हरूय हमे राम त
मा चा। यह ननेरा औ हि। या उपा छिसे जे परे ते पष बंध
न मांहि १४ चौपई पैचां तांनि जु करि करि काचे अपने
अपने पंथ मिरा चो। तुरसी निरपष रांम ल जो ग्यांम जउ त
रा न मह अधरि आन्यां १५ ऐ अपने ऐ आहि पगा ऐ ऐ बि ने
र पष बंधन गा ऐ। तुरसी निरपष अबंध अतीता। ता की न
ही पष नि संप्री ति १६ उ पष मुक ऊ तंमां नि नहीं तेयां पषा
पषी पंथि पाव न देय तुरसी निरपष ग्यांन समाया नहां
का रूं का मिलें न माया १७ ताती सी ती ताहि न जो लो जो
मधि नया सुषि जांनी बोलो। पषपषी केउ चरे बे न ताहि
दहे दारे उपषे न १८ साषी ज्ञावन सम के सुप नमें उ पषू
ता व तजो मा तुरसी उपर हरे। सेन तब जब सुष हो इ छि
नी मांन १९ तुरसी अ पषसुष समि करे। या पषु नि बिस
राइ। पषा पषी से ऊपर रहे। सो न हां जाइ तो जाइ २० चौ
२१ नांही वे ह उत न अस्यं न। नहां जु को ऊ न यावे सं
नो। नन तुरसी सोई जांनन जाइ। जो पष तजि निरपष बं
ध रमसमाय २२ साषी राग न कारू सो कैये सो पन धरही
कोहि। ता न आ ता न अत छि तछि बिसरे चित व नि
चाहि। मधि अग्यांन मेउ गा रहे। मम ता बर तन मांहि तु
रसी या त्रिय लोक में तुरपद दरसे नांहि २२ आगत मो
व तजगत स बसो व त ऊ सो तुं ना तुरसी सोई सेहजन

तुलसे तुलन मोचेतन १२ जैसे पछनिके नाथि रहे ताती
लागि तुरसी ताहि बकु रिन रहे जनम मरन की आगि १४
तुरसी जनम मरन की आगि यह ताहि कबकु न जरावै
जो नाही सो हरता आपके कछू न कहावै १५ तुरसी हे
जो सो राम तुह मा पछायची के बैना नरधरि अस्तु नरच
रसी सो कछु आतम चेतन १६ चौ० तुरसी नाही रूपा
रहे माया मुक्ति के बचनन कहे रहे निरालानि रपच
रा सो पछबा नन तेद कोइ १७ सा० तुरसी यह सब
अरथ सबको निह चोजोइ नांही जाऐ मुनि छिगाऐ जि
गुन ताजी सोइ १८ तुरसी यह सब को अरथ सब पं
थ निको सार पचा पची को लोक यह सिर सुधरऊ
नारि १९ थापकु सो निन्यारा होइ रहे अस्तित नांही सोइ
सो हे दरसे पच नो सतक है सबको य २० सो० पछा
पी को जान नांही जयनासे तु यह तुरसी सहत अपं
ना आरो अमहत सुध रोके ही २१ चौ० मे नांही तहां मे
चलि गया सोहै नागिरन्यारा नया तुरसी तहां
आनि सा नानि नथिरि की नोपरवेस २२ जहां न चदन
सूर अबहु अनाहद बाजे तूर तुरसी जगा भगा तो लिए
का सा जहां नांही हो इएक चेभिन दास २३ निराकार
को धरे है सोइ कारू के आकार न होइ तुरसी निराकार
होइ जाइ तब नन जन नं घर हि समाइ २४ सो० २५
[illegible] तुरसी चारि वेद
धि जो कछु साहि न कछु ठो सार सोई सार संचि रि
सु म तिन सो बिसतार २६ सार सधा रोही न लो ना
सु न लो असार त्यागे तुरसी समझि के सार ही सू
रो प्यार २७ सो रोही मनतपक रस्तु सार सार ह टबीर
लकु बिस्तार मरू ना लो त्यागतीन २८ तीन ही एतीर
२९ तुरसी धारे ही मे बकु न सुख बकु न माहि कछुनां
हि कंचन के छिन कूत लो कंकर को रिछि हि
३० तुरसी चार्यो वेद को सार कहत मत एह समता ग
हि रहि है सुख विचरि तु होइ बिदेह ३१ तुरसी चत्र
मटन बुअछमी दसक मेयहसार अमित नानजन
अभलपद आदि अपिह कु नार ३२ आदि अलिजा
रऊ सार सुपद स्तू सोइ तुरसी ब्रम तुम सुमिरि सो

तुरसीधरम अनेक है। सारयार नहीं को

। तुरसीध

मलकरन

। नवरतिमा सतन वरतिमा

वस्त

व १५॥ वी। जिनि

कारकी

सो तुरसी माथे मारि ११॥ घटही में अम्रत बसे। प्य

। बिषत जि अम्रत कूं पावे। हेसपीयां न

१२। साचमी रसुष संग हे। कूवनी र को त्याग अेसा

हंस सरूप जन पाई पूरन भाग १२ सा च अकिनिरवा

रि करि भिर ने होइ न जे रां म त्रि साहे संसरूप जन। तुर

सी पूरन कांम १४॥ ज्यूं अधकूर बास नांको त्री गीका

र कराय तुरसी हे सपी रहि पीवे, नीर न ने राजाइ १५ ॥तु

रसी से से साधू संत जन तो मपि के बेद पुरांन सार सार मत

संग्रहे तन जि असार त्र मअ्यांन १६॥ चौपई सार सार मत

संबे कोगहो ग हे सी के सुनि न्यारा रहे। काहू के रंग

मे मिलाइ अपने सु मारग लागा जाय १७। अपने सार सु

मारग मांही चल्या जाइ छिनछाडे नांही तुरसी जस नी

तो गी सोइ अार बिमे कबकू नरत होइ १८ साषी अेसा

सार संग्रही जन सदगति सुष के मांहि तुरसी समावे स

ही। तामें संसे नांहि॥ १७॥ २२ २॥ १८॥ अथि बिचार बो

परिवार॥ रेषा दषी उचि चलो। क्योन ही बबेक तुर

सी फिरि करि बाजे रा बिनां बिबेक अने कां॥ बिना बिम

क अगहि तजे। अति मोपक्षे चेनांहि। तरसी हास जनहां के

तहां। आइ मिले जुग मांहि २॥ चोपई पहलै कछू कछू ग

हे बबेक पीछे त्यागे कुठै बअने कां बिन ही बबेक कउ

बहि त्यागे। सो अधिबिचि रहे पार नहीं लांघे २ पहले

ही जड त्यागे है अज्ञांनां। बिन समझे सत गुर को ग्यांन। तु

रसी सिध नहीं सो बेसो घबन मे बसो बसो न तत लोइ॥

४॥ साषी। तो मजु गति जांने बिना, जड त्याग है सरीर तुर

सी अति नि बहे नहीं॥ ज्यू छिहोइ जल बीरा ४॥ चोपई तुर

सी गुर मत ज्ञांन्यां नांही। होइ अनन वेगा मन मांही संत

अ को कषो ग्यां नांहि। तम त बारू मीलि जु अोहि ६॥ मा

तुरसी सुति सानि परहै
रव सिमकै गुसोइ ।८। साषी । जब सद जेही होइ गा प्र
पासं जब गप जिहि बिचार । नव कुल बातें धौ को बिसतारे ।६
बिया परहार ।९। चौपई । तुरसी कै ब्रह्म बिचार
नमो अरथ अनरथ हि टारे । चौरही मैं बकै न बिचार
बिचारसो करै बारंबार ।१०। तुरसी तन मन इही सो अ
तन प्पान नाहि त्याग बिकार ।११। साषी । अमसा उबसि रम
नुलगाव ते गुरु सहो हारि बिचार । जावे घाजो वेद मत
मत सुषंड तनो होन है बिचार समिफि को ऊन हो तुरसी
जावे सिधांत मार ।१२। बिचार ही ते पाइ ।१। कि बल आतम गया
नन मनु आन । बिचार हो हे ऐक ब्रह्म बिचा
न ।१३। आधि ब्याधि की औषदी । रोग को पहार ।१४। बि
आ तुरसी ता तर आचरै सो होइ तुरसी सो
चार सूछि जन के गदे । सो जन मग बन कू राह ।१५। दोहा । बिचार
कब ऊन परै मिलै घाड कूं ताइ । मैं नतहै बिसरामो तु
बिना न चरै हरि नाम । माकूं ध्यान परम पद पावै
रसी बिचार ही सत्य वो तब जन बिना बिचार सबे फी
।१६। ता ते बिचार ही है मी का । स्वाद । तिन संतन का
फीका । तुरसी जिन यह पायउ उपाये अबस्त
महा अगाध ।१७। तुरसी ब्रह्म बिचार त्रिगुनी यह देह । जे
उपाधि बिचार न जाइ जो को है को ब्रह्म ध्यान बिन बि
ब्रह्म सों मिसजै साने ह ।१८। साषी । कारिज कोऊ नासरै तु
पूको कोटिक करै आचार । बिचार सोई जानीये ब्रह्म बि
रसी बिना बिचार ।१९। चितवै नहीं तुरसी छिन रू
चौरे मिता अबस्त कूं यह के बज मत आ
चित २० मन सा बाचा करमना । हो मन जन मन घरि आ
नि । तुरसी ब्रह्म बिचारि गहि । दोहरा माहि बिलाइ
नि २१ दोहरा त्याग दोह कूं गहि है । दोह की त्रास मिटाइ २२ दो
ता तुरसी ब्रह्म सो दोहरा परै । बिनास तुरसी दो
ह न तटाइ दो को होइ अ बिके को बास २३ तुरसी पं
ड क रति मिलै न तहां न यह आया । का ऊ न ल टि
तत की देह धरि सब को अमृत रूपी
अमृत पीया । का ऊ बिष षाया २४ तुरसी गुर के ग्यान
राम है । बिष रूपी जु बिकार । अमृत पीये ज बरी
न लागि म्रु वा संसार २५

जाके सा चार कनही कुमिबिचारनहीकोइ।
आत्मनश्रैरापसधाकहीहोमोइ ।
नहीं जिन्हा रकुअहि तेसा गेतेमाहिरे
[illegible] नाको तेसज । तुरसी श्रैसे आपानानर साधो सुचि
[illegible] सो कु भ्रम नानामिटे बिनएक सु [illegible] बबेका
[illegible] चारी को [illegible] कु जरको असमान दया
[illegible] नहीं [illegible] माडे ध्यान ।। तुरसी जोई
जोई [illegible] करनी करै सोई सोई कु जर सो चासमित
[illegible] पाच ।। जोई जोई कछु
करनी करै सहसोई [illegible] सोइ तुरसी एक बिचार बि
ना [illegible] चनिर्हो ।। १२ बकुब चनिनमें बहिपरे
[illegible] तुरसी एक आतम बिना कि
[illegible] ।। परिबहा [illegible] बचन की बुधि
[illegible] तुरसी तीरलगेनही बिनबबेक
[illegible] ।। तुरसी हीनबबेक पद पढे गुनै गुण
[illegible] मिटै कहै न आसा [illegible]
तुरसी हीनबबेक पद पडितहोय [illegible]
[illegible] ।। १४ ।। [illegible]
[illegible] ।। सबको कबाछै मुक्तिफल
[illegible] तुरसी पावै नही बिन गुर
[illegible] ।। सब को कबाछै मुक्तिफल मारग लागे
जाहि तुरसी [illegible] बिचार बिन [illegible]
।। बिचार [illegible] बिचार
[illegible] तुरसी केतष
[illegible] ।। बिचार [illegible]
[illegible] गुवार [illegible]
[illegible] तुरसी आगहन है सोइ ।। [illegible]
[illegible] न्यारे न्यारे पैब
[illegible] बिनसत गुर को [illegible] पावै
[illegible] तुरसी [illegible] बिचार की [illegible]
[illegible] सोइ ।।
[illegible] तुरसी बिचार [illegible]
[illegible]

रवअनि करै तमोर।८।साषी।तुलसी सति साति परत्र
पमांजन बउपजिहै बिचार।तब सहै जैसी होइगा।त्र
बिचारहार।९।चौ।ई बकुतन बातमैं।।बिस्तारौ।छ

कौ

तनौ ग्रंथ अनरथ हि टारो।तुलसी एकै ब्रह्म बिचार

सुध

तनौ ग्रंथ अनसरथ हि टारो।चौ रही मेव कौन बिचार
बिचारो कौ बारंबार।१०।
ततम्यां नाहि त्यागि बिकार तुलसी तन मन उडी सोइ
नुलटाव हे तुहोइ सहोइ।११।साषी।मम सा उबनि रम
मत सुर्थइ तनौ ही नेद बिचार।भावै सो जो बेद मत
भावै सिधांत सार।१२।बिचार सम कोऊ नहीं।तुलसी
जनम मनुआंन।बिचार ही ते पाइए।केवल आतम ग्यां
न।१३।आधि ब्याधि की औषदी।हिए क ब्रह्म बिचा
र।तुलसी नासइ आ चरौ सो होइ रोग कौ पहार।१४।बि
चार रूप जल के घट डोलौ जनम गवन करइ तुलसी सो
क बऊन परे मैं ते षाड कु लहइ।१५।चौ।१६।बिचार
बिसांज चरै हरि नाम मा।साकू मैं न लहे बिसरां मा।तु
रसी बिचार ही संथावे तब जन ध्यांन परम पद पावै
।१६।जाते बिचार ही है मी का।बिनां बिचार सबै फी
का।तुलसी जिन यह माया साद।तिन संतन का
म ना आगाध।१७।तुलसी ब्रह्म बिचार जपा हे अब स्त
नपाछि बिचार न जाडौ को है को त्रिगुनी यह देह।ज
।१८।साषी।ब्रह्म ग्यांन बिन बि
प्र कोटिक कऊ आचार।का रिज कोऊ नां सरै तु
रसी बिनां बिचार।१९।बिचार सोई जांनीये ब्रह्म बि
चार मिट अब स्त कूं चित चेतन नहीं तुरसी छिनरु
चित २०।मन सा बाचा करमनां यह केवल मत ग्यां
नि।तुरसी ब्रह्म बिचारि गहि मन उनमन घरि आ
नि २१ दोइ त्याग दोइ कूं गहि दोइ नर मांहि बिलोइ
तो तुरसी बसो दोइ परै दोइ की त्रास मिटाइ २२ दो
इ जलता रहे दो कौ दोइ अरु रसि के बिनांस तुरसी दो
इ करि नि मिलो तहां न यह को बास २३ तुरसी पंच
तत कौ देह धरि सब कोऊ आया।काऊ नै लहि
अमृत पीया।काऊ बिष षाया २४ अमृत रूपी
राम है।बिषरूपी जु बिकार।तुरसी गुर के ग्यांन बि
न लागि मूरत संसार २५ अमृत पीये न बरि ए बि

[illegible] रिना इ ताते तुरसी बिष तजो अमृत पायो अ
[illegible] तपीयपीय ऊँ घेरे साधु को छिद्र नित जागमि
[illegible] कें तुरसी तजि न गावें त ३ ॥ चौपई ॥ भिन्न
[illegible] को बिचार परे संतगुरु के उपगार तुरसी ज्ञा
[illegible] होय बड भागी जन कही ए सोइ ३७ साखी ना
[illegible] गति नहीं नासु घ फिरे अ संग तुरसी सुषसु
[illegible] जो प्रभू सू बोटे रंग ३८ तुरसी पह लै फल हि बि
[illegible] काज करायू ताको कारिज सुफल
[illegible] गति नाइ ३९ यह करि बिकरि बिन यह य
[illegible] नाहिं तुरसी सोई संतजन नायद न बिबेक ता
[illegible] ज्ञानी अन ज्ञानी कहा आइ पैरे रिषि सो घ तुर
[illegible] आरे जो अन्न हवती होइ ४१ अनरू चली ना
[illegible] सो छिया नी सोइ तुरसी ताके तपको बिघन
[illegible] साधु सद जो जन कें रे असुद जो न
[illegible] सम सार बिचित्र तजो नेदं चार ४३
[illegible] धिजा न के जग हि न देय ल पाउ तु
[illegible] नाहि ल गेन तती बाइ ४४ जु गति
[illegible] न गति जानि तजे राम तुरसीदास
[illegible] आलें जा मन तुरसी हंस बिचार के
[illegible] गहे सुगुन चित जिनि करि
[illegible] बिचार नो मगि रको छाया तहां
[illegible] निज्ञानी रत्नो होइ रहे जिन उरथ
[illegible] बिचार बिन हरि भजन जु सोउ तर
[illegible] तुरसी [illegible] नारटि बो करै मन नहीं
[illegible] बिष बिषन चार जु सदा ही
[illegible] नाहीं [illegible] गति जाने बिना राम
[illegible] आ वो जा मटे ॥ तुरसी नाम प्रताप
[illegible] भेद करू [illegible] पाइ जु गति भेद करि
जिन हरि ध्याय ॥ तात काल तिन फल पाइ ५१
[illegible] नसत न को देह ॥ जिन बिचार नरक्ष सारे
तुरसी [illegible] जिनि काया देह धरे का लाहा नी
[illegible] आसा ना रसी र जिनि करि बै वे संत सधी
तुरसी तेई संत परकाभि ओर भेक हि बेमा त्र जानि
[illegible] साखी कहि बेके बरू नहें साधु या संसार में पि

कहै ब्रह्म आतमा। तुरसी ते को कुसार ॥४४॥ चौपई॥ तुरसी
एक भिसुपनि जिन जिन कह्यो ही। कहि कहि आप अपने अप
मिकांही। एक तिष कै सिपुरय पुरुष्य॥ तुरसी जे न्है
कोन बफ़ मपाइ ॥४५॥२२३॥ ॥१॥ उपदेस कोप रिकर
ना॥ तुरसी सुबधी जीवस्यों सिष्य हि सु ग्यान कु बुधी
कही हमही। जाको रिदै प्रमान॥ तुरसी सुबधी जीवस्यों
मंत कृपा तजु होइ। उपदेसे धरम आपनो। कुबुधी सों
न हिकोइ॥३। उपदेसी ग्यान प्रतीत कौं अजित उडी को ग्या
न तुरसी उरम धिना सिरे होइ यहो रिदै प्रमान॥२॥ पाल
नारि सूरि कछि राषी न सम सम काय। तुरसी सुक्ष सतुं
को जहं के से ग्यान सिराइ॥४॥ कहूं क आगिल गिमुनि
कु कहूं कहां न अग्यान। तुरसी ताहि न उपदेसिए पहले
ही ब्रह्म बिग्यान॥५॥ सुबधि नो सिष ताको रिदै। सबद बी
ज तहां होइ। तुरसी कुगिउदो करै कबहु न तिरफ ल
होइ॥६॥ तुरसी उतम जो सिहोइ उतम ही होइ बीज बोह
न हार बुधि वृत हेइ तो उपजे धरम अधीन॥७॥ तुरसी सुध
समाहै न ते जिदै बुधि गुरग्यान। स्पूं तत्र अदर सबै आइ
कासे गान॥८॥ ग्यान प्रकासे उपनो मैं ग्यान सुधा तत्र मांहि
कअसुधि जा उतवाम धि तुरसी दरसे नाहि॥९॥ सुध तत्र स्युं
ग्यान कहि सुध तत्र स्युं ध्यान। तुरसी सुध तत्र उपदेसीए य
ह सिष्या प्रवान॥१०॥ जाके बुधि बैराग की कै बंदगी बिचार
तुरसी ताहि हरि जन जनको करो बहु उपगार॥११॥ क
रि उपगार जन जनको जाके सद बुधि होइ। तुरसी अमद
बुधी वह जा बिज पिमरै जुको इ॥१२॥ महा गासी गत बेति
को ऐसो गुरको ग्यान। तुरसी तथन बोही बिधि बिधि पाय
न१३। तुरसी येह दारा लगे काल सि जयो उदासी मन॥
ताहि धरम न उपदेसीए अवसि बतई यवै न ध॥१४॥ तुरसी ब
सो कि बन मही। सुधि रिदै कौं यह ग्यान। तुरसी अवसि
उपदेसीए। असुध कुं न होइ ग्यान॥१५॥ तुरसी जाको उत्तम
त नयो अमल आदरस समांन॥१६॥२२८॥ ॥१॥ पत्र॥
अबिस्वास को परिकरन॥ तुरसीदास जाके रिदै नहीं रां
म बिसवास ताकी गति कहूं नहीं आवे फिरो धरवास आ
काम॥१॥ तुरसीदास जाके रिदै नही गुरग्यान प्रतीति। संत
न को बिसवास नही ताहि दरसे मक तन अनीति॥२॥ तुरसी
ताहि ग्यान उपदेसीए यह सां बिप्र कां मित्रो २

[illegible] रिनाइ। तौ तें तुरसी बिष तजै जो अमृत पायो ऋ
[illegible] तापीय पीय तऊ धरें। साधु को छिन तजा [illegible]
[illegible] सिध कें तुरसी न जिन गावे तन ११। चौपई। जिनि
[illegible] को बिचार। पर्ई न तुर के उपगार तुरसी जा
[illegible] तुरही बड भागी तन करी एमोह १२ साखी नाम
[illegible] गति महीनां सु परि स्रसंग। तुरसी सुष सुख
[illegible] जो प्रन सो बाटें रंग १३ तुरसी पहले फल हि बि
[illegible] कर तिन ही को काज कराय ता को कारिज सुफल है
[illegible] मारिजाइ १४ यह कह बिबेक करि बिन यह आय
[illegible] जिन हनां हि। तुरसी मोई संतजन। यह बिबेक जा
[illegible] ही। जाची अन जाची कहा आइ पेरि छिसो चतुर
[illegible] न आवे जो अनरुचती होइ १५ अनरुचती ना
[illegible] सें स्रियानी सोइ। तुरसी ताके तप को बिमन
[illegible] को इ १६ साधु सदनो जन को रे आस दनो जन
[illegible] तुरसी साधु समा र बिचित सो नंद चार १७
[illegible] गति हि बिजा न को जग हि न देय तेषाइ तुर
[illegible] पन हरें सों मा हि लगे न तती बाइ १८ जगति
[illegible] गहे। न गनि जानि न जे राम। तुरसी दास
[illegible] न दर आवें जाम न १९ तुरसी हंस बिचार के
[illegible] कोइ गहे सुगुन चित जिनि करि भि
[illegible] सोइ २० बिचार ना मागि र की माया तहां
[illegible] न लोहोइ रहे जिन उर धासर
[illegible] २१ चौपई बिचार बिन हरि न जन सु सोइ तरव
[illegible] जोय। तुरसी [illegible] न रहि बो कैर मन नहीं
[illegible] किरें २२ बिष बिधन चार जुसदा ही प्र
[illegible] नां मरें को नाही। यू है [illegible] जानें बिनां राम। उ
[illegible] को आवें जो मन २३। तुरसी नाम प्रताप तन
[illegible] नेह कछु [illegible] पाइ जु गति नेह करि
[illegible] हरि ध्याय। तात [illegible] तिन हू फल पाइ २४ ध
[illegible] न संतन को देह। जिन बिचार नर [illegible] है
तुरसी [illegible] जिनि को ध्या। देह धरें को [illegible] तीया
[illegible] आसा नी रसा २५ जिनि करि बेव सत सधी
तुरसी तेई संत परवानि। और धो कहि बे मात्र जानि
२६ साखी। कहि बे के बहुत है साधु ज्या संसार मधि

तुरसी तेको कुसार ॥४४॥ चौपई तुरसी
हि घ्रत आत्मा तुरसी तेको कुसार ॥ कारिकरि अधमे अम
क मिपुरप तितितित्ति क्रयहीं करिकरि अधमेअम
नाही प्रकतिप कु मिपुरप पुरुष मिसाय तजे नजे
तनवफ मयाइ ॥४५॥ २० नू ॥ १ ॥ उपदेस को परिकर
॥ तुरसी सुबधी जीव सौ मिथ्या ए सुग्यान कुबधी
ही एनही जाको रिदे प्रग्यान ॥ तुरसी सुबधी जीव सौ
न कृपा तनु होइ ॥ उपदेसे धरम आपनो कुबधी सौ
हि कोइ ॥ उपदेसी एनपतितकुं अजितइंद्री कौं ग्यां
तुरसी उरम थिनां मिरै होइ यहो रिदै प्रग्यान ॥ पति
नारि सम्पूरिक रि राषी नपसमप काव्य तुरसी सुक्रसतुरं गु
तो जहां के से ग्यान मिदाइ ॥ ४ ॥ कबूक अग्नित मिपुनिक
कबूक ज्ञान अज्ञान तुरसी ताहि न उपदेसीए पहलै
ही ब्रह्म विग्यान ॥ ५ ॥ सुबधिनो मिता को रिदै समरवी
ततहां बोइ तुरसी कु मित दो करै कबऊ न निरफल
होइ ॥ ६ ॥ तुरसी उत्तम जो मिहोइ उतम ही होइ बीज बोइ
नहारनु प्रिवं तहोइ सो उपजे धरम अपीज ॥ ७ ॥ तुरसी सुध
तमा है नते मिरै बुधि पुरग्यान सूत्र ज्यर्थ रस भै आइ
का से मान ॥ ८ ॥ ज्ञान पकाव इपन मै ग्यान सुध्यात्मा माहि ॥
क असु विधी वत त्वामहि तुरसी दरसे नाहि ॥ ९ ॥ सुध्यात्मा
ग्यान करि सुधात्म ध्यान तुरसी सुधात्म उपदेसीए
हसि आपकार ॥ ज्याके वुधिबे रागको केवल ही विचार
तुरसी ताहि तसै मन चनको करीए बऊन पगार ॥ क
रिउपगार वे भवन के जाके सदबुधि होइ तुरसी असद थि
बु जीव कुं ... िमरै ... ॥ म ह्यगासी गम बेति
की ऐसो गुरु के ... तुरसी वचन ... विधि विपाप
न ॥ तुरसी ... नियो उदासी मन ॥ स
नारि ... वसिव ... न ॥ तुरसी व
तो कि ... यह ग्यान ॥ तुरसी अवसि
उपदेसि ... ॥ तुरसी जाको उरत अ
त ... ॥ २२० ॥ १ ॥ ॥ ६ ३ ॥
... सु ... स जाके रिदे नहीं
मवि ... नाविफेरो धरपुरता
काम ... न ही पुरग्यान प्रतीति संत
न ... कवल अबतिरि तुरसी
... ि ... है

[illegible] शिना [illegible] तोतुरमी
[illegible] पीयपीयंत्र [illegible]
[illegible] तुरमीन [illegible]
[illegible] [illegible] पर्हे
[illegible] बडमागीम
[illegible] गातिमंही नांसुप
[illegible] जोप [illegible] बाटेरग
[illegible] कारानक [illegible]
[illegible] नीगतिनार ११८
[illegible] नांहि [illegible] मे
[illegible] नानी [illegible]
[illegible] जो [illegible]
[illegible] सेमियांनी से
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] पसदि [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

त्वै सोहरि प्रतापनसाजे ११ बिस्वभरदासदरहरन॥
न्हैसेना मश्रनंत मोईना मनुरक्षरी १२ तुलसी होहनिचि
त(१)३ करैमनुदिमनइकं हरिको दासकहाइ केनिरहे
रीब्रतकरै केश्रकलपजिघ्याघाया टूकासततसंतोष
काहरिजनहितसंघाय श्रसंतकेबिजनबने तुरसीत
हानजाइ १२ चौपई लीयेहि सवास उरहैनगाढा कब
ऊबैगकबऊगाढा कबऊ तुरसी रहैऊसोघापेकलप
नंतश्रनिकोश्रंथ साधी तुरसीत्रस्कलपनांको बजरले
पलीसाग पायेऊ भूटेनही करिकरिथकेउपाइ १५॥
तातेजोगीजानियह श्रकलपजिघ्याघाइ रूपीबासी॥
चोपरी केसीऊसिलेश्राइ १६ चोपई रागदोषकाहू न
कराही समदृष्टीसी मतसुषमांही तुरसीकलपनजाचे
काहि रामभरोसे रहैजुनाहि १७ साषी श्रनइछतजा
तनमिले सोजनसहजसुभाय काहूबडभागीसंतकूं
तुरसीहतीहोइ श्राइ १८ तवरहतिकेश्रजबारी रोमिष्ठ
परवांन तुरसीकपरेविश्रोरसब सकलपतियहजांन
भवरहतिकेइजगारी जिमजिघ्यारेह तुरसीश्रेसेश्रस
नकीरे बोदेप्रभसनेह १९ केजुबिचारिनोजनकरे वै
जगारीसभाइ श्रांनजदिमकछुनांकरै संतनामसोयाइ
२० गतिमजिघ्याय जगारी मधिजिघ्याफिरितोइ तुरसी
कनिहजांनीये परघरिधरनोदेय २१ परघरधरनोदेह
अन्नकीजिघ्यामाहीं तुरसीनातं माहिं नहीनेकऊसि
ई २२ तुरसीजिघ्यजबारसुधकरी श्रपवाश्रराषी
सोइ साषुसोईसोईसंग्रहे जहांकलपनांनकोइ २२(?)
श्रपईरहनकलपजिघ्यालेय सिवगऊसरषासूदेह
सोईजिघ्याश्रमृतप्रवांन श्रोरकलपनाहलाहलजानि
२४ तुरसीश्रमृतजिघ्याश्रेसी संतसकलहीबसीतेसी
जिघ्याप्रांनीजोपावै सोमरोमश्रांनदरसावै॥ २७(?)॥२
२७॥१४५॥ पीवपिश्रांनकोपरिकरन॥ कायाकाछ
कानही पय्यानकाहूजाइ तुरसीनपय्यानांपरै सोपाव
मोराश्रहि १ तुरसीपितकेबोझको ताहिनहीतुछना
भिरतरिन्यारारहै सोनिजकंतहमार २ तुरसीपांनीः
डिनही पावकसकैनदाहि ३ पवननडायानांचहै सो
वहमाराश्रांहि ४ तुरसीछिपैनहीश्राकासमें गुनइ

प्रथमाहू मतलब थकूं मतलब रमे सभि नो भि
लिखु राखा नमत मिटन नहीं करो मन तुरसी
रामनाल बूंदन मेहे काइ अबिमवास रवि अध
रिहे जराउ ४ तुरसी जोक बसिया जु कपरे अप
होइ तन कूं प्रकरन पूरट ई ऐसे ही वो सब मोह
हि द रिकि मुसल कर तब बिहावैरे नि तुरसी छिन
ते कहूं न पावे चैन ॥ ६ तुरसी सत मतो प बिन मन
ही होइ पाति दिवस नटक न फिरै नर तन पाग नप
सोपर तुरसी तृस्ना घोड फिरै नते बुरे की सक
जहां तहां जाचन हीस कांम ग्रेम जीवन कृ क
७ ॥ साखी त्रम नफिरै तिऊ लोक मे कर पकर ई
अतिसवा सके सिंध बिचि लूटे नत्र रे मोड मूरि पलो
गजो को क कोट कूं पाक रि नाहि के है ॥ ८ ॥ अपने
सबासहे अथ रमात तिन माहि ॥ तुरसी माय क दाकरे
रहिर चाना हिं ॥ १ ॥ [illegible]
न ॥ प्रिथी आप अगनि के अनल अकास केजी व तुरस
बस पूरवे अंतर जामी जीव ॥ ॥ य क स्त्रप मश्र सघ
॥ के नर अजर जु मोड ॥ ॥ कन की चलन नुसक्ति
हि यि सो यक मा चे जाचे न यक ऐसे सेय स नोड तु
सबद के त हे सा मेरा साड ॥ ॥ पाती क सून राप ई अंत
सी सम तुरसी सब कूं पूरवे ॥ हां तहा सबराम ॥ ॥ चो
तीन लोक इकीस ब्रह्मंड सपत दीप सागर नव षंड
सि व्यापक अनंत जीव सब की सृष्टि तेस मृष्टपीव ॥ ॥
ओ त्रिगुन सकल रूप पूरवे गुन औगुन न राहाउ तुरसी स
गरासब जा सो कहे हंडरा ड ॥ ॥ चो ग रस तवा सम हा स
टमांही हा अन्तके तहा रून हीं नाही तो तुरसी बाह रिम
सोराकाहे रहे बाहिही जु डेरे को इ सा ॥ चिता नाहि न
कछोरे मोहे रिहे तु रांम पाले पोष सि तो ताहि बिसन र
हे ॥ तुरसी सुतजननी सुतो सब की चिंता ते यु आज
म न मोह नदास कूं जहा मागेतहां देय ॥ ॥ आजन तो नन की
कहा सु षमे अपनो धाम तुरसी अरपे रांम जी तासविम
तवकाम ॥ ॥ गहि बिसवास गोबिंद नजे सा ब ति राप्त आ
कीना तुरसी कारतिं कैहै रीन जगआधीन ॥ ॥ नेम
मति आवे घट सब जीव के रेन पार तुरसी सत छवित

५१५

री संस्कार। मन बुधि चित अहं कै पैरे। सो निज के तह
रहै।। अप चप चजि पैरे दस पैरे फुनि जोय तुरसी म
चक्र मसही। इष्ट हमारा सोय।।४१।। फुनि जन मे फु
नहोरा नरन नौ होवे सोइ तुरसी सुध होइ बिन सई
रा मन होइ।।४२।। बानी बुधन तरन सोइ मरनन

न

र तुरसी अजर अमर अपंड। राम हमारा सोइ।।४३।। अनरू
प्रानसर छि मंअति। न नरूने महा बिस्तार। तुरसी कहै

जु

कइ नां परै सो जीव न बुन हमार।।४४।। ना कै पांण पद
या। नैन नासिका नांहि। तुरसी असा परम तत
रहा सब मांहि।।४५।। ताकी सत्या मांनि के बुध्य दिकन
को ग्यांन तुरसी ज्ञत पन हो नहै पिवां हि सकै न हिज्ञांन
।।४६।। जड़ वे चेतन अन्नु। एनि सव हरबि आदि तुरसी
अति तत्रा तरा। के सं लषि हि जु नांहि। लषि जु तां हि जु
नासकै। पैर वहयरपी रा तुरसी तुरै कापरै की कांसां
नेसुधि मीव।।४७।। हेत अनुराप सुना गहुर। लष चौरासी
जीव।। तुरसी। सब पकु पैर परम तत्त्व सी पीव।।४८।। परम
तत्त्व। यातै कहै। दिष्ट सुष्टि न दी आइ। नहीं वो निगंध
मनन अतु। अवर्न कयौ नहीं नाइ।।४९।। बास रूप में लि
भासहै। नाद रूप में नांहि। तुरसी दास रस रहत होइ सो

दोहा

बिस्वाद।।५०।। ग्यांन मुकां मन भिकठ वरु। नहीं तास गठ
तुरसी गुण अतीत प्रभु। व्यापि रह्यो सब ठांम।।५१।। रहतै
न चहतै अचल प्रभु। पुरि रह्यो सब रंग मांहि तुरसी दास
अरंग कै। पटंतर को ज्ञ नांहि।।५२।। करमरहत करतार है
करम करै सो जीव तुरसी करता सदा थिर। जीव फिरै ब
क सीव।।५३।। सोहं आदि गति अपरंपार। सो सब मांहीं स
मपरे। तादि लिषे सो सार। तुरसी जामे नाम रे।।५४।। सा पि
उब्रह्म सर्व हिय। पीया अर्धवर्ध मभि गांम। तुरसी लिषे न
लोक मे। अलिपत आतम रांम।।५५।। तुरसी अलिपत आतम
रांम। लिषे लोक मे जु नांही। इष्ट हमारा सोइ। ओर द्विरत्म
कि मांहीं।।५६।। तुरसी द्वि रस्य जहां तो। तहां तो मनन पति

ठपति

आय। जन लषति कै पैरे पी बुसा ष्टि ले सो पीछाय। तुरसी
तानपरि अवरा रूजा नांही कोइ। ते जमूं जस मत्रण धनी
इष्ट हमारा सोइ।।५७।। ११५८।। ११५६।। बैराग को अपरि
कारनौ। तुरसी जे यब सज्ञान ने कांहे उपाय एक ग्यांन

सो बिन बैराग न उपजै या को यह अनुमान ॥ साधक है सा
सत्र कहै सुमृति हू कहै सोइ ॥ तुरसी बिराग नहि बिन ब्र
ह्म ग्यान नहीं होइ ॥ तुरसी ब्रह्म ग्यान के नहीं तें भय जै मुक्ति
बदेह ॥ सो बैराग बिन होवन ही सब को निस्चै एह ॥ ३ ॥
तुरसी अग्रेसाधु नहीं ॥ नेक मोह टूनाथि ग्रब है आभी
हो है ॥ सब को एको साषि ४ ॥ चौपई ॥ बैराग बिन तन ज प
तप करे कित ॥ तीरथ हू न रमै जु गजे तें ॥ बिराग बिन ज्या
करज अनेक ॥ प्याषे तु अवत बिना बेकूप ॥ साषी ॥ तुर
सी बैराग बिन तिन लोक के ॥ मत देषै ब्यो पाइ अंत वं त
फल देन को ग दे नहीं है आइ ॥ ६ ॥ तुरसी नैराग ही नले आ
हि सुरतन अमोल ॥ अरु सकल सुष कूं करे ॥ सपरें रहो ज्यू
यों लाग ॥ चौपई ॥ सो बैराग थे कोण जामे बिषया नसे बौन
उपजै नर आतम ग्यान ॥ बिस षकरन है तब ही भान
दा ॥ साषी ॥ तुरसी एक अपरंग थो सुयका आदि सुनजे प्रका
र बैराग की बिधि अनुगति है ॥ धो कु जाने ग्यान न हार ॥ ८ ॥
तुरसी पग को जु है अपर लोभि कातीन ॥ ताजो मीन सै ज्यु
कि यह ॥ चारि प्रकार जु चीन्हि ॥ ९ ॥ तुरसी तें नोभि का को ॥
भिन्न भिन्न मोहि बताय ॥ जा जामे बैरागय है अति आरू
ढ हो इ आय ॥ १० ॥ जतमान ना दिइंउ जुय क अति चोभि का जां
नि ॥ बसी की रसि धिकरन कूं तुरसी ले उपावनि ॥ १२ ॥
वसी कार बैरागय है ॥ पर हरि बिषया भोग ॥ सब इंद्री नल टि
भए बकू रिन धरे संजोग ॥ १३ ॥ बिषया या या लोक की ॥ बि
षै स्वत नलो बिसारि इहईं उतल टि अचल भई रहीन को क
नधारि ॥ १४ ॥ लोभि का कं रस जै नुपजे ॥ यह बैराग निधान
के संत संग गुरु कृपा तें ॥ और उपाइ न आन ॥ के पूरब ले
पुनि ते जो पुनि हो इ अमान ॥ तुरसी दिढ बैरागय है उप
सुप करन समान ॥ १५ ॥ तुरसी या बैराग की महिमा बरनी
न जाय ॥ जो मो मी निजरूप नां ता हि सकै न को रु डिगा
इ ॥ १६ ॥ तुरसी पर बैराग है ॥ एे सब साधन जो इ ज्ञत मांता
दिवसी कार लों संत निबरनी सो इ ॥ १७ ॥ तुरसी चारयों ज
ग मही ॥ चारयों बेद मंझार ॥ चौदा ह तीनों लोक में ए ई सा
धन सार ॥ जिन साधिक संत निस्तुति नाती ए ज्ञ गति उरधा
रि तिन के परबैराग नयो ॥ कलि कि रहीन लगार ॥ १८ ॥
तुरसी पर बैरागय है ॥ जे संज्ञ न नाम सिधि हो इ ॥ सो ई सो ई

जतनन तुम रो। आ रति श्री ति संजोय॥१०॥
यह सिधि करन के काज। जतमान आदि संज्ञा नको
भि भि भिक रूज इत्या हि॥१९॥१४२७॥॥२०॥ जतमानि
ग्याते राग हि थान॥ तुरसी या संसार मैं सारा
नाहि भिनि भिनि बोपाउ। गहै नरहै मुष मोन॥१॥
मोन गहे कछु बोबनै। पहतै ही षै होय। जावत
सारवे भिनि भिनि तेचन दोइ॥२॥ तुरसी गुरसा सत्र श्री
हि कै। भिनि भिनि बोपाइ। यह तुसार असार ए। ताहि
तेऊ नी कै निरहाय॥३॥ तुरसी सारतु आत्मा असार अनु
चियह देह। गुरसा सत्र सबही निको। निज करि नित हबै
नेह॥४॥ तुरसी गुरसा सत्र सबही कहै। संत ऊ आपे रहा बे
रागसी चिबटाइ रहो। तोरि विषै को नेह॥५॥ जावत कचबैरा
ग हीन अरूक रप गाइ। तुरसी तावत जतन करि रहिए नहि
अलसाइ॥६॥ अकूर तै बढि वृक्ष होइ। पुष्पि पडहो इ जाइ
नव मांचह लोरहै। जजिन स कूईनाहि। ऐसे जतनन चक
श्साजु गति होयबैराग। तुरसी संगकु संगको तबनाहि
लगै नदाग॥७॥ जावत जग तं भुवन मै। समभक तहै जतमा
न। तावत तहक त नया रहे। तो नत कबर नहोइ॥८॥ चो
पुरेजा बलसनमै रोग जनावे॥ तावत पथ्य जोग तनुपा
बै रहै वैद के कहे नुमां ही। जो रागी के राग बिलांही॥
॥ जावत मकरक काया के माहि। कामक्रोध की लागे ना
हि॥ तुरसी तावत जतन बिसारै। सा निश्चे ज नम आपनो
हारे॥१॥ तुरसी कचबैरा गजु ऐसो। आतै का गदि अंकुर
जैसो। बिना जतन कीए नगहो इजाय। समझ के देषियह
नना गुणाई॥२॥ सासी॥ कचबैरागी काया की कसनी दे
षि टकाय। बातायी तबी तै छिव स। सोवत रज निषि हाइ
हिरक तसा पकै रैन ही। मन मन मा कुतटाइ। तो तुरसी न
मिन सकै। कैसे काज सिराइ॥२॥ बैरागी बैरागतै मति
गसबैक सुकोइ। तुरसी तावत नांमिटे राग दोष थिरहोइ
॥२॥ बिरागी बैरागतै। मसिको कक स्कू गुमान। तावत
नेन निमिषे बसे। नरनारी को आन॥४॥ जावक सुपन मैं चि
तवतै। जूगलत विषया भोग। तावत कच बैराग है नही
पक संजोग॥५॥ चौ॥ जावत काया को धन रावे बि
नकूं कांम दिसारी यावे। तावत पक बैराग न होइ। तुरसी

सब आसक है सो छाडो ॥५॥ तुरसी आइ परे आन दुष्या हरषै
अरु मुरझाइ ॥ साधुत जोगी अपक है पकक ह्या नही जाइ ॥
१८ ॥ तुरसी तानक व्हे मन मुदित होइ ॥ अतानै कुमि लाइ
साव तजोगी अपक है ॥ पकक ह्या नही जाइ ॥ ९ ॥ चोपई ॥ अप
क जोगी के मन मांही ॥ सातपा घतपजि वोकराही ॥ कबकु ड
री कबकु पांन ॥ तुरसी नरमै दसो दसान ॥ १ ॥ कबकु जोगक
रनकी बिचारै ॥ कबकु जोगनमै मन धारै ॥ कबकु बसतीक
बकु बन ॥ एक नही ठकत बिहावै तन ॥ २ ॥ संतसंगति है स
मनजा कों ओरउ या नही कुछता कों जाकों मन है अपक अ
थीर जैसै बाइ फकोर सोनी र १२ ॥ आदि अति सतसंग मै रहै
सो जु धरम मांहि निरबहै ॥ तुरसी सतसंगति जाइ ॥ सा कुअव
बनाइ बनाइ २१ ॥ तुरसी साधसंगति मांही ॥ कुसंगति के दोषन
सांही ॥ असिही अपतंकां चा मन सोइ ॥ सनैसनै परपक्व होइ
२५ ॥ दोहा ॥ तुरसी करत जु जतन यह रहै न दोष बिकार ॥ २४
॥ २३ ॥ ५ ॥ १५८ ॥ बितरेकु संग्यो बैराग विधान ॥ तुरसी
सावृत ढिके नपक चीया ॥ पकन नयावै राग ॥ सावृत कबकु
कनको आए ॥ तन धरित पको त्याग ॥ १ ॥ सावृत विनपक चीयए
मिटयो न मन बिकार ॥ सावृत जपक रित पकरै ॥ कर कुक शु
उपचार ॥ तुरसी बे फिर ही एन ही ॥ इतनै दीनत म विचार बैठे
रहे रियबत बैठे जतन हि होइ ब्रहार २ ॥ तुरसी सावृत ति
के बपक चीया ॥ तपिन नया मनचित ॥ सावृत कबकुन त्या
गी ए तपस्यासी थित ३ ॥ त्याग नकी जैत पको ॥ कसिए काया
मन ॥ कसे कसे होइ कन कतुल ॥ तुरसी तपसी जन ४ ॥ तत
ई तजितन की ॥ मनमन सा उलटाइ ॥ तुरसी तपसी तपकरै ॥ तो
न रिजाइ को टिकयाइ ॥ ५ ॥ तुरसी काया कसे बिन ॥ करम क
ट नहि जाइ ॥ जो नपती जो होदे धिकु ॥ कनक ना तु निरताइ
॥ ६ ॥ कसे कसे यह काया मन ॥ कंचन सई होइ जांइ ॥ तुरसी जै
कसे ए नही ॥ तो काच कुतेक छुनां हि ॥ ७ ॥ तुरसी करता जो
नि को काया कसे जु कोइ ॥ सो जन करता कुं मिले ॥ को टिक
ले कहि पोइ ॥ ८ ॥ तातें तपवैराग करि ॥ अंति ति अति तत्याग
तुरसी जो मजु गति ताहि ॥ तब सिधि होइ बैराग ॥ ९ ॥ तुरसी तप
बैराग महि ॥ तन मन की गति सोइ ॥ कसत कसत कंचन सोइ
काच कहै नहि कोइ ॥ १० ॥ तीन भांति नर तप करै ॥ कामक्रोध
अहंकार ॥ तुरसी असैं तपकरत ॥ मुःलहै सो छिके हार ॥ ११ ॥

११॥ स्वरगन बांछै तप करै तो नरक तै डरायनरकस्वर्ग
कोह्ण गा करि ऊर थेरे है है नुपाइ १९॥ निस बासर नरहे रिझये
कै गन जा सि कसि काया॥ तुरसी ऐसी तपसी त्रिगुन परे
मा इ २१॥ कै तपन तप्या न गाहि॥ कसि काया मन श्रान
सी या गा न रूपजे॥ दोषं होइ बिनी मान १६॥ कै तपन न मन
हि कसि॥ नां नां ने ह चुं काइ॥ तुरसी बांछै नपर्द ई सुष मो पद
मां हि समाइ १७॥ चौपई॥ तुरसी तपसोई तन मार॥ ज्ञा सा थैर
न मद्दो हि॥ आर॥ मन गुन को बाट प्रचावा॥ तो श्रागे तुर पद ता
गे चावू १८ सापी॥ तुरसी तपसोई जनम श्रम तो जा मैं न तै बिना
मा र जन म को बुलि नां रहै॥ बाटै सत प्रका स १९॥ जा तप की
नुर रूपजे॥ रजु तम को परना वा जन न तुरसी ता तप कुं लै षा रै
ब हाव २०॥ रज का जसु ष २ का रनें॥ काया क सै जु को इ॥ तो
तुरसी कोडी मटै दी य हार तसो इ॥ २१॥ चौपई॥ सत गुर फुनि
ता स त्र हि श्रा डि॥ कै तप सासन मन पाडि॥ ता तन मै ऊपजे ऋ
भिमा ना॥ चा ल्यो रसा त लि जाइ श्रपान २१॥ कालना मुष षैं ता
तप के रा जहां न पजै अभिमान घनेरा॥ तुरसी सुष सा लिन दस
झा हा य नि घनेरी बट ती जाइ २२ सा॥ तातै यह है बिचारि कै
तुरसी तपसी श्रारै॥ जु गति जा नि काया कसै॥ श्रजु गति नि क
टि जाइ २३॥ सत गुर सा ध्य सा सत्र सब कूं बाकि बिचार तुरसी त
पसी तप करै॥ तब तप को रसार २४॥ सतिम मिटि ष्टि मुकरम
कार रहा मन न चपुनि काया॥ ता नि को तपस्या कही॥ कै जु गति
हो या या॥ सो तपसी तन मन का॥ रहित बिषाहो इ जाइ २३ तुर
सी तुरष्टिगुन परै तु षिदा ता सुष मांहि समाय २३॥ संक ल
प बिकलप रा का र जमा ऊं रहै न को य॥ तुरसी जप तप श्रा
दि को का॥ तोबजन न रस हो इ २४ तुरसी जतन जु जा नि यह
श्रो रश्र जतन सब श्रा हि॥ जै तिके निरउा निकी श्राडै चित
ता हि निरदोषी होइ घट नि स्वांस गऊ कै रनका हि॥ चाहि
ते मनर उस की रहै ना म मैं ता हि॥ २५॥ २४ २५॥ राग याय
सू रउ वैराग विर्धना॥ तुरसी यां ता तौ क के तो गऊ षमर्थ
ले षु सब उं रउा नलटी नहीं पै मन न हि छाडत रषा १॥ मन बिष
या चितयो कै रै मांही ही मां हि॥ तुरसी सो बसि जये बिन उरी
जै नां ही १॥ तुरसी उरी होहि बसि॥ ता मैं न ही संदेह॥ जो मन
नऊ ता श्रविद्दी ता गि बिषै को नेह॥ मनजी तै उरी जुरा बसि
है हि त ही का त॥ साते यह मन जी ता रा गहि बैराग निदान

...काम्मोतुझननबिनो।।मनकौ बिन्नो अपार।मन बिनो जै
...रहै सो त्यागी छिनवृन साइ५।।चंचलता सब त्यागिकैं जब
...न निहचल होइ।तब बैरागी सो कहीन परई कोइ६।चौपई
...तुरसी मनका माया त्यागी।तिकौं बैरागी है बडभागी।मनमा
...या कूं न छिमाए सोइ।तिन समान त्यागी नहि कोइ।७।साषी।
...त्यागी नेंई जांनीए।जिन यह मन बसि कीन।तुरसी बैरागी लौ
...थे का।तिन निज लाई लीन८।इंद्री बसि तब जांनीए।जब
मन बसि होइ मांहि।तुरसी मन बसि नीए बिना इंद्री बसि
जांहि९।इंद्री बसि तब जांनीए।मन बिषया छिटिकाय।तुर
सी छिमा रहित होइ रहै संतोष समाइ१०।।२४२०।।१९०।।
बसी का सेष्या बैराग बिधांन।।बसीकार बैराग यह।आदि
अति मूंछि अंत।तुरसी आगें बरनकैं।सुनों सकल ई संत।।१।।
अनाछित अभिकैरे।आदि छिलावे चित।तुरसी बिसरै बिषय
सो बैरागी बिरकत२।।मुख माया मांगो नहीं।मन मुक्तताइ
न देह।अनबंछी आगे परै।हरिजन तक न लेय३।।लेतो पर
त आति गुही।दे तो फुनि नुगात न।तुरसी कछु लेदे नहीं सो
कहीए निज संत४।।आजन सो जन सहज में दरवें दीनदयाल
तुरसमा रस लीजीए।अधिक परत छि काल।।५।।गी।।
कोई कंजत पन होइ।यौ तौ फुनि धातन राषे।सो बैरागी सार
बेद सुमृत यूं भाषे।बिषयारस बीसेरे।बिरकत बिचरे निर
सेवे बेहद पद गति तांन।तास तुरसी बलि जावे५।।आजन
सो जन सचि हाइ तो अंग।कृत करावे।जितो सत गुरु फुनि स
न बेद बिधि जुगति बतावे।अनरुचतो नाचैरे।अधिक संग्र
ह न बढावे।तास पति ग्रह नांहि।तन मन तुरसी गावे६।चौ
पई काय क कौ क करम न करै।जाकौं जुग बंधन परै।वाइक
कौ बिसरे बक बाद।मनजैरा न बिसरे सब स्वाद७।मन कूं थ
कित करै तन मांहि।छिन न रितांहि चलन दे नांहि मन बच
क्र मनि रमैनिर ध्कार।सो बैरागी तिन चुन सार।८।साषी।तुर
सी हमारे मत न तन यह बिरागी कूं सेव।काछ बाच निकल
करहे।न जे निरजन देव९।।तुरसी सब साध कहें।सास न ऊय
हे कहांहि।काछ बाच निकलंक रहै।बिरागी सो आहि१०।का
छ बाच बिकलंक बिना।बिरागी कोउ।तुरसी बास।नीति
लो।अलिखि लिखै चै सोइ११।।तुरसी यह तो यूं नहीं।यह तो मांडे
सार।काछ बाच दिढ निरबहै।ति ही पावै पार१२।अहि निस

अपने ही उर मांहि रहे रांम भ्यौ ताहि तुरसी देषि सकाम
सिंधु ऊ ख्रेष राउ राय ॥४॥ बिषया देषे बचन सम बिषकी
कानो सोय तुरसी देषतु डैरे रया न थाद्रक होइ ॥५॥ इष
रूप संसार यह मह नयानक रूप तुरसी पावन दी जीए
यहो ही अरथ अनूप ॥६॥ साधन की करनी यहै यहै सा
धि सिधु जोग तुरसी दास बिषबचन तौ बिसरि बिषै
लोग ॥७॥ चौपई ॥ जो आरति होइ स्रूषे मो हि तौ नुतम गणां
न तुलां ऊ नो हि ॥ बिषेमुष बचन तौ बिसारे तौ ही ततन ध
रि आया तोरे ॥८॥ साषी ॥ न्ऊ के चुकी न तारि के सर पनकै
सनेह तुरसी मूंदहरि मिलन कौं दरिजन त्यागे गेह ॥९॥ स्व
गृह संसार जिती सगाई आंन तुरसी भाई रही नही नुरते क
च र आंन ॥१०॥ बैराग लीयो तब ही सुफल बि सारे बिषे
फल सोइ ॥ रोक कनक अरु कामनी चित मेर हेन कोइ
॥११॥ तुरसी जे नन कौ अनूराग यह होइ निपट निह राग
मन साषा चाकरमनां तन कही बैराग ॥१२॥ त्यागी तैं
ज्ञानी रे त्रिनचन माहि सोइ ॥ जिन त्यागी बिषया बचनतो
कनक कामनी दोइ ॥१३॥ कनक कामनी आदि ए जितो
कइ दौ सुष तिवर ग भूत पारा तके बरने बदन मुष तुर
सी बैरागी सोई त्या गिरहोइ निरूप निपट निरमूल कै
धिनो सब कंरूसद गतिसु ॥१४॥ ज्ञं जल सं रूप कपनी म
ल ही सांऊ रहीहि ॥ जल त्यागे जीवै न ही अरथ इतो ही आहि
मूं बिषे निमू मन जया सुरति सुमति जु कहांहि तुरसी सा
मन लवमे ईश्वर बिषे रहत सोइ मांहि ॥१५॥ बिषे त्याग त्या
ग जु सोई और सब त्याग अत्याग तुरसी बिषे जु त्यागीए
तौ न रहो इ अरदाग ॥१६॥ अलघ बस्त कौ पाइबो पुनि ताइतन
कराइ ॥ जोग छेम जानो तुरे संत निदीए दिषाइ ॥ यतन जेति
रहे ह तहोइ बैराग नाम सो पाइ तुरसी तस का रचो र नयः ॥ म
हि क बड ऊ न दरसाय ॥१७॥ दा वोड वक्त ते सको घर आबे सब
को इ तुरसी सांहि त्याग पिरै त्यागी कहीए सोइ ॥१८॥ तेई पावे
परम सुष दावे गचे नांहि तुरसी निरदा वू रहे निलट आ मां
मांहि ॥१९॥ तुरसी निरदावे गु दा न हांक रऊ आराम निरदावे
सुष पाईए दावा रूक्षा कांम ॥ निसप्रेही होइ नांव ले जु गनि
रदावे होइ तुरसी जोग की बारता औसे आषे जन सोइ ॥२०॥ कै
ए कांगू चित करि साधि अधात्म जोग ॥ कै बिरकत बैराग

हि॥ परहरि नांनां जोग तप क्रिसरूप संतुष्टि सर्व सेयू न
गति निह कांम क्रिया तनी निरबैर होय॥ दिपिस कल घरिशं
मरम॥ ज्ञ तुरथ पंथ संतनि कहे॥ जिटन कुं न गवृंत तुलसी
और आय है॥ नांनां बिधि के मंत २४॥ बीतराग बैराग बिना
मिटे न मन को सोक॥ जावे कोटि जतन करै॥ नरमो तो का
को २५॥ चौपई॥ के करिबो संतनि को संग॥ के बन मै बिचरि
बो अ संग॥ के साषि बो आत्मा सारा॥ के समझिबो सा षिसु
बिचार॥ २६॥ तुलसी ये नर धरि तत्सम संतरांम मिलन कुं ररी
या पंथ॥ जिन जोगी नि अपने नर धारे॥ ते नु गनीति नि ज
तो गसि धारे ३७॥ तुलसी य त्रिपति को कांम॥ त्रिपति को
नांहि न आरांम॥ ग्यांन संपूरन कार्यां को॥ सो बन मै बिचरै
एकाएकी २८॥ जिसा षिक्कुरै मन धरै॥ एकाएकी बिचरन
की करै॥ तौ तुलसी ताको संग॥ बिन परसे पूरन मत संगर
५॥ साषी॥ एकाएकी बि चरिबो॥ सि धबनि आवे बीर साषि
क कं सो भिनहीं॥ जाको मन अथीर ४०॥ एकाएकी बि चरिबो
नाहिं भलैं बनि आय॥ तुलसी जो पर पक जनो रिझै नक हूरि
जाइ ४१॥ जाको मन असषि नयो॥ मिटि गई डगंध ड़रास
एकाएकी बिचरिबो तुलसी सो नतनास ४२॥ चौपई॥ नवजो
बनी जुनारी आवे॥ ताहि देषि मन निहिचल न्हें भावे॥ तुलसी औसा
को ऊ होइ॥ निसंक न है भैं बिचरै सोइ ४३॥ साषी॥ तुलसी संग कु
संग को ताहि न लागही दाग॥ औसी पक बुधि बरतई॥ करि पं
च बिषै को त्याग ४४॥ तुलसी ज मै बैराग यह॥ ता मै राग न दोष
सम दिष्टी रुवा रहे॥ गहे सुदिढ मतो ष ४५॥ तुलसी नमै बैराग
यह॥ जा षे बेद पुरांन॥ सत्रु मित्र सब ही नि सुं॥ रुवा रहै समान
४६॥ तुलसी नमै बैराग यह॥ अपनी इछ्या सोइ ज बैठि रहै तो न
चलै तो नहि॥ बंधन नांही को इ ४७॥ तुलसी नमै बैराग यह॥ चित
अतटा नर धारि॥ बिषया वाता ऊकी॥ बिषै बचन तो बिसारि
४८ इन्द्री अपने बस करे॥ का चाहे औ रांनि॥ तुलसी बिषया
परहरो॥ करि जतनि रमूरांनि ४९॥ इन मांहि सब सुष है॥ इन मां
हि सब ग्यांन॥ इन मांहि बैराग है॥ इन मांहि सब ध्यांन॥ ५०॥
सिषिन बांछै सुपन का॥ रिधि मै चित न देय॥ जिन हरि हीरा
पाईयौ॥ कंकर को कांते य ५१॥ कंकर काच कपीर वृत॥ मि
ष्या यह संसार॥ तुलसी छाडि वतन जांनि कै॥ संतन करै संचार
॥५२॥ तुलसी त्रिष्णा त्यागते॥ मन मैं सुख होइ॥ ता सुख के अ

सकुसिन नहीत्रिन तन सुखसोह ॥ ५१ ॥ तुरसी त्रिष्णा त्यागते
जो सुख नपजै आय सुषसो ढ्रोर अहिं सुख संत कहै समझ
य ॥ तुरसी तनमत्यागी नांनितव जब ऐसा होइ आइ थौर
दसा जडनरथकी बिच रैसहज सुभाइ ॥ तुरसी को नकअ
वी सुखवी कोक कोन कथ रोसिरिनार नरथ्यदसात नज्ञा
नीके जबनपजे नहीअंकार ॥ देहदसा नरथरी की नर
थ तिनाको त्याग ॥ तुरसी तिनबपारे ई ये जबप्रगटे पूरण
भाग ॥ दिहदसा नरथरी की थैरकोक बिरला दास आ
नप्रसन्नक तसतवमन गिरकंदरतरबास ॥ चौपई
हंसरूप वनबासी संत ॥ हिरदे गिरतरगुहा ऐकंत महा
सोछि को करै गुणा नृ ॥ मनमनसातनमीन लटाइ ॥ मा
मनमनसा जनटे ता करै ॥ अपने नरत्र स्थान ॥ या आरेन मैप
सिरहे ॥ ताति दिषसयक सांन तुरसी बैरागी सोई नगतज
सोई ज्ञान ॥ जिनकै मोछि नृपाइयह ॥ आसनही कछु आन ॥ ६॥
कहा बन बस्ती क कहा ॥ कहणगर गुहा जुगंम ॥ तुरसी संत
कछु नही जो जीत्या होइ काम ॥ चौ ॥ नावै बस्ती भावै बन
भावै राट बाट निजजन ॥ निसप्रेही निरदावै होइ तुरसी कह
रहु मानसोइ ॥ ॥ कांम कहत पनांमिटि गाई ॥ नरस्ते निज
सुहोय तुरसी संत कहु रहो जो ऐसा कोक होय ॥ ॥ लोक
बेर कहु कामनी ॥ साजे सकल सिंगार ॥ एकबार सत्र जुषा कर
जुग हिमनथ्थार करकंपा नपजै नही नेकामवी तनगार तुर
सी बैरागी सोई जो ऐसा कोक सार ॥ सुषकी नदी असम
हा ॥ कपमानिदहे नदेह तुरसी जिरप ची जन बिचरे बिगति
सनेह ॥ तुरसी परेनमाहक फंधसे परहारप्रभु को ध्यान स
दा तुनझी होइरहे सो अली नप्रवांन ॥ त्रियत्रिय करि स्वेन ही
ये वे का हप्यान ॥ कंचन मानै का चसभि फुनि कंकर अनमांन
मा हिर्जं ग्राह जिवु छिबिमारि बिचैर बिदेह प्रवांन तुरसी पक
हे उनके समझे ओसहनांन ॥ तुरसी पक बैरागमें मान आ
नसमांन ॥ आपक के नपजै सदा ओतै गरब गुमान ॥ तुरसी प
क बैरागमे दहन नकोक दरसाइ ॥ अति न अलनह जु होइ रह
मन का फेल मिटाइ ॥ कांमनि देषिन चित चले कनक आ
गधरी कोय तुरसी तो नन कपजे ॥ पक बैरागी सोइ ॥ ॥ नही
कलप नाकाया में आकलप आतमरांम तुरसी सन्यासी सोई
जाके यह आराम ॥ है तनका रूप सकै अनछित आतमरत

तुरसी सन्यासी सोई । गहै रहै यह मन ७६ चौपई कर काष्ट केडं
ड सिमहै । गाहि सन्यासी सुर तिनिहि कहै । जन तुरसी सन्यास
माया मन वच क्रम छंडी जित होय ॥ ८ ॥ पुनी या राम कृष्ण मन
क्रम करि मोनं डंडे है वचन सुभाषै । काया क्रम सिरा मैं हाथ
बहै नही इंडी निकेसा षि ७ ॥ तुरसी त्रिय दंड जु धरै सो सन्या
सी श्रुति उचरै । त्या बिन यतर सन्यासी जोय । तुडा रषी ज्ञ
नौ मोय ७२ साषी तुरसी ज्यूं ऊपर नां कारने । कीयौ नगो हा
त्ति सब त्यागी कौ ऊ ओ रहै । जिन त्यागे पौहे तक ते सगुर
तन त्यागी त्यागी जु मन बचन ऊ त्यागी होइ । तुरसी ऐसो है
कोऊ त्यागी कहीए सोइ ७३ एक वार गिरकं नकको एक
वार मनिकाच । तुरसी ऐसे समान कीए । विचरै विरकत सद
स ७४ अत्र रवि मरव तो न छमी । आगे धरै जु कोय । तुरसी ना
हि नु साइत हि । त्रिवत्तन त्यागी सोइ ७५ गहि हिवे की इच्छां न
ही त्यागे अरुं नऊंन । निहन रंग जानते रहै माया त्यागी सं
त ७६ तुरसी सब सुधा कौ त्रिशो । सो न करै जो कोय । तौ तो फ
त्ता कौ नही जीतो त्यागे दोइ ७७ त्यागी के पट तरजु क्यौ । न
हि जिन वन को ऊ आन । तुरसी हम ढूंढी जुय यह । विखि बिखि
सक तजि सान । माया त्यागी संत की । मेह मां वरती न जाय
तुरसी यावे लो कहे । मत्त गिरे ग जाय ७८ तुरसी माया त्या
गी संत कौ । पार सरहं नही कोय । तीन जवन स्थाय है ता वेद
मुकडी चेड ७९ ॥ उत्तम जोग जुगति जीवतम । उत्तम धारना ध
यै उत्तम भावन गति विधि उत्तम । उत्तम सुमरन सार उत्तम गय
न ध्यान धृत उत्तम । उत्तम सुध सुविचार । उत्तम रहन कहन
तुरसी तन । जत विरकत समार ८० तुरसी विरकत बैरा
गय है । बसी कार ता नांम । पंच विष कौ त्याग उहै । पैको ऊ
स्र बीरं कौ काम ८१ तुरसी इंडी बसि न श्री इंडी निके बसि
नो हि । बसी कार बैराग यह । बरन्यो वेद लिमांहि ८२ तुरसी
बसीकार बैराग यह । नहीं विषे नि कौ त्याग । पुनि त्रिभां नि
हराग होइ । सो कही ए पर बैराग ८३ ॥ तुरसी पर बैराग की
महिमा बरना न जाइ । ताहि कहि वे को क्रसकै । सुर नर रहे
लजाइ ॥ ८७ ॥ २५१७ ॥ ११ ॥ पर बैराग कौ परि करन सौरं
तुरसी पर बैराग [illegible] दिसै तिसं पनो जुयह । इहां भुन वि
वे जु राग र हो न ही ते सक त हो ॥ १ ॥ साषी तुरसी ते सकु नार
सो । माया पुनि को मोह । अति तहां वितसुध भयो । पर बैरा

गाऐसोय॥४॥ तुरसी परवैरागयऊ। सुनौ मासत्रनिमाहि
हांगुनसांक्ष्मगतिगई॥ तिनकैरहीतुनाहि॥२॥ प्रक
तिकेगुनां अंतिन मिथ्याजांनि हेसधीरनीरनौ। जिनिजि
नगुरपदहिनी यापिछानि॥ थनिवैसोगीधनिजनी जिनवै
गुन्यैआंनि॥ तुरसीपरवैरागयह॥ तिकुतुगतिसमजांनि
॥३॥ प्रकृतिनीरधीरतुगुरग्रह सग्यांननपजाइ। तुरसीति
रनाइतुनीरो॥ मसेसकतनमिटाइ। अतिनपरवैरागयह
नहां असेतु॥ तिहाइ॥ तुरसीसमाधियहे॥ बीजरहतबिनकार
॥५॥ प्रकृतिप्रकृतिकेगुनां॥ गुनमैयहसंसार॥ यहजड़
सोदबितेनयो॥ रहिगयो चेतनसार॥ तुरसीपरवैरागयह
सतनिकीयो निरधार॥ सुरति सुरति निकुनआथीयो॥ अप
रआयारआधार॥ ॥ गुनतिहरांगी संतजन॥ सुधिपावैगे सोइ
तुरसीयावैरागको॥ सगमगामन हिहोइ॥७॥ दोहा॥२४॥२८
॥ जगजगतमेकोयहि रतना॥ तुरसी जत सतधर मर्दे जुगमे
दी प्रगटीया अक्षरमत्र ध्रियो रोहरना॥ परगटयसी ऐसोय
॥ तुरसी जत सतधर मर्दे॥ मदा अभो तनरतनां॥ जिनदिठ
अपनेनरसंचे॥ अनवृंतातेईजन ॥ अनवृंतातेईजांनीऐ॥ श्री
रुन् अनसंसार॥ जिननिजनिरबाहेतुले॥ ऐहतअपनेपग
॥ दोयमुखे अतिउतनअफिंउ धायै॥ जानाहीयपरैनसहार
तुरसी मोछारछी तुकोय॥ तिनहिजुप्पारतागै सोइ॥ तु
रसी सोई संतजन साचा॥ निकतकरहैकाछअरुबाचा॥ अ
पनेजनसतधरमजु मांही॥ र॥ स्यारहेछिन छाडेनांही॥ ॥ श्री
सदगुनोमनपांडे॥ जनसतधरमडछोरपांडे॥ जिनके
ऊमेएकऊनांहि॥ सोबाढिहीआयाकतिमांहि॥ ॥ पट
नांगुननांसदजनसाचा॥ निकतकरहैकाछअरुबाचाइ
नऊमेएकऊनहिं मांही॥ सोपटनांगुननांसबचतुराई॥
॥ सांषी॥ तुरसी जतअसवारहे॥ सतपातेजनमांनजोपस
छाडेनही॥ तोपऊचेऐकस्थान॥ ॥ चो॥ जतरबिवृत
सतससि॥ समांन॥ तेजनफरकप्रवांन॥ तुरसी तातेजतीज
सो॥ अपनेजन आकटतुसोइ॥ जतसमांनब्रतयाजग
मांही॥ हमकोकरैपासुन्यांतुमांही॥ तुरसी जिनयहदिठ
करिगह्या॥ तिनअ॥ ब्रतकरनकथुनरस्या॥ तुरसीजि
नजिनियहब्रतसाध्या॥ अरुआदहोरअकतनआराधा
दरसनअरुडनीयामेजोय॥ जगतगुरूजनकहीएसोइ॥

११ जुगमांहि बिसती भारे सिमो गरल्लधरम गरधारे

ननथिरहोशधर

रनआराधि १

रसी श्रे साजती आपति रि औरति रावे १४॥
चनं मुनेनहिरचिकरिकानां ॥ जबेतोइन्ांचलटि धरेत्र
मित्रं तरिधांनां पसनां कोरसतते गधमधिमननबहावे
घरी घरी फल छिन मुरति गे गेजलठावे गुरु जिंइडी क्
नीति जुगति रतहो इपदमांही तुरसाऔसा चती बहुरि
जगुजनभेनाही ६ जंत्रमंत्रबेदा नकरि गानकहुतिक
रिसोइ गुडमूरनांकरतेहैं ते तोजतीनहोइ है अजती आ
स्यास्नर संतबुधानेसोइ तुरसीदेजगपरहगे तामें
संकनकोइ ७ जतीतुनांमकहाइ कैं मनिकामनांउप
जै कुसाचित्रियतनचितवे सो बन्नलेप न पीमाय ॥
८ जतीतुनांमकहाइ कें करकोडीनहीलेय तुरसीतोहू
अंतरा तेकरि औरनिदेय १० तेबेकी इ स्थानहीं उबा
दिकनकी कोय तुरसी देबेक्रको नहीं साचा जती तुसो
इ ११ चोपई ऐसो करबसहजादि पिपरेनारी तोपे पे अपनीम
हतारी पिमलिंता उपावेमांहीं तुरसी मनक्रमबचनक
मांही १ ॥ यहत्रियपद तरसिलापषांन बिसरिगयायह
बानीप्यांन तुरसीसोई जती प्रवान जाकेएक आतमाध्यां
न १२ तुरसी ऐसी जती नरेस जहां क्रं रमें मधतिवेदेस
थविवे तोगथमिवेग्राम ॥ थनिवे अस्थलजहां आरांम ॥
१३ ॥ १ ५४ ७ ॥ १ ५ ॥ मतीजनको पारेक्रहरनां ॥ तुरसी सती
सोई संसा रमें आस्त्रित मषिओन जतीजननको चरनं
की स्रुवारहेरनहरे नि ॥ १ ॥ तुरसी सती सोई संसारमें चितच
तबिचतनतास मतब्रत गहे स्रुवारहेदास नकापरस
स १ चोपई सुधिचितहोस्ले सेवाकरे सकल जमांमग्री आ

सतगुरपदबंदनकरैसाधसंगतिआराम वो॥२१

गधेरै स्वारहैदासनकादास॥ संतसतीजनऔषतासह
सजनसोजनबानीयानी॥ प्रीतिसहतलेमिले सुआनी॥
जनमिलीसेवाकरै तुरसीसोजुसतीनधरे॥ आरअग
आगैलेयपतनरिपाछापावनदेय॥ तुरसीधरमधजासे
सतीआछिअसियूजेयूजती॥ यामायमेरहेजुऔसे
जलमांहीकंवलातैसें॥ तुरसीतिनपतनकबकुहोरस
सुरनछिनजुगएतोय॥ ऐसा॥ परत्रिरीयापरसेनही
रधरहैनचुष॥ मांसयरायोनांनषे॥ मिथ्यानबोलेमुषपर
निंदापरबादकरि देयनकाहुडुष॥ तुरसीऐसासतीजन
पावेसदगतिसुष॥ चलाबिसनबिसारिकें॥ मननी
करिलेय॥ स्वरानअचवे सुपनकु॥ परहक चितनदेय द
सेनहीपरआत्मा॥ यारसुपंथबिचेरय॥ तुरसी
सतीजन॥ पावेगसुपथ्ह्य॥ कहा अपनीकदापा
त्रियरूपनराचेत॥ उपदेषिरहलेनही॥ मुषमेनजमपि
नसांपतिछियतिसमानचित्त॥ आदिअंतिरापत॥ तुरसीसा
सतीलगबकुरिनजगजामत॥ आनउपासनरधरे
अनिनहोरजेरामकुं॥ कैसनेसमसमारतुष॥ छाडेसकलम
काम॥ तुरसीलासेवगकुं॥ आनदआगेजाम॥ याचो
पाएकब्रुमुदिलनहोइआवे॥ आनपाएबिसमेनजनेव
पतिबिपतिचितरहेसमान॥ तुरसीसतीसुएसहनान॥
॥ ग्रहदेषबाहसभिसोइ॥ बीचिबसेजुसुयंगाजोय॥
रसीबिनांमगतिमिहकाम॥ तहांनराचेएकोजांमरैस
बानदासीनोहीनेह॥ कहाग्रेहकहाआदिजुदेह॥ तुरसी
मानकिरहेजुमारा॥ यागेफोकटप्रपंचपसारा॥
ऐसासतीजुसोइजतीजननिकासगीजोइ॥ यहपा॥
दआदिअसवारयकुचेएकसोमिदरबार॥ १२॥ ११ यह
ससुरषारईकोपरिकरन॥ तुरसीहरिकीकृपाबिन
कोडीकानदीजीवजनजनकुंजाचतफिरैआसबिसारी
बा॥ तुरसीहरिकृपाबिनजीवतेकछुनहोइ॥ कोटिकमाई
करिमरे॥ फलनहिलागेकोइ॥ ॥ कृयासहतकरीएकछु
जपतपसाधनजोग॥ तुरसीसाईसुफलतेहोइ॥ कटेकरमबिषे
रोग॥ हरिकृपातेगुरमिले॥ गुरकिरपातेग्यान॥ तुरसीग
नतेपारसी॥ परमजोतिअस्थान॥ सूरबिनासेरबिनदे
ससिससिकेप्रकास॥ तुरसीसूरसेकृयानिधि॥ कियांतनै

उजासय। अनुग्रह अविगतिदेवकौ। जअसनकपरिहोइ।
तुरसी तबयाजीवको। तिनातुलिसबलोय ॥१॥ कृपासिंध
कृपातहोइ। आपादेयलपाय। तुरसी तबतनमनकी। मर
महाससनविलाय ॥२॥ हिमजोनैकूंवकूकीया। कूटेमुगकी
तारो। तुरसी रामकृपावहोइ। करगहिलीएनवारि ॥३॥ कर
गहिलीऐ उवारिकैं। सुडलदहिमसार। तुरसी ऐसारामहै।
गुणसेवतिहार ॥४॥ सेवतिहरिरामकी। जिनिमाहिदीया
उपगुनऔगुनमेटिफिनकीरे। सवैनिवारिउपरे ॥५॥ उपरउ
दरतारिकरिदीया परमसुपआय। तुरसी अपनांकरि
लीयो। सीतलपरसलगाय ॥६॥ तुरसीधनिवेरामजी। जि
नयहऐसीकीन। पतितजीवतारे घने। हमसेकिते दीन
॥७॥ जिनकैंवलकोकूनही। नहीआसिरोआधार। तुरसी
तिरखरजीव तिनकूंतारियारि ॥८॥ तुरसी जनमहीनकरमकू
दीन जातिपातिकुलहीन। आपनैपारसनांमदे। तेकूपांव
नकीन ॥९॥ ऐमनफीरैकरिदासकें। गुनहीगहेजगवांन।
तुरसीवोरकैरेनही। विरदआपनोजांन ॥१०॥ विरदआप
नोजांन। रामवेअंतरजांमी। अधमनिकूउधरें काटिकति
विषैतेस्वांमी ॥११॥ तुरसीऐसेप्रभुकूंनजतं। तेजतजेचुनि
कांम। कालामुषतेनजडतिका। सुषनदिखावोराम ॥१२॥
तुरसीगुरगोबिंदबिनव्यहकालिमांकलेमा। कैसेंकूनासे
नही आवैसाजोनांनांजेस। गुरजिहाजगोबिंदजीसमरथ
सेवनहार। तुरसीजनेसुहावते। किलेपतितजरेपार ॥१३॥
स्रगोगहिलेबावरे। पंगुरअनेनजुअंध। तुरसीसमरथजेहा
सचहितेधिगोजवसिधा ॥१४॥ मनरंजनसजनघनेउपने
जनकोकूनांहि। उपनेजननांगइनां। तुरसीदेषिनमांहि
॥१५॥ सुषहिबटावनहैसबै। दुषकानांहीकोय। दुषहिवटा
वनरांमजी। तुरसीनजिनितमोह ॥ तुरसीअलपजलतूं
दसूं। जिनिरचीोजुदेहीधाम। नकशुतेचुकछुकीयो। ऐ
सेसमरथरांम ॥१६॥ जाकेतनकसपर्कतें। जगतनदेहोइआव
जूंआरसीअरकविचि। कहीआमिनसुनाइ ऐसेसमरथरां
मजी। अनतनवनकेराइ। तुरसीअधमनिउधरते। ताहिके
करनकछिनांइ ॥१७॥ तुरसीत्रीजहदेहजुकरम। जगपति
ऐकहीबार। जीवसंरचिबोइतनहै। कछिनकहाकरतार
॥१८॥ ऐसोसमरथसाहिबजाकै। काकेंनारतिरहेजुता

२

गु

केरोकहटूरिक्रपाकीडोरेताहीमेंआपदासबटोरे।
श्री।तंकाहेकूत्रयेरोबिचिहीबांधेतनारजिनियहकीया
नू कैसा।ध्यानतनमनकीमार॥३॥पंडनकातकरर
सन्मुखकरतारामा।तुरसीताकोसरनगहि।ताहीकोतेबांमा
॥४॥जनममरनकीआंचतेंजनकूलेयबचाय।श्रेसेसमूथ
रामहैतुरसीसदासहाइ॥५॥ताहीसूंलागोरकाचाहें
औरोहि।औरसरनउपरूपहे।सुपहेसाहिबमांहि॥६॥
कूलनको।कनजिमीसरूंपेंचिनतोजिकोय।तुरसीत्कैको
कामदी।कालायकमेंमोउब।तुरसीआपाअरपि
काताकूसोय॥७॥कोबिचअपनांईकैं रहामुनीस्व
र॥८॥तुरसीजेजेकोकमाथनवो।तिनअपघरयपी
सबमाहिबकूंसमरपिकें रहेनिरातेमांहि॥९॥२॥थ
॥१०॥सबद्कोचरित्रकोअंग।।महाकूसबदकेबानसूंक
कूनहीलगार तुरसीदासतासकीमेंबलिबारंबार॥१॥
कूसबदसुनिकोननिमेंकसकेनांहिनमोउ।तुरसीत्रे
सासंतजना।कनिमेंबिरलाकोइ॥२॥तुरसीकू
जोमूसकूहोइसो।गरेसमदबिचिबीजरीकहात
॥३॥सोदकूजनसंसारमें।स्वरबमांहीचंदकानजानमेंना
कहीकूसाकरेकोकूमद॥४॥कोटिपुनकोहिकहिकूउ
कूसाधिसाधिमरेबांनशब्दपिअगनिनजोहेपानीसूका
न॥५॥मनमाबाचाकूमनाशतनकीमतिमेंहितुरसीसबद
कूसबदसुनिकूकिनहिमाचेसोहेकांमदहैअनतन
नहेकूसबदसहेसरीर।तुरसीगुरमताहिरहे।मोणवे
सीर॥७॥तुरसीसुबकीसीमोमहाकीयकोतम।सुपनत
नआपूर्ईथनिखमांबूदेसतुरसीपिंतकीसदनतापु
परमारथसोऊ।मनेअगाजनदिहगाहैतोगजिनसकेकोय
॥९॥कूसाकरेकोकेअरुकेकामीकोधीजीवकृतकाए
तकेनहीसंतसदारतसीचअपनेसांतिसुनावकूं।तकू
छाडेसंतज्ञोकोकूकरवतऊगुगहि।मस्तगकूछिदरत
॥१॥चोगई तुरसीधरतीरूवारहैसूदसकतकीआपन
हे।अपनतनकूनउघेसोइसोकरवतत्तनछिदेरेकोइ॥
१२॥अगनिकूतेअतिनहीहेअगपानीकीबेन तुरसी
ताहिसदारिनेमोईसाधूअबन॥१३॥मेंनकूपजाकोरिदेपा
नीकूपीप्राण।तुरसीकूसबदसोसहेकूजेअगनिसमान

[illegible] जोगीजन जिनपहलेंहीमृतककीये

[illegible] मोह जेराख्यु घटमाहीगोहपसा

[illegible] तुरसी तेनामें मरे [illegible]

[illegible] नहीजीवनतनेह

[illegible] नाककारिनथीरहत मामरनेके

[illegible] तुरसीजेहीवतमूए तिनपाय्यातत

[illegible] कऊवचाजोगीजाइश्र

[illegible] तुरसी [illegible] माय बुरीनतीसमफे

[illegible] तुरसीतुरीयातीतमहि जायबसा

[illegible] मरे जरेमुफ्तनेनजरांहितुरसी

[illegible] घटमांहि जेजीवतमृतक

[illegible] तुरसीसुखमेंहोइरहे जुगिजु

[illegible] ताकीअवस्थाजीवतगहेजुको

[illegible] मरेनकबऊमोह मृएकेमोह

[illegible] तुरसीइहनतनहे जोवियबेठे

[illegible] करावेजीव तबलगतें

[illegible] होइजाय तबनिहचेसुषमां

[illegible] रहे तिनकेनहिकोय

[illegible] सोय हैसोयरहरिहा

[illegible] चातरहेगा हेसोकेहेपह

[illegible] लियेतापार तुरसीजोकछू

[illegible] हाहरयनी हेकनहीन

[illegible] नाहिन्नेबत

[illegible] होअपनेरामसमफ

[illegible] नाहिनकछ तुरसीसम

[illegible] हेउसेसमत्रजिदे

आनभीजइये४।तुरसीहमडूढतफिरैहैसामिलेनकोइजा
केतनमनमेंनहीरागदेषरिपदोइ६।तुरसीहमढूंढफिरैं
बिषयासूंन्यारा।बिरलाकोऊपाइये।हरनूजीकाप्यारा७।
जंत्रमंत्रकेग्राहजी।बऊजगमांहीजोय।तुरसीयोजीरामका
बिरलादेष्याकोय८।तुरसीजंत्रमंत्रबेदंतके।गानकहूतिवे
सोउ।घोजाहमदेषेघनेयेब्रसहितबिरलाकोइ९।चौपई
करमतोंइडीजनताये।ब्रूरबपरहरिपछिमआवे।बिसर
जाइबाजीकोभ्पान।गूंगापंगासेप्रदेंषजान१०।गाखी।तुरसी
तेकेंनावइयहमनजनमनमोक्षसमथेनलोहोइरहेते
तोबिरलाकोइ११।बिरलाकोऊपाइये।तिरगुनसंन्यारा
तुरसीदासमुनरहतवहहेजगत्रसारा।१२।।२६।।७।।१२४
।।हतथीतमनेहकोपरिकरन।।तुरसीऐसीप्रीतिकरिपी
वसजैसीचंदचकोर।पलकहततनटेरैचितबूंततही
होइतोर।।तुरसीऐसीप्रीतिकरिपीवसूंज्यूंचात्रिगघनहे
तपीवपीवनचसोकरेनिसबासुरनितसोइ२।तुरसी
ऐसीप्रीतिकरिपीवसूंज्यूंमृगमोहतनाद।मातासुतसुर
तीबछनिज्यूंसारीघटसादन।तुरसीज्यूंनरनारीकंन
नेनारीनरसूंलीनऐसीप्रीतिकरिरामसूंज्यूंजलसेतीम
नथ।प्रीतिकायेपीवपाइये।तनमनचजनहोइ।तुरसीजो
मनमरनकाभोसारहेनकोइ।।चौपई।तुरसीसोसासबही
नासेरीमरोमरंरकारप्रकासे।ज्यूंच्यूंघअनप्यासेपांनी।
ऐसीप्रीतिजोजजेबिनाभी।६।अंहलहकरनकेवृत्तजो
अंही।प्रीतिकुचिकाषोतेमांही।तुरसीप्रीतिहीकरैप्रका
स।प्रीतिबिनासबमिथ्याआस७।।प्रीतिकेबाघप्रतुआं
ये।मुभिन्यागअपनेघसजगाये।नीएपरमपरकेगलगा
ह।तुरसीज्यूंबालकसूंमाय७।साषी।तुरसीप्रीतिबिना
प्रभुकोमिलेनउलनडहिमंसारभावेग्रहतजिबनजावे
ननलबनटाएछार।१।प्रारन्नसमेसामैंमलएलोहीजानिप्री
तिसहतहरिनावृत्ते।तुरसीपरहरिआंन१०।फूरिफूरिब
ऊतकमेघोकारिकरिजननअनेक।तुरसीकिनऊनपाई
या।प्रीतिबिनाप्रभुएक११।तुरसीभावेकूंनगनमिलिअ
गबऊनमानेगाय।निरतिसुरतिलागेनहीप्रीतिबिनाह
रिनाइ१२।तुरसीप्रीतिसमिनसाधनकोऊ।प्रीतिमेमन
मनआन।प्रीतिपकचावेप्रानकूं।तेकेंपरमसथान१३

जा ना लो हा तुरसी मैं थिर रहन मिलि जाय। तुरसी जो
कलमिप न होइ तो नकरि कमोटी मह ॥४॥ होइ के
मोटी ला चलै गजाव न सिंध मिलाय ॥ साधि मिलनी तुरसी
वकी नव सुप मांहि विहाइ ॥६॥ तुरसी जी वसीव संजोग सह
मिलन वन कूं जानीन ॥ प्रीति कमोटी को जीरे नहीं तौ क
रन कौन ॥७८॥ ७१५ ॥ १२ ॥ ६ ॥ रातन कौ पारख करना ॥ तुरसी
जा सरातन मैं सुधि और बिहरि नाम ॥ सो सरूप तन न टारीए
करतिए कौ काम ॥ सोई सूरमि राहिए कैसुर ति कौ घेर
तुरसी सुनि रेराम कूं पंचम हारिय फेरि ॥१॥ पचौ वि घरेन
नहै चाप नी अपनी बाट तुरसी सोई सूर है जो आनै एकै
घाट ॥२॥ कामद है रामहि गहै नहै परम सुख सोइ पावणि
होइ नाजे है तुरसी सूरा सोइ ॥३॥ चौ ॥४॥ तुरसी करगहि श
नकुमान पुनि सब बाहि गपान के जान ॥ होइ आरुढ अन
गहि मारै ता सरा के मैं बनिसा ॥४॥ साथी मैं बनिहारी स
र कै जो त्रै साहै बाय ॥ तुरसी अनगारिय मारि कै रहा रां
म रत होइ ॥५॥ सबको कूर रकहा बूरे बिन अपने ननम
न तुरसी पचौ बसि करै सो सूरा सति जान ॥६॥ सोई सूरस
राहिए सोई सूर सेवै तुरसी कनक अरु कामनी दोऊ त
जि दैवै ॥ त्रिया तजे तन त्याग न गहि कनक हाथ नही
लेय तुरसी ताहि प्रभु हसि मिलै मिलि अपनो सुख देय
सूरवीर संसार मैं मारै कुजन मांहि तुरसी मनमथ
मारि कै रहै ज्ञ निर मैं होइ ॥ सूरसुकच माने नही क
रता करम जंग तुरसी ताको जग कहि आपन रहै अनंग
तुरसी धनि वे सूरिवा अनि नहोइ जे राम ॥ कामहि मा
रि मिटाइ के सूर कहै ॥ कामा ॥ १२ ॥ कैरे जगया अनग
रह पालवा न लै हाथि तुरसी जरसा लव रहै जवरिय
आ वेहाथि ॥ सिलनितन करिया मदन की जर मूनि डारै स
ब तुरसी जो मन मरन तें तब जन होय निरमूर ॥ निरमूर
करै मदन कूं उर धरि हरि को ध्यान तुरसी तीनो लोक परि
ता को बजे निसान ॥५॥ सब मरम मानन सूर को कनिन जी
त्या सब संसार तुरसी वे बड सूरिवा जिन कीयो समर को प्र
हार ॥ सांवत सिरि सांवत सो सूर कुसिर मो सूर तुरसी
जिन गुरग्यान गहि समर कीयो निरमूर ॥ महापुरष या मा
डमे मन सा बाचा मोह तुरसी आगे काम के कब कुनका

॥तुलसी राम हृदय

काशिमिठावृषीमुरीमारिषुम

हि छिना मं २० करी चराई सूरिवा मारन कुमल मीर तुल
सी मन माश्यानही ॥बाटिस बाहेती २४ ॥ जौ लों मन रिपन
मरे ॥मिटै न गरब गुमानता तौ लों सूर कहाइ कैं ॥ फगा कर
मखको म २२ जौ मन मरे तौ परम गति नहीं तौ निष्ठ बनाइ
तुलसी पेट न मो करौ सूर कहाइ कहाइ २३ तुलसी सूरा
संत जन तब न लकुहाए सोइ ॥मन को छोभ मिटाइ कैं ६हे
बुद्धा रत होइ २४ अबन पोठि दोपी दृकोम रिक माहगमांहि
मनसा बाचा करमना सूमेरजी वृआहि २५ जौ लौ वृपीकि पि
जावही तौ लौ सूर मुरिजाइ ॥तुलसी ॥ रण संग्राम में भिडरा
मंगल गाइ २६ सती सोइ सिलिजे बसि को धाए चित वे नाहि
पावकपानी समि ग मैं मन चित ज्वाला माहि २७ कोटि आ
नपंको ति सुषा कोटि कबने सिंगार तुलसी सबतण रूप
करिजली जपी वृकी नार २८ सूसा छसुषदेह के तिन का
लोभ्यागे ॥तुलसी तब जननी मई साहिब के आगे २९ ॥ साहि
बआगे जाय जो रहिबो चरनन पास ॥तुलसी बात उलजो हे
बिनकी एइंडी मा सवप सो चनकी जे सुमिरते साईको नि
जनाम ॥तुलसी पोचक नहीं डोकी तनइ इंडी मन ३१ ॥रिण
माहीप्रवेस की ए सूरक रे जो साच ॥तौ तुलसी ते नहीं स
बको ऊ कहत जुपो च ३२ ॥ हम सूरा कहैं गाथ के जो पा
आपाचन देह ॥परबल पर दाता नितिको मना मजाचि लेइ
३३ करते कन कहि परहेय ॥ तुलसी का मनि हो इ तुलसी ३
रो बनी सूरक हावै सो ३४ ॥चौपई ॥ अन तुलसी रिखि सिधि
हम सुने त्यागी सूरक हावे घने ॥कुरती माया त्यागे सो ३ न
समान त्याग नहीं को इ ३५ ॥साषी ॥ ति भवन मांही सासना ॥
जा सूर की चलाइ ॥तुलसी समर न बसि कीयो ॥तौ कहा की
यो सूर कहाइ ३६ ॥सोई सूर सांवत सोई सु नट कर त पुनि सो
इ ॥तुलसी समर हारा जीति कै अमर आगे जितदोई ३७ ॥ आ
य चलि पाश्रा जुपलापावन देय अतीत ॥तुलसी या जियल
के में सो कहो ए मन जीत ३८ ॥जो कब सांई सुमिरते उपजै
उपसा ॥ तो क मन बिग्रह नो कैसे तुलसी संत सधीर ३९
॥ उष सुष माहि सारिषा संपति बिपति समान ॥तुलसीय

तौ दोइ जग मै देकार ४४ तुरसी सूरे संत कौ मुष मलि मोर कूं राम वो ७

हा गिथीरकी गहे रहे गुरग्यांन ४० धीर नटरे निम्र्षन
२६ देषि उतौ को मुष तुरसी सदई होइ रसा सांई सूंस न मुष ४
धीरटे केकऊ क्यौंन नै होइ धरम की हानि तुरसी प्रानी फु
पंच मे फिरि फिरि षचे तु प्रानि ४२ गहे वो ट गुर धीर की
थिर ता गहे अथीर तुरसी ते थिर हात जे तौ कौंन बधवे थी
२ ४३ तुरसी जो गे वर चित्त ले कतै तौ को काटन हार
२ हरि तुम मोकूं ... मुष मोर जो तौ जी वे सो जीवन ध्र
व काम ४४ तुरसी लोक जाइ परलोक कऊ न
हि जो जन थ्र तु कूंपी गिदे राचे विषयन मांहि ४५ परह
संग संसार को गहे जो गवे राग तुरसी फिर करि बाकूं रे
सो लेग बजे को दाग ४६ संतन को कऊ आदरे जग कू
टका ते तुरसी जो वैराग तजि नरव कऊ धरचे संसार ४७
कूट बक तन पनां मो चित्त कौ ष जं प मन ते हि बैराग तु
फिरि बिषयान जे सो धृग धृग जन को त्याग ४८ होइ अप
जस या लोक मे परलोक हि न सभा इ तुरसी राम बिमुषन
र कि छिछी पतन होइ जाइ ४९ जे नर मम ऐक्क हा थिन
आया कोइ नांगत नयान मत नयां नर चले वा दिन षो
टूपचो ... तुरसी ऐसा अधम जु सोइ ता को संग करौ
जि कोय कौ ऐ संग नो बेरू नाहि ... छित लागे सुनि
... सा ... हास्या हारी बात सुनि षुसी होइ मन मांहि तुरसी
सूर कऊ की कथा न रमें आवे नांहि ५२ कूं चेन चूर जीव कूं
र कू को सुग्यांन तुरसी जहां काइ रकप्पा तहां तहां मां
न ... राम नजन कूं आ तसी ... आ न न जन कू सूर तुर
बऊ नहें पांच निराछे चूरि ... त्यौ ... पंचन के तु बहां
राम जनन की सुछिन करे तुरसी विकाइ स्रगपांन केसै पा
वे पर कें जांन ... सुथ न रि स हि कऊ बातें कहें स नामिमां
हि कच चै ते तुरसी कांम पर न जब होइ त बले ते फरे त
का ... सा ... सूरातन की बात सुनि सांहस उपजा
... तुरसी तब दोइ दल मिले सब जी व गया पुलाइ ५६ दे
सी महरीया सूरतन नांसजो गा तुरसी जब मोरें परी तब चित
हे ऊ न लोग ... तुरसी बांनो बांधि के बऊ त कर डफ डोर
मर ता विरीयां मुष हि मुष त के पुरां नी गोर ५ ... सूर कहां
न कू मधे नरस्सू रतन नांहि तुरसी परे फुल्या फिरे ती रिपर
न गी नांहि ... घट घट तन सूर कूं ऐसे सूर अनंत तु

मनकिय कूंदरन बिलोकाकु ... ॥६२॥ चौपई॥ जहां तहां ज
नमत होइ मन त्रिय लोकी मैं कैरे गवन॥ तुरसी तहां तहां सू
लावै सोई सुन ठमेरे मन लावै॥६३॥ साखी॥ गहि गासी गुरपा
नकी अरु ध्यान की कमान॥ मनमा म्हगी मन म्हगांय चढि
कारे ध्यान॥ गुरमा मिघे रिहने कमध॥ मुलेटि हृदि दासांचा
ना तुरसी तब आगे सकल तो मोछि मुक्ति आसान॥६४॥२७७
॥१२॥ कालको परिकरन॥ तुरसी कूं पे काल सं सुरनर अ
सुर अनंत॥ निरनै रूप को कु नही॥ बिलांत गति जग वन
॥ तुरसी कूं पे काल सं॥ जिन के काल अनंत सरीरा मदास
यान कहो रहे॥ बाधिन सकू ही धीर२॥ तुरसी जिन की अव
धिकौ आवै अनंत न है वृत्ति कू कूं पे काल सं॥ ब्रह्मा कू से प
दे व३॥ तुरसी ओर खपरे को का मही॥ का की गिनती मांहि ब्र
या कू से ने कू रे॥ काल सं पेरे डरा हि४॥ जाको ने ब्रह्मा कैरे
ब्रह्मंड रू कं पहो ५॥ तुरसी दास अैसा बली॥ महा काल है
सो ६॥ काल कं पावै सब न कौ जो लतन धारी होइ॥ तुरसी हरि
गुरके सरन॥ साध जबै रै सो होइ ६॥ जो ते आगे गउ मुख पद रज
रू ले सो ७॥ तुरसी गो बिंद जन बिन॥ तिन में रहा न कोइ॥
॥८॥ जिन की अवधि अनंत नही॥ अनंत दे हि बिसमा र अनंत
मनी मन रा पते॥ तिमरि मिलै नु छा रा ब॥ जिन की अवधि अनं
नही॥ महा बिस्तीरन दे हा॥ तुरसी ते कं चा ति बसा सबे मि
ला नेष हू ९॥ जिन की अवधि अनंत नही॥ हो ते अस्थिर पिंड
ते कं औ सरि आइ को॥ काल को पिंड मंड १०॥ अस अ बसे

होन को ३॥१०
कुन देषी ११॥ जो तन धारी होइ॥ अपनो अपनो औ स
करन रावन सो कु
होइ गए कसकु

१५॥ तुरसी जिन्सुंदरि सुषमो
कोइ॥ तिने ना निते निकसि कैं अ
व नि बसी ए सोइ६॥ तुरसी थिर को कु नहीं॥ जो धरियां देह
औसर औसर अपनो मिलले सो जाहि अबह १७॥ बिलत कूं दल
देषी ए सुष बिलस तन सुमा॥ तुरसी ते कुं जा हूं गा॥ स्कूं ध्रु मको

पहाराज। तुरसीया सो जीव नमहीं मति के कुगरब
करइ एक दिनां उठि चालनां। जाइ जरी तजि काय॥
नसि गुर देह की मति छीती तिकरो कोय। बारु के मिंदर
ज्यों बिनसत बार न होइ २॥ बिनसि जाइ पल छिन मही।
तायां देह। तुरसी ऐसी देह सूं बादि करत नर नेह २॥ बारु
मंदिर मही जैसे अस्थिर होइ। तुरसी यूं जाने नहीं बिनसि
जासी सोइ २१॥ ऊंचे ऊंचे गढ नपरि ... ऊंचे रचहि आवास।
तुरसी यूं जाने नहीं का लगि न तहे स्वास २२॥ तुरसी मिथ्या
देह यह तासूं मोह न लाइ। आहि गरेस बदेष तां जि
रय आय २३॥ तुरसी मिंथ्या देह यह। बारु की सी भीति॥ का
ल मेघ के परैते। थिन आइन चीति २४॥ काल घटा वत देह कूं
जूं दी दा की लोइ। तु गाफिल होइ अंधेरे कहा रहे सुख सोइ
२५॥ काल काटले गयो काया कूं। ज्यूं लोनी तरपा भीति
ऐसे पिंड की करी फिकर पर भीति २६। काल बली कायाजु
कूं षिय होइ लागा से। तुरसी राजाराम बिन राषनहारन को
इ २७॥ काल व्याल मुष कजग ल। तक न फिरे निति सोइ
को ऊ छुषि करि कबे स्नगत ज नाज गवूत स रैने होइ २
८॥ काया कर सन काल कौं। मन मांने त बपाय। ताकी रछ्या
को कैरिल नहरि गुन गाइ २९॥ जैसे तोपे तरक पजेजपरो।
तांम इयाते। तुरसी तैसे काल है। जन पर डारत जाल ३०॥
जीव जाने जम आइहै। जब यह अवधि सिराइ। तुरसी यूं जा
ने नहीं जु घेरि रह्या गढ काय ३१॥ बकत रहत यो देह कौं र
... काल अनेक। तुरसी सोफुनि बिनसि है। बिन हरि जन
न बछे कोन्या। छिन भिगर देह की मति प्रतीति करो कोइ
काल कहर लक जु फिरे लेजाइ रूप टि जुसोइ ३४
संपति देषि नर फूल्यो अंग न मांहि। तुरसी यूं जाने नहीं
ऊ या छिट काइ ३५॥ बिमुष जीव बिषया सुष लीन
जं जाल। काल बली सूं कछु नहीं आइ गया तत काल ३६
जाइ सु फिरि आवै नहीं। आवे सु फिरि जाइ। तुरसी जब लग
देह है। तब लग संगराहाइ ३७। हीन होइ आ स्वास रंग जल रं
ग ... सीस। तुरसी यह गति देह की है है बिस बा बीस॥
३८॥ तुरसी जो जन्म्या सो मरेगा। जो मर जो सर आइ। को कं आ
गो पीछे को कं बिन जीने मन काइ ३९॥ अवधि घटत यूं अंधेर
जूं दीवा की लोइ। ऐसे अलप जीवन मही कहा रचे बिष

४०॥अवघटनघूंघरेजासिताकोनीरगयोसुफिरिआवै
।तुरसीसुछिमकालयहोकोउ
जोगीहीनलतहैताछनरजीवजानेनहीसाकेमनहतन
सुफिरतनध१॥तुरसीसुछिमकालयहीमहात्तुवनियासे
डाकरवतवहैसवनिजोतनधारीहोमध२तुरसीगति
नुकालकी।महाअगहतनुआहि।सुधिमनिरतरिहि
बहै कोकंलघेनताहिध३।घपमछिनकनापरिकर्म
परिपरिपुरतुहोश।ब्रह्माअवधिप्रजतजो।वदिविस
नैजुमोह४४।छिनकपरनपावेनही।सोछिनतांरेनका
लो।तुरसीदासमिम्रतहोड़।महाअघतरसातसद्अप
नेआतमरूपलूंडरिनकवकहोड़सुधसरूपहीमेरिहेना
हिकालनहिकोड४७जमतेडरैनिहानसवजनकूमांन
का।तुरसीसुभिमरैरैनिदिनतानेरसगवंत४८।तुरसीका
लकरारेसोजीवनतजेसेजात।करुनांमकेसंनत।
तीकालकराहदयालध८।येकनुगतिअमरिपदे[illegible]
तिअमसितातुरसीतानेरैनिदिनसांस[illegible]
रामनामलागारहे।अंतरिनेउपजाउ।तुरसीसा[illegible]
कपालहोइफिरिजाइ॥५१५२५३०॥७१॥[illegible]
परिकरने॥नांमसजीवनिवोषदी।मन[illegible]
अहांनसोप्तेजैनहोतहाविष्पनआंन१॥[illegible]
वोषदीसतगुरदीआंपि।तुरसीअरि[illegible]
गजेताहि२।कालतत्रअस्थेकाकै[illegible]
रमीरतमतहोहरसा।फ्काटिकनपनांकानं[illegible]
मनांमसजीवनितरा।छिनलंननना[illegible]
जमपुरिनहिजांहिं।रहेसमा[illegible]
रमनुनतगलनक्केरा।जममम[illegible]
हिरदेसुधिपूरि।तुरसीरोममग[illegible]
निहरिनाममसोआतंनआ[illegible]
ते।जिनसैनांही।कोअनेमि[illegible]
वनिनांम।तुरसीरमितारोम[illegible]
सबासुरत्तागारहेनांमनि[illegible]
हरिआरकुंजरीसवआहि।[illegible]
प्यांनोतहांजोआलिडल[illegible]
गावे

ननहीं तुरा न व्यापै आय॥ तुरसी जमके कौनै नहीं चलि
हां जाहि॥ ५२॥ जनम तन मरन जात में॥ बकु दिन बीते सोइ
जनमै घर जाइकै रहीऐ नैनै होइ॥ १ अहंमम तकै पैरपर
सोप दसीव नम्हर॥ तुरसी चलिता परसि गोक्षू बकु रि
अस्र र॥ ४॥ अकुरब जरि नस्स होइ जन्म मरन कौ सोइ
तुअ आतो पहर जौ अस अलोक न होइ॥ २ सा लोकु न ऐक
न्हको॥ जौ निजके ब हराइ॥ तुरसी नर वा हार सदा भरे
कोइ काइ॥ ५॥ पिंगुल होइ अति भी तिरस॥ ता न कालतर
तुरसी तो जन चढि गया॥ सो जुग जुग कै रक्षिता म॥ ६॥
रसी सो तर ऊर बिना॥ घर फुनि ता भागा नाहिं परबिहूं नपं
सदा कै तिन करै तामांहि॥ दो॥ २८०२५॥ २५॥ अथ पारष कौ प
रिकरन॥ बन बिचरत बन चरत गज मोती पाऐ तैं न॥
रही की मति बाहरी गई जु गूं जातैं न॥ १ तुरसी मोती पाऐ बि
तिह रस बस पति सुखदाइ॥ की मति बिकै न किराटनै॥ कि
किन दीऐ बिडाइ॥ २ तुरसी जो जानै नहीं जा को बित पर भाव
सो ताहि निरै निंडर होइ॥ कारि करि को टिकु भाव नहीं॥ ३ सि
मिलो सा षिक मिलौ॥ मिलौ संत सुषदेव॥ तुरसीदास पारष
बिना॥ को कं न जानै नेच॥ ४ रजित कै नौरगै हो सुक्षीस
ज॥ तुरसी अष्ट सो श्रोनी यां॥ परष परपष्ठि ताइ दे॥ रूप रिक
लई कन वकी॥ जी तरि नरीया लोद॥ तुरसी ताम आदर की
अति निपुनई अदोह॥ ६ कपरिक लई कनक की मिल्है बि
जन्य नाय॥ तुरसी जौ नर बस्त बिन॥ भरे न मोल बिकाइ॥ ७
छोटी बस्त हिषरी करि बर तत है जे जानि॥ तुरसीदास सुजन
मन तें अति हित हरी हानि॥ ८॥ बोगी बस्त दिषरी करि जे ब
हैं अग्यान॥ सु मका ताहि जाइगा॥ जबनि कसि है निदान॥ ९
सो है कायाकंचनी॥ काच सें रतन रही वु॥ तुरसी तिन अंध
मिन तौ॥ कैसे कसहै सीवु॥ १०॥ तुरसी परषनहार बिन बे
सगर सुरग्यांन॥ कोड़ी कोड़ी कै सटैं बिचत फिरै अग्यांन॥
११ दिष्टि अनत या षंड में जंत्र मंत्र के मांहि ते अग्यान ह
को कैसे परषत साहि॥ १२ तुरसी आप अपार है अपार है
सोइ दो कं जैसे तेस मति कैसे परष सु होइ॥ १३॥ सुगधन
पानै परी॥ इति बाअध्यात्म आरं अध्यात्मसार॥ स्लो॥ जनजो
जन कारने वेची घर घर ज्ञान॥ ग्यानं बिद्या परसादतें पइऐ
कुसस्थान॥ तुरसी ताम सीक है ता॥ तौ मिलै मुक्ति न
तुरसी नै थार घरिकरी दई थारमे व तार २४ मुघधन के पांनै परी बिद्यावो
वो॥ ४

भए ज्ञान ज्यों सो मिथ्या असो लखि निजाई ज्यों चसै टै कुच धीमा
धाई निधि विचोहटै जु जाही तुलसी करन नर्तु ३ पाइ १७ साधु तुल
सी जीरन पट महीं जैन पेसवो होई हीर तौ जु छेग कोऊ नांगहे
द्विषतनाइ बहीर १८ जो नौतन पट पाटमें फंकर बंध्यो सेह
सो तुलसी मवकु लमहि परम छिकुनी लोइ १९ कुपारिसील
ग्रसकल भावकै सुलतांना तुलसी जानहि भेद बिन रहे
न मलनि धान २१ वेमन भेद पावि नहीं बिन जस्यो सो इ तुल
सी उपतेहिरंग निमें रहे रंग लिलेहोइ २२ जो जुग कीरु बता कै
पा कहे कोऊ जन आइ तो तुलसी तुग कुलव सही परी कहै न
गिनाइ २३ नाकी मूरति मूरतिज मोमनि कहा कराइ तुल
सी मनि वहै मोक्त की पै तौ कुनसाहि गनाइ २४ दे. सोधु.
मी करगही की मति रूपाई नांहि तुलसी तामति को परसे बैन
से मरम लेखांहि २५ परसे नहीं जनपार छू छेदे तेपरस बताइ
तुलसी परष बिनय मूनर फिरि फिरि घोरा घाइ ॥ २५ ॥ २७
॥ २४ ॥ पारष को परिकरन ॥ तुलसी हरि नम परयई संत बने
की कोइ के से पंडित पारषू पवि पखिर एच्छ सोइ १ हीरा ठेर
गरनिके बड बड पारषू जोइ तुलसी परषे रामजन सो तो वि
रलाकोइ २ आके नर च बखुले ज्यों आपा न तुलसी
सो सतरास मक्कु से बे परष आसान ३ तुलसी पिंड ब्रह्मंड की
सबे परष जाय मांहि औरऊ परष उदत होहि जो मन के मव
मांहि ४ चोप तुलसी मनन मलकाने कै रे सकल पर परख
जो तां हिफुरै छिन नरस्यो नेरहे न कोइ सो नरदरप न तो सु
ष सोइ ५ तुलसी यह त्रिगुनी माया यह बुध रूप हचंचल तव
धिर तु धंन उ सै निकोसु नाद सि निजां ने सो पारषू पदाहि
पहचांने ६ रूपेरे रूं गलि परषत नाड पोटा डारे सराग स
हा तुलसी धोये विषया वांमा घरी तु रामनो मनिहकांम ७
॥ साधु जो मनां मनिह कां मयहां परषिली याजिन आन ॥
तुरसी याछिय लोक में ते पारषू परवांन ८ चोप स्त्री त्र गोत्र
के नांहि न नेरे त्यागि रहे नरम का चयनेरी तुलसी आत्मध
रम लिमान को अदिष्टि मनो वे आनन ८ साषी तुलसी आ
त्मी कथ रम श्रम लयह कसि के चन तो सोइ तैके हमाडि
रे दिध सा श्रु तिं तम जानि सं तो इ ॥ १० ॥ २८ ७ ॥ १२ ३ ॥ उपजा
तिं साय रिकरन ॥ तुलसी चलि अनि आरति सं तुलस सरोवर
नांहि उं धरि हे सुष को नहीं सुष देसा दिव मांहि १ तुलसी अ

सोरां मरन होइ रहा सो मन मन साधा न॥२५॥ चौपई उपजन
उपजी सहनां न आवै साधु सुम नपुरां न तुरसी रहि सि
षि आडी आवै। लकं न मात न देषि लुभावै॥२१॥ साषी करई
लागे कामनी करवा लगे धन धाम। सी गलागे रामजी षि
उपजनि के काम॥२२॥ त्रिय पेषे पुरष हि पिता पुरष हि त्रिय
तन माइ॥ तुरसी असी जो सब करू राम रिझाइ॥२३॥ सो
रें रांम रीझै नहीं कोटिक रेजे कोइ॥ तुरसी ता वत त्रिय पुर
ष को नेद खि लेन हिं दोइ॥२४॥ पुरष पेषै पिता सम पि॥ पप
बुध बिसराई॥ तो त्रिय उपनो जांनी॥ ग्यांन सु धि तव
नराइ॥२५॥ चौपई पुरष नारि तन त्रिवे असो॥ तिसे वालक
मात पिता तैसो॥ तुरसी जोय द असी होइ॥ तौ सिष मैं सांसा नहि
कोइ॥२६॥ साषी॥ अजा अजा तु रहि होइ बल सब गकगर जर
हा घ तुरसी जा मैं मष पती तासे मि बिचरै माह॥२७॥ न ऊबि
यां नी पुरष बिन॥ जाया पिंगुल पूत॥ तुरसी तरवर चढि आय
अजर अमर अवधूत॥२८॥ पुत्र जन्यो पे पिता बिना बंझै जाइ
या सोइ॥ तुरसी उलटी गति नई बुझै बिरला कोइ॥२९॥ पांनि
प दउसथ मुरा॥ पवन नै नन मुष नास॥ तुरसी ऐत खिक्रन
सुत तरवर चढि कै रहि बिलास॥३०॥ तुरसी ऐक अंनट नई उल
टी ही समझै कोइ॥ पहली गह मारती सु गह गीरनरे सोइ॥
३१॥१९॥१२॥१२७॥ दया निरबैरता को परिकरन॥ तुरसी उ
तके हे तुरंज़ी वासव परि बिचारी यो यहे जु मांनै पीव॥१
तुरसी दया जु धीरघ धांन है॥ दया जु ब्रह्म गियांन॥ दयाज
घडे पाप सब दया मांहि भगवांन॥२॥ तुरसी दया जु उत्तम रह
नि है॥ दया परम करतूति॥ दया जु पद की निसरनी॥ पार न पै
अवधूत॥३॥ चौपई उषी देषि करि दया न पवै॥ जां नैय हसद
मति सुष पावै॥ तुरसी असा को मत साध है कलि मैं कह कह
एक आध॥४॥ साषी॥ दया जिनों के दिल बसै दरद बंत दरवेस
तुरसी तिन कै होइगा भिस्त मांहि परवेस॥५॥ दया न बिसारे
दिल दो जानै अपपरपीर॥ तुरसी इस आलम मैं वह अवली
या फकीर॥६॥ कहर कुफर नहीं काया मैं॥ मोम दिल दिन राति
तुरसी असा फकर जन उरसि अल्ह की जाति॥७॥ चौपई तुरसी
परपीर हि यह चांनैं॥ घट घट हो इहै नहीं आंनैं॥ सब जीव जाति
आल्हा की जानैं॥ यह जांनि काहू न रजांनै॥८॥ साषी॥ तुरसी
जांनै काहू नहीं॥ मन बच काइ जु सोइ॥ दया वंत साधू सोई जै

ऐसा है को हरण ॥ चौपाई ॥ तुरसी लष चौरासी जीव स
से व्याप कहो कोपी वाइ है जो सितु षरै को कछु नाही
होसि तिनि रदो बड़ु मांही ॥ तुरसी जाव लगु गर्भ में जीजै
ताव लग यह मत छांडिन दीजै ॥ दया धरम अरु सील न
गहे रहौ ताव लगन आव ॥ मुक्ति दरदो सक
हु सां ओर को कहु जानाही ॥ तुरसी हृ जीव ब्रह्म कि महा
सब संतनि निष्पा कही ॥ एक राम सक
रल जां लग चंद बिराजे ॥ तुरसी यह जानि जीय मांही
म बैरता करीए नाही ॥ साषी ॥ बैरता जु करीए नहि यह
हु मग्यान ॥ तुरसी यह जु ध्यान है सब सुर्ग के समान ॥ ४
॥ ७५२६ ॥ १२८ ॥ कु दया को तो ता चौपरि करना चौपई ॥
तुरसी जिनके दया जु नाही ॥ ते आस्चरम निछिनिके मांह
महा तामसी क्रोध मोह ॥ नरक निच जिन राषे कोइ ॥ मा
ही तुरसी आस्चर अस्चर कहीए नहीं ॥ आस्चर सोई जानि
जाके बैरता बढि रही ॥ महादोष निकी षानि ॥ जिन कै
कु दया कछु नेर ता ॥ अनीति बकन स्कोमा रेन करि ब
रि न दो जग नैं ॥ तिन हि कहीहे रामना ॥ करै अनीति दिन
न हिंसा दा हे ते धक हति मोह ॥ मारैं षो मे षा हिं सगम
मके ते कुन हो ॥ जिका स्वारथ आपने रहै पराई दे
ह बझ मले षाम मांगे ॥ सब मुष परे गीध ह ॥ जैसी अपनै
आत्मा तिसी पराई जान ॥ तुरसी नि डर न दई नर सम कै
नहीं यह ग्यान ॥ जो अपने कांटा चुभै तो पस्याप मा
नि ल ॥ ता ह यरपी रही जाने नही गला काटिकें षाइ ॥
तुरसी ऐसा अधरमी ॥ निवर नि रदई जीव मुष जु मपु
जा हिंगे ॥ तिन हि कहिरै पीवु ॥ पीवु जीव के पासि है ना
र न्यारे नाहि ॥ न्या राय न जानो जु यह ॥ मारैं षोमे षाहि ॥ ग्रै
न कमसमके नहीं ॥ बढि रही बिष मता माहि ॥ तुरसी बिषम
ता छिन नेही तो पलटि होक हो इ जाहि ॥ तुरसी कु दया क
बेरता ॥ करते अस्त हो इ जाइ ॥ दयाधरम सुषि संपदा हिरदै
रहै ठहराइ ॥ गड्या जीव जु बन्धरे ॥ -
कपाइ को कछु नहीं ॥ हम कहैं जु षिषि बो पाइ ॥ ९ ॥ १९
न्हा ॥ १२५ ॥ सुंदरि को चौपई करना ॥ तुरसी आत्म सु
मनेम दर संसार ॥ पंपनि हारै पीव को ॥ पल पल बार बार ॥
तुरसी आत्मा सुंदरी रही आर सिव तहि हारै पीव के दर

सखि नाक्यो सुख पावे सो ॥४॥ तुरसी आत्मा सुंदरी परमा
तम भरतार। साहि छाडि आं नहि जाते। तहे न पीव को अ
स्त्र। पीव परस न होइ वे न तो। ध्यो वे लही नर अको। तुरसी ता
कृत सुंदरी। मन में रोये वे कथ॥ तुरसी पीव कहा करे जो प
ति सुंदरी होइ। मन माया कर ताफिरे अपनो पति व्रत
छोइ॥ सांई सुं विधि फेरि क्यो सुंदरि सहज सुभाइ। चु सि
नरि चितवे आन दिस। सो कोटि कजी लगि जाइ॥ पुर
ष एक परब्रह्म नित्य और अनित्य संसार। तातें निचि
तवे सुंदरी सो परे पति व्रत में क्वार॥ आ दरे न अ
न्यानि पुरष सों। हिन क बकु सोइ। जो निचवे मन के मते॥
पति को पतिव्रत षोइ॥ तुरसी सोई सुंदरी परषा सीति
नु पाइ। पतिव्रत सूं तन घटी रहे आपने पीव के पाइ॥
दीन होइ करु तो अज्ञ कारि॥ नि चरे अस्थान बैन तब अन्न पावे
सुंदरी। सांई का सुष अैन॥ सांई के पतिव्रत बिचि होइ
रही लैलीन। तुरसी धनि वे सुंदरी। जिन असी कछु कीन॥
॥ चौ॥ तुरसी यक टग रहे जु गाढी। प्रीति परसपर जौरै गाढी
पतिव्रत कछु न तन बहीं टेरे। सुष विलसे जो असें करे॥
॥ साषी॥ तुरसी मद सुष विलसे सुंदरी सांई के संग संग प्रे
म सहित लपटी रहे। तो कबहु न होइ कुरंग॥ २८॥ [illegible]
॥ [illegible] ॥ कि सतरी या स्तुथ को परिकरन॥ तुरसी आपने ही
उरम ही अंतरजामी रांम। रोम रोम में रमि रह्या लषि कित ढूंढे ब
न॥ तुरसी अपने ही अमही अलष निरंजन देव। नाहि स्न
डि षोजत फिरे जड जीवड तत तो [illegible]॥ कि क धावे तीरथ
नि के ऊपुरी अस्थान। तुरसी हरि हरदे रहे ये लहै न षि
न पुरगपान॥ ३॥ चौ॥ [illegible] कंग हि कंचन माल बिसारी ढूंढत
फिरे सुगंध बन नारी। तुरसी बिन मुष्यावे नाही। रषि रय्यो बिच
रहे नरम के मांहीं॥ साषी॥ तुरसी अपने नर बिसराइ हरि बा
हरि ढूंढन जांहि। कि तु गी कि मृगजल फिरि फिरि भटकां मां
हिं॥ ५॥ पिरसि न सकइ अथ सूं नर। पारब्रह्म की जोति। तुरसी
बसे जु निकटि ही नैना आगे होति॥ ६॥ तुरसी ज्युं नैना महि
ल पूतरी। त्यूं नरम पै रांम। तुरसी तांहि बिसारि नर ढूंढे पा
न मुकाम॥ ७॥ तुरसी नरम के बहकाये फिरे जिनका हिंब
सारे यावे सो जु नरमगत नरे बिन॥ चौपी व्यापी [illegible]
[illegible] अंतरजामी आप मैं तन मन घर साम माइ। तुरसी तब न
त पाएरी॥ मन पिरसो इनु र आइ॥ चौ॥ मन उलटान

[illegible] नहिं याते [illegible] रमी जैसे कहै मोः
[illegible] नकी [illegible] सुरमी [illegible] नतकि
[illegible] नपाय [illegible] नय तहां स
[illegible] यो [illegible] काया कै माहि
[illegible] सुरमा [illegible] ने ताहि यह
[illegible] सुरमा [illegible] नहीं [illegible]
[illegible] नरमन्न पावे नाहि॥
[illegible] जिन के नेदल
[illegible] मारन आंत
[illegible] काय
[illegible] धुमा [illegible]
[illegible] सोनी यह का
[illegible] को [illegible] जो
[illegible] जहां निदानि
[illegible] तहां [illegible] सबदन
[illegible] मतस्ते [illegible]
[illegible] चोक
[illegible] असंत
[illegible]
[illegible] मा [illegible] के
[illegible] गमे [illegible]
[illegible] नग [illegible]
[illegible] संसार
[illegible] के [illegible] ने [illegible]
[illegible] सुरमी
[illegible] बोय
[illegible] पै
[illegible] जाणी तपी
[illegible] मीनमांझे
[illegible] सेराज
[illegible] कोम [illegible]
[illegible] नदनिदा
[illegible]
[illegible] नहि [illegible] समान
कोई [illegible] पद मांहि [illegible] चनसाध की

निरमुषनिकसाथ।तुरसीतन्ह तहियतितरूं।।८।।गैदोषअघाइ
आजनमुखनिदानीकहै।।निजमाधनकीसोइ।तुरसीतनहता
निनजकोजीवनगिरफतनोइ।।९।।संतनकेअपमानकरिअ
पनोवदेवमाना।तुरसीताअगानकोसबदनसुनीयकान।।१०।।
आनकरमकीरोनरकैमेंहरेहैरहोइरा।तुरसीनीदसाधके
ननयरहोइसोत्रास।।११।।संतनकीनिंदाकरेअवसिषतासोघाइ
तुरसीखरदेवगीतिअसुरनावेनपजाइ।।जीनपगीजोतो सुनेछ
जेछिनेकीसाषि।साधनकीनिंदाकरतदीपेदेवनोकेसूनाषि
।।१२।।रविदिसिक्षरिजडावुरैनरकोऊअनुधावपाइ।तुरसीतसी
पऊचैनहीपरनारीपरिआइ।।१३।।तुरसीसापोएकरमातिनके
उतीनकोहानाजेअपनोपावैनरा।चितामनितोसोइ।।१४।।साध
जाहियचदलीघनेतुजाहिसुभाइ।।घनुकुतेनुसिचुसि
मरोनलीयामाहिआइ।।१५।।तनचुषचितवेनदीआरवातनउ
पाजाइ।तुरसीचितयेतामतनागायंदगतिनजाइ।।१६।।वने
जाहिचितछिनगहेदीएफलनकहकैरी।तुरसीजिहकारन
जुगाकेरैतिनोसूवेर।।१७।।निरमननिरदाइकजन।विचरै
सहजसुभाइ।जगतस्वानस्वारथनस्यो।तिनकुलागेधाइ
।।१८।।वविभावत्यागे।फिरैधरेजस्हरिआनंदश्रीसंतनकी
सुगति।काजानेजगअंधा।१९।।होइरहेरतमतनामसूमान
अमानसमघोइ।तिनकीकोनिंदाकरे।निंदाकरेगतनको
इ।।२०।।साधनकीनिंदाकरेतारीकीहोइजनतहोनि।साधुनको
कछुनाघटैजोरातपरदनवानि।।२१।।कोऊनिंदकोऊवंदई
कोऊकरैमावकुनाव।।तुरसीकछुनअंभिोग्यमगको
यहसुभाव।।२२।।चोपईकवकुघातनिसुरगचढावे।कवअ
पातालहूंवहावै।तुरसीजगजाचिगकोसुष।ताकीचित
नआनैचुषऽ।।माहेरहेसमितासमिभाव।रागदोषकोकरि
छिसराव।तुरसीयहअतीतकीवानी।कोएरहैमनमनसाप
नी।।२३।।संतनकोकोऊनिंदाकरै।तोमंतकोनकछूनहीधरै
मतगजराजस्वानननधावे।तोतुरसीसोनानहीपावे।।२३।।
समुद्ररूपसाधूजनसोइ।निंदेकोधनउपजेकोइ।।स्वरी
यामेसमनिपरे।तुरसीपरितोकोकहाकरै।।२४।।तुरसीअपै
अंधककोयाइसोइ।ताकीकछुनआनेकोइ।।अछतीआंपि
अंधसूनिरेता।कोअधिरजरसवकोकरे।।२५।।संतनकेधरम
पहचोनेजोनिवकिपुनिनिंदाठानै।।तुरसीतापापीकेसोइ

मन रच्छी सो साधु को इह तत्व ।। सा ।। तुरसी निंदा हू में भेद है
बस्त्र पाय न गिजाइ ।। कपाय मलू ट्टी को
१४ ।। निंदक को भी निरबैर होइ ज्यु गस्त रहे इराइ
तन को ।। निंदक नरक को जाइ १५ ।। निंदन सरषा बस्त है सो
दें निंसक ।। तुरसी निंद मुक्ति है सो पिक है सब संत नदभाय
मांह में तें मंना मन के चार षि चार तुरसी तिण करि निंद
मो लि राखे संसार १७ ।। निंदे बिन नि पजे नही तन मन का या
ता सा तें तरसि कर मि निंदा तुरसी है सु चेत १८ ज्यूं र बि
निंदरज नि कू ।। ससि सत्ताय न साइ ।। पूजन कू वहि निंद कै
सु घ मेर है समाइ ।। १९ ।। २० ।। २१ ।। निगुना को पारि
क रना ।। तुरसी मन हि करा चै ना पज्री ।। निगुने नर का संगा
कहि ये कछु मान के ज्ञा उपजे दोष तुरंग ।। २३ ।। जीव सिंच
है ते मधि निपजा न मिलाइ तुरसी मन ब च कारमसही तेकुक
रवा पन नही जाइ २४ ।। अमृत नई षजु दंड सु ।। कुटबेली न पता
क तुरसी तक छाडे नही अपनो कुटक सुभाव ।। संग्रार
हि महा प्रीति कु रिपिया दूई जुको ।। तुरसी ताहि लब रिते
षलु सुभाव न जोइ ।। कुनि गाहिये पाई ये ।। प्रीति
याइ तुरसी अति ओसर परे फिरि ताही के घाइ ।। तुरसी
निगुना नर अरु नाग दो को उभेए क सभि जानि बक्त तभो
परमोधी ते लक न छाडे जो मि ।। अति तकुट तीजीव स
रहे कहा होइ मानि ।। तुरसी छिड तको करे औगुन ही के
मान २ ।। औगुन वा रत कौ करे गुन समुद बिसराइ तु
सी जब व्रा पति होइ पतले बा षि तेजाइ ।। तुरसी गुन रत
के समुद्र बिचि जो बले बुड की दे ता तक मदा ति नित्याग
के दूरसा षुते तिन ।। जहा बक मो ती बीछरे पल कमूंदे
तन लसाइ तुरसी के कर का च मनि तहा दे ह टमकाइ ।।
कोय ।। जहा संत मंडली बिराजे तहां ज्ञान मन में अति लाजे
तुरसी गुन को य है जुसु भाव कुसंग ति सि ले मा ने चा
।। अगले के गुन औगुन गावे अपनो हिरदा माहि दुरावे
तुरसी ऐसा को कहि इ ना सम्मान पलू नाही कोइ ।। सा
गुन के लते औगुनी तुच्छ करि माने सोइ तुरसीदास
नापति त को केसे का रि जहो इ ।। हेत कीन चाटे तन है
कुहै ते का टर ना ते सब अरु हसा न सु रचे न बिर चे संत
।। ना य ।। नता ।। समुना को पूरिक रना ।। तुरसी समुने

श्रीगुनजैसे टिककैं गुनकनदीगदिलेद री १८

संतके सम कोऊ सद नांन ॥ अपने गुन फिलि करि गिरो ॥
परगुन करै प्रवांन ॥ तुरसी सगुन संतकी आदि अंतिए
बानि परमारथ के पंथ मे क्रिया रहे गरदानि ॥ २ ॥ तो को
ऊ औगुन करै भूर आतिरथ रि दोष । तुरसी सगुनां संत
जन तासू कूं देय पोष ॥ तुरसी करने कूं सूलो करै तेने राग
अरु दोष । अन करतेकी को कहे । यह समता संतोष ॥ ४ ॥ तु
रसी औगुन और न रेषही छिद्र कूंत के न काहि । वो र परावो
नां करै सगुन ये गुन आहि ॥ ॥ मरम छेद काहू जको क
रैम कबहू । सोइ गरबु गहरा सम मइ ॥ ५ ॥ रसा अथा जुहै
॥ ६ ॥ चोपई तुरसी गुन रतन निकी पानि जिन को एतछिन
परखांन । धरत जो मन कूं सुष देहि पि औगुन काहू को न हि
ते हिं ॥ ७ ॥ अपनौ अमृत पीवि पिया वो असुन प्रकृतिके नि
कटिन आवै । तुरसी सूं धरत रीग र जो ई अमेर रहे तपगोरे
होइ ॥ ८ ॥ तुरसी अपगार ही को इंछा आगे पहर औगु
न कू कोटि करै कोऊ । तो कछु चित देदि षिन कहर । ए छ
दर दिषिन ही कायामे आदि अंति मधि अरु अंत सीत
ल सुषदाई सदा तुरसी सगुनां संत ॥ ९ ॥ तुरसी सुगनां संत
जन सुप सुमत चित दे यां ॥ १ ॥ तुरसी गुन करते सब गुन क
रे हरे वाको अपराध । औगुन ऊपरि गुन करै सो कहीए
निज साध ॥ २ ॥ तुरसी निज साध सोई जाके गरमति एह अदे
ह रोम रत होइ रहे पा देन औगुन देह ॥ ३ ॥ २० ॥ २ ॥ ४ ॥ जे
को परिकरन ॥ तुरसी जो तो जे न नहीं कुपजे तो तो सरम
ने आइ मन चंचल मानो तजे पि छिन थिर न रहा राइ ॥ १ ॥
जो तो जे न नहीं कपजे तो तो सजन न होइ ॥ तुरसी बुझे न
छिकाल कलना तन मन की तिलमा ई ॥ २ ॥ जे सामि जातावे
नहीं तेम पहि तूं तन और तुरसी जे आनेन तत रि फूटे म
न कूं गेर ॥ ३ ॥ तुरसी ने जागत रहरा करै । करे मनको उ
लटावं जे सो वतन कु सुपन में आइ र करै सहाव ॥ ४ ॥
चोपई तुरसी ने घर रवन परदेस । उपजत नेंदय न असुन
अंतेसो सुन माही तुरावेफेरि जूग का गवां लघ पिआ
ने घेरि ष तुरसी भेसं सूख पियास मिटै और आउल स
होइ नासा निज आकू नेक कछु जुनावे जो हरि मैं भरस उप
जि आवे ॥ जे उपजे अरु छिर हइ जगाइ मैं न तिज तत घ
न तो थिर थाइ तुरसी तब जे साचा तो इज बअे सापाति

की नहां तो हा ७ साषी तुलसी राम सेषा तिविन
रो कृनि को रि विनकू नां पावे नहीं
जो चौपई तुलसी ते विन न गाते जुत्रे
तुलसी सूष तन मन नाशे सोह राम नाम को रूचि नहीं ते
हा ॥८॥ अन्न सावै के न आवै नीद मन रूवा फिरै चो गान
की गार तुलसी जहां जहां ते न ही होइ तहां तहां चित नो
ट होइ ॥९॥ साषी तुलसी ते संगवंत को नांग
गु किरण तें रूप जोत न होइ नजार न कोइ ॥१०॥ चौपई
ते कोरो को दारा कोट न गान हिहोत तु बार ते तें साषआ
तो नाम भेते सुसुमिरे अपनो राम ॥११॥ साषी ते रूकीट ग्या
न या ॥ जासि पाति कूत तोह तुलसी और ही गति नई
जाने सब कोइ ॥१२॥ ऐसे ते उर धारि कें न गति करै तिहका
मा तुलसी सो जन सही सू होइ पतनेटि कें राम ॥१३॥ चौपई
॥ रूप ॥ जी नती कोय रिकरन ॥ तुलसी कहै मति नाथ जी मम
औगुन की कोइ ते तुम बड़ा सो तो कहूं तें बरन होइ तो है
हा ॥ जैसे परसन होइ तु मासों हम कछु न की न प्रतपत्र
तु थी जीव हम ॥ तेऊ अरन नाहित दीन ॥१४॥ नाम तुम्हारो नातेवे
ही हिर्दे न जाइ ॥ तुलसी अप भायो कीयो ॥
रना ॥ तुलसी मन दीयो तुकु ताइ ॥ नानाइ जीनि सुषमांहि
अटको नहीं सु नाइ ॥ सू ॥१६॥ मन तमोर बहूं ही ॥ बुरो न
तो औगुन न ॥ सो जैसो तैसो साइ ॥ तुलसी तुम्हारो जु है
और आसिरो न कोइ ॥१७॥ जदपि होऊं तुछ जीव तक तु
म्हारो आसा तुम सम डरू सेवते काके रही जु पास ॥
॥ रूप दास ते दव जी तिन की तुम छाया कोट ॥ तुम कोट उप
पारे ते तो मन गही को ॥१९॥ पार मत तुम्हारे दास हूं उ
र भोति होइ नारि मेहो जब तुम दरवो रामजी ॥ तब कार हैस
दे हा ॥२०॥ हो सदा हरकसां इया ॥ जन से वग परि आस ओगन
नो रन देषो देषजी व बहि जाइ ॥२१॥ तुम्हारी सम्रपता पे
बल ते आवे अनेन वोर तुलसी अघ मन धारीए ॥ चित कृप
की कोर ॥२२॥ चित कृपा की कोर ॥ सरन कि नराषो केसो
आरीज को कहे रहे सो हिय ह आ है ॥ अदेसो ॥२३॥ दरपदह
नद है दह कूं ॥ विजवत है सम प्रांन ॥ बरसि बुझावो राम
जी ॥ होहरि कृपा निधान ॥२४॥ तुलसी दास विके न देजो रै
र जानि अधिय्यारतो रविता जे रामजी जन के यहै विचा

र।(३॥ सिंघसरनैकू जाइ कै।जोजबकडुधदेह।तौतुरसी
वासिघको सरननकोकूतेय।४ अनंतआपसापीरवे
अछतनुम्हारोराजयहदुषदहि५ नुक्रुपाकरिरावौजन
कीलाज॥५॥ मैंपतितपावनतुमआरबन्यौसंजोग।विर
दआपनोजांनिप्रभु।हरौविबधिबिधरोग।६ मैंओगुनकी
रासिहूं तुमगुनकरतारांम।कोटिकलकुसनुक्रुपा
करिजीवहिदेकूबिश्रांम।७ तौहमओगुनअनंतकीरो
गोकहांछूटैरांम।छूटनतुम्हारेपासिहै ओरनहीकोकू
ठांम।८ इहैधरन्याधरीजीतुमहीआदिअंतिमधिजोइ जो
छुडावौतोरांमजी।ओरनहीबलकोइ।९ चौपई तुरसीओ
रनहीबलमेरैं।मनबचनक्रमकहतहूंटेरैं।भावेंभ
वजलबौवकूरांम।तेरसारौअपनौदेरांम१०तौकछु
करौमुतुम्हारीबडाई।हमपेंकछुनजानीबनिआई।तु
रसीगुलांमगहिसरनाई।कीन्हीअपनीतउनराई११सा
धीज्यूहैत्यूंतेरीमगतिहोइ।तनआवैमोहि।तातैफिरि
फिरिरांमजी।दोसनलगाऊंतोहि१२।तुरसीतुमस्वादरथ
नमदीनहीउबधिकछुतोहि।मैंमुषदेषूजिसीबिधितै
सोभासतमोहि१३ तुरसीमेरीकाईमुझकोंआडीआव
तरांम।तुमकूदोसकछुनहीतुमसिरमनिमहकांम।
१४जैसीतैसीरांमजीतुमतैछांनैनांहि।तुममातिकथ
जीवकेजांनतहोसबमांहि१५अबिद्याबसिजीवहम
जनीकछुनहीहोइ।सकलनजीकेमूलतुम।तुमतै
ओरनकोइ१६तुरसीयाघोरीकलिमांहिहमनुपजा
वनकूतैनांहि।जोउपजाएरांमजी।तोमदेरहौदिढबां
ह१७तुमकूंलज्यादासकीआदिअंतिमधिरांम।तुम
बिनओरकोऊनहीजनकैबलआरांम१८यहैबान
तीसांईयांहमहिसुमेरसमांन।तुमजलतुसरूपहैदे
ऊआपनौनांम१९सरनेरापिसंबाहिकेंदीजैनहीछि
टकाइ।छिंगकोछेनकूंप्रभुहमिहेलोकअघाइ२०
।हमसेतुमरैबकूतहैघरजाएजुगुलांमतुमसेपति
तपांवनप्रभु।हमहिकहांहैरांमा२१।काहूकेबनज
जनकोकाहूकेबलग्यांनहमारेअधकी।तुटतुम
होकिरयातिअछेन२२तुमहीग्यांनध्यांनऊतुमही।तुम
हीजनमनबैराग।तुरसीकेतुमहीजुहौओरनतासूंना

गाहक॥ जाचै नर कहै ऊंगा मजी। जावै सुगमु बास जावै
मोछि मुक्ति दै राखै अपनै पास॥ ३४॥ अथ प्रश्न॥ स्वद्दा देत
को परिकरन॥ तुरसी नर काटै बेली बधै। तजरी बधै न बा
राछै दिजां कहु लंडकू जो पो बीएन नीरा। ज्यूं ज्यूं बेली क
हिरा ज्यूं ज्यूं हरी जु होइ। तुरसी यह दहै रां न है सी चे सु केबा
ड॥ १॥ सी चे सुके बेलरी यह देषी है रान। तुरसी अनटी बा
त यह को क समझै संत सुजांन॥ २॥ तुरसी जल दीए बेल
जै॥ बिन जल हरिया तेय। या बेली मैं यह गुन। बिना दि
ति फल देय॥ ३॥ तुरसी बन फूलै लागै अमृत फल फू
लै न फल जाहि॥ पाव क पोषपुष्ट होइ॥ बिन पाव क मु
रझाइ॥ ४॥ तुरसी पाव क कहीकौ पावतौ। पाव क कही पाव
त सो कब जलदि राखि। सो बेली सूकि जर न ६॥ जाप
न धरता है लगै। पाव तब घेन बेलि। तुरसी धरतै अ
धर होइ। तब करै आकास के नि ७ ज बधरते बेली बि
छुरि के रैआका सोगवन। तुरसी तब या बेलि कूं दाह
दहै न दहन ८ सो सनदी कूं पारे वा ऊपरि न हि कोय
सुरति बेलि लागूं तगी। कब ऊं न बिछुरे सोइ॥ ९ तुरसी
धरते बिछुरि के गगन मे करे निवास। तब बेली फूले
फले। छूट्टै हिवारा मास १० तुरसी आतम बेलरी जर
बासनां अनंत। सा जरनिय टि निरमूर हों हि तब क हू फ
लला गंत ११ तुरसी ना बेली सुके आदि जु ऐ फल चारि
सा तीन निग्रथ बसु जु ये ते तु हं मा रहै धारि १२ अरथ
धरम अरु को म फल गरथ कामी नर पांहि। तुरसी चतु
र्थ मुक्ति फल। सा हि हंस हि न तो चुगा है १३ तुरसी मु
क्ति फल का रनै सम जु झ न त्यागे काम॥ अरथ अनरथ
तौ त के तत्व पायो आरां म॥ तुरसी यह मह मोक्षि फल
साहि नगन हि लै नीले न हां हि॥ अगम गत क बऊ न पाव
ई जो अनंत मुनि जांहि॥ १४॥ इति श्री प्रश्न॥ १८॥ अथ ग्यान की
परिकरन॥ तुरसी अमित अग्यान यह। जहां आपा पर
को ग्यांन॥ सुपन ऊ जीव जानै नही। तहां केऐस हांना न
॥ १॥ आपा कं विरक हर गिनै। वर आपा समझाइ॥ तुरसी
यह विपरीत जहां। तहां अग्यांन कहाइ॥ २॥ तुरसी कहु
कहां ईतौ। ना हि है तो कछु बलोइ। अग्यानी अरु अथकी
गति अनदी होइ॥ ३॥ जो बहुरे मघ ते कोऊ। बरने हिन

नुयज्ञाइ॥ सो तुरसी मानै नहीं सुगध तहांही जाइ॥ चौपई॥
सुगधनकी गति ऐही जोइ जे ही गति गाडरकी होइ॥ घेर
लोक परी नहां जाइ॥ सकल परी तिहिं दहे अरसइ॥
माइ॥ अस्ति बस्त सति करि गनै॥ सति असति करि
लिय॥ तुरसी अैसे मुढह्नौ कोसमझावन दयप॥ नलीक
हत मानै बुरी सैसवचन गिनैतुछ॥ तुरसी ता अग्यानर्त
कहीए नाही कुछ॥५॥ निरवृरति मारगनारु चै॥ प्रवृति सु
अति प्रेर तुरसी अैसे मुढको॥ नही निज सुष सुपने दृष्टि॥
नृवरति सु परिपक्व रिगिनै॥ प्रवृरति सुषप्रवान त्रि
ससवह्निस मझा वृतिहो इ धरमकी हांनि॥७॥ माया नन
न मुदित होइ॥ राम भजन तअलसाइ॥ तुरसी यह गति मुढ
की॥ हम देषी क्यो पाइ॥८॥ तुछ-नान जाए मुदित होइ
तुछ अलानै सोइ॥ मुरछि मुरछि धरपरिपरै मरे अप
नी रोइ॥ अैसी वौछी बुधिको॥ कोटि करै जे कोइ॥ तुरसी
ता हिर दासको॥ परसन कबहु न होइ॥९॥ कोडी दीए
षुसी होइ॥ कोडी लीए सोइ॥ तुरसी अति लड्डु पित होइ
ता सूं नन डक कोइ॥१०॥ जाए मागआए हरषाजा नर
मति यह होइ॥ दुषसुष केदरि यामे॥ बुडे उबारे सोइ॥
११॥ तुरसी यहे अग्यान मत त्रिसो सो प्रवांनि॥ जहा यह
तहां सेवै नहीं॥ परपद रसे पदचां निरश॥ आत्म अनात्म
की सुधि सार बहिकोइ॥ तुरसी यह अग्यान मत॥ अग
टरूप जुगजोइ॥४॥ चौपई॥ तुरसी आत्म र विवृत ऐक
अनात्म घटवृत सु अनेक॥ तिनैनि को भिनि भावन
जानै॥ यह अग्यान स बसंत बषांनै॥५॥ साषी॥ तुरसी आ
त्मअभित अपारहै॥ तिना वृत सो देह॥ तिनै भिनकै एक
ही गिनै॥ भ्रूगता की मति ऐह॥६॥ तुरसी कहै भ्रम भ्रम
रैतो हि का कहुं॥ आतप अबुधी जी वा अपनो रूप
बिसारि कै॥ आन रूप रुचि कीव॥७॥ आतप विषेस
चि मांनि कै॥ हास्यौ हरि सुष सिंध॥ ता तै आवागवन
तो हि॥ बार बार होइ अंध॥८॥ बिरिबरि जामै मरै अत
प देह सुष मांनि॥ तुरसी यहै देहीजु है॥ करम नहीं की॥
मांनि॥९॥ अपने रिप आपनजनै॥ फिरि करै तिनो सूं
नेह॥ तुरसी ता तै उषमांनि मो॥ उपजे विनसे देह॥१०॥ जू सं
तत निनो जिनो भ करी मांडे गेह॥ तुरसी तहां हेम प्रेम

रे ऐसे सें नमिदे ह॥२२॥चौ॥ तुरसी दे ही संत ति माही॥
ग्यांनी मिलि के लिक रंहो॥ ज्यूं नुयंगकिण आया सुष
मां डकी बेग मांने सुष॥२३॥सा॥ उपरी का सुष करि लीया
अग्यान तान पाइ॥ ज्यूं मृग मिथ्या मांनि जल फिरि फिरि न
ट का घाइ॥२४॥ ध्यांन धरत अग्यांन नर॥ नैनै नैन पट लाइ॥
नैन नि पट लागे रहे मन बहि गया कि याइ॥ मामन की मन
ही न कूं सोधी नांहि न काइ॥ तुरसी ऐसे ध्यांन में॥ ति जऊ
न त्रिभवन राइ॥२५॥ तुरसी ध्यांन अग्यांन को ऐसो सो प्रवांनि
ज्यूं अनंत बगम छीतके॥ होइ हो इनरम जु आंनि॥२६॥ तुरसी अ
हरि अनंत का मन बाह रि कट गछी ति॥ होइ दिषावे लो
क कूं यह अग्यांनी की रीति॥२७॥ तुरसी अग्यांन अनंत है ज्यूं
मरीच को पांन॥ आगें ही आगें दिषी॥ बिना बिचार ग्यांन॥२८॥
तुरसी अग्यांन अनंत है॥ कहां लों बरनों सोइ॥ जीव ब्रह्म बि
चित्र है॥ कोरिका जु आगत सोइ॥२९॥चौपई॥ तुरसी सुछि
म ग्रस्त अस्थूल॥ अग्यांन आदि दीनों यह सूल॥ या अग्यां
न की सीवां सोइ॥ तधे ग्यांनी जोगी कोइ॥३०॥ जाग्रत सुपन
सुषोपति जावंत॥ इन मांहे सारा मनु ताबंत॥ तुरसी तावंत
है अग्यांना॥ ता आगें तुर आत्मग्यांन॥३१॥सा॥ तुरसी ताव
न इष्ट अग्यांन यह॥ हो नाहि न कहूं मार॥ तावत हम ड्य पाई
या॥ अब हे गया कि नार॥३२॥३३॥३४॥ ग्यांन दृष्ट को
पर कारना॥ तुरसी जिनके होइ॥ सो कोजी रूपी मन॥ तिन है अ
म म को वनकूं म रहि पेठे को कंजन॥ उपदेस ए अग्यांन
न रकां चेर षस मांना॥ तुरसी फाटे इष कूं का आवे सोइ
ग्यांन॥३५॥ ह ध जसन करि हि जनों के जु न लोक तमार तुर
सी वहि हि के बुरा घाटाह धर्म वार॥ अलप समकि अ
समकि अनं ना र हो ता समझि भांति॥ तुरसी मो समके नही
ताके समको दिन राति॥ ब्रह्मादिक रिषि मुनि हंस॥ वे आ
ई दे हि उपदेस॥ तुरसी मु ढमति हीन को॥ मन न होइ प्रवेस॥
जो चतुरानन चतुर मुष॥ समकावे सु ग्यांन॥ तुरसी तऊ
नि म्रख न हि छूटन मांडे कोन ध॥ ग्यांन दृष्ट आत्मा को दि
रदे बडो कठोर॥ साधु बरषे रामरस॥ अऊ न भीजे कोर॥
ग्यांन दृष्ट आत्मा को॥ हिरदो बडो पषांन॥ कोटि जतन को
ऊ करे॥ पैको ही न भिदे ग्यांन॥ चौपई॥ काहि एक बूक
बुकरि मांने॥ अपने मन मुख ही कूं मांने॥ तुर

कौंग्यांनकहासुनाऐ।होइसुग्यान।५।काया किमूरनग्यांनि
नतो।कैसुनलोआपांना।तुरसीवहहिचिकाबुराफाटाइ
४।अग्यांन।६।ग्यांनीसूंग्यांनी।मिलो।मिलेपरानसुषहोइफ्तु
मीश्रीकुसमझाऽईऐ।तौमांनिजयमतिसोइ।१।तुरसीश्रै
सिनगिमुनिनही।सोहिनसांनअग्यांन।सोमूरिषसमफैान
हीमंननकोसुग्यांन।१२।कामनिकेमारेनयहिकराचिनप
सेग्यांना।तुरसीमासानहकाबकरिनचैसेप्रान।१३।हैमो
खिपरआपसूं।पोंऔरकहीऐकौन।प्रकतिसुभावछुटत
नही।होइरहापांनीलोन।तोकोकमंतसमझावईतास
निमाहैंगेन।तुरसीऐसेसुगधसूं।पाहिरहीऐसुषमौन।१४।
जबहामाहरिधरमसूं।सबकैहैसकोतसबसाआपश्र
पसूंबेतनहि।काकूंलागेकरमश्रैसेअपनअग्यांननरहे
करमीवसरम।तुरसीतिनहिघानीऐ।सोहैहिनिपटनरम
।१५।साकोदेहीसूंममत।अनिकरूपांही।सोकछुसिकि
हौऐनही।हिबंधनमांही।तातमातसुतवितबंनता।लयछि
रहानहीं।सोसबमोछिकहावतैसरमारतमांही।१६।
रतगुनमांहीरविश्रेष्ठेतमगुनचूरानांहि।सतगुनसूंपरचे
नही।कैहैहमतुरयपदमांहि।१७।जातहीमावनरदेसोक
नमहिमांन।कैसेसुपनमेंसोइकरिहोइरहाभलतान
सुषपतिसूंपरचेनही।पतमोकोपवांन।तुरसीपायोतुरी
पद।कैयतनलतनअग्यांन।१८।सोइगाहोइअरमीआनमे
ह।रिऐगुरग्यांनसूं।ग्यांनहीमेंअभिमांन।तुरसीसोकसिट
रिए।१९।चोपई।जाकोकूंईस्वरसाबयनो।ताहिश्रुतीस्वर
ताकरिमांने।मामतीककेऐमतजोइ।तुरसीकैसेसमझे
सोइ।२०।मामतीकनरकीग्रुवांनी।तिन्हंहमश्रैसीकहिजा
नी।तुरसीन्हसेवरकेफूलो।मकरिनीकेनफलबदसि
मूल।२१।साषी।तुरसीकोटिषचुमटतैपडितऐकोजान
जोपहिगुनिनिजधरमकौ।लोपकैरेश्रपांनं।तुरसीसाअ
ग्यांनकौ।पटिबोनफलजांन।२२।कोकहतकीकोकुन
तकी।मिलिमेलिहैबात।तुरसीकहीतोकामयोसुन
रिदेसिरात।२३।चोपई।कोकहतकीकोकुनतकील्यावैजु
तहांकोसाथिमिलावै।तुरसीअपनेस्वारथकाजे।ताका
कपटनाकैरेनिलाज।२४।साषी।तुकुतपसात्युबुधितु
छतनमांहिबैको।ताहिमहिमनीजसोंफिरैदम्मत
निजपदकीनासतकरैकछेइडीयाग्यांन वो०

५३५

तो का जनकोइ है अजान कमाई केलीहे अथ करतत्र
निगान तुरसी कुवहे नीको देतगान तत्र ग्यान [illegible]
तुरसी मनतकू मारे कवन सो कोधाले घागजोदासा
[illegible] तासू बचे बनाइ पहले माया त्यागि
है नवाहे नागे भाइ तुरसी सो फिरि बांकुरे तो बजी
[illegible] कैसे मिलाचढाई है धरबतकुपरि
[illegible] ग्राइआका मसू कसे हिमे सबजोइ तुरसी आप
[illegible] मिलोके मे लुइ कहा चेकोन पहले विषयात्य
[illegible] जो फिरि नया आटेनोन नास्तीक निजधरम
के तो पकरे आपान अैसे अधमनि कोब चन नैकेन
[illegible] दोइ चारि मासी कही दोइ चारि के हे पद
के देह मक्ह अनने फुरी तमजानी [illegible] दमसमियांन
को नही दमभानेसब गम अैसा ओर कहिको नेह जाकू
[illegible] तुरसी जानेतु गति सतलूक नकाये जाहि तुरसी
इहि मति बहि गई बजा जिमकी नदि मांझि [illegible] नदी
सु माग दिताय पवना इ तेमि तनमानि जायी वर्कू तुरसी आप
[illegible] फूदहीमरेट पलित आपनी पलितना माहि तुरसी
अैसी पतिगा [illegible] प्रचुपहबाव्यां नाहि [illegible] प्रचुपह चानि
म कामही बिन रतन छिगुर मान नास्तीक मतधारि नरब
[illegible] आयान बांधकू की मेटा मनो करे का
[illegible] नास्तीक नर कोद रस नतोन माखि बद [illegible]
[illegible] जीवसी वकी मोह सुधि सारस मकेनही
[illegible] आनंद करके गये सो गम ताय
[illegible] आसमत को कू नाबोय [illegible] उपसु
[illegible] गुमान तुरसी सब यहे [illegible]
[illegible] मो ना धरा [illegible] ना नकोय
[illegible] अमर जग धरे माहि नपसव रहो उराइ तुरसी
[illegible] नहीं बिन गुर ग्यान न पाइ [illegible]
कोटि [illegible] दान तुरसी तनमन नको लिमस मिटेन बिन गु
[illegible] जिबस्त नवपाई राज बनजिया मेहाइ वि
न जिया रपान वेहा तुरसी लहे नको इ [illegible] सीमन जन
[illegible] नसमाइ [illegible] तेरसी चौपित आसदउ
जियार हाइ [illegible] नदीपन कलिपवन अनदिन चलेआ
डे तुरसी [illegible] नकहि सो दीप मवेते अवेद [illegible] जोइ

ग्यान को करि तन माहि विश्राम तुरसी तेबे न तपाई
परापरी धन धाम॥१६॥ चौ० ॥ अविद्या न मम सोवन का जो सो
प को करे हलाला॥ तुरसी ता फिर होइ न मोरी बिन तम
ग तनये मुक्ति सुनो ही॥१७॥ अध्यात्म पैन बिलउन मांन हम सुने
लिसुख लिपुरानो तास्त्र मांहि कही ज्युं सो छिउ पाइ सु
॥१८॥ चौपई तुरसी मोक्ष दौ तेन के कारनी विवेक तो ग्यान
साधारन ग्यान बिना हठ तजनी जेह फोल बादी ज्ञानी
बसो इ॥१९॥ भाषी त्याग बेद चंद्र जुग मही जिते कर्म धर्म
ध तुरसी तिन कू कहि शू ग्यान तत्र अनम्र साथ॥२०॥ अग
म्यागो दावरी लोक को तीरथ थान तुरसी साधु जन नि के
तीरथ गुरु ग्यान॥२१॥ [illegible]
[illegible] मुख सिन ता तसे नाम तुरसी नहीं [illegible] करत पावन
पा [illegible] म॥२१॥ ग्यान गंग मंजन करत हरत पाप बिप [illegible]
तुरसी आतम अमल होय [illegible] ग्यान गंगा
जन करे काया कासी बासो भूजे आतम देव कू तुरसी सो
न दास॥२४॥ मन को मल हरे तप करि तन को [illegible]
तुरसी हरे सत संग [illegible] ग्यान सरोवर न्हाइ॥२५॥ आप गुनि मल
मन मही तन मंजेमि राइ तुरसी मल न रहित [illegible] ग्या
न सरोवर न्हाइ॥२६॥ ग्यान नीर मांही सदा [illegible] बसोइ
तुरसी तब मन सुचि होइ पाप न रहै कोइ॥२७॥ [illegible] घटे
आपा मिटे [illegible] मन ते सोइ तुरसी [illegible] ग्यान सो जाम
धि श्री माही॥२८॥ तुरसी [illegible] ग्यान आम
धि दैसे आत्मा [illegible] ॥२९॥ [illegible] मिटे या
तन को मन [illegible] तुरसी [illegible] ग्यान
[illegible] ॥३०॥ तुरसी आतम ग्यान के [illegible]
[illegible]
[illegible] तुरस
[illegible] ग्यान के [illegible]
ग्यान के परस ते पावन होइ सो तुरसी [illegible]
[illegible] छिन में
होइ [illegible] तुरसी [illegible]
न॥३४॥ ग्यान में पूरन संत [illegible] के दास
[illegible] तुरसी [illegible] सुधा को [illegible]
दान करै [illegible] ग्यानी [illegible]

सो कहै बाग्र लन न होइ अलिंतउपानपती रघ्यकीएदान तुर
साउपहरन को मुरख लायो ग्यान २७ जो कोन ग्यान उदितहो
हीसो कोन रोग मिटै तो तुरसी मान अमान सो फिरिफिरि आ
वत २८ सो गमें ना वन नाव नगा माव नस सके ग्यान । ग्यान वो
हसी आवै सो होइ निरोगी ग्यान २९ तुरसी जिनके ग्यान बरी
जी अय पने ही नर थिर रहै जाइ उपमुषके दरीयाव के तिरि जुग
एक न मोइ ३० निरे सुमार सु ग्यान नगे ससमन आसमि टाइ
रसी तिसु रूपहै सके न को नरमाइ ३१ जिन नरकीयो आर
सी ग्यान मुसक को नाइ तुरसी तिन नर उदसनयो जो तिस
रूपी आइ ३२ ग्यान मुसक को लायके अमल नकीयो मनग्रा
नात्रसी नर आउस नयो तहां प्रगटे पद ज्ञान ३३ अदरि
ग्यान उदित नयो गति मयो मारग मान तुरसी जाति तुसा
सकी पूछै सुबड आग्यान ३४ अष्ट ध्यान पारस मिले तब
काया तिजु होइ तुरसी यह रस फाब जिन नर मग तिन जोए
सो ३५ हरणं आसरम के मान ते तिन ननि कसे जान तुर
सी ते ब्रीस सो रोसो रतार को ग्यान ३६ सोरतोर की रसा रू
तं घस कतन मजीवा तुरसी ग्यान हुब ये तो ग्यान कहाक
थि कीवन ३७ अनु रे सा तिपै नफल कमीन सूं सन तिपै नदेह
तुरसी ग्यान जिन सोइ आहे रहै मलोह ३८ तुरसी ज्यून जनीर
मे भूक साधि मुष आइ सूं ग्यानी या देह मे कहैने मात्र
आंहि ३९ देही के उष मुष निमे तिपतनक बऊ होइ तुर
सी या संसार मे ग्यानी कहीं ही सोइ ४० तुरसी अपनी इच्छा
उ तिच ले आपनी इच्छा पीर पर इच्छा मे ना परे ग्यानी ग
हिर गंभीर ४१ अब ने नन कं और रंगे तो ग्यानी ना नि
कोन उ बढ़े सुख को कै तुरसी ते थ नमानि ४२ मानि ले
मन ने सु न ग्यानी गुन गल तो न तुरसी अकल रूवा रहे त
नहे कस्य आस्थान ४३ ग्यानी के सावन नही बधि कै बाएक तन मार
तुरसी सुमन नागहि रसा लि तिय वको सु हार ४४ जो कब
ग्यानी सो ताजि सो तुरसी इहि भाइ ज्यों कूरमी उदध की त
कत्सह नसु जाइ ४५ सोपई सम्ता सुतंत्री रहे अडोल गहे सु
द्दि हरु ग्यान अमोल सुख इच्छ फल न किन नु चैरे बैन तुरसी
ते ग्यानी के विदे न ४६ सो ग्यानी आसन तिआप मुषकरे
नक बऊ सो होइ और रक की हद्द्यान नही रह्यो अमल तन हो
इ ४७ सोई रहे हिसडब तदेन नको न कूरम लोंनु छिप्यार

हैं आनै। हम त्रै से हम कूं को जांनै। तुरसी यूं कव कुतर नांनै॥
धप मांधी चित्र सरपडरतावृत्त ७॥ ज्ञावत तिमर सौ होइ तुर
सी दीपग नै देहो ही तिमर मिटे डर जाइ ७॥ ज्ञावृत तिमप्या जगत
को मिम्यापई तु मांहि। तुरसी तावृत ग्यानको तुरिया रो तुरसी
हि ८॥ आपा नीकूं जगत रो प्रा हयो सिंधमसा जातुरसी ग्यानी
जन कूं गोपद कैजे न मांन ५॥ आपानी कू जगतप्रकालरूप
दरसा हो ग्यांनी कूं सुषरूप है जहां न त्रास त्रिसाहू ॥ जैसे आ
नापर तै नहीं दोषि पयांनको सीहा तुरसी षग अकोरा कर सुष
मे सदा अबीह १२॥ सुष मे सदा अबीह । षग मृतके लिक
हीं यूं ग्यांनी जगत कूं जगत न व्यापै नांहीं । २ तुरसी जग
हीं मांही रूप नो जुग हां मे दिचर हीं ३ जुग ने पलो नही
के शुक मरति बैका पाइए २ घोर ई ज्ञावृत कांम कोधरिप
कायो फुनि व्यापई मोहअरु माया । तुरसी ज्ञावृतपान
न होइ है अग्यांन जांने मव कोइ ४॥ सारी तुरसी दुःषसुष
डनी को चित मे चित नांहि । चित नो नर आदरसमे आ
आ इ दरसा हि ४ ग्यांनी कूं मो से नहीं । घर प्रकृति को ध्यान
तुरसी अपने रूप मे हु वार है गलतां न ८ जिन अपने
औगुन तजे। नरतन धरे उगाइ। तुरसी गो के संग है दोषपरो
नाइ ७ तुरसी औगुन और को आनि एनउर मांहि जो पी
कू आडनां सो पहलें गाहि ए नांहि ४८ दोषग्यांनी मोहाइ
दाचि गाई को झे सो तुरसी ग्यांनी नहीं है अग्यांनी सोहाइ
निरबैरी होइ सकल ने सत्रमा गदो द वि मराइ तुरसी तक
नी सही। कवक कालन षाइ ९॥ तुरसी कालन आइ
का कैसा ग्यांनी को मोहा त्रा कौ दोषन थिररहि नई
निरदोषी होइ १ ॥ संत्र मित्र सब कै विषै लीनत चन
इ अरू देत आसदि पई है नडरा मा बाह। १ अस्तुतन नं
सक तेमें यूं सब घट मध राम जा हरिनी लत नरि
पाली को ऊ न गांम द्र ३ ऐ निरदोषी ताहि रहै नि
निह कां मा इत रहीं वृ निउ लन न पसौ। तुरसी मोछि
॥ ६५॥ ब्रह्म हि व्यापक होइ रह्या। अरधन रधम
रसी रोषि दसौ दिसा। ब्रह्म बिन औरन आनंद ५॥
सत्त लिइ पन मे र रह्या जु व्यापक। होइ यूं ग्यांनी
आपा जानै मोह इद ६ तुरसी आपा माहीं आपा द
[illegible] नै प्रमकी ए कौ तन नाहि तन

पहला गुन गा तब सुषकन्दा। नहीं तो न कुल गोना। तुलसी ज
न रहे दैहीह। बुद्ध ग्यान को जान ७०। जान प्रकास ग्यान को
हर तन आ [illegible] है सि। तुलसी जब जाइ चै न होइ तब श्रेमी
श्री [illegible] ७१। [illegible] तुलसी साधु सुम्र त पुरान सब को सिधांत
यह ग्यानी पेख [illegible] ताकी ज्ञान पावे को आइ तब जीव कु ड:
न ज्ञान ७२। तुलसी कहै सुने का नांही निपटे सीत ले आनंद
होइ मांही मोले ग्यानी की पन हि मे [illegible] तो बा
सुद्धि या रहो हइ ७३ तुलसी बाता न कले घने पढ़ि न गुनी
आतंस को गिनी [illegible] न कुं न को तु जो हइ [illegible] बा
न दीसे सो हइ ।७४। न २४० । १४५ । ग्यानी आरि विष्न । ।
तुलसी [illegible] बा जई आ ग्यानी घट मो हइ ग्यानी मन [illegible]
न हइ कर ही थिर रहो हइ। तुलसी न या कुन बोले नहीं ग्यानी ए
गुन मांनी आ ग्यानी याकी घर [illegible] फो स्यो करै जु कान।
२। तुलसी बुद्धि रि न आवई सु मित्र गिन के बैन। या जु गोमे
ग्यानी मांही आर आ ग्यानी ऐन। तुलसी ग्यानी जन की पा
[illegible] सन बनाये रहु सत्र मित्र सम सम रहे सम कंचन म
सय हथ। कोइ क बाइ क मन को सुपन जरि तक सोइ
तुलसी आ न [illegible] पद को ग्यानी ए मत जोइ। तुलसी यह
आप नो यह पास्को यह मित्र बैरी रहे यह बिनाग बिस
[illegible] ग्यानी [illegible] न दीदे [illegible] बाचक बसे हि सो धिके
[illegible] मांही है लीन आ भव जान जु सो हइ रसा ग्यानी ए मत
वीन ४। ग्यानी जन की पारि या ए नहीं मे जान दोष न का
[illegible] के सो निरदोस भिन्न रता। तुनि निंदा अस्तुति तु
कंचन का चुस मांनी तुलसी के नमि ताइ को दोह रसा आ
बान ७। तुलसी आ त्म ग्यान यह ग्यानी धरु पुनि सोइ ज
डप सुव आदि तु फल का गती रहीन ही को हइ ।८। त्रिब
ताप आ ग्यान बिना कि रही तो हपहार तुलसी तंघि को कु
मांस के कि मि करि पके विचार ।९। मार ग तुलसी तीनों ताप
दुःख अ मिटि तो ग्यान बिन न मिक रहु को क जाप तप साधे
तीरथ नवे ।१०। न २५० । १४। त्रिवधि ताप विष्न । तुलसी
तीनों ताप के लिंग चिह्न बोप्याइ लिंग लिंग हम कहै तते
कोक संसनी नवेल नाइ [illegible] जे दृष्टि बियोग तो अनिष्ट
के आगा मा। तुलसी यह मन की बिथा आधि व्याधि को नाम
२ जु रादिक न नांना जु दुष वेदे ही हियह देह। तुलसी यह त

न की विधा। व्याधि कसो वो है ३। सि प्रसरपमत्रादिको मे
व्यापि ई जु मांहि फिरव तलोंबि दस्यो कहै। न्हत नाय ए अ
छि॥ तुसी देवादिक न की। नापकसो दे ए है। असन ह घासी
न जुग छा मव गेरपी डा दे है॥ तुरसी तीनो नापादिक नस
ने न नहो इ जवारे। न गति जो गन रूप जे के बेराग बिचार
ध्रनारू मे नाइपन को मिपट करन परहा रो ऐ कहै अ के तै
ग्यान हे भंत निबरनो संसार ७॥ तुरसी ग्यान बिना जु ऐ इ कर
तीनो ताप। ग्यान नजे देर बिर जा नि नो हैं हिं निपट निहपाप
८॥ सुषसाधन ग्यान ही है जोर महा इकसो इ॥ तुरसी त्रिबि
धि इप दहन को साधक है सबको इ॥ ए॥ २२ ८ ए॥ १४२॥
ग्यान की मपत मो मिका विध्यान॥ तुरसी सोई ग्यान सुप
जपजे को ए मो मिका जपा इ॥ न्हू वो कयै रन चड मारग न
बिर जे जाइ। जोई जोई सो मिका सिधि हो इ त्यूं त्यूं आगे ब
रनो सो इ॥ तुरसी मसुछ अ तुसरे तो मह जे सब सिधि है इ॥
२॥ सोर वाय ह सो मिका जु ग्यान अग्यानी गुर बिना तुरसी
न हो इ प्रवांन सब को सिधांत यह ३॥ साधी के सतगुर के सा
स्त्र कि संत समागम न ग्यान के इच्छ वे पुनि ते यह सो मिक
जु ग्यान॥ तुरसी श्रवसि जु रूप जे और जपाइन अंत नानस
वाचा कम नां यह निसचे निर बांन ४॥ तुरसी ते सो मिका के
कहा नाम बिधि सो इ॥ भिन्न भिन्न निसंग्या तानि ए सो आरंभ
जु को इ॥ ५॥ २२ ८ ५॥ १४३॥ सुजन्त्र मिका बिधांन॥ तुर
प्रथम सो मिका यह सु मन्त्र नाम तु सो इ॥ मोई सिधि न्है स
हीन की मने मने सिधि हो इ १॥ मने मने जु बढ़ाइ रो यह हो इ
अवा आंन तुरसी सुन इ अघा जु यह ताप दे पे मन कु ग्यान २॥
सी सुन इ अघा जु यह हो ती जअ कृपा रा ३॥ बढ़ ए नवडि च ते
सो पुर कैर महा इ न्ह ३॥ गुर की कृपा प्रसाद ते सूरब पुनि सह
तुरसी सुभ च्छ नु देहो इ ३॥ अवसि मव इ हि का ३॥ सुन इ अघा
तपन से र छ ती ए चंद तो दृह प्रथम भो मिका ग्यान की॥
सी आहि जु यह ५॥ मित्यां वस्त को जहां नि नि बिबेकन प
तुर ग म्ह त्प के सुपन की रू चि ने ग हो वे आ ३॥ तुरसी छि
त अन ते और क सा तो क छु ब नां ३ यह सुभ इ अवा ग्य
न्हो॥ सतगुर दि इ दिया इ ६॥ तुरसी यावा तो क को जो ग बिर
होइ जाहि बक्त रिसुपन क भांस्त्वे। जा गुरत की को आंहि ७
सी ग्यान निरूप जे जा का कु के मांहि॥ प्रथम ग्यान सो मि

ह [illegible] तिनो [illegible] तुरसी अंतःकरन [illegible] करनो निज
[illegible] बिकार [illegible] रनो [illegible] रहे। बिबेक बास मांहि
[illegible] न मरघा [illegible] ना। मा मकू [illegible] बिचार यह सुभ
[illegible] संत [illegible] सार ॥ [illegible] माधन आदि सब
[illegible] तुरसी [illegible] का ग्यांन। को यह सु [illegible]
[illegible] तुरसी सुन [illegible] का यह [illegible] अंतःकरन
[illegible] सु बिचार नो आर [illegible] को इ [illegible]
[illegible] मत गुरसार ने आह क रि बि
[illegible] तुरसी [illegible] निरधार ई [illegible] न राषे कोइ
[illegible] बिचार मैं [illegible] तुरसी सुक [illegible]
[illegible] तुरसी [illegible] बिघर जे करतय
[illegible] बिचार [illegible] ग्यांन की [illegible] सार
[illegible] मनन [illegible] निरधार सब फल सद
[illegible] तुरसी [illegible] कहो लोक दो अ
[illegible] देह [illegible] पर मात्मा बिबेक मी [illegible]
[illegible] बिचार [illegible] यह सु बिचार [illegible]
[illegible] बरने ह [illegible]
[illegible] श्रवन मनन [illegible] बिदि ध्यासन ग
[illegible] ध्यांन [illegible] रहे [illegible] न मोन सनो
[illegible] जहां [illegible] जड [illegible] बिसरि मन वि
[illegible] तुरसी [illegible] कार
[illegible] अवस्था नदे [illegible] मांहि ॥ २ [illegible]
[illegible] चित [illegible] गरे
[illegible] तुरसी [illegible] मिलता
[illegible] मान [illegible] संत [illegible] नतो ह
[illegible] तुरसी [illegible] जाइ म
[illegible] मन मे आइ [illegible] कार [illegible]
[illegible] जोगी माई जान
[illegible] तुरसी [illegible] साधन [illegible] जो इ मा
[illegible] अवस्था [illegible] जो [illegible] जगुरु
[illegible] ध्यान [illegible] तहां [illegible]
[illegible]
तुरसी [illegible] का [illegible] की प्राप
[illegible] मन [illegible] सिं धसि

मिलिएक होंइ जिन देरहे कोऊ नाहि। सत्ता पति सो मिकाय हि
त्रबरनी बेदनि माहि॥ सो सुमाध सब ही कहे ही फल रूप
सो आहि॥१॥ तुलसी यह चतुरथ सुबसि धि जिए सि धि सब
कोहोइ कहा अमिली पिछली कहा॥ जैसे रहे न कोइ जो
बन मुक्ति ऊपाइ॥ अब सि जु या मैं सोइ मनसा बाचा क
रमना॥ सत कहे सब कोइ ख्यात चतुरथ सो मि कामे सु
पनवृत संसार तुरसी मिथ्या जासही दरध पट उन हाराध॥
॥२८६॥४७॥ सेन्याति सोमिका बिभाग॥ तुरसी सदि का
लपसमाधि कौ करत कठ अभ्यास निरहित लपस
नदेहोइ मन हृति कोकरि नास ऐहा पंचम सो मिकाय
हत्नाम असंसक्ति नासो जाउरमाहि तदेत नहीं नादा सनक
मैदास॥१॥२८७॥४८॥ पदारथा अवनी सोमिका बि
धाना॥ यह अभ्यास पक जो ते हिद हिद तर सोइ ता जोस पति
न बिस्मरन होइ॥ अभ्यास न रहई कोइ सुख पति तो नास
नही रहि जाइ जोगी सोइ तुरसी पदारथ अनावृती छठी
सोमि यह जोइ॥१॥२८८॥४९॥ सपतमी तुरस्य गा सो
मिका बिभाग॥ कहा अपनी कहा औरते जा समाधि ते सोइ
जगायाजो ग नही जगावई जु कोइ॥ वह रूप यहत लय यह अ
नूछेत नान सब पोइ तु छिपे ही हो इरसा तुरी सोमिय
हजोइ॥१ चोपई॥ तुरसी ... समानी ... मिलन
सिध कौ तु पानी तुरी सोमिकी ए सहनानी रही न कोऊ
अप हचानी॥ सा ही पहचान जु कोऊ नारही जई बिसर
जनेदह अस्थल आदि तीनो जुए तुरी सोमिका ए हा॥
॥२८९॥५०॥ बिग्यान को परिकरन॥ गुरउपदेस ते पइ
एकु निसुनि बेदपुरान तुरसी ए सो ग्यान है आतम देह बि
ग्यान॥ आतम माही कपजे अपने सहजे सुभाइ तुरसी आ
कू फूलतो देत दिषाई आइ॥ चोपई॥ जड नरप कथि
त मुनि जान जानमत ही लेउ वे जु ग्यान तुरसी सो बिसेष
बिग्यान॥ सो रसक ल अपनो उनमान रछन हि आदि
रस जु आही॥ परगट गुपत ति कुपुर माही भजन अरू
रहती ए आते सब बेद पुरानन गाए॥ सा तुरसी गडी
अगनि लौ पुनि सुरातन सोइ गुरतनक जतनते प्रगट

पलमें होइ पा तुरसी परलै होवै पलमहां पुनि पुरा
इ जन्म जनम का संचितहि पेन रहै छिपाइ ८ तुरसी दीपके
जोरे ज्यंद नदेत अन्त होइ अधियार ॥ ९ तिस जाम मिटे नहीं
बिन रवि के उंच्यार १० तुरसी जप तप तीरथ नारिका सबि
सुन्यां न सम्मान बिग्यान मान उर नदिं जोए म कल निसा
बिती मान ॥ तुरसी निसा तुला रहै जनम करम की सोइ
जब लग रवि से ष बिग्यान को जान प्रकासित होइ १२ जसो
रवि बिन हार निसा नहीं जहां लगि बिग्यान तुरसी तहां आपा
लन ही यह निश्चै निरबांन १३ तुरसी बरनाश्रम को जा
नन देत नदिषाइ १४ चौ बरणाश्रम की गणणां जावत
आत्म ग्यान न देन ही तावत १ तुरसी ज्यूं अकास के तारे
दिन रवि दीसे न्यारे न्यारे १ ऐसा ही तुरसी बरणाश्रम को
जहां लों गणणां होइ तहां लों सो वां जगत की आगे तो
लखोइ २ परपंच कं जा धा जु करि गण पांगां तो जु कोइ
तुरसी बरणाश्रम की सो बधक कब कुन होइ ३ चौ
जावत गणणां कै रुपंना तावत निज सें सेर तजो नी
तुरसी तसे होइ बिती मांन तब कही ए के बल बिग्यान
॥ ४ तुरसी इस बिग्यान की निज निर चै करि एह स
ब घट देषि आत्मा देषनां हो देह ५ तुरसी ज्यूं दरपन में मुष
देषी ए दरपन जा से नाहि ज्यूं नै रपरी ए क आत्मा नासे मा
सि ही मांहि ६ जहां लों संसे बिरपने जे नैनि को आत्मा
ता तुरसी रूप न तर न ही तहां बिग्यान प्रकास ७ तुरसी क
हूं है तमा को ज्यूं इन्ना को जहां प्रीति जु का सूं के
रु बुहास कल घट मांहि ८ चौ तुरसी ब्रह्म मकल में
राजे ज्यूं चंदा जल घट निबिराजे यह रूप यह तल ए को ज
ओर याके तन कुन ही तहां जोर ९ ॥ तुरसी राग रहित
हो मकुर हल ज्ञौ निरद तजो छोम कहे कर सो कछु नां परै
निरा करन नि जांम तहां गए ही गम परै नः ही कहन सुकां
म ऐसो छिम तल बिग्यान पद संतनि को आराम २ तुरसी
सं को भी या ग्यान के बिग्यान कुंके नाहि अधिकारी हम नां
सुने संतनि के मत मांहि २२ तुरसी अधिकारी सोई या बि
ग्यान को सोइ जानत नाही काति मां कोम क्रोध की सोइ
२३ जब लग को ग्यान जुनत नबध्य पादि हूति जई हरि यूं
बिग्यान नाए जुगन रम मिटे जो ब्रह्म हिर सो जु मूरि २४

त्र ६॥१५१॥ बुधि को परिकरण॥ जहां दरपन नाम मे तहां
बिसमि को प्रति बिंब॥ तुरसी जहां जहां मुख बुधि तहां ता
मो बिंद॥ अमल बुधि उनदित होइ॥ नामी नाम मंकारि
तुरसी सा अमल नाम हि दरसै देख सुमारि २॥ ह्वै बेक वंती बु
धि यूं जूं भिबाव को नीरा तुरसी दरसै आतमा॥ नाम बिन न
सूधी रहै॥ विबेक वंती बुधि यूं जूं तरंग को नाम॥ तुरसी सतगुर
निस निबरत ही सो बुधि बिबेक विबेक को मधा॥ रहत तम की बुधि को
साधु सेइ के सब बुधि बदलै को होइ सो बुधि सु बुधि जो बिन दरसन
निमचे नाम जु होइ५॥ तुरसी बुधि सु बुधि जो अरथ जु ऐव द॥
माँहि देव को टि जतन को करै सो या को अरथ॥ तुरसी आत्म बु
सतगुर सासत्र संत जन सब मिलि आखिया॥ तुरसी आत्म बुधि यह जा
धि सईं तब नासै बुधि देह ७॥ ब्रह्म अवधारे रहै॥ रहै न घट अनव
सं प्रणाम बुधि एक॥ [illegible] बिसरि होइ अनेक॥ तुरसी
एक बुधि जल तरंग लौं॥ बिसरि होइ अनेक॥ बिबेक रहत नव
तहां बिबेक नहिं है अलित अबिबेक एक बिबेक को न की
भिकी जु बुधि जल तरंग तन मांना॥ तुरसी बिबेक की नकी॥ और औ
अचल आकास समान ९॥ थिर नहीं दधि धूं धुंलौं॥ बन एको नाम १०॥
रप्रणाम॥ तुरसी यह सात्वकी बुधि जू बन एको नाम॥ तुरसी यह
एक ही बन छिमो दसा॥ एक ही जल सब ध्यान॥ चौपई॥ तुरसी घन
सात्वकी बुधि जहां नहीं नाना ग्यान १२॥ तामसी मत॥ जहां जल
बदले॥ को कै रहत॥ बुद्धि तामसी तामसी मत॥ धरम॥ रसल॥ बु
एक एक ही ब्रह्म पेखै सात्वकी बुधि को धरम॥ समान॥ तत्र भि
छिबि कल न चित्त चपलता॥ तन मन तत्वा समान॥ जहां रजतम की बु
पद रसै नहीं॥ निरमल स्वरूप निज जानै॥ जहां रिबि रांमन सा सहीं कोट
छिहै॥ तव तुलि घट सोइ॥ जहां रिबि रांमन सत बुधी को ऊ
कै रस कोइ॥ रजतम बुधी जगत सब॥ सत बुधी को ऊ धार ऊ
साध॥ तुरसी सत मे सुष घना॥ रजतम जीर बिषाद॥ लोइ॥ तुरसी स
तम बुधी जगत सब॥ मन ऊ अंधीयारी लोइ॥ तुरसी सतमकी जु
भिप्रका सब ते संत सुबधी जोइ२॥ तुरसी सतमकी जु॥ बाधक से
बुधि जा का रूकै होइ निरणहूं आश्रम मे लै॥ बिन सत बु
ई सोइ साधक कै हैं मा सत्रक हैं से बे पु कारे लो इ॥ जा घट अहं अग
भिन साधक को ऊ अरथ है तो ही जो इ२६॥ सु पच कह हा वे
न की भ्रम रूप बुधि हो॥ तुरसी या संसार मै सुपच कह हावे तुर
सो इ२७॥ जन म सुपच कहीए नहीं जो न सा बुधि होइ तुर

सानंदी को परिकरन ॥ सानंदी की जुगति यहै जो मिजोयम
तुरसी सूं जल अल मिले फुनि वह जु रहे होइ मांहि ॥ चौई
नामि धहि मम वे मिति के अपानो नांगन सावे अरु
ग लियां ना होइ सानंदी जुगति ए जो हा साधे तुरसी अ
तसुप लसुषा पती ॥ ना अरु हो श्री राम २ तन त्व पद मिति ए क
वा रहे न हहि मां मन ॥ छ हा देह छिदेह कहा ते मे ए ल
न मांहि ॥ तुरसी परस पूमि विरहे ॥ पंचम पद के मांहि ये तुरसी
लगा मिध मिलै ॥ सिधि सिनि ता के मांहि ॥ स्वामी से
व ए के रूवा रूजा को कमांहि ॥ तुरसी ध्यान ता धोइ को मिलि
गयो सकल विभेदा ॥ तैसे ए कहां रहे करिहैत को तुछेद
६ तुरसी है तन दरसई जहां हरि नयो कांम क्रोध कुजु पायो
गयो रसोन ता को नाम ॥ तो मन तिया तिदर्सा सहता जिन गये
नक्षि के धाम ॥ मो हि हियो फुटि रसू वो रहि गयो ए कराम ॥
तुरसी राम अरूरा मजल पो सु है व तहां मांहि ॥ पानी पानी न पान
लो होइ रहै मिलि मांहि ६ ॥ तुरसी पाला गलि पांनी मिल्यो
अरु आटे मिलि गयो लोन ॥ स्वामी सेवग मिलि एक ह्वा
चाहि बिभोहे कोन ॥ ७ ॥ तुरसी जीव समांनो सीव में ॥ सी जी
व के मांहि ॥ जो तुरसी वोए के नया रूजा को कमांहि ॥ ८ ॥ इ
६ ॥ १५४ ॥ जोग को परिकरन ॥ श्री गुर पद पंकज सुमिरि
सुमिरं सिध साध ॥ तुरसी ता परसाद तें ॥ बरनौं जोग अग
ध ॥ १ ॥ जा जोन तें मुक्ति है ॥ मन को मिटे बिकार ॥ तुरसी मन
ऊ मिलै सुष सिंधु मैं कार २ ॥ रोम रोम आनंद हो इस
ब सब बिति मरन साइ तुरसी जो तिज ग मगे ॥ जा जोग सूं सुनप
॥ जप तप आदि सकल धरम सा सा छिमा छिमरे को त्यो तुर
सी जोग ग्यान सम ॥ सो सिधि सहज होइ ४ ॥ नांहि न मघ मह
छि को हठ जोग के समांन ॥ तुरसी साधि क कदा सत
गुर किरपा निधांन ५ ॥ हठ जोग अरु सांषि मत जहां सुमार
ग जांन ॥ तुरसी ता में हरी के हठ जोग ही प्रवांन ६ ॥ हठ जोग
चार है ॥ हठ जोग में सु लीन हठ जोग में हूवा रहे ॥ तुर
सी लसी न ७ ॥ तुरसी हठ जोग तरसे वृते घाली को ज
न जाइ जो कब फल पावे नही तो ग्याम सुष बिलसाइ ८ ॥
त जु मो छि माया स्वरग सुष साध कहे सब कोइ तुरसी
गत रसे वृते ए क तो होइ ही होइ ९ ॥ ये जिन की आरुढ म
त रहे मुक्ति मन गाउ ते सुरग सुष बांछे नही तो मिले सह

न
५४०

जैसें सोइ। १०। स्वरग मांहि क के सुपन स्यों कौं परे ज
जोग्यासा महा मुक्ति का। तुरसी अति न स्याहि। ।चौ
धरम कांम फल तीनां। नहीं जगत होइ रह्या जनम लीन
गी सैं का कैरे ज्या कै मन लागो तिऊ परे ११ साषी
अपि सिधि होइ। ना वै होइ उ सुष। तुरसी जोगाभ्यास
न मोहि रे सुष १२ अनंत सिध आगे न पा। साषि साषि
तुरसी सो मन बाइ कौं। कोइ न लेऊ न तन स्याइ १३ तु
न मन बाइ कौं। बिधि ही बिघन तन न होइ। तुरसी जोग
ही आगे रहे ही इस मोहि १४ ना वै षोजि पुरान सब। तो स
सब मांहि। तुरसी मन बसि करन कौं अभ्यास सो
१५ कृत न चितन होइ नहीं। चितन चित बिनास। तुरसी जो
ति जुहि कहि आत्म अभ्यास १६ सब सुष जोगाभ्यास में
कहे सुष नांहि। तातें तुरसी जुगति गहि। कहि आ
न मांहि १७ तुरसी तन में मन में पवन। पवन में सुरति म
अभ्यास अभ्यास करि जो गजुगति सजाइ १८ कोइ
आरोगत न रोग ही क न मिटि जाइ। तुरसी मन मन
आनंद बांन समाइ १९ जोग जगत जोगाभ्यास में। नी मन
आइ तिन के मन हि जु कांमना। सकैं न छिकै चलाइ २०
रत जोगाभ्यास में जोगी जन दिन राति। तुरसी तिन के म
सकै को कल्याति २१ चौपई तुरसी जोगी जुग सुष
स्वपन न रहे चैनां ही। सावधान कौ रहै जांही अप
जोगाभ्यास जु सांही २२ साषी तुरसी जोगाभ्यास भि नी
न आनंद पाइ। मन इंद्री बसि करन कौं सतगुर दई बता
२३ के मन थिर रहै नांम में। के थिर जोगाभ्यास। के थिर
तसंग नम्य। के थिर सतगुर प्यास। के थिर रहै जु ग्यान में
के थिर फिरै उदास। तुरसी थिर रहै वो चाहे। तो न रषिर
बिस्वास २४ चौपई तुरसी सब ही मत साचा जा स
करे बिचार। पै बिनसी घ जोग के न पाइ बेगिन
थिर रहै सु आइ २५ साषी तुरसी कब कु साधे जोग कूं
बडे छिटकाइ ऐसें मन थिर रहै नहीं बिन कीये
पाइ २६ कोइ अग्या गा रहे तो ही जोग सिधि होइ
सी सरजीन के फल नहि लागे कोइ २७ स्तू को क
हे समहि लेते आवे साइ। तुरसी साची मूल बिन स्ही
होइ ऐसें मन थांमै रे के सै ऊकरे कोइ जै

तुरसी जोग जुगति जांनी । तिन के मन थिर ह्वै रहै आनी ॥
जोग जुगति सूरे है अचेता । तिन के भ्रम न मोपे चेता ॥
जांनी नहीं जोग जुगति जोग पंथ मे आइ । तुरसी तिन के म
न को जोग कहो क्यो जात । आवत होइ आवे नहीं जनेप ।
जोग ज्यास भावत थांन मुकाम को है देवन को थास ॥
२९ अत्र चपल बुधि बसि नहीं । आपत विरलो रोग ग्रसन मा
बन बहो फिरै मन बंछित बहु भोग । इडी तिको आदर अ
तिन दिन मे बसे द रोग । तुरसी एआचरन जहां तहां न स
धे छिन जोग ३१ चोपई नेन रूप रस अवनां नाद । नासा गंध
रसनां वक बाद । पुनि मनां रस स्वे चित धरै । इंडी कांम चो
की करै । तुरसी ऐ ओ लों न रूद हूति एह । तौ लौं न जोग सधे
ति हि देह ३२ सा । जावत जोग सधे नहीं । तावत रुद इति ता न
बहु धांनां बहु सोवनां । अरु मन माया म्हे लीन ३४ ज्ञान
न सधि आवे नहीं । मिटत न दुष पियास । तुरसी नव लग
जोग की बादि करत नर आस ३५ जनन उठि बाहरि कूं च्रमे
जुगत नांनां सुधा सावत जो ग कहि है । तुरसी सधे न चुरा
री बिपरीति मिटे बिनां अरु बिनं मन जो एथार । तुरसी क्षा
रा जोग की । को साधिबे सधी ३७ चोपई रिस बही रस फी वि
कै रे जोग साधनां परि चितधरै । भांडे मरन धरन गुन साथ
तुरसी जोग सधे तन काइ ३८ जोग साधनां तन बनि आ
वे मब ऐनां नां रस मिटावे । मन चित सर धान उपजे सोइ त
ब साधे सोई सिधि होइ ३९ सा । तुरसी मरछा री निदिन दै
सा नां नो जोग साहि साधते सरम होइ । फिर पनि आवे रोग
४० चोपई भोग कपेज अ जुगति की रोग जुगति न्र ज्ञाहि बीस
रि मो ऐ । तातें भाव धान होइ सोइ अ जुगति पंथ न प करे वे
र ४१ नां श्रति आतुरतां अन माहि । सन जोग पंथ लागत
इ तुरसी सनें सनै सिधि होइ । सो सत्र संत पुकारै सोइ ४२
साध कहै सो सत्र पुनि आपे । रिष मुनि सिध सकुल न श्रं सा
पे प्रथम बाहि जचिता त्यागे । ता न ल जोग मांझ चित
लागै ४३ जोग करन की जो उर धारे । तो सुष सुध रमी देस
बिचारे । त हांअ चल हो रवे से पांनी । तो जोग साधनां हो
इ मन मानी ४४ सा । कवन जोग कैसी जु बिधि साधे सा
धि कजान । तुरसी दास सो जोग को जिनि जिनि करे बषांन

॥ षट साधै षट पर है ॥ षट कै हो तै ग्यांन ॥ तुरसी सम
ता ष टमही परचै ताको ग्यान ॥ ॥ प्रथम जोग आ
संन जोह ॥ आसन साधि सरल कै देह ॥ अलप आहार
जुगति सूं लेय ॥ स्वामी जा सुषन दे ॥ पथि जो जन सूं
ये प्रीति ॥ अपथि की छाडै सब रीति ॥ पथि जो जन नै सिधि
होइ जोग ॥ अपथि उपजे नाना रोग ॥ साषी ॥ अति अप
थि अहार सूं ब्याधि प्रबल होइ जाइ ॥ तुरसी नर आतुर सबु
रोग उदै होइ आइ ॥ ॥ ऐसे रोग उतपन होइ साधक है जु
सोइ ॥ कै हूं रबले करम सूं ॥ कै अति आहार सूं होइ ॥ चौ
॥ अति अहार आलस उपजावै ॥ निंद्रा न षसप बधतआ
वै ॥ तुरसी प्रांण प्रबल होइ आई ॥ सम प्राजो गल हाकसारै
॥ साषी ॥ तुरसी जोग साधनां होइ तब ॥ तब आसंक रै इक
न अन जल सो तन सबद को ॥ मन मसाधै मन ॥ ॥ करै नि
चौरन नीद को ॥ सन मनै हठ नांहि ॥ तुरसी जोग जुगति रत
सो कहि जुग सांहि ॥ ॥ जुगति जुगति अन आचरै जुगति
ही आचवै नीर ॥ तुरसी संग अजुगति को कबहु न करै
सधीर ॥ ॥ नां अतिहसेन बोलई डोलै नीच ॥ ॥ अति नांहि
तुरसी थिर होइ उर मही रहै ध्यांन ही मांहि ॥ ॥ नबहि जोग
फल पाई रो ॥ जो सजमर है सरीर ॥ जुगति जुगति अन आच
रै जुगति ही आचवै नीर ॥ ॥ अधिक न निंद्रा अधिक सो
अधिक न बोलै बीर ॥ तुरसी संग अजुगति को कबहु न
करै सधीर ॥ ॥ चौ ॥ अधिक न तुयान अधिक अहार अ
धिक न नींद्र अधिक उचार ॥ अधिक करम न परिहरै नरंग
अधिक न करै काहू को संग ॥ सब अधिक त्यागि थिर है
जा सरूप रहजो गहि साधै सोइ ॥ प ॥ १ ॥ प ॥ आस
न विधान ॥ ॥ प्रथम आसन साधै संत जैसे ॥ ॥ हीगु
रदेव बतायो मंत ॥ बिन ही आसन बाइ हिरदै तुरसी अ
स्थिर नहीं धरै ॥ बिन ही हिरदै रहि उगावै ॥ अतिहै
थर मांझ समावै ॥ ॥ जिहि आसन पक साधै जोग ॥ तुरसी
अति उपजै तन हां रोग ॥ ॥ आसन पक न एकबाहिरा
प्रणायां म करै कोइ ॥ तुरसी अति आतुर पर सिधि का
न होइ ॥ चौ ॥ प्रथम जो गी आसन करै तुनी षट
करम विधि न धरै ॥ नेम्र न्यास करै षट मास ॥ अमल नहो
इ तन रोग विनास ॥ ॥ धिम जिसे जुबाइ तुरसी

घननपरहिकाइ।४ साषी॥ विघनको रूपरिसके जो आ न
सनपकहोइ तुरसी भावु विरुलनघरहो तनदेष्याकोइ
॥५॥ चोपाई तिगरी रूपरिआसनजाह वैठे प्रा विधिसो
नबनाहा कनकरंडलौं सुधसरीर। रोषैलौंचन रूमधि
धीर॥ यह सिधासन ऐसे करै। सोजोगी जांमैं नही मरै॥ मु
क्तिद्वार केषुलहि कपाट॥ तुरसीपरसे जोतिलिलाट॥६
सा॥ सिधासन वैगारहो इतवै हल नपाव। आजसनि
द्रानूप छिपा॥ नहिं अतिगति नपजावो सीतलतानैभष्रवन
सुषिरा॥ हरि सुमरिन का चाव। तुरसी ऐसे संतकौं सम र
नकरैसंताप॥७ चोपई सबआसनसिवकी एहक्षरतातें
अतिमेष्ठनेंजुसार। सिधासन पदमासनसोइ। तुरसी साध
सिधि नुहोइ॥ साषी॥ पद्मासनकी विधिजुगति जे
ज्ञानकरिपाइ। तेकेंजानिनपरधेरनासादिष्टिलगाइ
॥९॥ नासादिष्टिलगाइके आसन अचल होइ आइ जो
गुरउपदेसी जुगति विधिसें जुगतिकराइ॥१०॥ आवपह
रअमपजैसौ आसन रहे अतीत॥ तुरसी तबनतजा
निए रूपा आसनजीत॥११॥ चोपई आसनपकनरेएक
होइकाया होहि आरोगअंगअंग सबाया॥ तबसत
करि प्राणायांम॥ तुरसी सिधि होंइ सबकांम॥१२॥१४
२२॥ पद्॥ प्राणायाम विधान॥ तुरसी प्राणायांकौ क
रिबौ बिधिसन सोइ। पापसें हनकहेरे तनमन
अमलजुहोइ॥ तुरसी प्राणायामसैं छिकतिहोइ समान
मनमनसाकौरथपकै पापवृंदविलीमांन॥ सिधिहो
इतनआतमा अनहद धुरे निसान॥ ऐसे प्राणायामकूं
तजेसबडअपान॥ तुरसी यह गतिजांनिकै प्राणयाम
करितेय। बारबार बिपरजैबुधि रविससिपवनपरेह
॥१५॥ चोपाई ससिसिनाडी बिधिबोयाइ बोतप्रानपवु
मांपुराय॥ तुरसी कुंनककरेचकसोइ। करैजुगतिमन
गम लषोइ॥ साषी॥ बास नांजुमिटविना करहिं बाहकौ
प्यास॥ तुरसी चितनगाहेरैमन आसा केपास प्रथमे
त्याग बास नांडुतीहकूरे प्राणायांम एकत्याग एक उ
तटीए॥ तुरसी सिधि होहि कांम॥७॥ प्राणायाम आवस
मनकी वृतिउतलटाइ॥ तुरसी मन बसिकरनकौं हेयह
उतमउपाइ॥८॥ अधम मध्यम उत्तम प्राणायामकौ भेद॥

५७१म

तुरसी बिधि बिधि बिधि साधै होय मनन तू ति को भेद ५
चौबीस प्राणायाम नहीं न प्रकार ॥ अथ मंत्र बिधि मंत्र तत्त सार मा
ला हार मंत्र तत्त्व ग्रहण सम के जानी स यह सब जो ७
मिलाये जगदीस ॥ सो जोगी सुर नर कहाईस ॥ प्राणायाम सों
सुनि सार ॥ नाम बिधि के मंत्र विचार ॥ बोले सोहं बिन ही बा
त ॥ तुरसी सांचे मिथ्या न याह ॥ प्राणायाम करै अब को
आ साधन हतन जुगति सू सोह ॥ सो प्राणायाम संग अस
र तुरसी साधे भव ते पार ॥ ७ ॥ मिश्र न प्राणायाम सू सोह
नाम बिधि मंत्र बीज न होइ ॥ तुरसी सो प्राणायाम करै ना
जोगी कछु संचै पै ॥ [illegible]
[illegible] ॥ बोले मे भिन्न मंत्र हो ॥ सोई मंत्र
तुरसी तुरसी नथी जुगति सू ॥ प्रगटे जो तिम कारि
॥ तुरसी जो मनसा से ॥ उनै मंत्र ऐ सार ॥ एक बोले सो
ह्य क जपे होइ जीव ॥ तुरसी एक मंत्र है मात्रा
एक मात्रा लीन ॥ उनै मंत्र कू जपै जीव होइ जो तिमे ली
न ॥ सो हं सो है निदिन सब काहू के होइ ॥ जन तुर
सी पूरण बिना मुक्ति न पावै कोइ ॥ सोहं सोहं होइ नि
सि भास अग्र है जाइ ॥ तुरसी सो सोहं सबद ॥ ७ चरि अ
नि अति अगह ॥ [illegible] नारि सोहं जपत ॥ हो हि पाप
नि नम्र ॥ तुरसी जो ति जग मगे ॥ बाजे अनहद तूर ॥ अ
नहद अन हद घुरे ॥ जागे जो ति अपार ॥ मास ॥ तुरसी अनि
अन हद जपत ॥ सोहं हं मा जाप ॥ सोहं हं माजाप कू
जप आति सत सोह ॥ तुरसी सोहं हंसा मांहि हंसा सोहं
सोह ॥ बोले सोहं सा हं सब दसु मांहि ॥ ना निकवल ते
पूजे अहं सा सोहं जब टि के ॥ चारे ॥ नानिकं वां ते थिर
होसि बिचारे ॥ परम जो ति सू ध्यावै ध्यान ॥ तुरसी ए अज
पा प्रवान ॥ सा धीरज ना कर ॥ बिन काया मे रक्षा
रमु निहोइ ॥ तुरसी सब साध कहे ॥ फुनि अजपा बिधि
सोह ॥ तुरसी प्राणायाम मे ॥ मन कू संग्रह तत सोह ॥ बि
धि बिधि के बरन्यो जुह माहू के बिरला कोइ ॥ अ
सन प्राणायाम का ॥ कछु कछु कीया बिचार ॥ तुरसी
अपो बिधि जुगति सू ॥ बरनो प्रत्याहार ॥ [illegible]
[illegible] ॥ तुरसी प्रत्याहार बिन मनोह
मनोरथ सोइ निम्न न होइ मिटै नहीं ॥ कोटि करै जो

कोइ ॥१॥ चौपई बारबार इहंजा अरु मेन नातुलट्यो जु जोगी
जन पहि आरंभता वृथा जु करावै जाव तमनय केत्र
होइ आवै ॥ सुरसी करत गति निरमाहाइं डीनिकं
आनेजुतें जो हिरदा कंवल मैं यकतर कै रैसा होइ
आतिर नवति रे ॥ जहां तहां इंडी आरुपान जनमते होइ
के कैरैं गवन । तहां तहां ते जोगी हेरै । सुरसी हरि अपने
वसि करै ॥४॥ अपने अपने रस कूं नांहि । विषर मनक
रिकरि जु भतां हि । सुरस हलाहल करि जुदि पावै गहि
गुरगमां ते लावै ॥५॥ इन्द्री विअस्त पस्यानां देय अपनी
फिर निआप मैं लेय । यूं जु सरब पा जोगी करै धूर लफ
पिपछिम मन धरै ॥६॥ सुरसी जब ऐसे मन आइ इंडी
निग्रहत रहै वह राइ । तब तलै जोग धारना होइ सो सब
संत कहै सब कोइ ॥७॥२४६॥२५॥धारना॥धिआ
न ॥ धारना जु ऐसे करै । जोग जुगति थिर होइ । राम रूप
निरष्यो करै । भासा अग्र जु सोइ ॥ चौपई इतने तकी वि
तवनि जु निवारै । चित हि जु त्रिकुटी का अधारै । जैसे नैन
बिचि नासा ध्यांन । तहां निरखै निज पद वांन २ सुर
सी निज हिरदे सथान र अथवा ज्यू मधि धरै जु ध्यान म
न अचल करि राषो कही । परम जोति प्रापति है इतही
३ जहां धरी ए तहां मन नटेरै । परम जोति पद निरषो कै
तब धारना परपक जु जानि । ता आगे सुध ध्यान बषानि
४ सो पी धारना जु परपक सो ए । ध्यान सहज ही लगि जाइ सुर
सी प्रगट पेषो ए । परम जोति यह काय ॥५॥२५७॥२६॥
॥ धार विधांन ॥ कोटि जुगि के कोए कोइ जप तप कछ दो
सोइ ध्यांन मोल नहीं कलाके पलटै तरनहीं होइ १ सुर
सी एक घरी अरधकु परी । लगै सु पहु ससत ध्यांन । ता पुनि
के अमर कु सम ही नहीं तीरथ ह्नान दान २ । आदि अंति आ
गोपहर जे रहै ध्यान ही समाइ । अहि मौ गन जोगीन की ॥
कोपै बरनी जाइ ३ । चौपई जोगी ध्यान धरै जु ऐसे जैसे वि
षम री जुकाम निलै से । राति दिवं कत हि न बिसारै यूं जु
न ध्यान धनी को धारै ॥१॥ कीट भृंग ही सु ध्यावै चंद चकौ
र लौ ध्यान लगावै सुरसी ऐसा को जे होइ अगम ध्यान
कही ऐ सो इय ॥ सम्हि आसन सम्हि का र विचारै सम ग्रीवा
करि ध्यान जु धारै । नासा अग्र नैन चित दे है परम जोति

५४२

परचा करि लेय ॥ अब बाहिर दे तुम्हारै ध्यान मन पवनो
उलटा करि आनो अस्थम पंचलो बैठे सोइ ॥ तुरसी गगन गह
तो सोइ ॥ साखी ॥ मधुरस सुखम कैन ही ॥ सब दरसी सुन
ही कान ॥ तुरसी जा जानि तब यह मन उनमनि ध्यान
॥ निसरि जाइ रस रूप को ॥ घ्रान गंध बिलीमान ॥ तुरसी
तुमन लगे को ॥ संत कहै सहनान ॥ ... निबावके नी
रहै ॥ तुरसी तरगन होइ ॥ ध्यान जब पातब जानीए तब
जो सो रहै मन सोइ ॥ चार बिचार नक्रपने को कहिदे
ओ नी ॥ भिन्न तन स्वांन मग रहै ॥ तुरसी ध्यान प्रावन ॥ चौ
॥ तुरसी रिदा कंवल के मांही ॥ जो मन मई जगदी सरहाहि
ता थ्यान में रहै बूंद होइ ॥ जैसे की चपषा न जु सोइ ॥ साखी
तुरसी की चपषान तो मन रहै रिद थिर होइ ॥ अप्रमवस
घट सकों न नहि तन से सति सोइ ॥ तुरसी यह ध्यान च
कसा ॥ मन गुर के पर साद ॥ आगे बरनो अति अमल पं
थन परम समाधि ॥ ध्यान रूप अंग ॥ ६ ॥ अथ समाधि अंग ॥ तु
रसी परम समाधि सुख ॥ तब पाप मिटै सोइ ॥ तब पूरन स
द गुरू को परसाद परगट होइ ॥ चौ ॥ जन मजन मसा
धि अरु जोग समाधि ॥ जु आया होइ असाध ॥ २ ॥ तुरसी जब स
माधि सुख पावै ॥ जोर कहे सो मो मति नावै ॥ २ ॥ तुरसी जे रे
है सो नाही ॥ साधि जोग सिधि नो खिना ही ॥ परम समाधि
न उपजे मांही ॥ या को अरण रसो ही आहि ॥ तुरसी ध्या
न कार नायक होइ आवै ॥ ... चित को बिछेप मिटावे
॥ काम हर रहे दुहराइ ॥ तब समाधि जतन न होइ आइ ॥ सा
खी ॥ सत सम्मावे चंद में ॥ चंद सूर के मांहि ॥ तुरसी जब स
माधि सुख ॥ तब उनमें यक होइ जाहि ॥ चौ ॥ तुरसी जे
इ कहे इन मांही ॥ भार छिद सब मि सरस ही ॥ जो बसी बक
नेका होइ ॥ यह समाधि साधू कहे सोइ ॥ साखी ॥ रबिसस
जै उलटि को पछिम अस्त हो हि आइ ॥ सूर बिदसा नक
गावहि ॥ चक्र रिन कवठ जाइ ॥ अ मिलि मिलि मिलि बी
सुरेखि मिलि बिछि तु मन मनाइ ॥ तुरसी तब काया की छा
या नहीं दरसाइ ॥ चौ ॥ उलटि स्वास होइ नहि स्वास ॥
न रहै गुरु भसहि होइ निवास ॥ मन मधुकर की पर होइ छिन
गा ॥ तब समाधि कहि यह अंग ॥ मन मधुकर की पर
फरि जा नही ॥ सोहं सोहं सबद होइ मांही ॥ जब रम गुरा मेरै है यू

द्रोशज्यूं मुषक पीपार सोइ॥५॥ साषी॥ ज्यूं मुषक पाश सर्पाय
ह बसुरूका नजाहीं ज्यूं पूं नमन पंगसोऊ सुषमे रहसमाइ
कुरमके अंसरूप मन॥ बिकार नरहि हि दिषाइ॥ तुरसी जब रे
से जुहरपर मसमाधिक हाइ॥७॥ चौपई॥ तुरसी ज्यूं ज्ञानउ
लहि मावी घृतमुतु मिलि उकार न बिछराई॥ ज्यूं मन ग्रा
समें मिलि जाइ॥ तबसमाधिक्रहि मिलि जाइ॥११॥ साषी॥ तुर
सी परमसमाधियह॥ ज्ञाताके नहि होइ॥ बडभागी निज से त
जन पर सुष बिलसे सोइ॥१२॥ इति॥१६॥ साधि सिद्धि त
नको पृरिकरम॥ तुरसी मो छिपद ज्ञानको मसासुमघरो
होइ हठजोग अरु सांषिमत॥ सुके बिरला कोइ॥१॥ हठजोगी
अरु सांषिमत॥ भने अमोलिकबाट॥ तुरसी मोछिपद ज्ञानके
गुरू दिषाए घाट॥२॥ हठजोग अरु सांषिमत॥ जैसे पंथ ए राज
तुरसी मनमन गहज्ञानकूं॥ संतन बांधा पाज॥ चौपई॥ मुक्तिजै
नके मारग होइ॥ सांषिजोग साधु कहे सोइ॥ तुरसी तिन बिधि
बिधि कै जाने॥ तब जन मुक्ति पद पहिचाने॥४॥ साषी॥ तुरसी ग्या
न दृष्टि करि॥ जो कब पूरन होइ॥ अध्यातम जाने नहीं तो
कोन करी एसोइ॥५॥ तुरसी अध्यातम बिनां॥ ऐसे लागे तम्पं
नाए कूपथ को पंथिया॥ जिडिन सके असमान॥६॥ तुरसी अ
ध्यातम अरु ग्यांन में॥ एक अंग घट जो॥ एक परहे फल एक है
हनरी॥ तो कैसे पछिडाइ॥७॥ एक ठौर है उडन को॥ एक च
लन को नाइ॥ जैसे असे हि जो पषि॥ तो कब ऊधता न पाइ
॥८॥ जैसे बांह बल पैरि एपरि रहेई एसा॥ ज्ञानै माहि एकही
न होइ॥ तो रही एरवार॥९॥ तुरसी सिद्धि होइ सही सं जामें न
ही संदेह॥ जो गुनि नै प्रापति होइ जैसे अमल मसलै॥१०॥ इस
बिहि थन लषबटा॥ जैसे सजोग जु आहि॥ केते पार भन भए
किते जु होत जांहि॥ यह है जुगति बूझी बलिभि जोगी तेई अ
हि॥ तुरसी ग्यांन कूतेई जुन जैसे पंथ पर चांहि॥११॥ तुरसी इन
न ने पंथ तिका ज्ञान जोग का सोइ॥ फल दोए को महसो छि
दे मिलि मति जानो कोइ॥१२॥ ज्यूं दोक जैने नां जुए॥ सायैब
ल जुए कज्यूं जु ग्यांन अरु जोग को है ए कही बबेक
तुरसी ग्यांन बिहंगवत॥ जोग पपील तव न आंहि॥ बिरजाइ
वह क्रम क्रम को फल निहा॥ चौ जुकरो हि॥१४॥ तुरसी फल
मोछि मारग जो महा जोग अरु ग्यांन॥ इन दोउ नै निसिधि
जए तो पाई परमसथान॥१५॥ चौपई॥ तुरसी साषिजोग ये सार

तुलसी निकी सारचो बिचारि दृष्टि करि नुप जे आतमा माहि
मुक्ति मै अस देसा नाहि ॥ ६ ॥ नाम मे सांषि बिहम वंत
मेघराज तुलसी जोग मधीन । वंत जोसा ध्याहे इब कऊ बार
॥ ७ ॥ सेतु तुलसी जोग जु साध्यानाहि । ताकु न सांषिकू जु अस
आंही जु नौ । काष्टवट जु बिना ही । बहीबही फिरे दरीया
मोही ॥ ८ ॥ साषी तुलसी साषि जु धरमतत्व । अतित वट होइ आप
सो जु गति जु साधु जु होइ । जो गावडो गनु काह ॥ ९ ॥ तुलसी ब
ऊंग जोग बिन सांषि विगुना जान सांषि बिना जोग ऊरह
आंहि अंध न मान ॥ १० ॥ रूपवन पंछी उडे एक पम चलो
न जा सो जैसे मैं कुं हिन से को तो ही जल ले सिषि पाइ तुलसी
पु मान अरु जोग का मत देषो निरताइ एक से होइ एक होइ
न होसो कैसे का न सराइ ॥ ११ ॥ तुलसी सक्त ससा मत्र निको सु
न त निकु वेसो साइ अरथ इसो ही सार है गे मे साध सिषि से
इ ॥ १२ ॥ अधपग मिल्ति मतो करि निकसि गए फल माहि तुलसी
पाये पर मसुष का बफात से नाहि ॥ १३ ॥ प्यानपंग पगापंष ति
ना अधा सम चषअंध तुलसी जब दोउ ऊमिले ॥ तब क
स्यो का ल न मफंधी तुलसी इन दोऊ बिना जोग न जोगी होइ
पाइ न पामि चष अंधा ऐसा जाने सोइ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥
॥ सु ॥ ॥ तुलसी न तपची सको जा न रअ
जैसा न सम परीनो सुध जामे क जीन आन सांईचरी मू
दु साह मिली कु सा परवान सदर सन मे को कहे इकन
कु न साई जान ॥ १७ ॥ हमधारनी रतो निति प्रकृति पुरष दोह
तुलसी निन क सिके लिषे सांषि प्यानी सोइ ॥ १८ ॥ तुलसी नही
सम नहो न हो बिष से काह जैसे साहि एक रूनही सांषि
ग्यानी सोइ ॥ तुलसी सांषि प्यानी की पा हिमा ते तेही मे जा
न मुल सई देह बिसर कै कहे रसो आत्मा वान ॥ तुलसी
प्रकृति आहे पुरष अभि प्रवान प्रकृति जड चेतन पुर
ष है सांषि पुरवान ॥ तुलसी ते दस जु देक रि जान नही सांष
रतको जु साहि प्रकृति क जो कान क्षेत्र हे पुरष ही हो
इ ॥ २० ॥ तुलसी पुरष जु जाए को आहि जु एस हमान प्रकृति
न जोन हो सब दिन एक समान ॥ २१ ॥ २२ ॥ चि
त कोण रि का ॥ तुलसी चित चित सब को ऊकहे चितहि
न होने कोह मिन चित की आ आपना जा तत्व चित मे
इ ॥ २३ ॥ तुलसी चित चित सब को ऊकहे चित हिन को क जा न

जैसें जतन बिनु नीतीए सोइ लतन को कं ध्यान ॥२॥ तुरसी चित्त बि
न अकुरम प्रि आहि नु यह संसार ॥ तीन लोक बिस्तारि रह्यो ।
कुलन मायह्यारो ॥ चौपई तुरसी चित्त बीज सकल पत्र अकुर ।
यह संसार वृक्ष को मूर ॥ ताहि बिधुंसे यह जु गसोइ ॥ सिंचे नि
ज निरमर जु होइ ॥४॥ साखी तुरसी किते सो हद साधन किते कि
ते अन्तर कहाहि ॥ चित्त जीते ते मुरिखा ति को कछु औरही आहि ॥
॥४॥ तुरसी अमल समाधि सुख महा मुकति निरबांन ॥ लहै चित
जीते बाहरा ॥ कोऊ न पावै जांन ॥६॥ जांन कोऊ पावै नहीं ज
हां निज सरूप निरकार ॥ तुरसी चित वृत्ति से रही ॥ छाडी बोटय
हार ॥७॥ चौपई तुरसी पंडित गुनी बिचारे ॥ चित वृत्ति जीतन
कूप बिचारे ॥ पे जु गति बिना न हीं जीती ॥ ताहाथ्या को गत्ता है
उपाइ ॥ साखी ॥ चित वृत्ति छित्त जोमिका ॥ चित केते भेक्षर म ।
तुरसी लषि बोइ लतने है ॥ कोऊ बिरला जाने मरम ॥८॥ जदपि
प्रथम चित वृत्ति कही ॥ तदपि करम सूं नांहि ॥ तुरसी वरनो
जोमिका ताथी छे औरां हि ॥१०॥ अथ जुग ॥१६॥ चित्त की
चत्तो मिका छिपत च निधांन ॥ तुरसी इडी द्वार होइ यह
चित बाहरि जाह ॥ रज गुन के उदबे है गा तें यह छिप्त च मिक
हा ॥ तुरसी कछु कसुष सुष पुनि कछू पाऐ अपा हो इ यूं
बहेते छुसाक रेहन बिषय न में सोइ २ ॥ चौ ॥ सो वृत्तरे
नम लेपी चित सावृत लेहे न ही उरथिति तुरसी उरथित कूं
तो पावै जो मूरबृत जिय छिम आवे ॥ साषी तुरसी पृछिम
तो बई यह चित अध अग्यान ॥ ऐसे सार ज गुन निका बसा
बसा फिरे आन घि घिर सुनि यर थके गनेन का कू को
नि छिप्त जो मिका जानि यह जहां यहे अचांनि ॥४॥ ज
पर ॥१६॥ मूढ जोमिका बिधांन ॥ तुरसी तामस रूपी चि
त यह निज्ज नैना सोइ ॥ कृत अकृत समझै नहीं ऐसा ऋति
तजल होइ ॥ चौ ॥ युनिती बुरी सरस्त वसर सोई सुभ असुभ
की समझि न कोई ॥ तुरसी तब ऐसा चित होई ॥ महा तामसी
कही ए सोई ॥ सा ॥ तुरसी मूढ जोमिका यहु जहां कृत अ
कृत ग्यांन ॥ निज के समझे नांपरे ही हरदौं लो पबिग्यांन
॥३॥ जुग ॥४०॥ १६८ ॥ बिक्षप्त जो मिका बिधान ॥ चौपई ॥
बिक्षपति जो मिका जब चित आवे ॥ तब ऐसा होइ के जु
दिया वे सुष रुचि दुष देष्यो न सुहाई ॥ तुरसी सोई सोई कै
जु पाइ ॥ रज गुन के सुष न कू जु चाहे ॥ कारि करिपी तजु वे

रनिद्रा है तुरसी यूं जानै नहीं अधारे ई सुष फिरि हौ है फे
र आवी ज्यूं बिष के लड वान पर मिश्री नाई सोह मीठे क
र के दिपाई रे अनि बिरंच निहार श्री दी मुरगादि कनके
चिन वचनके सुषमोइ तुरसी उपसरूप है ५ मति रपती ज्ञो को
हा नाते तुरसी बिश्व नेमिका यह सलोगुनी जु कहाइ आ
डी आगत नेहे रही ब्रह्म जीव बिचि आइ आलपपान अ
नपही सुष उनै निसुष उपजाइ ताहि त्यागेही मुक्ति होइ औ
रन आं नंउपाइ ६ ॥ अथ ॥ एक्छा तीन नेमिका लक्षण बिधि
नाको ॥ ई तुरसी तीन नेमिका माहीं है न चलत अचलसु
हु नाहीं सो है जोगी सोई करै यनहिं त्यागि आगे चित धरै
१ ॥ तुरसी बिधि बिधि के न तै जुगति उपाइ बिचारि जे
निके चित नथिर करै जनतिय तो मिनिवारि २ तुरसी ती
न नेमिका ए उपजावत संसार रे कामु निरोध बिन पुले
न मोछि दरबार ३ ॥ अथ प्रथम ॥ एकामु नेमिका लष
हि आना ॥ एका गृचित करन को उत्मउपाइ जु रहे तुरसी
जुगति जतन नाहि तजि अजुगति को नेहा (चोपई) ताते जो
गी जुगति संबारा अजुगति के नेरे नहीं जाइ तुरसी जुगति
मां कछु थिर होइ यह चित सब कामा कहै सोइ २ आदि अति
म छिन न होय करै जतनटि जतनटिहि टेढे चित धरै तुरसी अंत
हुत अंत रत सोइ रेकादि नां सह सै थिरि होइ ३ ॥ सो ॥ तुरसी
यह चित रहे साधि कामु से होइ मांहि जोया को करै कोऊ
छि नांहि साधना हि ४ तुरसी हदि आर एकानागा रहै राति वस
एकसंत तब जनते कामु होइ यह चित परहरि आन ५
॥ अथ प्रथम ॥ एकामु नेमिका प्रथम समाप्त लिख्यते ॥ तुरसी
एकामु चित नाके आहि जु रहे नान यरस्याइ षम सुष
का चलै नहीं कहु आंन सो समा फल गयारहे ज्यूं चके
र सिसध्यान चाहिय थन सफरी जु जान छिप्र रत त्यागे
प्रान ॥ ॥ अथ पद्य ॥ ॥ निरोध नेमिका लिख्यते ॥ तुरसी
निरोध नेमिका यह तृनत रहन होइ चित्त परा बिरहन पञ्ची
जु लो उठि न सके रतनत्त ॥ तुरसी उड्यो जु ना परै तृन तिग
या पूर्व फाल छूति रहत यह चित नथ्या पाय्या सुष निराल
निरालं सुषपाई या जिन कालगया जु चित छूति रह
न होइ सुसमै पाई पूरन थिति २ प्रथमा आदि पचो छूति
या चित की जु सोइ निरोध नेमिका सिधि ताते इन मैं रहै न

क्रोध निरोध नेमि का चित नेए उपजे परम समाधि तो नर
हत नेद कुरहत रहत मुम कनेउपाधि ॥५॥२४५॥१०४॥
पंच हो नाम बिधान ॥ तुलसी तहं जु कवन को हो नाम मैं
साइ जिनि जिनि प्रगट कहो स्वराव को गयान जु होइ ॥
पूरक चंचन काचे हे यह ॥ तोनो वृतबाजी मंपो नो ॥ तुलसी प्रवी
न हतिय हा चीयो कै रेग ए नौन २ मिथ्या देहादिक न कें
आप मानै सोइ तुलसी विपर जे हुतियह या चित की जु जो
इ बचनयांन ३ तपन होइ छत्त ग्यांन तसो नाहि तुलसी
बिकल पवृतियह या चित की जु ओहि ४ ॥ नीदि जाइ दरीय
व में रहैन सुषिपन धाम ॥ तुलसी तांम स चित वृति निद्रा या
को नांम ॥ जि आगे सुष जो गए दुष्य चो गए देह तुलसी मन
नो मिटै सु निचित की वृति ६ हा देह न पचो वृति निरोध
वृति कचित होइ चित जित जोगी जांनि वृहा जोअे सा है को इ
७ चोपई तुलसी चितं जोगी नया ॥ तादि कंत करनक हुन ही
रहा अजि नि चित कूं सुम्रत जैनें जतन करत आ वैस वेौ
बनें ७ साध तुलसी जा वत चित में चंचल ताद रसाइ साव
त केरो चित को दोजे नही छिद्र काइ ए जावत चित बाह
रि जमैं तावत तुरपद रहि तुलसी आवै न रमहा सो पाविय
द पूरि ए चित मृ ए चित क गुनौ मार कहो इ ॥ तिजाहि तु
लसी आत्म रूप सो इ ॥ रिदा कंवल कै मांहि १ चित चित
स बंधन कह्यो चित चित आ षेबंदी तुलसी पई ए परम सु
म जो चित को होइ छेद २ चित तत सार सावि राट सुं ।हो
नी क पे नि राट तुलसी दास महा मो छिके ॥ को कहि पुल हि
कपाट ३ छिन उहां छिन वहां चहुं दिस चित चंचल चलि
जाइ जा वृत जन के पि तन नहीं रहो अप्यति नर छार ४ चि
त चपल बास नांहि सि फिरै पवन लों सोइ तुलसी सो न लहै
बिना ॥ सिधि कार जन हिहोइ ५ ॥ नलटी ही मैं विगा आत्म
सुष कै मांहि ॥ तुलसी उलटे बाहिरी भ्रमत उहां तहां हि ॥
६ तुलसी जहां तहां अस्थांन तजि चित चंचल चलि जाइ ॥
तहां तहां तें ल्यावई इन्हीं जोग चलोइ ७ चित चला वै दह
को पवं नांत स्की डारि तुलसी कारन चित पवन ना देहि तन
तर कै मारि ८ माली कूंत मुजल बिना ष्ष पालीयह का
तुलसी चित जल स्रू तैसें तो आत्म नंद रसाइ ९ चित नीर
थिर नै ल्छिन थिपत तथनें सत रेंग ॥ तुलसी तत आत्मन नां द

सो
नकोरूप। चौपई मनदिवस संचित ताग्यानं। लावतउ
निकोसंग्यांन। तुरसी लावत है श्रग्याना। समझै को ऊसंतसु
जान। सोधी। जहां लों साधु जगत की। तहां लों ग्यान स्थानं
तुरसीदास श्रागे भये। तऊ हैं हि विलमांन। १। यह चितवे
रलोगये। श्रह बासना बिलाहि। तुरसी प्राण चपलता जो
उरउपजै नाहि। २। प्राण चपलता के मिटे। कौ मिटै बासना
मोह। दऊ मांहि। किऊ घटे। हो चित उदै नहोइ। ३। तुरसी
चित को बीज दोऊ। प्रांन बासना मांहि। इनकी च चलता ति
मिटे। तो चित उपजै नाहि। ४। तुरसी यह रोगवो पदरहे। इ
है जु उत्तम विचार जिनि को निबासना मत। भुसन श्रागनि मे
नार ५। चौपई। बुद्ध श्रगनि बासना जरावे। तब चित थिर
सहजै होइ श्रावे। तुरसी श्रूपव नाप किजाइ। निह तरग
जलदेत दिखाइ। ६। २६। ७। ४। चितजीतन की जुगति
विधांन। तुरसी चित इंद्रिकन कू यह मं। सारत्न ससार। कै त
संतसंग केसा थवां। केसद बस्त विचार। १। चौ। १। प्रथम सुर
इतीए सतसंग। त्रितीए सारासार बस्तश्रग। चतुरथ चितश्रट
कनकू ग्यांन। तुरसी पंचम पवनांप्यांन। २। टेपा चोश्रालेब
नसारा मटन कूं चित हाति हि कार। त्रुरसा श्रारकथा वि
स्तार कथिकथिको ऊबाथे मार। ३। सा। तुरसी कथि
कथिकलपनां मालजुगरूपे कोऊ। चितजीतन कूं जु
गतिमता ऐई जु गि जुगि जाइ। ४। चौ। ४। तुरसी ईई जुगजुग
मांही। चितजीतन कूं जुगतिजु श्राही। जो बरनहि हट टेकें
जुग हाइ। सो चितजीति जगत लै छिनाइ। ५। सा। चौदा हतीनूं
लोक मे श्रोर कूं कै कहो लौ सोइ। तुरसी चितजीतन को जी
यहमतश्रोरन कोइ। ६। तुरसी एपांचो श्रालंबनतजि जो
सो चाहे मन। तस्रमकरि कछ प्रांणीया। नू थबोवैयहत
न। ७। तुरसी करमनिग्रह जु यह संत निदीया दिखाइ। चित
जीतन कूं सुगममत को ऊ जोगी हीन ले कराइ। ७। तुरसी
थमतत्यागिजै जो सो चाहे चित सो प्रानी कनपर है
कू कसकूटैनि त्रा। ए। तुरसी कू कसकूटै नितजु गति बि
नचितउलटावे। सो करदीपग त्यागि। प्रलजत मनै नत्र
जावे। ९। जिहा जतेकू तपपरे डोडनिबेध्यांत्र। श्रेसी
बताजु प्रांतेहो। बिनयह जुगति उपाइ। १०। चितहाथ्य श्रा
वेनहीं हठकरि कीरिप चिजाइ। तुरसी चित सो जीतिहे जि

न।१६।तुरसी आठे नौंन लो होइ रह्यो पद मैं सोइ जिन चि
न सुध कीया आपनो। राग दोष मन न पोइ२॥ चोपई। रागदोष
मन कतरि राखो। मन अरु मन मा उत्तम नखो। तुरसी अमल
आमा प्रकासी। चित सुध न ऐसी मत्ति नासी॥१॥ साषी॥
तुरसी ऐसी मति नहीं अमल आदर एक समान। सामा हे उदित
नो ए निजमरूप निरवांना॥२॥१८५७॥१७३॥ बासना के
परिहरन॥ तुरसी जो लो विविधि बासना। पिंड ब्रह्मंड रही॥ बि॰
भ्राय। तो लौ एक आत्मा न च झिलि मिलि के रहा॥१॥ घट म
ग ब्रह्म एक आत्मा। पर दास न त्रिय गंमा। तुरसी जब पर द्वामिटे
न तो एको निरमां म॥२॥ तुरसी निरंजन मा पुरुष। निरषर निस्ने
द बिबिध बासनां बसि नहो। सा कूं हय्यो बिन दरा॥ तुरसी तीनै को
लोक लौ जीव जंनम बन्न जे जसु दीजा लिमां वृकूं तुदी सुहे स
मनां बंधे ज४॥ तुरसी आपनी आपनी बासनां आइ कीया आ
राम। ताते एक अनंत नया नहीं कुत्ता निरमांम५॥ तुरसी नि
रंजन मा आमां य ह आरंजा व्रन मांहि आपनै रूप हि चित वे
बास नां सू ना मै नां हिं प। बासनां पट लजु फिरि गयो। निज च
सुन परि सोइ। ताते रूप जु आपनौ। निज करि देन होइ।६।
तुरसी जूं तुछ बासरी। राम्या चंद [illegible] ऐसी ड रंग ध बास
नाऐ। मनि को कुपति याइ७॥ बासनां तुम आनि करि
मांनी जुनां हि। तुरसी मिलै उपाधि के काल जाल होइ जाइ।८॥ ए
मन जी वै तौ लो जीवै उरबासनां अनेक। तुरसी मन मृतु भए र क
है एक को एक॥९॥ चोपाई॥ काया कै सो अग्रत पकूरे देही कृमि
जी वत ही मरो। तुरसी जावत मरै न मन तौ लौ ना मिटै बास
नां तन॥१॥ साषी॥ निरमूर न होइ मन को। तब बासनां मिटाइ॥
तुरसी तैरे मिटै नहीं। कसें कसें यह काय॥१॥ जो न पनी जो तो
देष कूं। मह द रिष कूं जोइ। कोटि बरष ता लौं लगी कछे उलहन
सोइ२॥ चोपाई। जावत उगंध बासनां तन मैं रही प्रवेसु कि रिय जु
मन मै। तावत को हि जुसन कच्छु कोइ। तुरसी सिषि का रिज
नही होइ१॥ साषी॥ सहेष दस पांच लो लगै जिन मन मां हि समा
धि। तत्तुं ग्यांन बिन ना मिटै। बिषम बासनां ब्याधि२॥ ता नी
मैं मूता रहे जाइ नतनमनत्याग। तुरसी ज ब जीव जागहि न
ब पहली कहै जागि।३॥ ज्यूं सु षपति मधि सुपन को जागृन
कूं को सोइ। बीज अनूं तर हि बो करे आोम र ह दे सु होइ२। ज्यूं
सरीरे मैं सरीर का रही बासनां मोह। तुरसी तेत व जरह न लजि म

सुनि जल सहित अगनि सेपरत तजि मी है वासना व नोभी ताको
तुरत चेसरु श्रगुनी सेपरत उप्ति सी है वासनाव तास ताश्र
गतु है सो कछु है साइ तुरसी उजन उलटी लय सूं सूं श्र
मन मानां देस २ श्रगनि धूम लौ दिष्ट दस छैये ज्ञान परे
र कपवन मिलावे तुरसी सो पवन ताथै कोई सहा चपल
चितदै सोई ४८ पांणी तुरसी इक सो वेयक जाग ईय काजं
भांजाय फिर सो इ तुरसी त्रिमी वासना नेथे तुजोगी कोइ
४९ चौपई तुरसी जोगी हित लै पवन तैं कु जोगाइ न धैं काजं
नैं जिनके कारज सोत रखाइ कु बधिका सनां राषे घाइ
पुसाय ऐके हे कछै बीतगई ऐ कहै न को श्रासा उरमप
रस के बीज लौं श्रौसर जैहे प्रकास ५१ चौपई श्रौसर श्रौ
र तृष्णा के रोही जब है सहावृक्ष मिल हि तुश्रांही तुरसी सह
वृक बिनसो इ रही चित मांही छांनी होइ ५३ श्राषा तुरसी चि
तनी मिकरी रही वासनां समाइ सो न मूरति विनां फरह
कसे होइ काइ ५४ जोगी जंगम तपसी त्यागि रहे तन जोग
सुरसी मन रस नां छूटै यहे लषो वड रोग ५५ मन के रस वि
षवासनां माधि श्रमांनि उपाधि तुरसी जो लों न छूटही
तो लों न सुष समाधि ५६ चौपई जावत रहत तनकी श्राय
वढि रही विषे सुषन की प्यासा त्यावत ध्यांन लायो कुन
लागे विषे वासनां श्राडी श्रागे ५७ साधी धूम मेटै सन्नो
मिटे न बल्या श्रगनि बरंता तुरसी श्रगनि सबसो तिहोइ
तो धूम न ही दरसंत ५८ जावत दहन मैं दारकी है कछु क स
रता को र तुरसी तावत दहन मैं उठत धूम की घोर ५९
जावत कसर तिकायामें क्रोम क्रोधकी होइ तावत तरंग
उठैं श्रो कहै नांनां विधिकी सो इ ६० चौपई तुरसी नांनां तर
ग तु मांही श्रगनि धूम लौं उठै सदां ही तावत तरांकी रू नर
होरी जावत श्रगनि कुटी श्रगनि जु मांही ६१ सापी तुरसी क
हां लौं श्रापो ए वासनांनि को तेव जावत ए तावत नही मि
ल हि मिर जत देख ६२ पतन सावा चांकर मन या मैं मिथ्या नां
हि श्रात्मश्राडो होइ रहो वासनां श्रुवाद रसो हि ६३ कस
नो मत्र्रासे कहा वासनांनि को नाश तुरसी गरू पसांनीए
तो को ऊ करै उपाइस ६४ लोक वासनां श्रादि है सांनसी वृ
सनां श्रन तुरसी चतुरथ वासनां ए को ऊ जोगा ही चलै
तह तप ५५ चौपई तुरसी जोगी ही चल लैजांनै जांनि जु गति
श्रारंन गां नै तिनि तिनि कैं जतन कराइ तो का दिवाराना

भैरे गारा। अरु ।७७॥ ।७८॥ लोक ब्रासनो विख्यो ना।
सी लोक बासना यह। जहां श्रीमानु षि होय। यह जु गनिदा
करै औसो गनै सोइ।१ तुरसी लोक बासना यह। जो सुज
तस करा हे सो अकेले औमान करै। औमान सेए सुरिज्ञाइ॥
तुरसी औसस वनिकै। कोसम कावृ गणन। जिन के उर
मनो। लोकारथ को ध्यान ना। लोक रिझावन कारने
अरथ अरु नाई। लोक रिझावन कारने करै बकु दिन बनो
वे। रागरंग लाव सुधरे लोक हिलावे चाव। तुरसी लक्ष ह
रि बिमुख को होर नउन्नत नाचु। लोक रिझावन कारने
हे सी सपरि घांग। लोक रिझावन कारने जागै आगै जाम
लप अहार लुया अलप। अलप बचन अ चपन हरै। उपाइ क
लोक कों पैअ धन सुमिरै राम दा। चोपई तुरसी लोक बास
कान को कानि लचन करै रला। जानै जु गुमो ही कूं
औरका ऊनरमै आनै। सत्तप अन अलप जु पानी अरु
सुख नालेसु धरी बानी। विधि बिधि की जु कसौटी करै। कप
करि मानम्रः हमै पूरे। सापी लनाकु हांवन कारनै कमिक
सा है जोगा। तुरसी अैसे जोगी मैं बैठे अतित रोग। यह सू
ने की नदी सई ताके संसार। तुरसी कानु हिन सकै को उ
हुकाटै नो का अधिकार। तुरसी लोक बासनां यह। तपजो
नउ बवी जा। जनम मरन फिरि फिरि करन। सदई रहत हरी
जर। तुरसी लोक बासना जु यह। सब माधु जक है हि ना
म हीसु धहे। औरनु पाइ जु नांहि।८०।२० ।७९॥ ।७८॥ लास
नासनां हि नंना। एक निपट बोजु बिसन। परमारथ नले
नाहि। कहा सार असार कहा। बिबरन को क नाहि। या जु म
न बासनां को। घर बहावृ निमोहि। तुरसी लेको नधरें जिन के
असी नाहि।१ यह देषो देषि हे यह। जो नाम ग्रथ निमो है। या
श्रवा मै परि रहै। प्रनु पता चान्यो नाहि। ते बिद्या पढि पढि
जु बकु। हे पंडित सरम करहि। तुरसी नन लेष बिना घरलो
बोक बहोहि। नवमन वृ सामत्रा पुदसाषी है का।
गति दिवस गयो करै। जहां आत्म आ लोक धा तुरसी अ
त्म आ लोक बिन पढै मुख दपुरान। परमारथ पावे नही
कहा कनक दातुष आ ना धु तुरसी या बिद्या सकल अबि
द्या हो इजाइ। जाव त पढि गुनि ब्रह्म को। परमनंद न हा पाइ
तुरसी ब्रह्म अगाधवे। लतन लष्या जु नांहि। ते रूप पढि

पहिचानीयां श्रम करि करि मरिजो॥ हो॥ दो॥ ७२॥ ७९॥ ८०॥ दि
ह बासनाको॥ह श्राणकी
हबासनाविधान॥ चौपई॥ तुरसी जहां बासना कही
करि मानेदेह॥ त्रिमी बिधर जेबुधिदे जहां देह बासनाकरी
ए नहीं॥ तुरसी देहबासनायह जहां उलटबुधिहोइ ब्रह्म
श्रीरमानेश्रवरानहीनि रूपन कोहरी॥ सबदश्रादिबिषय
ग्रे॥ श्रुतिं तसोतनजानि रासिदिव मत देमकै देहीकेसु
पमानि जपकै तपकरे हतनकै॥ श्रारथकरहनानि तुरसी
कोरिजतनकै रहै हसुपनिउ श्रानि नसोई चौ॥ चौ॥ श्ररसी
श्री मोहि श्रपघाती जोनिसोई क्रतनयनीयापपतिन करिबेव
सुकृत नहीं नि॥ श्राप श्रवरमानेश्रवरश्रपयांनतातरश्रांति
तुरसी श्रा श्रुरकु सोही॥ जो श्रुसाहे नांनि॥७॥७३॥७५॥ ८०॥ त्रि
नि श्रतिबासनाविधान॥ चौपई॥ तुरसी कामक्रोध श्ररलोभ
मनहीमन उपजाव नछोभ॥ मोह मदमछर दिनुश्राही उपै
करै करमीमाही॥ ऐसा धोकरमी उरजावत नाहीं तावत नाहीचे
न तुरसी सबसाधक हैं यहतो बात जु श्रैनाग॥ बाहिर सीतकि
बासनाविनोकबरना॥ हो॥ तुरसी मलनबासनायह श्रव
सिधराष्ठनदेह॥ ४॥ चौपई॥ जागृत जो कर्म करावैसो दिसो
क्रिदबासनारहावै श्रेसो सुपनांमै सिधि होइ श्राइपजैसीम
नसातिसीध रिकाह॥ सासो तुरसीजागृतसुपनमेश्रमत
बासनादेह॥ भावै तिनत घ नरहौ॥ जागृत नहीं बिदेह
॥ दोहा॥ तुलनमिटिबो सुपनको तबु तेनकोनासा तुरसी केते
पचतहेदिदेतनकूश्रास॥ केतेक यारूं कसैकर गुणतोमै
बासा केते श्रलप श्र हारतेहि सोचेतनकोमास केतेन
गानदीं बरी बनबन फिरैउदास॥ तुरसी तनकूगुरकृपा
बिन मिटै न सुपन बिलास॥ जो कदाचजतनसीतिको श्र
स्पातनहिकरैपीर॥ तौ श्रागैह्वतरपरौ तुरसी तिनतर
शरीर॥ नवतनके सरीरको जागृतनहीबिनासनावतं
नसमरनको तुरसी मिटैनश्रास॥ तुरसी नरमबसिनातें
मोनिय स्तरयह दहादि ह श्रारयामांहि है यह बाकों रैम
हा॥ सोदेही मृतककोना मृततन बछु सोहोइ तुरसी मरिम
रिजीसोए जोलों है यह सोह॥ लोक बासना श्रादि॥ चत
रथबरनौ सोइ तुरसी ताछेकरनकूं सुधबासनायहै
॥२०२७॥१८७॥ सुधबासनाविधान॥ तुरसी सुधबासनायह
संतकैहे सबकोहर विषै प्रवाह मिटाइकै रहै श्रपूरनसोइ॥

+कूपी यत्न तौं माहि ॥ चौपई तुरसी सुधरमसी चिबठावै +बो
र अघके होरके रहो इ बिषै जोग बिसराइ तुरसी अपनै बु
धमे सुध बासनां कसाइ २ ॥ नप चो तमसी जौवृ ऐसरू
लोजानि तुरसी सुध बासनां यह ॥ सब स्रूरहै समांन ३ ॥
कौकूनदेषो सिन घट आतमराम ॥ तुरसी मिंतक
शी सुध बासनां ऐ नांम ४ ॥ बऊ बात को भी कहै छतो हौ अर
पबौ पाइ तुरसी बिषै बासनां ऐ उरत्ते धरौ जगाइ ॥ ५ रू
ग्यांन ध्यांन मर बमोक्षि कौ अपाइ ॥ तुरसी इतेही मांहि
बिबासनांन माइ ६ ॥ चौपई निकैगहि दिढगुरग्यांन
र लाइ आतमा ध्यांन तुरसी बिषै बासनांन
सुक्ति फल पावै ७ ॥ बिन लाये ही लागे ध्यांन जो बा
बिलीमांना ॥ तुरसी मनरहे थिर होइ सूंनि बावृदी पग
लोइ ८ ॥ ज्ञानि कैनि बासनां घटावै ॥ घटत घटत अक्रतिबि
लावै ॥ तुरसी तब सुद्धि मत न होइ सहज अकासो बिचरै
इ ९ ॥ ऐसे जोगी जतन करावै तौ बासनां बिलै होइ जाइ ॥ कूपी
पल कंपो पै कोइ पलो ससहजे निज रहोइ १० ॥ ताथैं तुरसी
पलास वृत्त बासनां ऐ ॥ नरक कूप ही जांहि ॥ सुधरमसी चिबठा
ऐसो अधरम निह चेन सवै ॥ यारो गकं जुयह उपाइ आगेस
नामिदी थोब ताइ ११ ॥ चित न बासनां उबन नही दय कदा चि
जु है सो नलटी हिय ॥ यहि आरं जलागा रहै नित तब निहचै हो
इ नवृ तत जिन १२ ॥ निसबासुर लागा रहै कैरे जहां जहां जाइ
तहां तहांके रै परम तत मन राषे लीना ॥ तब चले सुपन ब्याधि हो
इ षीनर १३ ॥ प्रथम हि तन अस्थांन चुकावै अन हित होइ आप
मे आवै ॥ छूटै बार है आतम में लीना ॥ तुरसी सुपन ब्याधि होइ षी
न १४ ॥ सारी बासनां बिनासै जु ॥ तब निहचै निज करि सोइ तुर
सी जब बासनां निकौ ॥ मूल निकंद न होइ १५ ॥ मूल तेहे तन आमै
जुकनापुनि आलेबन आन तुरसी का रिज बासनां ऐ कार
न पूर्वा लन १६ ॥ जब इन है तादिक निसू उतन हि अहित होइ ज्ञा
इ ॥ तुरसी न्यूं जे बीज लौ जब बासनां दिषाइ १७ ॥ तुरसी ज्यूं जे बी
ज लो हो हि बासनां सोइ १८ ॥ पापपुनि को उद्दिम तब उदेन कब
हू होइ १९ ॥ चौपई जैसे बादर बिन आकास अरू निरधूम अग
नि प्रकास ऐसे सुद्धि आतम रहि जाइ ॥ तुरसी जो बासनां बि
लाइ २० ॥ सारी बासनां जु कै मिटै तौ निबावृनी रुजनमांनि
तुरसी चित थिर होइ रहै ॥ जाहे न सुन्हत आन २१ ॥ चौपई पके
पवन नरलौ तन पावै ॥ चु जितन न होवै मन सानी र तुरसी निह

र न होइ आइ। तामें थिर तुरपद दरसाइ २२ आगे ततन्है
इ आवे। प्रापट तमपट लो फुटि जावे तुरसी परदा रहै न को
इ जो गुरगम में ऐसी गति होइ २ नृजाग्रत सुपन सुषोपत ताको गैबे
रूपद होइ लीन॥ तुरसी सो जोगी ततसार और बासना बिधि
समार २। तुरसी ऐ बासना जोग। सब संतन्हि कुरि होग जिन
ए सुवसरूप करि जाने। तिन्ह ही के रहा रहे ने २ पाये हैं ग्यान
यह जोग सबाया यह है मुक्ति मग संतन्हि गाया जे बिषया
सूं फिर कत न आये। ते निहचे बाजी लषि गाये २६ तुरसी है बे
द को मारा। छतीही माहि सब ग्यान बिचारा अस सुध सिधांत
क मतो एह बिषया तजि होइ रहै बिदेह २ अब न सबद स
परस तु कलानि। ते न रूप ना सारा गेध ग्यान एस लो रस आदि जु
तजो गये त्यागे बिन फो कुं जोग २८ साषी जोग सिध जाने
जु नबा धुनि जु नगति बेराग। तुरसी अबिद्या आदि यह हो
इ बासना त्याग २९ सुध असुध बासना ए बरनी जैसे प्रकार
तुरसी ए कअबंध करना। एक बंध में बिकार न असुध ते
बंधना बकें। प्रापति होइ यह जीवो तुरसी सुध ते मुक्ति होइ
परमें अपनो पीवे ३०॥ चोपई सुध बासना जु राषे जाव ताना व
नजी वसी व होइ आवत जी वसी वजबए के होश ना बताले
न परोजन कोइ ३१॥ सो सुध बासना सुध करै सरीर सूं सोइ
तुरसी पद पकुचाइ के ना बजाइ अस तनु होइ ३२ तुरसी सु
ध बासना यह। निरमूल अगनि वृत सोइ अमृध दारन दग्ध
कथि अरपरू कत क न होइ ३३ सो पद प्रकृति के पैठे ता पद
में पकुचाइ तुरसी आपक अस्त होइ ज्यूं दीपग बलत दिपाइ
३४ तुरसी दीपग बलत दिपाइ ये सुध बासना राम जेते निमत
ततपन न रो और न कोऊ काम ३६ तुरसी सुध बासना यह॥
ताको संहभांना जहां होए तहां भासे नहीं। मलिन करम को नां
॥ ३७॥ ३८ ६४॥ ८२॥ निरबासना को परिकरन॥ रूका का
वन हस्या होइ भावे सी चैसो बार निरबासी क अतीत के
रसीए बो व्हार। कनस्कतर ऊपरे जो घन बरषा होइ नां
सो उन्है न पल्है वा कूप जल तेइन कोइ। यूं निरबासी संत ये
आवत रिधि सिधि मोइ। तुरसी सो सुप मोनि को हस्या क बज
न होइ ४१ रिधि सिधि घन बरषा नये ते न नहीं हरियाइ। निरब
सी क अतीत को तुरसी अस्त नहीं काइ ४२ कनस्कनई आत्मा
गई बासना बिनाइ तुरसी ताक्कें स्वाद जल सिके नहीं हरिया

रूप॥ हरियो री हरिया हरूने। जोजन बरषे पूर तुरसी स
त मे रावत न हो ऊरके ॥४॥ उनमन र जरत सो जानि
रस सो ॥ तुरसी बिसरि बिष बकनलो रसा जुना रस होइ
मन मे रस उपजे नहीं तन चेष्टा न कोइ तुरसी उनमन रत
ऐसे जानो सोइ ॥६॥ जाक बमू रम्तक की इच्छा तल है सोइ
नोनि रवा सी संत के जग चे मटा होइ ॥७॥ जाकी जरि गई का
मना ॥ सा को का करै नारि तुरसी बुझी अगनि कू सकै न जा
रि ॥ मारि ॥ ८ ॥ मन के कू समल जरि गो ॥ ग्यान अगनि के मां
हि ॥ तुरसी तजे बाजतो ऊकू स्यो करै नाहि ॥९॥ देष अनदेष
जु की माया सुष की सोइ उर बासना न उपजई तब मनम
जो होइ ॥१०॥ मन सूं बांम म लागई नयो मनी को नास मछर ता
उपजे नहीं गलित बासना दास ॥११॥ तुरसी या वा लोक की आ
सा नहीं न कोइ निबा वली रतो मन नया बिषम बासना षे
इ ॥१२॥ चोपई तुरसी सुष अरु सुष बासना सिध्यारी जू बाजी बिष
रि नर नारी रुचि सेग नई गई गलि आ सिउदे नई उर औ रही
लि ॥१४॥ अ सुष बासना मन कू अ ध्यारी सुष जैसी रजनी उजि
यारी तुरसी सुचे नई लिलो मान ज बउदयो उर आतम भा
न ॥ साषी ॥ आतम जान उदित नयो हरन अबिद्या रैण तुर
सी सुष आनंद नयो दृहि दस बरतै चैन ॥१५॥ ॥२७६॥ ॥१८॥
॥ अकल साषी ॥ अन को पतिके र नो ॥ तुरसी साषी जूतसक
ल कारिट रूप आतम राम ॥ तब करि न्यारा होइ रसो निरप
र निहकाम ॥१॥ सकल सिष्टि ता सु नहीं सुभिनालिपत न होइ
तुरसी साषी नोर है सोई मेरा मोह ॥२॥ तुरसी साषी न्यू तसद
रहे सुष दुष मे नहीं जाइ ॥ पालै पोषै सकल कू अपने सह
सु नाइ ॥३॥ चोपई ॥ जगुन करि संसार उपावै सतगुन करि पे
षे पल हरावै तुरसी तमगुन करि संघारै आपन रहै तिहू सूं
न्यारा ॥४॥ साषी ॥ गुन सूं गुन पर चिर तिसब चली जाइ सब
सोइ तुरसी आप अकल अमल न बधक कबऊं न होइ ॥५॥
चोपई ॥ बधक कबऊं होइ जु नांही आदि अंति अरु मधि स
दा ही तुरसी ऐसा आतम रांम जन न्हा वुन ताको नाम ॥६॥ सा
॥ तुरसी गा वुन जन की जगत को आधार ॥ घट घट मांहि र
मि रहा जैसे को गति हार ॥७॥ चोपई तुरसी को गति हार जु सां
ही काहू के उषम सुष मैं नाही अलिपत आकास जु चंद
कहिबे मात्र घट प्रतिबिंब ॥ साषी ॥ तुरसी घट प्रतिबिंब लौ

निरछर सूं आरसी अरक छिब छिा प्रगटी अगनि सुभाय तुलसी यूं

१५१

ज्ञानि तत्त्व सं सहज ऊपनी आइ या को आरसी अरक को कोइ
अगनि ऊनमांना तुलसी यह गति समझि कै जिनि निनि करउ
रुपा नेरदप्रकृति हवा आरसी अव गति अरक अषंड अगनि
सरूपी जीव है तुलसी महा प्रचंड १७ तुलसी रवि की किरनि कौ धरि
न सकै कोइ संजोग तन तन नाहीं तातें भिन्न रह होइ १८ गुन अौ
कृत कर तहीं रूपा औ रका औ रा तुलसी उलटी गति भई ज्यौं
ग याद है गोर १९ यों है तुलसी जीव विसरि अपनी गति माव अौ
हुंकार सूं ऐसे की न्हा तें प्रस्या प्रवाह मंझार २० उपजे विनसै
बार बार २० मा या तुलसी नाना बंधन मैं परया नाना दुष पनमै सोइ
सुन अमुनफल भुगतन लाग्या अहंकार वसि होइ २१ करि आप
ने म अच्छत सू माया वसत कूं रना तुलसी गति सहत जीव ज
नम मरन दुष सहै २२ आपा कूं विरकरि गिने विर आपा सम फ़
इ देपी अबि द्या जीव की बंधा विरपर जे नाइ २३ दृष्टि दिसि संजो
ग तें ऐसें भया जु सोइ तुलसी न लना गहत ही जैसें सुवा सोइ

तुलसी

२४ चौपरी जनली माया सु कायह जीव गति नरमाइ औरही कीव
ना तें बंधि जानि बिलला है मुक्ति याहि यै मरम न पावे २५ साधी
तुलसी ऐसी काहू सूं न होइ जे सीया आपि कीन ऊ बंध होइ बं
धन परया मरकट ज्यौं मति हीन २६ तुलसी लनक स्वाद रस लागि
कै स फरी तौ स ठ सो इ डुष सम सूइ मांहि परया सुष सम इ कमाइ
२७ उपति बपति प्रवाह मैं परया पतना होइ दुष सुष के झक
झोर मैं धीर न लागै सोइ २८ विवध बाजी कूं निरषि अबंध नय
बंध सोइ विसरि गया गति आपनी तुलसी परवसि होइ २९ आप
रापरा सूं विछरि कै परया तोषि गुन मांहि तुलसी निरगुन नाथ
की निमष कू सोधी नाहि ३० ज्यूं म्रतना स्वै गही सुवा ननती
सो है तुलसी प्रकृति जीव यह रहे जु ऐसे होइ ३१ ज्यूं देह नदी
रमे डुर रही धरि जु दोष अनमान तुलसी यूं जड देह संगि होइ
र सा जीव जड वान ३२ चेतनि परि जड गुननि मैं बिसरि गया
आपगांन तुलसी ज्यूं मिनि ध्रत निमैं डुस्यो सुक्के चनना व ३३
ज्यूं पै मैं पानी मिलै पानी मैं पै सोइ तुलसी प्रकृति जीव यूं
रहे परसपर होइ ३४ जड प्रकृति मैं जीव यह कीर परसपर वस
तुलसी आपन ऊ भया जैसें म लिबिन सम ३५ रूं औरै यह औ
ही सम झत नाही जीव माटी कूं अप नाइ कै भूठ बिसार तप

ज्ञाति

व हाचो जड संगति चेतन जड भया अपने सुभाव हि

बामरिगया।तुरसीजडरूचेतनहोइ॥जबचेतनकूंपरसैसोइ
३७॥साषी॥चितनकेसंगिउपजो।जडरूचेतनताग्र्याहि।तुरसी
ज्यूं लोहअगनिसंगिअगनिवत होइआइ॥३८॥चौपई॥सो चेतन
जोजबचेतनकीयो बास।तुरसीज्यूंरबिकेउदे।सबकेन
थोप्रकास।चेतनबिनजडरूहोतुल्य।जंहबिनचेतनपेग॥
तुरसीजैसेइकवनरो।नवलाडयोरसरीग॥४०॥जडसंगतिचेत
निजडचेतनजडप्रकासजोंना।तुरसीज्यूंदारददनकादेखिले
यजनमोनपरा।[illegible]चेतनचेतनजडा।नयोपरसपरसेलत्तुर
सीजबदेक्रेमिलिमिलेहितबजिहकेचत्तघातन्ध४।तुरसीतब
निहकेचनघातजबजुग्रैसेहोइआवे।इहसषीरुगारलोचे
संजोगमिलावे४२।तुरसीजैसेनकोमिलनोजुयहा।पलिदेअ
मिलनोहोइयहजोगजुगतिक्तयहैसंतकहैसबकोइ४
३।दारदहनलोहोइरहेप्रकृतिपुरषमिलदोइ।तुरसीजि
मिजिमिसोनहैजतनकी।एतैसोइ४४।[illegible]॥
प्रकृतिपुरषजिजिमिमिलेउपाइबिधांन।।सतसंगतिगुरुकृ
पासेंजबउपजेहैबिचार।तुरसीतबजिनजिनिमिलेहिश्रोर
नहीउपचार।ज्यूंदधमधिघृतकाडीए।पुनिजेतहितोइ
अैसेजतनकी।एदहसौ।जीवजुदाहोइआइ४।जुदाइयाजीव
कोमोक्षकहावे।एहातुरसीतनअसफ्ता यहबेधलयहदेर्द
प्रकृतिपुरष मिलिकरनको।नोघबिबषिपुरीस्पे।मे
हीतोकारनकवनकथिबस्तयहग्यानवा।चोपई।अनंतसा
सत्रअनंतजुबानी।अनंतकथाबिधिकेजुबषांनी।अनंतसं
तनकोषिपांन।ताकुमांझकथ्योयहग्यान४।साषी।तुरसी
सबकोसारयह।यासमिश्रोरनकोइ।प्रकृतिपुरषजिनिकी
जीरा।जिनिकेनिधोसोइ४।।नातूदेहनदेहतूसमझोतो
तूंआहि।तुरसीसमझेबाहिरारहसापरसपरलोहि।६तुर
सीषिपीबतपुनितूनहीजोसमझैसांचिबिचार।आपग्र
ानिअनंतजुधरेंडीआपषिकार।अहंकारबुधिआदिदे
प्रकृतिकेबोहार।तूं औरै एऔरही लागिहोइकिनन्यार
।।७चोपई।तूंअपनोबलसमझिसयांनो।कहापरिरह्योदे
हअभिमान।देहीमायाप्रकृतिरूपा।तूंअबिनासीअमअनूप म
प८।साषी।तूंअसनिरगुनब्रह्मकोदेहीगुनकोभाग।तुर
सीयहगतिसमझिकैछाडिदेहकोराग।९।जाका तूंहैता
हित्ताताहीहिरदेधारि।बिरलोगमिननहीराचीए।इतनोही

ग्यानहि चारि रचौ। त्रासो प्रकृति निखर माया
तृअसो निरगुन ब्रह्मकौ। कौन मनावै सोइ २
सोयामहीं अग्यानता उपाइ। तरकि नगा सू तोरिकै कौ ध
दुदा हेरु आइ ३ जु दाईया जीव की जो प्रकृति सू होइ तुरसी
हृदय देसी वहे जीव कहे नहीं कोइ ४ तुरसी जु दा नए ही
नो मा गिपु कृति संजोग। संजोग माहि दु वेहे आनंद मूल
ति जो सा ५। तुरसी सब कौ सार यह। ध्यासी म त्रौ रन को ६ प्र
कृति पुरु षनि नि की जीए। जनि के नि थें सोइ ७ गुना त्रत
सो ब्रह्म है। गुन बधई अरु जीव। तुरसी गुन की विषमता अ
ह टसत न सर्व ८ ब्रह्म तेई भ्रमतया। ईश्वर ते न या जीव
उपाधि गुल्सि त्रिक्ष नया। न दीऊ ता एकीव ९। प्रकृति पुर
षनि नि की जीए। हे रग्यान उपाजाइ तुरसी सब को सार यह
ते तन दीयो न ताइ १० या समान औरजु नहीं। पद येषन कु
ग्यान। तुरसी दीपग रूप है। हरन तिमर अग्यान ११ प्रकृति
पुरु षनि नि की ए जिन। तत ग्यान गहि सोइ। तुरसी तें बामर
गए। ते री नहीं होइ १२ प्रकृति पुरु षनि नि की ए जिन। तिनके
रासह नान। लोहा कांचन मृत्यका। तुरसी एक समान। १३ तु
[illegible]। आत्मा [illegible] कौ पारि [illegible]। तुर
सी आत्म पूमात्म बिचि। इतनो ही भेद बिचार। परमात्म प्रकृ
ति पै। आत्म प्रकृति मझारि १४। तुरसी आत्म प्रकृति बंध
अबंध आत्म जानि। यह जु भेद संत निकसा। आदसी पिप्र
वां नथ ठिद कहे सु मनि कहें। मास एकऊ कहे सोइ। जावत
करम कलु अंतरा। तावत है ती दोइ १५। तुरसी जर दोइ है हि
नहीं। लोक। घरत जि वन जाइ। काहे क कसिक सिजु तन
करि करि मैरे जु उपाइ १६। तुरसी जे दोऊ होहि नहीं। सो ध्यात
ध्येय कौ ग्यान। सकल अरथ अनरथ होइ। सू छि जाइ तपदो
ना १७। आत्म पर आत्म का। हे यह जु तत बिचार। तुरसी जिन य
ह जानीयां। ते ग्यानी संसार १८। नई ग्यानी उनी बिचि। निरगु
न के ध्यारे। तुरसी जिन ए समझौ ए। मत न्यारे न्यारे १९। तर जु
रा कु प ह्वौ [illegible] ते निको जु सुना व। तुरसी तावत जिनि है
जावत क छु अंतराव २०। अंतरा व है तावत [illegible] लग जावही
देहो। तुरसी तन [illegible] तर व हैं सो। पक्षी सुंदर सोइ २१ उन पंथ
तन नर मही। बसे एक अस्थान। तुरसी एक फल [illegible] ए
क निराहार निरबान २२ एते पंथिन नन तर बसे। एक प्रचल

चलो का तुरसी अचल अबध है। चल न बंध करम अनेक २१। च
लघगाई री हार होइ। सुन असुन करम कराइ। तुरसी नाम
फल भोगवे। नरक स्वरग में आइ २२। अचल आदि अंत है कु
रम मधि कुन धरे उरेग। तुरसी व्यापक सकल में। अरु रहे स
दा असंग २३। जीव सीव भिनि भिनि नहि। सुमति तक है न जो हि। तु
रसी आवन करम का है परसा कहु मांहि २४। पैसे प्रम अनंत प
द मुरे अनंत पय हजा वे। तुरसी विचि प्रकासि परी। तातें सफै न
सी व २५। तुरसी जीव सुष दुष करी। मानि मानि लेसोइ। सीव इन
तुं जैन मैं एक हैं। अपना वे नहि कोइ २६। प्रभा समध गायरी पर
पूरन प्रकास। आदि अंति सम धिनो केसु पन कुं नो गहि ला
स २७। चोपई। अनम चुराम तमायामान। सही अतेष पद स्वबो
न। तुरसी व्यापक सब घट मांहि। सुरग नरक फल चुग्ते नां
ही २८। सुन असुन सब ही संसारा। नांइ आधारि कै प्रमार
तुरसी प्रमातमां पद सोइ। प्रास इस र जीय अत्मा जो हि २९। साषी।
जीव सीव इहै नहीं जो आपा नल टिस माइ। तुरसी परदा पे चा
का। बिलीमां न होइ जाइ ३०। परदा जो पै चका निरगुन प्रट
ले फटि जाइ। तुरसी तब निरलोक में। एक रूप दरसाइ
३१ आदि अंति मधि एकं त बा जब असी कह्युं कीव। तुरसी ग
हि सन्मि तन को जीव सत मांहे माव ३२। जीव सब वे माव मधि
अंसम निना मिधमांहि। तुरसी तब यह होक है। स्वज्ञा को कु मांहि
३३। स्वज्ञा को कन दे षो रे जब जा व गाव होइ जाइ। तुरसी यह
सिधंत मत मतपुर दीया बताइ ॥ ३४ ॥ इति ॥ ८८ ॥ बंध
मुक्ति को परिकरन ॥ बंध मुक्ति परि करन कौं सुमत सब
पर नु सोइ। तुरसी समझे गाम है। संतन बेदा कोइ १। तुरसी
अनात्मा विषे। आत्मा कबुधि होइ। यह बंधन या जीव कौं संत
कहे सब कोइ २। अनात्मा बुधि अनत होइ। आत्म बुधि उपज
इ। तुरसी तब न बंध यह। आदि अंत मधि जाइ ३। अध्यांनस
घन संजुक्त उर। तिट बास ना सोइ। तुरसी ता बासनां रहे अववि
जु बंध न होइ ४। चौपई। तुरसी ज्युं रस वाननतना जु गहावें अ
ड सु माहि बास रजा वे। बंध सयालि लता वे गोइ। ज्यूं नर मब
सिगातिमी व को होइ ५। तुरसी जीव सुध है सदा ही। कछु वे ले
पन लागे ता ही। छिन कु गुन संग करत सुभाइ। सु कर्न तनी
लो बंध होइ जाइ ६। साषी। तुरसी बंध होइ सही सं। ता में नहि
सदेह। जो अपनो निरगुन रूप न जा गुन सं बांधे नेह ७। अ

चौपाई

न्यारी रहनि को। बुधि हारै लै स्वाद। तुरसी ताते बंधनया।
नहीं सो रूपा ताते बाध ८ अब है मान नहीं यह गाति गई। पूरब सं
जम बीसरि गई। तुरसी बरनन नागा सेरा। यह मेरा यह मेरा
।८। साची यह मरा तेरा। तुय हो जो रहे न थीर यह ग्यान। नातें अ
नपन जु होइ गया। बिसरि अपनो बिग्यान। ९। पर बतन तेराई
या देखो हेर हिराई। तुरसी तुख बिपया न मे। बंध है तहीं
रा चौपाई बंध बिबेक सुमर समझाने। अबंध ताहि लिन काक
माने। बंध अबंध अनर जो हाना। कोनि रखि तु दे मो मोह १४
बंध बिषे भोग न कचा हो। तन पार देह हि माने चिता हि तुर
सी अबंध हन स्न्यारा। करि रहा आत्म मांहि संचारा। बं
ध माया सु पकरे ते मानि। अबंध कहे रोउ प कीपां मनि। ब
ध अंतर रो जोइ। तुरसी समके मा ध्रूक कोह रस सा। तुरसी ताव
न बंध है निश्चे निज कर मोह जावत रागद्वेष कीरे
अंतर ही हरपा तुरसी रपन रही को जान रमा ही आंना राग
गुन गनि गो। माक ही अबंध र बान। तुरसी बंध अबंध
भिम भिन नेद बिचार। बिधि बिधि के हम बरनी यों का
मैं जा नन हार ७। चौपाई तुरसी जान ही समुझ जाने। या बंध
अबंध के जु न्याने। और अग्यान कहा यह चाने। तक्र रथे
कहि ताने। ८। ... उबध्या कै परिकरना जोया
उबध्या में असे माया नजो किरांम। तुरसी न अधिबिचार
सो नर को कांमारा। कबक कहें पितर के बा मूजं प्रीतिन
माह। कबक कहे अग्निन होई। मंनू निरंजन राह। १। कबक
रामनाजन को। नर ध्यजे उनके सार। कबक कहे माया नज्
नन धरि तस्य यह तो हरा। कबक कहै निरगुन नजो। कबक
सरगुन ननसार। आबोला कोनी मही। सो पिगई सब आह।
भाग्य बोला काकोनी मही। पाई कंचन देह। तुरसी रामन न्यान
हो रिडु बक्षि सुने ह। याइ बधा के पंथ में। बकुतक अट
के आह। तुरसी तन ते न तजा पै ते काल पकड़ा ना आह हा।
क को क रत्थान होत न रही न नाउ पाइ। तुरसी उ बधा दे
सहरी दिलाये पबना हा। कि कयंपथ सहा मो छिको। ८। कमा
तन जाइ। तुरसी पंथ क पूछे बिना। पंथ मे न पाइ ७। तुर
सु करनि दरस ही न। गाय निकीयो प्रवेस। अपनी फाइ दिष
क रि। कर कर भूवा क लेस १०। आपा ते नामे पेरा तु
गुन दोहा। तुरसी सूग चहु बन में। बोलत फांई सोइ ११। जो

पनैंग रूप जे। कारूसै बैर बनावै। तुरसी मो वृत सुपनमें नेसो
हो होइ दरसावै॥११॥ स्पूर बिलागे रिपु चोर कौ॥ मोह समिं तसमा
ना। तुरसी कासन आपनो। औरन इ जो श्रांन॥१२॥ एकांत सै त्रेजुक
एकिन तें रोक सिमिं तक राह। तुरसी अपनो दिरहै को। यह स
न कारन आहि॥१३॥ जहां जहां कछु स्वारथ होइ तहां तहां मोनें सु
ष नहि। स्वारथ नाहि कहीं॥ वा का का लग मुष॥१४॥ ता ते यह
सकल पसब। तुरसी अपनों है आहि॥ का को सुष कहि मांनी
ए दुष मांनी ए ज का हि॥१५॥ चौपई॥ दिन की रबध्या के रे न ही
ध्यांन धरे दो अंगुर मूरि। तुरसी भरन ही होइ गजि यांरे॥ बिनां
छिध्र से उबछि अपारो॥१६॥ जब लग उबध्या तन मन मांही। तब ल
ग जोग सिधि होइ ना ही॥ तुरसी जो। सिधि होइ आय उबिध्या मि
टै मन मरि जाइ॥१७॥ जावत अबिद्या नी रब ना सै॥ तावत ने प्र
काम प्रकासै। एक जीव एक साव जु नां मा। ता छिनि तब बीते
बकु जांम॥१८॥ उबध्या दरपन इ बध्यानी॥ करै रोक रूं दोइ स
रि। जब तुरसी उबध्या तब नासै। जेर परै एको अनासै॥१९॥ उ
बिध्या के हरि रूप में परै। उबध्या दसी फटिक सू जैसे। तुरसी
देषि उबध की झांई। कोटिक परकुब षि की पाई॥२०॥ साषी॥ जो
अपने से रबैरता। तो पर कू बैर ना होइ। तुरसी अपने सू छिदे
हो सो सुधि दमो द सि जो इ॥२१॥ स्पू करता ते सु करने वो सिरन
यो सिर सुनवाय। तुरसी का देन देषि कू दरपन मैं निरता इ॥२२
॥ गुन सु दोष दुष सुष कछु। दरसत उबिध्या ध्यांन। तुरसी अ
पनो रांजु है वेपन सदा समांन॥२३॥ आपा पर हि सराहे को रू॥
उबिधा को देदांन। तुरसी सु तद प्रकासमें। सो इ रहे ता ततां न
॥२४॥ २०५३॥ साषी॥ उबिध्या बिधु सकी परिहरना। तुरसी
उबध्या आसी जर कहते बुटि जाइ। तब उर पर भे ते आत्मा
एक रूप दरसाइ॥१॥ जावत दहन सुदा रमें। तुरसी दे न सोइ
तावत ही है नां महै प्रगटे ते के सो इ॥२॥ चौपई॥ जावत है मालत
अरुपानी। तावत तब ते नां मनी सांनी॥ तुरसी जब गरि एके होइ
तब उबध्या रहे न कोइ॥३॥ तुरसी केरो दिष्टि जु आहि। तावत
ह चे दाद रमांही॥ जब सुधि होइ गहे आरांम॥ तब एको चंदा
एको रांम॥४॥ साषी॥ जे बिबहो हि एही। तुरसी हेत मिताइ॥ क
जब हि जीव सबै मिलै॥ होइ परस पर आइ॥५॥ चौपई॥ एक रां हि
म सब ही न के मांही। ता मैं फेर सार कछु नांही॥ जो उरबांम दि
ष मिटि जाइ॥ सुध एक ता ग्यांन उपाइ॥६॥ साषी॥ सुधएकता ग्य

नहोरु आपने हीउरआहो।तब हि होइ काएक रोग तुलसी है
राम उ।तुलसी है तबि धुम नभ्यां नयह चेतन नहीं गहि लेह मनि
न घट को नेकरे।धागे ही चित देय।८।धागा स्यो राम है मनि
गन नादे हा।तुलसी व्यापक होइ रह्यो।अरु नहु जाके रूप।१।तुलसी
यह सब प्रभु निसु मति को।इतो होउ सब बके।दवद सनवृतो
केहि दहदा रव्।न अनेक।११।दार मिनि नथेका नया।पीपल
केर बबुर।दहन सब नमे।एकेहा।रहि सकल बन पूर यू घट घ
ट में राम है।ज्यू जल चंदा सूर।तुलसी असे देखिये।तो उब धार हेन
न्हूर।१२।जीव सीव एकै नहीं।जो बुधि जंद बिलाइ।ज्यू करस्या गे
आरसी।उने नबि बदिया इ।१३।एक जीव एक सीव को।बेद बता
वत जेह।तुलसी तावत ही जुदे।जो लौ न होइ बुधि बेद।१४।बुधि बे
द छिती मोन होइ।अहं मम नमि टि जाइ।तब ही होइ काए करे
हो।सिलल ना सिंधु मुजाइ।१५।तुलसी सलिल समावे सिंधु में रहेन
सिलल को नाम।जीव समावे सीव में तब एको निरनाम।१६।
१५४।१५५।अति हृदय कोपरि हरनामा मोर्य ई।तुलसी स
गीमो जुहमारा जोया उतपाति स्न्यारा।अपंड तेज पुंज प्रकास
नासंगी बिचरू करू बिलास।१।प्रथम मिलन ताउ लन जोह
मिलन यल वसिशि बिछरे सोइ।तुलसी असा संगी राम।सिषि करन
सोतन का काम।२।तुलसी ताहि सकल करिने ह।ताही कू नजि ता हाले
ह साही संगि सदा रकू लागा।कबकू न लो म्हां लेन गा।३।वो
सिनही मितको ऊआर।हमनी के देषै सब गेर।तुलसी नवज
ल मारक राम।पतित पावन ता का नाम।४।अब हर अजर अम
र देस।इ।पुनि वृध बाल तरुन नहीं सोइ।तुलसी दास एक सको
इ।सो सीराम हमारा सोउ।५।सा।तुलसी अनंत चोक री अनंतजु
ग।हे।मि बीति जो जा हि।न ऊ राम समना छूटे जो परस्या होइ
मा हि।हा।चो।६।तुलसी पृथ्वी आदि पचूए ते ता कदा चिति नरू
को होइ अंत।जि न अपने प्रभु परसे मोही।तिन को नास कदा
चितना ही।७।ब्रह्मा को अवधि को जु नास।पेना जोगी को नही
बिनास।जिन सकल प्रपंच जनया बिसराइ।अबिनासी हूले
मन लाय।८।२५५।१५२।आतमा परिचय नाम।तुलसी अपंकु
पुरू सु बास ना।तिहमें तेल फूल नि असे न घ सम घतन मह व्या
पक आतमा राम।तुलसी ज्यू दहा रमे दहन है पे दिषाई नहीं देह
यू तन व्यापक आत्मा को ऊ महा मती मषि ते य।२।मषि का
टे माधन जुलो बारि नीरलो सोइ।तुलसी जुगि जोगी सोई ओरकु

त्रिगोजोय ३। कीरी कुंजर सब तनमें। व्यापक ओर समाहीं। तुरसी व्या
पक ब्रह्म सैं। त्याग मिल्या जु नांहिं ॥४॥ त्यागकू कह्या जु नांपरै
मिल्या ऊ कह्या न जाइ। तुरसी रवि प्रतिबिंब त्यौं सब घटि रह्
समाइ ॥५॥ सब घटि आत्मा एक है। तो निज निज भासंत। तुरसी ध
मादिक है। मन गुन मन कूं अनंत ॥६॥ तुरसी ताहि कोऊ सुख चि
तही नहै। निज करि जानै सोइ। अमुख अहंत ह करनै में अति
बिंब तन ही होय ॥७॥ चौपई। यह हरूं यह हूं मेरी तेरी यह डर मा
नही आवे तेरी। तुरसी जब आत्म प्रकासे। सब सोतत होआ त्मही
भासे ॥८॥ साषी। तुरसी रहत न पाधि तें। निरुपाधि निज सार। घट
मठ मांही रमि रह्या। रहत अवस्था चारि ॥९॥ चौपई। लिंग अति
सूक्षिम अस्थूल तो। चकू नाम करि माया मूल तो। तुरसी दास तापै
न्यारो आतम रूप अषंडित सोइ ॥१॥ साषी। तातन मातन आत
न सिंगा वुन गेवुन नांवा देह न ग्रेह नेन डोरत स्या। तुरसी ताबलि
जांवु ॥१॥ आत्म अचल अषंड पद। षंडित सके कोइ। तुरसी व्या
पक सकल मैं लिपत न काहू होइ ॥२॥ है तन सब धर कै पै ॥
सरबत्र भासे नांहि। जहां जहां नीरइ पन तहां दरसत न होत त
छिन न सूं अवगति पद पूरि रह्या। पिंड ब्रह्मंड सब मांहि। नाद
बिंद जन प्रिय जहां। प्रभा टता तन मांहि ॥४॥ एक ब्रह्म आका
स वत सब घाट रह्या समाइ। तुरसी देह गुन वीसरैं। ताहि न लै
दरसाइ ॥५॥ सन गुर हांटे हम सुन्या। सास नकू मैं सोइ। अनात्म
बिसरे बिना। आत्म लाभ न होइ ॥६॥ प्रमात्म प्रकास ई जिम मन
सुध होइ जाइ। तुरसी मन सूं छजाए छिन। ती तब बिंब दिषाइ
॥७॥ तुरसी प्रमात्म प्रकासई अवसि जु हिरदा मांहि। सो पहलै
मन सुध होइ। और उपाइ सु नांहि ॥८॥ काया ऊं तन मै प्राण ज
लोश पी अचल समाइ। तुरसी तन सतार न तिरना आत्म न
न दरसं माहि ॥९॥ प्रकृति पवन के मिटे तैं मन मातर गांव नै
सा। तुरसी प्रांण अन समि रहे। नासे बुध्या आकाश। आराधत
अदिष्ट पद। दृस्य रूप डरि जाइ। ज्यूं निरषत मुकर मुकर बि
लै। तुरसी मुष दरसाइ ॥११॥ ज्यूं मुष नासे दरपनै मैं। तेरैं परै सुध होइ
तुरसी मूंद रसै आतमा। जो मन चित सुध होइ ॥१२॥ सुध चित क
रि सकल नै मैं दषै आतम राम। तुरसी तब तासै तके क्रोध न व्या
पै काम ॥१३॥ चौपई। तुरसी काम मिलि जब होइ जाइ। क्रोध न कब हु
दे षाइ तो न मोह कौ रहै न नांम। जो चित सुध कोऊ दषै रांम

तदि

॥१४॥ साषी। चित्त आसी अमल होइ। रजतम का टमि गइ सो तु

र बाहर भिद मो दिसा । एक रूप दरसाइ ॥ ४४ ॥ तुरसी आतम दर
सा मैल ही संदेह ॥ छोगर अमल आदरस होइ ॥ पर ह
र ह चो पई ॥ तुरसी नाना ने हन माही ॥ नावन तवा तु नि चित
हो ॥ त्याग ने हन मल होइ आइ ॥ नाश्चित मे आंम दरसाइ ॥ ४७
॥ २५९७ ॥ २५६ ॥ आत्मा नात्म विथान ॥ चोपई ॥ आतमलान भवै
द जाहि ॥ जनम मरन उपद है नाहि ॥ तुरं मानों मग न गजराज
बिच रैलि सरलो का लाइ ॥ निद विद की करन आवे ॥ दुष सु
ख कन कन तन तासा वै ॥ आत्मलानी ऐह सरनाना ॥ विचरे बिस
र अनां अगयान ॥ १ ॥ मोन अमोन समान सखा के ॥ सत्र मित्र सु
दृद हीन ता कै ॥ कु नि स पि कंचन लोह पषाने ॥ पद परसे को ग
ह ना न साथी ॥ आतम लान जिनै नयो ॥ तिनके एसह नोत तुरस
त्रि भवनको बिसो ॥ निषतनि नां स मां न ७ ॥ आतम लान न गोड
पा उमे फलक मे सोइ ॥ तुरसी हे कछु नहीं रसा आतम रत होइ
॥ ३ ॥ गगनालितदा पकु गलि ७ ॥ गलित जु गर तु गुमोन तुरसी
देही गुन गलित ता वे आतम रत ज्ञान ॥ ७ ॥ चो ॥ आतम रत के ज्ञान
न हाहै ॥ तेज न तिऊ लोक से न्यारो ॥ उद पिंड जुग मारु बिचरो
ही ॥ तुरसी नद पिंड जुग मे नाही ॥ ७ ॥ २५६४ ॥ २५ ॥ जीवन मुक्
तिको वरि कहना ॥ तुरसी ब्रह्म अगनि मे ॥ तनमन कुं देराग पीछे
प्राण पिंड मुक्ति है ॥ जो बकन धोकि काम ॥ १ ॥ तुरसी ब्रह्म अग
नि मे ॥ बिछ वास नां जगाइ ॥ ता पीछे बाधा न हो क ऊ परोय ह
काइ ॥ २ ॥ तुरसी नावे पिंड परो ज्ञानां रसी ॥ ना चे स्व च सुगर रपा
न सेपूरन संतजन ॥ जिन हिंको न संदेह ॥ ४ ॥ नावे पिंड अवे परो
जावे रहो ॥ जुगि जु गिष्य हा ॥ तुरसी तिन से सैन हो जिन पर स्पा
पद गोसाइ ॥ ॥ पिंड अछित पिंड के परे ॥ ते जन मुक्ति सरूप
तुरसी जिन छित सुध कीयो ॥ मन मे लयो अरूप ॥ ६ ॥ मन लो
लीन सो मे सहि को मन नादो ॥ ७ ॥ तुरसी या को लोक को जीव
न मुक्ति बसो ह ॥ ७ ॥ छुटो देह न लेपि रहो ॥ जुग जुगंत जुग
माहि ॥ तुरसी मुक्ति सरूप सो ॥ जा उर मे तेनां हि ॥ ८ ॥ तुरसी
मुक्तिन सुरगपुर ॥ नां पृथ्वी पाताल ॥ मुक्ति आसा गुन गा
लितसो ॥ मन को कीो प्रहार ॥ ९ ॥ चो ॥ तुरसी संपूरन मन सो
ई ॥ सो निसहत उतपति रहोई ॥ चतुर पद मे रहे समाइ
स बनि जन्म मल मुक्ति कहाइ ॥ ९ ॥ तुरसी मुक्ति सु कहिए सी
मन की क्रिया निवलीत रथसी ॥ सु चलत भई छिन चलेन सोइ
लालम सुषमेर हे समोइ ॥ १ ॥ साषी ॥ जीवन मुक्ति सुजननके ॥

मिटि गए छिये छिका रा तुरसी तिऊ परे करि रहे। तुर पद मैं पैसा
२२। विर्दे जिनके उर को मन ना तु सो इ ऊ ष रि गए रहन ही कोइ
तुरसी जीवन मुक्ति जनु जो इ जो ऐसे जो भा है को इ २ का मन क
व ऊ फल कि दिपा वे। क्रोध अगनि काया न जरावे। तुरसी उने
लो न अरु मोह तिनऊ को मिटि गयो अंदो ह १३ साप दिरष सो
गहि दे न ही। संपति विपति समान। लोहा कंचन सम गिने।
सो मूरति भगवा न १४ जद ह मन मा नैन हारे हो। ऊ ज र हरूपी गो
तुरसी गुन गति ता न को काट न लागे को इ १५ जहां मन गो नैन
हारे हो। अरध उरध मधि पांन। तहां तहां मुक्ति रासू पे हो। तुरसी
गुन गति ता न १६ चौ पई गुन अपा छि जा को गति गई। ता को सं प
और ही नहीं सूप्त रम परसे ने लो ह। तुरसी पलटि भयो और
हो वे ह १७ साषी संतोषी साधु जना। संत ब ऊ सु षरू प। तुरसी
षिषा लो कहूं तें जन पावन रूप १८ मन नोषी साधु जनो जन
मन मारा सो इ। तुरसी आसम रो मरत। जीवन मुक्ति व जो इ। १९
जीवन मुक्ति जो निवो। तन ही अछिन तु सो इ। तुरसी जिनके रा
ग नहिं दो षन दरसे को इ २० पंरि दे को गई छित्ता सां तिन यो
संदेह। तुरसी जीवन मुक्ति सो। घट बंद तक रि वे ह २१ घट बंदन
करि ले जीया। अ तिनषा ति उपा इ। जीवन मुक तिमो दा न के।
तुरसी सरनै आइ २२ तुरसी सरनै कूं जो गहै। जो ऐसे को ऊ अ
हि। जिनके तन अरु मन को बुझि गई दिस्मो नांहि। जीवन मुक
ति जो भी सुवो या तिनवनके माँहि। तुरसी बुझ स तरू पे है घट
न र को ऊ नांहि २३ घट तनर कूं को ऊ न ही दे म दे षी स कल ति
सो न जी वन मुक ति जो गीन कें। तुरसी को ऊ न आ न २४ तुरसी
मो न अ मो न की खिन बत्ती का सो इ मुक तिरू प महा मुनी के
बा धा रही न को इ २५ जो वो वेतो ब्रह्म सुषा अबोल ब्रह्म मां
हि। छाडि अ निमधि ब्रह्म बिना। ऊ जा ज्ञा ने नांहि २६ सां चो क
परदा मिट्यो। जै ते मत भागा। तुरसी अमल न ह्यो ला रू
ना जीव जा भा २७ जा वत जी वन मुक्ति नही। तो म रो का आ स
तुरसी जीवन मुक्ति नरे ते आनंद दास २८ आनंद सुत नहि प्र
का स मो सुत ते सुष वि लः सो हि। तुरसी इंउ सु षं को छाडि ते
म ऊ र हो नांहि २९ ऐसे जीवन मुक ति जन। तुरसी जुग मैं जो
हा तिनके दरस परस सो पृथ्वी पावन हो इ [illegible]
प व देह विध्वंने ॥ ३० ॥ तुरसी बालिव देह की। रे मनप्
छिन मो हि जे बिसरें ते आपनी तें उपदेस लो हि। तु

तुरसी त्रि माहि को क त्रि नव मडुलन जोइ॥३४॥ तुरसी ताहि न को
क गंजि न सके ख्या कूर मलौं होइ॥ अपने मन चितन की छि
हि उलटि अमूठी सोइ॥ कैसत्ता रहैमिलै लौं सुरति ब्रह्म
सूलाइ॥ कि जागि रजैपे जगुन पुर आगम पद रस कनाइ॥ के
मन चितन बुधि कूं गहै॥ छिचौस हज सुनाइ॥ आचरन अती
नको॥ तुरसी कहि समझाइ॥ इमदष्टि दहैलै नही॥ सुष को
बिसरे ध्यान॥ पाप कमांहि लिपै नही॥ पुनि फल नहि दसमान
निंदा सुनि जो जनकौ अस तूलि हरष न मानि॥ तुरसी या सम
रमौ क्रिम सरीर सुजान॥ तुरसी संत मधी रके॥ जुक्ति हनयाव
ना॥ यह कंचन का चेह यहां॥ तयो नदछिनी माना॥ छंडी उल
टि अचल नही मन गयो अमन समाइ॥ मिला सरूपी संत मो
तुरसी अछित ही काइ॥ ... तवै माइ॥ द्रि सा होइ जनम्यु
... जिन सके को

कहि गुन इंडी रस घोइ॥ तो तुरसी सिद्ध साध जानि सके कौ
सार कूं तन मन सिला को॥ जोगी मन माहि॥ कलप ताहि
न कपैजो॥ छि कलप व्यापे नाहि॥ सारतक स प्रदा मिटै सु
न कपैजो छि कलप व्याप नाहि॥ तुरपद माहि समा
पन कुं नदरसाइ॥ तुरसी सुपपमिलै षिकैं॥ तुरपद माहि समा
इ॥ ध्यान तन लैहम कहैनै हो सतनु सिला सभा मांकु सकेडिग
न तोडिगो॥ सुषन हो द्विगलतना छां॥ गअस घटनटि कैंग
हिरहे कूं रम पांना॥ तुरसी पद बुसदेहा॥ नहीक सन कूं ज्ञान
जो कवसी तमंतावही॥ तो सिला नउ चेरे आहि॥ सहस किरा
न सूरज तपै॥ तो दोसनदेवे नाहि॥ ध्यूं जोगीकूं ज्ञान सवमाहि॥
उरव चनौ दाहि॥ तोजोगी आनैन कथा॥ दिहासला गुन साहि॥
रवि चौपहि॥ तुरसी यह सिला गुन सार॥ सी तउ मिलन हि ता सम
झांग॥ कदाचि कपरिसिरवुन होइ॥ तो तौ नेडिगा फिरन हि सो
इ॥ ध्यूं जोगी उपसुषके माही॥ तुरसी अचल चलै सो लाही जो
कब कोइ तन उत चलि जाइ॥ सावत नही सिला मत पाइ॥ साध॥
तुरसी तन करि छिचरही॥ अपने सहज सुनाइ॥ मन कछि अचल
को वारहै सुरति ब्रह्म सूवाइ॥ जिमसा साधु है कोक अछितही
नुरहि काइ॥ ध्वनि नामा न धानि पिमा त्रिभुवन वंदत पाइ॥ ७॥
सिला महाजड रूप है॥ साधु चेतन सोइ॥ संत मिलोए अंतरा
प्रगट पेमी दोय जनदापि सिलाअडौ लेहै साधु चलन कयहोइ
तुरसी नथा पिवु सदेह॥ संतसमानन कोइ॥ तुरसी को मत
सदा कंगे रनही॥ इसु सुपरहन अमान॥ अपंड अछिड सबका

सकल सुद्ध समिता निरखो न ताहि को कू ग्यानी लेषै ओर न
कू नहि मानो ना जो ग्यानी बिसराया । बिष बुन बाजी ग्यान ॥२०॥ चौ
॥ तुरसी समिता मन सो पावै जो कोऊ ऐसा होइ आवै उमसु
ष मांनि दहै न हीदे हा रूप बार है ग्रह अचल ब दैह ॥२१॥ तुरसी सि
ना मन तय हमार संतन बरनेयो करि अधिकार बड भागी होय
वे सो य ऊ नर सो वक्तं ड लन जोइ ॥२२॥ ॥४०॥ दृष्टा ॥ १७०८ ॥ समत
को य रि [illegible] तुरसी ब्रह्मा कीट प्रजंत लौ आत्मा एक स
मान सूक्ष्म सिसि थ संत राव मैं दीषि लेऊ मन मान ॥१॥ चौपाई
ब्रह्मा आदि कीट प्रजंत थावर जंगम संत असंत तुरसी सब
महि व्यापक राम । काहू के गुन संग नहि काम ॥१॥ काहू के गुन
[illegible] आवै सब मैं समान सदा रहावै सूरज चंद जल कू जानि
लो ही । व्यापक जैसे घोर सो आंही ॥ सो ॥ सब घट व्यापक
[illegible] तुरसी राम अदह ओर का और रहावै नही ओर और
य ह देह ॥ तुरसी गुन की विषमता बरत विषमता नाहि ॥ मां
[illegible] निरषो ॥२॥ बि ए को सब माहि ॥ कहा उतमम
[illegible] सुषि मत्र स्पूत नो तुरसी सब गुन घट तिमै ॥
आत्मा एक समत्व ताहा सब घट पिंड ब्रह्मांड मैं व्यापक अ
लोक तुरसी दिष्टि गुन ब थैं सो भेद रस अनेक ॥ चौ
॥ दृष्टि दृष्टि दृष्टि घर मांही सो ले नाना रूप दिषांही तुरसी सम
दृष्टि उपजे आही तन ब न लेए कूरू पद रसाइ ॥ ऐसे घर दृ भिनि
भिन सब पायो मन ले थो ष मांहि अट कायो तुरसी निरषे
[illegible] को हो इ तुर पद संसीर ॥ पूरन सोइ पूरन प
द [illegible] पूरन बिन कछु और न देषै तुरसी पूरन कहा ए सोइ
[illegible] मषि यह मत है इ ॥ ऐसा ॥ तुरसी चारो बेद को सा
र [illegible] मत यहां समिता गहि दहे देह सुष बिचरि जु हो इ ब
[illegible] चरि जु हो इ बिदेहा ॥ सरि जु गुरु [illegible] मि आई तुर
सी [illegible] मौदि सा द [illegible] ई ॥ तुलिता जब ता नि
[illegible] सुष के है [illegible] तुरसी तब ब्रह्म जानि है पाया
आनंद [illegible] निंदा अरु अस्तुति [illegible] राम तु
[illegible] ता निरे पायो परम बिश्राम ॥ चौपाई ॥ तुलि कं
चन तुलित काच बमोई [illegible] सरि जन होई तुरसी त
[illegible] सुध जानी तेई कहै सो आहि अग्यानी ॥ ए कचा
र कंचन का टरी ॥ ए कचा [illegible] कीच घनेरी ॥ तुरसी [illegible] समा
न तु जाने ॥ ताहि समिता सब संत बषाने ॥ ऐसी समिता

सिधि होइ आवै त्रिबिध तापन हीता हिअ हिदै। तुरसी सो
नृप दरबार मैं जाइ।। सिसतते तसिधनि दोइ समाइ।।७।। कोऊ
र कपाव नकहि कैसुख पावै।। कोऊ सीत उसम बदसु नावै
डखसुख कम करू न कैनावै। सो मत कोऊ चढ भागी प
वै।।७१।। कोऊ चंद नतेपन करै। कोऊ उडावै धूरि दै कऊ
तमि होइ खोरा मनी हैग तिउ तनह रि२८ पथ्य मनसुह ससय
नित बपति आहि बकु माइ तुरसी तब मन तपाइ।। न बरो म
हि कीरे सहाइ२। राम कृपा तें पाइ ऐ कै गुर पूरा होइ।। माकै
दास परम तें समम तउपले सोइ२२ चौपई कोउ छि सास नका
मत ऐहा आतम चितै बिसरि हुन देह। कृत करी रम त्सुका
पथो नो। तुरसी देष सरबस मोन२२ साथ। कोऊ आवो न त
जावै कोऊ निंदै बिंदो कोइ तुरसी समि तहै सिधलो। आ
क हिएमोइ२४ स बने मासे सुपन जा भिजकु न दरसाइ।।
तुरसी समिता गर्गोनगहि रहा संतोष रामाइ२५ अनंत सि
धि साध चिको पा म त्रक को सोइ मत एनो हामारहे समि
तार है समोइ२६ आगें पाछें रामजी। आरथ उरध मधि रामि
तुरसी दहिद स्रिभ महो संमसकुल हीं म२७ गुना अतीत
निर्गुन मई अबिगति अपरंपार तुरसी दऊ दसि न स्यारा
कोऊ जानै ज्ञान नसार२८ पना दिबेरी नाङ्गेन ही मित्र न नास
को इ तुरसी बहदसुष मैं पमा कैना सोइ२७ रि धि आए बुधि
नो चले अन आए न घटाइ तुरसी पूरा मंत सो रहै सिधि बै
सुभाइ ३० तुरसी निसप्रस्त्रति को रतना सुनै नक बड़
सोइ। पु बिकारू कौ नाकै गेर हाए कहीसे इष्ट ए चनत
की ऐद सद।। ता में व्रस्त समोन। घटि बधि कऊ न देषी ए
। तुरसी यहु तत म्या न३२ न होन हा जितनि कृत सबो आरध
उरध मधि सोइ तुरसी रमि रमि रह्या पालीद सान कोइ३४ ब
रपरैए कार्मो छिबि छिबि छै हैइ ध्यावै तुरसी मनि गनि रूप
तजि भोगै छि छि ता गावै नूप। जब छि छि छि छि उ दतहे छा चर
म छि छि बिलो मानै तुरसी सबन तपाइ ए यहसाम ता सुख
नवइ तुरसी यहु समि साधर मा। पास त्रबेद सु रोता सबे संतनि
म ष्ये कारीयो। मसा अकाल मंथ पोन३७ तुरसी यह समि
ता धरम जो उर मैं चिकोऊ कहोय। सो उषसुष की कसकउ र
उपजन कबकु मदेयर८ व्यहरू यहल्ले एअवरीरै बिनाम
जात्राहि तुरसी समिता कै जोये सकल ए कसोइ जाहिरी हि

[illegible]सीती नरे [illegible] सराहे दुषसुषकबकनकपाग
आदे तुरसी मान अमान समान ॥ [illegible]
[illegible] तुरसी यह सा भक्त को सोम हा बुधि सो पार
[illegible] आपो एक ना न होन उतिदर साह ॥ [illegible]
[illegible] ॥ तुरसी बेद पढो व्याकरन प
[illegible] अष्टादस पुरान ॥ सकल सास्त्र सो छिके ॥ [illegible]
[illegible] करे जुपानी [illegible] पकरो तप करे बुत करो दे [illegible]
[illegible] दिन [illegible] तिन सो रूप जे बिना एक ना ग्यान
॥ [illegible] रूप [illegible] करतानी तुरसी नल होइ ॥ अरे व्याधि तजि
[illegible] पानी सो होइ अरथ [illegible] रथ मधिदसो दसि दरपन
[illegible] ॥ तुरसी ध्यान ना ध्येय बिचित बसे चररहे न को इ
[illegible] बूलक [illegible] तुफा [illegible] बसो हत नाहि ॥ अरे व्या
[illegible] तुलिन होइ ॥ मे [illegible] मिटि जाहि ॥ मान अमान समान
[illegible] अरि मित्र ताहि ॥ तुरसी आनंद पद दरपनो हे [illegible]
[illegible] ॥ तुरसी देह दस देषो [illegible] कही अमल तजु राम
[illegible] ॥ तहां न हो हत को नाम ॥ [illegible] तुरसी
[illegible] तम्यान यह ॥ अति ही अमल [illegible] सो है अधिकारी बिषे
[illegible] ॥ न [illegible] अहे तम्यान को कामी न
को [illegible] काम तुरसी [illegible] जतन है तिन को यह आराम ॥
तुरसी अधिकारी ही न है को [illegible] अन अधिकारी ना हि य
[illegible] तुरसी बेद पुरान ने मांहि अनअधिकारी
[illegible] यह ग्यान ॥ तुरसी [illegible] आपी ए दे
[illegible] ध्यान [illegible] ध्यान ॥ तुरसी अति नना सेई धर्म अति
[illegible] न कन [illegible] को कद धर्म तद [illegible] ना हि
॥ तुरसी अधिकारी [illegible] ग्यान यह हा कहो रमा बिधि सो
[illegible] अनअधिकारी जीव को देषो तुम्पान मुराहा ॥ तु
रसी [illegible] को [illegible] एक ताग्यान ॥ [illegible] देषो वि
[illegible] मान ॥ तुरसी तदे [illegible] भासे
[illegible] ग्यान ॥ [illegible] कल सास्त्र सुमृति को ॥ य
[illegible] ॥ तुरसी [illegible] कथो को [illegible] ग्यान
[illegible] ग्यान में [illegible] सद ईबर घो मे
[illegible] तुरसी [illegible] बिचरे को [illegible] अधिकार ते
[illegible] यह अहीन बिचार ॥ तुरसी [illegible]
[illegible] ग्यान को [illegible] करो ना [illegible] बद पु

रानाश्यमोरग तुरसी कासी औको शकुल्ल वतोका नामुकत्ति धी
नुहोइ सो मुकति जाइ सबलो ३ अमुकति काहू की नहीं ॥
धमा मुषरु कथे नुएकुसा सविकामनो अनेक क्रोध
लोन बूहा नही कहा कथे होइ एक एदेह अध्यासी नो वस्ते
गहए कना नुग्यांन कि सहु उपदेसो को का तुरसी होइन मं
न७ तुरसी ग्यान प्रकास दरपे मो ष्पान सुध्यातमा साहिस
कुल सामत्र को सारथ हा एते ही मे आहि ॥ जाको अर्थयो
आसी रागदोष मल तेषा सत्र अधिकारी याग्यान को तुरसी
कहीए सो ३४ तुरसी रागादि कजा के यागो रह्यो नु कोकन
हि ॥ नाहि सन वे ग्यांन यहा और नउ: दार साहिरषा ॥ विषय
यावा लोक की भ्रम करि जांनो सोइ ॥ विषहरनलो वि
सारि के रहा नउलटा सोइ अधिकारी याग्यांन का तुरस
कहिए सो ३ और येकला कथ्या करी कथे कातुरसी
होइ ३७ अनेक कारन वहक्रत तोजि सिली एन त्रसटाइया
वा उने नुलोक के विषे नागविसरइयां अहीत नुग्यांन
मे सोई नले वहरहा तुरसी जा उहे ते गए ग्यांना तर सविष
इ ३ संमादमा क्षमपत्ति नुयहाना के सिधा नई आस तुर
सी धनि धनि संतवा अधिकारी नुकहा ३५ अनुराग समद
मादि संपति नुयहा संत निबरही मारा अहीन ग्यान नउदे
करन को है साधन अधिकार ३५ तुरसी इन समदमादि सा
धन सिक पाये एसे पूरन मोक्ष निनर्गुण पायां न लषि नुकूं नहीं
कूविनता को इर द्या अहै न गुण की ॥ विधि हम कही सु
नाइ ॥ तुरसी असे उदे होइ जो गुरु कै रसहाइ ३७ तुरसी गुर
कारन सब धरमका हे उपदेसन तार गुरुहा ते लषि जाई ए
हे त प्रपंच नुपार ३६ हेन परपंच नतल षेने क्रांति ही तजा
ना सोइ तुरसी उतनम उपाइ है ॥ ताविसु नूसई सोइ ३८ सबघ
टव्यापिक एक है ॥ निरदोषी सम देषि ॥ यह सुध बुसन पास
मो ॥ तुरसी निउकार ते षिन ए यह निज ब्रुसन पामसी ॥ ३९
षेबहु रान ॥ तुरसी सब साधु के से सब संरहे सम ग्यान ४० ।
ब्रुसन बिना नहि विन चेरा यह बुधि निमघ कजांन तुरसी दे
निदिध्वसक करा ॥ यह समदिसन ग्यांन ४१ श्रवन मनन को
फलनु यहा षु दत नावना एह तुरसी मागन उदे होइ विस
रावन जड देह ४२ नैपर तुरसी जडता नावनो भिवार ब्रहना
वना नुरमे भारो गुरगमि तहां लो जावे सो राखी बुसे गपासिल

ब्रह्म हो सोइ ॥४॥ तुलसी ब्रह्म सों भिन्न है कारन माया है नांव
नां सुध साधारनां ॥ स्तुति सु तुलिमति बरनी मारी है न
ध्र सनपरमबिचार ॥४५॥ सो ॥ तुलसी द्वैत न मूल तह होइ जो
हि मा है को इ ॥ अखंड अहो निसहृदामे ॥ क्यों न ब्रह्म है
सो इन छंद चौपाई ॥ तुलसी ती रबनी बरनी पाइ न देखा लौ ला
गा जा इया ॥ सुध ब्रह्म नांव नां माही ॥ तो ब्रह्म सो इन मे स
मानां ही ॥४७॥ ब्रह्म हि ब्रह्म कीयो करी हिरदे सु धरि कही ता
तुलसी कहत यह नांव नां रहे न जुग को नांन ॥४८॥ हि न दे
खि न ध्यो सु ज्या नि रता एते सो इ ॥ तुलसी रज्जु मा ही जु
गा ॥ ऐसे यह जुग जो इ ॥४९॥ तुलसी ता ब्रह्म साचो मोल गो मा
नतो हि न ग्यानां ॥ ब्रह्म ग्यान के ना एते रहे न जुग को जान
न ॥ तुलसी ब्रह्मा ब्रह्म न छूटो ॥ सो है जहा सुरे न नां न
नां सेन ही ॥ ऐसो ग्यांन सु ऐन ॥५०॥ ब्रह्म ग्यांन के नएते
हि जाइ हेत क्लेस ॥ तुलसी ब्रह्म बिके ग दोर हे न रज नी ले
॥५१॥ ब्रह्म ग्यांन अग्यांनां ए कै संग नु सो इ ॥ तुलसी कैसे
ला जही यह सो ब्रह्म न ही हो इ ॥५२॥ तुलसी अग्यान की रज
नी ॥ नहीं ग्यांन सु भांन समां नां ॥ जहां इ हत हां वह न ही व
नतां या को हांनि ॥५३॥ मह ज्ञ द्वैत ग्यान यह तहां केसो
अग्यांनां ॥ तुलसी हमहू ध्यान न ही ॥ तुम्हे नक नक रूका
न मे छियो ही जानी ये ॥ ते जनि मरन जान मांन संत सु म्हत
ही कहे ॥ नाग्ये दसु रांन ॥५४॥ जदपि अग्यान छली है क
आ वही आ ही न चाहि आगे ग्यांन के ॥ तुलसी कहुं न बसा
॥५५॥ कहां लौ तुम्ह बाद लो को अछादई जु जांन ऐसा अही ता
तौ नहीं नि रवा रनि कि रवांनां जा घट मे तपन भयो तहां केए
सहजौ नां ॥ तुलसी अरि मिल एक भया न ही नदे ॥ ध्यान ॥५६॥
हि रदन को तु मैं लगा तं को अधिया रा मरा जहि तज्यो हे
को नहीं न हो इ प्रकार दीप गांको जा वत हो ना तका न सि हि
र ॥ तुलसी गयो रहो न हो ॥ अस अद्वैत ग्यान बिचार ॥५७॥ जप त
प सांदिक न को ॥ सु मादिक न को सो इ ग्यांन अकेलो सारहे
ग्यांन समांन न को इ ॥ तुलसी तामें ता कमें औरक हो ले सो इ
ग्यांन मांन इत स्तु धरम लिस निरुत्र लों सो इ ॥५८॥ तुलसी इतु
सा हि न छत्र प्रकास ही सकै नि सांन सु रन हो इ ॥ मांन ज्दे मा
सन हीं ॥ ऐसो ग्यांन जु सोइ ॥५९॥ तुलसी ग्यान समान को कहं नहीं
ना ग्यांन हुं सु मांहि ॥ घट घट मांसो कही इजा को जनां हि ॥६०॥

तुरसी ग्यांन समां न क्लेक्रु नहीं॥ संसक है सब को स्रुति सुख
रस बही कहैं॥ ग्यांन तहां नहीं दोइ॥५१॥ तुरसी है तउ परा सिहै
उरसैं धरो उगर्व॥ श्रद्धी तहां उरधार क्रु स्स सक लकुछी मिथ्या
हये तुरसी है तउ परा सिहै श्राद्धा तसु पको म्हरायं सुष सब संत दिहै
कह्या मति बहकि परो कम्रु ह॥५४॥ तुरसी हरि न आइरा गैरै
परो करांम। बाहरि जीन रिसन रस्या रहत रूप अरूराम पप॥
तुरसी नांम रूप जैहू हत सकल प्रकास कसोह॥ सबका सा ना न
सकल सरो॥ ब्या पि र्यास बलोइ॥५६॥ अरू दार मैं रह नहै हूबंग्या
पकपीवा॥ पुजा पनि सुगंध सुबासना॥ पिंड पिंड सूंजीवा गोसराम मो
रमि रस्या॥ यूं सब घट व्यापक सीव॥ तुरसी अमलो कही है अ
चे संत समधी सु॥५७॥ जद पिदार लिनि लिनि लिनि है॥ दह बलिनि लिनि लिनि
हि तुरसी दह है॥ ब्रह्म रूप ऐसैं आहिय॥५८॥ तुरसी दार निनि नए
न। ऐको नयापी पलने केरबं बूराद हन सकलमै ऐकु है यूं कुछ
सबनि को रूप एक सम भिन्न तु घ घटि नमैं बुस्न ऐक ही
आहि॥ तुरसी गुन की विषम ता॥ बस्त विषमता नाहि॥६०॥ न
स्त सुधो कही है॥ सब घट मांहि मो रा तुरसी सब साधु कहै॥
बस्त नेद नहीं कोइ॥६१॥ न्यारा मन निज निज विचि। न्यारा न्यार
नांहि॥ न्यारे न्यारे मनि गनां॥ ऐको आहि॥ ऐसैं अघट ब्रह्म
हैं स ऐमान सब घट मांहि॥ तुरसी व्याप कहौ हरदा॥ हूजा
को क नांहि॥६२॥ तुरसी अगाही कोरा हन कहि मनि रान घट
बिसरा हाथ गां रूपा रांम है मनि रानना नाकाइ॥६४॥ काया
माया आदि दोजे तक र ऐ बिकार तुरसी ऐ अपनपो नहीं यू
हनि है चौनि रधांर॥६५॥ चित चेतन मैं गाडि रस्या॥ बुस्न तावनाए
है तुरसी वाहरि कूचे मै सत्र नांव नाहे॥६६॥ चितन नहीं कोग हनक
ऐ का अपनां वहे है॥ तुरसी देह उ रांध नग॥ व्याधीपुरी चुपद॥६७॥
चेतन नहीं कोग हन करि जड उसूं नांहि न कांम तुरसी जड ठिडरू
पहें चितन आत्म रांम॥६८॥ चेतन हीको गहन करि जड बूगानां नाइ॥६९॥ चेतन ही को म
नगाइ चेतन सुधो ऐकही है॥ जड बूग नां नां नाइ॥ जड बुगन्यागधी
हन करि स्सह गा गहधीर॥ तुरसी नारही परहूरी यूं आहि धीर आतम रा मदे
र॥७०॥ तुरसी धीर अधीर विचि॥ आहि तु अतरोहा धीर आत्मा न सेस
अधीर कहे है अदे हद॥७१॥ तुरसी जड चेतन बासो नन कै आहि तननेस
रीर ताहि अगिहीश्राचै॥ कोंअपनावेधीर॥७२॥ अग्यांन आदि तीनों
जुत नाअ तितउ प कोंयां मां तुरसी महा जड रूप ऐतहां नहीं धीर को
कांम॥७३॥ तुरसी धीर अधीर चित॥ उ पसु परहत जु सोइ फलका

याकाल वैनही रहाएक हीहोइ ७ तुरसी डिष्ठि जु औरकी सम
जुमसक्रुसमिनांगा तिनोकीसंसेहरया निरदोषीनिहराग ८
तुरसीधनिधनिधीरखरै जाकीदृष्टि जुएह बैरीकोक्रमासेनहीमित्र
कूनाहिनकेह ९ बैरनावमैंतोकरूं जोकोकरे वैश्रान तुरसीस
बघटआपही देषेमिटयाकुध्यांन १० तुरसीगयाकुध्यानतरतेजु
अछि ज्युंरबिनेदलऔरैन आदी ज्ञानतनपनमया तषसपकरन
सुछेन ११ बदांतसिधांतकोमतएतौही सार तुरसीसंतनिकीस
मझयहअहीनबिचार १२ यहरूयहसे अवर जहांजहारहेअ
ग्यांन तुरसीतहांनहांमासई ग्यांनभएनहीआन १३ जदपिबबी
मांनकै प्रतिबिबबनेअनेक तुरसीनेत्रतुयादिमेंआतिएकक
रेक १४ जाकोकनदेषीएहजीयक्रिजांन तुरसीसोकमिथ्या
हि ज्युंमराचकोपांन १५ आपामांहीआपकूं आपहीनतयआइ
तुरसीत्रअमकरिहरा नहीतोराकोकाय १६ ज्यूंबालकमुषअ
पनो दरपनमांहीदेषि तुरसीलेषनुआरकौ दितइतोहीपष १७
ज्यूंगजफटिकपषांनमें आपाओरजुओंजांनिफोरिफोरिमस
तगलसै दितहिदेपवांनि १८ तुरसीज्यूंकेहरिजलकूपमैंआप
नाहीछायादेषि कूदिपस्योनयोकाल तबमिपेसक्यान आपानेष
१९ तुरसीआपालेषबिना आपाआपाकोकालमहासंतहोइयो
रवे नहीसोसुतहिदया २० तुरसीआपालेषबिन आपआप
कूसोइ आपहीगपमरदनकरे देषानलटीहोइ २१ तुरसीआपा
लेषबिन यहइगहैतबलोइ क्योंहीमिटैवकोनही जोलेसु
धिएकनदरसाइ २२ सोईहैतउपन्नरैहासुरतिसुमतिजुक
ह्लोहि तुरसीसबसाधकहैहै तनहांसुषनाहि २३ आपाटारि
देषेअवरसोईहैतउपनरी तुरसीसबघटआपहीदिषेउब
होइहरि २४ जिनआपानिजकरिलष्यासबघटमांहिसमांन
तुरसीतेएकहीमएरहेनहसरेनांम २५ तुरसीबिबीबिबरने
जो बूसीवएआंखि जदपिबसतठाकहै पैमनजानसुषेमिनां
हि सहसाहीमानेबकेनहीसोजुगांतचलिजांहि यहनिज
ज्ञानसुनीजुहमबिदपुरानमिमांहि २६ जावतईस्वरजीवकीज
हेजहिसोइ तुरसीसुधिएकनलषी होवाचकधेकाहोइ
२७ तुरसीअबिद्यावसिजीवयहघटआकासवतसोइ मठआक
मवतईसहै दिषासुरतिसंजोइ नमेनिक्रोबाचकतजे तछि
नीधमांहिसमोइ नबयहअपेडब्रह्महै दोइकहैनहीकोइ २८
ज्यूंरबितेजनकपना रबिजलमेंदरसाइ तुरसीरबिजलसेपि

लोन बखिहे नमिराझ।जैरे कहै सो रूच है जावसी वहि नसमाझ
मन बुधिपानी सावलेगझो लोनिज कैन सुकाझ।एपचुरसी मन
बुधि पोना सुखेगा।जीवसी वोए सोझ जने बिबेक ही सै हि बात
नि कछु न होइ।६८।बाल निमेन लेघनो वपिकपिअरोतनपोन
तुरसी मन जलन सुख बिन।नही ब्रह्म आमानए।६९।तुरसी पान न नो
न मपरकते मनपानी सुखिआइ।सि वे दोइ काए कूसे अरहेनके
जराइ।७०।मनपानी सुखि जीवका जैसा बाचिप नि त्रिवसो अप
नें कारन भित्या।मिटयो है तउ बहि दाए।७१।तुरसी जदपि बुस्नके।
कारिज माहि नि कोइ।कारन कू कोऊ नही।पिया पिकहिएदीसी
कजीवेरो कसी वयह।७२।भ्रमकरि जिपजै सोइ।मनपानी के सुखि तें
भ्रम मिटि ओक ही होइ।७३।पान पानी जिनका सुख्या।भ्रम कू गया बि
लाइ।७४।ने बिबेक ही नया।रही न कोऊ राइ।७५।तुरसी प्रमात्म अ
वयह।सिन सासि धमुनाइ।जगतिजो गबेरा को सबफल बेलय
इ।७६।इती सापारंपूरन॥साषी॥४२०२॥परिकरन॥२००॥
अथ ग्रंथ नियते ग्रंथ चौपरी॥गुरपरसाद अकनि प्रवांनी हेस
नो तनी जु चालन बानी।जोय सअछर कै बिचारी सो चीन्हे सो जन
रपार।१।प्रथमे बिसरै माया मोह।बिसरै पांनि बैर माटो हश।बिसरै म
मता मांनि बडाई।बिसरै हरिबिन बुरी मनाई।२।बिसरै आपा
सअभिमाना।बिसरै सुदीन खगुमां।बिसरै परपंच बाद बिंदा।बिस
रै टकटर सइसी स्वादं।३।बिसरै कांम क्रोध का संग।बिसरै कुबधि
बिषका संग।४।बिसरै अगनि निंदा सुख।बिसरै थापनि उपसुष।५।
बिसरै पाषंड कपट सुभाव।बिसरै रूप रंग रसचाव।६।बिसरै दसनब
करें की बांनि।बिसरै कल्ह कलयनां कांन।७।बिचारे सति संगति
नही की रति करे अघाइ।सोई परम निजे बसनो पति कुं बिसरन
जाइ।८।साहे यां मनां मनन सार।साहे समता ग्यांन बिचार।साहे बुधि
बेमेक परकासा।साहे नाव नगति बिसवासा।९।साहे जत सत सील
संतोष।साहे स्याधरम नजि दोष।साहे निज करनी अधिकारी।साहे नांव
निरंजन सार।१०।साहे दीनगरीबी ग्यांन।साहे दिढि करिथीर ध्यांन।
११।साहे निरति सुरति मन पवन।साहे निज निरमल निज चरन।१२।
साहे परमारथ नजि स्वारथ।साहे अरथ पेति राव अनरथ।साहे सा
च रूच छिट काइ।साहे प्रम प्रीति निज ध्याइ।१४।साहे निज तत निरम
ला।साहे ऐमत सार।सोई परम निजे बसनो।कन तो कूकस डारि
।१५।न करै नीरथ ब्रत की आसा।न करै न मत पञ्चांन उपासा।न करै पा
रथ पूजा सेवा।न करै नांना बिधि नेपेवा।न करै बिन चारी कासे गा

न करै काम निकंन क्रूसेगा॥ न करै दरबबिनजबोपार॥ न
सिष साषा परिग्रह॥ २॥ न करै आसंघ रिधि रिवांरी॥ न करै पष्टि गुनि
बकबिल्लारी॥ न करै परवरती स्नेह॥ सो न गता मैं पषुनवेह॥ न
करै घरनि याप रउपदासी॥ न करै प्रीति विगासी॥ न करै किसतं
डेरजमावो॥ न करै रहिनबिन आन उपावो॥ प्रीति करै निजदेव
मनका॥ नर मन साइ सोई परम निजबैसनो॥ जन तुरसी बलि जा
हां पा॥ ३॥ आरति स्नेह दरिनां वरुचारै॥ आरति स्नेह निजरूप निहारै
आरति स्नेह अनभेरम पीवै॥ आरति स्नेह मरिबकुरिनजीवै॥ आ
रति स्नेह निरष लजसगावै॥ आरति स्नेह निजतत दरसाइवै॥ आरति
स्नेह चीन्है पदसोइ॥ जा चीन्हें फिरि जनम न होइ॥ ४॥ आरति स्नेह पति
स्नेह मनलावे॥ आदि अंत लिमधि रामहि ध्यावै॥ आरति स्नेह पेषे पति
दरि॥ जाके दरस मिटै दुषदुंदरि॥ आरति स्नेह सेवाकरै॥ तन मन
आतमताइ॥ सोई परम निजवैसनो निरमलतमा हि समाइ॥ ऐसी
करनी जो करै सो निजदरि की देह॥ तुरसी जो मनमरनका बीजे म
क्रतनसनेह॥ ५॥ इति श्री ग्रंथ वैसनौ सम्पूरन गयो॥ ५॥ कार
सार जोग ग्रंथ॥ उत्तम जोग संग्राम कछिनबड़े की कार॥ पा
कुरसेम स्रोरजी वृकदा बिचार॥ १॥ सुरनर मुनिजनपी रहे नव
जानै रखारै॥ गुरगमि ध्यांन बिचारि गहि बिलाज नपारै॥ २॥ स
ङ्षी समिनाह रहै निरबैर निरास॥ सोजन उतरै पार रकाल न बरी
करै बिजास॥ ३॥ जाके सत्र न मित्र नहीं संगि हज़ा कोई सदा रहै
रत्न धसाथ जन कहीं है सोई॥ ४॥ नहीं किसी स्नेह दहै सुषन सी
हो सी सनह सिरि सहै॥ आदि अंति ऐसी निरबाहै॥ ५॥ घरब
करी निरचेन ही इन सबसाझै॥ कंनककामनी त्यागि रहै ननमत
लोलाई॥ ६॥ ऐसी रहनी रहै ना सकुन पद चानी॥ कैसा चरहै
का चसाई परहरी ए प्रांनी॥ ७॥ सबद सरी नरक है मिथ्या कबऊ
हो बोलै॥ सोई पद निरबांन कहै कूं बनबन डोलै॥ आसा त्रि
ष्णा डिंतजे सबउजग आसा रां रहै निरंतर॥ निरतिगिसो ई जोगी तत
रूपे॥ काया कूं बसि करे मोह तनजि मममा मारै॥ ऐसा अवधूत जो
नि काल ने हारि निवारै॥ ९॥ निरघन रहै उदास न हीस मीहरा
खावै॥ एकलमंत अबीह॥ सोई अवधूत कहावै॥ १०॥ नहीं
ली चाहि पाछें संमान ही कोइ॥ रमैसी गीप्रवान देवगति कहीए
ई॥ ११॥ निंद्कू बिदकू को ई नहीं किस हीस्नेह बैरन्नावै॥ सबदेषै स
मभाइ जि सारे कतिसा रावे॥ १२॥ आसन अस्थिर करै रहै नहीं घ
रवरहारे॥ उजगर की गति ग्रहि पावै अकलप अहार॥ १३॥ च

तन मेलै मरिकै लहि अमृत रस पीवै ॥ ऐसा अवधूत जो निर्मै रेन दीज
ग तम मिनीहै १ ॥ ज्ञान तव चलो जनि मृरिछा तां अस्थल आवै न
[illegible] ॥ ७ ॥ तूरका दरसन पावै ॥ ६ ॥ कुंवा बाड़ि निवा नव
रेन दी बाड बाग आसन मढी मसांवैन तेजे सब बांदे बिबादां ॥ १७
तन मन तवो बदि जडी बूटी नदी ता नै अवगति बिन आराधऊं वा
सब ही करिमांने ॥ १८ ॥ परहरि बाद विवाद तजे सब हद्द निका साथ
चक्र मच्छ ज्ञानी कारिकै रेनहीजी वकी घात ॥ १९ ॥ स्वाद सकल ब
सगि तजे घाटा मीग अरुधारा डंडी जोग नदेय सोई जोगीम नमारा
॥ २० ॥ ह्लाधि गुना फेरि पछिम दूं चला टाधा ॥ २१ ॥ भवरगुफा कै
घाट पीवै अमृत मच्चु पावै ॥ २१ ॥ अमृत पीवै अघाइ तप तिसबल
न की जाइ ॥ थकि सहोर तामांहि नाम कै ध्यान माई ॥ २२ ॥ पर ही
पांच पचीस दोहन तिरि कपाट खोले ॥ सतगुरु कै परसादि दिसा
ति बिसबांनें ॥ २३ ॥ तसे उप अरसुघराग तमें आसन जावैं ॥ त
हां देखि निज रूप मगन है मांहि समावै ॥ २४ ॥ रोदास दसि जमपान
विचारि कै उनमनि रहे समाइ ॥ सुरसी दास अंतर नहीं ता ॥ त
होइ दरिआइ ॥ २५ ॥ इती करनीसार जोग ग्रंथ संपूरण ॥ ग्रंथ
॥ ७ ॥ साधसुलक्षन जोग ग्रंथ ॥ साध जन संसार मैं सुजाइसु
भार कारू केरंग मांभि ते अपने रंग राइ ॥ सुष बानी सुस
बद चवै कुस बरु कहै न काइ ॥ अीलसंबरी मांहि करि चले ब
ऐ कहीं मांहि ॥ निरपष निरदावै रहै बरतैं ससा बिचार ॥ कांम क्रो
ध अहंकार का मंगन कै ते गार ॥ ३ ॥ दया मया हिरदै रहै सदा सु
मति स मेल ॥ दरिद मदरि का नांव लो मल आरमन मा ते लपपर
निंदा भावै नही ॥ पर पंच पतन सु हाश ॥ पर आतम संपति कहि
परचे बित नै ध्याइयं ॥ ॥ बिष अमृत तंजन मही ॥ जिसि जिनि व
जिलेय ॥ बिषत्यागे अमृत गहै ऐसा का जकहेयदां ॥ अलप छ
हारी अलप नुय अलप ही निंदा जेह अलप रमिसार मैं सुमति
सै अलप ही मबद करे य ७ ॥ आरू सार गा आदि मत आरू सो बि
चार ॥ आदि अनिर टिबो करै निराकार निज सार ॥ ८ ॥ करम तजे
करता भजे कैरन जाकी कांनि ॥ ध्यावत तरीयां जिके करता
ते ऊपजो त्याण ॥ ९ ॥ पिरम पेमी ना तजे अविनासी स्तेह रहत
ना सुष त्यागि कै ॥ होइ रहै समिपहा ॥ १० ॥ होइ रहै समिपद लो तन
मन आपा जारि ॥ आर तिस्तृआ त्यामही रामरमै इकतार ॥ ११ ॥ सु
ष सुआंन उचैर नही ॥ परयंव सुनै न कांनि ॥ तिमैं लोइ नांउ तव्ह
को ॥ मुनि में राषध्यांन ॥ १२ ॥ को निंदो किदै को कां ॥ करीन आदर

नावांकू चां चितनलैगाई। हरिनजिवैको चाव १३॥ सुषदि
कऊ अम गयेरोडप दैषिन मुष्काइडपसुषहै सोमोरकरि
ना सम जिरनाइ १४ समजुजोट सम कै चना सम जुमा नत्रयमां
मी नाउम सम करिरिगेनी सम चौरासी जो न १५ सम जु सुषमाि
जां हरी ॥ सम याये सम पानी सम से नफट कमनि मोंया सम कं
कारमंगनाने १६ सम मनपवरी तन मही निरति सुरति समानं
नादबिंद सम करि नैकी सूरनप रमानि थीन १७ पराघरी सूर
रचा मी हम सुनि भनए हा तुरमी श्रै सा सं तजन परतबि प्रभु
हहा १८ अन्नली मांथ सुनि हल जो गग्रंथ मं सूरता गुथ्या वा ग्रं
ना सुन नेहा रांम नांम तत सारसुमिरश्रनि श्रंत रि प्रोनी
मकौ मनि वारे सम कि सत गुरकी बांनी १९ काल जाल तं जाल
जु कि तन मन मति थाबे नरम निसोसे पेमि मुगधम रिषमि
मो वे २ बुधि विवेक परकास तन ए नहां करे निवासा सबय
मिरजन न हरि यूपसहरि परश्रासा २१ जो श्रनमिश्रनंत मे यम
श्रां न सुन्याभी। गवबगु मोनगु दावं दिन सो घनि संनि जागी। २
रहीन मो गुन सहि श्रादसारप जुनि वारी परमार पप रतीति
सु मति सब हरि देषारी २३ कबी सुषी समा नरोइ काकु न हाकी
जो जन रबेरी जिति रहे सुमिरकी नासानी जे दयासम यो सना
घ सी नसद नहा जुगाहीये बुधी जनीमवतें जुरांलि कबऊ न
कहीये २४ को कबि देषि नहीं ज कोकबदो न लताई दोकंम
करि सुमिरीये सकल नप तिराई २५ जूं जानदिन श्ररु राति व
ना नषन श्रटके मांही। श्रैसे ग न करि मिलीये सुषसागर मांही
२६ करे श्रटकी पनो हि हरी लीये निति हरिको नां मा नांमवि
नाबके सो माई तुलसी बकामा २७ सबही कं सुष देइ कपदी जेन
गा सा जूं जिन पन मेषोप श्रांति न्यारे का न्यारा २८ कांम क्रोध
श्रहंकार सा गिण तन कूं नही रही २९ सं तन की जु सम माइ जाइ सुषमं
जि जु मिः ती पे कू कहां नि गुन सुरगुन कया सकल नहीं सभि
क सिली सो श्रन निरगत सराइ २ सान् दरस कबुन कीजे ३१ म
हां षाट क ना मीनां कहा सुष रक सो पाप समहो: हरसमिवा
रिश्र मानि जिमक रे श्रहारा ३२ बुरा न जानां नहीं कहीए बुरो
सो नो जन कीजो श्रातम श्रा मि बुझी सदासाई सुमिरीजे ३३
मनक चकाम सुनि बीरथ हनुमति दृढ करिमाही तो तिर
तन जो बाट पाचे परचे सुभतांई ३४ मन मन साज मनाइ स
माइथर मथद मांही बाइतजी गहि मत श्रातनक दूरची

रद्धाकहारककहारावोकालिकोआसक्तनहीहोइ॥ बारहतन
गतिमाहमकलनतमिनिरवंधहीये ॥ कुनककामांनीत्याग
सुखसपतिसबखोई॥ धोखेलिखसेतापजनतनमांतरहोई॥
१०॥ मांनिहमारीसीखरांमआनिअंतरिगाई॥ पांचपचीसोंत्या
गि ज्ञानगगपतिमिरनाई॥ धूसबमेंआकृसाहरि
नांतरिहकसारा॥ ऐसेमचुरुपखिलकनकाकैलिचा
रा११॥ अविगतिअपरंपारतुमअडियअविनांसीदेवार
सादसोंदसमूरि॥ पलतिपरचेकरिसेवा॥१२॥ बाहरिसो
नहिंकेकेबसबहीमेंजांनी॥ अरंथनेरथमधिकेतव
कुसबमांनी॥१३॥ सबहीमृतओगाहमारमततेहिलुनाया
ऐसीकरनीकरेतो॥ बकुरिफिरिधरनआया॥१४॥ सदाक
याकबकुनधारई बकुरिनयाजुगआशातुमीसुघस
मही रहीसरासमाई॥१५॥ इतीग्रंथसंपूरनाग्रंथ॥
॥ अथपदलिषते॥ रागगौडी॥ गुरुमेराग्यांनीरंग्यांनी अहो
जिनिअवगतिकीगतिजांनी टेक॥ सारवसानवदिखरदेखरी
धारलिषैलिसरांनी॥ निरखिसुरतिअगिअंतरिपीवस्तु॥ प्री
तिसहतलपरांनी॥ अजेनमंजनसबेलिसारै मनमनसा
गहिआंनी॥ अरितसहतआत्मामांही प्रगासुप्रवांनी॥१॥
पांचपंचीसंभगततिचेरे त्रिगुनसुदईकांनी॥ कहितुर
सीचोपापदमांही॥ नियागरकुगततांनी॥२॥ ॥ आहिमेंगांन
रेगांकें माहगाहसचपांकें टेक॥ पलितनअक्षरलहतरतारन
नरकनिवारनेवा कलिलिपिटारनकेतंकवतारनेरेकारि
जसोरलनेर ॥ सबसुषपूरारेतरपूरा निरमलतनराखे आवे
बाजेतूरा मराहस्त्रा॥ आनंदम्हरारे॥१॥ अतरजोमीसब
कास्वांमी॥ सबसिरनांमीरे॥ तारनतिरनपरमसुषकी निधि
हैनिहकांमीरे॥ परमप्रकासापूरनआसा॥ जनआसारे सु
मीदासादेलिसवासा॥ राषेपासारे॥२॥ असरनसरनगरीब
निवाजा॥ सबबिधिसबहीसारनकाजा॥ टेक॥ अथमउधारन
तारनसिध बंधमोछिकरनतिरबंधा॥ कलिविषहरनपर
मसुषकारी॥ जनममरनतेंराषेटारी॥१॥ जनतुरसीताहिपिस
दिनगाई सुषसागरसांहिलेयसमाई॥२॥ ॥ अबमोहितारोसा
हिबमेरा॥ दीनदयालबूडतनवमांही॥ करकसाहसवेरा॥ टेक
मायाअगमअथाहअधिकजलनाहिनमांतरगअपारा॥ गोत
अनंतकालतेहोइजाना॥ पारहियानहमारा॥ ममतामीनर

तोनमगरमिलि।मोहिसंतावैनारी।जोहनवरैमे
सू कूरगहिकाटिमुरारी।थपकिरदेवीखिविप्रमनवमाही
कहौकहांबतेमराजननतुरसीकेत्रौरनकोकरोकनगोस
सेमाहे।।यातेनितिरांमजीकोनांमप्रांनीकहाजूतोकिरै
टेक।।चांमन्या।रांमहिचितनलई।।फुनिबंरताोनदांनव
दखिवादविसरिज्ञिमाथ्यौ।निसदिनऋांगेजांमातनहि
डी।तमनकेरसपरहमिलनांटगहीबिसरांमाजनतुरसीसु
मिरतेसुखमागबासहजिसरेसबकांमथापड़ामगहरिक
रिनरकूरकाहरपाहिसरनहरिकेरोमनक्रमबचनस
रहिमनकोहिजाजनममुफलहोइतेरो।टेक।आनंदसहत
श्रूरथिंघ्रुकोचितचरनोनपगारी।निरनेहोइनिरंतरनि
सदिन सुमिरसुमरसुखदाई।।पंचततत्रिगुनकीबाजी
यामैंरचिकावरीहैथकूमोकृतमरूपमकूतमगतनतथि
श्रेनपदगाहीर।२।रांमनांमहिरदेजपिहितसू।विसरिनजर्ड
नाही।जनतुरसीकहेकातेनछूटेसुखमेसुरतिसमाई।।।
२।।सोईजपीएजंजालत्यागिजुगतसूजीयमाही।जाके
जनममरननासकलतेनसाईटेक।दीनबंधपतितपावन
पूरनबिरदजाको।नासहीनरमकरमत्रनेकागावतहैज
सजाको।।कैतेकहरनकृपाकरनोत्रथमनधारनसाईजि
नि।जीएसमाइसकलनसंताऋपनेत्रंगमांहीर।२।चरमनरूप
मतलीपरमजोतिपरकोसा।जनतुरसीदासपरसितास मे
हिआनऋासा।।जनकरिभाईचितमनकोजोतीलय
त्रिपदनिरबोलटेक।मनिघ्राजन्मतुलेनदेरीत्रमनिहोइत्र
चलमनक्रमबचनजोहरिजोतिरामिटिकरमत्रनेक।
थकूत्रोमरबकूत्योनहीरेकरीतिनिहचलमथुमनकी
महिमांसनालोमिलिहिनरजनदेवू।२।अपनांमाहिब
सुमिरितेहिजिनजाइजनमनमाह।जनतुरसीहरिकेहै
नाहीसंदेहोनाइ।३।नाकूरिकतयागहै।।त्रेरनऋेसीवं
घनदेखासोकिनबादगमहिमापावैकरिकरित्रनेतसनेह
टेक।छतपचनकेदसिमनोकारेकूहनतजारागोबं
त्रिथकूजगतिनपछेजेहेमनमसिराछ।।चारिदसावोरसी
जनमकोपाहिहै।जनमजागसोयहदेहतनकसुखमाहीम
लिबोततेलागि।२।बारबारसोहिकहूसमकिरेसुमिरलेहे
हिनिनांमछकूत्रोमरथकूदावबन्योहैयहमोछिमुनगाम

नजि सोध कूचे निज गाकू रे टेक ज

बल गस चन हीपा कूरे मायामो हन जिह जी आसा।

हद रक्षा कूरे [illegible] पांचो च [illegible] रिक रि उब ध्या। त्रिगुन नाव मिटो

[illegible] ब तुर सी सुख सागर मांही हिलि मिलि प्राण समा कूरे

[illegible] न मेरे जोत सै सी न फेरा तो तो हि ने रो ही निरखन पद

[illegible] केरे टेक नाम मत्या गि जागि जगपति नजि रागना

[illegible] रे ऐसी कारि हि सो सुरत सुमटत्ता ज

१ [illegible] सारत्थ [illegible] नपनकूनी रनपी जेरे [illegible] तोन सोरे

[illegible] सोसुख दरिय लिनी जेरे २ सब संतन के सार सुम

[illegible] मसा हि न चितन दीजेरे नायो घूत पो रे हीनी को क

[illegible] जेरे ३ जन तुरसी आनद कर नजि जा व तसु गामें

[illegible] दी जुध रे कानना सा ऐसो निज कर लीजे रे ४ [illegible]

[illegible] गुरसा च बनावे रे जीव अबुधी क पट न खोडे [illegible]

[illegible] जपन पसे जमपूजा पाती बाहरि क रि

[illegible] रे अंतरि क पट न सी हरि सूहित दिसउनी पुटिमावे रे

१ [illegible] के मांई सीना मारग सुनावे रे [illegible] न रि रूपस

[illegible] हरि [illegible] हिय्या न लगावे रे २ पर हरि रुफ व लो न अरूल

[illegible] हरि चरनो चित ना वे रे तुरसी सोई साध हरि साचा अ

[illegible] पदपावे रे ३ [illegible] रे भाई सुनि सतगुर की बानी लो ना

[illegible] बैरागी पर हरि कुल की कानी लो टेक पहली

[illegible] सम्रट के सुनि सुनि बात बिरानी लो अब क

[illegible] परी अंतर गति आइ कथा पर बानी लो १ मैं तें ग

[illegible] मानि रुचि मानी लो [illegible] चलो अभि

[illegible] माया की मिटि गई खेंचातानी लो २ चंचल मैं मन निहच

[illegible] सुरत निरद राखी लो जन तुरसी सतगुर परसा

[illegible] अचल रजधानी लो ३ १ संतो मा है राम हमारा रे मा

द [illegible] बिंद बिबरजत ना नहि न स व र न पारा रे टे

[illegible] बिया पी सब ते न्यारा सब का सिरजनहारा रे स

[illegible] नम व जवनजनासि [illegible] रे १ सब सु

[illegible] सुप दाता [illegible] मि रो व न सारा रे सब गुन रह

[illegible] नामी तरन हि धन ही बारा रे २ ब्रम्हा बिस्नम

हादेव नारद [illegible] कहि करि [illegible] पार न पावे अगम बतावे

ना वे [illegible] कतारा रे ३ आवे न जाइ मरे न हो जनमें अब गति

अंत पर अपारा रे जन तुरसी ऐसा राम हमारा ता हि सुमिरू बार

वारेष्ठ॥१०॥ चितनरामजपैमेरेजीवराहिहिरदैस्रे अंतहीलि
गा टेक॥ ऊगतदेवैगनसाधिलिसोहंसोहंसोहंजापजुहोहि
॥मोमोहंउलाटिकैंनेचारो॥ नासिहिरदैथिरवैसि विचारो॥
बिनजिस्या बिनहीकरमाला॥ सुमिरेथिरह्रैप्रसोदीनदया
ला॥२॥ याहगाइत्रीजपजुकहावै॥ जैपैसुजोगीनांवकहावै॥
३॥ जनतुरसीअजिनिनियहैकीना॥ जपिजपिनरेअजपमें
लीना॥४॥ ऐसेंतोसुषमांहीसुषनांहीरे॥ सकलसासत्रटेबिसु
कोरे॥ करिकैऊंचीबांहीरे॥ टिकोप्रथमहस्थग्रीकारदरा
॥पिरतसिबनकूंजाहीरे॥ जहांथिरहोइदैजादेषगुरु॥ त
पअगनिमेंज॰ ॥ांहीरे॥ आसनबांधिनिरासाधे सुष्म्यदेषा
मबैसहांहीरे॥ सीतउसनममिकरदेहारैसुमरेहरिकांमीहे
मांहीरे॥२॥ सुषिजोगिकाकरैसेततनपातुछदरयनकीनांई
॥तवचिंतमेचिंतुपप्रकासेप्रेचंदा जननमांहीरे॥३॥ जनतु
रसीयहभ्रीकप्योटै॥ पोटिकेक्षेमांहीरे॥४॥ रमलोटं गउस्र
॥जोआतमसुषमांहीरे॥ ऐसेंतोसोआतमसुषपावैरे जोवि
ऐबिसरिबवनमौ उलटि अपूर्व अरे दे ॥टेकरिचेतनही॥
मारसुषनमें॥ दुषदेषिनदहलावैरे॥ संपतिबिपतिसमान
पनो॥ निजमरूपनिरताथेरे॥ यादृस्यसीमामिजोसे पा
नीपावकउनमां ॥वैरे॥१॥ ऐसेंयकुतालामरीमाया ताहि
जुगतिकेसिरावैरे॥ रहेमलेमानसवसही ऊपरि रागदो
नहीलावैरे॥ निरवैरीनिरदंदीतुरसी॥ जोसतिरूपमसा
रे॥२॥ दुषसुषकसकजोलोजीयओ दोरिकोनरषांन
कीयोकरेपरपदकूंनहीजानें॥ जबपरपरदकेध्यानलि
गेमेजबोएअनंतहिजांनें॥३॥ जोकदाचिदुषसुषकूंत्य
॥तोदुषसुषनहीत्यागो॥ तुगउत्तवे बासितसोहरदे थ
रिथरिहेदजुआगेरे॥ टेईबोटपरसारहोइरहेदिनतेहरि
हिनांही॥ बडेबडेस्वरयंद्रिनयाचेहारेकरिकरिउपाड
गेमांही॥४॥ जनतुरसीपरदायहजोगोस्वरूपवनांजतका
मेषरनमनतेगेनांवस्योनबजनवोइसिराईषा॥ऐसेंमरे
गइमारेकोऊजानेंजानसुजानजाकेहिरदैओरतओं
येरंगहीमेरंगरभिरहा॥ तारंगहीनचीन्हेकोइ वारंग
रूमोईचान्हिहै॥ ताकेथडपरिसीगनहोइ॥ जिहिरंगरंग
रेरंगबधे॥ रंगकबकजूटिनजाइ॥ रंगसरीपाहोस्वैरंग
कोऊपरसेआइ॥ आनरंगसबपरदेवैरंगतनमनरहेर

सो॰ जन तुलसी राम को नाई रमै स राम सदा सोइ ॥ २४
राम सनेह जो नेम वराग न को रंग ॥ प्रभु मेरे अबगा नि अ
न्त लगे [illegible] राम रोम न पसम पसउ घट मैं ॥ पकुप नाम लो
[illegible] सि जत कुंल मुन म नि गन लो ॥ [illegible] जु ऐसे हो हा
[illegible] पर मन ही यकुरो ॥ विलीमान हो इ जाइ ॥ [illegible]
[illegible] नमेंमु [illegible] निरख न ॥ नो द नि ज रि न दी आइ ॥ पंचतत
[illegible] मिलावो ॥ फु नि [illegible] गुन रंग सो इ ॥ मन ही रंग करो इ
[illegible] नाय दत न नहीं कोइ ॥ प्रेम प्रीत्य अरमा हि बसावो ॥
[illegible] निदिन ध्यान ॥ जन तुलसी तार ग कुं तब पावो ॥ कर
[illegible] न [illegible] जलटि अमीरस पीजो ॥ आ मंत्र न
[illegible] टे [illegible] बिब [illegible] कर न पढे रे का पढे वेद पुरा
न मन को मल नामि टे ॥ बिन जती ए नगवा न ॥ का तपत
नी [illegible] का पूजा अतदा ना ॥ सब परहरि हरि नांव जे
[illegible] गुरग्यान ॥ [illegible] जो गये हे ते गति हिये हे ने
मि हे भाव ॥ पांच प चीसो फेरि को ॥ परापरी पद ध्यांव ॥ अ
परापरी पद परसि के ॥ करम कटि जा हि ॥ जन तुलसी
[illegible] मन मिले मन सब मांहि ॥ [illegible] गति बिचारे जोग
[illegible] टि [illegible] गये जे ना नों [illegible] चल बुधि निह चलनई
[illegible] बिना [illegible] निह करमी स्र मन लगेगा ॥ आ मंत्र
[illegible] करम काल ॥ बिचारि के ॥ तीए पांच पचीसों फ
[illegible] पाने परी ॥ [illegible] नहद ने हि ॥ न भ स अति आ
[illegible] मिटे अम सेपास ॥ जन तुलसी परमप्र कोमे भि
[illegible] ना म ॥ [illegible] राम [illegible] ॥ के हि
[illegible] को पानी ॥ [illegible] क [illegible] ते तो तुम
[illegible] नी टे [illegible] क रि [illegible] नो मां निम हा बि
[illegible] मोन [illegible] टे जु बिचारो ॥ आ [illegible] ति परवानी ॥
[illegible] गानआ [illegible] बकु ध्यानी बस्यादि
[illegible] करे ॥ कहा मोक सदमानी ॥ [illegible] निसी चि
[illegible] सु ध्य ज न [illegible] ॥ तुलसी तेक ही ए तुम
[illegible] नी ॥ [illegible] सा हो र [illegible] ध्यानी ॥
[illegible] की कहावना ॥ बोने बेद नु बानी ॥ टे क ॥ आ
[illegible] ॥ सूर बिच स पानी ॥ निगा वनीर लोरे हे तदा
[illegible] बस सूबानी ॥ ॥ चो [illegible] री यह दे पुनि वो
[illegible] मानी ॥ जो जुगल [illegible] न ति पर [illegible] देह जगत

कानी॥थगहिगुरध्यानपंचकूपूते जगकूटरआनी॥मान
ईनु॥बुधिसबमिकरियोआदिखेतिदक्यानी॥ननदे
मेघिनवनपतिः ऐसेलेहसतपहिचांनी॥छननुरसीऐसा
ननमोगी॥बकरिनजनमेआनी॥४॥२७॥सुरतिकोअर
थदेतीआंरीपिकोकनांनहीतलमोंदेअपांनीनननसं
दीरकवाचकपांनीसीमसुनिकैसठबूसहोइवेगमाहि
अनुअधिकारीकोमीक्रोधी॥मारपरेगानांहीर॥कावतजी
बदेहअधामीनावतनगतिकरांही॥नगतिबिनांछूटन
नहीबोबनबसीबसोकहांही२॥गहिगुरुपांनअपांन
हिकूलेकूलेआतमनांही॥नबस्तूंरहेस्तूंहीउसहैरकान
करतकछुरह्यानांहीर॥नाहिकतकरनेउरसाकोकोसु
मपतिकीसीमांहीजनतुरसीयूंरआगतहीरहिगयाअप
नेसुखसरूपकेमांहीथ॥२॥रचिलेलागीवावूदसरसाकेरूप
रमेरबिसरिगयेविषवतनको॥बिवैवासनांबिषयेरंगा
कामक्रोधआलसकीजरावतीजुमाहिर॥मोहलटिस्या
नीनहीलेफरिवका॥सोनाहिरे॥धनिवेजोगीधनिसती
धनिवेपांनीसाधरे॥जागतसोवतजिनिकेलागीथ्यहिनिसे
परमसमाधिरे२॥जनतुरसीबानीलेछिगए॥त्रिगुनपरेजुसो
इचतुरपदवासाकायारहेजुपेसोहोइरे॥२॥२७॥
गजेगतीगोडी॥रमईयातुमबिनरहोनजाइहिय्यामयाक
रिअंदरमेवैबागामिलकेनआइटे॥पीनडलीदरसनहि
नदिनदिनत्रलिगलिरहेउदासा॥करगकपाटखोलसबम्वो
मीवियनककुपकासत्रिमहोनेसेतुमप्रगटोप्रगटद
रसनदेहु॥बिनदरसनमेरोक्लोमनमांनेपलपलतहांजेद
हु॥तनमनमेसनुमहोतांहीकाकरूंखबकूतबनाह॥मनतु
रसीकोंमलकुकपाकरिबेगिबालमनताइहि॥रमईर
मोदरहमहिदियाइ॥जिहिदरिपकचेसकतघेतजनसु
बमेरहेसमाइटिकनहोउपतिपपतिसंतापनकोईकात
नपरमेधाइ॥बिछरनमिलनमिलनफिरबिछुरनऐकहु
आइ
नहीनाजहांएकरसनसुराजी॥घटतबढतनहीकाइ॥
तहांतेउअनेनस्यांतिअविनीतलछांनदसदाबिहाइ॥
ऐजहांधरनीगगनपवनमहीपांनीप्रविसमिकनहीआइ
सोदरदेकुदयाकरिमाधोजनतुरसीबलिजाइ॥२॥केसे
नहलगोकेरामसो॥मनबिचै॥नांहीकामस्यो॥टेक॥बिधी

स्या स्ये प्रीति लगावै हरि का गुन कबऊँ न गावै ॥ मन गु
सजन्दन मांनें महीं जगत ते राम न जानें ॥१७॥ तुलसी
कारी हरि बिन होसी दुष भारी ॥ तथा मन गुरम मकावै
लिं मन मांनें नहीं नहीं हरि तजि भिष बनो टेक ॥ तुं आर आर
चित लगा चैन नावै न हां बकुं मनु पपावै ॥ यकुं दीसे रूप सु
गा ॥ सा मेय रिपरि मरि रिपत गा रा ॥ या में सुष न नांही माहीं तें
सम किरां मन गुन गाई ॥२॥ जन तुलसी इहै बिचारो सुषम
रा रां मसं मारो सार ॥ ऐसे राम नांम जपि लीजो रे ॥ लिक्ष्मी
का सें गलकी जीरे ॥ टेक ॥ तन मन हरि कूं दीजो रे ॥ जगत राम
सांइ लपी जीरे ॥ जन तुलसी ऐसे कीजो रे ॥ तजि मोह छिद्र राग
तु मिजी जीरे ॥२॥ सोई दास बमेकी होइ रमां ॥ चित औ रत अ
मैं तुम बिना टेक ॥ और रूप क रिजानें तुम हीं स्वसुमांनें ॥
हीं रूप मन तके भिका रा ॥ निरनेपद तजे संवारा ॥ तुलसी पति
स्य मन लावै ॥ नावे मिलि तहां समावै ॥ ते रोपरम हित्त
हे रो ॥ और स्वारथी लोग घनेरे ॥ टेक ॥ के तेरो परम हित्त है राम
इपमो चन है ता कोनां व ॥ ताहि मजि काहे कूं इत न तजाई
रतनु न ग्रो हलि सैन हि नाई ॥ त्या गिप्री ति बारहलीसं गाई
इह वाह ले बसे जग जाई ॥ अन हित हो इत्री बिनासी नजि
मो ॥ बिलस्वर थिय लोम बता जरे ॥ जन तुलसी की टहल की
नाही ॥ रसे ... न पर सुपद मां हीं ॥
कुली ॥ अवन अविर अविमन अनादि अपूर्वा ॥ मजि नेरा मना
न तुं मा मा ॥ टेक ॥ य कुं सकें नसं सार सार ॥ आप व्यापी यह मार
दो जगी दो गर कुं मावे सरम कोना ही तहां ॥ नहीं बिश्राम के
हि समझि देषि बिचारि सोहि सुष की निधि राम रटि ले आप
हीं माहीं ॥१॥ आडि अमंजिका रमाया ॥ मोह नीसब जीव षाया ॥
कुं बंध्या जन न्याल कूरि जिलि मेइया स्वामी ॥ काल ता काड स्
रि लीया ॥ अने पुरी में बास दीया ॥ ऐमा दीन दयाद वृंअंतर
जा मीं ॥२॥ जाके मांहि नर जीआनं ॥ ऐसो हरि सुष को निधांन
परम प्रकास पूरन निकट है नेरा ॥ जन तुलसी साई संभाल
लीजे ॥ सबतां न हि बिन मन कीजे ॥ छूटे आगवन जानी मक
न इथ तेरा ॥ सो जोगी जोग्या मनकुं मारे ॥ मनकूं मारि म
नोरथ जारे ॥ टेक ॥ ग्यांन घर गांवदि अवसर पो चोपिस न निव
रे ॥ निरसने हो इ निसकं लिम दिन ॥ नमन लानां मन चोरे ॥१॥
सिव नगरी में आसन धारे ॥ अनहद आगम बिचारे ॥ त्रिबेनी

तहितालौलौवै परमजोतिमिलावै२।३ कालकलपनानिक
टिनआवै।गलितहोउनुभावै।।जनतुरसीऐसाजोनिमोः
परमपदारथपावै२।४।हैकोऊमूरतसधीरसंतजनमन
ममताखोवै।उलटिआपमांहिआसनधरिसोवहनरीगलवै
वैरैरसकामक्रोधअभिमानआपदाँदुखआहरिनधोवै२
आत्मकेरसयांनिकरि हरिनजिकाहूजमारैर।।१अवतै
हाइकरिअचलतिचीन्हें पदमहिसमांसमावैजनं
तुरसीऐसातनजोगी।वकुछिनतोजलिआवैर।२।सतोहै
कोऊऐसेपिनो।तनमनजोतिनरमसहोलै।पांचूंजनपन
नाटेक कामकालकामुरडामारै।क्रोधतलोमिरजानै।जि
मोहदोऊदलपरहरि।मनवयधरांगाहजानैर।ग्यानविचा
तजेकलपना।बुरीमती सबत्यागैरहैअडोलचतेलिसदा
सुरसोवनहीसदाभिलजागेर।घतरजतमतान्हूंगुनपरह
रिचौथेचितविलमावै।कहितुरसीमूरलपदपैमासुपम
हिजाइसमावैर।४सोबैरागीरामकामनलागहिआवैरव
गतिदेवानिरंजानो।नाहिउलटिपिछानैटिरधअंतरगतिअ
सनकरैनिजततनिरतावै।पांचोरूपरमोधिकैनिलिम
गलगावै।रंजगुनकासंगुपरहरै।तमकुविमरोकैताजा
मैथितिरहेकेचौथेचितलावै।।मगनसहरमनरूराहिसव
करमनसावै।जनतुरसीहरिपदचीन्हिकेपदमांहिदावैर।।
५।हरिभजिहरिजनजिहोनीम्यांउवलिविमनकीजेआवैघवे
जोवनकसेपलपलतनछीजेटेकवारवारनदीबाधेस
मिपानपावैपुनिजगवैननढीलकरिसतगुरसमझावै
१जवलगतुरतनआवईतनकालनपासैनवस्तगमसेवा
रामकोनिहचैकरिसाहि।छक्रअवसरअबकेचन्योनिहि
कहूसमझाईजनतुरसीहरिरूंनजोसनमनचितलाईर।
६।रामनामजपिवावरेनकवादनकरनांवकवादेवुधिक
लघटैसोजेमनपवूनांटेवामेकिमसपदध्याइरे।अवत
गतनसरूनांजवलनलजरहिहरा।तातैजेरुसुमिरनां२रम
जुकहैसमझाइकें।तुमरूनिकूअवूनां।विलहरिसुमिरन
नांमिरेजामनअसमरनां।यहसंपानगहिगलतहोइहृदधा
सुधरनां।जनतुरसीतनमनमोपिकैनिजनामचरनां।
७।कलिमैकेवलनामहैसोईहरिधारैऔरउपाइअन
तपरोताहिचितहिविसारो।टेक।औरनउपाइअनेतकरत

कछु नहीं मांही रंकार रचकर है तैसे सब सिधि मांही ।
जु सब मैं आन धरम को सोइ निस्तारा ॥ अब कलि मैं
सब मैं स काट्यो पू नसागर वेद पुरान सब ही नमिति नाम
ही सुन्दर सुन्यो कोटि पतित पावन न [illegible]
[illegible] स कल निसि मन निस कलपति सब हीन में भरत
न मांही ब हिरमुखी ताको जे जे कारा ॥ सूर बिकम राजा ली
[illegible] दहन सुंदर दास हरि भूपा पस [illegible] निपल कमें हरि नाव
निवारे ॥ आनेकर लमन आत्मा हरे जा मन न मरना जन
सुंदर सी हरि नांव कं यकतार न चरनां [illegible] तौ ही आछे
रूप अन्य [illegible] को देह रूप [illegible] ग्रंथ बडु परतमा है रूप रे
[illegible] च लिप या परहे [illegible] बहुत नानो सोऽहं बडु [illegible]
[illegible] ऐसे सुडा [illegible] न र राम [illegible] आ र गुक
[illegible] निज रिकर [illegible] [illegible] सुनि है मो [illegible]
[illegible] न परी [illegible] वेद को [illegible] सार में मन ना [illegible] पढ़न
सुनन सुन न सुना [illegible] जोग परही
[illegible] जो [illegible] देव जन सुंदर सी सब साधु कहें
[illegible] यह मत सार सब को आहि [illegible]
[illegible] हम [illegible] योगा [illegible] प्र [illegible] मन
[illegible] चित [illegible] आत्मा राम [illegible] कर सत्ता गारहो त्र
[illegible] जिम [illegible] यह जोग वे राग [illegible] यह लगति
निहकाम [illegible] यह सकल सिधांत को फल [illegible] जो केवल राम
[illegible] अफल [illegible] फल कत्यागो [illegible] जुनी [illegible] जन
सुंदर सी [illegible] आत्मा में थीर [illegible] मन मेरो मौ न मुड़
[illegible] जुगति मांही रहो [illegible] पर
न [illegible] संग [illegible] निमास बद हो निहकाम [illegible]
[illegible] रामनाम चित्त रहो [illegible] को [illegible] को [illegible]
[illegible] कहो [illegible] की आस अपने सीस परि सहो
[illegible] की ऐसे होइ निरबहो जन सुंदर
सी यह सार सब [illegible] कब [illegible] का [illegible] कहे [illegible] ध्यान
[illegible] के कथा के [illegible] को [illegible]
[illegible] बुधि [illegible] की य जु मन सा मैं न
[illegible] या कवी र साम चैन [illegible] जिसारी
[illegible] मैं न [illegible] मो करो करि सां तडुब
[illegible] ज्ञान सुंदर सी यह [illegible] सब को [illegible] धर

हन। सोई अरपि रगहि रहै। फपोंनन फिरकहु केंनौ। २
१। हरि बिन करम माधिन जाय। टट दरसन नोंसी नली। मधु
केकरस नुपाइ। टेवौ एक जय नपती रप्य करैं एक पुसों चैमें
३। एक जेभाज पिअन कर हिहू ना यकट गधांनन लगाइ। एक
पेंमु नेसी पें सुनहि। एक रहमोंन मगाइ। ए फ ठन बन फिरह
तिम दिन अगिन मसि नगाइ। ४। एक अनप्रहार ये पौवे। एक र
हकंद हि याइ। एक सुफिरनोपि जराभक्ष परिवेआयन।
दिवं निहरि एकसूं जेरहे तन मन लाइ। जन तुलसी तिनके हर
मनामे लीए चरन सरन समाइ। ५। रहैं देवं दगा चित लाइ परह
रिमांनि अमानि जीव के दीन होइ गुन गाय। टेक। काम कोध कतेस
परहरि आपदा बिसराइ। भाजा रामसं आलिम सहित जुलहि अंद
रिआइ। १। कहा इत नत फिरै धानी। फिरे कछु न सराध रमक चित
चिनाइ चिंतबिनो हरि चरनो। तपचाइ २। तन मन आसा पत
टि प्रभु लाइ। जन तुलसी कारिज सरैं सदब सब होत बिन बार
उ। ३। नारी नैंन नदेखौ। सुनो गन नाहि निनमन चोर दपतौ ग
जोगमाही टेक। नैन नबैन कमल सिकर। रचें नपदनावे घटद
रसन जोगी जती राव सभु सिषावे। १। सिव गंगा सुन वाकै रमोह अनि
नारी। फएने कर फरा परहरैं श्रगीहनारी। २। जीनर चानत सिक
रि नाहि। मनवे जाने को कपाघेनरी आपनेबाम लोवर। कि
कको करनक वस्त। जिन हरि रसपीया। धार जीव छलिता घ
नी। धुनि धुनि सकनीया। ३। याका संगमारन नेम भरथा तौकि
चारो जिन तुलसी तन मन सौपि कें निननावरनारो पा। पोचिसन।
पिञ पिरजीय राग मजा। हरि सबबिधि सुर नंको गजा। टेक। तजि
कनक कामनी संगा नाहि चक्रुपरिहि पतंगा। धरि यरि जीव नाए सु
धारा त्यों मेजे के नांहिलन गा। तो हिचार घार कछु माई यामें
सचुनांही काम कुयपेंड न गा। हिवें नरो। नाहि समाक्रिसंभार सं
वेरा त्रंस मधि, मसे चरण्यां नां पर हरि रावरू जीअंतां तुलसी
सेवा साति नांमा। सुप सागर अंतरजांमा। २। छोसाहो इस तनप्रि
जाहै। सो चक्र रिन ही बिन गहै। टेक। अपमकां मनोको टेनि
हकां मनां होइ घट फौटै। घट फूटे रहेतन मांही संमनां मे चले
नांही। १। हिरहनां हि छिपां नाही नयालाथरी गावे। नो दीनेए
छ्मिजमाधा। सिरबैसेरा मीएव मलफाट। २। इह घरहे घटही मांहि
हरिबनांनां एजुमांही पिनोद रयिर कौ नावे। साघर की सुधि
सो पावे। ३। घर की एमहनां नी। तसो जाजे अनहद नौसां नी। जह

अनंदवारनया गा कोऊ जो मैं अगते त्यगा ॥ जहां रविससि तेज
न वरषा न हो अविद्र जो तिन जिया रा जन तुलसी ता सुष मांही म
छज ने देखि करा ही पा ॥ ७ ॥ अब मेरी जीति में जरत बलइया हा
रि मोहे रमि कै जरत मइयां ॥ टेक ॥ जीति मो हि जरत सब इयां ॥
अह बा धिन रचुनि चुनि पईया ॥ जहां जहां हते हा नेव कुले
नां ही न यानि रघुनि जन गा मैं ते मनी री देन ही पारे दीन लीन
हो इ नाव अचारो ॥ २ ॥ तुलसी जोया ने देखे तो पट ले प्रहारइ
रि पद सुखेन ॥ जी ति मे हार हारि में जीति ॥ कोऊ बिरला जाने
यऊ रसी ली ति टे को कोऊ अति न को पहि आवे ॥ टेक ॥ छु
ही को हरन लिगावे ॥ जव पिअ भिक्त गति है आगे ॥ कछु बलन चले
पाँ ही नाले ॥ जो सीतल जल मैं जन हारे ति न क्रोध कल नावे ॥
नेरे ॥ जन तुलसी यक मन जु हमा रा ॥ मम के गा को कसा धुम
रहा ॥ ८ ॥ ऐसे जगपति कोन जोरे जुगति विचारि जो मयदे
रथ लिये गुन घरे न न नाहि न जोरे ॥ टेक ॥ कां म हि मारो क्रोध नि
वारे लोन दे खि लोभ म रजो रौं ॥ निरति सु रति दोऊ सम करि
ना थे नादविंद की नाव सुजोरे ॥ वापरि चढि भव सिंधु पार है
परम जो ति मिलि के गर जो रे ॥ निरमे होइ निरतारि चिचे पिगु
न छाया ली न हि तजो रे ॥ जन तुलसी कहे चौथे चित लावे ॥ अब कुरि
न जगमें उपजो रे ॥ ९ ॥ ऐसे जगपति ही जानो रे और जानि बो
सुभ अतुल यही सा हिन ऊरे आनो रे ॥ टेक ॥ अदार में दहन रूप हिय त
पत म न एक थि मा री ॥ दूधे घटि घट चेतन अविनासी चीन्हि ते
कछु नांहीं ॥ ऐसे हंस मधु रकु गहि हवे नीर नन्नेरा जाई ऐसे अं
मित लषे आप को ॥ अलष लखि जाई ॥ टेक ॥ बपर हरि पिछम
अवतो पर जाय फेरि लखा वो ॥ तो नफ संतर अघट चैन होइ आ
व अलस न गावो ॥ यह ऐसो सुख समब हो को ॥ सुरति सुरति
मिलि न गायो ॥ जन तुलसी सुख होइ सुभ मिल्यो निज निज ही तद
न रूपायो ॥ १० ॥ ना वन फो कट घ्याने रे जो लों बिरहि न लागे कि
अ गुर हा रा मस हिन चिकु टन लागे टे ॥ बेद पढे व्याकरन प
ढे षट सुर सुख संसा सकल न मास त्र साधि के ॥ स म फो मत ना नि
॥ कथा बहु दो के ले को को ॥ ऊ क रो उपाइ मन दुई छ मटे बि
ना न ही हो न मिसाइ ॥ २ ॥ किन देख्या किन यो सुन्यां ॥ कछ मरम धि
आ नां ॥ जिन देषी को गया न रा ॥ अमा सो जो ना ॥ ३ ॥ चित दरपन
सुधि जान नयो मन मिट्या न नाही पहली सुन कम त्यागीया
तिन मन सुधाई ॥ ४ ॥ अंहत कऊ न बह कहरता ॥ आपने बसि की जे

नवश्रषिकारजुगपांनकौ श्रुनि सोहिसुषी ॥ ऐसजनतुरसी कहै
विचारिकौंसमजो मेरनाहीमहतैतालसुदाईरो तोपीछैंनत
वहाराईश्या ॥४१॥ करंरी नाही सूरिवैं ॥ काया वनवासें जोगीस
वाजरथरी ॥ सजि राजविलासं टेक ॥ सुषसंपधनअतिघनां ॥ त्रि
वला बऊ नारी ॥ सकलस्वादरस त्यागीयां ॥ सजि जग्यांसिध्या
री ॥ छत्रसिंघासन राजपाट अस्वगजनऊ तेरा ॥ मनप रहरि
कारिजकी माजनजस्वां मसचे ॥४२॥ सूरापुरसूरामनांसूरनप
दपाया ॥ जनममरनकां चेमिटाफिरिथरैनकायांना ॥ छवि
हरपदश्रोंषिकौकाटीजमपासी ॥ जनतुरसी जोगी जरणां
करवा श्रविनांसी ॥४३॥ अवगति आगम निरंतरि न्यारा ॥ अकल
रूपगति मोहि प्याके बूझा विरला सेहरू हमारनपावैकोई
टेक ॥ सुरनरमुनिजनपीरअवलिया बहदरसनकऊ तेरा ॥ हि
रनांगतिजानैनिरगुनकी ॥ उनगुनगोकीयावसेरा ॥ सबगुन
रहतसकलसुषसागरानिराकाररतिजेदेवा ॥ अवगतिघारप
स्कचुनांहीं ॥ श्रेसाश्रलषश्रनेवृ४ ॥ आदेवजाइमेरे
नहीनने मो ॥ सो साहिबसातमेरा ॥ जनतुरसी उनचरिनलगानें
मोरषदास कहीराधा ॥४४॥ वाबऊगतिबूझे विरला कोई
आपरिकृपाकरैकृपासिंधप्रभु धपावैजनसोई ॥ टेक ॥ साहिबु
रषरमथसेदयियामहिं जो इयिरि हो ॥ छिननैमो पूरन
परवेषपापपुलिमलघावि ॥ जलमैंपेसिजगावैज्यालतासा
मेंहो मलाई ॥ निरसैहोइ निरंतरपैतापासिपरमसुषमोई ॥४५
उरमोहै आरांमविचारे धुनिमें ध्यांनसंजोई ॥ जनतुरसी श्रेसा
जनजोगी बऊरिनजनमें सोई ॥४५॥ छातीपरसेपदच्याइरामात
वंहयरेरवसंवुनिमांही ॥ हमजु कहे गमकाइरेटेक ॥ आसतना
धिजपाषिहरिकारी ॥ निज्ञानेहनमाहरे ॥ यहराधधंनोमाथिान
तिप्तहतसौ ॥ निरासुरात उनमा रे ॥ इच्छाहरञ्चचर्दपवृतो
जलापिंगुलोरचसुनाहरे ॥ सुषमधिमं चारि जुगतिसं दमावे
दवारिचढइरे ॥२॥ विनश्रवनौ सुनिनादश्रपडत विनरसना
गुणगाइरे ॥ बिननैनो निहारि जगाओवन जागमगजोतिजग
रे रे ॥ श्रेसीविधिश्राराधिश्रेनेपद लैतहीव्यापेकाइरेजन
तुरसीसुषसागरमांही ॥ परचेप्रांनसमाइरे ॥४७॥ ॥ बाबापरचेप्रां
ननोजोजाकौ छुदनहोइ ॥ विनकीबिनलौ ॥ धा ॥ रचनिनम
के षितताको टेक ॥ मांमार गनपजेनूहीकबऊ सचेनरसनर
कोरा ॥ सुरतिमदासें चोरम लिवलौ पदसेसिंधसुधाकोर

[illegible] नवगि[illegible] ध्यानकी [illegible] नासेमनमाकोरे
[illegible] छेबेतकाः [illegible] रूपदमाकोरै परमजोतिपद
[illegible] तहोः [illegible] स्वरूपमाकोरै परमब्रह्मध्यानमु
[illegible] कोरै [illegible] पदमाहीसमा
[illegible] ध्याकोरै ॥ २७ आत्मापरचेजिनपरमानंद
[illegible] ध्यानठीन आत्माफटनपराथो
[illegible] ध्यानजि आपापरविमराये प
[illegible] ध्यारनहीकारे परमेपद
[illegible] अध्यात्मगति निरन्तरठ
[illegible] जाहिलगाई सुरसाननुगीकेर
[illegible] आत्माध्याये आतमाकीप्रमदमानी
[illegible] हिनचपातमाछिमानी
[illegible] फिरिव्यापतनहीगा
[illegible] सोपदनिरचिरसइपानी
[illegible] नैमानी सोअरमोफ
[illegible] कानी परमपदमुकि
[illegible] आध्यात्मअमृतज
[illegible] निजआनंदसुषउ
[illegible] आनंदसिधमे सुरति
[illegible] आसविचराह
[illegible] देहग्रहहि
[illegible] नाविरचईआनंदि
[illegible] आमानामानोहाक
[illegible] सधिलोककी
[illegible] सुमाइ आप
[illegible] मवस्वरूप
[illegible] मपदयही सोपद
[illegible] जोगकाचेत
[illegible] कोन्कपरीवसाहि
[illegible] कामी
[illegible] निजपद
[illegible] कायाकासीवषि
[illegible] फनपदी व
[illegible] जेत्रसनानक
[illegible] निसानरलीन अनहदधुनि[illegible]वो ॥ २८

६५

सीगतिपाई॥ मनगुरआपदईसमझाई॥
नांहीरमाई॥ मनगुरसाधकहैसमझाई॥ टे॥ ३॥ नांवबिनाम
नीरथन्हावो॥ नावेनौषंडरूफिरिआवो॥ नावेअवसाध
साधे॥ नावेमकतदेवआराधे॥ नावेजपतपसंज
नावेजोगाजिगमुवानो॥ नावेध्यासोबेदबषानो
रूगामकतपसारा॥ नावेपूजाकरहेअपारा॥ हरिबिन
नेफिरकूअदासा॥ नावेघरबनमेकरिबासा॥ नावेमब
दनबिश्रांनी॥ नावेनगनरहेगहबानी॥ नावेअननति
नेतेन्यारा॥ केवलराममानतमारा॥ सकलसिरोमनिम
षपावो॥ जनतुरसीतास्रलिवलावो॥ सबकुपजाइपरमसु
षपावो॥ जबलगनुगमेजीजी॥ रामनामजपिलेह॥ च्यारि
बेदसांसत्रसबनको॥ अरथअनूपमरोह॥ टे॥ मायामम
ताकीरीत्रयोरूकपहिलोआरांम॥ तासेथिररहेहरिदेनांम
जथि॥ स्यामिक्रोधअरूकांम॥१॥ सतजुगत्रेताद्वापरकलिजुग
चारिजुगकेमांहि॥ सारमूतसुमिरनहीगायो॥ सबसंतनपि
त्ति॥ ऐसीप्रीतिहरथारिअघटितचरनकमलहीचीतिरा
पूरनमनोरथ॥ अपबसिकरि॥ उलटिअमृतआवाजनतुर
सीसिजनिरगुनननिजियोंबकुरिनऐसोदाव॥ ४॥ ऐसाक
रईमांमिबेसदरहेला॥ जोरेकाचनरमीकरकेला॥ जैसेप्रग
टहरतनजाशिऐसा॥ नांवलेनअघजाहिबिलाईस्तुरसी
सजपेरसाही॥ छाडोमायामोहबडाई॥ टे॥ साधसंगतिमि
लिहरिगुनगावो॥ मनकीमनसामनहिसमावो॥ तजिन
रिएमसियालापीवो॥ मरकूनकबकूजुगजुगजीवो॥ २॥ म
म्झेरोधक्कामुंडामोडा॥ जगसूं तोररामसूंजोडा॥ ३॥ हिनिसथ
बैरआनमबिनांनीसोहूटे॥ नमआवाजानी॥ तुरसीदासम
ईजनमाराजेसिरेजना॥ तजेबिकार॥ ४॥ नमनितारीरहैन
साईआपानजिहरिमांहिसमाई॥ ५॥ ७॥ गोबिंदगोबिंदगोबि
दमनिजपो॥ मायामोहतेरसबतजिपो॥ टे॥ बिमलसाधकी
संगतिकरीए॥ रामसुमिरभवसागरतरीए॥ १॥ निसबासुरगोवि
दगुनगाईए॥ अबइरअनूपआमरपदपाईए॥ २॥ जनतुरसीऐसी
गतिगहीए॥ तनमनसीपिरामरमिरहीए॥ ३॥ हरिबिमुष
कासंगनकीजे॥ तनमनसोपिरामरसपीजे॥ टे॥ माचकूव

आत्मके अस्थानवे विकैरामरत्नौवौरे वो ३५

[illegible]री निरति सुरति अजि अंतरि पीवस्तु नष
[illegible]ही [illegible] चो [illegible] तेह रितारे सूते ती ।
[illegible] सुख माही जनतुरसा [illegible] ।२। [illegible] दिन दस गाइ
[illegible] किर मुना आति को कपिर नाहि [illegible] सम फिरे मेरे
[illegible] चक वे मंडली कहादस कर ते [illegible] नेक
[illegible] मोटी मिले बकुत सही तन [illegible] सपिर
[illegible] विन न [illegible] पद अविनास ।२। [illegible]
[illegible] घान सुवान राजन के सब रहे [illegible]
[illegible] सारसु धक [illegible] सब ही नदी ये पयानो ।२। [illegible]

[illegible]

अनबनेसहनजीवबसिकाया॥चुनरुचिकारा॥चुमिचुनिलो
गीरमनकरावराजारानी॥मारेध्यारसकलविषवानी॥कोम
क्रोधकागोलाबाहाका॥चाकोरचोटसूठहे॥छूटिनसकेकोकु
नरप्रानी॥सबजीवमारिकीधुकधानी॥पिंडसगुनीस्तसबहारे
सुरनरमुनिजनपीरसघारे॥महादेवकामनाडिगा॥श्रीश्रप
रबलतेरीमाया॥१॥रचिरचिनानाभेषबनावे॥रिसदिनमाहिब
कुलतउपयावे॥तुरसीदासजनकरेपुकारा॥गषिराषिसाईर
सा॥४॥२३॥मायामनदकुगांठिपरी॥छूटतनाहीअधिकधुरी
॥जोमायाकूमनछिटकावे॥सोमायानहीछाडेजो
हारमनसूं॥तोमनवासिरऊाडे॥मायाबिनमनरहेनपवनसे
मनहिमायानबिसारे॥अतिगतिगांठिपरीअमिअतरिकेसेको
निरवारे॥अैसेहितिमिलिरहेपरस्परिकहोसिनिकोहोई
बडेबडेपंडितमुनिग्यानी॥षोवतषोवतषकेमाहि॥साईसंतमाहि
जागस्वर॥सोयगांठिनिवारे॥कहितुरसीसाईगुरमेराआपतिरे
मारतारे॥२४॥साईनमतामेरेमनभावे॥बाहरिजातानीतिलिय
वेटेक॥बाहरिकामबतजेपुसारा॥अंतरिसुमिरेरामपियारा॥
१॥तिनजिन्हाहरिकेगुनगावे॥बिनकरअंतरदबेनबजावेज
नतुरसीसाईजनमाना॥पांचोमेटिकरसराचा॥२॥२५॥साईसाधसि
रिमोरहसोरे॥टेकगहिमदतजिनतारेटेक॥रहेश्रीकमकोब
लप्यारा॥अंतरिसुमिरेरामपियारा॥नाघररहेनबनमेजाइ॥उल
टिआपमेरहेसमाइ॥१॥जनतुरसीपतिसूमनलावे॥तावेपावे
नहासमावे॥२॥२६॥जोगीयामाईबाबाजुगतिपिछानी॥बाहरिजा
ताभानरआनटेक॥सिवनगरीमहिआसनलावे॥सबदअनाह
दसींगीबावे॥कंथाषिमाअतिघअधारी॥सहजमुद्राअगमबि
चारी॥भिन्नसरूपगुनतेहीपरचोनप्रगटजोतिनहांमनलागी
॥पांचोमोरिकरसजोगी॥कहतुरसीसाईजनजोगी॥२॥२७॥
॥आपापोजिअनंतकेतजो॥अनंतहिपावेनाहीनाहीटेक
मनअमनमबजगयसापापाजी॥किनकनपायोनेव॥केक
केकनपकेकतीरथवृत॥केकग्यानकीसेवा॥केकबदपु
राणोविलंबा॥केकपटकरमअचारा॥पावेनहीआपबिन
जानिकटिहीनाथहमारा॥१॥आपापाअंनहिंषोजिहिरतबीमन
पवनकोजुमिलाई॥तुरसीदासआपछूटापदमेप्रानसमाई॥२॥२
८॥प्रानीकाहेकूरनगलजोरि॥छूतजनपावेनाहीनाहीटेक
रतउतभ्रमपतकपटरसूनाहेरिरहिहारहारेमतादि

ता सहि रस परमिपारबुदारस्या ॥ २३ ॥ बेदेबेद गी कसिनह
हतकहि अनत चितनदेह देहन करता रानेमहिकि भिन
तरि आदारआइ हिरदा मधिनजि राम अपनो बि
सनाइ ॥ माहीहीलागा बरकुमिलि ज्यू बचंदकोर अपने
अंतरराम सोइ कतारनिस अरुभोर ॥ ४ ॥ जन तुसी तन आर
बीनो बऊ मिकहांक्षे बारा निबाहीयग लोबेकेरहे आमा
सेषी रुपा ॥ ५ ॥ तनहिमसहीमे आसन माडा पाचांच लाकांस
गहाडोरे कोकाएकी आरंभलागा नीदलिवाटिकरस
जागो ॥ जिन जिस्याहरिका गुनगावो बिन कर अनहदबन
बजावा ॥ ६ ॥ जन तुरसी अनहदरसपीवो मरकेनके बऊ जुम
जुग जीवो ॥ ७ ॥ जाहि कहो रहो हीहै राम पईए जो कुईएक
दूकां मटेको जेनिह कोमनो तिनपाया सकामनिअक्षिन
हागवायाा ॥ ज्यूं दारमे दूहनरु धमे घीव ॥ ज्यूं नपसप म्यापक
मरुपीव ॥ ८ ॥ तिनयाम नकापाया स्वाच तेहजते कउनक
रे नरमाव ॥ ९ ॥ मनपवनाकारि तनमेंधारे सोइरहे ज्यूं निबाव
कोली ॥ १० ॥ जन तुरसी ध निध निवेसा धो जिन पाईएं जगति आ
गम अनूप पाडेकहो तुम्पां तुम्हारा ॥ भरमकरम कोमनी
कनक सुधाछुटत नाहि लगा राटेको दोजग का जउनी पर
मो धुता कोरि बऊ अरथ बिचारा ॥ जा करनी करमादि कथ
टोला मनरहा निरारा ॥ कागीना जागब तनबपीनो कहने
हरीयपानो तन मनमायामो हि अजूको ॥ साचरदोसब ढो
मोन ॥ सो क्या तरपन अरुघट करमो ॥ जा गिरहइहि आसा
इहि आसा सूं लोगि अबंधहो ॥ कोन नयानिजदासाथ ॥ तुर
सी दास कूहे समा कहि अनआस तजभाहि मनक्रम नाजि
लेना मजरंजन तोमिलिहेरहरि आहि ॥ १२ ॥ पाडे कोन कथ
नहरमा रीमा सुनिसंतजतरा तोप्यारा टेको अब कहां कपाम
तनमब कोजा स्वूकी स्वूंही आंदी ॥ बहआरति उपज नि
कोन करोरा ॥ जासुनि बनके जांहो ॥ २ ॥ बिषे बचनसों ईफी के
कागो ॥ पब दादि बिषे सो हि मोईकपा सुमरनसोई साच
ना मोहो सू ॥ होई ॥ ३ ॥ हदपरे बेहद दबुसमे तहां जाइ मन
लागो ॥ जनम मरन का संसा छूटे स्रुती सुमरत्य जागो ॥ ४ ॥ जन तुर
सी साई पंडित घूरा जो अंसे मम कावेजा समके बऊ सो गम
हा ॥ अ समभि किलेहतरा आवे ॥ ५ ॥ २७ ॥ पंडित कहा नयो मुषिब
नी बोलो ज बलग मन थिर नाही निरगुन सरगुन एबपोमे

न्हाचिरयो त्रमांहीटैकाकेहेसुनेकछूसमकैंनांहीमन
कोहरनछूटैकनककामनीकेबसिपड़ीयोजानैछिमादिन
दिमछूटै॥मबगुनरहतअकलतअबिनासीहैगुनसबतै
न्यारा॥नाकूसुमरिछाडिसबउरमति॥यहलजगपानबिचा
र॥१॥कहनीकूछमांनननांहीरहनीरहेतेसारे सुरमीद
सकेहेसमकायेगुमहरिनजनतरेपारेचा॥२०॥सेतहोसे
पडतअधिकारी धरमगहेअधरमसबत्यागै॥निसदिनजागै
मुरीटवाकांमकोधतजिलोगहिबेडो॥छिमासंगनसोवेसा
चकूमनिनिजिमिकरिमांनी॥निजपदसेहलागावे॥१॥नरम
करमाहिरहेनधारे॥बादबिबादनवांबरनेनहाबसकी
सामां॥अबरत जमछिमतारेन॥पांचपचीसअनंनत्र घघर
हा॥त्रिगुनछिमानध्यावे॥कहितुरसीचोथापदमांहीसब
सुषहोइसमावै॥४॥अब्रवक्षआत्मनलबाहतेपहिचानि
माईनलनाकूरहेबिसरजनदेहटेके॥प्रकासीकपापके॥
तिमरसरहैजुन्यारामांही॥मैचततत्रिगुनकीतेपतमाहिब
तेपेमांही॥जागमगजोतिजरतलछजित जनममरननहाहोद
करैसनांननासमसरोवर॥त्रिगुकेकूलमतमेरे१२॥चिदानंद
सतिमतअमितकबुदरसेइघिननेतबितेसेसुषहंससाक्षुज
न॥तासमसरोवरतीरतरसिकतबियापीसबतेन्यारासबका
ईस्वरसोहिसकतदेवनाकेतरहरीय॥साऊपरिनहीकोई॥
४॥अनहदतत्वरअर्थ हेतबाजेजहांबनाकाबासानलस्त्र
वतेरमोहीजुदासासुरसादेषितमासाध॥५॥इहांईगंगाइहां
ईकासी॥इहांईआपनाथअबिनासीटेक॥जोबडलाकूनत
थीत्यावे॥पिगुलाकूफिरिकेबहावे॥जेनप्रवाहसुषमनिम
थिदयाबुरपरसाहिअसी कहितेहा॥तीनऊकामेलाकरेज
हांयछिमदेसप्रागहेतहां॥जहांसंजगतबाघनपांनी॥पिकबऊ
नकरसूरबनतनगचनां॥१॥यात्रिबेनीन्हावेकोईकोफलजग
कोफलतमाहिहोई॥मनक्रमबचनमतिहैसाईयांनहीसदे
हबकोई॥याकाकासीरनाथमुक्तिपुरीकरिसतनिगाई
यावाहिरजिनबांधीपीलि तेबहिपरलोककीरतिध॥ध्या
हीमांकपुरीमबजोनो॥याहीमेऊपरप्रवानो॥याहीमेतीर
थसबदेवा॥याहीमेरहेजुपावेनेवप॥याहीमांकआत्मां
ध्यांन याहीमांहिबुसणयांनोयाहीमे ध्यांवेजगदीससो
जोगीसुरनरकाईसाजननतुरसीयकऊनतमेउपाइघटहीमेयु

रदीया वताय। जो कूंर मनों नतरा पावे। सोई मले ने
पाव। १। छ २ यह को सुद जु यह को पांडे। एक दीमा टीके
सब मांडे। टेक। एक दी चका। एक दी गारा। एक कुलाल
बनहारा। १। एक दी ब्रह्मा सिर जपायो। जु दे जु द कहीए
सोई। २। एक जोनि बाट सब आयो। कहा ब्रह्मन कहा सुद
सबायो। ३। एक दी जननी जन्या। जु सोई। एक उदर प जे सब
कोई। ४। करम धिम करनी की न्हो। ता ते न्यारे भिन्न न्या छिनी।
५। दे पो अं रकार नन दि कोरी। औरम निंद्य मात्र दे सोई। ६। स
बघट सुख एक ब्रह्म बिचारे। सोई ब्राह्मन न्यूं बेद पुकारे। ७।
निरदा घीन खेर हाई। जन तुरसी ब्राह्मन कही सोई। ८।
१। निंदा मुख ते न करउ रे। पर भिंदा बिष तें जम सों बिष
करि कि दीजा। का धर कउ रे। टेक। जो निरंजन निरति सुर
गहि हो। तो मन मांझ धरउ रे। यह धरम अधरम सब मो
का छप बेद न व जत न तिरउ रे। १। दोष सत्र करत न लो छि
। हिदे बैरी बैस अधिक बढ़उ रे। ना सुद करम परम कीरि
करि तुम करु नांसि धसु घ को बिसरउ रे। २। सब रूस मदि
ही है बिचारो नाग दोष काहु न करउ रे। इह मारम बरी ग्रंथ
न को सो आपने उर मांझ धरउ रे। ३। नाना पथ नाना पथ नि
नाना मत नाना मत हि परउ रे। जन तुरसी कहे एक ब्रह्म
सजो आदि अंत यहं घट में धरउ रे। ४। शब्द ३ राग गौ
राग मी घूडो। सोई सूर मा बलम हो रब मा है। निरति गहि सु
निरख आ नो उने मि ना हजु माहि रकत्र करे। ननतः सुर
पद कूं पहि चा ने टेक। मन मांन मद गलि न कउ बटि फिरे।
नन ही बउ रे घर मो बउ घरि हारे। पांन आन कस जु करा
हि तु न न टि धरे। तो अनुरि दका हिरमांझ घ थो। को मकु दल
माने निपट करि मिर दल ते को धपा वक पानी जु के व सुधा ज
तमी घिने मांनि ऐसे करे। जू बउ रिन फल किअकार लवे
। १। ताेस अरु मोह मनन सरजु म दमारि के। स कल ते अरि जा नि
उघ दूद मिटा वे। तुरसी आनंद पद सु मिरखा गो पद रजा ह अ
पने पद तुकुं बूसी सना वे। ४। शब्द ४ राग गौ ३ री। सो ईंयोगी
सने है हरि मार गांहि जाई। कहु तो दि बारबार समझाई। टेक। म
न थ सज हा न्तर ना ता बिष आ मन करि कि रिषा ता १ बिष अ मन
करि कि रिषा या। अब न जि मुनि जि न व न राग १। परहरि बिषे
बन की बासा। न घिज ई ऐ सो घट घा सा। नं घी छिन यउ गति

होवै सवमवोरामाकृसिफरिज़ोवैय। हरिमारगकीअधिकाई
ज्ञचलेसुपकचेजाई। सूटाजांमनअरमरमो। छिष्ठांमकीया
हरिचस्यो२। मनभजलेरामसनेही। स्यूंवऊरिनधरीयेदेही
सुमसागरमेहोरबासा। सुगिसुमिजनतुरसीदासा। ४। रामन
हरिमारगहेश्रेमा। घरगधारअगनिफ़लेजेमाटेफे। फ़ारस्यै
अतिनारीचढिसकेनेएकलागी। फ़फ़किफ़फ़किरदेवा
गाऊ बसुबदरीयावमंफ़ारा १। जोकबऊचुगछिटकावे। तो
जंत्रमंत्रमनलावे। लालचलोजनछुटेभातेपकरिपकछिज
मलूटे२। मायामीवीलागी। ताकोकहाचलनजुआगोआगो
चतिहेजनमोही। जिनअहूममनबुधिपोही। जिनछाडीमन
ममआमाधरिदेहहरिसबसवासा। तुरसीपकचेपदमांही
जेमसितनामिधसमांहीयो। १। मनरेमेतेंनहीबिसारी। तबलग
आहिःजुत्रूसंमारी। फेकोफ़्हानथोजेपजुफ्रीयाछापाति बहो
नकअरुमानाफ़ोमक्रोधलोभादितजेछिनहोरनअरबा
नयारा १। जबल्पाअरकसतिकोलालोकानयोभीरस्तुन्हा
ता। मनकवीरपाषांनरूपी। तोकासंतसंगतिआरे२। तुरसी
मेनरूपहोरहिरसे। रागदोषमलत्यागी। सोसीतलसहगति
सुषपावे। मोलहोइजुषअयोग। ३। मनरेआवकसांमाइमाई
धिरिहोइनजिलाविनवनराईटेकोजोईजोईत्तदेषतयह
बानी। तेंनरूपमुमानता। सोईडमरूपजोनियहजीयमें १।
विनांभजनगोपालाय। बऊतजीयडहकेयामाया। कोक के
उघरननपाया। कबसासोईनांहिनात्सिकसिसरसोमकी
आयान। त्रिनिजिनजण्यारांमअन्निसोसीप्रेमभीसिभलता
ईतुरसीपारगतिनेलेईजेसुषमेरहेसमाई। ४। मनरेह
रिजजिनमनकरनां। जबलगुननहेयऊनरमांहेकञ
बउराधुमायोओवोनबनांनांरोगसंतावे। बजरेबुखि
होरनासाउपजेनकवेहरमासा। जबलेंनानीरबहाईभूव
भकसुन्योनभाईमुषसुखवचनभेआवे। तबसुकतकी हो
योनजावे २। जबथरहकंपेकाया। कछुहेसुननमनउपाया
नातेंअबचेतअग्यांनी। समफ़ावेमेतसुजांनी ३। कूकरिनप
रअवेगहा। परहरिदेमांनोनेहा। मांवृसिरूपकिरलेही। ऊं
सुफलहोइयेहदेही४। तूंषडिपलकषाआसा। फकरिउल
टिलअमिअंतनिवासा। तुरसीनिजरटहरिजांमां। निसबा
सुरअचौजामां। ५। मनरेनियरेसुषबतांऊं। छिपतनेनी

बोगिमिलो ऊटे ॥ जब लगि मिले जेन नाहीं ॥ तब लगि मिले
नहीं नाहीं ॥ बिमुप रहि गुन टिसमावे ॥ तो निरचे सुख सुषपा
वे ॥ तकि कामक्रोध कूट नाहीं ॥ न मिले चित नव नय भिगई बि
न सके नद नहिं पावे ॥ जेम कलतो के फिरि आवे ॥ जब हां रा म
म हो न ही को भा ॥ ऐसा कहूं हे बिसरामा ॥ सो आहि जु तुमही
पामा ॥ बिन जोन पावे तासा ॥ तू समझि मरो तरबानी ॥ हम
कहीं साधि प्रवानी ॥ ऐसी करनी करि लीजे ॥ जन तुलसी सुष
लीजिये ॥ छ ॥ इस मने रआ त्मरत होर ही ॥ आदि अति म धि
मन मा बा चा यह जोग हि टगहीए ॥ ३ ॥ नाना कथा निगमम
तनाना ॥ तहां बहि किन ही बही ए ॥ निरचे पर चेप करि नांव
को ॥ डुर म ति दो मयू दही ए ॥ कोटि क ग्यान ध्यान मत को टि
क ॥ कोटिक मारग कहीए ॥ सुजान रूफ न सुन न सुनावन ॥
परम तिपार न लहीए ॥ २ ॥ केऊ आसति केऊ नासति आखे के
ऊ जनम के ऊ नहीं ए ॥ ऐसे या फ का फोल माहि परि कोइ है कू
रा गबही ए ॥ राग दोष बिसराइ बिवेक न बुधि ॥ च मत धारब
हई ए ॥ तुलसी जरम आरं मकरि प्रभा त्म पद गहीए ॥ ३ ॥ ए
मन र सब घटि करता कहीए ॥ कैसे परतीति जु लहीए ॥ टेक ॥ जो
सब घटि करता होई ॥ तो उपावे किम तो इय हू जन मम रन के
त्रासा को हो इस के पीय पासा ॥ जो कहीए सबते न्यारा तो कू
नी मन नहीं पूरा ॥ पूरा मन जे यकू जो ई ॥ सो हलन चलन को है
ई ॥ विभु ना अतीत निरकारा ॥ सब ब्यापक सब ते न्यारा ॥ जन तु
रसी ऐसे जानी ॥ सब साधक हृदय वानी ॥ १ ॥ मन रे ऐसे करता
जानी ॥ सब साधक हे जु बषानी ॥ टे ॥ ज्यूं जल मांहि जु चंदा थूं
सब घटि ब्रह्म अनंदा ॥ पै दुःष सुष में वन नाहीं ॥ दुःष सुष जीव न गनाई
॥ जाके रेष रूप कछु नाहीं ॥ सोई ब्यापि रह्या सब मांहीं ॥ पैज
प लिपत न न्यारा ॥ ज्यूं पूजे बिनसे आकारा ॥ वे जो निसरूपी पू
रा ॥ सब मांहि जु सब ते दूरा ॥ जन तुलसी गुरु दिए ज्ञानी ॥ चिन्ता
न के वल न पटा नो ॥ २ ॥ मन रे मति इन या मांही ॥ या में सुष
कछु नांहीं रे ॥ टे ॥ यकू दिन करि जिनि जोरी ॥ ते गाडी के
कि रही ॥ अर बषर बक्कू साथ्या ॥ ते गये कूला व नहाथा
॥ जिन के यस गज बक्कू लोरा ॥ जठ लट गा वधन रा ॥ बक्कू पा
जब कूं जि यम संगा ॥ तो वे म डेब चोरंगा ॥ १ ॥ यकू नानांकप
की राती ॥ या में सुष नाहीं ॥ बिना सी ॥ अबिनासी सुष है तां हि
संतोषी संतनि माहीं ॥ २ ॥ सो रिजु तान्हूं याको सिर ज्यो गहि

मरनबंधाको।अबसाप्रभुकीसरनाईतेरौजनममरनमिटि
जाइ॥जहांतेउपजेपूकासा।सबमाहकैरेबिलासा।तुरस
तनिश्रानबआसा।चितिकरीएतहांनिवासा।५।१।मनब
निजागरेआईछिनदसव्योपकरि[illegible]मुरग्यो।ननेसाईथि
नरनोमरुलदेहपुलिबपुनितेपाई।नजनबिनापलितोहि
गोजनबसमैचलिजाई।।संसारसहरबारेजारमैलोकलिम
।मिजाइधिकाथकीतहांपाईहे।हरिभावबिसराई।।जाकर
रमिबऊकरमकीए।रैनिदिनध्याहिमगिकोईनआयहेजि
मपकरिलेजाइ२।समऊिसोजमसेवारिअपनीरैनियसजाई
पंचचोरमहाबलीतोहिहरिहिगेआईन।चितनपहरेजा
गिमिसदिनतोहमतिजाईयऊश्रीसरबऊ्योनहीलो
हिकरूसमझाई।।अबसबसुबिसाहिकोहमताहिचले
आयीजनतुरसीबिनजारीयासिनउरिपऊचाईप।१।हरि
बिनकोजीवकंमाहीनिसबासुरकल नापरैमैरैजीव
नसाईटेक।।मीसपछिप्रतिपालतकीनीजोतिदरसाईदे
कहिमेजमरारहेयावूसोनबिसराई।।निरमादादरकम
वअतचराइतहिउपजाही।मीनपलनरहीहोरैसोनलपि
मरिजाई२।बपबिरहकेबसियसोजैसैकाठघुनघाईअब
कीबेरनआरहेसीकरकरहिनाई३।मीयाबिनापसीनई
सरबबिध्यालनघाई।बोधदकछूनसंचैमोहिलगीबोर
इथा।बिकलकेबनिवनिफिरीरूटेरिसुनिधाहिजनतुर
सीप्रभुमिलेहसिकोसकलसुपदाईप।१।जो।बिदानिक
रितुम्हारोनांवरापाकोमेबलिहारीजावरेटेक।।ताहिअ
डिनहीनरमैडरतउनमोजनहानाठांवरे।मनमाराचा
नतरिअभिअंतचिरामहिरामजपांवरे।।दोचोकेरिमि
लोकंमनमोमननतनमहिवहरांवरे।मनमेहेसिवसअ
राधैचितचरनोलपटांवरे२।जहांतेउवतसबरअनंह
रधुलिताधुनिमोफरहांवरेजनतुरसीपरसिंपरमपद कैं
परहीमोफसमांवरेग।१।गो।बिदागरकचोतुममोही
हा।विजनबिछरैनांहीहोटेक।।आपापरउबधाभवन नदौसो
उपऊनहोदरसाईहो।हरिसुषमांहिअचलहोइबैसे।।
नटरोहोसो१।जनममरनभवबंधनछूटेबऊरि

नहीं जलटारी हो॥ तुरसी यूं हरिजन हरि मांही॥ रहत मिलि
रियकहांहीहो॥ ३॥ २ धामा ऽरे जन जग मांहि न मेला मि
लि रहे यांनी निमि तेला ऽ॥ जन तुरमें नरक सुं न्यारे न जग रहै
न कुंजाई यूं सूं नरा बूझा न सुत नाती हो॥ कैसे नर सुनि नाहिं
जनयार सजगु थाहन रूपी जन चंद न जग ढं सा॥ जैन तुहें मजगु
का गकु बसी॥ रहें न सुं नरचैसा॥ ४॥ जनदिन मसिनु गरे नपट
रा जलनकेंच न तुगका वा॥ जन अमृत नयी केंज्ञ गविषरस नामी मि
नतोंम मल मा बाचा॥ जनरा ता सुनि अन रिपी बुसे जगुमाया
नपसांना॥ तुरसी जन कुमेलै पदमांही जगु जमराष्यि कि कानां॥
॥ ५॥ जगत के जगल रिपे हेरे हरतां कुसप्र हलाकी सुनक सा
घचिलदे हटे कै॥ निह का नही करै बांगो॥ मकरतां नपाई दास
नूं मैं क्यों डरे॥ जाके तुरांम सहाई॥ मा चक्र कहे कृ वहे यक अ
च क्र के रयो ष॥ अंति अग्यान असोच असमकि अदोष पलो वृ दोष
॥ ६॥ का हवा चारै निकलंका हो इरत निरवांन॥ सा जन सिध से सा
धन क फरक होय बांन॥ ७॥ जन तुरसी जप पसाध रती दास अ
नेक कासी॥ कोटि कल्प नाकरि मरे॥ लेप न लागै तास॥ ८॥ हरि
जिन मूलन बक्कत सुग्यांनी॥ सब गति की गति बिरलै जांनी॥ टेक॥
जोगी जंगम अरु सन्यासी॥ पषा पषी सेरा ता॥ निरपष हो इरांम नहीं
जांन्यां॥ कांम क्रोध मद हि माता॥ सुष सागर अबिनासी राजा निरंतर सु
ष पास नारु हर चिनम दारा नरसू न्या विविष जरोक्षा रा॥ तेने बि
का रमो हमदम सु सांद विपदरिटक रिसाहै रहे समाइ मगन दोइ मां
ही॥ आंनंद दिसा नहीं चाहें॥ २॥ सु गहा गहे लटे सुषसाई पदमहि जाय
समाये॥ जन तुरसी वो साध सिरामनि॥ बहुरि न भौजलि आवे॥ ३॥
॥ ४॥ सा हनर मिलत सबलोई तेरा जन बिरला कोई टेक॥ जे
नरमांन कर बहुते रा अंतर मिल मचाया सतगुर मिल्या न अ
मल कुंचा॥ ता ते कर मांहि सा फल बिकाया॥ १॥ पाहन पूजि पूजि ज
गं मा॥ तुलसी सो रिषु दीया॥ यक पूजा हरि कूंन ही भावे॥ जो लै
चित निरविषन कीया॥ कलि का कीट कहां गति जांने॥ रषि पचि
राम बनाया॥ अंतरि क पट विष सूरता॥ रमता रांम न हंगाया॥ २॥
॥ २॥ कहै हंस कवा गति चाले यक अधिर जमो हि नारी मुक्ता
पदन जिन थपेन रक विषे रही रांम गति न्यारी॥ ३॥ ते नेउरा सरवा
दलंप टना रमता रांम पिछाने॥ सतगुर मिले तो यक गति पई
ये॥ और जीव कहा जांने॥ ४॥ ना वे प्रेम की पूजा करि ले रहा एक
रस माता॥ जन तुरसी से सा जनको ई॥ अबिनासी रपि राता॥

६॥ १८ ऐसो सांईं साधु के होवै। नितमांहि के गानि गावै देहें ग्यान
घटगतै मन कूं मोरि पांचो विसन निवारै ऐसी मति कि जो ऐक का
मनसू वोरि यत तु हौं रैया ॥ पछा पावन देवल कन रिसु नमुवसे
रसे जोरै रहे गुर पर मादि में वासा नो रैरे ऐसा का जिसारे। रितन
मनसी मसी मकूं मोपे। हरि निज जन म सुध्यारे रे जन तुरसी सांई
गुरो रा आपति रे मोहि ना रे ग॥ २० नुगति बिना जो गया निव
ई या ऐसो सकल सासत्र धंत न षोने लोन बिना अन ले सो टेक
काया कैसे क पारि लप कम रेकार नुगति ज्ञाने नाही। वा खपी
टेका लरूप महा मरयस रैको मांहि। ९ मुषां कोर डेतो मन च
ये। मनां स्त्रेम नहूं कोपि। घन बिन बीज घर नि मंडारे केसे हू
धजु हो है। २ जन तुरसी य कू अकथ कई नी नाना दिप रेन ना मी
जो नुगति पूरन पुवांनी। पार नपो से पानी २॥ २८ चपल चित
केसे रहे हो छिपा तो। इही आगनि तों वा वि गयो। तन त सर्द रू
लकोनो टेको जो ने ना निस तल रिअनो। देरूप सुकानो
तोना मारसनो ध्रुव न निहोश अनन हीकरे य याने। कर म
रडी को है जम काप्या न इडी कूं जर आनो। हगनि ग्रहे क पिर
किरांधो। तक नर हे थिराने। २ आनि धमनी न तेरो करै नर में
मूमिलना को पानेो। ई सर से और खंडो को जोगी घेरत नाहि
हिरा नो २॥ बुसादि क मन का छिक स्सनर रिपमुनि किन
थपो जोर हे च पाइ चप्यो न ही यकूं चित जेसो हो ने सा नो ४॥
वेद पढो अपवा पठो सुम्रत अथवा पढो पुरानो। करो अथ
नेम सो नित प्रति चित बिन मुक्ति न मांनो ५॥ उपजे बुद्धि
चार अकाल मधा सब चित अविथा नो। के बास नात्पा नस
पिर होइ के थिर जो गा थियां नो ६ कि पूरन गुरकी सेवा सें
केसें गासिनरखानो। के थिर होइ नि ह कां मच्च गतिसूं ओर उपा
इन आनो। ऐसें सनेस नेकाम्क मकरि [illegible] चित उर आनो
जन तुरसी पद मां ऊसमां वा होइ गारक [illegible] गलतां मेंतो॥ २ त्याव
मन ही बेराग जावत रागदोष हिरदे तें होइ न आवत्या गैरी॥
ऊपरि ते पत्र लेया मो तरिका मनां को दाग। स्पोई दाग व गत न एे
बिन उपजे नहीं अनुराग। कह सा त्यागत नज जेमाया लूटे न
मन को राग। जागत सो वन न ही ही सरसा चैरंग्यो नु काग॥ का
म को धन लोन ह्टै तोमि टै यो नमोह विनाग त्रिस्ना तरंगन बि
लीनी। पथे न मन सा वाग ७। निर मल तेसों है वासना मन की स
मम स कस म नां। य कूं बेराग न दिल होइ अ। तुरसी त ब बडभाग

आ॥२७॥ अस गाइ मन सा हाथि न आवे ॥टेक॥ नमिजन मिडु धपावे
हे प॥ आसण बांधे मिडु साधे । उलटा पवन चढावे मन मनसा
टोक छिरि नांही हु नागग जगावे ॥ केना सुनी के कमु धावे
ले ॥ कै का कथे अपारा ॥ कपरि जनत माहि कानि मो पायान
हो ततसारा ॥२॥ मन साथ करि अमृत श्रोता त्यागे बिषै बिकारा
तना तुरसी कहै सब आसा छाडे मोसन गुरु हमारा ॥ ॥३॥ राम
सह करनी क दासि चारी ॥ सब तन नहीं कृपा तुम्हारी ॥टेक॥ स्वं
कि रमीक कि रखि क मावे ॥ सान्त स्वरम पावे ॥ जो घन बरखे
ही जम शिक्ष रि निक सत साधिन आवे ॥ जो वक मारे करेकोरि
तेक तक सरे कछु नांहि ॥ दया मया करि तुम पाव धारे तब
हो सकत विधि नाही ॥ आपरि कृपा क रऊ तुम माधो मोरे सुर
गति नाही ॥ श्रोरत पार करे बऊ तेरा गति नहीं लहे तुम्हारी ॥
तास नाव तुरसी स्वं नाथ ॥ कहै सरन रि सांची जो तुम करे सोई
तमा सो ॥ ओर बात सब काची ॥ ॥३॥ राम राइ करऊ महा हम्मा
री ॥ तुम दीन दयाल मुरी ॥टेक॥ बेर संगि सरसा मोहि परेवे ॥ कैसे
क हा बक मेरा तुम दया तसा हि बसिर कऊ परि ॥ करऊ सहाइ
सवेगा ॥ मे अनाथ काहि कहा प्रभु का हूं तसब तत घट मांही ॥ म
हिमा हि कर हि आपनेव सो मति न छूटे नांही ॥२॥ पांच पची
समाह सदम छर मोह सतावे मारी ॥ आन नहीं न छूटे तुरसी जन
आसा एक तुम्हारी ॥३॥ ॥ साधु गति की गति को पावे हो ॥ सो अर
हे ब्रह्मादिक सुरनर केसे यऊ पार न पावे हो ॥टेक॥ सफेत नही
न रथा कऊ जाको पार न कहि को धावे हो ॥ थकि रहे सु थकित सु
ता सक तहि निगम सत ता क हि गावे हो ॥ अति अपार गहरो
सु नार रजि न अकत कास्यो न रहो ॥ अति अगहन अपि हीग
सिजो मो नि रमा मीक कहा हो ॥ ॥ बांके का हि कहूं मे का सूय
ऊ सं क्या सदई न आवे हो ॥ आवन गावन ावनाही जाके ता हि के
से का क सुमिरावे हो ॥ ॥ गारासु गर कलप सामाही सूंदरी
याके हम समावे हो ॥ मन सहह सक मे का सनि ॥ को कंतलटा कि
रिन छिपावे हो ॥ ॥ आपा महि होइ नर असथिर रहि ... पद ॥
नि जि नि रतावे हो ॥ मोर च सुघत है सो लहे मत ओर हे रानहि
रावे हो ॥ जन तुरसी यह अकथ कहा है को कऊ बिरला जन पावे
हो ॥ सतगुर कृपा नई जापरि ता कूं यह सुध आवे हो ॥ ॥ ॥
री मेरा मोह आनेक बनाया ॥ तुम सा साहिब क बऊ न पाया
हे ॥ मा या के मदिय कऊ मन माता उब थाव कऊ त कऊ गाई नि र

ाक्नरनिरलेपनिरंजना॥ जनसिरूपधरे॥। यकु मनवा अपराधी
कामी चेतनहीगंवारा॥ मसुरमिकबऊनहीआँनी औरेकरे
पसारा३॥तुमबिनकेनउबारेजनकोतुमभेरेप्राणअधारा॥तुर
सीदासकहेजनतेरा मिटेसकलबिकारा॥२॥ध्रुकेऊपीम
आंनिमिलावेहो प्यासलगी चातृगनेंसजनी दृगाकलूनसुहावे
होटेकमिजसिंगारनभावकसमिं छिनछिनबिरहजगावेहो
ऐसोयकुब्योहारहमारो॥कोउहरिजीकुंजाइसुनावेहो(मोहि
साधमोईपरउपगारीयकुउरसालमिटावेहो स्वातिबुंदलोसी
पिसनहो॥ अबमोहिमरनजियावेहो कहांकहुंकरुनामेस्वा
मी॥ अबकबरुसहजनआवेहो॥ जनतुरसीबिरहनिब्याकुलमा
बिनदरसनदुषपावेहो॥२॥ध्रुधनिधनिगुरदेवहमारा हो॥जिन
ऊकेपाकरिकाटलीएहो॥बुडतइहिसंसारासोंदेकेअनेकज
नमकीतरफिनिवारीसो बंदीछानतसाराहो॥नौवजिहाजचढा
इअगतिसंषियउतारेपाराहो॥१॥गुरुपदसबसंतप्रगटदिखलाई
प्रगटकीयाप्रहाराहो॥अबतनमनफिरिनाउजपावनपरमि
परसिपीव्याराहो॥२॥अबचलनबरकीबोहगहाथदेकेबऊ
बिधिनाराहो॥जनतुरसीभूरनसुपायोसतगुरकेउपगाराहो
॥३॥२८ धनिधनिपीवकीरजधानीहो॥सुरनरमुनिजाकेभनिगा
नो छंदमुरे नेतिनेतिहारहेटेक॥ अवनीआपजमाइजुगतिसें मोस
तिमांकसमांनीहो॥ अंबरअधरथस्योबिनपेतेचंदसूरअगि
वांनीहो॥ ब्रह्माकुलालकुमेरुनेडारी चितरगुपतलिपतानी
नीहो॥धरमराइजाकेऊनवालाछिपानकोरिनरेपानीहो॥१॥
सेससहंसमुषकीरतिगावे नारदसेरिषग्यांनीहो॥सनकादि
कजाकेब्रह्मचारीसेकरसेमुनिध्यानीहो॥सबदेवनमेंदेव
गुसांईसबकेअंतरजांमीहो॥ अरधनरधमधितुमहीव्यापक
तीनलोकसिरनांमीहो॥४॥जैसेनदीयांसमदसमांनीबुकरिन
न्यारेपांनीहो॥जनतुरसीमिलिरहेपरस्परसबदरहेसहनां
नीहो॥५॥२९ऐसोजुवहघररहेरे॥जहांजमदूतनिकोनेकरूंन
डरहेरेटेक॥ जहांअनहदबाजेबाजे अघंडआंगेजांमरे॥ बि
नदीपगजहांनोतिचमकेहीरालालविस्रामरे॥ जहांअमृतधा
राहोरबालिष्यासुधासरवेमोइआदिअंतिरमधिनिजजन र
हेमिहीनासुपनेतोहरि॥ जहांचंदसूरकोनोहिनअलपअमा
सा॥तहांउदितनुहेहरहेसो॥ महातेजपूंजपुकासरे॥सतगुरु
यासेहजाकयरीजातेसेतमहारे॥तुरसीतनजागेताघरिअ

स्लो हिछमाया ध ॥ २१ ॥ असे उनघरिगो बेसंत -
लिनकरि एक रिउरा ॥ कृत टेक ॥ कांम न्हले क्रोध न्हले लोभ
जाय पुला ॥ मोह की सेना सम महति रि पद हि एक चेजाइ ॥ जरं
अ ल्हाद न मम त मत ॥ अन मान उपजे कोइ ॥ असे सुषसमा छिप
रो रहे थिर रहे इ सोइ ॥ १ ॥ पंच तन के परे बकु घर ॥ त्रिगुन स्हत म
यांन जनम मरन जुड हलहो ॥ सुपकुन हिद रसात ॥ २ ॥ सूमिल
ता सिध मिल तअसे नया उन मांनो ॥ तुरसी पुनि बिछुरे नहीं होइ
है ब्रह्म समान ॥ ३ ॥ २२ ॥ बाजी ध्यांन बिसरजन कोहै ॥ तब रंगो बिरह
तो पैहै हैक ॥ जे रके हैसो नाही ॥ याकथनी बदनी मांहीं ॥ तीरथ
ता की आसा ॥ करिकरि गो बकु तनिरासा ॥ १ ॥ जावत सुष की अ
सा ॥ छूटत नहीं यह अध्यासा ॥ तुम कु नावत होइ ॥ सब संत क
हे सूलोइ ॥ २ ॥ उने कमकनर आंही ॥ कसको कैरे मांहीं मांहीं
ना कहते न जुनांही ॥ बस्ती बसो न तब न मांहीं ॥ ३ ॥ जब पम सखे
ही ध्यांना ॥ कहूट देन सुषसहानांनो ॥ तुरसी असा होइ आवे
तब कहू आतम सुषपावे ॥ ४ ॥ २३ ॥ तो नको पुत्र देनहे रे याआ
पन संघ दामांही ॥ बडो पं जो हेर टे ॥ जाइ हि सकल यकु जगत ब
सो ॥ भांनां नाति न पाइ ॥ छूटद रस नकु बहाये गो ॥ नरम बिक
ल ॥ भ्रमो कारिज कारन मिटे बिन ॥ मिटत नां छन बीर ॥ याको अ
पह तो हीं जांनो ॥ औरसकु पाबहीर ॥ २ ॥ अपम म तन हि लोनसाग
र कु भिप टिजु नांपि ॥ सो पुत्ते मद चेजु निजवे ॥ ग्यांन उरकी अ
छिव ॥ पांच अरु तीनों नांत्र ए ॥ ३ ॥ बिचाप रिवारि यकु अपरवे
पर छुछु ॥ नी के जुते उनिरवारि ॥ ४ ॥ ग्यांन पर बैराग पागाहि व
कु भिप टनिरम्र ॥ सो तुरसी आतम प्रकास मांनो कोटि नदस्त
स्र ॥ ५ ॥ २४ ॥ जो तुम सब कारु की सेहो ॥ तो तुम वकु घरये हो टे
क ॥ मिहि घरिनां मकबी र ॥ पकु चेतन मन करि थी रा ॥ अमिही
सु हिम्म होई ॥ जाइ मिले ब्रह्म कु सोई ॥ १ ॥ जिहि घरिगो स्वग्यांनी ॥
दत्तहे ब्रुद्धि सो बरध्यांनी ॥ त्याती त्रिगुनी माया ॥ आपने सुष सरूप
समाया ॥ २ ॥ सुक आदि मंत बकु तेरे ॥ आइ देवे अगम ऊंडे रे मि
लि रहे महापद मांहीं ॥ बिछुरे कुन ही पुनि फिर ताहीं ॥ ३ ॥ वो घर है य
ह अस्ल्या रांग त्तिगो ॥ कि वे अहकारा ॥ मन इन्द्री सहत बनाही
को के पकु चादे ष्या मांहीं ॥ ४ ॥ त्यागि दे क्रोध अरु कामा ॥ निह का
म होइ न जिरांमा ॥ सब की सहो बुरी भलाई ॥ निरदोष रूचार
रु माई ॥ ५ ॥ स्तुति निंदा अस्तु ति जांनो ॥ दुष सुष क सक कोकनांने
कंचन मटि का पाषांना ॥ सब हो इ रहो समांनां ॥ या वा घर की

सहनातो हम कहौ तुम्हहि तुलसी बपुरो तुलसी अतिसोइ
नो ही भीति रहो परमपद मोहि ॥७॥५॥५॥७॥५॥ राग धना
श्री ॥ माधो जी कहा मैं मोहमम सो जनम अमोल लिकर गाइ रेनि दिन रा
खि हो बिषम सो टि के काम कुटिलक न पति दिन मोते परनिद
करते गयो रमा पान की पबरि न जानी बिमुख नयो तुम ते रे पो
चक्रधनि के मदि मा तो ली न भयो हरनसो ॥ मन पवन गहि नि
मवनहि मन मुख नयो न तुमसे १॥ जा करनी कर मादिक छु
टै सुरति लागे तुम सो सो करनी कबहुन कीनी के वो नाचि बो हम
जम सो ॥ तुम पावन में पतित बहुत भयो का ढिले कर सो
जन तुलसी के आस तुम्हारी का जन को परस बेर के संकर सो
तुम्हारी सेवा तुम निरगुन हरि अति बस अजेव टेक । ग्यान ध्या
न में क्षण न जानो आगम अगाध के से बुझ पानो १॥ तुम अप
रंपर मित नही कोई षट कित नर सुर नर मुनि जाई ॥ तुम्हार
रंग रूप नही काया । का कहि बरनो हो हरि राई ॥ तुलसीदास
जनम रन तुम्हारी सेव न जानो हो देव मुरारी ॥ ७ ॥ माधो जी ह
म अपराधन के जनम पाइ सुकरतन को नो उक्रत बक्रत क
रे टेक जेते पाप कृते नव न परि तेह मस कल के रेजा करनी
सागर तेरो तो चित ते बिसरे । काम क्रोध अरु लोभ मोह सब
औगुन अनंत करे पावन नाम तुम्हारो तजि कौ पापी निस्तरे
१॥ जो मोर्ड फिरि जम फाँसो गमो तो त्वगन रखि परे ॥ दया मया क
रि सब किल्विष को तो तुलसी उबरे ॥ ८ ॥ माधो जी करमा बस्य
रीय जीव जो [illegible] वन जानत तेरो काम क्रोध लोभ मोह इन माहो
मन मेरो टेक [illegible] पसप अपराध मो मन चूलि रेसो मंदा दिस दे
नि अरूप सांची सोई तासि नयो अंधा ॥ बिषया के लपटो
राम नाम न जानो अैसो मराम दमति ॥ तुम सून ही छांनो ॥ २॥
जन तुलसी अपराधी जीव क बहुत हो थित पाई जाहि आधि
माहि बमे रा अब रामो सरनागति २॥ माधो जी हो हृदयालमे
दिसाल अब के मोहि कबारो काम क्रोध बिषे बिकार सके
ल हरि निवारो टेक । करूं महा इ बोमि आई मोटि कहु दलोभ
अब की बार पार न तारि तुम हो अंतरजामी ॥ जनम जनम धरे
अनेक कहुं न हो सुखपायो अब के जीव चरन सरनि राखो रघु
राया १॥ तुम ही न दयाल कारो मिहाल कोट कहु पमेरा जन
तुलसीदास के रे कलासा दरस दे कर पाम २॥ ४ नाथ ना अब के
हो हृदयाल आयो सरन धरन गुन गायो को शुटे गरसाल टेक

पांचचोरसंगिमहैसदाही सोगुनकरहिअपार तुमत्र्यर
सोबऊरिनब्यापैमायाजहीहमारा १
सुषसंमायहडुयइहरिमनौरी
करगहिपारउतारौ २
भरमनयायासैसीमायानाघनीतेरा जिनिचुनिचुनिस
बडुगतायान करमझ्यालिलागीकरनांमैंजीवडुषोत्रा
तमारीजनतुरसीकेआसडुम्हारी मेटोबिपतिहमारी ४
॥ह्र सोसुषदेऊंनागनगुरमाही जासुषसूंसबहीडुषनासै
आदिमिलोप्रभुसोहीदे जासुषसूंजरमादिकछूटेकरम
कमायेकोटी ननमनआनमोहिरामजी आतिगतिआनंहै
ही १ जासुषसूंजमजुरानभासैडु षसुषनासैदोई सतरज
तमतीनोगुनजोपोआतमस्थिरहोई १ जासुषसूंसब
हीजनरचिकैपारिपऊतेसोई सोसुषमांगतहैजनतुरस
हीऊहूंपावतहासीं १ रसनांरामनामजपिलीजै सोचिवि
चारिचितमरजीयरा ऊबकबादलकीजै टर कूगतन
कीकृदासबइसी मन कमां हिजरिलीजे तातेसावधंनहोइ
प्रानीरटनरामकोकीजे १ परहरिविषविकारस्वादसब
रसकोमानकीजे गुरपरसादसाधकीसंगति हरिहितला
गीजे २ मनिषाइहजागिबड्यारी हरिभजबिलमन
नकीजे जनतुरसीआरतिसंनिसदिन रामरसाइनपीजे ३
॥७॥ मनसिल्हिजनमसिरानोजाइ रामनामकीषबरिनजा
नीतीनेकहाकीयोसुगआइ टेक बारबारतोहिकोसमझा
योयऊआसरचलिजाइ समझिनमनगहीगोबिंदकी बि
षमहिरह्योलुभाइ १ जोछिनजाइसुबहुरिनआवैतोहि
कहसमझाइ आवघटैजोछिनदेही पलमहिजाइबि
लाइ २ मसुदासनरचेतिआपनीं साधकहैसमझाइ जनतु
रसीकहेहरिसेवा तनमनधीलितगाइ ३ ॥७॥ जानबिनाहरि
छिनछिनपाऊ घनरदपिनछबपाछिमका सबमतसूझिबु
झाइ टेक केऊजटानगवाकरिबसतर तीरथकूउठिधा
ये केऊनगनविसवासबाहिरफिरिफिरिप्रानपराये के
ऊजाइपुरिनमैबैसा बऊनककष्टकपाये पावकमांहि
पावकरितेतसीसकूतारे २ केऊतुचितमुंडितके
ऊ केऊनकरीछाये केऊजाइगुफाबनबासे पेप्रीति
बिनांपछिताये ३ प्रीतिबिनांसबहीमनकाचे बिदपुरांन

नमाो तुरसी श्रीनिकरी जिनि पाव्सु॥ तिपी व्मो हिरामाे॥४॥ १०॥
राम बिन कू थमक ा करि ज्ञां नि॥ कृत कहे इस जो श्र बिनासी॥
श्रेमाप्पां नथि ब्रो निटेका चो रंग्लो कसमां नि एकटम॥ श्रेसी मट
गी ज्ञानि सो कत बादि रोम बिन थो व्रि सा थि सबद परवां नि
मा सेवा सतु मिरिज गजी व्ना॥ छ बजि निकऊ बधीर श्रो वेका
लकेर श्रपने बसि॥ सूम ह्मा कुकीरा॥ पतन मनपवन श्रमोल
कती नो॥ सिरजम कूंदेबी रपि। छुटे त्रम श्रावा जांनी॥ प्रमते सिथ
नटिनी रा॥१ श्रेसी करनी कोर सुजाणी॥ जगत्मा ईन्त तजो न
तुरसी दासकहै सति बांनी काल केरे नही हांनि॥२॥ धरी हारि है
गीय हदेह॥ सातेन जिनगवूं समुझ्या॥ त्यागि याको नेहा टेक पा
रि है बड़ जमा ते॥ चमिके च्यासों पांनि॥ सो हृया मत्त ही जुपावे॥
कहे हमारो मांनि॥ छा तिनी वुहोइ सुमिरन्या॥ तो सुषसिध
रां मश्रदेह॥ देही का श्रासक्त तजि॥ सुध श्ररथ सबको एह॥२॥
हंसधीर बनी रलो॥ जी के ब लोनि रवा रि यकऊ ब देदे देहि ब ऊड
श्रेसो ज्ञ गपांन बिचारि॥ जन तुरसी कहे समभि रन र॥ निरति मि
हिञ्जल ग श्रावा सुरति श्रहा निस चित माथे॥ काक रिरसोबि
रमां वरी॥ ऽजगसु षग वन केरे जिनि को ईश्रके सही परे या व
कमंहि। जनि बलि को इ ल्ला हो उँटेक॥ छत्रपति चूपति राज
रा नां॥ पीरमु लकसु लतां नां॥ लि सबजेर हि घेपाव कसहि हो
ते च तुरसयांनो॥ कितेक एमरहिंगे केते छ सकांम नि स्ल
गी॥ जिजनजा नि सुगति सत्यागे॥ तिन के मोटे ना पा॥४॥ चेतन रे
ईजे श्रबनासी॥ जिबिषया कासंगा॥ तुरसी दास गपांन हो इ
श्र सथिर॥ कालन करेन हीनेगा॥ ऽघबाधा निमारिया रे साधो स
बजगुधाछ॥ कोऊ को ऊजन ज बस्या॥ स्यां सुमिरया हु घराइ
टेक॥ तिन बैन करिमोह प्रांनी॥ नांनां भेष बनांइ॥ सरय एक सि
घारे सकल श्राप न मारे घाइ॥ घट दरसन के सांग नही कारि
जन ही कारंग॥ नाग पने छूटे नही मारिका एसंत घेड॥१॥ पंडित
गुनी स्र किव दाता॥ सुरनर मुनि जनपीर॥ सकल तेबिनास
जाय नी॥ कांम क्रोध केतारा॥ श्रादि श्रति श्रबगति श्रारांध्या॥
रट हरि पां च पचीसा॥ कहि तुरसी से ऊ बस्या माधु बिसवा बीस
२॥४॥ लेन सके को ऊनां मतुम्हारा॥ श्र र फिरहे सब माया मो
ह मे॥ परहरिया पति ग्यांन बिचार॥ टेक॥ फी रे लोभ स्वाद बाद रस
बारथ से ती श्र थिक पियारा॥ परमारथ ना वेन ही पल भरि॥ बि
सै गलित मो जुमवारा॥ सुत दारा धन देषिं तुलांनो॥ लालच

लोभ नहीं छेद रक्षा लौ जि तनु अब तु मेर अनंत सुषपदै सो दिस
ऐसी बिसारि श्यांघ डकू रउ डन सु राचा लीन नउजा
कार जेस बतीज करि जो बैरागी।। तिनकूं अरूच [illegible] श्रपि
आ मितेमा हि मनी सबत्यागी।। आदि इंदय सब जुगयो हार जन
रुपासाई सुमिरे हरि कूं।। जो भिर सूं कूं घरे जनाशिधा।। पारोम द
या ते देह जो वन जाने अध।। चरम दिष्टि सूं कै नही।। च्या सो
च न अंध टे।। जे मैं प्रगट ध्यान चुवकूं परि रहा दस कैरे प्रका
रुलं कुं।। सकै नही सो दास क्रिमा कौ नास।। चारि मास रत
बन कूं पावा हरी हारे बन नग जे वासो बिरधे नही बरसते
कुमताइ।।२।। रूप सरीषा कै रस बन कूं बास लिदे बन मांहि
पीपी जीस न ते दहि।। तो चंदन दीस न नांहि [illegible] कहि तुरसी सब
परि स्वांमी मि हरत्यांन रु घराय।। जि मुष जीव जांने नही बि
म हिरदे तु ताइ।।३।। [illegible] का कै रांम कूं हो।। कांमी कुटिल कुजांन
कांमनि ही चित थो कैरो [illegible] रधरि धरि [illegible] ध्यान।। रामत गुरसु
मनि दीन्ही।। सो करक बकुन लेय।। कंकर कोडी क्या च सं षुले।।
न हांत हा चित दह।।४।। सुष सागर रूप रहै रउ ब हिले हि नि हारि
सीड रूमारी नषै पैसी कूनके नांहि।। पा तपीत जागत सूर सा बत
ऊ रमै य हरु ध्यांन।। कै कांमनि के कांमनी छोर तरु जो ध्यांन [illegible] त्रि
गुन अबीत रांम अपने सूं मनमुष क बकु न हो र।। जन तुरसी रषि
रहा नाजी ही मैं सो रहा।।५।। क्रोधी बापु रा हारया ता तन ते समांन
संदेरु एक मिदे नही सी न ल गुरु कौ ध्यांन [illegible] करु र द हिमि कु
टी पुनि देही।। चटरै ह अगि आंन।। बिन ही अगि न जस्यो कैर राति दि
व म हकूं ता न।।६।। पर निंदा पर धन पर त्रिय रत।। पर उदो अस ह न अ
न पुरहि रहीत क्यो कै।। दोष तिही कौ ध्यांन उपदेसी ऐ न रूल
आपको आतम थर सम मांन त ऊ अबि या उपाइ कैं मंदिर हे स ग
ला चिता मनिल का कैरे का चही सूप रहु यां निज न तुरसी
सली चाल्या बिना नन न मिरबांन स।।७।। है बुधि बावरी मति न
बिर अबगाति सुमिरि सुमरि अवगाति कूं केता हो इ अनंद टे
गा गिबेडे मनि षात न पायो पूर बले पर साद ता तैं रांम सुमिरले
ता हा मति रगवा हि बादि।।८।। जब लग जुरा रोग नही आवे काल न
रेषि मांस त ब लग साव धान होइ सुमरो सो हर्नि रत रिनास।।
।। बार बार तो हि कहि समझांऊं।। यह आसा फिरि नांहि जन तु
रसि [illegible] कूं जो आरति सू घट मांहि।।९।। काया कार ईस्ता के
रमिन नन लो कोइ न जामि न लो ते न बहि पर पार न लो घ सा इरे [illegible]।

नवसागरमांहीपचेक्रिकरिदेसांग। तेविषयाकुलमैंजेरजैसै
जोलिपताग।पडितगुनीसूरकविवदानासोवृतसुनटकूजार
ग्रदहीडपदरीयमोंहीबूडेछिनाबिचार२। ग्रेतकालछिरनो
रहेदेयोछिननिरतासोबिगोकूमनमसाहोदपानीमांटीमेमि
लिजाइसूछिननगुछिनहीमेयनसेछिनमेंजाउबिलाइ।ग्र
सीछिनयकूजांबिकैंतुमकाहेकूरहेलुनाइ।ग्रनहितहोइम
ग्रसेंगयाकोलजकूग्रातमारामाजननुरसीकहेग्रेसीकरोतो
परिहोइसबकोमा५।।२०।।कहाकोकूजांनेपीरपराईजाके
लगोविरहकोनलकोसोसमकेमेरीमांईस्केहरिबिछुरेह
मसंसुनिसंग्रनीकरवतनवहिवहिजाईहैकाकू पगारैग्रै
माबकूरदेहेपाराई।।दिवसजाइमासहिरसघनोवृतनिस
नतनफलांबिरहादीपावबदेसउलननयोदरसनाविरहबिथात
नछाईरा।।बिनदादारउछिननईग्रतिमातछिनछिनग्रावृक्षिरि
राईतुरसीबिरहनितबसचपावैमितहिपरमसुखदाई।।२
१।।कहोधौंकोजेकोनबिचारनवजनेग्रागमवारतसनोरी
कोकूनरबोपारिटेरी।।तामहिमछकालसाकेताछिरमांमें
रंगग्रपारतारसेजीवग्रछिकनेमानेरहेनाविबकूहारिले
पचोरासीजीवजंतकोमांहिग्रकेसोनाहि।सुरनरमुनिजनपीर
ग्रवलोयाधकितनेएतामांहिर।।तोहोबक्कमिलतकूघेवट
सूग्रबलिनकरकूबधीरजनावनातिनोकाचडिग्रांनी इमि
बिखिकूतरोतीरा।।उसेरेपारतिनोसचपायासकलजरमनव
भागा तुरसीदासतोजनरहगातिजहांकातहोजाइलाभा।।
नु२२ग्रबमेंग्रायोसरनतुम्हारी।नानेनकीमाहिरामउहारि
नडियोचरनसुरसीदेखीयकूसंसारकूगहमदेख्यानामहिम
चूनरीकाईरामजननाबिचग्रंतरेपारेबिषमहिदेयतुलाई।
१।।सरमकरमकोमंतोदिहावोसरमावेग्रातिमारीनावचूडी
इनरकमेंवोवेग्रसाजीवविकारी२।।कूगीकायाकूगीमाया
कूवापरपंचपमारा।।मकोग्रासग्रबिकतामांहीनातेकीया
प्रपंचहारा।।ग्रोछीग्रावग्रलपजीवनपचुबिनसंतनाहिमनव
रा।।जनतुरसीसरनाईग्रायोदेकूदेकूदीदारा।।४।।२३।।दीनताइरि
करकूजीवकेविपटहोइसुमिरोसाईकेंमनमतसात्योघरी
टेकीकाहरकूयाकाजकोमांहीफिरनकहतरूटेसो।पांचोंगनपि
प्रीतिमाहियनुकीकीरतिकरकूसवेरी।।तनमनसीमुसोपि
सबपोनीहरिमारमत्योहेरीजननतुरसीकहेसुपछितसोनु

[illegible] हि जाइ जन [illegible] ॥२४॥ ऐसे मन राषे नहीं
[illegible] मधन न्यारा [illegible] सूरा [illegible] रहे ति [illegible] गाइ टे [illegible] ग
[illegible] री आयो अन [illegible] गपा कछू दीन [illegible] जा इस्त [illegible]
[illegible] रिके से आषी न [illegible] तर दिप न [illegible] द [illegible] रहरि प
[illegible] गयो [illegible] असुर मारि सुर फेरि [illegible] राम रमो न [illegible]
[illegible] ची [illegible] मन माले [illegible] पराइ जन तुर
[illegible] पद महि रहे [illegible] माइ [illegible] ॥२५॥ थिर गथिरा
[illegible] नि रमन [illegible] बिमा स्योरे निस दिन बिषयन
[illegible] फिरे [illegible] नमा [illegible] सोरटे [illegible] रतन जनम पायो
[illegible] हू [illegible] नाग [illegible] कांच [illegible] कनक
[illegible] कू सम करि यो फु निमम [illegible]
[illegible] नही [illegible] ट बकु अपराध ॥२६॥ या मन के
[illegible] मन सा दई सु कला [illegible] आपनी बिषयापी
[illegible] गाइ ॥२७॥ [illegible] दिन [illegible] सुधि गई [illegible] बकु वा
[illegible] दिन [illegible] हरि नाम [illegible]
[illegible] नामोर [illegible] निर्लेन [illegible]
[illegible] नामोरे [illegible] सब तजि [illegible] राम जी
[illegible] नामो [illegible] तुरसी कहे का [illegible] सिधि हो
[illegible] ॥२९॥ आरो [illegible] राम जी जो चाहो [illegible]
[illegible] परहरि [illegible] सुनामोरे [illegible] मनिष
[illegible] जो हरि नाव न
[illegible] पितरा बकु सईया करि
[illegible] सो रे [illegible] काल [illegible] ॥३॥ अव
[illegible] दिन का हे नम [illegible] कांधन [illegible]
[illegible] बकु [illegible] ॥३२॥ सुष के माग
[illegible] केजन हारो रामा [illegible] तिस्र पलप
[illegible] सब तजि [illegible] सुमरको [illegible] हरि को नां
[illegible] तुरसी कहे [illegible] मिटो सुष मे [illegible] ॥३२॥
[illegible] राम सत्य [illegible] नाम [illegible] राम ही [illegible] को
[illegible] जन मन [illegible] की उरी [illegible]
[illegible] नर कि [illegible]
[illegible] सुत्री [illegible] चारी [illegible] दीन जीव [illegible]
[illegible] करि [illegible] कोआ [illegible] दई
आ [illegible] आत [illegible] लिगउ दे करि जीव [illegible] को [illegible]

व्यांन शज्ञनतुरसीयहतांमयाहिधिबरनीहैदसिमाहिजहांउ
हतहांसुपनऊ सुष सत्तु भेटगवांहि॥२०॥जोरेअबनो
केवलराम कहांलोक सूकांम यहमहाइप कोषांमटेकैलो
करंजनबुरोअतिनहीजोपैहेदपुरांनगतीमतीमोष्यरथी
कोम्यजावअयानां१॥त्यागोमोहत्याहपुनित्यागोत्यागोकु
नकरूलोहा॥रागदोषसबजगकोत्यागोजूमिटिजाइसकल
अंदोह२॥कहांलोककैनिदेवैदेदोकहाकीयेमानअमान
रामनगतिसतिमुसहाइबोयहजमोटीहानि२॥रजनयाव तु
तुमेलोककोविषलोधरोविगारि॥जनतुरसीमनकमनजो
निरंजनइहेमोषकोद्वार॥२९॥चलोजीवमांहराचलिरेजं
हिअपनेदेसतहांसुषहीसुषआदिअतिमधिनहीदुषकोअहि
लेसरेके॥जोगाङिनेफेरीदीन्हीज्यारिदिसावरमांहि लयचे
रासीहोइफेरोकांहूसचपायोनांहि१॥कहूंचेतुरपदकहूं
दुपदोकपदाकऊवकुतन्यादपारबहतविछोसोतेयकु
दुषजुगत्योधरिधरिनानाकाय२॥अजहूसमझिमावथांनहो
जीजगुकोमोहमिटाउअनलसुतनलोनलहिमानघरंरही
[illegible]वासुषहिसमाइ॥याहीतेअजनेमेनिरंजनकाकरिहोउ
पांनअपनेसुषरूपकोनमेजानेंगिरावरनिनिबानथरिहाइ
सज्ञातीमिलोबुसकेविजातीभतगेहि॥जनतुरसीजुषसारो
रहोमृषकविक्षोहोनहोइ॥अभिमानमेंवाजेअनहदबांम
सुषरसुषरमांहीहोमांहीमिननम्रगनयोलहलीनटेकंयाचांथ
ऊजकिरहतहांही॥फिरिनपयांलोकोन[illegible]नादअंनदफंद
मेपरिनविषविहीना॥तनतकीचितवनिचूकीवितनादे सब
नयोलीनाविसरयाविरदकोजुबाजीपिननजोगीजनअसकीन
जनतुरसीवासुषकीवातोजहांजहांपरतककहीनजिपूरवतन
जिपछिमआएमिनहीनतेयहचीन्ह॥३॥२११९७॥रागगोडीरा
गजेतिश्री॥मेरसबतमनेहीरामजीअबपीवतुमबिनरह्योनजा
इ॥अबलाकूरंदरसकूजीपलपलरिसुषदिषलारटेकं॥अति
आधीननरैव्याकुलतापलअगनांनसुहाइ॥ऊगततेठठककं
ऊनसोवैजागतरैनिविहाइ॥अपिआतुरताबिरहनीसुनिसां
इरूघराइंस्तुनीसजन[illegible]आतगो॥तुमकबरमिलोगेआएर॥
पंथनिहारैपलपलनैनेंआरतिहियरेमांहि॥तुकमिलिबकूजीय
तर्पोविनेदरपेजकनांहि२॥विलेवनकीजेरामजीआसापुरवो
आइ॥आतमकूंमिलिमहरिमयाकरिसनकीतपतिबुजाइ

४ ग्राके सिरपरि तुम धनी सो कोउ डरपावनहारि कृपा करो मेरे म
गृह संसार अंतर मे बिसवारि ५ अंग संग मिलि दरस न दीजे अं
तरजामी आइ तन मन लुभाइ वारने जन तुलसीदास बलि जाई घा
ग्रो के तेर वारने जी अब मोहि दरस न दीजे आइ टे० अंतरजा
मी बिछि जानो आसा पूरवो आइ आप कूं सुष देऊ दया करि
ननकी तपति बुझाइ तुलसी जन तेरी तोह रितेरी ओर नन्द ब
जा हम घरि आवे सब सुष लावो मम काल द्वन सिरिराज
सब गुनन दास कला बियायी सकल सिरताज मोहि
करि दरस न दीजे जन तुलसीदास बलि जाइ ७ रमईया आवो
घर अब पीव तुम बिन डपीया देह टे० अब ना करे दरस कूं द
स देऊ दयाल तुम अंतर गति की सब जानो परम सनेही लाल
तुम सब सुष सागर सब सुषदाता सब सुष पूरन देव से
री आइ कटि अरस परस सुष देऊ जनकी जे दरस न दीजे
आस अब मिलि आइ तुलसीदास जन वारने बेर बेर बलि जा
बिचाले नदी बहै जी अब पीव क्यों करि आऊं पार टे०
हे बिचाले नदी अगम अति ओंडी गहरी नीर मे अब लालन रिंग
सकां गस्त किसी बिधि तीर नाम हिमगर मछ बकु तेरा कोती
कूं वंतर गा पेनी पार भरा पीव बसे हो रकहो कोसग हे को
ना रूतत बसा पारजना स्यो हि साई रूम ताकरे पेब डगपग
री सो इन कामी तन पेके कामकू न्हू निरधन धन की पांहि जनतु
लसीतन नेक दरसकूं अं चात्रिग घन की चांहि दास तुम कूं न
ही जी अरे गुन मोट घनी हममांहि टे० युक्ति मानत जी
अधम अपांगी सोई सोतेरा मदया लनको नाईको किरदस नदी
१ काम क्रोध अस बिषे बासना युक्ति लिबरते जीव माईम
सनम गुन नही सो कैसे दरस पीव गुन ही चोर साहतो तेरा अं
नहीं कहो सम भाव जन तुलसीदास कूं नांकरे पीव तापिसर जि
न तिसा व दास नही तुम कूं गुरदेव मे गुन हीन रूली त
री सेव टे० काम क्रोध बिषे बिकार लीये देब कुते अपार
नाकर नी नो साग रिगेरो माह मपेन नही निगार ओगुन को क
छुअंत नही नषसषभरि दो मांही भाव जगत बहनी तेरी बि
सहो समनथ साईं तुम दीनानाथ दयाल स्वामी मेक्र मीकु
लकामी बिरद जानि नम रि अबके आइ के अंतरजामी गु
नही साहनो तेरा आसिरा न हो ओसकरा जनतुलसी कूं सरनि
रापो पोवन साहिब मेरा तुम हि का ता गेजू रम हे अप

ग श्रीमराम मतो रामरो मनेबीमरहेहमजानहीमुहरिटेक।
तुमसब ।।सुधश्रमतेश्राकामवृतहमभत्तनेश्रम्पान
देष्योवाहदरसतुम्हारो करिकामुष्यामानं।तुलसीव
हश्रहियकश्रसी।कोकजानेजानसुजानाबिलबछाडिन
जेरामश्रपनोसुपषेपदत्तिरवान।२।।७रितगवेनकहोवक
हांकुंकीयो।कहारचोश्रसकाहिपूंबतोहिनहिसकीए ते
रोश्रोमरबीतोनाहिटेकै।रितेप्रथमदषाबेरागकीलीनीग्ररपे
सुवावे सबदसाकतमोवृत्तियाकुगीकेसंगिलागिरे१।रेतेमो
तेसानिमनराछोरभसोपदहीबिसराइय।कोडीकेसुषकारने
तनोहीरासोजनमसिरायो।रे२।हरिगोबिंदकेगुनगावतेकहोक
हश्रलसाइय।मानुषरेगीश्रंधरकूतोहिकहुसमकाइनूरिटं
तरकिगास्तूतासिकेविगुनरूपविसराइरेजनतुलसीचोपापद
माही।स्तूलेकानप्रोनसमाइरेयां।।८।।हिनिदावेवेगावनोवृते
दोचेगविनजाइरेपिकउपदेससत्गुरतनो।स्तुसुनिश्रवनो
विसताइरे।टेवेरदावेभेदाफाडुलीसुरलगागोछिहाइरेपडित
स्रसोवृतसुभरकेसेगयोबिनाइरे।।१।श्ररथश्ररथमषिलोक
नो दोवेरहेतपटाइरे।तहांकजकको कनहीहमस्पीश्रज
कश्रघाइरे२।रेजेतंसमकेतोकहूंछतोहीश्ररघव्योपाइरे
श्राहिश्रतिमथिमांकलोनिरतिसुरतिउलझाइरेन्।।जेजेनिरस
वेरहेदावा।दषलतिगाइरे।तुरसीमितेसुषमिधमेश्रूमलजजन
लहिसमाइरे।।४।।८।।गोपालहिगाइलोकिहारयोश्रलसाइरे।
परीघरीगोबिंदनजनविनोतेनेनमासिरोजाइरेटेकेसाव
तहेश्वारोगिनवक्रतनाकंचतरूपाखाइरे।जावतन्यारोगात
हितेरोनमनहिय।तहियाइसोहीराहरितुनाकाहीसुषगाहि
मतितेहिसुमाइरे।श्रमतपरेछूटेहेनबिसनोकाफिरि
छेपछिनाइरे२।विनविनतनतिहिकरिबोकायुजधछिरे
नपाइरे।हेमोगयदजुगतिसकलविधिविसरिपतामात
पाइरे३।यकश्रोसरहऊश्रवश्रमोलिकोकोकपूरवलेपुनि
पाइरे।जनतुलसीजनमनरनहेताहरिस्तूतांहीस्तूल्योलाइरे
।।४।।९।।श्रगोनीश्रावरकयोहमारोमोनिवयोवयोकाफ
रछिपेसंगि।हसोडपकामांनिहकें।।साकउमासतसतगुकारे
दर्दश्रगुतीकोनिप्रतितोममनमायछिनतनकी।होतहिनदि
नरोनिश्रायहश्ररथश्रनरथजुश्रोरसबहोवेजानिमजानि
जनिकेनिजपरतमःपदोगलपिश्रलिश्रेनरिश्रांनियहक

रनी कहि करि जुक्ति जतन प्राप्ति कछु चेष्टा न याविन ओ राम
कतव्हा चिन्ता सो भि ध्यान करि मोनि ठो आन्मीक धरम सब
कोही को माभि चलेऊ अवोभि जन तुरसी तन काल न तजांव
सो रतु रपद पर चोनि ॥ ११ राम जी को नांव तीयू नरके
अघ नरि नांहि टे ऐसे चिन गीपे आग नि को सू ई मांही न
सिम सम करै तांहि रहै सनमां कछू नांही ऐसे ही धोपाप
न पतन राम को नाप अवतरि तो फिटि जांवू ही रहि नाहि आत्म अ
प ... तछिके नु गए रजनी के मेरु हाई यूं न राम को नाम ज
न कैसे रहे जुकारी कोटि करम कटि जांव ही निर चे तज
करि सोह यामांही संसे नही साथ कहे सब कोइ ॥ परसां
पारस रूप नांम निह कामनु सोई जिन सांव नि जल तो ज
र की वासना जु सोई होइ मिलते ताए कन कलो वापूरनपद
मांहि जन तुरसी मन बचन करम नेई जन बऊ सो छिस्टरे
नांहि ॥ ११२ ऐसे हरि आव ही ओर उपार जु नांहि टे ... स
चावि राघन प्रीति रहि के वचन न वारे चकोर चित व चंद दि
ष्टि कुत नत नहीं टारे ऐसे ही निरख्यो करे रामरूप घट मांहि
घरी घरी पल ही पल छिन छिन निमष विसारे नांहि ॥ ... म
हाती जलति बिनां तलफि के त्याग देहा करम अंड कुरकटी
सु सनस्त कैरस नहा ऐसी सुरति धरि ... मिति ही निरू
पनां मः निस बासुर त्यागारे हो तो कोंन मिले वे राम ॥ कांम
ति के सब देस ना भिर ही नेनव नारी छिन में परेन चेन हो रहि
हि कछु नप वारी सुर अंत रिकुर वत बहे छिन दरसे वे नार ऐसे
राम जपे जन अपनो सो भिट जनम उपदा हा ॥ ती ब्रबे गम
सुति प्रभु को पंथ निहारे त्या हित्रा हि कछु छिके जु राम को नाम
न चारे ... गहत लागा रहै अपने ही नर स्थान तुरसी ताहि
मिले वे पांवन रसिक करि कृपा निधान ॥ ... आवै गे रामह
मारे ... जुपको भवतु तसा हा निमसप मसह परछि करहेंगे अव
... रगुन नांहा टे ... निस बासुर गाढी मघ जो के करि कौ
श्री लिठ मोहा जानो जायू मिलो पावहु ... सम इकु बाहा
पी र आय सधि रहैन को ... तिक न कल्तो का हा जनम जनम
अहतु गजु गत के भिरहि हमारे दा हा ... यक्क अबला अति
नहमारे ओरन को ज्याचा हा ओर चाहि चितव नि सब त्या
गी तु म आवो न रमा हाहा ... तुम तेज प्रकास अपरमित
सो सुख सिंधु अपार हा जन तुरसी कृप मिलो महाप्रभु अरपोय

ऊ नतलगाहोध।।५। तावत आपने दे बेदपटो कि पुरान
टेको अछिर अछिर को अरथ भिनभिननि सबनि सुनावो मा
सत्रनि के नेदनु गति बिधि स्रुयो पावै नरअं नरिअनरथ
बसै यह अचनो आहि मिथ्या तो नमो हमाया मेरहो हैन
लची त्यहै और निस्रु कहै टेरि नया ये नटबया रे आपन के
अनिस्रु नतो अभिअ निरधारे कुदरज बिपया नोगवो क
थिक थिसदरूपापो नातिलनरितो हि नत्या गई इहै बडे
हेरानरा बियाबिधि बिधिपटे अछिया छाडे नहीं सुषा
रोभना मचित बसै माया के माही बातपातया चभमे हो
रस्या आटे लोन सिमि बिचारन समकही पिरको आपि
रकोन आकहीते आए आहि जाहिगो कहा बनाही यकु बबे
कनुरनाहि और बकुतें चलराही कएनुषरी कही आपही
निगुन सगुन सोइ तुरसी त्रिगुन अतीत नअनुना मुक्तिन
कबकु होइ ।४।।६। गाटमन को गहो काषाद नेरहे लागि
टेके वे दिन आए चालि जे बदिन कहती माताहो सुतबडे
होऊ बमनि बकु कुसला ताहा सातेसु भिया रामजी तीबरवे
गिनुपाप आलसी कुकाहो रहे तिरो आसरबीतो जाहां। पद
गुनको फल बोऊ आहि मसुनि नाही गहिमन गोबिंदन औ
अभिअनरि आई पांचो पसरनिवारकू सारइसो हीगपान ड
हिआलध्यान है तुम क्रोध जनकि रो आन।२ जा ननदीजजहे
तहां बेठन रनारी गए जहा होइ जाइ यलटि सिंथ तेससारी थ
ऐसी। प्रबजमा यो यकु पलपरसे हानजाइ। तुलिकुचनलु
लिकांचसकुलकरि रही ए संतापसमाइ४। यहसबसंत निकु
हीएहसुम तसुकहाही यह आप हीबिदसार सबको यहअ
हा करिप्रतीति गरखरकु मनक्रमबचनबसोइ नानतुरसीरि
देरामअपने स्र रहो अपडरतहोइ५।।ए रतो ही मारहे आरय
पवित्रसतारटे की संपूरनगा नलेऊ। गलटि अपने नरमाही जि
निके निरापिकु ३७ नहैं सहाही निसबासुरलागा रहो ऊहे आर
नहै ध्यान चित तें पलन बिसारिए निजसरूप निरबान।।१
बिपयापहि होजहां जहां जुगल पटाना निपटि कसऊ निरमूर।।
गहिजु समअगुरपांनाबिपकवनतो छिमारकु अवसिजुतन
तोएह यहबंधनयहमु निको है कारनयहदेह२। काहकूप
छिपटिगरपकरत बिस्तार घनेरा कुरम लोनुतटाइ छितरा
सोउरहे रा हिरदे के वृत निरथापि के रहो अचलयूं समाइर

जूनि आवदी पाको बाली लोइ न इस अंत होइ ३

ना इ छ [illegible] सं ता नी ना है ज्यू सी क्षे ग्रु न्ही रे त्रै मैं ता इ को दि षा

ने क डु से च र ना रे है जा बुसी व बि चि सो इ जन तुरसी परम सा

षि य डु ना जब त्रै से च्यू होइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ तेरो त्रो स र बी त्यारे जा इ रे

[illegible] स म जा इ क हा रे त्यो त्रु न सा इ [illegible] नाना बाति सु

[illegible] त्र मु त्र प तो [illegible] हि त्र [illegible] चात्रि ग घन पुनि

[illegible] च को र ती [illegible] ना रा र डु इ क ना इ [illegible] का चा है य टि व गु न [illegible]

[illegible] स व धार व हा इ य क चि न [illegible] रा म स्तो ती त्रु र बे [illegible]

[illegible] जन तुरसी क है सम कि मन बार बि गि [illegible] ब न ना इ मि

[illegible] वा है रा म त्रु प ने [illegible] सो सुमिरन ही चित ना इ [illegible] ब डु रे

[illegible] त य इ [illegible] रे ह रे [illegible] ना हि उ प रे स्मो [illegible] राम [illegible] म त पि

[illegible] सो ना इ [illegible] भि या इ पूर न [illegible] नि द ह त्रै सी स

[illegible] त्रु [illegible] त म ति पा वे क रि क रि त्र ने त स न र [illegible] बिन सि जा इ

सी [illegible] का ग द सो त्र [illegible] बा [illegible] पा इ डु ल न षु नि है [illegible]

[illegible] न क म [illegible] लि व है [illegible] २ [illegible] ग दो [illegible] हो इ रा म ज [illegible] क र दो

[illegible] ब के र [illegible] जन तुरसी त त [illegible] प [illegible] क क रि त न धरि

[illegible] न र त्रै सो स र प [illegible] नी को राम सुमिरन दे षा

म त्रा प तो [illegible] क प ट्या जा व सो टे का [illegible] वि पी [illegible] बि व तो

[illegible] या मि दे य डु सु [illegible] त्रु ति त फी को [illegible]

[illegible] त्रा [illegible] नि त व [illegible] ना मा र डु मा र य है स ब ही को [illegible] य

डु न र त न हू [illegible] म ति पा वे हो इ त्रु स त [illegible] नी को या मि [illegible]

[illegible] न ते [illegible] क डु [illegible] न पा नी पी वै त्र [illegible] त ही नी बु र हो इ ना रि त

[illegible] मा [illegible] ग [illegible] को जन तुरसी कहै नि र [illegible] स क

[illegible] तु र य द स [illegible] को [illegible] न त या त्रो स र के का जा सु

त्रु सु र [illegible] स क [illegible] डु [illegible] क रे र ना जा टे [illegible] सो

त्रा स र [illegible] म ति [illegible] त्र मि [illegible] को डि का जा ह

[illegible] न या [illegible] स [illegible] ना [illegible] ता [illegible] पा या

[illegible] को स मा जा [illegible] त्र व सि के [illegible] है म ह

को रा सा [illegible] न [illegible] मा वे न [illegible]

[illegible] ना [illegible] ना वे [illegible] ति ना है [illegible] न

क है स म [illegible] न र [illegible] के गि नि करै त्र का जा

च र न [illegible] ना डु प र है [illegible] का ना जा [illegible] गा इ गा इ गा इ

बि [illegible] गा इ [illegible] गो बिं द के गुन गा रे बिन तेरो त्र सो

[illegible] जा इ टे [illegible] त्र व [illegible] ते रे त्रा वत घ ट त न रो पो र

नाऊँ भात आवे पानि डुहे ज्ञां सिंघ रे मैं जांनि। पोरतो सदीव पा
न विषवकन नो विसारे सुयाजुगको छूगेजेआल १ कोकटि
र देत्कनेरा अपनो ध्यउरकृ ला देह मोकं यतिहि देथ स्ता तो
म रामस्हतानि सुमिरि सोई अविहा आतुरमाही सुपको मागन
रा नृथकोहर नाएहरी। असोन ओसर पावे लरराकजोव मिं
वे सो ह्याम तिहीा भवे सोई सुष वो मन लतुरसी कहे यक
वो तो अति हीप्रम तुर्मानी ह्वाटकै फंदकु वधी न सिरअपनो
रामन्॥ २२ जीया राम सुमिरि राम सुमरि रसना मो ग विनाजा
इ वैमोतीरो आमेओ सरेरे टैको वार वार कूं विचार लं मांही
समझ लगावा रे राम रूप विसारि के नहो सो अ सुरेरा अफहे जब
अंतेरा न मसपेरहे नव रुपहि तोगोलांन सातेहरि ध्यांन धरि
रो। अजह चेत न अपनो बीयो जाइत्र व थिन्यां नो चल्यो आव
काल ए। कर रपारेद रे राजनतुरसी कहे समझि रोह पै ते मन
न्या गिहहु आरकस्नजिरा म अपनो कजिन न सुफल रहे। २
२ रमईया आवो आवन कहे जु वारा तुम हो अहे आनंद सुषदा
इ षकेतं जन हारटे फे।। भिस वासुरने न निम घड़ी कं करि कहि
भीसिसनेह। डमटकू राम अब केरहे औसर पतन पल छी जेदह
। फेम रोते स तुम पूरन। प्रगट करकू ष्फारादो हरसी आव
न अबि या सनी नाहिर विरह करे मा राः। जन तुरसी निज
दास वम्हारो। करजो रि विनवे एहु दरषो राम देकू दरस तुम्हा
रो। और सब तुम हाले कृया। २४ रमईया आवो जुरिदसं। हिमर
कूं जों कं वारने तेरे टे कां। अपनी जाति नु जगावो न पसप मव
ति मरन भावो। आ ए जैसे अब आवो तो मा मनि मावो।। अप
राभांहीही मारी। वाहजकी माहि पीति सां ही तुम्प जविनरे
सामो मलिनपतियसहिर। दीनकू परिद्या कीने गिनहवे मिज
अपनाहलाने। सूरन अपने रहीदी जे तो सुष मैं जीउन। तन
त्रि वषि नाय निवारो विगि आइ प्रभुपा व धारो। जन तुरसी के
निरति सुनि के प्यार न वारो। २५। आरे हीवे नगी रो के ना
अव के थोह रिहि अरव कुरि वे मि सु मिलनन तो ही वी नत अव
विकरार रहे ए। वो जलनतो जा नरेही दिन हो दिन घटती ज्यु
रा। यह जो निमित्तिहिस सनेही। मा प्रांन के भेहीरा। विरहनी म
गन भोवे मनदी मन जागे सरोवे जो व प्रतु को दरस होवे तो
ही सुष सोवे। तुम आ ए दुषदंदनो सो नपसप अहे आनंद प
कूं से न मन हरिकी जोति नासे रिहे न नम आरांना।। सुषर

मधुर [illegible] लीन बजे । [illegible] ही घन मानो [illegible] गाजे तु =
५०५ [illegible] कानते [illegible] जन तुरसी [illegible] दरसे री जु
[illegible] चेरी [illegible] जा निरख [illegible] सेरो मो हीजी वनमे
[illegible] श्याम [illegible] ही [illegible] तु फंदे बन दा चाव
[illegible] तुम ही तुम ही [illegible] दिन ऊ
[illegible] तु म [illegible] सो हि सुख [illegible]
[illegible] घन चकोर [illegible] बन्यो बना [illegible]
गा०८ [illegible] ही [illegible] जन तुरसी [illegible]
[illegible] न जतु मस [illegible] गत [illegible] नतुम मेरे [illegible]
[illegible] हो कि [illegible] हि गे [illegible] हि गमे [illegible] मिलि र
[illegible] हि [illegible] बिन जीय में [illegible]
ही [illegible] नद [illegible] नो [illegible] हो वे सदा [illegible] सुख
प [illegible] बिन सि [illegible] ही एक
[illegible] की [illegible] ओर को क नाही [illegible] बिला [illegible] मेरो [illegible]
[illegible] तुम [illegible] हि [illegible] सब मनोरथ जीव
के [illegible] तुम [illegible] नो [illegible] हर [illegible] होई न रमे [illegible]
[illegible] जनक [illegible]
[illegible] जन तुरसी [illegible] ही [illegible] जो व [illegible] की जे [illegible]
[illegible] वी [illegible] जा [illegible] जो कव गा
[illegible] म नो [illegible] मो [illegible] ह का [illegible]
[illegible] सुख [illegible] म जी को [illegible] ही [illegible] जे [illegible] हे [illegible]
[illegible] जानो [illegible] तिमे केवल [illegible] बिना [illegible] नगर
[illegible] नो [illegible] भरी [illegible] री [illegible] त बोनी [illegible]
[illegible] नी [illegible] के [illegible] गत्र [illegible]
[illegible] जन तुरसी [illegible] नो [illegible] मि र [illegible] जन म सुफल की
[illegible] दिन के [illegible] हि [illegible] नो [illegible] ही [illegible] जानो [illegible] मित्र
[illegible] नी [illegible] या ओर [illegible] नो [illegible] कथ ह माया
[illegible] रिको [illegible] जन [illegible] नो [illegible] हा [illegible]
[illegible] नोर [illegible] को कर [illegible]
[illegible] जारे [illegible] के [illegible] मिले [illegible] कि नरा [illegible] नोर [illegible]
[illegible] वर सिधास [illegible] नी मानो [illegible] कि र कर दे न
[illegible] में सुख दीन [illegible] नोर [illegible] जानिया वालोक
की [illegible] सु [illegible] नोर [illegible] सुख [illegible] को [illegible]
[illegible] नोर [illegible] फेरि [illegible] नो परम [illegible] नोरज

तुम्ही कहै तो कृत कृत होइ हो इष्ट घकी हौ नौ ॥१५॥ ३प केते रान
केते पर जाहा है हम दीते जनत र द सूदे लो छिन्न इ मारे राजा
राम भजन बिन गीते टके लेके का दति रोवन कुं हा साहे कुंचन
रन मे नाही क्रूट बमहत छिन्न मान नये वक्रूं तुदा दयाही ।स रि
हश्र वाल्ह अनंत बकु राजा सो है बल श्री नि मांग। मारी मिलि
मारी जए हरि जगति बिन आपानी ॥ २ ॥ जरा सिंध सिसपाल
जाहो केरो पाछे जेते सो अनेक इल का लनि या रोक हा लै
बरनो के तैऊ लगे सुधी न आइहे सुतेऊं थिर न रहे तो भाई ब
लहूं धतरु भारदि तन न काल सबन कूं खाइ ५ छिन ननरोय हौ
न ने ग्रेह बांजी मा हिदे षिजो घहरागी सिद तई मलक हरे।
नगवे तन जिबडभागी ॥ ८ ॥ छिह चामेत्रा मिरे जनजी संश्रोर
तसु नीरे रवे गुरु पान ध्यान केदाना वै सो त नि माही रहयु ।
श्रीर उपजे बिन सी छिन मिले हि अबल ना क्रतामा ह आपान उपजि
जलमी बूडे बरे बार सातीसी री माहि ता पन परसे । सुषदुख
ते कन को ही सदा अकल तक अलिपत आकास वत सोईमेर
मोहि ॥ ९ ॥ अरध उरधत्रिजुन कहो परदेस ज्ञान तें त्यागी सन छि
तत्रोम रहो कर सो तन तन हूं घन नही आराध ।। प्रो च तन गवतीन
छिब रजत परम जो तिप्रकासा जनतुरसी सोई सहह मांये मे
ता दास निदासा ॥ १० ॥ ५२ ॥ २८४ ॥ राग ॥ ७ ॥ ग्यामा रन्ग्री ॥ निरा
धार अंमन लागो माई केसे धीरज रहावे ॥ बिनपारनके पथ अच
लनी ता तें कंप आवै टके ॥ बिनही करन बाऊ तर अति का रहो
बिन जिन्हा गुन गावे ॥ बिन माला कर बिनहरि सुमरन छिरो
योहोइ आवे ॥ १ ॥ पयीलक के पार ज्ञान फिर मिले पछी रूनत होभा
वे पिंडेधारू ते तुम घडावन भाग चिना को पावे २ जहां रबि
चंद ते अनही गारा छतु तहां प्रकास कहावे अति अगहन यसो
नही पैठी निगम कु अगम बतावे ॥ पांच तीन आवरन छिवर
जत दृष्टि मुष्टि नावे मत अमत अमत हसत कछू कहो कैसे कु
न हि आवे ४ ॥ जन तुरसी यक अकथ कहानी कहत न कछू
बनि आवे पूरन ब्रह्म सतगुरकी क्रिपा दृष्टि सो जन लय रह सुप
पावे ॥ ५ ॥ तुं देव तुमही तुमही मेरे और को कनो ही तुमही
आदि तुमही अंति मधि कु तुम ओहो टिके तुमही प्रान तुम
ही पिंड तुमही नैन तारा तुमही करन सीस पाय तुमहो मेर
स्वामी ॥ तुमही सावर तुमही नदि तुमही प्रान ध्यानो तुमही
लोभ तुमही जुगति तुम बिन नही ओनही तुमही देस तुमही द

सा तु महा देव देखा तुम्ह ही सरब मेरे कहूं तुम्हारी सेवा
तुम्ह ही ना छिन तुम्ह ही तुम्हि चुम ही बनि छिन वासा तुम
मन तुम बचन औरन मेरे आसा ॥ निराकार जन सरूप
आपन गामी जन तुलसी निगम नाम तेरो राखि सरन स्वामी
२। छंद तिरमन गामि ताजा हि जहां सुख के सागर रामरहे गाम
ता देखे कहार सो ढसो आठ देखिहै सुख काढ ऐस कहन जै
तिनाहा भाव जो निमनाम तातें कहो सुनि मानि मेरो कहु
माने जो मन तेरो समुझि तिसे न आपनो मति बाउरी बाभ
१२ कोमको धुसनत्यो त्यागि लोग के लगाव आगि मार मदा
कछु न भाव दिन्ह दिष्ट है रागरोष बतपरसा ज आही सोह
रूप रहन वोट माही कुन आहि तन्य जे जु नाही जिन चरनति
आनन रागरा धनि जो तक रै ऐसा संत जन नन्द कहि तिसी ते
हि आछि दासा जा का तन की के जु वे निरबाह नहीं नन्द धर आन बाछ
या पवन जलते जोन काया मा रक नाही सुमाया ते सो पि
हरत जाके जहां जगमग जोति राजे अति ही आनन्द सुख बिराजै
कोटि अनहद नाद बाजे सोर रहो जैसे कार जन तुलसी वा सुख
सिंधमाही आदि अंत न मध्य सदाही परस परा मिलो के है
रहि है सु चरन म झार आदि ना रहावे राम तहां न होकाम अरथ
धरम करम की गम्मि नाही महा उजल न बरधाम वा को पंडित
की पहुंच नाही आपदि सको जु आही गुणी कुगुणि गुणि
सदा ही थकि रहे उरवार पार धों को कहे न पावे॥ माया सा बजु
जो न आवे। मानेरहे हेरा तिहारे पंथ निहारि निहारि ॥ जोगी ज
गम जे न जैते सन्यासी कथहिके लाय जगु माहि है ब तेते र है
नकी सुकाय। हारि कहि तपस्या सुदार नाम न कोम म केन का
लोलील भरि ता को निरवासन ही के ॥ अजाह रहि २ दोहनाही
हि मिटाय है मिटे जे कछु बिना रहे न कि नहीं सो रह भए अनेहार
मन लगे आप थान चाल न सो सुख का चलाया सुख कुल वे
के न माया अस हो इसो तहे व कुघर ओर को न री जानत आप
रहत अतीत है कुगति न तोहि बास ना पावे ऐसे आपन और
पावे जगजु मत के साई जन तुलसी मन क्रम बचन आही
हि त्रिमि है वाक्य समा ही बकु रा धो दिछुर जु न ही जो अैसा
को कहा वे ॥ ३ ॥ सरमान ऐसी साज आपान सुमरि
लेय मनुष्य को जीव को जु जीवन पान टेक ॥ पूरब पुनि ते पाई
मानुष देह तें जु आई मोर तन न छन गवाई बिना आत्मा

तौ स्वरूप है जिन्ह अपनौ सांई अपन हि द्रिष्टा कौ वलम्मांही सो २०

न एकागर होइ करि अतुलागनि तौ रिअर म तौ स्वरुत्तागा परय २
रमने कौ दुतौ होत मानि मान भाति धों कहौ जुमेरौ रूप वा
मिलहि तूतौ त्यागि एक दरजा छिपै सुपन कुनकरीए
न बंधमू कुकरनकूं देहां सौ वो आपा जु ऐही सकल मार
त्रकाम नहीं और नाहि न आनिथ तीन लोकन चपड मांही सा
रभूत होही आंही और असार गनत यकु मधिंन वेद प्रर ३
नानास्तलगि मति अवधि पीवा कारन अपने आंख खोवे सुम
सुमरिनि हचे जु आपनो निज सरूप निरखो नथ जननतुर
सीकै हे यक ब्रह्म वांनी हैस पीर नीर लौं प्रयांना मानि रज्ञांनै
तौ जानी काहे रयो अज्ञान बीट न्हे गकौ नाई होइ कै गे
लताने धपा जुद्रवुधी मता अन हिम्रपग आवेर सुपने मांहि
मूस त्यो नवट के आगमा ध्यान मोक रहा लागा गो रिज्ञान सरे
कामांस नागा फरी ए नहीं अमरा वरे गी काम रह होइ कै रूक न
गा हरि के चरन सरनां वेरा सुनि यकु गपतीन तौ मेरी त्याग म
न मिथ्या यकुरी को कनगयो सुप पावे रहे हे दिन के मांनि
आनि चलै छिछकाव रे री या वा लो कके सोग जुप्रांनी
सुप संपनां के सो जांनी मति करे फलावरे या अभिलाष ४
मो हिय रिपरि नक तनि पोई हथ सावरे रयकु जगुरु वेदापि
मिन्न लौय हनी नोग पनि को मूरतौ या मेन चेन चनावेर यह
मरा छिको सो जनां किन पीय मांस्पा आवेथ। निसवासु
र अपने उरमांही सुमिर अपनो सम ब्यसांई मलौ वन्या यह डा
वेर यह नगका चमटे मनि घवूं तौ हि कारूं समझावेर प। यह
बके मति हारो पार होनका जुगति विचारो मतउरह
क अटका वेर गमनो मनोका चटि प्रांनी पयपार होना वे
हा जननुरसी सतगुरस्युं नाथ आज्ञाय हउपदेस जु आपस्य
नजकु निरंजन रावेरो कोटि गंथ का अरथ इतनो ही और क
हो लोक रूपना वेर ७ ।। ६ ।। मेरे अछे मनाकरो नामस्तेन ररंगे
न औ सरा सरे रहे फिर यकुउनी यां कवि सकोकारनो थ्या
वसि केकु रोगि वारन भाषि ए न तव लोहौ तन धन आदि
सकल जे अपन करी जा का ता कूं देह रे।। साकृत मास्त्र निकै
मत एहो संतकु जया ये सुमिर सेन रहो सोई हर धस्तिकरौ।।
उतन्त्र मिलू प्रमा लियावे न जन नवि नाय कदहर २ यह तन
रतन बकुरे नर हथ आवे सो मन कोडी सटे गवावे कफि करि हि
पन छुटहर यह उपदेस मानि निज मेरो त्याग वासना रहे

जन तुलसी जुगति जुग ही न जऊ अपनो राम सनेही ।
अबु मारि के हे राजन मन मन उपजी तिम हाते परमला मेर
नि हेरा ॥४॥७॥ अनन मीत हमारे इहां नहीं पिराऊ को हरे
मोर सब नो कूरे हे के मक बंधी राजा के बीतारा
मोरे जुगी सो हा प्रभू लानु तसो हरे यह जो निजु गम मत
[illegible] हे राम रत हो इरे रागो बुन कूनवर नसके ते याजु
परि मरा सुतेन का हे नद धोजो हे मिथ्या तन धन को पूब
करि कारि वे अति मारे हे रा ॥ के रे पाडे जा दो तुज हा लो
तन धरि आप जुतेल जुत हा लो लीन नव नम बलो हरे सोई
सोई कम तिन पारे वे ज्यां जु बिरला को हरे ॥ दिन दिन घऊ
ला तनल नत रो कहा करि रहो अधम रके रो करम बास नां
ला इरे ली बरहो इ नाज राम अपनो जो चाहे सुख सो इरे ॥ मन
मा हि मवन अभूग आवे हरे मलो न लटि के समा वा अपनी
न थिर हो हरे ॥ को टरमके जागा कु वा साहिब सो हरे
यह सब है [illegible] संत निको बानी सुरति सुमत्य कू यह
बाधा नाम न को निज्यो सो हरे जन तुलसी ब्रह्म गल ना न हो हरे
[illegible] बकु रि लि ओ हन हो हरे ॥ [illegible] अलट आवरे चेतन मे कर
हि आगम जड संगति बकु जन मबी तो पायो न अपनो राम टो
को कहते को यह बात नाही रही यह सुख होइ मो ही निरमू
ल इ वासना जाही ते सकुर है न को ही तब ताको मत दरसे
वो [illegible] रि माहि जग में सा वे इ हो दी मामत्र सब हीन को मार
न नु सांई ॥ देह को असत त्यागो यह बिनसर मत न हो ॥
तो तु रब जनम हे मा को मरे फाटना इत दो नाही जक बदत
[illegible] हो दीन तम उपदेस आवे आत्मा मे ध्यान दो हरे हो अन टि
दरि आइ ॥ जन तुलसी कहे यह ब्रह्म बानी ॥ हरि भजन की जु
गति तु बधानी आनि रे मानै सो जानी ॥ फिरि न आ मर एह ही
अपने मा थिका ओ कहे लोग [illegible] जो रूं सुफल होइ यह
इहे ॥ [illegible] नाहि ब्रह्म ही ब्रह्म कथ मन लो [illegible] ब्रह्म न चीन्हे को
ब्रह्म चीन्हि ओ तब बनि आवे जो मन मा सुख होइ टेक ॥ अत
दिन बात कहे न तर को चलो जुद पन नाई सो अंतर कूर के
से पद्धे वेथ हम मफो मरे जाई ॥ औरनि बिषे बिषवत देषा
बो अपने इडा पाये न टिपो अमी पडि लाई जो नाग हे न सी ल
संतो ॥ ॥ जन तुलसी यह कथा पावनी सुनि जु मनन करत ले जे
नाही ब्रह्म को ध्यान जु का [illegible] तब मन लय हलन मली जे ॥ ॥

नाईकथिकथिकूलरहेरतो केउदो त्यागनमनकेमांहि मिथ्या
मायाकेरसिवमिहोऊपरपदचीन्हानांहिटेक मोहकामक्रोध
ज्यूंकेत्यूंबहरिरटरहिहिंराम उदाथीलोकहिंदिपावे कपटस
रेकौकांमा मुषमूतचरेपांनीपांनी बिनअचावेवहनीरअैसेके
संतनतापत्तुनांसे मनपकरेक्युंधीरथी निरतिसुरतिउलटाइअ
लिअंतरिरामरमिहेजुकोइसा निहचेआतमसुषपावेसंतकहै
वैमोरानरतनतुरसीयहषसतरवांनी जिनिजोगनजीयजानीअ
तिअथाहामहाउदसमुद्रलेषि पाणिरोतेषांनी॥५॥१॥१२४॥
रागा॥ढा॥रागसारंग॥समझायोरेमनकेव्हरी मांन्योनहीसबदेतै
मेरोसीषसबेहीफलनकरीटेक लोभमोहअरु बिषबासनांदो
ऊगमसिहिरदैधरी मायातिनिअरुदयादीनता सदगासिमुग
ध्वपरहारी॥१॥ रामबिसारिकांमरसिमातोसि योनरीहरिनरहरी
आमुनकोएअघाईरैनिदिनो कोपावेसुषकापुरी॥२॥ चितचित
वकीयो षमकांको मांनिसीषकरिलेषरी तुरसीदासमोमनजि
पांनीनहीलगनमकरिहेबुरी॥३॥ निरमलभगाइरिमनोमति
नांहिअनंतगंमनजिप्रांनी कहतसंतहरिकेजनोटेकायदेसम
रनारबिषेमागरतोमिउपदेजगघनो रूपरेगसदेषपतोअमू
बकतबिगतेसुजिनतां॥१॥ परहरिकांमक्रोधमदमछरभावना
कीजेबिषबनोरथ्यामहिउबपावेसुषनोहीलजितेरामनिरजन
॥२॥ निरजेनिराकारअविनासी सुषसागरउषंडनोजनतुरसी
नांहिसेनाहिरेमिदिना मनसाबाचाकरमनां॥३॥ निरवैरऊनि
रतनसवरेमनसाबाचाकरूकरमनो औरलइजोदेवरेटेको॥
अैसोसांजबऊरेनहींपावोकोटिधरऊतु देहरे भागबडेमनिष
तनपायो तोहिसुफलकरिजेहरे॥१॥ कूडीमायाकूडीयकूडाम
नोरकिसासनेहीरे मातपितासुतसंगीतेरोअतिबिछूटोरेहरि
॥२॥ बदपुरानसकलद्युंभाषैभाषिकेदेसुप्रदेवरेतुरसीदासजन
कहैसंतहो तनमनहरिकूंदेसाररे जनजनमसुरांनोजाइरे
नातेरामसुमरअभिअंतरा कहारहोमुरछाइरेटेको॥ यहमा
यासुषस्वपनचारिकोसमकिबोगबिसराइरे॥ त्यामदिसुचिव
होएनकुबधीयहपापरतछिलाइरे॥१॥ सुमतिसमाइकुमतिस
बपरहरी निरतिसुरतिलयहरेआदिअंतिहिरदेसुषतिसदिन
हरिहरिउचरअघाइरे॥२॥ यकतेरोश्रोसरयकतेरोबिरयांस्य
हतनबऊंनपाइरेजनतुरसीदासरामजिप्रांनी॥२॥ कवितयेकु
भाइरे॥३॥ रागघोरदेपिचतुलांनेराकूडीमायाकेमदिमांतेभरदे

रामनाम ग्रानैरे टेक सकलौथी मंडली कच्चंवांचो चोदा
ह्रि तुम आरिमे मेरा करि करिस बड़ी नहीं येपयानेरे
२ समरुसा पाईमां रहिबे सिगर बौनेरे ॥ होम चुनादसमस्त
छि नोमे प्रहमिला नेरे ॥ रा जकाजमन दूसरा घोरा ॥ ३ नेकराथि
रन रवानेरे ॥ ग्रापा नोहिदेवालाकी नवकुनतमें जाहमिलो नेरे
॥ श्रीमहंदेरद थिरोराम नजानो ॥ तेनरबकु पछिनानेरे तुरसी
दास मनगुर परसादें यकु जगफू बाजानेरे ॥ ४ ॥ ५ ततकेस
लौरे दूनामयानी जिनिमावतम बेरी निबिहावे दिनटमरमचौथ
रहनी ॥ टेके मरनिदा परदो बनपूरितयरह छिया नरिघनी श्रो
करे मातो क्रुनन्तो करि नमकेसुनी ग्रानसुनी ॥ १ तिदी प्रमा
रजाल साग्रपानरा ग्र तिते ग्रोधी कृतयनी दयाहीनदारघ
जुसुनी सोकमोहमेरहे सनी ॥ २ ॥ अतटिन सुमिरे राम ग्रपनो ता
मि मोह माया मनी तुरसा ने कृबकु नहीं पावे ग्रपड ग्रनारद को
धुनी ॥ ३ ॥ ६ ॥ बंद्यादरमन को करनी ग्रोरबद्धा ग्रोसे तजिप्रानी ग्र
रछियाग रजनी टेक दहिरसनरह पनके कारन गहिग्रा काम
नात धरनी करिकरनी सुनताह सुरति मनाच छरेनाबृ जमर
॥ १ ॥ स्वरा गम्हत्यपाता लते कतो बिमयामवे बिसरनी माहसु
हिदेबागग्र छिग्रत लिोर कहीरसुधि धरनी ॥ २ ॥ जूचाछिगहि
रोबृतित घनको चकोरसाधि कीकरनी ग्रोसे चित चिते चितमांर
चरनकंबून कीसरनी ॥ ३ ॥ जू करम ग्राग ग्रगत तोटवे बृच्छित
तरुत्या मरिकरनी तुरसी हरिदरसन चिरतेम नवग्रातमा गार
नी ॥ ४ ॥ ७ ॥ समकिरे रसोदी ग्ररघनतमार मुरतिमबा हिनिरमि
रथरि रसिले रामपिया रहे की कारह कबकि बुकि ग्रगपानमाती
करनकथा रकायाकी छिदलापकरि के क्रोजेकिन करतार
॥ १ ॥ तुहे सरह सहकई माग्रहो मिमा त्वा मनि को निरधार ग्रोसीमे
नग्रमो तिकहलिबिन छेहो पावे न धार ॥ २ ॥ घ तमेपां चपानमन
तते तरे सहके नार ग्रोसीक राहहोहोहपरम गति बकेन
यावेषा रहा ॥ ३ ॥ कर मतो ग्रा ग्रा नतटिकरि करिनरपानबि
चारा तुरसी जनम मरन दूख्ट टेसु पेमे होइ संचार ॥ ४ ॥ ८ ॥ नाहि
सुमिरमन निसदिन मुरारी ग्रापर पार ग्रनंत ग्रघमोचन बिसेम
मोपसरा सुखकारी टेक जनम मरन मरवहरनगुमाई परमक
रनप्रभु रछाकारी ग्राद्विग्रतिम धिग्रम थिर येमे मेटि बिपति
ग्रापद तुम्हारी ॥ १ ॥ दीनदयाल तेकृपासिंधमा गर तारनतिरन
परम हितकारी जेजनपापल तापतिग्रमोचन चरनसरना

वनवारी। परम तेज प्रकास परम पद परम जोति प्रगट अवि
कारी जन तुरसी ताहि परसि परम पर होइ आपे ग आ भो भेजा
री ३ ॥ छिन टिचत तऊ मन न हरि सुं कहो हि जहां तु पसु षिय
ना पन व्यापे राम रहि ऐसी तजे सुष मांहि टेक जहां नहिं पुनि प
रले कछू नांही घ देख्यो सो कहे नांहि निरमल अमल अचल प
द पूरन ॥ परम तत्त्व रत न सकल तत्त्व जाहि ॥ लिषि धि रहत अपे अ
बिनर षरवे पछी के तिन रहित ताहि मांहि व्यापि सुषहि सु
ख विलसे निरंतर सदा संकल्प को नांहि ॥२॥ मुनि अतीत अजीत परम
पद परम तेज पंडित कोऊ मांहि तुरसी दास कहत सब संत
निस दिन चलि बसी ऐसा मांहि ॥३॥ रण त्रि तऊ मन न जहां जइ ऐत
हां रांम अविनासी नाथ निरंतर स्मरन सत निकै षिय्रां मन देवो ॥
छाडि अजान सुष गहो परम सुष औसे सोप्यांन विचारि विषै चोर
संगि दूर परे इन को संग निवारि ॥१॥ सबद विचारि चलो मन नेम
सम ऊंडी लगन रीकी जे सुष की सीर स्थिर मन निमाष्ये तहां रहः
सुतर समपी जे २ जहां असे अस्तमूर न सांचो पाप पुनि दोऊ नां
हि तहां निरमल तरूप अनूप अषंडित रमि रहो ऐनामहि ॥३॥
रूप न कर मन तहां कहुं न व्यापै त्रिगुन जहि होतहां ध्याइ जन तुर
सी ब्रह्म सरोवर ताहि मि तऊ सति नाउ ४ ॥ राग बहसो ॥ हम दे
ह तुम्हारी ॥ काहे कू गरब गुमान करत नर सुन तूं जु विनदेसी
मरमारी ॥ कैप्यो देही कू कागर वरि रो अति कालन नरी हो तनु
मारी ॥ तुम अपरऊ की कोन चलावे छाडि गये बडे बडे अधि
कारी ॥१॥ जारे भस्म होइ छिन माहि डारे फिर मंपर तन अति आस
ह कर स्वांन तऊ तन्य रूप भी जो निगति सम कि विकारी
अति रिनरी भेन मल मूतर नवो छिद्र रऊ रक्त देहारी काम क्रोध
ऊ बधि म्म मूरत नांहि दोष क तन सुवधि विसारी ॥२॥ भूठी का
या भूठी माया भूठी चलत चलत नर नारी साची निधि हरि हरि अ
नि अ तरि ता हि उलटि कि मजे पोरे जं जारी ॥ मनो त्यागी मैं तें
जुनि वारो मन पवन रायो उर धारी ॥ काल नघाइ करम नहि व्यापे
जन तुरसी सुमरे जु मुरारी ॥४॥ रागी क्यों न फेर सो कत्तें का लजत
रो मराना नव जत तिरिपा रि गये सेरे स कल काज टे को पुनि
को प्रवाह वैठे पाप प्रचंड भाजा है ते महा अधम जीव सुगगन
आइ छिन राजा ॥१॥ कटे करम न्नम मनासे मिटे उ पद राजा पकै च
म हा पद सुधांम सु ः रिपी तिपाजा २ परम जोति देपी नाइ
जहां बजे अनहद वाजा जन तुरसी ने ए आनंद रूप अभे तेजम

म का मन ॥ धाहि बार ऐसो गोबिंद नाँव त्रिभुवन ततसार
सो हिरदे मिरा हरसोई सु काहे न करे पल नाटे को पापके
न मिटि बिनाय भन्या गाइत्री निकेप रतापलनमे
॥ राको सपतित पंच नकरनअनंत अधमन
स्र लयो अनाथ निमाक्षराश सुखखिद सा सोम अरथि
लि नारा मदगति सुधको निधान सो कउ पपुहारा
हम निप्रगट करन परमजोति जारा जनतुरसी आदि अति
सो निसप्तरूपमें जाराॱ मेरे परम सनेही रामजी तुमजीव
प्रान आधारे टेक अंत करन मछि अरे लगे मेरे कुनती राम
सारे अब केम नेमें रबसी बरिक गंभनर नारे घरीम
ऊलि मोधि केबुल्लागानबिचारे मेअबला बाराबूसकी
भार मसरयो बिगारे नगात नाहरि कै दीयो तब आद
चलिमुरारो सुरतती मो समानाए तहो सुफिजन तरे अपारे
उजहकि मनि आनंद भयो हरि आयेबाम मेंझारे पचम
मोद घनगर्ज सहार ने अनघ अपारे आनद आमोतीन
हे तसी तारन तत बिचारो अबतिकनम बंदाइ के तहां प्रेम
आसि स्यो नारो मोती हत चौक पुराइयो तहाँ आनंद बद
जचारे अब राम सगि नाव रिपि रीसंधी गावे मंगलचारो
अबिसी सुपति नाग संप्रेम ब छो अधिकारो जनतुरसी हि
तिभीतरहे अब पुनि रिपिजन मनि वारो देव तुमही स
पति बसदेसरो मन क्रम बचन सुन कसुमसाई आनआसे
कामकोरो टेक नावे नरकत्वगद कसाई नावेतपचोगसी
करो नाहे सकल सुनाद करहरि राम निज चरनन करि
चेरो बकत भिने बकुते भिलिबिधकु काहू सुन तन गत
बिन मेरो मरे चित तुमही तन राच्यो आडरदीये आसंग
सुगकेरो तुम मेरे मात पिता बंधजन तुमही गुरस तगुप
तिमेरो तन तुरसी के आरन कोई एकनरो सो अंतरिक्ष तो
आ देव तुम ही तुम टेरन सुपायो तुम बिन जनम अने
कसुमाई हुन करि भाया नर मायो टेक अब तुम सरनम
कलदु खलास प्यासो कु सो सो पाइ त्रिपतायो अंगकु प्यास
अधिक तन माही अमृत सनी को न अपायो मिटी आपद
आन हमारी मन न बिटि हरि चरन समायो जनतुरसी सत
रघरमादि मनिमाजन मन नो फलपायो प्रान नाथ स्वरूप
तिहमारी कोक रिमाह करे कहा मेरो हम तुम ग हहै सुरतजि

घनवानि मलीनिवलौ जनको तुमसे निज करिनेहु रेखौ २४

डारि टेक की ऊनदोबदोनक नको कौ कौ कै देकु नथकै तोहगारी
हेर भाव उपजत नहा अंतरि [illegible] नन नरत नयौ म गौ १ कौ कु दे
सो एतं तु सातवा कौ कु कहे सो ए अपो अहंकारी बुध मलीसोकु
तजि प्रभु की गुरगामि ऊनटो च्यु [illegible] विचारी सबही दोषा वलते तज
निवारी निरखि निरखि निजपद धनवारी जनतु सी मुदत मुथ
रू ग्रामन मर नदोकु मरम मागा छु सु आपन ता न र टे थ
हरि मानागा सोमा नागा पांचो नारेपान रंगनिते हाइ जप
अविनासी का तन कै पेपानम्रु ११ मनवमिका यअनतनदि
या गतां मातानेवस्ं सिव सुखपाया क्रमसमायातनम व
सोप्या स्वांगस्ं श आदि अति अन गतिआर धे रा च्या पा ही
न्रा ११ त्या गिरे यक जुनई पहियो ती परमात्म पद ऊपाइ पुराना
तिकु जुगतिम्रुं जो मिटे ते पंचन की पहि चानि जु माही सो तव
वाकी हानि सो तई जु बुधि कि नो किन सव साथि रहइ न आनि
१ वार वमतो हि करू जु बारो हू नही मु नाच कोनि या वकी
मोही रचि पचि कौ को कोन गुरफे आनि २ यकु म पंजड कविन
रयाग हि हरसी औ चातानि जकम्रुं कबकु नटा मांही याउनी
यांउ पपां निन्रा युर को रपान गहि आनि अपरा थकु म नमन गा
तानि अचल नु करियातन मांही नेतु ब स्वासम्रुं वानि ३ जोनि
अरित्या गिदै कैर मरा व घ्रुरू तजि ताका कानि जन भुरीन नीति
रोक न जि छपते मार गपा नर १ श गा बिंदना वतु म्हारादे कु न
नमन आदि सो जसव प्रभु की सातु म अपन न कैं या यकव
छापूरखो परमानंद ७ जाव नदेये रहे हो नाव बिना कु भूर
नमाम्रुं राज पारथनेयहा खु वारि तो [illegible] बिनमत हमें देघ जिउ
जि निज्ञा चेयेहा बि कुत कहा तु मस्रुं करू माधा मि को गकहे
रोह जन तु रसारे रोमनाम नाहि सजि केरू बदेहा ७ २ जोहि
आरति बादर स की छि तिगानि जो रेमाई र ९ घन चकार चाछिग
तौ हि रसो देपन कै पीवपाई री हि १ जापी गका दरसई री ग
वार वार स्रुं आई री परसन कुं पद पाइ ता यहर घन वाएतो ध
ई री १ मीन कहै जा तबिन को जीवे आम कव ला कुं ना ई री
गुर थिर हा करवं लो विहरत छिन सुरग सुधरा ई री हरि बिन हि
यरो फाट म जरी नेन न तो रवहा ई री पीव वंद गा २ दरमनना
ती आर षि वरी ता जा ई री २ अति न अरति रो थिरा मेव रर वे छि भे

तनसुखी जनसुखी सुंदर भनीयो ॥ आनंद वल्ली बचनिका ॥ ४
श्री ॥ चलि चलि जी वृज जहां जाईये ऐसो जहां जगत सिरोमणि राम ॥
जन के सकल मनोरथ पूरन ॥ सुंदर सुखको धाम है ॥ जहां
सो कछु रूप बेसु तन बिनु सुधर सुधर सुख होइ ॥ नीनी
सुनावे आनंद बढि रह्यो सोइ ॥ जहां बिन हीं पावक तें बिन
बिन धूप गगन ते सु भाव ॥ अषंड जोति हीं होइ रह्यो तहां ति
परम प्रकास ॥ जहां बिन दीपनि बाजे बिबिध ॥ जहां बिमल
हरि जोति महा सु मंगल होइ रह्यो ॥ जहां निरति चरन बिन
॥ जहां बिन हीं देव देवता ॥ बिन हीं सेवा नित सेव
हां अनंत मांहीं मांहीं जमि बो आनंद बूं ॥ जहां
तरवर पहुप फूलि रहे ॥ बिन हीं बास सुबास ॥ बिन हीं कंठ
किता बोले बचन सुहावने तास ॥ जहां बिन हीं मान सरोवर
रस भर अमित वारि नहीं पार ॥ जहां बिन हीं कवल जु कंवल
खिलि रहे ॥ मधुकर तहां गुंजार ॥ जहां बिन हीं पवन
नसी तल बहै ॥ बिन घन बरषा होइ ॥ जहां बिन हीं बीज बिज-
तता चमकै ॥ तेज पुंज की सोइ ॥ जहां न जनम मरण जुग जम-
को नेम त्रिबिध त्रिताप कष्ट नाहिं ॥ बिछुरन मिलन मिलन सु-
छुरन नाहिं बिषे पन नाम माहिं ॥ जहां रवि तेज चंद नहीं तारा उदै
अस्त नहीं होइ ॥ जन सुखी पहुंचे तिह पद अंकुसु पावै संतन पैं
न को होइ ॥ परंपरा जगत जानीयां जानीयां ॥ आदि अंत अघिर
परे हरि रूप अरूप पद चीनीयां ॥ टेक ॥ जुगत जुगत हेर तह
कब कुछ नल हि तन जानीयां ॥ उत्तर दक्षिन पूरब पछिम फिर
फिरि न पिरानीयां ॥ पारब्रह्म समिक किकरि पूजे केपां न
केपानीयां ॥ अलि कौ बरम सब रको फल लीं वा षत हर
यां ॥ २ ॥ कथनी कथि कथि करम लगावे तुराई चित
न रमत्या ॥ गेकें जा मि जुगति हि मन स्नमनन तप ठांनीयां
॥ अजकवी ति तु गयमति हीं सा मांहि सीध सुन कानीयां पे
खिया ति दूंजाज अबिनासी तजि बिन सरब गानीयां ॥ ३ ॥ यह
गयह नु गति जगति कथिं लटि आल्म अस्थानीयां ॥ जन सु-
खी कै हे सब ही ठानां सो मिलहि परम सुख दानीयां ॥ ४ ॥ स
मसराइ कें डी षरा का है क्रूं करत सनेह रात बसे हित
चले ॥ तू फिर तो जु कैसा रूष रहै टेक ॥ नाह कहत तू मेर मे-
मेरत सरस बमोहा ॥ धर ही रहैगो धाम निज्ज परे ॥ संग न चालत है
को हो मात पिता सुत गनैक छेरौ के हाम्र हकसा दहा तेरन

नांहीइनकोा॥१॥ष्वरिकेसमेहरु७॥जहांजहांनिजआसो॥तैसो॥मा
याकब्रह्ममंफाराहीहोतहांहीबासाहोवेयदिनिरचोनिरधार
॥२॥दृष्टिमुष्टिवाजीयहनानोडुक्षमेमायारूपतिनतुरसीअव
डअरूपरांमनजिआनंदसिंधअनूप॥४॥२५॥तक्रूतनहीबह
क्रिपरीयेरेनानासुषवादनमांहीमांनधरीयेरे॥टेक॥बाईचूव
बुधिबैटमहाअचभिबीतीजाइ॥गांगिपैरपरहोतुआवे संतक
हेसमफाय॥यहउपदेससतगुरूकोसंतनिसुधसीषसुमारगन
जिकुमारगमूलिनजरीयेजायध॥१॥निरिष्यामनमूसनीगहेरहो न
पंचपसरलिवा॥१॥जनतुरसीसुधचेतनमनजो॥स्मूकतक्रूनआवे
हारि॥२॥दृष्टकृतिपरेजुजाइबोहो॥कामीकोनहीकाम॥निरकां
मांहीकोकनलपकचे॥औरनिडलनवहधामटेक॥इरिहोरवाट
देसलहलीआईक्रमनवहराहा॥पापीलककेपाकछुपिसलोपेडीक्रम
नसंजाइ॥वादिपलानचलेबालोदिरलो॥कामक्रोधकोनारपाइव
बाइकमांनिसपायानकोबिादमयपाडेष्यर२॥जहांसरनहिसिन
छिनहिनहि॥हिथरपवनअकास॥असोवोदेघरनिजनिराधारहेते
जपुजप्रकास॥३॥नांहीनोसुपकचेजनघर॥जहांनउतीनेकोइ॥
जेहेते बडभेजलमेरूवडरूबडहोइजेबोइहैऔरमतिजाने
तषिमेतछिसमाइ॥बाचरहसततत्वपदकीबिक्रूरनबिष्टेरे
आइ॥४॥जनतुरसीजोचेतमएरेतनमनआपामारिनिमिलेब्रह्म
आनंदसिंधमे॥स्मूजलजलमंफारया॥२०॥त्यागकोअभिमानहोइ
तोहेबुरो॥घातोनिराधारहोइरहिबोयहमारगहै॥अतिथरो॥टेक॥घ
हिरीबीचिचेरेजगमे॥पापपुनितेहोइहरो॥तेनत्यागआनंदपद
परसो॥[illegible]ोतेषिजाइडषढाठीदेरापहमजोगीज
गमसन्यासीहमहमकोत्यागधरो॥होइनांहीकछुहोइनदिषावे
परैगुप्तनलोबुरो॥२॥जसतोमसहोइनआवे॥सतगुनकसुषके
पुरो॥तहांअघरअफलकूआत्मसुष॥साहिबेटकोकनरांसरिन
रो॥३॥जनतुरसीयहफांनोमारग॥संतनिसोपिलीयाफोडुषनेहेत
सुषकोसागरसुरतिसुमत्यसबकोसेरो॥४॥२८॥२५३॥राग॥१०॥
रागमलार॥सेनहेंसोहेरामहमारा॥पंडिअसाडनिरंजनरिपूरन
परमानंदपियारा॥टेक॥त्रिनतलोकतामांहिबसतहेरहतसकलन
तेन्यारा॥सिवसनकादिकषोजपरतहेंवहअबगतिवारनपारा
॥१॥आदिअंतनेपंचनमलरहतबरनआकार॥जनतुरसीवहरा
७ महमारा॥ताहिसुरोंआरबारं॥२॥सोइजनपावेदरसेउनहीराम
नसाबाचाओरकरम॥मोनोवलेहकसारादेवी॥प्रेमप्रीतिसमा

राजा है। पलपल बार बारा। रैन उत चित चैन नहीं निमष न रि तुम
से ही प्यारा १। मात गर्भ चित चैनि सबासुर पीव पीव कै पुकारा
मुक्ति बैकुंठ कछू नहीं बाछौं। बाछौं निज दीदारा २। कनक का
मन सुख त्याग्यो तन मन सी करै धारा जन तुरसी हाँ हिम तनि पतथ
र साईं सिरजनहारा ३। २। हरि बिन रैन दिन जात उघारे सकल स
मारे सजन सुष त्यागे जाहन तैननि प्यारे टेक सुनि री सषी सावन मास
आयो बरसि सैबैबन पारे दमारे मनत्र जऊ नहीं नल हत चिर
आग नि बे जारे। कासूं कहूं कोन यह मानै अंतरि कर वतसारे
मन ही मन हि बिसूरि बिरैनी सुरति नैनन जल ढारे १। आरतिवं
आस चातृग लो मारी रे निपुकारे जन तुरसी पचु प्रीतजा नि
घन लो आ मि माला रे २। ३। आदल न बरषन लागे दोइ रोग म मोन र
मा हि अगि के जल ज्यलन उतरे बाइ टे०। कने आई घट गया बीच
दामिनि दमक तन मोह। प्रीति पवन चलि हरि जल बरसै अमृत
रस जो इ १। सपति मिटी मन नयो सीतल सुरति सुधारस नीर
न षसषन मी आनंद उपनो सुष बिलसै सब कोइ २। उरन छि
टि सुर नहि उपजानो उमद नडगा पोपोइ चुरसी आदि अतिली
मैला मंगल गावै लोइ ३। धौल नई ग्यान प्रकास नयो भिटौ
सुनिम रतन मन स्रू सजानो। काल पिसाइ गायो टे० पाप पुनि के
उद्दिम प्रावै वो निरउदिम सोइ रयो। जुरा मरन जम जीति जुगतिस
हरि मारग नितयो १। साचु रू उ जिनि करि दिषलाए अमत जि
करम दसो निरगुन गुन मथि नीयो जुगति स्रं। श्राड्यो सुरय
म होई २। पंच तत गुन तीन बिबरजत सोई पद उलट गहो जन
तुरसी गुर के बीर करता संगि सकल सुहाग लयो ३। ४। राम राम
है तन जनमारे। भ्रम प्रीति अनूराग सहत निति निरषे निज
प्रभु प्यारे टे०। काम क्रोध तजि लोन दिम हे मोह को कैरे घरे
रे। सत रज तम ही न्यो गुन आगे मोड़े अचल उपारे। सीत उ
ष्ण दुष सुष सम जानै हरष सोग सूं न्यारे। मान अमान सम
नि बिचारे। पार ब्रह्म को प्यारे १। रहे अरी करि रिझवे काहूं हरि
रस रत मतिवारे जन तुरसी ता के दरसे तम नासे परस तहा उज
जियारे २। दिनाराम चीन्हे जु तत तहि मन जित साधु कोइ राम
रहन लौ घट घट माही ब्यापि रह्या सब लोइ टे०। तत पाँचो राम
जात जीवनि का। भिनि भिन निवरनि जाषी रे सूक्षिम अस थूल
जल थल सब ही न में रमि रह्या एक साषी रे १। आरथ अनरथ मथि
बाहरि जीत रि रयो अद्भूत रहीया न रिहे सन त चित आनंद घन पै

हे प्रकृति के परि२ ३ पांचो इंद्री निको संजम करि हिरदै तन अं
नोर जन तुरसी समदृष्टी माखे निहचे पद परवां नो रे २ । ७ अैसे द
रस तुम्हारे दिवु विधि देवे । नो संत जनन कूं प्यारो जद पित्र तन पे
खि जु सी सुख तथा विनिदा निधारो है क्रमूं चाहि गपी वृपी वृ ७
कोर अरध ऊरद की प्यासा । जद पिधर निज हांत हो जन पूरन त
क्रनता की आसा । । मूंचे को रचित वेचे सामन हे लन तम सुखन
नही मोरे । एकाग्रह इस्क तांन लग्यां रहे सुरति ता गन हीं तोरे २
। स्वूं निरधन धन हु ध्यारथी अन । स्वूं प्यासे कूं पांनी प्रेमी प्रा
ति प्रभु को मघ जोवे । जो पेघे अलख बिना नाध । । ब्रिचे न्या गि
निहरा गमु ध होइ सुमिरे सांई मांही जन तुरसी सो अवृति परम पद
पेषि ता मे मिथ्या नाही । । ४ । । ८ । । २ ह१ । रा गा । । ए । । रा ग तो डी । । मा हे
जी निरमल नांव तुम्हा रा । सुमरि सुमरि जन उतरे पा रा टेक । नांवृ
लेत पर रा हो इ दृ शि अ बिना मी पीव मिलन हिं हन्रूशि । । नांवृ लेत स
ब मिटे बिकार । काया के चत मन हो इ सार २ जन म हित न मार म
हि सार । जन तुरसी के नांव अधार ३ । । स्विव निरंजन देव निरंजन दे
व निरंजन । पके न जन टे की छो रे देवु सब ही मन रंजन को अनस
म्रथ काल हि गंजन १ । जो मन मरन त्रास तन में घन तुम बिन
कौन करे भ्रम खंडन २ । तुम मेरे मात पिता सुख पन । तुम्हारे लाड
लडे तुरसी जन ३ । ३ । हरि हिरि हर तह मारे पाप हरि हरि करत मि
टे त्रिय ताप टेक । हरि हरि कहत रहे मन धीरा । हरि हरि करत
मिटै सब पीरा । हरि हरि कहत जु जरम बिलां ही । हरि हरि कह
त करम कटि जांही । । हरि हरि कहत मिले हरि प्रांनी छूटि ना इ
स ब आवा जांनी २ । जन तुरसी हरि हर जपि लीजे । । जप हि सुचु रि
सु पि आनंद की भैनू । । रे मेरा हो प्रांनी ह्या म सू रुचि ... मा नी का
मन का मस्त टे ढी कनक कामनी काम मे गाजावे । राम नाम हि
रदे नहीं आवे । पाषंड कपट रहे मन मांही । सा चा साहि ब सूं चित न
ही २ । बाद बाद कर ताँस च पावे । साध संग ति दिष्यां मुर छावे १ । त
जि अम्रत बिष भो ह बिकारी । जामी जमपुरि होसी नारी २ तुरसा
इन का संग न कीजे । पाम र सा इन चरि त्र सिपा जे २ । ४ आवृ है पी वृ
आवृ हो बिरहनि कूं रे दरस न कारा न सख्यां दरसा र पाच होटे की
सेज संवारि पंथ निहारे । तन फल तै नि बिरहा वृ हो पी ग दासी दरस
पियासा । मिहर वांन दिष लाव हो । । हरि घरि आवो बिलम न ला
वो प्रेम पिया सा पावृ हो । तुरसी दासा दरस पियासा । तु क मिल
ने रा चावृ हो २ । ४ प्रांन नाथ तन पाया । जिन की प्रीति लगी अबि

अनरीति मननि मनजग माया है। तो बिसर जन आन
तन छीन नाम लिये नाही गये। तिनि या कृत बानी कू
रिनह तसु गआयो। तिन मन मन आन न अपि मन हाथ नु कू पावे। रि
पनि नाया। जन तुलसी सुख सागर मांही मन सुख होइ समाया। ४
। थनि धनि ते प्रानी जिह रिनां मन जप हिरदे मुष बोले अ
तर नी है। परनि दाप रंच न ना वे साध संगति रुचि मांनी
सुष मे यह जगत पटा नां नाम सुषरस पी कानी। ५। कां मन मा
ही कलपनां कू मात सबे बिसर तो सुमति सबी को मांहि संग
जन नि सुरति अ रामकू तांनी। अनहद धुनि में जाइ समानें पर
मातिपद में त्री जन तुलसी तिनकी बलिहारी जिन असी मति पां
नी। ६। मन रे अलख आव तलख आव गलख आवे अपने घर
ही। बलखे बिन आरधक अधीन नोक नवुपंड सुव घोर गेर
नी तिहि न अपनी माहि है। यकू संसार नरम रूप प्रि
सा जना आदि अति मधि जा को देष्यो नु नांही। नामें कहि
तेजा बीबि मरे आपनी पीवु गये बिनाइ दुरगो जकू न आंही
। बुरलो कडइ रूड लोककू फिर आवे। ओर कू नुगति
ड अन कजो बनावे तो कू नरपि सनो बिन अपनो सुष आ
म रूप सुमिरि मन थोब ताहि सुप न कू न पावे। ७। पीतिन रपं
गहे हइ अपने रिद कवल मांक। इनदी मेन लप्टि दपि समकि
म आई। जन तुरसी अपनो सुमिरि राम पिंड को धरतो न काम
जिनि जिनि सुमस्या अपनी तिन आत्मगति पाई। ८। नि
कारनि जन रूप नेम सू बार बार प्रीति अरू प्रेम सूं टे कां अ
हिरदा कवलके मांही। असी गत आरकहू नांही। १। चि
इनते पद सिबीजे इतनत करू जानन हदीजे। २। कूरमनि
लमानरआई जन तुरसी निज मन वु न राई। ३। यह गति
नमा ब माहि नाहत जोजी यजे भके निहोर आवत है। करिग
हि अपू ती न्याे कस्मलो हो इके रहावे। अपन हिरदा कवु
लके मांही अपनो राम बिसारे नांही। २। तुरसी तनम रिय हलन
लावे अनिम होइ न जे आत्म देवे। ३। यह जु मगति बु
का सो निरा समारी जी है। जड अस्थूल मनि मानि बिसरावे
तन ध्याने मू मनलावे। कामरूपी केवल राम नाहि न जे
म बनाम। २। थावर जंगम में तु मकूँ देषे तु मबिन और आंनन
हि पेषे। ३। जन तुलसी भाचा जन सोइ अेसे राम तन मेंता होइ। ४
। सकल व्यापक रहित री रहत मन अरू रू हसी है। घर
न्यूहार मे दइनई धृत पकु पनि पर मल न्यू नाजी वो २

घटमांही है हरि आकाश ज्यों तुम्हें तनै लषियो सूरीजी ज्ञान चकर सत
नवृत्स की रि कल मैं को क क्यो हो नत ॥ अरथ तुरथ मषिचि त्र
कटमो सिसाजन तपलब्यापं ज्यों हरीजी इतनेन चालै अचल चिदथ क
[illegible]
[illegible]
[illegible]
पवलनाशीमो रघुनन्दन व्यापक अखिक नोर ।मनमासरपान
संगिसोलार निसवासुर लागो बारंबार रोमरोम विषचटै धाइ
ताते सुरछिसुरछिजाइ जाइ ॥ २ ॥ तुरसी दास जनकरै पुकार
खिर हरि निवारिक अबकी बार । दीनदुषी मरना इन्हेक । तुम
सुषसागर देवा छिदे व २ ॥ अबमै आयो सरनि तुम्हारी तुमहे
कृदयाल मुरारी देषी थक संसार नार विषमागर दुषसंतापघ
नेरा । नामकी नाम अधिक नैव्यापे जहां नमाने मनमेरा ॥ सोभि
अनेक जीवजनैथनमें कारू नहीं सचपायो । तकरस्वान पत
ग कीट होय बकु तैनें बनायो २ । तुम दीनानाथ दयाल दया
निधि । कृपासिंध मुरारी । तारनतिरन परमसुषदाता पूरवक
आस हमारी २ । मनसा बाचा औन आमत जि साहीबोट तुम्हार
जन तुरसी कृपहकृपाकरि आवागवन निवारी ॥ ७ ॥ थरिआ
वहो सईयां वेणा मोरा मैं बेरि बेर बलिजावूं तोरे । टे ॥ जैसे चाषि
पापी व पावकैरे प्रकार घिनषिन जक नाहिं लगार अैसैं विरह जाय
निकरे दरसकाजि । त्रि चेंवि नमरोजनम काहि ॥ तेरोपेषनि तुम
हारो होरपावां । विन दरस नैन तपैमो रजीवु । अवपी वअैसा क
कआइ जैसे कमो सूरातमनसाइ २ जनतुरसी के आसतोर
छिन देषे जीवु जाइ मोर । पीया सुषदीजै बेगआइ पावुने ने
नागीतो रपाइ ३ ॥ ७ ॥ मनजि रामनाम आधार होइ । बिना राम न
हि और को इ टेक । साधसंगति मिलि करि विचार इ पतां ही । व्या
पे दुष अपार । १ सुषसागर अनंत आपरदेव मनतांहि संसार
कके रुकसेव २ । जनतुरसी अैसें ताइ रंग कबकु न अंतरहोइ
संगर ३ ॥ ८ ॥ अवतं आवे आव मनत छि जे राजाराम । सब सु
षसागर सबसुषदाता सबविषि पूरनकाम टेक । थकसंसा
र न्यारा विषमागर नामहि जकु नहि कोइ ॥ आतमके आध्यां
नि बेसकरि निरमलहरि पद जोइ १ । जन्म जन्म का सबदु
षनासे जन्म सुगम भवु जाइ । जन्म जनम की विपतिनिवारै अै
साहै रघुराइ २ । अनामअगाध अनंत अघमोचन निराकार नि

बसमारहोसुखमेसमोइजाजसोसीतलतारसुगंधवास तसो
केवलफूलनिकरिहेबिगास जहांमधुपरूपसाधवसोइ ह
रिचरनकेवलरसरहेलोइ जोजोहमछिछिबरनीबसाई सो
सबघटमेंजनलेयेकोइ सुरसीओलेपैसुसुखसमाइ जुगाजु
गाजमइघररसेनआइ।।५।।पयकुसवदेषीसारथकोइनी
नासेसो गगएमुनी हैकोनुमेराहू तेरायजुमतकरिसुमि
लेसबलोईजबसारथकोकोरघेट तबकोऊकानहिकोई १
जबलागतेचरेवलातचकरोजबलगधीतिसगाशिवहवाके
वोहवाकेआवेपूछेजुमतसवाहैऊ परिछथ्याहोजाहोजा
पनेगकोसोस्या।कपिकरिकैजुभलेसबकोऊ अनकाजन
हिसगा२।यऊ बोसारेप्रिया सुगको गुलटिअपवाआया
जनसुरसीचितचाखिग चकोरहो ते।हरिचरनोंलाया।।४।।२१।।
२०४।।रागा।।१२।।गगकाफी।।कलिमेंकलेक हरमाईरेहो।के
वलहरिकोनाव सुषरूपीसतनिकेसीरामिलिनहोतहोस
बगोवदेखो फोटिकमतकोटिकचतुराईकोटिककरनीआन
मबपरहरिनेमरसुमरिरे रामनामनिरबान२।ताआराधतसु
नअसुनकी।सेकेनकरीएकोराजनिकोनबहोतहोनरवाह
सुमिरतहोरसुहोरनु सतजुगमतत्रेतानपहोपुरमजाकोप
रेनावब्रबकलिमेंइकरामनामसमिफाहिनआनउपाव४।
पतितपावनकुनिरोनबेषपचतुरआसरनसरनबगोवा।अध
मउधारनअनेतलोकपतिअसोहरिनांव५।सुषसरूप
सदातिपकेचांवनसुषसमइकीनाव जिबेसेततेबजतर
गए छिनननयोकिरमावद।।अरथधरमअरूकामभोछिको
हेअरूहानजपोनि।ताहिसुनतसुमतअरुगावतप्रगटहोवे
आनि७।।कहोकहोलोबरनोमहिमाबरनेबरनीनजायकोटि
पतितपावनमोजुगिजुग अरधनावगुनगाइ८।।विदगुगनसु
मृतसंतनिमिलि।।प्रियकाझोइतएहजनतुरसाकैहेसुमि
रिताहिनिसदिनजिनमतफलनकरिलेहपि।।१।।हरिकोअमृत
जसगावतेहो।काकेरह्योहेकलेकोजनमजुगजुगधेतेंगवरि
गए।।मिटेहेमरनतसकटकेहोतअधमअधर्मकेराजा।पतिन
तनिकेसिरताज।अरधनावबततेनधरिगएकीयोहेअपनो
काज।जिनमहीनकरमहोनफुनिजातिपांतिकुलहीन
नोएजावतेसीवसुआरहरिजुगाजुगाकितेबरान२।तीभता
सूगाएतहोंचालजसोहारदीनदयाल।आदिअंतआनदसुष

हिं तसे कबकु नत्रासे गो काल त्रा नाथ फिरि कै।

५०२

रम का टमन षोइ जैसी बिधि पारस के परसते लोहा कंचन

होइ ॥ कहा जु बपुरी को जहां उदे न यो मान सू ब

नावउ चरत दीक्है गये पाप पटल बिलीमान ॥ जन्म मरन नो

सारि है धरा मिले महापद मांहि जन तुरसी रूमि जना सा

रामि नि बकु स्यो बिशु रैना हि ६ २ कलि मे उपासनां नांव

की हो सत न निर्द्द है हि छा इ ना हि पर हरि ब हिपर जु बाहरि

ले न्त्र म गाए हो बिकाइ टे नांव हि जप नाम हि तपतीरथ नाम

हि छिब्ल दान नाम हि अति पुनीत करि गायो जुगि जुगि बर

पुरान नाम हि जोग जग पुनि नाहि नाम हि ग्यान अरु ध्यान जे

ति जन्है नाम हि रा ते पारन ए ते प्रान नाम हि देव दे सा न

महि नाम हि ना तिरु नाव नाम हि पूजा नाम हि पानी नाम सि

रोम लिग वृ स कल विधि जि नि नाम जान्यो परह रि आन उ

पा इ मन बच क्रम नाम हि सूरत ते निज दास कहाइ अध्यम

उधारन दीन बंध पतित न को पावन नाम निकुल नि को कुल

निबल नि को बल निरधन को धन राम ॥ नाव हि नवु समद

उ

नंघ न कुं स फरी नाव मोइ आरो हन करि करि के तेजीव

म रि पकु चलाइ जे नि के ति जैसे कै से सुख चित होइ सु मिरे

राम तेपा नी पल टि के बुसन भो डस्यो जीव को नाव सु मि

सुमरत्य सास त्रास बही मिति मथि का ढ्यो घृत मार जन तुर

सी तत राम नाम को कर थरि तत रो पारि ॥ ८ ॥ ३ ॥ १७ ॥ १ ॥ ३ ॥ २

१ ॥ ६ ॥ ३ ॥ चौपाई अब क्या मे राजा मंदर मन पाकं तेराजी टिके जी

हर मन ह्या ख़ारन ही पाइ चा हि ग वंचन बोवे लगार ॥ निस दिन

सी बृ पाव कर त विराइ यन बिन सन की लप ति न जाइ १ दया

कर उद्दार वृ कर घु बीर बरसि बुझावे मे रेतन की पीर ॥ जन

तुरसी कैं आस तुम्हारी दरसन दे कर दयाल मुरारी ॥ पांचे

अपरबल नारी जी ॥ यकु मेटि कु बिप ति हमारी जी टे के मेन

मजयो मेरो रा पांच पचीसो आपे मोरा जनवु सागर अति वा

र न पार पार न तार कु सिर जन हार ॥ तुरसी दास जन करे पु

कार सब उत्म है देकु दीदारा ॥ २ ॥ राम सुमिर मन मेरा रे

हरि सबु सुख जनते रारे टे ॥ तजि डर मिन जजि राम अधार

मन सुख साई सिर जन हार ॥ जनम जनम का मिटे जंजाल त्रै

सा सा हिब दीन दयाल ॥ जन तुरसी ता को करि सेवा सुख को

सागर पूरन देव ॥ रे नर का है कुं तनु उच्च फाये फिर हो इ नर

नराम रस चाषे है कू पी बिषया देषी ऐ अनूप अति काल है दुष को
रूप।। बिषय तजा निस्प्रिह भई नाही बन हिका म बिना को षरि
२ उहै हंस निर्मल दा आव यूं बिन न हो स्त्रै रेहु मनसाव। अपन हि उर
रदा के वलन के मांही। निसदिन सुमिरन आपने मांई जन तुरसी कु
है श्री करि लेही। सो क्यो न मिले वे राम सनेही।पा४। सीतल स
ना मिले सुषदाता। मो मैं दयो आप बिधाता। टेक। दया मया करि
कोर आए। प हित जन नेके पापन माए।। सूती सरषा दई जगाई
न मति अरु रूर अरु रैकी ये आह २ अमृत कथा यन लो बरषाई सुन
मन की सब ता पन साई। जन तुरसी धनि धनि वे संत मा नो मिले
आप भगवंत।४।प। बां वन रूप संत जन आए। जिन देषे मजने न
सि राई टेक। पापन ओ नर हरने मांनी। स्यूंर बिन देनि सा बनसानी
।।गिरह गेह कु लप पूजनो। भगति अरु रनेहे चरन ए जतजीव
नि की जह ताराहीं म हो चेतनि अरु रागिन ई जन तुरसी वे आनंदी
साध जिनि अपनी हरि अराति आगाध।४। दि रि बातु मही सू मन मांस्ये
हो श्री सिकल नर म जांन्यो हो टेके। चिकवै मंडला करूं कराजा नि
न कौ सुष करूं काजा वेपरे काल जम घा साध तन पायो नहि अ
बिनासी।। हर हर जुन्न अस्थांना ना हो पिंड मुक्ति नकतांना
प दमुक्ति न दरषे नाही। जो मै मो मन मानत नाही २ अरध उरध मधि
लो को निरंजन बिनांकुष मो को। सो मैं गुरु नजन बताया। करि
जन परम सुष पायो २। पिंड ए मुक्ति एका बाजी तदा बरतनस
राइ राजी पिंड राजी सुष नु मपासा। जो पैनु मरू मंडयो बिसवासा
ध जिते सुष पाजुग मांही तिते सब है है जो नहीं प्रो अघट सुषस
मांनो। तुरसी नसां रतन नया पांनो।५।७। दि बातु मद रसाए के काजा
नेएरे कसमि मजा हो टेके। गहे। गम दर घो रहा नी बकू पार कसे मीस
षी सुत बित बान ना सुष रासी सिव त्या धाम ऐ बन बासी।। ऊंचे अ
ति कनक अरु बिसो बिचि बिबिध मणीन के अजा सेहि रे घन मों निक
मोती। सिन गोबिन बाधी पोती २। सुष सेज सिंघासन पांन कपरि
तो लिए बितां ने करने बकू मोग बिलासी तिन छाडि दई सब अ
सा २। दर बजने बकू बिधि बाजा मांनो घोरि रहे घन गाजा सुन्यो न
यस तो कान तेजा मंडे मैं दोन ४। सम बिमल बसन सुभ बा
सा रस राग रंग बिलासा होते नो पति अधिकारी ते परत हि ना ए
निषा मिध। मब कू ल अभिमान निवारे माजिगो बिंद का रिज सारे
जाए मिले परम सुष मांहा तुरसी बकू सो नमांही ।६।७। दिवा तु म
दरसन के रातेहा नमस्त बारे मांतेहो टेक।

कछु रहीन तन सुखि सारा रमनां रूचि अम नपीवै पी
नु पिजी वै । ७ तनदि कीया बिश्रांम जहां को मत केवल
मांन सो जे प्रनह रमा दं सुनि सुनि छिसरे बकबाद २
नाश्रो नी सुख मनि म थि फेरि समां नां ॥ चुस्ता
सोरमा अघ डु जासा २ ॥ जहां जित कित जग मग जोती
रम नूरा मित दीसो ॥ ती जन जाइ समां ने तांही तुरसी अंतरक
नारी ॥ ४ ॥ ५ ॥ त्रैसे थोवै केतो राम रौके गये ॥
टेक तन छि छि छि ने थडु नां धु मन की कछु थाह न आवै मनन
क न फिर पर नारी सो की सुथ न ले हे समारी ॥ प्रेमम
ते ॥ नुट लु टि तो कहि जु दि पावै ॥ हिरदे और सुष आंनी
नन हे न रावां ना ॥ १ ॥ जुग माया के काजा ॥ को कान हि करेर
जा छि अने क ब नावै ॥ पेन कु ना हे न ही पावै ॥ २ ॥ वे अति श्रीक
छिना सी बस हरि आग म आ कासी ॥ नरा बादि सहत बजाई दे
सो मुराथ की बडाई ॥ ३ ॥ ये च बिष कै त्यागे ॥ गहि राम नाम मित जा
गे ॥ जन तुरसी सो ताहि पावै ॥ निर कपट हो गुन गावै ॥ ४ ॥ ६ ॥ देवा
आरति नगति तुम्हारी हो ॥ सो हम ताग तथ्या री हो ॥ टे ॥ ककम सिम
साधन नहि बकुबा सी ॥ आरित बिन को कछू कैन सारा जिव दीअ
गो कछै छिन ताहि न बहा न जोग लेह पित माई ॥ १ ॥ आरति नगति
जब उपजे आइ ॥ तब सत्या जीव जागे जाइ ॥ राम राम रंकार धुनि
हो इ ॥ आरति से समान हि कोइ ॥ २ ॥ जहां धर न नदी पवन आकास
तेज न सुरया न गुन आ ना सा ॥ चंद सूर कुसके न जाइ तहां आर
ति स्मृति समाइ ॥ ३ ॥ आरति सहत नगति जो करे प्रंथ को नी
मपनरी सो तुरसी सुख में रहे समाइ ॥ बकुरि न इत जुग जन्मे
आइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ देवा अरथा अरथी मांही हो ॥ पूरन नगति फल ना ही
ए कोनु बकुट नत जिब न हूं जांही ॥ बन में बसि तुत प हि कर
नो ध्व रगा सुष न सरे जो मित हो ॥ १ ॥ कर मइ ड कू रहे सु गाइ ॥
गया न रही जहां तहां च लि जाइ ॥ सो केसो काहू न रही हि ॥ अपने अ
पने सुख के काज ति म ए च ले ज्यूं मत गजराज ॥ २ ॥ रोक अरथ अ
रथ कु चाहे ॥ यकु प न आदि अनि निरबाहे ॥ ताते पर नगति
म हीर कां म नांन राबे पहु हरि ॥ ३ ॥ कर म इड को स जम कै
गया न रही नर रूप रहे ॥ सोइ निकां म ले इ हरि नाम तो पावै पूर
न बिश्रा मा ॥ अह निस नजे निरंजन देव ॥ त्यागि दई अंजन की
सेवा ॥ तुरसी सुष बिलसे नगवंत ॥ जासु ष कोन ही आदि न अंत
॥ ४ ॥ ८ ॥ देवा जग मांसा जन न ते रहो ॥ ते कछु मन मे न रहो ॥ टे ॥ प्रथम

कहु तुलसी नातन सुखि सारा रस नाम चित्त मन पीवै पी
तु गिजा दोहे ॥१॥ उलटि कीया विश्राम जहां को मत केवल
मांन सोउ है अनहद ध्वनि सुनि सुनि छिन रेख कवाद ॥२॥
ना ज्ञानी सुख मानि मधि फिरि समांना ॥ सुरत सूरत काया वासा
सोइ घाट अघट ऊजासा ॥ जहां जित कित जगमग जोती।
रूप कहां नित दीखो ती ॥ जन जाइ समाने तांही ॥ तुर
ना हो ॥४॥ प्र ऐसे घौं घै को राम रौ के गहो ॥ कैसे बात कहै गोइ
हे का नन छिपि छिपि ने मन नाहीं। मन की कह्यौ जाइ न आवे। मनन
कहत फिरै परनारी। याकी सुध न तेहसा री ॥ प्रेम मगन है ध्या
वै। तुरत तुरति को कहि तुहि पावै ॥ हिरदे और मुख आंनी नाहि जि
नन है जगा वो नां ॥२॥ जग माया के काजा। काकान हि करे लाजा
जग मिश्र ने कव नाही। पिनक नाहि नहीं पावे ॥३॥ वे अति अरी कष्ट
छिना सी बिस है हरि आग मआ का मी ॥ तहां बाढि सहत बजाई दे
खो मुगध की वडाई ॥४॥ ये च बिवेक स्तौ। गहि राम नाम निज जा
गो। जन तुलसी मो ताहि पावै। निह कपट हो गुन गावै ॥५॥ दोहा
आरति नगति तुम्हारि हो। सो हमला गन ध्या री हो ॥ ध्यन मिस
सावत नई बकुवारी। आरति बिन को कहू कैन सारा जब दीआ
गो करै बिन ताशि न बतान झोग नेह घिन माई ॥ आरति नगति
जब उपजे आइ। तब सता जीव जागि जाइ। राम रोम रंकार धुनि
होइ। आरति सें समान हि कोइ ॥ जहां धरन नहीं पवन आकास
तेजन तुया न गुन अग्नि मास। चंद सूर रूस के बजाई। तहां आर
ति सुरति समाई ॥ आरति सहत नगति जो करै। प्रभु को नी
र नपत नहीं सो हो ॥ तुलसी सुधि मैं रहे समाइ। बहुरि न इत उत गाजन
आइ ॥ दोहा अरथ्या अरथी माहि हो। पूरन नगति फल ना हि
ए का नु बहु कुटंब तजि बन तें जांहि। बन मैं बसि तुत पहि करी
हो ध्व रग सुध न रहे जो बिन होइ। करमई कुरहे सुगाइ ॥
ध्यान नहीं जहां तहां चलि जाइ ॥ सोकै सो कोई न रहो हिं अपने आ
पने सुख के काज ॥ मई चलेकू मत गज राज ॥ पक अरथ अ
र्थ्य कुचाहे ऊपन आइहि आनि मिरबाहो ॥ ता तें पर नगति
म हर कोम नांमि राधे पद हरि ॥ कर मई को संजम करै
ध्यान नहीं तन स्पर रहै। होइ जिकी मलते हरि नाम तौ पावे पूर
न बिश्रामा ॥ अहनिस सो निरंजन देवा। त्याग दई अंजन की
सेवा। तुलसी सुख बिलसे नगवत जासु कोन ही आदि न अंत
॥ यह दव भाग्या साजन नेरहो। ते कहु मन नेरहो ॥ कर पवन

२ रांम रांम उपजै आनंद सिसो सोग मिटै दुख दंद ४ जन तुरसी जप
ता निरंजन नांव तन मन सुफल होइ सब गांव ४ । ५ । जपि रे जीव
रा नांव सूं जा छूजै पैन वृ मागरा तरी टेक सोग जाइ सब छुटै वै
री को सो नांव जपि जीव नितनी वृ को । सक्ल नसत जन सुमर हि
जास होइ रदैा अजर अमर अविनास ।। सोतिन गावे अमृत
पावे नांव निरूपतिय ऊ सुष आवे १ छारा परी परमें होइ गोवृ
तुरसी सुमिरत निमिल नांवृ २ ।। ६ । सिहंसा जाप जु जपन साई
जन परम जोति परसन टेक ।। अनीत मांदिर में अनंत अस्थाये
अनल जगाइ जु गति सें जाये । पांग जमन सुरसती मिलावे सम सु
पहे सुष सागर ध्यावे १ जहां अनहद बाजा रजे बुलंद तेज जच
मकै मरांध चंद्र ।। सिर सिष ... नूर निरंतर बास तुरसी नि
जजन परसे ता सध ।। ७ । रांम नांम हिरदे धरि लीजे जग सूं प्रीति
कहो कोकासे रिटेक पनि पाया तन पायो बडभागि भगति पावे उनी
या संगि लागि । कनक कामनी व ऊक विकार मन सा बा चा
रांम संभार १ । जन तुरसी असी करि लीजे । तन मन अरपि रांम सूं
दिऊ । प्रेम प्रीति सूं राचे नाहि । असें तन मन रहि समाइ २ ।। ८ । ज
ग सूं प्रीति करे जिनि कोई हरि सम रुवो कक वा मंगि होई टेक
कनक कामनी विषफल दोइ । जिन इ षा विष व्यापे सोइ षायो
ते तन को होइ नास । छिन का में गति जे साई दास ।। १ । छहन सरे ह
रीक सलील जिसें पांनी मांहि मीन । पंच संताप न व्यापे को इ इनि
है चे सब सुष पावे सोइ २ । जन तुरसी असा जन कोइ रांम नांम
जपि निरभै होइ । तन मन तासूं रहै लगाइ आपा तजि हरि मांहि
समाइ ३ ।। ९ । असी चाल तनि करे । मन चित्या सब कारिज सरे
टेक । कनक कांमनी परहरि फिर दा । निरंदर न्यारा होइ रहे रां
मर में इक तार रे करम । क्रांम क्रोध अहंकार दहे १ । हरष सां
उ षसु ष सब तजि के । छिस्नां के संगि पतन वहै । ग्यांन ध्यांन
गहि गुर की बांनी । अनहद धुनि सूं लागि रहे २ । पांच पचीसों
बसि करि राषे । तन मन ने सो पिनांव उचरे । जन तुरसी नाहि
मिलि हि निरंजन । जनम मरन संताप टरे ३ ।। १० । असी विधि ह
रि गुन गाइ प्रांनी । छूंड़ि कपट भ्रम अब जांनी टेक । मन मनसा
जोरि इ अपूग हरि सूं हित जग भ्रम रऊ रूवो । पांचो इंद्री का
मिटि पसारा । सब ही त्यागि सुमिर हरि प्यारा १ । गुन और हत नि
सुन भिन दवा । ता देवा की करि ले सेवा २ । परम तत्व परमत
ज प्रकासा । परम जोति निजि तुरसी दासा ।। ११ । सेया निरंजन

पावके तिनकी नहीं गिनाही ॥२॥ संतोषी सुसील नमा ध्रु जन सुह
दी मा चाली ऐसे जनकौं देस महा उतर तहां बिचरि न सकै बिक
रा ॥३॥ छतर थय हनु ग लट आवै अपने ही नर मांही अथ डआ
ध्यांन तपा रहै नक्क किनद षिन जां ही ॥ सबद आदि पे
षयारी दषिन कही ऐसे हाउ हरि सिला गि बा हरि ज नसे
के चलने ही ॥४॥ हम जोगी जंगम सन्यासी हम हम सकल
दे हम अति मांन मालित करि सुन सुभि सो वाग रहि पावै ॥५॥ ज
र सोई थ्यांनी नके लछ न बीत राग का बानी ऐसे रहै सुपर
षे ओर सब कथा कहांनी ॥६॥६॥ ३ पद ॥ राग ॥ [illegible] ॥ राग गौ
ड ॥ यह मन म्रिष समझै नांहि रचि रसो बिषीया बन
[illegible] तौ माया के संगि जाइ हरि सन्या इ बिष सघाइ
बिनाइ हैगा ति जांनि सुचराइ डघ मेर समांनि [illegible] सम झि देषि
मेरा जाई तोरी हरि बिन जन मत्र कारथ जाई ॥१॥ जन तुरसी गुर
क सोम म फाइ निस बासुरा गो बिंद गुन गाई ॥ ॥ अब मन सम
झि राम गुन गाइ यह कुतन छिन सि जाइ छिन मांही पलपल सु
ध के है समकाइ टेक ॥ रसरो राम जपो मन मेरा त्या मे स्वास तजा ए
से मा रि निस दिन रहै परा कर मता गा रजी ड रमा तिर रिन वा
दीन रया लत्र कलत्र बिनासी सन मुष मांई सिरजन हार ॥
ता रनि रैत नपरम सु चदा ता ताके रत क बड नबिसारि ॥ मेरि
आ जन म बड रिन ही आवै अब के कारते सुकृत सार जन तु
रसी करी हरि सेवा ता ता बे ती राम सजरि ॥२॥ रे मन नजि
रा म स्थ्यां रा म न जे ल हाता सुष धार टे [illegible] सबद ध घट नहीं
जदे हां या की तनि हूं चलक रि सेव ॥ ॥ हरि हरि दे जिन चा रे रु
रि ज मि ड रम सि यी वृमि तहि हिन्द रि ॥२॥ जन तुरसी कहै हरु
र ध्यांना रा म सुमिरत जिस जा वो नि ॥३॥ ता मन के मल गय
रिध रि जा मे नहै बिष अकर दे [illegible] ता रे हरि नाइ न लागो नी
न सिरै बा हरि के नागो बिषयन से नी ला वे था ति छांडे राम न
जन रस रा ति ॥ ध्यांन ध्यांन की सुधरे हा जा मे ॥ रहै निसमार पे
फिरै भ्रमा नै मानै नहीं सत गुर की बाचा पर हरि कनकर्ते
मनिका चा ॥२॥ क्रोम दांम के सुष दिब चाहै बेसो जाइ बिष
के बाहै ते जे न ही सुष सागर राम तुरसी नरम रिक कु जाम
॥३॥४॥ राम मनां भजु यत नहै ये कहा न लागो जा हि जपे जम को डर सा
गि रै [illegible] नाम ज्यु पत नर हां इन जिया रे सोई नाम जपि मांड अर
रा ॥ ॥ हरी घटै नहीं वेहांनि हरि सुष अघर नदे हा हो छांनि ॥

२ रोमरोम उपजे आनंद। सो सोभा गामि टेक पूरन देख जन तुरसी जय
तन रजन नांव सतनाम सुफल होइ सब ठांव ४।५। जपि रैजी य
रा नांव हरी। जाहि जपे न कू माया रात री टेक। सो गज ग्रास ब सी के
टी को। सो नाव जपि जीव जिन जीव को। मैं कुलसंत जन सुमर हि
जास होइ रसे सो अजर अमर अविनास। सो तिन गावे अमृत
पावे जां विनि रूपतिय कु सुष आवे २। धरा परी यद में सोइ गांव
तुरसी सुमिरत ति मिलनां वू ३।६। सिहं हंसा जाप जु जपन साई
जन परमजोति परसन टेक। अनी तमंदिर में अनंत अस्थापे
अनंत जगाइ जुगति से जापे। धांगजम न सुरसती मिलावे मन मु
परसे सुष सागर ध्यावे १। जहां अनहद बजे जारि जे ब्रुसंड ने ज च
मं के मंहा प्रचंड २। निर सिंध। नूर निरंतर निवास। तुरसी नि
जन न परसे तास ३।७। राम नाम हिरदे धरि लीजे। जग सू प्रीति
कुहो का कांजे। टेक। फ निघा नन पाये वडभागि प्रति पांवे इनी
यां सं मिलागि। कनक कामनी व अके बिकार पन ना माना चा
रो मसे जार १। जन तुरसी असी करि लेक्रों तन मन अरपि राम स
दिक्रौ। प्रेम प्रीति सूं रापो लाइ। असे जन मनि रहे समाइ २।८। ज
ग सूं प्रीति करै जिन कोई। दुःसह वोकू कबा मांगि होई टेक
कनक कामनी विष फल होइ। जिन द ष्यो विष छाये सोइ मारो
ते तन को सोइ भाम। इन का संगत जे साई दास १। छ्र ह नि संर है
रोके स्त्रांन जिसे पानी मांही मीम। दव में ताप नहीं आपे कोइ नि
हचे सव सुष पावे सोइ २। जन तुरसी असा जन कोइ। राम नाम
जपि निर मैं होइ। छब मन ता ली रहे लगाइ स्वापा न जे इस मांहि
समाइ ३।।९। असी घा तन की रो मन विस्वास व का रिजसरे
टेक। कनक कामनी पर हे रिफंदा। निरदंद न्यारा होइ रहे रा
मर में इकतार रकरस। कामक्रोध अहंकार दहे १। इसुष सो
उ षमु षसम तजिके। हिरदा के मांहि पतन रहे। ग्यांन ध्यांन
गहि गुर की बानी। अनहद धुनि सूं लागि रहे २। पांच पचीसो
बसि करि रापे। तन मन से पि नांव उचरे। जन तुरसी नाहि
मिलत हि निरंजन। जनम मरन संसा घट रे ३।।१०। असी विधि ह
रि गुन गाइ प्रानी। छूटे भ्रम आवा जानी टेक। मन पवना
अजा पि इ अपूगा हरि से हित जाग सूरक रूपी। पांचो इंद्री का
मिटि पसारा। सब ही त्यागि सुमिर हरि प्यारा १। गुन रहत नि
र्गुन निज देवा। ता देवा की करि ले सेवा २। परम तत्त्व परम ते
ज प्रकासा। परम जोति जन तुरसी दासा ३।।११। सिया निरंजन

ई

ही

निराल

अलख मांहि जाके रूप कछु नांहि है ॥ मन तुलसी घट मा
ही लिष अविनासी पावे जे कोपि ध्यानि जाके गुन इहीं सानांहि
लिखा पिरथा सब यामांहि जन तुरसी तास लिखि लावउ साता फेरे
हरा वै जाहा २ ॥ रथ हरि हिरदै कत चाहो आंन न लेहा
हो ध्यांन टेक । जगपर का धन गावे नारी । परिपटि लोक सुभ
लोक्ष्य पन ठ ध्या करम के फंद माहि और सवै गि रड़ावे ॥
कपाह करी है बकु तेरा स्वारथ मं सचि मांनी । कुग आप कू
तेगत नाग मा सा च दोष दिवा कांनी ॥ २ ॥ घट माहि आप स घट के जो वे
सो चोके रष्टहारा जन तुरसी राचर है रामस्ं । सो सत्य गुरु हमा
रा ॥ सो रक हीनसं आरा क्षेर ॥ कहा मन बस करक आपनो
कवकु बकुत निगा क्षैरे टेका । मन तो एक हो लागो गोरक बु
सो रक मा ध्या छ ने नो तु आरोहन करतो । के हो पावि किन प
या । [illegible] आधि व्यता दि कजे ते । तपतीरथ जप जांनी एक
का मनिकान न हति विन सब मृगा तृसना पानी ॥ जंत्र मंत्र बै
द हिं बनै जगा सटीय कुमाया । या जुबहा व नि मांहि परिपरि
बक नजन न भगवाया ॥ हरि मुष बाजी या त्रिगुन आति
न है सोइ जन तुरसी कहे चेतन । हरि जो रा हरि विधि मुक्ति अ
हो ॥ ग्रोक तत को ध्यान सोई साधिक सुष्ठि पा
वा ही सोई सुषी पेषो ध्यान टेका । जे कोटि ध्यावे नही क
हू सहि रहा ता जा को ध्यांन । जो वै जाकुक रहै न लेन न
रूप हन आने आंन ॥ ज्यूं चात्रिग घन चकोर चंद ह्वे हो
सा ऐसे न मांन । जन तुरसी ऐसा है को ज अवधि बपे षे
हाल र हां न ४ ॥ कुछ सुष मोह मांनि मेरे मिथ्या व पक्ष रे
बकु तेरे टेका । और कौ धरम और मे आयो । करि अभ्यास
अपनो करि जो न्यो । तुमा इसे त कट कपा मां नां प
त आ नंगग नयो मनो आ नां ॥ १ ॥ ऐसे बकु देही अरु देह
हरहे मिति तादात्मो हुं । जन तुरसी न पजे बिन ग्यान मिट
त न ही उपराग व आंन ॥ २ ॥ तै और और यकु देहता सं
हि सौं करत सनेह टेका । छाडि मम तदे ह का सगाई यकु त
पन कुछ नांही रे भाई ॥ तेह सा अवगति को अंसा सो छिते
ह किन आपनो वंसा ॥ १ ॥ मन चित थिर करि हरि गुन गाइ
तेरो आवागवन साइ ॥ जन तुरसी कहे सम किसु ध्यान धी
रता रहो कछु निनि करि जांन ॥ ३ ॥ तत जाने को समहनाव
हि कनक की चसो तागो । कामनि मांने मिलाप ध्यान टे

जिव नीर लौं अफल नक हिरदो पायो अति सीतल सुरस्यो न
प्यावरु जे गमम सव जीव नि मो होइ रसा एक समान १ बक त
ध्यान को वैसी मत है रूप रखप रत छिप र धान सुरसी जिन मि
रगु वरस अचयो तिगहे के से जो इगुन आन १ १० तन की गु
हा आंहि थिर अवे राम न की गुहा काया वे अदिर टेक । साधर अ
बर गुहा नुमांहि साध विचरे मुक्ति सदेही १ क्ष हा गिरत रवृक्ष
ल भिवा सी जहां तहां विचरे करें विलास १ थ कारू सेती कोरल
होइ सो कारू सेवाध मोह रु १ सभि के चन समिका च विचारे
असे विचरे मन मासा मारे ४ । तन गुहा में तन करि थे ते मन को
गुहा मांहि मन मेल्हे ११ मन गुहा महि मन द्विढ रा थे अचल र
है अमृत रस चाषै ६ तन सिंधरे तन लागे वारा मन जेन आठ
जाहि न वपारा ७ । असे जे नेमें नासि रहै सरा मह पद होइ आई
पा जन तुरसी यक परम विचारा सम केरा को गाक्ष साराट्
॥२ असी सुरति सुमिर हरि नाव जो त्वचा है सुखधाम टेक
जैसी सुरति चंद हीं सुच को रचा चिग चितवे घन की वोर । जे
सी सुरति प्यासे की पानी अन ही अन न जैसे भूषत प्रानी २ जे
सी सुरति समंदन की आंहि सुरति बसे सुत अपने मांहि २ जे
सें सुरति कूरम अंड धरे वित्र राषन की जो गा करे ४ जैसी सु
रति विषई परनारि लोभी पर धन दूरन संकारि ५ जैसी सुरति
कीट भृंग की नाव अरु जल विछुरत जैसा मीन ६ जैसी सुरति
नटनी को होइ वांस वरत चित राष्यो सोइ ७ ॥२०॥२२॥ राम
॥५॥ राग विलावल । रिमनये मसुमिरौ राम सुमरि [illegible] आइ रघु
पति के चरन आडि अनंत कहूं न जाइ टेक यक संसार विष
की कार दाफ न षेह षारा या में जक नाहि कोइ तू सब गम छि
अवकी बार १ देषि रा परे पतंग जरत तैसी वके सारे चक सु
षकार नेष्टष से इसुमेर जे ता २ बार बार कहूं विचार मांनि
वद में राजन तुरसी सुषसागर राम से जो रोसे वे गरा ३ ।
साईं सूं तिवला हरे मन न मेरे वार जौ तूं पावे परम सुष जो जे
नवपार टेक कांक सो इत उत नरमत फिरे अधीर अधीर आवे
नूअवधि दिन जिय रही बिन से तुमरी रा १ बार बार तोसूं क
हूं रे काहे करे वधीरा निस दिन मौ वसनारि को पकरि रहि
किन तीर २ पांचो तजि सा जरा मन्ही मन सा करि थिर जन
तुरसी उपसव कटे सुषमें होइ सरीर ३ ॥ मति न लेसिर ज
न की सेव । मन मान न पावे काय कुल से सुमिर सुमरि प्रांनी

[illegible] मकी [illegible] छूटै मन वंछित फल पावैगा वो

[illegible] सब गमा ओर है सब वा [illegible] सेवा
[illegible] सुरय कला [illegible] पार ब्रह्म सन सुख
[illegible] आयो काल [illegible] सेन हीके
[illegible] नाहि [illegible] है च करि तेरी
[illegible] पायो [illegible] साईक
[illegible] तुरसी [illegible] पाँनी फिरि [illegible] सन [illegible]
[illegible] करम [illegible] काटै सब
[illegible] तब [illegible] देव गुसाईं संत [illegible]
[illegible] सब सुख सागर सब सुख दाता सकल [illegible]
[illegible] जनम मरन का [illegible] जनम मरन
[illegible] जनम जन्म की बिपति निवारै [illegible]
[illegible] अगाध सकल विधि पूरन केव
[illegible] जन तुरसी ताकी करि सेवा माया मो
[illegible] जो जी यह [illegible] गावैगा [illegible] काम क्रो
[illegible] करम न मावैगा [illegible]
[illegible] आवैगा [illegible]
[illegible] जम की त्रास मिटावैगा [illegible] जो नि
[illegible] पावैगा [illegible] पाच पाचा [illegible]
[illegible] चित वित लावैगा जन तुरसी सुख
[illegible] सुख होइ समावैगा [illegible] जन [illegible] सुमिर
[illegible] सकल पद पूरन तामे सुरति [illegible]
[illegible] कीया काज [illegible] गहि होइ है
[illegible] को [illegible]
[illegible] संसार है न कोइ हो [illegible]
[illegible] आनंद [illegible] जो मन [illegible]
[illegible] करम [illegible] आपे को [illegible] जन तुरसी सु [illegible]
[illegible] माईका [illegible]
[illegible] पाया तन [illegible] सीया [illegible]
[illegible] पतीरस [illegible]
[illegible] पारस [illegible] मन [illegible] फिरि आईय
[illegible] सोना [illegible] पाई [illegible]
[illegible] जन तुरसी सु
पाईया सुमिरन निरबाना ॥ [illegible] राग [illegible] राम [illegible]
[illegible] गुरु [illegible] दाता को [illegible]

वतीन लोक मांही है केम वसाभरश्रुति ग्रंथा ह माहि वारप
अगतीनांव चढाइजन कूं पेयपार उतारे ६ जनमजनमके
जंजाल छिनमें करे रिंपुराम रनरोगकोटि देयसजीवनिम
री २ परमगणे नयरम ध्यान परम बुधि देवे परमप्रीतलपरसलाइ
पूं श्रपनांक रिलैवर सुरनर मुनि हुलनदेव वेदपारख पावे
तुरसीवहां प्रगट गुरू पलमें पद्यांवैश्च ॥ ६॥ वनजसगाइ प्रांनी
श्रभिमांनि छाडि जागिरे सवेरा मनवचक्रम उलटि श्रतरि रांम
सुमिरिनेरा ॥ रामसुमरि सुधानिधांन सकल लोक सांई जनमम
रनपीरजाइ प्रांनमिले परमांहिं ॥ जोगमूलजुगतिमूल नगाति
मूलसाई ग्यांन ध्यांन सकलमूल सुमा श्यालनित होई गाइगाइ
केतपतित पांवननरे नांई सोई जिसगाइ विमल तुरसीमन लो
ईय ॥ १ ॥ श्रैसो ग्यांन विचारे रांमो तुम श्रापा तारे रे टे ॥ मांन
श्रमतसंसारमें श्रीमांन जुघोरेरे श्रोमानें श्रमृतगिने सोईमा
ध्रूमा रोरे ॥ मांन श्रमांनकी श्रानि माफ रोफ तमबलोई री मा
फरैमें संसजरैसो श्रधिकार न कोई रे ॥ समिलोपसमिकचनी
सुडयमुपसभि जांनोरे सीतउष्णकी विधामानि मनमेंमति श्र
रेरे क्रोध निदेउपपाइकें सुपपाइ जुकोकरे हरिषहरषि
श्रस्तुतिकरे तुति मानो रोक रे लपलेरासी जीवजंत जिनि
लिजितेजांनोरे निरवैर होइ सकलमां फ़ऐक ब्रह्म विद्या
रेश्रा सकल मांस न्नको सार न्नला फलो सी श्रांहीरे जनतुरसी
धसरूप में मिलि रहेके नांहीरे ४ श्रैसो गुरदेव जाकी मः
मांगा छीण गरहतसोधरहत सीतलसुषदाई टे ॥ वेद नाये
हतिनांथे नांथे विबधि पुरांनां जाकी गति करीसु नावनांहिने
श्रांनां ॥ ग्याजगत्र की जिह्वाजांनो पुरगाई जाके उरमांफ
फजकोकांमकोनहीं है कोधरहत लोभरहत मोहक्र सम्या
जाके कनकको चकीमाल उनकौ प्रहारा ॥ जेमोहीसत्र
जाकेमित्र कु समांनां श्रोरकी श्रोर मनापेरहत हरिनामां रे
।समहष्टी सीलवान दयासिंधसोई श्रंध्यात्रनहिनउपगार
हीकी श्रोरनांहिनको ई ६ ॥ यावालोककी विषे विषलोभिस
राही छिरदितजनलोंत्यागि श्रैंगितटाई ॥ सबदब्रह्म श्रो
गाहिं पारब्रह्ममांही ॥ संपूरनमनरसांसमाइ श्रनंतक
नांहीं ३ ॥ त्रिभुवनकफांकोनेकरि निरगुनलपिलीनांहम
रनारलोभिनि जनतुरसी जिनकीनां ॥ ७ ॥ २४ ॥ राग ॥ ६ ॥

[illegible] कल्यान ॥ काहे रे मन फिरहि गंवारा ॥ या माया में जक न लागा
[illegible] जाहि [illegible] चुनो री म चुहे मा चेमा हि बमाहि ॥
[illegible] सुख सार नया ॥ ता हि सु मरि रे बार बारा ॥ जन तु
[illegible] म तें बानी ॥ काम नात जिन जि मार गयो नी ॥ १ ॥ रम
[illegible] स हि ना म ॥ राम छाडि रचि ऐन ही बाम रे क रूप रा
[illegible] अपने सांई स मन मुधि र [illegible] ॥ जिनि जिनि जपे
[illegible] चुप्पो ॥ [illegible] के अने पुरी पड़ें चारि ॥ नां मक बी राजन रे
[illegible] जो मि टी जम त्रासा ॥ २ ॥ म बड पद हरन पर म अनेरा ॥
[illegible] म का देरा ॥ ३ ॥ जन तुलसी अब छिन मन को जे रा
[illegible] पीजे ॥ ४ ॥ ३ ॥ बिक बाद त्याग्यो हो बैरागी ॥ जो तुम
[illegible] के रागी ॥ सो [illegible] मा हिस्र चलन रहे रहो वा नाम नि सूलागी
[illegible] बहि परो हुन सुक बारनमें अवधि जात है नागी
[illegible] सार वर को पानी ॥ घट न घट लगायो फागी ॥ २ ॥ ऐ का अग हर
[illegible] लागी ॥ राम नाम चित पागी ॥ जन तुलसी अपने रिदा कवु
[illegible] सबड भागी ॥ ३ ॥ ४ ॥ नाहि तुम ची न्हो रे थिर रहो इमन मि
[illegible] मोहि ॥ यार रह न लो रे हर बि चि ॥ त्या पिर स्या सब ॥ २
॥ [illegible] न मा हि न पा हो सं त के हे मन को इ यो री व
[illegible] र म क नाम जो हर ॥ १ ॥ सु रति सुख रस समत सबही को
[illegible] मन आ दि [illegible] ॥ २ ॥ राघो घट मे गो इ [illegible] य
[illegible] चुक्यो ओर करे क हा लो सोइ ॥ चित सुख रावे
[illegible] राग रोष मन [illegible] ॥ ३ ॥ सूर व पर ह रि पछि म आवे
[illegible] होइ ॥ जन तुलसी कहे सुख सिंधु सुन में रहे सबिन
मोइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ मन मेरो दीन नयो गु
[illegible] घरी घरी पल ही पल छिन छिन [illegible] सुमिरन राम चुपा वत
[illegible] तजि [illegible] बादबिबाद [illegible] विषे बिस रा व त
॥ [illegible] सम हत मिति मुरा मिक्त नाट [illegible] धा वे
[illegible] सुनन की रति हरि गाथा नैन निज रूप निरता व त रे
[illegible] के रो नि स दिन राम रिझा वत ॥ २ ॥ हो इ अपंग
संग तजि जगु को जुगति [illegible] गति [illegible] चुरसी
[illegible] आगे छिन छिन मे सिर ना व त ॥ ३ ॥ मन मेरो
[illegible] अब न चले [illegible] सब्द सूर रहो राम ल्यो
इ टे [illegible] या संसार तनो सुख छाड्यो राग दोष दो कं धरे उ वा ह ॥
अब तु म सरने मे इस्यो मगन होइ यक छिन ए क हि नाह ॥
रघुरात न पह लो परब ल पायो रस बिस राइ जन तुलसी सुख

मोहीसहजैरहोसमाहीय।२।अबचलिरेजोहितहांअहांडषसु
कनाहि।कोहरूंदामहोवआपंनाव्या जगुञ्चातामाहि टेक
जुगंजमकोनेनांहीबिछुरनमितनजुनाहिघटेनबधेव
सूकासूणिकरूपसोआहि।नहांधरनन नपवनपानीरवि
ससिकनजगांही।सुरमीनावापरमजोतिमिलिजुगिजुगिसुष
नसांही॥१५३॥२७९॥राग॥५॥राग६ मन॥यकतनलेक
चोरासीत्रमिपायो।किमूरनपुनिरहइऐसेकमानुषजनम
दुलभ्योहसोनतहूरिनजनबिनातुमकाइमित
नकरिकहोकहांपाईयो।ऐसोहीरातनसोइगाहिसुरसवही
छोवडभागिप्रापतिहोइ।सोइनतुछबिषयानिमेंसहसान
न ही।यकनहिडपमईआपि।ना तेजेतिकेनिजेसेकेसे
निकसोजुयासूगगि२।केवीनरागवैरागधरोकिकरागि
निहकाम।उनेपनदिढपकरिअपनोजोकेवलराम जनतु
कहैऐसीकरो।सोसिधिहोहिसबकाम॥३॥१॥२४१॥रा
गकानेरा॥मैंगरीबगोविंदतुमहरा।औरनसूनहा
मारा।टेक।एजकदतसबमेरामेरा।मैंतेरानहीकाहूकेरा।जे
वडओगनगारा।तोतुमबिननहिओरमुरारी१ जहांतहां
आसा।तुमबिनकौनकरैजमत्रासा।२।जनतुर
तुचनैनिचेरा।तुमसाहिबजीवनिजीयकेरा।३।गरीब
गादकहैरामउदरकेनांदिनजुनेरा।उदरसूकाकाम टेक
॥गरीबीगोविंदपाईरी।साधकैहेसबसाधिउदरनारीजा
कारनापनुबिनपरहोनाथि२।गरीबीसिधनोजुगार
त्यागिदहूअभिमानलिधसाधक आगिनतकहूकेतेपारि
तेल्पानव।जनतुरसीगरीबीतरधारै।दिढआपनेगर
मोकधकानहिकोआसनकहैसबकोइ॥३॥निसदिनना
लेहरिकेरो।लोपाचेसुघनेरो टेक।कामक्रोधकाकरकप्रहारा
महिरदेरहियोमपिग्यारा१ जपतपनेमधरतजो धरनी नाव
नासबपोटीकरनीय।तीरथवरतदानपुनिसेवा।७ सबपर
हरिदेवा।२।हरिमनसाचअवरमतकाचा।जनतुरसीन
माबाचा॥३॥रामसूजारितिजि।स्वांसैस्वाससरिदमाफरेमि सुमरो
।यकरहनीजुरहोजे टेक। यहजोगयकजपयककर्ति
ोफतप।यहहूतितितिनिरबहीजे१ यहमकलतीरथसनां

रहिये रूपे मगी तिको बसन पद रिके निरखि सुरति
गहि आरे षि माप वरित्तिल कतन्तु राजे सीजन आरूपवेभ
न हारे घोडि मपेहन गमंदि रक्रे हादस दलन तरसेजब
रालि रह निपीत्पर मिप सिाचे पुरतप
नहि शनिर सन ज्ञोसि मई चकुचीरा अनहद धुनि तहांट
सु नाही जन तुरसी आनंद सम नितही सुषसिंधसमाहि २
नैनों छकित नरहे रामबिन आनरूप देषनैतेर हीहोटे
मूरत नैनछिम आरोन कमुद ऐहा मेर डंड डोरी लागी द
वे गरहे ॥ सहेज कंवल मधि निवास नीएह मूरत प्रका
सनासमे नुरहे ॥ २ ॥ सुनिसरो वरमधि निरमल न्होहो
रसीमन सम न मिति के अक्रुर दहहे हमारे परमस
पाये। हर बले पर सादिरा मेवा ॥ नाग बैठ घरि आरोटे का श
नरोम तन सुष सचि बाढी छप संताप न माये जन तुरसी मेरे
न मजन मको आन दस हाता बपूरा रहे ॥ ३ ॥ आरखेरे माषे
से माषे अपने नरमा जत लिय हमो गमाषे टेक अंग तबे
व नखा सम की मा ना माही माप फिरि फिरि पी तिस चितना
रहे नेवासेर विसरी न रामनाम उपदर सुष कोउ धर्म जि
जिनि सुसु स्या नते तिनउ जुयह सुषला षो जन तुर
सुमरन मार मन हा मो छि कोजु हारा न षस सुष जिनगये षम
यानिष लिवसा षे मागे जनम मरनजि ता पाई अपनी
पि तांत नधरि जिन असी कीनी तिलटिकान षाये ॥ ४ ॥
रे मार्ही नैनर लोरे हमारे माही घरी घरी पलपल जुअवधि छिन ॥
छिन नहि नीर नजाही टेक रोक अगदो इचाधि गनो चंदच
कोनाही अपने हिरदा कंवल के मोही हरिह रिसुविसराही
घट गुन मासतसुन को अरथ हतो ही आसी जन तुरसी प्रव
नो राम रहो क रे फिरि यह औसर नाही ॥ ५ ॥ पाव जीपी
वरही ... टेह मारे जी वजी ज्यूं चात्रिग जुरटे निम
की ... दरस ऊव रस जी वजी टेयह आरति असित नरमेरे
... सरहत रहो वजी सुध एक तुम्हारे दरसन की ओरन
हैं कोवजी ॥ ६ ॥ ती नतो क वा रू तुक रूप शितन मनसद के
नी हो ॥ जन तुरसी कूं मिलि कृपाकरि हे सुषसागर
॥ २ ॥ ... जन निराकार निराधार आधार निरषिषि
... टन मम नव नार टेक ... पाषि निर गुन नि
पारब्रह्म व्यापि रहे हि सों दरस जल थलमें सार जन तुरसी

नरूमवचनाञ्जौरकोऊनंमिरनी आदिअतिमछिगैरे तुमहीहोत्र
पारा।।(१)।।२७२।।राग।।२२।।राग बिहागरा।।जिनआगतिम
नेनैनसांजिन केरहे मनोरथमांही टेक।। रूवबहंयकी छाया
औसेही तृष्णाजनममममाया।।मुकृतकहूनकरनपाया।। भूसंआ
गसूलीविसिखाए१।।जिसकेनवगुनीमाया कियेसकेनमोहि
नपाया।।नृ।।औसेहीश्रौ शंपांनी बंडिमृगए भ्रमबोछेपानी।।जनतु
रसीविश्रतपछिताए जबजमदूत निबांधिचलाए।।३।।बिलेन
कोऊमतिकरेनाहिं अपनेनिजनरामरघुराईटे कोखासमिरन
नमांही बकसौअैसेअैमरनाही।। होगासोमनपसरीराक
होकहेहैनीरा१।।दोतैंअबगहरनहिकीजे नजिगोबिंदनाहे
जीजेन जनतुरसीयकूमतसारा।।जिनजानोतिनपाया।।।
२।।अैसेआवेकाहेनांही ज्यूंकूरमनलनयआग्रनआगलेनपटमे
मांही टेक।।विषयाबवनलोत्याग्रिदो विपकनकाकी नाई
को टिमरथकोअरथ हैतोही समझिदेयमननमांही।।पदेहेन
तिनावूंनंदवकोऔरबाजनौनमअहि जनतुरसीअपनोपि
दाकंवलमें हरिहारेचरिमदांही१।। थबअवनाअन्नसहे
रजिआए तिनहीसचपाए सनराकुषमरे टे।। सबदआदि
छिपयापेधरहे रिशकेडानुलटीनेरे।। चंदचकोरलो भरिदाकंव
लमें आत्मरूपचितेरे१।।निसबासुरनहाईलागोरहे कीट
भृंगलौहैरे सकलनमामनकोसारजोसोई चितधरिलेरे।।
२।।धनिवेसंतजिनायूंकीना जिनमनगतिबूझेरे।। जनतुरसील
धिगएवाजीकूं रहेजुथेसोहे।। रेनाग्र ब्रगुकोनेहरोनिवाप्रिम
नारे।।मांनिसुदृढयहसीपहमारी।। गहेरहोहरिगुरसनारेटे क
छिपकनकालो कनत्याभिदो कामनिजोबाअबद्दितअनारे।।
३।। नित्याशिगोबिंदनामजाथिधरीधरीपत्तपतक्षिनारे।।२।।प्रतलो
मीहोइआवतआपमें हिरदेआत्मसुपभिधघनारे।।३।।हित्याग
कनबाहरिडोलो खोजनतुझकनवोसबैकनारे४।।हेसार
मबदीसंतनिकी सुरतिसुमुतिकोअघटधनारे जनतुर
सीकीटन्नगलोहोर सोअपनेआनंदघनब्रह्मसमारे५।।४।।
चलौरेपचोधियारे जोहिरेननब्रह्मदेसजहांउपसुपकीक
सककोऊ नांही तहांहै आवेजुआप अबधिमेवनतापास
तचितआनंदघन तहां निरनैहोरह्याछिटको।। तहांजम
कीत्रासी सहरतिबाराजुगमीकोटिमसआपकासीकोटिपि
ससिरारीजनतुरसीवे ब्रह्मनिवासजुगमज्युमामतिकरीये।।

बिना सा आदि आनि मधि नहीं बिछोप नहीं राई ॥ ६ ॥ मे
क रिकृ हाय देह । घरी घरी पल नहीं पल छिन में आनि हो गो बिहरे
कु बिनन हो रच पल ना । छांडि दे त्यागि जगत को नेह सु नि
नेही हरि सों जन रहो । सु प नु कूं अपि कि नदेह ॥ २ ॥ अन लमु
न जो न लहि अपू वा चाति ताहि जनगे हा जहा सु गनहीं ज
समसन नहीं । नहीं कोऊ दुष कोलि हरे ॥ सब सतन को सार
मु मन यह सास अंकु कोउ है । जन तुरसा नग वृ त ना म चजि
तन धरि यह तन नेह ॥ ३ ॥ बोरे यह तन बीतो जाइ बकु
क नपाइ रि बिन भजन इछिन माहि पांछे पछि ताइ रहे कोप
छिन ॥ रेन बतन बदिन हो हा । साधी सों जग माहि रे मनमे
रे निज नगर गो बिन मन हि ताहि रे ॥ ४ ॥ बिछे जल लो जानि दे
ही सुमि मन नहीं पाए । मनमे रे यह संसार विष तसो ताहि न
द पि सुलाइ रे ॥ ५ ॥ कोमपर हरि क्रो धकूं तजि तो निज कछि न
हो । मनमे रे सो लान्छ त्याग ॥ गोपाल हि गाइ रे ॥ गाइ गाइ गो
पाल को तु नानग है मन हाइ ये । मनमे रे बिसा सहरि तजन
थ बहि आहिरे ॥ ६ ॥ बेरि बेर जन तुरसी यूं नाथ बिमत बुधि नपाई
रो । मन मेरे हरि सु मरु मंड कं सु मिरि ॥ बकु रिन हिआ हिरे ॥ ४ ॥
७ । साधो ओ मन की बिथा न जाइ । तन की बिथा तू ज अति कू
न सो जन ते न सिरा जरे के । मन की बिथा मां हि स क्यो करे
से रहे मध्य कहातो त्र स भजे जरे बिन पाव का बड बड मुनि राइ
॥ को क नर्रहि बपाइ कै ॥ कोऊ कबि दहे जु पाइ या कू ह्वे क
रे क सूप रि बकु न नपाई आइ ॥ १ ॥ जावत जल थल मम जीव
सो आत्म तत न नप जा हो सावत जप करी तप क्रो तीरथ क
मित्त नन रक झाइ ॥ २ ॥ हरन बहा गुर की कृपा तो समता
न ह्याइ जन तुरसी तब यह बिथा जु ना मे और न आन
उपाय ॥ ३ ॥ राग गौडी राग माल ॥ कोऊ बूझे रे बनना
री कहि कब आवै राम । बिरह निकूरे दरस कू जीव
हु मेरा मह टे ॥ न्यू चा त्रिग घन कूं रटे पीव पीव कर पुका
रे म मन न कं बिर हनी ॥ फिर फे बारबार ॥ कृ त बनाआरति
करो थी मन नकी चाह । पलपल जोवन जात है । पीछे कहा
करोगे आर ॥ २ ॥ अब ना कूं मुघटी जाए अंतरजामी आप ल
खी दरसन न बार नी बिरबेर बलि जाइ ॥ १ ॥ अब घरि आवे
मा हिब मेरा निसदिन पंथ निहारूं तेरा रे ॥ अब पीव तुम
बिनु कैसी या नारी दरसन देऊ दयाल मुरारी ॥ सूनी सेज क

हो क्योंरहेहो खिनपीवू मिलेंबकुं तडपसहीऐं१ अबजन
तुरसी अपनौकीजै अरसपरस मिलियकुं सुखदीजै३ ॥ अ
बपीवचरनसरन आयलीजैं कुरमातसबहरिकीं जै टेक मायरी
निसदिनमो हिसतावे अबपीवतुम बिनकौंन छुडावै अ
सीमाया मोहनी तेरी जिनतुमबिचिपारी मेरी२ जायेरबकु
नजनमडुखपाया अबकेंराखिलेकुं रघुराया३ अबपीवकुं
नमोहनितमारे बलिजाऊंकें तुम बिनकोनतबारे४ अबजन
तुरसीआयोसरना बलिजाऊं मेटकु आवागवनां५ ॥ २ ॥ रम
यारूपतुम्हारा हो मुझिदिखलावो महरिकरि मुझलाग
तप्यारा हो टेक कोईजोई सुखसंसारका सबकीयाउदारा हो
तुमहीतुमलागारहा विसरूं न लगारा हो रूपतुम्हारादेख

ल

तेंहिलहो डजारहो जनतुरसी विसेसदां सुखआनंदमा
राहो२ ॥ ४ ॥ क्यौंजीवेवे बिरहनिबोरी जिनकोपीवपरदेस
बसतहै सुखसंदेसनकोरी टेक निरखैंनितिनैननिमघनि
रमल जैसेंचंदचकोरी अतिही बिकलहोइरहीरैंनिदिन
हरिदरसनबिनमोरी१ बकतफिरेंनहोनहीं मुखीयनअ
तुरहोरीदोरी चित्तमेचैनपरेनहीचखनरिलगिरहीपी
वगोरी२ अतिआतुरहरीदरसपियासी रहीजैनेकरजो
री तुरसीतिकनलहोमचपावै जबबांहगहैवुभोरी३ ॥ ५
सखीमेरीनीदनसानी हो पीवकौपंथनिहारेंतासबरेंबि
बिहानी हो टेक सबसखीयनमिलिसीषदईमननिकन
मानी हो बिनदरसनकलनायरेजीवअैसीठांनी हो१ अग
अंनबल्याकुलभई मुखमुखधरीबानी हो अंतरिवेदन बिरह
कीपीवपडेनजानी हो२ ज्यूंचात्रिगघनकुंरटैमछरीजि
म पानी हो जनतुरसीपीवबिनामिले सुधिबुधिबिसरानी हो
३ ॥ ६ ॥ बिछ्योहेमेरीमाईरी बालमसनेहीगोबिंदानहीदेतदि
खाईरी टेक निसदिनकलनमोहिनापरे नरफततेबिरहसही
पीवपरदेसनआईया जाइअबधिसराईरी१ मीनज्युंजलबि
नकूंजीवे कंवलाकुमलाईरी अैसेंमीतनबिछ्योहेमेसखीम
नमेंमुरझाईरी२ मैंपरदेसनबापरी बौछारहीआईयारी
अबमोहिजांनडलतनभयो तूंहैमतमांईरी३ चकचक
इनबिछरेमोंतोउकुलाईरी नांजांनोंकबमिलहि
होनिवपीवसुपदाईरी४ ज्ञानमिलैंआनंदहोयादुखदरदमि
टाईरी जनतुरसीचितमेआनंमोसुखसदाअघाईरी ॥ ५ ॥ ७ ॥

[illegible] आप्यारे हो [illegible] केते हो [illegible] हम कूं क प्यारे
हो [illegible] मिलो [illegible] मन पथ उधारे हो मिले पर
[illegible] ॥ म हो नयान क बन पर प्रीति रु
[illegible] हो ॥ [illegible] रजें घने प्रीति जु अकारे हो थानम
[illegible] जानत हारे हो ॥ [illegible] रस नन
[illegible] मारे हो ॥ यह दिन [illegible] आइहै हो [illegible] क
[illegible] तुम [illegible] मिले बिरह [illegible] प्यारे हो ॥ ७ ॥ क
[illegible] है सो निवारि तुम अबिनासी बिनसर
[illegible] तुम हो अनि [illegible] हम कहे
[illegible] आप मिले अति हे
[illegible] चेतन न हम जड अति तहो हम तुम क
[illegible] हम हि [illegible] ॥ २ ॥ रू क
[illegible] तुम्हारी बीनती करूं कर जोर ॥ जो चाहो म
[illegible] तुम अरूप अ
[illegible] हम [illegible] हकाये ।
[illegible] ॥ करूं ध्यान [illegible] कर जु ध्यान
[illegible] हम संग तुम [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] मांनि कहो सुन मेरी
[illegible] हम [illegible] हम स्वारथ नहीं जु
[illegible] करी है हम [illegible] परमातम पद चाह
[illegible] ॥ जाका
[illegible] जन तुरसी चौथा पद
[illegible] ॥ ए का [illegible] करी है
[illegible] बिन पाव [illegible] हो टेक ॥ [illegible]
[illegible] परी ए हो ॥ बंधन का टि निरबंध
[illegible] ॥ [illegible] बुद्धि बिचारी ए यह पंथ
[illegible] यह माया [illegible] ॥ अ
[illegible] जन तुरसी तन
[illegible]
[illegible] ॥ टेक ॥ [illegible]
[illegible] स्वासे स्वासे द
[illegible] नही को
[illegible] स
[illegible] हो जन तुरसी [illegible]

न गारू पल्लै यही रीझ सरनाईं हो ॥२॥ छोनी जपि नांव चबां
नां हो जो मोहि आनंद रस को नगरम्य देखां नां हो टेक पा
वा मन पुरसे हिमकावे मानां हो । लालच हो नी बकू तहै ति
नमें गिन जानां हो ॥१॥ कूवे गरव गुमान में जे जत पटानां हो
तेम्ह रिघ देप तजो प्रेम कुल गत सानां हो ॥२॥ जिन पांचो स्यमद
हेर पचीस फिरानां हो । तिनकै संग मस गबि चरी ऐं परहरि च
मनानां हो ॥३॥ प्यासमि औसु नापानहे नांहि नकोऊ भांनां हो
जन तुरसी हरि नाव में रहे सदा समानां हो ॥४॥ एक सु पद मां
ऊब तायारे । काहे कूं बाहिरि तै मैं । पूर्व किन सच पायारे
दर्क जप तप तीरथ सब कीते । करि करि सिर हाया रे अंतिकु
लयालीय रे कछू हाथ्य न आया रे ॥ पंचम हो रिप बल करिकै
मनसें मन लायारे तिन हि परम सुष पाइया जो सद्गु मिलाय
रे ॥१॥ जन तुरसी सद्गुरु मिल्या जिन भेद लपायारे आतम
महि आनंद पदा परगट दिपलायारे ॥२॥ ... तौ और आर तिस्यै
मोहिं अपनो आनंदघन राम । आलस बकरी गे नहीं सुमिर
नो प्रचु को नाम टेक । अलसा मो कहि क्यूं तबै । आलसा विय
ह बसरार । दिन दिन बीत्यो जात है ... वो छे सर कोनी र ॥१॥
जैसे ... मको नादर बने बसो है ऐसे चित लक तदेया
धन भोवन थोदिन दो इ ॥२॥ अपराधी अग्यांन सो भमो च
हो अधीर त्रुल को डी सुषकारने तुम ... दिरि हो र
पूरब पुन्याई बयक्रो सो ज अमो तिक सो ह । सो करते हू
आरमी । बकरी कहो ते हो इ ॥४॥ जन तुरसी कहे समझाइ कें
सुनि ल्यो सी पबोह । सुष सागर मांई सुमिर ल्यो जब लग है
यक देह ॥ ॥ इन नांनो सासत्रन मांही जाया तुम झीन बहे
रे बोछी आव जीवन अल प तुछ बुधि साले राम नांनि जक
रि गहेरे है जो । चारि बेद सु मृत्य आदि बिद्या अनंत कहा
लो पढे गुमे छै सुको ॥ सकल न को सार निराधार निजानंद य
ह सो ॥ हिरदै ... राषे सुषो ॥ ... कंठ कौ कंठ कौ कथा इ
न मैं जयो । ता ते निज निपट नि ह चौ न ओ वा सुष कर परम त
प्र कपलै सार हि गहो ॥ मति बक बिस्तार न परि जुस्तिना
वो ॥ भेतव भ्रम मत माही माया जु रहो ॥ ऐसे पत पक रिषित वो
रां म अपंड अहो निस रच सां न लागा रहो । प्रीति करि रहै पति
को सुनां मरा । त्यागि ... गुन ... गुन सकल । गहो छ है सव ध
य को अरथ सारा जन तुरसी अपने सुष सरूप में हो इरहो ।

[illegible] जन के [illegible] ॥५॥ [illegible] तौ हि [illegible] के बार
[illegible] सुमिर [illegible] मोक्ष [illegible] दातार [illegible]
[illegible] मन न [illegible] धन कीयो [illegible]
[illegible] कीयो [illegible]
[illegible] कीयो [illegible]
[illegible] ॥१२॥ [illegible] मन [illegible] माया [illegible]
[illegible] चाहे
[illegible] तौ तुरसी नर [illegible]
[illegible] चलि मन [illegible]
[illegible] आनंद की जे टेक॥ [illegible]
[illegible] की जे॥ निरमल [illegible]
[illegible]
[illegible] तुरसी [illegible]
[illegible] दिन [illegible] दिन बीते [illegible]
[illegible] छिन छिन [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] की परती
[illegible] संतनि का [illegible]
॥२॥ [illegible] कोटी को [illegible]
[illegible]
[illegible] टेक [illegible]
[illegible] के माही [illegible]
[illegible] आराधे॥ [illegible]
[illegible] की सेवा [illegible]
[illegible] बिना [illegible]
[illegible] मन लागे [illegible]
[illegible] चारा [illegible]
[illegible] नाव चढाया [illegible]
[illegible] तुरसी [illegible] और नहीं [illegible]
[illegible] बन माही [illegible] टेक [illegible]
[illegible] के माही [illegible]
[illegible]
[illegible] बनावे [illegible]

रहे मन मांही।कदर जस्री कारनै।काकाउ दिसन करांही सो २
ऊंची बनी कन कञ्चनी।बिचि चिचि चंदन जुकि यारी।मन
वंक तनै जाकमांही।हरि नाम सुधारी।थपर देरै।बिबेक नाद
मांही सो ३।अमा जै बकुं मांनि कमो ही।नवनव जो बनी जु
ज्ञो नीपे इन ही संमन लाया।तन को थी गहिं केचन तास्या।
रा जन भाग माया हो ४।पंथ पुरा तन नहीं पाया।कुं हा तं हाथ
न आया।जो बिनु तहां माया।ता लेय परम पद पाया नांही छांवे ८
गांपो ऊं काया हो ५।जिह रि नां स हिलाये मांनो गो वत ते जागे
गाहि गुर आ समपां भां ते भिन्न बै निमत रगो।आर रहे वार अप
नां हो ६।ज्ञान तुलसी भाष्या मारि पूलि तु भिकी मति बोर सुनाई
जिनि यह मति निज र जु त्यागी।जिस म के तेई साध ब्रह्म नाए
जो श्रेमे बे रागी हो।७।१८५ ध्यान सभा नि को करि पन ही॥
ताको ते करि तनि जि अपनो पावे रे जी व सम कि मदांही टेक स
ने मने आवरि श्रे मे स्थ प्र कार धर्यो ही आइ अचान कार
से जीय को लाय लो के मांही।१।सो ईजो ईतन धरि आया जग
मां नरम दिखावत मांही ब्रह्मा आदि सकल विष्णु कपे भिर
ते ताक कमांही २।घन ते म हमा छिप पंथ मांही बटपार हो इ
आंही।चिचि ही पंड पंड कर तन कू लेडा रे व कसांही।३।स
मत दी घन व पंड औ दिदो।तीन लोक सब गांही।जह ते तस डर
निडर भिचु रहो निज हरि न गात बिना होथ।यह ज्ञानि अव
के ता जि अपनो।सा व थां ने हा ह साथि जन तुं।यह बोट व वाए
औरन गौर कि यां ही ५।१।हरि गु नगा इ रेमा इरु गारे मनसा
वाचा करम नो जलति अञ्जि श्रेत रिआइ रेरे कैक छल तया
झूठी चित बल ने मि कहा रयो अल साइरे। स्वासै स्वास पल
घरी महू। रति ति है औ वस बीतौ नाइरे।बार वार नमांन
आपनैसो हि कहै मन फाइरे।जो चाहे प्रभु को व अ छे सुष
तो अलय सुर विसराइरे।२।सुर राम जा गव ड़े ने पाया भाव
नि रंज न राइ रे। साहि रा को डि के बदले।कं मफि दहव हाइरे
३।जो सुरो चाहे बकुं गृथ ग्यांनमता घर पड़ हे वो पाइरे
जन तुलसी न जि प्रेम प्रतित सो अपनौ राम अघाइरे ४।१२॥
अब की बर जो मिलै नै पांऊं।तो ले घि ज्ञा कंस कल कन बू
झी।बहो रि न तो जाल आंक टेके छूम मापं ड़ि अपंड अरप
त्रि हां न राम टंकु जनम मरन की ज्वाला ले कें हर जल
सा सिंबु ज्ञा कं रामन हजी पप बना अधला कें पां चो रिपप

६०५

[illegible] सुषनिधान साईं के सुषमो आन हिलाडलडो
[illegible] धीरनी रसिक राधो [illegible] मकरम न सांकों ।। ज
[illegible] तुहें [illegible] सुमंगल गांकें ।।२।। [illegible] सखी
[illegible] श्री नंदघन तो कैरे गो मम [illegible]
[illegible] माहि [illegible] नहे [illegible] बिरजन
[illegible] नको [illegible] नेह [illegible] कार कहै सुषबु
[illegible] कल [illegible] की चौ
[illegible] पुरब [illegible] उपजि है यह
[illegible] रहे को [illegible] कर श्री
[illegible] नम बाम हाथ [illegible] सुष चेतन
[illegible] स्थूल सूछिम [illegible] श्री
[illegible] मासोस कल [illegible]
[illegible] दसो दिसा दरसे [illegible] कारूप
[illegible] भाव पुरुष कुं निरबंध करन आप
[illegible] बाधी बंधन न मैं [illegible] देव
[illegible] रसुर [illegible]
[illegible] पजा [illegible]
[illegible] नंदहन दास [illegible]
[illegible] कर [illegible] हो
[illegible] जन
[illegible] नश्रपने [illegible] काजि की [illegible]
[illegible] अपने [illegible] मदो के श्रघ
[illegible] होकहो श्रलप
[illegible] के नस्वप मल
[illegible] बार बार [illegible] गोरी
[illegible] जो चाहे
[illegible] सेवन
[illegible] माया [illegible] जनर
[illegible] निधान ।।२।। सम
[illegible] जिन [illegible]
[illegible] राषी
[illegible] सुषपावे सुषनां हो ।।२।। जैसे दी मग्द

छियतेमा ऐसे मन रत्न रे बिष संगात्र।मा निस बदस न गुर को
बानी र८२।छिन छिन न ही सुनि प्रानी जन तुरसी रामसं भरे
यक दस आवे दादह मारे।५।।२७।। समझिन राचे सिर नजि
नै गोपाल।फिर पीछे पछिताहिगो।जनमपकरि करे बेहाल
टेक।यामाया मे क्षण है रे।कारचिर ढोगवारे छिन दस
का सुषकार ने पीछे दुषहो अपार।।मेरी मेरी करि गोपरे रा
वरंक सुलतान।काल के सोगनी चलो सब डेरी नपै सेदान
२।समझि समझि साचो कहूं रे मति नूले माया जार ध्यावे
३ षबकू पाहि रे सुषनांहि नपै कतगार रे।मन सा बाचा कर्म
नारे यक ऐसा फिरि नांहि जन तुरसी हरि कूं जनै सो फूंम
लो परम सुष मांहि।४।२८।। ऐसा को कहे रे या जग मांही जाके
दरस सच पाईये परसे अघ जांही रे टेक।निरबैरी निहकाम
ना सब कूं सुष देवे रे रचे न ही संसार सूं घति कूं नित सेवे रे।।
१।रज गुन तज्य तम गुन तजे सत गुन कूं त्यागे छप बकु ध्य तजे
तिम बतजे रचि रहे रामजी कै रंग।। आदि अंत मधि एक सं।त
नमन लेलावे रे जन तुरसी हरि कूं मिले मिलि नकु रमन आवे रे
३।२८।। सो जोगी मेरे मन भावे। मन सा जारि बिनू पिचरावे अन
हद सी गीत्रावे टेक। पवन रंग ति मे आसन धारे उ बधा रहि गम
वो चित बित बिषरि रामकूं सोपे बकु रिन न वृझ न आवे।१
तजे छिकार तजे अबिनासी दरि चरनां चित लावे मनपव
नारोष घट मांही उनमन जाइ समावे।२।ऊंलटि नैन निरजन र
निहारे ध्यान न ध्याने लेलावे जन तुरसी साई जन जोगी मन नि
ज मन हि मिलावे।२।८।। ओ रहे प्रेम जल नेनी रात दिवस गो
बिंद गुन गावे तोय हूं जगति नहीं या आन दक काया मे कोर
गान नासे उचरे गदगद बेनी मन क पाछो लि जाइ हे मनोता न
अंतरांम सुषरे न रे।क बकु हमे पाद सुष हरिको फिर बकु चित
श्रचेनो छिन बिछर त हरि न रहि नारि सोवे पीव बिछोहे से न।।
१।सोई संत जु ऐसा को कहा जाको हिरदे जुमेनो।बिरह बल ने
रजन गावे नद हिगावे निहीन नकी सुध से नरे यह जगति प्रेमा
ष्ठ कूं जीको जनम मरन को देहने जन तुरसी मह माछि फल
दाता बिदन बरना औ नर।२८।। कैसे पई ये दरस तुम्हारो यह मन
मुगधमहा पदपरहरि।करत परपंच पमारो टेक।जहां अ
ट को तन हां तहां धावे।कूं दोन काल को त्राग मे आवे लागत
आनरस प्यारो।कुमति संग सुमति सूं अतरम फाडि रसोरन सं

रूपनै राजुरे नतेगुन सबै अहारै सा चक्र ग कासु
सो हुन्सां फसकामो कै वकुन जा गजैपै जगजी
[illegible] न्यारो २ प्रेमप्रीति सम्पूरचो नांही ॥
है मानहि हो इकै नि नज नि कारो जन तुलसी ह
कै सो ही इ सचो रो ॥२॥ २४॥ धप्रारा गमे माची मारू
वर सतु म्हारो यह मन मसक तेहत कु है त नजि हो इजरेम
स्याम रो टेका चित ते सब चरन तुरसा क्रिनाही पचो पक्रि म्हे
इ तन मसां न्हा करि तहि मक्रत पसारो जाइ गर बाल तानहा
कुलबकुरि नदै प्रद्धिया तो १ जहां नेउ वत तहां मन आवे जाम
तम छिपवत सम मावे ॥ तगतन कुंदर सारो निरति सुरति हिल
मिलि ऑसि प्यांना रो ति स छि नकर स नि सारो ॥ ३ चंचल नबुधि
मरजन सोवे सु रति सुद्ध इ मिल नसजो वा दे जो छि करम कि
रो सुरसा ध्यान बसे दम बै घारि मा डि र अचल न अहारो ॥ ४ ॥ त्रि
हा त्रा खुद घर जो हि ब माहि वा घर छि न मो पे र सोन परतहै ॥ य
लपत कुन पछि हाइ है [illegible] इ ससां न र मत बकुते दिन बीत उप
नुग सो अछिका हो अबमरै मनि त्रैमी ज पजी पर मो प्रभु के
पाइ ॥ १ ॥ इन्हां र छि को टि पूका मकुही यतै है तिम र न ही द र स प
आदि अनि मधि अस्थिर हो इ के र है सतत हो बाइ ॥ २ ॥ जहां सद
र तत र करा अ ी कुती स कन ही का इ तुर सी आ ल त व स च
या चो तत बा सुध हि स माइ ॥ ३ ॥ १ सपीरी व इ घर कहीए री
ज हां जो ति जा मो म दा हो ॥ बजे अनहद तूर टेक ॥ जहां ति म
र नही त्रिबधि ता पन हो न ही जग वे म सिरू र ॥ जा मन मर न जे
रा जम को ने न हां न आय मरा ॥ १ ॥ रहे का रू व ज ग मे र चि इ हां न
रेतु पक्ष र प्रेम स ह त च लि प र मि ध्यान पति ॥ मिटि जा इ अ
सु न अंकु र मै तें बिस रि बिस रि न र मा दि क बा डि कुब छि दव
कु र सु ध बु छि हो इ सुमिर ण तु अपनो सो पे षि न जन्ह रा ॥ ३ ॥ जे
सो गा इ हां की हो इ ऊ न रु चि जग दी से ज स धरि ॥ आ दि अं
म ध मा षो जी का र ही ए स दा ह जू रि ॥ ४ ॥ मन है जा ल प व न दृ ढ
ग ख्य लि पा चो को ग हि दृ ढि ज न तु र सी क हि आ र ति सं च लि
के र ही ए प स्ये पू रि ॥ ५ ॥ जो र प र दे सी हो क हा र सो इ हां बा इ
च ल र ज हां सो हि ले च लो ॥ ति दो व स हि नि र ज न रा इ टे का चा
रि दि सा चे म सि पु र मे फि र यो ब कु त ही बा र ॥ अ ब ब जो
का हे क तर मे पर ह रि ज ग को प्यारा ॥ १ ॥ जहां उप जे बि न से न
को कु का ल कु स के न षा इ ॥ तहां वे नि र ने घा र बे तेरा स

बसेतानैसाहश॥ जहांअविगतिआनंदबिराजैबिआनंदतहां
नांहिजहांकेगोबकुरनहीआएयाकूवेजगुमांहि॥जि
हांओलिन्नगमगेसदाही॥तिमरनहीदरसाशेतुरसीआदिअ
तिअथिरतहांरहीएवासुषःसमाहिथा॥२७॥अहोबीरचन
देसैचलिजाहीतहांबसहिप्रानअधारा॥मिलिरहीएमहाप्रभु
सूं॥सुषआनंदहोइअपार॥टेक॥जहांचंदसूरकीगमनही॥उ
दअस्तनहीहोइ॥तहांतिलनरितापनपीवे॥मिलिबकुरि
नबिछुरैकोइ॥१॥जहांकोकमरेनजनमलेनहीआवेनही
जाइजमकीत्रासनहीतहां जहांआनंदसदाबिलाइश॥जहां
अनहदबाजेबाजेही॥सदाअषंडधुनिहोइसुनिसचपावे
आत्मा॥निसिमांईकेसंगसोइ॥२॥जहांपरमनूरप्रमतेजहां
परमजोतिप्रकास॥परमसांतितहांबसतहै॥औरतकूंडलन
बासथा॥जिहांइकराजीबरतेसदानांहिनइजीआंनजिनसुर
सीतहांचलिजइए॥मिलिप्रानसोइनिरबांनाथा॥३॥अरेबीरसु
षः॥कोसागरतांमहे॥सोईसुमिरचितलाइ॥कसोइनगतनूतो
फिरिरूलोहिकसूसमझाइटेके॥थिरकछिजुगकेटकरूप
हैकोटिककन्हकीषांनि॥मोमपरिपचीएनही॥त्रैकसोह
मारोमोलि॥याजरमजलमैंरडेयतेॐरिकरिकोटिउपाइ
सचक्तितकूपायोनहीथ्याकूठेरगालयराइश॥जोईजोईसुषक
प्रथाईएसोईसोईसुषनहीहोइसुषहैसाचेनांमसैं॥तेनांमें
सुरतिसमोइ॥४॥गौरीबिरचितजीएसदा॥निरमलहरिके
नांम॥जिनतुरसीकारिजसबसरेहरिसुषमेंहोइबिसराम
शधा॥२॥कथिकथिगएप्रानअनेकाकहेजैमरहेतेसा॥नि
कोकबिरलाएकाटेका॥बातकहेबैरागकीबिधिसंजुमु
षांबनाइ॥अिरीकेसकमकरे॥केसेमिलेरांमराइ॥१॥सहस
कृतप्राकृतभाषा॥बाचकप्रांनश्रद्धीना॥जिनिकोजानेन
ही॥चिरमायाकेआधीन॥२॥बहुघरषैकोकऔरहेजहांग
एगहोइकामक्रोधलोमअरमारकोसुषतेरूनसुनोए
नांमश॥बिषयनसरेउफिरे॥चितचेतनलगिजाइ॥ध्यांन
कीषापतिनयेअेसादसाहोइआइ॥४॥प्ररथजरथहिसोंहिम
दरसेसुएकोरांमामजलपांनकेनीरजैमासेतइसरेनांम
प॥जिनतुरसीअकथकथायेहो॥मुषनैकहीनजाइ॥जिनि
लषीतिनिगाइजलोरहेसुषहिसमाइ॥५॥रपुहरपरइए
हेरे॥मिहघरिपकुचेसाध॥मनसाबाचाकरमनांकोटिसक

न कुरसथ टेक न सो पपी नहन जाहि पै ष्टा हन देत दिषा
अति डुलन वहै सा सुरनरमुनि कथ किरदी कर मके
को परदे सा । जहां स्त्रुति अंतिय कराजो मधि कजनदादोत
राजी । सदा येक रस ही जो तहां स्त्रु स्वप्न सुष्टे प्राने दस । आप
नंद सनरा जे २ । जहां सुष उत्पनंदी माया तहां गया फिरि को
न आया । सुषम हि रसा समाई । बक रिनक बक बिछुरे । जो
हुहेडक बति ठाई ४ । जहां कोटे चंद न सूरा तहां बजदि
न हहतुरा । जहां जनम मरण जीति जरा । जन तुरसी सोई परस
ही जोया अगुतै न्यारा ५ ॥ ७० तहां तुरीया तत हू को जानै ज
हां स्त्रुचैन सुष्य दा भ्रु तप बुधि मन मां नांरस गंने टेक दोइ
न हे नम तस्रै धरै हुवे गरव गुमांनै । साध सिधकी बात न द
जै सो हुहे रस आनै १ । मिथ्या स्वाद स्वारथ सूरत मत बु
री नती नदितानी । क्रिया हीन हु नयन की बुधि करे साषि बषानै
मत र जन म सीन्न गुन की हुत यै हु अपि नक रै मांनै तुरसी चे
प्याद की चित वित छिन कनचित नमै आने २ ॥ ७१ तहां तुरीय
न तथा रत न भोरी । जहां अचेन आपद न धर्म को बादर फटि गा
यो सेरि । गरि माये गरब गुमांन छिता मै राग दोष बित योरी
मन न यो म जनम सा सुषड़ी न संक मित यो री १ उदित भये
छिया न न गै सि मनि मन हित योरी तुरसी पान र बां
न स मै नौ न कुरि न आ वहन यो री २ ॥ ७२ ॥ मेरे नैन समाने न
मै । पांव न परसि पांव न को । अपाव न ताकरि र टेरि रै टेका
ता ठिकारो अरपुर मही तहां दे पीव लसे पूरै जन म मरन को
न म टे जो । फिरि फिरि गये नहीं अरुरे १ । जहां बिन ही दीप
न ला न दिये तहां बिनक र बाजे तूरे । बिनही बाहन पकुची
रे । मे ने प्रा न हवां न हु हू रे २ सुष सागर वासो नयो उप
द लिह स थो र रि जन तुरसी बस्त बस्तु ही मिजी अबबि
सू न होहनम हिरे ३ ॥ ७३ ॥ सीवृहे षद उष को मरहे रे ॥ जि मि
करी जमिकरी जिमिक रे का हु स्मादी मां खुयक रहै टे
का हि रद क वल मा कर ब हि जु विल्ल रहो मां मोहिं ब
रहे रे । सिवषि स पआदि कोटे अनं नाहि हो गढ्यो करै सूरहे
रे । मैं न आरत मोहे जाते ही तुक हि चितवै करोयीम रहे रे ।
हे दनु पईड पदेपनिज दास कूं सानि पद कूं करि र हरि रहे । यो
हे मेरो सत्य ओ रमि त्र मा ने सुष यो रागा हे हरि रह पूरहै ये ताउ
व हित्या जा जिमो बिदन जि सोहिसा व नतरहे रे । देव सिंप

रासुधउरउदेकरि॥ग्रासरको कैसे चूरहैरजनतुम्हीमोईसव
सुप्रमेगावैरहैहरिमदाहज्ञ पिहैश्च॥८४॥गहेमरहत॥
होइरोमपुतगाउलतहिक्रुपनेउरमांफग्रांगोपदूर गाइरेज
इतनवीततयेजाश्टेकूकांमग्ररिनीसिसुबिचार केवांन
गहिक्रोधफलविमोतलसीविसिराइ॥लोनसुरुमोहमद
ग्रादिदोषीजुएजासनांसहतप्रमिषादिवदाइ१॥ छोमेसहं
सहकईसमहामलिनकीविजेंतीमालान्फिराडास्वासस्वा
सउरमांफहरिहरिसुमिरिजं तेरीसुफलहोइयहकाइ॥
श्यहजोगश्रेमाजुनक्रियहा॥सतगुरमारगदीयोजुदिपाउ॥ हे
सीबुहोइमांवजेत्यागिग्रानसग्रसरा॥हिरदेसुधयकसांन
मनलाइ४थ्यहहरिजनविधितिमग्रापीजुसोहि सुरति
सुम्हतिनीकैतिराइजनतुरसीजडभांबनांइरिकरिरहो ॥ जु
उरमांफचेतनमनलाइ॥४५॥जीवरागकारूसंजिनकरो
राथ्यहगयांनबैरागंजगतिऊथेहैसिबकोसारजधरोरेटेक ॥ ऊ
कोफुग्रांवेसुखपाइग्रस्तुतिकरतीकेऊउपपाइदेवेजुगा
री॥ उचैसतउततटिरहसारहोसिलालोरतमनहाइचेतनमुरा
री॥धारबिचारमनकेमनुमांजुएउटयोकरैउरजततरं
गजैसे॥ताहिसुमतिपटिसिरमततकस्थिरहरो॥उतटिहोइ
रहोनिबावनीरजैसोथहेविश्रातहसरबहीजनतकीजेगाए ॥ न
जैपिनवुजतनुपारा॥जनतुरसीसंसरभिरांसहिजुतोग्रोर
जीवरतेंहिमएवारा१॥४६॥यहसबकोसारग्रौरविमतादुको ॥ र
हिसासत्रसुम्रतिपठोविधिसजुकोफाकरिदेपोनीकेजूनि
रधारटेकथ्यविषयाविषववूनलोखिम॥होहिनिपटिनि
रमलहोइऊपरजाहीबफ्रोरिदमांफमरकरमबचनले
सकोक॥ग्राविग्रांतमधिदेहोइमांहो१॥संपूरनमनउलटि
उमेवसेहंठीयतसहतप्रिरिहोइग्राइहिएसमांध्यानसोंही
जुलागारहो॥ग्रटलग्रातेपन्हरप्रीतिलाई१॥चारिबेदसा
मत्रसमुरतमकथापुरानग्रातहामकोउरपयेहो॥ग्रति
नेहोइरांमनिहकामसुमलोकेरत्याग॥ग्रामाजनेहोइबद
हीरा॥ बिदेरविवतनबुगयांनकोउदोहाश्रग्राविद्यारजनपुर
छजतासेउजनतुरसीपमांसांजीवभिलिहोकरडी॥ग्रागेको
तवकोऊरहेनग्रासेध४७मारेकायाकामीहोतामेंथिर
होरतन्नूबिचारेंजेरांमग्रविनासीहोटेक॥बिस्वसरीर
दूसथानेविराजेदारमपरससमनासीहोमनकरनकानाम

न मन जन न्हावें ही मनना मी हो १। बिबेक आदि सुषिमा
ग मिल्या राई मां मे मन्या सी हो। पक्ष त्रिपुर बिबरन कर बे
पा नगर नट वासी हो। १। या मे रदे बहन ही हनूमत मे हमक
न की ग्रासी हो। इमा मसूरी मतंग देह रिकुं जनो को छीर
मफल यामी हो २ या ही मां कबूद मां थे जी बिकुठ के बासी हो
या ही मां कमु रुस गर मिणा ब बैठ कैर बिलासी हो ४। या ही
मां कच्छ ला कुं वृंदा मन। या मे सक रके ला सी हो या ही मां
क सुरसु ने गुन रहत हि हो हम दे वस बिलासी हो ५। या ही मां
क शुद्ध कैर द ठ बासा। न कौ कपाट लगा सी हो जन तुरसी
मां जी बन सुक्ति फल न पावै आगम निन कब जासी हो ६।४०
मन के कपूर ब सन थाबे हो। सूरबदस रागका बासा। आ
दसाई उमपावे हो ४। जहां अलपलाना आ अदाघन की
धुनि सों पुनत बिसरावे हो। निरचे निज सुष सहनही नराहू
या जी व बहना वे हो १। जहां इडी न बिघया रलागी रहे त्रिक्षा
कलन न कफावे हो। दो रन धावन अव छिव दी ने सुषमें ते मन आ
बि हा २। जहां के दरिक्षा मको धम हाथी। गई डाटम वे हो।
अहंकार न म ह कुछ हो दे खि सहनय आवे हो ४। श्रम पान
न नर से सहदम दि सो आपना दी ब हाव हो। दो नमगरमी
हि न व सपलो उमस सूपत र गासु गावे हो ४। सूरवय हे मा घरी
न को। परि प्रसुन त धा आवे हो ५। अति सो भा हो जिन जेबुजन के
हिरदे ध्यान लगावे हो। सबद आ दिपचौ छिय यो। बिषबव
नलें लगाई हो मनसी हक लक हिरदे मे परमजो तिनि र
सावे हो ६। आदि अनत अंसे रहे नाम मा मा हैं ही मन लावे रै
नाही तन पचम हाथी बकनी गुस मगन गाव हो ७ जन तुल
सी सतगुर नित पानी को कठिन ताई न पावे हो अमतन
के अनिहद तन नाखण न नरसुख पावे हो ८। ४१ मन का दे षि
मनमुख फूल्यो। माचपाचे पाचन पैमोया वज पर सभ्या दि
न लो कि। मन का अमन सुनि बस न हो मन का मन
का थन दरा ओन क या मे आसन कहो हो इकेत पवन
न हलि समिरो ब्रह्म न हिरसा बैके। १। मन का ही की थे
न हे दे खी। मन का सो यो जी पमा र ा। मन का ही के र हम जि
न बने। मन का दी आमा अपार। २। मन का ही के गठम
हुरसु पारक अंत ना मन का ही के धारे सुरत्यो। मन का
ही के जी मांन ने सब ना आति की देव रही न को ई सा पा रा ता

तत्र समाव त्राता तुलसी तो ष्ठा सदासी परवार मोई सफल
मायी मिले गिलये क काले नेभा एहथा नजन नवित अवधियेई
धाकहा लौ कहैं बरनौ तुमे कहा लौ एकही सुतका कोप
सारा तहा लौ तृष्टि अर मुष्टि आवे सकल । फि वोरथ अम्थ ल
तो तो विचारा पायौ कही सुतका तहूं प्रत्तु बीचियर हो हरदो
वो हमहा कोटपाधि । साहू कुले घन तुरत नरपरयो । सो आगो
विविस को तजे जोगिया हत्या गति तत्याग सब को कीयो । सा
हिबेक शुनर सौन सो ग्रिया ही माऊ तेई सुर अंतर सुना । यासी त्याग
त्यागस बत्याग होइ है । सारासार विवेक तरथ शितमत्त जिष
पंच को कीयो प्रहारा जन तुरसी थनिध हीसं न जन वेत्रपतेस्त
थसुरूप करि रहे संचारा । ८१ । पद । आवमं कहा करूरी माई
मेरे दरद अंगनम माई हरिदर मन विनहिय रोफाटे । मेरे नैन
रहे फलाई टेके जीव में छकरी लगि रही पीव पीव करत विहा
ञपाव विहो रहनस हस को । मो हिसत नपते निस जाइ । हरिदे
सउलत माई सदे सकून पकू चाउ खिन देष मेरो जीयउपी हि
तेरह घुन लौ पाइर । त्ती वरउव तनक तरावे विपारथी अरख
हसी को टिजतन की यैक नमिटे । ऊलो प्रत्रम करै सहाउ
रा जिन तुरसी आतुर विरहनी । फुरमो रिवित करा इस्तू
न प्रत्तु को दरस हो श पी री सुफल यह काय भा । १ निराक
र को भांव कयो विसराये रही राहा त्यो हाथ लै कोडी मनल
योरे ये लन पंथ मारग आन मस्यो । कीयो मन को नायो यंत्र
अ तिसोज हरि न जन विना हेप जनम गमा योरे । जो विष मंन
न परहस्यो अमृत करि षायो रे अमृत न त्यागो आंधरे जो
निर्हि गायो रे । २ अजकू चेत अयान न यो न गहि छि अवधि
विशयो रे जन तुरसी कहै निरंजन निरा कत जि जिहि तुमा
ह्यो रे सोप निरंजन श्री हमारो रे या तृष्टि मुष्टि तै न्यारो रे । टा
का तो सो मेरे न जनम ईह जो का नही लागे ते तो सी रहो
नहीय कहत सब कहत गरा । फो कूनि रो को कूवदई चित
धरे तह मारो रे । एस री गीत माम त्रमोधि मथि लीया न तसा
रो रे । १ श्रि नि के लिव धि लिपे मारा नो बुद्धि सो लिका रो रे
जदपि ब्रह्म सुख सिंधु है तिन कू ले गोपारा रे । २ हरि जित
सिहकांम जिहरा गीहि ते जामनत्यारा रे असे अधिकारी त
लौ गो अंति न हीप्या यारे । ३ जू धागा एक ही माल में यूं जग
त अधारो रे ब्रह्म ही व्यापक सो हरसो । नहि न ही दारो रे

प्र साके तन क संपूरण कते निरतत सुगमसा गायो च्युं ब केलो ॥
प्रान नैनो आप सुतँह न्यारा रे ॥ पंच तत त्रिगुन परे पर
लि जसा गायो जन तुरसी अट दरिया न धी वार न पा गये ॥
प्र ॥ थि का रते सा ॥ हि बार बार रोम रूप कयो बिसरायो रे
माया का दीम तलागो ॥ ही राजन म जुस स्यो रे टेक ॥ १ ॥
साया हीए प्रेसो तन ॥ म हा मोच्छि को द्वार सो
यो रे ॥ वो रके तन बा रा ॥ म्ह बोन ही
सा कीयो अपान ज्ञानी वृबे अपन नरहं ॥ १ ॥ सुने न सु
गे न २ ॥ जो क सू च ६ स कीयो अव धि न रि सो अकेले न इही
का न स्यूं स्युं पेट म स्यो अपराधी कीयो न मो बि ॥ कलजि र ॥
लि रचित लो ए सिर स्यिरा म जके ॥ म र खा जी रु च्छिमा नी अमरत
न जि हल्ला हल पायो ॥ यह बि परा ति ते गा नी ॥ ४ ॥ जन तुरसी व
हे सम फि रे नि तुरन रा रहि न जि हो रसु चेत ॥ आ धी परधी ग
तू रे तेरो सिर घन पायो चेत ॥ ॥ उ लटि अपु गा आवे रम
न सर ना ई ॥ रत न जत न क र परी ए न हीं ॥ यह समझि स बाई रे
॥ जाई जाई ते न न देखी ए सोई रूप अनुक्रूपा या ॥ ५ ॥ तैसे
लूटे घने बडे बडे सुर न र पा ॥ अवतन दी पवन ले बहे मु
नेन रूबे ना ॥ चित्त को मा दि क नि को उलटि हीरा रचे
ना ॥ ६ ॥ ना सा गय रस नां रस हि सो मन मति ज्ञानी हनउ एन
जा हर घने को र छिन पानी न ॥ तु क हंस मह सा मत हे सप
नसुपमा ही सी ए डिगा रके ते मुनी ॥ गिनती को नांही ॥
॥ ७ ॥ इन पे च न को आ कुल ना बं धन को मरा आदि अंति
सिर बंधना रो जो हन सूर हे सा रो ए छिपया छिप ब वन लो
नि च र सुजिन स्यों गा ॥ जन तुरसी नं व पार हि गए ॥ ८ ॥ अरे सब
रामी घर घ री जा हर मन गार ज्ञा हरे ॥ प्रेम जग लिये गा ए ॥
सा हूं रो ना कु ला जन्या गिदे छिपलो पार ब्रह्म में मिलिया
हरे टेक ॥ स्यूं पा ला गलि यानी हो रहि ते उरा हर हेन री को
स्यूं सि लत ला सिंध हित न धोवे ॥ सिंध मिलि आपनो ना मन
सो बो ॥ १ ॥ यूं प्रेम जगा लिय र मे स्वर जो की स कल सिरो मनि
जी वन जी की करत कुपा हर रहे को क नांही संकल पवि
कल्प स ब मि टि जा ही ॥ २ ॥ रोम पुलन कन पुनि गद गद वानी
मेन नब र खे आंन रपानी ॥ प्रेम जगा लि के चित्त हे जु रहा ॥ गा
व तसु ज स सु धिल र हे हैं ही ॥ जन तुरसी यह जगा ति नै सा
अ ते क र न मि ट न जु अंदेसा ॥ जी वह सुखसा

सिंध बूंद नै लै मुमिलो वै ध। यद्युव हृदय गो वकाजी के
कगो वी ही या वेजानस्थ्य रस्थे बलमाथा जिन हिउल न
६
वृद्ध्यां नेथ्यैं। जहां उपसपने जोनां ही मिलिहि खेरनके
र
नां मांही त्रि बंधि नापउपसू नासुपन सरकु नध्या पसी अहे
आं न दसुषम नारंभ होकायां माहीं माया। सहां काग या
को फिरि आंया मा ही होइ सो सहां गाछि है नेउने की गमनां ही
छि नक नदेह दिशा री वृहद्य रनिराध्य शमिर मो हा काड़ स्
पी तिन सहा नि रषिरनिर नां मा महामुनि जन देपाइ सु फिरदै
आरव पुरके कां मश। कांम मिटो कोधकुच यो पांनी लोमम
हेदगण ज़ुकां नी अवि या सकुन चिलानी जिनि आड्यहश्रेव
मिहाया सुधनिवृव न गियांनी ४ जहां बांचक अरस्थन हिके
कु महाजीवु सीव है, सेकु रत हि मेल छि मिलां छैजन तुरा सु
धहो हम लिनं मिध लो वि चि वि छे पनहे गई य। ५ ।आया नाजी
यरा अपनें सो वृहि किनले र पिछोनि अपनें रिदा कवान के
माही सता नी कुज़ा मिटे कु छि जा ना नां संसार यह सि नषि इयन
को म र छ्र गयां न र जनी हो इरह्यो नहां कैयां न उ गावे मर रानी
रधीर लो मिनि कुर ला जोहह सगयां न उ यांजा हपी र बुस नीर
यह माया चा हि ने हना के मिरसा हर। जिनि छाया तूं देंसय र
नन साजो। महा माछि को हारसे। न न भू वर टै म तिपोवरचि
कू वेसे मारह। जे तुरसीय रूपट गुनेको। सु मकुको फूलसा
न
रा सोनां तु बाजी हि सरिति अपनो निजसरूपता पिछै ४। ५
तिथी नेपवनां यो हा दिने पवना हअ ते छु नजपानही मो है
रही स्वा दिटे को पिइकुल नया गिगवन कायो वनकां वनांस
लागी आगि कांम कोध अरु लोन मारकी नाइम को नांह
त्यागि १। पांटमीट परस रसंचो जन रुचि सूंन छजु मांहिं हो नि
गमसारा गहो हि गोयर कल्ल समका नाहि २। जानेरू हरिन
जेरूहो नेवृन नेपती पार। मो आयां न उरवार रहि गयो जे
र
निके लिमुगमार र। जन तुलसी कहे नेय न नबसा चा नजेरी
मति इकां म नेब अपनो अवसि के जुपा वे। आह आतम धंम
धाप। सिनसोयह मुजा मइ प कहि रो हा पहले सुध सो होइ हि
घाके पी छे के रवलो अमस हि रो रो हरि नु। इस्ता धेरा चंवर सिंध
सन निवृजो बनी जुमारा हो बिधि बिधि जा बिचा गवे बिन
के
से निपात परमारी है। ५ ए हले सुरगा के सुधन ठछले पीछे
सुन करम करा ही है। जप जपा दिक रिकरि तहायकऊ चं पुनि

श्री नमो परां ही है॥ जिन देषे सुसुने तिन
लिखे लिए नां माही॥ मन बच तन महा मान जोगावे॥ ए
सुष साहै॥ ४१॥ तन करि मन करि अनेइंद्री न करि
लिकारी है॥ सोई सुष कहु ष हो इ पलटि को सत्न मह समा
हा नू॥ उत्तम पति षपति ज हा तौ वासु ष सो सुषना हि कहा वे
जन तुरसी मन हा अ छे बु सत सुष ता हि निहकाम हि को रूप
है सो पा है॥ ज्यो हे जड ब्रह्म ई है रेबी राज्य के राज्य के बैपसो
अपनो ही देषि मरार टके ज्यू गज फट कपषान मे अपनी
छांह न्या देषि अ जब की भिरि भिरि मुवो सको न आपो ते
दिए नू स्वांन न्यू कि न कि मवौरा मुक्र मंदिर मैं जाइ मर कट
ष रिषरि नांही ची यो पि मूगन ही छिटकाइ २ सुक अपुं
ष छि न वो धीयो हे बैनी के निरताइ नलनी पकरी
धाइ को जिनि दी नी मति न रमा इस्यानूं आपही अपनपी
मनबिरत सो ष रि जु बकु मेष तासे आपही मकरने लपे
ज उरगवज्ञ ह ष ध्यान म हत उपरहरी ह रूप रूप छ
मा तो स बिषय रिसुष धरि करी हाइ तुरसी तब कछु सुष होय
॥ ६ ॥ तदां ध्यान॥ आटे ई संघ रा मां हि॥ अै सो सम ध्य
अै रस आनंद ते ध्यान ज्याहि कमा ई बत पती र पद तन
ता सम कांमी कूं संत न कहे ब ह न की बषान॥ श्री गुर संतन
संषा हैरो के सुनेग्रन्थन बांन के महाजोग समाधि ते औरु
पाइ न आन ९॥ यह मेरो मत्र मित्र यह मेरो रोग न्हो हो सभा
नानि हरसी निदा छ ध्यान कोई स्वरूप म हनो न ॥ स्र
ष्या मा म न गने मै एक न हो मा मा न ॥ सब घटि ब्यापक आ
तमा को रूप षेगु न गलता न ॥ जिन तुरसी यह ध्यान जुक
स्या को उ चीन्हे संत सुजांन॥ अग्यान नतम हरता नहे मानो
सी न त सामि समान॥ ५॥ इ॥ १॥ ४४॥ १॥ ४॥ ॥ १॥ यादा॥ गनेश
हरि बिन मन नहीं बांधन धीर सो चतहीं दिन जाइ सधारी
मैन न छुरषनीर टेक ॥ जाइ दिन ह शिष्ठ न्हो र सजनी कलन
हियर तस गिरा बिरह बिथा उर अंतर मेरा को कन जानत
पीरा ॥ ह न स जाइ बकु षि नहीं आवे जहां आनंद सुष मूरस
ह सो को ऊआ नि सुनावे आगम अगो चर ह रि१॥ अति आ
तुर है उमगि चल्यो मन मै नेकन छांड तनी र जिन तुरसी बि
रह निजधि मितता सागर सिंध कबी रस्या ॥ हरि मूरति बि
न रहे न जाइ बासनापन की प्रातिलिरन रापलऊ नहीं

सयाहैकेहरिमिलिबेकीआरत्यसजनीघरिअंगनानसु
हाहीव्यारुरपीरबोफकाजानेनाकूंसुषहिबिहाछाजेसे
गमदोगेननकरिकैंगो तो [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
मनसाकहांहाअनंतहीअनंतबहेतटवोयामनसासुर
नबेसिकोसबघटियजकरेतासुतसरानजिगोबुबन
मेतिनहूंनरमोवेहा१जोनकेहतहीआहगगगकहिशेकी
तेनरहेतोबेडबडेमुनिपुचिहारेपिकाहूसेकनकेरत॥
२यामुनसासबहीजायदाहेमनसाकोक्रनदहतामनस
देहेसोहेपरमसुषाकबकूनकोतागहेतया मन मनस
ननमोहिसमावेनिकूजुनेमकरेतप्रेमप्रीतिअनुरागस
हतनिनिचरनकंवूलचितनवेतासोईसंतमोहितचूयानी
ऐसीविधिनिबहेतेजिनसुरसासोहैनहेपरमसुषजुगजु
गसुषबिलसंतधार मनसासबसुषबिलाविनावे मनसाके
कोकुंजनबिरनागहिमोबेदगुनगावेटेकघटघटमांही
मुदीसदाहीमोनारूपबनावेभोगीजतीतपीसन्यासी
बिषबनमेनरमावेरहेनकोनोअथिरअमोनोदहदिस
केउठिधावेबडेबडेमुनियरपचिहारेपेकाहूहाथिन
आवे३मनसाहाथिकोऐसबकाहूमनसाहाथिनआवे
जनतुरसीमनसाजोजानेजुप्रेमसहतगुनगावेसाधको
हेकुंगहकेरतगुनगावताघरीघरीपल [illegible] हीपल [illegible] आ
नीहसिबनजनमुसिरावताटेक पाचतीनगुनमोतिसंपो
घटाबकुदिवलगेबनावताबिनसतबेरकछूनहीलागे
फिरपाछेपछितावता ''' सूं तरवरकेपातजातफरबकु
रिनडारीआवताऐसैंतनजाइध्यांइहबिसवनपतिसंतसकत
समकावताध्येयूतेरोओसरयहतेरीबरीयांयहसमयो
फिरिनोवतजनतुरसीनजिरांमेरेंलिछन सुषमहसुर
तिसमावता२॥पनिडानहनकोजेनीच निडानिहनेको
तननमनसबनोरेजुराकूमीचटेकजुरामसनवेहस
मुराभीनजिनजिनिडानहा निडानेहलजिछिनसुगधा दे
हहोइजरिषेहाआमनमाधिआगछिपरमपदानिरतिसुर
तिउनतोंमिहामुषहरिदेरहिरामनिरंजनग्यकोचितएकैंना

२॥ अलप अहार अलप निंद्रा कुं धि अलप
अलप रमन अलप ही संग सठ ऐसी करनी कीजैं॥
दृष्टि करि मन सा दृष्टि करि॥ दृष्टि करि तन मन प्रान जोग जु
गति करि रूपा चो दृष्टि करि थिर॥ ओर हरि ध्यान निरंजन निर
कार निरमल तन मन गति तब मोहे जन तुरसी परसि
आत्मा नरम करम सो बिलोहि॥ पा॥ मन का है कं क
तुं उपाइ जिउ पाइ निवताइ रामसं॥ कथि नइ कहि
इट कर तन उपाइ आंन अंत रिगति॥ ध्यान ध्यान घट आइ
औध अहंकार सबि या रहे आनंद छाया॥ कृपा रह
न राम जजि बोरे आपा पर बिसराइ जन तुरसी पद मैं है ब
सा जन मम रन मिटि जाइ॥ २॥ परिन रका है कुं करत इती क
या कार हिंस बर अ॥ चलत न मबेर रती टका मे मेरा करि
करम बंधवत नासमझ तना हिरती॥ बारू के मंदिर में बैठ ब
वरो बांधत पार किती॥ सुत दारा धन धाम मंत्र बनावत मा
नत फूलि फिरती॥ आवत आवृधि सरावत रतन नतनं चीर
तन नहीं सुगती॥ २॥ राजबिला स सिंघासन आसन नांम्हा इस क
ल बिपती यह बिपति सें आगिला गिन राबड़ तगहि आग
ती॥ ३॥ मिहि सिरज्यो ता हि फेरि समझि नजि मा हि मिरति
रती जन तुरसी जनम मरन नव छूटे सुमिरत प्रान पती॥ ४॥
६॥ हिरदा मैं आतम रूप आराधि यह सुघाट संतन जुधि पाये
मन उलट करि साधि टका मांहि त्या गिबा हरि निहीं जइ॥ न
तिर्हे कहंसोह बाहरि जरम सुबरे परगट निकटि
छि पाइ॥ यह सुरति सुम्हत्य म बहन कों निज निद चोति
र थार कूट बदल पर हरि पछि मघरि अन्त टोगा नामारि
२॥ यह आति ही अमतन्ह गुन उपासना॥ हिरदा कंवल के
मां हि जन तुरसी निसबासुर की सोक रैा का चाहै और रा
२॥ ऐसी वृह मार जाति रै बिरको कुछ मांही हरन सुं इ रन
की जीरा न्ह प्रिकुंज मा हि टका जे स चेद जनम ही गरवै
र पकाम से से घट घट आत्मा रकरि सा न नासे॥ को म
न बचन चारी॥ किसु घपाट न घोतो आगले को हिर
दे छुतिमा बैन न बोलो अबोड घसु घरे सुख आपकुं जु
द॥ रहजा मि उर आप नेंड घरे न छिकाई॥ २॥ अति सबन मं
घदो जीरा परमार छवे ना॥ न रजाइ रे॥ यह मार
हमा को कन

घाटो।ऊरधरिमनतेहीया।निरदोषी।निरवैरहोइचेतनरीग
ाजडंडो।निसफेरिमुषलेतरी।सोइरहीरे८।यहमनि
गुनगपासतो।बिदनमेंजाषी।सुन्नतिही।मबहिनकरी।सो
रदेरषी९।यहसकलसामत्रतिको।निरचोनिरधारप्र
त्मश्रुरजीवयहा।सुधरेकोविचार।१०।जनतुरसीकहेक
तोंकहोयहपरमगियांनोंयहैश्रासरधांनंदेंसंतनिजुव
नो।।११।।१०।।४पद।।राग२६।।रभार्नातात।।जागिजागि
गिजागिरे।निजअनुरागिजागिरहोहरिनामसोंनेरोत्राषो:
औसरजात।श्रालसकरोकोरेअधागिगयरूश्रापांनफेंथ
आरतिसंसुमिरतेअपनोगमराइरे८।एकोंमसागिको
त्यागितोनेकुलगाऊश्रा।मिभो२२होनवारिमदमछरऊत
लिरेक्रामनपवनउलटिश्रांनाहिरदेकेवृतधरिसुध्यांनश्रा
त्मांश्राराधिकाहेनश्रानेंमनानतेक।।१।।मनपजनेमश्रन
पायो।श्रशोरतनहाथिश्रायो।मोईलेधिलाइश्रापनोंमेह-
मारांमज्ञोपश्रेसीकरिरेबारहोइकेंजुद्दधारतोपतेरसक
लसुनिहोहिसिधिकामर२ंविरवरकरूं।नाहिंबेरीनंमांनिमो
हिथकश्रवश्रौसरवऊरिनोहीश्रमकेमतिषोइजनंतुरसी।
कहेमु।मिमोइआकेनजेमुक्तिरोघरेनरऊरश्राइश्रतिन
मत्रिप्रीतिसंजोइ२।१।फिपेहिवनेजगदीसश्रोरकीकाटिहु
दसांमनवचक्रमविमवावीसजलटिअंदरश्राइजोगकी
जुगतिजानिलैचितलेचितमांफमांतिजलनतड़ोरसति
रानेकवऊगुनाइरेकेंलागरहोइकसोनअषंडश्रात्मां।
श्रांनजीवनहोइहेजोमिटोरामकालधंधासुरतिसुमह
वयेहसोकिनउरधरितहयोंतनवेहैपटचेतरेअवम
२।बिषयाविषवसजांनियहहोश्रनंतदुषकोषांनि।कैयोंटू
मारेमानिश्रांननेअरोहस्यागिसागेनविचारसतरांम
मोमनुचारीस्वासेस्वासराषियऊमिलिश्रांनयदेहरा।कू
रमलोंउलटश्रावश्रावनकोयहसुदावे।फेरिषेंकवश्राइ
हेअधेरोश्रागपांनश्रामोलिकश्रवसरवोसोआइसोनवऊ
रिकरचताइ।सातैंतुरसीतोवुद्दोसुमरेरेश्रपनोसुयांन
॥३॥२॥४पद॥रागमालवा॥रमईयाश्रावमेंदिरमेरे तुम।
सुंदररूपसुजांनो।तुम्हारीसूरतिमूरतिऊपरिवारूंतनम
नधांटेके।श्रिपनुजतमजानजमसिहातेश्रावतश्रावधि
नेरीजातेकलनांहिमोहिप्यारसिञ्जतरतेरी।तुमदयाल

रि

कृपा सिंधु तारन तरन दे वा परम कृपा न दरन त्रास जन मम र
ये वा ॥२॥ तुम अनाथ के नाथ पतित पावन अधम उधारन
जी तुलसी दास कों कर्म आव त्रन तेरे ज्ञामी ॥३॥ आए ही बने
है अब न विजामी तुम प्रास के आधार तुम दास न देष को उक्त ने
हा ते हरन पातन सार टेक मीन कहे जल बिन क्यों जीवे जा
के जल आधार में विरह नीर पीर रस बिन ताल फेर आवो जाम
॥ यह आस प्यास तुम रूप दर्स की निरषत बीते रैनों बासुरु बि
सारत मधुर वत चित में परे न चैनां ॥२॥ यह वीनती सुनो होसा
ई अब सुधि इष बिसरावो जन तुलसी को मिलो कृपा करि मि
लि त्रांन रूप जावो ॥३॥३॥१०५८॥३॥१२०॥ राग ॥ देव गंध
॥ जग मग जो ति हां च प्रति ज्ञाकें याकृ ते जुग माहै रवि के का
ह कुंनर मांऊं टेक हे तन अत कौ छि ते गा ना नि वारो म गुन म गन
में रत चित चेत न अनुराग म चाट नि स दिन तां गुन धरि पकुवो
कों ॥ जहां तुम तज में कोनें नांही नहें नेहा रहां व जन तुलसी ...
पने कुं तुम्ह मिलि तुम गुरु तुम सुष द्वि तसां व ॥४॥ बांना कपिक पि
पूरत धांनी जो गति न ल मैं तन पर चांनी सो तो एक न जांनी टेक
जो लग नाहीं केघन तो मृतक ता वन अंध अपांनी कर नी वांस
रूद तुलि जाहि ॥ को मिलि तो मिस्वांनी ॥१॥ बिचित्र बिचित्र बैन
कुचारे मुषबिचित्र कथा कहांनी ॥ बिचित्र बिचित्र अरथ अव
गाहे चिर गरबनते ज्ञात पुमांनी ॥२॥ जन तुलसी वह अगाह आरही जु
गति आते तब जांनी ॥ जिन दृष्टि करि अपनें कर धारी ततो निव
व को पांनी ॥३॥ बांनी जई सांवन को पांनी ॥ जहां तत्त्व कथ तत ही
रूही तो करनी रूह अपांनी टेक ॥ पट्ट सा षी श्लोक सवैया भि
न्न चतुर तायि आंनी ॥ बडे बडे गरुप ग्रंथ बिस्तारे ये तजे न अ
लष बिनांनी ॥१॥ सुनति सुम्रति मास्त्र संतन की तमत अन जे बांनी
ना हि सग सुपन न आगा है अपकृत ही रचिमो नी ॥ आछी के च
न काय अमोल कि का मही मां छि की पांनी ॥ सो कोडी गहि मुधन
लुब धो हीये प्रभु सुप्रांतन गांनी ॥२॥ इडी जो मिजी ति मन मनमा
धुमां त्तम प्रवांनी ॥ जिन को कंप बंदन सब सांचो ओर फोकट स
मज्ञांनी ॥३॥ जन तुलसी थान धनि संत वे ॥ जिनि लीनु गति यह चांनी
औरनी रंचो जिन करित छिर तत तो परहरि बाचक पांनी ॥५॥
॥५॥६॥२॥५॥ इती श्री अध्यात्म रस प्रबोध अष्टपदी ग्रंथ ॥ राम
नाम नाव सिधु पांती रांम नांम महा अमृत बांनी ॥ रांम नांम त्रिय लै
कुमार रांम नांम सुमिर जो पावें रांम नांम नीरमल सीतल

ममसरिसदा जेस्नो नंकुते निस्यो सेतत्तप्रवत्रभवे तत्पत्तसिध्व
टिधनरक्ष्या। ततरष्यो सबै जीवकाकूरमसि अडरक्ष्या सोतरै
छ्या जेभो सुरं १२ परि। मस्यचमीत्ता जीवा स्मां १ जोष्टवत्त जे
घ्रसतिआरत्तवंतो तेनमनांलो कोचव्र१२ कुतयनीकृया
ही तो कुसंमी कृपणसेरा। सुश्रुति तवे चाडात्ता। थवा बिष
मुरूस्थवाधर्दि मधीरजसंतोषस्यासति सुस्या सुमरणां सपैद
नवे विश्रसामरवेवराणां चश्रेष्ट कं।परम दासां तसरवत्यागी
स्मदृष्टी सुपदाइके बिचरंते बिहरलीला। सएवे गुरूवंदनं
प।। सुबधी सततवांभश्रोता। स्तुत्य सबदमुचारयते सी तवंत
सततापी सुद्धी। षै मंतिकारतूं १ पांम नांमस तुत्कंगपां नस्य
नचमुत्रमं।रां मनोमबिक्कनेस्य। सरवेकु तत्यत्नफत्त ७।मे
कांमासरबत्रस्य। प्रकृतैनावबिबतिरसे जथाकासकुं
:नमध्ये। नदिपेनत्तेजंनं ८।ये दरंति केडपस्य तेनदंति
परमपदंभ तनम म्रत्यु जराव्याधि मुच्यते नवबंधनं ९।कु
डपस्य कालरूपं बसिकुवं नचनेत्रिये। पंमा निद हेते
ये नेति नवंति निरंजने १०।मतजुरास्यसतः मूजा चेतायेन
मनुच्यते। घोरे घटकरमांणां। कुतो हरिनामश्रेष्टकं।११।
कियं सिसितेपः सीरथो। कंपूजा बुतपानंनं। तजिसंमतो
भस्यबंदे। सरबंहे यनिवारणं १२।पापंपुबिं नवे बेरा बंध
नेसर्व जीवकें जे नम म्रत्यु ब्याधि रोवां मुच्यते स्थिरं श्रा. स
१३ कांम क्रोध नवे त्रारचा। मूनं रजगुनमेव चां स्वरवंत
स्थियं नवे ध्यात्मा स्वरूपकं।१४ श्रसो नेस्थिरं कृत्रा। श्रत्त
पनो जनमाचरेत्। अल्पनिद्रा अल्पतुयं प्रथमेजोगस्य
लछिणं १५ निराकार निरंधारं दोजिडडबनंजनं प्राद
सोतिसर्व त्रस्या तुरसीदास ततसिवदनं।।१६।। इतीपूजाकु
संपूरणं।। सबदीलिषते।।जे सेजदो रतहोनेका बासानो
दीन्हेभेघत्तंग्यांनगरी दनांही होइ निरचो केकुछ त्तुसत्तसू
भेतां।प्रवबदेस पश्चिश्र वसापछिमकीयागवनं छिन
करत्स्यागमनभैंगरजे सोसुनीयांछिन अववनं२ दछिनदेस
कीदसानिवारी। पछिमकी यागवनंतांत सां बियातिनया
प्रांनरहमां रां मायासो कबुकांन २।। नयूरमध्याबासतांबि
लांनी कूली नया फिरिफूलेपयां नगरी बतबारिघाटसीत र
पायाश्रीतवसू तैध। ग्यां नगरी बुध्यांनधरितिमदिनजीव
नेसावलबिलतीजे भक्षेमुक्तिकहेत बेतिजननत्ताहितथो

६

नगरीतिपरतिकी कलानुअनूतनदहै नवससिकला
नीअंधकारमेंनयाउजियारी निहारयौ नगरीबक्र चिमांनी
[illegible] हितनति [illegible] आराधे अषंडभुनि मनभावै गा
नगरबगैबघरका गनित तबजोगी जनपावै [illegible] बबेकसंयुक्त
मनमित्र कहावै अबबेकी अरिनौडरपावै मानै करौबै
कसमांन पांनगरबसमझिगुरपांन [illegible] नहोनहोधी
थिनहीध्यान नहीं जहाँ जुगकोआवनजान [illegible] चाहैज
नजनको नावरपां नमारी बसै हैअनेरी व [illegible] त्रिलोकपति
त्रिपति सौ हैंतेनछि अनेछि मैं नाथ नमें हैर हैअपार
गिरदपरमनदासी सौ सन्यासी सुखमेंबासी [illegible] श्रीगु
साईंजाश्री तुलसीदासजीको कृतसंपूर्ण सबैकलाकीसं
[illegible]
[illegible] मुसीजी [illegible]
[illegible] मन [illegible]
[illegible] श्री [illegible] जीअमरदासजीचौसिष
[illegible] बिचारजा
[illegible]
[illegible] पुरषका
[illegible] श्री पु आपु गुसांई
[illegible] सांमबिचिमें [illegible]
[illegible] सतीमाता कहैकबीर [illegible] सबआमा
[illegible] करै सबदसनदी
आवो अवधमें [illegible] मातपिताकी [illegible]
कृपासुनाफल असा पावै जगतिजीव है हैंसा [illegible]
जनमहमाराजतप [illegible] तिनकीबरनिसुनां [illegible]
सबमिलि [illegible] जनमपत्रकाक [illegible]
आवो [illegible] किरतचिते जिनि [illegible]
मा आवो [illegible] धरि [illegible] कीया सिष
[illegible] आवो [illegible] आ
[illegible] आवो [illegible] सपासुर [illegible]
[illegible] आवो बारा [illegible] दिन मांहीं दस [illegible]
[illegible] आवो नर [illegible] पांहनमैं की
[illegible] आवो [illegible] बालकेमिपा [illegible]
[illegible] आवो [illegible] कासा [illegible]
करी

त्रिपुर बरमांडे मन छोडा । निहचै नयो पेट कूं गोडासी यां वर
आवो रू घर्नस आवो हरण वैतत्त्व मण वे धू १० । छाधीप
अम्बरते कु छिधूमा छोर हंड मेरे चोमूसा प्यार पति आवो सुप
दारी के कूं पांड मां अगनि नागरि इत्त नस नाथी वहो गासा
उनमू बकु रि नया फिरिया ११ आवो बुधि कलि के रूपत
रहतु मसो करी सूलें सी विगूह १२ आवो निहकलंक कलितु उ
छेरगा कालिंगा के कूं धनि कूं टन सब मेरी जननी के पेरे मेक
शीरम वके भंरहे रे १३ आवो सनकादिक नारद सारद
आवो सेसमहीके भार दल आवो परथि अनंत रुणि गिरि धि आवो
हेमहरी वसुमनमुधि १४ आवो कपिल मुनि बदरी जोगेस्वर
मार कंडे रोमां वर षेसुरास प्रहलाद आवो वड भागता चेद
रसूरोम के जुगना १५ आवो धरमराइ सुरपति इंद्र मे
से जनम पत्र काढि हं आवो दत्त चरूं दिस कुमार सपासह तुग
रष अवधूता १६ आवो नवनाथ अरसिध चोरासि ति तेजो
ग जुगति के भासी आवो मो जोग सुरजन कवदेस सुषदेव
आसुवेद केग्राही १७ आवो कतरस्यां मगण सराधेगीता
राध गोरां घाई आवो अनसयां अंजनी देवकू थी । मदालस्या
सुतले औ धूती १८ आवो नवकर आवो हस्तामलत सं करा घ
रि जवासिसट विमल १९ कुरवासाजी तुम नी आवो छ्रम
रे वूका गरु कहा वो तुम रषी स्वर वकु तपकी न्हो ऋपन
कोटिका सुमजुली न्हो २० आवो ।। रामानंद नीसो नरमा
थव । ति रम स्यां मे आवा रि स्व थव । धरम सनातन धरपा
चारी लहांगी वनी हं स्यो नारी २१ । रामानंद गुरु आवो मेरे
हसक चत्रदस पुदगा तरेरे सब आवो मेरे गुरु नाहि गुरू सं
हत लेकं सुरजाई २२ आवो भां का वांका नांमां सुनो पत्रका
मे रजन नमो । फुलि आवो चोवीस थिपंकर वकु तीकथा न
रमकी ते कर २३ । मुसलमान के महमद पीरा आवो बुलावे
रासक बीरा जिवे करस्ट का पंथ चलाया रोसा हिव नेक च
पुरमाया । च्यारि वरन आश्रमां च्यारी च्यारि जुगन केसो म
नधारी । जुध दीर घामि लि सव ही आऊं जनम पत्रका सुनि
ले भाऊं २२ गोरू विहंगम पं पंजनम रमेना सुनो पिता के
वचन के रहे ना रम सी नस र ठंगा नर सूरा मांसो लिहगनां सो
री २४ मां से आवेनां मो जावे मल निरवलिमा वमोज बगांवे
आपे चु नेरू अपदावे उनकी गनि कोई न पावे २५

रानासै तस्यापु निंरो वाकी सरन लीनी हि न और ऐसा
न श्रवण बिनानी बिसनान है नग तिन वानी २७ परम पुरष
है मूरत जोगी सो ऐन पीवै सर बैजोगी तजोगी के जो गतिरा
नरमानि कछू तैवकु वानी २८ मन सो निरंजन पुरष स्वरूपा
स कति निरंजनी जो सि सरूपा तिन नगवाके महा कोई जो
गनि जोति सरूपी सोई २९ तिगम गहे वो आकारा वाजो
नि कापत्रन छि तारा श्रद्धा उरचे पतिम्मे के तेउ परस्नेकरतप
करतेतिहे ३० जोग माया हे याकाभी माता माहीं एक निक
स्या सो मो निक सिऊं रपमो तागी ध्यानी नादिन चरनसी
तू। ऑमो ३१ ध्यान मस्तके तेज गढीसे मानि पैतनही आ
वे तगिनसो बहो रिपुरष की न्हो उप चार न एह मर ची सि
सटि के कारन ३२ मन तो सुनि ध्यान गहिरावा अब जो क
रचे जग सा पा पुरष म कति मे सत्या जगाया ध्यानबीरमे
त होइ आया ३३ कर नीकरनी जननी कीन्हो पिताव
रे अपिरदी न्हा ति बमे माव कबीर कहाया नगति उजीर
बिड दत्तसा पाया ३४ पिता पुरष मो कूं गहि लीन्हा तब ज
ननी सो मान कुं गराकी न्हा सुतह मारा हम कूं दीजे पर
ह छाते तो जन की जे ३५ पुरष कहे रे नाहि न देस्यो और क
है अन्नु सारि जो मेरी सत्या पानय रहवी रा य हमे धर प्यान
गति नजीरा ३६ तुम कूं हम देहें जकू साजा रचो सिष्टि
रह छिनसो राजा जो कू दे छिनया तब मोह कू गी सष्टि ज
नी करि सो हूइ ३७ सब में सुत रची गी के ता सो सब
मे हेला पुरष पासि आवन नहीं दे हूं जहा तहां मेरा
३८ बैकुं गरै जननी प्यारी अह कारना लगी मकसि ब्रह्मंड वि
रचा मांन पिता जब कूं गरा पाया तब मै जननी सूं जन मत
पाया ३९ सो माय लीजन्मां नकोई पिता पछि जननी का ज्यो
हेत कु है त कूं तहे दोई मे जननी का जो न सोई ४० सक
स ति निरचित पंडन पा ऊ पिता पासि मेरे कूं चा ऊ एक
की कहा चला वे जननी पंड अनेक उपावे ४१ फो स्या
उ नु चा स्यावे कूं पिता पासि मेके नाजा ऊं मेतीस
केशरीर स्यापिता के सर नै लागी ४२ वो ऊ कार ज्ञान
सुनहे त्रियादेव वाकू का सि पहे यन तीन कोयो वि
पंड बैस रन सुरन स्थावर तारा ४३ या जननी के विसतर
रा विरचरू इहे सीरम सीरा पोष विस्तार विरंचउपजावे

रूउकालनकरिसबेपपावैधथे।क्षमगाइबटवालबिचारी
तीनलोकमेंतेषणिसारी।रीकेअंडचोइनकेबांटेजनती
इकितीहीधारैधसापावपलरूजलयी१७आलसाबेलव
यासिष्टिकजेपहोइआवेमसपरलेकुहेतेहेताहीपाव
पुलकजननीआलसाहीध१७।अनिवर्टेवकरिकाहेबोले
थमाअनड्पलनामेदोतोमिरूअंडआससापरलामापी
क्षेपैलमबेलाध८।।तीनराजसुतजननीकेमोकबार
रूजोमतनीकोयाबिनमोकेकोईकोईजानोतिनकेदेअ
पदमिरबानेषेणामाषीमिकबारजजननरगालबहोत्योअ
कासंहापदपकेचाकेंपचमेतीवृहंसकरिलोहा।पूणा
रमीलो।।।१।।चौपई।।दोइपंथजोनेसबकोईजानिवृझिक
रताहेसोइसिरगुनमतिमेंबत्रनतीकीसिरखुनमगामिप
तापभुकी।।सुरगुननपंथपपीलनधपानेनिरगुनबिहंग
पथरबोनेपेथपपीलधस्याकेंध्यावेस्नोकबेदकरिनग
तदिखावे।।फुनिसाधूसुसुनवोचोरीआरस्त्रीतजान
तरूसगरी।।यनकातोमेंचारीक्हे।।पितापुरषकादानत
दोरू।।पचबिधकोलाडुदेवपीछेगुनेगारकषलेवोबा
जीरथिपीइजीवनिकीकरलआपचोरीदेयनरूधी।।ध्याव
नहीएवडाअन्याक़्दोइदेरजीवलिकमसाकोतीनलोक
मेंतेदेवाकरचावेजीवमियेसवाप।।परमारथीमहीहेके
ईवोरवारेप्रापतेहेगोईआपआपमेंसोवउपावेसरूमान
अहंकारबभावेदा।।छिमास्वांतिसुपनेनहीमावेंएकरेक
मंत्रथकीसवेकोटिकडरगाकोटिनवानीतिनकीमेन्या
बकृगरबोगी।।चकरतिसलताघपगाडेसोतिवतापचेडी
असतेसूंपित्रहिहाडीमोगमिकेतीचत्रछित्रधकिहेगनते
ठ।।धीरपकेवरइअमतिथरीगतिनकीसेन्यान्यारीभारीपा।
पभूपअहंगहसबातलछतेडराकसनूसालूए।ओरऔ
रकेकेताओरोतिमबासुरजीवनिपरिहोरैसबहीमोगपूज
मानीथनजीवनिकेसबहीमानी१७।।रोगव्याधिकरिनरेक
लवरासोकसंतापबहुनतजेवर११।।कोइजीवकामी
विधिछूटेसतगुरबिनोजुगेजुगालूटे१२।।तीनपंथदीरघ
सुरगोमां।मसाबतीजाद्धलेहेपोनांबिषमकेहेमेबडाबडे
रा।।तिनबेकुंठध्यांमहेमेरा।१२।मेरीमगतिमेंबोमिरजानो
माबिनओमेमबेहीआनो।।ध्यारिमोछिमाजोतिसमीपूस्कु

निमारू पवहोरितैाकैकू । शासेग धरममाधिलेनारी
१५ नोच्या रिमोषिकामाऊधिकारी । छिरषिकहैमेपित्रामव
निका त्रु कू मारूच्या रू बेदनिका ॥ मोकूंसेहमरबमु
छहोई मोमाओरनहीहैकोई कुनि कैनासिकहैतिपरा
री औरकहै कोमामरगेस्थारी ॥ मेरोचिकध्यानसे
नुगर्हा । बूझाविष्मन मातहैकैसा ॥ ऐसेमेरीमरीआपे
आ: पपणेआ पाणा कारनपायो । वेदछिच्या करिशिमवन
रूथा । करमलगाहजीवसबबंधा ॥ तीनलोकमेंजा
८ पमाराअमरसबदछिनातहैनपारा ॥ पमरमेकेतानसी
औके । पुनिलंपननदैवेआपमोछाने ॥ जननीहूताऊ
ननदवे । सोकैसंतहपुरषकानवे । परमपुरषसूमिलीकै
सोविचिविचिश्वनडवमहैपेसे ॥ कहूकातिजननील
आवेतो मलमनेकरिपुरषमितावे । सकातिकमिधकीसधिम
घाटी । विचविचिवऊलदेशकरिघाटी ॥ जननीत्रदमा
हमाई । छिलियामआलनारवनाही । कवऊकसोवेकवऊ
कयावेकवऊकानेपरानामेनावे ॥ यामेगरवनहीकाऊ
का । मुदितमानिमवलेचेचका रहानारा मत्रकेनत्रविना
सीयाविनसवेकालकीपासी ॥ मेरूपरमपुरषकामृता
नातिनजीवआदिअवधना । मेराविहगपंथनिरवानेजी
वानिकहायहैआसामेॅ ॥ हबरोजीवलजे अहमेवातवपा
वसतगुरकासेवा । आपापारहोवसरनाहतालबजीवरहसिव
हकेपाहता ॥ तवयहजीवदरोकिसदाहेतिवपरमपुरष
माकूकुरमावेऊकमपाइमेपरदेआकेॅ ॥ नांवजोगिंद
मनोन्हकरमां । मामेदगादापनहीसत्मां । चौकाचारंजपानः
मिमाहैदेहधरमशरकूमाई ॥ मबदजहांकोईकरमन
धरमां । मलखछिरासावरणआसरमां । केवलकेवलकार
माशेकूं मैतिनकीमावलकूटेकू ॥ वा परमारथपदाथ
की रू मारमबदसोगजीवजधारू ज्यूंसूवकेबादरआयो
मोपुरषाविछिऔरनमाया । मदारऊमायाकेपारी । आणे
आसाधूकूंत्यारी ॥ जो वानि हसकछ्यंयहवानी सोसारति
कोईविरलेजानो ग्यांनबेगराहीनताकूरनो । मुनिकोईजीव
गहेजोसरनां ॥ मुमिरनबिरहनादपरचाकीजोतिझिराट
अगमअगाकी । एकलहसुरमुभकीगाऊं । बऊस्योतरकि
रभ्रदलबमाका । बऊविधिछिनेछिनेकहगाकूं । अनतेजी
+ ऐसैमैभरतहूंकाया २८ रिवकेपरैनबाहरछाया रो ७

व भिहेतसुनाथे।नामेंगया।अरनामेंआया।सदापुरषमेंरहु
समाया।४।अब रिवकि रमिरिवकेअगा।त्यूमेंसदपुरषकेसं
गा।नामेंजनम्या।नामेंमूवा।नामेंजुदापुरषसेंरह्या।२।मोपर
चा मेंगहरमेंदीन्हा।अजऊंमेरामरमनचीन्हा।मोकोजीवसमस्त
असिमानां।मनिपजीवकरिमोकुंजानां।२४।जोजुगाआन्याहो
नाथनकाकैगड्डाकैपावकजरता।मैंम्हांमेरेसाईंसंगरहो
ता।नागसेंपाडरह्या।सुगोता।२५।प्रथ्वीआवसांमकरिमेंकुंन
भेतेकुमिल्यआया।तनंसुतेजबाइआकाससमाया।मैंसतिसद
पुरषकेपांऊ।२६।साषी।कबीरहीहसबपावकजरै।मुसलमांन
मबघोर।मेंरुआगानअलषकी।मतिकोईआनोंओर।२७।रमै
णी।।१।।८७।।चौपई।।ओरकहेंसोओरेंहीमेंरहै।तमाधुनहै
कोईमेसतिनाहरकुंसबहन।स्युपरमारथआपतजी।वृतिमं
।१।कुंतेध्याम्नतसबेसुतफांकुंगोकभरमहेलोकरीगोकुं
जोमुलकेसोअसहमारा।ह्जकरमकांडव्योहारा।२।बांच
तबांचतबेदपुरांनां।भरिष्यावृतहैअतिअभिमांनां।तातेंस
तगुरस्यूंज्ञानआवै।सोसबदसाजीवृतिकेसेपावै।३।सब
दबिनांघटिनांहीपरचा।ध्यानमांदेबिनांकहाचरचा।पीर
ओरकीओरपुकारा।तातनबिनसबबाइडकारै।४।असे
पथविकलनिम्रना।नादप्रकासबिनांघटसूंनां।ओसेंबि
याकीयाहेतिमहारा।जसतांमसपेंगचोरू।५।तामंदिरका
कान्जियारा।देहाराजसतांमसचास्फुकारा।तातेंसारसब
दहीचीन्हां।फलनपेषेढिलकानहीलीन्हा।६।हिलका
ध्यानत्रियपातहोई।सवादबिनांविद्यासबषोई।जैसेअंध
मेंवगजनामो।स्तकिनआवैमारगकीनां।७।कुटकुटसंगि
लगीकलसा।तुघदोरयसबलुहलागा।मितिभिवबांचत
बेदबिदांता।मकेतसासत्रवहेपंथअनंता।८।ओसापोजक
रतनहीमदगनअंसूंकिसदीपकालोहेअंजन।९।सोदीपक
केसेंकरिपरचेता।न्यास्यांहोइअंजनचरचै।ओसेंबिद्यावं
तअहंकारी।अन्यूंभाइकोरैमिअंधारी।१०।फुनिनाथोदीप
गकीभाष्या।ताकेपरचेतहंबिषाता।दिलकरिपाकदीपजो
ओहावे।सबदसकारतहोलेतसंजोवे।पुरतिनिरतिकीवा
तिबिचारे।अनयवनाकेतमुषधारे।११।तबसतगुरकादर
सनहोवे।तेदीपकसंदीपगजोवे।परचेदीपनादपरकासा
तबवोअंजनवेदअभ्यासा।१२।घटपरचाबिनग्रंथनकोई

सारद सेस बिरंचि सो जो गोरष सा[illegible] कबीर न कानन
मिति रसा असिजा से अधि मांन मित्राई कामु कये
घटिम किमांन ।। १ ।। रमीनी [illegible] ।। सोर[illegible] ।। नाद बिं
से तन से हैं कोध नाद किमी परि है हरू ता है सो कहै गि
री घाट बाट की मिमि मिमि जांनी ।। १ ।। आंनी न है बु
धा जो घटि नां रघुनाथ है साचा ।। जो कोई कहै और को दर
सो हा सिन नहीं गुरदरमान रसी ।। २ ।। जो कोई देषा दस बता
श्रा ।। देषा वा को मुष चाहै ।। सब कोई कहै सुनो हम मू
नाम सुन्या सो केसा थों मूल ।। ३ ।। चरन चले हाथ कछि गहै
दे छिर मुष सूं कहै ।। अवनां सुने सु मुष सू षेल ।। को योनामा
किसा परिवालै ।। ४ ।। सुन्या हो इसो कहो विचारू ।। घटदरसन
सूं करू ।। १ ।। मारू ।। तिन की मेनो ग्याव रिके रही बिबधि चातिम
हिमा अनूसाहिं ।। २ ।। जतो सुन्या तो संतन कीजै ना का अनुरात
रकि मो हिवाजे ।। याजग की लज्या है केसी लज्या मांनि रहै माग
हेसी ।। ३ ।। आपनां पति की पती बांची पर घिर मांनि तेह सा चा
जांनि सोकिजे यांस्त्री होवे ।। सो वा पति बरता कउन सा हे ।। ४ ।।
वर षेम रुकी च बहे मेरा पैली पार ह ला वे के ना पतीनी
केसी गन्हन नारी महा नयाल क रोते आ ।। ६ ।। षरी फिल मघ
की सब बूंद जा इयी वृका पार ह वदे ।। ७ ।। सो करी एपति बूरना
नारी से क करे मोई छिन चारी ।। पर छजां ।। निजो वादव षो वे से
पांनी दो जग मै ना वै ।। ९ ।। तुम कासी के पंडित राज ।। मै ग्यांन बीर
स है के काज ।। १ ।। वो मिवो मिबो चल है वह रा है माने ती
या है है ह इन का राजा सब देस जीवन सो केस कहि कीजे
अचवन ।। २ ।। सो केइ का वे द है हर वांनी ।। जहां तहां परगटवा
ति जांनी ।। वेदांनी वा लैम कुकासा ।। जे हा म हो रेषू बुलसमं मु
कसा ।। ३ ।। सो वेद से री कीया विचारू ।। तिन का मेव्यो रूनिर
वारू ।। जतन स्तते न हो ई ।। ४ ।। वे सा ।। जल बिन गले नहीं करू
या सा ।। ५ ।। सो तिन तें न षस्या बरतन मैं ।। बरतन ते मे न्यारा मह
रहे ।। दिनां च्यारि का फरचा होई ।। ता के र तन्या हे सो ई ।।
।। ७ ।। सो तस मिल्या न गुन गात रू ।। घां न वलगहे ग्रुवा कारू
वां मे घसि रा नां ष्प प जैना ।। ब रो रिजई ऐसी ही तीला
।। ७ ।। से से षौवे क बक्र मर रहे जे ।। सब दपार घट परचै कीजे
नै ।। ८ ।। इसी रसमरथ कादासा ।। सति ही सति का रूपर का
सा ।। ९ ।। बहो तारक वे रूठ गवनावे ।। च्यारि मो षि वे है मे गावै

चारिमोघिरैवाजुडमारी।चासमूषणछुडकैताहां[illegible]
ग्रटचूवकेकमितहकीकं।घटपरचेकरिमजिलोकीकं
मिकबीरसमथकादासा।सतिहीसतिकरिरहुप्रकासा।
७॥बिपवैरकापाठकरावेप्याठकरेकरिचपनरैवेसि
रकैहैगावत्रीआपूलयेनही[illegible]नयासरापू।८।छाडिस
रापधाखेकेवृला।रासिमवदरैहकारदेवलाधोलिक
पारदेपिहरिपाका।घटपरचेसाईहिजराकूं।मिकबीरस
मूषकासा।सतिहीसतिकारहूप्रकासा।सन्यासीतपकूंश्रै
गाहोवनकरिवासबकूनकमरावे।१०।बबईकूंटेबिन
विचारीश्रह्मसरपकूंसकैमारी।घटपरचेकरिश्रमरदरच
वैसोसेमांसहसपुरषमेंश्रावे।११।मिकबीरसमथकादा
सासतिहीसतिकरिरहुप्रकासा।जोगीनेमजेमश्रारैनोश्रा
सनधारिपवनकूंथंभे।१२।ध्यानधरैसहूंदीपालोईरीनीध
तनुमानहीहोईवोतोवेननमानश्रायाला।नामजोगले
करोसचारू।श्रसविकूंपरिश्रकलदिवाना।निरंरनहो
रमस्नसहूमाना।माजोगस्वरंनोजनजीनाम्यावैपरमपु
रषमीना।१३।मिकवीरसमथकादासा।सतिहीसतिक
रिरहुप्रकासा।जंगमघरिघरिघंटाबजावे।भोजघराकाम
रमनपावे।घटकाघाटजंगावे।जंगमामारम्यालमश्रालमकं
रिसंगम।१४।घटपरचेकरिसिजहारा।सोजंगमसतिपु
रषजुहारा।मिकवीरसमथकादासा।सतिहीसतिकरि
प्रकासा।१५।जैनदयादयाकरिश्रावे।जहांजहांबकूं
सकउपावे।सबहुबिनाचोरासीश्रावे।लनधरिधरिबहो
जीवसतावे।१६।जाकूंसगलाचोरासीछूटेवोमिसहरय
रकेसफूटे।जीवसीवकीसंधिमिलावे।दयापालेसोजैन
कहावे।मिकबीरसमथकादासा।सतिहीसतिकरिरहुप्र
कासा।सिंहरीनदीनकरिबाले।दीनदयारकूंबकूंहीभू
ले।१७।श्रांमपत्रेषेसुराश्रकूंतेगी।मिसंदिनसिरडेरै
बकूंजंगी।जिहांसाईदामरमदोरे।ख्यालोसिलामबकं
स्तफोरेबूसांडसिरबुलाबे।कजमाबाजिदकूं।मिजद
सिलामा।मिकबीरसमथकादासा।सतिहीसतिकरि
प्रकासा।१८।तितिबषानेकाजीमुलांकाढिकतेबकै
तहेफेलाजीवजिबहकरिषावेगास्तासूंरहेसाहिबू
दोमन।१९।बूफूपकमुसलांकाजी।जिबहकीयांश्रनी

साहिबरली। कहे दलाल्लअरकहै हरांमा। ए काजी
गको सांमां। रथ ख्ताडा कुफरम हरि। लोग्गाई ज्यूं घट पसै
सिलेषु दरी मे कबीरस मप्रधक दासासति हासति क रिह
सानूप। मिनी कोसबहमिक कुफ़ो। इनकू और मौरहा मूको
दूषिनू छिमे बहोरिहताई मुल्लीफ मिल्या सोपकू चाल्याई
२६। जिनियहजानी औसी हैसी ताके दगारिरसाहे बैसी ह
रनधरका गेकरहेवे अरूबिरक्षफल्यां सुषलेवे॥२१॥ मा
कबीरघाराबादि पढि रया ति जिसुष सागरनींका मेचु
चुणिलेतहै धरम राहकाकीर॥२॥ ॥६॥२
॥चौपई॥ मेरा बचन लगा नहेपारा मैं नाथ नहूं चौनपगारा
कू मीबाहूदे नके हेला जो कोई गहै नांव निजमेला॥ नाम
सोग निरमल निहकांमा। आरत और बिषकी सांमा। कु
घरमथि गुरू कहावे। कणघरमथ चेलाध्यावे गुरू चे
छि सघरि मरता बूछि बिना सब है तेम हेला॥४॥ पटे गुने
रबडा कहावे। जिस दिन बेदबिद्या भोगावे। बडा होन
न मेका या साके अ ग दस्त नअहंकारा। बधिक बान
पहली देखाके मैमत देषिसारी कूं ताके छेसा गुनकबडा
कहावे आपबडे और नकूं बाहे॥५॥ पटे सदी रघ अप दस
छारा। तिनका अरपं लाहारा। अपटचाजीव करमहे
सामद जिसु लीकि चरचा मे का॥ काचारुथ करे सो हाई
फारा। जिगरि रयाहे साहि। करम कूनाहें तिनके राजा पंड
नअहं मह तनके दे। सी पिसी छिबानी मुकुच की मिल्या पंच
मायामे हूच री। यनपा चन कू सो मुलजावे जो कोई। कहत
मा चालवे॥७॥ मेरू सब कुछ हिहे सा मा फुनि आम राह क
रत नही सामां मे रीसा हिन की आगवा अगा ने सुणि आगम
सो सामया॥ मेरा बिड दमा थके गमा साहिन चरू सिधकी
ताका। सिधलो दया है दया ध्यावे। तिन कूं साध नबिनक र
गावे। मे कबीरहे निरमल आगा। जो बलकरू बरहे नगा
॥ जैसे तो नमो हन हीसा मां। कुनि अहंकार क्रोध
सा। मे अजीत हूं अथ्यचारी परम पुरष के सदा हजूरी।
॥ मेराधाम सब दहे सारा। सें सम पुषीता के हैं धारा मोपे
कलेबिद का राजा। अहं अतिजानत हूं साजा॥। पिंडका
ततपर चेतनदी कीन्हा। पिंडतन मन कलधरि लीन्हा पिंड
परचा छिनपरितके सा। मोमें एं हूं रमत्रं है सा॥२ गीतापा

रोहन।भारथनेस्यकहै।मोहन।स्पीमैरेरहे।मारो।मक्रुतच
रनपुरषहैन्यारे।ताकेषक्रोहवकी।एगीता।सोध्याताके
मैंकारपीता।प्रहगीस्थकपी।छेवक।होरिछैया।श्रथकरै
नहीं।५।विप्रवरनका।जोरहिछै।मिदमाता।मारनकूंध्यावै कोई
मैता। चारिवरनमेंक्रचा।धालतनरूसवरनसेंनीचा।
१६।जमजोंनतहैं।जुलहाकारन।मिरूवहोजा।वनकातारन
परमपुरषकै।आदिबवा।म्हो।रहरहरकरतहैं।आस।१७।विरचि
सिमसितामिपतिवधानी।जोसाजीवमोहिकाजानैणहरै
साहरगदविनकहै।छीलारकीचामाचिजेषिफूटै।१८।परत
गुनतसमक्रुतनहीरूहा।अपनीथापआपनामुहा।मितावेद
चासकीवांनी।घटपरचेकरिमिमिनिजांनी।१९।रोहन
कासुषदेवबकता।सोहैवीजसवदकाधता।संकरपगो
रगुफलीस्रो।ताहिनसुषदेवसहैजैचीन्हो।२०।छी।छसकी
सेंन्यानरमाई।मिथ्याअगानकरिलाइहिंपाडीपी।छैगुफन
पतिकूंदीन्हो।सपतदिवसमेंपरचेकीन्हो।२१।ताकीसपति
पराहनवांनी।एकगटकरिसवहिनजोमा।मिक्रहीजमतग
रतेपावे।परचासंपरचोहोम्प्रावे।२२।कुपिसुषदेवहैकपया
ध्यास्या।कछूएकआसागुनकाधस्या।संकरपआईगोता
पावा।जनकवदेहीकहावता।वा।२३।वारपारआवैहोसोता
परिअरूविरछकेएफलनफूलतसारमतीतमतिरामगुसाई
पूरनपूरहैमेंवाई।२४।ममुकामसवेगुनमाया।छुसरू
पसरवेगसमाया।हेपरगटपरिसवस्तगुपता।सतगुरवि
नकाऊनहीलषता।२५।जोवोलेहेवेसायापोथी।सोगो
रषपाटिकोतिस्हैहोती।क्रामातिरिषिसिधिनाहोडे।किंता
पिंडलकरिकरिछोडे।२६।जनतासुषिसतगुरतेपाई।तोअ
रजीवकीकहाचलाई।कहैकबीरतजोअहंकारा।सतगु
रषोजोपारउतारा।२७।तनमनसतगुरकूंदेजेमबदसजी
वनपरचेकीजे।सवदमधिनकरिसवदेसमाया।स्वांमबे
दठताकेनरिआया।२८।घटपटषोलिदरसलेणावका।स्वां
मबेदकीयाहीरीसाकहैकबीरगरवगाहिडारो।सतगु
रषोजअपिरनरिधारो।२९।पूरवकापरसतगुरषोल्या
तवसुगवेदगासामेंबोल्या।सोवोल्यासोपंडितहोईसं
घवेदकोटीकायोसी।३०।कहैकबीरगरवगाहिडारोसत
गुरषोजिअपिरजरिधारो।परमजोसिअदम्रतसतिस्वांत

सिष गुर आइ जगाया। गुर का सबद लै मन लाया॥४॥ मन का छिर लीया॥
जा रब कृत सुषदीया। भाया ते मन का...
जा रब कृत सुष दीया। भाया। अंतर गति मैं राम बसाया॥५॥
बिचार गुर तब पाया। अंतर गति मैं मति ही बही॥५॥ जन सं
का सबद लै मन रही। करम न रम मैं मति ही। लै मन लौ का॥६॥ जन सं
का सबद लै मन लाऊं। गुर का सबद लै मन लाऊं॥७॥ गुर की ली
सी मैं बलि जाऊं। गुर का सबद लै मन लाया लै रा॥७॥ गुर की
मैं गुर का चेला। सतगुर राम बसाया। दिव लाधा॥८॥ गुर
अगम अगाधा। अंतर गति मैं सा दिव लाधा॥ हरि निधि पाई॥९॥ गुर
ता उदक दरगाही। गुर की कृपा तें हरि निधि पाई॥ मैं
कृपा अंतर अपारा। सतगुर मेरे प्रान अधारा॥११॥
नाथ गुर अपर कीया। राम रसाइण नरि मनि पीया॥ मैं
कृपा सीस नवाइ प्रकृमा दीजै। सब मन आपा त्रेसे तीजै॥
र आया जीव बहा बंधाई। प्रेम प्रीति अंतर लौ लाई॥१२
गुर मिलीया ते धुले कपाटा। सुधा चाते हरि की बाट॥१३
सुधा पटे जन सुधा बाणी गुर कृपा तें हरि निधि पाई॥१४॥
त्रिस अगति गुर देहि दिषाई। मन पवन ले ताली लाई॥ ॥ अम
तु सुरति निरति लै कीया बिचारा। सतगुर बरषे अम
नदेरा॥१५॥ प्रेम घटा बरिषै बहो धारा॥ सत गुर मा क
पावनहारा॥१६॥ प्रेम मगन मन सेवा तारूवा गुण इउ ताते
यो मन न्हूवा॥१७॥ पावो रडी बसि कृपा राषी सतगुर बो
ली अम्रत साषी॥१८॥ जो कछू कीया सतगुर कीया अपणा स
सबद यक मन लीया॥१९॥ गुर बकृत जोति कमी वनि
बाण्या। अंतर गति मैं राम छिपाण्या॥२०॥ महा रकरी है गुर
गुसाई रूप का सुमिरन छल ले नाही॥२१॥ कहा करू केछ
कूद तन आवै सतगुर मो कूं अम्रत पावै॥२२॥ गुर गयान धा
ता और न कोई। आतम माही दरसु पढो ई॥२३॥ गुर गोबि
न ते नावु दिहावै सतगुर मेरा मन के नावै॥२४॥ बिकरम जीव
द की यह बड़ाई अंतर गति मैं देषूं नाई॥२५॥ गुर
निवाजिस की नहीं आपणा चरणा आप लीन्ही॥२६॥ गुर का
सफ सफा रमते है साड़ी रोम निरंजन देष्या भाई॥२७॥ गुर का
चरणा लै मन लावो। आगम निरंजन तहां चलि जावे॥२८॥ गुर का
जैसी उपजै तैसी कहै। गुर सबदो मैं लै मन रहै॥२९॥ गुर मोहि रामनि
सबदा लै मन लाऊं॥३०॥ मैं तै भमि ता सतगुर बणाया। अंतर ग
रे जन पाया सोई॥३१॥ सबद बिचार रोम जब पाया अंतर राषै रो मरसां
तिमें प्र मबदाया॥३२॥ गुर की सिफति सुरति मैं राषै रो मरसां

रणरसा नां चाषे स्रया ४८ गागा हित्ता मरणों आया गुरक्षै पानै
अवगति पाया ४९ ॥ अ फल पया ते अमृत पीया जन कल्या
ण दास समन अचेत जीया ॥ ५० ॥ इती श्री गुर द्यो नीताम्य पसं
पूरण ॥ अंग ॥ ५ ॥ अथ पद लिषते राग गोडी ॥ राम जी के बं
धु लाग्या जाइ पूरी छोटे नां पडै सुष मेरे है म माइ टे कांपा ष
स न छाती टिके री ॥ अनि न राई राम सील मतो पले ना दा
या मन न ध्या या बिस्राम ॥ १ ॥ सब काना ऽक राम है पडी दमाम
छरि रघु वा तो हरि जी कृ रोत हा न आगि न सके चार २ प्रेम श
तित नू की या यसाने न बि चारी डोरि बां सम मनो रथ रा षि क
रि ज्यो ता नाडो छाया जो गि ३ धीर ज ते क रगट कीया पि
गा ऽडाया पाट सबै सबद ले आ न्या श्री हरि री बाट
४ पि छोरी राम का लिए ज्यादी रखा रत्ता साहिब मेरा बां
हीं यो अब के कीया निहाल ५ सो दा कीया राम सू सम्र
थ सिर ज्यनहार पूं जी दे करणा नया हरि ना जि उतन ल्या
र ६ मारग पक डयो राम का रसा आगा ती हरि जन कल्या
ण दास सुमिरे राम को राम रत्ता जन रहरि ७ ॥ ५ ॥ कहा रे मन
सा नू सो जा वै गोरष नरपरी कहि सम मान वे टेक ॥ जल जी
व न्यू जल की नाईं आपे आप बंधावै मत गुर का सबद सो
अ चेत मोम तगु रु बा ल दृष्टि वे १ अंकर कट की मृग की नाईं
आपु दुष न्ही नाहीं कनक का मनी कूम न दीया राम का
मिलन ही पावै २ गोरष नरपरी गोपीचन्द जी व कहै उपदे सा
सुसाबि समदेव सुमिरे सर्व सुषां रस सा ३ गोरष
नरपरी कबीर नामदेव दिल का पट ले षो ल्या गपोन बि
चार व के कना के डी मन पवना ले सो ल्या ४ गोरष नरपरी
री गोपी चन्द आस नया अमंदा जन कल्याण दास मत भित्र
न्ना ब्रिर ज्ञान याया सुमान दा ५ ॥ २ ॥ संतो सत गुर कहै बिचा
रा सुमिरो सिर ज्ञन हारा टेक बकू सगली मन फूटी बक
सा भति नहीं कीजे गुर गोबिंद के सरणे रहीजे १ प मोम सार
सी जा ॥ बकू अबषि बोली बकूं वि धिज नी बकू विषि बा
णी पूटे गुर गोबिंद का सुमिरण कीजे राम रसा लूटे
२ गुर गोविंद कं उदिक रिपथ पद के हिसा पि गोरष नरप
री कबीर नामदेव दिस दा ना तन रिया ३ गुर गोबिंद के सर
ण रहीया गुर गोबिंद है सार जन कल्याण दास मनजाम लिरजे
मो अगम वार नहीं पार ४ ॥ ३ ॥ जीव रा हसा यों जैसू र रही ए हरि सं

फेरि जबाबनकी रेटैकं। आवे मारो आवे तारो। आवे फेरि निवा ली
जो। आवे हष चरणोमे राषो। सबदसूं मेरे दबाजो। आवे तन
मन योग लगावो। आवे नमल मारो आवे मारि कुबेलो पेडो॥
आवे न नागपागा।१। हरिही पूरा हरिही सूरा। हरिही दीनदयाला
हरिही पाले हरि पोषे। साहिब है प्रतिपाला २ हरिही साई हरि
ही माहीं। हरिही अगम अपारा। हरिही मेरा जीव जिसाई हरि
ही मल मारा। हरिही उपाया हरिही निपाया। इत्यादि गुनी
नारी। हरि बिन मेरे और न कोई। हरिही संतां तारी हरि पिंड
प्राण जीव दीया सुरति न्रति मुष सासा। छोटा मोटा भी राम नि
रंजन। प्रेम ज्योति प्रकासा।४। हरिही करता हरिही भरता
हरिही अमल सरूपा। ज्योति सरूपी राम निरंजन सकल रसा
नरपूरा।५। आवे नरक सुरग मे राषो। आवे लष चोरासी फेरी
जन कल्याण राम के और न कोई हरि चरनां का चेरा।६। आ
चित लागो मत राम सूं। मन बिचरयो बिषीयां बांम सरूटै।
कही व साध साध संगति मिलि तूटै ऐसो अबिनासी हरि
सूके ऐसे साध जन तेमन धारा मिटी जन्म मरन की पीरा।
१।। जन कल्याण दास सुष पाया सुषसागर मांहि समाया।५
।२४ जिनि पाया साहिब सांई वे घटि बधि बोले ते भाई टेकं।
षरि बषि बोले ते फूरा वे साहिब बसे ती रूरा॥ जीव रूप रिने
षबनावे साहिब कबहू न पावे २ साच सबद ते तोले हरि
जन कहन बोले। जन कल्याण दास अब डरी। सब साहे
बसरण रही।२।५। राम रस मीगा ये अमली बिनपी या न जा
उ टेकं। काम क्रोध तृष्णा तजे पांचूं इंद्री और सोई पीवे राम
रस पावे हार मे गोरा तन मन आतम सरूपी ध्यान स्व सुरति
मव बास राम रसाइण जिन पीया समरण है जन दास २ राम
रसाइण सार है। ता का कारन सि चित्त र के ल्याण दास
जन पी जीता। मेरे जीव का प्राण अधार ४ राम रस बक्री
रे कोई पीवे साध सुजाने टेकं। मन कूं सो पीवे रूडा जाहि
राम रसाइण पीवतां। जन कल्याण वे जी लै आत्म कूं सुष माहि
।।१ यक साधकी रीति है माहि व प्रीति २ जाप रिह रके
पाकरी। पावत रहे सुघाय। कल्याण दास जन चीन वे। प्रेम
प्रीति ल्यौ लाइ॥७ राम रस पीवेर पीवे जी वे सो हटे कं। स
व साधां की मति कही की मति विघन को इ राम रसाइण पी
वतां जीव अबिनासी होइ। तन मन दे करि पीजीए सिर
वतां जी व अबिनासी होइ तन मन वेवा जीति ५
राम रसाइन पीवतां तन मन वेवा जीति ५

॥अथश्रीकबीरसाहिबजीकेपदांकीटीकाअर्थसहितय
हलिष्यते॥पद्फुटकर॥दुलहनीगावहुमंगलचार॥हमघ
रिआएहोरांमभरतार॥टेकतनरतकरिमैंमनरतकरिहूंपंचत
तबराती॥रांमदेवमोरेपांहुनेआएमैंजोबनमैंमाती॥१॥सरीर
सरोवरबेदीकरिहूंब्रह्माबेदउचारा॥रांमदेवसंगिभांवरिले
हूंधनिधनिभागहमारा॥२॥सुरतेतीसूंकौतिगआएमुनियरसहं
सअठ्यासी॥कहैकबीरहमब्याहिचलेहैंपुरषएकअबिनासी
॥३॥१॥अर्थ॥दुलहनीआत्मा॥घरघटभरतारपरमेसुर॥टेकत
नमनपरमेस्वरसूंरतकीया॥पंचतत्तिनकीतासीरपरमेस्वरसूं
लीनबराती॥बनेजोबनप्रेममदमत॥१॥सरीरसरोवरबेदीक
रिहूं॥परमेस्वरसूंबणावसोईबेदी॥ब्रह्माबांणी॥भांवरिफेरे
परमेस्वरसूंबिलाससोईभांवरि॥२॥सुरदेवतातेतीस॥पांचइंद्री
पचीसप्रकृतितीनगुण॥एतेतीस॥मुनियारसहंसअठ्यासी॥
नौनाडीबहत्तरकोठेसपतधातएअठ्यासीमुनि॥आत्मपर
मात्मसूंसंजोगसोईब्याह॥संसारसूंनिरबासीकहुंएचले॥
॥३॥१॥पद॥मनकेमोहनबीठला॥यहुमनलागोतोहिरे॥चर
नकंवलमनमांनीया॥औरननांवेमोहिरे॥टेकषटदलकंव
लप्रकासीया॥चहुंकूंफेरिमिला॥२॥दहुंकेबीचिसमाधिहै
तहांकालनपरसैआइ॥२॥अष्टकंवलदलनीतरा॥श्रीरंगके
लिकरा॥३॥सतगुरमिलेतौपाईएनहीतौजनमअबिरथा
जाइ॥४॥कदलीऊसमदलनीतरा॥दसअंगुलकाबीचत
हांबादसघोजिसैजुरामरननहीमीच॥५॥बंकनालिकेअंत
रेपछिमदिसाकीबाट॥तहांनीझरझरैरसपीजीएभंवरगु
फाकेघाट॥६॥त्रिबेणीमनन्हाईलेसुरतिमिलेजेहाथि॥त
हांफिरिमघजोईयेसनकादिकमिलिहैंसाथि॥७॥गगनगर
जिमघजोईया॥तहांदीसैतारअनंत॥बिजुरीचमकिघनब
रषिहैतहांभीजतहैंसबसंत॥८॥षोडसकंवलजबचेतीया॥
मिलीयाश्रीबनवारि॥जुरामरननौनाजीया॥अबपुनिरिप
जन्मनिवारि॥१०॥गुरगमिहैतौपाईएनहीतौऊंघिमरैजिनि
कोई॥तहांकबीरारमिरह्यासहजिसमाधिसोई॥११॥२॥अर्थ
मोहनमोहिराषैसब॥बीठलब्यापक॥टेकषटदलमांषुडी
कास्वाधिष्ठांनचक्रलिंगअस्थाननिवासमनपवनसुरति
कौ॥चहुंकूंच्यारिपांषुडीकाआधारचक्र॥गुदाअस्थानदोइ

ा।सुषइम्रतबरषै चंद आपही आप बिचारा।
होइ आंनद।दहुतमजिनि जांनो गीत है।यकु निज
चारा केवल कहि समझाइया।आत्म साधन सारा।७।
वल चित लाइया।राम नाम गुण गाइ।कहै कबीर
हीन्नगति मुक्ति फल पाइ।।८।।२।।अर्थ।।गोकल
ा।काया कहीए।नाइक परमेस्वर बीठल ब्यापक काटेक
कोटिकी गहदेहा।जामें सबमलीन क्रमकु हिने लगावि।
सुरमाया।तासूंनेह आपे आप सबबंधे लोचन सब
सिरहि २ येकै जुगति।ए केमिले जोग कीए जोग फल
गते भोग फल सो कहूं बदौंनू।राम नाम जपै दीजै फल
पति जोग अरु जोग।आत्म परमात्म संजोग सोई जोग नां
मीवा लागा सोई लोग।१।अम्रत स्वाति कबचन इजा अ
त्तनां।चंद ग्यांन सो पोष आपही आप आत्म बिचार अ
तहकरण।बदेह ग्यांन।।२।।१।।पद।।नरहसम दहै जैही जिनि
जोंना।गलत फल फूल तततर पलव।अंकूर बीजन सांनां
टेक प्रगट प्रकास ग्यांन गुर गमि तें ब्रह्म अगनि परजारी
ससिहर सूर हर ऊतरा।लागी जोग जुगतारी।१।उलटे प
वन चक्र षट बेध्या।मेर डंड सरपूरा।गगन गरजि मन सुनि
समांना।बाजे अनहद तूरा।२।सुम तिसरीर कबीर बिचा
री।त्रिकुटी संगम स्वामी पद आंनद काल थें छूटे सुषमे
सुरति समांनी।।३।।४।।अर्थ।।सहजै मांन सी नजन उदर
हित फल पाप पुन फूल कांमना तर ग्यांन ततरूप बेरस
गुण।उदै नही पलव परकीरति नही।अंहं अंकुर नही बी
ज बासनां नही।प्रगट परस्या ब्रह्म।गुर गमि ते गुर परस
दि ब्रह्म अगनि परजारी।परजारी परकीरति।प्र कीरति
सिसूर।मन पवन ताता सीला।हरि कहीए।इन तें आगे
जोग कहीए जुगतारी।आत्म परमात्मा जुगल सोई
ग जुगतारी।२।ध्यांन समाधि पवन सा सिसु मिरणाल
सोई उलटे।पांच इंद्री इठा मन।ऐ षट चक्र बेधे सुम
मेंमेर माया डंड कहीए।माया कूंजीती सरस बद पू
का।गगन अंत हकरण।गरजि उनमगि कि रिसु नि ब्र
स्थांन उदर हित।अनहद दूदर हित बाजा इजा
का।गगन अंतहकरण।अनहदद हदर हित बाजा रिजा
स्थांन उदरहित।अरुण हत्या बिण।बजाया बाजे।१।या
कहीए।अरुणहत्या बिण।त्रिकुटी मन पवन सुरति स

हीरोकन्हा तहांस्वांमी परमेस्वरपद प्रांन आंनंदमै हुवा
हगा ॥ अर्थ जोगी ॥ मनपवनउलटि षटचक्रमेंसमाया चक्र
जोडुतीरा सब्दमें कहै मेरडंड दसवेंद्वार पवन चक्रांफेरि
पछिंमध्ररक मिदसवेंद्वारे चढावें सरस्वास गगनदसवांद्वार ग
रजिधुनि सोई अनाहद ॥ २॥ ४॥ पद ॥ मनरेमनहीउलटिसमा
नां गुरपरसाद अकलिभई तोकूं नांतरथा बेगांनां टेक नैरैथै
हरिहरि थैनीरा जिनि जैसा करि जांनां अवलो तीकाचवू
तरीडै जिनिपीयातिनमांनां २ उलटेपवनषटचक्रबेधे
सुनिसुरतिलैलागी अमरनमरैमरैनहीजीवै ताहिषोजि
बैरागी ३ अनभैकथाकवनसूंकहीए है कोई चतुरबबे
की कहै कबीरगुरदीया पलीता सो फल बिरलै देषी ॥ ४॥
५॥ अर्थ ॥ मनउलटिपरममनसूंमिल्या टेक नैरैथै हरिबि
नप्रीति दूरिथैनैरै हिरदैप्रीतिरूप अवलोतीइडीबलौ
डाकं चीदसा २ पवनसासषटचक्र पांचइंडी सुगमनबे
ध्यासुमरणमेंएकनक्रोसहजसुनिउदरहित बैरागीअ
णरागी बाजीसूरागनही अमरकदेमरैनहीताहिषोजि
बैरागी बिनांराग ३ अनभैनैरहतकथापलीतागुरसब
द फल ब्रह्मजोति ॥ ४॥ ५॥ पद ॥ यहितत रांमजपकुरेप्रां
णी बूझौ अकथकहांणी हरिकरिभावहोइ जाका परिज
गतरैंणि बिहांणी टेक डांइन्यडारे सुनहाडोरै सिंघरहैबन
घेरै पंचकुटंब मिलिझूझन लागे बाजतसबदसंघेरै २
रोहैमृघससाबनघेरै पारधी बांणनमेलै साइरजरैसक
लबनदाझै मछ अहेरा षेलै ३ सोईपंडितसोईतत
ज्ञा यापदहि बिचारै कहै कबीरसोई गुरमेरा आप
तिरै मोहि तारै ॥ ५॥ ६॥ अर्थ ॥ यहितत यसि जांनिजपोअ
कहांणी अकथकथा परमेस्वरकी हरिकरिभावहरि
कीकृपा जागतरैंणि चेतन्य आरबलटेक डांइनमाया
डारे छाडै सुनहासंसा डोरैबसिकरै सिंघग्यांनबनका
पांचकुटंब पांचइंडी ग्यांनवंतहुई झूझे ब्रह्मदिसा
बाजेसबदगुरका घेरै समेटै बसिकरै रोहैरोकैमृघम
नसासससबदजीवनीकहीए बनबिकारपारधी
नकालकरै साइरसरीरजलैब्रह्मअगनिसूं २ बनबि
कारदाझै मछमनअहेरासिकारसबदसूंषेलाकरै ३
बिचारैयामेंकह्यासोकरणीकरै ॥ ५॥ ६॥ पद अवधू

नलनहरिधुनिमांडीसबद अतीतअनाहदरातायहि
छिघ्रितिष्टांमांडी।टेकबनकेसुसेसमदथरकीय।मछाबसेपद
डीसुद्धपीवैब्राम्हनमतिवाला।फलसागा।बिनबाडी।२षाड
बुणकोनामैंबैठीनैषूंटामेंगाडी।तांणोबांणोपडीअनवासी
सूतकहैबुणगाढी।१कहैकबीरसुणौरेसंतो।अगमग्यांनपद
मांही।गुरपरसादिसूईकेनाकेहसीआवैजादी।।३।।७।।अथ
अवधूकहीएआधूतअणघग्यांमनपैनवगावै।हंस्यांपैनव
गावैग्यांनकीलहरिध्यांनसोईधुनिलहरिकहीऐछका मांडी।
हरैदेसबदअतीतगरीबीलीयै।हजाअतीतबचनरहितबू
ल्हअनाहदहदरहितब्रम्हतासूंरातांजनचूं।तिसनांहरिक
रीटेकबनबिकाररसासबिहदसमदब्रम्हमछमन।पहाडीप
रमेस्वारसुघडडीपीवैरांमरसबांननब्रम्हमांहिलानसोमन।फ
लरसमनबाडीकायाबिनां।२षाडकायाकोलीप्रांण।प्रांणअ
स्थांनब्रम्हसूबणावैसोईकहीऐबुणैंनैब्रम्हनावषूंटामन
जगतसेमनसातांणोपरमेस्वरसूंबांणौअनवासीआत्मासूतसु
रतिकहैपरमेस्वरसूंगाढीप्रीतिबणावै।२।अगमकंडाग्यांनया
पदमांहीसूईसुरतिअरहनगतिहसीमन।।३।।७।।पद।।हरिवि
षारेबडेपकाएजिनिजारेतिनषाएग्यांनअचेतफिरैनरलोई
ताथैजनमिजनमिडहकाएटेकधौलमदलीयाबैलरबाबी
कउवातालबजावैपहरिचोलनागाथैनाचैभैसानिरतिक
रावै।सिंघबैठापांनकतरैघूसगिलोराल्यावैउंदरीबपुरीमं
गलगावैकछूएकअनंदसबदसुनावै।२कहैकबीरसुनहुरे
संतोगडरीपरबतषावा।चकवाबैसिअंगारेनिगलैसमंदअ
कासोधावा।।३।।८।।अर्थ।।बडे.बिकारषारेबिषरूपहैपका
एपरमेसुरकरिधरेहैंजारेकहीएजिन्यग्यांनअगनिकरिजारे।।
निहकांमकीएतिनषाएतिनबिकारजीतेऔरअचेतनरस
बबिका रूषाएडहकाएवगोटेकधौलगजलमनसोईमाद
लबैलबपकनुवामनहजाबिरहतालब्रम्हबांणीचोल
नांचितगादहग्यांनीमनमनचितएकमतैसोईपलस्या ना
चैपरमेस्वरआगैभैंसाभलानावनिरतिनिरणौं२भैसिंघग्यां
नपांनपरकीरतिघूंसबुधिघटमैंगिलौरागग्यांनकथाउंदरी
आत्मामंगलनजनआंनंदनिचिंतकथ्या।१पाडरग्यांन
परबतपाप।चकवाचितअंगारेक्रसबदजरैहजेअंगा
रेहडीसबदमनआकासकंचीदसा।।३।।८।।पद।।चरषाजि

मुनिकौनेस्तौगगनमंडलसिरमोर।दोऊंकुलहमआगरी
जौहमफूलहिंहिंडोर।उर्ध्वअरधकीगंगाजमुनामूलकं
वलकोघाटषटचक्रकीगागरी।त्रिवेणीसंगमबाट४ना
दबिंदकीनावडीरामनामकनिहार।कहैकबीरगुणगाइ
लैगुणभिनुतरौपार।।५।।२१।।अर्थ।।प्रेमनगतिसोईहिंडो
लना।टेककंचंदसूरमनपवनबंकनालिसुरतिसोईडोरी।पंच
पियारीपंचेंद्री।१ हंसबारहआंगुलबाइदुवेस्वासज
हांतेसोहिरदा।अंतराकहीए।तिसमांहेअमृतनाम२ सहज
सुनिब्रह्मअस्थानाइंदरहितसोईहिरदानेदहैपीसूतासूने
हगगनमंडलआस्मकंवलमोस्नावनगतिदोऊंकुलतो।
कपरलोकआगरीअधिकाराइजादोऊंपषतिनतेंआगेउ
अधउरधउवतीबेवतीबाणीवाहीगंगाजमुनामूलकंव
लब्रह्मअस्थानसोईहिरदाषटचक्रपांचइंद्रीअवामन
सोईगगारिइनकीनावबाणीत्रिवेणीमनपवनसुरतिसंग
मिलापबाट४नादसबदअरुबिंदतिनकीनावसोईकाय
रामनामषेवेकिणिहारकहीएमलाहसोनाम।।५।।२१।।पद।।
कोबीनेप्रेमलागोरीमाईकोबीनेरामरसोइनमातेरीमाईके
बीने।टेकपाईपाईतूंपुतिहाईपाईकीतुरीयाबेचिबाईरी
माईकोबीने।१ ऐसेपाईपरबिथुराईत्यूंरसआनिबनायौ
रीमाईकोबीने।२नाचेतानानाचेबानानानाचेकूचपुराना
रीमाईकोबीने।३करगहिबैठिकबीरानाचेचूहेकाटयातां
नारीमाईकोबीने।।४।।२२।।अर्थ।।कबीरजीकहैहेकोबीने
कोणाबुणीबुणानाकहीएमायाबुणाव।छोड्याप्रेमलागोपर
मेस्वरसूंयूंछोड्या।टेकपाईपाईमेंजाणीजाणीमायापुतिह
ईकहीएअपणीपुत्रपाणीमायासापणीसबडसेकनककाम
मणीहोइतुरीयातीनगुणबेचियात्यागिनामलीया।ऐसेक
हीएअबकेजानी।परिबिथुराइपरेहरिछाडी।सूरकहीए
ध्यांनगोबिंदसूंलागा।तातेमायासूंबोणोनाहीं२परमेस्वर
आगेनाचेबनायापरमेसरसूंबनावतहांनाचे।कूचपुरा
नोकामनिबलापड्यासोनाचे।३करगहिकहीएकबीरजी
सबसोंजहांथिकरीबसिकरीनाचेपरमेस्वरआगे।चूहाचि
रासीगुण।।४।।२२।।पद।।मैंबुनिकरिसिरानाहो
नेकरमनहीजबरे।टेकदिषणछूटजबसुनहा
ब्रह्मसुगनबिचारा।लरकेपरकेसबजागतहैं।

हीतरवब्याईपकडिविलाईमुरगेषाईश२वैलदिडारिगं
निघरिआईक्रिताकूंलैगईविलाईतलिकरिसाषाक
परिमूलबकुतनासि जडलागेफूलध कदैकबीरया
पदकूबकोताकूतीन्यूं भिनवनसूभै॥५॥२५॥अर्थ॥सिं
घग्यांनगाइमनसा सहितइहीटेकपूतग्यांनसुषमाया
पांछेपडी चेला चितमनतजनचितमनवसिकीया२
जनमायामछीमनसातरवरबृक्षविलाइकुमतिषु
रगाग्यांनीमन२वैलवपअस्थानछोड्या गूंनिगुणघर

[illegible]

बेभूलम्ख्मीकापांवइडीछाडामनाकपरिहीडीकवी
हिसाबांथिराषी१ परहिडाप्राणअस्थानाछारेनोरोको
बिषैतैपूतग्यांनघरविरचामैंल्याबो जेवीधीइकमति
सासरैसैसारमैंल्यागिदेकु१लकुराधायसुबधिकुलगो
टेकमइरिकियातबडिगपरमेसरकनैवैवा किलिकिरि
चौरासीकाकलेसकरमचूका॥२॥२६॥पद॥आपनेबिच
रअसवारीकीजैमदजकोपाइडेपावजबदीजैटेकदेमकु
रालगामपवरीकुंपसिकलीजीनगगनदौरांकां२चलिवे
कूंवतोदिलेतांस्वथकदितप्रेमकेताजिनैमारूं१जन
कबीरश्रैसाअसवारा वेदकतेवदकुतेंन्यारा॥२७॥
अर्थ॥अपनेविचारअपनीआत्मांउपजनिकोविचा

रताकार गुणाकप्र असवारीकरसहजकहीरहुदर
लाल पाइडोसो पवंगो पावदीजैत हान हचे रोषे टेकलगाम
लैग कुरामुष राम नाम सिकली जीनसकेरि काया करिमम
नकों चीवसा ब्रह्म वोरदों रोंकूं मन घोराकूं १ वेकूंवसा असंम
मनकूं प्रांणा कहै यों ऐसा असवार साध सो बेद कतेब है पष तैं
आगै २॥ १॥ पद॥ अपने मैं रंग अपनपो जांनूं जिहि रंग जांणि
न ताहीकूं मानूं टेक॥ अंतिर अंतरि मन रंग समांना लोग कहै
कबीर बोरांनां १ रंग न जांनैं मूरिष लोई जिहि रंगि रंगि रह्या सब
कोई २ जो रंग कबहूं आवै न जाई कहै कबीर तिहि रह्यो
समाई ३॥ १८॥ अर्थ॥ अपनै रंग परमेसर ताको रंग लागो
तब अपनपो आपनी आत्मां पिछांनी सब घटि अंतरि तिस रं
गकूं जांनूं उसहीकूं मांनूं टेक॥ अंतरि अंतरि अपने अंतरि
तिस रंग मन राता सो रंग परमेसर मूरष नर न जांणै २ सो रंग
आवै न जाई मरै न जीवै ता रंग मैं कबीरजी समाइ रहे॥ ३॥ १
८॥ पद॥ झगरा एक नबेरो राम जे तुम्ह अपने जन सूं काम
टेक॥ ब्रह्मा बडा कि जिनि रूप पाया बेद बडा कि जहां थैं
आया॥ १ यहु मन बडा कि जहां मन मांनै राम बडा कि राम
हि जांनैं २ कहै कबीर हूं षरा उदास तीरथ बडे कि हरि के
दास॥ ३॥ १९॥ अर्थ॥ ब्रह्मा मुषि बेद तो ब्रह्मा बडा कि बे
द बडा॥ कि जहां उपनां सो वेद बडा॥ यहु मन कि मनरत सो
वो बडो राम बडा कि राम जांननहार बडा टेक तीर्थ बडे
कि दास॥ १॥ उतर॥ ब्रह्मा ते उपावनहार बडा॥ जिनि ब्रह्मा
पाया बेद ते ब्रह्मा बडा ता ते बेद उपज्या सो उपावनहार सा
धके हिरदै समाया ता ते साध बडा मन सबका ब्रह्म साध दे
षि मांनै ता ते साध बडा जांननहार साध बडा॥ [illegible] का साध
ना दरसन पुनि तीरथ अनूं तेणु साधवा कोटि कालेफल तीर
थे। सिध साध समागमं १ असमेधि जिग्य कीयां कोटि तीरथ
के न्हायें होता तत फल पृथीना धु साध के दरसन पायें १ पृथी
ना थ जिनि अपनां मन बसि कीया ता समि बडा न कोइ अ
वसठि तीरथ कोटि जिगि ताके दरसन ही फल होइ॥ ३॥
१९॥ पद॥ मैं डोरे डोरै जांऊंगा तो मैं बहुरि न भौज
ग आऊंगा टेक॥ सूत बहुत कछू थोरा ताथैं लाइ लै कंथा डोरा
थाडोरा लागा तब जुरा मरण लव लागा १ तहां सू
सन पूनी तहां बसै एक मूंनी उस मूंनी सूं चित लाके गा

तौमैंबकुरिनीजलिश्रांकंगा॥२मेरडंडइकथाजा।तहां
बसैइकराजा।तिसराजासूंचितलाकंगा।तौमैबकुरिनवृ
जलिश्रांकंगा॥३जहांबकुहीराघनमोती।तहांततलाइले
जोती।तिसजोतिदिजोतिमिलांकंगा।तौमैंबकुरिनवृज
लिश्रांकंगा॥४जहांकोसूरनचंदा।तहांदेष्या।केश्रनंदा
भसश्रानंदसूंचितलाकंगा।तौमैबकुरिनीजलिश्रांकंगा
५मूलबंधोकपावा।तहांसिधगोसरावा।तिसमूलहिमू
लमिलांकंगा।तौमैंबकुरिनवृजलिश्रांकंगा॥६कबीरा
तालबतोरा।तहांगोपिहीगुरमोरा।तहांहेतहरीचितल
कंगा।तौमैंबहौरिनीजलिश्रांकंगा॥७॥२०॥श्रथ॥डोरा
नांवकीडोरी।नीजलिसंसारतामैबकुरिनश्रांकंगा।टेक
सतमासबकुतकछूधोरा।कहीरानिपटथोरा।मिएश्रोस्वा
ससोईडोराकेथाकायामैंथिरकभिनजनकरिहै।२सूत
स्वासनहीकपासकायानहीमूनीपरकोरतिनहीतहांकस
जलनहीमूनीगोबिंद२मेरमायाडंडजीतिकरिश्रागेथाय
ब्रह्मश्रस्थानराजापरमेसरताकाध्यांन३बकुहीरामोतीक
हीएब्रह्मप्रकासतेजइजाहीरासाधमोतीमनततश्राम
जोतिजगदीसजोतिदिजोतिश्रात्मापरमात्मा।एक४चंद
सूरतातासीलाउदैनही।श्रानंदश्राप।सबकोमूलपरमेर
बंधेजनहीसबका।इजाबेदध्यानलागा।सिधगोसरगोरी
बेदाइजासिधाकाश्ररूगोसरकाराबगोबिंदामूलपरमे
सरतासूंमनमूलमिल्या॥७॥२०॥पद॥संतोक्षगातस्या।
गनबिनमिगया।सबदजुकहांसमाइरैसैसामोहिमसदिन
ब्यापैकोईनकहैसमझाइटेकनहीब्रह्मंडपिंडपुनिनाही
पंचततनीनांही।इला।पिंगुलासुषमननांही।एगुणकहांसमां
ही२नहीगहदारकछूनहीतहीयांरचनहारपुनिनांहीजो
वनहारश्रतीतसदासंगिगंगुनतहांसमांही२तूटेबंधैबधैपु
निटूटैजबतबहोइबिनासा।तबकोठाकुरश्रबकोसेवग
कोकाकैबिसवासा२कहैकबीरयहुगगननबिनसैजोध
गाउनमांना।सीषेंसुनैपढैंकाहोइजोनहीपदहिसमांना॥४
२१॥श्रर्थ॥क्षगास्वासगगनघटफूटासबदबोलएहार
कहांसमायोयहसंसाटेकब्रह्मंडमैंनहीदीसै।पिंडमैंनही
दीसैपांचततमैंनीनांहीदीसैइलामनपिंगुलापवनसुषम
नासुरतितीनांहीसोकहांगया।२गहमैंनांहीरचनहारब्रह्म

न जांने जो व्रन त्तार परमेसर ता कै आसिरै ह्वै आती
साधि गुरा पांच तत अतिनसमैं लीन। १॥ टे बेधे न पजे बि
नसै तो को इ यौ नै हृद्वंदगी बिनासह्वै
सत्ता गा २। गगन घट न त्रिन मैं जे ख्यासद्यास तन मनिरंतर गो
बिंदसूं पद परमेसर॥ ४॥ १॥ पद॥ ता मन कूं षोजो रे भाई
तन छूटै मन कहां समाई टेक सनक सनंदन जै देव नांमां॥
भगति करी मन उन न जांनां १ सिव बिरंचि नारद मुनि ग्यं
नी मन की गति उन न जांनी॥ २॥ ध्रू प्रहलाद बभीषण सेषा
तन भीतरि मन उन न देषा ३ ता मन का कोई जांनै भेव रंचि
क लीन भये सुषदेव ४ गोरष भरथरी गोपी चंदा ता मन सूं
मिलि करै आनंदा ५ अकल निरंजन सकल सरीरा ता मन सूं
मिलि रह्या कबीरा॥ ६॥ २१॥ अर्थ॥ ता मन कौ मन परमेसर
षोजो तन छूटा तन छूटै बिन षोज्यां बिन परचै कहां बिल
जो गे टेक दरी या व्रदि सटांत समंझि लैनां॥ कोक नारे बैठे पी
हे को घूंटा को ग लसरे को कमर को ई अथाह मैं जा इ डूलै
पावै तैसे कबीर जी आतिक चे अस्थान बोलै है॥ १॥ २२॥ प
द॥ भाई रे बिरलै दोस्त कबीर के यहु तत बार बार का सूं क
हीये भांनण घड़ण संवारण संम्रथ ज्यूं राषै त्यूं रहीये टेक
आलम दुनी सबै फिरि षोजी हरि बिनि सकल अयांनां छ
ह दरसन छिनवै पाषंड आकल किन हू न जांनां १ जप तप
संजम पूजा अरचा जोतिग जग बौरांनां कागद लिषि लि
षि जगत भुलांनां मन ही मन न समांनां २ कहै कबीर जोगी
अरु जंगम ए सब झूठी आसा गुर प्रसाद रटो चात्रिग ज्यूं
न हचै भगति निवासा॥ ३॥ २२॥ अर्थ॥ बिरलै दोस्त साध
ताग्यांन के ज्ञांन नन्दार के आगे गया के पीछे आवे गा तो ज्यूं
रषा इटेक आलम दुनी या षोजी छ दरसन षोज्या छिनवै
पाषंड षोज्या ऐसब पषा पषी अभिमांन मैं लागि रहै आ ज
ल परमेसर अकल रहत तिस कूं न जांनै आलम तुरक कहै
है बडे दुनीयां दीइ कहै हैं म बडे छह दरसन कहै ऐ जोगी
जंगम सेवड़े बौध सिन्यासी सेष सब आप आप छिकी कहै
अभिमान त्ते १ जप तप संजम पूजा अरचा ऐते जो नन्दार
परमेसर सूं प्रीति न बांधी जोगी जंगम सेष भरे सा झूठ प्रीति
सूं रटै सो पावै॥ ३॥ २२॥ पद॥ किते ऐक सिव से कर गये कवि
रामसमाधि अजहूं न ही छूटि टेक परलै काल कहूं किते

एकनाथ गोइंद्रसे आगि एत लाष२ब्रह्मा षोजिप सोगि
नाल कहै कबीर वैराम निराल॥१॥१४॥अर्थ॥संकर ध्यान
रिधीकैसे गये ब्रह्म समाधि न षुली सो अटल है टेक परले
कालमें आगि एत न पाया इंद्र के रहो द्रगये २ ब्रह्मा के व
नालका षोज न पाया १ मिसा राम सब से न्यारा॥१॥२४॥पद॥
अविसचित भोमाधो सो सब मांहि समां नां ता हित्ता इजे
नत जत हैं ते सब नरमिन्न लांनां टेक ईसकहे मैं ध्यान न
नूं इरल न निज पद प मो ही २ चक करूं गा ला र सांके सो नांव
धलकूं तो हीर कहो धूं सबदक हा थे आवे अरु फिर कहां स
माई सबद अतीत का मरम न जांने न्नरमिन्न लीङ्गलीयां
२ पिंड मुक्ति कहा लै की जे जो पद मुक्ति न होई पिंड मुक
कहैत हैं मुनिजन सबद अतीत था सो ईश्परगट गुपत
पत पुनि परगट सो कत रहै लु काई कबीर परमानंद मनायो
अकथ कथ्यो नहीं जाई॥४॥२५॥अरथ॥अचिंत कहा ये नि
हचिंत होइ माया चित्त व निद्धा डि चित ईयो माधो माया धर
हार इजाश्च चिंत कहा ये मन सूं अचित होइ सब चिंत मिट
जाई ती जे अचिंत कहा ये निर्फल चित्त वन सब परमेसर वि
नां चिंत एत चिंता या ही जो माधो चिंत सो परमेसर सब वीरहै
टेक सर्व ओंकार अवगति ते उतपति ता करि सबद पसारा
फिर तिसी में सब लीन सबद अतीत परमेसर जांने न्नरमिन्न
ले पसारे में आंन से वा में इजा स्वास ना नी ते क वेत हान षोजे
पथर पांणी ने षन्न रो सेन्न लै पिंड मुकति ने ष आसरा देह मुक
ति किस कांम पद मुकति बिनां इजा पिंड मुकति कहत हैं
मुनिजन मुनिजन जीवत मुकति तिस कूं कहैं जो सबद अ
तीत कहा ये गुण अतीत होइ तिस का ने षपद रूप्या परवा
२ परगट गुपत थावर जंगम जल थल व्यापक सो कबीर
जी मनायो है॥२॥२५॥पद॥ सो कछू विचार हू पंडित लोई
जा कै रूप न रेष बरण नहीं कोई टेक उपजे पिंड प्रांण कहां
थें आवे मूवा जीव जाइ कहां समावे २ इंद्री कहां करि है बिस
रांमा सो कत गया जु कहता रांमा २ पांच तत तहां सबद न स्वा
अलेष निरंजन विद्या न बादं ३ कहै कबीर मन मन ही समानां
तब आगम निगम झूठ करि जांनां॥४॥२६॥अर्थ॥पंडितो वि
चारो आत्मां कौंण बरण टेक पिंड कहां ते उपज्या प्रांण कहां
आया इंद्री मूंहां पांहों कहां रा सियो प्रांण कहां गया २ पांच

ततन्हीसब्बदनस्वादं निरंजन॥
बरणाआसरम तेरहतछे २ मन परमं मन परमेसर मैं समाया
तब बरणा अ आंम रूव जांनैं॥२॥२६॥ पद॥ जोपैं बीज रूप
जगवांनां तो पंडित का कथि सिगियां नां टेक न हीतन हीम
न नहीं अंहंकार नहीं सतरज तम ती नि परकार २ बिष अमृत
फल फले अनेक बेद अरु बोध कहैं तरोक २ कहै कबीर इ
हमन मांन कहि धूं छूटिकर न तरकांन॥२॥२७॥ अरथ॥ तौ
पंडित कहा कहै टेक तन नहीं मन नहीं अहंकार नहीं सतरज
तमती निगुण नहीं ब्रह्म बिषै २ जे बिष अमृत तर आपही
बेद बोध कहै है तौ परमो थरूव १ जल ज्यो तौ ब्रह्म सुल ज्यौ
तो ब्रह्म जाति बरण रूव॥२॥२७॥ पद॥ कौन मरै कौन जन्मै
आई सरग नरक कौनें गति पाई टेक पांच तत अबगत तैं उपन
एकैं कीया निवासा बिछुरे तत फिरि सहज समानै रेष रही न
ही आसा २ जल मैं कुंभ कुंभ मैं जल है बाहरि भीतरि पांणी फू
टा कुंभ जल जल ही समांनां यहु तत कथ्यो गियांनी २ आदि ग
गनां अंते गगनां मधे गगनां भाई कहै कबीर करम किस लागै
झूठी संक उपाई॥२॥२८॥ अरथ॥ मरण जीवण रूव सरग न
क रूव जहां आसा तहां बासा माया का माया मैं ब्रह्म का ब्रह्म
मैं टेक पांच तत का घट रोक चेतनि प्रांण निवास कीया बिछुरे
तत कही ए तहां की तासीर तै निरबासी कहूवा सहज सुरत
न ब्रह्म मैं तब रेष सहनांणी नहीं जल ब्रह्म कुंभ घट कुंभ
के जल कूं कुंभ ही पटल आत्मां परमात्मां बीचि घट पटल
फूटा कुंभ कही ए निरबासी कहूवा तब आत्मां परमात्मां
एका जूं कुंभ फूटा जल एक २ आदि गगनां आदि ब्रह्म अंति
ब्रह्म मधि ब्रह्म घट मठ बिनस्यां गगन परचै करम नहीं तैं
सैं ब्रह्म परचै करम नहीं॥२॥२८॥ पद॥ मैं सब दिन मैं औरन मैं
हूं सब मेरी बिलगि बिलगि बिलगाई हो कोई कहौ कबीर कै
ई कहौ रांमराई हो टेक नां हम बार बूढ नांही हम नां हम
रै चिलकाई हो पठरो न ही जांऊं अरवा हम नहीं आंऊं सहज
उर हूं हरि आई हो २ वोढन हमारै एक पछेवरा लोक बोलैं
इकताई हो जुलहै तनि बुनि पांन न पावल फारि बुनी द
स ठाईं हो २ त्रिगुण रहित फल रमि हम राषल तब हमारो
नांम रांमराई हो जग मैं देषूं जग न देषै मोहि यहि कबीर कछू
पाई हो॥२॥२९॥ अरथ॥ मैं सब मैं यूं जो सब घट मेरा सरू

पदेषत हूं औरन हूं मैं सब अूरन दीसै सब मैं नहीं यूं जे
निरमोह सब तै सःब तै न्यारो मेरी बिलग बिलग भेरी अूट
कअूट कथी बिलग कहै ते नावे बुरी कहो मे मेरी गई आप
नहीं तब कबीर राम एक हूवा टेक बारा बाल नहीं बूडे न
ही चित काई हो माया नावेतरनापा कहो प्यन के गुण नहैं
पवयान जां ऊं करमां का नेज्यान जां ऊं अकवा आ ऊंन है
संसार मै देह धरि सहू जिउ दर हित हरि आई हरि की गति अ
ई।१।ष्वेहटण आसिरा पहेवरा परमेसर का त्नो कबीरनै अजा
नाई तब लोक अअूंतारो साषी।दास जब तै हम निरपष
होस बे स्सारे लोका सतगुर के परसाद सैं मै रेहर षन सो का॥१
तिन संसार तैं तौ निसुरति सहित सब सौ जाबु नि परमेसर सूं
बनाई।माया मी तिन ही प्रेम पोन ताई दस ईदी द सूं हिसा ते
फार संसार ते।डि।परमेसर मैं बुनी बुनाई त्रिगुण रहित फल
गो बिहराप्यौ हिरदै तब कबीर रो मऐका।२।४।।पद।सो है
हैसा एक समान काया के गुण आन हीं आन टेक माटी एक सक
ल संसारा बहु बिधि भांडे घडे कुम्हारा रे पांच बरण दस दुह
गाई एक हूध देषो पति आई रे कहै कबीर संसा करि दूरि त्रि
भवननाथ रह्या भरपूरि।३।५।अरथ।मोहंहंसा जीवसी
वपेक काया भिनि टेक माटी पांच तत भांडे घट।कुम्हार कर
ता रे पंच बरन गऊ हूध ऐक रंग तैसैं घट।पद।दिक अनंत स
बमें ब्रह्म ऐक।१।३।।पद।।प्यारे राम मन हीं मना कासूं कहूं क
हन कूं नाही दूसर और जना टेक ज्यूं दरपन प्रतिबिंब देषी ए अ
पड़वा सूं सोई सो मिट्यो एक कोए के महाप्रले जब होई रे जो
रिझ के सो महा कबि नहै।बिन रिझ सब षोटी कहै कबीर त र
कहो ईसा थे ता की मति है मोटी।।४।।२।।अरथ।।ग्यांन गांसम
नहीं मैं बिचारि हिजा समझौ वनो थोडा।टेक दरपण बां का
बांको सूंधै सूंधै महाप्रले कहीरे जाकी बासना मिटी परकी
रति प्रलै न ई ताकूं महाप्रले हो इ चूकी रे परमेसर अरीझ बिन
रिझाए मिलै नहीं तौ तर कहो इ पष मेरा तेरा राग दोष यन तै
न्यारो होइ ता की मति बडी ता परि रीझे परमेसर।।१।।२।।पद
बागड देस लून का घर है तहां जिनि जाहु दाझन का डर है टेक सब
जग देषूं कोई न धीरा परत धूरि सिर कहैत अबीरा।१ न तहां स
रवर न तहां पांणी न तहां सतगुर साधू बांणी।२ न तहां कोकिल
न तहां सूवा ऊंचे चढि चढि हंसा मूवा।२ देस मालवा गहर

गुडीसबलागी।पवनरा।षिमनधीरा।पांचूंलईयानऐसनमु
षा।तबयङ्कपांण।क्रीला॥४॥नाल्हीमेलापी।सिलईहैखो।वि
लईहैबारा।कहैकबीरतेलजबमेल्हा।बणतनलागी
बार॥३॥२५॥अरथ॥श्वा।स्वासपरमेसरसूंजोडिमति नाउसं
जोडि.नांवसूंसुरतिलूंटोलूंटणि।परमेसरसूंबिमुषहोइगा
अरुजमकीमारमनिषजन्मबहोरिनमिलसीटेक।सूतसुर
तिनरकीइंडाबिषेमेपांणप्रेमनहीलागोपरमेसरसूं।कूच
कोमनांनीकहीरो।सबलनबहरमुषापवनबिषैबाहतास्वास
॥१॥सुरतिसुरकीसबहारतें।गुडी।गा।ठिकमकीपवनबिषैबाइ
यांनी।पांचेंइंडीसनमुषपरमेसरसूं।तबयांनप्रेमलागी॥१॥
नाल्हीमनसोमेलामन।सोपीस्यागरीबहूवा।खांणिलईबि
चारकरितुसषोटेकामहूरिकीरो।दोइबारदोइवोइगुणहरि
कीरो।तेलततगयांनबुणांवतपरमेसरसूंबणावतांबारन
लागी॥३॥२५॥पद॥कालेकूंबटवामारीरो।बटवान्नाई
बीररेटेकमासपवाईहमपईनण।दलरांध्योसाग।जबदि
बटवाजेचरैनेहमकूंअधजसलागेरोवासनरीतेरीपांन
हीएकतबरनतरवारिरिमेरोमायो।जबहीवमक्यो।श्वा
रोबटवहिमारिरो॥१॥मटिया।बिकनिकरिकवियालेहूं॥
कवियाबिकनिकरिश्राणिसगौनईयालेहूंमलरचिहूं॥
जरिहूगौनांलागिरेच।जेतूंबटवसाकिलीरतौरांषीपांच
मारि।जन्मजूवानहीहारिबो।कहैकबीरबिचारिरे॥४॥२६
अर्थ॥बटवाप्राणमास्याब्रह्मवोडतेटेकसुरतिस्वास
पवाईपरकीरतिरोटीरटणि।मायाकीकायाकहैछेनणव
मनसासागस्वादवोसमायापांनी।पिंडरक्तकतबरनलोन
रक्तजिन्या।मटियांकायामाटी।कवीयाकरणी।श्राणिबि
हगोहनिसा।छि१पांचूंइंडीमारिगुणांतें॥३॥२६॥पद॥व
बीरासंतनदीगयोबहिरे।वाढीमाइकिराडे.टेरे।हैकोईस्य
वेगहिरेटेकबादलबांणीरामघनउनयो।बरषैअमृतध
रासषीनीरगंगनरिआई।पीवैप्राणहमारा॥१॥जहांबहिल
गेसनंकसनन्दन।रूइध्यांनधरिबैठे।सुयप्रकासआनंद
मेकमैघनकबीरकैपैठे॥२॥२७॥अरथ॥कबीरजीनद
नोवकीप्रेमप्रवाहतामैंबहेमायमाया।किराडे.संसार
कोरेटेरैछेटेकब्रह्मबांणीसोईबादलरामनांमसोईघ
जलसंतमषिनचारसोईबिरषा।अमृतधारा।अनन्नेव

री सहजि समानी। पीवै पीवन हारा। २। दोइ पुड जोडि चिग
ई नावी चुया महारस भारी। कांम क्रोध दोइ कीया बलीता
छूटि गई संसारी। ३। सुनि मंडल मैं मदला बाजै तहां मेरा
। गुरु प्रसादि परम पद पाया सहजि सुषमन काछै
पूरा। ल्या तबै सुषउपनां। तन की तपति बुझांनी। क
कबीर छौ बंधन छूटे जोति हि जोति समांनी॥४॥४०॥
अर्थ॥ अवधू आण वणा मनरुईयां पैन वगावै सो औ
धू मतिवारा रांमरस माता। उनमनि कीचा दसा मगन रांमर
सतु। त्रिनवन उजियारा। त्रिगुणी काया तामैं ब्रह्म पोन
प्रकासा। हु जासीं न नवन प्रकास टेक। उड मन सुरति स
हजि इदरा हित ब्रह्म नाव मैं पीवण हारा प्राण। १ दोइ पुड दो
ई गुण जोडि कही ऐसी सी कौ नावी नाव की मद्वार सरांमरस
संसार छलमर जाय हु जा जोग में पांन अपांन बाइ मिलाई
। १। सुनि मंडल इंद्रा हित ब्रह्म अस्थान सो ह्रिदा जोग मैं
सुनि मंडल अनसवा हार मदला अनाहद सबद मन ना चे
परमेसर आगे २ अमरफल परमेसर दरसन सुषमनां सुर
त का छैना व नगति। पूरा समा षणाया तपति त्रिसना बुझी
जोति हि जोति प्र आत्मा मैं आत्मा समाई॥४॥४०पद॥
बो ऐसा नाई रांम की डुहाई यहिं सिवसन की दिकरा तै। पीवत
न अज हूं अघाई टेक इला पिंगुला नावी कीन्ही ब्रह्म अ
गनि परजाली। ससि हर सूर द्वार दस मूंदे। लागी जोग
जुगताली २ मन मतिवाला पीवै रांमरस दूजा कछू न सुहा
ई उलटी गंग नीर बहि आया अमृत धार चुवाई २ पंच
जने सो संग करि लीन्हो चलत षुमारी लागी प्रेम पियालै
पीवन लागो सोवत नागनी जागी ३ सहजि सुनमें जिनि
रस चाष्या सत गुर तैं सुधि पाई दास कबीर यहि रस माता
कबहूं उछकि न जाई॥४॥४१॥ अर्थ॥ रांम डुहाई रांम
नांम बाणी वो ऐसी सिव सनकादि करत हूं वा अजहूं चां
हैं छै टेक मन पवन इला पिंगुला ब्रह्म अगनि करि पर
ति जारी। सिस मन पवन सूर ऐसी लाइ करि दसूं द्वार का
याके मूंदे बिषै रस तैं तब ताली समाधि गो बिंदसूं लागी
। २ गंगा बाणी उलटी ब्रह्म बेराग नीर नाव आया हिरदै अमृत
धार अषंड नाम २ पंच जने पांच इंद्री बसि करी चले ब्रह्म
दि सि षुमारी वरिसकी नागनी मनसा चेतन हुई २ सहज

सुनि उंदरहित अस्थान। नांमरसक बड़ाई लकि

२० ईक बड़ा का कंत तेरे नहीं॥थ॥४३॥पद॥रांमचरन

रे रा अ सदगुर जाकुराडके करहा प्रेमप्रीति त्यो लाए

ओब चढी अंबलीरे अबलीबं बूरचढी नगाबेली

र चढिगयो राडके करहा मन रूपाट की सेलीरे रे कंक

ईपतातनपानी यां सोनें बूंद बिकाई रे अब जूपरी थहिम

रानगरी कान्ह पियासा जाईरे ॥१॥ कद दृडीया दही जेमी

इसरी परिगई सारा रे न्यों ति जिमांझ आपनों करहा आर

तूरारे थहि बनि बांजें मदन ने रिराउ हिब निब

रे४ आसि पासि तुरसी को बिरवा पंकि हारिका गांऊं रेतव

सेरो गाऊं रामराइ हैं। भगत कबीरा नां ऊं रे॥॥७४॥ अस

राम माया करहा मनं माया बोक तत्ते बहि मूवां अनंतज

हू ऐसें प्रेमप्रीति त्यों लाइ परमेसर वार ठरो तो माया बो

बहनते छूटो टे आब आपो बेलि आत्मां आपा दिसा

फेलांहै तो लो अमली कहीरो आमि लीरे बृक्ष सूनां हीमि

लो बबूर बपचढी कहीरो देह गुण ऊपरि असवारी करी

नग बेली कुई इजा नगक हीरो बलि केतां तूं नसे आत

सोदाइ गुण राग दोष भरा ते रासो चढि गयो जीति गयो कर

हामन तब मन कठोर था सो नरम हूवा। के कर करम कूई

कबल पताल करमां सें परे पानी प्रेम नांम सो नें बूंद सिरकै

साटै वा प्रेम बूंद न पाइरो ब जू बी जली मथुरा काया सो बी

जपरीया काया परि जो कान्ह जीव प्यासा चरन्या नीर नांमन

पीया इजा बजू काल चोट बार बार नाव बिनां ऐक दड़ी

या बृक्ष नाव को ऐकता लीऐ दही दया धरम नाव नगति

शील संतोष इसरी दड़ी माया को तीया नाव लीऐ तातें

सरी कहीए दडी उबधा उरमति लोभ मोह सारी सिसटि

री तामें इजा सारी कहीए सुसनी फिरी इधबि गाड्या सुस

ली सासं वया परवेस बिगाडी आत्मां में ग्यांन नास ऐकद

डी ऐक बृक्ष सूं टेलागी तब अंतह करण जमी ति

ई निहचे बधी ऐक दड़ी इधमें थूल प्रापति आत्मां

ग्यांन प्रापति न्यों ति निढ़िगरी बलोइ करहा मन जिमां

ऊंनावननजनसूं।मुनसमायां।मनोरथछोडेसो।म्हारदई।धा।व
नदोइ।एककाया।एकब्रह्मबन आत्मा।अस्थान।मदनकोंम
काया।अस्थान।कोंमकावलअहैब्राजा।आत्मअस्थानअन
हदसबदसोईतूरा।राहीरूकमनिमाया।मनसागोबिंदराद
तेरोकैमनकूंकोंननिरंजनअहीरसंतप तुरसीपेचेततथि
रनपेछारिकाहिरदातिसमैंगाऊंरनिरंजन॥३॥४१॥पद॥१
थरनरहैचित्तथिरनरहै।चिंतामनितुम्हकारनहो।मनमेंरे
मेंफिरिआइहो।तुम्हसुनहूनउथविसरावनहो।टेकप्रेम
घटोलवाकसिकरिवांधो।बिरहवोनतहिसावूंहौं।१मह
रूमछामारिनजांने।गहरेपैठेध्याईहो।दिनएकमगरमछर
लेवैहै तबकोरापिहैबंधनजाईहौ।२महरूजांममहरहीरे
जांनेसबदनबूझैबोराहो।चारैंजाइसकलजगषायो।तोनं
ननेटिनिसहराहो।३ जोमहाराजिचाहोमहरईए।तोनाछो
एमनबोराहो।तारीलाइकैंसिषिविचारो।तबगहिनेटिनि
सहराहो।४।टिऊरीनईकोन्हकैकारणिअमित्रमिताछे
कोन्हांहो।सोपददेहूमोहिमदनमनोहर।जिहिपदहरिमें
चीन्हांहोपदासकबीरकीन्हअसगहिरा।बूझैकोईमहरा
हो।यहसंसारजातमेंदेषूं।गाडारहूंकिनिहूराहो॥६॥४२॥
मनोरथ॥चिंतामणिपरमेसरसूंलागैनहीमनमैलैमहीनम
नोरथतिनमेंफिरिफिरिआवटेकघटोलवाकहोपांचइंद्र
धेगामनमायाप्रेमसूंबंधा।मायाकोविरहसोईवानइंदन
आत्मांगवसिया।गवनकेरेमायासूंतहांतेजमजाग्या।१मह
रूजीवरसोप्रांणमछमनगहैरेगुणांमैपैठोमगरमछकाल
२सबदगुरकाषोजेनही।चारैलाइस्वादलाय।जगतषायाम
छमनतऊननेटिनिसहरादोतऊनहांथिआवैमननि
सहरानिकसिजाइषोटीदिसा।२ जोमहाराजिपरमेसरचो
होमहरयथाप्रांण।तोनाथोएमनबोराहो।तोमनवसिकरो
तालीध्यांनलाइसिसषिकायामेंषोजो।तबगहिनेटिनिस
हराहो।तबहाथिआवैनिसहरानिसरिजांणामनध।टिऊ
रीहरीबऊतपरमेसरकारणितीरथसंतसंगसोपदनगति
देहूपदासकबीरकीन्हअसगहरागहराऊंडाग्यानजीव
रोमेंसिरदारतासूंकहैमहरासंतोमेंअसटमहरमीसाधसो
महरासंसारथिरनहीरावांकदोऊंनासा॥६॥४३॥पद॥कैं
मैरामकूं ... नारी टेक।

बेलबियाइगाइनईबांकबछारा झूझैतीन्यूंसांझ॥
कडीघरिमाषीछाहिछारीमांसमपसारचील्हरषवारी१मू
साबेवटनाव बिलईया मींडकसोवैसापपहरईयार निर
तविस्यालसिंघसूंझूझै कहैकबीर कोई बिरलाबूझै॥४
४४॥ अथ॥ कैसैंकायानगरमैंनीतिराषूं चंचलपुरषमन
बिचषननारीमनसा॥टेक॥ बेलबपगुणप्रसूतिगाइअ
स्यागंयाननहीबछरा इडी झरै बिषैमैंझूझैतीनिसांझ॥
तीन्यूंगुणांमें२मकरीमायामाषीमनसाछयाछिस्वादच
हैमांसयसतपसारिचील्हिचितवनिसूंसुरति१मूसा
मनबिलाईदुरमतिमैंपैठामींडकमनसोवैअचेतसा
पसेसाजागैस्यालजीवग्यांनहीरासिंघकालबली॥२
४५॥पद॥ नाईरेचूनबिल्हूटांषाई बाघनिसंगनईसव
हिनकोषसमनन्हेदलहाई॥टेक॥सबघरिफोरिबिल्हूटां
षायो कोइनजांनैंभेवा षसमनिपूतोआंगिनिसूतोरांड
नदेईलेवा२पाडोसनिपनिनईबिरांनीमांहिकुईघरघ
लैपंचसषीमिलिमंगलगावैंयहदुषयाकूंसालै१दै
हैदीपकघरिघरिजोयामंदिरसदाअंधियाराघरघहस
बआपस्वारथबाहरिकीयापसारा२होतउजाडसबकै
ईजांनैंसबकाहूमनिभावैकहैकबीरमिलैजेसतगु
तोयहुचूनछुडावै॥४॥४५॥ अरथ॥ चूनचितकूंबिल
टाबिकारषाइगयेबाघणीमायानारीषसमजीवकूंसम
झनहीटेकसबघरफोडिसबघटफोडिबिल्हूटांबिका
रांषायाषसमजीवनिपूताग्यांनपूतबिनांआंगणअ
सघूलगुणांमेंसूताअचेतजीवरांडमनसालेलगावै
नहींनांमसूं२पाडोसनिमनसबिरांनीबसिनहीपंचस
षीपांचइंद्रीमंगलमनमताहुषीजीव१दोइदीपकम
हेआंषिसबकेमिदरहृदेअंधेराग्यांननहीघरघहरघ
रकीतासीरआपस्वारथआपणांस्वारथचाहेपसाराब
हरमुषबाहरिमनकीवृतिपसरिगई२उजाडेबिका
रसबकूंलूटेहैंअरसबकूंबिकारभावेहैंसतगुरचू
नछुडावैबिकारांसूं॥४॥४५॥पद॥ काहेरेमनदहदिसि
धावै बिषीयासंगिसंतोषनपावै॥टेक॥जहांजहांकलपै
तहांतहांबंधनारतनकौथालकीयोतैंरंधना१जोपैंसु
षपाईयतइनमांहीतौराजछाडिकितिबनकूंजांहीं

गुरउपदेसनरीलेनीरा।दरषिदरषिजलपीवैकबीर
१४ ॥२॥४॥॥अरथ॥इनरपनीयाप्रेमनामउतनन।निषा
न्हाकूपरिनीरनामनीरअधगुणतेंपरेलेजतले
लेजसेसोइछोटीगुणतेंपणिहारीआत्मानीरनां
मसेनसकेटेकउधस्योऊंधोकूपकेवलघाटन्यारीदे
हरा।पांचइंद्रीनीरनामतेनिरासचलीगुरउपदेस
नीरनांमनस्या॥१॥४॥पद॥बहुरिहमकाहेकूंआ
वेंगे।बिछुरेपांचतत्तकीरचना।तबहमरामहिपावेंगे
।१।पृथीकागुणपाणीसोष्याणीतेजमिलावहिंगे
तेजपवनमिलिपवनसबदमिलिसहजिसमाधिलगा
वहिंगे।२।जैसेबहुकंचनकेभूषनयेकहिंगालित
हिंगे।ऐसेहमलोकबेदकेबिछुरेसुनिहीमांहिसमांव
हिंगे।३।जैसेजलहितरंगतरंगनीऐसेहमदिषलाव
हिंगे।कहैकबीरस्वांमीसुषसागरहंसहिहंसमिलावहिं
गे॥५॥अरथ॥पांचतत्तकीरचनाबिछुरेकहीएतत्त
कीतासीरपरकीरत्तिजीत्याविरबासीकहूवाबहोरि
देहकाहेकूंधरेंगेरामपदपावेंगेतबइजापांचतत्तकीर
चनाकायाकायागुणजीत्यानआवेंगेजामैंज्यूंउत
पतित्यूंहीलीनाउथमेब्रह्मतेसबदअउतिपृथी॥
त्यूंहीपृथीतासीरजीत्यासबदसोजीतिउदराहित
त्यांमेसमांहिंगे।जैसेकंचनकाअनेकभूषनगाल्याएै
कसोनां।२जैसेमायाब्रह्मतैंमूलएकाभ्रमिकरिअने
कजीवसुनावमायाभ्रममिट्यालोकलाजकुलबास
नांमिट्यांआत्मांपरमात्माएक।३जैसेएकजलतैंत
रंगअनेकापवनसेजोगकरिपवनथक्याजलतरंग
दोइनहीतैसेबासनांमिट्यांजीवसीवएकाहंसजीव
परमहंसब्रह्ममिल्याएकरूपा॥२॥५॥पद॥अवधू
मधेनिगाहिबांधीनांडानेजनकरैसबदिनकाकछून
सकेआंधीटेकजोब्यावेतौदूधनदेईग्याभणिअम
तसरवेकोलीघाल्यांबीडरिचालेज्यूंघेरूंत्यूं
१ तिहिधनितेअैछापूरीपाकडि.षूंटेबांधी
मांहैंआंनदउपनांषूंटेदोऊंबाधी।१साईमाईसास
निसाईसाईघरकीनारीकहैकबीरपरमपदपाया
तोलेकुबिचारी॥२॥५२॥अरथ॥कांमधेनिमनसा

थीखिकार्तिबसिकायांहूफे।लोडा।हिरदाकंवलहजाना
चलोडा।थोंधीग्यांनटेकव्यावैबहरमुषगुणांमें।हूधरां
मनांमनहीं॥ग्यानगुणपसैरै।तनकीतासीरअंतरिजुरै
तोअंमृतरांमरससरवैकोलीस्वादयोषां।बहरमुषदोडै।थ
रिबौकसौटीषूंटै।बांधीग्यांनकैं।२॥गाडाकाया।तामेंसुषनय
षूंटैग्यांनदोकंदसेइदोइगुण।जास्या॥३॥५२॥रागरामक
ली॥पद॥जगतगुरअनहदकीगुरीबाजै।तहांदीरघनाद
ल्यौलागै।टेक॥तीअसथानअंतरिषिद्यालागगनमंडलसी
गीबाजै।तकुवांएकडकांनरचौ।हे।निरकारबरतसाजै।१॥ग
गनछिनावीसींगीकरिचूंगीकनककलसएकपावा।तकुवां
चवैमहारसअंमृतरसहीमेंरसचवावा।अबतौएकअनूप
बातभईपवनपयालामाजा।तीननवनमेंएकेजोगीकहो
कहांबसैराजा।२।बिनरजोगिप्राणांकंपरसोलमकहिकबीरर
गिरातागयकुङलीयांकाइन्तरमिजुलांनीमेंरांमरसाइनमात
था।३॥२३॥ब्रह्मअस्थांनकाचरचाकहैछौ।जगतगुरपरसे
सरविराजमांन।तहांअनहदगुणारहित।नादकीगुरीकाया
दीरघनादब्रह्माकासबदसूंबडोती।निगुणांथें।आगैतहां
ल्यौलागैजनकाटेकत्रीअस्थांनमनपवनएकत्रसोईअ
स्थांनतहांअंतरिछरमतारांम।गगनमंडलब्रह्मअस्थांन
सोहिरदा।सींगीसुरतिबाजै।डकांनडुसनावब्रह्मसूंबिण
जाअपणीसुरतिवहांल्योलागी।तहांतेप्रेमपियाजालेण
निराकारसाजवैवहांसबद।१।गगनअंतहकसणनावीनाव
कीसींगीकरिचूंगी।सुरतिकरिचुई।कनककलसआतमकंवल
अंमृतरांमरसानीझरअपंडरसमेंरसअधिकअधिकप्रीति
२।पवनपयालासासिसासिसुमिरनातीननवनत्रिकुटीका
यामेंजोगीएकपरमेसरबिराजै।तोराजारजगुणकहांपाईरो
३।बिनरजोनिभ्रांनतेरहित।हो।इएकप्रांनपतिजांन्यो।४॥२
पद॥ऐसाग्यांनबिचारिलेलेलाइलेध्यांनासुनिमंडलमें
घरकीया।जैसेरहेसंचांनां।टेक।उलटिपवनकहांराषीए।को
ईमरमबिचारै।सांधेतीरपतालकूं।फिरिगगनहिमारै।१।कंसा
नादबजाइलेधुनिनिसमिलेकंसा।कंसाफूटापंडिताधुनि
कहांनिवासा।२।पिंडपरैजावैकहांरहै।कोईमरमलषावैजीव
तिसधरिजाईए।कंधेमुषनहीआवै।३।सतगुरमिलेतोपाईए
ऐसीअकथकहांणी।कहैकबीरसंसागया।मिलेसारंगप्रां

नी॥ ३॥ १॥ अरथ॥ सुनिमंडल ब्रह्म अस्थांन दसद्वार सो
कहिला घर निरंत्र॥ सिचांनां सुरति॥ उरधकं चीदसा टेकल
ट पवन सास उलटि से सारत॥ परमेसर में राषै तीर सास पात
ल थाप मारग तैं फेरि करि गगन कं चीदसा॥ ब्रह्म अस्थांन
सो कहिवा तत्तां राषै २ कं सा काया में सबद करि नां मरटिक्यो
धुनि ध्यांन निमसले कं सा॥ निग्रह करि काया अंतर कं सा क
या फूटां धुनि नदी पछितावौ गो पंडित॥ १ पिंड परैं जीव चौ
रासी मैं परै तब कहा मिलै ब्रह्म कूं जीवता जीव सीवमैं थि
र रहै चौरासी न आवै फेरि २ अकथ कहांणी अचिरज कथ
थां॥ हजा जो गमें॥ सो थै तीर पाताल कूं॥ तीर अपांन बाई रो
कि पांन बाई सूं मिलावै॥ पांन अपांन दो कं मिलाई मेरदंड
करि गगन दसवैं द्वार चढावै॥ १॥ २॥ पद॥ है कोई संत सहज
सुष उपजै जा कूं जप तप दें क़ें दलाली॥ एक बूंद जो रिदै राम
रसा ज्यूं न रिदै इकलाली॥ टेक॥ काया कलाली लांहन करि
हूं॥ गुरु सबद गुड़ कीन्हा॥ काम क्रोध मोह मद मछर काटि
काटि कस दीन्हा॥ २॥ भवन चतुरदस भाठी पुरई ब्रह्म अगि
न परजारी॥ मूंदे मदन सहज धुनि उपजी सुषमनि पोतनहा
री॥ २॥ नीझर झरै अमीरस निकसै तिहि मदिरावल छाका कहै
कबीर यह बास बिकट अति ग्यान गुरु ले बांका॥ ३॥ २॥ अ
रथ॥ कोई ऐसा संत मिलै जा मिल्यां सहज सुष उपजै सहज
सुष दसद्वार पोंचे इंद्री न पसरे बिषे बासनां मिटि जाइ गु
णां का नास होइ ब्रह्म नाव हिरदै ता कूं सहज सुष कहीए
ता सुष के बदले जप तप दलाली मैं दीजै सो सुष सति औ
र झूठा टेक काया कलाली मद की लाहनि ले लावै २ चतुर
दस इंद्री चतुर अंतहकरण ए चवदह भवन भाठी नाव
ब्रह्म अगनि परकीरति जारी मूंदे मदन काम द्वार मूंद्या स
हज इड़ दसद्वार ब्रह्म धुनि सुषमनि सुरति प्रेम पोता करै १ नी
झर अषंड धार अमीरस रावल मन बक्या बास बिकट सूं
धीन जाइ ते जिद्दौ गुर के ग्यांन कोई सूरिवां झेलै ३ ॥ दूजा
बास कं चा अस्थांन बिकट है॥ ३॥ ३॥ पद॥ अकथ कहांणी
प्रेम की कछू कही न जाई॥ गूंगे केरी सरकरा॥ बैठे मुसका
इ टेक॥ भोमि बिनां अरु बीज बिना तरवर एक भाई अनं
त फल प्रकासीया गुर दीया बताई २ मन थिर बैसि बिचा
रीया रामहि ल्यो लाई झूठी अनभै बिस्तरी सब थोथी

ई॥१॥कहैकबीरसकलितेअलखनादा॥गुरनय॥सख॥१॥अप्र
णजांणी मिटिगई मनमन हि समाई॥२॥४॥अर्थ॥जो मि
काया काया बिन बीज बासना॥ बिन तरवर प्रांण॥ अनंत
फल गो बिंद दरसन २ रूवी अनंत परमेसर बिन जौ करण
२ मन परम मन मैं समाया॥२॥४॥पद॥ संतो सो अनंत पद ग
ही ऐ कला अतीत आदि निधि निरमल ता हंस सदा बिचार
तरही ऐ टेक॥ सो काजी जा कूं काल न ब्यापै॥ सो पंडित पद बू
झै॥ सो ब्रह्मा सो ब्रह्म बिचारै॥ सो जोगी जग सूझै॥१॥ देन ब्रह्म
सूरन हीस सि हरता की नाव न जन करि लीजै॥ काया थैं
कछू हरि बिचारै ता सगुरु मन थी जै॥२॥ जा सो जैरन का दो
सकै उतपति परलै नाहीं॥ निराकार अपंड मंडल मैं पांचूं
तत समावै॥ लोचन अछत सबै अंधियारा॥ बिन लोचन ज
ग सूझै॥ पड़दा षोलि मिलै हरि ताकूं जो या अरथ हि बूझै॥४॥ अ
दि अनंत उनेप निरमल दिष्टि न देष्या जाई॥ ज्वाला ऊबी अ
कास पर ज्यो ऊसीत अधिक समाई॥५॥ ऐक निगंध बासनां प्रगट
जग थिर है अकेला प्रांण पुरिष काया थैं बिछुरैगा षिलै कुगु
र चेला॥६॥ नागा नर मन या मन अस थिर॥ निझाने हन सोनो
घट की जोति जगत परकासा॥ माया सो कछु झीनां॥७॥ षंकना
लि जैस मिकरी राषै तो आवागवन न होई॥ कहै कबीर धुनि लि
ह रि प्रगटी सहज मिलैगा सोई॥८॥५॥ अर्थ॥ अनंत पद
नैरहित ब्रह्म पद॥ कला अतीत माया तैं रहित टेक॥ काजी
सोई जिनि काया काल नाम सेराषी॥ ब्रह्म पद बूझै सो पंडित
ब्रह्म बिचार करै सो ब्रह्मा॥ सोई जोगी घट परकास जगा देषै॥१॥
ब्रह्म के उदे अस्त नहीं सूरस सि ता तासी ला गुणान ही॥ काया
थैं हरि आकास हेत ब्रह्म बिचारै सो गुरसति॥२॥ अषंड मंड
ल ऐसा जो ब्रह्म अस थान पांचूं तत समावै ता मैं पांच तत
ता की ता सीर लीन करै जन हूं जा पांच तत बाहीतैं उतपति
षो ही समाइ लैह लोचन देह दिष्टि अंधारा बिन लोचन अं
तरध्यांनी आत्म दिष्टि देषै अरथ बूझै कहीऐ अंतरध्यान
बूझै॥४॥ आदि परमेसर अनंत अनंत ही उनेप निरमल
हे पपते निरपप दिष्टि कारवाड़ा का पार न पाईऐ हूं जा देह
दिष्टि देष्यान जाई ज्वाला ब्रह्म अगनि आकास अंतहक
रण अरूं परकीरति जा री तहिसी तत लंड दरहित स्वां ति हिरदै
समाई॥५॥ ऐक निगंध परमेसर निरबासी क. बासनां प्रगटता की

महिमां परगट। साध बिंद गावै छै। जगत रहै अकेला निरलेप प्र
ण काया के गुणां तै न्यारा होइ। तदि गुर परमेसर सरणै राषि ग्र
जाणि करि गोब्यंद हिरदै निगंध ओनेते निरबासी का परगट बास
ना अन जे जगते अकेर
ला चित राख्या थिर हु अरमन्ना मांमन थिर नया
ग्यांन का नास नया घट की जोति काया ग्यांन ते जगत न्नासै
था सो काया का हरष सोग ब्यापै था सो बुझांनां मिट्या हू जा
घट की जोति ग्यांन परकास देष्या ३ बंकनालि मुरति सम
लांव सूं धुनि ध्यांन रट लागी सहज डुंदर हिरदै ब्रह्म मैं
मन लै गा॥ ८॥ पा॥ प्र॥ जाइ पूछो गोब्यंद पढीया पंडिता ते
रा कौंण गुरू कौंण चेला आपणै रूप की आपदी जांणै अ
पै रहै अकेला टेक बांझ का पूत बाप बिण जाया बिन पां
कं तरवर चढीया अस बिन पाषर गज बिन
मांडे संग्राम जुडीया १ बीज बिन अंकूर पेड बिन तरवर
बिन साषा तरवर फलीया रूप बिन नारी पहोप
ला बिन नीरै सरवर भरीया २ देव बिन देहुरा
जा बिन पांषां भवरा बिलंबीया सूरा होइस परमपद
कीट पतंग होइ सब जरीया ३ दीपक बिन
न दीपका हदि बिन अनाहद सबद बागा चेतनां होइस
चेतिलीज्यौ कबीर हरि कै संगि लागा॥ ४॥ ६॥ अर्थ॥
झ का पूत आसा ग्यांन बाप बिन बप बिन आकार नहीं
बनां पां कं बिनां गुणां तरवर ब्रह्म अस ई दी पाषर परकी
रति नहीं॥ मन गुडीया बिन
हिस ग्यांन संग्राम मांड्या बीज
र के बीज पज णि उपजी पेड बिन धर्या गुणां सूं
रहीण। बिन साषा हडीया बिनां तरवर
नारी मनसा माया रंग नहीं पहोप बिन घट बिनां
ब्रह्म बास ना बन गति बिन नीर माया नीर बिनां हिरदा
सरोवर प्रेम जल संन्नस्या २ देव गोब्यंद छै बिन दे
न हीं प्रत्र बिन घट नहीं पूजा भाव की बिन
नहीं नौरा मन परमपद सूं बिलं
माया दीपक मैं जरै २ दीपक बिन घट बिनां जोति जग
दीस की हदि माया अनहद ब्रह्म सबद॥ ४॥ ६॥ पद
डित होइस पद हि बिचारै मूरिष नां हिन बूझै बिन हा

थनपाइन बिनकांनन बिनलोचनजगसूझै टेक बि
मुषषाइ चरनबिनचालै बिनजिभ्यागुणगावै आछै
ठौरनहीं छाडे दहदिसहीफिरिआवै २ बिनहीहाथां
लबुजावै बिनमदलुपटताला बिनहीसबदअनाह
बाजैतहांनिरततहैगोपाला १ बिनांचोलनैंबिनांक
चली बिनहीसंगसंगहोइदासकबीर औसरनलदेष
जांणै गाजनकोई ॥२॥३॥ अरथ॥ पंडितसोईतीनगुण
रहितचौथापदबूझै आत्मापरमात्मांपरचैतहांकी
देषैवहांअसथूलसोंजनहीं आकाररहितनावकी
जहैदेतहाथसूंसेवापरमेसरकी पावबिनप्रेमपा
करिचलैछै बिनश्रवनसुरतिश्रवनकरिसुनैछै बि
नलोचनअंतरिध्यानदेषैछै टेक बिनमुषअंतरगति
जन चरनबिनचेतनिचितवनिकरिचलै बिनजिभ्य
हरिदेगावैदहदिसिदसूंदिसातैंफिरिहरिदेअंतरिआ
या १ बिनतालांबूरनबांणीताल बिनमदलमनमव
बाजैछैगुणरहितअनाहदसबदबाजैनिरतिगोपाल
आगै २ बिनलोचनमांहिलीआंषिबूरनदिष्टिदेषैकं
लीकाया बिन बिनहीसंगिअस्थूलसंगि बिनांआत
परमात्म संग॥३॥८॥पद॥ अवधूजागतनीदनकीजै
लनषाइकलपनांनहीब्यापैदेहीजुरानछीजैटेक
टीगंगसमंदहीसोषैससिहरसूरगिरासैनोग्रिहदेमं
रोगीयाबेवाजलमेंबिंबप्रकासै २ डालगहांथेंमूल
सूझै मूलगहांफलपावा बंबईउलटिअपकूंला
धरणिमहारसषावा ३ बैठिगुफामेंसबजगदेष्याबा
रिकछूनसूझैउलटेधनकपारधीमास्या यहअचिरज
कोईबूझै ४ अंधघडानजलमेंडूबैसूंधासूनरनरीय
जाकूंयहजगघिनकरिचालैताप्रसादिनिसतरीया
४ अंबरबरसैधरतीभीजैयाजांणैसबकोईधरतीभ
रसै अंबरभीजैबूझैबिरलाकोई ५ गांवणहाराकदे
गावैअणबोल्यानितिगावै नटवरपेषिपेषनांपेषैअ
हदबेणिबजावै ६ कहणीरहणीनिजततजांणैयह
बअकथकहांणी धरतीउलटिआकासहिग्रासै यह
रसांकी बांणी ७ बाझपियालेअमृतसोष्या नदीनीर
राष्या कहैकबीरतेबिरलाजोगी धरनिमहारसचाष्या

टा।ा।अरथ।। ज्ञाग्यातरहै ग्यांन चेतन्य। नीदअग्यांन
कारो है। गंगा ब्रांणी उलटी ब्रह्म ओर। तब सम दुसरी
ताली रस सोषी मसि हर सूर ता ता सी ला गुण ग्रास्या। नो गढ
नो द्वार की लहरि जीती रोगी जीव। जायात ब्राजल ब्रू
की कायामें बिंब ब्रह्म प्रकास्या। १ डाल अ्यांन देव। मू
ल ब्रह्म रूप। डाल इंद्री यां स्वांद लागा। मूल मन ब
दी। मूल मन थिर कीया तब दरसन फल पाया। बंब
देह अ्रप संसा धरणि या धारणा रस नांम लीया। २ गु
द्धि रदा बाद रिब्ब्रद्धर मुषइंद्री न रमै धन कध्यांन धरि
रथी कालमा स्या रं। कुंभ घड़ा। हिरदा कंवल कुंभ तो
हि मज लमें नड्बै सूध नस्या। थिन करि देह तैं। गि
ग्यां दृसन डग्यांना कमृदे। ता प्रसादि सो तन धरि निसत
स्या अंब स्त्रत दक रणा आतमां सो जा। बरसे सरवैब
रमुष इंद्री। धरती काया नो द्वार सजल बिषे रस सू
गतिस बके है। फिरि धरती बरसे कायासों जइंद्री
रमुषतें समे टि अंतर करणा थिर कूं द्वित अंबर आ
नी जे प्रेमजल सूं या गति को संत बूझै। ४ नगा वे काया
स्यांन अन बोलणा अंतर धुनि गा वे। नट वरगो बिंद अक
थ अ चिरज कथा पै मनां जन। ऐसी कहे तैसी तो तत कूं
पावे। अकथ अचिरज कथा। धरती काया आकास
हृदकरणा आपा ग्रास्या। बिन प्याले पवन प्याला अमृत ना
मन दी नो द्वार नीर नांम धरणि तन धरि मद्दार स नांम लीया
टा। टा।पद। है कोई जगत गुरग्यांनी उलटि बेद बूझै पांनी
मैं अगनि जरै अंधरे कूं सूझै टे काक निदा डुरषाए पांच वन
वेगा। गायना हरषायो। काटि काटि अंगा बकरी बिघार
यो। हिरनि घायो चीता। काग लरफ धीयो बटेरै बाज
। २ मूसेमं जार घायो स्याल घायो स्वांना। आदि कूं आदेस क
रत कहै कबीर ग्यांना। टा।। टा।। अरथ। पांनी जल बूंद की
काया ता मे ब्रह्म अगनि प्रगटी अंधरा सो जो अंतर ग्यांनी
दिष्टि की बिषैर हित टेक द डुरि मन पांच वन वंग क दीरोतपां
चइंद्री। गाय मनसा नाहर काम बकरी बुधि। बिघारनै षा
हिरन मन चीता चित दा गमन लगर लोन बटेरा बप
ज बिघन २ मूसा मन मंजार काल। स्याल जीव स्वांन संसा
आदि परमेसर। टा।। टा।। पद। ऐसा अदभुत मेरे गुर कथ्या

भिरत्ता उनषे मूसा हस्ती सूं लडै। कोई बिरला पेषै टेक मूंस
षेवाबा बिमें लो रैसा पणि।थ ईउलटि मूसै सापणि गिली
य कु अचिरज नाई।१।चांटी परबत के षाणां सेरा ल्या चै
डै। मुरगा मिनी सूं लडै। फल पाणी दौडै। सुरही चूंषै बछत
लि बछा इधउ तो रे।३।सान वलगुनी न्या। सारहलदिम
रे।३। नीलनलु क्या बन बीजै मैं ससा सरमो रे। कहै कबीरसा
हि गुर। कह्रूं जो या पद हि बिचारो।४।।१०।। अर्थ।। उनषे अ
चेनेर सा। टेक मूसा मन बौबी काया मे पिरनया। सापणि
माया छल कीया। उलटि मूसै सापणि गिली मन माया जीत
२ चीटी मन सा परबत पाप मुरगा मन मिनकी उरम तिषे
जल बूसा जोति पाणी माया नाठी। सुरही सुरति बछा बां
इध रामरस नौलमन हूजा नौलग्यान नौल सार हलसेस
इरिकीया २ नील नयान क रूपी काल बनसंसारमें ली
न हूवा। ससा जीव सरसबद गुरका। ताकरि मोरे। बिचारे ज
या करणी करै।।३।।१०।। पद।। रामगुण बेलडी रे अवधू गो
रषनाथ जाणी नातिसरूप न छाया जाकै बिरध करै बिन
पाणी टेक बेलडीयों वे अणी पहूती गिगन पहूती सैली
सहज बेलि जब फूलण लागी डाली कूंपल मेल्ही। २ मन
कुंजर जाइ बाडी बिलंब्यो सतगुर बाही बेली। पंचसषी
मिलि पवन पयंप्यो बाडी पाणी मेल्ही।२ काटत बेली कूं
पमेली सीचत डी कुमलाणी। कहै कबीर ते बिरला जोगी
सहज निरंतरि जाणी।।३।।११।। अर्थ।। आत्मबेलि तामें रा
म जाणन का ध्यान सो ई गुण ताकी महिमा गोरषनाथ जा
णी रूप माया के रंग सु नाव नहीं छाया माया बलन हीं बि
धि नाव नगति बधे पानी माया जल बिना। टेक। दोइ अ
मन पवन सुरति लब गगन ब्रह्म अस्थान सेल नर्षइजा
सैली साध संग सहज बेलि उदर हित आत्म फूलना बन
गति सो ई डाली कूंपल रे मन कुंजर बाडी काया में घिरन
या बेलि आत्मा गुर रोपी पांचसषी पांचे इंद्री पवन स्वासि
स्वासि सुमिरण करि २ काया बाडी सीची। काटत कमी तेक
ी तब कूंपल कोमल नावत पज्या माया जल सीचत सू
कै सहजि निरंतरि उदास हित अपणी अंतरि जांणी।।३।।१२ प
द।। राजा राम कवन रंगै जैसे परमल पहुप संगै टेक पंचतत
लि कीन्ह बंधांन चौरासी लष जीं समांन बेगर बेगर राषिले

नाव तासैं कीन्हे आपकूं वांवा १ जैसें अंजन पाव क[illegible]ा बसेष
यहन नमान कीयाप्रवेस १ कह्यो चाहूं कछू कह्यौ न जाइ ज
लजीव जल है न ही बिगराइ २ सकल आत्मा बरते जेष्ठल
वलन करिसब चीन्ह बसै ४ चीन्हि यत चीन्हि यत चीन्हि लसे
ति है चीन्हि यल धूका करके ५ आपा परसब एकसमान तब
मया याएद निरबांन पक हे कबीर मनि लया संतोष मिले नाग
वेत गया दुबदोष ।।१।।अंगी।। जैसें पहोप मैं बास तैसें सब
मैं रमता राजा राम टेक पंच तत प्रथी अप तेज बाइ आकास
ताकरिकै पिंड ब्रह्मंड रच्यो चौरासी लष जीवा जूंनि तामैं आ
प बिराजमान छै १ अंजन कहांरो घट लु घदीरघ सब जैसें घ
ट मैं दीपक धर्यो तैसो ही प्रकास भयो २ कह्यो चाहूं बरणे
चाहूं अबरणा है बरणो न जाइ जल का जीव जल सूं न्यारा न
ही जल बिना और नही तैसें ब्रह्म बिना और नही ३ अकल
आत्मा मैं बरतरह्यो है लष कहा जु बिचार करिकै बलसा
धन करिकै परमेसर मैं बास करो ४ बारबार चीन्हल्यो बिना
चीन्हां आगै कहा करोगे ४ आपणी पराई आत्मां एक करि जा
णी तब ब्रह्म निरबाण पदकूं प्राप्ति भयो ५ कबीर जी कहत
है हमारे मन मैं संतोष भयो परमेसर मिले तासूं जन्म मरण के
दुष मेटे अंतहकरण की बेरता गई ।।६।।१।।पद।। अब मैं ज
णी बौरा केवलराइ की कहांणी मंझे जोति राम प्रकासे गुरग
म आगमी बांणी टेक तरवरो का अनंत मूरति सुरता ले छूपि
आंणी सापा पेड फूल फल नाही ताकी अंमृत बांणी १ पहो
प बास भौरा एकरा ता बारा ले उरधरीया सो लहमंझे पवन
रूको ले आकासे फल फलीया २ सहज समाधि बिरष यहु
सी च्या धरती जल न हरसो ष्या कहै कबीर तास मैं चेला जिनि
यहु तरवर पेष्या ।।३।।२।।अंगी।। अब हम केवलराइ निरंज
न देव ताकी कहांणी सो आणे नेक था सो हम जांणी मंझे दि
ला मांहि जोति जगदीस ताको प्रकास गुरगम तैं गुरू कृपा तैं अ
गम बांणी ब्रह्म बांणी टेक तरवर ब्रह्म अनंत मूरति सो अनंत
यहा सुरता साधसब मैं पिछांणी ले पेड धर्या गुण नही फू
लनांनही फल पाप पुनि दोनही अंमृत अनाहद बांणी १ प
हुप आत्मां कंवल तामैं ब्रह्म बास नाम ह्वै किरही भौराम
न बारह कला उरधर्या पवन अजन मैं हजा बारह
ष जाता अंतर मुषधर्या २ सो लहै मंझे सो लहै कला मन की

पवनझिकोलैसासिसासिसुमिरणकरिसुधकरीआकास
ऊंचीदसात्र्प्रात्मांफलदरसनउसदिजिसुनाइछ्दरहित
[illegible]

कीरतिनहीअष्टगगनपांचततलीनिगुणकीकायागगनअ
मकंवलव्यागाअनहदसबदरेपगाविनगुणरहितनिरति
नावकंरिहाथविनअनहदबाजाजिन्याविनअंतरधुनि
गावणहारारूपरहित२जैसेपंषाषोजअदिष्टिमीनमारगा
गोपितैसेब्रह्मविचारअकथअपरंपारनहीपारजाकाअ
सोअतनिपुरिसपरमेसरासोपरसोमजाकीबलिहारी३॥२
[illegible]

थानमानी२सऊजहसकातैसकलसुषणतोदेषमाथनस
बहारोकेहैकवीरअगमपुरपायाप्रगटपुरातनजोरे॥३॥
२५॥अर्थ॥अनिनवांणीआंनरहतब्रह्मवांणीगगनब्रह्म
अस्थांनमोहिरदाकंवलतामेंगुपतमधुकरमनमधुरसपीवे
सोगतिसेसनागमहादेवजांणीहैटेकत्रिगुणीतापनिवधि
करतैलफनीसोनाठीतिमरातना॥तिमरअंधेराअग्यानतन
[illegible]

अमरब्रह्म अगनिसी चे। अमरन रो मेरे पांणी माया जलमी वे
१ मेरे थर रवि ससि मन पवन सुन गमी ता वांन न रिरहे न षि
षिसु निडुंदर रहित अनाहद मबद। थि ति तहां थिरनय॥
२ संकट दुष सकति माया ताके दुष सुष सब षोरी।३ दिध अ
हंकरणा सरीरम थनम मोर थि बिकार सो षके। अगम अ
नासी पटण काया ता मैं परगट गोबिंद पुरातन गुण जोरी॥
३॥१५॥ पद॥ रमनबेवि किते जिनि जासी हिरदै सरोवर
है अबिनासी टेक॥ काया मधे कोटि तीरथ काया मधे कासी
काया मधे कंवलापती बैकुंठवासी १ उलटि पवन षट
क निवासी तीरथराज गंगतटिबासी॥२ गगनमंडल रवि
ससि दोतारा उलटी कूंची लागि किवारा ३ कहै कबीर उ
जियारी पंचमारि एकरहौ निनारी॥४॥१६॥ अष्टपदी॥ कं
माया पति परमेसर बैकुंठ का लक मतें अकट सो बैकुंठ
सी निरंजन ताका टेक॥ पवन सासक दीउ उलटि षट च
चक्र दी अवामन निवास निर चल कूवा तीरथराज प्र
सरा गंगातटि बासी गंगा बाणी ३ वैजसंते तहां बसै है
जा तीरथ काया राजा प्राणा गंगा बांणी तटि थिर २ गगन मं
डल हि रहां कंवल रवि ससि मन पवन थिर उलटी कूंची स
बदा उलटि अंतर षोज्या तब करम किवार षुले १ उजिया
रा ब्रह्म प्रकासा पांच इंद्री गुण तै मारि एक प्राण
मौते॥ ३॥ १७॥ पद॥ अवधू अगनि जरै कैका वा। पृथ्वी पं
जोगसन्यासी सतगुर चीन्हौ बाट टैक॥ अगनि पवन मैं
३ पवन कवन मैं सबद गगन के पवनां निराकार आदि निरं
ना क तरवं ते नवनां १ उतपति जोति कवन अधियारा
घन बादल की बरषा प्रगटी बीज धरनि अति अधिके
पारब्रह्म न दीवषा २ मरणां मैरै न मरि सकै मरणां दू
नेरा द्वादस घादस सन मुष देषै आपे आप अकेला ३
जे बंध्या ते अबंद मुकता बांधन हारा बांध्या बांध्या मु
ता मुकता बांध्या तिन पारब्रह्म दृष्टि लाध्या ४ जे जाता
ले कोण पवाता रहता ते किन राष्या अमृत समाना बिष
मैं जानां बिषमैं अमृत रस चाष्या ५ कहै कबीर बिचार
चारी तिन मैं मैर समानां अनेक जन्म का गुर गुर करता
सतगुर तब नैटांनां॥ ५॥ १८॥ अष्ट॥ अगनि व्यापक
ब्रह्म का व पांच तत काया पसारा दूजा अगनि आत्मा

वकाया आत्मापरमात्मा अनुभव। गुरग्यांन चीन्हो॥
टेक॥प्रश्न॥ ज्यूंसतनुतपतिनरे ज्यूंही लीन तौनि
रंजनप्रभुकाकोनवोरकोनक्षेमकहांरमेहै २॥उत्तर।
निरंजनहीकीसत्याकरिसबउतपतिहोतहै।वाहीकी
जोतिसबप्रकासप्रकासहै कौनअंधियारा तो अंधेरा
कहां।नासतिकहांकहीं।प्रगटप्रतछिपरमेसरकी
संप्रथाई देषीऐघनबादलकाबरिषाब्रह्मबीजतें।
प्रगट्यापसाराधरनिअरुसिअधिकोधरतीआदिमंडब्र
ह्मंडबटकबीजज्यूंआपहीहै।जाहीयासत्यासोप
रब्रह्मदेषानहीप्रगटहै॥२॥मरणांमेरेनमरिसकेजी
वतमृतकहे इहरिकेहेतकरिगुणांतेंमरेतो जामरणम
रणांमिटे।फिरिमरणांनहो इघदसबारहआगुलबाइ
मोभासिसासिसुमरणाकरैतो परमेसरसनमुषदेषै३।जे
बंध्या।बांध्याथा जीव इही गुणाकरि।सोगुरग्यांनकरि
मुकताकीया।मुकतागुणाइही बांध्या।तिनब्रह्मला
धा।जेजातातेकोणपवाता।जिकेजातिचौरासी।तेकिनि
भेजेरहताते किनिराष्या।जेरहैंचौरासीतेकिनिराषे।अ
मृतरांमरसलागे।जोथिररहे।बिषमायारसलागेतेचौ
रासीगये।बिषअंमृतदोऊघटमेंछे।जैसापीयातेसाफ
ललीया॥४॥साषी॥दादूबिषअमृतघटमेंबसे।बिर
लाजांणेंकोइ।जिनिबिषषायेतेमूये।अमरअमीसूंहोइ
।पतितलब्रह्मवारलगतवारमेरमन।।६॥२७॥पद॥अब
धूऐसाग्यांनबिचारलेरेचढेसअधफरडूंबे।निराधारन्यो
यारटेक।कबहचलेसनगारपहुते।बाटचलेतेलूटे।एक
जेवडीसबलपटांने।केबांधेकेछूटे।मंदिरपेसिचहुंदिसि
भीगे।बाहरिरहेतेसूका।सरिमारेतेसदासुषारे।अनमारेलो
दुषा२।बिनेनैननकेसबजगदेषै।लोचनअछतेअंधा।क
हेकबीरकछुसमझिपरीहै।यहुजगदेष्याधंधा॥३॥२५॥अर
थ॥जेरैसंसारसूंमिले अधफरअधोगतिबूडे।निराधारसंसा
रतेंन्यारे।ब्रह्मसरणिपारंगतिनलए।टेक।ऊबटचलटेसंसारते
नगरब्रह्मअस्थांनपहुंते।बाटकुलकीडगरचलेसोलूटेबि
कारूं।लूट्या।बुधिचितजेवडीमेरतेरमाया।केईसंतछूटेसं
सारबंध्या२।मिंदरमाया।भीगेमोहमेंनिदैं।बाहरिमायातेअलि
पतसूके।ममतमेंनिंदे।सतगुरकासबदलागातेसुषी।सब

दन लागा ते दुषी। जांमण मरण दुषी २ बिन नैनन सो जाके
ब्रह्म द्रिष्टि पसरै माया पसारा मिथ्या नासै सूझै हिरदै ग्यान
लोचन अछि तैं जाकी बाह्य दिष्टि पसरै संसार सति नासै
हिरदै अंधा ह्वा जा बिन लोचन हिरदै ग्यान नैन ह्वा तो ज
गत सति नासै लोचन ग्यान नैन नहोत ब संसार मिथ्या न
सेन नासै ॥३॥२८॥ पद ॥ जग धंधा रे जग धंधा स ब लोकन
जांणी अंधा लोभ मोह जेवड़ी लपटांनी बिन हीं गांठि गा र
ह्यो फंधा टेक ऊंचै टीबै मछ बसत है ससा बसै जल मांही
परबत ऊपरि लोक बूडि मूंवा नीर मूल धूंको ही १ जलै
नार तिण षड सब बकबेरे बैसंदर लै सींचै ऊपरि मूल फूल
तिन नीतरि जिनि जांन्यां तिनि नीकै २ कहै कबीर जांन हीज
नें अन जांन तहु भनारी हारी बाट बटाऊ जीत्या जांन की
बलिहारी ॥३॥२९॥ अर्थ ॥ बिन गांठि संसै सूं बंधे न्यून
लनीको सवा टेक ऊंचा टीबा ऊंची दिसा ब्रह्म मछ मनस
सा सबद जल ब्रह्म परबत ऊंची दसा प्रेम लोग इंद्री गल
तो नानी रकाम नावे माया धुष्या ब्रह्म अगनि करि १ नारकां
म माया जलै ग्यान अगनि सूं तिण तन सो जीव षड काया बे
ची कांम अगनि तै बैसंदर ब्रह्म अगनि मूल प्रांण ऊपरि ऊं
ची दसा फूल नाव न गाति हिरदै कपजे जांन्यां तिनि करणी
करी ते सुषी २ अग्यांनी करणी बिनां दुषी बाट चौरासी या
की बटाऊ प्रांण ब्रह्म पंथि चल्या तब जीत्या ॥३॥२९॥ पद
अवधू ब्रह्म मतै घरि जाई कार्ल्हि जु तेरी बसुरी यांधी नी क
हो चरावै गाई टेक ताल चुगै बन तीतर लवा परबत चरै
मोरा मछा बन की हिरनी कूवै बियांनी ससा फिरै अकासा
१ ऊंट मारि सैं चारै लावा हस्ती तरड़वा देई बबूर की डारी
यां बनसी लहा सीयारां किन्नूं कि षाई २ अंब के बौरै
चरहल करहल नीबया छोलि छोलि षाई मोरै आंगनि
दाषदरीबल लकहैकबीर समझाइ ॥३॥३०॥ अर्थ ॥ ब्रह्म म
तै घरि जाई ब्रह्म ग्यान करि परमेसर में मिलै बसरी या काया
छोनी का लके ई बार गाइ इंद्री चरावै गा कहां लूं पोषे गाटे
तीतर तामी रलनवा लोभ बन बिकार में रहे ते सो ताल ब्र
ह्म सरोवर में चुगै नांव ले गा ॥ इला ताल हिरदा बन काया अ
स्थान कहन मान दोइ परबत परमेसर ऊंचा दसा मछ मन मा
या जल छोड्या बन काया बिकार हिरणी मनसा कूवा हि

दाकंवल। गर्यांन जन म्पा मसा सब्दंस्रकाम ऊंची दसा। २
कुंटमनमा स्यागुणांते। चारानां मचित्तव्हाने दस्तीकोमन्ना
गा। बंबरबपडारी ईडीबनसी कहीऐ ऊसाडी। सो ऊबधिडा
रीमं ऊबधिकादी सो इडी येनसं ऊबधिकादी सियरास्यास्त
सो जीव नूंकिचूंकिनांमन्न जिन्नजिकारनपाधा १ आंबविरव
आत्मां अस्थांन करहामन निबोली विकारछोडे दाघदीन
ता सा गा आंगए अंतह्रकरएा॥ ४॥ २॥ पद॥ बाबाकरकु
रूपाजनमारग लाबों ज्यूंनव बंधनछूटैजुरामरएाडुषफे
रिकरनसुष जीवजनमतें छूटै टेकसतगुरचरनलागियूं वि
नकंजोव्हनिकहांथें पाईजाकारएा दमउपजे बिनसे कोंन
कहोसमझाई २ आसापासषंडनहीपाडे येमनसुनिनलूटे
आपापरआंनंदनदूफे बिन अनने कूंछूटे ३ कहांनउपजे
उपज्यांहीजांनें नाव अनाव बिहूनां उदे अस्तजहांमतिबु
धिनांही सहजिरांम ल्योलीनां ४ ज्यूं प्रतिबिंव प्रतिबिंबहि
समानां उदिक कुंभविगरांनां कहैकबीरजांनिनरमभ्रमनासी
तहिजीवसमांनां॥ ४॥ २॥ अर्थ॥ बिनकुंबीनती करहूं ज्ञी
वनिजागदकहांपाईऐ। हजीजीवनिजत्ती कहांतेंपाईऐ। जाका
रएा जिमकरएातें जांमें मरैसो कहो टेकमायाकी आसासोईया
सीजीवगलिषंडनहीपाडे। काटेनहीं यूंसुनिइंदरहतब्रह्म बि
लसनसकेआपापरअपएांपरायामेरातेरापषहो १ तोलूंआंन
दउपजेसुषनांही हजाअपएां पराई आत्मां एकनजांएां कह
एांमात्र हजा २ भाव अभाव बिहूंनां सतभिंतर द्रितमांन अपमां
नरहत उदे अस्तजहांदोश्गुएानांही सहजिहुंदा द्रितरांममें ल
नातज्यूं सूरजका प्रतिबिंबकुंभनहोलां जुदानासे ज्यूं उत्तबिन
स्यां सूरजमें लीन। ज्यूं घटसंजोग जीवब्रह्मते जुदाघटबासनां
बिनस्यां जीवसी व्हलीन॥ ४॥ २॥ पद॥ माधो चलेवुनां वनमा
ता। जगजीतिजाइजुलाहा टेकनवगजदसगजगजउगनी
सा पुरीयाएकतनाई सातसूतदे गंड बहतरिपाटलागी अधि
काई १ तुलहनतो लीगजहनमापी पद्दजनसेर अदाईअदा
ईमेंजेपावघटेतो करकचकरैवजहाई २ दिनकी बैठिषसम
सूंकीजे अरजुलगीतहांही नागी पुरीयाघरछाडी। चलै
जुलाहारिसाई ३ छोछीन लाकांमनहीं लपटिरहोनरकाई
छाडिपसारेरांम कहिबौरे कहैकबीरसमझाई॥ ४॥ २४॥ अर्थ
चलेवुनावनमाहा चलेवुनावनमांदेपरमेसरसंतनकी ष

जामें हैं हिरदा में। हुआ ऊंचा कपड़ा माहा। सो ऊंची नगरि है
नौ गज नौ हारद सगज दस इंद्री रेत्रगनी स गज। पतिन की पुरी
या काया। सात सूत स पत धात गंड बद्ध तर को वे पाट प्रीति
सूत गति सोई पाट का डोरा तातें अधिक न हुई। पद्दजन सेअ
टाई एक अर ऊअढाई साढ़े तीन प्रवांन जो पावे घटे अढाई
सेर के दस पाव सो दस पाव दस इन्द्री एक इन्द्री नंग होइ जा
बही प्रांण क लेपै। २ हुआ अढाई सेर अहार घटै प्रांण करत
रे। दिन को बेठि निति मजूरी परमेसर सूं कीजे अरज बंदगी
मांगी। मागी पुरीया। बिनसी काया छलै जु सा हारि साई जुला
हाजीव कायतें निरबासी कहै। च ल्या न ली मन सा १ श्रोद्व
बासनां बिनांघा सीलपटी गो बिदसूं थिरन ई पसारा संसा
र का चूका॥ ४॥ २१॥ पद॥ जंत्री जंत्र अनूप म बाजे। ताका स
बद गगन में गाजै। टेक। सुर की नालि सुरति का तूंबा। सतगु
र साजि बनाया। सुर नर गण गंध्रप ब्रह्मादिक। गुर बिन तिन
हून पाया। जिभ्या तांति नासिका करही माया का मेंण लगा
या। गमां बतीस मोरणां पांचूं नीका साज बनाया। २ जंत्री जं
त्र तजे नही बाजे। तब बाजे जब बावे। कहै कबीर सोई जन
तेरा। जंत्री सूं प्रीति लगावे॥ २॥ २२॥ अर्थ॥ जंत्री परमेसर जं
त्र काया। गगन अंतहकरण। टेक। सुर सास सोई नालि सतगु
र परमेसर सुर देवत ब्रह्मादिक गुर बिन जंत्री न पाया किंनै
। २। गमां बतीस दांत मोरणां पांचूं इन्द्री बनाया परमेसर जंत्री
परमेसर जंत्र काया स्वासो चेतन बाजे॥ २॥ २२॥ पद॥ अव
धू नाद बिंद गगन गाजे। सबद अनाहद बोले अंतरगति
सो देखैने डा। टेक। तब बन बन डोले। टेक। सालिगरांम तज सि
व पूजो सिर ब्रह्मा को काटो। सायर फोडि नीर मुकलांऊं कूवा
सिला दे पाटो। १। चंद सूर दोइ तूंबा करिहूं चित चेतनि की डां
डी। सुषमनि तांती बाजन लागी इहि बिधि त्रिष्णा षांडी। २। प
रम तत आधारी मेरै सिवनगरी घर मेरा। काल षिपंडूं मीच बिहं
डूं बहुरि न करिहूं फेरा। ३। जप मून जाप हूंन भूगल पुसत
ग लैन पता ऊं। कहै कबीर परम पद पाया नहीं आऊंन ही जा
ऊं॥ ४॥ २४॥ अर्थ॥ नाद बिंद थिर कीए गगन अंतहकरण
गाजै धुनि अनाहद सबद होइ तहां हिरदा अंतरि कोई मो
जे बाहरि तीरथ धांम न रमत डोले। टेक। सालिगरांम बिस्न
पूजा सिव महादेव लिंग पूजा ब्रह्मा बेद पूजा तीन्यूं आका

सिवातजी।ता तैसी निगुणा त्यागि।चौथा निरंजनपद पूं
जूंसरीरमांहि कूवा कंवल सिला हिरदा बनाई पांचै सी१
वूंसुमरण करि हूजा मालिगरांम तत्त जूं आकारकी सेवाव
जूंस्यो परमेर पूजूं ब्रह्मा राजसी गुण काट्यो।२।चंद स्सूर मन
पवन थिर सोई तूंबा सुषमनि सुरति सोई तो तिबाजे अन
हद धुनि परमतत प्रमेसर आधारी अंतहकरण हिरदै मेरै
वसि छै स्यो नगरी निरंजन मै बसं बूंवातपोत।।४।।२४।।७
पा।।अथ राग आसावरी।।पद।।अैसा रे अवधू की वांणी जप
रिऊवदात लि नीर पांणी।टेक।जब लग गगन जोति नही
पलटै अविनासी सूं चित नही चिहूंटै।जब लग भंवर गु
फा नही जांनैं तो मेरा मन कैसैं मांनैं१ जब लग त्रिकुटी संधि
न जांनैं ससिहर के घर सूर न आंनैं जब लग नाभि कंवल न
ही सोधै तो हीरै हीरा कैसैं बेधै२ सोलै कला संपूरण छाजा
अनहद के घरि बाजे बाजा सुषमनि के घरि भया अनंदा उ
लटि कंवल जै भेटे गोबिंदा३ मन पवन जब परचा भईया।
जूं नालि रांपी रस माईया।कहै कबीर घटि लेहु बिचारी
औघट घाट सीचि ले क्यारी।।४।।२।।अथ।।जगति जोग मैं कु
वाऊ वलऊं अर्थ छै।सो ऊपरि कंची दसा सूंधा करि तलिकं
ही सब तैं नीचा गरीब है ईपांनी प्रेम नांम ले हू।टेक।गग
न आत्मा ब्रह्म जोति मैं रामन गुफा हिरदा१ त्रिकुटी मन
पवन सुरति संधि मिलाप हनकास सि सूरता तासीला।ए
कवन करे नाभि नाली कंवल न सोजे हीरै हीरा कैसैं बेधै
तौ आत्मां परमात्मां कैसैं मिलै२ सोलह कला मन की सं
पूरण सुध बणी सुषमनि सुरति हिरदा कंवल उलटि सू
भनया।मन पवन एकत्र हूवा तब नाद रैनाभि कंवल मैं
तन की सब बसी जजमीत हूवा हूजा मन धीर हूवा औघट घ
टह दी उलटि अंतर थिर करो क्यारी काया।।४।।हूजा जो
गमैं।।कूवा ऊपरि दसवां द्वार तलि पांनी लं विकार करि अ
मृत ले ई।टेक।गगन दसवां द्वार जो तिलछि दिन दिन अधिक
सो रामन गुफा ध्यांन।१।त्रिकुटी संधि इला पिंगुला सुषमनि सर
स सूर मन पवन।नाभि नाली कंवल हीरै हीरा पांन अपांन बा
हक बूंक रि मिलै।२ उलटि षटचक्र सूधे करो।।नाल रैनाली
कंवल मै षीरनाद बिंद थिर भया।।३।।१।।पद।।आत्मा अंन
दी जोगी।पीवै महारस अमृत जोगी।टेक ब्रह्म अगनि काया

६०

पर जारी॥ अजपा जाप तनमनी तारी॥१॥ त्रिकुटी कोटि मैं आ
न मांडे। सहजि समाधि बिषै रस छांडै॥ त्रिबेणी बिभूति
रे मन मंजन। जन कबीर प्रभु अलख निरंजन॥३॥१॥ आ
त्मां आनंदी जोगी। आत्मा ग्यांन सो जोगी। आनंद म
रस रांम रस सो अंमृत जोग। टेक ब्रह्म अगनि करि काय
की परकीरति जारी। अजपा अंतरि गति जाप तनमनी
ग सूं उदास वो कं प्रेम मन तासूं ध्यांन॥२॥ त्रिकुट कोटि
गुणी काया। तामें आसण थिर ध्यांन मांडे। सहजि सुंदर
त समाधि॥३॥ त्रिवेणी मन पवन सुरति एकत्र मन कूंभ
ना मलीन बास नाम जाई। अनेन बिभूति लावै तत
ती निरंजन पावै॥४॥२॥ पद॥ बाबा जोगी एक अकेला।
जैती रथ बरतन मेला। टेक झोली पत्र बिभूति न बट
अनहद बैन बजावै। मांगिन षाइ न भूषा सोवै घर अंग
नां फिरि आवै॥१॥ पांच जनां की जमाति चलावै तास गु
रू मैं चेला। कहै कबीर उन्हि देस सिधाये बहुरि न ह
गि मेला॥२॥३॥ अर्थ॥ जोगी जन एक कोई गुणातै
रा तीरथ बरत नरम नेदर हित बरत बोहार नांही मेला
संसार के गुणां मिले नांही। टेक झोली अंत हकरण
ली पत्र परकीरति नहीं बिभूति माया नहीं बट बाबा
नां नहीं अनहद धुनि बाजे मांगिन षाइ इंद्रीयां की बिषै तें
अ जाची भूषान ही ग्यांन ध्यांन करि आत्मा त्रिपति है। घर
आना फिरि आवै बहुर मुष ते फेरि सुरति घट घट=
र त्रिवेणी में आवे थिर है॥१॥ पंच जनां पांच इंद्री बसि ब्रह्म
पंथि चालै गुरू है देसि ब्रह्म में मिले इहि जुगि संसार सूं न मि
ले कै॥२॥३॥ अर्थ॥ जोगी जगदीस तीरथ में ले
इन आवे सब सें रहित सब मैं व्यापक अडोल टेक झोली
पन आकार व्यवहार रहित मांगिन षाइ अहार रहित सब घट
जोगी घर अगनां फिरि आवे सब में रमि रह्या॥१॥ पंचजना पां
च तत जमाति कदेस मैं रहै नेक देप सारि वे तिस जोगी के दे
स सिधारे जोगी संत बहुरि याजग सूं न मिले॥२॥३॥ पद॥
अवधू ऐसा ग्यांन बिचारी ज्यूं बहुरि न ह्वै संसारी टेक चिं
त सो जु चित बिन चितवै बिन मन सो मन होई अजपा जप
ति अनि अंतरि यह तत जांनै सोई॥१॥ कहै कबीर स्वाद ज
ब पाया बंक नालि रस षाया अंमृत झरै ब्रह्म प्रकासे त

हीमिलेरांमराया॥१॥४॥अर्थ॥ऐसासुमरणकरो।ज्यूंबहु
रिसंसारमेंदेहनधरो।टेकपरमेसरचितवृनिसोईजोऔर
चिंतानाहीदूजी।बिनमनसामनहोइमिनमनसाकेमनो
नमनोरथनही।कायाअस्थांनकीसोंजविनांस्वास्वाअस्था
नीकसोंजसूंहोइब्रह्मचितवृनिअजपाजापअंतरगतिसु
निंडुसहितअनिअंतरिअपणोअंतरीयकुतत्तग्यानसो
ई।२।जोणस्वादस्नेहवेकनातिसुरतिरसरांमरसअंमृतरां
मरसअषंड॥१॥४॥पद॥गोबिंदेतुम्हारेबनकंदलिमेरोम
नअहेरामेलेबपुबाारीअनगमृगरचिहीरचिमेल्हेटेकचि
ततरतुचापवृनषेधसहजिमूलबांध्या॥ध्यानधनकजोग
करमग्यानबांनसांधा।२षटचक्रकंवलबेधाजारिउजारा
कीन्हांकांमक्रोधलोभमोहहांकिस्यावजदीन्हां।२गगनमं
डलरोकिबारातहांदिवसनराती।कहैकबीरछाडिचले
बिछुरेसबसाथी॥१॥५॥अरथ॥कंदलकायाअंतमनगु
णकासिकारषेलेछै।वपबाडीबणीतामेंअनंगकांमसोईमृ
ग।रोक्याहरिचिकसीऐमगिऊमगि।थिरकैरेकांमसहितमेले
कहीऐकरससबगुणकायाबाडीमेंथिरकैरे।टेकचितत
रवृरजिनिसूंबांधिलेकडिबाराकैहै।पवृनषेदनहारसा
सिसासिसूंनांमजपे।बाहरितेंगुणदेषि।कायामेंथिरकैरे।
सहजिइदरहितमूलमन२षटचक्रपांचइंद्रीछवामन॥
बेधेबचनसूंजारेबिकारउजारागग्यानका।१गगनमंडल
ब्रह्मअस्थांनसोहिरदातहांबाराबिचारदिवसनराती
दोइगुणनहीदूजादिवसग्यानअग्यानन्हीछाड्यापसा
रा।साथीपांचततदूजाबिकार॥३॥५॥पद॥साधनकाचूं
हरिनउतारेअननेकैसोअरथबिचारे।टेकबांणीसुरंगसो
धिकरिआणो।आंणेनोरंगक्षगा।चंदसूरऐकत्तरिकीयासी
वृतबहुतदिनलागा।२पांचपदारथषोडिसमांनांहीरेमो
तीजडीया।कोटिबरसलूंकांचूंसीयासुरनरधंधेपडीया।
२निसबासुरजेसोवृनांही।तानरिकालनखाईकहैकबी
रगुरपरसादेंसहजेंरह्यासमाई॥३॥६॥अरथ॥साधनआ
त्मांकोचूंकायाहरिनउतारेहाथिकरीसीवि बाथैंछोडैन
ही।कायासैंजसीवृैपरमेसरसूंअननेग्यानहोईतोका
याअरथलोवृैटेकबांणीब्रह्मग्यारातीसोईसुरंगनोरंग
नोक्षगानोहारसुरतिसैंचिअंतरिल्यावेचंदसूरमनप

वनकीया सीवत सुमरणसूं जनम बीते ॥१॥ पांच पदारथ
जड़ देह छोडि कायामें थिर नया हीरे मोती तन कासों जम
मन सासहि ताजड़्या थिर कीया कायामें कहूं काया कोटि
रस लहै सो सो ही सुमरणमें कोटि जन्म बैराग ले तब धन ने
भै ॥२॥ ग्रा पद ॥ जीवत जिनि मारे मूवा मति ल्यावे मांस
हूना घरि मति आवै हो कंता टेक ॥ उर बिन षुर बिन चंच
बिन वपु बिहूनो सोई सो स्यावज किन मारे कंता जाके
रगत रुग मांस न होई ॥१॥ पैली पारके पारधी ताकी धुण हीप
णाचन हीरे ता बेसी कूं ढुके मृग रे ता मृघा के सीस न
हीरे २ ॥ सो मृघ जीव तो रा छे ॥ य कु गुर ग्यान महीरे कहे
कबीर स्वामी तुम्हारे मिलन कूं बेली है परि पात न हीरे ॥२
॥३॥ अरथ ॥ जीवे ना सांइण मैं तो न मारि माया में मरे तो ज्ञा
मांस मन बुधि कहै हो कंत जीव कूं टेक उर षुर मन के
र नहीं मन का सुनि रूप है ॥१॥ पैली पार संसार ने हले परे नारा
इन सुं ने ह पारधी प्राण मन परकीरति हुनी ता तें पारथी
होन प णाच ॥ अ कार रहित धुण धुणा ही पण च प्रीति ता
करि मारयो मन बेलि आत्मा २ ढुको अंतर सुष मृघ ला
सीस आपा न ही मारयो यातें न मोकूं मनात ब ज्याया नारा
णी ती ति मैं केली आत्मा निरले पया ते परकीरति नहीं ॥२
॥३॥ पद ॥ पार ब्रह्म देखो हो तब बाडी फूली फलना गा बड
फूली सदा सदा फल दाष बिजौरा कौ गति हारी झूली टेक ॥
बा दस कूवा एक बन माली उलटा नीर चलावे सहज
मनां कूल भरावे दह दिसि बाडी पावे ॥२ ल्यौ की लेज पव
का ढीकू मन मटका जु बनाया सत की पाटि सुरति का चा
सहज नार मुकलाया ॥२॥ त्रिकुटी चढ्यो पाव ढो ढारे अरध
उरध की क्यारी चंद सूर दोउ पाणाति करि है गुरमुषि बीज बि
चारी ३ नरी छाबडी मन के कूंगा सोइ सूर हिया रंगा कहे
कबीर सुनहु रे संतो हरि हम एकै संगा ॥४॥ ८ ॥ अरथ ॥ बाडी
काया फूली न्यान गति सूं फल गोबिंद दरसन बड फूली
बडी सो नावांन बडी फूइ दाष दीनता बिजौरा बिचार को
तिग हारी आत्मा यूं कौतिग देषि झूली देह गुण इ जा मन
कहै झूली माया टेक ॥ बादस कूवा बारह कला पवन की
सिसा सि सुमरण सोई सांचे माली प्राण नार नाम सहज सु
मनां इंद्र रहित सुरति कूल कंवल बाडी काया दह दिसि द

सूधाराकूनीरनांमसुकलाया॥चलाया॥त्रिकुटीतीनगुणां
तेंआगेंपावेटोप्रेमा॥अथनरशेउवतांबेवतासासिसासि
सुमरणा॥चंदसूरमनपवनपांणा॥तिहारीआसांपांणीच
लांवैबीजनांम॥धाया॥बडीकाया॥नरीनावलगातिसूंबे
कूंवाबडाफलसोमनसुनिदनउरिधस्या॥मैनसामालन
गोविंदकेटोवेआईगोविंदसरणारावी॥५॥८॥पद॥रां
मकेनांइनीसांनवागा॥ताकामरमनजांनेकोइ॥रूपनिपा
गुण॥वांकेनहीघटघटअंतरसोइटेकछेदछेवाजितनेद
बिवरजितबिवजिसपापरूपुनिंगुणा॥नबिवरजितथां
नबिवरजितोबिवरजितअस्थूलसुनि२नेषबिवराजि
तनीषबिवरजितबिवरजितडिनकिरूपं॥कहेकबी
रतिहूलोकबिवर्जितऐसाततअनूपं॥२॥७॥अरथ॥
रांमनांमरटतांनीसांनअनहदसबदबागा॥ताकामरमको
इनजांणेंकहूंनजांणेजपाजिगया॥दिकतीरथव्रतमूलांगे
यूंनजांणेंषुध्यानध्यायेत्रिपानध्यायेगुणांकारकैरहित
हैंघटिघटिब्यापकहेटेकछेदनजांनेंपारनेदनतीवांके
पापपुनिरहित२निषरहितनीषअस्थारहित॥तडिनरू
पतेपरेतीनिलोकतेआगेंअपारऐसाततअनूपहे॥२॥
७॥पद॥अबनवसूंयहिगांइगुसांई॥तेरेनेवगीवसयाने
हेरांमटेक॥नगरएकतहांजीवधरमहिता॥वसेजुपांचकि
सांना॥नेनूंनकटेंश्रवनूंरसनांइद्रीकहोनमांनेहेरांम
२॥गांइकउवाऊरषेतऊनेपेकाइथपरचनपोरेजोरिनेव
रीपेतयमारेसबमिलिमोकूंमारेहेरांम॥२॥घोटोमहतोबिक
टबलाही॥सिरकसदमकापोरे॥बुरोदीवानदादिनहीलागें
इकबांधेइकमारेहेरांम३धरमराइजबलेषामांग्या॥बाकी
निकसीनारी॥पांचकिसांनानाजिभाएहैं॥जीवधरबांधोमा
रीहेरांम४कहेकबीरसुनहुरेसंतो॥हरिनजिबांधे॥नेरा
अबकीबेरबकसिबंदेकूं॥सबषेतकरूंनवेरा॥५॥२०॥
अरथ॥गांवकाया॥कायाअस्थाननवसूं॥हजादेहनथा
रूंनेवगीइड़ीगुणसयानेमकति॥टेक॥नगरकायाजीवनि
वलमनमहताबल॥पांचकिसांनांपांचइंद्री॥सोकहे
मैंनहीं॥२॥ऊवाऊरवीकनहीं॥ऊवीकसीलसंतोषनहीं
इजाकोमऊवाऊंरापेतकायानिरफलनावेंजगतिषा
ली२काइथमनपरचनपोरे॥घोटेक्रामातेपारनहीं॥जोडि

१२

जेवड़ी जेवड़ी मैं पकड़ी काया कतणी जोड़ कीया तब
ऐ जीव राम विसारा मन मोटा बलाली त्रय गुणां मैं बिकल
सिरवा सब लद मका दमडा मो दस मास दीवांन सूंना
ऊथै रवि चार नहीं दूजा दीवांन छांणा कहै ऐक गुण
ऐक मोरे जीव हूं ॥४॥२०॥पद॥ मैं सासरि पीय गौंहनि-
कीआई संगि साथन हो पूगी गये जोबन सुपनै कीना है टेक
पंच जनां मिलि मंडप छायो तीनि जनां मिलि लगन लि-
षायो सषी सहेली मंगल गावै दुष सुष माथै हलद चढावै
१ नांनां रंगै भांवरि फेरी गांठि जोरि बाबै पति ताई पूरि सु
हागनि भयो बिन दूलहै चोक केरंग धर्यो संगी नाई १ अपनै
पुरष मुष कबहु न देष्यो सती होत समझी समझाई कहै क
बीर हूं सर रचि मरहूं तिरूं कंत लै तूर बजाई ॥३॥२१॥-
रथ॥ सासुरै संसार मैं पाव पिंड धरि आई गौंहनि गोलि कहै
आवै साथि साई संगि साथन हो पूगी चा दिन पूगी नई
ग साथ चाहै टेक पंच जनां पंचइंद्री मंडप माया को तीनि
गुण लगान संसारस्यूं लगन लागी सषी सब इंद्री मंगल
रथ माया के गावै दुष सुष घड़ी बांधी सो कही ऐवधाई १ नां
नां रंगै तन तासा रतिन मैं डोरत्या गांठि माया मोह की गलमैं
जाला बापा लप आपरोगुणां मिलाई अपणो संगि परणाई
दूलहै परमेसर बिनां सुहाग मरां रके सूआ चतुष्टै अंत
करण सम मिलाई सा चित लाना व सरीर अरु संसार सूं १ अब या
सन हसैं वाह प्राप तिन जया पुरात्म पुरिष सूं प्रीति उप
कहै को अपनो पुरिष परमेसर देष्यो नहीं छै समझी समझा
ई सत सांगति सनेहह धर्यो सत बिरह कै तकलेवर सदि
तिरूं तूर अनाहद ॥३॥२१॥पद॥ धीरै धीरै षाइबो अनंत न
जाइबो रांम रांम रांम रमि रहिबो टेक पहली षाई आई मा
ई पीछै षैहूं सगा जगा ई १ षाया देवर षाया जेठ सब षा
सुसर का पेट १ षाया पांच पचीस का लोग कहै कबीर त
पाया जोग ॥३॥२१॥अर्थ॥ धीरै कहीऐ धारज धरि कै तन
सब तासीर षाई जीति अनंत ग्यांन मारग मति जांहि रांम ज
पि टेक पहली आई बुधि बुद्ध षाई माई माया षाधी जीती
जमाई जम षाधी १ देवर अरम कांम नी कहीऐ जेव ज्युरा सु
सरा संसा ता का पेट परवार सब प्रकीरति षाई २ कांम क्रो
ध लोभ मोह सब जीते पचीस काया पांच लोक पांच ई

जीतीसो पाई॥ जब जोग जो परमेसर मिलण की जुगति पई॥ टा॥ २१॥ पद॥ मन मेरो रहटा रसना पूरीया। हरि को नाव लै लै कातिबहुरीया॥ टेक॥ च्यारि षूंटी दोइ चमरष लाई। सहजि रहटवा दीयो चलाई॥ १॥ सासू कहै कातिबहु ऐसा। बिन कातें निसतरिबा कैसा॥ २॥ कहै कबीर सूत भल काता। रहटै नहीं परम पद दाता॥ टा॥ २२॥ अर्थ॥ रहट च्यरष आसना पूनी बहुरीया बुधि॥ टेक॥ च्यारि षूंटी चतुष्ट अंतहकरण॥ मन बुधि चित अहंकार अंतरि थिर रोप्या॥ दोइ चमरष दोइ गुण थिर कीया सहजि इंद्रा लित १ सासू सुरति कहै है बहु बुधि कूं बिन कातें बिन सुमरण निसतारा नहीं॥ २॥ सूत सुमरण भला कीया मन मैं सुमरण कीया परमेसर पाया॥ टा॥ २२॥ पद॥ अबकी घरी मेरो घर करसी। साध संगति लेमो कूं तिरसी॥ टेक॥ पहली को घाल्यो भरमत डोल्यो। सच कबहुं न ही पायो। अबकी धरनि धरी जा दिन तै सगलो भरम गमयो॥ १॥ पहली नारि सदा कुलवंती। सासू सुसरा मानें॥ देवर कै वस बन की प्यारी। पीव को मरम न जानें॥ २॥ अबकी धरनि धरी जा दिन तें पीव सूं बान बन्यो रे॥ कहै कबीर भाग बपुरी कै आइ राम सुन्यो रे॥ टा॥ २४॥ अरथ॥ अबकी बुधि या सें कारिज होइगा॥ साधसंगति सूं नौ सागर तिरसी॥ टेक॥ पहली ऊबुधि नरभ्या चौरासी जो पहली ऊबुधि॥ अबकी सुबुधि तै चौरासी मिटी॥ १॥ पहली ऊबुधि कुलवंती कही॥ काया कमा सूं मिलि रही॥ सासू न्हेडी सुरति सुसरा संसा रेसा जीय पहली तै देवर काम जे व जो रा इन की सला इमें ऊबुधि पीव परमेसर कूं जांनें॥ २॥ अबकी सुबुधि धारणा धरी तब परमेसर पाया॥ टा॥ २४॥ पद॥ मेरी मति बौरी राम बिसार्यो किहि बिधि रहनि रहौं हो दयाल॥ सेजैं रहौं नैंन नहीं देखूं यहु दुष कासूं कहौं हो दयाल॥ टेक॥ सासकी दुषी सुसर की प्यारी जेव के तरसि डरूं रे॥ नणद सहेली गरब गहेली देवर के बिरह जरूं हो दयाल॥ १॥ बाप साव को करै लडाई माया सद मतिवाली॥ सगो भईया लै सलरचि मरिहूं तब है हूं पीय हि पियारी॥ २॥ सोचि बिचारि देषो मन मांही औसर आइ बन्यो रे॥ कहै कबीर सुनो मति सुदरि राजा राम रमो रे॥ टा॥ २५॥ अरथ॥ सासू षोटी सुरति सुसरा संसा सुरति संसा मिलि रहे ता तें दुषी आत्मां जेव जुरा सिर परिनण

दमनसा मरै तौ इहौ एगरबमें गहै तौ देव रकांम॰
देहौ २ बापबपसावकौ बसिनहौ लडाई॰
माया सदानहिसगौ लयासा चलैनाव लै बिरहसरिच
गौ पीवपरमेसर२ औसरमनिषादेह॥३॥१५॥पद॥ अवधू
ऐसा ग्यान बिचारी तातै नई पुरषतै नारी टेक नाहू
हू कंवारी पूतजनेजनिहारी काली मूंडी
अजहू अकनकंवारी १ बांम्हणकेबंम्हणीहोती योगि
यांके चेली कलमांपढिपढिनईतुरकनी अजहू फि
रहू अकेली २ पीहरजांऊंनरहूसासरे पुरिषहिअंगनलाऊं
कहैकबीरसुनहुरेसंतो अंगहिअंगनछुवाऊं॥३॥१६॥
॥ पुरिषब्रह्मनारीमायाटेक ब्याहौनहीकिनेबसि
नकरीकंवारीनीनांहीकेसंचचौडिमारोयामायाकूं १ अ
जहू अकेली मायाकाहूसंगिनराचे २ पीहरपरमेसरसास
सासंसारमायाकहीथिरनहीजाइन आवै सोरब्यापरहै
पुरष अंगनलावै काहूकैबसिनहोइ सबकूंठगिसबतै
न्यारीमाया॥३॥१७॥पद॥ चौषौ बिनजब्योपरकरीजे अ
इनैदिसावरेरामनजिलाहोलिजै टेक जबलगदेषोह
टपसारा उठिमनबणीयारेकरिलेबणिजसवारा १ बेगे
होतुम्हलादलदांनां औघटघाटचलनां इहिपयांन
२ षरानषोटानांपरषांनांलाहाकारनिसबमूलहिरांन
इसकलहुनीमेरे लोनपियारामूलजराषैरैसौईबनिजा
रा ४ देसनलापरलोकबिरांनांजनद्वैच्यारिनरपूछ्यौसा
द्दांनां ५ साइरतीरनवारनपाराकहिसमझायैरेकबीरब
निजारा॥६॥२९॥ अरथ॥ हाटदेहपसाराइंद्रीयरैबणि
जबुल्लसूसासिसासिसुमिरण १ लादलदांनांसंगकेगये
औघटघाटपैयसौइपयांनां २ षराषोटापापपुनिपरष्यौ
नहीलाहास्नेनमूलमनिषादेहइदेसमनिषदेहलो
कईदीबसिनहीद्वैच्यारिपांचइंद्रीछठामनसुधनहीं
४ साइरसंसारताकावारपारनहीं॥५॥२९॥पद॥रेदिल
षोजिदिलहरषोजिनांपरिपरेसांनीमांहिसहरमाल
अजीजहैकोईदसतगीरीनांहिटेक पीरांमुर
यांमुलांअरदेरवेसाकहांसैतुमकिनिकीरा अ
हैसबनेस १ जरांनांकतेबांअसुपढिपढि
नेंजाइ दूकदमकरारीजेकरैहाजरासूरषुदाइ २

गांखकेखकिदोंदिषुसीयांखेअकलिखकदिपवांहिमु
चुसाचषलकमालिकसेलसूरतिमांहिरअलदपाक
लनांपाककभूअखदूसरानदीकोइीकवीरकरमकरीमको
करणीकरेजोगोसोइ॥४॥२८॥अरथ॥दिलमेदिलदार
बोजिपरसांनीससारषरावेमेंनांपरोमदरमालमुलक
झटेबअतिदस्तगीरीहाथिकोइनपडैगा टेकअसि
पारसहितसबपड्या परफिकरनगया दमकरारीसंतोष
धीरजधरेदाजरदेआपारदरोगजूठखकिखकिपवांहिं
अभिमांनतोलेंषालिकषलकमेंसेलरमिरह्यादेसबसू
रतिमें २ वदपाक कथकुनांपाकांकुंजोकसंगिरहेकरणी
बिनांनापाकाकरणीकरेतोपावें॥३॥२८॥पद॥षालिक
दस्किदीदस्तालपेजरंजिसकरदडुसमनपुरदकरिपेम
लटेकनिस्तिकुसकांदोजगडुदरदराजदिवालयहनं
मप्रदाइतअसराजहरजंगमजालरदमरफतरदबे
रकुसमांषुरदासुमांबिसियारदमजमीअसमांनषालि
कगुदमुसकलकाल१असमांनम्यांनेंलहंगदरीया॥
लहांगुसलकरदांबूदाकरिफिकरदसालकजसमज
दोसतहांमोजूदरदमचिबूदनिबूदषालिकगरकद
मतुमपेसकबीरपुनदमुदाइकीरहेदिगरदावानेस॥४॥
रोगाबुभि षालिकजिनिषेलबनायादरिकदीसब
जोरदरहालततकालपांचइंद्रीरंजकरेदमकूंडुसमन
बैरीहैपेमुरदकरिपेमालत्नमारियनकानासकरिटेक
निस्तिकुसकांदोजगांनिस्तिवीचिआडेदोजगलेजांहि
ऐबदरगुणदराजदिवालबडीलंबीचोडीकांथपहनांम
हादिदूरिकरिपरदायतआलमयाअगनिहैजहरजंगम
जालबिसियाररूपइंद्रीतिनकाजालरमेंफस्याहूंदमर
फतरदवेरकुसमां दमचलैहैंऊरादमेंषुरदासुमांछोट
सुमेंबिसियाबकूतुम दमजमीधरतीअसमांनषालि
कतुमआकासवेतकैचेगुदमारेहैंबिकटमुसकलकाल
बेतुम्दअसमांनकीनांईलहंगदरीयाबडादरीयावगु
सलकरदाबूदअसमांनयहजोसबवोरव्यापकाकरिफि
करदमचिंताकरिदसालडुमहैदमारेमोजूदतियारज
दोसतहोतुमदमचिबूददमक्याहेंनिबूदनिकछूदम
गरकदमभायोमेंपेसतुमआगेहैंयनसिरणिरदहिगार

रहै दोइ तें निरदावे ॥४॥१८॥६८॥ कबीरा प्रे
रा हमारे राम बिनां न सरै रे बांधि लै धेरा सी चित्त लै क्यारी ज्यूं रूंपट
लै रे रे टेक काया बाडी मांहे माली टहल करै
जन सोवे काज संवारे पांणि तिहारी माती २
तन रति सीतल कबहुं न बाव न लौरे नागर मारे हरि ष
वारो कबहुं उजाड न लीरे २ गुरु बीज जमायो किरष निपा
यो मन की आपदा षोइ वीरे स्यावट करै षारिसा सिलाकरै
सब कोई रे जो घरि आया तो सब ल्याया सब ही काज संव
रयो कहै कबीर सुनहु रे संतो थकित भया मैं हास्यो ॥४॥२
०॥६९॥ प्रेम सोई कलधौ रा ध्यांन क्यारी काया पेड प्रांण त
रो नाम जल सूं टेक माली मन पांणि तिहारी आत्मा सेजे रू
रा आत्म कंवल मैं उनमें सांति स्वांति गी गुण रु बाव बि
वै बाइन ली १ बीज सबद हरि ज्ञा बीज नाम किरषि काया मैं न
वल गति सोइ किरषि वीरे स्यावट तुष्ट वान स्यावट सो सुर
ति लगी थिर हूई साध सदृश गुणी जगति की नैपे हुई सि
ला कै रे सिले हार जिग्यासी २ घरि आया घट मैं थिर हूवा
सब परमेसर ॥४॥२०॥७०॥ रामकी सों करि या पाटगा राम
छाडि और न जाचूं गा टेक तांनां तनत मोरा बेटा मास्यो धीम
रा बौराई छाक मारत मोरी महरी मारी मा मोरी बौराइ १ टा
टी फारि पई सातौं नां अंतरि मिलि गयो गह की लागी च्या
रि कमर भेदी लौ लागा तरि गई मद मस्ती २ हंसिया को पट को
हूं लै की लसी यहि नियांमति लकुसी कहै कबीर दो जं उ
लतारे अब मोरी संसे छूटी ॥४॥२१॥७१॥ पाटइ दी बिषै तें
मूहेंगा टेक तांनां संसार सूं तनि तां बेटा बपमा स्याधी ऊव
छि बौराई बावली सो मारी छाक स्वाद महरी मनसा सोम
री बाइ बिषै बाह गई हरि जै बुम वीरा पी २ टाटी जरम की
पई सा परमेसर प्रेम अंतरि हरि दे गह की आत्मा गुण
मारी गोबिंद के लागी च्यारि मन बुधि चित अहंकार च
तुर अंतह करण ल्यो लागी कमरि करमा के मिरबज
ई मदमस्ती माया की उत्तरि गई २ हंसिया जीव ताका
ह ग्यांन को हकरणी लूसी भाव हह नो जनत्रो ग्या हूजा
को हकरम लसी लूम्या ग्यांन अगनि दोजं उलदा जंप
स्यौ आवे सो तिरै हरि जादो जंपष तें न्यारो ॥४॥२२॥७२
रामसोर ॥४॥७२॥ अब न रहूं माटी के घर मैं अब

हरहूं मिलि रहूं हरि मैं टेक छिन हूं घर अरू छिन हूं हाटी
घन गरजत कंपे मेरी छाती।१।दसवें द्वार लागि गई तारी
हूरि गवन आवन नयो नारी।२।चहूं दिस ले वे च्यारिप
हरिया जागत मुसिगए मोर नगरिया।३।कहै कबीर सुनै
रे लोई मांनण घणन सवारण सोई।४।१।अरथ।।माटी
का घर काया सो कायो छोडि हरि मैं वास करूंगा।टेक छिन
हूं घर अरू छिन हूं हाटी काया।छिन जैगर जन हूं नाथा
रफैरें विषै मैं घन काल गरजे।१।दसवां द्वार तार।हंस चल्या
नव चुप सब द्वार सुनि।हूरि गवन जम पंथ आवन नारी छि
रमनि षदेह न पावे।२।चहूं दिस वे वेपारहू रा जांकचा क
र गरीब के जेट बंधु सिगारे जम लोग रो जीव हूं नगरी का
याहू सहज सुन्नाइ इंद्र रहित परमेसर मांहि मिलि रहे सो
फिरि देह न धरे।४।२।पद।।यहि विधि रांम सूं ल्यो लाइ च
रन पांषे निरति करि रसनं विन रसनां गुण गाइ टेक जहां स्वं
ति बूंद न सीप साइर।सहज मोती होइ उन मोतीयन मैं नी
र पोयो पवन अंबर धोइ।१।जहां धरनि बरसै गगन भीजै
चंद सूरज मेल।अणमिलिया सो मिलण लागा करत हं
सा केल।२।एक बिरछ मांही गंग निकसी कनक कलस पु
राइ पांच सूवा टाहलहि बेठा उदै भई बणराइ।३।जहां
का बिछुरया तहां लागा गगन बेठा जाइ जन कबीर व
टाऊ वा जिनि मारग लीयो चाइ।४।३।अरथ।।चरन प
षे चरन बिन आकार रहित भाव की सोंज।जिभ्या बिनां
अंतरगति टेक आकार नहीं अरस बहै निराकार छै बूं
द ब्रह्म सार निरमल सुरति सो ई सीप।हिरदा सरोवर मोती
मन।सहज इंद्र रहित निपनां नीर नांम पवन सास अंबर
आत्मां।१।धरणि काया लहर मुषि हूं दी उलटि अंतर बि
रषा गिगन आत्मां नीगी।चंद सूर मन पवन एकत्र दोइ
गुण तातासी लासमि हूंसा प्रांण।२।बिरष काया नदी नां
व की कलस आत्म कंवल पंच इंद्री थिर भई बणराइ
सोमावत्नी रोम रोम धुनि।३।बिछुर्यो ब्रह्म तें गगन ब्रह्म
स्थान जाइ बैठा प्रांण बटाऊ संसा।४।३।पद।।तेरा
जन वामैं जु लाला मेरो नाम सुमरण का लाहा टेक दसें
गकी पुरिया पूरी चंद सूर दोइ साषी अनंत नांव गिनि
ई मजूरी हिरदा कंवल में राषी।१।सुरति सुमति दोइ षूं

दीकीन्हौ आरंभ कीया विवेकी
जन तत्त आत्मा पेषी ॥ ४ ॥ अविनासी मन लई मंजरी
मनि पाई रन बन सम सो षिसो षिं आया निकटें
ताई मन सूक्ष्म को कूच कीयो है ग्यान
की गति त्रिगुटी सब त्यागी जहां को तहां ल्यौ लाई
विवेका सुखराई याको अनभै पद प्रकासा दास कबी
र जुन तसरूप पाया ॥ ५ ॥ सेसा सब नासा ॥ पा ॥ २ ॥ अरथ याते
सा दूरि नांमें जु लागा ध्यान ज्ञान समिला है और कि
या में नहीं टेक दसूं दिसा सूं धार समेटि परमेसर में सुरति ला
ई पूरी ताली चंद सूर मन पवन साषी छूटे बडे तिण कि
न बुण न लागा ॥ सुरति सुमूरति सुरति सबद सुमूरति स्वास
स्वासा परमेसर में विवेक आरंभ कीया बुण तया सो ज
गो बिंद सूं बणावते अपणी आत्मा दरसी ॥ २ ॥ अविनासी क
हे जिन सेन ही ता को दरसन भई सोई मंजरी पूरा पूंजी नांव
आरंभ वन वन दूर मुष अन्तर आया निकट हिरदा रमन सूक्ष्म कीय
परमेसर सूं सोई कूच ग्यान का कूंडा में प्रेम पाणी पाई तब गं
त्रिगुटी त्रय करम त्यागे जहां परमेसर सूं ल्यौ लाई ॥ ४ ॥ वि
वेका मिटि चौरासी छूटे तब की अनभै नेह रहत ब्रह्म पद सोई
हिरदा में प्रकास्यो कुण तगो बिंद सूं बणावते ३ पनावा ॥ प
द ॥ पद ॥ लाई रस कहत तब निरबनि रने कुरंग पीछे राम हिरदे
न दे कुरंग टेक करम दोक बिना नी ताली तीर पंच पिरानी
ताको देही क उदासी तब तत पीव षि सके बिनासी ॥ २ ॥ जो
तूं चौसटि करी यो ध्यान ही ताहि पंच सूं मिलावा जो तें
पासे हमें सेना री तो तूं सुष सूं रहे प्राणी ॥ ३ ॥ पद ली तणीय
ताणी पीछे बुणी यो बोणा तणि बुणि मुरब कीन्हा तब
राम राइ पूरा दीन्हा ॥ ४ ॥ राम नरत न हंस फाता रूणी नीय
मन बंधा कहै कबीर बिचारी अब छोड़ी न लीद मारी
॥ ५ ॥ ६ ॥ अरथ ॥ तनि बुनि संसार ते तानो परमेसर सूं बन
वो सब तासी ॥ २ ॥ बिना निमन हाथ करो टेक पंच पिरानी पं
च इंद्री उदासी प्राण माया ते उदास करो तणि संसार सूं
तोणि मूरति परमेसर सूं बणाइ बिनसी मिटी चौरासी
॥ २ ॥ जैसें चौसटि कला सीषी तो नो पांच इंद्री बसि न भई
पांच से बसे पांच इंद्री गमन ताणी ॥ ३ ॥ पद ली तणीय
पद लो संसार सूं तासार ताणी पीछे बणाया पीछे परमेस

रमैंबाणाया।मूरतबसाबूदसौंज परमेसरमैंकरी।पूरादी
या।श्रादपाया।२।माअग्यानकरिबाणतासांऊरवांतिनई
तारूणीब्रह्मबांणीतहांत्रियामनसा।श्रमेनबांधेथिरन
ही।श्रौषधीषासीनलेपकर्मीतेनलीकाया॥४॥४॥पद॥
परमगुरदेषोहिरदेबिचारी।कछूकरहुसहाइहमारी।टेक
लवानालितततियकसमिकरिजंनऐकनलसाजासरि
तश्रसतिकछूनहीजांनूं।जैसैंजाया।तैसैंबाजा।२।चौर
तुम्हारातुम्हारीश्रापा।मुसियतनगरतुम्हारापनकेगुन
हहमकूंक्यूंपकरो।क्याश्रपराधहमारा।२।सोईतुमसोईहम
ऐकेकहीयत।श्रापापरनहीजांना।ज्यूंजलमेंजलपैसिनरि
नकैसैंकहैकबीरमनमांना॥३॥५॥श्ररथ॥लवालोन
नालिउहसंतीजिभ्याजेतकायासतिश्रसतियाकेसारे
नहीं।परजदिश्रापापरनलेतदिऐकाजबताईछेदेषे
तबताईपकडीऐनीमारीऐनी।श्रात्मानेदराषेतौलौ
नछूटे॥३॥५॥पद॥मनरेश्राइरकहांगयो।तातैमोहिबै
रागभयो।टेक।पंचततैकायाकीन्ही ततलहांलेकीन्हो
करमूंकेबसिजीवकहैतहो जीवकरमकिनदीन्हा।२।श्रा
कासगगनपाताललगगन।दसूंदिसागिगनरहाइले।श्रान
दमूलसदापरसोत्तमघटबिनसैगगनसमाईले।२।हरमै
तनहैतनमेंहरिहैहैपुनिनांहीसोई।कहैकबीरहरिनांव
नछाडूंसहजैहोइसहोइ॥३॥६॥श्ररथ॥बैरागबिचारबि
चारभयो।टेक।पांचततैकायाकरी।ततकहांतेंकीयाकर
मकैबसिजीवतौकरमकोणका।१।श्राकासपातालदसूं
दसागगनब्यापकातैसेंब्रह्मसबठौरब्यापका।ब्रह्मतिहि
काकरमघटबिनसैतिहिसरनैगयो।२।तनब्रह्मबातपोत
फिरिनांहीक्यूं।ब्रह्मगुणांतैंन्यारायकाबासनाकरिब्रह्म
तैंन्यारा॥३॥६॥पद॥सरवरतटिरांमराइहंसणीतिसाई
जुगतिबिनांहरिजलपीयोनजाइ।टेक।पीयोचाहैतौ
लैषगसारी।उडिनसकैदोऊंपरनारी।१।कूंनलीऐवाटीपनि
हारी।गुणबिननीरनैरैकैसैंनारी।२।कहैकबीरगुरबुधिबता
ईसहजसुनाइमिलेरांमराई॥३॥७॥श्ररथ॥सरवरहिरद
सरोवरहंसणीश्रात्मा।नामजलबिनांतिसाइटेकषगपं
षी सो प्रांणलेलेजउसाभिकंवलकूवामेंदोऊंपषरोगदे
ष।१।कूंनकायापणिहारीश्रात्मा।गुणकहीएलेजसोलेन

रमैंबाणाया।मूरत्तबसाबूदसौंज परमेसरमेंकरी।पूरादी
या।आदरपाया।२।रा।अगपानकरिवणतासांजरवां।तिनई
तारूण।ब्रह्मबांणीतहां।नियामनसा।अमेनबांधेथिरन
ए।ह्रो।ह्रो।षाली।नलेपकमींतेनलीकाया॥४॥४॥पद॥
परमगुरदेषो।हिरदे।बिचारी।कछूकरहुसहाइहमारी।टेव
लवा।नालितेतियकसभिकरिजंन।एकन्नलसा।जा।सरि
तअसतिकछूनहीजांनूं।जैसैंबजाया।तैसैंबाजा।२।चोर
तुम्हारा।तुम्हारी।आग्या।मुसियतनगरतुम्हारा।यानकेगुन
हहमकूंक्यूंपकरो।का।अपराधहमारा।१सो।इतुमसोईहम
एकेकहीयत।आपापरनहीजांनां।ज्यूंजलमेंजलपेसिन।र
नकैसैंकहैकबीरमनमांना।।३।।५।।अरथ।।लबवालोन
नालिउइतंती।जिग्याजेनकाया।सति।असतिया।केसोरे
नहीं।परजदि।आपापरन्हेनेतहिसैकाजबतांईछेदेषे
तबतांईपकडी।ऐनीमारी।ऐनी।आत्मानेदरोषेंसौनो
नछूटे।।३।।५।।पद।।मनरे।आइ।रकहां।गयो।तातैं।मो।हिवे
रागभयो।टेकापंचततंतैंकायाकीन्ही।ततकहांलेकीन्ही
करमूंकेबसिजीवकहैतहैं।जीवकरमकिनिदीन्हा।२।आ
कासगगनपातालगगन।दसूदिसा।गिगनरहाइलै।आन
दमूलसदापरसोत्तम।घटबिनसैगगनसमाईल्ले।२।हरिमें
तनहैतनमेंहरिहेंलैपुनिनांहीसोईकहैकबीरहरिनांव
नछाडूंसहजैहोइसहोई।।३।।६।।अर्थ।।वैरागबिचारबि
चारनयो।टेकपांचततंतैंकायाकरी।ततकहांतैंकीयाकर
मूकैबसिजीवसो।करमकौणका।२।आकासपातालदसूं
दसागगनब्यापकातेसैंब्रह्मसबठोरब्यापका।ब्रह्मतिहि
काकरमघटबिनसैतिहिसरनैंगयो।२।तनब्रह्मवांतपोत
किरिनांहीक्यूंब्रह्मगुणांतैंन्यारायकुबासनांकरिब्रह्म
तैंन्यारा।।३।।६।।पद।।सरवरतटिरांमराइहंसणी।तिसाई
जुगतिबिनांहरिजलपीयोनजाइटेकपीयो।चाहैतो
लैषगसारी।उडिनसकैदोऊंपरनारी।२।कूंनलीएगटीपनि
हारी।गुणबिननीरभरैकैसैंनारी।१कहैकबीरगुरुषिबता
ईसहजमुभाइमिलेरांमराई।।३।।७।।अरथ।।सरवरहिरद
सेविराट्हंसणी।आत्मा।नामजलबिनांतिसाइटेकषगप
षा।षो।प्राणलेलेजउसारिकंवलकूवामेंदोऊंपषरोगदे
षा।२कूंनकायापणिहारी।आत्मा।गुणकंहीएलेजसोलेन

दीनीरनांम २ गुरकृपा करि कैंलगति ग्यांन की बुधि बताई म
हजसुन्यां ह डुदर दिल सोई सहज रांम जी मिले ॥ २ ॥ ७ ॥ २० ॥
रांम के दासे ॥ पद ॥ एक कोस बनि मिलांवन मेला
क्यनीति करै फुरमाइ संदे अ सवार अ के ला ॥ टेक
टक जुसेसत सब गहा करत बकेली जेला जो रिकटक गा
हतो रिपातिसाह बिलिचल्यो रेक बेला २ कूच मुकांम
गके घरमें कछू यक दिवस घटांनां आसण राषि बिभूति
शाषि दे फुनि लेम ढी उडांनां २ या जुगीया की जुगति
ने सो सतगुरका चेला कहे कबीर तन गुरकी कृपा से
सबन रम पद्येला ॥ ३ ॥ ३ ॥ अरथ ॥ रेक को ऐसा कोई संत
स्रूरिवां जो सब सासीर मिलावे तनकी फुरमाइस गुणां
परि कुकम करे अ सवाइ इती तिन परि अ सवार प्रांण टेक क
टक ग्यांन दल जोरि गढ काया गुणां दिकरा के फैली फैला
गुणां की चोट फेरे बिचार सूटा लें आप सबद सर कारि गु
णां का प्रहार करे कटक ग्यांन दल जोरि गढ काया
पतिसाह मन पकड़ि २ कूच काया के गुणां सून्या
मआतमा आसण छूट नां नाम जप्या आसण संसार
रसैं अन्न मैं बिभूति रहीम ढी मन सा जोगी जन जुगति
करणी करै ॥ ३ ॥ ३ ॥ २० ॥ ५ ॥ राग नैरू ॥ पद ॥ ऐसा ध्यांन
रोन रहो सबद अनाहद चितवन करो टेक पहली
जोपं चंद्र बाह बाइ बिंद ले गगन समाइ गगन जोति
लो त्रिकुटी संधि रवि ससि पवन नांमे लो बंधि २ मन थिर
होई तो कंवल प्रकास कंवला मांहि निरंजन बास सु
रोस पट षोलि दिखावे निगुरो कैसे कहा बतावे १ न
टि पवन जब चटे अकासि तने कंवल बिचि निज
कासासि ने पति आवे सब्द उपजाइ आपा परमें रहे स
इस रहे समाइ ध्यांन न दो कोइ सुनि सबद सहजै ती होइ
रगट तीन लोक ल्यो लाई अ बहरि बिन औरन
ई २ कंवल नासि निज बपाया प्रांणा दिढ बुधि
करि जांना तल त्रास सिहर सो ध्यांन जांना गुर किरपातें पा
या पूरा ग्यांन ॥ ४ ॥ बुल ध्यान बुल समि तो इ पूरन प्रीति
करैं जे को इ जुरा मृतिर है तजि कंवल सो हें से सातां का
रेपं अब रन बरन बाचा बंध देह निज जन के अव
सु षो लेह नादे बिंदका बिंदे नाद नादे बिंद मिले

बिंद ७ सहज लहि निलेत जो उपाधि आसन दिढ निह्।
निसाधि पखेपवन जहां रामना कहै कबीर न जिनि
न वनधन ॥ ८॥ राग रथ॥ अनहद दद बिनां नाचीस
बद टेक पांच बाइ पांच इद्री बाइ स्वासा नि दस दत ग
गन अंतरि समावै गगनि हिरदा लहां ब्रह्म जो लि त्रिकु
टी २ मन पवन स्यो थिर रहि स सिनातासी ला॥ गुरा स
मटि हिरदा कंवल १ पवन स्वास चलटि आकास वत त
चीदसा ब्रह्म में लगावै उनै कंवल विचि हिरदा कंवल
तहां निज कारण सिनांवा नै पति गोविद का दरसन सं
दुष जाइ जनम मरण मिटै आत्मा परमात्मा में समावै रा
परमेसर में समाइ रहै जहां माया गुण पसारो नहीं गुनि
सबद ब्रह्म सबद प्रगट परमेसर तीन लोक में तासूं
ल्यौ लाई बिनां राम स बकूवा ४ कंवल नालि नाभि
कंवल प्राण सुमरण सूं सी त्या ता सूं उधि अचल न इ
धीर जमै तोष न यो ब्रह्म सति करि जांणो मासि मन पव
न उलटि चांण सूर जि काम क्रोध लोभ मोह सौं गुर
परताप तै पूरा ग्यान ब्रह्म ग्यान पायो ५ ब्रह्म ग्यान वि
चारै सो ब्रह्म समान हो [illegible]
डि एक [illegible]
सा जीव सा व एक ६ अब सा ब्रह्म ताकूं बरणौ बरन सप्त
पसारो ताकूं न बरणौं अैसो निज जन होइ सा निज सबद
सुणै नाद बिंद थिर सनी गोबिंद मिलै ७ सहज जल लीन
इ दरहि त उपाधि नांव बिनो जो करणी आसण दिढ म
न का आसण ब्रह्म में ठहरावै निहा अग्यान निवारो प
हुप पत्र आत्मा कंवल हीरा मणि नाम ॥ ८॥ २॥ इजा गौ
गी मै॥ अनाहद नाद नि सबद चित वो पांच बाइ पांच तत
कील लि बाइ बिंद लहि मिली तब गगन दसवां द्वार त
हां समाइ गगन दसवे द्वार ब्रह्म जोति त्रिकुटी इला पि
गुला सुषमनां मधि मिला पर विस सि ता तासी ला संपट
कंवल प्रफुल पट कंवल हीरा पवन॥ ३॥ पद॥ यहि वि
धि सेइये श्री नरहरी मन की दुबध्या मन परहरी टेक मन
करि पूजा मन करि धूप मन करि सेवा सहज सरूप मन अ
वै मन दह दिस जाइ उनमनि रहै सो काल न खाइ मन
मे जनक रि दसवैं द्वार गगन मनां संधि विचारि बिंद

दि नादक नादे बिंद। नादे बिंद मिले गोबिंद।१। जहां
६५७ जहां तहां कछू जांनि। जहांनहीं तहांतें कछू पांवांनि। नां
दे छिन जहां लागि। जहांनहीं तहांरहीयो लागि।२। देवांनदे
पूजा न जाप। नाइनहथ माइन बापगुण अतीत जसा
गुरआप। नरम जेवड़ी जगकीयो साप।४। दूधमें घृतपहै
में बास। काष्टमीत रिअगनिप्रकास। जोरकहूतो कोई न
साई। ऊणकामें ब्रह्मंड समाई।५। तनन नांहीकब जबमन नां
मन प्रतीति ब्रह्मतनमांहि। परहरि बकउलागहि निजसार। नि
षदे षिनिषि वारनपार।६। कहै कबीर परमगुरग्यांन सुनिमंडल
धरो धियांन। पिंडपरे जीव जैहै जहां। जीवतहीं लेराषो तहां।
२। अरथ। यहि बिधियसी बिधिसेवो। श्रीकहीए मोनावांन
जाको अंतनसोला नरहरिनारोहण। बब्यामाया गुणपसारय
कीजो चित्तवनि चाहिदेमनमें सोमनसूंघाडो। टेकमनकरिके
प्रेमप्रीति परमेसरकूं सुमरे सोईपूजा मनकी जो किरणब्रह्मअ
गनिमें जरावे सोई धूपसहजसरूप गुणातपाथि रहितब्रह्मसह
पसोई सेवो मनकबहूकअंतरि आवो दिहदिसदसूंद्वारेनमें
उनमनयामनको मन परमेसर तासूं मिलेतीका लमेनांही।१। ज
हांनहीं गुणरूप। अरुपहन आकार रहित निरगुण ब्रह्म सोस
तिकरि जांणो। न्रगुण ध्यान तें नाजांणोनहीं आकारघटधरेसब
मायासि ध्याहे।२। जगतकेसो प्रगटदसवां द्वारा हिरदा जहांम
नमें लषो हंग गाग ब्रती बांणी जमुनां बेवतीबांणी नादबि
दमिलकारोगोबिंद मिलेर।३। देवपूजा ऊटंबन काया निरगुणब्र
ह्म ताका जसगांके। आकाररूपकहै सो भ्रमजेवड़ीकूं अप
४ जैसें दूधमें घृतव्यापक फूलमें बास व्यापक काष्टमें अगनि
व्यापकवर्णंकामें ब्रह्मंड ब्रह्मंड कहा वाकरणकाकोपिंड
सोई ब्रह्मंड ऐसें सबमें निरंजनव्यापक है।५। तननांही जबम
नकल्पनांनांही बऊलाबप।६। गुरपरमग्यांन बतायासुनिमं
डलकैंदराहितसोहिरदाब्रह्म अस्थान।।७।।२। पद। तहां
सोरांमनांम ल्योलागै सो जुरामरण छूटै नरमनागे टेक अग
मनिगमगढरचिलेअवासातहूंवां जोतिकरैप्रकास चमकै
बिजुरी तार अनंत तहां प्रभुबैठे कवलाकंत।१। अषंडमंडल
मंडितमंड। त्रिस्नांनकरे त्रीषंड। अगम अगोचर अभि अंतरा। ता
कोपारनपावै धरणीधरा।२। अरधउरधबिचिलाइले आकास।
तहूंवां जोतिकरैप्रकास। टारयाटरैनआवैजाइ। सहजसुनि

मेरहो समाइ ३ अबरन बरन स्यांम नहीं पीत हो हू जाइन
गावै गीत अनहद सबद ६ ऊंणाकार तहां प्रभु बैठे संम
थसार ४ कदली पुहुप दीप परकास हिरदा पंकज मैं लीयो
निवास ५ द्वादस दल अभि अंतरि म्यंत तहां प्रभु पाइसि करि
ले चिंत ५ अमलन मिलन घांम नहीं छांह दिवस न राति नहीं
है तहां तहां कोंगे सूरन चंद आदि निरंजन करे अनंद ६ ब्रह्मंडे
सो पिंडे जांनि मांनसरोवर करि सनांन सोहंहं साता का जाप ७
ताहि न लिपै पुनि न पाप १ काया मांहीं जांनै कोई जो बोलै सो
आपै होई जोति मांहि जौ मन थिर करै कहै कबीर सो प्राणी ति
रे ॥ ८ ॥ ३ ॥ अरथ अगम निगम हरि नजीक प्रबल ब्रह्म गढ
ता गढ मैं प्रवास आत्मा मांडौ है ज्ञा अगम सो कहैत आगै सो
ब्रह्म अस्थांन तहां अवासरचो जो सि जगदीस को । बिजुरीसा
रे ब्रह्मतेज कंवला माया केतगो छिद २ अखंड मंडल ब्रह्म अ
स्थांन तहां मांडौ ध्यांन ३ सनांन मनपवन सुर तिथिर तहां
त्रिबेणी जहां त्रिछांन करे षडकहीएतीनगुणछांडे अगम
अगोचर गो छिद अनिअंतरा अपणीं मांहि द्वौ ४ रणी धरा ब्र
ह्मा पारन पाइस कै ५ अरध उरध बिच्चि सासउसास आकास आ
स्मा तैन मैं ब्रह्म सहज उदर हित सबमैं समाइरहा ७ अब
रण बरणं जाइन बरन कहा जाइ स्यांम पीत कालन पीत
हो हू कहीये गांवणो सो बेद भो ह्या गाइन सकै पेला यार अन
हद हदर हित ऊणाकार ४ कदली काया पहुप आत्म कंवल
दीप कब्रह्म ग्यांन पंकज कहीए कंवल सो हिरदा द्वादस बा
रह कला पवन हंजा अनूं हास चक्र ताके बारे हे पांखुडी त
हां मोत परमेसर ५ अमिलन मैलन हीम लिन मेंला सो ब्र
ह्म मैला न मल दोइ गुणां सें रहित घांम न छांह सुषन दुष
दिवस न राति ५ पांन अपांन रहित सूरन चंद तासा सी ता गु
ण न हीं ६ मांनसरोवर हिरदा सोहं जीव सां वाएक कीनजे ।
ताकूं पाप पुनि नहीं ॥ ८ ॥ ३ ॥ पद ॥ टीका अचेना ऐसा नया क
रणीसें कारण मिटि गया टेक करणी कीयां करम का नास पा
वक मांहि पदीप परकास पहुप मांहि पावकपरजरै पाप पु
नि दोउ भ्रमटरै २ प्रगटी बास बासनां धोइ कुल प्रगट्यो कु
ल घाल्यो मोइ उपजी चिंत चिंत मिटि गई भैं भरम भागा ऐसी
भई २ उलटी गंग मेर कूं चली धरती उलटि आकास हि मि
ली दास कबीर तत ऐसा कहै सिसिहर उलटि राहु कूं गहै ॥

३॥४॥अरथ॥ करणी ब्रह्म न जनं है कारण चौरासी मिटै
पाप करता पानी अगनि परकु पआतमा कंवल बिगस्या १ प्र
ब्रह्म बास तब संसा बासना षोई। कुल के सब भ्रम ग्यो
ब्रह्म आत्म सोया २ गोबिंद चित उपजी तब माया
दीगी ग्यांन उलटि संसार सू सुमेर कू चीदसा चली
काया सीं जउलटि। आकास आत्मा अस थलि थिर नहीं स
मन पवन रा दरसा॥३॥४॥पद॥ संत निरोक अहेरा लाश
र नि मिल सज्जन का षाष आटे कयाजंगल में पांचूं मृघा रि
ष नि का चरिगा १ पारधी पनो सांधे जे कोई अर्ध षसारो षेसो
२ कहै कबीर जे पांचूं मारे आप तिरै औरन कूं तारे॥३॥४॥
रथ॥ अहेरा गुण सिकार॥ मृघा पांच इंद्री षेत काया षाश
षि चित जंगल काया पारधी सोई। जो इन्द्री देवे पांचूं इन्द्री
३॥५॥पद॥ हर रंग बिलवनो बिलोइ मेरी माई ऐसे
लोइ जैसें तत न जाई टे॥ तन करि मटकी मन दहि बिलोइ
या मटकी मे पवन समोइ १ इला पिंगुला सुषमनि नारी बेगि
बिलोइ ठाडी छाछि हारी २ कहै कबीर गुजरी बौरांनी मट
फूटी जोति समांनी॥३॥६॥अरथ॥ माई मनसा बिलौनो ब्र
ह्म बिचार करि तत ग्यांन का इलोइ जाइ हरि नांम बिलोवै टे
क तन मटकी मन मही सास पवन थिर राषि सुमरण मे १
पिंगुला सुषमनां मन पवन सुरति मिलाप छाछि हारी मत
२ गूजरी मनसा मट की काया फूटी जोति समांनी आत्मा रा
३॥पद॥ ऐसा ग्यांन बिचारे मना हरि किन सुमरे दुष भंजन
टेक जब लग मैं मैं मेरी करै तब लग काज एक नहीं सरै जब
मैं मेरी मिटि जाइ तब हरि काज सवारै आइ १ जब लग
सिंघ रहै बन मांहि तब लग यहु बन फूलै नांहि उल
ल सिंघ कूं षाइ तब यहु फूलै बनराइ २ जीत्या डूबै
तिरै गुर परसादि जीवत ही मरै दास कबीर कहै समझाइ
वलोमर है स्यो ल्याइ॥३॥८॥अरथ॥ मैं मेरी प
कार जन ही १ सिंघ संसा बन काया फूलै न्याव लगति न ही स्या
ल जीव संसा सिंघ २ जीत्या अहंकार हार्या जीवत मत
८॥पद॥ माई न्यूलनारा मुनस हि मारै मुनस हि मारि पारोसी
ही तारै टेक माइ बाप की गैनें न कांनी सुसरा कूं मारि आवि
यांनी १ माइ कंवारी धीय व्वर आयो नातनी यां घरि भ्रटा
यो २ पंच बराती सवे जमाई तिन हि मारि कूं ब्यांहन:

२ कहै कबीर हूं परम निवास यहु पद बिचारै मैं ताका दास
४॥ ८॥ अरथ॥ नारी मनसा मुनस मनोरथ पाडौसी पिंड
हूजा जिग्यासी टेक माई माया बाप बप हूं नका ममतनो ह
सुसरा संसा पांनी प्रेम १ माई मनसा धीय बुधि बर ब्रह्म ना
तनी यां जीव थोटा कहीए बालक सो ग्यांन २ बराती पांच
इन्द्री जमाई जम ब्याह ब्रह्म सूं बनाकै ३ परम निवास पर
मेसर मैं निवास हूवा॥ ४॥ ८॥ पद॥ पारोसनि मांगै कंत हम
रा पीव क्यूं बौरी मिलै उधारा टेक मासा मांगै रती न देऊं घ
टै मेरा प्रेम तौ कासनि लेऊं १ राषि पारोसनि लरका मोरा॥
जो कछु पाऊं स आधा तोरा २ बनबन ढूंढूं नैन न रिजोऊं
पाऊं न मिलै सो बिलषि करि रोऊं ३ कहै कबीर यहु सब
जग मारा बिरली सुहागनि कंत पियारा॥ ४॥ १७॥ अरथ॥
पारोसनि सती करता कं तकूं चाहै कालै पीव परमेसर उधा
रा अधूरी सेवा प्रीति बिन न पावै टेक मासा मन किरपा चाहै
रती रधि माया मन बटै प्रेम घटै १ पारोसनि सती लरका इ
न्द्री सेवा करि पोषै आधा तोर साची सेवा जती सती दोऊं मुक्ति
बन काया ढूंढै हूजा बन सतसंग ढूंढै बिरहनी ए निरमोह
२ सुहागनि साधक सकरतार तिन कौ प्यारो सो सेवा मैं तत फुर
सुष उपमैं मन न बहावै ता संग तिमुकति॥ ४॥ २०॥ २५॥ १
राग ललित॥ पद॥ निबरक सुत ल्यौ कोरा रांम मोहि मारि
कलि बिष बोरा टेक उन्स देस जाइ बौरे बाबू देषि बौरे लोग
कि नि कि नि षेल्यूं लौ १ उडि कागा उनि देसा जाइबौ तासूं
मेरा मन चित लागा लौ २ जल बिन हंस निसह बिन रबू
कबीरा कौ स्वामी पाइ परि कै मनैबू लौ॥ ३॥ २॥ अरथ॥
निबरक सुत निबल छोटा पुत तेरा कोरा कोवेरा षो अपणे
कलि बिष पाप तिन मैं डूबा हूं टेक उन देस जाइबो ब्रह्म
देष जा दिबाबू मन लोगां कुं कालकि सि कि सि कूं न दीष
इ गया ब्रह्म देस बिना १ कागा मन देस ब्रह्म २ हाट सतसं
गपट्टण पिंड गांव काया पोरा गांव तैं बाहरि यास न हो ब्रह्म
२ जल माया बिन हंस संत ब्रह्म सरोवर नि सह बिन रबू
ग्यांन न हीर बूसूर जसी ब्रह्म प्रकास॥ ४॥ २॥ २६॥ राग
बसंत॥ सोई जोगी जाकै सहज भाइ अकल प्रीति की भि
ष्या षाइ टेक सबद अनाहद सींगी नाद कांम क्रोध बिषी
या न बाद मन मुद्रा जाकै गुर कौ ग्यांन त्रिकुटी कोट मैं धरै

ध्यांन॥२॥मनहीकरणकौकरैसिनांनगुरकैसब्दलेलखै
ध्यांनकायाकासोधोजेबासलहाजोतिसरूपीनयोप्र
स॥२॥ध्यांनमेपलासहजनाइबंकनालिकोरसषाइ
लदेईबंधकहैकबीरथिरहोइकंध॥३॥१॥अथरयास
जनाकहीगुणइंद्रीथिरतबब्रह्मनाइअकलपरमेसरत्री
तिकोअनेसोईअकलनीघटेकसोगीसुरतिबजावेअ
लदसबदमनकूंजोगीकरैध्यांनमुद्राधरावेमनकूंत्रिकुटी
त्रिगुणीकायासोईकोटतामेंध्यांन॥२॥मनकरनऊंडकरैका
बसैहैमुकतिहोइबानैसोकायामेंबासकरैथिरहोइ॥१॥
कनालिसुरतिकरिरामनामरसपीवैजोगआत्मांपरमा
जुगलध्यांनसोईजोगबेधइजाजोगमनमूलबंध॥३॥२॥
पदांमेरोहरहिरांनोमेंलजांनसासउराचनपीवडरांव
टेकहारगुरहोमेरोरामलागबिचिबिचिमांनिकएकला
लनपरवालेपरमजोतिअंतरिअंतरिलागमोति२पो
सांमिलिहेसुजांनचलउलजाइहोत्रिबेणीन्हांनान्हा
इथोइकैतिलकदीनमोजांन्हारकिनहूलीना॥२॥हा
रानोजिनबिमलकीन्हामेरोआइपरोसनिहारलीन
लोकहीजानैपारसहूदेवसिरामनिकहैकबीरा॥३॥३॥
रम्या॥हारकायाकूंध्यायोसौंजसहतकायाहारपरमेसर
लखानहीतातेंपछितावोसासूसुरतिघोटीपीवपरमेसरटे
पाहरकायागृहनहाररामजीसत्यापुत्रमांनिकमनरतन
चइंद्रीपवनतामेंपायापरमजोतिपरमेसरमोतीमनसासो
कूंध्यायाकूंकरिहिरांना॥२॥पांचइंद्रीबिषबोरसुजांनत्रि
बेणीत्रिगुणीबुधिमेंनरमीध्यायासुरतितिलकतामस
न॥१॥सौंजकीबुधिनहीकहांगईहारजन्मगयाजनजीव
बिमलनषालीरहागांठिसुकृतकोनहीपारोसनिऊबधि
घटीमनसाकहैदेवसिरामनिपीवतैंयूंलजांऊं॥४॥४॥इ
ले॥२॥हारकायासौंजपरमेसरमेंलीनभईपरकहतल
ऊंमासमसारउराचारीपीवपरमेसरमेंअत्ताइकरेकोई
लछिकारतातेडरलहाटेकपीवपरमेसरसूंहारकायासौंज
गुहीरामनांमतागसूंप्रोनिकउजलमनरतनपांचइंद्री उ
जलपूवालेपवनसाससुमरणकरिपोईजोतिजगदीसमो
मनसातजला॥१॥पांचसषीपांचइंद्रीब्रह्मध्यांनकरिसुजांन
नईत्रिबेणीमनपवनसुरतिएकत्रधोईमलीनकम

लकदीयानांजांनूंवदेहनया॥४॥हारकायासौंजहिंनीब्रह्म
मेंलीनन्नई।जनविमलनिरमलनया॥५॥सीपरमेसरसमदास
गजीवकैतीनिलोककीवकैताकूंचवत्राहार॥३॥१॥पद॥
मेऐसैबिनजसंकौंनकाजामूलनघटेसिरवधेब्याजटेकनाद
करौंकबनिजारेपांचावेलपचीसकौसंगसाथिनोवदीयाद
सपूनिग्राहिकसनिवहतरिलागीताहि॥२॥मालमूलमिलिब
निजकीन्होकरमपयादैसंगिलीन्हतीनिजगातीकरतारि
चलैयोहैवनिजवावनिजदा॥२॥वनिजपुटांनैपूंजीलूटि
घाडदहिदिसगयोफूटिकहैकवीरयहूजनमवादिमहजस
मानौरहीलादि॥३॥३॥१॥वनिजकरा॥मूलमनिषदे
हब्याजपापटेकवनिजारापांचइंद्रीवेलपचीसप्रकृति॥
नौकमेरेनोघारदसवांगुपतवहतरकोवेरमातस्मूलसपतधी
तकीकायाक्रमलेपतीनिगुनजगातीवनिजवामनवनि
जफारिग्राखलपूरीकरी॥२॥वनिजग्रावपूग॥पूंजीमासधू
टेघाडवालदासीदेहसौंजवीघरिगईऐसेवनिजलागेति
नकाजेन्मवादिसहजसमानेसहजकहै॥५॥उदरहितगुणमे
टिब्रह्मनावमेंसमाणरहीलादितिनकाग्रावागवनमिट्या॥
३॥३॥पद॥ठकरीडरकंूनकरैगुहारातुमबिनपंचानिन
प्रीमुरारिटेकतननगीतरिवेसेमदनचोरगतेनासरवसलीन्हे
चोरिमोरमांगेदेहनवितैमांनातकिमारेहिरदेमैकामबांन२
मैंकिहिगुहरांऊंग्रापलागठकरीडरवडेवडेगएहैनागवू
ली॥बिसनग्ररुसुरमयंकाकिहिकिहिनदीनावाकंलंक१
जपतपसंजमसुचिध्यांनवदिपरेसबसदिनगपानकहैके
वीरुवरेवतीनएजापरिगो॥विदकिरपाकीन॥३॥४॥ग्रर्थ
गोविंदसूंवीनतीकरैछैगुणांकोनेकठकरीगुणसवलपो
चूंइंद्रीयांसहितकूंनकरैगुहारि॥परमेसरजीवाहरकूंन
करौहमारीमनकहीयेमुषव्यारियंजेग्ररुमुषकौपचमुषसिं
घकोतांतेसिंघपंचाननकहीए॥तुमबिनपंचाननातुमबिन
सिंघहोमदनकामटेकमांगेदेहनवितैमांनचेनदेहमांन
जोमरावैमदन॥२॥किहिगुहरांऊंग्रौरकिसग्रागैपुकारूंग्राप
लागिग्रपणीग्रपणीलागरहीहैसबकूंठकरीडरगुणांग्र
गैवडेवडेलागेब्रह्मात्र्यादिदेसुरइंद्रमयंकचद्रमा॥२॥जप
तपसंजमसुचिध्यांनग्यानकेग्रधिकारीगुणांकीवदिपरेदोइ
तीनकहीएपांचइंद्रीइनतैवसकरुवरोजापरिगो॥विदकि

रघाकरीअपराधै॥२॥४॥पद॥ चलिचलिरेभौंराकंवल
तेरीभौंरीबोलैअलिजदास टेक तें अनेकपहुपको
रसलीनउयौतनउडोरोगहुजकहतौहिवारवारमैं
वनसोछोडारडार १ दिनांच्यारकेसुरंगफूलातिनदिदेषिकार
सौन्हरियाबनासपतीमेंलैगीआगितबतुमहूजेहौकहांला
गि २ पहुपपुरांनेअहैंसूकिंतबनवरदिसागीअधिकरूष
उडौनजाइबलगयोदेहछूटि तबनवंरीरूनीसीसकूटि ३
दादिदिसजोवेमधपराइ तबभौंरीलेचलेसिरचढा
इमनकोसुभावरांमभगतिबिनजमकोडाव॥४॥ अरथ
नेवरामनकंवलब्रह्मचरननवरीकायाजदासकंू वाल
षातरुनजराजनांईएकुजपदेसदेइसमझावैहूतौहि
नोकेमोहिवैसेएकुजपदेसदेहतेंऐसी टेक अनेकपहुपमा
याकेसुखइछयांकेभोगरागरूदनेमेवकांमइइयांवधीवन
संसारडारपुनकलिदसुरंगफूलजोवनअवसथाबनासप
तीकटंबआगिसोनिवृधि१ पहुपपुरांनेबधअवसथाअव
नहदोनिंनथकिसनइंजवंरीकायारूनीकायागिरी२ मधप
राइमनसिरचढाइकायामसांणभूमिलेचले॥४॥पद
सुरहीकोजेसीतेरीचालतेरपूछररूपरिक्रमकेबालटेक
एकघरमैदेसोदूहिबाहिओरकिसीकेमतिजाहि१ चाकी
तेदूहूंनबाहिचाकीकोचाथराकहांलेजाहि२ छाकेपरते
रीबहुतदहिप्रितिलकरीसाटापैरेपूछिकहैकवारलाग
जलकानमतिकोमारैढूटटीम॥४॥दा॥ अरथ॥ सुरहीमनस
पूछरप्रकृतिबारविकारटेक घरघटमैपरमेसरढूंढिलेधे
रकिसीकेंबहरमुषमतिजिनटंको१ चाकीचिंताचूंनचितचीथ
रजिन्या२ छाकापांचइंद्रीछठामन तिनकेस्वादिपरिदोव
षमोगूंसंहतलकरासोटाकरमाकीमारलहै॥४॥६॥रागम
लीगौडी॥पद॥ पंडितामनरंजिता भगतिहेतल्यौलाइरे
प्रेमप्रीतिगोपालभजिनरओरकारनजाइरे टेक दांमछै
नि कांमनंसीपंनछैपणिधंधरे अवणछैपणिसुर
तीनिंनछैपणिअंधरे १ जाकेनाभिपदमसउदतब्रह्माच
रनगंगतरंगरेकहेकबीरहरिभगतिवाक्ूंजगतगुरगोबिंद
थ॥१॥अरथ॥ पंडितामनरंजिता पंडितजोमनमेंखुसीहो
सोहे विद्याबलकरिकुलअभिमानकरिसुचिआचार
करिसेकारणजातारहैगा तातेंभगतिहेतकरिप्रेम

रग।बिदत्तजि टे॰ दामस्वाससुमरण बिन मिष्या। बाचिक
रण। बिनां ग्यांन सब कूवा अवण छेपण। सम। सुरतिनां
।मांथे नैंन हिरदे अंध ग्यांन छि ष्टि नहीं २ नासिक पवन सूंबू
नां बांणी उ दित जिस हिरदे गो॥ लिद चरण और त्या रू चरणांते
गा बांणी चली तिस की न गति नहीं॥२॥२॥साषी नगा तिने
ष सूंन्यारी मन पवनां पांचूं बसि कीया भजि नया राद सुभरी टेक
बारू का घस्या मैं बेगो काग द का घरू कीन्हा माला तिलक तिये
नहीं कोइ बिनां परमतत चीन्हां गोरष नाथ गुरु अनहीं पद
री मस तग स ही मुडाया औसा न्यात नया छूजा पा गुरु पराग
मुडाया २ गास्तवा सौं मैं सुमरण कीन्हों सुषदेव कै सिम्याला॥
कहै कबीर सब नेष झूलां नां फूल छ्या दिग दि डारा॥२॥२
॥२३॥ इती कबीर जी के पद अथ मादन र धां॥ अथ॥
गोरष नाथ जी का पद अथ रा रतन॥ पद॥ बांधी बांधी बछ
डा पीयो पीयो षीर कलि अजरां कहो इसरि ने टेक बारह बछ
डा सोल्ह गाइ थे निडर तातै ॥ बिद्दा इ अचराचे रषनिक
चरान घाइ पांच गवा लीयां कू मारा ध्या ध्या १ अजा कासकी थे
निसनि कैराया सो गगन पूछा वाके षुरन ही काया ३ इन सुरती
का इ धूज मीगापी वै गोरष नाथ गगन बइगा॥४॥२॥अथ।
बांणी बछा मन पवन की कला टे॰ चर्थे नि मन सा २ अचरबू
लसा कटरा करम पंच च २ थे निज सागर नबूल्ला॥२॥१
पद॥ गोरष बालूडा बोले सतगुर बांणी॥ जीव तान परापा
जांनें अगनि निन पांणी टे का षीलडी इजें नें सिख्या ले सारु
डी पास नौंबकुडी ही डी ने १ को इस भोरी आ बिलो बास्यो
गगन की मछली बुग लो गरास्यो २ करम सापा कौ रष बाली
पाछे चारि गया मृघला पारधी बाछी ३ झीगीनां दे जोगी पूरा
गोरषनाथ परणपंत हां चे दन सूरा॥४॥२॥ अग्य॥ जीवत
प्रस्यान ही अगनि बूल्ला पांणी रांमरस टे॰ षी लोमन नें सिक
या बिरोलै बिचार मासू सुरति बकुबुधि १ कोइल बांणी अ
बस्नालां गगन बूल्ला मछली मनसा बुगलो कालन २ करस
णकां मपा को रष वा लीकालन मृघला मनोरथ पारधी मन २
सीगी सुरति नाद सबद॥४॥२॥ पद॥ आवी नें जोसी जोवो
बिचारी पहली पुरष क नारी टे क बावन नहीं ता बादलडा
जदीयां तेज न होता तारा बिन दीयां न बाबै मडपर चील
तब आपही उपावणहारा १ बाप न्हारो बैसडै न होता त

कला निऊटी के बिषै। चव्रदे तव कोई परै चित मैं ल्यौ॥ षो
कंवल बतीस पंषुडी समझ्या जुराग इदसमै उनमना। समत
ति रूपा सबद ॥४॥७॥ पद॥ पूछो पंडित ब्रह्म गियांन गोरष
ले जांन सुजांन टे कवोज बिन निसपती मूल बिन बृषा पांन
ल बिन फलाया। बांझ केरा बालूडा चषि बिन न्हैरेरला॥ गुर
सब्द च्हडीया १ गगन बिन चंद ब्रह्मंड बिन सूर झूझ बिन र
चीला थांनं रोप रमार थजे नरजांनीला छुटि ब्रह्म गियांन २ सु
न थूल लिंग न ती पूजा धुनि बिन अनहद बाजे बाडी बिन
पहुप पहुप बिन साहर पवन बिन भ्रंग आछाजे ३ राता बिणि
सीलीया आगनि बिन जलीया अंबर बिन जल दरलरीया ए
इमांणा कहो हो पंडिता स्रग जुग सांम अथरबन पढीया ४
सब बेद सौहं प्रकासा धरती गगन न चंद गगन मन बिचि
गोरषनाथ ए लै गुरु मछिंद्र प्रसादे ॥५॥८॥ अरथ॥ बीज
को मनि सको पतिगयांन मूल माया बिना प्राण तरवर पांन
इ कीरति फूल कां मनां बांझ का पूल ग्यांन २ लिंग प्रांणबा
डी काया रहत ईस्वर कंवल काया न्ह गमन भ्वास बेद प
ढं बांणी गगन उनमना सास उसास बिचि गोरषनाथ षेले ॥८॥
६॥ पद॥ अंवलीयो थलिमा रायो रूपसीनी बनी जिजो
फलीयो सो फल षांतां लागै मीठो जाणै जिन गुरपरसादे
गो टेक कूंट सिंचाणो जब जबतो जाइ केरोडाली बैठो बांके
बेटा जनमीया नैणा पुरषनदीठा २ लाकड डबे मिलतीदे
षतां जग जाइ कूंट पनीले बढि गया ससलो पोलिन माझ
३ डूंगर मछा बनमंसा पांणी मैं दौं लागा अरहट बहै तिमाल
वा मूले कांटा लागा ४ एक गाइ नो बाछड़ा पंच दुहै बा जाइ
एक फूल सोल इक रंडीया माल णी मन मैं रपीन माइ ५ प
बिंदुलाडे चोरी कीधी चोरनै आंणी गाइ मछिंद्र प्रसादे ज
गोरष बोल्या इक फाणी न ब्याइ ॥७॥९॥ अरथ॥ अंवलीयो
आत्मा थल ब्रह्म नीब ब्यपु बिजोरा बिचार टेक कूंट सि
चांज ब्रह्मा कूंट आपो सिंचाणो सबद के रोंकरमा बी
सांबेटो ग्यांन पुरिषन दीठो पुरिष घट मैं स्वर बिना औरण
षा १ लाकड डबे मिलतीरे लाकड कवोर सिदा सुध कूंट
यो ब्रना सोप्रीति सुसलो सांसो २ मछा मन डूंगर ब्रह्मा ज
संसार सो सांसो पांणी बंदब्रह्म आगनि रहट रटणि मूल
बरहकांटां करम ३ गाइ आत्मा नो नाडि. पंच रूप फूलकंव

नकडीयाकलीधापगाकरम बिनाचोरीगा॥३मनसाधमीमें
व्यावेनही॥५॥ए॥पद॥अवधूजापजयोवनमालीचीन्हे
तिन्हेंजापजपोफलहोहिश्रैसाजापजपंतांगोरषचीन्हेंबि
रलाकोइटेककेवलबदनकायान्हईक्वनेश्रवधूचेत
नकीयाजपमाली।अनेकजन्मकापासिगछूलाजपेगोरषच
माली२एकअषिरएकंकारजपीले सुनिथूलदोइवांणी।पि
डब्रह्मंडसमतुलिव्यापीला।एकअक्षरगोरषनाथगुरमुषि
जाणी२दोइअषिरदोइपषिवधारिलेतिरीलान्येपार।३श्रेसा
जापजपंतांगोरषनागानरमविकारं३तिअक्सरनीकोहि
मधेजपीलेब्रह्मअंडनिजथानं।अजपाजापजपेगोरषअ
तीतअनमहिथानं४चौअक्षरीच्यारिवेदथापिलेच्यारिषां
णीच्यारिवांणी।महिंदप्रसादेजतीगोरषबोल्याअजपाज
पक्षोथीरहाणी॥५॥२०॥अर्थ॥समझोतिहिकसिअगम
जापोटेकवदनप्राणसुषनकतांकायाकेचनाव सिसोहतो
जपदोइचवेकहेरोक्सअक्षरइडा॥कारउनकासुनिना१
नवाणीवसिद्धहुईजोपिंडब्रह्मंडमेसमततहै२वेअक्षरी
इजीनाडीदोइपषपंनअपंन।तिहिकमिनोपारउतरेंउवे
अक्षरीसुषमनतेमंतजपीब्रह्मअंडब्रह्मद्वारथचोअक्ष
रीपराचारिषाणीचारिवाणीवसिद्धहुई॥५॥२७॥पद॥वोनमो
देवाइस्वामीवोनमोदेवाइअषैनिसबाइमंतकोणरेतपाइनि
न्हेनिन्हेआपिदेहिसमझाइताकारेमेंचेलाबाबूलागूताके
पाइटेकवोकंकारेआछेबाबूमूलमनधारावोकंकारेआछे
लासकलसंसारावोंकंकारेनालीह्वदेदेवगुरसोइवोकंका
रसाधौविनासिधनहोई२नादिलीनांब्रह्मानादैलीनांनरह
रिनादेलीनांकेमापतिजोगध्यानधरिधरिनादेहोसेआछे
बाबूसबकछूनिधनांनादेहीतेपाईऐपरमनिधनां२बाई
बाजेबाइगाजेबाईधुनिकरेराबाईषटचक्रबेधेअरधअ
धारिसोहंबाइहंसरूपीपिंडपिडेबहैबाइकेप्रसादलिंद
गुरमुषिरहैउमानमोरेमनमेरेमनतोरेमनतेरेमनहीजोअ
स्थिरहोइतोनिरंजनमेरोमनआदिमनअंतमनमधेसार
मनहीथेंछूटेबाबूसकलविकारंधमतिरूपीरजआछे
सुनिरूपीबिंदबाबूहकलारविआछेसोलहकलाचंद्रच्या
रिकलारविकासिघरिआवैतोम्योसकोसमिलैवेअंत
कोईनपावै५ऐहीराजारामचंदअंगेअंगेबासाऐहीपांच

ततबाबूसहजप्रकासापेदीपां चतत बाबूसमझिसयां
णां बदंत गोरषनाथ हरिपद जांणां ॥६॥२१॥ अष्टपद ॥ वोअं
न्मो सिधाइ बाबू अहनिस राति दिन बाई ईस्वर बिनां व
हैहे कौंण मंत्र कौंण पाइब सिद्धाइ ताकारे मैं चेला टेक
गुरु कहै वोअंकार जो ऋषि स मूल मंत्र छै ताहि करि संसा
र पंडित होनातिजु दाबिचिवहै तौ देव गुरु वताव सोत
साध बिनां सिधि नाही ॥ वोअंकार करि नर हरि ब्रह्मा मह
देव पसिध हैं नाद सब कौ निधान ॥ घट च क्रां कूं बेधि बे
धं बाई हीसंमथ है बाई ही सो हंहै बिलर षनहीं पिंड बि
पे अ सिधि बहै बिंद कूं बाइ जीते ॥ मन कूं मन मारै मन कूं
मन तारै ॥ पवन मैं मन मन दे पे ॥ आदि मन ही समडिसी अ
तिसु मन लसमक्या कांम मन ही सू बिषै छूटै ॥ अनिकल
नांद ही ॥ बिंद रज की मांड है ॥ तारा कला सूरज सो हा कलास
सिर जेरत समजे छै ॥ तब पसम गति होइ ॥ इती समि कायाअ
पे आपहै पंच तत की समझि है ॥६॥२२॥ पद ॥ मनसा देवी
ब्यौपार बांध्यौ पवन पुरष तत पना ॥ जागो जोगी अध्यात्म
लागो ॥ काया पाटण मनां ॥ टेक ॥ इकीस सहंस षट सास आदि
पवन पुरष जपमाली इडा पिंगुला सुषमनि नदीयां अहनि
स वहै पड ताली ॥१॥ छ सै सोडि कंवल दल धारा तहां बै
ठ्ला धारी हंस पवन जल झूलण पेंगा तहां नौसै नदीप
णिहारी ॥२॥ गंगा तीर मती रेष्य व ष्याफिरि फिरि बणिजा कीजै अ
रधे जातां उरधे लीजै ॥ रविससि मेला कीजै ॥३॥ चंद सूर दोऊ ग
गन बिलूं ध्या भै ला घोर अंधारं पाइकूं पांच नीद न्हरिसूता त
ब पहरा याये निपनारे ॥४॥ काया कंथा मन जोगौटा सत गुर
समंछ ल षवा ॥ बदंत गोरषनाथ नीकां राषौ नगरी चोर मला
वा ॥५॥२१॥ अष्टपद ॥ मनसा ब्यौपार ब्रह्म सूं काया पवन
क रियुरुष मन बिनस सैतप ज्यौ मन सा कहेरे जोगी मन अ
ध्यात्म लागो काया पट्टणि हे रूइ कोस हजार छसै दम आ
दि काया पुरुष मन के हाथि जपमाला दीनी इडा मन पिंगु
ला पवन सुषमनां सुरति अहनिस राति दिन पूतलीनाडि
कल टिवहै ॥ षट चक्र सांसो सोडि. काया कंवल मैं दहे क
र पर सिधि परब्रह्म धारी ग्यांन हंस ही पवन जल ब्रह्म नौ
से नाडि. नदी सो हूं पणिहारी आत्मां ॥ गंगा तीर तहि केत
टि बणिज ब्रह्म सां ॥ चंद सूर मन पवन ग्यान ब्रह्म गा

घोरअंधार गुणांकी रूवो पिच इंद्री पोंटी सुनि प्रगत्रांत स
वे म्हरांध काया दीकें था मन जो गोरा ॥५॥ २१॥ पद ॥ चा
रि पहर आलिंगण निद्रा संसार जाइ ब्रिषीया ब्राइ क्रजी
बांद गोरष ना थ पुकारे मूलन हारी म्हारा ला ईटेक माव
स पडिवा मन घट सूनां सूनां ते मंगल वारं षट ता गुणा ता
पंड्रिता न्हूला दसमी दोष निवार२ पडिवा आनंदी बीज सु
चंदी पांचूं लेबा पाली आवें चक्रदसि ब्रस तएका दसी
आगम लावें बाली २ संवी संक्रे सोइ ब्रामके जागिबा त्री संधि
देबा पहरा तीन पहर मां दिंदे इ यूटि जा सिलां तहांका लनका
हेरा ३ ब्रामें अंगिसो इब्रा जम चानो गिबा संगि नपीय बायां
णी चूं अजरा वर दोइ ब्राम छिंड्या गोरष बोल्या अमृत बाणी
४॥ २३॥ अरथ ॥ आलिंगन का मनी दटे क अमावस अग्यो
न करि मन सूनों घट सूनों मंगल रूगद मदोष की काया दा
१ पडिवा ब्रजा सो ग्यान ते आनंद पंच ब्रसि वो दी ठाम २
षसि पहरे सो पहरे ब्री चिकें पहरे त्रिगुणी माया तीन पहरा
गया अंमदे रूइ जाघट परमेसर ३ बामी आगमाय्या जम ने
नागो ॥ ४॥ २३॥ पद ॥ म्हारा रे बैरागी जोगी जोगणि संगिन
छोडे मांनसरोवर मनसा देवी घूमती आवे गगन मंडल मठ
मांडे टेक कौण स्थान धारा सा सू सुसरा कौण स्थान धारा ब
मा कौण स्थानि थानि जोगणि नेटी क हां नया घरवासा १ न
लि स्थांनि मेरा सासू सुसरा ब्रह्म स्थांनि मेरा बासा इला पिंगु
ला जोगणि ने टी तहां नया घरवासा २ कांम क्रोध जालि
में चूनां का धा कंइ पकी या कपूरा मन पवनां दो ऊंपान सुपा
री उनमनि तिलक संइर ३ ग्यान गुरु ना लूबा म्हारे मनसा
वेलन डांडी उनमनि लांती ब्राजन लागी इ द्दिलि धितिगे
मांडी ४ दमो रे सतगुर म्हे परणाया अब ला बाल कंवारी
मछिंद्र प्रसादे जती गोरष बोल्या मायानां नीतारी ॥ ५॥ २४
अरथ ॥ जोगणि मनसा मन जोगी मानसरोवर ईस्वर गगन
ब्रह्म मठ आसण टेक सासू सुरति सुसरो सबद जोगणि म
नसा २ ना नि बसे ब्रह्म अस्थान क बास ॥ २॥ २४॥ पद ॥ त
त बेली लो तत बेली लो अवधू गोरषनाथ जाणी डालन
मूल पहुप न ही छाया बिरधि करे बिन पांणी टेक काया
क जर तेरी बाडी रे अवधू सतगुर बेलि सपांणी मुरिषपा
नत करै धनिया नो नी के बा लिष रिआनी २ मूल गंगाजे

जाणसु श्वेलडीयादोंलाग
जिम अवेलडीदाऊणलाग
कारट लीकूपलमेलीसी
प्रसादै लीगोरषबोल्याानिति
लेत्निआत्माडालका
लसी मायाडालवि नाबंधेटेतऊंज
सुख धरतीरोपीपुरषप्राण
ज्यवनफूलपूनिमचं
पालदेव कारलकूप
बोल्यागो
मेरेग्यांनीटे जोज्योजे
त्रियालीआसनइंद्रीजि
निरंतरमेरेग्यांनी म
ासे मिलांणांमनम
ग्यांत्रलषलषवामेरेग
पुरषनीपरष्यापाई पुरि
यामेरेग्यांनी जिदि
जाल तदांजेत्रास
मनसांदिलादे
पीव णांमछिंद्रप्रसादै
जोई मिलणांमेरेग्यांनी
तत्रात्माटे त्रियार्ल
ननबसिकीयामनमें
जपुरषेपुरषनिपाय
लनुदेहोइतत्तात्रास
लीणांतलग्यांनीबिम
वालत्नोगगनगाहउ
ग्रणमेलागाजीजे
मिलाविंदणांहोरूली
त्रातनिसचारेगोरूलो त्र
कालम दलदलायाले का
सकजे गामीमलीयालो एत
पुनिमंडलमेलाधीलो तदिला

गिरहौ पखारद्दमारो। ल्यौ निरंजनबांधी लो॥२॥सीगकांन
मुषपूंछचरन बिन बरण बिबरजितगाईलो॥मंछिंद्रप्र
सादें जती गोरषबोल्या। ततरहा ल्यौ लाईलो॥४॥२७॥अ
रथ॥गौ पृथीपाली गगनकी गाइ मनसा महीमन अनेभै
ई अ्रसूटेवमस्त मिल्यौ सब मायामूंडी बापबपछो रूंद्री
लालग बालप्रांन॥गाइ मनसा॥ अ्रनहद ईश्वरसबदसेष
अ्रसतकाया॥गगनकेवल॥१॥सुनिअ्रस्थांन गगनगाइ मनसा
परिवार मनपवन सुरति॥ निरंतर प्राण घरा बरण रहित म
नसागाइ॥४॥२७॥पद॥ गोरषकहेसुणो मछिंद्र अगमग
म्याने रहेला। निरति करै नैनीकासुणि। ज्यो तुमसतगुरमें चे
लाटेक॥कांमणि बहता जोगन होई। लगमुषि परसै केताज
लांते उपज्या तहां फिरि आवद्या। चिंतामणि चितचेता॥२॥घा
ससषोडि घसांणें नो सरात्तहांजी वसीलनां बासा। चवदाब्रह्म
डनां एकोदम है। इमही जाइ निरासा॥३॥पवनकानीरले अंब
रथीयासा सउसौ सें आया॥बेदंत गोरष इमहोइ निरंतरबीजे
बटकसमाया॥४॥२५॥ अरथ॥ चिंतामणि सरीषो चित वाद
सनें षोडि षटनै षोडि नो द्वारनें षोडि चवदे ब्रह्मंड कामोल
एकदम॥१॥पवनहीजलअंबर आत्मा बीजब्रह्म बटक प्र
ण॥४॥२५॥पद॥गोरषजोगीतो लातो लेनाडि नाडि बांधी
लेरतन अमोलिटेकग्राछे ग्राछे बिंदनपडिवा कंठ कोहि
तोला मोलजाई जिषिसे एक बिंद२जे सी मन उपजे तेसाक
रम करै। कांम क्रोध लोभ मोह संसारसूं ना मरै१गगन सिषर अा
छे अंबर पांणी मरतामूढ़ा लोका षबरि न जांणी२पूंन्यूंमे
लाचंदा उपूंनारी संगेरमणं॥गपांनरतन हरिलीया पुराण॥४
आदिनाथनाती मछिंद्रनापूता कोटितोला बिंदराषे गोर्ष
अवधूता॥४॥२७॥ अरथ॥ तोलामनतोलेपवन ग्यांन
सूंबांधे तब अमोलटेकजे बिंदछे तो कंद आस्मानपडे।
बेदपडआं कोटि मोलजाइ२जेसी उपजे न लीभरी ते मा
करमकरै१गगनब्रह्म अमरांमरस २पूंन्यूं चंद बिषेरत
।जेथ बिंदतोला मोलिले॥५॥२७॥पद॥ आवोहो माई
। रिधरिजावो गोरषजोगीन रिनषिषावो टेकरैन पारा बा
तेनाद ससिहर सूरनबाद बिबाद१पवनगो टिकारहणी
२कासमहीयर अंतर गगन कविलास१मातालकी डी।
ग्राकास चलाई लिंबदस गोरष मछिंद्र बताई३॥१०२८

मनसाधरीधस्याकीतासीरजाइटेकपाराबिंद
तासीला१पवनगोटिकाआकासब्रह्मगगनकेकला१
डीबीमनसासुनिसमाधि॥२॥४॥॥पद॥सोनाल्योरससो
नास्योमेरीजातिसुनारीधमनिधमीससजामनजाम्या
गगनमद्धारसामेल्लीयाटेकआपसुनारीआपैसोनामूल
चक्रअगीवाअहूरणिनादनैबिंदह्योडातबघडि(
स्यांगगनबईवा२अषैआरणिनैबिषैकोइलासद
कदेइनलीयांचंदसूरदोजैसमिकरिराष्यातबआपै
आपजुमिलीया३रतीनाकाममासानीचोरीरतीमैंमा
साचोरैमासाचोरिहैमासामैंइनबिधिगरष्ठेजोरे२
रेषैसोनाघरषैसोनाजीतरिसुनिमसुनितीनिसुनिकीर
हणीजांणीताधटिपापनपुनि४नुनमनिडांडीनैंमनत
राजूपवनकीयागदियांनांआपैगोरषनाथतोलन
बैठातबसोनांसुनिसमांनां॥५॥२॥१०॥पद॥
ल्योसुनारीऊनारीनहोस्वासउसासधवणिगगनअत
रकरणिटेकमूलनाभिनादअहूरणिबिंदकायागगन
कला१अषैगगनआसणबिषैकोइलातातासीलागु
नलीयाचंदसूरमनपवनसम२कामरतीकोस्वाद
सोमनउनमनिमैंरहैब्रह्मअधरधमधितीनसुनिब्र
मैधउनमनीडांडीमनतराजूपवनगदियांनातोल्यो
ब्रह्मबराबरि॥४॥३॥११॥पद॥सरवारेसरवात्रिनवन
गरवापांणीथेपातलाफूलथेहलवाटेककाया
जांनदेहरातिदिवसअनिअंतरिलेइमनमुद्राके
पनरेषाजगतगुरुमनहीमनदेषा२उलटैगापवन
कायाकूगहैगाकाचपलटिकंचनकोरहैगायकु
सावसाचक्राधरवारूध्रनयाफिरिषीरनीरबा३अती
तपुरिसध्यानपदपरसैअबिचलहोइसरीरदरसै
रामूर्तिकालकानछिननिसपतिजोगकायाकाल
नअगरडन्तुयंगमसमकरिसूतादेवद्वाररस
तामरदतमरदतहहैपीवीतेबातश्रीगोर
षतिदीवी॥५॥४॥१२॥पद॥सरवासरवामनत्रिन
वनसारिषोटेकजगतमनकोपसारो२मनकायागदे
उलटिफिरिषीरहोइ१निसापतीजोगीकालनषेर
गरुडमननवंगकामपांनअपांननान्होकीयो५॥२५

पद॥ नाथ बोले अंमृत बांणी। बरसैगी कंबलीया नं
जै गा पांणी टेक गाडि पडर बाब्बां थिले थूंटा चले दमांम
बाजिले कंटा२ कत वा कीडी ली पीपल बासे मूसे केस
बदि बिलाई नासे१ चूले बटाऊ सीकां बाट सोवे डोक
रीया घेरै घाट३ ढकि ले कूकर स्यूं सिले चोर का ढेथणी पु
कारे ढोर४ ऊजड षेडा नगर मझारि तलि गागरि ऊपरि पणि
हारि५ कांमणी जलै आगि ती तायै बिचि बैसंदर थरथर कां
पै६ मगरी ऊपरि चूल्हा धूंधा हपीवणहारी कूं रोटी षाइ७
रीक जरंछी यरडली आहीब कुबियाई सासू जाई८ नारीक
पणी कूंवे आवे उलटी चरचा गोरष गावे॥७॥१३॥ अथ॥
कांम लकाया पांणी प्रांण टेक अडर वा परकी रति षूंटा मन दमा
मां दम ऊंट काया२ कत वा का लडारी बांणी सून ली पीपल
पार ब्रह्म मूसा मन बिलाई ऊब धिथ बटाऊ प्रांण चले ब्र
ह्म पंथि चोरासी बाट थाकी डोकरी आसा बाट घट ग्रक्कू
कर मन चोर संसार धणी ईस्वर का ढे ढोर संसार४ ऊजड गु
णन ही बस्ती ब्रह्म गागर गुण पनिहारी आत्मा५ कांमनि
कांम नां अगीठी आत्मा बैसंदर बिकार६ मगरी माया चू
ल्हो चित रोटी रटणि पोवे ऊमति७ रुडिया आत्मा बकु
बुधि सासू सुरति८ मन गरी काया मंणी प्रांण कूं ई कंवला
ण॥१३॥ पद॥ मेरा गुरु तीन छंद गावै नां जांणूं गुर कहां रह
ला मुझ नी दडी न आवे टेक ऊंनरा के घरि हांडी आछे
अहीर के घरि मांडी बांम्हण के घरि रांडी आछे रांडी सांडी
सांडी२ तेली के घरि तेल आछे राजा के घरि सेल्ह जंगल
मधे बेलि आछे बेलि से लते ल२ मक्का के सिरि सींग आ
छै देवल मधे लिंग बांणिये के घरि हींग आछे हींग लिंग
सींग३ रां के धागे नांना मिनीयां बकु नांती दिषलावे बंद
त गोरष नाथ त्रिगुणी माया सतगुर हो इ लषावे॥४॥१४॥
अर्थ॥ मेरा गुरु तीन छंद त्रिगुणी माया टेक ऊंनार काया के
बसि हांडी ही माया अहीर के मद घी माया ब्राह्मण के ब्रा
ह्मणी माया२ राजा के सेल माया बांणीयां के हींग माया
तेली के तेल माया जंगलि बेलि माया४ पीक वाऊं का
रनां नां प्रांण पोष्या॥३॥१४॥ इती गोरषनाथ जी का पद अ
रथ लिखा संपूर्ण॥ अथ मछा पुरषां का फुटकर पद लिषते
अबधूत [illegible] का पद [illegible] लिषते॥ देषाजो

८

गी नरथरी। ऐसा अवधूता॥ कल्हकल्प नां मेटिकें। सुषमें सो र
हता टेक गगन गलत गुरग्यांन मैं हरिकैं रंगि राता सुनिमंडल
मैं घर कीया जहां काल न जाता॥१॥ वीतराग वैराग देह नृमल
न ग्यांनां आसक वंछ न पिछ्यां तिनकैं छ्याडे सुषनांनां॥२॥ निरति
सुरति लागी रहे अनि अंतर रितारी। बंकनालि कारस पीवे वांके
सहज सुमारी॥३॥ गुरगोरष परसादै तें जग मैं नधूताया। जनतुरसी
जोगी नरथरी निरलेप कपाया॥४॥१५॥ साधो जी सूमितन कैसें हो
इ सबल वैरी वसैं तन मैं कनक कांमणि दोइ टेक करि बिचार
बिकार परहरि भ्रम टि आयो जोइ ग्यांनदीपग जोइ अंदरि जू
सत जि दरसन होइ॥१॥ ज्यां सुम स्यो ते जुगि जुगि जीया साधि सुर
ग न्याओ कोइ दास तुरसी तत सुमरणा राषि हिरदै पोइ॥२॥३॥
माया मोहनी मन हरणा। जोगी या सब मीडंडारे। जोगी या बसि
करणा टेक चपल चार विसाल लोचन सबल सारंग धरणा
कांमबांण बिलोकि मारे जग सबही डरणा॥१॥ रोग दोष अनेक
चिंता सोक सागर तरणां फंद वारजि को रिमारे देत नका हुति
रणा॥२॥ सुरनर मुनिजन असुर सुरपति लग सबही डरणा। दास
तुरसी जोगि बचे क वरे हरि सरणा॥३॥४॥ अथ आरती॥१॥
आरती परपूरण देवा सकल सिध मुनि लागे सेवा टेक पंचतत
तले पकुप चढाया ग्यांनदीपल सहज समाया॥१॥ गगन मंडल
मैं घंटा बाजै सब द अनाहद सहजैं गाजै॥२॥ सुरति आरती मनसं
पूजा आतमदेव औरन ही दूजा॥३॥ जनतुरसी कूं दरसन दीयो
ग्यान अमीरस सहजैं पीयो॥५॥१॥ गुलाईं रामानंद जीका पद
राग बसंत॥ सहज सुनि मैं नित बसंत अबदि अ सहजि नज
इ अंत टेक नतहां इ आवा कै कार नतहां नाभि ननालीत
र॥ नतहां ब्रह्मा सो विष्णु नतहां चौबीसों वपवरन नत
हां दीसे माया मंडरा मानंद स्वांमी रमे अषंड॥१॥२॥ तातें नाक
हूं रे संसारा मेरै रांम कौ नांव आधारा टेक गुड न्हीटा गुड मांहि
गुड मांहि रहिसी लपटाई गुड रती ऐक मीगहा ई पाछै दुष पा
वै सोई॥ सुपना तर राजा हो ईऐ नांनां विधि के सुष लहीऐ ऐसे
सुष कूं सुष हो ई जाग्यां सें कूग सो ई॥२॥ मैं मेरी ग्यांन न सांवे ता
तें आत्म समाधि न पावै रांमानंद गुर ग मि गावै तातें निनिरि
न सम कावे॥३॥३॥ सो ज्ञा जी का [illegible] अने
दी नैं लद पायो नधरीयां लो ईरे अकारे नां टेक कूग सोलहे मैं
सो ईरे टेक अमेत्र मे ती रघ न्हावें आत्मा सच न पावें पूर्वरो

टीकाभेप्रांणषुध्यान जावै।लाइलै अनन्नेसुधांनन्निर्वांणी
कछिनेसनांनधांमजी कोनांवलेस्पावैपरमनिधांन।छिनहीदीठे
रूपध्यायसुनिमेंसमाछिनाहा।छिनहीपेडीचढिस्यांणगगनच
ढाहाय्पध्यांनरोपध्यांनसबदचीघंटबाहाकरिलेआत्माएूजा।
नूलोरेसुगधकायछिनहीपरचेसिधछाह जरेनउरगंधजाणै
लोश्रुतिकेकालिजनालजीवकोकालसुकालोकरिलेउकाल
नेरोई।रपमपदकरिलेकिलो।लशाजातेनमंतकरुजांनमूल
मेंकधेडध्यान।कसीएकंचनजांमेंरसीनाहिरेसोकईयारोमए
सादमांहीरांध्यांनबात्कहांरेतवेगएकारकेहांरेमीसांम्नांद॥
धा॥रा।मिलोरेचारोणेतासूअबमिलिरहीयेकरमकरीसजाल
छिन्नूतिचढाईयेरेकाकायामेरीमटकीचमजलछाई।श्रामां
छिरोलिरनवनिधिपाई।१काष्मूजनेवैसंदररहीएमथनकरलो।
पूरबोजन्मकूरहीए।२कामदकलीफलछिनामा।सोफानी
मासिश्रावागवनकानामा॥३॥३॥कमालजीकापद॥पद।०
श्रमारेवेसाणीनगरमेंआरिनमांगेजी।पीवेमहारसजोगीरेव
छिएथेनांरेकश्राकारचाया।श्रेसीश्रेसीअबारलिनारीजी॥
मरमदनीमांहिसमांनी।श्रेसीमदीहमारीजी।२।चंदसूरोक।
मुधजाके।सहजहादसचेलाजी॥कहेकमालविरंजनजोगी
बाचालेकरिषेल्याजी।२॥२।सुनिवमस्तदिवोनांफकीरांदाफ
लश्रसावे॥श्रमीलेंदाकालएहोवेरेका।पंपानगुरुदीमूर
डींस्यानीषफमी।कमारिमलगजेतदा।मांपेलिलकउनम
नी॥२॥सईध्यानधरमदीवे।सेलीसुरतिअपारपास्यावडीपे
मदी।दिलनगादसवेहार।१॥तुरीयाश्रदिरफूलेसावै।मर
मनजाणेकोइधुगबिचूदीसेमा।ल्हतावैरहेलावरेहोइर।
मातारस्तीग्यांनदावेश्रावोपहरघुस्याल।स्रुतिसंलदाचर
नदी॥मिलिनाईरामकमाल४॥१॥हेहमनमामालनी।श्रांश्र
छेफूललेश्रावा।श्रामादेवलिरंजमांस्रसाकुंश्रभिचूढावाटे
का।श्रगमनिगमघोजलफिरे॥हरिचरमांचितलायो।नम
नमीतरिनटकीयासलगुरकहिनषायो।रमानसरोवरमा
लाघटातहांकवलनदलफूले।जहांबसेमेरेप्रांणनाथकंव
नेरगिन्नूलै।१गगनमनअरअंतरा।ताकालिरमलपांनीजा
कोसेवगजनकमालहेजिसियकमतिमांनी॥२॥हेकोक
रसिकरामरमपीवकूगे।पीवकूगमुघजीवकूगोटेक॥नि

हैसतकोईजनतनजानकछिपाया॥२॥सियालोनहो
कृतै॥सुषपंषीमोरमयाता॥परीनतदश्रंगरमसीनो॥वा
ग्गर्सगिध्यावा॥३॥ईवसंतरुतिजेडमधुपसबबकुरिन
केनरआवा॥सुषानंदस्वामीसुषसागरीमगानजोतिनर
षा॥गा॥ह॥॥ष्यीसेहो अवलंबनमाछो॥तेरेचरनकंवलने
हीसिंअनाथपनुआसतुम्हारीमेरेअवरनहजाकोईहे॥का॥केवरमे
जैसेंसुनिकामाछे॥आंनबूसंमडनजांते॥असनयोकुंपमा
मनदाडूरथोरैहीजलनहछिमानै॥॥जोचिगकलाबकुनदिष
तोठे॥कुपनकेमतिनहीमानै॥आगेवाढोताहिनसहुजेतुम
अस॥तिनकरजलनिदानै॥सुषानंदल्योलाईरहेहै॥पूरनमैरीआ
सा॥तुम्हजनहरमेचाड़िा॥माछे॥मेरीबेगिनहरकुपियासा॥
॥कमातजीकापद॥॥आ॥सुषानंदजीकीपद॥शा॥थ॥ला॥धनोज
जीकौपद॥॥राग॥लै॥रेचितचितमिटीनदयालनहिहरीछिन
औरनकोहीजेधसवहिबूसंडपंडलैकरतासहोईहे॥का॥छि
निनमीकेउदरतहिकथ्योपिंडकीयोदसद्वारदीयोअश्व
अग्रनिसुषिरासे॥मासमसहमारा॥करमीअडधरैजलती
नरीषीरयंकनरानांदी॥पूरनपरमानंदपयोधर॥छिनछिन
बाढी॥थपांहरतमेंकीटगोपिमबढिनथै॥मारगकेतकुनां
॥कहैधनावाकेहरिसूरिका॥हूंकाईजीवदुराई॥३॥॥म
नजीकापद॥॥राग॥गौडी॥दासनहीसाहीएहो नेरोजनजेअपा
धीहोइहे॥का॥अमनअनूपमरोदिका॥संतनिमीनहरिवास
कूरदया॥तिनहीजनक्योपावैविसवास॥१॥कुतुमका
निबीनतजु॥तिसदिनधरौमजलमाछदिकतोरपसूबांधीयो॥
नहहसहीमरेपियास॥२॥औरनहीआलंबना॥जनसेनक
समफासहीमवाकुरमेंसवगा॥कृपाकरोरघुराइ॥३॥१॥
मुरारिजीकापद॥॥अवधूसोजोगीब्रह्मचारी॥जाकीचालनजग
हैन्यारीहेका॥मनकीमालासुरतिसुमिरनी॥सासमूतलपो
वासवरगुफामेंबैठिसुनीजनआलपसिंहसनजोवे॥नाष
दासणदीनपटावे॥अमपानीमुषसोवे२॥मलध्यानकी
रामेथिहिविधिमनकषावे॥धरतीलीप्यांसोतिनमांई
मेंध्या॥तिजनकै॥दिलकादमानछुटेनरे॥तोकालगरासे
२॥बंदकलबभरमकीक्षांडी॥ताविद्यावनमेंजो॥अपरंपार
पारपरमात्मा॥ताहूसमविषलौ॥३॥कहैमुरारिपांनघरपा
या॥छिनकाचकचढाया॥बुसतसगतिकृपाकबणाया॥

न्म नैमोतमायात्म॥१॥ हरिभैमांनसरोवरपायाजहांमन
हंसा खिलमाया टेकोकहंसदेखिसचपावै इजा पंछीनजरि
नआवै पंछीयांमैं वक्रनैंदा ऐकबुगलाहोइसपेदा १ वोमोती
यनकाकैअहारा वोरहैसबनथैंन्यारा वैकीटकरमचुणि
षावैजलचरसूध्यांनलगावै २ वोमांनसरोवरन्हावैवोनिति
३ विदरसनपावै वोद्यालरबैनबासा वाकैरामचरनबिसवा
सा ३ जहांमुनिसिषगदकीन्हा लहांप्रेममगनल्योलीनां ज
नमुरारिनिहकांमा जहांहंससदीया बिसरांमा ४॥ श्रीवोरेमी
वोहरिनांवसंतपावै जाकीवलिजांवां टेक मीवोनांवपीयो
सोसेसधूपीयो नारदजयदेस २ मीवोनांवपीयोनरहरा संवा
पडावतगनिकासिरी २ यऊेबिजेसनकादिकपीयो प्रहला
दअगनिमैंराषिलीयो रांमांनंदकवीरैदासपीये प्रेमपीयो
इकसासधमाहोनांवपीयोहरिव्यासधनैंपीयो जाकैसेनांस
थिपुछगरकील जनतुरसीपीयो दासमुरारिसंगतिकरि
लीयो॥६॥४॥२०॥ अथमलुकजीकापद॥ गो॥ बिंदामेरामद
बूबंसबधहिआत्मसूरति मूलटेदनहींजांकैमथरानहीं
जांकैकासीघरबैठांपायोअबिनासी २ नहीजांकैबदरीनहीं
केदारघरबैठांपायोदीदार ३ देषिदीदारनोपोलतांनाअबक
छूनजरिनआवै आंनइझिलिमिझिलिझिलिमिलिदसैसिरसि
रिघरसाहिबसदारहजूरि ४ पाकपलकप्रभुहमजिनांजाइ
हिरदानीवसिलासमाइ ५ कोईकहैकेसवा कोइकहैमीर
हीहसुरककायोकोपीर ६ कहैमलुकनजिअटलमुरारि तन
मनधनसंतनिपरिवारि ७॥ २ पाकतुम्हारानांवहैहमषाकी
बंदेषाकहीतैपैदाकीए अैसेगाफिलगंदेटेक कबहूनकी
न्हीबंदगीमारिबविसरायानैकीकारा हम्ही डिकेंबदअम
लकमाया १ जोरूलडकाघुसिकीएडुनीयां विचिनूलेन
जरिगईअसमांनकूंघोडांचढिफूले २ जसदसमकूंआदि
कूफजिनिपिंडसंवारा पैबेषाकदरिमाकेदेमनसमझिनां
वारा ३ दमसीघोडापाकेदैसबषांनपवांनी कहैमलुकर
हिजाइगी वोस्वाफनिसांनी ४॥ १ दरदिवांनेबावरेअल
मस्तफकीरा ऐकअकीदालेरहा अैसामतिकाधाराटेकपी
यापियालाप्रेमका बिसेस्सबसाथी आवपहरघूमतरहैजै
सैमैगलहाथी १ काटेवंधनमोदकेअैसेनरऐनिसंकावाकी
नजरिनआवईकोईरावनरंक २ सा दिलबलजिसादिलबलो

कछूरहीनतमाहा कहै मलुकउसघर
हा३॥३॥ दरदवंदरवेसहै बेदरदकसाई जांहनकुं
चलावही नही पारपराई टेक काबकरी कयागाइहै क्यां
अपणां जायासबका प्रांणीएकहै सा हिबफुरमाया अ
षाकूंटूकादीजीए प्यासेकूं पांणी तेदरगहकबूलहै हम
नीकांजांणी१ क्याजिमीअसमांमें क्यादोजिगमांही कहै
मलुकबेदरदकूं वाहरकहूंनांही॥३॥४॥२४॥जेगीजी
कोपद॥ रांमरस ऐसारेजाकासबदसुणतअघजाइटेक य
हुरसमहंगामोलिहो तनमनअरपेहोइ रांमरसाइणसोप
वैजाकेधड परसीसनहोइ१ योरसपीयोनांमदेवपीपेअ
रैदासपीवतकबीरानांअघाया अजहूप्रेमपियास२सूघत
हीगूंगाभया चाषतहीमरिजाइ रचीएकतनमेंसंचरैतौ
जलबूडेनजराइ३नादबिंदसैंरहैतहैगुरबीजजमायारू
निजनजगीब्रह्मपिछांनीयां सोसेवगपकुंतासूंनि॥४॥२॥
२४॥ अथबनारसजीकोपद॥ हमबैठे अपनामूनसूं छिन
दसकेमहमांनजगतजन बोलिबिगारेकोंनसूं टेक गोबिल
हूनरमकेबादल परमारथपतिपोंनसूं अमिअंतरगतिन
ईहमारी परचाआतमरांमसूं१ प्रगटीसुषपोंनकीमहिमां
मननहीलागेबोंनसूं छिननसुहाइओरफीकेरसारुचि
साहिबकेलौंनसूं२रहेअथाइपाइसुषसंततिउनिकसे
निजभोनसूं सहजभयाहूसतगुरकीसंगतिसुलफेआवा
गोनसूं३कहाकहीऐसतगुरकीमहमां बस्तबताईसैंनसूं
कहैबनारसमोंनगूंगेज्यूं न्याहोईरहैसंसारसूं॥४॥१॥२५॥अ
थकांन्हाजीकोपद॥ मेरेसमाताजोगिनां उनमनिमतिव
रा मगनभोसुधिबीसरी फोटाभरमहमारा टेक आतमगणि
नबिचारतेंमोहिलागीतारी रसिमातावषपनकतरूंसा
चीसहजषुमारी१ अनेकजन्मबैरागले अनन्तबजावें
छपामहारसजोपीवे तिहिपलकनलागै२ बलिहारीस
तगुर आपणे गुरदीनदयाला आनंदरसमाताफिरूंत
तप्रगटदिषाला३गगनगुफाअमृतचवै हिरदेनेंहजि
यारी रोमरोमप्रगटहिहुनसतिबस्तबिचारी४हीनन
हनकेनिरंतरें अंतरसुषध्यांना जनममरणकाडुषगा
यातनदरस्याकांन्हा॥५॥१॥२६॥कोई ऐसादिलदरवेससादी
गामीतमकनहीगुसाहिरसपुदीनहीं

चव्राव्ररिदेषै। दकदलालपिछांनै। जिसघटितलव
सादिव ऋपनेकी। औरतलवनतीं ऋांनै।१।कद्दरगुफ
रदिलदोजिगत्यागो। हलतषुदीनही राषै। सफनसफाहोइ
भिनेषापिकह्या। ज्ञुवांसुकनमति जाषै। जीवनमेरैजाग्रंफु
निमोवैजांनत आयमुसावे। जोयापदरूचीन्हेकान्हो। मोदरवे
मकहावैगाथा। बोहत्यारीबावरीचसरनपाटेनाम। लोरूबदवे। जलां
गामनही। वोऋगमपंथआकास।टे१। पापपुनिउषमुषनही स
बेदिवांनादेस। जोवानगरीवसिरहै। सोवहोडिनकछेनेम।१।
आतिबानकुलमिमिायाती। चकुंचनकाई सुरकेनरकरो
ऊपरहैरमोवामागजाई।२। रामनावआमपुरा वेसेसआम
होइउतनजतनकरिपऊचीत। तोवहोडिनिकसनहोइ स
बेऊंबूणकेतरनयापदही समांनाप्राण। ग्यानध्यानपैडरहारट
जनकांन्हांलतांनहा।३। माथेगाहरेमोटामरहमउण जाकीस
दगतकीरतमाचीं। महतकहारसकेनेमाया। दऊंदतीछिचि
काचीटेक। मनवेमुष्मांनही मायादिसाधीरजमनकोधीरो। ऋ
नतमिधांमैहमविषिचालो। मलटीचालकबीरो।४। दसाऋ
बिस्पकायागमआतुरमाधि।९। नसुरतिदरोनी। सूरिघसुडि
मूवांमायामें। नावूनीरविनवोरी।२। मनमुषमाजवणायोज
बैठे हरिचरणांचितबांधे। नघतरजनमजुलानाहाथोरो। बि
ववसानहीतांधे।३। उलटीचालजुलाहाथीरो। बिरलाका
ईचतसी। ब्राणिकमाहि बिष्मतावीजो। घडेचोनकोईघडी
सी।४। मुघतेवांणीमुधरीचवतो। सुधिबुधवणीमीगे। दास
कबीरसारिषाईजो। मुनोनकोईदीगो।५। सावतसूरजुल
होइउऊ। वांकीनोमिपजाई। माऊमाषितसबजीया। नवे
घडफिरीउहाहिंद। आगतेकथीहसीविषिउलटी। विमतबि
मतरीबांणी। डनीयामेंदीदारजुताहो। दोहाडेनीवानी।७।
स्वारथकाजिकीयासिघमामा। जोडेजातरिकाया। कौगति
हारकेहेजनकांन्हा। त्रिमानदीवहाया।८। मैवेरागीरामका। दि
कोईघाटघडेवघाटहमारेओरेजे। अमरापुरपावै।टेक। हरि
रेदेघाटमनकादिटघा। कोईपारिषजांने। श्रवणसुणिपरहरे
रजेप्तासूमजमांनेर। निरमोलिकहीरावण्यां गतपतिरका
गा।साससवदमिरवमोचता। जुडीमतआपणा।२। मसकतिक
बंनमेटिहीदतमाहिवसारे। सुषनिधिसेवारामकी। जनप
रमविचारेआप।१। नितोकीन्हीजवनपक्षरेराजारांम। सहरसु

वसि वसि मोरे सब कामटेक ॥ ज्ञान चित निरमल नग८
ज्यां केवल रांम लीयो बिसरांम ॥२ हरि आं केउ हसह नांत
म टिग या तिमर अहै त या भांन ज ब ह रि हित करि की म्हो
आसा मिटि गई जर मनां आसा पासा ॥२ काया म हत मे नयो
कासरो सरो मदीप कप्रकास ॥३ परस के हे हरि दी नद्य
ता कल न रा यां हरि सब टार ॥५ ॥२७ भी रा नमो मह दयानि
अनां थ मुझ हो नदया न कृपा करो मो हिया रत तेरो
टेक ॥ पान तबो नी सार वो मो हरि देस नाम प्रेम नी रत तेरी
जा कं बि सरू तो हा ॥२ रस रस नां सा करमि त्या सतगुर
लाया ॥ आप आ मी रस सच त्या राम नाम दि ढाया ॥२ कृत क
रणी सबै मात नाव तुम्हारे पर सके टेन ही बी सरू मो
हि मेरे प्रिया रे ॥३ ॥२ सो मेरी चाकरी को चोर नगति तेरी क
री नाहि ठेर ॥ न ब ज्ञ आरटेक पार न वास द स मास आगि
मु प हारे के मार व स ऊंसे प्रति पात का न्ही मे व रांम
आस ॥२ तेरे कर कर जा गत में राम न मे ओर पूरनां के
श्री ति नाही ॥ श्री ॥ मोरे ॥३ ॥ समकु ते लक हान
या नहीं राम रिझाया ॥ सात सुप च सिरो मणी गो बिद गुन
गाया ॥ टेक ॥ व्यास तो कथा सतो ॥ बिद्या अधिकारी तन क
न थोदि तब हामि री हरि जाति बिचारी ॥ बहो रि सुनो सु
क देव कू ॥ नाप कु तत्र भि मानी ज्ञान कं ब दे ही गुर कीयो त
बही कु ॥ ज्ञानी ॥ तनि आभि मान सब मारकु ष नाद गुर
कीया ॥ तन मन दे सेवा करी ॥ निर ने पद लीयो ॥४ गोप बाधि
पसांपी या ॥ सुमिर त सुपदाई ॥ परमां न द हरि जन गति बिन
मि थ्या चतु राई ॥ ॥ नरीदास जी कायदा ॥ राग बिल
(ता ॥ मो ह्यार कथो बिसराई ॥ प्रतिदिन राती ॥ ता पिड प्राणा के
हरि सदा समाती ॥ टेक ॥ तन मन धन सायो जी व दे मनिमातन
देही ॥ कूत धनी ॥ दि नमां गी न जिरे म सन ही ॥२ जीव नमे
जीव की ॥ नि ज नाव तुम्हारा ॥ पल कुन राम बिसारीये प्रांण
न ते प्यारा ॥२ ॥ तन मन हरि कुं दीजीये छिन हो इन न्यारा ॥
चू ॥ नमा ॥ नि ज न ही दास ॥ मम की न बिचारा ॥ ॥२ नांव निरं
जन सतिहै ॥ लीये नि सतारा ॥ सुमरि सुमरि जन उधरे ति जि
व हिकारा ॥ टेक ॥ सिव स नि का दिक मुनि जना ॥ नार द सुसेम
हरे कार रटे ध्रिर मोर ह जी नही नेमा ॥२ ॥ सा वत सु पु प्रहला द
के ॥ निज नाव तुम्हा अभ्या सा ॥ तेन्हा गी छूटे नही रंप हरि

पासा२गोरखगोपीचंदका।मनसुनिसमोनां जंजनके रत
नवृननरथरी तिरिमिलेसयांना ३ जनकबीरअरनांमदे करि
लमांहीतारेरांमरांमरटतांसही रैदासजबारे॥ तनतजिम
नैसारथसज्या।जगछाडिसबाया।नांहलागिनिरबा॥१॥पद
गुरदादूपायाधसकलसाधपहुंचेजिते।अबआगेसोईजु
गेनाथनिजनांवसूंअबिनासीहोई हां ३२ कोरहैरिनांवके
उचरैंनरहेजुरिजुरिकोटिकलमलनासछिनमैंकरैं टे
कजोगजगिबैरागतीरथसकलयाकीसरनमुक्तिनांजन
ग्यांनदीपगमसकलसेसेहरन२ नारदादिसुकादिसिवबि
धिरटतधरनीधरनसिधचारनअमरबिसिजपतआसर
मबरन१ निगमतरकोपरमफलहोतनकबहुषिरनकाल
प्रबलप्रचंडपावकानहीपावतजरन३ नरमनंजनकोमगं
जननरकपुरउधरनबारिनिधिसंसारदुसतराहोतसुषमैंत
रन४ संतसंपतिआगतिकोगतिसकलसुषउरलरनानंददा
सप्रभुहरिनजानतैंमिटतजामनमरन५॥६॥दासअनिन
मेरैनिजरूपादरसननिमषतापत्रियमोचनपरसनमुक्ति
करनगहरूपा टेक मेरीबांधीनगतछुडावैबांधेनगतन
छूटेमोहिंएकसमैंमोकूंगहिबांधैतोफिरिमोसूंउजावन
होइ२ मैंगुणावंतसकलकीजीवनिमेरीजीवनिमेरादास
चतरदासहरिताकाप्रीतमाजाकैहिरदैप्रेमप्रकास४॥३३॥
ध्यानपपेरूवारेब्रह्मवृक्षकरिबासामीचमिनीतहांनपहुं
चैंनांहीकेबिनासटेक मायातरवरछाडिमूरषिहोतहै
परनास।जिनपडैफंधपासिपिंजरैबेगिहोउदासपांनिहमा
रीसीषसूवाउरधउडिआकासतहांपहुंचैनहीकोईनिरनै
निडरनिवास१ ससजिसिवहूवनकोजेतजिबिषेबनबास
अतिअनूपमअगमऊंचोत्यांलिरतरतासअमरफलआरो
गिअहिनिसकरौकेलिबिलास।निकटसरोवरनीरनिरमल
पीयांजोगिप्यास२जिहिंबृछबहुतपंषेरूवारेरहैंनिसदि
नआसएहैजनकीमधुरबांनीउचरैअन्यासरांमहरिगो
पालमाधौंनजैसासौसासचितहरिचीत्हरकरैंकौडमि
टिगईतनत्रास३ अनूतिन्त्रमिन्त्रमिबिषेबनमैंबहोतस
हीतनत्रासनैंकहीसुषनांहिसूवाउपीछादसमासनजा
नूंतूंफिरयोकैबरिग्यानबिनंग्रनवास दासमाधौतहांच
लीएजहांसुषमैंबासधा॥अबूगरमैरेप्रेमकामेहा करम

थमा सांउ छिवतिडास्यां लीलांवस्नईदेहा टेक
हलसंज कीया रत्ना पिगुलारासी तुरीयादा लाग्रेसा चेतन
ग्रासामूल विनासी १ वंकनालिका कीया वीरनां करम
कीसी सुषमनिखी जब देजन सोई त्रिगुन लागी तारी २
सी ग्रासन दसी यावींया करमनि दांण निदंभणपां सुरतिनि
रवी करी चोकली पांच पचीसू निद्रणां ३ भंवरगुफा मेंदा
रोपी ग्रनहदद टाटवजाई ग्रापिनै मास्वलायागोला नि
रवडाई ४ त्रिकटी संगम पदोका निकस्या पांच तत्त पीजारा
कि लिमिलि जोती कूं कूं फलके कस्नीका कनकारा ५ गगन
डलमें फलहनरचीया मेह नईव देही पांचां पवनां गाहि
डाई सहजे ब्रह्म मिलहा ६ ग्रेसी षेती गोरष कीन्ही केदास
बीर निपाई गुरपरपरसादां दास धरमसी रसकसनी कोग्रांई
७ ॥ ३६ ॥ जिमन चरनकंवल ग्रविनासी जहां नउंपां हिरदे
सुष पावे सव ग्रघ जावे नासी टेक जे तो धरनि गगन विचि दीसे
ते तो सव जुग जासी कोई दस दिन ग्रागें कोई दस दिन पाछे
कालसबे कूं षासी १ कहा भयो जे जग वां पहरया गृह तजि
यासन्यासी जोगी होई जुगति नहीं जांनी जोनी संकटि फिर
ग्रासी २ कहा भयो तीरथ व्रत कीन्हां कहा करवत लीयो का
सी जसां को चित हरि चरनां लागो तेबेकूंठ जासी ३ दोइकर
जोडि जनक हैवा लसीक सुणो स्वांम ग्ररदासी दीनदया
ल करिसा धो कोटे जमकी पासी ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ग्रमुनाथजी
॥ राग वसंत ॥ सुणि ज्यो संत सुजांण दीया मेहेलारे कां
ग्रगुरी यां लाख दीयामें हेलारे टेक ग्रोंग्रा ककड जात हेरे
सेलो चलनां हि पसु पसारी जो मिले मे लैहे वस्ती मांहि १ सा
रे लि पुकारीया सिरसूं डारी पोट सूतास हरजगाईया निकसि
गया सव षोट २ सब जग बंधन वंधीया हरजन हैं निरवंधपा
इन्नसकोसोक सो गलिमाया को फंध ३ नरजो
पूजत हे तेतीस देवां सतिडे वालिसी जीव एक जमवीस
नाया के घटि प्रगट्या पडदा दीया उघाडि कोई एक हरि
रस्या चढि गया चरनपहाडि ॥ ४ ॥ माधे मो हमृग मारयो न
हमेरी बुधि वाडी में वसे षाइ टेक मेरी वाडी में निपजे मुक्ति
ग्रोरा देषत चरि जाइ केन केन होइन सके फल फूल पात सी
पाइ रहे पहकि हाथ १ ग्यांन धनक ग्रांदे सुजांन जिनि सुर
निरति को लयो हे वांन जेमें मारूं ताकि ताक होइ वदे

लाइजाता १मोहमृघकोइसकेनमारि सुरनरमुनिजनग
रहेहारिकहेनापोजिनदीयोहेताहुं दहसुमिरणकीकरी
देवाडिः२॥२०॥गोगेमांगनेमोताज सेसनारद ध्रूवनीघनक
रे श्रविचलराज टेक सिवसुणोसिधहोनदेतो नहीतिनस्
काज श्रलपसुषकोकहामांगं देवामांगत श्रावेलाज १सेस
रसमारङुषा श्रागरइस्यो सुनिमुनिगाजे सजलजलतेराषि
प्रभुजी देकुचरनजिहाज २तालपषावजसाजिनाथासर
ससोरभिरग केवलनैंनबिवानबेठेसकलसुरसिरताज ३
४॥ सकारतोहजाचूजगदीसजाचिगकूंजाचिगकहाज
चे कूसिरहोतेतीसटेकसेसमहेसनिगमनारदमुनि सकल
जनन्केइस तुमजाचे श्रनेपइयत पूरतमनं श्रास १मु १८
क्तिजातसेसारबिरोधे पचतनिगमहदास कहेनापोमहम
मुनिश्रायोहारैदेनश्रसीस २॥४ हरिमेरेमहकी निगमथ
नां पीवकुश्रमीरससंतजनां टेक जगतिमुक्तिदोईपाडी ज
कुली श्राफपणि श्राईश्राडी २गांनध्यांन दोउनाडेउहारा
लेलागी षडेनहीधारा १कहेनापो श्रनमेकीलोइरामना
मतसलीयोबिलोइ ३॥१६ कहाडरहेजाकेरामधनीस्यो
सनकादिकमुनिजनबुला संतनकेमुषिसाषिमुनी टेक
भूतपिसाचजोगणीजितलितबारबितालपतालफुन
कारनसकेकोजनेंनकरारजाकीहरिसेबातबनी १जा
कीरासिनथावरव्यापेशाहकेतकोमोडि श्रणीरषवाले
कूंच कसुदरसन निसेनापानांवजनी॥१॥४२॥ मुकंद
जी को पद रागबसंत जहांबारामासबसंतहोइपरमा
थजांणेसाधकोइटेकजहांबरषेश्रमीश्रषंडधारहरिया
लीहोतश्रपारजाणपाणीश्रासदेहनकोइपवनगईसव
मलिनधोइ २जहांबिनफूलांफूल्योश्रकासतहांस्यो
बुलादिकलीयोनिवाससनकादिकरहेनेवरहोइतह
लषचोरासीजीवजोइ ४सातेंसाहरपीरहेघोरः आरकु
रेतेतीसकोरिश्रमरलोकफललीयोहेजोइ कहेमुकंद
जांणेसोमाइ॥३॥१॥४४॥ श्रथश्रीलमजीकापदरागसो
रठि॥ देसडलोबिडांणोंश्रपणोकोनहीसबजगदेष्या
जोइ रांमसनेहीप्रीतमबाहिरेबिथानबूफेकोइटेक
जलमांहीजीवडोकपनोजलबिनजीवनिहोइसोज
लपीयोसाधोंनिकरिमलनहीलागेकोइ १कूवोज

मा नावड़ फिरो ॥ कीज्यो ना वसे सी न गति हरि की ऐमा गरहत रतिरे
॥४॥४१॥ अथ ठीरा ग मारू ॥ सुख को सागर राम को रविसारियो मेरी
जगति छिनां न गावंतम्र जनम सुहार्यो ॥ जनम जुहारयो राम बि
सार्यो चित्येन ही अजामी ॥ पतपतन्ना दूधेटे हनहीं जो वेदिन
आवणतामी ॥ आयुर्बल रचो बनमाली छहां ने ही को नेरा ॥
दास मदास कहे जन छीत राम सुमर मन मेरा ॥१॥ अमिके
तो न निवारि ममता मोड़ी रा ॥ हरि सहेत न्याइ जन मसूलो डि
गरी कहारेत्रजी सजो डोजम तोड्यो ॥ छाडो सकल बिकारा
यो संसार स्वारह रकी बाजी जात न लागे बारा ॥ जो आयो सो तु
गारेघानी ॥ करिले जो कछु करनां ॥ दास मदास कहे जनछीत म
रहो राम को चरनां ॥२॥ रेकि मरण सेसार सुणो नर नारीयां ॥
५॥ बिनसि जाइ छिनमांहि कजम डर भारीयां ॥ जम डर भारी
जपो मुरारी ॥ पिंड्य टतन हीवारा ॥ तन मन धन जोबन शरा
दा ततियन मे कहा तुम्हारा ॥ ऐसे नांव जपो नरहर कौ ॥
अमर नहीं करि कोइ दास मदास कहे जन छीत ॥ वहोडि
मंजोग न हाइ हि राक तरणी अरज्ञान जो बनवालीयां ॥ बि
षीया को रसचाषि न राम लिवलीयां ॥ न ई सलिवा लीजा बुन
बाली ॥ बिषीय रसचाषि घनो घूमनाफिरे नेण न हीस के
चेतन रह मायारस नो साईसे वी ने हनकी यो जनम गोत्र
हलीयां ॥ छीत कहे आगिबडसुंदरि हरि जी को नांव संभा
लीयां ॥ एक कोम क्रोध अहंकार कांइन जारियो ॥ नेरग
लय छोजम जाता मह प्रभू पुकारियो ॥ महं प्रभू पुकाह्यो मु
ध्या रमास्यो केती बीती अंग ॥ नांई मात पिता सुत बंधु ॥ को
ई न चाले संगा ॥ दह दिस ध्यावे कोई न छुडावे ॥ पावे दुख अ
पारी ॥ छीत कहे सुमरो धरनी धर ॥ जगति मुक्तिदातारा ॥
वहोब कहा दनिवारि राम नो मकहा जीए ॥ कोई रसी बो
ले बिष राबोल ॥ सोई अगम सही ए ॥ कि बिष राबो ले सह
जकाई जीव तअमर फल पावे ॥ हरि जी को नांव जयेलि सवास
र सुष हरि गुण गावे ॥ जां णि बिजां णि तै जो चतुराई सनमन
हर कुंदीजे ॥ दास मदास कहे जन छीत्म राम रसाइण पीजे
॥१२॥ इक बिडाणो डलाइ मूनन हूला हरि ॥ तिष्यो हरी को हो
ई ॥ साई न लपाइए ॥ तिष्यो हरी को साई न लपावे ॥ अधिक
कछू न होई ॥ राजा राणा सुखिबंधी ॥ गरब करै जिनि कोई जी
वडीया जिन रजक बणाया ॥ पूयण है अविनासी ॥ दास मदा

६२ कहै जन नहीं कोटे जम की पासी ७ कहै से फंद टे
जन मांह गोड़ियो त्यो नही न लगावे तत नथन ॥ तन
अनहोयो जन नम बिगोयो पायो नही बिचार ॥
मिरे माजी वरा जन मज़ रूवां स्त्रूपारी दास मदास कह जन
जिन न तै समारी ८ माइत्ती यो संसार देषि न भूली
रा देषि षि डाणी तोड मुगधन फूली ९ देषि बिडाणी
ट मुगधन फूली पामें कहो कास्य रा हूं सो समारसो
याहि न दस तीयो ठसेरा ३ तपत्ति पर तेह रजी को बाजी
देषो मो चहि चारी १ को चमहो सकं चन कोटे साखीत्म
स्ति हारी ए नरनाह कओ न तिं वसे परनपारी। बिनम
नाह छिन माहि न बहो रिपछि तारी ११ फिरि पछि ताने बदो
न पा ये न रनाह क ओ नार अपण सुष के काशण प्रानी
रखिते नथ अपारा सो च बिचारि कस्यू नहीं तेरा रामराम
स्तीम रहि की नरा लिखि तां जम स्यी मुक हो आइस
न पाय ध जाव गयनां श्री हैहरि न जन को अधिकार ऊच
नी च वसे पनांही जन नते जे कार टे १ घाडकु तमुंड जु
स्तो कू जपा पार स्या र पिंड मास्यो न रक ति वास्यो हरि
तोयो सोदार २ कांव कुडी अनेपे छोपो कमी सीआचार
उन ह घूत न स्यो सन मुष पडि तदिस पिछि वारि ३ बांनो
स्यो के आसपास वि विवहे बेगार ४ उलटि गंगा नई सनमु
प चली जन की मार ५ नीच कुल की होत गलका जाको
हार वस्यो सो सार ६ याति नी वि सिप क्ष रिचाती स्त्रो पछो
नार ७ पांडवां का जग मांही मित विप्र अपार सरमरी जी
वैसपवरागी साधि सब संसार ८ केरुव बैरी ममो हाही
इण अपार सब अपनी मरबदी न्हो ९ कौन हीन पर हो
जन का जान कमाही कोण काट ग हार १० धीष्ट के चर
न परसत निष्धर ति हि बार ११ जन मत गजी वे वेन जाणे
न करी पुकार १२ रेण कु सी नमेम आयो काटि गयो जमजार
१३ स कत स्यों सम स्यो तहि पर्छिसा किर हि क्षार नांव
सो निष्पन रप ति सिल ति रा सि ऋइ बार १४ पिता गो दप
ना सु न भग ति करी कार १५ दास सुक अरटल पद है कोण ठालण
हार १६ गरजू रोग स्यो अगनि जातो क्रुष्णी की लार वेअ
गवाह टकयाती नांव जे जे कार १७ के अजगज जापसी मे
एक राज कहा रि तिष्यो कन्नो बच्यो सो तो जरा हसार

ला।२।असे वा की ज्यो सुमरन की ज्यो। की ज्यो पर उपगार
जन हीत्म यू वीनवे हरि मेरे प्राण आधार॥२३॥४४॥
राग लागत लागत लागेगा। चूम चाजत चाजत चाजेगा।
टेक। अनेक जन्म को सूतो हंसो। जागत जागत जागेगा। ज
परि कृपा न ई सतगुर की। विन किर्पा नहीं जागेगा। पहल
कृपा करै म्हारो सतगुर पीछे राम निवाजे। गेबी कहै सुण
नाई साधो गुर सूं मारग लाने गा।२॥१। पेपेरूक डिसी आश
लोयो विसराम अनूज्ञ न स्वारथ का। वा को सेरे न एक को व्यो
म टेक। स्वारथ कोयो जी वडो स्वारथ छाडे नांहि। जबगा हि
रकृपा करे। तव मन चो समझे मांहि॥१॥ जल कूं चाहे मछली
धन कूं चाहे मोर। यूं हरिजन चाहे राम कू। ज्युं चितवत चंद को
र॥२॥ जो गी साई जांनीए जा सूं रहे गुदास। तत निरंजन पाईये
जन गोपाल छुड नाथ २।३। धनि धनि ब्रन पहेसी रहो अपणे
साई साहिब कारने। सब तज जोए फकीर हो टेक। तन तसि
पासण सबही छाड्या। रहन जडा हूल हीरहो। को टिन को टि
पजा नां छाड्या। रतन जडा वूल सी रहो। सोला सहेस मंन त्या
गी। छाड्या बांवन बीरहो। मांन गुमांन दोऊं के रिछाड्या स
यकला न हीस री रहो॥ धनि तेरी मात पिता धनि तेरा। जिन पीया
वीरहो। धनि तेरी करतूति कमाई। धनि तेरा गुर पीर हो २।
ऊर मांपाव ऊच नसूं मलनी। को मल अधिक सरीर हो। जनई
पायन चलत पयादे। लाभे पांनके तीरहो। हरि नल पकरा हि
ट कसिप करी ऐसा गयां न गरीर हो। मै नूं दास तजहालगप
ऊचा हरि के संत मधीर हो ३।४॥ सुलतानी नी वलपन्यारे
रा जिन की प्राति तगी कठमन सूं। अल्ला पी वरपियारे दा
टेक चेरी सूती घरा विगूती वा बक चोट चकारे दा। पाति
साह सू ज्यो बजकी न्हो एही हाल तुम्हारे दा। जिन के स
चैहदल बांत भौतिना दनगारे दा। इतनी तज कर लेई
फकीरा। धनि आंका दिल चारे दा १। जिन सुधि चीजन ति वा
ला पात। हा ता हुरत तयारे दा। अब मै टूका पां वून लागे
बासी भाऊ सकारे दा २। तन मैं चोला अजब बिराजे। सव
टोकस मारे दा। अब तौ बोऊ च लां वृए नागो गुदर बहो
तव फारे दा ३। अमलत पां ईदल तपा कड नीसुबो सकल
पाक बोहारे दा। आदसनी नेए अवलीया। ऐ कम बद मि
रवारे दा ४॥ साह सिकंदर पीर अवलीया। सद कसर

२ रीसोरठ ॥ नेनंदास कहै छै रागी प्रकरण्यां न अषोरी ॥
गारहण गावै तो स्यूं रागां न प्रकासे ॥ सहजा हन रीत रीयत्तो ॥ कुष
कहै [illegible] रण जब नाजे ॥ मिरिज्ञा इजां मणमरणां सो व
[illegible] रकारसज्ञ हनी सिन्ह ॥ अबि नामी अवतारी ता
निरमे हाह सिरलखिता ॥ नां वेलीयां न समारीतो ॥ मां
मैं नाथ जती मैं जती ॥ सकत मिथ्या अधिकारी तो ॥ ग्रह मैं क
न्या मैं [illegible] दरबा डया ॥ केती आत स तारी तो ॥ सबदां सुस
नी सद नाता धी पतिरता कोई जनपावै तो ॥ ओ कै कहै अपव
रआपे सुमिरयो साड नवा है तो ॥ [illegible] आपना ने
कसो [illegible] जो ही अनुगात सुप रवां न ॥ अजर जारै आसा
ध साधै आठे पट निरबा नटे [illegible] नी नत्यागे च्यारि साधै आ
वमार का ठ ॥ उलटि हसाप वि पांनी सुषमनां के घाठ मूल
बांधै नासि साधै इडना पीवे पो न अरदे वदे पअपी वृपी वेमि
टआ वागोनी ॥ कांम जारै क्रोध मारै उपरा तेभाइ कहैना नि क
जोग जैसा आप करता हो ह [illegible] पहरां अगानि रवे घरबसी
जोज नसार करांही ॥ सगरठि घड म्रतकरि या कं धरती अकचल
को हीन [illegible] हि न राजं अवधसौ तो पी ह्यं कचंत्रा ही ॥ जे ती सपवत
नदरगन तेती अकक रांही ॥ आगरू नोवपद्धेवार ज्यारी दरगह
पाह नपा ही ॥ दास मदास कहै जननानि कतोर मचे ना खडा
[illegible] सुरसिरटमेरा महरसी ॥ जिनम रमत पाया ॥ दिल अ
रिदी दारहै मोज्या जिम पाया ॥ रे [illegible] तम बीरे क आजं दहै ता मैं
हरि दमदा मां [illegible] जकि नाहत बिकै फेरी ति मजां नो हरस
हवाहेमां न हे ॥ बिसमत करि नाई ॥ रे दिह नां हत नां [illegible] ना जि
सितेहलाई [illegible] रहि बिन नीवृज तिब तिजावृ ॥ मैं आपनां
गुरपुछि देषा ॥ नही ओरठ्या हटे [illegible] ना न धरती तालजर
नी [illegible] तात पितना जरा व मोह नी मुषि मनी मो है कै रसापमा
व मोती नम दिकेसपरोरतन तन हो इ जावा ॥ आगर चंदन ते
प नां म तिदेषि आवे चाह ॥ मिषि हो कं साधि ल्यां कछि
अछि आव गुपत प्रगट हो इ रहैस तो कर ये नाव [illegible] पालिम
स हरी ओ कैम तिहृं क [illegible] तेषत र षपाव उ कमहा सिन क
[illegible] नांनि कासबवाव [illegible] मनोहर कनिर्मे बात सु
णी साई साई सुषी या सरव सुहत गुरमुषगाह गुणी दे
[illegible] मानगारा जसनां मसदरपे के तरूप ज्यारे [illegible] तबपरी
कवतां पतिडये आति दरपे धरम राये ॥ दहा धरी दे

पैसिध्रमाधिकडरिमूोलषचौरासीडरिडरिजनमी।फिरिफिरि
रजोनीडूोथडरपैभ्रतीअलखनछिसरा।जासिरअमलक
रारापवनपांणिबिंदरहररपैडरपैइहुबिचारा।लषचौरा
सीडरिहरिमूोबिनडरकैरेनेझारा।केहेनानिकलगतांकासं
गी तेरेसंतसीहेंदरबारा।४।।५५।।माझैमनकामांणत्यागौ
कामक्रोधसंगतिदुरजनकीतातेअहनिसभागौ।टेक।उघसु
षदोऊंसमिकरिशाषेअउरमांनअपमांनां।हरषसोगतेरहेअ
तीता।तिनजगततपिछांनां।१।असतुतिनिंदादोऊंत्यागै
षोजैपदनिरबांनां।जननानिकयहुषेलकठिनहैकिनहू
गुरमुषिजांनां।१।।५६।।साधनीगोबिदहमारा।बरननताके
गुनबिसतारा।टेक।कोटिबिष्नकीनेअवतार।कोटिब्रहमां
डजाकेध्रमसारा।कोटिमहेसउपाइसमाइ।कोटिब्रहमां
डजगसाजणहाइ।१।कोटिमायाजाकीसेवाकराइ।कोटि
जीयजाकीसिहराइ।कोटिउपाहजनोंतेरेअंग।कोटिभग
तबसतहरिसंगि।२।कोटिछत्रपतिकरतनिमसकार।कोटि
इद्रठाटेहैंदुआर।कोटिबैकूंठजाकीद्रिसटिमांहि।कोटिनांम
जाकीकीमतिनांहि।३।कोटिपूरीयतहेंजाकेनाद।कोटिअ
षारेचलतबिसमाद।कोटिसकतिसिवआगिआकार।कोटिजी
यदेवैआधार।४।कोटितीरथजाकेचरनमंझार।कोटिपव
त्रजपतनांमउचार।कोटिपुजारीकरतेपूजा।कोटिबिसतार
अवरनदूीहजा।५।कोटिमहमाजाकीनिरमलहंस।कोटिउ
सतितजाकीकरतब्रहमंड।कोटिपरलोउपतिनिमषमांहि।
कोटिगुणतेरोगिणेनजांहि।६।कोटिग्यांनीकथेहैंग्यांन।को
टिध्यांनीधरतध्यान।कोटितपीसरतपहीकरते।कोटिमुनी
सरमुनिमेंरहेते।७।अबगतिनाथअगोचरस्वामी।पूरि
रह्याघटिअंतरजांमी।जतकतदेषांतेराबासा।नानिककूं
गुरकीयाप्रकासा।।८।।६२।।अथसूरदासजीकापद।।औस
रहास्योरेबूडहास्योमनिषाजन्मपाइप्रतिबोरेहरिकोभज
नबिसार्यो।टेक।रूधबूंदतेंसाजिकीयेतनसुंदररूपसंवा
र्यो।जबरअगनिअंतरउरधमुषजिनदसमासउबार्यो।१।ज
बतैंजन्मलीयोघटचीत।रितबतैंप्रभुप्रतिपार्यो।अंध
अचेतमूढमतिमूरिषसोप्रभुक्यूंनसंभार्यो।२।मदेनबि
सारजीवनथिरमांन्योयहुउदिमनधार्यो।सुतदाराके
रहेमोहरचिअचिबिषअंमृतडार्यो।२।पहूपटेबरकी

रा अंडकटाह तत्तन कूव सिंगास्यौ। कांम क्रोध मद मोह
लोभ सिहृदि विधि जन्म विगास्यौ ॥४॥ कूव साच करि माया
डोरी रचि रचि नव नव संवास्यौ काल अवधि पूरन्न
दिन तबहीं त्यागि सिधास्यौ ॥५॥ प्रेत प्रेत करि नाव ध
जेवरी बांधि निकास्यौ जासुत के हित विमुष रांम ते ति
न ते रोमुष जास्यौ ॥६॥ जिहि क्रम जिसा कीया फल तैसा ति
का तो डि उचास्यौ ॥७॥ ईर्ष उर्द्व सजन सुत सब मि
थ्य है विचास्यौ ॥ सतगुर को उपदेस हिरदै धरि ज्यें
न निवास्यौ हरि न जि बिलंब दियो डि सूर प्रभु कं १
उकास्यौ ॥९॥५६४ अब तैं सन्या राम कह्यो। मांनो धरमसा
ल वेद पढि बेमें घोक ह्यारयौ ॥टेक॥ हरि दे प्रतीति ग्यांन गुर
मि ते दधि मथि घृत लैत ज्यों मह्यो सार को सार सकल
सुष हुलन मांन सुष जो निगह्यो ॥१॥ सिव को धन संतन्य
वस ब्रह्मा वेद विचारि कह्यो ॥ ज्यां रूं मुक्ति न रोसनकादि
क हरि चरनां चित लागि रह्यो ॥२॥ नांव प्रतीति न
लै आनंद दुष हरि वह्यो सूरदास धनि धनि ते नर ता जो हरि
को व्रत लै निबह्यो ॥ राद र यृत रिकथ्रे सोंज कह्यो ॥६६॥
सबै मन जा ते सो मेरो दास पह्यो ॥टेक॥ ग्यांन बैराग न गा ति
को पूरी बिचरत समधि मह्यो जो गृह में रहै तो इसी बिधि
यों कुंनौ पह्यो ॥१॥ आसा त्रिस्ना करै न कब हूं जगत पहा सिस
ह्यो परम कृपाल सकल जीवनि परि चाहत है हित ह्यो ॥२॥ न
रम करम अरु विधि निषेध की बाधक कबहूं न ह्यो सूरदास न
मलिन लंउपजे संता की सरन गह्यो ॥३॥ हरि तें कब मो सो पति
त उधास्यौ ॥ कांहे को हरि बिरद बुलावत बिन मसकति
को तास्यौ ॥टेक॥ गज अरु गीध पूतना तारी ताको कहा
सो गनिका तिरी आपनी करनी नांव भयो प्रभु तो सैं ॥१॥ अ
जामेल जन याही जनम तें कुती पुरातम दास तन क चूक
तें या गति कीन्ही फुनि बैकुंठ बास ॥२॥ तारि ता
ऊ जग तास्यौ पाली रहीन कूंट जे जानो अब मो हिता
रहौ सूर कूर कवि टेरि ह्यो नाथ जी अब कै मो हि
सौ पतितन में विष्यात पतित हूं पावन नांम तुम्हारौ ॥टे
क॥ बडे बडे पतित पासंग न हीं मेरे अजामेल को न विचारो
भागी नरक नांव सुनि मेरो जम दीयो हट तारो ॥१॥ सूर प
तत कूं तारि माप ता जिनि र करौ विलगारो सूर पतित

गोरकहूंनहीदेहरिनोवअधारो४॥दध कहोसुषश्रीनागौ
तविचारिहरिकीनगतिजुगेजुगिविरधेआनधरमदिन
चारिटेक चिंतातजोपरीछतराजासुणिसषसीषहमारी
केवलनैनकीलीलागावतांतिरियोअनेकविकारी२सु
मिरनकरौविस्वासगहौनृपसोसोसोकनिपातघटइलीप
केतनेमूकतितुम्हारेदेहदिनसात२सतजुगसतत्रेतात
पकरतेद्वापुरपूजाचारसूरजनकलिकेवलकीजै
लज्याकीणिनिवार॥३॥६७॥रागसोरठि॥मनांतोनैकैबि
रीयांसमझायो।चरणकेवलकीसेवाचूको।जन्मजन्म
डुषपायोटेकलज्योनहीनगवंतचलीपरिपरधारेचि
तलायो।परनिंद्यापरदोषपरापरपेरेपरेंविषषायो२अ
पणोकुटंबकोउदरभरायोहरिजनकोइनजिमायोजं
मकोहतोमारिजडायो।आडोकोइनआयो२नेणनीथ
काबेणनीथाकासीसनीकंपणआयोलचीयालेले
चालणलागोत्रिष्णांअजहूनधायो२नोवनलीयाअ
गणकीयावृद्धीजन्मगमायो।सूरदासराजारामनजन
बिन॥फिरिपीछेपछितायो॥४॥६८॥अबगतिगतिजाणी
नपरे।बिनसेवाबिनदानपुनिबिनअजिगरपेटनरे
टेककबहुकरंकसैंकसूराजारंकसिरछत्रधरैकबहु
कबिपतिबसेषबापडीराजासूरंककोरीतानेभिन
रयाफिरिठौरेकबहुकफेरिनैंकबहुकतिणडूबेपा
णीमैंकबहुकसिलातिरै२सागरसूबादलकरल्यावैच
हूदिसनीरझरै।सूरपतितरिजाइछिनकोमैंजौप्रभुरू
पाकरै॥४॥६९॥अथकल्याणदासजीकीआरती॥आरति
मंगलदेवारामनिरंजनअलषअभेवाटेकनिसबासुर
जीवसुमिरनलागादीपग्यांनजरमसबभागा२मनप
वनालेअछगतिपूजेकायामंडपनिजवनसूझै२बा
लनोगलेसुरतिचढावैऐसीआरतीहरिकूंभावै२आ
तमाहूंसेवाकीजेजनकल्याणदासहरि२ऐसैरीझै७०
पदहरिजनगतिकरतउधरेअनेका।जिनिरामनामकीग
हीहैटेक॥टेक१मनांमततसारोक।कोई२कैजो
गोजमबेवेकजांगोमिवसनकादिसेषकेधूनारद
अमरीकदेष२कोईपूरबजनमकोलेषोलेषा॥
लेषनटरहीकरअनेकंनागालिभीजाकेगतिहे

हृ हरि नग तिसमा तिन हो धरम कोहू र रांम नग तिस वक्षं
सेम जे हांमर मक रम को रहो नैहा नर मग येर स्यो रांम
क नग न नरी भु स्वामि र बोन पेष ॥ ॥ २१॥ अथ श्री गरुडी
प र. राग मारांग ॥ ना म नमो मन निस्या ह मारा जो म न का
प कृ मक लपमारा है व मन मधे मन रहे तु का ना ताम
न मध मन पहि चा ना ॥ मन या या मन न मपानि मारा ॥ श्री
गरु सेव्या रांम धि यारा ॥ रांम कै मांइ हरयो मन मेरा
मांगी सोष मन क्षै सेरा टेक रोकल घ हमनी नव कय
के कारा ॥ हृ घायी है यो रम सारा ॥ २ चतुरा इन चतुरम
जपारे श्री हृ मे व से नर के परारो ॥ ३॥ पढ़ि चीरय रमा रह
रु न मा जी श्री गरु करे हेम पर म पद पाके र ॥ ४ ॥ श्री सा
रमा मेरा पात ह मावे मन के समानि हो इ जो पावै ॥ ५
हृप श्री ह तुष से जन म कर पि जाने र म पा ति पति न हृ
दे श्री अनं ॥ १ ॥ श्री म तु नि ने ध्या श्री सा घाडे इ न पा चन मं
क गरा मा इ ॥ २ का मक्रो ध को घाट न चाले श्री हरि
स माघि नि नमु न पा ले ॥ ३ ॥ मन थि हरि रम रोक करी लेषं
श्री ग रु करे हेम परम पद देषे ॥ ४ ॥ ३ ॥ अथ सो हा गी का
मन ॥ रा ग रा मा श्री ॥ श्री ह धु म र न सो काल श्री भो मं धुरि
हन को हृ बार बार वि चारि देषि जा तन न गजो इ टेक प
च ना मा सु इंडी बांधे निरधार सम धोवे जीवे कारम्य जतन
करे न क श्री नि न नो ॥ १ ॥ नि न म न का दिक श्री सुकला
दिक ॥ तिन हरि न सौ का या जा पी जग म जटा धारी श्री
नि ते क न मा पा ॥ २ ॥ न हिं न दिन ने ना मा बिना मा मा सो हाम
च न की मो रा ॥ छिन छिन मे बार बार राम रसा इन पी
जो रि ॥ ३ ॥ के से हि न या हु बो रे मा न षा जनम गवार हरि
सो की भा ति बिना र घा नी ॥ का हू करे तन छार टेक श्री
या सो व त म गा ति न दे बो रे मू रि घ म ति हो न प स पं षरु
सो व जे ते म व जन म श्री रा इक हा कीन ॥ रोके थाव नि
हो यो या रा श्री बा श्री र व बूत ॥ नेला घा ला फ ल क र
ने वां की मा जे मूल ॥ २ ॥ श्री ध्म नै श्री र सो दिषा वै कहै वे
रहे ब्यान ॥ ध्यान हो इ मू रि घ म म जा वे मा इ मो हो इ सत
पार घ प मे बू रा न वा ना ना रे म इ कि न रजे गा नि चो रि
हरि नि न मे चो रि ॥ पर ह रि है परनारि ॥ ४ ॥ का हू के ते इ डांगा
म था हू ह को रो ना जा ॥ मूलो म न न रम्यो फिरे मे रे हाथ

रागश्रायरामारागा॥श्रोरश्रचपती॥करता॥मोगाविलासग्र
मकाकिकश्रइपकुंता॥खाडिचलेरिगावाडाहृयांगी॥
मोपिडमतपना॥पिडमलोहीमोष॥हाथपावेकारमूगबं
नाहीमोहीमलोयोहांस१७॥मोहामोखिटेमिघटमी॥तरिथि
रिनहीयोसमारतेलघेटाखातो॥झीतेहामिटरगयोश्र
धार॥७॥१२॥रागनितिलोकजीकोपद॥मा॥मारोखारिमैरे
मञ्रधिकततपाया॥सहजैतिमलनमापाटिकारीमनगतियकर
नकहतहेमैपनिलगतिहोकहिहृंतिप्रानीबसुधरहिंकहतहै
मैपनिवहोरिनधरिह्ंरे॥श्रेसानापजपोरिपानी॥तिसामैनधवांन
बिनमैनीपाबिनमूत्रकरीबिनहोइजायसोजानो॥रौकरबीस
महेमघटमैका॥होइजायखिनकोया॥गयाततितोकपरामलप
मिथमै॥बिघनटलोतबजीया॥२॥१७॥तिलोचनजीकोपद
रागश्रासा॥मांजानूंदेवलीयोकिनवेडपडसीपंचनूश्रात्मं
गोखिदसगिरममा॥टेका॥तीनमैदिहाडाम्हारेदेवलीयोघडी
यो॥मतगुरमबदीकूडोचटीयोर॥पांचपरेवादेवलमबसीया
मेडरझोदेवलचकृदिसभूसाया॥२॥सोनांकैयाग्नितेलदस
लोवामे॥मोतींनैश्रहिमपलरूईबाखाखेसेटाकहेतिलोचनजे
कोरिकैषामरमैसाकृतिनवनसरूजै॥४॥१८॥गनसुदरजीका
पद॥रागगोडी॥चंचलमायारहेनावेजातूगोविदेजिनवीसरे
टेका॥मायाविषकीबेलडीरेकुसमघिघेविकाराय॥कविनव
निजाकेचितरहेजाकूंनाईसुषउपबालूबार२॥रेकरूनक
श्ररकामनीसरुकेरश्रधिकपियारायूंकवरूनरहरिसजो॥मा
केरसनपडगारा२॥श्रहासिधिनबंनिधिमदाहरिभगतनके
श्राधीना॥कहेमनसुदरसोईश्रातमा॥जाकेसिसारेचजचुजली
॥२॥१७॥रागमारू॥रामनामपरमलनजानेकोरिधरमश्ररथ
कामसोखिसोकहाजुनहोईरेवाजेमलगिमपतीरथमूजा
राममामममिकोकश्रोरतहजारमतिसुंदरकहेरामभीमबा
रूबारलीजेकछुलोनपगार॥मोमिबहोतकहाकीजे॥२॥८॥
सामजीकापद॥रागटोडी॥हेमैरेश्रलषकीकरनी॥कोनकों
नश्रादमीखिगेणे॥षासघवासुषसिषसिपकुंतश्रोरडतीमाहे
हकदसरथकेदोकुंपुगरा॥श्रोरल्यानेबविचाले॥लेकामाहि
नईलराईरावमकेघरघालेरा॥फोलासहसमुश्रावपटरांनी॥
रानीकांनरिश्रांभिवडोबनीरापइजायारनमे॥तिसकीकरम
लुटानो॥हरिचंदचालोकरमवेखिनेपुगरापायोसापै॥२॥बका

उसकीश्रमाजलावनचाली॥नजलोवनदीयाबापेवो२

नबि चाग त्रेनबेचतां तिसकापूतनराया मीसकाश्यां डेनै
डाया तोनी घांन नाथ्याथ पाचपांडवान्हवीरापना घरां म्हि
की स्या हाडसारहि वां लि मा ने सोमसनेजमजी ता प रा कुम
हुडेभु नो वगदा नस कूलनपकुवा चुसके मा जी त्रैगत्रीसागमम
नलि रो कत्रे चिरजक हे रोनाजीटे सास्त्रिरानेमातलबसा
कोटि सुघमो देवां सह स सुमबुस्मानापेष्या मारबुस्मनदी
सेत्र नयत्रां पुत्रांब्रमस्यां कीजे बिकू रमी थत्रबिक्षरो त्रे
कदि नदिनमांकू नपां वां त्रसमपजमारोहमारे रात्रगारेकने
त्रास्समकू रमारो टेले स मुड पुताना सोम नने रो कमाथप
हल त्रारजिनांमानमुकांनीसा... कांजीम ... कापु दा
रागधुनाश्री जिदवांजान्योर संसा रम्हू रिषनी दोरा नवा सिकै
मिन ... हसि कोरि बोलतांर चोहारि कैबा रि मा सांजनमा
दी लि त्या रमांडा घटे कुमार सांघांपरबतता नतेर समरांघ्
टनरी ह सेनो ज्ञ माटी मिल्या म्हू रिषलक रागरबकरे हूराम
मानेहिमना गमे दिनजामेनरजाइ त्रांघाना ... फरू कडे घट
यउ थिनपार र कांजी मरुमंद सुमि मांड्या कतिकेफिर
...माह त्रांनेदेयो को ... माही कुमसचोहिवारामा हि ...
समनबानीयां ... गी बाने निवाि ... ने मूकि सीरगजिघांरि
... धुमकु डाया सांत नारे जाटडेत्तेर बाट तिनदों कु मिरतिक
तिरा न्द डाडी नगर चोहटे तेरहाट र त्रधिकनलीजीरेवा
आंनदीजारे रा छिमाई स्नेणापारर मार रा चलनां धराड्डेरल
सहनाहरा ... र रा बस्ततपानदीलहहरी रमनबानीया
दे ... सीदांने कोडि ... सहसेवी धरानांषि ... त्रायनां मलिते
त्रोड़ घाटि... कांजीमहमंदबानीन्हमतजांनी बानी बधाने
पनकोहि राके ... राजन पायपुनिलो लता ... धरमत्रक्षिके रारे
... सोडकोटनारे बिरदबिलांबु नारे टेक पीवुघस्त्रांव
मारे तथ तिवुफावनारे रजो नवाबनारे सबद सुहाकां
... भिस दिनकर नारे ... रोवनारे ... पी त्रपुकारनारे मार
रानो सुना रे ... महमदपारे ... बिरदतारे र पीवतुम्हारे रे
... लहमारे ... कोई त्रोपके सारे मेरापीवदेषणाजे सा
... सालबाजनसार ... तुफबाजनसारू र जिसबाज
... मारे तिस कांजबिमारू रे ... नाडगहेला नाडिला
सारू ... नि नायार जिसकीरानीमेफिरू सोमेमाईपायारे
... मेरापीवरूपवतारे सबलोगडसताकेरा महमदबि

वाराकाकैसैनैनू मै रापैरा॥३॥४॥राग रामकली॥ त्रेश्रव
घरिश्राव मजनी घरमेरै डे॥ निसराति कू जागी॥ जाक
नेरा बार डसी मेरी पल कूं न लागी टेक॥ कहरसी राती नेरै डे
मापी हू मुक्ति आवै॥ विरहा मेरा ना डिनां ताहि कोसम
झावै॥१॥ यकू मन मेरा वुसि नहीं कहा करूं सहेली॥ नेह
कूं स्यां नां पीव सौं कूं रहो अकेली॥ यकू वन मेरा थूं जा ले
ज्यू दिव ने बाता जी वुन रसे तु मामि लन कूं आइ मिलि तेरसा
थी॥२॥ महमद जो वे वाट डी वे राप धनि हारे॥ तन मन तु
परिवारे ए घरि आव हमारे॥३॥ पाखी लीराति महेलीयां
रूसा जन पांकूं श्री गुण ने रा गुण कहूं चे सी राचहो कूटेक
आई रू ति बसंत की॥ सव ही वनफूल डी लै बांधि हिंडोल
नां माई सांग फूले॥ पीव के आंग ल गाव ने चोवा चंदन घ
या॥१॥ [illegible] हाथ फूल पु ना व के॥ ले
आरे सीया॥१॥ आ वे मिलो महेलीयां॥ वेग मिलाडी
देह सिरा ने माईयां॥ लट कली बाहयां॥२॥ महमद के रा
डिवाचां हे सापाया॥ जो कहया अरना का॥ ले मासि ला
४॥६॥ मोने मेरापी वजी आवे रे॥ इजा कोई आ दिन आवेर
हक पीवधीव करि मासरी सहीयां पीवन मिली मा कोई॥
पाहन हाला पारिमाया॥ वारि नि न गो रोहा२॥ आछे मीठे
लेधी वजी के रे राखे हिरदा माहि डरे तीयां नी नापीव कूं
दीमतिवु क्यों जो हि॥१॥ रोक अधरी राति डीयूं॥ चात्रग मो
पीव॥ काजी महमद यूं कहे वर्षी पीव हमारजी वु२॥७॥ मेरे
नैन सलूने आव जी॥ मारा डनीयां मे फिरी तुझ ताज सव
के॥ मुझ तो मीठा लगे आव॥ अरे कड के फी को टेक
के मनल्ले बसे उस थाम न माना सुपरा तेरा देषता मेरा जीव
तु जाना॥१॥ काजी महमद आंखे बीनती सुनि समुझ साई
गुन हे रतु झमे सो ऐसा नाही॥२॥ पार घडि या ने बीनती
नघडी बजावे॥ मैं मेरा पीव के रमारा लिखिन रैन घटावे टेक।
जेती घा माते दूसी॥ घडियां लेपाया॥ मोत नि लागी मेरे डे॥
रूपरी मत पापी॥१॥ बरसां मोको काँ रघडी॥ वलि ता री तेरे॥
निति न वला ने हहे सांई स्यू मेरे॥२॥ काजी महमंद पीव की चा
हि है॥ कार कूं धाव तेने ह वे धन ने भा हस्यू ज्यां दिव मरया
ते॥३॥ राग केदारो॥ कोई कहीयो रे मेरे मीत सदेसा॥ पीव प
रदेस तु जाना के मा टेक जब ते साईयां तुमथे विछोही

रोइमैसुषिवुषिसाई इनदोइनैंमनचातेलोही॥२
२रहसादोइघटमांही॥विचिकोइभूतरहतानांही
नसाहेमेरेहियेमांही॥२जोहूकहतासोईयावकर
गुणमैंमनवसीधरता॥दिनवेदिनभूतरहेता॥रामद
इप्यारोकीयेमेरीमाईसाहिबनयहूकिसीसगाई॥हू
करोलोतेरीबडाई॥४॥२५॥रागकनडो॥आवपीयारे
घदेषूंतेरासवडुषजावेहियेरकेरा॥टेक॥यहूडुषमोपैस
हानजावे॥आपसुषीयामेरीपरनपावे॥१काजीमहमद
कहेबीनसीमेरी॥तेरीजोतिहैधनवारीफेरी॥२॥२६॥रमईयो
जोबासाहिब॥दोइनैंनन्हाहिनिरषूंटेकहैआंनेप्रमट
वे॥जेसोवेसोसुषपावे॥१कवविलोधोजेहीनैसुष
लोइकुपरिसेहीनें२काजीमहमदकहेजिनिदीवा
मूलसेरसमीचा॥२॥२७॥रागभैरावद॥आवरेसजनमैंक
हूसुनिइकवातसलूंनी॥जिसिरसजामैंतूंनहीसोई
सोईसमाभ्रलूंनी॥टेककाजीवडामेरागोडनही॥हिवडा
लोहगयासूना॥सोजीवनिलोषेनही॥तुफमीतविहूंना॥
तुझमेरीपरवाहनही॥हिवडेहेजनआवेजूपरजा
नावाऊंराचेगानेहनमावे॥२वहोडषनरसरीसैकासूं
आषिसुनाऊंतुफसेप्याराकोनही॥जिनितेसचपाऊंर
महमदकेरीबीनतीसुनिमेरेसाईजेगुनहैतुझमैंते
औरांनाही॥४॥२८॥रागबिलावल॥बोहिपीयाजी
अलधनवारनेंकीली॥हूंतोदासीतेरडीसबलोगवदी
सी॥टेकचटकामटकायूंघटा॥
तुझबिनहूंक्यूंरहेजीवमेरा॥१काजीमहमदसू
कीजीयेहेहवीलाहोला॥मैंनीआपसवारीयां॥२
बोला॥२॥२९॥१५३॥सबखडावदीजीकापद॥राग
वला॥हमदरवेसडुनीयांसूंक्याहैवहोतजं
नांजेसाबांधीयांबधाजकेरगातेसाकतसनरना
डुईकरेवामदिलबांधेदीनधारकूंपावेकाजीकैक
हाआगेतबजीवकेंगाडुडावे॥१षसचषुदा
कापड॥अलाहदावेसिरजीवांचचुगणोकेताईरिजक
मीरीभ्रमडावेसषबदावदीसगैबाला॥साचकहिसम
झावेतनथेवतकछूनआवेदिलथेवेतोपावे॥२॥१॥
यथना॥श्री॥डुनीयांबावरीरेबालबादनिवारिहूवी

कलागारिबो जीवनो देहिन च्यारि वे द सांईतेरकारणी की
यादिन सबेस डुनी यातरकमहौ बसि स्या ग्री ननत जि
बालूबेसा थेजे चा देदी सरकै सौ एता सेग निवारि नूक
चोरी मुषजुरी। व्याज बिडांवती नारि २ लरबेसा कूके साब
बू चोवा चंदन फूल दू जरति बंदगी जो करे ताकी आ
रतिपडे कबूलरी। कोईसोवे साथेरे कोई सोवे घाटासे
घबहाव दीयू कहै रकूला डूले किमाट॥४॥२॥५६॥अ
थ बिद्याधरजी को पद॥राग बिलावल॥ जनम पदारथ
बाद जातरे सुमिरण न जन करो कि निहार को जब लग
ना दिन गलित गातरे बिछरन बहोरि मिलन न हो लो
इहे जु तरवर के पात जातरे। तब कैसे हरि नाव ल्यो द
गे कंठ गहे सी कफ सीत बातरे। काल करात फिरै सिरऊ
परि आइ अचानक करत घातरे २ चेत्यो नहीं अल पम ति
मूरष छांडि अमृत फल बिष षातरे बिद्यादास कहे अ
सत जि औरे श्री गोपाल के रंग राचिरे ॥३॥५५॥ हरद
सजी का पद॥राग रामगरी॥ वा बुत मेरो आहक रीजेहो म
नउरबूकि लिषा बो मा हो। निरमल बरकंदी जै हो टेक दे छि
हि सतरि तो कम बाया। का जिमम कि समाई बो लत लाज
न हो बाबुल मे। बर घा पति के आई॥ पल पल में पानूं परमे
धू कर कू चिता कछू मेरी। बिन आनी नहीं आ के बा रे खार
ह पी वह ने री २ गगन मंडल मे मंड पछा बो मेनिनि कट बि
राजी कहे हरदास ब्याह बधि आपे। बाजे अनहद बाजा ३
॥राग बसंत॥ माधो मास आनि कआयो राग बसंत रमू रु
घुनाइक मनि रुचि मीसो नायो। १ फक्क सम कली बिबिधि
बनमाला मनि मालनि जानि आनी करसिनगू थिक रीड्म का
रनि पहरे सारंग पानी। १ भार अठार रूप सो पफ जोनि हरि म
धकर मनतनी गी। नो घंड निरखि अंनानी तुमहका र दे। सोम
रि चाद रा मोगी २ फूल फगार मे वाफल नूधो सविर दुडी मूधि
संप्रीराधिकि र्याक रिअंजनजी वि जिहि बिधि निकसिनमाई
र पथिम पाछिले पा वैपहली॥ मदामद रसनी को कहे हरी
दास फाधि सबफागुन आगे आनंद जीव को ए॥३॥५७॥
परमानंदजी को पद राग सारंग॥ माधो जी मैं कहा पुरानग
नि की न्हों अनपाइनी भगतिन कीन्ही। नृपदान न दीन्हों
टेक को मन बिसरयो कोधन बिसरयो। लोभ न बिसर्यो देव

२

परतिया [illegible] सैन [illegible] सौ निरक्त लगाई सब से वा १ बार
[illegible] सो पराये [illegible] अपराधी लोक परलोक दह
सो [illegible] साधी २ चरण के वल अनुराग न
[illegible] परमानंद प्रभु साध संग
[illegible] हीं ॥ ३ ॥ राग [illegible] रस होरी
[illegible] संत [illegible] संत [illegible]
[illegible] रस [illegible] कार जे जे चार पांच सहेली षडी पा
[illegible] फाग रमै जन हरीदास । कबीर नांमदेव [illegible] संग पीपै
[illegible] रंग सेन जे देव रैदास दास फाग रमै जन तुरसी
दास ॥ गोपीचंद [illegible] लीयां सती कबीर ग
[illegible] नाम [illegible]
[illegible] सिध चोरासी नक नाथ [illegible]
[illegible] आनंद [illegible]
[illegible] परमानंद [illegible] दास जी को [illegible]
[illegible] साधन की चरन [illegible]
[illegible] बिल महम साध
[illegible] सिधि [illegible]
[illegible] नाव बैस
[illegible] चरन कवल [illegible]
[illegible] बहो तत हारी [illegible]
[illegible] पाही ॥ [illegible] ॥
[illegible] राग गोडी ॥ [illegible] हे हम हारे हे जो [illegible]
[illegible] बिचारे हो टे [illegible] माटी
[illegible] गुर को ग्यान [illegible]
[illegible] आत्मा
[illegible] नही [illegible]
[illegible] का [illegible] काम क्रोध
[illegible] काज [illegible]
[illegible] के [illegible]
[illegible] पावे [illegible]
[illegible] मार [illegible]
[illegible] गो [illegible]
[illegible] पाव [illegible]
[illegible]

...तरवा रिवरछी सरस
...ल्ह्या कि तेन के राजा वैवे तीरजु पक्क नरवा जी ने बाजी दनह
...हे मुहि पावेवे रसीमसहैं धनषाहि स्याम को जन ने बाजी दनह
...वे हिरदै कुलषहजरराम जी ॥ चुणा ॥ चुणा माझी मारवे ध
...रामा मोहि तारिजी ती जवामहारि ॥ लडि ले पाव पचीस हुरे
...हू घेन बुहारि रंस वगतर टोपरी लडी ॥ पीडे अगराज
...पीडे घेन बुहारि रंस्कवग तरटी परसी लडी ॥ पीडे अगराजा
स मारयड ॥ मेरी नकी तिसोज विगाडी सारे अवती नागाना
बोरे ॥ काहरु कुवाक पूव जलि वलि घडी पतारू ॥ राजा
राम नाम रज मूत ॥ रा च व कि णो दो हरी र ॥ नहीं चहा साघ
ले ॥ श्रणीतु ज्ञान सनमु घधसे सा म्हा ऊ जे लेमेले २ ॥ अवतो तु
काया मांचवे ॥ रे ॥ पुगट न यो संसार जन बाजी दे यूं कहे
रे चुणा चुणा माझी मारि ॥ २५ ॥ राख्य सर लीन ठि मा न माहि
रा हि तेरो मुनि हो ना न बहो मात कर न क्यूं न करे ॥ टेक ॥ म
हारी नव हो नीन बुधि बल मब ठेटा ॥ काम क्रोध लोभ मो
पंचन मिलि कही ॥ अबल काम दे हे राम ॥ क्रोध करद चूरे
कठिन व्याधि वही ॥ असाधि परगट परयो हरे ॥ १ ॥ मदो नृपति
स्यो मूल राम स नरा च्यो ॥ सामा का जत जो ॥ ताज पार क्यो
हमा च्यो ॥ २ ॥ लोभ लाइ लगी आइ जहां जाइ अधा ॥ फिरयो
हे रिम क्यो नतो ॥ ३ ॥ कठिन करम फधा ॥ ३ ॥ यह मोच बयो
या चा राम नाम म सो ॥ यो मन रे निचित न चैन ॥ चोरा माही
उल्यो ॥ १ ॥ गहो हाथ रह साथ ॥ गाफिल तो हीन शरीन बंध
रे पिके बधु ब षा न वेरि मेरो ४ ॥ कलंक हरन कृपा करन नी
समान न को रू ॥ मन क्रम बचन नाथ्या ॥ व सुधा म जो ॥ ६ ॥ म
कलजा नमु घ निधान ॥ अब न अंत लीजे ॥ बाजी द राम रह
न पास ॐ तु ॥ औसो कछु कीजे ॥ ६ ॥ ४ ॥ ७२ ॥ अथ जषडी ग
गजा गलीगाडी ॥ मदान मंगि सहेलीया ॥ मदान राजा दे स वे अ
न नगर में जी ब णा ॥ मदान काला के स वे ॥ मदान काला के स
जुग मे सो च मा मी मुक नया जी वन अजनली नीर जैसे मिलोम
अकरि मया म याको ने दरस दीजे पीव प्रेम अघाइवे ॥ १
श्री ने टश्यपने हन दसा पीव परी जु म्हारे या इवे ॥ पीव नेरे
पाइ लाग ज्यू आया रूपे लीया ॥ बाजी द जन बलि गाइस्यो
मी मदान मंग सहेलीया ॥ २ ॥ मध विसनाम सारदे पुरपाटण
दा हाट रे ॥ पार व कु तीना व ज्यू हो दूग या बार बार वे हि
रु गपा बार बार हरि बिनि सुपन नरन ही मिल वे ॥ आठो
पहर आरत णा पीव रूं क्डा ही ते लवो ते ल आ वरे ॥

जन्मतनयौबिरकतारे ऐसामोहिसकानहीताकूंसद
ब्रह्मऋतुरकौरि६ गोरषनाथनथैरीसूरा कमधजगो
पीचंदरे चरपटकणेरी चौरंगी लीनजनोत जिंदंदारे।
रामानंदकीयोसूरातन कासीपुरीमझारेरे लोकनपार
सकसिवकेहोतेआनिनगतिबिसतारीरे७ नांमदेव
असूरंकाबंकानयोतिलोचनसूरारे जगतिकरीनेय
छाडिजगतकोखाजहितिनकेसूरारे७ कलिजुगमां
हिकीयोसूरातन दासकबीरनिसंकारे ब्रह्मआगनिप
रजालिपलकमेंजीतिलीयोगढबंकारे८ जनरैदास
साधिसूरातन बिप्रनमारमचाईरे सोझापीपासेनधन
तिनजीतीबहोतलडाईरे९ अंगदनवूनपरसदरस
सामानगसौदथियारारे नानिककांन्हंबायमहाज
डजलोबजायोसारारे १०गुरदादूप्रगटेसानरिमेऐसे
सूरनकोईरेबचनबांनलायोजाकेउराथकितनये
सुनिसोईरे११आदिअंतिकीयोसूरातन जुगिजुगिमा
अनेकारे सुंदरदासमोजनायकूपावेदीजेपरमबमे
कारे॥१४॥१॥राममाऊ॥लगयामोहिरांमपियारासो॥
प्रीतितजीसंसारसूंमनकीयान्यारासो टेकसतगुरस
बदसुनाईया दीयाग्यानबिचारा नरमतिमरनागेस
बेमांहिकीयाउजियारासो ॥चाषिचाषिसबछाडीया
मायारसषारासो। नावसुधारमपीजीये छिनवारूंबारासो ॥२
मैंबदाउसबरसका जाकावारनपारासो तासिनजेकोईसाधुवा
छिनितनमभवारासो२। आनंदवक्रूंध्यावही जाकेसुषसारासो त्र
लषनिरंजनऊपरे जनसुंदरवारासो॥४॥ साधसमागमकीजे नाई
जोभिअनांनिद्धीवृपारसकूं लोहपलटिकंचनहोइजाईटेक॥
नानाबिधिबनरायकहावे निसिदिनबहोनावअयरी जाकूंबा
सलगेचंदनकी चंदनहोतबारनहीकाई॥१नोकारूपजामि
सतसंगति जामेसबकोइबिलोआई छोरगपाइनदीसिरबकूं॥
सुंदरकाठीरामकहाई॥२॥३॥११॥रागबसंत इनजोगीनीन्हो
गुरकीसीष नांवनिरंजनमांगेभीष टेक कंथापहरीपचरंग॥
ग्यानबिभूतिलगावेअंग मुद्रागुरकोसबदकांन ऐसोनेम
कीयोअवधसुजांन सींगीसुरतिबजाईपूरि तहांबसीदेषीब
हो तहांरिसबहसुन्योनगरीमझारि तहांआसनकरिबेठवि
चारि२ अम्रतजुजोजहांआवेपास चेलाचौरारहेपास सबका

[illegible] बा [illegible] ज [illegible] बिवाहि जगा [illegible] कलि
नय [illegible] बार [illegible] हि [illegible] करि श्रहार [illegible] गी [illegible]
[illegible] श्री से सुदर [illegible] मारी सुप निश्चं [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] कारे
[illegible] [illegible] म [illegible] निज [illegible] द सा [illegible] [illegible] बया
[illegible] [illegible] जि [illegible] मक्रोध [illegible] नमोह मद [illegible] नव [illegible]
[illegible] [illegible] नके [illegible] परसेत्र ग ॥ १ ॥ [illegible] पद गुरदेव
[illegible] साधि ताहि [illegible] वक बीरा श्रजैदेव
[illegible] कहि [illegible] नी [illegible] ॥ २ ॥ मन रते [illegible]
[illegible] [illegible] नस दास र मांधे [illegible] न बाजी मारी रे
[illegible] न जा [illegible] गयो मग [illegible] नारी [illegible]
[illegible] मर बर सपायो जवारी ॥ [illegible]
[illegible] नकीयो [illegible] नयो इहिवारी ॥ अब मन [illegible] नी च
[illegible] चितधारी ॥ ३ ॥ जब [illegible] [illegible]
[illegible] कारी ॥ का [illegible] हरि [illegible] चित मव
[illegible] ॥ ४ ॥ धनि रे दिहाडे [illegible] [illegible]
[illegible] महाह जाको मारिग हरे
[illegible] करी ॥ ५ ॥ पर फूलन [illegible] तक [illegible]
[illegible] मनोरथ [illegible] श्राम [illegible] चित्त [illegible]
[illegible] [illegible] धनी ॥ बहुनाम हामावर
[illegible] नमिली [illegible] ॥ ५ ॥ १६ ॥ [illegible] गाय
[illegible] [illegible] चित्त चित्त [illegible] ॥ कीया क [illegible]
[illegible] हरि के हाथ सब [illegible] की [illegible] बसि नाहन
[illegible] [illegible] ॥ [illegible] सुर [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] चरन [illegible] नीरंत [illegible] संतत [illegible]
[illegible] ॥ १७ ॥ [illegible] री बम [illegible]
[illegible] गुर [illegible] पाल ॥ [illegible] नेत्र [illegible] [illegible] नाम
[illegible] ॥ [illegible] सुक [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] प्रतिपाल ॥ चि
[illegible] [illegible] [illegible] श्ररपत्र
[illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ २ ॥ प्रीति [illegible]
[illegible] [illegible] नदयाल ॥ तेजन्हूर श्रर नूर बाजे
[illegible] ॥ दीन ताकि सदा राखूं ॥ जागत गुर मेरे [illegible]
[illegible] दास [illegible] [illegible] ॥ ११
८ ॥ [illegible] सीपुर [illegible] बासी हा जाति [illegible] नामक बीरा

ग सूरहत उदासी हो टेक यो तप चीत आपउ सिराघ पक आम
नमें वासी हो मा यामो न बडाई त्यागी ॥ मिले राम अविनासी हो ।
आनि नद देषरनि न हो गाडे पडी जन मकी पासी हो संदेहा
र मो हिस माया रेष फूल सुवासी हो ॥२॥ सुरतर गुनी औ रसैम
र बैठे बरतन सन्यासी हो ॥ सुक्ति पेलन तनि वले मेग दरको को
क औसा हिट विसवासी हो ॥३॥ दीहू उरकदो के नेम्या रा नरम
करम कीया नासी हो ॥ दाम कहे तन हाको जन पकोषे बा
नो बहेतन बनासी हो ॥४॥ ॥ राग धनाश्री ॥ जोगी जाते अ
या नगर नला नहीं राजा म्हारो कीयो रेउदास ॥ जो पनि तो म
र मायो देस बंगाल रो भैनि छाडआ लील विलास टेक ॥ नग
र दुहाई पहली फेरती जो जांगोमू [illegible] थाको नरपति नो प्या
यो ने पडयो ॥ अब क्यू लीयो जाइ ॥१॥ कलप ता की विरीयां न
ही सब मिलि बूझे बास ॥ नरपति के गल गूदडी ले पद राम
ई ना पच राज सुत नरि राना पेषरच यो ॥ क्यूं पद स्यो योनि
ष मोले से राणी आगे षडी ॥ फिरि अबला हिसि देष ॥२॥ घरसू
जन हिं राणी हि गज चढ्या ॥ गगन की या परदेस ॥ साहिब अ
पणा का रोगै छाडयो ॥ अबला देस ॥३॥ राम चले बन वासको
सीता लीनी लार ॥ हम हिर उत्तम बन वासमे ॥ को सासद सिरिनार
४ राम चले न ही त्यागि के हम लीयो बैराग जे हम उत्तम को सा
पले तो पडे जोगमें दाग ॥५॥ राणी करे बिसुरणा ॥ सब दसुण
वे टेरि ॥ थाको नो वसमंद मे हि को ईल्पा वे फेरि ॥६॥ रोम च
बरराजा राणी नागिणी ॥ हस्ती घोडा वीर छत्र सिंघासन छो
डिके ॥ सबत जिन रीफ कीर ॥७॥ आज रे उदासी म्हारा नगर मे
सब कोई लागी पाडू ॥ बचन सुणत बिष से लगी जे गलमंडी ॥
याजो ॥८॥ तन मन त्याग्या राजा वा कम्ंू ॥ सब सुप्राणी न
हार या वन नोधूरी राप रसी या ॥ गोपी चंद उतर यो पार ॥९
२०॥ रोक रसो फिरि आ वो राजा अरपरी ॥ ना पउ जी राणी देष
सरा ने मेवा मेराणी क्यूं फिरे ॥ सिर धरि लाज ना पाछु लेष ॥टे
क ॥ बस नर पहरो राजा राज भागि ॥ पहरि उनाणो नेष ॥ बहो डि न
आके राणी जग मे ॥ न हो उताल नेष ॥१॥ क्षहर्दे दे रो वे राणी
भेलन हर परगट पुकारे लोग ॥ करमी उन राणी कूरवे ॥
था ने को ग ले सिषा या न जोग ॥२॥ आप स्वार थ राणी सब कहे
मेरा सगान कोड सगा तसि जन हार हे ॥ ताले मेरा फिरणा
न हो इ ॥३॥ गोपअवासा राजा सातसे ॥ सेज डलीम वारे हो रा

अथो सा चंदन कि [illegible] क मक मा रोल तै च वरतु ला ड ४

[illegible] सारो ला गि केदरा मि कडु नी मि लाम हा इ मोम

[illegible] दे नली या रो लग नै म [illegible] गढ़ प ती

[illegible] या [illegible] गिल के हो लाष [illegible] मो है

[illegible] मदि नाची दडी पाम तला ष [illegible] चे तन ताजी रो

[illegible] मे व [illegible] गज दा थि दी [illegible] बिरजे राणी मुनि

[illegible] दडी या [illegible] मात ७ मो [illegible] बाजे राजा दरबार में

[illegible] चो ब्रीसा [illegible] ला [illegible] पा री बिण जे न ही रो वे मा कु

का र ८ मो [illegible] नि [illegible] राणी बाजत र है चो ह टां वो बी

[illegible] सा [illegible] रा बि णजी या [illegible] र मा टै [illegible] हार

[illegible] म [illegible] गा [illegible] ग [illegible] राणी प

[illegible] ला पती [illegible] बजा व तेतु जो णा ए

[illegible] के दरा गो [illegible] पांच पची म मो

[illegible] को कि [illegible] बीरा क मके नै मी स ७ जुग ति मे

[illegible] जो म र थ री [illegible] समाधि न हो मि लि रो

[illegible] रो शह ९ [illegible] गचं त पुरा रा णी हम घर कोया

[illegible] को [illegible] को [illegible] म हिरदे की ।

[illegible] जी व रो क घ र दो इ [illegible] व क

[illegible] या [illegible] के [illegible] जो ड १० [illegible] जो रा पा राणी

[illegible] या जा [illegible] दी या [illegible] पछिता ई या

[illegible] नी [illegible] ता [illegible] ति १२ [illegible] मानी राजा तु म बोलनी

[illegible] को न क ही [illegible] सुंदर सो है मो जो [illegible]

[illegible] चल [illegible] गवं त म रो से रा नी हम बोलीया [illegible] ना रि

नर कु [illegible] म की पासी [illegible] सार की [illegible] मी कही

म जो [illegible] १५ हो ह [illegible] दास म [illegible] बा कु डी [illegible] कृ र वे [illegible] माहि ॥

[illegible] पिता तुम मा वली [illegible] दे ब री जो [illegible] १६ राणी

[illegible] म हलमे [illegible] घोडा ज व चर ता ॥ हा थी [illegible] डरा राजा घूम

का व र के लि कर ता १७ [illegible] गति जो [illegible] राजा भ र [illegible]

[illegible] दया द [illegible] पा १ [illegible] प्रकासीया [illegible] ते ह र सा ।

[illegible] १८ ॥ १९ सुणि रा जा रानी कहे है गाम हलि प [illegible] जि न

[illegible] माइ या जा का सं [illegible] नि वा [illegible] राणी रा [illegible] घोडा

[illegible] सब माया [illegible] न [illegible] राजा [illegible] र थ री [illegible] चित ॥

[illegible] या १ [illegible] राजा [illegible] राणी न [illegible] सोले सिंगा रा [illegible]

[illegible] पजी को ई करो बिचा रा २१ राणी हम जंग ।

बासाकाया।क्यानैंप्रमेथ्रै॥राजकंवारकलिमेंघणा नीकांकरि
थ्रै॥३॥दीराबेरागसराजाअतिघणा निश्चिनेराबिलासा॥कि
सेकारणिराजानर्थरी भननरोउदासा॥४॥नौलेन्द्रलीकामनी
अबकरोसबूरी म्हेसमकायानाथजी अबकीयादूरी
॥५॥राजापहलीजोगी किननया। अबनया ब्साक तैपरणि
पापक्यानैलीया।बिचिबोईनाकृ॥६॥राणीम्हेरेंसातसैसब
रबिलाया दूथलेवाकीगुन्हैगारि कोईमूरबलेयाया॥७॥मति
म्हौहेकांमणी मतिकरोअदेसा रचणहारयूंहीरच्या हम
तुमहिबिछोहा॥८॥जननीजन्मतबिषक्यूंनदीयो जन्मत
क्यूंनमारी।जोगलीयोराजानर्थरी म्हेरैसबनारी॥९॥जनीन
जनैनबारबार थिररहैनकाया।ताकारनिहेकांमनी।जुग
तैनहीमाया॥१०॥फाटिफाटिहेअसतीरी।दमलेहबिसारा।बि
ननाइकनारीकिसी।ध्रिगजन्महमारा॥११॥राणीसतगुरसब
दीबेधीया।कथापहराईबोलेराजानर्थरी।घरिजावोमा
ई॥१२॥राजापांनफूलजुंकुमलीभेराअभूषाई कोटहोज्यूं
राजानरथरीकरहतहैमाई॥१३॥राणीपहलेंन्हूल्यानरमभैं
पीवैसुधिआई।राजापनैंकीअसतरी।जोगपनैंकीमाई॥१
४॥राजामहीकराऊंजडावकी।नांनाबिधिसेवा।सोवनप
सीगीकरो।करिपूंजूंदेवा॥१५॥राणीमहीहमारीगिरकंदरा
जंगलमें बासा।जोगलीयोराजानर्थरी मननयोउदासा
॥१६॥राजागुफाकराऊंमहलमें नीकीबिधिसेवा।अगरचंद
नकरूंलेपनां करिपूंजूंदेवा॥१७॥राजसिघांसणछाडिकरि
बनबेठाजाई बोलेरा जानरथरी घरिजाकुरीमाई॥
॥एकदिनराजावोहूता।छैतेरणिआया।हथपूजीमेंग
रह्या।नरथरीबरपाया॥१८॥अमरनयासंसारमें नजिकारजि
सास्या।कहेकालूपुरमांतणी।गुरग्यांन बिचास्या॥२०॥२१
साधसुषीहोराजानर्थरी।मसाडबीसंसार।प्रनपमरीह
रिजीकासाधवा।प्रडपकाटणहारटेक कोणडुभासूराज
जीथेनीसर्‌या।थारेअनधननस्यानंडारमातामेंगलघूं
मतालषमीअनंतअपार॥१॥मलमलषारांजाजीथेपह
रते।चंदनकरतेषोल।मनसानोजनजीमते।मुषडे।थारे
लालतंबोल॥२॥राणीतेराजाजीथारेंपिगुला दीरा
जडतीयोति सोनेहेलयो थारेयालिषो।चकुदिसपट
नकिकोति॥३॥राणीतोम्हारेसाथ्रैनाईसुषमनां दीरां

काया कोट्रि मलपुरस बटा बैठा श्रीया हरिसूं सगलि जोड्रि ध्या। सुषको
तो रूली मांहे सोरिसी श्राप भदी नदी आग। मलपुरस बटा म्है चेता
या रम्याश मत्या ताल्ल ५। करकर बोगलगटडी। कोयो मिथ्यार
मम तां अभिअंगनकार तो। गुरगोरष दीयो उपदेस ही। २३। बा
कडे मे नां कुडे गोया चंदराजा। बकुरि श्री लागरच्या बोजी
र ग्रा मे जनमववि नरजा। नाहजागनिसूं आबोजी। टेक पा
तपोनी दन श्रावे हे रगी। सोमनराजन गावेजी। जो गत्रुगति
का राजा हमारा श्रविचलकं धुथावेजी १ श्रगरचंदन कीमं
दी बछंको मो ना का वे हूरं बाजी। कूयारा राजाजी ने पत्रघडं
सो वकमयी ला टसी २ गगनमंडलमे रहरा हमारी मनपवं
सो इर बाजी। सहजमी सकायत हमारे श्रनहद मी गीना देजी
र कर कर रहजी मनासे राजाजी। विकंडी कि म बाबोजी
कप सिथा तारी बीडी श्रारोगना। बैल्यारां धान किम षासोजी
३। हर कपर म्हारे ग्रासनस। सोहर कटत्रु मनत्यालाजी गग
नध्यानका पान हमारे। श्रनहद राम तिवालाजी ४। कोणाउम्हा
रे चरया प्रधाने। कोणा करेला बाथोजी। कोणाउम्हारे सेज पथ
रसी। कोणा पग से मातोजी। ५। गगन हमार चरन पधाने। मनसाक
रेला बालाजी। कथा हमारे सेज पथरसी। श्रलष पगसे मातो
जी। ६ सोड उलाई उमया दने हो राजाजी। मां पसे किम मासे
जी। सां च रसो सो म पथरका सां कूटचोसी मदेस्योजी ७ माथरे
सांस्यां पथरका सां कूटचोसी मदस्याजी। सोड उलाई म्हारे स
तरहा री। जो सिमस्या म्है करस्याजी ८ सोला सेरणी बारां मं
कल्या। ... आगीजी। आ म्हारे राजाजी ने राज छु
डायो। सो वो मछंद जोगीजी ९० जलंधरी परमा ... पीवंद बो
ल्या। म्हारे ... नी जदी ... जी। ... म्हारे मन तगकथ री
पेश्रार ... कीस्याजी ॥ ११ ॥ २४ ॥ श्राज नगर में राक जोगी देषा
... जोगीडा ने जाणा नेदी
ने श्राग ... सो ना ... पारी ... घडावां मो
... रेला २ मो ... बाई घर ... डा। दे
... श्रगणा नहो वा। समके
र ... मा या रेला ९ कौन कुंआरे जोगी कानफडाया। किन उ
... रेला। ... जोगी राजकुं ... जो गयो। को
... मारी रेला ३ मलपुरस बटा कानफडाया। ... ग्
डा पहरा रेला। मा ... रा ... ने त्याग्यो। श्रमर ...

नेनारीरह्यो ४ कोगाउम्हारजोगीपिनानगीछेकोगाउमारीमाई
रह्योकोगादेसरोराजकरतोकोगाउहनरानाईरह्योपरा
बहह्योचनपिताहमारो औरसेगावतीमाईरह्यो देसबेगा
रोराजकरतोउमहा बहनरानाई ६ कादरेमाटेजोगीजीतउ २८
म्हारीम्हारेबीराजोगीकिमहोईरह्यो पालामगावतीरउ
बअकेलो औरनबंधूकोईरह्यो ७ म्हारावीराजोगीहस
तीरघोडा बिनरा अनेनअसवाररेलो हिमदेसरा कन्यासेदे
निसदिनरोलबातारह्यो एकथानेरामीरा वजगावो बिल
नकरगाकाई रह्यो टसबेगाल ८ घव रिसगावोरेक
गीयोरेगयोदाहोरह्यो ९ रावचेपावननाहयकुना
रविलखोगारेलो नरनारीसब विलखाडोले मानारेमनिउ
खाहोरेलो १० इरमणयहरूयो हमघरिआयो मद नाग
नहीजोल्यारेलो बीरागोपीचंदरा कुषघणोरे मलोहिवा
जाईरेलो ११ कनीरांणी करेबिसुरणा हथलेवो किमजो
रेलो गोपीचंदनैजंधरीजीमिलीया बाधीनेहकिमतोडोरे नं
लो ॥१२॥१२४॥ इतीकुटकरमहापुरषांकापदसंपूर्ण॥
थसदईया लिषतेकुटकरा धूलिजेसाधसताके सुतसे
समारउष मूलजेसो नागदेषअतिकोमीयारीहे पायजेसी
रननाईसापजेसो मनमानवडाइककोछनीसीमागनी
नारीहै अगनिजेसोइंड लोकविघनजेसो विधिलोक
रतिकलेकजेसो सिष्टमीटडारीहै बामनानकोकवाकी
औसीमतिसराजाकीसुदरकहननाहिबंदबोहमारीहै २
कोचसीकनककागकेनीचसोनरसपदमीचसीमिताई
बाईजाकेगारिसीकहरसीकरामातिजहरसीजोगजाति
हरसीफसपंडुगलछिसबाढारसी जालसीजुगबिलासना
लसीनवनबामकालसीकूटबकाललोकलाजलालसी
सीटसोउनमयानेबीटसोबषतमानेऔसीजाकीरीतिता
हवंदतबोनारसी २ फासीसीगंदरीसूरासीफूपरीफटेसो
नेतननीरनरयोहे फुवलेसगातमिथ्यारीसोदीसतफस
मायोअनाथपरयोहे सबकीधीरअधीरकबकुनदी
ऋलोकसबबिसर्योहे ताहीकोजीवनधबिसुफलसुकेध
देदकोबुतधर्योहे ॥३॥ अथरपत्ना॥ वंदेवंदगीबिनान
हीहुवेगादे बिबिचारकरतासबकुफिलगीगबेराग
पासजिंद कबीरऔसानयादेहसुधागयादत्तनिरमलसे

उहै वंस गोरख कहि जो गत पमरी रहत है वल को या नया पर-
तन नगई निस करी है औसा न या लर्टकिकै पेर सा गुरस
बद पाक औ गह द गंदा। साहिब बरगी मब को मानिले
नयरी कया गोपी चंदा। आत्माय कहि निगत न तहती
रि हो इ निरवैस ऊं कटन फंदा। कहत क माल एक नाव
अबिचल गहो सब दगी। ना व मिलि है इवैदा॥१॥ सब टयो
अवधि अलप नामै नी वसो चपाव केसी अनेक व कल-
वक हा कहा को जीये। पारन प्रान को करान कुको-
ननाहि वां गो कुर व कुन विन कहा कहा दीजीए। काहि
कना अनेक खंट कै प्रबंध बकुवराग कुरसी लेरम कहा-
गयीजीए। धीमा बा ना रोके बान मोहन बता या जात सब
दी दुष्ट रजोये राम नाम लीजीए॥२॥ कहि ता। घट हि
हो इ सर्गन हुए गा। अगोर ग रे नाहि बिगा हु जी रहिरि न
ग। चोरी हत्या कथ रह फूवरस कामण पाजिको। वेरस परह
साति मदहार अकाजि का हन पानक छुल पटी अविसव
समन में गहर पनु हस्तो गुन न भिके बारन हस्त निपुक है।
कबीर को पारायो न ही बहा॥१॥ अमघट दर सणी ना
व गुन मव धर मसा अधर म करि गा यो जो गनि गत पद
न नहि नउबव नायो। हीहतर कवि चारि रमै गा सब दी
पहि पानमी कहीमव न के हित को साषी। आरहट दसा
गत तामें गुन वटपी नाहि न ना। कबीर को साषी
गो अमघट दरसणी १। हरहर अनंत गुणा अनंता महिमा
अनंत बुधि अनंत माधुर्वै रक रतहै। सुरन अनंत सोना
अनंत सिव अनंत निज ध्यान धरत है। रिधि सिधि अनंत
लछमी अनंत नारीय अनंत सो है षडा रहत है। नील
कंठ रमणै न च न बस ब तुजी के अरध राम परिस कर
त है। सर्व सु अमित अबिनासी नन न नाम
थ निरंजन नाम कहत है॥२॥ ममता छांडै मन जीव खा =
हे कारा स्वाद बाद सिंगार तजै सकल संसार। ऐकारे की
टेक अनागति आराधे। ग्यान भगति बैराग सदा प
य साधै। राजा परजा देवता औ रनता के कोधनी सत
ना सिह लोक में सो नि जुदास निसानी २। नजी ऐ ना नि
कारनि राकार नजी ऐ नाम बैबिकार कथी ऐ तो बुसु
नमा नीऐ अलेष आन पाली ऐ तो जीव दया जहां रसि

रह्या मारी ऐसो मो नराइ बैठो दीपक तषाइ जो कैहै यिता नमा
इ सुनि मैं मगा विलाइ कहै नगही क्नदास की जो ऐसो राम
आस ॥१२॥ अथ दादूजी की साषी कटकर लिपते ॥ बंदना ॥
दादू नमो नमो निरंजनं नमस्कार गुरदेवतः बंदनं सर्व साधवा
प्रणामं पारंगतः ॥१॥ साषी ॥ प्रांण नरवर रसुर तिन अब्रह्म सो
मिता मांहि रसपर्व विफूलै फलै दादू सूके नांहि ॥१०॥ ब्रह्म सुनि
हंकार है आतम केअस्थान काया असथल कार है
गुर कहै सुजांन न काया के असथल [illegible] है मन राजा पंच
प्रधान पचीस प्रकार तिलीन गुण आया गर व गुमान ४ आ
तम के अस्थान है प्रांन ध्यान विसास सहज सील संतोष स
त्त ताव नगति निषिपास ५ ब्रह्म सुनि तहां ब्रह्म है निरं
न निराकार नूर तेज तहां जोति है दादू देषन हार ६ जब नां
ही सुरति सरीर की विसरै सब संसार आतम नां जांणें आप कूं त
ऐकरता निरधार ७ चम दृष्टी देषै बहौत कम आतम दृष्टी
एक ब्रह्म दृष्टी परचै नया दादू बैठा देष ८ पांच्यूं लैनां देह के
पांई आतम होइ पांई नैनां ब्रह्म के दादू पलटे देह ९ मन चित
असथिर कीजीए तो नषसष सुमिरण होइ श्रवन नैन मुषि
नासिका पंचौं पूरे सोइ तहां हजूरी बंदगी नूरी दिल में होइ
तहां दादू सिजदा करै जहां न देषै कोइ २ दादू जैसा राम अ
पार है तैसी भगति अगाध इन दोन्यूं की मति नहीं सकल
पुकारैं साध ३ दादू सेवग सेवा करै मैं थैं कछू न होइ
तहां तैसी बंदगी कहि नहीं जांनै कोइ ४ सेवग विसरै आप कूं
सेवा विसरि न जाइ दादू पूछै राम कूं सो तत कहि समझाइ
५ प्रेम लहरि की पालकी आतम बैसै आइ दादू षेलै पीव सं
ग ऐ सुष कह्या न जाइ ६ सब दसुरति लै सां निचिल तन म
न मन सा मांहि मति बुधि पांच्यूं आत्मां दादू अनत न जांहि
७ दादू तन मन पवनां पंच गहि लै राषै निज ठौर जहां अ
केला आप है दूजा नांही और ८ पांया तैसा सुष नया बाकी
व है वैराग ऐसे जनथा के नहीं दादू उनमनि लाग ९ जी
व ब्रह्म सेवा करै ब्रह्म बराबरि होइ दादू जांणें ब्रह्म कूं ब्रह्म
सरीषा सोइ १० दादू सब बातन की एक है दुनीयां थैं दिल दूरि सां
ई सेती संग करि सहज सुरति लै पूरि ११ एक सुनि सूं सब रहै
पंच उनमनि लाग एक अनेके उपदेस एक ही एक परम जोग
वैराग १२ दादू जहां कनक अरु कांमनी तहां जीव पतंग जा

हि आगि अनंत सऊं जैन ही जरि जरि मूए मोहि ॥२०॥
ली छूरी बाद सि त्यागी दो फाटी के थ्याप दारि काशि
वको इ २१ दादू माया चेरी संत की दासी उस दरबार वू करां
णी सब जग की तीन्यूं लोक मंझार २२ दादू च्यारि पदारथ
मुक्ति बापुरी अठ सिधि नौ निधि चेरी माया दासी ताके आगे
न सैं निरंजन तेरी २३ जे जन कांम णि परहै ते छूटे ग्रन्थ बा
दादू कंचे मुए नहीं रहे निरंजन पास २४ जिहि घट ब्रह्म न
प्रगटै तहां माया मंगल गाइ दादू जागे जोति जब तब मा
या भरम बिलाइ २५ दादू माया बैरी राम की केहे मैं ही मोद
नराइ दूल्हा बिह्म महेस लौं जोनी आवै जांइ २६ पोथी अ
पणां पिंड करि हरि जस मांही लेष पंडित अपणां प्राण करि
दादू कथ्य कुअलेष २७ दादू जा कन्न गति उपजै नहीं साहिब
का परसंग विषै विकार छूटै नहीं सो कैसा सतसंग २८ दादू बा
सन विषै विकार का तिनसैं आदर मान संगी सिरजनहार के ति
न सूं गरब गुमान २९ साच अमर जुगि जुगि रहै दादू बिरला को
इ झूठ बहुत संसार मैं उतिपति परलै होइ ३० कर्म फिरावै जी
व कूं कर्मन कूं करतार करता कूं कोइ नहीं दादू फेरनहार ३१
सुष दुष संसै सुषपण है कै दास बबेकी होइ दादू ऐ बिचि बिवेक भु
रे दाधे रोग सो इइ ३२ सब जगत मुष आरसी पावक की या प्रक
स दादू सोई साध बिचि सहजै निपजै दास ३३ ग्यानी पंडित
बहुत हैं दाता सूर अनेक दादू भेष अनंत हैं लागि रह्या
को एक ३४ दादू सब दिष लावै आप कूं नाना भेष बनाइ ज
हां आपा मेटणा हरि भजन तिहि दिसि कोई न जाइ ३५ बाग
स गाई कछू नहीं राम सगाई साच दादू नाता नांव का दूजे अं
गि न राचि ३६ दादू एके आत्मां साहिब है सब मांहि साहिब
के नाते मिले भेष पंथ के नांहि ३७ दादू सुरनर मुनिजन औ लि
या पैक बस सब थीर दरसन सूं परसन नहीं अजहूं वे लीती
३८ दादू निराकार मन सुरति सूं प्रेम प्रीति सूं सेव जे पूजै आ
कार कूं तो साधू प्रतषि देव ३९ दादू भोजन दीजे देह कूं ली
या मन बिसराम साधू के मुषि मेल्हीये पाया आत्मराम ४०
॥ सार बिचारा जात है छाडि या लहर तरंग जैसे लेवै गं
स तिसा धू के संग ॥१॥ साध मिलें तब ऊपजे हिरदै हरि
व दादू संगति साध की जब हरि करै पसाव ॥२॥
अंतर पडै प्रेम जगति रस जाइ साध मिलै सुष ऊपजै

दश्रंगिनमाहाधश्। दादूमुषदिषलाईसाधका।जेतुमहीमि
लेवैश्राहातुम्हमांहि।श्रंतेकरैदईनदिषाईगाहि४४जव
दीजीयो।तुमपेंमांगतऐह।दिनप्रतिदरसनसाधकौप्रिमभगति
दहदेह४५जिसरसकूंमुनियरमरैसुरनरकरैकलाप।सोरससहजै
पाइये।साधूसंगतिश्रापध६तननहीभूलामननहीभूला
प्रांन।साधसबदक्यूंभूलहीऐरेमनमूढश्रजांन४७जिनकैहिरदैह
रिबसैसदानिरंतरिनांव।दादूसाचेसाधकीमैंबलिहारीजां
परमार्थकूंसबकीया।श्रापस्वार्थनांहि।परमेसरपरमारथी कैसा
धूकलिमांहि४८जिसकातिसकूंसौंपीऐ।सुकृतपरउपगार।दा
सेवगसोभलाासिरनांलेवैभार५०दादूइनसंसारमेंएदोइरतन
श्रमोलएकसांईएकसंतजनइनकामोलनतोल५१साचा
धदयालघट।साहिबकाप्यारा।हतामासारांमरसासो
५२दादूसबजगएकला।सेवगस्वांमीदोइ।जगतदुहागीरामबिन
साधसुहागीसोइ५३रामथनबांधैगांवडी नहींनारीसूंनेह मनइ
डीश्रसिथिरकरैदाडिसकलगुणदेह५४निराकारसूंमिलिरहै
श्रषंडभगतिकरिलेह।दादूक्यूंकरिपाईऐउनचरनूंकीषेह५५
दादूसोईजनसाधूसिधसो।सोईसकलसिरमोर।जिहिकैहिरदैह
रिबसैदूजानांही श्रोर५६दादूसाधसिरामणिसोधिलेनहीपू
रपरवाहसजीवनिसांम्हांचढैदूजाबिहियाजांहि५७दादूदत
रबारकाकोईसाधूबांटैश्राइ।तहांरामरसपाईऐ।जहांसाधूतहां
जाइ५८सबहीमृतकसमांनहैं क्यूंकरिजीवहिसोइ।दादू
रसश्रांनिपिलावैसैंहि५९दादूसाधसंगतिश्रंतरपडै
गाकिसठौरप्रेमभगतिभावैनहीयहमनकामतश्रोर६०
रामिलनकैकारनेजेतूंषराउदासासाधूसंगतिसोधिले
कैपासे६१श्रधसचालकबीरकीश्रासंधीनहींजाइदादूक्यूंदेम्
घश्यूंतलहिपडैलेश्राइ६२दादूरहनिकबीरकी कठिनबि
कुचालश्रधरएकसूंमिलिरहा।जहांनकैफैकालदरसा
'मीठालागैमोहि दादूसुणतांपरमसुष केता
होइ६४एकदेसहमदेषीया।तहांबस्ती ऊजडनांहि
हमदादूउसदेसके सहजरूपतामांहि६५बारहमासेनीपजै त
कीयापरवेस दादूसूकानांपडैहमश्रायेउसदेस६६घरबन
हैंसुषनहीसुषहैसांईपास दादूतासूंमनमिल्याइनथैंनया
सद६७दादूपषकाहूकैनांमिलै निहकांमीनिरपषसाधऐ
सिरामकेमेलैमेलश्रगाध६८निरपषहोइकरिपषगहै

किपडे गा सो हद्द्म निरपष लागे नां वसूं करता करै सहो इ ६८ द
हूं एक नृगुन एक । गुण मई सब घटि रहे ग्यांन काया का मायार
मरे आत्म ब्रह्म समान ६९ सांई सत संतोष दे भाव भगति बेसास
सिदक सबूरी साच दे मांगे दादू दास ७० दादू जिन मुक्तकूं पैदा कीया
मे रासा दिल्व सोइ मै बंदा उस राम का जिनि सिरज्या सब कोइ ७१
जो मैं मेरे सो जीव है रमता राम न होइ जो मण मराण तैं रहत है मे
रा सा दिल्व सोइ ७२ पंड पंड निज नां नया छक कलसरोकै नूर ज्यूं
घा त्यूं ही तेज है जोति रही भरपूर ७३ दादू आपा कहा दिषला
इ जे कछु आपा होइ यक तौ जाता देषीये रहता चीन्हे सोइ ७४
दादू सोई आपनी लज्या उलकी कारा मां निबडाइ पति गई त
ब सुन मुष सिरजनहार ७५ सांई कारणि मांस का लोही पांणी होइ
सूका आटा अस्तका दादू पावे सोइ ७६ तन मन मैदा पीसि करि
छांणि छांणि ल्यौ लाइ यूं बिन दादू जीव का कबहू साल न जा
इ ७७ पीसे ऊपरि पीसीये छांणे ऊपरि छांणि तो आत्म कण ऊ
बरे दादू ऐसे जांणि ७८ पहली तन मन मारी ये इनका मरदे मांन
दादू काटे जंत्र में पीछे सहज समान ७९ दादू है कूं भै घणां नांही
कूं कछु नाहि दादू नांही होइ रहु अपणे साहिब मांहि ८० बिरह
अगनि का दाग दे जीवत मृतग घोर दादू पहली घर कीया आदि
हमारी ठौर ८१ काया कबज कमांण करि सार सबद करि तीर दादू
यहु सर सांधि करि मार मोटे मीर ८२ मोहै मन सूं जूझ करि ऐसा
सूरा बीर इदी अरदल जो निसब यूं कहि कहवा कबीर ८३ सांई
कारणि सीस दे तन मन सकल सरीर दादू प्रांणी पंच दे यूं हूं भिमि
ल्या कबीर ८४ दादू मद जो धमोटा बली सोस बादमारी नार स
ब जग बैरी क्या करे जस तत हो रिणधीर ८५ दादू जाते जीव तैं तो
ड़ू जे जीय मरा दो इ जिनि यह जीय अपाईया सार करैगा सोइ
८६ नाद बिंद सूं घट भरे सो जोगी जीवै दादू काहे कूं मरै राम रस
पीवे ८७ जे को इ सेवै राम कूं राम सरीषा होइ दादू नांम कबीर ज्यूं
साषी बोले सोइ ८८ दादू को इ थिर नहीं यहु सब आवे जाइ अ
मर पुरस आपै रहै के साधू ल्यौ लाइ ८९ मा हि बसे तो लागि रहू
तौ अजरांवर होइ दादू देषि बिचारि करि जुदा न जीवे कोइ ९०
देह रहै संसार में जीव राम के पास दादू कछू ब्यापे नहीं काल झा
ल दुष त्रास ९१ जागहु लागहु राम सूं छाडहु बिषै बिकार पी
वो जीवो राम रस आत्म साधन सार ९२ दह दिसि फिरै सु मन है आ
वे जाइ सपौन राषषा हारा प्रांण है देषण हारा ब्रह्म ९३ सब जीव

णी न्हतैं साध मिलै तब देव। ब्रह्म मिलै तब ब्रह्म। दादू अ
लष अनेव ।९४। करम कैं वसि जीव है करम रहित सो ब्रह्म। ज
हां आतम तहां परमातमां दादू भागा भ्रम ।९५। सुगुरा सत सज मरहै स
न मुष सिरजनहार। निगुरा लोभी लालची न्हूंचै विषै विकार ।९६
दादू कथि कसि सनी जीवण कौ तत्त परमांण। षोटा षोटा विन बांधी रै
सा दिव कैं दीवांण ।९७ माया का गुण बल करै आपा उपजै आइ। अ
ज सत मस सा लागी मन चंचल है जाइ ।९८ आपा नांही बल मिटै
त्रिविध तिमर नहीं होइ। दादू यहु गुण ब्रह्म का सुनि समांनां सो
इ ।९९ आत्म बोध वंझ का बेटा गुरमुष उपजै आइ। दादू पंगुल पं
च बिन जहां रांम तहां जाइ ।१००। मन गति जब उपजै। निहचल
सहज समाधि। दादू पीवै रांम रस सतगुर कै परसादि ।१०१। पारब्रह्म
कह्या प्रांन सूं प्रांन कह्या घट सोइ। दादू घट सब सूं कह्या विष अ
मृत गुण दोइ ।१०२ आपा मेटै हरि भजै तन मन तजै विकार। न्हि
बैरी सब जीव सूं दादू यहु मत सार ।१०३ साहिब जी की आतमां दी
जै सुष संतोष। दादू दूजा को नहीं चौदह तीन्यूं लोक ।१०४ तुम्ह
कूं भावै और कछू मैं जब कीया और। मिहर करौ तो छूटिए नहि
तो नांही ठौर ।१०५ हूं सुषि सूती नींद भरि जागै मेरा पीव। क्यूं करि
मेला होइगा जागै नांही जीव ।१०६ सुषी सुहागनि सब कहै क
हांगनि आहि पीव का महल न पाई। कहां पुकारूं जाइ ।१०७
सषी सुहागनि सब कहैं प्रगट षेलै पीव सेज सुहागन पांवही
दुषी यामैं राजीव ।१०८ दादू अण देष्यां अनरथ कहै अपराधी सं
सार जदि तदि लेषा लेइगा समरथ सिरजनहार ।१०९। दादू अण
देष्या अनर्थ कहै कलि पृथमी का पाप धरती अंबर जब ल
गै तब लग करै कलाप ।११०। दादू जब हीं साध संताइए तब ही
ऊंध पलटै आकास धसै धरती मिलै तीन्यूं लोक गरक ।१११ जि
ह घरि निंद्या साध की सो घर संमूल। तिन की नींव न पाइए नांव
न ठांव न धूल ।११२ निर्गुण गुण मानै नहीं कोटि करै जे कोइ द
ष्सर बससौ पाण सो फिरि बेरी होइ ।११३ कीया कृत मेटै नहीं गु
ण ही मांहि समाइ। दादू बधै अनंत धन कबहूं कदे न जाइ ।११४
साहिब साध दयाल है हम ही अपराधी। दादू जीव अभागिया
अविद्या साधी ।११५ कू दारा फेरि संवारि करि लै पहुंचावै ठौर
ऐसा कोई नां मिलै दादू गई बहोर ।११६ दादू पलक मांही पर
गटै सही जे जन करै पुकार दीन दुषी तब देषि करि अति आ
तुर तिहि बार ।११७ सेवग का रषा करै सेवग की प्रतिपाल सेव

गये

लागेनांवसूंरातेमातेहोइदेषेगेदीदासूंसुषपावैगेसोई।
१४१सरीसरोवररांमजलमोंहैमजनसारादादूसहजैसबग
रैमनकेमैलविकार१४२दादूनिरविषनांवसूंतनमनसहजै
होइरांमनिरोगाकरैगादूजानांहीकोइ१४४देसोसुमिरणहो
तानहीनहीसुकीजेकांमदादूयहतनयूंगयाक्यूंकारिएइं
म१४५दादूरांमनांमनिजमोहनीजिनमोह्याकरतारसुरनरसं
करमुनिजनोंब्रह्मासिष्टिबिचार१४६मनपवनागहिसुरतिसूं
दादूपावैस्वादसुमिरणमांहैसुषघणांछाडिदेहूबकवाद
१४७दादूरांमनांममैंपैसिकरिरांमनांमल्योलाइयहइकंत
त्रियलोकमैंअनंतकालकूंजाइ१४८दादूसबसुषसुरगप
यालकेतोलितराजूबाहिहरिसुषएकपलककातासमि
कह्यानजाइ१४९केणपटंतरदीजीएदूजानांहीकोइरां
मसरीषारांमहैसुमिरयांहीसुषहोइ१५०नांवनआवैतब
दुषीआवैसुषसंतोषदादूसेवगरांमकादूजाहरषनसोक
१५१दादूजैसानांवथातैसालीयानांहिहोंसरहीयहजी
वमैंपछितावामनमांहि१५२जेतापापसबजगकरैतेता
नांवबिसारेंहोइदादूरांमसंभालीएतौएतांडैषोइ१५३
दादूजबहीनांवबिसारीएतबहीमोटीमारषंडषंडकरि
नांषीएबीचपडैतिहिबार१५४पसेबैवासबसुणोंहमकूं
ज्यावनदेहुदादूतैरेसिरचढैजीवहमारालेहु१५५बिरह
निरोवैरातिदिनझूरैमनहीमांहिदादूऔसरचलिगयाप्री
तमपायानांहि१५६दादूहरसएककारलीहमकूंबहुतअप
राकाजांसूंकबहुमिलैमेराप्रानअधार१५७दादूपीडन गे
ऊपजीनादमकरीपुकारताथैसाहिबनामिल्यादादूबी
तीबार१५८बिरहाबेगानगतिसहजैमेंआगेपीछेंजाइ।
थोडेहीमैंबहुतहैदादूरहौल्यौलाइ१५९दादूनिरतरपी
वाईयातीनलोकभरपूरिसबसेजौंसांईबसैलोकब
तावैदूरि१६०जहांतनमनकामूलहैउपजैओंकारअन
हदसेझासबदकाआतमकरैबिचार१६१भावभगतिलैक वे
उपजैसोतासरंनिजसारतहंदादूनिधिपाईएनिरंतरनिर
धार१६२दादूतिससरवरकेतीरजपतपसंजमकीजीएतहं
सनमुषसिरजनहारप्रेमपिलावैपीजीए१६३सहजसरोव
रआतमांहंसाकरैकिलोलसुषसागरसूभरभरयामुकताह
लमनमोल१६४दादूहरिसरवरपूरनसबैजिततितपांनीपीव

गकी बा हरचहै।। दाहू दीनदयाल।। २५ दाहू तेरी षूबी षूब है
सब भीगलागै सुंदर सोनाका हि है सबकोई नागे।। २६ अन
थ का आसिरा निरधारू आधार निरधन के धन राम है दाहू सि
रजनहार।। २७ दाहू मन अपराधी एक सै सारे इह संसार औगण
मेरे अति घणे अंति न आवै पार।। २८ गुनहगार अपराधी तेरा
भाजि कहां हम जांहि दाहू देष्या सोधि सब तुम बिन कहीं न
समांहि।। २९ सिरपरि राषि कबीर कूं राम नाम ल्यौ लाइ दाहू म
रा नु गौका ह कपल कमें जाइ।। ३० आडा दे दे राम कूं साधू राषै
मन साषी दे अस्थिर करै सोई साधु जन।। ३१ यह मन कागद
की गुडी उडि चली आकास दाहू भीजे प्रेम जल तब आइ
रहै हम पास।। ३२ दीया मन का चाबुंता मेटी आगया कार क्या
ले मुषदिषलाइयो दाहू उस भरतार।। ३३ इहि अपणा बसि कै
सो कहि जाचण जाइ दाहू असथिर आतमा आसण बैसे आ
इ।। ३४ है घट देषी सब चलै यारि न पकूं च्या जाइ दाहू आसा
पहलके फिरि फिरि बैसा आइ।। ३५ दाहू मन मारै मुनियर मू
ये सुरनर कीये सिंघार ब्रह्मा बिष्णु महेस सब राषै सिरजन
हार।। ३६ मन बाहे मुनियर बडे ब्रह्मा बिष्णु महेस सिध सा
धिक जोगी जती दाहू देस बदेस।। ३७ पूजा मान बडाईयां
आदर मांगै मन राम गहै सब परहरै दाहू सोई जन।। ३८ अ
दिष्ट तिमिरि के रस लहै न दीधा गा दाहू कै रहि गया त
ब जांणी जामाग।। ३९ हेहे टूका दस दस का टूटा जोडे तार दाहू
सांधे सुरति सूं सो गुरपीर हमार।। ४० पहली श्रवन दुतीय र
सन त्रितीय हिरदै गाइ चतुरदसी चेतन भया तब रोम रो
म ल्यौ लाइ।। ४१ दाहू नीका नाव है तीन लोक तत सार राति
दिवस रटिबो करी रे मन इहै बिचार।। ४२ एक राम के नाव बि
न जीव की जलनि न जाइ दाहू केते पचि मूए करि करि
बहुत उपाइ।। ४३ दाहू अगुन निरगुन है रहो जैसा है तैसा ली
न हरि सुमिरन ल्यौ लाइये का जांनूं का कीन्ह।। ४४ दाहू ऐसा
कोन अभागीया कछु दिढावै और नांव बिना पग धरन कूं
कहौ कहां है ठौर।। ४५ दाहू मेरे संसा कोन ही जीवन मरण का
राम सुपनें ही जिनि बीसरै मुष हिरदै हरि नाम।। ४६ दाहू ऐसै
महंगे मोल का एक सास जे जाइ चौदह लोक समान सो का
२४ हे रेति मिलाइ।। ४७ सोई सुजांन नर सांई सेती लाइ कहि सांव
सिरजनहार सूं जनम गंमायो मिलि बिकाइ।। ४८ दाहू चिम चि

मूलमंत्र मनमाला गुरतिलक सतिसंजम सील सुच्या ध्यान धो
वती काया कलस मनमंदिर निरंजनदेव आतमा पाती पहोप
प्रीति चेतन चंदन नवधा नोव नाव पूजा मतिपात्र सहज
सुमरण सबद घंटा आनंद आरती दयापरसाद अनदिन ऐसे
सा तीरथ सतसंग दान उपदेस व्रित सुमिरण षट गुण ध्यान
अजपा जाप अनंन आचार फल दरसन अनि अंतरि सदानि
रंतर सति भोजदास बरतते आत्मा उपदेस अंतरगति पूजा
॥२८७॥ पीव सूं षेले प्रेमरस तौ जावै रजक दोइ दास पावे सेजस
षपर दानां दास कहै ॥२८८॥ पुरष पुरातम छाडि के चले आन कै सा
थ सो नीसंग ते बीछडा आ षडी मरी डि दास ॥२८९॥ दास नीच कै च
ऊल सुंदरी सेवा सारी होइ सोई सुहाग निकी जाणे रूप नपीजे षो
इ ॥२९०॥ नदीयां नीर उलंघि कर दरीया पैली पार दास सुंदरी सो न
ली जाइ मिले नरतार ॥२९१॥ पीव नदेष्या नैन नरिकं वन लागी
ध्याइ सूती नदीगलि बाद दे वीची दीगई विलाइ ॥२९४॥ कोई
आगेमा मन बस्या चित ते धरी उताचि दास पति विन सुंदरी छां
डे घरघर वार ॥२९३॥ अथ काया बेली लिष्यते ॥ साचा सतगु
राम मिलावै सब कछु काया मां दिषावै काया मांहे सिरजन
हार काया मांहे वो अंकार काया मांहे है आकास काया मांहे ध
रती पास काया मांहे पवन प्रकास काया मांहे नीर निवास काया
मांहे सस सिहर सूर काया मांहे बाजे तूर काया मांहे तीन्यू देव का
या मांहे अलष अनेव काया मांहे च्यारूं वेद काया मांहे पाया
भेद काया मांहे च्यारूं षांनी काया मांहे च्यारूं बांनी काया मां
हे उपजे आइ काया मांहे मरि मरि जाइ काया मांहे जामें मरे का
या मांहे चौरासी फिरै काया मांहे ले हूं अवतार काया मांहे बार
बार काया मांहे राति दिन उदे अस्त इक तार दास पाया परम गु
र कीया ऐकंकार ॥१॥ काया मांहे षेले पसारा काया मांहे प्राण
अधारा काया मांहे अगम अपार काया मांहे उपावण हार काया
मांहे सब बनराइ काया मांहे रहे घर छाइ काया मांहे कंदली व
स काया मांहे है कविलास काया मांहे तरवर छाया काया मां
हे पंषी माया काया मांहे आदि अंत काया मांहे है भगवंत ॥
काया मांहे त्रिन वनराइ काया मांहे रह्या समाइ काया मांहे च
व दे भवन काया मांहे आवागवन काया मांहे सब ब्रहमंड
काया मांहे है नव षंड काया मांही कि सब दे दास दीयो दिषाइ
मन साचा चाकर मनां गुर बिन लष्या न जाइ ॥२॥ काया मांहे स

जहांतहांजलअंचता गई निमसुषजीव॥६४॥नैनहुंम
ऊनहीन्हलाकलह्जाइ॥दाइनपावैनही आयामूल॥
॥६५॥नैनहुवालानिरषिकरि दाद्रूघालेहाथ तबही
पावैरामधन निकटि निरंजननाथ॥६६॥पहली लोचन
पीजीये बहुलदिषाइ दाद्रूसूझैसारसब सुषमेंरहैसमा
६७
सुषसागरसूभरभन्या उज्जलनृमलनीर प्यासबिना
दाद्रूसागरतीर॥६८॥दाद्रूदरीयाप्रेमका तामेंझूलेदोइ एक
आतमपरआतमा एकमेकरस होइ॥६९॥ दाद्रूदेषूंदयालकूं
सनमुषसांईसार जीधरदेषूंनैननरि तीधरसिरजनहार॥७०॥
तनमननांहीमेंनहीं नहीकायानहीजीव दाद्रूएकेदेषीए
दिसिमेरापीव॥७१॥ दहदिसदीपगतेजके बिनबातीबिन
तेल चहूदिसमूरजदेषीए दाद्रूअदबुदषेल॥७२॥ दाद्रूअ
नालीअगतेजका ऐसा तत अनूप सो हमदेष्यानैनभरि सु
दरसहजसरूप॥७३॥ निराधारनिजदेषीए नैनहूलागाबंद
तहांमनषेलैपीवसूं दाद्रूसदाअनंद॥७४॥ नैनहमारेनूरमां त
हारहेल्यौलाइ दाद्रूउसदीदारकूं निसदिननिरषतजाइ॥७५॥
तेजपुंजकीसुंदरी तेजपुंजकाकंत तेजपुंजकीसेजपरि दाद्रू
न्याबसंत॥७६॥ ऐसाअचिरजदेषीया बिनबादल
तहांबिजलीचमकै दाद्रूअधिकसनेह॥७७॥ अमृत
[illegible] तेजपुंजझिलिमिलिझरै कोसा
षीवंत॥७८॥ रसहीमेंरसबरषिहै धाराकोटिअनंत तहांमन
[illegible] दाद्रूसदाबसंत॥७९॥ तरवरसाषामूलबिन
[illegible] रामफल दाद्रूनैनहुमांहि॥८०॥
[illegible] तेजपुंजसबमांहि दाद्रूजोतिअनंतहै आ
[illegible] नांहि॥८१॥ सुरतिसिमांगेबावरी सा हिबसीनिधि
[illegible] दाद्रूवेनूफलगमो जैसेंनागरबेलि॥८२॥ फलकारणसे
वाकरे जाचेत्रिभुवनराव दाद्रूसोसेवगनहीषेलैअ
[illegible] दाद्रूकथ
नहींतेबिरलासंसार॥८४॥ ग्यानध्यानसबछाडिदे जपत
[illegible] दाद्रूबिरहालेरहै छाडिसकलरसभोग॥८५॥ज
[illegible] तबलगदूसरआहि एकमेक
है तोरसपीवणसूंजाइ॥८६॥ ऐदोन्यूंऐसेंकहैकरीए
[illegible] दाद्रूरहैल्यौलाइ॥८७॥ सोज
[illegible] सतिरामअत्मांबेष्मों सुबुधिजोमिसंतोषया

काया मांहैं महल अवास काया मांहैं निहचल वास काया मांहैं राजद्वारो १२
गरसातो काया मांहैं अबगति नाथ काया मांहैं नदी यानी र
काया मांहैं गहर गंभीर काया मांहैं सरवर पानी काया मा
हैं बिनानी काया मांहैं नीर निवांन काया मांहैं हंस सुजान।
काया मांहैं गंग तरंग काया मांहैं जमुना संग काया मांहैं देसुरस
ती काया मांहैं द्वारामती काया मांहैं कासी थान काया मांहैं
करे सनांन काया मांहैं पूजा पाती काया मांहैं तीरथ जाती
काया मांहैं मुनिरय रमेला काया मांहैं आप अकेला काया
मांहैं जपी ले जाप काया मांहैं आपे आप काया नगर निधान है
मांहैं कोतिग हौ ब्रह्मा दादू सतगुर संग ले चूं लि पैडे जन कोइ
॥ काया मांहैं विषमी वाट काया मांहैं औघट घाट
हैं पटण गांव काया मांहैं उत्तम ठांव काया मांहैं मंडप छा
जै काया मांहैं आप बिराजै काया मांहैं बोलण हार का
मांहैं नरवंडार काया मांहैं बस्त अपार काया मांहैं नवनि
धि काया मांहैं अठसिधि जाण काया मांहैं हीरा लाल का
या मांहैं निपजै लाल काया मांहैं माणिक नर काया मांहैं
लेले धरे काया मांहैं रतन अमोल काया मांहैं मोलन
काया मैं करतार है सो निधि जांनै नांहि दादू गुरमुख पा
स बक सू काया मांहि ॥४॥ काया मांहैं सब कछु जानी का
या मांहैं लेहु पिछानी काया मांहैं बहौ बिस्तार काया
हैं अनंत अपार काया मांहैं अगम अगाध काया मांहैं निप
जै साध काया मांहैं कल्यान जाइ काया मांहैं रहे ल्यो लाइ।
काया मांहैं साधन सार काया मांहैं करे बिचार काया मांहैं अ
मृत बांणी काया मांहैं सारंग प्राणी काया मांहैं सारंग प्राण
काया मांहैं पद निरबांण काया मांहैं मूल गहि रहै काया मा
हैं सब कछू लहै काया मांहैं निज निरधार काया मांहैं अ
पार काया मांहैं सेवा करै काया मांहैं नाम उरे काया मांही
बास करि रहै निरंतर रिधाइ दादू पाया आदि घर सत
दिखाइ ॥५॥ काया मांहैं अनंत सार काया मांहैं करै बिचार
काया मांहैं उपजै ग्यांन काया मांहैं लागे ध्यांन काया अमर
अस्थान काया मांहैं आतमराम काया मांहैं कला अनेक
काया मांहैं करता ऐक काया मांहैं नाम रंग काया मांहैं साई
संग काया मांहैं सरवर तीर काया मांहैं कोकिल कीर का
मांहैं कछि बैन काया मांहैं ऊजी बैन काया मांहैं कंव
प्रकास काया मांहैं मधुकर बास काया मांहैं नाद ऊर

।है जोतिपतंग। कायामांहै चांनिंगमौर। कायामांहै चंदचको
यामांही प्रातिकेरि। कायामांहि सनेही। कायामांहै प्रेमरसलाहै
पुरौहद। कायामांहै तारणहार। कायामांहै उतरे पार। काया
हूतरतारै। कायामांहै आपनबारे। कायामांहै हूतरतिर। का
ांहै केउधरे। कायामांहै निपजे आइ। कायामांहै रहैसमाइ
ामांहै पुलेकपाट। कायामांहै निरंजनहाट। कायामांहै
दार। कायामांहै देषणहार। कायामांहै रामरंगराते। काया
प्रेमरसमाते। कायामांहै अविचलनांण। कायामांहै निह
रहै। कायामांहै जीवजीइ। कायामांहै पायापीइ। कायाम
दाआंनंद। कायामांहै परमांनंद। कायामांही ऊसरवदे सो
देष्या आइ दादू गुरमुषपाइरे। साधकहै समझाइ ⁝
यामांहै देष्यानूर। कायामांहै रह्या भरपूर। कायामांहै प
तेज। कायामांहै सुंदरसेज। कायामांहै पुंजप्रकास। का
मांहै सदाउजास। कायामांहै झिलिमिलिसारा। काय
है सबतैन्यारा। कायामांहै जोति अनंत। कायामांहै स
वसंत। कायामांहै षेलै फाग। कायामांहै सबवनबाग
यामांहै षेलैरास। कायामांहै ऋधिबिलास। कायामांहै
गैबाजे। कायामांहै नादधुनिसाजे। कायामांहै सेजसु
ा। कायामांहै मोहनागो। कायामांहै मंगलचार। काय
है जेजेकार। काया अगम अगाध है मांहै तू सबजाइ।
रूअगटपीवमिल्या गुरमुषरहैसमाइ॥८॥ कायावली
ण॥ अथ पदराग गौड॥ कैसैकरि मिलै मोकूं रामगु
रथ्यकुबिषीयमेरैबसिनांही। टेकयहुमनमेरा दह
ह ध्यावे नैरामनदेषनपावे। जिभ्यास्वादसबैरसल
इ ही नौगबिषेकूं जागै २ श्रवनकुसाचकदेनहीना
नैनरूपतहांदेषितुनावै २ कामक्रोधकदेनहीं जे
लचिलागिबिषैरसपीजे ४ दादूदेषिमिलैकूंसांइ १
विकारबसैमनमांही ५॥२ जौरेनाइरामदयानही कर
नौकानांवषेवटहारिआवे यूं बिनकयूंनिसतिरते टेक
नीकविनहोतनहीमोपै कयूंकरिदिनंनरते लाल
लागिमरतपाककमें आयही आपेजरते। २। स्वांदैस्वं
बिषैनहीछूटै मननिहचलनहीधरते माहायहलाह
सुषकेतांई आपेहीपचिमरते २ मैंकामीकपटीक्रोध
यामें कूपपरतनहीडरते करवतकामसीसधरिअपने

आपैही आप बिछुरते राहरि अपणां अंग आपनहीं आ
१५ अपणी आप बिछुरते। पिता कहूं पूता कूं मारे दादू यूं ज
न तिरते ॥३॥२॥ साहिब जी सति मेरा रे लोक कहै बो
रे टेक जीव जन्म जब पाया रे मस्तग लेष लिषाया रे १ घ
टै बधै कछू नांही रे करम लिष्या तै समा ही रे २ बिधाता
बंध कीन्हा रे सिरजि सबन कूं दीन्हा रे ३ समरथ सिरजन
हारा रे सो तेरे निकटि गंवारा रे ४ सकल लोक फिरि आवै
रे तो दादू दीया पावै रे ५॥२॥ पूरि रह्या परमेसर मेरा आ
णा देवै बहुतेरा टेक सिरजनहार सहज मैं देई तो काहे
धाइ मांगि जन लेई १ बिस्वंभर सब जग कूं पूरे उदर काजि
नर काहे झूरे २ पूरक पूरा है गोपाल सब की चिंत करे द
याल ३ समरथ सोई है जगनाथ दादू देषि रह्या संग साथ ४॥
निकटि निरंजन लागि रहे जब हम जीवत मुक्ति भए टे
क मरि करि मुक्ति जहां जग जाइ तहां न मेरा मन पतियाइ
१ आगै जन्म लहै औतारा तहां न मानैं मन हमारा २
तन छूटै गति जो पद होइ मृतक जीव मिलै सब कोई ३ जीवत
जन्म सुफल करि जांनां दादू राम मिल्या मन मांनां ४॥५॥
सब हम नारी एक भरतार सब कोई तन करै सिंगार टेक
घरि घरि अपनैं सेज संवारैं कंत पियारे पंथ निहारैं १ आरति
अपनैं पीव कूं ध्यावैं मिलै नाह कब अंग लगावैं २ अति आ
तुर ये षोजत डोलैं बांनि परी बियोग निबोलैं ३ सब ह
नारी दादू दीन देषि सुहाग काहू संगि लीन ४॥६॥ राग
माली गौडी ॥ गोबिंद कैसे तिरीए। नाव नांही षेव नांही
राम बिमुष मरीए टेक ग्यान नांही ध्यान नांही लै समाधि
नांही बिरह बैराग नांही पांचूं गुण मांही १
प्रीति नांही नाव नांही तेरा भाव नांही जुगति नांही
रजी व मेरा २ बाट नांही घाट नांही कैसे पग धरीए वार
नांही पार नांही दादू बूडीए ३॥१॥ मुझ तैं
रे यहु चूकि गया रे पछितावा रहिया रे टेक मैं सीस न दीया
रे न रिझै मन पीया रे मैं क्या कीया रे १ हूं रंगि न राता रे रस
प्रेम न माता रे नहीं गलत गाता रे २ मैं पीव न पाया रे की
मन कमाया रे कछू हो इन आया रे ३ हूं रहूं उदासा रे मु
झ तेरी आसा रे कहै दादू दासा रे ॥४॥१॥८॥ राजकल्याण
जग सूं कहा हमारा जब देष्या नूर तुम्हारा टेक परम ते

जघरमेरासुषसागरमोहिबसेरा१झिलिमिलिऋतिऋान
सधायापरमानंद१जोतिऋपारऋनंताषेलैफागबसंता
[illegible]
[illegible]
रहेकझिलिमिलिझिलिमिलितेजतुम्हारापरगटषेलै
प्रांनहमारा२नूरतुम्हारानैन्हमांहीतनमनलागाछूटै
नांही२सुषकासागरवारनपारा।ऋमीमहारसपीवणहारा
३प्रेमममानमतिवालामातारगितुम्हारैसाइराता।।४।।२।।

[illegible]

नांजलिऋापसिरिसेतोरे।प्रांनउधारनदासरहैकपूराणब्रह्म
रामरंगिरातेनिरमलनांवऋधारसुषसंतोषसदासतिसंज
ममतिगतिवारनपार१जुगिजुगिरातेजुगिजुगिमातेजुगि
जुगिसंगतिसारजुगिजुगिमेलाजुगिजुगिजीवनिजुगि
जुगिग्यांनविचार२सुकृतसिरोमनिसबसुषदाताकुले
नइहिसंसारदादूहंसहैसुषसागरऋापेपरउपगार।।३।।४।।

१॥ताअ॥रामकाँ॥ आपनिरंजनयूंकहैकोरति
मैंजनसेवगहैनहीं॥केअगमाय॥टेक॥समकारनसबप्र
हैं॥अापाअनि॥मांन॥मदाअपंडतजरधरैबोलेनग
॥१॥अंतरपटजीवैनहीं तबहीमरिजाइ॥बिछुरेतत
नज्यूं॥जीवैजल आइ॥२॥षीरनीरज्यूंमिलिरहैजलजल
हिंसमांन॥आतमपांनीलोंनज्यूं॥दूजानहीआंन॥३॥मैं
सेवगहैंनहीं॥मेराबिसरांम॥मेराजनमुजसारिषा
द्विरांम॥४॥॥१॥सरनितुम्हारीकेसवामैंअनंतसुषपाया॥भा
गबडेतुमभेटीया॥हूंसरनेआया॥टेक॥मेरीतपतिमिटी
तुमदेषतांसीतलभयोभारी॥भौबंधनमुक्ताभया॥जबमि
लेमुरारी॥१॥भरमभेदसबभूलीया॥चेतनचितलाया॥पारसमूंप
रसाभया॥निरमलजलपाया॥२॥मेरोचंचलचितनिहचलभयो
अबअनंतनजाई॥मगनभयोसरबेधीयो॥रसपीयो॥
२॥सनमुषहैतेंसुषदीया॥यहदयातुम्हारी॥दादूदरसनपाव
ईपीवप्रानअधारी॥४॥१॥भगतिमांगूंबापभगतिमांगूंमूंने
ताहरानांवनोप्रेमलागो॥सिवपुरब्रह्मपुरसरबसूंकीजीये
अमरथावानहींलोकमांगूं॥टेक॥आपिअवलंबनोताहरा
नांवनो॥भगतिसजीवनीरंगराचूं॥देहनेग्रेहनेबासबें
नाणो॥इहआसथानहीमुगतिंजाचूं॥१॥भगतिबाल्हीखरीआ
पिअवलंबनहरी॥निरमलोनामरसपानभावे॥सिधिनेरिधिनेरा
जरूडोनहीदेवपदमाहरेकामिनांआवे॥२॥आतमाअंत
रसदारिताहरीबापजीभगतिदीजेकहेदादूदिवेकोडि
येतुम्हबिनांअम्हनांदिलीजेरूं॥३॥जैजैजैजगदीसतूंतू
समथसांईसकलभवनभानैघडैदूजाकोनांहीटेक॥कालमी
चकरतांकरैजमकिंकरमायामदाजीवबलवंतबलीने
पेसगा॥१॥तुरामरनतुमथेंडरैमनकूंनेमारी॥कांमदल
नईतूंदेवमुरारी॥२॥सबकेपेकरतारथेंभवबंधनपासा॥अरि
रथभंजनभेगतासबबिघनबिनासा॥३॥सिरऊप
सोईदमंमांहीदादूसेवगरामकाभिरभैनडरांहीं॥४॥५॥आज
हमारेरामजीसाधघरिआये॥मंगलचारचहुंदिसभयो॥
बधाये॥टेक॥चौकपुरांऊंमोतीयां॥घसिचंदनलाऊं॥पंचप
दारथपोइकरि॥यहमालचढाऊं॥१॥तनमनधन
परदंडाणादीजे॥सीसहमाराजीवलेनौछावरकीजे॥२॥
भगतिकरिप्रीतिसूंप्रेमरसपीजे॥सेवाबंदनआरतीय

हालीजेरत्नागह्मारादेसंषीसुषसागरपाया।दादूदसन
नया।मिलिनिजवनराया॥४॥५॥चलिरेमनजहां अमृतबनं
नमलनी केसंतजनो।टेक।नगुननामफलअगमअपारसंत
नजीवनप्रानअधारसीतलछायासुषीसरीरचरनसरोवरनि
रमलनीर॥१॥सुफलसदाफलबारामासनानाबांणीधुनिप्रका
सतहांबासबसिअमरअनेकतहांचलिदादूहंसमेक
॥२॥६॥दृढ़परमगुरजोगं अमीमहारसजोगं।टेक।मनपवनाथि
रसाधअविगतिनाथअराधं सबदअनाहदनादं॥१॥पंचस
षीपरमोधंअगमग्यानगुरबोधं तहांनाथनिरंजनसोधं॥२॥सत
गुरमांहिबतावा निराधारघरछावा तहांजोतिसरूपीपावा
॥३॥सहजैसदाप्रकासं पूरणब्रह्मबिलासं तहांसेवगदादू
दासं॥४॥७॥२१॥रागआसावरी॥तूंहीमेरेरसनां तूंहीमेरे
बैनां तूंहीमेरेश्रवनां तूंहीमेरेनैनां।टेक।तूंहीमेरेआतमकंव
लमंझारी तूंहीमेरीमनसा तुम्हपरिवारी॥१॥तूंहीमेरेमनहीं
तूंहीमेरेसासा तूंहीमेरे सुरतेप्राननिवासा॥२॥तूंहीमेरेनषस
षसकलसरीरा तूंहीमेरेजीयरेज्यूंजलनीरा॥३॥तुमबिनमेरे
अवरकोनांही तूंहीमेरेजीवनिदादूमांहीं॥४॥१॥ हसीएकतुम
वणहारा औरचलसीसबसंसारा।टेक।चलसीगगनधरनस
बचलसी चलसीपवनअरुपानी चलसीचंदसूरपुनिचल
सी चलसीसबैउपानी॥१॥चलसीदिवसरैनिभी चलसी चल
सीजुगजमवारा चलसीकालब्यालपुनिचलसी चलसीस
बैपसारा॥२॥ चलसीसरगनरकभीचलसी चलसी भूचनहा
रा चलसीउषसुषभीचलसी चलसीकरमबिचारा॥३॥चलसी
चंचलनिहचलचलसी जेकछकीनांदादूदेषिरहै अ
बिनासी औरसबैघटषीनां॥४॥२॥पीवपीवआदिअंतिपीव
परसिपरसिअंगसंग।जहांपीवतहांजीव।टेक।मनपवनभव
नगवनप्रानकवलमांहीं।निधिनिवासबिधिबिलाससातिदि
वसनांही॥१॥सासबासआसपासआतमअंगिलगाइ।अैनबै
ननिरषिनैनगाइगाइरिझाइ॥२॥आदितेजअंतितेजसहजे
सहजआइ। आदिनूरअंतिनूरदादूबलिबलिजाइ॥३॥
३॥रुक्म॥रागदेवगंधार॥सरनितुम्हारीआएपरे जहांतहांह
मसबफिरिआएराषिराषिहमदुषियतहारे।टेक।कसिकसि
कायातपैंकरिकरिभ्रमतभ्रमतहमभूलिपरे कहूंसीतल
कहूंतपतिदहेतनकहूंहमकरवतसीसधरे॥१॥कहूंबनती

२॥सतरामकरणी॥ आपनिरंजनयूंकहैकोरति
मेजनसेवगहैनहीं॥टेक॥ आगसार टेक समकारनसबप्र
कटै आपाआप निर मान मदा अषंडतजधरैबोलैजग
१ अंतरपटजीवैनहीं तबहीमरिजाइ बिछुरेतत्त
नरूं जीवैजलआइ२ पीरनीरज्यूंमिलिरहैजलजल
हिसमांन आतमपानीलोनज्यूं दूजानहीआंन३ मैं
सेवगहैनहीं मेराबिसरांम मेराजनमुझमांहिषा
लिरांम४॥ सरनितुम्हारीकेसवा मैंअनंतसुषपाया॥ भा
गबडेतुमभेटीयाहूंसरनैआया॥टेक॥ मेरीतपतिमिटी
तुमदेषतां सीतलभयोभारी भोबंधनमुक्ताभयाजबमि
लेमुरारी१ भरमभेदसबभूलीया चेतनचितलाया पारसमूं
भया उनिसहजलषाया२ मेरोचंचलचितनिहचलभयो
अबअनंतनजाइमगनभयोसरवेधीयोरसपीयोअघा
इ३ सनमुषकैतेसुषदीया यहकृदयातुम्हारीदादूदरसनपाव
ईपीवप्रानअधारी४॥२ जगतिमांगूंबापजगतिमांगूंमूंने
तारानांवनोप्रेमलागो सिवपुरब्रह्मपुरसरबसूंकीजीए
अमरथावानहीलोकमांगूं॥टेक॥ आपिअवलबनोतारा
नांवनो जगतिसजीवनीरगरांचूं देहनेगेहनेबासबें
सारौ हूं आसांनहीमुक्तिजाचूं२ जगतिबालहांमरीआ
१ अबचलहरी निरमलोनांमरसपानभावे सिधिनैरधिनैरा
जकूंडोनहींदेवपदमांहरेकांमिनांआवे३ आतमांअंत
नरतसितारहरीबापजी जगतिदीजेकहैदादूहिवेकोडि
येतुम्हबिनांआम्हेनांहिजीजे४॥२ जैजैजैजगदीसतूं तू
समरथसांई सकलभवनभानैघडैदूजाकोनांही॥टेक॥ कालमी
चकरताकरैजमकिंकरमाया मदाजोधबलवंतबलीभे
पैराया१ जुरामरनतुमथैंडरैमनकूंभैभारी कांमदलनकर
माईतदेवमुरारी२ सबकेपैकरतारथे नवबंधनपासाआरि
रयभंजनभैगतासबबिघनबिनासा३ सिरऊपरिसा
ईहमांमाहीदादूसेवगरामकानिरभैनडरांहीं४॥४ आज
हमारेरामजीसाधघरिआपे मंगलचारचहुंदिसभए
आनंद॥टेक॥ चौकपुराऊंमोतीयांघसिचंदनलाऊं पंचप
दारथपोइकरियहुमालचढाऊं१ तनमनधन
परदछणादीजे सीसहमाराजीवलेनोछावरकीजे२
भगतिकारप्रीतिसूंप्रेमरसपीजे सेवाबंदनआरतीय

हाली जे श्रनाग हमारा देसमी सुषसागर पाया। दादू कूं दरसन
या। मिलि निरंवन राया ४।५। चलि रे मन जहां श्रंमृत बनां
श्रमलनी के संत जनां। टेक। नृगुन नांम फल श्रगम श्रपार संत
न जीवन प्रांन श्रधार सीतल छाया सुषी सरीर चरन सरोवर नि
मल नीर १ सुफल सदा फल बारा मास नांनां बांणी धुनि प्रका
स तहां बास बसि श्रमर श्रनेक तहां चलि दादू इहि बमेक
२।६। इहि परम गुर जोग श्रमी महारस भोग। टेक। मन पवन थि
र साधि श्रवगति नाथ श्राराधि सबद श्रनाहद नाद १ पंच स
षी परमोधि श्रगम गम ग्यान गुर बोधि तहां नाथ निरंजन सोधि २ सत
गुर मांहि बतावा निराधार घर छावा तहां जोति सरूपी पावा
३ सहज सदा प्रकास पूरण ब्रह्म बिलास तहां सेवग दादू
दास ४।७।२१। राग श्रासावरी॥ तूंही मेरे रसनां तूंही मेरे
बैंनां तूंही मेरे श्रवनां तूंही मेरे नैंनां। टेक। तूंही मेरे श्रातम कंव
ल मंझारी तूंही मेरी मनसा तुम्ह परिवारी २ तूंही मेरे मन ही
तूंही मेरे सासा तूंही मेरे सुरते प्रांन निवासा १ तूंही मेरे नष सि
ष सकल सरीरा तूंही मेरे जीय रे ज्यूं जल नीरा ३ तुम बिन मेरे
श्रवर को नांही तूंही मेरी जीवनि दादू मांही ४।१। हलसी एक प
वण हारा श्रीर चलसी सब संसारा। टेक। चलसी गगन धरन स
ब चलसी। चलसी पवन श्रम्ह पांनी। चलसी चंद सूर पुनि चल
सी चलसी सबै उपांनी १ चलसी दिवस रैंनि भी चलसी चल
सी जुग जम वारा चलसी काल ब्याल फुनि चलसी चलसी स
बै पसारा १ चलसी सरग नरक भी चलसी चलसी भूचन हा
रा चलसी उष सुष भी चलसी चलसी करम बिचारा ३ चलसी
चे चल र दिसी निहचल चलसी जे कछु कीना दादू देषि रहै श्र
बिनासी श्रीर सबै घट षीनां ४।२। पीव पीव श्रादि श्रंति पीव
परसि परसि श्रंग संग जहां पीव तहां जीव। टेक। मन पवन भव
न गवन प्रांन कंवल मांही निधि निवास बिधि बिलास राति दि
वस नांही १ सास बास श्रास पास श्रातम श्रंग लगाइ श्रैन बै
न निरषि नैंन गाइ गाइ रिझाइ २ श्रादि तेज श्रंति तेज सहज
सहज श्राइ श्रादि नूर श्रंति नूर दादू बलि बलि जाइ ३।३।
३।२४। राग देवगंधार। सर नितु म्हारी श्रायो रे जहां तहां ह
म सब फिरि श्राये रे राषि राषि हम तुम्ह पियत्म्हारे। टेक। कसि कसि
काया तप फेरि कीरि भ्रमत भ्रमत हम भूलि परे कहूं सीतल
कहुं ना ... १ कहूं बन तं

रय फिरि फिर याकौ कहूं पीर परबत जाइ चढै कहूं
त्ति परे धरनि परि कहूं हित आपा प्रान हेरा ए अधम पो दसनि
कटिन सकौं ता थैं तुम्ह तजि जाइ जे राहा हाहा हरि
न करी दादू बहु अपराधन रौ ३॥२॥
रो चरन बिन चलिबौ स्रवन बिन सुनिबौ बिन करि बे
जाइ हो टेक तन नहीं जहां मन नहीं तहां प्रान नहीं त
हो सबद नहीं जहां जीव नहीं तहां बिन रसना मुष गाइ हो॥१
पवन पावक नहीं धरनि अंबर नहीं उदे नहीं तहां लाइ हो चंद
नहीं जहां सूर नहीं तहां परम जोति सुष पाइ हो॥२ तेज पुंज सो सु
ष का सागर झिलि मिलि नूर नहाइ हो तहां बलि दादू अगम
अगोचर ता मैं सहज समाइ हो॥३॥१॥२६॥ राग सोरठि॥ राम
जी जिनि न्यारा पोढ़ दम कूं ता थैं करूं बीनती तुम कूं टेक
चरन तुम्हारे सब ही देषूं तप तीरथ ब्रत दाना गंग जमन
पास पाइन कै तहां देहू अस्नाना १ संग तुम्हारे सब ही ला
गे जोग जगि जे कीजे साधन सकल एई सब मेरे संग आप
णौ दीजे २ पूजा पाती देवी देवल सब देषूं तुम मां ही मो कूं
... की दीजै चरन कंवल की छांहीं ३ ए अरदास
दादू तुम्ह बिन और न जा
नै रा पी चरन न्येरा॥४॥२॥ अजहूं न निकसै प्रान कठोर दर
सन बिना बहुत दिन बीते सुंदर प्रीतम मोर टेक चारि पहर
च्यारि जुग बीते रैनि गमाई भोर अवधि गई अजहूं न
ही आये कितहूं रहे चित चोर १ कबहूं नैन निरषि नहीं दे
षे मारग चितवत तोर दादू ऐसे आतुर बिरहनि जैसे चंद
चकोर ३॥१॥ बिरहनि कूं सिंगार न भावै है कोई ऐसा राम मि
लावै टेक बिसरे अंजन मंजन चीरा बिरह बिथा यहु ब्या
पै पीरा १ नव सत थाके सकल सिंगारा है कोई पीर मिटावन
हारा २ देह गेह नहीं सुध सरीरा निस दिन चितवत चा
तग नीरा ३ दादू ताहि न भावै आंन राम बिना भई मृतक
समान॥४॥३॥२६०॥ राग गौडी॥ आवौ राम दया करि मेरे बा
र बार बलिहारी तेरे टेक बिरहनि आतुर पंथ निहारे रा
म राम कहि पीव पुकारे १ पंथी बूझै मारग जोवै नैन नी
झर नरिझर रोवै १ निस दिन तलफै रहै उदास आतम
राम तुम्हारी प्यास ३ बप बिसरे तन की सुधि नांहिं दादू
बिरहनि मृतक मांहि॥४॥२॥ निरंजन कूं रहै

गोदीसैंसो बिनसिजाइ गा प्रेमसागर प्रमोधारे वो २७

बैरागके तेज्युगनरो टेक जागो जगपतिराइ हसि बोलैनही
रगटघूघटमां छिपरषो लैनहीं १ सदकै करूं स
ब छाडूं सब परवारते रेकारनै १ वारू पिंड प्रान पाकं सिख
ईना वैराम सो सेवाकरूं २ दीनानाथ दयाल
जनदादू बलिबलि जाइ सेज सुषदी जीरो ॥४॥२॥
रीनेदनकी जीरो ज्युं करांम पियारा माया मोहन बंधीरो
टेक बिषीया रंगराचै नही नहीं करै पसारा देह ग्रेहप
मैं सबै थें है न्यारा आपापर जाणै नहीं नहीं मैं मेरा मनसा बाचा
मांना सोई सबतैरा १ मन इंद्री थ्रिर करै कतहूं न
बिकार सब परहरै मिथ्या नही बोलै न १ रहै निरंतर राम
रिमतिरात्ता गावै गुणगोबिंदका दादू समाता ॥४॥
३॥ राग बिलावल ॥ बार बार तन नहीं बावरे काहेकूं बाद
बिगसत बारक झूनही लागे बकु
कलेरे नागबडे नावधरि कीना क्यूं करि चिंत बनावैरे सो
बिषै मैं डारे कंचन छार मिलावैरे १ खं अति जाने बकु
अबके जनि डहका वैरे तीन लोककी पूंजी तैरे
सो आवैरे १ जब लग घटमें सास बास है तब ल
का हेन ध्यावैरे दादू तन धरि नाकन लीया सो प्राणी पछितावै
॥२॥ सोई साध सिरोमणी गोबिंद गुण गावै राम भजे
बिषीया तजे आपा न जनावै टेक मिथ्या मुष बोलै नहीं
परनिंद्या नाही औगण छाडै गुण गहै मन हरि पद मांही
१ निरबैरी सब आत्मा पर आतम जाणै सुषदाई समिता ग
आपा नहीं आणै २ आपा पर अंतर नहीं निरमल निज सा
मतवादी साची कहै लै लीन बिचारा ३ न्हैन जिन्यारा
रहै कहू लिपत नहीं दादू सब संसार मैं प्रेसा जन कोई ॥
४॥१॥ हरि बिन निस्चल कोई न देष्या तीन लोक फिरि सो
धारे है के धरती गगन पवन अरु पांनी चंद सूर थिर नाहीरे
निदिवस रहत नही दीसे रोक रहै कलि मांहीरे १ पीर पैक
बर सेष मुसाइक सिध बिरंच सब देवारे कलि आया सो को
ई न रहसी रहसी अलष अभेवारे २ सवा लाष मेर गिर परब
समंद न रहसी धीरा रे नदी निवाण रहत न ही दीसे रहस
सी रांरे ३ अबिनासी वो रोक रहैगा जिनि रे सब क
छू कीन्हां रे दादू जाता सब जग देष्या रोक रहै सो चीन्हारे ॥
॥४॥२॥२५॥ राग बसंत ॥ मोहन दुष दीरघ तूं निवार मोहि
ताबै बारबार टेक कांम कठिन घट रहै मांहि ताथैं ग्यान

।पूदपीजणांनलारैनाईपीजणां नैला।करमनलागे
।काजजलाफला।टेकरसनारूईरामरसपीजणां।फद
।परमपदपूणां कसणींदई गुटीगईसनकीतबकीम
।पाईहूणां।२ ततकला चितचमरषचरषामनसाम
।बंधणां।सुरतिसूतमेंजाइसमायो तब्रह्मलटिअपूठी
आणां।३ तनताणांबुधिबाणांबावेगी।नली नाकिनरपू
।पांचपचीसूंजोडे तोडे।वरकवणींको ईसूत।४धोबीधो
।सुरतिकरि माब्रू।अबधिकूंदीकरिकूटी तनका तप
रिदागगमाया अबधोवणां।सहूटी।५ नूमलनाकनजो
तुमनोका सूरणा बुसन अधारा।दादूदरगदेजाइ मदेंता
अमटनयापीजरा।।६।।४२।।इतीदादूजीकीवाणीफुट
करसंपूरणा।।रामरामबांचे बिचारे जाकूंराम रामसं
श्री निरंजे नाइ अथवावा कबीरजीकोपरचोलिष्यते।।का
सी बमै जुलाहाएकु हरि भगतनकी पकडीटेक।बहुतदिना
सा किनमें गईया अब हरिकागुनले निरबहीया।विश्रनावागी
बोले थबैनूं बिनानदरमनदीया।जैनूं मालातिलकबनावोतो
नूं हमारा दरसनपावो।सुनलोमानहमारी नीती।मालापाके
केसीनी।।नीतो बानी बोल्यो रीहारामा नेदये रजालेहार
मानेदनदेषमोही।कैसेरखूपाकेमोहा।रानिबसो गलामेंजाईबांम
कहे अरुनेद्युपाहीं।मनके हिरदे बह्या।जवावाकबीर अपने
घरिगिआवा।माला नीतीतिलकबनाया।कबीरकैसेस
नकामाया।लोकजातदरसनपाई।कूटबसेनननमधीमिलि
रोव।विकलनया।काहूघरषोवे।सकामसीनाहमाराभता कु
लमारो मात्रोरनिवाणा।तबकबीरकैलागीडाला।माथेति
लकगुरुथरिमाला।रकबीरतूकिनमरमाया।यहपाषंडक
हांपेलमाया।अपनीराहचलेगतिहोहूं।हीहूउरकेबूझिले
रोही।अबेनामयासकलसमारारामानेदलागईपुकारा।
सुमलमानजुलाहाएकहरिभगतनकायहस्योभेषकिरा
षकरेजभकूकेदेहेनूफ्यानोनेउमारोलेही।नवरामानेद
उरनबुलाया।आगेपीछे परदादियारे कहि मालाकबदी
नीतोही।अबरेनांव हमारा लेही।रामकह्याअरनेद्यापाके
हमेकह्या अरहउमेकहाका।तबकूं अपनेघरिजशिष्यापा
आनेदमंगलप्रेमरसपाया।रिमूंलोरामकदेसबकोही।

+इमरलिकबसेगेलोमेंजाई सेवगसहतनुमलिकसेआईं+दो २

क्रिया करी है सारंग पांनी ठाकुर म्हारी अैसी करि है अब
अ कबीर का देह रहे ॥ दोहा ॥ तांना बांना छाडि करि र
चरन चित लाइ अब तो राम दया करी कपि परि समर तना
चाय ॥२॥ नगन बुलाइ सहीदो कीन्हों कछु नरायांस
गये दीन्हों कोप्या बांमन अरु संन्यासी कहन चल्या क
बीर की सास्ती राजा कोइ देग यो दरब देषा ल्यो मुडन को
सबै राजा पास बडी जो ना बांमन कहा या क्रिस्मो ता
कछु नरायी बात हमारी नगर मो कते इकु निकारी यक
कहे नो कथरि कारो ता तें मिटै हमारो औंटो। ये क कहे हम
तिन्ह परि बरि है जो कबीर को ऊपरि करि हैं। अैसें रस कूर
नही आरि कुने नगर में सबनि धायो ऊपली च कुलौ
सन्यासी कौ निगरेष न उमरी कासी चकै दिस बाधरवैदी जा
इ। न ब कबीर सनमुष न यो आई। आदर करि नी को बै
सार कैसे मया करी मग धरि बांमन को धक्कै इरकारै नि
कसि नगर मा ना तरि मारैं। कोन चूकै ते मारो मो ही राम न
मचिन राष्ट्र पौडी कि से बाट ज्यारि मारी कैसे न को घरा बै
नारी कैसे घर काहू को फोरयो मानस मार्यो कै धन चोरयो
नगति करी ते हम न बुलाये मुड लोक सब आनि सिमायो अ
ब तौ हमें रमाइ रहै ना तरि हम तुम लाग नहैरे गा गाठी गी
ज बही देपा कहून कहे कबीर ब बेको अब तो नाज सही
घर माही लि आ के उमरौ ठौ षाही इन नी का है कबीर टरि
गइ अ। कैसा कैसन सामो नइ जु। सबह रिकी न्ही कबी
र की कथा अनि दरषि गै ब का धुरा सोई दरब तो ता को वा
नो जाति जाति का सो घा की न्हो। सदा बांवर षोइ ब कुला
स कलर सोई घृत म हेता ज नो च्यारि मजूर न दो घाल्या सि
इ सो ज ले घर के चाल्या। बांमन देषि न यो सुष नारी को इन
जाने घिर न मुरारी तिन को मह मा ब क्रन ब दाई जन ने न
के मेर अदाई ये क कहे तु लहे निधि पाई। सो हि बां न षे कहे
रजाई रे क कहे नी को रे नीको। ज नीकरी उदास है जी को
बोरा पान देन सुष पावे। तब कबीर सब कै मन भावे। भि
ष्यो को धरवार प्रसब ब नई या धनि धनि करि अब ते घरि गइ
या ॥ दोहा ॥ साचो जग न कबीर है कासी परगट आइ। जा
वा को न घाकैर सोई नर को जाइ ॥३॥ चौपई जहां कबी
र तहां हरि गई या। अणपाहि बाण्मो बांमन गर ई पा वे गा।

कछु करै रमाई। काहे न रे कबीर के जाई। सब काहू के
रसोई लोपि कोली साडे सोई मेरा बाबर मेर अटाई धृत मह
न आस पाइ घटाई। बामन अरु सन्यासी लीनी। याहे षा
महा कदीन्ही। इतनी सुनत मय पा सुष मारी। के सोरा षी
नइ मारी। सब कबीर अपने घरि आयो। हरि को चिर
काहू पायो। बहुत भोग देषी घर माही। अजहू बामन
लेगो ही। धनि धनि बोले सब कोई। दास कबीर है सुह
दे धनि सघु घ हरि के रतामेरो। कनौ सदा हरि जी को चेरो
हरि बिन कोगा बडाई देहा हरि बिन को न अपनौ करि
होत सु कबीर के नरली लागी। नई परतीति नरम ग
मागी। प्रेम हहल हरि के गुन गावै। लोक हरि ने टरसमा
के सीनो हपी कपरो देहा। दास कबीर कछु नही लेही
जन नोस्म इस नो ले ही। साव सहत जो हरि जिन दे ही। रा
म रंगा को रहरयागे। ... अधिक जाता लागो। दिन दिन
रहो त अधिक को ही। ... कारन चित चलि जाई। त बके
बोरो कछु पि बिचारी। लोक स माई धरु उतारी।
सने ग निका के गाई। ली नी सगि अचेना नरोक।
हाहरगनि का के घाली। गनिका मिलि कबीर सगाचा।
नीर को रहे चरनो हि कलीनो। सहके धी षेक रिक रघी
गोहु बाजार माहि नी सरघो। ... नौ स्वान सबै ... हा
को रे नगर को लोग। हरि जिन के मनि उपज्यो सोग। बा मन
बनी या बहुत निगो वै। हरि जिन देषि देषि मुह गोवै। मग
नको या बाहे सब को ही। नीच जाति ने कैसे होई। जिन दस
नगरि कबीर को नी अब देषो गनि का सगि लीन्ही। च
ल च ... कबीर गयो जहा। नगर को राजा बैठोत
जो रहै तो आगे हो इलैलो। दारि सिघासरा आसन देतो
साहि न आदर कछु न कीन्हो। सना के बाहरि बैठ नदी
सब ही के मन अचार जमा ऐसो मन मत्त बिगरि कैसे
हो। दोहा॥ भयो अचंभो चार मे। सब को करै बिचार।
... सिर पर मिस्सन खारा ॥ चौपई।
तिहि औसर कबीर जल दारयो। हरि को पडो जरत उ
तह प्रेम हो न रपती। कहो कबीर आपनी गती।
हचर करि उम दिष लायो। ताको सरस नह मह पायो क
कबीर सुनो हो राई कि स्यामसुन्दर को पति आई। जग

कौ पंडो जरी यो। पानी कुटि पाव परिपरी यो। सो जलसी चली
यो मैं राख्यो। इहां यहां देखू सब आयो। तब राजा मन बकौ
।माचौ कहे कारमकं बाद। जगतनो कभैसे समभावे। राजा
मि माचे भयो अस्त्र गाभ्यो। बोलो कबीर कहै
सो के मैं डोले। राजा पानी उरना लिषाई। घरामहो रमनलिमजाई
गंगा थसोई जमांचताया। जब कबीर अयने घरि आया। दिन
दूसरा नाथक नामाई दाधा पंडा लीया बुलाई। कहु पंडा अय
मति नाऊ कैसे जरयो उन्हारो पाऊ। पंडो कहे यसा वत्तजरि
को पानी कुटि पाव परिको। तब कबीर राजन लेधायो। कृपाक
पग आनि बुझायो। इतनी बात सुनि हैसमी। कौन कबी
रो तुकैसो। जाति जुलाहो कासी बासी। सबको जानें हरि को
अगोनाथ कै दरन आवे। इरषि हरषि हरि का गुन गावे। सो स
हम देष्यो जब ही। पाव जरत जल डारयो जबही। तब इन
मन आन दक्षीनो। पालेटि यानी पर कोदीनो। दिन दसमें
लिआयो। लोक नगर को बूझन धायो। इतक रहो
भेद हम पंडा को कायोन भेद। पंडे दमलूक ही गुसायी
मगुमस कबनराषी। तब राजा मन विलषो नरेक
६ रजन गरौक। जाह कबीर के पाव परिके। येमह
रमन जानो तब मैं हे सोलीला वानो। राजा रानी बूझ्यो मा
ई गुकथा करी समभाई। रानी कहे बार जिनि करिके। आ
चरन कबीर के परिकै। राजा बोले डरयो भारी। आपदे
ले नउबारी। अब कबीर के मिलि रेजाई। नहीतर कछू
हि मलाई। कोन नेट लेमलीरेजाई। इरस्ब देष लोउरे
दासा। कथ ऊदारी घाति के माध्यानि गाको मार ऊटे चमहर
राजा चलेपा कासी को निगहार॥५॥ चौपई॥ बरसिंघ देब
घेलो राजा कबीर का रीमा घोई लाजा। इरिहीत कबीर उ विध
सीरानारेषि घेम को आयो। डारिडारि माथे को बोझ। मैरेम
नमैं नहीं कोध। मैं रवैन मै नाऊ मै रंक न मै राऊ। राजा
जाइ डंडो मगु कीन्हो। अंक माल कबीर करि लीनो। ऐकय
तराजा गाहि रहोयो। इञ्जो पाव उरट बसबलहीयो। वकमोसां
भी चूक हमारी। तुम बिन कोन करे रखवारी। हम द्रिपा विजि
नि टेक गुसाई। बार बार कहो का बनाई। कहै कबीर ना
ही उमहकीन्ही हमको आइ वडाई दीन्ही। बडो जु अवर हि
देइ बडाई। ब डो जु बाटि बाटि धन षाई। बडो जु माचफ बप

हिवाने म रिषकहा बडाई जाने राजा के मनि आनंद भो के थ्
सेयाकु अपने पुरि गो कि । कबीर अपने नांव मिटावे कुल
सो गरब हुवो वे । हिंसा हिन यरागर हो न है मोहि करणी के मे जानी
होइ ऐसे को अपनी करे बडाई । सुपन पावे म लोर जाइ । अ
सो हि च अपने करम रहे । के मे का मनि टेरै टरे । ऐसे मम
रहु नाना हरि हम स्यानि तिन मारग जाना । बहोरि कबीर को चरी
बडाई छुनी यांदर सन देव नाथिहे । ब्रिगरे का रिजराम सुधा
ऐसो नत बडस राम हो गार । काजी मुला करे उपाधि । बांमन
बनीया आनि अपराधी । हिर के अरु मारन त कवे समकि
समकि अरु मन मे ग्रंथ वे । ऐसे करतब कहे ते दिन बीते गये
कहे कबीर दिन बीते । अब कबीर की माता षोटी । जगति
माहि पकरे चोटी । बहुत सहन करे दिन रारी । धनि कबीर मो
कु महारी । ताह रिबरी अरु घर माही । रहे कबीर राम की छांह
जाति को तीरथ बन मताह । आहि ऐसे रिद रिराषन हारू ।
कब लै ऐसी के आई । विधि संजोग नने ट्रोजा ह्वै । मा हमिं
हरकासी आया । काजी मुला के मनि आया । चले फिर दी बा
न लागे । बांमन बनी या मिली या नाही । अरु कबीर की मा
टोरी ससके नही मर्तु मनि बारी । सब मिलि आउ रवाह मुका
जाति कहत का मान समास्यो । कबीर को रह्या करे भगवंत
सोजन गावे राम अनंत । तेता नाह मि कहरंगी तो मि
[illegible]
कहे मि कहे दर क्या हे नाहु । गो वपरि गना लीया छिनाई
वपरि गना नाही लीया । फुल है रोक अमारग कीया । सुमल
न की छोडी री ती अहं हो रको मानेंथी ती नाहे नी रवमि
बड तिहे नो गुहमुरिग चंडा निदय करति है माहे नि दे स
रहगा गायनि राहु निदरमार मि हो मस राधा नि दे बामन
गआराधि निदे मान पिता को भेवा । बंदन मांनजी अक्ष
वहिवा निदे सकल धरम की आसा । घटे दरसन अरु
रहमाषा ऐसी विधि मलो ग हि गाया । होइ मुसलमान ते
ज्यारा । ताते हम न मांने कोई । जब लग जुलहा कासी होई
ऐसी विधि निवार हमारी नहीं नाय रहि मह मारी । मुनतौ
कहर उठो रिसाई । बरी हार हे रीया पगाई आनो वे गाबी
रज्ञिनि टेर्दु नाहि भारु वीनती करे सोई जाह यहीं यारे बा
सनाई । मिहमि कर रहु लावे नाही । हमहि सिकर रका है गौ

कौन कह्यौ कै सैय हद्यौ तै तिरी मारहु यक्षा ईरवरी काजी बांमन
म हत्त प्रकारी समझि के बोरव त्यौ मन माहि। सौ न चल्यौ अब वं ति
ति वे मोही मम संतन के दीयो परमो धू त्रम मिनि करो दमारो मो
धू अति अंतर करि असुर भया या तब लग दोइ जनां आहि अ
या। है कबीर मरो तहां कौ न्हो जहां सिकंदर ड्रेरो दीनो दहमा
दूलो मन म थलोजे लायरि माला मिल कबिराज मुसत बचन अ
रुनि रमत नैनौ। मुख तै नि कोममी न लिबैतो तब काजी बोले सब फा
हि कर रत मलो म दिवाने भाई। हु सलीम कह्या करि जानो। मुनि
मि काजी होइ दिवानो। कहे सिकंदर अब थी बाहा फु तोहि देषूं
आ ज्ञाता राह छाडि तै गही कुराह है क्यू बे जु लहा को नै बाहा।
अपनी राह चल्यौ गनि हो ईद हि इह तुरक बूझि लेदोई कबीरा
बोले बचन बने शू सकल स मामृत के भी हे शू दोजिग परे अस
असहीं ए काजी सुलो। अरब डतूदो दमतो भगति मुकि तमे अ
री गुरुपर मा हिरां म गुन्यारी। राम नरो मे गिनंदि नका जू सब मि
लि रमारे कहि मारू।। दोहा।। राघन हा राराम द मारि नम के के
इ या तिम दिह नाडरी करना को सम होइ।। ७।। चौपई।। काहे
कले बद थाव काजी हिचिविहि विवी न लाहे हैं नाजी मालानि
ल कशरि कर डारी पीछे से पय रु कारि मारी ने हब रज्या सुने
सब कोई मुसलमान जो काफर होई क्रिक हे कबीर समझि क्यू
न करि हित्र म हो काफर तुम हो मरि हू को न कते हु जुगा हू के
टाई बकरी मुरगी कि न फुरमाई जिन ला देप आत्म घाती ति
न नो कीम मनोई हाती। रूजा परजा नरक म सेही राज कहे ति
न कोने नोही मुन नसि कंदर को पढी करा। जो सो हत घालि
आतिन तुचरा। जो नो का रको पूछ म शरा। जा नो मो बत माहू
नीर थरी जो नो बैठ दरमे त्यौ हो ली। जो नो चीत की आधि छ
री गाफि ल संक न मानें मेरी। अब देषूं साची करा मानि तोरी बं
धि या मैल्यो गंगनी रु। ले बो यो गंगा के नीरु। ड्रुक सक र तक
बीर मन तूली नौं प्रफि अगाध गंगा के दीनौ। छूटि जंजीर पर्यो जल
माही। लागो तिर न बूडि गयो नाही। क्रोध भर्यो असुर सू नाये
ग लेमरह्यो अब को राषो। बकुरि बांधि मिदरमें डार्यो। आ मि
यामि लेया वकनार्यो। न पो कृपा सन जे तेनी रु। हरि हरि उर
मैं राम कबीरू। कबीर को कर सनो हरि की ल्यो। यहे मप कर थ
ग लागे ध्रुप को न्यो। ना हि गयो मि दरषे उ डांनी। मही के रामा
न प्रसन जानी। अधिक रूप ना राइन दोन्ह्यौ। देह उ बदि जल म

[illegible] जैसे कारज यो जग माही । काजी [illegible]
[illegible] माह [illegible] करत [illegible]
[illegible] कबीर [illegible] को न मरे सा । [illegible]
[illegible] आपनी [illegible] आया [illegible]
[illegible] सोने मा [illegible]
[illegible] । सोने आं [illegible]
[illegible] नगर माहि [illegible] न पावे [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] पंथ चले [illegible]
[illegible]
[illegible] आगे न ही आया । [illegible]
[illegible] कबीर [illegible]
[illegible] । चौपई । [illegible]
[illegible] कौ दरसन [illegible]
[illegible] माह [illegible]
[illegible]
[illegible] कबीर राम [illegible]
[illegible] । काजी [illegible]
[illegible] कबीर । चरन सरन [illegible]
[illegible] । तो हरि [illegible]
[illegible]
[illegible] करि [illegible]
[illegible] काज [illegible]
[illegible] आपनो [illegible]
[illegible] कबीर के पाइ । [illegible]
[illegible]
[illegible] कहै कबीर न हीं [illegible]
[illegible] होइ मन [illegible]
[illegible] जन कबीर
आपने घर आया [illegible] काजी [illegible]
[illegible] आपने घर आइयो कबीर [illegible]
[illegible] कबीर को [illegible]
[illegible] कबीर । चरन सरन [illegible]

वीरूद्यानिमाहज्ञबकसगीदीन्हो।मेरेमनमेक्यानकीन्हो।(
ननिरगनमकोबलहोई।तिनकोमारिनसकेकोई।कोटिप
पायहरिनामनिनमोवै।जगतिनपीछेहरचलिग्रावै।जेहरि
नामनितेरहैन्यारे।तिनकेगंननहीरषवारे।जेनातिनकोनि
हाकरहीकै।जीवाकपायलेयरही।जेनगननितोकरेंजोगी।ति
नकेगलितमदेहकोली।मकलजीवमेंदेषरामै।हरिनगति।
सुनामेरेनहारकोमै।पुरगोबिन्दजानदेमचीन्हो।मानेमेरोकै
मनकीम्रां।दोहा।जल थलमयापावककानेरया।विनभ्यानसीम
रीरंगजतोरतहरिराषीयो।निरनमयाकहीरा।ध॥चौपई।
यहपरकारकबीरभवारा।जहांतहांहरिनयारषवारा।ध।
कुरिसमटिमतबोमनकीन्हो।गुलहेमनवहीमदुषदीन्हो।।
परपंचरोककीयोग्रनदानै।छलबलनकवेग्रपनीबाते
बोननपकुंकोमुंडमुडायो।मालातिलकसोगपहरायो।नि
न्हेमीपदेगुपतचलायो।चकुंदेसकोनगनबुलायो।।टी।
म्पोरलकबीरकेनाऊं।ग्रमीकोसलगजितनोगाऊं।मा
घुमासपहलेपषबोरे।नोमीकेदिनचलेसवारे।फूठोदलर
न्होसबकाहू।वेगिवेसनपंचमीग्राहू।दासकबीरमहो
छापारी।सबमेननकीजोवैबाटा।माघमासिमानिदलतले
न्हो।पाषंडनेधनकाहूचीन्हो।ग्रैसोपरपंचकीयोबोननो
घरिग्रारोननबहरिषमन।तायोवेहरिजनचलग्रारि।ग्रा
नोभावसरुतिबादलधारा।वीमकपाइनतेयनिलेहो।वी
सकेवेसीघनदेही।वीसदिनानहोग्रावेग्रन्त।मोजसगा
वेदामग्रनन।मनगुषचलेनारिनतीहोई।पगनारमिले
सबकोईगुननकबारगुपतकरहोयो।मनमुषनाइक
वेबातनकहीयो।सबमेननकोग्रावननईयो।सबके
मोग्रपनेपरिलीन्हो।कोटिकलाकबारकोचीन्हो।इरेडे
रेग्रादरलीयो।जोजमनमजो।मोनिमदीयो।कहाकहोगावै
ग्रहगावेहरिकाचिरतनकोईयावे।दिनायचलालीला
कोन्हो।तायोवेपहरावोदीन्हो।सबकोचिवादीईकरिम
ककयावनतमयोविरेवनशक्ं।मोहिमिलिकवीरसुषदे
योजीवनजनमप्रफलकरिलेयो।रामकवीरसदाबनि
ग्राई।तोनेवांननरहगिमाई।वरसयेकवीचोदेहनवही
हरिग्रयकरायदईतवही।टेषोनाइककवीरवरतेरा।वसेवन
रसीनिरंजनकेरा।छलबलकरिलाजोग्रंगलाई।वारबार

सा हेत सिषाई। आइ अपछ रहै दिषाई जा गुरषदे
आ हैगा को रूपनपूजै कोई मधुरै बचन सुनावै मोई चंद
वनावि छिपिव करही। मानो बन विहरी हिरना फिरही चित
सबनि को हरही। मानस कहा सुन्या नपरही। हो हा। पां
डे वस किया। जोगि जती याति मत न कवी रहरिका मा वं
तागे बधा मसु नत। चौपई। धनि कबीर मनि नही रां
रिका वरण कैवल सम चाषे। काम चेष्टा ले ले बोले कबीर का
मन कै से डोले। हम सूं अमर को नमगा ता जल में अगनि ला
गा गा। मो तै भ्रम रूप ना ष पना डांई। देणा महा तम मु हम को आई
मोहे मना मक मीन हमारा जहां गाके म हा रा ज के
मोह के पूरण बारी। अगर के चोवा अरक तबादि मकरंदी
गरा आ के कीजे। पाथर के मे पाणी भीजे। नी ची दिष्टि क
रूहा रीहू ष मा मे रा रूप निहारी। कबहू कारो का हू न ही पाई से
हू सुना रे महसै आई। कामी के तन रमाग पिरा गु नेम
कोने फार गुणा नी हूद मह ररे करही। कामी कर मन ले ले मर हे
जा लगा घस सेई बूझै गारू। मोन मेर मह जन रतारू रा कबीर
कोहि कम्हारी रोक धूरा मा दि षो हि म रि जा ही रोक गाइ दि
था ते सीमें ते कनमा हि अग छारी फो जब लगली पान
रा न बल नरू कूवाजन मतो म्हारा हू तनी मानो वा तर मारा ब
ते न ही रा षो हि न घारी न बक बीर थोले सम फाई हूतो कि
हू मिरी माई। हरखा लोकन के मे सारू के से करी हमारी वाही
दि गा हे वो तु मला नन म हि हानी च टे वि म तिस कन करहू व
क मि ब क मि के कहे निहो रा। मेरा ष्या ल म र न हो इ मेरा।
न को न को कहो। कराने अब ही राम राम बहि जाके मिरहि
घु न लोक माई सा हि ब मेरा प रा रिसाई वाको त्याव न आवै
हू ने न बे न हि ल ताग ते मारा ह रिसो बोध्या ज्ञान हमारा
तिजिनि करी तुम्हारा आसा। ता को निह चै नरक निवासा।
नर तु म सू प्रीति लगावै। सो पह्या व सव नि पार न पावै। घरि
क कहै षरा हारी। त्यों त्यो चल्यो सरप के मारा। सिर घट
ता हा य रिडा रया। बकु रिस तजी न म लि मारया। औसा मनि पछि
ता वा हो इ तेरा संग करै न कोई। क्रोध्यो टारमा हो कारो।
जा न्यो मिष्ट अहारो। काटि पिटारै मा ही न रा क नि का लि न दे
छै दि के हू ग रो क। औसी गति ता हा की [illegible] हो हि वै रो स ग
इं बाड़े माता आस हमारी। सु रग लोग कहा परा क जारी। दो

हा॥ बहोतजतनकरियचिरही तयाकबीरअडोल गई अ
पछोराघरिआपने रह्यानगतकावोल॥१४॥चौपई॥हरि
मोकह्योअपछोराजाई कबीरआगेकछूनवसाई सकलअ
गमोहिमोहनचाहा अतिकैडोनहीयांकथाहा जोएविपछिम
नटेकरांही परबंतटारेअधामजराही धूजेदसनदेहयघानो
नकैनकबाराहोइअयाना मायाकासुषतिणनपरलेषेजोमजु
गतिगारषकैसेपनवकेसोअपनोकरिलीन्हो दरसनआइक
बीरकोदीन्हो मंधचक्रगरासदमविरजै कोसनममरिगाप
नोबरसोजैन्योलतागरुडजसमनमोहे वेचनुमोवैजैसीमाला व
षमषमुदस्थोममरीरा ऊंजकलीदसनोधलिहोरा गजमोतीकु
लराकेगाऔसीमोतिबसेबकेवा देषतमीतलनयोमरीर
वरनकेवलगहिरसोकबीरू हरिसंपतिकोरुचितपगावे
तोनलोककैमुघरहुनावे मागीमागीमांगैल्यो मोई जोते
रमनिअभ्याहोइ कहैतोपकुमाकोपतिकरिहों माथेभत्र
अपलेकरिधरिहों कहैतोइंद्रलोकवेगारूं गणपसदाकेवस्
नहीटारूं कहैतोकरामातियोभारी जिरलगइनतअनुनछुटका
री कहैतोतोघामबदपुरांके यारहेसांटेओरसुनाके तकामरि
रषतेषिरकाई हजीटहीलेकूतगाई आवमिधिनवनिधिहो
देऊंकेवलामहतचरनहसेऊं कहेकबीरसुनोसुषदाई क
बनमांगौत्रिभुवनराई अलपबुधिहंमांगिनजानों सुषमाग
रकैसेपहचानों दीटीकौपरवतहीउपावे जंगमकौचंदरमा
छिपावे मोरनगडिआकासोजाइ अजलीकेमेमेरुसमाइ
बालकहाथसरपकोगावे मानामोहकरननहीयावे मिट
अगिलगावेजबही जननीमानृध्यानहोहजबही पुडेदलो
नीमहरोहनाई मतिमृरिषघरदेहजनमाई सुतअसुननन
गोनोबोली छोमीमेरमतिहेभोली हनीमुनिकेसोसुष
पाये धनिकबीरजमनन हुलायो तबहरिचाह्युकरमाथे
दीन्हो अजरअमरअविनासीकान्हो दिपरसाहसबेद्रघट
स्या निवनपतिबेकोवसिधारया॥दोहा॥निरगुनसरगुन
तेकहे सबघटरह्यासनाइ हरीयाकेरीलहरिज्यु रूपधरे
मिलिजाइ॥१५॥चौपई॥बालपनेक्षीममेगयो तीसबरसतो
चेतनभयो बरषसोलगकीनी नगानिता पीछेपाईहेमु
क्ति मरनाकेममिलीला थाटी सोधिलेईमधरकोयाटी कि
सीमुक्तिकहेमरकोईमगहरमरेसामिवहोई कासीका

[illegible] सिषाई ।। [illegible] दिषाई जो ।। [illegible]
आ[illegible] को रूप [illegible] पूजे कोई [illegible]
[illegible] करही ।। मानो [illegible] हिरणी [illegible] फिरही [illegible]
[illegible] नरही ।। मानस [illegible] तप रही ।। [illegible]
[illegible]
[illegible] ।। धनि कबीर [illegible] मनि नही [illegible]
[illegible] काम [illegible] कबीर का
[illegible] जल मे [illegible]
[illegible] हम को [illegible]
[illegible] महाराज के
[illegible] कबीर [illegible]
[illegible] पाणी [illegible]
[illegible] नही [illegible]
[illegible] कासी के [illegible]
[illegible] कासी [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] कबीर [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ग॥ बहीनजननकरियचिरही नसाकबीरअडोल गई
छगधरिआयनै रह्यामगनकाबोल॥ ११॥ चौपई॥ ह
ाकहो अबतराजाई कबीरआगेकछूनबसाई सकल
ामहिमोहनचाहा अतिकेडोनहीयाकुथाहा जोएविपछ
टेकराहे परबतटारिअघासनराही धूजेदसनदेहयपानी
केनकबीराहाहअयाना मायाकामुधनिशानसरलेषजेम
तिगामसबसैचनबकैसे अपनेकरलीन्हे दरसनआहब
रकोटीन्हे मंयचक्रगदामदमनिरंजे कोमनममन
बरसाने नगुलनागरहडामममोहैं बचनुजाबजैसीमाला
मधबुंदस्यांममरारा कुंजनकलीदसनाउलिहारा गजमोती
नाकेग आसीमातिबसैबकैवा देषतमीनलनयोमगरि
बरनकेचलगहिरसोकबीरू हरिसपनिकोहनिफयजावे
तीनलोककैमुषदमुनावे माया माया मायागिर्छ्यो सोई जोत
भनिअछाहाहर कहैतोपक्रमाकोपतिकरिस्हो मायेइन
अपलकरिधरिके कहेतोइदलोकबेगारु रभेसदाकबी
नदीयारू कहैतोकरमानिदोच्यारी जारनगईनउनउत्क
कहैतोमोधामबदपुराके यारहैनारदेओखुनाके तेकस
खलेमिटकाई हजीदेहीलेहतगई आनमिधिनवनिधि
कै केवलामहरनचरनहमेके सोहेकबीरहतोसुषदाई
नमागोतिनवनराई अलयबुधिहमोगिनजोमोसुषमा
कैसेपदचाने हीटीकोपरवतहीलागे जगमको चेड
छिपावे मोरनगेडिआकामोजाई अजलीकेमेसमदममा
बालकहायमरपकोगावे मानामोयकरननहीयावे मि
अगिलगावेजबही जननीमारक्षानहोहजबही सुडेली
नीमहरिबिनाई मतिमूरिषधरदेहलमासीमुतअसुजनन
जानेबोली औसीमेरीमतिहैभोली इननीसुनिकेमोसुष
पसी धनिकबीरजमनन मुलायो नबहरिचाल्यू करमाथे
दीन्हे अमरअमरअबिनासी कीन्हे दिपरमारस्मेवेदुर
ह्या तिनवनपनिवेकोवसिधाया॥ दोहा॥ निरगुनसरगुन
एकहै सबघटिरह्यामभाइ दरियाकेरीलहरमिम रूपधं
मिलेजाइ॥ १२॥ चौपई॥ बालयतोक्षेसभेगयो बीमबरने
वेतननयो बरषसोलगकीनी मगनिता यीछेपाईहेमु
क्ति मरनोकेमेमिलीलापाटीसोधिलेइमघरकोपाटी
मीमुक्तिकहमनकोछीमगाहरमेरमसामिबदोई कामीक

टै सबका पाप छूटि जाइ हरि को परताप ॥ है इतर को
ऊ सन्तारम्मो उमहो सो माही ॥ बोक के सामका फलमाप
ले ग्यापी सैन कराया ॥ मन बसन्तन मिलि नाचै गावै ॥ ताल पखा
ज सेह ख्याल रावै ॥ अमर नय पो लूट्यो ॥ नभरी सहा ॥ अथ पोस टेढ़ी
धीर ॥ सालन मोहि स्रुप सो मरिका ॥ फूलै देखि अपने घरी
ज्ञारि कबीर ने सुनि नाअन्न सोही ॥ रोक लोग बकन्त पछितोही
कबीर कीनो का मो अछियारा ॥ चेवो बिन दीन मतारा ॥ ब
रना मैं कुलन सनां ही ॥ घर कि नाजि बनारस मांही ॥ बस
रबिन टेक मन लीना ॥ कबीर कहिनका साहि नो जहां अलक
धीर सहलि आई ॥ तहां तहां चौगनी बड़ाई ॥ सिव बिरंचि आ
दिक तेती ॥ सुरपति हरि लिखि मन सेती ॥ दिन न कहे बे कोउ
ऊसारो ॥ वसो सदा ईसा बहु भारो ॥ सिद्ध सनेह करे बहे मेरा
यन करे कैमेर भंडारा ॥ सन का दिक मिलि बसे सगा ॥ ना
सो अपि हुआ ऐरंगा ॥ कहो कहं तग हरबहु प्रपेता तथा
पो रहस कहा ॥ हरि सबनो आपे गावे ॥ जब कोज मर देशी तिब
है ॥ नगाहन के सग लागो ढोले जग रे नन गगन के घटि
ह लनी का जाकहुं हरि केरी ॥ गा बजन्तु नन तकति हो रहेरी ॥
तर नारी सैगावै कोर्तें सहजे नवहु घवा वे साई ॥ नामे रंग
सो मारी ॥ सातत गहि तिन पूजै सब मारी ॥ बिच्या हे गावे
सो ॥ कबीर का गुण कहि बिसरि गावे ॥ कबीरा है करता को
मानि करत जहां सो जोगा नि रघुन बूझ कबीर विचार
ताहि उनके लोग लयारा ॥ सुरगन न गानि नमो सो नागे
गहि रघुन हिन जलो ते हरि केना गुन बरनो तेरा गा सब
न रहे मन में गारि यनि सा रिबा रिमन सिको जे ना रअग
लेपेनि लीजे ॥ मान समर का को जे दोनी बहु धीमी का
को हेनी ॥ मार है लिबबन आवै अंत का कहि गावे दास
हे ॥ दोहा ॥ दास अनंत कहा कहे हरि को कथा अपार क
हे कहा कबीर सतगुर के नयसार ॥ छिमा ॥ ११ ॥ इती
बीर सी को परचई संपूरणा ॥ अथ ॥ १ ॥ पति देव निरंजना ॥
थ नाम देव जी को परचई लिख्यते ॥ अलघ निरंजन
सो ही ॥ साधु संगति है सोग सोही ॥ समनम लोसी बेताल
बोले बेनर माला ॥ अन रनामी आनारी नी दास
था करि लीनी ॥ मो भ्रम आने अरबुसन सुपानी ॥ कथा नाग
आहि बुरानी ॥ लगनि है लि हरि के गुन गावै ॥ उरपर मार

परपंचु व [illegible] सवदवली सवहि
नाके सकु [illegible] दवि नवदे [illegible] तसही
यो इत [illegible] वहि [illegible] हय
नो [illegible] पवीकरि
लय [illegible] लहिसहली अयरवदया
वन [illegible] रहा दोइ [illegible]
[illegible] दी अयनेवषि
[illegible] दलहछिगायोघा
डी [illegible] वादी [illegible] लोवसा
रे परवेपन [illegible] पर हद [illegible] हाइ यो
[illegible] दहकरवा व द
[illegible] सेर सांगि अन
रकरे [illegible] दासी वदवे
तेरा [illegible] आपन
ले [illegible] सलाइ वा
[illegible] बोले [illegible] तेमासाय
चहि वताइ कृसन [illegible] तियाइ गोविंद वसारसिद्दिया
ह्मी सकल सिषु [illegible] नामदेव हैं [illegible] सिकोना
वी एकमादि [illegible] लसाधी अवरी कमाकेवा आनो
ओरलेयतका [illegible] वनगाया वाघन बोलघुसे घारा साचा
सबरमो मिलिबारा [illegible] रानन आवे सवलाध
रम अवेक दिदावे [illegible] लगरिव न करे [illegible] लोनि
नहोइ [illegible] लगरहे अ
धारामाही [illegible] विसाइ
एक दिन [illegible] सम
धरम के [illegible] पार विप्रवाद
सवमाही साधी [illegible] नाधी सिसकरिमे
वीपडो [illegible] नगर माहि [illegible] लोग कहे गुड
या अपराधी [illegible] कि नसाधी [illegible] मुपको
देषमा यी ऐसी [illegible] नामां का नरहे [illegible] ला
गा [illegible] नाथ॥ दोहा॥ आपन [illegible]
[illegible] कोइ कैसे बिना [illegible] के गिनिनी
नीसोंडा॥ चौपई॥ कहत नामदेव [illegible] मन
माथि अगनिमें [illegible] दि

गी कृष्णे रिमपेगा। श्री नन माथिन रनॅ बुलागा॥ ह
रउ ठिकरि नामा। धनि धनि नामदेव भला बाभागा॥ पा
डिसाह कि नमुक्ता।
सखो पारा सिमरी माहि। अनको मिलई। इघमा।
मलई। इनाधरमकै जिनिनाई॥
नाई नवले नामदेव भ्या रमिवाडी। जवनिगुन मगासि
रबाधी॥२॥ दोहा॥ रिकादली मजानहूं। अरमनतानी लोइ
मनलेबांधो हाटली मुक्ति कहा नेहोइ॥३॥ चौपई॥ माहरोक
पडरपुर माहे। बड्यो कुलाना। न्यो मवकाहे। दायादर बेमा
नि हमा नामा। पीछे पूछे माहमयानो। ऐब कोरदो नगरमैता
हूं सबनाई नामदेव कातुम्हिया कूं। आनो बैगि अबै मोपास
ब नवीया बोरहे निरमसा। रिकवुलाइ लदीहू पगावा। तीज
बोलनामदेव आया। ते हि हररबबोले रसाह धरमहमारे
सुफलकराका। हमतो नहीदरॅके मुघा। इसनी कहै नसाहरे
कहुया। पूजालि कहर। मजनमा ई॥ बिनटी याम रीयपि जाई
जेतुमलेहु वकुले अरु पोरा। जगमे नमरहेगा मोरा। नामदे
व कहैसुनि हो साहे। हमसो नाहीं नामदका कुमेरप्याल
धरेसनकाई। मेरली युगचूरा होई। तोनरहो तो इनाकरि
हो रहीरी कमेर करिहरे हाोसेरविधि कहसाई तुमसा नो
माना कहूँ लडीका आओ। तिहयान बरग्योहतुमसा ना। सा
हुम लेहु होहुतुम हना। छिमलैसटक सो समझाई इतनै को
का मांगे साई। लोना अस्थिया चकि वले फ़। पीछे हमको दी
लनदेहु। कहत नामदेव हरिहे ऐसा। टिछिनमासो करिहै केसा
सुसनी रावो बोलत सारा। चटैनुलामा होइ हमारी। नवतुल
सी कापानसगाया। टैपन लोगसहरका आया। यातमे लिख
रखाराना ये ससकलमिलिका नारा॥ दोहा॥ अरघ नाव
के पुलतरे देवी कोकछु नाहि सकल पुरमरि घिसिहि जिनी स
नाकहूँ केनाहि॥४॥ चौपई॥ घालिनराजजो षन लागे नया
श्रवे सामो वनजागे सोनो रूपा आवि चढावा मानिक मोत
होले धावा बडी तूलामे ले वढ धरीया। तकनहोइ बालसमस
रीपा हरवदाया जोघरमाही। वकुरि उधराले लेजा हो। जेताब
सीयालोते आया। तिनसब अपना हर वटाया। हलकायल
नधरती बाडे लोक देदके धरमहिषाडे। तावी छेवो लेसघना
रसाका आनरगालीया अनारा गा

सूताने घर मो थै। अमा बाजत बरसत बनी या। मंगल नित गावौ कौ
मनी यो एक हल नामदेव मन मगन भयो। अथ नामदेव धरम व
टाबैं नाम देव कहे मोई हरि मानी। करसंकल पलै यो नी। का हू
बो नन लाय जिमाया। काहू हो भट्ठा रकरा या। कौ हूजप तप
नी स्य कीनो। फल धरम तो अरपन दीनो। गई कलांतब माह
खिमोनी। ता परिबो नन होन रिसो जो। करै डेढो मठकृत मम हा
री हमगा जिनो हालसीउम्हारी। ले हूद रबउ घाकू लोमो। जो हम
री पौ दिया धेरी मो। हाम दिया यो कब उभसी मो करौ बडाई राम
न चीन्हें। जो उमपा तबुरा बरि लेता। तो हम दरब उमारा लेता।
अबवो बाका हिको लीज। तात उम्हारा लेउमकौं दीजो। नाम
देवदल ली या उबाई जा के बीवल स दाम हाई। बनो पै अपने
दरब उबा सा। अरध ना वकापर चाया या। इत्ता परचा कह थो दे
ता नामदेव कौं दीयों देता। महमा अनंत कहन नही आवे यु
कदास अनता गावे॥ दोहा॥ दास अनंत कथा कही नामदे
वतन सगाइ। अबजन वा हूं काबी रका। सुनो मकल चितला इ
॥ इति नामदेवजी की परचई संपूरण॥ ग्रंथ॥ १॥ अथ रै
दासजी की परचई लिषतै॥ नगर बनारसी उत्तम गाऊं। पाप
पुनी नहीं कहां के। मूवां न को इ नरक हि जांई। सकल राम पुरा
वे आई। सुरति सुमति कै है अधिकारा। तहां रैदास भगतिया औतारा
रा पूरब जनम बिप्र ही होता। मांसल खाडो नि षटि लि प्रो ता। तिम
अपराध चौ चकु लदी नां प[illegible] ममा चीन्हि जन लीन्हां ग
भैय मार पिता हमाई। सा षित कै घर जनमो जाई। कल पत
कल पत बेटा जायो। बड के नबनि अजायो आया। मंगल गीतन
कोम नि गावे। कुवते नरे बाजान बजावे। वि दनासनी लेले आं
वे। जेउ म उवो घरी करावे। बालक मरन राषि लेको ई। हमरे गो
न धन तर सोई। जो कर माह सो हम करि है। बहोत दरब ले आ
गे धरि है। ऐसी भांति रहे दिन च्यारी। बहोत अंदो ह करे मह ता
री। कुटंब सहत पिता दुष पावे। रैदास जिनम रिबो नावे। जी बा
ते मरि बो हे नाको हरि ते बिमुष जीवे नो फोको। हरि रैदास बिमा
र जे मन मो वे जम मे बिघन करावे गी रवे। कहा दास दरा कहा
धन बूदरे कहा दुरबल कहा मे मर्व। कापं डित कहा मूरिष
कोई हरि बिन राम नार कछ लि हि ही। निजम रिग्रो रैदास बिचा
रा हरि करन मे राषन हारा। अरध रात भरी गई आ कास बानी
सा रे मा न दली न्ही जानी। चमरा के घर बेटो जायो सो मे रौ न

श्री हरि आयो हरिजन क्रप्या करी समझाई जोयी
आई कृपा पूरन के हरष्यो देह। मालक मन तन राषि उमलेहु।
न रामानंद की यों विचारु। समझायो है सब परिवारु। जो उम
नगन होइ रैसाई। तो हरि बालक ले हजवाई। तब चमराउ
[illegible] तागो पाइ। मन माने मो कहि हृय साई। तब रामानंद ग
[illegible] मिलि के दीन्हो। मा तात लक नस्व
रवायो। पीछि ताके जल सब डरायो। सब हिन के मान न पाइ
[illegible] पान करे रैदासु। देह सब धायी बाजे बाजा घर घ
[illegible] तक जस बिराजा॥ दोहा॥ जन मनुन रैदास को सुप
यावत मंगल ता। करम का बंध सब कटै गावे दास अनंत
॥ चौपई॥ कृह हि बिधि हरि भगतिन हित कारी। ग्रुग जनकी
बिपति निवारी। दिन दिन हरि रैदासु। दिन दिन बडे
यो रैदासु। बरष सात को भयो है जबही। तो धसमग तिहि
आई तब ही। हरि भगतनि को सेवा करै। मन गुर कहे मही धन
[illegible] ऐसी बिधि [illegible] या बहु नग्री ति के सोस नई या
[illegible] बहुरे बडी लागन फाको बड
[illegible] आइ आयो बांधि न दीन्हो। राख्यो ब
[illegible] रैदासु [illegible] सीख चा मभाल
ले आवे तिनको पग हो अधिक बनावे। [illegible] राजर बाजो
[illegible] ऐसे लागन सहजमे होई। ताको
[illegible] लागे कोई। प्यारे मन हरि [illegible] तहा न कोई म
[illegible] आवे [illegible] अधिक प्यारु। जाने जगपति रसि बी
[illegible] बरस पाव ऐसी बिधि गई या कसगी बहो तसरीर
[illegible] हरि [illegible] रूप करि आये जन रैदास बहुत
[illegible] आदर करि आसन बैसारे। ही मन बचन कहि चर
न पारे। [illegible] हरि कथा चलाई। ताकी [illegible] जिव नार
[illegible] जनही [illegible] सुख कथा चलाई तब
[illegible] कहि रैदास आपनो मरमो। [illegible] धरमो स्यार
[illegible] याचे चेला। तब रैदास कहै सम
[illegible] राख्यो राइ। कोटि [illegible] ताके चरन
[illegible] ताको [illegible] नीक [illegible] कहि रैदास कैसो
[illegible] रैदास वचन इक मेरा अब ही
[illegible] पार पन के हो बैरागी। ग्यान पाइ करि म
या त्यागी फिरत फिर [illegible] आयो। कालि बाट मे पारस

पायोक्यु याकरि तो तुमही लेहु मेरेको मिल आवेहु गोहाने।
पारसकोमेरे। कंचन होत न कोई मेट। ऐसे कंचन करिकरि
लेहु मन मानें सो ही कोंदेहु। ताको दोष न लागे कोई हणीन
गनितु मारी होई॥ दोहा॥ वचन सुनत नगावनका मानगहर।
दास कामत देषन आई या कपटन गनिका नाम॥नाम॥ ५
घरीरे केरेदास मन बोल्या हरि गोविंद पारसथो। त्याउम
निजों नो डहके गोही निहचे की यादेलहु तोहा तेदेषोया
सकोविहनो। सुईयक्करिके रत्मो ताकोना। ऐसे काहुदोह
नआनो याम नोही जो नबिलानो। तबरदास बोलीयो बान
पाहन कबकु देषनेनो कनक कामनी देषसाधु दासहि
यालागे अपराधु। जो कंचनहेसो के काज। तो क्योंरामा
खोडेराज। नियामोगिर नोजन करही। कनक कामनीन
नतडरही ताको मनरहे कैसे कीजे। मनखोडि केबदिन
तबहरिबोले सुनिमति ताकु। कंचनदोसन दीजे काहु।
चरकेमहरबेके ठा। कंचन हरि पदरतदेकंठा। कंचनकी
कारकाविराजे। कंचनमख देवन के साजे कंचमनगनहरि
कीसेवा। कंचनदीयो सदा मेरेवा। कंचनके सनडीनिकई
जो कंचनकोटिमहो सोकीजे। कंचनलेहेकेवबमावे जो
चनके मरमहियाते। कंचनघरहयायजोकीजे। ताकिनदास
कंचनहिराजे। कंचनलेगनिका कदही नरकविसा
कोलेही कंचनतो। जूवाधेले तोक्योजनमरोकमवेले। कंच
नलेकलालकेजाही। सुरापानयी नरकपडाही। कंचनदेजो।
आमषषाई। सहजेनरक आयहीजाई। कंचनदेमागमही
वे। तोगतिमोसेके हाते पावे। कंचनदेषरते पाराचे। तबते
रोरोषकहेनबोचे। कंचनको आकोसलेही अपराधीक आ
हरदेई कंचन घरेधरनि सुराई। औरदेहिन आयाहृषाई।
ताकंचनके मेनिमतारे देषनजनम आपनोहारे। ऐसीबात
हीहरिजबही गनरेदासबोलीयो तबही। कोहे दाथ हमारेध
है। क्यो नमहोतो उमहोकरिहो। हमहिनयो उमकउपरिआऊ
अबरैदासमनन्हाना ताको। पारसलेपाखनपरिधरीया तबरैस
सपछोडा टरीया॥ दोहा॥ तादीकोयनबूदीप रैदासकवना
कंत सुषमागरहरिमरनिह गावदास अनंत॥ चोपई॥ १॥
वी ल्योजनरैदासबिचारी। हरिराषतहे कोनिउम्हारा जोउम
टेक आयमीकरिहो। तोवसतु बोधिगांतिमेधरिहो। नागे

नहे ओर कामा नाही ग्यो बाडिन को स्पो लागो। केसो पारस
रायो वाको घर नीत रडे के सांथी। हम देषयकृ धरोल
हुयो तैकंचन करकरि राषे। कछु बिचार करिके सोग हुय
बरसो को पारस को मनुंया। जनरे दामन देष्यो काकु मान
तेरहे वकुर्यो आगो। वाहे स्वामीने फाटि नली न्हो कोंगाद
न पारसको दीन्हो। तब वैरदास कहे के रजोर मे वाड्यो पाथ
र के मोरे। याहे रसमें रहरको नामो। पाथर सों कछु नाही
काम्हो। हरि पारसके चरन को रामी। ओर सकल माया को
या सों। श्री कार रदासनकी न्हों। तब हरि अपनो पारस
न्हो सो पारस फिर गयो मुरारी। बकुस्यो के सो बुधि बिचारा सु
पतन हमे बीनती करत हूं। मोह स्यो वसुपटरहो धरहूं ले कन
काशिनि करकृत के मनको। एको साधुहिरदे धरि ताके हम
नाडुतन नयो दुष मारी। मोते बचन सुकहे मुरारी। नारतम्य
जो दूषे मागी दीन्हो। सपति मे कहि माजी। तब वेपा च पाव
दिन पारसु तेम व पाक मह हो बोला वे। मिदरम हल का पोव
होते रा। तेहा नहा नगनन को डेरा। कहे कथा को रतनम
ह आनंद धरम नाही येमा रहो। नग को लोक दरसनको
आवो। तिन्हे सुबा मन धरा रिसादी। काहुको धन पायो
सो। छाडू नगा ते सड्ग यारो। ठचर करे लोगन बीसवे
सुद आयन पूजा लावे। सो पदैन कों नाही कोई। वकत
अनीति नगर में होई। सधिम कुल आरु मधिम का मूर्ष
सम कुटंब अरु मधिम भाषो मधिम आयन मधिनाम मो
चो पूजे सालिगरामो। बिद मुरानकहेसमफाई। बुद्धिहि
नलोन कहो गाई। अस बामन को पकराही। तब रदास हि
वर जन नाही। जो रहयो नगर में वाहे। तो मन काहु आर हि
माहे सुध सुमति रहो हरि नामो। तिन पूजे सालिगरामो
बर जाति तिन्है नगर को राजा। ताको बामन करे न लाजा
दो बाम्हन नीति मानें नहीं कहो न हरि आह कार बामनन
रे मनमें मलन कीरतार। खाको पकड़ो। इहे तिवाडी वे
वे आये भाष अपाचार जपा नगर आयो बालाबु दामवे सवे
नाको रह बादर दास एके लाख बेज हाव घरतो राखे तिन
नके राजनीति हो। आहीं नगर लोगन मा मे आपो दीन
दीया बिन को तिन या पो। जो मी या लोग पाच मिलि
मकन माने बामन नगर जो तब रदास वाहे रे आयो।

परगत्रम्यो नायो बैठेगे नो मिहुली चोरासी। मानों चेरमां की पीठ
त्रि यारी। श्राम पास ताराग ता मोहि भजन यरबाय बासुरा को है
निरमल बचन कहे रैदास। कौन चूक ते हम हिन राम। वासन दे
ते सुनि रैदास। ते क्यो धरम हमारा नीदंसा। रैदास गुरु रसन आदिम
व कैरे। लोग बचन मानत है तेरा। तू किन मानें बात हमारी। ते
हि पाप लागे है भारी। सालिगराम हिला वे हा पूत व दा पत
है। श्री लगना पूजन ले आसन तान करा वे तब ही। सुराधा नरा है
मानों त बही ते रमाचे रम स्रय हि फल ता को दोष थाय
की रला। बालम्यो गजे ल दारे श्री महाराज मो गमांन तगो मा मू
धूप दीप आरती किम नाक। तालें न लोन मानें का हू सुरति
सुरति की रा परी ती। साधू मानें के हारि न मीती। प्रेम धरम को म
हां लग धरी ये। जाते नर को डं भे परी ये। धरम तु म्हारो कर्म री
क्र म बका हूं को मान न दे क्र। हरि सुमरन हिरदे सिमि टारो
कल पत पाचूं ड डी मारो। य र स्रय बार करो सिनि का हू। हर
सिहर षिह रिके गुन गाहू। इतनां बचन हमारा मानों। जिर म
मला आप ना जानों। तब रैदास कहे सम काहीं। तुम तेम ग
त हरि हमाई। कूवे फल नी लनी य याँ। थ्री निजा नित टिके
मनि भारा। ताते पापहि कैल डराऊं। नयो गुय थित्वना रायु
नाऊं। बो मन बोले सुनि रैदासा। तू जिन बोरे भक्ति की आ
सा। ते ता गुडन पस्या करही। ता के पाति ग बांमन मरहीं। से
रुघना थ मारी ये बांनो। बांमन जीये। सुइ गये। प्रांणां। तप
तीरथ की करेन आसा। हम हरि सर बिक है रैदासा। हरि पद
लमि की कूभनि षाई। कोंचे नी च को से क्यानहीं का ई। ता म
कूब निकै भु सा आयो पाई नहीं कूस न भरमायो। बिदन
गवन बोलै साधी दास अनंत कथा पूं जाषी॥ दोहा॥ जग
ति पाया री राम की मरमन जांने कोइ। जिनि जांनां तिन कबर म
रैन सके को हा॥ ५॥ चौपई॥ बांमन बोले नक नइ रही के बा
कोंनि हमारी करही। गुरि षा सुर मारी ता ता सो ना अधि
क न ई हरि गावा। परसराम सब छत्री संगारा। राम हम ही दी नो
हू की बारा। कुनि पांडु के दी ये भइ रंता। सहस्र श्रूग्रासी नोज
न करता। तब रैदास कहे सुनि पांडे। तात मारे के नरो न चो
डे। मानो न ही रान का रीसी। ता ते न ई बैहो त हि परी। ती सं देस
श्रासी मन्ये न का ता। सुप च के संघ प चो ड नें बा ता। उम्ह
री पूजा को फल राक्ष। सेवा कर भ्रम रक मैं दें क्र लघरा जाइ

[illegible] कायो । श्री [illegible] सराय [illegible] कायो [illegible] निस्तुरा [illegible]
[illegible] निकी [illegible] बारा [illegible] नी [illegible]
[illegible] भाजा [illegible] नपरी [illegible] पुरही [illegible] करकौ [illegible]
[illegible] कोहू । [illegible] नहु [illegible] गानमैम
[illegible] कीनि [illegible] हुन [illegible] कामके [illegible] कमार
के चन [illegible] बिचारी [illegible] पुरमनो [illegible] नरहोइ
[illegible] सोई [illegible] ही [illegible] नाके पा
[illegible] कोही [illegible] तोस [illegible] मानैरा
[illegible] निर [illegible] रिस्या गैराजा
[illegible] धरम [illegible] बामाग [illegible] न
[illegible] कोहू [illegible] केमाटे । मालिगराम
[illegible] बिराम । तो [illegible] मारा माज [illegible] नी [illegible]
[illegible] नन कहे बे गिले [illegible]
[illegible] हिनपजी [illegible] सिघा
[illegible] बिरामा । जो [illegible] नकेरा [illegible]
[illegible] कोगो [illegible] नन कहे [illegible] मेरे
[illegible] कर [illegible] निदारघबानी [illegible]
[illegible] माजी । [illegible] चित [illegible] और ध [illegible]
[illegible] सबदिन गा [illegible]
[illegible] । नोको [illegible] की [illegible]
[illegible] जल [illegible]
[illegible] निगरा [illegible] जबही [illegible]
[illegible] राजा [illegible] के मन माही जैजे कार
[illegible] चलमुह [illegible] मुषनी दषा [illegible]
[illegible] जो [illegible] नेर [illegible]
[illegible] नकी [illegible] ॥ [illegible] जनथा
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] पालिक [illegible] नी [illegible]
[illegible] । [illegible] । [illegible] बरसयाचको
[illegible] या [illegible] कथा चीत [illegible] या [illegible] नीम
[illegible] धरम [illegible] जन [illegible] । [illegible] कलकीजन
[illegible] नाके [illegible] जै [illegible] मनि
[illegible] जगत [illegible] कबूको [illegible]
[illegible] माही [illegible] भगत कहे [illegible] यदेस ।

मनमैंदयौ यासौं देख्यो।बहुत नगरनकी तो कहै चयानी।रोवे
हु लागत बैसो कहै रानी।कासी नगर बेगि चलि साकुं जो मेरे बद
न पति आज्ञा मांगि तु लाहे नाम कहीहु।सौ नै सुख दे कहा
आइ सरीह।निरपन बुझ लीयौ यह चोनी।साथ रहा लीजे
रानी।आरती करि दास सब मारग मानों नार दलीयौ औ तारा
सुक कहूं तो आवैला ना।दरसन कारनि कलै राजा।पंडि
त भरम मन मांने कोई।बिसनकौ प्रेम ऐसे होइ फाली कै
मनि आने दरसई या।बोनारसी कौ डेरो दीया।बोनन भोग
ले मनि जानी हम पै रचाले हैं रानी फाली बरजे बरद रजो है
तक दरसा अरु गंगा न्हाही।दिना बीसमें कासी गयी।हा ज
ली जनो हयपत पइया जाकु कबीरदेकु तनाही फाली
मिस कने कोन आई।तब कबीर मन पजी लाजा।मेरे कोमन
रानी राजा फाटी कै बलीयो टीजवही।फाली आइ यकुं तीन
बही रंथम बनिरयणा चेग्गी।जबे गेहै मायास्पागी देखी घरम
कटीमा थरीया।तिनकुं परिफाटी कोंबरी।पूजा अरचा स्व
मदेश।मनसम माधि लगा चेसेसा।पारीग डवाइ वन घीसा।इ
जे दिन कोसहैबनी हु।माथी मोज दखिम बरानी।फिरपाछी भ
बपछितानी।चलीजहा रैदास चमारा।उनकुं कौ देखे ब्योहा
रापकुं दीनहां न लागी बारा।के वेदेषे यौ रियगारा देखरि
दालीन यौ औ वे दू तहां मसदा बैठगो बिंदू कथरि माहि चेद
तानां।औ मासुख नेदे पैरानी।सो नेले जनन कहूं चकयाट
बहेम सुगंध नरहै माटा काल रिंझि कथषा बजैताला।नर
नवरन फूलन की माला।तब देखे स्वामी रैदासा।बकुन मह
नरैसन्त हे पामाल जलकष डोसु दरगाला।सुख नेकेसरी
तल बानभार बगयो रानी कोजबहा कापि डोल गनन
केतबही।।दोहा।।चरनन गहे रैदासके दीन्हो माथ रा
नी कै मनि पुंजयो हरि गन तन सा पा।।७।।चौपई।।यह
ली भरम मन जाने कोई।ऐसी दसा लीनी गाई बहोत दरब
ले आई फाली सो सब घर रमाय घर को वाली।कोम पाव गये
बौड़ा जगह विहार बानन मांड्यो कगरत सुनी परोहत
ली नी माला बाभन को पुजारे है काला।अगनि रूप मनि
उपजी रोसा पापार लेले फोड़े सीसा।गही बागरा नीयल
टाई बकुल्यो कासी पकुं चे आई।बाभन को पदे ह स
राष्ट्र बिरफ नहीं हुयौ तेरे जा या के ई पवरा सुयस मारे

रपकुं वे गोई। को यो प्रागो म मिले रूमा। संतन के प्र
रिया सो। तब मो मिलि यत्री न्न वसी। तब रेदास बचा इर
नी। लगन करी छिगति म व छानी। हरसन को जेत्रा
न चल्यो तबै को। मान चलाई। म ह संतन को सब विसुना
ऐसी सुनि के हरख सनूं। स्हो आग्या दे नग चले तब
पछि या र वाना। गुरु सम्मान करी र बड़ भागा। ताको
श्रवण मनायो कबीर आदर कर लिये पाय। तब कबी
र वचन सुनायो। धीरज रे ह मही को दतआया। दोह
रा। सोह म अनुसरि है करी चले च हीं ग नरक रिहे तब
कबीर करी मति ऐसी सो हरिदास के हिरदे बसी के
आप्यो उर माहू रामे दासा नन के नाक। दोहा। आग्या
लई कबीर की नि आग्या दरियो ल्, दरसन भतो बी
रको नन रेदास तब की न्ह। चौपई। प्रात समेर
ताको सो न्हा आपन सभा लेगि सब लीन्हा। सील वेन तुम
रम सोरे आग्या करी सोगि लिआरे। ग्यान ध्यान निरगु
न और सरहा। अलते य बदलि चार। ऐसा मिष सदास
निमकसर दिया मोहे जाताहा हरि जन च लिजा वै
मिस लेमु म यावे कथा कीरतन हरि जन भक रिहे उमसह
स्तको मन रहे। तिनि के हरि जिनि पावे धरे। कोटिया
नो की व उधरे। ग्रनि उ छ्नाह कर प्रेम बढावे। हरि के जन
ने नर सी माये। ऐसे रसन व कुछ दिन लागा। फाली आ
आया। कि तिचौ तारनि कटि सब आगे। तब रेदास रो ह स्या
न कसो तिन ग ति लिना हुसु नाई बानी। स्यमि कर गहा हन
म कि रा री। धनि हिन आगि परी धनि कुल। आगे बचन सु
नो सिद्धि। तबै दास च लि आगे नरा पहले बाग मे दी पाड
रा। भ्रमी सबै तुलागारानी सन सुख पाओ सब रज ध्यानी लो
ग महा मन दरसन जाही। ओपन तनि मन मे पछि ताई।
ल वो क मे आगे र कथा। भिउ रूप आनि जरि बर म वा।
कला गजत रानी आई। यानसु ग ध सु ताल मिगाई ह
रि बोलो हरि बोलो होई। नाग वन्यो है केवगसो हो क
र तन वकरि धि को न्हो। बाहि प्रसाद स बन को दी
को डेरा लगाए वि धा रे। मह मो करी बाजार वो धारे। मगा हय
न वर आनि प समारे। चरन धरन गुरदेव पधारे। दोहा। म
न गुरु मा हिदबो आये। चरे मन्ब धार सान दीया नर

या बिनो कह्यो कहा ॥ ३ ॥ २ ॥ चौपई ॥ अधिक ज्ञान को
सो सो रानी सापी छै जो जन को बानी सक ल बिब मिलि घान
उपाई । या को कारज बिगारो जाई । सुत हित अभिन्न हमको
घर के बो मन बाढ्यो रानी । ता को कारज राम सवारे । ओ मा दे
सुत हितु गारे सब ही चलि रह बार हि ओ । पीज करेरें
नी पूरण पाये रानी कह्यो धरम क्यों । औसे धरती पे तहि ना
राजे । बिप्र कहते सब बिगार्यो रजधानी मोते होय या स्यौ
स ब राजा बिप्रन को माने । और अरे कहि नहि जाने ओ
तुम्ह मि करन को हो तो यह ले पहर हम को देहो । जिग करे
ते बिप्रन को दुखी । और स बे बिप्रन के पीछे जहां तहां बिप्र
न अधिकारे ते गुरको न्हो मधिम चमारे रानी कहे सुनो रे
गाई मेरतो ममि यह सुहाई करणी दीम सुद्र है सोई करा
नी करे सब तन म होई मधिम नम करनी माही गमि षदे हह
नम को नांही काम क्रोध लोभ त बनो हारे तो मन में पद च
मारत नमनों नि बो रजी जे बो नन कहो बात नी क कहि
[illegible]त पाति का नहीं अधिकारा राम जने सेरा म पियारा । नही
कछु उन्हो रसार कयो बिप्र जा कुमहारे । बिप्र बकुत मन
मे दुख पावे क्रोध करे रानी डरपावे । पहले हम को दे करा
मोई पीछे यह बस्तु होई । रानी कहे नहीं मन धीर धरय ह्
उ म को को रोज असे फगरो अधिक नगायो सब रे टासी
क न मत पठायो हमारे तोही सारि लजीमा फुन को तुम राखे
र मरी ना पन में सम फिर आया मानी बिजन र सोई देह रा
नी मन अन ना र बिबु लागी कुलेन गर में सब अति धाये
ते नर सोई बो नन टारे गिनती ना सुन जन अजो रित्ने ह बर
र बिचार मन में करो रसोई सारे दिन में हम ठ ता को
ई औ नन पावे छोम को रक लस म गाये । करे असनान
टी ल मन माही हरिजन ह्वै ह सिउ नगाही । तई रसोई जी
मन लागा भागवत रि को या सिंगा गा । त बेरवा स धाम स र
नहीनो धर्यो ध्यान बहे ह लन को नो । दूरय नम कुलो क
मे कुल को फाई पूवरे हजन सब को गोई सब ही के संग
जो सन के बाउन चाये उन बापे दीवा सब के अधिक मन्
त मा सा जे ता बिप्र ने ता रे सभा तब ही रोक डेरा को धाये
जन रे सा मत हा ही पाये । बनि धनि करि बोले सब कोई त ब बि
प्र सेवत भगो ई सब ही के मनि नियत भाजा साधुम ता पांहि

ह श्र कहा गो रहे को यकरे हम [illegible] रि तो श्रबहो नाहि [illegible]
हम श्रपरा [illegible] तनके साहि बमदा हमरा माचे है
सा [illegible] पकरी बानना । [illegible]
हि [illegible] नाहि [illegible]
मन मरे [illegible] । रम [illegible] मिलिमनो [illegible]
[illegible] केपाया [illegible] बहोग हरम कोनी
[illegible] कोन नो [illegible] चरन हम [illegible]
[illegible] परी हम महीया घरडेरडोन नु करता
[illegible] दासबाते कदीबा तुम
[illegible] ना के मीय [illegible] डोन नु कहि हो तुमो
[illegible] बोलन श्राई मन दि
न को [illegible] राम नाय रजा म बहो श्रा पे नि दा करते
[illegible] कहि है कोन नाति
[illegible] श्रान जन म
को कथा [illegible] माना नाते मो [illegible]
[illegible] नके काटी न [illegible]
[illegible] नाम [illegible] ना [illegible] गहीनाम
नाम [illegible] नाम [illegible] नाम न [illegible]
[illegible] ना म [illegible] बानी । नाम [illegible]
[illegible] नाम म बनय रिरा षे जन रदा
[illegible] बसी । [illegible] कहे [illegible]
[illegible]
[illegible] रदा सम [illegible] की
[illegible] नाप रजा म [illegible] पावे
[illegible] नाम [illegible] नाम [illegible]
[illegible] श्रापनि [illegible] क विचारा राम
[illegible] नाम [illegible] नाम [illegible]
[illegible] नाम [illegible]
[illegible] रसा [illegible] को
[illegible] क पावे [illegible]
[illegible] कोनाम [illegible] पावे [illegible]
[illegible] को ईन [illegible] क हाहि रानी । [illegible]
[illegible]
[illegible]

अथग्रंथप्रह्लादचरितलिष्यते॥चौपई॥प्रथमसीसहरि
गुरुकूंनाऊं।कहौंकथाजोत्र्प्रागयापाऊं॥भगवंतभगतसुज
सविसतारौं।करिग्रालोकनध्यानविचारूं॥१॥च्यारिजुगन
केच्यारूंनेह।रुगजुगस्यामग्रथरवनवेह॥बावनत्र्प्रक्ष
रोंकेंकारा।तीनलोकवदविधिविस्तारा॥२॥च्यारवरण
च्यारूंत्र्प्रास्रमा।तिनकेकहीनानाधर्मा।एकजोगएक
जग्यदिढावै।एकतीरथव्रतसूंचितलावै॥३॥एकतोकहै
दानपुनिनीको।एककहैउधारकरिजीको।हीकहुकहै
राहदोई।सतगुरमिलेतवपकेहोई॥४॥रामभगतिविनरा
मनिनारा।ऐवैलेजगकेविवहारा।भगवंतधरमनजानेको
ईं।जवलगकृपाकरैनहींसोई॥५॥चितामनिक्यूंमोलवि
काई।कल्पव्रषकाकघरिजाई।पारसकहोकौनकूंचाहै
कामधेनिकूंकोनिरवाहै॥६॥करमधरमकरिरामनपावै।जेम
नवचक्रमनामननलगावै।इहिविधिसाधकहैउपदे
स।संकरब्रह्मादिकत्र्प्ररुसेस॥७॥दोहा॥त्र्प्रादिग्रंतिजे
तेभएसाधनपाउंपार।जसवरनौप्रह्लादको।जनगोपा
लविचार॥८॥विप॥१॥चौपई॥ब्रह्मापुत्रसनकादिकच्या
री।मनसातेउपजेत्र्प्रधिकारी।पंचवरषकेरहैसदाई।नग
नमगनगोविंदगुनगाई॥९॥प्रातसेसमुषकथासुनाई।मध्या
नेमृतमंडलिजाईं।संध्यापुरवैकुंठप्रवेसा।सनकादिकवि
चरैंइहिभेसा॥१०॥जैसेगनवधाकूंनावै।मातमातकरिवा
लकधावै।निषावंतज्यूंनीरपियासा।यूंवाढीदरसनकीत्र्प्र
सा॥११॥जवहीपावपौरिपरदीनौं।जैवेपारषदत्र्प्रंतरकीनौं।
परथरगवनपूंछिकेंकीजे।प्रभुरिसाइउत्तरकहादीजे॥१
२॥सनकउवाच।हमजानेंयहहमहिपिछानें।प्रभुकेहि
कहिसदाईजानें।त्र्प्रनपरचेकोत्र्प्रवगननाही।त्र्प्रहंवुधि
त्र्प्राईमनमांही॥१३॥त्र्प्रहंग्रवकूंगाहरनांही।होइत्र्प्रसुर
विचरौजगमांही।सनकादिकस्रापयूंदीनौं।हिरनाकसि
वहिरनाषिजुकीनौं॥१४॥इजेविजेउवाच।जिहविजे
कहैगुसाईवकुरिमिलेंगेकवइहिवाई।सनकउवाच॥
सपतजन्मत्र्प्राराधेत्र्प्राऊ।तीजेजन्मविरोधेपाऊ॥१५॥मित्रहि
मित्रविसरिपुनिजाईवैरी।हिरदेरहैसमाई।जानित्र्प्रजानि
त्र्प्रगनिकूंपरसे।नाइउभाइव्रह्मयूंदरसे॥१६॥प्रवलनवली
जोवलिवंतजोधा।नहिसमानकोउत्रिभुवनसोधा।व्रष

सहससदससोउहतजांहीजुधहीसपुजवैकोनांही१९॥
छिजिपृथीपावैतलिचांपी॥नांहिनांहिपृथ्वीकांपी॥क
ल्पकतत्रनिथासत्रथाकीयोबराहचिरतजनकेरथ॥
२०हेतिहरनाछिपृथीछिरथापीहरनकसिबतबको
पापीहरिबेरीबेरीहरिदासानावजगतिमेदोकमत्रासा२
०सनकादिकश्रापयहदीनोहरनाकसिबहरनाछिजुकीनौ
तांहेल्यायपुननजोरि०मृतलोकसबबसिकरिलयोतब
रनाकसहरपुरगयो॥असुरनासमुरगाएपुरनाई॥बिस्न
रूपछूतेजाइ२१देवकहेसदनिनवनराया॥दैत
सरनेआया॥राषोहमहिकरोप्रतिपाला॥दीनजांनिअब
होहदयाला२२जबतैबिस्नुकलाएककीनी॥काहयेंग
तजाइनचीनी॥प्रसिधसाधसुमततयूनाषै॥असुरमारि
सुरनेराषै२३सुरअसुरबैरजबनयो॥हरनकसिबत
तबगयो॥तबसुरपतिसोपुरीलगाई॥असुरहितियाब
लेजाइ२४सनमुषनारदहरसनदीनो॥तबहिरइब
दरकीनो॥दीनछिप्रलहरिमगतकहावै॥परपीरातेअति
दुषपावै२५नारदकहैसुनोसुरराई॥निदैकरमकरिलाज
नआई॥इदकहैअबसुनोगुसांई॥बालकहतौंतिया
ही२६तबहरिगुनसहतबजाइबीनांप्रहलाद
रहेलीनो॥तारिकमंत्रसुनाइबानी॥कृपाकरीकाहूनहीं
जांनी२७नारदकहेइहमुनिआइ॥याकेउइनतहेंना
ल्यारबरनमैवाहरनांही॥कांकरितेअसुरघरजांही२८
जातसनगांवप्रहलाहनाराइनकोसेवगआहूकोनचू
असुरघरआयो॥बिधनाबिधिसंजोगबनायो॥१०॥दोहा
कृत्सात्रतिजुकरसाकनकनिनिनहीहोइजनगी
जगदीसकेउलकारननहिकोइ॥१०॥छिप॥१॥चौ
सालिसीलकृपालअडोही॥ग्यांनबिग्यांनबिदेहबि
दी॥सारासारबिबेकबिचारै॥सत्रमित्रसमदृष्टीसारै२॥गो
प्यानसंतनसुषदाई॥परआत्मआत्मांसमाई॥परदुषउ
सुषीसुषपावै॥तां[illegible]हीतेहरिजनकहावै२॥बहुतनांति
रकीजोसेवा॥तुमकूकृष्णकहेदेवा॥तबजन्मत्राकार
दकनदीनी॥तबहिइदबहुबिनतीकीनी२॥श्री
कृस्नलेजांकै॥नतकहैतराषोतुमगंकेरिष॥अस्थान
रहीतबमाताग्रनलासहतआवैजबतातां[illegible]बहु

नो विसीचलजमलाई।।प्रघरजन्मलाजयक्तआईपुत्री
बदनसुनीरामाई।तोइपुत्रअपनैघरजाई।।२५ तोइप्रथ्म
रिषआसकादीनी।मातातबहिसीसधरिलीनी।कीयोउग्र
तपदेहसुकांनी।तबहिदेवगनबोलिवानी।२६ कैविषि
हमकूचाहरदीजे।कै:हरिनोऊसकहेसुकीजे।दिविवर
संतिहितपकीनो।कैप्रथमब्रह्माबरदीनो।२७ब्रह्माकहै
अब्रूकहाचाहै।कौनकांमनातनकूदाहै।ससवअगनि
जलविषनैनांही।रैनदौसबाहरिघरमांही।ब्रह्मसिष्टि
मैमरोनकबकुहोकुहोकुब्रह्माकसोतबकु।दिविवर
ससततपुजबकीनो।तोइप्रथमब्रह्माबरदीनो।२८ तब
दीहरनकसिवगृहआये।मातालेषिषलहासधाये।प्रन
समोपूरननयोआई।प्रहलादहितबजनमेजाई।२९।जन
मनयोतबउदत्रिवागी।सुरनरसकलआरतीसाजी।सब
संतनकेमनआनंद।अंतरजामीहैगोबिंद।४०।एकबरषके
तीनरुच्यारी।पंचबरषकेनक्तिसनारी।प्रेममगनआनं
दमैफूलै।देहदसानषसषतेनूलै।।४१।।दोहा।।पंचबरष
कोतबनयो।साधपुत्रप्रहलाद।जनगोपालसमझैनही
बालकेलिरसस्वाद।।४२।।चिपा।।३।।हरनाकसिवउवाच
चौपई।।हरनाकसिवलीयोसुत्तबुलाई।धाकीतुमकूंला
जबडाई।राजनीतिसबजाइपढाऊ।म्हमऊलधरमबतोष
सुनाऊं।४४।सुदिनमहूरतिसुतकजुसोध्यो।नीकैकसराजापर
मोध्यो।नलैमहूरतबाजाबाजे।घरिघरिमंगलुकलसबिरा
जे।४५।गानकरतचटसारजुआये।सुरशातीओरगणेआपु
जाइ।बहुविधिबालनिपूजाकीनी।जनप्रहलादसुऐक
नचीनी।४६।तबजनकसौराजकुंवारू।पढैगुनेसमझैव्यौ
हारू।कैन्मोशिक्ष्याटीलिषिदीनी।करसूंकरजुसिषांन
कीनौ।४७ रौममौआपनलिषिजांनै।कहैसुनैनअौरकीमां
नै।सोनामरककसौपटिबाला।जैसेपुसीहोवैनुंवाला।।
४८।।श्रीप्रहलादउवाच।।कहैप्रहलादसुंवालहिजांनौ
तौकतमिथ्याबादबषांनौ।जिहिकायौउतपतिवोऊंका
रा।पैचततत्तैसकलपसारा।४९।च्यारिषांनिजौनिचौरासी
सुरनरकजीवतिहुंपुरबासी।पुरिषनारिविषइम्रतकी
न्हांसतगुरबिनानजाईचीन्हां।५०।षंडब्रह्मंडरचीबकु
अरनीहैमकुवाराजाकीकरनी।पातपदोजिहिरीझैराजा।

औरपठनसूंनांहीकाजा॥५२॥बिद्यागएजोजनअसनांनां
लब्बालनिंदवकीयोनिदांनां॥कहेप्रहलादआपनी
आद्समबनूंरवातुम्हारेसाथ्या॥५२॥कोंनपाठतोहिला
गेनीकोहमसूंकहेनावतोजीको॥मित्रकपटसमकोषन
नाहिकेदप्रांनकहेंसमझाई॥५३॥कहेप्रहलाद
ला॥जन्ममरनजीवकोबहुकाला॥तातेजन्ममरनमिट
जाहिहूजान्संसोवडेलपाई॥५४॥अंधकूपगृहमेंपराए
तोमोसागरकेसेतिराए॥बिषबनबेलिअंम्रतफलचा
हे॥बिषफलषाइअमरजमाहे॥५५॥लोहनावकेसेनिस्त
राएअरुजोपापषांननरीए॥अगनिग्रहकेसेंसु
हिकोननांतिसीतलनाहोई॥५६॥पूर्बजातपद्मकत
हेनेनबिनांकेसेमघपावे॥कामकेलिकामनिसबीजे
पापपसारेमहिकंसीजे॥५७॥सुतपरवारपावकीपासी
ध्रनजोबनरहेनजासी॥जबलगरोगग्रस्तनहुईए॥तब
लगवोमुदकाहेनबहीए॥५८॥जबगृजरेरूकूपनषनाई
तदिमसोकसहेनाहि॥जबलगपारपरेनहीवेरा
लगलीजेमारगहेरी॥५९॥जबलगरहेनहीरषवारू
लगनजीहिबालकुवारू॥तातेसबतजिबनमेंजः
साधसंगतिमिलिहरिगाईए॥६०॥ग्यांननगतिबैरागबि
चारो॥हृदिजिभिआपआपनपोतारो॥बारबारयहतन
नहिंपाऊ॥ऐसोजन्मबीराकिनलाऊ॥६१॥दोहा॥रामना
मछाडोनहीगुरकूआवेगा॥१॥जनगोपालसषांन
प्रहलादबिचारि॥६२॥चिपा॥४॥चोपई॥कबहुंगृहप्र
हलादपधराराजालेउछंगबेसारे॥मुषचूंबनकरिहि
रदेधारे॥कहेपुत्रब्योहारतुम्हारे॥६३॥नीकीबिद्यापढी
सुनाओ॥सोतुममोसूंकहुंनराषो॥जोमांगेसोदेऊंतुरत
मेरेकोंनबोलकोअरतु॥६४॥श्रीप्रहलादउवाच॥
श्रवनसुमरनकीरतनकीजे॥चरनसेयअरतनमनदी
जे॥बंदनकरिदासातनगावे॥दिढबिस्वासतेंसरवाकहावे
॥६५॥आरूआतमांसमरपनकीजे॥नोधाभक्तिप्रेमरसपीजे
बिद्यासोजिहब्रह्मपिछांने॥औरअबिद्याप्रपंच
॥६६॥जबलगमेमेरीनहीभूले॥तोतनपाइकोंनबि
हेसबजगबंध्योअहंअरुममता॥साधुसबत
हिरमता॥६७॥लोहेकनकरोकहीबेरीजोनीकेकरि

देषकुहेरी सुरनर असुर विषेसुषजैसे पसपंषीसुषपा
वैतैसे ६४ रजुकेअपसकलजगपायो स्वनें विष्नजग
तडहकायो भवतमृगत्रिषावेपानी ६५ जीवबंधहेहअ
भिमानी ६६ सुकनलनीदृष्टंतदिषायो इहिविधिजीव
अवंधवंधायो छांडिदयतौकौनेंबांध्यो ६७ अगयानकरि
दुषआराध्यो ७० सोमेंसोवतगईपचासा बारहबरसब
लापननासा कांमकेलिकेंवृद्धव्योहासा रांमनलिवि
सऱ्योसंसारा ७१ सत्रुतिमटेसुविद्यापावे औरअवि
द्याकूकोधावे विद्यारांमनांमनिजबांनी औरअविद्या
झूठीजांनी ७२ समझिदेषिहिरदेयहग्यांनां कोनिस्तऱ्यो
बिनाहरिध्यांनां ७३ दोहा स्वप्नपाइसंसारहैसोव
तहीलौंसाच जनगोपालहरिनजिजगै तिनहिसास
रमबाच ७४ वि० ५ चौपई इतनीबातसुनीहेजब
ही अस्रुद्गिनयौअचंभौतबही मनमेंनी मिलिलायौकु
लाई यहविद्याकौनेंसमझाई ७५ ममदोहीकौध्यांनदि
ढायो तोहरनाषिमूंवोहमनायो गाइविप्रऋषिवेदरु
देवा एतेकरैविष्नुकीसेवा ७६ हमइनकीकीनीप्रतीति
पुत्रबिगास्योकरीअनीती अबलैयाहिजाइसमझावो
नातरिजीवतरहनपावो ७७ असुरसिषाइकहीयह
बांनी बिनप्रहलादसतिकरिजांनी तबैबिप्रप्रहला
दहऱ्यायो चामंडअरूनेंदबतायो ७८ कषगघनांज
लिष्योतबआई औरेअक्षरपाटिनाई दैअक्षरपढि
हूं सुनिपांडे हरिबिन औरपचासूंछांडे ७९ तेरेपिता
दिसासबजीती वेदविप्रसुरडरें अनीती विनामृतह
मकूंकतमारे साधसोईप्रकारजसारे ८० कहेप्रहला
दनमारैकोई जबरअगनिमैंराषैसोई उदधमुषपीर
पियायो प्रगटनयौतबबाहरिआयो ८१ तारैरांम
कहौकोमारे मारेरांमतबहीकोसारे जीवनमरनहाथ
हैजाके हमतुमबिस्वसरनहैताके ८२ बारबारतुम
सूंकेनाषे अमृतछाडिबिषकोचाषे बालकसबैजु
बीनतीकरही कोनकांतिकरिहमनिस्तरही ८३ अ
सुरकुमारसुनोगमबांनी नारदकहिवेदप्रवांनी मैंतै
मेरीयहुसंसारू यातैंरहतजुब्रह्मविचारू ८४ कांम
क्रोधमोहमदमछरजीतैंइनैंमिलैप्रमअदरबार

औरपठनसूंनांहीकाजा।५१।बिछुरगऐजोजनअसनांनां
तबत्याललनिहठकीयोनिदांनां।कहेप्रहलादआपनीगा
थां।हमसबनसुखावातुम्हारिसाथा।५२।कैांनपाठतोहिला
गोनीकोहमसूंकहोनावतोजीको।मित्रकपटसमदोषन
नाहि।वेदपुरांनकहैसमजाई।५३।कहेप्रहलादसुनोसवा
ला।जन्ममरनजीवकोबहुकाला।तातेजन्ममरनमिट
जाहि।हरिजानसोबडोउपाई।५४।अंधकूपगृहमेंपरीए
तोजोसागरकैसेतिराए।बिछबनबेलिअमृतफलचा
है।बिछफलषाइअमरकमाहै।५५।लोहनावकैसेनिस्त
राए।असेजोपापपरबांननरीए।अगनिग्रहकेसेसुषसो
इकोनलांतिसीतललाहोई।५६।पूर्बजातपदमकतआ
हे।तेनकिनाकैसेमघपावे।कामकेलिकामनिससबीजै
पापपसारेमहिकसीजै।५७।सुतपरवारपावकीपासी।तन
धनजोवनरहैनजासी।जबलगरोगग्रस्तनहुतहोए।तब
लगवोमुदकाहनहोए।५८।जबगराजेरुकूपनषनाई
उदिमलोकसहैनाहि।जबलगपारपरेनहीबेरा।तब
लगतीजेमारगहेरा।५९।जबलगरहैनदीरषवारु।तब
लगनजीएबालकुवारु।तातेसबतजिबनमेंजः ओ
साधसंगलिमिलिहरिगाईए।६०।ग्यानभगतिबैरागबि
चारो।हरिजिधिआपआपनपोतारो।बारबारयहतन
नहिपावे।ऐसोजन्मबेरकिनलावे।।६१।।दोहा।।रामनां
मछाडोनहीप्रुरकुंआवैगार।जनगोपालसषांनसूंकही
प्रहलादबिचार।।६२।।बि०।।४।।चौपई।।कबहुंगृहप्र
हलादपधारे।राजालेउछंगबैसारे।मुषचूंबनकरिहि
रदैधारे।कहोपुत्रब्योहारतुम्हारे।६३।नीकी
सुनाषो।सोतुममोसूंकछूनराषो।जोमांगेसोदेऊंतुरत
ऐसेकोंनबोलकोअरत।।६४।।श्रीप्रहलादउवाच।।
हनसुमरनकारतनकीजे।चरनसेय-
बंदनकरिदासातनलावे।दिढबिस्वासतेसरवाकहावे
६५।अरुआत्मासमरपनकीजे।नौधाभक्तिप्रेमरसपीजे
बिद्यासोजिहब्रह्मपिछांने।औरअबिद्या
ने।६६।जबलगमेमेरीनहीछुटे।तोतनपा
फूलेसबजगबंधोअहे-
महिमता।६७।लोहेकनकरो

देषकुदेरी।सुरनरअसुर।बिषेसुषजैसे।पसपंषीसुषपा
वैतैसे।हपरजुकैअपसकलजाषायो।स्वनैंबिप्रजग
तउहकायो।भवतमृगनिछांकेपानी।ऐजीवबंधेहहअ
निमांनी।६६।सुकनलनीदृष्टंतदिषायो।इहिबिधिजीव
अबंधबंधायो।छाडिदेयतौकोनंबांध्यो।ऐअग्यानकरि
दुषआराध्यो।७०।सोमैंसोवतगईपचासा।बारहबरसब
लापननासा।कांमकेलिकैगृहव्योहारा।रांमनलिविबि
सर्योसंसारा।७१।सिस्रुतिभेटैसुबिद्यापावै।औरअबि
द्याकूंकोधावै।बिद्यारामनामनिजबानी।औरअबिद्या
झूठीजांनी।७२।समझिदेषिहिदेयहग्यांना।कोनिस्तरै
बिनाहरिध्यांना।।७३।।दोहा।।स्वप्नपाइसंसारहैसोव
तहीलोंसाच।जनगोपालहरिभजिजगे।तिनलिहास
रमबाच।।७४।।बिप।।प।।चौपई।।इतनीबातसुनीदेजब
ही।अस्रुद्धिनयोअचंभोतबही।मनमंनीमिलिनायोब
लाई।यहबिद्याकोनेंसमझाई।७५।ममहोहीकोध्यांनदि
ढायो।सोहरनाषिमूबोहमनायो।गाइबिप्रारिषबेदरु
देवा।ऐतेकरैंबिष्णुकीसेवा।७६।हमइनकीकीनीप्रतीत
पुनबिगास्योकरीअनीती।अबलैयादिज्ञाइसमझावो
नांतरिजीवतरहनपावो।७७।अप्पसिसाइकहीयह
बानी।बिनप्रहलादमतिकरिजांनी।तबबिप्रप्रहला
दहैलाये।चौमंडअरुनेदबताये।७८।कषगघनाजु
लिषोतबआई।औरेअक्षरपढिस्नाई।डेअक्षरपढि
हैसुनिपांडे।हरिबिनऔरपचासूछाडे।७९।तेरेपित
हिंसासबजीती।बिदबिप्रसुरडरेअनीती।बिनामृतह
मकूंकतमारे।साधसोईप्रकारजसारै।८०।कहैप्रहला
दनमारेकोई।जबरअगनिमैंराषेसोई।उदधिमुषपी
पियायो।प्रगटनयोतबबाहरिआयो।८१।तारैराम
कहौकोमारे।मारैरामतबहीकोसारै।जीवनमरनहाथ
हैजाके।हमतुमबिस्वसरनहैताके।८२।बारबारतुम
सूंकेचाषे।अमृतछाडिबिषकोचाषे।बालकसबैगु
बीनतीकरही।कोनजांतिकरिहमनिस्तरही।८३।अ
सुरकमारसुनोगमबांनी।नारदजीकैबेदप्रवांनी।मैंतैं
मेरीयहुसंसारू।यातैरहतजुब्रह्मबिचारू।८४।काम
क्रोधमोहमदमछर।जीतैंइनैंमिलेप्रभअद्भर।बार

कहदेसुनौप्रह्लादरषिसूंकहनयोसंबादह ८५
गोबहुदरहांनआयो यहसंदेहकहौसमझायो तबकथा
रात्मकहिसमझायो मेरोपितातपस्याजाई ८६ तापीछेंसु
रपतिचढिआयो नग्रबिध्वंसीपावकलायो सुरपतिबं
दीममतालेचल्यौनहूकुतेसंगाता ८७ रिष
रसनपायो बहुतनातिसुरपतिसमझायो नारद
निलीजे याबालकसूंबैरनकीजे ८८ यहबालकहैहरि
कोदासा याकेब्रह्मग्यांनप्रकासा सुरपतिकहीनहींमम
कोसा रषलेजहुआपनेधांमा ८९ तबमाताकूंरिषलेआ
यो प्रभवासममग्यांनसुनायो बीनबातकेहराहीनाग्र
नस्थालकमेसुनिलीनां ९० पुनीजांनिकरीहतिपाना
हितउपदेसपुष्टकेबाला सोहैतुम्हैंकहौसमझाई ९१
हेहकष्टकरिपाई ९२ हसीवाकूंकछुनचहीए धनधन
हमसमरथ्योलहीए सेवासांमग्रीनहीचाहीए केवलप्रेम
नरबाहे ९३ देवद्विजांनहीअधिकारी हनीबेसमुत्रनि
नारीरांमभजनकूंसबअधिकारी ब्रह्माश्रुतितुलेकु
ही ९४ प्रेमसहतहरकेगुनगावैं सबतेंउत्तमसोपदपावैं ९५
सूकेवारनहिमनलावैं जनप्रह्लादहिगुरकरिध्यावैं ९६
सानामरकपुकारेजाई पटकीपाघअसूकेपाई तेरोपुत्र
हेबिधिऐसी बेदपुरानननसमझीतेसी ९७ औरेसबपास
नांडे राजनीतिकेमारगछाडे तातेंहमकूंदोसनदीजे
नावैसोवाकोकीजे ९८ दोहा नगरढंढोरोफेरीयो सब
कोमारनजाइ जनगोपालप्रह्लादके रांमसहाइ
९९ लि० १ छंदमोतीदाम बध्योप्रह्लादमहामु
साधसुसाटप्रहारकरेंदिसच्यारमहामनधारडरेनसरीर
लगावैंभुजंगरहेबिषसंगहलाहलघोरतेदेहबहोरकु
कांमेंमेमतहूटेतिनदंतनमोरहस्तगलग्योहरिरंगतुप
करतीरबखतनीरगुरजरुसेलबहैमुदमेलसुईट
सोनबहैबहुबांनगोलाअरुचक्रचलेंअतिबक
हथियारकरैंपरहारहैपछितहारसरीरहिहारि ९० १००
दोहा अरिपरहारकरिसामनोअरुसस्त्रोनहिकाम
गोपालप्रह्लादकूंधुवैसुरांमहिरांम १०१ लि० १
चोपई जनप्रह्लादरहेजुऐसे मनकुचित्तकोदीपग
सेप्रांनरहौप्रमेस्वरसंगा तातीबावनलागीअंगा १०२

सांचौ दिषि देत है जैसे सीतल बदन होत है तैसें यूं साच कूं
प्रभेस्वरा पै कहा जगत अगपानी नाषै ९७ हस्तनि कही अ
खूसं बाता हमतैं बचीन ऐ को घाता सब अयुध गज अप
लगा बिचि बिचि बांटि हलाहल पाए ९८ नां जानें व
हको नैराध्यो दिव देह अमृतसो चाध्यो अस्तु हिरैनै छगा
मी दोई है प्रह्लाद हमारे कोई ९९ नोर नयें कहो जल में
बोरो मे ल्हि ज जौ रधर नि में छोरो अैसी नां तिडारि है जब
ही पगर म झेले जे हेत ब ही १०० कुकम कर्त प्रह्लाद ह
ल्याऐ भार लंगर लोह मंगाए बांधि अश्रु जब बोरन लागे
नयो अचंभो सो वत जागे १०१ छूटि जंजीर बूडि गयो नाह
पद मपन प्रह्लाद तिराई तोरे रामन बोरे कोई सिला तिरी
जानें सब लोई ॥१०३॥ दोहा ॥ जिनके बांधे गज रहे तिनसूं
बंध्यो धाइ जन गोपाल प्रह्लाद की यूं हरि करी सहाइ ॥१०
८॥ चौपई ॥ हरिनकसिब उबाच ॥ हरिनकसिब जब
उठ्यो रिसाई अंधकूप में डारो जाई मेरी बातन मानें कौनो
तू टेक जोन कहा सो सोनो १०४ पुत्र चाहि तैं नसौ अकृत मोज
लक्ष्मि चलै नही पूत गहि प्रह्लाद कूवे में दीनो पाटी सिल
पाटि जब लीनो ११० नाहि नाहि सबको ई नाषे छिन छिन
राम कहै क्यूं राषे राषनहारा सब दास चेतू जानें नही अग्यान
अचेतू ॥१११॥ छंद मोतीदाम बिरह को ॥ रोवै ताकी माइ
परै मुरझाइ रोवै ताकी भाइ करै हाइ हाइ रोवै पित भाइ नही
ति हि जी ह रोवै सब बीर कहां मति धीर रोवै सब मित पर्षे बज
चित रोवै सब बाल पट कहि नाल रोवैं सब साध कहा प्र
ह्लाद रोवैं गुरदेव करै कौन सेव रोवैं रिषराइ कहा सुषदा
इ रोवैं पुर चाट निहारही बाट रोवैं सब गांउ लीऐ मुष नां
उ रोवै पसु पंषि निहारही अंषि रोवैं सुरदेव कहा हरिसेव
न काहि सिस दयंत कीन्हास ॥११२॥ दोहा ॥ सकल बि
स्व दुष पाइयो दयंत सूं कछू न बसाइ अब गति गति गो
बिंद की कछू ही लषी न जाइ ११३ हरनकसिब लूं सुष न यो
मान्यो छिन आनंद जन गोपाल प्रह्लाद घर भग ध्रो पूर
न चंद ॥११४॥ बि०॥ चौ०॥ मारत गोपि ष्य निज बदीनो
जैजैकार सकल जग कीनों देषि अचंभ मनि अचिरज होई
अब गति गति जानें नही कोई ॥११५॥ राजा उबाच ॥ कहे
प्रह्लाद इष्ट कौ तेरो जाते परहसु सैन मेरो कौन जरी वि

डःगाधारबिष्त्रास।जनगोपालप्रह्लादकेै।पूरनब्रह्मप्र
कास॥२३३॥बिप॥२१॥चौप॥हरनकसिवउवाच॥हरनक
सिबकहेसुनिप्रह्लाद।छाडोकूनबिप्रकोबाद।तोहूपि
तापुत्रतूंमेरो।राजपाटबिंनोसबतेरो॥२३४॥श्रीप्रह्लादउ
वाच॥कहेप्रह्लादपिताअरुमाता।सगोमनेहीप्रीतम्रा
ता।बिनसबैयोधरीसगाई।लषचौरासीआवैजाई।२३५
मायासूरचिताहिबिसारे।बृथाजन्मबिषैसूंहारे।स्वपनेमेंग
धांनीमाची।जागपैतबदीसैकाची।२३६कैसौजाइकेआपन
मरीऐ।पिताबिष्नकेसैंपरहरीऐ।हरनकसिवउवाच।बि
ष्नकहतसोउवत्रौरिसाई।मारोबेगिनागनदीजाई।२३७चंद
नकेसंगिनपङ्योबांस।जबतबकरैउटबकोनास।जैसेंप्र
पश्रूपगलागेनषसषलदुरहलादहजोगे।२३८तातेका
टिश्रंगूगेडारे।मोहकेतोसरबसहारे।तनकोदुषनकाहिसु
नाई।बनबूटीतैंबेदनजाई।२३९सनपुत्रकोनेषबनायो।अं
गश्रंगारनकाहूनायो।तबश्रूपसिंघश्रुस्वांनलगाए।
अंतरजांमीनिकटिनआए।२४०।बदेस्यूंनागयासिसूबांधे
समंदबोरिश्रुदैतआराधे।तबतिनलेप्रबततनचंपेडे
लीधरनिसेससिरकंपे।२४१।परबततन्नेमनकुसिरफूला
शूटिपासिजलथलसमितूला।सकलबियापीसबहि
नाषे।जनप्रह्लादरामसतिराषे॥२४२॥दोहा॥समरथरा
षनहारहेतोमारनहारनकोइ।जनगोपालजगुरुफिरहै
बालनबांकोहोइ॥२४३॥बिप॥२२॥चौप॥होरीउवाच
होरीबहनकहेसुनिराजा।मोतेंसरेतुम्हारोकाजा।मैंबहुतन
तितपस्याकीनी।तबसिवमोहिअग्निगतिदीनी।२४४जारेज
रौंनमारेमरौं।श्रबकैकाजतुमारोकरौं।बहुतनातिकरिक
वमगाऊ।लेपैगेतुमअगनिलगाऊ।२४५।कावसकेलेंक
रैंउह्याहू।नगतिनावनावैनहीकाहू।तबघरस्वैंकाठबि
स्तारोदसोंदिसाप्रबतमेडारे।२४६होरीगोदलीयोप्रह्लाद
तिनकीदुष्टअधमनीआह।जोकोउवाकोहमदेषेहार
तेंबिमुषअसुरगतिलेषे।२४७राजारच्योअचंभोभारी
देषनगएनग्रनरनारी।लेप्रह्लादरूततछिनपैठीमीतरि
देआडीकिबेठी॥२४८॥दोहा॥जिनकूंराषेरामजी।तिनक
कहोमैनाहि।जिनकूंडारेहाथतेंतेलीजेघरमांहि॥२४९
बिप॥२३॥छंदमोतीदाम औंदरकी॥आयोतबराईनई

रह्यो नृसिंघ जहां निज अंग। फाट्यौ तिन षंभ कीयो जु अं
चंभ उचंभो गल्ल गाजि रह्यो रिपु लजि। अंग्यानी अंबु हर्की
यो तिन जुध गह्यौ लल्लकारि धरन पछारि जंघा धरवार तहां मच्यो म
रदिवस न राति रह्यो न घटाति पुरुष न त्रि सु ब्रह्म लिचारि रुथान
कल्लेस डरै सुरसेस। अद्भुत अरूप न देख्यो अनूप। प्रहलाद कै अं
ग गगन बह्यो संग। मारि तिहि छिनहि निकटि जु जाइ रवकन्न सेनैन ल
ग्यान कबैन बड़े बड़े देत सो देंग लिअंत। ओनि तल्ला रति वाकु
बिसाल। दयाल दयाल दयाल दयाल ॥२६५॥ दोहा ॥ जगति वि
घलता प्रगटे देषि अरूपी रूप। जन गोपाल प्रहलाद तब की
रति किने भूप ॥२६६॥ छिण॥२६॥ अब स्तुति छंद ॥ प्र
संम्रथ सबै तुम दय्या प्रस्तै छिन मांहि। अजो सब तां छिन गति
दिहाव कीयो जु पसाव। गहे सुरसैन देषे सुनेनैन। अगाध अबा
ध कहै सब साध। अजीत अतीत कहै सब रीत। अगनेत अनेत क
है सब संत। अगाध अथाह कहै जु अलाह। अलेष अदेष कहै
सुर सेष। अभेद अछेद कहै सब बेद। अपार अधार कहै निराकार
अडोल अतोल कहै जु अमोल। अघात अनीत कहै गुनगीत अ
जाप अथाप कहै जु अमाप। अदेह अछेह कहै जु अग्रेह अरंग
असंग कहै जु अनंग ॥२६७॥ दोहा ॥ सेस पार पावै न ही निगम
नेत जस गाइ। ररंकार हू सिव जपै अस्तुति करी न जाइ ॥२६
सम दृष्टी सब जीव सूं जल समान रहै सोइ। जे कोई दुष पावै साध
कूं तब ही बिषम सो होइ ॥२६९॥ छिण॥ सिकल्यो नृसिंघ तब मांगि
मांगि प्रहलाद तुम सूं कछू न राषिहूं। जन गोपाल मम आदि
॥२७०॥ छिण॥२७॥ प्रहलाद उवाच॥ तुम बिन नाथ
कछू न हीं मांगौं दे हु भगति दिढ तुम सूं लागौं। प्रेम भगति अ
तरिगति दीजे। तुमरे चरन कंवल रस पीजे ॥२७१॥ रसना नाम ने
न तुम दरसन। श्रवनन कथा चरन कर परसन। बांनी बिमल
होइ गुन गांऊं। मन मनसा तुम सूं लै लाऊं ॥२७२॥ अरु प्रभु सा
ध संगति मोहि दीजे। यह प्रसाद अब सिकै कीजे। अवसि छिन
व निधि मुक्ति न लेऊं। तुमरे चरन निरंतर सेऊं ॥२७३॥ सकल बि
स्व कौ दुष मोहि दीजे। प्रानी जंत्र सुषी सब कीजे। इह ब्रह्मा स्यो
पुरी न चावै। अरथ धरम की कौन चलावै ॥२७४॥ राज रिधि अमर
पुर थोरे। म्याति छाडि मांगे सो नोरे। ज्यूं चिंतामनि पै कोडी बं
छै कल्प वृक्ष पै कोइ सांचै ॥२७५॥ इहि बिधि सेवग कछू न चा
है। मांषन दे पुत्र न जाहै। अप अंग बिमाटी दिहु डावे बालक

ग्यानकी गाथा। जीवनमुक्ति प्रमथन होथा।५। चितदेसु
रूननागि। नरमकरमनसेतनत्यागि। दुषकलेसजोहि
हरीसुषकीकथासुनेंसुषपूरी॥६॥दोहा॥ जसरसरूपीसु
ी।कहतप्रानसुषपाइ षमगोमसबहरिकै सुनोसकल
ताइ॥७॥चौपई॥ दापुरअतितपजेमुनिव्यासा।पारासुरके
सप्रकासा॥ब्रह्मबंसविद्यागुनसागर। व्यासप्रसिधिबषान
नआगर॥८॥चारोंबिदसपूरनबषानें। षटहीसासनषटगुन
ानेनेव्याकरनकहेमुनिग्यानी। पुंनअग्वारहकेवप्रवानी
।विद्यारथीरहेंबहुपासा। अर्थग्यानपुरवेसबआसा। परसे
बरसंरहेंपांइन कहेंअवतारकृष्नदीपाइन॥१०॥ बरषसदंसर
आत्तप्रवानेंसुकृतनजनहदेगुरग्याने लदामीपूरननसेन
डारापुरबासीलोपेनहीकारा॥११॥ व्यासबिलासबिबधिसुष
ना॥चिंताअधिकपुत्रएकबिना रहेउदासरेनदिननारी
ध्रबकैंहितकारी॥१२॥ सबगुनश्रेष्टबकुबिधिव्यासकोनचि
ततेंहोउदास।गृहकोधर्मपुत्रबिनकैसो। त्रियापुरषमनय
चंदेसी॥१३॥करोउपावजाकुबनिव्यास।पावेपुत्रनजोहरि
व्यास।साधोकष्टकरोतपध्यान।देहबिष्मबरपुत्रप्रवान॥१४॥
रषत्रियोदसोकहीपाइ।करोकष्टजपजेसुतआइ। चलेव्या
सतपसुतकेकाजें जटासंकी आसनसाजें॥१५॥दोहा॥ बिष्म
पदीतटिव्यासमुनितपबेवेसुतहेत नैमधारनारदबिषेर
मिलिकहेसंकेत॥१६॥चौपई॥सौनकरिषनारदसूबूझे।तुम
नवनचतुरदससूझोसदस अबव्यासीबीनतीकरहीनेमगु
तुमतेंबिस्तरही॥१७॥नारदमानिलीरिषबेनां कथानतस्मे
वपेश्रेंनोगुनसागरहेसिवश्रीधृत। तहांजाकुब्रह्माकेपू
रघतबनारदचालेसिवपासा। कौनबिचारिबूझेबोता
आनउपावनदीसेकोई।पारबतीसूप्रस्नहोई॥१८॥नारद
चेसिवश्रीश्रीमां गोरामानदेहप्रनमा आसनदेमुनिच
गएतबरिषकथाप्रसंगचलाए॥२०॥गोरातुमसूसिव
लाकहोनेंउनगलिकाहेकीमाला।नोहमपूछीनांउन
तातेरिषआएपूछीरही॥२१॥यहतोकथाआनूपमअ
तुमसूंकहीनकहसीकाछि दहसुनामनननएअयान
हवकरिलीयोनग्यान॥२२॥यकुतोतुमसूअंतरराखे
बोधनहितकरिदाष्यो बारनलावोबूझेजोजाईथाबि
त्तोभिराई॥२३॥तबेकंमांमनिआरतिनईसंकरो

इपी मात इषपावै ॥२७॥ मांगनहारन जगत करावै अंतका
लजा चित्रपदपावै सिंध स्यांन की वृति कहावै वकुडे लवकु
घसा दिखावै ॥२८॥ मुक्ति मोक्ष भक्ति सहकामी तुम करतावै
अंतरजांमी हौं बालक कछु मांगिन जांनौं तुमथें नाथक
हा है छांनौं ॥२९॥ दोहा ॥ तुम बिन कछू न चाहूं सुरपुर
नरपुर नागहहि रिधि सिधि कीनी बालती प्रहलाद बडभाग
॥१॥ ष्यारी करमाथि दीयें साधसाध प्रहलाद ममसमा निगु
नगा इहै जनगोपाल सबसाधु ॥२॥ ॥ चि० ॥२॥ अथ
[illegible] ॥ नहीं ति
हि पाप नहीं तिहि पुंनि नहीं तिहि थूल नहीं तिहि सुंनि नहीं
तिहि सीस नहीं तिहि पाव नहीं तिहि नैन नहीं तिहि नाव
॥१॥ नहीं तिहि कांन नहीं तिहि नैंन नहीं तिहि मुष नहीं ति
हि बैंन नहीं तिहि सास नहीं तिहि आस नहीं तिहि पिंड न
हीं तिहि बास ॥२॥ नहीं तिहि अस्थल नहीं तिहि हस्त नहीं
तिहि जीव विचारन वस्त नहीं तिहि पाव नहीं तिहि पेट
नहीं तिहि श्रोन ति बीज सहेट ॥३॥ नहीं तिहि संश्रित न
आवै गोंन नहीं तिहि बोल नहीं तिहि मौंन नहीं न जो
नि अजोंनि अजोंनि अजोंनि ॥४॥ दोहा ॥ अप
नी जांनै आप गति और न जांनै कोइ जनगोपाल फलबी
ज मैं फल मैं बीज कहोइ ॥१॥ सारद लिषत न अंत कहै
ब्रसुध कागद होइ महमा भगवंत की कहूं करि बसै
कोइ ॥२॥ अमृत रस प्रहलाद जस कहे सुनै जे कोइ अमै
अमरपद पाईये भक्ति मुक्ति फल होइ ॥३॥ मैं मति सारू श्री
[illegible]ली कहीजु थटि बधि बात जनगोपाल सुत हेत कूं नीकै
समझत मात ॥४॥ ॥२॥ इती प्रहलाद चरित्र ग्रंथ सम्पू
र्ण ॥ अथ ध्रुव प्रसंग लिषते ॥ दोहा ॥ सीस नवां कुं
रचरन प्रनि बिनवौं सब साध ॥ निराकार की भक्ति है सो दी
जु छि अगाध ॥१॥ चौपई ॥ निराकार प्राप्ति नित कीजे स
[illegible] ब्रिमलगा इगुन लीजै गुर जब दाहू परमदेवा नामक
बीर कहै हरिसेवा ॥१॥ गोरख भरथरी गोपीचंद ध्रुप्रहलाद
काल रूबंद पीपा धनासे नरैदासा सोफासोम सुनो
[illegible]सब कृपा देह जो गयांनो तो कीजे सुष कथा बषानो
नी सक तिनां हि कछू ऐसी कहीजाइ ज्यूं है त्यूं तैसी ॥
ही कीजो आगपा होइ जनम कथा संभराजै सोई सुषकौ

जन्म ग्यांन की गाथा। जीवनमुक्ति प्रमथन हाथा ॥५॥ चित्तदें
नै संपूरन नागे। नर मन कर मन सैं नत्यागे। उषकें नेस जो वि
उपह्री सुष की कथा सुनैं सुष पूरी ॥६॥ दोहा ॥ जसरस रूपी
ष को कहत ग्यांन सुष पाइ। षमगेम सब हरि कै सुनो सकत्त
तलाइ ॥७॥ चौपई ॥ द्वापुर अंति उपजे मुनि व्यासा। पारासुर वे
बंस प्रकासा। ब्रह्मबंस बिद्या गुन सागर। व्यास प्रसिध बषां
घन आगर ॥८॥ च्यारौ बेद सपूरन बषांने। षटदर्सन सास्त्र षट गु
जांने ॥ नौ व्याकरन कंठे सुभि ग्यांनी। पुंन अवतार हरि केव प्रवां
॥९॥ बिद्यारथी रहैं बहु पासा। अरथ ग्यांन पुरवै सब आसा। पर
स्वरसंर है पराइन कहै अवतार रुध्म दीपाइन ॥१०॥ बरष सहस
आव प्रवांनै सुकृत नजन हूवै गुर ग्यांनै तन दामी पूरन नेहनै
डारा पुरवासी तोयैन हीकारा ॥११॥ व्यास बिलास बिबधि सुष
ना। चिंता अधिक पुत्र कोक बिना। रहैं उदास रैन दिन नारी। बि
प्रबझैं हितकारी ॥१२॥ सब गुन श्रेष्ट बहुत बिधि व्यास कौन चि
तातें रहैं उदास। गृह कौ धर्म पुत्र बिन कैसो। नियापुरष मनय
अंदेसो ॥१३॥ करौ उपाव जा कुल न व्यासा। पावौ पुत्र न जो हरि
व्यास साधै कष्ट करौ तप ध्यांना देह बिह्म बर पुत्र प्रवांन ॥१४॥
रष नियो दस सो कहौ पाइ करो कष्ट जप जे सुत आइ चले व्या
सतप सुत के काजें जहां सकी आसन साजें ॥१५॥ दोहा ॥ बिछ
पदीत हि व्यास मुनि तप बैंवे सुत हेत नैमषारन नारद बिषे रि
मिलि कहें संकेत ॥१६॥ चौपई ॥ सौनक रिष नारद सूं बूझैं तुम
न वन चतुरदस सूझैं सहस अठ्यासी बीनती करही। नौ प्रभु
तुम तें बिस्तरही ॥१७॥ नारद मां बिलौरे रिषबेंनां कथा न उत्पस्वि
वपें श्रेनी गुनसागर है सिव श्री धरता तहां जाउ ब्रह्मा के पूत
॥ तब नारद चाले सिव पासा। कौन बिचार है बूझिवौ तासा।
आन उपावन दीसे कोई। पारब्बती सूं प्रश्न होई ॥१९॥ नारद प्र
चे सिव आश्रामां। गौरा मान देह प्रनमा। आसन दे मुनि कूं वे
गए तब रिष कथा प्रसंग चलाए ॥२०॥ गौरां तुम सूं सिव कृपा
ला कहौ नैं उन गालिका हे की माला। नौ हम पूछी नां उनकहै
तातें रिष आए पूछौ रही ॥२१॥ यह तौ कथा आनूप म आहि।
तुम सूं कहौं न कहसी काहि। विद दस सुता म नन ऐ अयान कादे
हव करिली यौं न ग्यांन ॥२२॥ यह तौ तुम सूं अंतर राष्यो। श्रे सो
बोधन हित करि दाष्यौ। बारन ताबौ बूझौ जाई। या विधि कहि
चाले रिषराई ॥२३॥ तबैं कंमाम नि आर तिन ई संकर पैं जाइ व

हीरही संकर लगे उनमनी तारी। गगन समाधि जाइ कयू टारी॥
२४। परम सुनि मैं सुमिरन करै। कल्प जो दिव लिख्यो न न टरै।
रिष नाम प्रद दान दीनी। करदो जे जो रिबी नती कीनी २५
अनाथ बिश्व के अधिकारी। सुनो सिद्ध लोक अजे हमारी। निस
दिन करो तुम्हारी सेवा। ब्रह्म हो कुदेवन के देवा २६ जगी समा
धि ने नप ट षोले। कारन कौन मता देव बोले। मेरे उर आसं
री तुम कृपा लपर मउपगारी २७ होतो सदा तुम्हारी चेरी
निस दिन रहों चरन लितारे नेरी। मो सषो ति कहो कृपाला तु
मगति का दे की मांहला २८ तब ईस्वर बोले प्रति गोरा। अब
लो यह तुम ली ये न बोरा। अब यह बुधि कहां ते आई
न कहो कौने समझाई २९ तब गोरां ज्यू थी त्यू कही। रिष ना
रद सूं प्रापति न इउन बूझी हूं तुम पै आई माला नेव
मझाई ३० तबै बिगासि के बोले ईस। ये पारबती तेरे सीस।
अबे तरिस रिस रिगाई। ताकी यह रुंडमाला नई ३१। दइ
ला मनि संसो नये। यह तो ईस अचं भो कह्यो। हूं पुनु मूई
बेतर बार तुम निहचल सो कौन अधार ३२ हम नि न
निहचल आधार सो ऐ अबिनासी निज सारा परम
ध्यान गोरां सो तुम गत्यो न ग्यान अरु मन निहचल करि
नहीं रहाई। बिन समाधि बिनसी फिर आई। क्यूं करि यह म
न निहचल रहै। सूं सुल समाधि समझावो सोई ३४। आवा
गवन मिटै जिहि ध्याना। बपरा षो सो कहो गियाना ज्यूं तुम
त्यूं हम कहि समझावो। यह चंचल निहचल स्थावो॥ ३५
दोहा॥ जे मन लागे नां वस्तु कहीन रतनु तजाइ। पांच पची
स्तत सि सहज समाधि समाइ॥ ३६॥ चौपई। पारबती बाच॥
पांच पचीसो थिर क्यूं कीजे। ससि सूर गहण गति दीजे। न
ग्रंत धरम जोग की धरनी। सो मो हि कहो तुम्हारी करनी। ३७
जिम ल न सो सिव रदे बिचारी। उत्तम ग्यान सू बूझ्यो नारी प्रम
लो पनु बिश्व नाथा। याके हेत प्रम धन हाथा। ३८
चले ऐका ति बिचारी। बट तर बैठे सिव उपगारी। तरु के प
दी रे उडाई। सूवा अंड रह्यो जड ताई ३९ नां व प्रताप कहै
सब ग्यानी। गोरां सुनै हरष प्रानी। जोग जुगति सुमिरन को मा
गा देवा। सुनो ल रत्नु मन लागा ४०। मन पवन मनसा करि थीर
सुरति समेटो सरवे सीर काया कूं तजि ध्यान लगावो। परम
सुनि मैं ध्यान समावो ४१। साधन कह्यो चक्र षट केरो। गगन

स्यौनैनिजघरहैरो।नंवरगुफाजबबसिहैगोरादेवीत
व्यापैजोरा॥४१॥तहांआगेहैघरअबिनासी।बसोबिलंबे
ननषासी।अजपाजपैगोराअम्रसपीवो।आवागवनमिटैनि
जीवौ॥४२॥मूलमंत्रहरिसुमिरनजापरटोजोहिजुगजुग
पापंयडुतपदेसकहतसिवनाथा।गोराग्रानपरमसमात
॥४४॥दोहा॥इहांमगनगोरानईउहांअडनयोपोषजठप
लटेचेतनभरोनजनग्यानसंतोष॥४५॥चौपई॥पषीप्रगट
सुनैहरिगाथा।रूकानेरैगोराकेसाथा।तबसिवकह्योकोनय
हअ्रांन।वगिछिपिलीयोमेरोग्यान॥४६॥बचननयांनकवौ
लेसीव।पषीतडिलेनागोजीवरूपसिचांनीकीयोईसजांन
नपावैबिस्वाबीस४७॥ईसनडैसूवाकेपीछे।नेनेयवैरसूव
कतईछे।पीछेसिवआगेसुकनागेयो।पतनीव्यासतहांतन
त्यागेयो॥४८॥संकरत्रासतज्योतनसूवा।उहांव्यासतपमूरल
रूवा।बिह्मदीयोवरमांगेयो।व्यासपुत्रचाहिकीपुरवोआस
४९॥तपकेजोरिलीयोसुतव्याससोसुतहोसीपरमउदासकिसे
कंूतीसुतदेषं।जीवनजन्मसुफलकरिलेषं॥५०॥ग्यानवि
ग्यानत्रिकालहिजोनैदेउइसोसुतव्यासबषानै।जोमनबं
छितसोसुतपायो।नागवडोस्योश्रोताआयो॥५१॥चरनबं
दियरिआरो।व्याससूवाप्रांनबसेग्रलवास।पिंडपुइहै।पिंड
रसलीरो।प्रांननिरंतरिहरिरसपीरो॥५२॥नषसषसाजसंवा
स्योदेवा।अपनीजानिआपनीसेवा।ग्रनकेरदिनछननआई
रूषतवडुतपिताअरमाई॥५३॥आजककालिजन्मसु
तहांईअबगतिकीगतिलुपैनकोई।अवधितलेछिबसे
ग्रनजबही।अचिरजनयोसबनहूतबही॥५४॥सुषअप
नोमनहरिसूंलायो।गुफागातमाताकोपायो।सिवउपदेस
समझिकेलीयो।सतगुरजांनिमनबंदनकीयो॥५५॥सुषल्यौ
लागीहरिकेचर्नी।डरपैबडुतजन्मअरुमरनी।तार्थेलगे
रहैल्योमांही।जोरीसुरतिसूटैनांही॥५६॥आवैआदि
नगतडुषआगरअबनदिषाडोहरिसुषसागर।प्रीतिल
गाईअअचलअनंगा।यूंबिनमिटैननौकोसंगा॥५७॥नष
सषसुमरैनमलसार।गदगदबानीकरैपुकार।याबिछिसु
षग्रनअंतरिध्यावै।माताडुषीपिताडुषपावै॥५८॥सबकेसो
चयहमनरहै।ग्रनबोझमाताक्यूंसहै।सुमृतकथासुनावै
व्यास।बिद्याधरमिलिबैठेपास॥५९॥सीतांपरदेषोजीमहै

नास्तिक हैसो नपढ़ेतो॥७७ मात पिता अतिकैसे अंदोहसु
षदेव बंधेन मायामोह पुत्रपुत्र करि पीछे लागे हमसुतको
नदोषतैं त्यागे ७ पवाडेरहो पुत्र सुषदेवा माता कहे करू तुम
सेवा सुषदेव रहेन पीछो जोवे दुषी बहोत माता अति रोवे ७
७ पीछे धाए रोवत व्यास मोहि पुत्र जिन तजो निरास अब
कौन बिरपुत्र हूं तेरो केती बेर नयो तूं मेरो ८॥ यह रूप सुषदेव नपसु
सब जाने मायामोह जीव नरकाने व्यास दुषी रोवत जाह पीछे
सुषन अपूर्व कब हूं ईहो ८ सो कहे व्यास मुनि गदगदवानी
फेरनैन अति नीझरपानी सुनो पुत्र बीनती हमारी व्याकुल
माता दुषी तुम्हारी ८७॥ रुदन बिलाप करत जिन मेलो बाल
क जननी के संग षेलो सुनि सुत जो माता दुष दीजे धरम नफ
ले अरु नरक परीजे॥ ८२॥ श्री सुषदेव उवाच॥ माता पिता तजे
मे केते चोरासी मधि पारे तेते जिहि जिहि जो निग्रन हूं आयो
ता हीता को पुत्र कहायो ८३ कौन कौन माता आराधूं किसकूं
तजों मोह किस बांधूं वार पार कछूं लहूं न थेव सुनो व्यास
लेसुषदेवा ८४॥ च्यारि षानि फिरते दुष पायो नरमत नरमत ते
रे आयो तातें तूं अब कहे सुत मेरो सुन ज्ञान चोरासी को फेरो
८५॥ कीट जन्म दस बांद रतासा नि ऊन चन दस जो निपूई
सा पंष बारसत त्रमि हूं आयो सूकर स्वान सिंघ तन पायो
८६ मृग मंजार स्याल के ई बारा रीछ रोझ सांमर अवतारा सं
षा सेह देह मैं पाई गंडा जरष चरज मुरगाई ८७॥ घर अरु स्व जे
जरन तन नी नयो अज मेषा वृषभ ह्वैया पायो अजिगर अ
पड दुष अधिकाई जलचर थलचर कहत न आई ८८॥ चीच
र नयो स्वान के कोना सुनो व्यास दुष कहौं बषांना रुध्र स्वान
को मैं तहां पीयो दूजे स्वान दांत तर दीयो ८९॥ आधी देह दां
त स्यूं बाटी मुष सू तुचा गहि मैं गाडी नांतन नत जी न जीव हूं
सुष अरु ध्रसरीर नयो दरदुष ९०॥ तरसरत तरस सतत हियो मू
वो फुनि और नर लीष हे हूं वो जुवती के तनि दीयो वासा से
दुष कहों अब ही तुम पासा ९१॥ नयो पुध्यार थ लागो मातां तव्र
तिन मो कूं पकस्यो हाथ्या मीडत मीडत तेरहा ड अज कूं मो दि
षाइ गोराड ९२॥ नीतरि मार दुषत करि मास्यो पीछे गर्भ सि
लापर डास्यो जरे सरीर तजे न हीं प्रांनी दीरघ दुष की सुनो क
हांनी ९३॥ नांना जो नि नटकत फिस्यो और सुनो जिह दुष
हूं पस्यो अस बन संकीरन के पात जम हूत निषें चेमोत हां॥

ता ॥९५॥ पादी न्हौ बैतरनी की धारा ॥ जम द्वार पड्यौ कैई बारा ॥
तहं सासना बहु बिधि पाई सो हू तुम सूं कहौं सुनाई ॥ ९६
जल तें थल नलगा इरहे स्यौ ॥ ९७ ॥ अब ताई सो मोहि फेस्यौ ता
तें तल पकरि जम पावै तो जिग अगनि आदि मोहि आवै
॥ ९७ ॥ कबहु स्वरग लोक मैं पायो पुनि नट क्यौं उडगन के अ
यो बिबिधि नाति देव तु भजल थल ॥ सरग रसातल भ्रम्यो
लल ९८ कबहु स्वर्ग नरक गयो कबहु तें दुषमो नास्त
हे सबहु साथै अब बंधन होमो तात जो ब्यास सुत को अ
सोह ॥ ९९ ॥ दोहा ॥ रुपमदीपां हून हू फिर्यो नाना बिधि अ
नंत नाना जो अनंत माता पिता न जोन सिरजनहार ॥ १०० ॥ ब्या
सोवाच ॥ चौपई ॥ सिरजनहार जो सुष आवो ॥ घर ही मांही ध
रम चलावो ॥ ब्रह्म बंस उतम कुल पायो ॥ लागै [illegible] अ
यो ॥ १०१ ॥ च्यार बेद षट सासत्र गयांनां नो ब्याकरन अवर हू पु
रान ॥ आश्रम धरम सकल हूं जांनो बिद्या पाट अनंत बषांनो
॥ १०२ ॥ श्री सुषदेव उवाच ॥ आश्रम धरम करमन ही छूटे बेद
पुरांन जगत बित लूटे ॥ बिद्या मुक्ति करे जे ब्यास तुम कूं
[illegible] मोह की पास ॥ १०४ ॥ व्यासोवाच ॥ ब्यास कहे सुनि सुत सु
[illegible] कम धरम आदि है [illegible] मत तुम मिले न जे जगनाथ
मात पिता न बिद्या होसाथ ॥ १०५ ॥ श्री सुषदेव उवाच ॥ सुनहु
ब्यास संग को गाया को आयो को जे है साथी आदि अंतिज
[illegible] अनेक ॥ १०६ ॥ ब्रह्मा बिसन रुद्र
रासुर [illegible] रिष [illegible] गवा आगस्त [illegible] गवा गिर [illegible] बसिष्ट
बिस्वामित्र मृदकंजन स्थ पिपल गये अनंत ॥ १०६ ॥ नारद ज
सन गये अरजन दुरबासा जम [illegible] गये तन सांडी लो मुनि
[illegible] पुलिक हा पन लस्त जा तिलनां ही रहता ॥ १०७ ॥ कसिप ग
[illegible] गये दस जो ति सहस अठ्यासी गये जु है ति राजा धुंधमार से
गये बुध पुत्र परस्त नर हे ॥ १०८ ॥ दसरथ राम लषमण जेसे न घु
दिलीप नागीरथ तेसे गये सुग्रीव नील [illegible] गज गवा
ष अंगद सु अनंत ॥ १०९ ॥ हनक सिब रावण [illegible] रुद्र जी
तम करा षि सुषेण [illegible] हस्त कंपन काल हि षाये देवा अनंत
नर अनंत बिलाये ॥ ११० ॥ अजैपाल हरदास जो धन आगनत
गये कथो कहा [illegible] निय कु कथा कहत चले मुनि ब्या
सा पहुचे जाइ सरोवर पासा ॥ १११ ॥ सुरकन्यां हूं तै जल मांही
सुष कूं देषि प्रनाम करा ही पी ब्यास अंबर हो

रिसीएतनतास॥२२४॥बोले व्याससुनोरीबाला।सुषदेवदे
षन अंगसंनत्ता।व्यासबधसैलज्याकीनी।तातैंनियाकही
मतिहीनी॥२३॥कन्योवाच।वेदिबदृष्टीआत्मग्यानी।ऊ
सोऊधरतैसोपानी।सर्पसिंघसुरहीहरिणोकें।तुमकछुसमझो
निनिबवेके॥२४॥दोहा॥ग्यानकह्योयूंव्याससंसुरकन्यांर
मझाइ।तबलगसुषछेतीपरी।तपबनिपकुतेजाइ॥२६॥चौ
पई।सघनबनसरजगमनोहो।सुफलबृक्षअंम्रतजलतो
हो।आसपदममांडिसुषबैठे।मनपवनांलेगगनमनिपैठे।२७
सुमिरनध्यानजोगअभ्यासा।तहांपेरलेपहुंचेव्यासा।बाल
कसुतकतआरोबनां।सिंघसर्पडुषकारघनां।२८।मातारोवत
आरोमैरहे।पिताबचनपावनसूंपैले।सुतममजीवनिजमूं
जलमीनतजैप्रानतबहीछैनीन॥२८॥श्रीसुषदेवउवाच
मातापितानकोइमैरै।जूंगेमोहबंध्योहैसैरे।मीननीरजमूंस
बकोसाथ।धर्मजस्योकोपकर्योहाथ२९।रूदनकरैपुनिबो
लेव्यासपुत्रपिताजिनितजोनिरास।प्रीतिपनगनीलागीमे
रेजीवनिजरीहाथिहैतेरे२०।सुनिसुतसोचसंमदरूपस्यो
तुमचितवेतोहलरतिस्यो।मोहणासिमेरगरमांही।तुमषैंचो
तोजीवननांही२१।सोकअंगनिप्रानीअतिजैरैतुम्हारीक
यामेघसोवेरीकरूना।बोलेबिनवेव्याससुषनेंकनचितवे।
तासर२१।सुमिरनसेतीसुषकोहेतमुरछिपरैधरव्यासअचे
तहोइनिरासबकुतडुषपारो।तबनागाबिद्याधरआरो२२
सुनोव्यासबोलेहरगपाल।षोयोग्यानकहांइहिकालअौर
नरूपमोधजुकीनो।अपनीबेरनयाबुधिहीनो२४सुषको
सोचकरोजिनस्वामी।नागनजैसुतअंतरजामी।बिबधिनो
तिकहिग्यानबिसाल।समझाइलबाजुरहरगपाल२५।क
हेव्यासकीयेआलोचन्य।कीतपपारोंअबपोचमगएजहां
सुरपतिदीवांन।सुरपतिदीयोव्यासकूंमांन२६।कोनकाज
रिषइहांपधारे।बिलमेबदनरूप्रानडुषारे।बोलेव्याससुनो
सुरराईसुतउतपनसबकथासुनाई२७।हुषदीरघदेकीये
त्यागऐकेपुत्रलीयोबैराग।मोहोजाइनलघ्योहैउग्रतप
इहांप्रहरै॥२८॥दोहा॥व्यासकह्योसुरपतिसूं।सुषतपवि
धिबोहारहमसुततुमथिरराजहै।सोकछूकरोबिचार॥
२९॥चौपईतबसुरपतिमनिचिंतानई।अपछराबडीवु
लाइलई।सुषकीकथाकहीसबव्यास।जाइकरोवाकीत

रत॥ सै चलि तेकै गए॥२१०॥ [illegible]॥ बूझ्या सिष्य तपन्न
लां पांच भूत तत सरीर मे आगे रनाकै है येन को इथार॥ २११॥ श्रीसुष
[illegible] बूझ्या सिष्य मैं हम नही ना हम तत तबै ध्यान आगम आ
गोचर गम न ही तहां हमारा ध्यान॥ २१२॥ [illegible]॥ सुनि सुष
न लो इसि सो समकि र करो बिस्वास पंषी उडे आकास दिस अं
बर निकै पास॥ २१३॥ श्री सुषदेव [illegible]॥ सहकामी आवे सदा नि
हकामी निज बोर कन दिख्या डिकूकस गहे वैरना के इ और॥ २१४
[illegible]॥ कर जोडे बिनती करे देसुष हम कू मान न ही तर
पी हों जानि हे जब मन सायो गयो॥ २१५॥ मेर देन आगे मुडे सुनि
सुष मोटे रूस मृतक जिवायो बदृत मे चतुर को ए सब चूर २१६
बूझ्या बिम्म यदे स तो पाता सुर श्रुंग मे कं मुच केदा ग्रह धूम रि
षाइदस आदि अनेक॥ २१७॥ श्री सुषदेव [illegible]॥ अब र नातुम
जा कुछ करो न उन्ह अग जो र हसुषदेव बिच सौं न ही बादि
करो जिन सोर॥ २१८॥ चौ०॥ इहि बिधि सुषदेव जाइ नली नो तब
रंना ज्युध आरंभ कीनो सील रूकाम न ई समु हाइ को जीते को हारे
जाइ २१९ रंना यंभन बांन चलायो सुष अनुराग सूं रिब हायो
रंना मोहन बांन चलायो सुषन सो हनि कटि नही आयो २२० बं
[illegible]सी का सं [illegible] यो सो सुष ध्यान गदा सूं हयो तब उदमा
दबांन सं नायो सो सुष बिरह बांन सूं जाय्यो २२१ गही रंना अ
चाट न बान मारे सुष गहि ब्रह्म गियान पंच बांन सु तो सुष
हारे पंच बिषे तब रंना सं भारे २२२ सबद बिषे करि रुचि उप
जाई सो तो सुने न बादि माव सपरस बिषे तब रंना सं भारे
ब्रह्म अगनि सूं सुषदेव जारे २२३ रूप दिषाइ रूमो है मन कू सो
तो लरक परे दि बिजन कू रंना कहे सरस सबानी सो [illegible] रस बि
षू करि त्यागे ग्यानी २२४ गंध दिषाइ मुनी कू मोहे सुषके उ
सुभ वो है रंना पंच बिषे इडारी सुषन व्यापे मन मे हारी २२५
आ [illegible] नई उपाय को इ कौन जात सुष हम बासि हो इ अ
स सबै छाडी चतुराई जप अपयात बिचारन आई २२६ ज्यूं
ज्यूं स्वाद सरीर दिषावे सुष कहै नरक दिव आवे तुम जानो सु
ष [illegible] स्यो मल चीस्यो पट दिषायो प्रमल॥ २२७॥ श्रीसुष
[illegible]॥ बोल्यो सुषदेव रूलो तबे सीता के ग्रभ आयो जबै
जो जानो अे सो ग्रभ वास तो माता इहा करतो बास २२८ तबे
सुक चिमुर छि धरपरी सुष सूं बडु बे अद बीकरी नादि नादि
कार छेन लागी तुम सुष सागर हम मद नागी २२९ तब सुष

देवनगीकृपाला।उदरदेष्योविहाला।श्रीमहरीपरउप
गारी।करफेरतेनानईसारी।२००।परसपरसतपलटैलोह।
यूस्योतिनईकलपना।विह्मो।हसीतनईसुषकेसरनैधनि
धनिलागीउचरैनै।२०।२करैवीनतीअस्तुतिधरी।करुनावच
नोकपाधरी।तुमसुषसागरहमडुषदाई।बकसोहूकसरन
तुमआई।२००२।पोहनहनतरूषफलदेई।संतवडेसुषरामस
नेही।यहउपाइतुमदरसनपायो।करीवीनतीमाथोनायो।२
००३।दोहा।डुषदेतेमोह्रिसुषदीयो।माचोसुषदेवनामदेष्द
हनवाकुरीस्नाकरिषनाम॥२००४॥चौपईपङुचीजाइइके
पासी।कहेइडदेवमिलिव्यासारनाकहेसुनोसुरराईडुराउध
तपलीयोनजाई२०।द्वषतनछिविमेरीगती।विचलिगए
सववनकेजती।व्रतहमगौनकीनवनमाही।सकेष्षहेन
एलोही२०।खगमृगपसूजडमोहेतवही।सुषदेवसूवलचले
नकवही।कामचेष्टालिलेबोली।विचलताज्यूंसुरतिनडोली
२०।विषैवाइहमवकृतचलाईनगदीपगकंहीनवुजाईस्र
नबलकनहकीविकृतेराकोटअंगानअवेनेरा२०।छरागी
नकेकहापानीआगैयहिविधिसुषसंजोरनलोगी।काष्टवाल्ह
पूरनबैरागी।तिह्लोककीमायात्यागी२०।सुरपतिकूरनासु
षदीमेफुनिव्यासदीसनाषनकीयो।सुनकृव्यासतुमअतिव
डभागी।जाकेसुतहरिसूंलेलागी२०।२उमजोगधरणांसोयी
जासूरीकेअंतरजोमी।ऐसोजतीजुवसतुम्हारेइकोतरसैपरी
यातारे२०।१तुमजिनिमनमेहोकुअधीरा।सुषनिरमोहअडो
लसधीरा।हमवकडावडपावविचारवोननलोगेपुनतुम्हारे
०२सुनिरोवचनसुमेल्होआसआगपामांगिचलेघरिव्यास२
सुषकेदरसदेवमुनिभारीवूस्यावि।षमहैसुरआरी२०।३साव
चीलहामीअरुगौरासहेसअपछरासीरिषइकवेरामंगला
इकैरेआरतीवडेजोगेस्वरसुषदेवजती२०४पूरननजनगपा
नधनपूरोसतसधीरकाछदिढसूरोसुरनरजैजैकारवषानै।
सुषकीरतिजुगजुगजसगानै२०६अडिगअडोलनआडै
नेमसुषप्रतापवषानैषेमसुषसंवादसुनैरुगावेअमरलोव
फलवेछितपावे२०।जनगुरकृपाकरीपटलागोयहगुनक
थतचतुरदिनलागो।कथिविपुलउनमोनमवानी।जथास
क्तिसोषेमवषानी२०।८नूनचूककछुघटिवधिआईसुत
कोहेतलषेसवमाईयहअरसासिसुनोसुषदेव तुमगुनवा

रूपारत हिये व्है॥२०॥ ब्रकत्ता ह्वैलै पाप सुरता नादर ...
ब्रह्मता श्रोतान जानाम्म विरष्यात त्रिजीवनं॥२०८॥इति
श्री ग्रंथ सुभ संवाद संपूर्ण॥ ॐ अस्य श्री विचारमालावे
दा॥ नमो नमो श्री रामचन्द्र सत चित आनंदरूप। जिहि जानें जगरू
प भ्रत नासे भ्रम सर्प। राम मयास कुरदया। साधु संग ज
नहिं तत्व ग्यानी जानें कछु रहो विशेष सनेह॥१ पद वंदन अ
नंद जुत करि श्री देव मुरारि। विचारमाला वरनन करौं गौनी
तुरत भ्रमारि॥२॥ कौं मौन यह मैं मयय हैना हि मम सब विकल्प
नो हीन। परमात्म पूरन सकल जो निमौं नत लीन॥४॥ श्री
गुरसत्तुति। दोहा॥ तात मात भ्राता सुहृद इष्टदेव नृप प्रान
अनाथ सु गुरु सब तें अधिक दान ग्यान विग्यान॥५॥ परं ट पकु
रु गुरु स्तुति जन्म न लिन प्रकास। अनाथ कमोद निविमु
ष जन ताब कुन होइ कुलास॥६॥ टेरत सम्भ्रमया करि मोहनी
हलो वृत जग्यो ग्यान तो चनपुले स्वप्नौ भ्रम विसरंत॥७॥ गुरु
विन भ्रम लाग नसीयो नेद लहे विन स्वान केहर वपकोई
निरखि प्रखो कूप अ ग्यान॥८॥ प्रगट अवनि कर रविण रत्त
न ग्यान विग्यान। वचन लह तन परस तें अन कुहोत सुजा
न॥ स्वर दरस आदरस ज्यूं होत अग नित दोत तैसें गुरु प्रस
न्नै अनु जन नयन हो त॥१०॥ जिम चंद हित दि चंद मनि
अपी इवत ति किमान गुरु मुष न षत सिष्य के अनुनरहे
नाविसाल॥११ सिष्य वचन॥ कुसरना गति रावरे श्री गुरदीनद
याल साधौ वंदौं चरन दर कुक विनत रसाल॥१२ कं अना
म अतिसय दुषी डस्यो देषि संसार वहत हुन वसिध मैं मो
हि करौ अनुपार॥१३ आसा निस्मा चिंत वकु पेडा इन घरमा
हि जीव निकि हि विधि होइ मम इहै संसति कुं पांदि॥१४ कव
कुसुम ति प्रकास जुत काव कुकमति अधीन विवनारी केके
न जू रहत सदा अति दीन॥१५ नदी आसा सुत अ सुनतट न
ग मनोरथ नार तिस्मा अमित तरंग जहां चंव रत्न मगम्मीर॥
राग दिक जल जंतु वहु चिंता प्रवल प्रवाह धृति तरु
रुगी तरनति हिं वंधन मो मन आह॥१७ प्रवल जुगल सु
न अ सुन गज निरत सुरौं सब ठाइ अपनी हून अनाथ ठं
प रयो म छिति हि आइ॥१८ कब कुन मन थिरता गही समझ
यो सेयो ति जैसे इडी झंट की स्वारथि सूं धी होति॥१९॥ चलद
ल पत्र पता षपट दाम निक छिप माय नूत दीप दीपक सि

षायो मनव्हातअनाथ॥२०॥सहजसुनाइअकासकूं॥पाव
कजरषचलेतचंचलसुतःअनादिको॥मनमितिविषयक
रेत१२॥जगसाचोमिथ्याकिधौं ग्रसीतज्योंनहीजातभही
होंसूलअपज्योंनुगिलतलवनतनघात॥२३॥श्रीगुरुवा
क्य॥समाधानगुरकहतुहैं दयाजुगतिकहिवोल्लममवचन
नमेंश्रानित्तेआपतवाक्यअडोल२३॥नहीमेंसेमनदेचप
लदुःकरगतिअतिश्राहिगुरुश्रुतिसुधअभ्यासकरि॥नि
श्चलकीजततादि॥२४॥सिष्यवचन॥हुविषईअतिअजित
मनलोंहिनहोतअभ्यास॥तातेंफलत्तुमपदसरनहरकुक
विनजुत्रास॥२५॥श्रीगुरुवाक्य॥सुनिसिष्यउत्तमसीषकहूंजो
चाहतनिजश्रेय॥जगबंधनइस्थतमुच्यौ॥तोसतसंगकरेय
२६॥सोरठा॥श्रीगुरपरमदयाल॥असरनसरनउदारअति
जनअनाथउरसाल॥कृपाकरतचाहतहस्यो॥२७॥इति
श्रीविचारमालसिष्यत्रासकाप्रथमोविश्राम॥१॥सिष्यव
चन॥कहोकृपाकरिसहकेंलदानश्रीगुरदेव॥ताहिनिर
षितआपनोकरौनलीविधिसेव॥१॥श्रीगुरुवाक्यसाधु
लछनबरनन॥अतिकृपालनहीद्रोहकहोंसहजसी
लतासार॥समदमदांतअकांममत्त॥मृदुलसरवउपगार
२आत्मवितजुअनीहसुचि॥निद्रकंचलगंनीर॥अपरमतमत्तसर
स्हतमुनितपसौतसधीर॥जितषटगुणधृतिमौनिकव्यमानद
आपसमानमतिप्रतीतअनीतगतकारुणासीलनिधान॥४॥अस्त
तिनिंदामित्ररिपुदुषसुषकंचनकाच॥ब्रह्मानिणअमृतगरल
कंचनकाचनवीच॥५॥समदरसीसीतलहृदयगतउद्वेगउदार
सूक्षमचितसुमतिअतिजगचिदवपुनिरहंकार॥६॥श्रष्टमित्र
निष्कलमनत्यागीअतिसंतोषईस्वर्यआयेवगपानवलजान
तबंधरमोष७तनमतगतश्रोनेदगयगुणातीतनिसप्रेहबिग
तिकलेससुब्धेदमतिसंतोन्हषणगेहा स्वसंवेदनदिकदिसकैं
ल्लदानसंतमहंत॥प्रसबेदिकहेकछूसंगपरतापकहंत॥८॥
सतसंगमहिमा॥सतसंगतिनिजुकल्पतरसकलकामनादेत
अमृतरूपीबचनकहितिहुंतापहरिलेत१॥दबंदनतनअ
घहरनतीरथमेंपदतोइसेनावनचितसौतकरकृपापरमपद
होइ२॥सतसंगतिसुषसिंधुवरमुक्ताफ्लिकैफलि आसेपरम
अगाधअतिकोउपैवैमलनदलमहिलि॥२॥सतसंगतिसुषपल
कजोमुक्तिनतासमसमान॥ब्रह्मादिकइंद्रादिनुषनिपटिअल

प्रोजांन१३। जगतमोहपासी अजर कटैन ओनउपाइ सो
सतसंगतिकरतासहजमुक्ति ह्वेजाइ १४ कामधेनि अरु
जोसुरतरुफल होइ सतसंगति छिनएकमें प्रानी पावै सोइ १५ पा
को अरुसंत को बडो अंतरो जानि वह लोहा कंचन करै एक करै
आपसमांनि १६ बिछ्रितजज्ञकरतसदा जेद्विजउत्तमगोत
ध्यानिकटिचरितिजातुहासोफलपगपगहोति १७ दयाआदिदै
धर्मसब जपतपसंजमदांन जोप्रापतिइनसबुनकेसोसतसं
गप्रवांन १८ तीरथगंगादिकसबै करिनिश्चैसेवजुसोकैव
सतसंगमैंप्रानीफलनैवैजु १९ ब्रह्मादिकदेवासलकातिनन
जिजोफलहोत सोसतसंगतिमेंसहज बेगिहीहोतउदोत
२० वेदादिकबिद्यासबै पावैपढैजुकोइ सतसंगतिछिन
कमैं होइसुअनुभवलोइ २१ कंचसुमेरकैलासकौ सबतरत
रैरहंत सतसंगतिगिरमलयसमि सबतरमलयकरंत २२
मुक्तिचारपालकचतुर समसंतोषबिचार चौथोसतसंग
तधरम महापूजिनिरधार २३ मुक्तिकरनबंधनहरन बकु
तजतनजगनत्रिपैयहको टिउपाइकरिसतसंगतिकर
२४ ओरधरमहेतकजगैं आहिसकामसरूप साधनग्यांन
होतहैं सतसंगअनूप २५ स्रुतिसुमृतिश्रीमुषकहो
सतसंगतिजगसार अनाथमिटावै बिषमता दरसावैसु
चार॥२६॥पत्र॥इतिश्रीविचारमालसतसंगमहमा छिती
यो विश्राम॥२॥सिष्यवचन॥ जोजगवनगुनसाधके
जानेनिरधार निरपेक्षकसंकल्पगतहैसुषसिंधअपार १
निहकामीवैराग्यचितमोहिनआवैबूझि केसेहितउप
देसगोलनिजसूझि॥२॥श्रीगुरुवाक्य॥कहतसंतजेसहज
हीबातगीतरुचिबैन तेतेरतनउषहरन ज्ञायकसबसु
चैन ३ बोलतसहजसुनाइजे बचनमनोहरसंतस
मिकाग्यांनकी तिनहुमेंहैसंत॥४॥सिष्यवचन॥जोजग
वनमेंउषितअति औरनकछूसुहाइ सपैजो मिकाग्यांन
कहीसोमोसमुझाइ॥५॥श्रीगुरुवाक्य॥सुनेज्यासुबिचार
स लनमांनसासुहोइसत्वातिअरुशक्ति पदारथाजोवन
इहतुग्यांसमभूमिकाहैसिष्यहनिरधारजोअब
हुसंसयकरै वरनौसोप्रकार॥७॥सिष्यवचन॥जोजगव
नलघुमतिसुमम रहेमिलतेनहीजात निलिनिलिता
तेंकहोग्यांनभूमिकासात॥८॥श्रीगुरुवाक्य॥ग्यांनभूमिका

बरनन॥ बिषय बिषेन ईर्षता गुरुतीरथ अनुराग ताते र
श्रुनेच्छा कही कथा श्रवन मन लाग ।९। भगवत रत गत अ
नमत प्रेम भक्ति जु नित्त चित्त गुन गावत पुलिकहदें दि
न दिन सरस सुहित्त ।१०। दूजी कही बिचार गां जप जो तत्त्व
बिचार ।एक तत्त्व सो धन लग्यो कोइ को संसार ।११। तनु मान
सा जु तीसरी मन को प्रत्याहार थिर है सुध सरूप की राखे नि
त संभार ।१२। चतुरथ सता सियहि अनुभवहि देअनंग आ
भ जग हस्यो जहं लै न भूमधि सिध तर ।१३। छूटे ओतन अनिमा
न जब निश्चै कीयो सरूप ।असंस कि यह है भूमका पंचम म
हा अनूप ।१४। कहें पदारथ बुधि लै सबको होइ अनाव य
ह पदारथ भावनी खष्टी भूमि लखाव ।१५। भावा भावन त
हा कछू सप्तम तुरया माहि मैं तैं तहां न संभवे कहा आहि
कहा नाहि ॥१६॥ सोरठा ॥ प्रगट करी गुरदेव सप्त भूमिका ग्यां
न की अनाथ लहे निज भेव चित दे करे बिचार जो ॥१७॥७
३॥ इति श्री बिचारमाल ग्यान भूमिका बरनन त्रितीयो विश्रा
राम ॥३॥ सिष्य बचन ॥ भगवन मैं जान्यो न लैं सप्त भूमिका
ग्यान निर्मल ग्यान उदोत कूं साधन कौन प्रमान ।१। भगवन
तिमर न सैन ही कहि दीपक की बात पूरण ग्यान उदे बिना ह
दे भ्रमन हि जात ॥२॥ श्री गुरु बाक्य ॥ ग्यान साधन कहत हैं॥
प्रथमे जग्यास कित जि दारा सुत गृह बित्त बिषवत बिषे
बिसारि जग ॥ राग द्वेष अति त्याग निय अति पथ जे जा नि
भर करत प्रीति अधिकाइ ते सब अति मति मद जग व्यथा
धरी नरकाइ ।४। अस्त मांस अरु रुधिर तुका कस मल न पस ष
पूरि निरधन असुचि मलान तन त्यागि आगि ज्यूं दूरि ॥
अह बिषतन का टेच है यह चित वत च हिजा इ ग्यान ध्यां
न पुनि म्रान क्या लेत मूलनु जत धाइ ।६। मैथुन अष्ट प्रकार य
ह अनाथ कहै श्रुति चाहि इन तें निज बिप्रीत जो ब्र
ह्मचर्य कहिता हि ।७। श्रवन रु सुमरन कीरतन चितवन ब
तरोकत ह ठ संकल्प अरु जतन पुनि प्रापति अष्ट कहें त
।८। सुत मीता बातें कहै मनो मोहनी मंत सुनि सुनि आंनद
पाइ बसि होत मूढ जग जंत ।९। काज अकाज लखे नहीं
गह्यो मोह दृढ बंध मो गुर षो जिम घनां लह्यो छुट्यो संध
मधि अंध ।१०। सोरठा ॥ अंध कूप सम ग्रेह पर्यो न जान्यो मरम
सठ बंध्यो सुप सवत नेह सुत तिय क्रीडा मृग नयो ।११। दो

१५६॥इति श्री विचारमाला ग्रंथ जग मिथ्या वर्णनं नाम पंचमो विश्राम
५॥ सिष्य उवाच ॥ नौ भगवन मो मन भई संसय देहु निवारि
जग मिथ्या किहि बिधि कह्यौ मो प्रति कहौ बिचारि॥१॥
श्री गुरुवाच॥ जग मिथ्या दृष्टांत है॥ सीतल जल मृग
त्रिष्णा कौ। गगन कंवल की बास सुंदर अति बसुवंन ऐसो जगत प्रक
सार॥ ज्यूं नभमें कलपायंनी पुनी बिबध अनेक करैं युध अति क
अद्भुत ऐसो जगत सब बंध्या के नाथ स्वप्न का हुन रहि दिसन बि
ये भ्रम होइ पूरब तजि पछम गयो तहि बिषाद जग सोइ॥४॥ रविक
र ल्गन समे टिके करी गूंथि रज माल पहरै बंध्या को सुवन सोना बन
सिसाल॥ सुसे सींग कौ धनुक करि गगन पुरष सीयें जाइ देषि मा
ला नहि लगी पुनि पुनि मांगत ताहि॥६॥ वृद्ध मांगत यह देत नहि
ही परसपर रारि नां कछू भयौ न है कछू ऐसो जगत बिचार॥७॥ गग
निष की लहरि तें आ निबनायो धाम ऐसैं पूरण ब्रह्म में देषि जग
अभिराम॥८॥ मृग त्रिष्णा को नीर है सीचें नंदन अंनोज ता सुगंध
है सरस आदि जगत यह षोज॥९॥ सिष्य उवाच॥ जगत जगत सब
कोउ कहै अरु पुनि देषी नैंन सो मिथ्या क्यूं कहत हो आरति जन सु
प देंन॥१०॥ श्री गुरु वाच॥ रजु देषि पानी घने कलपै बहुत प्र
कार कोई सरज रु कोई आप कहि कोई कहै पहुम दरार॥११॥ सुक्ति निर
षि बहु नेह रै पानी कलपे ताहि कोई नोड़ रु कोई रजित कहि कोई
कहै का गर आदि॥१२॥ पूरण अछै आत्मा अब्यय अचल अपार
मिथ्या ही कलप्यौ घनो तामें यह संसार॥१३॥ ज्ञान बिनि निन दितो इते
बुदबुदा फेन तरंग। या प्रकार संसार यह सुध स्वरूप अनंग॥१४॥
पूरण आत्म में जगत कंचन भूषन प्रकार अद्वै भ्रम लय रूप
जा सु हरि नाम असार॥१५॥ काष्ट में रहटा भयो रहटा में नयो फेर प
ऐयो रूलन ता फेर में नयो सूत को ढेर॥१६॥ बसन नयो ता सूत में॥
पुत्तरी बसन मंझार॥ आपस में पुतरी सबै करत परसपर रारि॥१
का सू कयारा रि कौ कह्यौ कहा सन बंधातन बिकार यू ब्रह्म में
कलपै पानी अधा र॥१८॥ ब्रह्म रतन न भयो निज तामें कोति अनंत
है नां ही कछू तन बनै ऐसें जगत दरसंत॥१९॥ कहै अनाथ का सू क
हौं आदि मधि अरु अंत ज्यूं रवि में नहीं पाइये निस बासुर कोत
त॥२०॥१५८॥ इति श्री विचारमाला जगत मिथ्या वर्णनं नाम षष्टमो विश्राम
॥६॥ सिष्य अनुभव कहत है॥ बारंबार प्रनाम मम श्री गुरु
दीन दयाल। जगत भ्रम बड नास्यो सहज सुनि तुव बचन रसा
ल॥१॥ नौ भगवन तुम मया तें नयो बिगति सनेह सुध स्वरू
ल हौ न है बिसरयो देह अदेह॥२॥ अजुत तन सुन अ

नहीईश्वरनहीजीवसतिफुरवोमैंनहीअमलसमलत्रियप
व अ आआंमवरननदेवनरगुरसिषक्षमनपापपून्नअ
त्माएकरसनहीघटवधिमाबापथमनबुधिइंद्रीप्राननही
चूलतक्षुनोहि५माताध्याननज्ञेकछूनहिसबनहीसबमाहि
या॥सोरठा॥मैंचेतनसरूपइंद्रजालवतजगतयहमैंतोकथ
अनूपयदसवहकरिकतसंनेह६दौहांदेहीदेहनकछु
मुक्तबंधनहिहोइजतीनविषईतपअतपलोहूंऐकनदो
७पूरवपछिमअरधउरधउत्तरदछननाहिलघुदरघन्यारो
न्योनहीबाहिरनहीमांहि।नहीउतपतिनहीवृधिलयस
पंगरसनेदनहीजोगीनोगीनहीनहीस्थिरनहीषेद
नेंनेंनकरिदेषीएसबकछुसबनहीजाइअमलदिष्टजव
लसो।सबविहीदरसाइ१०केंचनीचनगुणगुणीरंकअन
थअरूपरूपहिविधिकासूकहूंसबअंनंदसरूप११मन
नमेषजगतनयोविनउनमेषनसाइकहोजगतकतसंन
मनहोजहांविलाइ१२नहिकारणकार्यकछुनहिनकाल
हिदेससिवसरूपपूरनअचलमजातिविजातिनहेस१३
कछुकहतबनेनही।दोइकहोकिहिनाइपूरनरूपविसाइ
यहमवकहोनजाइ१४विश्वनतेयसप्राज्ञकछुनहितुरी
यातामोहिसोसरूपनिजध्यानघनमैंतेविवतहोनाहि५ज
गतस्वप्नसुषोतिकोअभिमानीएआंहिजोसबकोअनुभव
करैचिदसरूपकहिताहि१६साधनसाधकछूनहीसाधिक
सिधनकोइप्रमाणप्रमाताकोकहैअनाथप्रमेवनहोइ१७प्र
स्तासासनकोनही नहीनिंदुकनहीदोनदेसनकालनव
तगुनवादीवादनहोन१८विधिनषेदनहीथपअथपन
प्रत्तुनहिकेदोकेवलसुधसरूपहूंपूरनसुतहप्रकास॥१९
सोरठा॥ध्याताध्याननध्येयममनिजसुधसरूपमैंउपाइदेय
नहिहेयअवरूपसबतेंपरे२०सोहाकहोसिषिअनुभव
सबैरहोमोनगहिसोइबोलैदासअनाथकहिसुगुरुसि
तनजोइ॥२१॥२६॥इतिश्रीविचारमालनिराअनुभवराम
विश्राम॥७॥श्रीगुरुपरहाकरतुहै॥अनुभवअमृतसिषके
उदैभयोचितचैनलेनपरछ्याकूंकहैगुरुकरुनासुषैन१प
रीष्यानिजविग्यांनकीलितषंडिब्योहारअवथितिआन
तांनकीउपदेसतनिरधार२जान्योअविनासीअजरअदेरु
प्रपञ्चजाआसतिनसंचवेसनिसप्रसतिविचारउजोका

करि देखत विषय न्ह्योग्यो नजै तौ तौ विषै संग मति लागै ग्यां
न सरूप लखि ताहि तिन आतम सुख लखौ नहीं उद्यो नन्ह मल ग्यां
नामृत विन विषय विहार रत तब लग होत अजान ॥५॥ जौ पूर्ण
आतम लखौ तौ करत विहार सो है जो निज होइ ध्यान जग जन
दीन प्रकार ॥६॥ मुक्ति विषै वैराग जो बंधन विषै सनेह यह सब
ग्रंथन को मतौ मन मांनै सु करेह ॥७॥ कृपा करत सिष परि घनी
गुरु समनाई साहू स्थिति आतमज्ञांन की कहि पुनि पुनि दरसा
हू ॥ जैसें रंजै अनमोल दन वस्तान इछ्या न तैसें आतमज्ञांन
की काइज गत मति लीन ॥८॥ अनाथ सुग्यांनी को टिकौ निश्चै
निज मत एक ॥ होक अग्यांनी के हिये बरतत मता अनेक ॥९॥ गै
वा ज्ञुत प्रकास मुनि अंग नास करै कोइ ग्यांनी आपन यो लखै
त्रिथ ति ऊपतिन ताहोइ ॥१०॥ छिपी यानंद संसार है नजनां नंद
हारि दास ब्रह्मानंद की दीन मुक्ति लई वास नां नास ॥११॥ सांत रूप
तिन कुं जगत जो तुसां तम हूं त विबधि ताप तिन त्रंज रत ॥
ते जग जर जल हेतर ॥१२॥ मुक्ता दिक इच्छा न दी ॥ निस पद परम पु
मान आतमसुख निति ठलि जो तिन समान नहि आंन ॥१४॥ रूप
पदारथ को नयो ज्ञानि कै सहज अनावा कहा गहै त्यागै क
हा छूट्यो चाव अचाव ॥१५॥ जैसें दिनकर के उदै दीप गड तिउ
रजास ऐसें ब्रह्मानंद मैं आनंद सबै विलात ॥१६॥ गरुड तदे
खो हन सबै रस सब भी समीप ॥ ग्यान दिवाकर के उदै सब
मत है गमे दीप ॥१७॥ देत मरीचा के सुगुरु वडौ जग वयो हार
कहत सिष आनंद जुत परा रथ आधार ॥१८॥ सिष्य वचन ॥ न
म तन आसवांन जो लीला वृत करैं नोग ॥ वस्तु बुधि कछु न
ब्रहै धीरज मांहि अरोग ॥१९॥ अग्यांनी आसक्त मत करै सु बंध
हेत ॥ ग्यांनी के आसक्ति न ही तजै न कछु गहि लेत ॥२०॥ रूप अनै
ध अनंत अनंत गति परस्यो चित तस्वीर बहु कल्लोल तामें
वीनो नारूप सरी ॥२१॥ चित बात नयो सांति अब जीव लद ॥
नईस्वी ना केवल रूप अनंत ह्वै रह्यो असुन सुन हानि ॥२२॥ ऊ
दिक इच्छा करै निश्चल पद सु अगाध तहां ग्यांनी की थिति
सदा मैं तत्व यद वृद्ध बाध ॥२३॥ जाग्रत स्वप्न तहां न ही जहां सुषोप
ति मन लीन मैं तंत तहां न सं न है आतम निश्चौ कीन ॥२४॥ ग्यांनी क
रै अनेक कारमां विधूत जग विवहार तिपैन धूमा कास लौं जा
नै जगत असार ॥२५॥ जाग्रत मांहि सुषोपति सी मति वालेकी के
लि करै चेष्टा बालक ज्यूं आतम सुख रह्यो केलि ॥२६॥ सोरठा ॥

स्वप्नरावनयौरेक। प्राणतजेतसांछुधाबसि।जागेवदय
जंक कसैंबिसमयकसैंदरषपुनि॥२७॥दोहा॥आस्तिनास
तिनांकह्यौ।नहीतहांऐकरसोस्लघुदीरघनहिंअगुणगुण
चितसरूपममसोइ२८अगदअगोचरऐकरस निरबचनीनि
रबांनअनाथनाहिनकोजनुमिका।जापरिकयौगयांन।२९
श्रीगुरुवाक्य॥धनिधनिसिषउदारमति।पायौमतौअनूप
सोगुरुषोजितीनौनतौनयौसुखसरूप२।सुनिबिचारव
दराइकैबिसरिबाक्यथकिजाइ।अनाथबबेकीजांनिहै
गईजुबाजीप्राइ३।यहबिचारमालासरसबहुबिधिस्यौं
बिचारसाधनसिधिप्रगटकीऐ।अनाथनतैंप्रकार२१बं
धोमोनचाहतछुटयौ।यहनिहचैमनमांहि।बिचारमाल
तापरिरची।अन्तजपरिनोंहि२२औरमालरतनादिजे
घातहोततिनहेत।अदभुतमालबिचारयहतसकरबसि
करिलेत२३।घटदरसनकीमालजे।अपनेंपदुलीयेंहि
तरहतरुचिमालयहसोनतसबहीयेंजुर४।धारांकम२
तनोवती।बरणआ्रमसुषदेंन।रुचिबिचारमालास्वी।चि
तवतअतिचितचैंन२५।अनाथअवनबहुतैंकीयौ।व
होबहुतपरकारअबसुबिचारबिचारपुनिकरयानपु
रबिचार२६।मुमिषकूंनसुनाइऐ।नहीजाकेजज्ञास।कैसे
करैबिषादकछु।कैमनहोइउदास२७।आस्तिकमतिगु
रुश्रुतिबिषै।हृदैसुदृढजज्ञास।अभिमानरहतधरमात
मातिहिप्रतिकरौप्रकास२८।दामजोकबिमतिदिढउ
ठिहूंसिसुप्राइअबुध।लेकुसुधारिबिचारिकोअद्भरसु
धअसुधर९।हूंअनाथकेतकसुमतबरनौंमालबिचार
रामभयासद्गुरदयासाधसंगनिरधार४०।पुरीनरोत्तम१
मेंनबरघरौअथितिनगवांनबरणीमालबिचारमेंतिदि
अमप्रमांन४१।लिषेपहेअतिप्रीतिजुतअरपुनिकरै
बिचारछिनछिनग्यांनप्रकासतिहिंहोस्तुरिप्रकार।४
२॥सोरठा॥सत्रेहसैछबीससंबतमाधवमाससुच।मीमति
जितकहूंतीस।जेतकबरणिप्रगटकरी॥४४॥दोहा॥गीतान
रथरकोमतौऐकादसकीजुक्तिअष्टाबक्रबसिष्टपुनि।क
हकअपनीतक्ति॥४५॥२२४॥इतिश्रीबिचारमालअात्म
वांनकीथितिअष्टमोबिश्रामः॥८॥२॥इतीबिचारमालासंपूर्ण
अथब्रह्मज्ञानग्यांसग्रंथलिष्यते॥ॐब्रह्मऐकसुधचेतमाया

चेतन जड माया ब्रह्म को संजोग। जैसें वृक्ष की छाया। वृ
क्ष जीव। छाया सु जीव नांही। वृक्ष बिना छाया नांही। माया
की वोट ब्रह्म न दिसै। ब्रह्म की वोट माया न दिसै। ब्रह्म माय
को ऐसो संजोग। माया जड। ब्रह्म चेतन। माया रूप रि ब्रह्म
ब्रह्म रूप रिको नांही। ब्रह्म माया वन इच्छा न ई। ब्रह्म सक्ति
। इच्छा। १। क्रीया। २। ग्यान। ३। माया सक्ति तीन। सती। १। मिथ्या। २
। परजे। ३। ब्रह्म के नांम पंच। ब्रह्म कहीए। १। जीव कहीए। २
काल कहीए। ३। कर्म कहीए। ४। सुभाव कहीए। ५। ब्रह्म का दे
तैं कहीए। अखंड अरु बिनासी है। तातें ब्रह्म कहीए। १। जीव का
दे तैं कहीए। आप कूं आप चीन्है नांही। तातें जीव कहीए। २।
काल का दे तैं कहीए। आप कूं आप का लखपाइए। तातें
काल कहीए। ३। कर्म का दे तैं कहीए। सकल देह विषे कर्म क
ला है। तातें कर्म कहीए। ४। सुभाव का दे तैं कहीए। सकल
बरो बाटे दुष सुष अमल जांनें। तातें सुभाव कहीए। ५। मा
या के नांम पंच। माया कहीए। १। आकास कहिए। २। सुनि क
हिए। ३। सक्ति कहीए। ४। प्रकृति कहिए। ५। माया का दे तैं क
हीए। ब्रह्म सु मिल त है। तातें माया कहिए। १। आकास का दे
तैं कहिए। पिंड ब्रह्मंड आदि कारण है। तातें आकास कहि
ए। २। सुनि का दे तैं कहिए। जड है। तातें सुनि कहीए। ३। सक्ति
का दे तैं कहिए। सकल संसार कूं जीति रही है। तातें सक्ति क
हिए। ४। प्रकृति का दे तैं कहिए। अर्ध ग्रांमनी है। तातें प्रकृ
ति कहिए। ५। ब्रह्म माया के संजोग तें श्रृष्टि रूप जी। प्रथ
म महतत। १। महतत तें सुभाव। २। सुभाव तें अहंकार। ३।
अहंकार तें आकास। ४। आकास तें बाइ। ५। बाइ तें तेज। ६।
तेज तें जल। ७। जल तें पृथ्वी। ८। पृथ्वी को कारण रूप सरीर
। सरीर तें जड। जीव तें चेतन। माया अचेतन जड। ब्रह्म चेतन
ब्रह्म माया सदा संग रहै। कब हू न्यारी नांहि॥ पांच तत बिन
बरनन॥ पृथ्वी पीत बरण। १। अप सेत बरण। २। तेज रक्त ब
रण। ३। बाइ हरी बरण। ४। आकास स्यांम बरण॥ ५॥ पांच तत्व प
चीस प्रकृति ता को अर्थ॥ मन पांणी को सरूप। १। बुधि पृथ्वी के
सरूप। २। चित बाइ को सरूप। ३। अहंकार अगनि को सरू
प। ४। [illegible]॥ सबद आकास को सरूप। १
[illegible] को सरूप। २। रूप अगनि को सरूप। ३। रस अ
प को सरूप। ४। गंध पृथ्वी को सरूप॥ ५॥ इति [illegible] चेतन मा [illegible]

श्रोत्रआकासकोसरूप४त्वचबाइकोसरूप१नेत्रतेज
कोसरूप२जिभ्याअपकोसरूप३नासिकापृथ्वीकोसरूप
॥५॥इतिपांचग्यानइंद्रीएकहिए॥वाकआकासकोसरूप१पां
णिबाइकोसरूप१पावतेजकोसरूप१उपस्थअपकोसरू
प४गुदापृथ्वीकोसरूप॥५॥पांचकरमइंद्रीकहिए॥एचौवी
सअंसमायाकेपचीसवोंअंसब्रह्मकोतासोंजीवकहिए॥१॥
अथपचीसकोगुणविसतार॥अथ॥सिष्टिकीउतपति
जांणै१संघारजांणै१जीवकोआवणजांणै१गमणजांणै
४विद्याजांणै५अविद्याजांणै६॥तातैंगटगुणसंपन्ना
ईसकहिए॥मायाकेसरीरदोइहैएकसरीरनौतत्तको॥ताकेनाम
तीनस्थूलकहिए॥दीरघकहिए॥विराटकहिए॥सोसरीरदोयतु
रीय॥विनुमुक्तअवस्थाचारिजाग्रतस्वपनसुषुपततुरीया
॥अथअवस्था॥पांचतत्तपचीसप्रकृतिमिलिजाग्रतरहै
तातैंजाग्रतअवस्थाकहिए॥नौतत्तकौस्वप्नमैंरमैं॥तातैंस्व
प्नअवस्थाकहिए॥जाग्रतस्वपनअवस्थाजांनैंनहीं॥तातैंसुष
पतिअवस्थाकहिए॥जीवब्रह्मएककरिजांणै॥तातैंतुरीयाअ
वस्थाकहिए॥जीवब्रह्मअंतरनांही॥जैसैंसूरजधामदोइनांही॥
जैसैंअगनिउष्न॥जैसैंजलतरंगदोइनांही॥जैसैंकंचनकेआ
भूषनकंचनदोयनांही॥ऐसैंब्रह्मजीवअंतरनांही॥जीवब्र
ह्मएककरिजांणै॥तासौंमुक्तिकहिए॥पददोइब्रह्ममाया॥त्रय
गुणतीन॥तत्तकारणग्यांन॥क्रतालदनांइतैब्रह्ममृतकानांइ
तैमाया॥नाडीमायाकौअंस॥जीवब्रह्मकौअंस॥सौंताअग्यांन
सेंजीवबंध्यौ॥अथवाषटकरमीकहिए॥कांमक्रोधलोभ
मोहमानिअभिमानि॥एषटकरमीजीतै॥तासौंजीवनमुक्तिक
हिए॥वाचाच्यारिपरापसंतीमधिमाविषरी॥मायातीनउन
मनीब्रह्मवाचि॥पंचोतत्तकौविनसैनौतत्तकौवासनारे
औतरैंसोदोइसरीरविनसैंतबनृवांनतत्तप्रापतिहैदस
गोगायोषन्या१अरहटघंटकान्या२झालालचकन्या३जम
चकन्या४कीटीनृंगन्या५लोहाचेवकन्या६पालफीधां
नन्या७इतिब्रह्ममायाकौनिरणौ॥पिंडब्रह्मंडकौविचारप
रमहंसगियांन॥इतिश्रीसंकराचार्यविरचितब्रह्मज्ञानपार
ग्रंथसंपूर्ण॥अथकबीरजीकीचितावनीलिष्यंते॥सतिका
सबदसुणौभाईफकीरीअदलिपातिसाही२साधौवंदगी
दीदारसदावंतरौसाहरयार१सोहंसबदसेंकरिप्रीति अ

अग्यानमायाकौअंस२३

जी॥ बिडदब्बजुतहै अकथकाथलहै जिनिमोज्यातिनिपा
या घटघटमैं अघट अबिनासी अलषनिरंजनराया॥२८॥
रैदासकहै जी॥ तुमजूला ब्रह्मग्यांनी वाकामर्मनपाया अं
जनछाडि निरंजनगाया मिथ्याजन्मगमाया॥२९॥ कबीरक
हैजी॥ गुरुजूलै सोसिषसमझावै सिषजूलैगुरतारै कहैक
बीरसुनौरैदासा समझिजोनिराकारै॥३०॥रैदासकहैजी॥
मैंतोनिगमनेतिहरि कह्या सोतोसबयंजापै बेदकतेबकौं
कसौनमानै टेकआपणीराषै॥३१॥कबीरकहैजी॥बेदक
तेबषोजिसबदेष्या ऐसबकरनीआसा योसंसारनरकसबडूबै
करिबेदबिसवासा॥३२॥रैदासकहैजी॥ घटतनबधतथणां
नहीघोडा हैचंचलवैथीरा तरुनबृधबालापनहैहीहैपा
जीवैपीरा॥३३॥कबीरकहैजी॥ घटतनबधतथणांनहिघो
च डा निहचलनिहकांमी आणहोताऊवादहिरिनोहीहसादह
मारास्वांमी॥३४॥रैदासकहैजी॥ तुमसाचीकहीसहीसत
वादी सबसंतसज्यालगाई सबलसिंघास्यानिबलातास्यां
सुनौकबीरगुरुनाई॥३५॥कबीरकहैजी॥ रागदोषदुषसुष
तैंन्यारा हैनवर्तिनरमननोगी प्रवर्तिनहीपुरषपरमांनंद
वैजोतिसरूपीजोगी॥३६॥रैदासकहैजी॥साधबेदनागोत
बतावै सुरनरबकुतसंघारा जगतबबलजगतांबसिह्व
मतिमैंहैंओसारा॥३७॥कबीरकहैजी॥ब्रह्माबिष्नसेस
असंकरसुरनरजाकीसेवा अनंतलोककेग्वालगुसांई
ऐसाहमरादेवा॥३८॥रैदासकहैजी॥ तेरीमाइतुरकणी
बापजुलाहा पुत्रनयाब्रह्मग्यांनी बेदकतेबकौंकसौन
मांनै बातआपनीठांनी॥३९॥कबीरकहैजी॥तेरीमाइच
मारीबापचमारा कहांजगतितुमकीन्ही रामनांमकाभेद
नजांन्यां माथैबैवितुमलीन्ही॥४०॥हंसचढ्याब्रह्मा
जीआया साषीबेदबुलाया सतिमतिरैदासकरीहै कब
रैनेदनपाया॥४१॥कबीरकहैजी॥ ऊवासाषीऊवाब्रह्मा
ऊवाबेदपुरांणां जाजाब्रह्माघरांआपणैं तुमनीलेदन
जांणां॥४२॥सिंघबांहणीबादकरतहै बोलतमधुरीबां
णी सतिजगतिरैदासकरीहै कबीरैजगतिनजांणी॥४३॥क
बीरकहैजी॥ तूं आवैसासैंगलाकवावै घरिघुरिषांतीडो
लै जाजाजगतकीजननी कूडीसाषिकूंबोलै॥४४॥डूर
गाकहैजी॥ नोपतिअनडमैंबजनवाया हरिरूपघर

दासी॥ बिरकत होइ बनी जाइ बैठा देगति मास्यापासी॥४५॥
कबीर कहै जी॥ जो तुम पास्या नरक गिरास्या जाके माया मास
कनक कामणी दोऊ त्यागी करि है जो रे साता॥४६॥ उरगा क
है जी॥ तीन लोक में बसि करि राख्या हूँर सकल की माई॥ सुरन
र संगणा देव निधारी हूँर किनो न ही पाई॥४७॥ कबीर कहै ज
ती निगुरा नाम्या नेह किन नं इं रमण बस्याहर लागी॥ तो सै यां जे
गत मुकति है तो मीठे कहूँ त्यागी॥४८॥ ब्रह्म च रत्र्या सिव बा
दक रत है बोल तइ मूरत बोली॥ सतिगति रै दास करी है
काली रै नगति न जोसी॥४९॥ कबीर कहै जी॥ तूं तो न्हूत
कल कीये मासा कहि है नगति कमाई॥ जा जा से कर धरो स्त्र
… सो गिं ध्या को इन्द्र माई॥५०॥ वाल्या सिव जल गया जी ज
ल गर डगो पाला दम तो मूल करि थाप्या जल ताने वस्त्र
मा ताप रा॥ तुम तो सिं न्हू बाह करत हो कहा चक वै षै नो रता
डाल पान के पू डी बो ल्यै वछू में टत हो मूल॥५१॥ चद्रं दिस क
नी ढूरवा को ये मत्त देव मुरारि सोना॥ पल कू में परलै करिरा
लो च ढ्रैं जुगा तम मानो॥५२॥ कबीर कहै जी॥ का तुम
मारे का हा तुम तारो को ले रामा स्या मरहो तुम सिं न्हू ब्रे ठ नं
वाद करत हो हम तुम सैं नही डरि है॥५४॥ संकर कहै जी
दस औतार हूवा मोज्या गे दिह धरो नही छोडा तुम तु घम
नि घ ऊ चल कबीरा न करि हमारी होडा॥५५॥ कबीर कहै
जी॥ दस अवतारां कारज कीया देह धरि धरम दिढ या ज
स्या गर आगे तुम नागो तब हरि आंण छुडाया॥५६॥ सं
कर कहै जी॥ तीन लोक स मांनी मैं री कहा सर नरण तो की
न्हीं॥ रावन आइ याइ जब लागो तब वा कूं लंका दीन्ही॥
५७॥ कबीर कहै जी॥ तुम र नरो सै रावण बूडो करि का रसे
ल तुम्हारी॥ कल के सब ऊट ब कटा ए न्हू रू बुरी बिच
री॥५८॥ संकर कहै जी॥ हूँर सूं ऊंनी रिधि सिधि को दात
हूँर भगवंत नंडारो तूं ऊंच ल कमाए कबीरा न करि
होड हमारी॥५९॥ कबीर कहै जी॥ तुम प्रमोध्या तिस्या
न को है सुण हो संकर स्वामी॥ नगति मुक्ति सूं न्यारा रहि
गया हरि सूं कुइ हरामी॥६०॥ रैदास कहै जी॥ कोण तेरे गु
न है कोण तेरे ध्यांन है कोण तेरे बेद र बाणी कोण ते कों
ण आगे कहे या मति कोण सूं जांणी॥६१॥ कबीर कहै जी॥
मन ही ग्यांन है मन ही ध्यान है यो मन बेद र बाणी यो मन

रैमन आगे रूझै यामति मन सै जाणी ।।६२।। रैदास कहै जी
सो तुम गावौ सो हूं गाऊं तेरा गांन बिचारौ कहै रैदास कब
र गुरमेरा भरम करम धो डारौ ।।६३।। कबीर कहै जी ।। भरम ही
डारि दे करम ही डारि दे डारिदे जीव की दुबध्या हो आतमरांम
करौ बिसरांमा हम तुम दोन्यूं एक जाई ।।६४।। रैदास कहै जी
मां षरणा मथि रतन दिषलाया भरम करम सब जाइ कहै
रैदास पीर गुरमेरा यामति तुम सूं पाई ।।६५।। कबीर कहै जी ।।
अगम ब्रह्म सकल को दाता सो तुम रौ चित लाई कोहे ल
षदी रष को नाही हम तुम दोन्यूं गुर भाई ।।६६।। चत्याच त्यार
ब्रह्म जी आया जहां कबीर रैदासा ऊठ्यौ कबीर सनमुष है
देषी करौ कौण की आसा ।।६७।। कहै कबीर जी सुणौ ब्रह्म जी
तुम हो चतुरबबेकी हम तो बुरा अजाजन तेरा यातत बत्त
किन देषी ।।६८।। गरड चढे गोपाल कहत है सत जिन कोम्हारै है
ई सति कबीर धनि रैदासा गावै सैना सोई ।।६९।। इति श्री से
न जी कृत कबीर अरु रैदास संवाद संपूर्ण ।। अथ श्री पृ
थीनाथ जी को नित लिष्यते हट जोग ग्रंथ ।। वै पंडित कहै औ
र नक्ति के भेद हि बूझे वै नेत कहै और आदि अंत गति सू
झै ।।१।। वै पद और जोणि तास लेतीरथ की जै वै तुज और बू
हू कालन सिर मुद गरल्दी जै ।।२।। वै मुष और जोणि नांव लेता ह
रि आवै वै प्रवाण कहूं और सबद सुणत पद पावै ।।३।। वह
कहूं औरै नांव जास चढि इत्तरती रै वाकरणी कहूं और
जन्म धरि कबहु न ही मरीए ।।४।। वाण का दसी कहूं और जास
जागत जम भागे वह उपदेस कहूं और करम काटन ला
गे ।। वह फास कहूं और जास पावत ल्यो लागे वह जीव द
सा कहूं और पडत जि प्राण न भागे ।।६।। वह मुद्रा कहूं और
जास मूंडे सिधि पाई इसि बिधि जोग हि मिलै और सब पंथ
बताई ।।७।। वह तिलक कहूं और जास ही गति पाई वामा
ला कहूं और जास फेरत सुष नाही ।।८।। वाह मूंजा कहूं और
जहां कहूं देव न पाती सब तैं भिनि पसांव जहां ऊलदेव न
जाती ।।९।। वह षट करम कहूं और जास करतां मल धोवै वह
आचार कहूं और सदा कंटक दुष षोवै ।।१०।। वा गावत्री कहूं औ
र जास जपे सिधि पाई वा गंगा कहूं और सिधि ले ब्रह्मंड च
ढाई ।।११।। पृथीनाथ बबेक बिन ऐसे जे आगे षट दरसन
वे भिनि पुरष निपजै तहां आगे ।।१२।। यह अकथ कथा आ

रबिन कथै बदै पद निनि पद परष्यां नैं नन कंवल पुरिष
कि छिन नारद बक्ता चन रोग्यां नी श्रोता मो षिलन्त ते छ
ीतान जांनां सि बृथा तसि जीवनं ॥ ४॥ स्त्री श्री पृथीना
नथा रमत महा पुरो सि षिना सश्री नन्ति दैस्तव ग्रंथ जो
ासन संपूर्ण ॥ छप्पै श्री पृथीनाथजी का ग्रंथ लिष्यते
श्री साध प्रणाम जो गत्य ग ॥ स्यांन बिन न प्रीत्य
ाजा सत संतो ष जु जीरे पंच चोर गहि पर दल जीत्ति बा
ामी बलवीरे बिचार मंत्री नबेक पाइका चित्त चेतन
ाल नवल षघाटी मन लेरे षिबात बजीत्ति लीया ज
कालां न विषै कलप नां पग दे चपी षेषा बंधि बताया
दै पृथीनाथ ते श्रदलि नणी जे सुषी बसे गढ कायां
निद मारी तलू ज्यां जे मन पवनां दोड़ घोडा सबद
ारा षस्त्र षांडा जिनि जम सूं कीया न वेड़ा ॥ गगनि दमारा
ाजा बाजे मन मैं च दो छत्र धीसं सा को बल गुरमुष तो ड
पंच पुरिष मेरे साथी ॥ जगति दमारी छत्र सिंघासन मद
सकि रावांसां कदै पृथीनाथ ते पुरष बिचषण जिनि
मे दिस च्या रुकां सां ॥ ७ ॥ घडा मै वासा काया जीती मनसूं
कमि घाणीयां कदै पृथीनाथ मेरी तदां कंटक ई जिनि
सिया सब संसार गगनां धूप जिनि स बैसं घारे दल
रके श्रषि क्रारी सोइं दरद मबसि क रली या जिनि जीत
नारी ॥ मन जीत्यां त्रिभवन जीत्या जीती सुंदर काया
गले पावदै जोरा जीत्या जीती सूप्र बलमाया ॥ भतप
रै दोनु जीत्या कहै पृथीनाथ ऐ नारी बिषम फूल क
निगुर रूप कुलता तिस घरि रहनि दमारी ॥ ८ ॥ जो पद कथ्या
जो वासी है घरि पद सां मांश्रूत तारा तिन ची त्राह रग
ीया तिर छे के संसार ॥ ९ ॥ सबद प्र नाम संकर कथ्या
मांन सुबदेव कहै होइ गीता कथी जगति ज
न का भेव ॥ १० ॥ बेद हे इ ब्रह्मा कथ्या नारद कथ्या सुक
हि जिन उपदेस भूलया सो भ्रम गया सब जग मांहि ॥
पृथीनाथ नांमदेव कहि क्या कथ्या क्या बोल्या दण
ले जिसि करणी ऐ पद नया तिन मैं पकुता संत ॥ १२ ॥
जा जन बनया जिनि क्या कथ्या क्या प्रहलाद कबी
सो पद का दैन षो जी ऐ जि दिन भरसरीर ॥ १३ ॥ मारकंडे सु
क्या कथ्या क्या पद गोरषनाथ जिसकरणी

ताथैंतनमनआयाहाथि।१४पृहजगतिजगवंतवसिपुर
जयेसबपापप्रथीनाथअनंतमुनि।इनमैंकिनधूक
सिंगार१७जिसकरणीथैंबूडी।इहमनतनसंजंगाकहिंधूंगोवि
टकबकीया।पूनारीसंसंगार१८पतंगयाजमनादहिजाकीवहै
प्रबलनधारा।यहजगतिकरमांनी।जोघरिघरकथैसिंगार१९बु
ध्यामदनप्रगटकीया।सूला।अपजगा।इनबातनजतसतकूर
हैसुपनैंहीछिगिजाइ२०आंध्यांकाअंधजुअतहीनघषैकांनां
कांबहराजुसबदहीनइसे।हिंदाकाआंधांजोपुरषहीनमांनैं१
जहाकागुण।जोसांदहीनजांनैं।२२।बांकाजूवांदांनकरिछूटा
पांवांकालुल्हाजिनसंततहुंता।जगतिकाहीनजिनरांमन
जन्मवृथासंसारमैंआया२२पृथीनाथसेयूंहीगये।जिनहीन
पायानेव।जेसमझ्यातेनिसतर्या।तिवानिरंजनदेव२३चेलाडु
षीतौगरुपीरलाजा।बांदकाजूवानसेईराजासेएहीनके
पहिबाघोटाउवितबेविनसकैसो।किसिकाभिमेटा२४जेपरिम
रिजाइबातौजारिजानमाया।आपनहीसमझ्यातौवृथाइहिक
या२५पृथीनाथतेकतभैहो।जिनकैयाशिगयेसुष्मां।तिजूय
थीमालीपडे।।नउडनगरीमांहि२६जेयुक्तावूलअषंडितपद
तौमरिमारकाहेजांहि।जेइहव्यापकब्रह्ममें।तौकातनपताग्य
मांहि२७वनिवनिहांडेमुक्तिकै।तोपसूपंषीसेवा।मायामैंजे
बडीतेजनकजयाकूपार२८पृथीनाथइतनीबातनकिह
ही।तिनकूंकथाउपदेस।कापुरिसांकीनारज्यूंघरहीमांहिबदे
स२९मलमूंवतैंइहतनजया।तनमनहांरिमैंसोइजबहीइह
फिरिजलकारली।जेतबहीवसेरातोइ३०मनबसिहोइतो
हरिसंमिलैहरिसेटैंजगवंत।जिनइतनीवस्तविचारीनहीअ
इवृथाजेजंत३१जैसैंतिलमैंतेलबस्तहैकाष्टमधेआगिद
हूंमथनकरिदीपककीयातबकछूसूजनलागि३२पृथीन
थकहैतेविरला।जेनिजजपैस्यांनंमनमनसाजबीकवरैगा
तबहरिनहीजगवांनंस्वप्रथीकागुणदेहप्राणगुणसंखा
ईकागुणसासरहतिमनमूलां३४अनीलकागैलातादिषा
चततलागे।तिनहीवसिकीया।जेगुरमुषजागे३५कथंतश्री
पृथीनाथ।यकअकथकहां।णायकपुनिनहीपाई।जिन
इहलेदनजांणी३६यहमनजीतिहूंयडमनधरिहुंधोषाक
रिचितनकरिहुं।ज्यूंज्यूंआवैत्यूंत्यूंलैहुं।इंद्रीप्राणपुरिसस
जांणनदेहूं३७पृथीनाथकहैसबसंताइहिविधिपुरषासि

वपुहिजितातूपाजन्मनतीर्थंकराखेडग्रासजांमेनांहितेक्याजांम
हिवाप॥३॥जिनकैसदाकल्यनांमांहिं॥२७॥जतनरहैतौनेडानि
पजै॥सतजनल्यासुषेतांपृथीनाथतेमरिश्रीतरांजेग्रमरसद
हैतं॥४०॥मनुपवनासवजगकथैहैतनकथैग्रवकोईएपां
श्रात्मांचयेडेयनकाकहीवसेरातौ॥४१॥गांवेकथैसलकारस
जोगीवोलतहैयटवैसापृथीनाथकहैंसुनैपंडितान्नकारू
पवरणगुणकैसा॥४२॥जोइहलनैगुरकापूरानेदहिविचारैति
सकीनावनलेहैसंवडोसदाग्रायणपोतारै॥४३॥सबकोईकहै
पांचवासकीजेवक्रकेदेहनरोसानांहींयादेहीकैविनसै
पांचेंआत्मांकहौपंडितकिसगांहीं॥४४॥तेगांईपांचवसेरामांडे
जोग्रगमगवणकमलजांणौसबदछि(?)कुनांस्मबिवजित्ततपद
बांधिवबांधौ॥४५॥तावेंहरिहरक्युंकलीणाजाकेहृदेयहसग्र
वेपृथीनाथकहैतेसतगुरुयौयहनेदवतावै॥४६॥ऊपजीतोर
तोमनकूनाजोपांहराणलिग्रासुसारमेत्राभिटेनजीज्याविनसै
ऐसातत्तविचार॥४७॥ग्रातमैंधीरहोइपालैतनरपूरषीरंसंजमपा
लेतौमनहोइथीरसाधकसेवैतौमुक्तिकीग्रासाग्रात्मांवंदैसै
वैकूंवासा॥४८॥कथंतश्रीपृथीनाथजिनइहनेदलक्यास
लातदेवतानिजवतनसक्यांपृथीनाथवनसबजंगलफिस्या
सबकांटेकांसूसतोफलविस्तापाईराजातैनाजेभूष॥४९॥वेट
दरसनषटसासनाथनकूंकलपतहादिनजांहिअस्थिरकोई
नांरहैसोवाकोसबैवलांवनमांहि॥५०॥सबपृथीकांटैनरा
ग्रंतरवापैसलपृथीनाथहसनगतिविनातेनरवृषवेल
ल॥५१॥साधपुरषचंदनविडौरनेवनेमैंनांहिसबेपापषिन
मैंमिटैजेयनमांहिसमांहि॥५२॥हैमतोइजौठैठकैतौवांनी
अधिकाइजैइहसाधकवाइजौलोकक्यामहमांजाइ॥५३॥स
बकाफलकैपूजीराजुगतिग्रपनीकरिथाप्पै॥जोयहसाधकवार
लोकदेवताकहावै॥५४॥साधुपुरषनितिकजलामलहिनकै
कूपतिमहापुरसजिसघरल्हीजिनकोधोषैविलंवोचित
॥५५॥रांमनांमसबकोईकहैसवेईश्वरकूंध्यावैतुरगासबकेपू
जीसवेगणसीमनावै॥५६॥इनकेजातिनुदकैलननांहिपुर
षसबकेउपगारी॥तासौंकबरदेयासदासेवैअधिकारी॥५७॥ध
नमरचैमैंनांहि॥वेदभागवतवषांणौतिसगांइपुरषनमैंसंत्रे
ष्ठिकचेलुराईवांणौ॥५८॥साधूपुरषयनकैजातिक…जातिन
पूछीं॥पतिमतिगरवोकोइ॥तिसगांइपुरषनपाईऔ॥जिनकै

साधसाधसबसूं दहे साधकी प्रसनजांनै
मा कुबध्या दोहा ६०। साधसाधसबसूं दहे साधकी प्रसनजांनै ६१। सतिसबदमूहरैरूव
माटे कनतजे सबदहीकेसेमानें ६१। सतिसबदमूहरैरूव
सेवा लागेप्रपंचीकोमानिकेरैसाधदेखाउविनागे ६२ पृथी
या घरोसाधवचननितिहीसुने ग्घनहीघटमांहिधार आंए
साधतजेधपासेवनमांहिरहे सेवाचकथेसाधमांनेप्रतमिसंउवि
मततिसाधवचननिति सिंचिहि सोई खित्ताासनमांनहि ६४ दोई हावि
करिझगडेलागहीं जोबिरवैसो वाकीबातन्मांनही अपनी फिरिकरिलाव
ही खामिटे न्मनकी छूटेसाधवचनकूंपावहीं ६५ साधूकेकहेसो
नन संका उिनग्रंडेबरनां ही पृथीनाथ शब्दकहासनमुष जिनके
प्रसनहीघटमांहीं ६६ सबैप्रसआसांनसाधकी प्रसपावे हीमाहूकी
प्रसजुगतिजोंहराबतावें ६७ हीयाहूकीप्रसजन्हांमोतीकाबासा
चंदसरकीप्रसगाहनगतिलषेप्रकासा ६८ सबबासवा प्रसजिष्या
दूइधरिचाषी प्रबतहूकी प्रसस्रवजिनगुरुराषी ६९ जन्मथन
हूकीप्रस प्रसबहूकी आई पृथीनाथ अचनगतिसाधघतिस
पीनजाई ७० साधपुरिषचीन्हांनही तेबहिरेजंजालि प्रसहिनी
दुगति जंबलिदीयापतालि ७१ पृथीनाथसाधपुर्षकी इदंप्र
ख्या तनमन जीत्यां फिरिरहेतो अपनी अंख्या ७२ आराधे हूंसाहवि
साधफलहीन्हां बनकोटि अवटेकहो कुरबासा कीन्हां ७३ जिसंधे
जपजीयहूतहांसाधूउपपावें तिसकै धोपायाणांजहांनिस्चलक्यूंध
वें ७४ अनिमांनी क्यूंलषें जिनिआतमान जीती तबक्या घेदनहो
तजबेबलिकूंहोइबीती ७५ पृथीनाथप्रकहिनापडिसलिंमा
रबोकोइजिसवाहूसाधनसंचरैतहांलांलिकहोतेंहोइ ७६ सो
नांकीकालिमांसोनांकरिपूरैसपूसेंलतसकूकहेधूंकेसेंबू
झै ७७ बाईमांदितलबाहरकोधूंकेसेंजांणेंपांणीमोहिकरिघतको
धूंकेसीबिधि आंणें ७८ तबगोबिंदहिपाईराजबयाअर्थहिक
टेतहिगावेकथे अंधकादिनदिनसंक्याबाढे ७९ जारेजपत
एकलैकोटितीर्थकंधावेजीवतस्तीनहोइ जुगतिविनपद
हिनपावे ८० पृथीनाथप्रपतबजबगुरपूराहोइ नहीतोनर
देहीनागागईजाकेहदैंग्यानकोइ ८१ साधपुरिषकेमिलेनईमुर
बिअमृतबांणी साधपुर्षकेमिलेगुसप्रगटकरिजांणी ८२ साध
पुरिषकेमिलेअधघट्टोपककीयासाधपुर्षकेमिलेकरमअपणांकाट
लीया ८३ साधपुर्षकेमिलेथनिहूचेकरिबेसासाधपुर्षकेमि
लेमुक्तिकाकिसाअंदेसा ८४ अस्मिध्यानगकायेकोटितीर्थके
न्हाये इतनौंतसफलहोइसाधकोदरसनपाये ८५ साधूबोहि

थ अनेपदरस देषपार पृथीनाथ उतन है ०३ नसाधकादीदार
द साधपुरिषके मिले भ्रमकी संका टूटै साधपुरिषके मिले ताहित
करन बंध छूटै ०७ साधपुरिषके मिले दिष्टि बादर नदी आवै साध
पुरिषके मिलैं आपआपापदिचावै ०८ साधपुरिषके मिलैं दुषदुंदर
ता नागे साधपुरिषके मिले नर्मकी रहन लागै ०९ साधपुरिषके
मिलै कहमति हरदेवेसी साधपुरिषके मिलै बडहोइ बध्यामतिकेसी
१० पृथीनाथ संगतिपिस्या बिस्रांम्या हद चित अंधकाधिमा
मूल मन भया पवित्र ११ पृथीनाथ साधपुरिषकेते क्या जानै
आपीमिलि देषै औरको बिस्वास न मानै १२ क्याबरु बिद्याप
कहा उपदेस दिदीन्हें सब मिथ्या जानि बिनां साधकै चीन्हें १
३ सबजुग कल्पत फिरै पुरिसका हित न डोरै संसै सलनरहै
उबेसुष अंमृत बोलै १४ सी चलदी फलदेह दूष देहतजैन
साहिबोह साध भमें जहां बाचा सति पाया १५ दर्सते पद
रहैहसाथ होत लिसवांइ मन लेमैल कू जहां जुगरहैतन
उहतउत्तकी दोइमेलि साधके बचन ही षंडे साधपुरिषकहे
करै आपआपनपो नडे १६ साधमिलैतैसाधहोइ विकरता
ताआसाजे सफेतो दीपकाछष बिनयै पतंगा १७ इहदेउपजी
नां साधकूं कैसे जोवहीमनकूं जीतिनसकै सबैपीछैलेदिनरो
हि १८ पृथीनाथ इमनदी अभिमानी अज्ञानगुरु गोविंची
नदीतेसबजायापषान १९ पदलें समफिनपडे धकालागे
ते बिगरीकूपारियबेता हि ईस्वरकारमाने २० २ यहरगसिसवसं
साधपुरिषका मरमन पावहि जे हरिसज्याहोइतो बूझा
ता चुरावहि २१ साधसदाही मिलें मुग्धकूं क्या समझावै
हिमां सुतिकरै जबही बिप्रीति दिषावै २२ करनहकल्पनां
पनिछि साधसंतापैकोइन्यापैते आगेछडा जो परदततत्र
२३ बकाचननेयांनी प्रुरतामो कूलत्रूते बकाश्रोतान
जांनांमय वृथातन्निलीजन [illegible]
ग्रंथसंपूर्ण ॥ अथ ग्रस्तुतिको पद लिष्यते ॥ राग सोरठि ॥
सा अैसतगुरकी बलिहारी हो जो जलमांहिजातजीव देषा
करमांहि कायायारी हो टेक जनम मरनका रोग सबन्या तब
हो सदीया हो रामनाम निजमेदबताया ताते रोगी जीया हो
२ सतगुरसाहिब परउपगारी रंककां हीरा दीया हो आपारूपं यबता
यससरिसे आपसरीषा कीया हो १ कर्म भर्म सब दूरि निवारे
मनकी आसा हो रामरोम में आनंद उपजाया सुषमें सरज

साहो ३ अगम अलष अंतरि दिषलाई दिषा अगम समासा हो जन
सेवा ॥ सतगुर केसर नै पूरी मन की आसा हो ४॥५॥ समरथ साईंय
समरथ साईंयां मेरे राम पकडो बांहीयां टेक औगन बहो कीया
नो बनमें लीया नां बनमें लीया मेरे राम बिषमें रुचि पीया १ यो
औसर फिर आवै नहीं दरसो नरम हीं दरसो नरम हीं मेरे राम यो अ
कला नैन हीं २ साहिब मेरडा मैं रूलतेरडा मै रूलतेरडा मेरे राम राषै
नेरडा ३ अंतर आई रे प्रेम चषाई रे प्रेम चषाई रे मेरे राम ज्यूं जुग
ति जाई रे ४ जनसेवा कूं सुषदीजी रे अपणां कीजी रे अपणां
कीजी रे मेरे राम सरन रतदीजी रे ५॥२ बीनती सुणो हे मेरे रा
मजी हरि अधम उधारण राइ अबला हो अपनी जानि करि दरस
ण दीजे हो आइ टेक तुम अलष निरंजन हो इरसा अकल अ
नी देव सकल मांडमें हो राम जी रमि रह्या किसि बिधि कीजे सेव २
तुम रोम रोम में रमि रह्या नैना दीसे नाहि बिरह निजी वडे जक
की तो कहा रह्या घट माहि ३ जा जल तो ना वैन हीं सुनि दीन द
याल औगन बकसो राम जी जो निवेरो काटो जीव जंजाल ४ कर
णां सुणि करुणा धणी हरि परम सनेही पीव जनसेवा दास कूं राम ज
दरस द्यो ज्यूं सुष पावै जीव ५॥३॥ आवो हो राम ईया मेरे आंगणे ह
रि अकल नवन केराइ तुम बिन घडी न आवलौं हो रम हत लि ब
राजो आइ टेक अबला को बल कोन हीं तुम सकल बियापि
राइ दरस दिषावो राम जी आपनो दिन दिन घटतो जाइ १ औग
ण सब ही मेटीये मेरा कछु न यां न दरदन राजे हो राम जी तुम बि
३ ना साहिं कैसु जोना २ मेरे तुम बिन कोन हीं वाड निवादन ह
रदास मूनो हो राम जी मेरडी मिलीये निरजन हार ३ जनसेवा दा
स यू बीनवे सुनीये देव मुरारि आरतिवंती हो राम जी जानिके
हित मिल द्यो दीदार ४॥४॥ निरंजन आईरो हो सरे आ दिषे ति
के पीव सहज सुष ल्याई रो हो टेक। बाल्हा तुम बिन क्या करू
जीव धीर न धरत है क्या जानो क्या होइ अब मन डरत है १ अनु
ष बीती जाइ साहिब कहां अटे बाल्हा तुम दरसन की चाहि नें
न प्रजुयूं फटे २ जो दिन है पजु आ जे सो ला नैन हीं बाल्हा सब
औगण कसमा फर दरसो नरम हीं ३ अंतरजामी आव दरसन दीजीये
जनसेवा सब सुष होइ अपणां कीजीये ४॥५॥ राग काफी॥ जैसें म्रग
रपीव संग होरी षेलीए हो साहे हो होइ मगन मन मो लि टेक हो इनि
सकपीव संग बहु सिकन मांनै का हन्तनै होइ के षेलीए हो षेलि
रमो हि समाइ १ सषी सहेली साथि ले हो निसदिन रहुं दरजरि से

जमने की आइ बिरा जो निरखूं मैं निस दिन रूप २ कोगति लोग
रकी आयो सेल ज्यो अतिकीन अनहद बाजा बाजि है मुखरी
जे को बीन राखै सो फागमें कबकुं न देषो आनंद बढ़ो अप
जन सेवादास अबसु पनया हो सहज लषै ओपार ॥४॥१॥६॥
२॥ राग गोंड ॥ साधो आया मेरे घर पिनवार कर मन धारि टेक
साधु कोन लिहारी रे वो केली आलं तारीर २ वे साधू मेरा नाई रे
तनकी तपति बुझाई रे ३ वे साध सुषकी रासरि ज्ञा है जन्म जन्म
पासी रे जन सेवादास सुषपायो रे जब सो औं दरस दिषायारे ॥४॥
राग मारू ॥ आवो हो राम सनेहडा दरसन दीजे मोहि तुम बि
जीवडो जक न लो निस दिन निरषूं तो हि टेक ॥ बिरह बिथा
लगे मिसन दी पकडो सादिन जांदी यो ओ सर फिर नाहि गुसां
दरसण दीजे मांदी १ रोम रोम में व्याप करसांमी हम कुं नैण न दीसै
अब लातो दरसन नहीं पाऊं करतार ल्या करि रीसे १ तुम अंतर ज
मीमन की जाणों हो विविलब मन की जे यो सो सोह रि हरि निवारो
अपनी कर हमी लीजे २ अबके अरगल हरि निवारो सम्रथ
लिब मेरा सरो ॥ महा कोल लाज दया निधि सेवाजन हेतरा ॥४॥
राग धनाश्री ॥ बलि बलि दास कबीर की जगति करी कलि
इसा दिव जति न है जय कबकु कालनषाइ टेक अनंत
लिसबके सिलामी दास कबीर जगु जगति कमाइ के अ
आपे सो तीर २ आनंद मलि पाइया सतगुरके प्रसादि दरस
पीया प्रेम रस लिपेन आवे आदि २ आरति सूं अंतरि मिल्या
ज्यूं जल जलासमाहि राम कबीर यूं मिलि रहा कबकु न्यार
नाहि २ कर जोड्या सेवो कहे सुणि सतगुर दास कबीर जो मा
गर रहूं न जया आइ रखिया वो धीर ॥५॥ इति श्री स्वामी जी
श्री श्री श्री श्री सेवादास जी का अस्तुति का पूरसपूर्ण ॥ अथ
लपने की को पद ॥ मनि धामां ठान की जे गहि लागर बन की जे प
लाप रसनाइ अवधि दिन आवे आवघटे तन छीजे टे को के घूंट
सम दिन सो आदि ग्रंथ बलत न्यारो लंका गाडि पूलं का पड़े
तेनी कालदि पारे १ ॥ रिचयो थर गई पयालो रोकदा दपरल्याण
जाकी मापी जहां कडा ते न अंत बिलाए १ लंका सा कोट समंदसी
आई मंदोदरी सी राणी दसमस्तक बीस भुजजाके सो मारि कीयो
डे ॥ आणी दयो दो षद ले बिडे बेठी रांणी तणां घरां दी वाके माथे कोणो लिषीय
ना लिषती ओ रांदी २ चंद सूर लंक समंद पाणी पारो सी तारी माबि जो गागर्ब क
कूं कौरव पानपाड़े पर्वकौ जिनि लोगा बडा बडी कोडे सू बाजे बेरपराणी सा
कृष्ण देवकी गोपी रही अरजन सको न राषी केरोक हाक लापच्चपडो नाही
कहे हरि गर्व घटारी ता छेडर तार ही ॥८॥

+सिमरौ जसु बिसंभर एकै नामु जपत अगनत अनेकै ॥ ६

श्री सिंह जी नाइ शमे श्री गुरदेव नमः ॥ अथ नानक जी का बा
णी लिखते: ग्रंथ सुखमनी: राग गउड़ी गाउड़ी ॥ श्लोकः गुर
देव माता गुरदेव पिता गुरदेव स्वामी परमेस्वरा गुरदेव सख
अगियांन भंजन गुरदेव बंधप सहोदरा ॥ गुरदेव दाता हरिना
म उपदेसै गुरदेव मंत्र निरोधरा ॥ गुरदेव सांति सति बुधि मूर
ति गुरदेव पारस परस परा ॥ गुरदेव तीरथ अंमृत सरोवर गुर
गियांन मंजन अपरंपरा ॥ गुरदेव करता सभ पाप हरता गुरदे
व पतित पवित करा ॥ गुरदेव आदि जुगादि जुगि जुगि गुरदे
व मंत हरि जपि उधरा ॥ गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि क्रिपा हम मूड़ पा
पी जितु लगि तरा ॥ गुरदेव सतिगुर पारब्रह्म परमेसर गुरदेव
नानक हरि नमसकरा ॥ १ ॥ श्लोक ॥ आदि गुरए नमः जुगादि
गुरए नमः सतिगुरए नमः श्री गुरदेवाए नमः ॥ असटपदी ॥ सिम
रि सिमरि सिमरि सुख पावौ कलि कलेस तन माहि मिटावौ ॥
बेद पुरान सिंमृति सुधाख्यर कीने राम नाम इक आख्यर किनका
एक जिसु जीअ बसावै ता की महिमा गनी न आवै ॥ कांखी
एक दरस तुहारो ॥ नानक उन संगि मोहि उधारो ॥ सुखमनी सु
ख अंमृत प्रभ नाम ॥ भगत जनां के मन बिस्राम ॥ प्रभ के सिम
रन गरभ न बसै ॥ प्रभ के सिमरन दूख जम नसै ॥ प्रभ के सिम
रन काल परहरै ॥ प्रभ के सिमरन दुसमन टरै ॥ प्रभ के सिमरन
कछु बिघन न लागै ॥ प्रभ के सिमरन अनदिन जागै ॥ प्रभ के सि
मरन भउ न बिआपै ॥ प्रभ के सिमरन दुख न संतापै ॥ प्रभ का
सिमरन साध कै संग ॥ सरब निधान नानक हरि रंग ॥ २ ॥ प्रभ
के सिमरन रिधि सिधि नउ निधि ॥ प्रभ के सिमरन गिआन धिआ
न तत बुधि ॥ प्रभ के सिमरन जप तप पूजा ॥ प्रभ के सिमरन
बिनसै दूजा ॥ प्रभ के सिमरन तीरथ इसनानी ॥ प्रभ के सिमरन
दरगह मानी ॥ प्रभ के सिमरन होइ सु भला ॥ प्रभ का सि
मरन सुफल फला ॥ से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥ नानक
ता कै लागउ पाए ॥ ३ ॥ प्रभ का सिमरन सभ ते ऊचा ॥ प्रभ
के सिमरन उधरे मूचा ॥ प्रभ के सिमरन त्रिसना बुझै ॥ प्रभ
के सिमरन सभु किछु सुझै ॥ प्रभ के सिमरन नाही जम त्रासा ॥
प्रभ के सिमरन पूरन आसा ॥ प्रभ के सिमरन मन की मल
जाइ ॥ अंमृत नाम रिद माहि समाइ ॥ प्रभ जी बसहि साध की
रसना ॥ नानक जन का दासन दसना ॥ प्रभ को सिमरहि
से धनवंते ॥ प्रभ को सिमरहि से पति वंते ॥ प्रभ को सिमरहि

हि से जन परवान। प्रभ को सिमरहि से पुरख प्रधान। प्रभ को सिमरहि
से बेमुहताजे। प्रभ को सिमरहि से सरब के राजे। प्रभ को सिम
रहि से सुखवासी। प्रभ को सिमरहि सदा अबिनासी। सिमरन ते ल
गे जिन आप दयाला। नानक जन की मंगै रवाला। प्रभ
को सिमरहि से परउपकारी। प्रभ को सिमरहि तिन सद बलि
हारी। प्रभ को सिमरहि से मुख सुहावे। प्रभ को सिमरहि तिन सु
खि बिहावै। प्रभ को सिमरहि तिन आतम जीता। प्रभ को सिम
रहि तिन निरमल रीता। प्रभ को सिमरहि तिन अनद घनेरे।
प्रभ को सिमरहि बसहि हरि नेरे। संत क्रिपा ते अनदिन जागि।
नानक सिमरन पूरै भागि। प्रभ के सिमरन कारज पूरे। प्रभ के
सिमरन कबहु न झूरे। प्रभ के सिमरन हरि गुन बानी। प्र
भ के सिमरन सहज समानी। प्रभ के सिमरन निहचल आस
न। प्रभ के सिमरन कमल बिगासन। प्रभ के सिमरन अनह
द झुनकार। प्रभ के सिमरन अंत न पार। सिमरहि से जन
जिन को प्रभ मइआ। नानक तिन जन सरनी पाइआ। हरि सि
मरन करि भगत प्रगटाए। हरि सिमरन लगि बेद उपाए। हरि
सिमरन भए सिध जती दाते। हरि सिमरन नीच चहु कुंट जा
ते। हरि सिमरन धारी सभ धरना। सिमरि सिमरि हरि कारन क
रना। हरि सिमरन कीओ सगल अकारा। हरि सिमरन मह
आप निरंकारा। करि किरपा जिस आप बुझाया। नानक
गुरमुखि हरि सिमरन तिन पाया। दीन दरद दुख भंज
ना घटि घटि नाथ अनाथ। सरनि तुमारी आइओ नानक के
प्रभ साथ। जह मात पिता सुत मीत न भाई। मन ऊ
हा नाम तेरै संगि सहाई। जह महा भयान दूत जम दलै। तह के
वल नाम संगि तेरै चलै। जह मुसकल होवै अति भारी। हरि
को नाम खिन माहि उधारी। अनिक पुनहचरन करत नही
तरै। हरि को नाम कोटि पाप परहरै। गुरमुखि नाम जपो मन मे
रे। नानक पावहु सूख घनेरे।१। सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ।
हरि का नाम जपत होइ सुखीआ। लाख करोरी बंध न परै। ह
रि का नाम जपत निसतरै। अनिक माया रंग तिख न बुझा
वै। हरि का नाम जपत आघावै। जिह मारग इह जात इके
ला। तह हरि नाम संगि होत सुहेला। ऐसा नाम मन सदा धिआईऐ।
नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ।२। छूटत नाही कोटि लख बा
ही। नाम जपत तह पारि पराही। अनिक बिघन जह

धारै। हरिका नाम ततकाल उधारै। अनिक जोनि जनमै मरि जा
मे नाम जपत पावै बिसराम॥ हउ मैला मल कबहु न धोवै। हरिका
नाम कोटि पाप खोवै॥ ऐसा नाम जपो मन रंग। नानिक पाईऐ
साधु के संग॥३॥ जिह मारग के गने जाहि न कोसा। हरिका नाम ऊ
हा संग तोसा। जह पैडे महा अंध गुबारा। हरिका नाम संग उजि
यारा। जहा पंथ तेरा को न सियानु। हरिका नाम तह नालि पछानु।
जह महा भइआन तपति बहु घाम। तह हरिका नाम की तुम ऊपरि छा
म। जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै। तह नानिक हरि हरि
अंम्रित बरखै॥४॥ भगत जना की बरतनि नामु। संत जना कै
मन बिसराम। हरिका नाम दास की ओट। हरिके नाम उधरे ज
न कोटि। हरि जसु करत संत दिनु राति। हरि हरि अउखधु साधु क
मात। हरि जन कै हरि नाम निधानु। पारब्रहम जन कीनो दानु।
मन तन रंग रते रंग एकै। नानिक जन कै बिरति बिबेकै॥५॥ हरिका
नाम जन को मुकति जुगति। हरिका नाम जन को त्रिपति भु
गति। हरिका नाम जन का रूप रंगु। हरि का नाम जपत कब परै न
भंगु। हरिका नाम जन की वडिआई। हरिके नाम जन सोभा
पाई। हरिका नाम जन को भोग जोगु। हरि नाम जपत कछु ना
हि बिउगु। जन राता हरि नाम की सेवा। नानिक पूजै हरि हरि दे
वा॥६॥ हरि हरि जन कै माल खजीना। हरि धन जन को आप प्र
भ दीना। हरि हरि जन कै ओट सतानी। हरि प्रतापि जन अव
र न जानी। ओतपोत जन हरि रसि राते। सुंनि समाधि नाम रस
माते। आठ पहर जन हरि हरि जपै। हरि का भगत प्रगट नही
छिपै। हरि की भगति मुकति बहु करे। नानिक जन संगि केते तरे
॥७॥ पारजात इहु हरि को नाम। कामधेन हरि हरि गुन गाम। स
भ ते ऊतम हरि की कथा। नाम सुनत दरद दुख लथा। नाम की मह
मा संत रिद वसै। संत प्रताप दुरत सभ नसै। संत का संगु वडभाग
ी पाईऐ। संत की सेवा नाम धिआईऐ। नाम तुलि कछु अवर न होइ
नानिक गुरमुखि नाम पावै जन कोइ॥८॥२॥ सलोक॥ बहु सासत्र
बहु सिम्रिती पेखे सरब ढढोलि। पूजसि नाही हरि हरे नानिक
नाम अमोल॥१॥ असटपदी॥ जाप ताप गिआन सभि धिआन।
खट सासत्र सिम्रिति वखिआन। जोग अभिआस करम धरम कि
रिआ। सगल तिआगि बन मधे फिरीआ। अनिक प्रकार कीए बहु ज
तनां। पुंन दान होमे बहु रतना। सरीर कटाइ होमै करि
राती। वरत नेम करै बहु भाती। नही तुलि राम नाम बीचा

[illegible] नानक गुर [illegible] नाम जपीऐ [illegible] बार १ [illegible] ६३

[illegible] सुरयी [illegible] आगनिमा

[illegible] नानक आवै हैं [illegible] मदान [illegible] लीकरम करै वहो आप

[illegible] साधन [illegible] निमष निमष करि [illegible]

[illegible] हरि के नाम [illegible]

[illegible] मन का मन [illegible] रथ [illegible]

[illegible] मनका

[illegible] साधना करै मन ते [illegible]

[illegible] नीति [illegible]

[illegible] हरि के नाम की महमा [illegible]

[illegible] वहो [illegible] का [illegible]

[illegible] मन न [illegible]

[illegible] दरगह नहि [illegible]

[illegible] माया जाल [illegible]

[illegible] हरि का नाम

[illegible] नाम [illegible]

[illegible] की सेवा लागे जिको [illegible]

[illegible] को [illegible] नालीरे

[illegible] साधन [illegible] को मन

[illegible] ना निकना [illegible]

[illegible] साध संगति का [illegible]

[illegible] मानु [illegible] को [illegible] नीचा [illegible]

[illegible] का मन [illegible] हरि हरि नाम [illegible]

[illegible]

[illegible] नानक पाय [illegible]

[illegible] धन को धन [illegible] नामु [illegible] थावे को नाम [illegible]

[illegible] मान को [illegible] नाम [illegible] सगल [illegible] को [illegible]

[illegible] सामी [illegible] अंतरजामी

[illegible] नानक आये [illegible] आय [illegible]

[illegible] नानक को [illegible]

[illegible] हरि को नाम [illegible] निरमल करम [illegible]

[illegible] साध संग [illegible] हरीया [illegible]

[illegible] हरि का नाम जप [illegible]

[illegible] मन [illegible] नानक [illegible]

थानैतेउहउतनमथाध्रु॥नानिकतनहथहिवैमेहरिनाम्रु॥ध॥स्रो
॥प॥जिरयुनी सूरयेघ्रुनीण॥सो प्रुनमदामनानि जनको श्र
तमुज्ञातरप्र॥नानिकनिवहीनाति॥स्रू॥८॥मई पाकेउ
नचैवक्रपणी॥कोनमूलनेकोनहिदेनी॥निनिनमामिस
वारिसिंगारी॥प॥णरन श्रगनिमलिनहिउवारी॥प॥बारवि
रेघाउकपिया॥वेदध॥नरजोहनमोनतमुपसध॥दिरधतयु
ऊपरिसाकेमेनामुष श्रोषधारदेवको देना पदनिगुन
गुन कछुन वूझे॥वकमिलेहकुतो॥नानिकसके॥जदपर
मारध्रकपरिखुपवसादि॥मुन नानमेतबनिनामगिहमेहि
जहप्रमादपीवहिमी॥नलजनी॥मुछराईपवनयावक श्र
मणी॥नहपरसा॥नीनाहिमनरना॥मगलमनगी॥मानाथिव
मादीनेहमननयाव कतरनलेउरमना॥तिमदाथियागन्नूवर
संगरवनो॥ऐसेसोयमहङ्गधविपाये॥नानिककाटिलेकु
पनश्राये॥१॥श्राहि श्रनिजो॥शपनमर॥तिसमुझी॥निनहि
रंगवारजाको मनानो॥निश्चिपाव॥नामन्ख्ठ मननदी॥नाद
जोबाकरसदमदाहजरी॥नाको श्राधनानिहरि॥जाको रहन
माहरंगहमानु॥तिमहि बिसारमगध श्रजानु॥मदासदाह
कनलिनहारि॥नानिकरापनहारे श्रपार॥८॥रतनन्नामि॥
कोडीमेरचेमावहोडिकर॥मेगमचे॥मोहोडनामे॥थ
रकरिमोनेजोहोवेनमोहरियरानै॥छोडिमाहरतिसको
मरमकरेसंगमहा॥ईतिमपरहरे॥चंदनतोपुउनारमो
गारहूपीतिनसमममरोहा॥श्रेधकपमेलपेनहिकराल
नानिककाटिलेक्रुप्रमदपा॥ला॥करतलिपिनकोमन
मजानि॥लोकपचाराकरेदिनराति॥बाहरिमेप श्रनरिमल
मायाछिपमिनाहिकछुकरेछिपाया॥बाहरिम्पानध्यानम
नानश्रेनरिव्यापेलोनरवोन॥श्रेनरिश्रगनिबाहरिननमुश्र
ह॥बालेधापरकैसेतिरेश्रथाह॥जाकेश्रेतरिवसेप्रम श्र
प॥नानिकसेतिनेमहजनमानिरणुमि॥श्रेधकेसेमारग
पावे॥करगाहिलेकुवोडनिबावे॥कासाबुफारपबूकेवो
रा॥निसकहोंमासमकेभोर॥कहाबिसनपदगावेगुणमनु
नकरैतनउनो॥सुरनेगाकहाविपुलपरवनपरिनवल॥नदीमे
लनहाउमगवनो॥करता करगामेदी॥न॥बानतीकरेला॥न
कउम्हारोक्रपानिरे॥संगमहाईप्रुश्रावे नचोतिमोवे
राईनासंप्रानिवनुवाकेगहनी॥नहिवेमे श्रेनदकोलिम

या रंग रसे। दि ढक रिमानै मन हि ग्रनी। मि काल न आवै मह
ची। मि बैर विरोध काम क्रोध मोह फुन विकार मद लोभ
छे हाया क्रम गुण निहि ह्यानी कहै गनम। मानि क राष लेज
आप कर करम। ७। रहवा करत हये अब दास जी व पिंड प
न बेरो रा मि तुह मा हा पिता हम बार कै तर उमर कृपा मे
तुष पूजै। को हैन मानै मारा अत ऊचे तऊ चा नगवं
सगल सम ग्री तुमरे सूर धारी तुम तै हो इस आग्या कारी। उ
मरी गति मिति तुम ही जानी नानिक दास सदा कुरबानी। धे
आ क। १। न हार उनसे उ दि के लाग हि आन सु आहु मा
न क कृत मीठ हे मिन ना है पवि नाहु अप पदे दम न म
के पाछे पाछे ते कारज सेल कार न हु ये रग या वे रोक मीन।
इ इ हस सी हु मले रा ता मे दा तू कैसा करै ह। जे वा कु र म
ही सारा ताकी कीमति सदन सम कारा। जा के मन लागा उ
न सी मा सर बहु पसा क्रम न हूआ। निह रनन अपनी कु कम
मना या सर उ थो क नानि क ति न पाया। ॥ आगनि न मा
अपन दे राश पति पी न बरो आ न र कुल स अपनी अ
मानि क व र क्र मन हते ह आग्या नी मन रोस करेह अप
सी हटी नि आप हठी वे बैक्र रिउ सका बिस वास न होवै
मि सदा बसत निस आगे आवै उन की आग्या मानै म
थि ९ तन है बोउ मा करे निसारा। नानिक मा हि व सदा दयाल
२। भुठे कि माणि मा या के हेत सर पहो व न जानी अनु व
न म को सा आलो र या ताते हे ठि न मे व मनप स्थिरा वि गोर
मेसा आगन मार लय हि नहा न हो अध अधीर व ता केसे
झी ता दे नै न हां ठाको हाथन आवे के द। हल न हरि के नाम की
औ नि सुब सा हु क लि कृपा नानि क आप लय ला ई। रमि
थ्या तन धन कुटंब सबाया। मिथ्या हउमै ममता माया। मि
थ्या राज जोबन धन माल। मिथ्या काम क्रोध बिकराल।
मिथ्या रथ हसती अस्व बसत्रा। मिथ्या रंग संग माया पेखै
हसा। मिथ्या ध्रोह मोह अभिमान। मिथ्या आपस ऊपरि क
रत गुमान। असथिरु भगति साध की सरन। नानिक जपि ज
पि जीवै हरि के चरन। ४। मिथ्या स्रवन पर निंदा सुनहि। मिथ्या
हसत पर दरब कउ हिरहि। मिथ्या नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद। मि
थ्या रसना भोजन अन स्वाद। मिथ्या चरन पर बिकार कउ
धावहि। मिथ्या मन पर लोभ लुभावहि। मिथ्या तन नही

३प्रकार। मिथ्या बासना तिन विकार। तिन करि के मिथ्या मन
सुकल देह जानि कर हरि हरि नाम लेय। पविरथा माथिन को
रुआ साच विना कहे होवत मथा। विरथा ना मंगहिना
अथमुष आवत सा के कुरुध। विन विमरन हरि नरि नि
रथ विहाइ। मिथ्या विना सुथे ती जाइ। गोविंद भजन बिन बि
थमन को मन सकपन के निगर थराम धनि धनि ते जन
हयर बस्यो हरि नाम। जानि क या के बलि बलि जाम। इरह
अवरक छे अवरक मा वत। मन न हियो निमुषगट लावह
जो न नहार वेत वचीन। बाहरि भेषन का कहीन। अवर गय
हम आपन हिकरै। आवत ना वत जन मेमरे। जिस के अंतरि
वसे निरंकारा। तिस की सीथि तरै संसार। जो तुम भाने तिन थ
नगावा। नानिक उन जन चरन पराता। ७ करू ही भनतापर
बस मन जाने। अपना कीया आपही माने। आपहि आप
आप करतन वेरा। किस हरि जना वन क्यस बुफ नेतन र
थपा वस यो नप स गलते रहस। मन क छूजानत आत्म कीर
हव तिसुनावै तिसु लेय लड. ध्यान धन तरर हा सभा
ड।सोम वक तिस किरपा करा। तिस घतिस घजण नानि क
हरी ०।श्लोक।कामक्रोध अरु लोभ मोह। विन सजाइ अरु
मरु। नानिक प्रभ सरनागती। करियसा प्रगरे देव अ
हपदी। जिह प्रसादछती अमृत थाहि। तिस ठाकुर के राय मन
मोहि। जिह प्रसाद सुगंध तन लावहि। तिस को सिमरत परम
गतिपावहि। जिह प्रसाद बसहि सुथ मंदर। तिस हि सिमाय
रामन अंदर। जिह प्रसाद ग्रेह संग सुथ बसना। आठ पहर सि
मरि कु तिस रसना। जिह प्रसाद रस भोग। नानि क सदा
धियाइ वन जोग। २ जिह प्रसाद पाट पटंबर हडावहि। तिस हि
तिआगि कित अवर लुभावहि। जिह प्रसाद सुथ सेज सोईजै
मन आठ पहर ताका जस गाईजै। जिह प्रसाद तुफ सभ को
ई माने। मुष ताको जस रसन बषाने। जिह प्रसाद तेरो रहता धं
रमु। मन सदा धियाय केवल पारब्रहम। प्रभ जी जपत दरग
ह मान पावहि। नानि क पति सेती घरि जावहि। जिह प्रसाद
आरोग कंचन देह। लिव लावहु तिस राम सनेह। जिह प्रसा
द तेरा ओला रहत। मन सुष पावै हरि हरि जस कहत। जिह
प्रसाद तेरा सगल छिद्र ढाके। मन सरनी परि ठाकुर प्रभ
ताके। जिह प्रसाद तुफ को न पहूचे। मन सासि सासि सिमर

धियाइयै

प्रभ ऊचे । जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह । नानक ता
की भगति करेह । ३ । जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै । मन तिसु सिम
रत किउ आलसु कीजै । जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी । म
न तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी । जिह प्रसादि बाग मिल
ख धना । राखु परोइ प्रभ अपुने मना । जिनि तेरी मन बनत ब
नाई । ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई । तिसहि धिआइ जो
एक अलखै । ईहा ऊहा नानक तेरी रखै । ४ । जिह प्रसादि कर
हि पुंन बहु दान । मन आठ पहर करि तिस का धिआन । जि
ह प्रसादि तू आचार बिउहारी । तिसु प्रभ कउ सासि सासि चि
तारी । जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु । सो प्रभु सिमरहु सदा अनू
पु । जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति । सो प्रभु सिमरि सदा दिन रा
ति । जिह प्रसादि तेरी पति रहै । गुर प्रसादि नानक जसु कहै । ५
। जिह प्रसादि सुनहि करन नाद । जिह प्रसादि पेखहि बिसमा
द । जिह प्रसादि बोलहि अंम्रित रसना । जिह प्रसादि सुखि सहजे ब
सना । जिह प्रसादि हसत कर चलहि । जिह प्रसादि संपूरन फल
हि । जिह प्रसादि परम गति पावहि । जिह प्रसादि सुखि सहजि स
मावहि । ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु । गुर प्रसादि
नानक मनि जागहु । ६ । जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि । तिसु
प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि । जिह प्रसादि तेरा परताप । रे
मन मूड़ तू ता कउ जाप । जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे । तिस
हि जानु मन सदा हजूरे । जिह प्रसादि तूं पावहि साचु । रे मन मे
रे तूं ता सिउ राचु । जिह प्रसादि सभ की गति होइ । नानक जा
पु जपै जपु सोइ । ७ । आपि जपाए जपै सो नाउ । आप
गावाए सु हरि गुन गाउ । प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु । प्र
भू दइआ ते कमल बिगासु । प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ । प्रभ
दइआ ते मति ऊतम होइ । सरब निधान प्रभ तेरी मइआ । आ
पहु कछू न किनहू लइआ । जितु जितु लावहु तितु लगहि ह
रि नाथ । नानक इन कै कछू न हाथ । ८ । ६ । सलोकु । अ
गम अगाधि पारब्रहमु सोइ । जो जो कहै सु मुकता होइ । सु
नि मीता नानकु बिनवंता । साध जना की अचरज कथा
। १ । असटपदी । साध कै संगि मुख ऊजल होत । साध कै संगि मलु
सगली खोत । साध कै संगि मिटै अभिमानु । साध कै संगि प्र
गटै सुगिआनु । साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा । साध कै संगि सभु
होत निबेरा । साध कै संगि पाए नाम रतनु । साध कै संगि

नक रूप रंग नाम साध की महमा बरनै कौन प्रानी नानक
साध की सोभा प्रभ माहि समानी ।१। साध के संग अगोचर मि
लै साध के संग सदा परफुलै। साध के संग आवहि बसि पं
चा। साध के संग अम्रत रस भुंचा। साध के संग होइ सभ की
रेन साध के संग मनोहर बैन। साध के संग न कितहू धावै।
साध के संग असथित मन पावै। साध के संग माया ते भिंन
साध के संग नानक प्रभ सुप्रसंन ।२। साध के संग दुसम
न सभ मीत। साध के संग महा पुनीत। साध संग किस सिउ नही
बैर। साध के संग न बीगा पैर। साध के संग नाही को मंदा। सा
ध के संग जाने परमानंद। साध के संग नाही हउ ताप। साध
के संग तजै सभ आप। आपे जानै साध बडाई। नानक सा
ध प्रभ बनि आई ।३। साध के संग न कबहू धावै। साध के सं
ग सदा सुख पावै। साध संग बसत अगोचर लहै। साध के संग
अजर सहै। साधु के संग बसै थान ऊचै। साधु के संग मह
ल पहूचै। साधु के संग द्रिड़ै सभ धरम। साध के संग केवल
पारब्रह्म। साध के संग पाई नाम निधान। नानक सा
धु के कुरबान ।४। साध के संग सभ कुल उधारै। साध सं
ग साजन मीत कुटंब निसतारै। साधु के संग सो धन पावै जिस
धन ते सभ को बरसावै। साधु संग धरमराइ करै सेवा। साध
के संग सोभा सुरदेवा। साध के संग पाप पलाइन। साध संग
अम्रित गुन गाइन। साध के संग स्रब थान गम। नानक
साध के संग सफल जनम ।५। साध के संग नही कछु घा
ल। दरसन भेटत होत निहाल। साध के संग कलूखत हरै। सा
ध के संग नरक परहरै। साध के संग ईहा ऊहा सुहेला। साध
संग बिछुरत हरि मेला। जो इछै सो ई फल पावै। साध के
संग न बिरथा जावै। पारब्रह्म साध के रिदै बसै। नानक उध
रै साधु सुनि रसै। साध के सुनो हरि नाउ। साध संग हरि के गु
न गाउ। साध के संग न मन ते बिसरै। साध संग सरपर निस
तरै। साध के संग लगै प्रभ मीठा। साधु के संग घटि घटि डीठा।
साधु संग भए आगया कारी। साधु संग गति भई हमारी
साध के संग मिटे सभ रोग। नानक साध भेटे संजोग ।७।
साध की महमा बेद न जानहि। जेता सुनहि तेता बखिया
नहि। साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि। साध की उपमा र
ही भरपूरि। साध की सोभा का नाही अंत। साध की सो

नामसद बेअंत। साध की सोभा ऊच ते ऊची। साध की सोभा मू-
च ते मूची। साध की सोभा साध बनि आई। नानक साध प्र-
भ भेद न भाई॥८॥ सलोक॥ मनि साचा मुख साचा सोइ॥ अव-
र न पेखै एकस बिनु कोइ। नानक इह लछन ब्रह्मग्यानी हो-
इ॥१॥ असटपदी॥ ब्रह्मग्यानी सदा निरलेप। जैसे जल महि क-
मल अलेप। ब्रह्मग्यानी सदा निरदोख। जैसे सूर सरब क-
उ सोख। ब्रह्मग्यानी कै द्रिसटि समान। जैसे राज रंक कउ लागै
तुलि पवान। ब्रह्मग्यानी कै धीरज एक। जिउ बसुधा को-
ऊ खोदै कोऊ चंदन लेप। ब्रह्मग्यानी का इहै गुनाउ। नानि
क जिउ पावक का सहज सुभाउ॥१॥ ब्रह्मग्यानी निरमल
ते निरमला। जैसे मैल न लागै जला। ब्रह्मग्यानी कै मनि होइ
प्रगास। जैसे धर ऊपरि आकास। ब्रह्मग्यानी कै मित्र सत्रु
समानि। ब्रह्मग्यानी कै नाही अभिमान। ब्रह्मग्यानी ऊचे
ते ऊचा। मनि अपनै है सभ ते नीचा। ब्रह्मग्यानी से जन भए
नानिक जिन प्रभ आपि करे॥२॥ ब्रह्मग्यानी सगल की री-
ना। आतम रस ब्रह्मग्यानी चीना। ब्रह्मग्यानी की सभ ऊपरि
मइआ। ब्रह्मग्यानी ते कछु बुरा न भइआ। ब्रह्मग्यानी सदा
समदरसी। ब्रह्मग्यानी की द्रिसटि अंम्रित बरसी। ब्रह्मग्या-
नी बंधन ते मुकता। ब्रह्मग्यानी की निरमल जुगता। ब्रह्म-
ग्यानी का भोजन ग्यान। नानिक ब्रह्मग्यानी का ब्रह्म
ध्यान॥३॥ ब्रह्मग्यानी एक ऊपरि आस। ब्रह्मग्यानी का
नही बिनास। ब्रह्मग्यानी कै गरीबी समाहा। ब्रह्मग्यानी प-
रउपकार उमाहा। ब्रह्मग्यानी कै नाही धंधा। ब्रह्मग्यानी
ले धावत बंधा। ब्रह्मग्यानी कै होइ सु भला। ब्रह्मग्या-
नी सुफल फला। ब्रह्मग्यानी संगि सगल उधार। नानिक ब्र-
ह्मग्यानी जपै सगल संसार॥४॥ ब्रह्मग्यानी कै एकै रंग।
ब्रह्मग्यानी कै बसै प्रभ संग। ब्रह्मग्यानी कै नाम आधा-
र। ब्रह्मग्यानी कै नाम परवार। ब्रह्मग्यानी सदा सद जा-
गत। ब्रह्मग्यानी अहंबुधि त्यागत। ब्रह्मग्यानी कै म-
नि परमानंद। ब्रह्मग्यानी घरि सदा अनंद। ब्रह्मग्यानी सु-
ख सहज निवास। नानिक ब्रह्मग्यानी का नही बिनास।
५॥ ब्रह्मग्यानी ब्रह्म का बेता। ब्रह्मग्यानी एक संगि हेता।
ब्रह्मग्यानी कै होइ अचिंत। ब्रह्मग्यानी का निरमल मं-
त। ब्रह्मग्यानी जिस करै प्रभ आपि। ब्रह्मग्यानी का

नाथ। ब्रह्मग्यानी का दरस बडभागी पाईयै। ब्रह्मग्यानी कै
बलिबलि जाईयै। ब्रह्मग्यानी को खोजहि महेस्वर। नानिक
ब्रह्मग्यानी आप परमेस्वर। ब्रह्मग्यानी की कीमति ना
हि। ब्रह्मग्यानी कै सगल मनमाहि। ब्रह्मग्यानी का कौन जा
नै भेद। ब्रह्मग्यानी कौ सदा आदेस। ब्रह्मग्यानी का कथ्या
न जाइ अधाखर। ब्रह्मग्यानी सरब का ठाकुर। ब्रह्मग्यानी
की मिति कौन बखानै। ब्रह्मग्यानी की गति ब्रह्मग्यानी जानै
ब्रह्मग्यानी का अंत न पार। नानिक ब्रह्मग्यानी कौ सदा न
मसकार। ब्रह्मग्यानी सगल स्रिष्टि का करता। ब्रह्मग्यानी
सदजीवै नही मरता। ब्रह्मग्यानी मुकति जुगति [illegible] का दा
ता। ब्रह्मग्यानी पूरन पुरष बिधाता। ब्रह्मग्यानी अनाथ का
नाथ। ब्रह्मग्यानी का सब ऊपरि हाथ। ब्रह्मग्यानी का सगल
आकार। ब्रह्मग्यानी आप निरंकार। ब्रह्मग्यानी की सो
भा ब्रह्मग्यानी बनी। नानिक ब्रह्मग्यानी सरब का धनी।८।
स्लोक। उरधारै जो अंतर नाम। सरब मै पेखै भगवान। निमख
निमख ठाकुर नमसकारै। नानिक ओहु अपरस सगल निस
तारै।१। अष्टपदी। मिथ्या नाही रसना परस। मन मह प्री
ति निरंजन दरस। परत्रिया रूप न पेखै नेत्र। साधू की टहल सं
तसंग हेत। करन न सुनै काहू की निंदा। सभ ते जानै आ
पस कौ मंदा। गुर प्रसादि बिखिया परहरै। मन की बासना मन
ते टरै। इंद्री जित पंच दोख ते रहत। नानिक कोटि मधे को
ऐसा अपरस।१। बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन। बिसन की
माया ते होइ भिंन। करम करत होवै निहकरम। तिसु बैस
नो का निरमल धरम। काहू फल की इछा नही बाछै। केव
ल भगति कीरतन संगि राचै। मन तन अंतरि सिमरन गोपाल
सभ ऊपरि होवत किरपाल। आपि द्रिडै अवरह नामु जपावै
नानिक ओहु बैसनो परम गति पावै।२। भगउती भगवंत
भगति का रंगु। सगल तिआगै दुसट का संगु। मन ते बिनसै
सगल भरमु। करि पूजै सगल पारब्रहमु। साधसंगि पापा मलु ख
ोवै। तिसु भगउती की मति ऊतम होवै। भगवंत की टहल करै
नित नीति। मनु तनु अरपै बिसन परीति। हरि के चरन हिरै
बसावै। नानिक ऐसा भगउती भगवंत कौ पावै।३। सो प
डित जो मनु परबोधै। राम नाम आतम महि सोधै। राम नाम
सारु रसु पीवै। उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै। हरि की कथा

हिरदैबसावैसोपंडितफिरिजोनिनआवै।बेदपुरानसुमृत
बूझैमूल।सूखममहिजानैअसथूल।चहुवरना।कौदेउप
देस।नानिकउसपंडितकौसदाअदेस।४।बीजमंत्रसरबकोग्या
न।चहुवरनामैजपैकोऊनाम।जोजोजपैति
सकीगतिहोइ।साधसंगिपावैजनकोइ।करिकिरपाअंतरिउरिधारै।पसु
प्रेतमुघधपाथरकौतारै।सरबरोगकाअउखधनामु।क
लिआनरूपमंगलगुनगाम।काहूजुगतिकितैनपाईऐधरमि।नानि
कतिसुमिलैजिसलिखीआधुरिकरमि।५।जिसकैमनिपारब्रह्मका
निवासु।तिसकानामसतिरामदासु।आतमरामतिसुनदरी
आइआ।दासदसंतणभाइतिनिपाइआ।सदानिकटिनिक
टहरिजानु।सोदासदरगहपरवानु।अपनेदासकौआप
किरपाकरै।तिसदासकौसभसोझीपरै।सगलसंगिआत
मउदासु।ऐसीजुगतिनानिकरामदासु।६।प्रभकीआग्याआतमहितावै
जीवनमुकतिसोईकहावै।तैसाहरखतैसाउसुसोगु।सदाअ
नंदुतहनहीबिओगु।तैसासुवरनुतैसीमाटी।तैसाअंमृ
तुतैसीबिखुखाटी।तैसामानुतैसाअभिमानु।तैसारंकुतैसा
राजानु।जोवरताएसाईजुगति।नानिकओहुपुरखुकहीऐजी
वनमुकति।७।पारब्रह्मकेसगलेठाउ।जितुजितुघरिराखैतिस
तिननाउ।आपेकरनकरावनजोगु।प्रभभावैसोईफुनि
होगु।पसरिओआपिहोइअनंततरंग।लखेनजाहिपारब्र
ह्मकेरंग।जैसीमतिदेइतैसापरगासु।पारब्रह्मकरताअ
बिनासु।सदासदासदादइआल।सिमरिसिमरिनानिकभए
निहाल।८।९।सलोकु।उसततिकरहिअनिकजन।अंतन
पारावार।नानिकरचनाप्रभरची।बहुबिधिअनिकपरकार
असटपदी।कईकोटिहोएपूजारी।कईकोटिआचारबिउ
हारी।कईकोटिभएतीरथवासी।कईकोटिबनभ्रमैउदासी
कईकोटिबेदकेस्रोते।कईकोटितपीसुरहोतेकई
कोटिआतमधिआनुधारहि।कईकोटिकबिकाबि
बिचारहि।कईकोटिनवतननामधिआवहि।नानिक
अंतनपावहि।कईकोटिभएअभिमानी।क टि
अंधअगिआनी।कईकोटिक्रिपनकठोर।कईकोटिअ
भिगआतमनिकोर।कईकोटिपरदरबकौहिरहि।क
ईकोटिपरदूखनाकरहि।कईकोटिमा
कईकोटिपरदेसभ्रमाहि।जितुजितुलावहुतितुतितु

नो नानिक करते को नो मैकरता रचना २ कई कोटि सिध जती
जोगी। कई कोटि राजे रस भोगी। कई कोटि पंषी सरप उपाये कई को
टि पाथर बिरष निपजाये। कई कोटि पवन पांणी बैसंतर कई कोटि
देस भूमंडल कई कोटि ससिअर सूर नषत्र कई कोटि देव
दानव इंद्र सिर छत्र। सगल समग्री आपन सूत धारे नानि
क जिसु भावै तिसु निसतारे २ कई कोटि राजस तामस सात
ग कई कोटि बेद पुरान सिम्रत अरु सासत्र। कई कोटि की
ए रतन समुंद्र कई कोटि नाना प्रकार जंत। कई कोटि की
ए चिरजीवे कई कोटि गिरि मेर सुवरन थीवे। कई कोटि किनर
पिसाच कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच सभ ते नेरै सभ ते
दूरि नाम आप अलिप रहा भरपूरि ३ कई कोटि पाताल
के वासी कई कोटि नरक सुरग निवासी। कई कोट जनमहि
जीवहि मरहि। कई कोटि बहु जोनी फिरहि। कई कोट बैठ
नही षाहि। कई कोटि घालहि थकि पाहि। कई कोटि की
ए धनवंत कई कोटि माया मै चिंत। जह जह भाणा तह तह राषे
नानिक सभ कछु प्रभ के हाथे ४। कई कोटि भये बैरागी राम
नाम संग तिन लिव लागी। कई कोटि प्रभ को षोजंते। आतम महि
पारब्रह्म लहंते। कई कोटि दरसन प्रभ प्यास। त्यिन को मिल
प्रभ अबिनासी। कई कोटि मांगहि सतसंग। पारब्रह्म तिन ला
गा रंग। जिन को होवे आप प्रसन। नानिक ते जन सदा धनि ध
नि ५। कई कोटि षांणी अरु षंड। कई कोटि आकास ब्रहमंड
कई कोटि हुवे अवतार। कई जुगति कीनो बिसतार क
ई बार पसरयो पासार सदा सदा एक ओंकार। कई कोटि
कीने बहु भाति प्रभ ते हुवे प्रभ माहि समाति। ता का अंत न
जाने को ६ आपे आप नानिक प्रभ सोइ ६ कई कोटि पारब्र
ह्म के दास। तिन होवत आतम परगास। कई कोटि तत के बे
ते सदा निहारे एको नेत्रे। कई कोटि नाम रस पीवहि। अमर भ
ए सद सद ही जीवहि। कई कोटि नाम गुन गावहि आतम रस
सुष सहज समावहि। अपने जन को सासि सासि समारे ६ नानि
क ओइ परमेसर के पियारे १० ५। स्लोक। करण कारण प्रभ
एक है दूसर नाही कोइ। नानिक तिस बलिहारने जलथ
ल महीअल सोइ १ १०। असटपदी करन करावन करने जोग जो ति
स भावे सोई होग। षिन महि थापि उथापनहारा। अंत नना
हि किछु पारावारा। हुकमे धारि अधर रहावे हुकमे उप

के कु क ममना॥ कु कमे कु [illegible] नी च बिव हार कु क मे अनि
करंग परकार॥ क रि किर रेखे आपनी वडाई नानिक मन
नहि रहा समाई॥ उन नावे नानि [illegible] गतिपावे॥ उन नावे
पपर रहि रावे उनमा वे लेमा मनेरा खे॥ उन नावे नाह [illegible] ना
नाम [illegible] नमा वे चा पतितनु [illegible] आप करे आपन [illegible]
[illegible] कारा आपहामी [illegible] [illegible] अनरजामी नोमा
हे मी कार करावे॥ नानि क [illegible] आवरन आवे क हो मा
न मई के आहाइ आवे॥ नानि कुना वे सो ई कग वे इ [illegible]
[illegible] [illegible] कउ [illegible] जो तिम नावे॥ सो ई कर [illegible] अनजानत
[illegible] वे आ मेर चे [illegible] आपन आप वेचे॥ नर [illegible]
[illegible] नम [illegible] मा हि त्या [illegible] फिरि आवे॥ क रिकियो
तिम आपनी जाग [illegible]॥ नानि क [illegible] नाम [illegible] मिन
[illegible] नी [illegible] [illegible] पारब्रहम गरबिन वाज जाकी द्रिसटि
[illegible] नहीं आवे॥ [illegible] जाके
पनी करे व कसी स॥ [illegible] जी वपिड सभि
स कोरासि॥ [illegible] पूरन ब्रहम परगास आपनी बनित आप
बनाई॥ नानिक नीवे देखि वडाई॥ [illegible] का बलन [illegible]
[illegible] कारन करावन॥ स ब को नाथ [illegible] कारी वपरनी
[illegible] नानि क [illegible] सो ई कु नि [illegible]॥ क ब कु [illegible] नी वमे वसे
क ब कु [illegible] महा [illegible] गरमे॥ क ब कु निद [illegible] आहार कब
कु कु [illegible] आकास पयाल॥ क ब कु बेना ब्रहम बिचार॥ नानि
क आप मिलावन हार॥ क ब कु निरति करे बकु नानि क
ब कु सो इ रहे दिन रानि॥ क बमहा को धबिकरा ल॥ क ब
कु [illegible] नाल॥ क ब कु हो इ बहै बड राज॥ क बकु
[illegible] नीच को साज॥ क बकु आप कि [illegible] आवे॥ क ब
कु [illegible] [illegible] रहे॥ गुर परसाद ना
नि क [illegible] क ब कु हो इ पंडि [illegible] करे बषान॥ क ब कु
नि [illegible] धान॥ क ब कु नर [illegible] असनान॥ क ब कु सिध
साधिक [illegible] गिआन॥ क ब कु की [illegible] मन [illegible] गहो इ जी अ
आ नि क [illegible] नि [illegible] भरमाया॥ ना ना रूप [illegible] सांग दिखावे
सो [illegible] [illegible] जो तिम नावे सो ई हो इ॥ नानिक
[illegible] अवर न को इ॥७॥ क ब कु साध संगति इ कु या वे [illegible]
[illegible] ब कु [illegible] आवे॥ अंतर हो इ ग्यान परगास [illegible]
आतम [illegible] का नहीं बिनास॥ मन तन नामि रते [illegible] करंग [illegible]

साधमे यारवुष केसंग रुंत जलमहि जल आइ घटोनो मैसे
नी मेगजो भिसमोनो भि हिगरोग वनपरो हि सराम। नानि का
प्रनके मदक्रुरवांन ७॥ ११॥ श्लो कहथी वैसे मम कोनी पां
आपु भिवारतलिखूडे बडे अहंकारी या नानि कगरवगले
अरथ पदी जिसके अंतरिराम अभिमान सोनरकपावीहै
वृस्वान झोजा ने मैजो बन वंछ सोहो वृतनि सा काजंछ। आपस
कोकारम वेनकहा वेजनने मैरे वसे सोनि नरमाहे। धनअ
रनो भि कोजो करय मान। सो पुरष अंध अग्यान। करिवि
रपा तिसके हिरदे गरी बी बसावे। नानि क हूहां मुक्ति अ
गंमुपपावे ॥ २॥ धन वंता हो इकरि गरबावे। त्रिणसमानि क
छु संगन जावे। बहु लसकरमा निष कमयरिकरे आस। पल भी
तरिता का होइ विनास। सम ते आपना रो बलि चंद बिनम
हिहो इजाइ नम मेल किमे न बेटै। अहंकारी। धरम राइ ति
स करे षवारी। गुरपरसादि जाका मिटै अभिमान। सो जन ना
नि कदरगह परवान ॥ २॥ कोटि करम करे हउ धारे सरमपा
वे सगल बिरथारे। अनिक तपस्या करे अहंकार नरक सुर
क फिरि फिरि अवतार। अनिक जतन करि आतमन हिदे
हरिदरगह कहो कैसे गवे। आपस को जो भला कहावै। तिसहि
भलाइ निकटिन आवै। सर्व की रेन जा का मन होइ। कहु
नानि कता की निरमल सोइ॥ ३॥ जब लग जाने मुझते कछु हो इ
तब इसकउ सुष नाही कोइ। जब इह जाने मैं कछु करता। जब
लग गरभ जोनि महि फिरता। जब धारे कोऊ बैरी मीत। तब लग
निहचल नाही चीत। जब लग मोह मगन संगि माइ। तब लग
धरमराइ देइ सजाइ। प्रभ किरपा ते बंधन तूटे। गुरप्रसादि
नानि क हउ छूटै ॥ ४॥ सहस षटे लष कउ उठि धावै। त्रिपति न
आवे माइया पाछै पावै। अनिक भोग बिषिआ के करै। नह त्रि
पतावे षपि षपि मरै। बिना संतोष नही कोऊ राजै। सुपन
मनोरथ ब्रिथे सभ काजै। नाम रंग सरब सुष होइ। बडभा
गी किसे प्रापति होइ। करन करावन आपे आपि। सदा स
नानि क हरि जापि ॥ ५॥ करन करावन करनै हारु। इसके हाथि
कहा बिचारु। जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ। आपे आपि आ
प प्रभु सोइ। जो कछु कीनो सो अपनै रंगि। सभ ते दूरि सभहू
के संगि। बूझै देखै करै बिबेक। आपहि एक आपहि अनेक।
मरै न बिनसै आवै न जाइ। नानि क सद ही रहिआ समाइ॥ ६॥

आपउपदेसैसमझैआपआपेरचीयासभकैसाथिआप
कीनोआपनबिसथारासभुकछुउसकाओहुकरनैहार।
उसतेभिंनकहहुकछुहोइ।थानथनंतरिएकैसोइ।
अपुनेचलितआपिकरणैहारकउतककरैरंगआपार।म
नमहिआपमनअपुनेमाहि।नानककीमतिकहनुजा
इ।७।सतिसतिसतिप्रभुसुआमी।गुरप्रसादिकिनैवखियानी।स
चुसचुसचुसभुकीना।कोटिमधेकिनैबिरलैचीना।भ
लाभलाभलातेरारूप।अतिसुंदरअपारअनूप।निरमल
निरमलनिरमलतेरीबानी।घटिघटिसुनीस्रवनबखानी।
पवित्रपवित्रपवित्रपुनीत।नामुजपैनानकमनिप्रीति।८
।१२।सलोक।संतसरनिजोजनुपरैसोजनुउधरनहार।संत
कीनिंदियानानकाबहुरिबहुरिअवतार।१।असटपदी।सं
तकैदूखनिआरजाघटै।संतकैदूखनिजमतेनहीछुटै।संत
कैदूखनिसुखुसभुजाइ।संतकैदूखनिनरकमहिपाइ।संतकै
दूखनिमतिहोइमलीन।संतकैदूखनिसोभातेहीन।संत
केहतेकउरखैनकोइ।संतकैदूखनिथानभ्रसटुहोइ।संत
क्रिपालक्रिपाजेकरै।नानकसंतसंगिनिंदकुभीतरै।१।सं
तकेदूखनतेमुखुभवै।संतनकैदूखनिकागजिउलवै।संत
नकैदूखनिसरपजोनिपाइ।संतकैदूखनित्रिगदजोनि
किरमाइ।संतनकैदूखनित्रिसनामहिजलै।संतकैदूखनिस
भुकोछलै।संतकैदूखनितेजुसभुजाइ।संतकैदूखनिनी
चुनीचाइ।संतदोखीकाथाउकोनाहि।नानकसंतभावै
ताओइभिगतिपाहि।२।संतकानिंदकुमहाअततार।संत
कानिंदकुखिनुटिकनुनपाई।संतकानिंदकुमहाहत
यारा।संतकानिंदकुपरमेसुरिमारा।संतकानिंदकुरा
जतेहीनु।संतकानिंदकुदुखीयाअरुदीनु।संतकेनिंदककउस
रबरोग।संतकेनिंदककउसदाबिजोग।संतकीनिंदादोखम
हिदोखु।नानकसंतभावैताउसकाभीहोइमोखु।३।संत
कादोखीसदाअपवितु।संतकादोखीकिसैकानाहीमि
तु।संतकेदोखीकउडानुलागै।संतकेदोखीकउसभतिया
गै।संतकादोखीमहाअहंकारी।संतकादोखीसदाबिका
री।संतकादोखीजनमैमरै।संतकीदूखनासुखतेटरै।सं
तकेदोखीकउनाहीठाउ।नानकसंतभावैतालएमिलाइ।४।
संतकादोखीअधबीचतेटूटै।संतकादोखीकितै

पक्षे। संत का दोषी को नहि यों न न रमाई रो। संत के दोषी
जकुपा कूरि संत का दोषी अहंत ने थोथा। जैसे साम बिनो मि
रतक की लोथ्या संत के दोषी की जड़ कथू नांहि। आप
न अपर्दृशी हि संत के दोषी को और न राषन हारु नाभि
क संत ना वे नो हिले यन बासु प। संत का दोषी इउ बिल
कु सूजल बिहूने मछी तड़फड़ाइ। संत का दोषी भूषान
हि राजे अगि पाव कई धनन हि धापै। संत का दोषी छूटै अ
ला २ सूबूबाड़ तिलेष तमांहि कुहला। संत का दोषी
भते रहत क्रत निरंकका धुर ही पई या। नानिक जो
सना वैसोहू थियाईया। ६। संत का दोषी बिगड़ रूप होइ
जाइ। संत का दोषी को दरगह मिले सजाइ। संत का दो
षी को ई रो। संत का दोषी को मरता जिवाये। संत के दोषी
की ऋौन आसा। संत का दोषी उठि चले निरासा। संत के
दोषन तिसटै कोइ। जैसा भावै तैसा कोई होइ पईया
रत न मेटै कोइ। नानिक जाने सा चा सोइ। ७। सभ घट तिस
के ओह करनेहार। सदा सदा सदा तिस कउ नमसकार। प्रभ की उ
सतति करहु दिन राति। तिसहि धिआवहु सासगरासि। सभ क
छु बरतै तिस का कीया। जैसा करे तैसा को थीया। अपना खे
ल आप करनेहारु। दूसर कौन कहै बीचार। जिस नो क्रिर
पा करै तिस आपन नाम देइ। बडभागी नानिक जन सेइ
हि। ८। १३। श्लोक। तजि हु सयानप सुरजन हु। सिमरि हु
हरि हरि राइ। एक आस मानि हरि सउ। नानिक दूष भर
म भौ जाइ। असटपदी। मानिष की टेक बिरथी सभ जानु। दे
वन कउ एकै भगवानु। जिस के दीऐ रहै अघाइ। बहुरि न
त्रिसना लागै आइ। मारै राखै एको आपि। मानिष कै कछु ना
ही हाथि। तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ। तिस का नाम राखु
कंठ परोइ। सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ। नानिक बिघ
न न लागै कोइ। १। उसतति मन मह करि निरंकार। करम
न मेरे सति बिउहार। निरमल रसना अम्रितु पीउ। सदा सुहेला
करि लेहि जीउ। नैनहु पेषु ठाकुर का रंगु। साध संगि बिनसै सभ
संगु। चरन चलउ मारगि गोबिंद। मिटहि पाप जपीऐ हरि बि
द। कर हरि करम स्रवनि हरि कथा। हरि दरगह नानिक
ऊजल मथा। २। बडभागी ते जन जग माहि। सदा सदा हरि के
गुन गाहि। राम नाम जो करहि बीचार। से धनवंत गनी संसार।

१४८ ह मनन मगुण बोले हरिगुण मी। सद्भम राजा न कृते गुण मी।
होवा रोके यह स्वामी कृत मन को गहे सो जो जाने।
कामन मानी या। नानि क तिनाहि निरजन सामी या गुर
परसाद अपना आप मुके तिस को जान क तिसना बुझे
१४९ माधसेन हरि हरि जन मुकहता। मर बरोग ते उक्रम न रहता अ
नुहतु। कोरतन के बल खा नु। अहसन माह सोई निरवा
तुायेक कथ हरि मजन की आसा। तिसको कर्म जम को
मासा। या रखु सकी जिसु मन नष। नानिक तिसहि लाग हूव
४ जिसको हरिप्रभ मनन आवे सो लन तमुहे लानही हुल
के। जिसप्रभ अपनी कर्या करे सो सेवक काइकिसते डरै
जेसा सा तैसा दृष्टि आईया। अपने कारज महि आपसमाईया सो
धन सोधन सो धन मी को या। गुरप्रसाद रवु मन वु को पा
न रहे पकरन मनक मल। नानक सो व्रह्म सोई भ्रम
मूला ५ नहि क शुन नमैनहि क्र ह्मरे ना आय नाचलि
तु आयहि करे। आवन जावन द्रिष्टि अन दिष्ट। आग्याका
री धारी सभ सिष्ट। आपे आप सगल महि आप अनि
क जुगति रचि थाप उथाप। अविनासी नाही किछु खंड
धारणा धारि रह्यो ब्रह्मंड। अलख अभेव पुरख परताप आ
पि जपाये न ता नि क जाप्य। जिन प्रभ जाता सो सोभावंत सग
ल संसार पुनीत तिन मंत। प्रभ के सेवक सगल उधारण। प्रभ
के सेवक दूख बिसारन। आपे मेलि लए किरपाल गुरका
सबद जप भए निहाल। उनकी सेवा सोई लागे जिसनउ कि
रपा करहि बड भाग। नाम जपत पावे बिसराम नानिक
तिस पुरख को ऊतम करि मानु ६ जो किछु करे सु प्रभ के रंग
सदा सदा बसे हरि संग सहज सुभाइ होवे सो होइ करणे हार
आ पेछाने सोइ। प्रभ का या ना मीठ लगना। जैसा सा तैसा दृ
ष्टाना। जिसते उपजे तिसमाहि समाइ। ओह सुख निधान उनहू
बनि आइ। आपस को आप दीनो मानु नानिक प्रभजन
एको जानु ७ सरब सोभा सरब कला सरब पूरन विवे
क जानन सारे जाके सम गरनहारी नानि क तिस बलिहा
री। आपे आप। तुम सभ महि सर्व जीव आपे पति
ते। मगन केकी चिंता तिसमन माहि। तिसते बिरथा कोइ
नाहि। मन मेरे सदा हरि जाप। अबिनासी प्रभ आपे आ
प। आपन की या कछु न होइ। जे सो प्रानी लोचे कोइ।

उ ज्ञिन नाही तेरे कछु काम। गति नानिक जपिये कहि हरि नाम॥२॥
रूपवंत होइ नाही मोहै। प्रभ की जोति सगल घट सोहै। धनवंता
होइ क्या को गरबै। जो सभ कछु तिस का दीया दरबै। अति सूरा
जे को ऊक कहावै। प्रभ की कला बिना कहा धियावै। जे को हो
वे दातार। तिसु देनहार जानै गवार। जिसु गुर प्रसाद तूटै हौ
रोगा। नानक सो जन सदा अरोग॥३॥ ज्यों मंदर कउ थामै थमनु। त्यों
गुर का सबद मनहि असथंभनु। ज्यों पाषान नाव चढि तरै प्रा
नी गुर चरन लगत निसतरै। ज्यों अंधकार दीपक परगास। गुर दर
सन देषि मन होइ बिगास। ज्यों महा उदयान महि मारग पावै।
त्यों साधू संग मिलि जोति प्रगटावै। तिन संतन की बाछउ धूरि।
नानिक की हरि लोचा पूरि। मन मूरिष काहे बिललाईऐ। पुरब
लिषे का लिष्या पाईऐ। दुष सुष प्रभु देवन हारु। अवर तियागि
तू तिसहि चितारु। जो कछु करै सोई सुष मानु। भूला काहे फि
रहि अजानु। कोन बसतु आई तेरे संग। लपटि रहिओ रस लोभी प
तंग। राम नाम जपि हिरदे माहि। नानिक पति सेती घरि जाहि॥
४॥ जिसु बषर को लैन तू आईया। राम नाम संतन घरि पाईया। त
जि अभिमान लेहु मन मोलि। राम नाम हिरदे महि तोलि।
लादि षेप संतन संग चालु। अवर तियागि बिषिया जंजाल। धनि
धनि कहै सभ कोइ। मुष ऊजल हरि दरगह सोइ। इहु वापा
र बिरला वापारै। नानिक ता कै सद बलिहारै॥५॥ चरन सा
ध के धोइ धोइ पीउ। अरपि साध कौ अपना जीउ। साधु की
धूरि करहु इसनानु। साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु। साध सेवा
वडभागी पाईऐ। साध संगि हरि कीरतन गाईऐ। अनिक बिघ
न ते साधू राषै। हरि गुन गाइ अंम्रित रस चाषै। ओट गही संतह
दरि आईया। सरब सुष नानिक तिह पाईया॥६॥ मिरतक कौ जी
वालनहार। भूषे कौ देवत अधार। सरब निधान जा की दि
सटी माहि। पुरब लिषे का लहणा पाहि। सभ कछु तिस का ओ
हु करनै जोगु। तिसु बिन दूसर होआ न होगु। जपि जन सदा स
दा दिन रैणी। सभ ते ऊच निरमल इह करणी। करि किरपा
जिस कौ नाम दीया। नानिक सो जन निरमल थीया॥७॥ जा कै मन
गुर की परतीति। तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति। भगत भग
तु सुनीऐ तिहु लोइ। जा कै हिरदै एको होइ। सचु करणी स
चु ता की रहत। सचु हिरदै सति मुष कहत। साची द्रिसटि सा
चा आकारु। सचु वरतै साचा पासारु। पारब्रहम जिनि सचु करि

रजाता नानिक सोजन नमतिममा ला।२५ स्रो का।रूपनरे
लहरगा कछ्यति हूं उनने उन तिनि।तिमहितुजाते नानिक
सितु सो वैउ उसन।अपूपादी अछिनासी उन मननेमे रातु
निष्कओ उो तितियायुतिमनेपरे नाही कछु होइ।सरवा
रनहिरि कोसो हू आये होना आये रोना।गहरोनारगहे
तुजो नो यारतुम परमेसर गोविंद।किरपानिधान रपा
अपरसमाधनैर को वरना याके नानिक के मनमध्य कृ
रा हो।२ मनसा पूरन कूरनेनी गुरो करि घई पमोई संप
हरन मरन ना काले अपोल।तिमछा मरा ननाने होर अ
नहूपमगते सद नाके।सरव घो कसुनी पहूँता के राज
हि रामको जोग माह जोगी।तय महि तपेसुर उमतमहे सो
छिया यछिहूय लगन हुसुमपाईया।नानिककनिसुरु
कास्कि ने अतुन पाईया।१ जाको तो ताको मनि नाहि
लहकै होर अवगाहि पिता का जनम क्या जाने पुतामा
ल परो सी अपने सूता।सुमहते म्या न जिनदेख्यो।जननरासुना
सु याते सय।तिहूं सुन नमहि ताको नरमारो जनम मरे पि
हू अपने नाते।के बनी ठहिमके अम ध्यान किमा जने विग्ि
साना निकसाना।२ नाना रूप नाना जाके रंग।नाना भेष
हि होरकरंग।नाना विधि कीनो विसतार प्रभु अविनासी
के कार।नानाविधि तकरे षिन माहि।पूरि रहो पूरन
नगोहि।नाना विधि करि बनत बनाई अपनी की मति
आप पाई।सभ घट तिसके सभ तिसके ठाउं जपि जपि जी
नानिक हरिनाउ।४।नाम के धारे सगले जंत।नाम के धारे
खंड ब्रहमंड।नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान।नाम के धारे सुन
न गिआन धिआन।नाम के धारे आकास पाताल।नाम के
धारे सगल आकार।नाम के धारे पुरीआ सभ भवन।नाम के
संगि उधरे सुनि स्रवन।करि किरपा जिसु आपने नामि
लाए नानिक चउथे पद महि सो जनु गति पाए।५।रूप सति जाका
सति असथानु।पुरखु सति केवल परधानु।करतूति सति
सति जाकी बाणी।सति पुरख सभ माहि समाणी।सति
करमु जाकी रचना सति।मूलु सति सति उतपति।सति
करणी निरमल निरमली।जिसहि बुझाए तिसहि सभ
भली।सति नामु प्रभ का सुखदाई।बिस्वासु सति नानिक
गुर ते पाई।६।सति बचन साधू उपदेस।सति ते जन जाके रि

है परवेस मसि भिनि रति बूझै जे कोइ नाम भयत ताकी गति है
हु। आयसति कीया मनेमति आपे जाने आपनी मति गति
तिसकी सिष्टि सी करी तो हार। और न बूझै करन विचार क
रते की मति निजाने की या ना। निक गो तिसु नावै सोइ वरही
या ७। बिसन बिसम बिरहै बिसमाद। जिन बूझी या तिसु आ
ईया स्वाद। प्रेम के रंग राचि जन रहै। गुर के वचन पदारथ
लहै॥ वे सा ले डुष कारन हारु। जाके संग मिरस मारु। जन
का सेवक से बडभागी। जिन के संगी कलि व लागी। गुम गी
बिवकारन मन गुगावै। गुर यसी स्तानिक फल पावै। ८
स्लोक। आदि सचु जुगादि सचु है भी सचु नानिक होसी
भी सचु। अष्टपदी। चरन सति सति परसन हार। पूजा सति
सति सेवा दार। दरसन सति सति येषन हार। नाम सति सति धिया
वन हार। आपि सति सति सन धारी। आपे गुण आपे गुणकारी
सबद सति सति प्रभ बकता। सुरति सति सति जसु सुनता। बू
झन हार को सति सति होइ। नानिक सति सति प्रभ सोइ। १। सति
सरूप रिदै जिन मानी। करन करावन तिनि मूल पछानी।
जाके रिदै बिस्वास प्रभ आईया। तत गियान तिस मन प्रग
टाईया। भैते निरभै होइ बसाना। जिस ते उपजि आ तिस
माहि समाना। बसतु माहि ले बसतु गडाई। ता को भिनन कहन
नी जाई। बूझै बूझन हार बिबेक। नारायन मिले नानिक
एक। २। ठाकुर का सेवक आगया कारी। ठाकुर का सेवक स
दा पूजारी। ठाकुर के सेवक के मन परतीति। ठाकुर के सेव
क की निरमल रीति। ठाकुर को सेवक जानै संग। प्रभ का से
वक नाम के रंग। सेवक को प्रभ पालन हारा। सेवक की
राषै निरंकारा। सो सेवक जिसु दया प्रभ धारै। नानिक सो से
वक सासि सासि समारै। ३। अपने जन का परदा ढाकै। अप
ने सेवक की सरपर राषै। अपने दास कौ देइ वडाई। अप
ने सेवक को नाम जपाई। अपने सेवक की आप पति राषै।
ता की गति मिति कोई न लाषै। प्रभ के सेवक को कोन पहु
चै। प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे। जो प्रभ अपनी सेवा लाईया।
नानिक सो सेवक दहदिसि प्रगटाईया। ४। नीकी कीरी महि का
ल धराषै। भसम करै लसकर कोटि लाषै। जिस का सासु न का
ढत आप। ताको राषत दे कर हाथ। मानस जतन करत ब
हु भांति। तिस के करतब बिरथे जाति। मारे न राषे अवर न

सतगुनरहेपारब्रह्मकीदरगहदरगहे।सुनकरउचनकारनअ
घानेमनकोतोषआ।स्मयतियानेसूरागुरआख्योताकोमेउ
अमृतदिष्योसेतोइसंत।सुनदेअंतकोमतिनहोयाई।नानि
कसिनावनिसलयेमिलाई।४।जिन्हातोकउमनतिअनेक
सतिगुरसमरथातेब्रेक।काहुबोलनयङ्कचनडाभी।अग
मअगोचरपुनमिलानी।निराहारनिरवैरसुयदाई।ताकी
महिमातिकिवेनयाई।अनिकनगनवेदभनिनिकरहि।व
उनकेबलिहारीसमिरहे।सदबलिहारीसतगुरअपनेनामि
कनिमप्रसादअमाउमनमपने।पूर्णकहरिरसपाकुजनको
इअमृतपीवेअमरसोहोइ।उसपुरखकानहीकदेविनास
ताकेमनउपजेगुननास।आपपरहरिकानोगुतेयसच
उपदेशसेवककोस्यु[illegible]मायाकेसंगनतेथमनमहिरि
बेहरियिइके।अधकारदीपकपरगासे।नानकनरनमोहदु
सतहसेनासे६सापनिमाहिगाहिबस्ताई।अनदनसाकुष
नामनाई।जनममरनकेमिटेअंदेसे।साधकेपूरनउपदे
सओचरुकाभि[illegible]केवसे।मगलबिधाधिमनतेसैनैसेजिस
कामानकिरपाधारीसाधसंगतयिनाममुरारी।पतिनियाई
केनरअगवनपुनिनानिकहरिहरिजनसमसरख७निरगुनआप
मुरखवनीवोही।कलाधारिजिनसगलीमोही।अपनेचिरत
पुनआपबनाये।अपनीकीमतिआपेपाये।हरिबिनदूजा
नाहीकोइसरबनिरंतरिएकोसोइ।ओतपोतरवियारू
परगोनानकपरगासाधकेसंग१चरचनोअपनीकलथ
रीआनिकबारनानिकबलिहारी८।१८।सलोक।साथन।
चालेबिनभजनबिखीयासगलीछार।हरिहरिनामकमा
वनानानिकयहधनसार।अष्टपदी।संतजनामिलिके
रकुबिचारुएकसुमरिनामआधारु।अवरउपाइसभ
मीतबिसारहु।चरनकवलहिरदमहिधारहु।करनेका
रनसोप्रभसमरथ।दिरडकरगहोनामुहरिवथ।यहधन
संचहोहुभगवंत।संतजनाकानिरमलमंत।एकआसराष
कुमनमाहि।सरबरोगनानिकमिटिजाहि।जिसधनकउ
चारकुटधावहि।सोधनहरिसेवातेपावहि।जिससुपकौ
नितबाछहिमीतसोसुपसाधसंगपरीति।जिससोभाकउक
रहिभलीकरनीसासोभाभजुहरिकीसरनी।अनिकउपा
यनरोगनजाइ।रोगमिटैहरिअवषधलाइ।सरबनिधानमहि

हरिनाम निधानु जपि नानक दरगह परवानु ॥२॥
४ ह्हहरिके नाय दहरि मछिया तन आवन ताच नाको बि
गुनन लागे को छुगाके रिदै बसे हरि सोइ कलि
दरि नाउ मिमरि सिम रिसराम
आसा आगा निनाय आतम परगास ति उपरि जा इ बस आ
सा ॥ करु नानिक काटीजम पासी ॥२॥ ततबिचारि क ह
ननमा चाज ममकै सोका चो को ॥ आ
तवा आपति पागमर नगर देव ॥
स हरिहरि सिमरि प्रान आधार ॥ आनिक गपावन
हारे सुमृत सास व बेद बिचारे हरि को
ना कू मन बसत नानक फल पाइ ॥ ४ ॥ मगन चाल मिते ख
नातिक्रि पाल पतर हिमरप मना ॥ सुनमी तकुट व अल ष
मिता ॥ इन तै कक उमको न मनाथा ॥
र झूनते कहक को न ठुटकार ॥ अम रहस ता रप अमवा
री फ वाट फ फ ट पा मारी ॥ जिम टी यति मबु फैन बिगा ॥ मा
नामबिसारि नानिक प ठिला ना ॥ ५ ॥
याते नगातिबिना वक नूदेम याने ॥ हरिकी नग
मत सात नि रमते होइ उहार बीत ॥ चरन क वतराघ
न मा हिंसाय ... नय क्र अवरक्र नाम जया वक्र सुनत क
हरहनगनि या वक्र ॥ मारम तम तिहरि को नाव महजा
मा कृ नानि कगु नागा व ॥ तनगा वनेरी क नरम मेल बिनम ॥
नाह्रू हम हिप फै त होइ आचित बसे सुष नाति ॥ मा सिम
हरि नाम मना ति ॥ आ डिम या न प मग मी म नी साध म
गपा व हिय नाहरि पृजी म व कर क्रु बि व हार इहा सुष र
गहके कारे ॥ मरव निरत रिरी को देश ॥ कक्र नानिक गा के
मम त क्रि लेष द्ो को जरा को मलाय ॥ ते क मिम रिरी क म
न आप रि कल के गुन गावक अनत मन तन जपि रिक म
गवता ते कोते कते क हरि आप पूरा पर क वोप्रन बिय
पा अनिकथि सता रो कने न रारि कु अराधि परा इ तम रोम
न तन अतरो क वन राना ॥ गुरप्रसाद नानिक रोक सा
टा ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ फिरत फिरत प्रभ पाई या परी या तो सरना
या नानिक की प्रभ बीनती अ नी मगती लाइ ॥ अष्टपदी
जाचि क जन जाचे प्रभ दानु ॥ कर कु पा देव हु हरि नाम ध्या
ध्या नी की माग कु धूरि ॥ पारब्रह्म मेरी सरधा पू

चरन के बलहि

[illegible]न कागन गाउ सामि सामि प्रनउ महि प्रियाउ । रोको वो रोको ।

[illegible]ना गश्रीति नाम ति करि प्रन को नाति नाति । प्रन कोटि छिन हि

आधार नानि क मागे नाम पुन सा हरि । जिन चा थी याते उपती

पहोइ हरि रस याउ विरला को य । अनु अरसरस रग उपतेच

न पुरुन पुरुषन हिडो लो नाउ नर नेर प्रमर सरग उपरा

प्रमाध के संग । पर सरमि आनि सरवनि याग श्रनरयरा

म अनुदिन लइ लाग । बड नागी नपी पाप्रनसोइ नाति क

नाम रतन पर होइ मिवक को मन नसा पूरो मा ई मन गुरनेन

मल मन लइ जिन को प्रन द्रोक रयालु सेवक को नाम

नामि हाल बंधन कारि भक्ति मन नइया । जन मरनदुयम

स्मगइया । इ श्रमनी सरधी सन हरी । प्रिय रदी यो मगहनरी

[illegible]मि का मा निमलि या मिलाय । नानिक नगती नोग मगाइ

रसा क्यो निमै निघा लन नाने । सो क्यो निमै ति कोपाज

नो मीक्यो त्रिमै नन मय कछ हीया । सो क्यो विसर जीव

न मीया सो क्यो छि हि आनि महि राधे । गुरप्रमा द को विरला

ला पसो क्यो बिसरै मिहपुद्दे कोटे नमन तनमको दरा

मोटा गुर पुरे नउ पर बूकाइ या । श्रम अपनी नानिक मन

भियाइ या । मा नन मन कार क्रपक काम आनि निया गम्म

कहरे नाप्र मिन रिसन रिंसु पया वृद्धि । श्रापजप क्रं अथ

रनाम नया क्रा नगति नाव लिरीसेमा रे । छिन नगती नलहे

रा मखव कल्या गासु यनि ध्यनाम । हरिजन जान यारो छिम

म मगलपुष कारहोवत नासु । नान कनाम नपपु नना सु ।

उयजी प्राति प्रमरमचा उ । मनन नमे अरहरी सुयाउ नेः

कैपरससु परो हर । मनन विगमेमाध चरन धे इ । नगरानव

के मनमनरग । विरला को कथा वेमनु रो कबमत दीन कथ

मया सुर खुमार माम नपिल या । ता को वोयमा कहो नना

इ । ना नि कहरही मासर कसा या या । २ । पुन वपसर रो नरया

लु । नगति निखलमदा कि रया लु । अनाथ नाथ गोविरा

माल । सर व यरो करत प्रति पाल । आदिपुरष कारन का

तर । भगत नन नाके प्रान अधार । जो जो जप सो होइ पुनीत

नगत नाव लावेम न हीत । हम निरगुनी आरती च अनान

नानि क श्मरा सर नि पुरख भगवान । सर व वके उ मु निम

त्यारो रोक नि मघ हरि के गुन गारो । अनि कराज योगव

दियाइ । हरिके नाम की कथा मनि माही । बक नो जन व

[illegible] नारस्नानो जामली हरि ॥ नाम लीनु करनी सो नाधन
[illegible] नहि रहे [illegible] मनो साध संग [illegible] निवासु ॥ २० ॥
[illegible] निरंकार [illegible] मिल माधौ आप आपन
[illegible] आपे [illegible] जब आका
[illegible] नहि [illegible] ना ॥ [illegible] तब ध
[illegible] आपन [illegible] माधि [illegible] संग [illegible] माता ज
[illegible] तब [illegible] मो [illegible] हो कि
[illegible] आपन जब आपन आप आप [illegible] तब मो [illegible]
[illegible] आपन [illegible] आप [illegible] जा जानि क
[illegible] ॥ [illegible] ध्यानी ॥ तब [illegible]
[illegible] को [illegible] ॥ [illegible] अगम अपार
[illegible] को न [illegible] ना र जब निरगुन [illegible]
[illegible] जब आपहि आप
आपनी [illegible] ॥ [illegible] को न कि [illegible] ॥ आपन
[illegible] आप करे [illegible] ना न [illegible] कर अगम अपार ॥
[illegible] आपन आपन [illegible] जनन मरन [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] को [illegible] के
[illegible] आगि [illegible] ना [illegible] ॥ तब [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] जन [illegible] गोवर आधे
[illegible] ॥ आपन आप आपही
[illegible] आप [illegible] आपही [illegible] जब हमि
[illegible] ॥ [illegible] कहा कि पाधे ना ॥ [illegible]
[illegible] को [illegible] को मानको [illegible]
[illegible] लगन [illegible] को
[illegible] माथे ॥ [illegible] कि [illegible]
[illegible] ॥ नानिक [illegible] का
[illegible] ॥ जब आपनी [illegible] आपने [illegible] नाही [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] कला आपे [illegible]
[illegible] ॥ जब आपन आप [illegible]
[illegible] आप [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] आपनी [illegible] आप ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] कि [illegible]
[illegible] आपन को आप [illegible] ना [illegible]
[illegible] कहि [illegible] को [illegible] को ॥ [illegible]

किम लागै चित। जहै आपन आप आप पतियारा। तहौ कौन
कथै कौन सुननेहारा। बहो बेअंत ऊच ते ऊचा। नानिक आ
पस कौ आपहि पहूचा ॥८॥ जह आप रचियो परपंच अकार।
त्रिगुन मै कीनो बिसथार। पाप पुंन तह भए कहावत। कोउ
नरक कोउ सुरग बंछावत। आल जाल माया जंजाल। हौमै
मोह भरम भै भार। दूख सूख मान अपमान। अनिक प्रकार
कीओ बखियान। आपन खेल आप करि देखै। खेल संकोचै तौ
नानिक एकै ॥१॥ जह अबगति भगत तह आप। जह पसरै पा
सार संत परताप। दुहू पाख का आपहि धनी। उन की सोभा
उनहू बनी। आपहि कौतक करै अनद चोज। आपहि रस
भोगन निरजोग। जिस भावै तिस आपन नाय लावै। जिस भावै
तिस खेल खिलावै। बिसमार अपार अगनत अतोल। जिउ बु
लावहु नानिक दास बोलै ॥८॥२१॥ सलोक। जीअ जंत के ठा
कुरा आपे वरतनहार। नानिक एको पसरिया दूजा कह द्रिस
टार ॥ असटपदी ॥ आप कथै आप सुननेहार। आपहि एक आप
बिसथार। जा तिस भावै ता स्रिसटि उपाये। आपनै भाणै लए
ए। जीअ जंत्र सभ ता के हाथ। दीनदयाल अनाथ को नाथ।
जिस राखै तिस को इन मारै। सो मूआ जिस मनहु बिसारै। तिस
तजि अउर कहा को जाय। सभ सिरि एक निरंजन राय। जीअ
की जुगति जा कै सभ हाथ। अंतरि बाहरि जानहु साथ। गुन नि
धान बेअंत अपार। नानिक दास सदा बलिहार ॥२॥ पूरन पू
रि रहे दयाल। सभ ऊपरि होवत किरपाल। अपने करतब जा
नै आप। अंतरजामी रहियो बियाप। प्रतिपालै जीअन बहु
भांति। जो जो रचियो सु तिसहि धियाति। जिस भावै तिस लए मि
लाय। भगति करहि हरि के गुन गाय। मन अंतरि बिस्वास करि मा
नीया। करनहार नानिक इक जानिया ॥३॥ जन लागा हरि एकै
नाय। तिस की आस न बिरथी जाय। सेवक कौ सेवा बनि
आई। हुकम बूझि परम पद पाई। इस ते ऊपरि नही बीचार।
जा के मनि बसिया निरंकार। बंधन तोरि भए निरवैर। अ
नदिन पूजहि गुर के पैर। इह लोक सुखीए परलोक सुहेले।
नानिक हरि प्रभ आपहि मेले ॥४॥ साधसंगि मिलि करहु अ
नंद। गुन गावहु प्रभ परमानंद। राम नाम तत करहु बि
चार। दुलभ देह का करहु उधार। अंम्रित बचन हरि के गुन
गाउ। प्रान तरन का यह सुआउ। आठ पहर प्रभ पेख

करन जोगो होइ सोई सुख मानै करन करावन हार उस नो मै अं
तर बसे बाहरि तोई ही नानक दरसन देखत मोही ॥४॥ आप
सति कीआ सभ सति तिस प्रभ ते सगली उतपति । तिस भावै ता करै
बिसथार तिस भावै ता एककार । अनिक कला लखी न जाइ । जि
सु भावै तिसु लेय मिलाइ । कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि । आ
पे आप आप भरपूर । अंतरगति जिसु आप जनाए । नानक
तिस जन आप बुझाए ॥५॥ सरब भूत आप वरतारा । सरब नैन
आप पेखनहारा । सगल समग्री जा का तना । आपन जस आ
प ही सुना । आवन जानु इक खेल बनाइआ । आगिआकारी की
नी माइआ । सभ कै मधि अलिपतो रहै । जो किछु कहणा सो आ
पे कहै । आगिआ आवै आगिआ जाइ । नानक जा भावै ता लेय
समाइ ॥६॥ इस ते होइ सु नाही बुरा । ओरै कहहु किनै कछु कर
आ । आप भला करतूति अति नीकी । आपे जानै अपने जी की
आप साचु धारी सभ साचु । ओति पोति आपन संगि राचु । ता की
गति मिति कही न जाइ । दूसर होइ त सोझी पाइ । तिस का की
आ सभ परवानु । गुर परसादि नानक इहु जानु ॥७॥ जो जानै
तिसु सदा सुख होइ । आप मिलाइ लेय प्रभ सोइ । ओहु धन
वंत कुलवंत पतवंत । जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंत । धनु धं
धनु जनु आइआ । जिसु प्रसादि सभु जग तराइआ । जन आ
वन का इहै सुआउ । जन कै संगि चिति आवै नाउ । आप मुक
तु मुकति करै संसारु । नानक तिस जन कौ सदा नमसकारु
॥८॥२३॥ सलोक । पूरा प्रभ आराधिआ । पूरा जा का नाउ । ना
नक पूरा पाइआ पूरे का गुन गाउ ॥१॥ असटपदी । पूरे गुर का
सुनि उपदेस । पारब्रहम निकटि करि पेखु । सासि सासि सि
मरहु गोबिंद । मन अंतर की उतरै चिंत । आस अनित तिआ
गहु तरंग । संत जना की धूरि मन मंग । आप छोडि बेनती
करहु । साधसंगि अगनि सागर तरहु । हरि धन के भरि ले
हु भंडार । नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥ खेम कुसल सहज आ
नंद । साधसंगि भजि परमानंद । नरक निवारि उधारहु जीउ
गुन गोबिंद अंम्रित रस पीउ । चित चितवहु नाराइण एक । एक
रूप जा के रंग अनेक । गोपाल दामोदर दीन दयाल । दुख भं
जन पूरन क्रिपाल । सिमरि सिमरि नाम बारं बार । नानक जी
अ का इहै अधार ॥२॥ उतम स्लोक साध के बचन । अमुली
क लाल एहि रतन । सुनत कमावत होत उधार । आप तरै लो

[illegible] गोकै [illegible]
[illegible] सुमि सुनि आनंद कंरु
[illegible] नादद [illegible] नानिक [illegible] नंके
[illegible] कर्णकिरया [illegible]
[illegible] मगलेन
[illegible] नामसाध [illegible]
[illegible] सवकको [illegible] ला नैना
[illegible] नाकद [illegible] क [illegible]
[illegible] मारो [illegible] नकोगम
[illegible] नानिक [illegible] मनीम
[illegible] [illegible]
[illegible] नानिधान [illegible]
[illegible] नन [illegible] नेके
[illegible] बननान [illegible]
[illegible] मच [illegible]
[illegible] नानिक [illegible] प्रगध
[illegible] परगाध
[illegible] नका [illegible]
[illegible] गुरनानि [illegible]
[illegible] नानिक [illegible] गम
[illegible] नमनको [illegible]
[illegible] नानिबानी [illegible]
[illegible] नाम [illegible] गोबिंद [illegible] के [illegible]
[illegible] तेगम
[illegible] साध [illegible] नानिक
[illegible] जिमजल [illegible]
[illegible] नेना [illegible] तनका
[illegible] नाकी बानी [illegible] क नामं
[illegible] साधनाम [illegible] ताके
[illegible] नानिक [illegible] नाम
[illegible] मानाबनी नानिक [illegible]
[illegible] नव [illegible]
[illegible] नरगनी
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

॥श्री निरंजनाय नमः॥ श्री गुरदेवाय नमः॥ सकल संत महापुरु
ष नमः॥ अथ श्री स्वामीजी श्री सेवादासजी की परचई लिख्यं
॥दोहा॥ गुर गोबिंद प्रणाम करि संतन सिर जु नवाइ॥ सिध स
धिक सब बंदि कै हरि गुण बरणि सुनाइ॥१॥ कलिजुग पहरे अ
टोसा चासे सत जोण। उन की महिमा कहा करौं। मो मति अलप
अजांण॥२॥ महर करौ तौ मैं कहूं। यौं बुधि दीनदयाल॥ सकल
संत प्रनाम म्हा। बकसौ बचन रसाल॥३॥ सतगुर साहिब संत स
प्रनमूं बारंबार। अचा बरनूं प्रीति धरि। यह अगम अपार॥४॥ अं
त कोटि साधु हूवा। अनंत जुगन के मांहि॥ कलिजुग की रति आ
करी। जन सेवा मैं बलि जांहि॥५॥ चौपई॥ कृपा करो करुणां
निधि देवा। दीजै मोहि भक्ति कौ भेवा॥ प्रसाद प्रभू मो हिरदै आवै
तुम्हरे गुण हिरदै सुधि गावै॥६॥ बांणी बिमल प्रकास करो स्वामी
तुम सुषसागर अंतरजामी॥ मेरी बुधि मति बहुत मलीनी। ज्यूं
है त्यूं जावतन दीनी॥७॥ अग्यान दीज्यसके काइ बिन दी अ
ग्यास हज सुनाई। जैसे सागर उदिक अपारा। उपजे तरंग अ
पइ कसारा॥८॥ असी बात कहौ कुण जांणै। कृपा आपकी आ
बंणी ऐ। पूरण ब्रह्म देह नहीं धरै। आपा आगम सुधि संत पधारै
ए जब संसार बिकार अपारा। जगति बैराग या गुण सारा॥
ग्यांन ध्यान जीव जौ गान जांणै। अनधरम जगन रम तुलांणै॥१०
जकडे जगत करम की पासी। दरसे नांहि अकल अबिनासी॥
गुपत भई गुर संतन बांणी। असी रीति अनीति बंधांणी॥११॥ अंत
रजामी राम गुसांई। केवल संकल्प ठानी नांही॥ भक्ति काजि स
धु कलि आवै। सूते जीव हि अनंत जगावै॥१२॥ दोहा॥ जगति बध
रण कारणै। आंणे जगत जिहाज॥ सेवादास प्रगट हुवा। कितां
सुधारण काज॥१३॥ अनंत कला ले औतरे। मरम न जांणै कोइ॥
जन रूपदास गुण गावतां। आनंद मगल होइ॥१४॥ बि॰॥१॥
चौपई॥ घोड सबर सदेह जन जोई। आगम ग्यान गुण समझे
ई। गोबी पुरस गोब संग्रा ऐ। मिलि मिलि पूछै संत सबा ऐ॥ न
ग वो नेष अलेष गुसांई। देह दरसा असी दरसांई॥ सागे संत पर
म गुर पूरा। निरगुण नेह निरमला नूरा॥१५॥ सतगुर देह देस बदलू
लारै। असे ध्यान ग्यांन मति वारै॥ महा बैराग अडिग रिआसै
ईषत दरस मिटे मनि सांसो। जन दास कबीर सीस परि सूरा। घट
अखि ग्यान गुरू दा पूरा। असे सतगुर हिरदै बिराजै। तीन लोक
मैं नौबति बाजै॥१६॥ हरी पुरस के पंथ उजियाला। गति गोरष जीते

जम काला। हनसीदया रहति सुषदेवा। ऐसे संत बिराजत सेवा

॥ सिवसीम क्रिसंपद लीनां। सनकादिक से प्रगट प्रवीनां

जो गजुगति भक्ति बैरागी। केवल रांम नांम लौलागी॥६॥ बैरागी

कहा ल रनर पूरा। भ्रमांनूं प्रगटे उ देषया सूरा। तपकी सो

नाक हतन आवे। देषत दरसन मनन आघावे॥७॥ सुषके सब

द सुष रसपावे। निसबासुर नोत्म गुण गावे। निरमलन नेतके

पा कहिजोवे। म हरि हृ हिते सब जग मोहे॥८॥ कोमल कवलस

दा आनेदा। प्रगटे जगमें लगत निरंदा। ऐसी चाल अगाधव

षानं। तास पट तर नांउ नमांनूं॥९॥ सील संतोष धारण धारी॥

हीलो सो य गुण सारी। मारे मोह मांन मन मीरा। त्रिगुण त्यागन

एजन पीरा॥१०॥ पांच पचीस पछाडे पाछा। तिन गुण धरे मुनि

आछा। दयादीन ता स म तासंगी। विमल धारि रंगे हरि रंगी॥

अठिग अजाची बहोल अचाई॥११॥ मांनि बडाई मारि तगाई। का

म न क्रोध लोभ नहीं लेसा। पूरा गुर का यह उपदेसा॥१२॥ दा

नि रगुण संत निरलेप रसा। न आसा न निरास निरदावे बि

चरे सदा। श्री स्वांमी सेवादास॥१३॥२१॥ छि०॥१॥ चोपई॥ र

मे रांम जन हरि रस राता। आठौ पहर गलत गुण गाता। षीर

र निरवारा कीन्हां। अकलि परषे च सबे तजि दीन्हां॥२॥ रमता रे

रांम का प्यारा। आप कहु सब के नहि धारा। ब्रह्म सरोवर स

हलि आये। पर महंस सब के मनि भाये॥३॥ धनि धनि नाग तह

च लि आवे। नाग बडे ते हरि रस न पावे। धनि हर जो भिजहं ज

बिचरे। एक रांम बिन और न उचरे॥४॥ रूप षडू षजगत विचि

सा। मंडी मसांण करत निवासा॥५॥ नूं नेर हे सकन दी काई

नि डुर रहाए जन सहज सुजाई॥६॥ इरपे नदी डरावत नाहीं घटि

घटि ब्रह्म एक दरसांही। जल में थल में जीव अपारा। सब म

हि जोया जगत आधारा॥७॥ थावर जंगम में जगदीसा। अरध उ

रध मधि एक लाईसा। ऐसी जुगति जो निज न जोगी। रमता र

हे ब्रह्म रस भोगी॥८॥ प्रेम सने हो परउपगारी। सब सूं रहे स

म ब्रत धारी। जनम हि ति ले बिराजत सीसा। ध्यान समाधि जो

तज गदीसा॥९॥ आठौ जांम आस ए इक सारा। लागी लिव

अषंडित धारा। आनद्या सनाथो हित पारी। ब्रह्म बिलास आन

द कसारी॥१०॥ बिषैबन न लौउ लटि अपूठी। जनम मरन की

मे बूटी। त्यागी तपसी वरतत बेता। कहा बरणूं स्वामी गुन

जेता॥११॥ घट पर चै की विगति सु णाऊं। पूरण पर चा पार न पा

कं गिगनमेंडलमैंनोबतिबाजे।मों नूंघटाइं दृजूंगाजै २०।बो
ना रअषंडितधारा।फा लिरिसेषपषावजतारा।मेरिगिहराउ
अहरनसींगे।स्वामीसुवतप्रेमरसलीगे।।सहनाईबसीर
रबोलैसुनतांसुरति अनंतनदींडोलै।बिबधिनातिधुनिसेत
अपाराइम्रतकरतअषंडितधारा।२जहांझिलिमिलेजोति
प्रकासा।अरसपरसंब्रह्मविलासा।अतिकोतूहलकर
तनआवे।यहपरचापूराजनपावे।।उमग्योप्रेमरेहैनदी
बोना।मगनभएजनगुणलतांना।रसपीयाकीपारिषएहै
रसमैंहिवि देहबिचिरेहो।१४।करणीपूरासागेस्तरा।निरष्या
तेजनिरमलतानूरारसीयारंगमेंरातांडोलै।अएनेसबदस्
गमकाबोलै।१५।दोहा सहककलहूरीसुणअनहदजनसेवाक
रणीसार।रूपदासबरणिकरामहिमांअनंतअपार।१६।
।।धरा।।विश्रामा।।३।। चौपई ।।बिहोतबेरसलगकरीकमाई
पीछेअटरसिअैसीआई।सदजसुनाइसबदमुछिआवे।।
अगमगपानकीऊगमपावै।। ।दयासिंधअैसीदिलआ
केवलकरनीवरनसुनाई।४।सेजेसबदसातरासेलासुण
एसतबुयकामेला।बिरहबैरागगपानकीभाषा।लगतिजो
गजतसतकीबाता।२।निदकेवलनिजसारबतायो।स्वाम
एकनिरंजनगायो।तृतीयानावचरमसबमेटै।पूरासतगुर
प्रगटनेटे।४।अनेताजीवउधारणतारण।प्रगटेआइजगा
तकेकारण।कलिजुगमेंसतजुगप्रगटायो।जरमकरमत
जितलबतायो।५।मोरीकलिमेंसाचबधाणैं।कहूबडनामी
सबदपिछांणैं।जोसंतनकेचरणांलागे।तिनकेरोगदोषदु
षभागे।६।नावधरयोतेतेजीवतारे।केतेकाजसेवकीसारेपाव
नरूपीपरउपगारी।पतितजीवकीयाडितारी।७।सेवाजनकी
साचीबांणी।जांणीजिनकीतपतिसिरांणी।अनंतकोटिजव
आगैंहूवा।क्याकहिवरणौंजूवाजूवा।८।कलिमेंनामकबी
रउधियाला।दत्तगोरषसंतओरदयाला।अैसेसंतसेवासु
षदाई।भवसागरमेंजगतिजगाई।९।अैसेसतजनहोतेना
हीं।तोजीवजातअधोगतिमांहीं।योसंसारअपानअनंता
ताकारणिसाजेसंता।१०।संतसमागमकरिहैकोई।ताकीसु
किसहजहीहोई।पूरासंतकेसरणैंजावै।मनकेबंछित
फलपावै।११।तीनलोकतेजनहैन्यारा।तिनकेअदरिगप
नअपारा।सरणिसुधारणसेवासामी।प्रगटपूरापारग्रामी

उलटाबेलिअगमसुषमं
१२॥ कोंणीचालतक्षुधा तिकौंणजांणौं
भेदनपावै भेदगुसाईं दूजासमझै कहौ कुण कोई॥ ॥ नौ आकर
नसासअगीसा धारनपावै सुंनसमीता त्रिगुनतजितुरीयाके
साते पंचमपदमैं ध्यानसमाते॥ ॥ पंडितगपानी चतुरविचारं मा
गुणमांहींजगसारे सिवब्रह्मास्त्रविस्नुगवानी ऐतीम
त्रिगुणकै थांनां॥ ॥ अनंतअवतारउरैंहीराते सुरअसुर
हूपतिसाते चौघरकहीऐपरपरदेसा विरलैसंतकरतप्रवेसा
॥ ॥ उनघरपहुंतेनामकबीरा गोरषदत्तसेप्रमसधीरा उनघ
रपहुंतेजनरैदासा पीपाधनांसेनसुषबासा॥ ॥ उनघरिपहुंते
धूप्रहलादा सुषसनकादिकअनंतरिनाथा॥ उनघरसेतीनानि
कनेरा परसासोझानगवेतनेरा॥ ॥ राकावांकाकेवलकूबा
उनघरिगऐतेइजनसूबा हरीपुरसदरिरसकेजोगी॥ उनघरिप
हुंतेपरमविवोगी॥ ॥ सेवादासजनउनघरमांही अरसपर
समिलिहिलमिलैनांही॥ सिधसाधिकचरणौंकहौकेता उनघर
पहुंतेपारनतेता॥ ॥ दोहा॥ केलैकहीऐसाधसंत मिलेप्रमघर
जाइ॥ उलटिनिसूगआवहीं सुषमैंरहैसमाइ॥ ॥ श्रीस्वामीपर
चौकौ सबसंतनकौसार सुणतांआनंदकपजै तैनर
...नराहार॥ १२॥ ६०॥ चौपई॥ जीवतमुक्तिरमैजु
गमांही॥ ...आरतहोनेजांही॥ मूकपातपरवानअदैता
...नेगतेजावैजेता॥ परस्यब्याते तेजनपावै सेवगता
...होनहींजावै॥ उरिस्याकीदैसदकसहरी हरिजनकेहरि
...टिहैजरी॥ साहिबसतएकसगिडोलै अंतरजांमीप
टेघटिबोले हरिजनकेचितानहीं काई सिरपरिरामसदासु
हाई॥ ॥ कसमैरमतारंगभीनां देसहरिकादरसनदीनां
अब्यानहीं औरमनमांही स्रुतेसुनाइ अैसे बिचरांहीं॥ स्वा
मीउलटिरमनकूंआया आगेंसमंदआडाआया समंद
तीरनावएकनाहीं कितनीडुनीयाकपरस्योटी॥ बहुतमाल
हैमांहीघात्या साहूकारदेसतेचाल्या स्वामीआपआज्ञ
हांकना॥ सबहींदेषैसूरतिषूबा॥ नावचलनकूकरततय
री॥ बहुतजननैबैठेनरनारी स्वामीआपबिराजेनाऊ कोईन
समझैजनकौनाऊ॥ पवनप्रवाहनावजबचाली सबहीक
हीकरमैंझाली साहूकारबातएकभाषी नावडीयातुमनी
कोराषी॥ ॥ नावडीयोकहैराषैरांमा कछुनबिगडैतेराका
स्वामीसुनैसबनकीबांनी अंतरजांमीसूनहीछांनी

७ बाई नाथ जंदां समदं अथागा। अनमी घणी आगली जागा।
विगसी नावमी हिजल सुरीया। तबही सग लाम नमें डरीया। १० सा
हकार बकुतव छिताही। पे तीतीर कहे कव आवे सबही रोवे ले
गलुगाडी बूडा। अबै समद मैं नाई। सेवा दास जन हसरंगीला। को
ई न समझै जन की लीला। साहुकार कहे सुनिहो स्वामी। तुम नही
डरयो अंतरजांमी। ११ स्वामी कहे डरे क्या हो सौ राषे राम तो कौण डुबै
सौ। सुमिरो राम राम सब कोई। होंणी होइ स सद जे होई। तब ही
सुरति राम सूं लाई। तिरती नाव तीरच लिआई। सब हिन के मन निश्चै
जो जाको सेवा संत के चरन सहाऊ। साहुकार २० ठि बंदन कीया।
इतनां जीव तुम्हारा दीया। बकुत मैं दे आनि चढोसा। कितां के हू श्री
फल फोसा। ५ सबही कहे बिराजो अनूं यां ही। मेरो मन स्वामी तुम
मांही। सब परसाद बांटि के रिदीया। स्वांमी तो कछु हाथ न लीया। १६।
दोहा। अैसे सब तनाव कूं राषी दीन दयाल। जन सेवौ पर बैयी वडे सम
त राम के लाल। ७ मैं हू रिपसम कौन हीं परचा हुं दोपार। जन सूं यासन
फि बताएं तो सतगुर सिरजनहार। १०॥७३॥ बि०॥ प॥ चोपई॥ उसी
तें गवन कीयो गुर देवा। सम झे कोण संत की सेवा। बकुत उजाड़ि बि
गल अंति जोई। बसती दूरि तिकटि नहीं कोई। बाघर ऐक नयां न
क नारी। जहां बिराजे आसण धारी। इं मूल पोन पाऐ मति वारा। सुधा
पियासा दूर तें सारा। २ तहां तें हरि नगर ऐक नीका। सिपत थी सत
गरू इन दीका पीछे ऐक मनि ष तहां आवा। तिन स्वांमी का दर
सन पाया। नु दिषि दरसंउ। ए। मनि अैसी जांनै। अबै रहूं इत बेसी
स्वांमी तरे ध्यान के मांही। बतराए पनि बो लैनां हीं। ४ कछु चित माम
मैं हर षाया। पीछै हरि नगर मैं आया। जाइ नगर मैं बात सुणाई
मेरी सब दसा च तो नाइ। पए कजंगल मैं जोगी बैठा। मन पवनो लै
नम नि पैठा। मेरे य ह सुं देसा आया। बो त्या न ही बहो सब तलाया।
हम तब ड नायां के अैसी आइ। जहां रसोई लै गया नाहीं। तब स्वांमी
लीयो प्रसाद नाथी छै रमीया वेसा हूं। ७। ऐक नगर मंडीया पा
मेला डुनी यादार कुवा आतिनेला। मती नाथ को मेलो नरीयो।
सबही लोग अचें सी धरी यो। ८ आऐ सकल भि तिसतगुर पासा म
न की पूरा सब की आसा। कहि प्र नांम सबे मन मोदे हि दरसन से
ब के दुष षोए। ऐनो जन पान करत सुष पायो। गोरष को सोग पान
सुणायो। कोई ही लै गोरष सागे। धनि धनि भाग आपनो जागे। १९
कोई कहै यह दरस की देही। क्या कहीऐ सुष देव सने ही। कोई कहै
ऐसा गे सोई। अैसा नूर न देष्या कोंही। १२ सब ले लोगन के उपजी

नगती। ऐसे जो भजु गति के जु गती स्वामी बोले सब घरि जाबो अल
२१ ष निरंजन ऐक समायो।१२। गयो न जाइ गाव के कोनी स्वामी को
सुरति म निमानी। ऐम प्रवाह चले हग मांही मुषते बचन नी कसे
नांही।१३। सब ही जो वै सुरति सांम्हा। बिसरे लोग कुटंब ग्रह धांमा
हैं इन दासी गुलटे आऐ। अपने अपने धांम सिधाऐ।१४। अजहूं ले
क सबै सु जो वै बैरे ही दास अवै कब होवै। जिनके मिलीया सत
गुर सेवा। तिन ही पाया अलष अभेवा।।धा दोहा। ऐसो दरसन स
ब को बहुभागी हूं होइ। सरम मिटावै जी बका मिटै बडउ बरोप
... तिन स्यां ... हीं जु हि चरन मा जगत गुरू जग माहि जन सेवा के
म तिकु ... तो ... हि।।१७।।१००।।बि०।।६। चोपई।
निर बंछि क बिचरें निरभावे। निरधारा आधार सदा वे। रमन मतो
बा लोत रै कामी। ऐ सी रीति येन ही जो नी।१। जाइ बिराजे सत निरास
आ व पद अंतर मांहि उदासी। चित हरि चरन के व ल के मांही अास
न अडिग हिगे पल नांही।२। ऐसी जुगति बिराजै जोगी। राम अमीर
स का वे भोगी। सम पाइ गुरदेव पधारे। धनि धनि मोटे भाग हमारे
। ऊ बे तुर तिस्तु न तति हि बारा। धनि बद घरा जब संत पधारा। जि
के जि भ्यासी जो ते बाटा। तिन का तिमर तुरत तब फाटा।४। आऐ
म गि प्रीति का प्यारा। जिन के हिरदे सब दरजारा। देषद रसत वे
म निमां न्या। स्वामी अपने तुरत पिछांन्या।५। अष्टांग आइ करी प्र
नांमां। दै प्रक्रमा परम सुतांमां। नकि नाव करि नेट चदाई सब
ही सेवग करत बधाई।६। स्वामी बोले बचन रसाला। सुनि को
र म गन भऐ तत काला। वे सुष दाई इंम्रत पावें। अपने रोपे बरष
को धावें।७। सेवग टहल करै मति मानी। उनके अ बुध ओर न जांनी
गुपती संत गुपत ही इरहीया। अपनां भेद और न ही कहीया।
जो नर ल्या गि री ह ते नतायो। सेवग कहु ते भेद न ही पायो।
छु हरी सेस बदेही मांन्ई इम्रत प्याला ते ही प्रभु को ल्यावे।
जन भारी। सब ही सेव अ आग्या कारी। आपन भोजन कब
न लेवें। बकुते जीवा जेत हु के देवें।१०। अन परसाद दीयो तब टा
जनन हीं अचवे पवन अधारी। ऐसे दिन निकसे हे तीसा जा
भजती जोग कोई सा।११। ऐसो कुण बोले सुष आगे वह तप
दे षत हुरलागे जांने को ए संत को सारा। बोले घट में घटके
प्यारा।१२। ऐसे आप अगम मन लायो। मास ऐक ते भोजन पायो
की गति जांणें कुण प्राणी। सुर नर मुनि जन सब लैं छानी। अब
सेवग समकि सनामा। करै दीनता धनि गुर रामा। अपनी गति

मति आपहीआंनूं कहेक एसमझै औरआंनूं ।१४। हेपरसादसब
न संतोंने स्वांमी सत आपणी सोषे ।मरमनपावै मनिषविचारे अपनी
अंबुधि संतसिखरे ।१५। दोहा ॥ कुतहि ऐ सोहा कारी सबही सेवगसोइ
रमती विरीयां रांमजन मरमन पावै कोइ ।५। पायहविरकत वैरागर
रीति सुणों सब संता रूपदास जन कहत है कहतनआवै अंत ।१६
॥१७॥ इति ॥७॥ चौपई ॥ दरसन कारनि सतगुरसेवा ।रांमभक्ति कर
तजगतिकै नेवा ।जेको ईजीव रांमसुषजीवै । करिहो हारसमगनतब
होवै ।१। असी विधि बहुतेदिन हूवा । हरिजनरमै जगततैं जुवा सो
गी सबद सुनै तहां कांनां ।स्वामी इतनां करतपयांनां ।२। ऐक दिनां अ
जमेर पधुता । उनकै पासि वास ऐक होता । सहरगया नहीं या दित
आंणी । सहरा बदीत जुगतियां जांणी । तूदेषी गोरखअनूपमहाई ते
हां फिरा ले संत सुषदाई । आसणमांडि अडिगमन असो सकलप
विकलप उपजत कै सो ।४। हो सी ऐकुसा इयां जूंनी । देषी आपपरी
तब सूंनी । लीन रिये ठिआंन मनलीनां । असा सबद सुणा ऐक की
नां ।५। असा उपनां ऐक अचंना । अतिसुंदरि आई इक रंना । वाकै
बदन कहूं मैं कैसा । तीन लोक मधि और न असा ।६। स्वांमी सूं कीनैं
प्रनांमां । बोई कहिजो रिकै है यूं नांमां । मैं हूं माया अति अदभूता । अ
सा विसम है स्वर भूता । जगत जीव की कौन चलावै । सुरनरमुनि ज
न असुर न चुलावै । जोगी जती तपां नहीं सांमी । पंडित रसां तो जल्दै त
गी ।७। प्यारा रिषं मांरि मधाई । ईड आदि दे चंद चित लाई । किते
नां कहूं मो हिमम लीन्हां । तीन लोक लग सब सिरि कीन्हां ।८। तब
बोले सेवाजन सूरा । जिन कै ग्यांन ध्यांन चरपूरा । तेरी कला जुगति ह
म जांनी । सुषदेव गोरष नै कहमांनी ।९। आन कबीर कै इहसत आ
तिन नहीं तूती कहि वत साई । दत्त अवधूत इसो पण धारो । कनक
पोर सौ त्यागि सिध सौ ।१०। जसी नरहरी गोपीचंदा । तजि चाले स
लितांनी बंदा ।११। बरलों सा बसि धअपारा । किन कुं न राष्यां ते पत
म्हारा ।१२। माया कहै अरजमेरी ऐकी । सुणि हो स्वांमी परमववे
की । साची पड़ी धरनि मधि गोई । कारन हार न ताने को ई ।१३। अब
तो सांमी वहि छुडावो । मुक्ती माया बिलसो षावो । धर मैं रहा से
व की माया परची नहीं पाणनहीं पाया । सो चिसा चिम रिग ऐ प
अमाई । का दिन हरि कै तेषे लाई । बांटि न जांणै जगत विकारी
आगे होसी बहीत षारी ।१४। समझि बिना परचांक्या हे ऽ । विषैं
रजमंडइ मरि रोवै । केता गया समझि बिनसूंनां । माया सां चिव
होत बिधिहूं नां ।१५। इतनां वचन कह्या पछितांनी । स्वांमी बात ऐक
नहीं मांनी । स्वांमी कहै कांम क्या तेरा । राषे नहीं रांमजी मेरा ।१६।

१५८

सा चौमत देष्यो अकुलाई। कुंई अलोप षबरि न पाई। कितनी
क धारन ही आवै। और क कृतो कृपा बषावै।४४॥दोहा॥ इस मा
या को छंल अनंत। समझै संत सुजांण। जा परि गुर कृपा करी ता
का कुंछ न बांण।४५ ऐसी रीति कबीर की जैसौ गोरष चालते
सी रहनी रतकी। सो सेवा सतद याल।२६॥१६ ग्रंथ विणा ता चौपई
कौ गौरष कुबाउ जियाला। तब ही कग्यां दीन दयाला। रमता रहै
सुरति मन गोवैं। पैंड नरेपंप सांम्हां जोवैं।१ रमन न मतो महाराजि
विचारैं। बडौ नागजहां संत पधारैं। रूपनगर रमनें की आई मन में आ
आ और न काई।२ जाइ बिराजे उतिम ठौरा। नीकी छतरी चौतर
चौरा। बैठे आसन क्षर बिचारी। आसिपा सिस बसिष अधिकारी
३ उडिगन मधि चंद्र सराजे। हीरा मोतिन मांहि बिराजे। सो छा बन
क मैं काई। देषत दरस मगन होइ जाई।४ सेवग सुनत प्रेम अधि
काई। आनंद मगन नबैटत बधाई। धनि या घरी महुरत आजा। स
बौ बिबधि नांति के बाजा।५ राणी ऐक नांव नां नीनी। उनन्ही सुनत
बधाई कीनी। धनि दिन आजि उदै की बारा। सतगुर चरन सीस पधा
रा।६ चालो बेगि सकल बिधि तीजै। तन मन धन सतन कूं दीजे
सब ही गावै मंगल चारा। बाजत आवै नेरि नगारा।७ सेवा सक
ल मिले तब आई। अपनो गुरां की करत बडाई। करि प्रनांम पर
करमो दीनी। नलोप धारे किरपा कीन्ही।८ बहो बिधि के पकवा
न मगाऐ। गिरी छुहारा आनि चढाऐ। स्वांमी आप सकल बिधि जै
ने ऐक प्रतापरास को मांनै।९ पहली सिषन कूं दे परसाद पीछे
से वगलें सें आद। आप गुसांई बड़ो तउदारा। ले लेमे वा अधिक
उछारा।१० सतगुर देवे यह उपदेसा। रटो राम सुमिरै अदेसा
गुर का सबद सबन कूं भावे। करें बंदना सीस नवावे।११ आ
भाग ऐ घर हारे। नगति करन की जुगति बिचारे। करे रस
वरागा न्यावैं। अधापर सादरामजन पावे।१२ ऐसी नकि बं
धिन चौषे। स्वांमी सेवग सकल संतोषे। ऐक दिनां बिधि उपज
ऐसी। कहन आवै कहु अब कैसी।१३ ऐसो अचिरज क
यो गुसांई। आप आंन दित षेलन दियांई। कठे उम गिरे निषा
आथी। मन हांम तिवारे प्रेम समाधी।१४ छतरी की पैरी पग दीन
ऐकतमासा ऐसा कीन्हां। कारी अपकु तो ऐक मोरा महा प्रच
अंतर मैं षोटा।१५ सतगुर का पग कपरि तागा। सूतो अपचम वि
उठि जागा। स्वांमी तब देष्या नहीं कोइ। बहे इजामर दीन्हां डंकवे
ई।१६ स्वांमी देषि सरप कै कोनी। कपन काई मन आनी। अपन
दीको ई हरि की माया। देही धरि देव को ई आया।१७ पीछे

स्यो अपम तिहीनौं।यो तो कांम तुरै हमकीनौं।सो रिखह्यौ चौंतरा
मांही तो तौ संत कहै कछु नांही।१८।ऐसी विधि सरपप गिलाणा
उनका पापस कलही नासा।नाइ कुंनाइ छुइस कै तेटै।उनका
जनम मरन सब मेटै।१।अब तो सुण ऐक आपो।सतगुरजी काम
तकी नाषो।कुंगौ सोनहवौ परनाता।अपने सिष मिलि छुहे बाता।
१०।कबो गुसांई चरन पधारे।ऐसी हैंकलतपो कहां कारै।स्वांमी
बोले अब कछु नांही।तुम तो रहो मगन मन मांही।११।वहस्त्र वहत
रांम मति वाला।तिन कूं कहै न व्यापै काला।सिष तो सोच करै बिल
लावें।ऐसे संत नौ जड़ दुष पावें।१२।ऐसे सतगुर कब हम पावें।बहु
र्यूं जगत जनम नहीं आवें।अब तो सेवग आया सबही।सुणें अप
पग लागौ तबही।१३।स्वांमी कहो आपनी बाता।कैसी रीति तुम्हारे
गाता।तब तौ बोले सेवा स्वांमी।सब जीवां का अंतरजांमी।१४।अब त
म सोच करो मति कोई।मेरै सिर परि रांम सहाई।सुणि यो वाता क
कूं म मणै ती।यो तन जावें कंटक सेती।१५।या देही का किसा नरोसा।दे
षत जावें जैसें जल बोसा।यातें रांम सुमरि सुष लीजे।सेवा सुकृत लवे
गा की जै।१६।सतगुर बिगति कही न निजांनी।सबही मन में साची
मांनी।सब ही नें आया संतोषा।तबही नागा मन का धोषा।१७।दिल
ऐसे सो प्रचौ नागा को बरण्यां बुधि अनुसार।सेवा जन जीवन मुक्ति
को ईजां लै जांण णहार।।२५।।१६५।।हिं०।।०।।चौपई।।कथा क
रत न हरि गुन गांवें।सेवग संत बहु तनसुष पांवें।महमांव कुतनग
र के मांही।रे तिरा वसबद रसन गांही।।१।।रांणी कहै न गति वहो सां
नी।कोई न बरजै दरस निजांनी।ऐ कबी नती मांनो मेरी।सतगुर सांनि
ध में तुम चेरी।२।रांनी कहै कृपा मो हि कीजै।तुम्हारे चरन नवन म
नदी जै।जे सतगुर गृह आवो मेरे।मैं बलि जांऊ वार नैं तेरे।३।सत
गुर मंदर करी मन मांनी।तब अपने घरि आई रांनी।जाइ की ऐ
जन बहोला ती।।बहौ त स्पतननो करि करि ष्पाती।४।राज परोहि
त नें सौ जाई।जाइ गुरां कूं करि शुद रांई।बेगि पधारो हो गुरप
रा।पावन करो हमारो हारा।५।स्वांमी ऊवे जे जन कीना।अप
ना सिष संगि सबही लीना।और सेत आया बहौते रा।कुई
सो इ इतनी बेरां।६।मो हपट ख रवबुत विद्या ऐ।स्वांमी चरन ध
रत गृह आए।करि निंछरावलि फूल न उछारे।ऐसी विधि गुरदे
व पधारे।७।मुकातौ चौक पंगति तहां पूरी।और लोक सब कहेन
द रीं।हरिजन गावें धुनि द्वरि जाकी।रत्न ध्यांनी सब लागत फी
की।८।नीका पान पुरु से रांणी।धनि धनि नागड हती उ दिजांनी।।
पावें तब प्रसाद दयाला।जन बेठे मो तिन की माला।ए सक कत

अघाए पूरन होई । तारै मुक्ती रहै रसोई । साधु सब ही आस पिआसु
ए ।। गै तब वे कौ लोग जिमाए ।।१०।। तो नीसूटै नाहि रसोई । नहि कीये
५ गुण के ता होई । जे ह्वां के कछु ई विधि सारी । तो कहता नही आवे बार
।।११।। कुता नगर मे इक विप्र बिचारा । उनके उपरा ना व अपारा । जन
सेवा कं करि प्रनामा । मुकता की यार सो ई सांमा ।।१२।। एक बेर सत
गुरु गृह आवे । तो मेरा दुष दूरि गमावे । ऐसी उपजी मन परतीता
साधु सेवे सो नर जीता ।।१३।। सेवा जन पै जाइ संवेरा । मेरे जन्म जन्म का
चाकर तेरा । करु दीनता मीनहु ऐका । सकल तजि मांऊ हरि को लेषा
।।१४।। प्रभु गुरुदेव दया मनि धारै । अपना जानि गृह पधारै । तब ही
स्वामी बोले नाही । जब बांनन सम क्या मन मांही ।।१५।। आइ रसोई
रत पकाई । विविधि भांति की जुगति बनाई । सब संतन कूं जब दल
दीनो । तब ही मानि मानि विदत लीना ।।१६।। या तुरत सत गुरु के पास
मता । रनिर अपर दीन अरदासा । अब पधारो मो पति रापो । तुम बिन
कोन धणी जीव याको ।।१७।। कृपा करै गुरुदेव पधारै । दरसन देत कि
तां जीव तारै । उनके ओर कुता इक काका । नगति करन तै मनन
ही जाका ।।१८।। दुष्टी बहुत नगति को बैरी । नगति बिना उनकी बु
धि केरी । बोले बचन कठोर गिवारू । जे देखूं तो मुडी या मारूं ।।१९।। दुक
है मा हिरदय नघो नी । ऐसी अकति अधकी बोली । जब आवै तब
उन मै गे को । आवत ही हारै ते फेरु ।।२०।। बहो विधि वरजे हूजा पाइ आ उ
न का सब दन मान न राडा । वांनन साधा बैर कहै को । जन रे दास क
बीरकू देषो ।।२१।। बरजे उन के घर की नारी । उनकूं नीमूरि व दे गारि
इतनी करता हरिजन आए । तब ही उनका दरसन पाए ।।२२।। देष
त बांनन दीया रा । तब ही उतरा सब अहंकारा । बड बाजार म
हि सब आए । बहो लप टबर तरै विजाए ।।२३।। स्वामी चरन धारत
नौ पीवै पवन सकल जन घाले । सो ने रूपे फूल न घाडाए । सो स्वामी
ऊपरि उछराए ।।२४।। ऐसी विधि महमा दिषराई । सो सब हि निकब
होत सुहाई । सुकलो ते नेष साध के संगा । स्वामी साहिब सदा सुरं
गा ।।२५।। साधे सिष होते अति सूरा । जा के ग्यान गुरु का पूरा । अब तै
बांनन चरना परायो । करै बीनती मन मेडरीयो ।।२६।। मै मदमाती न
भगति न जो न्ह । अपनो जानि नरम मम सानह । मेरी जाति पाति प्रन
बोरी । [illegible] सो गुन्हा तुम्हरी मति मोटी ।।२७।। अब तो आप रसोई पा
लाग बडो तिन के पद आवो । तब आया सेवग के द्वारे । आगे स
त बिराजे सारे ।।२८।। कसो पाती यो वो कीहा तौ ऊपरि धरा कं अ
नी प्या सी मांही पुरसे नो जन भांता । वहु जिन वातुर ताऊ तात ।।२९।।
सब ही साधु हरि गुण गावै । भाव भगति सूं भोजन पावे । सेवग

वरकरैसुबनिरथैं।करिदीदारमगनमनदरसें।२०।धनिमेरेभा
गआजिकीबेराग्यरूपधरेसाहिबमेरा।जिनकेहारेदरिजनआ
वै।पापतापडरिगमेवैं।२।रुचिकरिजीमोंसेंतसबाया।तरक
रीपकवानसवाया।मुकताहूतसकरसुधराई।तजीतातिसूतो
गलगाई।३।अबतौसारेसंतअघाऐ।अपनेंअपनेंआसनिआऐ
सबहीबाननबहुतउमाया।गोतगेलसतगुरकेआया।४।स्वाम
बोलैतुमघरिजावौ।अबतौतुमहीनोजनपावौ।आऐघरराजीमनै
बैठा।कोईआडमंदरिमैपैठा।५।देषैतौप्रसादअपारा।विप्रोंकी
नोऐकबिचारा।सरबसदरकेबिप्रबुलाऐ।मुकतीरिधिसबहीजु
आघाऐ।२५।विप्रोकेमनिबहोतउछावा।बहोतउपसोजनकौना
वा।ऐसीभगतिनगरमैजागी।दुधकीबौरजअतरा।तागी।२८।मांनिन
डाईतेगुरमारा।।अबतौमनमेंऔरबिचारा।घरघरीमनैकी
आडी।औरसंतक्कंनाहिसुनाई।२७।बरणौकहाघणांगुणजाका
पारनपाऊंकहिकहिथाका।।अबतौरमीयाऊंहिसबारा।सेवग
संतरह्यासबसारा।२०।दोहा।रूपनगरसूंरमिचलेजनसेवाआनंद
माहिमनमैंअछ्याकोनहीं।रामरयातहांजाहि।संसेवाजनरमतार
हैंऐकअलपसूंप्रीति।रचैनबिरचैंरूपलायहसंतनकीरीति।।
।४०।।२०५।।वि०।।२०।चौपई।।रांमतिकरतबहोतदिलराजै।राम
रयातहांआइबिराजै।ऐकबसीगांवपोकरजीपासा।आइबिराजे
सेवादासा।१।नीकीजांगांझूंपकिसारे।तहांसेवाजनआसनधारे
देषैदसाउनीसबआवै।वहबिरकतजनतबमनिभावै।२।उनगां
रीमेंसाहूकारा।जातिसरावगबसैबिचारा।साधधरमकीसमझि
नजांनैजिनधरमतिनक्कूंवहमांनै।३।दूजाऔरमहश्रीसाऊसेवा
जनकौउनकेनाऊ।सबमिलिचक्किकरीमनिमांनी।तबगुरउनकी
सिषानांनी।४।तबउनजाइकीयोदीदारा।मनमैंउपसोनाहअपा
रा।सबमिलिकरीगतलाजनपूरा।इनकैरहीऐसदाहजूरा।५।ऐते
संतकेचलीनाइ।करीएटहलबहुतमनलाई।सतगुरसाहिबप
नबषांनैं।सुनिसुनिसबदबहुतमनमांनैं।६।बहुतप्रकारकरैस
बसेवा।तबउनगुणकाथाँथैदेवा।कैतेजीवमुदजगमांही।साधमिलै
बिनसमझतनांहीं।७।साचासंतमिलैंतबतारैं।जरमकरमकीता
पनिवारैं।ऐसेंसतगुरनक्किकमाई।सबसेवगसंतनमतिनाई
।८।तबसेवगकहैसुनोमहाराजा।मेरौतनमनधनतुम्हकाजा।स
दाबिराजौममसुपदीजो।सतगुरसाहिबउतनीकीजै।ऐतबसतगु
जीइतनीभाषे।रहीएजहांरामजीराषै।९।टहलबंदगीकरौमननाई
इसासंतनसौरहैसदाई।१०।निरमोहीजनजगतैंन्यारा।सेदनपोषैंज

गते बिचारा॥ निसदिन एक अलख की आसा॥ जगत जीत तो जिन छे
सा॥१॥ रहै अचित चित नहीं काई॥ हरिजन बिचरैं सहज सुभाई॥ अ
सो पहर मगन मन धीरा॥ दोनों पाणी करत बहीरा॥२॥ बसी नगर तें क
छिस धाया॥ दूजा नगर और इक आया॥ गए हूं चालि मयापुर कानी॥
जे गल खां हि रहै जन ध्यानी॥३॥ निसक निरभै मन के मांही॥ सिध अ
तस कर भै नाही॥ औसे सूर संत जन साचा॥ कबहु न काहू सम ब
सा वाचा॥ ..लि कहि नगर तहां बहुत निवासा॥ होइ ती न भीष रहै अ
उदासा॥ बसत रनी की सब के आगा॥ देषि हरि तें बहुत सुरगा॥४॥
तब ही न हां फौज चलि आई॥ दिषणी मांहि बहुत दुष दाई॥ मारे मरि
घ गांव सब लूटे॥ जगवा नेष मिले तब छूटे॥५॥ षट दरसन की संक न
मानें॥ वह पापी जम ना हि पिछानें॥ देषि हरि तें बागत वाई॥ इनके पासि
माल है नाई॥७॥ तब ही निकटि संतन के आया॥ सिष तौ सब ही कठि
सिधाया॥ मन मे अंछ्या औसी आई॥ इहां सूरमी पैवे गानाई॥८॥ स्वा
मी आप रहै मन धीरा॥ वह निरभै सक मांहि सरीरा॥ रहै बिराजे एक ठौ
र आप॥ तब ही देषद रिद्रता पू॥९॥ तब ही उतरे घोडा पीला आइ ऊ
सत गुर के दीना॥ आइ कही तुम कुण हो औसे डरपत नहीं जंगल बि
चि बैस॥१०॥ अब तो हमें छोडते नाही॥ बोलि मात्रा सब ले जाही॥ स्वाम
कही सो हम तुम षोली॥ करे रांम सो सहजें हो सी॥११॥ स्वामी मुष तें क
ह दीया॥ ऐकल मासा औसा त ईया॥ एक जने की घोडी मोटी॥ पड
ग छिलि परि देषत लोटी॥१२॥ देषी जाइ वा गत उन ताणी॥ उनके मुष मे नि
सत पाणी॥ लै बस लगाया हौरि उन पासा॥ जीवत नहीं निकसत है सा
स॥१३॥ गुर सेवक तप छै पछिताया॥ सतगुर पासि आइ सिर नाया॥ स्वाम
न क सो गुन्हा हमारा॥ तेरा चरनां होइ उबारा॥१४॥ तुम को माया धीर स
घोडी॥ कृपा करो जीवे मम घोडी॥ तब स्वामी बोले सुनि रामा॥ मेरै म
या को नहीं कछु मांहि॥ अपनां कीया सकल जीव पावे॥ ताव अपने आ
है आवै॥१५॥ वह साधु दुष कबहु न मानें॥ साहिब संकट संत को जानें॥
तब ही दीन बचन वह बोले॥ जब संकट उनका हरि षोले॥ घोर उ
ठि पाया तब पांणी॥ तब उनके मनि साची जांणी॥१६॥ करि प्रनाम चर
सिर धारे॥ धनि धनि सतगुर संकट टारे॥ हम पापी तुम पूरा जोगी॥ अ
नहम जाणें राम बियोगी॥१७॥ तब उन दिषणा पूजा कीनी॥ स्वामी पै
आपा न वही नी॥ साधां का साहिब रषवारा॥ गऊ बछ ज्यूं बिचरत त
त॥१८॥ जन प्रहलाद अगनि नहीं जारे॥ गज मारत कबीर उबारे॥ गज
के काज दौडि हरि आया॥ द्रौपदी तब आनि छुडाया॥२०॥ नामा प
धा जन रैदासा॥ उन संतन की पूरी आसा॥ मीरां बिष न रिपावै अ
घाई॥ राम बिना कुण राषे नाई॥२१॥ राम न रोसे संत जन सारा॥ जुगि

गुणीजनकाकारिजसारा॥ऐसेमननैंधरिबिसवासा॥सदाऊंनेदित
सेवादासा॥२४॥दोहरा॥बितरोसौरंभकौ॥रमतरंगीतादास॥जनसेवा
गुषमाहीसदा॥एकअलषकीआस॥२५॥२२०॥वि०॥१॥चौपई॥
मेंरामजनहरिकेप्यारे॥रूपनगरसंतफेरिपधारे॥निकटिनगरकेब
गीजाणी॥तहांबिराजेसंतबिनांणी॥२॥बैलोगधारणाधीरा॥ऐसीआं
णीअवलिफकीरी॥सबलोगनकेउपज्याभाऊ॥जाइकह्यौराजाकूं
ताकूंपरषांननबनीयोसबचलिआया॥आयोरावनेरबडलाया॥
तबहीदरसनपायौनीकौ॥सबकेहुवौनाव्रतोजीकौ॥३॥स्वामीवांदेमु
कामेवासबलागेसतगुरकीसेवा॥बधीनांवनांनगरमंफारी॥ऐसी
सतगुरनगतिबधारी॥४॥तोनगरमेंएकअस्यांनां॥उनमेंबसतनेष
नगवांनां॥उनिसुनिपाइएकस्वांमीआयौ॥लोगनगरकौसबनरमा
यौ॥कुतेमहंतजनबेहरिआसी॥मनकीदुबध्यांमृलिनरासी॥५॥स्वांमी
केदरसनिनहींआवै॥दुनीयांआवैतबदुषपावै॥जाइकहैंबाजारमें
नारी॥बनीयांमांनेबातहमारी॥६॥उनस्वांमीकेंतुममतिजावौ॥घरि
बैठेहीगोबिंदगावौ॥वहतौठगहैंतेपबनायौ॥किनकौमानसुसनक
आयौ॥७॥दुनीयांअटकीअटकनमांनैं॥वहस्वांमीकेंसाहिबजांनैं॥दु
नीयांबरजोरहीनमानीतबमुंडीयामनिरीससउपाई॥८॥कह्यौजाइ
लूंडापाचारी॥कपडाउनकाल्यौहउतारी॥तबलूंडाएकबातबि
चारी॥कैसैंजाईएडेरपांसारी॥९॥आधीरातिचोरहताकूणापाप्पां
काछकतबहीपूगा॥कढिगएस्वांमीकेनेराइतउतऔरमनिषभ
रहेरा॥१०॥स्वांमीलागेध्यानमंफारी॥तबहीकपडालीयाउतारी॥त्यांसि
रावमैंअस्यलिआया॥दिषौकपडासबछिनिल्याया॥११॥मोड्यामनमें
हरषनलागा॥कपडाधस्यामेहरिमैंआया॥बोलौमतीबातकोईए
का॥लोकजांनिसीइनकैभेषा॥ऐनबहीस्वांमीषोल्याध्यांनां॥उनकेहि
रदैकेवलग्यांनां॥सदाऊंनदितअष्ट्याचारी॥उरमेंउपजीनांहिलगा
री॥१२॥कुसोसांएकवीपरनाता॥आऐसेवगसबमिलिसाथा॥राजाकी
पोआइदीहारा॥मनमैंउपज्याअतिअहंकारा॥१३॥देष्यानगनसरी
रबाया॥तबराजाइकबचनसुनाया॥साहिबतौगुरूहमाराअ
सांबसतरकौंनउतारा॥१४॥सतगुरबोलेकोईकआया॥कौंनउतारै
केनैंउठाया॥साधधरमसुनौंतुमभाई॥कोईदेवैकोलेजाई॥१५॥तब
राजाकैंअतिमतिसाया॥अतिघनमीतापैंवनल्यादो॥आसासुलह
तुलअरूचौतारा॥ओसापउनआंनिउतारा॥१६॥औरलोगसबपूजा
सांवैं॥स्वामीजीकेमनिनहींसावैं॥इतनीबातसुनीबैराग्या॥औरंगांवे
केसबउठिनास्या॥१७॥चोरआपतेंआपडरावै॥जेकोईवाकीषबरि
नपावै॥राजाकहैंअगपामोहिदीजे॥सतगुरसाहिबसरनैंलीजे॥१८

स्वामी कह्यौ रामनजिनाइ जेतेरैमनि ऐसी आइ ६ तनी कहि स
भी उठिधाया पीछें लोगनगरका आया २० ठाढारहो तुमैंघ रिजा
वो करोंवंदगीहरिगुणगावो इतनी कह्लिचालेगुरराइ उनके
उपजी प्रीतिसवाइ २१ इतनी री तिन ईउनवौरा अवतौ पस्याबर
नो और मेराघटमें सतगुरबोले केतीवात अगमकीषोलै २२ द
जरणाधारीजोगीया जगमेंविचरैजोष जनसेवासुषदाईसदार
ही वउघजेरोष २ मन मांनैंतहांउवि चनै तनमनमनमा धीर जन
स्यांक्छिअंतरनहीं केवलरामकबीर २३ ॥२४॥ इतिश्री ॥१३॥
चौपई॥ नीकोनगरउदेपुरआयो ऐकबागदेषीमनभायो आ
सणधारीजाइबिराजे तनमनपवनांसमटरसाजे १ आयो ऐक
नगरतें साहू जिनकै हुतो आगिलो लाहू स्वामीसाहिबदरसनी
कीजे आजिनगरमैंतोजनलीजे २ सतगुरकहैजेजनलाइ मनमैंस
क औरनहींकाई चलेजांहि बाजार विचालें नीचीदृष्टि इतउतन
हीं न्हालैं ३ सांम्हैं आवैराजमसतानों नहीं मानैं आंकुसकी कान
आवत ऊंची सूडिउसारे निकटिजाइ ताही कूंमारे ४ इनी यांउरपैर
स्तीफूवा बिरजेंस्वामीधिरोअपूवा सतगुरसनमुषिचालो आवै
कोरिवेदनआगाक्रंजावै ५ देषिवदसदिलऐसी आई गैंदगरीब
न यो सुषदाई यहपरचाहस्तीका नईया हमतोसंषेपमात्रकहीया
दसैवगवोले धनिसंतसेवा यहांबिराजो हो गुरदेवा कृपानिधानअ
ब कृपा कीजे दरसतुम्हारेसबनवकीजे ७ सतगुरबोलेहरिनजि
लीजे तनमन धनसंतनकूंदीजे यूंकहैचालेगुरउपदेसा सबरे
धुगकामेटिअंदेसा ८ उदैनगरतेरमीयासाधू श्रीस्वामीसेवाद
अगाधू मीठाकौसांसोनहींकोई न्हीं आगिलीचाहिजुहोई
९ इहवदेहआसनहीं तनकी वसीगांवषबरिनहीं बनकीनिक
सेजाइसेरपुरसहरा डोगरअनंतघणांबनगहरा १० निरनेघणांस
कनदीस्यावैंहरिआप्यातहांहीउठिजावैं रणतभवरसागिरन्दी
स्जां तहांगणपतिकीलागेपूजा ॥११॥ दोहा॥ ऊंचोगिरसुक्तीगुफ
सहेकोगिरवरशणरा इ स्यावजसिंघमांहीघणा हरिजननिकस
जाइ ॥१२॥ २०४॥ बिश्राम॥ १२॥ चौपई॥ मारगमांहि सिंघऐकस
जी स्वामीनिकटिजाइतबपडूंता कह्यो आनसमोहि आकारो सत
गुरकौकरायोहारो १ आइचरनतरिलोटणा लागो करिडंडो
तगयो सिंघआघो तवहीसमभ्यो सिंघविचारा ऐसाधूकेईरामपि
आरा २ सेवाजनयादिनआंधी अबतोदेदराषीऐनाहींइनदेद
हीइउदासी तजीऐयाहां मिलीऐअबिनासी ३ आपोआपऐ
कनिरधारा चलेजहां गिरअनंतअपारा कोईकहैबेहोतेजन

ग्पो नी अपनी देह के हौ करां नी॥४ इसी भांत सौ कहीं ऐनो ही ३
पनीजां मैं आप गुसांई॥सा त दिवस डोंगरम धिजांही डोंगर वहीं शृ
वहीं आंवे॥५ एक डोंगर दी ठा अति मोटा॥ दुजा पर वतन तें छे
टा॥ उनकै नी चे गुफा अछांनी॥ वा सतगुर कै मनि अति मांन
॥६ तहां [illegible] न बिराजे पवन अधारी॥ लागी ऐक जु सस्थेता री इ
वा सपत दिन लगी समाधी॥ होती राति लारी नी आधी॥७॥ तब हो इ
ई आकास अवाजा॥ प्रगटे अलप नग तिकै काजा॥ ऐसे के सौ
सबद जन मांन्यां या देही का है कं सांन्यू॥८॥ सुनि करि स्वामी मन
मैं चेता बोले राम नग तिकै हेता॥ तीन सबद सतिक सा व सेप
इन तैं जी व उधरिहैं अनेका॥ एक ठे आप सबद सुनि सा चा नहीं
कहता मन सा वाचा॥ अवतौ उन शिष्यांनां की नां करमें कम
डल घु संग लीनां॥१०॥ वहौ तर्फ़ नी लवमधि अधेरा आवे आ
प चल्या तिहि बेरा तहां ऐक ष्या लगौ व का होई॥ ऐसा अचिर
ज देष्या सो ही॥११ आई तहां मा या धरि रूपा तिन का उद सु वचद
न अनूपा स्वामी के मुष आगलि आई कर मैं रोटी निजरि दि
षाई॥१२ मुष तें सबद न बोली माई॥ स्वामी को मन जो वण आई
व हते बहोत अडिग मन मांहीं॥ उदका या प नइ द का नां हीं अ
गें आव त और त मा सा॥ ऐतो सब सन कै दूरि दासा॥ उत र दिष ए
लो बी सु रि बाली॥ ही से धर णि पड़ी सब काली॥१३ ऊपरि च दू इ
की सही छिंणसो सीजै चे ब ला बा फां निक सै॥ ऐसा चिरत देषि गु
र रा मा॥ त्रिलगार रया निकट ही नहीं आया॥१४॥ बुहतो स्वामी सम झि
व सेषा॥ ऐमा या का चिरत अनेका॥ फु तनी जां निजन आधा आय
ऐक डो करी रूप बना या॥१६॥ आइ निकटि ऐक रोटी दीनी संत
बोल्या आधी कीनी॥ लै ले करो तबे उनि माई जब सत गुर वारे
ही पाई॥१७ जहां सीतल जल व ऊ त सु गं धा॥ च हुं दिस फरे ध्वत की
सं धा॥ ऐक धर व दे व हो त अकारी॥ तहां सतगुर बेठा पण धारी॥१८
क मंडल मांहि छोलि जल लीया॥ बहु त दिनन सैं तह जल पीया॥ अ
च या जलत ब ऊ ठि सि धाया॥ पी छे रूपर र स्या स बा या॥१९ आगै
आई रे ल्लि नदी का॥ बसी नां ही और न जी का स्वामी दे षि जा गु
गांनी की॥ होती आछी धूलि नदी की॥२० आ सण मांड़ि मुने स्वर बै
ठा॥ कोस आध बसी सबै गा॥ कधी या रा डोंगर रूआ बैठे दे ष्या पु
त मन मैं पछितांवें॥२१ आ जिरा लिपड सी ति दिवा रा॥ इन स्वामी का कै
र ष धारा॥ बसी मांहि जा इगु द रा या॥ ऐक जंग ल मैं जोगी आया॥
२२ लोभा नगर को आयो सारो॥ ऊं चौ से स गांव मांहि पधारो॥ नहां
आवे गा स्या व ज सिंघा तन ठुम्हा रौ करिहैं संगार स्वामी कहो

किसा अब सांसा हम तौ छाडी तनकी आसा। तुम अपनै घरि
वौ जाई। अनमो गोवरा तिपरि जाई।२४। और लोग सब कुवात
१४२ यारी। कहै रजपूत मो तरै स्त्री। एक रांघडो घरि नहीं जावै बवे
त भांति स्वांमी समझावै।२५। कहै रजपूत छोडि नहीं जाऊं। मैं रजपू
री बडदन नांऊं। तब ही नाहर गरज्यौ। नागा। वहै रजपूत जी वले
नागा।२६। तब रांघड हु रप्या मन मांही। अब स्वामी कै छोडत नांही
तब तेडो गरहर सिंघ आता चलि आए उन ऊपरि ताता।२७। आए
नि कहि तबे जन दीवा होता डुहब हौत मन धीरा। अब तो सांम्हा
ना म्हाई डुत गलदे बे सक गया ई।२८। बोले संत अबै उठि जावौ
अग्या कुई तो तुम नपावो मेरै इनकी आसन काई यादेवी
है नपत्यौ ना ही।२९। तब ही सिंघ करि कै हुंकारा। सातों मीसवे
रे नतरि क्षरा। स्वांमी कै मुष आगरि लेरै। धनि मेरे नाग चरन
तुम नेटे।३०। जीए संतो व सिंघ मन धीरा। करि वंदन सिंघ कुएव
हीरा। तिन की रछ्या करि है ... रामा जिनकौ कौन बिगारै का
मा हा डुनीया क रोग या सिंघ षाई। अब चालो रे ष्यां वां नाई
ऊ गो मा ए नवे वद आया स्वामी बैठा आसण पाया।३१। दोष
जो रूप का से कदनान रे तु मगति लषीन जाइ। सब के मनि यद
सांच्या। तुलि तुलि नामत पाइ।। इति रूपदा लिषि।।१९४।। चौप
सब लोगन कै ऐसी आई। ऐ तौ संत और है नाही इनके तन
पौ नांहि सं मारी ए तौ मनि बन हैं तनधारी। व हौत नां व नांक
रि कै धाया पीछै तौ गनगर गढि आया।१। करि बसतारक
है जनको दीपर चाव हो तकै ता नहीं जाई दिवस तीसरै कठि
सिधाया पीछै जनपष्टि कै आया।२। कहा कहुं रमनै कीर
ता इन संत मिसे व हो ऐ दिनबीता। कोई मिलै कोई बीछहि
न जावै। तकै दरष सो मन हीं आवै।३। हो ता नगर षारडा नांकै
रविर जैतति मठांऊं। तिन नगर मे सेवग सूरा कुदानाव धीति
का दूस।।४। जनि सुनि पाया सतगुर आया। आए रौरि गुरदेव
सुहाया। करी बीनती चरणां पू गो। दिवस आज नांहीं कौ
... रीव होत हि सेवाके ती ए कहि नाम निजपत्ती एतौ जे
गुरदेव घरां पधारे। तौ सब मेरै जनम सुधारे।५। चरनन बंदि
जोरि दोऊं हाथा। महरि करौ हम जीव अनाथा। देव दया
थहद नपांऊं। एक दिन हारे मंदरि बुलाऊं।६। पाम हरवान थाक
पाप रीषू करि वीनते श्री प्यारी। तब सेवग मनमै अति
राजी। जाइ घरा संगली विधि साजी।७। नटै आइ गुरां दिसतै
हा मै तुम्ह रे आया चेरा। बेगि पधारौ बीतत बेरा। सेवग सत गु

रे सब नेरा ।९ सतगुर साहिब मुख राचालैं। बहोत सेष नभावान
खिचालैं सेवग हारे आइ पधारै। करिनो छावरि चरन पखारे।१०
।। सतगुर ऊपरि फूलन डारे। धनि मेरे भाग यहां संत पधारे
करि निछरावलि बहुत बधाई। सब हनि के मनि बहुत सुहाई
११ जुगति जतन करि आसन साज्या। ता ऊपरि गुरदेव बिरा
ज्या। सब ही संत राम गुण गावैं। सेवग सुनि सुनि अति सुख पावैं
१२ अब तो भोजन ल्यावै नारी। दालि भात नलपसी पचधारी। बिं
जन बहो बिधि सकल सुधारे। सब पावैं हरिजी के प्यारे। १३ सेवग
मनमें हरष्या नारी कहा करूं मन हमा जन धारी। पाइ प्रसाद
प्रेम संप्यारा। सेवग सुख दे संत सुधारा। १४ थोडी कही घणी पी
गाथा। मिलीया सतगुर नया सुनाथा। वह बिरकत जन रहसन
राख्या। कितना सेवग कहि कहि थाका। १५ अपनी इंछ्या कृसि
धाया। उन सतगुर का ने दरसन पाया। वह साधु कहो किन कै जावे
भाग होय तो सहजां आवैं। १६ आए जो एही आइ बिराजे। अैसे
नगर जगत के काजे। एक गाव खोडाखडू नामा। जिनके पासि
बाग सुषधामा। १७ सिम्या जाइ बिराजे स्वामी। सबजी हांका पारु
रामी। उन नगरी मैं सेवग सारा। साहूकार एक उस ठारा। १८
उनि सुनि पाए सतगुर आया। ढोल नगारा तुरत मंगाया। बिलिखु
रो सम्हांचा लैो। धनि धनि भाग आप तीसालौ। १९ बहोती माईमें
गलनगावैं। बिधि बिधि के बाजित्र बजावैं। अैसी बिधि चरनो चलि
आया। जहां बिराजे पे गुरराया। २० आनिध रेना तेर मिठाई। पारस
रूप संत के पाई। चली ऊई महाराजि पधारे। पावन की ए चरन सि
र धरे। २१ करि डंडोत प्रक्रमा दीन्हीं। सब घर चाले आपपाका
न्ही। जाइ घर ए एक जुगति बिचारी। करो रसोई बारी बारी। २२ सा
ह कहे हम पहली करि है। संत रमि जावैं भूनमे डरि हैं। कैसे
राजाइ दल दीनो सगलो नेब न्यूति जिमितो नोर तुरत रसोई क
री एना ई। सबही ल्यावौ संत बुलाई। एक जन सतगुर पै आयो।
उ गो गुसांई सब नेष बुलायो। २४ यह काल्याप पराए आगे सत
गुर चरन ऊपरै लागे। फूलों की निछरावलि करी ही ल्या कुंदे पि
और चित धर ही। २५ चले जो हिबि चैं बाजारा। आगे आया निकहि
दवारा। जाइ बिछावना जुगति बिछाया। जा ऊपरि सतगुर पधरा
या। २६ अठे बिराजो अंतरजामी। सब ही आए सेवग स्वामी। सब ह
री न्ही बाजमंगाई। मांहि जले बी और मिठाई। २७ तरकारी सालण
अपारा। नला सुधारे बहोत प्रकारा। जीमो सतगुर धनि दिन मेरो रा
वोस दा चरनको चेरो। २८ स्वामी बोले तुम बड भागी। जाको प्रीति रं

मरू लागी सबजनजी मेचलनराई। सब लागै सतगुरकै
२७ ॥हम कूं तारे त्रिनवंनराया ॥ सुनहीं राषो कृपरि छाया सब
भजमै ऐसी आवै। स्वामी रहै कि नाहरमिजावै २८ मनैकोअ
मनमैमाहीं। सेवगकोई समकेनाहीं। स्वामी कहै रमे
जाकोईसंगनसाथा २९ पीछै सेवगकलपै सारा। रमिचालेनि
रधार अधारा। जेजन करै जुगदिरमिजाणै। एकदिवसपऊ
नागाणै ३० ऋषि एकतजाइगाजोगी। तहां बिराजे हरिरस
निसप्रेही निरदावै न्यारा। आठोजाम राममतिवारा ३१ उज
लतिअनजलनैवै। अपनोनेद औरनदीदेवै। डुनीयाअ
करैदीदारा। हेषतदरसलगतअतिप्यारा ३२ बदनागोरन
पानीका। तहां बिराजे जनहरिजीका। पदनी ऐसाजननहीं
आया। ताते डुनीयानेदनपाया ३३ वदमुनैसुर रामदिवा
साऊंनजोनैतनमाना। गुपतरहै कछु जुगतिन जाणी। ऐसेस
सेवानिरवाणी ३४ जिनजिन दरसन पाया जनका। तिनधोषा
गामनका। नावनगतिमे सेवा लागा। तिनकाजन्ममरन उ
गा ३५ बडभागीते सतमनावै। नागबिना दरिजनहीं आवै
संसारन समझै सारा। भेदबिना नहीं पावत प्यारा ३६ सेवाजन
कीषबरिनपावै। केता जगत नेषमिलिजावै। रहै नागपुर
अणारा। कछु न पाया भेद बिचारा ३७ पहलीजनकी षबरिनपा
ई। रमीए पाछे सबपछितावै। एकदिनां ऐसी दिन आणी। अ
गाकादाणपाणी ३८ नागा तेते कठि सिधाया। सेवाजनकाम
नपाया। रमतारामसदासुषमाहीं। अलषचरो सैजनबिचराहीं
३९ रहणैकी अग्यानहीं काई। सहजै सतबीकाणैजाई। बीका
नेरनगर बडनामी। जाइबिराजे सेवास्वामी ४० जहां होती छ
तिचोषी। अलगीधणीजाइगा बोषी। आसनमांडिध्यानमन
दरसनलोगनगरकौ आयो ४१ करैवैरागी साहस बाया ध
निमागइसासत आयाहोते वद अवधूत अमाना। सब ड
कै तपजोध्यानां ४२ दिनदिन अधिकी पूजा लागी। माईमरदसबै
उविलागी। बीकीटहलकरी चितलाई। ऐसी सतगुरनकिबषाई
४३ दोहा॥ संतनकीसेवाकरै। तिनकैमस्तगभागाजनरूपा
कै आवता। लोका बडा अभाग ४४ आवै पहर अंनेद मेंजन
सतसधीर। जगतनसमझे बावरो वद अवलीयाफकीर॥४५॥
४६॥ चौपाई ॥ अबतो समनचोहतरा आया। बीकाणै
चौमासा छाया। संतांसे चोहतरामांही। आयो सावणमास
ही। जलतनहीं बरषै पवन अकाशा। सबमिलि डुनीयाकरतबि

राकुंतानगरमेंबोनप्राकैसा।जाकैनहींनक्तिकोहेतारबह
बोनएदैवहोतअलोभा।रामनसुमिरैराजगुलामा।जाइकरी
राजासुनिऐती।आयोएकनगरकउसेती।२तोगनगरकोस
बनरमायो।तिरोनगरसकलठगिपायो।हमबोनएमांनतन
हीकोशितनकेदेवेसकलरसोई।४बोरीअठेमेघवहीवरस
बांधानगतयहहमदरसे।यहतौनाटकचेटकआएदूसान
कोईपराठवोऐ।५साचीबातसुणौतुमराइयास्वामीकेबोर
उमाई।जेयहनकपराठभिजावेतोपीछेंमुक्तामेंहआवे।६
तबराजामांनीमनिएती।जाइकहोउनसाधसेती।यानगरीकै
तुमतजिजावो।जेतुमअपनेनलोमनावो।७।बांनएमंत्रीदी
यापवाईसतगुरपासिपकुंताजाई।बंदनकरिवैगजनपास
इतनीबातसुनोहरिदासा।८जाइकहोराजायूंकहीयो।स्वामी
अबैअबैमसिरदीयो।बिप्राकहोराजकैमांही।स्वासीमेह
बरसणदेनांही।९स्वामीकहोतुम्हेंघरिजावो।औरमुकलतै
पबरिमंगावो।।औरमुलकजेबरसापांणी।तोतेरैमनिसाच 1
जांणी।१०बांनएमंत्रीपाछाआया।उनराजाकुंजाइसुणायास्वा
मीकहोमतिनरमोंनाईमेरीबातकूवनहींकाई।११मुलकमुल
ककीसुणीअवाजा।सगलेऐकरीतिसुणिराजा।तबराजामन
मेंपछितायो।स्वामीकोमरमनपायो।१२लेगाचलोसंतकैपास
इनकैऐकरांमकीआसा।राजाहरसनिआइपहुंतांजहांवि
राज्याअवधूता।१३कहैवीनतीधनिधनिसाधा।हमतोतेराबै
दनलाधा।हमकूंतोबिप्रांनरमायो।दरसतुम्हारैनाहीपायो
१४अबतौदयादीनपरिकीजे।मेरीसहारसाईलीजे।असीरी
तिसंतसमझाई।करैरामसोहोसीनांई।१५।करिप्रनांमराबघ
रिआयामुक्तामोजनतहांपहुंचाया।ऐकदिवसतोलाईरसे
ईडूजैदिनमांनींनहींकोई।१६राजाकेअतिउपनोध्यांनात
बपाडेमनमेंपछितांनां।इतनीबातसुणीहमनापी।औरसुणे
महमासेवाकी।१७ऐकछित्ररहेउनपासा।अरधरातिउठिकरै
तमासा।होतानृतबहबहोतअंन्याई।पापकीयाकीयहदड
ई।१८हरिकीनगतिजनेनहींजाणी।तातेंअगतिगएवहप्राणी
हरिजमसेतीकरतोहासा।तोअबजीवसहेअतित्रासा।१९गुरसा
धांकोकसोनकीयो।याबिधिजीवअधोगतिदीयो।ऐकदिनांउ
ठोअधराती।करनेलग्योअनेतउतपाती।२०औरनृतकिरानां
ऐकल्यायो।अलगोरह्योनकैहिनहींआयो।बहुतनत्यांनक
हकामारैअतिबिहरूपबहोतनधारै।रालेबादंतकेसबिका

नासीसप्रचेडुडीलऋतिकाला।करतांचिरतिरैणीसबवीती
जोभएकरहीऔरलदीती।२१।बोलेसंतऋबैतुमधयाऋ
कालेसाकमाया।देवेदरसतवेसंकमानी॥
जोनी॥२२॥याहष्टितबजनके आईतवहीभूतपरमगतिपाई।ऐ
सेसतमिलैजवतारेंऋनतजनमकेपापनिवारे॥२३॥दोहा॥बीक
णैबडोदिनरहैजनसेवासंतसुजाण।ऋबरामतिऋावैरकीत
काकरकैवषाण॥२४॥मूल॥तिणो॥२६॥चौपई॥कृतरसैचौस
सैऊठे।सबकलपेकरिऋावैपूठे।पवनप्रवादचलैजिमनीर।
ऐसेंजनजगहोतवहीरा।१।मिलनताजलजावैतहांपावैऋनतजीव
कीप्यासबुफावै।साफसवारेरमताडोलै।मनहरिकरैतबऋंतरषो
लै।१।एकदिनाइकमिलनीयासाक्षातिनकोस्वामीऋतरसाक्षाति
नकेकिनैगरदडी।नांही।एतीउनकैमनकेमांहीं।३।उनकूऋापग
दडीदीनी।हरिजनवोदिररामतिकीनी।ऋवेऋापकेमनमेंऋाई
बीधगरडाकरीएसाई।१।ऋागेऋापकदेनहींकरीयाजाऐव
सीतवृतबीसरीया।दोइप्रेसताऋाइदिषाया।देषिदरसऋा
कासंसिधाया।४।पीछेऋापरमेपहोपीनी।कोमनचरणचले
हतिसीनी।धनिवहनगरीजहांसतऋावै।सुकेहृषसीविपलै
वै।५।सांगानेरपधारेसेवाजदजीवनकूतारनतेवा।सेवगसत
मलैकहैकेता।करिदीदारवडुतसुषलेता।६।सांगानेरमांहि
कवेशाकविल्हसकररजपूतघणे।रामांहोमांहिलड़नेजवल
गावहोउतपालकुवाउनजा।।गा।७।तुपकत्तरवारिचलेवडुवा
नाजुडैजुधरांघडदोऊकांना।सतगुरदेषिधस्याउनमांहीउर
वैनाहिबिचोकरिजांही।८।दोकूंदलबिचिसतगुरचालै।नामा
तनहींरामरषवालै।ऐसेंसूरसंकनहीऋाई।उनसूकबोमर्
मतिनाही।९।उनकातवडतरेऋरहकारा।ऐसेस्वांमीकाजिस
रा।तवजेपुरगुरदेवपधारेजाइविराजेसतगुर॥प्यारे॥१०॥सेवगस
तसुनतसुषपावौ।धनियाघरीऋाजिसतऋावैसवैसबटिसत
गुरपेऋाया।प्रेमप्रसादजनतांबिलिल्याया।११।करिप्रनामपर
दिषनादीनी।जनतांपधारेकृपाकीनी।तुममेरेमातपितागुरदे
वा।तुमबिनकोंणवतावेसेवा।१२।करिदीदारसकलजनकेरो
वगडोनागऋाजप्रभुमेरो।ऋबतोटहलकरैंबहोनांतीऋन
लबसतरकेरिकरिष्यातीऋबहोलगतिजैपुरमेजागीसब
कैपीतिचोगणीलागी।ऐसीनांतिरहेबडुमासा।ऋबतोदरसजि
डुएउदासा।उनकैनहीउदासीकाईजहांकोऋनजलतहांले
जाई।सेवगसबहीकरैमनवारा।ऋबतो॥यहांरहोगुरप्यारा।१

ऐसा सुषकब देषां सांई मेरो तन मन धन नुनतांई ।नुमबिन ना
हमें किरमरा कहा कहीऐ गुरवारू वारा ।२।सेवग सकल रन त
यो रोवै झुरै बिलाप दरस सुष जोवै विरकत जन की यह रस रीत
सब स्नेह तर कफर कम नजी ता।३।मतारा मबमें कहू वेरा केव
न मानें मेरा तेरा। गवनकरै जन ग्यान उजारे।मदूर करै तहां कें प
गधारै।४।सो हुम कमकु वो महाराजि कै।५।यहां स्तरमी ये आ
घलौ कतें तुरजाइऐ। ऐसी सुणी अवाज गगन गति वधारण औरत
रे वहसे बानिज संतजन रूप दास गुण गांवतां भाजे नरमञ्जन
।१२।।४०२।।विण।।१३।।चौपई।। जेपुर तें रमीया सुषदाई मन
तआवत जेजन काई।। विविमें नगर कहूं जन केता रमैराम जन
हरिके हेता ।१। कालेड दूरे आया आप क्ति ताजी बा की मेरणता
प्र नगरन जी कजाइ गादे पी आइवि राजे वमे का ।२। सुपत स
वांसेवग चलि आवें। महापुरषां को दरसन पावें।। करि वीदार म
गन मन रंजी। धनि धनि सतगुर संत सेवाजी। ३।राम प्रसाद रस्ये ईकं
नी पावें संत भावती जी की।। सेवग सारा वदोत प्रकारा। करैं वीनती व
स्तुबाण।४।सतगुर साहिब बिषजानें वह अवषत कहो नहीं नी
एक दिनां ऐसा मनि आनी कहि र रमी या पारू कानी।५।यारू ज
इ बिराजे ज्वही रहणों नहीं रमें कहो कवहा तदार दे स्वामी दि
न तीसा। सबको सुष देजे जगदीसा ।६। वहां रहता ऐक संत उदास
सोसतगुर का कृतानगपासी। रूपदास था उनका नांऊं सो सेवा
के लागो।७।बोले सेवासत अणरागी। हरि की नगतै करी वैर
गी।इतनी करि हरि के संत सिधाया।।८।। तर मत सी करि चलि आया
।९।सीकरि वासिजो रहा ऐकी। उनके कनें एक गुमरी देषी जा
बिराजे सतगुर मां ही। देषें बिनां जाणी ऐ नां ही।९।आयो तहां ऐव
रजपूता देषे तिन्हें अवलि अवधूता। करी वंदना जोरे हाथा क
हो गुसांई अपनी बाता।१०।अनपाणी कहो कहां तें आवें। श्रृं
जंगल में कौण लिमांवे। बोले स्वांमी राम जिमासी। उन बिन कौन
यहां ल्यासी।।११।। तव रजपूत घरां उठि आयो। आइ नगर कौ लोग
बुलायो। सबको कह्यो सुणौं मम वाणी। आया ऐक संत निरवाणी
।१२।मति कोई जासो उन दिग नाई। उन को रांम जिमावें आई। इनी
सगली उनके सारें जे आवे तौ रांघड मारें।१३।दो इक जनां राये र पक
रो कन्या देषे घोड़ी चारें। अवती दिवस नी करेंतां। पीछे रांम सं भार
की नाथ।१४।साधसंकट साहिब दुष पावें। जनके लारें लागा आवें। इनी
यां जांऐ नां हि गिवारा। हरिजन का हरिजी रषवारा।।१५।। पूदलां दके
बीरानें मां साहिब सारे उनके कांमां। अनंत कोरि नित आर अनेक

राषीरामजनौकीटेका १५। अब वहां एक साद चलि आया रामसा
द का रूप बणाया जब बनी ऐ हरिजन कूं दीठा बोलि गंवरी या आ
छुव इगा १६ करि बंदन तब बोली पोटा धरी मिठाई सतगुर बोला सु
कली गिरी छुहारा गोरा लाडू दाष कीया अति देरा १७ तब रांघड़ कै
चाकर आया उन नी दोड़ दोड़ लाडों पाया स्वामी पावे मुकता
होटे छुनी यां देषे छाती फाटे १८ जाइ चाकरां बात सुणाई औ
र छुनी नही आई काई उन के धणी राम जी मोटा तिन के कहे
का टोटा १९ तब रांघड़ मन मैं पछिताया स्वामी के दरसन च
लि आया मैं ऋरिषन ही पाया नेवा तुम सतगुर देवन के देवा २०
सा चौ राम तुम्हारो स्वामी गुन्हा बकसी ऐ अंतरजामी स्वामी बोले
सुनि मम बाता सब कूं देवत्रि न वनतांता २१ तब रजपूत कही जो
न सेती अरज हमारी मानो ऐती अब तो मेरी अंन जल पावो ह
पा करे अपनो करि जावो २२ आप दया तड़सी बिधि जानी तब उन
कौ तौ नहीं अन पानी तब रजपूत बहोत सुष मान्यो धनि धनि ना
आपनो जान्यो २३ ऐसा परचा सतगुर पाया कहां कहां लौ ऐ संषेप
गाया जिन के राम सदा संगि नाही तिन के और कुमी नही का ई
२४ छिहा मरे जो सो राम कौ सतगुर की प्रतीति दूत नी ठरमी
धरी ऐ इन परचा की रीति २५ जन सेवा साजे संत जन जा के उरि
धरी ऐ को राम कृपा दुइ रूपता धरीन हजी टेका २६ छन्द ७ बि १२
चौपई अब जो रमीया राम दिवांना निकसे आइ कुते पुरवा
ना नगर कुते पुरा संत पधारे बहु स्वामी सेवा मति वारे १ आवत सु
नी या सेवग सारा अब सतगुर के बेगि बधारा औरन्यावो नाले
मिठाई सतगुर के म्हेलो पाई २ ज्ञान सांन गुण गावत आवे
सतगुर साम्हा सब चलि जावे ऐसी बिधि आए उनपा सा जहां बि
राजे पेहरि दासा ३ धनि धनि घरी आज की बेरा दरसन पाया सत
गुर केरा चाकर भेट स्वामी की कीन्ही करि प्रनाम प्रदषिना दीन्ही
४ अब महाराज पधारो आया अपने जोसी नाकी जागा पीछे
सतगुर तिको टिबिराजा जगतिनाव संतन के काजा ५ अब तौ दि
न दिन के मन वारी सेवग संत करवा सुष नारी संत समागम सब
के भावे राव रंक मिलि दरसन पावे ६ बहु साध सब सूं समिल
कै जैसो रक तिसो है राजा घाटि बाधि की नजरि न आणे कंचन
काच बराबरि जांणे ७ घरि घरि देष्या अंतरजामी ऐसी जुगति तिण
कि बहु स्वामी दिन दिन अधिक महिमा लागी संत सेवंत इंब
इ लागी ८ ऐसी स्वामी जगति बधारी हरि गुण गावै सब नर नार
मास चतुर दरसन नां बिराज्या सब सेवग का संसा भाज्या ९ अब

तो आईबसंतरुति भारी।तबसतगुर दिलऔरबिचारी।ऐसावा
जगैबसंत आई।ह्वासा दिवहूं ऐसी नाहीं।१०।एकदिनां ऐसीमनि
ऐई।।सबसंतनकूं नीयानुलाई।अबतौसंतौ याबिधिमानौं
दरसनकरनडीडुपुरजानौं।११।सबसाधुसमझैमनमांहीं।आप
कहौसुकरांगुसांई।सबसिषसंगतबक्रूचानयारी।स्वामीवि
राजेबागमंझारी।१२।पीछैलोगनगरकौआयौ।स्वामीसबकूंपो
षलगायो।अबतौरांमरामतुमकहीयो।सबसेवगआनंदमेंर
हीयो।साहिबकिरपाकीन्हीभारी।अबतौलाडिचलेनिरधारी।
१३।बहुसतगुरमनकितकूनबांटै।ह्यांवेतसबकौदुषकाटै।षि
जेकेबागतीनदिनरहीया।अबतौरमीऐसतगुरकहीया।१४।सुनौ
संतआपकैमारा।बेगाचलौकरैजिनबारा।हरीपुरसकौदर
सनकीजै।मिलौमेड़ोबहुतसुषलीजै।१५।आपमहंतजनसब
सुषदीना।रांमतिरमतबहुतदिनबीता।आऐगोवगएडेडीनांम
सबसंतनकीनांविसरांमा।१६।कृविसिकारैसंतसिधाया।नगर
आबापैतबचलिआया।स्वामीआपपयादाआगै।कोमलचर
नधरनपरलागे।१७।नगरगोरवनिकसतआधा।तबहीचर
नकूंकाटालागा।तबहींकांटापगमैंपैठा।जबहीसंतआइ
डिगबैठा।१८।स्वामीआपबिराजेवहांही।अबआगाकूंचलीऐ
नांही।साधकहैंइतनीअबकीजै।सतगुरअबकांटौकाढणदी
जै।१९।सतगुरबोलेकंटकनांहीं।रहूंदनकोइचरनकैमांहीं।एतै
ध्यानतऔरहीप्यारे।ऐसेसतगुरबचनउचारे।२०।समाचारग
टेपकूंचाया।सेवासतगुरथांणैआया।इतनीबातसुणीसतस
रदूलौबधसेवासतपधारे।२१।संतनकाजुधसांम्हाजावै।अरसप
रसमिलिदरसनपावै।।नतांपधारेअंतरजांमी।।कैसौपैलबना
यौस्वांमी।२२।स्वामीबोलेजोहरिआप्या।तुमगतिजांणीकांटाआ
प्या।तबडोलीचढिआयपधारे।सबहीसाधुआवतलारेरज्ञान
मांहिसूझनसालो।ऐसेसेवासंतबिराजे।गडिगनमधिचदरा
जयाला।।सबसंतनमैआपदयाला।२३।ऐसैसंतडीडपुरआऐ।।
सबसेवगसंतनमनभाए।हरीपुरसकोमेलौनरीयो।सबसाध
मिलिदरसनकरीयो।२४।दोहा। सेवासंतपधारीया।सबकैहूवा
उछाव।जगतजगतआवैघणा।बंदतगुरकेपाव।२५।महंतसंतसे
लाकूवा।सफलजनमबात।स्वामीहमसमझतनहीं।तुमहोनि
तबनसात।।२७।।४५७।। बिश्राम।।१०।।चौपई।।दयालजीकामे
लामांही।सेवासंतबिराजततांही।अबहीसंतकरतदीदारा।सि
षसाषअरुसेवगसारा।।सब मेलैकौइहइरसोई।आनंदमं

न हरि हरि होई। कृपा कीरतन हरिजस गावै। सब साध मिलि प्रेम
बढ़ावै।४। फागुन उतरे होरी आई। तब ही सबै रसोई पाई। अब
तो हरिजन आपा मांगै। सेवाजन काचरन लागै। आप कहै
तो हम रमि जावै। कृपा करौ तो सरनि रहावै। स्वामी बोले हरिगु
ण गावौ। गुरु गोविंद की सरनि रहावौ।४। निरगुन भगति करौ स
बदासा। सदा रहौ सतगुर के पासा। आन धरम तुम सब बिसरा
वौ। एक निरंजन सूं मन लावौ।५। केते संत गए रमि साई। केते स
ीष रहि सांई। हरि पुरस के निकटि बिराजै। सन सुष रही याद
रसन काजै।६। रोग ताप दुष को इन तन मैं। आठो पहर मगन जन
मन मैं। पकी या चरन सक लनजन जांने। पाप आने हित ने कन
मांने।७। हरष बढ्ढ षष दिन ही काई। जैसे इम्रत पीया अघाई।
सेवग संत करै सब सेवा। हासि हसि बात करै गुरदेवा।८। साध
षिषा कोइ न जानै। सुष दुष मांही एक समानै। या सरीर मै कट
आवै। सोई संत मन मैं नहीं लावै। दुष सुष मांही एक समानां है
सेसा गुन गावत तांनां। सूरजन की हे वडाई। सक न आएं क
पन काई।१०। ऐसी रीति रहै जन सेवा। कहुं न पाया उनका भेवा। अ
पने सिष सब रहै हजूरा। करै बंदगी सेवग सूरा।११। आठो पहर
रहै सुष आगै। कब हूं न सोवै निस दिन जागै। पषा पवन करै सिष
ही जा परि गुर की कृपा होई।१२। सेवाजन के सिष बहोतां कं कित
ना कृवा पार नहीं पाऊं। नीकी विधि सों सेवा करतो कहा एक क
रहै अतिउ रते।१३। सेवा करत बहोत दिन बीता। सतगुर सेवा को सु
ष लीता। अब तो सतगुर कृपा उदासी। हरि छवि नीसै सुरति निवासी
।१४। कहीं न पाया उनका भेवा। सब ही करता निति प्रति सेवा। अब
तो सतगुर सूं निसमाई। सुषते बचन कहो न ही जाई।१५। सिष सेव
ग सब दरसन पावै। साहिब की लौ सब न लावै। वह तो सुष सागर मैं
रहौ। ऐसी रीति देषि सब रहते। हरि मोही जन सब सूं न्यारा। एक
राम बिन और न प्यारा। वह तो संत अगम सुषमां रौं। उन की गति
जाति कोई न जाणै।१७। कितनी बेर सबद न ही कीया। सब सूं तव
रस पीया। कोई कहै ए संत हा साचा। कहूं न हाल्यो तैसु वतेव।
या।१८। केइ कहै ऐसंत हा सूरा। देषे मिलि मिलि सुष के नूरा। केइ
कहै ऐसंत गलतानी ऐसी रीति अब करे आनी।१९। केइ कहै ऐस
सुसीला। कहा दिषावै अपनी लीला। केइ कहै ऐसंत परवानी ज
की जुगति इसी नहीं जानी।२०। ऐसे देषि सबै उदकाया। सेवाज
का भरम न पाया। पहर सबा दोइ याटन बोले। बैस समाधित
नहीं बोले।२१। पहली राति गई एक जामां। तब ही प्रगट सुषतेरां

सतगुर का चरना आवा...
संतो रांम रांम सुषि गावै। तो सतगुर का चरना आवा
संतो रांम रांम सुषि गावो। राम राम कहीयै सबको ई अबतो रंरंका
बदबोलि धुनि होई। रांम रांम कहीयै सबकोई अबतो रंरंकार धुनि बाजत
धुनि लागी। तबही सुरति सकल बैरागी॥२२॥ रंरंकार धुनि बाजत
बीनो। सेवा संत रांम त्यो लीनो। गिगन मंडल मैं होत अवाजा। जे सै
धुनि ऐन अनहद बाजा॥२४॥ ऐसो सबद गुरु जणकारा। मानो बाजे
राग अपारा। पावघडी लग सबद सुणाए॥ रंरंकार मैं प्राण समाऐ
॥२५॥ धुनि के साथि चले जन ऐसा। ब्रह्म समाधि की न्हाव वैसा॥ सिल
तानी रस मद मिलि जाई। ऐसै साध ब्रह्म समाई॥२६॥ साध सब ऐसै
अठोंऐ। बदि यडि वाजे सो मासा। जन सेवा सुल जिसि धाइया। की
बुलमै बास। ऐसै जल मै जल मिलै। ऐसी संतन रीति। जनन
दास सुषपावही। तिनके या प्रतीति॥२७॥२८॥२९॥२०॥ तोधै
अबतो सिष सेवग विलषामा। सतगुर साहिब ब्रह्म समाया। स
बजन कलये सूर तिजोवे। कही ऐक हाव होत विधि रोवै। कहां
सूरति कहां वाचा ला। कहा वै सतगुर दीन दयाला। बहोत वि
योग करैं संत सोई। वह ही सार रांम कब होई॥ वह अविनासी
तरजांमी। वह कब मिलि है सेवा स्वांमी। निरधार आधार गुसाई
हम से अधम करां अब काई। पावन रूपी परउपगारी। कितेअ
वतारन देह धारी॥ अब वह सरनि कौन की जावें। वै से संत कव
बपावें॥ ४॥ उन की सरनि बहोत सुषपायो। रांम रांम हिरदै
सुष गायो। वारी गुर के सीतल वैना। सुण तो सब दुष गया सुषदै
॥५॥ ऐसा विजोग कहा न दीजावे। सेवग संत बहोत पछितावे
गुरकं जाणे नांही। ते तो वहीया या नव मांही॥६॥ अबतो संतत
मिलि आया। कथा कीरतन हरि जस गाया। सपडाऐ सतगुर
सुषदाई वै कंठी विधि आ निवनाई॥७॥ बहोत प्रकार पैनपवे
पासा मुलमुल आनि उडाया॥ और प्रसाद नालेर मिठाई
करी न जावै कि तो चढाई॥८॥ नेरिनगारा वरघू बाया। सव हील
ग नगर का आया। कोति लयो रासि गिसि सिएणरस्या। ऐसै सतगु
रस दुज सिष रस्या॥९॥ साधु संत कृवा अतिने ला। आजि गुरु का प
छिला मेला। करि नि छरावलि फूल उछारे। सैदेही गुरदेव पधा
॥१०॥ दंड प्रनाम करैं सब दासा। सेवग सकल संतजन पासा। चर
नांमत प्रसादी लीनी। सबही मिलि प्रकमा दीनी॥११॥ उनीया द
स गैल गुर आगे। संत सिष सबतच रनां लागे। अबतो हरि गुन
चरै प्यारो। वह सतगुर कब कुन ही नारै॥१२॥ केइ नाचै केइ गा
केइ देषि मगन होइ जावैं। प्रेम प्रवाह चले हग नीरा। ऐसै सत
गुर होत बहीरा॥१३॥ ... मचं दन किस तूरा प्रार दियतक
गुर होत वहीरा॥१३॥ अब...

माई भूरा विहसा धसवके मनि भाए दरसन काजि देवमुनि आए
१४ ऐसा समिया गुर का कूवा बहतो नदी ब्रह्म सरूवा ऐसे सं
कुता जनसे वा ब्रहतो मिले निरंजन देवा १५ हरिजन की या ब्रह्म मे
वासा अनंत कोटि तहां संत निवासा आरस परस आनंद सुषमां
ही एकसेक मिलि बिछुडे नांहीं १६ यह परचा सुमरै अरु गावै आ
प पढै अरु औरै परचावै तिन का करम भरम सब भागै केवल ग्यां
न ध्यांन लिव लागै १७ जे को जीव रांम मिलि जाणै सेवा जन कीस
पति बषांणै निराकार अविनासी देवा पूरण ब्रह्म सरस भजन सेवा
१८ दोहा यह परचा ब्रह्म का कहि गुर के उपदेस श्री स्वामी से
वादासजी को या ब्रह्म प्रवेस १९ ऐसे परचा कैसे कहूं यह गुर का उ
पगार जन रूपदास बरणै कहा परचा अनंत अपार २० श्री गुरु
मरदास गुरदेवजी मेरे सिर का ताज उनके सतगुर सेवजी सक
ल सुधारण काज २१ घटती बधती मात्रा अक्षर तुक अनुसार हरि
जन सकल सुधारज्यो जन रूपदास बलिहार २२ अठारासै बतीसु
लमें बदि बैसाष जो ई। बारसि तिथि गुरबार दिन परचा पूरण
होइ २३ इती परचई संपूरण ॥ चौपई सरब ॥ ५० ॥ बिश्राम ॥
२४ ॥ इती श्री स्वांमीजी श्री श्री सेवादासजी की परचई संपूरण
संवत ॥ १८३२ ॥ श्रीमती सुदि [illegible] पक्षे तिथौ नाम १० ॥ बा
र सोमवार के दिन [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] श्री महापुरषां का ग्रंथ लिष्यते ॥ [illegible]
[illegible] लिष्यते ॥ नमो नमो गुरदेव परम सुष पूरण दे
वा अलष रूप अरहंत तो हि कुण जाणै भेवा १ नमो नमो निरंज
रन गुन रहै निहकामी सकल जोति प्रकास दास तुम्ह सरणै
स्वामी २ भ्रम सनेही पीव जीव तुम्ह सरणै आया निरमल नांव
उचार सार सत निकट बताया ३ अधम उधारन आप ताप स
कतन तै षोई गुर ही दीन दयाल और दूजा नहीं कोई ४ निर
श आधार पतित जीव पार उतारो अनंत गुन्हा सब मेटि सरनि
है को ज सुधारो ५ गुर गोबिंद जिनि नाहि उनै अंग ऐक बिराजै त
न मन प्रीति लगाइ भजत भरम सब भाजै ६ गुरु गम [illegible]
आकास अवनि जल धीर सधीरा ऊंचा अगम गिर मेर अलिप पा
स कल समीरा ७ अथग जिसा दरियाव अरक जस अनत उ
जासा सीतल जस ससि सो इतो इजम मेटण त्रासा ८ गुरगुण
अनंत अपार सकल संत महिमा आषै निसबासुर मन माहि
ध्यांन धरि अंतर राषै ९ सतगुर साहिब एक दया करि उर मा

चोवै।रामनामततसारसबदहेतुरमतषोवै१०।गोरगोबिंदप्र
तापनांवहिरदामेंधारयो।रटिरटिरमतारामका।तेसेनरमतिव
रयो।१जपतपसाधनऔरजोग।जिगासबहीकाचा।रामनामस
तिएकहीयागुरमनसावाचा।२सुमिरनसासउसासनांवनिज
निश्चताया।रटिरटिरमतारामऔरमिथ्यासबमाया।३सोरथपू
जाग्यानव्रतविधिक्याआचारा।रामनांमसमिनांहितूलितजन
नरमेंवारा।४गुरगोबिंदप्रतापमुक्तिमारगलीया।अबकौअ
टकेनांहिमहरिकरिसतगुरदीया।५औरधतरधविधिलालनि
रषिलेबिनहीनेनां।।गगजमनधरिहोइमिटेजबमनकेफेनां
१६अनंतजनमकीबीचसतगुरबिनकिसबिधिनाजे।महरि
करेमहाराजदयाकरिदेवनिवाजे।७दयासबूरीसाचसीलस
तगुरतैपावै।ग्यानभगतिवैरागप्रेमकेपंथबतावै।८कामक्रो
धअहंकारममतसबमनकेछूटे।मिथ्यावादविवादजीवसें
त्रिगोलूटे।९पाषंडकपटसुभावमानअभिमानसतावे।तीन
तापधूषपाचगुरांबिनकोएमिटावे।२०जोगीजंगमसेषविप्र
यदिविद्याबिगोया।जतीसन्यासीऔरकुबधिकांटानहीषो
या।२१नृतासबसेसारसमफिबिनसूतावोले।बिनांनिरंजन
नांइचकिचौरासीडोले।२२जीवकैजूवीआसप्यासउरहरिव
नांही।बिनांभगतिविसवासनूतिनरमेजुगमांही।२३प्रेमनहीं
प्रतीतिभावनहीनेदविचारा।सतगुरबिनिसबजाहिवहेविष
मोहकीधारा।२४कोईइकउबरेसंतजिनांसतगुरसुधिदीन्ही
उलटागेतामाहिआत्मांअंतरिचीन्ही।२५साधसंगतिमेंसार
नावमैंनीतरिनेरे।गुरगोसीगहिप्योनपापकेप्रवतछेदे।२
कोटिजनमकेकादआत्मांमेलीमांही।किसिबिधिनमलदे
हुइरहबिनकोंइपजांहीं।२७कहांकरमसनाहसबदर
रकिसिबिधिलागे।निकोटिनआवेंनीचचोटसूअलगान
गे।२८सतगुरसनमुषिआइसबदकीचोटसहारैतनमनधू
रपैवोइमांनिममतासबडारे।२९जबलगेसबदकीमारध
रउरधमकेझनी।निकसेपेजीपारषारकतबछाडिमूनी।३०
मनमेवासीमांहिकोटिअतितेवडगाडा।कामक्रोधउमरा
वअडेआतमकेआडा।३१आसात्रिसनालागिचाहिकरिचि
ततुनाया।सांसोसोगसेतापपीवकापंथभुलाया।३२रमति
डुबधालांहिगेलसोगरवधिकावे।आपोमवउलटाइजीव
होकेरमकरावे।३३बलबुधिलीयाचुराइजीवलेडपमेंद
स्योन्तूलिगयाभगवंतजहरईम्रतकरिपीन्हा।३४कुरामर

दनमस्तो नातैसो गनमन लाया कनककोमनी लागिसुग
धूंधू मलन वगाया ॥४३॥ देष्यो कैसे गिदीन पाणि विन पडे पै
लोदा ॥ दसा निपटिव सिहो इमोर कौ से स्यांमांही ॥४४॥ नतन वि
नो सवनो दि कु संग सैं अकल्पवि नासा ॥ आप आपणा ना
ला गिजग बोदी आसा ॥४५॥ मनिषजनम अवतार ना वविनवी
कोजावे वाजी सुष ओपाय मुगधनर काइ गमावे ॥४६॥ कुसु
ष अरलप अनंत बो रबि नकडी धारा जब गुर पैवर दोइ तिर
तन सौ लागै बारा ॥४७॥ आगे पतित अपार गुरां करि गै लापाया
सुणौं गुरा तम साषि ॥ से टिजा मै तीसाया ॥४८॥ अनंत कोटि निज
संत संगति करि काज सुधासा ॥ जनम मरण दुष दोइ कालते
नरम लिवासा ॥४९॥ गोरषनाथ कबीर देव दत्त सुषदेव सूरा
सांसांरा मांनं दजि नां गुर धाया पूरा ॥५०॥ धनां सैं नरैं दास पास पी
की कादी ॥ नाषा नांनिक दास लये वो इदुष की घाटी ॥५१॥ वगर
पहल्या दत्त आदि जगत ब्रडनां मी ॥ नीतरिधरि विसवास रद
सूं इरवे स्वामी ॥५२॥ नौ जोगेस्वर जाणि आ रिसन कादिक साच
गुर विलपां न विचार मिलेनरी मनसा वाचा ॥५३॥ राजस्या गिव
न ज्ञासि सर पारीषो पी चंदा ॥ सतमैं णांतत सार मेटिजग माया
धंध ॥५४॥ प्रुति तांनी पति साहा वलतें हां पलक न लागी ॥ जणेदी
न दरवेस सुमति सतगुर तें जागी ॥५५॥ परसा सो का सो मनरम
न ब्रण का नागा ॥ संका केवल कूबसर ए सतगुर की लागा
॥५६॥ संत तिलोचन साषि सूरदमानंद प्यारा ॥ कोन्हा अरूजैदे
सेव सतगुर का लारा ॥५७॥ दास मुरारि मनाइ मलूकै सब दष
कासा ॥ साची गुर परतीति आनंते होतदासा ॥५८॥ जन तुरसी जग
मांहि ग्यांन पूरण ततसारा ॥ जगजीवन धरि ध्यान स्यांम गुरक
रिजसा सा ॥५९॥ पूरण पीव सर्वांणि नेम सं नाथ सुना थ्या वेम व
राकरि लोहु षेम संज पिजगनाथ्या ॥६०॥ हरि का दास दयाल हर
विकरि मिले हजूरी ॥ जन हरी दास गुर पासि परम निधि पाई पू
री ॥६१॥ श्रीहरदीन सनाइ सेव सतगुर की साची ॥ प्रेम विनां पद ना हि
साषि वेदन मैं वांची ॥६२॥ सेवादास जन सूरनूर कूं निरषत जीय
कबीर गुर प्रताप भैम का ध्यान लापी या ॥६३॥ और कूं संत अनेक
गिणे ते गिणती नावैं ॥ साची सतगुर वोट परम सुष सहजैं पावैं
॥६४॥ आइ साषि प्रवांणि गुरु की महिमां गाई ॥ सतगुर होइ कृप
ल दया करि डर सि दिषाई ॥६५॥ पूरा सतगुर होइ तवै सुष पूरा
पावै ॥ नरम करम सब मेटि निरमल नांव बतावै ॥६६॥ साषी ॥ सत
गुर मो परि करि दया बहुत की ऐ उपगार ॥ राम रतन धन बकसी

या सबसारनमैंसार ।६०।ती निलोकचवदैनव न।आंरिजुगनके
मां हि।जनरूपदासगुरदेवसमि दूजाकोई नांहि।६१।।तनमनस
रबससौंपीऐ।गुरतैंकरण नांहि।जन अमरदास गुरदेवकी मिवे
रिवेरिव लिजो हि।।६२।।इती श्रीग्रंथगुरभगतिसारउपदेसजो
गग्रंथ संपूरण।।ग्रंथ।।१।।अथ कवित।। भक्तिकाजवपधारिन
गुनमतप्रगटकीनौं।नरमकरमसबमेटिसारसंतनकुंदीनो।
त्रिगुणपरैंततरूप अकलनकीवोट समांनौं।जनसेवलिसासुष
देवइसाऊन और रबपांनौं।आगमवस्तअंतरिधरीनांजेनरम
जेजीरजनरूपदासवंदनकरैं केवलआपकबीर।१।।जनसेस
सासंत औरकलमैं बिरलाकूवा।लोकवेदपषदोइसबनतेपै
न्यारवा।बिरऊमनमदावैरागतत वैतातपधारी।पूरणब्रह्मसबव
रण आत्मा अनंतसुधारी।साधकोहि अनंतऐकसूंऐकसवायु
संतसेवासाचीमूंठि भेदकुं बिरलेपाया।करीजगतिनिदक
मता।ऐकनिरंजनउरधसौ।गुरसंतप्रसादसेंकहैरूपरामका
रिजसवौ२।कलिजुगमैंकृपालदयाकरिदरसदिपायो।प्रगटेआह
संततनदेतिमर मिटायो।कीयोग्यांनप्रकासभक्तिवैरागवधा
यो।अमरआपमहाराजिपरमनतनक्षसौं।गोरषकहोंकबीर
कहांकहौंदत्तसुषदेव।इसडीचालअगाधसाधकहौंसांगेसे
वा।नांव अमरमहिमा अमर अमर अषै गुरआप जनरूपाद
समस्त गिरहौसदा अमरगुरआप।नूपसतगुरअमरसधीरअ
डिगअविचलअविनासी।महिमांअनंतअपारअगमगतिग
नप्रकासी।असरणिसरणि अलेषदीनदुषमेटणदेवा।रसा
नूरनरपूरिलगेनिष्फलनिजसेवा।करणांसिंधिकृपालको
लक्रमलिपैनकोईजीवनमुक्तिजुगमांहिरमततमतामुषिप
ई।त्रिगुणलजिनगुणलदारदाऐकउरधारि जनरूपदासअ
बसुषनया।सबदुषदीयानिवारि।।४।।अथरेषतो।।धनिगु
रदेवजिनपतितपावनकीऐ।कलितेकलिमांहिजीवअधमकेवे
भगतिअरूसावदेनोवसीनावदेलारिसंसारसैंलपारिपहुंचे
जगतमैंजावताबहोतेडुपपावताकाविबंधनकीऐचरनचेरादा
सरूपाजीयाआपसरणैंलीया।अमरमहाराजिगुरदेवमेरा।।
।।१।।अथकड.षा।।हरीगुरसहरिकामतिवाला।सभीअणरागी
अवधूत।कलिमैंभक्तिकरीअतिनारी।सकलसुधारीसंतन
त।जुगजुगभगतनकूंकूवाकहूंकेता।ऐकऐकसूंअधिकीच
ल।अवधूतकअणांकेआगे।गुरधरमंडीयाआपदयालसा
बतधरकीनीसरिसारी।मांफीमारिकीऐचकचूर।इसडीअ

र करै ऊण बीजो । तनमन तो लिवजाणै ॥२॥ अजनन्हा है निरंज
न पायो । अरिगंजनरहायो इकनाइ ॥ जनटो षेलि अगम सूलागौ
न गुण नाथ मनाइ मनायो ॥ रामत एगरज पूत रंगीला हरी
दास अजन सरस धीर ॥ परोम अजन मरण तुम्हारी गाऊं गुण पाऊं
सुषसीर ॥ ॥ जुगजुग मै जोगेस्वर गोरष कोई तेरा पार न पावै
अकल अजनी आप हि राजौ गति मति लष न जावै ॥ ना रणत्रिए
नर ॥ नवनजण । नक्ति मुक्ति का दाता । गगन सिषर के तषत बिरा
जो अमतेज रंगीराता ॥१॥ अनत आत्मा करी आपणी । तहां सजीव निप
जी जनम मरण का सांसा मेट्या वकुरि न उडसमाई ॥२॥ साध सिध जो
गेस्वर जाणै जालिमतं जतधारी । नाथ अनाथ जीव तुम जाणौ
नेव जति धार उतारी ॥ आगति अपानमेटि जग मंडण । केता जी
व गावै । जन रूपदास गोरष मति वाला प्रेम पियाला पावै ॥४॥ के
सी पुरी मांहि आणिकीनी कलिजुग नक्ति वधारी वीरा दास क
रसाणिको हुजै कबीरदास संत सधीर । टेको बी पुरस गेव स्थावै
कहो आयो उनको रेव । जुग मे जाति जुगा होजाणो वव आणे अरि
नासी देव । राषी टेको कर स्यौ हास्यौ नहीं तिडरडरनी हि होइ
एक मांहि जुगना हो जीतो कबो वदी तो जुग जुग मांहि ॥१ कहा कहौ
सो नाम हि वको सुंदर रूप सेवा सो साजा अलष अरूप रूप गु
ण केता नगवंत नक्ति बंधारण काज ॥२॥ सायी सबद च ओचो ष
र सुधारे हंस व सुष की सार पीया तिके आणनते पाव न सुणि
सुणि सो तन व्यासरीर । ध्यान ध्यान अरुन मन धीरो । रहो क
बीरो जन ही लागि । केता कह्यो बह्यो नहीं बाती त्याग चल्यो
करडी कुलकाणि ॥४॥ स्वामी आपस कुल नवनजण । अतर
जामी जगत जिहाज । रूपदास जन तुम गुण गावै रा षो राम क
बीर नज ॥५॥ ॥ कनाम मे निरगुण नाथ मनायो धास्यो अ
लष ध्याण कोध्यानं करम करम तजि धरम विचास्यो नाव बिना दे
ष्या मत आन । टेक साचा तिके स्याम सूं साचा कूडा जगत तुसा तुं जी
व न्यारा रह्या नया नरनसंग प्यारा कीया प्रेमरस पीव ॥१ जगति व
धास्यो नगता प्रगट नाव कीयो कलि आग नगता बिनास कल अ
गम नो अगति गति जाणि तहां जाइ नामे निजतत लस्यो निरालो
अलष मेटि मेट नगवंत जन पद जीवन हात हूं जाणै पूरण ब्रह्म
सांसो सत आया उगम गि अलष का ओधी । नाम कबीर अनुन आव
तार अनंस कोटि संत नदे ही के जन रूपा राम मिलावण हार ॥४॥
५ ॥ इति ग्रंथकर सव संपूरण ॥ बाणी पुस्तक मै ओ ब सही ॥ लि
षतं चेला साध श्री अगरदासजी को सिष । ॥ १७ श्री स्वामी अमरदासजी को सिष ॥
[illegible] ॥ नाजाद गुलाम । [illegible] श्री अमरदासजी को

प्रताप

गमजी॥ विसनदासपोथादई दिरदेरामनें श्रोर नगनाई
नाई गांवली लपाव नाई साषि साधांकी वरिजी रामजीकी
कुसलदासजीकी रामदासजीकी नेपदासजीकी ऊगनामन,

रदेरामजी पोथी शिष मुकंददासनें दी सो को [illegible]
गुरुसाई दावो करणपावे नरी साषि ग्या ने अगार
लैकी नाथुराम नरतीयाकी माणकराम नरती
ती नोलराम दाधलीयेकी चेलिदरजी की साधकंगा,
नदासजीको मिती फागुणवदि ५ संवत १८७८ का
रसक तदयाराम दासजीका १८५७ [illegible] मिती
वसाख बदि ४ ऐ पुस [illegible]
लामुकंद दास जी का [illegible]
लेरूपे [illegible] जीस [illegible] दार [illegible]
बालकदासजी [illegible] पी प ली
का पीदरवा [illegible]
रीरा [illegible] कुर [illegible] मो [illegible]
मको [illegible] परवा [illegible]
साष रामनाथ [illegible] कटे [illegible]
दे [illegible] राम [illegible] ता [illegible]
लोवासखाली दागीरधारी दासव